मानक हिन्दी कोश

•

रामचन्द्र वर्म्मा

मानक हिन्दी कोश

पाँचवाँ खण्ड

रामचन्द्र वर्म्मा

१.१
२४

पचास रुपया

साहित्य सम्मेलन
प्रयाग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पुस्तकालय

विषय संख्या २.९
पुस्तक संख्या २V
आगत पञ्जिका संख्या ४४,६८३

पुस्तक पर किसी प्रकार का निशान लगाना वर्जित है। कृपया १५ दिन से अधिक समय तक पुस्तक अपने पास न रखें।

३४६०२ ~~[illegible]~~
१०-५-५६

सन्दर्भ ग्रन्थ
REFERENCE BOOK

यह पुस्तक वितरित न की जाय
NOT TO BE ISSUED

Stock Verification-2024

[illegible] प्रमाणीकरण १९८४-१९८५

Stock Verification-2024

शब्द संख्या—२५३१६

मानक हिन्दी कोश

[हिन्दी भाषा का अद्यतन, अर्थ प्रधान और सर्वांगपूर्ण शब्द-कोश]

पाँचवाँ खंड

(व से ह तक; तथा दो परिशिष्टों सहित)

CHECKED 1973
Libr... धी

प्रधान सम्पादक
रामचन्द्र वर्म्मा
सहायक सम्पादक
बदरीनाथ कपूर, एम. ए., पी-एच. डी.

हिन्दी साहित्य सम्मेलन • प्रयाग

प्रकाशक
मोहनलाल भट्ट
सचिव, प्रथम शासन निकाय
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

[illegible]
पुस्तक सं. ९.१ / 2V
आगत सं. ६४,७६२
दिनांक
गुरुकुल ग्रन्थालय कांगड़ी

प्रथम संस्करण
शकाब्द १८८७ सन् १९६६
मूल्य : २५ रुपए

मुद्रक
रामप्रताप त्रिपाठी, सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग

प्रकाशकीय

मानक हिन्दी कोश का यह पाँचवाँ और अन्तिम खण्ड हिन्दी जगत् के सम्मुख रखते हुए हमें अतीव प्रसन्नता हो रही है। लगभग आज से दस-ग्यारह वर्ष पहले सम्मेलन के भूतपूर्व आदाता श्री जगदीश स्वरूप एडवोकेट ने इस कार्य का श्रीगणेश किया था और इसके सम्पादन का भार श्री रामचन्द्र जी वर्म्मा को सौंपा था।

नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हिन्दी शब्द सागर आज से ३५ वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ था और उसके बाद हिन्दी का यह दूसरा बृहत् तथा महत्वपूर्ण कोश ग्रन्थ आज हिन्दी साहित्य सम्मेलन से प्रकाशित हो रहा है।

कोश की विशेषताओं के सम्बन्ध में कोश के प्रधान सम्पादक ने पहले खण्ड में विस्तार से चर्चा की है। उन विशेषताओं को दोहराना यहाँ समीचीन नहीं है। फिर भी हम यहाँ इतना अवश्य कह देना चाहते हैं कि हिन्दी शब्दों का आर्थी विवेचन प्रस्तुत करने में इस कोश में श्लाघनीय कार्य हुआ है।

निश्चय ही कोश-कार्य ऐसा कार्य नहीं है जिसकी १० वर्षों में ही इतिश्री समझ ली जाय। यह कार्य ऐसा है जिसमें अनेकों पीढ़ियों को दिन-रात लगे रहने की आवश्यकता है। शब्द-चयन के लिए तथा अर्थ निश्चय के लिए सैकड़ों विद्वानों के इसमें बराबर लगे रहने की आवश्यकता है। मानक हिन्दी कोश के प्रथम चार खण्डों के प्रति मनीषी विद्वानों तथा हिन्दी प्रेमियों ने जो सद्भाव प्रकट किये हैं उसके लिए हम कृतज्ञ हैं।

इस कोश के शब्द-चयन, सम्पादन, मुद्रणकार्य में जिनका हमें अनन्य सहयोग प्राप्त हुआ है उनके हम विशेषरूप से आभारी हैं। आशा है हिन्दी जगत् हिन्दी कोश साहित्य में इस अभिनव प्रयास का स्वागत करेगा।

मोहनलाल भट्ट
सचिव, प्रथम शासन निकाय
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

संकेताक्षरों का स्पष्टीकरण

अं०—अंगरेजी भाषा
अ०—(कोष्ठक में) अरबी भाषा
अ०—(कोष्ठक से पहले) अकर्मक क्रिया
अज्ञेय—स० ह० वात्स्यायन
अनु०—अनुकरणवाचक शब्द
अप०—अपभ्रंश
अर्द्ध० मा०—अर्द्ध-मागधी
अल्पा०—अल्पार्थक
अव्य०—अव्यय
आस्ट्रे०—आस्ट्रेलिया के मूल निवासियों की बोली
इब्र०—इबरानी भाषा
उग्र—पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'।
उदा०—उदाहरण
उप०—उपसर्ग
उभय०—उभयलिंग
कबीर—कबीरदास
कश०—कश्मीरी भाषा
केशव०—केशवदास
कोंक०—कोंकणी भाषा
कौ०—कौटिलीय अर्थ-शास्त्र
क्रि०—क्रिया
क्रि० प्र०—क्रिया प्रयोग
क्रि० वि०—क्रिया विशेषण
क्व०—क्वचित्
गुज०—गुजराती भाषा
चन्द्र०—चन्द्रवरदाई
जायसी—मलिक मुहम्मद जायसी
जावा०—जावा-द्वीप की भाषा
ज्यो०—ज्योतिष
डिं०—डिंगल भाषा
ढो० मा०—ढोला मारू रा दूहा
त०—तमिल भाषा
ति०—तिब्बती
तु०—तुरकी भाषा
तुलसी—गोस्वामी तुलसीदास

ते०—तेलगु भाषा
दादू—दादूदयाल
दिनकर—रामधारी सिंह 'दिनकर'
दीनदयालु—कवि दीनदयालु गिरि
दे०—देखें
देव—देव कवि
देश०—देशज
द्विवेदी—महावीरप्रसाद द्विवेदी
नपुं०—नपुंसक लिंग
नागरी—नागरीदास
निराला—पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी
ने०—नेपाली भाषा
पं०—पंजाबी भाषा
पद्माकर—पद्माकर कवि
पन्त—सुमित्रानन्दन पन्त
पर्या०—पर्याय
पा०—पाली भाषा
पुं०—पुंलिंग
पु० हि०—पुरानी हिन्दी
पुर्त्त०—पुर्त्तगाली भाषा
पू० हिं०—पूर्वी हिन्दी
पैशा०—पैशाची भाषा
प्रत्य०—प्रत्यय
प्रसाद—जयशंकर प्रसाद
प्रा०—प्राकृत भाषा
प्रे०—प्रेरणार्थक क्रिया
फा०—फारसी भाषा
फ्रां०—फ्रान्सीसी भाषा
बंग०—बंगाली भाषा
बर०—बरमी भाषा
बहु०—बहुवचन
बिहारी—कवि बिहारीलाल
बुं० खं०—बुंदेलखण्डी बोली
भारतेन्दु—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
भाव०—भाववाचक संज्ञा

भू० कृ०—भूत कृदन्त
भूषण—कवि भूषण त्रिपाठी
मतिराम—कवि मतिराम त्रिपाठी
मल०—मलयालम भाषा
मि०—मिलावें
मुहा०—मुहावरा
यहू०—यहूदी भाषा
यू०—यूनानी भाषा
यौ०—यौगिक पद
रघुराज—महाराज रघुराज सिंह, रीवां-नरेश
रसखान—सैयद इब्राहीम
रहीम—अब्दुर्रहीम खानखानाँ
राज० त०—राजतरंगिणी
लश०—लशकरी बोली अर्थात् हिंदुस्तानी जहाजियों की बोली
लै०—लैटिन भाषा
व० वि०—वर्ण-विपर्यय
वि०—विशेषण
वि० दे०—विशेष रूप से देखें
विश्राम—विश्रामसागर

व्या०—व्याकरण
शृं०—शृंगार सतसई
सं०—संस्कृत भाषा
संयो०—संयोजक अव्यय
संयो० क्रि०—संयोज्य क्रिया
स०—सकर्मक क्रिया
सर्व०—सर्वनाम
सिं०—सिन्धी भाषा
सिंह०—सिंहली भाषा
सूर०—सूरदास
स्त्री०—स्त्रीलिंग
स्पे०—स्पेनी भाषा
हरिऔध—पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय
हिं०—हिन्दी भाषा

*यह चिह्न इस बात का सूचक है कि यह शब्द केवल पद्य में प्रयुक्त होता है।

†यह चिह्न इस बात का सूचक है कि इस शब्द का प्रयोग स्थानिक है।

संस्कृत शब्दों की व्युत्पत्ति के संकेत

अत्या० स०—अत्यादि तत्पुरुष समास (प्रा० स० के अन्तर्गत)
अव्य० स०—अव्ययीभाव समास
उप० स०—उपपद समास।
उपमि० स०—उपमित कर्मधारय समास।
कर्म० स०—कर्मधारय समास
च० त०—चतुर्थी तत्पुरुष समास।
तृ० त०—तृतीया तत्पुरुष समास।
द्व० स०—द्वन्द्व समास
द्विगु० स०—द्विगु समास
द्वि० त०—द्वितीया तत्पुरुष समास
न० त०—नञ्तत्पुरुष समास
न० ब०—नञ्बहुव्रीहि समास
नि०—निपातनात् सिद्धि
पं० त०—पञ्चमी तत्पुरुष समास
पृषो०—पृषोदरादित्वात् सिद्धि
प्रा० ब० स०—प्रादि बहुव्रीहि समास
प्रा० स०—प्रादि तत्पुरुष समास
ब० स०—बहुव्रीहि समास
बा०—बाहुलकात्
मयू० स०—मयूरव्यंसकादित्वात् समास
शक०—शकन्ध्वादित्वात् पररूप
ष० त०—षष्ठी तत्पुरुष समास
स० त०—सप्तमी तत्पुरुष समास
√—यह धातु चिह्न है।

विशेष—पृषो०, नि० और बा० ये तीनों पाणिनीय व्याकरण के संकेत हैं। इनके अर्थ हैं, 'पृषोदर' आदि शब्दों की भाँति, 'निपातन' (बिना किसी सूत्र-सिद्धान्त) से और 'बाहुलक' (जहाँ जैसी प्रवृत्ति देखी जाय वहाँ उस प्रकार) से शब्दों की सिद्धि। जिन शब्दों की सिद्धि पाणिनीय सूत्रों से संभव नहीं होती उनकी सिद्धि के लिए उपर्युक्त विधियों का प्रयोग किया जाता है। इन विधियों से किसी शब्द को सिद्ध करने के लिए वर्णों के आगम, व्यत्यय, लोप आदि आवश्यकतानुसार किये जाते हैं।

मानक हिन्दी कोश

पाँचवाँ खण्ड

व

व—नागरी वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यंजन जो व्याकरण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से अंतस्थ, घोष, अल्पप्राण, ईषत्स्पृष्ट तथा दंत्यौष्ठ्य है।

वंक—वि०[सं० √वंक् (टेढ़ा होना)+अच् (कर्तरि)] १. टेढ़ा। वक्र। २. कुटिल।

पुं०[√वंक्+घञ्] नदी का मोड़। वंकर।

वंकट—वि०[सं० वंक] १. टेढ़ा। बाँका। २. कुटिल। ३. दुर्गम। विकट।

वंक-नाल—पुं० =वंकनाली।

वंक-नाली—स्त्री०[सं० कर्म० स० ?] सुषुम्ना (नाड़ी)।

वंकर—पुं०[सं० वंक√रा (लेना)+क] नदी का घुमाव या मोड़।

वंका—स्त्री० [सं० वंक+टाप्] चारजामे (जीन) के अगले हिस्से का ऊँचा उठा हुआ किनारा।

वंकाला—स्त्री०[सं०] प्राचीन वंग देश की राजधानी का नाम। ('बंगाली' इसी का अपभ्रंश रूप है।)

वंकिम—वि०[सं० वंक+इमनिच्] आकार, रचना, आदि के विचार से कुछ झुका हुआ या टेढ़ा।

पुं० आवारा आदमी।

वंकिल—पुं०[सं०√ वंक्+इनच्] कंटक। काँटा।

वंक्रा—स्त्री०=वंक्रि।

वंक्रि—स्त्री०[सं० √वंक्+क्रिन्] १. पशु विशेषतः मादा पशु की पसली की हड्डी। २. कोड़ा। ३. प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा।

वंक्षण—पुं० [सं० वंक्ष् (इकट्ठा होना)+ल्यु—अन] पेड़ू और जाँघ के बीच का अंश।

वंक्षु—स्त्री०[सं०√वह् +कुन्, नुम्] आधुनिक आक्सस नदी का पुराना नाम।

वंग—पुं०[सं०√ वंग् (गति)+अच्] १. बंगाल (राज्य)। २. राँगा नामक धातु। ३. वैद्यक में उक्त धातु की भस्म। ४. कपास। ५. बैंगन। भंटा। ६. एक चंद्रवंशी राजा।

पुं०[?] पहाड़ों की घाटी। (राज०)

वंगज—वि० [सं० वंग√जन् (उत्पत्ति)+ड] वंग अर्थात् बंगाल में उत्पन्न। बंगाल में जन्मा या बना हुआ।

पुं० १. बंगाल का निवासी। बंगाली। २. सिंदूर। ३. पीतल।

वंग-मल—पुं०[सं० ष० त०] सीसा (धातु)।

वंगसेन—पुं०[सं०] १. अगस्त का वह पेड़ जिसमें लाल फूल लगते हों। २. उक्त में लगनेवाला लाल फूल।

वंगारि—पुं०[सं० वंग-अरि, ष० त०] हरताल नामक खनिज।

वंगाष्टक—पुं०[सं० वंग-अष्टक, ष० त०] राँगा आदि आठ धातुओं को फूँककर तैयार की जानेवाली ओषधि। (वैद्यक)

वंगीय—वि०[सं० वंग+छ—ईय] १. वंग अर्थात् बंगाल में होने अथवा उससे संबंध रखनेवाला। २. राँगे का बना हुआ।

वंगेश्वर—पुं०[सं० वंग-ईश्वर, ष० त०] वैद्यक में एक रसौषध।

वंचक—वि० [सं०√ वंच् (ठगना)+णिच्+ण्वुल्—अक] [भाव० वंचकता] छल-कपट से जो दूसरे को ठग लेता हो।

पुं० १. ठग। २. गीदड़। ३. पालतू नेवला।

वंचकता—स्त्री०[सं० वंचक+तल्—टाप्] १. वंचक होने की अवस्था या भाव। २. वंचक का कोई कृत्य।

वंचन—पुं०[सं०√वंच्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० वंचित] १. धोखा देना या ठगना। २. धूर्तता। ठगी।

वंचन-योग—पुं० [सं० ष० त०] ठगी का अभ्यास।

वंचना—स्त्री०[सं०√ वंच्+णिच्+युच्—अन, टाप्] छलपूर्वक किसी को ठगने या धोखा देने की क्रिया या भाव।

स० १. छलपूर्वक व्यवहार करना। २. ठगना। ३. वास्तविक रूप या बात छिपाकर कुछ और ही बात बनाना या मिथ्या रूप उपस्थित करना। (चीटिंग)

स०=बाँचना (पढ़ना)।

वंचनीय—वि० [सं०√ वंच्+अनीयर] १. जो ठगे जाने के योग्य हो। जिसे ठग सकें। २. जो छोड़े या त्यागे जाने के योग्य हो।

वंचयिता (तृ)—वि०[सं०√वंच्+णिच्+तृच्]=वंचक।

वंचित—भू० कृ०[सं०√ वंच्+णिच्+क्त] १. धोखे में आया हुआ। जो ठगा गया हो। २. जो किसी काम, चीज या बात से अलग या दूर किया गया हो। जो रहित हुआ हो। ३. जो वांछित पदार्थ न प्राप्त कर सका हो अथवा जिसे प्राप्त करने से रोका गया हो। (डिप्राइव्ड; उक्त दोनों अर्थों में)

वंचितक—पुं०[सं० वंचित+कन्]=व्यंग्य।

वंचिता—स्त्री०[सं० वंचित+टाप्] एक प्रकार की पहेली।

वंचुक—वि०[सं० √वंच्+उकन्]=वंचक।

वंच्य—वि०[सं०√वंच्+ण्यत्]=वंचनीय।

वंछना—स०[सं० वांछा] वांछा करना। चाहना।

वंजुल—पुं० [सं०√ वज् (गति) +उलच्, नुम्] १. बेंत। २. तिनिश का पेड़। ३. अशोक। ४. स्थल पर का एक प्रकार का पक्षी।

वंजुला—स्त्री० [सं० वंजुल+टाप्]१. दुधारी गाय। २. पुराणानुसार सह्याद्रि पर्वत से निकलनेवाली एक नदी।

वंट—वि० [सं०√वंट्+घञ् करणे]१. कटी दुमवाला। २. कुँआरा।

पुं०१. अंश। भाग। २. हँसुए की मुठिया। ३. अविवाहित पुरुष।

वंटक—वि०[√वंट् (बाँटना)+णिच्+ण्वुल्—अक] बाँटनेवाला।

पुं० [वंट+कन्]१. बाँट। २. बाँट में मिलनेवाला हिस्सा। ३. बाँटनेवाला व्यक्ति।

वंटन—पुं० [सं०√वंट्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० वंटित] १. कोई चीज कुछ व्यक्तियों आदि में बाँटना। २. किसी चीज के अनेक हिस्से करना।

वंटनीय—वि०[सं०√वंट्+अनीयर्]जो बाँटा जाय या बाँटा जा सके। बाँटने के योग्य।

वंटाल—पुं० [सं०√वट्+आलच्]१. शूरों का युद्ध। २. नौका। ३. कुदाल जिससे जमीन खोदते हैं।

वंठ—वि० [सं०]√वंठ् (अकेले जाना)+अच्]१. कुँआरा। २. बौना। ३. अपाहिज। पंगु। ४. किसी अंग से विहीन। हीनांग।

पुं०१. अविवाहित पुरुष। २. दास। ३. बौना व्यक्ति। ४. सेवक। ५. भाला।

वंठर—पुं०[सं०√वंठ्+अरन्]१. ताड़ के वृक्ष का कल्ला। २. बाँस के कल्ले का वह कड़ा और मोटा पत्ता जो उसे छिपाये रहता है। यह पत्ता हर गाँठ पर होता है। ३. कुत्ता। ४. कुत्ते की दुम। ५. पशुओं के गले में बाँधने की रस्सी। ६. छाती। स्तन। ७. बादल। मेघ।

वंड—वि०[सं०√वन्(आघात करना)+ड]१. वह जिसकी लिंगेंद्रिय के अग्रभाग पर वह चमड़ा न हो, जो सुपारी को ढँके रहता है। २. जिसका खतना हुआ हो। ३. जिसका कोई अंग कट या निकल गया हो। हीनांग।

पुं० ध्वज-भंग नामक रोग।

वंडर—पुं० [सं० √वंड्+अरन्] १. कंजूस। सूम। २. अन्तःपुर का रक्षक नपुंसक। खोजा।

स्त्री० पुंश्चली स्त्री।

वंद—प्रत्य०[सं० वत् से फा०]एक फारसी प्रत्यय जो संज्ञाओं के अन्त में लगकर ‘वाला’, ‘स्वामी’ आदि का अर्थ देता है। जैसे—खुदावन्द।

वंदक—वि०[सं०√ वंद् (स्तुति या प्रणाम करना)+ण्वुल्—अक] वंदना करनेवाला।

पुं०१. चारण। २. भिक्षु। ३. बाँदा नामक परोपजीवी वनस्पति।

वंदन—पुं०[सं०√वंद्+ल्युट्—अन]१. नम्रतापूर्वक की जानेवाली वंदना या स्तुति। २. शरीर पर बनाए जानेवाले तिलक आदि चिह्न। ३. एक प्रकार का विष। ४. वंदाक या बाँदा नामक वनस्पति। सिंदूर।

वंदनक—पुं०[सं० वंदन+कन्]=वंदन या वंदना।

वंदन-धूरि—स्त्री० [सं० वंदन=सिंदूर +हिं० धूरि=धूल]अबीर, गुलाल आदि। उदा०—रसिकलाल पर मेलति कामिनि वंदनधूरि।—हितहरिवंश।

वंदनमाला—स्त्री०=बंदनवार।

वंदना—स्त्री०[सं०√वंद्+युच्—अन, टाप्] [भू०कृ०वंदित, वि०वंदनीय] १. आदर और नम्रतापूर्वक की जानेवाली स्तुति। वंदन। २. बौद्धों की एक पूजा। ३. होम हो चुकने पर उसकी भस्म से लगाया जानेवाला तिलक।

वंदनी—स्त्री०[सं० वंदन+ङीप्]१. स्तुति। वंदना। २. जीवातु नामक ओषधि। ३. गोरोचन। ४. शरीर पर लगाए जानेवाले तिलक आदि चिह्न। ५. माँगने की क्रिया। याचना। ६. वटी।

वंदनीय—वि०[सं०√वंद्+अनीयर्] [भाव० वंदनीयता] जिसकी वंदना की जानी चाहिए अथवा की जाने को हो।

वंदा—पुं०[सं०√वंद्+अच्—टाप्]बाँदा नामक परोपजीवी वनस्पति।

वंदाक, वंदार, वंदारु—पुं० [सं०]वंदा या बाँदा नामक परोपजीवी वनस्पति।

वंदि—पुं०[√वंद्+इन्]=बंदी (कैदी)।

वंदिग्राह—पुं०[सं० वंदि√ग्रह् (ग्रहण,+अण्] डाकू।

वंदित—भू० कृ०[सं०√वंद्+क्त] [स्त्री० वंदिता] जिसकी वंदना हुई हो या की गई हो।

वंदितव्य—वि०[सं०√वंद्+तव्य] वंदनीय।

वंदिता (तृ)—वि०[सं०√वंद्+तृच्] वंदना करनेवाला।

वि० सं०‘वंदित’ का स्त्री०।

वंदी (दिन्)—पुं० [सं०√वंद्+णिनि] १. वह जिसे बंधन में रखा गया हो। २. वह अपराधी जिसे दंड-स्वरूप कारागार में रखा गया हो।

वंदीगृह—पुं०[सं० ष० त०] कैदखाना। कारागार।

वंदीजन—पुं०[सं० कर्म० स०]१. राजाओं आदि का यश वर्णन करनेवाली एक प्राचीन जाति। २. उक्त जाति का व्यक्ति या चारण।

वंद्य—वि०[सं०√वंद्=ण्यत्]=वंदनीय।

वंद्या—स्त्री०[सं० वंद्य+टाप्]१. बाँदा नामक वनस्पति। २. गोरोचन।

वंधुर—पुं० [सं० बंधुर] १. रथ या गाड़ी का आश्रय जिसमें दोनों हरसे और धुरा प्रधान होते हैं। २. गाड़ी में का वह स्थान जहाँ सारथी या गाड़ीवान बैठकर उसे चलाता है।

वंध्य—वि० [सं० बंध्य] १. जिसमें कोई परिणाम या फल उत्पन्न करने की शक्ति न हो। अनुत्पादक। २. जिसमें बीज या संतान उत्पन्न करने की शक्ति न हो। बाँझ। (स्टराइल) ३. जिसका कोई परिणाम या फल न हो। निष्फल।

वंध्यकरण—पुं० [सं०] अनुर्वरीकरण। (स्टर्लाइजेशन)

वंध्या—स्त्री० [सं० बंध्या] वह स्त्री या मादा पशु जो गर्भ धारण करने में फलतः प्रसव करने में असमर्थ हो। बाँझ।

वंध्या-कर्कटिका—स्त्री०[सं० बंध्याकर्कटिका] बाँझ ककोड़ा।

वंध्या-पुत्र—पुं०[सं० बंध्यापुत्र] बाँझ स्त्री के पुत्र की तरह होनेवाला असंभव पदार्थ।

वंश—पुं० [सं०√वम् (उगलना)वा√वन् (शब्द)+श] १. बाँस। २. बाँस की बनी हुई बाँसुरी। ३. छाजन की बँडेर जो बाँस की होती है। ४. एक प्रकार की ईख। ५. पीठ के बीच में हड्डियों की गुरियों की लंबी माला या श्रृंखला जो गरदन से कमर तक होती है। रीढ़। ६. नाक के बीच की लंबी हड्डी। बाँसा। ७. खड्ग के बीच का पीछे की ओर उठा हुआ या ऊँचा भाग। ८. बारह हाथ की एक पुरानी नाप। ९. हाथ या पैर की लंबी हड्डी। नली। १०. युद्ध की सामग्री। ११.

पुष्प। फूल। १२. विष्णु का एक नाम। १३. जीव या प्राणी की संतान-परम्परा। एक ही जीव, प्राणी या व्यक्ति से उत्पन्न होने वाले जीवों, प्राणियों या व्यक्तियों की परम्परा या श्रृंखला। कुल। खानदान। १४. दे० 'वंशलोचन'।

वंशक—पुं० [सं० वंश+कन्] १. छोटी जाति का बाँस। छोटा बाँस। २. अगर नामक गंध-द्रव्य। अगरु। ३. एक प्रकार की ईख। ४. एक प्रकार की मछली।

वंशकपूर—पुं० [सं० वंशकर्पूर] वंशलोचन।

वंशकर—पुं० [सं० वंश√कृ (करना)+अच्] वह पुरुष जिससे किसी वंश का आरंभ हुआ हो। मूलपुरुष।

वंशकरा—स्त्री० [सं० वंशकर+टाप्] वंशधारा नदी।

वंशकार—पुं० [सं० वंश√कृ+अण्] गंधक।

वंशज—पुं० [सं० वंश √जन् (उत्पत्ति)+ड] १. वह जो किसी वंश में उत्पन्न हुआ हो। २. किसी विशिष्ट व्यक्ति के विचार से, उसकी संतान। जैसे—ये लोग टोडरमल के वंशज हैं। (डिसेन्डेन्ट: उक्त दोनों अर्थों में)

वंशजा—स्त्री० [सं० वंशज+टाप्] वंशलोचन।

वंश-तिलक—पुं० [सं०] पिंगल में एक प्रकार का छंद।

वंश-धर—पुं० [सं० ष० त०] १. बाँस धारण करनेवाला। २. वह जो किसी के वंश में उत्पन्न हुआ हो। वंशज। ३. वह जिसने अपने वंश या कुल की मर्यादा की रक्षा की हो।

वंश-धरा—स्त्री० [सं० वंशधर+टाप्] मध्य प्रदेश की एक नदी, जो पुराणानुसार महेन्द्र पर्वत से निकली है। आज-कल इसे 'वंशधारा' कहते हैं।

वंश-धान्य—पुं० [सं० ष० त०] बाँस का चावल। (वि० दे० 'बाँस')

वंशनर्ती (र्तिन्)—पुं० [सं० वंश√नृत् (नाचना)+णिनि] भाँड़।

वंश-नाश—पुं० [सं० ष० त०] फलित ज्योतिष के अनुसार एक योग जो शनि, राहु, और सूर्य के एक साथ किसी लग्न में, विशेषतः पंचम लग्न में पड़ने पर होता है, और जिसके फल-स्वरूप सारे वंश या परिवार का नष्ट होना माना जाता है।

वंश-नेत्र—पुं० [सं० ब० स०] ऊख की जड़ या पोर जिसमें से अँखुआ निकलता है।

वंश-पत्र—पुं० [सं० ब० स०] हरताल (खनिज)।

वंश-पत्रक—पुं० [सं० वंशपत्र+कन्] १. एक प्रकार की ईख जो सफेद होती है। २. एक तरह की मछली। ३. हरताल।

वंश-पत्र-पतित—पुं० [सं० पं० त०] एक प्रकार का छन्द।

वंशपत्री—स्त्री० [सं० वंशपत्र+ङीष्] १. एक प्रकार की हींग। २. बाँसा नाम की घास।

वंश-रोचना—स्त्री० [सं० ष० त०] बंसलोचन।

वंशलोचन—पुं० [सं० वंशरोचना] बंसलोचन। (देखें)

वंश-वज्रा—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का अर्द्ध-सम वर्णिक वृत्त जो इधर हाल में इंद्रवज्रा और इन्द्रवंशा के योग से बनाया गया है। इसके पहले और तीसरे चरणों में तगण, तगण, जगण और दो गुरु वर्ण होते हैं।

वंश-वृक्ष—पुं० [सं० ष० त०] वृक्ष की आकृति का वह रेखा-चित्र जिसमें किसी वंश के मूल पुरुष से लेकर उसके परवर्ती वंशजों (पुरुषों) का क्रमात् नाम एक विशिष्ट क्रम से लिखा होता है।

वंश-शर्करा—स्त्री० [सं० ष० त०] बंसलोचन।

वंश-शलाका—स्त्री० [सं० ष० त०] बीन, सितार, आदि बाजों का डंडा।

वंशस्थ—पुं० [सं० वंश√स्था (ठहरना)+क] बारह वर्णों का एक वर्णवृत्त जिसका व्यवहार संस्कृत काव्यों में अधिक मिलता है। इसमें जगण, तगण, जगण, और रगण आते हैं। इसे 'वंशस्थविल' भी कहते हैं।

वंश-हीन—वि० [सं० तृ० त०] १. जिसके वंश में कोई न हो। निर्वंश। २. जिसके पुत्र न हो।

वंशागत—वि० [सं० वंश-आगत, पं० त०] १. वंश-परम्परा से प्राप्त। २. उत्तराधिकार में प्राप्त।

वंशानुक्रम—पुं० [सं० वंश-अनुक्रम, ष० त०] [वि० वंशानुक्रमिक] किसी वंश में बराबर चलता रहनेवाला क्रम या परम्परा।

वंशानुक्रमण—पुं० [सं० वंश-अनुक्रमण, ष० त०] वंश-परंपरा।

वंशानुक्रमिक—वि० [सं० वंशानुक्रम+ठन्—इक] वंश में परम्परा के रूप में चलनेवाला। आनुवंशिक। (हेरीडेटरी)

वंशावली—स्त्री० [सं० वंश-आवली, ष० त०] किसी वंश में उत्पन्न पुरुषों की पूर्वोत्तर क्रम-सूची। (जीनिएलॉजी)

वंशिक—पुं० [सं० वंश+ठन्—इक] १. अगर की लकड़ी। २. काला गन्ना।

वंशिका—स्त्री० [सं० वंशिक+टाप्] १. अगर की लकड़ी। २. बंसी। मुरली। ३. पिप्पली।

वंशी—स्त्री० [सं० वंश+अच्—ङीष्] १. मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा जो बाँस में सुर निकालने के लिए छेद करके बनाया जाता है। बाँसुरी। मुरली। २. वंशलोचन। बंसलोचन। ३. चार कर्ष या आठ तोले की एक पुरानी तौल।

वि० [सं० वंशिन्] किसी विशिष्ट वंश में उत्पन्न होने या उससे संबंध रखनेवाला। जैसे—चंद्रवंशी, सूर्यवंशी।

वंशीधर—पुं० [सं० ष० त०] श्रीकृष्ण।

वंशीय—वि० [सं० वंश+छ—ईय] किसी वंश या कुल से संबंध रखने या उसमें होनेवाला।

वंशी-वट—पुं० [सं० मध्य० स०] वृन्दावन वन में स्थित बरगद का एक पेड़ जिसके नीचे श्रीकृष्ण वंशी बजाते थे।

वंशोद्भव—वि० [सं० वंश-उद्भव, ब०स०] किसी विशिष्ट वंश या कुल में उत्पन्न।

वंशोद्भवा—स्त्री० [सं० वंशोद्भव+टाप्] बंसलोचन।

वंश्य—वि० [सं० वंश+यत्] १. वंश-संबंधी। वंश का। २. किसी वंश या कुल में उत्पन्न। वंशज।

पुं० १. छत की छाजन में की बँड़ेर। २. पीठ की रीढ़।

व—पुं० [सं०√ वा (गमनादि)+क] १. वायु। २. वाण। ३. वरुण। ४. बाहु। ५. मंत्रणा। ६. कल्याण। ७. सांत्वना। ८. बस्ती। ९. समुद्र। १०. शार्दूल। ११. वस्त्र। १२. कोईं का कंद। सेरकी। १३. जल में पैदा होनेवाले कंद। शालूक। १४. वंदन। १५. अस्त्र। १६. खड्गधारी पुरुष। १७. मूर्वा-लता। १८. वृक्ष। १९. कलश से उत्पन्न ध्वनि। २०. मद्य। २१. प्रचेता।

अव्य० [फा०] और। जैसे—अमीर व गरीब।

†सर्व० वह' का संक्षिप्त रूप।

वक—पुं०[सं०√वंक् (टेढ़ा होना)+अच्, पृषो० नलोप] १. बगला नाम का पक्षी। २. अगस्त का पेड़ या फूल। ३. एक प्रकार का यज्ञ। ४. कुबेर। ५. एक प्राचीन जाति। ६. एक राक्षस जिसे भीम ने मारा था। ८. एक असुर या दैत्य जिसे श्रीकृष्ण जी ने मारा था।

वक़अत—स्त्री०[अ०] १. शक्ति। बल। ताकत। २. महत्त्व। ५. मान-मर्यादा।

वककच्छ—पुं०[सं० मध्य० स०] एक प्राचीन जनपद जो नर्मदा नदी के किनारे था।

वकजित्—पुं०[सं० वक√ जि (जीतना)+क्विप्, तुक्] १. श्रीकृष्ण। २. भीमसेन।

वक-पंचक—पुं०[सं० ष० त०] कार्तिक शुक्ल एकादशी से कार्तिक पूर्णिमा तक की पाँचों तिथियाँ।

वक-यंत्र—पुं०[सं० मध्य० स०]अरक, आसव आदि खींचने का एक तरह का भवका।

वकर—पुं०=वकर (नदी का घुमाव या मोड़)।

वक-वृत्ति—स्त्री०[सं० ष० त०] धोखा देकर काम निकालने की घात में उसी प्रकार लगे रहने की वृत्ति जिस प्रकार बगला शान्त भाव से खड़ा रहकर मछली पकड़ने की घात में रहता है।

वक-व्रत—पुं०[सं० ष० त०] [वि० वकव्रती] १. बगले की तरह चुपचाप और सीधे बनकर किसी का अनिष्ट करने की ताक में रहना। २. [ब० स०] उक्त प्रकार से घात में लगा रहनेवाला व्यक्ति।

वक़ार—पुं०[अ०]१. प्रतिष्ठा। मान-मर्यादा। २. बड़प्पन। महत्त्व।

वकालत—स्त्री० [हिं० वकील] १. वकील होने की अवस्था या भाव। २. वकील का काम या पेशा। ३. अन्य व्यक्ति द्वारा किसी के पक्ष का किया जानेवाला मंडन। (व्यंग्य)

वकील—पुं० [अ० वाकिल] १. वह व्यक्ति जो किसी की ओर से उसका कोई काम करने का भार अपने ऊपर ले। प्रतिनिधि। २. किसी का संदेश कहीं पहुँचानेवाला व्यक्ति। संदेशवाहक। दूत। ३. राजदूत। एलची। ४. वह जो किसी की ओर से उसके पक्ष का युक्तिपूर्वक मंडन या समर्थन करता हो। ५. आज-कल विधिक क्षेत्र में, एक विशिष्ट परीक्षा पारित और विधिक दृष्टि से अधिकार-प्राप्त वह व्यक्ति जो न्यायालय में किसी पक्ष की ओर से खंडन, मंडन आदि का काम करने के लिए नियुक्त होता है।

वकुल—पुं०[सं०√वंक् (टेढ़ा)+कुलच्]१. अगस्त का पेड़ या फूल।

वकुला—स्त्री०[सं० वकुल+टाप्] कुटकी नामक ओषधि।

वकुली—स्त्री०[सं० वकुल+ङीष्]१. काकोली नाम की ओषधि। २. मौलसिरी का फूल।

वकुश—पुं०[सं०] जैनियों में वह महापुरुष जिसे भक्तों की चिंता रहती है।

वकूअ—पुं०[अ० वकूआ] प्रकटीकरण।

क्रि० प्र०—में आना।—होना।

वकूफ—पुं० [अ० वक़ूफ़]१. जानकारी। ज्ञान। २. बुद्धि। समझ। ३. काम करने का अच्छा ढंग। शऊर। सलीका।

मुहा०—वक़ूफ पकड़ना=अक्ल सीखना।

वकूफदार—वि०[अ०+फा०] [भाव० वकूफदारी]१. समझदार। २. अनुभवी।

वक्त—पुं०[अ० वक़्त] १. समय। काल।

क्रि० प्र०—काटना।—गँवाना।—बिताना।

मुहा०—किसी पर वक्त पड़ना=कष्ट या विपत्ति के दिन आना।

२. किसी काम या बात के लिए उपयुक्त समय। अवसर। मौका। जैसे—आप भी ठीक वक्त पर आये। ३. वह निश्चित समय जो किसी विशिष्ट काम के लिए नियत हो। जैसे—उन्हें मैंने यही वक्त दिया था, शायद चले गये हों। ४. पंचांग, घड़ी आदि के अनुसार विवक्षित, पल घड़ी, दिन आदि। जैसे—खाने का वक्त, सोने का वक्त, स्कूल का वक्त आदि। ५. उतना समय जितना किसी कार्य के सम्पादन में लगा हो। जैसे—इस काम में २ घंटे का वक्त लगेगा। ६. अवकाश। फुरसत। जैसे—अगर वक्त मिले तो आप भी आ जायँ। ७. मृत्यु का समय। जैसे—जब जिसका वक्त आ जायगा तब उसे जाना ही पड़ेगा।

वक्तव्य—वि० [सं०√वच् (बोलना)+तव्य] [भाव० वक्तव्यता] १. जो कहा जाने को हो। २. जो कहे जाने के योग्य हो। ३. जिसके संबंध में कुछ कहा जा सकता हो।

पुं०१. वक्ता का कथन। २. वह कथित या प्रकाशित विवरण जिसमें किसी ने लोगों की जानकारी के लिए वस्तु-स्थिति स्पष्ट की हो अथवा अपना विचार या मंशा प्रकट की हो। (स्टेटमेन्ट)

वक्तव्यता—स्त्री०[सं० वक्तव्य+तल्—टाप्]किसी बात के संबंध में वक्तव्य या उत्तर देने का भार।

वक्ता (क्तृ)—वि०[सं०√वच्+तृच्] १. कहने या बोलनेवाला। २. जो अच्छी तरह कोई बात कह या बोलकर बतला सकता हो। अच्छा बोलनेवाला।

पुं० वह जो जन-समाज के सामने कोई बात अच्छी तरह और समझाकर कहता हो। जैसे—कथा कहनेवाला, भाषण या व्याख्यान देनेवाला।

वक्तृक—पुं०[सं० वक्त्र+कन]=वक्ता।

वक्तृता—स्त्री०[सं० वक्तृ+तल्—टाप्]१. वक्ता होने की अवस्था, गुण या भाव। २. भाषण। व्याख्यान।

वक्तृत्व—पुं० [सं० वक्तृ+त्व] १. वक्तृता। वाग्मिता। २. अच्छे वक्ता होने की अवस्था, गुण या भाव। वाग्मिता। ३. वक्तृता। ४. कथन। वक्तव्य।

वक्तृत्व-कला—स्त्री०[सं० ष० त०]१. वक्तृता अर्थात् प्रभावशाली ढंग से भाषण देने की कला या विद्या। (इलोक्यूशन)

वक्तृत्व-शास्त्र—पुं०[सं० ष० त०]वह शास्त्र जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि दूसरों पर प्रभाव डालने के लिए किस प्रकार की बातें कहनी या वक्तृता होनी चाहिए। (रिहटोरिक)

वक्त्र—पुं०[सं०√वच् (बोलना)+त्र] १. मुँह। मुख। २. जानवरों का थूथन। ३. पक्षियों की चोंच। चंचु। ४. तीर, भाले आदि की नोक। ५. अगला भाग। ६. कार्य का आरम्भ। ७. एक तरह का पुराना पहनावा। ८. एक प्रकार का छंद।

वक्त्रज—पुं०[सं० वक्त्र√जन्(उत्पत्ति)+ड] ब्राह्मण।

वक्त्र-ताल—पुं०[सं० ष० त०] संगीत में वह ताल जो मुँह से कुछ कह या बजाकर दिया जाय। (किसी पर आघात करके दिये जानेवाले ताल से भिन्न)

वक्त्र-तुंड—पुं०[सं० ब० स०] गणेश।

वक्त्र-भेदी (दिन्)—वि० [सं० वक्त्र√भिद् (भेदन करना)+णिनि, दीर्घ नलोप] बहुत कड़ुआ, चटपटा या तीक्ष्ण (खाद्य पदार्थ)।

वक्त्र-शोधी (धिन्)—वि०[सं० वक्त्र-√शुध् (शुद्ध करना)+णिच् +णिनि] मुँह साफ करनेवाला (पदार्थ)।

पुं० जँबीरी नींबू।

वक्त्रासव—पुं०[सं० वक्त्र-आसव, ष० त०] लाला। थूक।

वक्फ—पुं०[अ० वक़्फ़]१. किसी देवता की पूजा आदि धार्मिक कार्यों अथवा लोकोपकारी संस्था को कोई चीज (धन या संपत्ति) अर्पित करने का कार्य। २. उक्त रूप में अर्पित किया हुआ धन या संपत्ति। ३. दान।

वक्फनामा—पुं०[अ० वक़्फ़+फा० नामः] १. वह पत्र जिसके अनुसार किसी के नाम कोई चीज वक्फ की जाय। दानपत्र। २. वह लेख जो वक़्फ की हुई संपत्ति या धन का प्रमाण हो।

वक्फा—पुं०[अ० वक़्फ़ा] १. दो घटनाओं के बीच में पड़नेवाला थोड़ा समय। अवकाश। २. काम से मिलनेवाली छुट्टी या फुरसत।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

वक्र—वि०[सं० √वंक् (टेढ़ा होना)+रन् पृषो० नलोप] [भाव० वक्रता] १. जो आड़े या वेड़े बल में हो। टेढ़ा या तिरछा। 'ऋजु' का विपर्याय। २. झुका हुआ। नत। ३. कुटिल और धूर्त। ४. त्रिपुर नामक असुर। ५. दे० 'वक्र-गति'।

पुं०१. नदी का मोड़। बंकर। २. मंगल ग्रह। ३. शनैश्चर ग्रह। ४. रुद्र।

वक्र-गति—वि०[सं० ब० स०]१. टेढ़ी-मेढ़ी चालवाला। २. कुटिल। ३. उलटी गतिवाला (ग्रह)।

पुं०१. ग्रह लाघव के अनुसार वे ग्रह जो सूर्य से पाँचवें, छठे, सातवें और आठवें हों। इस प्रकार मंगल ३६ दिन, बुध २१ दिन, बृहस्पति १०० दिन, शुक्र १२ दिन और शनि १८४ दिन वक्री होता है। २. मंगल ग्रह।

वक्रगल—पुं०[सं० ब० स०] फूँककर बजाया जानेवाला पुरानी चाल का एक बाजा।

वक्रगामी (मिन्)—वि० [सं० वक्र√गम् (जाना)+णिनि] १. जिसकी गति वक्र हो। टेढ़ी चालवाला। २. कुटिल और धूर्त।

वक्र-ग्रीव—पुं०[सं० ब० स०] ऊँट।

वक्र-चंचु—पुं०[सं० ब० स०] तोता।

वक्रता—स्त्री०[सं० वक्र+तल्—टाप्] १. वक्र होने की अवस्था, गुण या भाव। टेढ़ापन। २. साहित्य में किसी रचना, वस्तु या विषय के निर्वचन और उसकी वर्णन-शैली में रहनेवाला वह अनोखा बाँकापन या उच्च कोटि का सौन्दर्य जो परम उत्कृष्ट प्रतिभा का परिचायक होता है। जैसे—वस्तु-वक्रता, वाक्य-वक्रता।

वक्र-ताल—पुं०[सं० ब० स०] वक्रनाल (बाजा)।

वक्र-तुंड—पुं०[सं० ब० स०] १. गणेश। २. तोता।

वक्र-दंष्ट्र—पुं०[सं० ब० स०] सूअर।

वक्र-दृष्टि—स्त्री०[सं० ब०स०] १. टेढ़ी दृष्टि। २. क्रोध आदि से युक्त दृष्टि। ३. मन्द दृष्टि।

वि० १. (व्यक्ति) जिसकी दृष्टि पड़ने से कुछ अमंगल होता या हो सकता हो। २. क्रोधपूर्ण दृष्टि।

वक्र-धर—पुं०[सं० ष० त०] द्वितीया का वक्र चन्द्रमा धारण करनेवाले शिव।

वक्र-नक्र—पुं० [सं० उपमति स०] १. चुगलखोर। २. तोता।

वक्र-नाल—पुं०[सं० ब० स०] एक प्रकार का पुराना बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता था।

वक्र-नासिक—वि० [सं० ब० स०] टेढ़ी नाकवाला।

पुं०=उल्लू।

वक्र-पुच्छ—पुं०[सं० ब० स०] कुत्ता।

वक्र-पुष्प—पुं०[सं० ब० स०]१. अगस्त का पेड़। २. पलास।

वक्रांग—वि०[सं० वक्र-अंग, ब० स०] जिसका कोई अंग टेढ़ा हो।

पुं०१. हंस नाम का पक्षी। २. सर्प। साँप।

वक्रित—भू० कृ०[सं० वक्र+इतच्] टेढ़ा किया हुआ।

वँकिम—वि०[सं० वंच् (गमनादि)+किमच्] १. टेढ़ा। २. कुटिल।

वक्रिमा (मन्)—स्त्री०[सं० वक्र+इमनिच्]=वक्रता।

वक्री (क्रिन्)—वि०[सं० वक्र+इनि, दीर्घ नलोप] जो अपना सीधा मार्ग छोड़कर इधर-उधर हट गया हो या पीछे की ओर मुड़ने लगा हो। जैसे—अब मंगल ग्रह वक्री होगा।

वक्रोक्ति—स्त्री०[सं० वक्र-उक्ति, कर्म० स०]१. किसी प्रकार की वक्रता से युक्त कोई चमत्कारपूर्ण उक्ति। २. काकु अलंकार से युक्त उक्ति। ३. साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें एक अभिप्राय से कही हुई बात का काकु या श्लेष के आधार पर कुछ और ही अभिप्राय निकलता या निकाला जाता है। यह अर्थ परिवर्तन शब्दों के आधार पर ही होता है, इसलिए कुछ आचार्य इसे शब्दालंकार मानते हैं।

वक्रोक्ति-गर्विता—स्त्री० [सं०]=गर्विता (नायिका)।

वक्रोष्ठिका—स्त्री० [सं० वक्र-ओष्ठ, ब० स० +कन्+टाप्, इत्व] मंद हँसी। मुसकान।

वक्षःस्थल—पुं० [सं० ष० त०] छाती।

वक्ष (स्)—पुं०[सं०√वक्ष् (बलिष्ठ होना)+असुन्] १. पेट और गले के बीच में पड़नेवाला वह भाग जिसमें स्त्रियों के स्तन और पुरुषों के स्तन के से चिह्न होते हैं। उरस्थल। २. बैल।

वक्षश्छद—पुं०[सं० वक्षस्√छद् (ढकना)+घ] कवच।

वक्षु—पुं०=वंक्षु (नद)।

वक्षोज—पुं०[सं० वक्षस्√ जन् (उत्पन्न करना)+ड]स्त्री का स्तन।

वक्षोरुह—पुं०[सं० वक्षस्√ रुह (उगना)+] स्त्री का स्तन।

वक्ष्यमाण—वि०[सं०√वच् (कहना)+लृट्—शानच्, मुक् आगम] १. जो कहा जा सके। वाच्य। वक्तव्य। २. जो कहा जा रहा हो।

वगला—स्त्री०[सं०] बगलामुखी।

वगलामुखी—स्त्री०[सं० ब० स०] दस महाविद्याओं में से एक।

वगाहना—स०=अवगाहना। उदा०—पूतना को पय पान करै मनु पूतनाते विसवास वगाहत।—देव।

वगैरह—अव्य०[अ० वग़ैरह] और इसी प्रकार शेष या संबंधित भी। आदि। इत्यादि।

वग्ग†—पुं०=वर्ग।

वचः (चस्)—पुं०[सं० √वच् (बोलना)+असुन्] वचन। बात।

वच—पुं० [सं० √वच्+अच्] १. तोता। २. सूर्य। ३. कारण। ४. वचन। बात।
स्त्री०=वाचा।

वचन—पुं०[सं० √वच्+ल्युट्—अन] १. मनुष्य के मुँह से निकला हुआ सार्थक शब्द। वाणी। वाक्य। २. किसी की कही हुई बात। उक्ति। कथन। ३. दृढ़तापूर्वक या प्रतिज्ञा के रूप में कही हुई बात। जैसे—वचन-बद्ध। ४. व्याकरण में वह तत्त्व जिसके द्वारा संज्ञा की संख्या का बोध होता है। (नम्बर)

वचनकारी (रिन्)—वि० [सं० वचन√कृ (करना)+णिनि] आज्ञाकारी।

वचन-गुप्ति—स्त्री० [सं० ष० त०] जैन धर्म के अनुसार वाणी का ऐसा संयम जिससे वह अनुचित या बुरी बातें कहने में प्रवृत न हो।

वचन-चतुर—पुं०[सं० स० त०] साहित्य में शृंगार रस का आलम्बन वह व्यक्ति जिसके वचनों में चतुराई भरी होती है।

वचन-बंध—पुं०[सं० तृ० त०] यह कहना कि हम अमुक काम या बात अवश्य और निश्चित रूप से करेंगे।

वचन-बद्ध—वि०[सं० तृ० त०] जिसने किसी को कोई विशिष्ट काम करने या न करने का वचन दिया हो।

वचन-लक्षिता—स्त्री० [सं० तृ० त०] साहित्य में वह नायिका जिसकी बात-चीत से उसका उपपत्ति से होनेवाला प्रेम लक्षित होता हो।

वचन-विदग्धा—स्त्री०[सं० स० त०] साहित्य में वह परकीया नायिका जो अपने वचन की चतुराई से नायक की प्रीति संपादित करती हो।

वचनीय—वि०[सं०√वच्+अनीयर्] १. कहे जाने के योग्य। २. जिसके संबंध में दोष या निंदा की कोई बात कही जा सकती हो। दूषित। बुरा।

वचर—पुं० [सं० अव√चर् (जाना)+ अच्, अकारलोप] १. कुक्कुट। मुरगा। २. शठ। दुष्ट।

वचसांपति—पुं०[सं० ष० त०, षष्ठी का अलुक्] बृहस्पति।

वचसा—अव्य०[सं० वचस् की तृतीया विभक्ति का रूप] कथन के रूप में। वचन से।

वचस्वी (स्विन्)—वि० [सं० वचस्+विनि, दीर्घ, नलोप] वाक्पटु।

वचा—स्त्री०[सं० √वच् +णिच्+अज्, नि० ह्रस्व] १. वच (ओषधि)। २. मैना। सारिका।

वचोहर—पुं० [सं० वचस्√ हृ (हरण करना)+अच्] संवादवाहक।

वच्छ—पुं०[सं० वक्षस् प्रा० वच्छ] उर। छाती।
पुं० बछड़ा।

वजन—पुं०[अ० वज़न] १. भार। बोझ। २. भार का परिणाम। तौल। ३. भारीपन। गुरुत्व। जैसे—सोने में वजन होता है। ४. मान-मर्यादा का सूचक महत्त्व। जैसे—उनकी बात कुछ वजन रखती है।
क्रि० प्र०—रखना।
५. वह विशेषता जिसके कारण चित्र का एक अंग दूसरे से न्यून या भिन्न हो जाय। (चित्र-कला)

वजनदार—वि०[अ० + फ़ा०] १. (पदार्थ) जिसमें वजन हो। गुरु। भारी। २. (कथन या बात) जिसमें विशेष तथ्य, प्रभाव, बल या महत्त्व हो।

वज़नी—वि०[अ० वज़नी] १. जिसका बहुत वजन या बोझ हो। भारी। २. जिसका विशेष प्रभाव या महत्त्व हो।

वजह—स्त्री०[अ०] १. कारण। हेतु। २. प्रकृति। तत्त्व।

वजा—स्त्री० [अ० वज़अ] १. संघटन। बनावट। रचना। २. बनावट का ढंग। ३. बनावट का अच्छा और सुन्दर ढंग या प्रकार। सज-धज। ४. अवस्था। दशा। हालत। ५. ढंग। प्रणाली। रीति।
वि० १. जो काट या निकालकर अलग कर दिया गया हो। घटाया। हुआ। २. (धन) बाद या मुजरा किया हुआ।

वजादार—वि० [अ० वज़ा+फा० दार] [भाव० वजादारी] १. जिसकी बनावट या गठन बहुत अच्छी और सुन्दर हो। तरहदार। २. सज-धजवाला। ३. अपनी रीति-नीति न छोड़नेवाला।

वजादारी—स्त्री० [अ०+फा०] १. वजादार होने की अवस्था या भाव। २. आचरण-व्यवहार, बनाव-सिंगार, रहन-सहन आदि का अच्छा और सुन्दर ढंग। ३. अच्छी वेष-भूषा। ४. मान, मर्यादा आदि का सुन्दरतापूर्वक होनेवाला निर्वाह।

वजारत—स्त्री० [अ० वज़ारत] वजीर अर्थात् मंत्री का काम, पद या कार्यालय।

वजीफा—पुं० [अ० वज़ीफ़ा] १. भरण-पोषण आदि के लिए मिलनेवाली आर्थिक सहायता। वृत्ति। २. छात्रवृत्ति। ३. पेंशन। ४. नियम और श्रद्धापूर्वक किया जानेवाला जप या पाठ। (मुसलमान)
क्रि० प्र०—पढ़ना।

वजीफादार—वि० [अ० वज़ीफ़ा+फा० दार] जिसे वजीफा मिलता हो।

वजीर—पुं० [अ० वज़ीर] १. वह जो बादशाह या प्रधान शासक का सलाहकार हो। अमात्य। मन्त्री। २. राजदूत। ३. शतरंज का एक मोहरा जो बादशाह से छोटा तथा बाकी सब मोहरों से बड़ा होता है।

वजीरिस्तान—पुं० [फा०] वजीरी कबीलों का प्रदेश जो पाकिस्तान की पश्चिमी सीमा पर है।

वजीरी—स्त्री०[अ०] वजीर का काम, पद या भाव। वजारत।
पुं० पशुओं की एक जाति।

वजू—पुं० [अ० वुज़ू] नमाज पढ़ने से पहले शारीरिक शुद्धि के लिए हाथ-पाँव धोना। (मुसलमान)

वजूद—पुं०[अ०] १. सत्ता। अस्तित्व।
क्रि० प्र०—में आना।
२. देह। शरीर। ३. सृष्टि।

वजूहात—स्त्री० [अ०] वजह का बहु० रूप।

वज्द—पुं०[अ०] वह स्थिति जिसमें मनुष्य काव्य, संगीत आदि की उच्च कोटि की रसानुभूति के कारण आनन्द से विभोर होकर अपने आपको भूल जाता है। आनन्दातिरेक के कारण होनेवाली आत्मविस्मृति।

वज्र—वि०[सं० √वज् (गति)+रन्] १. बहुत अधिक कठोर। बहुत कड़ा या सख्त। २. बहुत अधिक उग्र या तीव्र। जैसे—वज्राग्नि।

२. जिस पर सहसी और किसी प्रकार का प्रभाव न पड़ सकता हो। बहुत बढ़ा-चढ़ा। जैसे—वज्र मूर्ख, वज्र बधिर।

पुं० १. पुराणानुसार भाले के फल के समान एक शस्त्र जो इन्द्र का प्रधान शस्त्र कहा गया है, और जो दधीचि ऋषि की हड्डियों से बनाया गया था। कुलिश। २. आकाश से गिरनेवाली बिजली।

क्रि० प्र०—गिरना।—पड़ना।

मुहा०—वज्र पड़े =ईश्वर के प्रकोप से सर्वनाश हो। (स्त्रियों का शाप)

३. बौद्ध साधकों और सिद्धों की परिभाषा में, शून्य अर्थात् परम तत्व की संज्ञा जो उसकी अभेद्यता, दृढ़ता आदि गुणों के आधार पर उसे दी गई थी। ४. उक्त के आधार पर बौद्धों में चक्राकार चिह्न की संज्ञा। ५. फलित ज्योतिष में २२ व्यतीतपात् योगों में से एक व्यतीतपात योग। ६. वास्तु-कला में, ऐसा खंभा जिसके बीच का भाग अठकोना हो। ७. पुराणानुसार विष्णु के चरण का एक चिह्न। ८. श्रीकृष्ण के पोते और अनिरुद्ध के पुत्र का नाम। ९. हीरा। १०. फौलाद नाम का लोहा। ११. बरछा। भाला। १२. अबरक। १३. कोकिलाक्ष वृक्ष। १४. सफेद कुश। १५. काँजी। १६. धात्री। धौ। १७. थूहड़। सेंहुड़। १८. अकलबीर नाम का पौधा। १९. वज्रपुष्प।

वज्र-कंटक—पुं०[सं० ब० स०]१. थूहड़-सेंहुड़। २. कोकिलाक्ष वृक्ष।

वज्र-कंद—पुं० [सं० ब० स०] १. जंगली सूरन। २. शकरकंद। ३. ताड़ के पेड़ का फूल।

वज्रक—पुं०[सं० वज्र+कन्]१. हीरा। २. वज्रक्षार। ३. सूर्य का एक उपग्रह। ४. वैद्यक में चर्मरोग के लिए विशेष प्रकार से तैयार किया जानेवाला तेल।

वज्र-कांति—स्त्री०[सं० ब० स०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

वज्र-कालिका—स्त्री०[सं० मध्य० स०] बुद्ध की माता माया देवी का एक नाम।

वज्र-कीट—पुं० [सं० मध्य० स०] एक प्रकार का कीड़ा जो पत्थर को काटकर उसमें छेद कर देता है। बनरोहू।

वज्र-कूट—पुं०[सं० ष० त०] हिमालय की एक चोटी।

वज्र-केतु—पुं०[सं० ब० स०] मार्कंडेय पुराण के अनुसार एक राक्षस जो नरक का राजा था।

वज्र-क्षार—पुं०[सं० मध्य० स०] वैद्यक में एक रसौषध जिसका व्यवहार गुल्म, शूल, अजीर्ण, शोथ तथा मंदाग्नि आदि उदर रोगों में होता है।

वज्र-गोप—पुं०[सं०] वीर बहूटी नाम का कीड़ा। इंद्रगोप।

वज्र-ज्वाला—स्त्री०[सं०] कुंभकर्ण की पत्नी का नाम।

वज्र-डाकिनी—स्त्री०[सं०] महायान शाखा के तांत्रिक बौद्धों की उपास्य डाकिनियों का एक वर्ग, जिसके अन्तर्गत ये आठ डाकिनियाँ कही गई हैं—लास्या, माला, गीता, नृत्या, पुष्पा, धूपा, दीपा और गंधा। इनकी पूजा तिब्बत में होती है।

वज्र-तुंड—पुं०[सं० ब० स०]१. गणेश। २. गरुड़। ३. गिद्ध। ४. मच्छड़। थूहड़। सेंहुँड़।

वज्र-दंत—पुं०[सं० ब० स०]१. चूहा। २. सूअर।

वज्र-दंती—स्त्री०[सं० वज्र+दंत] एक प्रकार का पेड़ या पौधा।

वज्र-दंष्ट्र—पुं० [सं० ब० स०] इंद्रगोप नाम का कीड़ा। वीरबहूटी।

वज्र-द्रुम—पुं० [सं० उपमित स०] थूहड़ का वृक्ष। सेंहुड़।

वज्र-धर—वि०[सं० ष० त०] वज्र धारण करनेवाला।

पुं० १. इंद्र। २. वज्रयान के अनुसार गौतम बुद्ध का एक रूप जिसमें वे अपनी प्रबल शक्ति से साधना में लगे रहते हैं। ३. वह बौद्ध सिद्ध जो वज्र धारण करनेवाला अर्थात् कमल-कुलिश साधना में पारंगत होता था। ४. उल्लू।

वज्र-धारक—वि०[सं० ष० त०] वज्र धारण करनेवाला।

पुं० ऊँची इमारतों पर लगाया जानेवाला एक विशेष प्रकार का यंत्र या धातु का टुकड़ा जो लोहे के तार से जमीन से जुड़ा होता है और जो आकाश से गिरनेवाली बिजली को जमीन के अन्दर ले जाता है और इस प्रकार बिजली के कुप्रभाव से इमारत को बचाता है। तड़ित-संवाहक। (लाइटनिंग एरेस्टर)

वज्र-नख—पुं०[सं० ब० स०] नृसिंह।

वज्र-पतन—पुं०[सं० ष० त०] वज्रपात।

वज्र-पाणि—पुं०[सं० ब० स०] १. इन्द्र। २. ब्राह्मण। ३. एक बोधिसत्व।

वज्र-पात—पुं० [सं० ष० त०] १. आकाश से बिजली गिरना। २. उक्त बिजली के गिरने से होनेवाला क्षय या नाश। ३. किसी प्रकार का भीषण अनिष्ट या नाश।

वज्र-बाहु—पुं०[सं० ब० स०]१. इन्द्र। २. रुद्र। ३. अग्नि।

वज्र-भृत्—पुं० [सं० वज्र√भृ (धारण)+क्विप्, तुक् आगम]इंद्र।

वज्र-भैरव—पुं० [सं० उपमित स० या मध्य० स०] बौद्धों की महायान शाखा के एक देवता जिन्हें भूटान में 'यमांतक शिव' कहते हैं। इनके अनेक मुख और हाथ कहे गये हैं।

वज्र-मणि—पुं०[सं० मयू० स०] हीरा।

वज्र-मुष्टि—पुं०[सं० ब० स०]१. इंद्र। २. जंगली सूरन। ३. बाण चलाने के समय की एक विशेष हस्तमुद्रा।

वज्र-यान—पुं०[सं० उपमित० स०] बौद्ध धर्म का वह रूप जिसमें देवता, मंत्र, गुह्य साधना, अभिचार आदि तांत्रिक प्रवृत्तियों की प्रधानता है।

विशेष—आरंभिक बौद्ध साधक शून्य को ही परम तत्त्व मानकर उसकी उपासना करते थे, और इसलिए उसे वज्र (देखें) कहते थे क्योंकि उसमें भी वज्र की-सी अभेद्यता और कठोरता थी। इसी आधार पर इस साधना मार्ग का यह नाम पड़ा था।

वज्र-यानी (निन्)—वि०[सं० वज्रयान-इनि]वज्रयान-सम्बन्धी। वज्रयान का।

पुं० बौद्धों के वज्रयान पन्थ का अनुयायी।

वज्र-रद—पुं०[सं० ब० स०] सूअर।

वज्र-राग—पुं० [सं० उपमित स०] वज्रयानी साधना में, करुणा के कारण उत्पन्न होनेवाला सांसारिक राग। (यही राग जब आगे बढ़कर महामुद्रा के प्रति अनुरक्त होता है, तब महाराग कहलाता है।)

वज्र-लेप—पुं०[सं० उपमित स०] लेप के काम आनेवाला ऐसा मसाला जिसका लेप करने से दीवार, मूर्ति आदि बहुत मजबूत हो जाती है।

वज्र-वारक—पुं॰[सं॰ ष॰ त॰]१. जैमिनि, सुमंत, वैशंपायन, पुलस्त्य और पुलह इन पाँचों ऋषियों का स्मरण जो वज्रपात के निवारण के लिए किया जाता है। २. दे॰ 'वज्रधारक'।

वज्र-वाराही—स्त्री॰[सं॰]१. बुद्ध की माता माया देवी का एक नाम। २. बौद्धों की एक देवी।

वज्र-व्यूह—पुं॰[सं॰ उपमित स॰] एक प्रकार की सैनिक व्यूह रचना जो दुधारी खड्ग के आकार की होती है।

वज्र-शल्य—पुं॰[सं॰ ब॰ स॰] साही (जंतु)।

वज्र-शाखा—स्त्री॰[सं॰ मध्य॰ स॰] जैन मत के अन्तर्गत एक सम्प्रदाय जिसका प्रवर्तन वज्रस्वामी ने किया था।

वज्र-शृंखला—स्त्री॰[सं॰ब॰स॰] सोलह महाविद्याओं में से एक। (जैन)

वज्र-संघात—पुं॰[सं॰ ष॰ त॰]१. भीमसेन। २. वास्तु-रचना में, पत्थर जोड़ने का एक मसाला जिसमें आठ भाग सीसा, दो भाग कांसा और एक भाग पीतल होता था।

वज्र-समाधि—स्त्री॰[सं॰ उपमित स॰] बौद्ध धर्म के अनुसार एक प्रकार की समाधि।

वज्र-सार—वि॰[सं॰ ष॰ त॰] अत्यन्त कठोर।

पुं॰ हीरा।

वज्र-हस्त—पुं॰[सं॰ ष॰ त॰] इंद्र।

वि॰ जिसके हाथ में वज्र या बहुत ही भीषण अस्त्र हो।

वज्र-हृदय—वि॰[सं॰ ब॰ स॰]१. (व्यक्ति) जिसका हृदय अत्यन्त कठोर हो। २. बेरहम।

वज्रांग—पुं॰[सं॰ वज्र-अंग, ब॰ स॰]१. हनुमान्। २. साँप।

वज्रांगी—स्त्री॰[सं॰ वज्रांग+ङीष्]१. कौड़िल्ला (पक्षी)। २. हड़जोड़ी नामक लता जिसकी पत्तियाँ बाँधने पर दरद दूर हो जाता है। (वैद्यक)

वज्रा—स्त्री॰[सं॰ √वज्र(गति)+रक्—टाप्]१. दुर्गा। २. स्नुही। थूहर। ३. गुडुच।

वज्राख्य—पुं॰[सं॰वज्र-आख्या, ब॰स॰] एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर।

वज्राघात—पुं॰[सं॰ वज्र-आघात, ष॰ त॰]१. आकाश से गिरनेवाली बिजली का आघात। २. बहुत ही कठोर और बड़ा आघात। ३. बिजली के तार आदि का स्पर्श होने पर लगनेवाला आघात।

वज्राचार्य—पुं॰[सं॰ वज्र-आचार्य, ष॰ त॰] नैपाली बौद्धों के अनुसार तान्त्रिक बौद्ध आचार्य जिसे तिब्बत में लामा कहते हैं। यह गृहस्थ होता है और अपनी स्त्री आदि के साथ विहार में रह सकता है।

वज्राभ—पुं॰[सं॰ वज्र-आभा, ब॰ स॰] एक कीमती पत्थर।

वज्राभ्र—पुं॰[सं॰] काला अभ्रक।

वज्रायुध—पुं॰[सं॰ वज्र-आयुध, ब॰ स॰] इंद्र।

वज्रासन—पुं॰ [सं॰ वज्र-आसन, मध्य॰ स॰] १. हठयोग के चौरासी आसनों में से एक जिसमें गुदा और लिंग के मध्य के स्थान को बाएँ पैर की एड़ी से दबाकर उसके ऊपर दाहिना पैर रखकर पलथी लगाकर बैठते हैं। २. गया में बोधिद्रुम के नीचेवाली वह शिला जिसपर बैठकर बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्त किया था।

वज्रजित्—पुं॰[सं॰ वज्रिन् √जि (जीतना)+क्विप्, तुक् आगम] गरुड़।

वज्री (ज्रिन)—पुं॰ [सं॰ वज्र+इनि] १. इंद्र। २. उल्लू। ३. बौद्ध संन्यासी।

वज्रेश्वरी—स्त्री॰[सं॰ वज्र-ईश्वरी, ष॰ त॰]१. एक देवी। (बौद्ध) २. एक प्रकार का तान्त्रिक अनुष्ठान जिसे वज्रवाहनिका भी कहते हैं। इसमें वज्र बनाकर मन्त्रों द्वारा अभिषेक, पूजन और हवन करते हैं। कहते हैं कि इससे शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है।

वज्रोली—स्त्री॰[सं॰] उँगलियों की एक विशिष्ट मुद्रा। (हठयोग)

वट—पुं॰[सं॰ √वट् (लपेटना)+अच्]१. बरगद का पेड़। २. कौड़ी। ३. गोली। ४. वटिका। ५. छोटा गेंद। ६. शून्य। ७. एक प्रकार की रोटी। ८. रस्सी। ९. एकरूपता। १०. एक पक्षी।

वटक—पुं॰ [सं॰ वट+कन्] १. बड़ी टिकिया या गोला। बट्टा। २. पकौड़ी आदि पक्वान। आठ मासे की एक पुरानी तौल।

वट-गमनी—स्त्री॰ [हिं॰ वाट=मार्ग+गमन चलना] एक प्रकार का मैथिली लोक गीत जो उत्सवों, मेलों आदि में तथा वर्षा-ऋतु में स्त्रियाँ गाती हैं। इसके प्रत्येक चरण के अंत में 'सजनी' शब्द आता है, इसी लिए इसे 'सजनी' भी कहते हैं।

वट-पत्रा—स्त्री॰[सं॰ ब॰ स॰] एक तरह की चमेली।

वट-पत्री—स्त्री॰[सं॰ ब॰स॰] पथरफोड़ नामक वनस्पति।

वटर—पुं॰[सं॰ वट+अरन्] १. चोर। २. बटेर पक्षी। ३. बिस्तर। बिछौना। ४. उष्णीष। पगड़ी। ५. मथानी।

वट-सावित्री व्रत—पुं॰[सं॰ मध्य॰ स॰] सौभाग्यवती स्त्रियों का एक त्यौहार जो जेठ वदी अमावस को होता है। इसमें सौभाग्य स्थिर रखने की कामना से वट और सावित्री का पूजन किया जाता है।

वटिक—पुं॰[सं॰√वट्+इन्+कन्] शतरंज का मोहरा।

वटिका—स्त्री॰ [सं॰√वटिक+टाप्] गोली, टिकिया या बटी।

वटु—पुं॰[सं॰√वट+उ] १. बालक। २. ब्रह्मचारी।

वटुक—पुं॰[सं॰वटु+कन्]१. बालक। २. ब्रह्मचारी का एक विशिष्ट रूप।

वटोदका—स्त्री॰[सं॰ वट-उदक, ब॰स॰+टाप्] एक पवित्र नदी। (भागवत)

वठर—पुं॰[सं॰√वठ् (दृढ़ होना) अरन्]१. अंबष्ट नामक जाति। २. शब्द गढ़ने या बनानेवाला पंडित। ३. चिकित्सक।

वि॰१. मूर्ख। २. शरारती। शठ। ३. धीमा। मन्द।

वड़वा—स्त्री॰[सं॰ बडवा=बल √ वा (गति)+क+टाप्, लस्य डः] १. घोड़ी। २. दासी। ३. वेश्या। ४. अश्विनी नक्षत्र। ५. ब्राह्मण जाति की स्त्री।

वडिश—पुं॰[सं॰ वडिश=बलिन्√शो (नष्ट करना)+क, लस्य डः]१. बंसी, जिससे मछली फँसाई जाती है। कटिया। २. वैद्यक में एक प्रकार का नश्तर।

वण†—पुं॰=वन (जंगल)।

वणिक्(ज्)—पुं॰[सं॰√पण् (व्यवहार करना)+इजि, पस्य वः]१. वाणिज्य या व्यवसाय से जीविका उपार्जित करनेवाला। २. वैश्य।

वणिकवाद—पुं॰ दे॰ 'वाणिज्यवाद'।

वणिक्-सार्थ—पुं॰[सं॰ ष॰ त॰] व्यापारियों का जत्था जो व्यापार के उद्देश्य से कहीं जा रहा हो।

वणिज्य—पुं॰[सं॰ वणिज्+यत्] वाणिज्य।

वत्—अव्य॰[सं॰ व्याकरण का एक प्रत्यय] एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत

में लगकर निम्नलिखित अर्थ देता है। (क) तुल्य, समान। जैसे—चंद्रवत्। (ख) के अनुसार, जैसे—विधिवत्।

वतंस—पुं०[सं० अव√ तंस् (अलंकृत करना) घञ्, अव के अकार का लोप]=अवतंस।

वत—अव्य०[सं०√वन् (सम्यक् भक्ति करना]+क्त, नलोप] १. खेद। २. अनुकम्पा। ३. संतोष। ४. विस्मय आदि का बोधक शब्द।

वतन—पुं०[अ०]१. जन्मभूमि। मूल वासस्थान। ३. स्वदेश।

वतनी—वि०[अ०]१. वतन संबंधी। २. एक ही वतन में होनेवाला। ३. स्वदेशी।

पुं० किसी की दृष्टि से उसी के देश का दूसरा निवासी।

वतीतना†—अ०[सं० व्यतीत+हिं० ना (प्रत्य०)] बीतना। गुजरना। उदा०—अवधि वतीती अजूँ न आये।—मीराँ।

स० बिताना। गुजारना।

वतीरा—पुं०[अ० वतीरः]१. ढंग। रीति। प्रथा। २. चाल-ढाल। ३. टेव। लत।

वतोका—स्त्री०[सं० अव-तोक, ब० स०, अव के अकार का लोप, टाप्] जिसका गर्भ नष्ट हो गया हो।

स्त्री० बाँझ स्त्री।

वत्स—पुं०[सं० √ वद् (बोलना)+स] १. गाय का बच्चा। बछड़ा। २. छोटा बच्चा। शिशु। ३. कंस का एक अनुचर। ४. इन्द्र जौ। ५. छाती। उर। ६. एक प्राचीन देश।

वत्सक—पुं०[सं० वत्स+कन्][स्त्री० अल्पा० वत्सिका]१. पुष्प कसीस। २. इन्द्र जौ। ३. कुटज। निर्गुंडी।

वत्सतर—पुं०[सं० वत्स+तरप्] [स्त्री० वत्सतरी] ऐसा जवान बछड़ा जो जोता न गया हो। दोहान।

वत्सतरी—स्त्री० [सं० वत्सतर+ङीष्] ऐसी बछिया जो तीन वर्ष या उससे कम की हो।

वत्सनाभ—पुं० [सं० वत्स√नभ् (हिंसा)+अण्] एक प्रकार का जहरीला पौधा। बछनाग।

वत्सर—पुं० [सं०√वस् (निवास करना)+सरन्, सस्य तः] बारह महीनों का समय। वर्ष। साल।

वत्सल—वि०[सं० वत्स+लच्] बच्चों, विशेषतः अपने बच्चे से अनुराग रखनेवाला। बच्चों से स्नेह करनेवाला।

पुं० वात्सल्य रस।

वत्सासुर—पुं० [सं० वत्स-असुर, मध्य० स०] एक असुर जिसका वध श्रीकृष्ण ने किया था।

वत्सिमा (मन्)—स्त्री०[सं० वत्स+इमनिच्] बचपन। बाल्यावस्था।

वत्सी (त्सिन्)—वि०[सं० वत्स+इनि] जिसके बहुत से बच्चे हों।

पुं० विष्णु।

वत्सीय—वि०[सं० वत्स+छ—ईय] वत्स-संबंधी।

पुं० अहीर। ग्वाला।

वथ्य†—स्त्री०=वस्तु (चीज)।

वदंती—स्त्री०[सं०√वद् (कहना)+झि—अन्त+ङीष्] कही हुई बात। कथन।

वद—वि०[सं० पूर्वपद के साथ आने पर] बोलनेवाला। (समासांत) जैसे—प्रियंवद।

वदतोव्याघात—पुं० [सं० अलुक्] तर्क में कथन-संबंधी एक दोष, जो वहाँ माना जाता है जहाँ पहले कोई बात कह कर फिर ऐसी बात कही जाती है जो उस पहली बात के विरुद्ध होती है।

वदन—पुं०[सं०√ वद्(कहना)+ल्युट्—अन] १. कोई बात कहने की क्रिया या भाव। कहना। बोलना। २. मुँह। मुख। ३. किसी चीज के आगे या सामने का भाग।

वदर—पुं०=बदर (बेर)।

वदान्य—वि०[सं०]१. वाग्मी। २. बात से संतुष्ट करनेवाला।

वदाल—पुं० [सं० √वद्+क घञर्थे=वद√ अल् (पूर्ण होना)+अच्] १. पाठीन मत्स्य। पहिना मछली। २. आवर्त। भँवर।

वदि—अव्य०[सं० √वद्+इन्] चांद्र मास के कृष्ण पक्ष में। बदी में।

पुं० कृष्ण पक्ष।

वदितव्य—वि०[सं०√ वद् (कहना)+तव्य] कहे जाने के योग्य। जो कहा जा सके।

वदी—पुं० दे० 'वदि' (कृष्ण पक्ष)।

वदीतना†—अ०, स०=वतीतना।

वदुसना—स०[सं० विदूषण]१. दोष मढ़ना। २. आरोप करना। ३. भला-बुरा कहना। खरी-खोटी सुनाना।

वद्य—वि०[सं०√वद्+यत्]१. कहने योग्य। २. अनिंद्य।

पुं०१. कथन। बात। २. कृष्णपक्ष। बदी।

वध—पुं०[सं० √ हन् (हिंसा)+अप्, वधादेश]१. अस्त्र-शस्त्र से की जानेवाली हत्या। २. पशुओं की हत्या करना। ३. जान-बूझकर तथा किसी उद्देश्य से की जानेवाली किसी की हत्या।

वधक—पुं०[सं०√ हन्+क्वुन्—अक, वधादेश]१. घातक। हिंसक। २. व्याध। ३. मृत्यु। ४. दे० 'बधक'।

वि० वध करनेवाला।

वधजीवी (विन्)—पुं०[सं० वध√जीव् (जीना)+ णिनि] वह जो औरों का वध करके जीविका निर्वाह करता हो।

वधत्र—पुं०[सं० हन्+अत्रन्, वधादेश] वध करने का उपकरण। अस्त्र-शस्त्र।

वधना—अ०[सं० वर्द्धन] बढ़ना। उन्नति करना।

स०[सं० वध] अस्त्र आदि की सहायता से किसी को जान से मार डालना।

वध-भूमि—स्त्री०[सं० ष० त०] वह स्थान जहाँ मनुष्यों, पशुओं आदि का वध किया जाता हो।

वधामण*—पुं०=बधावा।

वधालय—पुं०[सं० वध-आलय, ष० त०] वह स्थान जहाँ पर मांस प्राप्त करने के उद्देश्य से पशुओं का वध किया जाता है। बूचड़खाना। (स्लाटर हाउस)

वधिका†—वि०=बधिक।

वधित्र—पुं०[सं० √ हन्+इत्र, वधादेश]१. कामदेव। २. कामासक्ति।

वधिर—वि०[सं० बधिर] बहरा।

वधु—स्त्री०=वधू।

वधुका—स्त्री०[सं० वधू+कन्+टाप्, ह्रस्व] वधू।

वधू—स्त्री०[सं०√वह् (पहुँचाना)+ऊ, ह्रस्व धः] १. ऐसी कन्या जिसका विवाह हो रहा हो अथवा हाल में हुआ हो। दुलहन। २. पत्नी।

वधूटी—स्त्री०[सं० वधू+टि+ङीष्] १. पुत्रवधू। २. नवयुवती।

वधूत—पुं०=अवधूत (संन्यासी)।

वध्य—वि०[सं० वध्+यत्] जिसका वध होने को हो अथवा किया जाना उचित या शास्त्र-सम्मत हो।

पुं० वह जिसका वध किया जाना चाहिए।

वन—पुं०[सं० √वन् (सेवा)+घ] १. ऐसा स्थान जहाँ बहुत दूर तक हर जगह पेड़ ही पेड़ हों। जंगल। बन। २. बगीचा। वाटिका। ३. फूलों का गुच्छा। ४. जल। पानी। ५. घर। मकान। ६. किरण। रश्मि। ७. चमसा नामक यज्ञपात्र। ८. दशनामी संन्यासियों का एक वर्ग।

वन-कुंडल—पुं०[सं० ष० त०] अच्छी जाति का सूरन या जिमीकंद।

वन-कटाई—स्त्री० [सं०+हिं०] किसी क्षेत्र को जंगल से रहित कर देना। (डिफ़ारेस्टेशन)

वन-काम—वि०[सं० वन√कम् (चाहना)+णिङ+अण्] जंगल में रहनेवाला।

वनग—पुं०[वन√गम् (जाना)+ड] बनवासी।

वि० वन की ओर जानेवाला।

वन-गमन—पुं०[सं० स० त०] १. वन की ओर जाना। २. संन्यास ग्रहण करना।

वन-गोचर—वि०[ब० स०] १. प्रायः वन में जानेवाला। २. जल में रहनेवाला।

पुं० १. व्याध। २. वनवासी। ३. जंगल।

वन-चंदन—पुं०[सं० मध्य० स०] १. अगरु। अगर। २. देवदार।

वन-चंद्रिका—स्त्री०[सं० स० त०] मल्लिका।

वनचर—पुं० [सं० वन√चर् (चलना)+ट] १. वन में भ्रमण करनेवाला या रहनेवाला। २. जंगली जीव या प्राणी। ३. शरभ नामक जंतु।

वनज—वि०[सं० वन√जन् (उत्पन्न करना)+ड] जो वन (जंगल या पानी) में उत्पन्न हो।

पुं० १. कमल। २. मोथा। ३. तुंबुरु का फल। ४. बनकुलथी। ५. जंगली विजौरा नींबू।

वनजा—स्त्री०[सं० वनज+टाप्] १. मुद्गपर्णी। २. निर्गुंडी। ३. सफेद कँटियारी। ४. वन-तुलसी। ५. असगंध। ६. वन-कपास।

वनजीवी (विन्)—पुं०[सं० वन√जीव् (जीना)+णिनि] १. लकड़हारा। २. बहेलिया।

वन-ज्योत्स्ना—स्त्री० [सं० ष० त०] एक प्रकार की चमेली।

वनद—पुं०[सं० वन√दा (देना)+क] मेघ। बादल।

वन-देव—पुं० [ष० त०] वन का अधिष्ठाता देवता।

वन-देवी—स्त्री०[ष० त०] वन की अधिष्ठात्री देवी।

वन-नाश—पुं०[ष० त०] वनाच्छादित प्रदेशों के वृक्ष काटकर उसे साफ करना।

वन-नाशन—पुं०[ष० त०] दे० 'वनकटाई'।

वन-पाल—पुं० [सं० वन √पाल् (रक्षा करना)+णिच्+अच्] वह अधिकारी जो वनों की रक्षा और वृद्धि के लिए नियुक्त रहता है। राजिक। (फ़ॉरेस्ट रेंजर)

वन-पिप्पली—स्त्री०[सं० मध्य० स०] छोटी पीपल।

वन-प्रिय—पुं०[ब० स०] १. कोकिल। २. साँभर हिरन। ३. कपूर कचरी। ४. बहेड़े का पेड़।

वन-मल्लिका—स्त्री० [ष० त०] सेवती का पौधा या फूल।

वन-महोत्सव—पुं० [ष० त०] स्वतन्त्र भारत में वर्षा ऋतु में वनों का विस्तार करने के उद्देश्य से होनेवाला कार्यक्रम जिसमें वृक्ष लगाये जाते हैं।

वन-माला—स्त्री०[मध्य० स०] १. जंगली फूलों की माला। २. विशेषतः कुंद, कमल, मदार और तुलसी की बनी हुई तथा पैरों तक लटकनेवाली लंबी माला।

वनमाली (लिन्)—वि०[सं० वनमाला+इनि] वनमाला धारण करनेवाला।

पुं० श्रीकृष्ण का एक नाम।

वन-रक्षक—पुं०[ष० त०] वन की देख-भाल करनेवाला अधिकारी।

वनराज—पुं० [ष० त०, समासान्त टच् प्रत्यय] १. सिंह। २. अश्मंतक नामक वृक्ष।

वन-राजि, वन-राजी—स्त्री० [ष० त०] १. वन की श्रेणी। वनसमूह। वृक्षसमूह। २. जंगल में की पगडंडी।

वन-रोपण—पुं०[सं० ष० त०] खुले मैदान में, अर्थात् जहाँ पहले से पेड़-पौधे न हों, वहाँ नये सिरे से पेड़-पौधे लगाकर वन या उपवन तैयार करने की क्रिया। वनाच्छादन। (एफ़ारेस्टेशन)

वन-लक्ष्मी—स्त्री०[सं० ष० त०] १. वन की शोभा। २. केला।

वनवास—पुं०[सं० स० त०] वन का निवास। जंगल में रहना।

मुहा०—(किसी को) वनवास देना=बस्ती छोड़कर जंगल में जाकर रहने की आज्ञा देना।

वनवासक—पुं० [सं० ष० त०] १. शाल्मली कंद। २. एक प्राचीन नगर।

वनवासी (सिन्)—वि०[सं० वन√वस् (बसना)+णिनि] [स्त्री० वनवासिनी] १. वन में रहनेवाला। २. बस्ती छोड़कर जंगल में जाकर वास करनेवाला।

पुं० १. ऋषभ नामक ओषधि। २. वराही कंद। ३. नील महिष नामक कंद। ४. डोम कौआ। ५. दक्षिण भारत का एक प्राचीन नगर जहाँ कादम्ब राजाओं की राजधानी थी।

वन-वृत्ति—स्त्री०[सं०] १. जंगल में जाकर जीविका उपार्जित करना। २. वन्य फल खाकर अथवा वन्य वस्तुएँ बेचकर जीविका चलाना।

वन-शूकर—पुं०[सं० ष० त०] जंगली सूअर जो बहुत ही बलवान, भीषण तथा हिंसक होता है।

वन-संस्कृति—स्त्री०[सं०] आदि काल की वह संस्कृति जिसका विकास उस समय हुआ था जब लोग वनों में ही रहते थे, फल-मूल खाकर अथवा पशुओं का शिकार करके और खालें, छालें आदि ओढ़-पहनकर रहते थे। (फ़ॉरेस्ट कल्चर)

वनस्थ—वि० [सं० वन√स्था (ठहरना)+क] १. वन में रहनेवाला। २. वह जिसने वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण कर लिया हो। ३. जंगली जानवर।

वनस्थली—स्त्री० [सं० ष० त०] वनों से घिरा हुआ प्रदेश।

वनस्था—स्त्री० [सं० वनस्थ+टाप्] अश्वत्थ। पीपल।

वनस्पति—स्त्री० [सं० वन-पति, ष० त०, सुट् आगम] जमीन से उगनेवाले पेड़, पौधे, लताएँ आदि।

वनस्पति घी—पुं० [सं०+हिं०] आज-कल घी की तरह का वह चिकना पदार्थ जो नारियल, मूँगफली आदि के तेल साफ करके बनाया जाता है और प्रायः तरकारियाँ, पकवान आदि बनाने के लिए घी के स्थान पर काम में लाया है।

वनस्पति विज्ञान—पुं० [सं० ष० त०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा जिसमें वनस्पतियों के उद्भव, रचना, आकार-प्रकार, विकार आदि का विवेचन होता है। (बोटैनी)

वनहास—पुं० [सं० ष० त०] १. काश। काँस। २. कुंद का पौधा और फूल।

वनाच्छादन—पुं० [सं० वन-आच्छादन, ष० त०] वनरोपण।

वनांत—पुं० [सं० वन-अंत, ष० त०] जंगली भूमि या मैदान।

वनाग्नि—स्त्री० [सं० वन-अग्नि, ष० त०] वन में लगनेवाली आग। दावानल।

वनायु—पुं० [सं०√वन्+आयुच्] १. अच्छे घोड़ों के लिए प्रसिद्ध एक प्राचीन देश। २. उक्त देश का निवासी। ३. पुरुरवा का एक पुत्र।

वनायुज—पुं० [सं० वनायु√ जन् (उत्पन्न करना)+ड] वनायु देश का घोड़ा।

वनाश—वि० [सं० वन√अश् (खाना)+अण्] १. जल पीनेवाला। २. केवल जल पीकर रहनेवाला।

पुं० एक तरह का छोटा जौ।

वनि—पुं० [सं०√ वन्+इ] १. अग्नि। २. ढेर। ३. याचना। ४. इच्छा।

वनिका—स्त्री० [सं०√वनी+कन्+टाप्, ह्रस्व] छोटा वन। उपवन।

वनित—भू० कृ० [सं० वन् (माँगना)+क्त] १. याचित। २. अभिलषित। ३. पूजित।

वनिता—स्त्री० [सं० वनित+टाप्] १. अनुरक्त स्त्री। प्रिया। प्रियतमा। २. औरत। स्त्री। ३. छः वर्णों की एक वृत्ति जिसे 'तिलका' और 'डिल्ला' भी कहते हैं। इसमें दो सगण होते हैं।

वनिता-सुख—पुं० [सं० ब० स०] मार्कण्डेय पुराण के अनुसार मनुष्यों की एक जाति।

वनी—स्त्री० [सं० वन+ङीष्] छोटा वन। वनस्थली।

वनीकृत—भू० कृ० [सं० वन+च्वि, ईत्व√कृ+क्त] (स्थान) जिसमें बहुत से पेड़ लगाये गए हों। जो जंगल के रूप में लाया गया हो।

वने किंशुक—पुं० [सं० स० त०] ऐसी चीज जो वैसे ही बिना माँगे मिले, जैसे वन में किंशुक बिना माँगे या बिना प्रयास किए मिलता है।

वनेचर—वि० [सं० वने√चर् (गति)+ट, अलुक् स०]=वनचर।

पुं० १. जंगली आदमी। २. संन्यासी। ३. वन्य पशु।

वनेज्य—पुं० [सं० वन-इज्य, स० त०] १. आम। २. पर्पट। पापड़ा।

वनोत्सर्ग—पुं० [सं० वन-उत्सर्ग, ष० त०] १. देवमंदिर, वापी, कूप, उपवन आदि का शास्त्रविधि से किया जानेवाला उत्सर्ग। मंदिर, कूआँ आदि बनवाकर सर्वसाधारण के लिए दान करना। २. उक्त प्रकार के उत्सर्ग की शास्त्रीय विधि।

वनौकस्—वि० [सं० वन-ओकस्, ब० स०] जिसका घर वन में हो। वनवासी।

पुं० १. तपस्वी। २. जंगली जानवर।

वनौषधि—स्त्री० [सं० वन-ओषधि, मध्य० स०] जंगल में पैदा होनेवाली जड़ी-बूटी।

वन्नरवाल—स्त्री० [सं० वंदन+माला] वंदनवार। उदा०—वन्नरवाल बंधाणि वल्ली।—प्रिथिराज।

वन्य—वि० [सं० वन+यत्] १. वन में उत्पन्न होनेवाला। वनोद्भव। २. जंगल में रहनेवाला। जंगली। जैसे—वन्य जातियाँ। ३. जो सभ्य या शिष्ट न हो, बल्कि जिसकी प्रवृत्तियाँ बर्बर हों।

पुं० १. जंगली सूरन। २. क्षीरविदारी। ३. वाराही कन्द। ४. राख।

वन्या—स्त्री० [सं० वन+य, टाप्] १. मुद्गपर्णी। २. गोपाल ककड़ी। ३. गुंजा। घुंघची। ४. असगंध।

वपन—पुं० [सं०√ वप् (बोना, काटना)+ल्युट्—अन] [वि० वपनीय, भू० कृ० वपित] १. बीज बोना। २. सिर मूंड़ना। ३. नाई की दूकान। ४. कपड़ा बुनना। ४. करघा। ६. शुक्र।

वपनी—स्त्री० [सं० वपन+ङीप्] १. वह स्थान जहाँ नाई क्षौर-कार्य करते हैं। २. हजामत बनाने या बनवाने का स्थान ३. जुलाहों के कपड़ा बुनने का स्थान।

वपनीय—वि० [सं० √वप्+अनीयर्] [भू० कृ०-वपित] १. जो वपने के योग्य हो। २. बोये जाने के योग्य।

वपा—स्त्री० [सं० √वप्+अङ्+टाप्] १. चरबी। मेद। २. वल्मीक। बाँबी।

वपु (स्)—पुं० [सं० √वप्+उस्] १. शरीर। देह। २. रूप।

वपुष्मान—वि० [सं० वपुष्मान्] १. सुन्दर और पुष्ट देहवाला। २. सुन्दर। ३. मूर्त। साकार।

वपुष्टमा—स्त्री० [सं० वपुष्+तमप्+टाप्] १. पद्मचारिणी लता। २. पुराणानुसार काशीराज की एक कन्या जो परीक्षित के पुत्र जनमेजय को ब्याही थी।

वपोदर—वि० [सं० वपा—उदर, ब० स०] बड़ी तोंदवाला।

वप्ता (प्तृ)—पुं० [सं०√वप् +तृच्] १. पिता। जनक। २. नाई। नापित। ३. बीज बोनेवाला। ४. रवि।

वप्र—पुं० [सं०√वप्+रन्] १. मिट्टी का वह ऊँचा धुस्सा जो गढ़ या नगर की खाईं से निकली हुई मिट्टी के ढेर से चारों ओर उठाया जाता है और जिसके ऊपर प्राकार या दीवार होती है। २. वह ढालुई वास्तु-रचना जो मकान की कुरसी की रक्षा के लिए छोटी दीवार के रूप में बनाई जाती है। ३. नदी का किनारा। ४. खेत। ५. धूल। रेणु। ६. पहाड़ की चोटी या पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि। ७. टीला। भीटा। ८. प्रजापति। ९. द्वापर युग के एक व्यास।

वप्रक—पुं० [सं० वप्र+कन्] १. वृत्त की परिधि। गोलाई का घेरा। २. चक्कर।

वप्र क्रिया—स्त्री० [सं० ष० त०] वप्र-क्रीड़ा।

वप्र-क्रीड़ा—स्त्री० [सं० ष० त०] पशुओं का अपने दाँतों, नाखुनों, सींगों आदि से जमीन या टीले की मिट्टी कुरेदना।

वप्रा—स्त्री०[सं० वप्र+टाप्] १. जैनों के इक्कीसवें जिन नेमिनाथ की माता का नाम। २. मंजीठ।

वप्रि—पुं०[सं० वप्+क्रिन्] १. क्षेत्र। २. समुद्र। ३. स्थान की दुर्गमता।

वफ़ा—स्त्री०[अ०] १. कही हुई बात या दिये हुए वचन को पालना। निर्वाह। २. मेल-जोल, संग-साथ, सद्व्यवहार आदि का किया जानेवाला निर्वाह। ३. निष्ठा।

वफ़ात—स्त्री०[अ०] मृत्यु। मौत।

क्रि० प्र०—पाना।

वफ़ादार—वि०[अ०+फा०] कर्तव्य, वचन, सम्बन्ध आदि का सज्जनता और सत्यतापूर्वक पालन करनेवाला। निष्ठ।

वबा—स्त्री०[अ०] १. महामारी। मरी। २ छतवाला या संक्रामक रोग।

वबाल—पुं० [अ०] १. बोझ। भार। २. बहुत बड़ी विपत्ति या संकट। ३. झगड़े-बखेड़े की बात। झंझट। ४. दैवी प्रकोप। ५. पाप का फल।

मुहा०—(किसी का) वबाल पड़ना=दुखिया की आह पड़ना।

वभ्रु—पुं०[सं०√वभ्र्(गति)+उ] १. एक प्रकार का सर्प। (सुश्रुत) २. दे० 'बभ्रु'।

वमन—पुं०[सं०√ वम् (उलटी करना)+ल्युट्—अन्] १. कै करना। उलटी करना। छर्दन। ३. कै किया हुआ पदार्थ। ३. पीड़ा। कष्ट। ४. आहुति।

वमि—स्त्री०[सं०√ वम्+इन्] १. एक रोग जिसमें मनुष्य का जी मिचलाता है और जो कुछ खाया-पीया होता है, वह मुँह के रास्ते निकलकर बाहर आ जाता है। २. अग्नि।

वमित—भू०कृ०[सं०√ वम्+क्त] वमन किया हुआ।

वमी (मिन्)—वि०[सं० वम्+इनि] वमि रोग से ग्रस्त।

स्त्री० [वमि+ङीष्]=वमि।

वम्य—वि०[सं० वम्+यत्] (ओषधि) जिससे वमन कराया जा सके।

वम्री—स्त्री०[सं०√ वम्+र+ङीष्] दीमक।

वम्री-कूट—पुं०[सं० ष० त०] वल्मीक। बाँबी।

वयं—सर्व०[सं० अस्मद् शब्द का प्रथमा बहु०] हम।

वयःक्रम—पुं०[सं० ष० त०] अवस्था। उम्र।

वयः प्रमाण—पुं०[सं० ष० त०] जीवन-काल।

वयः सन्धि—स्त्री०[सं० ष० त०] वाल्यावस्था और यौवनावस्था के बीच की स्थिति। लड़कपन और जवानी के बीच का समय।

वय—स्त्री०[सं० वयस्] १. बीता हुआ जीवन-काल। अवस्था। उम्र। २. बल। शक्ति। ३. चिड़िया। पक्षी। ४. बया पक्षी। ५. जुलाहा।

†स्त्री०=वै (जुलाहों की)।

वयण—पुं०=वचन। (राज०)

पुं०=वचन।

वयस्—पुं०[सं०√अज् (गति)+असुन्, वी आदेश] १. आयु का बीता हुआ भाग। उम्र। वय। २. चिड़िया। पक्षी।

वयस्क—वि०[सं० समस्त पद के अन्त में] शारीरिक दृष्टि से जिसका विकास पूर्णता पर पहुँच चुका हो अथवा यथेष्ट हो चुका हो।

पुं० १. विवाह के योग्य युवक या युवती।

विशेष—आज-कल विधिक दृष्टि से युवक १८ वर्षों का और युवती १६ वर्षों की होने पर वयस्क मानी जाती है।

२. २० या २० से अधिक वर्ष की अवस्थावाला व्यक्ति जिसे विधितः निर्वाचन आदि में मत देने और अपनी सम्पति की व्यवस्था आदि करने का अधिकार प्राप्त होता है।

वयस्क-मताधिकार—पुं०[सं०] प्रत्येक वयस्क व्यक्ति को राजकीय चुनाव आदि में मत देने का विधि द्वारा प्राप्त अधिकार।

वयस्कृत्—वि०[सं० वयस्√कृ (करना)+क्विप्, तुक् आगम] जीवन अथवा आयु बढ़ानेवाला।

वयस्था—स्त्री० [सं० वयस्√स्था (ठहरना)+क+टाप् विसर्गलोप] १. युवती स्त्री। २. आमलकी। आँवला। ३. हर्रे। ४. गुरूच। ५. छोटी इलायची। ६. काकोली। ७. शाल्मली। सेमल।

वय-स्थान—पुं०[सं० ष० त०, विसर्गलोप] यौवन। जवानी।

वयस्य—वि०[सं० वयस्+यत्] जिनका वय या अवस्था समान हो। सम वय वाले। बराबर की उमर के।

पुं० मित्र।

वयस्यक—पुं० [सं०+वयस्य+कन्] [स्त्री० वयस्यिका] १. सम सामयिक व्यक्ति। २. सखा। मित्र।

वयस्या—स्त्री०[सं० वयस्य+टाप्] १. सखी। २. ईंट।

वयोगत— वि० [सं० वय्-गत, च० त०]=वयस्क।

वयोवृद्ध—वि० [सं० वयस्-वृद्ध, तृ० त०] वह जो वय के विचार से बहुत बड़ा हो। अधिक उमरवाला। वृद्ध।

वरंच—अव्य०[सं० परंच] १. उपस्थित, उक्त, वर्णित आदि से भिन्न या विपरीत स्थिति में। ऐसा नहीं बल्कि ऐसा। २. परन्तु। लेकिन।

वरंड—पुं० [सं० √वृ (आच्छादान)+अण्डन्] १. वंसी की डोर। २. समूह। ३. मुहाँसा। ४. घास का गट्ठर। ४. फीलखाने की वह दीवार जो दो लड़ाके हाथियों को लड़ने से रोकने के लिए उनके बीच में खड़ी की जाती है।

वरंडक—पुं०[सं० वरंड+कन्] १. मिट्टी का भीटा। ढूह। २. हाथी का हौदा।

वरंडा—स्त्री०[सं० वरंड+टाप्] १. कटारी। कत्ती। २. वत्ती।

†पुं० दे० 'वरामदा'।

वर—वि०[सं० वृ (चुनना आदि)+अप् कर्मणि] १. (समस्त शब्दों के अन्त में) सबसे बढ़कर उत्तम। श्रेष्ठ। जैसे—पूज्यवर, मान्यवर। २. किसी की तुलना में अच्छा या बढ़कर। ३. चुने जाने या पसन्द किये जाने के योग्य।

पुं० १. बहुत-सी चीजों में से अच्छी या काम की चीज पसंद करके चुनना। चयन। वरण। २. कोई ऐसी अच्छी चीज या बात जो देवता से प्रसाद के रूप में माँगी जाय। ३. देवता की कृपा से उक्त प्रकार की इच्छा या याचना की होनेवाली पूर्ति।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—माँगना। मिलना।

४. वह जो किसी कन्या के विवाह के लिए उपयुक्त पात्र माना या समझा गया हो। ५. नव-विवाहिता स्त्री का पति। ६. कन्या के विवाह के समय दिया जानेवाला दहेज। ७. जामाता। दामाद।

८. बालक। लड़का। ९. दारचीनी। १०. अदरक। ११. सुगन्ध तृण। १२. सेंधा नमक। १३. मौलसिरी। १४. हल्दी। १५. गौरा पक्षी। प्रत्य०[फा०] एक प्रत्यय जो संज्ञाओं के अंत में लगकर 'वाला' या 'से युक्त' का अर्थ देता है। जैसे—किस्मतवर, नामवर।

वरक—पुं० [सं० वर√कन्] १. कपड़ा। वस्त्र। २. नाव के ऊपर की छाजन। ३. वन-मूँग। ४. जंगली बेर। झड़बेरी। ५. प्रियंगु। कँगनी। पुं० [अ०] १. पृष्ठ। पन्ना। २. धातु विशेषतः सोने या चाँदी का पतला पत्तर जो मिठाइयों, मुरब्बों आदि पर लगाकर खाया जाता है।

वरक-साज—पुं०[अ०+फा०] सोने-चाँदी के पत्तर अर्थात् वरक बनानेवाला।

वरक़ा—पुं०[अ० वरक़] पुस्तक आदि का पृष्ठ। पन्ना।

वरक़ी—वि०[अ०] जिसमें कई या बहुत से वरक हों। परतदार।

वर-क्रतु—पुं०[सं० ब० स०] इन्द्र।

वर-चंदन—पुं०[सं० कर्म० स०] १. काला चंदन। २. देवदार।

वरज—वि०[सं० वर√जन् (उत्पत्ति)+ड] उमर या कद में बड़ा। ज्येष्ठ।

वरज़िश—स्त्री०[फा०] १. कसरत। व्यायाम। २. ऐसा काम जिसमें शारीरिक श्रम अधिक करना पड़ता हो।

वरज़िशी—वि०[फा०] (शरीर) जो व्यायाम से हृष्ट-पुष्ट हुआ हो।

वरट—पुं०[सं०√वृ+अटन्] [स्त्री० वरटा] १. हंस। २. कुन्द का फूल।

वरटा—स्त्री०[सं० वरट+टाप्] १. मादा हंस। हंसी। २. बर्रें नाम का फतिंगा। ३. गँधिया कीड़ी।

वरण—पुं०[सं०√वृ+ल्युट्-अन] १. अपनी इच्छा या रुचि से किया जानेवाला चयन। चुनाव। जैसे—उन्होंने न जाने क्यों कंटकित पथ का वरण किया।—महादेवी वर्मा। २. प्राचीन भारत में यज्ञ आदि के लिए उपयुक्त ब्राह्मण चुनना और कार्य सौंपने से पहले उसका पूजन तथा सत्कार करना। ३. उक्त अवसर पर पुरोहित, ब्राह्मण आदि को दिया जानेवाला दान। ४. कन्या के विवाह के समय का चुनाव करके विवाह संबंध निश्चित करने की क्रिया या कृत्य। ५. अर्चन। पूजन। ६. सत्कार- ७. ढकने-लपेटने आदि की क्रिया। ८. घेरा। ९. पुल। सेतु। १०. वरुण वृक्ष। ११. ऊँट। १२. प्राकार।

वरण-माला—स्त्री०[सं० च० त०] जयमाल।

वरणा—स्त्री० [सं०] १. वरुणा नदी। २. सिन्धु नद में मिलनेवाली एक छोटी नदी।

वरणीय—वि०[सं०√वृ+अनीयर्] [भाव० वरणीयता, स्त्री० वरणीया] १. वरण किये जाने के योग्य (वर, पात्र आदि)। २. चुनने या संग्रह करने के योग्य। उत्तम। बढ़िया। ३. पूजनीय। पूज्य।

वर-तिक्त—पुं०[सं० ब० स०] १. कुटज। कोरैया। २. नीम। ३. रोहितक। रोहेड़ा। ४. पापड़ा।

वरत्रा—स्त्री० [सं०√वृ+अत्रन्+टाप्] १. बरेत। बरेता। २. चमड़े का तसमा। ३. हाथी को बाँधकर खींचने का रस्सा।

वर-त्वच—पुं०[सं० ब० स०] नीम का पेड़।

वरद—वि० [सं० वर√दा (देना)+क] [स्त्री० वरदा] १. वर देनेवाला। २. अभीष्ट सिद्ध करनेवाला।

वर-दक्षिणा—स्त्री०[सं० ष० त० या मध्य० स०] वह धन जो वर को विवाह के समय कन्या के पिता से मिलता है। दहेज। दायज।

वरद-मुद्रा—स्त्री०[सं० कर्म० स०] दूसरों को यह जतानेवाली शारीरिक मुद्रा कि हम तुम्हें मनचाहा वर देने या तुम्हारी सब कामनाएँ पूरी करने को प्रस्तुत हैं। (इसमें देने का भाव सूचित करने के लिए हथेली ऊपर या सामने रखकर कुछ नीचे झुकाई जाती है।)

वर-दल—पुं०[सं० ष० त०] वर के साथ विवाह के लिए जानेवाले लोगों का समूह। बरात।

वरदा—स्त्री० [सं० वरद+टाप्] १. कन्या। लड़की। २. असगंध। ३. अड़हुल।

वरदा चतुर्थी—स्त्री०[सं० व्यस्त पद अथवा मध्य० स०] माघ शुक्ल चतुर्थी। वरदा चौथ।

वर-दाता (तृ)—वि० [सं० ष० त०] [स्त्री० वरदात्री] वर देनेवाला। वरद।

वर-दान—पुं० [सं० ष० त०] १. देवता, महापुरुष आदि के द्वारा दिया हुआ वर जिससे अनेक प्रकार के सुख-सुभीते प्राप्त होते हैं और कष्टों, संकटों आदि का निवारण होता है। २. किसी की कृपा या प्रसन्नता से होनेवाली फल-सिद्धि। ३. वह वस्तु जो शुभ फलदायिनी हो। जैसे—उनका शाप मेरे लिए वरदान सिद्ध हुआ।

वरदानी (निन्)—वि० [सं० वरदान+इनि] १. वरदान करनेवाला। २. मनोरथ पूर्ण करनेवाला।

वरदी—स्त्री० [अ० वर्दी] किसी विशिष्ट कार्यकर्ता, वर्ग का पहनावा। जैसे—खेलाड़ियों, चपरासियों, फौजियों या सिपाहियों की वरदी।

वर-द्रुम—पुं०[सं० कर्म० स०] एक प्रकार का अगर जिसका वृक्ष बहुत बड़ा होता है।

वरन्—अव्य० [सं० परम्] १. ऐसा नहीं। २. इसके विपरीत। बल्कि।

वरना—सं० [स० वरण] १. वरण करना। चुनना। २. अविवाहिता स्त्री का किसी को अपने पति के रूप में चुनना। वरण करना।

पुं० ऊँट।

अव्य० [फा० वर्ना] यदि ऐसा न हुआ तो। नहीं तो।

वर-प्रद—वि० [सं० ष० त०] [स्त्री० वरप्रदा] वर देने वाला। वरद।

वर-प्रदान—पुं०[सं० ष० त०] मनोरथ पूर्ण करना। कोई फल या सिद्धि देना। वर देना। किसी पर प्रसन्न होकर उसका मनोरथ पूरा करने के लिये उसे वर देना। वर-दान।

वर-फल—पुं०[सं० ब० स०] नारिकेल। नारियल।

वरम†—पुं०=वर्म।

वर-मेल्हा—पुं०[पुर्त०] एक प्रकार का लाल चंदन।

वर-यात्रा—स्त्री०[सं० ष० त०] १. वर का विवाह के लिए वधू के यहाँ जाना। २. वर के साथ वर-पक्ष के लोगों का कन्या पक्ष के यहाँ विवाह के अवसर पर धूम-धाम से जाना।। बरात।

वरयिता (तृ)—वि० [सं०√वर् (चुनना)+णिच्+तृच्] वरण करनेवाला।

पुं० स्त्री का पति। स्वामी।

वररुचि—पुं०[सं०] एक प्रसिद्ध प्राचीन वैयाकरण और कवि।

वरला—स्त्री०[सं०√वृ (विभक्त करना)+अलच्+टाप्] हंसिनी।

वि० परला (उस पार का)।

वरवराह—पुं०[सं० कर्म० स०, व्यंग्य प्रयोग]=बर्बर।

वरवर्णिनी—स्त्री० [सं० वर-वर्ण, कर्म० स०+इनि, शुद्ध रूप वरवर्णी] १. लक्ष्मी। २. सरस्वती। ३. उत्तम स्त्री। ४. लाक्षा। लाख। ५. हलदी। ६. गोरोचन। ७. कंगनी नामक गहना।

वरही—पुं० [हिं० वर] सोने की एक लंबी पट्टी जो विवाह के समय वधू को पहनाई जाती है। टीका।

†पुं०=वर्ही (मोर)।

†स्त्री०=वरही।

वरांग—पुं०[सं० वर-अंग, कर्म० स०] १. शरीर का श्रेष्ठ अंग अर्थात् सिर। २. [ब० स०] विष्णु जिनके सभी अंग श्रेष्ठ हैं। ३. एक प्रकार का नक्षत्र वत्सर जो ३२४ दिनों का होता है। ४. [कर्म० स०] गुदा। ५. भग। योनि। ६. वृक्ष की शाखा। टहनी। ७. [ब० स०] दारचीनी। ८. हाथी।

† वि० सुंदर अंगोंवाला।

वरांगना—स्त्री०[सं० वरा-अंगना, कर्म०स०] सुडौल अंगोंवाली सुन्दरी। सुन्दर स्त्री।

स्त्री०=वारांगना।

वरांगी (गिन्)—वि० [सं० वरांग+इनि शुद्धरूप वरांग] [स्त्री० वरांगिनी] सुन्दर अंगों और शरीरवाला।

पुं० १. हाथी। २. अमलबेत।

स्त्री०[सं० वरांग+ङीष्] १. हल्दी। २. नागदंती। ३. मंजीठ।

वरा—स्त्री० [सं०√वृ (चुनना आदि)+अच्-टाप्] १. चित्रकला। २. हलदी। ३. रेणुका नामक गन्ध द्रव्य। ४. गुड़ूच। ५. मेदा। ६. ब्राह्मी बूटी। ७. बिड़ंग। ८. सोमराजी। ९. पाठा। १०. अड़हुल। जापा। ११. बैंगन। भंटा। १२. सफेद अपराजिता। १३. शतमूली। १४. मदिरा। शराब।

वराक—पुं० [सं० वृ (अलग करना)+षाकन्] १. शिव। २. युद्ध।

वि० १. शोचनीय। २. नीच। ३. अभाग्य। दीन-हीन। बेचारा।

वराट—पुं० [सं० वर√अट्(जाना)+अण्] १. कौड़ी। २. रस्सी। ३. कमलगट्टे का बीज।

वराटक—पुं० [सं० वराट+कन्] १. कौड़ी। २. रस्सी। ३. पद्मबीज।

वराटिका—स्त्री०[सं० वराट+कन्, टाप्, इत्व] १. कौड़ी। २. तुच्छ वस्तु। ३. नागकेसर।

वरानन—वि० [सं० वर-आनन, ब० स०] [स्त्री वरानना] सुन्दर मुखवाला।

पुं० सुन्दर मुख।

वरान्न—पुं०[सं० वर-अन्न, कर्म० स०] दला हुआ उत्तम अन्न।

वरायन—पुं० [सं० वर+आयन] १. विवाह से पहले होनेवाली एक रीति। २. वह गीत जो विवाह के समय वर-पक्ष की स्त्रियाँ गाती हैं।

वरारोह—पुं० [सं० वर-आरोह, ब० स०] १. विष्णु। २. एक पक्षी।

वि० श्रेष्ठ सवारीवाला।

वरार्ह—वि०[सं० वर√अर्ह् (योग्य होना)+अच्] १. जिसके संबंध में वर मिल सके। २. जो वर पाने के लिए उपयुक्त हो। ३. बहुमूल्य।

वराल (क)—पुं० [सं० वर√अल् (भूषण)+अण्; वराल +कन्=वरालक] लवंग। लौंग।

वरालिका—स्त्री०[सं० वरा-आलिका, ब० स०] दुर्गा।

वरासत—स्त्री०[अ० विरासत] १. वारिस होने की अवस्था या भाव। २. वारिस को उत्तराधिकार के रूप में मिलनेवाली सम्पत्ति।

वरासन—पुं०[सं० वर-आसन, कर्म० स०] १. श्रेष्ठ आसन। २. विशेषतः वह आसन जिस पर विवाह के समय वर बैठता है। ३. अड़हुल। ४. नपुंसक। ५. दरबान।

वराह—पुं०[सं० वर(=अभीष्ट)आ√हन् (खोदना)+ड] १. शूकर। सूअर। २. विष्णु के दस अवतारों में से एक जो शूकर के रूप में हुआ था। ३. एक प्राचीन पर्वत। ४. शिशुमार या सूस नामक जल-जन्तु ५. वाराही कन्द।

वराहक—पुं०[सं० वराह+कन्] १. हीरा। २. सूँस।

वराह-कर्णी—स्त्री०[स० ष० त० ङीष्] अश्वगंधा लता।

वराह-कल्प—पुं० [मध्य० स०] वह काल या कल्प जिसमें विष्णु ने वराह का अवतार लिया था। वाराहकल्प।

वराह-कांता—स्त्री० [सं० तृ० त०] १. वाराहकल्प। २. लजालू।

वराह-पत्री—स्त्री० [सं० ब० स०, ङीष्] अश्वगंधा।

वराह मिहिर—पुं०[सं०] ज्योतिष के एक प्रसिद्ध आचार्य जो बृहत्संहिता, पंचसिद्धांतिका और बृहज्जातक नामक ग्रन्थों के रचयिता थे।

वराह-मुक्ता—स्त्री० [सं० मध्य० स०] एक प्रकार का कल्पित मोती जिसके संबंध में यह माना जाता है कि यह वराह या सूअर के सिर में रहता है।

वराह-व्यूह—पुं०[सं० मध्य० स० या उपमि० स०] एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना, जिसमें अगला भाग पतला और बीच का भाग चौड़ा रखा जाता था।

वराह-शिला—स्त्री०[सं० मध्य० स०] एक विचित्र और पवित्र शिला जो हिमालय की एक चोटी पर है।

वराह-संहिता—स्त्री० [सं० मध्य० स०] वराहमिहिर रचित ज्योतिष का बृहत्संहिता नाम का ग्रन्थ।

वराहिका—स्त्री०[सं० वराह+कन्—टाप्, इत्व] कपिकच्छु। केवाँच। कौंच।

वराही—स्त्री०[सं० वराह+ङीष्] १. वराह की मादा। शूकरी। सूअरी। २. [वराह+अच्+ङीष्] वाराही कंद। ३. नागर मोथा। ४. असगंध। ५. गौरैया की तरह का काले रंग का एक पक्षी। ६. दे० 'वाराही'।

वरि—स्त्री०[सं० वर=पति] पत्नी। (राज०) उदा०—वर मंदा सइ वद वरि।—प्रिथिराज।

अव्य०[सं० उपरि] १. ऊपर। (राज०) उदा०—वले बाढ़ दे सिली वरि।—प्रिथिराज। २. भाँति। तरह। उदा०—वेस संधि सुहिणा सुवरि।—प्रिथिराज।

वरियाम—वि०[सं० वरीयस्] उत्तम। श्रेष्ठ। उदा०—पतो माल गद्ध पुरुषरा, वणिया भुज वरियाम।—बाँकीदास।

वरिशी—स्त्री० [सं० वडिश] मछली फँसानेवाली कँटिया। बंसी।

वरिष्ठ--वि०[सं० वर+इष्ठन्] १. श्रेष्ठ तथा पूज्य। २. सबसे बड़ा तथा बढ़कर। 'कनिष्ठ' का विपर्याय। (सुपीरियर)

पुं० [सं०] १. धर्म सार्वणि मन्वतर के सप्त ऋषियों में से एक। २. उरुतम्स ऋषि का एक नाम। ३. ताँबा। ४. मिर्च। ५. तीतर पक्षी।

वरिष्ठा--स्त्री० [सं० वरिष्ठ+टाप्] १. हलदी। २. अड़हुल। जवा।

वरी--स्त्री०[सं०√वृ (वरण करना)+अच्-ङीष्] १. शातावरी। सतावर। २. सूर्य की पत्नी।

†स्त्री० [सं० वर] विवाह हो चुकने पर वर पक्ष से कन्या को देने के लिए भजे जानेवाले कपड़े, गहने आदि। (पश्चिम)

वरीय--वि० [सं० वरीयस्] [भाव० वरीयता] १. सब से अच्छा या बढ़िया। २. बहुतों में अच्छा होने के कारण चुने या ग्रहण किया जाने के योग्य। अधिमान्य। (प्रिफ़रेबुल)

वि० [सं० वर+ईय (प्रत्य०)] वर-संबंधी। वर का।

वरीयता--स्त्री०[सं० वरीयस्ता] १. चयन, चुनाव आदि के समय किसी को औरों की अपेक्षा दिया जानेवाला महत्त्व। २. वह गुण जिसके फलस्वरूप किसी को चयन आदि के समय औरों से अधिक प्रमुखता मिलती है।

वरीयान् (यस्)--वि० [सं० वर+ईयसुन्] १. बड़ा। २. श्रेष्ठ। ३. पूरा जवान। पूर्ण युवा।

पुं० १. फलित ज्योतिष में, विष्कंभ आदि सत्ताइस योगों में से अठारहवाँ योग, जिसमें जन्म लेनेवाला मनुष्य दयालु, दाता सत्कर्म करनेवाला और मधुर स्वभाव का समझा जाता है। २. पुलह ऋषि का एक पुत्र।

वरु--अव्य०=बरु(बल्कि)।

वरुड--पुं०[सं०] एक प्राचीन म्लेच्छ जाति।

वरुण--पुं०[सं०√वृ+उनन्] १. एक वैदिक देवता जो जल का अधिपति, दस्युओं का नाशक और देवताओं का रक्षक कहा गया है। पुराणों में वरुण की गिनती दिक्पालों में की गई है और वह पश्चिम दिशा का अधिपति माना गया है। वरुण का अस्त्र पाश है। २. जल। पानी। ३. सूर्य। ४. हमारे यहाँ सौर जगत् का सबसे दूरस्थ ग्रह। (नेपचून) ५. बरुन का वृक्ष।

वरुणक--पुं० [सं० वरुण+कन्] वरुण या बरुन का वृक्ष।

वरुण-ग्रह--पुं०[सं० ब० स०] घोड़ों का घातक रोग जो अचानक हो जाता है। इस रोग में घोड़े का तालू, जीभ, आँखें और लिंगेन्द्रिय आदि अंग काले हो जाते हैं।

वरुण-दैवत--पुं०[सं० ब० स०] शतभिषा नक्षत्र।

वरुण-पाश--पुं०[सं० ष० त०] वरुण का अस्त्र, पाश या फंदा। २. नक्र या नाक नामक जल-जंतु। ३. ऐसा जाल या फंदा जिससे बचना बहुत कठिन हो।

वरुण-प्रस्थ--पुं० [सं०] कुरुक्षेत्र के पश्चिम का एक प्राचीन नगर।

वरुण-मंडल--पुं० [सं० ष० त०] नक्षत्रों का एक मंडल जिसमें रेवती, पूर्वाषाढ़ा, आर्द्रा, आश्लेषा, मूल उत्तरभाद्रपद और शतभिषा हैं।

वरुणात्मजा--स्त्री० [सं० वरुण-आत्मजा, ष० त०] वारुणी। मदिरा। शराब।

वरुणादिगण--पुं०[सं० वरुण-आदि ब० स०, वरुणादि-गण ष० त०] पेड़ों और पौधों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत बरुन, नील झिंटी, सहिजन, जयति, मेढ़ासिंगी, पूतिका, नाटकरंज, अग्निमंथ (अगेंयू), चीता, शतमूली, बेल, अजश्रृंगी, डाभ, बृहती और कंटकारी हैं। (सुश्रुत)

वरुणालय--पुं०[सं० वरुण-आलय, ष० त०] समुद्र।

वरूथ--पुं० [सं०√वृ (वरण करना)+ऊथन्] १. तनुत्राण। बकतर। २. ढाल। ३. लोहे का वह जाल जो युद्ध के समय रथ की रक्षा के लिए उस पर डाला जाता था। ४. फौज। सेना।

वरूथिनी--स्त्री०[सं० वरुथ+इनि-ङीप्] सेना।

वरूथी(थिन्)--पुं०[सं० वरुथ+इनि] हाथी की पीठ पर रखी जानेवाली काठी।

वरेंद्र--पुं० [सं० वर+इंद्र, कर्म० स०] १. राजा। २. इंद्र। ३. बंगाल का एक प्रदेश या विभाग।

वरे--अव्य० [?] १. परे। दूर। २. उस ओर। उधर। ३. उस पार।

वरेण्य--वि०[सं०√वृ०+एण्य] १. जो वरण किये जाने के योग्य हो। २. चाहा हुआ। इच्छित। ३. उत्तम। श्रेष्ठ। ४. प्रधान। मुख्य।

पुं० केसर।

वरेश्वर--पुं०[सं० वर-ईश्वर, कर्म० स०] शिव।

वर्क--पुं०=वरक(पृष्ठ)।

वर्कर--पुं०[सं० √वृक्(स्वीकार)+अर] १. जवान पशु। २. बकरा।

पुं०[अं०] १. काम करनेवाला व्यक्ति। २. विशेषतः किसी सभा, समिति आदि का कार्यकर्ता।

वर्कराट--पुं०[सं० वर्कर√अट् (जाना)+अच्] १. कटाक्ष। २. दोपहर के सूर्य की प्रभा। ३. स्त्री के कुच पर का नख-क्षत।

वर्किंग कमिटी--स्त्री०[अं०] किसी संस्था, सभा आदि की वह समिति जो उसकी व्यवस्था करती है।

वर्ग--पुं०[सं०√वृज्(त्याग देना आदि)+घञ्] १. एक ही प्रकार की अथवा बहुत कुछ मिलती-जुलती या सामान्य धर्मवाली वस्तुओं का समूह। श्रेणी। जैसे--ओषधि वर्ग, साहित्यिक वर्ग, विद्यार्थी वर्ग आदि। २. कुछ विशिष्ट कार्यों के लिए बना हुआ कुछ लोगों का समूह। ३. देवनागरी वर्णमाला में एक स्थान से उच्चरित होनेवाले स्पर्श व्यंजन वर्णों का समूह। जैसे--कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग आदि। ४. ग्रन्थ का अध्याय, परिच्छेद या प्रकरण। ५. कक्षा। जमात। ६. ज्यामिति में वह समकोण चतुर्भुज जिसकी लम्बाई-चौड़ाई बराबर हो। ७. गणित में समान अंकों का घात।

वर्गण--पुं०[सं० वर्ग+णिच्+युच्-अन,] गुणन। घात। (गणित)

वर्ग-पद--पुं०=वर्गमूल।

वर्ग-पहेली--स्त्री० [सं०+हिं०] पहेलियाँ बुझाने के लिए ऐसी वर्गाकार रेखाकृति जिसमें छोटे-छोटे घर बने होते हैं तथा जिनमें कुछ संकेतों के आधार पर वर्ण भरे जाते हैं। (क्रासवर्ड)

वर्ग-फल--पुं०[सं० ष० त०] गणित में दो समान राशियों के घात से प्राप्त होनेवाला गुणनफल।

वर्ग-मूल--पुं०[सं० ष० त०] वह राशि जिससे वर्गफल को भाग देकर वर्गांक निकाला जाता है।

वर्ग-युद्ध--पुं०[सं० ष० त०] दे० 'गृह-युद्ध'।

वर्गलाना—स० [फा० वर्गलानीदन] छल-फरेब से किसी को किसी ओर प्रवृत्त करना। बहकाना।

वर्ग-संघर्ष—पुं०[सं० ष० त०] किसी समाज के भिन्न-भिन्न वर्गों में होनेवाला ऐसा पारस्परिक संघर्ष जिसमें एक दूसरे को दबाने या नष्ट करने का प्रयत्न होता है। (क्लास स्ट्रगल)

वर्गित—भू० कृ०[सं० वर्ग+णिच्+क्त] अनेक वर्गों में बँटा या बाँटा हुआ। वर्गीकृत (क्लैसिफ़ायड)

वर्गी (र्गिन्)—वि० [सं० वर्ग+इनि, दीर्घ, नलोप] वर्ग-संबंधी। वर्ग का।

वर्गीकरण—पुं०[सं० वर्ग+च्वि, ईत्व√कृ (करना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० वर्गीकृत] गुण-धर्म, रंग-रूप, आकार-प्रकार आदि के आधार पर वस्तुओं आदि के भिन्न-भिन्न वर्ग बनाना। (क्लैसिफ़िकेशन)

वर्गीकृत—भू० कृ० [सं० वर्ग+च्वि, ईत्व√कृ+क्त] वर्गित। अनेक या विभिन्न वर्गों में बँटा या बाँटा हुआ। (क्लैसिफ़ायड)

वर्गीय—वि०[सं० वर्ग+छ-ईय] १. किसी विशिष्ट वर्ग से संबंध रखनेवाला या उसमें होनेवाला। वर्ग का। २. जो किसी विशिष्ट वर्ग के अंतर्गत हो। जैसे—क वर्गीय अक्षर। ३. एक ही वर्ग या कक्षा का। जैसे—वर्गीय मित्र।

पुं० सहपाठी।

वर्गोत्तम—पुं०[सं० वर्ग-उत्तम, स० त०] फलित ज्योतिष में राशियों के वे श्रेष्ठ अंश जिनमें स्थित ग्रह शुभ होते हैं।

वर्ग्य—वि०[सं० वर्ग+यत्] १. जिसके वर्ग बनाए जा सकें या बनाये जाने को हों। २. वर्गीय।

वर्चस्—पुं०[सं०√वर्च् (तेज)+असुन्] [वि० वर्चस्वान्, वर्चस्वी] १. रूप। २. तेज। प्रताप। ३. कांति। दीप्ति। ४. श्रेष्ठता। ५. अन्न। अनाज। ६. मल। विष्ठा।

वर्चस्क—पुं०[सं० वर्चस्+कन्] १. दीप्ति। तेज। २. विष्ठा।

वर्चस्य—वि०[सं० वर्चस्+यत्] तेजवर्द्धक।

वर्चस्वान् (स्वत्)—वि०[सं० वर्चस्+मतुप्] [स्त्री० वर्चस्वती] १. तेजवान्। २. दीप्तियुक्त।

वर्चस्वी (स्विन्)—वि०[सं० वर्चस्+विनि] [स्त्री० वर्चस्विनी] तेजस्वी। दीप्तियुक्त।

पुं० चंद्रमा।

वर्जक—वि०[सं०√वृज् (निषेध करना)+णिच्+ण्वुल्-अक] वर्जन करनेवाला।

वर्जन—पुं०[सं०√वृज्+णिच्+ल्युट्-अन] [वर्जनीय वर्ज्य] १. त्याग। छोड़ना। २. किसी प्रकार के आचरण, व्यवहार आदि के संबंध में होनेवाला निषेध। मनाही। ३. हिंसा ४. दे० 'अपवर्जन'।

वर्जना—स्त्री० [सं०√वृज+णिच्+युच्-अन, टाप्] १. वर्जन करने की क्रिया या भाव। मनाही। वर्जन। २. बहुत ही उग्र, कठोर या विकट रूप से अथवा बहुत भयभीत करते हुए कोई बात निषिद्ध ठहराने या वर्जित करने की क्रिया या भाव। (टैबू)

विशेष—अनेक असभ्य और आदिम जन-जातियों में इस प्रकार की अनेक परम्परा-गत वर्जनाएँ चली आती हैं कि अमुक काम आदि नहीं करने चाहिएँ, अमुक पदार्थ कभी नहीं छूने चाहिएँ अथवा अमुक प्रकार के साथ किसी प्रकार का सम्पर्क नहीं रखना चाहिए, नहीं तो बहुत घातक या भीषण परिणाम भोगना पड़ेगा। सभ्य जातियों में नैतिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में भी इसी प्रकार की अनेक वर्जनाएँ प्रचलित हैं। मनोवैज्ञानिकों का मत है कि जहाँ मन में बहुत सी स्वाभाविक, अदमनीय और प्रबल प्रवृत्तियाँ तथा वासनाएँ होती हैं, वहाँ प्राकृतिक रूप से उनके दमन या नियन्त्रण की भी प्रवृत्तियाँ होती हैं जो वर्जनाओं का रूप धारण कर लेती हैं।

स० वर्जन या निषेध करना। मना करना।

वर्जनीय—वि० [सं०√वृज्+णिच्+अनीयर्] १. जिसका वर्जन होना उचित हो। वर्जन किये जाने के योग्य। २. त्यागे जाने के योग्य। ३. खराब।

वर्जयिता (तृ)—वि० [सं०√वृज्+णिच्+तृच्] वर्जक।

वर्जित—भू० कृ० [सं०√वृज्+णिच्+क्त] १. जिसके संबंध में वर्जन या निषेध हुआ हो। मना किया हुआ। २. (पदार्थ) जिसका आयात-निर्यात या व्यापार राज्य के द्वारा विधिक रूप से बंद किया या रोका गया हो। (कान्ट्राबैंड) ३. त्यागा हुआ। परित्यक्त। ४. दे० 'निषिद्ध'।

वर्जिश—स्त्री०[फा०]=वरजिश (व्यायाम)।

वर्ज्य—वि०[सं०√वृज्+णिच्+यत्]=वर्जनीय।

वर्ज्य-सूची—स्त्री० [सं०] अर्थशास्त्र में, ऐसी वस्तुओं की सूची जिनके संबंध में किसी प्रकार का वर्जन या निषेध किया गया हो। (ब्लैक लिस्ट)

वर्ण—पुं०[सं०√वर्ण् (रँगना आदि) ण्यत्] +घञ्] १. पदार्थों के लाल, पीले, हरे आदि भेदों का वाचक शब्द। रंग। (देखें) २. वह पदार्थ जिसमें चीजें रँगी जाती हों। रंग। ३. शरीर के रंग के आधार पर किया जानेवाला जातियों, मनुष्यों आदि का विभाग। जैसे—मनुष्यों की कृष्णवर्ण, गौरवर्ण, पीतवर्ण आदि कई जातियाँ हैं। ४. भारतीय हिंदुओं में स्मृतियों में कही हुई दो प्रकार की सामाजिक व्यवस्थाओं में वह जिसके अनुसार गुण, कर्म और स्वभाव के विचार से सारा समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र नामक चार वर्गों में विभक्त है। दूसरी व्यवस्था 'आश्रम व्यवस्था' कहलाती है। ५. पदार्थों के निश्चित किए हुए भेद, वर्ण या विभाग। जैसे—स-वर्ण अक्षरों की योजना। ६. भाषाविज्ञान तथा व्याकरण में लघुतम ध्वनि इकाई। ६. उक्त का सूचक चिह्न। अक्षर। ७. संगीत में मृदंग का एक प्रकार का ताल जिसके ये चार भेद कहे गये हैं—पाट, विधिपाट, कूटपाट और खंड पाट ९. आकृति या रूप। १०. चित्र। तसवीर। ११. प्रकार। भेद। १२. गुण। १३. कीर्ति। यश। १४. बड़ाई। स्तुति। १५. सोना। स्वर्ण। १६. अंगराग। १७. केसर।

वर्णक—पुं०[सं० √वर्ण+णिच्+ण्वुल्—अक] १. वह तत्त्व या पदार्थ जिससे रँगाई के काम के लिए रंग बनते हों। रंग। (पिगमेन्ट) २. अंग-राग। ३. देवताओं को चढ़ाने के लिए पिसी हुई हल्दी आदि। ऐपन। ४. अभिनय करनेवालों के पहनने के कपड़े या परिधान। ५. दाढ़ी-मूँछ या सिर के बाल रँगने की दवा या मसाला। ६. चित्रकार। ७. चन्दन। ८. चरण। पैर। ९. मंडल। १०. हरताल।

वर्ण-क्रम—पुं०[सं०] १. वर्णमाला के अक्षरों का क्रम। जैसे—वर्णक्रम से सूची बनाना। २. किसी वस्तु की वह आकृति जो उसे देखने के बाद आँखें बन्द कर लेने पर भी कुछ देर तक दिखाई देती है। ३. प्रकाश में के रंग जो विशिष्ट प्रक्रिया से विश्लेषित किये जाते हैं। (स्पेक्ट्रम)

वर्ण-खंड-मेरु—पुं०[ष० त०] छंद शास्त्र में वह क्रिया जिससे बिना मेरु बनाए ही वृत्त का काम निकल जाता है, यह पता चल जाता है कि इतने वर्णों के कितने वृत्त हो सकते हैं और प्रत्येक वृत्त में कितने गुरु और कितने लघु होते हैं।

वर्ण-चारक—पुं०[सं० ष० त०]१. चित्रकार। २. रंगसाज।

वर्णच्छटा—स्त्री०[सं० ष० त०] दे० 'वर्णक्रम'।

वर्ण-ज्येष्ठ—पुं०[सं० स० त०]हिन्दुओं के सब वर्णों में बड़ा अर्थात् ब्राह्मण।

वर्ण-तूलिका—स्त्री०[सं० ष० त०] वह कूँची जिससे चित्रकार चित्र बनाते हैं। कलम।

वर्णद—पुं०[सं० वर्ण√दा (देना)+क]एक प्रकार की सुगन्धित लकड़ी। रतन-जोत। दंती।

वि० वर्ण या रंग देनेवाला।

वर्ण-दूत—पुं०[सं० ब० स०] लिपि।

वर्ण-दूषक—पुं०[सं० ष० त०]१. अपने संसर्ग से दूसरों को भी जाति-भ्रष्ट करनेवाला। २. जाति से निकाला हुआ पतित मनुष्य।

वर्णन—पुं०[सं०√वर्ण् (वर्णन करना, रँगना आदि)+णिच्+ल्युट्—अन] १. वर्णों अर्थात् रंगों का प्रयोग करना। रँगना। २. किसी विशिष्ट अनुभूति, घटना, दृश्य, वस्तु, व्यक्ति आदि के संबंध मे होनेवाला विस्तारपूर्ण कथन जो उसका ठीक-ठीक बोध दूसरों को कराने के लिए किया जाता है। ३. गुण-कथन। प्रशंसा। स्तुति।

वर्ण-नष्ट—पुं०[सं० ब० स०] छन्दशास्त्र में एक क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि प्रस्तार के अनुसार इतने वर्णों के वृत्तों के अमुक संख्यक भेद का लघु-गुरु के विचार से क्या रूप होगा।

वर्णना—स्त्री०[सं०√वर्ण्+णिच्+युच्—अन, टाप्]१. वर्णन। २. गुण-कीर्तन।

वर्णनातीत—वि० [सं० वर्णन+अतीत, द्वि० त०] जिसका वर्णन करना असंभव हो।

वर्णनात्मक—वि० [सं०वर्णन-आत्मन्, ब० स०, कप्] (कथन, लेख आदि) जिसमें किसी अनुभव, अनुभूति, दृश्य आदि का वर्णन हो या किया जाय।

वर्ण-नाश—पुं०[सं० ष० त०] व्याकरण में, उच्चारण की कठिनता या किसी और कारण से किसी शब्द में का कोई अक्षर या वर्ण लुप्त हो जाना। जैसे—'पृष्ठतोपर' में के 'त' का वर्ण-नाश होने पर पृष्ठोपर शब्द बनता है।

वर्ण-पताका—स्त्री०[सं० ष० त०] छन्दःशास्त्र में एक क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि वर्णवृत्तों के भेदों में से कौन सा (पहला, दूसरा, तीसरा आदि) ऐसा है जिसमें इतने लघु और इतने गुरु होंगे।

वर्ण-पात—पुं०[सं० ष० त०] किसी अक्षर का शब्द में से लुप्त हो जाना। वर्ण-नाश।

वर्ण-पाताल—पुं०[ष०त०]छन्दःशास्त्र में एक क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि अमुक संख्या के वर्णों के कुल कितने वृत्त हो सकते हैं और उन वृत्तों में से कितने लघ्वादि और कितने लघ्वंत, कितने गुर्वादि और कितने गुर्वंत तथा कितने सर्वलघु होंगे।

वर्ण-पात्र—पुं०[ष० त०]१. रंग या रंगों का डिब्बा। २. वह डिब्बा जिसमें बने हुए छोटे छोटे-घरों में रंगों के जमे हुए टुकड़े रखे होते हैं। (चित्रकला)

वर्ण-पुष्प(क)—पुं०[ब० स०, कप्] पारिजात।

वर्ण-प्रत्यय—पुं०[ष०त०]छंदःशास्त्र में वह प्रक्रिया जिससे यह जाना जाता है कि कितने वर्णों के योग से कितने प्रकार के वर्णवृत्त बनते हैं।

वर्ण-प्रस्तार—पुं०[ष० त०]छंदःशास्त्र में वह क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि अमुक संख्यक वर्णों के इतने वृत्त-भेद हो सकते हैं और उन भेदों के स्वरूप इस प्रकार होंगे।

वर्ण-भेद—पुं०[ष० त०] १. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र इन चार प्रकार के वर्णों के लोगों में माना जानेवाला भेद। २. काले, गोरे, पीले, लाल आदि रंगों के आधार पर विभिन्न जातियों में किया जानेवाला पक्षपातमूलक भेद। (रेशियल डिस्क्रिमिनेशन)

वर्ण-मर्कटी—स्त्री० [ष० त०] छन्दःशास्त्र में एक क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि इतने वर्णों के इतने वृत्त हो सकते हैं जिनमें इतने गुर्वादि, गुर्वंत, और इतने लघ्वादि, लघ्वंत होंगे तथा इन सब वृत्तों में कुल मिलाकर इतने वर्ण, इतने गुरु-लघु, इतनी कलाएँ और इतने पिण्ड (=दो कल) होंगे।

वर्ण-माता(तृ)—स्त्री०[ष० त०] लेखनी।

वर्ण-मातृका—स्त्री०[ष० त०] सरस्वती।

वर्ण-माला—स्त्री०[ष० त०]१. किसी लिपि के वर्णों (लघुतम ध्वनि इकाइयों) की सूची। २. उक्त ध्वनियों के सूचक चिह्नों की सूची।

वर्ण-राशि—स्त्री० =वर्णमाला।

वर्ण-वर्तिका—स्त्री०[ष० त०]१. चित्रकला में अलग-अलग तरह के रंगों से बनी हुई बत्ती या पेंसिल की तरह का एक प्राचीन उपकरण। २. पेंसिल। ३. तूलिका।

वर्ण-विकार—पुं०[ष० त०]भाषाविज्ञान में, वह स्थिति जब किसी शब्द में का वर्णविशेष निकल जाता है और उसके स्थान पर कोई और वर्ण आ जाता है।

वर्ण-विचार—पुं०[ष० त०] आधुनिक व्याकरण का वह अंश जिसमें वर्णों के आकार, उच्चारण और सन्धियों आदि के नियमों का वर्णन हो। प्राचीन वेदांग में यह विषय शिक्षा कहलाता था।

वर्ण-विपर्यय—पुं० [ष० त०] भाषाविज्ञान में वह अवस्था जब किसी शब्द के वर्ण आगे-पीछे हो जाते हैं और एक दूसरे का स्थान ग्रहण कर लेते हैं।

वर्ण-वृत्त—पुं०[मध्य० स०] वह पद्य जिसके चरणों में वर्णों की संख्या और लघु गुरु का क्रम निर्धारित हो।

वर्ण-व्यवस्था—स्त्री०[ष० त०] हिंदुओं की वह सामाजिक व्यवस्था जिसके अनुसार वे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार विभागों या मुख्य जातियों में बँटे हुए हैं।

वर्ण-श्रेष्ठ—पुं० [स० त०] ब्राह्मण।

वर्ण-संकर—पुं०[ब० स०][भाव० वर्ण-संकरता]१. व्यक्ति जिसका जन्म विभिन्न वर्णों के माता-पिता से हुआ हो। दोगला। २. व्यभिचार से उत्पन्न व्यक्ति।

वर्ण-संहार—पुं०[ब०स०] नाटकों में प्रतिमुख संधि का एक अंग।

वर्ण-सूची—स्त्री० [ष० त०] छंदःशास्त्र में एक क्रिया जिससे वर्णवृत्तों

की संख्या की शुद्धता, उनके भेदों में आदि, अन्त, लघु और आदि अन्त गुरु की संख्या जानी जाती है।

वर्ण-हीन—वि०[तृ० त०]१. जो चारों वर्णों (क्षत्रिय, ब्राह्मण आदि) में से किसी में न हो। २. जातिच्युत।

वर्णांध—वि०[सं० वर्ण-अंध, सुप्सुपा स०] [भाव० वर्णान्धता] जिसकी आँखों में ऐसा दोष हो कि वह रंगों की पहचान न कर सके। वर्णान्धता रोग का रोगी। (कलर ब्लाइंड)

वर्णांधता—स्त्री० [सं० वर्णान्ध+तल्—टाप्] नेत्रों का एक प्रकार का रोग या विकार जिसमें मनुष्य को लाल, काले, पीले आदि रंगों की पहचान नहीं रह जाती। (कलर ब्लाइन्डनेस)

वर्णागम—पुं० [सं० वर्ण-आगम, ष० त०]भाषाविज्ञान में वह स्थिति जब किसी शब्द के वर्ण में एक वर्ण और आकर मिलता है।

वर्णाट—पुं० [सं० वर्ण√अट् (गति)+अच्]१. चित्रकार। २. गायक। ३. प्रेमिका। ४. पत्नी द्वारा अर्जित धन से निर्वाह करनेवाला।

वर्णाधिप—पुं० [सं० वर्ण-अधिप ष० त०] फलित ज्योतिष में ब्राह्मणादि वर्णों के अधिपति ग्रह। (ब्राह्मण के अधिपति बृहस्पति और शुक्र, क्षत्रिय के भौम और रवि, वैश्य के चंद्र, शूद्र के बुध और अन्त्यज के शनि कहे गये हैं।)

वर्णानुक्रम—पुं०[सं० वर्ण-अनुक्रम, ष० त०] वर्णों का नियत क्रम।

वर्णानुक्रमणिका—स्त्री०[सं० वर्ण-अनुक्रमणिका, ष०त०] वर्णों के अर्थात् वर्णमाला के अक्षरों के क्रम से तैयार की हुई अनुक्रमणिका या सूची।

वर्णानुप्रास—पुं०[सं० वर्ण-अनुप्रास, ष० त०] एक प्रकार का अलंकार।

वर्णाश्रम—पुं०[सं० वर्ण-आश्रम, ष०त०]सनातनी हिंदुओं में माने जानेवाले (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र)चारों वर्ण और चारों आश्रम (ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और सन्यास)।

वर्णाश्रमी (मिन्)—वि०[सं० वर्णाश्रम+इनि]१. वर्णाश्रम-सम्बन्धी। २. जो वर्णाश्रम के नियम, सिद्धान्त आदि मानता और उनके अनुसार चलता हो।

वर्णिक—पुं०[सं० वर्ण+ठन्—इक] लेखक।

वि० १. वर्ण-सम्बन्धी। २. (छन्द) जिसमें वर्णों की गणना या विचार मुख्य हो।

वर्णिक-गण—पुं० [कर्म० स०] छन्दःशास्त्र में के ये आठों गण—यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण और सगण।

वर्णिक-छंद (स्)—पुं०[कर्म० स०] संस्कृत छन्द शास्त्र में वे छन्द जिनके चरणों की रचना वर्णों की संख्या के विचार से होती है।

वर्णिक-वृत्त—पुं०[कर्म० स०] वर्णिक छंद।

वर्णिका—स्त्री०[सं० वर्णिक+टाप्] १. स्याही। रोशनाई। २. सुनहला या सोने का पानी। ३. चन्द्रमा। ४. लेप लगाना। लेपन।

वर्णित—भू० कृ० [सं० √वर्ण् (व्याख्यान या स्तुति)+णिच्+क्त]१. जिसका वर्णन हो चुका हो। २. वर्णन के रूप में आया या लाया हुआ।

वर्णिनी—स्त्री०[सं० वर्ण+इनि—ङीप्] १. किसी वर्ण की स्त्री। २. हल्दी।

वर्णी (णिन्)—वि०[सं० वर्ण्+इनि] वर्णयुक्त। रंगदार।

पुं०१. चित्रकार। २. लेखक। ३. ब्रह्मचारी। ४. चारों वर्णों में से किसी एक वर्ण का व्यक्ति।

वर्णु—पुं० [सं०√ वृ (अलग करना)+णु] १. आधुनिक बन्नू नदी। २. बन्नू नामक नगर और इसके आस-पास का प्रदेश।

वर्णोद्दिष्ट—पुं० [सं० वर्ण-उद्दिष्ट, ब० स०] छंदःशास्त्र में एक क्रिया जिससे यह माना जाता है कि अमुक संख्यक वर्णवृत्त का कोई रूप कौन सा भेद है।

वर्ण्य—वि० [सं० वर्ण्+यत्] १. वर्ण या रंग-संबंधी। २. [√वर्ण्+ण्यत्] वर्णन किये जाने के योग्य।

पुं०१. केसर। २. बन-तुलसी। ३. प्रस्तुत विषय। ४. गंधक।

वर्तक—पुं० [सं०√वृत् (वर्तमान रहना)+ण्वुल्—अक]१. बटुआ। २. नर बटेर। ३. घोड़े का खुर।

वि० वर्तन करने या बनानेवाला।

वर्तन—पुं० [सं०√ वृत्+ल्युट्—अन] १. इधर-उधर या चारों ओर घूमना। २. चलना-फिरना। गति। ३. जीवित या वर्तमान रहना। स्थिति। ४. कोई चीज उपयोग या व्यवहार में लाना। बरतना। ५. लोगों के साथ आचरण या व्यवहार करना। बरतना। बरताव। ७. जीविका। रोजी। ८. उलट-फेर। परिवर्तन। ९. कोई चीज कहीं रखना या लगाना। स्थापन। १०. पीसना। पेषण। ११. पात्र। बरतन। १२. घाव में सलाई डालकर हिलाना-डुलाना, जिससे घाव या नासूर की गहराई और फैलाव आदि का पता लगता है। शल्य-कार्य। १३. चरखे की वह लकड़ी जिसमें तकला लगा रहता है। १४. विष्णु का एक नाम।

वर्तना—स्त्री० [सं०√ वृत्त+णिच्+युच्—अन, टाप्] १. वर्तन। २. चित्रकला में, चित्रों में छाया या अंधकार दिखाने के लिए काला या इसी प्रकार का और कोई रंग भरना।

†अ०, स०=बरतना।

वर्तनी—स्त्री० [सं०√वृत्त+अनि—ङीष्] १. बटने की क्रिया। पेषण। पिसाई। २. रास्ता। बाट। ३. किसी शब्द के वर्ण, उनका क्रम तथा उच्चारण विधि। (स्पेलिंग)

वर्तमान—वि०[सं०√वृत्+शानच्, मुक् आगम] १. (जीव या प्राणी) जो इस समय अस्तित्व या सत्ता में हो। २. नियम या विधान जो लागू हो या चल रहा हो। ३. जो उपस्थित, प्रस्तुत या समक्ष हो। विद्यमान।

पुं० वर्तमान काल।

वर्तमान-काल—पुं०[सं० कर्म० स०] १. व्याकरण में क्रिया के तीन कालों में से एक जिससे यह सूचित होता है कि क्रिया अभी चली चलती है। २. वृत्तान्त। समाचार। हाल।

वर्ति—स्त्री०[सं०√ वृत्+इन्] १. बत्ती। २. अंजन। ३. घाव में भरी जानेवाली कपड़े आदि की बत्ती। ४. औषध बनाने का काम या क्रिया। ५. उबटन। ६. गोली। बटी।

वर्तिक—वि०[सं०√वृत्+तिकन्] १. बत्ती से सम्बन्ध रखनेवाला। बत्ती का। बत्ती से युक्त। जिसमें बत्तियाँ हो। उदा०—बन सहस्र वर्त्तिक नीराजन।—दिनकर।

अ० बटेर नामक पक्षी।

वर्तिका—स्त्री० [सं० वर्त्तिक+टाप्] १. बत्ती। २. बटेर पक्षी। ३.

मेढ़ासिंगी। ३. सलाई। ५. पेंसिल की तरह का एक उपकरण जो रेखाचित्र बनाने के काम आता था।

वर्तिक—पुं०[सं०√वृत्+इतच्] बटेर।

वर्तित—भू० कृ०[सं० √वृत्त+णिच्+क्त]१. घुमाया या चलाया हुआ। २. संपादित किया हुआ। ३. विताया हुआ। ४. ठीक या दुरुस्त किया हुआ।

वर्तिलेख—पुं० [सं०] बहुत लंबे और मुट्ठे की तरह लपेटे जानेवाले कागज पर लिखा हुआ लेख। खर्रा। (स्क्रोल)

वर्ती (र्तिन्)—वि० [सं० पूर्वपद के रहने पर] [स्त्री० वर्तिनी] १. वर्तन करनेवाला। २. स्थित रहने या होनेवाला। जैसे—तीरवर्ती, दूरवर्ती।

स्त्री० १. बत्ती। २. सलाई।

वर्तुल—वि० [सं०√वृत्+उलच्] गोल। वृत्ताकार।

पुं०१. गाजर। २. मटर। ३. गुंड तृण। ४. सुहागा।

वर्त्म (न्)—पुं० [सं०√वृत्+मनिन्, नलोप] १. मार्ग। पथ। रास्ता। २. छकड़ों आदि के चलने से जमीन पर बननेवाली रेखा या लकीर। ३. किनारा। ४. आँख की पलक। ५. आधार। आश्रय। ६. पलकों में होनेवाला एक प्रकार का रोग या विकार।

वर्त्म-कर्दम—पुं० [सं० ब० स०] आँख का एक रोग जिसमें पित्त और रक्त के प्रकोप से आँखों में कीचड़ भरा रहता है।

वर्त्म-बंध—पुं० [सं० ब० स०] आँख का एक रोग जिसमें पलक में सूजन हो जाती है, खुजली तथा पीड़ा होती है और आँख नहीं खुलती।

वर्त्मार्बुद—पुं० [सं० वर्त्मन्-अर्बुद, ब० स०] आँखों का एक रोग जिसमें पलक के अन्दर एक गाँठ उत्पन्न हो जाती है।

वर्दी—स्त्री०=वरदी।

वर्द्ध—पुं० [सं० √वर्ध् (काटना, पूरा करना आदि)+णिच्+अच्] १. काटने, चीरने या तराशने की क्रिया। २. पूरा करना। पूर्ति। ३. भारंगी। ४. सीसा नामक धातु।

वर्द्धक—वि० [सं०√वृध् (बढ़ना)+णिच्+ण्वुल्—अक] १. वृद्धि करनेवाला। २. [√वर्ध्+ण्वुल्]-अक] काटने, छीलने या तराश करनेवाला।

पुं० [सं०√वर्ध् (काटना)+अच, वर्ध√कष् (हिंसा)+डि] दे० 'वर्द्धकी'।

वर्द्धकी (किन्)—पुं०[सं०√ वर्ध्+अच्+कन्+इनि] बढ़ई।

वर्द्धन—वि०[सं० √वृध्+णिच्+ल्यु—अन] वृद्धि करनेवाला। जैसे—आनंदवर्धन।

पुं०[√वृध्+णिच्+ल्युट्—अन]१. वृद्धि करने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. वृद्धि। बढ़ती।

वर्द्धनी—स्त्री० [सं० वर्द्धन+ङीप्]१. झाड़ू। २. संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

वर्द्धमान्—वि०[सं०√वृध्+शानच्, मुक आगम]१. जो बढ़ रहा हो या बढ़ता जा रहा हो। बढ़ता हुआ। २. जिसकी या जिसमें बढ़ने की प्रवृत्ति हो। वर्द्धनशील।

पुं० १. महावीर स्वामी। जैनियों के २४वें तीर्थंकर। २. बंगाल का आधुनिक बर्दवान नगर। ३. मिट्टी का प्याला या कसोरा। ४. एक वृत्त जिसके पहले चरण में १४, दूसरे में १३, तीसरे में १८ और चौथे में १५ वर्ण होते हैं।

वर्द्धयिता—वि०[सं०√वृध् (बढ़ना)+णिच्+तृच] [स्त्री० वर्द्धयित्री] बढ़ानेवाला। वर्द्धक।

वर्द्धापन—पुं० [सं० √वर्ध् (काटना)+णिच्, आपुक्+ल्युट्—अन] १. जनमे हुए शिशु की नाल काटना। २. उन्नति। ३. वृद्धि आदि की कामना से किया जानेवाला धार्मिक कृत्य। ४. महाराष्ट्र में प्रचलित अभ्यंग आदि कृत्य जो किसी की जन्मतिथि पर उसकी उन्नति, दीर्घायु आदि के उद्देश्य से किये जाते हैं।

वर्द्धित—भू० कृ० [सं०√वृध्+णिच्+क्त]१. जिसका वर्द्धन या वृद्धि हुई हो। २. कटा या काटा हुआ।

वर्द्धिष्णु—वि०[सं०√ वृध्+इष्णुच्] बढ़ता रहनेवाला। वृद्धिशील।

वर्द्ध्र—पुं०[सं०√वृध+रन्] चमड़ा। चमड़े का तसमा।

वर्द्ध्रिका—स्त्री०[सं० वर्द्ध्री+कन्—टाप् ह्रस्व] दे० 'वर्द्ध्री'।

वर्द्ध्रीका—स्त्री० [सं०वद्‌र्ध+ङीप्]१. चमड़े की पेटी। बद्धी २. गले में और छाती पर पहनने का बद्धी नाम का गहना।

वर्धरोध—पुं०[सं०] जीवों, वनस्पतियों आदि की वह स्थिति जिसमें उनका वर्धन या विकास रुक जाता या वैज्ञानिक क्रियाओं से रोक दिया जाता है। (एबोर्शन)

वर्ध्म—पुं० [सं०√वृध्(बढ़ना)+मनिन् वर्ध्मन्] १. प्रायः आतशक या गरमी से रोगी को होनेवाला वह फोड़ा जो जाँघ के मूल में संधिस्थान में निकल आता है। बद। २. आँत उतरने का रोग।

वर्म (न्)—पुं०[सं० √वृ (बढ़ना)+मनिन्] १. कवच। बकतर। २. घर। मकान। ३. पित्तपापड़ा।

पुं०[फा०] शरीर के किसी अंग में होनेवाली सूजन। शोथ। जैसे—जिगर का वर्म।

वर्मक—पुं०[सं० वर्मन्+कन्] आधुनिक बरमा या ब्रह्मा देश का पुराना नाम।

वर्म-धर—वि०[सं० ष० त०] कवचधारी।

वर्मा (र्मन्)—पुं०[सं०] एक उपाधि जो कायस्थ, खत्री आदि जातियों के लोग अपने नाम के अंत में लगाते हैं।

वर्मिक—वि०[सं० वर्मन्+ठन्—इक] वर्म अर्थात् कवच से युक्त।

वर्मित—भू० कृ० [सं० वर्मन+णिच् (नामधातु)+क्त] वर्म से युक्त किया हुआ। कवचधारी।

वर्मी—वि०=वर्मिक।

वर्य—वि०[सं०√ वर् (इच्छा करना)+यत्]१. श्रेष्ठ। २. प्रधान।
पुं० कामदेव।

वर्या—वि० स्त्री० [√ वृ (वरण)+यत्+टाप्] (कन्या) जिसका वरण होने को हो अथवा जो वरण किये जाने को हो।

वर्वर—पुं०[सं०√ वृ+ष्वरच्]=बर्बर।

वर्ष—पुं०[सं०√वृष् (सींचना)+अच्]१. वर्षा। वृष्टि। २. बादल। मेघ। ३. काल का एक प्रसिद्ध मान जिसमें दो अयन और बारह महीने होते हैं। उतना समय जितने में सब ऋतुओं की एक आवृत्ति हो जाती है। संवत्सर। साल। बरस। ४. काल गणना में उतना समय जितने में कोई विशिष्ट चक्र पूरा होता हो। जैसे—चांद्र वर्ष; नाक्षत्र वर्ष,

वित्त वर्ष। ५. पुराणानुसार पृथ्वी का ऐसा विभाग जिसमें सात द्वीप हों। ६. किसी द्वीप का कोई प्रधान भाग या विभाग। जैसे—इलावर्ष, भारतवर्ष। ७. किसी मास की निश्चित तिथि से लेकर पुनः उसी मास की आनेवाली तिथि के बीच का समय। जैसे—एक वर्ष उन्हें यहाँ आये आज हुआ है।

वर्षक—वि०[सं०√ वृष्+ण्वुल्—अक]१. वर्षा करनेवाला। २. ऊपर से फेंकने या गिरानेवाला। जैसे—बम-वर्षक।

वर्षकर—पुं०[सं० वर्ष√कृ (करना)+ट] मेघ। बादल।

वर्षकरी—स्त्री०[सं० वर्षकर+ङीप्]झिल्ली। झींगुर।

वर्षकाम—वि०[सं० वर्ष√कम् (चाहना)+णिङ+अच्] जिसे वर्षा की कामना हो।

वर्षकामेष्टि—पुं० [सं० ष० त०] एक यज्ञ जो वर्षा कराने के उद्देश्य से किया जाता था।

वर्ष-कोष—स्त्री०[सं० ष० त०] १. दैवज्ञ। ज्योतिषी। २. उड़द। माष।

वर्षगाँठ—स्त्री०=बरस-गाँठ।

वर्षघ्न—पुं० [सं० वर्ष√हन् (मारना)+टक्, कुत्व] १. पवन। वायु। २. अन्तःपुर का नपुंसक रक्षक। खोजा।

वर्षण—पुं० [सं० √ वृष् (बरसना)+ल्युट्—अन] १. बरसना। २. वर्षा। ३. वर्षोपल।

वर्ष-धर—पुं०[सं० ष० त०] १. बादल। २. पहाड़। ३. वर्ष का शासक। ४. अन्तःपुर का रक्षक। खोजा। ५. पृथ्वी को वर्षों से विभक्त करनेवाले पर्वत।

वर्षप, वर्ष-पति—पुं० [सं० वर्ष√ पा (रक्षा)+क; वर्ष-पति, ष० त०] वर्ष अर्थात् साल का अधिपति ग्रह।

वर्ष-पुस्तिका—स्त्री०[सं०]दे० 'वर्ष-बोध'।

वर्ष-फल—पुं०[सं० ष० त०] १. फलित ज्योतिष में जातक के अनुसार वह कुंडली जिससे किसी के वर्ष भर के ग्रहों के शुभाशुभ फलों का विवरण जाना जाता है।

क्रि० प्र०—निकालना।

२. उक्त के आधार पर साल भर के शुभाशुभ फलों का लिखित विचार।

क्रि० प्र०—बनाना।

वर्ष-बोध—पुं०[सं० ष० त०] प्रति वर्ष पुस्तक के रूप में प्रकाशित होनेवाला कोई ऐसा विवरण जिसमें किसी देश, वर्ष, समाज आदि से संबंध रखनेवाले कार्यों, घटनाओं आदि की सभी मुख्य और जानने योग्य बातों का संग्रह रहता है। अब्द-कोश। (ईयर-बुक)

वर्षांक—पुं०[सं० वर्ष-अंक, ष० त०] संख्या क्रम से किसी संवत् या सन् के निश्चित किये हुए नाम जो अंकों के रूप में होते हैं। दिनांक की तरह। जैसे—वर्षांक १९६१, १९६२।

वर्षांबु—पुं०[सं० वर्षा-अंबु, ष० त०] वर्षा का जल।

वर्षांश—पुं०[सं० वर्ष-अंश, ष० त०] महीना।

वर्षा—स्त्री० [सं०√ वृष्+अ+टाप्] १. आकाश के मेघों से पानी बरसना। वृष्टि। २. किसी चीज का बहुत अधिक मात्रा में ऊपर से आना या गिरना। जैसे—गोलियों या फूलों की वर्षा। ३. किसी बात का लगातार चलता रहनेवाला क्रम। जैसे—गोलियों की वर्षा। ४. [वर्ष+अच्+टाप्] वह ऋतु जिसमें प्रायः पानी बरसता रहता है। बरसात।

वर्षागम—पुं०[सं० वर्षा-आगम, ष० त०]१. वर्षा ऋतु का आगमन। २. नये वर्ष का आगमन।

वर्षाधिप—पुं० [सं० वर्ष-अधिप, ष० त०] फलित ज्योतिष के अनुसार वह ग्रह जो संवत्सर या वर्ष का अधिपति हो। वर्षपति।

वर्षानुवर्षी (र्षिन्)—वि० [सं० वर्ष-अनुवर्ष, ष० त० +इनि] १. प्रति वर्ष होनेवाला। २. जो बराबर कई वर्षों तक निरंतर चलता रहे या बना रहे। ३. (वनस्पति या वृक्ष) जो एक बार उग आने पर अनेक वर्षों तक बराबर बना रहे। बहुवर्षी। (पेरीनियल)

वर्षा-प्रभंजन—पुं० [सं० मध्य० स०] ऐसी आँधी जिसके साथ पानी भी बरसे।

वर्षा-बीज—पुं०[सं० ष० त०]१. मेघ। बादल। २. ओला।

वर्षाभू—पुं०[सं० वर्षा√भू (होना)+क्विप्] १. भेक। दादुर। मेढ़क। २. इन्द्रगोप या ग्वालिन नाम का कीड़ा। ३. रक्त पुनर्नवा। ४. कीड़े-मकोड़े।

वि० वर्षा में या वर्षा से उत्पन्न होनेवाला।

वर्षा-मंगल—पुं०[सं० मध्य० स०]१. वर्षा का अभाव होने या सूखा पड़ने पर मेघों का वरुण से वर्षा के लिए प्रार्थना करना। २. इस प्रार्थना से संबंध रखनेवाला उत्सव।

वर्षा-मापक—पुं०[स०ष०त०] वह बोतल अथवा नल जिसमें वर्षा का पानी आप से आप भरता रहता है, और जिसपर लगे चिह्नों से जाना जाता है कि कितना पानी बरसा। (रेन-गेज)

वर्षाशन—पुं०[सं० वर्ष-अशन, मध्य० स०] वर्ष भर के लिए दिया जानेवाला अन्न।

वर्षाहिक—पुं०[सं० वर्षा-अहिक, मध्य० स०] एक प्रकार का बरसाती साँप जिसमें विष नहीं होता।

वर्षित—भू० कृ० [सं०√वृष्+णिच्+क्त] १. बरसाया हुआ। २. ऊपर से गिराया या फेंका हुआ।

पुं० वर्षा। वृष्टि।

वर्षी (र्षिन्)—वि०[सं० (पूर्वपद के रहने पर)√वृष+णिनि] [स्त्री० वर्षिणी] वर्षा करनेवाला। (यौ० के अंत में) जैसे—अमृत-वर्षी। †स्त्री०=बरसी।

वर्षीय—वि०[सं० वर्ष+छ—ईय] [स्त्री० वर्षीया] १. वर्ष या साल से संबंध रखनेवाला। २. गिनती के विचार से, वर्षों का। जैसे—पंच-वर्षीय, दसवर्षीय बालक।

वर्षुक—वि०[सं०√वृष्+उकञ्] वर्षा करनेवाला।

वर्षेश—पुं०[सं० वर्ष-ईश, ष० त०] वर्षाधिप। (दे०)

वर्षोपल—पुं०[सं० वर्ष-उपल, ष० त०] ओला।

वर्ष्म (र्ष्मन्)—पुं०[सं०√वृष्+मनिन्] १. शरीर। २. प्रमाण। ३. चरम सीमा। इयत्ता। ४. नदियों आदि का बाँध।

वर्ह—पुं०[सं० √वर्ह् (दीप्त करना)+अच्] १. मोर का पंख। ग्रंथि-पर्णी। गठिवन। ३. वृक्ष का पत्ता।

वर्हण—पुं० [सं०√वृह् (बढ़ना) अथवा√वर्ह्+ल्युट्-अन] पत्र। पत्ता।

९.१ / २५ ५४,७५२

वर्हि (स्)—पुं०[सं०√वृंह्+इसुन्, नि० न-लोप] १. अग्नि। २. चमक। दीप्ति। ३. यज्ञ। ४. कुश। ४. चीते का पेड़।

वर्हि-ध्वज—पुं०[सं० ब० स०] स्कंद। कार्तिकेय।

वर्हिमुख—पुं०[सं० बं० स०] १. अग्नि। २. एक देवता।

वर्हिषद्—पुं०[सं० वर्हिस्√अद् (खाना)+क्विप्] पितरों का एक गण।

वर्ही (हिन्)—पुं०[सं० वर्ह+इनि] १. मयूर। मोर। २. कश्यप के एक पुत्र। ३. तगर।

वलना—स०[सं० वलय] १. घेरना। २. लपेटना। ३. पहनना। (राज०) उदा०—वले वलै निधि विधि वलित।—प्रिथीराज।

वलंब†—पुं०=अवलंब।

वल—पुं०[सं०√वल्(घूमना-फिरना)+अच्] १. मेघ। बादल। २. २. एक असुर जो देवताओं की गौएँ चुराकर एक गुहा में जा छिपा था। इन्द्र ने जब इससे गौएँ छुड़ा लीं, तब यह बैल बनकर बृहस्पति के हाथों मारा गया था।

वलन—पुं०[सं०√वल्+ल्युट्-अन] १. किसी ओर घूमना या मुड़ना। २. चारों ओर घूमना। चक्कर लगाना। ३. ज्योतिष में, किसी ग्रह का अयनांश से हटकर कुछ इधर या उधर होना।

वलना—अ०[सं० वलन] १. किसी ओर घूमना या मुड़ना। २. वापस आना। लौटना।

स० १. घुमाना। फिराना। २. लपेटना।

वलनिक—वि० [सं० वलन] १. जिसका वलन किया जा सके। २. जो तह करके या मोड़कर छोटा किया जा सके। (फोल्डिंग)

वलनी—स्त्री०[सं० वलन] १. वह स्थान जहाँ से कोई चीज किसी ओर घूमती या मुड़ती हो। २. कोई ऐसी चीज जो घूमे या मुड़े हुए रूप में हो। (बेंड)

वलभी—स्त्री०[सं०√वल् (आच्छादित होना)+अभि+ङीष्] १. वह छोटा मंडप जो घर के ऊपर शिखर पर बना हो। गुमटी। निगोल। २. घर का ऊपरी भाग। ३. छप्पर। ४. छत। ५. काठियावाड़ की एक प्राचीन नगरी।

वलय—पुं०[सं०√वल्+कयन्] १. गोलाकार घेरा। मंडल। २. घेरने, लपेटने आदि वाली चीज। वेष्टन। ३. हाथ में पहनने का कंगन। ४. वृत्त की परिधि। ४. एक प्रकार की व्यूह-रचना जिसमें सैनिक मंडल बनाकर खड़े होते हैं। ५. एक प्रकार का गल-गंड रोग। ६. शाखा।

वलयित—भू० कृ०[सं० वलय+णिच्+क्त] घेरा या लपेटा हुआ। परिवृत्त। वेष्टित।

वलवला—पुं०[अ० वल्वलः] १. शोर-गुल। २. मन की उमंग। आवेश। क्रि० प्र०—उठना।

वलसूदन—पुं०[सं० वल√सूद् (मारना)+ल्यु—अन] इंद्र।

वलाक—पुं०[स्त्री० वलाका]=बलाक (बगला)।

वलायत—स्त्री०=विलायत।

वलाहक—पुं०[सं० वारि-वाहक, ष० त०, पृषो० सिद्धि] १. मेघ। बादल। २. मुस्तक। ३. पर्वत। पहाड़। ४. कुश द्वीप का एक पर्वत। श्रीकृष्ण के रथ का एक घोड़ा। ६. एक प्राचीन नद। ७. साँपों की एक जाति जो दर्व्वीकर के अन्तर्गत मानी गई है।

वलि—पुं०[सं०√वल्+इन] १. रेखा। लकीर। २. चंदन आदि से बनाये जानेवाले चिह्न या रेखाएँ। ३. देवताओं आदि को चढ़ाई जानेवाली वस्तु। ४. देवताओं के उद्देश्य से मारे जानेवाले पशु। ५. झुर्री। बल। सिकुड़न। ६. पंक्ति। श्रेणी। कतार। ७. एक दैत्य जो प्रह्लाद का पौत्र था और जिसे विष्णु ने वामन अवतार लेकर छला था। ८. पेट के दोनों ओर पेटी के सिकुड़ने के कारण पड़ी हुई रेखा। वल। जैसे—त्रिवली। ९. राजकर। १० बवासीर का मसा। ११. छाजन की ओलती। १२. गंधक। १३. पुरानी चाल का एक प्रकार का बाजा।

वलिक—पुं०[सं० वलि+कन्] ओलती।

वलित—भू० कृ० [सं०√वल्+क्त] १. घूमा, मुड़ा या बल खाया हुआ। २. झुका या झुकाया हुआ। ३. घिरा या घेरा हुआ। परिवृत्त। ४. जिसमें झुर्रियाँ या सिकुड़नें पड़ी हों। ५. किसी के चारों ओर लिपटा हुआ। आच्छादित। ६. मिला हुआ। युक्त। सहित।

पुं० १. काली मिर्च। २. हाथ की एक मुद्रा।

वलि-मुख—पुं०[सं० ब० स०] १. वानर। बंदर। २. गरम दूध में मठा मिलाने से उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का विकार।

वली—स्त्री०[सं० वलि+ङीष्] १. झुर्री। शिकन। २. अवली। पंक्ति। श्रेणी। ३. रेखा। लकीर। ४. चंदन आदि के बनाए हुए चिह्न या रेखाएं। ५. पेट-पर पड़नेवाली रेखा। जैसे—त्रिवली।

पुं०[अ०] १. वह धर्मात्मा और महात्मा जो ईश्वर की दृष्टि में प्रिय और मान्य हो। २. वह व्यक्ति जो किसी नाबालिग या स्त्री की संपत्ति का कर्ता-धर्ता तथा रक्षक हो। अभिभावक। ३. स्वामी।

वली अल्लाह—पुं०[अ०] एक प्रकार के सिद्ध मुसलमान फकीर।

वली अहद—पुं०[अ०] युवराज।

वलीक—पुं०[सं०√वल्+कीकन्] १. ओलती। २. सरकंडा।

वलीमुख—पुं०=वलिमुख (बंदर)।

वलूक—पुं०[सं०√वल्+अक] १. कमल की जड़। २. एक प्रकार का पक्षी।

वले—अव्य० [फा०] १. लेकिन। मगर। २. पुनः।

वलेकिन—अव्य०=लेकिन।

वलै*—पुं०=वलय।

वल्क—पुं०[सं०√वल्+क, नि०] १. पेड़ की छाल। वल्कल। २. मछली के ऊपर का चमकीला छिल्का। मछली की चोई।

वल्क-द्रुम—पुं०[सं० मध्य० स०] भोज पत्र का वृक्ष।

वल्कल—पुं०[सं०√वल्+कलन्] १. पेड़ों के धड़ और काण्ड पर का आवरण। छाल। २. प्राचीन काल में वह छाल जो जंगली लोग, तपस्वी आदि कपड़े की तरह ओढ़ते-पहनते थे। ३. एक दैत्य। ४. ऋग्वेद की वाष्कल नामक शाखा।

वल्कला—स्त्री०[सं० वल्कल+टाप्] १. एक प्रकार का सफेद पत्थर जिसका गुण शीतल और शान्तिकारक माना जाता है। शिला वल्का। २. तेजबल नामक वनस्पति।

वल्कली (लिन्)—वि० [सं० वल्कल+इनि] (पेड़) जिसकी छाल ओढ़ने पहनने के काम आती है।

वल्गन—पुं० [सं०√वल्ग् (उछलना)+ल्युट्-अन] १. उछलने, कूदने

या फाँदने की क्रिया या भाव। २. दुलकी। ३. व्यर्थ की उछल-कूद और बकवाद।

वल्गा—स्त्री०[सं०√वल्ग्+अच्+टाप्] बाग। रास। लगाम।

वल्गु—वि०[सं०√वल्+ड, गुक्-आगम] १. रूपवान्। सुंदर। २. प्रिय। मधुर। ३. बहुमूल्य।

पुं० [सं०] १. बौद्धों के बोधि द्रुम के चार अधिकृत देवताओं में से एक। २. बकरा।

वल्गुक—पुं०[सं० वल्गु+कन्] १. चंदन। २. जंगल। वन। ३. पण। बाजी। ४. क्रय-विक्रय। सौदा। ५. मूल्य। दाम।

वि० वल्गु।

वल्गुल—पुं०[सं०√वल्ग्+उल] १. एक प्रकार का चमगादड़। २. गीदड़। शृगाल।

वल्गुला—स्त्री०[सं० वल्गु√ला (लेना)+क+टाप्] १. बकुची। २. चमगादड़।

वल्गुलिका—स्त्री०[सं० वल्गुल+कन्+टाप्, इत्व] १. कत्थई रंग का पतंग जाति का कीड़ा जिसे 'तेलपायी' भी कहते हैं। चपड़ा। २. पिटारी। मंजूषा।

वल्गुली—स्त्री० [सं० वल्गुल+ङीष्] १. चमगादड़। गेदुर। २. पिटारी। मंजूषा।

वल्द—पुं०[अ०] पुत्र। बेटा।

वल्दियत—स्त्री०[अ०] पुत्र होने की अवस्था या भाव।

पद—वल्दियत लिखाना=यह लिखाना कि हम किसके पुत्र हैं। पिता का नाम बतलाना।

वल्मीक—पुं०[सं०√वल्+कीकन्, नुम्-आगम] १. दीमकों का लगाया हुआ मिट्टी का ढेर। बाँबी। बिमौट। २. ऐसा मेघ जिसपर सूर्य की किरणें पड़ रही हों। ३. एक प्रकार का रोग जिसमें संधि-स्थलों में सूजन आ जाती है। ४. वाल्मीकि ऋषि।

वल्ल—पुं०[सं०√वल्ल् (ढकना)+अच्] १. घुँघची। २. एक पुरानी तौल जो किसी के मत से तीन और किसी के मत से छः रत्ती की होती थी। ३. आवरण। ४. निषेध। ५. अनाज ओसाना या बरसाना। ६. शल्लकी। सलई।

वल्लकी—स्त्री०[सं०√वल्ल्+क्वुन्+ङीष्] १. वीणा। २. नारद की वीणा का नाम। ३. सलई का पेड़।

वल्लभ—वि० [सं०√वल्ल्+अभच्] [स्त्री० वल्लभा] अत्यन्त प्रिय। प्रियतम। प्यारा।

पुं० १. अत्यन्त प्रिय व्यक्ति। २. स्त्री का पति। ३. मालिक। स्वामी। ४. अच्छे लक्षणोंवाला घोड़ा। ५. एक प्रकार का सेम। ६. दे० 'वल्लभाचार्य'।

वल्लभ-मत—पुं०=वल्लभ-संप्रदाय।

वल्लभ-संप्रदाय—पुं० [सं० ष० त०] महाप्रभु वल्लभाचार्य द्वारा स्थापित पुष्टिमार्ग संप्रदाय का दूसरा नाम। दे० 'पुष्टि-मार्ग'।

वल्लभा—वि० स्त्री० [सं० वल्लभ+टाप्] सं० 'वल्लभ' का स्त्री०।

वल्लभी—पुं०=वलभी।

वल्लर—पुं०[सं०√वल्ल्+अरन्] १. निकुंज। २. वन। ३. लता। ४. मंजरी। ५. अगर।

वल्लरी—स्त्री०[सं० वल्लर+ङीष्] १. वल्ली। लता। २. मंजरी। ३. मेथी। ४. बचा। बच। ५. पुरानी चाल का एक प्रकार का बाजा।

वल्लव—पुं० [सं० वल्ल्√वा (गति)+क] [स्त्री० वल्लवी] १. १. गोप। ग्वाला। २. रसोइया।

वल्लाह—अव्य०[अ०] १. ईश्वर की शपथ लेते हुए। २. सचमुच।

वल्लि—स्त्री०[सं०√वल्ल्+इन्] १. लता। २. पृथिवी।

वल्लिका—स्त्री० [सं० वल्लि+कन्+टाप्] १. लता। वल्ली। २. बेला। ३. पोई नामक साग।

वल्लिज—पुं०[सं० वल्लि√जन् (उत्पत्ति)+ड] मिर्च।

वल्लि-दूर्वा—स्त्री०[सं० मध्य० स०] सफेद दूब।

वल्ली—स्त्री०[सं० वल्लि+ङीष्] १. लता। २. काली अपराजिता। ३. केवटी मोथा। ४. अग्नि दमयन्ती। ५. शाल का वृक्ष।

वल्लुर—पुं०[सं०√वल्ल्+उरच्] १. कुंज। २. मंजरी। ३. क्षेत्र। ४. निर्जल स्थान।

वल्लूर—पुं०[सं०+वल्ल्+ऊरच्] १. धूप में सुखाया हुआ मांस, विशेषतः मछली का मांस। २. सूअर का मांस। ३. ऊसर जमीन। ४. जंगल। वन। ५. उजाड़ जगह। वीरान।

वल्वल—पुं०[सं०] एक दैत्य जिसे बलराम जी ने मारा था। इल्वल।

वव—पुं०[सं०] एक करण। (ज्यो०)

वशंकर—वि०[सं० वशकर] वशीभूत करनेवाला।

वशंवद—वि०[सं० वश√वद् (बोलना)+खच्, मुम्] १. जो किसी के वश या प्रभाव में हो। २. कही हुई बात या आज्ञा माननेवाला। आज्ञाकारी।

वश—पुं०[सं०√वश् (चाहना आदि)+अप्] १. अधिकार, नियन्त्रण या प्रभाव क्षेत्र में लाने या रखने की शक्ति या समर्थता। काबू।

वि० १. काबू में आया हुआ। अधीन। २. आज्ञानुवर्ती। ३. नीचा दिखलाया हुआ। ४. जादू-टोने से मुग्ध किया हुआ।

पद—वश का=जिस पर वश चलता हो। जो संभव हो। जैसे—यह काम हमारे वश का नहीं है।

मुहा०—वश चलना=ऐसी स्थिति होना कि अधिकार या शक्ति अपना पूरा काम कर सके। जैसे—तुम्हारा वश चले तो तुम उसे घर से निकाल दो। **वश में होना**=पूर्ण नियन्त्रण में होना।

५. इच्छा। ६. जन्म। ७. कसबियों के रहने का स्थान। चकला।

वशक—वि०[सं० वशकर] [स्त्री० वशका] १. वश में करनेवाला। २. वश में किया हुआ।

वशका—स्त्री० [सं० वश√कै (शोभा)+क+टाप्] आज्ञा और वश में रहनेवाली पत्नी।

वशग—वि० [सं० वश√गम् (जाना)+ड] [स्त्री० वशगा] आज्ञाकारी।

वशा—स्त्री०[सं०√वश्+अच्+टाप्] १. वंध्या स्त्री। बाँझ। २. जोरू। पत्नी। ३. गौ। ४. हथनी। ५. स्त्री के पति की बहन। ननद।

वशानुग—वि० [सं० वश-अनुग, ष० त०] १. वश में रहनेवाला। २. वश में किया हुआ। ३. दे० 'वशग'।

वशित—स्त्री०=वशित्व।

वशित्व—पुं०[सं० वशिन्+त्व] १. वश में होने की अवस्था या भाव। वश चलना। २. योग में अणिमा आदि आठ सिद्धियों में से एक सिद्धि जिससे साधक सब को वश में कर सकता है। ३. सम्मोहन।

वशिमा—स्त्री०[सं० वश+इमनिच्] योग की वशित्व नामक सिद्धि।

वशिर—पुं०[सं०√वश्+किरच्] १. समुद्री लवण। समुद्री नमक। २. एक प्रकार की लाल मिर्च।

वशिष्ठ—पुं०=वसिष्ठ।

वशी (शिन्)—वि०[सं० वश+इनि] १. जो किसी के वश में हो। २. जिसने अपनी इच्छाशक्ति और इन्द्रियों को वश में कर रखा हो।

वशीकर—वि० [सं० वश+च्वि, ईत्व√कृ+ट] १. वश में करनेवाला। जैसे—वशीकर मंत्र। २. सम्मोहक।

पुं० वशीकरण।

वशीकरण—पुं० [सं० वश+च्वि, ईत्व√कृ (करना)+ल्युट्—अन] [वि० वशीकृत] १. दूसरों को अपने वश में करने, रखने अथवा लाने की क्रिया या भाव। वश में करना। २. तंत्र में एक प्रकार का प्रयोग जिसमें मंत्र-बल से किसी को अपने वश में किया या लगाया जाता है। ३. ऐसा साधन जिससे किसी को वशीभूत किया जा सके या किया जाता हो।

वशीकृत—भू० कृ० [सं० वश+च्वि, ईत्व√कृ+क्त] १. वश में किया हुआ। २. मोहित। मुग्ध।

वशीभूत—भू० कृ०[सं० वश+च्वि, ईत्व√भू (होना)+क्त] वश में आया या किया हुआ। अधीन। ताबे।

वश्य—वि०[सं० वश+यत्] [भाव० वश्यता] १. जो वश में किया गया हो। २. जो वश में किया जा सकता हो। ३. अधीनस्थ।

पुं०१. दास। नौकर। सेवक। २. अधीनस्थ कर्मचारी या व्यक्ति।

वश्यता—स्त्री०[सं० वश्य+तल्+टाप्] वश में होने की अवस्था या भाव। अधीनता।

वश्या—स्त्री०[सं० वश्य+टाप्] १. लगाम। २. गोरोचन। ३. नीली अपराजिता।

वषट्—अव्य० [सं०√वह (पहुँचाना)+डषटि] एक शब्द जिसका उच्चारण यज्ञ के समय अग्नि में आहुति देते समय किया जाता है।

वषट्-कार—पुं०[सं० ब० स०] १. देवताओं के उद्देश्य से किया हुआ यज्ञ। होम। होत्र। २. तैंतीस वैदिक देवताओं में से एक देवता। ३. वषट् (शब्द) का उच्चारण करनेवाला व्यक्ति।

वषट्-कृत—भू० कृ०[सं० सुप्सुपा स०] देवताओं के निमित्त अग्नि में डाला हुआ। होम किया हुआ। हुत।

वषट्-कृत्य—पुं०[सं० मध्य० स०] होम।

वष्कयणी—स्त्री० [सं०√वष्क् (गति)+अयन्=वष्कय (एक साल का बछड़ा)√नी (ले जाना)+क्विप्+ङीष्, णत्व] बकेना गाय।

वसंत—पुं०[सं०√वस्+झच्] १. वर्ष की छः ऋतुओं में से एक ऋतु। हेमंत और ग्रीष्म के बीच की ऋतु। २. माघ सुदी पंचमी को मनाया जानेवाला एक पर्व जो उक्त ऋतु के आगमन का सूचक होता है। ३. संगीत में छः मुख्य रागों में से एक जो विशेष रूप से वसंत ऋतु में गाया जाता है। ४. एक ताल। ५. चेचक। ६. अतिसार। ७. फूलों का गुच्छा।

वसंतक—पुं०[सं० वसंत+कन्] श्योनाक। सोनापाढ़ा।

वसंतगीर्वाणी—स्त्री०[सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

वसंत घोषी (षिन्)—पुं०[सं०] कोकिल।

वसंतजा—स्त्री०[सं० वसंत√जन् (उत्पन्न करना)+ड+टाप्] १. वासंती लता। २. सफेद जूही। ३. वसंतोत्सव।

वसंततिलक—पुं०[सं० ष० त०] १. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तगण, भगण, जगण, जगण, और दो गुरु—इस प्रकार कुल चौदह वर्ण होते हैं। २. एक प्रकार का पौधा और उसके फूल।

वसंत तिलका—स्त्री०[सं० वसंततिलक+टाप्] =वसंततिलक (वर्ण-वृत्त)।

वसंतदूत—पुं०[सं० ष० त०] १. आम (वृक्ष)। २. कोयल। ३. पंच-राग। ४. चैत्रमास।

वसंत-दूती—स्त्री०[सं० वसंतदूत+ङीष्] १. कोयल। २. पाडर वृक्ष। ३. माधवी लता।

वसंत-नारायणी—स्त्री०[सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

वसंत पंचमी—स्त्री०[सं० ष० त०] माघ महीने की शुक्ल पंचमी। पहले इस दिन वसंत और रति सहित कामदेव की पूजा होती थी, पर आज-कल यह सरस्वती पूजन का दिन माना जाता है। इसे श्री-पंचमी भी कहते हैं।

वसंत-पूजा—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का धार्मिक समारोह जिसमें वेदों के कुछ विशिष्ट मंत्रों का सस्वर पाठ होता है।

वसंत बंधु—पुं० [सं० ष० त०] कामदेव।

वसंत-भूपाल—पुं०[सं० मध्य० स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

वसंत भैरवी—स्त्री०[सं० मध्यम० स०] ऐसी भैरवी जो वसंत राग में गाई जाती हो।

वसंत महोत्सव—पुं०[सं० ष० त०] १. एक उत्सव जो प्राचीन काल में वसंत पंचमी के दूसरे दिन कामदेव और वसंत की पूजा के उपलक्ष में मनाया जाता था। २. होली का उत्सव।

वसंत मारू—पुं०[सं० मध्यम० स०] सम्पूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

वसंत यात्रा—स्त्री०[सं०] वसंतोत्सव।

वसंत-व्रत—पुं०[सं० ब० स०] कोकिल।

वसंत सखा—पुं०[सं०] कामदेव।

वसंती—वि०[सं० वसंत] १. वसंत ऋतु-संबंधी। वसंत का। जैसे—वसंती मौसम। २. वसंत ऋतु में फूलने वाली सरसों के फूलों की तरह हलके पीले रंग का। बसंती। जैसे—वसंती चोली, वसंती साड़ी।

पुं० उक्त प्रकार का रंग।

वसंतोत्सव—पुं०[सं०] १. वसंत पंचमी के दिन मनाया जानेवाला उत्सव। (पश्चिम) २. प्राचीन काल में माघ सुदी छठ (वसंत पंचमी के दूसरे दिन) को मनाया जानेवाला उत्सव जिसमें कामदेव की पूजा की जाती थी। ३. होली का उत्सव।

वसअत—पुं०[अ०] १. विस्तार। फैलाव। २. चौड़ाई। ३. अँटने या समाने की जगह। गुंजाइश। समाई। ४. शक्ति। सामर्थ्य।

वसता—स्त्री० १. बस्ती। २. बसऊत।

†पुं०=वस्त्र (कपड़ा)।

वसति—स्त्री०[सं०√वस् (निवास करना)+अति] १. वास। रहना। २. घर। ३. आबादी। बस्ती। ४. जैन साधुओं का मठ। ५. रात।

वसती—स्त्री०[सं० वसति-ङीष्] १. वास। रहना। २. रात। ३. घर। ४. बसती।

वसन—पुं० [सं० √वस् (आच्छादन करना)+ल्युट्–यु–अन] १. वस्त्र। कपड़ा। २. ढकने का कपड़ा। आच्छादन। आवरण। ३. किसी स्थान पर बसना। निवास। ४. कमर में पहनने का गहना। ५. तेजपत्ता।

वसना—स्त्री०[सं०] स्त्रियों की कमर का एक गहना।

अ०=बसना।

†अ०[सं० वश] वश में होना।

वसनार्णवा—स्त्री०[सं० ब० स०] भूमि। पृथ्वी।

वसमा—पुं०[अ०] १. नील का पत्ता। २. खिजाब। ३. उबटन। ४. पुरानी चाल का एक प्रकार का छापे का कपड़ा जो चाँदी के वरक लगाकर छापा जाता था।

वसल—पुं०=वस्ल (संयोग)।

वसली—स्त्री० [अ० वस्ली] चित्रकला में कई कागजों को चिपकाकर बनाया हुआ गत्ता या दफ्ती।

वसलीगर—पुं० [अ०+फा०] १. वसली या गत्ता बनानेवाला। २. हाथ के अंकित चित्रों को वसली या गत्ते पर चिपका कर उसमें गोट आदि लगानेवाला।

वसवास—पुं०[अ० वस्वास मि० सं० विश्वास] १. अविश्वास। २. संदेह। संशय। ३. आगा-पीछा। दुबिधा।

पुं०[हिं० बसना+वास] निवास। वास।

वसवासी—वि० [अ० वसवास] १. विश्वास न करनेवाला। संशयात्मा। शक्की। २. धोखा देनेवाला। धूर्त।

†वि०=निवासी।

वसह—पुं०[सं० वृषभ; प्रा० वसह] बैल।

वसा—स्त्री०[सं०] [वि० वसीय] १. पीले अथवा सफेद रंग का एक प्रसिद्ध चिकना या तैलावत पदार्थ जो पशुओं, मछलियों और मनुष्यों के शरीर में पाया जाता है और जिसकी अधिकता होने पर उनमें मोटाई आती है। चरबी। (फैट) २. उक्त प्रकार का कोई सेंद्रिय तत्त्व या पदार्थ (जैसे—पौधों या फलों में का)। ३. मज्जा।

वसाकेतु—पुं०[सं०] एक प्रकार या तरह का धूमकेतु या तारक पुंज।

वसातत—स्त्री०[अ० वस्त (मध्य) का भाव०] १. मध्यस्थता २. जरिया। द्वार।

वासति—पुं० [सं० ब० स०] १. उत्तर भारत का एक प्राचीन जनपद। २. उक्त जनपद का निवासी। ३. इक्ष्वाकु का एक पुत्र।

वसा प्रमेह—पुं०[सं० ष० त०] एक प्रकार का मेहरोग जिसमें पेशाब के साथ चरबी निकलती है।

वसामेह—पुं०[सं० ष० त०]=वसाप्रमेह

वसार—पुं०[सं० वसा+रक्] १. इच्छा। २. वश। ३. अभिप्राय।

वसाल—पुं०[?] भेंड़। (राज०) उदा०—ढोला करह निवासियइ, देखे वीस वसाल—ढो० मा० दू०।

वसित—वि०[सं०] १. बसा हुआ। २. पहना हुआ। ३. एकत्र या संगृहीत किया हुआ।

पुं० १. निवास स्थान। २. बस्ती। ३. वस्त्र।

वसितव्य—वि० [सं०√वस् (आच्छादन करना)+तव्य, इत्व] धारण करने या पहने जाने के योग्य।

वसिर—पुं० [सं०√वस्+किरच्] १. समुद्री लवण। २. गज पिप्पली। ३. लाल चिचड़ा। ४. जलनीम।

वसिष्ठ—पुं०[सं० वस+इष्ठन्] १. वैदिककालीन सूर्यवंशी राजाओं के पुरोहित एक प्राचीन ऋषि जो ब्रह्मा के मानस पुत्र माने जाते तथा ऋग्वेद के सातवें मण्डल के रचयिता कहे गये हैं। २. सप्तर्षि मंडल का एक तारा जिसके पास का छोटा तारा अरुंधती कहलाता है।

वसिष्ठ पुराण—पुं०[सं० मध्य० स०] एक उप-पुराण जो कुछ लोगों के मत से 'लिंग पुराण' ही है।

वसिष्ठ प्राची—पुं०[सं० ब० स०] एक प्राचीन जनपद।

वसी (सिन्)—पुं० [सं० वस+इनि] ऊदबिलाव।

पुं० [अ०] वसीयत लिखकर जिसे वारिस बनाया गया हो। वह जिसके नाम वसीयत लिखी गई हो।

वसीअ—वि०[अ०] १. चौड़ा। २. फैला हुआ। विस्तृत।

वसीक़ा—पुं०[अ० वसीक़ा] १. ऋण-पत्र। २. दस्तावेज। ३. इकरारनामा। ४. वह धन जो सरकारी खजाने में इसलिए जमा किया गया हो कि उसका सूद जमा करनेवाले के संबंधियों को मिला करेगा अथवा किसी धर्म-कार्य आदि में लगाया जायगा। ५. उक्त प्रकार की मद में से अथवा सहायता के रूप में भरण-पोषण आदि के लिए नियमित रूप से मिलनेवाला धन। वृत्ति।

वसीय—वि०[सं०] १. वसा संबंधी। २. जिसमें वसा या चरबी का मान अधिक हो। (फ़ैटी)

†पुं०=वसी (जिसके नाम वसीयत हो)।

†वि०=वसीअ (विस्तृत)।

वसीयत—स्त्री०[अ०] १. यह लिखित आदेश कि मेरी अनुपस्थिति में या मृत्यु के उपरान्त मेरी सम्पत्ति का वारिस अमुक व्यक्ति या अमुक संस्था होगी। २. उक्त आशय का लिखा हुआ आदेश पत्र। वसीयतनामा।

वसीयतनामा—पुं०[अ०+फा०] वह पत्र जिसपर कोई वसीयत लिखी हो। इच्छापत्र।

वसीला—पुं०[अ० वसीलः] १. लगाव। संबंध। २. कोई काम करने का द्वार या साधन। जरिया।

वसुंधरा—स्त्री० [सं० वसु√धा (धारण करना)+खच्-मुम्] पृथ्वी।

वसु—वि०[सं०] १. जो सबमें निवास करता हो। २. जिसमें सबका निवास हो।

पुं० १. सूर्य। २. विष्णु। ३. शिव। ४. कुबेर। ५. धन-सम्पत्ति। जैसे—सोना-चाँदी, रत्न आदि। ६. किरण। रश्मि। ७. साधु पुरुष। सज्जन। ८. जल। पानी। ९. तालाब। सरोवर। १०. अग्नि। ११. पेड़। वृक्ष। १२. पीली मूंग। १३. मौलसिरी। १४. अगस्त का पेड़। १५. जोते जानेवाले घोड़े, बैल आदि की जोत। १६. देवताओं का

एक गण जिसके अन्तर्गत आठ देवता हैं। १७. उक्त के आधार पर आठ की संख्या का वाचक शब्द। १८. छप्पय के हो सकनेवाले भेदों में से ६९वाँ भेद।

स्त्री० [सं०] १. दीप्ति। चमक। २. वृद्धि नामक ओषधि। ३. दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो धर्म को ब्याही थी, और जिससे द्रोण आदि आठ वसुओं का जन्म हुआ था। ४. अमरावती।

वसुक—पुं० [सं०√वसु+क या वसु+कन्] १. साँभर नमक। २. पांशु लवण। ३. बथुआ नाम का साग। ४. काला अगर। ५. आक। मदार। ६. मौलसिरी।

वसुकरी—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

वसुकर्ण—पुं० [सं० ब० स०] एक मंत्र-द्रष्टा ऋषि।

वसुकला—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसे 'तारक' भी कहते हैं। दे० 'तारक'।

वसुद—पुं० [सं० वसु√दा (देना)+क] १. कुबेर। २. विष्णु।

वसुदा—स्त्री० [सं० वसुद+टाप्] स्कंद की एक मातृका।

वसुदेव—पुं० [सं०] मथुरा के राजा कंस के बहनोई जो श्रीकृष्ण के पिता थे।

वसुदेवत—पुं० [सं० ब० स०] धनिष्ठा नक्षत्र।

वसुदेव्या—स्त्री० [सं० वसुदेव+यत्+टाप्] धनिष्ठा नक्षत्र।

वसुद्रुम—पुं० [सं० मध्यम० स०] गूलर।

वसुधर्मिका—स्त्री० [सं० ब० स०] १. स्फटिक। बिल्लोर। २. संगमरमर।

वसुधा—स्त्री० [सं० वसु√धा (धारण करना)+क+टाप्] पृथ्वी।

वि० धन देनेवाला।

वसुधाधर—पुं० [सं०] १. पर्वत। २. विष्णु।

वसुधान—पुं० [सं० वसु√धा (धारण करना)+ल्युट्—अन] पृथ्वी।

वसुधारा—स्त्री० [सं० वसुधार+टाप्] १. एक शक्ति। (जैन) २. बौद्धों की एक देवी। ३. अलका पुरी। ४. एक प्राचीन तीर्थ। ५. एक प्राचीन नदी। ६. नांदीमुख श्राद्ध के अन्तर्गत एक कृत्य जिसमें घी की सात धारें दी जाती हैं।

वसुन—पुं० [सं० वसु√नी (ढोना)+ड] यज्ञ।

वसुनीत—पुं० [सं० तृ० त०] ब्रह्मा।

वसुनीथ—पुं० [सं० ब० स०] अग्नि।

वसुनेत्र—पुं० [सं० ब० स०] बौद्धों के अनुसार ब्रह्मा का एक नाम।

वसुपति—पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

वसुपाल—पुं० [सं० वसु√पाल् (पालन करना)+अच्] राजा।

वसुप्रद—पुं० [सं०] १. शिव। २. कुबेर। ३. स्कंद का एक अनुचर।

वि० धन देनेवाला।

वसुप्रभा—स्त्री० [सं० ब० स०] १. अग्नि की एक जिह्वा। २. कुबेर का राजनगर।

वसुबंधु—पुं० [सं०] महायानी शाखा के एक बौद्ध जिनकी रचनाओं के चीनी अनुवाद अब भी प्राप्य हैं।

वसुभ—पुं० [सं०] धनिष्ठा नक्षत्र।

वसुमती—स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। २. एक प्रकार का वर्ण, वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तगण और रगण होते हैं।

वसुमना—पुं० [सं० ब० स०] १. अग्नि। २. शिव। ३. पुराणानुसार एक मंत्र-द्रष्टा ऋषि।

वसुमान—पुं० [सं०] पुराणानुसार उत्तर दिशा का एक पर्वत।

वसुमित्र—पुं० [सं० ब० स०] महायानी शाखा के एक बौद्ध आचार्य जो काश्मीर के पश्चिम अश्मापरांत देश के निवासी कहे गये हैं।

वसुरुचि—पुं० [सं० वसु√रुच् (प्रकाश करना)+क्विप्] एक प्रकार के देवता।

वसुरूप—पुं० [सं० ब० स०] शिव।

वसुल—पुं० [सं० वसु√ला (लेना)+क] देवता।

वसुवन—पुं० [सं० ष० त०] ईशान कोण में स्थित एक प्राचीन देश। (बृहत्संहिता)

वसुविद्—पुं० [सं० वसु√विद् (प्राप्त होना)+क्विप्] अग्नि।

वसुश्री—स्त्री० [सं० ब० स०] स्कंद की अनुचरी एक मातृका।

वसुश्रेष्ठ—पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

वसुषेण—पुं० [सं० ब० स०] १. कर्ण। २. विष्णु।

वसुसारा—स्त्री० [सं० ष० त०] अलका (नगरी)।

वसुस्थली—स्त्री० [सं० ब० स०] अलका (नगरी)।

वसुहा†—स्त्री० [सं० वसुधा] १. पृथ्वी। २. जगह। स्थान।

वसूल—वि० [अ०] १. जो मिला या प्राप्त हुआ हो। २. (प्राप्य धन या पदार्थ) जो दूसरे से ले लिया गया हो। उगाहा हुआ। ३. जितना व्यय या परिश्रम हुआ हो उसका मिला हुआ प्रतिफल।

पुं० उगाही या प्राप्त की हुई रकम। प्राप्ति।

वसूली—स्त्री० [अ० वसूल] १. वसूल करने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव। प्राप्य धन की प्राप्ति। उगाही। २. लोगों से धन आदि लेकर इकट्ठा करने की क्रिया या भाव।

वि० जो वसूल किये जाने को हो।

वस्त—पुं० [सं०] बकरा।

पुं० [अ०] बीच का भाग। मध्य।

† स्त्री=वस्तु।

वस्तक—पुं० [सं० वस्त+कन] बनाया हुआ नमक। (प्राकृतिक नमक से भिन्न)

वस्तव्य—वि० [सं०√वस् (निवास करना)+तव्य] (स्थान) जिसमें निवास किया जा सके। रहने या बसने के योग्य।

वस्ताद†—पुं०=उस्ताद।

वस्ति—स्त्री० [सं०] १. नाभि के नीचे का भाग। पेड़ू। २. मूत्राशय। (यूरिनरी ब्लैडर) ३. पिचकारी। ४. दे० 'वस्ति कर्म'।

वस्तिकर्म—पुं० [सं०] १. लिंगेंद्रिय, गुदेन्द्रिय आदि मार्गों में पिचकारी देने की क्रिया। (वैद्यक) २. आज-कल आँतें साफ करने के लिए या रेचन के उद्देश्य से गुदा-मार्ग से जल ऊपर चढ़ाने की क्रिया। (एनिमा)

वस्तिकुंडलिका—स्त्री० [सं०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसमें मूत्राशय में गाँठ-सी पड़ जाती है, उसमें पीड़ा तथा जलन होती है और पेशाब कठिनता से उतरती है।

वस्तिवात—पुं० [सं०] एक प्रकार का मूत्र रोग जिसमें वायु बिगड़कर वस्ति (पेड़ू) में मूत्र को रोक देती है।

वस्तिशोधन—पुं० [सं०] १. मदन वृक्ष। मैनफल का पेड़। २. मैनफल।

वस्ती—वि०[सं०] वस्त अर्थात् मध्य भाग में होनेवाला। बीच का। †स्त्री०१.=बस्ती। २.=वस्ति।

वस्तु—स्त्री० [सं०√वस्+तुन्] १. वह जो कुछ अस्तित्व में हो। वह जिसकी वास्तविकता हो। गोचर पदार्थ। २. श्रम द्वारा निर्मित चीज। ३. वह जो किसी वाद-विवाद, आलोचना या विचार का विषय हो। विषय। ४. कथावस्तु।

वस्तुक—पुं०[सं० वस्तु+कन्]१. सार भाग। २. बथुआ का साग।

वस्तु-जगत्—पुं०[सं० कर्म० स०] यह दृश्यमान जगत्। संसार।

वस्तु-ज्ञान—पुं०[सं०]१. किसी वस्तु की पहचान। २. मूल तथ्य या वास्तविकता का ज्ञान। तत्त्वज्ञान।

वस्तुतः—अव्य०[सं० वस्तु+तसिल्] वास्तविक रूप या स्थिति में। वास्तव में। (डी फ़ैक्टो)

वस्तु-निर्देश—पुं०[सं० ब० स०] मंगलाचरण का एक भेद जिसमें कथा का कुछ आभास दे दिया जाता है। (नाटक)

वस्तु-निष्ठा—वि०[सं०]१. अध्यात्म और दर्शन में, जो बाह्य तत्त्वों या भौतिक पदार्थों से संबंध रखता हो, स्वयं कर्ता के आत्म या चेतना से जिसका कोई संबंध न हो। 'आत्म-निष्ठ' का विपर्याय। २. कला और साहित्य में जो बाह्य तत्त्वों या भौतिक पदार्थों पर ही आश्रित हो, स्वयं कर्ता या कृती के आत्म या चेतना से जिसका कोई संबंध न हो। 'आत्म-निष्ठ' का विपर्याय। (आब्जेक्टिव; उक्त दोनों अर्थों के लिए)

वस्तु-बल—पुं०[सं० ष० त०] वस्तु का गुण।

वस्तु-रूपक—पुं० दे० 'आलेख रूपक'।

वस्तु-वक्रता—स्त्री०[सं०] साहित्यिक रचनाओं में होनेवाला एक प्रकार का सौन्दर्य-सूचक तत्त्व जो कवि की शब्दावली से भिन्न उन वस्तुओं या विषयों पर आश्रित होता है जिन्हें वह अपने वर्णन के लिए चुनता है। वाक्य-वक्रता (देखें) की तरह यह भी कवि की श्रेष्ठतम प्रतिभा से उद्भूत होता और काव्य के समस्त सौंदर्य का उद्गम होता है। वर्ण्य वस्तु या विषय की रमणीयता, सुकुमारता और कौशलपूर्ण प्रदर्शन ही इसके प्रमुख लक्षण हैं।

वस्तुवाद—पुं०[सं०] [वि० वस्तुवादी] यह दार्शनिक सिद्धान्त कि जगत् जिस रूप में हमें दिखाई देता है, उसी रूप में वह वास्तविक और सत्य है। **विशेष**—न्याय और वैशेषिक का यही सिद्धांत है जो अद्वैतवाद के सिद्धान्त के बिलकुल विपरीत है।

वस्तु-स्थिति—स्त्री०[सं० ष० त०] किसी चीज या वस्तु की वास्तविक स्थिति।

वस्तुत्प्रेक्षा—स्त्री०[सं०] साहित्य में उत्प्रेक्षा अलंकार का एक भेद जिसमें किसी उपमेय में उपमान के कार्य, गुण आदि की कल्पना की जाती है।

वस्तूपमा—स्त्री०[सं० ब० स०] उपमा अलंकार का एक भेद।

वस्त्य—पुं०[सं० वस्तु+यत्] बसने की जगह। बसती।

वस्त्र—पुं०[सं०√वस् (आच्छादन करना)+त्रण्] ऊन, रूई, रेशम आदि के तागों से बुना या जमाकर तैयार किया हुआ वह प्रसिद्ध पदार्थ जो पहनने, ओढ़ने आदि के काम आता है। कपड़ा।

वस्त्रग्रंथि—स्त्री० [सं० ष० त०] नीवी। नाड़ा। इजारबंद।

वस्त्रप—पुं०[सं०] आधुनिक गिरनार पर्वत और तीर्थ का पुराना नाम।

वस्त्र-पट—पुं० [सं०] कपड़ों पर हाथ से अंकित किया हुआ चित्र। (प्राचीन)

वस्त्र-पुत्रिका—स्त्री०[सं० मध्य० स०] गुड़िया।

वस्त्र-पूत—वि०[सं०] कपड़े से छाना हुआ।

वस्त्र-बंध—पुं०[सं०] नीवी। इजारबंद।

वस्त्र-भवन—पुं०[सं० ष० त०] खेमा। तंबू।

वस्त्र-रंजन—पुं०[सं०] कुसुंभ का पेड़।

वस्त्र-रंजनी—स्त्री० [सं०] मजीठ।

वस्त्रागार—पुं० [सं० वस्त्र+आगार]१. वह स्थान जहाँ सब प्रकार के या बहुत से कपड़े हों। २. घर में वह कमरा जिसमें पहनने के कपड़े रखे जाते हों तथा उतारे और पहने जाते हों। (ड्रेसिंग रूम)

वस्न—पुं०[सं०√वस् (आच्छादन करना)+न]१. वेतन। २. दाम। मूल्य। ३. कपड़ा। ४. द्रव्य। वस्तु। ५. धौ का पेड़। ६. छाल। त्वक्।

वस्नक—पुं०[सं० वस्न+कन्] करधनी।

वस्फ़—पुं०[अ०]१. प्रशंसा। स्तुति। २. विशेषता-सूचक गुण। सिफत।

वस्ल—पुं०[अ०]१. एक दूसरे का आपस में मिलना। मिलन। २. स्त्री और पुरुष या प्रेमी और प्रेमिका का मिलाप। संयोग। ३. मनुष्य की आत्मा का परमात्मा में लीन होना। मृत्यु। ४. प्रेमी और प्रेमिका का संभोग।

वस्ली—स्त्री०=दे० 'वसली'।

वस्वौकसारा—स्त्री० [सं० स० त०] १. इंद्रपुरी। २. कुबेर की अलकापुरी। ३. गंगा।

वहंत—पुं०[सं०√वह् (ढोना)+झ—अन्त] १. वायु। २. बालक।

वह—सर्व०[सं०√वह् (ढोना)+अच्] १. एक सर्वनाम जो किसी स्थिति या संदर्भ से अनुमानित किया जाता अथवा ज्ञात या सूचित होता हो। २. पति के लिए प्रयुक्त सर्वनाम। जैसे—वह मुझसे कुछ भी नहीं कह गये थे।

पुं०[सं०]१. बैल का कंधा। २. घोड़ा। ३. वायु। हवा। ४. मार्ग। रास्ता। ५. नद।

वि० वहन करने अर्थात् उठा या ढोकर ले जानेवाला (यौ० के अन्त में)। जैसे—भारवह।

वहत—पुं०[सं०]१. बैल। २. पथिक। यात्री।

वहति—पुं० [सं०]१. बैल। २. वायु। ३. परामर्शदाता।

वहती—स्त्री०[सं०] नदी।

वहदत—स्त्री०[अ०]१. 'वहिद' अर्थात् एक होने की अवस्था, गुण या भाव। २. अद्वैतवाद। ३. एकान्तता।

वहदानी—वि० [अ०] [भाव० वहदानियत] १. 'वहिद' अर्थात् एक से संबंध रखनेवाला। २. अद्वैतवाद-सम्बन्धी।

वहन—पुं०[सं०√ वह् (ढोना)+ल्युट्—अन]१. कहीं से ले जाने के लिए कोई चीज उठाना या लादना। भार ढोना। २. लाक्षणिक अर्थ में, कर्तव्य आदि के रूप में लिए हुए भार का निर्वाह करना। ३. एक स्थान से दूसरे स्थान पर चीजें ले जाने का साधन। जैसे—गाड़ी, नाव आदि। ४. वास्तुकला में खंभे के नौ भागों में से सबसे नीचेवाला भाग।

वहनक—पुं०[सं०] गाड़ी, ठेला, नाव आदि जिसपर भार आदि लादकर कहीं ले जाया जाता है। संवाहक।

वहन-पत्र—पुं०[सं० कर्म०स०] वह पत्र जिसमें वहन की जानेवाली अर्थात् ढोकर कहीं ले जाई जानेवाली चीजों का विवरण या सूची रहती है। (बिल आफ़ लेंडिंग)

वहना—स०[सं० वहन] १. वहन करना। ढोना। २. कर्तव्य आदि ऊपर लेना अथवा उसका निर्वाह करना।

वहनीय—वि० [सं०√वह् (ढोना)+अनीयर्] १. वहन करने के योग्य। २. जो वहन किया जाने को हो।

वहम—पुं०[अ०] मन में प्रायः बनी रहनेवाली कोई ऐसी असंगत या निराधार धारणा जिसके फल-स्वरूप अपने किसी अनिष्ट या हानि की संभावना जान पड़ती हो। झूठा शक। मिथ्या संदेह।

वहमी—वि०[अ०] १. जिसके मन में प्रायः कोई वहम बना रहता हो। २. शक्की।

वहला—स्त्री०[सं० वहल+टाप्] १. शतपुष्पा। २. बड़ी इलायची। ३. दीपक राग की एक रागिनी।

वहशत—स्त्री०[अ०] १. वहशी अर्थात् जंगली होने की अवस्था या भाव। जंगलीपन। बर्बरता। २. उजड्डपन। ३. पागलपन। बावलापन। ४. अधीरता और विकलता के कारण होनेवाला मानसिक विक्षेप। पागलों का-सा आचार-व्यवहार।

मुहा०—**वहशत सवार होना**=किसी प्रबल मनोवेग के कारण सहसा पागलपन का सा काम करने को उतारू होना।

५. किसी स्थान के उजाड़ या सुनसान होने के कारण छाई रहनेवाली उदासी। खिन्न करनेवाला सन्नाटा। ६. आकार-प्रकार, रूप-रंग आदि का डरावनापन।

क्रि० प्र०—छाना।—बरसना।

वहशियाना—वि०[अ०] वहशियों की तरह का।

वहशी—वि०[अ०] १. जंगल में रहनेवाला। जंगली। वन्य। २. (पशु) जो जंगल में घूमता-फिरता और रहता हो। 'पालतू' का विपर्याय। ३. (व्यक्ति) जो परम असभ्य तथा असंस्कृत हो। बर्बर।

वहाँ—अव्य० [हिं० वह] १. उस स्थान में। उस जगह। २. उस अवसर, बिंदु या स्थिति पर। जैसे—उसे इतना बढ़कर रुक जाना चाहिए था, पर वह वहाँ रुका नहीं, बल्कि आगे बढ़ता चला गया।

वहा—स्त्री०[सं० वह+टाप्] १. नदी। २. पानी की धारा या बहाव।

वहाबी—पुं०[अ०] १. मौलवी अब्दुलवहाब का चलाया हुआ एक मुस्लिम सम्प्रदाय जो कुरान को मानता है पर हदीसों को नहीं मानता। २. उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।

वहा-मापक—पुं०[सं०] दे० 'धारावेगमापी'।

वहि—अव्य० [सं०√वह+इसुन्,] जो अंदर न हो। बाहर। (इसके यौ० के लिए दे० 'बहिः' के यौ०)

वहित—भू० कृ०[सं० अव√हा (त्याग करना)+क्त, अलोप] १. वहन किया हुआ या ढोया हुआ। ३. ज्ञात। ४. विख्यात। ५. प्राप्त।

वहित्र—पुं०[सं०] वहन करने का उपकरण। जैसे—गाड़ी, जहाज, नाव, रथ आदि।

वहिनी—स्त्री० [सं० वह+इनि+ङीप्] नौका। नाव।

वहिरंग—वि०, पुं०=बहिरंग।

वहिर्गत—वि०=बहिर्गत।

वहिर्द्वार—पुं०=बहिर्द्वार।

वहिर्भूत—वि०=बहिर्भूत (बहिर्गत)।

वहिष्करण—पुं०=बहिष्करण।

वहिष्कार—पुं०=बहिष्कार।

वहिष्ठ—वि० [सं० वह+इष्ठन्] अधिक भार वहन करनेवाला।

वहीं—अव्य०[हिं० वहाँ+हीं] १. उसी स्थान पर। उसी जगह। २. उसी बिंदु, समय या स्थिति पर।

वही—सर्व० [हिं० वह+ही] उस वस्तु या तृतीय व्यक्ति की ओर निश्चित रूप से संकेत करनेवाला सर्वनाम, जिसके संबंध में कुछ कहा जा चुका हो। निश्चित रूप से पूर्वोक्त। जैसे—यह वही किताब है जो तुम ले गये थे।

स्त्री०[अ०] ईश्वर की कही हुई बात। देव-वाणी।

वहोरु—पुं०[सं०] १. रक्तवाहिनी नाड़ियों का एक वर्ग। शिरा। २. स्नायु। ३. मांसपेशी। पट्ठा।

वहूदक—पुं०[सं० ब० स०] चार प्रकार के संन्यासियों में से एक।

वह्नि—पुं०[सं०√वह (धारण करना)+नि] १. अग्नि। २. तीन प्रकार की अग्नियों के आधार पर तीन की संख्या का सूचक शब्द। ३. चित्रक। चीता। ४. भिलावाँ। ५. मित्रविंदा के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

वह्निकर—पुं०[सं० वह्नि√कृ+अच्] १. विद्युत्। बिजली। २. जठराग्नि। ३. चकमक पत्थर।

वह्निकुमार—पुं० [सं० ष० त०] एक प्रकार के देवगण।

वह्निदैवत—वि० [सं० ब० स०] अग्निपूजक।

वह्निनी—स्त्री० [सं०] जटामासी।

वह्निबीज—पुं० [सं०] १. स्वर्ण। सोना। २. बिजौरा नींबू।

वह्निभूतिक—पुं० [सं० ब० स०] चाँदी।

वह्निभोग—पुं० [सं० ष० त०] घी।

वह्निमंथ—पुं० [स०]=अग्निमंथ वृक्ष।

वह्निमित्र—पुं० [सं०] वायु। हवा।

वह्निमुख—पुं० [सं०] देवता।

वह्निरेता (तस्)—पुं०[सं०] शिव।

वह्निलोह—पुं० [सं०] ताम्र। ताँबा।

वह्निलोहक—पुं०[सं०] काँसा।

वह्निशिखा—स्त्री०[सं० ब० स०] १. कलिहारी या कलियारी नाम का विष। २. धौ। ३. प्रियवंद। ४. गजपीपल।

वह्निश्वरी—स्त्री०[सं० ष० त०] लक्ष्मी।

वह्य—पुं० [सं०√वह् (ढोना)+यक्] १. वाहन। यान। २. गाड़ी। शकट।

वि० वहनीय।

वह्यक—वि०[सं० वह्य+कन्]=वाहक।

वाँ—प्रत्य०[स्त्री० वीं] एक प्रत्यय जो १,२, ३, ४, और ६ को छोड़कर शेष संख्या वाचक शब्दों के अन्त में लगकर उनके क्रमिक स्थान का सूचक होता है। जैसे—पाँचवाँ, सातवाँ, आठवाँ आदि।

†अव्य०=वहाँ।

वांक—पुं०[सं० वक+अण्] समुद्र।

वाँकड़†—वि०=बाँका।

वांछक—वि०[सं०√ वाञ्छ् (इच्छा करना)+ण्वुल्-अक] इच्छुक।

वांछन—पुं०[सं०√ वान्छ्+ल्युट्—अन][भू० कृ० वांछित] वांछा या इच्छा करना।

वांछनीय—वि०[सं० √वान्छ्+अनीयर्] जिसकी वांछा या कामना की गई हो या की जाने को हो।

वांछा—स्त्री० [सं० √वान्छ्+अप्+टाप्] [भू० कृ० वांछित, वि० वांछनीय] इच्छा । अभिलाषा। चाह।

वांछित—भू० कृ० [सं० √ वान्छ्+क्त] जिसकी वांछा की गई हो। चाहा हुआ। इच्छित।

वांछितव्य—वि०[सं०] वांछनीय।

वांछिनी—स्त्री०[सं० वान्छा+इनि+ङीप्] पुंश्चली स्त्री।

वांछी (छिन्)—वि० [सं० वान्छा+इनि] वांछा करने या चाहनेवाला।

वांत—पुं०[सं०√ वम् (वमन करना)+क्त] उलटी। कै। वमन।

वांताशी—वि० [सं० वांत √ अश् (खाना)+णिनि,] वमन की हुई चीज खानेवाला।

पुं०१. कुत्ता। २. वह ब्राह्मण जो केवल पेट के लिए अपने कुल की मर्यादा नष्ट करे।

वांति—स्त्री०[सं०√ वम्+क्तिन्] कै। वमन।

वांश—वि० [सं० वंश+अण्] १. वंश-संबंधी। वंश का। २. बाँस संबंधी।

वांशिक—पुं० [सं० वंश+ठक्—इक]१. बाँस काटनेवाला। २. वंशी अर्थात् बाँसुरी बनानेवाला।

वांशी—स्त्री०[सं० वांश+ङीष्] वंसलोचन।

वा—अव्य०[सं०√वा+क्विप्] विकल्प या संदेहवाचक शब्द। अथवा। या। जैसे—मनुष्य वा पशु।

सर्व० [हिं० वह]१. वह। २. उस। (ब्रज)

वाइ†—सर्व०=वही।

वाइज़—पुं०[अ०]१. वाज अर्थात् नसीहत करनेवाला। २. धर्म या नीति का उपदेश करनेवाला।

वाइदा—पुं०=वादा।

वाइ†—स्त्री०=वायु।

वाइसराय—पुं०[अं०] अंगरेजी शासन में भारत का वह सर्वप्रधान शासक अधिकारी जो सम्राट् के प्रतिनिधि स्वरूप यहाँ रहता था। बड़ा लाट।

वाउचर—पुं०[सं०] आधार पत्र। (देखें)

वाउला—वि०=बावला।

वाउल—वि०=वातुल।

वाक्—पुं० [सं०√वच्(बोलना)+घञ्]१. वाणी। वाक्य। २. शब्द। ३. कथन। ४. वाद। ५. बोलने की इन्द्रिय। ६. सरस्वती।

वाक—पुं०[सं० वक+अण्]१. वकों अर्थात् बगलों का समूह। २. वेदों का एक विशिष्ट अंश या भाग। ३. खेत की वह कूत जो बिना खेत नापे की जाती है। ४. वाक्य।

वि० वक या बगले से सम्बन्ध रखनेवाला।

वाक़ई—अव्य०[अ०] यथार्थ में। वास्तव में। वस्तुतः। जैसे—क्या आप वाकई वहाँ गये थे।

वाक़फ़ीयत—स्त्री०[अ०] जान-पहचान। परिचय।

वाक़या—पुं०[अ० वाक़िअ]१. घटना, विशेषतः दुर्घटना। २. वृत्तांत। हाल।

वाकयाती—वि०[अ०] विशिष्ट घटना से संबंध रखनेवाला। जो घटित हुआ हो।

वाका—वि०[अ० वाक़ुया]१. जो घटना के रूप में घटित हुआ हो। २. किसी स्थान पर स्थित।

पुं० वाकया (घटना)।

वाकारना—स०[?] ललकारना। (राज०)। उदा०—बिलकुलियौ वदन जेम वाकारयौ।—प्रिथीराज।

वाकिनी—स्त्री० [सं० वाक+इनि+ङीष्] तांत्रिकों की एक देवी।

वाक़िफ़—वि०[अ०]१. परिचित। २. जानकार।

वाकिफकार—वि०[अ० वाक़िफ़+फा० कार] [भाव० वाकिफदारी] किसी काम या बात की अच्छी ठीक या पूरी जानकारी रखनेवाला।

वाकुची—स्त्री० [सं० वा√कुच् (संकुचित करना) +क +ङीष्]= वकुची।

वाकुल—वि०[सं० वकुल+अण्] वकुल-संबंधी। वकुल का।

पुं० वकुल। मौलसिरी।

वाकोपवाक—पुं० [सं० द्व० स०] कथोपकथन। बात-चीत।

वाकोवाक—पुं०[सं० द्व० स०] कथोपकथन। बात-चीत।

वाकोवाक्य—पुं० [सं०] १. कथोपकथन। बात-चीत। २. तर्क-वितर्क।

वाक्कलह—पुं० [सं० तृ० त०] कहा-सुनी।

वाक् चपल—वि०[सं० तृ० त०]१. जो बातें करने में चतुर हो। २. बकवादी।

वाक् छल—पुं०[सं० तृ० त०]१. न्याय शास्त्र के अनुसार छल के तीन भेदों में से एक। ऐसी बात कहना जिसका और भी अर्थ निकल सके तथा इसी लिए दूसरा धोखे में रहे। २. टाल-मटोल की बात। बहाना। (क्विब्लिग)

वाक्पटु—वि०[सं०] बात-चीत करने में चतुर।

वाक्पति—पुं०[सं० ष० त०]१. बृहस्पति। २. विष्णु।

वाक्पारुष्य—पुं० [सं० तृ० त० या मध्य० स०] १. बात-चीत में होनेवाली कठोरता या परुषता। कड़वी बात कहना। २. धर्मशास्त्रानुसार किसी की जाति, कुल इत्यादि के दोषों को इस प्रकार ऊँचे स्वर से कहना कि उससे उद्वेग या क्रोध उत्पन्न हो।

वाक्य—पुं०[सं०√वच् (बोलना)+ण्यत्] शब्द या शब्दों का ऐसा समूह जो एक विचार पूरी तरह से व्यक्त करे। जुमला। (सेन्टेन्स)

वाक्यकर—वि० [सं०] झूठी या तरह-तरह की बातें बनानेवाला।

पुं० सन्देशवाहक।

वाक्य-ग्रह—पुं०[सं० ष० त०] मुँह का पक्षाघात से ग्रस्त होना।

वाक्य-भेद—पुं०[सं० स० त०] मीमांसा में एक ही वाक्य का एक ही काल में परस्पर विरुद्ध अर्थ करना।

वाक्य-वक्रता—स्त्री०[सं०] साहित्यिक रचनाओं का एक प्रकार का सौन्दर्य सूचक तत्त्व जो वाक्य रचना के अनोखे और उत्कृष्ट बांकपन के रूप में

रहता है। यह तत्त्व कवि की बहुत ही उच्च कोटि की प्रतिभा से उद्भूत होता है और सारे प्रसाद गुणों, सभी रसों की निष्पत्ति तथा अलंकारों का उद्गम या मूल स्रोत होता है। उदा०—(क) कहाँ लौं बरनौं सुन्दरताई खेलत कुँवर कनक आँगन में, नैन निरखि छवि छाई। कुलहि लसत सिर स्याम सुभग अति, बहुविधि सुरँग बनाई। मानों नव धन ऊपर राजत मघवा धनुष चढ़ाई। अति सुदेस मृदु चिकुर हरत मनमोहन मुख बगराई। मानो प्रकट कंज पर मंजुल अलि अवली घिरि आई।—सूर। (ख) रुधिर के है जगती के प्रात, चितनल के ये सायंकाल। शून्य निश्वासों के आकाश, आँसुओं के ये सिंधु विशाल। यहाँ सुख सरसों शोक सुमेरु, अरे जग है जग का कंकाल।—पंत।

वाक्य-विन्यास—पुं०[सं० ष० त०]वाक्यों, शब्दों या पदों को यथा-स्थान रखना। वाक्य बनाना।

वाक्य-विश्लेषण—पुं०[सं०] व्याकरण का वह अंग या क्रिया जिसमें किसी वाक्य में आये हुए शब्दों के प्रकार, भेद, रूप पारस्परिक संबंध आदि का विचार होता है।

वाक्याडंबर—पुं० [सं० ष० त०] केवल वाक्यों या बातों में दिखाया जानेवाला आडम्बर।

वाक् संयम—पुं०[सं० ष० त०] वाणी का संयम। व्यर्थ बातें न करना।

वाक्-सिद्धि—स्त्री० [सं० ष० त०] तंत्र-मंत्र योग आदि के द्वारा अथवा स्वाभाविक रूप से प्राप्त होनेवाली ऐसी सिद्धि जिसमें कही हुई बात पूरी होकर रहती है। जो बात मुँह से निकल जाय, वह ठीक सिद्ध होना।

वागना—अ०[?] आचरण या व्यवहार करना। (पश्चिमी हिन्दी और मराठी) उदा०— कलपत कोटि जनम जुग बागै दर्शन कतहुँ न पाये।—कबीर।

वागर—पुं०[सं० वाक्√ऋ (प्राप्त होना आदि)+अच्] १. वारक। २. शाण। सान। ३. निर्णय। ४. भेड़िया। ५. पंडित। ६. मुमुक्षु। ७. निडर। निर्भय।

† पुं०=बाँगडा (प्रदेश)

वागा—स्त्री०[सं० वल्गा] लगाम।

वागारु—वि०[सं० स० त०] विश्वासघाती। झूठी आशा देने या दिलानेवाला।

वागीश—पुं० [सं० ष० त०] १. बृहस्पति। २. ब्रह्मा। ३. वाग्मी। ४. कवि।

वि० अच्छा बोलनेवाला। वक्ता।

वागीशा—स्त्री०[सं० वागीश+टाप्] सरस्वती।

वागीश्वर—पुं०[सं० ष० त०] १. बृहस्पति। २. ब्रह्मा। ३. कवि। ४. मंजुकोष। ५. बोधि सत्त्व।

वि० बहुत अच्छा वक्ता।

वागीश्वरी—स्त्री० [सं० वागीश्वर+ङीष्] १. सरस्वती। २. नव-दुर्गाओं में से एक।

वागुजाश्त—स्त्री०[फा०] १. छोड़ देना। २. दे देना। ३. मुक्त करना।

वागुजी—स्त्री० [सं० वा√गुज् (संकोच करना)+क+ङीष्] बकुची।

वागुण—पुं०[सं० ष० त०] १. कमरख। २. बैंगन। भंटा।

वागुरा—स्त्री०[सं० वा√गृ+उरच्+टाप्] वह जाल जिसमें हिरन आदि फँसाये जाते हैं।

वागुरि—स्त्री०[सं० वागुरा] जाल। पाश। उदा०—वागुरि जणे विसतरण।—प्रिथिराज।

वागुरिक—पुं० [सं० जा वगुरा+ठक्—इक] हिरन फँसानेवाला शिकारी। मृग व्याध।

वागुलि—पुं० [सं० वा √गुड् (सुरक्षित रखना)+इनि, ड—ल] १. डिब्बा। २. पानदान।

वागुलिक—पुं०[सं० वागुलि+कन्] राजाओं का वह सेवक जिसका काम उनको पान खिलाना होता था: प्राचीनकाल में वह भृत्य जो राजाओं को पान लगाकर खिलाता था।

वागेसरी—स्त्री०[सं० वागीश्वरी]=वागीश्वरी।

वाग्गुलि—पुं०[सं०] वागुलिक।

वाग्जाल—पुं०[सं० वाक्+जाल] ऐसी घुमाव-फिराव की बातें जिनका मूल उद्देश्य दूसरों को धोखा देना या फँसाना होता है।

वाग्दंड—पुं०[सं० कर्म०स०] दंड के रूप में कही जानेवाली कठोर बातें। झिड़की। भर्त्सना।

वाग्दत्त—भू० कृ० [तृ० त०] [स्त्री० वाग्दत्ता] (पदार्थ) जिसे किसी को देने का वचन दिया गया हो।

वाग्दत्ता—स्त्री०[सं०] ऐसी कन्या जिसके विवाह की बात पक्की हो चुकी हो।

वाग्दल—पुं० [सं० ष० त०] ओष्ठाधर। ओंठ।

वाग्दान—पुं०[सं० ष० त०] १. किसी को कोई वचन देना। किसी से वादा करना। २. कन्या के विवाह की बात किसी से पक्की करना और उसे कन्यादान का वचन देना।

वाग्दुष्ट—वि०[सं० तृ० त०] १. कटुभाषी। २. जिसे किसी ने कोसा या शाप दिया हो।

वाग्देवता—पुं० [सं० ष० त०] (सं० में स्त्री०) वाणी। सरस्वती।

वाग्देवी—स्त्री०[सं० ष० त०] सरस्वती।

वाग्दोष—पुं०[सं० ष० त०] १. बोलने की त्रुटि। जैसे—वर्णों का ठीक उच्चारण न करना। २. व्याकरण संबंधी दोष या भूल। ३. निन्दा। ४. गाली।

वाग्बद्ध—वि०[सं० तृ० त०] १. मौन। २. वचन-बद्ध।

वाग्भट—पुं०[सं०] १. अष्टांग हृदय संहिता नामक वैद्यक ग्रन्थ के रचयिता जिनके पिता का नाम सिंहगुप्त था। २. पदार्थ चंद्रिका, भाव प्रकाश, रसरत्न, समुच्चय शास्त्र-दर्पण आदि के रचयिता। ३. एक जैन पंडित जिनके पिता का नाम नेमिकुमार था। इनके रचे हुए अलंकार तिलक, वाग्भटालंकार और छंदानुशासन प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं।

वाग्मिता—स्त्री०[सं०] वाग्मी होने की अवस्था, गुण या भाव।

वाग्मित्व—पुं०=वाग्मिता।

वाग्मी—पुं० [सं० वाच्+ग्मिनि] १. वह जो बहुत अच्छी तरह बोलना जानता हो। अच्छा वक्ता। २. पंडित। विद्वान्। ३. बृहस्पति का एक नाम।

वाग्य—वि० [सं० वाक्√या (प्राप्त होना)+क] १. बहुत कम बोलनेवाला। २. तौल या सोच-समझकर बोलनेवाला। ३. सत्य बोलनेवाला।

पुं० १. नम्रता। २. निर्वेद।

वाग्यमन—पुं०[सं०] वाणी का संयम। बोलने में संयम।

वाग्युद्ध—पुं०[सं० ष० त०] बात-चीत के रूप में होनेवाला झगड़ा या लड़ाई। बहुत अधिक कहा-सुनी।

वाग्रोध—पुं०[सं०] एक प्रकार का मनोवैज्ञानिक रोग जिसमें स्मृति नष्ट हो जाने के कारण आदमी कुछ पढ़ या सुनकर भी उसका अर्थ नहीं समझ सकता। (एफ़ेशिया)

वाग्लोप—पुं० [सं०] दे० 'वाग्रोध'।

वाग्वज्र—पुं०[सं० कर्म० स०] १. बहुत अधिक कठोर वचन। २. शाप।

वाग्वादिनी—स्त्री० [सं० वाक्√वद् (बोलना)+णिनि+ङीप्] सरस्वती।

वाग्विदग्ध—वि०[सं० तृ० त०] वाक्चतुर।

वाग्विलास—पुं०[सं० ष० त०] १. प्रसन्नतापूर्वक होनेवाला पारस्परिक सम्भाषण। आनन्दपूर्वक बातचीत करना। २. प्रेम और सुख से की जानेवाली बातें।

वाग्वीर—वि०[सं० तृ० त०] १. बहुत अधिक तथा बड़ी-बड़ी बातें करनेवाला। २. खाली बातें बनानेवाला।

वाग्वैदग्ध—पुं० [सं० ष० त०] १. वाग्विदग्ध होने की अवस्था या भाव। २. कथन, लेख, वक्तव्य आदि में होनेवाला चमत्कारपूर्ण तत्त्व।

वाङ्निष्ठा—स्त्री०[सं० ष० त०] अपनी कही हुई बात पर दृढ़ रहना।

वाङ्मती—स्त्री० [सं० वाक्+मतुप्+ङीष्] नेपाल की एक नदी जो आजकल 'वागमती' कहलाती है।

वाङ्मय—वि०[सं० वाक्+मयट्] १. वाक्यात्मक। २. वचन-संबंधी। ३. जो वाक् या वचन के रूप में हो। ४. वचन द्वारा किया हुआ। जैसे—वाङ्मय पाप। ५. जिसका पठन-पाठन हो सके।

पुं० गद्य-पद्यात्मक वाक्य आदि जो पठन-पाठन का विषय हो। लिपि-बद्ध विचारों का समस्त संग्रह या समूह। साहित्य।

विशेष—वाङ्मय और साहित्य का मुख्य अंतर जानने के लिए दे० 'साहित्य' का विशेष।

वाङ्मुख—पुं०[सं० ष० त०] ग्रंथ की भूमिका या प्रस्तावना।

वाङ्मूर्ति—स्त्री०[सं० ष० त०] सरस्वती।

वाच्—स्त्री० [सं०√वच् (बोलना)+क्विप्] वाचा। वाणी। वाक्य।

वाच—स्त्री०[सं०√वच् (बोलना)+णिच्+अच्] एक प्रकार की मछली।

स्त्री०[अं० वॉच] कलाई पर पहनने या जेब में रखने की छोटी घड़ी।

वाचक—वि० [सं०√वच्+ण्वुल्—अक] १. कहने या बोलनेवाला। २. बताने या बोध करानेवाला। जैसे—सम्बन्ध-वाचक ३. वाचन करने अर्थात् पढ़कर सुनानेवाला। जैसे—कथा-वाचक।

पुं०१. वह जिससे किसी वस्तु का अर्थ बोध हो। नाम। संज्ञा। संकेत। २. व्याकरण तथा भाषा-विज्ञान में तीन प्रकार के शब्दों में एक जो प्रसिद्ध या साक्षात्-अर्थ का बोधक होता है; अर्थात् अर्थ के साथ जिसका वाच्य-वाचकवाला सम्बन्ध होता है।

वाचक धर्म लुप्ता—स्त्री० [ब० स०,+टाप्] साहित्य में लुप्तोपमा अलंकार का एक प्रकार या भेद जिसमें वाचक और धर्म दोनों का कथन नहीं होता। उदा०—दोनों भैया मुख शशि हमें लौट आकर दिखाओ—प्रिय-प्रवास।

वाचक्नवी—स्त्री०[सं० वचक्नु+इञ्+ङीप्] गार्गी। वाचकूटी।

पुं० वचक्नु ऋषि की अपत्य या गोत्रज।

वाचन—पुं० [सं०√वच्+णिच्+ल्युट्-अन] १. लिखी हुई चीज पढ़ना या उच्चारण करना। पठन। बाँचना। जैसे—कथा-वाचन। २. कहना या कहकर बताना। ३. किसी मत, विचार, या विषय का प्रतिपादन। ४. विधायिका सभा में किसी विधेयक का पढ़ा जाना। (रीडिंग) जैसे—यह विधेयक का प्रथम वाचन था।

वाचनक—पुं०[सं० वाचन√कै+क] पहेली।

वाचना—स्त्री०=वाचन।

स०=बाँचना (पढ़ना)।

वाचनालय—पुं०[सं०] वह सार्वजनिक (या निजी) स्थान जहाँ बैठकर पठन या अध्ययन किया जाता हो। (रीडिंग रूम)

वाचनिक—वि० [सं० वचन+ठक्—इक] वचन के द्वारा अथवा कथन के रूप में होनेवाला।

वाचयिता (तृ)—वि०[सं०√वच्+णिच्+तृच्]=वाचक।

वाचस्पति—पुं०[सं० ष० त०] १. बृहस्पति। २. प्रजापति। ३. ब्रह्मा। ४. सोम। ५. बहुत बड़ा विद्वान्।

वाचा—स्त्री० [सं० वाच्+टाप्] १. वाणी। २. वचन, शब्द या वाक्य। ३. शपथ ४. सरस्वती।

अव्य० [सं०] वचन द्वारा। वचन से।

वाचापत्र—पुं०[सं०] प्रतिज्ञा-पत्र।

वाचाबंध—वि०=वाचाबद्ध।

पुं०=**वाचा-बंधन**।

वाचा-बंधन—पुं०[सं०] प्रतिज्ञा करके उसमें बँधना।

वाचा-बद्ध—वि०[सं०] किसी को वचन देने के कारण बँधा हुआ। प्रतिज्ञा-बद्ध।

वाचाल—वि०[सं० वाच्+आलच्] [भाव० वाचालता] १. बोलने में तेज। वाक्पटु। २. बकवादी। व्यर्थ बोलनेवाला। ३. उद्दंडतापूर्वक या बहुत बढ़-बढ़कर बातें करनेवाला।

वाचालता—स्त्री०[सं० वाचाल+तल्+टाप्] वाचाल होने की अवस्था या भाव।

वाचिक—वि०[सं०√वच्+ठक्-इक] १. वाचा या वाणी-संबंधी। २. वाचा या वाणी से निकला हुआ। मुँह से कहा हुआ। ३. संकेत के रूप में कहा या बतलाया हुआ।

पुं० १. सन्देश आदि के रूप में कहलाई जानेवाली बात या भेजा जाने-वाला पत्र। २. अभिनय का एक प्रकार या भेद जिसमें केवल वाक्य-विन्यास द्वारा अभिनय का कार्य सम्पन्न होता है।

वाची—वि० [सं० वाच्+इनि, वाचिन्] १. वाचक। वाचा-सम्बन्धी। २. वाचा के रूप में होनेवाला। ३. परिचय या बोध करानेवाला। जैसे—पक्षी-वाची शब्द। ४. वाचन करनेवाला।

वाच्य—वि० [सं०√वच्+ण्यत्] १. जो वाचा के रूप में आता हो या आ सकता हो। जो कहा जा सके या कहे जाने के योग्य हो। २. शब्द की अभिधा शक्ति के द्वारा जिसका बोध होता हो या हो सकता हो। अभिधेय। ३. जिसे लोग बुरा कहते हों। कुत्सित। निन्दनीय। बुरा।

पुं० वाचक शब्द का अर्थ। वाच्यार्थ।

वाच्यता—स्त्री० [सं० वाच्य+तल्+टाप्] १. 'वाच्य' होने की अवस्था या भाव। २. निंदा। ३. बदनामी।

वाच्यत्व—पुं०[सं० वाच्य+त्व] =वाच्यता।

वाच्यार्थ—पुं०[सं०] वाचक का अर्थ। अभिधेयार्थ।

वाच्यावाच्य—पुं०[सं०] १. कही जाने के योग्य बात और न कही जाने के योग्य बात। २. किसी अवसर पर अथवा किसी व्यक्ति से कहने और न कहने योग्य बातें।

वाज—पुं०[सं०√वज्+घञ्] १. घृत। घी। २. यज्ञ। ३. अन्न। ४. जल। ५. संग्राम। ६. वेल। ७. वाण के पीछे का पंजा। ८. पलक। ९. वेग। १०. मुनि। ११. आवाज़। शब्द।

वाज—पुं० [अ० वअज़] १. उपदेश। २. विशेषतः धार्मिक उपदेश।

वाजपति—पुं०[सं०] अग्नि।

वाजपेई†—पुं०=वाजपेयी।

वाजपेय—पुं०[सं०] सात श्रौत यज्ञों में से पाँचवा यज्ञ जो बहुत श्रेष्ठ माना जाता है।

वाजपेयक—वि०[सं० वाजपेय+कन्] वाजपेय-सम्वन्धी।

वाजपेयी—पुं० [सं० वाजपेय+इनि,] १. वह पुरुष जिसने वाजपेय यज्ञ किया हो। २. कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के एक प्रतिष्ठित वर्ग की उपाधि। ३. उक्त के आधार पर बहुत बड़ा कुलीन या धर्म-निष्ठ व्यक्ति। उदा०—कौन धौं सोमजाजी अजामिल, कौन गजराज धौं बाजपेई। तुलसी।

वाजप्य—पुं० [सं०] एकगोत्रकार ऋषि। इनके गोत्र के लोग वाजप्यायन कहलाते हैं।

वाजप्यायन—पुं०[सं०] वाजप्य ऋषि के गोत्र का व्यक्ति।

वाजबी—वि०=वाजिबी।

वाजभोजी (जिन्)—पुं०[वाज√भुज् (खाना)+णिनि] वाजपेय यज्ञ।

वाजश्रव—पुं० [सं०] एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि।

वाजश्रवा (वस्)—पुं०[सं०] १. अग्नि। २. एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि। ३. एक ऋषि जिनके पुत्र का नाम 'नचिकेता' था और जो अपने पिता के क्रुद्ध होने पर यमराज के पास ज्ञान प्राप्त करने गये थे।

वाजसनेय—पुं०[सं० वाजसनि+ढक्-एय] १. यजुर्वेद की एक शाखा जिसे याज्ञवल्क्य ने अपने गुरु वैशंपायन पर क्रुद्ध होकर उनकी पढ़ाई हुई विद्या उगलने पर सूर्य के तप से प्राप्त की थी। २. याज्ञवल्क्य ऋषि।

वाजसनेयक—वि०[सं० वाजसनेय+कन्] १. याज्ञवल्क्य से संबद्ध। २. वाजसनेय।

वाजा—वि०[अ० वाज़ऽ] ज्ञात। विदित। जैसे—आपको यह बात वाजा रहे।

वाजित—वि०[सं० वाज़+इतच्] १. पंखवाला। २. (तीर या बाण) जिसमें पंख लगे हों।

वाजिन—पुं०[सं० वाज+इनि-अ ए्] १. शक्ति। २. होड़। ३. संघर्ष।

वाजिनी—स्त्री०[सं० वाजिन्,+ङी ए्] १. घोड़ी। २. असगंध।

वाजिब—वि०[अ०] १. उचित। २. संगत।

वाजिबी—वि०=वाजिब।

वाजिभ—पुं०[सं०] अश्विनी नक्षत्र।

वाजिमेध—पुं०[सं० ष० त०] अश्वमेध।

वाजिराज—पुं० [सं० ष० त०] १. विष्णु। २. उच्चैःश्रवा।

वाजिशिरा—पुं०[सं० वाजिशिरस्+ब० स०] विष्णु का एक अवतार।

वाजी (जिन्)—पुं०[सं० वाज+इनि] १. घोड़ा। २. वासक। अड़सा। ३. हवि। ४. फ़टे हुए दूध का पानी।

वाजीकर—वि० [सं० वाजी√कृ (करना)+अच्] (औषध) जिससे स्त्री-संभोग की शक्ति बढ़ती हो।

वाजीकरण—पुं० [सं० वाज+च्वि√कृ (करना)+ल्युट्-अन] एक प्रक्रिया जिससे पुरुष में घोड़े की शक्ति आ जाती है।

वाट—पुं०[सं०√वट् (घेरना)+घञ्] १. मार्ग। रास्ता। २. इमारत। वास्तु। ३. मंडप।

वाटधान—पुं०[सं० ब० स०] १. कश्मीर के नैर्ऋतकोण का एक प्राचीन जनपद। २. एक संकर जाति।

वाटली—स्त्री०[सं० वर्तुली] १. छोटी कमोरी। २. अँगूठी।

वाटिका—स्त्री० [सं०√वट् (घेरना)+ण्वुल्—अक,+टाप्, इत्व] १. १. वास्तु। इमारत। २. बगीचा। ३. हिंगुपत्री।

वाटी—स्त्री० [सं०√वट् (घेरना)+घञ्+ङीष्] इमारत। वास्तु।

वाट्टक—पुं०[सं०] भुना हुआ जौ। बहुरी।

वाट्य—पुं०[सं० वाट+यत्] १. बरियारा (पौधा)। २. भुना हुआ जौ।

वाडव—पुं०[सं० वाड्√वा (प्राप्त होना)+क] वड़वाग्नि। बड़वानल।

वाडवाग्नि—स्त्री० [सं०]=बड़वानल।

वाण—पुं० [सं०] वाण। (दे०)

वाणिज—पुं० [सं० वणिज+अण्] १. व्यापारी। २. वड़वाग्नि।

वाणिज्य—पुं०[सं० वणिज+ष्यञ्] १. बहुत बड़े पैमाने पर होनेवाला व्यापार। (कामर्स)

वाणिज्य-चिह्न—पुं०[सं० ष० त०] वह विशिष्ट चिह्न जो कारखानेदार या व्यापारी अपने बनाये और बेचे जानेवाले सब तरह के माल या सामान पर इसलिए अंकित करते हैं कि औरों से उनका पार्थक्य और विशिष्टता सूचित हो। (मर्केन्टाइल मार्क)

वाणिज्य दूत—पुं०[ष० त०] किसी देश का वह राजकीय दूत जो किसी दूसरे देश में रहकर इस बात का ध्यान रखता है कि हमारे पारस्परिक वाणिज्य में कोई व्याघात न होने पावे। (कॉन्सल)

वाणिज्यवाद—पुं०[सं० ष० त०] [वि० वाणिज्यवादी] पाश्चात्य देशों में मध्य युग में प्रचलित वह मत या सिद्धान्त जिसके अनुसार यह माना जाता था कि साधारण जन-समाज की तुलना में वणिकों या व्यापारियों के हितों का सबसे अधिक ध्यान रखा जाना चाहिए जिसमें आयात कम और निर्यात अधिक हो। (मर्केन्टाइलिज्म)

वाणिता—स्त्री०[सं० वाण+इतच्+टाप्] एक प्रकार का छन्द या वृत्त।

वाणिनी—स्त्री०[सं०√वण् (बोलना)+णिनि+ङीप्] १. नर्तकी। २. मत्त स्त्री। ३. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में १६ वर्ण अर्थात् क्रमानुसार नगण, जगण, भगण, फिर जगण और अन्त में रगण और गुरु होता है।

वाणी—स्त्री० [सं०√वण्+णिच्+इन्+ङीष्] १. सरस्वती। २. मुँह से निकलनेवाली सार्थक बात। वचन।

मुहा०—वाणी फुरना—मुँह से बात निकलना। (व्यंग्य)

३. बोलने या बात-चीत करने की शक्ति। ४. जिह्वा। जीभ। ५. स्वर। ६. एक छंद।

वातंड—पुं०[सं० वतंड+अण्] एक गोत्रकार ऋषि, जिनके गोत्रवाले वातंड्य कहलाते हैं।

वातंड्य--पुं०[सं० वातंड+ष्यञ्] [स्त्री० वातंड्यायिनी] वातंड ऋषि के गोत्र में उत्पन्न व्यक्ति।

वात—पुं०[सं०√वा (जाना आदि)+क्त] १. वायु। हवा। २. वैद्यक के अनुसार शरीर में होनेवाला वायु का प्रकोप।

वातकंटक—पुं०[सं० ब० स०] एक प्रकार का वात रोग जिसमें पैरों की गाँठों या जोड़ों में बहुत पीड़ा होती है।

वातकी (किन्)--वि० [सं० वात्+इनि, कुकच्] वात रोग से ग्रस्त।

वातकुंभ—पुं०]ष० त०] नख-क्षत।

वातकेतु—पुं०[सं० ष० त०] धूल। गर्द।

वातकेलि—स्त्री०[सं० ष० त०] १. सुन्दर आलाप। २. स्त्री के उपपति का दंत-क्षत।

वातगंड—पुं० [सं० तृ० त०] वात के प्रकोप के कारण होनेवाला एक तरह का गलगंड रोग।

वात गुल्म—पुं०[सं० तृ० त०] वात के प्रकोप से होनेवाला गुल्म रोग।

वातघ्नी—स्त्री० [सं० वात√हन् (मारना)+टक्+ङीप्] १. शालपर्णी। २. अश्वगंधा।

वात-चक्र—पुं०[सं० ब० स०] १. ज्योतिष में एक योग। २. [ष० त०] बवंडर। चक्रवात।

वातज—वि० [सं० वात√जन् (उत्पन्न करना)+ड] वात या वायु के प्रकोप से उत्पन्न होनेवाला। जैसे—वातज रोग।

वात-तूल—पुं०[सं० तृ० त०] बहुत ही महीन तागों के रूप में हवा में इधर-उधर उड़ती हुई दिखाई देनेवाली चीज।

वातध्वज—पुं०[सं० ब० स०] मेघ। बादल।

वात-नीड़ा—स्त्री०[सं०] एक प्रकार का रोग जिसमें वायु के प्रकोप से दाँत की जड़ में नासूर हो जाता है। (पायोरिया)

वातपट—पुं०[सं० ष० त०] पताका। ध्वजा।

वात-पुत्र—पुं०[सं० ष० त०] १. हनुमान्। २. भीम। ३. नेवला।

वात-प्रकृति—वि०[सं० ष० त०] १. (व्यक्ति) जिसकी प्रकृति में वात की प्रधानता हो। २. (पदार्थ) जो खाने पर शरीर में वात का प्रकोप बढ़ानेवाला हो।

वात-प्रकोप—पुं०[सं० ष० त०] शरीर में वात या वायु का इस प्रकार बढ़ना या बिगड़ना कि कोई रोग उत्पन्न होने लगे।

वात-मृग—पुं० [सं० मध्य० स०] वायु की विपरीत दिशा में दौड़नेवाला एक प्रकार का मृग।

वातरंग—पुं०[सं० ब० स०] पीपल।

वातर—वि०[सं० वात√रा (लेना)+क] १. वात-सम्बन्धी। २. अन्धड़ या तूफान से सम्बन्ध रखनेवाला। ३. हवा की तरह तेज।

वात-रक्त--पुं०[सं० ब० स०] रक्त में रहनेवाला वात के प्रकोप से उत्पन्न होनेवाला एक रोग जिसमें पैरों के तलवे से घुटने तक छोटी-छोटी फुंसियाँ हो जाती हैं, जठराग्नि मंद पड़ जाती है, और शरीर दुर्बला होता जाता है।

वातरथ—पुं०[सं० ब० स०] मेघ। बादल।

वातरायण—पुं० [सं० वात√रै (शब्द करना)+ल्युट्—अन] १. निष्प्रयोजन पुरुष। निकम्मा आदमी। २. बौखलाया हुआ आदमी। ३. लोटा। ४. कुट नामक ओषधि।

वातल--पुं०[सं० वात√ला (लेना)+क] चना।

वि० वात का प्रकोप उत्पन्न करनेवाला।

वातव—वि० [सं०] १. वात से संबंध रखनेवाला। वात का। २. वात के कारण उत्पन्न होनेवाला। (रोग या विकार) जैसे—वातव लासक।

वातवलासक—पुं० [सं० ब० स०] एक प्रकार का घातक वात-रोग जिसमें रोगी को ज्वर के साथ कलेजे की धड़कन, अंगों की सूजन और नेत्र-कष्ट होता है। (बेरी-बेरी)

वातव्याधि---स्त्री०[सं० तृ० त०] १. वात के प्रकोप से उत्पन्न होनेवाला रोग। २. गठिया नामक रोग।

वात-सारथि—पुं०[सं० ब० स०] अग्नि।

वात-स्कंध—पुं०[सं० ष० त०] आकाश का वह भाग जिसमें वायु चलती रहती है।

वात स्वप्न---पुं०[सं० ब० स०] अग्नि।

वातांड—पुं०[सं० ब० स०] अंडकोश-संबंधी एक प्रकार का वायु रोग जिसमें एक अंड चलता रहता है।

वाताट—पुं०[सं० वात√अट् (चलना)+अच्] १. सूर्य का घोड़ा। २. हिरन।

वातात्मज--पुं०[सं० ष० त०] हनुमान्।

वाताद—पुं०[सं० वात√अद् (खाना)+घञ्] बादाम।

वातानुकूलन--पुं०[सं०] [भू० कृ० वातानुकूलित] यांत्रिक या वैज्ञानिक प्रक्रिया से ऐसी व्यवस्था करना कि किसी घिरे हुए स्थान के ताप-मान पर उसके बाहर के ताप-मान का प्रभाव न पड़ने पावे; अर्थात् उस स्थान के अंदर की गरमी या सरदी नियंत्रित और नियमित रहे। (एयर-कन्डिशनिंग)

वातानुकूलित---भू० कृ० [सं०] (स्थान) जिसका ताप-मान वातानुकूलन वाली प्रक्रिया से नियंत्रित और नियमित किया गया हो। (एयर कन्डिशन्ड)

वातापी---पुं० [सं०] एक राक्षस जो आतापि का भाई था। (इन दोनों भाइयों को अगस्त्य ऋषि ने खा लिया था।)

वाताप्य---पुं० [सं० वातापि—यत्] १. जल। २. सोम।

वाताम--पुं० [सं० पृषो० सिद्धि] बादाम।

वातायन—पुं०[सं० ब० स०] १. झरोखा जो घरों आदि में इसलिए बनाया जाता है कि बाहर से प्रकाश और वायु अन्दर आवे। २. एक मंत्र-द्रष्टा ऋषि। ३. एक प्राचीन जनपद। ४. घोड़ा।

वातायनी—स्त्री०[सं० वातायन-ङीष्] लकड़ी, लोहे, सीमेन्ट आदि की वह रचना जो छत के नीचे दीवार में इसलिए बनाई जाती है कि कमरे में प्रकाश और वायु आ सके। (वेन्टिलेटर)

वातारि—पुं०[सं० ष० त०] १. एरंड। रेंड। २. शतमूली। ३. अजवायन। ४. बायबिडंग। ५. जमीकन्द। सूरन। ६. भिलावाँ। ७. थूहड़। सेंहुड़। ८. शतावर। ९. नील का पौधा। १०. तिलक।

वाताली—स्त्री०[सं० वाताल-ङीष्, ष० त०] १. तूफान। २. बवंडर।

वातावरण—पुं०[कर्म० स०] [वि० वातावरणिक] १. वायु की वह राशि जो पृथ्वी, ग्रह आदि पिंडों को चारों ओर से घेरे रहती है।

शरीर, स्वास्थ्य आदि के विचार से वायु का उतना अंश जो किसी प्रदेश, स्थान आदि में होता है। जैसे—बिहार का वातावरण, कमरे का वातावरण। ३. किसी वस्तु या व्यक्ति के आस-पास की वह परिस्थिति या बात जिसका उस वस्तु या व्यक्ति के अस्तित्व, जीवन-निर्वाह, विकास आदि पर प्रभाव पड़ता है। ४. किसी कलात्मक या साहित्यिक कृति के वे गुण या विशेषताएँ जो दर्शक या पाठक के मन में उस कृति के रचनाकाल, रचना-स्थान आदि की कल्पना या मनोभाव उत्पन्न करती हैं। जैसे—इस मूर्ति का वातावरण बतलाता है कि यह शुंग काल की है, अथवा गांधार की बनी है। (एटमॉस्फ़ियर)

वातावरणिक—वि०[सं०] १. वातावरण-संबंधी। २. वातावरण का या वातावरण में होनेवाला।

वाताष्ठीला—स्त्री०[सं० तृ० त०] एक रोग जिसमें वात के प्रकोप के कारण पेट में गाँठ-सी पड़ जाती है। (वैद्यक)

वातास—स्त्री०[हिं० वात] वायु। हवा। उदा०—जो उठती हो बिना प्रयास। ज्वाला सी पाकर वातास।]—पंत।

वाति—पुं०[सं०√वा (जाना)+अति] १. वायु। हवा। २. सूर्य। ३. चन्द्रमा।

वातिक—वि०[सं० वात+ठञ्—इक] १. वात सम्बन्धी। वात का। २. जिसे वात का कोई रोग हो। वात-ग्रस्त। ३. तूफान या बवंडर से सम्बन्ध रखनेवाला। ४. बकवादी।

पुं० १. पागल। विक्षिप्त। २. एक प्रकार का ज्वर। ३. चातक। पपीहा।

वातुल—वि०[सं० वात+उलच्] [भाव० वातुलता] १. वात-संबंधी। २. वात के प्रकोप के कारण होनेवाला। जैसे—गठिया (रोग)। पुं० पागल। बावला।

वातोदर—पुं०[सं० तृ० त०] एक रोग जिसमें हाथ, पाँव, नाभि, काँख, पसली, पेट, कमर और पीठ में पीड़ा होती है, इसके साथ कब्ज और खाँसी भी होती है। (वैद्यक)

वातोन्माद—पुं०[सं० वात+उन्माद, ब० स०] अपतंत्रक नामक रोग। (हिस्टीरिया) देखें 'अपतंत्रक'।

वातोर्मी—पुं०[सं० ब० स०] ग्यारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसमें मगण भगण, तगण और अन्त में दो गुरु होते हैं।

वात्य—वि०[सं० वात+यत्] वात या वायु-सम्बन्धी। जैसे—वात्य भार।

वात्या—स्त्री०[सं० वात+य+टाप्] १. बहुत तेज चलनेवाली हवा। २. विशेषतः ४० से ७५ मील प्रति घंटे चलनेवाली तेज आँधी। (गेल)

वात्स—पुं०[सं० वत्स+अण्] [स्त्री० वात्सी] १. एक गोत्रकार ऋषि का नाम। २. ब्राह्मण द्वारा शूद्रा के गर्भ से उत्पन्न व्यक्ति।

वात्सरिक—पुं०[सं० वत्सर+ठक्—इक] ज्योतिषी।

वि० १. वत्सर या वर्ष-सम्बन्धी। जैसे—वात्सरिक श्राद्ध। २. प्रति-वर्ष होनेवाला। वार्षिक।

वात्सल्य—पुं०[सं०] १. प्रेम। २. विशेषतः माता-पिता के हृदय में होनेवाला अपने बच्चों के प्रति नैसर्गिक प्रेम।

वात्सल्य-भाजन—पुं० [सं०] वह जिसके प्रति वत्स का-सा प्रेम हो। वत्स के समान प्रिय।

वात्स्य—पुं०[सं० वत्स+यञ्] १. एक प्राचीन ऋषि। २. एक गोत्र जिसमें और्व, च्यवन, भार्गव, जामदग्न्य और आप्नुवान नामक पाँच प्रवर होते हैं।

वात्स्यायन—पुं०[सं० वात्स्य+फक्—आयन] १. कामसूत्र के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि। २. न्याय शास्त्र के भाष्यकार एक प्रसिद्ध पंडित।

वाद—पुं०[सं०√वद्+घञ्] १. कुछ कहना या बोलना। २. वह जो कुछ कहा जाय। उक्ति। कथन। ३. किसी कथन के समर्थन के लिए उपस्थित किया जानेवाला तर्क। दलील। ४. किसी बात विशेषतः सैद्धांतिक बात के संबंध में दोनों ओर से कही जानेवाली बातें। तर्क-वितर्क। विवाद। बहस। ५. अफवाह। किंवदंती। ६. विचार के लिए न्यायालय में उपस्थित किया जानेवाला अभियोग। मुकदमा। (सूट) ७. कला, विज्ञान या कल्पनामूलक किसी विषय के संबंध में नियमों, सिद्धांतों आदि के आधार पर स्थिर किया हुआ वह व्यवस्थित मत जो कुछ क्षेत्रों में प्रामाणिक और मान्य समझा जाता हो। (थियरी) जैसे—विकासवाद, सापेक्षवाद। ८. कोई ऐसा तत्त्व या सिद्धान्त जो तत्त्वज्ञों या विशेषज्ञों द्वारा नियत या निश्चित हुआ हो। (इज़्म)

विशेष—इस अंतिम अर्थ में इसका प्रयोग कुछ संज्ञाओं के अंत में प्रत्यय के रूप में होता है। जैसे—छायावाद, रहस्यवाद, साम्यवाद आदि।

वादऋणी—पुं०[सं० ब० स०] न्यायालय ने जिसे अपने फैसले में ऋणी ठहराया है। (जजमेंट क्रिडेटर)

वादक—वि०[सं०√वद् (कहना)+णिच्+ण्वुल्—अक] १. कहने या बोलनेवाला। २. वाद-विवाद करनेवाला। ३. बाजा बजानेवाला।

वाद-ग्रस्त—वि०=विवादग्रस्त।

वाद-चंचु—पुं०[सं० त०] शास्त्रार्थ करने में पटु। वाद-विवाद करने में दक्ष।

वाददंड—पुं०[ष० त०] सारंगी आदि बाजे बजाने की कमानी।

वादन—पुं० [सं०√वद् (कहना) +णिच्+ल्युट्—अन] १. कहने या बोलने की क्रिया। २. बाजा बजाना। ३. बाजा। वाद्य। ४. वादक।

वादनक—पुं०[सं० वादन+कन्] बाजा।

वाद-पद—पुं०[सं०] विधिक क्षेत्र में, किसी वाद या दीवानी मुकदमे से संबंध रखनेवाली वे विवादास्पद और विचारणीय बातें जो पहले पक्ष की ओर से दावे के रूप में कही जाती हों, परंतु दूसरा पक्ष जिनसे इन्कार करता हो। तनकीह। (इश्यू)

विशेष—न्यायालय ऐसी ही बातों के सत्यासत्य का विचार करके उनके आधार पर मुकदमे का निर्णय करता है। यह दो प्रकार का होता है—विधि वाद-पद जिसमें केवल कानूनी दृष्टि से विचारणीय बातें आती हैं और तथ्य वाद पद जिसमें तथ्य अर्थात् वास्तविक घटनाओं से संबंध रखनेवाली बातें आती हैं। इन्हें क्रमात् इश्यू ऑफ़ लॉ और इश्यू ऑफ़ फ़ैक्ट्स कहते हैं।

वाद-प्रतिवाद—पुं०[सं० द्व० स०] दो पक्षों या व्यक्तियों में किसी विषय पर होनेवाला खंडन-मंडन और तर्क-वितर्क।

वाद-मूल—पुं०[सं० ष० त०] वह मूल कारण जिसके आधार पर कोई मुकदमा या व्यवहार न्यायालय में विचारार्थ उपस्थित किया जाता है। (कॉज़ आफ़ ऐक्शन)

वादर—पुं०[सं० वदर+अण्] १. कपास का पौधा। २. सूती कपड़ा। ३. बेर का पेड़।
वि० सूती कपड़े का बना हुआ।

वादरायण—पुं०[सं० वदर+अयन, ष० त०,+अण्] बादरायण (वेद-व्यास)।

वादरायणि—पुं०=बादरायणि (शुकदेव)।

वाद-विवाद--पुं०[सं० द्व० स०] १. वाद-प्रतिवाद। २. वह विचार-पूर्ण बात-चीत जो किसी निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए होती है। (डिस्कशन)

वाद-विषय—पुं०[सं० ष० त०] वाद-मूल। (दे०)

वाद-व्यय—पुं०[सं० ष० त०] किसी वाद या मुकदमे में होनेवाला उचित और नियमित व्यय। (कास्टस)

वाद-साधन—पुं०[सं० ष० त०] १. अपकार करना। २. तर्क करना।

वाद-हेतु—पुं०[सं० ष० त०]=वाद-मूल।

वादा--पुं०[अ० वाइदः] १. किसी काम या बात के लिए नियत किया हुआ समय। २. किसी से दृढ़ता और निश्चयपूर्वक, यह कहना कि हम तुम्हारे लिए अमुक काम करेंगे या तुम्हें अमुक चीज देंगे। प्रतिज्ञा। वचन।
क्रि० प्र०—पूरा करना।
३. दे० 'वायदा'।

वादा-खिलाफ़ी—स्त्री०[अ०+फा०] वादा पूरा न करना। प्रतिज्ञा का पालन न करना।

वादानुवाद—पुं०[सं० द्व० स०]=वाद-प्रतिवाद।

वादिक—वि०[सं० वादि+कन्] कहनेवाला।
पुं० १. जादूगर। २. भाट। चारण। ३. तार्किक।

वादित—भू० कृ० [सं०√वद् (कहना) +णिच्+क्त] जिसमें से नाद या स्वर उत्पन्न किया गया हो। बजाया हुआ।

वादित्र—पुं०[सं०√वद् (कहना)+णिच्+इत्र] वाद्य। बाजा।

वादींद्र—पुं०[सं० स० त०] मंजुघोष का एक नाम।

वादी—वि०[सं० वादिन्] १. बोलनेवाला। वक्ता। २. जो किसी वाद से सम्बन्ध रखता हो या उसका अनुयायी हो। जैसे—समाजवादी।
पुं०१. वह जो कोई ऐसा विषय उपस्थित करे जिस पर विचार होने को हो या दूसरों को जिसका खंडन अथवा विरोध करना पड़े। २. वह जो न्यायालय में किसी के विरुद्ध कोई अभियोग उपस्थित करे। फरियादी। मुद्दई। ३. संगीत में वह स्वर जो किसी राग में सर्वप्रमुख होता है, और जिसका उपयोग और स्वरों की अपेक्षा अधिक होता है। इसी स्वर पर ठहराव भी अपेक्षया अधिक होता है और इसी के प्रयोग से उस राग में जान भी आती है और उसकी शोभा भी होती है। जैसे—यमन राग में गांधार स्वर वादी होता है।
†स्त्री०=बाई (वात की अधिकता या जोर)। (पश्चिम)
वि०=वातग्रस्त। जैसे—बादी शरीर।

वादोवदि*—क्रि० वि० [सं० वाद से] कह-बदकर। दृढ़तापूर्वक कह कर। उदा०—बहतै कटर्कि माहि वादीवदि।—प्रिथीराज।

वाद्य—पुं०[सं० √ वद् (कहना)+णिच्+यत्]१. बाजा बजाना। २. बाजा।

वाद्यक--पुं०[सं० वाद्य√कन्] बाजा बजानेवाला।

वाद्य-वृंद--पुं०[सं०]१. अनेक प्रकार के बहुत से बाजों का समूह। २. उक्त प्रकार के बाजों का वह संगीत जो ताल, लय आदि के विचार से एक साथ बजने पर होता है। (आर्केस्ट्रा)

वाद्य-संगीत—पुं०[सं०] ऐसा संगीत जिसमें केवल वाद्य या बाजे ही बजते हों, कंठ संगीत बिलकुल न हो। (इन्सट्रूमेंटल म्यूजिक)

वाध--पुं०[सं०√ बाध् (रोकना)+घञ्]=बाध (बाधा)।

वाधूल--पुं०[सं० वाधू√ला (होना)+क] एक गोत्राकार ऋषि। इनके गोत्र के लोग वाधौल कहलाते हैं।

वान्--प्रत्य० [सं०] [स्त्री० वती] एक संस्कृत प्रत्यय जो कुछ शब्दों के अंत में लग कर युक्त या संपन्न होने का सूचक होता है। जैसे—ऐश्वर्य-वान्, धैर्यवान् आदि।

वान--पुं०[सं०√वा (गमनादि)+ल्युट्--अन] १. गति। २. सुरंग। ३. सुगंध। ४. पानी में लगनेवाला हवा का झोंका। ५. चटाई।
प्रत्य०[सं० वान्] एक प्रत्यय जो कुछ सवारियों के नामों के अंत में लगकर उन्हें चलाने या हाँकनेवाले का सूचक होता है। जैसे—एक्का-वान, गाड़ीवान।
वि०[सं०]१. वन-संबंधी। जंगल का। २. सूखा या सुखाया हुआ।
पुं०१. बड़ा और घना जंगल। २. जल आदि का बहाव या आगे बढ़ना। ३. सूखा फल। (ड्राई फ़्रूट)। ४. महक। सुगंधि। ५. यम।

वानक--पुं०[सं० वान+कन्] ब्रह्मचर्यावस्था।

वान-दंड--पुं०[सं० ष० त०] करघे की वह लकड़ी जिसमें बुनने के लिए बाना लपेटा रहता है।

वानप्रस्थ--पुं० [सं० वन+प्र√ स्था (ठहरना)+कु, वनप्रस्थ+अण्] १. भारतीय आर्यों में जीवन-यापन के चार शास्त्र विहित आश्रमों या विभागों में से एक जो गृहस्थ आश्रम के उपरान्त और संन्यास से पहले आता है और जिसमें मनुष्य ५० वर्ष का हो जाने पर पचीस वर्षों तक वनों में घूमता-फिरता रहता है। २. महुए का पेड़। ३. पलास।

वानर—पुं०[सं०]१. ऐसा प्राणी जो पूरी तरह से तो नर या मनुष्य न हो, फिर भी उससे बहुत कुछ मिलता-जुलता हो। जैसे—गोरिल्ला, चिम्पांजी आदि। २. बन्दर। ३. दोहे का एक लघु भेद जिसके प्रत्येक चरण में १० गुरु और २८ लघु होते हैं।

वानर-युद्ध—पुं०[सं०] दे० 'छापामार लड़ाई'।

वानर-सेना—स्त्री० सं०] छोटे-छोटे बच्चों का दल जो कोई विशिष्ट कार्य करने के लिए नियुक्त हो।

वानरी—वि०[सं०] १. वानर-सम्बन्धी। बन्दर का। २. वानर या बन्दर की तरह का। जैसे—वानरी तप।
स्त्री०१. बन्दर की मादा। बँदरिया। २. केंवाच। कौंछ।

वानरी तप—पुं०[सं०] एक प्रकार का तप या तपस्या जो बन्दरों की तरह बराबर वृक्षों पर ही रहकर और उनके पत्ते, फल आदि खाकर की जाती है।

वानवासक—पुं०[सं० वानवास+कन्] वैदेही माता से उत्पन्न वैश्य का पुत्र।

वान-वासिका—स्त्री० [सं० वानवास+कन्+टाप्, इत्व] सोलह

मात्राओं के छन्दों या चौपाइयों का एक भेद, जिसमें नवीं और बारहवीं मात्राएँ लघु होती हैं।

वानस्पतिक—वि०[सं०] १. वनस्पति-सम्बन्धी। वनस्पति का। २. वनस्पति के द्वारा बनने या होनेवाला। जैसे—वानस्पतिक खाद या तैल।

वानस्पतिक खाद—स्त्री०[सं०+हिं०] गोबर, मल, पौधों आदि के मिश्रण से बनाई हुई खाद। कूड़े आदि से बनी खाद। (कम्पोस्ट)

वानस्पत्य—पुं०[सं० वनस्पति+ण्य] १. वह वृक्ष जिसमें पहले फूल लगकर पीछे फल लगते हैं। जैसे—आम, जामुन आदि। २. वनस्पतियों का वर्ग या समूह। ३. वनस्पतियों के तत्वों और उनकी वृद्धि, पोषण आदि से सम्बन्ध रखनेवाला शास्त्र। (आरबोरिकल्चर)

वि०=वानस्पतिक।

वानिक—वि०[सं० वन+ठक्—इक]१. जंगली। वन्य। २. जंगल में रहनेवाला। वनवासी।

वानीर—पुं०[सं० वन+ईरन+अण्] १. बेंत। २. पाकर वृक्ष।

वानेय—पुं०[सं० वन+ढञ्—एय]केवड़ा मोथा।

वि० १. वन में रहने या होनेवाला। २. जल-संबंधी।

वान्य—वि०[सं० वन+ण्य]वन-संबंधी। वन का। जंगली।

वाप—पुं०[सं०√ वप् (बोना)+घञ्]१. बीज आदि बोना। वपन। २. खेत। ३. मुंडन।

वापक—वि०[सं० √ वप् (बोना)+णिच्+ण्वुल्—अक] वपन करने अर्थात् बीज बोनेवाला।

वापन—पुं०[सं० √ वप् (बोना)+णिच्-ल्युट—अन] बीज बोना।

वापस—वि०[फा०]१. (जीव या यान) जो कहीं न जाकर लौट आया हो। २. (वस्तु) जिसे किसी ने मँगनी माँगकर अथवा खरीदकर फेर दिया हो।

वापसी—वि०[फा० वापस]१. जो वापस होकर आया हो। जैसे—वापसी जवाब। २. वापस जाने से संबंध रखनेवाला। जैसे—वापसी टिकट।

स्त्री०१. वापस होने या लौटने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. वापस की या लौटाई हुई चीज देने या लेने की क्रिया या भाव।

वापसी टिकट—पुं०[हिं०] वह टिकट जिससे कहीं जाया और वहाँ से वापस आया जा सकता हो। जैसे—रेल या हवाई जहाज का वापसी टिकट। (रिटर्न टिकट)

वापिका—स्त्री० [सं० वप+इञ्+कन्+टाप्]=वापी।

वापित—वि०[सं०√वप् (बोना)+णिच्+क्त] १. बोया हुआ। २. मूँडा हुआ।

वापी—स्त्री०[सं०वापि+ङीष्] एक प्रकार का चौड़ा और बड़ा कूंआँ या छोटा तालाब जिसमें जल तक पहुँचने के लिए प्रायः सीढ़ियाँ बनी रहती हैं। बावली।

वाप्य—पुं०[सं० वापी+यत् वा√वप्+ण्यत्] वपन किए या बोए जाने के योग्य (बीज या भूमि)।

पुं० १. वापी या बावली का पानी। २. बोया हुआ धान्य (रोपे हुए से भिन्न)। ३. कुट नामक ओषधि।

वाम—वि० [सं० वा+मन्] १. शरीर के उस पक्ष में या उसकी ओर होनेवाला जो दूसरे पक्ष की अपेक्षा साधारण प्रणियों में कमजोर या दुर्बल होता है। बायाँ। २. 'दक्षिण' या 'दाहिना' का विपर्याय। ३. प्रतिकूल। विरुद्ध। ३. कुटिल। टेढ़ा। ४. दुष्ट। बुरा।

पुं० १. कामदेव। २. वरुण। ३. धन-सम्पत्ति। ४. कुच। स्तन। ५. चन्द्रमा के रथ का एक घोड़ा। ६. सवैया छंद का आठवाँ भेद, जिसके प्रत्येक चरण में सात जगण और एक यगण होते हैं। इसे मंजरी, मकरंद और माधवी भी कहते हैं। ७. वामदेव।

वामक—पुं०[सं० वाम+कन्] १. एक प्रकार की अंग-भंगी। २. बौद्धों के अनुसार एक चक्रवर्ती।

वाम-कक्ष—पुं०[सं० ब० स०] एक गोत्रकार ऋषि जिनके गोत्र के लोग वामकक्षायन कहलाते हैं।

वामता—स्त्री०[सं०] १. वाम होने की अवस्था या भाव। २. प्रतिकूलता। विरुद्धता।

वामदेव—पुं०[सं०] १. शिव। महादेव। २. एक वैदिक ऋषि।

वामदेवी—स्त्री०[सं०] १. दुर्गा। २. सावित्री।

वामन—वि०[सं०] [स्त्री० वामनी] १. छोटे कद या डील का। ठिंगना। २. नाटा। बौना। खर्व। ३. ह्रस्व।

पुं० १. विष्णु। २. विष्णु का पाँचवाँ अवतार जो अदिति के गर्भ से हुआ था; और जिसमें उन्होंने बौने का रूप धारण करके राजा बलि को छलकर उससे सारी पृथ्वी दान रूप में ले ली थी। ३. अठारह पुराणों में से एक। ४. शिव। ५. एक दिग्गज का नाम। ६. छोटे डील का या बौना घोड़ा।

वामन द्वादशी—स्त्री० [सं० ष० त०] भाद्रपद शुक्ला द्वादशी जिस दिन व्रत करके वामन अवतार की पूजा करने का विधान है।

वामनिका—स्त्री०[सं० वामन+कन्+टाप्+इत्व] १. स्कंद की अनुचरी एक मातृका। २. बौनी या ठिंगनी स्त्री।

वामनी—स्त्री०[सं० वामन+ङीप्] एक प्रकार का योनि रोग।

वाम मार्ग—पुं०[सं०] तांत्रिक साधना में एक पद्धति जिसमें मृत प्राणियों के दाँतों की माला पहनते, कपाल या खोपड़ी का पात्र रखते, छोटी कच्ची मछलियाँ और माँस खाते तथा सजातीय पर-स्त्रियों से समान रूप से मैथुन करते हैं।

वाम-मार्गी—वि०[सं०] वाम-मार्ग सम्बन्धी। वाम मार्ग का।

पुं० वह जो वाम-मार्ग का अनुयायी हो।

वामरथ—पुं०[सं०] एक गोत्रकार ऋषि जिनके गोत्रवाले वाम-रथ्य कहलाते थे।

वामलूर—पुं०[सं० वाम√लू (काटना)+रक्]दीमक का भीटा। वल्मीक। बाँबी।

वामलोचना—स्त्री०[सं०] सुन्दरी स्त्री।

वाम-शील—वि०[सं०] [सं० वामशीला] प्रायः या सदा वाम अर्थात् प्रतिकूल या विरुद्ध रहनेवाला।

वामांगिनी—स्त्री०[सं०] विवाहिता पत्नी।

वामांगी—स्त्री०[सं०]=वामांगिनी।

वामाँदा—वि०[फा०] [भाव० वामाँदगी] १ पीछे छूटा हुआ। २. थक जाने के कारण रास्ते में पीछे छूटा हुआ। ३. बाकी बचा हुआ। ४. लाचार। विवश।

वामा—स्त्री०[सं०√वम् निकालना) +अण्+टाप्, अथवा वाम+अ+च्

टाप्] १. स्त्री। २. दुर्गा। ३. पार्श्वनाथ की माता। ४. दस अक्षरों के एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में तगण, यगण और भगण तथा अंत में एक गुरु होता है।

वामाक्षी—स्त्री० [सं० ब० स०] १. सुंदरी स्त्री। २. दीर्घ 'ई' स्वर या उसकी मात्रा।

वामाचार—पुं०[सं०] दे० 'वाम-मार्ग'।

वामाचारी (रिन्)—पुं०[सं० वामाचार+इनि]=वाम-मार्गी।

वामावर्त—वि०[सं० वाम-आ√वृत्+अच्] १. (पदार्थ) जिसका मुँह बाईं ओर घूमा हुआ हो। जैसे—वामावर्त शंख। २. (क्रिया) जिसका आरम्भ बाईं ओर से हो। जैसे—वामावर्त प्रदक्षिणा। 'दक्षिणा-वर्त' का विपर्याय।

वामिका—स्त्री०[सं० वाम+कन्+टाप्+इत्व] चंडिका देवी।

वामी—स्त्री० [सं० वाम+ङीष्] १. शृगाली। गीदड़ी। २. घोड़ी। ३. हथनी। ४. गधी।

वामेक्षणा—स्त्री०[सं० ब० स०] सुंदर नेत्रोंवाली स्त्री।

वामोरु—स्त्री०[सं० ब० स०] सुंदरी स्त्री।

वाम्नी—स्त्री०[सं०] एक गोत्रकार विदुषी जिसके गोत्रवाले वाम्नेय कहलाते थे।

वाय—पुं०[सं०√वे (बुनना)+घञ्] १. बुनना। वपन। २. साधन। अव्य० [फा०] दुःख, शोक आदि का सूचक अव्यय। जैसे—वायकिस्मत।

वायक—वि०[सं०] बुननेवाला।

पुं० जुलाहा। तन्तुवाय।

वायदंड—पुं०[सं० ष० त०] १. करघे का हत्था। २. करघे की ढरकी।

वायदा—पुं० [फा० वाइदः] १. वादा। वचन। २. सट्टेवालों की परिभाषा में, भविष्यकाल के सम्बन्ध में किया जानेवाला सौदा। जैसे—दालों के वायदे के बाजारों में इस सप्ताह भी अच्छी तेजी-मंदी आई।

वायन—पुं०[सं०√वे (बुनना)+ल्युट्—अन] १. मंगल अवसरों, उत्सवों आदि के समय बनाई जानेवाली मिठाई। २. उक्त का वह अंश जो रिश्ते-नाते में भेजा जाय। ३. सौगात।

वायव—वि०[सं०] १. वायु-संबंधी। वायु का। २. वायु के द्वारा या उसकी सहायता से होनेवाला। (एरियल) ३. जिसका कुछ भी आधार न हो। हवाई। जैसे—वायव स्वप्न।

वायव-भट्ठी—स्त्री० दे० 'पवन भट्टी'।

वायवी—वि०[वायु+अण्+ङीप्] वायु के समान हृदय के भीतर ही भीतर रहनेवाला। प्रकाश में न आनेवाला।

स्त्री० उत्तर पश्चिमी कोण।

वायवीय—वि०[सं०] १. वायु-संबंधी। २. वायु के बल से चलनेवाला। (एरियल)

स्त्री० वह तार जिसका एक सिरा तो रेडियो यंत्र से संबद्ध होता है और दूसरा सिरा या तो खुले आकाश में विस्तृत होता है या ऊँचाई पर खड़े हुए बाँस के साथ लगा रहता है। (एरियल)

वायव्य—वि०[सं० वायु+यत्] १. वायु-संबंधी। २. वायु के द्वारा बनने या होनेवाला। ३. जिसका देवता वायु हो।

पुं० १. पश्चिम और उत्तर दिशाओं के बीच का कोण जिसका अधिपति वायु देवता माना गया है। २. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। ३. दे० 'वायु-पुराण'।

वायव्या—स्त्री०[सं० वायव्य+टाप्]=वायव्य (कोण)।

वायस—पुं०[सं०] १. अगर का पेड़। २. कौआ।

वायसतंतु—पुं०[सं० मध्य० स०] १. हनु के दोनों जोड़। २. काक तुंडी।

वायसी—स्त्री० [सं० वायस+अण्+ङीष्] १. छोटी मकोय। काकमाची। २. महा ज्योतिष्मती। ३. सफेद घुँघची। ४. काकजंघा। ५. महाकरंज। ६. काकतुंडी। कौआ ठोढी।

वायसेसु—पुं०[सं० ष० त०] काँस (तृण)।

वायु—स्त्री०[सं०] १. वायु। हवा।

विशेष—हमारे यहाँ (क) इसकी गिनती पाँच महाभूतों में की गई है, और इसका गुण स्पर्श कहा गया है। (ख) इसकी एक दूसरे के ऊपर सात तहें या परतें मानी गई हैं जिनके नाम हैं—आवह, प्रवह, संवह, उद्वह, विवह, परिवह और परावह।

२. धार्मिक क्षेत्र में एक देवता जो उक्त का अधिष्ठाता माना गया है और जिसका निवास उत्तर-पश्चिम कोण में माना गया है। ३. दर्शनशास्त्र में, जीवनी-शक्ति या प्राणों का वह मुख्य आधार जो शरीर के अन्दर रहता है और जिसके पाँच भेद कहे गये हैं—प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान। ४. वैद्यक में, उक्त का वह अंश या रूप जो शरीर के अन्दर रहता है और जिसके प्रकोप या विकार से अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। वात।

वायु-अपनयन—पुं० [सं०] वायु का धूल, बालू, आदि उड़ाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना।

विशेष—प्रायः समुद्र तट से और शुष्क प्रदेशों से होकर बहनेवाली वायु वहाँ से अपने साथ बहुत सी धूल, बालू, आदि भी उड़ा ले जाती है जिससे कहीं तो ऊपर की मिट्टी साफ होने से नीचे का चट्टान निकल आती है और कहीं रेत के टीले बन जाते हैं। विज्ञान में वायु की यही क्रिया वायु-अपनयन कहलाती है।

वायु-कोण—पुं०[सं०] वायव्य (कोण)।

वायुगंड—पुं०[तृ० त०] १. अजीर्ण नामक रोग। २. पेट अफरने का रोग। अफरा।

वायु-गुल्म—पुं०[सं०] १. वायु-विकारों के कारण पेट में बनने या घूमता रहनेवाला वायु का गोला। २. बवंडर।

वायु-छिद्र—पुं०[सं०] भू-गर्भ शास्त्र में, समुद्रतट की चट्टानों में कहीं-कहीं पाये जानेवाले वे छिद्र जिनमें हवा भरी रहती है, और ज्वार या भाटा होने पर जिनमें से भीतरी वायु के दबाव के कारण पानी के फुहारे से छूटने लगते हैं। (ब्लो-होल)

वायु-तनय—पुं०[सं० ष० त०]=वायु-नंदन (हनुमान्)।

वायु-दारु—पुं०[सं०] मेघ। बादल।

वायु-नंदन—पुं०[वायु√नंद(हर्षित करना)+ल्यु—अन] १. हनुमान्। २. भीम।

वायु-देव—पुं०[ब० स०] स्वाति नक्षत्र।

वायु-पंचक—पुं०[ष० त०] शरीर में रहनेवाला प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान नामक पाँच वायुओं का समाहार।

वायु-पथ—पुं०=वायु-मार्ग

वायु-पुत्र—पुं०[सं०] १. हनुमान्। २. भीम।

वायु-पुराण—पुं०[मध्य० स०] अठारह मुख्य पुराणों में से एक पुराण।

वायु-फल—पुं०[सं०] इन्द्रधनुष।

वायु-भक्ष्य—पुं० [सं०] सर्प। साँप।

वायु-भार—पुं०[सं०] वायु-मंडल में वायु की ऊपरी तहों का नीचेवाली तहों पर पड़नेवाला वह भार जिसके कारण नीचे की वायु घनी और भारी होती है। (एटमास्फेरिक प्रेशर)

विशेष—हमारे धरातल पर प्रति वर्ग इंच प्रायः १४॥ पौंड भार रहता है।

वायु-भार-मापक—पुं०[सं०] वह यंत्र जिससे किसी स्थान या वातावरण के घटने या बढ़नेवाले ताप-क्रम का पता चलता है। (बैरोमीटर)

वायु-मंडल—पुं०[सं०] १. वह गोलाकार वाष्पीय आवरण जो हमारी पृथ्वी को चारों ओर से घेरे हुए है। (एटमॉस्फ़ियर) २. दे० 'वातावरण'।

वायुमंडल विज्ञान—पुं०[सं०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि इस पृथ्वी के वायु-मंडल की क्या-क्या विशेषताएँ हैं, उसमें कैसे-कैसे वाष्प हैं, और ऊपर की ओर उसका विस्तार कहाँ तक और कैसा है। (एयरॉलोजी)

वायु-मरुत्—स्त्री०[सं०] ललितविस्तर के अनुसार एक प्राचीन लिपि।

वायुमापी—पुं०[सं०] वह यंत्र जो वायु मिति के द्वारा वायु की शुद्धि और उसमें होनेवाले आक्सिजन का मान या माप बतलाता है। (यूडिओमीटर)

वायु-मार्ग—पुं०[सं०] आकाश या वायु में के वे निश्चित मार्ग जिनसे होकर हवाई जहाज आदि एक देश से या स्थान से दूसरे देश या स्थान को जाते हैं। (एयर रूट)

वायु-मिति—स्त्री०[सं०] वह प्रक्रिया जिससे यह जाना जाता है कि वायु में कितनी शुद्धता है। (यूडिओमेट्री)

वायु-यान—पुं०[मध्य स०] हवा में उड़नेवाला मनुष्य निर्मित यान। हवाई जहाज।

वायु-लोक—पुं०[सं०] १. पुराणानुसार एक लोक। २. आकाश।

वायु-वलन—पुं० दे० 'वातानुकूलन'।

वायु-वाहन—पुं०[ष० त०] १. विष्णु। २. शिव। ३. धूआँ।

वायु-संवलन—पुं०[सं० ब० स०] [वि० वायु-संवलित] दे० 'वातानुकूलन'।

वायु-संवलित—भू० कृ० [सं०] दे० 'वातानुकूलित'।

वायु-सख—पुं०[सं०] अग्नि। आग।

वायु-सेना—स्त्री०[सं०] सेना का वह विभाग जो वायुयानों से शत्रु-पक्ष पर गोले आदि फेंकता है।

वायु-सेवन—पुं०[सं०] स्वास्थ्य रक्षा के लिए खुली हवा में घूमना-फिरना, उठना-बैठना या रहना।

वायु-सेवा—स्त्री०[फा०] वायुयानों के द्वारा की जानेवाली कोई सार्वजनिक सेवा। जैसे—वायुयान द्वारा यात्री या डाक लाने ले जाने का क़ाम।

वायु-स्नान—पुं०[सं०] स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए नंगे बदन होकर खुली हवा में कुछ देर तक इस प्रकार रहना कि शरीर के सब अंगों में अच्छी तरह हवा लगे। (एयर-बाथ)

वारंक—पुं०[सं०√वृ+अंकन्] पक्षी।

वारंग—पुं०[सं०√वृ+अंगच्] १. तलवार की मूठ। २. प्राचीन वैद्यक में एक प्रकार का अस्त्र।

वारंट—पुं०[अं०] १. आज्ञा-पत्र। २. विधिक क्षेत्र में न्यायालय का ऐसा आज्ञापत्र जिसके अनुसार किसी राजकीय कर्मचारी को कोई ऐसा काम करने का आदेश होता है जो साधारण स्थिति में वह न कर सकता हो। जैसे—गिरिफ्तारी या तलाशी का वारंट। ३. लोक-व्यवहार में किसी की गिरफ्तारी के लिए निकलनेवाला आज्ञा-पत्र।

वार—पुं०[सं०√वृ+घञ्] १. द्वार। दरवाजा। २. अवरोध। रुकावट। ३. आवरण। ढक्कन। ४. नियत काल या समय। ५. किसी काम या बात की पुनरावृत्ति का आनेवाला अवसर। दफा। बार। बारी। (दे० 'बार') ६. सप्ताह के दिनों के नामों के अंत में लगनेवाला कालावधिक सूचक शब्द। जैसे—रविवार, सोमवार आदि। ७. क्षण। ८. कुज नामक वृक्ष। ९. शराब पीने का प्याला। १० तीर। बाण। ११. जलाशय का किनारा। कूल। तट। १२. विशेष रूप से जलाशय का वह किनारा जो वक्ता की ओर हो। उदा०—पार कहे उत वार है और कहे उतपार। इसी किनारे बैठ रह, वार यहि पार।

पद—**वार-पार, वारापार**। (देखें स्वतंत्र शब्द)

†अव्य० ओर। तरफ।

पुं०[सं० वार=दाँव, बारी] आक्रमण आदि के समय किया जानेवाला आघात। प्रहार। जैसे—तलवार या लाठी से वार करना।

मुहा०—**वार खाली जाना**=(क) प्रहार, निशाने आदि में चूक होना। (ख) युक्ति निष्फल होना।

प्रत्य० [फा०] क्रम से। क्रमात्। जैसे—तफसीलवार, नामवार, ब्योरेवार।

†प्रत्य०=वाला। जैसे—करनवार।

वारक—वि०[सं०√वृ (रोकना) + णिच+ण्वुल्—अक] १. वारण अर्थात् निषेध करनेवाला। मना करनेवाला। २. रुकावट डालनेवाला। प्रतिबंधक।

पुं० १. घोड़ा। २. घोड़े का कदम। ३. ऐसा समय या स्थान जहाँ कोई कष्ट या पीड़ा हो। ४. बाधा का अवसर या स्थान। ५. एक प्रकार का सुगंधित तृण।

वार-कन्या—स्त्री०[सं०] वेश्या। रंडी।

वारकी—पुं०[सं० वारक+इनि] १. प्रतिवादी। २. शत्रु। ३. समुद्र। ४. ऐसा तपस्वी जो केवल पत्ते खाकर रहता हो। पर्णाशी। यती।

वारकीर—पुं०[सं० स० त०] १. किसी की पत्नी का भाई। साला। २. द्वारपाल। ३. बाड़वाग्नि। बड़वानल। ४. जूं नाम का कीड़ा। ५. कंघी। ६. लड़ाई में सवार के काम आनेवाला घोड़ा।

वारगह†—पुं०[सं० वारि+गृह, मि० फा० बारगाह] १. तंबू। खेमा। २. दे० 'बारगाह'।

*पुं०[सं० वारण+गृह] हाथियों के बाँधने का स्थान। उदा०—बंधण दधि कि वारगह।—प्रिथीराज।

वारज—पुं०[सं०] [भू० कृ० वारित] १. अनिष्ट या अनुचित कार्य आदि के सम्बन्ध में होनेवाली निषेधात्मक आज्ञा, आदेश या सूचना। निषेध। मनाही। २. अनिष्ट आदि को दूर रखने या उनसे बचने के

लिए किया जानेवाला उपाय या कार्य। ३. आपत्तिजनक या दूषित प्रकाशनों आदि का प्रचार रोकने के लिए राज्य या शासन की ओर से होनेवाली निषेधात्मक आज्ञा या व्यवस्था। (स्क्रेप्शन) ४. बाधा। रुकावट। ५. शरीर को अस्त्रों आदि के आघात से बचानेवाला कवच। बकतर। ६. हाथी को वश में रखनेवाला अंकुश। ७. सम्भवतः इसी आधार पर हाथी की संज्ञा। ८. छप्पय छन्द का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में कुछ आचार्यों के मत से ४१ गुरु और ७० लघु तथा कुछ आचार्यों के मत से ४१ गुरु और ६६ लघु मात्रा होती हैं। ९. हरताल। १०. काला शीशम। ११. सफेद कोरैया।

वारणावत—पुं०[सं०] एक प्राचीन नगर जिसमें दुर्योधन ने पांडवों के लिए लाक्षागृह बनवाया था।

वारणिक—वि०[सं०] १. वारण-संबंधी। २. (उपाय या कार्य) जो अनिष्ट, क्षति, हानि आदि से बचने अथवा अपने हित-साधन के विचार से पहले किया जाय। (प्रिकाशनरी)

वारणीय—वि०[स०√वृ (रोकना)+णिच+अनीयर्] वारण करने योग्य। मनाही के लायक।

वार-तिय—स्त्री० [सं० वार+स्त्री] वेश्या।

वारद†—पुं०=वारिद (बादल)।

वारदात—स्त्री०[अ० 'वारिद' का बहु० शुद्ध रूप वारिदात] १. घटना। २. बुरी घटना। दुर्घटना। ३. चोरी, डकैती, मार,-पीट, दंगा-फसाद आदि की आपराधिक घटना। ४. किसी प्रकार की घटना का विवरण। (मूलतः बहुवचन; पर उर्दू और हिन्दी में एक-वचन रूप में प्रयुक्त)

वारन†—पुं०[सं० वंदनमाल] बंदनवार।

पुं०[सं० वारण] हाथी।

स्त्री०[हि० वारना] वारने की क्रिया या भाव। निछावर। बलि।

†पुं०[सं० वारण] परदा। उदा०—निरवौर वारन बिसारै पुनि द्वार हू कौं।—सेनापति।

वारना—स०[सं० वारण=दूर करना] टोने-टोटके के रूप में कोई चीज किसी के सिर के चारों ओर से घुमाकर निछावर करना।

मुहा०—वारी जाऊँ=निछावर हो जाऊँ। (स्त्रियाँ)

पुं० निछावर।

मुहा०—(किसी पर) वारने जाना=निछावर होना।

वारनिश—स्त्री० [अ०] १. स्पिरिट, चपड़े, रूमी मस्तगी आदि के योग से बननेवाला एक प्रकार का घोल जो लकड़ी के सामान पर चमक लाने के लिए लगाया जाता है।

वार-पार—पुं०[सं० अवर-पार] १. इस पार के और उस पार के दोनों किनारे या सिरे। जैसे—बाढ़ का पानी चारों ओर इतनी दूर तक फैल गया था, कि कहीं उसका वार-पार नहीं दिखाई देता था। २. पूरा या समूचा विस्तार।

अव्य० इस किनारे, छोर या सिरे से उस किनारे छोर, या सिरे तक। आर-पार। जैसे—तीर हिरन के वार-पार कर गया।

वार-फेर†—पुं०=वारा-फेरा।

वार-बाण—पुं०[सं०] कंचुक की तरह का, पर उससे कुछ छोटा एक पुराना पहनावा जो युद्ध के समय पहना जाता था।

वारयितव्य—वि०[सं०√वृ (रोकना)+णिच्+तव्यत्]=वारणीय।

वारयिता (तृ)—पुं० [सं०√वृ.(रोकना)+णिच्+तृच्] १. रक्षक। २. पति।

वि० वरण करनेवाला।

वार-वधू—स्त्री० [सं०] वेश्या। रंडी।

वारवाणि—पुं०[सं०] १. वंशी बजानेवाला। २. अच्छा गवैया। ३. न्यायाधीश। ४. ज्योतिषी।

वारवाणी—स्त्री०[सं०] वेश्या।

वारवासि, वारवास्य—पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद जो भारत की पश्चिमी सीमा के उस पार था।

वारस्त्री—स्त्री०[सं० कर्म० स०] वेश्या। रंडी।

वारांगणा—स्त्री०[सं० कर्म० स०] वेश्या। रंडी।

वारांनिधि—पुं०[सं० ष० त०] समुद्र।

वारा—वि०[सं० वारण] १. (पदार्थ) जिसके खरीदने या बेचने में कुछ आर्थिक बचत भी हो। २. (दर या भाव) जिस पर बेचने से लागत व्यय निकल आने के सिवा कुछ आर्थिक बचत भी हो।

पुं० १. वह स्थिति जिसमें किसी निश्चित दर पर कोई चीज खरीदने या बेचने से लागत, व्यय आदि निकालने के साथ साथ कुछ बचत भी होती हो। २. फायदा। लाभ। उदा०—उनके बारे की कछू मोपै कही न जाइ।—रसनिधि।

पुं०[हिं० वारना] चीज वारने या निछावर करने की क्रिया या भाव।

पद—वारा-फेरा।

मुहा०—वारा जाना या वारा होना=किसी पर निछावर जाना या बलि होना। (बहुत अधिक प्रेम का सूचक) **वारी जाना**=वारा जाना। (स्त्रियाँ)

वाराणसी—स्त्री०[सं०] वरुणा और अस्सी नदियों के बीच में बसी हुई तथा गंगा तट पर स्थित काशी नगरी। बनारस।

वाराणसेय—वि०[सं० वाराणसी+ढक्—एय] १. वाराणसी-संबंधी। २. वाराणसी में उत्पन्न या बना हुआ। बनारसी।

वारा-न्यारा—पुं०[हिं० वार+न्यारा] १. झंझट या झगड़े-बखेड़े आदि का निपटारा। २. ऐसी स्थिति जिसमें किसी एक ओर का पूरा निर्णय या निश्चय हो जाय, या तो इधर हो जाय या उधर हो जाय। जैसे—सट्टे में रोज लाखों रुपयों का वारा-न्यारा होता रहता है।

वारा-पार—पुं०[सं० वार+पार] १. यह पार और वह पार। २. अन्तिम या चरम सीमा। जैसे—ईश्वर की महिमा का कोई वारा-पार नहीं है।

वारा-फेरा†—पुं०[हिं० वारना+फेरना] १. किसी के ऊपर से कोई चीज या कुछ द्रव्य निछावर करने की क्रिया या भाव। २. विवाह, मुंडन आदि शुभ अवसरों पर होनेवाली उक्त रस्म। ३. वह धन या पदार्थ जो उक्त प्रकार से निछावर किया जाय।

वाराह—पुं०[सं०] [स्त्री० वाराही] १. सूअर। बराह। २. विष्णु का तीसरा अवतार जो शूकर या सूअर के रूप में हुआ था। काली भैनी का वृक्ष। ३. जलाशय के किनारे होनेवाला बेंत।

वाराहपत्री—स्त्री०[सं० ब० स०] अश्वगंधा। असगंध।

वाराही—स्त्री० [सं० वराह+ङीप्] १. ब्रह्माणी आदि आठ मातृकाओं

में से एक मातृका। २. एक योगिनी। ३. श्यामा पक्षी। ४. कँगनी नामक कदन्न। ५. वाराही कंद।

वाराही कंद—पुं० [सं० मध्य०स०] एक प्रकार का महाकंद जो औषध में काम आता है। गृष्टि।

वारि—पुं०[सं०√वृ (रोकना)+णिच्-इञ्, अथवा वृ+इण्] १. जल। पानी। २. कोई तरल या द्रव पदार्थ। ३. वाणी। सरस्वती। ४. हाथी बाँधने का सिक्कड़। ५. छोटा गगरा या घड़ा। ६. सुगन्ध बाला।

वारिकफ—पुं०[ष० त०] समुद्र।

वारि-केय—पुं०[वारिका+ढक्—एय] दे० 'जल-लेखी'।

वारि-कोल—पुं०[सं०] कच्छप। कछुआ।

वारि-गर्भ—पुं० [ब० सं०] बादल। मेघ।

वारि-चर—वि०[स०] पानी में रहने और चलने फिरनेवाला। जलचर।
पुं० १. मछली आदि जीव-जन्तु जो पानी में रहते हैं। २. शंख।

वारिज—वि०[सं०] जल में या जल से उत्पन्न होनेवाला।
पुं० १. कमल। २. मछली। ३. शंख। ४. घोंघा। ५. कौड़ी। ६. खरा और बढ़िया सोना। ७. द्रोणी लवण।

वारिजात—वि०, पुं० [सं०]=वारिज।

वारित—भू० कृ०[सं०] जिसका वारण किया गया या हुआ हो। मना किया हुआ।

वारित्र—पुं०[सं० वारि√त्रा (रक्षा करना)+ड] अविहित या निन्दनीय आचरण।

वारिद—पुं०[सं०] १. बादल। मेघ। २. नागर मोथा।
वि०[अ०] जो आकर उपस्थित या घटित हुआ हो। सामने आया हुआ। आगत।
विशेष—वारिदात इसी का बहुवचन है जो हिन्दी में 'वारदात' (देखें) के रूप में प्रचलित है।

वारिदात—स्त्री०[अ०]=वारदात।

वारिधर—पुं० [सं०] १. बादल। मेघ। २. नागर मोथा। ३. एक प्रकार का सम-वृत्त वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में रगण, नगण, और दो भगण होते हैं।

वारिधि—पुं०[सं०] समुद्र।

वारिनाथ—पुं०[सं० ष० त०] १. वरुण। २. समुद्र। ३. बादल। मेघ।

वारिनिधि—पुं०[सं०] समुद्र।

वारिपर्णी—स्त्री० [सं० ब० स०, ङीष्] १. जल-कुंभी। २. पानी में होनेवाली काई।

वारियंत्र—पुं०[सं०] फुहारा।

वारियाँ—अव्य० [हिं० वारना] मैं तुम पर निछावर हूँ। (स्त्रियाँ)
मुहा०—**वारियाँ जाऊँ**=दे० 'वारा' के अन्तर्गत मुहा०—'वारी जाऊँ'।
वारियाँ लेना=बार-बार निछावर होना। (विशेष दे० 'वारना' और 'वारा' के अन्तर्गत)

वारि-रथ—पुं०[सं० ष० त०] जहाज या यान।

वारि-रुह—पुं०[वारि√रुह् (उत्पन्न होना)+क] कमल।

वारि-वर्त—पुं० [सं० बारि+आवर्त] मेघ। बादल।

वारि-वास—पुं०[सं०] मद्य के निर्माता या व्यापारी।

वारि-वाह—पुं०[सं०] १. मेघ। बादल। २. नागर मोथा।

वारि-वाहन—पुं०[ष० त०] मेघ। बादल।

वारि-शास्त्र—पुं०[सं०] १. फलित ज्योतिष का वह अंग जिससे यह जाना जाता है कि कब, कहाँ और कितनी वर्षा होगी। २. दे० 'वारिकेय'।

वारिस—पुं०[अ०] १. वह जिसे किसी की विरासत मिले। २. उत्तराधिकारी। ३. व्यापक क्षेत्र में, जिसने अपने आपको किसी दूसरे के कार्यों आदि का संचालन करने के योग्य बना लिया हो।

वारींद्र—पुं०[सं० ष० त०] समुद्र।

वारी—स्त्री० [सं० वारि+ङीष्] १. हाथी के बाँधने की जंजीर या अँडुआ। गजबंधन। २. छोटा घड़ा। कलसा।
वि० स्त्री० दे० 'वारा' के अन्तर्गत 'वारी जाना' आदि मुहा०।

वारी-फेरी—स्त्री०=वारा-फेरा।

वारीश—पुं०[सं० ष० त०] समुद्र।

वारुंड—पुं०[सं० √ वृ+उण्ड] १. साँपों का राजा। २. नाव में भरा हुआ पानी बाहर फेंकने का तसला। ३. कान की मैल। खूँट। ४ आँख में से निकलनेवाला कीचड़ या मल।

वारु—पुं०[सं०√ वृ (मना करना)+णिच्+उण्] वह हाथी जिस पर विजय पताका चलती है। विजय-हस्ति।

वारुठ—पुं० [सं० वारु+ठन्] १. मृत्यु-शय्या। २. शव ले जाने की अरथी। टिकठी।

वारुण—पुं०[सं० वरुण+अण्] १. जल। पानी। २. शतभिषा नक्षत्र। ३. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। ४. हरताल। ५. एक उप-पुराण। ६. वरुण या वरुना नामक वृक्ष।
वि० १. वरुण-संबंधी। २. जलीय। ३. पश्चिमी।

वारुणक—पुं०[सं० वारुण+कन्] एक प्राचीन जनपद।

वारुण-कर्म—पुं०[स० कर्म० स०] कूआँ, तालाब, नहर आदि बनाने का काम।

वारुणि—पुं०[सं० वरुण+इञ्] १. अगस्त्य मुनि। २. वसिष्ठ। ३. भृगु ऋषि। ४. दाँतवाला हाथी। ५. वारुण या बरुना नामक पेड़। ६. वारुणक जनपद।

वारुणी—स्त्री०[सं० वरुण+अण्+ङीप्] १. वरुण की पत्नी, वरुणानी। २. वृन्दावन के एक कदंब का रस जो वरुण की कृपा से बलराम जी के लिए निकला था। ३. कदंब के फलों से बनाई जानेवाली मदिरा। ४. मदिरा। शराब। ५. उपनिषद् विद्या जिसका उपदेश वरुण ने किया था। ६. पश्चिम दिशा। ७. शतभिषा नक्षत्र। ८. एक प्राचीन नदी (कदाचित् आधुनिक वरुणा)। ९. इन्द्रवारुणी लता। १०. घोड़े की एक प्रकार की चाल। ११. मादा हाथी। हथनी। १२. भुईं आँवला। १३. गाँडर दूब। १४. गंगास्नान का एक पुण्य पर्व या योग जो चैत्र कृष्ण त्रयोदशी को शतभिषा नक्षत्र पड़ने पर होता है।

वारुणी वल्लभा—पुं०[ष० त०] समुद्र।

वारुणीश—पुं०[सं० ष० त०] विष्णु।

वारुण्य—वि० [सं० वरुण+ष्य, अथवा वारुणी+यत्] वरुण-सम्बन्धी। वारुण।

वारुद—पुं०[सं० वारु√ दा (देना)+क] अग्नि। आग।

वार्कजंभ—पुं०[सं० वृकजंभ+अण्] १. वृकजंभ ऋषि के गोत्रज। २. एक साग का नाम।

वार्क्ष—वि०[सं० वृक्ष+अण्] वृक्ष-संबंधी। वृक्ष का।

पुं० वृक्षों की छाल से बना हुआ कपड़ा।

वार्क्षी—स्त्री० [सं० वार्क्ष+ङीष्] प्रचेतागण की स्त्री मारिषा का दूसरा नाम।

वार्ड—पुं०[अं०]१. रक्षा। हिफ़ाजत्। २. वह व्यक्ति जो किसी की रक्षा या हिफाजत में रहता हो। ३. किसी विशिष्ट कार्य के लिए स्थानों का निश्चित किया हुआ विभाग। मंडल। जैसे—(क) इस नगर पालिका में १२ वार्ड हैं। (ख) इस अस्पताल में यक्ष्मा के रोगियों के लिए अलग वार्ड वनेगा।

वार्डन—पुं०[अं०] किसी विभाग विशेषतः छात्रावास के किसी विभाग का व्यवस्थापक अधिकारी।

वार्डर—पुं०[अं०]१. वह जो किसी वार्ड (मंडल) में रक्षा का काम करता हो। २. जेलों में कैदियों का पहरेदार।

वार्णक—पुं०[सं० वर्णक+अण्] लेखक।

वार्णव—पुं०[सं० [वर्णु नद से वर्णु+अण्]आधुनिक बन्नू नगर और उसके आसपास के प्रदेश का पुराना नाम।

वार्णिक—पुं० [सं० वर्ण+ठञ्—इक] लेखक।

वार्त—वि०, पुं०=वार्त्त।

वार्तक—पुं०[सं० वार्त+कन्] बटेर पक्षी।

वार्तमानिक—वि०[सं० वर्तमान+ठक्—इक]१. वर्तमान (काल) से सम्बन्ध रखनेवाला। आज-कल का। २. जो वर्तमान (उपस्थित या विद्यमान) से सम्बन्ध रखता हो।

वार्त्त—वि० [वृत्ति+अण्] १. वृत्ति-सम्बन्धी। वृत्ति का। २. नीरोग। स्वस्थ। ३. हल्का। ४. निस्सार। ५. साधारण। ६. ठीक।

पुं० वह जो किसी वृत्ति (काम, धन्धे या पेशे) में लगा हो। वह जो रोजी-रोजगार में लगा हुआ हो।

वार्त्ता—स्त्री०[सं०]१. बात-चीत। २. ऐसा कथन या बात जो केवल औपचारिक रूप से कही गई हो, पर जिसका व्यावहारिक रूप में सदा उपयोग न होता हो। (फारमल टाक)। ३. ऐसा कथन जो किसी को किसी विषय का ज्ञान कराने के लिए हो। (टाक) ४. किंवदन्ती। जनश्रुति। अफ़वाह। ५. खबर। समाचार। ६. वृत्तान्त। हाल। ७. बात-चीत का प्रसंग या विषय। ८. वैश्यों की वृत्ति। जैसे—कृषि गो-रक्षा, वाणिज्य-व्यापार आदि। ९. चीजें खरीदना और वेचना। क्रय-विक्रय। १०. दुर्ग का एक नाम।

वार्त्ताक—पुं०[सं०]१. बैंगन। भंटा। २. बटेर पक्षी।

वार्त्ताकी—स्त्री०[सं० वार्ताक+ङीप्] बैंगन। भंटा।

वार्त्तानुकर्षक—पुं०[सं० ष० त०] गुप्त बातें ढूँढ़ कर जानने या निकालने वाला, अर्थात् गुप्तचर। जासूस।

वार्त्तानुजीवी (विन्)—वि०[सं० ष० त०] कृषि या व्यापार से जीविका चलानेवाला।

वार्त्तायन—पुं०[सं० ब० स०] दे० 'राजपत्र'।

वार्त्तालाप—पुं०[सं० ष० त०] लोगों में आपस में होनेवाली बात-चीत। कथोपकथन।

वार्त्तावह—पुं०[सं० वार्त्ता√वह् (ढोना)+अच्]१. पनसारी। २. दूत। ३. राजकीय शासन का आय-व्यय आदि से सम्बन्ध रखनेवाला अंग या विभाग।

वार्त्तिक—वि०[वृत्ति+ठक्—इक]१. वार्त्ता संबंधी। २. वार्त्ता या समाचार लानेवाला। ३. विशद् व्याख्या के रूप में होनेवाला। व्याख्यात्मक।

पुं०१. किसान। २. व्यवसायी। ३. दूत। चर। ४. वैद्य। ५. ऐसी विश्लेषणात्मक व्याख्या जिसमें किसी सूत्र, भाष्य आदि का अर्थ समझाया जाता है, उसमें होनेवाली छूट, त्रुटि आदि का निर्देश किया जाता है तथा उसकी व्याप्ति मर्यादित या वर्द्धित की जाती है। ६. कात्यायन का वह प्रसिद्ध ग्रंथ जिसमें पाणिनि के सूत्रों पर विश्लेषणात्मक व्याख्याएँ लिखी हुई हैं।

वार्दर—पुं० [वार √दृ (फाड़ना)+अप्] १. दक्षिणावर्त्त शंख। २. जल। ३. आम की गुठली। ४. रेशम। ५. घोड़े के गले पर दाहिनी ओर की एक भौंरी।

वार्द्धक्य—पुं०[सं० वृद्ध+ष्यञ्, कुक्]१. वृद्ध होने की अवस्था या भाव। वृद्धावस्था। २. वृद्धावस्था के फलस्वरूप होनेवाली कमजोरी। ३. वृद्धि।

वार्ध्रीणस—पुं० [सं० वार्ध्री नासिका+अच्, नस-आदेश, णत्व, ब०स०] १. लंबे कानोंवाला बकरा। २. गैंड़ा। ३. एक प्रकार का पक्षी जिसका बलिदान प्राचीन काल में विष्णु के उद्देश्य से किया जाता था।

वार्मुच—पुं०[सं० वार्√मुच् (त्याग)+क्विप्] १. बादल। २. मोथा।

वार्य—वि०[सं०] १. वरण करने योग्य। २. वर के रूप में प्राप्त या स्वीकार करने योग्य। ३. बहुमूल्य।

वि०=निवार्य।

पुं०१. वर। २. चहारदीवारी।

वार्ष—वि०[सं०]=वार्षिक।

वार्षक—पुं०[सं० वर्ष+अण्+कन्] पुराणानुसार पृथ्वी के दस भागों में से एक।

वार्षगण—पुं०[सं० ष० त०] एक प्रकार का वैदिक आचार्य।

वार्षिक—वि०[सं० वर्षा+ठक्—इक]१. जल की वर्षा या वर्षा ऋतु से संबंध रखनेवाला। २. प्रति वर्ष होनेवाला। एक वर्ष के बाद होनेवाला। ३. एक वर्ष तक चलता रहनेवाला।

अव्य० प्रति वर्ष के हिसाब से।

वार्षिकी—स्त्री०[सं०वार्षिक]१. प्रति वर्ष दी जानेवाली वृत्ति या अनुदान। (एनुइटी) २. प्रतिवर्ष होनेवाला कोई प्रकाशन। (एनुअल) ३. किसी मृत व्यक्ति के उद्देश्य से, उसकी मरणतिथि के विचार से प्रतिवर्ष होनेवाला कोई स्मारक कृत्य। बरसी।

वार्षिक्य—वि०[सं० वार्षिक+यत्]=वार्षिक।

पुं० वर्षा ऋतु।

वार्ष्ण—पुं०[सं० वृष्णि+अण्] कृष्णचन्द्र।

वार्षी—स्त्री०[सं० वर्षा+अण्+ङीप्] वर्षा ऋतु।

वार्षुक—वि०[सं० वर्षुक+अण्]१. बरसनेवाला। २. बरसानेवाला।

वार्ष्णेय—वि०[सं० वृष्णि+ढक्—एय] १. वार्ष्ण-सम्बन्धी। २. वार्ष्ण का अनुयायी या भक्त।

पुं०१. वृष्णि का वंशज। २. श्रीकृष्ण।

वार्हस्पत्य—वि०[सं० बृहस्पति+यञ्]=बार्हस्पत्य।

वालंटियर—पुं०[अं०] स्वयंसेवक।

वाल—पुं०[√वल् (चलना)+घञ्] (घोड़ों आदि की) पूँछ के वाल।
प्रत्य० [हिं० वाला] एक प्रत्यय जो कुछ संज्ञाओं के अन्त में लगकर यह अर्थ देता है—(क) वाला या मालिक जैसे; कोठीवाल। (ख) रहने वाला; जैसे—गयावाल। (ग) क्रिया करनेवाला; जैसे—देवाल=देनेवाला, लेवाल=लेनेवाला।

वालक—पुं०[सं० वाल+कन्]१. बालछड़। २. हाथ में पहनने का कंगन।

वालदैन—पुं०[अ० वालिदैन]माता-पिता।

वालना†—स० [?] गिराना। डालना। (राज०) उदा०—काजल गल वालियौ किरि।—प्रिथीराज।

वालव—पुं०[सं० वाल√वा (गमनादि)+क] फलित ज्योतिष में एक करण।

वाला—स्त्री०[सं० वाल+टाप्] इंद्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के मेल से बने हुए उपजाति नामक सोलह प्रकार के वृत्तों में से एक, जिसके पहले तीन चरणों में दो तगण, एक जगण और दो गुरु होते हैं, तथा चौथे चरण में और सब वही रहता है, केवल प्रथम वर्ण लघु होता है।
प्रत्य० [सं० वान्] [स्त्री० वाली] १. पूर्ववर्ती पद (संज्ञा) के स्वामी या धारक का बोधक। जैसे—घरवाला, चश्मेवाला। २. पूर्ववर्ती पद (क्रिया) के संपादक का बोधक। जैसे—नाचनेवाला, मारनेवाला। ३. पूर्ववर्ती पद (स्थान वाचक संज्ञा) से संबंध रखनेवाला। जैसे—शहरवाला, देहातवाली जमीन। †४. पूर्ववर्ती पद (उपभोग्य वस्तु) के उपभोग से सम्बन्ध रखनेवाला। (पश्चिम) जैसे—खानेवाली मिठाई=खाने की मिठाई।
वि० [फा०] उच्च। ऊँचा।

वालिका—स्त्री०[सं० वाल+कन्+टाप्, इत्व]१.=बालिका। २.=बालुका।

वालिद—पुं०[अ०] [स्त्री० वालिदा, भाव० वल्दियत]पिता। बाप।

वालिदा—स्त्री०[अ० वालिदः] माता। माँ।

वालिदैन—पुं०[अ०] माँ-बाप। माता-पिता।

वाली (लिन्)—पुं०[सं० वालिहंता (तृ), वालि√हन् (मारना)+तृच्, ष० त०] सुग्रीव का बड़ा भाई एक वानर।
प्रत्य० हिं० 'वाला' का स्त्री०।
पुं० [अ०] १. मालिक। स्वामी। २. बादशाह। ३. सहायक। मददगार। ४. संरक्षक।

वालुक—स्त्री० [सं० वालु+कन्] १. एक प्रकार का गंध द्रव्य। २. पनियालू।

वालुंका—स्त्री०[सं०] १. वृक्ष की शाखा। डाल। २. ककड़ी। ३. बालुका। बालू।

वालेय—पुं०[सं० वालि+ढञ्—एय]१. पुत्र। बेटा। २. एक प्रकार का करंज। ३. गधा।

वाल्क—वि०[सं० वल्क+अण्] वल्कल या छाल-संबंधी।
पुं० वृक्षों की छाल या उसके रेशों से बना हुआ कपड़ा।

वाल्कल—वि० [सं० वल्कल+अण्] वल्कल-सम्बन्धी। छाल का।

वाल्मीकि—पुं०[सं० वल्मीक+इञ्] संस्कृत भाषा के आदि कवि तथा रामायण के रचयिता।

वाल्मीकीय—वि० [सं० वाल्मीकि+छ—ईय] १. वाल्मीकि-सम्बन्धी। वाल्मीकि का। २. वाल्मीकि-कृत।

वाल्हा†—पुं०=वल्लभ। (राज०)

वाय*—स्त्री०[सं० वायु]१. हवा। २. गंध। महक। (राज०) जैसे—बघवाव (बाघ के शरीर से निकलनेवाली गंध)।

वावदूक—पुं०[सं०√वद्(बोलना)+यङ, दीर्घ, ऊक्] १. अच्छा बोलनेवाला। वक्ता। वाग्मी। २. बकवादी।

वावना†—अ०[सं० वाद्य] बजना। उदा०—विधि सहित बधावे वाजित्र वावे।—प्रिथीराज।
स०=बजाना।

वावू†—स्त्री०=वायु। (राज०)

वावैला—पुं०[अ०] १. रोना-पीटना। विलाप। २. शोर-गुल। हो-हल्ला।
क्रि० प्र०—मचाना।

वाशक—वि०[सं० वा√शा (पतला करना)+ण्वुल्—अक]१. चिल्लानेवाला। २. रोनेवाला।
पुं०=वासक (अड़ूसा)।

वाशन—पुं० [सं० वा√शा (छीलना)+ल्युट्—अन]१. पक्षियों का बोलना। २. मक्खियों का भिनभिनाना। ३. चिल्लाना।

वाशित—पुं०[सं०√वाश् (शब्द करना)+क्त, इत्व] पशु, पक्षी आदि का शब्द।

वाशिता—स्त्री०[सं० वाशित+टाप्]१. स्त्री। २. हथनी।

वाशिष्ठ—पुं०[वशिष्ठ+अण्] १. एक उपपुराण का नाम। २. एक प्राचीन तीर्थ।
वि० वशिष्ठ-सम्बन्धी।

वाशिष्ठी—स्त्री०[सं० वाशिष्ठ+ङीप्] गोमती नदी।

वाष्कल—वि०[सं० वष्कल+अण्] बड़ा।
पुं० योद्धा।

वाष्प—पुं०[सं०]१. भाप। २. आँसू। ३. लोहा। ४. भटकटैया।

वाष्पन—पुं०[सं०] ताप की सहायता से तरल पदार्थ को वाष्प के रूप में परिणत करना। वाष्प बनाना। (वेपोराइज़ेशन)

वाष्पशील—वि०[सं०][भाव० वाष्पशीलता] (पदार्थ) जो कुछ विशिष्ट अवस्थाओं में वाष्प बनकर उड़ता हुआ समाप्त हो सकता हो। (वोलेटाइल)

वाष्प-स्नान—पुं०[सं०] कुछ विशिष्ट प्रकार के रोगों की चिकित्सा के लिए ऐसी स्थिति में रहना कि सारे शरीर या पीड़ित अंग पर खौलते हुए पानी की भाप लगे। (एयर बाथ)

वासंत—पुं०[सं० वसन्त+अण्]१. कोयल। २. मलयानिल। ३. मूँगा। ४. मैनफल। ५. ऊँट।

वासंतक—वि०[सं० वासंत+कन् अथवा वसंत+वुञ्—अक]१. वसंत-सम्बन्धी। २ वसंत ऋतु में होनेवाला।

वासंतिक—पुं० [सं० वसन्त+ठक्—इक] १. भाँड़। २. नर्तक।
वि० वसंत-सम्बन्धी।

वासंती—स्त्री० [वासन्त+ङीष्] १. माधवीलता। २. जूही। ३. दुर्गा। ४. गनियारी। ५. मदनोत्सव। ६. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में १४-१४ वर्ण होते हैं।

वासंवर†—स्त्री०[सं० वैश्वानर] आग। अग्नि।

वास—पुं०[सं० वस्+घञ्] १. किसी स्थान पर टिक कर रहना। अवस्थान। निवास। जैसे—कल्पवास, कारावास, स्वर्गवास आदि। २. घर। मकान। ३. अड़ूसा। वासक। ४. गंध। बू।

पुं०[सं० वस्त्र] कपड़ा। वस्त्र। उदा०—धरौ निधि नील वास उत्तर सुधारत हौ।—सेनापति।

वासक—पुं० [सं० वास+ण्वुल्—अक] १. अड़ूसा। २. दिन। दिवस। ३. शालक राग का एक भेद।

वासक-सज्जा—स्त्री०[सं० वासक√सज्ज् (तैयार होना)+णिच्+अण्+टाप्] साहित्य में वह नायिका जो स्वयं सज-संवरकर तथा घर-बार सजा-सँवारकर प्रिय की प्रतीक्षा में बैठी हुई हो।

वासग†—वि०[सं० वासक] बसानेवाला।

†पुं०=वासुकि।

वासगृह—पुं० [सं०] वासभवन।

वासत—पुं०[सं०√ वास् (शक करना)+अतच्] गधा।

वासतेय—वि० [सं० वसति+ढञ्—एय] बस्ती के योग्य। रहने लायक (स्थान)।

वासन—पुं०[सं० वसि+ल्युट्—अन] [वि० वासित] १. निवास करना। बसना। २. सुगंधित करना। वासना। ३. वसन। कपड़ा। ४ ज्ञान।

वासना—स्त्री०[सं०√वस् (मिलना)+णिच्+युच्—अन,+टाप्] १. कोई ऐसी आकांक्षा, इच्छा या कामना जो मन में दबी हुई, बनी या बसी रहती हो।

विशेष—शास्त्रों में कहा है कि यह किसी पूर्व संस्कार के फलस्वरूप मन में बनी रहती है, और जब तक इसका अन्त नहीं होता, तब तक मनुष्य को मुक्ति नहीं प्राप्त हो सकती। न्याय-शास्त्र में कहा गया है कि यह एक प्रकार का मिथ्या संस्कार है जो शरीर को आत्मा से भिन्न समझने की दशा में मन में बना रहता है।

२. किसी चीज या बात की ऐसी इच्छा या वासना जिसकी पूर्ति सहज में न हो सकती हो। ३. ज्ञान। ४. दुर्गा का एक नाम। ५. अर्क की पत्नी का नाम।

स०=वासना। (गन्ध से युक्त करना)।

वासभवन—पुं०[सं०] १. रहने का घर। २. प्राचीन भारत में धवल गृह का वह ऊपरी भाग (सौध से भिन्न) जिसमें स्वयं राजा और रानियाँ रहा करती थीं। २. अन्तःपुर। ३. शयनागार।

वासर—पुं०[सं०√ वस् (निवास करना)+णिच्+अर] १. दिन। दिवस। २. वह कमरा या घर जिसमें वर-वधू की सोहागरात होती है।

वासर-कन्यका—स्त्री०[ष० त०] रात्रि। रात।

वासरमणि—पुं०[सं० ष० त०] सूर्य।

वासरिक—वि० [सं०] १. वासर-संबंधी। वासर का। २ प्रतिदिन होनेवाला। दैनिक।

वासरेश—पुं०[सं०] सूर्य।

वासव—वि०[सं०] १. वसु-संबंधी। २. इन्द्र-संबंधी। इन्द्र का।

पुं० १. इन्द्र। २. धनिष्ठा नक्षत्र।

वासवि—पुं०[सं०] १. इन्द्र के पुत्र जयंत। २. अर्जुन।

वासवी—स्त्री० [सं० वासव+ङीप्] १. व्यास की माता सत्यवती। मत्स्यगंधा। २ इन्द्राणी। शची।

वासवेय—पुं०[सं० वासवी+ढञ्—एय] वासवी के पुत्र, वेदव्यास।

वास-स्थान—पुं०[सं०] रहने की जगह। निवास-स्थान। आवास। (एबोड)

वासा—स्त्री०[सं० √ वस्+णिच्+अच्,+टाप्] १. वासक। अड़ूसा। २. माधवी लता।

†पुं०=बासा।

वासामात्य—पुं०[सं० वास+अमात्य] वह राजकीय अधिकारी जो किसी पराये राज्य में वहाँ के शासन आदि पर दृष्टि रखने के लिए अमात्य के रूप में रखा जाता हो। (रेजिडेन्ट)

वासि—पुं०[सं० वस+इञ्] एक प्रकार का छोटा कुल्हाड़ा या बसूला।

वासित—भू० कृ०[सं० वास+क्त, इत्व] १. वास अर्थात् सुगंध से युक्त। सुगंधित किया या महकाया हुआ। २ कपड़े से ढका हुआ। ३. देर का बना हुआ। बासी।

वासिता—स्त्री०[सं० वासित+टाप्] १. स्त्री। २. हथनी। ३. आर्या छन्द का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में ९ गुरु और ३९ लघु वर्ण होते हैं।

वासिल—वि०[अ०] १. जिसका वस्ल अर्थात् संयोग हुआ हो। २. जो वसूल अर्थात् प्राप्त हुआ हो।

पद—वासिल-बाकी।

वासिल-बाकी—पुं० [अ०+फा०] ऐसी सभी धनराशियाँ या रकमें जो या तो प्राप्य होने पर प्राप्त या वसूल हो चुकी हों अथवा अभी प्राप्त या वसूल होने को बाकी हों।

वासिलात—पुं० [अ० वासिल का बहु०] वे धनराशियाँ या रकमें जो वसूल हो चुकी हों।

वासिष्ठ—वि०[सं० वसिष्ठ+अण्] वसिष्ठ-सम्बन्धी।

पुं० १. वसिष्ठ का वंशज। २. खून। लहू।

वासिष्ठी—स्त्री०[सं० वसिष्ठ+ङीप्] गोमती नदी।

वासी (सिन्)—वि० [सं० वास+इनि] रहनेवाला। बसनेवाला। जैसे—काशीवासी, मथुरावासी।

स्त्री०[सं० वस+इञ्+ङीप्] बढ़इयों का बसूला।

वासुंधरेयी—स्त्री०[सं० वासुन्धरेय+ङीप्] सीता।

वासु—पुं०[सं०] १. विष्णु। २. आत्मा। ३. परमात्मा। ४. पुनर्वसु नक्षत्र।

वासुकि—पुं०[सं० वासु√ कै+क+इञ्] १. आठ नाग राजाओं में से एक जो कश्यप के पुत्र माने जाते हैं तथा जिनका उपयोग समुद्र-मन्थन के समय रस्सी के रूप में किया गया था। २. एक प्राचीन देवता।

वासुकेय—वि०[सं०] वासुकि-सम्बन्धी।

पुं०=वासुकि।

वासुदेव—पुं०[सं०] १. वसुदेव के पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र। २. पीपल का पेड़।

वासुदेवक—पुं० [सं० वासुदेव+कन्] वासुदेव या श्रीकृष्ण के उपासक।

वासुदेव-धर्म—पुं०[सं०] वि० पू० चौथी, पाँचवीं शती का एक धार्मिक संप्रदाय जो वासुदेव या श्रीकृष्ण का उपासक था। यह 'एकांतिक धर्म' का विकसित रूप था।

वासुभद्र—पुं०[सं०] वासुदेव। श्रीकृष्णचन्द्र।

वासुर—पुं०=वासर।

वासुरा—स्त्री०[सं० वास+उरण्+टाप्] १. स्त्री। २. हथनी। ३. जमीन। भूमि। ४. रात। रात्रि।

वासू—स्त्री०[सं० वास+ऊ (बाहु०)] नाटक में सेविका बननेवाली स्त्री के लिए संबोधन रूप में प्रयुक्त शब्द।

वासोख्त—पुं०[फा०] १. दिल के बहुत ही जले हुए या दुःखी रहने की अवस्था या भाव। मानसिक सन्ताप। २. उर्दू फारसी में मुसद्दस (षट्-पदी) के रूप में लिखा हुआ वह काव्य जिसमें प्रेमिका के उपेक्षापूर्ण दुर्व्यवहारों के कारण परम दुःखी होकर प्रेमी उसे जली-कटी बातें सुनाता और अपने दिल के फफोले फोड़ता है।

वासोख्ता—वि०[फा०] १. जला हुआ। २. दिल-जला।

वास्कट—स्त्री०[अ० वेस्टकोट] पाश्चात्य ढंग की बिना आस्तीन की कुरती या फतुही।

वास्तव—वि०[सं० वस्तु+अण्] जो वस्तु या तथ्य के रूप में हो। यथार्थ। सत्य।

पुं० परमार्थ अथवा मूलतत्त्व या भूत।

पद—वास्तव में=वास्तविकता यह है कि। हकीकत में।

वास्तविक—वि०[सं० वस्तु+ठक्—इक] [भाव० वास्तविकता] १. जो वास्तव में हो। जो अस्तित्व में हो।

विशेष—यथार्थ और वास्तविक में मुख्य अंतर यह है कि यथार्थ में उचित और न्यायसंगत होने का भाव प्रधान है और उसका अर्थ है—जैसा होना चाहिए, वैसा। परन्तु 'वास्तविक' मुख्यतः इस भाव का सूचक है कि किसी चीज या बात का प्रस्तुत या वर्तमान रूप क्या अथवा कैसा है। काल्पनिक या मिथ्या से भिन्न। (रियल)

२. (वस्तु) जो खरी तथा प्रामाणिक हो।

वास्तविकता—स्त्री०[सं०] १. वास्तविक होने की अवस्था या भाव। (रिएलिटी) २. ऐसी स्थिति जो सत्य हो। ३. ऐसी बात जो घटित हुई हो।

वास्तव्य—वि०[सं०√ वस्+तव्यत्] १. निवास करने अर्थात् बसने या रहने के योग्य (स्थान)। २. निवास करने या बसनेवाला (व्यक्ति)।

पुं० बसी हुई जगह। बस्ती।

वास्ता—पुं०[अ० वास्तः] १. संबंध। लगाव। सरोकार।

मुहा०—(किसी का) वास्ता देना=किसी की शपथ देना। (पश्चिम) **(किसी से) वास्ता पड़ना**=किसी से लेन-देन या व्यवहार स्थापित होना।

२. मित्रता। ३. अवैध संबंध विशेषतः पर-स्त्री और पर-पुरुष का। ४. जरिया। द्वारा।

वास्तु—पुं०[सं०] १. बसने या रहने के लिए अच्छा और उपयुक्त स्थान। २. वह स्थान जिस पर रहने के लिए मकान बनाया जाय। ३. बनाकर तैयार किया हुआ घर या मकान। ४. ईंट, चूने, पत्थर, लकड़ी आदि से बनाकर तैयार की जानेवाली कोई रचना। इमारत। जैसे—कूआँ, तालाब, पुल आदि।

वास्तुक—पुं०[सं० वास्तु+कन्] १. बथुआ नाम का साग। २. पुनर्नवा। गदहपूरना।

वास्तु-कर्म (न्)—पुं०[ष० त०] इमारत बनाने का काम।

वास्तु-कला—स्त्री०[सं०] वास्तु या मकान, महल आदि बनाने की कला जिसके अन्तर्गत चित्रण और तक्षण दोनों आते हैं और जो बिलकुल आरंभिक तथा सब कलाओं की जननी मानी गई है। (आर्किटेक्चर)

वास्तु-काष्ठ—पुं०[सं०] इमारत के काम में आनेवाली लकड़ी, अर्थात् किवाड़, चौखट, धरनें, आदि बनाने के योग्य लकड़ी।

वास्तुप, वास्तुपति—पुं०=वास्तु-पुरुष।

वास्तु-पुरुष—पुं०[सं०] वास्तु अर्थात् इमारत या बसने योग्य स्थान का अधिष्ठाता देवता।

वास्तु-पूजा—स्त्री०=वास्तु शांति।

वास्तु-बंधन—पुं०[ष० त०] इमारत बनाने का काम।

वास्तु-याग—पुं०[सं०] वह याग जो नये घर में प्रवेश करने से पहले किया जाता है।

वास्तु-विद्या—स्त्री०=वास्तु-कला।

वास्तु-वृक्ष—पुं०[सं०] वह वृक्ष जिसकी लकड़ी इमारत के काम आती हो।

वास्तु-शांति—स्त्री०[सं०] कर्मकांड-संबंधी वे कृत्य जो गृह-प्रवेश से पहले वास्तु या मकान के दोष शांत करने के लिए किए जाते हैं और जिसमें वास्तु-पुरुष का पूजन प्रधान होता है।

वास्तु-शास्त्र—पुं०[सं०]=वास्तु-कला।

वास्तूक—पुं०[सं० वास्तु+कन्, पृषो० दीर्घ] बथुआ। (साग)

वास्तूपशम, वास्तूपशमन—पुं०=वस्तु-शांति।

वास्ते—अव्य०[अ०] १. निमित्त। लिए। जैसे—मेरे वास्ते किताब लाना। २. सबब। हेतु। जैसे—मैं भी इसी वास्ते वहाँ गया था।

वास्तेय—वि० [सं० वस्ति+ढञ्—एय] १. वास्तु-संबंधी। २. बसने या रहने के योग्य (स्थान)।

वास्तोष्पति—पुं०[सं० ष० त०] १. इन्द्र। २. देवता। ३ वास्तुपति।

वास्त्र—वि०[सं० वस्त्र+अण्] १. वस्त्र-संबंधी। २. वस्त्र से बना हुआ। ३. ढका हुआ।

पुं० प्राचीन भारत में वह रथ जो कपड़े से ढका होता था।

वास्य—वि०[सं० वास+यत्] १. (स्थान) जो बसने के योग्य हो। २. (स्थान) जो छाये जाने के योग्य हो।

वाह—वि०[सं०√ वह् (ढोना)+घञ्] १. वहन करनेवाला। २. बहनेवाला। (यौ० के अन्त में)

पुं० १. वाहन। सवारी। जैसे—गाड़ी, रथ आदि। २. बोझ खींचने या ढोनेवाला पशु। जैसे—घोड़ा, बैल आदि। ३. वायु। हवा। ४. चार गोणी के बराबर एक पुरानी तौल। ५. बाँह। बाहु।

अव्य०[फा०] १. प्रशंसा-सूचक शब्द। धन्य। जैसे—वाह! यह तुम्हारा ही काम था। २. आश्चर्य, घृणा आदि का सूचक शब्द। जैसे—वाह! यह तुम कैसी बात कहते हो।

पुं०[?] एक प्रकार का रात्रिचर जन्तु जिसकी बोली प्रायः बिल्ली की

बोली की तरह की होती है। यह पेड़ों पर भी चढ़ सकता है और पाला भी जाता है।

वाहक—वि० [सं०√वह् (ढोना)+ण्वुल्—अक] ढो या लादकर ले जानेवाला।

पुं०१. कुली। २. सारथी। ३. एक विषैला कीड़ा।

वाहणी†—पुं०=वाहन। (डिं०)

वाहन—पुं०[सं०√वह् (ढोना)+ल्युट्—अन, वृद्धि निपा०] १. वहन करने अर्थात् ढोने की क्रिया या भाव। २. कोई ऐसा पशु या चीज जिस पर लोग सवार होते हों। सवारी। जैसे—घोड़ा, गाड़ी, रथ आदि। ३. उद्योग। प्रयत्न।

वाहनप—पुं०[सं०] वह जो किसी प्रकार के वाहन की देख-रेख करता हो। जैसे—महावत, साईस आदि।

वाहना—स्त्री०[सं० वाहन+टाप्] सेना।

†स०१.=बाहना। २.=बाँधना।

वाहनिक—पुं०[सं० वाहन+ठक्–इक] वह जो भारवाहक पशुओं के पालन-पोषण, वर्द्धन आदि का काम करता हो।

वाहनीक—पुं०=वाहनिक।

वाहनीय—वि०[सं०√वह् (ढोना)+णिच्+अनीयर्] जो वहन किया जा सके।

पुं० भारवाही पशु।

वाहरु†—पुं०=पाहरु (पहरेदार)।

वाहला—स्त्री०[सं० वाह+लच्+टाप्] १. धारा। स्रोत। २. प्रवाह बहाव। ३. वाहन।

†पुं०१.=बादल। २.=नाला (पानी का)। (राजा०)

वाहवना†—स०=वाहना (बाहना)।

वाह-वाही—स्त्री०[फा०] १. कोई अच्छा काम करने पर लोगों का वाह-वाह कहना। साधुवाद। २. समाज में होनेवाली प्रशंसा।

क्रि० प्र०—मिलना।—लूटना।—होना।

वाहि—सर्व० [हिं० वा] उसको। उसे।

वाहिक—पुं०[सं० वाह+ठक्—इक] १. गाड़ी, रथ आदि यान। २. ढक्का नाम का बाजा।

वाहिकता—स्त्री०[वाहिक+तल्-टाप्]वाहिक होने की अवस्था या भाव।

वाहिकत्व—पुं०=वाहिकता।

वाहिका—स्त्री०[सं०] रक्तवहन करनेवाली शिरा। वाहिनी। (वेसल)

वाहित—भू० कृ० [सं०√वह् (ढोना)+णिच्+क्त] १. जिसका वहन हुआ हो। ढोया हुआ। २. बहता हुआ। प्रवाहित। ३. चलाया हुआ। चालित। ४. वंचित।

वाहिद—वि०[अ०] १. एक। २. अकेला। ३. अनुपम।

पुं० ईश्वर।

वाहिनी—स्त्री०[सं०] १. सेना। फौज। २. प्राचीन भारतीय सेना की एक इकाई जो तीन गुल्मों के योग से बनती थी। ३. आज-कल सेना का वह विशिष्ट विभाग जो किसी एक उच्च सैनिक अधिकारी के अधीन हो। (डिवीज़न) ४. शरीर-विज्ञान में नली के आकार के वे सूक्ष्म आधार जो रक्त के कण एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाते हैं। (वेसल) ५. नदी।

वाहिनीय—वि०[सं०] शरीर के अन्दर की वाहिनियों से संबंध रखनेवाला। (वैस्कयुलर)

वाहिनीपति—पुं०[सं० ष० त०] १. वाहिनी नामक सैनिक विभाग का अधिपति। २. सेनापति।

वाहियात—वि०[अ० वाही का फा० बहु०] [भाव० वाहियातपन] १. (वस्तु) जो निरर्थक या व्यर्थ हो। २. (बात) जो बे-सिर-पैर का, अश्लील या बेहूदी हो। ३. (व्यक्ति) जो तुच्छ, दुष्टप्रकृति, निकम्मा या मूर्ख हो।

विशेष—यह शब्द मूलतः बहुवचन संज्ञा होने पर उर्दू और हिंदी में विशेषण रूप में दोनों वचनों में समान रूप से प्रयुक्त होता है। जैसे—वाहियात लड़का, वाहियात बात।

वाहियाती—स्त्री०[फा० वाहयात] १. वाहियातपन। २. कोई वाहियात बात।

वाही—वि०[अ०] १. सुस्त। ढीला। २. निकम्मा। निरर्थक। उदा०—अजी बस जाओ भी, कुछ तुम तो बड़े वाही हो।—इन्शा०। वाहियात इसी का बहु० रूप है। ३. अश्लील, गंदा और भद्दा।

मुहा०—**वाही तबाही बकना**=(क) अश्लील, गंदी या भद्दी बातें कहना। (ख) बे-सिर-पैर की या व्यर्थ की बातें करना।

४. मूर्ख। बेवकूफ। ५. आवारा। ६. बेहूदा।

वाही-तबाही—वि०[अ० वाही+तबाही] १. आवारा। २. बेहूदा। ३. बे-सिर-पैर का। अंड-बंड।

स्त्री० गन्दी और भद्दी बातें।

क्रि० प्र०—बकना।

वाहु—स्त्री०[सं०√वाध् (नाश करना)+कु, हादेश]=बाहु।

वाह्य—वि०[सं०√वह्+ण्यत्] वहन किये जाने के योग्य। जिसका वहन हो सके।

पुं० १. यान। सवारी। २. घोड़े, बैल, हाथी आदि पशु जो वहन के काम आते हैं।

वि०, क्रि० वि०=बाह्य।

विशेष—उक्त अर्थ में 'वाह्य' के यौ० के लिए दे० 'बाह्य' के यौ०।

वाह्लिक—वि०[सं०] वाह्लीक देश का।

वाह्लीक—पुं०[सं०√वह्+लिण्+कन्] १. एक प्राचीन जनपद जो भारत की उत्तर-पश्चिम सीमा पर था। गांधार के पास का प्रदेश। आधुनिक बलख राज्य। २. उक्त देश का निवासी। ३. उक्त देश का घोड़ा। ४. केसर। ५. हींग।

विंगेश—पुं०[सं० ष० त०] अग्नि।

विंजामर—पुं०[सं०] आँख का सफेद भाग।

विंदक—पुं० [सं० विंद+कन्] १. प्राप्त करनेवाला। पानेवाला। २. जाननेवाला। ज्ञाता।

विंदु—पुं०[सं० विन्द+उण्] १. पानी या किसी तरल पदार्थ का कण। बूँद। २. छोटा गोलाकार चिह्न। बिंदी। ३. हाथी के मस्तक पर रंगों से किये जानेवाले चिह्न। ४. लिखने में अनुस्वार का चिह्न। ५. शून्य का चिह्न। सिफर। ६. रेखा-गणित में वह स्थान जिसकी स्थिति तो हो, पर जिसके विभाग न हो सकते हों। ७. दाँत से लगनेवाला घाव।

दन्त-क्षत। ८. किसी चीज़ का बहुत छोटा टुकड़ा। कण। कनी। ९. वेदान्त में, नाद के फल-स्वरूप होनेवाली क्रिया। देखें 'नाद'। १०. रत्नों का एक दोष या धब्बा जो चार प्रकार का कहा गया है—आवर्त्त (गोल) वर्त्ति (लम्बा) आरक्त (लाल) यव (जौ के आकार का)।

वि० १. ज्ञाता (वेत्ता)। जानकार। २. दाता। दानी। ३. जिसका ज्ञान प्राप्त करना उचित हो। जानने योग्य।

विंदुक—पुं०[सं०] माथे पर लगाया जानेवाला टीका या बिन्दी।

विंदु-चित्रक—पुं० [सं० ब० स०] हिरन जिसके शरीर पर सफेद चित्तियाँ हों।

विंदु-जाल—पुं०[सं०] सुंदरता के लिए गोद या छापकर किसी स्थान पर बनाई हुई बिंदियाँ। जैसे—हाथी के मस्तक या सूँड पर का विंदु-जाल, बाँह या हाथ पर गोदने का विंदु-जाल।

विंदु-तंत्र—पुं०[सं० ष० त०] चौपड़ आदि की बिसात। सारि-फलक।

विंदु-तीर्थ—पुं०[सं० मध्यम० स०] काशी का प्रसिद्ध पंचनद तीर्थ जहाँ विन्दु माधव का मंदिर है। पंचगंगा।

विंदु-त्रिवेणी—स्त्री०[सं० ब० स०] संगीत में स्वर साधन की एक प्रणाली जिसमें तीन बार एक स्वर का उच्चारण करके एक बार उसके बाद के स्वर का उच्चारण करते हैं, फिर तीन बार उस दूसरे स्वर का उच्चारण करके एक बार तीसरे-स्वर का उच्चारण करते हैं; और अंत में तीन बार सातवें स्वर का उच्चारण करके एक बार उसके अगले सप्तक के पहले स्वर का उच्चारण करते हैं।

विंदु-पत्र—पुं०[सं० मध्यम० स०] भोजपत्र।

विंदु-माधव—पुं० [सं० मध्यम० स०] काशी की एक प्रसिद्ध विष्णु मूर्ति।

विंदु-मालिनी—स्त्री०[सं०]संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

विंदुर—पुं०[सं० विंदु+रक्] छोटी विंदी। बुंदकी।

विंदुराजि—पुं०[सं० ब० स०] एक तरह का साँप जिसके शरीर पर बुँदकियाँ होती हैं।

विंदु-रेख—पुं०[सं०] १. विंदु-रेखा। २. अंकन की एक विशेष प्रक्रिया जिसमें विभिन्न विंदुओं को रेखाओं से संबद्ध किया जाता है। ३. उक्त प्रकार से विंदुओं को रेखाओं से संबद्ध करने पर बना हुआ चित्र। (ग्राफ; अंतिम दोनों अर्थों के लिए)

विंदु-रेखा—स्त्री० [सं०] विंदुओं को मिलाने से बननेवाली रेखा। विंदु-रेखा।

विंदुसर—पुं०[सं० मध्यम० स०] १. पुराणानुसार कैलाश पर्वत के दक्षिण का एक सरोवर। २. भुवनेश्वर क्षेत्र में स्थित एक प्राचीन सरोवर।

विंध †—पुं०=विंध्य (विंध्याचल)।

विंध्य—पुं०[सं० विंध+यत्] एक प्रसिद्ध पर्वत-श्रेणी जो भारतवर्ष के मध्य में पूर्व से पश्चिम तक फैला हुआ है, यह आर्यावर्त की दक्षिणी सीमा पर है; और दक्षिण भारत को उत्तर भारत से विभक्त करता है।

विंध्य-कूट(क)—पुं०[कर्म० स०, ब० स०] १. विंध्य पर्वत। २. अगस्त्य मुनि का एक नाम।

विंध्य-गिरि—पुं०[मध्यम० स०] विंध्य पर्वत।

विंध्य-चूलिक—पुं०[ब० स०] विंध्य पर्वत के दक्षिण का प्रदेश।

विंध्यवासिनी—स्त्री० [सं०] मिरजापुर जिले के अंतर्गत स्थित दुर्गा की एक मूर्ति।

विंध्या—स्त्री०[सं० विंध्य+टाप्] एक प्राचीन नदी।

पुं०=विंध्य।

विंध्याचल—पुं०[सं० मध्यम० स०] १. विंध्य पर्वत। २. उक्त पर्वत का वह विशिष्ट अंश जो मिरजापुर के पास है और जहाँ विन्ध्यवासिनी देवी का मंदिर है। ३. वह नगरी जिसमें उक्त मंदिर स्थित है।

विंध्याद्रि—पुं०[सं० मध्यम० स०] विंध्य पर्वत।

विंश—वि०[सं० विंशति+डट्, अति-लोप] बीसवाँ।

पुं० किसी चीज का बीसवाँ भाग।

विंशक—वि०[सं०] बीस।

विंशत—वि०[सं०] बीस। (समस्त शब्दों में)

विंशति—स्त्री०[सं० विंश+ति] १. बीस की संख्या। २. उक्त संख्या के सूचक अंक।

वि० जो गिनती में बीस अर्थात् दस का दूना हो।

विंशति बाहु—पुं०[सं० ब० स०] रावण।

विंशोत्तरी—स्त्री० [सं० ब० स०] फलित ज्योतिष में, मनुष्य के शुभाशुभ फल जानने की एक रीति जिसमें मनुष्य की आयु १२० वर्ष मान कर उसके विभाग करके नक्षत्रों और ग्रहों के अनुसार फल कहे जाते हैं।

वि—उप०[सं०]एक उपसर्ग जो क्रियाओं तथा संज्ञाओं में लगकर निम्नलिखित अर्थ देता है—(क) अलगाव या पार्थक्य; वियोग। (ख) विपरीतता; जैसे—विस्मरण, विक्रय। (ग) अंशीकरण; जैसे—विभाग। (घ) अन्तर; जैसे—विशेष, विलक्षण। (ङ) क्रम या विन्यास; जैसे—विद्या। (च) अधिकता; जैसे—विकरालता। (छ) अनेकरूपता या विचित्रता; जैसे—विविध। (ज) निषेध या राहित्य; जैसे—विकच। (झ) परिवर्तन; जैसे—विकार।

पुं० १. अन्न। २. आकाश। ३. आँख।

स्त्री० पक्षी। चिड़िया।

वि०—सं० विक्रम संवत् का संक्षिप्त रूप।

विकंकट—पुं०[सं० वि√कंक् (गमनादि)+अटन्] गोखरू।

विकंकत—पुं०[सं० वि√कंक् (गमनादि)+अतच्] १. एक प्रकार का जंगली वृक्ष जिसके कुछ अंग औषध के काम आते हैं; और प्राचीन काल में जिसकी लकड़ी यज्ञ में जलाई जाती थी। कंटाई। किंकिणी।

विकंटक—पुं०[सं० ब० स०] १. जवासा। २. विकंकट।

विकंप—वि०[सं० कर्म० स०] १. काँपता हुआ। २. चंचल। ३. अस्थिर।

विकंपन—पुं०[सं०] १. हिलना-डुलना। काँपना। २. गति। चाल।

विक—पुं०[सं० ब० स०] नई ब्याई हुई गौ का दूध।

वि० १. जल-रहित। जल-विहीन। २. अप्रसन्न।

विकच—पुं०[सं० ब० स०] १. एक प्रकार के धूमकेतु जिनकी संख्या ६५ कही गई है; और यह माना गया है कि इनका उदय अशुभ होता है। २. ध्वज। ३. क्षपणक।

वि० १. जिसके बाल न हों। २. खिला हुआ। विकसित। ३. व्यक्त। स्पष्ट। ४. चमकता हुआ।

विकचित—भू० कृ० [सं०] खिला हुआ (फूल)।

विकच्छ—पुं०[सं० ब० स०]ऐसी नदी जिसके दोनों ओर तराई या कछार न हों।

विकट—वि०[सं० वि√कट्(गमनादि)+अच्] १. बहुत बड़ा। विशाल। २. भद्दा। भोंड़ा। ३. उग्र, तीव्र, भयंकर या भीषण। ४. टेढ़ा। वक्र। ५. कठिन। मुश्किल। ६. दुर्गम। ७. दुस्साध्य।

पुं० १. विस्फोटक। २. सोमलता। ३. धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

विकटक—वि० [सं० विकट+कन्] जिसकी आकृति खराब हो गई हो।

विकटा—स्त्री०[सं० विकट+टाप्] १. बुद्ध की माता, मायादेवी। २. टेढ़े पैरोंवाली लड़की जो विवाह के योग्य न हो।

विकथा—स्त्री०[सं०] निरर्थक या बेहूदी बात।

विकर—पुं०[सं० वि√कृ. (करना)+अच्] १. रोग। व्याधि। २. तलवार चलाने के ३२ प्रकारों में से एक।

विकरण—पुं०[सं०] व्याकरण में, प्रकृति या धातु और प्रत्यय के बीच में होनेवाला वर्णागम। जैसे—'घोड़ों पर' में का 'ों' विकरण है।

वि० करण अर्थात् इन्द्रियों से रहित।

विकरार*—वि० १.=विकराल। २.=बे-करार (विकल)।

विकराल—वि०[सं० तृ० त०] [भाव० विकरालता] भीषण आकृतिवाला। डरावना।

विकर्ण—वि०[सं० ब० स०]१. कर्णरहित। २. जिसके कान न हों। बिना कानोंवाला। २. जिसे सुनाई न पड़ता हो। जो सुन न सके। बहरा। ३. जिसके कान बड़े और लम्बे हों। ४. रेखा-गणित में चार या अधिक कोणोंवाले क्षेत्र में किसी कोण से उसकी ठीक विपरीत दिशावाले कोण तक पहुँचने या होनेवाला। टेढ़े या तिरछे बल में ऊपर से नीचे आने अथवा नीचे से ऊपर जानेवाला। (डायगनल)

पुं० १. कर्ण का एक पुत्र। २. दुर्योधन का एक भाई। ३. एक प्रकार का साँप। ४. एक प्रकार का तीर या बाण। ५. रेखा गणित में वह रेखा जो किसी चतुर्भुज को तिरछे बल से पड़नेवाले आमने-सामने के विन्दुओं को मिलाती हुई चतुर्भुज को दो भागों में विभक्त करती है। (डायगनल)

विकर्णक—पुं०[सं० विकर्ण+कन्] १. एक प्रकार की गँठिवन। २. शिव का व्याडि नामक गण।

विकर्णतः—अव्य०[सं०]विकर्ण के रूप में। तिरछे बल में। (डायगनली)

विकर्णिक—पुं०[सं० विकर्ण+ठक्–इक] सरस्वती नदी के आस-पास का देश। सारस्वत प्रदेश।

विकर्णी—स्त्री०[सं० दिकर्ण+इनि, दीर्घ, न—लोप] एक प्रकार की ईंट जिसका व्यवहार यज्ञ की वेदी बनाने में होता था।

विकर्तन—पुं०[सं० ब० स०] १. सूर्य। २. आक। मदार। ३. ऐसा राजकुमार जिसने पिता के राज्य पर अनुचित रूप से अधिकार जमा लिया हो।

विकर्म—पुं०[सं०] १. दूषित या निषिद्ध कर्म। २. कर्म विशेषतः वृत्ति से निवृत्त होना। ३. विविध कर्म।

विकर्मस्थ—पुं०[विकर्म√स्था (ठहरना)+क] वह जो वेद-विरुद्ध आचरण करता हो। (धर्म-शास्त्र)

विकर्मिक—वि०[सं०] १. दूषित या निषिद्ध कर्म करनेवाला। २. व्यवसाय या विविध कामों में लगा रहनेवाला।

पुं० प्राचीन काल में वह अधिकारी जो बाजारों, हाटों, मेलों आदि की व्यवस्था तथा निरीक्षण करता था।

विकर्ष—पुं०[सं० वि√कृष् (खींचना)+घञ्] १. बाण। तीर। २. धनुष की प्रत्यंचा खींचने की क्रिया। २. अन्तर। दूरी। फासला।

विकर्षण—पुं० [सं०] १. छीना-झपटी करना। २. आकर्षण। खींचना। ३. दूसरी ओर या विपरीत दिशा में खींचना। ४. खींचकर अपनी ओर लाना। लौटाना। ५. न रहने देना। नष्ट करना। ६. विभाग। हिस्सा। ७. कुश्ती का एक पेंच। ८. कामदेव के पाँच बाणों में से एक। ९. एक प्राचीन शास्त्र जिसमें लोगों को आकर्षित करने की कला का वर्णन था।

विकल—वि०[सं० ब० स०] १. जिसमें कल न हो। कल से रहित। २. जिसका आराम या चैन नष्ट हो चुका हो। बेचैन। व्याकुल। ३. जिसकी कला न रह गई हो। कला से रहित या हीन। ४ जिसका कोई अंग टूट या निकल गया हो। खंडित। जैसे—विकलांग। ५. जिसमें कोई कमी हो। घटा हुआ। ६. असमर्थ। ७ क्षोभ, भय आदि से युक्त। ८. प्रभाव, शक्ति आदि से रहित। ९. कुम्हलाया या मुरझाया हुआ। १०. प्राकृतिक। स्वाभाविक।

पुं०=विकला।

विकलन—पुं० [वि √ कल्(गिनती करना)+ल्यु–अन] हिसाब-किताब में किसी मद में कोई रकम किसी के नाम लिखना। (डेबिट)

विकलांग—वि०[सं० ब० स०] १. किसी अंग से हीन। २. जिसका कोई अंग बेकाम हो।

विकला—स्त्री० [सं० विकल+टाप्] १. कला का साठवाँ अंश। २. बुध ग्रह की गति। ३. वह स्त्री जिसका रजोदर्शन बन्द हो गया हो।

विकलाना—अ० [सं० विकल+आना (प्रत्य०)] व्याकुल होना। घबराना। बेचैन होना।

स० किसी को विकल या बेचैन करना।

विकलास—पुं०[सं० विकलास्य]एक प्रकार का प्राचीन बाजा, जिस पर चमड़ा मढ़ा होता था।

विकलित—भू० कृ०[सं० वि√कल्+क्त, इत्व अथवा विकल+इतच्] १. विकल किया हुआ। २. विकल। बेचैन। ३. दुःखी। पीड़ित।

विकलेंद्रिय—वि०[सं० ब० स०] १. जिसकी इन्द्रियाँ वश में न हों। २. दे० 'विकलांग'।

विकल्प—वि०[सं०] [वि० वैकल्पिक] १. ऐसी स्थिति जिसमें यह समझना या सोचना पड़ता है कि यह है या वह। २. मन में एक कल्पना उत्पन्न होने के बाद उससे मिलती-जुलती की जानेवाली दूसरी कल्पना। पहले कुछ सोचने के बाद फिर कुछ और सोचना। ३. वह अवस्था जिसमें सामने आई हुई कई बातों या विषयों में से कोई बात या विषय अपने लिए चुनने की आवश्यकता होती है। (आप्शन)। ४. सामने आये हुए दो या अधिक ऐसे कामों या बातों में से हर एक जो आवश्यक, सुभीते आदि के अनुसार काम में लाया या लिया जा सकता हो। (आल्टरनेटिव)। ५. व्याकरण में किसी बात या विषय से सम्बन्ध रखनेवाले दो या अधिक नियमों, विधियों आदि में से अपनी इच्छा के अनुसार कोई नियम या विधि

मानना, लगाना या लेना। ६. धोखा। भ्रम। भ्रान्ति। ७. विचित्रता। विलक्षणता। ८. योग शास्त्र में, पाँच प्रकार की चित्त-वृत्तियों में से एक जिसमें कोई चीज या बात बिना तथ्य या वास्तविकता का विचार किए ही मान ली जाती है। जैसे--चाहे पारस पत्थर होता हो या न होता हो; फिर भी यह मान लेना कि उसका स्पर्श लोहे को सोना बना देता है। ९. योगसाधन में एक प्रकार की समाधि। १०. साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें दो परस्पर विरोधी बातों का उल्लेख करके कहा जाता है कि या तो यह हो या वह; अथवा या तो यह होना चाहिए या वह। (आल्टरनेटिव) जैसे--पार्वती की यह प्रतिज्ञा या तो मैं शंकर से विवाह करूँगी या जन्म-भर कुँआरी रहूँगी। उदा०--बैर तो बढ़ायो, कह्यौ काहू कौन मान्यौ, अब दाँतनि तिनूका कै कृपान गहौ कर में।--मतिराम। ११. मन में विशेष रूप से की जानेवाली कोई कल्पना या विचार। निर्धारण। जैसे--दंड देने का विकल्प। १२. मन में उत्पन्न होनेवाली तरह-तरह की कल्पनाएँ। १३. कल्प का कोई छोटा अंग या विभाग। अवान्तर कल्प। १४. विचित्रता। विलक्षणता।

विकल्पन--पुं०[सं०] [भू० कृ० विकल्पित] १. विकल्प करने की क्रिया या भाव। २. किसी बात में सन्देह करना।

विकल्पना--स्त्री० [सं०] १. तर्क-वितर्क करना। २. सन्देह करना।

विकल्पसम--पुं०[सं० ब० स०] न्याय-दर्शन में २४ जातियों में से एक जिसमें वादी के दिये हुए दृष्टान्त में अन्य धर्म की योजना करते हुए साध्य में भी उसी धर्म का आरोप करके अथवा दृष्टान्त को असिद्ध ठहराकर वादी की युक्ति का निरर्थक खंडन किया जाता है। जैसे--यदि वादी कहे-'शब्द अनित्य है, क्योंकि वह घर की तरह उत्पत्ति धर्मवाला है।' और इस पर प्रतिवादी कहे 'घर जिस प्रकार उत्पत्ति धर्म से युक्त होने के कारण अनित्य और मूर्त है, उसी प्रकार शब्द भी उत्पत्ति धर्म से युक्त होने के कारण अनित्य और मूर्त है।' तो ऐसा तर्क 'विकल्पसम' कहा जायगा।

विकल्पित--भू० कृ०[सं०] १. जिसके सम्बन्ध में विकल्पन (तर्क-वितर्क या सन्देह) किया गया हो। अनिश्चित और संदिग्ध। २. जो विकल्प (देखें) के रूप में ग्रहण किया गया हो ३. जिसके सम्बन्ध में कोई निश्चय न हो। ४. जिसके सम्बन्ध में कोई नियम न हो। अनियमित।

विकल्मष--वि०[सं० ब० स०] कल्मष या पाप से रहित। निष्पाप।

विकस--पुं०[सं० वि√कस् (विकसित होना)+अच्] चंद्रमा।

विकसन--पुं०[सं० वि√कस् (विकसित होना)+ल्युट्--अन] [वि० विकसित] १. विकास करना या होना। २. फूलों आदि का खिलना।

विकसना--अ० [सं० विकसन] १. विकास के रूप में आना या होना। २. फूलों आदि का खिलना।

विकसाना--स०[सं० विकसन] १. विकास के रूप में लाना। २. खिलने में प्रवृत्त करना। खिलाना।

विकसित--भू० कृ० [सं० वि√कस्+क्त, इत्व] १. जिसका विकास हुआ हो या किया गया हो। २. खिला हुआ।

विकस्वर--वि० [सं० वि√कस्+वरच्] विकासशील। खिलनेवाला।
पुं० साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार जो उस समय माना जाता है जब विशेष का सामान्य द्वारा समर्थन करने के उपरान्त सामान्य का विशेष द्वारा भी समर्थन किया जाता है।

विकांक्ष--वि०[ब० स०] आकांक्षा से रहित।

विकांक्षा--स्त्री०[सं० विकांक्ष+टाप्] १. कोई आकांक्षा न होना। आकांक्षा का अभाव। २. अनिश्चय। दुविधा।

विकाम--वि०[सं० ब० स०] कामना से रहित। निष्काम।

विकार--पुं०[सं० वि√कृ (करना)+घञ्] १. प्रकृति, रूप, स्थिति आदि में होनेवाला परिवर्तन। २. किसी चीज के आकार, गुण, रंग-रूप, स्वभाव आदि में होनेवाला परिवर्तन जिससे वह खराब हो जाय और ठीक तरह से काम देने के योग्य न रह जाय। खराबी। बिगाड़। ३. वह तत्त्व या बात जिसके कारण चीज में उक्त प्रकार की खराबी या दोष आता हो। जैसे--उद्देश्य, भावना आदि में होनेवाला विकास। ४. मुख पर क्रोध, घृणा आदि के फल-स्वरूप होनेवाली ऐंठन या विकृति। ५. शारीरिक कष्ट या घाव। ६. वेदान्त और सांख्य दर्शन के अनुसार किसी पदार्थ के रूप आदि का बदल जाना। परिणाम। जैसे--कंकण सोने का विकार है, क्योंकि वह सोने से ही रूपान्तरित होकर बना है। ७. निरुक्त के प्रधान चार नियमों में से एक जिसके अनुसार एक वर्ण के स्थान में दूसरा वर्ण हो जाता है।

विकारित--भू० कृ०[सं० वि√कृ+णिच्+क्त] जो किसी प्रकार के विकार से युक्त किया गया हो अथवा आपसे आप हो गया हो।

विकारी(रिन्)--वि० [सं० वि√कृ+णिनि, दीर्घ, न-लोप] १. जिसमें कोई विकार उत्पन्न हुआ हो। विकार से युक्त। २. जिसमें कोई परिवर्तन हुआ हो अथवा किया गया हो। ३. जिसमें कोई विकार या परिवर्तन होता रहता हो या होने को हो।
पुं० साठ संवत्सरों में से एक संवत्सर का नाम।

विकाल--पुं०[कर्म० स०] १. ऐसा समय जब देव-कार्य, पितृ-कार्य आदि का समय बीत गया हो। २. सन्ध्या का समय। ३. विलम्ब। देर।

विकालत--स्त्री०=वकालत।

विकालिका--स्त्री०[सं० विकाल+कन्+टाप्, इत्व] जल-घड़ी।

विकाश--पुं०[सं० वि√काश् (दीप्त होना)+घञ्] १. प्रकाश। रोशनी। २. फैलाव। विस्तार। ३. बढ़ती। वृद्धि। ४. आकाश।
वि० एकांत। निर्जन।

विकाशक--वि०[सं० वि√काश्+ण्वुल्--अक] विकासक।

विकास--पुं०[सं०] १. अपने आपको प्रकट या व्यक्त करना। २. फैलना या बढ़ना। ३. फूलों आदि का खिलना। ४. आँख, मुँह आदि का खुलना। ५. किसी चीज या बात का अस्तित्व में आकर या आरम्भ होकर फैलते या बढ़ते हुए और उन्नति की अनेक क्रमिक अवस्थाएँ पार करते हुए अपनी पूरी बाढ़ तक पहुँचना। बढ़ते-बढ़ते अपना पूरा रूप धारण करना। ६. उक्त क्रिया के परिणाम-स्वरूप प्रकट होनेवाला रूप या स्थिति। ६. यह सिद्धान्त कि कोई वस्तु अपनी आरंभिक सामान्य अवस्था से अपनी प्रकृति के अनुसार बढ़ती तथा फूलती-फलती हुई पूर्ण अवस्था प्राप्त करती है। (इवोल्यूशन)
स्त्री०[?] दूब की तरह की एक घास जो चौपाये बहुत चाव से खाते हैं।

विकासक--वि० [सं० वि√कस्+ण्वुल्--अक] विकास करने अर्थात् खोलने या बढ़ानेवाला।

विकासन--पुं० [सं० वि√कस्+ल्युट्-अन] [भू० कृ० विकसित] १. विकास करने की क्रिया या भाव। २. खिलना। ३. खुलना। ४. फैलना।

विकासना--स०[सं० विकास] १. विकास करना। २. खोलकर प्रकट या व्यक्त करना। ३. खिलने में प्रवृत्त करना।

†अ०=विकसना।

विकासवाद--पुं० [ष० त०] यह सिद्धान्त कि ईश्वर ने यह सृष्टि (अथवा इसका कोई अंग) इसी या प्रस्तुत रूप में नहीं उत्पन्न कर दी थी, वरन् इसका रूप प्रतिक्षण बदलता और बढ़ता जा रहा है। (थियरी ऑफ इवोल्यूशन)

विशेष--इस सिद्धान्त के अनुसार यह माना जाता है कि इस पृथ्वी पर प्राणियों, वनस्पतियों आदि का आरम्भ बहुत ही सूक्ष्म रूप में हुआ था; और धीरे-धीरे उनका विकास होने पर वे सब फैलते, बढ़ते और अनेक प्रकार के रूप-रंग धारण करते गये, उनकी शक्तियाँ आदि बढ़ती गईं और उनके बहुत-से भेद-विभेद होते गये।

विकासवादी--वि०[सं०] विकासवाद-सम्बन्धी।

पुं० वह जो विकासवाद का अनुयायी या ज्ञाता हो।

विकासित--भू० कृ० [सं० वि√कस्+णिच्+क्त] १. जिसका विकास किया गया हो। २. सामने लाया हुआ। ३. फैलाया या बढ़ाया हुआ।

विकिर--पुं० [सं० वि√कृ (करना)+क] १. पक्षी। चिड़िया। २. कूआँ। ३. विकिरण। बिखेरना। ४. बिखेरी जानेवाली वस्तु। ५. वे चावल आदि जो पूजा के समय विघ्न दूर करने के लिए चारों ओर फेंके जाते हैं। अक्षत।

विकिरक--वि०[सं०] जो अपनी किरणें चारों ओर फेंकता या फैलाता हो। किरणें विकीर्ण करनेवाला। (रेडिएटर)

पुं० कोई ऐसा पदार्थ या यंत्र जो किसी प्रकार की किरणें, ताप, भाप, शीत आदि अंदर से निकालकर बाहर फैलाता या बिखेरता हो। (रेडिएटर)

विकिरण--पुं०[सं०] १. इधर-उधर फेंकना या फैलाना। छितराना। बिखेरना। २. किसी केन्द्र से शाखाओं आदि के रूप में निकलकर इधर-उधर फैलाना या बढ़ाना। ३. आज-कल वैज्ञानिक क्षेत्र में किसी केन्द्र से ताप, प्रकाश की किरणों अथवा किसी प्रकार की ऊर्जा को निकलकर इधर-उधर या चारों ओर फैलना। (रेडिएशन) ४. चीरना-फाड़ना। ५. हत्या करना। मार डालना। ६. ज्ञान। ७. मदार का पौधा। आक।

विकिरणता--स्त्री०[सं०] १. वह स्थिति जिसमें किसी चीज की किरणें निकलकर किसी ओर फैलती हैं। २. आधुनिक विज्ञान में वह स्थिति जिसमें अणु-बमों आदि के विस्फोट के कारण विषाक्त किरणें निकलकर चारों ओर फैलती और वातावरण दूषित करके जीव,जन्तुओं, वनस्पतियों आदि को बहुत हानि पहुँचाती हैं। (रेडियो-एक्टिविटी)

विकिरण-मापी--पुं० [सं०] वह यंत्र जिसकी सहायता से तपे हुए पदार्थों में से निकलनेवाली ताप-रश्मियों का परिमाण या शक्ति जानी या नापी जाती है। (रेडियो मीटर)

विकिरण-विज्ञान--पुं० [सं०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा जिसमें इस बात का विचार और विवेचन होता है कि अनेक पदार्थों में से किरणें कैसे निकलती हैं और उनके क्या-क्या उपयोग, प्रकार या स्वरूप होते हैं। (रेडियोलोजी)

विकीरना†--स०[सं० विकीर्ण] १. फैलाना। २. चारों ओर छितराना या बिखेरना।

विकीर्ण--भू० कृ० [सं० वि√कृ (फेंकना)+क्त] १. चारों ओर फैलाया या छितराया हुआ। २. खुले, बिखरे या उलझे हुए (बाल)। ३. प्रसिद्ध। मशहूर।

पुं० संस्कृत व्याकरण में स्वरों के उच्चारण में होनेवाला एक दोष।

विकुंचन--पुं०[सं०] [भू० कृ० विकुंचित] १. सिकुड़ना। २. मुड़ना।

विकुंज--पुं०[सं० ब० स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जाति।

विकुंठ--वि०[सं०] १. तेज और नुकीला। २. अत्यधिक भुथरा।

†पुं०=वैकुंठ।

विकुंठा--स्त्री०[सं० विकुंठ+टाप्] १. मन का केंद्रीकरण। मन को एकाग्र करना। २. विष्णु की माता।

विकुक्षि--पुं०[सं० विकुक्ष+इनि] अयोध्या के राजा कुक्षि के पुत्र का नाम।

वि० जिसका पेट फूला हुआ और बड़ा हो। तोंदवाला।

विकृत--भू० कृ० [सं० वि√कृ (करना)+क्त] [भाव० विकृति] १. जिसमें किसी प्रकार का विकार आ गया हो। २. जिसका आकार या रूप बिगड़ गया हो। बेडौल। ३. असाधारण। ४. अधूरा। अपूर्ण। ५. अराजक। विद्रोही। ६. बीमार। रोगी। ७. उद्विग्न। ८. अप्राकृतिक।

पुं० १. दूसरे प्रजापति का नाम। २. साठ संवत्सरों में से चौबीसवाँ संवत्सर। ३. बीमारी। रोग। ४. विरक्ति। ५. गर्भपात।

विकृत-दृष्टि--पुं० [सं० ब० स०] ऐंचा-ताना।

विकृत-स्वर--पुं०[सं०] संगीत में, वह स्वर जो अपने नियत स्थान से हट कर दूसरी श्रुतियों पर जाकर ठहरता है। इसके १२ प्रकार या भेद कहे गये हैं।

विकृता--स्त्री०[सं० विकृत+टाप्] एक योगिनी का नाम।

विकृति--स्त्री० [सं० वि√कृ (करना)+क्तिन्] १. विकृत होने की अवस्था या भाव। २. खराबी। विकार। ३. वह रूप जो विकार के उपरान्त प्राप्त हो। बिगड़ा हुआ। ४. बीमारी। रोग। ५. परिवर्तन। ६. मन में होनेवाला क्षोभ। ७. काम-वासना। ८. वैर। शत्रुता। ९. धार्मिक क्षेत्र में माया का एक नाम। १०. पिंगल में २३ वर्णोंवाले छन्दों की संज्ञा। ११. सांख्य के अनुसार मूल प्रकृति का वह रूप जो उसमें विकार आने पर होता है। विकार। परिणाम। १२. व्याकरण में शब्द का वह रूप जो उसको मूल धातु से विकृत होने पर प्राप्त होता है।

विकृति विज्ञान--पुं०[सं०] चिकित्सा-शास्त्र और दैहिकी का वह अंग या विभाग जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि शरीर में किस प्रकार के विकार होने से कौन-कौन-से रोग होते हैं। रोग-विज्ञान। (पैथालोजी)

विकृतिवेत्ता--पुं०[सं०] वह जो विकृति-विज्ञान का ज्ञाता हो। (पैथॉलोजिस्ट)

विकृतीकरण--पुं०[सं०] किसी की आकृति अथवा कृति के कुछ अंगों को छोटा-बड़ा करके इस उद्देश्य से उसे विकृत करना कि लोग उसे देखकर अनायास हँस पड़ें। (केरिकेचर)

विकृष्ट--भू० कृ०[सं० तृ० त०] [भाव० विकृष्टि] १. खींचा हुआ।

२. खींच या निकालकर अलग किया हुआ। ३. फैलाया या बढ़ाया हुआ। ४. ध्वनि के रूप में आया या लाया हुआ।

विकृष्टि—स्त्री०[सं०] विकृष्ट होने की अवस्था या भाव।

विकेंद्रण—पुं०[सं०] विकेंद्रीकरण। (दे०)

विकेंद्रीकरण—पुं०[सं०] १. केन्द्र से हटाकर दूर करना। २. राजनीतिक क्षेत्र में, शक्ति या सत्ता का एक केंद्र या स्थान में निहित न होकर अनेक केंद्रों या स्थानों में थोड़े-थोड़े अंशों में निहित होना। (डिसेन्ट्रलाइज़ेशन)

विकेट—पुं०[अं०] १. क्रिकेट के खेल में वे डंडे जिन पर गुल्लियाँ रखी जाती हैं। यष्टि। २. बल्लेबाज। जैसे—तीन विकेट गिर चुके हैं। ३. दोनों ओर की विकेटों के बीच की जगह।

विकेश—वि०[सं० ब० स०] [स्त्री० विकेशी] १. जिसके सिर के बाल खुले हों। २. जिसके सिर पर बाल न हों। गंजा।

पुं० १. एक प्रकार का प्रेत। २. पुच्छल तारा।

विकेशी—स्त्री०[सं०] १. ऐसी स्त्री जिसके सिर के बाल खुले हों। २. गंजे सिरवाली स्त्री। ३. मही (पृथ्वी) के रूप में शिव की पत्नी का नाम। ४. एक प्रकार की पूतना।

विकोष—वि०[सं० ब० स०] १. कोष या म्यान से निकला हुआ (शस्त्र)। २. खुला हुआ। अनाच्छादित। ३. जिस पर भूसी, छिलका आदि न हो।

विक्टोरिया—स्त्री०[अं०] एक प्रकार की घोड़ा-गाड़ी जो देखने में प्रायः फिटन से मिलती-जुलती होती है।

पुं० एक छोटा ग्रह जिसका पता सन् १८५० में हैंड नामक एक पाश्चात्य ज्योतिषी ने लगाया था।

विक्रम—पुं०[सं० वि√क्रम् (चलना आदि)+अच्] १. विपरीत गति। 'संक्रम' का विपर्याय। २. चलने में पड़नेवाला कदम। डग। पग। ३. चलना। गति। ४. किसी को दबाकर अपने अधिकार या वश में करना। ५. विशिष्ट पौरुष या बल। ६. बहादुरी। वीरता। ७. ढंग। तरीका। ८. विष्णु का एक नाम। ९. साठ संवत्सरों में से चौदहवाँ संवत्सर। ९. बिना किसी क्रम या प्रणाली के होनेवाला वेद-पाठ। १०. दे० 'विक्रमादित्य'।

वि० १. क्रम से रहित। बिना क्रम का। २. उत्तम। श्रेष्ठ।

विक्रमक—पुं०[सं० विक्रम+कन्] कार्तिकेय के एक गण का नाम।

विक्रमण—पुं०[सं० वि√क्रम् (चलना आदि)+ल्युट्—अन] १. चलना। कदम रखना। २. आगे बढ़ना। 'संक्रमण' का विपर्याय। ३. विक्रम। वीरता।

विक्रम-शिला—स्त्री०[सं०] प्राचीन भारत की एक नगरी जिसमें बहुत बड़ा बौद्ध विद्यालय था।

विक्रमाजीत†—पुं०=विक्रमादित्य।

विक्रमादित्य—पुं०[सं० स० त०] उज्जयिनी के एक प्रसिद्ध प्रतापी राजा जिनके संबंध में अनेक प्रवाद प्रचलित हैं। आज-कल का विक्रमी संवत् इन्हीं का चलाया हुआ माना जाता है।

विक्रमाब्द—पुं०[सं० मध्यम० स०] विक्रमादित्य के नाम से चलाया हुआ संवत्। विक्रम संवत्।

विक्रमार्क—पुं०[स० त०]=विक्रमादित्य।

विक्रमी—पुं०[सं० विक्रम+इनि, दीर्घ, न-लोप विक्रमिन्] १. वह जिसमें बहुत अधिक बल हो। विक्रमवाला। पराक्रमी। २. विष्णु। ३. शेर।

वि० १. विक्रम-संबंधी। विक्रम का। २. विक्रमाब्द-संबंधी।

विक्रमीय—वि०[सं० विक्रम+छ-ईय] विक्रमादित्य-संबंधी।

विक्रय—पुं० [सं०वि√क्री (बेचना)+अच्] दाम लेकर कोई चीज देना। दाम लेकर किसी चीज का स्वत्वाधिकार दूसरे को देना। बेचना। 'क्रय' का विपर्याय।

पद—क्रय-विक्रय।

विक्रयक—वि० [सं० वि√क्री+ण्वुल्—अक] बेचनेवाला। विक्रेता।

विक्रय-कर—पुं०[ष० त०] वह राजकीय कर जो चीजों के विक्रय के समय खरीदनेवाले से लिया जाता है। बिक्रीकर। (सेल-टैक्स)

विक्रयण—पुं०[सं० वि√क्री (बेचना)+ल्युट—अन] बेचने की क्रिया। विक्रय। बिक्री।

विक्रय-पंजी—स्त्री०[सं० ष० त०] वह पंजी (बही) जिसमें व्यापारी नित्य अपनी बेची हुई चीजों के नाम, मूल्य आदि लिखते हैं। (सेल्स जर्नल)

विक्रय-पत्र—पुं०[सं० ष० त०] वह पत्र या लेख्य जिसमें यह लिखा जाता है कि इतना मूल्य लेकर अमुक व्यक्ति ने अमुक वस्तु दूसरे व्यक्ति के हाथ बेची है। बैनामा। (सेल-डीड)

विक्रय-लेख—पुं०[सं०] विक्रय-पत्र।

विक्रयिक—पुं०=विक्रेता

विक्रयी (यिन्)—पुं०=विक्रेता।

विक्रय्य—वि०[सं० विक्रय+यत्] जो बेचा जाने को हो।

विक्रांत—भू० कृ० [सं० वि√क्रम्+क्त] १. जो चल कर पार किया गया हो। २. जिसमें विशेष विक्रम अर्थात् बल या शूरता हो। वीर। ३. विजयी। ४. प्रतापी। ५. तेजस्वी।

पुं० १. बहादुर। वीर। २. शेर। सिंह। ३. डग। पग। ४. बल और शक्ति। विक्रम। ५. हिरण्याक्ष का एक पुत्र। ७. प्रजापति। ८. साहस। हिम्मत। ९. व्याकरण में एक प्रकार की संधि जिसमें विसर्ग अविकृत ही रहता है। १०. वैक्रान्त मणि।

विक्रांता—स्त्री०[सं० विक्रान्त+टाप्] १. अग्निमथ वृक्ष। अरणी। २. जयंती। ३. मूसाकानी। ४. अड़हुल। गुड़हर। ५. अपराजिता। ६. लज्जावती। लजालू। ७. हंसपदी नामक लता।

विक्रांति—स्त्री०[सं०वि√क्रम्+क्तिन्] १. गति। २. विक्रम। वीरता। ३. घोड़े की सरपट चाल।

विक्रिया—स्त्री०[सं० वि√कृ+श+टाप्] १. विकार। २. प्रतिक्रिया।

विक्रियोपमा—स्त्री०[सं० मध्यम० स०] एक प्रकार का उपमालंकार जिसमें किसी विशिष्ट क्रिया या उपाय का अवलंब कहा जाता है।

विक्री—स्त्री०=बिक्री (विक्रय)।

विक्रीत—भू० कृ०[सं० वि√क्री+क्त] बेचा हुआ।

विक्रेतव्य—वि०=विक्रेय।

विक्रेता—पुं०[सं० वि√क्री+तृच्] बिक्री करनेवाला। बेचनेवाला।

विक्रेय—वि०[वि√क्री+यत्] जो बेचा जाने को हो। बिकाऊ।

विक्रोश—पुं०[सं० वि√क्रुश् (विलपना)+घञ्] १. लोगों को अपनी सहायता के लिए पुकारना। गोहार। २. कुवाच्य कहना।

विक्रोष्टा (ष्टृ)—पुं०[सं० वि√क्रुश्+तृच्] १. गोहार करनेवाला। २. गाली देनेवाला।

विक्लव—वि० [सं० वि√क्लु (अधीर होना)+अच्] १. विकल। बेचैन। २. क्षुब्ध। ३. भयभीत। ४. दुःखी। संतप्त।

विक्लिन्न—वि० [सं० वि√क्लिद् (भींगना)+क्त] १. बहुत पुराना। जीर्ण-शीर्ण। २. गला-सड़ा। ३. पकाकर मुलायम किया हुआ। ४. गीला। तर।

विक्लेद—पुं० [सं० वि√क्लिद्+घञ्] १. आर्द्रता। २. गलाना या द्रव करना। ३. क्षय।

विक्षत—भू० कृ० [सं० तृ० त०] १. जिसमें क्षत लगा हो। जिसमें खराश पड़ी हो। २. जिसे क्षत या घाव लगा हो। घायल। जख्मी।

विक्षय—पुं० [सं० ब० स०] अधिक मद्य-पान के कारण होनेवाला रोग। (वैद्यक)

विक्षिप्त—वि० [सं० वि√क्षिप् (फेंकना)+क्त] [भाव० विक्षिप्तता] १. फेंका या छितराया हुआ। २. छोड़ा या त्यागा हुआ। व्यक्त। ३. जिसका मस्तिष्क ठीक तरह से काम न करता हो। पागल। सिड़ी। ४. पागलों की तरह घबराया हुआ और विकल।

विक्षिप्तक—पुं० [सं० विक्षिप्त+कन्] ऐसी लाश या शव जो जलाया या गाड़ा न गया हो, बल्कि यों ही कहीं फेंक दिया गया हो।

विक्षिप्तता—स्त्री० [सं० विक्षिप्त+तल्+टाप्] विक्षिप्त या पागल होने की अवस्था या भाव। पागलपन।

विक्षुब्ध—वि० [सं० वि√क्षुभ् (अधीर होना)+क्त] जिसमें किसी प्रकार का क्षोभ उत्पन्न किया गया हो अथवा आप से आप हुआ हो।

विक्षेप—पुं० [वि√क्षिप् (फेंकना)+घञ्] १. इधर-उधर छितराना या फेंकना। २. झटका देना। ३. धनुष का चिल्ला या डोरी चढ़ाना। ४. गदायुद्ध में गदा की कोटि से समीपवर्ती शत्रु पर प्रहार करना। ५. मन इधर-उधर दौड़ाना या भटकाना। ६. बाधा। विघ्न। ७. सेना का पड़ाव। छावनी। ८. एक तरह का प्राचीन अस्त्र।

विक्षेपण—पुं० [सं० वि√क्षिप् (फेंकना)+ल्युट्—अन] १. ऊपर अथवा इधर-उधर फेंकने की क्रिया। २. झटका देना। ३. धनुष की डोरी खींचना। ४. बाधा। विघ्न। ५. विक्षेप।

विक्षेप लिपि—स्त्री० [कर्म० स०] एक प्रकार की प्राचीन लिपि।

विक्षेप्ता (प्तृ)—पुं० [सं० वि√क्षिप्+तृच्] विक्षेप या विक्षेपण करनेवाला।

विक्षोभ—पुं० [सं० वि√क्षुभ् (अधीर होना)+घञ्] १. विशेष रूप से होनेवाला क्षोभ। उद्विग्नता। २. किसी अशुभ या अनिष्ट घटना के कारण मन में होनेवाला ऐसा विकार जो क्रुद्ध या दुःखी कर दे। ३. उथल-पुथल।

विक्षोभण—पुं० [सं० वि√क्षुभ्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विक्षोभित] क्षोभ उत्पन्न करने की क्रिया या भाव।

विक्षोभित—भू० कृ० [सं० वि√क्षुभ्+क्त]=विक्षुब्ध।

विक्षोभी (भिन्)—वि० [सं० वि√क्षुभ्+णिनि दीर्घ न लोप] [स्त्री० विक्षोभिणी] क्षोभ उत्पन्न करनेवाला। क्षोभकारी।

विखंड—वि० [सं०] १. टुकड़े-टुकड़े किया हुआ। २. बहुत छोटे खंडों या टुकड़ों में परिवर्तित।

विखंड राशि—पुं० [सं०] भूगोल में चट्टानों की सतह पर से टूट-फूटकर गिरे हुए कंकड़ों का समूह। मलवा। (डेट्रिलस)

विखंडित—भू० कृ०=खंडित।

विखंडी (डिन्)—वि० [सं० वि√खंड् (टुकड़ा करना)+णिनि, दीर्घ न लोप] तोड़ने-फोड़ने या नष्ट करनेवाला।

विख—वि० [सं० वि० नासिका, ब० स०, नासिका-खादेश] जिसकी नाक कटी हुई हो या न हो।
†पुं०=विष (जहर)।

विखनस—पुं० [सं०] १. ब्रह्म। २. एक प्राचीन ऋषि।

विखाद†—पुं०=विषाद।

विखादितक—पुं० [सं० वि√खद् (खाना)+णिच्+क्त+कन्] ऐसा मृत शरीर जिसका बहुत-सा अंश पशुओं ने खा डाला हो।

विखान†—पुं०=विषाण (सींग)।

विखानस—पुं०=वैखानस।

विखायँध—स्त्री०=बिसायँध।

विखुर—पुं० [सं० वि√खुर (काटना)+अच्] १. राक्षस। २. चोर।
वि० जिसके खुर न हों। खुरों से रहित।

विख्यात—भू० कृ० [सं० वि√ख्या (प्रसिद्धि होना)+क्त] [भाव० विख्याति] प्रसिद्ध। मशहूर। जिसकी ख्याति चारों ओर हो।

विख्याति—स्त्री० [सं० वि√ख्या (ख्याति)+क्तिच्] विख्यात होने की अवस्था या भाव। प्रसिद्धि। शोहरत।

विख्यापन—पुं० [सं० वि√ख्या+णिच्+ल्युट—अन] १. प्रसिद्ध करना। मशहूर करना। २. सार्वजनिक रूप से घोषणा करना।

विख्यापित—भू० कृ० [सं०] जिसका विख्यापन हुआ हो।

विगंध—वि० [सं० ब० स०] १. जिसमें किसी प्रकार की गंध न हो। २. बदबूदार। बुरी गंधवाला।

विगंधकीकरण—पुं० [सं०] वह रासायनिक प्रक्रिया जिसके द्वारा लोहे आदि धातुओं में मिली हुई गंधक निकाल कर दूर की जाती है। (डीसल्फ़राइज़ेशन)

विगंधिका—स्त्री० [सं० विगंध+कन्+टाप्+इत्व] १. हपुषा। हाऊबेर। २. अजगंधा। तिलवन।

विगणन—पुं० [सं० वि√गण् (गिनती करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विगणित] १. हिसाब लगाना। लेखा करना। २. ऋण से मुक्त होना।

विगत—भू० कृ० [सं० वि√गम् (जाना)+क्त] [स्त्री० विगता] १. बीता हुआ। गत। २. गत से ठीक पहले का। अन्तिम या बीते हुए से ठीक पहले का। जैसे—विगत दिन (बीते हुए कल से पहले अर्थात् परसों का), विगत वर्ष (गत अर्थात् पिछले साल से पहले का)। ३. जो कहीं इधर-उधर चला गया हो। ४. जिसकी कान्ति या प्रभाव नष्ट हो चुका हो। निष्प्रभ। ५. जो किसी बात से रहित या हीन हो चुका हो। जैसे—विगत यौवन। उदा०—बोले बचन बिगत सब दूषन। —तुलसी।

विगता—स्त्री० [सं० विगत+टाप्] ऐसी कन्या जो किसी दूसरे व्यक्ति के प्रेम में पड़ी हो और इसी लिए विवाह के लिए अनुपयुक्त हो।

विगति—स्त्री० [सं० वि√गम्+क्तिन्] दुर्दशा। दुर्गति।

विगद—वि० [सं० ब० स०] रोगरहित। नीरोग।
पुं० १. बात-चीत। चर्चा। २. शोर-गुल। हो-हल्ला।

विगम--पुं०.[सं० वि√गम्+घञ्] १. प्रस्थान। प्रयाण। २. पार्थक्य। ३. अनुपस्थिति। ४. त्याग। ५. हानि। ६. नाश। ७. समाप्ति। ८. मृत्यु। ९. मोक्ष।

विगर--पुं०[सं० ब० स०] १. दिगंबर यति। २. पहाड़। ३. भोजन का त्याग करनेवाला व्यक्ति।

विगर्हण--पुं० [सं०] [वि० विगर्हित] बुरे काम के लिए निन्दा करना और बुरा-भला कहना। भर्त्सना।

विगर्हणा--स्त्री०[सं० वि√गर्ह् (निन्दा करना)+णिच्+टाप्] भर्त्सना। डाँट-फटकार।

विगर्हणीय--वि०[सं० वि√गर्ह्+अनीयर्] निंदनीय।

विगर्हा--स्त्री०[सं० वि√गर्ह्+अच्+टाप्]=विगर्हण।

विगर्हित--भू० कृ०[सं० वि√गर्ह्+क्त, तृ० त०] १. जिसकी भर्त्सना की गई हो। जिसे डाँट या फटकार बतलाई गई हो। २. बुरा। खराब। ३. निषिद्ध।

विगर्ही(हिन्)--वि० [सं० वि√गर्ह्+णिनि] विगर्हण करनेवाला।

विगर्ह्य--वि० [सं० वि√गर्ह्+यत्] जो भर्त्सना का पात्र हो। डाँटने-डपटने या निंदा किये जाने के योग्य।

विगलन--पुं०[सं० वि√गल् (पिघलना)+ल्यु--अन] [भू० कृ० विगलित] १. अच्छी या पूरी तरह से गलना या पिघलना। २. तरल पदार्थ का चूना, बहना या रिसना। ३. मन का आर्द्र होना। ४. नाश या लोप होना। ५. शिथिल होना।

विगलित--भू० कृ०[सं० तृ० त०] १. जो गल गया हो। पिघला हुआ। ३. गिरा हुआ। पतित। ४. बहा हुआ। ५. ढीला। शिथिल। ६. विकृत।

विगाढ--भू० कृ० [सं० वि√गाह् (विलोड़न करना)+क्त] १. नहाया हुआ। स्नात। २. डूबा हुआ। ३. अन्दर घुसा, धँसा या पैठा हुआ। ४. जो बहुत अधिक मात्रा में हो। बहुत गहन या घना।

विगाथा--स्त्री०[सं० वि√गाथ् (कहना)+अक्+टाप्] आर्या छन्द का एक भेद जिसके विषम पदों में १२-१२, दूसरे में १५ और चौथे में १८ मात्राएँ होती हैं और अन्त का वर्ण गुरु होता है। विषम गणों में जगण नहीं होता, पहले दल का छठा गण (२७ ही मात्रा के कारण) एक लघु का मान लिया जाता है। इसे 'विग्गाहा' और 'उद्गीति' भी कहते हैं।

विगान--पुं०[सं० कर्म० स०] १. निंदा। २. अपवाद। ३. असामंजस्य। ४. घृणा।

विगाहन--पुं० [सं० वि√गाह्+अच्]=अवगाहन।

विगीत--वि०[सं० वि√गै (गाना या कहना)+क्त] १. अनेक प्रकार से या अनेक रूपों में कहा हुआ। २. बुरी तरह से कहा या गाया हुआ। ३. परस्पर विरोधी। ४. निंदित।

विगीति--स्त्री०[सं० वि√गै+क्तिन्] आर्या छंद का एक भेद।

विगुण--वि०[सं० ब० स०] १. जिसमें कोई गुण न हो। गुण-रहित। गुण-विहीन। २. निर्गुण।

विगूढ़--भू० कृ० [सं० तृ० त०] १. छिपा हुआ। गुप्त। २. जिसकी निंदा की गई हो।

विगृहीत--वि०[सं० वि√ग्रह् (ग्रहण करना)+क्त] १. फैलाया या विभक्त किया हुआ। २. पकड़ा हुआ। ३. जिसका विरोध या सामना किया गया हो। ४. रोका हुआ। ५. जिसका विश्लेषण हुआ हो। विश्लिष्ट।

विग्गाहा--स्त्री०[सं० विगाथा] विगाथा नामक छन्द जो आर्या का एक भेद है।

विग्रह--पुं० [सं० वि√ग्रह्+अच्] १. विस्तृत करना। फैलाना। २. अलग या दूर करना। ३. टुकड़ा। विभाग। ४. यौगिक शब्दों अथवा समस्त पदों के किसी एक अथवा प्रत्येक शब्द को अलग करना। (व्याकरण) ५. लड़ाई-झगड़ा और वैर-विरोध। ६. युद्ध। समर। ७. नीति के छः गुणों में से एक; विपक्षियों में कलह या फूट उत्पन्न करना। ८. आकृति। सूरत। ९. देह। शरीर। १०. प्रतिमा या मूर्ति। जैसे--शालग्राम की बटिया या शिव का लिंग। ११. शृंगार। सजावट। १२. शिव का एक नाम या लिंग। १३. स्कन्द का एक अनुचर। १४. सांख्य के अनुसार कोई तत्त्व।

विग्रहण--पुं० [सं० तृ० त०] रूप धारण करना। शक्ल में आना।

विग्रही--वि०[सं०√ग्रह+णिनि] १. विग्रह या लड़ाई-झगड़ा करनेवाला। २. युद्ध करनेवाला। ३. मूर्ति-पूजक।

पुं० प्राचीन भारत में युद्ध-विभाग का मंत्री या सचिव।

विग्राह्य--वि०[सं० विग्रह+ण्यत्] जिसके साथ विग्रह अर्थात् लड़ाई या युद्ध किया जा सके।

विघटन--पुं०[सं० विघट्टन] १. किसी वस्तु के संयोजक अंगों का इस प्रकार अलग या नष्ट होना कि उसका प्रस्तुत अस्तित्व या रूप नष्ट हो जाय। 'घटन' का विपर्याय। (डिस-इन्टिग्रेशन) जैसे--किसी संस्था या समाज का विघटन। २. खराब होना या टूटना-फूटना। बिगड़ना। ३. नष्ट करना या होना।

विघटिका--स्त्री०[सं० ब० स०] समय का एक छोटा मान जो एक घड़ी का २३वाँ भाग होता है।

विघटित--भू० कृ०[सं० वि√घट् (मिलाना)+क्त] १. जिसके संयोजक अलग-अलग किये गये हों। २. तोड़ा-फोड़ा हुआ। ३. नष्ट किया हुआ। ४. (संस्था, समिति आदि) जिसे भंग कर दिया गया हो। (डिस्साल्वड)

विघट्टन--पुं०[सं० वि√घट्ट् (संयुक्त करना)+ल्युट्--अन] [भू० कृ० विघट्टित] १. खोलना। २. पटकना। ३. रगड़ना। ४. दे० 'विघटन'।

विघट्टी (ट्टिन)--वि०[सं० विघट्ट+इनि] विघटन करनेवाला।

विघन--पुं०[सं० वि√हन् (मारना)+अप्, ह--घ] १. आघात करना। चोट पहुँचाना। २. बड़ा और भारी हथौड़ा। घन। ३. इन्द्र।

†पुं०=विघ्न।

विघर्षण--पुं०[सं० वि√घृष् (रगड़ना)+ल्युट--अन] अच्छी तरह रगड़ना या घिसना।

विघस--पुं०[सं० वि√अद् (खाना)+अप्, अद्--घस्] १. आहार। भोजन। २. देवताओं, पितरों, बड़ों आदि के उपभोग के उपरान्त बचा हुआ अन्न।

विघात--पुं०[सं०] १. आघात। चोट। २. विनाश। ३. निवारण। रोक। ४. बाधा। ५. हत्या। ६. आज-कल मालिकों को हानि पहुँ-

चाने के विचार से जान-बूझकर उनके यंत्र या उपयोगी सामान तोड़ना-फोड़ना। तोड़-फोड़ का कार्य। अंतर्ध्वंस। (सैबोटेज) ७. नाश।

विघातक--वि०[सं० विघात+कन्] १: विघात करनेवाला। २. तोड़-फोड़ के काम करनेवाली।

विघातन--पुं०[सं० वि√हन्+ल्युट्–अन] १. विघात करने की क्रिया। २. मार डालना। हत्या।

विघाती (तिन्)--वि०[सं०] [स्त्री० विघातिनी]= विघातक।

विघूर्णन--पुं० [सं०] [भू० कृ० विघूर्णित] १. इधर से उधर घूमना या होना। २. चारों ओर घूमना। ३. आज-कल, किसी अक्ष या केन्द्र के चारों ओर चक्कर काटना या लगाना। (जाइरेशन)

विघ्न—पुं०[सं० वि √ हन्+क] १. बीच में आकर पड़नेवाली कोई ऐसी बात जिसमें होता हुआ काम रुक जाय। अड़चन। बाधा।

क्रि० प्र०--आना।—डालना--पड़ना।—होना।

२. ऐसा अशुभ चिह्न जिसके कारण बनता हुआ काम बिगड़ जाता हो। (प्रवाद)

विघ्नक--वि० [सं० विघ्न+कन्]=विघ्नकारी।

विघ्नकारी (रिन्)—वि० [सं०] बाधा उपस्थित करनेवाला। विघ्न डालनेवाला।

विघ्ननाशक—वि०[ष० त०] विघ्नों का नाश करनेवाला।

पुं० गणेश।

विघ्नपति, विघ्नराज—पुं०[सं० ष० त०] गणेश।

विघ्नविनायक—पुं०[ष० त०]गणेश।

विघ्नित—भू० कृ०[सं० विघ्न+इतच्] १. (कार्य) जिसमें विघ्न पड़ा या डाला गया हो। २. बाधित।

विघ्नेश—पुं०[ष० त०] गणेश।

विचकित—वि०[सं० विचक+इतच्] १. चकित। २. घबराया हुआ।

विचक्षण—वि०[सं० वि√चक्ष्(कहना)+युच्–अन] १. तीव्र दृष्टि-वाला। बहुत दूर की चीजें या बातें देखनेवाला। २. प्रकाशमान। ३. बुद्धिमान्। समझदार। ४. कुशल। दक्ष।

पुं० पंडित। विद्वान्।

विचक्षु--वि०[सं०] चक्षुओं से रहित। अंधा।

विचच्छन†—वि०=विचक्षण।

विचय—पुं०[सं० वि+चि (बटोरना)+अप्] १. एकत्र करना। इकट्ठा करना। जमा करना। २. जाँच-पड़ताल करना।

विचयन—पुं०[सं० वि√चि+ल्युट्–अन] १. इकट्ठा करना। एकत्र करना। २. जाँचना। परखना। ३. चुराई या छिपाईहुई वस्तु। खोज निकालने के उद्देश्य से किसी की ली जानेवाली तलाशी।

विचयन-प्रकाश—पुं०[सं०] वह तीव्र प्रकाश जिसके द्वारा बहुत दूर तक की चीजें प्रकाशित होती हों। खोज-बत्ती। (सर्चलाइट)

विचरण—पुं०[सं० वि√चर् (चलना)+ल्युट्, यु=अन] [भू० कृ० विचरित] १. चलना। २. घूमना-फिरना।

विचरना—अ० [सं० विचरण]चलना-फिरना। घूमना-फिरना।

विचर्चिका--स्त्री०[सं० वि√चर्च् (फाटना)+ण्वुल्–अक+टाप्, इत्व] १. सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर पर दाने निकलते हैं और खुजली होती है। ब्यौंची। २. छोटी फुन्सी।

विचल--वि०[सं० वि√चल् (हिलना)+अप्] [भाव० विचलता] १. जो बराबर हिलता रहता हो। २. जो स्थिर न हो। अस्थिर। ३. अपने मार्ग या स्थान से गिरा, डिगा या हटा हुआ। ४. प्रतिज्ञा, संकल्प आदि से हटा हुआ।

विचलता--स्त्री०[सं०] विचल होने की अवस्था या भाव।

विचलन--पुं०[सं०] [भू० कृ० विचलित] १. ठीक या सीधा मार्ग छोड़कर इधर-उधर होना। पथ से भ्रष्ट होना। (डेविएशन) जैसे--मनुष्य का नैतिक विचलन। (ख) प्रकाश की रेखाओं की विचलन। २. जान-बूझकर या अनजान में उपेक्षापूर्वक अपने कर्तव्य या मत से हटकर इधर-उधर होना। कार्य, निश्चय या विचार पर दृढ़ न रहना। उत्क्रम से भिन्न।(डेविएशन)

विचलना--अ०[सं०विचलन]१.अपने स्थान से हट जाना या चल पड़ना। २. इधर-उधर होना। ३. अधीर या विचलित होना। ४. प्रतिज्ञा, संकल्प आदि से हटना।

विचलाना †--अ०=विचलना।

स० विचलित करना।

विचलित--भू० कृ०[सं०] १. भय, साहस की कमी, साधन-हीनता आदि के फलस्वरूप अपनी प्रतिज्ञा, सिद्धान्त या स्थान से हटा हुआ। २. अस्थिर। चंचल। ३. विकल।

विचार--पुं०[सं० वि√चर् (चलना)+घञ्] [वि० विचारणीय, वैचारिक; भू० कृ० विचारित] १. किसी चीज या बात के संबंध में मन ही मन तर्क-वितर्क करके कुछ सोचने या समझने की क्रिया या भाव। आगा-पीछा। ऊँच-नीच आदि का ध्यान रखते हुए कुछ निश्चय करने की क्रिया। जैसे—तुम भी इस बात पर विचार कर लो। २. उक्त प्रकार की क्रिया के फल-स्वरूप किसी बात या विषय के सम्बन्ध में मन में बननेवाला उसका चित्र। सोच-समझकर स्थिर की हुई भावना। खयाल। (आइडिया) जैसे—(क) मेरे मन में एक और विचार आया है। (ख) इस पुस्तक में आपको बहुत से नये विचार मिलेंगे। ३. कोई प्रश्न सामने आने पर उसके सम्बन्ध में कुछ निर्णय करने के लिए उसके सब अंग अच्छी तरह तर्क करते हुए देखना या समझना। (कन्सिडरेशन) ४. दो विरोधी दलों, पक्षों, मतों आदि के विवादास्पद विषय के सम्बन्ध में कुछ निश्चय करने से पहले किसी न्यायालय या विचारशील व्यक्ति के द्वारा होने-वाली सब अंगों और बातों की जाँच-पड़ताल। फैसले के लिए मुकदमे की सुनवाई।(ट्रायल)जैसे—न्यायालय में अभियोग के सम्बन्ध में होने-वाला विचार। ५. घूमना-फिरना। विचरण।

विचारक--वि०[सं० वि√चर् (चलना)+णिच्+ ण्वुल्–अक] विचार करनेवाला।

पुं० वह जो किसी विषय पर अच्छी तरह विचार करता हो। विचारशील। २. वह जो न्यायालय आदि में बैठकर अभियोगों का विचार और निर्णय करता हो। न्यायकर्ता। (मुंसिफ) ३. पथ-प्रदर्शन। नेता। ४. गुप्तचर। जासूस।

विचारकर्ता—पुं०[सं० विचार√कृ (करना)+तृच, ष० त०] १. वह जो किसी प्रकार का विचार करता हो। सोचने विचारनेवाला। २. २. न्यायाधीश। विचाराध्यक्ष।

विचार-गोष्ठी—स्त्री०[सं०] विद्वानों या विशेषज्ञों की वह गोष्ठी जो

किसी विशिष्ट गंभीर विषय पर विचार करने के लिए बुलाई गई हो। (सेमिनार)

विचारज्ञ—पुं०[सं० विचार√ज्ञा (जानना)+क] १. वह जो विचार करना जानता हो। २. विचाराध्यक्ष।

विचारण—पुं० [सं० वि√चर् (चलना)+णिच्+ल्युट्–अन] विचारने की क्रिया या भाव।

विचारणा—स्त्री०[सं० विचारण+टाप्] १. विचारने की क्रिया या भाव। २. सोची-विचारी हुई बात। ३. कोई काम करने से पहले यह सोचना कि यह काम करना चाहिए या नहीं अथवा हम से हो सकेगा या नहीं।

विचारणीय—वि०[सं० वि√चर् (चलना)+णिच्+अनीयर्] १. (बात या विषय) जिस पर विचार करना उचित हो या विचार किया जाने को हो। चिन्त्य। २. सन्दिग्ध।

विचार-धारा—स्त्री०[सं०] १. आधुनिक विज्ञान की वह शाखा जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि मनुष्य के मन में विचार कहाँ से और किस प्रकार उत्पन्न होते हैं और उनके कैसे-कैसे भेद या रूप होते हैं। वैचारिकी। २. विचारों का प्रवाह। (आइडियालोजी)

विचारना—अ० [सं० विचार] १. विचार करना। सोचना-समझना। गौर करना। २. जानने के लिए किसी से कुछ पूछना। ३. तलाश करना ढूँढ़ना।

विचार-नेता—पुं०[सं०] वह जो किसी क्षेत्र में जन-साधारण के विचारों का नेतृत्व या मार्ग-प्रदर्शन करता हो।

विचार-पति—पुं०[सं० ष० त०] १. बहुत बड़ा विचारक। २. न्यायाधीश।

विचारवान—पुं०[सं० विचार+मतुप्, म–व] १. जो ठीक तरह से विचार करता हो। विचारशील। २. जिसमें विचार करने की विशेष क्षमता हो।

विचार-शक्ति—स्त्री०[सं० ष० त०] सोचने या विचार करने की शक्ति। बुद्धि। प्रज्ञा। (इन्टेलेक्ट)

विचारशास्त्र—पुं०[ष० त०] मीमांसा दर्शन।

विचारशील—पुं०[सं० ष० त०] [भाव० विचारशीलता] वह जिसमें किसी विषय पर अच्छी तरह सोचने या विचारने की शक्ति हो। विचारवान्।

विचार-स्थल—पुं०[ष० त०] १. विचार करनेवाला स्थल। २. अदालत। न्यायालय।

विचार-स्वातंत्र्य—पुं०[सं०] राज्य, शासन आदि की ओर से मिलनेवाली वह स्वतंत्रता जिसमें मनुष्य हर तरह की बातें सोच सकता तथा उन्हें व्यक्त या प्रकाशित भी कर सकता है। (लिबर्टी ऑफ़ थॉट)

विचाराधीन—वि० [सं० विचार+अधीन] १. (बात या विषय) जिस पर अभी विचार हो रहा हो २. दे० 'न्यायाधीश'।

विचाराध्यक्ष—पुं०[सं० ष० त०]=विचारपति।

विचारालय—पुं०[सं० ष० त०] न्यायालय। कचहरी।

विचारिका—स्त्री० [सं० विचार+कन्+टाप्-इत्व] १. प्राचीन काल की वह दासी जो घर में लगे हुए फूल पौधों की देख-भाल तथा इसी प्रकार के और काम करती थी। २ अभियोगों आदि का विचार करनेवाली स्त्री। स्त्री-विचारक।

विचारित—भू० कृ०[सं० विचार+इतच्] १. जिसके संबंध में विचार कर लिया गया हो। २. निश्चित या निर्णीत किया हुआ।

विचारी (रिन्)—पुं०[सं० वि√चर् (चलना)+णिच्+णिनि] वह जिस पर चलने के लिए बहुत बड़े बड़े मार्ग बने हों (जैसे—पृथ्वी)। वि० १. विचरण करने या घूमने-फिरनेवाला। २. विचारक। ३. विचारशील।

विचार्य—वि० [सं० वि√चर् (चलना)+णिच्+यत्]=विचारणीय।

विचालन—पुं०[सं० तृ० त०] १. इधर-उधर चलाना। २. अलग या दूर करना। हटाना। ३. नष्ट करना। ४. विचलित करना।

विचिंतन—पुं०[सं० वि√चिन्ति (सोचना)+ल्युट्–अन] अच्छी तरह चिंतन करना। खूब सोचना-समझना।

विचिंतनीय—वि० [सं० वि√ चिन्ति+अनीयर्] (बात या विषय) जो चिंता करने या सोचने के योग्य हो।

विचिंता—स्त्री० [सं० वि√चिन्ति-अच्+टाप्] सोच-विचार। चिंतन।

विचिंत्य—वि०[सं० विचिन्त+यत्]=विचिंतनीय।

विचिकित्सा—स्त्री० [सं० वि√कित् (रोग दूर करना)+सन्+अ, +टाप्] १. किसी बात या विषय में होनेवाली शंका या सन्देह। २. भूल। ३. संदेह।

विचित—भू० कृ०[सं० वि√ चि (इकट्ठा करना)+क्त] अन्वेषित किया या खोजा हुआ।

विचिति—स्त्री०[सं० वि√ चि+ क्तिन्] खोज या ढूँढ़ निकालने की अवस्था या भाव।

विचित्त—स्त्री० [सं० विचित्त+इनि] १. मन ठिकाने या शान्त न रहना। २. अन्यमनस्कता। अनमनापन। ३. मूर्च्छा। बेहोशी।

विचित्र—वि० [सं० तृ० त०] [भाव० विचित्रता] १. जिसमें कई प्रकार के रंग हो। कई तरह के रंगों या वर्णोंवाला। रंग-बिरंगा। २. जिसमें मन को कुछ चकित करनेवाली असाधारणता या विलक्षणता हो। अजीब। जैसे—आज एक विचित्र बात मेरे देखने में आई। २. जिसमें कोई ऐसी नई बात या विशेषता हो जो साधारणतः सब जगह न पाई जाती हो और जो अनोखा जान पड़ता हो। साधारण से भिन्न। नया और विलक्षण। ३. मन में कुतूहल उत्पन्न करने, चकित या विस्मित करनेवाला। जैसे—वह भी विचित्र स्वभाववाला आदमी है। ४. खूबसूरत। सुन्दर।

पुं० १. पुराणानुसार रौच्यमनु के एक पुत्र का नाम। २. साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार जो उस समय होता है जब किसी फल की सिद्धि के लिए किसी प्रकार का उल्टा प्रयत्न करने का उल्लेख किया जाता है।

विचित्रक—पुं०[सं० ब० स०+ कन्] भोजपत्र का वृक्ष। वि० विचित्र।

विचित्रता—स्त्री०[सं० विचित्र+तल्+टाप्] १. विचित्र होने की अवस्था या भाव। २. वह विशेषता जिसके फलस्वरूप कोई चीज विचित्र प्रतीत होती हो।

विचित्र-विभ्रमा—स्त्री०[सं०] केशव के अनुसार वह प्रौढ़ा नायिका जो अपने

सौन्दर्य मात्र से नायक को आकृष्ट या मोहित करती हो। (देव ने इसी को सविभ्रमा कहा है)।

विचित्रवीर्य—पुं० [सं० ष० त०] चन्द्रवंशी शांतनु के एक पुत्र का नाम। (महाभारत)

विचित्रशाला—स्त्री० [ष० त०] अजायबघर। अजायबखाना।

विचित्रांग—पुं० [सं० ब० स०] १. मोर। २. बाघ।

विचित्रा—स्त्री० [सं० विचित्र+अच्+टाप्] संगीत में, एक रागिनी जिसे कुछ लोग भैरव राग की पाँच स्त्रियों में और कुछ लोग त्रिवण, बरारी, गौरी और जयंती के मेल से बनी हुई संकर जाति की मानते हैं।

विचित्रित—भू० कृ० [सं० विचित्र+इतच्] १. अनेक रंगों से रंगा या अंकित किया हुआ। २. सजाया हुआ।

विची—स्त्री० [सं० विचित्र+ङीष्] वीचि (लहर)।

विचेतन—वि० [सं० ब० स०] १. जिसमें चेतना शक्ति न हो। अचेत। २. संज्ञाहीन। बेहोश। ३. जिसे भले-बुरे का ज्ञान न हो। विवेकहीन।

पुं० १. चेतना से रहित करने का क्रिया या भाव। २. प्राणियों की वह अवस्था जिसमें शरीर या उसका कोई अंग चेतनारहित या संज्ञाशून्य हो जाता है। संज्ञा-नाश। निश्चेतन। संवेदनहरण। (ऐनेस्थीशिया)

विचेतनक—वि० [सं०] शरीर या उसका कोई अंग चेतना से रहित या संज्ञाशून्य करनेवाला। संज्ञा-नाशक। (एनीस्थेटिक)

विचेतनीकरण—पुं० [सं०] [भू० कृ० विचेतनीकृत] दे० 'निश्चेतनीकरण'।

विचेता (तस्)—वि० [सं० ब० स०] १. जिसका चित्त ठिकाने न हो। घबराया हुआ। २. जो कुछ जानता न हो। ३. दुष्ट। पाजी। ४. बेवकफ। मूर्ख।

विचेष्ट—वि० [सं० ब० स०] [भाव० विचेष्टता] १. जो सचेष्ट न हो। २. अक्रिय। ३. गतिहीन। अचल।

विच्छर्दन—पुं० [सं० वि√ चेष्ट् (इच्छा करना)+ल्युट्—अन, कर्म० स०] [भू० कृ० विचेष्टिता] पीड़ा आदि होने पर मुँह या शरीर के अंगों से बुरी चेष्टा करना। इधर-उधर लोटना और तड़पना।

विचेष्टा—स्त्री० [सं० वि √ चेष्ट् +अङ्+टाप्] १. बुरी या खराब चेष्टा करना। भौंहें सिकोड़ना, मुँह बनाना या हाथ-पैर पटकना। २. क्रिया।

विच्छर्दन—पुं० [सं० वि√ छर्द् (कै करना)+ल्युट्, अन] [भू० कृ० विच्छर्दित] १. कै या वमन करना। २. बलपूर्वक बाहर निकालना। फेंकना। ३. त्याग करना। छोड़ना। ५. तिरस्कार कराना।

विच्छर्दिका—स्त्री० [सं० विछर्द+क+टाप्, इत्व] वमन। कै।

विच्छाय—पुं० [सं० ष० त०] १. पक्षियों की छाया। २. मणि। रत्न।

वि० १. जिसकी छाया न पड़ती हो २. कांतिहीन।

विच्छित्ति—स्त्री० [सं० वि√छिद् (काटना)+क्तिन्] १. काटकर अलग या टुकड़े करना। २. विच्छेद। ३. कमी। त्रुटि। ४. गले में पहनने का एक प्रकार का हार। ५. कविता में होनेवाली यति। विराम। ६. वेशभूषा आदि के सम्बन्ध में की जानेवाली लापरवाही। ७. ऐसी लापरवाही के कारण वेशभूषा में दिखाई देनेवाला बेढंगापन। ८. रंगों आदि से शरीर चिह्नित करने की क्रिया या भाव। ९. साहित्य में एक प्रकार का हाव जिसमें स्त्री थोड़े शृंगार से ही पुरुष को मोहित करने की चेष्टा करती है।

विच्छिन्न—भू० कृ० [सं० वि√ छिद् +क्त] १. जिसका विच्छेद हुआ हो। २. जो काट या छेदकर अलग कर दिया गया हो। ३. जिसका अपने मूल अंग के साथ कोई सम्बन्ध न रह गया हो। ४. अलग। जुदा। पृथक्। ५. जिसका अन्त हो चुका या कर दिया गया हो। ६. कुटिल।

विच्छेद—पुं० [सं० वि√छिद्+घञ्] १. काट या छेदकर अलग करने की क्रिया। २. किसी प्रकार बीच से टूटना। विशृंखलता। ३. किसी पूरे में से उसका कोई अंग या अंश किसी प्रकार अलग होना। ४. अलगाव। पार्थक्य। ५. नाश। बरबादी। ५. वियोग। विरह। ६. पुस्तक का अध्याय या प्रकरण। परिच्छेद। ७. बीच में पड़नेवाला खाली स्थान। अवकाश। ८. कविता की यति या विराम।

विच्छेदक—वि० [सं० वि√ छिद् (काटना)+ण्वुल्—अक] विच्छेद करनेवाला।

विच्छेदन—पुं० [सं० वि √ छिद्+ल्युट्—अन] [वि० विच्छेदनीय] विच्छेद करने की क्रिया या भाव। दे० 'व्यवच्छेदन' (शव का)।

विच्छेदी—वि० [सं० वि √ छिद्+णिनि]=विच्छेदक।

विच्छेद्य—वि० [सं० विच्छेद+यत्] जिसका विच्छेद किया जा सकता हो अथवा किया जाने को हो।

विच्युत—भू० कृ० [सं० वि√ च्यु (मिलना आदि)+क्त] [भाव० विच्युति] १. जो कटकर अथवा और किसी प्रकार इधर-उधर गिर पड़ा हो। २. जो अपने स्थान से गिर या हट गया हो। च्युत। भ्रष्ट। ३. (अंग) जो जीवित शरीर से काटकर अलग किया या निकाला गया हो। (सुश्रुत) ४. नष्ट।

विच्युति—स्त्री० [सं० वि√ च्यु (हटना)+क्तिन्] १. विच्युत होने की अवस्था, क्रिया या भाव। ३. गर्भ-पात। ४. नाश।

विछलना†—अ०=१.=बिछलना (फिसलना)। २.=विचलना।

विछेद†—वि०=विच्छेद।

विछोई†—वि० [हिं० विछोह+ई (प्रत्य०)] १. जिसका प्रिय व्यक्ति उससे बिछुड़ चुका हो। २. बिछोह से दुःखी। विरही।

विछोह†—पुं० [सं० विच्छेद] १. ऐसी अवस्था जिसमें प्रिय के विदेश चले जाने पर उससे संयोग न होता हो। २. संयोग न होने के फलस्वरूप होनेवाला दुःख। विरह।

विछोही†—वि०=विछोई।

विजंघ—वि० [सं० ब० स०] १. जिसकी जाँघें कट गई हों या न हों। २. (गाड़ी या सवारी) जिसमें धुरी, पहिए, आदि न हों।

विजई†—वि०=विजयी।

विजट—वि० [सं० ब० स०] १. जटा से रहित। २. (सिर के बाल) जो यों ही खुले हों, जूड़े आदि के रूप में बँधे न हों।

विजड—वि० [सं०] जो पूरी तरह से जड़ हो चुका हो। जिसमें चेतनता का कुछ भी अंश न हो।

विजडीकरण—पुं० [सं०] [भू० कृ० विजड़ीकृत] विजड़ करने की अवस्था, क्रिया या भाव।

विजन—वि० [ब० स०] १. जनहीन। २. एकांत।

पुं०=व्यजंन (पंखा)।

विजनन—पुं० [सं०] [भू० कृ० विजनित] १. संतान को जन्म देना। जनन। प्रसव। २. प्रयोगशालाओं आदि में वैज्ञानिक प्रक्रियाओं की सहायता से स्त्री-पुरुष के संयोग के बिना संतान उत्पन्न करना।

विजना†—पुं० [सं० विजन] [स्त्री० अल्पा० विजनी] पंखा।

विजन्मा (न्मन्)—पुं० [सं० ब० स०] १. किसी स्त्री का उसके उपपति या जार से उत्पन्न पुत्र। जारज सन्तान। २. एक प्राचीन वर्ण-संकर जाति। ३. वह जो जाति से च्युत कर दिया गया हो।

विजन्या—वि० [सं० विजन+यत्—टाप्] गर्भवती (स्त्री)।

विजयंत—पुं० [सं० वि√जि (जीतना)+झ—अन्त] इंद्र का एक नाम।

विजयंती—स्त्री० [सं० वि√जि+ शतृ+ङीप्] १. एक अप्सरा का नाम। २. ब्राह्मी।

विजय—स्त्री० [सं० वि√जि+अच्] १. शत्रु को परास्त करने पर होनेवाली जीत। २. प्रतियोगी या प्रतिस्पर्धी को हराकर सिद्ध की जानेवाली श्रेष्ठता। ३. वह अवस्था जिसमें सब विघ्न-बाधाएँ दूर कर दी गई हों। ४. एक प्रकार का छन्द जो केशव के अनुसार सवैया का मत्तगयंद नामक भेद है। ५. भोजन की क्रिया के लिए आदरसूचक पद। (पूरब) जैसे—अब आप विजय के लिए उठें, अर्थात् भोजन करने चलें।

विजयक—पुं० [सं० विजय+कन्] वह जो सदा विजय प्राप्त करता रहता हो। सदा जीतता रहनेवाला।

विजयकच्छंद—पुं० [सं०] १. एक प्रकार का कल्पित हार जो दो हाथ लंबा और ५०४ लड़ियों का माना जाता है। कहते हैं ऐसा हार केवल देवता लोग पहनते हैं। २. ऐसा हार जिसमें ५०० मोती या नग हों।

विजय-कुंजर—पुं० [सं० च० त०] १. राजा की सवारी का हाथी। २. लड़ाई में काम आनेवाला हाथी।

विजय-केतु—पुं० [सं० ष० त०]=विजय-पताका।

विजय-डिंडिम—पुं० [सं० च० त०] प्राचीन काल में युद्ध-क्षेत्र में बजाया जानेवाला एक प्रकार का बड़ा ढोल।

विजय-दंड—पुं० [सं० ब० स०] सैनिकों का वह विभाग जो सदा विजयी रहता हो।

विजयदशमी—स्त्री०=विजयादशमी।

विजय-दीपिका—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

विजय-नागरी—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

विजय-पताका—स्त्री० [सं० ष० त०] १. सेना की वह पताका जो जीत के समय फहराई जाती है। २. विजय का सूचक कोई चिह्न।

विजय-पर्पटी—स्त्री० [सं० मध्यम० स०] वैद्यक में एक प्रकार का रस जो पारे, रेंड़ की जड़, अदरक आदि के योग से बनता और संग्रहणी रोग में दिया जाता है।

विजय-पूर्णिमा—स्त्री० [सं० मध्यम० स०] आश्विन की पूर्णिमा।

विजय-भैरव—पुं० [सं० च० त०] वैद्यक में एक प्रकार का रस।

विजय-मर्द्दल—पुं० [सं० च० त०] प्राचीन काल का एक प्रकार का ढोल। ढक्का।

विजय-यात्रा—स्त्री० [सं० ष० त०] वह यात्रा जो किसी पर किसी प्रकार की विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से की जाय।

विजय-रत्नाकरी—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

विजय-लक्ष्मी—स्त्री० [सं० कर्म० स०] विजय की अधिष्ठात्री देवी, जिसकी कृपा पर विजय निर्भर मानी जाती है।

विजय-वसंत—पुं० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

विजयशील—वि० [सं० ब०स०] जो विजय प्राप्त करता हो। सदा जीतता रहनेवाला।

विजय-श्री—स्त्री० [सं०] १. संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी। २. विजय-लक्ष्मी।

विजय-सरस्वती—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

विजय-सामंत—पुं० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

विजय-सारंग—पुं० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

विजयसार—पुं० [सं० ब० स०] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी इमारत के काम आती है। विजैसार।

विजया—स्त्री० [सं० विजय+टाप्] १. दुर्गा। २. पुराणानुसार पार्वती की एक सखी जो गौतम की कन्या थी। ३. यम की भार्या। ४. एक योगिनी। ५. दक्ष की कन्या। ६. इन्द्र की पताका पर अंकित एक कुमारी। ७. श्रीकृष्ण के पहनने की माला। ८. काश्मीर का एक प्राचीन विभाग। ९. विजयादशमी। १०. पुरानी चाल का एक प्रकार का बड़ा खेमा या तंबू। ११. वर्तमान अवसर्पिणी के दूसरे अर्हत की माता का नाम। १२. एक सम-मात्रिक छंद (क) जिसके प्रत्येक चरण में १०-१० की यति पर ४० मात्राएँ होती हैं और अंत में रगण होता है। (ख) जिसके प्रत्येक चरण में १२, १२, १०, १० की यति से ४४ मात्राएँ होती हैं। १३. एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते हैं। इसके अंत में लघु और गुरु अथवा नगण भी होता है। १४. भंग। भाँग। १५. हर्रे। १६. वच। १७. जयंती। १८. मजीठ। १९. अग्निमंथ। २०. एक प्रकार का शमी वृक्ष।

विजया एकादशी—स्त्री० [सं० मध्यम० स०] १. क्वार सुदी एकादशी। २. फागुन बदी एकादशी।

विजया दशमी—स्त्री० [सं० मध्य० स०] आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी जो हिन्दुओं का बहुत बड़ा त्यौहार मानी जाती है।

विशेष—इसी तिथि को राम ने रावण को मारा था।

विजयानंद—पुं० [सं०] संगीत में ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

विजयाभरणी—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

विजयासप्तमी—स्त्री० [सं०] रविवार के दिन पड़नेवाली किसी मास की शुक्लपक्ष की सप्तमी।

विजयास्त्र—पुं० [सं० विजय+अस्त्र] वह अस्त्र, क्रिया या साधन जिससे विजय प्राप्त करना निश्चित हो। (ट्रम्पकार्ड)

विजयी—वि० [सं० विजि+इनि] १. वह जिसने विजय प्राप्त की हो। जीतनेवाला। २. (वह व्यक्ति या पक्ष) जिसकी प्रतियोगिता युद्ध, विवाद आदि में जीत हुई हो।

पुं० अर्जुन।

विजयोत्सव—पुं० [सं० स० त०] १. विजय दशमी के दिन होनेवाला उत्सव। २. युद्ध में विजय प्राप्त करने पर होनेवाला उत्सव।

विजर—वि० [सं० ब० स०] १. जिसे जरा या बुढ़ापा न आता हो जराहीन। २. नया। नवीन।

विजल—वि० [सं० ब० स] जल से रहित। जलहीन। निर्जल।

पुं० अनावृष्टि। सूखा।

विजलीकरण—पुं० [सं०] निर्जलीकरण।

विजल्प—पुं० [सं० तृ० त०] १. व्यर्थ की बहुत-सी बकवाद। २. किसी को बदनाम करने के लिए कही जानेवाली झूठी बात।

विजल्पन—पुं० [सं०] [भू० कृ० विजल्पित] १. विजल्प करने की क्रिया या भाव। २. कहना। बोलना। ३. अस्पष्ट रूप से कोई बात पूछना। ४. बे सिर-पैर की या व्यर्थ की बातें कहना।

विजात—वि० [सं० कर्म० स०] [स्त्री० विजाता] १. जन्मा हुआ। २. विभिन्न जातियों के माता पिता से उत्पन्न। वर्णसंकर। दोगला।

पुं० सखी छन्द का एक भेद जिसमें प्रत्येक चरण में ५-५-४ के विश्राम से १४ मात्राएँ और अंत में मगण या यगण होता है। इसकी पहली और आठवीं मात्राएँ लघु रहती हैं।

विजाता—स्त्री० [सं०] ऐसी स्त्री जिसने बच्चे या बच्चों को जन्म दिया हो।

वि० 'विजात' की स्त्री०।

विजाति—वि० [सं० ब० स०] विजातीय। (दे०)

स्त्री० दूसरी या भिन्न जाति।

विजातीय—वि० [सं० विजाति+छ—ईय] [भाव० विजातीयता] किसी की दृष्टि में, उसकी जाति से भिन्न जाति का। पराई जाति का। (हेट्रोजीनियस)

विजानक—वि० [सं० वि √ ज्ञा (जानना)+ल्यु—अन, +कनज्ञा—जा] जाननेवाला।

विजानता—स्त्री० [सं० विजान+तल+टाप्] १. जानकारी। २. चातुर्य।

विजानना—स० [सं० विजानता] विशेष रूप से जानना।

विजानु—पुं० [सं०] १. युद्ध में लड़ने का विशेष कौशल। २. तलवार चलाने का एक ढग।

विजार—पुं० [देश०] एक तरह की भूमि जिसमें धान, चना आदि बोया जाता है।

विजारत—स्त्री० [अ० विजारत] १. वजीर अर्थात् मन्त्री का कार्य या पद। २. मंत्रियों का समूह। मंत्रिमण्डल। ३. वजीर या मन्त्री का कार्यालय।

विजिगीषा—स्त्री० [सं० विजिगीष+टाप्] विजय पाने की इच्छा।

विजिगीषु—वि० [सं० वि√जि+सन् +उ] जिसे विजय पाने की इच्छा हो।

विजिगीषुता—स्त्री० [सं०] विजिगीषा।

विजिट—स्त्री० [अं०] १. भेंट। मुलाकात। २. डाक्टरों आदि का रोगी को देखने के लिए उसके घर जाना। ३. उक्त काम के लिए डाक्टर को मिलनेवाली फीस।

विजित—भू० कृ० [सं० वि√जि (जीतना)+क्त] जिस पर विजय पाई गई हो। जिसे जीता गया हो।

पुं० फलित ज्योतिष में, पराजय का सूचक ग्रह।

विजितात्मा (त्मन्)—पुं० [सं० ब० स०] शिव।

विजितारि—पुं० [सं० ब० स०] वह जिसने शत्रुओं को जीत लिया हो।

विजिति—स्त्री० [सं० वि√ जि +क्तिन्] १. विजय। जीत। २. प्राप्ति।

विजिती (तिन्)—वि० [सं० विजित+इनि, दीर्घ नलोप] विजयी।

विजितेय—वि० [सं० विजित+ठक्, ढ=एय] जिस पर नियंत्रण या विजय प्राप्त की जा सके या की जाने को हो।

विजिल्व—पुं० [सं०] १. ऐसा भोजन जिसमें अधिक रस न हो। २. एक प्रकार की लपसी।

विजित्वर—वि० [सं० वि√जि +क्विप्, तुक्] विजयी। विजेता।

विजित्वरा—स्त्री० [सं० विजित्वर+टाप्] एक देवी का नाम।

विजीष—वि० [सं०] विजिगीषु। (दे०)

विजुली—स्त्री० [सं० विजुल+ङीप्] पुराणानुसार एक देवी का नाम।

†स्त्री०=बिजली।

विजृंभण—पुं० [सं०] १. खिलना। २. खुलना। ३. तनना या फैलना। ४. विकसित या विस्तृत होना। ५ जँभाई लेना।

विजृंभा—स्त्री० [सं० विजृम्भ+टाप्] उबासी। जंभाई।

विजृंभिणी—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

विजेतव्य—वि० [सं० वि √ जि +तव्यत्]=विजेय।

विजेता (तृ)—वि० [सं० वि √ जि +तृच्] जीतनेवाला। विजयी

विजेय—वि० [स० वि √जि+यत्] जो जीता जा सके या जीते जाने के योग्य हो।

विजै†—स्त्री०=विजय।

विजैसार—पुं० [सं० विजयसार] साल की तरह का एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

विजोग†—पुं०=वियोग।

विजोगी†—वि०=वियोगी।

विजोर—वि० [हिं० वि + जोर=बल] जिसमें जोर न हो। बलहीन। निर्बल।

†पुं०=बिजौरा नींबू।

विजोहा—पुं० [सं० विमोहा] एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो रगण होते हैं। इसे जोहा, विमोहा और विजोरा भी कहते हैं।

विज्जल—वि० [सं० वि √ जड् (स्थित रहना) +अच्, ड—ल, जुट्] (स्थान) जहाँ फिसलन हो।

पुं० १. शाल्मलीकद। २. एक तरह की चावल की लपसी। ३. एक तरह का तीर या बाण।

विज्जव—पुं० [सं०] एक प्रकार का बाण।

विज्जावइ—पुं० [सं० विद्यापति] =विद्यापति। उदा०—विज्जावई कविवर एहु गावए।—विद्यापति।

विज्जु*—स्त्री० =बिजली।

विज्जुल—पुं० [सं० विज+उलच्, जुट्] १. त्वचा। छिलका। २. दारचीनी।

विज्जुलता—स्त्री० [सं० विद्युलता] विद्युत्। बिजली।

विज्जोहा—पुं०=विजोहा (छन्द)।

विज्ञ—वि० [सं० वि √ ज्ञा (जानना)+क] [भाव० विज्ञता] १. (व्यक्ति) जिसकी जानकारी बहुत अधिक हो। २. विशेषतः विषय का बहुत बड़ा जानकार। ३. समझदार और पढ़ा-लिखा व्यक्ति।

विज्ञता—स्त्री० [सं० विज्ञ+तल्+टाप्] विज्ञ होने की अवस्था या भाव।

विज्ञत्व—पुं० [सं० विज्ञ+त्व]=विज्ञाता।

विज्ञप्त--भू० कृ० [सं० वि√ज्ञप्तृ (जानना)+क्त] १. जिसकी जानकारी दूसरों को करा दी गई हो। २. विज्ञप्ति के रूप में निकाला या प्रकाशित किया हुआ।

विज्ञप्ति--स्त्री० [सं० वि √ज्ञप्तृ+क्तिन्] १. जतलाने या सूचित करने की क्रिया। २. इश्तहार। विज्ञापन। ३. आज-कल किसी अधिकारी या उसके कार्यालय की ओर से निकलनेवाली ऐसी सूचना जिसमें किसी बात या विषय का स्पष्टीकरण हो। (कम्यूनीक) ४. दे० 'बुलेटिन'।

विज्ञात--वि० [सं० वि√ज्ञा+क्त] १. जाना या समझा हुआ। २. प्रसिद्ध। मशहूर।

विज्ञातव्य--वि० [सं० वि√ज्ञा+तव्य] जानने या समझने के योग्य (बात या विषय)।

विज्ञाता (तृ)--पुं० [सं० वि√ज्ञा+तृच्] विज्ञ।

विज्ञाति--स्त्री० [सं० वि√ज्ञा+क्तिन्] १. ज्ञान। समझ। २. जानकारी। ३. गय नामक देवयोनि। ४. पुराणानुसार एक कल्प का नाम।

विज्ञान--पुं० [सं० वि √ज्ञा+ल्युट्-अन] १. ज्ञान। जानकारी। २. बुद्धि विशेषतः निश्चयात्मिका बुद्धि। ३. अच्छी तरह काम करने की योग्यता। दक्षता। ४. सांसारिक कार्यों, बातों और व्यवहारों का अच्छा अनुभव तथा ठीक और पूरा ज्ञान। ५. आविष्कृत सत्यों तथा प्राकृतिक नियमों पर आधारित क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित ज्ञान। ६. विशेषतः भौतिक जगत् से संबंधित उक्त प्रकार का ज्ञान। ७. दार्शनिक तथा धार्मिक क्षेत्रों में अविद्या या माया नाम की वृत्ति। ८. बौद्धों के अनुसार आत्मा के स्वरूप का ज्ञान। आत्मा का अनुभव। ९. आत्मा। १०. ब्रह्म। ११. मोक्ष। १२. आकाश। १३. कर्म।

विज्ञान कोश--पुं० [सं० मध्यम० स०] १. वेदान्त के अनुसार ज्ञानेन्द्रियाँ और बुद्धि। २. विज्ञानमय कोश जो आत्मा को परिवृत्त करनेवाला पहला आवरण या कोश कहा गया है।

विज्ञानता--स्त्री० [सं० विज्ञान+तल्+टाप्] विज्ञान का धर्म या भाव।

विज्ञान पाद--पुं० [सं०] वेदव्यास।

विज्ञानमय कोष--पुं० [सं०] =विज्ञान कोश।

विज्ञानवाद--पुं० [सं०] [वि० विज्ञानवादी] बौद्ध महायान का एक दार्शनिक सिद्धान्त जिसमें यह माना जाता है कि संसार के समस्त पदार्थ असत्य होने पर भी विज्ञान या चित् की दृष्टि से सत्य ही हैं।

विज्ञानवादी--वि० [सं०] विज्ञानवाद-संबंधी।
पुं० विज्ञानवाद का अनुयायी।

विज्ञानिक--वि० [सं० विज्ञान+ठन्--इक] १. जिसे ज्ञान हो। २. विज्ञ। ३. दे० 'वैज्ञानिक'।

विज्ञानिता--स्त्री० [सं०विज्ञानि+तल्+टाप्] विज्ञानी का धर्म या भाव।

विज्ञानी (निन्)--पुं० [सं० विज्ञान+इनि] १. ज्ञानी। २. वैज्ञानिक।

विज्ञानीय--वि० [सं० वि√ज्ञा+अनीयर] विज्ञान-संबंधी। वैज्ञानिक।

विज्ञापक--वि० [सं०] दूसरों को जानकारी करनेवाला।
पुं० समाचार-पत्रों आदि में विज्ञापन छपानेवाला। विज्ञापन-दाता।

विज्ञापन--पुं० [सं० वि√ज्ञा+णिच्+युक--अन] १. सब लोगों को कोई बात जतलाने या बतलाने की क्रिया या भाव। जानकारी कराना। सूचित करना। २. पत्रों आदि में लोगों की जानकारी के लिए विशेष रूप से छपवाई जानेवाली बात या सूचना। ३. उक्त उद्देश्य से बाँटा जानेवाला सूचना-पत्र। ४. प्रचार तथा बिक्री के उद्देश्य से किसी वस्तु के संबंध में सामयिक पत्रों में प्रकाशित कराई जानेवाली सूचना।

विज्ञापना--स्त्री० [सं० विज्ञापन+टाप्] विज्ञप्त करना। जतलाना। बतलाना।

विज्ञापनीय--वि० [सं० वि √ज्ञप् (जानना) +णिच्+अनीयर्] (बात या विषय) जो दूसरों को सार्वजनिक रूप में बताये जाने के योग्य हो।

विज्ञापित--भू० कृ० [सं० वि√ज्ञप्+णिच्+क्त] १. जो बतलाया जा चुका हो। जिसकी सूचना दी जा चुकी हो। २. जिसके विषय में विज्ञापन प्रकाशित हो चुका हो। ३. जिसकी सूचना दी गई हो। (नोटिफ़ायड)

विज्ञापित क्षेत्र--पुं० [सं०] स्थानिक स्वशासन और प्रबंध के लिए नियत किया हुआ छोटा क्षेत्र। (नोटिफ़ायड एरिया)

विज्ञापी--वि० [सं० विज्ञापिन्] =विज्ञापक।

विज्ञाप्ति--स्त्री० [सं० वि √ज्ञा (जानना)+णिच्, पुक्,+क्तिन्] = विज्ञप्ति।

विज्ञाप्य--वि० [सं० वि √ज्ञप्+ण्यत्] =विज्ञापनीय।

विज्ञेय--वि० [सं० वि√ज्ञा+यत्] (बात या विषय) जो जानने या समझने के योग्य हो।

विज्वर--वि० [सं० ब० स०] १. जिसका ज्वर उतर गया हो। जिसका बुखार छूट गया हो। २. सब प्रकार के क्लेशों, चिन्ताओं आदि से मुक्त।

विट्--पुं० [सं०√विट्+क्विप्] १. साँचर नमक। २. मल। विष्ठा।

विटंक--वि० [सं०] ऊँचा।
पुं० १. बैठने का ऊँचा स्थान। २. वह छतरी जिसपर पक्षी बैठते हैं।

विट--पुं० [सं०] १. वह जिसमें काम-वासना बहुत अधिक हो। कामुक। २. पुंश्चली स्त्रियाँ और वेश्याओं से संबंध रखने और प्रायः उन्हीं के साथ रहनेवाला व्यक्ति। लंपट। ३. बहुत बड़ा चालाक या धूर्त आदमी। ४. साहित्य में एक प्रकार का नायक जो प्रायः ऐसा व्यक्ति होता है जो बात-चीत में बहुत चतुर, बहुत बड़ा धूर्त तथा लंपट हो और अपनी सारी सम्पत्ति भोग-विलास में नष्ट करके किसी विलासी राजा, राजकुमार या धनवान् के साथ बहुत-कुछ विदूषक के रूप में रहने लगा हो और उसके भोग-विलास में सहायक होकर और उसका मनोरंजन करके अपना निर्वाह भी करता हो और प्रायः वेश्याओं के साथ रहकर थोड़ा बहुत भोग-विलास भी करता हो। भाण (देखें) नामक प्रहसन या रूपक का यही नायक होता है। ५. बहुत बड़ा बदमाश या लुच्चा। ६. एक प्राचीन पर्वत। ७. दुर्गंध खैर। ८. नारंगी का पेड़। ९. साँचर नमक। १०. चूहा। ११. गुह। मल। विष्ठा।

विटक--पुं० [सं० विट+कन्] १. नर्मदा के किनारे का एक प्राचीन प्रदेश। २. उक्त प्रदेश में रहनेवाली एक जाति। ३. घोड़ा।

विटकृमि--पुं० [सं० ष० त०] चुन्ना या चुनचुना नाम का कीड़ा जो बच्चों की गुदा में उत्पन्न होता है।

विटप—पुं०[सं०] १. वृक्ष या लता की नई शाखा। कोंपल। २. छतनार पेड़। झाड़। ३. पेड़। वृक्ष। ४. लता।

विटपी (पिन)—वि०[सं० विटप+इनि] (वनस्पति) जिसमें नई शाखाएँ या कोपलें निकली हों।

पुं० १. पेड़। वृक्ष। २. अंजीर का पेड़। ३. वट वृक्ष। बड़ का पेड़।

विटपी मृग—पुं०[सं० ष० त०] शाखामृग (बंदर)।

विटमाक्षिक—पुं०[सं० मध्यम० स०] सोना-मक्खी।

विट-लवण—पुं०[सं० मध्यम० स०] एक प्रकार का नमक।

विटामिन—पुं०[अं०विटैमिन] प्रायः सभी अनाजों, तरकारियों और फलों में बहुत ही सूक्ष्म मात्रा में पाया जानेवाला एक नव-आविष्कृत तत्त्व जो शरीर के अंगों के पोषण, स्वास्थ्य-रक्षण आदि के लिए आवश्यक और उपयोगी माना गया है और जिसके बहुत से भेद तथा उपभेद देखे गये हैं। (विटैमिन)

विट् खदिर—पुं०[सं० कर्म० स०] एक प्रकार का खदिर जो बदबूदार होता है।

विट्घात—पुं०[सं० प० त०] मूत्राघात नामक रोग।

विट्ठल—पुं०[?] विष्णु के अवतार एक देवता जिनकी मूर्ति पंढरपुर (महाराष्ट्र) में प्रतिष्ठित है।

विट्शूल—पुं०[सं०] एक प्रकार का शूल रोग।

विठर—वि०[सं०] वाग्मी।

पुं० वृहस्पति।

विठल†—पुं०=विट्ठल।

विठोबा†—पुं०=विट्ठल।

विडंग—पुं०[सं०√विड्+अङ्गच्] वाय विडंग।

पुं०[?] घोड़ा।

विडंबक—वि०[सं० वि√डम्ब् (विडम्बना करना)+णिच्+ण्वुल-अक] १. ठीक अनुकरण करनेवाला। पूरी नकल करनेवाला। २. केवल अपमानित करने या चिढ़ाने के लिए किसी की नकल उतारनेवाला। ३. हँसी उड़ाने के लिए निंदा करनेवाला।

विडंबन—पुं०[सं०] १. किसी को चिढ़ाने, अपमानित करने आदि के उद्देश्य से उसकी नकल उतारना या हँसी उड़ाना। २. विडंबना।

विडंबना—स्त्री०[सं० विडंबन+टाप्][वि० विडंबनीय, भू० कृ० विडंबित] १. किसी को चिढ़ाने के लिए उसकी उतारी जानेवाली नकल। २. वह हँसी-मजाक जो किसी को चिढ़ाने या अपमानित करने के लिए किया जाय। ३. दम्भ।

विडंबनीय—वि०[सं० वि√डम्ब्+अनीयर्] जिसकी विडंबना हो सके या होना उचित हो।

विडंबित—भू० कृ०[सं०] जिसकी विडंबना की गई हो या हुई हो।

विडंबी (बिन्)—वि०[सं० विडम्ब+इनि] १. दूसरों की नकल उतारनेवाला। २. चिढ़ाने या अपमानित करने के उद्देश्य से दूसरों का हँसी-मजाक उड़ानेवाला।

विड—पुं०[सं०] विट् लवण। बिरिया नोन।

विडरना—अ०[सं० तलव, हिं० डालना या सं० वितरण] १. इधर-उधर होना। तितर-बितर होना। २. भागना।

विडराना—स०=विडारना।

विडलवण—पुं०[सं० उपमि० स०] साँचर नमक।

विडारक—पुं०[सं० विड+आरकन्, विडाल+कन्, ल—र] बिड़ाल। बिल्ली।

विडारना—स०[हिं० विडरना का स० रूप] १. तितर-बितर करना। इधर-उधर करना। छितराना २. नष्ट करना।

विडाल—पुं०[सं०√विड् (निंदा करना)+कालन्] १. आँख का पिंड। २. आँख में लगाई जानेवाली दवा या उस पर किया जानेवाला लेप। ३. बिल्ली। ४. गन्ध-बिलाव। ५. हरताल।

विडालाक्षी—स्त्री०[सं०] बिल्ली-कीसी आँखोंवाली स्त्री।

विडाली—पुं०[सं० विडाल+ङीष्] १. विदारी कंद। २. बिल्ली।

विडीन—पुं०[सं० वि√डी (उड़ना)+क्त] पक्षियों की एक विशेष प्रकार की उड़ान।

विडौजा (जस्)—पुं०[सं०]=इंद्र।

विड्ग्रह—पुं०[सं०] कोष्ठबद्धता। मलावरोध।

विड्घात—पुं०[सं०] मलमूत्र का अवरोध। पेशाब और पाखाना रुकना।

विड्ज—वि०[सं०] विष्ठा में से उत्पन्न होनेवाला (कीड़ा)।

विड्भंग—पुं०[सं०] दस्त आने का रोग।

विड्भेद—पुं०[सं० ष० त०]=विड्भंग।

विड्भेदी (दिन्)—वि०[सं०] जिसके खाने से दस्त आते हों। विरेचक।

विड्लवण—पुं०[सं०] विट्लवण। साँचर नमक।

विड्वराह—पुं०[सं० मध्यम० स०] गाँवों में रहनेवाला सुअर।

वितंड—पुं०[सं० वि√तंड् (ताड़न करना)+अच्] १. हाथी। २. एक तरह का पुरानी चाल का ताला।

वितंडा—स्त्री०[सं० वितंड+टाप्] १. ऐसी आपत्ति, आलोचना या विरोध जो छिद्रान्वेषण के विचार से किया गया हो। २. दूसरे के पक्ष को दबाते हुए अपने मत की स्थापना करना। ३. व्यर्थ की कहा-सुनी। झगड़ा। ४. दूब। ५. कबूतर। ६. शिला रस।

वितंत्र—पुं०[सं० वि+तंत्र] ऐसा बाजा जिसमें तार न लगे हों। बिना तार का बाजा।

वितंत्री—स्त्री०[सं० ब० स०] ऐसी वीणा जिसके तारों का स्वर ठीक मिला न हो।

वितंस—पुं०[सं० वि√तंस् (भूषित करना)+अच्] १. पक्षी रखने का पिजंरा। २. वह रस्सी, जंजीर आदि जिससे पशु या पक्षी को बाँधा जाय।

वित—वि०[सं० विद्] १. जाननेवाला। ज्ञाता। २. चतुर। होशियार।

पुं०=वित्त (अर्थ)।

वितत—भू० कृ०[सं० वि√तन् (विस्तार होना)+क्त] १. फैला हुआ। विस्तृत। २. खींचा या ताना हुआ। जैसे—वितत धनुष। ३. झुका हुआ।

पुं० १. वीणा नाम का बाजा। २. वीणा की तरह का कोई बाजा।

वितताना—अ०[सं० व्यथा] व्याकुल या बेचैन होना।

वितति—स्त्री०[सं० वि√तन्+क्तिन्] वितत होने की अवस्था या भाव। विस्तार।

विततोरसि—वि०[सं० वितत (फैला हुआ)+उरसि] १. चौड़ी या विस्तृत छातीवाला (वीरों का लक्षण) २. उदार हृदय।

वितथ--वि०[सं०वि√तन्+क्थन्] [भाव० वितथता] १. झूठा। मिथ्या। २. निरर्थक। व्यर्थ।

पुं०१. गृह-देवताओं का एक वर्ग। २. भरद्वाज ऋषि।

वितथ्य--वि०[सं०] १. तथ्य-रहित। २. वितथ। (दे०)

वितद्रु--पुं०[सं० वि√तन्+रु, दुट्-आगम] पंजाब की झेलम नदी का प्राचीन नाम।

वितनु--वि०[सं० वि√तन्+उ] १. तनहीन। देहहीन। विदेह। २. कोमल, सूक्ष्म तथा सुंदर।

पुं० कामदेव।

वितपन्न†--वि०=व्युत्पन्न।

वितमस--वि०=वितमस्क।

वितमस्क--वि०[सं०] १. जिसमें तम या अंधकार न हो।२. तमोगुग से रहित।

वितरक--वि०[सं० वितर+कन्] वितरण करनेवाला। बाँटनेवाला।

पुं० व्यावसायिक क्षेत्र में वह व्यक्ति या संस्था जो किसी उत्पादक संस्था की वस्तुओं की बिक्री आदि का प्रबंध करती हो। (डिस्ट्रीब्यूटर)

वितरक नदी--स्त्री०[सं०] आधुनिक भूगोल में, किसी नदी के मुहाने पर बननेवाली उसकी शाखाओं में से प्रत्येक शाखा जो स्वतंत्र रूपसे जाकर समुद्र में गिरती है। (डिस्ट्रीब्यूटरी)

वितरण--पुं०[सं० वि√तृ (पार करना)+ल्युट्-अन] १. दान करना। देना। २. अर्पण करना। ३. बाँटना। ४. अर्थशास्त्र में उत्पत्ति के फलस्वरूप होनेवाली प्राप्ति का उत्पत्ति के साधनों में बाँटना। ५. व्यापारिक क्षेत्र में विक्रय तथा प्रदर्शन के उद्देश्य से दुकानदारों तथा व्यापारियों को निर्मित वस्तुएँ देना।

वितरन†--वि०=वितरक।

वितरना--स०[सं० वितरण] वितरण करना। बाँटना। उदा०--आकर्षण धन सा वितरे जल। निर्वासित हो सन्ताप सकल। --प्रसाद।

वितरिक्त--अव्य०=अतिरिक्त।

वितरित--भू० कृ०[सं० वितर+इतच्] जो वितरण किया गया हो। बाँटा हुआ।

वितरिता--वि०[सं० वि√तृ (तरना)+तृच्]=वितरक।

वितरेक--पुं०=व्यतिरेक।

वितर्क--पुं०[सं० वि√तर्क् (तर्क करना)+अच्] १. कुतर्क करना। २. किसी के तर्क का खंडन करने के लिए उसके विपरीत उपस्थित किया जानेवाला तर्क। ३. साहित्य में एक संचारी भाव जो उस समय माना जाता है जब मन में कोई विचार उत्पन्न होने पर मन ही मन उसके विरुद्ध तर्क किया जाता है और इस प्रकार असमंजस में रहा जाता है। ४. एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी प्रकार के सन्देह या वितर्क का उल्लेख होता है और कुछ निर्णय नहीं होता।

वितर्कण--पुं०[सं० वि√तर्क् (तर्क करना)+ल्युट्-अन] १. तर्क करने की क्रिया या भाव। २. संदेह। ३. वाद-विवाद।

वितर्क्य--वि०[सं० वितर्क+यत्] १. जिसमें किसी प्रकार के वितर्क या संदेह के लिए अवकाश हो। २. अद्भुत। विलक्षण।

वितर्दि (र्द्धि)--स्त्री० [वि√तर्द् (मारना) + इनि] १. वेदी। २. मंत्र। ३. छज्जा।

वितल--पुं०[सं० तृ० त०] पृथ्वी के नीचे स्थित सात लोकों में से दूसरा लोक। (पुराण)

वितली (लिन्)--पुं०[सं० वितल+इनि] एकदेव, जो वितल के धारक माने गए हैं। (पुराण)

वितस्ता--स्त्री०[सं० वि√तस् (ऊपर फेंकना)+क्त+टाप्] पंजाब की झेलम नदी का प्राचीन नाम।

वितस्ताख्य--पुं०[सं० ब० स०] कश्मीर में स्थित तक्षक नाग का निवास-स्थान। (महाभारत)

वितस्ताद्रि--पुं०[सं० मध्यम० स०] राजतरंगिणी में उल्लखित एक पर्वत।

वितस्ति--पुं०[सं० वि√तस्+ति] बारह अंगुल की एक नाप। बित्ता।

विताडन--पुं०[सं० वि√तड् (मारना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० विताड़ित]=ताड़न।

वितान--पुं० [सं० वि√तन् (विस्तार करना)+घञ्] १. फैलाव। विस्तार। २. ऊपर से फैलाई जानेवाली चादर। चँदोआ। ३. जमाव। समूह। ४. घृणा। ५. शून्य स्थान। खाली जगह। ६. यज्ञ। ७. अग्निहोत्र आदि कृत्य। ८. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सगण, भगण और दो दो गुरु होते हैं। ९. सिर पर बाँधी जानेवाली पट्टी।

वि० १. खाली। शून्य। २. दुःखी। ३. मूर्ख। ४. दुष्ट। ५. परिव्यक्त।

वितानक--पुं०[सं०] १. बड़ा चँदोआ। २. खेमा। ३. धन-सम्पत्ति। ४. धनियाँ।

वि० फैलानेवाला।

वितानना--स०[सं० वितान] १. खेमा, शामियाना आदि तानना। २. कोई चीज तानना या फैलाना।

वितार--पुं०[सं० ब० स०] एक प्रकार का केतु या पुच्छल तारा। (बृहत्संहिता)

वितारक--पुं०[सं० वितार+कन्] विधारा नामक जड़ी।

विताल--वि०[सं० ब० स०] (संगीत या वाक्य) जो ठीक ताल में न दे रहा हो। बे-ताल।

पुं० संगीत में ऐसा ताल जो गाई या बजाई जानेवाली चीज के उपयुक्त न हो।

वितिक्रम†--पुं०=व्यतिक्रम।

वितिमिर--वि०[सं० ब० स०] जिसमें तम या अंधकार न हो।

वितीत†--वि०=व्यतीत।

वितीपात†--पुं०=व्यतीपात।

वितीपाती--वि०[सं० व्यतीपात+ई (प्रत्य०)] जो बहुत अधिक उपद्रव करता हो। पाजी। शरारती।

विशेष--फलित के अनुसार ज्योतिष के व्यतीपात योग में जन्म लेनेवाले बालक बहुत दुष्ट होते हैं।इसी आधार पर यह विशेषण बना है।

वितीर्ण--पुं०[सं० वि√तृ+क्त]=वितरण।

भू० कृ० १. पार किया या लाँघा हुआ। २. दिया या सौंपा हुआ। ३. जीता हुआ।

वितुंड--पुं०[सं०] हाथी।

वितु†—पुं०=वित्त (अर्थ)।

वितुद——पुं०[सं०वि√तुद् (पीड़ित करना)+अच्] एक प्रकार की भूत योनि। (वैदिक साहित्य)

वितुन्न—पुं०[सं० वि√तुद्+क्त] १. शिरियारी या सुसना नामक साग। २. शैवाल। सेवार।

वितुन्नक—पुं०[सं० वितुन्न+कन्] १. धनिया। २. तूतिया। ३. केवटी मोथा। ४. भू-आँवला।

वितुष्ट—वि० [सं० वि√तुष् (संतुष्ट होना)+क्त]=असंतुष्ट।

वितृण—वि०[सं० ब० स०] (स्थान) जिसमें तृण, घास आदि न उगती हो। तृण से रहित।

वितृप्त—वि०[सं० ब० स०] जो तृप्त या संतुष्ट न हुआ हो। अतृप्त।

वितृष—वि०[सं० ब० स०]=वितृष्ण।

वितृष्ण- -वि०[सं०] [भाव० वितृष्णा] जिसके मन में कुछ भी या कोई तृष्णा न रह गई हो। तृष्णा-रहित।

वितृष्णा--स्त्री०[सं० कर्म० स०] [वि० वितृष्ण] १. मन से किसी बात की तृष्णा न रह जाना। तृष्णा का अभाव। २. बुरी या विकट तृष्णा।

वित्त—पुं०[सं०] १. धन। संपत्ति। २. राज्य, संस्था आदि के आय-व्यय आदि की मद या विभाग और उसकी व्यवस्था। (फ़ाइनान्स)

वित्त-कोश—पुं०[सं० ष० त०] १. रुपये-पैसे आदि रखने की थैली। २. धन आदि का खजाना।

वित्तगोप्ता—पुं०[सं० ष० त०] कुबेर के भंडारी का नाम।

वित्तदा—स्त्री०[सं० वित्त√दा (देना)+क,+टाप्] कार्तिकेय की एक मातृका।

वित्तनाथ—पुं०[सं० ष० त०] कुबेर।

वित्तपति—पुं०[सं० ष० त०]=वित्तपाल।

वित्तपाल—पुं० [सं० वित्त√पाल् (पालन करना)+अच्] १. कुबेर। २. खजानची। ३. भंडारी।

वित्तपुरी—स्त्री०[सं० ष० त०] कुबेर की अलका नगरी।

वित्त-मंत्री—पुं०[सं० ष० त०] १. राज्य का वह मंत्री जो आय-व्यय वाले विभाग का प्रधान अधिकारी हो। (फ़ाइनान्स मिनिस्टर) २. किसी संस्था के आय-व्यय वाले विभाग का मंत्री । अर्थ-मंत्री।

वित्त-वर्ष—पुं०[सं०] वित्तीय वर्ष।

वित्तवान्(वत्)—वि० [सं० वित्त+मतुप्, म–व, नुम्] धनवान्।

वित्त-विधेयक--पुं०[सं० ष० त०] आधुनिक शासन में विधान सभा में आगामी वर्ष के लिए उपस्थित किया जानेवाला वह विधेयक जिसमें आय-व्यय संबंधी सभी मुख्य बातों का उल्लेख रहता है। (फ़ाइनान्स-बिल)

वित्त-सचिव—पुं०[सं०] वित्त मंत्री।

वित्त-साधन—पुं०[सं० ष० त०] आधुनिक शासन व्यवस्था में वे सब द्वार या साधन जिनसे राज्य, संस्था आदि को अर्थ या धन प्राप्त होता है। (फ़ाइनान्सेज)

वित्तहीन—वि०[सं० ष० त०] धन-हीन। निर्धन।

वित्ति—स्त्री०[सं० विद् (जानना)+क्ति] १. विचार। २. प्राप्ति। ३. लाभ। ४. ज्ञान। ५. संभावना।

वित्तीय—वि०[सं० वित्त+छ–ईय] १. वित्त-संबंधी। वित्त का। २. वित्त की व्यवस्था के विचार से चलने या होनेवाला। (फ़ाइनान्सल)

वित्तीय वर्ष—पुं०[सं०] किसी देश की वित्तीय व्यवस्था की दृष्टि से नियत किया हुआ बारह महीनों का समय या वर्ष। जैसे--भारतीय वित्तीय वर्ष १ अप्रैल से ३१ मार्च तक होता है।

वित्तेश, वित्तेश्वर--पुं०[सं० ष० त०] कुबेर।

वित्त्व—पुं०[सं० विद्+त्व] वेत्ता होने की अवस्था या भाव।

वित्थार†--पुं०=विस्तार।

वित्पन्न--भू० कृ० [सं०] घबराया हुआ। व्याकुल।

†वि०=व्युत्पन्न।

वित्रप—वि०[सं० ब० स०] निर्लज्ज। बेहया। बेशरम।

वित्रास—पुं०[सं० वि√त्रस् (कांपना)+घञ्]=त्रास (भय)।

वित्रासन—पुं०[सं० वि√त्रस्+णिच्+ल्युट्–अन] [भू० कृ० वित्रासित] डराने की क्रिया। त्रासन।

वि० डरावना। भयानक।

विथक—पुं०[सं० विथ+कन्] पवन।

विथकना--अ०[हिं० थकना] थकना। उदा०--अंग अंग विथकित भइ-नारी।--नन्ददास। २. चकित या मुग्ध होकर स्तंभित होना।

विथकित--भू० कृ०[हिं० विथकना] थका हुआ। शिथिल। चकित या मुग्ध होने के कारण स्तब्ध।

विथराना--स०=विथराना। (छितराना)।

विथा†—स्त्री०=व्यथा।

विथारना--स०[सं० वितरण] १. फैलाना। २. छितराना।

विथित--वि०=कथित।

विथुर--पुं०[सं०√व्यथ्(पीसंत करना)+उरच्, य=इ] १. चोर। २. राक्षस। ३. क्षय। नाश।

वि० १. अल्प। थोड़ा। २. व्यथित।

विथुरा--स्त्री०[सं० विथुर+टाप्] १. विरहिणी स्त्री। २. विधवा स्त्री।

विद्—वि० [सं०√विद्(जानना)+क्विप्] जाननेवाला। ज्ञाता। जैसे--ज्योतिर्विद।

पुं० १. पंडित। विद्वान्। २. बुध ग्रह। ३. तिल का पौधा।

विद—वि०=विद्।

विदग्ध—भू० कृ०[सं० वि√दह् (जलाना)+क्त] [भाव० विदग्धता] १. जला हुआ। २. नष्ट। ३. तपा हुआ। ४. जिसने किसी विषय का अच्छा या पूरा ज्ञान प्राप्त करने के लिए अनेक कष्ट सहे हों। ५. चतुर। ६. रसिक।

विदग्धक—पुं०[सं० विदग्ध+कन्] जलती हुई लाश। (बौद्ध)

विदग्धता—स्त्री० [सं० विदग्ध+तल+टाप्] विदग्ध (देखें) होने की अवस्था या भाव।

विदग्धा—स्त्री०[सं० विदग्ध+टाप्] साहित्य में वह परकीया नायिका जो चतुरतापूर्वक पर-पुरुष को अपने प्रति अनुरक्त करती है।

विदत्त—भू० कृ०[सं० तृ० त०] १. दिया या सौंपा हुआ। २. बाँटा हुआ।

विदमान†--वि०=विद्यमान्।

विदर—पुं०[सं० वि√दृ (फाड़ना)+अच्] दराज (सूराख)।

विदरण—पुं० [सं० वि√दृ+ल्युट–अन] [भू० कृ० विदरित] १. विदीर्ण करना। फाड़ना। २. विद्रधि नामक रोग।

विदरना—अ० [सं० विदरण] विदीर्ण होना। फटना।

स० १. विदारण करना। फाड़ना। २. कष्ट देना। पीड़ित करना। उदा०—विदर न मोहि पीत रंग ऐसे।—नूर मुहम्मद।

विदर्भ—पुं०[सं० ब० स०] १. आधुनिक महाराष्ट्र के बरार नामक प्रदेश का पुराना नाम। २. उक्त प्रदेश का राजा।

विदर्भजा—स्त्री०[सं० विदर्भ√जन् (उत्पन्न करना)+ड+टाप्] १. अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा। २. दमयंती। ३ रुक्मिणी।

विदर्भराज—पुं०[सं० ष० त०] दमयंती के पिता राजा भीष्म जो विदर्भ के राजा थे।

विदर्व्य—पुं०[सं० ब० स०] बिना फनवाला साँप।

विदल—वि०[सं० ष० त०] १. दल से रहित। बिना दल का। २. खिला हुआ। विकसित। ३. फटा हुआ।

पुं० १. सोना। स्वर्ण। २. अनार का दाना। ३. चना। ४. दाल की पीठी। ५. बाँस की पट्टियों का बना हुआ दौरा या पिटारा।

विदलन—पुं०[सं० वि√दल् (दलन)+ल्युट्–अन] [भू० कृ० विदलित] १. मलने, दलने या दबाने आदि की क्रिया। २. दलने, पीसने या रगड़ने की क्रिया।

विदलना—स० [सं० विदलन] दलित करना। नष्ट करना।

विदलान्न—पुं०[सं० ब० स०, कर्म० स०] १. दला हुआ अन्न। २. दाल। ३. पकाई हुई दाल।

विदलित—भू० कृ०[सं० वि√दल् (दलन करना)+क्त] १. जिसका अच्छी तरह दलन किया गया हो। २. कुचला या रौंदा हुआ। ३. काटा, चीरा या फाड़ा हुआ। ४. बुरी तरह से ध्वस्त या नष्ट किया हुआ।

विदा—स्त्री०[सं०√विद्+अङ्+टाप्] बुद्धि। ज्ञान। अक्ल।

स्त्री० [सं० विदाय, मि० अ० विदाअ] १. रवाना होना। प्रस्थान। २. कहीं से चलने के लिए मिली हुई अनुमति।

विदाई—स्त्री०[हिं० विदा+ई (प्रत्य०)] १. विदा होने की क्रिया या भाव। प्रस्थान। २. विदा होने के लिए मिली हुई अनुमति। ३. विदा होने के समय मिलनेवाला उपहार या धन। ४. किसी के विदा होने के समय उसके प्रति शुभ कामना प्रकट करने के लिए लोगों का एकत्र होना। (फ़ेयरवेल)

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—माँगना।—मिलना।

विदाय—पुं०[सं० ब० स०] १. विसर्जन। २. प्रस्थान। रवानगी। ३. प्रस्थान करने के लिए मिली हुई अनुमति। ४. दान।

†स्त्री०=विदाई।

विदायी (यिन्)—वि०[सं० विदाय+इनि] १. जो ठीक तरह से चलाता या रखता हो। नियामक। २. दाता। दानी।

†स्त्री०=विदाई।

विदार—पुं०[सं० वि√दृ (फाड़ना)+घञ्] १. युद्ध। समर। २. फाड़ना। विदारण।

विदारक—पुं०[सं० वि√दृ+ण्वुल्–अक] १. वृक्ष, पर्वत आदि जो जल के बीच में हों। २. छोटी नदियों के तल में बना हुआ गड्ढा जिसमें नदी के सूखने पर भी पानी बचा रहता है। ३. नौसादर।

वि० विदारण करनेवाला या फाड़नेवाला।

विदारण—पुं०[सं० वि√दृ+णिच्+ण्वुल्—अक] १. बीच में से अलग करके दो या अधिक टुकड़े करना। चीरना, फाड़ना या ऐसी ही और कोई क्रिया करना। २. मार डालना। वध। ३. ध्वस्त या नष्ट करना। ४. कनेर। ५. खपरिया। ६. नौसादर।

विदारना—स०[हिं० विदरना] १. विदारण करना। फाड़ना।

विदारिका—स्त्री० [सं० वि√दृ+णिच्+ण्वुल्—अक,+टाप्, इत्व] १. बृहत्संहिता के अनुसार एक प्रकार की डाकिनी जो घर के बाहर अग्निकोण में रहती है। २. गंभारी नामक वृक्ष। ३. शालपर्णी। ४. कड़ुई तुँबी। ५. विदारी कंद।

विदारित—भू०कृ०[सं० वि√दृ+णिच्+क्त] जिसका विदारण हुआ हो।

विदारी (रिन्)—वि० [सं० वि√दृ+णिनि] विदारक।

स्त्री०[सं० वि√दृ (फाड़ना)√णिच्+अच्+ङीष्] १. शालपर्णी। २. भुईं कुम्हड़ा। ३. विदारी कंद। ४. क्षीर काकोली। ५. 'भाव प्रकाश' के अनुसार अठारह प्रकार के कंठ रोगों में से एक प्रकार का कंठ रोग। ६. एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसमें बगल में फुंसी निकलती है। ७. वाग्भट्ट के अनुसार मेढ़ा सींगी, सफेद पुनर्नवा, देवदार, अनन्तमूल, बृहती आदि ओषधियों का एक गण।

विदारी कंद—पुं०[सं० ब० स०, ष० त०] भुईं कुम्हड़ा।

विदारी गंधा—स्त्री०[सं०] १. सुश्रुत के अनुसार शालपर्णी, भुईं कुम्हड़ा, गोखरू, शतमूली, अनंतमूल, जीवंती, मुगवन, कटियारी, पुनर्नवा आदि औषधियों का एक गण। २. शालपर्णी।

विदाह—पुं०[सं० वि √दह् (जलाना)+घञ्] [वि० विदाहक, विदाही] १. पित्त के प्रकोप के कारण होने वाली जलन। २. हाथ-पैरों में होनेवाली जलन।

विदाही†—वि०=विदाहक।

विदिक्—स्त्री०[सं० वि√दिश्+क्विप्] दो दिशाओं के बीच की दिशा कोण। विदिशा।

विदित—भू० कृ० [सं० विद् (जानना)+क्त] जाना हुआ। अवगत।

पुं० कवि।

विदिता—स्त्री०[सं० विदित+टाप्] जैनों की एक देवी।

विदिथ—पुं०[सं० विद्+थन्, इ] १. पंडित। विद्वान्। २. योगी।

विदिशा—स्त्री०[सं०] दो दिशाओं के बीच का कोण।

विदिषा—स्त्री० [सं० तृ० त०,+टाप्] १. वर्तमान भेलसा नामक नगर का प्राचीन नाम। २. एक पौराणिक नदी जो पारियात्र नामक पर्वत से निकली हुई कही गई है। ३. दो दिशाओं के बीच की दिशा। कोण।

विदीपक—पुं०[सं० कर्म० स०] दीपक। दीया।

विदीर्ण—भू० कृ० [सं०] १. जिसे फाड़ा गया हो। २. टूटा या तोड़ा हुआ। ३. जो मार डाला गया हो। निहत।

विदु—पुं० [सं०√विद् (जानना)+कु] १. हाथी के मस्तक पर का वह गहरा अंश जो दोनों कुंभों के बीच में पड़ता है। २. घोड़े के कान के बीच का भाग।

वि० बुद्धिमान्।

विदुख†—पुं०[स्त्री० विदुखी]=विदुष (विद्वान्)।

विदुत्तम—पुं०[सं० ष० त०] १. वह जो सब बातें जानता हो। २. विष्णु।

विदुर—पुं०[सं० √विद् (जानना)+कुरच्] १. वह जो जानकार हो। २. ज्ञानवान्। ज्ञानी। ३. पंडित।

पुं० १. अम्बिका के गर्भ से उत्पन्न व्यास के पुत्र जो धृतराष्ट्र और पांडु के भाई थे। २. एक प्राचीन पर्वत। विदूर।

पुं०=वैदूर्य (मणि)।

विदुल—पुं०[सं० वि√दुल् (झूलना)+क,√विद् (जानना) +कुलच्] १. बेंत। २. जलबेंत। ३. अमलबेंत। ४. बोल नामक गन्धद्रव्य।

विदुला—स्त्री० [सं० विदुल+टाप्] १. सातला नाम का थूहर। २. विट् खदिर।

विदुष—पुं०[सं०√विद् (जानना)+क्वसु, व–उ] [स्त्री० विदुषी] विद्वान्। पंडित।

विदुषी—स्त्री०[सं० विदुष+ङीष्] विद्वान् स्त्री।

विदूर—वि०[सं०] जो बहुत दूर हो।

पुं० १. बहुत दूर का प्रदेश। दूर देश। २. एक प्राचीन जनपद अथवा उसमें स्थित एक पर्वत जिसमें वैदूर्य रत्न अधिकता से मिलता था। ३. वैदूर्य मणि।

विदूरज—पुं०[सं०] विदूर पर्वत से उत्पन्न, अर्थात् वैदूर्य मणि।

विदूरत्व—पुं०[सं० विदूर+त्व] विदूर होने की अवस्था या भाव। बहुत अधिक अन्तर या दूरी।

विदूरथ—पुं०[सं०] १. कुरुक्षेत्र का एक नाम। २. बारहवें मनु का एक पुत्र।

विदूरित—भू० कृ०[सं० विदूर+इतच्] दूर किया या परे हटाया हुआ।

विदूषक—पुं०[सं०][स्त्री० विदूषिका] १. दूसरों में दोष बतलाकर उनकी हँसी उड़ानेवाला व्यक्ति। उदा०—बेद बिदूषक बिस्व बिरोधी—तुलसी। २. अपने वेष, चेष्टा, बात-चीत आदि से अथवा ढोंग रचकर और दूसरों की नकल उतार कर लोगों को हँसानेवाला। मसखरा। ३. प्रायः नाटकों में इस प्रकार का एक पात्र जो नायक का अंतरंग मित्र या सखा होता है तथा जिसकी सूरत-शवल, हाव-भाव, बातें आदि सब को हँसानेवाली होती हैं। ४. साहित्य में चार प्रकार के नायकों में से एक प्रकार का नायक जो अपने कौतुक और परिहास आदि के कारण कामकेलि में सहायक होता है। ५. कामुक या विषयी व्यक्ति। ६. भाँड़।

विदूषण—पुं० [सं० विद्√दूष् (दूषित करना)+ल्युट्–अन] [भू० कृ० विदूषित] १. किसी पर दोष लगाने की क्रिया या भाव। २. भर्त्सना करना। कोसना।

विदूषना—वि०[सं० विदूषण] १. दूसरों पर दोष लगाना। बुरा बताना। २. कष्ट या दुःख देना।

†अ०=दुखी होना।

विदूषित—भू०कृ०[सं० वि√दूष् (दूषित करना)+क्त] १. जिस पर दोष लगाया गया हो। २. दोष से युक्त। खराब। बुरा। ३. जिसकी भर्त्सना की गई हो। निन्दा किया हुआ।

विदृक् (दृश्)—वि०[सं० ब० स०] १. जिसे दिखाई न पड़े। अन्धा। २. जो देखने में किसी से भिन्न हो। 'सदृश' का विपर्याय।

विदेय—वि०[सं० तृ० त०] दिये जाने के योग्य। देय।

विदेव—पुं०[सं० ब० स०] १. राक्षस। २. यक्ष।

विदेश—पुं०[सं०] स्वदेश से भिन्न दूसरा कोई देश।

विदेशी—वि०[सं० विदेश+इनि] १. विदेश अर्थात् दूसरे देश का। २. विदेश में बनने या होनेवाला। जैसे—विदेशी कपड़ा।

पुं० विदेश अर्थात् दूसरे देश का निवासी।

विदेशीय—वि०[सं० विदेश+छ–ईय]=विदेशी।

विदेह—वि०[सं०] १. देह अर्थात् शरीर से रहित। जिसका शरीर न हो। २. अचेत। बेहोश। ३. शारीरिक चिन्ताओं आदि से रहित। ४. सांसारिक बातों से विरक्त। ५. मृत।

पुं० १. वह जिसकी उत्पत्ति माता-पिता से न हुई हो। जैसे—देवता, भूत-प्रेत आदि। २. मिथिला के राजा जनक का एक नाम। ३. मिथिला देश। ४. मिथिला देश का निवासी। मैथिल। ५. राजा निमि का एक नाम।

विदेह-कैवल्य—पुं० [सं०] जीवन्मुक्त व्यक्ति को प्राप्त होनेवाला मोक्ष।

विदेहत्व—पुं०[सं० विदेह+त्व] १. विदेह होने की अवस्था या भाव। २. मृत्यु। मौत।

विदेहपुर—पुं०[सं०] राजा जनक की राजधानी। जनकपुर।

विदेहा—स्त्री०[सं० विदेह+टाप्] मिथिला नगरी और प्रदेश का नाम।

विदेही (हिन्)—पुं०[सं०] ब्रह्मा। स्त्री० सीता।

विदोष—वि०[सं० ब० स०] दोष-रहित।

पुं० १. अपराध। २. पाप।

विद्द†—स्त्री०=विद्या।

विद्ध—भू० कृ०[सं०√व्यध् (छेदना)+क्त, य–इ] १. बीच में छेदा या बेधा हुआ। जैसे—विद्ध कर्ण। २. फेंका। हुआ। ३. घायल। ४. जिसमें बाधा पड़ी हो। ५. टेढ़ा। वक्र। ६. किसी के साथ बँधा हुआ। बद्ध। ७. किसी के साथ मिला या लगा हुआ। जैसे—दशमी विद्ध एकादशी; अर्थात् ऐसी एकादशी जिसमें पहले कुछ दशमी भी रही हो। ८. मिलता-जुलता। ९. पंडित। विद्वान्।

विद्धक—वि०[सं० विद्ध+कन्] विद्ध करनेवाला।

पुं० मिट्टी खोदने की एक प्रकार की खंती या फावड़ा।

विद्ध-व्रण—पुं०[सं० तृ० त०] १. काँटा चुभने से होनेवाला घाव। २. ऐसा व्रण जो किसी चीज के अंग में चुभने या धँसने के फल-स्वरूप हुआ हो।

विद्धा—स्त्री०[सं० विद्ध+टाप्] छोटी-छोटी फुन्सियाँ।

वि० सं० विद्ध का स्त्री०।

विद्धि—स्त्री०[सं०√व्यध् (आघात करना)+क्तिन्, य–इ] १. चुभने या धँसने की क्रिया या भाव। वेध। २. इस प्रकार होनेवाला छेद। ३. आघात। चोट। प्रहार।

विद्यमान—वि०[सं०] [भाव० विद्यमानता] १. जो अस्तित्व में हो। २. जो सामने उपस्थित या मौजूद हो।

विशेष—'उपस्थित' और 'विद्यमान' में मुख्य अंतर यह है कि 'उपस्थित' में तो किसी के सामने आने या होने का भाव प्रधान है, परंतु 'विद्यमान' में कहीं या किसी जगह वर्तमान रहने या सत्तात्मक होने का भाव मुख्य है।

विद्यमानत्व—पुं०[सं० विद्यमान+त्व]=विद्यमानता।

विद्या—स्त्री०[सं०] १. अध्ययन, शिक्षा आदि से अर्जित किया जाने-

वाला ज्ञान। इल्म। २. पुस्तकों, ग्रन्थों आदि में सुरक्षित ज्ञान। इल्म। ३ किसी तथ्य या विषय का विशिष्ट और व्यवस्थित ज्ञान। ४. किसी गंभीर और ज्ञातव्य विषय का कोई विभाग या शाखा। ५. किसी कार्य या व्यापार की वे सब बातें जिनका ज्ञान उस कार्य के सम्पादन के लिए आवश्यक हो। ६. कौशल या चातुर्य से भरा हुआ ज्ञान। जैसे--ठग-विद्या। ७. दुर्गा।

विद्याकर--पुं०[सं०] विद्वान् व्यक्ति।

विद्या-गुरु--पुं०[सं०] वह गुरु जिससे विद्या पढ़ी हो। शिक्षक। (मंत्र देनेवाले गुरु से भिन्न)

विद्या-गृह--पुं०[सं०] विद्यालय। पाठशाला।

विद्यात्व--पुं०[सं०] विद्या का भाव।

विद्या-दान--पुं०[सं०] किसी को विद्या देना या सिखाना।

विद्या देवी--स्त्री०[सं०] १. सरस्वती। २. जैनों की एक देवी।

विद्यादोही--पुं०[सं०] १. विद्यार्थी। २. विद्या-प्रेमी। उदा०--पहले दीच्छित विद्या दोही।--नूरमोहम्मद।

विद्याधन--पुं०[सं० कर्म० स०] १. विद्या रुपी धन। २. विद्या के बल से अर्जित किया हुआ धन।

विद्याधर--पुं०[सं० विद्या√धृ (धारण करना)+अच्] [स्त्री० विद्याधरी] १. एक प्रकार की देव योनि जिसके अन्तर्गत खेचर, गन्धर्व, किन्नर आदि माने जाते हैं। २. वैद्यक में एक रसौषधि। ३. कामशास्त्र में एक प्रकार का आसन या रति--बन्ध।

विद्याधरी--स्त्री०[सं० विद्याधर+ङीष्] विद्याधर नामक देवता की स्त्री।

विद्याधारी--पुं०[सं० विद्याधार+इनि, विद्याधारिन्] एक प्रकार के वर्ण वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में चार मगण होते हैं।

विद्याधि देवता--स्त्री०[सं०ष० त०] विद्या की अधिष्ठात्री देवी, सरस्वती।

विद्याधिप--पुं०[सं० ष० त०] १. गुरु। शिक्षक। २. पंडित। विद्वान्।

विद्यापति--पुं०[सं० ष० त०] १. राज-दरबार का सबसे बड़ा विद्वान्। २. मिथिला के प्रसिद्ध कवि।

विद्यापीठ--[सं० ष० त०] १. शिक्षा का बड़ा और प्रमुख केन्द्र। २. ऐसा विद्यालय जिसमें ऊँचे दरजे की शिक्षा दी जाती हो। महाविद्यालय।

विद्या मंदिर--पुं०[सं० ष० त०] विद्यालय।

विद्यामहेश्वर--पुं०[सं० ष० त०] शिव।

विद्यारंभ--पुं०[सं०] हिंदुओं में, बालक को विद्या की पढ़ाई आरम्भ कराने का संस्कार।

विद्याराज--पुं०[सं०] विष्णु की एक मूर्ति।

विद्यार्थी--पुं०[सं० विद्या√अर्थ+णिनि] १. वह बालक जो प्राचीन काल में किसी आश्रम में जाकर गुरु से विद्या सीखता था। २. आजकल, वह बालक या युवक जो किसी शिक्षा-संस्था में अध्ययन करता हो। ३. वह व्यक्ति जो सदा कुछ न कुछ और किसी न किसी विषय में जानने-सीखने को लालायित तथा प्रयत्नशील रहता है।

विद्यालय--पुं०[सं०] ऐसी शिक्षण संस्था जिसमें नियमित रूप से विभिन्न कक्षाओं के विद्यार्थियों को शिक्षा दी जाती है।

विद्यावधू--स्त्री०[सं० ष० त०] सरस्वती।

विद्यावान्--वि०[सं० विद्या+मतुप्, म--व] विद्वान्।

विद्या वृद्ध--वि०[सं० तृ० त०] विद्या या ज्ञान में औरों से बहुत आगे बढ़ा हुआ।

विद्या-व्रत--पुं०[सं० ष० त०] गुरु के यहाँ रहकर विद्या सीखने का व्रत।

विद्यु†--स्त्री०=विद्युत् (बिजली)।

विद्युच्चालक--वि०[सं० ष० त०] (पदार्थ) जिसके एक सिरे से स्पर्श होते ही विद्युत् दूसरे सिरे तक चली जाय। जैसे--धातुएँ, द्रव-पदार्थ आदि।

विद्युत्--स्त्री० [सं० वि√द्युत् (प्रकाश करना)+क्विप्] १. बिजली। २. सन्ध्या का समय। ३. पुरानी चाल की एक प्रकार की वीणा। ४. एक प्रकार की उल्का।

वि० १. बहुत अधिक चमकीला। २. चमक या दीप्ति से रहित।

विद्युता--स्त्री० [सं० विद्युत्+टाप्] विद्युत्। बिजली।

विद्युतिक--वि०=वैद्युत् (बिजली संबंधी)।

विद्युत्पात--पुं०[सं०] आकाश से बिजली गिरना। वज्रपात।

विद्युत्पादक--पुं०[सं०] प्रलय काल के सात मेघों में से एक मेघ।

विद्युत्प्रभा--स्त्री०[सं० विद्युत-प्रभ+टाप्] १. दैत्यों के राजा बलि की पोती का नाम। २. अप्सराओं का एक गण या वर्ग।

विद्युत्मापक--पुं०[सं० विद्युत्+मापक, ष० त०] एक प्रकार का यंत्र जो विद्युत् की गति या वेग अथवा उसके व्यय की मात्रा नापता है। (इलेक्ट्रोमीटर)

विद्युत्माला--स्त्री०[सं०] १. आकाश में दिखाई पड़नेवाली बिजली की रेखा। २. चार चरणों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो भगण और दो गुरु होते हैं।

विद्युत्मुख--पुं०[सं० ब०स०] एक प्रकार के उपग्रह।

विद्युत्य--वि०[सं० विद्युत्+यत्] विद्युत् या बिजली से संबंध रखनेवाला। विद्युतिक।

विद्युत्-विश्लेषण--पुं०[सं०] वह वैज्ञानिक प्रक्रिया जिससे विद्युत् के द्वारा खनिज पदार्थों में से धातुएँ निकालकर अलग की जाती हैं। (इलेक्ट्रोलिसिस)

विद्युद् गौरी--स्त्री० [सं० उपमि० स०, ब० स०] शक्ति की एक मूर्ति।

विद्युद्दर्शी--पुं० [सं०] एक प्रकार का यंत्र जिसकी सहायता से यह देखा जाता है कि किसी वस्तु में कैसी और कितनी विद्युत् की धारा का संचार है। (एलेक्ट्रोस्कोप)

विद्युद्दाम (न्)--पुं०[सं० ष० त०] बिजली की रेखा।

विद्युन्माला--स्त्री०[सं०]=विद्युत्माला।

विद्युल्लता--स्त्री०[सं० कर्म० स०] लता के रूप में आकाश में चमकने वाली बिजली।

विद्युल्लेखा--स्त्री०[सं० ब० स०] १. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो मगण होते हैं। इसे शेषराज भी कहते हैं। २. विद्युत्। बिजली।

विद्येश--पुं०[सं० ष० त०] शिव।

विद्योत--स्त्री०[सं० वि√द्युत् (प्रकाश करना)+घञ्] १. विद्युत्। बिजली। २. चमक। दीप्ति। प्रभा।

विद्रध--वि० [सं० वि√रुध् (आवरण)+कि] १. मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट। २. दृढ़। पक्का। मजबूत। ३. उद्यत। प्रस्तुत।

पुं०=विद्रधि।

विद्रधि--पुं०[सं० वि√रुध् (आवरण)+कि, पृषो० सिद्धि] पेट में होनेवाला ऐसा घाव या फोड़ा जिसमें मवाद पड़ गया हो।

विद्रधिका--स्त्री०[सं० विद्रधि+कन्+टाप्] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का छोटा फोड़ा जो पुराने प्रमेह के कारण होता है।

विद्रव--पुं०[सं० वि√द्रु (जाना)+अप्] १. द्रवित होना। गलना। २. घबराहट की स्थिति। ३. बुद्धि। समझ। ४. भागना।

विद्रवण—पुं०[सं०] विद्रव।

विद्राव--पुं०[सं० वि√द्रु+घञ्] विद्रव। (दे०)

विद्रावक--त्रि०[सं०] १. पिघलनेवाला। २. भागनेवाला।

विद्रावण--पुं०[सं०] [भू० कृ० विद्रावित] [वि० विद्राव्य] १. फाड़ना। २. नष्ट करना। ३. दे० 'विद्रव'।

विद्रावी (विन्)--वि०[सं०] १. पिघलने या पिघलानेवाला। २. भागने या भगानेवाला।

विद्रुत—वि०[सं० वि√द्रु (जाना)+क्त] १. भागा हुआ। २. गला, पिघला या बहा हुआ। ३. डरा हुआ। भयभीत।

पुं० लड़ाई का एक ढंग।

विद्रुम--पुं०[सं० कर्म० स०, वि√द्रु+म] १. प्रवाल। मूँगा। २. मुक्ता-फल नामक वृक्ष। ३. वृक्षों का नया पत्ता। कोंपल।

वि० द्रुमों अर्थात् वृक्षों से रहित (स्थान)।

विद्रुमफल--पुं०[सं०] कुंदरू नामक सुगंधित गोंद।

विद्रुम-लता--स्त्री०[सं०] १. नलिका या नली नामक गंध द्रव्य। २. मूँगा। विद्रुम।

विद्रूप--पुं०[सं० विरूप] किसी का किया जानेवाला उपहास। मजाक उड़ाना।

विद्रूपण—पुं०[हिं० विद्रूप से] किसी का उपहास करना। दिल्लगी या मजाक उड़ाना।

विद्रोह—पुं०[सं० वि√द्रुह् (वैर करना)+घञ्] १. किसी के प्रति किया जानेवाला द्रोह अर्थात् शत्रुतापूर्ण कार्य। २. विशेषतः राज्य या शासन के प्रति अविश्वास या दुर्भाव उत्पन्न होने पर उसकी आज्ञा, विधान आदि के विरुद्ध किया जानेवाला आचरण और व्यवहार। ३. देश या राज्य में क्रान्ति करने के लिए किया जानेवाला उपद्रव।

विद्रोही (हिन्)—वि०[सं०] १. विद्रोह-संबंधी। २. विद्रोह के रूप में होनेवाला।

विद्वज्जन—पुं०[सं० कर्म० स०] १. विद्वान्। २. ऋषि।

विद्वत्कल्प—वि०[सं० विद्वस्+कल्पप्] नाम-मात्र का थोड़ा पढ़ा-लिखा (आदमी)।

विद्वत्ता—स्त्री०[सं० विद्वस्+तल्+टाप्] बहुत अधिक विद्वान् होने का भाव। पांडित्य।

विद्वत्व--पुं०[सं० विद्वस्+त्वल्] =विद्वत्ता।

विद्वद्वाद—पुं०[सं०] विद्वानों में होनेवाली बहस या विवाद।

विद्वान्--वि०, पुं० [सं०] १. वह जो आत्मा का स्वरूप जानता हो। २. वह जिसने अनेक प्रकार की विद्याएँ अच्छी तरह पढ़ी हों। ३. सर्वज्ञ।

विद्विष—वि०[सं०] द्वेष या शत्रुता रखनेवाला।

पुं० दुश्मन। शत्रु।

विद्विष्ट—भू० कृ०[सं० वि√द्विष् (द्वेष करना)+क्त] [भाव० विद्विष्टता] जिसके प्रति द्वेष की भावना व्यक्त की गई हो।

विद्विष्टि—स्त्री०[सं० वि√द्विष्+क्तिन्] विद्वेष।

विद्वेष--पुं०[सं० वि√द्विष्+घञ्] १. विशेष रूप से किया जानेवाला द्वेष। २. मनोमालिन्य के कारण मन में रहनेवाला वह द्वेष या वैर जिसके फलस्वरूप किसी को नीचा दिखाने या हानि पहुँचाने का प्रयत्न किया जाता है। (स्पाइट) ३. दुश्मनी। शत्रुता।

विद्वेषक--वि०[सं० वि√द्विष्+ण्वुल्-अक]=विद्वेषी।

विद्वेषण--पुं० [सं० वि√द्विष् (द्वेष करना)+णिच्+ ल्युट्-अन] १. विद्वेष करने की क्रिया या भाव। २. दो व्यक्तियों में विद्वेष उत्पन्न करना।

वि० विद्वेषी।

विद्वेषिता—स्त्री०[सं० विद्वेषि+तल्+टाप्]=विद्वेष।

विद्वेषी (षिन्)--वि०[सं० वि√द्विष्+णिनि] मन में किसी के प्रति विद्वेष रखनेवाला। विद्वेष करनेवाला।

पुं० दुश्मन। शत्रु।

विद्वेष्य—वि०[सं० विद्वेष+यत्] जिसके प्रति मन में विद्वेष रखा जाय या रखना उचित हो।

विधंस†—पुं०=विध्वंस।

वि०=विध्वस्त।

विधंसना—स०[सं० विध्वंसन] नष्ट करना। बरबाद करना।

विध—पुं०[सं० विधि] ब्रह्मा।

†स्त्री०=विधि।

विधत्री--स्त्री०[सं० विधा+ष्ट्रन्+ङीष्] ब्रह्मा की शक्ति, महासरस्वती।

विधन—वि०[सं० ब० स०] धन-हीन।

विधना--स०[सं० विधि] १. प्राप्त करना। २. अपने साथ लगना। ऊपर लेना।

विधमन—पुं०[सं० वि√ध्मा (चौंकना)+ल्यु-अन, वि√ध्मा (धौंकना)+शतृ वा] धौंकनी से हवा करना। धौंकना।

विधर†—अव्य०=उधर (उस तरफ)।

विधरण—पु०[सं०] [भू० कृ० विधृत] १. पकड़ना। २. आज्ञा न मानना।

विधर्ता (तृ)—पुं०[सं० वि√धृ (धारण करना)+तृच्] विधरण करनेवाला।

विधर्म--वि०[सं०] १. धर्मशास्त्र की आज्ञा, विधि आदि से बाहर का। अधार्मिक। धर्महीन। २. जिससे किसी की धार्मिक भावना को आघात लगता हो। ३. अन्यायपूर्ण। ४. अवैध।

पुं० १. किसी की दृष्टि से उसके धर्म से भिन्न धर्म। २. ऐसा कार्य जो किया तो गया हो अच्छी भावना से, परन्तु जो वस्तुतः धर्मशास्त्र के नियम के विरुद्ध हो।

विधर्मक—वि०[सं०] १. विधर्म-संबंधी। विधर्म का। २. विधर्म के रूप में होनेवाला।

३. दे० 'विधर्मी'।

विधार्मिक—वि०[सं०]=विधर्मक।

विधर्मी (र्मिन्)—पुं०[सं० विधर्म+इनि] १. वह जो अपने धर्म के

विपरीत आचरण करता हो। धर्म-भ्रष्ट। २. जो किसी दूसरे धर्म का अनुयायी हो। ३. जिसने अपना धर्म छोड़कर कोई दूसरा धर्म अंगीकृत कर लिया हो।

विधवा--स्त्री०[सं०] १. वह स्त्री जिसका धव अर्थात् पति मर गया हो। पतिहीन। राँड़। २. विशेषतः वह स्त्री जिसने पति के देहांत के उपरांत फिर और विवाह न किया हो।

विधवापन—पुं०[सं० विधवा+हिं० पन (प्रत्य०)] वह अवस्था जिसमें विधवा बिना विवाह किये ही अपना जीवन यापन करती है। रँड़ापा। वैधव्य।

विधवाश्रम--पुं०[सं० ष० त०, विधवा+आश्रम] वह स्थान जहाँ अनाथ विधवाओं को रखकर उनका पालन-पोषण किया जाता हो।

विधाँसना†--स०[सं० विध्वंसन] १. विध्वस्त या नष्ट करना। बरबाद करना। २. अस्त-व्यस्त या गड़बड़ करना।

विधा---स्त्री०[सं०] १. ढंग। तरीका। रीति। २. प्रकार। भाँति। ३. हाथी, घोड़े आदि का चारा। ४. वेधन। ५. भाड़ा। किराया। ६. मजदूरी। ७. कार्य। क्रिया। ८. उच्चारण।

विधातव्य--वि०[सं० वि√धा (धारण करना)+तव्यत्] १. जिसके संबंध में विधान हो सकता हो या होने के लिए हो। २. (काम) जो किया जा सकता हो या आवश्यक रूप से किया जाने को हो। कर्तव्य।

विधाता(तृ)—वि० [सं० वि√धा+तृच्] [स्त्री० विधातृका, विधात्री] १. विधान करनेवाला। २. रचनेवाला। बनानेवाला। ३. प्रबंध या व्यवस्था करनेवाला।

पुं० १. सृष्टि की रचना करनेवाली शक्ति। २. ब्रह्मा। ३. विष्णु। ४. शिव। ५. कामदेव। ६. विश्वकर्मा।

स्त्री० मदिरा। शराब।

विधातु—स्त्री० दे० 'असार' (धातुओं का)।

विधात्री--वि० स्त्री० [सं० विधातृ+ङीप्] १. विधान करनेवाली। २. रचनेवाली। बनानेवाली। ३. प्रबंध या व्यवस्था करनेवाली।

स्त्री० पिप्पली। पीपल।

विधान--पुं०[सं० वि√धा+ल्युट्-अन] [वि० वैधानिक] १. किसी कार्य के संबंध में किया जानेवाला आयोजन और उसका प्रबंध या व्यवस्था। २. कोई चीज तैयार करने के लिए बनाना। निर्माण। रचना। सर्जन। ३. किसी चीज या बात का किया जानेवाला उपयोग, प्रयोजन या व्यवहार। जैसे—धातु में प्रत्यय का विधान करना। ४. यह कहना या बतलाना कि अमुक काम या बात इस प्रकार होनी चाहिए। ढंग, प्रणाली या रीति बतलाना। ५. बतलाया हुआ ढंग, प्रणाली या रीति। विशेषतः धार्मिक रीति। ६. कायदा। नियम। ७. कही या बतलायी हुई ऐसी बात जो आदेश के रूप में हो और जिसका अनुसरण या पालन आवश्यक और कर्तव्य के रूप में हो। जैसे—धर्मशास्त्र का विधान। ८. आज-कल राज्य या शासन के द्वारा जारी किया हुआ कोई कानून जिसमें किसी विषय की विधि और निषेध से संबंध रखनेवाली सभी बातें धाराओं के रूप में लिखी रहती हैं। कानून। (लॉ) ९. नाटक में, विभिन्न भावनाओं, विचारों आदि में होनेवाला द्वंद्व और संघर्ष। १०. अनुमति। आज्ञा। ११. अर्चन। पूजा। १२. धन-संपत्ति। १३. किसी को हानि पहुँचाने के लिए किया जानेवाला दाँव-पेंच या शत्रुता का व्यवहार। शत्रुतापूर्ण आचरण। १४. शब्दों में उपसर्ग, प्रत्यय आदि लगाने की क्रिया या रीति। १५. हाथी को मस्त करने के लिए खिलाया जानेवाला चारा।

विधानक--पुं०[सं० विधान+कन्] १. विधान। २. वह जो विधान का ज्ञाता हो।

वि० विधान करनेवाला।

विधान-परिषद्—स्त्री० [सं०] राज्य की विधान सभा से भिन्न दूसरी बड़ी विधि-निर्मात्री सभा जिसका चुनाव परोक्ष रीति से होता है। (लेजिसलेटिव कौंसिल)

विधान-मंडल—पुं० [सं०] राज्य के संबंध में विधान बनानेवाले दोनों अंगों का सामूहिक नाम और रूप। (लेजिस्लेचर)

विशेष—इसके दो अंग या सदन होते हैं—विधान परिषद् और विधानसभा।

विधान-सप्तमी—स्त्री०[सं०] माघ शुक्ल सप्तमी।

विधान-सभा—स्त्री०[सं०] किसी देश या राज्य की वह सभा या संस्था, विशेषतः निर्वाचित प्रतिनिधियों की सभा या संस्था जिसे कानून या विधान बनाने का अधिकार होता है। (लेजिसलेटिव एसेंबली)

विधानांग—पुं०[सं०]=विधान-मंडल।

विधानी—वि० [सं० विधान+इनि, अथवा विधान+हिं० ई(प्रत्य०)] १. विधान जाननेवाला। २. विधान या विधिपूर्वक काम करनेवाला।

विधायक—वि०[सं० वि√धा+ण्वुल्-अक, युक्] [स्त्री० विधायिका] १. विधान करनेवाला। जैसे—एकता का विधायक। २. कार्य का सम्पादन करनेवाला। ३. निर्माण या रचना करनेवाला। ४. निर्माण के रूप में होनेवाला। रचनात्मक। ५. प्रबंध या व्यवस्था करनेवाला।

पु० विधान सभा (या परिषद्) का सदस्य।

विधायन—पुं०[सं०] १. विधान करने या बनाने की क्रिया या भाव। २. आज-कल विशेष रूप से शासन अथवा विधान मंडल द्वारा कोई विधान (कानून) बनाने की क्रिया या भाव। (एनैक्टमेन्ट) ३. उक्त प्रकार से बने हुए अधिनियम, विधियाँ आदि।

विधायन-संग्रह—पुं०[सं०] किसी विषय, विभाग आदि के कार्य-संचालन से संबद्ध नियमों, निर्देशों आदि का संग्रह। संहिता। (कोड) जैसे—बंगाल विधायन संग्रह।

विधायिका—वि० स्त्री०[सं०] विधान-निर्मात्री संस्था। जैसे--विधान परिषद्, विधान सभा, लोक सभा, राज्य सभा आदि।

विधायी (यिन्)—वि०[सं०वि√धा (धारण करना)+णिनि, युक्] [स्त्री० विधायिनी] विधान करने या बनानेवाला। विधायक। (दे०)

पुं० १ निर्माण करनेवाला। २. संस्थापक।

विधारण—पुं०[सं० वि√धृ (धारण करना)+णिच्+ल्युट्-अन] १. रोकना। २. वहन करना।

विधि—स्त्री०[सं०] १. कोई काम करने का ठीक ढंग या रीति, क्रिया, व्यवस्था आदि की प्रणाली।

मुहा०—(किसी काम या बात की) विधि बैठना=लगाई हुई युक्ति का ठीक या सफल सिद्ध होना। जैसे—यदि तुम्हारी विधि बैठ गई तो काम होने में देर न लगेगी।

२. आपस में होनेवाली अनुकूलता या संगति।

मुहा०—(आपस में) विधि बैठना=अनुकूलता, मेल-मिलाप या संगति होना। जैसे--अब तो उन लोगों में विधि बैठ गई है। **विधि मिलना**=अनुरूपता होना। जैसे--जन्म-कुंडली की विधि मिलना।

३. ऐसी आज्ञा या आदेश जिसका पालन अनिवार्य या आवश्यक हो। ४. धर्म-ग्रन्थों, शास्त्रों आदि में बतलाई हुई ऐसी व्यवस्था जिसे साधारणतः सब लोग मानते हों।

पद—विधि-निषेध=ऐसी बातें जिनमें यह कहा गया हो कि अमुक-अमुक काम या बातें करनी चाहिए और अमुक-अमुक काम या बातें नहीं करनी चाहिए।

५. आचार-व्यवहार।

पद—गति-विधि=आगे बढ़ने, पीछे हटने आदि के रूप में होनेवाली चाल-ढाल या रंग-ढंग। जैसे--पहले कुछ उसके रोजगार की गति-विधि तो देख लो, तब उनके साथ साझेदारी करना।

६. तरह। प्रकार। भाँति। उदा०--एहि विधि राम सबहिं समुझावा।—तुलसी। ७. व्याकरण में वह स्थिति जिसमें किसी से काम करने के लिए कहा जाता है। जैसे--(क) तुम वहाँ जाओ। (ख) यह चीज यहीं रहनी चाहिए। ८. साहित्य में, एक अर्थालंकार जिसमें किसी सिद्ध विषय का फिर से विधान किया जाता है। जैसे--वर्षा-काल के ही मेघ, मेघ हैं। ९. आज-कल राज्य या शासन के द्वारा चलाये या बनाये हुए वे सब नियम, विधान आदि जिनका उद्देश्य सार्वजनिक हितों की रक्षा करना होता है और जिनका पालन सबके लिए अनिवार्य तथा आवश्यक होता है। कानून। (लॉ)

पुं० सृष्टि की रचना करनेवाला, ब्रह्मा।

विधिक—वि० [सं०] [भाव० विधिकता] १. विधि-संबंधी। २. विधि के रूप में होनेवाला। ३. (कार्य) जिसे करने में कोई कानूनी अड़चन न हो। ४. जो विधि के विचार से न्याय-संगत हो। (लीगल)

विधिकता—स्त्री०[सं०] १. विधिक होने की अवस्था या भाव। २. कानून के विचार से होनेवाली अनुरूपता।

विधिक प्रतिनिधि—पुं०[सं०] वह प्रतिनिधि जिसे किसी की ओर से न्यायालय में कानूनी कार्रवाई करने का अधिकार प्राप्त हो। (लीगल रिप्रेजेंटेटिव)

विधिकर्ता—पुं०[सं०] वह जो विधि या कानून बनाता हो। (लॉ-मेकर)

विधिक व्यवहार—पुं०[सं०] वह कार्य या प्रक्रिया जो किसी व्यवहार या मुकदमे में विधि या कानून के अनुसार होती है। (लीगल प्रोसीडिंग)

विधिक साध्य—स्त्री०[सं०] विधिक-निर्णय। (दे०)

विधिज्ञ—पुं०[सं०] १. वह जो विधि-विधान आदि का अच्छा ज्ञाता हो। २. कानून का ज्ञाता ऐसा व्यक्ति जो दूसरों के व्यवहारों के संबंध में न्यायालय में प्रतिनिधि के रूप में काम करता हो। (लायर)। ३. वह जो काम करने का ठीक ढंग जानता हो।

विधितः—अव्य०[सं०] १. विधि या रीति के अनुसार। २. कानून के अनुसार। (बाई लॉ) ३. कानून की दृष्टि में या विचार से। (डी जूरी, लॉफुली)

विधि दर्शक—पुं०[सं०] विधिदर्शी। (दे०)

विधिदर्शी—पुं०[सं०] यज्ञ में वह व्यक्ति जो यह देखने के लिए नियुक्त होता था कि होता, आचार्य आदि विधि के अनुसार कर्म कर रहे हैं या नहीं।

विधिना†—पुं०=विधना (ब्रह्मा)।

विधि-निषेध—पुं० [सं० ष० त०] साहित्य में आक्षेप अलंकार का एक भेद जिसमें कोई काम करने की विधि या अनुमति देने पर भी प्रकारांतर से उसका निषेध किया जाता है। जैसे--आप जाते हैं तो जाइए; अगले जन्म में मैं आपके दर्शन करूँगी। (अर्थात् आप के दर्शन की लालसा में प्राण दे दूँगी।)

विधि-पत्नी—स्त्री०[सं०] सरस्वती।

विधिपाट—पुं०[सं०] मृदंग के चार वर्णों में से एक वर्ण। शेष तीन वर्ण ये हैं—पाट, कूटपाट और खंडपाट।

विधिपुत्र—पुं०[सं० विधि+पुत्र] ब्रह्मा के पुत्र, नारद।

विधिपुर—पुं०[सं० विधि+पुर] ब्रह्मलोक।

विधि-भंग—पुं०[सं०] १. विधि अर्थात् कानून का उल्लंघन करने की क्रिया या भाव। नियम तोड़ना। (ब्रीच आफ़ लॉ)

विधि-भेद—पुं०[सं०] साहित्य में, उपमा अलंकार का एक दोष जो उस समय माना जाता है, जब उपमेय और उपमान के गुण, धर्म आदि का मेल ठीक से नहीं बैठता।

विधिरानी—स्त्री०[सं० विधि+हिं० रानी] ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती।

विधिलोक—पुं०[सं०] ब्रह्मलोक।

विधिवत्—अव्य०[सं०] १. विधिपूर्वक। विधितः। २. जिस प्रकार होना चाहिए उसी प्रकार।

विधि-वधू—स्त्री०[सं०] ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती।

विधि-वादपद—पुं०[सं०] विधिक क्षेत्रों में वह वादपद जिसका संबंध व्यवहार या मुकदमे के केवल विधिक या कानूनी पक्ष से हो। तथ्य-वादपद से भिन्न। (इश्यू आफ़ लॉ)

विधि-वाहन—पुं०[सं०] ब्रह्मा की सवारी, हंस।

विधिविहित—वि० [सं० तृ० त०] शास्त्रीय विधियों आदि में कहा या बतलाया हुआ। विधि में जैसा विधान हो, वैसा।

विधिषेध—पुं०[सं० ष० त०] विधि और निषेध।

विधुंत—पुं०[सं० विधुंतुद] राहु।

विधुंतुद्—पुं०[सं० विधि√तुद्(दुःख देना)+खच्, मुम्] चंद्रमा को दुःख देनेवाला। राहु।

विधु—पुं०[सं०] १. चंद्रमा। २. ब्रह्मा। ३. विष्णु। ४. वायु। हवा। ५. कपूर। ६. अस्त्र। आयुध। ७. जल से किया जानेवाला स्नान। ८. पाँवों आदि का प्रक्षालन।

विधुक्रांत—पुं०[सं०] संगीत में, एक प्रकार का ताल।

विधुदार—स्त्री०[सं० ष० त०] चन्द्रमा की स्त्री। रोहिणी।

विधुप्रिया—स्त्री० [सं० ष० त०] १. चंद्रमा की स्त्री। रोहिणी। २. कुमुदिनी। कोईं। (दे०)

विधु-बंधु—पुं०[सं० ष० त०] कुमुद (फूल)।

विधु-बैनी—स्त्री० [सं० विधु+वदन, प्रा० वयन] चंद्रमुखी। सुंदरी स्त्री।

विधुमणि—पुं०[सं० ष० त०] चंद्रकांत मणि।

विधुमुखी—वि०[सं०] चन्द्रमा के समान सुंदर मुखवाली (स्त्री)।

विधुर—वि०[सं०] [स्त्री० विधुरा] १. दुःखी। २. घबराया या डरा

हुआ। ३. बेचैन। विकल। ४. अशक्त। असमर्थ। ५. छोड़ा या त्यागा हुआ। परित्यक्त। ६. मूढ़। ७. जिसकी स्त्री मर चुकी हो। रँड़ुआ। ८. किसी बातु से रहित या हीन। (यौ० के अन्त में) जैसे—अनुनय-विधुर=जो अनुनय-विनय करना न जानता हो या न करता हो।
पुं० १. कष्ट। दुःख। २. जुदाई। वियोग। ३. अलगाव। पार्थक्य। ४. कैवल्य। ५. दुश्मन। शत्रु।

विधुरा—स्त्री०[सं०] १. कानों के पीछे की एक स्नायु ग्रन्थि, जिसके पीड़ित या खराब होने से आदमी बहरा हो जाता है। २. मट्ठा। लस्सी।

विधुबदनी—स्त्री०[सं० ब० स०] चन्द्रमुखी।

विधूत—भू० कृ०[सं०] [भाव०विधूति] १. काँपता हुआ। २. हिलता हुआ। ३. छोड़ा या त्यागा हुआ। ४. अलग या दूर किया हुआ। ५. निकाला या बाहर किया हुआ।

विधूति—स्त्री०[सं०] कंपन।

विधूनन—पुं०[सं० वि√धू (कंपन)+णिच्+ल्युट्–अन] [भू० कृ० विधूनित] कंपन। काँपना।

विधृत—भू० कृ०[सं० वि√धृ (धारण करना)+क्त] १. ग्रहण या धारण किया हुआ। २. अलग किया हुआ। ३. रोका हुआ। ४. अपने अधिकार में लाया हुआ। ५. सँभाला हुआ।
पुं० १. आज्ञा की अवज्ञा। २. असंतोष।

विधृति—स्त्री०[सं० वि√धृ+क्तिन्] १. अलगाव। पार्थक्य। २. विभाजन। ३. व्यवस्था। ४. नियम। ५. विभाजक रेखा।

विधेय—वि०[सं०] १. देने योग्य। २. प्राप्त करने योग्य। ३. जिसके प्रति विधि का आदेश दिया जाय। ४. जिसे कुछ करने का आदेश दिया जाय। ५. जिसके संबंध में विधान किया जाने को हो। ६. प्रदर्शित किये जाने के योग्य। ७. प्रज्वलित किये जाने के योग्य।
पुं० १. वह काम जो अवश्य किये जाने के योग्य हो। २. व्याकरण में, वह पद या वाक्यांश जिसके द्वारा किसी के संबंध में कुछ विधान किया अर्थात् कहा या बतलाया जाता है। हिन्दी में इसका अन्वय या तो (क) कर्ता से होता है या (ख) प्रधान कर्म से। जैसे—(क) राम जाता है। और (ख) राम रोटी खाता है।, में 'जाता है' और 'खाता है', विधेय है, क्योंकि 'जाता है' से राम (कर्ता) के संबंध में और 'खाता है' से रोटी (कर्म) के संबंध में कुछ कहा या बतलाया गया है। ३. साहित्य में प्रिय के मान-मोचन के दो उपचारों में से एक, जिसमें उपेक्षा, धृष्टता, भय, हर्ष आदि दिखलाकर उसे प्रकारान्तर से अनुकूल करने का प्रयत्न किया जाता है।

विधेयक—पुं० [सं० विधेय+कन्] आज-कल किसी कानून या विधान का वह प्रस्तावित रूप या मसौदा जो विधान बनानेवाली परिषद् या सभा के सामने विचारार्थ उपस्थित किया जाने को हो। (बिल)

विधेयता—स्त्री०[सं० विधेय+तल्+टाप्] १. विधेय होने की अवस्था, गुण या भाव। २. अधीनता।

विधेयत्व—पुं०[सं० विधेय+त्व] विधेयता।

विधेयात्मा (त्मन्)—पुं०[सं० ब० स०] विष्णु।

विधेयाविमर्ष—पुं० [सं० ब० स०] साहित्य में एक प्रकार का वाक्य-दोष जो विधेय अंश के प्रधान स्थान प्राप्त होने पर होता है। मुख्य बात का वाक्य-रचना के बीच दबा रहना।

विध्य—वि०[सं०√विध्(छेदना)+यत्] जो बींधा जाने को हो या बेधा जा सकता हो।

विध्यात्मक—वि०[सं०] १. विधि से संबंध रखता हुआ और उससे युक्त। २. जो विधि के पक्ष का हो। सकारात्मक। सहिक। 'निषेधात्मक' का विपर्याय। (पाज़िटिव)

विध्वंस—पुं०[सं० वि√ध्वंस् (नाश करना)+घञ्] १. विनाश। नाश। बरबादी। २. घृणा। ३. वैर। शत्रुता। ४. अनादर। अपमान।

विध्वंसक—वि०[सं० वि√ध्वंस् (नाश करना)+ण्वुल्–अक] विध्वंस या नाश करनेवाला।
पुं० एक प्रकार के विनाशक पोत। (डेस्ट्रायर)

विध्वस्त—भू० कृ०[सं० वि√ध्वंस्+क्त] नष्ट किया हुआ। बरबाद किया हुआ।

विन†—सर्व०[हिं० वा=उस] हिं० 'उस' के बहु० 'उन' का स्थानिक रूप। अव्य० बिना (बगैर)।

विनत—वि०[सं०] [स्त्री० विनता] १. नीचे की ओर प्रवृत्त। झुका हुआ। २. जिसने किसी के सामने मस्तक या सिर झुका रखा हो। ३. विनीत। नम्र। ४. टेढ़ा। वक्र। ५. सिकुड़ा हुआ। संकुचित। ६. कुबड़ा। कुब्ज।
पुं० महादेव। शिव।

विनतड़ी†—स्त्री०=विनति।

विनता—स्त्री०[सं० विनत+टाप्] १. दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो कश्यप को ब्याही थी और जिसके गर्भ से गरुड़ का जन्म हुआ था। २. एक राक्षसी जिसे रावण ने सीता के पास उसे समझाने-बुझाने के लिए रखा था। ३. व्याधि उत्पन्न करनेवाली एक कल्पित राक्षसी। ४. प्रमेह या बहुमूत्र के रोगियों को होनेवाला एक प्रकार का फोड़ा।

विनति—स्त्री०[सं० वि√नम् (नम्र होना)+क्तिन्] १. विनीत होने की अवस्था, गुण या भाव। २. झुकाव। ३. विनीत भाव से की जानेवाली प्रार्थना। अनुनय-विनय। ४. व्यवहार, स्वभाव आदि की नम्रता। ५. दमन। ६. निवारण। रोक। ७. विनियोग।

विनती—स्त्री०[सं० विनत+ङीष्]=विनति।

विनद्ध—भू० कृ०[सं० वि√नह् (बाँधना)+क्त] १. किसी के साथ जोड़ा या बाँधा हुआ। २. बन्धन से युक्त किया हुआ।

विनमन—पुं० [सं० वि√नम् (नम्र होना)+ल्युट्–अन] [भू० कृ० विनमित] १. झुकना। २. नम्रतापूर्वक झुकना।

विनम्र—वि० [सं०] [भाव० विनम्रता] १. विशेष रूप से नम्र। २. विनीत और सुशील। ३. झुका हुआ।
पुं० तगर का फूल।

विनम्रता—स्त्री०[सं०] विनम्र होने की अवस्था या भाव।

विनय—स्त्री०[सं०] १. यह कहना या बतलाना कि अमुक काम या बात इस प्रकार होनी चाहिए। कुछ करने का ढंग बतलाना या सिखाना। शिक्षा। २. कोई काम या बात करने का अच्छा, ठीक और सुंदर ढंग। ३. आचार, व्यवहार आदि में रहनेवाली नम्रता और सौजन्य जो अच्छी शिक्षा से प्राप्त होता है। (मॉडेस्टी)। ४. कर्तव्यों आदि का ऐसा निर्वाह और पालन जिसमें कुछ भी त्रुटि या दोष न हो। ५. आदेशों, नियमों आदि का ठीक ढंग से और भले आदमियों की तरह

किया जानेवाला पालन। (डिसिप्लिन) ६. नम्रतापूर्वक की जानेवाली प्रार्थना या विनती। ७. नीति। ८. इंद्रिय-निग्रह। जितेंद्रिय व्यक्ति। १०. किसी को नियंत्रण या शासन में रखने के लिए कही जानेवाली ऐसी बात जिसके साथ अवज्ञा के लिए दंड का भी भय दिखाया जाय या विधान किया गया हो। (स्मृति) ११. वणिक्। व्यापारी।

विनयकर्म(न्)--पुं० [सं० ष० त०] पढ़ाने, सिखाने आदि का कार्य। शिक्षण। शिक्षा।

विनय-ग्राही(हिन्)—वि०[सं०] अनुशासन में रहकर मर्यादा का पालन करनेवाला।

विनयधर—पुं०[सं०] पुरोहित।

विनय पिटक—पुं०[सं०ष०त०] बौद्धों का एक धर्म-ग्रन्थ जिसमें विनय अर्थात् सदाचार संबंधी नियम संगृहीत हैं।

विनयवान्--वि०[सं० विनय+मतुप्, विनयवत्] [स्त्री० विनयवती] जिसमें विनय अर्थात् नम्रता हो। शिष्ट।

विनयशील—वि०[सं०] जो स्वभावतः विनम्र हो। प्रकृति से विनम्र।

विनयाध्यक्ष—पुं०=संकायाध्यक्ष।

विनयावनत—भू० कृ०[सं० तृ० त०] विनय के कारण झुका हुआ। विनम्र।

विनयी(यिन्)--वि०[सं० विनय+इनि, दीर्घ, न-लोप] विनययुक्त।

विनवना†--स०[सं० विनय] विनय करना। नम्रतापूर्वक कुछ कहना।
अ० १. नम्र होना। २. झुकना।

विनशन--पुं०[सं० वि√नश् (नाश करना)+ल्युट्—अन] विनाश करने की क्रिया या भाव।
वि० विनश्वर।

विनश्वर—वि०[सं० वि√नश् (नष्ट करना)+वरच्] [भाव० विनश्वरता] जिसका विनाश होने को हो।

विनष्ट—भू० कृ० [सं०] [भाव० विनष्टि] १. जो अच्छी तरह नष्ट हो चुका हो या नष्ट किया जा चुका हो। बरबाद। २. मरा हुआ। मृत। ३. बिगड़ा हुआ। विकृत। ४. भ्रष्ट आचरणवाला। पतित।

विनष्टि—स्त्री०[सं० वि√नश् (नष्ट करना)+क्तिन्] १. वह अवस्था जो विनाश की सूचक हो। २. विनाश। ३. पतन। ४. लोप।

विनष्टोपजीवी(विन्)—वि०[सं० विनष्टोप√जीव् (जीवित करना)+णिनि] मुर्दा खाकर जीनेवाला।

विनस—वि०[सं० ब० स०, नासिका—नसादेश] [स्त्री० विनसा, विनसी] १. बिना नाक का। नककटा। २. बेशर्म।

विनसना—अ०[सं० विनशन] नष्ट होना। लुप्त होना।
†स०=विनसाना।

विनसाना—स०[हिं० विनसना का स० रूप] १. नष्ट करना। २. बिगाड़ना।
†अ०=विनसना।

विना—अव्य० [सं० वि+ना] १. न होने पर। अभाव में। बिना। जैसे—आप के विना काम न चलेगा। २. अलग रहकर अथवा उपयोग न करते हुए। जैसे—विना जूते के चलने में कष्ट होता है। ३. अतिरिक्त। सिवा। (क्व०) जैसे—तुम्हारे विना उसका है ही कौन।

विनाड़ी--स्त्री० [सं०] एक घड़ी का साठवाँ भाग। पल। प्रायः २४ सेकेंड का समय।

विनाथ--वि०[सं० ब० स०] जिसका नाथ न हो। अनाथ।

विनाम--पुं०[सं० वि√नम्(नम्र होना)+घञ्] १. टेढ़ापन। वक्रता। २. वैद्यक में, पीड़ा आदि के कारण शरीर के किसी अंग का झुक जाना। ३. किसी पदार्थ का वह गुण जिसके कारण वह झुकाया या मोड़ा जा सकता है।

विनायक--पुं०[सं० कर्म० स०] १. गणों के नायक गणेश। २. गरुड़। ३. गुरु। ४. गौतम बुद्ध। ५. बाधा। विघ्न।

विशेष--पुराणों में विनायक के कई रूप कहे गये हैं। यथा कोण विनायक, दवढ़िविनायक, सिंदूर विनायक, हस्ति विनायक आदि।

विनायक चतुर्थी--स्त्री०[सं० मध्यम० स०] माघ सुदी चौथ। गणेश-चतुर्थी।

विनायिका--स्त्री०[सं०] १. विनायक अर्थात् गणेश की पत्नी। २. गरुड़ की पत्नी।

विनाल--वि०[सं० ब० स०] जिसमें नाल अर्थात् डंठल न हो।

विनाश--पुं०[सं० वि√नश्+घञ्] १. ऐसी स्थिति जो अत्यधिक धन-जन की हानि की परिचायिका हो। नाश। ध्वंस। जैसे--भूकम्प के कारण शहरों, बाढ़ के कारण गाँवों, अतिवृष्टि या अनावृष्टि के कारण खेती का होनेवाला विनाश। २. अदर्शन। लोप। ३. खराबी। विकार। ४. दुर्दशा। ५. नुकसान। हानि।

विनाशन—पुं०[सं०] १. नाश करना। २. मार डालना। ३. बिगाड़ना। ४. काल का पुत्र एक असुर।

विनाशित—भू० कृ०[सं० वि√नश्+णिच्+क्त]=विनष्ट।

विनाशी(शिन्)—वि०[सं० वि√नश्+णिनि] [स्त्री० विनाशिनी] १. विनाश या ध्वंस करनेवाला। (डेस्ट्रॉयर) २. मार डालनेवाला। ३. खराब करने या बिगाड़नेवाला।

विनाश्य--वि०[सं० वि√नश् (नष्ट करना)+ण्यत्] जिसका विनाश हो सकता या होने को हो।

विनास†—पुं०=विनाश।

विनासक—वि०[सं० ब० स०,+कन्, ह्रस्व] बिना नाक का। नकटा।
†वि०=विनाशक।

विनासन†--पुं०=विनाशन।

विनासना†—स०[सं० विनाशन] विनाश करना।
†अ० विनष्ट होना।

विनिंदा—स्त्री०[सं० विनिन्द+टाप्] बहुत अधिक निंदा।

विनिगमक—वि०[सं० वि+नि√गम्+ण्वुल्—अक] निश्चयपूर्वक एक पक्ष को स्वीकृत करने और दूसरे को त्यागनेवाला।

विनिगमना—स्त्री०[सं०] १. विचारपूर्ण निर्णय। २. वह स्थिति जिसमें एक पक्ष का ग्रहण और दूसरे पक्ष का त्याग होता है। ३. नतीजा। परिणाम।

विनिग्रह—पुं० [सं० वि+नि√ग्रह् (ग्रहण करना)+क] १. निग्रह। संयम। २. बाधा। रुकावट। ३. अवरोध।

विनिद्र—वि०[सं० ब० स०] १. जिसे नींद न आई हो। जागता हुआ। २. जिसे नींद न आती हो। ३. खिला हुआ। उन्मीलित।

विनिधान--पुं०[सं०]. [भू० कृ० विनिधित] १. किसी विशिष्ट उद्देश्य अथवा कार्य के लिए अथवा योजना के अनुसार किसी को अलग कर कहीं रखना। (एलोकेशन) जैसे--छात्रवृत्ति के लिए किसी निधि के कुछ अंश का होनेवाला विनिधान।। २. कार्य-प्रणाली आदि के संबंध में दी जानेवाली सूचना। हिदायत।

विनिपात--पुं०[सं०] १. विशेष रूप से या अच्छी तरह से किया हुआ निपात। २. विनाश। ३. वध। ४. अपमान। ५ गर्भपात। ६. बहुत बड़ा कष्ट या संकट उपस्थित करनेवाली घटना या स्थिति। आपद्। (कैलेमिटी)

विनिपातक--वि०[सं० वि+नि√पत् (पतन होना)+णिच्+ण्वुल्–अक] विनिपात अर्थात् विनष्ट करनेवाला।

विनिपाती (तिन्)--वि०[सं०]=विनिपातक।

विनिमय---पुं०[सं०] १. एक वस्तु लेकर उसके बदले में दूसरी वस्तु देना। परिवर्तन। (बार्टर) २. वह प्रक्रिया जिसके अनुसार भिन्न-भिन्न पक्षों या देशों का लेन-देन विनिमय-पत्रों के अनुसार होता है। ३. वह प्रक्रिया जिसके अनुसार भिन्न भिन्न देशों के सिक्कों के आपेक्षिक मूल्य स्थिर होते हैं और जिसके अनुसार आपसी लेन-देन चुकाये जाते हैं। ४. किसी क्षेत्र में किसी से कुछ पाकर उसके बदले में वैसा ही कुछ देना। (एक्स-चेंज, अंतिम तीनों अर्थों के लिए) जैसे--विचार-विनिमय।

पद--**विनिमय की दर**=वह निश्चित की हुई दर जिस पर देशों के सिक्के परस्पर बदले जाते हैं।

५. गिरवी या बंधक रखना। ६. साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें कुछ कम देकर बहुत कुछ लेने का वर्णन रहता है।

विनियंत्रण--पुं०[सं० ब० स०] [भू० कृ० विनियंत्रित] १ नियंत्रण उठा लेना। २. व्यापारिक क्षेत्र में, शासन द्वारा किसी चीज की बिक्री, मूल्य आदि पर लगाये हुए नियंत्रण का हटाया जाना। (डि-कन्ट्रोल)

विनियम--पुं०[सं० वि + नि√यम् (रोकना)+घञ्]१. रोक। २. संयम। ३. नियंत्रण। ४. शासन। ५. आज-कल कोई ऐसा विशिष्ट नियम जो किसी नये निश्चय या आदेश के अनुसार बनाया गया हो। (रेगुलेशन)

विनियोग--पुं०[सं० वि+नि√युज् (संयुक्त करना)[+घञ्] १. फल-प्राप्ति के उद्देश्य से किसी वस्तु का होनेवाला उपयोग। २. वैदिक कृत्य में मन्त्रों का होनेवाला प्रयोग। ३. प्रवेश। पैठ। ४. प्रेषण। भेजना। ५. व्यापार में पूँजी लगाना। ६. किसी विशिष्ट उद्देश्य, प्रयोजन आदि के निमित्त संपत्ति आदि किसी दूसरे को देना। (एप्रोप्रिएशन) ७. संपत्ति आदि बेचकर निकालना ।(डिस्पोज़ल)

विनियोजक--पुं०[सं०] विनियोजन या विनियोग करनेवाला।

विनियोजन--पुं०[सं०] [वि० विनियोज्य, भू० कृ० विनियुक्त, विनियोजित] १. विनियोग करना। २. विशेष रूप से नियुक्त करना। ३. भेजना। प्रेषण। ४. अर्पण।

विनिर्गत--भू० कृ०[सं०] १. बाहर निकाला हुआ। २. बीता हुआ। व्यतीत। ३. मुक्त।

विनिर्गम--पुं०[सं० वि+निर्√गम् (जाना)+अप्]१. बाहर निकलना। २. प्रस्थान या यात्रा करना।

विनिवेशन--वि०[सं० वि+नि√विश् (प्रवेश करना)+ल्युट्–अन] [भू० कृ० विनिवेशित, वि० विनिवेशी] १. प्रवेश। घुसना। २. अवस्थित या स्थित होना। अधिष्ठान। ३. स्थान आदि का बसना।

विनिवेशी (शिन्)--वि० [सं० वि+नि√विश्+णिनि] [स्त्री० विनिवेशनी] १. प्रवेश करनेवाला। घुसनेवाला। २. बसने या रहनेवाला।

विनिश्चय--पुं०[सं० वि+निस्-√चि (चयन करना)+अच्] किसी विषय में खूब सोच-समझकर किया जानेवाला निश्चय या निर्णय। (डेसीज़न)

विनिषिद्ध--भू० कृ०[सं०] [भाव ० विनिषिद्धता] १. जिसका विशेष रूप से निषेध हुआ हो। २. जिसका शासन द्वारा विधिक रीति से निषेध किया गया हो। (कन्ट्राबैंड) जैसे--विनिषिद्ध व्यापार।

विनिषिद्ध व्यापार--पुं०[सं० ष० त०] वह व्यापार जिसे शासन ने विनिषिद्ध ठहराया हो। (कन्ट्राबैंड ट्रेड)

विनीत--वि०[सं० वि√नी (ढोना)+क्त] [भाव० विनीतता, विनीति] १. जिसमें विनय हो। विनय से युक्त। २. सुशील। ३. नम्र और शिष्ट। ४. नम्रतापूर्वक किया जानेवाला। जैसे--विनीत निवेदन। ५. जितेन्द्रिय। संयमी। ६. ग्रहण किया हुआ। ७. शिक्षित। ८. अलग या दूर किया हुआ। ९. दंडित। १०. साफ किया हुआ।

पुं०१. वणिक्। बनिया। २. व्यापारी। ३. ऐसा घोड़ा जो जोत, सवारी आदि के काम में सधा हुआ हो। ४. दमनक या दौना नाम का पौधा।

विनीति--स्त्री०[सं० वि√नी (दोना)+क्तिन्] १. विनय। २. सद्-व्यवहार। ३. सम्मान।

विनु†--अव्य०=बिना।

विनुक्ति--स्त्री०[सं०] १. श्रौत सूत्र के अनुसार एक प्रकार का एकाह-कृत्य। २. दूर करना। हटाना।

विनूठा†--वि०=अनूठा।

विनोक्ति--स्त्री०[सं० ब० स०] साहित्य में, एक अर्थालंकार जो उस समय माना जाता है जब कोई वस्तु स्वयं शोभायुक्त होती है तथा किसी अन्य वस्तु के होने या न होने से उसकी शोभा पर प्रभाव नहीं पड़ता।

विनोद--पुं० [सं० वि√नुद् (प्रेरणा देना)+घञ्] १. ऐसा काम या बात जिसका मुख्य प्रयोजन अपना (और दूसरे का भी) मन बहलाना तथा प्रसन्न रखना होता है। जैसे--खेल, तमाशा आदि। २. उक्त के द्वारा होनेवाला मन-बहलाव तथा प्राप्त होनेवाला आनंद। ३. हँसी-ठट्ठा। ४. एक प्रकार का प्रासाद। ५. कामशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का आलिंगन।

विनोद-वृत्ति--स्त्री० [सं०] मनुष्य की वह वृत्ति जो उसे विनोद करने और विनोदपूर्ण बातें समझने और प्रसन्नतापूर्वक सहन करने में समर्थ करती है। (सेन्स ऑफ़ ह्यूमर)

विनोदी (दिन्)-- वि०[सं० वि√नुद्+णिनि] [स्त्री० विनोदिनी] १. विनोद-संबंधी। २. विनोद-प्रिय। जैसे--विनोदी स्वभाव। ३. विनोद के द्वारा जी बहलाने या मन को प्रसन्न करनेवाला। विनोद-शील। ४. हँसी-दिल्लगी करनेवाला। हँसोड़।

विन्यसन--पुं०[सं०] [भू० कृ० विन्यस्त]=विन्यास।

विन्यस्त--भू० कृ० [सं० वि+नि√अस् (होना)+क्त] १. रखा हुआ। स्थापित। २. क्रम से या सजाकर रखा हुआ। ३. अच्छी तरह जोड़ा, बैठाया या लगाया हुआ। ४. फेंका हुआ। क्षिप्त।

विन्यास--पुं०[सं० वि+नि√अस् (होना)+घञ्] [वि० विन्यस्त]

१. कोई चीज कहीं स्थापित करना। जमाकर रखना। २. सजाने-सवाँरने, ठीक स्थान पर रखने तथा ठीक क्रम से लगाने की क्रिया या भाव। जैसे—केश-विन्यास, वस्तु-विन्यास।

विपंचक—पुं०[सं० वि√पंच् (विस्तार करना)+ण्वुल्—अक] भविष्यवक्ता।

विपंची—स्त्री०[सं० वि√पंच+अच्+ङीष्] १. क्रीड़ा। खेल। २. वीणा की तरह का एक प्रकार का बाजा।

विपक्व—वि०[सं० वि√पंच् (पकना)+क्त] १. अच्छी तरह पका हुआ। २. पूरी बाढ़ पर पहुँचा हुआ। ३. जो पका न हो। कच्चा।

विपक्ष—वि०[सं० ब० स०] [भाव० विपक्षता] विपक्षी। (दे०)

पुं० १. किसी पक्ष या पहलू के सामने या नीचेवाला पक्ष या पहलू। २. किसी पक्ष, दल आदि के विचार से विरोधी पक्ष या दल। विशेषतः ऐसा पक्ष या दल जिससे विरोध, शत्रुता, विवाद आदि हो। ३. विरुद्ध व्यवस्था या बाधक नियम। ४. विरोध। ५. व्याकरण में, किसी नियम के विरुद्ध अथवा उससे भिन्न व्यवस्था। बाधक नियम। अपवाद। ६. तर्कशास्त्र में ऐसा पक्ष जिसमें साध्य का अभाव हो।

विपक्षी (क्षिन्)—वि०[सं०] १. (पक्षी) जिसके डैने या पंख न हों। २. जिसका संबंध विपक्ष (विरोधी दल आदि) से हो। ३. जिसके पक्ष में कोई न हो। ४. उलटा। विपरीत।

पुं० १. विरोधी। २. दुश्मन। शत्रु। ३. प्रतिद्वन्द्वी।

पुं०[सं० विपक्षिन्] वह जो किसी पक्ष के विरोधी पक्ष में हो। दूसरा फरीक।

विपचन—पुं०[सं०] शरीर में पोषक तत्त्वों या द्रव्यों का पहुँचकर भिन्न-भिन्न रसों आदि के रूप में परिवर्तित होना। उपापचयन। चयापचयन। (मेटाबोलिज़्म)

विपज्जनक—वि०[सं०] विपत्ति उत्पन्न करने या लानेवाला।

विपणन—पुं०[सं०] बाजार में जाकर माल खरीदने या बेचने की क्रिया या भाव। (मारकेटिंग)

विपणि (णी)—स्त्री० [सं०] १. बाजार। हाट। २. बिक्री का माल। ३. क्रय-विक्रय। खरीद-फरोख्त।

विपत्तन—पुं०[सं० वि+पत्तन] आधुनिक राजविधानों में किसी ऐसे व्यक्ति को अपने देश से बाहर निकाल देना जो जनता या राज्य के हित के विरुद्ध आचरण या व्यवहार करता हो। देश-निकाला। (डिपोर्टेशन)

विपत्ति—स्त्री०[सं० वि√पद् (गमन)+क्तिन्] १. ऐसी घटना या स्थिति जिसके फल-स्वरूप कष्ट, चिन्ता या हानि अधिक मात्रा में होती हो या होने की संभावना हो।

क्रि० प्र०—आना।—झेलना।—टलना।—ढाना।—पड़ना।—भुगतना।—भोगना।

२. झंझट या बखेड़े का काम या बात।

विपत्र—पुं०[सं०] वह पत्र जिसमें किसी से प्राप्य धन का ब्योरा होता है। प्राप्यक। (बिल)

विपथ—पुं०[सं०] १. खराब या बुरा रास्ता। ऐसा रास्ता जिस पर चलने से कष्ट, हानि आदि हो सकती हो। २. बगल का रास्ता। ३. एक प्रकार का रथ। ४. अनुचित कामों में प्रवृत्त होना।

विपथगामी (मिन्)—वि०[सं०] १. विपथ पर चलनेवाला। २. चरित्र-हीन। कुमार्गी।

विपथन—पुं०[सं०] [भू० कृ० विपथित] अपने उचित या नियत पथ अथवा मार्ग से हटकर इधर-उधर होना। (एबेरेशन)

विपद्—स्त्री०[सं० वि√पद् (गमन)+क्विप्] १. विपत्ति। आफत। संकट। २. मृत्यु। ३. नाश।

विपदा—स्त्री० [सं० विपद्+टाप्] १. विपत्ति। आफत। २. दुःख। ३. शोक या संकट।

विपन्न—भू० कृ०[सं० वि√पद् (गमन)+क्त] १. विपत्ति में पड़ा हुआ। विपत्तिग्रस्त। २. कठिनाई या झंझट में पड़ा हुआ। ३. आर्त्त। दुःखी। ४. धोखे या भ्रम में पड़ा हुआ। ५. मरा हुआ। मृत। जो नष्ट हो चुका हो। विनष्ट। ७. भाग्यहीन। अभागा।

विपरीत—वि०[सं० वि+परि√इ (गमन)+क्त] [भाव० जो विपरीतता] १. जैसा होना चाहिए उसका उलटा। उलटे क्रम, स्थिति आदि में होनेवाला। २. जो अनुकूल या मुआफिक न हो। मेल न खानेवाला। ३. नियम के विरुद्ध होनेवाला। गलत। ४. असत्य। मिथ्या।

पुं० केशव के अनुसार एक अर्थालंकार जिसमें कार्य की सिद्धि में स्वयं साधक या बाधक होना दिखाया जाता है।

विपरीतक—वि०[सं० विपरीत+कन्] विपरीत।

पुं०=विपरीत रति।

विपरीत रति—स्त्री०[सं० कर्म० स०] साहित्य में ऐसी रति जिसमें संभोग के समय पुरुष नीचे और स्त्री ऊपर रहती है। काम-शास्त्र का पुरुषायित बन्ध।

विपरीत लक्षणा—स्त्री०[सं० कर्म० स०] किसी चीज की ऐसी व्यंग्यपूर्ण अभिव्यक्ति जिसमें परस्पर विरोधी गुणों, लक्षणों आदि का उल्लेख भी हो।

विपरीत लिंग—पुं० दे० 'लिंग' (न्यायशास्त्र वाला विवेचन)।

विपरीता—स्त्री०[सं० विपरीत+टाप्] १. बदचलन स्त्री। दुराचारिणी। २. दुश्चरित्रा पत्नी।

विपरीतार्थ—वि०[सं० कर्म० स०] विपरीत अर्थात् उलटे अर्थवाला।

विपरीतोपमा—स्त्री०[सं० ष० त०] केशव के अनुसार एक अलंकार जिसमें किसी भाग्यवान् व्यक्ति की हीनता वर्णन की जाय और अति दीन दशा में दिखाया जाय।

विपर्ण—वि०[सं०] जिसमें पर्ण या पत्ते न हों।

पुं० एक साथ या आमने-सामने लगी हुई रसीदों आदि का वह बाहरी भाग जो लिख या भरकर किसी को दिया जाता है। (आउटर फॉयल)

विपर्णक—वि०[सं० ब० स०] जिसमें पत्ते न हों।

पुं० टेसू। पलास।

विपर्यय—पुं० [सं० वि+परि √ ई (गमन)+अच्] १. ऐसा उलट-फेर या परिवर्तन जिससे किसी क्रम के अंतर्गत कोई कुछ आगे और कोई कुछ पीछे हो जाय। पारस्परिक स्थान-परिवर्तन करनेवाला हेर-फेर। (ट्रांसपोजीशन) जैसे—'पिटारा' से 'टिपारा' में होनेवाला वर्ण-विपर्यय। व्यतिक्रम। २. उलटकर फिर पहले रूप, स्थान आदि में लाना। (रिवर्शन) ३. कुछ को कुछ समझना। मिथ्या ज्ञान। भ्रम। ४. गलती भूल। ५. अव्यवस्था। गड़बड़ी। ६. नाश। बरबादी।

विपर्यस्त—भू० कृ०[सं० विपरि+अस्त, वि+परि√ अस् (होना)+क्त] १. जिसका विपर्यय हुआ हो। जो उलट-पलट गया हो। जो इधर

का उधर हो गया हो। २. इधर-उधर बिखरा हुआ। अस्त-व्यस्त। ३. चौपट। बरबाद। ५. जो ठीक न समझकर उलट दिया या रद्द कर दिया गया हो।

विपर्यास—पुं० [सं० वि+परि+ अस् (होना)√घञ्] [वि०विपर्यस्त] १. विपर्यय। उलट-पलट। व्यतिक्रम । २. जैसा होना चाहिए, उसके विरुद्ध कुछ और ही हो जाना। ३. भ्रम। भ्रांति।

विपल—पुं०[सं० ब० स०] पल का साठवाँ अंश।

विपश्चन—पुं०[सं०]प्रकृत ज्ञान। यथार्थ बोध। (बौद्ध)

विपश्चित—वि०[सं०] जिसे यथार्थ ज्ञान हो। अच्छा ज्ञाता।

विपाक—पुं०[सं० वि√ पच् (पकना)+घञ्] १. परिपक्व होना। पकना। २. पूरी तरह से तैयार होकर काम में आने के योग्य होना। ३. खाई हुई चीज का पचना। हजम होना। ४. परिणाम या फल। ५. किये हुए कर्मों का फल। ६. जायका। स्वाद। ७. दुर्गति। दुर्दशा। ८. विपत्ति। ९. विपर्यय।

विपाटन—पुं० [सं० वि√पट् (गमन) +णिच्+ल्युट्—अन] [वि० विपाटक, भू० कृ० विपाटित] १. उखाड़ना। खोदना। २. तोड़ना-फोड़ना।

विपाटल—वि०[सं० तृ० त०] गहरा लाल (रंग)।

विपाठ—पुं०[सं०] एक तरह का बड़ा तीर।

विपात—पुं० [सं० वि√ पत् (गिरना)+घञ्] १. पतन। २. नाश।

विपातन—पुं०[सं० वि√पत् (गिराना)+णिच्+ल्युट्—अन] १. विपात करना। २. गिराना। ३. नष्ट करना। ४. गलाना।

विपादन—पुं०[सं० वि√ पद् (गमन)+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विपादित] १. वध। हत्या। २. क्षय। नाश।

विपादिका—स्त्री०[सं० विपाद+कन्+टाप्, इत्व] १. अपरस नामक रोग। २. पैर में होनेवाली बिवाई। ३. प्रहेलिका। पहेली।

विपाल—वि०[सं० ब० स०]१. जिसे किसी ने न पाला हो। २. जिसका कोई पालक न हो। अनाथ।

विपासा—स्त्री०[सं० विपास+टाप्] पंजाब की ब्यास नदी का पुराना नाम।

विपिन—पुं०[सं० √ वेप् (काँपना)+इनन्] १. वन। जंगल। २. उपवन। वाटिका। ३. समूह।

वि० घना। सघन।

विपिनचर—वि०[सं० विपिन√चर् (चलना)+अच्] १. वन में रहनेवाला। वनचर।

पुं०१. जंगली आदमी। २. जंगली जीव-जंतु।

विपिनतिलका—स्त्री०[सं० ष० त०,+टाप्] एक प्रकार की वर्णवृत्ति जिसके प्रत्येक चरण में नगण, रगण, नगण और दो रगण होते हैं।

विपिनपति—पुं०[सं० ष० त०] वनराज। सिंह।

विपिनविहारी—वि०[सं० विपिन-वि√हृ (हरण करना)+णिनि, दीर्घ, न-लोप, विपिन+विहारी] वन में विचरनेवाला।

पुं० श्रीकृष्ण।

विपुंसक—वि०[सं० ब० स०] नपुंसक।

विपुंसी—स्त्री०[सं० विपुंस+ङीप्] वह स्त्री जिसकी चेष्टा, स्वभाव या आकृति पुरुषों की-सी हो। मर्दानी औरत।

विपुत्र—वि०[सं० ब० स०] [स्त्री० विपुत्री] जिसके आगे पुत्र न हो। पुत्र-हीन। निपूत।

विपुर—वि०[सं० ब० स०] जिसके रहने का स्थान निश्चित न हो।

विपुल—वि०[सं०] [स्त्री० विपुला] [भाव० विपुलता] १. संख्या या परिमाण में बहुत अधिक। २. बहुत बड़ा। विशाल। ३. बहुत गंभीर या गहरा।

पुं०१. सुमेरु पर्वत का पश्चिमी भाग। २. हिमालय। ३. एक प्रसिद्ध पर्वत जिसकी अधिष्ठात्री देवी विपुला कही गई है। ४. राजगृह के पास की एक पहाड़ी।

विपुलक—वि० [सं० ब० स०] १. बहुत चौड़ा। २. पुलक से रहित।

विपुलता—स्त्री०[सं० विपुल+तल्+टाप्] विपुल होने की अवस्था या भाव।

विपुला—स्त्री०[सं० विपुल+टाप्]१. पृथ्वी। २. विपुल नामक पर्वत की अधिष्ठात्री देवी। ३. एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में भगण, रगण और दो लघु होते है। ४. आर्या छन्द के तीन भेदों में से एक भेद जिसके प्रथम चरण में १८, दूसरे में १२, तीसरे में १४ और चौथे में १३ मात्राएँ होती हैं।

विपुलाई†—स्त्री०=विपुलता।

विपुष्ट—वि०[सं०]१. जो अच्छी तरह पुष्ट न हो। २. जिसे भरपेट खाने को न मिलता हो।

विपुष्प—वि०[सं० ब० स०] पुष्पहीन (वृक्ष)।

विपूयक—पुं०[सं०√ पूय् (दुर्गन्ध करना)+अच्+कन्] १. सड़ायँध। २. सड़ा हुआ मुर्दा। (बौद्ध)

विपृक्त—भू० कृ०[सं० वि√पृच् (पृथक् करना)+क्त] अलग किया हुआ।

विपोहना—स०[सं० वि+प्रोत]१. पोतना। २. लीपना।

स०=पोहना।

विप्र—पुं० [सं० √ वप् (बीज फैलाना)+र निपा० सिद्धि, अथवा वि√ प्रा (पूर्ण करना)+ड]१. ब्राह्मण। २. पुरोहित। ३. कर्मनिष्ठ और धार्मिक व्यक्ति। ४. पीपल। ५. सिरस का पेड़। ६. पापर या रेणुका नाम का पौधा।

वि० १. मेधावी। २. विद्वान्।

विप्रक—पुं०[सं० विप्र+कन्] नीच ब्राह्मण।

विप्रकर्षण—पुं०[सं० वि+प्र√ कृष् (आकर्षण करना)+ल्युट्—अन] [वि० विप्रकृष्ट]१. दूर खींच ले जाना। दूर हटाना। २. काम पूरा करना।

विप्रकार—पुं०[सं० वि+प्र√ कृ (करना)+घञ्] [वि० विप्रकृत] १. तिरस्कार। अनादर। २. अपकार।

विप्रकीर्ण—वि०[सं० वि+ प्र√ कृ (फेंकना)+क्त]१. बिखरा या छितराया हुआ। इधर-उधर गिरा-पड़ा। २. अस्त-व्यस्त। अव्यवस्थित।

विप्रकृष्ट—भू० कृ०[सं० वि+प्र √कृष् (खींचना)+क्त] १. खींचकर दूर किया हुआ। २. दूर का। दूरस्थ।

विप्रगीत—वि०[सं० वि+प्र √ गा (गाना)+क्त, ब० स०] जिसके संबंध में मतभेद हो। (जैन)

विप्र-चरण––पुं०[सं०] [सं० विप्र+चरण] भृगु मुनि की लात का चिह्न जो विष्णु के हृदय पर माना जाता है।

विप्रता––स्त्री०[सं० विप्र+तल्+टाप्] १. विप्र होने की अवस्था या भाग। २. ब्राह्मणत्व।

विप्रतिपत्ति––स्त्री०[सं०] १. मतों, विचारों, स्वार्थों आदि में होनेवाला झगड़ा। मतभेद या संघर्ष। विरोध। २. किसी काम या बात पर की जानेवाली आपत्ति। ३. किसी के प्रति होनेवाला शत्रुतापूर्ण भाव। ४. भूल। ५. न्याय में, ऐसा कथन जिसमें दो परस्पर विरोधी बातें हों। ६. बदनामी।

विप्रतिपन्न––भू० कृ० [सं० वि०+प्रति√पद् (गमन)+क्त] १. जिसमें प्रतिपत्ति का अभाव हो। २. संदिग्ध। ३. जो स्वीकृत न हो। अग्राह्य। अमान्य। ४. जो प्रमाणित या सिद्ध न हुआ हो। अप्रमाणित। असिद्ध।

विप्रतिषिद्ध––वि०[सं० वि+प्रति√षिध् (मना करना)+क्त] १. जिसका निषेध किया गया हो। निषिद्ध। (स्मृति) २. उल्टा। विरुद्ध। ३. मना किया हुआ। वर्जित।

विप्रतिषेध––पुं० [सं० वि+प्रति √षिध् (मना करना)+घञ्] १. नियन्त्रण में रखना। २. दो सम कार्य-प्रणालियों का संघर्ष। ३. व्याकरण में, वह जटिल स्थिति जो दो विभिन्न नियमों के एक साथ प्रयुक्त होने के फलस्वरूप उत्पन्न होती है।

विप्रत्यय––पुं०[सं० मध्यम स०] प्रत्यय या विश्वास का अभाव। अविश्वास।

विप्रत्व––पुं०[सं० विप्र+त्व] विप्रता।

विप्रथित––वि० [सं० वि√ प्रथ् (ख्यात करना)+क्त] विख्यात। मशहूर।

विप्र-पद––पुं०[सं० ष० त०]=विप्र-चरण।

वि-प्रपात––पुं०[सं० तृ० त०] १. विशेष रूप से होनेवाला पतन। बिलकुल गिर जाना। २. ढालुआँ।

पुं०=खाईं।

विप्र-बंधु––पुं०[सं० ष० त० या ब० स०] १. वह ब्राह्मण जो अपने कर्म से च्युत हो। नीच ब्राह्मण। २. एक मंत्रद्रष्टा ऋषि।

विप्रबुद्ध––वि०[सं० तृ० त०] [भाव० विप्रबुद्धता] १. अच्छी तरह जागा हुआ और सचेत। जागरूक। २. ज्ञानी।

विप्रमाथी (थिन्)––वि० [सं० वि+प्र√मथि (मथन करना)+णिनि] [स्त्री० विप्रमाथिन] १. अच्छी तरह मथन करनेवाला। २. ध्वंस या नाश करनेवाला। ३. व्याकुल या क्षुब्ध करनेवाला।

विप्रयुक्त––वि०[सं० तृ० त०] १. अलग किया हुआ। २. बिछुड़ा हुआ। विमुक्त। ३. बाँटा हुआ। विभक्त।

विप्रयोग––पुं०[सं०] [भू० कृ० विप्रयुक्त] १. अलग या पृथक् होने की अवस्था या भाव। अलगाव। पार्थक्य। २. किसी बात या वस्तु से रहित या हीन होने की अवस्था या भाव। 'संयोग' का विरुद्धार्थक। जैसे––बिना धनुष-बाण के राम। (यदि धनुष-बाण वाला राम कहा जायगा तो वह 'संयोग' कहलाएगा)। ३. साहित्य में, विप्रलंभ के दो भेदों में से एक, जो उस मानसिक कष्ट या विरह का सूचक है, जो दूसरे से विवाह हो जाने पर कौमार्य अवस्था के प्रेम-पात्र के स्मरण से होता है। (आयोग से भिन्न) ४. वियोग। विरह। ५. बुरा या दुःखद समाचार।

विप्रयोगी (गिन्)––वि०[सं० वि+प्रयोग+इनि] १. विप्रयोग-संबंधी। २. विप्रयोग करनेवाला। विमुक्त।

विप्र-राम––पुं०[सं०] परशुराम।

विप्रर्षि––पुं०[सं० विप्र+ऋषि] वह ऋषि जो ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुआ हो। जैसे––विप्रर्षि दुर्वासा।

विप्रलंभ––पुं०[सं०] १. छलपूर्ण व्यवहार। २. बात बनाकर या वादा पूरा न करके किसी को धोखा देना। ३. मतभेद के कारण होनेवाला झगड़ा। ४. अभीष्ट वस्तु प्राप्त न होना। चाही हुई चीज न मिलना। ५. एक दूसरे से अलग होना। विच्छेद। ६. साहित्य में, प्रेमी और प्रेमिका का वियोग या विरह। ७. साहित्य में, अलंकार का वह प्रकार या भेद जिसमें नायक और नायिका के विरह का वर्णन होता है। ८. अनुचित या बुरा काम।

विप्रलंभक––वि०[सं० विप्रलंभ+कन्] धोखा देकर या वचन-भंग कर दूसरों को छलनेवाला। धूर्त और धोखेबाज।

विप्रलंभन––पुं० [सं० वि+प्र+√लभ् (वादा करना)+ल्युट––अन, नुम्] [भू० कृ० विप्रलंभित] छल करना। धोखा देना।

विप्रलंभी (भिन्)––वि० [सं०] विप्रलंभक।

विप्रलब्ध––भू० कृ०[सं०] १. जिसे किसी ने छला हो। २. जिससे वादा-खिलाफी की गई है। ३. निराश। ४. वंचित। ५. जिसका प्रिय से समागम न हुआ हो। वियुक्त।

विप्रलब्धा––स्त्री०[सं० विप्रलब्ध+टाप्] १. साहित्य में, वह नायिका जिसका प्रिय उसे वचन देकर भी संकेत स्थल पर न आया हो। २. वह नायिका जो प्रिय के वचन भंग करने तथा संकेत-स्थल पर न मिलने के कारण दुःखी हो।

विप्रलाप––पुं०[सं०] १. व्यर्थ की बकवाद। प्रलाप। २. झगड़ा। विवाद। ३. दुर्वचन।

विप्रलापी (पिन्)––वि०[सं० वि+प्रलाप+इनि] विप्रलाप करनेवाला।

विप्रलुंपक––पुं० [सं० विप्रलुम्प+कन्] १. बहुत बड़ा लालची। अतिलोभी। २. वह जो अपने लिए औरों को कष्ट देता या पीड़ित करता हो। ३. वह शासक जो बहुत अधिक कर लेता हो।

विप्रलुप्त––भू० कृ०[सं० तृ० त०] १. जो लूटा गया हो। अपहृत। २. गायब या लुप्त किया हुआ। ३. जिसके काम में विघ्न डाला गया हो।

विप्रलोप––पुं०[सं० तृ० त०] [वि० विप्रलुप्त] १. बिलकुल लोप। २. पूरा नाश।

विप्रवाद––पुं०[सं० मध्यम० स०] १. बुरे वचन। २. बकवाद। ३. कलह। विवाद। ४. मतैक्य का अभाव। मतभेद।

विप्रवास––पुं०[सं० कर्म० स०] [भू० कृ० विप्रवासित] १. परदेश में रहना। प्रवास। २. सन्यासी का अपने वस्त्र दूसरे को देना जो एक अपराध या दोष माना गया है।

विप्र-व्रजनी––स्त्री०[सं०] दो पुरुषों से यौन-संबंध रखनेवाली स्त्री।

विप्रश्न––पुं०[सं० मध्यम० स०] ऐसा प्रश्न जिसका उत्तर फलित ज्योतिष के द्वारा दिया जाय।

विप्रश्निक––पुं०[सं०] [स्त्री० विप्रश्निका] दैवज्ञ। ज्योतिषी।

विप्र-हरण––पुं०[सं० मध्य० स०] १. परित्याग। २. मुक्ति।

विप्राधिप—पुं०[सं० ष० त०] चंद्रमा।

विप्रिय—वि०[सं० वि√ प्री (प्रसन्न करना)+क्त]१. जो प्रिय न हो। अप्रिय। २. कटु और तीक्ष्ण। ३. जो रुचि के अनुकूल न हो। पुं०१. अप्रिय काम या बात। २. अपराध। कसूर। ३. वियोग। विरह।

विप्रेत—वि०[सं० तृ० त०]१. बीता हुआ। गत। २. अस्त-व्यस्त। छिन्न-भिन्न।

विप्रेषित—भू० कृ० [सं० वि+प्र√वस् (निवास करना)+क्त] १. देश से निकाला हुआ। २. देश से बाहर गया हुआ। ३. अनुपस्थित।

विप्लव—पुं० [सं० वि√ प्लु (तैरना, कूदना)+अप्] १. पानी की बाढ़। २. किसी चीज का पानी में डूबना। ३. उथल-पुथल। हल-चल। ४. उत्पात। उपद्रव। ५. देश या राज्य में होनेवाला ऐसा उपद्रव जिससे शांति में बाधा पड़े। बलवा। ६. आफत। विपत्ति। ७ विनाश। ८. डाँट-डपट। ९. अनादर। १०. घोड़े की बहुत तेज चाल।

विप्लवक—वि०[सं० विप्लव+कन्] विप्लव करनेवाला।

विप्लवी (विन्)—वि०[सं० वि√ प्लु +णिनि] १. क्रांति करनेवाला। २. क्षण-भंगुर।

विप्लाव—पुं० [सं० वि√ प्लु+घञ्] १. पानी की बाढ़। २. घोड़े की बहुत तेज चाल।

विप्लावक—वि० [सं० वि√ प्लु +ण्वुल्—अक] विप्लव करने या करानेवाला।

विप्लावन—पुं० [सं० ब० स० या मध्यम० स०] १. निंदा करना। २. अपशब्द कहना।

विप्लावी—वि०[सं० विप्लाविन्] [स्त्री० विप्लाविनी] १. उपद्रव करनेवाला। २. बाढ़ लानेवाला। ३. निंदक।

विप्लुत—वि०[सं०] [भाव० विप्लुति] १. छितराया या बिखरा हुआ। अस्त-व्यस्त। २. घबराया हुआ। हक्का-बक्का। ३. तोड़ा या भंग किया हुआ (वचन आदि)। ४. आचार-भ्रष्ट। चरित्रहीन। ५. नियम, प्रतिज्ञा आदि से च्युत। ६. अस्पष्ट। ७. विपरीत। विरुद्ध।

विप्सा—स्त्री०=वीप्सा। (दे०)

विफल—वि०[सं०]१. (वृक्ष) जिसमें फल न लगे हों या न लगते हों। २. जिसके अण्डकोश न हों या काट दिये गये हों। ३. निरर्थक। ४. जिसका उद्देश्य सिद्ध न हुआ हो। ५. जिसके प्रयत्न का कोई फल न हुआ हो। ६. जो परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुआ हो।

विफलता—स्त्री०[सं० विफल+तल्+टाप्] विफल होने की अवस्था या भाव।

विबंध—पुं०[सं० ब० स०]१. बहुत कड़ा बन्धन। २. पेट के अफरा नामक रोग का एक भेद। ३. अनाज, भूसे आदि का ढेर। ४. बैलों आदि के कन्धे पर रखा जानेवाला जूआ। जुआठा। ५. चौड़ी और बड़ी सड़क। राजमार्ग। ६. प्राचीन काल में, वह आय जो राजा को प्रजा से होती थी। ७. बन्धन। हथकड़ी।

विबंधन—पुं०[सं० तृ० त०] [वि० विबंधक]१. बाँधने की क्रिया या भाव। २. पीठ, छाती, पेट आदि के घाव या फोड़े पर बाँधी जानेवाली पट्टी। (सुश्रुत) ३. बाधा। रुकावट।

विबंधु—वि०[सं० ब० स०, वि+ बन्धु] १. जिसके भाई-बंधु न हों। बन्धुहीन। २. अनाथ।

विबल—वि०[सं० मध्यम० स०]१. बल या शक्ति से रहित। अशक्त। २. विशेष रूप से बलवान्। बहुत बड़ा बली।

विबाध—वि०[सं० ब० स० या मध्यम० स०] बाधारहित।

विबुद्ध—वि०[सं० तृ० त०, वि+ बुद्ध,] [भाव० विबुद्धता]१. जागा हुआ। जाग्रत। २. खिला हुआ। विकसित। ३. ज्ञानवान्।

विबुध—पुं०[सं० वि√ बुध् (जानना)+क] १. पंडित। बुद्धिमान्। २. देवता। ३. चन्द्रमा। ४. शिव।
वि० विद्वानों से रहित।

विबुधतरु—पुं० [ष० त०] कल्पवृक्ष।

विबुधधेनु—स्त्री०[सं०] कामधेनु।

विबुधनदी—स्त्री०[ष० त०] आकाश-गंगा।

विबुधपति—पुं०[ष० त०] देवताओं का राजा, इन्द्र।

विबुधपुर—पुं० [सं० ष० त०] देवताओं का देश, स्वर्ग।

विबुधप्रिया—स्त्री०[सं०] चंचरी या चर्चरी नामक छंद का दूसरा नाम।

विबुधबेलि—स्त्री०[सं० ष० त०] कल्पलता।

विबुध-वन—पुं०[सं० ष० त०] इन्द्र का कानन।

विबुध-विलासिनी—स्त्री०[सं० ष० त०]१. देवांगना। २. अप्सरा।

विबुध-वैद्य—पुं०[सं० ष० त०] देवताओं के चिकित्सक, अश्विनीकुमार।

विबुधाचार्य—पुं०[सं० विबुध+आचार्य, ष० त०] बृहस्पति।

विबुधान—पुं०[सं० वि√बुध (जानना)+शानच्]१. पंडित। आचार्य। २. देवता।

विबुधापगा—स्त्री० [सं० विबुध-आपगा, ष० त०] आकाश गंगा।

विबुधावास—पुं० [सं० ष० त०, विबुध +आवास] १. स्वर्ग। २. देव-मन्दिर।

विबुधेंद्र—पुं०[सं० विबुध+इन्द्र, ष० त०] इंद्र।

विबुधेश—पुं० [सं० ष० त० विबुध+ईश] देवताओं का राजा, इन्द्र।

विबोध—पुं०[सं० मध्यम० स०]१. जागरण। जागना। २. अच्छा और पूरा ज्ञान। ३. चेतनता। होश-हवाश।
वि० जिसे बोध या ज्ञान न हो।

विबोधन—पुं० [सं० वि√बुध् (जानना)+ल्युट्—अन्] [भू० कृ० विबोधित] १. जगाना। प्रबोधन। २. ज्ञान कराना। ३. ढाढ़स या सांत्वना देना। ४. प्रस्फुटित करना। खिलाना।

विब्बोक—पुं०[सं०] बिब्बोक (हाव)।

विभंग—पुं०[सं० ब० स०] [भू० कृ० विभग्न] १. सब चीजें यथास्थान रखना या लगाना। विन्यास। २. टूटना। ३. विभाग। ४. विशृंखल होना। ५. भौंहों से की जानेवाली चेष्टा। भ्रू-भंग। ६. मन का भाव प्रकट करनेवाली चेष्टा। ७. किसी कड़ी या ठोस चीज का आघात आदि के कारण बीच से टूट जाना। (फ्रैक्चर) जैसे—अस्थिविभंग।

विभंगि—स्त्री०[सं० विभंग+इनि] १. अनुकृति। २. भंगी।

विभंगी (गिन्)—वि०[सं० वि√ भज् (भंग होना)+णिनि]१. कंपशील। २. झुर्रियोंवाला।

विभंगुर—वि०[सं०] अस्थिर।

विभक्त—भू० कृ० [सं० वि√ भज् (भाग करना)+क्त, तृ० त०] १. जिसके विभाग किए गए हों। २. अलग किया हुआ। ३. बांटा हुआ। ३. जिसे पैतृक संपत्ति में से अपना अंश प्राप्त हो गया हो।

पुं० वह अंश जो किसी को पैतृक संपत्ति में से प्राप्त हुआ हो।

विभक्तज—पुं० [सं० विभक्त+√ जन् (उत्पन्न होना) +ड] सम्पत्ति के बंटवारे के बाद पैदा होनेवाला लड़का। (स्मृति)

विभक्तवाद—पुं०[सं०] [वि० विभक्तवादी] यह मत या सिद्धान्त कि त्यागियों तथा साधुओं को संसार या समाज से अलग रहना चाहिए।

विभक्ति—स्त्री० [सं० वि√भज् +क्तिन्] १. विभक्त करने या होने की अवस्था या भाव। विभाग। बाँट। २. अलगाव। पार्थक्य। ३. संस्कृत व्याकरण के अनुसार शब्द में लगनेवाला वह प्रत्यय जिससे उस शब्द का कारक, लिंग तथा वचन जाना जाता है।

विभज्य—वि०[सं०]=विभाज्य।

विभर—वि०[सं० विभा] १. प्रकाशमान्। २. तेजस्वी।

विभव—पुं०[सं०] १. ईश्वर का अवतार। २. ऐश्वर्य। ३. धन-संपत्ति। ४. बल। शक्ति। ५. उदारता। ६. अधिकता। बहुतायत। ७. मोक्ष। ८. पालन। ९. विकास। १०. छत्तीसवाँ संवत्सर।

विभवकर—पुं०[सं०] वह कर जो किसी की धन-संपत्ति या वैभव के विचार से लिया जाता है। (वेल्थ टैक्स)

विभवशाली—वि०[सं०] १. संपत्तिशाली। २. शक्तिशाली।

विभवी (विन्)—वि०[सं० विभव+इनि, दीर्घ, नलोप]=विभवशाली।

विभाँति—स्त्री०[सं० वि+हिं० भाँति] प्रकार। किस्म।

वि० अनेक प्रकार का।

अव्य० अनेक प्रकार से।

विभा—स्त्री०[सं० वि√भा (प्रकाश करना)+क्विप्] १. प्रभा। कान्ति। २. किरण। रश्मि। ३. छवि। शोभा।

विभाकर—वि०[सं०] प्रकाश करने या फैलानेवाला।

पुं० १. सूर्य। २. आक। मदार। ३. चित्रक। चीता। ४. अग्नि। आग। ५. राजा।

विभाग—पुं०[सं० वि+भज् (भाग करना)+घङ्] १. कोई चीज कई टुकड़ों या भागों में बाँटना। २. उक्त प्रकार से अलग किया हुआ अंश या टुकड़ा। ३. ग्रन्थ का परिच्छेद या प्रकरण। ४. कोई विशिष्ट कार्य करने के लिए अलग किया हुआ क्षेत्र (डिपार्टमेन्ट)। जैसे—न्याय-विभाग। ५. कार्य-संचालन के सुभीते के लिए किसी कार्य-क्षेत्र के कई छोटे-छोटे हिस्सों में से हर एक (सेक्सन)। ६. किसी विशिष्ट कार्य के लिए निश्चित किया हुआ क्षेत्र या खंड (डिविज़न)।

विभागक—पुं०[सं० विभाग+कन्] १. विभाग करनेवाला। विभाजक। २. विभागीय। (दे०)

विभागात्मक-नक्षत्र—पुं० [सं० कर्म० स०] रोहिणी आर्द्रा, पुनर्वसु, मघा, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठा और श्रवण आदि आठ प्रकाशमान् नक्षत्र।

विभागी (गिन्)—वि०[सं० वि√भज् (भाग करना)+णि] १. विभाग। २. हिस्सेदार।

विभागीय—वि०[सं०] किसी विशिष्ट विभाग में होने या उससे संबंध रखनेवाला। (डिपार्टमेन्टल) जैसे—विभागीय कारंवाई।

विभाजक—वि०[सं० वि√भज् (भाग करना)+ण्वुल्-अक] १. विभाजन करनेवाला। २. बाँटनेवाला।

पुं० वह संख्या या राशि जिससे दूसरी संख्या को भाग दिया जाय। (गणित)

विभाजन—पुं० [सं० वि√भज् (भाग करना)+णिच्+ल्युट्–अन] १. हिस्से लगाना। विभाग करना। २. संयुक्त संपत्ति आदि को उसके स्वामियों द्वारा आपस में बाँटना। ३. पात्र। बरतन।

विभाजित—भू० कृ०[सं० वि√भज् (भाग करना)+णिच्+क्त] १. जिसका विभाजन हो चुका हो। २. विभाजन द्वारा जिसका अंश अलग किया या निकाल लिया गया हो। खंडित। जैसे—विभाजित भारत।

विभाज्य—वि०[सं० वि√भज् (भाग करना)+ण्यत्] जिसका विभाजन हो सके या होने को हो।

विभात—पुं० [सं० वि√भा (प्रकाश करना)+क्त] सवेरा। प्रभात।

विभाति—पुं० [सं० वि√भा (प्रकाश करना)+क्तिन्] शोभा। सुंदरता।

विभाना—अ०[सं० विभा+हिं० ना (प्रत्य०)] १. चमकना। शोभित होना। फबना।

स० १. चमकाना। सुशोभित करना।

विभाव—पुं० [सं०] साहित्य में, वह निमित्त या हेतु जो आश्रय में भाव जाग्रत या उद्दीप्त करता हो। इसके दो भेद हैं-- आलंबन और उद्दीपन।

विभावक—वि०[सं० विभाव+कन्] १. अभिव्यक्त करनेवाला। २. तर्क करनेवाला।

विभावन—पुं०[वि√भू (होना)+णिच्+युच्–अन] १. सोचने की क्रिया या भाव। २. अनुभूति। ३. परीक्षण। ४. तर्क। ५. साहित्य में, वह स्थिति जिसमें कविता या नाटक के पात्र के साथ पाठक या दर्शक का तादात्म्य होता है।

विभावना—स्त्री०[सं०] १. कल्पना। २. कारण के अभाव में कार्य की होनेवाली कल्पना। ३. उक्त के आधार पर साहित्य में एक विरोधमूलक अर्थालंकार।

विशेष—यह पाँच प्रकार का कहा गया है—(क) कारण के अभाव में कार्य होना; (ख) अपर्याप्त कारण से कार्य होना; (ग) प्रतिबंधक तत्त्व के होने पर भी कार्य होना; (घ) विरुद्ध कारण द्वारा कार्य होना; और (ङ) कार्य से कारण की व्युत्पत्ति होना।

विभावनीय—वि०[सं० वि√भू (होना)+णिच्+अनीयर्] जिसकी भावना अर्थात् चिंतन या विचार हो सके।

विभावरी—स्त्री० [सं० वि√भा (प्रकाश करना)+वनिप्+ङीप् आदेश] १. रात्रि। रात। २. तारों से जगमगाती हुई रात। ३. चतुर और मुखरा स्त्री। ४. कुटनी। दूती। ५. पतिता स्त्री। ६. रखैल। ७. हलदी। ८. मेदा। ९. प्रचेतस की नगरी का नाम।

विभावरीश—पुं०[सं० विभावरी-ईश, ष० त०] निशापति। चन्द्रमा।

विभावसु—वि०[सं० ब० स] जिसमें विशेष प्रकाश हो। अधिक प्रभावाला।

पुं० १. सूर्य। २. अग्नि। ३. चन्द्रमा। ४. वसुओं के एक पुत्र। ५. नरकासुर का पुत्र एक दानव। ६. एक गंधर्व जिसने गायत्री से वह सोम

छीना था, जो वह देवताओं के लिए ले जा रही थी। ७. आक। मदार। ८. चित्रक। चीता। ९. गले में पहनने का एक प्रकार का हार।

विभावित—भू० कृ० [सं० तृ० त०] १. जिसकी विभावना हुई हो। कल्पित। २. निश्चित। ३. गृहीत या स्वीकृत।

विभावी (विन्)—वि०[सं० वि√भू (होना)+णिनि,] १. भावों का उदय करनेवाला। २. प्रकट करनेवाला। ३. शक्तिशाली।

विभाव्य—वि०[सं० वि√भू (होना)+ण्यत्] जिसके संबंध में विभावना या विचार हो सकता हो। विभावना के लिए उपयुक्त।

विभाषा—स्त्री० [सं०] [वि० वैभाषिक] १. यह कहना कि ऐसा हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता। २. व्याकरण में, ऐसा प्रयोग जिसके संबंध में उक्त प्रकार के दोहरे मत, विचार या सिद्धान्त मिलते हों। ३. उक्त मतों, नियमों आदि के चुनाव के संबंध में होनेवाली स्वतंत्रता। ४. भाषा-विज्ञान में, किसी भाषा की कोई ऐसी बड़ी शाखा जो उसके विशिष्ट विभाग के अंतर्गत हो और जिसके कई स्थानिक भेद, प्रभेद भी हों। बोली। (डायलेक्ट)

विभाषित—वि०[सं० विभाषा+इतच्] जो इस रूप में कहा गया हो कि ऐसा हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता।

विभास—पुं०[सं० वि√भास् (प्रकाश करना)+अप्] १. चमक। दीप्ति। २. संगीत में सबेरे गाया जानेवाला एक प्रकार का राग। ३. पुराणानुसार एक देव-योनि। ४. तैत्तरीय आरण्यक के अनुसार, सप्तर्षियों में से एक।

विभासक—वि० [सं० विभास+कन्] [स्त्री० विभासिका] १. चमकने या चमकानेवाला। प्रकाशयुक्त। २. प्रकट या व्यक्त करनेवाला।

विभासना—अ०[सं० विभास+हिं० ना (प्रत्य०)] १. चमकना। २. विभासित होना। जान पड़ना।

विभासा—स्त्री०[सं० विभास+टाप्] १. प्रकाश। २. चमक। ३. कांति।

विभासित—भू० कृ०[सं०] १. प्रकाशित। २. चमकता हुआ। ३. कांति से युक्त।

विभिन्न—भू० कृ० [सं०] [भाव० विभिन्नता] १. काट या छेदकर अलग किया हुआ। २. अलग। पृथक्। ३. जो ठीक वैसा ही न हो जैसा कि कोई और प्रस्तुत पदार्थ हो। ४. जिनमें परस्पर कुछ न कुछ विभेद या असमता दिखाई दे।

विभिन्नता—स्त्री०[सं० विभिन्न+तल्+टाप्] १. विभिन्न होने की अवस्था या भाव। २. वह तत्त्व जो दो या अधिक वस्तुओं का भेद दरशाता हो। ३. फरक। अंतर।

विभीत—भू० कृ० [सं० वि√भी (भय करना)+क्त, तृ० त०] [भाव० विभीति] भय-भीत।

विभीति—स्त्री०[सं० वि√भी (भय करना)+क्तिन्] १. डर। भय। २. शंका। ३. सन्देह।

विभीषक—वि०[सं० वि√भीष् (भयभीत होना)+ण्वुल्—अक] डरानेवाला। भयानक।

विभीषण—वि०[सं० वि√भीष् (भयभीत होना)+ल्यु—अन] [स्त्री० विभीषणा] बहुत अधिक भीषण।

पुं० १. रावण का एक भाई जिसे राम ने रावण की मृत्यु के उपरांत लंका का राजा बनाया था। २. अपने भाई-बंधुओं से द्रोह करके शत्रुओं के साथ जा मिलनेवाला व्यक्ति। (व्यंग्य) ३. नरसल। ४. एक तरह का मुहूर्त।

विभीषिका—स्त्री०[सं० विभीषा+कन्+टाप्, इत्व] १. भय-प्रदर्शन। डर दिखाना। २. वह साधन जिससे किसी को भयभीत किया जाय। ३. भय का वह उग्र रूप जिसके उपस्थित होने पर मनुष्य किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाता है। त्रास। (ड्रेड)

विभु—वि०[सं० वि√भू (होना)+डु] [भाव० विभुता] १. जो सर्वत्र वर्तमान हो। सर्वव्यापक। जैसे—दिक्, काल, आत्मा आदि। २. जो सब जगह जा या पहुँच सकता हो। ३. बहुत बड़ा। महान्। ४. सदा बना रहनेवाला। नित्य। ५. अपने स्थान से न हटनेवाला। अचल। अटल। ६. ऐश्वर्यशाली। ७. शक्तिशाली। सशक्त।

पुं० १. ब्रह्म। २. जीवात्मा। ३. ईश्वर। ४. शिव। ५. विष्णु। ६. प्रभु। स्वामी। ७. नौकर। सेवक।

विभुता—स्त्री०[सं० विभु+तल्+टाप्] १. विभु होने की अवस्था या भाव। सर्वव्यापकता। २. ऐश्वर्य। वैभव। ३. प्रभुत्व। ४. शक्ति।

विभूति—स्त्री०[सं० वि√भू (होना)+क्तिन्] १. बहुत अधिक होने की अवस्था या भाव। बहुतायत। विपुलता। २. बढ़ती। वृद्धि। ३. धन-धान्य आदि की यथेष्टता। ऐश्वर्य। विभव। ४. धन-संपत्ति। दौलत। ५. भगवान् विष्णु का वह ऐश्वर्य जो नित्य और स्थायी माना जाता है। ६. अणिमा, महिमा आदि अलौकिक या दिव्य शक्तियाँ। ७. चिता की वह राख या भस्म जो शिव जी अपने शरीर पर पोतते थे। ८. यज्ञ, होम आदि के बाद बची हुई राख जो शैव लोग माथे पर या शरीर में लगाते हैं। ९. लक्ष्मी। १०. एक दिव्यास्त्र जो विश्वामित्र ने राम को दिया था। ११. सृष्टि। १२. प्रभुत्व।

विभूमा (मन)—वि० [सं० वि√भू (होना)+मनिन्; विजहु+इमनिच्, बहु—भू वा] ऐश्वर्य्यवान्। शक्तिशाली।

पुं० श्रीकृष्ण।

विभूषण—पुं०[सं० वि√भूष् (भूषित करना)+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० विभूष्य, भू० कृ० विभूषित] १. आभूषणों अर्थात् गहनों से सजाना। २. आभूषण, गहना अथवा अलंकरण का कोई और उपकरण। ३. सौन्दर्य। ४. मंजुश्री का एक नाम। (बौद्ध)

विभूषना—सं० [स० विभूषण] १. विभूषित करना। २. गहनों आदि से सजाना। ३. सजाना-सँवारना। ४. शोभा से युक्त करना।

विभूषा—स्त्री० [सं० विभूषण—टाप्] १. आभूषणों, गहनों अथवा सजावट के उपकरणों से युक्त होने की अवस्था। २. उक्त अवस्था से प्रस्फुटित होनेवाली शोभा।

विभूषित—भू० कृ०[सं० वि√भूष् (भूषित करना)+क्त] १. आभूषणों से सजा या सजाया हुआ। अलंकृत। २. अच्छी बातों या गुणों से युक्त। ३. शोभित।

विभूष्य—वि०[सं० वि√भूष् (भूषित करना)+यत्] विभूषित किये जाने के योग्य। सजाये जाने के योग्य।

विभेद—पुं० [सं० वि√भिद् (काटना)+अच्, घञ्-वा] १. वह तत्त्व जो दो वस्तुओं में होनेवाली असमता का द्योतक हो। २. अनेक भेद और प्रभेद। ३. कटा हुआ अंश, छेद या दरार। ४. खंड। विभाग। ५. एक से विकसित होकर अनेक रूप बनना। ६. मिश्रण। मिलावट।

७. दे॰ 'विभेदन'। ८. विशेष रूप से किया हुआ अलगाव या भेद। (डिस्क्रिमिनेशन)

विभेदक—वि॰[सं॰ वि√भिद्+ण्वुल-अक] १. भेदन करनेवाला। काटने या छेदनेवाला। २. विभेद उत्पन्न करनेवाला। ३. भेदने या छेदनेवाला। ४. घुसने या धँसनेवाला। ५. अन्तर या भेद दिखलाने या बतलानेवाला। ६. आपस में मतभेद करानेवाला।

पुं॰ विभीतक। बहेड़ा।

विभेदकारी (रिन्)—वि॰[सं॰विभेद√कृ(करना)+णिनि]=विभेदक।

विभेदन—पुं॰[सं॰ वि√भिद्+ल्युट् अन] [वि॰ विभेदनीय, विभेद्य, भू॰ कृ॰ विभेदित] १. बीच में से छेदना या भेदना। २. काटना या तोड़ना। ३. खंड या टुकड़े करना। ४. अलग या पृथक् करना। ५. अन्तर या भेद उत्पन्न करना, मानना या समझना। ६. आपस में मन-मुटाव पैदा करके फूट डालना।

विभेदना—स॰[सं॰ विभेदन] १. भेदन करना। छेदना। काटना। २. विभेद या भेद उत्पन्न करना। ३. छेदते हुए अन्दर घुसना या धँसना। ४. अन्तर उत्पन्न करना। फरक डालना।

विभेदी (दिन्)—वि॰[सं॰]=विभेदक।

विभेद्य—वि॰ [सं॰ वि√भिद् (काटना)+यत्] १. विभेदन के लिए उपयुक्त। जिसका विभेदन हो सके। २. जिसमें भेद या अन्तर निकाला जा सके।

विभोर—वि॰ [सं॰ विह्वल] १. विकल। विह्वल। २. मग्न। लीन। ३. मत्त। मस्त।

विभौं†—पुं॰=विभव।

विभ्रंश—पुं॰[सं॰ 'वि√भ्रंश् (नाश करना)+अच्] १. विनाश। ध्वंस। २. अवनति। ३. पतन। ४. पहाड़ के ऊपर का चौरस मैदान। ५. ऊंचा कगार।

विभ्रंशन—पुं॰[सं॰] [वि॰ विभ्रंशी, भू॰ कृ॰ विभ्रंशित] विभ्रंश करने की क्रिया या भाव।

विभ्रम—पुं॰[सं॰ वि√भ्रम् (चलना)+घञ्) १. चारों ओर घूमना। चक्कर लगाना। भ्रमण। २. किसी काम या बात में होनेवाला भ्रम। भ्रांति। किसी काम या बात में होनेवाला शक या संदेह। ४. पारस्परिक व्यवहार में किसी काम या बात का अर्थ, आशय या उद्देश्य समझने में होनेवाली भूल। और का और समझना। गलत-फहमी। (मिसअन्डरस्टैंडिग) ५. मनोविज्ञान में, किसी विशिष्ट मानसिक विचार के कारण किसी ज्ञानेन्द्रिय के द्वारा होनेवाला ऐसा भ्रम जो प्रायः निराधार होता है। निर्मूल भ्रम। (हैल्यूसिनेशन) जैसे—अँधेरे में कोई आकृति या भूत-प्रेत दिखाई देना। ६. साहित्य में, संयोग शृंगार के प्रसंग में स्त्रियों का एक हाव जिसमें वे प्रियतम का आगमन सुनकर अथवा उससे मिलने के लिए जाने के समय उतावली और उत्सुकता के कारण कुछ उलटे-पुलटे गहने-कपड़े पहन लेती हैं। ७. घबराहट। विकलता। ८. शोभा।

विभ्रमी (मिन्)—वि॰ [सं॰ वि√भ्रम (घूमना)+णिनि, दीर्घ, नलोप] चारों ओर घूमने या चक्कर खानेवाला।

विभ्रांत—भू॰ कृ॰[सं॰] [भाव॰ विभ्रांति] १. जो घूम या चक्कर खा चुका हो। २. चारों ओर फैला या बिखरा हुआ। ३. भ्रम में पड़ा हुआ। ४. घबराया हुआ। ५. अस्थिर। चंचल।

विभ्रांति—स्त्री॰[सं॰वि√भ्रम् (चक्कर कटाना)+क्तिन्] १. फेरा। चक्कर। २. भ्रम। भ्रांति। ३. घबराहट।

विभ्राट्—पुं॰[सं॰] १. आपत्ति। विपत्ति। संकट। २. उत्पात। उपद्रव। वि॰ दीप्त। चमकीला।

विमंडन—पुं॰ [सं॰ तृ॰ त॰, वि√मण्ड् (सजाना)+ल्युट्–अन] [भू॰ कृ॰ विमंडित] १. गहनों आदि से सजाना। २. सजाना।

पुं॰ अलंकार। गहना।

विमंडित—भू॰ कृ॰ [सं॰ वि√मण्ड्+क्त, तृ॰ त॰] १. अलंकृत। सजा हुआ। २. सुशोभित। ३. किसी से युक्त। मिला हुआ।

विमत—वि॰[मध्य॰ स॰] [भाव॰ विमति, वैमत्य] १. जिसका मत या विचार अच्छा न हो। २. जो अच्छी राय न देता हो।

पुं॰ १. ऐसा मत या विचार जो किसी के विरुद्ध पड़ा या दिया गया हो। विमति। (डिस्सेन्ट) २. ऐसी राय जो अनुकूल न हो।

विमति—वि॰[सं॰ मध्यम॰ स॰] जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो। मूर्ख।

स्त्री १. विमत होने की अवस्था या भाव। विरुद्ध मत या विचार। २. खराब या बुरी मति (बुद्धि या विचार) ३. किसी के विपरीत या विरुद्ध मति या विचार। ४. असहमति।

विमत्सर—पुं॰[सं॰ मध्यम॰ स॰] बहुत अधिक मत्सर या अहंकार। वि॰ मत्सर से रहित।

विमद—वि॰[सं॰ ब॰ स॰] १. मद से रहित। २. (हाथी) जिसे मद न बहता हो।

विमध्य—वि॰[वि√मन् (जानना)+पक्, न–ध] [भाव॰ विमध्यता] १. जिसका अक्ष अपने केन्द्र या ठीक मध्य में न हो। केंद्र या मध्य से कुछ इधर-उधर हटा हुआ। उत्केंद्र। २. (वृत्त) जिसका मध्य दूसरे वृत्त के मध्य या केन्द्र से भिन्न हो। ३. जो आकृति, गति आदि में ठीक गोलाकार न हो और इसी लिए वृत्त के हर विंदु से जिसमें एक ही मध्य न पड़ता हो। उत्केंद्र। (एक्सेन्ट्रिक)

विमध्यता—स्त्री॰[सं॰विमध्य+तल्+टाप्] विमध्य होने की अवस्था या भाव। उत्केंद्रता। (एकसेन्ट्रिसीटी)

विमन—वि॰[सं॰ ब॰ स॰ विमनस्]=विमनस्क।

विमनस्क—वि॰[सं॰ ब॰ स॰, कप्] १. अनमना। अन्यमनस्क। २. उदास। खिन्न।

विमर्द—पुं॰[वि√मदू (रगड़ना)+घञ्] १. रगड़ना। २. रौंदना। ३. संघर्ष। ४. नाश। ५. बाधा। संपर्क। ७. खग्रास (ग्रहण)।

विमर्दक—वि॰[सं॰ विमर्द+कन्] विमर्दन करनेवाला।

विमर्दन—पुं॰[सं॰वि√मृद् (मर्दन करना)+ल्युट्–अन,] [वि॰ विमर्दनीय, भू॰ कृ॰ विमर्दित] १. खूब मर्दन करना। अच्छी तरह मलना-दलना। २. खूब रगड़ना या रौंदना। ३. कुचलना या पीसना। ४. नष्ट करना। ५. मार डालना। ६. बहुत अधिक कष्ट देना या पीड़ित करना। ७. अंकुरित या प्रस्फुटित होना। (सांख्य)

विमर्दित—भू॰ कृ॰[सं॰ वि√मृद् (रगड़ना)+क्त, तृ॰ त॰] १. मला-दला हुआ। २. कुचला या रौंदा हुआ। ३. नष्ट किया हुआ। ४. पीड़ित। ५. अपमानित।

विमर्दी—वि॰[सं॰ विमर्द+इनि, विमर्दिन्] [स्त्री॰ विमर्दिनी] विमर्दन करनेवाला। विमर्दक।

विमर्श—पुं० [वि√मृश् (स्पर्शनादि)+घञ्] १. सोच-विचार कर तथ्य या वास्तविकता का पता लगाना। २. किसी बात या विषय पर कुछ सोचना-समझना। विचार करना। ३. गुण-दोष आदि की आलोचना या मीमांसा करना। (डेलिबरेशन) ४. जाँचना और परखना। ५. किसी से परामर्श या सलाह करना। ६. ज्ञान। ७. नाटक में पाँच संधियों में से एक संधि।

दे० 'विमर्श-संधि'।

विमर्शक—वि० [सं०] विमर्श करनेवाला।

विमर्शन—पुं० [सं० वि√मृश् (तर्क-विवेचन करना)+ल्युट्—अन्] [वि० विमृष्ट, विमर्शी, भू० कृ० विमर्शित] विमर्श करने की क्रिया या भाव।

विमर्श-संधि—स्त्री० [सं०] नाटक की पाँच संधियों में से एक जो ऐसे अवसर पर मानी जाती है जहाँ क्रोध, लोभ, व्यसन् आदि के विमर्श या विचार से फल-प्राप्ति का प्रयत्न किया जाता हो और गर्भ संधि (देखें) के द्वारा यह उद्देश्य बीज रूप में प्रकट भी हो जाता हो। अवमर्श-संधि।

विशेष—प्रसाद के चंद्रगुप्त नाटक में यह उस समय आती है, जब चाणक्य की नीति से असंतुष्ट होकर चन्द्रगुप्त के माता-पिता चले जाते हैं, और चंद्रगुप्त अकेला पड़कर अपना असंतोष और क्रोध प्रकट करता है और विमर्शपूर्वक साम्राज्य स्थापित करने के लोभ से प्रयत्न आरंभ करता है।

विमर्शी (र्शिन्)—वि० [सं० वि√मृश् (विचार करना)+घञ्, विमर्श+इन्] विमर्श अर्थात् विचार या समीक्षा करनेवाला।

विमर्ष—पुं० [सं० वि√मृष् (सहन करना)+घञ्] =विमर्श।

विमल—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० विमला, भाव० विमलता] १. जिसमें किसी प्रकार का मल न हो। मलरहित। निर्मल। २. साफ तथा पारदर्शक। जैसे—विमल जल। ३. दूषण, दोष आदि से रहित। जैसे—विमल चरित्र। ४. दर्शनीय। सुन्दर। ५. सफेद तथा चमकता हुआ।

पुं० १. चाँदी। २. एक प्रकार की उप-धातु। ३. पद्म-काठ। ४. सेंधा नमक। ५. गत उत्सर्पिणी के ५वें और वर्तमान अवसर्पिणी के १३वें अर्हत् या तीर्थंकर। (जैन)

विमलक—पुं० [सं० विमल+कन्] एक प्रकार का नग या बहुमूल्य पत्थर।

विमलता—स्त्री० [सं० विमल+तल्+टाप्] विमल होने की अवस्था, गुण या भाव।

विमलध्वनि—पुं० [सं० ब० स०] छः चरणों का एक प्रकार का छन्द जो एक दोहे और समान सवैया से मिलकर बनता है।

विमला—स्त्री० [सं० ष० त०] १. योग में, सिद्धि की दस भूमियों या स्तरों में से एक। २. एक देवी जो वास्तुदेव की नायिका कही गई है। ३. सरस्वती। ४. सातला (वृक्ष)।

विमलात्मा (त्मन्)—वि० [सं० ब० स०] जिसका हृदय निर्मल तथा शुद्ध हो।

पुं० चन्द्रमा।

विमलाद्रि—पुं० [सं० मध्यम० स०] गुजरात का गिरनार पर्वत।

विमलाशोक—पुं० [सं० ब० स०] संन्यासियों का एक भेद।

विमली—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

विमांस—पुं० [सं० मध्यम० स०] ऐसा मांस जो खराब हो तथा भक्ष्य न हो।

विमा—स्त्री० [सं०] [वि० विमीय] किसी दिशा में काया का होने वाला विस्तार जो नापा जा सकता हो। आयाम। (डाइमेंशन)

विशेष—विमाएँ तीन प्रकार की होती हैं लंबाई, चौड़ाई, और ऊँचाई, (जिसके अंतर्गत मोटाई या गहराई भी आ जाती है)।

पद—द्विविम, त्रिविम। (दे०)

विमाता (तृ)—स्त्री० [सं० मध्यम० स०] सौतेली माँ।

विमातृज—वि [सं० विमातृ√जन् (उत्पन्न करना)+ड] विमाता से उत्पन्न। सौतेला।

विमान—वि० [ब० स०] जिसका कोई मान न हो। मान से रहित।

पुं० १. पुराणानुसार देवताओं का वह यान या रथ जो आकाश-मार्ग से चलता था। २. आज-कल आकाश-मार्ग से उड़नेवाला यान या सवारी। वायुयान। हवाई जहाज। ३. महात्मा, वृद्ध आदि के शव की ऐसी अरथी जो फूल-मालाओं आदि से खूब सजाई गई हो। ४. रासलीला आदि के जलूस में वह चौकी जिस पर देवताओं की मूर्तियाँ रखकर आदमी लोग कंधे पर उठाकर चलते हैं। ५. रथ। ६. घोड़ा। ७. सात खंडोंवाला मकान। ८. परिमाण। ९. वास्तुकला में, ऐसा देवमंदिर जिसका ऊपरी भाग बहुत ऊँचा और गावदुमा या लंबोतरा हो।

विमान-चालक—पुं० [ष० त०] वह जो हवाई जहाज या वायु-यान चलाता है।

विमान-चालन—पुं० [ष० त०] हवाई जहाज चलाने की विद्या या क्रिया (एविएशन)

विमानन—पुं० [सं०] विमान अर्थात् हवाई जहाज चलाने की कला, क्रिया या विद्या। (एयर नैविगेशन)

विमान-पत्तन—पुं० [सं०] हवाई अड्डा। (एयर-पोर्ट)

विमान-वाहक—पुं० [सं० विमान+वाहक] एक प्रकार का समुद्री जहाज जिसके ऊपर बहुत लंबी-चौड़ी छत होती है और जिस पर बहुत से हवाई जहाज रहते हैं।

विमानित—भू० कृ० [सं० वि√मान् (मान करना)+क्त, विमान+इतच् वा] जिसका अपमान हुआ हो।

विमार्ग—पुं० [कर्म० स०] १. बुरा रास्ता। कुमार्ग। २. बुरा आचरण। ३. झाड़ू। बुहारी।

विमार्गा—स्त्री० [सं०] दुश्चरित्रा स्त्री।

विमार्जन—पुं० [सं० वि√मृज् (शुद्ध करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विमार्जित] १. धोना। २. साफ करना। ३. पवित्र करना।

विमासना†—अ० [सं० विमर्श] राय या विचार करना। विमर्श करना।

विमित—वि० [सं०] परिमित। सीमित।

पुं० १. भवन। २. विशेषतः ऐसा भवन जो चार खंभों पर आश्रित हो। ३. बड़ा कमरा।

विमिश्र—वि० [सं० तृ० त०] १. जिसमें कई तरह की चीज़ों का मेल हो। मिला-जुला। २. जो विशुद्ध हो।

विमिश्रा—स्त्री० [सं० विमिश्र+टाप्] मृगशिरा, आर्द्रा, मघा और अश्लेषा नक्षत्रों में बुध की होनेवाली गति जिसका मान ३० दिनों तक रहता है।

विमिश्रित—भू० कृ० [सं०] जिसमें कई तरह की चीजें मिली हों या मिलाई गई हों।

विमीय—वि० [सं०] विमा-संबंधी। विमा का। (डाइमेंशनल)

विमुक्त--भू० कृ०[सं० तृ० त०] [भाव० विमुक्तता, विमुक्ति] १. कैद, पाश, बंधन आदि से जो छूट चुका हो या छोड़ दिया गया हो। स्वतंत्र हुआ या किया हुआ। २.दंड आदि से छूटा हुआ। ३. चलाया या छोड़ा हुआ। जैसे--विमुक्त वाण। ४. स्वच्छंदतापूर्वक विचरण करनेवाला। ५. बरखास्त। कार्य-भार से मुक्त किया हुआ।

विमुक्ति--स्त्री०[सं०] १. विमुक्त होने की अवस्था, क्रिया या भाव। कष्ट, संकट आदि से होनेवाला छुटकारा। ३. कार्य-भार, नियम, बंधन आदि से मिलनेवाला छुटकारा। (एग्जेम्प्शन) ४. विछोह। ५. मोक्ष।

विमुख--वि०[ब० स०] [स्त्री० विमुखी, भाव० विमुखता] १. जिसने किसी ओर से मुँह फेर या मोड़ लिया हो। २. फलतः जो किसी से उदासीन या विरक्त हो चुका हो। ३. प्रतिकूल। विरुद्ध। ४. जो फल-प्राप्ति से वंचित रहा हो।

विमुखता--स्त्री०[सं० विमुख+तल्+टाप्] विमुख होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

विमुग्ध--वि०[सं० वि√मुह् (मुग्ध करना)+क्त] [भाव० विमुग्धता] १. मोहित। आसक्त। २. भ्रम में पड़ा हुआ। भ्रान्त। ३. घबराया और डरा हुआ। विकल। ४. उन्मत्त। मतवाला। ५. पागल। बावला। ६. अचेत। बेसुध।

विमुग्धक--वि०[सं० विमुग्ध+कन्] विमुग्ध करनेवाला।

पुं० साहित्य में, एक प्रकार का छोटा अभिनय।

विमुद्र--वि०[सं० ब० स०] १. जिस पर मोहर या छाप न लगी हो। २. जिसका मुँह बन्द न हो। खिला या खुला हुआ।

विमुद्रण--पुं०[सं० वि+मुद्रा+युच्-अन, तृ० त०] [भू० कृ० विमुद्रित] १. मुद्रा या छाप तोड़ना या हटाना। २. खिलने में प्रवृत्त करना।

विमूढ़--वि०[सं०] [स्त्री० विमूढ़ा, भाव० विमूढ़ता] १. विशेष रूप से मुग्ध। अत्यन्त मोहित। २. भ्रम या मोह में पड़ा हुआ। ३. अचेत। बेसुध। ४. बहुत बड़ा। मूढ़ या नासमझ।

पुं० १. एक देवयोनि। २. एक प्रकार की संगीत-कला।

विमूढ़क--पुं० [स० विमूढ़+कन्] साहित्य में एक प्रकार का प्रहसन।

विमूढ़ गर्भ--पुं०[सं० ब० स०] ऐसा गर्भ जिसमें बच्चा मर गया हो या मर जाता हो।

विमूर्च्छ--वि०[सं०] जिसकी मूर्च्छा दूर हो गई हो।

विमूर्च्छित--वि० [सं०]=मूर्च्छित (बेहोश)।

विमूल--वि०[सं० ब० स०] १. मूल से रहित। बिना जड़ का। २. मूल से उखाड़ा या हटाया हुआ। ३. ध्वस्त या नष्ट किया हुआ। बरबाद।

विमूलन--पुं०[सं० वि√मूल् (स्थित करना)+ल्युट्-अन] १. जड़ से उखाड़ना। उन्मूलन। २. ध्वंस। विनाश।

विमृश--पुं०[सं०] विमर्श।

विमृश्य--वि०[सं० वि√मृश्(विचार करना)+यत्] जिसके विषय में विमर्श अर्थात् आलोचना या विवेचन हो सके या होने को हो। विमर्श के योग्य।

विमृष्ट--भू० कृ०[सं० वि√मृश् (विचार करना)+क्त] १. जिसके संबंध में विमर्श अर्थात् आलोचना या विवेचन हो चुका हो। २. अच्छी तरह विचारा हुआ।

विमोक--वि०[सं० ब० स०] १. दुर्वासना, द्वेष, राग आदि से युक्त या रहित। २. जिसके ऊपर कोई आवरण न हो। ३. स्पष्ट। साफ।

पुं० छुटकारा। मुक्ति।

विमोक्ता(क्तृ)--वि० [सं० वि√मुच् (छोड़ना)+तृच्] विमुक्त करने या छुड़ानेवाला।

विमोक्ष--पुं०[सं० वि√मोक्ष् (छोड़ना)+अच्] १. छुटकारा। २. जन्म-मरण के बन्धन से होनेवाला छुटकारा। मुक्ति। ३. पकड़ी हुई चीज इधर-उधर छोड़ना या फेंकना। ४. चन्द्रमा या सूर्य के ग्रहण का अन्त। उग्रह। ५. मेरु पर्वत। ६ दे० 'मोक्ष'।

विमोक्षण--पुं०[सं० वि√मोक्ष् (छोड़ना)+ल्युट्-अन [भू० कृ० विमोक्षित] १. बंधन आदि खोलना। मुक्त करना। २. हथियार आदि चलाना या छोड़ना।

विमोक्षी (क्षिन्)--वि०[सं० वि√मोक्ष् (छोड़ना)+णिनि] जिसे मुक्ति या निर्वाण प्राप्त हुआ हो।

विमोघ--वि० [सं० ब० स०] १. अमोघ (अचूक)। २. व्यर्थ। बेकार।

विमोचक--वि० [सं० वि०√मुच् (छोड़ना)+ण्वुल्-अक] मुक्त करने या करानेवाला।

विमोचन--पुं०[सं० वि√मुच् (मोड़ना)+ल्युट्-अन] [वि० विमोचनीय, विमोच्य; भू० कृ० विमोचित] १. बंधन आदि खोलकर मुक्त करना, छुड़ाना या छोड़ना। २. सवारी में से खींचनेवाले जानवर को खोलना। जैसे--गाड़ी या रथ में से घोड़ों या बैलों का विमोचन। ३. किसी प्रकार के नियंत्रण, सीमा आदि से अलग या बाहर करना। जैसे-रथ से अश्व-विमोचन। (ख) धनुष से वाण का विमोचन। ४. गिराना या फेंकना।

विमोचना†--स०[सं० विमोचन] १. विमोचन अर्थात् मुक्त करना या कराना। २. किसी पर से रोक उठा या हटा लेना जिससे वह स्वच्छंद गति प्राप्त कर सके। ३. गिराना। ४. निकालना।

विमोच्य--वि०[सं० वि√मुच् (छोड़ना)+यत्] जिसका विमोचन हो सकता हो या होने को हो। मुक्त होने के योग्य।

विमोह--पुं०[सं० वि√मुह् (मुग्ध करना)+घञ्] १. अज्ञान, भ्रम आदि के कारण उत्पन्न होनेवाला मोह। २. अचेत होने की अवस्था या भाव। बेहोशी। ३. बुद्धिभ्रंश। ४. एक नरक।

विमोहक--वि०[सं० विमोह+कन्] १. मोहित करनेवाला। लुभावना। २ मन में लोभ उत्पन्न करने या ललचानेवाला। ३ सुध-बुध भुलानेवाला।

पुं० संगीत में, एक राग जो हिंडोल राग का पुत्र माना जाता है।

विमोहन--पुं० [सं० वि√मुह् (मुग्ध करना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० विमोहित, वि० विमोही] १. मुग्ध या मोहित करना। लुभाना। २. किसी का मन अपने वश में करना। ३ सुध-बुध भूलना। ४ कामदेव के पाँच वाणों में से एक। ५. एक नरक का नाम।

विमोहना†--अ०[सं० विमोहन] १. मोहित होना। २. अचेत या बेसुध होना। ३. भ्रम में पड़ना।

स० १. मोहित करना। २. बेहोश करना। ३. भ्रम में डालना।

विमोहा--स्त्री०[हिं०] विज्जोहा नामक छन्द का दूसरा नाम।

विमोहित--भू० कृ०[सं० वि√मुह् (मुग्ध करना)+क्त] १. जो किसी

पर मोहित या आसक्त हो। २. जो सुध-बुध खो चुका हो। बेसुध। बेहोश। ३. भ्रम या धोखे में पड़ा हुआ।

विमोही(हिन्)—वि०[सं०] [स्त्री० विमोहिनी] १. जिसमें किसी के प्रति मोह न हो। २. मोहित करनेवाला। मोह लेनेवाला। ३ धोखे या भ्रम में डालनेवाला।

विमौट—पुं०=बिमौट (बाँबी)।

वियंग—वि०[सं० अव्यंग] जो टेढ़ा-मेढ़ा न हो। सीधा।

*पुं०[?] शिव।

विया†—वि०[सं० द्वि०, द्वितीय, प्रा० विय] १. दो। युग्म। २. दूसरा।

वियत्—पुं०[सं० वि√यम्+क्विप्, तुक्, म-लोप] १. आकाश। २. वायु-मंडल।

वि० १. गमनशील। २. गतिशील।

वियत्-पताका—स्त्री०[सं० वियत्+पताका] विद्युत्। बिजली।

वियद्गंगा—स्त्री०[सं० ष० त०] आकाशगंगा।

वियम—पुं०[वि√यम्+अप्]=वियाम।

वियाम—पुं०[सं० वि√यम् (संयम करना)+घञ्] १. इन्द्रिय-निग्रह। संयम। २. विराम। ३. कष्ट। ४. रोक।

वियुक्त—वि० [वि०√युज् (संयुक्त होना)+क्त] [भाव० वियुक्ति] १. जो युक्त या संयुक्त न हो। २. जो किसी से अलग, जुदा या पृथक् हो चुका हो। ३. जिसे औरों ने छोड़ दिया हो। परित्यक्त। ४. वियोगी। ५. वंचित, रहित या हीन।

वियुग्म—वि०[सं०] १. जो युग्म अर्थात् जोड़ा न हो। अकेला। २. (गणित में वह राशि) जिसे दो से भाग देने पर एक निकलता या बचता हो। (ऑड) ३. जिसमें कुछ अस्वाभाविकता हो।

वियुत—वि० [सं० वि√यु (मिलना, न मिलना)+क्त] १. वियुक्त। अलग। २ जो किसी से अलग हुआ हो। वियुक्त। ३. रहित। हीन।

वियो—वि०=विय (दूसरा)।

वियोग—पुं०[वि√युज् (संयोग होना)+घञ्, मध्यम० स०] १. योग न होने की अवस्था या भाव। पार्थक्य। २. ऐसी अवस्था जिसमें दो जीव विशेषतः प्रेमी एक दूसरे से दूर हों और इस प्रकार उनमें मिलन न होता हो। ३. उक्त अवस्था के फलस्वरूप प्रेमियों को होनेवाला कष्ट। ४. किसी का सदा के लिए बिछुड़ना। मरने के कारण होनेवाला अलगाव। ५. उक्त के फलस्वरूप होनेवाला शोक।

वियोग-शृंगार—पुं०[सं०] साहित्य में, शृंगार रस का वह अंग या विभाग जिसमें विरही की दशा का वर्णन होता है। विप्रलंभ। ४. 'संयोग शृंगार' का विपर्याय।

वियोगांत—वि०[सं० ब० स०] (कथा-कहानी या नाटक) जिसके अंतिम दृश्य में प्रेमी, मित्र आदि के वियोग का वर्णन हो।

वियोगिन—स्त्री०=वियोगिनी।

वियोगिनी—वि० [वियोगिन्+ङीप्] जो नायक, पति या प्रिय के परदेश चले जाने पर उसके विरह में दुःखी हो।

स्त्री० विरहिनी नायिका।

वियोगी(गिन्)—वि० [सं० वियोगिन्] [स्त्री० वियोगिनी] १. जिसका किसी से वियोग हुआ हो। २. विरही।

पुं० १. नायक जो नायिका से वियुक्त होने पर दुःखी हो। २. चकवा पक्षी। चक्रवाक।

वियोजक—वि०[सं० वि√युज् (मिलना)+णिच्+ण्वुल्—अक][स्त्री० वियोजिका] वियोजन करनेवाला। पृथक् करनेवाला।

पुं० गणित में, वह छोटी संख्या जो किसी बड़ी संख्या में से घटाई गई हो।

वियोजन—पुं०[सं० वि√युज् (मिलना)+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० वियोजित, वियुक्त] १. वियोग होना। योग का अभाव। २. जुदाई। वियोग। ३. गणित में एक संख्या (या राशि) में, से दूसरी संख्या (या राशि) घटाने की क्रिया।

वियोजित—भू० कृ०[सं० वि√युज् (मिलना)+णिच्+क्त] १. जिसका किसी से वियोग हुआ हो। २. जिसे बलात् किसी से अलग या जुदा कर दिया गया हो। ३. वंचित।

वियोज्य—वि०[सं० वि√युज् (मिलना)+यत्] १. जिसका वियोजन हो सके या होने को हो। २. (गणित में संख्या) जिसमें से कोई छोटी संख्या घटाई जाने को हो।

विरंग—वि० [सं० ब० स०] १. रंगहीन। २. अनेक रंगोंवाला। रंग-विरंगा। ३. बदरंग।

विरंच(चिं)—पुं० [सं० वि√रञ्च् (रचना करना)+अच्] ब्रह्मा।

विरंचि-सुत—पुं०[सं० ष० त० विरंचि+सुत] नारद।

विरंजन—पुं०[सं०] [भू० कृ० विरंजित] १. रंजन से रहित करना। २. ऐसी प्रक्रिया जिससे किसी वस्तु में के सब रंग हट या निकल जायँ। ३. धोकर साफ करना। प्रक्षालन।

विरक्त—वि०[सं०] [भाव० विरक्ति, विरक्तता] १. गहरा लाल। रक्त वर्ण। खूनी। २. जिसके रंग में कुछ परिवर्तन आ चुका हो। ३. जिसकी किसी पर आसक्ति न रह गई हो। 'अनुरक्त' का विपर्याय। ४. सांसारिक प्रपंचों, बंधनों आदि से परे रहनेवाला। ५. भोग-विलास आदि से बहुत दूर रहनेवाला। ६. खिन्न।

विरक्तता—स्त्री०[सं० विरक्त+तल्+टाप्]=विरक्ति।

विरक्ति—स्त्री०[सं० वि√रञ्ज् (राग करना)+क्तिन्] १. विरक्त होने की अवस्था या भाव। २. मन में अनुराग या चाह न रहने की अवस्था या भाव। ३. सांसारिक बातों की ओर से मन हटाना। वैराग्य। ४. भोग-विलास आदि के प्रति होनेवाली अरुचि या उदासीनता। ५. अप्रसन्नता। खिन्नता।

विरचन—पुं०[सं० वि√रच् (बनाना)+ल्युट्—अन] [वि० विरचनीय, भू० कृ० विरचित] १. रचना करना। निर्माण। बनाना। २. तैयारी।

विरचना—स०[सं० विरचन] १. निर्माण करना। बनाना। रचना। २. अलंकृत करना। सजाना।

†अ०=विरक्त होना।

विरचित—भू० कृ०[सं० वि√रच् (बनाना)+क्त] १. रचा या बनाया हुआ। निर्मित। रचित। २. (ग्रन्थों आदि के संबंध में) लिखित।

विरज—वि०[ब० स०] १. धूल, गर्द आदि से रहित। २. जो रजोगुण प्रधान न हो। ३. जिसमें रजोगुणी प्रवृत्ति न हो। ४. स्वच्छ। निर्मल। ५. (स्त्री) जिसका रजोधर्म रुक गया या समाप्त हो चुका हो।

पुं० १. विष्णु। २. शिव।

विरजन—वि०[सं०] रंग-परिवर्तन करनेवाला।

विरजा—स्त्री०[सं०] १. श्रीकृष्ण की एक सखी। २. नहुष की स्त्री।

विरजाक्ष—पुं०[सं० ब० स०] एक पर्वत जो मेरु के उत्तर में कहा गया है।

विरजा-क्षेत्र—पुं०[सं० ष० त०] उड़ीसा का एक तीर्थ-स्थान जो जाजपुर के पास है।

विरत—वि०[सं० वि√रम् (रमण करना)+क्त, म-लोप] [भाव० विरति] १. जो रत अर्थात् अनुरक्त या प्रवृत्त न रह गया हो। जिसका मन किसी ओर से हट गया हो। २. जिसने किसी से अपना संबंध तोड़ लिया हो। जो अलग हो गया हो। जैसे—किसी काम से विरत होना। ३. जिसने सांसारिक विषयों से अपना मन हटा लिया हो। विरक्त। वैरागी। ४. जो विशेष रूप से किसी ओर रत हुआ हो।

विरति—स्त्री०[सं० मध्यम० स०, ब० स० वा] १. विरत होने की अवस्था या भाव। उदासीनता या विरक्ति। २. वैराग्य।

विरथ—वि०[सं० ब० स०] १. जिसके पास रथ न हो अथवा जो रथ पर आरूढ़ न हो। २. रथ से गिरा या हटा हुआ। ३. पैदल।
पुं० पैदल सिपाही।

विरद—पुं०[सं० विरुद] १. बड़ा और सुन्दर नाम। २. ख्याति। प्रसिद्धि। ३. कीर्ति। यश।
वि० जिसे रद अर्थात् दाँत न हों। दन्तहीन।

विरदावली†—स्त्री०=विरुदावली।

विरदैत—वि०[हिं० विरद+ऐत (प्रत्य०)] १. बड़े विरदवाला। २. कीर्ति या यशवाला। ३. किसी का विरद बखाननेवाला।
पुं० चारण।

विरम—पुं०=विराम। उदा०—जागरणोपम यह सुप्ति-विरम भ्रम भर। —निराला।

विरमण—पुं०[सं० वि√रम् (क्रीड़ा)+ल्युट्—अन] १. विराम करना। ठहरना। थमना। रुकना। २. रमण करना। रमना। ३. भोग-विलास। ४. रमण से मन हटा कर अलग होना। परित्याग।

विरमना†—अ०[सं० विरमण] १. रम जाना। मन लगाना। अनुरक्त हो जाना। किसी से या कहीं से मन लगाना। २. मन का रमने लगना। ३. ठहरना। रुकना। ४. गति, वेग आदि का कम होना या रुकना।
†अ०=विलंबना।

विरमाना†—स० [हिं० विरमना का स० रूप] १. किसी को विरमने में प्रवृत्त करना। बिलमाना। २. धोखे या भ्रम में डालना।

विरल—वि०[सं० वि√रा (लेना)+कलन्] [भाव० विरलता] १. जिसके अंग या अंश बहुत पास-पास न हों। जो घना न हो। जिसके बीच-बीच में अवकाश हो। 'सघन' का विपर्याय। जैसे—विरल बुनावटवाला कपड़ा। २. जो बहुत कम मिलता हो। दुर्लभ। ३. जो गाढ़ा न हो। पतला। ४. निर्जन। एकान्त। ५. खाली। शून्य। ६. अल्प। थोड़ा।

विरला—वि०[सं० विरल] १. विरल। २. जो केवल कहीं-कहीं या बहुत कम मिलता अथवा होता हो।

विरलीकरण—पुं० [सं० विरल+च्वि√कृ (करना)+ल्युट्—अन] सघन को विरल करने की क्रिया।

विरव—पुं० [सं० मध्यम० स०] अनेक या विविध प्रकार के शब्द।
वि० १. जिसमें शब्द न हो। २. जो शब्द न करता हो। निःशब्द। नीरव।

विरस—वि०[मध्म० स०] [भाव० विरसता] १. जिसमें रस या मिठास न हो। २. फलतः जो स्वाद में फीका हो। ३. जिसमें रुचि को आकृष्ट करने का कोई गुण या तत्त्व न हो। जिसमें रुचि न लगती हो। ४. (साहित्यिक रचना) जिसमें रस का परिपाक न हुआ हो।
पुं० काव्य में होनेवाला रसभंग नामक दोष।

विरसता—स्त्री०[सं० विरस+तल्+टाप्] १. विरस होने की अवस्था या भाव। २. साहित्य का रस-भंग नामक दोष।

विरह—पुं०[सं०] १. किसी वस्तु से रहित होना। किसी वस्तु के अभाव में होना। २. प्रिय व्यक्तियों का एक दूसरे से अलग होना जो दोनों पक्षों के लिए बहुत कष्टप्रद हो। वियोग। ३. उक्त के फलस्वरूप होनेवाला मानसिक कष्ट या दुःख। ४. त्याग।
वि० रहित। हीन।

विरह-निवेदन—पुं० [सं०] साहित्य में, दूत या दूती का नायक (अथवा नायिका) के पास पहुँचकर उससे यह कहना कि तुम्हारे विरह में नायक (अथवा नायिका) कितनी दुःखी है।

विरहा†—पुं०=बिरहा (गीत)।

विरहागि*—स्त्री०=विरहाग्नि।

विरहाग्नि—स्त्री०[सं० ष० त०] प्रिय के विरह या वियोग के कारण होनेवाला तीव्र मानसिक कष्ट या संताप।

विरहानल—पुं०[सं० ष० त०, मध्यम० स०]=विरहाग्नि।

विरहिणी—वि०[सं० विरह+इनि+ङीप्] पति या प्रिय के विरह से संतप्त (नायिका)।

विरहित—वि०[सं० वि√रह् (त्याग करना)+क्त] रहित। शून्य।

विरही (हिन्)—वि० [सं० विरह+इनि] [स्त्री० विरहिणी] (नायक) जो प्रियतमा के विरह से संतप्त हो।

विरहोत्कंठिता—स्त्री०[सं० तृ० त०] साहित्य में, वह विरहिणी नायिका जो प्रिय के आगमन के लिए अधीर हो रही हो।

विराग—पुं०[सं० वि√रञ्ज् (राग करना)+घञ्, मध्यम० स०] १. मन में राग का होनेवाला अभाव। किसी चीज या बात की चाह न होना। 'अनुराग' का विपर्याय। २. किसी काम, चीज या बात से मन उचट या हट जाना। विरक्ति। ३. सांसारिक सुख-भोग की चाह न रह जाना। वैराग्य। ४. संगीत में, दो रागों के मेल से बना हुआ संकर राग।

विरागी (गिन्)—वि० [सं० विराग+इनि] [स्त्री० विरागिनी] १. जिसके मन में राग (चाह या प्रेम) न हो। राग-रहित। २. दे० 'विरक्त'।

विराज—वि० [सं० वि√राज् (शोभित होना)+अच्] १. चमकीला। २. राज्य-रहित।
पुं १. राजा। २. क्षत्रिय। ३. ब्रह्माण्ड। ४. एक प्रकार का मन्दिर। ५. एक प्रकार का एकाह यज्ञ। ६. एक प्रजापति का नाम।

विराजन—पुं०[सं० वि√राज्+ल्युट्—अन] १. शोभित होना। २. उपस्थित, वर्तमान या विद्यमान होना।

विराजना—अ०[सं० विराजन] १. शोभित होना। प्रकाशित होना। २. उपस्थित या विद्यमान होना। ३. बैठना। (बड़ों के लिए आदर-सूचक) जैसे—आइए विराजिए।

विराजमान—वि०[सं० वि√राज्+शानच्, मुक्] १. प्रकाशमान। चमकता हुआ। चमक-दमकवाला। २. उपस्थित। विद्यमान। (बड़ों के लिए आदरार्थक; विशेषतः बैठे रहने की दशा में)

विराजित—भू० कृ० [सं० वि√राज्+क्त] १. सुशोभित। २. प्रकाशित। ३. विराजमान।

विराट्—वि०[सं०] बहुत बड़ा या भारी। जैसे—विराट् सभा, विराट् आयोजन।

पुं० १. विश्वरूप ब्रह्मा। २. विश्व। ३. क्षत्रिय। ४. दे० 'विश्व-रूप'।

विराट—पुं०[सं०] १. मत्स्य देश का पुराना नाम। २. उक्त देश का राजा जिसकी उत्तरा नामक कन्या का विवाह अभिमन्यु से हुआ था। ३. संगीत में एक प्रकार का ताल।

विराण†—वि०[फा० बेगानः] [स्त्री० विराणी] दूसरे का। पराया।

विराध—पुं०[सं० वि√राध् (पीड़ित करना)+अच्] १. पीड़ा। क्लेश। तकलीफ। २. एक राक्षस जो दंडकारण्य में लक्ष्मण के हाथ से मारा गया था।

वि० कष्ट देने या पीड़ित करनेवाला।

विराधन—पुं०[सं० वि√राध् (पीड़ित करना)+ल्युट्–अन] १. किसी का अपकार या हानि करना। २. कष्ट देना। पीड़ित करना।

विराम—पुं०[सं०] १. क्रिया, गति, चाल आदि में होनेवाला अटकाव। २. कार्य-व्यापार में होनेवाली मंदी। ३. आराम या विश्राम के उद्देश्य से चुप-चाप पड़े रहने की अवस्था या भाव। ४. विश्राम। ५. कार्य, पद, सेवा आदि से अवकाश ग्रहण करना। ६. पद्य के चरण में की यति। ७. विराम-चिह्न।

विराम-काल—पुं०[सं०] वह छुट्टी जो काम करनेवालों को विराम करने या सुस्ताने के लिए मिलती है।

विराम-चिह्न—पुं०[सं०] लेखन, छपाई आदि में प्रयुक्त होनेवाले चिह्न। (पंक्चुएशन) जैसे—, ; .-। आदि।

विराम-संधि—स्त्री०[सं०] युद्ध होते रहने की दशा में बीच में होनेवाली वह अस्थायी संधि जो स्थायी संधि की शर्तें निश्चित करने के लिए होती है और जिसके अनुसार युद्ध कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया जाता है। अवहार। (आर्मिस्टिस)

विराल—पुं०[सं० वि√डल्+घञ्, ड—र] बिडाल। बिल्ली।

विराव—पुं० [सं० वि√रु (शब्द करना)+घञ्] १. शब्द। आवाज। २. मुँह से निकलनेवाली वाणी। बोली। उदा०—मोर कौं सोर गान कोकिल विराव कै।—सेनापति। ३. शोर-गुल। हो-हल्ला।

वि० रव अर्थात् शब्द से रहित। जिसमें आवाज न हो।

विरावण—वि०[सं० विराव√नी (ढोना)+ड] [स्त्री० विराविणी] १. बोलने या शब्द करनेवाला। २. रोने-चिल्लानेवाला। ३. शोर-गुल करने या हो-हल्ला मचानेवाला।

विरावी (विन्)—वि०[सं०] विरावण।

विरास†—पुं०=विलास।

विरासत—स्त्री०=वरासत।

विरासी†—वि०=विलासी।

विरिंच (चि)—पुं०[वि√रिच् (बनाना)+ अच्, नुम्] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव।

विरिक्त—वि०[वि√रिच् (रेचन करना)+क्त] [भाव० विरिक्ति] १. जो रिक्त हो। खाली। २. (पेट) जो जुलाब लेने के बाद साफ हो गया हो।

विरुज—वि०[सं० मध्यम० स० या ब० स०] जिसे रोग न हो। निरोग।

विरुजालय—पुं०[सं०] वह स्थान जहाँ रोगों का निदान तथा उपचार किया जाता हो। (क्लिनिक)

विरुझना†—अ०=उलझना।

विरुझाना†—स०=उलझाना।

†अ०=उलझना।

विरुद—पुं०[सं० ब० स०] १. उच्च स्वर में की जानेवाली घोषणा। २. किसी के गुण, प्रताप आदि का वर्णन। प्रशस्ति। ३. उक्त की सूचक कोई पदवी जो प्रायः राजाओं के नाम के साथ लगती थी। जैसे—'चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य' में 'विक्रमादित्य' विरुद है। ३. कीर्ति। यश।

विरुदावली—स्त्री०[सं० ष० त०] १. विरुदों या पदवियों का संग्रह। २. किसी बड़े व्यक्ति के गुणों, पराक्रम आदि का होनेवाला विस्तारपूर्वक वर्णन। ३. गुणावली।

विरुद्ध—वि०[सं०] १. सामने आकर विरोधी होनेवाला। २. कार्य, प्रयत्न आदि का विरोध करने या उसकी विफलता चाहनेवाला। ३. जो अनुकूल नहीं, बल्कि प्रतिकूल हो। मेल या संगति में न बैठनेवाला। विपरीत। ४. साधारण नियमों आदि से विभिन्न और उलटा। जैसे—विरुद्ध आचरण।

अव्य० १. प्रतिकूल स्थिति में। खिलाफ। जैसे—किसी के विरुद्ध चलना या बोलना। २. किसी के मुकाबले या विरोध में। ३. सामने।

पुं०[सं०] भारतीय नैयायिकों के अनुसार ५ प्रकार के हेत्वाभासों में से एक जो वहाँ माना जाता है जहाँ दिया हुआ हेतु स्वयं अपनी प्रतिज्ञा के विपरीत हो।

विरुद्धकर्मा (कर्मन्)—वि०[सं० ब० स०] १. विरुद्ध कर्म करनेवाला। २ विपरीत या निन्दनीय आचरणवाला।

पुं० श्लेष अलंकार का एक भेद जिसमें किसी क्रिया के फलस्वरूप होनेवाली परस्पर विरुद्ध प्रतिक्रियाओं का उल्लेख होता है। (केशव)

विरुद्धता—स्त्री०[सं० विरुद्ध+तल्+टाप्] १. विरुद्ध होने की अवस्था या भाव। विरोध। २. प्रतिकूलता।

विरुद्ध-मति-कारिता—स्त्री०[सं०] साहित्य में, एक प्रकार का काव्य-दोष जो ऐसे पद या वाक्य के प्रयोग में होता है जिससे वाच्य के संबंध में विरुद्ध या अनुचित भाव उत्पन्न हो सकता है। जैसे—"भवानीश" में यह दोष इसलिए है कि भव से उनकी पत्नी का नाम भवानी हुआ है। अब उसमें ईश शब्द जोड़ना इसलिए ठीक नहीं है कि इससे अर्थ हो जायगा—भव की स्त्री के स्वामी।

विरुद्धार्थ—वि०[सं०] विरोधी अर्थवाला।

पुं० विरुद्ध या विपरीत अर्थ।

विरुद्धार्थ दीपक—पुं०[सं०]साहित्य में दीपक अलंकार का एक भेद जिसमें एक ही बात से दो परस्पर विरुद्ध क्रियाओं का एक साथ होना दिखाया जाता है।

विरुध†—पुं०=विरोध।

†वि०=विरुद्ध।

†पुं०=वीरुध। (पौधा या लता)

विरुह*—वि०=विरुद्ध।

†पुं०=विरोध।

विरूज—पुं०[सं० ब० स०] एक अग्नि जिसका स्थान जल में माना गया है।

विरूढ़—भू० कृ०[सं० वि√रुह् (उत्पन्न होना)+क्त] १. किसी पर चढ़ा हुआ। आरूढ़। सवार। २. अंकुरित। ३. उत्पन्न। जात। ४. अच्छी तरह जमा, धँसा या बैठा हुआ।

विरूथिनी—स्त्री०[सं० विरुथ+इनि+ङीप्] वैसाख बदी एकादशी।

विरूप—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० विरूपा] [भाव० विरूपता] १. अनेक या कई रूपोंवाला। २.कई तरह या प्रकार का। ३.भद्दे रूपवाला। कुरूप। बदसूरत। ४. जिसका रूप-बदल गया हो। ५. शोभा, श्री आदि से रहित। ६. उलटा, विपरीत या विरुद्ध। ७. अप्राकृतिक। ८. अन्य या दूसरे प्रकार का। भिन्न।

पुं० १. बिगड़ी हुई सूरत। २. पांडु रोग। ३. शिव। ४. एक असुर। ५. पिप्पलीमूल।

विरूपण—पुं०[सं०] [भू० कृ० विरूपित] आघात आदि के द्वारा अथवा और किसी प्रकार का रूप या आकार बिगड़ना।

विरूपता—स्त्री०[सं० विरूप+तल्+टाप्] विरूप होने की अवस्था या भाव।

विरूप-परिणाम—पुं०[सं०] एक-रूपता से अनेक-रूपता अर्थात् निर्विशेषता से विशेषता की ओर होनेवाला परिवर्तन। एक मूल प्रकृति से अनेक विकृतियों का विकसित होना।

विरूपा—स्त्री० [सं० विरूप+टाप्] १. दुरालभा। २. अतिविषा। ३. यम की पत्नी का नाम।

वि० सं० विरूप का स्त्री०।

विरूपाक्ष—वि०[सं० ब० स०] जिसकी आँखें विरूप हों।

पुं० १. शिव। २. शिव का एक गण। ३. रावण का एक सेनापति जिसे सुग्रीव ने मारा था। ४. पुराणानुसार एक दिग्गज।

विरूपिक—वि०[स्त्री० विरूपिका]=विरूप।

विरूपी (पिन्)—वि०[सं० विरूप+इनी] [स्त्री० विरूपिणी] १. जिसका रूप बिगड़ा हुआ हो। २. कुरूप। बदसूरत। ३. डरावनी या भयानक आकृतिवाला।

पुं० गिरगिट नामक जन्तु।

विरेक—पुं०[सं० वि√रिच् (रेचन करना)+घञ्]=विरेचक।

विरेचक—वि० [सं० वि√रिच् (रेचन करना)+ण्वुल्–अक] (पदार्थ) जो दस्त लानेवाला हो। दस्तावर।

विरेचन—पुं० [वि√रिच् (रेचन करना)+ल्युट्–अन] १. ऐसी क्रिया करना जिससे दस्त आवें। २. ऐसा पदार्थ या ओषधि जिसके सेवन से दस्त आते हों। विरेचक पदार्थ।

विरेची (चिन्)—वि०[सं० वि√रिच् (रेचन करना)+णिनि]=विरेचक।

विरेच्य—वि०[सं० वि√रिच् (रेचन करना)+यत्] जो दस्तावर दवा देने के योग्य हो। जिससे विरेचन कराया जा सके।

विरोक—पुं० [सं० वि√रुच् (चमकना)+घञ्] १. चमक। दीप्ति। २. किरण। रश्मि। ३. चन्द्रमा। ४. विष्णु। ५. छेद। सूराख।

विरोकना†—स०=रोकना।

विरोचन—पुं० [सं० वि√रुच् (चमकना) युच्—अन] १. प्रकाशमान होना। चमकना। २. सूर्य की किरण। ३. सूर्य। ४. चन्द्रमा। ५. अग्नि। ६. विष्णु। ७. प्रह्लाद के पुत्र और बलि के पिता का नाम। ८. राजा बलि का एक नाम। ९. आक। मदार। १०. रोहित वृक्ष। रुहेड़ा। ११. श्योनाक। सोनापाढ़ा। १२. घृतकरंज।

वि० चमकनेवाला। दीप्तिमान।

विरोध—पुं०[सं० वि√रुध् (ढकना)+घञ्] १. विशेष रूप से होनेवाला रोध या रुकावट। २. किसी कार्य या प्रयत्न को रोकने या विफल करने के लिए उसके विपरीत होनेवाला प्रयत्न। (ऑपोज़ीशन) ३. भिन्न भिन्न तथ्यों, विचारों आदि में होनेवाला ऐसा तत्त्व जो एक दूसरे के विपरीत हो। (रिपग्नेन्सी) ४. मतों, व्यक्तियों, सिद्धान्तों आदि में होनेवाली पारस्परिक विपरीतता। ५. उक्त के फलस्वरूप आपस में होनेवाला ऐसा संघर्ष जिसमें प्रायः वैर या शत्रुता का भाव भी सम्मिलित होता है। (कॉन्फिलक्ट) ६. आपस में होनेवाली अनबन या बिगाड़।

पद—वैर-विरोध। ७. ऐसी स्थिति जिसमें दो बातें एक साथ हो सकती हों। विप्रतिपत्ति। व्याघात। ८. उलटी या विपरीत स्थिति। ९. विरोधाभास। (दे०) १०. नाटक का एक अंग जिसमें किसी बात का वर्णन करते समय विपत्ति का आभास दिखाया जाता है। ११. नाश।

विरोधक—वि०[सं० वि√रुध् (ढकना)+ण्वुल्–अक] १. विरोध सबंधी। २. विरोधी।

पुं० नाटक में ऐसा विषय जिसका प्रदर्शन या वर्णन निषिद्ध हो।

विरोधन—पुं० [सं० वि√रुध् (ढकना)+ल्युट्–अन] [वि० विरोधी-विरोधित, विरोध्य] १. विरोध करने की क्रिया या भाव। प्रतिरोध। २. ध्वंस। नाश। बरबादी।

विरोधना—स०[सं० विरोधन] १. किसी का या किसी से विरोध करना। २. वैर करना।

विरोध-पीठ—पुं० [सं०] विधायिका सभा में विरोध पक्षवालों के बैठने का स्थान। (ऑपोजीशन बेंच)

विरोधाभास—पुं०[सं०] साहित्य में एक विरोधमूलक अर्थालंकार जिसमें वस्तुतः विरोध का वर्णन न होने पर भी विरोध का आभास होता है।

विरोधित—भू० कृ० [सं० वि√रुध् (ढकना)+क्त] जिसका विरोध किया गया हो।

विरोधिता—स्त्री०[सं० विरोधिन्+तल्+टाप्] १. विरोध। २. वैर। शत्रुता। ३. फलित ज्योतिष में, नक्षत्रों की प्रतिकूल दृष्टि।

विरोधी (धिन्)—वि०[सं०] १. जो किसी के विरुद्ध आचरण करता हो। विरोध करनेवाला। २. जो इस प्रयास में हो कि अमुक कार्य को प्रचलन में न लाया जाय अथवा प्रचलन से उठा लिया जाय। ३. विरुद्ध पड़ने या होनेवाला। उलटा। विपरीत।

पुं० १. विपक्षी। २. शत्रु। वैरी।

विरोध्य—वि०[सं० विरोध+यत्] जिसका विरोध किया जा सके या किया जाने को हो।

विरोपण—पुं० [सं० वि√रूप् (बहना)+णिच्+ल्युट्–अन] [वि०

विरोपणीय, विरोप्य, भू० कृ० विरोपित] १. जमीन में पौधे आदि लगाना। रोपना। २. लेप करना। चढ़ाना या लगाना।

विरोम—वि०[सं० ब० स०] रोम-रहित। बिना रोएँ का।

विरोह—पुं०[सं० वि√रुह् (अंकुर निकलना)+घञ्] १. अंकुरित होना। २. उत्पत्ति या उद्भव होना।

विरोहण—पुं०[सं० वि√रुह् (अंकुरित होना)+ल्युट्–अन] [भू० कृ० विरोहित वि० विरोहणीय, एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान पर लगाना। रोपना।

विरोही—वि०[सं० वि√रुह् (उगना)+णिनि=विरोहिन्] [स्त्री० विरोहिणी] (पौधा) रोपनेवाला।

विर्त्त†*—स्त्री०=वृत्ति।

पुं०=वृत्त।

विलंघन—पुं०[सं० वि√लंघ् (लाँघना)+ल्युट्–अन] १. कूद या लाँघकर पार करना। २. उपवास। लंघन। ३. किसी काम, चीज या बात से अपने आपको रहित या वंचित रखना।

विलंघना—स०=लाँघना।

विलंघनीय—वि०[सं० वि√लंघ् (लाँघना)+अनीयर्] १. जिसका विलंघन हो सके या होने को हो। २. (काम) जो सहज में किया जा सके। सुगम।

विलंघित—भू० कृ०[सं० वि√लंघ् (लाँघना)+क्त] जिसका विलंघन हुआ हो।

विलंघी (घिन्)—वि०[सं० वि√लंघ् (लाँघना)+ णिनि] विलंघन करनेवाला।

विलंघ्य—वि०[सं० वि√लंघ् (लाँघना)+यत्]=विलंघनीय।

विलंब—पुं०[सं० वि√लम्ब् (देर करना)+घञ्] १. ऐसी स्थिति जिसमें अनुमान, आवश्यकता, औचित्य आदि से अधिक समय लगे। अति-काल। देर। २. इस प्रकार अधिक लगनेवाला समय।

विलंबन—पुं०[सं० वि√लम्ब् (देर होना)+ल्युट्–अन] [वि० विलंबनीय, विलंबी, भू० कृ० विलंबित] १. देर करना। विलंब करना। २. टँगना या लटकना। ३. आश्रय या सहारा लेना।

विलंबना—स०[सं० विलंबन] १. आवश्यकता से अधिक समय लगाना। २. देर या विलंब करना।

अ० १. देर या विलंब होना। २. लटकना। ३. आश्रय या सहारा लेना। ४. दे० 'बिरमना' या 'बिलमना'।

विलंब शुल्क—पुं० [ष० त०] १. वह शुल्क जो किसी काम या बात में विलंब करने पर देना पड़े। (लेट फ़ी) २. वह अतिरिक्त शुल्क जो जहाज, रेल आदि से आया हुआ माल देर से छुड़ाने पर देना पड़ता है। (डेमरेज)

विलंबित—वि०[सं० वि√लम्ब् (देर करना)+क्त] १. लटकता या झूलता हुआ। २. जिसमें विलंब लगा हो या देर हुई हो। ३. देर करने या लगानेवाला।

पुं० १. ऐसे जीव-जंतु जो बहुत धीरे-धीरे चलते हों। जैसे—गैंडा, भैंस आदि। २. संगीत में ऐसी लय, जिसमें स्वरों का उच्चारण बहुत मंद गति से होता हो। 'द्रुत' का विपर्याय।

विलंबी (बिन्)—वि० [सं० वि√लम्ब् (देर करना)+ णिनि] [स्त्री० विलंबिनी] १. लटकता हुआ। झूलता हुआ। २. विलंब करने या देर लगानेवाला।

पुं० साठ संवत्सरों में से बत्तीसवाँ संवत्सर।

विलक्ष—वि०[सं० वि√लक्ष् (लक्षित करना)+अच्] १. जिसमें विशिष्ट चिह्न या लक्षण न हों। २. जिसका कोई लक्ष्य न हो। ३. चकित। ४. लज्जित।

विलक्षण—वि०[सं० ब० स०] १. जिसका कोई लक्षण न हो। २. जिसके बहुत से लक्षण हों। ३. अपने वर्ग के अन्यों की अपेक्षा जिसके लक्षणों में विशेषता हो। जैसा साधारणतः होता हो, उससे कुछ अलग प्रकार का। ४. किसी की तुलना में कुछ अलग और विशिष्ट प्रकार का।

विलक्षणता—स्त्री०[सं० विलक्षण+तल्+टाप्] १. विलक्षण होने की अवस्था या भाव। २. वह गुण जिसके कारण कोई चीज विलक्षण कही जाती है।

विलखना†—अ०=बिलखना।

स०=लखना।

विलखाना†—स०[हिं० विलखना का स०] १. =बिलखाना। २. =लखाना।

विलग—वि०[हिं० वि (उप०)+ लगना] जो किसी के साथ लगा हुआ न हो। अलग। जुदा। पृथक्।

पुं० अन्तर। फरक। भेद।

विलगाना—अ०[हिं० विलग+ना (प्रत्य०)] अलग होना। पृथक् होना।

स० अलग या पृथक् करना।

विलग्न—वि०[सं०] १. किसी के साथ लगा हुआ। संलग्न। २. झूलता या लटकता हुआ। ३. किसी में बंद किया या बाँधा हुआ। ४. बीता हुआ। व्यतीत। ५. कोमल।

पुं० १. कमर। २. चूतड़। ३. जन्म-पत्री। ४. राशियों का उदय।

विलच्छन†—वि०=विलक्षण।

विलज्ज—वि०[सं० ब० स०] निर्लज्ज। बेहया।

विलपन—पुं०[सं०] १. विलाप करना। २. गप-शप करना। २. तेल आदि के नीचे जमने या बैठनेवाली मैल। गंदगी।

विलपना—अ०[सं० विलाप] विलाप करना। रोना।

विलब्ध—भू० कृ० [सं० वि√लभ् (प्राप्त होना)+क्त] १. दिया हुआ। पाया हुआ। मिला हुआ। प्राप्त। लब्ध। २. अलग या पृथक् किया हुआ।

विलम†—पुं०=विलंब।

विलमना—अ०=बिलमना।

विलय—पुं०[सं० वि√ली (मिलना, घुलना आदि)+अच्] १. किसी चीज का पानी में घुलकर मिल जाना। घुलना। २. एक पदार्थ का किसी रूप में दूसरे पदार्थ में घुलना-मिलना। विलीन होना। ३. आज-कल किसी छोटे देश या राज्य का अपनी स्वतंत्र सत्ता गँवाकर दूसरे बड़े देश या राज्य में मिल जाना। छोटे राज्य का बड़े में लीन होना। (मर्जिंग) ४. आत्मा का शरीर से निकलकर परमात्मा में मिलना, अर्थात् मृत्यु।

मौत। ५. सृष्टि का नष्ट होकर अपने मूल तत्त्वों में मिल जाना; अर्थात् प्रलय। ६. ध्वंस। नाश।

विलयन—पुं० [सं० वि√ली(लय होना)+ल्युट्—अन] १. लय या विलय होने की अवस्था, क्रिया का भाव। विलीन होना। २. एक वस्तु का दूसरी वस्तु में इस प्रकार मिलकर समा जाना कि उस पहली वस्तु का स्वतंत्र अस्तित्व न रह जाय। ३. किसी देशी रियासत का या किसी छोटे राज्य का बड़े राज्य में होनेवाला विलय। (मर्जर)

विलसन—पुं० [सं० वि√लस् (चमकना)+ल्युट्-अन] १. चमकने की क्रिया या भाव। २. क्रीड़ा। प्रमोद। विलास।

विलसना—अ० [सं० विलसन] १. शोभा पाना। फबना। २. क्रीड़ा या विलास करना। ३. किसी चीज का सुखपूर्वक भोग-विलास करना।

विलसाना†—स०=बिलसाना।

विलसित—वि० [सं० वि√लस्+क्त] १. चमकता हुआ। २. व्यक्त। ३. क्रीड़ा में मग्न। ४. विनोदी।

पुं० १. चमकने या चमकाने की क्रिया। २. चमक। दीप्ति। ३. अभिव्यक्ति। ४. क्रीड़ा। ५. अंग-भंगी। ६. परिणाम। फल।

विलह-बंदी—स्त्री० [?] ब्रिटिश शासन में, जिले के बन्दोबस्त का वह संक्षिप्त ब्योरा जिसमें प्रत्येक महाल का नाम, काश्तकारों के नाम और उनके लगान आदि का ब्योरा लिखा जाता था।

विलहा†—पुं० दे० 'बोल्लाह'।

विलाना—अ०, स०=विलाना (नष्ट होना या करना)।

विलाप—पुं० [सं० वि√लप् (बोलना)+घञ्] हार्दिक दुःख प्रकट करने के लिए बिलख-बिलख कर या विकल होकर रोने की क्रिया।

विलापन—वि० [सं० वि√लप् (कहना)+ल्युट्-अन] १. रुलानेवाला। २. जो विलाप का कारण हो (शस्त्रादि)। ३. पिघलानेवाला। ४. नष्ट करनेवाला।

पुं० १. रुलाने की क्रिया। २. नाश। ३. मृत्यु। ४. पिघलाने का साधन। ५. शिव का एक गण।

विलापना—अ० [सं० विलाप] विलाप करना।

†स०=रोपना (वृक्ष आदि)।

विलापी (पिन्)—वि० [सं० वि० √लप्+णिनि] रोने या विलाप करनेवाला।

विलायत—पुं० [अ०] १. पराया देश। दूसरों का देश। बहुत दूर का विशेषतः समुद्र पार का देश। २. भारतीयों की दृष्टि से इंग्लैंड अमेरिका, युरोप आदि देश या महादेश।

विलायती—वि० [अ०] १. विलायत का। विदेशी। २. विलायत या दूसरे देश का बना हुआ। ३. विलायत या दूसरे देश में रहनेवाला। विदेशी।

विलायती पटुआ—पुं० [हिं० विलायती+पटुआ] लाल पटुआ। लाल सन।

विलायती बैंगन—पुं० [हिं०] टमाटर। (देखें)

विलायन—पुं० [सं० वि√ली+णिच्+ल्युट्-अन] प्राचीन भारत का एक अस्त्र। कहते हैं कि इस अस्त्र के प्रयोग से शत्रु की सेनाएँ विश्राम करने लगती थीं।

विलावल†—पुं०=बिलावल (राग)।

विलास—पुं० [सं० वि√लस् (साथ में क्रीडा करना)+घञ्] १. ऐसी क्रिया या व्यापार जो अपने को प्रसन्न तथा प्रफुल्लित रखने के लिए किया जाय। २. क्रीड़ा। खेल। ३. अधिक मूल्य की और सुख-सुभीते की वस्तुओं का ऐसा उपभोग या व्यवहार जो केवल मन प्रसन्न करने के लिए हो। शौकीनी। (लक्जरी) ४. अनुराग तथा प्रेम में लीन होकर की जानेवाली क्रीड़ा। ५. ऐसी स्त्रियोचित भाव-भंगी या कोमल चेष्टा जो काम-वासना की उत्पादक या सूचक हो। ६. साहित्य में संयोग शृंगार का एक भाव जिसमें प्रिय से सामना होने पर नायिका अपनी कोमल चेष्टाओं तथा भाव-भंगियों से उसके मन में अपने प्रति अनुराग उत्पन्न करती है। ७. मनोहरता। सौन्दर्य। ८. किसी अंग की आकर्षक और कोमल चेष्टा। जैसे—भ्रू-विलास। ९. किसी वस्तु का उक्त प्रकार से हिलना-डोलना। जैसे—विद्युत् विलास। १०. आनन्द। प्रसन्नता। हर्ष। ११. यथेष्ट सुख-भोग।

विलासक—वि० [सं० विलास+कन्] [स्त्री० विलासिका] १. इधर-उधर फिरनेवाला। २. दे० 'विलासी'। ३. नर्तकी।

विलासन—पुं० [सं० वि√लस्+ल्युट्-अन] विलास करने की क्रिया या भाव।

विलासिका—स्त्री० [सं० विलास्+कन्+टाप्, इत्व] साहित्य में, एक प्रकार का शृंगार प्रधान एकांकी रूपक जिसका विषय संक्षिप्त और साधारण होता है।

विलासिता—स्त्री० [सं०] १. विलासी होने की अवस्था या भाव। २. विलास।

विलासिनी—स्त्री० [सं० विलास+इनि+ङीप्] १. सुंदरी युवती। कामिनी। २. रंडी। वेश्या। ३. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ज, र, ज, ग, ग होता है।

वि० विलासिता-प्रिय (स्त्री)।

विलासी (सिन्)—वि० [सं० विलास+इनि] १. (व्यक्ति) जो प्रायः ऐसी क्रीड़ाओं में रत रहता हो जिनसे उसे सुख-भोग प्राप्त होता हो। २. हँसी-खुशी में समय बितानेवाला। ३. आराम-तलब। ४. कामुक।

पुं० वरुण (वृक्ष)।

विलास्य—पुं० [सं० विलास+यत्] प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जिसमें बजाने के लिए तार लगे होते थे।

वि० विलास के लिए उपयुक्त या योग्य।

विलिंग—वि० [सं० ब० स०] १. लिंग-रहित। २. दूसरे या भिन्न लिंग का।

पुं० लिंग अर्थात् चिह्न का अभाव।

विलिखन—पुं० [सं० वि√लिख् (रेखा करना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० विलिखित] १. लिखना। २. खरोचना। ३. खोदकर अंकित करना।

विलिप्त—भू० कृ० [सं० वि√लिप् (लीपना)+क्त] १. पुता हुआ। लिपा हुआ। २. उखड़ा या खुदा हुआ। ३. अस्त-व्यस्त। ४. कलुषित।

विलीक†—वि०=व्यलीक (असत्य)।

विलीन—भू० कृ० [वि√ली (मिलना, घुलना)+क्त] १. (पदार्थ) जो किसी दूसरे पदार्थ में गल, घुल या मिल गया हो। २. उक्त के आधार पर जो अपनी स्वतंत्र सत्ता खोकर दूसरे में मिल गया हो।

३. जो गायब या लुप्त हो गया हो। अदृश्य। ४. नष्ट। ५. मृत। ६. जो आंड़ में जा छिपा हो। ओझल।

विलुनन—पुं० [सं०] [भू० कृ० विलुनित] नष्ट करना।

विलुप्त—भू० कृ० [सं०] १. जिसका लोप हो गया हो। नष्ट। २. जो अदृश्य या गायब हो गया हो। ३. नष्ट। बरबाद।

विलुलक—वि० [सं० वि√लुल् (मर्दन करना)+ण्वुल्–अक] नाश करनेवाला।

विलून—भू० कृ० [सं० वि√लू (काटना)+क्त, त-न] १. कटा हुआ। अलग किया हुआ। २. काटकर अलग किया हुआ।

विलेख—पुं० [वि√लिख्+घञ्] १. अनुमान। कल्पना। २. सोच-विचार। ३. वह करण या लिखत जिसमें दो पक्षों में होनेवाला अनुबंध लिखा हो और जिस पर प्रमाण-स्वरूप दोनों पक्षों के हस्ताक्षर हों। दस्तावेज। (डीड)

विलेखन—पुं० [सं० वि√लिख् (लिखना)+ल्युट्–अन] [भू० कृ० विलेखित] १. खरोंचना। २. खोदना। ३. उखाड़ना। ४. चिह्न बनाना। ५. चीरना। ६. नदी का मार्ग। ७. विभाजन।

वि० खरोंचनेवाला।

विलेखा—स्त्री० [सं० विलेख+टाप्] १. खरोंच। २. चिह्न। ३. विलेख। लेख्य।

विलेखी (खिन्)—वि० [सं० वि√लिख् (लिखना)+णिनि] १. खरोंचनेवाला। २. चिह्न बनानेवाला। ३. इकरार लिखनेवाला। ४. विलेख अर्थात् अनुबंध या संधि-पत्र लिखनेवाला।

विलेप—पुं० [सं० वि√लिप् (लेपन करना)+घञ्] १. शरीर आदि पर लगाने का लेप। २. दीवारों पर लगाया जानेवाला पलस्तर।

विलेपन—पुं० [सं० वि√लिप्+ल्युट्–अन] [भू० कृ० विलेपित] १. लेप करने या लगाने की क्रिया या भाव। अच्छी तरह लीपना या लगाना। २. लेप के रूप में लगाई जानेवाली चीज। लेप।

विलेपनी—स्त्री० [सं० विलेपन+ङीप्] १. वह स्त्री जिसने अंगराग लगाया हो। श्रृंगारित स्त्री। २. माँड़।

विलेपी (पिन्)—वि० [सं० वि√लिप् (लेप करना)+णिनि] [स्त्री० विलेपिनी] १. लेप करनेवाला। २. पलस्तर करनेवाला। ३. चिपका या साथ लगा हुआ। ४. लसदार। लसीला।

विलेय—वि० [सं०] १. जिसका विलय हो सके या किया जा सके। २. (पदार्थ) जो पानी या किसी तरल द्रव्य में घुल सके। (सोल्युबल)

विलेवासी (सिन्)—पुं० [सं० विले√वस् (रहना)+णिनि, दीर्घ, नलोप सप्तमी-अलुक्] सर्प।

विलेशय—वि० [सं० विले√शी (सोना)+अच्, सप्त०-अलुक्] बिल में वास करनेवाला।

पुं० १. साँप। २. चूहा। ३. बिच्छू। ४. गोह। ५. खरगोश।

विलोक—वि० [सं० ब० स०] १. लोक या जन से रहित। २. निर्जन।

पुं० १. दृष्टि। नजर। २. दृश्य।

विलोकन—पुं० [सं० वि√लोक् (देखना)+ल्युट्–अन] [भू० कृ० विलोकित] १. देखना। २. विचार करना। २. तलाश करना। ढूँढ़ना। ४. ध्यान देना। ५. अध्ययन करना।

विलोकना—स० [सं० विलोकन] १. देखना। २. निरीक्षण करना। ३. ढूँढ़ना।

विलोकनि—स्त्री० [हिं० विलोकना] १. देखने की क्रिया या भाव। २. दृष्टि। नजर।

विलोकनीय—वि० [सं० वि√लोक् (देखना आदि)+अनीयर्] देखने योग्य अर्थात् सुन्दर।

विलोकित—भू० कृ० [सं०] १. देखा हुआ। २. निरीक्षित।

विलोकी (किन्)—वि० [सं० वि√लोक् (देखना)+णिनि, दीर्घ, न-लोप] १. देखनेवाला। २. निरीक्षण करनेवाला।

विलोचन—पुं० [सं०] १. लोचन। नेत्र। आँख। २. एक नरक का नाम।

वि० लोचन अर्थात् आँख से रहित।

विलोडक—वि० [सं० वि√लुड् (मथना आदि)+ण्वुल्–अक] विलोड़न करनेवाला।

पुं० चोर।

विलोडन—पुं० [सं० वि√लुड् (मथना आदि)+ल्युट्–अन] [भू० कृ० विलोड़ित] १. मथना। २. हिलाना। ३. चुराना।

विलोड़ना—स० [सं० विलोड़न] विलोड़न करना। बिलोड़ना।

विलोप—पुं० [सं० वि√लुप् (भागना)+घञ्] १. लोप। २. बाधा। रुकावट। ३. आपत्ति। संकट। ४. नाश। ५. नुकसान। हानि। ६. कोई चीज चुरा या लेकर भागना।

विलोपक—वि० [सं० वि√लुप् (नष्ट करना)+ण्वुल्–अक] विलोप करनेवाला।

विलोपन—पुं० [सं०] [भू० कृ० विलोपित] १. विलोप करने की क्रिया या भाव। २. जो कुछ पहले से वर्तमान हो, उसे काट या रद्द करके अलग करने, छोड़ने या निकालने की क्रिया या भाव। (डिलीशन)

विलोपना—स० [सं० विलोपन] १. लोप करना। २. नाश करना। ३. ले भागना। ४. बाधा या विघ्न डालना।

अ० १. लुप्त होना। २. नष्ट होना।

विलोपी (पिन्)—वि० [सं० वि√लुप् (गायब करना आदि)+णिनि, दीर्घ, नलोप] लोप अर्थात् पूर्णतया नष्ट या ध्वस्त करनेवाला।

विलोप्ता (प्तृ)—वि० [सं० वि√लुप् (लुप्त करना)+तृच्] विलोपी।

पुं० १. चोर। २. डाकू।

विलोप्य—वि० [सं० वि√लुप् (लुप्त करना)+यत्] जिसका विलोपन हो सके। विलुप्त किये जाने के योग्य।

विलोभ—वि० [वि√लुभ् (विमोहित करना)+घञ्] जिसे लोभ न हो। लोभ से रहित।

पुं० १. ऐसी बात जो मन को ललचाती हो। २. प्रलोभन। ३. माया के कारण उत्पन्न होनेवाला भ्रम या मोह।

विलोभन—पुं० [सं०] १. विलोभ। २. प्रलोभन।

विलोम—वि० [सं०] १. जिसे बाल न हो। लोम-रहित। २. सामान्य या स्वाभाविक स्थिति के विपरीत स्थिति में होनेवाला। ३. सामान्य क्रम से न होकर विपरीत क्रम से होनेवाला। ४. जो सामान्य रीति, प्रथा आदि के विचार से नहीं, बल्कि उसके विपरीत हुआ हो। जैसे—विलोम विवाह। ५. क्रम के विचार से ऊपर से नीचे की ओर जानेवाला। जैसे—विलोम स्वर साधन।

पुं० १. साँप। २. कुत्ता। ३. रहट। ४. एक वरुण। ५. संगीत में स्वरों का अवरोहात्मक साधन।

विलोमक—वि० [सं० विलोम+कन्] १. उलटे या विपरीत क्रम से चलने या होनेवाला। २. (औषध या पदार्थ) जिसके प्रयोग से शरीर के बाल, विशेषतः फालतू बाल झड़ जाते हों। (डेपिलेटरी)

विलोम जात—वि० [सं०] १. (बच्चा) जो उलटा जन्मा हो। २. जिसकी माता का वर्ण उसके पिता के वर्ण की अपेक्षा ऊँचा हो।

विलोमतः—अव्य० [सं०] १. विलोम अर्थात् उलटे प्रकार या रूप से चलकर। विपरीत दिशा या रूप में। (कॉन्वर्सली) २. दे० 'प्रतिक्रमात्'।

विलोमन—पुं० [सं०] [भू० कृ० विलोमित] १. विलोम अर्थात् उलटे क्रम से चलाना, रखना या लगाना। २. नाटकों में मुख-सन्धि का एक अंग।

विलोमवर्ण—वि० [सं०] (व्यक्ति) जिसकी माता का वर्ण पिता के वर्ण की अपेक्षा ऊँचा हो।

विलोमा (मन्)—वि० [सं० ब० स०] १. केश-रहित। २. उलटी ओर मुड़ा हुआ।

विलोल—वि० [सं० तृ० त०] १. लहराता या हिलता हुआ। २. अस्थिर। चंचल। ३. सुन्दर। ४. ढीला। शिथिल। ५. अस्त-व्यस्त। बिखरा हुआ।

विलोहित—वि० [सं० तृ० त०] १. गाढ़ा लाल। २. बैंगनी रंग का। २. हलका लाल।

पुं० १. रुद्र। २. शिव। ३. एक नरक का नाम। ४. लाल प्याज।

विलोहिता—स्त्री० [सं० विलोहित+टाप्] अग्नि की एक जिह्वा।

विल्व—पुं० [सं० √विल् (भेदन करना)+वन्-क्वित्]=बिल्व (बेल का पेड़ और फल)।

विव—वि० [सं०] १. दो। २. दूसरा।

विवक्ता (क्तृ)—पुं० [सं० वि√वच् (बोलना)+तृच्] १. कहने या बतलानेवाला। २. स्पष्ट बात कहनेवाला। ३. ठीक या दुरुस्त करनेवाला।

विवक्षा—स्त्री० [सं० वि√वच् (कहना)+सन्, द्वित्व,+टाप्] १. कुछ कहने या बोलने की इच्छा। २. वह जो किसी के स्वभाव का अंश हो। ३. शब्द के अर्थ में होनेवाली विशिष्ट छाया जो उसका स्वाभाविक अंग होती है। ४. फल या परिणाम के रूप में या आनुषंगिक रूप से होनेवाली बात। (इम्प्लिकेशन)

विवक्षित—भू० कृ० [सं०] १. जो कहे जाने को हो। २. (आर्थी छाया) जिसे शब्द व्यक्त कर रहा हो।

विवत्स—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० विवत्सा] संतानहीन।

विवदन—पुं० [सं० वि√वद् (बोलना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विवदित] विवाद करने की क्रिया या भाव।

विवदना—अ० [सं० विवाद+हिं० नाप्रत्य०] विवाद अर्थात् तर्क-वितर्क या झगड़ा करना।

विवदमान्—वि० [सं०] विवाद या झगड़ा करनेवाला।

विवदित—वि० [सं०] जिसके सम्बन्ध में किसी प्रकार का विवाद हुआ हो। (डिस्प्यूटेड)

विवर—पुं० [सं०] १. छिद्र। बिल। २. गर्त। गड्ढा। ३. दरार। ४. कन्दरा। गुफा। ५. किसी ठोस चीज के अंदर होनेवाला खोखला स्थान। (कैविटी)

विवरण—पुं० [सं० वि√वृ (संवरण करना)+ल्युट्-अन] १. स्पष्ट रूप से समझाने के लिए किसी घटना, बात आदि का विस्तारपूर्वक किया जानेवाला वर्णन या विवेचन। २. उक्त प्रकार से कहा हुआ वृत्तान्त या हाल। जैसे—किसी संस्था का वार्षिक विवरण, अधिवेशन या बैठक का कार्य-विवरण। ३. ग्रन्थ की टीका या व्याख्या। ४. किसी अधिकारी आदि के पूछने पर अपने कार्यों आदि के संबंध में बताई जानेवाली विस्तृत बातें।

विवरण-पत्र—पुं० [सं०] १. वह पत्र जिसमें किसी प्रकार का विवरण लिखा हो। (रिपोर्ट) २. ऐसा सूचीपत्र जिसमें सूचित की जानेवाली वस्तुओं का थोड़ा-बहुत विवरण भी हो।

विवरणिका—स्त्री० [सं०] १. विवरण-पत्र।

विवरना†—अ० =बिवरना (सुलझना)।

† स० =विवरना (सुलझाना)।

विवरणी—स्त्री० [सं०] आय-व्यय आदि की स्थिति बतानेवाला वह लेखा जो प्रतिवेदन के रूप में कहीं उपस्थित किया जाने को हो। (रिटर्न)

विवर्जन—पुं० [सं०] [भू० कृ० विवर्जित] १. त्याग करने की क्रिया। परित्याग। २. मनाही। निषेध। वर्जन। अनादर। ४. उपेक्षा।

विवर्जित—भू० कृ० [सं० वि√वर्ज् (मना करना)+क्त] जिसका या जिसके सम्बन्ध में विवर्जन हुआ हो।

विवर्ण—वि० [सं०] १. जिसका कोई रंग न हो। रंगहीन। २. जिसका रंग बिगड़ गया हो। ३. कांति-हीन। ४. रंग-बिरंगा। ५. जो किसी वर्ण के अंतर्गत न हो; अर्थात् जाति-च्युत।

पुं० साहित्य में एक भाव जिसमें भय, मोह, क्रोध, लज्जा आदि के कारण नायक या नायिका के मुख का रंग बदल जाता है।

विवर्णता—स्त्री० [सं०] विवर्ण होने की अवस्था या भाव। वैवर्ण्य।

विवर्त—पुं० [सं०] १. घूमना। मुड़ना। २. लुढ़कना। ३. नाचना। ४. एक रूप या स्थिति छोड़कर दूसरे रूप या स्थिति में आना या होना। ५. वेदान्त का यह मत या सिद्धान्त कि सारी सृष्टि वास्तव में असत् या मिथ्या है; और उसका जो रूप हमें दिखाई देता है, वह भ्रम या माया के कारण ही है। ५. लोक-व्यवहार में किसी वस्तु का कुछ विशिष्ट अवस्थाओं में या किसी कारण से मूल से भिन्न होना। जैसे—रस्सी का साँप प्रतीत होना या ब्रह्म का जगत् प्रतीत होना। ७. ढेर। राशि। ८. आकाश। ९. धोखा। भ्रम।

विवर्तक—वि० [सं०] विवर्तन करनेवाला। चक्कर लगानेवाला।

विवर्तन—पुं० [सं०] [भू० कृ० विवर्तित] १. किसी के चारों ओर घूमना। चक्कर लगाना। २. किसी ओर ढलकना या लुढ़कना। ३. भिन्न भिन्न अवस्थाओं में से होते हुए या उन्हें पार करते हुए आगे बढ़ना। विकसित होना। विकास। ४. नाचना। नृत्य। ५. अरविन्द दर्शन में, चेतना का क्रमशः उन्नत तथा जाग्रत होकर विश्व की सृष्टि और विकास करना। 'निवर्तन' का विपर्याय। (इवोल्यूशन)

विवर्तवाद—पुं० [सं०] दार्शनिक क्षेत्र में, यह सिद्धान्त कि ब्रह्म ही सत्य है और यह जगत् उसके विवर्त या भ्रम के कारण कल्पित रूप है।

विवर्तवादी—वि० [सं०] विवर्तवाद-सम्बन्धी।

पुं० वह जो विवर्तवाद का अनुयायी हो।

विर्वातित—भू० कृ० [सं० वि√वृत् (उपस्थित रहना)+क्त] १. जिसका विवर्तन हुआ हो या जो विवर्त के रूप में लाया गया हो। २. बदला हुआ। परिर्वातित। ३. घूमता या चक्कर खाता हुआ। ४. नाचता हुआ। ५. (अंग) जो मुड़क या मुड़ गया हो। ६. (अंग) जिसमें मोच आ गई हो।

विवर्ती (र्तिन्)—वि० [सं० वि√वृत् (उपस्थित रहना)+णिनि]=विवर्तक।

विवर्द्धन—पुं० [सं० वि√वृध् (बढ़ना)+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विवर्द्धित] १. बढ़ाने या वृद्धि करने की क्रिया। २. बढ़ती। वृद्धि।

विवर्द्धिनी—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

विवश—वि० [सं० वि√वश् (वश में करना)+अच्] [भाव० विवशता] १. जो स्वयं अपनी इच्छा के अनुसार नहीं बल्कि दूसरों की इच्छा से अथवा परिस्थितियों के बंधन में पड़कर काम कर रहा हो। २. जिसका अपने पर वश न हो, बल्कि जो दूसरों के वश में हो। ३. जिसे कोई विशिष्ट काम करने के अतिरिक्त और कोई चारा न हो। ४. पराधीन।

विवशता—स्त्री० [सं० विवश+तल्+टाप्] १. विवश होने की अवस्था या भाव। लाचारी। २. वह कारण जिसके फलस्वरूप किसी को विवश होना पड़ता हो।

विवस†—वि०=विवश।

विवसन—वि० [स्त्री० विवसना]=विवस्त्र।

विवस्त्र—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० विवस्त्रा] जिसके पास वस्त्र न हो अथवा जिसने वस्त्र उतार दिये हों।

विवस्वत्—पुं० [सं०] १. सूर्य। २. सूर्य का सारथी, अरुण। ३. पन्द्रहवें प्रजापति का नाम।

विवस्वान् (स्वत्)—पुं० [सं० विवस्वत्] १. सूर्य। २. सूर्य का सारथी, अरुण। ३. अर्क। मदार वृक्ष। ४. वर्तमान मनु का नाम। ५. देवता।

विवाक—पुं० [सं० वि√ वच् (कहना)+घञ्] १. न्यायाधीश। २. मध्यस्थ।

विवाचन—पुं० सं० वि √वच् (कहना)+णिच्+ल्युट्—अन] आपसी झगड़ों का पंच या पंचायतों के द्वारा होनेवाला विचार और निर्णय।

विवाद—पुं० [सं०] १. किसी बात या वस्तु के सम्बन्ध में होनेवाला जबानी झगड़ा। कहा-सुनी। तकरार। २. किसी विषय में आपस में होनेवाला मतभेद। ३. ऐसी बात जिसके विषय में दो या अनेक विरोधी पक्ष हों और जिसकी सत्यता का निर्णय होने को हो। (डिस्प्यूट) ४. न्यायालय में होनेवाला वाद। मुकदमा।

विवादक—वि० [सं० वि √ वद् (कहना)+ण्वुल्—अक] विवाद करनेवाला। झगड़ालू।

विवादार्थी (र्थिन्)—पुं० [सं० विवादार्थ+इनि, ब० स०] १. वादी। मुद्दई। २. मुकदमा लड़नेवाला व्यक्ति।

विवादास्पद—वि० [सं० ष० त०] १. (विषय) जिसके सम्बन्ध में दो या अधिक पक्षों का विवाद चल रहा हो। २. प्रस्ताव, मत, विचार आदि जिसके संबंध में तर्क-वितर्क चल सकता हो। (काँन्ट्रोवर्सल)

विवादी (दिन्)—वि० [सं० वि√वद् (कहना)+णिनि] १. विवाद करनेवाला। कहासुनी या झगड़ा करनेवाला। २. मुकदमा लड़नेवाला।

पुं० संगीत में वह स्वर जिसका प्रयोग किसी राग में नियमित रूप से तो नहीं होता फिर भी कभी-कभी राग में कोमलता या सुन्दरता लाने के लिए जिसका व्यवहार किया जाता है। जैसे—भैरवी में साधारणतः तीव्र ऋषभ या तीव्र निषाद का प्रयोग नहीं होता फिर भी कभी कभी कुछ लोग सुन्दरता लाने के लिए इसका प्रयोग कर लेते हैं।

विवाद्य—वि० [सं०] (विषय) जिस पर विवाद, बहस या तर्क-वितर्क होने को हो या हो सकता हो। (डिबेटेबुल)

विवान†—पुं०=विमान।

विवास—पुं० [सं०] १. घर छोड़कर कहीं दूसरी जगह जाकर रहना। २. निर्वासन।

विवासन—पुं० [सं० वि√ वस् (निवास करना)+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विवासित] १. निर्वासित करना। निर्वासन। २. दे० 'विस्थापन'।

विवास्य—वि० [सं० वि√ वस्+ण्यत्] (व्यक्ति) जो अपने निवास-स्थान से निकाल दिया जाने को हो या निकाला जा सके।

विवाह—पुं० [सं० वि√ वह् (ढोना)+ घञ्] १. हिंदू धर्म में सोलह संस्कारों में से एक जिसमें वर तथा कन्या पति-पत्नी का धर्म स्वीकार करते हैं।

विशेष—हिन्दू धर्म में आठ प्रकार के विवाह माने गये हैं—ब्राह्म, दैव आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गान्धर्व, राक्षस और पैशाच्य।

३. उक्त संस्कार के अवसर पर होनेवाला उत्सव या समारोह। ४. व्यापक अर्थ में, वह उत्सव जिसमें पुरुष तथा स्त्री वैवाहिक बन्धन में बँधना स्वीकार करते हैं। ५. उक्त अवसर पर होनेवाला धार्मिक कृत्य। जैसे— विवाह पंडित जी करावेंगे।

विवाहना†—स०=ब्याहना।

विवाहला—पुं० [सं० विवाह] विवाह के समय गाये जानेवाले गीत। (राज०)

विवाह-विच्छेद—पुं० [सं० ष० त०] वह अवस्था जिसमें पुरुष और स्त्री अपना वैवाहिक सम्बन्ध तोड़कर एक दूसरे से अलग हो जाते हैं। तलाक। (डाइवोर्स)

विवाहा—वि० कृ० [स्त्री० विवाही]=विवाहित।

विवाहित—भू० कृ० [सं० विवाह+इतच्] [स्त्री० विवाहिता] १. जिसका विवाह हो गया हो। ब्याहा हुआ। २. जिसके साथ विवाह किया गया हो।

विवाह्य—वि० [सं० वि√ वह् (ढोना)+ण्यत्] १. जिसका विवाह होने को हो या होना उचित हो। २. जिसके साथ विवाह किया जा सकता हो।

विवि—वि० [सं०] १. दो। २. दूसरा। द्वितीय।

विविक्त—भू० कृ० [सं० वि√ विच् (पृथक् होना)+क्त] [स्त्री० विविक्ता] १. पृथक् किया हुआ। २. बिखरा हुआ। अस्त-व्यस्त। ३. निर्जन। ४. पवित्र। जैसे—विविक्त स्त्री।

पुं० १. त्यागी। २. संन्यासी।

विविक्ति—स्त्री० [सं० वि√ विच् (पृथक् करना)+क्तिन्] १. विवेकपूर्वक काम करना। २. अलगाव। पार्थक्य। ३. विभाग।

विविध—[वि० सं० ब० स०] १. अनेक या बहुत प्रकार का। भाँति-भाँति का। जैसे—विविध विषयों पर होनेवाले भाषण। २. कई विभागों, मदों आदि का मिला-जुला। फुटकर। (मिसलेनियस)

विविर—पुं०[सं० वि०√वृ (संवरण करना)+अञ्]=विवर।

विवीत—पुं०[सं० वि√वी(गभन, व्याप्त होना आदि)+क्त] १. चारों ओर से घिरा हुआ स्थान। २. पशुओं के रहने का बाड़ा।

विवुध—पुं०=विबुध।

विशेष—'विवुध' के यौ० के लिए दे० 'विबुध' के यौ०।

विवृत—वि०[सं०]१. फैला हुआ। विस्तृत। २. खुला हुआ। ३. (वर्ण) जिसका उच्चारण करते समय मुख-द्वार पूरा खुलता हो।

पुं० व्याकरण में उच्चारण की वह अवस्था जिसमें मुख-द्वार पूरा खुलता है।

विशेष—नागरी वर्णमाला में 'आ' विवृत वर्ण (स्वर) है।

विवृता—स्त्री०[सं० विवृत+टाप्] योनि का एक रोग जिसमें उस पर मंडलाकार फुंसियाँ होती हैं और बहुत जलन होती है।

विवृति—स्त्री० [सं०] १. विवृति होने की अवस्था या भाव। २. किसी की कही या लिखी हुई बात की अपनी बुद्धि से प्रसंगानुकूल अर्थ लगाना या स्थिर करना। निर्वचन। (इन्टरप्रिटेशन) ३. भाषा विज्ञान का विवृत नामक प्रयत्न अथवा वह प्रयत्न करने की क्रिया या भाव।

बिवृतोक्ति—स्त्री०[सं० ब० स०] साहित्य में, एक प्रकार का अलंकार जिसमें श्लेष से छिपाया हुआ अर्थ कवि स्वयं अपने शब्दों द्वारा प्रकट कर देता है।

विवृत्त—वि०[सं०]१. घूमता हुआ या चक्कर खाता हुआ। २. चलता हुआ। ३. ऐंठा हुआ या मुड़ा हुआ। ४. खुला या खोला हुआ। ५. सामने आया या लाया हुआ।

विवृत्ति—स्त्री०[सं० वि√ वृत् (फैलाना आदि) +क्तिन्]१. विवृत्त होने की अवस्था या भाव। २. चक्कर खाना। घूमना। ३. विस्तार। फैलाव। ४. विकास। ५. ग्रन्थ की टीका या व्याख्या।

विवृद्ध—वि०[सं०] [भाव० विवृद्धि]१. बहुत बढ़ा हुआ। २. पूरी तरह से विकसित। ३. प्रौढ़ अवस्था तक पहुँचा हुआ। ४. शक्तिशाली।

विवेक—पुं०[सं०] [भाव० विवेकता]१. अन्तःकरण की वह शक्ति-जिसमें मनुष्य यह समझता है कि कौन-सा काम अच्छा है या बुरा, अथवा करने योग्य है या नहीं। (कान्शेन्स)२. अच्छी बुद्धि या समझ। ३. सद्विचार की योग्यता। ४. सत्यज्ञान।

विवेकवादी—पुं०[सं०] वह जो यह कहता या मानता हो कि मनुष्य को वही काम करना चाहिए और वही बात माननी चाहिए जो उसका विवेक ठीक मानता हो।

विवेकवान्—वि०[सं० विवेक+मतुप्, म-व, नुम्] १. जिसे सत् और असत् का ज्ञान हो। अच्छे-बुरे को पहचाननेवाला। २. बुद्धिमान्।

विवेकाधीन—वि०[सं०] (विषय) जो किसी के विवेक पर आश्रित हो। (डिस्क्रीशनरी)

विवेकी (किन्)—वि०[सं० विवेक+इनि,] १. जिसे विवेक हो। भले-बुरे का ज्ञान रखनेवाला। विवेकशील। २. बुद्धिमान। ३. ज्ञानी। ३. न्यायशील।

पुं० न्यायाधीश।

विवेचक—वि०[सं० वि√ विच्+ण्वुल्—अक] विवेचन करनेवाला।

विवेचन—पुं०[सं० वि√ विच् (जाँच करना)+ल्युट्—अन] १. किसी चीज या बात के सभी अंगों या पक्षों पर इस दृष्टि से विचार करना कि तथ्य या वास्तविकता का पता चले। यह देखना कि क्या समझना ठीक है और क्या ठीक नहीं है। सत् और असत् का विचार। २. तर्क-वितर्क। ३. मीमांसा। ४. अनुसंधान। ५. परीक्षण।

विवेचना—स्त्री०[विवेचन+टाप्] १. विवेचन। २. विवेचन करने की योग्यता या शक्ति।

विवेचनीय—वि०[सं० वि√ विच् (विचारना)+अनीयर्] जिसका विवेचन होने को हो या होना उचित हो।

विवेचित—भू० कृ०[सं० वि√विच् (विवेचन करना)+क्त] जिसकी विवेचना की गई हो या हो चुकी हो। २. निश्चित या तै किया हुआ। निर्णीत।

विवेच्य—वि०[सं०] विवेचनीय।

विव्वोक—पुं०[सं० वि√ वा (गमन करना) आदि)+कु, विवु-ओक, ष० त०] साहित्य-शास्त्र के अनुसार एक हाव जिसमें स्त्रियाँ संयोग के समय प्रिय का अनादर करती हैं।

विशंक—वि०[सं० ब० स०] शंका-रहित। निःशंक।

विशंकनीय—वि०[सं० वि०√शंक् (संदेह करना)+अनीयर्] जिसमें किसी प्रकार की शंका न हो।

विशंका—स्त्री०[सं० वि√शंक् (संदेह करना)+अच्+टाप्]१. आशंका। २. डर। भय। ३. आशंका का अभाव।

विशंकी (किन्)—वि०[सं० वि√ शंक्+णिनि] जिसे किसी प्रकार की आशंका हो।

विशंक्य—वि०[सं० वि√ शंक्+ण्यत्] १. जिसके मन में कोई शंका हो या हो सकती हो। २. प्रश्नास्पद। पूछने योग्य।

विश्—स्त्री०[सं० विश् (प्रवेश करना)+क्विप्]१. प्रजा। २. रिआया। ३. कन्या। लड़की।

वि० जिसने जन्म लिया हो।

विश—पुं०[सं० √ विश् (प्रवेश करना आदि)+क] १. कमल की डंडी। मृणाल। २. मनुष्य। ३. चाँदी।

स्त्री० १. कन्या। २. लड़की।

विशद—वि०[सं०] [भाव० विशदता] १. स्वच्छ। निर्मल। साफ। २. स्पष्ट रूप से दिखाई देनेवाला। ३. उज्ज्वल। चमकीला। ४. सफेद। ५. चितारहित। शांत तथा स्थिर। ६. खुश। प्रसन्न। ७. मनोहर। सुन्दर। ८. अनुकूल।

पुं०१. सफेद रंग। २.. कसीस। ३. बृहती। बन-भंटा।

विशदता—स्त्री०[सं०]१. विशद होने की अवस्था या भाव। २. निर्मलता। ३. स्पष्टता।

विशदित—भू० कृ० [सं० वि√ शद् (स्वच्छ करना आदि) +क्त]विशद अर्थात् साफ़ किया हुआ।

विशय—पुं०[सं० वि√ शी (स्वप्न, संशय आदि)+अच्]१. संशय। संदेह। शक। २. आश्रय। सहारा। २. केन्द्र। मध्य।

विशरण—पुं०[सं० वि√शॄ (मारना)+ल्युट्—अन] १. मार डालना। हत्या करना। वध करना। २. नाश। ३. विस्फोटन।

विशल्य—वि०[सं०]१. (स्थान) जो काँटों से रहित हो। २. तीर

जिसमें नोक न हो। ३. (स्थिति) जिसमें कष्ट या संकट न हो।

विशल्या--स्त्री०[सं० विशल्य+टाप्] १. गुड़ुच। २. दंती। ३. नागदंती। ४. अग्नि-शिखा नामक वृक्ष। निशोथ। ६. पाटला। ७. खेसारी। ८. एक प्रकार की तुलसी जिसे रमदंती भी कहते हैं। ९. एक प्राचीन नदी। १०. लक्ष्मण की स्त्री उर्मिला का दूसरा नाम।

विशसन--पुं० [सं०] [भू० कृ० विशसित]१. वध करना। २. नष्ट या बरबाद करना। ३. युद्ध।

विशसित--भू० कृ० [सं० वि√ शस् (मारना)+क्त] १. जो मार डाला गया हो। २. काटा या चीरा हुआ।

विशस्त--वि०=विशसित।

विशांप्रति--पुं०[सं० प० त०] राजा।

विशा--स्त्री०[सं० विश् (प्रवेश करना)+क+टाप्] १. जाति। २. लोक।

विशाकर--पुं०[सं० विशा√कृ (करना)+अच्] १. भद्रचूड़। लंकासिज। २. दंती। ३. हाथीशुंडी। ४. पाटला या पाढर नामक वृक्ष।

विशाख--पुं०[सं० विशाखा+अण्, ब० स०]१. कार्तिकेय। २. शिव। ३. धनुष चलानेवाले की वह मुद्रा जिसमें एक पैर आगे और एक पीछे रखा जाता है। ४. पुराणानुसार एक देवता जिनका जन्म कार्तिकेय के वज्र चलाने से हुआ था। ५. गदहपुरना। पुनर्नवा। ६. बालकों को होनेवाला एक प्रकार का रोग। (वैद्यक) वि०--१. शाखाओं से रहित। २. माँगनेवाला। याचक।

विशाख-यूप--पुं०[सं० ब० स०] एक प्राचीन देश जिसे कुछ लोग मद्रास प्रान्त का आधुनिक विशाखपत्तन मानते हैं।

विशाखा--स्त्री०[सं० विशाख+टाप्]१. बड़ी शाखा में से निकली हुई छोटी शाखा। २. सत्ताईस नक्षत्रों में से सोलहवाँ नक्षत्र जो मित्र गण के अन्तर्गत है और इसे राधा भी कहते हैं। ३. कौशाम्बी के पास का एक प्राचीन जनपद। ५. सफेद गदहपूरना। ५. काली अपराजिता।

विशातन--पुं०[सं० वि√ शत् (काटना, आदि)+णिच्+ल्युट--अन] [भू० कृ० विशातित]१. खंडित या नष्ट करना। २. विष्णु का एक नाम।

वि० काटने, तोड़ने या नष्ट करनेवाला।

विशारण--पुं०[सं० वि √ शृ (मारना)+णिच्+ल्युट्--अन] १. मार डालना। २. चीरना या फाड़ना।

विशारद--वि० [सं० विशाल√दा (देना)+क, ल+र] १. समस्त पदों के अन्त में किसी विषय का विशेषज्ञ। जैसे--चिकित्सा-विशारद, शिक्षा-विशारद। २. पंडित। विद्वान्। ३. उत्तम। श्रेष्ठ। ४. अभिमानी।

पुं० बकुल वृक्ष।

विशाल--वि०[सं०√ विश् (प्रवेश करना) +कालन्] [भाव० विशालता] १. जो आकार-प्रकार, आयतन, आदि की दृष्टि से अत्यधिक ऊँचा या विस्तृत हो। २. जिसके आकार-प्रकार में भव्यता हो। ३. सुन्दर।

पुं० १. पेड़। २. पक्षी। ३. एक प्रकार का हिरन।

विशालक--पुं०[सं० विशाल+कन्]१. कैथ। कपित्थ। २. गरुड़।

विशालता--स्त्री०[सं० विशाल+तल्+टाप्] विशाल होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव।

विशाल-पत्र--पुं०[सं० ब० स०] १. श्रीताल नामक वृक्ष। हिंताल। २. मानकंद।

विशाला--स्त्री०[सं० विशाल+टाप्] १. इन्द्रवारुणी नामक लता। २. पोई का साग। ३. मुरा-मांसी। ४. कलगा नामक घास। ५. महेन्द्रवारुणी। ६. प्रजापति की एक कन्या। ७. दक्ष की एक कन्या। ८. एक प्राचीन तीर्थ।

विशालाक्ष--पुं०[सं० ब० स०] [स्त्री० विशालाक्षी] १. महादेव। २. विष्णु। ३. गरुड़।

वि० बड़ी और सुन्दर आँखोंवाला।

विशालाक्षी--स्त्री० [सं० विशालाक्ष +ङीष्] १. पार्वती। २. एक देवी। ३. चौंसठ योगिनियों में से एक योगिनी। ४. नागदंती।

विशिका--स्त्री०[सं० विश+कन्+टाप्, इत्व] बालू। रेत।

विशिख--पुं०[सं० ब० स०]१. रामसर या भद्रमुंज नामक घास। २. बाण। ३. रोगी के रहने का स्थान।

वि० १. शिखाहीन। २. (बाण) जिसकी नोक भोथरी हो। ३. (आग) जिसमें से लपट न उठ रही हो।

विशिखा--स्त्री० [सं० विशिख+टाप्] १. कुदाल। २. छोटा बाण। ३. एक तरह की सूई। ४. मार्ग। रास्ता। ५. रोगियों के रहने का स्थान।

विशिरस्क--पुं० [सं० ब० स०,+कप्] पुराणानुसार मेरु पर्वत के पास का एक पर्वत।

वि० सिर या मस्तक से रहित।

विशिरा(रस्)--वि० [सं०] जिसका सिर न हो या न रह गया हो।

विशिष्ट--वि०[सं०] [भाव० विशिष्टता]१. (वस्तु) जिसमें औरों की अपेक्षा कोई बहुत बड़ी विशेषता हो। २. (व्यक्ति) जिसे अन्यों की अपेक्षा अधिक आदर, मान आदि प्राप्त हो या दिया जा रहा हो। ३. अद्भुत। ४. शिष्ट। ५. कीर्तिशाली। ६. तेजस्वी। ७. प्रसिद्ध।

विशिष्टता--स्त्री० [सं०विशिष्ट+तल्-टाप्] विशिष्ट होने की अवस्था, धर्म या भाव।

विशिष्टाद्वैत--पुं० [सं० विशिष्ट+अद्वैत] आचार्य रामानुज (सन् १०३७--११३७ई०) का प्रतिपादित किया हुआ यह दार्शनिक मत कि यद्यपि जगत् और जीवात्मा दोनों कार्यतः ब्रह्म से भिन्न हैं फिर भी वे ब्रह्म से ही उद्भूत हैं, और ब्रह्म से उनका उसी प्रकार का संबंध है जैसा कि किरणों का सूर्य से है, अतः ब्रह्म एक होने पर भी अनेक हैं।

विशिष्टी--स्त्री०[सं० विशिष्ट+ङीष्]शंकराचार्य की माता का नाम।

विशिष्टीकरण--पुं०[सं०]१. किसी काम या बात को कोई विशिष्ट रूप देने की क्रिया या भाव। २. किसी कला, विद्या या शास्त्र में विशिष्ट रूप से प्रवीणता या योग्यता प्राप्त करने की क्रिया या भाव। (स्पेशलाइजेशन)

विशीर्ण--भू० कृ०[सं० वि√शृ(हिंसा करना)+क्त]१. जिसके टुकड़े-टुकड़े या खण्ड-खण्ड हो गये हों। २. गिरा हुआ। पतित। ३. संकुचित। ४. सूखा हुआ। ५. दुबला-पतला। ६. बहुत पुराना।

विशील--वि०[सं० ब० स०] १. बुरे शीलवाला। २. दुश्चरित्र।

विशुद्ध--वि०[सं० तृ० त०] [भाव० विशुद्धि] १. जो बिलकुल शुद्ध हो। खरा। जैसे--विशुद्ध घी। २. जिसमें कुछ भी दोष या मैल न हो। ३. सच्चा। सत्य।

विशुद्ध चक्र--पुं०[सं०] हठयोग के अनुसार शरीर के अन्दर के छः चक्रों में से एक जो धूम्र वर्ण का तथा सोलह दलोंवाला है तथा गले के पास माना गया है।

विशेष--आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार इसी चक्र की ग्रंथियों की प्रक्रिया से शरीर के अन्दर के विष बाहर निकलते हैं।

विशुद्धता--स्त्री०[सं० विशुद्ध+टाप्] १. विशुद्ध होने की अवस्था या भाव। पवित्रता। २. चारित्रिक पवित्रता।

विशुद्धि--स्त्री० [सं०] १. विशुद्धता। २. दोष, शंका आदि दूर करने की क्रिया या भाव। ३. भूल का सुधार। ४. पूर्ण ज्ञान। ५. सादृश्य।

विशुद्धिवाद--पुं०[सं०] यह सिद्धान्त कि दूषित प्रभावों से अपने को या अपनी चीजों को निर्दोष तथा विशुद्ध रखना चाहिए।

विशूचिका--स्त्री०[सं० वि√ शूच् (सूचना देना)+अच्+कन्, टाप, इत्व] विषूचिका (रोग)।

विशून्य--वि०[सं० विशूना+यत्] [भाव० विशून्यता] १. पूरी तरह से रिक्त या शून्य। २. जिसके अन्दर वायु तक न रह गई हो। (वैकुम)

विशृंखल--वि०[सं० ब० स०] १. जो शृंखलित न हो। २. बंधनहीन। ३. जो किसी प्रकार दबाया या रोका न जा सके। अदम्य।

विशृंखलता--स्त्री०[सं०] विशृंखल होने की अवस्था या भाव।

विशृंग--वि०[सं० ब० स०] जिसे शृंग न हो। शृंगरहित।

विशेष--वि०[सं० वि√शिष् (विशेषता होना)+घञ्] १. जिसमें औरों की अपेक्षा कोई नयी बात हो। विशेषता-युक्त। २. जिसमें औरों की अपेक्षा कुछ अधिकता हो। ३. विचित्र। विलक्षण। ४. बहुत अधिक। विपुल। पुं०१. वह जो साधारण से अतिरिक्त और उससे अधिक हो। अधिकता। ज्यादती। २. अन्तर। ३. प्रकार। भेद। ४. विचित्रता। विलक्षणता। ५. तारतम्य। ६. नियम। कायदा। ७. अंग। अवयव। ८. चीज। पदार्थ। वस्तु। ९. व्यक्ति। १०. निचोड़। सार। ११. साहित्य में, एक प्रकार का अलंकार जिसके तीन भेद कहे गये हैं।

विशेषक--वि०[सं०] विशेष रूप देने या विशिष्टता उत्पन्न करनेवाला। पुं०१. विशेषता बतलानेवाला चिह्न, तत्त्व या पदार्थ। २. माथे पर लगाया जानेवाला टीका या तिलक जो प्रायः किसी सम्प्रदाय के अनुयायी होने का सूचक होता है। ३. प्राचीन भारत में, अगर, कस्तूरी, चंदन आदि से गाल, माथे आदि पर की जानेवाली एक प्रकार की सजावट। ४. साहित्य में, एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें पदार्थों से रूप-सादृश्य होने पर भी किसी एक की विशिष्टता के आधार पर उसके पार्थक्य का उल्लेख होता है। उदा०--कागन में मृदु बानि ते, मैं पिक लियो पिछान। --पद्माकर। ५. एक प्रकार का समवृत्त वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ५ भगण और एक गुरु होता है। इसे अश्वगीत, नील, और लीला भी कहते हैं। ६. साहित्य में, ऐसे तीन पदों या श्लोकों का वर्ग या समूह जिनमें एक ही क्रिया होती है, और इसी लिए इन तीन पदों या श्लोकों का एक साथ अन्वय होता है। ७. तिल का पौधा। ८. चित्रक। चीता।

विशेषक चिह्न--पुं०[सं०] वे चिह्न जो वर्णमाला के अक्षरों या वर्णों पर उनका कोई विशिष्ट उच्चारण-प्रकार सूचित करने के लिए लगाये जाते हैं। (डायाक्रिटिकल मार्क्स)

विशेषज्ञ--पुं०[सं० विशेष√ज्ञा (जानना)+क] [भाव० विशेषज्ञता] वह जो किसी विषय का विशेष रूप से ज्ञाता हो। किसी विषय का बहुत बड़ा पंडित।

विशेषण--पुं०[सं०] १. वह जिससे किसी प्रकार की विशेषता सूचित हो। २. व्याकरण में, ऐसा विकारी शब्द जो किसी संज्ञा की विशेषता बतलाता हो, उसकी स्थिति मर्यादित करता हो अथवा उसे अन्य संज्ञाओं से पृथक करता हो। (ऐडजेक्टिव)

विशेषता--स्त्री०[सं० विशेष+तल्+टाप्] १. विशेष होने की अवस्था या भाव। २. किसी वस्तु या व्यक्ति में औरों की अपेक्षा होनेवाली कोई अच्छी बात।

विशेषांक--पुं०[सं० विशेष+अंक] सामयिक पत्र का वह अंक जो किसी विशिष्ट अवसर पर या किसी विशेष उद्देश्य से और साधारण अंकों की अपेक्षा विशिष्ट रूप में या अलग से प्रकाशित होता है। (स्पेशल नम्बर)

विशेषाधिकार--पुं०[सं०] किसी विशिष्ट व्यक्ति को विशेष रूप से मिलनेवाला कोई ऐसा अधिकार जिससे उसे कुछ सुभीता भी मिलता हो। (प्रिविलेज़)

विशेषित--भू० कृ०[सं० वि√शिष् (विशेषता होना)+क्त] १. जिसमें विशेषता लाई गई हो। २. (संज्ञा शब्द) जिसकी विशेषता कोई विशेषण मर्यादित करता हो।

विशेषी--वि०[सं० वि√ शिष् +णिनि] जिसमें कोई विशेष बात हो। विशेषता-युक्त। विशिष्ट।

विशेषोक्ति--स्त्री० [सं० विशेष+उक्ति] साहित्य में, एक अर्थालंकार जिसमें कारण के पूरी तरह से वर्तमान रहते भी कार्य के अभाव का अथवा किसी क्रिया के होने पर भी उसके परिणाम या फल के अभाव का उल्लेख होता है। (पिक्यूलियर+एलेजेशन) यह विभावना का बिल्कुल उल्टा है। इसके उक्त निमित्ता, अनुरक्त निमित्ता और औचित्य निमित्ता ये तीन भेद माने गये हैं।

विशेष्य--पुं०[सं० वि√ शिष् +ण्यत्] व्याकरण में, वह शब्द अथवा पद, जिसकी विशेषता कोई विशेषण या विशेषण पद सूचित करता या कर रहा हो।

विशेष्य-लिंग--पुं० [सं०] व्याकरण में, ऐसा शब्द जिसका लिंग उसके विशेष्य के लिंग के अनुसार निरूपित हो। जैसे--पाले या हिम के अर्थ में शिशिर शब्द पुं० है शीत काल के अर्थ में पुन्नपुंसक तथा शीत से युक्त पदार्थ के अर्थ में विशेष्य लिंग होता है। अर्थात् उसका वही लिंग होता है, जो उसके विशेष्य का होता है।

विशेष्यासिद्धि--स्त्री० [सं० विशेष्य+असिद्धि, तृ० त०] तर्कशास्त्र में, ऐसा हेत्वाभास जिसके द्वारा स्वरूप की असिद्धि हो।

विशोक--वि० [सं० ब० स०] [भाव० विशोकता] जिसे शोक न हो। शोक से रहित।

पुं०१. अशोक वृक्ष। २. ब्रह्मा का एक मानस पुत्र।

विशोका--स्त्री०[सं० विशोक+टाप्] योग दर्शन के अनुसार, ऐसी चित्त-

वृत्ति जो संप्रज्ञात समाधि से पहले होती है। इसे ज्योतिष्मती भी कहते हैं।

विशोणित--भू० कृ० [सं० ब० स०] जिसका रक्त निकाल लिया गया हो।

विशोध--वि० [सं०] विशुद्ध करने के योग्य। विशोध्य।

विशोधन--पुं० [सं०] [भू० कृ० विशोधित] १. विशुद्ध करने या बनाने की क्रिया या भाव। २. विशुद्धीकरण।

विशोधनी--स्त्री० [सं० विशोधन+ङीप्] १. ब्रह्मा की पुरी का नाम। २. ताम्बूल। पान। ३. नागदंती। ४. नीली नाम का पौधा।

विशोधित--भू० कृ० [सं० वि√शुध् (शुद्ध करना)+क्त] जिसका विशोधन हुआ हो या किया गया हो।

विशोधिनी--स्त्री० [सं०] १. नागदंती। २. जमालगोटा। ३. नीली नाम का पौधा।

विशोधी (धिन्)--वि० [सं० वि√शुध्+णिनि] विशुद्धि करने या बनानेवाला।

विशोध्य--वि० [सं० वि√शुध्+यत्] जिसका विशोधन होने को हो या हो सकता हो।

पुं० ऋण। कर्ज।

विश्पति--पुं० [सं० ष० त०] [स्त्री० विश्पत्नी] १. राजा। २. वैश्यों या व्यापारियों का पंच या मुखिया।

विश्रंभ--पुं० [सं०] १. किसी में होनेवाला दृढ़ तथा पूर्ण विश्वास। २. प्रेम। मुहब्बत। ३. रति के समय प्रेमी और प्रेमिका में होनेवाला झगड़ा। ४. वध। हत्या। ५. स्वच्छन्दतापूर्वक घूमना-फिरना।

विश्रंभी (भिन्)--वि० [सं० वि√श्रृम्भ् (विश्वास करना)+णिनि] १. विश्वास करनेवाला। विश्वास का पात्र। विश्वसनीय। ३. गोपनीय (वार्ता)। ४. प्रेम-संबंधी।

विश्रब्ध--वि० [सं०] १. जिसका विश्वास किया जा सके। २. जो किसी का विश्वास करे। ३. निडर। निर्भय। ४. शान्त और सुशील।

विश्रब्ध-नवोढ़ा--स्त्री० [सं०] साहित्य में, वह नायिका (विशेषतः ज्ञातयौवना) जिसमें लज्जा और भय पहले से कम हो गया हो और जो प्रेमी की ओर कुछ-कुछ आकृष्ट होने लगी हो।

विश्रम--पुं० [सं० वि√श्रम् (श्रम करना)+घञ्, ब० स०]=विश्राम।

विश्रय--पुं० [सं० वि√श्रि (आश्रय देना)+अच्] आश्रय। स्थान।

विश्रयी (यिन्)--वि० [सं० विश्रय+इनि] आश्रय या सहारा लेनेवाला।

विश्रव (स्)--पुं० [सं०] ख्याति। प्रसिद्धि।

विश्रवा (वस्)--पुं० [सं०] कुबेर के पिता जो पुलस्त्य के पुत्र थे।

विश्रांत--वि० [सं० ब० स०] १. जिसने विश्राम कर लिया हो। २. जो कम हो गया या रुक गया हो। ३. रहित। ४. समाप्त। ५. वंचित। ६. क्लांत।

विश्रांति--स्त्री० [सं०] १. विश्राम। आराम। २. थकावट। ३. कार्यकाल पूरा होने अथवा और किसी कारण से अपने कार्य, पद, सेवा आदि से स्थायी रूप से हट कर किया जानेवाला विश्राम। (रिटायरमेन्ट)

विश्राम--पुं० [सं०] १. ऐसा उपचार, क्रिया या स्थिति जिससे श्रम दूर हो। थकावट कम करने या मिटानेवाला काम या बात। आराम। (रेस्ट) २. कर्मचारियों, विद्यार्थियों को कुछ नियत घंटों तक काम करने के बाद थकावट और सुस्ती मिटाने तथा जलपान आदि करने के लिए मिलनेवाला अवकाश। ३. ठहरने का स्थान। विश्रामालय। ४. चैन। सुख।

विश्रामालय--पुं० [सं० ष० त०] वह स्थान जहाँ यात्री लोग सवारी के इन्तजार में ठहर या रुककर विश्राम करते हों।

विश्राव--पुं० [सं० वि√श्रु (सुनना)+घञ्] १. तरल पदार्थ का झरना, बहना या रिसना। क्षरण। २. बहुत अधिक प्रसिद्धि। ३. ध्वनि।

विश्रावण--पुं० [सं० वि√श्रु+णिच्+ल्युट्-अन] [भू० कृ० विश्रावित] कोई तरल पदार्थ, विशेषतः रक्त बहना।

विश्री--वि० [सं०] १. जिसकी श्री नष्ट या लुप्त हो गई हो। श्रीहीन। २. (व्यक्ति) जिसके मुख पर सौंदर्य की झलक न दिखायी पड़ती हो। भद्दा।

विश्रुत--वि० [सं० तृ० त०] [भाव० विश्रुति] १. जिसे लोग अच्छी तरह से सुन चुके हों। २. जिसे सब लोग जान चुके हों, फलतः प्रसिद्ध।

विश्रुतात्मा (त्मन्)--पुं० [सं० विश्रुत+आत्मा, ब० स०] विष्णु।

विश्रुति--स्त्री० [सं० वि√श्रु (ख्याति होना)+क्तिन्] विश्रुत होने की अवस्था या भाव।

विश्लथ--वि० [सं० ब० स०] १. बहुत थका हुआ। श्लथ। क्लान्त। २. ढीला। शिथिल। ३. बन्धन से छूटा हुआ। मुक्त।

विश्लिष्ट--भू० कृ० [सं० वि√श्लिष् (संयुक्त होना)+क्त] १. जिसका विश्लेषण हो चुका हो। २. जो अलग किया जा चुका हो। ३. खिला हुआ। विकसित। ४. प्रकट। व्यक्त। ५. खुला हुआ। मुक्त। ६. थका हुआ। शिथिल।

विश्लिष्ट संधि--स्त्री० [सं० ब० स०] शरीर के अंगों की ऐसी सन्धि या जोड़ जिसकी हड्डी टूट गई हो। (वैद्यक)

विश्लेष--पुं० [सं० वि√श्लिष+घञ्] १. अलग या पृथक् होना। २. वियोग। ३. थकावट। शिथिलता। ४. विरक्ति। ५. विकास।

विश्लेषण--पुं० [सं०] [भू० कृ० विश्लेषित] १. अलग या पृथक् करना। २. किसी वस्तु के संयोजक अंगों या द्रव्यों को इस उद्देश्य से अलग-अलग करना कि उनके अनुपात, कर्तृत्व, गुण, प्रकृति, पारस्परिक संबंध आदि का पता चले। ३. किसी विषय के सब अंगों की इस दृष्टि से छान-बीन करना कि उनका तथ्य या वास्तविक स्वरूप सामने आए। (एनैलिसिस उक्त दोनों अर्थों के लिए) ४. वैद्यक में, घाव या फोड़े में वायु के प्रकोप से होनेवाली एक प्रकार की पीड़ा।

विश्लेषणात्मक--वि० [सं० विश्लेषण+आत्मक] (विचार या निश्चय) जो विश्लेषणवाली प्रक्रिया के अनुसार हो। 'आश्लेषात्मक' का विपर्याय। (एनैलिटिकल)

विश्लेषी (षिन्)--वि० [सं० विश्लेष+इनि] १. विश्लेषण करनेवाला। २. वियुक्त।

विश्लेष्य--वि० [सं०] जिसका विश्लेषण होने को हो या हो रहा हो।

विश्वंतर--पुं० [सं० विश्व√तॄ (पार करना आदि)+खच्, मुम्] भगवान बुद्ध का एक नाम।

विश्वंभर--वि० [सं० विश्व√भृ (भरण-पोषण करना)+खच्, मुम्] [स्त्री० विश्वंभरा] विश्व का भरण-पोषण करनेवाला।

पुं० १. विष्णु। २. इन्द्र। ३. अग्नि। ४. एक उपनिषद् का नाम।

विश्वंभरा--स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

विश्वंभरी—स्त्री०[सं०] १. पृथ्वी। २. संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

विश्व—वि०[सं०√विश् (प्रवेश करना)+क्वन्] कुल। समस्त।

पुं० १. सृष्टि का वह सारा अंश जो हमें दिखाई देता है। २. ब्रह्मांड। समस्त सृष्टि। ३. जगत्। संसार। ४. विष्णु। ५. शिव। ६. जीवात्मा। ७. देह। शरीर।

विश्वक—वि०[सं०] १. विश्व-संबंधी। २. जिसका प्रभाव, प्रसार आदि विश्व-व्यापी हो। (यूनीवर्सल)

विश्वकर्ता—पुं०[सं० ष० त०] विश्व का स्रष्टा। ईश्वर।

विश्वकर्मा (र्म्मन्)—पुं० [सं० ब० स०] १. समस्त संसार की रचना करनेवाला अर्थात् ईश्वर। २. ब्रह्मा। ३. सूर्य। ४. शिव। ५. वैद्यक में शरीर की चेतना नामक धातु। ६. एक शिल्पकार जो देवताओं के शिल्पी और वास्तु-कला के सर्वश्रेष्ठ आचार्य माने गए हैं। ७. इमारत का काम करनेवाले राज, बढ़ई, लोहार आदि।

विश्वकाय—पुं०[सं० ब० स०] सारा विश्व जिसका शरीर हो, अर्थात् विष्णु।

विश्वकाया—स्त्री०[सं० विश्वकाय+टाप्] दुर्गा।

विश्वकार—पुं०[सं० ष० त०] विश्वकर्मा।

विश्वकार्य—पुं०[सं० ब० स०] सूर्य की सात किरणों या रश्मियों में से एक।

विश्वकृत्—पुं०[सं०] १. विश्व का निर्माता अर्थात् ईश्वर। २. विश्वकर्मा।

विश्वकेतु—पुं०[सं० ष० त०] (कृष्ण के पौत्र) अनिरुद्ध।

विश्वकोश—पुं० [सं०] ऐसा कोश या भंडार जिसमें संसार भर के पदार्थ संगृहीत हों। २. ऐसा विशाल ग्रन्थ जिसमें ज्ञान-विज्ञान की समस्त शाखाओं-प्रशाखाओं तथा महत्त्वपूर्ण बातों का विश्लेषण तथा विवेचन होता है। (एनसाइक्लोपीडिया)

विशेष—विश्व कोश में विभिन्न विषयों के बड़े-बड़े विद्वानों के लिखे हुए ग्रन्थों, निबंधों, विवेचनों आदि के सारांश संकलित होते हैं, और उन विषयों के शीर्षक प्रायः अक्षर-क्रम से लगे रहते हैं।

विश्वगंध—पुं० [सं० ब० स०] १. बोल (गंध द्रव्य)। २. प्याज।

वि० जिसकी गंध बहुत दूर-दूर तक फैलती हो।

विश्वगंधा—स्त्री०[सं० विश्वगंध+टाप्] पृथ्वी।

विश्वग—वि०[सं० विश्व√गम् (जाना)+ड] विश्व भर में जिसका गमन या गति हो।

पुं० ब्रह्मा।

विश्वगर्भ—पुं०[सं० ब० सं०] १. विष्णु। २. शिव।

विश्वगुरु—पुं०[सं० ष० त०] विष्णु।

विश्व-गोचर—वि० [सं०] जिसे सब लोग जान या देख सकते हों।

विश्वगोप्ता—पुं०[सं० ष० त०] १. विष्णु। २. इन्द्र। ३. विश्वम्भर।

विश्व-चक्र—पुं०[सं० ब० स०] पुराणानुसार बारह प्रकार के महादानों में से एक। इसमें एक हजार पल का सोने का चक्र बनवाकर दान किया जाता है।

विश्व-चक्षु (ष्)—पुं०[सं०] ईश्वर।

विश्वजित्—वि०[सं०] विश्व को जीतनेवाला।

पुं० १. वह जिसने सारे विश्व को जीत लिया हो। २. एक प्रकार की अग्नि। ३. एक प्रकार का यज्ञ। ४. वरुण का पाश।

विश्वजीव—पुं०[सं० ष० त०] ईश्वर।

विश्वतः (तस्)—अव्य० [सं० विश्व+तसिल्] १. विश्व भर में सब कहीं। सर्वत्र। २. सारे विश्व के विचार से।

विश्वतोया—स्त्री०[सं०] गंगा नदी।

विश्वत्रय—पुं०[सं०] आकाश, पाताल और मर्त्य लोक।

विश्वदेव—पुं०[सं०] देवताओं का एक वर्ग जिसकी पूजा नांदी-मुख श्राद्ध में की जाती है।

विश्वदैवत—पुं०[सं०] उत्तराषाढ़ा नक्षत्र जिसके देवता विश्वदेव माने जाते हैं।

विश्वधर—पुं०[सं० विश्व√धृ (धारण करना)+अच्] विश्व को धारण करनेवाले विष्णु।

विश्वधाम (न्)—पुं० [सं०] ईश्वर।

विश्वधारिणी—स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

विश्वधारी (रिन्)—पुं० [सं०] विष्णु।

विश्वनाथ—पुं०[सं०] १. विश्व के स्वामी, शंकर। महादेव। २. काशी का एक प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग।

विश्वनाभ—पुं०[सं०] विष्णु।

विश्व-नाभि—स्त्री०[सं०] विष्णु का चक्र जो विश्व की नाभि के रूप में माना जाता है।

विश्वपति—पुं०[सं०] १. ईश्वर। २. श्रीकृष्ण।

विश्व-पदिक—वि०[सं०] (रोग या विकार) जो बहुत बड़े भू-भाग, सारे महाद्वीप या सारे संसार में फैला या फैल सकता हो। (पैण्डेमिक)

विश्व-प्रकाश—पुं०[सं० ष० त०] सूर्य।

विश्वप्स (प्सन्)—पुं० [सं० विश्व√प्सा (खाना)+कनिन्] १. अग्नि। २. चन्द्रमा। ३. सूर्य। ४. देवता। ५. विश्वकर्मा।

विश्व-बंधु—वि०[सं० ष० त०] जो विश्व का मित्र हो।

पुं० शिव।

विश्वबाहु—पुं०[सं०] १. विष्णु। २. महादेव।

विश्व-बीज—पुं०[सं० ष० त०] विश्व की मूल प्रकृति, माया।

विश्वभद्र—पुं० [सं० ब० स०] सर्वतोभद्र (चक्र)।

विश्व-भर—वि०[सं० ष० त०] जिससे विश्व उत्पन्न हुआ हो।

पुं० ब्रह्मा।

विश्वभुज्—पुं० [सं० विश्व√भुज् (भोग करना)+क्विप्] १. ईश्वर। २. इन्द्र।

विश्व-माता (तृ)—स्त्री०[सं० ष० त०] दुर्गा, जो विश्व की माता कही गई है।

विश्वमुखी—स्त्री०[सं० ब० स०] पार्वती।

विश्वमूर्ति—वि० [सं० ब० स०] जो सब रूपों में व्याप्त हो।

पुं० विष्णु।

विश्व-योनि—पुं०[सं० ष० त०] ब्रह्मा।

विश्वरुचि—पुं०[सं०] एक देव-योनि।

विश्वरुची—स्त्री०[सं०] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

विश्वरूप—पुं०[सं०] १. विष्णु। २. शिव। ३. भगवान श्रीकृष्ण का

वह स्वरूप जो उन्होंने गीता का उपदेश करते समय अर्जुन को दिखलाया था। ४. एक प्राचीन तीर्थ।

विश्वरूपी(पिन्)—पुं०[सं० विश्वरूप+इनि] विष्णु।

विश्वलोचन—पुं०[सं०] १. सूर्य। २. चन्द्रमा।

विश्ववाद—पुं०[सं०] १. दार्शनिक क्षेत्र का यह मतवाद कि विज्ञान की दृष्टि से यह सिद्ध किया जा सकता है कि सारा विश्व एक स्वतंत्र सता है और कुछ निश्चित नियमों के अनुसार उसका निरंतर विकास होता चलता है। (कॉजमिस्म) २. यह सिद्धांत कि तत्त्वज्ञान संबंधी सभी बातें सारे विश्व में समान रूप से पाई जाती हैं। (युनिवर्सलिज़म)

विश्ववास—पुं०[सं०] संसार। जगत्।

विश्वविद्—वि०[सं० विश्व√विद् (जानना)+क्विप्] १. जो विश्व की सब बातें जानता हो। २. बहुत बड़ा पंडित।
पुं० ईश्वर।

विश्वविद्यालय—पुं०[सं०] वह बहुत बड़ी शैक्षणिक संस्था जिसके अन्तर्गत या अधीन सभी प्रकार के विषयों की सर्वोच्च शिक्षा देनेवाले बहुत से महाविद्यालय हों और जिसे, अपने स्नातकों को शिक्षा संबंधी उपाधियाँ देने का अधिकार हो। (यूनीवर्सिटी)

विश्वव्यापक—वि०,पुं०[सं०] विश्वव्यापी। (दे०)

विश्वव्यापी—वि०[सं० विश्वव्यापिन्] १. जो सारे विश्व में व्याप्त हो। २. जो संसार या उसके अधिकतर भागों में व्याप्त हो।
पुं० ईश्वर या परमात्मा।

विश्वश्रवा(वस्)—पुं० [सं०] रावण के पिता का नाम।

विश्वसन—पुं०[सं० वि√श्वस् (जीवन देना)+ल्युट्–अन] १. विश्वास। २. ऋषियों और मुनियों के रहने का स्थान।

विश्वसनीय—वि० [सं० वि√श्वस् (विश्वास करना)+अनीयर्] १. (व्यक्ति) जिस पर विश्वास किया जा सकता हो। २. (बात) जिस पर विश्वास किया जाना चाहिए।

विश्वसहा—स्त्री०[सं०] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

विश्व-साक्षी(क्षिन्)—पुं०[सं०] ईश्वर।

विश्वसित—भू० कृ०[सं० वि√श्वस् (विश्वास करना)+क्त] १. जिस पर विश्वास किया गया हो। २. विश्वास-पात्र। ३. जिसे अपने पर पूर्ण विश्वास हो।

विश्व-सृज्—पुं०[सं०] विश्व की सृष्टि करनेवाला ईश्वर या ब्रह्मा।

विश्वस्त—भू० कृ०[सं० वि√श्वस् (विश्वास करना)+क्त] १. जिसका विश्वास किया जाय। २. जिसके मन में विश्वास हो चुका हो।

विश्वहर्ता(र्तृ)—पुं०[सं० ष० त०] शिव।

विश्व-हेतु—पुं० [सं०] विश्व की सृष्टि करनेवाले विष्णु।

विश्वांड—पुं०[सं० कर्म० स०] ब्रह्माण्ड।

विश्वा—स्त्री०[सं०√विश् (प्रवेशकरना)+क्वन्+टाप्] १. दक्ष की एक कन्या जो धर्म को ब्याही थी और जिससे वसु, सत्य, क्रतु आदि दस पुत्र उत्पन्न हुए थे। २. बीस पल की एक प्राचीन तौल या मान। ३. पीपल। ४. सोंठ। ४. अतीस। ६. शतावर। ७. चोरपुष्पी। शंखिनी।

विश्वाक्ष—वि०[सं० विश्व+अक्ष] जिसकी दृष्टि पूर्ण विश्व पर हो।
पुं० ईश्वर।

विश्वातीत—वि०[सं० ष० त०] १. जिसे विश्व प्राप्त न कर सकता हो। २. विश्व से अलग या दूर।
पुं० ईश्वर।

विश्वात्मा(त्मन्)—पुं० [सं० ब० स० विश्व+आत्मन्] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। ४. सूर्य।

विश्वाद्—पुं०[सं० विश्व√अद् (खाना)+क्विप्] अग्नि।

विश्वाधार—पुं०[सं० ष० त०] विश्व का आधार अर्थात् परमेश्वर।

विश्वानर—वि०, पुं०=वैश्वानार।

विश्वामित्र—वि०[सं० ब० स०, विश्व+मित्र] जो विश्व का मित्र हो।
पुं० गाधि नामक कान्यकुब्ज क्षत्रिय नरेश के पुत्र जिन्होंने घोर तपस्या से ब्राह्मणत्व प्राप्त किया था।

विशेष—भगवान राम ने इन्हीं की आज्ञा से ताड़का का वध किया था।

विश्वामृत—वि०[सं० विश्व+अमृत] जिसकी कभी मृत्यु न हो। अमर।

विश्वायन—पुं०[सं० ष० त०] १. वह जो विश्व की सब बातें जानता हो। सर्वज्ञ। २. ब्रह्मा।

विश्वावसु—पुं०[सं० ब० स०] १. विष्णु। २. साठ संवत्सरों में से एक।
स्त्री० रात्रि। रात।

विश्वावास—पुं०[सं० ष० त०] ईश्वर। परमात्मा।

विश्वाश्रय—पुं०[सं० ष० त०] विश्व को आश्रय देनेवाला अर्थात् ईश्वर।

विश्वास—पुं०[सं० वि√श्वस्+घञ्] १. किसी बात, विषय, व्यक्ति आदि के संबंध में मन में होनेवाली यह धारणा कि यह ठीक, प्रामाणिक या सत्य है, अथवा उसे हम जैसा समझते हैं, वैसा ही है, उससे भिन्न नहीं है। एतबार। यकीन। २. धार्मिक क्षेत्र में, ईश्वर, देवता, मत, सिद्धान्त आदि के संबंध में होनेवाली उक्त प्रकार की धारणा। (बिलीफ़)
मुहा०—(किसी पर) विश्वास जमना या बैठना=विश्वास का दृढ़ रूप धारण करना। **(किसी को) विश्वास दिलाना**=किसी के मन में उक्त प्रकार की धारणा दृढ़ करना।
३. केवल अनुमान के आधार पर होनेवाला मन का दृढ़ निश्चय। जैसे—मेरा तो यह दृढ़ विश्वास है कि वह अवश्य आएगा।

विश्वास-घात—पुं०[सं० ष० त०, तृ० त०] १. किसी को विश्वास दिला कर उसके प्रति किया जानेवाला द्रोह। २. विश्वसनीय व्यक्ति द्वारा अपने मित्र या स्वामी के हितों के विरुद्ध किया हुआ ऐसा बुरा काम जिससे उसका विश्वास जाता रहे।

विश्वास-घातक—वि०[सं० विश्वास√हन् (मारना)+ण्वुल् अक, ब० स०] विश्वासघात करनेवाला (व्यक्ति)।

विश्वास-पात्र—वि०[सं०] (व्यक्ति) जिसका विश्वास किया जाता हो और जो विश्वास किये जाने के योग्य हो। विश्वसनीय।

विश्वासिक—वि०[सं० वैश्वासिक]=विश्वसनीय।

विश्वासित—वि०[सं० विश्वास+इतच्] जिसे विश्वास दिलाया गया हो।

विश्वासी (सिन्)—वि०[सं० विश्वास+इनि] १. जो किसी एक पर विश्वास करता हो। विश्वास करनेवाला। २. जिसका विश्वास किया जा सके।

विश्वास्य—वि० [सं० वि√श्वस्+णिच्+यत्] विश्वास के योग्य। विश्वसनीय।

विश्वेदेव—पुं०[सं०] १. अग्नि। २. वैदिक युग में इन्द्र, अग्नि आदि

ऐसे नौ देवताओं का एक वर्ग जो विश्व के अधिपति और लोकरक्षक माने जाते थे।

विशेष—अग्नि-पुराण में इनकी संख्या दस कही गई है। यथा—क्रतु, दक्ष, वसु, सत्य, काम, काल, ध्वनि, रोचक, आद्रव और पुरूरवा। नांदीमुख श्राद्ध में इन्हीं का पूजन होता है।

विश्वेश—पुं०[सं० विश्व+ईश, ष० त०] १. शिव। २. विष्णु। ३. उत्तराषाढ़ा नक्षत्र जिसके अधिपति विश्व नामक देवता कहे गए हैं।

विश्वेश्वर—पुं०[सं० विश्व+ईश्वर, ष० त०] १. ईश्वर। २. शिव की एक मूर्ति।

विषंगी(गिन्)—वि० [सं० विषंग+इनि] जो किसी से संलग्न हो। किसी के साथ लगा हुआ।

विष—पुं०[सं० √विष्+क] १. कोई ऐसा तत्त्व या पदार्थ जो थोड़ी मात्रा में भी शरीर के अन्दर पहुँचने या बनने पर भीषण रोग या विकार उत्पन्न कर सकता और अंत में घातक सिद्ध हो सकता हो। जहर। (प्वाइज़न) २. कोई ऐसा तत्त्व या बात जो नैतिक या चारित्रिक पवित्रता अथवा सार्वजनिक कल्याण, सुख, स्वास्थ्य आदि के लिए नाशक या भीषण सिद्ध हो। जैसे—बाल-विवाह समाज के लिए विष है।

पद—**विष की गाँठ**=बहुत बड़ी खराबी या बुराई पैदा करनेवाली बात, वस्तु या व्यक्ति।

मुहा०—**(किसी चीज में) विष घोलना**=ऐसा दोष या खराबी पैदा करना जिससे सारी भलाई या सुख नष्ट या मजा किरकिरा हो जाय।

३. पानी। ४. कमल की नाल या रेशा। ५. पद्मकेसर। ६. बोल (गंधद्रव्य)। ७. बछनाग। ८. कलिहारी।

विष-कंटक—पुं०[सं० ब० स०] दुरालभा।

विष-कंटकी—स्त्री०[सं० विषकंटक+ङीष्] बाँझ ककोंटकी।

विष-कंठ—पुं०[सं० ब० स०] शिव। महादेव।

विष-कंद—पुं० [सं० मध्य० स०] १. नीलकंद। २. इंगुदी। हिंगोट।

विष-कन्या—स्त्री० [सं० मध्य० स०] वह कन्या या स्त्री जिसके शरीर में इस आशय से विष प्रविष्ट किया गया हो कि उसके साथ सम्भोग करनेवाला मर जाय।

विशेष—प्राचीन भारत में धोखे से शत्रुओं का नाश करने के लिए कुछ लड़कियाँ बाल्यावस्था से कुछ दवाएँ देकर तैयार की जाती थीं और छल से शत्रुओं के पास भेजी जाती थीं।

विष-कृत—वि०[सं०] विषाक्त।

विष-गंधक—पुं०[सं० ब० स०] एक प्रकार का तृण जिसमें भीनी-भीनी गंध होती है।

विष-गिरि—पुं०[सं० ष० त०] ऐसा पहाड़ जिस पर जहरीले पेड़-पौधे होते हैं।

विषघ—वि० [सं० विष√हन् (मारना)+ड, ह–घ] विष का नाश करनेवाला।

विषघा—स्त्री०[सं०] गुरुच।

वि० विष दूर करनेवाला। विष-नाशक।

विषघ्न—पुं०[सं० विष√हन् (मारना)+टक्, कुत्व] १. सिरिस वृक्ष। २. भिलावाँ। ३. भू-कदंब। ४. गंध-तुलसी। ५. चम्पा।

विषघ्नी—स्त्री० [सं० विषघ्न+ङीष्] १. हिलमोचिका या हिलंच नामक साग। २. बन-तुलसी। ३. इन्द्रवारुणी। ४. भुईं-आँवला। ५. गदहपुरना। पुनर्नवा। ६. हल्दी। ७. गदा करंज। ८. वृश्चिकाली। ९. देवदाली। १०. कठ-केला। ११. सफेद चिचड़ा। १२. रास्ना।

विष-ज्वर—पुं०[सं० मध्य० स०] १. शरीर में किसी प्रकार का जहर पहुँचने या उत्पन्न होने पर चढ़नेवाला ज्वर जिसमें जलन भी होती है। २. भैंसा।

विषणि—पुं०[सं० विष√नी (होना)+क्विप्] एक प्रकार का साँप।

विषण्ण—वि० [सं० वि√सद्+क्त] [भाव० विषण्णता] १. उदास। २. दुःखी तथा हतोत्साहित। ३. जिसमें कुछ करने की इच्छा-शक्ति न रह गई हो।

विष-तंत्र—पुं०[सं० ष० त०] वह तंत्र या चिकित्सा-प्रणाली जिससे विष का कुप्रभाव दूर या नष्ट किया जाता था।

विष-तरु—पुं०[सं० ष० त०] कुचला।

विषता—स्त्री०[सं० विष+तल्+टाप्] १. विष का धर्म या भाव। जहरीलापन। २. ऐसी चीज या बात जो विषाक्त प्रभाव उत्पन्न करती हो।

विषदंड—पुं०[सं० ष० त०] कमलनाल।

विष-दंतक—पुं०[सं० ब० स०] सर्प। साँप।

विषदंष्ट्रा—स्त्री०[सं० मध्य स०] १. साँप का वह दाँत जिसमें विष होता है। २. नाग-दमनी। ३. सर्प-कंकालिका नामक लता।

विषद—पुं०[सं० वि√सद् (क्षीण करना)+अच्] १. बादल। मेघ। २. सफेद रंग। ३. अतिविषा। अतीस। ४. हीराकसीस।

वि० १. विषैला। २. साफ। स्वच्छ।

विषदा—स्त्री०[सं० विषद+टाप्] अतिविषा। अतीस।

विषदिग्ध—भू० कृ० [सं० ब० स०] [भाव० विषदिग्धता] (वस्तु) जिसमें विष का प्रवेश कराया गया हो। विषाक्त।

विष-दुष्ट—वि०[सं० तृ० त०] (पदार्थ) जो विष के सम्पर्क के कारण दूषित या विषाक्त हो गया हो।

विष-दूषण—वि०[सं० ष० त०] विष का प्रभाव दूर करनेवाला।

विष-द्रुम—पुं०[सं० ष० त०] कुचला।

विषधर—वि०[सं० विष√धृ+अच्] विषाक्त। जहरीला।

पुं० साँप।

विषधात्री—स्त्री०[सं०] जरत्कारु ऋषि की स्त्री मनसा देवी का एक नाम।

विष-नाशन—वि०[सं० ष० त०] विष का प्रभाव नष्ट करनेवाला।

पुं० १. सिरिस का पेड़। २. मानकन्द।

विषनाशिनी—स्त्री०[सं० ष० त०] १. सर्प कंकाली नामक लता। २. बाँझ ककोड़ा। ३. गन्ध नाकुली।

विष-पत्रिका—स्त्री०[सं० ष० त०] कोई जहरीली पत्ती या छिलका।

विष-पुच्छ—पुं०[सं० ब० स०] [स्त्री० विष-पुच्छी] बिच्छू।

विषपुष्प—पुं०[सं० ब० स० या मध्य० स०] १. नीला पद्म। २. अलसी का फूल। ३. मैनफल।

विष-प्रयोग—पुं०[सं० ष० त०] १. चिकित्सा के लिए विष का ओषधि के रूप में होनेवाला प्रयोग। २. किसी की हत्या के लिए उसे जहर देना।

विष-मंत्र--पुं०[सं० ष० त०] १. वह जो विष उतारने का मंत्र जानता हो। ऐसा मंत्र जिससे विष का प्रभाव दूर होता हो। २. ऐसा व्यक्ति जो उक्त प्रकार का मंत्र जानता हो। ३. सँपेरा।

विषम--वि० [सं० मध्य० स०] [स्त्री० विषमा] [भाव० विषमता] १. जो सम अर्थात् समान या बराबर न हो। असमान। 'सम' का विपर्याय। २. (संख्या) जो दो से भाग देने पर पूरी न बँटे बल्कि जिसमें एक बाकी बचे। ताक। ३. (कार्य या स्थिति) जो बहुत ही कठिन या विकट हो। ४. (विषय) जिसकी मीमांसा सहज में न हो सके। जैसे--विषम समस्या। ५. बहुत ही उत्कट, प्रचंड, भीषण या विकट। जैसे--विषम विपत्ति। ६. भयंकर। भीषण। ७. तीव्र। तेज।

पुं० १. विपत्ति। संकट। २. छंद शास्त्र में, ऐसा वृत्त जिसके चारों चरणों में अक्षरों और मात्राओं की संख्या समान न हो। ३. साहित्य में, एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें या तो दो परस्पर विरोधी बातों या वस्तुओं के संयोग का उल्लेख होता है, या उस संयोग की विषमता अर्थात् अनौचित्य दिखलाया जाता है। (इन्कांग्रैचुइटी) ४. गणित में, पहली, तीसरी, पाँचवीं आदि विषम संख्याओं पर पड़नेवाली राशियाँ। ५. संगीत में, ताल का एक प्रकार। ६. वैद्यक में, चार प्रकार की जठराग्नियों में से एक जो वायु के प्रकोप से उत्पन्न होती है।

विषम-कर्ण--पुं०[सं० ब० स०] (चतुर्भुज) जिसके कोण सम न हों।

विषम-कोण--पुं०[सं० कर्म० स०] ज्यामिति में ऐसा कोण जो सम न हो। समकोण से भिन्न कोई और कोण।

विषम-चतुष्कोण--पुं०[सं० ब० स०] ऐसा चतुष्कोण जिसकी भुजाएँ विषम हों। (ज्यामिति)

विषम-छंद--पुं०=विषमवृत्त।

विषम ज्वर--पुं०[सं० कर्म० स०] १. मच्छरों के दंश से फैलनेवाला एक प्रकार का ज्वर जिसके साथ प्रायः जिगर और तिल्ली भी बढ़ती है। इसके आरंभ में बहुत जाड़ा लगता है, इसी से इसे जूड़ी और शीत ज्वर भी कहते हैं। (मलेरिया) २. क्षय रोग में होनेवाला ज्वर।

विषमता--स्त्री०[सं०विषम+तल्+टाप्] १. विषम होने की अवस्था या भाव। २. ऐसा तत्त्व या बात जिसके कारण दो वस्तुओं या व्यक्तियों में अंतर उत्पन्न होता है। ३. द्रोह। बैर।

विषम त्रिभुज--पुं०[सं० कर्म० स०] ऐसा त्रिभुज जिसके तीनों भुज छोटे-बड़े हों, समान न हों। (ज्यामिति)

विषमत्व--पुं०[सं० विषम+त्व] विषम होने की अवस्था या भाव। विषमता।

विषम-नयन--पुं०[सं० ब० स०] शिव। महादेव।

विषम-नेत्र--पुं०[सं० ब० स०] शिव। महादेव।

विषम-बाहु--पुं०=विषम-भुज।

विषम-भुज--पुं०[सं० ब० स०] ज्यामिति में ऐसा क्षेत्र, विशेषतः त्रिभुज जिसके कोई दो भुज आपस में बराबर न हों। (स्केलीन)

विषम-वाण--पुं०[सं० ब० स०] १. कामदेव का एक नाम। २. कामदेव।

विषमवृत्त--पुं०[सं० ब० स०] ऐसा छंद या वृत्त जिसके चरण या पद समान न हों। असमान पदोंवाला वृत्त।

विषम-शिष्ट--पुं० [सं०] प्रायश्चित्त आदि के लिए व्यवस्था देने के संबंध का एक रोष जो इस समय माना जाता है, जब कोई भारी पाप करने पर हल्का प्रायश्चित्त करने या हल्का पाप करने पर भारी प्रायश्चित्त करने की व्यवस्था दी जाती है।

विषमांग--वि०[सं० विषम+अंग] जिसके सब अंग या तत्त्व भिन्न-भिन्न अथवा परस्पर विरोधी प्रकार के हों। 'समांग' का विपर्याय। (हेटेरोजीनिअस)

विषमा--स्त्री०[सं० विषम+टाप्] १. झरबेरी। २. एक प्रकार का बछनाग।

विषमाक्ष--पुं०[सं० ब० स०] शिव। महादेव।

विषमाग्नि--पुं०[सं० कर्म० स०] वैद्यक में एक प्रकार की जठराग्नि जो वायु के प्रकोप से उत्पन्न होती है।

विषमान्न--पुं०[सं० कर्म० स०] विषमाशन।

विषमायुध--पुं०[सं० ब० स०] कामदेव।

विषमाशन--पुं०[सं० कर्म० स०] १. ठीक समय पर भोजन न करना। २. आवश्यकता से कम या अधिक भोजन करना।

विषमित--भू० कृ०[सं०] विषम रूप में लाया हुआ। जो विषम किया या बनाया गया हो।

विषमीकरण--पुं०[सं०] १. 'सम' को विषम करने की क्रिया या भाव। विषम करना। २. भाषा विज्ञान में, वह प्रक्रिया जिससे किसी शब्द में दो व्यंजन या स्वर पास-पास आने पर उनमें से कोई उच्चारण के सुभीते के लिए बदल दिया जाता है। 'समीकरण' का विपर्याय। (डिस्सिमेलेशन)

विषमुष्टि--पुं० [सं०] १. केशमुष्टि। २. बकायन। घोड़ा नीम। ३. कलिहारी। ४. कुचला।

विषमेषु--पुं०[सं० ब० स०] कामदेव।

विषय--पुं०[सं०वि√सि+अच्, षत्व] [वि० विषयक] १. वह तत्त्व या वस्तु जिसका ग्रहण या ज्ञान इन्द्रियों से होता है। जैसे--रस-जिह्वा का और गंध नासिका का विषय है। २. कोई ऐसी चीज या बात जिसके संबंध में कुछ कहा, किया या समझा-सोचा जाय। ३. कोई ऐसा काम या बात जिससे संबंध रखनेवाली बातों का स्वतंत्र रूप से अध्ययन, मीमांसा या विवेचन होता है। ४. कोई ऐसी आधारिक कल्पना या विचार जिस पर किसी प्रकार की रचना हुई हो। विषय-वस्तु। (थीम) जैसे--किसी काव्य या नाटक का विषय। ५. कोई ऐसी चीज या बात जिसके उद्देश्य से या प्रति कोई कार्य या प्रक्रिया की जाती हो। (सबजेक्ट, उक्त सभी अर्थों के लिए) ६. वे बातें या विचार जिनका किसी ग्रन्थ, लेख आदि में विवेचन हुआ हो या किया जाने को हो। (मैटर) ७. सांसारिक बातों से इंद्रियों के द्वारा प्राप्त होनेवाला सुख। जैसे--विषय-वासना। ८. स्त्री के साथ किया जानेवाला संभोग। मैथुन। ९. सांसारिक भोग-विलास और उसके साधन की सामग्री (आध्यात्मिक ज्ञान या तत्व से पार्थक्य दिखाने के लिए)। १०. जगह। स्थान। ११. प्राचीन भारत में, कोई ऐसा प्रदेश या भू-भाग जो किसी एक जन या कबीले के अधिकार में रहता था और उसी के नाम से प्रसिद्ध होता था। १२. परवर्ती काल में क्षेत्र, प्रदेश या राज्य।

विषयक--वि०[सं० विषय+कन्] १. किसी कथित विषय से संबंध रखनेवाला। विषय-संबंधी। जैसे--ज्ञान-विषयक बातें। २. विषय के रूप में होनेवाला।

विषय-कर्म(न्)--पुं०[सं० ष० त०] सांसारिक काम-धन्धे।

विषय-निर्धारिणी-समिति—स्त्री०[सं० कर्म० स०] वह छोटी समिति जो किसी सभा में उपस्थित किये जानेवाले विषयों या प्रस्तावों के स्वरूप आदि निश्चित करती हो। (सबजेक्ट्स कमेटी)

विषयपति—पुं०[सं० ष० तं०] किसी विषय अर्थात् राज्य का स्वामी या प्रधान व्यवस्थापक।

विषय-वस्तु—स्त्री०[सं०] कल्पना, विचार आदि के रूप में रहनेवाला वह मूल तत्व जिसे आधार मानकर कोई कलात्मक या कौशलपूर्ण रचना की गई हो। किसी कृति का आधारिक और मूल विचार-विषय। (थीम) जैसे—इन दोनों नाटकों में भले ही बहुत-कुछ समता हो फिर भी दोनों की विषय-वस्तु एक दूसरी से भिन्न है।

विषय-समिति—स्त्री०=विषय-निर्धारिणी समिति।

विषयांत—पुं०[सं० विषय+अन्त, ष० त०] विषय अर्थात् देश या राज्य की सीमा।

विषयांतर—वि०[सं०विषय+अन्तर,कर्म०स०] समीप स्थित। पड़ोस का।

पुं० १. एक विषय को छोड़कर दूसरे विषय पर आना। २. असावधानता आदि के कारण मूल विषय पर कहते-कहते (या लिखते-लिखते) दूसरे विषय पर भी कुछ कहने (या लिखने) लगना।

विषया—स्त्री०[सं० विषय+टाप्] १. विषय-भोग की इच्छा। २. विषय-भोग की सामग्री।

विषयाधिप—पुं०[सं० विषय+अधिप ष० त०]=विषयपति।

विषयानुक्रमणिका—स्त्री०[सं० ष० त०] विषयों के विचार से बनी हुई अनुक्रमणिका। विशेषतः किसी ग्रन्थ में विवेचित विषयों की अनुक्रमणिका या सूची। (इन्डेक्स)

विषयासक्त—वि०[सं० स० त०] [भाव० विषयासक्ति] सांसारिक विषयों का भोग-विलास के प्रति आसक्ति रखनेवाला।

विषयासक्ति—स्त्री०[सं० स०त०] सांसारिक विषयों के भोग में रत रहने की अवस्था या भाव।

विषयी(यिन्)—वि० [सं० विषय+इनि] १. विषयों अर्थात् भोग-विलास में रत रहनेवाला। २. कामुक।

पुं० १. कामदेव। २. धनवान् व्यक्ति। ३. राजा।

विषरूपा—स्त्री०[सं०] १. अतिविषा। अतीस। २. घोड़ा नीम। मीठी नीम। ३. ककोड़ा। खेखसा।

विषल—पुं०[सं० विष√ला (ग्रहण करना)+क, विष+लच् वा] विष। जहर।

विष-लता—स्त्री०[सं० मध्य० स०] १. इन्द्र वारुणी नाम की लता। २. कमल-नाल। मृणाली।

विष-वल्ली—स्त्री०[सं० ष० त०] इन्द्र वारुणी (लता)।

विष-विज्ञान—पुं०[सं० ष० त०] वह विज्ञान या विद्या जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि भिन्न-भिन्न प्रकार के विष किस प्रकार अपना काम करते हैं और उनका प्रभाव किस प्रकार दूर किया जा सकता है। (टॉक्सीकालोजी)

विषविद्या—स्त्री०[सं० च० त०] मंत्र आदि की सहायता से झाड़-फूंककर विष का प्रकोप, प्रभाव या विकार शान्त करने की विद्या।

विष-विधि—स्त्री०[सं० ष० त०] एक तरह की परीक्षा जिससे यह जाना जाता था कि अमुक व्यक्ति अपराधी है अथवा निरपराधी।

विष-वृक्ष—पुं०[सं०] १. ऐसा पेड़ जिसके अंग विष का काम करते हों। २. गूलर।

विष-वैद्य—पुं०[सं० च० त०] वह जो मंत्र-तंत्र की सहायता से विष उतारता हो।

विष-व्रण—पुं०[सं० ष० त०] जहरबाद। (दे०)

विष-हंता(तृ)—पुं०[सं० ष० त०] सिरिस(पेड़)।

वि० विष का प्रभाव नष्ट करनेवाला।

विष-हंत्री—स्त्री० [सं० विष-हंतृ+ङीष् ष० त०] १. अपराजिता २. २. निर्विषी।

विषह—वि०[सं० विष√हन् (मारना)+ड] जो विष का नाश करता हो। विषघ्न।

पुं० १. देवपाली। २ निर्विषी।

विषहर—वि०[सं० ष० त०] (औषध या मंत्र) जिससे विष का प्रभाव दूर होता हो। विष दूर करनेवाला।

विषहरा—स्त्री०[सं० विषहर+टाप्] १. मनसा देवी का एक नाम। २. देवपाली। ३. निर्विषी।

विषहा—स्त्री०[सं० विषह+टाप्] १. देवपाली। बंदाल। २. निर्विषी।

विषहारक—पुं०[सं० ष० त०] भुइँकदंब।

वि० विष का प्रभाव दूर करनेवाला।

विषांकुर—पुं०[सं० ष० त०] तीर।

विषांगना—स्त्री०[सं० मध्य० स०] विष-कन्या।

विषांतक—वि०[सं० ष० त०] जिससे विष का नाश हो।

पुं० शिव। महादेव।

विषा—स्त्री०[सं० विष+टाप्] १. अतिविषा। अतीस। २. कलिहारी। ३. कड़वी तोरई। ४. काकोली। ५. बुद्धि। समझ।

विषाक्त—वि०[सं०] जिसमें विष मिला हो। २. (वातावरण) जो बहुत अधिक दूषित हो।

विषाण—पुं०[सं०√विष्+कानच्] १. जानवर का सींग। २. हाथी का बाहरवाला दाँत। हाथी-दाँत। ३. सूअर का दाँत। खाँग। ४. ऊपरी सिरा। चोटी। ६. शिव की जटा। ७. मथानी। ८. मेढ़ा-सिंगी। ९. वराही कंद।। गेंठी। १० ऋषभक नामक औषधि। ११. इमली। १२. सींग का बनाया हुआ बाजा। सिंगी। उदा०—कि जाने तुम आओ किस रोज बजाते नूतन रुद्र विषाण।—दिनकर। १३. चोटी।

विषाणका—पुं०[सं० विषाण+कन्] १. सींग। २. हाथी।

विषाणिका—स्त्री०[सं० विषाण+ठन्–इक+टाप्] १. मेढ़ासिंगी। २. सातला। ३. काकड़ासिंगी। ४. भागवत वल्ली नाम की लता। ५. सिंघाड़ा। ६. ऋषभक नामक ओषधि। ७. काकोली।

विषाणी—वि०[सं० विषाण+इनि, विषाणिन्] ८. जिसे सींग हो। सींगवाला।

पुं० १. सींगवाला पशु। २. हाथी। ३. सूअर। ४. साँड़। ५. सिंघाड़ा। ६. ऋषभक नामक औषधि। ७. क्षीर काकोली। ८. मेढ़ासींगी। ९. वृश्चिकाली। १०. इमली।

विषाणु—पुं०[सं० विष+अणु] कुछ विशिष्ट रोगों में शरीर के अन्दर उत्पन्न होनेवाला एक विषाक्त तत्त्व जो दूसरे जीवों के शरीर में किसी प्रकार पहुँचकर वही रोग उत्पन्न कर सकता है। (विरस)

विषाद्—पुं०[सं० विष√अद् (खाना)+क्विप्] हलाहल विष खानेवाले शिव।

विषाद—पुं०[सं० वि√सद्+घञ्] [वि० विषण्ण] १. शारीरिक शिथिलता। २. जड़ता। निश्चेष्टता। ३. मूर्खता। ४. अभिलाषा या उद्देश्य पूरा न होने पर उत्साह या वासना का दुःखद रूप से मंद पड़ना जो साहित्य के शृंगारिक क्षेत्र में एक संचारी भाव माना गया है। (डिस्पॉन्डेन्सी) ५. आज-कल, मन की वह दुःखद अवस्था जो कोई भारी दुर्घटना (बाढ़, भूकंप, महापुरुष का निधन आदि) होने पर और भविष्य के संबंध में मन में गहरी निराशा या भय उत्पन्न होने पर प्रायः सामूहिक रूप से उत्पन्न होती है। (ग्लूम)

विषादन—पुं०[सं०] [भू० कृ० विषादित] १. किसी के मन में विषाद उत्पन्न करने की क्रिया या भाव। २. परवर्ती साहित्य में, एक प्रकार का गौण अर्थालंकार जिसमें बहुत अधिक विषाद उत्पन्न करनेवाली स्थिति का उल्लेख होता है। (यह प्रहर्षण नामक अलंकार के विरोधी भाव का सूचक है।)

विषादनी—स्त्री०[सं० विष√अद् (खाना)+ल्युट्–अन+ङीप्] १. पलाशी नाम की लता। २. इन्द्रवारुणी।

विषादिता—स्त्री०[सं० विषाद+तल्+टाप्, इत्व] विषाद का धर्म या भाव।

विषादिनी—स्त्री०[सं० विषाद+इनि,+ङीप्] १. पलाशी नाम की लता। २. इन्द्रवारुणी।

विषादी (दिन्)—वि०[सं०] विषाद-युक्त।

विषानन—पुं०[सं० ष० त०] साँप।

विषापह—वि०[सं० विष+अप√हन् (मारना)+ड] विष का नाश करनेवाला।

पुं० मोखा नामक वृक्ष।

विषापहा—स्त्री०[सं० विषापह+टाप्] १. इन्द्रवारुणी। इन्द्रायन। २. निर्विषी। ३. नाग-दमनी। ४. अर्कपत्रा। इसरौल। ५. सर्प-काकोली।

विषायुध—पुं० [सं० ब० स०] १. जहर में बुझाया हुआ या जहरीला आयुध। २. साँप।

विषार—पुं०[सं० विष√ऋ(प्राप्त होना आदि)+अच्] साँप।

विषारि—पुं०[सं० ष० त०] १. महाचंचु नामक साग। २. घृत-करंज।

वि० विष को दूर करनेवाला। विषनाशक।

विषालु—वि०[सं० विष+अलुच्] विषैला। जहरीला। (प्वायजनस)

विषास्त्र—पुं०[सं० ब० स०]१. ऐसा अस्त्र जो विष में बुझाया गया हो। २. साँप।

विषी—पुं०[सं० विष+इनि, विषिन्]१. विषपूर्ण वस्तु। जहरीली चीज। २. जहरीला साँप।

वि० विषयुक्त। जहरीला।

विषुप—पुं०[सं० विषु√पा (रक्षा करना)+क] विषुव।

विषुव—पुं०[सं० विषु √वा (गमन)+क] गणित ज्योतिष में, वह समय जब सूर्य विषुवत् रेखा पर पहुँचता है तथा दिन और रात दोनों बराबर होते हैं।

विषुवत्—वि०[सं० विषु+मतुप्, म–व] बीच का। मध्यस्थित।

पुं०=विषुव।

विषुवत्-रेखा—स्त्री०[सं० ष० त०]भूगोल में, वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी तल के पूरे मानचित्र पर ठीक बीचो-बीच गणना के लिए पूर्व-पश्चिम खींची गई है। (इक्वेटर)

विषुवदिन—पुं०[सं०] ऐसा दिवस जिसमें दिन और रात दोनों समय के मान से बराबर होते हैं।

विषवद्देश—पुं०[सं० ष० त०] विषुवत् रेखा के आस-पास पड़नेवाले देश।

विषूचक—पुं०[सं०]=विसूचिका (रोग)।

विषूचिका—स्त्री०=विसूचिका।

विषौषधि—स्त्री०[सं० ष० त०] १. जहर दूर करने की दवा। २. नागदंती।

विष्कंध—पुं०[सं० ब० स०] १. वह जो गति को रोकता हो। २. बाधा। विघ्न।

विष्कंभ—पुं० [सं० वि √स्कम्भ्+अच्] १. अड़चन। बाधा। रुकावट। २. दरवाजे का अर्गल। ब्योंड़ा। ३. खंभा। ४. फैलाव। विस्तार। ४. नाटक या रूपक में, किसी अंक के आरंभ का वह अंश या स्थिति जिसमें कुछ पात्रों के द्वारा कुछ भूत और कुछ भावी घटनाओं की संक्षिप्त सूचना रहती है। जैसे—भारतेन्दु कृत चन्द्रावली नाटिका के पहले अंक के आरंभ में नाटक और शुकदेव वार्ता विष्कंभ है। ५. फलित ज्योतिष में, सत्ताईस योगों में से पहला योग जो आरंभ के ५ दंडों को छोड़कर शुभ कार्यों के लिए बहुत अच्छा कहा गया है। ७. ज्यामिति में, किसी वृत्त का व्यास। ८. योग-साधन का एक प्रकार का आसन या बंध। ९. पेड़। वृक्ष। १०. एक पौराणिक पर्वत।

विष्कंभन—पुं० [सं० विष्कम्भ+कन्] [भू० कृ० विष्कंभित] १. बाधा डालना। २. विदारण करना या फाड़ना।

विष्कंभी(भिन्)—पुं० [सं० वि√स्कम्भ् (रोकना)+णिनि] १. शिव का एक नाम। २. अर्गल। ब्योंड़ा।

विष्क—पुं०[सं० √विष्क् (मारना)+अच्] ऐसा हाथी जिसकी अवस्था बीस वर्ष की हो।

विष्कर—पुं०[सं० वि√कृ+अच्] १. एक दावा। २. पक्षी। चिड़िया। ३. अर्गल। ब्योड़ा।

विष्कलन—पुं० [सं० वि√ कल् (खाना) +ल्युट्—अन] भोजन। आहार।

विष्किर—पुं०[सं० वि√ कृ(फेंकना)+क, सुट्, षत्व] १. पक्षी। चिड़िया। २. साँप।

विष्टंभ—पुं० [सं० वि√ स्तम्भ् (रोकना)+घञ्] १. अच्छी तरह से जमाना या स्थिर करना। २. रोकना। ३. बाधा। रुकावट। ४. आक्रमण। चढ़ाई। ५. अनाह या विबंध नामक रोग।

विष्टंभी(भिन्)—वि० [सं० वि√ स्तम्भ् (रोकना)+णिनि, दीर्घ न—लोप] कब्जियत करनेवाला (पदार्थ)।

विष्ट—भू० कृ० [सं० √विश् (प्रवेश करना)+क्त] [भाव० विष्टि] १. घुसा हुआ। २. भरा हुआ। ३. युक्त।

विष्टप—पुं०[सं० √ विश्+कपन, सुट्] १. स्वर्ग-लोक। २. जगह। स्थान।

विष्टप-हारी—पुं०[सं० विष्टप√ हृ (हरण करना)+णिनि, ष० त०] १. भुवन। लोक। २. पात्र। बरतन।

विष्टर—पुं०[सं० वि√ स्तृ +अप्, षत्व] १. आक। मदार। २. पेड़। वृक्ष। ३. आसन, विशेषतः पीठ। ४. कुश का आसन।

विष्टरश्रवा(वस्)—पुं०[सं० विष्टर+श्रवस्, ब० स०]१. विष्णु। २. कृष्ण।

विष्टि—स्त्री०[सं०√ विष् (व्याप्त रहना आदि)+क्तिन्]१. ऐसा परिश्रम जिसका पुरस्कार न दिया जाता हो। २. व्यवसाय। पेशा। ३. प्राप्ति। ४. वेतन। ५. फलित ज्योतिष के ग्यारह करणों में से सातवाँ करण जिसे विष्टिभद्रा भी कहते हैं। ६. एक प्रकार का पौराणिक व्रत।

विष्टिकर—पुं०[सं० विष्टि+कृ(करना)+अप्, ष० त०]१. प्राचीन काल के राज्य का वह बड़ा सैनिक कर्मचारी जिसे अपनी सेना रखने के लिए राज्य की ओर से जागीर मिला करती थी। २. अत्याचारी। जालिम।

विष्टि-भार—पुं०[सं० ष० त०] बेगारी का भार। उदा०—बोले ऋषि भुगतेंगे हम सह विष्टि-भार।—मैथिलीशरण गुप्त।

विष्ठा—स्त्री० [सं० वि√स्था(ठहरना)+क, षत्व+टाप्]१. वह चीज जो प्राणियों के गुदा मार्ग से निकलती है। गुह। मल। २. बहुत ही गंदी तथा त्याज्य वस्तु।

विष्ठित—भू० कृ०[सं० वि√ स्था (ठहरना)+क्त]१. स्थित। २. उपस्थित। २. विद्यमान।

विष्णु—पुं० [सं०√विष् (व्यापक रहना)+नुक्] १. हिंदुओं के एक प्रधान और बहुत बड़े देवता जो संसार का भरण-पोषण करनेवाले कहे गये हैं। २. अग्नि देवता। ३. वसु देवता। ४. बारह आदित्यों में से एक।

विष्णु-कांति—पुं०[सं०] एक प्रकार का बहुत गहरा आसमानी रंग। (सेरुलियन)

वि० उक्त प्रकार के रंग का।

विष्णु-क्रांत—पुं०[सं० ब० स०] १. इश्कपेचाँ नामक लता या उसका फूल। २. संगीत में, एक प्रकार का ताल।

विष्णु-क्रांता—स्त्री० [सं०] १. नीली अपराजिता। कोयल नाम की लता। २. बाराही कन्द। मेंठी। ३. नीली शंखाहुली।

विष्णुचक्र—पुं०[सं० ष० त०] विष्णु के हाथ का चक्र सुदर्शन।

विष्णुतिथि—स्त्री०[सं० ष० त०]एकादशी और द्वादशी दोनों तिथियाँ, जिनके स्वामी विष्णु माने जाते हैं।

विष्णुत्व—पुं० [सं० विष्णु+त्व] विष्णु होने की अवस्था, धर्म, पद या भाव।

विष्णुदैवत—पुं०[सं० ब० स०] श्रवण नामक नक्षत्र जिसके स्वामी विष्णु माने जाते हैं।

विष्णुधर्मोत्तर—पुं० [सं० ब० स०] एक उपपुराण का नाम जो विष्णुपुराण का एक अंग माना जाता है।

विष्णुधारा—स्त्री० [सं० ष० त० या ब० स०] १. पुराणानुसार एक प्राचीन नदी। २. उक्त नदी के तट का एक तीर्थ।

विष्णु-पत्नी—स्त्री०[सं० ष० त०] १. विष्णु की स्त्री। लक्ष्मी। २. अदिति का एक नाम।

विष्णु-पद—पुं०[सं० ष० त०]१. विष्णु के चरण या उनकी बनाई हुई आकृति। २. आकाश। ३. स्वर्ग। ४. कमल।

विष्णु-पदी—स्त्री०[सं० ब० स०,+ङीष्] १. गंगा। २. द्वारिकापुरी। ३. वृष, वृश्चिक, कुंभ और सिंह इनमें से प्रत्येक की संक्रान्ति।

विष्णुपुरी—स्त्री० [सं० ष० त०] स्वर्ग।

विष्णु-प्रिया—स्त्री०[सं० ष० त०]१. लक्ष्मी। २. तुलसी का पौधा।

विष्णु-माया—स्त्री० [सं० ष० त०] दुर्गा।

विष्णुयशा—पुं०[सं० ब० स०, विष्णुयशस्] पुराणानुसार जो ब्रह्मयशा का पुत्र और कल्कि अवतार का पिता होगा।

विष्णुयान—पुं०[सं० ष० त०] गरुड़।

विष्णु-रथ—पुं०[सं० ष० त०] गरुड़।

विष्णु-लोक—पुं०[सं० ष० त०] वैकुंठ। गोलोक।

विष्णु-वल्लभा—स्त्री०[सं० ष० त०]१. तुलसी का पौधा। २. कलिहारी।

विष्णु-वृद्ध—पुं०[सं०] एक प्राचीन गोत्र प्रवर्त्तक ऋषि।

विष्णु-शक्ति—स्त्री०[सं० ष० त०] लक्ष्मी।

विष्णु-शिला—स्त्री०[सं० ष० त०] शालग्राम का विग्रह।

विष्णु-शृंखला—पुं० [सं० ष० त०] श्रवण नक्षत्र में पड़नेवाली द्वादशी।

विष्णु-श्रुत—पुं०[सं० तृ० त०]प्राचीन काल का एक प्रकार का आशीर्वाद जिसका आशय है विष्णु तुम्हारा मंगल करे।

विष्णु-स्मृति—स्त्री०[सं० मध्यम० स०] एक प्रसिद्ध स्मृति। (याज्ञवल्क्य)

विष्णुहिता—स्त्री०[सं० तृ० त०]१. तुलसी का पौधा। २. मरुआ।

विष्णूत्तर—पुं०[सं० ब० स०] विष्णु के पूजा के निमित्त किया जानेवाला भूमि या संपत्ति का दान।

विष्पर्धा—पुं०[सं० वि√ स्पर्ध् (संघर्ष करना)+असुन्, ब० स० विष्पर्धस्] स्वर्ग।

वि० स्पर्धा से रहित।

विष्फार—पुं०[सं० वि√स्फर्(स्फुरण करना)+णिच्+अच्,अत्व०षत्व] धनुष की टंकार। विस्फार।

विष्यंदन—पुं०[सं० वि√ स्यन्द्+ल्युट्—अन]१. चूना। २. बहना। ३. पिघलना। ४. एक तरह की मिठाई।

विष्य—वि०[सं०विष+यत्] जिसे विष दिया जाना चाहिए या दिया जाने को हो।

विष्व—वि०[सं० √ विष् (व्याप्त होना)+क्वन्]१. हिंस्र। २. हानिकारक। ३. दुष्ट।

विष्वक्—वि० [सं०] १. बराबर इधर-उधर घूमनेवाला। २. विश्व संबंधी। विश्व का। २. सारे विश्व में समान रूप से होने या पाया जानेवाला। (यूनीवर्सल)। ३. इस जगत् से भिन्न, शेष सारे विश्व से संबंध रखनेवाला। पृथ्वी को छोड़कर सारे आकाश और ब्रह्माण्ड का। ब्रह्माण्डीय। (कॉस्मिक)

अव्य० १. चारों ओर। २. सब जगह।

पुं०=विषुव।

विष्वक्किरण—स्त्री० [सं०] दे० 'ब्रह्माण्ड किरण'।

विष्वक्वाद—पुं०[सं०] दे० 'विश्ववाद'।

विष्वक्सिद्धान्त—पुं०[सं० कर्म० स०] दर्शन और न्यायशास्त्रों में, वह सिद्धान्त जो किसी वर्ग या विभाग के सभी व्यक्तियों या सभी प्रकार के

सत्त्वों के लिए समान रूप से प्रयुक्त होता या हो सकता हो। (डॉक्ट्रिन ऑफ यूनीवर्सल्स)

विष्वक्सेन—पुं०[सं० ब० स०]१. विष्णु। २. शिव। ३. एक मनु का नाम जो मत्स्य पुराण के अनुसार तेरहवें और विष्णु पुराण के अनुसार चौदहवें हैं।

विष्वग्वात—पुं०[सं०] एक प्रकार की दूषित वायु।

विसंकट—पुं०[सं० ब० स०] १. इंगुदी या हिंगोट नाम का वृक्ष। २. शेर। सिंह।

वि० बहुत बड़ा। विशाल।

विसंक्रमण—पुं०[सं०] [भू० कृ० विसंक्रमित] बहुत अधिक ताप पहुँचाकर ऐसी क्रिया करना जिससे किसी पदार्थ में लगे हुए कीटाणु या रोगाणु पूरी तरह से नष्ट हो जायें और दूसरी वस्तुओं में लगकर उन्हें दूषित न करने पायें। (स्टरिलाईजेशन) जैसे— शल्य-चिकित्सा में चीर-फाड़ करने से पहले नश्तरों आदि का होनेवाला विसंक्रमण।

विसंगत—वि० [सं० ब० स०, तृ० त० वा] जो संयत न हो। जिसके साथ संगति न बैठती हो। बे-मेल।

विसंज्ञ—वि०[सं० ब० स०] संज्ञाहीन। बेहोश।

विसंधि—स्त्री०[सं०] समस्त-पदों या शब्दों की संधियाँ मनमाने ढंग से बनाना-बिगाड़ना, जो साहित्य में एक दोष माना गया है।

विसंधिक—वि०[सं० ब० स०] जिनकी या जिनसे संधि न हो।

विसँभारा—वि०[हिं० वि+ संभार] जिसकी सुध-बुध ठिकाने न हो।

विसंवाद—पुं० [सं० वि-सम्√वद् (कहना)+घञ्] १. विरोध। झूठा कथन। २. अनुचित कहासुनी। ३. डाँट-फटकार। ४. प्रतिज्ञा भंग करना। ५. खंडन। ६. असहमति।

वि० अद्भुत। विलक्षण।

विसंवादी—वि०[सं० वि-सम्√वद् (कहना)+णिनि, दीर्घ, न-लोप] १. धोखा देनेवाला। २. वचन-भंग करनेवाला। ३. खंडन करनेवाला।

पुं० संगीत में, वह स्वर जिसका वादी स्वर से मेल न बैठता हो।

विसंहत—भू० कृ० [सं० वि- सम्√हन् (हिंसा करना)+क्त] १. जो संहत न हो। २. अलग या पृथक् किया हुआ।

विस—पुं०[सं० वि√सो (तनूकरण)+क]कमल।

†पुं०=विष।

वि-सदृश—वि०[सं०]१. जो किसी विशिष्ट के सदृश न हो। भिन्न। (डिस्सिमिलर)। २. अनोखा। विलक्षण।

विसम†—वि०=विषम।

विसम्मति—स्त्री०[सं०] किसी विषय में दूसरे के मत से सहमत न होने की अवस्था या भाव। विमत होना। (डिस्सेन्ट)

विसर्ग—पुं०[सं० वि√सृज्+घञ्]१. सामने आये हुए काम या बात के सम्बन्ध में आवश्यक कार्यवाही, उचित निर्णय, आदि करके उसे निपटाने की क्रिया या भाव। (डिस्पोजल)। २. दान। ३. त्याग। ४. मल-मूत्र का त्याग। शौच। ५. मृत्यु। ६. मोक्ष। ७. प्रलय। ८. वियोग। ९. चमक। दीप्ति। १०. सूर्य का एक अयन। ११. वर्षा, शरद और हेमन्त ऋतुओं का समूह। १२. व्याकरण के अनुसार एक वर्ण जिससे ऊपर-नीचे दो विन्दु होते हैं और उसका उच्चारण प्रायः अर्द्ध ह के समान होता हैं।

विसर्गी—वि०[सं०] १. जिसमें विसर्ग हो। विसर्ग से युक्त। २. बीच-बीच में ठहरने या रुकनेवाला। जैसे—विसर्गी ज्वर। ३. दानी। ४. त्यागी।

विसर्गी ज्वर—पुं०[सं०] वह ज्वर जो बराबर बना न रहता हो, बल्कि बीच-बीच में कुछ समय के लिए उतर जाता हो। अंतराग्रिक ज्वर। विरामी ज्वर (इन्टरमिटेंन्ट फीवर)

विसर्जन—पुं०[सं० वि√सृज् (त्याग करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विसर्जित] १. परित्याग करना। छोड़ना। २. किसी को कुछ करने का आदेश देकर कहीं भेजना। ३. कहीं से प्रस्थान करना। विदा होना। ४. अंत। समाप्ति। ५. दान। ६. देव-पूजन के सोलह उपचारों में से अंतिम उपचार जिसमें आहूत देवता के प्रति यह निवेदन होता है कि अब पूजन हो चुका, आप कृपया प्रस्थान करें। ७. उक्त के आधार पर, पूजन आदि के उपरान्त प्रतिमा या विग्रह का किसी जलाशय में किया जानेवाला प्रवाह। भसान। जैसे—दुर्गा या सरस्वती की मूर्ति का गंगा में होनेवाला विसर्जन। ८. कार्य की समाप्ति पर उसके सदस्यों आदि का कार्य-स्थल से होनेवाला प्रस्थान।

विसर्जनी—स्त्री०[सं० विसर्जन+ङीप्] गुदा के मुँह पर के चमड़े का एक भाग।

विसर्जनीय—वि०[सं० वि√ सृज्+अनीयर्] जिसका विसर्जन हो सके अथवा किया जाने को हो।

विसर्जित—भू० कृ०[सं० वि√ सृज्+क्त, इत्व] जिसका विसर्जन हुआ हो।

विसर्प—पुं०[सं० वि√ सृप् (सरकना, चलना)+घञ्]१. रेंगते हुए या मन्द गति से इधर-उधर घूमना, फैलना या बढ़ना। २. खुजली नामक चर्म रोग। ३. नाटक में, किसी कार्य का अप्रत्याशित रूप से होनेवाला दुःखद परिणाम।

विसर्पण—पुं०[सं० वि√सृप्+ल्युट्—अन]१. साँप की तरह लहराते हुए चलना। २. उक्त प्रकार की लहराती हुई आकृति या स्थिति। (मिएन्डर) ३. फैलना। ४. फेंकना। ५. फोड़ों आदि का फूटना।

विसर्पिका—स्त्री०[सं०वि√सृप् +ण्वुल्—अक, इत्व,+टाप् या विसर्प+कन्+टाप्, इत्व] विसर्प या खुजली नामक रोग।

विसर्पी(र्पिन्)—वि०[सं०]१. तेज चलनेवाला। २. फैलनेवाला। ३. साँप की तरह लहराते हुए चलनेवाला। लहरियेदार। (मिएन्डर) ४. रेंगता हुआ आगे बढ़ने या चलनेवाला। ५. (पौधा या बेल) जो धीरे-धीरे आगे बढ़कर जमीन पर फैले या किसी आधार पर चढ़े। (क्रीपिंग)

विसल—पुं०[सं० विस√ला (ग्रहण करना)+क, अथवा विस+कलच्] वृक्ष का नया पत्ता। पल्लव।

विसवर्त्म—पुं०[सं० ब० स०] आँखों का एक प्रकार का रोग।

विसार—पुं० [सं० वि√सृ (गमन)+घञ्] १. विस्तार। २. निर्गम। निकास। ३. प्रवाह। बहाव। ४. उत्पत्ति। ५. मछली।

विसारक—वि०[सं०] विसरण करनेवाला।

विसारण—पुं०[सं०] [भू० कृ० विसारित, वि० विसारी]१. फैलाना। २. चलाना। ३. निकालाप। ५. कार्य का संपादन करना।

विसाल—पुं० [अ०] १. मिलन। २. प्रेमी और प्रेमिका का मिलन। २. मृत्यु, जिससे आत्मा जाकर परमात्मा से मिल जाती है।

उदा०—पसे विसाल मयस्सर मुझे विसाल हुआ। मेरे जनाजे में बैठे रहे व सारी रात।—कोई शायर।

विसिनी—स्त्री०[सं० विस+इनि+ङीष्] कमलिनी।

†वि०=व्यसनी।

वि-सुकृत—वि०[सं० ब० स०] जिसके कर्म अच्छे न हों।

पुं०१ धर्म-विरुद्ध कार्य। २. दुष्कर्म।

विसूचन—पुं०[सं० वि√ सूच् (सूचित करना)+ल्युट्—अन] सूचित करना। जतलाना।

विसूचिका—स्त्री०[सं० वि√ सूच्+अच्+कन्, +टाप्, इत्व] वैद्यक के अनुसार, एक प्रकार का रोग, जिसे कुछ लोग हैजा कहते हैं।

विसूची—स्त्री०[सं० वि√ सूच्+अच्,+ङीष्] वह रोग जिसमें कै और दस्त होते हैं, परन्तु पेशाब नहीं होता।

विसूरण—पुं०[सं० वि√ सूर् (दुःख होना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विसूरित] १. दुःख। रंज। २. चिन्ता। फिक्र। ३. विरक्ति। वैराग्य।

विसृत—भू० कृ० [सं० वि √ सृ(गमन)+क्त] [भाव० विसृति] १. फैला या फैलाया हुआ। २. ताना हुआ। ३. कथित। उक्त।

विसृष्ट—भू० कृ० [सं० वि√सृज् (रचना) +क्त-षत्व-त–ट] [भाव० विसृष्टि] १. जिसकी सृष्टि हुई हो। २. छोड़ा, त्यागा या निकाला हुआ। ३. प्रेरित।

पुं० विसर्ग नामक लेख-चिह्न जो इस प्रकार लिखा जाता है—:

विसृष्टि—स्त्री०[सं० वि√ सृज्+क्तिन्] १. विसृष्ट होने की अवस्था या भाव। २. सृष्टि। ३. छोड़ना, त्यागना या निकालना। ४. भेजना। ५. प्रेरणा करना। ६. संतान। ७. स्राव।

विसैन्यीकरण—पुं० [सं०] [भू० कृ० विसैन्यीकृत] युद्ध के आवश्यकता-वश प्रस्तुत किये गये सैनिकों को सैन्य-सेवा से पृथक् करना। सैन्य-विघटन (डिमिलिटराइज़ेशन)

विसौख्य—पुं०[सं० मध्य० स०] सौख्य या सुख का अभाव। कष्ट। दुःख।

विस्खलन—पुं०[सं०][भू० कृ० विस्खलित]=स्खलन।

विस्त—पुं०[सं० √विस् (छोड़ना)+क्त]१. एक कर्ष का परिमाण। २. सोना। स्वर्ण।

विस्तर—पुं०[सं० वि√ स्तृ (फैलना)+अप्] [भाव० विस्तृता] १. विस्तार। २. प्रेम। ३. समूह। ४. आसन। ५. आधार। ६. गिनती। संख्या। ६. शिव का एक नाम।

वि० अधिक। बहुत।

विस्तरण—पुं०[सं० वि√ स्तृ+ल्युट्—अन] १. विस्तार बढ़ाना। विस्तृत करना।

विस्तार—पुं०[सं० वि √ स्तृ+घञ्]१. फैले हुए होने की अवस्था, धर्म या भाव। २. वह क्षेत्र या सीमा जहाँ तक कोई चीज फैली हुई हो। फैलाव। (एक्सटेन्ट) ३. लंबाई और चौड़ाई। ४. विस्तृत विवरण। ५. शिव। ६. विष्णु। ७. वृक्ष की शाखा। ८. गुच्छा।

विस्तारण—पुं०[सं०]१. विस्तार करना। फैलाना। २. काम-काज या कर्म-क्षेत्र बढ़ाना।

विस्तारना—स०[सं० विस्तरण] विस्तार करना। फैलाना।

विस्तारवाद—पुं०[सं०]यह मत या सिद्धान्त कि राज्य को अपने अधिकार, क्षेत्र और सीमाओं का निरंतर विस्तार करते रहना चाहिए, भले ही इसमें दूसरे राज्यों या राष्ट्रों का अहित होता हो। (एक्सपैन्शनिज्म)

विस्तारिणी—स्त्री०[सं० वि√ स्तृ+णिनि+ङीप्] संगीत में एक श्रुति।

विस्तारित—भू० कृ० [सं० विस्तार+इतच्] १. जिसका विस्तार हुआ हो। २. व्यापक विवरण से युक्त।

विस्तारी(रिन्)—वि०[सं० विस्तारिन्] १. जिसका विस्तार अधिक हो। विस्तृत। २. शक्तिशाली।

पुं० बड़ या बरगद का पेड़।

विस्तीर्ण—भू० कृ०[सं० वि√ स्तृ+क्त] [भाव० विस्तीर्णता]१. जो फैला या फैलाया हुआ हो। विस्तृत किया हुआ। २. व्यापक सूत्र-वाला। ३. बहुत चौड़ा। ४. बहुत बड़ा। ५. विपुल।

विस्तृत—भू० कृ०[सं० वि√स्तृ +क्त] [भाव० विस्तृति]१. जो अधिक दूर तक फैला हुआ हो। लंबा-चौड़ा। विस्तारवाला। जैसे—यहाँ आप लोगों के लिए बहुत विस्तृत स्थान है। २. (कथन या वर्णन) जिसमें सब अंग या बातें विस्तारपूर्वक बताई गई हों। जैसे—विस्तृत विवेचन। ३. बहुत बड़ा या लंबा-चौड़ा। (एक्स्टेन्सिव, उक्त सभी अर्थों में)

विस्तृति—स्त्री० [सं० वि√स्तृ+क्तिन्] १. फैलाव। विस्तार। २. व्याप्ति। ३. लंबाई, चौड़ाई या गहराई। ४. वृत्त का व्यास।

विस्थापन—पुं०[सं०][भू० कृ० विस्थापित]१. जो कहीं स्थापित या स्थित हो उसे वहाँ से हटाना। २. किसी स्थान पर बसे हुए लोगों को कहीं से बलपूर्वक हटाना और वह जगह उनसे खाली करा लेना। (डिस्प्लेसमेन्ट)

विस्थापित—भू० कृ० [सं० वि√ स्था+णिच्,पुक्,+क्त] १. जो अपने स्थान से हटा दिया गया हो। २. जिससे उसका निवास-स्थान जबरदस्ती छीन लिया गया हो। (डिस्प्लेस्ड)

विस्थिति—स्त्री० [सं०] ऐसी विकट स्थिति जिसमें उलट-फेर की संभावना हो।

विस्फार—पुं०[सं० वि√ स्फुर् (संचालन)+घञ्, उ-आ] [वि० विस्फारित] १. धनुष की टंकार। कमान चलाने का शब्द। २. धनुष की डोरी। ३. फैलाव। विस्तार। ४. तेजी। फुरती। ५. काँपना। कंपन। ६. विकास।

विस्फारक—पुं०[सं० विस्फार+कन्] एक प्रकार का विकट सन्निपात ज्वर जिसमें रोगी को खाँसी, मूर्च्छा, मोह और कम्प होता है।

वि० विस्फार करनेवाला।

विस्फारण—पुं०[सं० वि√ स्फुर् (हिलना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विस्फारित]१. खोलना या फैलाना। २. पक्षियों का डैने फैलाना। ३. फाड़ना। ४. धनुष चढ़ाना।

विस्फारित—भू० कृ०[सं० विस्फार+इतच्]१. अच्छी तरह से खोला या फैलाया हुआ। जैसे—विस्फारित नेत्र। २. फाड़ा हुआ।

विस्फीत—भू० कृ०[सं०] [भाव० विस्फीति] जो स्फीत न हो। 'स्फीत' का विपर्याय।

विस्फीति—स्त्री०[सं० ब० स०] दे० 'अवस्फीति'।

विस्फुरण—पुं०[सं० वि√ स्फुर् (कंपित होना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विस्फुरित] १. विद्युत् का कंपन। २. स्फुरण।

विस्फुलिंग—पुं०[सं० वि√ स्फुर् (हिलना) +डु = विस्फु, विस्फु+ लिंग, ब० स०] १. एक प्रकार का विष। २. आग की चिनगारी। स्फुलिंग।

विस्फूर्जन—पुं०[सं० वि√ स्फूर्ज् (फैलाना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विस्फूर्जित] १.किसी पदार्थ का बढ़ना या फैलना। विकास। २. गरजना।

विस्फोट—पुं०[सं० वि√ स्फुट्+घञ्] १. अन्दर की भरी हुई आग या गरमी का उबल या फूटकर बाहर निकलना। जैसे—ज्वालामुखी का विस्फोट। २. उक्त क्रिया के कारण होनेवाला जोर का शब्द। ३. एकत्र गैस, बारूद, आदि का अग्नि या ताप के कारण जोर का शब्द करते हुए बाहर निकल पड़ना। (एक्सप्लोज़न) ४. बड़ा और जहरीला फोड़ा।

विस्फोटक—पुं०[सं० विस्फोट+कन्] १. फोड़ा विशेषतः जहरीला फोड़ा। २. चेचक या शीतला नामक रोग।

वि० (पदार्थ) जो अन्दर की गरमी या ताप के कारण चटक कर फूट जाय।

विस्फोटन—पुं०[सं० वि√ स्फुट्+ल्युट्—अन] विस्फोट उत्पन्न करने की क्रिया या भाव।

विस्मय—पुं० [सं० वि√ स्मि+अच्] १. आश्चर्य। २. अचम्भा। २. वह विशिष्ट स्थिति जब किसी प्रकार की अप्रत्याशित तथा चमत्कारिक बात या वस्तु सहसा देखकर प्रसन्नता-मिश्रित आश्चर्य होता है। ३. साहित्य में, उक्त के आधार पर अद्भुत रस का स्थायी भाव।

वि० जिसका अभिमान या गर्व चूर्ण हो चुका हो।

विस्मयाकुल—वि०[सं० तृ० त०] जो बहुत अधिक विस्मय के कारण घबरा या चकरा गया हो।

विस्मयादि-बोधक—पुं० [सं०] व्याकरण में, अव्यय का वह भेद जो ऐसे अविकारी शब्द का सूचक होता है जो आश्चर्य, खेद, दुःख, प्रसन्नता आदि का सूचक होता है। जैसे—वाह, हाय, ओह आदि।

विस्मरण—पुं० [सं० वि√स्मृ (स्मरण करना)+ल्युट्—अन, मध्यम० स०] [भू० कृ० विस्मृत] १. स्मरण न होने की अवस्था या भाव। भूलना। २. भुलाना।

विस्मापन—पुं० [सं० वि√ स्मि (आनन्द होना)+णिच्, आत्व, पुक्, +ल्युट्—अन] १. गंधर्व-नगर। २. कामदेव।

वि० विस्मयकारक।

विस्मारक—वि०[सं० वि√ स्मृ (स्मरण करना)+णिच्+ण्वुल्,—अक] विस्मरण कराने या भुला देनेवाला। 'स्मारक' का विपर्याय।

विस्मित—भू० कृ०[सं०वि√स्मि(आश्चर्यहोना)+क्त][भाव० विस्मृति] जिसे विस्मय हुआ हो।

विस्मिति—स्त्री०[सं० वि√ स्मि (आश्चर्य करना)+क्तिन्]=विस्मय।

विस्मृत—भू० कृ०[सं० वि√ स्मृ+क्त] [भाव० विस्मृति] १. जिसका स्मरण न रहा हो। भूला हुआ। २. भुलाया हुआ।

विस्मृति—स्त्री० [सं० वि√स्मृ + क्ति, मध्यम० स०] भूल जाना। विस्मरण।

विस्रंभ—पुं०[सं०]=विश्रंभ।

विस्रवण—पुं०[सं० वि√ स्रु (बहना)+ल्युट्—अन] १. बहना। २. झड़ना। ३. रसना।

विस्रा—स्त्री० [सं० विस्र+अच्+टाप्] १. हाऊबेर। हवुषा। २. चरबी।

विस्राम†—पुं०=विश्राम।

विस्राव—पुं०[सं० वि√ स्रु (बहना)+घञ्] भात का माँड़। पीच।

विस्रावण—पुं०[सं० वि√स्रु (बहना)+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विस्रावित] १. बहना। २. रक्त बहाना। ३. अर्क चुआना।

विस्वर—वि०[सं० ब० स०] १. स्वरहीन। २. बेमेल। ३. कर्कश (स्वर)।

विस्वाद—वि०[सं० ब० स० या मध्यम० स०] १. जिसमें स्वाद न हो। २. फीका।

विहंग—पुं०[सं० विहायस्√गम्+खच्, डित्व, मुम्, विहादेश] १. पक्षी। चिड़िया। २. सूर्य। ३. चन्द्रमा। ४. सोना मक्खी। ५. बादल। मेघ। ६. तीर। बाण।

विहंगक—वि०[सं० विहंग+कन्] आकाश में उड़नेवाले।

पुं० छोटा पक्षी।

विहंगम—पुं०[सं० विहायस्√गम् (जाना)+खच्, मुम्, विहादेश] १. पक्षी। चिड़िया। २. सूर्य।

†वि०=वेहंगम।

विहंगम मार्ग—पुं०[सं० कर्म० स०] योग की साधना में, दो मार्गों में से एक जिसके द्वारा साधक बिना अधिक काया-क्लेश सहे बहुत जल्दी और सहज में उसी प्रकार अपने प्राण ब्रह्मांड तक ले जाता है, जिस प्रकार पक्षी उड़कर वृक्ष के ऊपरी भाग पर जा पहुँचता है। यह दूसरे अर्थात् पिपीलिका मार्ग की तुलना में श्रेष्ठ समझा जाता है।

विहंगमा—स्त्री० [सं० विहंगम+टाप्] १. सूर्य की एक प्रकार की किरण। २. चिड़िया। ३. बहँगी।

विहंग-राज—पुं०[सं० ष० त०] गरुड़।

विहंगहा(हन्)—पुं० [सं०] बहेलिया।

विहंगिका—स्त्री०[सं० विहंग+कन्+टाप्, इत्व] बहँगी।

विहँड़ना—स०[?] १. नष्ट करना। २. मार डालना।

विहँसना—अ०=हँसना।

विहग—पुं०[सं० विहायस्√ गम्+ड, विहादेश] १. पक्षी। चिड़िया। २. सूर्य। ३. चन्द्रमा। ४. ग्रह। ५. तीर। बाण।

विहगेंद्र—पुं०[सं० विहग+इन्द्र] गरुड़।

विहत—भू० कृ० [सं० वि√हन् (मारना)+क्त, न-लोप] १. मारा हुआ। हत। २. फाड़ा हुआ। विदीर्ण। ३. जिसका निवारण हुआ हो। निवारित। ४. जिसका प्रतिरोध या विरोध किया गया हो।

पुं० जैन-मंदिर।

विहति—स्त्री०[सं० वि√ हन्+क्तिन्] विहत होने की अवस्था या भाव।

विहर—पुं० [सं० वि√ हृ (हरण करना)+अच्] वियोग। बिछोह।

विहरण—पुं०[सं० वि√ हृ (हरण करना)+ल्युट्—अन] १. विहार करने की क्रिया या भाव। २. फैलना। ३. वियोग। बिछोह। ४. घूमना-फिरना।

विहरना—अ० [सं० विहार] १. विहार करना। २. घूमना-फिरना।

विहर्ता(र्तृ)—वि० [सं० वि√ हृ +तृच्] १. विहार करनेवाला। २. घूमने-फिरने का शौकीन।

पुं० डाकू।

विह्व—पुं०[सं० वि√ ह्व (दान देना, लेना)+अच्] १. यज्ञ। २. युद्ध। लड़ाई।

विहसन—पुं०[सं० वि√ हस् (हँसना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० वि० हसित] १. मंद और मधुर मुस्कान। हास्य। २. किसी की हँसी या मजाक उड़ाना।

विहसित—पुं०[सं० वि√ हस् (हँसना)+क्त] ऐसा हास्य जो न बहुत उच्च हो, न बहुत मधुर। मध्यम हास्य।

भू० कृ० जिसकी हँसी उड़ाई गई हो। उपहसित।

विहस्त—पुं०[ब० स०] पंडित। विद्वान्।

विहाग—पुं०=बिहाग (राग)।

विहाण—पुं०=बिहान (सबेरा)।

विहाना—सं०[सं० विहीन] पृथक् करना।

अ०, स० बिहाना (बीतना, बिताना)।

विहायस—पुं०[सं०] १. आकाश। आसमान। २. दान। ३. चिड़िया। पक्षी।

विहार—पुं०[सं० वि√ हृ (हरण करना)+घञ्] १. घूमना। २. आनन्द प्राप्त करने या मौज लेने के लिए घूमना। ३. घूमने-फिरने तथा आनन्द लेने की जगह। जैसे—उद्यान, बगीचा। ४. प्राचीन काल में, बौद्ध श्रमणों के रहने का मठ या आश्रम। ५. रति-क्रीड़ा। ६. रति-क्रीड़ा का स्थान।

विहारक—वि० [सं० वि√हृ+ण्वुल्—अक, विहार+कन्] १. विहार करनेवाला। २. विहार अर्थात् बौद्ध मठ-सम्बन्धी।

विहारिका—स्त्री०[सं० विहार+कन्+टाप्, इत्व] छोटा विहार या मठ।

विहारी—वि० [सं० वि√ हृ+णिनि] [स्त्री० विहारिणी] जो विहार करता हो। विहार करनेवाला।

पुं० श्रीकृष्ण का एक नाम।

विहास—पुं०[सं०] मुसकान।

विहिंसक—वि०[सं०]=हिंसक।

विहि—पुं०[सं० विधि] १. विधाता। २. विधान।

†स्त्री० विधि।

विहित—भू० कृ० [सं० वि√ धा+क्त] १. जो विधि के अनुसार हुआ या किया गया हो। २. जो विधि के अनुरूप या अनुसार हो। ३. उचित। मुनासिब।

विहीन—वि० [सं० वि√ हा (त्याग करना)+क्त, ईत्व, त-न] [भाव० विहीनता, भू० कृ० विहीनित] १. रहित। बगैर। बिना। २. छोड़ा या त्यागा हुआ।

विहून—वि०[सं० विहीन] रहित।

अव्य० बिना। बगैर।

विहृत—पुं० [सं० वि√ हृ+क्त] साहित्य में हाव की वह अवस्था जिसमें प्रिया लज्जा के कारण प्रिय पर अपना मनोभाव नहीं प्रकट कर पाती।

भू० कृ० हरण किया हुआ।

विहृति—स्त्री०[सं० वि√ हृ+क्तिन्] १. जबरदस्ती या बल-पूर्वक कुछ ले लेना या कोई काम करना। २. खेलना। ३. क्रीड़ा। विहार।

विह्वल—वि० [सं० वि√ ह्वल्+अच्] [भाव० विह्वलता] आशंका, भय आदि मनोविकारों के कारण किंकर्तव्यविमूढ़-सा होकर जो अपना चैन तथा साहस छोड़ चुका हो और घबरा रहा हो।

विह्वलता—स्त्री० [सं० विह्वल+तल्+टाप्] विह्वल होने की अवस्था या भाव। व्याकुलता। घबराहट।

वींद—पुं०[सं० वीरेंद्र] बहुत बड़ा वीर। (डिं०)

वीक—पुं० [सं० √अज् (गमन)+कन्, अज—वी] १. वायु। हवा। २. चिड़िया। पक्षी। ३. मन।

वीकाश—पुं०[सं० वि√ कश् (विकाश करना)+घञ्, दीर्घ] १. एकांत स्थान। २. प्रकाश। रोशनी।

वीक्ष—पुं०[सं० वि√ ईक्ष् (देखना)+अच्] दृष्टि।

वीक्षक—वि०[सं० वि√ ईक्ष् +ण्वुल्—अक] देखनेवाला।

वीक्षण—पुं० [सं० वि√ ईक्ष् +ल्युट्—अन] [भू० कृ० वीक्षित, वि० वीक्षणीय] देखने की क्रिया। निरीक्षण।

वीक्षणीय—वि०[सं० वि√ ईक्ष् +अनीयर्] जो देखे जाने के योग्य हो। दर्शनीय।

वीक्षा—स्त्री०[सं० वि√ ईक्ष्+अङ्+टाप्] देखने की क्रिया। वीक्षण। दर्शन।

वीक्षित—भू० कृ०[सं० वि√ ईक्ष्+क्त] देखा हुआ।

पुं० दृष्टि। नजर।

वीक्ष्य—वि०[सं० वि√ ईक्ष्+ण्यत्] देखने या देखे जाने के योग्य।

पुं० १. वह जो देखा जाय। दृश्य। २. घोड़ा। ३. नर्तक। नचनिया।

वीख—पुं०[?] कदम। डग। (डिं०)

वीखना—स०[सं० वीक्षण] देखना। (राज०)

वीचि—स्त्री०[सं०√वे+डीचि] १. लहर। तरंग। २. बीच की खाली जगह। अवकाश। ३. चमक। दीप्ति। ४. सुख। ५. किरण।

वीचिमाली (लिन्)—पुं०[सं०] समुद्र।

वीची—स्त्री० [सं० वीचि+ङीष्] तरंग। लहर।

वीज—पुं० [सं० वि√ जन् (उत्पन्न होनेवाला)+ड, दीर्घ, वि√ईज् (गमन)+अच्] १. मूल कारण। असल वजह। २. वनस्पति आदि की वह गुठली या दाना जिससे उस जाति की और वनस्पतियाँ उत्पन्न होती हैं। बीज। बीआ। ३. वीर्य। शुक्र। ४. अंकुर। ५ फल। ६ आधार। ७. निधि। खजाना। ८. तेज। ९. तत्त्व। १०. मज्जा। ११. तांत्रिकों के अनुसार, एक प्रकार के मंत्र जो बड़े बड़े मंत्रों के मूल तत्त्व के रूप में माने जाते हैं। प्रत्येक देवी या देवता के लिए ये मंत्र अलग-अलग होते हैं। १२. दे० 'वीज-गणित'।

†स्त्री० बिजली (विद्युत्)।

वीजक—पुं०[सं० बीज+कन् वीज√ कै+क] १. बीज। बीआ। २. विजयसार या पियासाल नामक वृक्ष। ३. बिजौरा नींबू। ४. सफेद सहिजन। ५. दे० 'बीजक'।

वीज-कर—पुं०[सं० वीज√ कृ (करना)+अच्] उड़द की दाल जो बहुत पुष्टिकर मानी जाती है।

वीजकृत—वि०[सं० वीज√कृ +क्विप्] शुक्र बढ़ाने तथा पुष्ट करनेवाला (पदार्थ)।

वीजकोश—पुं०[सं० ष० त०] १. फलों, पौधों आदि का वह अंग जिसके अन्दर बीज रहते हैं। २. कमलगट्टा। ३. सिंघाड़ा।

वीज-गणित—पुं०[सं० तृ० त०] गणित की वह शाखा जिसमें सांकेतिक

अक्षरों की सहायता से राशियाँ निकाली जाती हैं और गणना की जाती है।

वीजधान्य—पु०[सं० मध्यम० स०] धनियाँ।

वीजन—पुं० [सं० वि√ईज् (गमन)+ल्युट्—अन] १. पंखा झलना। हवा करना। २. पंखा। चँवर। ३. चादर। ४. चकोर पक्षी। ५. लोध।

वीजपुरुष—पुं०[सं० कर्म० स०] वह पुरुष जिससे किसी वंश की परम्परा चली हो।

वीजपूर—पुं०[सं० ब० स०] १. बिजौरा नींबू। २. चकोतरा। ३. गलगल।

वीज-मार्गी—पुं०[सं० वीज√मार्ग् (खोजना)+णिनि; वीजमार्गिन्] एक प्रकार के वैष्णव जो निर्गुण के उपासक होते हैं, और देवी-देवताओं का पूजन नहीं करते।

वीजलि†—स्त्री०=बिजली। (डिं०)

वीजसार—पुं०[सं० ब० स०] बायविडंग।

वीजसू—स्त्री०[सं० वीज√सू (उत्पन्न करना)+क्विप्] पृथ्वी।

वीजा†—स्त्री०=बिजली।

वि०=दूजा (दूसरा)।

पुं० [अं०] पार-पत्र पर लिखा जानेवाला वह लेख जिसके आधार पर विदेशी यात्री को किसी दूसरे देश में प्रवेश करने और घूमने-फिरने का अधिकार प्राप्त होता है। द्रष्टांक। (वीजा)

वीजित—भू० कृ० [सं० वीज+इतच्] १. बोया हुआ। २. पंखा झलकर ठंढा किया हुआ। ३. सींचा हुआ।

वीजी—वि०[सं० वीज+इनि] जिसमें बीज हों। बीजोंवाला।

पुं० १. पिता। बाप। २. चौराई का साग।

वीजोदक—पुं०[सं० वीज+उदक, उपमि० स०] आकाश से गिरनेवाला ओला। बिनौरी।

वीज्य—वि०[सं० वि√ ईज् +यत्, वीज+यत् वा] १. जो बोया जा सकता हो। बोया जाने के योग्य। २. जो अच्छे बीज से उत्पन्न हुआ हो। ३. कुलीन।

वीझण—पुं०[सं० व्यजन] बिजन। पंखा। (राज०)

वीझना—स०[सं० व्यजन] पंखा झलना।

वीटक—पुं०[सं० वीट+कन्] [स्त्री० अल्पा० वीटिका] पान का बीड़ा।

वीटा—स्त्री०[सं० वि√ इट्+क+टाप्] प्राचीन काल में, एक प्रकार का खेल जो लकड़ी के डंडे से खेला जाता था।

वीटिका—स्त्री०[सं० वि√ इट्+इन्, वीटि+कन्+टाप्] पान का छोटा बीड़ा।

वीटी—स्त्री० [सं० वीटि+ङीष्] १. पान का बीड़ा। २. गाँठ विशेषतः पहने हुए कपड़े में लगाई जानेवाली गाँठ।

वीटुली—स्त्री०[सं० वेष्ट] एक प्रकार की पगड़ी। (राज०)

वीण—स्त्री०=वीणा।

वीणा—स्त्री०[सं० √ वी+न+टाप्] १. एक तरह का प्राचीन भारतीय बाजा जो सितार, सरोद आदि का मूल रूप है और सब बाजों में श्रेष्ठ माना जाता है। २. साधकों और सिद्धों की परिभाषा में, जीव की काया या शरीर। ३. विद्युत्। बिजली।

वीणा-दंड—पुं० [सं० ष० त०] वीणा का वह लंबोतरा अंश जो दोनों तुंबों या सिरों के बीच में पड़ता है।

वीणाधारी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

वीणा-पाणि—स्त्री० [सं० ब० स०] सरस्वती।

पुं० नारद।

वीणा-प्रसेव—पु० [सं०] वीणा की वह गट्टी जिसे आगे-पीछे करने से तार से निकलनेवाला स्वर तीव्र-मंद होता है।

वीणावती—स्त्री० [सं० वीणा+मतुप्, म—व,+ङीप्] सरस्वती।

वीणा-वादिनी—स्त्री० [सं० ब० स०] सरस्वती।

वीणा-हस्त—पुं० [सं० ब० स०] शिव। महादेव।

वीणी—पुं०[सं० वीणा+इनि] वह जो वीणा-वादन में कुशल हो।

वीतंस—पुं० [वि√तंस् (भूषित करना)+घञ्] वह (जाल या पिंजरा) जिसमें पशु-पक्षी फँसाये या रखे जाते हैं।

वीत—वि० [सं०√वी+क्त, वि√इ+क्त] १. गया या बीता हुआ। २. स्वतन्त्र किया हुआ। ३. जो अलग या पृथक् हो गया हो। ४. ओझल। ५. युद्ध करने के लिए उपयुक्त। ६. किसी काम या बात से मुक्त या रहित। जैसे—वीतचिन्त, वीतराग।

पुं० १. ऐसी चीज जो पुरानी होने के कारण काम में आने के योग्य न रह गई हो।

विशेष—प्राचीन भारत में बुड्ढे घोड़े, हाथी, सैनिक आदि वीत कहे जाते थे।

२. अनुमान के दो भेदों में से एक।

वीतक—पुं०[सं० वीत+कन्] १. कपूर और चंदन का चूर्ण रखने का पात्र। २. घिरी हुई जमीन। बाड़ा।

वीत-मल—वि०[सं०] १. मल से रहित। निर्मल। २. निष्पाप।

वीतराग—पुं०[सं० ब० स०] १. ऐसा व्यक्ति जिसने सांसारिक आसक्ति का परित्याग कर दिया हो। वह जो निस्पृह हो गया हो। राग-रहित। ३. गौतम बुद्ध। ३. जैनों के एक प्रधान देवता।

वीतसूत्र—पुं०[सं०] यज्ञोपवीत। जनेऊ।

वीतहव्य—पुं०[सं० ब० स०] वह जो यज्ञ में आहुति या हव्य देता हो।

वीतहोत्र—पुं०=वीतिहोत्र।

वीति—स्त्री०[सं० √ वी+क्तिन्] १. गति। चाल। २. चमक। दीप्ति। ३. खाने-पीने की क्रिया। ४. गर्भ धारण करना। ५. यज्ञ।

पुं० [√वी+क्तिच्] घोड़ा।

वीतिहोत्र—पुं०[सं० ब० स०] १. अग्नि। २. सूर्य। ३. याज्ञिक।

वीथी—स्त्री० [सं०√ विथ्+इन्+ङीष्] १. पंक्ति। कतार। २. मार्ग। रास्ता। सड़क। ३. बाजार। हाट। ४. आकाश में सूर्य के भ्रमण करने का मार्ग। ५. आकाश में नक्षत्रों के रहने के स्थानों के कुछ विशिष्ट भाग जो वीथी या सड़क के रूप में माने गए हैं। जैसे—नागवीथी, गजवीथी, गो-वीथी आदि। ६. दृश्य काव्य या रूपक के २७ भेदों में से एक जो एक ही अंक का और शृंगार-रस-प्रधान होता है। इसमें एक से तीन तक पात्र होते हैं। प्राचीन काल में ऐसे रूपक अलग भी खेले जाते थे और दूसरे नाटकों के साथ भी।

वीध्र—पुं०[सं० वि√ इन्ध् (दीप्त होना)+क्रन्] १. आकाश। २. अग्नि। ३. वायु।

वीनाह—पुं० [सं० वि√नह् (रोकना)+घञ्, दीर्घ] वह जंगला या ढकना जो कूएँ के ऊपर लगाया जाता है।

वीपा—स्त्री० [सं० वीप+टाप्] बिजली।

वी० पी०—पुं० [अं० वेल्यू-पेएबुल के आरंभिक अक्षर वी० और पी०] १. डाक द्वारा चीजें भेजने की वह व्यवस्था जिसमें पानेवाले व्यक्ति से चीजों का दाम वसूल करके तब उन्हें चीजें दी जाती हैं। २. उक्त प्रकार से भेजी हुई चीज।

वीप्सा—स्त्री० [सं० वि√ आप् (व्याप्त होना)+सन्, इत्व, अ+टाप्] १. व्याप्ति। २. कार्य की निरंतरता सूचित करने के लिए होनेवाली शब्द की आवृत्ति। जैसे—खड़े-खड़े या चलते-चलते। ३. एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमें आदर, घृणा, विस्मय, शोक, हर्ष आदि के प्रसंगों में उपयुक्त शब्दों की पुनरावृत्ति होती है। यथा—रीझि रीझि रहसि रहसि हँसि-हँसि उठै साँसें भरि, आँसू भरि कहत दई दई।—देव।

वीभत्स—पुं० [सं०] [भू० कृ० वीभत्सित]=बीभत्सा।

वीरंधर—पुं० [सं० वीर√धृ (रखना)+खच्, मुम्] १. जंगली पशुओं को मारने या उनसे बचने के लिए की जानेवाली लड़ाई। २. मोर।

वीर—पुं० [सं० √ अज्+रक्, वी—आदेश, √ वीर+अच् वा] [भाव० वीरता] १. वह जो यथेष्ट बलवान और साहसी हो। बहादुर। शूर। २. योद्धा। सिपाही। सैनिक। ३. उक्त के आधार पर साहित्य में शृंगार आदि नौ रसों में से एक रस जिसमें उत्साह, वीरता, साहस, आदि गुणों का रस-पूर्ण परिपाक होता है। ४. वह जो किसी विकट परिस्थिति में भी आगे बढ़कर अच्छी तरह और साहसपूर्वक अपने कर्तव्य का पालन करे। ५. वह जो किसी काम में और लोगों में से बहुत बढ़कर हो। जैसे—दानवीर, धर्मवीर। वह जो किसी काम या बात में बहुत चतुर या होशियार हो। जैसे—वाग्वीर। ७. स्त्री की दृष्टि में उसका पति। ८. पुत्र। बेटा। ९. भाई के लिए बहन का एक प्रकार का संबोधन। १०. तांत्रिकों की परिभाषा में, साधना के तीन प्रकारों या भावों में स एक जिसमें खूब मद्यपान करके और उन्मत्त होकर मनुष्य, भैंसे या भेड़-बकरी का बलिदान किया जाता है।

विशेष—कहा गया है कि दिन के पहले दस दंडों में पशु भाव से, बीच के १० दंडों में वीर भाव से और अंतिम १० दंडों में दिव्य भाव से साधना करनी चाहिए। कुछ लोगों के मत से, १६ वर्ष की अवस्था तक पशु भाव से, फिर ५० वर्ष की अवस्था तक वीर भाव से और उसके बाद दिव्य भाव से साधना करनी चाहिए।

११. तांत्रिकों की परिभाषा में, वह साधक जो उक्त प्रकार के वीर-भाव से साधना करता हो। १२. वज्रयानी सिद्धों की परिभाषा में, वह साधक जो वज्र-प्रज्ञोपाय योग के द्वारा महाराग में विराग का दमन करता हो। १३. साहित्य में एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३१ मात्राएँ और १६ मात्राओं पर यति या विराम होता है। आल्हा नामक गीत वस्तुतः इसी छंद में होता है। १४. विष्णु। १५. जैनों के जिनदेव। १६. यज्ञ की अग्नि। १७. सींगिया विष। १८. काली मिर्च। १९. पुष्करमूल। २०. काँजी। २१. उशीर। खस। २२. आलूबुखारा। २३. पीली कटसरैया। २४. चौलाई का साग। २५. वाराही कन्द। गेंठी। २६. लताकरंज। २७. अर्जुन नामक वृक्ष। २९. कनेर। काकोली। ३०. सिंदूर। ३१. शालिपर्णी। सरिवन। ३२. लोहा। ३३. नरकट। ३४. नरसल। ३५. भिलावाँ। ३६. कुश। ३७. ऋषभक नामक ओषधि। ३८. तोरी। तुरई।

वीरक—पुं० [सं० वीर+कन्] १. साधारण वीर या योद्धा। २. नायक। ३. एक तरह का पौधा। ४. पुराणानुसार चाक्षुष मन्वंतर के एक मनु। ५. सफेद कनेर।

वीर-कर्मा (र्मन्)—वि० [सं०] वीरोचित कार्य करनेवाला।

वीर-काम—वि० [सं०] वह जिसे पुत्र की कामना हो। पुत्र की इच्छा रखनेवाला।

वीरकाव्य—पुं० [सं०] ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर बना हुआ वह काव्य जिसमें किसी वीर व्यक्ति के युद्ध संबंधी बड़े बड़े कार्यों का उल्लेख या वर्णन होता है। (हिन्दी में ऐसे काव्य प्रायः रासों के नाम से प्रसिद्ध हैं।)

वीरकुक्षि—वि० [सं० ब० स०] (स्त्री) जो वीर पुत्र प्रसव करती हो।

वीर-केशरी (रिन्)—पुं० [सं० स० त०] वह जो वीरों में सिंह हो।

वीरगति—स्त्री० [सं० ष० त०] १. युद्ध-क्षेत्र में मारे जाने पर योद्धाओं को प्राप्त होनेवाली शुभ-गति। २. इन्द्रपुरी।

वीर-गाथा—स्त्री० [सं० ष० त०] ऐसी कवित्वमयी गाथा जिसमें किसी वीर के वीरतापूर्ण कृत्यों का वर्णन होता है।

वीर-चक्र—पुं० [सं०] एक तरह का पदक जो भारत में शासन द्वारा बहुत वीरतापूर्ण कार्य करने पर सैनिकों को दिया जाता है।

वीरज—वि० [सं०] वीर से उत्पन्न।

†वि०=विरज।

वीरण—पुं० [सं० वि√ईर् (गमनादि)+ल्युट्—अन] १. कुश, दर्भ, काँस, दूब आदि की जाति के तृण। २. उशीर। खस। ३. एक प्राचीन ऋषि। ४. एक प्रजापति।

वीरणी—स्त्री० [सं० वीरण+ङीष्] १. तिरछी चितवन। २. नीची भूमि। ३. वीरण की पुत्री और चाक्षुष की माता।

वीरता—स्त्री० [सं० वीर+तल्+टाप्] १. वीर होने की अवस्था, धर्म या भाव। २. वीर का कोई वीरतापूर्ण या साहसिक कार्य।

वीरधन्वा (वन्)—पुं० [सं०] कामदेव।

वीरपट्ट—पुं० [सं० ष० त०] प्राचीन काल का एक प्रकार का सैनिक पहनावा।

वीरपत्नी—स्त्री० [सं० ष० त०] १. वह जो किसी वीर की पत्नी हो। २. वैदिक काल की एक नदी।

वीर-पान—पुं० [सं० ष० त०] एक तरह का पेय (विशेषतः मादक पेय) जो युद्ध क्षेत्र में जाते समय या युद्ध में योद्धा पीते थे।

वीरपुष्पी—स्त्री० [सं०] १. महाबला। सहदेई। २. सिंदूरपुष्पी। लटकन।

वीर-पूजा—स्त्री० [सं०] मानव समाज में प्रचलित वह भावना जिसके फलस्वरूप उन लोगों के प्रति विशेष भक्ति और श्रद्धा प्रकट की जाती है जो असाधारण रूप से अपनी वीरता का परिचय देते हैं। (हीरो-वर्शिप)

वीर-प्रसू—वि० [सं०] वह (स्त्री) जो वीर संतान उत्पन्न करे।

वीरबाहु—पुं० [सं० ब० स०] १. विष्णु। २. रावण का एक पुत्र। ३. धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

वीरभद्र—पुं० [सं०] १. श्रेष्ठ वीर। २. शिव की जटा से उत्पन्न एक वीर

जिसने दक्ष का यज्ञ नष्ट कर दिया था। ३. अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा। ४. खस।

वीर-भुक्ति—स्त्री०[सं० ष० त०] आधुनिक वीरभूमि का प्राचीन नाम।

वीर-मंगल—पुं०[सं०] हाथी।

वीर-मत्स्य—पुं०[सं०] रामायण के अनुसार एक प्राचीन जाति।

वीर-मार्ग—पुं० [सं० ष० त०] स्वर्ग, जहाँ वीर योद्धा मरने के बाद जाते हैं।

वीर-मुद्रिका—स्त्री० [सं०] पहनने का एक तरह का पुरानी चाल का छल्ला।

वीर-रज—पुं० [सं० वीररजस्] सिंदूर।

वीर-राघव—पुं० [सं० कर्म० स०] रामचन्द्र।

वीर-रात्रि—स्त्री० [सं०] गुप्त काल के गुंडों की परिभाषा में वह रात जिसमें गुंडे कोई बहुत बड़ी दुर्घटना या दुस्साहस का काम कर गुजरते थे।

वीर-रेणु—पुं० [सं० ब० स०] भीमसेन।

वीर-ललित—वि०[सं०] वीरों का-सा, पर साथ ही कोमल (स्वभाव)।

वीर-लोक—पुं० [सं० ष० त०] स्वर्ग।

वीरवती—स्त्री०[सं० वीर+मतुप्, म—व,+ङीप्] १. ऐसी स्त्री जिसका पति और पुत्र दोनों जीवित और सुखी हों। २. मांसरोहिणी लता।

वीर-वसंत—पुं०[सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

वीर-वह—पुं०[सं०] १. वह रथ जो घोड़ों द्वारा खींचा जाय। २. रथ।

वीर-व्रत—पुं०[सं० ब० स०] १. ऐसा व्यक्ति जो अपने व्रत पर अडिग रहता हो। २. निष्ठापूर्वक ब्रह्मचर्य का पालन करनेवाला।

वीर-शयन—पुं०[सं०] वीरशय्या।

वीर-शय्या—स्त्री०[सं० ष० त०] वीरों के सोने का स्थान अर्थात् रणभूमि। लड़ाई का मैदान।

वीरशाक—पुं०[सं० ष० त०, या मध्य० स०] बथुआ (साग)।

वीर-शैव—पुं०[सं० मध्यम० स०] शैवों का एक संप्रदाय।

वीरसू—वि०[सं०] वीरप्रसू। (दे०)

वीरस्थ—वि० [सं०] बलि चढ़ाया जानेवाला (पशु)।

वीर-स्थान—पुं०[सं० ष० त०] १. स्वर्ग, जहाँ वीर लोग मरने पर जाते हैं। २. तांत्रिक साधकों का वीरासन।

वीरहा—पुं० [सं० वीरहन्] १. ऐसा अग्निहोत्री ब्राह्मण जिसकी अग्निहोत्रवाली अग्नि आलस्य आदि के कारण बुझ गई हो। २. विष्णु।
वि० वीरों को मारनेवाला।

वीरहोत्र—पुं०[सं०] विंध्य पर्वत पर स्थित एक प्राचीन प्रदेश।

वीरांतक—वि० [सं० ष० त०] वीरों को नष्ट करनेवाला। वीरों का नाशक।
पुं० अर्जुन (वृक्ष)।

वीरा—स्त्री०[सं० वीर+टाप्] १. ऐसी स्त्री जिसके पति और पुत्र हों। २. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन नदी। ३. मदिरा। शराब। ४. ब्राह्मी बूटी। ५. मुरामांसी। ६. क्षीर काकोली। ७. भुइँ आँवला। ८. केला। ९. एलुआ। १०. बिदारी कन्द। ११. काकोली। १२. घीकुंआर। १३. शतावर।

वीराचार—पुं०[सं०] वाममार्गियों का एक विशिष्ट प्रकार का आचार या साधना-पद्धति जिसमें मद्य को शक्ति और मांस को शिव मानकर शव-साधन किया जाता है।

वीराचारी (रिन्)—पुं० [सं० वीराचारिन्] [स्त्री० वीराचारिणी] वीराचार के अनुसार साधना करनेवाला वाम-मार्गी।

वीरान—वि०[सं० विरिण (ऊसर) से फा०] १. (प्रदेश) जिसमें बस्ती न हो। निर्जन। २. लाक्षणिक अर्थ में, शोभा-विहीन।

वीराना—पुं०[फा० वीरानः] निर्जन प्रदेश।

वीरानी—स्त्री०[फा०] वीरान होने की अवस्था या भाव।

वीराशंसन—पुं०[सं० वीर+आ √ शंस् (कहना)+णिच्+ल्युट्—अन] ऐसी युद्ध-भूमि जो बहुत ही भीषण और भयानक जान पड़ती हो।

वीरासन—पुं०[सं० वीर+आसन] १. योग-साधन में, एक विशिष्ट प्रकार का आसन या मुद्रा। २. मध्ययुगीन भारत में राजदरबारों में बैठने का एक विशिष्ट प्रकार का आसन या मुद्रा जिसमें दाहिना घुटना मोड़कर पैर चूतड़ के नीचे रखा जाता था और बायाँ मुड़ा हुआ घुटना सामने खड़े बल में रहता था।

वीरिणी—स्त्री०[सं०] १. ऐसी स्त्री जिसका पति और पुत्र दोनों जीवित तथा सुखी हों। २. वीरण प्रजापति की कन्या जो दक्ष को ब्याही थी। ३. एक प्राचीन नदी।

वीरुध—पुं० [सं० वि√ रुध्+क्विन्] १. वृक्ष और वनस्पति आदि। २. ओषधि के काम में आनेवाली वनस्पति।

वीरुधा—स्त्री० [सं० वीरुध्+टाप्] दवा के रूप में काम आनेवाली वनस्पति। ओषधि।

वीरेंद्र—पुं०[सं० वीर+इन्द्र, ष०त०] वीरों में प्रधान या बहुत बड़ा वीर।

वीरेश—पुं०[सं० वीर+ईश, ष० त०] १. शिव। महादेव। २. वीरेन्द्र।

वीरेश्वर—पुं०[सं० वीर+ईश्वर, ष० त०] शिव। महादेव।

वीर्य—पुं०[सं० √वीर्+यत्] १. शरीर की सात धातुओं में से एक जिसका निर्माण सब के अंत में होता है, और जिसके कारण शरीर में बल और कांति आती है। यह स्त्री प्रसंग के समय अथवा रोग आदि के कारण यों ही मूत्रेंद्रिय से निकलता है। इसे चरम धातु और शुक्र भी कहते हैं। २. पराक्रम। वीरता। ३. ताकत। बल। शक्ति। जैसे—बाहुवीर्य=बाहों या हाथों की शक्ति, वाचि वीर्य=बोलने की शक्ति। ४. वैद्यक के अनुसार, किसी पदार्थ का वह सार भाग जिसके कारण उस पदार्थ में शक्ति रहती है। किसी धातु का मूल तत्त्व। ५. अन्न, फल आदि का बीज जो बोया जाता है।

वीर्यकृत्—वि०[सं०] १. जो बल या वीर्य उत्पन्न करता हो। बलकारक। २. बलवान्। शक्तिशाली।

वीर्यज—वि०[सं०] वीर्य से उत्पन्न।
पुं० पुत्र।

वीर्यधन—पुं०[सं०] प्लक्ष द्वीप में रहनेवाले क्षत्रियों का एक वर्ग।

वीर्यवत्—वि०[सं० वीर्य+मतुप, म—व] वीर्यवान्।

वीर्यशुल्क—पुं०[सं०] ऐसा काम या बात जिसे पूरा करने पर ही किसी से या किसी का विवाह होना संभव हो। विवाह करने के लिए होनेवाली शर्त।

वीर्यांतराय—पुं० [सं० ब० स०] पाप-कर्म जिसका उदय होने से जीव हृष्ट-पुष्ट होते हुए भी शक्ति-विहीन हो जाता है। (जैन)

वीर्या—स्त्री०[सं० वीर्य+टाप्]१. शक्ति। २. पुंस्त्व।

वीर्याधान—पुं०[सं० ष० त०] वीर्य धारण करना या कराना। गर्भाधान।

वीर्यान्वित—वि०[सं० तृ० त०] शक्तिशाली।

वीसा—पुं०[अं०] दे० 'वीना'।

वुजूद—पुं०[अ०]=वजूद।

वुसूल—वि०, पुं०=वसूल।

वुसूली—वि०, स्त्री०=वसूली।

वृंत—पुं०[सं०√वृ (आच्छादन),+क्त, नि० मुम्]१. स्तन का अगला भाग। २. डंठल। ३. घड़ा रखने की तिपाई। ४. कच्चा और छोटा फल। ५. वह पतला डंठल जिस पर पत्ती या फूल लगा रहता है। पर्णवृंत। (पेटिओल)

वृंताक—पुं० [सं०√वृन्त+अक् (प्राप्त होना)+अण्]१. बैंगन। २. पोई का साग।

वृंताकी—स्त्री०[सं० वृन्ताक+ङीष्] बैंगन। भंटा।

वृंद—वि०[सं० √वृ (आच्छादन)+दन्, नुम्, गुणाभाव] बहुसंख्यक। पुं०१. समूह। २. सौ करोड़ की संख्या। ३. फलित ज्योतिष में, एक प्रकार का मुहूर्त। ४. ढेर। राशि। ५. गुच्छा। ६. गले में होनेवाला अर्बुद।

वृंदवाद्य—पुं०[सं०] दे० 'वाद्यवृंद'।

वृंदसंगीत—पुं०[सं०] समवेतगान। सहगान। गाना।

वृंदा—स्त्री० [सं० वृंद+टाप्] राधिका का एक नाम।

वृंदाक—पुं०[सं० वृन्दा+कन्] परगाछा या बाँदा नामक वनस्पति।

वृंदार—पुं०[सं० वृन्द√ ऋ (गमन)+अण्]देवता।

वृंदारक—पुं०[सं० वृन्द+आरकन्] देवता या श्रेष्ठ व्यक्ति।

वृंदारण्य—पुं०[सं० ष० त०] वृन्दावन।

वृंदावन—पुं०[सं० ष० त०]१. मथुरा के समीप स्थित एक वन। २. उक्त वन में बसी हुई एक आधुनिक बस्ती जो प्रसिद्ध तीर्थस्थल है। ३. वह चबूतरा जिसमें तुलसी के पौधे हों।

वृंदावनेश्वर—पुं०[सं०] श्रीकृष्ण।

वृंदावनेश्वरी—सं०[वृन्दावनेश्वर+ङीष्] राधिका।

वृंदी—वि०[सं० वृन्द+इनि] जो समूहों में बँटा हो।

वृंहण—वि०[सं० √वृंह् (वृद्धि करना)+ल्यु—अन] पुष्ट करनेवाला। पुं० १. वह पदार्थ जो पुष्टिकारक हो। बलवर्द्धक द्रव्य। २. एक प्रकार का धूम्रपान। ३. मुनक्का।

वृक—पुं० [सं०] [स्त्री० वृकी] १. भेड़िया। २. गीदड़। ३. कौआ। ४. चोर। ५. वज्र। ६. क्षत्रिय। ७. अगस्त वृक्ष।

वृकदेवा—स्त्री०[सं० वृकदेव+टाप्] कृष्ण की माता देवकी।

वृकधूप—पुं० [सं० कर्म० स०] १. एक तरह का सुगंधित धूप। २. तारपीन।

वृका—स्त्री० [सं० वृक+टाप्] पाढ़ा (लता)।

वृकायु—पुं०[सं० ब० स०]१. जंगली कुत्ता। २. चोर।

वृकोदर—पुं०[सं० ब० स०] १. भीमसेन का एक नाम। २. ब्रह्मा।

वृक्क—पुं० [सं० वृक्कः] पशु, पक्षियों और स्तनपायी जीवों के पेट के अन्दर का एक अंग जो दो बड़ी ग्रन्थियों या गुल्मों के रूप में होता है और जिसके द्वारा मूत्र शरीर के बाहर निकलता है। गुरदा। (किड्नी)

वृक्क शोथ—पुं० [सं०] एक घातक रोग जिसमें वृक्क या गुरदे सूज जाते हैं। (नेफ़ाइटिस)

वृक्का—स्त्री० [सं० वृक्क+टाप्] हृदय।

वृक्ष—पुं० [सं०√व्रश्च् (छेदने)+स, कित्] १. मोटे तथा कठोर तनेवाली वनस्पतियों का एक वर्ग। पेड़। दरख्त। २. दे० 'वंश-वृक्ष'।

वृक्षक—पुं० [सं० वृक्ष+कन्] १. वृक्ष। पेड़। २. छोटा पेड़।

वृक्ष कुक्कुट—पुं० [सं०] जंगली कुत्ता।

वृक्षचर—पुं० [सं० वृक्ष√चर्+ट] बंदर।

वृक्ष-दोहद—पुं० [सं०] १. कुछ वृक्षों का कृत्रिम उपायों या विशिष्ट प्रक्रियाओं से असमय में ही खिलने लगना या खिलाया जाना। २. भारतीय साहित्य में कवि प्रसिद्धि (देखें) के अन्तर्गत एक प्रकार की मान्यता और उसका वर्णन। जैसे—सुंदरी युवतियों के पैर की ठोकर से अशोक में फूल लगना और खिलना, उनके नाचने से कचनार में फूल आना, उनके गाने से आम में मंजरियाँ लगना, उनके आलिंगन से कुरबक का खिलना, उनके मुस्कराने से चम्पा का और देखने मात्र से तिलक का खिलना आदि। (दे० 'कवि-प्रसिद्धि' और 'कवि-समय')

वृक्ष-धूप—पुं० [सं०] चीड़ (पेड़)।

वृक्षनाथ—पुं० [सं० स० त०] वृक्षों में श्रेष्ठ, बड़। बरगद।

वृक्ष-निर्यास—पुं० [सं० ष० त०] वृक्ष के तने, शाखा आदि में से निकलनेवाला तरल द्रव्य। निर्यास।

वृक्ष-प्रतिष्ठा—स्त्री० [सं०] वृक्ष लगाना। वृक्षरोपण।

वृक्ष-भक्षा—स्त्री०[सं० वृक्ष√भक्ष्+अच्+टाप्] बाँदा नामक वनस्पति।

वृक्ष-मूलिक—वि० [सं०] वृक्ष के मूल में होनेवाला अथवा उससे संबंध रखनेवाला।

वृक्षराज—पुं० [सं० ष० त०] परजाता। पारिजात।

वृक्षरुहा—स्त्री० [सं०वृक्ष√रुह्+क+टाप्] १. परगाछा नाम का पौधा। २. रुद्रवती। ३. अमरबेल। ४. जतुका लता। ५. बिदारी कंद। ६. कंथी नामक पौधा।

वृक्ष-रोपण—पुं० [सं०] सामूहिक रूप से वृक्ष लगाने की क्रिया या भाव। पौधों आदि को इस उद्देश्य से कहीं प्रतिष्ठित करना कि वे आगे चलकर बड़े पेड़ों का रूप धारण करें।

वृक्ष-रोपक—वि० [सं०] वृक्ष-रोपण करनेवाला।

वृक्ष-वासी—वि० [सं० वृक्षवासिन्] [स्त्री० वृक्षवासिनी] जो वृक्षों पर रहता हो अथवा प्राकृतिक रूप से वृक्षों पर रहने के लिए उपयुक्त हो। (आरबोरियल)

वृक्ष-संकट—पुं० [सं० ब० स०] वह पतला रास्ता जो घने पेड़ों के बीच से दूर तक चला गया हो।

वृक्ष-स्नेह—पुं० [सं० ष० त०] वृक्ष निर्यास। (दे०)

वृक्षादन—पुं० [सं० वृक्ष√अद् (खाना)+ल्युट्—अन] १. कुल्हाड़ी। २. अश्वत्थ। पीपल। ३. पयाल या चिरौंजी का पेड़। ४. मधुमक्खियों का छत्ता।

वृक्षाम्ल—पुं० [सं० ष० त०, मध्यम० स०] १. इमली। २. चुक नाम की खटाई। ३. अमड़ा। ४. अमर बेल।

वृक्षायुर्वेद—पुं० [सं० ष० त०] वह शास्त्र जिसमें वृक्षों के रोगों और उनकी चिकित्सा का वर्णन होता है।

वृक्षालय—पुं० [सं० ब० स०] १. वह जिसने किसी वृक्ष पर अपना घर (घोंसला) बनाया हो। २. पक्षी। चिड़िया।

वृक्षावास—पुं० [सं० ब० स०] तपस्वी, साँप या कोई अन्य प्राणी जो वृक्ष की कोटर में रहता हो।

वृक्षोत्थ—वि० [सं० वृक्ष+उद्√स्था (ठहरना]+क] वृक्ष पर उत्पन्न होनेवाला।

वृक्षोत्पल—पुं० [सं० स० त०] कनियारी या कनकचम्पा नामक पेड़।

वृक्षौका (कस्)—पुं० [सं० ब० स०] वनमानुष।

वृक्ष्य—पुं० [सं० वृक्ष+यत्] पेड़ का फल।

वि० वृक्ष-संबंधी।

पुं० फल, फूल, पत्ती आदि जो वृक्ष में लगते हैं।

वृज—पुं० [सं०√वृज् (त्याग करना)+अच्] व्रज।

वृजन—पुं० [सं०√वृज् (त्याग करना)+ल्युट्—अन] १. केश विशेषतः कुंचित केश। २. बल। शक्ति। ३. युद्ध। लड़ाई। ४. निपटारा। निराकरण। ५. दुष्कर्म। पाप। ६. दुश्मन। शत्रु। ७. शरीर के बाल।

वि० १. टेढ़ा। वक्र। २. कुटिल। ३. नश्वर।

वृजन्य—वि० [सं० कर्म० स०] बहुत ही सीधा-सादा। परम साधु (व्यक्ति)।

वृजि—स्त्री० [सं०√वृज् (त्याग करना)+इनि] १. व्रज भूमि। २. विहार का तिरहुत या मिथिला प्रदेश जहाँ पहले विदेह, लिच्छवी आदि रहते थे।

वृजिन—पुं० [सं०√वृज् (त्याग करना)+इनच्, कित्] १. पाप। गुनाह। २. कष्ट। दुःख। ३. शरीर पर की खाल। त्वचा। ४. रक्त। लहू। ५. शरीर। ६. शरीर पर के बाल।

वि० १. टेढ़ा। वक्र। २. पापी।

वृज्य—वि० [सं०√वृज् (त्याग करना)+यत्] जो घुमाया या मोड़ा जा सके।

वृत—वि० [सं०√वृ (वरण करना))+क्त] १. जो किसी काम के लिए नियुक्त किया गया हो। मुकर्रर किया हुआ। २. ढका हुआ। ३. प्रार्थित। ४. स्वीकृत। ५. गोलाकार।

†पुं० =व्रत।

वृति—स्त्री० [सं०√वृ (वरण करना)+क्तिन्] १. वह जिससे कोई चीज घेरी या ढकी जाय। २. नियुक्ति। ३. छिपाना। गोपन।

वृत्त—वि० [सं० √वृत् (व्यवहार करना)+क्त] १. जो अस्तित्व में आ चुका हो। २. जो घटित हो चुका हो। ३. मृत। ४. गोल।

पुं० १. धर्म या वेद-शास्त्र के अनुकूल आचरण या व्यवहार। २. वृतान्त। हाल। ३. चरित्र। ४. वर्णिक छंद। (दे०) ५. वह क्षेत्र जो चारों ओर से किसी ऐसी रेखा से घिरा हो जिसका प्रत्येक बिंदु उस क्षेत्र के मध्य बिंदु से समान अंतर पर हो। गोल। मंडल। ६. ज्यामिति में उक्त प्रकार की रेखा जो किसी क्षेत्र को घेरती हो। (सर्किल, अन्तिम दोनों अर्थों में) ७. स्तन का अग्र भाग। ८. गुंडा नाम की घास। ९. सफेद ज्वार। १०. अंजीर। सतिवन। १०. कछुआ। ११. वृत्ति। १२. वृत्तासुर।

वृत्तक—पुं० [सं० वृत्त+कन्] १. ऐसा गद्य जिसमें कोमल तथा मधुर अक्षरों और छोटे-छोटे समासों का व्यवहार किया गया हो। २. छंद।

वृत्त-खंड—पुं० [सं० ष० त०] ज्यामिति में, किसी वृत्त का वह अंश या खंड जो चाप तथा दो अर्द्ध व्यासों से घिरा हो। (सेक्टर)

वृत्त-गंधि—स्त्री० [सं०] साहित्य में ऐसा गद्य जिसमें अनुप्रासों की अधिकता होती है तथा जो पद्य का-सा आनन्द देता है।

वृत्त-चित्र—पुं० [सं०] आज-कल सिनेमा का वह चित्र जिसमें किसी विशिष्ट कार्य या घटना के मुख्य-मुख्य अंग-उपांग अथवा ब्योरे की और बातें लोगों की जानकारी या ज्ञानवृद्धि के लिए दिखाई जाती है। (डाक्यूमेन्टरी फ़िल्म) जैसे—दुर्गापुर के लोहे के कारखाने या राष्ट्रपति की जापान-यात्रा का वृत्त-चित्र।

वृत्त-चेष्टा—स्त्री० [सं०] १. स्वभाव। प्रकृति। मिजाज। २. चाल-ढाल।

वृत्त-पत्र—पुं० [सं०] १. वह पंजी जिसमें दैनिक कार्यों, घटनाओं आदि का संक्षिप्त उल्लेख हो। २. किसी संस्था या सभा के निश्चयों, कार्यों आदि के विवरण अथवा तत्संबंधी लेख आदि प्रकाशित करनेवाला सामयिक पत्र। (जर्नल) २. पुत्रदात्री नाम की लता।

वृत्तपर्णी—स्त्री० [सं० वृत्तपर्ण+ङीप्] १. पाठा। पाढ़ा। २. बड़ी शंखपुष्पी।

वृत्तपुष्प—पुं० [सं०] १. सिरिस का पेड़। २. कंदब। ३. भू-कदंब। ४. जल-बेत। ५. सेवती। ६. मोतिया। ७. चमेली।

वृत्तपुष्पा—स्त्री० [सं० वृत्तपुष्प+टाप्] १. नागदमनी। २. सेवती।

वृत्त-फल—पुं० [सं०] १. कोई गोलाकार फल। २. काली या गोल मिर्च। ३. अनार। ४. बेर। ५. कपित्थ। कैथ। ६. लाल चिचड़ा। ७. करंज। ८. तरबूज। ९. खरबूजा।

वृत्तफला—स्त्री० [सं० वृत्तफल+टाप्] १. बैंगन। भंटा। २. आँवला।

वृत्तबंध—पुं० [सं०] छंदोबद्ध रचना।

वृत्तवान् (वत्)—वि० [सं० वृत्त+मतुप्, म—व] जिसका आचरण उत्तम हो। सदाचारी।

वृत्तशाली (लिन्)—वि० [सं०]=वृत्तवान्।

वृत्तांत—पुं० [सं०] १. किसी घटना, वस्तु, विषय, स्थिति आदि की जानकारी कराने के उद्देश्य से उससे संबद्ध कही या बतलाई जानेवाली बातें या किया जानेवाला वर्णन। २. समाचार। हाल।

वृत्ता—स्त्री० [सं० वृत्त+टाप्] १. झिंझरीट नाम का क्षुप। २ रेणुका नामक वनस्पति। ३ प्रियंगु। ४. मांस-रोहिणी। ५. सफेद सेम। ६. नाग-दमनी।

वृत्तानुवर्ती (र्त्तिन्)—पुं० [सं०+वृत्त+अनु√वृत् (व्यवहार करना)+णिनि] वृत्तवान्। (दे०)

वृत्तानुसारी (रिन्)—वि० [सं० वृत्त+अनु√सृ (गमन आदि)+णिनि] शुभ आचरण करनेवाला।

वृत्तार्ध—पुं० [सं० ष० त०] वृत्त का आधा भाग जो व्यास तथा चाप से घिरा होता है।

वृत्ति—स्त्री० [सं०√वृत्+क्तिन्] १. चक्कर खाना। घूमना। २. किसी वृत्त या गोले की परिधि। वृत्त। ३. वर्तमान होने की अवस्था, दशा या भाव। ४. चित्त, मन आदि का कोई व्यापार। जैसे—चित्त-वृत्ति। ५. उक्त के आधार पर योग में चित्त की विशिष्ट अवस्थाएँ जो पाँच प्रकार की मानी गई हैं। यथा—क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र, और विरुद्ध। ६. कोई ऐसी क्रिया, गति आदि जिसके फलस्वरूप

कुछ होता हो। कार्य । व्यापार। ६. कोई काम करने का ढंग या प्रकार। ८. आचरण और व्यवहार तथा इनसे संबंध रखनेवाला शास्त्र । आचार-शास्त्र । ९. वह कार्य या व्यापार जिसके द्वारा किसी की जीविका चलती हो। जीवन-निर्वाह का साधन। धंधा। पेशा। जैसे––आकाश-वृत्ति, यजमानी वृत्ति, वेश्यावृत्ति, सेवावृत्ति आदि। १०. जीविका-निर्वाह, भरण-पोषण आदि के लिए नियमित रूप से मिलनेवाला धन। जैसे––छात्रवृत्ति। ११. किसी ग्रन्थ विशेषतः सूत्रग्रन्थ का अर्थ और आशय स्पष्ट करनेवाली संक्षिप्त परन्तु गंभीर टीका या व्याख्या। जैसे––अष्टाध्यायी की काशिका वृत्ति। १२. शब्दों की अभिधा, लक्षणा और व्यंजना नाम की अर्थ-बोधक शक्तियाँ। शब्द-शक्ति । १३. व्याकरण में, ऐसी गूढ़ वाक्य-रचना जिसकी व्याख्या करनी पड़ती हो। १४. नाटकों में, आशय और भाव प्रकट करने की एक विशिष्ट शैली जिसे कुछ आचार्य काव्य की रीतियों के अन्तर्गत और कुछ शब्दालंकार के अन्तर्गत मानते हैं।

विशेष––प्राचीन आचार्य कायिक और मानसिक चेष्टाओं को ही वृत्ति मानते थे, परन्तु परवर्ती आचार्यों ने इसे विकसित और विस्तृत करके इन्हें काव्यगत रीतियों के समकक्ष कर दिया था, और इनके ये चार भेद कर दिये थे––कौशिकी, आरभटी, भारती और सात्वती तथा अलग अलग रसों के लिए इनका अलग अलग विधान कर दिया गया था। नाटकों में भिन्न-भिन्न रसों के साथ अलग-अलग वृत्तियों का संबंध होने के कारण प्रत्येक रस के लिए अनुकूल और उपर्युक्त वर्ण-रचना को भी 'वृत्ति' कहने लगे थे, जिससे 'वृत्यनुप्रास' पद बना है। परवर्ती आचार्यों ने इन वृत्तियों का नाटकों के सिवा काव्य में भी आरोप किया था; और इनके उपनागरिका, कोमला, परुषा आदि भेद निरूपित किये थे। नाट्यशास्त्र की 'प्रवृत्ति' और 'वृत्ति' के लिए दे० 'प्रवृत्त' ६ का विशेष। १५. वृत्तान्त। हाल। १६. प्रकृति। स्वभाव। १७. प्राचीन काल का एक प्रकार का संहारक अस्त्र।

वृत्ति-कर—पुं० [सं० ष० त०] वह कर जो कोई पेशा या वृत्ति करनेवाले लोगों पर लगता है। पेशे पर लगनेवाला कर। (प्रोफ़ेशन टैक्स)

वृत्तिकार—पुं० [सं० वृत्ति√कृ+घञ्] वह जिसने वार्तिक लिखा हो। व्याख्या ग्रन्थ लिखनेवाला।

वृत्ति-विरोध—पुं० [सं० स० त०] भारतीय साहित्य में रचना का एक दोष जो उस समय माना जाता है, जब वृत्तियों (विशेष दे० 'वृत्ति' ५ और ६) के नियमों का ठीक तरह से पालन नहीं होता। जैसे––शृंगार रस के वर्णन में परुष वर्णों का प्रयोग करना वृत्ति-विरोध है।

वृत्तिस्थ—वि० [सं० वृत्ति√स्था+क] १. जो अपनी वृत्ति पर स्थित हो। २. जो अपनी वृत्ति से जीविका उपार्जित करता हो।

वृत्तीय—वि० [सं०] १. वृत्ति-संबंधी। वृत्ति का। २. जो वृत्त के रूप में हो। गोलाकार।

वृत्य—वि० [सं०√वृत्+क्यप्] १. जो घेरा जाने को हो। २. जिसकी वृत्ति लगने को हो।

वृत्यनुप्रास—पुं० [सं० मध्यम० स०] एक प्रकार का शब्दालंकार जो उस समय माना जाता है जब किसी चरण या पद में वृत्ति के अनुकूल वर्णों की आवृत्ति होती है। यह अनुप्रास का एक भेद है।

विशेष—वृत्तियाँ तीन हैं––उपनागरिका या वैदर्भी, गौड़ी और कोम्ला या पांचाली। इस प्रकार वृत्यनुप्रास के भी तीन भेद किये गए हैं–– उपनागरिका वृत्यनुप्रास, परुषानुप्रास और कोमला वृत्यनुप्रास।

वृत्र––पुं० [सं०√वृत्+रक्] १. अन्धकार। अंधेरा । २. बादल। मेघ। दुश्मन। शत्रु। ४. एक असुर जो त्वष्टा का पुत्र था तथा जिसका वध इन्द्र ने किया था।

वृत्रघ्न––पुं० [सं० वृत्र√हन् (मारना)+क] १. वृत्र नामक असुर को मारनेवाले इन्द्र। २. वैदिक काल का गंगा-तटपर का एक देश।

वृत्रघ्नी––स्त्री० [सं० वृत्रघ्न+ङीष्] एक नदी। (पुराण)

पुं०=वृत्रघ्न।

वृत्रत्व––पुं० [सं० वृत्र+त्व] १. वृत्र का धर्म या भाव। २. दुश्मनी। शत्रुता।

वत्रनाशन—पुं० [सं० द्वि० त०] वृत्र नामक असुर को मारनेवाले इन्द्र।

वृत्रशंकु––पुं० [सं०] एक प्रकार का खंभा। (वैदिक)

वृत्रहा—पुं० [सं० वृत्र√हन्+क्विप्] वृत्रासुर को मारनेवाले इन्द्र।

वृत्रारि––पुं०[सं० ष० त०] इंद्र।

वृत्रासुर––पुं०[सं० मध्यम० स०] वृत्र नामक असुर। दे० 'वृत्र'।

वृथा—वि० [सं०√वृ(वरण करना)+थाल्] जिसका कोई उपयोग या प्रयोजन न हो। व्यर्थ। फजूल।

अव्य० १. बिना किसी आवश्यकता या प्रयोजन के। २. मूर्खता या भूल से।

वृथात्व––पुं०[सं० वृथा+त्वल्] वृथा होने की अवस्था या भाव।

वृथा-मांस—पुं०[सं०] ऐसा मांस जिसका व्यवहार या सेवन न किया जा सकता हो। निषिद्ध मांस।

वृद्ध—वि०[सं०] [स्त्री० वृद्धा, भाव० वृद्धि] १. बढ़ा हुआ। २. अच्छी या पूरी तरह से बढ़ा हुआ। ३. गुण, विद्या आदि के विचार से औरों की अपेक्षा बहुत चतुर, विद्वान् या बहुत श्रेष्ठ। जैसे––तर्क, व्याकरण आदि शास्त्रों के अध्ययन से वृद्ध होना ४. जो अपनी युवा विशेषतः प्रौढ़ावस्था पार कर चुका हो। बुड्ढा। ५. पुराना। ६. जो खूब सोम-पान करता हो। जिसकी उमर सोमपान करने में ही बीती हो।

पुं०[√वृधु+क्त] [भाव० वृद्धता, वृद्धत्व] १. वह जो अपनी औसत आयु आधी से अधिक पार कर चुका हो। बुड्ढा। मनुष्यों में साधारणतः ६० वर्ष या इससे अधिक अवस्थावाला व्यक्ति। ३. पंडित। विद्वान्। ४. वह जो योग्यता आदि के विचार से औरों की अपेक्षा श्रेष्ठ तथा सम्मानित हो। (एल्डर) ५. वृद्धावस्था। बुढ़ापा। ६. शैलज नामक गन्ध-द्रव्य।

वृद्ध-काक—पुं०[सं० कर्म० स०] द्रोण काक। पहाड़ी कौवा।

वृद्ध-केशव—पुं०[सं०] सूर्य की प्रतिभा। (पुराण)

वृद्ध-गंगा––स्त्री०[सं०] हिमालय की एक छोटी नदी।

वृद्धता—स्त्री० [स० वृद्ध+तल्+टाप्] वृद्ध होने की अवस्था, धर्म या भाव।

वृद्धत्व—पुं०[सं० वृद्ध+त्वल्]=वृद्धता।

वृद्ध-धूप——पुं०[सं०] १. सिरिस का पेड़। २. सरल का पेड़।

वृद्ध-नाभि—पुं०[सं०] जिसकी तोंद निकली या बढ़ी हुई हो।

वृद्ध-पराशर—पुं०[सं०] प्रसिद्ध धर्मशास्त्रकार।

वृद्ध-प्रपितामह—पुं० [सं०] [स्त्री० वृद्ध प्रपितामही] दादा का दादा। परदादा का पिता।

वृद्ध-युवती—स्त्री०[सं० कर्म० स०] १. कुटनी। २. धाय। दाई।

वृद्धश्रवा (वस्)—पुं० [सं० वृद्ध (वृहस्पति) √श्रु (सुनना)+असुन्, ब० स०] इंद्र।

वृद्धश्रावक—पुं०[सं० ष० त०] कापालिक।

वृद्धांगुलि—स्त्री०[सं० कर्म० स०] अँगूठा।

वृद्धांत—वि०[सं० ष० त० कर्म० स०] सम्मान या प्रतिष्ठा के योग्य।

वृद्धा—स्त्री०[सं० वृद्ध+टाप्] वह स्त्री जो अवस्था में वृद्ध हो गई हो। बुड्ढी।

वि० बुढ़िया।

वृद्धाचल—पुं०[सं० मध्यम० स०] दक्षिण भारत का एक तीर्थ।

वृद्धावस्था—स्त्री०[सं०] वृद्ध होने की अवस्था, धर्म या भाव। बुढ़ापा।

वृद्धि—स्त्री०[सं०√वृध् (बढ़ना)+क्तिन्] १. वृद्ध होने की अवस्था या भाव। २. गुण, मान, मात्रा, संख्या आदि में अधिकता होना जो उन्नति, प्रगति, विकास आदि का सूचक होता है। जैसे—वेतन, संतान आदि की वृद्धि। ३. उक्त के आधार पर होनेवाली अधिकता जो उन्नति, प्रगति, विकास आदि की सूचक होती है। ४. विशेषतः वृत्ति, वेतन आदि में होनेवाली अधिकता। (इन्क्रीमेंट) ५. अभ्युदय। समृद्धि। ६. ब्याज। सूद। ७. राजनीति में कृषि, वाणिज्य, दुर्ग, सेतु, कुंजरबंधन, कन्याकर बलादान और सैन्यसन्निवेश इन आठों वर्गों का उपचय। वर्द्धन। स्फाति। ८. वह अशौच जो घर में संतान उत्पन्न होने पर सगे-संबंधियों को होता है। ९. एक प्रकार की लता जो अष्ट वर्गों के अन्तर्गत मानी गई है। १०. फलित-ज्योतिष में विषकंभ आदि २७ योगों के अन्तर्गत ग्यारहवाँ योग।

वृद्धिक—पुं०[सं०] लिखाई में एक प्रकार का चिह्न जो इस बात का सूचक होता है कि लिखाई या छपाई में यहाँ कोई पद या शब्द भूल से बढ़ा दिया गया है। यह इस प्रकार लिखा जाता है— ∧

वृद्धि-कर्म—पुं० [सं० ष० त०]=वृद्धि-श्राद्ध।

वृद्धिका—स्त्री०[सं० वृद्धि+कन्+टाप्] १. ऋद्धि नाम की ओषधि। २. सफेद अपराजिता। ३. अर्कपुष्पी।

वृद्धि-जीवक—पुं०[सं० तृ० त०] वह जो वृद्धि या ब्याज से अपना निर्वाह करता हो। सूद से अपना निर्वाह करनेवाला। महाजन।

वृद्धिद—वि०[सं० वृद्धि√दा+क] वृद्धि देनेवाला।

पुं० १. जीवक नामक क्षुप। २. शूकरकन्द।

वृद्धि-पत्र—पुं०[सं० ब० स०] चिकित्सा के काम आनेवाला एक तरह का शल्य। (सुश्रुत)

वृद्धि-योग—पुं०[सं० मध्यम० स०] फलित ज्योतिष के २७ योगों में से एक योग।

वृद्धि-श्राद्ध—पुं०[सं० च० त०] नांदीमुख नामक श्राद्ध जो मांगलिक अवसरों पर होता है।

वृद्धि-सानु—पुं०[सं०] १. पुरुष। आदमी। २. कर्म। कार्य। ३. पत्ता।

वृध्य—वि०[सं०√वृध् (बढ़ना)+क्यप्] १. वृद्धों में होनेवाला। वृद्ध-संबंधी। २. जिसकी वृद्धि हो सकती हो।

वृन्न—पुं०=वर्ण।

वृश—पुं०[सं०√वृ (वरण करना)+शक्] १. अड़ूसा। २. चूहा। ३. अदरक।

†पुं०=वृष।

वृश्चन—पुं० [सं०√व्रश्च् (काटना)=ल्युट्–अन, व्र—वृ] वृश्चिक। बिच्छू।

वृश्चिक—पुं०[सं०√व्रश्च् (काटना)+किकन्, व्र–वृ] १. मकड़ी की तरह का पर उससे बड़ा एक तरह का जंतु जिसका डंक बहुत अधिक जहरीला होता है। २. ज्योतिष में बारह राशियों में से आठवीं राशि जिसक तारे बिच्छू का-सा आकार बनाते हैं। (स्कार्पिओ)। ३. अगहन मास जिसमें प्रायः सूर्योदय के समय वृश्चिक राशि का उदय होता है। ४. वृश्चिकाली या बिच्छू नाम की लता। ५. गोबर में उत्पन्न होनेवाला कीड़ा। शूक कीट। ६. मदन वृक्ष। मैनफल। ७. गदह-पूरना। पुनर्नवा।

वृश्चिकर्णी—स्त्री०[सं० ब० स०, ङीष्] मूसाकानी।

वृश्चिका—स्त्री०[सं०] १. बिछुआ या बिच्छू नाम की घास। २. सफेद गदहपूरना। ३. पिठवन।

वृश्चिकाली—स्त्री०[सं० ब० स०] बिच्छू नाम की लता। जिसकी जड़ का प्रयोग ओषधि के रूप में होता है।

वृश्चिकेश—पुं०[सं० ष० त०] वृश्चिक राशि के अधिष्ठाता देवता; बुध (ग्रह)।

वृश्चिपत्री—स्त्री०[सं० वृश्चिपत्र+ङीप्, ष० त०] १. वृश्चिकाली। २. मेढ़ासिंगी।

वृष—पुं०[सं०√वृष् (सींचना)+क] १. साँड़। २. कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषों में से एक जो शंखिनी जाति की स्त्री के लिए उपयुक्त कहा गया है। ३. स्त्री का पति। स्वामी। ४. धर्म जिसके चार पैर माने जाते हैं और जो इसी कारण साँड़ के रूप में माना जाता है। ५. पुराणानुसार ग्यारहवें मन्वन्तर के इंद्र का नाम। ६. श्रीकृष्ण का एक नाम। ७. दुश्मन। शत्रु। ८. गेहूँ। ९. चूहा। १०. अड़ूसा। ११. ऋषभक नामक ओषधि। १२. धमासा।

वृषक—पुं०[सं०] १. साँड़। २. एक प्रकार का साँप। ३. चूहा। ४. गेहूँ। ४. भिलावाँ। ५. अड़ूसा। ६. ऋषभक नामक ओषधि।

वृषकर्णी—स्त्री०[सं०] १. सुदर्शन नाम की लता। २. एक प्रकार का विधारा।

वृषका—स्त्री०[सं० वृषक+टाप्] एक नदी। (पुराण)

वृष केतन—पुं०[सं० ब० स०] शिव। महादेव।

वृषकेतु—पुं०[सं० ब० स०] १. शिव या महादेव, जिनकी ध्वजा पर बैल का चिह्न माना जाता है। २. लाल गदहपुरना।

वृषक्रतु—पुं० [सं० मध्यम० स०, ब० स० वा] वर्षा करनेवाले इंद्र।

वृषगण—पुं०[सं० ष० त०] वैदिक ऋषियों का एक गण।

वृष-चक्र—पुं० [सं० ष० त०] फलित ज्योतिष में, एक प्रकार का चक्र जिसमें एक बैल बनाकर उसके भिन्न-भिन्न अंगों में नक्षत्रों आदि के नाम लिखते हैं और तब उसके द्वारा खेती संबंधी शुभाशुभ फल आदि निकालते हैं।

वृषण—पुं० [सं०√वृष् (उत्पन्न करना)+क्यु,—अन] १. इंद्र। २.

कर्ण। ३. विष्णु। ४. पीड़ा के कारण होनेवाली बेहोशी। ५. अंडकोष। ६. साँड़। ७. घोड़ा। ८. पेड़। वृक्ष।

वृषण-कच्छु—स्त्री० [सं० ष० त०] १. एक रोग जिसमें पसीने, मैल आदि के कारण अंडकोष के आसपास फुन्सियाँ निकल आती हैं। २. उक्त् रोग में निकलनेवाली फुन्सियाँ।

वृषणाश्व—पुं० [सं० ब० स० या ष० त०] १. एक प्रसिद्ध वैदिक राजा। २. इन्द्र के घोड़े का नाम।

वृषदर्भ—पुं० [सं० ब० स०] १. श्रीकृष्ण का एक नाम। २. राज शिवि का एक पुत्र।

वृषदेवा—स्त्री० [सं० ब० स०] वायु पुराण के अनुसार वसुदेव की एक स्त्री।

वृषध्वज—पुं० [सं० ब० स०] १. शिव। महादेव। २. गणेश। ३. पुण्यशील व्यक्ति। पुण्यात्मा। ४. पुराणानुसार एक पर्वत।

वृषध्वजा—स्त्री० [सं०] दुर्गा का नाम।

वृष-नाशन—पुं० [सं०] १. पुराणानुसार श्रीकृष्ण का एक नाम। २. वाय-विडंग।

वृषपति—पुं० [सं० ष० त०] १. शिव। महादेव। २. नपुसंक।

वृषपर्णी—स्त्री० [सं०] १. मूसाकानी। आखुकर्णी २. दंती। ३. सुदर्शना लता।

वृषपर्व्वा—पुं० [सं० ब० स०, वृषपर्व्वन्] १. शिव। महादेव। २. विष्णु। ३. एक असुर या दैत्य जिसने दैत्य-गुरु शुक्राचार्य की सहायता से बहुत दिनों तक देवताओं के साथ युद्ध ठान रखा था। ४. भँगरा। ५. कसेरू। ६. एक प्रकार का तृण।

वृषप्रिय—पुं० [सं० ब० स०] विष्णु।

वृषभ—पुं० [सं०√वृष्+अभच्, कित्] १. बैल या साँड़। २. कामशास्त्र के अनुसार वह श्रेष्ठ पुरुष जो शंखिनी स्त्री के लिए उपयुक्त हो। ३. सूर्य की एक वीथी। ४. एक प्राचीन तीर्थ। ५, साहित्य में वैदर्भी रीति का एक भेद। ६. कान का विवर। ७. ऋषभ नामक ओषधि।

वृषभ-केतु—पुं० [सं० ब० स०] शिव का एक नाम।

वृषभ-गति—पुं० [सं० ब० स०] १. शिव। महादेव। २. ऐसी सवारी जिसे बैल खींचते हों।

वृषभत्व—पुं० [सं० वृषभ्+त्वल्] वृषभ होने की अवस्था, धर्म या भाव। वृषभता।

वृषभधुजा—पुं०=वृषभध्वज (शिव)।

वृषभ-ध्वज—पुं० [सं० ब० स०] महादेव जिनकी ध्वजा पर वृषभ की मूर्ति बनी होती है।

वृषभ-वीथी—स्त्री० [सं०] सूर्य्य की एक वीथी।

वृषभांक—पुं० [सं० ब० स०] महादेव । शिव।

वृषभा—स्त्री० [सं० वृषभ+टाप्] पुराणानुसार एक प्राचीन नदी।

वृषभाक्ष—पुं० [सं० ब० स०] विष्णु।

वृषभानु—पुं० [सं०] राधिका जी के पिता। (पुराण)

वृषभानुजा—स्त्री० [सं० वृषभानु√जन्+ड+टाप्] राधिका जी।

वृषभानु-नंदिनी—स्त्री० [सं० ष० त०] राधिका जी।

वृषभासा—स्त्री० [सं०] इंद्रपुरी।

वृषभी—स्त्री० [सं० वृषभ+ङीष्] १. विधवा स्त्री। २. केवाँच। कौंछ।

वृषरवि—पुं०=वृषभानु।

वृषल—वि० [सं०√वृष्+कलच्] [भाव० वृषलता] १. जिसे धर्म आदि का कुछ भी ज्ञान न हो, फलतः कुकर्मी और पापी। २. शूद्र। ३. बदचलनी याँ शूद्रता के कारण जातिच्युत किया हुआ ब्राह्मण या क्षत्री। ४. घोड़ा। ५. चन्द्रगुप्त का एक नाम।

वृषली—स्त्री० [सं०] १. बारह वर्षीय कुमारी कन्या विशेषतः ऐसी कन्या जिसे मासिक धर्म होने लगा हो। २. रजस्वला स्त्री। ३. शूद्र-पत्नी। ४. बाँझ स्त्री अथवा मरा हुआ पुत्र जनमनेवाली स्त्री।

वृषलीपति—पुं० [सं० ष० त०] वह पुरुष जिसने ऐसी कन्या से विवाह किया हो जो विवाह से पहले ही रजस्वला हो चुकी हो।

वृषवासी (सिन्)—पुं० [सं०] केरल स्थित वृष पर्वत पर रहनेवाले अर्थात् शिव जी।

वृषवाहन—पुं० [सं० ष० त०] शिव। महादेव।

वृषशत्रु—पुं० [सं०] विष्णु।

वृषस्कंध—पुं० [सं० ब० स०] शिव। महादेव।

वृषांतक—पुं० [सं० ष० त०] विष्णु।

वृषा—स्त्री० [सं० वृष+टाप्] १. गौ। २. मूसाकानी। आखुकर्णी। ३. केवाँच। कौंछ। ४. दंती। ५. असगंध ६. मालकंगनी।

वृषाकपि—पुं० [सं० ब० स०, दीर्घ] १. शिव। २. विष्णु। ३. इन्द्र। ४. सूर्य। ५. अग्नि।

वृषाकृति—पुं० [सं० ब०स०] विष्णु।

वृषाक्ष—पुं० [सं० ब० स०] विष्णु।

वृषाणक—पुं० [सं० वृषाण+कन्] १. शिव। महादेव। २. शिव का एक अनुचर।

वृषाणी (णिन्)—पुं० [वृषण+इनि] ऋषभ नामक ओषधि।

वृषादित्य—पुं० [सं० ष० त०] वृष राशि के अर्थात् वृष राशि के ज्येष्ठ मास की संक्रान्ति का सूर्य जिसका ताप बहुत अधिक होता है।

वृशायण—पुं० [सं० वृष+कक्, क-आयन, णत्व, ब० स०] १. शिव। महादेव। २. गौरैया पक्षी।

वृषायणी—स्त्री० [सं० ब० स०] गंगा का एक नाम।

वृषाश्व—पुं० [सं० ब० स०] १. ऐसे जंतु जिनकी बोली बहुत कर्कश होती है। २. वह लकड़ी जिससे नगाड़े पर आघात किया जाता है।

वृषाश्रित—स्त्री० [सं० तृ० त०] गंगा।

वृषासुर—पुं० [सं० मध्यम० स०] भस्मासुर दैत्य का एक नाम।

वृषी (षिन्)—पुं० [सं०] मोर।

वृषेंद्र—पुं० [सं० ष० त०] १. साँड़। २. बैल।

वृषोत्सर्ग—पुं० [सं० ष० त०] पुराणानुसार एक प्रकार का धार्मिक कृत्य जिसमें लोग अपने मृत पिता आदि के नाम पर साँड़ पर चक्र दाग कर उसे यों ही घूमने के लिए छोड़ देते हैं। ऐसे साँड़ों से किसी प्रकार का काम नहीं लिया जाता।

वृषोदर—पुं० [सं० ब० स०] विष्णु।

वृष्टि—स्त्री० [सं०√वृष्+क्तिन्] १. आकाश से जल की वर्षा होने की अवस्था या भाव। पानी बरसना। २. वर्षा का जल। ३. वर्षा की तरह बहुत सी छोटी-छोटी चीजें ऊपर से गिरने की क्रिया या भाव। जैसे—

सुमन वृष्टि। ४. किसी क्रिया का कुछ समय तक लगातार होना। जैसे-- कुवाच्यों की वृष्टि।

वृष्टि-जीवन--वि०[सं०] जिसका जीवन वर्षा पर निर्भर हो।

पुं० १. चातक। २. ऐसा प्रदेश या क्षेत्र जिसकी फसल बहुत कुछ वर्षा पर ही आश्रित हो।

वृष्टिभू--पुं०[सं०] मेढक।

वृष्टिमान--पुं०[सं०] वृष्टि-मापक।

वृष्टिमापक--पुं०[सं०] नल के आकार का एक प्रकार का यंत्र जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि कितनी मात्रा में वृष्टि हुई।

वृष्टि-वैकृत--पुं०[सं० ष० त०] बृहत्संहिता के अनुसार बहुत अधिक वृष्टि होना या बिलकुल वृष्टि न होना, जो उपद्रव, संकट आदि का सूचक माना जाता है। ऐसी विकृति या खराबी जो वर्षा की अधिकता अथवा कमी के फलस्वरूप उत्पन्न हुई हो।

वृष्णि--पुं०[सं०√वृष् (सींचना)+नि, कित्] [वि० वार्ष्णेय] १. मेघ। बादल। २. इन्द्र। ३. अग्नि। ४. शिव। ५. विष्णु। ६. वायु। ७. ज्योति। ८. गौ। ९. यादव वंश। १० उक्त वंश में उत्पन्न होने वाले श्रीकृष्ण। ११. मेढ़ा (पशु)। १२. साँड़।

वि० १. प्रचंड। उग्र। तेज। २. नीच। ३. क्रोधी। ४. नास्तिक।

वृष्णिक-गर्भ--पुं० [सं० ब० स०] श्रीकृष्ण।

वृष्ण्य--पुं० [सं० वृष्ण+यत्] वीर्य।

वृष्य--वि०[सं०√वृष्+क्यप्, यत्, वा] १. (पदार्थ) जिससे वीर्य और बल बढ़ता है। २. (पदार्थ) जिसके सेवन से मन में आनन्द उत्पन्न होता हो।

पुं० १. ईख। ऊख। २. उड़द की दाल। ३. आँवला। ४. ऋषभ नामक ओषधि। ५. कमल की नाल।

वृष्या--स्त्री०[सं० वृष्य+टाप्] १. अष्ट वर्ग की ऋद्धि नामक ओषधि। २. शतावर। ३. आँवला। ४. बिदारीकन्द। ५. अतिबला। ककही। ६. बड़ी दंती। ७. केवाँच। कौंछ।

वृहत्--वि०[सं०] आकार-प्रकार, मान-परिमाण आदि में जो बहुत बड़ा हो। जैसे--वृहत् कोश।

वृहती--स्त्री० =बृहती।

वृहत्कंद--पुं०[सं० कर्म० स०, ब० स०] १. विष्णुकंद। २. गाजर।

वृहत्काम--पुं० [सं०] भीम।

वृहत्कुक्षि--पुं०[सं० ब० स०] जिसका पेट निकला या बढ़ा हुआ हो।

वृहत्ताल--पुं०[सं० कर्म० स०] श्रीताल (वृक्ष)।

वृहत्तृण--पुं०[सं० ब० स०, कर्म०स० वा] बाँस।

वृहत्त्वक्--पुं०[सं० ब० स०] सप्तपर्ण या सतिवन नामक वृक्ष।

वृहत्त्वच--पुं०[सं० ब० स०] नीम का पेड़।

वृहत्पंचमूल--पुं०[सं० पंचमूल, द्विगु स०, वृहत् पंचमूल, कर्म० स०] बेल, सोनापाठा, गंभारी, पाँडर और गनियारी इन पाँचों का समूह। (वैद्यक)

वृहत्पत्र--पुं०[सं० ब० स] १. हाथीकंद। २. पठानी लोध। ३. बथुआ नामक साग।

वृहत्पत्रा--स्त्री०[सं० वृहत्पत्र+टाप्] १. त्रिपर्णी कंद। २. कासमर्द।

वृहत्पर्ण--पुं०[सं० ब० स०] पठानी लोध।

वृहत्पाद--पुं०[सं० ब० स०] वट का वृक्ष। बरगद।

वृहत्पीलू--पुं०[सं० कर्म० स०] पहाड़ी अखरोट, महापीलु।

वृहत्पुष्प--पुं०[सं० ब० स०] १. केला। २. सफेद कुम्हड़ा। पेठा।

वृहत्फल--पुं०[सं० ब०स०] १. कुम्हड़ा। २. कटहल। ३. जामुन। ४. चिचड़ा।

वृहत्फला--स्त्री०[सं० वृहत्फल+टाप्] १. कद्दू। लौकी। २. कड़वा कद्दू। ३. महेन्द्रवारुणी। ४. जामुन। ५. सफेद कुम्हड़ा। पेठा।

वृहदंग--पुं०[सं० ब० स०] हाथी।

वृहदेला--स्त्री० [सं० कर्म० स०] बड़ी इलायची।

वृहद्गृह--पुं०[सं० ब० स०] विंध्य पर्वत के पश्चिम में मालव के पास का एक प्राचीन देश।

वृहद्दंती--स्त्री० [सं० ब० स०, कर्म० स०] बड़ी दंती। द्रवंती।

वृहद्दल--पुं० [सं० ब० स०] १. पठानी लोध। २. सप्तपर्ण। छतिवन। ३. लाल लहसुन। ४. श्रीताल या हिंसताल नामक वृक्ष। ५. लजालू।

वृहद्दला--स्त्री०[सं० वृहद्दल+टाप्] लाजवंती। लजालू।

वृहद्धान्य--पुं०[सं० कर्म० स०] ज्वार।

वृहद्बला--स्त्री०[सं० ब० स०, कर्म० स०] १. पीत पुष्पा। सहदेई। २. पठानी लोध। ३. लजालू।

वृहद्भानु--पुं०[सं० ब० स०] १. सूर्य। २. अग्नि। ३. चित्रक। चीता।

वृहद्रथ--पुं०[सं० ब० स०] १. इन्द्र। २. यज्ञ-पात्र। ३. सामवेद का एक अंग या अंश। ४. एक तरह का मंत्र।

वृहद्रथा--स्त्री०[सं० वृहत्-रथ+टाप्] एक प्राचीन नदी।

वृहद्वल्कल--पुं०[सं०] १. पठानी लोध। २. सप्तपर्ण। छतिवन।

वृहद्वारुणी--स्त्री०[सं० कर्म० स०] महेन्द्रवारुणी। इनारू।

वृहन्नल--पुं०[सं० ब० स०] १. अर्जुन। २. बाहु। बाँह। ३. नरसल का बड़ा पेड़।

वृहन्नला--स्त्री०[सं० वृहन्नल+टाप्] स्त्री वेष में अर्जुन का उस समय का नाम जब वह अज्ञातवास के समय राजा विराट् के यहाँ अंतःपुर में नाच-गाना सिखलाते थे।

वृहस्पति--पुं०[सं० ष० त०] =बृहस्पति।

वृही--पुं०[सं०√वृह (वृद्धि करना)+णिनि, दीर्घ, नलोप] साठी धान।

वेंकट--पुं०[सं०] दक्षिण भारत में स्थित एक पहाड़ की चोटी जिस पर विष्णु का मंदिर है।

वेंकटाचल--पुं०[सं० मध्यम० स०]=वेंकट पर्वत।

वेंकटेश, वेंकटेश्वर--पुं०[सं०] वेंकट पर्वत पर स्थापित विष्णु की मूर्ति का नाम।

वे--सर्व०[हिं० वह] हिं० 'वह' का बहुवचन।

विशेष--विभक्ति लगाने पर 'वे' का रूप 'उन' तथा 'उन्हों' हो जाता है। जैसे--(क) उनमें बहुत से सफल कलाकार हैं। (ख) उन्होंने ये सब खेत दिखलाये थे।

वेकट--पुं०[सं०√वे+कटच्] १. युवक। जवान। २. विदूषक। ३. जौहरी। ४. भाकुर मछली।

वेक्षण--पुं०[सं० अव√ईक्ष् (देखना)+ल्युट्-अन] १. अच्छी तरह ढूँढ़ना या देखना। २. देखना।

वेग--पुं०[सं० विज् (चलना आदि)+घञ्] १. मन में होनेवाली प्रबल

प्रवृत्ति। मनोवेग। २. गति या चाल में होनेवाला जोर या तेजी। जैसे—नदी का वेग अब कुछ कम होने लगा है। ३. किसी प्रकार की क्रिया के सम्पादन में समय के विचार से होनेवाली तेजी या शीघ्रता। ४. शरीर की वह आन्तरिक वृत्ति या शक्ति, जो प्राणियों को मल, मूत्र आदि का त्याग करने में प्रवृत्त करती है। ५. जल्दी। शीघ्रता। ६. कोई काम करने की दृढ़ प्रतिज्ञा या पक्का निश्चय। ७. उद्यम। उद्योग। ८. बढ़ती। वृद्धि।-९. आनन्द। प्रसन्नता। १०. वीर्य। शुक्र। ११. न्याय के अनुसार चौबीस गुणों में से एक गुण जो आकाश, जल, तेज, वायु और मन में पाया जाता है। १२. लाल इन्द्रायन। १३. महाज्योतिष्मती। १४. दे० 'संवेग'।

वेगग—वि०[सं०] [स्त्री० वेगगा] १. बहुत तेज चलनेवाला। २. बहुत तेज बहनेवाला।

वेग-धारण—पुं०[सं०] ऐसी क्रिया को रोकना जो वेगवती हो। विशेषतः मल-मूत्र रोकना जो स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक होता है।

वेग-नाशन—पुं०[सं०] जिसके कारण शरीर से निकलनेवाला मल आदि रुकता है।

वेग-निरोध—पुं०[सं० ष० त०] १. वेग का काम करना या घटाना। २. दे० 'वेगधारा'।

वेगमापक—पुं०[सं०] ऐसा यंत्र जो किसी गतिमान वस्तु की गति का वेग मापता हो। जैसे—नदी की धारा का वेग-मापक यंत्र।

वेगवती—वि०[सं० वेग+मतुप्, म—व,+ङीष्] जिसका वेग अत्यधिक हो।

स्त्री० दक्षिण भारत की एक नदी।

वेगवान्—वि०[सं० वेग+मतुप्] वेग-पूर्वक चलनेवाला। तेज चलनेवाला।

पुं० विष्णु।

वेग-वाहिनी—स्त्री०[सं०] १. गंगा। २. पुराणानुसार एक प्राचीन नदी। ३. संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

वेग-विघात—पुं० [सं०] वेग-धारा।

वेगसर—पुं०[सं०] १. तेज चलनेवाला घोड़ा। २. खच्चर।

वेगा—स्त्री०[सं० वेग+टाप्] बड़ी मालकंगनी। महाज्योतिष्मती।

वेगित—भू० कृ०[सं० वेग+इतच्] १. वेग से युक्त किया हुआ। २. क्षुब्ध (समुद्र)।

वेगिनी—स्त्री०[सं० वेग+इनि+ङीष्] नदी।

वेगी (गिन्)—वि० [सं० वेग+इनि] १. जिसका वेग तीव्र या अत्यधिक हो। वेगवान्।

पुं० बाज पक्षी।

वेगीय—वि० [सं० वेग+छ, छ—ईय] १. वेग-संबंधी। वेग का। २. वेग के फलस्वरूप होनेवाला।

वेट्—पुं०[सं०√वेट् (शब्द करना)+क्विप्] यज्ञ में प्रयुक्त होनेवाला स्वाहा की तरह का एक शब्द।

वेट्ट चंदन—पुं० [सं० मध्यम० स०] मलयागिरि चंदन।

वेड—पुं०[सं०√विड्+अच्] एक तरह का चंदन।

वेड़ा—स्त्री०=बेड़ा (नावों का समूह)।

वेढमिका—स्त्री०[सं० वेढग+कन्+टाप्, इत्व] वह कचौरी जिसमें उरद की पीठी भरी हुई हो। वेढ़ई।

वेण—पुं० [सं०√वेण् (गमन)+अच्] १. एक प्राचीन वर्णसंकर जाति जो मुख्य रूप से गाने-बजाने का काम करती थी। २. राजा पृथु के पिता का नाम।

वेणवी (विन्)—वि० [सं० वेणु+इनि] जिसके पास वेणु हो।

पुं० शिव।

वेणा—स्त्री०[सं० वेण+टाप्] १. एक प्राचीन नदी जिसे पर्णसा भी कहते हैं। २. उशीर। खस।

वेणि—स्त्री०[सं०√वी (गमन)+नि, णत्व] १. बालों की लटकती हुई चोटी। २. चोटी गूँथने की क्रिया। ३. जल-प्रवाह। ४. संगम। ५. देवदाली। बंदाल।

वेणिक—पुं०[सं० वेणि+कन्] १. एक प्राचीन जनपद। २. उक्त जनपद का निवासी।

वेणिका—स्त्री०[सं० वेणिक+टाप्] स्त्रियों की वेणी।

वेणिनी—स्त्री० [सं० वेण+इनि,+ङीष्] स्त्री जिसकी गुँथी हुई चोटी लटक रही हो।

वेणी—स्त्री० [सं० वेण+ङीष्] १. स्त्रियों के बालों की गूँथी हुई चोटी। कवरी। २. पानी का बहाव। ३. भीड़-भाड़। ४. देवदाली। ५. एक प्राचीन नदी। ६. भेड़। ७. देवताड़।

वेणीदान—पु०[सं० ष० त०] किसी तीर्थ-स्थान, विशेषतः प्रयाग में केश मुँडाने का एक कृत्य या संस्कार।

वेणीर—पुं० [सं० वेण+ईत्] १. नीम का पेड़। २. रीठा।

वेणु—पुं० [सं०√अज् (गमन) +णु, अज्—वी (वे)] १. बाँस। २. बाँस की बनी हुई वंशी। मुरली। ३. दे० 'वेणु'।

वि० वेणुकीय।

वेणुक—पु०[सं० वेणु+कन्] १. वह लकड़ी या छड़ी जिससे गौ, बैल आदि हाँकते हैं। २. अंकुश। ३. बाँसुरी। ४. इलायची।

वेणुका—स्त्री०[सं० वेणु+कन्+टाप्] १. बाँसुरी। २. हाथी को चलाने का प्राचीन काल का एक प्रकार का दंड जिसमें बाँस का दस्ता लगा होता था। ३. जहरीले फलवाला एक प्रकार का वृक्ष।

वेणुकार—पुं० [सं० वेणु√कृ (करना)+अण्, उप० स०] वह व्यक्ति जिसका पेशा बाँसुरी बनाना हो।

वेणुकीय—वि०[सं० वेणुक+छ, छ—ईय] वेणु-संबंधी। वेणु का।

वेणुज—वि०[सं० वेणु√जन्+ड] जो वेणु अर्थात् बाँस से उत्पन्न हो।

पुं० १. बाँस के फूल में होनेवाले दाने जो चावल कहलाते हैं और जो पीसकर ज्वार आदि के आटे के साथ खाये जाते हैं। बाँस का चावल। २. गोल मिर्च।

वेणुज-मुक्ता—स्त्री०[सं० कर्म० स०] बाँस में होनेवाला एक प्रकार का गोलदाना जो प्रायः मोती कहलाता है।

वेणुप—पुं०[सं०] १. एक प्राचीन जनपद (महाभारत)। २. उक्त जनपद का निवासी।

वेणुपुर—पुं० [सं०] आधुनिक बेलगाँव का पुराना नाम।

वेणु-बीज—पुं०[सं०] बाँस के फूल में होनेवाले दाने जो ज्वार आदि के साथ पीसकर खाये जाते हैं। बाँस का चावल।

वेणुमती—स्त्री० [सं० वेणु+मतुप्+ङीष्] पश्चिमोत्तर प्रदेश की एक नदी। (पुराण)

वेणुमान—पुं०[सं० वेणुमम्] १. एक पौराणिक पर्वत। २. एक पौराणिक कुल या वंश।

वेणु-मुद्रा—स्त्री०[सं०] तान्त्रिकों की एक प्रकार की मुद्रा।

वेणु-यव—पुं० [सं०] वेणु-बीज।

वेणु-वन—पुं० [सं० ष० त०] ऐसा वन जिसमें बाँसों के बहुत अधिक झुरमुट हों।

वेण्य—स्त्री० [सं० वेणु+यत्] पुराणानुसार विंध्य पर्वत से निकली हुई एक नदी।

वेण्वा—स्त्री०[सं० वेणु+अच्+टाप्] पुराणानुसार 'पारिपत्र पर्वत की एक नदी।

वेण्वा-तट—पुं०[सं० ष० त०] वेण्वा नदी के तट पर स्थित एक प्रदेश। (महा०) २. उक्त प्रदेश का निवासी।

वेत—पुं०=बेंत।

वेतन—पुं०[सं०√वी (गमन)+तनन्] १. वह धन जो किसी को कोई काम करने के बदले में दिया जाय। पारिश्रमिक। उजरत। २. वह धन जो निश्चित रूप से निरंतर काम करते रहने पर बराबर नियत समय पर मिलता रहता है। तनख्वाह। (पे) जैसे—मासिक या साप्ताहिक वेतन। ३. जीविका निर्वाह का साधन। ४. चाँदी। रजत।

वेतन-भोगी (गिन्)—पुं०[सं०] वह जो वेतन पर किसी के यहाँ नौकरी करता हो।

वेतस—पुं० [सं०] १. बेंत। २. जल-बेंत। ३. बड़वानल।

वेतसक—पुं०[सं० वेतस+कन्] एक प्राचीन जनपद। (महाभारत)

वेतस-पत्रक—पुं०[सं०] एक तरह का शल्य। (सुश्रुत)

वेताल—पुं०[सं०√अज्+विच्, वी, √तल्+घञ्, कर्म० स०] १. द्वारपाल। संतरी। २. शिव के एक गणाधिप। ३. पुराणानुसार एक तरह की भूत-योनि या प्रेतात्माओं का वह वर्ग जिसका निवास-स्थान श्मशान माना गया है। ४. उक्त योनि के भूत जो साधारण भूतों के प्रधान माने गए हैं। ५. ऐसा शव जिस पर भूतों ने अधिकार कर लिया हो। ६. छप्पय के छठे भेद का नाम जिसमें ६५ गुरु और २२ लघु कुल ८७ वर्ण या १५२ मात्राएँ अथवा ६५ गुरु और १८ लघु कुल ८३ वर्ण या १४८ मात्राएँ होती हैं।

वेताला—स्त्री०[सं० वेताल+टाप्] दुर्गा।

वेत्ता—वि०[सं०√विद् (जानना)+तृच्] समस्त पदों के अन्त में; अच्छा या पूर्ण ज्ञाता। जैसे—तत्त्ववेत्ता, शास्त्रवेत्ता।

वेत्र—पुं० [सं०√वी+त्र] १. बेंत। २. द्वारपाल के पास रहनेवाला डंडा।

वेत्रक—पुं०[सं० वेत्र+कन्] रामसर। सरपत।

वेत्रकार—पुं०[सं० वेत्र√कृ (करना)+अण्] वह जो बेंत के सामान बनाता हो।

वेत्रकूट—पुं०[सं० मध्यम० स०] पुराणानुसार हिमालय की एक चोटी।

वेत्र-गंगा—स्त्री०[सं० मध्यम० स०] हिमालय से निकली हुई एक नदी।

वेत्रधर—पुं०[सं० वेत्र√धृ (रखना)+अच्, ष० त०] १. द्वारपाल। संतरी। २. चोबदार। ३. लठैत।

वेत्रवती—स्त्री०[सं० वेत्र+मतुप्, म—व+ङीष्] बेतवा नदी।

वेत्रहा (हन्)—पुं०[सं० वेत्र √ हन् (मारना)+क्विप्] इंद्र।

वेत्रासन—पुं०[सं० ष० त०] बेंत का बुना हुआ आसन।

वेत्रासुर—पुं०[सं० मध्यम० स०] एक असुर जिसका वध इन्द्र ने किया था।

वैत्रिक—पुं० [सं० वेत्र+ठक्–इक] १. एक जनपद। २. उक्त जनपद का निवासी। ३. चोबदार।

वेत्री—पुं०[सं० वेत्र+इनि, वेत्रिन्] १. द्वारपाल। संतरी। २. चोबदार।

वेद—पुं०[सं०] १. वह जो जाना गया हो। ज्ञान। २. धार्मिक ज्ञान। तत्त्वज्ञान। ३. भारतीय आर्यों के आद्य प्रधान धार्मिक ग्रन्थ जो हिन्दुओं में सर्व-प्रधान हैं।

विशेष—आरंभ में ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद ही तीन वेद थे। जिनके कारण वेदत्रयी पद बना था। पर बाद में चौथा अथर्ववेद भी इनमें सम्मिलित हो गया था, और अब उनकी संख्या चार हो गई है। ये संसार के सबसे अधिक प्राचीन धर्मग्रन्थ हैं। प्रत्येक वेद के दो मुख्य विभाग हैं (क) मंत्र अथवा संहिता भाग और (ख) ब्राह्मण भाग। हिन्दू इन्हें अ-पौरुषेय मानते हैं, अर्थात् ये मनुष्यों द्वारा रचित नहीं हैं, बल्कि स्वयं ब्रह्मा के मुख से निकले हैं। स्मृतियों से इनका पार्थक्य जतलाने के लिए इन्हें 'श्रुति' भी कहते हैं, जिसका आशय यह है कि वेदों में कही हुई बातें लोग परम्परा से सुनते चले आये थे, जो बाद में लिपिबद्ध करके ग्रन्थ रूप में संकलित की गई थी। आधुनिक विद्वानों के मत से इनकी रचना लगभग ६००० वर्ष पूर्व हुई होगी।

४. विष्णु का एक नाम। ५. यज्ञों के भिन्न भिन्न अंग या कृत्य। यज्ञांग। ६. छंद। ७. धन-सम्पत्ति।

वेदक—वि०[सं० वेद+कन्] वेदन अर्थात् ज्ञान करानेवाला।

वेदकर्ता (र्तृ)—पुं०[सं० ष० त०] १. वेद या वेदों का रचयिता। २. सूर्य। ३. शिव। ४. विष्णु। ५. वर पक्ष के वे लोग जो विवाह-कृत्य सम्पन्न हो जानेपर वधू के घर पहुँचकर उसे और वर को आशीर्वाद देते तथा मंगल-कामना प्रकट करते हैं।

वेदकार—पुं०[सं०] वेद या वेदों का रचयिता।

वेद-गंगा—स्त्री०[सं० मध्यम० स०] दक्षिण भारत की एक नदी जो कोल्हापुर के पास से निकलकर कृष्णा नदी में मिलती है।

वेदगर्भ—पुं०[सं० ष० त०] १. ब्रह्मा। २. ब्राह्मण।

वेदगर्भा—स्त्री०[सं० वेदगर्भ+टाप्] १. सरस्वती नदी। २. रेवा नदी।

वेदगुप्त—पुं०[सं० ब० स०] श्रीकृष्ण का एक नाम।

वेदगुह्य—पुं०[सं० ब० स०] विष्णु।

वेद-जननी—स्त्री० [सं० ष० त०] सावित्री जो वेद की माता कही गई है।

वेदज्ञ—पुं० [सं० वेद√ज्ञा (जानना)+क] १. वेदों का ज्ञाता। वेद जाननेवाला। २. ब्रह्म-ज्ञानी।

वेदत्व—पुं०[सं० वेद+त्व] वेद का धर्म या भाव।

वेद-दीप—पुं० [सं० ष० त०] महीधर का किया हुआ शुक्ल यजुर्वेद का भाष्य।

वेदन—पुं०[सं०√विद् (जानना)+ल्युट्–अन] १. ज्ञान। २. अनुभूति। ३. संवेदन। ४. कष्ट। पीड़ा। वेदना। ५. धन-सम्पत्ति। ६. विवाह। ७. शूद्र स्त्री का उच्च वर्ग के पुरुष के साथ होनेवाला विवाह।

वेदना—स्त्री०[सं० वेदन+टाप्] १. बहुत तीव्र मानसिक या शारीरिक

कष्ट। विशेषतः प्रसव के समय स्त्रियों को होनेवाला कष्ट। २. तीव्र मानसिक दुःख। व्यथा।

वेदनी—स्त्री०[सं०√वेदन+ङीष्] त्वचा।

वेदनीय—वि०[सं०√विद्-(जानना)+अनीयर्] १. जो वेदन के लिए उपयुक्त हो अथवा जिसका वेदन हो सके। २. जानने के लिए उपयुक्त। ३. वेदना या कष्ट उत्पन्न करनेवाला।

वेदबीज—पुं०[सं० ष० त०] श्रीकृष्ण।

वेदभू—पुं०[सं० ब० स०] देवताओं का एक गण। (महा०)

वेद-मंत्र—पुं० [सं० मध्यम स० या ष० त०] १. वेदों में आए हुए मंत्र। २. पुराणानुसार एक प्राचीन जनपद। ३. उक्त जनपद का निवासी। ४. मूलमंत्र। (दे०)

वेद-माता (तृ)—स्त्री०[सं० ष० त०] १. गायत्री। सावित्री। २. दुर्गा। २. सरस्वती।

वेद-मूर्ति—पुं०[सं० ष० त०] १. वेदों का बहुत बड़ा ज्ञाता। २. सूर्य।

वेद-यज्ञ—पुं०[मध्यम० स०] वेद पढ़ना। वेदाध्ययन।

वेदवती—स्त्री०[सं०] १. सीता का पूर्वजन्म का नाम। उस जन्म में ये राजा कुशध्वज की पुत्री थीं। २. एक प्राचीन नदी।

वेद-वदन—पुं०[ब० स०] १. ब्रह्मा। २. व्याकरण।

वेद-वाक्य—पुं०[सं०] ऐसा वाक्य या कथन जिसकी सत्यता असंदिग्ध हो। वेद में आए हुए वाक्य के समान मान्य कोई अन्य वाक्य या कथन।

वेदवादी (दिन्)—पुं०[सं०] वेदों का ज्ञाता।

वेदवाह—पुं०[सं० वेद√वह् (ढोना)+घञ्] वह जो वेदों का ज्ञाता हो।

वेद-वाहन—पुं०[सं० ष० त०] सूर्य।

वेद-व्यास—पुं०[सं० वेद+वि√अस् (होना)+अण्] एक प्राचीन मुनि जिन्होंने वेदों का वर्तमान रूप में संकलन किया था। ये सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न पराशर के पुत्र थे। व्यास।

वेद-व्रत—पुं०[सं० ब० स०] वह जो वेदों का अध्ययन करता हो।

वेदशिर—पुं० [सं० ब० स०] १. एक प्रकार का अस्त्र। (पुराण) २. पुराणानुसार मार्कंडेय का एक पुत्र जो मूर्द्धन्या के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। कहते हैं, भार्गव लोगों का मूल पुरुष यही था।

वेदसार—पुं०[सं० ष० त०] विष्णु।

वेद-स्वरूपी—पुं०[सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

वेदांग—पुं०[सं० ष० त०] १ वेद के अंगों में से हर एक। २. वेद के छः अंग। ३. सूर्य।

वेदांत—पुं०[सं० वेद+अंत] १. वेदों में प्रतिपादित सिद्धान्तों का निरूपण और विवेचन करनेवाला शास्त्र। २. भारतीय छः दर्शनों में से अंतिम दर्शन जो उपनिषदों की शिक्षा और सिद्धान्तों पर आश्रित है और जिसमें वेदों का अंतिम या चरम उद्देश्य निरूपित है और जिसे उत्तर-मीमांसा भी कहते हैं।

विशेष—इस दर्शन का मुख्य सिद्धान्त यह है कि यह सारी सृष्टि एकमात्र ब्रह्म से उद्भूत है, और वह ब्रह्म इस सृष्टि के प्रत्येक अणु-परमाणु तक में व्याप्त है। इस दर्शन में मुख्यतः ब्रह्म और जगत् तथा ब्रह्म और जीव के पारस्परिक संबंधों का निरूपण है। अहं ब्रह्मास्मि, तत्त्वमसि, सोहं अस्मि आदि इसके मुख्य सिद्धान्त हैं। लोक में जो अद्वैत की भावना, भूत या माया के प्रति तिरस्कार आदि के भाव प्रचलित हैं वे अधिकतर इसी वेदांत की शिक्षा के फल हैं।

वेदांत—पुं०[सं०] व्यास कृत ब्रह्मसूत्र।

वेदांती (तिन्)—पुं०[सं० वेदान्त+इनि] वेदांत का पूर्ण ज्ञाता। ब्रह्मवादी।

वेदाग्रणी—स्त्री०[सं० ष० त०] सरस्वती।

वेदात्मा—पुं०[सं० ष० त०] १. विष्णु। २. सूर्य।

वेदादि—पुं०[सं० ष० त०] प्रणव या ओंकार का मंत्र।

वेदाधिदेव—पुं०[सं० ष० त०] ब्राह्मण।

वेदाधिप—पुं०[सं० ष० त०] वेदों के अधिपतिग्रह।

विशेष—ऋग्वेद के अधिपति बृहस्पति, यजुर्वेद के शुक्र, सामवेद के मंगल, अथर्व वेद के बुध।

वेदाध्यक्ष—पुं०[सं० ष० त०] विष्णु।

वेदि—स्त्री०=वेदी।

वेदिका—स्त्री०[सं० वेदिक+टाप्]=छोटी वेदी।

वेदित—भू० कृ०[सं०√विद् (जानना)+क्त] १. निवेदित। २. वेद द्वारा कथित या जतलाया हुआ। २. देखा हुआ।

वेदितव्य—वि०[सं०√विद्(जानना)+तव्यत्] बात या विषय जो जाना जा सके।

वेदित्व—पुं०[सं० वेदि+त्व] विदित होने का भाव। ज्ञान।

वेदी (दिन्)—वि०[सं०] १. जाननेवाला। ज्ञाता। २. पंडित। विद्वान्। ३. विवाद करनेवाला।

पुं० १. ब्रह्मा। २. आचार्य। ३. एक प्राचीन तीर्थ। (महाभारत)

स्त्री० १. यज्ञ-कार्य के लिए साफ करके तैयार की हुई भूमि। वेदी। २. मांगलिक या शुभ कार्य के लिए तैयार किया हुआ चौकोर स्थान और उसके ऊपर का मंडप। ३. सरस्वती। ४. ऐसी अँगूठी जिसपर किसी का नाम अंकित हो। ५. पूजन आदि के समय उँगली की एक प्रकार की मुद्रा। ६. अंबष्ठा नामक वनस्पति।

वेदीश—पुं०[सं० ष० त०] ब्रह्मा।

वेदुक—वि०[सं०√विद् (जानना)+उकञ्] १. जाननेवाला। ज्ञाता। २. प्राप्त करनेवाला। ३. मिला हुआ। प्राप्त।

वेदेश्वर—पुं०[सं० ष० त०] ब्रह्मा।

वेदोक्त—भू० कृ०[सं० स० त०] वेदों में कहा हुआ।

वेदोपकरण—पुं०[सं० ष० त०] वेदांग।

वेदोपनिषद्—स्त्री०[सं० मध्यम० स०] एक उपनिषद् का नाम।

वेद्धव्य—वि०[सं०√विध् (छेदना)+तव्यत्] वेधे या छेदे जाने के योग्य।

वेद्धा—वि०[सं०√विध् (छेदना)+तृच्] १. वेधने या छेदनेवाला। २. वेध करनेवाला।

वेद्य—वि०[सं०√विद्(जानना)+ण्यत्] १. (बात या विषय) जो जानने या समझने के योग्य हो। २. कहे जाने के योग्य। ३. प्रशंसनीय। ४. प्राप्त किये जाने के योग्य।

वेद्यत्व—पुं०[सं० वेद्य+त्व] ज्ञान। जानकारी।

वेध—पुं०[सं०√विध् (छेदना)+घञ्] १. किसी चीज में नुकीली चीज धँसाना। वेधना। २. यंत्रों आदि की सहायता से आकाशस्थ ग्रहों, नक्षत्रों आदि की गति, स्थिति आदि का पता लगाने की क्रिया।

पद—वेधशाला।

३. ज्योतिष के ग्रहों का किसी ऐसे स्थान में पहुँचना जहाँ से उनका किसी दूसरे ग्रह में सामना होता हो। जैसे—युतवेध, पताकी वेध। ४. गंभीरता। गहराई। ५. ब्रह्मा। ६. विष्णु। ७. शिव। ८. सूर्य। ९. दक्ष आदि प्रजापति। १० पंडित। विद्वान्। ११. सफेद मदार।

वेधक—पुं०[सं०√विध् (भेदना)+ण्वुल्-अक] १. वेध करनेवाला। २. वेधन करने या वेधनेवाला।

पुं० १. वह जो मणियों आदि को वेधकर अपनी जीविका चलाता हो। २. कपूर। ३. धनिया। ४. अमलबेंत।

वेधनी—पुं० [सं० वेधन+ङीष्] १. वह उपकरण जिससे मोती आदि वेधे जाते हैं। २. अंकुश।

वेधनीय—वि० [सं०√विध् (छेदना)+अनीयर्] जिसका वेध या वेधन हो सके या होने को हो।

वेधशाला—स्त्री०[सं० ष० त०] वह प्रयोगशाला जिसमें ग्रह, नक्षत्रों आदि की गति का पर्यवेक्षण किया जाता है। (आवज़र्वेटरी)

वेधस—पुं०[सं० वि√धा+अस्, वेधस्+अच्] हथेली में अँगूठे की जड़ के पास का स्थान। अंगुष्ठमूल। ब्रह्मतीर्थ।

विशेष—आचमन के लिए इसी गड्ढे में जल देने का विधान है।

वेधा (धस्)—पुं०[सं० वि√धा+अस्, वेधादेश] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। ४. सूर्य। ५. दक्ष आदि प्रजापति। ६. आक। मदार।

वेधालय—पुं०[सं० ष० त०]=वेधशाला।

वेधित—भू० कृ०[सं० √विध् (छेदना)+णिच्+क्त]१. जिसका वेधन या भेदन किया गया हो। २. (ग्रह या नक्षत्र) जिसका ठीक ठीक पर्यवेक्षण किया जा चुका हो।

वेधिनी—स्त्री०[सं० वेधिन्+ङीष्] जोंक। ।

वि० सं० 'वेधी' का स्त्री०।

वेधी (धिन्)—पुं०[सं०] १. वेधन या भेदन करनेवाला। २. ग्रह-नक्षत्रों आदि की गति का पर्यवेक्षण करनेवाला।

वेध्य—वि०[सं०√विध् (छेदना)+ण्यत्] जिसमें वेध किया जाय। जिसका वेध हो सके या होने को हो।

वेन—पुं०[सं०√अज् (गमन)+न, अज्-वी] वेग। (दे०)

वेन्य—पुं०[सं० वेन+यत्] सुन्दर। मनोहर।

पुं० वेण।

वेपथु—पुं०[सं०√वेप् (काँपना)+ अथुच्] १. काँपने की क्रिया। कँप-कँपी। २. कंप (साहित्यिक अनुभाव)।

वेपन—पुं०[सं०√वेप् (काँपना)+ल्युट्-अन] १. काँपना। कंप। २. वात रोग।

वेर—पुं० [सं०अज+रन्, अज=वी] १. शरीर। देह। बदन। २. केसर।

वेल—पुं०[सं०] १. उपवन। २. कुंज। ३. बौद्धों के अनुसार एक बहुत बड़ी संख्या।

†स्त्री०=वेला।

वेलना—अ०[सं० वेल्] १. हिलना। २. काँपना। ३. विकल होना।

वेला—स्त्री०[सं०] १. मर्यादा। सीमा। २. समुद्र का तट। ३. तरंग। लहर। ४. किसी काम या बात का नियमित या निश्चित समय। जैसे—भोजन की वेला, मृत्यु की वेला, सन्ध्या की वेला आदि। ५. समय का एक विभाग जो दिन और रात का चौबीसवाँ भाग होता है। कुछ लोग दिनमान के आठवें भाग को भी वेला मानते हैं। ६. वाणी। ७. अवकाश। अवसर। ९. आसक्ति। राग। ९. भोजन। १०.रोग। बीमारी।

वि० [हिं० उरला] इस ओर या पार का। इधर का। उदा०—सुर नर, मुनिजन ये सब वेलै तीर।—कबीर।

वेला-जल—पुं०[सं०] चंद्रमा के आकर्षण से ऊपर उठनेवाला समुद्र का ज्वार जल। (टाइडल वाटर्स)

वेला-ज्वर—पुं०[सं०] मृत्यु के समय होनेवाला ताप या ज्वर।

वेलाद्रि—पुं० [सं० स० त०] ऐसा पर्वत जो समुद्र के किनारे स्थित हो।

वेलाधिप—पुं०[सं०] फलित ज्योतिष में, दिनमान के आठवें भाग या वेला के अधिपति देवता।

वेलार्ख—पुं०[?] वाण का फूल। (डिं०) उदा०—वेलार्ख अणी भ्रुठि द्रिठि बंध्धं।—प्रिथीराज।

वेलावित्त—पुं०[सं० ब० स०] प्राचीन काल के एक प्रकार के कर्मचारी। (राजतरंगिणी)

वेलिका—स्त्री०[सं० वेला+कन्+टाप्, इत्व] १. नदी के किनारे का स्थान। २. ताम्रलिप्त का एक नाम।

वेल्लन—पुं०[सं०√वेल्ल् (चलना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० वेल्लित] १. गमन। २. कंप। कंपन। ३. जमीन पर घोड़ों के लोटने की क्रिया या भाव। ४. झुकना। ५. लिपटना।

वेल्ली—स्त्री०[सं० वेल्लि+ङीष्] बेल। लता।

वेशंत—पुं०[सं०] १. पानी का गड्ढा। २. अग्नि। आग।

वेश—पुं० [सं०√विश् (प्रवेश करना)+घञ्] १. अन्दर जाने या पहुँचने की क्रिया या भाव। प्रवेश। २. प्रवेश का द्वार, मार्ग या साधन। ३. रहने का स्थान, घर या मकान। ४. वेश्या का घर। ५. पहनने के कपड़े आदि। पोशाक। ६. कुछ खास तरह के ऐसे कपड़े जिन्हें पहनने पर कोई विशिष्ट रूप प्राप्त होता है। भेस। (डिस्गाइज़) जैसे—अभिनेता कभी राजा का कभी सेवक का वेश धारण करता है। ७. परिश्रम या सेवा के बदले में मिलनेवाला धन। पारिश्रमिक। ८. खेमा। तंबू।

वेशक—वि०[सं० वेश+कन्] प्रवेश करनेवाला।

पुं० घर। मकान।

वेशकार—पुं०[सं०] १. वह जो पुतलियाँ बनाता और उनका शृंगार करता हो।२. पहनने के अनेक प्रकार के वस्त्र बनानेवाला। (आउटफ़िटर)

वेशता—पुं० [सं० वेश+तल्+टाप्] वेश का धर्म या भाव। वेशत्व।

वेशत्व—पुं० [सं० वेश +त्व]=वेशता।

वेशधर—पुं०[सं०] १. वह व्यक्ति जिसने किसी दूसरे का वेश धारण किया हो। २. वह जिसने किसी को छलने के लिए अपना वेश बदल लिया हो। ३. जैनियों का एक सम्प्रदाय।

वेशन—पुं०[सं०] प्रवेश करना।

वेशनी—स्त्री० [सं०√विश् (प्रवेश करना)+ल्युट्—अन,+ङीष्] ड्योढ़ी। पौरी।

वेश-युवती—स्त्री०[सं० कर्म० स०] वेश्या। रंडी।

वेशर—पु०[सं० वेश+रक्] खच्चर।

वेश-रथ्या—स्त्री०[सं० कर्म० स०] वेश-वीथी।

वेश-वधू—स्त्री०[सं० कर्म० स०] वेश्या। रंडी।

वेश-वनिता—स्त्री०[सं०] वेश्या। रंडी।

वेश-वार—पुं०[सं० ष० त०] १. वेश्या का घर। २. धनिया, मिर्च, लौंग आदि मसाले।

वेशवास—पुं० [सं० ष० त०] वेश्या का कोठा। वेश्यालय।

वेश-वीथी—स्त्री०[सं० ष० त०] वह गली या बाजार जिसमें वेश्याएँ रहती हों।

वेश-स्त्री—स्त्री०[सं० कर्म० स०] वेश्या। रंडी।

वेशांत—पुं० [सं०√विश् (प्रवेश करना)+झ–अन्त, ष० त०, ब० स०] छोटा तालाब।

वेशिक—पुं०[सं० वेश+ठक्–इक्] हस्त-शिल्प। दस्तकारी।

वेशी (शिन्)—वि०[सं०√विश् (प्रवेश करना)+णिनि] प्रवेश करनेवाला।

वेश्म—पुं०[सं०√विश्+मनिन्] घर। मकान।

वेश्मस्त्री—स्त्री०[सं०] वेश्या। रंडी।

वेश्मांत—पुं०[सं०] अन्तःपुर। जनानखाना।

वेश्मा—पुं०[सं०] १. वेश्या के रहने का मकान। रंडी का घर। २. वेश्या की वृत्ति। रंडी का पेशा।

वेश्यांगना—स्त्री०[सं० कर्म० स०] ऐसी स्त्री जो वेश्या-वृत्ति करती हो।

वेश्या—स्त्री०[सं०] १. ऐसी स्त्री जो धन लेकर लोगों के साथ संभोग कराने का व्यवसाय करती हो। गणिका। २. आज-कल ऐसी स्त्री जो उक्त प्रकार का व्यवसाय करने के सिवा लोगों को रिझाने के लिए नाचगाने का भी काम करती हो। तवायफ।

वेश्याचार्य—पुं०[सं०] रंडियों का दलाल। भड़ुआ।

वेश्या-पत्तन—पुं० [सं०] वह बाजार जहाँ वेश्याएँ रहती हों। चकला।

वेश्यालय—पुं०[सं० ष० त०] वेश्या या वेश्याओं के रहने की जगह।

वेश्या-वृत्ति—स्त्री०[सं० ष० त०] १. वेश्या बनकर अर्थात् धन लेकर पर-पुरुषों से संभोग कराना। कसब कमाना। २. गुण, शक्ति का वह परम घृणित और निंदनीय उपयोग जो केवल स्वार्थ-साधन के लिए बहुत बुरी तरह से किया या कराया जाय। (प्रॉस्टीट्यूशन)

वेष—पुं०[सं०√विष्+अच्] १. पहने हुए कपड़े आदि। वेश। २. रंग-मंच में पीछे का वह स्थान जहाँ नट लोग वेश रचना करते हैं। नेपथ्य। ३. वेश्या का घर। रंडी का मकान। ४. काम करना या चलाना।

वेषकार—पुं० [सं०] वह कपड़ा जो किसी चीज पर उसे सुरक्षित रखने के लिए लपेटा जाता है। बेठन।

वेषण—पुं०[सं० √ वेष् (व्याप्त होना)+ल्युट्—अन] १. वेष बनाने की क्रिया या भाव। २. परिचर्या। सेवा। ३. कासमर्द। ४. धनिया। ५. सेवा।

वेषधारी—वि०=वेशधारी।

वेष-भूषा—स्त्री०[सं०] १. वे कपड़े जो किसी विशिष्ट देश, जाति, संप्रदाय आदि के लोग करते हैं। २. शरीर की सजावट के लिए पहने हुए कपड़े आदि।

वेषवार—पुं०=वेसवार।

वेष्ट—पुं०[सं० √ वेष्ट् (लपेटना)+घञ्] १. वृक्ष का किसी प्रकार का निर्यास। २. गोंद। ३. धूपसरल नामक पेड़। ४. सुश्रुत के अनुसार मुँह में होनेवाला एक प्रकार का रोग। ५. ब्रह्म। ६. आकाश। ७. पगड़ी।

वेष्टक—वि०[सं० √ वेष्ट्+ण्वुल्—अक] चारों ओर से घेरनेवाला।

पुं० १. छाल। वल्कल। २. कुम्हड़ा। ३. उष्णीष। पगड़ी। ४. चहार-दीवारी। परकोटा। ५. दे० ‘वेष्ट’।

वेष्टन—पुं०[सं० √ वेष्ट्+ल्युट्—अन] १. कोई चीज किसी दूसरी चीज के चारों ओर लपेटना। २. इस प्रकार लपेटी जानेवाली चीज। ३. पगड़ी। ४. मुकुट। ५. कान का छेद।

वेष्टनक—पुं०[सं० वेष्टन√ कै (प्रकाश करना)+क] कामशास्त्र में एक प्रकार का रतिबंध।

वेष्टव्य—वि०[सं०√ वेष्ट् (लपेटना)+तव्यत्] घेरे या लपेटे जाने के योग्य।

वेष्टसार—पुं० [सं० ब० स०] १. श्रीवेष्ट। गंधाबिरोजा। २. धूपसरल नामक वृक्ष।

वेष्टित—भू० कृ०[सं० √ वेष्ट् (लपेटना)+क्त] १. चारों ओर से घिरा या घेरा हुआ। २. कपड़े, रस्सी आदि से लिपटा या लपेटा हुआ। ३. रुका या रोका हुआ। रुद्ध।

पुं० १. पगड़ी। २. एक प्रकार का रतिबंध। ३. नृत्य की एक मुद्रा।

वेसा—स्त्री०=वयस।

वेसन्नर—पुं०[सं० वैश्वानर] आग। (डिं०)

वेसर—पुं०[सं० वेस√ रा (लेना)+क] खच्चर।

वेसवार—पुं०[सं० वेस√ वृ (निवास करना)+अस्] १. जीरा, धनिया, लौंग, मिर्च आदि पीसकर बनाया हुआ मसाला। २. एक प्रकार का पकाया हुआ मांस।

वेसासना—स०[सं० विश्वास] विश्वास करना। (डिं०) उदा०—भ्रिध पणै मति कोई वेसासौ।—प्रिथीराज।

वेह—पुं०[?] मंगल कलश। (डिं०)

वैंध्य—वि०[सं० विंध्य+अण्] १. विंध्य पर्वत पर होनेवाला अथवा उससे संबंध रखनेवाला। २. विंध्यवासी।

वै—अव्य० एक निश्चय-बोधक अव्यय।

वि० [सं० द्वि] दो।

प्रत्य०[सं० वा] १. भी। जैसे—कढुवै (कुछ भी)। २. ही। जैसे—भुत वै (भूत ही)।

वैकक्ष—पुं०[सं० वि√ कक्ष् (व्याप्त होना)+अण्] १. वह माला जो जनेऊ की तरह शरीर पर धारण की जाय। २. उक्त प्रकार से माला पहनने का ढंग।

वैकक्ष्यक—पुं०[सं० वैकक्ष+यत्+कन्] एक प्रकार का हार जो कन्धे और पेट पर जनेऊ की तरह पहना जाता था।

वैकटिक—पुं०[सं० विकट+ठक्—इक] जौहरी।

वि० विकट।

वैकट्य—पुं०[सं० विकट्+ष्यञ्]=विकटता।

वैकथिक—वि०[सं० विकथ+ठक्—इक] डींग हाँकनेवाला। शेखीबाज।

वैकर्ण—पुं०[सं० विकर्ण+अण्] १. वैदिक काल का एक जनपद। २. वात्स्य मुनि का दूसरा नाम।

वैकर्णायन—पुं०[सं० वैकर्ण+फक्—आयन] वह जो वैकर्ण या वात्स्य मुनि के वंश में उत्पन्न हुआ हो।

वैकर्तन—पुं०[सं०]१. सूर्य के एक पुत्र का नाम। २. कर्ण का एक नाम।
वि० १. सूर्य-सम्बन्धी। २. जो सूर्यवंश में उत्पन्न हुआ हो।
पद—वैकर्तन कुल=सूर्यवंश।

वैकर्म—पुं०[सं० विकर्म+अण्] बुरा कर्म। दुष्कर्म।

वैकल्प—पुं०[सं० विकल्प+अण्]१. ऐसी स्थिति जिसमें किसी को दो या अधिक चीजों में से कोई एक चुनने की पूर्ण स्वतन्त्रता होती है। २. इस प्रकार चुनी हुई वस्तु।

वैकल्पिक—वि०[सं० विकल्प+ठक्—इक]१. जो विकल्प के रूप में हो। २. जिसके विषय में विकल्प का उपयोग या प्रयोग किया जाने को हो अथवा किया जा सकता हो। जिसके चुनाव में अपनी इच्छा या रुचि का प्रयोग किया जा सकता हो। (आप्शनल) ३. संदिग्ध। ४. किसी एक ही अंग या पक्ष से संबंध रखनेवाला।

वैकल्य—पुं०[सं० विकल+ष्यञ्] १. विकल होने की अवस्था या भाव। विकलता। २. उत्तेजना। ३. बल या शक्ति से हीन होना। निर्बलता। ४. कमी। न्यूनता। ५. भ्रम उत्पन्न करनेवाली त्रुटि या दोष। जैसे—श, ष, और स अथवा व और ब के उच्चारण में वैकल्य जनित सादृश्य है। ६. कातरता। ७. अंग-हीनता। ८. अभाव।
वि० अधूरा। अपूर्ण।

वैकारिक—वि०[सं० विकार+ठक्]१. विकार युक्त। २. विकार-संबंधी। २. किसी प्रकार के विकार के फलस्वरूप होनेवाला।
पुं०=विकार।

वैकारिकी—स्त्री० [सं० वैकारिक से] आधुनिक चिकित्सा शास्त्र की वह शाखा जिसमें इस बात का विचार या विवेचन होता है कि शरीर में किस प्रकार के विकार होने से कौन-कौन से अथवा कैसे-कैसे रोग उत्पन्न होते हैं। (पैथालोजी)

वैकार्य—पुं०[सं० विकार+ष्यञ्] विकार का भाव या धर्म।
वि० जिसमें विकार होता या हो सकता हो।

वैकाल—पुं०[सं० विकाल+अण्]१. दिन का तीसरा पहर। २. शाम। सन्ध्या।

वैकालिक—वि०[सं० विकाल+ठक्—इक]१. विकाल-संबंधी। २. सन्ध्या का। सान्ध्य।

वैकासिक—वि० [सं०]१. विकास-सम्बन्धी। २. विकास के रूप में होनेवाला।

वैकुंठ—पुं० [सं०] [वि० वैकुंठीय]१. विष्णु का एक नाम। २. वह स्वर्गीय लोक जिसमें विष्णु निवास करते हैं। ३. स्वर्ग। ४. इन्द्र। ५. सफेद पत्तोंवाली तुलसी। ६. संगीत में एक प्रकार का ताल।

वैकृत—वि०[सं० विकृत+अण्] [भाव० वैकृति]१. जो विकार के कारण उत्पन्न हुआ हो। २. दुस्साध्य। ३. विकारी। परिवर्तनशील।
पुं०१. विकार। खराबी। २. वीभत्स रस या उसका कोई आलंबन।

वैकृत ज्वर—पुं० [सं० कर्म० स०] वह ज्वर जो प्रस्तुत ऋतु के अनुकूल न हो, बल्कि किसी और ऋतु के अनुकूल हो।

वैकृतिक—वि० [सं० विकृति+ठक्]१. विकृति से संबंध रखने या उसके कारण उत्पन्न होनेवाला। २. नैमित्तिक।

वैकृत्य—पुं०[सं० विकृत+ष्यञ्] १. विकार। २. परिवर्तन। ३. दुःखावस्था। ४. बीभत्स काम या बात।

वैक्रम—वि०[सं० विक्रम+अण्] विक्रम-संबंधी।

वैक्रमीय—वि० [सं० विक्रम+छण्—ईय] विक्रम-संबंधी। जैसे—वैक्रमीय संवत्।

वैक्रांत—पुं०[सं० विक्रांति+अण्] चुन्नी नामक मणि।

वैक्रिय—वि०[सं० विक्रिय+अण्] जो बिकने को हो। बेचे जाने के योग्य। विक्रेय।

वैक्लव्य—पुं० [सं० विक्लव+ष्यञ्] १. विकलता। व्याकुलता। २. पीड़ा। ३. शोक। ४. अस्त-व्यस्तता।

वैखरी—स्त्री०[सं० वि+ख√ रा (लेना)+क+अण,+ङीप्] १. मुँह से उच्चरित होनेवाला शब्द। २. बोलने की शक्ति। ३. सरस्वती। वांग्देवी।

वैखानस—पुं०[सं० विखन+ड+असुन्+अण्]१. जो वानप्रस्थ आश्रम में प्रवृत्त हो चुका हो। २. एक प्रकार के संन्यासी जो वनों में रहते हैं। ३. कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा। ४. भागवत के दो स्कंधों में से एक।

वैखानसीय—स्त्री०[सं० वैखानस+छ—ईय] एक उपनिषद् का नाम।

वैग़न—पुं० [अं०] मालगाड़ी का डब्बा जिसमें माल भेजा जाता है।

वैगलेय—पुं०[सं० विगला+ढक्—एय] भूतों का एक गण। (पुराण)

वैगुण्य—पुं० [सं० विगुण+ष्यञ्] १. विगुण होने की अवस्था या भाव। विगुणता। २. दोष। ३. नीचता। ४. अपराध।

वैग्रहिक—पुं०[सं० विग्रह+ठक्—इक] विग्रह या शरीर संबंधी। शारीरिक।

वैघटिक—पुं०[सं० विघट+ठक्—इक] जौहरी।

वैघात्य—वि०[सं० वि√ हन् (मारना)+णिच्—ण्यत्] जिसका घात किया जा सके या हो सके।

वैचक्षण्य—पुं०[सं० विचक्षण+ष्यञ्] विचक्षणता।

वैचारिकी—स्त्री०=विचारधारा। (आइडियालोजी)

वैचित्त्य—पुं०[सं० विचित्ति+ष्यञ्] १. चित्त की भ्रांति। भ्रम। २. २. अन्यमनस्कता।

वैचित्र—पुं०[सं० विचित्र+अण्] १. विचित्रता। विलक्षणता। २. भेद। फरक। ३. सुन्दरता।

वैचित्र्य—पुं०[सं० विचित्र+ष्यञ्] विचित्रता।

वैचित्र्यवीर्य—पुं०[सं०] विचित्रवीर्य की संतान—धृतराष्ट्र, पांडु, विदुर आदि।

वैच्युति—स्त्री०[सं० वैच्युत+इति]१. विच्युत होने की अवस्था या भाव। विच्युति। २. पतन।

वैजनन—पुं०[सं० विजनन+अण्] गर्भ का अन्तिम मास।

वैजन्य—पुं०[सं० विजन+ष्यञ्]१. विजनता। एकांत। २. इन्द्र की पुरी का नाम।

वैजयंत—पुं०[सं०]१. इंद्र। २. घर। मकान। ३. अग्निमंथ।

वैजयंतिक—पुं०[सं० वैजयन्त+ठक्—इक] वह जो पताका या झंडा उठाकर चलता हो। (हेरल्ड)

वैजयंती—स्त्री०[सं०]१. पताका। झंडा। २. जयंती नामक पौधा। ३. घुटनों तक लंबी मोतियों की पचरंगी माला।

वैजयिक—वि०[सं०विजय+ठञ्—इक]१. विजय-संबंधी। २. विजय के फलस्वरूप मिलने या होनेवाला।

वैजात्य—पुं०[सं० विजाति+ष्यञ्]१. विजातीय होने की अवस्था, धर्म या भाव। २. विलक्षणता। ३. बदचलनी। लंपटता।

वैजिक—पुं०[सं० वीज+ठक्—इक]१. आत्मा। २. कारण। हेतु।

वि०१. बीज-सम्बन्धी। २. वीर्य-संबंधी। ३. बिजली संबंधी।

वैज्ञानिक—वि०[सं० विज्ञान+ठक्]१. विज्ञान-संबंधी। २. ठीक रीति या सिलसिले से होनेवाला।

पुं०विज्ञान का ज्ञाता। विज्ञान-वेत्ता।

वैडाल-व्रत—पुं०[सं० उपमि० स०] [वि० वैडाल-व्रती] पाप और कुकर्म करते हुए भी ऊपर से साधु बने रहने का ढोंग।

वैण—वि०[सं० वेणु+अण्, उ—लोप] वेणु संबंधी। बाँस का।

पुं० बाँस की खमाचियों आदि से चटाइयाँ, टोकरियाँ आदि बनानेवाला कारीगर।

वैणव—पुं०[सं० वेणु+अण्]१. बाँस का फल। २. बाँस का वह डंडा जो यज्ञोपवीत के समय धारण किया जाता है। ३. वेणु। बाँसुरी।

वि० वेणु-संबंधी। वेणु का।

वैणविक—पुं०[सं० वैणव+ठक्—इक] वह जो वेणु बजाता हो। वंशी बजानेवाला।

वैणवी (विन्)—पुं० [सं० वैणव+इनि] १. वह जो वेणु बजाता हो। २. शिव।

वैणिक—पुं०[सं० वीणा+ठक्—इक] वह जो वीणा बजाता हो। बीनकार।

वि० वीणा-सम्बन्धी। वीणा का।

वैणुक—पुं०[सं० वेणु√कै (प्रकाश करना)+क,+अण्]१. वह जो वेणु बजाने में चतुर हो। वंशी बजानेवाला। २. हाथी चलाने का अंकुश।

वैण्य—पुं०[सं० वेणु+ष्यञ्] राजा वेणु के पुत्र का एक नाम।

वैतंडिक—पुं०[सं० वितंड+ठक्—इक] वितण्डा खड़ा करनेवाला। बहुत बड़ा झगड़ालू व्यक्ति।

वैतंसिक—पुं०[सं० वितंस+ठक्—इक] कसाई।

वैतत्य—पुं०[सं० वितत+ष्यञ्]=वितति (विस्तार)।

वैतथ्य—पुं०[सं० वितथ+ष्यञ्]१. वितथ होने की अवस्था या भाव। २. विफलता।

वैतनिक—वि० [सं० वेतन+ठक्—इक]१. वेतन-संबंधी। वेतन का। २. जिसे किसी पद पर काम करने के फलस्वरूप वेतन मिलता हो। जैसे—वैतनिक मंत्री।

पुं० नौकर। भृत्य।

वैतरणी—स्त्री०[सं० वितरण+अण्,+ङीप्]१. उड़ीसा की एक नदी का नाम जो बहुत पवित्र मानी जाती है। २. पुराणानुसार परलोक की एक नदी जिसे (यह शरीर छोड़ने पर) जीवात्मा को पार करना पड़ता है।

वैतस्त—वि०[सं० वितस्ता+अण्] १. वितस्ता नदी-संबंधी। २ वितस्ता नदी से प्राप्त।

वैतानिक—वि०[सं० वितान+ठक्—इक] १. यज्ञ-संबंधी। २. पवित्र।

वैताल—पुं०[सं० वेताल+अण्] स्तुति पाठक। वैतालिक।

वि० वेताल-सम्बन्धी। वेताल का।

वैतालिक—पुं०[सं० वेताल+ठक्—इक]१. प्राचीन काल का वह स्तुति-पाठक जो प्रातःकाल राजाओं को उनकी स्तुति करके जगाया करता था। स्तुति पाठक। २. ऐन्द्रजालिक। जादूगर।

वैताली (लिन्)—पुं०[सं० वैताल+इनि] कार्तिकेय का एक अनुचर।

वैतालीय—वि०[सं० वेताल+छ—ईय] वेताल-सम्बन्धी।

पुं०१. एक प्रकार का विषम वृत्त जिसके पहले और तीसरे चरणों में चौदह-चौदह और दूसरे और चौथे चरणों में सोलह-सोलह मात्राएँ होती हैं।

वैतृष्ण्य—पुं० [सं० वितृष्ण+ष्यञ्] वितृष्ण होने की अवस्था या भाव।

वैत्तिक—वि०[सं०] वित्त-सम्बन्धी।

वैदंभ—पुं०[सं० विदंभ+अण्] शिव का एक नाम।

वैद†—पुं० =वैद्य।

वैदक†—पुं०=वैद्यक।

वैदग्ध(दग्ध्य)—पुं० [सं० विदग्ध+अण्, विदग्ध+ष्यञ्] १. विदग्ध या पूर्ण पंडित होने की अवस्था, धर्म या भाव। पांडित्य। विद्वत्ता। २. कार्य-कुशलता। दक्षता। पटुता। ३. चातुरी। चालाकी। ४. रसिकता। ५. शोभा। श्री। ६. हाव-भाव।

वैदर्भ—वि०[सं० विदर्भ+अण्]१. विदर्भ देश का। २. विदर्भ देश में उत्पन्न। ३. बात-चीत करने में चतुर।

पुं०१. विदर्भ का राजा या शासक। २. दमयंती के पिता भीमसेन। ३. रुक्मिणी के पिता भीष्मक। ४. वाक्चातुरी। ५. मसूड़ा फूलने का रोग।

वैदर्भक—पुं०[सं० विदर्भ+अण्+कन्] विदर्भ का निवासी।

वैदर्भी—स्त्री०[सं० विदर्भ+अण्+ङीप्] १. संस्कृत साहित्य में साहित्यिक रचना का वह विशिष्ट प्रकार या शैली जो मुख्यतः विदर्भ और उसके आस-पास के देशों में प्रचलित थी, और जो प्रायः सभी गुणों से युक्त सुकुमार वृत्तिवाली तथा सर्वश्रेष्ठ मानी जाती थी। करुणा, श्रृंगार आदि रसों के लिए यह विशेष उपयुक्त मानी गई है। २. अगत्स्य ऋषि की पत्नी। ३. दमयन्ती। ४. रुक्मिणी।

वैदांतिक—वि०[सं० वेदान्त+ठक्—इक] वेदांत जाननेवाला। वेदांती।

वैदारिक—पुं०[सं० विदार+ठक्—इक] सन्निपात ज्वर का एक भेद।

वैदिक—वि० [सं० वेद+ठक्—इक] १. वेद-संबंधी। वेद का। जैसे—वैदिक काल, वैदिक धर्म। २. जो वेदों में कहा गया हो।

पुं०१. वह जो वेदों में बतलाये हुए कर्मकांड का अनुष्ठान करता हो। वेद में कहे हुए कृत्य करनेवाला। २. वह जो वेदों का अच्छा ज्ञाता या पंडित हो।

वैदिक धर्म—पुं०[सं० कर्म० स०]आर्यों का वह धर्म जो वेदों के युग में प्रचलित था।(इसमें प्रकृति की उपासना पितरों का पूजन, यज्ञकर्म, तपस्या आदि बातें मुख्य थीं, और जादू-टोने या मंत्र-यंत्र का भी कुछ प्रचलन था।)

वैदिक-युग—पुं०[सं० कर्म० स०] वह युग या समय, जब वेदों की रचना हुई थी और वैदिक धर्म प्रचलित था।

वैदिश—वि० [सं० विदिशा+अण्] १. विदिशा-सम्बन्धी। विदिशा का। २. विदिशा में होनेवाला।

पुं० विदिशा का निवासी।

वैदिश्य--पुं०[विदिशा+ष्यञ्] विदिशा के पास का एक प्राचीन नगर।

वैदुरिक--पुं०[सं० विदुर+ठक्--इक]१. विदुर का भाव। २. विदुर का मत या सिद्धान्त।

वैदुष--पुं०[सं० विद्वस्+अण्] विद्वान्। पंडित।

वैदुष्य--पुं०[सं० विद्वस्+ष्यञ्] विद्वत्ता। पांडित्य।

वैदूर्य--पुं०[सं०]१. हरे रंग के रत्नों का एक वर्ग। (बेरिल) २. लहसुनिया नामक रत्न। (लैपिस लेज़ूली)

वैदेशिक--वि०[सं० विदेश+ठक्--इक]१. विदेश में होनेवाला। २. विदेशों से संबंध रखनेवाला।

पुं० विदेशी व्यक्ति।

वैदेश्य--वि०=वैदेशिक।

वैदेहक--पुं०[सं० वैदेह+कन्]१. वणिक्। व्यापारी। २. एक प्राचीन वर्णसंकर जाति।

वैदेही--स्त्री०[सं० विदेह+अण्+ङीप्]१. विदेह राजा जनक की कन्या; सीता। २. वैदेह जाति की स्त्री। ३. पिप्पली। ४. रोचना।

वैद्य--पुं०[सं० विद्या+अण्] १. पंडित। विद्वान्। २. आयुर्वेद का ज्ञाता। ३. आयुर्वेद द्वारा निर्दिष्ट चिकित्सा पद्धति के अनुसार चिकित्सा करनेवाला। ४. एक जाति जो प्रायः बंगाल में पाई जाती है। इस जाति के लोग अपने आप को अंबष्ठसंतान कहते हैं। ५. वासक। अड़ूसा।

वि० वेद-सम्बन्धी। वेद का।

वैद्यक--पुं०[सं०वैद्य+कन्] वह शास्त्र जिसमें रोगों के निदान और चिकित्सा का विवेचन हो। आयुर्वेद।

वैद्याधर--वि०[सं० विद्याधर+अण्] विद्याधर-सम्बन्धी।

वैद्युत्--वि०[सं० विद्युत+अण्] विद्युत-संबंधी। बिजली की।

वैद्रुम--वि०[सं० विद्रुम+अण्] विद्रुम-सम्बन्धी। मूँगे का।

वैध--वि०[सं० विधि+अण्]१. विधि-सम्मत। २. विधि की दृष्टि में ठीक। विधि के अनुकूल।

वैधता--स्त्री०[सं०] वैध होने की अवस्था, धर्म या भाव।

वैधर्मिक--वि०[सं० विधर्मी+कन्+अण्]१. धर्म-विरुद्ध। २. विधर्मियों जैसा।

वैधर्म्य--पुं०[सं० विधर्म+ष्यञ्]१. विधर्मी होने की अवस्था या भाव। २. नास्तिकता। ३. वह जो अपने धर्म के अतिरिक्त अन्यान्य धर्मों के सिद्धान्तों का भी अच्छा ज्ञाता हो।

वैधव--पुं०[सं० विधु+अण्] विधु अर्थात् चन्द्रमा के पुत्र, बुध।

वि० विधु-सम्बन्धी। विधु का।

वैधवेय--वि०[सं० विधवा+ढक्--एय] विधवा के गर्भ से उत्पन्न।

वैधव्य--पुं०[सं० विधवा+ष्यञ्] विधवा होने की अवस्था या भाव। रँड़ापा।

वैधस--पुं० [सं० वेधस्+अण्] राजा हरिश्चन्द्र जो राजा वेधस के पुत्र थे।

वि० वेधस-संबंधी। वेधस का।

वैधात्र--पुं० [सं० विधातृ+अण्] सनत्कुमार जो विधाता के पुत्र माने जाते हैं।

वैधात्री--स्त्री०[सं० वैधात्र+ङीप्] ब्राह्मी (जड़ी)।

वैधिक--वि०[सं० विधि+ठक्--इक] वैध। विधि-सम्मत।

वैधी--स्त्री० [सं० विधि+अण्+ङीप्] ऐसी भक्ति जो शास्त्रों में बतलाई हुई विधि के अनुसार या अनुरूप हो। जैसे--कीर्तन, भजन आदि।

वैधूर्य--पुं [सं० विधुर+ष्यञ्]१. विधुर होने की अवस्था या भाव। २. हताश या कातर होने की अवस्था या भाव। ३. भ्रम। धोखा। ४. सन्देह। ५. कंप।

वैधृति--पुं [सं० ब० स०, पृषो० सिद्धि] १. ज्योतिष में विष्कंभ आदि सत्ताइस योगों में से एक जो अशुभ कहा गया है। २. पुराणानुसार विधृति के पुत्र एक देवता।

वैधेय--वि०[सं० विधि+ढक्--एय या विधेय+अण्] १. विधि-संबंधी। विधि का। २. संबंधी। रिश्तेदार। ३. मूर्ख। बेवकूफ।

वैनतक--पुं० [सं० विनता+अण्, अकच्] एक प्रकार का यज्ञ पात्र जिसमें घी रखा जाता था।

वैनतेय--वि०[सं० विनता+ढक्--एय] विनता-सम्बन्धी। विनता का।

पुं० १. विनता की संतान। २. गरुड़। ३. अरुण।

वैनतेयी--स्त्री०[सं० वैनतेय+ङीप्] एक वैदिक शाखा।

वैनत्य--वि०[सं० विनत+ष्यञ्] विनीत। विनम्र।

वैनयिक--पुं०[सं०विनय+ठक्--इक] १. विनय। २. निवेदन। प्रार्थना। ३. वह जो शास्त्रों आदि का अध्ययन करता हो। ४. युद्ध-रथ।

वि०१. विनय-संबंधी। २. विनय अर्थात् नीतिपूर्ण आचरण करनेवाला।

वैनायक--वि०[सं० विनायक+अण्] विनायक या गणेश सम्बन्धी। विनायक का।

पुं० पुराणानुसार भूतों का एक गुण।

वैनायिक--पुं०[सं० विनाय+ठक्--इक] बौद्ध धर्म का अनुयायी। बौद्ध।

वैनाशिक--पुं०[सं० विनाश+ठक्--इक] १. फलित ज्योतिष में, जन्म-नक्षत्र से तेरहवाँ नक्षत्र। २. जन्म नक्षत्र से सातवाँ, दसवाँ और अठारहवाँ नक्षत्र। ये तीनों नक्षत्र अशुभ समझे जाते हैं और निधन-तारा कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में यात्रा करना वर्जित है। ३. बौद्ध।

वि० १. विनाश-सम्बन्धी। विनाश का। २. परतन्त्र। पराधीन।

वैनीतक--पुं०[सं० विनीत√कै (प्रकाश करना)+क,+अण्] १. एक तरह की बड़ी पालकी। विनीतक। २. वाहन का साधन अर्थात् कहार, घोड़ा आदि।

वैन्य--पुं०[सं० वेन+ण्य] वेन के पुत्र, पृथु।

वैपथक--वि०[सं० विपथ+कन्, +अण्] १. विपथ-संबंधी। विपथ का। २. विपथ पर चलनेवाला।

वैपरीत्य--पुं०[सं० विपरीत+ष्यञ्] विपरीतता।

वैपार†--पुं०=व्यापार।

वैपारी†--पुं० =व्यापारी।

वैपित्र--वि०[सं० विपितृ+अण्](संबंध के विचार से ऐसे भाई या बहनें) जो एक ही माता के गर्भ से परन्तु विभिन्न पिताओं के वीर्य से उत्पन्न हुए हों।

वैपुल्य--पुं०[सं० विपुल+ष्यञ्] विपुलता।

वैफल्य—पुं०[सं० विफल+ष्यञ्]१. विफलता। २. साहित्य में रचना का एक दोष जो उस समय माना जाता है जब रचना में शब्दाडंबर मात्र होता है पर चमत्कार का अभाव होता है।

वैबुध—वि०[सं० विबुध+अण्] विबुध अर्थात् देवता-संबंधी।

वैबोधिक—पुं०[सं० विबोधिक+ठक्—इक]१. रात को पहरा देनेवाला व्यक्ति। २. जगानेवाला व्यक्ति। विशेषतः स्तुति पाठ द्वारा राजा को जगानेवाला व्यक्ति।

वैभव—पुं०[सं० विभु+अण्]१. विभव अर्थात् धनी होने की अवस्था या भाव। २. धन-दौलत। ऐश्वर्य। ३. बड़प्पन। महत्ता। ४. शान-शौकत। ५. शक्ति। सामर्थ्य।

वैभवशाली—वि०[सं०] १. (व्यक्ति) जिसके पास बहुत अधिक धन-संपत्ति हो। विभववाला। २. अत्यधिक समर्थ।

वैभविक—वि० [सं० वैभव+ठक्—इक] १. वैभव-सम्बन्धी। २. वैभवशाली।

वैभातिक—वि० [सं० विभात+ठक्—इक] विभात अर्थात् प्रभात संबंधी।

वैभार—पुं०[सं०] राजगृह के पास का एक पर्वत।

वैभावर—वि० [सं० विभावरी+अण्] विभावरी अर्थात् रात-संबंधी।

वैभाषिक—वि०[सं० विभाषा+ठक्—इक]१. विभाषा में होनेवाला। विभाषा-सम्बन्धी। २. वैकल्पिक। ३. बौद्धों के विभाषा नामक संप्रदाय से संबंध रखनेवाला अथवा उसका अनुयायी।

वैभाष्य—पुं०[सं० विभाषा+ष्यञ्] किसी मूल या सूत्रग्रन्थ का विस्तृत भाष्य।

वैभूतिक—वि० [सं० विभूति+ठन्—इक] १. विभूति-संबंधी। विभूति का। २. विभूति के फलस्वरूप होनेवाला। ३. प्रचुर।

वैभोज—पुं०[सं० विभोज +अण्] एक प्राचीन ज़ाति जिसका मूलपुरुष द्रुह्यु माना गया है। (महाभारत)

वैभ्राज्य—पुं०[सं० विभ्राज+अण्]१. देवताओं का उद्यान या बाग। २. पुराणानुसार मेरु के पश्चिम में सुपार्श्व पर्वत पर का एक जंगल। २. स्वर्ग के अन्तर्गत एक लोक।

वैमत्य—पुं०[सं० विमति+ण्य]१. विमति अर्थात् मतभेद की अवस्था या भाव। फूट। २. मतों का न मिलना। ३. मतों में होनेवाला अंतर या फरक।

वैमनस्य—पुं०[सं० विमनस्+ष्यञ्]१. विमनस् या अन्यमनस्क होने की अवस्था या भाव। २. दुश्मनी। वैर। शत्रुता। ३. मानसिक शैथिल्य। उदासी।

वैमल्य—पुं०[सं० विमल+ष्यञ्]=विमलता।

वैमात्र—वि० [सं०विमातृ+अण्] [स्त्री० वैमात्रा] (संबंध के विचार से ऐसे भाई या बहनें) जो विभिन्न माताओं के गर्भ से उत्पन्न, परन्तु एक ही पिता की संतान हों।

वैमात्रक—पुं०[सं० वैमात्र+कन्] [स्त्री० वैमात्री] सौतेला भाई।

वैमात्रेय—वि०[सं० विमातृ+ढक्—एय] [स्त्री० वैमात्रेयी] १. विमातृ संबंधी। विमाता का। २. विमाता या सौतेली माँ की तरह का। (स्टेप-मदरली) जैसे—किसी के साथ किया जानेवाला वैमात्रेय व्यवहार।

वैमानिक—वि० [सं० विमान+ठक्—इक] १. विमान-संबंधी। २. विमान में उत्पन्न।

पुं०१. वह जो विमान पर सवार हो। २. हवाई जहाज चलानेवाला। (पायलट) ३. जैनमत के अनुसार स्वर्गलोक में रहनेवाले जीव। २. वह जो आकाश में विचरण करता या कर सकता हो।

वैमानिकी—स्त्री०[सं० वैमानिक+ङीप्] विमान या हवाई जहाज चलाने की क्रिया, विद्या या शास्त्र। (एयरोनाटिक्स)

वैमुख्य—पुं० [सं० विमुख+ष्यञ्] १. विमुखता। २. विरक्ति। ३. घृणा। ४. पलायन।

वैमूढक—पुं०[सं०] नृत्य का वह प्रकार जिसमें स्त्रियों का वेश धारण करके पुरुष नाचते हैं।

वैमूल्य—पुं०[सं० विमूल्य+अण्] मूल्य की भिन्नता।

वैमृध—पुं०[सं० विमृध+अण्] इंद्र।

वैयक्तिक—वि०[सं० व्यक्ति+कन्, +अण्]१. किसी विशिष्ट व्यक्ति अथवा उसके अधिकार, गुण, स्वभाव आदि से संबंध रखनेवाला। (पर्सनल) २. जो पारिवारिक, सामूहिक या सार्वजनिक कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत न आता हो। बल्कि जिस पर एक ही व्यक्ति का विधिक अधिकार हो। (प्राइवेट)

वैयक्तिक बंध—पुं०[सं०]वह बंध या प्रतिज्ञापत्र जिसके अनुसार लेखक या हस्ताक्षरकर्ता अपने आप को कोई काम करने या कोई प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए बद्ध करता है। (पर्सनल बाण्ड)

वैयक्तिक विधि—स्त्री०[सं०] आधुनिक राजकीय विधानों में देशव्यापी विधियों या कानूनों से भिन्न वह विधि या कानून जिसका प्रयोग किसी क्षेत्र के विशिष्ट निवासी या निवासियों के संबंध में कुछ विशिष्ट अवस्थाओं में होता है। (पर्सनल ला)

वैयग्र—पुं०[सं०]=व्यग्रता।

वैयर्थ्य—पुं० [सं० व्यर्थ+ष्यञ्] व्यर्थ होने की अवस्था या भाव। व्यर्थता।

वैयसन—वि०[सं० व्यसन+अण्] व्यसन-संबंधी। व्यसन का।

वैयाकरण—वि० [सं० व्याकरण+अण्] व्याकरण-सम्बन्धी। व्याकरण का।

पुं० १. वह जिसे व्याकरण-शास्त्र का पूर्ण ज्ञान हो। व्याकरण का ज्ञाता। २. व्याकरण-शास्त्र की रचना करनेवाला।

वैयाघ्र—पुं०[सं० व्याघ्र+अण्]१. व्याघ्र-सम्बन्धी। २. व्याघ्र की तरह का। ३. जिस पर व्याघ्र की खाल मढ़ी गई हो।

पुं० पुरानी चाल का एक तरह का रथ जिस पर बाघ की खाल मढ़ी होती थी।

वैयास—वि०[सं० व्यास+अण्] व्यास-सम्बन्धी। व्यास का।

वैयासकि—पुं०[सं० व्यास+इञ्, अकङ-आदेश, ऐच्] वह जो व्यास का वंशज हो।

पुं० व्यास द्वारा रचित।

वैर—पुं०[सं० वीर+अण्] शत्रुता का वह उत्कट या तीव्र रूप जो प्रायः जाग्रत रहता और बहुत कुछ स्थायी या स्वाभाविक होता है।

विशेष—'वैर' और 'शत्रुता' का अंतर जानने के लिए देखें 'शत्रुता' का विशेष।

वैरक्त--पुं०[सं० विरक्त+अण्] विरक्त होने की अवस्था या भाव। विरक्तता।

वैरता--स्त्री०[सं० वैर+तल्+टाप्] वैर का भाव। पूर्ण शत्रुता।

वैरल्य--पुं०[सं० विरल+ष्यञ्]१. विरलता। २. एकांत स्थान।

वैर-शुद्धि--स्त्री०[सं०] वैरी से उसके लिए किये गए अपकार का बदला लेने के लिए उसका कोई अपकार करना। वैर का बदला चुकाना।

वैरस्य--पुं०[सं० विरस+ष्यञ्]१. विरक्त होने का भाव। विरसता। २. अनिच्छा।

वैराग--पुं०=वैराग्य।

वैरागिक--वि० [सं० विराग+ठञ्--इक] १. विराग-संबंधी। २. विराग उत्पन्न करनेवाला।

वैरागी--वि०[सं० वैराग+इनि] जिसके मन में विराग उत्पन्न हुआ हो। जिसका मन संसार की ओर से हट गया हो। विरक्त। जैसे--बंदा वीर वैरागी।

पुं० उदासीन वैष्णवों का एक संप्रदाय।

वैराग्य--पुं०[सं० विराग+ष्यञ्]१. वह अवस्था जिसमें मन में किसी के प्रति राग-भाव नहीं होता। २. मन की वह वृत्ति जिसके कारण संसार की विषय-वासना तुच्छ प्रतीत होती है और व्यक्ति संसार की झंझटें तोड़कर एकांत में रहता और ईश्वर का भजन करता है। विरक्ति।

वैराज--पुं० [सं० विराज+अण्] १. विराट् पुरुष। परमात्मा। २. एक मनु का नाम। ३. पुराणानुसार सत्ताइसवें कल्प का नाम। ४. पितरों का एक वर्ग। ५. वैराग्य। (दे०)

वैराजक--पुं० [सं० वैराज+कन्, अथवा वि√ राज् (सुशोभित होना) +ण्वुल्--अक, +अण्] उन्नीसवाँ कल्प। (पुरा०)

वैराज्य--पुं०[सं० विराज+ष्यञ्] १. ऐसी शासन-प्रणाली जिसमें दो प्रभु-सत्ताएँ किसी राष्ट्र का शासन-सूत्र सँभाले रहती हैं। २. ऐसा देश जिसमें उक्त प्रकार की शासन-प्रणाली प्रचलित हो।

वैराट--वि०[सं० विराट+अण्] १. विराट्-सम्बन्धी। विराट् का। २. लंबा-चौड़ा। विस्तृत।

पुं०१. महाभारत का विराट पर्व। २. वीरबहूटी। इन्द्रगोप।

वैराटक--पुं० [सं० वैराट+कन्]शरीर के किसी अंग में होनेवाली जहरीली गाँठ या गिलटी। (सुश्रुत)

वैरिंचि--वि०[सं० विरिंच+इञ्] विरिंचि या ब्रह्मा-संबंधी। ब्रह्मा का।

वैरिंच्य--पुं० [सं० विरिंच+ष्यञ्] ब्रह्मा की संतान सनक, सनन्दन आदि ऋषि।

वैरि--पुं०[सं० वैर+इनि] वैरी। शत्रु। दुश्मन।

वैरी--पुं०[सं० वैरिन्] वह जिसके साथ वैर-भाव हो। दुश्मन।

वैरूपाक्ष--पुं० [सं० विरूपाक्ष +अण्] विरूपाक्ष के गोत्र या वंश में उत्पन्न।

वैरूप्य--पुं० [सं० विरूप+ष्यञ्]१. विरूप होने की अवस्था या भाव। विरूपता। २. विकृति। ३. बेढंगापन।

वैरेचन--वि० [सं० विरेचन+अण्] विरेचन-संबंधी। विरेचन का।

वैरोचन--वि०[सं० विरोचन+अण्] १. विरोचन से उत्पन्न। २. सूर्यवंश में उत्पन्न।

पुं०१. बुद्ध का एक नाम। २. राजा बलि का एक नाम। ३. सूर्य का एक नाम। ३. सूर्य का एक पुत्र। ४. अग्नि का एक पुत्र।

वैरोचनि--पुं०[सं० विरोचन+इञ्]१. बुद्ध का एक नाम। २. राजा बलि का एक नाम। ३. सूर्य का एक पुत्र।

वैरोद्धार--पुं०[सं० ष० त०] =वैर-शुद्धि।

वैरोधक, वैरोधिक--वि० [सं०] अनुकूल न पड़नेवाला अथवा विरोधी सिद्ध होनेवाला।

वैलक्षण्य--पुं०[सं० विलक्षण+ष्यञ्]१. विलक्षण होने की अवस्था या भाव। विलक्षणता। २. ऐसा गुण या धर्म जिसके कारण कोई चीज विलक्षण प्रतीत होती हो।

वैलक्ष्य--पुं०[सं० विलक्ष+ष्यञ्]१. लज्जा। शर्म। २. आश्चर्य। ताज्जुब। ३. स्वभाव की विलक्षणता।

वैल-स्थान--पुं०[सं०विलस्थान+अण्]वह स्थान जहाँ मुरदे गाड़े जाते हैं। कब्रिस्तान।

वैलिंग्य--पुं०[सं० वेलिंग+ष्यञ्] लिंग अर्थात् परिचायक चिह्न से रहित होने की अवस्था या भाव। लिंगहीनता।

वैलोम्य--पुं०[सं० विलोम+ष्यञ्]=विलोमता।

वैवक्षिक--वि० [सं०] १. विवक्षा-संबंधी। २. विवक्षा-जन्य।

वैवधिक--पुं०[सं० विवध+ठक्--इक]१. फेरी लगानेवाला व्यापारी। २. अनाज या गल्ले का व्यापारी। ३. दूत। ४. मजदूर।

वैवर्ण--पुं०[सं० विवर्ण+अञ्] १. विवर्ण होने की अवस्था या भाव। २. लावण्य या सौन्दर्य का अभाव। ३. मलिनता। ४. वैवर्ण्य। (दे०)

वैवर्णिक--पुं० [सं० विवर्ग+ठक्--इक] वह जो जाति-च्युत कर दिया गया या अपने वर्ण से निकाल दिया गया हो।

वैवर्ण्य--पुं० [सं० विवर्ण+ष्यञ्]१. विवर्णता। २. साहित्य में एक सात्विक भाव जो उस समय माना जाता है जब क्रोध, भय, मोह, लज्जा, रोग, शीत या हर्ष के कारण किसी के मुँह का रंग उड़ने लगता है। ३. मलिनता। ४. जाति से च्युत होने की अवस्था या भाव।

वैवर्त--पुं०[सं० विवर्त्त+अण्] चक्र या पहिए की तरह घूमना।

वैवश्य--पुं०[सं० विवश+ष्यञ्]१. विवश होने की अवस्था या भाव। विवशता। २. कमजोरी। दुर्बलता।

वैवस्वत--पुं०[सं० विवस्वत+अण्] १. सूर्य के एक पुत्र का नाम; २. एक रुद्र का नाम। ३. शनैश्चर। ४. पुराणानुसार (क) वर्तमान मन्वंतर और (ख) उसके मनु का नाम। ५. कलियुग के अधिष्ठाता सातवें मनु।

वि०१. सूर्य-सम्बन्धी। २. मनु-संबंधी। ३. यम-संबंधी।

वैवस्वती--स्त्री०[सं० वैवस्वत+ङीप्]१. दक्षिण दिशा। २. यमुना। ३. यम की बहन।

वैवाह--वि० [सं० विवाह+अण्] विवाह-संबंधी। विवाह का।

वैवाहिक--वि०[सं० विवाह+ठक्--इक]१. विवाह-सम्बन्धी। विवाह का। (मैरिटल) २. विवाह के फलवरूप होनेवाला।

पुं०१. विवाह। २. विवाह के फलस्वरूप होनेवाला संबंध। ३. श्वसुर।

वैवाह्य--वि०[सं० विवाह+ष्यञ्]१. विवाह-संबंधी। विवाह का। २. जो विवाह के योग्य हो या जिसका विवाह होने को हो।

पुं० विवाह-संबंधी कृत्य।

वैवृत्त--पुं०[सं० विवृत्त+अण्] उदात्त आदि स्वरों का क्रम।

वैशंपायन—पुं० [सं० विशम्प+फञ्—आयन्] एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम जो वेदव्यास के शिष्य थे। कहते हैं कि महर्षि वेदव्यास की आज्ञा से इन्होंने जन्मेजय को महाभारत की कथा सुनाई थी।

वैशद्य—पुं०[सं० विशद+ष्यञ्] १. विशद होने का भाव। विशदता। २. निर्मलता।

वैशली—स्त्री०=वैशाली।

वैशल्य—पुं०[सं० विशल्य+अण्] बहुत बड़े कष्ट या वेदना से होनेवाली मुक्ति।

वैशाख—पुं०[सं० विशाखा+अण्] १. भारतीय वर्ष के बारह महीनों में से एक जो चांद्र गणना से दूसरा और सौर गणना के अनुसार पहला महीना होता है। इस मास की पूर्णिमा विशाखा नक्षत्र में पड़ती है, इसलिए इसे वैशाख कहते हैं। २. एक प्रकार का ग्रह जिसका प्रभाव घोड़ों पर पड़ता है, और जिसके कारण उसका शरीर भारी हो जाता है और वह काँपने लगता है। ३. बाण चलाने की एक प्रकार की मुद्रा। ४. मथानी का डंडा। ५. लाल गदहपूरना।

वैशाखी—स्त्री० [सं० विशाखा+अण्+ङीष्] १. ऐसी पूर्णिमा जो विशाखा नक्षत्र से युक्त हो। वैशाख मास की पूर्णिमा। २. सौर मास की संक्रान्ति के दिन होनेवाला उत्सव। ३. पुराणानुसार वसुदेव की एक पत्नी। ४. लाल गदहपूरना।

वैशारद—वि०[सं० विशारद+अण्] विशारद।

वैशारद्य—पुं० [सं० विशारद+ष्यञ्] विशारद या पंडित होने की अवस्था, कर्म या भाव। विशारदता।

वैशाली—स्त्री०[सं०] आधुनिक मुजफ्फरपुर (बिहार) में स्थित एक प्राचीन नगरी जिसे विशाल नामक राजा ने बसाया था तथा जो महावीर वर्द्धमान की जन्मभूमि है। आज-कल यह वसाढ़ नाम से प्रसिद्ध है।

वैशालीय—पुं०[सं० विशाला+छण्—ईय] जैन धर्म के प्रवर्त्तक महावीर का एक नाम।

वैशालेय—पुं०[सं० विशाल+ढक्—एय] १. विशाल का वंशज। २. तक्षक।

वैशिक—पुं०[सं० वेश+ठक्—इक] तीन प्रकार के नायकों में से वह नायक जो वेश्याओं के साथ भोग-विलास करता हो। वेश्यागामी नायक।
वि० १. वेश्यावृत्ति से संबंध रखनेवाला। २. वेश्या-संबंधी। वेश का।

वैशिष्ठ्य—पुं०[सं०] विशिष्ठता।

वैशेषिक—पुं०[सं० विशेष+ठक्—इक] १. छः दर्शनों में से एक जो महर्षि कणादकृत है और जिसमें पदार्थों के स्वरूप आदि का विचार तथा द्रव्यों का निरूपण है। पदार्थ-विद्या। २. उक्त दर्शन का अनुयायी।

वैशेष्य—पुं० [सं० विशेष+ष्यञ्] विशेष का भाव। विशेषता।

वैश्मिक—वि०[सं० वेश्म+ठक्—इक] वेश्म अर्थात् घर या मकान में रहनेवाला।

वैश्य—पुं०[सं०√विश्+क्विप्+ष्यञ्] हिंदुओं में तीसरे वर्ण का व्यक्ति जिसका मुख्य कर्म व्यापार तथा खेती कहा गया है।

वैश्यता—स्त्री०[सं० वैश्य+तल्+टाप्] वैश्य का धर्म या भाव। वैश्यत्व।

वैश्यभद्रा—स्त्री०[सं० द्व० स०] बौद्धों की वैश्या और भद्रा नाम की दो देवियाँ।

वैश्या—स्त्री०[सं० वैश्य+टाप्] १. वैश्य जाति की स्त्री। २. हल्दी।

वैश्रंभक—पुं०[पुं० विश्रंभक+अण्] देवताओं का एक उद्यान। (पुराण)

वैश्रवण—पुं०[सं० विश्रदण+अण्] १. कुबेर। २. शिव।

वैश्रवणालय—पुं [सं० ष० त०] १. कुबेर के रहने का स्थान। २. बड़ का पेड़। वट वृक्ष।

वैश्लेषिक—वि० [सं०] १. विश्लेषण-संबंधी। २. विश्लेषण के फलस्वरूप ज्ञात होनेवाला। (एनैलिटिकल)

वैश्व—वि०[सं० विश्व+अण्] विश्वदेव-संबंधी। विश्वदेव का।
पुं० उत्तराषाढ़ा। नक्षत्र।

वैश्वजनीन—वि०=विश्वजनीन।

वैश्वदेव—पुं० [सं० विश्वदेव+अण्] विश्वदेव को प्रसन्न करने के उद्देश्य से किया जानेवाला यज्ञ।

वैश्वदेवत—पुं०[सं० विश्वदेवता+अण्] उत्तराषाढ़ा नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता विश्वदेव माने जाते हैं।

वैश्वयुग—पुं०[सं० विश्व-युग, ष० त०,+अण्] फलित ज्योतिष के अनुसार बृहस्पति के शोभकृत्, शुभकृत्, क्रोधी, विश्वावसु और पराभव नामक पाँच संवत्सरों का युग या समूह।

वैश्वरूप—वि०[सं० विश्वरूप+अण्] १. बहुत से रूपोंवाला। २. विभिन्न प्रकार का।

वैश्वानर—पुं०[सं० विश्वानर+अण्] १. अग्नि। २. परमात्मा। ३. चेतन। ४. चित्र। ५. चित्रक। चीता।

वैश्वानर-मार्ग—पुं०[सं०] चन्द्रवीथी का एक भाग।

वैश्वामित्र, वैश्वामित्रक—वि०[सं० विश्वामित्र+अण्+कन्] विश्वामित्र-संबंधी।

वैश्वासिक—वि०[सं० विश्वास+ठक्—इक]=विश्वास-संबंधी।

वैषम्य—पुं०[सं० विषम+ष्यञ्] विषम होने की अवस्था या भाव।

वैषयिक—वि० [सं० विषय+ठक्—इक] १. विषय-वासना-संबंधी। विषय का। २. विषय-वासना में लिप्त रहनेवाला। विषयी।

वैषिक—वि० [सं० विष+ठक्—इक] १. विष-संबंधी। २. विष के संयोग से उत्पन्न होनेवाला। विषजन्य। (टॉक्सिक) जैसे—रक्त में होनेवाला वैषिक विकार।

वैषवत—पुं०[सं० विषुवत्+अण्] विषुव संक्रांति।
वि० विषवत्-सम्बन्धी।

वैष्किर—पुं०[सं० विष्किर+अण्] ऐसा पशु या पक्षी जो चारों ओर घूम-फिरकर आहार प्राप्त करता हो।

वैष्णव—वि० [सं० विष्णु+अण्] [स्त्री० वैष्णवी] १. विष्णु-संबंधी। जैसे—वैष्णव विचार। २. विष्णु का उपासक।
पुं० १. हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध धार्मिक संप्रदाय। इसमें विष्णु की उपासना करते हुए अपेक्षाकृत विशेष आचार-विचार में रहना पड़ता है। २. उक्त के आधार पर सात्विक वृत्तिवाला और निरामिषभोजी व्यक्ति। ३. विष्णु पुराण। ४. यज्ञ-कुण्ड की भस्म।
वि० विष्णु-संबंधी। विष्णु का।

वैष्णवत्व—पुं० [सं० वैष्णव+त्व] वैष्णव होने की अवस्था, धर्म या भाव। वैष्णवता।

वैष्णवाचार—पुं०[सं० ष० त०] १. वैष्णव का आचार-विचार। २. मांस आदि असात्विक पदार्थ का सेवन न करना।

वैष्णवी—स्त्री० [सं० वैष्णव+ङीप्] १. विष्णु की शक्ति। २. दुर्गा। ३. गंगा। ४. तुलसी। ५. पृथ्वी। ६. श्रवण नक्षत्र। ७. अपराजिता या कोयल नाम की लता। ८. शतावर।

वैष्णव्य—वि० [सं० वैष्णव+यत्, या ष्यञ्] विष्णु-संबंधी। विष्णु का।

वैसंदर†—पुं० [सं० वैश्वानर] अग्नि। आग।

वैसर्गिक—वि० [सं० विसर्ग+ठञ्–इक] १. विसर्ग-संबंधी। २. जो विसर्जन करने या त्यागे जाने के योग्य हो। त्याज्य।

वैसर्जन—पुं० [सं० विसर्जन+अण्] १. विसर्जन करने या उत्सर्ग करने की क्रिया। २. विसर्जित किया हुआ। पदार्थ। ३. यज्ञ की बलि।

वैसर्प—पुं० [सं० विसर्प+अण्] विसर्प नामक रोग।

वैसा—वि० [हिं०] १. किसी के अनुरूप या उसके अनुकरण पर किया जाने या होनेवाला। उसी तरह का। २. ऐसा। जैसा—वैसा काम करो कि लोग तुम्हें पुरस्कृत करें।

अव्य० उस प्रकार।

वैसादृश्य—पुं० [सं० विसदृश+ष्यञ्] विसदृश या असमान होने का भाव। असमानता। विषमता।

वैसे—अ० [हिं० वैसा] उस प्रकार से। उस तरह से।

वैस्तारिक—वि० [सं० विस्तार+ठक्—इक] १. विस्तार-संबंधी। विस्तार का। २. विस्तृत।

वैस्वर्य—पुं० [सं० विस्वर+ष्यञ्] १. विस्वर होने की अवस्था या भाव। २. उद्वेग, पीड़ा आदि के कारण होनेवाला स्वर-भंग। स्वर का विकृत होना। ३. गला बैठना।

वैहंग—वि० [सं० विहंग+अण्] विहंग-संबंधी। पक्षी का।

वैहायस—वि० [सं० विहायस्+अण्] १. आकाश में विचरण करनेवाला। २. आकाशस्थ। २. वायु-संबंधी।

पुं० देवता।

वैहार—पुं० [सं० विहार+अण्] मगध में राजगृह के पास का एक प्राचीन पर्वत।

वैहारिक—वि० [सं० विहार+ठक्–इक] १. विहार-संबंधी। विहार का। २. विहार के लिए काम में आनेवाला।

वैहार्य—वि० [सं० वि√हृ (हरना)+ण्यत्, +अण्] जिससे हँसी-मजाक किया जाता हो।

पुं० साला।

वैहासिक—पुं० [सं० विहास+ठक्-इक] ऐसा व्यक्ति जो लोगों को बहुत अधिक हँसाता हो।

वोट—पुं० [अं०] चुनाव में किसी उम्मेदवार को मतदाता द्वारा दिया जानेवाला मत।

†स्त्री० ओट। उदा०—बदन चंद पट वोट जरावै।—नंददास।

वोटर—पुं० [अं०] वह जिसे चुनाव में मत देने का अधिकार प्राप्त हो। मतदाता।

वोटिंग—स्त्री० [अं०] चुनाव के समय मत दिये या लिये जाने का काम।

वोड़ना†—स०=ओड़ना (पसारना)।

वोड्र—पुं० [सं० वा+उड्र] १. गोह नामक जंतु। गोनस सर्प। २. एक प्रकार की मछली।

वोढु—पुं० [सं०] ऐसी स्त्री का पुत्र जो मायके में रहती हो।

वोद—वि० [सं०] ओदा। गीला।

वोदर†—पुं०=उदर।

वोरव—पुं०=बोरो (धान)।

वोल्ट—पुं० [अं०] दे० 'ऊर्ज' (विद्युत् का)।

वोल्टेज—पुं० [अं०] दे० 'ऊर्ज-मान'।

वोल्लाह—[सं०] पुं० ऐसा घोड़ा जिसकी दुम और अयाल के बाल पीले रंग के हों।

वोहित्य—पुं० [सं० वोहित+यत्] बड़ी नाव। जहाज।

व्यंकुश—वि० [सं० वि+अंकुश] निरंकुश।

व्यंग—वि० [सं० वि+अंग] [भाव० व्यंगता, व्यंगत्व] १. अंग-रहित। २. जिसका कोई अंग खंडित हो अथवा न हो। विकलांग। ३. लँगड़ा। ४. अव्यवस्थित।

पुं० १. मुँह पर काली फुन्सियाँ निकलने का एक रोग। २. मेंडक।

पुं०=व्यंग्य।

व्यंगिता—स्त्री० [सं० व्यंगि+तल्+टाप्] १. विकलांगता। २. पंगुता।

व्यंगी—वि० [सं० व्यंग+इनि] विकलांग।

व्यंगुल—पुं० [सं० ब० स०] अंगुल का साठवाँ भाग। (नाप)

व्यंग्य—पुं० [सं० व्यंग+यत्] १. शब्द की व्यंजना शक्ति (दे०) द्वारा निकलनेवाला अर्थ। २. किसी को चिढ़ाने, दुःखी करने या नीचा दिखाने के लिए कही जानेवाली ऐसी बात जो स्पष्ट शब्दों में न होने पर भी अथवा विपरीत रूप की होने पर भी उक्त प्रकार का अभिप्राय या आशय प्रकट करती हो। (आईरनी)

व्यंग्य गीति—स्त्री० [सं०] ऐसा गीत या पद्यात्मक रचना जिसका मुख्य उद्देश्य किसी व्यक्ति या उसकी कृति पर व्यंग्य करके उसकी हँसी उड़ाना हो। (सैटायर)

व्यंग्य-चित्र—पुं० [मध्यम० स०] ऐसा उपहासात्मक तथा सांकेतिक चित्र जिसका मुख्य उद्देश्य किसी घटना, बात, व्यक्ति आदि की हँसी उड़ाना होता है। (कार्टून)

व्यंग्य-विदग्धा—स्त्री० [सं०] साहित्य में नायिका की वह सखी जो व्यंग्यपूर्ण बात कहकर उसे यह जतलाती हो कि मैंने तुम्हारा सब हाल जान लिया है।

व्यंग्यार्थ—पुं० [कर्म० स०] व्यंजना शक्ति के द्वारा प्राप्त अर्थ। सांकेतितार्थ। (सा०)

व्यंजक—वि० [सं०] व्यंजन अर्थात् व्यक्त करनेवाला।

पुं० १. ऐसा शब्द जो व्यंजना द्वारा अर्थ प्रकट करता हो। २. आन्तरिक भाव व्यक्त करनेवाली चेष्टा।

व्यंजन—पुं० [सं०] १. व्यक्त या प्रकट करने अथवा होने की क्रिया या भाव। व्यंजना। २. तरकारी, साग आदि जो दाल, चावल, रोटी आदि के साथ खाई जाती है। ३. साधारण बोल-चाल में सभी तरह के पकाये हुए भोजन। ४. वर्णमाला का कोई ऐसा वर्ण जिसका उच्चारण किसी और वर्ण विशेषतः स्वर की सहायता के बिना संभव न हो। देवनागरी वर्ण मात्रा में 'क' से 'ह' तक वर्णों का समूह। ५. चिह्न। निशान। ६. अंग। अवयव। ७. मूँछ। ८. दिन। ९. उपस्थ।

व्यंजनकार—पुं० [सं० व्यंजन√कृ+घञ्] तरह-तरह के व्यंजन अर्थात् पकवान बनानेवाला।

व्यंजन-संधि—स्त्री०[सं० ष० त०] संस्कृत-व्याकरण के अनुसार समीपस्थ व्यंजनों का मिलना अथवा मिलकर नया रूप धारण करना।

व्यंजन-हारिका—स्त्री०[सं० ष०त०] पुराणानुसार एक प्रकार की अमंगल-कारिणी शक्ति जो विवाहिता लड़कियों के बनाए हुए खाद्य पदार्थ उठा ले जाती है।

व्यंजना—स्त्री०[सं० व्यंजन+टाप्] १. प्रकट करने की क्रिया, भाव या शक्ति। २. शब्द की तीन प्रकार की शक्तियों या वृत्तियों में से एक जिससे शब्द या शब्द-समूह के वाच्यार्थ अथवा लक्ष्यार्थ से भिन्न किसी और ही अर्थ का बोध होता है। शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा साधारण अर्थ को छोड़कर कोई विशेष अर्थ प्रकट होता है।

व्यंजित—भू० कृ०[सं० वि√अंज् (गमनादि)+णिच्+क्त] जिसकी व्यंजना या अभिव्यक्ति हुई हो।

व्यंद†—पुं०=विंदु।

व्यंशुक—वि०[सं० ब० स०] वस्त्रहीन। नग्न। नंगा।

व्यंसक—पुं०[सं० वि√अंस्+ण्वुल्–अक] धूर्त। चालाक।

व्यंसन—पुं० [सं० वि√अंस्(समाघात करना)+ल्युट्–अन] [भू० कृ० व्यंसित] ठगने या धोखा देने की क्रिया।

व्यक्त—भू०कृ०[सं० वि√अञ्ज्+क्त] १. जिसका व्यंजन हुआ हो। जो प्रकट किया या सामने लाया गया हो। २. साफ। स्पष्ट।

व्यक्तता—स्त्री०[सं०व्यक्त+तल्+टाप्] व्यक्त होने की अवस्था या भाव।

व्यक्त-दृष्टांत—वि०[सं०] प्रत्यक्षदर्शी।

व्यक्त-राशि—स्त्री०[सं० कर्म० स०] अंकगणित में ऐसी राशि या अंग जो व्यक्त किया या बतला दिया गया हो। ज्ञात राशि।

व्यक्त-रूप—पुं०[सं०] विष्णु।

व्यक्ताक्षेप—पुं०[सं०] साहित्य में आक्षेप अलंकार का एक भेद जिसमें पहले अपनी ही कही हुई कोई बात काटकर दोबारा उसे और जोरदार रूप में कहते हैं। जैसे—वह सीधा क्या है, बल्कि यों कहना चाहिए कि मूर्ख है।

व्यक्ति—स्त्री०[सं० वि√अञ्ज् (व्याप्त होना)+क्तिन्] १. (समस्त पदों के अंत में) व्यक्त, जाहिर या स्पष्ट करने की क्रिया या भाव। जैसे—अभिव्यक्ति। २. भूत मात्र। ३. पदार्थ। वस्तु। ४. प्रकाश।
पुं०१. वह जिसका कोई अलग और स्वतंत्र रूप या सत्ता हो। समष्टि का कोई अंग। २. मनुष्य या किसी और शरीरधारी का सारा शरीर जिसकी पृथक सत्ता मानी जाती है और जो किसी समूह या समाज का अंग माना जाता है। समष्टि का विपर्याय। व्यष्टि। ३. आदमी। मनुष्य।

व्यक्तिक—वि०[सं०] किसी एक ही व्यक्ति से संबंध रखनेवाला, दूसरे सभी व्यक्तियों से पृथक् या भिन्न। (इण्डिवीजुअल)

व्यक्तित्व—पुं० [सं० व्यक्ति+त्वल्] १. व्यक्त होने की अवस्था या भाव। (इण्डिविजुएल्टी) २. किसी व्यक्ति की निजी विशिष्ट क्षमताएँ, गुण, प्रवृत्तियाँ आदि जो उसके उद्देश्यों, कार्यों, व्यवहारों आदि में प्रकट होती हैं और जिनसे उस व्यक्ति का सामाजिक स्वरूप स्थिर होता है। । (पर्सनैलिटी)

विशेष—मनोविज्ञान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व दो भागों में विभक्त रहता है—एक आन्तर, दूसरा बाह्य। आन्तर व्यक्तित्व मूलतः नैसर्गिक या प्राकृतिक होता है और आध्यात्मिक, दैविक तथा दैहिक शक्तियों का सम्मिलित रूप होता है। यह मनुष्य के अन्दर रहनेवाली समस्त प्रकट तथा प्रच्छन्न प्रवृत्तियों और शक्तियों का प्रतीक होता है। बाह्य व्यक्तित्व इसी का प्रत्याभास मात्र होता है, फिर भी लोक के लिए वही गोचर या दृश्य होता है। इससे यह सूचित होता है कि कोई व्यक्ति अपनी आन्तरिक प्रवृत्तियों और शक्तियों को कहाँ तक कार्यान्वित तथा विकसित करने में समर्थ है या हो सका है।

व्यक्तिवाद—पुं०[सं०व्यक्ति√वद्+घञ्] [वि० व्यक्तिवादी] १. यह मत या सिद्धान्त कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने ढंग से चलना और रहना चाहिए, दूसरों के सुख, दुःख आदि का ध्यान नहीं रखना चाहिए। २. आर्थिक क्षेत्र में,यह सिद्धान्त कि सब प्रकार के काम-धन्धों में सब लोगों को स्वतन्त्र रहना चाहिए, शासन अथवा समाज का उन पर कोई नियन्त्रण नहीं रहना चाहिए, और उन्हें अपनी इच्छा से मिलकर अपना संगठन स्थापित करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए। ३. आधुनिक राजनीति में, यह सिद्धान्त की सृष्टि व्यक्तियों के कल्याण के लिए ही हुई है, व्यक्तियों की सृष्टि राज्य या शासन का अस्तित्व बनाए रखने के लिए नहीं हुई है। (इंडिविजुएअलिज़्म)

व्यक्तिवादी—वि०[सं०] व्यक्तिवाद-संबंधी।
पुं० वह जो व्यक्तिवाद के सिद्धान्तों का अनुयायी और समर्थक हो। (इंडिविजुएलिस्ट)

व्यक्तिकरण—पुं०[सं० व्यक्त+च्वि√कृ (करना)+ ल्युट्–अन] व्यक्त करने की क्रिया या भाव।

व्यक्तीकृत—भू० कृ०[सं० व्यक्त+च्वि√कृ (करना)+क्त] व्यक्त किया हुआ।

व्यक्तीभूत—वि०[सं० व्यक्त+च्वि√भू (होना)+क्त]=व्यक्तीकृत।

व्यग्र—वि०[सं० ब० स०] [भाव० व्यग्रता] १. जो चिंतित तथा बेचैन हो। २. डरा हुआ। भीत। ३. काम में लगा हुआ। व्यस्त। ४. उद्यमी। उद्योगी। ४. आसक्त। ५. हठी।

व्यग्रता—स्त्री०[सं० व्यग्र+तल्+टाप्] १. व्यग्र होने की अवस्था या भाव। २. वह बात जिससे सूचित होता है कि व्यक्ति व्यग्र है।
पुं० विष्णु।

व्यजन—पुं०[सं० वि√अज्+ल्युट्] [भू० कृ० व्यजित, वि√अज्+क्त] १. पंखे आदि से हवा करने की क्रिया या भाव। २. पंखा। ३. आजकल कमरे, निवास-स्थान आदि में खिड़कियों, झरोखों आदि के द्वारा की जानेवाली ऐसी व्यवस्था जिससे घिरी और छाई हुई जगह में बराबर हवा आती जाती रहे। संवातन। हवादारी। (वेन्टिलेशन) ४. किसी प्रश्न या बात की ओर जन-साधारण या उससे संबद्ध लोगों का ध्यान खींचना।

व्यजनिक—पुं०[सं० व्यजन+ठक्–इक] [स्त्री० व्यजनिका] वह नौकर या सेवक जिसका मुख्य काम स्वामी को पंखा हाँकना होता था।

व्यजनी (निन्)—पुं०[सं० व्यजन+इनि] ऐसा पशु जिसकी पूँछ चँवर बनाने के काम आती है।

व्यज्य—वि०, पुं०=व्यंग्य।

व्यतिकर—वि० [सं० वि–अति√कृ (करना)+अण्] व्यति करनेवाला।

पुं० १. मिलन। संयोग। २. सम्पर्क। लगाव। ३. घटना। ४. अवसर। ५. संकट। ६. अन्योन्य आश्रित सम्बन्ध। ७. विनिमय। ८. विपरीतता। ९. अन्त या नाश। १०. व्यसन।

व्यतिकार––पुं०[सं० व्यति√कृ (करना)+अण्] १. व्यसन। २. विनाश। ३. मिलावट। मिश्रण। ४. व्याप्ति। ५. लगाव। संबंध। ६. झुंड। समूह।

व्यतिक्रम––पुं० [सं० वि-अति√क्रम् (चलना)+घञ्] १. किसी क्रम में होनेवाली बाधा या रुकावट। २. क्रम-विपर्यय। ३. उल्लंघन।

व्यतिक्रमण––पुं० [सं०] १. क्रम में उलट-फेर होना। २. क्रम-भंग करना।

व्यतिक्रांत––भू० कृ०[सं० व्यति√क्रम्+क्त] [भाव० व्यतिक्रांति] १. जिसके क्रम में बाधा खड़ी हुई या की गई हो। २. जिसका उल्लंघन हुआ हो। ३. भंग किया हुआ। भग्न। ४. बिताया या बीता हुआ।

व्यतिचार––पुं०[सं० वि-अति√चर् (चलना)+ घञ्] १. पाप-कर्म करना। २. दूषित आचरण करना। ३. ऐब। दोष।

व्यतिपात––पुं०[सं० वि-अति√पत् (गिरना)+ घञ्] १. बहुत बड़ा उत्पात। भारी उपद्रव या खराबी। २. दे० 'व्यतीपात'।

व्यतिरिक्त––वि० [सं० वि-अति√रिच् (विरेचन)+क्त] [भाव० व्यतिरिक्तता] १. भिन्न। अलग। २. बढ़ा हुआ।

क्रि० वि० अतिरिक्त। सिवा।

व्यतिरेक––पुं०[सं० वि-अति√रिच् +घञ्] १. अभाव। २. अन्तर। भेद। ३. बढ़ती। वृद्धि। ४. अतिक्रमण। ५. दो चीजों की ऐसी तुलना जो उनके परस्पर विरोधी गुणों को आधार बनाकर की गई हो। ७. साहित्य में एक अर्थालंकार जो उस समय माना जाता है जब उपमान की अपेक्षा उपमेय का गुण विशेष के कारण उत्कर्ष बताया जाता है।

व्यतिरेकी (किन्)––वि० [सं० वि-अति√रिच्+घिनुण्] वह जो किसी का अतिक्रमण करता हो। भिन्नता या भेद उत्पन्न करनेवाला।

व्यतिव्यस्त––वि०[सं० वि अतिवि√अस् (होना)+क्त] अस्त-व्यस्त।

व्यतिहार––पुं०[सं० वि–अति√हृ+घञ्] १. दो चीजों को अपने स्थान से हटाकर एक के स्थान पर दूसरी रखना। २. इस प्रकार स्थान आदि का होनेवाला परिवर्तन। (इन्टरचेंज) ३. किसी प्रकार का परिवर्तन। ४. अदला-बदली। विनिमय। ५. गाली-गलौज। ६. मार-पीट।

व्यतीकार––पुं०[सं० वि-अति√कृ (करना)+घञ्-दीर्घ] १. व्यसन। २. विनाश ३. मिलावट। मिश्रण। ४. भिड़ंत।

व्यतीत––भू० कृ०[सं० वि-अति√इ (गमन)+क्त] १. गुजरा या बीता हुआ। २. मरा हुआ। मृत ३. जो कहीं से चला गया हो। प्रस्थित। ४. परित्यक्त। ५. उपेक्षित।

व्यतीतना––अ० [सं० व्यतीत] व्यतीत होना। बीतना। गुजरना।

स० व्यतीत करना। गुजारना। बिताना।

व्यतीपात––पुं०[सं० वि०-अति√पत् (गिरना)+घञ्] १. बहुत बड़ा प्राकृतिक उत्पात। २. ज्योतिष में एक योग जिसमें यात्रा करना निषिद्ध माना गया है। ३. अपमान।

व्यतीहार––पुं० [सं० वि-अति√हृ(हरण करना)+घञ्+दीर्घ] १. विनिमय। अदला-बदली। २. परिवर्तन। ३. गाली-गलौज और मार-पीट।

व्यत्यय––पुं०=१. व्यतिक्रम। २. विचलन।

व्यत्ययक––पुं०[सं०] लिखाई आदि में एक प्रकार का चिह्न जो इस बात का सूचक होता है कि लिखने या छापने में यहाँ इस शब्द के अक्षर कुछ आगे-पीछे हो गये हैं।

व्यथक––वि०[सं०√व्यथ् (भय देना) +णिच्+ण्वुल्-अक] व्यथित करनेवाला।

व्यथन––पुं०[सं०√व्यथ् (भय होना)+ल्युट्-अन्] व्यथा।

वि०=व्यथक

व्यथा––स्त्री०[सं०] उग्र मानसिक या शारीरिक पीड़ा।

व्यथित––भू० कृ०[सं०√व्यथ् (भय देना)+क्त] व्यथा-ग्रस्त।

व्यथी (थिन्)––वि०[सं० व्यथा+इनि] व्यथा से ग्रस्त या युक्त।

व्यथ्य––वि०[सं० व्यथा+यत्] १. जिसे व्यथा दी जा सके। २. व्यथा उत्पन्न करनेवाला।

व्यधन––पुं०[सं०√व्यध् (ताड़ना देना)+ल्युट्–अन] वेधन।

वि० वेध्य।

व्यपगत––भू० कृ०[सं०] [भाव व्यपगति] १. जो कहीं चला गया हो। व्यथित। २. लुप्त। ३. वंचित। ४. रहित।

व्यपगति––स्त्री०[सं०] १. प्रस्थान। २. लोप। ३. राहित्य।

व्यपगम––पुं० [सं० वि–अप√गम् (जाना)+अप्] १. प्रस्थान। २. लोप। ३. बीतना (समय)।

व्यपगमन––पुं०[सं० वि–अप√गम्+ल्युट्–अन] व्यपगति।

व्यपदिष्ट––भू० कृ० [सं० वि–अप√दिश् (आज्ञा देना)+क्त] १. निर्दिष्ट। २. सूचित। ३. जो ठगा गया हो। ४. रहित या वंचित किया हुआ। ५. निन्दित।

व्यपदेश––पुं०[सं० वि-अप√दिश् (कहना)+घञ्] १. निर्देश। २. सूचना। ३. वंचना। ४. निद्रा।

व्यपनय––पुं०[सं० वि-अप√नी (ढोना)+अप] १. विनाश। बरबादी। २. त्याग।

व्यपनयन––पुं० [सं० वि-अप√नी (ढोना)+ल्युट्––अन] [भू० कृ० व्यपनीत] छोड़ देना। त्याग।

व्यपरोपण––पुं०[सं० वि-अप्√रुह् (चढ़ना)+णिच्–ल्युट्–अन, ह–प] [वि० व्यपरोपित] १. झुकाना। २. काटना। ३. दूर करना। हटाना।

व्यपवर्ग––पुं०[सं० ब० स०] १. अलग होना। २. छोड़ना। त्यागना।

व्यपवर्जन––पुं० [सं० वि-अप√वर्ज (छोड़ना)+ल्युट्––अन] [वि० व्यपवर्जित] १. छोड़ना। त्याग। २. निवारण। ३. देना। दान।

व्यपेक्षा––स्त्री०[सं० वि-अप√ईक्ष् (देखना)+अङ+टाप्] १. आकांक्षा इच्छा। चाह। २. अनुरोध। आग्रह।

व्यपोह––पुं० [सं० वि-अप√ऊह् (वितर्क करना)+घञ्] विनाश। बरबादी।

व्यभिचार––पुं०[सं०] १. बहुत ही निकृष्ट आचरण। २. ऐसी स्थिति जिसमें हर जगह चोरी, छिनारी, घूस, पक्षपात आदि का बोल-बाला हो। ३. स्त्री का पर-पुरुष से अथवा पुरुष का पर-स्त्री से होनेवाला अनुचित संबंध। छिनाला। जिना। (एडल्टरी) ४. नियमों का अपवाद। ५. एक तर्क छोड़कर दूसरे तर्क का सहारा लेना। ६. न्याय में ऐसा हेतु जिसका साध्य न हो।

व्यभिचारी—वि० [सं० वि-अभि√चर् (चलना)+णिनि] १. व्यभिचार संबंधी। २. व्यभिचार करनेवाला। ३. (शब्द) जिसके अनेक अर्थ हों। ४. अस्थिर।

पुं० साहित्य में, संचारी भाव। (दे०)

व्यभ्र—वि० [सं० मध्यम० स०] अभ्र या मेघ से रहित। अर्थात् स्वच्छ तथा निर्मल (आकाश)।

व्यय—पुं० [सं० वि√इ+अच्] १. उपभोग आदि में आने के कारण किसी चीज का क्षीण या लुप्त होना। २. भोग, निर्माण आदि में धन का खर्च होना। ३. किसी मद विशेष में होनेवाला धन का खरच। जैसे—डाक व्यय। यात्रा व्यय। ४. समय का बीतना। ५. नाश। ६. त्याग। ७. दान। ८. फलित ज्योतिष में लग्न से ग्यारहवाँ स्थान जिसके आधार पर व्यय पक्ष का विचार किया जाता है। ८. बृहस्पति की गति या भार के विचार से एक वर्ष या संवत्सर का नाम।

व्ययक—वि० [सं० वि√इण् (गमनादि)+ण्वुल्–अक] जो व्यय करता हो। व्यय करनेवाला।

व्ययमान—वि० [सं० ब० स०] अपव्ययी। बहुत अधिक व्यय करनेवाला।

व्ययशील—वि० [सं०] अधिक व्यय करनेवाला।

व्ययिक—वि० [सं० व्यय से] १. व्यय-संबंधी। व्यय का। जैसे—आय-व्ययिक। २. व्यय के फलस्वरूप होनेवाला।

व्ययित—भू० कृ० [सं०√व्यय् (खर्च करना)+क्त] जो या जिसका व्यय हो चुका हो। व्यय किया हुआ।

व्ययी (यिन्)—पुं० [सं० व्यय+इनि] बहुत अधिक खर्च करनेवाला। व्ययशील।

व्यर्थ—वि० [सं० वि-अर्थ, प्रा० ब०] [भाव० व्यर्थता] १. अर्थ से रहित। अर्थ-हीन। २. धन-हीन। ३. जो उपयोग में न आने को हो। ४. जिसकी कुछ भी आवश्यकता न हो। ५. जो लाभप्रद न हो। निरर्थक।

अव्य० बिना किसी आयोजन के।

व्यर्थक—वि० [सं० व्यर्थ+कन्] निरर्थक।

व्यर्थता—स्त्री० [सं० व्यर्थ+तल्+टाप्] व्यर्थ होने की अवस्था या भाव।

व्यर्थन—पुं० [सं०] १. व्यर्थ सिद्ध करना। महत्त्व, प्रयोजन आदि नष्ट करना। २. आज्ञा, निर्णय आदि को रद्द करना। (नलिफिकेशन)

व्यलीक—पुं० [सं० वि√अल् (पूरा होना)+कीकन्] १. ऐसा अपराध जो काम के आवेग के कारण किया जाय। २. किसी प्रकार का अपराध। कसूर। ३. डाँट-डपट। फटकार। ४. कष्ट। दुःख। ५. विट। ६. विलक्षणता। ७. शोकोच्छ्वास। ८. झगड़ा। ९. झंझट। बखेड़ा। १०. ओलती।

वि० १. जो अच्छा न लगे। अप्रिय। २. कष्टदायक। ३. अपरिचित। ४. अद्भुत। विलक्षण।

व्यवकलन—पुं० [सं० वि+अव√कल् (शब्द करना)+ल्युट्–अन] [भू० कृ० व्यवकलित] १. बड़ी राशि में से छोटी राशि घटाना। (गणित) २. घटाव। ३. जुदाई। पार्थक्य।

व्यवकीर्ण—वि० [सं० वि+अव√कृ (करना)+क्त] १. घटाया हुआ। २. अलग या जुदा किया हुआ।

व्यवच्छिन्न—भू० कृ० [सं० वि+अव√छिद् (अलग करना)+क्त] १. काटकर अलग या जुदा किया हुआ। २. विभक्त। ३. निर्धारित। निश्चित।

व्यवच्छेद—पुं० [सं० वि+अव√छिद्+घञ्] १. पार्थक्य। अलगाव। २. खंड। विभाग। हिस्सा। ३. ठहराव। विराम। ४. छुटकारा। निवृत्ति। ५. अस्त्र या शस्त्र चलाना। ६. विशेषता दिखलाना या बतलाना।

व्यवच्छेदक—वि० [सं० वि+अव√छिद्+ण्वुल्–अक] व्यवच्छेद करनेवाला।

व्यवच्छेदन—पुं० [सं० वि+अव√छिद्+ल्युट्–अन] [भू० कृ० व्यवच्छिन्न] १. व्यवच्छेद करने की क्रिया या भाव। २. आज-कल किसी मृत शरीर के अंगों-उपांगों आदि का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसके सब अंश अलग करके देखना। (डिस्सेकशन)

व्यवदात—वि० [सं० वि+अव√दै (शोधन करना)+क्त] १. निर्मल। साफ। २. चमकीला।

व्यवदान—पुं० [सं० वि-अव√दो (खंड करना)+ल्युट्–अन] १. किसी पदार्थ को शुद्ध और साफ करने का नियम या भाव। संस्कार। सफाई। उज्ज्वल करने या चमकाने की क्रिया या भाव।

व्यवधा—स्त्री० [सं० वि-अव√धा (रखना)+अङ्+टाप्] व्यवधान। परदा।

व्यवधाता (तृ)—वि० [सं०√वि+अव√धा (रखना)+तृच्] १. पृथक् करनेवाला। २. बीच में पड़कर आड़ करनेवाला।

व्यवधान—पुं० [सं० वि+अव√धा+ल्युट्–अन] १. जुदा या अलग होना। २. वह चीज या बात जो किसी चीज को दो हिस्सों में बाँटती या खंडित करती हो। ३. बीच में आड़ करनेवाली चीज। ओट। परदा। ४. बीच में पड़नेवाला अवकाश। ५. अंत। समाप्ति।

व्यवधायक—वि० [सं० वि+अव√धा+ण्वुल्–अक] [स्त्री० व्यवधायिका] १. आड़ या ओट करनेवाला। २. छिपाने या ढकनेवाला।

व्यवधारण—पुं० [सं० वि+अव√धा (रखना)+ल्युट्–अन] अच्छी तरह अवधारण या निश्चय करना।

व्यवधि—पुं० [सं०]=व्यवधान।

व्यवसर्ग—पुं० [सं० वि+अव√सृज् (छोड़ना)+घञ्] १. विभाजन। २. छुटकारा। मुक्ति।

व्यवसाय—पुं० [सं० वि+अव√सो (पतला करना)+घञ्] १. ऐसा कार्य जिसके द्वारा किसी की जीविका का निर्वाह होता हो। जीविका-निर्वाह का साधन। पेशा। (प्रोफ़ेशन) २. रोजगार। व्यापार। ३. कार्य-धन्धा। उद्यम। ४. उद्योग। प्रयत्न। ५. कार्य का संपादन। ६. निश्चय। ७. इच्छा या विकार। ८. अभिप्राय। मतलब। ९. विष्णु। १०. शिव।

व्यवसाय-संघ—पुं० [सं०] किसी व्यवसाय, पेशे या वर्ग के श्रमिकों का वह संघटन जो मालिकों या व्यवस्थापकों से अपने उचित अधिकार प्राप्त करने के लिए बनता है। (ट्रेड यूनियन)

व्यवसायी (यिन्)—पुं० [सं० व्यवसाय+इनि] १. वह व्यक्ति जो किसी व्यवसाय में लगा हुआ हो। २. वह व्यक्ति जो एक या अनेक व्यवसाय करता हो।

वि० व्यवसाय में लगे हुए व्यक्ति से संबंध रखनेवाला।

व्यवसित—भू० कृ० [सं० वि+अव√सो (पतला करना)+क्त] १. जिसका अनुष्ठान किया गया हो। व्यवसाय के रूप में किया हुआ। २. कुछ करने के लिए उद्यत या तत्पर। ३. निश्चित।

व्यवसिति—स्त्री०[सं० वि+अव√सो+क्तिन्]=व्यवसाय।

व्यवस्था—स्त्री० [सं० वि+अव√स्था (ठहरना)+अङ्,+टाप्] १. ठीक अवस्था। अच्छी हालत। २. क्रम, ढंग आदि के विचार से उपयुक्त स्थिति में होना। चीजों का ठिकाने पर तथा सजा-सँवार कर रखा होना। ३. वह कार्य या योजना जिसके फलस्वरूप हर काम ठीक-ठिकाने से किया या अपनी देख-रेख में कराया जाता है। इन्तजाम। प्रबंध। (मैनेजमेंट) ४. आज-कल विधिक और वैधानिक क्षेत्रों में, किसी निम्नस्थ अधिकारी के निर्णय के विरुद्ध बड़े अधिकारी का दिया हुआ आदेश या किया हुआ निर्णय।

मुहा०—**व्यवस्था देना**=पंडितों आदि का यह बतलाना कि अमुक विषय में शास्त्रों का क्या मत अथवा आज्ञा है। किसी विषय में शास्त्रों का विधान बतलाना।

५. कार्य, कर्तव्य आदि का निर्वाह करना। (डिस्पोज़ीशन) ६. धन-सम्पत्ति के बँटवारे, व्यय आदि से संबंधित योजना। (डिस्पोज़ीशन) ७. नियम, विधि आदि में कुछ विशिष्ट उद्देश्य से निकाली जानेवाली गुंजाइश या रास्ता। (प्राविजन)

व्यवस्थाता—वि०[सं० वि+अव√स्था (ठहरना)+तृच्, व्यवस्थातृ] १. वह जो व्यवस्था करता हो। व्यवस्था या इंतजाम करनेवाला। २. शास्त्रीय व्यवस्था देनेवाला।

व्यवस्थान—पुं०[सं० वि+अव√स्था (ठहरना)+ल्युट्—अन] १. उपस्थित या व्यवस्थित होना। २. व्यवस्था। प्रबंध। ३. विष्णु।

व्यवस्थापक—पुं० [सं० वि+अव√स्था (ठहरना)+णिच्+ ण्वुल्—अक, पुक्] [स्त्री० व्यवस्थापिका] १. वह जो यह बतलाता हो कि अमुक विषय में शास्त्रों का क्या मत है। व्यवस्था देनेवाला। २. वह अधिकारी जो संस्था आदि के कार्यों का प्रबंध करता हो। (मैनेजर)

व्यवस्था-पत्र—पुं०[सं० मध्यम०स०] ऐसा पत्र जिस पर कोई शास्त्रीय व्यवस्था लिखी हो। शास्त्रीय व्यवस्था का ज्ञापक पत्र।

व्यवस्थापन—पुं० [सं०वि+अव√स्था (ठहरना)+णिच्+ल्युट्—अन, पुक्] १. व्यवस्था करने की क्रिया या भाव। २. किसी विषय में शास्त्रीय व्यवस्था देना या बतलाना।

व्यवस्थापनीय—वि० [सं० वि+अव√स्था (ठहरना)+णिच्+अनीयर, पुक्] व्यवस्थापन के योग्य।

व्यवस्थापिका सभा—स्त्री० [सं० मध्यम० स०] विधान सभा। (दे०)

व्यवस्थापित—भू० कृ०[सं० वि+अव√स्था (ठहरना)+णिच् +क्त, पुक्] १. जिसके संबंध में किसी प्रकार का व्यवस्थापन हुआ हो। २. निर्धारित। ३. नियमित। ४. व्यवस्थित।

व्यवस्थाप्य—वि० [सं० वि+अव√स्था (ठहरना) +णिच्+यत्, पुक्] व्यवस्थापन के योग्य। व्यवस्थापनीय।

व्यवस्थित—भू० कृ०[सं० वि+अव√स्था (ठहरना) +वत] १. जिसकी ठीक व्यवस्था की गई हो। २. जो ठीक क्रम या सिलसिले से चल रहा हो।

व्यवस्थिति—स्त्री०[सं० वि+अव√स्था+क्तिन्] १. व्यवस्थापन। २. व्यवस्था।

व्यवहरण—पुं० [सं० वि-अव√हृ (हरना)+ल्युट् अन] १. अभियोगों आदि का नियमानुसार होनेवाला विचार। २. मुकदमे की सुनवाई या पेशी। व्यवहार।

व्यवहर्ता—पुं०[सं० वि+अव√हृ (हरण करना)+तृच्] न्यायकर्ता। न्यायाधिकारी।

व्यवहार—पुं०[सं० वि+अव√हृ+घञ्] १. क्रिया। काम। २. निर्णय, विचार आदि कार्यान्वित करना। ३. दूसरों से किया जानेवाला बरताव। ४. वस्तु आदि का किया जानेवाला उपभोग या भोग। काम में लाना। ५. रुपये-पैसे, लेन-देन आदि का काम। महाजनी। ६. मुकदमा। ७. किसी मुकदमे से संबंध रखनेवाली उसकी सारी प्रक्रिया। ८. न्याय। ९. शर्त। १०. स्थिति।

व्यवहारक—पुं०[सं० व्यवहार+कन्] १. वह जिसकी जीविका व्यवहार से चलती हो। २. वह जो न्याय या वकालत आदि करता हो। ३. वह जो व्यवहारों के लिए उचित उमर तक पहुँच चुका हो। वयस्क। बालिग।

व्यवहारजीवी (विन्)—पुं० [सं० व्यवहार√ जीव् (जीवित होना)+णिनि] वह जो व्यवहार अर्थात् मुकदमेबाजी या वकालत आदि के द्वारा अपनी जीविका चलाता हो।

व्यवहारज्ञ—पुं०[सं० व्यवहार√ज्ञा (जानना)+क] १. वह जो व्यवहार शास्त्र का ज्ञाता हो। २. वयस्क। बालिग।

व्यवहारतः—अव्य०[सं० व्यवहार+तस्]१. व्यवहार अर्थात् बरताव के विचार से। २. प्रायोगिक दृष्टि से जिस रूप में होना चाहिए ठीक उसी रूप में।

व्यवहारत्व—पुं०[सं० व्यवहार+त्व] व्यवहार का धर्म या भाव।

व्यवहार-दर्शन—पुं०[सं०] दे० 'आचार-शास्त्र'।

व्यवहार-निरीक्षक—पुं० [सं० ष० त०] वह अधिकारी जो सरकार की ओर से मुकदमे की पैरवी करता हो। (कोर्ट इन्स्पेक्टर)

व्यवहार-पाद—पुं०[सं०ष० त०]१. व्यवहार के पूर्वपक्ष, उत्तर, क्रिया पाद और निर्णय इन चारों का समूह। २. उक्त चारों में से कोई एक जो व्यवहार का एक पाद या अंश माना जाता है।

व्यवहार-मातृका—स्त्री०[सं० ष० त०] न्यायालय के दृष्टिकोण तथा विधि के अनुसार होनेवाली कार्रवाई। (स्मृति)

व्यवहार-विधि—स्त्री० [सं०ष०त०] वह शास्त्र जिसमें अपराधों का विवेचन तथा अपराधियों को समुचित दण्ड की व्यवस्था होती है। धर्मशास्त्र।

व्यवहार-शास्त्र—पुं०[सं० ष० त०] दे० 'व्यवहार-विधि'।

व्यवहार-सिद्धि—स्त्री० [सं० ष० त०] व्यवहार शास्त्र के अनुसार अभियोगों का निर्णय करना।

व्यवहारांग—पुं० [सं० ष० त०] व्यवहार के ये दो अंग दीवानी कानून और फौजदारी कानून।

व्यवहारासन—पुं०[सं० ष० त०, च० त० वा] वह आसन जिस पर बैठकर न्यायाधीश मुकदमे सुनते तथा अपना निर्णय सुनाते हैं।

व्यवहारास्पद—पुं०[सं०] वह निवेदन जो वादी अपने अभियोग के संबंध में राजा अथवा न्यायकर्ता के सम्मुख करता हो। नालिश। फरियाद।

व्यवहारिक—वि०[सं० व्यवहार+ठक्—इक] १. जो व्यवहार के लिए उपयुक्त या ठीक हो। व्यवहार योग्य। २. जो साधारणतः व्यवहार या उपयोग में आता हो। व्यावहारिक।

व्यवहारिक जीव—पुं० [सं० कर्म० स०] वेदांत के अनुसार विज्ञानमय कोष जो ज्ञानेन्द्रिय के साथ बुद्धि के संयुक्त होने पर प्रस्तुत होता है।

व्यवहारिका—स्त्री० [सं० व्यवहारिक+टाप्] संसार में रहकर उसके सब व्यवहार या कार्य करना। दुनियादारी।

व्यवहारी (रिन्)—वि० [सं० व्यवहार+इनि] १. व्यवहार करनेवाला। २. व्यवसाय में लगा हुआ। ३. (आचरण आदि) जिसका सामान्यतः उपयोग किया जाता हो। ४. मुकदमा लड़नेवाला।

व्यवहार्य—वि०[सं० वि+अव√हृ (हरण करना)+ण्यत्] जो व्यवहार में आने के योग्य हो। जिसका व्यवहार हो सके।

व्यवहित—वि० [सं० वि+अव√हा (छोड़ना)+क्त] छोड़ा हुआ।

व्यवहृत—भू० कृ० [सं० वि+अव√ हृ (हरण करना)+क्त] जो व्यवहार में आ चुका हो। व्यवहार में लाया हुआ।
पुं० व्यापार।

व्यवहृति—स्त्री०[सं० वि+अव√हृ (हरण करना)+क्तिन्] १. व्यापार या रोजगार में होनेवाला नफा। २. व्यवसाय। व्यापार। रोजगार। ३. काम करने का कौशल। होशियारी।

व्यवाय—पुं०[सं० वि+अव√ इण् (गमन)+घञ्] १. तेज। २. शुद्धि। ३. नतीजा। परिणाम। ४. आड़। ओट। ५. बाधा। विघ्न। ६. स्त्री-प्रसंग। संभोग।

व्यवायी—वि० [सं० वि+अव√इण् +णिनि] १. आड़ या ओट करनेवाला। २. कामुक।
पुं० ऐसी चीज जो शरीर में पहुँचकर पहले सब नाड़ियों में फैल जाय और तब पचे। जैसे—भाँग या अफीम।

व्यष्टि—पुं०[सं० वि√ अश्+क्तिन्] समष्टि का अंग या सदस्य व्यक्ति।

व्यसन—पुं०[सं० वि√ अस् (होना)+ल्युट्—अन] १. विपत्ति। आफत। संकट। २. कष्ट। तकलीफ। दुःख। ३. पतन। ४. विनाश। ५. अमांगलिक या अशुभ बात। ६. ऐसा कार्य या प्रयत्न जिसका कोई फल न हो। निरर्थक काम या बात। ७. किसी काम या बात के समय में होनेवाली ऐसी तीव्र प्रवृत्ति या रुचि जिसके फलस्वरूप मनुष्य प्रायः सदा उसी काम में लगा रहता हो। जैसे—लिखने-पढ़ने का व्यसन। ८ भोगविलास या विषय-वासना के संबंध में दूषित मनोविकारों के कारण होनेवाली ऐसी आसक्ति जिसके बिना रहना कठिन हो या जिससे जल्दी छुटकारा न हो सकता हो। बुरी आदत या लत। जैसे—जुए, मद्यपान या वेश्यागमन का दुर्व्यसन। ९. अशक्तता। या असमर्थता। १० दुर्भाग्य।

व्यसनार्त—वि०[सं० तृ० त०] जिसे किसी प्रकार का दैवी या मानवी कष्ट पहुँचा हो।

व्यसनिता—स्त्री०[सं० व्यसनिन् +तल्+टाप्]१. व्यसनी होने की अवस्था या भाव। २. व्यसन।

व्यसनी (निन्)—वि० [सं० व्यसन+इनि] जिसे किसी बुरे काम की लत पड़ गई हो।

व्यसनोत्सव—पुं०[सं० प०त०] वाम-मार्गियों का बहुत से लोगों को मिलाकर मद्यपान करना।

व्यस्त—वि०[सं० वि√ अस्+क्त] १. घबराया हुआ। व्याकुल। २. इस प्रकार काम में लगा हुआ कि दूसरी ओर ध्यान न दे सकता हो। ३. किसी के अन्दर फैला हुआ। व्याप्त। ४. फेंका हुआ। ५. जो ठीक क्रम से न हो। अव्यवस्थित। ६. अलग। पृथक्।

व्यस्तक—वि०[सं० व्यस्त+कन्] जिसमें हड्डी न हो। बिना हड्डी का।

व्यस्त गतागत—पुं०[सं०] एक प्रकार का चित्र काव्य जिसमें अक्षरों या वर्णों की स्थापना ऐसे कौशल से की जाती है कि यदि उसे सीधा अर्थात् आरंभ की ओर से पढ़ें तो एक अर्थ निकलता है, पर यदि उलटा अर्थात् अंत की ओर से पढ़ें तो कुछ दूसरा ही अर्थ निकलता है। (केशव) उदा०—सैनन माधव ज्यों सर के सब रेख सुदेस सुबेस सबे . . .।

व्यस्त-पद—पुं० [सं कर्म० स०]१. समास-रहित पद। 'समस्त' पद का विपर्याय। २. अव्यवस्थित या गड़बड़ कथन। (न्यायालय)

व्यह्न—पुं०[सं० मध्यम० स०] एक से अधिक दिनों में होनेवाला।

व्याकरण—पुं०[सं० वि+आ√ कृ (करना)+ल्युट्—अन] १. वह शास्त्र जिसमें बोलचाल तथा साहित्य में प्रयुक्त होनेवाली भाषा का स्वरूप, उसके गठन, उसके अवयवों, उनके प्रकारों और पारस्परिक संबंधों तथा उनके रचनाविधान और रूप परिवर्तन का विचार होता है। २. बोल-चाल में ऐसी पुस्तक जिसमें भाषा-संबंधी नियमों का संकलन होता है। ३. अनन्तर। भेद। ४. व्याख्या। ५. निर्माण। रचना। ६. धनुष की टंकार। ७. भविष्यद्वाणी। (बौद्ध)

व्याकर्ता (तृ)—पुं०[सं० वि+आ√कृ (करना)+तृच्] परमेश्वर।

व्याकर्षण—पुं०[सं० वि+ आ√कृष्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० आकृष्ट] =आकर्षण।

व्याकार—पुं०[सं० वि+आ√ कृ (करना)+अण्]१. विकृत आकार। २. रूप-परिवर्तन। ३. व्याख्या।

व्याकीर्ण—भू० कृ०[सं० वि+आ√ कृ (बिखेरना)+क्त]१. चारों ओर अच्छी तरह फैलाया हुआ। २. क्षुब्ध।

व्याकुंचन—पुं० [सं० वि + आ√कुञ्च+ल्युट्—अन्] [भू० कृ० व्याकुंचित] १. आकुंचन। सिकोड़ना। २. टेढ़ा करना। मोड़ना।

व्याकुल—वि० [सं०] [भाव० व्याकुलता]१. उत्सुकता, परेशानी, भय आदि के फलस्वरूप जिसके मन में घबराहट हो। बेचैन। २. जिसे कोई विशेष उत्कंठा या कामना न हो। ३. कातर। ४. काम में लगा हुआ। व्यस्त। ५. काँपता या हिलता हुआ।

व्याकुलता—स्त्री० [सं० व्याकुल+तल्+टाप्] १. व्याकुल होने की अवस्था या भाव। विकलता। घबराहट। २. कातरता।

व्याकृत—भू० कृ [सं० वि+आ√ कृ (करना)+क्त]१. पृथक् पृथक् किया हुआ। २. प्रकट किया हुआ। ३. जिसकी व्याख्या की गई हो। ४. रूपांतरित। परिवर्तित। ५. विकृत। ६. विश्लिष्ट।

व्याकृति—स्त्री०[सं० वि+आ√ कृ+क्तिन्] १. प्रकाश में लाने का काम। प्रकाशन। २. व्याख्या करने की क्रिया या भाव। ३. रूप में परिवर्तन करना। ४. विश्लेषण। ५. पृथक्करण।

व्याकोष—पुं०[सं० वि+आ√ कुश्+अच्] फूलों आदि का खिलना।
वि० खिला हुआ।

व्याकोष—पुं०[सं० वि+आ√कुष् (विकास करना)+अच्] १. विकास। २. खिलना।

वि०१. विकसित। २. खिला हुआ।

व्याक्रोश—पुं०[सं० वि+आ√ क्रुश् (निन्दा करना)+घञ्] १. किसी को क्रोधपूर्वक दी जानेवाली गाली। फटकार। २. चिल्लाहट।

व्याक्षेप—पुं०[सं० वि+आ√ क्षिप् (फेंकना)+घञ्]१. बिलंब। देर। २. घबराहट। विकलता। ३. बाधा। विघ्न। ४. परदा। ५. व्यवधान।

व्याख्या—स्त्री०[सं० वि+आ√ख्या+अङ्+टाप्] [भू० कृ० व्याख्यात] १. किसी कठिन या दुरूह उक्ति, पद, वाक्य या विषय को अधिक बोधगम्य, सरल या सुगम रूप से समझाने के लिए कही जानेवाली बात या किया जानेवाला विवेचन। किसी जटिल वाक्य आदि के अर्थ का स्पष्टीकरण। टीका। (एक्सप्लेनेशन) २. किसी वाक्य, कथन आदि का अपनी बुद्धि या अपने दृष्टिकोण से लगाया जानेवाला अर्थ। अनुवचन। अर्थयन। (इन्टरप्रेटेशन) ३. किसी विषय का कुछ विस्तार से किया हुआ वर्णन।

व्याख्यागम्य—वि०[सं० तृ० त०]१. जिसकी व्याख्या हो सकती हो। २. जो व्याख्या होने पर ही समझ में आ सकता हो।

पुं० वादी के अभियोग का ठीक-ठीक उत्तर न देकर इधर-उधर की बातें कहना।

व्याख्यात—भू० कृ०[सं० वि +आ√ ख्या (प्रकाशित करना)+क्त] १. जिसकी व्याख्या हुई हो या की गई हो। २. जिसकी टीका हो चुकी हो। ३. वर्णित।

व्याख्यातव्य—वि०[सं० वि+आ√ख्या+तव्यत्] जिसकी व्याख्या करने की आवश्यकता हो।

व्याख्याता (तृ)—पुं०[सं० वि+आ√ ख्या+तृच्]१. वह जो किसी विषय की व्याख्या करता हो। व्याख्या करनेवाला। २. वह जो व्याख्यान देता या भाषण करता हो।

व्याख्यान—पुं०[सं० वि+आ√ ख्या+ल्युट्—अन]१. किसी गूढ़ या गंभीर बात की व्याख्या करने की क्रिया या भाव। २. ऐसा ग्रंथ जिसमें किसी धार्मिक या लौकिक विषय के किसी कठिन ग्रन्थ या गूढ़ विषय की व्याख्या की गई हो। ३. किसी गूढ़ विषय के संबंध में विस्तारपूर्वक कही जानेवाली बातें। भाषण। वक्तृता। (लेक्चर)

व्याख्यानशाला—स्त्री० [सं० ष० त०] वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के व्याख्यान आदि होते हों।

व्याख्येय—वि०[सं० वि+आ√ ख्या+यत्] जिसकी व्याख्या होने को हो अथवा होना उचित हो।

व्याघट्टन—पुं० [सं० वि+आ√ घट्ट् (रगड़ना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० व्याघट्टित] १. अच्छी तरह रगड़ना। संघर्षण। २. मथना।

व्याघात—पुं०[सं० वि√आ√हन् (मारना)+घञ्, न—त] १. क्रम, सिलसिले आदि में पड़नेवाली बाधा। २. किसी प्रकार का होनेवाला आघात या लगनेवाला धक्का। ३. विशेषतः अधिकार या स्वत्व पर होनेवाला आघात। (इन्फ्रिंजमेंट) ४. किसी कार्य या प्रयत्न में होने वाला विषाद। ५. सत्ताइस योगों में से तेरहवाँ योग जिसमें शुभ कार्य करना वर्जित है। ६. काव्य में एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक ही उपाय के द्वारा अथवा एक ही साधन के द्वारा दो विरोधी कार्यों के होने का वर्णन होता है।

व्याघाती (तिन्)—वि० [सं०]१. व्याघात करनेवाला। २. विघ्नकारक।

व्याघ्र—पुं०[सं० वि+आ√ घ्रा (सूँघना)+क]१. बाघ। शेर। २. लाल रेंड़। ३. करंज।

व्याघ्र-ग्रीव—पुं०[सं० ब० स०] १. पुराणानुसार एक प्राचीन देश का नाम। २. उक्त देश का निवासी।

व्याघ्रचर्म—पुं०[सं० ष० त०] बाघ की खाल।

व्याघ्रता—स्त्री०[सं० व्याघ्र+तल्+टाप्] व्याघ्र का धर्म या भाव।

व्याघ्रनख—पुं०[सं० ब० स०] १. बघनखा। २. नख नामक गन्ध-द्रव्य। ३. थूहड़। ४. एक प्रकार का कंद।

व्याघ्रनखी—स्त्री०[सं०] नख या नखी नामक गंध द्रव्य।

व्याघ्रपद—पुं०[सं०]१. वशिष्ठ गोत्र के एक प्राचीन ऋषि जो ऋग्वेद के कई मंत्रों के द्रष्टा थे। २. एक प्रकार का गुल्म।

व्याघ्रमुख—पुं०[सं० ब० स०]१. बिल्ली। २. पुराणानुसार एक देश का निवासी। ३. एक पौराणिक पर्वत।

व्याघ्रवक्त्रा—पुं०[सं०]१. शिव। २. बिल्ली।

व्याघ्रिणी—स्त्री०[सं० व्याघ्र+इनि, +ङीप्] बौद्धों की एक देवी।

व्याघ्री—स्त्री०[सं० व्याघ्र+ङीप्] १. मादा व्याघ्र। २. एक प्रकार की कौड़ी। ३. नख नामक गन्ध द्रव्य।

व्याज—पुं०[सं० वि√अज् (गमनादि)+घञ्]१. मन में कोई बात रख कर ऊपर से कुछ और करना या कहना। छल। कपट। फरेब। धोखा। जैसे—व्याज-निन्दा, व्याज-स्तुति आदि। २. बाधा। विघ्न। ३. देर। विलंब।

†पुं०=ब्याज (सूद)।

व्याज-निंदा—स्त्री०[सं० तृ० त०]१. छल या बहाने से की जानेवाली किसी की निंदा। २. साहित्य में एक अलंकार जो उस समय माना जाता है जब किसी एक की निंदा इस प्रकार की जाती है कि उससे किसी दूसरे की निंदा प्रतीत होने लगती है।

व्याज-स्तुति—स्त्री०[सं० तृ० त०] १. ऐसी स्तुति जो व्याज या किसी बहाने से की जाय और ऊपर से देखने में स्तुति न जान पड़े फिर भी उसकी स्तुति ही हो। २. साहित्य में एक अलंकार जो उस समय माना जाता है जब कोई कथन अभिधा शक्ति की दृष्टि से निंदा सूचक होता है परन्तु जिसका वाक्यार्थ वस्तुतः स्तुतिपरक होता है।

व्याजोक्ति—स्त्री०[सं० तृ० त०]१. वह कथन जिसमें किसी प्रकार का व्याज अर्थात् छल हो। कपट-भरी बात। २. साहित्य में एक अर्थालंकार जो उस समय माना जाता है जब कोई ऐसी बात छिपाने का प्रयत्न किया जाता है जिसका रहस्य वस्तुतः खुल चुका हो।

व्याड—पुं०[सं० वि+आ√अड् (गमन)+घञ्] १. साँप। २. बाघ। ३. इन्द्र।

वि० धूर्त। चालबाज।

व्याडि—पुं०[सं० व्याड+इनि] एक प्राचीन वैयाकरण।

व्यादान—पुं०[सं० वि+आ √दा (देना)+ल्युट्—अन, कर्म० स०] १. फैलाव। विस्तार। २. उद्घाटन। खोलना। ३. निर्देश। ४. वितरण।

व्यादिष्ट—भू० कृ०[सं० वि+आ√ दिश् (कहना)+क्त]१. जो पहले कहा या बतलाया जा चुका हो। २. वितरित। ३. निर्दिष्ट।

व्यादेश—पुं०[सं० वि+आ√दिश्(कहना)+घञ्][भू० कृ० व्यादिष्ट] विधिक क्षेत्र में किसी व्यक्ति को कोई काम करने विशेषतः न करने के लिए दिया हुआ ऐसा आदेश जिसका पालन न करना न्यायालय का अपमान समझा जाता हो और फलतः दंडनीय हो। (इंजंक्शन)

व्याध—पुं० [सं०√व्यध् (मारना)+ण]१. वह व्यक्ति जो शिकार से जीविका उपार्जित करता हो। पक्षियों आदि को जाल में फँसानेवाला बहेलिया। २. प्राचीन भारत में उक्त प्रकार के काम करनेवाली एक जाति। ३. शबर नामक प्राचीन जाति।

वि० दुष्ट। पाजी।

व्याधा†—पुं०=व्याध।

व्याधि—स्त्री० [सं० वि+आ√ धा (रखना)+कि]१. किसी प्रकार का शारीरिक कष्ट। २. रोग। बीमारी (डिजीज)। ३. आपत्ति। विपत्ति। संकट। **विशेष**—साहित्य में इसे तेंतीस संचारी भावों के अंतर्गत रखा गया है, और मन या शरीर की अवस्था को इसका आधार माना गया है। यथा—मानस मंदिर में सती, पति की प्रतिमा थाप। जलती सी उस विरह में बनी आरती आप।—मैथिलीशरण।

४. कुट नामक ओषधि।

व्याधिकी—स्त्री० दे० 'रोग-विज्ञान'।

व्याधिघ्न—वि० [सं० व्याधि√हन्+क] व्याधि नष्ट करनेवाला।

व्याधित—भू० कृ०[सं० व्याध+इतच्] व्याधिग्रस्त।

पुं० रोग। बीमारी।

व्याधिहर—वि०[सं०] व्याधि दूर करनेवाला।

व्याधी (धिन्)—वि०[सं० व्याधि+इन्] जिसे कोई व्याधि हो। व्याधि से युक्त।

स्त्री०=व्याधि।

व्याध्य—वि०[सं० व्याधि+ष्यञ्] व्याध-संबंधी। व्याधि का।

पुं० शिव।

व्यान—पुं०[सं० वि√ आ√अन् +अच्]शरीर में रहनेवाली पाँच वायुओं में से एक जो सारे शरीर में संचार करनेवाली कही गई है। सारे शरीर में इसी द्वारा रस पहुँचता है, पसीना निकलता और खून चलता है तथा अन्य शारीरिक क्रियाएँ होती हैं।

व्यानद्ध—वि०[सं० वि+आ√नह् (बाँधना)+क्त]१. किसी के साथ अच्छी तरह से बँधा हुआ। २. परम्परा से संबद्ध।

व्यापक—वि० [सं० वि√आप् (प्राप्त होना)+ण्वुल्—अक्] १. चारों ओर फैला हुआ। २. छाया हुआ। ३. घेरने या ढकनेवाला। ४. जिसके कार्यक्षेत्र या पेटे में बहुत-सी बातें आती हों। (काम्प्रिहेन्सिव) ५. सामान्य।

व्यापक-न्यास—पुं०[सं० कर्म० स०] तांत्रिकों के अनुसार एक प्रकार का अंगन्यास, जिसमें किसी देवता का मूलमंत्र पढ़ते हुए सिर से पैर तक न्यास करते हैं।

व्यापत्ति—स्त्री०[सं० वि√ आप् (प्राप्त होना)+क्तिन्]१. मृत्यु। मौत। २. नाश। बरबादी। ३. हानि। ४. किसी अक्षर का लोप या उसकी जगह दूसरे अक्षर का आना। (व्याकरण)

व्यापन—पुं०[सं० वि√ आप् (प्राप्त होना)+ल्युट्—अन][वि० व्याप्य, भू० कृ० व्याप्त] १. किसी के अन्दर पहुँचकर चारों ओर फैलाना। २. ऊपर आकर अथवा चारों ओर से घेरना। ३. व्यापक रूप से सामान्य सिद्ध करना।

व्यापना—अ० [सं० व्यापन] १. चारों ओर फैलना। व्याप्त होना। २. किसी में समाना।

व्यापन्न—भू० कृ०[सं० वि+आ√पद् (स्थान)+क्त] १. विपत्ति या आफत में फँसा हुआ। २. मृत।

व्यापादन—पुं० [सं० वि+आ√पद्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० व्यापादित] [वि० व्यापादक-व्यापादनीय।] १. किसी को कष्ट पहुँचाने का उपाय सोचना। २. मार डालना। हत्या करना। ३. नष्ट करना।

व्यापार—पुं०[सं०]१. कार्य, आचरण, प्रयोग आदि के रूप में की जानेवाली कोई बात। किया जानेवाला या किया हुआ कोई काम। (ऐक्शन) जैसे—नाटक का मुख्य तत्त्व व्यापार है। २. क्रियात्मक रूप धारण करने का भाव। काम करना। (ऑपरेशन) ३. वह जो आचरण, व्यवहार, प्रयोग आदि के रूप में किया जाय। (कान्डक्ट) जैसे—जीवन व्यापार। ४. चीजें खरीदकर बेचने का काम। रोजगार। (ट्रेड, बिजिनेस)। ५. न्याय के अनुसार विषय के साथ होनेवाला इंद्रियों का संयोग। ६. मदद। सहायता।

व्यापारक—वि०[सं० व्यापार+कन्] व्यापार करनेवाला।

व्यापार-कर—पुं०[सं०]वह कर जो व्यापारियों पर कोई विशिष्ट व्यापार या रोजगार करने के संबंध में लगता है। (ट्रेड टैक्स)

व्यापार चिह्न—पुं० [सं० ष० त०] वह विशिष्ट चिह्न जो व्यापारी अपने विशिष्ट उत्पादनों आदि पर अंकित करते हैं। (ट्रेड मार्क)

व्यापारण—पुं०[सं० व्यापार√ नी (ढोना)+ड] १. आज्ञा देना। २. किसी काम पर किसी को नियुक्त करना। काम में लगाना।

व्यापार-तुला—स्त्री०[सं०] आज-कल देशों और राष्ट्रों के पारस्परिक व्यापार और विनिमय के क्षेत्र में वह स्थिति जिससे यह सूचित होता है कि एक देश ने दूसरे देश से कितना माल मँगाया और कितना वहाँ भेजा। (ट्रेड बैलेन्स)

विशेष—यदि माल मँगाया गया हो कम और भेजा गया हो अधिक तो व्यापार-तुला पक्ष में मानी जाती है, और इसकी विपरीत दिशा में विपक्ष में रहती है।

व्यापार मंडल—पुं० [सं०ष०त०] बड़े बड़े व्यापारियों की वह संस्था जिसका मुख्य उद्देश्य व्यापार बढ़ाना तथा व्यापारियों के हितों की रक्षा करना होता है।

व्यापाराना—वि०[सं० व्यापार+हिं० आना] १. व्यापार-संबंधी। २. व्यापार के नियमों के अनुसार होनेवाला। जैसे—व्यापाराना भाव।

व्यापारिक—वि० [सं०व्यापार+ठक्—इक] व्यापार या रोजगार-संबंधी। व्यापार का।

व्यापारित—भू० कृ०[सं०व्यापार+इतच्] १. व्यापार या काम में लगाया हुआ। २. किसी स्थान पर रखा या जमाया हुआ।

व्यापारी--पुं० [सं०, व्यापार+इनि] १. व्यापार करनेवाला व्यक्ति। २. व्यापार के द्वारा जीविका निर्वाह करनेवाला व्यक्ति।

व्यापी—वि० [सं० वि√आप् (प्राप्त होना)+णिनि] १. व्याप्त होनेवाला। २. सर्वत्र फैलनेवाला। ३. आच्छादक।

पुं० विष्णु का एक नाम।

व्याप्त—भू० कृ०[सं० वि√ आप् (प्राप्त होना)+क्त]१. जो किसी के अन्दर पूरी तरह से फैला या समाया हुआ हो। २. जिसमें कुछ फैला या समाया हुआ हो। ३. सब ओर से घिरा या ढका हुआ।

व्याप्ति--स्त्री०[सं०वि√आप्+क्तिन्] [वि० व्याप्त, व्याप्य] १. किसी वस्तु या स्थान के सब अंगों या भागों में फैले हुए या व्याप्त होने की अवस्था, क्रिया या भाव। (परवेज़न) २. साधारणतः सभी अवस्थाओं में व्याप्त होने का भाव। (जेनेरलिटी) ३. न्याय शास्त्र में किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का पूर्ण रूप से मिला या फैला हुआ होना। ४. विकृति विज्ञान में किसी रोग की समाप्ति (देखें) के बाद की वह अवस्था जिसमें वह रोग शरीर में रहता हो। जैसे--इस रोग की व्याप्ति काल १० दिन तक है। ५. आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक प्रकार का ऐश्वर्य। ६. ऐसा तत्त्व, नियम या सिद्धान्त जो सब जगह समान रूप से प्रयुक्त हो सकता अथवा होता हो। ७. फैलाव। विस्तार। ८. पूर्णता। ९. प्राप्ति।

व्याप्तित्व—पुं०[सं० व्याप्ति+त्व] व्याप्ति का धर्म या भाव।

व्याप्य--वि०[सं० वि√आप् (व्याप्त होना)+ण्यत्]१. जिसे अधिक व्यापक बनाया जा सकता हो या बनाया जाने को हो। २. जो व्याप्त हो सकता हो।

पुं० कार्य पूरा करने का साधन या हेतु।

व्याभंग—पुं०[सं०] विज्ञान में, वह स्थिति जिसमें प्रकाश की रेखा किसी अपारदर्शक पदार्थ का कोना छूती हुई निकलती है और उसमें के रंगों की रेखाएँ अलग-अलग दिखाई देती हैं। (डि-फ्रैक्शन)

व्याम—पुं०[सं० वि√अम्+घञ्] उतनी दूरी या लंबाई जितनी दोनों हाथ अगल-बगल खूब फैला देने पर एक हाथ की उँगलियों के सिरे से दूसरे हाथ की उँगलियों के सिरे तक होती है।

व्यामिश्र--पुं० [सं० वि+आ√मिश्र्+अच्] दो प्रकार के पदार्थों या कार्यों को एक में मिलाने की क्रिया।

वि० १. किसी के साथ मिला या मिलाया हुआ। २. अनेक प्रकारों से युक्त। ३. क्षुब्ध। ४. अन्यमनस्क। ५. संदिग्ध।

व्यामोह—पुं०[सं० वि+आ√मुह् (मुग्ध होना)+घञ्]१. विशेष रूप से होनेवाला मोह। २. ऐसी मानसिक अवस्था जिसमें घबराहट के कारण मनुष्य अपना कर्तव्य स्थिर करने में असमर्थ हो।

व्यायाम—पुं०[सं० वि+आ√यम्+घञ्]१. कोई ऐसी क्रिया या व्यापार जिसमें शरीर अथवा उसके किसी एक या अनेक अंगों को किसी असामान्य स्थिति में अथवा विभिन्न स्थितियों में इस उद्देश्य से लाया जाता है, जिससे शरीर पुष्ट हो तथा रक्त का संचार ठीक प्रकार से होता रहे। कसरत। (एक्सरसाइज़) २. पौरुष। ३. परिश्रम। ४. क्लांति। थकावट। ५. रति-क्रिया के उपरांत होनेवाली थकावट। ६. अभ्यास।

व्यायामिक—वि० [सं० व्यायाम+ठक्—इक]१. व्यायाम-सम्बन्धी। व्यायाम का। २. व्यायाम के फलस्वरूप होनेवाला।

व्यायामी (मिन्)—पुं०[सं० व्यायाम+इनि]१. वह जो व्यायाम करता हो। कसरत करनेवाला। कसरती। २. परिश्रमी। मेहनती। ३. व्यायाम से पुष्ट (शरीर)।

व्यायोग—पुं०[सं० वि+आ√युज+घञ्] साहित्य में दस प्रकार के रूपकों में से एक प्रकार का रूपक या दृश्य काव्य। इसके पात्रों में स्त्रियाँ कम और पुरुष अधिक होते हैं। इसमें गर्भ, विमर्ष और संधि नहीं होती।

व्यार्त—वि० [सं० तृ० त०] विशेष रूप से आर्त्त।

व्याल--पुं०[सं० वि+आ√ अल्+अच्]१. साँप। २. चीता। बाघ। शेर या ऐसा ही और कोई हिंसक जंतु। ३. वह सिखाया हुआ चीता जिसकी सहायता से दूसरे पशुओं का शिकार किया जाता है। ४. दुष्ट हाथी। ५. राजा। ६. विष्णु। ७. एक प्रकार का दंडक छंद।

वि० १. दुष्ट। पाजी। २. अपकार करनेवाला।

व्यालक—पुं०[सं० व्याल+कन्] १. दुष्ट या पाजी हाथी। २. हिंसक जन्तु।

व्यालग्राही(हिन्)—पुं०[सं०] सँपेरा।

व्यालग्रीव—पुं०[सं०]१. वृहत्संहिता के अनुसार एक देश का नाम। २. उक्त देश का निवासी।

व्यालता—स्त्री०[सं० व्याल+तल्+टाप्] व्याल का धर्म या भाव।

व्याल-मृग—पुं०[सं०] बाघ। शेर।

व्यालि—पुं०[सं० वि-आ√अड्(उद्यम करना)+इण्, ड—ल] व्यालि नामक प्राचीन ऋषि और वैयाकरण।

व्यालिक—पुं०[सं० व्याल+ठन्—इक] सँपेरा।

व्याली—पुं०[सं० व्याल+इनि] शिव।

व्यालीढ—पुं० [सं० वि+आ√लिह् (आस्वाद लेना)+क्त] साँप का ऐसा दंश जिसमें केवल एक या दो दाँत कुछ-कुछ लगे हों और घाव में से खून न बहा हो।

व्यालुप्त—पुं०[सं० वि+आ√लुप् (जुदा करना)+क्त] साँप का ऐसा दंश जिसमें दो दांत भरपूर बैठे हों और घाव में से खून भी निकला हो।

व्यालू†—पुं०=व्यालू।

व्यावरण—पुं० [सं०] [भू० कृ० व्यावृत, कर्त्ता व्यावर्तक]१. चारों ओर से घेरना। २. किसी शक्ति के फलस्वरूप आकार, रूप आदि का विकृत होना। (कन्टोर्शन)

व्यावर्त—पुं०[सं० वि+आ√वृत्त् (वर्तमान)+अच्]१. आगे की ओर निकली हुई नाभि। २. चकवँड़। चक्रमर्द।

व्यावर्तक—वि०[सं० वि+आ√ वृत् (वर्तमान रहना)+णिच्+ण्वुल्—अक]१. चारों ओर से घूमनेवाला। २. पीछे लौटनेवाला।

व्यावर्तन—पुं०[सं० वि+आ√ वृत् (वर्तमान रहना)+णिच्+ल्युट्—अन] १. चारों ओर घूमना। २. पीछे की ओर लौटना। ३. घुमाव। ४. मोड़।

व्यावसायिक—वि०[सं० कर्म०स०] व्यवसाय या पेशे से संबंध रखनेवाला।

व्यावहारिक—वि०[सं० व्यवहार+ठक्—इक] १. व्यवहार (बरताव या मुकदमे) संबंधी। २. जिसे व्यवहार में लाया जा सकता हो। ३. जो व्यवहार में आ सकता हो। ४. (व्यक्ति) जो व्यवहारशील हो। अच्छा बरताव करनेवाला।

व्यावहारिक-कला—स्त्री०[सं०]ललित कला से भिन्न वे कलाएँ जो प्रयोग या प्रयोग में आनेवाली वस्तुओं की रचना से सम्बन्ध रखती हैं। (ऐप्लायड आर्टस) जैसे—कपड़े, मिट्टी के बरतन, मेज, कुर्सियाँ आदि बनाने की कला।

व्यावहारिक-विज्ञान—पुं०[सं०] ऐसा विज्ञान जिसकी सब बातें प्रयोग या परीक्षा के द्वारा ठीक सिद्ध की जा सकती हों। (एक्सपेरिमेन्टल साइन्स)

व्यावहार्य—वि०[सं०व्यवहार+ष्यञ्] जो व्यवहार या कार्य में आने के योग्य हो।

व्याविध—वि०[सं०वि+आ√ विध् +क] विभिन्न प्रकार का। तरह तरह का।

व्यावृत्त—वि०[सं० वि√ आ+वृत्+क्त]१. छूटा हुआ। निवृत्त। २. मना किया हुआ। निषेधित। ३. टूटा हुआ। खंडित। ४. अलग या पृथक् किया हुआ। ५. विभक्त।

व्यावृत्ति—स्त्री०[सं० वि+आ√ वृत्+क्तिन्] १. मुँह मोड़ना। २. घेरना। ३. पीछे की ओर लुढ़कना। ४. (नेत्रादि) घुमाना। ४. प्रशंसा। स्तुति। ५. निषेध। मनाही। ६. बाधा। विघ्न। ७. निराकरण। ८. नियोग। ९. बचाकर रखा हुआ धन।

व्यासंग—पुं० [सं० वि+ आ√ सञ्ज् (साथ रहना)+घञ्] १. घनिष्ठ संपर्क। २. आसक्ति। ३. मनोयोग। ४. जोड़। योग। ५. पार्थक्य।

व्यासंगी (गिन्)—वि० [सं० व्यासंग+इनि] मनोयोगपूर्वक कार्य में लगा रहनेवाला।

व्यास—पुं० [सं० वि√ अस्+घञ्] १. पराशर के पुत्र कृष्ण द्वैपायन जिन्होंने वेदों का संकलन, विभाग और संपादन किया था। कहा जाता है कि अठारहों पुराणों, महाभारत, भागवत और वेदांत आदि की रचना भी इन्होंने ही की थी। २. कथावाचक (ब्राह्मण)। ३. किसी वृत्त में की वह रेखा जो उसके केन्द्र से होकर एक सिरे से दूसरे सिरे तक सीधी जाती हो। ४. फैलाव।

व्यासकूट—पुं०[सं० ष० त०]१. महाभारत में आए हुए वेदव्यास के कूट श्लोक। २. वह कूट श्लोक जो सीता हरण होने पर रामचन्द्र जी ने माल्यवान् पर्वत पर कहे थे और जिनसे उन्हें कुछ शांति मिली थी।

व्यासक्त—वि०[सं० वि+आ√ सञ्ज् (संग रहना)+क्त] बहुत अधिक आसक्त।

व्यासक्ति—स्त्री० [स० वि+आ√ सञ्ज्+क्तिन्] विशेष रूप से होनेवाली आसक्ति।

व्यास गद्दी—स्त्री० [सं०+हिं०] ऊँची चौकी या आसन जिस पर बैठकर पंडित या व्यास कथा-वार्ता कहते हैं। व्यास-पीठ।

व्यास-गीता—स्त्री०[सं० ष० त०] एक उपनिषद् का नाम।

व्यासता—स्त्री० [सं० व्यास+तल्+टाप्] व्यास होने की अवस्था, धर्म या भाव।

व्यासत्व—पुं०[सं० व्यास+त्व]=व्यासता।

व्यास-पीठ—पुं० [सं० ष० त०] वह ऊँचा आसन जिस पर बैठकर व्यास लोग पौराणिक कथाएँ कहते हैं। व्यास की गद्दी।

व्यास-वन—पुं०[सं०] एक प्राचीन वन या जंगल।

व्यास-सूत्र—पुं०[सं०] वेदांत सूत्र।

व्यासारण्य—पुं०[सं० मध्यम० स०] व्यास-वन नामक प्राचीन वन।

व्यासार्द्ध—पुं०[सं० ष० त] ज्यामिति में वृत्त के केन्द्र से उसकी परिधि तक खींची जानेवाली सीधी रेखा जो मान में व्यास की आधी होती है।

व्यासासन—पुं०[सं० ष० त०] व्यास गद्दी। व्यास पीठ।

व्यासिद्ध—वि० [सं० वि+आ√ सिध् (मांगल्यप्रद)+क्त] दे० 'प्रारक्षित'।

व्यासीय—वि० [सं० व्यास+छ—ईय] व्यास का।

व्यासेध—पुं०[सं० वि+आ√सिध् (मांगल्य प्रद)+घञ्] दे० 'प्रारक्षण'।

व्याहत—वि०[सं० वि+आ√हन् (मारना)+क्त]१. मना किया हुआ। निवारित। निषिद्ध। २. निरर्थक। व्यर्थ।

पुं० साहित्य में एक प्रकार का अर्थदोष जो उस दशा में माना जाता है जब पहले कोई बात कहकर उसी के साथ तुरन्त कोई ऐसी दूसरी असंगत या विरोधी बात कही जाय जो ठीक न बैठती हो। यथा—चंद्रमुखी के बदन-सम दिनकर कह्यो न जाइ।

व्याहति—स्त्री० [सं० वि+आ√ हन् (मारना)+क्तिन्] बाधा। विघ्न।

व्याहरण—पुं०[सं० वि+आ√ हृ+ल्युट्—अन] [भू० कृ०व्याहृत]१. उक्ति। कथन। २. कहानी। किस्सा।

व्याहार—पुं०[सं० वि+आ√ हृ (हरण करना)+घञ्] १. वाक्य। जुमला। २. प्रश्न करना। पूछना।

व्याहृत—भू० कृ०[सं० वि+आ√हृ (हरण करना)+क्त] १. कहा हुआ। कथित। २. खाया हुआ। भुक्त।

व्याहृति—स्त्री०[सं० वि+आ√हृ (हरण करना)+क्तिन्]१. उक्ति। कथन। २. भूः भुवः आदि सप्त लोकात्मक मंत्र।

व्युच्छित्ति—स्त्री०[सं०]=व्युच्छेद।

व्युच्छिन्न—भू० कृ०[सं० वि+उत्√छिद् (फाड़ना)+क्त] १. उन्मूलित। २. विनष्ट।

व्युच्छेद—पुं०[सं० वि+उत्√ छिद् (फाड़ना)+घञ्]१. अच्छी तरह किया हुआ उच्छेद। २. विनाश। बरबादी।

व्युति—स्त्री०[सं०] बुनने अथवा सीने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

व्युत्क्रम—पुं०[सं० वि+उत्√ क्रम्+घञ्]१. व्यतिक्रम। २. मृत्यु। ३. अपराध।

व्युत्क्रमण—पुं०[सं० वि+उत√ क्रम् (चलना)+ल्युट्—अन] उल्लंघन करने की क्रिया या भाव।

व्युत्थान—पुं०[सं० वि+उत्√ स्था (ठहरना)+ल्युट—अन]१. खड़े होना। २. किसी के विरुद्ध खड़े होना। ३. एक प्रकार का नृत्य। ४. समाधि। ५. योग के अनुसार चित्त की क्षिप्त, मूढ़ और विक्षिप्त ये तीनों अवस्थाएँ या चित्तभूमियाँ जिनमें योग का साधन नहीं हो सकता। इन भूमियों में चित्त बहुत चंचल रहता है।

व्युत्थित—भू० कृ० [सं० वि+उत्+ स्था (ठहरना)+क्त] जो किसी के विरुद्ध खड़ा हुआ हो। जो किसी का विरोध कर रहा हो।

व्युत्पत्ति—स्त्री०[सं० वि√उत्√पद्+क्तिन्]१. किसी चीज का मूल उद्गम या उत्पत्ति का स्थान। २. किसी शब्द का वह मूल रूप जिससे निकल या बिगड़कर उसका प्रस्तुत रूप बना हो। (डेरिवेशन) ३. व्याकरण, कोश आदि में किसी शब्द की मौलिक रचना आदि का विवरण। जैसे—व्यूह की व्युत्पत्ति है-वि√ऊह्+घञ्। ४. किसी विज्ञान या शास्त्र का अच्छा ज्ञान। बहुत सी बातों की जानकारी। बहुज्ञता। जैसे—दर्शनशास्त्र में उनकी अच्छी व्युत्पत्ति है।

व्युत्पत्तिक—वि०[सं०]१. व्युत्पत्ति से सम्बन्ध रखनेवाला। २. व्युत्पत्ति के रूप में होनेवाला। (डेरिवेटिव)

व्युत्पन्न—भू० कृ०[सं० वि०+ उत्√ पद्+क्त] १. जिसकी उत्पत्ति हुई हो। उत्पन्न। २. (शब्द) जिसकी व्युत्पत्ति ज्ञात हो।

व्युत्पादक—वि०[सं० वि+उत्√पद्+ण्वुल्—अक]उत्पन्न करनेवाला। उत्पादक।

व्युत्पादन—पुं०[सं०वि+उत्√पद्(स्थान आदि)+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० व्युत्पादित] १. उत्पन्न करना। २. व्युत्पत्ति।

व्युत्पाद्य—वि०[सं० वि+ उत्√ पद्+णिच्+यत्] १.जिसके मूल रूप की व्याख्या की जा सके। २. जिसकी व्युत्पत्ति बतलाई जा सके।

व्युत्सर्ग—पुं० [सं० वि+उत्√सृज् (छोड़ना)+घञ्] १. त्याग। विरक्ति। २. शरीर के मोह का त्याग। (जैन)

व्युपदेश—पुं०[सं० वि+ उप√दिश् (आदेश करना)+घञ्]१. उपदेश। २. बहाना। ३. छद्म। छल।

व्युपरम—पुं०[सं० ब० स०]१. शांति। २ निवृत्ति। ३. स्थिति। ४. बाधा। ५. विराम। ६. अन्त।

व्युपशम—पुं०[सं० ब० स०] अशांति।

व्युष—स्त्री० [सं० वि√उष् (दाह करना आदि) +क] प्रातःकाल। सवेरा।

व्युष्ट—पुं०[सं० वि√ उष्+क्त] १. प्रभात। तड़का। २. दिन। ३. फल।

भू० कृ० १. जला हुआ। २. चमकीला। ३. स्पष्ट।

व्युष्टि—स्त्री०[सं० वि√उष्+क्तिन्]१. फल। २. समृद्धि। ३. प्रशंसा। स्तुति। ४. उजाला। प्रकाश। ५. प्रभात। तड़का। ६. जलन। दाह। ७. इच्छा। कामना।

व्यूक—पुं०[सं०]१. एक प्राचीन देश। २. उक्त देश का निवासी।

व्यूढ़—भू० कृ०[सं० वि√ वह् (ढोना)+क्त] [स्त्री० व्यूढा]१. ब्याहा हुआ। विवाहित। २. मोटा। ३. अच्छा। बढ़िया। ४. तुल्य। समान। ५. दृढ़। पक्का। मजबूत। ६. फैला हुआ। विस्तृत। ७. विकसित। ८. व्यूह के रूप में आया या लाया हुआ।

व्यूढ़ापति—पुं०[सं०] वह व्यक्ति जो अपनी विवाहित पत्नी की रति या संभोग से संतुष्ट रहता हो और पर-स्त्री की कामना न करता हो।

व्यूढि—स्त्री०[सं० वि√ वह (ढोना)+क्तिन्]१. ठीक ठीक क्रम। विन्यास। २. पंक्ति। ३. व्यह।

व्यूत—भू० कृ०[सं० वि√वेञ् (बुनना)+क्त] बुना या सिया हुआ।

व्यूति—स्त्री० [सं० वि√वेञ्]+क्तिन्] बुनने या सीने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

व्यूह—पुं०[सं० वि√ऊह् (वितर्क करना)+घञ्]१. समूह। जमघट। २. निर्माण। रचना। ३. तर्क। ४. देह। शरीर। ५. परिणाम। नतीजा। ६. फौज। सेना। ७. युद्ध में सुदृढ़ रक्षा पंक्ति बनाने के उद्देश्य से सैनिकों का किसी विशेष क्रम से खड़ा होना। ८. अंश। भाग। योजना।

व्यूहन—पुं०[सं० वि√ ऊह् + ल्युट्—अन] व्यूह रचने की क्रिया या भाव। २. रचना। विस्थापन।

व्यूहित—भू० कृ० [सं० वि√ ऊह् +क्त] व्यूह के रूप में किया या लगाया हुआ।

व्योम—पुं०[सं० √ व्ये+मनिन्, व्योमन्, नि० सि०]१ आकाश। अंतरिक्ष। आसमान। २. जल। पानी। ३. बादल। मेघ। ४. शरीरस्थ वायु। ५. अभ्रक। ६. कल्याण। मंगल। ७. विष्णु। ८. एक प्रजापति।

व्योमक—पुं०[सं० व्योमन्+कन्] एक तरह का आभूषण। (बौद्ध)

व्योमकेश—पुं०[सं० ब० स०] शिव।

व्योम गंगा—स्त्री०=अकाश गंगा।

व्योमग—वि०[सं० व्योमन्√गम्+ड] १. आकाशचारी। २. स्वर्गीय।

व्योमगमनी—स्त्री०[सं० ब० स०] इंद्रजाल का वह भेद जिसके द्वारा मनुष्य हवा में उड़ता हुआ दिखाई पड़ता है।

व्योमचर—वि०[सं० व्योमन्√चर्+अच्] वह जो आकाश में विचरण करता हो। आकाशचारी।

पुं० १. देवता। २. पक्षी।

व्योमचारी—वि०, पुं०=व्योमचर।

व्योम धूम—पुं०[सं० ष० त०] बादल।

व्योमपाद—पुं०[सं० ब० स०] विष्णु का एक नाम।

व्योम-पुढम—पुं० [सं०] अस्तित्वहीन अथवा कल्पित वस्तु। आकाश-कुसुम।

व्योम-मंडल—पुं०[सं० ष० त०] १. आकाश। आसमान। २. झंडा। ध्वजा।

व्योम-मृग—पुं० [सं० ष० त०] चन्द्रमा के दस घोड़ों में से एक।

व्योमयान—पुं० [सं०] १. सूर्य। २. आकाश में चलनेवाला यान। आकाश-यान। (स्पेस शिप) ३. हवाई जहाज।

व्योमवल्ली—स्त्री० [सं० ष० त०] आकाशवल्ली। अमरबेल।

व्योम-सरिता—स्त्री०[सं० ष० त०]=आकाश-गंगा।

व्योमस्थली—स्त्री०[सं० ष० त०] पृथ्वी। जमीन।

व्योमाभ—पुं०[सं०] गौतम बुद्ध का एक नाम।

व्योमी (मिन्)—पुं०[सं० व्योमन्+इनि] चन्द्रमा के दस घोड़ों में से एक।

व्योमोदक—पुं०[सं० ष० त०] वर्षा का जल। बरसात का पानी।

व्योम्निक—वि० [सं० व्योमन्+ठक्—इक] व्योम-संबंधी। व्योम या आकाश का।

व्रज—पुं०[सं०√व्रज् (जाना)+क]१. जाने या चलने की क्रिया। व्रजन। गमन। २. झुंड। समूह। ३. गोकुल, मथुरा, वृन्दावन के आस-पास के प्रदेश का नाम।

व्रजक—वि०[सं०√व्रज् (गमनादि)+ण्वुल्—अक]भ्रमण करनेवाला। पुं० संन्यासी।

व्रजन—पुं०[सं०√व्रज्+ल्युट्—अन] चलना या जाना। गमन।

व्रजनाथ—पुं०[सं० ष० त०] ब्रज के स्वामी श्रीकृष्ण।

व्रजभाषा—स्त्री०[सं०ष० त०] व्रज प्रदेश में बोली जानेवाली भाषा। ग्यारहवीं शताब्दी से इसमें निरंतर रचनाएँ प्रस्तुत हो रही हैं।

व्रज-मंडल—पुं० [सं० ष० त०] ब्रज और उसके आस-पास का प्रदेश।

व्रजमोहन—पुं० [सं० व्रज√मुह्+णिच्+ल्युट्–अन, ष० त०] श्रीकृष्ण।

व्रजराज—पुं०[सं० ष० त०] श्रीकृष्ण।

व्रजवल्लभ—पुं०[सं० ष० त०] श्रीकृष्ण।

व्रजांगन—पुं०[सं० ष० त०] गोष्ठ।

व्रजांगना—स्त्री०[सं० ष० त०] १. व्रज की स्त्री। २. गोपी (श्रीकृष्ण के विचार से)।

व्रजित—भू० कृ०[सं०√व्रज्+क्त] गया हुआ। प्रस्थित।
पुं० १. गमन। २. भ्रमण।

व्रजी—स्त्री०[सं० व्रज] व्रजभाषा (व्रज की बोली)।

व्रजेंद्र—पुं०[सं० ष० त०] १. नंदराय। २. श्रीकृष्ण।

व्रजेश्वर—पुं०[सं० ष० त०] श्रीकृष्ण।

व्रज्य—वि०[सं०√व्रज्(गमनादि)+क्यप्] व्रजन संबंधी।

व्रज्या—स्त्री०[सं० व्रज्य+टाप्] १. घूमना-फिरना, टहलना या चलना। पर्यटन। २. गमन। जाना। ३. आक्रमण। चढ़ाई। ४. पगडंडी। ५. ढेर या समूह बनाना। ६. दल। जत्था।

व्रण—पुं० [सं०√व्रण् (अंग चूर्ण करना)+अच्] १. किसी प्रकार के प्राकृतिक विकार से होनेवाला घाव। २. क्षत। घाव। ३. छिद्र। छेद। ४. दोष।

व्रण-ग्रंथि—स्त्री० [सं० ष० त०] वह गाँठ जो फोड़े के ऊपर पड़ती है।

व्रणन—पुं० [सं०√व्रण्+ल्युट्-अन] [भू० कृ० व्रणित] छेद करना। छेदना।

व्रण-रोपिणी—स्त्री० [सं०] एक प्रकार की छोटी पीली लंबी हर्रें। रोहिणी।

व्रण-शोथ—पुं०[सं० ष० त०] फोड़े, घाव आदि में होनेवाली सूजन।

व्रणारि—पुं० [सं० ष० त०] १. बोल नामक गंधद्रव्य। २. अगस्त वृक्ष।

व्रणित—भू० कृ० [सं० व्रण+इतच्] १. जिसे घाव लगा हो। आहत। २. जिसे व्रण हुआ हो। ३. जो छेदा या बेधा गया हो।

व्रणिल—वि०[सं० व्रण+इलच्] व्रणी।

व्रणी (णिन्)—पुं०[सं० व्रण+इनि] १. जिसे व्रण हुआ हो। २. जिसके हृदय पर गहरी चोट लगी हो।

व्रणीय—वि०[सं० व्रण+छ–ईय] १. व्रण-संबंधी। २. व्रण के फलस्वरूप होनेवाला।

व्रण्य—वि०[सं०√व्रण् (अंगचूर्ण करना)+क्यप्] जो व्रण अच्छा करने के लिए गुणकारी हो।

व्रत—पुं०[सं०√वृ+अतच्] १. धार्मिक या नैतिक पवित्रता के निमित्त किया जानेवाला दृढ़ निश्चय या संकल्प। २. ऐसा दृढ़ निश्चय जिसमें किसी प्रकार का त्याग अपेक्षित हो। ३. पुण्य प्राप्ति या धार्मिक अनुष्ठान के लिए किया जानेवाला उपवास। जैसे—एकादशी का व्रत। ४. नियम। ५. आदेश।

व्रत-चर्या—स्त्री०[सं० ष० त०] किसी प्रकार का व्रत करने या रखने का काम।

व्रतचारिता—स्त्री०[सं० व्रतचारिन्+तल्+टाप्] व्रतचारी होने की अवस्था, धर्म या भाव।

व्रतचारी—पुं० [सं० व्रतचारिन्] वह जो किसी प्रकार के व्रत का आचरण या अनुष्ठान करता हो। व्रत करनेवाला।

व्रतती—स्त्री० [सं० प्र√तन् (विस्तार करना)+क्तिन्, पृषों० सिद्धि, प्र–त्र] १. विस्तार। फैलाव। २. लता।

व्रतधर—वि०[सं० व्रत√धृ+अच्] जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो। व्रत करनेवाला।

व्रत-पक्ष—पुं०[सं० ष० त०] भाद्र मास का शुक्ल पक्ष।

व्रत-भिक्षा—स्त्री०[सं०] वह भिक्षा जिसे बालक को यज्ञोपवीत संस्कार के समय माँगने का विधान है।

व्रत-संग्रह—पुं०[सं० ष० त०] वह दीक्षा जो यज्ञोपवीत के समय गुरु से ली जाती है।

व्रतस्थ—वि०[सं० व्रत√स्था (ठहरना)+क] जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो।
पुं० ब्रह्मचारी।

व्रत-स्नातक—पुं०[सं० तृ० त०+कन्] तीन प्रकार के ब्रह्मचारियों में से वह ब्रह्मचारी जिसने गुरु के यहाँ रहकर व्रत तो समाप्त कर लिया हो, पर जो बिना वेद समाप्त किए ही घर लौट आया हो।

व्रताचरण—पुं०[सं० ष० त०] किसी प्रकार के व्रत का पालन।

व्रतादेश—पुं०[सं० ष० त०] १. व्रत का आदेश देना। २. यज्ञोपवीत संस्कार जिसमें बालक को व्रत दिया जाता है। ३. व्रतादेश।

व्रतादेशन—पुं०[सं० ष० त०] वेदी का वह प्रदेश जो उपनयन संस्कार के बाद ब्रह्मचारी को दिया जाता है।

व्रतिक—वि० [सं० व्रत+इनि,+कन्] १. जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो। २. व्रत-संबंधी। ३. व्रत के फलस्वरूप होनेवाला।

व्रती—पुं०[सं० व्रत+इनि, व्रतिन्] [स्त्री० व्रतिनी] १. वह जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो। जैसे—वेद-व्रती। २. यज्ञ करनेवाला यजमान। ३. ब्रह्मचारी।

व्रतेश—पुं०[सं० ष० त०] शिव।

व्रतोपनयन—पुं०[सं० ष० त०] उपनयन संस्कार।

व्रतोपायन—पुं०[सं० ष० त०] कोई धार्मिक अनुष्ठान आरंभ करना।

व्रत्य—वि०[सं० व्रत+यत्] १. वह जिसने कोई व्रत धारण किया हो।
पुं० ब्रह्मचारी।

व्रन—पुं० १. =वर्ण। २. =व्रण।

व्रश्चन—पुं०[सं०√व्रश्च्(काटना)+ल्युट्–अन] १. काटना या छेदना। २. सोना, चाँदी आदि काटने की छेनी। ३. लकड़ी का बुरादा। ४. कुल्हाड़ी।

व्राचड़—पुं०[अप०] १. प्राचीन अपभ्रंश भाषा का वह रूप जो प्रायः एक हजार बरस पहले सिंध प्रदेश में प्रचलित था, और जिससे आधुनिक सिंधी भाषा की उत्पत्ति मानी जाती है। (इसका साहित्य अभी तक नहीं मिला है।) २. पैशाची भाषा का एक भेद।

व्राज—पुं०[सं०√व्रज्+घञ्] १. चलना या जाना। गमन। २. कुत्ता।

व्राजिक--पुं०[सं० व्रजि+कन्] एक प्रकार का उपवास जिसमें केवल दूध पर रहा जाता है। (संन्यासी)

व्रात--पुं० [सं०√वृ+अतच्,पृषो० सिद्धि] १. आदमी। मनुष्य। २. जत्था। दल। ३. जीविका उपार्जन के लिए किया जानेवाला परिश्रम या प्रयत्न। ४. जातिच्युत ब्रह्मचारी की संतान।

व्रात्य--वि०[सं० व्रात+यत्] व्रत-संबंधी। व्रत का।

पुं० १. ऐसा आर्य या हिन्दू जिसके पूरे धार्मिक संस्कार न हुए हों। २. ऐसा ब्राह्मण, क्षत्रिय या शूद्र जो वैदिक कृत्य न करता हो। ३. वर्णसंकर।

व्रात्यता--स्त्री०[सं० व्रात्य+तल्+टाप्] व्रात्य होने की अवस्था या भाव।

व्रात्यत्व--पुं०[सं० व्रात्य+त्व]=व्रात्यता।

व्रात्य-स्तोम--पुं० [सं० मध्यम० स०] एक प्रकार का यज्ञ जो व्रात्य या संस्कारहीन लोग किया करते थे।

व्रिख--पुं० १.=वृक्ष। २.=वृष।

व्रिध†-- वि०=वृद्धा।

व्रीड़†--पुं०[सं०√व्रीड् (लज्जा)+घञ्] लज्जा। शरम।

व्रीडन--पुं०[सं०√व्रीड्+ल्युट्-अन] १. लज्जा। २. नम्रता।

व्रीडा--स्त्री०[सं०√व्रीड्+अ+टाप्] लज्जा। शरम।

विशेष--साहित्य में इसकी गिनती संचारी भावों में है।

व्रीडित--भू० कृ० [सं०√व्रीड् (लज्जा)+क्त, व्रीडा+इतच] १. लज्जित। २. विनीत।

व्रीहि--पुं०[सं०√वृह+इन्, पृषो० सिद्धि] १. धान। चावल। २. धान का खेत। ३. अनाज। अन्न।

व्रीहिमुख--पुं०[सं०] एक प्रकार का शल्य। (सुश्रुत)

व्रीहि-श्रेष्ठ--पुं०[सं० स० त०] शालि धान्य।

व्रीही--पुं०[सं० व्रीहि+इनि, व्रीहिन्]वह खेत जिसमें धान बोया गया हो।

पुं०=व्रीहि।

व्रीह्य पूप--पुं०[सं० मध्यम०स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का पूआ, जो चावल पीसकर बनाया जाता था।

व्रैह--वि० [सं० व्रीहि+अण्] १. व्रीहि अर्थात् चावल-संबंधी। २. चावल का बना हुआ।

व्हिस्की--स्त्री० दे०'ह्विस्की'

व्हेल--स्त्री०[अं०]मछली की तरह का एक बहुत बड़ा और प्रसिद्ध स्तनपायी समुद्री जंतु। ह्वेल।

श

श--देवनागरी वर्णमाला का तीसवाँ वर्ण जो व्याकरण और भाषा विज्ञान के अनुसार ऊष्म, तालव्य, अघोष, महाप्राण ईषद्विवृत व्यंजन है।

शंक--पुं० [सं०√शंक्+घञ्] १. शंका। २. भय।

शंकना--अ० [सं० शंका] १. संदेह करना। २. डरना।

शंकनीय--वि० [सं०√शंक् +अनीयर्] १. जिसके विषय में कोई शंका हो सकती हो या उठाई जा सकती है। शंक्य। २. जिसके ठीक होने के संबंध में किसी को दृढ़ निश्चय न हो; और इसी लिए जिसके संबंध में कुछ प्रश्न किया जा सकता हो। (क्वेश्चनेबुल)

शंकर--पुं० [सं० शं√कृ+अच्] १. शिव। २. शंकराचार्य। ३. भीमसेनी कपूर। ४. एक प्रकार का छन्द। ५. संगीत में एक प्रकार का राग।

वि० [स्त्री० शंकरा] कल्याणकारी। शुभंकर।

†वि०, पुं०=संकर।

शंकर-शैल--पुं० [सं० ष० त०] कैलास पर्वत।

शंकरा--स्त्री० [सं० शंकर+टाप्] १. पार्वती। २. मंजीठ। ३. शमी।

पुं० शंकर नामक राग।

वि० स्त्री० कल्याण करनेवाली।

शंकराचार्य--पुं० [सं० मध्य० स०] १. दक्षिण भारत के केरल प्रदेश के एक प्रसिद्ध शैव आचार्य जो अद्वैत मत के प्रतिपादक तथा प्रवर्त्तक थे। (सन् ७८८-८२० ई०)

विशेष--इन्होंने बदरिकाश्रम, करवीर, द्वारका और शारदा नाम के चार पीठ स्थापित किए थे, जिनके अधिष्ठाता अभी तक शंकराचार्य कहे जाते हैं।

शंका--स्त्री० [सं०√शंक+अ+टाप्] १. किसी प्रकार के भावी अनिष्ट, आघात या हानि का अनुमान होने पर मन में होनेवाला कष्ट मिश्रित भय। आशंका। २. मन की वह स्थिति जिसमें किसी मान्य या निर्णीत तथा निश्चित की हुई बात के सामने आने पर उसके संबंध में कोई आपत्ति, जिज्ञासा या प्रश्न उत्पन्न होता है। कोई बात ठीक न जान पड़ने पर उसके संबंध में मन में तर्क उठने की अवस्था या भाव। जैसे--(क) आपने इस चौपाई (या श्लोक) का जो अर्थ किया है, उसके संबंध में मुझे एक शंका है अर्थात् मैं समझता हूँ कि वह अर्थ ठीक नहीं है; और उसका ठीक रूप कुछ दूसरा ही होना चाहिए। (ख) पंडित लोग शास्त्रार्थ करते समय एक दूसरे के मत पर तरह-तरह की शंकाएं करते हैं।

विशेष--मनोविज्ञान की दृष्टि से यह कोई मनोवेग नहीं है, बल्कि कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में होनेवाला बौद्धिक या मानसिक व्यापार मात्र है।

३. उक्त के आधार पर, साहित्य में तैंतीस संचारी भावों में से एक। मन का वह भाव जो किसी प्रकार की आशंका भय आदि के कारण होता है और जिसमें शरीर में कंप होता, रंग फीका पड़ जाता और स्वर विकृत हो जाता है। उदा०--चौंकि चौंकि चकत्ता कहत चहूँघाते यारो, लेत रहौ खबरि कहाँ लौ सिवराज है।--भूषण। ४. दे० 'आशंका', 'संदेह' और 'संशय'।

शंकाकुल--वि० [सं० तृ० त०] शंका से आकुल या विचलित।

शंकावगाह--पुं० [सं० शंका+अवगाह] किसी बात की शंका होने पर उसके संबंध में पता लगाने के लिए की जानेवाली बातचीत।

शंका-समाधान--पुं० [सं०]किसी की उठाई हुई शंका का इस प्रकार निराकरण करना जिससे जिज्ञासु का पूरा समाधान या संतोष हो जाय।

शंकित--भू० कृ० [सं० शंका+इतच्] जिसके मन में शंका हुई हो।

शंकु--पुं० [सं०√शंक्+उण्] १. कोई ऐसा घन पदार्थ जिसका नीचेवाला भाग तो गोलाकार हो, मध्य भाग क्रमशः पतला होता गया हो

और ऊपरी सिरा बिलकुल नुकीला हो। (कोन) २. कील। मेख। ३. खूँटा या खूँटी। ४. बरछा। भाला। ५. तीर की गाँसी या फल। ६. शंख नाम की बहुत बड़ी संख्या। ७. शिव। ८. कामदेव। ९. जहर। विष। १०. पाप। ११. राक्षस। १२. हंस। १३. एक प्रकार की मछली। १४. दीमकों की बांबी। वल्मीक। १५. पुरानी चाल का एक प्रकार का बाजा। १६. बारह अंगुल की नाप। १७. उक्त नाम की वह खूँटी जिसकी सहायता से प्राचीन काल में, दीपक, सूर्य आदि की छाया नापी जाती थी। १८. वनस्पतियों की वह शक्ति जिससे वे जमीन के अन्दर का रस खींचती हैं। १९. पत्ते या पत्ती की नस। २०. वास्तु शास्त्र में, ऐसा खंभा जिसका बीच का भाग मोटा और ऊपर का भाग पतला हो। २१. जूए का दांव। बाजी। २२. लिंग। २३. नखी नामक गंध द्रव्य।

शंकु गणित—पुं० [सं०]ज्यामिति के अन्तर्गत गणित की वह क्रिया जिससे शंकु के भिन्न-भिन्न भागों का मान स्थिर किया जाता है। (कोनिक्स)

शंकुच्छाया—स्त्री० [सं० ष० त०] प्राचीन भारत में १२ अंगुल की एक नाप जिससे दीपक, सूर्य आदि की छाया नापी जाती थी।

शंकुमती—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का वैदिक छन्द जिसके पहले चरण में पाँच और बाकी तीनों चरणों में छः छः या कुछ कम या अधिक वर्ण होते हैं।

शंख—पुं० [सं०√शम्+ख] १. एक प्रकार का बड़ा समुद्री घोंघा (जल-जंतु) जिसका ऊपरी आवरण या खोल फूँककर बजाने के काम आता है। २. उक्त जल-जन्तु का खोल जिसके ऊपरी छेद में मुँह से जोर से हवा भरने पर एक विशेष प्रकार का जोर का शब्द होता है। यह दो प्रकार का होता है—दक्षिणावर्त्त और वामावर्त।

पद—**शंख का मोती**=एक प्रकार का कल्पित मोती जिसकी उत्पत्ति शंख के गर्भ से मानी जाती है।

मुहा०—**शंख बजना**=विजय या आनंदोत्सव होना। **शंख बजाना**=(क) आनंद मनाना। (ख) वंचित रहना। (व्यंग्य)

३. एक लाख करोड़ या दस खर्व की संख्या। ४. हाथी का गंडस्थल। ५. कनपटी। ६. पुराणानुसार एक निधि का नाम। ७. कुबेर की निधि के देवता। ८. चरण-चिह्न। ९. नखी नामक गंध द्रव्य। १०. छप्पय छंद का एक भेद जिसमें १५२ मत्राएं या १४९ वर्ण होते हैं जिनमें से ३ गुरु और शेष लघु होते हैं। ११. दंडक वृत्त का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में दो तगण और चौदह रगण होते हैं। १२. कपाल। मस्तक। १३. हवा चलने से होनेवाला शब्द। १४. दे० 'शंखासुर'।

शंखक—पुं० [सं०√शंख+वुन्—अक] १. शंख की बनी हुई चूड़ी। साँख। २. वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का विकट रोग जिसमें कनपटी के पास लाल गिलटी निकलती है और शरीर में बहुत जलन होती है। ३. शंख नामक निधि। ४. हीरा कसीस। ५. मस्तक। माथा।

शंखकार—पुं० [सं० शंख√कृ+अण्] १. वह जो शंख से तरह-तरह की चीजें बनाता हो। २. पुराणानुसार एक संकर जाति जो उक्त प्रकार का काम करती थी।

शंख-चूड—पुं० [सं० ब० स०] १. एक प्रकार का बहुत जहरीला नाग या साँप जिसके शरीर पर काली बिंदियाँ होती हैं। २. एक प्राचीन तीर्थ। ३. पुराणानुसार एक राक्षस जिसे कंस ने कृष्ण को मारने के लिए भेजा था, पर जो कृष्ण के हाथों स्वयं मारा गया था।

शंखज—वि० [सं० शंख√जन्+ड] शंख से निकला या बना हुआ। पुं० एक प्रकार का कल्पित मोती जिसकी उत्पत्ति शंख के गर्भ से मानी गई है।

शंख-द्राव—पुं० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार का बहुत तीक्ष्ण अरक जो उदर रोगों के लिए उपकारी माना गया है। कहते हैं कि यह धातुओं, शंखों आदि तक को गला देता है, इसी लिए यह काँच या चीनी के बरतन में रखा जाता है।

शंख-धर—[सं० ष० त०] विष्णु।

शंख-नारी—स्त्री० [सं०] सोमराजी नामक वृक्ष का एक नाम।

शंख-पलीता—पुं० [हिं०] ज्वालामुखी पर्वतों में से निकलनेवाला एक प्रकार का रेशेदार खनिज पदार्थ जिसका उपयोग गैस के भट्ठे बनाने में होता है। इस पर ताप तथा विद्युत् का प्रभाव बहुत कम और देर में होता है।

शंखपाणि—पुं० [ब० स०] विष्णु।

शंख-पुष्पी—स्त्री० [ब० स० ङीप्] १. सफेद अपराजिता। २. जूही। ३. शंखाहुली।

शंख-लिखित—वि० [द्व० स०] दोष-रहित। बे-ऐब। पुं० १. शंख और लिखित नाम के दो ऋषि जिन्होंने एक स्मृति बनाई थी। २. उक्त ऋषियों की बनाई हुई स्मृति। ३. न्यायशील और पुण्यात्मा राजा।

शंखवटी—स्त्री० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार की वटी या गोली जो पेट के रोगों में गुणकारी कही गई है।

शंख-वात—पुं० [ष० त०] वायु के प्रकोप से सिर में होनेवाली पीड़ा।

शंख-विष—पुं० [मध्य० स०] संखिया।

शंखावर्त—पुं० [सं० शंख-आवर्त, ब० स०]भगंदर रोग का एक शंबुकावर्त नामक भेद।

शंखासुर—पुं० [सं०शंख-असुर, कर्म० स०] एक प्रसिद्ध राक्षस जिसका वध विष्णु ने मत्स्यावतार में किया था। कहते हैं कि यह ब्रह्मा के यहाँ से वेद चुराकर समुद्र में जा छिपा था।

शंखिनी—स्त्री० [सं० शंख+इनि+ङीप्] १. एक प्रकार की वनौषधि। २. कामशास्त्र में वह नायिका जो न अधिक मोटी हो न पतली; जिसका सिर तथा स्तन छोटे, पैर बड़े और बाहें लंबी होती हैं। यह काम से अधिक पीड़ित, परपुरुष से रमण की इच्छुक, कर्कश तथा चुगलखोर स्वभाव-वाली होती है।

शंड†—पुं०=षंड।

शंपा—स्त्री० [सं०] विद्युत्। बिजली।

शंपाक—पुं० [सं० ब० स०] अमलतास।

शंब—पुं० [सं०√शम्ब् (गति)+अच्] १. इंद्र का वज्र। २. दोबारा की गई जोताई।
वि० १. भाग्यशाली। २. सुखी। ३. अभागा।

शंबर—पुं० [सं०√शंब्+अरन्] १. जल। २. मेघ। ३. पर्वत। ४. एक प्रकार का हिरन। ५. युद्ध। ६. इंद्रजाल। जादू। ७. अर्जुन वृक्ष। ८. एक राक्षस।

शंबरारि—पुं० [सं० ष० त०] कामदेव।

शंबा—पुं० [फा० शंबः] शनिवार।

शंबु—पुं० [सं० शंब+उन्] घोंघा।

शंबूक—पुं० [सं०√शम्ब्+कू, शंबू+कन्] १. घोंघा। २. शंख। ३. हाथी के कुंभ का अंतिम भाग। ४. हाथी का सूँड़ की नोक। ५. त्रेता युग में रामराज्य का एक शूद्र तपस्वी जिसकी तपस्या से एक ब्राह्मण पुत्र अकाल ही मर गया था। कहते हैं कि इस पर राम ने इसका वध किया और ब्राह्मण का मृत पुत्र जी उठा था।

शंबूका—स्त्री० [सं० शंबूक+टाप्] सीपी।

शंभु—वि० [सं० शम्√भू+डु] कल्याण करने और सुख देनेवाला।
पुं० १. शिव। २. विष्णु। ३. एक प्रकार के सिद्ध पुरुष। ४. ब्राह्मण।

शंभु-क्रिय—पुं० [सं० ब० स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

शंसन—पुं० [सं०√शंस्+ल्युट्-अन] १. प्रशंसा करना। २. मंगल कामना करना। ३. कहना।

शंसनीय—वि० [सं०√शंस्+अनीयर्] १. प्रशंसनीय। २. मंगल करनेवाला। ३. कथनीय।

शंसा—स्त्री० [सं० √शंस्+अ+टाप्] १. प्रशंसा। २. मंगल-कामना। ३. कथन।

शंस्य—वि० [सं०√शंस्+ण्यत्] १. शंसा के योग्य। २. जिसकी शंसा की जाय। ३. प्रशंसनीय। ४. कथित।

शः—प्रत्य० [सं०] एक प्रत्यय जो कुछ शब्दों के अंत में लगकर (क) उसके अनेक गुने होने का भाव सूचित करता है। जैसे—बहुशः, शतशः आदि। (ख) उसके सिलसिलेवार होने का सूचक होता है। जैसे—क्रमशः। (ग) जैसे—प्रकृतिशः।

श—पुं० [सं०√शी+ड] १. कल्याण। २. मंगल। ३. सौख्य। ४. समृद्धि। ५. शास्त्र। ६. शिव। ७. शस्त्र।
वि० शुभ।

शऊर—पुं० [अ० शुऊर] १. कोई बात या काम करने का ठीक ढंग या तरीका। जैसे—उसे बात करने का शऊर नहीं है। २. सामान्य योग्यता या लियाकत। ३. बुद्धि।

शक—पुं० [सं०√शक्+अच्] १. तातार देश का पुराना नाम। २. तातार देश की, एक प्राचीन जाति जिसके कुछ लोगों ने भारत पर आक्रमण किए थे। कहते हैं कि विक्रमादित्य ने उन्हें पूरी तरह से परास्त किया था। जो लोग बच गये थे, वे भारतीय आर्यों और विशेषतः ब्राह्मणों से मिलकर शाकद्वीपी ब्राह्मण कहलाने लगे थे। ३. राजा शालिवाहन का एक नाम। ४. बहुत बड़ा या मारके का युद्ध और उसमें होनेवाली विजय।
पुं० [अ०] बहुत-कुछ अनुमान पर आधारित ऐसी धारणा कि अमुक काम ऐसे हुआ होगा या अमुक व्यक्ति ने ऐसा किया होगा। जैसे—पुलिस उस पर चोरी का शक कर रही है।

शक़—वि० [अ०] जिसमें दरार पड़ी हो। फटा हुआ। विदीर्ण।

शकट—पुं० [सं०√शक्+अटन्] १. छकड़ा। २. गाड़ी। ३. छकड़े या गाड़ी भर का बोझ जो २००० पलों का एक परिमाण था। ४. एक असुर जिसे कृष्ण ने बाल्यावस्था में मारा था। ५. तिनिश वृक्ष। ६. दे० 'शकट व्यूह।

शकट व्यूह—पुं० [सं० मध्य० स०] प्राचीन भारत में, एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना जिसके दोनों पक्षों के बीच में सैनिकों की दोहरी पंक्तियाँ होती थीं।

शकटी (टिन्)—पुं० [सं० शकट+इन्] शकट अर्थात् बैलगाड़ी हाँकनेवाला व्यक्ति।

शकर—स्त्री० [सं० शकल से फा०] शक्कर। चीनी।

शकरखोरा—पुं० [फा० शकरखोरः] गौरैया के आकार की एक प्रकार की हरे नीले रंग की बारहमासी चिड़िया जिसकी दुम गहरी भूरी, पुतलियाँ भूरी और चोंच तथा पैर काले रंग के होते हैं।

शकर-पारा—पुं० [फा० शकर पारः] १. एक प्रकार का फल जो नींबू से कुछ बड़ा होता है। २. आटे-मैदे आदि का एक तरह का पकवान जो टुकड़ों में होता है और प्रायः चाशनी में लिपटा होता है। ३. सिलाई में एक प्रकार का टाँका।

शकर-पीटन—पुं० [?] थूहर की तरह की एक प्रकार की कँटीली झाड़ी।

शकर-बादाम—पुं० [फा० शकर+बादाम] खूबानी या जर्द आलू नामक फल।

शकरी—स्त्री० [फा० शकर] फालसा।

शकल—पुं० [सं०√शक् (कर सकना)+कलच्] १. त्वचा। चमड़ी। २. छाल। छिलका। ३. दालचीनी। ४. आँवला। ५. कमल की नाल। ६. चीनी। शक्कर। ७. खंड। टुकड़ा। उदा०—पंचभूत का भैरव मिश्रण शम्याओं के शकल निपात।—प्रसाद। ८. एक प्राचीन देश।
स्त्री० [अ० शक्ल, मि० सं० शकल=त्वचा] १. चेहरे की बनावट। आकृति। रूप। जैसे—शकल न सूरत, गधे की मूरत।
पद—सूरत शकल=चेहरे की बनावट। रंग-रूप।
मुहा०—(किसी की) शकल बिगाड़ना=इतना मारना-पीटना कि आकृति खराब हो जाय।
२. मुख की ऐसी चेष्टा जिससे कोई भाव प्रकट होता हो। जैसे—रुपया माँगते ही उनकी शकल बदल गई। ३. किसी चीज की आकृति, गढ़न, ढाँचा या बनावट।
मुहा०—शकल बनाना=अच्छा या सुंदर रूप धारण करना (या कराना)।
४. उपाय। युक्ति।
मुहा०—शकल निकालना=युक्ति चलना या सूझना।

शकली—स्त्री० [सं० शकल+ङीष्] सकुची मछली।

शक संवत्—पुं० [सं०√शक् (सामर्थ्य)+अच्, मध्य० स०] महाराज शालिवाहन द्वारा प्रवर्तित एक संवत् जो ई० सन् ७८ में प्रचलित हुआ था।

शकांतक—पुं० [सं० शक-अंतक, ष० त०] शक जाति का अंत करनेवाला, विक्रमादित्य।

शकाब्द—पुं० [सं० शक-अब्द, मध्य० स०] राजा शालिवाहन का चलाया हुआ संवत्। शक संवत्।
विशेष—यह ईसवी सन् के ७८ वर्ष पश्चात् आरंभ हुआ था।

शकार—पुं० [सं० श+कार] १. शकवंशीय व्यक्ति। शकवंश का आदमी। २. संस्कृत नाटकों की परिभाषा में राजा का वह साला जो नीच जाति का हो।

शकारि—पुं० [सं० ष० त०] शक जाति का शत्रु, विक्रमादित्य।

शकील—वि० [फा०] [स्त्री०=शकीला] अच्छी शकल-सूरत वाला। सुन्दर। खूबसूरत।

शकुंत—पुं० [सं०√शक्+उन्त] १. पक्षी। चिड़िया। २. नीलकंठ। ३. एक प्रकार का कीड़ा।

शकुंतक—पुं० [सं० शकुन्त+कन्] छोटी चिड़िया।

शकुंतला—स्त्री० [सं० शकुंत√ला (लेना)+क+टाप्] पुराणानुसार, मेनका नामक अप्सरा के गर्भ से उत्पन्न विश्वामित्र की कन्या जिसका विवाह राजा दुष्यंत से हुआ था।

शकुंतिका—स्त्री० [सं०√शक्+उन्ति+कन्+टाप्] १. छोटी चिड़िया। २. प्रजा। रिआया।

शकुन—पुं० [सं०√शक् (कर सकना)+उनन्] १. चिड़िया। पक्षी। २. कोई काम आरंभ होने के समय घटित होनेवाली कोई ऐसी विशिष्ट घटना जो उस कार्य के भविष्य के संबंध में शुभ अथवा अशुभ परिणाम सूचित करनेवाले लक्षण के रूप में मानी जाती हो। जैसे—यात्रा के समय बिल्ली का सामने से रास्ता काटकर निकल जाना अशुभ शकुन और गौ या पानी का घड़ा दिखाई देना शुभ शकुन माना जाता है।

विशेष—प्राचीन काल में प्रायः पक्षियों के बोलने या सामने आने से ही इस प्रकार के शुभाशुभ फलों का अनुमान या कल्पना की जाती थी; इसी लिए इस धारणा का भी पक्षीवाचक 'शकुन' नाम पड़ा था।

मुहा०—**शकुन देखना या विचारना**=कोई कार्य करने से पहले किसी उपाय से लक्षण आदि देख या पूछकर यह निश्चय करना कि यह काम होगा या नहीं, अथवा काम अभी करना चाहिए या नहीं।

३. शुभ मुहूर्त में होनेवाला कोई शुभ काम। ४. उक्त अवसरों पर गाये जानेवाले गीत। ५. गिद्ध नामक शिकारी पक्षी।

शकुनज्ञ—पुं० [सं० शकुन√ज्ञा (जानना)+क] १. शकुनों का शुभाशुभ फल बतलानेवाला व्यक्ति। २. ज्योतिषी।

शकुन-द्वार—पुं० [सं०] यात्रा पर निकलने के समय एक साथ शुभ और अशुभ सगून होना।

शकुन-शास्त्र—पुं० [सं० मध्यम० स०] वह शास्त्र जिसमें शकुनों के शुभ और अशुभ फलों का विवेचन हो। शकुन बतलानेवाला शास्त्र।

शकुनाहृत—पुं० [सं० शकुन-आहृत, तृ० त०] १. एक प्रकार का चावल जिसे दाऊदखानी कहते हैं। २. बच्चों को होनेवाला एक प्रकार का रोग। ३. एक प्रकार की मछली।

शकुनि—पुं० [सं०√शक्+उनि] १. पक्षी। चिड़िया। २. गिद्ध पक्षी ३. गंधार राज सुबल के एक पुत्र का नाम।

विशेष—यह दुर्योधन के मामा थे तथा बहुत बड़े पापाचारी थे।

वि० १. दुष्ट। २. पापचारी।

शकुनिका—स्त्री० [सं० शकुनि+कन्+टाप्] स्कंद की अनुचरी एक मातृका।

शकुनी—स्त्री० [सं० शकुन+ङीष्] १. श्यामा पक्षी। २. मादा गौरैया पक्षी। ३. बच्चों को कष्ट देनेवाली एक कल्पित पूतना।

शकुनी-मातृका—स्त्री० [सं० व्यस्त पद] बालकों की एक प्रकार की कष्टदायक व्याधि जो उनके जन्म से छठे दिन, छठे मास या छठे वर्ष होती है और जिसमें उन्हें ज्वर तथा कंप होता है।

शकुनीश्वर—पुं० [सं० शकुनि-ईश्वर, ष० त०] पक्षियों के स्वामी, गरुड़।

शकुली—स्त्री० [सं० शकुल+ङीष्] १. सकुची मछली। २. एक पौराणिक नदी।

शकृत्—पुं० [सं०] १. विष्ठा। गुह। २. गोबर।

शकृद्देश—पुं० [सं० शकृत्-देश, ष० त०] मलद्वार। गुदा।

शकृद्द्वार—पुं० [सं० शकृत्–द्वार, ष० त०] मलद्वार। गुदा।

शक्कर—स्त्री० [सं० शर्करा मि० फा० शकर=चीनी] १. चीनी। २. कच्ची चीनी। खाँड़।

पुं० [सं०] १. साँड़। २. बैल।

शक्करी—स्त्री० [शक्करी+ङीष्] १. वर्णवृत्त के अंतर्गत चौदह अक्षरोंवाले छंदों की संज्ञा। २. मेखला। ३. एक प्राचीन नदी।

वि० [हिं० शक्कर] जिसमें शक्कर या चीनी मिली हो।

शक्की—वि० [अ० शक+ई (प्रत्य०)] १. जो हर बात को संदेह भरी दृष्टि से देखता हो। २. जिसका शक सदा बना रहता हो।

शक्त—वि० [सं०√शक् (सकना] +क्त] १. शक्ति सम्पन्न। समर्थ। २. पटु। ३. मधुरभाषी।

शक्तव—पुं० [सं० सक्त] सत्तू।

शक्ति—स्त्री० [सं०√शक् (सकना)+क्तिन्] १. वह शारीरिक गुण या धर्म जिसके द्वारा अंगों का संचालन, आत्म-रक्षा, बल-प्रयोग और ऐसे ही दूसरे काम होते हैं। पराक्रम। ताकत। जोर। (स्ट्रेंग्थ) जैसे—रोग के कारण उसमें उठने-बैठने की भी शक्ति नहीं रह गई है। २. कोई ऐसा गुण, तत्त्व या धर्म जो कोई विशिष्ट कार्य करता, कराता अथवा क्रियात्मक रूप में अपना परिणाम या प्रभाव दिखाता हो। ताकत। बल। जैसे—(क) बातें याद रखने या सोचने-समझने की शक्ति। (ख) ओषधियों में होनेवाली रोगनाशक शक्ति। ३. कोई ऐसा तत्त्व जो निश्चित रूप में और बलपूर्वक किसी से कोई काम कराने में समर्थ हो। (फोर्स) जैसे—(क) उसमें उसका मुँह बंद करने की शक्ति है। (ख) इस इंजन में सौ घोड़ों की शक्ति है। (ग) मंत्रों में आज-कल वह शक्ति नहीं रह गई है। ४. कोई ऐसा तत्त्व या साधन जो अभीष्ट या कार्य की सिद्धि में सहायक होता है। जैसे—आर्थिक शक्ति, सैनिक शक्ति। ५. आधुनिक राजनीति में, वह बड़ा पराक्रमी और बलशाली राज्य जिसके पास यथेष्ट धन, सेना आदि का साधन हो और जिसका दूसरे राज्यों की नीति आदि पर प्रभाव पड़ता हो। (पावर) जैसे—आज-कल अमेरिका और रूस ही संसार की सबसे बड़ी शक्तियाँ हैं। ६. धार्मिक क्षेत्रों में, ईश्वर, देवी-देवता आदि में माना जानेवाला वह गुण या तत्त्व जिसके फलस्वरूप वे अपना कार्य करते या प्रभाव दिखाते हैं। जैसे—दैवी शक्ति, रौद्री शक्ति।

विशेष—हमारे यहाँ कुछ देवताओं की उक्त प्रकार की शक्तियाँ उनकी पत्नी और देवी के रूप में मानी गई हैं। जैसे—दुर्गा, पार्वती, लक्ष्मी आदि।

७. तंत्र के अनुसार किसी पीठ की अधिष्ठात्री देवी जिसकी उपासना करनेवाले शाक्त कहे जाते हैं। ८. तांत्रिकों की परिभाषा में वह नटी, कापालिकी, वेश्या, धोबिन, नाउन, ब्राह्मणी, शूद्रा, ग्वालिन या मालिन जो युवती, रूपवती और सौभाग्यवती हो। ९. स्त्रियों की भग। योनि। (तांत्रिक) १०. न्याय और साहित्य में, वह तत्त्व जो शब्द

और उसके अर्थ से संबंध स्थापित करता अथवा शब्द का अर्थ प्रकट करता है। ११. बोल-चाल में अधिकार या वश। जैसे—उसे मनाना तुम्हारी शक्ति के बाहर है। १२. प्रकृति। १३. माया। १४. बरछी या साँग नामक अस्त्र।

पुं० एक प्राचीन ऋषि जो पराशर के पिता थे।

शक्ति-ग्रह—पुं० [सं० शक्ति√ग्रह् (ग्रहण करना)+अच्] १. शिव। महादेव। २. कार्तिकेय। ३. भाला-बरदार। ४. साहित्य में, वह वृत्ति या शक्ति जिससे शब्द के अर्थ का ज्ञान होता है।

शक्ति-धर—पुं० [सं० ष० त०] स्कंद। कार्तिकेय।

शक्ति-पाणि—पुं० [सं० ब० स०] कार्तिकेय। स्कंद।

शक्ति-पूजक—वि० [ष० त०] १. शक्ति का उपासक। २. वाममार्गी।

शक्ति-पूजा—स्त्री० [सं० ष० त०] शाक्तों द्वारा होनेवाली शक्ति की पूजा।

शक्ति-बोध—पुं० [सं० तृ० त०] शब्द शक्तियों से प्राप्त होनेवाले अर्थों का ज्ञान।

शक्ति-मत्ता—स्त्री० [सं० शक्ति+मतुप्, शक्तिमत्+तल्+टाप्] १. शक्ति संपन्न होने की अवस्था या भाव। ३. शक्ति का होनेवाला घमंड।

शक्ति-मान् (मत्)—वि० [सं० शक्ति+मतुप्] [स्त्री० शक्तिमती] जिसमें यथेष्ट शक्ति हो। बलवान्। बलिष्ठ। ताकतवर।

शक्ति-वादी (दिन्)—वि० [सं० शक्ति√वद् (कहना)+णिनि] १. शक्ति-संबंधी। २. शक्ति का उपासक तथा अनुयायी। शाक्त।

शक्ति-वीर—पुं० [सं० ष० त०] वह जो शक्ति की उपासना करता हो। वाममार्गी। शाक्त।

शक्ति-वैकल्य—पुं० [सं० ष० त०] १. शक्ति का अभाव। कमजोरी। दुर्बलता। २. असमर्थता।

शक्ति-शोधन—पुं० [सं० ष० त०] शाक्तों का एक संस्कार जिसमें वे किसी स्त्री को शक्ति की प्रतिनिधि या प्रतीक बनाने से पहले कुछ विशिष्ट कृत्य करके उसे शुद्ध करते हैं।

शक्तिष्ठ—वि० [सं० शक्ति√स्था (ठहरना)+क] शक्ति-संपन्न।

शक्ती—पुं० [सं० शक्ति] एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १८ मात्राएँ होती हैं और इसकी रचना ३+३ +४+३+५ होती है। अंत में सगण, रगण या नगण में से कोई एक और आदि में एक लघु होना चाहिए।

वि० शक्ति-संपन्न।

शक्तु—पुं० [सं०√शच् (एकत्रित होना)+तुन्] सत्तू।

शक्तुक—पुं० [सं० शक्तु√कै (मालूम होना)+क] भावप्रकाशानुसार एक प्रकार का बहुत तीव्र और उग्र विष।

शक्य—वि० [सं०√शक् (सकना)+यत्] [भाव० शक्यता] १. जिसका अस्तित्व में आना संभावित हो। जो हो सकता हो। २. (अर्थ) जो शब्द-शक्ति से प्राप्त होता हो।

शक्यता—स्त्री० [सं० शक्य+तल्+टाप्] शक्य होने की अवस्था, धर्म या भाव।

शक्र—पुं० [सं०√शक्+रक्] १. दैत्यों का नाश करनेवाले, इन्द्र। २. अर्जुन वृक्ष। २. कुटज। कोरैया। ४. इन्द्रजौ। ५. ज्येष्ठा नक्षत्र। ६. रगण का एक भेद जिसमें ६. मात्राएँ होती हैं।

वि० योग्य। समर्थ।

शक्र-कार्मुक—पुं० [सं० ष० त०] इन्द्र-धनुष।

शक्र-केतु—पुं० [सं० ष० त०] इन्द्रध्वज।

शक्र-गोप—पुं० [सं० शक्र√गुप् (छिपाना)+णिच्+अण्] इन्द्रगोप। बीरबहूटी।

शक्र-चाप—पुं० [सं० ष० त०] इंद्रधनुष।

शक्र-जाल—पुं० [तृ० त०]=इन्द्रजाल।

शक्रजित्—पुं० [सं० शक्र√जि (जीतना)+क्विप्, तुक्] १. वह जिसने इंद्र पर विजय प्राप्त की हो। २. मेघनाद।

शक्रत्व—पुं० [सं० शक्र+त्व] शक्र का धर्म या भाव।

शक्र-दिशा—स्त्री० [सं० ष० त०] पूर्व दिशा जिसके स्वामी इन्द्र माने जाते है।

शक्र-देव—पुं० [सं० कर्म० स०] इन्द्र।

शक्र-दैवत—पुं० [सं० ब० स०] ज्येष्ठा नक्षत्र जिसके स्वामी इन्द्र माने जाते हैं।

शक्र-धनुष—पुं० [सं०] इन्द्र-धनुष।

शक्र-ध्वज—पुं० [सं०] इन्द्रध्वज।

शक्र-नंदन—पुं० [सं० ष० त०] अर्जुन जो इन्द्र का पुत्र माना गया है।

शक्र-पुर—पुं० [सं० ष० त०] इन्द्र के रहने की पुरी, अमरावती।

शक्र-पुष्पी—स्त्री० [सं० शक्रपुष्प+ङीष्] १. कलिहारी। कलियारी। २. अग्नि-शिखा नामक वृक्ष। ३. नागदमनी।

शक्र-भवन—पुं० [सं० ष० त०] स्वर्ग।

शक्र-माता (तृ)—स्त्री० [सं० ष० त०] इंद्र की माता, भार्गी।

शक्र-यव—पुं० [सं० ष० त०] इन्द्र जौ। कुटज बीज।

शक्र-लोक—पुं० [सं० ष० त०] इंद्रलोक। स्वर्ग।

शक्र-वाहन—पुं० [सं० ष० त०] इन्द्र का वाहन अर्थात् मेघ। बादल।

शक्र-शरासन—पुं० [सं० ष० त०] इन्द्र-धनुष।

शक्र-शाला—स्त्री० [सं० ष० त०] यज्ञ-भूमि में वह स्थान जहाँ इन्द्र के उद्देश्य से बलि दी जाती थी।

शक्र-सारथी—पुं० [सं० ष० त०] इंद्र का सारथी, मातलि।

शक्र-सुत—पुं० [सं० ष० त०] इंद्र का पुत्र बलि, जिसे राम ने मारा था।

शक्राग्नि—पुं० [सं० शक्र-अग्नि, ब० स०,] विशाखा नक्षत्र जिसके स्वामी इन्द्र और अग्नि माने जाते हैं।

शक्राणी—स्त्री० [सं० शक्र+ङीष्, आनुक्] १. इन्द्र की पत्नी, शची। इन्द्राणी। २. निर्गुंडी।

शक्रात्मज—पुं० [सं० शक्र-आत्मज, ष० त०] अर्जुन।

शक्रानिल—पुं० [सं० शक्र-अनिल, ष० स०,] ज्योतिष में प्रभव आदि साठ संवत्सरों के बारह युगों में से दसवें युग के अधिपति।

शक्राशन—पुं० [सं० शक्र√अश् (भोजन करना)+ल्युट्–अन] १. भाँग। विजया। भंग। २. कुटज। कोरैया। ३. इन्द्र जौ।

शक्रासन—पुं० [सं० ष० त०] १. इन्द्र का आसन। २. सिंहासन।

शक्रि—पुं० [सं० शक+क्रित् बहु०] १. मेघ। बादल। २. वज्र। ३. हाथी। ४. पहाड़। पर्वत।

शक्रोत्थान—पुं० [ब०स०] इंद्रध्वज नामक उत्सव। शक्रोत्सव।

शक्रोत्सव—पुं० [सं० ष० त०] इंद्रध्वज नाम का उत्सव।

शक्ल—स्त्री० [अ०] दे० 'शकल' (आकृति या सूरत)।

शक्वर—पुं० [सं०√शक् (कर सकता)+वंनिप्-रच] १. बैल। २. आकाश।

शक्वरी—स्त्री० [सं० शक्वर+ङीष्] १. गाय। २. ऊँगली। ३. मेखला। ४. एक प्रकार का छन्द। ५. एक प्राचीन नदी।

शखस†—पुं०=शख्स (व्यक्ति)।

शख्स—पुं० [अ०] [भाव० शख्सीयत] आदमी। पुरुष। व्यक्ति।

शख्सियत—स्त्री० [अ०] शख्स (व्यक्ति) होने की अवस्था या भाव। व्यक्तित्व।

शख्सी—वि० [अ०] १. शख्स का। मनुष्य का। २. वैयक्तिक।

शगल—पुं० [अ० शुगल] १. ऐसा काम जिसे समय गुजारने विशेषतः मन-बहलाव के लिए किया जाता हो। (हॉबी) २. धंधा।

शगाल—पुं० [सं० शृंगाल से फा०] गीदड़। शृगाल।

शगुन—पुं० [सं० शकुन] १. दे० 'शकुन'। २. हिन्दुओं में एक रस्म जिसमें वर-कन्या के विवाह की बात पक्की की जाती है। ३. उक्त अवसर पर वह धन जो कन्या-पक्षवाले वर-पक्षवालों को देते हैं।

शगुनियाँ—पुं० [हिं० शगुन+इयाँ (प्रत्य०)] १. वह ज्योतिषी जो विभिन्न प्रकारों के सगुनों का शुभाशुभ फल बतलाता हो। २. सगुनों का फल बतलानेवाला पंडित।

शगुफ्ता—वि० [फा० शिगुफ्तः] [भाव० शगुफ्ती] १. खिला हुआ। विकसित। २. प्रफुल्लित। प्रसन्न-चित्त।

शगून—पुं०=शगुन या शकुन।

शगूनियाँ—पुं०=शगुनिया।

शगूफा—पुं० [फा० शिगूफ़ः] १. खिला हुआ फूल। २. कोई मनोरंजक या विलक्षण बात।

मुहा०—शगूफा छोड़ना=कोई ऐसी विलक्षण या मनोरंजक बात कहना जो झगड़े की मूल हो।

शग्ल†—पुं०=शगल।

शचि—स्त्री० [सं० √ शच् (स्पष्ट कहना)+कचि] १. इन्द्र की पत्नी। २. प्रज्ञा। बुद्धि। ३. वाग्मिता। ४. शतावर। ५. असवर्ग।

शची—स्त्री०=शचि।

शचीपति—पुं० [सं० ष० त० स०] इन्द्र।

शचीश—पुं० [सं० ष० त० स०] इन्द्र।

शजर—पुं० [अ०] दरख्त। वृक्ष।

शजरा—पुं० [अ० शजरः] १. शजर अर्थात् वृक्ष की आकृति के रूप में होनेवाला किसी वंश के लोगों का विवरण। वंश-वृक्ष। ३. खेतों का वह नकशा जो पटवारी या लेखपाल अपने पास रखते हैं।

शट—पुं० [सं०√ शट् (रोग आदि)+अच्] १. खटाई। अम्लरस। २. एक प्राचीन देश।

वि० अम्ल। खट्टा।

शटा—स्त्री० [सं० शट्+टाप्] १. जटा। २. शेर का अयाल। सिंह-केसर।

शटि—स्त्री० [सं० शट+इनि] १. कचूर। कर्चूर। २. कपूरकचरी। ३. आँवा हल्दी। ४. सुगन्ध बाला।

शटी—स्त्री० [सं० शटि+ङीष्]=शटि।

शट्टक—पुं० [सं० शट्ट+कन्] गूँधा हुआ चौरेठा जिसमें मोयन भी डाला गया हो।

शठ—वि० [सं० शठ+अच्] १. स्वभाव से दुष्ट। २. धोखेबाज। ३. मूर्ख। ४. आलसी।

पुं० १. साहित्य में, वह नायक जो ऊपर ऊपर से अपनी स्त्री के प्रति प्रेम प्रकट करता हो परन्तु वस्तुतः जो पर-स्त्री से प्रेम करता हो। ऐसा नायक जो अपराध छिपाने में चतुर होता हो। २. वह जो दो आदमियों के बीच में पड़कर उनके झगड़े का निपटारा करता हो। मध्यस्थ। ३. लोहा। ४. ताड़ का पेड़। ५. केसर। ६. धतूरा। ७. चित्रक। चीता। ८. तगर का फूल।

शठता—स्त्री० [सं० शठ+तल्+टाप्] १. शठ का धर्म या भाव। २. शठ का कोई ऐसा कार्य जो दूषित वृत्ति का सूचक हो। ३. दुष्ट उद्देश्य से किया जानेवाला कोई काम।

शठत्व—पुं० [सं० शठ+त्व] शठता।

शठिका—स्त्री० [सं० शठ+कन्+टाप्, इत्व] १. कचूर। २. कपूरकचरी। ३. वनअदरक।

शठी—स्त्री० [शठ+ङीष्]=शठिका।

शण—पुं० [सं० √शण् (दान आदि)+अच्] १. सन नामक पौधा। २. शणपुष्पी। बन-सलाई। ३. भंग। भाँग। विजया।

शणपुष्पी—स्त्री० [सं० ब० स०] १. एक प्रकार की वनस्पति जो साधारणतः बनसलाई कहलाती है। २. अरहर।

शत—वि० [सं० दशतः=दश=श] १. सौ। २. असंख्य।

पुं० १. सौ का सूचक अंक या संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१००। २. एक तरह की सौ चीजों का संग्रह। जैसे—नीति शतक। ३. शताब्दी। शती। ४. विष्णु का एक नाम।

वि० जिसके सौ अंश या विभाग हों।

शत-किरण—पुं० [सं० ब० स०] एक प्रकार की समाधि।

शत-कुंडी (डिन्)—पुं० [सं० शतकुंड+इन्] एक प्रकार का यज्ञ जिसमें सौ कुण्डों में हवन एक साथ होता है।

शत-कुंभ—पुं० [सं०] सफेद कनेर।

शतकुंभ—पुं० [सं० ब० स०] १. एक पर्वत जिसके संबंध में प्रसिद्ध है कि वहाँ सोना मिलता है। २. सोना। ३. सफेद कनेर।

शत-कोटि—पुं० [सं० ब० स०] १. सौ करोड़ की संख्या। अर्बुद। २ इन्द्र का वज्र। ३. हीरा।

शतक्रतु—पुं० [सं० ब० स०] इन्द्र।

वि० जिसने सौ यज्ञ किये हों।

शतखंड—पुं० [सं० ब० स०] १. सोना। स्वर्ण। २. सोने की बनी हुई कोई चीज। स्वर्ण-वस्तु।

शतगु—वि० [सं० ब० स०] जिसके पास सौ गाएं हों।

शतगुण—वि० [सं० कर्म० स०] सौ गुना।

शतगुणित—भू० कृ० [सं० शतगुण+इतच्] सौगुना किया हुआ।

शत-ग्रीव—पुं० [सं० ब० स०] एक प्रकार की भूत योनि।

शतघ्न—पुं० [सं०] शिव।

शतघ्नी—स्त्री० [स० शत√ हन् (मारना)+टक्+ङीप्] १. एक तरह

का प्राचीन क्षेप्यास्त्र। २. गले में होनेवाली एक प्रकार की घातक गाँठ। (रोग)

शत-चंद्र—पुं० [सं० ब० स०] एक प्रकार का आभूषण या गहना जिसमें चन्द्रमा की सैकड़ों आकृतियाँ बनी होती हैं।

शतच्छद—पुं० [सं० ब० स०] १. सौ पत्तियोंवाला कमल। शतदल। कमल। ३. कठफोड़वा या काठ-ठोका नामक पक्षी।

शतजटा—स्त्री० [सं० ब० स०] सतावर। शतमूली।

शतजित्—पुं० [सं० शत्√जि (जीतना)+क्विप्, तुक्] १. विष्णु का एक नाम। २. एक प्रकार का यज्ञ।

शतजिह्व—पुं० [सं० ब० स०] शिव। महादेव।

शत-तंत्री—स्त्री० [सं० शततंत्र+ङीप्] एक प्रकार की वीणा जिसमें प्रायः सौ तार लगे होते हैं।

शततारका—स्त्री० [सं० ब० स०] शतभिषा नक्षत्र।

शतदल—वि० [ब० स०] जिसके सौ दल हों। सौ दलोंवाला।

पुं० कमल।

शतदला—स्त्री० [सं० शतदल+टाप्] सेवती (फूल)।

शतद्रु—स्त्री० [सं० शत√द्रु (बहना)+कु] १. शतलज नदी का प्राचीन नाम। २. गंगा नदी।

शतधन्वा—पुं० [सं० ब० स०] एक योद्धा जिसने सत्राजित् को मारा था, और इसी लिए जो श्रीकृष्ण के हाथों मारा गया था।

शतधा—स्त्री० [सं० शत+धा] दूब।

वि० १. सौ गुना। २. सौ तरह का।

अव्य० सैकड़ों प्रकार से।

शतधाम्ना—पुं० [सं० ब० स०] विष्णु का एक नाम।

शतधार—वि० [ब० स०] १. सौ धाराओंवाला। २. (अस्त्र) जिसकी सौ धारें हों।

शतधृति—पुं० [सं० ब० स०] १. इन्द्र। २. ब्रह्मा। ३. स्वर्ग।

शतपति—पुं० [सं० ष० त०] सौ मनुष्यों या सैनिकों का सरदार।

शतपत्र—वि० [सं० ब० स०] १. सौ दलों या पत्तोंवाला। २. सौ पंखों या परोंवाला।

पुं० १. कमल। २. सेवती। ३. मोर। मयूर। ४. कठ-फोड़वा नामक पक्षी। ५. सारस। ६. मैना। ७. बृहस्पति।

शतपत्रा—स्त्री० [सं० शतपत्र+टाप्] १. स्त्री। २. दूब।

शतपत्री—स्त्री० [सं० शतपत्र+ङीप्] १. सेवती। २. गुलाब का केसर।

शतपथ—वि० [सं० ब० स०] १. बहुत से मार्गोंवाला। २. बहुत-सी शाखाओंवाला।

पुं० [सं० ब० स०, अच्०+समा०] यजुर्वेद का एक ब्राह्मण जिसके कर्ता याज्ञवल्क्य माने जाते हैं।

शतपथिक—वि० [सं० शतपथ+ठन्—इक] १. बहुत से मतों का अनुयायी। २. शतपथ ब्राह्मण का अनुयायी या ज्ञाता।

शतपद—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० शतपदी] सौ पैरोंवाला।

पुं० [स्त्री० शतपदी] १. गोजर। २. च्यूँटी।

शतपद्म—पुं० [सं० मध्यम० स०] सफेद कमल।

शतपर्वा—स्त्री० [सं० ब० स०] १. बाँस। वंश। २. गन्ना। ३. दूब। ४. बच। ५. कुटकी। ६. सुगंधित द्रव्य। ७. करेमू का साग। ८. भार्गव ऋषि की पत्नी का नाम।

शतपाद—वि०, पुं० [ब० स०]=शतपद।

शतपादिका—स्त्री० [सं० शतपाद+कप्+टाप्, इत्व] १. काकोली नामक अष्टवर्गीय ओषधि। २. कनखजूरा। गोजर।

शतपुत्री—स्त्री० [सं० ब० स०+ङीप्] १. सतपुतिया। तरोई। २. शतावर।

शतपुष्प—पुं० [सं० ब० स०] साठी धान्य।

शतपुष्पा—स्त्री० [सं० शतपुष्प+टाप्] १. सोआ नाम का साग। २. सौंफ। ३. गवेधुक।

शतफल—पुं० [सं० ब० स०] बाँस।

शतबला—स्त्री० [सं० ब० स०] एक नदी। (महाभारत)

शतबाहु—पुं० [सं० ब० स०] १. सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का कीड़ा। २. पुराणानुसार एक असुर। ३. बौद्धों के अनुसार मार का एक पुत्र।

शतभिषा—स्त्री० [सं० शतभिष+टाप्] २७ नक्षत्रों में से चौबीसवाँ नक्षत्र जिसमें १०० तारे हैं। शत-तारका।

शतभीरू—पुं० [सं० ब० स०] मल्लिका। चमेली।

शतमख—पुं० [सं० ब० स०] १. इन्द्र। शतक्रतु। २. उल्लू।

शतमन्यु—वि० [सं० ब० स०] १. क्रोधी। गुस्सावर। २. उत्साही।

पुं० १. इन्द्र। २. उल्लू।

शत-मयूख—पुं० [ब० स०] चन्द्रमा।

शत-मान—पुं० [सं० शत√मि+ल्युट्—अन] १. सोना, चाँदी आदि तौलने का सौ मान का बटखरा या बाट। २. आढ़क नाम की प्राचीन काल की तौल, जो प्रायः पौने चार सेर की होती थी। ३. रूपामक्खी नामक उपधातु।

वि० जो तौल में सौ मान हो।

शतमूला—स्त्री० [सं० ब० स०,+टाप्] १. बड़ी सतावरी। २. बच। ३. नीली दूब।

शतमूली—स्त्री० [सं० शतमूल—ङीष्] १. सतावरी नाम की ओषधि। २. मूसली नामक ओषधि। ३. बच।

शतरंज—पुं० [फा० मि० सं० चतुरंग] एक प्रकार का प्रसिद्ध खेल जो चौंसठ खानों की बिसात पर ३२ गोटियों से खेला जाता है।

विशेष—सब मोहरें दो रंगों के होते हैं। प्रत्येक रंग में ८ सिपाही या पैदल, २ हाथी, २ घोड़े, २ ऊँट, १ बादशाह तथा १ वजीर होते हैं।

शतरंजबाज—पुं० [फा० शतरंज+फा० बाज] [भाव० शतरंजबाजी] १. शतरंज खेलने का शौकीन। २. शतरंज के खेल का बहुत बड़ा खिलाड़ी।

शतरंजबाजी—स्त्री० [फा०] शतरंज खेलना।

शतरंजी—स्त्री० [फा०] १. शतरंज का खिलाड़ी। २. शतरंज खेलने की बिसात। ३. ऐसी चादर या दरी जिसमें रंग-बिरंगे खाने बने हुए हों। ४. मिस्सी की रोटी।

शतरात्र—पुं० [सं० ब० स०] सौ रातों तक बराबर चलता रहनेवाला यज्ञ।

शतरुद्र—पुं० [सं० ब० स०] १. रुद्र का एक रूप जिसके सौ मुँह कहे गये हैं। २. एक शक्ति। (शैव)

शतरुद्रिय—स्त्री० [सं० शतरुद्र+घ—इय्] १. यज्ञ की हवि। २. यजुर्वेद का एक अंग या अध्याय।

शतरुद्री—स्त्री० [सं० शतरुद्र+ङीप्]=शतरुद्रिय।

शतरूपा—स्त्री० [सं० ब० स०+टाप्] १. ब्रह्मा की पत्नी तथा माता। २. स्वयंभुव मनु की पत्नी तथा माता।

शत-लोचन—वि० [सं० ब० स०] जिसके सौ नेत्र हों।

पुं० १. स्कन्द का एक अनुचर। २. एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि।

शत-वल्ली—स्त्री० [सं० ब० स०] १. नीली दूब। २. काकोली।

शत-वादन—पुं० [सं० ष० त०] सौ बाजों का एक साथ बजना।

शत-वार्षिक—वि० [सं० शतवर्ष+ठक्—इक] १. सौ-सौ वर्षों के उपरान्त होनेवाला। २. जिसकी अवधि सौ वर्षों की हो।

शत-वार्षिकी—स्त्री० [सं०] किसी पुरुष, संस्था आदि के जन्म के ठीक सौ वर्ष बाद मनाया जानेवाला उत्सव। (सेन्टेनरी) जैसे—रवीन्द्र शत-वार्षिकी।

शत-वीर्या—स्त्री० [सं० ब० स०] १. सफेद दूब। २. सतावर। ३. सफेद मूसली। ४. मुनक्का। ५. किशमिश।

शतशः—अव्य० [सं० शत+शस्] सैकड़ों प्रकार से। बहुत तरह से।

शतशीर्ष—पुं० [सं० ब० स०] १. विष्णु का एक नाम। २. एक प्रकार का अभिमंत्रित अस्त्र।

शतह्रदा—स्त्री० [सं० ब० स०,+टाप्] १. विद्युत्। बिजली। २. वज्र। ३. दक्ष की एक कन्या जो बाहुपुत्र को व्याही थी। ४. विराध नामक राक्षस की माता।

शतांग—वि० [सं० ब० स०] जिसके सौ अंग हों।

पुं० १. रथ। २. तिनिश वृक्ष। ३. एक राक्षस।

शतांगुल—पुं० [सं० ब० स०] ताल वृक्ष।

शतांश—पुं० [सं० कर्म० स०] किसी चीज के सौ बराबर हिस्सों में से कोई एक। सौवाँ हिस्सा।

शता—स्त्री० [सं० शत+टाप्] सफेद मूसली।

शताक्ष—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० शताक्षी] सौ आँखोंवाला।

पुं० पुराणानुसार एक दानव।

शताक्षी—स्त्री० [सं० शताक्ष+ङीष्] १. पार्वती। २. दुर्गा। ३. रात्रि। रात। ४. सौंफ।

शतानंद—पुं० [सं० शत+आ√नन्द्+अण्] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. विष्णु का रथ। ४. श्रीकृष्ण। ५. गौतम ऋषि।

शतानक—पुं० [सं० ब०स०] श्मशान। मरघट।

शतानन—पुं० [सं० ब० स०] बेल। श्रीफल।

वि० सौ मुहोंवाला।

शतानना—स्त्री० [सं० शतानन+टाप्] एक देवी का नाम।

शतानीक—वि० [सं० ब०स०] (वृद्ध) जिसकी अवस्था सौ या अधिक वर्षों की हो।

पुं० १. द्रौपदी के गर्भ से उत्पन्न नकुल का एक पुत्र। २. व्यास के एक शिष्य। ३. जनमेजय के पुत्र का नाम।

शताब्द—वि० [सं० ब० स०] सौ वर्षवाला।

पुं० शताब्दी।

शताब्दी—स्त्री० [सं० शताब्द+ङीप्] १. सौ वर्षों की अवधि की सूचक संज्ञा। २. किसी सन् या संवत् की किसी इकाई से सैकड़े तक का समय। शती। (सेन्चुरी)

वि० सौ वर्षों के उपरान्त होनेवाला। जैसे—शताब्दी समारोह।

शतायु (स्)—वि० [सं० ब० स०] १०० वर्ष की अवस्थावाला।

शतायुध—वि० [सं० ब० स०] जो सौ अस्त्र धारण करता हो। सौ अस्त्रों वाला।

शतार—पुं० [सं० ब० स०] १. वज्र। २. सुदर्शन चक्र।

शतारु—पुं० [सं० ब० स०] एक प्रकार का कोढ़ जिसमें खाल पर लाल, काली और दाहयुक्त फुंसियाँ हो जाती हैं।

शतावधान—पुं० [ब० स०] वह व्यक्ति जो सौ काम एक साथ कर सकता हो।

शतावधानी (निन्)—पुं० [सं०] शतावधान।

शतावर—पुं० [सं० शत्—आ √वृ (वरण करना)+अच्, शतावरी] सफेद मूसली। सतावर।

शतावरी—स्त्री० [सं० शत–आ √ वृ+अच् +ङीष्] १. शतमूली। शतावर। सफेद मूसली। २. कचूर। ३. इन्द्राणी। शची।

शतावर्त—पुं० [सं० ब० स०] १. विष्णु। २. शिव।

शताशनि—पुं० [सं० ब० स०] वज्र।

शतिक—वि० [सं० शत+ठन्—इक] १. शत अर्थात् सौ संबंधी। सौ का। २. प्रति सौ के हिसाब से लगनेवाला (कर)।

शती—स्त्री० [सं० सत+इनि, शतिन्] १. सौ का समूह। सैकड़ा। जैसे—दुर्गा सप्तशती। २. दे० 'शताब्दी'।

शतोदर—पुं० [सं० ब० स०] शिव का एक नाम। २. शिव का एक अनुचर या गण। ३. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

शतोदरी—स्त्री० [सं० शतोदर+ङीप्] कार्तिकेय की एक मातृका।

शत्रुंजय—पुं० [सं०शत्रु√जि (जीतना)+खच्—मुम्] १. काठियावाड़ में स्थित एक प्रसिद्ध पर्वत। विमलाद्रि। २. परमेश्वर।

वि० शत्रु को जीतनेवाला।

शत्रु—पुं० [सं०] १. दो पक्षों में से हर एक जिनमें एक दूसरे के प्रति दुर्भावना हो। २. वह जो अपना अथवा दूसरे का घोर अहित चाहता हो। ३. वह जो किसी के नाश के लिए उतारू हो।

शत्रुघाती—पुं० [सं० शत्रु √ हन् (मारना)+णिनि–कुत्व,=घ, शत्रु-घातिन्] शत्रुघ्न के पुत्र का नाम।

वि० शत्रु का नाश करनेवाला।

शत्रुघ्न—पुं० [सं० शत्रु√हन् (मारना)+क] सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न राजा दशरथ के चतुर्थ पुत्र।

वि० शत्रुओं को मार डालनेवाला।

शत्रुघ्नी—स्त्री० [सं० शत्रुघ्न+ङीप्] हथियार।

शत्रुजित्—वि० [सं० शत्रु√जि (जीतना)+क्विप्, तुक्] शत्रु को जीतनेवाला।

पुं० शिव।

शत्रुता—स्त्री० [सं० शत्रु+तल्+टाप्] द्वेष भाव से उत्पन्न वह मनोभावना जिससे किसी को कष्ट या हानि पहुँचाने की प्रवृत्ति होती है।

विशेष—वैर और शत्रुता में मुख्य अंतर यह है कि वैर का स्वरूप अपेक्षया अधिक उग्र या तीव्र होता है और सदा जाग्रत रहता है। वैर जातिगत या स्वाभाविक भी हो सकता है, पर शत्रुता में ये बातें या तो होती ही नहीं या कम होती हैं। नेवले और साँपों में वैर ही होता है शत्रुता नहीं। इसके विपरीत हम किसी अवसर पर अज्ञान या मूर्खतावश अपने साथ शत्रुता तो कर सकते हैं परन्तु वैर नहीं कर सकते।

शत्रुताई†—स्त्री०=शत्रुता।

शत्रुत्व—पुं० [सं० शत्रु+त्व] शत्रुता। दुश्मनी।

शत्रुदमन—वि० [सं० शत्रु√ दम् (दमन करना)+ल्युट्—अन] शत्रुओं का दमन या नाश करनेवाला।

पुं० दशरथ के पुत्र शत्रुघ्न।

शत्रुमर्द्दन—पुं०[सं० शत्रु√ मृद् (मर्दन करना)+ल्यु—अन]शत्रुघ्न का एक नाम।

वि० शत्रुओं का मर्दन करनेवाला।

शत्रुसाल—वि० [सं० शत्रु+हिं० सालना] शत्रु के हृदय में शूल अर्थात् कष्ट और भय उत्पन्न करनेवाला।

शत्रुहंता (तृ)—वि०[सं० ष० त०] शत्रु का नाश करनेवाला।

शत्रुहा—वि० [सं० शत्रु√हन् (मारना)+क्विप्, दीर्घ, न-लोप] शत्रु का नाश करनेवाला।

पुं० शत्रुघ्न।

शत्वरी—स्त्री० [सं० शत+वरच्+ङीप्]रात्रि। रात।

शद—पुं०[सं० √ शद् (पतला करना)+अच्]१. कोई वानस्पतिक खाद्य पदार्थ। २. राजस्व। कर।

शदक—पुं०[सं०√ शद् (पतला करना)+ण्वुल्—अक] ऐसा अनाज जिसकी भूसी न निकाली गई हो।

शदीद—वि०[अ०]१. प्रबल। २. कठिन।

शद्द—पुं०[अ०]१. शब्द पर जोर देना। २. द्वित्व अक्षर।

शद्रि—पुं०[सं०√ शद् (पतला करना)+क्रि] १. मेघ। बादल। २. हाथी। ३. अर्जुन।

स्त्री० १. बिजली। २. खंड।

शन—पुं०[सं० शन+अच्]१. शांति। २. चुप्पी। मौन।

†पुं०=सन नामक पौधा।

शनपुष्पी—स्त्री०[सं० ब० स०] वन-सनई।

शनाख्त—स्त्री०[फा०] ठीक ठीक और पूरी पूरी पहचान।

शनास (सा)—वि०[फा०] पहचानने या परखनेवाला।

शनासाई—स्त्री०[फा०] जान-पहचान। परिचय।

शनि—पुं०[सं० शन+इनि√ शो (पतला करना)+अनि-कित्] १. सौर जगत के नौ ग्रहों में सातवाँ ग्रह जो फलित ज्योतिष में अशुभ और कष्टदायक माना जाता है। शनैश्चर। २. दुर्भाग्य। बद-किस्मती।

†पुं०=शनिवार।

शनिप्रसू—स्त्री०[सं० ष० त० स०] शनि की माता छाया जो सूर्य की पत्नी कही गई हैं।

शनि-प्रिय—पुं०[सं० ष० त० स०] नीलमणि। नीलम।

शनिवार—पुं०[सं० मध्य० स०] सप्ताह के सात दिनों में एक दिन का नाम जो शुक्र और रवि के बीच पड़ता है।

शनिश्चर†—पुं०=शनि।

शनैः—अव्य० [सं० शण+डैसि—नुक् पृषो०] धीरे। आहिस्ता। हौले।

शनैश्चर—पुं०[सं० शनैस्√ चर् (चलना)+ट] शनि नामक ग्रह।

शपथ—स्त्री०[√शप् (निन्दा करना)+अथन्] अपने कथन की सत्यता जतलाने के उद्देश्य से ईश्वर, देवता अथवा किसी पूज्य या अतिप्रिय वस्तु की दी जानेवाली साक्षी तथा की जानेवाली दुहाई। (ओथ)

शपथ-पत्र—पुं०[सं० ष० त०] ईश्वर अथवा अंतःकरण को साक्षी रखकर शुद्ध हृदय से लिखा जानेवाला वह पत्र जो न्यायालय में या वरिष्ठ अधिकारी के सामने यह सूचित करने के लिए उपस्थित किया जाता है कि मेरा अमुक कथन या प्रस्थापन बिलकुल ठीक है। हलफनामा। (एफिडेविट)

शपथ-भंग—पुं०[सं० ष० त०] शपथपूर्वक कोई प्रतिज्ञा करके भी उसका पालन न करना, जो विधिक दृष्टि से अपराध माना जाता है।

शपन—पुं० [सं०√शप् (बिदा करना)+ल्युट् —अन]१. शपथ। कसम २. गाली। दुर्वचन।

शप्त—पुं०[सं०√शप्(निन्दा करना)+क्त] उलूक नामक तृण।

वि० जिसे शाप दिया गया या मिला हो।

शफ—पुं०[सं०√शप्+अच्, पृषो० प=फ]१. वृक्ष की जड़। २. पशुओं का खुर। ३. नखी नामक गन्ध द्रव्य।

शफक—स्त्री०[अ० शफ़क़] सूर्य के निकलने और डूबने के समय क्षितिज पर दिखाई देनेवाली लाली।

मुहा०—शफक फूलना=उक्त अवसरों पर क्षितिज में दूर तक लाली फैलना। उदा०—फूले शफक तो जर्द हों गालों के सामने। पानी भरे घटा तेरे बालों के सामने।—कोई शायर।

शफकत—स्त्री० [अ० शफ़क़त] १. अनुग्रह। मेहरबानी। २. प्रेम। मुहब्बत।

शफ़गोल—पुं० [फा०] इसबगोल।

शफ़तालू—पुं०[फा०] एक प्रकार का बड़ा आड़ू या सतालू।

शफर—स्त्री०[सं० शफ√ रा (लेना)+फ]पोठी या सौरी मछली।

शफरी—स्त्री०=शफर।

शफा—स्त्री०[अ० शफा]१. स्वास्थ्य। तन्दुरुस्ती। २. आरोग्य।

शफाखाना—पुं०[अ० शफ़ा+फा० खाना] १. स्वास्थ्यवर्द्धक स्थान। २. अस्पताल। चिकित्सालय।

शफीक—वि० [अ० शफ़ीक़]१. शफकत या अनुग्रह करनेवाला। २. प्यार करने या प्रिय लगनेवाला।

पुं० प्रिय मित्र।

शफ्तालू—पुं०=शफतालू।

शफ्फाफ—वि०[अ० शफ़्फ़ाफ़] उजला या धवल (वस्त्र)।

शब—स्त्री०[फा०] रात। रात्रि।

पद—शबोरोज=रात-दिन।

शबदी—पुं०[सं० शब्द] १. शब्द। लफ्ज। २. किसी महात्मा के कहे हुए उपदेशात्मक पद या पद्य। जैसे—गुरु नानक की शबदी।

शबनम—स्त्री० [फा०] १. ओस। २. सफेद रंग का एक प्रकार का बढ़िया कपड़ा।

शबनमी—स्त्री०[फा०] शबनम अर्थात् ओस से बचने के लिए ताना जानेवाला कपड़ा।

शबबरात—स्त्री०[फा०] हिजरी सन् के शावान माह की चौदहवीं रात।

विशेष—इस दिन मुसल्मान अपने मृत पूर्वजों के उद्देश्य से गरीबों को भोजन बाँटते, उत्सव मनाते, दीपमालाएँ जलाते तथा आतिशबाजी छोड़ते हैं।

शबर—पुं०[सं० श√ वृ (वरण करना)+अच्]१. दक्षिण भारत में रहनेवाली एक जंगली या पहाड़ी जाति। २. जंगली आदमी। ३. शिव। ४. हाथ। ५. जल। ६. ऐसी सन्तान जो शूद्र तथा भील के संयोग से उत्पन्न हुई हो।

वि० चितकबरा।

शबरक—वि०[सं० शबर+कन्] [स्त्री० शबरिका]१. शबर लोगों में होनेवाला। २. जंगली।

शबर-चंदन—पुं०[सं० शबर+हिं० चंदन] एक प्रकार का चंदन जो लाल और सफेद दोनों मिले हुए रंगों का होता है।

शबरी—स्त्री० [सं० शबर+ङीष्] १. शबर जाति की नारी। २. रामायण में वर्णित शबर जाति की एक राम-भक्त स्त्री जिसने उन्हें चख चखकर जूठे बेर खिलाये थे। ३. बौद्ध तांत्रिकों की एक उपास्य नायिका जो बहुत दूर के किसी ऊँचे पर्वत पर रहनेवाली अबोध बालिका के रूप में मानी गई है।

शबल—वि०[सं० शप् (निन्दा करना)+वल्, प+व]१. चितकबरा। २. रंगबिरंगा। ३. अनुकृत।

पुं० १. कई रंगों को मिलाकर बनाया हुआ रंग। २. बौद्धों का एक प्रकार का धार्मिक कृत्य। ३. अगिया घास। ४. चित्रक। चीता।

शबलक—वि०[सं० शबल+कन्]=शबल।

शबलता—स्त्री०[सं० शबल+तल्—टाप्] शबल होने की अवस्था या भाव। रंग-विरंगा होना।

शबलत्व—पुं०[सं० शबल+त्व]=शबलता।

शबला—स्त्री०[सं० शबल+टाप्] १. चितकबरी या बहुरंगी गौ। २. कामधेनु।

शबलित—भू० कृ० [सं० शबल+इतच्] १. चितकबरा। रंगबिरंगा। २. अनेक रंगों में रँगा हुआ।

शबली—स्त्री०[सं० शबल+ङीप्] शबला। (दे०)

शबाब—पुं० [अ०] १. यौवनकाल। युवावस्था। जवानी। २. उठती जवानी। ३. युवावस्था का सौन्दर्य। ४. सौन्दर्य।

शबाहत—स्त्री०[अ०]१. रूप। २. आकृति। सूरत। ३. अनुरूपता। समानता।

शबिस्तान—पुं०[फा०]१. वड़े आदमियों के सोने का कमरा। अंतःपुर। २. मसजिद में वह स्थान जहाँ रात को ईश्वर-प्रार्थना करते हैं।

शबीह—स्त्री०[अ०]१. वह चित्र जो किसी व्यक्ति की सूरत-शक्ल के ठीक अनुरूप बना हो। २. अनुरूपता। समानता।

शब्द—पुं० [सं०√शब्द्+घञ्]१. किसी प्रकार के आघात के फल-स्वरूप वायु में होनेवाला ऐसा कंप जो कानों में पहुँचकर सुनाई पड़ता हो। आवाज। ध्वनि। (साउन्ड) २. अक्षरों, वर्णों आदि से बना और मुँह से उच्चारित होने या लिखा जानेवाला वह संकेत जो किसी कार्य, बात या भाव का बोधक हो। सार्थक ध्वनि। लफ्ज। (वर्ड) ३. परमात्मा का मुख्य नाम ओम्। ४. साधु-संतों के ऐसे पद जिनमें निराकार का गुण कथन होता है।

शब्द-काम—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० शब्द-कामा] जिसे बात-चीत करने का चस्का हो। बातें करने का शौकीन। बातरसिया।

पुं० बातचीत में होनेवाली चुहलबाजी।

शब्दग्रह—पुं०[सं० शब्द√ग्रह्+अच्] कान।

वि०[सं०] शब्द अर्थात् ध्वनि या वर्ण ग्रहण करनेवाला।

शब्द-चातुर्य—पुं० [सं० ष० त०] बातचीत करने का कौशल।

शब्द-चित्र—पुं०[ब० स०]१. अनुप्रास नामक अलंकार। २. चुने हुए शब्दों में किसी घटना या बात का किया जानेवाला सजीव वर्णन। ३. ऐसी रचना जिसमें किसी घटना, बात आदि का सजीव वर्णन हो।

शब्द-चोर—पुं० [सं०] दूसरों की रचनाओं से शब्द, प्रयोग आदि उड़ा लेने वाला।

शब्द-जाल—पुं० [स० ष० त०, ब० स०] कथन का वह रूप जिसमें कोई छोटी-सी तथा सीधी-सी बात बहुत से तथा भारी भारी शब्दों में घुमा-फिरा कर कही गई हो।

शब्दत्व—पुं०[सं० शब्द+त्व] शब्द का धर्म या भाव। शब्दता।

शब्द-नृत्य—पुं० [सं० ष० त०] एक प्रकार का नृत्य।

शब्द-पति—पुं०[सं० ष० त०]१. बातों का धनी। २. विशेषतः ऐसा व्यक्ति जो कहता तो बहुत कुछ हो परन्तु करता-धरता कुछ न हो।

शब्द-प्रमाण—पुं०[सं० कर्म० स०] मौखिक प्रमाण। आप्त प्रमाण।

शब्द-प्राश—पुं० [सं० ष० त०] शब्द के अर्थों का अनुसंधान। शब्दार्थ की जिज्ञासा।

शब्द-बोध—पुं० [सं० तृ० त०] किसी की कही हुई बातों मात्र से प्राप्त होनेवाला ज्ञान।

शब्द-ब्रह्म—पुं०[सं० मध्य० स०]१. परमात्मा या ब्रह्म का वह ब्रह्मावाला रूप जिससे उसने सृष्टि की रचना की थी। २. योगियों, साधकों आदि की परिभाषा में कुंडलिनी से ऊपर उठनेवाले नाद का वह रूप जो निरुपाधि दशा में रहता है। ३. ओंकार। प्रणव। ४. वेद।

शब्द-भेदी—पुं०=शब्दवेधी।

शब्दमहेश्वर—पुं०[सं० ष० त०] शिव।

शब्दयोनि—स्त्री०[सं० ष० स०] १. शब्द की उत्पति। व्युत्पत्ति। २. जड़। मूल।

पुं० ऐसा शब्द जो अपने आरंभिक या मूल रूप में हो, विकृत न हुआ हो।

शब्द-विद्या—स्त्री०[सं० ष० त०] शब्द-शास्त्र। व्याकरण।

शब्दविरोध—पुं० [सं० ष० त०] शब्द-गत विरोध। विषयगत विरोध से भिन्न।

शब्दवेध—पुं०[सं० शब्द√विध् (मारना)+घञ्] किसी ऐसे चिह्न या लक्ष्य पर तीर चलाना जो देखा तो न गया हो परंतु जिससे या जिसका होता हुआ शब्द सुना गया हो।

शब्दवेधी (धिन्)—पुं० [सं० शब्द√विध् (वेधन करना)+णिनि] १. वह व्यक्ति जो बिना लक्षित किए ऐसे चिह्न या लक्ष्य का वेधन करता हो जहाँ से कुछ शब्द हुआ हो। २. अर्जुन।

शब्दशः—अव्य०[सं०]१. जैसे शब्द हैं वैसे। २. शब्दावली के अनुसार। एक एक शब्द करके।

शब्द-शक्ति—स्त्री०[ष० त०] शब्द की वह शक्ति जो उसका अर्थ उद्घाटित करती है। ये तीन प्रकार की मानी गई है—अभिधा, लक्षणा और व्यंजना।

शब्द-शास्त्र—पुं० [सं० ष० त०, मध्य० स०] वह शास्त्र जिसमें भाषा के भिन्न भिन्न अंगों और स्वरूपों का विवेचन तथा निरूपण किया जाय। व्याकरण।

शब्द-शूर—पुं० [सं० स० त०] वह जो केवल बातें करने में अपनी बहादुरी दिखाता हो।

शब्द-साधन—पुं० [सं० ब० स०] व्याकरण का वह अंग या अध्याय जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति, रूपांतर आदि दिखलाया जाता है।

शब्द-सौष्ठव—पुं० [सं० ष० त०] किसी रचना का शब्द-गत सौन्दर्य। शब्दों के संकलन, क्रम आदि से लक्षित होनेवाला सौंदर्य।

शब्दाडंबर—पुं० [सं० ष० त०]१. साधारण बात कहने के लिए बड़े-बड़े शब्दों और जटिल वाक्यों का प्रयोग। शब्द-जाल। (बाम्बॉस्ट) २. साहित्य में, उक्त प्रकार की कोई ऐसी उक्ति जिसमें कोई विशेष चमत्कार न हो। जैसे—केवल अनुप्रास के विचार से कहना—का बलमा बलमा बलमा बलमा बलमा बलमा हैं।

शब्दातीत—वि० [सं० ब० स०]१. शब्द की जिस तक पहुँच न हो। जो शब्दों के परे हो। २. जो शब्दों में न कहा जा सके। अकथनीय। ३. ईश्वर का एक विशेषण।

शब्दानुशासन—पुं०[सं० ष० त०] व्याकरण।

शब्दायमान—वि० [सं० शब्द+क्यङ्, शानच्, मुम्] शब्द करता हुआ।

शब्दार्थ—पुं०[सं० ष० त०] शब्द का अर्थ।

शब्दार्थी—स्त्री०[सं०] किसी अन्य भाषा के कुछ विशिष्ट शब्दों अथवा अपनी ही भाषा के कठिन या पारिभाषिक शब्दों की ऐसी सूची जिसमें उन शब्दों के अर्थ, पर्याय या व्याख्याएँ भी की गई हों। (ग्लासरी)

शब्दालंकार—पुं०[सं० मध्य० स०] साहित्य में अलंकारों के दो मुख्य भेदों में से एक जिसमें शब्दों या उनके वर्णों का चमत्कार प्रधान होता है, अर्थों का नहीं।

शब्दावली—स्त्री०[सं० ष० त०]१. किसी बोली या भाषा में प्रयुक्त होनेवाले शब्दों का समूह। २. किसी जाति, वर्ग, संप्रदाय आदि में प्रचलित सब शब्दों का समूह। (वोकेबुलरी) ३. किसी वाक्य आदि के शब्दों का प्रकार तथा क्रम। ४. किसी विज्ञान या विषय में प्रयुक्त होनेवाले पारिभाषिक शब्दों की सूची, विशेषतः ऐसी सूची जो अक्षरक्रम से लगी हो और जिसके साथ उसके पर्याय या व्याख्याएँ भी दी गई हों। (टर्मिनालॉजी) ५. दे० 'शब्दार्थी'।

शब्देंद्रिय—स्त्री०[सं० ष० त०] कान।

शब्बो—स्त्री०[फा०]रजनीगंधा नामक पौधा या उसका फूल। गुलशब्बो।

शम—पुं०[सं०√ शम् (शान्ति प्राप्त करना)+घञ्] १. शांति। २. मोक्ष। ३. निवृत्ति। छुटकारा। ४. अंतःकरण तथा इन्द्रियों को वश में रखना जो साहित्य में शान्त रस का स्थायी भाव माना गया है। ५. क्षमा। ६. उपकार। ७. तिरस्कार। ८. हस्त। हाथ।

शमई—वि०[अ० शमअ] १. शमा का। २. शमा के रंग का।

पुं० शमा अर्थात् मोमबत्ती की तरह का सफेद रंग।

शमक—वि०[सं० √ शम्+ण्वुल्—अक]१. शमन करनेवाला। (ओषधि या औषध) जो त्वचा की जलन और शोथ की पीड़ा कम करता अथवा उनका शमन करता हो। (डिमल्सेन्ट)

शमता—स्त्री० [सं० शम्+तल+टाप्] शम का धर्म या भाव। शमत्व।

शमथ—पुं० [सं० शम+अथच् बाहु०]१. शांति। २. मंत्री।

शमन—पुं०[सं०√ शम् (शान्त होना)+ल्युट्—अन] १. बढ़े हुए उपद्रव, कष्ट, दोष को दबाने की क्रिया। दमन। जैसे—रोग या विद्रोह का शमन। २. शांति। ३. वैद्यक में, ऐसी ओषधि जो वात-संबंधी दोषों को दूर करती है। ४. यम। ५. हिंसा। ६. अनाज। ७. बलि।

शमनवस्ति—स्त्री० [सं० मध्य० स०] एक प्रकार का वस्तिकर्म जिसमें प्रियंगु, मुलेठी, नागरमोथा और रसौत को दूध में पीसकर मलद्वार से पिचकारी देते हैं।

शमनस्वसा—स्त्री० [सं० ष० त०] यम की भगिनी अर्थात् यमुना।

शमनी—स्त्री० [सं० शमन+ङीप्] रात। रात्रि।

शमनीय—वि०[सं०√शम् (शान्त होना) +अनीयर्] जिसका शमन किया जा सके या किया जाने को हो।

शमल—पुं०[सं० शम+कलच्] १. विष्ठा। गुह। २. पाप।

शमला—पुं०[अ० मिलाओ सं० शामुल्य]१. प्राचीन काल का एक प्रकार का पतला शाल जो पगड़ी पर बंद के रूप में बाँधा जाता था। २. पुरानी चाल की एक प्रकार की पगड़ी। ३. पगड़ी पर लगाया जानेवाला तुर्रा। कलँगी।

शमशम—पुं०[सं० मध्यम० स०] शिव।

शमशीर—स्त्री०=शमशेर।

शमशेर—स्त्री०[फा० शम=नाखून+शेर=सिंह]१. वह हथियार जो शेर की पूँछ अथवा नख के समान बीच में कुछ झुका हो अर्थात् तलवार खड्ग आदि। २. तलवार।

शमांतक—पुं० [सं० ष० त०] कामदेव।

शमा—स्त्री०[अ० शमअ]१. मोम। २. मोमबत्ती। ३. दीया।

शमादान—पुं०[फा०] वह पात्र जिसमें मोमबत्तियाँ रखकर जलाई जाती हैं।

शमि—स्त्री०[सं० शम+इनि] १. शिंबी धान्य (मूँग, मसूर, मोठ, उड़द, चना, अरहर, मटर, कुलथी, लोबिया इत्यादि)। २. सफेद कीकर।

पुं० यज्ञ।

शमित—भू० कृ०[सं० √ शम् (शान्त होना)+क्त]१. जिसका शमन किया गया हो या हुआ हो। दबाया हुआ। २. शान्त।

शमिता (तृ)—पुं० [सं०√शम् (शान्त होना)+तृच्] यज्ञ में पशु की बलि देनेवाला।

शमिपत्र—पुं०[सं० ब० स०] पानी में होनेवाली लजालू नाम की लता।

शमी—स्त्री०[सं० शमि+ङीप्, शिवा?] एक प्रकार का बड़ा कीकर जो पवित्र माना जाता है। सफेद कीकर।

वि०[सं० शमिन्]१. शमन करनेवाला। २. शान्त।

शमीक—पुं० [सं० शमी+कन्—शम+ईकन्] एक प्रसिद्ध क्षमा-शील ऋषि जिनके गले में परीक्षित ने मरा हुआ साँप डाल दिया था। इस पर वे तो कुछ भी न बोले, पर इनके पुत्र शृंगी ऋषि ने परीक्षित को शाप दिया जिसके कारण सातवें दिन तक्षक के काटने से परीक्षित की मृत्यु हुई थी।

शमीगर्भ—पुं० [सं० शमीगर्भ+अच्] १. ब्राह्मण। २. अग्नि।

शमीधान्य—पुं० [सं० मयू० स०]=शिंबी धान्य।

शमीर—पुं० [सं० शमी+र] शमी वृक्ष।

शमीरकंद—पुं० [सं० मध्यम० स०] वाराही कंद। शूकर कंद।

शम्स—पुं० [अ०] १. सूर्य। २. तसबीह में लगा हुआ फुँदना।

शम्सी—वि० [अ०] सूर्य-संबंधी। सौर।

स्त्री० मुगलशासन में मिलनेवाला छमाही वेतन।

शयंड—पुं० [सं०√शी (शयन करना)+अण्डन्] १. एक प्राचीन जनपद। २. उक्त जनपद का निवासी।

शय—पुं० [सं०√ शी (शयन करना)+अच्] १. शय्या। २. निद्रा। नींद। ३. साँप। ४. पण। शर्त। ५. हाथ।

†स्त्री० [अ० शै] १. वस्तु। २. बाधा (भूत-प्रेत की)।

स्त्री०=शह।

शयथ—पुं० [सं० शी+अथच्] १. गहरी नींद। २. मृत्यु। मौत। ३. यम। ४. साँप। ५. सूअर। ६. मछली।

शयन—पुं० [सं०√ शी+ल्युट्—अन] १. निद्रित होने या सोने की क्रिया। सोना। २. खाट। शय्या। ३. बिस्तर। बिछौना। ४. स्त्री-प्रसंग। मैथुन। संभोग।

शयन आरती—स्त्री० [सं० शयन+आरती] देवताओं की वह आरती जो रात में उन्हें सुलाने के समय की जाती है।

शयन-कक्ष—पुं० [सं० ष० त०] सोने का कमरा या घर। शयनागार।

शयन-गृह—पुं० [सं०ष०त०] सोने का स्थान। शयन मंदिर। शयनागार।

शयन-बोधिनी—स्त्री० [सं० ष० त०] अगहन मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

शयन-भोग—पुं० [सं० शयन+भोग] देवताओं के शयन समय का भोग। रात्रि का नैवेद्य जो मंदिरों में चढ़ता है।

शयन-मंदिर—पुं० [सं० ष० त०] सोने का स्थान। सोने का कमरा। शयन-गृह। शयनागार।

शयनागार—पुं० [सं० ष० त०] सोने का स्थान। शयन मंदिर। शयन-गृह।

शयनासन—पुं० [सं० ष० त०] १. वह आसन या बिस्तर जिस पर कोई सोता हो। २. खाट, चारपाई, चौकी, पीढ़ा आदि वे सब उपकरण जिन पर लोग बैठते, लेटते या सोते हैं।

शयनिका—स्त्री० [सं० शयन+कन्-टाप्–इत्व] १. शयनागार। २. आज-कल रेलगाड़ी का वह डिब्बा जिसमें यात्रियों के सोने की व्यवस्था रहती है। (स्लीपर)

शयनीय—वि० [सं०√ शी (शयन करना)+अनीयर्] सोने के योग्य (स्थान)।

शयनैकादशी—स्त्री० [सं० ष० त०] आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

शयानक—पुं० [सं०√शी (शयन करना)+शानच्+कन्, शी+आनकवी] १. सर्प। साँप। २. गिरगिट।

शयालु—वि० [सं० शी+आलुच्] नींद से भरा हुआ। निद्रालु।

पुं० १. अजगर। २. कुत्ता। ३. गीदड़।

शयित—भू० कृ० [सं०√ शी (शयन करना)+क्त] १. सोया हुआ। सुप्त। २. लेटा या लेटाया हुआ। ३. आड़े बल में रखा हुआ।

पुं० १. अजगर। २. लिसोड़ा।

शयिता (तृ)—वि० [सं० √ शी (शयन करना)+तृच्] सोनेवाला।

शय्या—स्त्री० [सं० शी+क्यप्—टाप्] १. खाट। पलंग। २. पलंग पर बिछा हुआ बिछौना।

शय्यागत—वि० [सं० द्वि० त० स०] शय्या पर पड़ा हुआ।

पुं० रोगी।

शय्या-दान—पुं० [सं० ष० त०स०] मृतक की प्रेत-आत्मा की शांति के उद्देश्य से महापात्र को दिया जानेवाला पलंग तथा बिछावन।

शय्या-पाल—पुं० [सं० शय्या√ पाल् (पालन करना)+अच्] वह जो राजाओं आदि के शयनागार की व्यवस्था तथा रक्षा करता हो।

शय्या-मूत्र—पुं० [सं० ष०त०स०] बालकों का वह रोग जिसके कारण वे सोये-सोये बिस्तर पर पेशाब कर देते हैं।

शय्या-व्रण—पुं० [सं०मध्यम० स०] रोगी के बहुत दिनों तक शय्या-ग्रस्त रहने के कारण उसकी पीठ आदि के छिल जाने से होनेवाला घाव। बिस्तर घाव। (बेड-सोर)

शरंड—पुं० [सं० शृ+अण्डच्] १. पक्षी। चिड़िया। २. छिपकली। ३. गिरगिट। ४. पुरानी चाल का एक प्रकार का गहना।

वि० १. कामुक। २. धूर्त।

शर—पुं० [सं० √शृ +अच्] तीर। बाण। २. सामुद्रिक शास्त्र में, शरीर के किसी अंग पर होनेवाला तीर का-सा निशान जो शुभाशुभ फल का सूचक माना जाता है। ३. कामदेव के पाँच बाणों के आधार पर पाँच की सूचक संख्या। ४. बरछी या भाले का फल। ५. हिंसा। ६. सरकंडा। ७. सरपत। ८. उशीर। खस। ९. दही या दूध के ऊपर की मलाई। साढ़ी।

शरअ—स्त्री० [अ०] १. वह सीधा रास्ता जो ईश्वर ने भक्तों के लिए बतलाया हो। २. कुरान में बतलाया हुआ विधान या इसी प्रकार की आज्ञा जिसका पालन प्रत्येक मुसलमान के लिए जीवन-यात्रा के उपरान्त के प्रसंग में आवश्यक और कर्त्तव्य हो। ३. इस्लामी धर्म-शास्त्र। ४. धर्म। मजहब। ५. दस्तूर। प्रथा।

शरई—वि० [अ०] १. शरअ के अनुसार किया जानेवाला। २. जो शरअ की दृष्टि में उचित हो। ३. जिसका कुरान में उल्लेख हो और पालन हर मुसलमान के लिए आवश्यक बतलाया गया हो। ४. शरअ का पालन करनेवाला।

शरकांड—पुं० [सं० ष० त०] सरपत। सरकंडा।

शरकार—पुं० [सं० शर√कृ (करना)+अण्] वह जो तीर बनाता हो।

शर-कोट—पुं० [सं० ष० त०] १. इस प्रकार चलाए हुए तीर कि शत्रु के चारों ओर तीरों का घेरा बन जाय। २. इस प्रकार तीरों से बननेवाला घेरा।

शरगा—पुं० [अ० शर्गः] बादामी रंग का घोड़ा।

शरच्चन्द्र—पुं० [सं० मध्यम० स०] १. शरत् ऋतु का चन्द्रमा। २. विशेषतः शरत् पूर्णिमा का चन्द्र।

शरज—पुं० [सं० शर√जन् (उत्पन्न करना)+ड] मक्खन। नवनीत। वि० शर से उत्पन्न या बना हुआ।

शरट—पुं० [सं०√शृ (गमनादि)+अटन्] १. कुसुंभ नाम का साग। २. करंज। ३. गिरगिट।

शरटी—स्त्री० [सं० शरट्—ङीप्] लज्जालुक। लाजवंती।

शरण—स्त्री० [सं० शृ (पूरा करना)+ल्युट्-अन], १. उपद्रव, कष्ट आदि से बचने के लिए किसी समर्थ के पास आकर अपनी रक्षा कराने की क्रिया या भाव। पनाह।

क्रि० प्र०—में आना या जाना।

२. ऐसा स्थान जहाँ पर जाकर कोई रक्षित रहे।

क्रि० प्र०—पाना।—लेना।

३. रक्षा के लिए भागकर आये हुए व्यक्ति के शत्रु को मारना या उसका नाश करना। ४. घर। मकान। ५. अधीनस्थ व्यक्ति। मातहत। ६. सारन प्रदेश का पुराना नाम।

शरण-क्षेत्र—पुं० [सं० ष० त०] १. ऐसा स्थान जहाँ अपराधी, भगोड़े आदि पहुँचकर शरण लेते और सुरक्षित रहते हों। शरणस्थान। विशेष—मध्य युग में ईसाई धर्माधिकारी अपनी शरण में आये हुए लोगों को राजकीय अधिकारियों के हाथों से बचा कर अपने यहाँ रख लेते थे। जिससे यह शब्द बना था। आजकल दूसरे देशों के अपराधियों को शरण देनेवाले राज्यों या क्षेत्रों के लिए व्यवहृत।

२. पशु-पक्षियों आदि के लिए वह सुरक्षित स्थान जहाँ वे निर्भयतापूर्वक रह सकते हों और जहाँ उनका शिकार करने की मनाही हो। शरणस्थान। (संक्चुअरी)

शरणगृह—पुं० [सं० ष० त०] जमीन के नीचे बनाया हुआ वह स्थान जहाँ लोग हवाई जहाजों के आक्रमण से बचने के लिए छिपकर रहते हैं। (शेल्टर)

शरणद—वि० [सं० शरण√दा+क] शरण देनेवाला।

शरणस्थान—पुं० [सं० शरण ष० त०] शरण-क्षेत्र। (दे०)।

शरणा—स्त्री० [सं० शरण-टाप्] गंध-प्रसारिणी (लता)।

शरणागत—भू० कृ० [द्वि० त० स०] किसी की शरण में आया हुआ।

शरणागति—स्त्री० [सं०] किसी की शरण में आए हुए होने की अवस्था या भाव।

शरणापन्न—वि० [सं० द्वि० त० स०] शरणागत।

शरणार्थी(र्थिन्)—वि० [सं० शरण√अर्थ (माँगना)+णिनि ब० स० वा०] जो किसी की शरण चाहता हो। फलतः असहाय तथा विस्थापित। पुं० आज-कल वे लोग जो पाकिस्तान से भागकर शरण लेने के लिए भारत में आकर बस गये हैं। (रिफ़्यूजी)

शरणि—स्त्री० [सं० श्रृ+अनि] १. मार्ग। पथ। रास्ता। २. जमीन। भूमि। ३. हिंसा।

शरणी—स्त्री० [सं० शरण-ङीष्] १. गंध-प्रसारिणी नाम की लता। २. जयंती। ३. पथ। मार्ग।

वि० स्त्री० शरण देनेवाली। जैसे—अशरण-शरणी भवानी।

शरण्य—वि० [सं० शरण+यत्] १. जिसके पास या जहाँ पहुँच कर शरण ली जाय या ली जा सके। २. आक्रमण, विकार आदि से रक्षित रखने वाला। (प्रोटेक्टिव) जैसे—आयुर्वेद का शरण्य स्वरूप।

शरण्यता—स्त्री० [सं० शरण्य+तल्—टाप्] शरण्य का भाव।

शरण्यशुल्क—पुं० दे० 'संरक्षण शुल्क'।

शरण्या—स्त्री० [सं० शरण्य—टाप्] दुर्गा।

शरण्यु—पुं० [सं० शृ+अन्यु] १. मेघ। बादल। २. वायु। हवा। स्त्री० सूर्य की पत्नी का नाम।

शरत्—स्त्री० [सं० शृ+अदि चर्त्व] १. वैदिक युग में, भाद्रपद और आश्विन महीनों की ऋतु। २. आज-कल, आश्विन और कार्तिक महीनों की ऋतु। ३. वत्सर। वर्ष।

शरत—स्त्री० १.=शरत्। २.=शर्त्त।

शरता—स्त्री० [सं०] १. शर का भाव। २. बाण-विद्या। उदा०—छोंड़ि दई शरता....।—केशव। ३. बाण-विद्या में होनेवाली पटुता।

शरत्तिया—अव्य० =शर्त्तिया।

शरत्काल—पुं० [सं० ष० त० स०] आश्विन और कार्तिक के दिन। शरद् ऋतु।

शरत्पद्म—पुं० [सं० मध्यम० स०] श्वेत पद्म।

शरत्पर्व—पुं० [सं० ष० त० स०] शरद पूर्णिमा।

शरदंड—पुं० [सं० ब० स०] १. चाबुक। २. सरकंडा। ३. शरदंडा नदी के तट पर बसी हुई साल्व जाति की एक शाखा।

शरदंडा—स्त्री० [सं० शरदंड—टाप्] पूर्वी पंजाब की एक प्राचीन नदी (कदाचित् शरावती)।

शरदंत—पुं० [सं० ष० त०] शरद् ऋतु का अंत। अर्थात् हेमंत ऋतु का आरंभ।

शरद—स्त्री० =शरत्।

शरदई—वि०=सर्दई (सर्दे के रंग का)।

शरद पूर्णिमा—स्त्री० [सं० ष० त० स०] क्वार मास की पूर्णिमा। शारदीय पूर्णिमा।

शरदा—स्त्री० [सं० शरद—टाप्] १. शरद ऋतु। २. वर्ष। साल।

शरदिंदुमुखी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

शरदिज—वि० [सं० शरदि√जन् (उत्पन्न करना)+ड] शरत् ऋतु में उत्पन्न होनेवाला।

शरदेंदु—पुं० [सं० ष० त० स०] शरद् ऋतु का चन्द्रमा। शरच्चंद्र।

शरद्वत्—पुं० [सं० शरत्+मतुप्—म=व] शरत् ऋतु।

शरधि—पुं० [सं० शर्√धा (रखना)+कि] तूणीर। तरकश।

शरन्मुख—पुं० [सं० ष० त० स०] शरद् ऋतु का आरंभ।

शरपंख—पुं० [सं० ब० स०] जवासा। धमासा।

शर-पंजर—पुं० [सं०] शर-कोट। (दे०) उदा०—जार्‍यो शर-पंजर छार कर्‍यो, नैऋत्यन को अति चित्त डर्‍यो।—केशव।

शरपुंख—पुं० [सं० ब० स०] १. नील की तरह का सर-फोंका नाम का पौधा। २. तीर या बाण में लगाया हुआ पंख या पर। ३. वैद्यक में, चीर-फाड़ के काम के लिए एक प्रकार का यंत्र।

शरफ़—पुं० [अ०] १. खूबी। २. बड़ाई। प्रशंसा। ३. सौभाग्य। ४. मान। प्रतिष्ठा। महत्त्व।

शरबत—पुं० [अ०] १. चीनी आदि में पकाकर तैयार किया हुआ ओषधि

या फल का गाढ़ा रस। जैसे—अनार, संतरे या शहतूत का शरबत। २. उक्त का कुछ अंश पानी में घोलकर बनाया हुआ पेय। ३. किसी फल का रस निचोड़कर तथा उसमें चीनी, पानी, आदि मिलाकर बनाया हुआ पेय। ४. ऐसा पानी जिसमें गुड़, चीनी, मिसरी आदि में से कोई चीज घुली हो। ५. मुसलमानों में एक रीति जिसमें विवाह के उपरांत कन्यापक्ष वाले वर पक्षवालों को शरबत पिलाते हैं। ६. उक्त अवसर पर वह धन जो शरबत पीने के उपलक्ष में वर पक्षवालों को दिया जाता है।

शरबत-पिलाई—स्त्री० [हिं० शरबत+पिलाना] वह धन जो वर और कन्या पक्ष के लोग एक दूसरे को शरबत पिलाकर देते हैं। (मुसल०)

शरबती—वि० [हिं० शरबत] १. शरबत की तरह मीठा या तरल। जैसे—शरबती तरकारी। २. उक्त के आधार पर रसपूर्ण, मधुर तथा प्रिय। जैसे—शरबती आँखें। ३. जो शरबत बनाने के काम आता हो। जैसे—शरबतीं नींबू, शरबती फालसा। ४. जो शरबत के रंग का हो। कुछ कुछ लाल। गुलाबी।

पुं० १. पानी में घुली हुई चीनी की तरह का एक प्रकार का हलका पीला रंग जिसमें हलकी लाली भी होती हो। २. एक प्रकार का नगीना जो पीलापन लिए लाल रंग का होता है। ३. एक प्रकार का बढ़िया कपड़ा जो तनजेब से कुछ मोटा और अद्धी से कुछ पतला होता है। ४. मीठा नींबू। ५. एक प्रकार का बढ़िया आम।

शरबती नींबू—पुं० [हिं० शरबत+नींबू] १. चकोतरा। २. गलगल। ३. जंबीरा या मीठा नींबू।

शरबान—पुं० [सं० शर+बान] अगिया घास।

शरभंग—पुं० [सं० ब० स०] एक प्राचीन महर्षि जो दक्षिण में रहते थे।

शरभ—पुं० [सं० शर√भृ+अभच्] १. टिड्डी। २. फतिंगा। ३. हाथी का बच्चा। ४. विष्णु। ५. ऊँट। ६. एक प्रकार का पक्षी। ७. शेर। सिंह। ८. आठ पैरोंवाला एक कल्पित मृग। ९. राम की सेना का एक यूथपति बन्दर। १०. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ४ नगण और १ सगण होता है। इसे शशिकला और मणिगुण भी कहते हैं। ११. दोहे का एक भेद जिसमें २० गुरु और ८ लघु मात्राएँ होती हैं।

शरभा—स्त्री० [सं० शरभ-टाप्] १. शुष्क अवयवों वाली और विवाह के अयोग्य कन्या। २. लकड़ी का एक प्रकार का यंत्र।

शरभू—पुं० [सं० शर√भू+क्विप्] कार्तिकेय।

शरम—स्त्री० [फा० शर्म] १. लज्जा। हया। गैरत।

मुहा०—शरम से गड़ना=मारे लज्जा के दबे या झुके जाना। बहुत लज्जित होना। **शरम से पानी पानी होना**=बहुत लज्जित होना।

२. किसी बड़े का लिहाज या संकोच। ३. इज्जत। प्रतिष्ठा।

शरमनाक—वि० [फा० शर्मनाक] (कार्य या व्यवहार) जिसके कारण शर्म आती हो या आनी चाहिए। लज्जाजनक। निर्लज्जतापूर्ण।

शरमल्ल—पुं० [सं० सप्त० त० स०] १. वह जो तीर चलाने में निपुण हो। धनुर्धारी। २. मैना पक्षी।

शरमसार—वि० [फा० शर्मसार] [भाव० शरमसारी] १. जिसे शरम हो। लज्जावाला। २. लज्जित। शरमिन्दा।

शरम-हुजूरी—स्त्री० [अ० शर्म+फा० हुजूर।] मुंह देखने की लज्ज।

शरमाऊ†—वि० [हिं० शरम+आऊ (प्रत्य०)] शरमानेवाला। लजीला।

शरमाना—अ० [अ० शर्म+आना (प्रत्य०)] १. किसी के सामने कुछ करने या कहने का उत्साह न होने के फलस्वरूप झेंपना। लाज से नम्र होना। २. लज्जित होना।

स० लज्जित या शरमिन्दा करना।

शरमालू†—वि०=शरमाऊ।

शरमा-शरमी—अव्य० [फा० शर्म] १. लज्जा के कारण। २. संकोचवश।

शरमिंदगी—स्त्री० [फा०] शरमिंदा या लज्जित होने की अवस्था, धर्म या भाव। लाज। झेंप।

क्रि० प्र०—उठाना।

शरमिंदा—वि० [फा० शर्मिन्दः] जो अपने किसी अनुचित कार्य या व्यवहार के फलस्वरूप लज्जित तथा दुःखी हो। लज्जा से जिसका मस्तक नत हो गया हो।

शरमीला—वि० [फा० शर्म+ईला (प्रत्य०)] लाज-भरा। लाज से युक्त। 'निर्लज्ज' का विरुद्धार्थक। जैसे—शरमीली आँखें, शरमीली वधू।

शरयू†—स्त्री०=सरयू (नदी)।

शरर—पुं० [अ०] चिनगारी।

शरलोमा (मन्)—पुं० [सं० ब० स०] एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने भरद्वाज जी से आयुर्वेद संहिता लाने के लिए प्रार्थना की थी।

शरवाणि—स्त्री० [सं०] १. शर। २. तीर का फल।

पुं० १. तीर चलानेवाला योद्धा। २. पैदल सिपाही।

शर-वारण—पुं० [सं० ब० स०] ढाल, जिससे तीरों की बौछार रोकी जाती है। ढाल, जिससे तीरों का वारण किया जाता है।

शरव्य—पुं० [सं० शरु+यत्—शर√व्ये (मुक्त होना)+ड] १. वाण का लक्ष्य। २. तीरंदाज।

शरह—स्त्री० [अ०] १ वह कथन या वर्णन जो किसी बात को स्पष्ट करने के लिए किया जाय। अच्छी तरह अर्थात् स्पष्ट और विस्तृत रूप से कुछ कहना। २. व्याख्या। ३. ग्रन्थ की टीका या भाष्य। ४. किसी चीज की बिक्री की दर या भाव। ५. किसी काम या चीज की दर। जैसे—लगान की शरह।

शरह-बंदी—स्त्री० [अ० शरह+फा० बन्दी] १. दर या भाव निश्चित करने की क्रिया। २. (मंडी आदि के) भावों की तालिका।

†स्त्री० =शरअ।

शराकत—स्त्री० [फा०] १. शरीक या सम्मिलित होने की अवस्था या भाव। २. हिस्सेदारी। साझा।

शराटिका—स्त्री० [सं०] १. टिटिहरी। २. लजालू लता।

शराध†—पुं०=श्राद्ध।

शराप—पुं०=शाप।

शरापना—स० [सं० शाप+हिं० ना (प्रत्य०)] किसी को शाप देना।

शराफ †—पुं०=सराफ।

शराफत—स्त्री० [अ० शराफ़त] १. शरीफ या सज्जन होने की अवस्था या भाव। २. सज्जनोचित कोई व्यवहार या शिष्टाचार।

शराफा†—पुं०=सराफा।

शराफी†—स्त्री०=सराफी।

शराब—स्त्री० [अ०] १. मदिरा। सुरा। वारुणी। मद्य। दारू। २.

हकीमों की परिभाषा में, किसी चीज का मीठा अरक या शरबत। जैसे—शराब बनफशा।

शराबखाना—,पुं॰ [अ॰शराब+फा॰-खाना] शराब बनने तथा बिकने की जगह। वह स्थान जहाँ शराब मिलती हो।

शराबखोरी—स्त्री॰[फा॰]१. शराब पीने का कृत्य। मदिरा पान। २. शराब पीने की आदत या लत।

शराबख्वार—पुं॰[फा॰] वह जो शराब पीता हो। मदिरा पीनेवाला। मद्यप। शराबी।

शराबी—पुं॰ [अ॰ शराब+हिं॰ ई (प्रत्य॰)] व्यक्ति जिसे शराब पीने का व्यसन हो।

शराबोर—वि॰[फा॰] पानी से तर। गीला।

शरारत—स्त्री॰[अ॰] १. शरीर या पाजी होने की अवस्था या भाव। २. दुष्टतापूर्ण कार्य।

शरारतन्—क्रि॰ वि॰[अ॰] शरारत या पाजीपन से।

अव्य॰[अ॰] शरारत अर्थात् किसी को तंग करने की नियत से।

शरारि—पुं॰[सं॰ शर√ ऋ (गमनादि)+इ] १. राम की सेना का एक यूथपति बंदर। २. टिटिहरी नाम की चिड़िया।

शरारी—स्त्री॰[शरारि—ङीप्] टिटिहरी।

शरारोप—पुं॰[सं॰ब॰ स॰]धनुष जिस पर शर चढ़ाया जाता है। कमान।

शराली—स्त्री॰[सं॰शरालि—ङीप्] टिटिहरी नाम की छोटी चिड़िया।

शराव—पुं॰[सं॰ शर√अव (रक्षा करना)=अण्]१. मिट्टी का एक प्रकार का पुरवा। कुल्हड़। २. वैद्यक में एक प्रकार का परिमाण या तौल जो चौंसठ तोले या एक सेर की होती है। (वैद्यक में सेर चौंसठ तोले का ही होता है)।

शरावती—स्त्री॰[सं॰ शरा+मतु—प्-म=व—दीर्घ—ङीप्] १. गंगा नामक नदी का पुराना नाम। २. एक प्राचीन नगरी जिसे लव ने अपनी राजधानी बनाई थी।

शरावर—पुं॰[सं॰ ब॰ स॰]१. ढाल। २. कवच। वर्म।

शरावरण—पुं॰[सं॰ ब॰ स॰] ढाल जिससे तीर का वार रोकते हैं।

शराविका—स्त्री॰[सं॰ शराव+कन्—टाप् इत्व]१. ऐसी फुंसी जो ऊपर से ऊँची और बीच में गहरी हो। २. एक प्रकार का कुष्ठ रोग।

शराश्रय—पुं॰ [सं॰ ष॰ त॰ स॰] तीर रखने का स्थान, तरकश।

शरासन—पुं॰ [सं॰ शर√ अस् (फेंकना)+ल्युट्—अन] धनुष। कमान। चाप।

शरास्य—पुं॰[सं॰ शर√ अस् (रखना)+ण्यत्] धनुष। कमान।

शरिष्ठ—वि॰=श्रेष्ठ।

शरी—स्त्री॰[सं॰ शरि—ङीप्] एरका या मोथा नाम का तृण।

शरीअत—स्त्री॰[अ॰] मुसलमानी धर्म में शरअ के अनुसार आचरण करना। नमाज, रोजे आदि का निर्वाह और पालन।

विशेष—सूफी संप्रदाय में यह साधना की चार स्थितियों में से पहली है। शेष तीन स्थितियों तरीकत, मारफत और हकीकत कहलाती हैं।

शरीक—वि॰[अ॰] १. किसी के साथ मिला हुआ। शामिल। सम्मिलित। २. कष्ट आदि के समय सहानुभूति दिखाने या सहायता करनेवाला। पुं॰१. वह जो किसी बात में किसी के साथ रहता हो। साथी। २. साझीदार। हिस्सेदार। ३. ऐसा निकट सम्बन्धी जो पैतृक संपत्ति का हिस्सेदार हो या रहा हो।

शरीफ़—पुं॰[अ॰ शरीफ़]१. ऊँचे घराने का व्यक्ति। कुलीन मनुष्य। २. सज्जन और सभ्य व्यक्ति। भला आदमी। ३. मक्के के प्रधान अधिकारी की उपाधि।

वि॰ पवित्र या शुभ। जैसे—मिजाज शरीफ।

पुं॰[अ॰ शेरिफ] अंगरेजी शासन में, कलकते, बम्बई और मद्रास में सरकार की ओर से नियुक्त किए जानेवाले एक प्रकार के अवैतनिक अधिकारी जिनके सुपुर्द शांति-रक्षा तथा इसी प्रकार के और कुछ काम होते हैं।

शरीफा—पुं॰[सं॰ श्रीफल या सीताफल]१. मझोले आकार का एक प्रकार का प्रसिद्ध वृक्ष जो प्रायः सारे भारत में फल के लिए लगाया जाता है। २.उक्त वृक्ष का फल जो अमरूद की तरह गोल और खाकी रंग का होता है। इसके अन्दर सफेद मीठा गूदा (बीजों में लिपटा हुआ) होता है। श्रीफल। सीताफल। रामसीता।

शरीर—पुं॰[सं॰ शृ (हिंसा करना)+ईरन्] [भाव॰शरीरता, वि॰शारीरिक]१. मनुष्य या पशु आदि के समस्त अंगों की समष्टि। सिर से पैर तक के सब अंगों का समूह। देह। तन। वदन। जिस्म।

वि॰[अ॰] दुष्ट-प्रकृति।

शरीरक—पुं॰ [सं॰ शरीर+कै+ क+कन्] १. छोटा शरीर। २. आत्मा।

शरीरज—वि॰[सं॰ शरीर√ जन् (उत्पन्न करना)+ड] जो शरीर से उत्पन्न हुआ हो या होता हो।

पुं॰ १. पुत्र। बेटा। २. कामदेव।

शरीरता—स्त्री॰ [सं॰ शरीर+तल्—टाप्] शरीर का भाव या धर्म।

शरीरत्याग—पुं॰[सं॰ ष॰ त॰] मृत्यु। मौत।

शरीरत्व—पुं॰ [सं॰ शरीर+त्व] शरीर का भाव या धर्म। शरीरता।

शरीर-पतन—पुं॰[सं॰ ष॰ या त॰, ब॰ स॰]१. शरीर का धीरे-धीरे क्षीण होना। २ मृत्यु। मौत।

शरीर-पात—पुं॰[सं॰ ष॰ त॰] देह का अंत या नाश। शरीरांत। देहावसान। मृत्यु। मौत।

शरीर-भृत—पुं॰[सं॰शरीर√भृ+क्विप्+तुक्]१. वह जो शरीर धारण किए हो। शारीरी। २. विष्णु। ३. जीवात्मा।

शरीर-यापन—स्त्री॰ [ब॰ स॰] जीवन का निर्वाह या यापन।

शरीर-रक्षक—पुं॰ [ष॰ त॰ स॰] अंगरक्षक (दे॰)।

शरीर-वृत्ति—स्त्री॰ [सं॰ मध्यम स॰] जीवन निर्वाह करने की वृत्ति।

शरीर-शास्त्र—पुं॰[सं॰] शारीर।

शरीर-शोधन—पुं॰[सं॰ ब॰ स॰ ष॰ त॰] वह औषधि जो कुपित मल, पित्त और कफ ऊर्ध्व अथवा अधोमार्ग से शरीर के बाहर निकाल दे।

शरीर-संस्कार—पुं॰ [सं॰ ष॰ त॰] १. शरीर को शुद्ध तथा स्वच्छ करने की क्रिया। २. गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक के मनुष्य के वेद-विहित सोलह संस्कार।

शरीर-सेवा—स्त्री॰ [सं॰ ष॰ त॰] ऐसे सब काम जिनसे शरीर अच्छी तरह और सुख से रहे।

शरीर-सेवी—पुं०[सं० शरीर सेवा+इनि] वह जो केवल अपने शारीरिक सुखों का ध्यान रखता हो।

शरीरस्थ—वि०[सं० शरीर√स्था (ठहरना)+क]१. शरीर में रहनेवाला या स्थित। २. जीवित।

शरीरांत—पुं० [सं० ष० त० स०] मृत्यु।

शरीरार्पण—पुं०[सं० ष० त० स०] सेवा-भाव से किसी कार्य में जी-जान से जुटना।

शरीरावरण—पुं०[सं० ष० त० स०] १. शरीर को ढकनेवाली कोई चीज। २. खाल। चमड़ा। ३. ढाल। वर्म।

शरीरास्थि—पुं० [सं० ष० त० स०, शरीर+अस्थि] कंकाल। पिंजर।

शरीरी—वि०[सं० शरीर+इनि, दीर्घ न लोप] शरीरधारी।

पुं०१. प्राणी। २. आत्मा। जीव।

शरु—पुं०[सं० शृ (हिंसा करना)+उन्]१. वज्र। २. तीर। वाण। ३. हिंसा। ४. आयुध। अस्त्र। ५. क्रोध। गुस्सा।

वि०१. हिंसक। २. बहुत पतला। ३. नुकीला।

शरेज—पुं०[सं० शरे√जन् (उत्पन्न करना)+ड, सप्तमी, अलुक्] कार्तिकेय।

शरेष्ट—पुं०[सं०√शृ+अच्=शरः काम-इष्ट; ष० त०] आम। आम्र।

†वि०=श्रेष्ठ।

शर्कर—पुं०[सं०√ शृ (हिंसा करना)+करन्] १. कंकड़। २. बालू का कण। ३. एक पौराणिक देश। ४. उक्त देश का निवासी। ५. एक प्रकार का जल-चर जन्तु। ६. शक्कर। चीनी।

शर्करकंद—पुं०[सं० ष० त० या ब० स०] शकरकंद।

शर्करक—पुं० [सं० शर्कर+कन्] मीठा नींबू। शरबती नींबू।

शर्करजा—स्त्री०[सं०शर्कर√जन् (उत्पन्न करना)+ड—टाप्] चीनी।

शर्करा—स्त्री० [सं० शर्कर—टाप्] १. शक्कर। चीनी। २. बालू का कण। ३. पथरी नामक रोग। ४. कंकड़। ५. ठीकरा। ६. पुराणानुसार एक देश जो कूर्मचक्र के पुच्छ भाग में कहा गया है। ७. दे० 'शर्कराबुंद'।

शर्कराचल—पुं०[सं० ष० त०]पुराणानुसार चीनी का वह पहाड़ जो दान करने के लिए लगाया जाता है।

शर्कराधेनु—स्त्री०[सं० ष० त० स०] पुराणानुसार चीनी की वह गौ जो दान करने के लिए बनाई जाती है।

शर्कराप्रभा—स्त्री०[सं० ब० स०] जैनों के अनुसार एक नरक का नाम।

शर्कराप्रमेह—पुं० [सं० मध्य० स०] ऐसा प्रमेह जिसमें मूत्र का रंग सफेद हो जाता है और उसके साथ शरीर की शर्करा भी निकलती है।

शर्करामापी—पुं० [सं० ष० त०] एक प्रकार का यंत्र जिससे यह जाना जाता है कि किसी घोल या तरल पदार्थ में शर्करा या चीनी का कितना अंश है। (सैक्रिमीटर)

शर्करार्बुद—पुं०[ब० स०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसमें त्रिदोष के कारण मांस, शिरा और स्नायु में गाँठें पड़ जाती हैं।

शर्करा-सप्तमी—स्त्री० [सं० मध्यम० स०] वैशाख शुक्ल सप्तमी; इस दिन सुवर्णाश्व का पूजन होता है।

शर्करासव—पुं०[सं० मध्यम० स०] चीनी से बनाई जानेवाली शराब।

शर्करिक—वि० [सं० शर्करा+ठन्—इक] १. शर्करा से युक्त। २. शर्करा से बना हुआ।

शर्करी—स्त्री० [सं० शर्करा—ङीप्] १. नदी। २. मेखला। ३. कलम। लेखनी। ४. वर्णवृत्त के अंतर्गत चौदह अक्षरों की एक वृत्ति। इसके कुल १६३८४ भेद होते हैं जिनमें १३ मुख्य हैं।

शर्करोय—वि० [सं० शर्करा+छ—ईय] शर्करा-संबंधी। शर्करा का।

शर्करोदक—पुं० [सं० मध्यम० स०] शरबत।

शर्कोटि—पुं०[सं० ब० स०] साँप।

शर्ट—स्त्री० [अं०] एक प्रकार का पाश्चात्य पहनावा जो कुरते की तरह का तथा कालर वाला होता है। कमीज।

शर्त—स्त्री०[अ०] १. किसी बात, घटना आदि की सत्यता तथा असत्यता अथवा विद्यमानता तथा अविद्यमानता आदि के संबंध में दो पक्षों द्वारा दाँव पर लगाया जानेवाला धन। बाजी।

क्रि० प्र०—जीतना।—बदना।—बाँधना।—लगाना।—हारना।

२. कोई ऐसी बात जो किसी काम या बात की सिद्धि के लिए आवश्यक रूप से अपेक्षित हो। (टर्म) जैसे—वह यहाँ आ तो सकता है, पर शर्त यह है कि तुम उससे लड़ने लगो। ३. दे० 'उपबन्ध'।

क्रि० प्र०—रखना।—लगाना।

शर्तिया—अव्य०[अ०]शर्त बदकर, अर्थात् बहुत ही निश्चय या दृढ़तापूर्वक। जैसे—मैं शर्तिया कहता हूँ कि आप अच्छे हो जायेंगे।

वि० बिल्कुल ठीक और निश्चित।

शर्तों—अव्य० =शर्तिया।

शर्द्ध—पुं०[सं०√शृधु [अपान वायु के निन्दित शब्द]+घञ्]१. तेज। २. अपान वायु। पाद।

शर्द्धन—पुं०[सं०√ शृधु (अपान वायु के शब्द)+ल्युट्—अन] अधोवायु त्याग करना। पादना।

शर्बत—पुं०=शरबत।

शर्बती—वि०, पुं०=शरबती।

शर्म—पुं० [सं०√ शृ (हिंसा करना)+मनिन्] १. सुख। आनन्द। २. घर। मकान।

वि० परम सुखी।

स्त्री०=शरम।

विशेष—शर्म और हया का अन्तर जानने के लिए दे० 'हया' का विशेष।

शर्मद—वि०[सं० शर्म्म √ दा (देना)+क] [स्त्री० शर्मदा] आनंद देनेवाला। सुखदायक।

पुं० विष्णु का एक नाम।

शर्मन्—पुं०=शर्म्मा।

शर्मर—पुं० [सं० शर्म्म √ रा (लेना)+क] एक प्रकार का वस्त्र।

शर्मरी—स्त्री०[सं० शर्म्मर—ङीप्] दारू हल्दी।

शर्मसार—वि०[फा०][भाव० शर्मसारी]१. लज्जाशील। २. लज्जित। शरमिन्दा।

शर्मा—पुं०[सं० शर्म्मन् दीर्घ, नलोप] ब्राह्मणों के नाम के अन्त में लगनेवाली उपाधि। जैसे—पं० पद्मसिंह शर्मा।

शर्माऊ, शर्मालू—वि०=शरमीला।

शर्माना—अ०, स०=शरमाना।

शर्माशर्मी—अ० य०=शरमा-शरमी।

शर्मिंदगी—स्त्री०=शरमिंदगी।

शर्मिदा—वि०=शरमिंदा।

शर्मिष्ठा—स्त्री०[सं० शर्म्म+इष्ठन्—टाप्] दैत्यों के राजा वृषपर्वा की कन्या जो शुक्राचार्य की कन्या देवयानी की सखी थी।

शर्मीला—वि०=शरमीला।

शर्य—पुं० [सं० √ शृ (हिंसा करना)+यत्] १. योद्धा। २. तीर। वाण। ३. उँगली।

शर्यण—पुं०[सं० शर्य्य √ नी (ढोना)+ड] वैदिक काल का एक जनपद जो कुरुक्षेत्र के अंतर्गत था।

शर्यणावत्—पुं० [सं० शर्य्यन √अव् (रक्षा करना)+क्विप् तुक्] शर्य्यण नामक जनपद के पास का एक प्राचीन सरोवर जो तीर्थ माना जाता था।

शर्या—स्त्री० [सं० शर्य्य—टाप्] १. रात्रि। रात। २. उँगली। ३. छोटा तीर।

शर्र—पुं० [फा०] १. शरारत। २. झगड़ा-फसाद। ३. बुराई। खराबी।

शर्व—पुं० [सं०√शृ (हिंसा करना)+व, शर्व+अच्] १. शिव। महादेव। २. विष्णु।

शर्वपत्नी—स्त्री०[सं० ष० त० स०] १. पार्वती। २. लक्ष्मी।

शर्वपर्वत—पुं० [सं० ष० त० स०] कैलाश (पर्वत)।

शर्वर—पुं० [सं० √ शर्व्+अरन्] १. अंधकार। अँधेरा। २. सन्ध्या। ३. कामदेव।

शर्वरी—स्त्री०[सं०√शृ+वनिप्—ङीप्] १. रात। रात्रि। २. सन्ध्याकाल। ३. हलदी। ४. औरत। स्त्री। ५. बृहस्पति के साठ संवत्सरों में से चौंतीसवाँ संवत्सर।

शर्वरीकर—पुं०[सं० शर्वरी√कृ (करना)+ट-अच्-वा] विष्णु।

शर्वरी-दीपक—पुं०[सं० ष० त० स०] चन्द्रमा।

शर्वरीपति—पुं०[सं० ष० त० स०] १. चन्द्रमा। २. शिव।

शर्वरीश—पुं०[सं० ष० त० स०] चन्द्रमा।

शर्वला—स्त्री०[सं०√ शर्व+घञ्√ला+क—टाप्] तोमर नामक अस्त्र।

शर्वाक्ष—पुं०[सं०ब० स०] रुद्राक्ष। शिवाक्ष।

शर्वाचल—पुं०[सं० ष० त० स०] कैलाश।

शर्वाणी—स्त्री०[सं० शर्व+ङीष्—आनुक्] पार्वती।

शर्शरीक—वि०[सं०√शृ (हिंसा करना)+ईकन्] १. हिंसक। २. खल। दुष्ट।

पुं० १. अग्नि। २. घोड़ा।

शलंग—पुं०[सं० √शल्+अङ्गच्, ब०स०] १. लोकपाल। २. एक प्रकार का नमक।

शल—पुं० [सं०√शल् (गमनादि)+अच्] १. ब्रह्मा। २. धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ३. कंस का एक अमात्य। ४. ऊँट। ५. भाला। ६. साही का काँटा। ७. दे० 'शल्यराज'।

शलक—पुं०[सं० शल+वुन्—अक] १. मकड़ी। २. ताड़ का पेड़। ३. साही का काँटा।

शलगम—पुं०[फा० शलजम] एक प्रकार का कंद जो चरी के काम आता है तथा जिसकी तरकारी भी बनाई जाती है।

शलभ—पुं० [सं०√शल् (गमनादि)+अभच्] १. टिड्डी। शरभ। २. फतिंगा। ३. छप्पय के ३१वें भेद का नाम। इसमें ४० गुरु और ७२ लघु कुल ११२ वर्ण या मात्राएँ होती हैं।

शलवार—स्त्री०=सलवार।

शलाक-धूर्त्त—पुं०[सं० तृ० त० स०] वह जो शलाकाओं आदि की सहायता से पक्षियों को पकड़ता हो। चिड़ीमार। बहेलिया।

शलाका—स्त्री०[सं० शल+आकन्—टाप्] १. धातु, लकड़ी आदि की लंबी सलाई। सलाखा। सीख। २. आँख में सुरमा लगाने की सलाई। ३. घाव की गहराई आदि नापने की सलाई। ४. जूआ खेलने का पासा। ५. काठ का छोटा टुकड़ा जिसकी सहायता से निर्वाचन में मत लिया जाता था। (बैलट) ६. अस्थि। हड्डी। ७. तिनका। तृण। ८. मैना पक्षी। ९. मदन वृक्ष। १०. सलाई का पेड़। शल्लकी। ११. वच। १२. पैर की नली की हड्डी।

शलाकापत्र—पुं० [ष० त० स०] प्राचीन भारत की शलाका के स्थान पर आज-कल प्रयुक्त होनेवाला वह पत्र जिसके द्वारा चुनाव के समय लोग अपना मत प्रकट करते हैं। (बैलट पेपर)

शलाकापुरुष—पुं०[सं० मध्यम० स०] बौद्धों के ६३ देवपुरुषों में से एक।

शलाका मुद्रा—स्त्री०[सं०] सभ्यता के आरंभिक काल की वे मुद्राएँ या सिक्के जो छोटे-छोटे धातु खंडों के रूप में होते थे और धातुओं के छड़ या शलाकाएं काटकर बनाये जाते थे। (बेन्टवार क्वायन)

विशेष—ऐसे सिक्कों पर प्रायः कोई अंक या चिह्न नहीं होता था।

शलाखा—स्त्री०=सलाख।

शलातुर—पुं० [सं०ब०स०] एक प्राचीन जनपद जो पाणिनि का निवास-स्थान था।

शली—स्त्री० [सं० √ शल् (हिंसा करना)+अच्—ङीष्] साही (जंतु)।

शलीता—पुं०=सलीता।

शलूका—पुं०[फा०सलूकः] आधी बाँह की एक प्रकार की कुरती जो प्रायः स्त्रियाँ पहना करती हैं।

शल्क—पुं०[सं० शल+क] १. टुकड़ा। खंड। २. कुछ विशिष्ट फलों का ऊपरी कड़ा छिलका। ३. मछली के शरीर पर का छिलका, जो कड़ा और चमकीला होता है। (स्केल)

शल्कल—पुं० [सं०√ शल् (संवरण करना आदि) +कलन्]=शल्क।

शल्कली—पुं०[सं० शल्कल+इनि शल्कलिन्] मछली।

शल्मलि—पुं०[सं० √शल्+मलच्-इनि, इञ् वा] शाल्मली वृक्ष। सेमल।

शल्य—पुं० [सं०√ शल+यत्] १. मद्र देश के एक राजा का नाम जो द्रौपदी के स्वयंवर के समय भीमसेन के साथ मल्लयुद्ध में हार गये थे। २. एक प्रकार का तीर। ३. फोड़ों आदि की चीर-फाड़ के द्वारा की जानेवाली चिकित्सा। ४. हड्डी। ५. आँख में सुरमा लगाने की सलाई। ६. छप्पय के ५६ वें भेद का नाम। इसमें १५ गुरु १२२ लघु कुल १३७ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। ७. मैनफल। ८. सफेद खैर। ९. शिलिंग मछली। १०. लोध। ११. बेल का पेड़। १२. साही नामक जन्तु। १३. सांग। बरछी। १४. दुर्वचन। १५. पाप। १६. वे पदार्थ जिनसे शरीर में किसी प्रकार की पीड़ा या रोग आदि उत्पन्न होता है

शल्यकंठ—पुं०[सं० ब० स०] साही जंतु।

शल्यक—पुं०[सं० शल्य√कै+क]१. साही नामक जन्तु। २. मैनफल। ३. खादिर। खैर। ४. बेल का पेड़ या फल। ५. लोध। ६. एक प्रकार की मछली।

वि० १. शल्य-संबंधी। २. शल्य चिकित्सा या शल्य कर्म से संबंध रखनेवाला। (सर्जिकल)

शल्य-कर्त्तन—पुं० [सं० ब० स०] रामायण के अनुसार एक प्राचीन जनपद।

शल्य-कर्त्ता—पुं०[सं०√शल्य√कृ+तृच्] शल्यकार।

शल्यकार—पुं० [सं० शल्य √कृ+अण्] वह जो शल्य-चिकित्सा का अच्छा ज्ञाता हो; या शल्य-चिकित्सा करता हो। (सर्जन)

शल्यकारी—स्त्री० [सं०] शल्य अर्थात् चीर-फाड़ करके चिकित्सा करने की क्रिया। (सर्जरी)

शल्यकी—स्त्री०[सं० शल्यक—ङीप्] साही।

शल्य-क्रिया—स्त्री०[सं० ष०त०स०] शारीरिक विकार को दूर करने के लिए की जानेवाली चीर-फाड़। (सर्जरी)

शल्य-चिकित्सक—पुं०[सं०]=शल्यकार।

शल्य-चिकित्सा—स्त्री० [सं०]=शल्यकारी।

शल्यज नाड़ी व्रण—पुं०[सं० नाड़ी-व्रण-ष० त० स० शल्यज—नाड़ी व्रण कर्म०स०] नाड़ी में होनेवाला एक प्रकार का व्रण या घाव जो नाड़ी में कंकड़ी या काँटा पहुँच जाने पर होता है।

शल्य-तंत्र—पुं०[सं० मध्यम० स०] वह विद्या जिसमें शल्य-चिकित्सा के सब अंगों का विवेचन हो।

शल्य-लोम (मन्)—पुं०[सं० ब० स०] साही।

शल्य-शालक—पुं०[सं० ष० त० स०]=शल्यकारी।

शल्य-शास्त्र—पुं० [सं० ष त०] चिकित्सा शास्त्र का वह अंग जिसमें शरीर में गड़े हुए काँटों आदि के निकालने का विधान रहता है। (सर्जरी)

शल्या—स्त्री०[सं० शल्य—टाप्]१. मेदा नाम की ओषधि। २. नाग वल्ली। ३. विकंकत।

शल्यारि—पुं०[सं० ष० त० स०] युधिष्ठिर।

शल्योद्धार—पुं०[सं० ष० त० स०] शरीर में गड़े हुए काँटे, तीर आदि को निकालने का कार्य।

शल्योपचार—पुं०[सं० मध्य०स०] चिकिंत्सा क्षेत्र में, शल्य के द्वारा किया जानेवाला उपचार। चीर-फाड़। (ऑपरेशन)

शल्योपचारक—पुं०=शल्योपचारी।

शल्योपचारिक—वि०[सं० ष० त०] शल्योपचार-संबंधी।

शल्योपचारी—पुं०[सं० शल्योपचार+इनि] वह जो शल्योपचार द्वारा चिकित्सा करता हो। (सर्जिकल आपरेटर)

शल्ल—पुं०[सं० शल्√ला (लेना)+क—शल+लच् वा]१. चमड़ा। २. वृक्ष की छाल। ३. मेढ़क।

वि० शिथिल तथा सुन्न।

शल्लक—पुं०[सं० शल्ल+कन्]१. शोणवृक्ष। सलई। २. साही नामक जन्तु। ३. शरीर की खाल या चमड़ा।

स्त्री०[तु०] बकवाद।

शल्लकी—स्त्री०[सं० शल्लक—ङीप्]१. साही। २. सलाई का पेड़।

शल्व—पुं०[शल्+व] शाल्व नामक एक प्राचीन भूखण्ड।

शव—पुं [सं० √शव् (गमनादि)+अच्]१. जीवनी-शक्ति से रहित शरीर। देह जिसमें से प्राण-पखेरु उड़ गये हों। लाश। २. लाक्षणिक अर्थ में ऐसी वस्तु जो अचेष्ट और निर्जीव हो चुकी हो। ३. जल।

शवच्छेद(न)—पुं०=शव-छेद (न)

शवछेद (न)—पुं०[सं० ष०त०]१. वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए शव का किया जानेवाला शल्योपचार। २. दे० 'शव-परीक्षा'।

शवता—स्त्री०[सं० शव+तल्—टाप्]१. शव का भाव। २. निर्जीवता। मुरदापन।

शव-दाह—पुं०[सं० ष० त०] हिन्दुओं में एक संस्कार जिसमें शव जलाया जाता है।

शव-दूष्य—पुं०[सं० ष० त०] मृत शरीर पर डाला जानेवाला कंबल या चादर। कफन।

शवधान—पुं०[सं० ब० स०] पुराणानुसार शरधान प्रदेश का दूसरा नाम।

शव-परीक्षा—स्त्री०[सं० ष० त०] दुर्घटनावश या सन्दिग्ध अवस्था में मरे हुए व्यक्ति के शव की वह जाँच या परीक्षा जिससे यह जाना जाता है कि मृत्यु आकस्मिक और स्वाभाविक हुई है या किसी के हत्या करने पर हुई है। (पोस्ट मार्टेम)

शव-भस्म—पुं० [सं० ष० त०] चिता की भस्म जो शिव जी शरीर पर लगाते थे।

शव-मंदिर—पुं०[सं० ष० त० स०]१. श्मशान। मरघट। २. समाधि। मकबरा।

शव-यान—पुं०[सं०ष०त०]१. अरथी जिसपर शव ले जाते हैं। टिकठी। २. वह सवारी जिसमें मुर्दे ढोये जाते हैं।

शवर—पुं०[सं० शव+अरन् बाहु० शव√रा (लेना)+क वा] [स्त्री० शवरी] शबर। (दे०)

शव-रथ—पुं०[सं०]=शव-यान।

शवरी—स्त्री०[सं० शवर-ङीप्]=शबरी।

शवल—पुं०[सं० √शाप् (निन्दा करना)+कलन्, य्=व]१. चीता। चित्रक। २. जल। पानी।

वि० चित-कबरा। शबल।

शवला—स्त्री०[सं० शवल—टाप्] चितकबरी गाय।

शवलित—भू० कृ०[सं० शवल+इतच्]=शबलित।

शवली—स्त्री० [सं० शवल—ङीष्] चितकबरी गाय।

शव-शयन—पुं०[सं० ब० स०] श्मशान। मरघट।

शव-समाधि—स्त्री०[सं० ष० त०] किसी महात्मा का अथवा कुछ विशिष्ट रोगों के कारण मरे हुए व्यक्ति का शव जल में प्रवाहित करने अथवा गाड़ने का एक संस्कार।

शव-साधन—पुं०[सं० तृ० त०] तंत्र में, शव पर या श्मशान में बैठकर मंत्र जगाने की क्रिया।

शवान्न—पुं०[सं० उपमि० स०]१. मनुष्य के शव का मांस। २. सड़ा-गला अन्न।

शवासन—पुं०[सं० शव+आसन मध्य० स०] हठयोग में एक प्रकार का

आसन जिसमें मृत व्यक्ति की तरह चित्त लेटकर शरीर के सब अंग बिल्कुल ढीले या शिथिल कर दिये जाते हैं।

शव्य—पुं॰[सं॰ शव+यत्] वह कृत्य जो शव को अन्त्येष्टि क्रिया के लिए ले जाने के समय होता है।

वि॰ शव सम्बन्धी। शव का।

शव्वाल—पुं॰[अ॰] दसवाँ अरबी महीना।

शश—पुं॰[सं॰ √शश् (गमनादि)+अच्]१. खरगोश। २. चन्द्रमा का कलंक या लांछन। ३. लोध। ४. कामशास्त्र में चार प्रकार के पुरुषों में से ऐसा पुरुष जो सर्वगुण सम्पन्न हो। यह मधुर-भाषी, सत्यवादी, सुशील तथा कोमलांग होता है।

वि॰ [फा॰] छः।

पुं॰ छः की संख्या।

शशक—पुं॰[सं॰ शश+क] खरगोश।

शशगानी—पुं॰[फा॰ शश=छः+गानी?] चांदी का एक प्रकार का सिक्का जो फिरोजशाह के राज्य में प्रचलित था।

शशदर—पुं॰[फा॰] चौसर के पासे में वह घर जहाँ पहुँच कर गोटी रुक जाती है और इस प्रकार खिलाड़ी निरुपाय हो जाता है।

वि॰१. निरुपाय। २. चकित। ३. हैरान।

शशधर—पुं॰[सं॰ ष॰ त॰]१. चन्द्रमा। २. कपूर।

शशभृत्—पुं॰[सं॰शश√भृ(भरण करना)+क्विप्—तुक] १. चन्द्रमा। २. कपूर।

शशमाही—वि॰[फा॰] हर छः महीने पर होनेवाला । छमाही।

शशमौलि—पुं॰[सं॰ ब॰ स॰] शिव।

शश-लक्षण—पुं॰[सं॰ ब॰ स॰] चन्द्रमा।

शश-लांछन—पुं॰[सं॰ ब॰ स॰] चन्द्रमा।

शश-शृंग—पुं॰ [सं॰ ष॰ त॰ स॰] वैसी ही असंभव या अनहोनी बात अथवा कार्य जैसा खरगोश को सींग होना होता है। ('आकाश-कुसुम' की तरह प्रयुक्त)

शश-स्थली—स्त्री॰[सं॰ उपमि॰ स॰] गंगा-यमुना के बीच का प्रदेश। दोआब।

शशांक—पुं॰[सं॰ ब॰ स॰]१. चन्द्रमा। २. कपूर।

शशांकज—पु॰[सं॰शशांक√जन् (उत्पन्न होना)+ड] बुध जो चन्द्रमा का पुत्र कहा गया है।

शशांक-शेखर—पुं॰[सं॰ ब॰ स॰] महादेव। शिव।

शशांक-सुत—पुं॰[सं॰ ष॰त॰ स॰] चन्द्रमा का पुत्र बुध (ग्रह)।

शशांकोपल—पुं॰[सं॰ मध्यम॰ स॰] चंद्रकांतमणि।

शशा—स्त्री॰[शश-टाप्] मादा खरगोश।

शशाद (न)—पुं॰[सं॰ शश√ अद्(खाना)+ल्यु—अन] बाज नाम का पक्षी।

शशि (शिन्)—पुं॰[सं॰ शश+इनि] १. चन्द्रमा। इंदु। २. मोती। ३. छः की संख्या का वाचक शब्द। ४. छप्पय के ५४वें भेद का नाम। इसमें १७ गुरु और ११८ लघु कुल १३५ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। ५. रगण के दूसरे भेद (।।ऽऽ) की संज्ञा।

शशिक—पुं॰[सं॰ शशि+कन्]१. एक प्राचीन जनपद। २. उक्त जनपद में रहनेवाली जाति।

शशिकर—पुं॰[सं॰ ष॰ त॰ स॰] चन्द्रमा की किरण।

शशि-कला—स्त्री॰[सं॰ ष॰ त॰ स॰] १. चन्द्रमा की १६ कलाओं में से हर एक। २. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ४ नगण और १ सगण होता है।

शशिकांत—पुं॰[सं॰ ब॰ स॰]१. चन्द्रकांत मणि। २. कुमुद। कोईं।

शशिखंड—पुं॰[सं॰ ष॰ त॰ या ब॰ स॰]१. चन्द्रमा की किरण। २. महादेव।

शशिज—पुं॰[सं॰ शशि√जन् (उत्पन्न करना)+ड] चन्द्रमा का पुत्र, बुध (ग्रह)।

वि॰ शशि से उत्पन्न।

शशि-तिथि—स्त्री॰[सं॰ ष॰ त॰ स॰] पूर्णिमा। पूर्णमासी।

शशि-दैव—पुं॰[सं॰ ब॰ स॰] मृगशिरा नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता देव चन्द्रमा कहे गये हैं।

शशिधर—पुं॰[सं॰ √ धृ+अच् ष॰ त॰ स॰] शिव।

शशिनी—स्त्री॰[सं॰] चंद्रमा की १६ कलाओं में से एक।

शशि-पुत्र—पुं॰[सं॰ ष॰ त॰ स॰] बुध (ग्रह) जो चन्द्र का पुत्र कहा गया है।

शशिपुष्प—पुं॰[सं॰ ष॰ त॰] कमल। पद्म।

शशि-पोषक—वि॰ [सं॰ ष॰ त॰ स॰] चन्द्रमा का पोषण करनेवाला।

पुं॰ उजला पाख। शुक्ल पक्ष।

शशि-प्रकाशी—स्त्री॰[सं॰] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

शशि-प्रभ—वि॰ [सं॰ ब॰ स॰] चन्द्रमा के समान प्रभावाला।

पुं॰ १. मोती। २. कुमुद। कुईं।

शशि-प्रभा—स्त्री॰[सं॰ शशिप्रभ–टाप्] ज्योत्स्ना। चाँदनी।

शशि-प्रिय—पुं॰[सं॰ ष॰ त॰ स॰]१. कुमुद। कोईं। २. मोती।

शशि-प्रिया—स्त्री॰[सं॰ शशिप्रिय—टाप् ष॰ त॰] सत्ताइसों नक्षत्र जो चन्द्रमा की पत्नियाँ माने जाते हैं। (पुराण)

शशि-भाल—पुं॰[सं॰ ब॰ स॰] महादेव। शंकर।

शशि-भूषण—पुं॰[सं॰ ब॰ स॰] शिव। महादेव।

शशिभृत्—पुं॰[सं॰ शशि√भृ (भरण करना)+क्विप्-तुक्] शिव। महादेव।

शशि-मंडल—पुं॰[सं॰ ष॰ त॰ स॰] चन्द्रमा का घेरा या मंडल। चन्द्रमंडल।

शशि-मणि—पुं॰[सं॰ मध्यम॰ स॰] चन्द्रकांत मणि।

शशि-मुख—वि॰[सं॰ ब॰ स॰] [स्त्री॰ शशिमुखी] शशि सदृश सुन्दर मुखवाला।

शशि-मौलि—पुं॰[सं॰ ब॰ स॰] शिव। महादेव।

शशि-रस—पुं॰[सं॰ ष॰ त॰ स॰] अमृत।

शशि-रेखा—स्त्री॰[सं॰ ष॰ त॰ स॰] चन्द्रमा की एक कला।

शशि-लेखा—स्त्री॰ [सं॰ ष॰ त॰ स॰]१. चन्द्रमा की कला। २. गिलोय। गुडुच। ३. बकुची।

शशि-वदना—वि॰[ब॰ स॰] शशि-मुखी।

स्त्री॰ एक प्रकार का वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में १ नगण(।।।) और १ यगण (।ऽऽ) होता है। इसे चौवंसा, चंडरसा और पादांकुलक भी कहते हैं।

शशि-शाला—स्त्री०[ष० त० या फा० शीशा+सं० शाला] शीशों का बना हुआ या बहुत से शीशों से सजा हुआ घर। शीश-महल।

शशि-शेखर—पुं०[सं० ब० स०] शिव। महादेव।

शशि-शोषक—वि०[सं० ष० त० स०] चन्द्रमा की कलाओं का शोषक।

पुं० अंधेरा पाख। कृष्णपक्ष।

शशि-सुत—पुं०[सं० ष० त०] चन्द्रमा का पुत्र, बुध (ग्रह)।

शशि-हीरा—पुं०[सं०+हिं०] चन्द्रकांत मणि।

शशी—पुं०=शशि।

शशीकर—पुं०[सं० शशिकर] चन्द्रमा की किरण।

शशीश—पुं० [सं० ष० त०] १. शिव। महादेव। २. कार्तिकेय।

शश्वत—वि०=शाश्वत।

शष्कुली—स्त्री० [सं० शष्कुल—ङीप्] १. पूरी, पक्वान्न आदि। २. कान का छेद। ३. सौरी मछली।

शष्प—स्त्री० [सं० शष+पक्]१. नई घास। २. नीली दूब। ३. ज्ञान या बुद्धि का नाश। ४. उपस्थ पर के बाल।

शसन—पुं०[सं०√ शस् (वध करना)+ल्युट्—अन] १. बलि के निमित्त पशु का किया जानेवाला वध। २. हत्या।

शसा—पुं०[सं० शश] खरगोश। खरहा।

शसि—पुं०=शशि।

शसी—पुं०=शशि।

शस्त—पुं०[सं०√ शंस् (कल्याण करना)+क्त] १. शरीर। बदन। २. कल्याण। मंगल।

भू० कृ० १. प्रशस्त। २. प्रशंसित। ३. जो मार डाला गया हो। निहत। ४. आहत। घायल। ५. मांगलिक।

पुं०[फा०]१. वह हड्डी या बालों का छल्ला जो तीर चलाने के समय अंगूठे में पहना जाता था। २. निशाना। लक्ष्य।

क्रि० प्र०—बाँधना।—लगाना।

३. दूरबीन की तरह का वह यंत्र जिससे जमीन नापने के समय उसकी सीध देखी जाती है। ४. मछली फंसाने का काँटा। बंसी।

शस्तक—पुं०[सं० शस्त+कन्]हाथ में पहनने का चमड़े का दस्ताना। अंगुलित्र।

शस्ति—स्त्री०[सं० √शंस् (कल्याण करना)+क्तिन्] स्तुति। प्रशंसा। प्रशस्ति।

शस्त्र—पुं०[सं० √शंस्+ष्ट्रन्] १. कोई ऐसी चीज जिससे लड़ाई-झगड़े या युद्ध के समय शत्रु पर प्रहार किया जाता हो। हथियार। २. लाक्षणिक रूप में कोई ऐसी चीज या बात जिसके द्वारा विपक्षी या विरोधी को दबाया अथवा शांत किया जाता हो। (वेपन) ३. किसी प्रकार का उपकरण या औजार। ४. लोहा। ५. फौलाद। ६. स्तोत्र। ७. कुछ पढ़कर सुनाना। पाठ।

शस्त्रक—पुं०[सं० शस्त्र+कन्] लोहा।

शस्त्र-कर्म (कर्म्मन्)—पुं० [सं०] घाव या फोड़े में नश्तर लगाना। फोड़ों आदि की चीर-फाड़ का काम। शल्यकारी।

शस्त्र-क्रिया—स्त्री० [सं० ष० त० स०] १. शस्त्र-कर्म। २. शल्योपचार।

शस्त्र-गृह—पुं० [सं० ष० त० स०]=शस्त्रागार।

शस्त्रजीवी (विन्)—पुं०[सं० शस्त्र√ जीव् (जीवित रहना)+णिनि शस्त्रजीविन्] योद्धा। सैनिक।

शस्त्रदेवता—पुं०[सं० ष० त० स०] युद्ध का अधिष्ठाता देवता।

शस्त्रधर—पुं०[सं० ष० त०] योद्धा। सैनिक।

शस्त्रधारी (रिन्)—वि०[सं० शस्त्र√धृ+णिनि] [स्त्री० शस्त्रधारिणी] शस्त्र धारण करनेवाला। हथियारबंद।

पुं० १. योद्धा। सैनिक। २. एक प्राचीन देश। ३. सिलहपोश नाम का जंतु।

शस्त्रपाणि—पुं०[सं० ब० स०] शस्त्रधारी।

शस्त्रभृत—पुं०[सं०]=शस्त्रधारी।

शस्त्र-विद्या—स्त्री०[सं० ष० त०]१. शस्त्र चलाने का कौशल या ज्ञान। २. यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद, जिसमें सब प्रकार के अस्त्र चलाने की विधियों और लड़ाई के संपूर्ण भेदों का वर्णन किया गया है।

शस्त्रशाला—स्त्री०[सं० ष० त०]=शस्त्रागार।

शस्त्रशास्त्र—पुं०[सं० ष० त०]=शस्त्रविद्या।

शस्त्रहत चतुर्दशी—स्त्री०[सं० शस्त्र-हत तृ० त०—चतुर्दशी ष० त०] गौण आश्विन कृष्ण चतुर्दशी और गौण कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी। इन दोनों तिथियों में उन लोगों का श्राद्ध किया जाता है, जिनकी हत्या शस्त्रों द्वारा होती है।

शस्त्राख्य—पुं०[सं० ब० स०] एक प्रकार का केतु। (बृहत्संहिता)

शस्त्रागार—पुं०[सं० ष० त० स०] १. शस्त्र आदि रखने का स्थान। शस्त्रशाला। शस्त्रालय। सिलहखाना। २. वह स्थान जहाँ पर अनेक प्रकार के शस्त्र प्रदर्शित किए अथवा सुरक्षित रखे जाते हों।

शस्त्राजीव—पुं०[सं० शस्त्र-आ√जीव् (जीवित रहना)+अच् ब० स०] =शस्त्रजीवी।

शस्त्रायस—पुं० [सं० मध्यम स० समा०—अच्] ऐसा लोहा जिससे शस्त्र बनाये जाते हैं।

शस्त्रालय—पुं०[सं० ष० त०]=शस्त्रागार।

शस्त्री—पुं०[सं० शस्त्र+इनि शस्त्रिन्]१. वह जो शस्त्र आदि चलाना जानता हो। २. वह जिसके पास शस्त्र हो। ३. छोटा शस्त्र; विशेषतः छुरी या चाकू।

शस्त्रीकरण—पुं०[सं० शस्त्र+च्वि√कृ+ल्युट्—अन, दीर्घ] आक्रमण आदि से राष्ट्र की रक्षा के उद्देश्य से सेना तथा निवासियों को शस्त्रों आदि से सज्जित करना।

शस्त्रोपजीवी (विन्)—पुं०[सं० शस्त्र-उप√जीव् (जीवित रहना)+णिनि] शस्त्रजीवी। (दे०)

शस्प—पुं०=शष्प।

शस्य—वि०[सं०√शस्+ यत[१. प्रशंसनीय। २. बढ़िया।

पुं० १. नई घास। कोमल तृण। २. वृक्ष का फल। ३. फसल। ४. अन्न। ५. प्रतिभा का नाश या हानि। ६. सद्गुण।

शस्यक—पुं०[सं० शस्य+कन्] एक प्रकार का रत्न।

शस्यागार—पुं०[सं० ष० त० स०] खलिहान।

शहंशाह—पुं०[फा०] १. राजाओं का राजा। सम्राट्। २. चक्रवर्ती राजा।

शहंशाही—वि०[फा०]१. शहंशाहों में होनेवाला। २. शहंशाह द्वारा

किया हुआ। ३. शाहों का सा। शाही। राजसी। जैसे—शहंशाही ठाठ-बाट।

स्त्री०१. शहंशाह होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। २. शहंशाह का पद। ३. लेन-देन का खरापन।

शह—पुं०[फा० शाह का संक्षिप्त रूप]१. बहुत बड़ा राजा। बादशाह। २. दूल्हा। वर।

वि० बड़ा और श्रेष्ठ।

स्त्री०[फा०]१. शतरंज के खेल में कोई मोहरा किसी ऐसे स्थान पर रखना जहाँ से बादशाह उसकी घात में पड़ता हो।

क्रि० प्र०—खाना।—देना।—लगाना।

२. गुप्त रूप से किसी को भड़काने या उभारने की क्रिया या भाव। जैसे—ये तुम्हारी शह पाकर ही तो इतना उछलते हैं।

क्रि० प्र०—देना।

३. गुड्डी, पतंग या कनकौवे आदि को धीरे-धीरे डोर ढीली करते हुए आगे बढ़ाने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—देना।

शहचाल—स्त्री०[फा० शह+हिं० चाल] शतरंज में बादशाह की वह चाल जो बाकी सब मोहरों के मारे जाने पर चली जाती है।

शहजादा—पुं० [फा० शाहजादः] [स्त्री० शहज़ादी]१. शाह का बेटा। राजपुत्र। २. युवराज।

शहजादी—स्त्री०[फा० शहजादी] १. राजकुमारी। २. युवराज्ञी।

शहजोर—वि०[फा०] [भाव० शहजोरी] बलवान। ताकतवर।

शहजोरी—स्त्री० [फा०] १. शहजोर होने की अवस्था या भाव। २. बल-प्रयोग। जबरदस्ती।

शहत†—पुं०=शहद।

शहतीर—पुं०[फा०] लकड़ी का चीरा हुआ बहुत बड़ा और लंबा लट्ठा जो प्रायः छत छाने के काम आता है।

शहतूत—पुं०[फा०]१. तूत का पेड़ और उसका फल। २. उक्त वृक्ष की मीठी फली।

शहद—पुं०[अ०] एक बहुत प्रसिद्ध मीठा, गाढ़ा और परम स्वादिष्ट तरल पदार्थ जो कई प्रकार के कीड़े विशेषतः मधुमक्खियाँ अनेक प्रकार के फूलों के मकरन्द से संग्रह करके अपने छत्तों में रखती हैं। मधु।

विशेष—यह प्रायः सभी प्रकार के रोगों में गुणकारी माना जाता और सभी अवस्थाओं के प्राणियों के लिए लाभ-दायक माना जाता है।

पद—शहद की छुरी=मीठी छुरी। (देखें)

मुहा०—शहद लगाकर अलग होना=उपद्रव का सूत्रपात करके अलग होना। आग लगाकर दूर होना। **शहद लगाकर चाटना**= किसी निरर्थक पदार्थ को यों ही लिए रहना और उसका कुछ भी उपयोग न कर सकना। (व्यंग्य) जैसे—आप अपनी पुस्तक शहद लगाकर चाटिये, मुझे उससे कहीं अच्छी पुस्तक मिल गई है।

वि० अत्यधिक मीठा।

शहनगी—पुं०[अ० शहनः] १. शहना होने की अवस्था या भाव। २. शस्य-रक्षक का काम। ३. वह धन जो चौकीदार को देने के लिए असामियों से वसूल किया जाता है।

शहनशीन—पुं०[फा०] बहुत बड़े आदमियों के बैठने के लिए सबसे ऊँचा या मुख्य आसन।

शहना—पुं०[अ० शहनः]१. खेत की चौकसी करनेवाला। शस्यरक्षक। २. खेतिहरों से राज-कर उगाहनेवाला अधिकारी। उदा०—राज्य का शहना आया, आठवाँ अंश ले गया।—वृन्दावनलाल वर्मा। ३. वह व्यक्ति जो जमींदार की ओर से असामियों को बिना कर दिए, खेत की उपज उठाने से रोकने और उसकी रक्षा के लिए नियुक्त किया जाता है। ४. नगर का कोतवाल।

शहनाई—स्त्री०[फा०]१. बाँसुरी या अलगोजे के आकार का, पर उससे कुछ बड़ा, मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा जो प्रायः रोशन-चौकी के साथ बजाया जाता है। नफीरी। २. रोशनचौकी।

शहबाज—पुं०[फा०] एक प्रकार का बड़ा बाज पक्षी।

शहबाला—पुं०[फा०] वह छोटा बालक जो विवाह के समय दूल्हे के साथ पालकी पर अथवा उसके पीछे घोड़े पर बैठकर वधू के घर जाता है।

शहबुलबुल—स्त्री०[फा०] एक प्रकार की बुलबुल जिसका सारा शरीर लाल, कंठ काला और सिर पर सुनहले रंग की चोटी होती है।

शहमात—स्त्री०[फा०] शतरंज के खेल में ऐसी मात जिसमें बादशाह को केवल शह या किस्त देकर इस प्रकार मात किया जाता है कि बादशाह के चलने के लिए कोई घर ही नहीं रह जाता।

शहर—पुं०[फा० शह्र] मनुष्यों की बस्ती जो कस्बे से बहुत बड़ी हो, जहाँ हर तरह के लोग रहते हों और जिसमें अधिकतर बड़े पक्के मकान हों। नगर।

शहर-पनाह—स्त्री०[फा०] वह दीवार जो किसी नगर की रक्षा के लिए उसके चारों ओर बनाई जाय। शहर की चार-दीवारी। प्राचीर। नगरकोटा।

शहरी—वि० [फा०] १. शहर से संबंध रखनेवाला। शहर का। २. शहर का निवासी। नागरिक। ३. शहरियों का सा।

शहवत—स्त्री० [अ०] १. इच्छा, विशेषतः भोग-विलास की इच्छा। २. स्त्री-संभोग के लिए होनेवाली इच्छा। काम-वासना। ३. स्त्री-संभोग। मैथुन।

शहवत परस्त—वि० [अ०+फा०] जिसमें भोग-विलास या स्त्री-संभोग की प्रबल प्रवृत्ति हो।

शह-सवार—वि० [फा०] कुशल घुड़सवार।

शहादत—स्त्री० [अ०] १. शहीद होने की अवस्था या भाव विशेषतः जहाद में लड़ते हुए प्राण देना। २. वध। ३. गवाही। ४. प्रमाण।

शहाना—वि० [फा० शहाना] [स्त्री० शाहानी] १. शाहों का। २. शाहों में होनेवाला। ३. शाहों जैसा। राजसी। ४. उत्तम। बढ़िया।

पुं० १. कपड़ों का वह जोड़ा जो विवाह के समय वर को पहनाया जाता है। २. मुसलमानों में विवाह के समय गाया जानेवाला एक प्रकार का लोक-गीत।

पुं० [देश० या फा० शाही से] सम्पूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

शहाना कान्हड़ा—पुं० [हिं० शहाना+कान्हड़ा] संपूर्ण जाति का एक प्रकार का कान्हड़ा राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

शहाब—पुं० [फा०] [वि० शहाबी] गहरा लाल रंग। विशेषतः कुसुम से तैयार किया जानेवाला गहरा लाल रंग।

शहाबा—पुं० दे० 'अगिया बैताल'।

शहाबी—वि० [फा०] शहाब के रंग का। गहरा लाल।

पुं० उक्त प्रकार का रंग।

शहीद—वि० [अ०] १. अपने धर्म, सदाचार या कर्तव्य-परायणता की रक्षा के निमित्त अपने प्राण देनेवाला। जैसे—शहीद हकीकत राय। २. आज-कल (वह व्यक्ति) जो स्वतन्त्रता की रक्षा अथवा उसकी प्राप्ति के लिए अपनी जान गँवाता हो। जैसे—शहीद भक्त सिंह।

शहीदी—वि० [अ० शहीद] १ शहीद संबंधी। २. जो शहीद होने के लिए तैयार हो। जैसे—शहीदी जत्था। ३. लाल रंग।

शांकर—वि० [सं० शंकर+अण्] १. शंकर-संबंधी। शंकर का। २. शंकराचार्य का। जैसे—शांकर भाष्य।

पुं० १. शंकराचार्य का अनुयायी। २. एक प्रकार का छंद। ३. एक प्रकार की सोमलता। ४. आर्द्रा नक्षत्र, जिसके देवता शिव हैं। ५. साँड़।

शांकरी—पुं० [सं० शंकर+इञ्] शिव के पुत्र गणेश जी। २. कार्तिकेय। ३. अग्नि। ४. शमी वृक्ष।

स्त्री० [शांकर–ङीप्] शिव द्वारा निर्धारित अक्षरों का क्रम। शिव-सूत्र।

शांकव—वि० [सं० शंकु+अञ्] जो शंकु के आकार या रूप में हो। जिसके नीचे का भाग चौड़ा या मोटा हो और ऊपर का भाग बराबर पतला या कोणाकार होता गया हो। (कोनिक)

शांख—पुं० [सं० शंख+अण्] शंख की ध्वनि।

वि० शंख-संबंधी। शंख का।

शांखायन—पुं० [सं० शंख+फिञ्-आयन] एक गहन और श्रौत सूत्रकार ऋषि जिनका कौशीतकी ब्राह्मण ग्रंथ है।

शांखिक—वि० [सं० शंख+ठञ्–इक] [स्त्री० शांखिकी] १. शंख संबंधी। २. शंख का बना हुआ।

पुं० १. वह जो शंख बजाता हो। २. वह जो शंख बनाता या बेचता हो।

शांख्य—वि० [सं० शंख-यञ्] १. शंख-संबंधी। २. शंख का बना हुआ।

शांडिक—पुं० [सं० शंड+ठञ्–इक] साँडा नामक जंतु।

शांडिल्य—पुं० [सं० शांडिल+यञ्] १. एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि जो स्मृतिकार भी कहे गये हैं। २. उक्त मुनि के कुल या गोत्र में उत्पन्न व्यक्ति। ३. बेल वृक्ष या उसका फल। ४. अग्नि।

शांतंपापं—अव्य० [सं०] एकपद जिसका अर्थ है 'पाप शांत हो'। और जिसका प्रयोग किसी बड़े के सामने उसके कोप आदि से बचने की कामना से किया जाता था।

शांत—वि० [सं०√शम् (शांत होना)+क्त, निपा०, दीर्घ] १. (उत्पात या उपद्रव) जिसका शमन हो चुका हो या किया जा चुका हो। जो दबाया गया हो या दबा दिया गया हो। जिसकी उग्रता या प्रचंडता न रह गई हो या नष्ट कर दी गई हो। जैसे—उपद्रव, क्रोध, या विद्रोह शांत होना। २. (क्रिया या व्यापार) जिसका पूर्णतः अंत या समाप्ति हो चुकी हो। जैसे— शीत शांत होना। ३. जिसमें कोई आवेग, चंचलता, वासना या विकार न रह गया हो। जैसे—वह बहुत शांत भाव से जीवन बिताता है। ४. जिसने इन्द्रियों और मन को वश में कर लिया हो। जितेंद्रिय। ५. उत्साह, उमंग, कर्मठता आदि से रहित। ६. चुप। मौन। ७. थका या हारा हुआ। श्रांत। ८. जिसकी उष्णता या ताप नष्ट हो चुका हो। जैसे—अग्नि या दीपक शान्त होना। ९. जिसकी घबराहट या चिंता दूर हो चुकी हो।

पुं० १. साहित्य में नौ रसों में से अंतिम रस जो सब रसों में प्रधान या सर्वोपरि माना गया है और जिसका स्थायी भाव निर्वेद अर्थात् काम आदि मनोविकारों का शमन माना गया है। (भक्ति-काल में इस रस को विशेष महत्त्व प्राप्त हुआ था।)

शांतता—स्त्री० [सं० शांत+तल्–टाप्] शांति।

शांतनव—पुं० [सं० शन्तनु+अण्] [स्त्री० शांतनवी] राजा शांतनु के पुत्र भीष्म।

शांतनु—पुं० [सं० शांतनु+डु] १. द्वापर युग के २१वें चन्द्रवंशी राजा। २. ककड़ी।

शांतस्वरूपी—पुं० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

शांता—स्त्री० [सं० शांत-टाप्] १. श्रृंगी ऋषि की पत्नी का नाम जिसके जनक दशरथ थे और पालक-पोषक अंगराज लोमपाद थे। २. शमी-वृक्ष। ३. आँवला। ४. रेणुका नामक गन्ध द्रव्य। ५. दूब। ६. संगीत में, एक श्रुति।

शांति—स्त्री० [सं०√शम् (शान्त होना)+क्तिन्] १. शांत होने की अवस्था जिसमें उद्वेग, क्षोभ, चिंता, दुःख आदि का पूर्णतः अभाव होता है। चित्त का ठिकाने और स्वस्थ रहना। २. दिल का आराम, इतमीनान और चैन। ३. जन-समूह या समाज की वह अवस्था जिसमें उत्पात, उपद्रव मार-पीट, लड़ाई-झगड़े, विद्वेष आदि का अभाव हो और फलतः लोग निश्चित भाव से सुखपूर्वक जीवन बिताते हों। ४. राजनीतिक क्षेत्र में, वह स्थिति जिसमें राज्य, राष्ट्र आपस में लड़ते-झगड़ते या मार-पीट न करते हों। ५. वातावरण की वह स्थिति जिसमें नैसर्गिक तत्त्वों में कोई उग्रता या प्रचंडता न रहती हो। ६. ऐसी स्थिति जिसमें किसी प्रकार की अप्रिय या कटु ध्वनि या शब्द न होता हो। नीरवता। सन्नाटा। स्तब्धता। ७. ऐसी शारीरिक स्थिति जिसमें पीड़ा, रोग आदि का दमन या शमन हो चुका हो। (पीस, उक्त सभी अर्थों में) ८. जीवन या शारीरिक व्यापारों का अंत या समाप्ति। मृत्यु। मौत। ९. गंभीरता, धीरता आदि की सौम्य स्थिति। १०. धार्मिक दृष्टि से तृष्णा, राग, विराग, आदि से मुक्त या रहित होने की अवस्था। ११. कर्मकांड में वह धार्मिक कृत्य जो अनिष्ट या अशुभ बातों का निवारण करने के लिए किया जाता है। जैसे—गृह-शांति, मूलशांति आदि। १२. दुर्गा का एक नाम।

शांतिक—वि० [सं० शांति+ठक्] १. शांति-संबंधी। शांति का। २. शांति के परिणाम-स्वरूप होनेवाला।

पुं० कर्मकाण्ड का शांति नामक कर्म।

शांतिकर्म—पुं० [सं०√मध्य० स०] वह पूजा-पाठ जो अनिष्ट, बाधा आदि की शांति के निमित्त किया जाता है।

शांतिकलश—पुं० [सं० मध्यम० स०] शुभ अवसरों पर शांति के निमित्त स्थापित कलश।

शांतिगृह—पुं० [सं० ष० त०] वह स्थान जहाँ पर यज्ञ की समाप्ति के बाद स्नान करने का विधान होता था।

शांतिद—वि० [सं० शांति√दा+क][स्त्री० शांतिदा] शांति देनेवाला।
पुं० विष्णु।

शांतिदाता (तृ)—वि० [सं० ष० त०] [स्त्री० शांतिदात्री] शांति देनेवाला।

शांतिदायक—वि० [सं० शांति√दा+ण्वुल् अक-युक्] [स्त्री० शांतिदायिका] शांति देनेवाला।

शांतिदायी (यिन्)—वि० [सं०शांति√दा+णिनि-युक्] [स्त्री० शांतिदायिनी] शांति देनेवाला।

शांतिनाथ—पुं० [सं० ब० स०] जैनों के एक तीर्थंकर या अर्हत् का नाम।

शांतिपर्व—पुं० [सं०√मध्य० स०]महाभारत का बारहवाँ और सब से बड़ा पर्व जिसमें युद्ध के उपरांत युधिष्ठिर की चित्तशांति के लिए कही हुई बहुत सी कथाएँ, उपदेश और ज्ञान-चर्चाएँ हैं।

शांतिपाठ—पुं० [सं० मध्य० स०] १. किसी मांगलिक कार्य के आरंभ में, विघ्न-बाधा दूर करने के लिए, किया जानेवाला धार्मिक पाठ या कृत्य। २. बराबर यह कहते रहना कि शांति रहे, शांति रहे।

शांतिपात्र—पुं० [सं० मध्यम० स०] वह पात्र जिसमें ग्रहों, पापों आदि की शांति के लिए जल रखा जाय।

शांतिभंग—पुं० [सं० ष० त०] १. शांत स्थिति में होनेवाली गड़बड़ी या बाधा। २. ऐसा अनुचित काम या उपद्रव जिससे जन-साधारण के सुख और शांतिपूर्वक रहने में बाधा होती हो। (ब्रीच ऑफ पीस)

शांतिवाचन—पुं० [सं० मध्यम० स०] शांतिपाठ।

शांतिवाद—पुं० [सं० शांति√वद्+घञ्] [वि० शांतिवादी] आधुनिक राजनीति में वह वाद या सिद्धान्त जिसमें सब प्रकार की सैनिक शक्तियों के प्रयोगों और युद्धों का विरोध करते हुए यह कहा जाता है कि सब राष्ट्रों को शांतिपूर्वक रहना और आपसी झगड़ों को शांतिपूर्ण उपायों से निपटाना चाहिए। (पैसिफ़िज्म)

शांति-वादी—वि० [सं०] शांतिवाद संबंधी। शांतिवाद का।
पुं० वह जो शांतिवाद के सिद्धान्तों का अनुयायी और समर्थक हो। (पैसिफ़िस्ट)

शांति-सन्धि—स्त्री० [सं० मध्य० स०] युद्ध के उपरांत युद्ध-रत राष्ट्रों में होनेवाली वह संधि जिसके द्वारा शांति स्थापित होती और परस्पर मित्रता का व्यवहार आरम्भ होता है। (पीस ट्रीटी)

शांब—पुं० [सं०]=सांब।

शांबर—वि०[सं० शंबर+अण्]१. शंबर दैत्य संबंधी। २. साँभर मृग संबंधी।
पुं० लोध का पेड़।

शांबर-शिल्प—पुं० [सं० कर्म० स०] इंद्रजाल। जादू।

शांबरिक—पुं० [सं० शम्बर+ठक्–इक] जादूगर। मायावी।

शांबरी—स्त्री० [सं० शांबर-ङीष्] १. माया। इन्द्रजाल। २. जादूगरनी।
पुं० १. एक प्रकार का चंदन। २. लोध। ३. मूसाकानी।

शांबविक—पुं० [सं० शंबु+ठञ्–इक] शंख का व्यवसाय करनेवाला व्यक्ति।

शांबुक—पुं० [सं० शांबु+कन्] घोंघा।

शांभर—स्त्री० [सं० शंभर+अण्] साँभर झील।
पुं० साँभर नामक नमक।

शांभव—वि० [सं० शंभु+अण्] १. शंभु-संबंधी। शिव का। २. शंभु से उत्पन्न। ३. शिव का उपासक।
पुं० १. देवदार। २. कपूर। ३. गुग्गुल। ४. एक प्रकार का विष।

शांभवी—स्त्री० [सं० शांभव-ङीष्] १. दुर्गा। २. नीली दूब।

शाइस्तगी—स्त्री० [फा०] शाइस्ता होने की अवस्था या भाव।

शाइस्ता—वि० [फा० शाइस्तः] १. शिष्ट तथा सभ्य। २. नम्र तथा सुशील। ३. जिसे अच्छा आचरण या व्यवहार सिखाया गया हो।

शाकंभरी—स्त्री० [सं० शाक√भृ (भरण करना)+खच्-मुम्-ङीष्] १. दुर्गा। २. साँभर नगर का प्राचीन नाम।

शाकंभरीय—वि० [सं० शाकंभर+छ–ईय] सांभर झील से उत्पन्न।
पुं० साँभर नमक।

शाक—वि० [सं० शक+अण्] १. शक जाति संबंधी। २. शक राजा का। ३. शक सम्वत् संबंधी।
पुं० १.वनस्पति। २. विशेषतः ऐसी वनस्पति जिसकी तरकारी बनाई जाती हो। ३. किसी वनस्पति के वे पत्ते जिनकी तरकारी बनाई जाती है। ४. उक्त की बनी हुई तरकारी। ५. सागवान। ६. भोजपत्र। ७. सिरिस। ८. सात द्वीपों में से छठा द्वीप। ९. शक जाति के लोग। १०. एक युग, विशेषतः शक राजा शालिवाहन का युग। ११. उक्त के द्वारा चलाया हुआ संवत्। १२. शक्ति।
वि० [अ० शाक] १. भारी। २. दूभर। दुस्सह।
मुहा०–शाक गुजरना=कष्टकर प्रतीत होना। खलना।
३. कष्ट या दुःख देनेवाला (काम)।

शाकट—वि० [सं० शकट+अण्] १. शकट या गाड़ी संबंधी। २. (वह जो कुछ) गाड़ी पर लादा गया हो।
पुं० १. गाड़ी खींचनेवाला पशु। २. गाड़ी पर लादा जानेवाला बोझ। ३. लिसोड़ा। ४. धौ का पेड़। ५. खेत।

शाकटायन—पुं० [सं०शकट+फक्–आयन] १. शकट का पुत्र या वंशज। २. एक बहुत प्राचीन संस्कृत वैयाकरण जिसका उल्लेख पाणिनि ने किया है। ३. एक दूसरे अर्वाचीन वैयाकरण जिनके व्याकरण का प्रचार जैनों में है।

शाकटिक—पुं०[सं० शकट+ठक्-इक] १. सग्गड़ हाँकनेवाला व्यक्ति। २. गाड़ीवान।

शाकटीन—पुं० [सं० शकट+खञ्–ईन] १. गाड़ी का बोझ। २. बीस तुला या दो हजार पल की एक पुरानी तौल।

शाकद्रुम—पुं० [सं० मध्यम० स०] १. वरुण वृक्ष। २. सागौन।

शाकद्वीपीय—वि० [सं० शाकद्वीप+छ–ईय]शक (द्वीप) का रहनेवाला।
पुं० ब्राह्मणों का एक वर्ग जिसे मग भी कहते हैं और शक द्वीप से आया हुआ माना जाता है।

शाक-भक्ष—वि० [सं० ब० स०] =शाकाहारी।

शाकरी—स्त्री० [सं० शाक√रा (लेना)+क ङीष्]दे० 'शाकारी'।

शाकल—वि० [सं० शकल+अण्] १. शकल अर्थात् अंश या खंड से संबंध रखनेवाला। २. शकल नामक रंग से बना या रँगा हुआ।

पुं० १. अंश। खण्ड। टुकड़ा। २. ऋग्वेद की एक शाखा या संहिता। ३. लकड़ी का बना हुआ जंतर या तावीज। ४. एक प्रकार का साँप। ५. प्राचीन भारत में मद्र जनपद की राजधानी। (आजकल का स्यालकोट नगर)।

शाकलिक—वि० [सं०√शाकल+ठक्–इक] शकल या शाकल संबंधी।

शाकली—पुं० [सं० शाकल–ङीप्] एक प्रकार की मछली।

शाकल्य—पुं० [सं० शकल+यञ्] एक प्राचीन ऋषि जो ऋग्वेद की शाखा के प्रचारक थे और जिन्होंने पहले-पहल उसका पद पाठ किया था।

शाकशाल—पुं० [सं० शाक√शाल् (सुशोभित होना)+अच्] बकायन। महानिंब वृक्ष।

शाका—स्त्री० [सं० शाक-टाप्] हरीतकी। हड़। हरें।

शाकारी—स्त्री०[सं० शकार+अण्–ङीष्] शकों अथवा शाकरों की बोली जो प्राकृत का एक भेद है।

शाकाष्टका—स्त्री० [सं० मध्य० स०] फाल्गुन कृष्ण पक्ष की अष्टमी। (इस दिन पितरों के उद्देश्य से शाकदान किया जाता है।)

शाकाष्टमी—स्त्री० [सं० मध्यम० स०]=शाकाष्टका।

शाकाहार—पुं० [सं० ष०, त० स०] अनाज अथवा फल-फूल का भोजन। (मांसाहार से भिन्न)

शाकाहारी—पुं० [सं० शाकाहारिन्] वह जो केवल अन्न, फल और साग-भाजी खाता हो; मांस न खाता हो। निरामिषभोजी। (वेजीटेरियन)

शाकिनी—स्त्री० [सं० शाक+इनि–ङीष्] १. शाक अर्थात् शाक-भाजी की खेती। २. वह भूमि जिसमें साग-भाजी बोई जाती हो। [सं० शाकिन्—ङीष्] ३. एक पिशाची या देवी जो दुर्गा के गणों में समझी जाती हैं। डाइन। चुड़ैल।

शाकिर—वि० [अ०] १. शुक्र करने अर्थात् कृतज्ञता प्रकाशित करनेवाला। शुक्रगुजार। २. संतोषी।

शाकी—वि० [अ०] १. शिकायत करनेवाला। २. नालिश या फरियाद करनेवाला। ३. चुगल-खोर।

शाकुंतल, शाकुंतलेय—वि० [सं० शकुंतला+अण्, शकुंतला+ढक्–एय] शकुंतला संबंधी।

पुं० शकुंतला के गर्भ से उत्पन्न राजा भरत।

शाकुंतिक—पुं० [सं० शकुंत+ठञ्-इक] बहेलिया।

शाकुन—वि० [सं० शकुन+अण्] १. पक्षी संबंधी। चिड़ियों का। २. शकुन संबंधी।

पुं० १. बहेलिया। २. दे० 'शकुन'।

शाकुनि—पुं० [सं० शाकुन+इन] बहेलिया।

शाकुनी—पुं० [सं० शाकुन+इन, दीर्घ, नलोप शाकुनिन्] १. मछली पकड़नेवाला। मछुआ। २. शकुन का विचार करनेवाला पंडित। ३. एक प्रकार का प्रेत।

शाकुनेय—वि० [सं० शकुन+ढक्–एय] पक्षी-संबंधी। शकुन संबंधी।

पुं० १. बकासुर दैत्य का एक नाम। २. एक प्रकार का छोटा उल्लू।

शाकुल—पुं०=शाकुलिक।

शाकुलिक—पुं० [सं० शकुल+ठक्–इक] १. मछलियों का झोल या समूह। २. मछुआ। मल्लाह।

शाक्त—वि० [सं० शक्ति+अण्] १. शक्ति-संबंधी। बल-संबंधी। २. दुर्गा-संबंधी।

पुं० वह जो तांत्रिक रीति से शक्ति अर्थात् देवी की पूजा करता हो। शक्ति का उपासक, अर्थात् वाम-मार्गी।

शाक्तागम—पुं० [सं० ष० त० स०] शाक्तों का आगम या शास्त्र अर्थात् तंत्रशास्त्र।

शाक्तिक—पुं० [सं० शक्ति+ठक्–इक] १. शक्ति का उपासक। शाक्त। २. शक्ति (एक प्रकार का भाला) चलानेवाला। भालाबरदार।

शाक्तीक—वि० [सं० शक्ति+ईकक्] शाक्तिक।

शाक्तेय—पुं० [सं० शक्ति+ढक्–एय] शक्ति का उपासक। शाक्त।

शाक्य—पुं० [सं० शक+घञ्+यत्-ञ्य वा] १. गौतम बुद्ध के वंश का नाम। २. गौतम बुद्ध।

शाक्यमुनि—पुं० [सं० कर्म० स०] गौतमबुद्ध।

शाक्य सिंह—पुं० [सं० सप्त० त०] गौतमबुद्ध।

शाक्र—पुं० [सं० शक्र+अण्] शक्र (इंद्र) संबंधी।

पुं० ज्येष्ठा नक्षत्र जिसके अधिपति इंद्र माने जाते हैं।

शाक्री—स्त्री० [सं० शक्र-ङीष्] १. दुर्गा। २. इन्द्राणी।

शाक्वर—पुं० [सं०√शक्+ष्वरप्-अण्] १. इन्द्र। २. इन्द्र का वज्र। ३. साँड़। ४. प्राचीन आर्यों का एक संस्कार।

शाख—पुं० [सं० √शाख् (व्याप्त होना)+अच्] कृत्तिका का पुत्र, कार्तिकेय। २. भाँग। ३. करंज।

स्त्री० [सं० शाखा से फा०] १. वृक्ष की शाखा। डाली।

मुहा०—(किसी बात में) शाख निकालना=व्यर्थ दोष या भूल निकालना।

२. किसी वस्तु, संस्था आदि का वह अंश या विभाग जो उसके संबंध के अथवा उसकी तरह के कुछ काम करता हो। शाखा। ३. पशु का सींग। ४. शरीर का दूषित रक्त निकालने का सींग का उपकरण। सिंगी। ५.किसी बड़ी चीज के साथ लगा हुआ छोटा खंड या टुकड़ा। ६. नदी आदि की बड़ी धारा में से निकली हुई छोटी धारा। शाखा।

शाखदार—वि०[फा०] १. शाखाओं से युक्त। २. सींगवाला (पशु)।

शाखसाना—पुं० [फा०] १. झगड़ा। विवाद। २. तर्क-वितर्क। बहस। ३. किसी काम या बात में निकाला जानेवाला व्यर्थ का दोष। ४. किसी बात का कोई विशिष्ट अंग या पक्ष। ६ ईरान में फकीरों का एक फिरका जो अपने आप को घायल कर लेने की धमकी देकर लोगों से पैसे लेते हैं।

शाखा—स्त्री० [सं०] १. वृक्षों आदि के तने से इधर-उधर निकले हुए अंग। टहनी। डाल। २. किसी मूल वस्तु से इसी रूप में या इसी प्रकार के निकले हुए अंग। जैसे—नदी की शाखा।

मुहा०—(किसी की) शाखाओं का वर्णन करना=(क) गुण, महत्व आदि का वर्णन करना। उदा०—साखा बरनै रावरी द्विजवर ठौरे ठौर।—दीनदयाल। (ख) शाखोच्चार करना।

३. किसी मूल वस्तु के वे अंग जो दूर रहकर भी उसके अधीन और उसके अनुसार काम करता हो। जैसे—किसी दुकान या बैंक की शाखा।

(ब्रांच, उक्त सभी अर्थों के लिए) ४. वेद की संहिताओं के पाठ और क्रम-भेद। ५. किसी विषय या सिद्धान्त के संबंध में एक ही तरह के विचार या मत रखनेवाले लोगों का वर्ग। वर्ग। सम्प्रदाय। (स्कूल) ६. ज्ञान या मत से संबंध रखनेवाला किसी विषय की कई भिन्न भिन्न विचार-प्रणालियों या सिद्धान्तों में से कोई एक। (स्कूल) ७. शरीर के हाथ और पैर नामक अंग। ८. हाथों या पैरों की उँगलियाँ। ९. दरवाजे की चौखट। १०. घर का किसी ओर निकला हुआ कोना। ११. विभाग। हिस्सा। १२. किसी चीज का किसी प्रकार का अंग या अवयव।

शाखा चंक्रमण—पुं० [सं० ष० त०] १. एक डाल पर से दूसरी डाल पर कूद कर जाना। २. विना किसी एक काम को पूरा किये दूसरे काम को हाथ में ले लेना। ३. थोड़ा-थोड़ा करके काम करना।

शाखाचंद्र-न्याय—पुं० [सं० मध्य० स०] उसी प्रकार मिथ्या बात को सत्य मानने का एक प्रकार का न्याय जैसे शाखा पर चंद्र का होना मान लिया जाय।

शाखानगर—पुं० [कर्म० स०] उप-नगर।

शाखापित्त—पुं० [सं० ब० स०] एक प्रकार का रोग जिसमें हाथों-पैरों में जलन और सूजन होती है।

शाखापुर—पुं० [सं०] उप-नगर।

शाखामृग—पुं० [सं० ष० त०] १. वानर। बंदर। २. गिलहरी।

शाखायित—वि० [सं० शाखा+क्यङ्क्त+] शाखाओं से युक्त।

शाखारंड—पुं० [सं०] ऐसा ब्राह्मण जो अपनी वैदिक शाखा को छोड़कर किसी दूसरी वैदिक शाखा का अध्ययन करे।

शाखालंबी—वि० [सं०] वृक्ष की शाखा में लटकने वाला।

पुं० बंदरों की तरह का एक जंतु जो प्रायः वृक्षों की शाखाओं में लटका रहता है; और अधिक चल-फिर नहीं सकता।

शाखा-वात—पुं० [सं० ब० स०] हाथ या पैर में होनेवाला वात रोग।

शाखाशिफा—स्त्री० [सं० ष० त० स०] पेड़ की वह शाखा जिसने जड़ का रूप धारण कर लिया हो।

शाखी (खिन्)—वि० [सं० शाखा+इनि, दीर्घ, नलोप] १. (वृक्ष) जिसकी अनेक शाखाएँ हों। २. (संस्था) जिसके अधीनस्थ कार्यालय अनेक स्थानों पर हों। ३. किसी शाखा से संबंधित।

पुं० १. पेड़। वृक्ष। २. वेद। ३. वेद की किसी शाखा का अनुयायी। ४. पीलू वृक्ष। ५. तुर्किस्तान का निवासी।

शाखीय—वि० [सं० शाखा+छ-ईय] १. शाखा सबंधी। शाखा का। २. शाखा पर का।

शाखोच्चार—पुं० [सं० ष० त० स०] १. विवाह के समय वर और वधू की ऊपर की पीढ़ियों का संबंधित पुरोहित द्वारा होनेवाला कथन। २. किसी के पूर्वजों के नाम ले-लेकर उनपर कलंक लगाना या उनके दोष बताना। (व्यंग)

शाखोट—पुं० [सं० ब० स०] सिहोर (पेड़)।

शाख्य—वि० [सं० शाखा+यत्]=शाखीय।

शागिर्द—पुं० [फा०] [भाव० शागिर्दगी] १. चेला। शिष्य। २. संबंध के विचार से किसी के द्वारा सिखाया-पढ़ाया हुआ व्यक्ति।

शागिर्द-पेशा—पुं० [फा० शागिर्द-पेशा] १. वह जो किसी के अधीन रहकर कोई काम सीखता हो। २. कर्मचारी। अहलकार। ३. खिदमतगार। ४. मकान के पास ही नौकर-चाकर के रहने के लिए बनाई हुई कोठरी।

शागिर्दी—स्त्री० [फा०] १. शागिर्द होने की अवस्था या भाव। शिष्यता। २. टहल या सेवा जो शागिर्द का कर्तव्य है।

शाचिव—पुं० [सं०] वि० १. प्रबल। २. शक्तिशाली। ३. प्रसिद्ध। ख्यात। १. ऐसा जौ जिसका छिलका या भूसी कूटकर निकाल दी गई हो। २. जौ का दलिया।

शाज—वि० [अ०] १. दुर्लभ। २. अद्भुत। अनोखा।

पद—शाजो नादिर=कभी-कभी यदा-कदा।

शाट—पुं० [सं०√शट् (डोरा)+अण्] १. कपड़े का टुकड़ा। २. कमर। में लपेटकर पहना जानेवाला कपड़ा। जैसे—धोती, तहमद आदि। ३. एक प्रकार की कुरती या फतुही। ४. कोई ढीला-ढाला पहनावा। जैसे—चोगा।

पुं०—[अं०] खेल में गेंद पर किया जानेवाला जोर का आघात।

शाटक—पुं० [सं०√शाट् (डोरा)+ण्वुल्-अक] वस्त्र। कपड़ा।

शाटिका—स्त्री० [सं० शाटक+टाप्-इत्व] १. साड़ी। धोती। २. स्त्रियों की पहनने की धोती या साड़ी। ३. कचूर।

शाटी—स्त्री० [सं० शाट-ङीप्] १. साड़ी। २. धोती।

शाठ्य—पुं० [सं० शठ+ष्यञ्]=शठता।

शाण—पुं० [सं० शण+अण्] १. हथियारों की धार तेज करने का पत्थर या और कोई उपकरण। १. कसौटी नामक काला पत्थर। २. चार माशे की एक पुरानी तौल।

वि० १. सन के पौधे से संबंध रखनेवाला। २. सन के रेशों से बना हुआ।

पुं० सन के रेशे का बना हुआ कपड़ा। भँगरा।

शाणवास—पुं० [सं० ब० स०] १. वह जो सन का बना हुआ वस्त्र पहनता हो। २. जैनों का एक अर्हत्।

शाणाजीव—पुं० [सं० शाण-आ√जीव्+अच्] सान लगानेवाला कारीगर।

शाणिता—भू० कृ० [सं० शाण+इतच्–टाप्] १. (शस्त्र) जिसे सान पर चढ़ाकर चोखा या तेज किया गया हो। २. कसौटी पर कसा हुआ।

शाणी—स्त्री० [सं० शाण+ङीप्] १. सन के रेशों से बना हुआ कपड़ा। भँगरा। २. फटा-पुराना कपड़ा। फटी पोशाक। ३. वह छोटा कपड़ा जो यज्ञोपवीत के समय ब्रह्मचारी को पहनने के लिए दिया जाता है। ४. धार तेज करने की सान। ५. कसौटी नामक पत्थर। ६. छोटा खेमा। रावटी। ७. आरा। ८. चार माशे की तौल। ९. संकेत।

शात—भू० कृ० [सं०√शो (पतला करना)+क्त] १. सान पर चढ़ाकर तेज किया हुआ। २. पतला। बारीक। ३. दुर्बल। कमजोर।

पुं० १. धतूरा। २. सुख। ३. आनंद।

शात-कुंभ—पुं० [सं० शतकुंभ+अण्] १. कचनार का वृक्ष। २. धतूरा। ३. कनेर। ४. सोना। स्वर्ण।

शातन—पुं० [सं०√ शो (पतला करना)+णिच् तङ्-ल्युट्-अन] [वि० शातनीय, भू० कृ० शातित] १. सान पर चढ़ाकर धार तेज करना। चोखा करना। २. पेड़ आदि को काटना या कटवाना। ३. नष्ट करना। ४. छीलना। तराशना। ५. लकड़ी रँदना।

शात-पत्रक—पुं० [सं० शतपत्र+अण्—कन्] चंद्रिका। चाँदनी। ज्योत्स्ना।

शातला—स्त्री०=सातला।

शातिर—पुं० [अ०] १. शतरंज का अच्छा खिलाड़ी। २. बहुत बड़ा चालाक और चालबाज। परम धूर्त। ३. दूत।

शातोदर—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० शातोदरी] १. पतली कमर-वाला। क्षीण-कटि। २. दुबला-पतला।

शात्रव—पुं० [सं० शत्रु+अण्] १. शत्रुत्व। शत्रुता। २. शत्रु। दुश्मन। ३. शत्रुओं का समूह।

वि० १. शत्रु-संबंधी। २. दुश्मन का। ३. शत्रुतापूर्ण।

शाद—पुं०[सं०√शो (पतला करना)+द]१. गिरना या पड़ना। पतन। २. घास। ३. कीचड़।

शाद-मान—वि० [फा०] [भाव० शादमानी] प्रसन्न। खुश।

शादाब—वि० [फा०] [भाव० शादाबी] १. सिंचित। २. हराभरा। सरसब्ज।

शादियाना—पुं० [फा० शादियानः] १. खुशी या आनंद-मंगल के समय बजनेवाले बाजे। २. आनन्द-मंगल के समय गाया जानेवाला गीत। ३. वह धन जो किसान जमींदार को ब्याह के अवसर पर देते हैं। ४. बधावा। बधाई।

शादी—स्त्री० [फा०] १. खुशी। प्रसन्नता। आनन्द। २. आनन्द विशेषतः ब्याह के अवसर पर मनाया जानेवाला उत्सव। ३. विवाह। ब्याह।

क्रि० प्र०—करना। —रचना।—होना।

शादी-गमी—स्त्री० [सं० फा०+अ०] १. विवाह तथा मृत्यु। २. बोल-चाल में, गृहस्थी में लगे रहनेवाले जन्म, मृत्यु विवाह आदि सुख-दुःख।

शाद्वल—वि० [सं० शाद्+ड्वलच्] हरित तृण या दूब से युक्त। हरी घास से ढका हुआ। हरा-भरा।

पुं० १. हरी घास। २. मरु द्वीप। (दे०) ३. साँड़। ४. बैल।

शान—पुं० [सं० शान (तेज करना)+अच्] १. कसौटी। २. सान नामक उपकरण जिससे चाकू, छुरी आदि की धार तेज करते हैं।

स्त्री० [अ०] १. तड़क-भड़कवाली सजावट। ठाट-बाट। जैसे—कल बड़ी शान से सवारी निकली थी।

पद–शान-शौकत। (देखें)

२. गर्व, महत्त्व, वैभव आदि सूचित करनेवाली चर्चा या स्थिति। जैसे—वह खूब शान से बातें करता (या रहता) है। ३. विशालता। जैसे—(क) उसके मकान की शान देखने योग्य है। (ख) वह सब खुदा की शान है। ४. मान-मर्यादा। प्रतिष्ठा। मान्यता।

पद—किसी की शान में=किसी बड़े के संबंध में। किसी के प्रति या किसी के विषय में। जैसे—उसकी शान में, ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए।

मुहा०–शान गवाँना=शान में बट्टा लगाना। **शान मारी जाना**=शान पर ऐसा आघात लगना कि वह नष्ट हो जाय। **शान में बट्टा लगाना**=शान या मान-मर्यादा में कमी या त्रुटि होना।

शानदार—वि० [अ०शान+फा० दार] [भाव० शानदारी] १. ऐश्वर्य-वाला। २. तड़क-भड़कवाला। ३. उच्च कोटि का तथा प्रशंसनीय। **जैसे**—शानदार जीत।

शानपाद—पुं० [सं० ष० त० स०] १. चन्दन रगड़ने का पत्थर। २. पारियात्र पर्वत।

शान-शौकत—स्त्री० [अ०] तड़क-भड़क। वैभव-सूचक ठाटबाट या सजा-वट।

शाना—पुं० [फा० शान] १. कंघा। कंघी। २. कन्धा। मोढ़ा।

मुहा०—शाने से शान छिलना=बहुत अधिक भीड़ और रेल-पेल होना।

शाप—पुं० [सं० √शप् (निंदा करना)+घञ्] १. अनिष्ट-कामना के उद्देश्य से किया जानेवाला कथन। २. उक्त की सूचक बात या वाक्य।

विशेष—प्राचीन भारत में प्रायः कुपित या पीड़ित होने पर ऋषि, मुनि, ब्राह्मण आदि हाथ में जल लेकर किसी दुष्ट या पीड़क के सम्बन्ध में कोई अशुभ कामना प्रकट करते थे।

२. धिक्कार। भर्त्सना। ३. ऐसी शपथ जिसके न पालन करने पर कोई अनिष्ट परिणाम कहा जाय। बुरी कसम।

शापग्रस्त—भू० कृ० [सं० तृ० त०] जिसे किसी ने शाप दिया हो। शापित।

शाप-ज्वर—पुं० [सं० मध्य० स०] एक प्रकार का ज्वर जो माता-पिता, गुरु आदि बड़ों के शाप के कारण होनेवाला कहा गया है।

शापांबु—पुं० [सं० मध्यम० स०] वह जल जो किसी को शाप देने के समय हाथ में लिया जाता था।

शापास्त्र—पुं० [सं० मध्य० स०] शाप रूपी अस्त्र।

शापित—भू० कृ० [सं० शाप+इतच्] शाप से पीड़ित।

शापोत्सर्ग—पुं० [सं० ष० त० स०] किसी को शाप देने की क्रिया।

शापोद्धार—पुं० [सं० ष० त०] शाप या उसके प्रभाव से होनेवाला छुट-कारा। शाप-मुक्ति।

शाफरिक—पुं० [सं० शफर+ठक्—इक] मछुआ। धीवर।

शाबर—वि० [सं० शबर+अञ्] दुष्ट। कपटी।

पुं० १. खराबी। बुराई। २. हानि। ३. लोध का पेड़। ४. ताँबा। ५. अँधेरा। अन्धकार। ६. एक प्रकार का चंदन।

शाबर-तंत्र—पुं० [सं० मध्य० स०] एक तन्त्र ग्रन्थ जो शिव का बनाया हुआ माना जाता है।

शाबर-भाष्य—पुं० [सं० तृ० त० स०] मीमांसा सूत्र पर प्रसिद्ध भाष्य या व्याख्या।

शाबरी—स्त्री० [सं० शाबर-ङीष्] १. शबरों की भाषा। २. एक प्रकार की प्राकृत भाषा।

शाबल्य—पुं० [सं० शबल+ष्यञ्] शबलता।

शाबाश—अव्य० [फा० शाद बाश=प्रसन्न रहो] एक प्रशंसा-सूचक शब्द। खुश रहो। वाह वाह। धन्य हो। क्या कहना।

शाबाशी—स्त्री० [फा०] किसी कार्य के करने पर 'शाबाश' कहना। वाह-वाही। साधुवाद।

क्रि० प्र०—देना।–पाना।–मिलना।

शाब्द—वि० [शब्द+अण्] [स्त्री० शाब्दी] १. शब्द सम्बन्धी। शब्द या शब्दों का। २. वाक्य के शब्दों में रहने या होनेवाला। ३. साहित्य में, शब्दों के कारण स्पष्ट रूप से कहा हुआ। कथित 'अर्थ' से भिन्न और उसका उल्टा। जैसे—शाब्दी विभावना या व्यंजना। ४. मौखिक। ५. शब्द करता हुआ।

पुं० १. शब्द-शास्त्र का पंडित। २. वैयाकरण।

शाब्दबोध—पुं०[सं० कर्म० स०] शब्दों के प्रयोग द्वारा होनेवाले अर्थ का ज्ञान। वाक्य के तात्पर्य का ज्ञान।

शाब्दिक—वि०[सं० शब्द्+ठक्—इक]१. शब्द-संबंधी। शब्द का। २. शब्द करता हुआ। ३. शब्दों के रूप में होनेवाला। मौखिक। जैसे—शाब्दिक सहानुभूति।

पुं० १. शब्दशास्त्र का ज्ञाता। २. वैयाकरण।

शाब्दी—वि० [सं०] १. शब्द-संबंधी। २. केवल शब्दों में होनेवाला। जैसे—शाब्दी व्यंजना।

शाब्दी व्यंजना—स्त्री०[सं० मध्य० स०] व्यंजना शब्द-शक्ति का एक भेद, जिसमें व्यंजित होनेवाला अर्थ किसी विशेष शब्द तक ही सीमित रहता है, उससे आगे नहीं बढ़ता।

शाम—वि०[सं० शम+अण्] शम अर्थात् शांति-संबंधी।

पुं०[सं० शामन्] सामगान।

वि०,पुं०=श्याम।

वि०[फा०] सायं। साँझ।

मुहा०—**शाम फूलना**=संध्या समय पश्चिम की ललाई का प्रकट होना।

स्त्री०[देश०] लोहे, पीतल आदि धातु का बना हुआ वह छल्ला जो हाथ में ली जानेवाली छड़ियों, डंडों आदि के निचले भाग में अथवा औजारों के दस्ते में लकड़ी को घिसने या छीजने से बचाने के लिए लगाया जाता है।

क्रि० प्र०—जड़ना।—लगाना।

पुं० एक प्रसिद्ध प्राचीन देश जो अरब के उत्तर में है।

शामक—वि०[सं० √ शम्+ण्वुल्—अक]१. शमन करनेवाला। २. (दवा) जो कष्ट, घबराहट या पीड़ा कम करे। (सेडीटिव)

शामकरण†—पुं०=श्यामकर्ण (घोड़ा)।

शामत—स्त्री०[अ०] १. बदकिस्मती। दुर्भाग्य। २. दुर्दशा करनेवाली विपत्ति।

क्रि० प्र०—आना।—घेरना।—में पड़ना या फँसना।

पद—**शामत का मारा**=जिसे शामत ने घेरा हो।

मुहा०—**शामत सवार होना या सिर पर खेलना**=शामत आना। दुर्दशा का समय आना।

शामत ज़दा—वि० [अ० शामत+फा० ज़दा] १. जिस पर शामत या विपत्ति आई हो। विपदग्रस्त। २. कमबख्त। बदनसीब। अभागा।

शामती—वि०[अ० शामत+हिं० ई (प्रत्य०)] जिसकी शामत आई हो। जिसकी दुर्दशा होने को हो।

शामन—पुं०[सं० शमन+अण्]१. शमन। २. शांति। ३. मार डालना। हत्या।

शामनी—स्त्री० [सं० शामन—ङीष्]१. दक्षिण दिशा जिसके अधिपति यम माने गए हैं। २. शालि। ३. स्तब्धता। ४. अन्त। समाप्ति। ५. वध। हत्या।

शामा—पुं० [?]१. एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियाँ और जड़ कोढ़ के रोगी के लिए लाभदायक मानी जाती हैं।

†वि०, स्त्री० श्यामा।

शामित्र—स्त्री०[सं० शमितृ-अण्] १. यज्ञ में मांस पकाने के लिए जलाई हुई अग्नि। २. वह स्थान जहाँ उक्त आग जलाई जाती है।

शामियाना—पुं०[फा० शामियानः] एक प्रकार का तंबू जो बांसों पर रस्सियों की सहायता से टाँगा जाता है।

क्रि० प्र०—खड़ा करना।—गाड़ना।—तानना।—लगाना।

शामिल—वि०[फा०]१. मिला हुआ। सम्मिलित।

पद—**शामिल-हाल**।

२. इकट्ठा।

शामिल-हाल—वि० [फा० शामिल+अ० हाल] १. जो दुःख, सुख आदि अवस्थाओं में साथ रहे। साथी। शरीक। २. (परिवार के लोग) जो एक साथ मिलकर रहते हों।

शामिलात—स्त्री०[अ०] संयुक्त संपत्ति। साझी जायदाद।

शामिलाती—वि० [अ० शामिलात] किसी के साथ मिला हुआ। सम्मिलित।

शामी—वि०[श्याम (देश)]१. शाम देश-सम्बन्धी। २. शाम देश में होनेवाला। जैसे—शामी कबाब।

पुं०[देश०] एक प्रकार का लोहे का छल्ला जो छड़ी या लकड़ी की मूठ आदि पर चढ़ाया जाता है।

क्रि० प्र०—जड़ना।—लगाना।

शामी-कबाब—पुं० [हिं० शामी+कबाब] टिकियों के रूप में तवे पर भूना हुआ मांस जिसमें मसाले आदि मिलाये गये होते हैं।

शामूल—पुं०[सं० शम+ऊलच्—अण्] ऊनी कपड़ा।

शाम्य—पुं०[सं० शाम+यत्] १. शम का धर्म या भाव। शमता। २. भाई-चारा। बन्धुत्व। ३. शालि।

शायक—पुं०[सं० √ शो+ण्वुल्—अक—युक्]१. बाण। तीर। शर। २. तलवार।

वि० [अ० शाइक] १. शौक करने या रखनेवाला। शौकीन। २. अभिलाषी। इच्छुक।

शायद—अव्य०[सं० स्यात् से फा०] सन्देह और संभावना सूचक अव्यय। कदाचित्। संभव है कि। जैसे—शायद वह आज आएगा।

शायर—पुं०[अ०] [स्त्री० शायरा]१. वह जो उर्दू फारसी आदि के शेर आदि बनाता हो। २. काव्य-रचना करनेवाला।

शायराना—वि० [अ० शायर+फा० आना (प्रत्य०)]। १. शायर संबंधी। २. शायरों जैसा। जैसे—शायराना तबीयत। ३. कवि-सुलभ।

शायरी—स्त्री०[अ०]१. कविता करने का भाव या कार्य। २. कविता। काव्य।

शायाँ—वि०[फा०] अनुरूप। उपयुक्त।

शाया—वि०[फा०]१. प्रकट। जाहिर। २. छापकर प्रकट किया हुआ। प्रकाशित।

शायिक—वि०[सं० शय्या-ठक्+इक] १. शय्या बनानेवाला। २. सेज सजानेवाला।

शायिका—स्त्री० [सं० शायिक—टाप्] १. शयन। २. निद्रा। ३. दे० 'शयनिका'।

शायित—भू० कृ० [सं० शी (शयन करना)+णिच्—क्त] [स्त्री० शायिता] १. सुलाया या लेटाया हुआ। २. गिराया हुआ।

शायिता—स्त्री० [सं० शायिन्+तल्—टाप्] शयन। सोना।

शायी—वि०[सं० √शी (शयन करना)+णिनि] [स्त्री० शायिनी] शयन करनेवाला। सोनेवाला। जैसे—शेषशायी भगवान्।

शारंग—पुं०=सारंग।

शारंगक—पुं०[सं० शारंग+कन्] एक प्रकार का पक्षी।

शारंग-धनुष—पुं०[सं० ब० स०]१. सारंग नामक धनुष से सुशोभित अर्थात् विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

शारंगपाणि—पुं०[सं० ब० स०]१. हाथ में सारंग नामक धनुष धारण करनेवाले; विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३. रामचन्द्र।

शारंग-पानी†—पुं०=शारंगपाणि।

शारंग-भृत्—पुं०[सं० शारंग√भृ (रखना)+क्विप्—तुक्] १. सारंग धनुष को धारण करनेवाले विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

शारंगवत—पुं० [सं० शारंग+मतुप—म=व] कुरु वर्ष नामक देश।

शारंगष्टा—स्त्री०[सं० शारंग, स्था (ठहरना)+क—टाप्] १. काक जंघा। २. मकोय। ३. गुंजा। घुँघची।

शारंगी—स्त्री०[सं० शारंग-ङीष्] सारंगी नामक बाजा।

शार—वि०[सं० √शृ+घञ्]१. चितकबरा। कई रंगों का। २. पीला। ३. नीले-पीले और हरे रंग का।

पुं०१. एक प्रकार का पासा। २. वायु। हवा। ३. हिंसा।

स्त्री० कुश। कुशा।

शारअ—पुं०[अ० शारिअ] १. बड़ी सड़क। राजमार्ग। २. लोगों को धर्म का मार्ग बतलानेवाला। धर्मशास्त्री।

शारक—स्त्री०[फा० मिलाओ सं० शारिका] मैना।

शारणिक—वि०[सं० शरण+ठक्-इक]१. शरण देनेवाला। २. शरण-चाहनेवाला। शरणार्थी।

शारद—वि०[सं० शरद्+अण्]१. शरद्-संबंधी। २. शरद ऋतु में होनेवाला। ३. नवीन। ४. वार्षिक। ५. शालीन।

पुं० १. वर्ष। साल। २. बादल। मेघ। ३. सफेद कमल। ४. मौलसिरी। ५. काँस नामक तृण। ६. हरी मूँग। ७. एक प्रकार का रोग।

शारदा—स्त्री०[सं० शारद—टाप्] १. सरस्वती। २. भारत की एक प्राचीन लिपि जो दसवीं शताब्दी के लगभग पंजाब और कश्मीर में प्रचलित हुई थी। आज-कल की कश्मीरी, गुरुमुखी और टाकरी लिपियाँ इसी से निकली हैं। ३. एक प्रकार की वीणा। ४. दुर्गा। ५. ब्राह्मी। ६. अनंतमूल।

शारदाभरण—पुं० [सं० ब० स०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

शारदिक—पुं०[सं० शरद्+ठञ्-इक]१. शरद् ऋतु में होनेवाला ज्वर। २. शरद् की धूप। ३. श्राद्ध। ४. बीमारी। रोग।

शारदी—स्त्री० [सं० शारद—ङीष्] १. जलपीपल। २. छतिवन। सप्तपर्णी। ३. आश्विन मास की पूर्णिमा।

पुं० [सं० शारदिन्]१. अपराजिता। २. सफेद कमल। ३. अन्न, फल आदि।

वि० शरद काल का।

शारदीय—वि०[सं० शरद+छण्—ईय] [स्त्री० शारदीया] शरद्काल का। शरद् ऋतु-सम्बन्धी। जैसे—शरदीय नवरात्र।

शारदीय महापूजा—स्त्री०[सं० कर्म० स०] शरद्काल में होनेवाली दुर्गा की पूजा। नवरात्रि की दुर्गापूजा।

शारद्य—वि०[सं० शारद्+यत्] शरद् काल का। शरद् ऋतु-सम्बन्धी।

शारि—पुं०[सं० √शृ (हिंसा करना)+इञ्]१. पासा, शतरंज आदि खेलने की गोटी। मोहरा। २. चौसर, शतरंज आदि की बिसात। ३. कपट। छल। ४. मैना पक्षी। ५. एक प्रकार के गीत।

शारिका—स्त्री०[सं० शारि+कन्—टाप्]१. मैना चिड़िया। २. चौसर, शतरंज आदि के खेल। ३. सारंगी बजाने की कमानी। ४. वीणा, सारंगी आदि कोई बाजा। ५. दुर्गा।

शारिका कवच—पुं० [सं० ष० त०] दुर्गा का एक कवच जो रुद्रयामल तन्त्र में है।

शारित—वि०[सं० शारि+इतच्] चित्र-विचित्र। रंग-बिरंगा।

शारिपट्ट—पुं० [सं० ष० त० स०] शतरंज, चौसर आदि खेलने की बिसात।

शारिफल—पुं०[सं० ष० त० स०]=शारिपट्ट।

शारिवा—स्त्री०[सं० शारि√वन् (पृथक् करना)+ड—टाप्] १. अनंतमूल। सालसा। दुरालभा। २. जवासा। धमासा।

शारी—स्त्री०[सं० शारि—ङीष्]१. कुश नामक घास। २. एक प्रकार का पक्षी। ३. मूँज।

पुं०१. गोटी। मोहरा। २. गेंद।

शारीर—वि०[सं० शरीर+अण्] १. शरीर-संबंधी। शरीर का। २. शरीर से उत्पन्न।

पुं० १. जीवात्मा। २. साँड़। ३. गुह। मल।

शारीरक—वि०[सं० शरीर+कन्—अण्]१. शरीर से उत्पन्न। २. शरीर-संबंधी। ३. शरीर में स्थित।

पुं० १. आत्मा। २. आत्मा-सम्बन्धी अन्वेषण।

शारीरक भाष्य—पुं०[सं० मध्य० स०]शंकराचार्य का किया हुआ ब्रह्मसूत्र का भाष्य।

शारीरक-सूत्र—पुं० [सं० कर्म० स०] वेदव्यास कृत वेदांत सूत्र।

शारीरकीय—वि०[सं० शारीरक+छ—ईय]=शारीरक।

शारीरतत्त्व—पुं० [सं० शरीर-तत्व-ष० त० स०+अण्] शरीर-विज्ञान।

शारीर विज्ञान(शास्त्र)—पुं० [सं० ब० स०] वह शास्त्र जिसमें जीवों की शारीरिक रचना और उनके बाहरी तथा भीतरी सभी अंगों, अस्थियों, नाड़ियों और उनके कार्यों आदि का विवेचन होता है। (एनाटमी)

शारीर-विद्या—स्त्री०[सं० मध्यम० स०]=शरीर विज्ञान।

शारीरविधान—पुं०[सं० ब० स०]१. वह शास्त्र जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि जीव किस प्रकार से उत्पन्न होते और बढ़ते हैं। २. शारीर विज्ञान।

शारीरव्रण—पुं०[सं० ब० स०] वह रोग जो वात, पित्त, कफ और रक्त के विकार से उत्पन्न हो।

शारीर शास्त्र—पुं०[सं०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा जिसमें प्राणियों और वनस्पतियों के अंगों और उपांगों का व्यवच्छेदन करके उनकी क्रियाओं आदि का अध्ययन किया जाता है। (एनाटमी)

शारीरिक—वि० [सं० शरीर+ठक्—इक] १. शरीर-संबंधी। २. भौतिक।

शारुक—वि०[सं०√ शृ (हिंसा करना)+उकञ्] हत्या या नाश करनेवाला।

शार्गं—पुं० [सं० शृंग+अण्] १. धनुष। कमान। २. विष्णु के हाथ में रहनेवाला धनुष। ३. अदरक। आदी। ४. एक प्रकार का साग। ५. धनुर्धारी।

वि०१. शृंग-सम्बन्धी। शृंग का। २. सींग का बना हुआ।

शार्गंक—पुं०[सं० शार्ङ्ग+कन्]पक्षी। चिड़िया।

शार्गंधन्वा (न्वन्)—पुं० [सं० ब० स०] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३. वह जो धनुष चलाता हो। कमनैत।

शार्गंधर—पुं०[सं० ष० त० स०] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

शार्गंपाणि—पुं० [सं० ब० स०] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३. वह जो धनुष चलाता हो। कमनैत।

शार्गंभृत्—पुं०[सं० शार्ङ्ग√ भृ+क्विप् —तुक] विष्णु।

शार्गंवैदिक—पुं० [सं० कर्म० स०] एक प्रकार का स्थावर विष।

शार्गेंष्टा—स्त्री० [सं० शार्ङ्ग√ स्था (ठहरना)+क–टाप्] १. काक जंघा। २. घुँघची।

शार्गेंष्ठा—स्त्री० [सं०] १. महाकरंज। २. लता करंज।

शार्गांयुध—पुं०[सं० ब० स०] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३. धनुर्धारी। कमनैत।

शार्गीं (ङ्गिन्)—पुं० [सं० शार्ङ्ग+इनि] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३. धनुर्धर। कमनैत।

शार्क—पुं०[सं० शृ+कन्—अण्] चीनी। शर्करा।

स्त्री० [अं०] एक प्रकार की बड़ी हिंसक मछली जो समुद्रों में रहती है।

शार्कक—पुं०[सं० शार्क+कन्] १. दूध का फेन। दुग्धफेन। २. चीनी का डला। ३. मांस का टुकड़ा।

शार्कर—पुं० [सं० शर्करा+अण्] १. दूध का फेन। २. लोध। ३. कंकरीली या पथरीली जगह।

वि०१. जिसमें कंकड़, पत्थर आदि हों। २. शर्करा या चीनी से बना हुआ।

शार्करक—पुं०[सं० शार्कर+कन्]१. वह स्थान जो कंकड़ों और पत्थरों से भरा हो। कंकरीली-पथरीली जगह। २. चीनी बनाने का स्थान। खंडसार।

वि० कंकड़, पत्थर आदि से भरा हुआ।

शार्करमय—पुं०[सं० शार्कर-मयट्] प्राचीन काल की एक प्रकार की शराब जो चीनी और जौ से बनाई जाती थी।

शार्करी-धान—पुं० [सं० ब० स०] एक प्राचीन देश जो उत्तर दिशा में में था।

शार्करीय—वि०[सं० शर्करा+ छण्—ईय] शार्करीक।

शार्दूल—पुं० [सं० √शृ (हिंसा करना)+उलच्-दुक्च निपा सिद्ध] १. चीता। बाघ। २. केसरी। सिंह। ३. राक्षस। ४. शरभ नामक जंतु। ५. एक प्रकार का पक्षी। ६. यजुर्वेद की एक शाखा। ७. चित्रक या चीता नामक वृक्ष। ८. दोहे का एक भेद जिसमें ६ गुरु और ३६ लघु मात्राएँ होती हैं।

वि० सर्वश्रेष्ठ।

शार्दूल-कंद—पुं०[सं० ब० स०] जंगली प्याज।

शार्दूलज—पुं० [सं० शार्दूल√ जन्(उत्पन्न करना)+ड] व्याघ्र-नख नामक गंध-द्रव्य।

वि० शार्दूल से उत्पन्न।

शार्दूल-ललित—पुं० [सं०ब०स०] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसका प्रत्येक पद अठारह अक्षरों का होता है और उनका क्रम इस प्रकार है—म, स, ज, स, त, स।

शार्दूल-लसित—पुं०[सं० ब० स०]=शार्दूलललित।

शार्दूल-वाहन—पुं०[सं० ब० स०] एक जिन। (जैन)

शार्दूल-विक्रीडित—पुं० [सं० ब० स०] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसका प्रत्येक पद १९ अक्षरों का होता है। उनका क्रम इस प्रकार है—म, स, ज, स, त, त, एक गुरु।

शार्यात—पुं०[सं० शर्यात्+अण्]१. वैदिक काल के एक प्राचीन राजर्षि। २. एक प्रकार का साग।

शार्वर—पुं०[सं० शर्वर+अण्] बहुत अधिक अंधकार।

शार्वरिक—वि०[सं० शर्वरी+ठक्—इक] रात्रि संबंधी। रात का।

शार्वरी—स्त्री० [सं० शर्वरी+अण्—ङीष्]१. रात। २. लोध।

पुं०[सं० शार्वरिन्] बृहस्पति के साठ संवत्सरों में से ३४वाँ संवत्सर।

शालंकटांकह—पुं० [सं०] सुकेशी राक्षस का एक नाम जो वामन पुराण के अनुसार विद्युत्केशी का पुत्र था।

शालंकायन—पुं०[सं० शलंक+फक्—आयन]१. विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम। २. शिव का नंदी।

शालंकायनि—पुं०[सं० शालंकायन+ङीप्] एक प्राचीन गोत्र प्रवर्तक ऋषि।

शालंकि—पुं०[सं० शलंक+इञ्] पाणिनि।

शालंकी—स्त्री० [सं० शालंक—ङीष्] १. गुड़िया। २. कठ-पुतली।

शाल—पुं० [सं० √शल् (प्रशस्त होना)+घञ्]१. साखू (वृक्ष)। २. पेड़। वृक्ष। ३. एक प्राचीन नद। ४. एक प्रकार की मछली। ५. धूना। राल। ६. राजा शालिवाहन का एक नाम।

स्त्री० [फा०] ओढ़ने की एक प्रकार की गरम चादर।

शालक—पुं०[सं० शाल+कन्]१. पटुआ। २. मसखरा। हँसोड़।

शाल-कल्याणी—स्त्री०[सं० उपमि० स०] एक प्रकार का साग जो चरक के अनुसार भारी, रूखा, मधुर, शीतवीर्य और पुरीष-भेदक होता है।

शालग्राम—पुं०[सं० ब० स०] गोलाकार बटिया के रूप में गंडक नदी में मिलनेवाले पत्थर के टुकड़े जिनकी पूजा की जाती है।

शालज—पुं०[सं० शाल√जन् (उत्पन्न करना)+ड] एक प्रकार की मछली।

वि० शाल (शाखू) से उत्पन्न या बना हुआ।

शाल-दोज—पुं०[फा०] वह जो शाल के किनारे पर बेल-बूटे आदि बनाता हो।

शाल-निर्यास—पुं०[सं० ष० त० स०]१. राल। धूना। २. शाल या सर्ज नामक वृक्ष।

शाल-पत्रा—स्त्री०[सं० ब० स०] शालपर्णी।

शालपर्णिका—स्त्री० [सं० ब० स०] १. मुरा नामक गंध द्रव्य। २. एकांगी नामक वनस्पति।

शालपर्णी—स्त्री० [सं० ब० स०] सरिवन नामक वृक्ष।

शालबाफ़—पुं० [फा०] [भाव० शालबाफी] १. शाल या दुशाला बुननेवाला। २. लाल रंग का एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

शालबाफी—स्त्री० [फा०] १. दुशाला बुनने का काम। शालबाफ का काम। २. शाल बुनने की मजदूरी।

शाल-भंजिका—स्त्री० [सं० शाला√भंज् (बनाना)+ण्वुल्—अक-टाप्, इत्व] १. कठ-पुतली। २. गुड़िया। पुतली। ३. प्राचीन भारत में, राज-दरबार में नाचनेवाली स्त्री। ४. रंडी। वेश्या।

शाल-भंजी—स्त्री० [सं०]=शाल भंजिका।

शालभ—पुं० [सं० शलभ+अण्] बिना सोचे-विचारे उसी प्रकार आपत्ति में कूद पड़ना जिस प्रकार पतंग आग या दीपक पर कूद पड़ता है।

वि० शलभ-संबंधी। शलभ का।

शालमत्स्य—पुं० [सं० मध्य० स०] शिलिंद नामक मछली।

शाल-युग्म—पुं० [सं० ष० त० स०] दोनों प्रकार के शाल अर्थात् सर्जवृक्ष और विजय सार।

शालरस—पुं० [सं० ष० त० स०] राल। धूना।

शालव—पुं० [सं० शाल√वल् (जाना आदि)+ड] लोध्र। लोध।

शालवानक—पुं० [सं० ब० स०] १. एक प्राचीन देश। २. उक्त देश का निवासी।

शालवाहन—पुं० [सं० ब० स०]=शालिवाहन।

शालसार—पुं० [सं० ष० त० स०] १. हींग। हिंगु। २. धूना। राल। ३. शाल या साखू नामक वृक्ष। ४. पेड़। वृक्ष।

शाला—स्त्री० [सं० √शो (पतला करना)+कालन्—टाप्] १. घर। गृह। मकान। २. किसी विशिष्ट कार्य के लिए बना हुआ मकान या स्थान। जैसे—गो-शाला, नृत्यशाला, पाठशाला। ३. पेड़ की डाल। शाखा। ४. इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के योग से बननेवाले सोलह प्रकार के वृत्तों में से एक प्रकार का वृत्त।

शालाक—पुं० [सं० शाला+कन्] १. झाड़-झंखाड़। २. झाड़-झंखाड़ से उत्पन्न होनेवाली आग।

शालाकी (किन्)—पुं० [सं० शालाक+इनि] १. शल्य चिकित्सा करनेवाला। जर्राह। २. नापित। हज्जाम। ३. भाला-बरदार।

शालाक्य—पुं० [सं० शलाक+ण्य] १. आयुर्वेद की एक शाखा जिसमें कान, आँख नाक, जीभ, मुँह आदि रोगों की चिकित्सा सम्बन्धी विवरण हैं। २. वह जो आँख, नाक, मुँह आदि के रोगों की चिकित्सा करता हो।

शालाजिर—पुं० [सं०ब०सं०] मिट्टी की तश्तरी, पुरवा, प्याला आदि बरतन।

शालातुरीय—वि० [सं० शालातुर+ छ—ईय] शालातुर प्रदेश सम्बन्धी।

पुं० १. शालातुर का निवासी। २ पाणिनि।

शाला-मृग—पुं० [सं० सप्त० त०] १. गीदड़। शृगाल। २. कुत्ता।

शालार—पुं० [सं० शाला√ऋ (गमनादि)+अण्] १. सीढ़ी। २. पिंजरा। ३. दीवार में लगी हुई खूँटी। ४. हाथी का नख।

शाला-वृक—पुं० [सं० सप्त० त०] १. कुत्ता। २. बन्दर। ३. बिल्ली। ४. हिरन। ५. गीदड़। शृगाल। ६. लोमड़ी।

शालि—पुं० [सं० √ शल+इञ्] १. हेमंत ऋतु में होनेवाला धान। जड़हन। २. चावल। विशेषतः जड़हनी धान का चावल। ३. बासमती चावल। ४. काला जीरा। ५. गन्ना। ६. गन्ध-बिलाव। ७. एक प्रकार का यज्ञ।

शालिक—पुं० [सं० शालि+कन्] १. जुलाहा। २. कारीगरों की बस्ती। ३. एक तरह का कर।

शालिका—स्त्री० [सं० शालि√ कै (होना)+क—टाप्] १. बिदारी कंद। २. शालपर्णी। ३. घर। मकान। ४. मैना पक्षी।

शालि-धान—पुं० [सं० शालि धान्य] बासमती चावल।

शालिनी—स्त्री० [सं० शालि√नी (ढोना)+ड, ङीष्] १. गृहस्वामिनी। २. ग्यारह अक्षरों का एक वृत्त जिसमें क्रम से १ यगण, २ तगण और अंत में २ गुरु होते हैं। ३. पद्मकंद। भसींड। ४. मेथी।

शालिपर्णी—स्त्री० [सं० ब० स०] १. मेदा नामक अष्टवर्गीय ओषधि। २. पिठवन। ३. बन-उरदी। ३. सरिवन।

शालि-वाहन—पुं० [सं० ब० स०] एक प्रसिद्ध भारतीय सम्राट् जिन्होंने शक संवत् चलाया था।

शालिहोत्र—पुं० [सं० शालि√ हु (देन-लेन)+ष्ट्रन्] १. घोड़ा। २. अश्व चिकित्सा। ३. घोड़ों और दूसरे पशुओं आदि की चिकित्सा का शास्त्र। पशु-चिकित्सा। (वेटेरिनरी)

शालिहोत्री—पुं० [सं० शालि होत्र+इनि (प्रत्य०)] १. घोड़ों की चिकित्सा करनेवाला। २. पशु चिकित्सक।

शाली—स्त्री० [सं० शाल+अच्—ङीष्] १. काला जीरा। २. शालपर्णी। ३. मेथी। ४. दुरालभा।

प्रत्य० [सं० शालिन्] [स्त्री० शालिनी] एक प्रत्यय जो संज्ञा शब्दों के अंत में लगकर युक्त, वाला आदि का अर्थ देता है। जैसे—ऐश्वर्यशाली, भाग्यशाली, शक्तिशाली।

शालीन—वि० [सं० शाला+ख–ईन] [भाव० शालीनता] १. लज्जाशील। हयावाला। २. विनीत। नम्र। ३. अच्छे आचरणवाला। ४. सदृश्य। समान। ५. शाला-संबंधी।

शालीनता—स्त्री० [सं० शालीन+तल्—टाप्] शालीन होने की अवस्था, धर्म या भाव।

शालीनत्व—पुं० [सं० शालीन+त्व] शालीनता।

शालीय—वि० [सं० शाला+छ—ईय] शाला अर्थात् घर सम्बन्धी।

शालु—पुं० [सं० शाल+उण्] १. भसींड। कमलकंद। २. चोरक नामक गन्ध द्रव्य। ३. कसैली चीज। ४. मेंढक। ५. एक प्रकार का फल।

शालुक—पुं० [सं० शल+उकञ्] १. भसींड़। पद्मकंद। २. जायफल।

शालूक—पुं० [सं० शाल+ऊकञ्] १. जायफल। जातीफल। २. मेंढक। ३. भसींड। ४. एक प्रकार का रोग।

शालेय—पुं० [सं० शालि+ढक्—एय] १. शालि अर्थात् धान का खेत। २. सौंफ। ३. मूली।

वि० १. शाल सम्बन्धी। शाल का। २. शाला अर्थात् घर सम्बन्धी।

शाल्मलि—पुं० [सं० शाल+मलिच्—ङीष् वा] १. सेमल का पेड़।

२. पृथ्वी के सात खण्डों में से एक जिसकी गिनती नरकों में होती है। ३. पुराणानुसार एक द्वीप।

शाल्मली—स्त्री० [सं० शाल्मल—ङीष्] १. शाल्मलि। सेमर। २. पाताल की एक नदी।

पुं० गरुड़।

शाल्मली-कंद—पुं० [सं० ष० त० स०] शाल्मलि की जड़ जो वैद्यक में ओषधि के रूप में व्यवहृत होती है।

शाल्मली-फलक—पुं० [सं० शाल्मली–फल+कन्] एक तरह की लकड़ी जिस पर रगड़कर शल्य तेज किये जाते थे। (सुश्रुत)

शाल्मली वेष्ट—पुं० [सं०] सेमल के वृक्ष का गोंद,। मोचरस।

शाल्व—पुं० [सं० शाल+व] १. एक प्राचीन देश। २. उक्त देश का राजा या निवासी।

शाव—पुं० [सं० √शव् (गमनादि)+घञ्] १. बच्चा विशेषतः पशुओं आदि का बच्चा। शावक। २. मृत शरीर। शव। ३. घर में किसी के मरने पर होनेवाला अशौच। सूतक। ४. मरघट। मसान। ५. भूरा रंग।

वि० १. शव-सम्बन्धी। शव का। २. मृत्यु के फलस्वरूप होनेवाला।

शावक—पुं० [सं० शाव+कन्] १. किसी पशु या पक्षी का बच्चा। २. झाऊ नामक वृक्ष।

शावर—पुं० [सं० शव+णिच्–अरन] १. पाप। गुनाह। २. अपराध। कसूर। ३. लोध का पेड़।

वि०, पुं०=शावर।

शावरक—पुं० [सं० शावर+कन्] पठानी लोध।

शावरी—स्त्री० [सं० शावर+अण्—ङीष्] कौंछ। केवाँच।

शाश्वत—वि० [सं० शश्वत+अण्] जो सदा से चला आ रहा हो और सदा चला-चलने को हो। नित्य। (एटर्नल)

पुं० १. स्वर्ग। २. अंतरिक्ष। ३. शिव। ४. वेदव्यास।

शाश्वतवाद—पुं० [सं० ष० त०] यह दार्शनिक सिद्धान्त कि आत्मा एक रूप, चिरन्तन और नित्य है, उसका न तो कभी नाश होता है और न कभी उसमें कोई विकार होता है। 'उच्छेदवाद' का विपर्याय।

शाश्वतिक—वि० [सं० शाश्वत+ठक्—इक]=शाश्वत।

शाश्वती—स्त्री० [सं० शाश्वत-ङीष्] पृथ्वी।

शाष्कुल—वि० [सं० शष्कुल+अण्] मांस-मछली खानेवाला।

शास—पुं० [सं० √शास् (अनुशासन करना)+घञ्] १. अनुशासन। २. प्रशंसा। स्तुति।

शासक—पुं० [सं० √ शास् (अनुशासन करना) +ण्वुल्—अक] [स्त्री० शासिका] १. वह जो शासन करता हो। शासन-कर्ता। २. किसी शासनिक इकाई का प्रधान अधिकारी। (हाकिम)

शासन—पुं० [सं० √ शास्+ल्युट्—अन] १. ज्ञान-वृद्धि के लिए किसी को कुछ बतलाना, समझाना या सिखाना। २. किसी को इस प्रकार अपने अधिकार, नियंत्रण या वश में रखना कि वह आज्ञा, नियम आदि के विरुद्ध आचरण या व्यवहार न कर सके। ३. किसी देश, प्रान्त या स्थान पर नियंत्रण रखते हुए उसकी ऐसी व्यवस्था करना कि किसी प्रकार की गड़बड़ी या अराजकता न होने पाए। हुकूमत। सरकार। (गवर्नमेंट) ५. वह प्रमुख अधिकारी और उसके मुख्य सहायकों का वर्ग जो उक्त प्रकार की व्यवस्था करते हों। हुकूमत। (गवर्नमेंट) ६. आज्ञा। आदेश। हुकुम। ७. वह आज्ञा पत्र जिसमें किसी को प्रबंध या व्यवस्था करने का अधिकार या आदेश दिया गया हो। ८. कोई ऐसा पत्र जिस पर कोई निश्चय, प्रतिज्ञा या समझौता लिखा गया हो। जैसे—पट्टा, शर्तनामा आदि। ९. राजा या राज्य के द्वारा निर्वाह आदि के लिए दान की हुई भूमि। १०. इन्द्रिय-निग्रह। ११. शास्त्र। १२. दंड। सजा। १३. कायदा। नियम।

वि० दंड देने या नष्ट करनेवाला। (यौ० के अन्त में) जैसे—(क) पाक-शासन=पाक नामक असुर को मारनेवाला, अर्थात् इन्द्र। (ख) स्मर शासन=कामदेव का नाश करने वाले, अर्थात् शिव।

शासन-कर—पुं० [सं०] गुप्त-काल में वह अधिकारी जो राजा या शासन का आदेश लिखकर निम्न अधिकारियों के पास भेजता था।

शासन-कर्ता (तृ)—पुं० [सं० ष० त० स०] वह जो शासन करता हो। शासक।

शासन-तंत्र—पुं० [सं० ष० त० स०] १. वे सिद्धान्त जिनके अनुसार शासन होता या किया जाता हो। २. शासन करने के लिए होनेवाली व्यवस्था।

शासन-धर—पुं० [सं० ष० त० स०] १. शासक। २. राजदूत।

शासन-निकाय—पुं० [सं०] वह समिति या निकाय जो किसी संस्था की प्रशासनिक व्यवस्था करने के लिए और सब प्रकार से उसपर नियंत्रण रखने के लिए नियुक्त किया गया हो। शासी-निकाय। (गवर्निंग बाडी)

शासन-पत्र—पुं० [सं० ष० त०] सरकारी हुकुम-नामा। राज्यादेश।

शासन-प्रणाली—स्त्री० [सं० ष० त०] किसी देश या राज्य पर शासन करने की कोई विशिष्ट प्रणाली या ढंग। शासन-तंत्र।

शासन-वाहक—पुं० [सं० ष० त० स०] १. वह जो राजा की आज्ञा लोगों के पास पहुँचाता हो। २ राजदूत।

शासन-शिला—स्त्री० [सं० ष० त०] वह शिला जिस पर कोई राजाज्ञा लिखी हो। वह पत्थर जिस पर किसी शासक की घोषणा, लेख आदि अंकित हो।

शासनहर—पुं० [सं० ष० त०]=शासन-वाहक।

शासनहारी (रिन्)—पुं० [सं० शासनहारिन्]=शासन-वाहक।

शासना—स्त्री० [सं०] दंड। सजा।

शासनिक—वि० [सं० शासन+ठक्—इक] १. शासन से संबंध रखनेवाला। २. सरकारी। राजकीय। ३. शासन-विभाग का। जैसे—शासनिक अधिकारी।

शासनी—स्त्री० [सं० शासन-ङीष्] धर्मोपदेश करनेवाली स्त्री।

शासनीय—वि० [सं० √शास्+अनीयर] १. जिस पर शासन करना उचित हो। २. जिस पर शासन किया जा सके। ३. दंड पाने के योग्य। दंडनीय। ४. जिसमें सुधार करना हो या किया जा सके।

शासित—भू० कृ० [सं० √शास् (शासन करना)+क्त] [स्त्री० शासिता] १. (प्रदेश) जो शासन के अधीन हो। २. (व्यक्ति) जो नियन्त्रण में हो। ३. जिसे दंड दिया गया हो। दंडित।

पुं० १. प्रजा। २. निग्रह। संयम।

शासी (सिन्)—वि० [सं० √शास् (शासन करना)+णिनि] शासन करनेवाला।

शासी निकाय--पुं०[सं० ष० त०] राज्य, संस्था आदि की व्यवस्था और शासन (प्रबंध) करनेवाले लोगों का वर्ग, निकाय या संघ। शासन-निकाय। (गवर्निंग बॉडी) .

शास्ता (स्तृ)--पुं०[सं० √शास् (शासन करना)+तृच्]१. कोई ऐसा व्यक्ति जिसे किसी प्रकार का शासन करने का पूर्ण अधिकार हो। २. अधिनायक। तानाशाह। शासक। ३. राजा। ४. पिता। बाप। ५. गुरु। शिक्षक। ६. निरंकुश शासक।

शास्ति--स्त्री० [सं० शास्+ति बाहु०] १. शासन। २. दंड। सजा। ३. कोई ऐसी दंडात्मक क्रिया या कार्रवाई जो किसी पूर्ण स्वतन्त्र व्यक्ति, राज्य, संस्था आदि के साथ उसे ठीक रास्ते पर लाने के लिए की जाय। अनुशास्ति। (सैन्कशन) ४. अर्थदण्ड या जुरमाने से भिन्न वह अलग धन जो अनुचित या नियम विरुद्ध कार्य करनेवाले से वसूल किया जाता हो। (पेनैल्टी)

शास्त्र--पुं०[सं०√शास्+ष्ट्रन्][वि० शास्त्रीय] १. कोई ऐसी आज्ञा या आदेश जो किसी को नियम या विधान के अनुसार आचरण या व्यवहार, करने के संबंध में दिया जाय। २. कोई ऐसा धर्मग्रन्थ जिसमें आचार, नीति आदि के नियमों का विधान किया गया हो और जिसे लोग पवित्र तथा पूज्य मानते हों।

विशेष--हिन्दुओं में प्राचीन ऋषि-मुनियों के बनाये हुए बहुत से ऐसे ग्रन्थ हैं जो लोक में 'शास्त्र' के नाम से प्रसिद्ध और मान्य हैं। पर मुख्य रूप से शास्त्र चौदह कहे गये हैं; यथा--चार वेद, छः वेदांग, पुराण मात्र, आन्वीक्षिकी, मीमांसा और स्मृति। इनके सिवा शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद, ज्योतिष और अलंकार शास्त्र की गणना भी शास्त्रों में होती है।

३. किसी कला, विद्या या विशिष्ट विषय से संबंध रखनेवाला ऐसा विवेचन अथवा विवेचनात्मक ग्रन्थ जिसमें उसके सभी अंगों, उपांगों, प्रक्रियाओं आदि का वैज्ञानिक ढंग से वर्णन और विश्लेषण हो। (सायन्स) **विशेष**--'विज्ञान' और शास्त्र' में मुख्य अंतर यह है कि विज्ञान तो उन तथ्यों पर आश्रित होता है जो हमें अपने अनुभवों, निरीक्षणों आदि के आधार पर प्राप्त होते हैं, परंतु शास्त्र उन आध्यात्मिक तथ्यों का विवेचनात्मक स्वरूप है जो हमें उक्त प्रकार के अनुभवों, निरीक्षणों आदि का अनुशीलन या मनन करने पर विदित होते हैं। इसके अतिरिक्त विज्ञान का क्षेत्र तो वहीं तक परिमित रहता है, जहाँ तक वस्तुओं का संबंध प्रकृति से होता है, परंतु शास्त्र का क्षेत्र इसके उपरांत और आगे विस्तृत होकर उस सीमा की ओर बढ़ता है जहाँ उसका संबंध हमारी आत्मा और मनोभावों से स्थापित होता है। जैसे--ज्योतिषशास्त्र, शरीर शास्त्र आदि।

४. वे सब बातें जिनका ज्ञान पढ़ या सीखकर प्राप्त किया जाय। ५. किसी गंभीर विषय का किसी के द्वारा प्रतिपादित किया हुआ मत या सिद्धान्त।

शास्त्रकार--पुं० [सं० शास्त्र√कृ (करना)+अण् उपप० स०] शास्त्र विशेषतः धर्मशास्त्र की रचना करनेवाला।

शास्त्रकृत्--पुं० [सं० शास्त्र√कृ (करना)+क्विप्–तुक्] १. शास्त्र बनानेवाले, अर्थात् ऋषि-मुनि। २. आचार्य।

शास्त्रचक्षु (स्)--पुं० [सं० ष० त०] १. शास्त्र की आँख, अर्थात् ज्योतिष। २. पंडित। विद्वान्।

शास्त्रज्ञ--पुं० [सं० शास्त्र√ज्ञा (जानना)+क] १. शास्त्र का ज्ञाता। २. धर्मशास्त्रों का आचार्य।

शास्त्र-तत्त्वज्ञ--पुं० [सं० ष० त० स०] गणक। ज्योतिषी।

शास्त्रत्व--पुं० [सं० शास्त्र+त्व] शास्त्र का धर्म या भाव।

शास्त्रदर्शी--पुं० [सं० शास्त्र√दृश् (देखना)+णिनि] =शास्त्रज्ञ।

शास्त्रशिल्पी (ल्पिन्)--पुं० [सं० शास्त्रशिल्प+इनि] १. काश्मीर देश। २. जमीन। भूमि।

शास्त्राचरण--पुं० [सं० शास्त्रआ√चर (करना)+णिच्-ल्यु-अन] १. शास्त्रों का अध्ययन और मनन। २. शास्त्र में बतलाई हुई बातों का आचरण और पालन।

शास्त्रार्थ--पुं० [सं० ष० त०] १. शास्त्र का अर्थ। २. शास्त्र के ठीक अर्थ तक पहुँचने के लिए होनेवाला तर्क-वितर्क या विवाद। ३. किसी प्रकार का तात्त्विक वाद-विवाद।

शास्त्री (स्त्रिन्)--पुं० [सं० शास्त्र+इनि] १. वह जो शास्त्रों आदि का अच्छा ज्ञाता हो। शास्त्रज्ञ। २. धर्मशास्त्र का अच्छा ज्ञाता या पंडित। ३. आज-कल एक प्रकार की उपाधि जो कुछ विशिष्ट परीक्षाओं में उत्तीर्ण होनेवाले व्यक्तियों को मिलती है।

शास्त्रीकरण--पुं० [सं० शास्त्र+च्वि√कृ+ल्युट्–अन-दीर्घ] किसी विषय की सब बातें व्यवस्थित रूप से एकत्र करके और शास्त्रीय ढंग से उनका विवेचन करके उसे शास्त्र का रूप देना।

शास्त्रीय--वि० [सं० शास्त्र+छ–ईय] १. शास्त्र-संबंधी। शास्त्र का। २. शास्त्र में बतलाये हुए ढंग या प्रकार का। जैसे--शास्त्रीय संगीत। ३. शास्त्रीय ज्ञान अथवा उसके शिक्षण से संबंध रखनेवाला। शैक्षणिक। ४. शास्त्रीय ज्ञान पर आश्रित। (एकेडेमिक) जैसे--शास्त्रीय विवेचन।

शास्त्रोक्त--भू० कृ० [सं० स० त०] शास्त्र में कहा हुआ।

शास्य--वि० [सं०√शास् (शासन करना)+ण्यत्] १. जिसका शासन किया जा सकता हो या किया जाने को हो। २. सुधारे जाने के योग्य। ३. दंडित होने के योग्य।

शाहंशाह--पुं० [फा०] सम्राट्।

शाहंशाही--स्त्री० [फा०] १. शाहंशाह होने की अवस्था या भाव। २. शाहंशाह का कार्य या पद।

वि० १. शहंशाह संबंधी। २. शहंशाहों का सा। ३. उदारता, बड़प्पन आदि का सूचक।

शाह--पुं० [फा०] १. बहुत बड़ा राजा या महाराज। बादशाह। २. मुसलमान फकीरों की उपाधि। ३. ताश, शतरंज आदि में का बादशाह।

वि० १. बहुत बड़ा या श्रेष्ठ। (यौ० के आरंभ में) जैसे--शाहकार, शाहबलूत, शाहराह आदि। २. शाहों का-सा। जैसे--शाह खर्च।

शाहकार--पुं० [फा०] कला संबंधी कोई बहुत बड़ी कृति।

शाहखर्च--वि० [फा०] [भाव० शाहखर्ची] बहुत अधिक खर्च करनेवाला।

शाहखर्ची--स्त्री० [फा०] १. शाहखर्च होने की अवस्था या भाव। २. शाहों की तरह किया जानेवाला अन्धाधुन्ध खर्च।

शाहजादा—पुं॰ [फा॰ शाहजादः] [स्त्री॰ शाहजादी] बादशाह का लड़का। राजकुमार।

शाहजादी—स्त्री॰ [फा॰] १. बादशाह की कन्या। राजकुमारी। २. कमल के फूल के अंदर का पीला जीरा।

शाहतरा—पुं॰ [फा॰] पित्त पापड़ा।

शाहदरा—पु॰ [फा॰] किले या महल के आस-पास की बस्ती।

शाहदाना—पुं॰ [फा॰ शाहदानः] १. बहुत बड़ा मोती। २. भाँग के बीज।

शाहदारू—पुं॰ [फा॰] औषधों का राजा अर्थात् भाँग या शराब।

शाहनशीं—पुं॰ [फा॰] शह-नशीन।

शाहबलूत—पुं॰=बलूत (वृक्ष)।

शाहबाज—पुं॰ [फा॰ शाहबाज़] एक प्रकार का बाज।

शाहबाला—पुं॰=शहबाला।

शाहबुलबुल—स्त्री॰ [अ॰ शाह+फा॰ बुलबुल] एक प्रकार की बुलबुल जिसका सिर काला सारा शरीर सफेद और दुम एक हाथ लंबी होती है।

शाहरग—स्त्री॰ [फा॰] वह बड़ी और सीधी नली जो गले से नीचे की ओर जाती है और जिससे सांस लेते हैं। श्वास नली।

शाहराह—स्त्री॰ [फा॰] १. वह बड़ा मार्ग जिसपर बादशाह की सवारी निकलती थी। २. बड़ा और चौड़ा रास्ता। राजमार्ग। ३. सड़क।

शाहसुलेमान—पुं॰ [फा॰] हुदहुद पक्षी का मुसलमानी नाम।

शाहाना—वि॰ [फा॰ शाहानः] १. शाहों का। २. शाहों का-सा। ३. शाहों के योग्य। ४. बहुत बढ़िया।

पुं॰=शहाना। (राज॰)

शाहिद—पुं॰ [अ॰] शहादत देनेवाला। गवाह।

वि॰ मनोहर। सुन्दर।

शाही—वि॰ [फा॰] १. शाह का। २. शाह द्वारा रचाया हुआ। ३. शाहों का-सा। ४. राजसी।

स्त्री॰ १. बादशाह का शासन अथवा राज्य-काल। २. किसी प्रकार का आधिकारिक प्रकार, व्यवहार या स्वरूप। जैसे—नादिरशाही, नौकरशाही।

शिगरफ़—पुं॰ [फा॰ शंगर्फ़] इंगुर। हिंगुल।

शिगरफी—वि॰ [फा॰ शंगर्फ़ी] १. शिगरफ संबंधी। २. शिगरफ के रंग का। लाल। सुर्ख।

पुं॰ उक्त प्रकार का रंग।

शिंघाण—पुं॰ [सं॰√शिंघ् (सूंघना)+ल्युट्-अन णत्व पृषो॰ शिंघ√नी (ढोना)+ड] १. अन्दर की वायु की जोर से नाक का मल बाहर निकालना। २. लौहमल। मंडूर। ३. तराजू की डंडी के ऊपर का काँटा या सूई। ४. काँच का बरतन। ५. दाढ़ी। ६. फूला हुआ अंडकोश।

शिंघाणक—पुं॰ [सं॰ शिंघाण+कन्] [स्त्री॰ शिंघाणिका] १. नाक के अन्दर का चेप। २. कफ। बलगम।

शिंघाणी (णिन्)—पुं॰ [सं॰ शिंघाण+इनि] नाक।

शिंघित—भू॰ कृ॰ [सं॰ शिंघ् (सूँघना)+क्त] सूँघा हुआ। आघ्रात।

शिंघिनी—स्त्री॰ [सं॰ शिंघ+इनि-ङीष्] नाक।

शिंजन—पुं॰ [सं॰ शिंज् (आभूषणों आदि की झनकार]+ल्युट्–अन] [वि॰ शिंजित] १. आभूषणों का होनेवाला शब्द। २. धातु खण्डों के बजने से होनेवाला शब्द।

शिंजा—स्त्री॰ [सं॰ शिंज् (ध्वनि होना)+अच्–टाप्] १. शिंजन। आवाज। झंकार। २. धनुष की डोरी।

शिंजिका—स्त्री॰ [सं॰] करधनी।

शिंजित—भू॰ कृ॰ [सं॰ शिंज (ध्वनि होना)+क्त] शब्द करता हुआ।

शिंजिनी—स्त्री॰ [सं॰√शिंज् (ध्वनि होना)+णिनि –ङीष्] १. धनुष की डोरी। चिल्ला। पतंचिका। २. करधनी, नूपुर आदि के घुँघरू।

शिंजी (जिन्)—वि॰ [सं॰√शिंज् (ध्वनि करना)+णिनि] १. शब्द करनेवाला। २. बजनेवाला।

शिंपैंजी—पुं॰ [?] अफ्रीका के जंगलों में पाया जानेवाला एक प्रकार का वन-मानुष। चिंपैंजी।

शिंब—पुं॰ [सं॰ शम+डिम्बच् बाहु॰] १. फली। छीमी। २. चकवँड़। चक्रमर्द।

शिंबा—स्त्री॰ [सं॰ शिंब-टाप्] १. छीमी। फली। २. सेम। ३. शिंबी धान्य।

शिंबिक—पुं॰ [सं॰ शिंब+टक् इक] मूँगफली।

शिंबिका—स्त्री॰ [सं॰ शिंबिक-टाप्] १. फली। छीमी। २. सेम।

शिंबिनी—स्त्री॰ [सं॰ शिंब+इनि–ङीप्] १. श्यामा चिड़िया। कृष्ण चटक। २. बड़ी सेम।

शिंबिपर्णी—स्त्री॰ [सं॰ ब॰ स॰-ङीष्] वनमूँग। मुद्गपर्णी।

शिंबी—स्त्री॰ [सं॰ शिंब-ङीष्] १. छीमी। फली। बौड़ी। २. सेम। ३. केवाँच। कौंछ। ४. बन-मूँग।

शिंबी धान्य—पुं॰ [सं॰ मध्यम॰ स॰] वह अन्न जिसके दानों में दो दल हों। द्विदल अन्न। दाल। जैसे—मूँग, मसूर, मोठ, उड़द आदि।

शिंशपा—स्त्री॰ [सं॰ शिंश√पा (रक्षा करना)+क–टाप्] शिंव, √वा (पान करना)+क पृषो॰ सिद्ध वा] १. शीशम का पेड़। २. अशोक वृक्ष।

शिंशुपा—स्त्री॰=शिंशपा।

शिंशुमार—पुं॰ [सं॰ शिंशु√मृ (मारना)+णिच्-अच्] सूँस नामक जल जन्तु।

शिकंजा—पुं॰ [फा॰ शिकंजः] १. कोई ऐसा यंत्र जिससे चीजें कसकर दबाई जाती हों। २. जिल्दबंदों का एक यंत्र जिससे वे बनकर तैयार होनेवाली किताबें दबाकर उनके किनारे काटते हैं। ३. वह तागा जिससे जुलाहे घुमावदार बंद बनाते हैं। ४. प्राचीन काल का एक प्रकार का यंत्र जिसमें अपराधियों को यंत्रणा देने के लिए उनके पैर कसकर जकड़ दिये जाते थे।

मुहा॰—(किसी को) शिकंजे में खिंचवाना=(क) उक्त प्रकार के यंत्र में किसी के पैर फँसा कर या और किसी प्रकार बहुत अधिक यंत्रणा देना। (ख) बहुत अधिक कष्ट देना।

५. रूई की गाँठें बाँधने के समय उन्हें दबाने का यंत्र। पेंच। ६. ऊख तेल आदि पेरने का कोल्हू।

शिकन—स्त्री॰ [फा॰] किसी समतल सतह के दबने, मुड़ने, बढ़ने, सिकुड़ने आदि के फलस्वरूप बननेवाला रेखाकार चिह्न।

क्रि॰ प्र॰—आना।—डालना।—निकालना।—पड़ना।

मुहा॰—चेहरे पर शिकन आना=आकृति से असन्तोष, कष्ट आदि व्यक्त होना।

शिकम—पुं० [फा०] पेट । उदर ।

पद—शिकम परवर=पेटू ।

शिकमी—वि० [फा०] १. पेट संबंधी । २. निज का । अपना । ३. किराये, लगान आदि के विचार से जो किसी दूसरे के अन्तर्गत हो । जैसे—शिकमी काश्तकार, शिकमी किरायेदार ।

मुहा०—शिकमी देना=किराये, लगान आदि पर ली हुई जमीन किसी दूसरे को किराये या लगान पर देना ।

शिकमी काश्तकार—पुं० [फा०] ऐसा काश्तकार जिसे जोतने के लिए खेत दूसरे काश्तकार से मिला हो ।

शिकरा—पुं० [फा० शिकरः] एक प्रकार का बाज जो दूसरे पक्षियों का शिकार करने के लिए सधाया या सिखाया जाता ।

शिकवा—पुं० [अ० शिकवः] १. शिकायत । उलाहना । २. ग्लानि ।

शिकस्त—स्त्री० [फा०] १. भंग । २. टूटना । ३. विफलता । ४. पराजय ।

क्रि० प्र०—खाना ।—देना

स्त्री० [फा० शिकस्त :] उर्दू लिपि की घसीट लिखावट ।

वि० टूटा-फूटा ।

शिकस्तगी—स्त्री० [फा०] १. टूटे-फूटे हुए होने की अवस्था या भाव । २. तोड़-फोड़ ।

शिकस्ता—वि० [फा० शिकस्तः] टूटा-फूटा । भग्न ।

स्त्री०=शिकस्त (लिपि) ।

शिकायत—स्त्री० [अ०] १. किसी के अनुचित या नियम-विरुद्ध व्यवहार के फलस्वरूप मन में होनेवाला असंतोष । २. उक्त असंतोष को दूर करने के लिए संबंधित अथवा आधिकारिक व्यक्ति से किया जानेवाला निवेदन । ३. किसी के अनुचित काम का किसी के सम्मुख किया जानेवाला कथन । ४. दंडित करवाने के उद्देश्य से किसी की किसी दूसरे से कही जानेवाली सही या गलत बात । ५. कोई ऐसा आरंभिक या हलका शारीरिक कष्ट जो रोग के रूप में हो । जैसे—बुखार की शिकायत ।

शिकायती—वि० [अ० शिकमत+हिं० ई (प्रत्यय)] १. शिकायत करने वाला (पत्र या लेख) । २. जिसमें किसी की या कोई शिकायत हो ।

शिकार—पुं० [फा०] १. जंगली विशेषतः हिंसक पशु-पक्षियों को पकड़ने या मारने का कार्य । मृगया । आखेट ।

क्रि० प्र०—खेलना ।

२. वह जानवर जो उक्त प्रकार से मारा जाय । ३. ऐसे पशु का मांस जो खाया जाता हो । गोश्त । ४. भक्ष्य पदार्थ । आहार । भोजन । जैसे—छिपकली को शिकार मिल गया । ५. फँसाया हुआ ऐसा व्यक्ति जिससे लाभ उठाया जा सकता हो ।

क्रि० प्र०—बनना ।—बनाना ।—होना ।

६. असामी ।

शिकारगाह—स्त्री० [फा०] शिकार खेलने का स्थान ।

शिकारबंद—पुं० [फा०] वह तस्मा जो घोड़े की दुम के पास चारजामे के पीछे शिकार किये हुए जानवर को लटकाने या आवश्यक सामान बाँधने के लिए लगाया जाता है ।

शिकारा—पुं० [फा० शिकारः] कश्मीर में होनेवाली एक प्रकार की बड़ी नाव जिसमें पूरी गृहस्थी के सुखपूर्वक रहने की व्यवस्था होती है । (हाउस-बोट)

शिकारी—पुं० [फा०] शिकार या आखेट करनेवाला अहेरी ।

वि० १. शिकार-संबंधी । २. जिसका शिकार किया जाता हो उससे संबंध रखनेवाला । ३. जिससे शिकार किया जाता हो । जैसे—शिकारी राइफल ।

शिकोह—पुं० [फा० शुकोह] भय ।

शिक्थ—पुं० [सं० शिच्+थक्—कुक् पृषो० स=श वा] मोम ।

शिक्य—पुं० [सं० शि+यत्—कुक च]=शिक्या ।

शिक्या—स्त्री० [सं० शिक्य—टाप्] १. बहँगी के दोनों कोरों पर बँधा हुआ रस्सी का जाल जिस पर बोझ रखते हैं । २. छींका । सिकहर । ३. तराजू की रस्सी ।

शिक्षक—पुं० [सं०√शिक्ष् (अभ्यास करना)+ण्वुल्—अक] विद्या या हुनर सिखलानेवाला व्यक्ति ।

शिक्षण—पुं० [सं०√शिक्ष् (अभ्यास करना)+ल्युट्—अन] शिक्षा देने अर्थात् पढ़ाने का काम । तालीम । शिक्षा ।

शिक्षण-विज्ञान—पुं० [सं० ष० त०] वह विज्ञान जिसमें शिक्षार्थियों को शिक्षा देने के सिद्धांतों का विवेचन होता है । (पेडागोजी)

शिक्षणालय—पुं० [सं० ष० त०] वह स्थान जहाँ शिक्षार्थी शिक्षा प्राप्त करते हैं ।

शिक्षणीय—वि० [सं० √शिक्ष् (अभ्यास करना)+अनीयर] जिसे शिक्षा दी जा सके या दी जाने को हो । सिखाये-पढ़ाये जाने के योग्य ।

शिक्षा—स्त्री० [सं०√शिक्ष्+अ] [वि० शिक्षित, शैक्षणिक] १. किसी प्रकार का ज्ञान या विद्या प्राप्त करने के लिए सीखने-सिखाने का क्रम । तालीम । जैसे—किसी भाषा विज्ञान या शास्त्र की शिक्षा । २. उक्त प्रकार से प्राप्त किया हुआ ज्ञान या विद्या । (एजुकेशन) जैसे—आप अभी अमेरिका से चिकित्सा-शास्त्र की शिक्षा प्राप्त कर लौटे हैं ।

क्रि० प्र०—देना ।—पाना ।—मिलना ।—लेना ।

विशेष—आज-कल शिक्षा के अन्तर्गत वे सभी बातें हैं जो किसी को किसी विषय का अच्छा ज्ञाता या उपयुक्त कार्यकर्ता बनाने के लिए पढ़ाई या सिखाई जाती है । शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को विद्या या विषय का ज्ञाता बनाने के सिवा नैतिक, मानसिक और शारीरिक सभी दृष्टियों से कर्मठ, योग्य, सदाचारी, समर्थ, स्वावलंबी आदि बनाना भी होता है ।

३. किसी प्रकार के अनुचित कार्य या व्यवहार से मिलनेवाला उपदेश या ज्ञान । नसीहत । जैसे—इस मुकदमेबाजी से तुम्हें शिक्षा तो मिली । ४. (क) छः वेदांगों में से एक जिसमें वैदिक साहित्य के वर्णों, मात्राओं, स्वरों आदि के उच्चारण-प्रकार का विवेचन है । (ख) आज-कल, व्याकरण का वह अंग जिसमें अक्षरों या वर्णों और उनके संयुक्त रूपों आदि के ठीक ठीक उच्चारण स्वरूप और फलतः उनके लेखन-प्रकार (अक्षरी या हिज्जे) का विवेचन होता है । (ऑर्थोग्रैफ़ी) ५. नम्रता । विनय । ६. दक्षता । निपुणता । ७. उपदेश । ८. मंत्रणा । सलाह । ९. शासन । दंड । सजा ।

शिक्षाकर—पुं० [सं०√शिक्षा√कृ (करना) +अच] व्यास ।

शिक्षाक्षेप—पुं० [सं० ब० स०] काव्य में एक प्रकार का अलंकार जिसमें प्रिय को किसी प्रकार की शिक्षा देकर अर्थात् अच्छी बात बतलाकर कहीं जाने से रोका जाता है । (केशव)

शिक्षा-गुरु—पुं० [सं० ष० त० स०] शिक्षा देने अर्थात् विद्या पढ़ानेवाला गुरु।

शिक्षा-दंड—पुं० [सं० मध्यम० स०] वह दंड जो कोई बुरी आदत या चाल छुड़ाने के लिए दिया जाय।

शिक्षा-दीक्षा—स्त्री० [सं० मध्यम० स०] ऐसी शिक्षा जो चारित्रिक, बौद्धिक या मानसिक विकास के उद्देश्य से दी जाती हो।

शिक्षा-पद—पुं० [सं० ष० त० स०] १. उपदेश। २. बौद्धों में, पंचशील के नियम जिनका लोगों को उपदेश दिया जाता है।

शिक्षा-पद्धति—स्त्री० [सं० ष० त० स०] शिक्षा देने का ढंग या तरीका। जैसे—भारतीय शिक्षा-पद्धति।

शिक्षा-परिषद्—स्त्री० [सं० ष० त० स०] १. प्राचीन भारत में किसी ऋषि का वह शिक्षालय जहाँ वैदिक ग्रन्थों की पढ़ाई होती थी। २. आज-कल शिक्षा-संबंधी व्यवस्था करनेवाली परिषद्।

शिक्षा-प्रणाली—स्त्री० [सं० ष० त० स०] विद्यार्थियों को शिक्षा देने की प्रणाली अर्थात् ढंग या तरीका।

शिक्षार्थी (र्थिन्)—वि० [सं० शिक्षार्थ+इनि] १. जो शिक्षा प्राप्त करना चाहता हो। २. शिक्षा प्राप्त करनेवाला।

शिक्षालय—पुं० [सं० ष० त० स०] शिक्षणालय। (दे०)

शिक्षा-विभाग—पुं० [सं० ष० त० स०] शिक्षा-संबंधी राजकीय विभाग।

शिक्षा-व्रत—पुं० [सं० मध्यम० स०] जैन धर्म के अनुसार गार्हस्थ्य धर्म का एक प्रधान अंग जो चार प्रकार का कहा गया है—सामयिक, देशावकाशिक, पौष और अतिथि संविभाग।

शिक्षा-शक्ति—स्त्री० [सं० ष० त०] शिक्षा ग्रहण करने का सामर्थ्य।

शिक्षित—भू० कृ० [सं०√शिक्ष् (अभ्यास करना) +क्त, शिक्षा+इतच् वा] १. (वह) जो शिक्षा प्राप्त कर चुका हो। २. जिसे शिक्षा मिली हो। पढ़ा-लिखा। साक्षर। ३. सिखाया हुआ।

शिक्ष्यमाण—पुं० [सं०√शिक्ष् (अभ्यास करना)+यक्–शानच्-मुक्] १. वह जिसे किसी प्रकार की शिक्षा दी जा रही हो। २. वह जिसे किसी कार्यालय में काम मिलने से पहले किसी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करनी पड़ रही हो।

शिखंड—पुं० [सं० शिखा√अम्+ड, ष० त० स०] १. मोर की पूँछ। मयूर-पुच्छ। २. चोटी। शिखा। ३. काक-पक्ष। काकुल।

शिखंडक—पुं० [सं० शिखंड+कन्] १. काक-पक्ष। काकुल। २. मोर की पूँछ।

शिखंडिक—पुं० [सं० शिखंड+ठन्–इक] १. कुक्कुट। मुर्गा। २. एक प्रकार का मानिक (रत्न)।

शिखंडिका—स्त्री० [सं० शिखंडिक–टाप्] शिखा। चोटी।

शिखंडिनी—स्त्री० [सं० शिखंड+इनि–ङीष्] १. मोरनी। मयूरी। २. जूही। ३. मुरगी।
वि० स्त्री० शिखंड युक्त।

शिखंडी—पुं० [सं० शिखंडिन्] [स्त्री० शिखंडिनी] १. मोर। २. मुरगा। ३. वाण। तर। ४. शिखा। ५. विष्णु। ६. शिव। ७. बृहस्पति। ८. कृष्ण। ९. द्रुपद का पुत्र जो जन्मतः स्त्री था, पर बाद में तपस्या से पुरुष बन गया था। महाभारत में, अर्जुन ने इसी को बीच में खड़ा करके इसकी आड़ से भीष्म को घायल किया था। १०. फलतः ऐसा व्यक्ति जिसमें पौरुष या बल का अभाव हो, पर जिसकी आड़ लेकर दूसरे लोग अपना काम निकालते हों। ११. पीली जूही। स्वर्ण-यूथिका। १२. गुंजा। घुँघची।

शिख—स्त्री०=शिखा।

शिखर—पुं० [सं० शिखा+अरच् अलोप] १. किसी चीज का सबसे ऊपरी भाग। सिरा। चोटी। २. पहाड़ की चोटी। पर्वत-शृंग। ३. गुंवद, मंदिर, मसजिद आदि का ऊँचा नुकीला सिरा। ४. गुंबद। ५. मंडप। ६. मंदिर या मकान के ऊपर का उठा हुआ नुकीला सिरा। कँगूरा। कलश। ७. जैनों का एक प्रसिद्ध तीर्थ। ८. एक प्रकार का छोटा रत्न। ९. उँगलियों की एक मुद्रा जो तान्त्रिक पूजन में बनाई जाती है। १०. प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र। ११. लौंग। १२. कुंद की कली। १३. काँख। बगल। १४. पुलक। रोमांच।

शिखरणी—स्त्री० [सं० शिखर√नि+क्विप्-ङीप्] =शिखरिणी।

शिखर-दशना—वि० स्त्री० [सं० ब० स०] (स्त्री) जिसके दाँत कुंद की कली के समान हों।

शिखरन—पुं० [सं० शिखर√नी (ढोना)+ड शिखरिणी] दही और चीनी का बना हुआ एक प्रकार का मीठा गाढ़ा पेय पदार्थ जिसमें केशर, कपूर, मेवे आदि पड़े होते हैं।

शिखर-वासिनी—स्त्री० [सं० शिखर√वस् (रहना)+णिनि] शिखर पर बसनेवाली दुर्गा।

शिखर-सम्मेलन—पुं० [ष० त०] कई राष्ट्रों के सर्वोच्च अधिकारियों अथवा शासकों का ऐसा सम्मेलन जो किसी महत्वपूर्ण राजनीतिक विषय पर विचार करने के लिए हो। (सम्मिट कान्फरेन्स)

शिखरा—स्त्री० [सं० शिखर–टाप्] १. मूर्व्वा। मरोड़फली। मुर्रा। २. एक गदा जो विश्वामित्र ने रामचन्द्र को दी थी।

शिखरिणी—स्त्री० [सं० शिखर+इनि+ङीप्] १. श्रेष्ठ स्त्री। २. शिखरन नामक पेय पदार्थ। ३. १७ अक्षरों की एक वर्णवृत्ति जिसमें छठें और ग्यारहवें वर्ण पर यति होती है। ४. रोमावली। ५. बेला या मोतिया नामक फूल। ६. नेवारी। ७. आम। ८. किशमिश। ९. मूर्वा। मरोड़-फली।

शिखरी—पुं० [सं० शिखर+इनि-दीर्घ-नलोप] १. पर्वत। पहाड़। २. पहाड़ी किला। ३. पेड़। वृक्ष। ४. अपामार्ग। चिचड़ा। ५. बंदाक। बाँदा। ६. लोबान। ७. काकड़ा सिंगी। ८. ज्वार। मक्का। ९. कुंदरू नामक गन्ध द्रव्य। १०. एक प्रकार का मृग।
स्त्री० [सं० शिखरा] एक गदा जो विश्वामित्र ने रामचन्द्र को दी थी। शिखरा।

शिखांत—पुं० [सं० शिखा+अं[illegible] ष० त०] शिखा का अंतिम अर्थात् सबसे ऊपरी भाग।

शिखा—स्त्री० [सं० शि+खक् पृषो०-टाप्] १. हिन्दुओं में, मुंडन के समय सिर के बीचोबीच छोड़ा हुआ बालों का गुच्छा जो फिर कटाया नहीं जाता और बढ़कर लंबी चोटी के रूप में हो जाता है। चुंदी। चोटी।
पद—**शिखासूत्र**=चोटी और जनेऊ जो द्विजों के मुख्य चिह्न हैं और जिनका त्याग केवल संन्यासियों के लिए विधेय है।
२. मोर, मुर्गी आदि पक्षियों के सिर पर उठी हुई चोटी या पंखों का गुच्छा।

चोटी। कलगी। ३. आग, दीपक आदि की ऊपर उठने वाली लौ। ४. प्रकाश की किरण। ५. किसी चीज का नुकीला सिरा। नोक। ६. ऊपर उठा हुआ सिरा। चोटी। ७. पैर के पंजों का सिरा। ८. स्तन का अगला भाग। चूचुक। ९. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके विषम पादों में २८ लघु मात्राएँ और अंत में एक गुरु होता है। सम पादों में ३० लघु मात्राएँ और अन्त में एक गुरु होता है। १०. पहने हुए कपड़े का आँचल। दामन। ११. पेड़ की जड़। १२. पेड़ की डाल। शाखा। १३. श्रेष्ठ वस्तु या व्यक्ति। १४. नायक। सरदार। १५. काम-वासना की तीव्रता के कारण होनेवाला ज्वर। काम-ज्वर। १६. तुलसी। १७. बच। १८. जटामासी। बालछड़। १९. कलियारी नामक विष। लांगली। २०. मरोड़-फली। मूर्वा।

शिखाकंद—पुं० [सं० ब० स०] शलजम। शलगम।

शिखातरु—पुं० [सं० ष० त० स०] दीप-वृक्ष। दीवट। दीयर।

शिखाधर—पुं० [सं० ष० त० स०] मयूर। मोर।

वि० शिखा धारण करनेवाला।

शिखाधार—पुं० [सं०]=शिखाधर।

शिखापित्त—पुं० [सं० ब० स०] एक प्रकार का रोग जिसमें हाथ-पैर की उँगलियों में सूजन और जलन होती है।

शिखाभरण—पुं० [सं० ष० त० स०] १. शिरोभूषण। २. मुकुट।

शिखामणिक—पुं० [सं० ष० त० स०] १. सिर पर धारण किया जानेवाला रत्न। २. मुकुट में लगाया जानेवाला रत्न। ३. सर्व-श्रेष्ठ पदार्थ या वस्तु।

शिखामूल—पुं० [सं० ब० स०] ऐसा कन्द जिसके ऊपर पत्तियाँ या पत्ते हों। जैसे—गाजर, शलजम आदि।

शिखालु—पुं० [सं० शिखा+आलुच्] मोर की चोटी। कलगी।

शिखावल—पुं० [सं० शिखा+वलच्] [स्त्री० शिखावली] १. मोर। मयूर। २. कटहल।

शिखावान् (वत्)—वि० [सं० शिखा+मतुप्–म=व–नुम्–दीर्घ नलोप] [स्त्री० शिखावती] शिखावाला।

पुं० १. अग्नि। २. चित्रक। चीता। ३. केतु ग्रह। ४. मयूर। मोर।

शिखावृक्ष—पुं० [सं० ष० त० स०] वह आधार जिस पर दीया रखा जाता है। दीवट।

शिखावृद्धि—स्त्री० [सं० ष० त० स०] १. ब्याज का प्रतिदिन बढ़ना। २. ब्याज पर भी जोड़ा जानेवाला ब्याज। सूद-दर-सूद। (कम्पाउंड इन्टरेस्ट)

शिखि (खिन्)—पुं० [सं० शिखा+इन] १. मोर। मयूर। २. तामस मन्वन्तर के इन्द्र का नाम। ३. कामदेव। ४. अग्नि। ५. तीन की संख्या का वाचक शब्द।

वि०=शिखावान्।

शिखि-ग्रीव—पुं० [सं० शिखि-ग्रीवा+अच् ब० स० वा] १. नीलाथोथा। २. कांत पाषाण नाम का नीला पत्थर।

शिखिध्वज—पुं० [सं० ष० त० स०] १. धूम। धूआँ। २. एक प्राचीन तीर्थ। ४. मयूरध्वज राजा का दूसरा नाम।

शिखिनी—स्त्री० [सं० शिखा+इनि–ङीप्] १. मयूरी। मोरनी। २. मुरगी। ३. जटाधारी नाम का पौधा।

शिखि-वाहन—पुं० [सं० ब० स०] मयूर की सवारी करनेवाले कार्तिकेय।

शिखींद्र—पुं० [सं० ष० त०] १. तेंदू (पेड़)। २. आबनूस (वृक्ष)।

शिखी (खिन्)—वि० [सं०] [स्त्री० शिखिनी] शिखा या शिखाओं से युक्त। चोटी या चोटियोंवाला।

पुं० १. मोर। मयूर। २. मुरगा। ३. एक प्रकार का सारस। ४. बगला। ५. बैल या साँड़। ६. घोड़ा। ७. चित्रक। चीता। ८. अग्नि। ९. तीन की संख्या का वाचक शब्द। १०. दीपक। दीआ। ११. पित्त। २१. पुच्छल तारा। केतु। १३. मेथी। १४. शतावर। १५. पेड़। वृक्ष। १६. पर्वत। पहाड़। १७. ब्राह्मण। १८. बाण। तीर। १९. जटाधारी। साधु। २०. इन्द्र। २१. एक प्रकार का विष।

शिखीश्वर—पुं० [ष० त० स०] कार्तिकेय।

शिगाफ—पुं० [फा० शिग्राफ़] १. दरार। दरज। २. सूराख। छेद। ३. चिकित्सा के उद्देश्य से नश्तर से फोड़ों आदि में लगाया जानेवाला चीरा।

शिगाल—पुं० [सं० शृगाल से फा०] गीदड़। सियार।

शिगूड़ी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का जंगली पौधा जो दवा के काम आता है।

शिगूफा—पुं०=शगूफा।

शिग्रु—पुं० [सं० शि+रुक्-गुक् च] १. सहिजन का वृक्ष। शोभांजन। २. शाक। साग।

शित—भू० कृ० [सं०√शो (पतला करना)+क्त] १. सान पर चढ़ा कर तेज किया हुआ। २. नुकीला। ३. दुर्बल।

†वि०=सित।

शितद्रु—स्त्री० [सं० शित√द्रु (पिघलना)+कु] १. शतद्रु। सतलज। २. क्षीर-मोरठ। मोरठ।

शिताफल—पुं० [सं० ब० स०] शरीफा। सीताफल।

शिताब—अव्य० [फा०] जल्द। झटपट। शीघ्र।

शिताबी—स्त्री० [फा०] १. शीघ्रता। जल्दी। २. उतावली। हड़बड़ी।

शितावर—पुं० [सं० शतावर] १. बकुची। सोमराजी। २. शिरियारी। ३. शतावर।

शिति—वि० [सं०√शो (पतला करना)+क्तिच्] १. सफेद। २. काला। ३. नीला। ४. रंग-बिरंगा।

पुं० भोजपत्र।

शितिकंठ—पुं० [सं० ब० स०] १. महादेव। शिव। २. नाग देवता। ३. जल-काक। मुरगाबी। ४. पपीहा। ५. मोर।

शिति-चंदन—पुं० [सं० ब० स०] कस्तूरी।

शितिपक्ष—पुं० [सं० ब० स०] हंस।

शिति-रत्न—पुं० [मध्यम० स०] नीलम।

शित्पुट—पुं० [सं० ब० स०] १. बिल्ली की तरह का एक जानवर। २. एक प्रकार का काला भौंरा।

शिथिल—वि० [√श्लथ् (हिंसा करना)+किलच्–पृषो०] [भाव० शिथिलता] १. जिसमें खिंचाव न होने के कारण ढिलाई हो। ढीला। २. (व्यक्ति) जिसके वृद्धावस्था, थकावट, बीमारी आदि के फल-स्वरूप

अंग-अंग ढीले पड़ गये हों। ३. जिसमें तेजी या फुरती न हो। जिसकी गति मंद हो। ४. आलस्य के कारण काम न करनेवाला। ४. जो अपनी बात पर दृढ़ न रहता हो। ५. (काम या बात) जिसका पालन दृढ़तापूर्वक न होता हो। ६. नियंत्रण या दबाव में रखा हुआ। ७. (शब्द) जो स्पष्ट न हो।

शिथिलता—स्त्री० [सं० शिथिल+तल्–टाप्] १. शिथिल होने की अवस्था, धर्म या भाव। २. साहित्य में, वाक्य-रचना का वह दोष जिसमें आर्थी दृष्टि से शब्द अच्छी तरह गठे हुए न हों। ३. तर्क में किसी अवयव का अभाव।

शिथिलाई†—स्त्री०=शिथिलता।

शिथिलाना—अ० [सं० शिथिल+आना (प्रत्य०)] १. शिथिल होना। ढीला पड़ना। २ श्रान्त होना। थकना।
स० १. शिथिल करना। २. थकाना।

शिथिलित—भू० कृ० [सं० शिथिल+इतच्] जो शिथिल हो गया हो। ढीला पड़ा हुआ।

शिथिलीकरण—पुं० [सं० शिथिल+च्वि√कृ (करना)+ल्युट् अन-दीर्घ] [वि० शिथिलीकृत] शिथिल करना। ढीला करना।

शिथिलीभूत—भू० कृ० [सं० शिथिल+च्वि√भू (होना)+क-दीर्घ] जो शिथिल हो गया हो। ढीला पड़ा हुआ।

शिद्दत—स्त्री० [अ०] १. तीव्रता। प्रबलता। २. उग्रता। प्रचंडता। ३. अधिकता। ज्यादती। ४. कठिनाई। कष्ट।

शिनाख्त—स्त्री० [फा०] १. यह निश्चय कि अमुक वस्तु या व्यक्ति यही है। किसी व्यक्ति, वस्तु आदि को देख कर बतलाना कि यही अमुक व्यक्ति या वस्तु है। पहचान। २. भला-बुरा पहचानने की योग्यता। तमीज। परख। जैसे—उसे हीरों की अच्छी शिनाख्त है।

शिनास—वि० [फा०] [भाव० शिनासी] पहचाननेवाला। जानकार।

शिनासाई—स्त्री० [फा०] १. पहचान। परिचय। २. जानकारी।

शिनि—पुं० [सं० शि+निक्] १. गर्ग ऋषि के पुत्र का नाम। २. क्षत्रियों का एक भेद।

शिप्र—पुं० [सं०शि+रक–पुक् च] हिमालय पर्वत का एक सरोवर।

शिप्रा—स्त्री० [सं० शिप्र-टाप्] एक नदी जिसके तट पर उज्जयिनी नगर बसा हुआ है। (कहते हैं कि यह शिप्र नामक सरोवर से निकली थी।)

शिफर—पुं०=सिपर (ढाल)।

शिफा—स्त्री० [सं० शि+फक्–टाप्] १. एक प्रकार के वृक्ष की रेशेदार जड़ जिससे प्राचीन काल में कोड़े बनते थे। २. कोड़े या चाबुक की फटकार अथवा मार। ३. कोड़ा या चाबुक।
पद—शिफा-दंड=कोड़े या बेंत मारने का दंड।
४. माता। माँ। ५. हलदी। ६. कमल की नाल। भसींड। ७. लता। वल्ली। ८. दरिया। नदी। ९. जटामासी। १०. चोटी। शिखा।

शिफ़ा—स्त्री० [अ०] १. बीमारी, रोग आदि से होनेवाला छुटकारा। २. स्वास्थ्य।

शिफाकंद—पुं० [सं० उपमि० स०] कमल की जड़। भसींड।

शिफारुह—पुं० [सं० शिफा√रुह् (आरोहण करना)+क] बरगद (पेड़)। वटवृक्ष।

शिबि—पुं० [सं० शिखि-कित्]=शिवि।

शिमाल—स्त्री० [अ०] [वि० शिमाली] उत्तर दिशा।

शिया—पुं०=शीया (सम्प्रदाय)।

शिरःकपाली—पुं० [सं० शिरःकपाल+इनि] कापालिक संन्यासी।

शिरःखंड—पुं० [सं० ष० त० स०] माथे की हड्डी। कपालास्थि।

शिरःफल—पुं० [सं० ब० स०] नारिकेल। नारियल।

शिर (स्)—पुं० [सं० शॄ+क] १. सिर। कपाल। मुंड। खोपड़ा। २. मस्तक। माथा। ३. ऊपरी भाग। चोटी। ४. अगला भाग। सिरा। ५. सेना का अगला भाग। ६. पद्य के चरण का आरंभ। टेक। ७. अगुआ, प्रधान या मुखिया। ८ पिप्पलीमूल। ९. शय्या। १०. बिछौना। बिस्तर। ११. अजगर।

शिरकत—स्त्री० [अ०] १. शरीक होने की अवस्था, क्रिया या भाव। मिलना। २. एक साथ मिलकर किसी काम में प्रवृत्त होना। ३. व्यापार में हिस्सेदार बनना। साझेदारी।

शिरकती—वि० [फा०] १. साझे का। सम्मिलित। २. शिरकत के फलस्वरूप होनेवाला।

शिरखिस्त—पुं०=शीर-खिश्त।

शिरगंला—पुं० [देश०] दुग्ध-पाषाण नामक वृक्ष।

शिरज—पुं० [सं० शिर√जन् (उत्पन्न करना)+ड] केश। बाल।
वि० शिर या सिर से उत्पन्न।

शिरत्रान†—पुं०= शिरस्त्राण।

शिरनेत—पुं० [देश०] १. गढ़वाल या श्रीनगर के आस-पास का प्रदेश। २. क्षत्रियों का एक वर्ग।

शिरफूल—पुं० =सीस-फूल (गहना)।

शिरमौर—पुं०=सिर-मौर।

शिरश्चन्द्र—पुं० [सं० ब० स०] महादेव। शिव।

शिरसा—अव्य० [सं० शिरस+आप्] सिर झुकाकर या आदरपूर्वक। शिरोधार्य करते हुए। जैसे—कोई बात शिरसा मानना या स्वीकृत करना।

शिरसिज—पुं० [सं० शिरसि√जन् (उत्पन्न करना)+ड सप्तमी अलुक् स०] केश। बाल।

शिरसिरुह—पुं० [सं० शिरसि√रुह् (उगना)+क-अलुक् स०] केश। बाल।

शिरस्कर—पुं० [सं० शिरस्√कै (प्रकाशित)+क] १. पगड़ी। २. शिरस्त्राण।

शिरस्त्र—पुं० [सिरस्√त्रै (रक्षा करना)+क] =शिरस्त्राण।

शिरस्त्राण—पुं० [सं०शिरस्√त्रै+ल्युट्–,अन] वह टोप जो युद्ध आदि के समय सैनिक सिर पर पहनते हैं।

शिरहन—पुं० [सं० शिर+आधान] १. तकिया। २. सिरहाना।

शिरा—स्त्री० [सं० शॄ+क–टाप्] १. रक्त की छोटी नाड़ी। खून की छोटी नली। (ब्लड वेसल) २. पानी का सोता; विशेषतः जमीन के अन्दर बहनेवाला सोता। ३. कूएँ से पानी खींचने का डोल।

शिराकत—स्त्री०=शराकत।

शिराग्रह—पुं० [सं० ब० स०] एक प्रकार का वात रोग।

शिराज—स्त्री० [देश०] हिन्दुओं की एक जाति जो चमड़े का काम करती है।

शिराजाल—पुं० [सं० ष० त० स०] १. शरीर के अन्दर की छोटी रक्त-नाड़ियों का समूह। २. आँख संबंधी एक रोग।

शिरापत्र—पुं० [सं० ब० स०] १. पीपल का पेड़। २. हिंताल। ३. कपित्थ। कैथ।

शिरापीड़िका—स्त्री० [सं० ब० स०] १. आँख का एक रोग जिसमें पुतली के पास एक फुंसी निकल आती है। २. बहुमूत्र के रोगियों को निकलने वाली एक प्रकार की घातक फुँसी।

शिराफल—पुं० [सं० ब० स०] नारियल।

शिरामल—पुं० [सं० ब० स०] नाभि।

शिरायु—पु० [सं० ब० स०] रीछ। भालू।

शिराल—वि० [सं० शिरा+लच्] १. शिरा-संबंधी। २. शिरायुक्त। ३. बहुत सी शिराओंवाला।

पुं० कमरख।

शिरावरोध—पुं० [सं० ब०स०] एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर के अंदर किसी शिरा में रक्त के कणों की गाँठ बनकर ठहर जाती और उस अंग के रक्त-संचार में बाधक होती है। (थ्राम्बोसिस)

शिराहर्ष—पुं० [ष० त० स० ब० स० वा] १. नसों का झनझनाना। २. एक रोग जिसमें आँखें लाल हो जाती हैं।

शिरि—पुं० [सं०√शॄ+कि] १. खड्ग। तलवार। २. तीर। बाण। ३. फतिंगा। ४. टिडडी।

शिरियारी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की जंगली बूटी या शाक जो औषध के काम में आती है। सुसना।

शिरीष—पुं० [सं० शॄ+ईषन्–किन्] १. सिरस का पेड़। २. उक्त का पुष्प।

शिरोगृह—पुं० [सं० मध्यम० स०] अट्टालिका का सब से ऊपरवाला कमरा।

शिरोग्रह—पुं० [सं० ब० स०] समलबाई नामक रोग।

शिरोज—पुं० [सं० शिरस्√जन् (उत्पन्न करना)+ड] बाल। केश।

शिरोदाम—पुं० [सं० ष० त० स० शिरोदामन्] पगड़ी। साफा।

शिरोधरा—स्त्री० [सं० शिरस्√धर् (रखना)+अच्–टाप्] ग्रीवा। गरदन।

शिरोधाम—पुं० [सं० ष० त० स०] चारपाई का सिरहाना।

शिरोधार्य—वि० [सं० तृ० त० स०] आदरपूर्वक सिर पर धारण किए जाने या माने जाने के योग्य। सादर अंगीकार किए जाने के योग्य।

शिरोपाव—पुं०=सिरोपाव।

शिरोभूषण—पुं० [सं० ष० त० स०] १. सिर पर पहनने का गहना। जैसे—सीसफूल। २. मुकुट। ३. श्रेष्ठ व्यक्ति।

शिरोभूषा—स्त्री० [सं० ष० त०] १. सिर की भूषा। २. सिर पर धारण किया जानेवाला वस्त्र, पगड़ी, टोपी आदि।

शिरोमणि—पुं० [सं० मध्यम० स०] १. सिर पर का रत्न। चूड़ामणि। २. मान्य और श्रेष्ठ व्यक्ति। ३. माला में का सुमेरु।

शिरोमाली (लिन्)—पुं० [सं० शिरस्-माला-ष० त० स०—इनि, दीर्घ, नलोप] मनुष्य की खोपड़ियों या मुंडों की माला धारण करनेवाले, शिव।

शिरोमौलि—पुं० [सं० ष० त० स०] १. सिर पर पहना जानेवाला आभूषण या रत्न। २. श्रेष्ठ व्यक्ति।

शिरोरक्षी (क्षिन्)—पुं० [सं० शिरस्-रक्षा-ष० त० स०—इनि] प्राचीन भारत में, सदा राजा के साथ रहनेवाला रक्षक। अंग-रक्षक। (बॉडी गॉर्ड)

शिरोरत्न—पुं० [सं० ष० त० स०]=शिरोमणि।

शिरोवर्ती (तिन्)—वि० [सं० शिरस्√वृत् (रहना)+णिनि, दीर्घ नलोप] प्रधान। मुखिया।

पुं० प्रधान। मुखिया। नायक।

शिरोवल्ली—स्त्री० [सं० तृ० त०] मोर, मुर्गे आदि की चोटी। कलगी।

शिरोवस्ति—पुं० [सं० ष० त० स०] वैद्यक में, शिर के वातज दर्द का एक उपचार।

शिरोविंदु—पुं० [सं० मध्य० स०] आकाश में वह स्थान या उसका सूचक विंदु जो हमारे सिर के ठीक ऊपर पड़ता है। 'अधोविंदु' का विपर्याय। (जेनिथ)

शिरोहर्ष—पुं० [सं० ब० स०] समलबाई नामक रोग।

शिरोहारी (रिन्)—पुं० [सं० शिरस्√हृ+णिनि] खोपड़ियों की माला पहननेवाले, शिव।

शिलंधिर—पुं० [सं० ब० स०] एक प्राचीन गोत्र-प्रवर्त्तक ऋषि।

शिलंब—पुं० [सं० ब० स०] १. जुलाहा। तंतुवाय। २. बुद्धिमान् व्यक्ति।

शिल—पुं० [सं० √शिल् (एक, एक कण का बीनना)+क] उंछ नामक वृत्ति।

स्त्री० १.= शिला। २.=सिल।

शिलज—पुं० [सं० शिल√जन् (उत्पन्न, करना)+ड]=शैलज (छरीला)।

शिल-रति—पुं० [सं० ब० स०] उंछशील। (दे०)

शिला—स्त्री० [सं० शिल+क—टाप्] १. पाषाण। पत्थर। २. पत्थर का बड़ा और चौड़ा टुकड़ा। चट्टान। सिल। ३. पत्थर की कंकड़ी या रोड़ा। ४. मनःशिल। मैनसिल। ५. कपूर। ६. शिलाजीत। ७. गेरू। ८. नील का पौधा। ९. हर्रे। १०. गोरोचन। ११. दूब। १२. उंछवृत्ति।

शिलाकुसुम—पुं० [सं० ष० त० स०] १. शैलेय नामक गन्ध द्रव्य। २. शिलाजीत।

शिलाक्षार—पुं० [सं० ष० त० स०] चूना।

शिलाखंड—पुं० [सं० ष० त०] १. पत्थर का बड़ा टुकड़ा। चट्टान। २. आज-कल पुरातत्त्व में पत्थरों का वह ढेर जो बहुत प्राचीन काल में किसी घटना या स्मारक के रूप में लगाया जाता था।

शिलाज—पुं० [सं० शिला√जन् (उत्पन्न करना)+ड] १. छरीला। पत्थर का फूल। २. लोहा। ३. शिलाजीत। ४. पेट्रोल।

शिला-जतु—पुं० [मध्य० स०] शिलजीत।

शिलाजा—स्त्री० [सं० शिलाज—टाप्] संगमरमर।

शिलाजीत—स्त्री० [सं० शिलाजतु] कुछ विशिष्ट प्रकार की चट्टानों

के अत्यधिक तपने पर उनमें से निकलनेवाला एक प्रकार का रस जो काले रंग का होता है और अत्यधिक पौष्टिक माना जाता है।

शिलाटक—पुं०[सं० शिला√अट् (जाना) +ण्वुल्—अक] १. बहुत बड़ा मकान। अट्टालिका। २. घर के ऊपर का कोठा। अटारी। ३. बड़ी इमारत की चहारदीवारी। परकोटा। ४. गड्ढा। गर्त्त।

शिलात्व—पुं० [सं० शिला+त्व] १. शिला का भाव। २. शिला का धर्म अर्थात् कठोरता, जड़ता आदि।

शिला-दान—पुं०[सं० ष० त० स०] पत्थर की मूर्ति विशेषतः शालग्राम का दिया जानेवाला दान।

शिलादित्य—पुं०[सं०] हर्षवर्द्धन।

शिलाधातु—पुं०[सं० ष० त० स०]१. सोनगेरू। २. खपरिया। ३. चीनी। शक्कर।

शिलानिर्यास—पुं०[ष० त० स०]=शिलाजीत।

शिला-न्यास—पुं०[सं० ष० त०]१. नये भवन की नींव के रूप में रखा जानेवाला पहला पत्थर। २. नींव रखने का कृत्य।

शिला-पट्ट—पुं० [सं० ष० त० स०]१. पत्थर की चट्टान। २. मसाले आदि पीसने की सिल।

शिला-पुत्र (क)—पुं०[ष०त०] पत्थर का वह टुकड़ा जिसे सिल पर रगड़ कर चीजें पीसी जाती हैं। लोढ़ा।

शिलापुष्प—पुं०[सं० ष० त०]१. छरीला। शैलेय। २. शिलाजीत।

शिलाप्रमोक्ष—पुं० [सं० ष० त० स०] लड़ाई में शत्रुओं पर पत्थर फेंकना या लुढ़काना। (कौ०)

शिला-बंध—पुं०[ब० स०] पत्थर की चहारदीवारी या परकोटा।

शिला-भव—पुं०[सं० त० स०]१. शिलाजीत। २. छरीला।

शिलाभेद—पुं०[सं०+ शिला √भिद्+अण्]१. पत्थर तोड़ने की छेनी। २. पाषाणभेदी वृक्ष। पखानभेद।

शिला-मल—पुं०[ष० त० स०] शिलाजीत।

शिला-मुद्रण—पुं० [सं० तृ० त०] [भू० कृ० शिलामुद्रित] पुस्तकों आदि की पुरानी चाल की एक प्रकार की छपाई जो पत्थर की शिला पर अंकित चिन्हों या अक्षरों की सहायता से होती थी। (लीथोग्राफ)

शिलायु—पुं० [सं० ब० स०] गले में होनेवाला एक प्रकार का विकार।

शिला-रस—पुं०[सं०ष० त० स०]१. शैलेय नामक गन्ध द्रव्य। २. लोबान की तरह का एक प्रकार का सुगंधित गोंद।

शिलारोपण—पुं०[ष०त०]नींव में पत्थर को प्रस्थापित करना। शिलान्यास।

शिला-लेख—पुं०[सप्त० त०] १. वह लेख जो पत्थर पर खुदा हो। २. वह पत्थर जिसपर लेख आदि खुदा हो। ३. दे० 'पुरालेख'।

शिलालेखविद्—पुं० [सं० शिलालेख√ विद्+ क्विप्] वह जो पुराने शिलालेखों के लेख आदि पढ़ने में प्रवीण हो। पुरालेखविद्। (एपिग्राफिस्ट)

शिलावह—पुं० [सं० ब० स०]१. एक प्राचीन जनपद। २. उक्त जनपद का निवासी।

शिला-वृष्टि—स्त्री०[सं० ष० त० स०] १. आकाश से ओले या पत्थर गिरना। २. पत्थर के टुकड़े किसी पर फेंकना।

शिलावेश्म (न्)—[सं० ष० त० स०]१. कंदरा। गुफा। २. पत्थरों का बना हुआ मकान।

शिलासन—पुं०[सं० ब० स०]१. पत्थर का बना हुआ आसन। २. शिलाजीत। ३. शैलेय नामक गन्ध द्रव्य।

शिलासार—पुं०[सं० ष० त० स०] लोहा।

शिलास्वेद—पुं०[सं० ष० त० स०] शिलाजीत।

शिला-हरि—पुं० [सं० मध्यम० स०] शालग्राम की मूर्ति।

शिलाहारी (रिन्)—वि०[सं० शिला√ हृ(हरण करना)+णिनि]खेतों से अन्न बिनकर जीविका चलानेवाला। उंछशील।

शिलाह्व—पुं०[सं० ब० स०] शिलाजीत।

शिलिंद—पुं०[सं० शिलि√ दा (देना)+क पृषो० सिद्ध] एक प्रकार की मछली।

शिलि—पुं०[सं०√ शिल् (एक-एक दाना बीनना)+कि] भोजपत्र। भूर्जवृक्ष।

स्त्री० डेहरी।

शिलींध्र—पुं०[सं० शिली√धृ (रखना)+क पृषो० मुम्]१. केले का फूल। २. आकाश से गिरनेवाला ओला। बिनौरी। ३. भुंइछत्ता। ४. कठ-केला। ५. शिलिंद नामक मछली।

शिलींध्रक—पुं० [सं० शिलींध्र+कन्] कुकुरमुत्ता। खुमी।

शिलींध्री—स्त्री० [सं० शिलींध्र—ङीप्] १. केंचुआ। गंडूपदी। २. मिट्टी। ३. एक प्रकार का पक्षी।

शिली—स्त्री० [सं० शिल–ङीप्]१. केंचुआ। २. मेढक। ३. देहलीज। ४. भोजपत्र। ५. तीर। बाण। ६. भाला।

शिलीपद—पुं० [सं० ब० स] फीलपाँव नामक रोग। श्लीपद।

शिलीभूत—भू० कृ० [सं०] जो जमकर पत्थर के सदृश कठोर हो गया हो।

शिलीमुख—पुं०[सं० ब० स०]१. भ्रमर। २. तीर। बाण। ३. युद्ध। समर।

वि० बेवकूफ। मूर्ख।

शिलूष—पुं०[सं० ब० स०]१. नाट्यशास्त्र के आचार्य एक प्राचीन ऋषि। २. बेल का वृक्ष।

शिलेप—वि०[सं०] शिला-संबंधी। शिला का।

पुं० शिलाजीत।

शिलोंछ—पुं०[स० शिल√उंछि+घञ्] खेतों से अन्न बिनकर जीविका निर्वाह करना। उंछवृत्ति।

शिलोच्चय—पुं० [सं० ब० स०] पर्वत। पहाड़।

शिलोत्थ—पुं० [सं० शिल-उद्√स्था (ठहरना)+क, स,=थ, लोप] १. छरीला या शैलेय नामक गंध-द्रव्य। २. शिलाजीत।

शिलोद्भव—पुं०[सं० ब० स०]१. शैलेय। छरीला। २. पीला चन्दन।

शिलौका—वि० [सं० ब० स० शिलौकस] पर्वत पर होनेवाला।

पुं० गरुड़।

शिल्प—पुं०[सं० शिल्+पक्] हाथ से काम करने का हुनर। दस्तकारी। हस्तकला।

शिल्पक—पुं०[सं० शिल्प+कन्] एक प्रकार का नाटक जिसमें इंद्रजाल तथा अध्यात्म संबंधी बातों का वर्णन रहता है।

शिल्पकर—पुं०[शिल्प्√कृ (करना) +अच्]शिल्पकार।

शिल्पकला—स्त्री०[सं० ष० त० स०] शिल्प।,(दे०)

शिल्पकार—पुं०[सं० शिल्प√कृ करना)+अण् उप० स०] १. शिल्पी। कारीगर। २. मकान बनानेवाला राज। मेमार।

शिल्पकारी—पुं०[सं० शिल्प√कृ (करना)+णिनि शिल्पकारिन्]= शिल्पकार।
स्त्री०=शिल्प।

शिल्प-गृह—पुं०[ष० त० स०] वह स्थान जहाँ शिल्प-सम्बन्धी कोई कार्य होता हो। कारखाना।

शिल्पजीवी (विन्)—पुं०[सं० शिल्प√जीव् (जीवन निर्वाह करना)+ णिनि] शिल्प से जिसकी जीविका चलती हो। शिल्पी।

शिल्पज्ञ—वि०-पुं०[सं० शिल्प√ज्ञा (जाना)+क] शिल्प जाननेवाला।

शिल्पता—स्त्री०[सं० शिल्प+तल्—टाप्] शिल्प का भाव या धर्म। शिल्पत्व।

शिल्पत्व—पुं०[सं० शिल्प+त्व]=शिल्पता।

शिल्पप्रजापति—पुं०[सं० मध्यम० स०] विश्वकर्मा का एक नाम।

शिल्प-यंत्र—पुं०[मध्य० स०] ऐसा यंत्र जिससे शिल्प सम्बन्धी काम होता या चीज़ें बनती हों।

शिल्प-लिपि—स्त्री०[सं०मध्यम० स०]पत्थर, ताँबे आदि पर अक्षर खोदने की कला।

शिल्प-विद्या—स्त्री० [ष० त०, स० मध्यम० स०]१. हाथ से तरह तरह की चीजें बनाने की कला। २. गृह-निर्माण कला। मकान आदि बनाने की विद्या।

शिल्प-विद्यालय—पुं० [ष० त० स०] वह विद्यालय जिसमें अनेक प्रकार के शिल्प अर्थात् चीज़ें बनाने की कला सिखाई जाती हो।

शिल्पशाला—स्त्री०[सं० ष० त० स०] कारखाना। शिल्पगृह।

शिल्पशास्त्र—पुं०[सं० मध्यम० स०]१. वह शास्त्र जिसमें दस्तकारियों का विवेचन होता है। २. वास्तुशास्त्र।

शिल्पिक—पुं०[सं० शिल्प+इनि+कन्]१. वह जो शिल्प द्वारा निर्वाह करता हो। कारीगर। शिल्पी। २. शिव का एक नाम। ३. नाटक का शिल्पक नामक भेद।

शिल्पिका—स्त्री० [सं० शिल्पिक—टाप्] एक प्रकार का तृण जो ओषधि रूप में काम आता है।

शिल्पिनी—स्त्री०[सं० शिल्पिन्—ङीप्]१. स्त्री शिल्पी।
२. एक प्रकार की घास।

शिल्पी (ल्पिन्)—पुं०[सं०]१.शिल्प सम्बन्धी काम करनेवाला व्यवित। शिल्पकार। कारीगर। २. मेमर। राज। ३. चित्रकार। ४. नखी नामक गन्ध-द्रव्य।

शिल्हक—पुं० दे० 'शिलारस'।

शिवंकर—पुं० [सं० शिव√कृ (करना)+खच्–मुम्] मंगल करनेवाले; शिव। २. शिव का एक गण। ३. एक असुर जो रोग फैलानेवाला कहा गया है। ४. एक प्रकार का बालग्रह। ५. तलवार।

शिवंसा—पुं० [सं० शिव+अंश] पैदावार या फसल का वह अंश जो शैव साधुओं के लिए अनाज काटने के समय पृथक् कर दिया जाता है।

शिव—वि० [सं०√शो (पतला करना)+वन् पृषो०] १. मांगलिक। शुभ। २. स्वस्थ तथा सुखी। ३. भाग्यवान्।
पुं० १. कल्याण। मंगल। २. हिन्दुओं के प्रसिद्ध देवता महादेव जो त्रिमूर्ति के अंतिम देवता तथा सृष्टि का संहार करनेवाले माने गये हैं। ३. देवता। ४. वेद। ५. लिंग जो शिव का चिह्न माना जाता है। ६. परमेश्वर। ७. महाकाल या रुद्र नामक देवता। ८. वसु। ९. मोक्ष। १०. शुभग्रह। ११. जल। पानी। १२. बालू। रेत। १३. फलित ज्योतिष में, विष्कंभ आदि सत्ताइस योगों में से एक योग। १४. एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में ५-६ के विश्राम से ११ मात्राएँ अंत में सगण, रगण, नगण में से कोई एक होती है। तीसरी, छठी और नवीं मात्राएँ लघु रहती हैं। १५. प्लक्ष द्वीप तथा जंबू द्वीप के एक वर्ष का नाम। १६. पारा। १७. सिन्दूर। १८. गुग्गुल। १९. पुंडरीक वृक्ष। २०. काला धतूरा। २१. आँवला। २२. कदंब। २३. मिर्च। २४. तिल का फूल। २५. चन्दन। २६. मौलसिरी। २७. लोहा। २८. फिटकरी। २९. सेंधा नमक। ३०. समुद्री नमक। ३१. सुहागा। ३२. नीलकंठ पक्षी। ३३. कौआ। ३४. एक प्रकार का मृग। ३५. गीदड़। ३६. खूंट। ३७. गुड़ की शराब। ३८. एक प्रकार का नृत्य।

शिवक—पुं० [सं० शिव+कन्] १. काँटा। कील। २. खूँटा।

शिवकर—पुं० [सं० शिव√कृ (करना)+अच्] चौबीस जिनों में से एक।

शिवकर्णी—स्त्री० [सं० ब० स०–ङीष्] कार्तिकेय की एक मातृका।

शिवकांची—स्त्री० [सं० ष० त० स०] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध तीर्थ।

शिव-कांता—स्त्री० [ष० त० स०] पार्वती।

शिवकारिणी—स्त्री० [सं० शिव√कृ (करना)+णिनि–ङीप्] मंगल करनेवाली, दुर्गा।

शिवकारी—वि० [शिव√कृ (करना) णिनि–दीर्घ, नलोप] [स्त्री० शिवकारिणी] १. कल्याण करनेवाला। २. शुभ।

शिव-कीर्तन—पुं० [सं० ष० त० स०] १. शिव का भजन तथा स्तुति। २. शिव का कीर्तन करनेवाला, शैव। २. विष्णु। ३. शिव के द्वारपाल।

शिवक्षेत्र—पुं० [सं० ष० त० स०] १. कैलास। २. काशी।

शिवगंगा—स्त्री० [सं० ष० त०] ऐसी नदी या जलाशय जो शिव के मंदिर के समीप हो।

शिव-गति—पुं० [सं० ब० स० वा] जैनों के अनुसार एक अर्हत् का नाम।
वि० १. सुखी। २. समृद्ध।

शिवगिरि—पुं० [सं० ष० त० स०] कैलास (पर्वत)।

शिव-चतुर्दशी—स्त्री० [मध्यभ० स०] १. फाल्गुन बदी चौदस जिस दिन शिवरात्रि का उत्सव मनाया जाता है। २. शिवरात्रि।

शिवता—स्त्री० [सं०] १. शिव का धर्म, पद या भाव। २. शिव-सायुज्य। मोक्ष। अमरता।

शिव-तीर्थ—पुं० [मध्य० स०] काशी।

शिवतेज (स्)—पुं० [सं० ष० त० स०] पारा। पारद।

शिवत्व—पुं० [शिव+त्व]=शिवता।

शिवदत्त—पुं० [सं० तृ० त० स०] विष्णु का चक्र।

शिव-दिशा—स्त्री० [सं० ष० त०] ईशान कोण जिसके स्वामी शिव हैं।

शिवदूती—स्त्री० [सं० ब० स०] १. दुर्गा। २. एक योगिनी।

शिव-दैव—पुं०[सं० ब० स०] आर्द्रा नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता देवता शिव हैं।

शिव-द्रुम—पुं० [सं० मध्यम० स०] बेल का पेड़ जिसकी पत्तियाँ भगवान शिव को चढ़ाई जाती हैं ।

शिवधातु—पुं०[सं० ष० त०स०] १. पारद। पारा । २. गोदंती नामक मणि ।

शिवनंदन—पुं० [सं० शिव√नन्द् (हर्षित करना)+ल्यु-अन] शिव जी के पुत्र, गणेश ।

शिवनाथ—पुं० [सं० कर्म० स०] शिव । महादेव ।

शिव-नाभि—पुं० [सं० ष० त०] एक प्रकार का शिव-लिंग जो अन्य शिव-लिंगों में श्रेष्ठ माना जाता है ।

शिवनामी—स्त्री० [सं०+हिं] वह चादर जिसपर शिव का नाम अनेक स्थानों पर छपा होता है तथा जिसे शिवभक्त ओढ़ते हैं।

शिवनारायणी (णिन्)—पुं० [सं० शिव-नारायण, द्व० स०–इनि] हिन्दुओं का एक संप्रदाय ।

शिव-निर्माल्य—पुं० [सं० ष० त० स०] १. शिव को अर्पित किया या चढ़ाया हुआ पदार्थ जिस का उपभोग वर्जित है। २. परम अग्राह्य वस्तु।

शिव-पीठिका—स्त्री० [सं० ष० त०] वह आधार जिस पर शिवलिंग स्थापित किया जाता है ।

शिवपुत्र—पुं० [सं० ष० त० स०] १. गणेश । २. कार्त्तिकेय । ३. पारा। पारद ।

शिवपुर—पुं० [सं० ब० त० स०] १. जैनों का स्वर्ग जहाँ वे मुक्ति का सुख भोगते हैं। मोक्ष-शिला । २. काशी।

शिवपुराण—पुं० [सं० मध्यम० स०] अठारह पुराणों में से एक पुराण जो शैव पुराण भी कहा जाता है और जिसमें शिव की महिमा बतलाई गई है।

शिवपुरी—स्त्री० [सं० ष० त० स०] काशी।

शिव-प्रिय—पुं० [सं० ष० त० स०] १. रुद्राक्ष। २. धतूरा। ३. भाँग। विजया। ४. अगस्त का पेड़। ५. बिल्लौर। स्फटिक।

शिव-प्रिया—स्त्री० [सं० ष० त० स० टाप्] दुर्गा।

शिव-बीज—पुं० [सं० ष० त० स०] पारा जो शिव जी का वीर्य कहा गया है।

शिवमल्लिका—स्त्री० [सं० शिवमल्ल+कन्–टाप्–इत्व] १. वसु नामक पुष्प वृक्ष। २. आक । मदार । ३ अगस्त का पेड़। ४. शिवलिंग। ५. श्रीवल्ली वृक्ष।

शिवमल्ली—स्त्री० [सं० शिवमल्ल–ङीष्] १. मौलसिरी। २. आक । मदार। ३. वक वृक्ष। ४. लिंगनी लता।

शिवमात्र—पुं० [सं० शिव+मात्रच्] बौद्धों के अनुसार एक बहुत बड़ी संख्या का नाम ।

शिवरंजनी—स्त्री० [सं० ष० त०] संगीत में एक प्रकार की रागिनी ।

शिवराजी—पुं० [हिं० शिव+राज] एक प्रकार का बहुत बड़ा कबूतर।

शिवरात्र—स्त्री०=शिवरात्रि ।

शिवरात्रि—स्त्री० [सं० मध्यम० स०] १. फाल्गुन बदी चतुर्दशी । (कहते हैं कि इसी रात्रि को शिव-पार्वती का विवाह हुआ था।) २. किसी चान्द्र मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी।

शिव-रानी—स्त्री० [सं०+हिं०] पार्वती ।

शिव-लिंग—पुं० [सं० ष० त० स०] लिंग के आकार का वह शिला-खंड जिसे महादेव जी की पिंडी मानकर पूजा जाता है। शिव की लिंग-मूर्ति।

शिवलिंगी—स्त्री० [सं० शिवलिंग–ङीष्] एक प्रकार की प्रसिद्ध लता। बिजगुरिया। पचगुरिया।

वि० शिव-लिंग संबंधी।

शिव-लोक—पुं० [सं० ष० त०] शिव जी का लोक, कैलास।

शिव-वल्लभा—स्त्री० [सं० ष० त०] १. दुर्गा। २. सेवती।

शिववल्ली—स्त्री०=शिवलिंगी।

शिव-वाहन—पुं० [सं० ष० त० स०] नंदी नामक बैल जिसकी सवारी शिव करते थे ।

शिव-वीर्य—पुं० [सं० ष० त० स०] पारा जो शिव जी का वीर्य कहा गया है।

शिव-वृषभ—पुं० [सं० ष० त० स०] शिव का बैल अर्थात् नंदी।

शिव-शंकरी—स्त्री०[सं०शिव शंकर–ङीप्,शिवशंकरी]देवी की एक मूर्ति।

शिव-शेखर—पुं० [सं० ब० स०, ष० त० स० वा] १. शिव का मस्तक ' २. धतूरा। ३. आक। मदार। ४. वक वृक्ष।

शिव-शैल—पुं० [सं० ष० त० स०] कैलास पर्वत।

शिव-सायुज्य—पुं०[सं० ष० त० स०] १. शिव का पद। मोक्ष। २. मृत्यु।

शिव-सुन्दरी—स्त्री० [सं० ष० त० स०] दुर्गा ।

शिवा—स्त्री० [सं० शिव-टाप्] १. पार्वती। २. दुर्गा। ३. मुक्ति। मोक्ष। ४. मादा गीदड़। गीदड़ी। ५. हर्रे। ६ सोआ नामक साग। ७ सफेद कीकर। शमी। ८. आँवला। ९. हल्दी १०. दूब। ११. गोरोचन। १२. श्यामा लता । १३. घी। १४. अनंतमूल । १५. एक बुद्धि-शक्ति ।

शिवाक्ष—पुं० [सं० ब० स०] रुद्राक्ष।

शिवाटिका—स्त्री० [सं० शिव√अट् (खोजना)+ण्वुल् अक–टाप्, इत्व] १. वंशपत्री नामक तृण। २. सफेद पुनर्नवा । ३. हिंगुपत्री। ४. कठूमर ।

शिवात्मक—पुं० [सं० ब० स०] सेंधा नमक।

शिवानंदी—पुं० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग ।

शिवानी—स्त्री० [सं० शिव-ङीष्–आनुक] १. दुर्गा । २. जयंती वृक्ष।

शिवा-प्रिय—पुं० [सं० ष० त० स०] १. शिव। २. बकरा जिसका शिवा अर्थात् दुर्गा के आगे बलिदान किया जाता है।

शिवा-बलि—पुं० [सं० चतु० त० स०] दुर्गा के निमित्त की जानेवाली बलि। (तंत्र)

शिवायतन—पुं० [सं ष० त० स०]=शिवालय ।

शिवारुत—पुं० [सं० ष० त० स०] गीदड़ के बोलने का शब्द जिससे शुभाशुभ शकुन का विचार किया जाता है।

शिवालय—पुं० [सं० ष० त० स०] १. ऐसा देवालय जिसमें शिव-लिंग

स्थापित हो। २. देव-मंदिर। (क्व०) ३. श्मशान। मरघट। ४. लाल तुलसी।

शिवाला—पुं० [सं० शिवालय] १. शिव जी का मंदिर। शिवालय। २. देव-मंदिर। (क्व०) ३. लोहारों, सुनारों आदि की भट्ठी।

शिवालु—पुं० [सं० शिव√अल् (पूरा होना)+उन्] शृगाल। सियार।

शिवि—पुं० [सं०√शि+वि गुणाभावः] १. एक प्रसिद्ध दानी राजा जो उशीनर के पुत्र और ययाति के नाती थे। प्रसिद्ध है कि ये कपोत (अग्नि) के रक्षार्थ बाज (इन्द्र) को अपने शरीर का सारा मांस देने के लिए उद्यत हो गये थे।

शिविका—स्त्री० [सं० शिव+णिच्–ण्वुल्–अक–टाप्–इत्व] पालकी। डोली।

शिविर—पुं० [सं०√शो (पतला करना)+किरच्, वुकच] १. खेमा। २. सैनिक पड़ाव। छावनी। ३. किला। दुर्ग। ४. आज-कल, वह स्थान जहाँ कोई बड़ा आदमी या दल कुछ समय के लिए ठहरा हो। पड़ाव। (कैम्प) ५. एक प्रकार का धान्य।

शिवीरथ—पुं० [सं० कर्म० स०] पालकी। शिविका।

शिवेतर—वि० [सं० पं० त० स०] जो शिव अर्थात् मांगलिक न हो। अमांगलिक। अशुभ।

शिवेश—पुं० [सं० ष० त० स०] शृगाल। गीदड़। सियार।

शिवेष्ट—पुं० [सं० ष० त० स०] १. अगस्त वृक्ष। २. बिल्व। बेल।

शिवेष्टा—स्त्री० [सं० शिवेष्ट-टाप्] दूब।

शिवोद्भव—पुं० [स० ब० स०] एक प्राचीन तीर्थ। (महाभारत)

शिवोपनिषद्—स्त्री० [सं० मध्यम० स०] एक उपनिषद् का नाम।

शिशन†—पुं०=शिश्न।

शिशिर—पुं० १. माघ और फाल्गुन की ऋतु। २. शीतकाल। जाड़ा। ३. हिम। पाला। ४. विष्णु। ५. एक प्रकार का अस्त्र। ६. सूर्य। ७. लाल चन्दन।

वि० [शश+किरच्–निपा०] १. बहुत अधिक ठंढा। २. ठंढ से जमा हुआ।

शिशिर-कर—पुं० [ब० स०] चन्द्रमा।

शिशिर-किरण—पुं० [ब० स०] चन्द्रमा।

शिशिरता—स्त्री० [सं० शिशिर+तल्–टाप्] १. शिशिर का भाव या धर्म। २. बहुत अधिक सर्दी।

शिशिर-मयूख—पुं० [ब० स०] चन्द्रमा।

शिशिर-रश्मि—पुं० [ब० स०] चन्द्रमा।

शिशिरांत—पुं० [सं० ष० त० स० ब० स० वा] शिशिर ऋतु के अंत में होनेवाली ऋतु अर्थात् वसंत।

शिशिरांशु—पुं० [सं० ब० स०] चन्द्रमा।

शिशिराक्ष—पुं० [सं० ब० स०] पुराणानुसार एक पर्वत जो सुमेरु के पश्चिम में कहा गया है।

शिशु—पुं० [सं० शो+कु सन्वद्भावोद्वित्त्वञ्च] [भाव० शिशुता, शैशव] १. बहुत ही छोटा बच्चा। (बेबी) २. सात-आठ वर्ष तक की अवस्था का बालक। (इन्फैन्ट) ३. पशुओं आदि का बच्चा। ४. कार्तिकेय का एक नाम।

शिशुक—पुं० [सं० शिशु+कन्] १. शिशुमार या सूँस नामक जल-जंतु। २. छोटा शिशु। ३. एक प्रकार का वृक्ष। ४. एक प्रकार का साँप।

शिशुकल्याण केंद्र—पुं० [ष० त० स०] छोटे बच्चों की देखभाल तथा कल्याण के उद्देश्य से बनाया हुआ स्थान। (चाइल्ड वेलफ़ेयर सेंटर)

शिशुकृच्छ्र—पुं० [सं० मध्यम० स०] एक प्रकार का चन्द्रायण व्रत जिसे शिशु चान्द्रायण या स्वल्प चान्द्रायण भी कहते हैं।

शिशु-गंध—स्त्री० [सं० ब० स] मल्लिका। मोतिया।

शिशु-चांद्रायण—पुं० [सं० मध्यम० स०] शिशुकृच्छ्र (दे०)।

शिशुता—स्त्री० [स० शिशु+तल्–टाप्] शिशु होने की अवस्था, धर्म या भाव।

शिशुताई†—स्त्री०=शिशुता।

शिशुत्व—पुं० [सं० शिशु+त्व]=शिशुता।

शिशुधानी—स्त्री० [सं० ष० त०] [वि० शिशुधानीय] कुछ विशिष्ट प्रकार के जंतुओं में पेट के आगे की वह थैली जिसमें वे अपने नव-जात बच्चे रखकर चलते हैं।

शिशुनाग—पुं० [सं० ब० स०] १. एक राक्षस का नाम। २. दे० 'शैशुनाग'।

शिशुपन—पुं०=शिशुता।

शिशुपाल—पुं० [सं० शिशु√पाल् (पालन करना)+अच्] चेदि देश का एक प्रसिद्ध राजा जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

शिशुमार—पुं० [सं० शिशु√मृ (मरना)+णिच्–अच्] १. सूँस नामक जलजंतु। २. एक नक्षत्र-मंडल जिसकी आकृति मगर या सूँस की तरह है। ३. कृष्ण। ४. विष्णु। ५. सौर जगत्।

शिशुमार-चक्र—पुं० [सं० मध्यम० स०] सौर जगत्।

शिश्न—पुं० [सं० शश+नक् नि०] पुरुष की जननेन्द्रिय। लिंग।

शिश्नोदरपरायण—वि० [सं० शिश्नोदरपर+फक्–आयन] कामुक (या लंपट) और पेटू।

शिश्नोदरवाद—पुं० [सं० शिश्नोदर√वद् (कहना)+अण्] वह वाद, मत, या संप्रदाय जिसका संबंध जननेंद्रिय और उदर से हो; जैसे—फ्रायड का काम सिद्धान्त या मार्क्स का समाजवाद। (व्यंग्य के रूप में)

शिष†—पुं०=शिष्य।

† स्त्री०=सीख (शिक्षा)।

शिषरी—पुं० [सं० शिष√रा (लेना)+क–इनि] अपामार्ग। चिचड़ा।

वि०=शिखरी (शिखर से युक्त)।

शिषा†—स्त्री०=शिखा।

शिषि†—पुं०=शिष्य।

शिषी†—पुं०=शिखी।

शिष्ट—वि० [सं०√शास्+क्त√शिष्+क्त] [भाव० शिष्टता] १. (व्यक्ति) जो एक सामाजिक प्राणी के रूप में दूसरों से सभ्यतापूर्ण तथा सौजन्यपूर्ण व्यवहार करता हो। २. धीर तथा शान्त। ३. बुद्धिमान्। ४. आज्ञाकारी। ५. प्रसिद्ध।

पुं० १. मंत्री। वजीर। २. सभासद्। सभ्य।

शिष्ट-कथ—वि० [सं० शिष्ट√कथ्+णिच्-अच्] शिष्टतापूर्वक बातचीत करनेवाला।

शिष्टता—स्त्री० [शिष्ट+तल्–टाप्] १. शिष्ट होने की अवस्था, गुण या भाव। २. शिष्ट आचरण। ३. उत्तमता। श्रेष्ठता। ४. अधीनता।

शिष्टत्व—पुं० [शिष्ट+त्व]=शिष्टता।

शिष्टमंडल—पुं० [सं० ष० त०] १. शिष्ट व्यक्तियों का दल। २. किसी विशिष्ट कार्य के लिए कहीं भेजा जानेवाला विशिष्ट व्यक्तियों का दल। (डेपुटेशन) जैसे—जापान या रूस से सांस्कृतिक सम्पर्क बढ़ाने के लिए भेजा जानेवाला शिष्ट-मंडल। ३. दे० 'प्रतिनिधिमंडल'।

शिष्ट-सभा—स्त्री० [सं० ष० त० स०] प्राचीन भारत की राज्यसभा या राज्यपरिषद्।

शिष्टाचार—पुं० [ष० त० स०] १. शिष्टतापूर्ण आचरण और व्यवहार। २. ऐसा आचरण जो साधारणतया एक सामाजिक प्राणी से अपेक्षित हो। ३. ऊपरी या दिखावटी सभ्य व्यवहार। ४. आवभगत। सत्कार।

शिष्टाचारी (रिन्)—पुं० [सं० शिष्टाचार+इनि शिष्ट-आ √चर (चलना)+णिनि वा] १. शिष्ट आचरण करनेवाला। २. सदाचारी। ३. विनम्र। ४. किसी समाज, संस्था, कार्यालय आदि द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार आचरण करनेवाला।

वि० शिष्टाचार-संबंधी।

शिष्टि—स्त्री० [सं०√शास् (अनुशासन करना)+क्तिन्] १. आज्ञा। आदेश। २. शासन। हुकूमत। ३. दंड। सजा। ४. सुधार। ५. सहायता।

शिष्ण—पुं०=शिश्न।

शिष्य—पुं० [सं०√शास् (अनुशासन करना)+क्यप्] [भाव० शिष्यता] १. वह जो शिक्षक से किसी प्रकार की शिक्षा पाता हो। विद्यार्थी। २. किसी की दृष्टि से वह व्यक्ति जिसने उससे विद्या सिखी हो। चेला। ३. वह जिसने किसी को अपना गुरु और आदर्श मानकर उससे कुछ पढ़ा या सीखा हो या उसके दिखलाये हुए मार्ग का श्रद्धापूर्वक अनुकरण किया हो। चेला। शागिर्द। (डिसाइपुल) ४. वह जिसने गुरु आदि से गुरुमंत्र लिया हो। चेला। ५. वह जो अभी हाल में श्रावक बना हो।

शिष्यता—स्त्री० [सं० शिष्य+तल्–टाप्] शिष्य होने की अवस्था या भाव। शिष्यत्व।

शिष्यत्व—पुं० [सं० शिष्य+त्व]=शिष्यता।

शिष्य-परंपरा—स्त्री० [सं० ष० त० स०] किसी गुरु के सम्प्रदाय की परम्परागत शिष्य-मंडली।

शिष्या—स्त्री० [सं० शिष्य-टाप्] एक प्रकार का वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात गुरु अक्षर होते हैं। शीर्षरूपक।

स्त्री० सं० शिष्य का स्त्री०।

शिस्त—स्त्री० [फा०] १. मछली पकड़ने का काँटा। बंसी। २. आघात आदि का लक्ष्य। निशाना।

क्रि० प्र०—बाँधना।—लगाना।

३. दूरबीन की तरह का एक प्रकार का यंत्र जिससे जमीन नापने के समय सीध आदि देखी जाती है। ४. अँगूठा।

शिस्तबाज—पुं० [फा०] १. शिस्त लगाकर मछली पकड़नेवाला। २. निशानेबाज।

शिह्लक—पुं० [सं० शिर+लक् नि० स्=श] शिलारस नाम का गंध द्रव्य।

शी—स्त्री० [सं०√ (शयन करना)+क्विप्] १. शांति। २. शयन। ३. भक्ति।

शीआ—पुं०=शीया।

शीकर—पुं० [सं०√शीक+करन्] १. पानी की बूंद। २. बहुत छोटी बूँदों के रूप में होनेवाली वर्षा। फुहार। ३. ओस। ४. वायु। ५. जाड़ा। ठंड। शीत। ६. गन्ध-बिरोजा। ७. धूप नामक गन्ध द्रव्य।

शीघ्र—अव्य० [सं० शिघि+रक् पृषो०] १. बिना विलंब किए। बिना अधिक समय बिताये। २. तत्क्षण। तुरंत।

पद—शीघ्र ही=कुछ ही समय बाद।

३. फुरती से।

शीघ्रकारी—वि० [सं० शीघ्र√कृ (करना)+णिनि; शीघ्रकारिन्] १. शीघ्र कार्य करनेवाला। काम करने में तेज। फुरतीला। २. शीघ्र प्रभाव दिखानेवाला। ३. उग्र। तीव्र।

पुं० एक प्रकार का सन्निपात ज्वर।

शीघ्रकोपी—वि० [सं० शीघ्र√कुप् (क्रोध करना)+णिनि] १. जल्दी गुस्सा होनेवाला। २. चिड़चिड़े स्वभाववाला।

शीघ्रग—वि० [सं० शीघ्र√गम् (जाना)+ड] तेज चलनेवाला। द्रुतगामी।

पुं० १. सूर्य। २. वायु। ३. खरगोश।

शीघ्रगामी (मिन्)—वि० [सं० शीघ्र√गम (जाना)+णिनि शीघ्रगामिन्] [स्त्री० शीघ्रगामिनी] तेज चलनेवाला।

शीघ्रता—स्त्री० [सं० शीघ्र+तल्–टाप्] १. वह स्थिति जिसमें जल्दी जल्दी कोई काम किया जाता है। जल्दी। २. तेजी। ३. जल्दबाजी। उतावलापन।

शीघ्रत्व—पुं० [सं० शीघ्र+त्व]=शीघ्रता।

शीघ्रपतन—पुं० [सं० ब० स०] स्त्री-सहवास के समय पुरुष के वीर्य का जल्दी स्खलित हो जाना।

शीघ्रवेधी—पुं० [सं० शीघ्र√विध् (वेधना)+णिनि] शीघ्रता से बाण चलाने या निशाना लगानेवाला। लघु-हस्त।

शीघ्रा—स्त्री० [सं० शीघ्र-टाप्] १. एक प्राचीन नदी। २. दंती वृक्ष।

शीघ्रिय—पुं० [सं० शीघ्र+घ–इय] १. शिव। २. विष्णु। ३. बिल्लियों की लड़ाई।

वि० १. शीघ्रगामी। २. तेज।

शीघ्री (घ्रिन्)—वि० [सं० शीघ्र+इनि] १. शीघ्रकारी। २. शीघ्रगामी। ३. तुरंत उच्चारण करनेवाला।

शीघ्र्य—पुं० [सं० शीघ्र+यत्]=शीघ्रता।

शीत—वि० [√श्यै (स्पर्श करना)+क्त] १. ठंढा। शीतल। २. शिथिल। सुस्त।

पुं० १. जाड़ा। ठंढ। सरदी। २. जाड़े का मौसम। ३. जुकाम। प्रतिश्याय। ४. कपूर। ५. दालचीनी। ६. बेंत। ७. लिसोड़ा। ८. नीम। ९. ओस। १०. कोहरा। तुषार। ११. पित्तपापड़ा। १२. एक प्रकार का चंदन। १३. जल। पानी।

शीतक—वि० [शीत√कृ (करना)+ड] १.ठंढ या ठंढक उत्पन्न करनेवाला। २. आलसी।

पुं० [सं० शीत√कृ (करना)+ड] १. शीतकाल। जाड़े का मौसम। २. बिच्छू। ३. बन-सनई। ४. एक प्रकार का चन्दन। ५. शीत विशेषतः ठंढक उत्पन्न करनेवाला एक यंत्र जिससे गर्मी के दिनों में कमरे ठंढे रख जाते हैं। (कूलर)

शीत कटिबंध—पुं० [सं० ब० स०] भूगोल में पृथ्वी के वे कल्पित विभाग जो भूमध्यरेखा से २३½ अंश उत्तर के बाद और २३½ अंश दक्षिण के बाद पड़ते हैं और जिनमें अपेक्षया अधिक सरदी पड़ती है। (फ़रीज़िड ज़ोन)

शीतकर—पुं० [सं० ब० स०] १. ठंढी किरणोंवाला, अर्थात् चंद्रमा। २. कपूर।

वि० ठंढा या शीतल करनेवाला।

शीत-काल—पुं० [सं० ष० त०] १. हेमंत ऋतु। २. सरदी के दिन। जाड़े का मौसम।

शीत-किरण—वि० [सं० ब० स०] शीतल किरणोंवाला।

पुं० चंद्रमा।

शीत किरणी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

शीत-कृच्छ्र—पुं० [सं० मध्यम० स०] मिताक्षरा के अनुसार एक प्रकार का व्रत।

शीतक्षार—पुं० [सं० कर्म० स०] शुद्ध सुहागा।

शीतगंध—पुं० [सं०ब० स०] चंदन। संदल।

शीतगात्र—पुं० [सं० ब०स०] शरीर के ठंढे पड़ने का एक रोग।

शीतगु—पुं० [सं० ब० स०] १. चन्द्रमा। २. कपूर।

शीतचंपक—पुं० [सं०] १. दर्पण। शीशा। २. दीपक। दीआ।

शीत-च्छाय—वि० [ब० स०] जिसकी छाया शीतल हो।

पुं० बड़ का पेड़, जिसकी छाया ठंढी होती है।

शीत-ज्वर—पुं० [सं० मध्य० स०] जाड़ा देकर आनेवाला बुखार। विषम ज्वर। जूड़ी।

शीत-तरंग—स्त्री० [सं०] १. शीतकाल में सहसा तापमान के गिरने से होनेवाली ऐसी उग्र ठंढ जिसमें हाथ-पैर गलने लगते हैं। २. किसी दिशा में बढ़नेवाली शीत की वह तरंग जिससे दो-चार दिनों के लिए सरदी बहुत बढ़ जाती है। (कोल्ड वेव)

शीतता—स्त्री० [सं० शीत+तल्–टाप्] १. शीत का भाव या धर्म। शीतत्व। ठंढापन। २. सरदी।

शीतत्व—पुं० [सं० शीत+त्व]=शीतता।

शीतवंत—पुं० [सं० ब० स०] एक रोग जिसमें ठंढी हवा तथा ठंढा पानी दाँतों में लगने के फलस्वरूप पीड़ा होती है।

शीत-दीधिति—पुं० [सं० ब० स०] चन्द्रमा जिसकी किरणें शीतल होती हैं।

शीतद्युति—पुं० [सं० ब० स०] चन्द्रमा।

शीतन—पुं० [सं०] [भू० कृ० शीतित] ठंढा करने की क्रिया या भाव। (कूलिंग)

शीतपर्णी—स्त्री० [सं० ब० स०] अर्कपुष्पी।

शीतपाकी—स्त्री० [सं० ब० स०] १. काकोली नामक अष्टवर्गीय ओषधि। २. घुँघची। ३. अतिबला। ककही।

शीतपित्त—पुं० [सं० ब० स०] शीतकाल में होनेवाला एक प्रकार का रोग जिसमें अचानक सारे शरीर में छोटे छोटे चकत्ते निकल आते हैं और उनमें बहुत तेज खुजली होती है। जुड़-पित्ती। (युरिकेरिआ)

शीतपुष्प—पुं० [सं० ब० स०] १. छरीला। शैलेय। २. केवटी मोथा। ३. सिरिस का पेड़।

शीतपुष्पा—स्त्री० [सं० शीतपुष्प—टाप्] ककही। अतिबला।

शीत-पूतना—स्त्री० [सं० मध्यम० स०] भावप्रकाश के अनुसार एक प्रकार का बालग्रह या बालरोग।

शीतप्रभ—पुं० [सं० ब० स०] १. चन्द्रमा। २. कपूर।

शीतफल—पुं० [सं० ब०स०] १. गूलर। २. पीलू। ३. अखरोट। ४. आँवला। ५. लिसोड़ा।

शीतभानु—पुं० [सं० ब० स०] चन्द्रमा।

शीत-मयूख—पुं० [सं० ब० स०] १. चन्द्रमा। २. कपूर।

शीत-मरीचि—पुं० [सं० ब० स०] १. चन्द्रमा। २. कपूर।

शीत-मेह—पुं० [सं० मध्यम० स०] एक प्रकार का प्रमेह रोग।

शीतमेही (हिन्)—पुं० [सं०शीतमेह+इनि] वह जिसे शीत-मेह रोग हो।

शीतयुद्ध—पुं० [सं मध्य० स०] राष्ट्रों के पारस्परिक व्यवहार में वह स्थिति जिसमें प्रत्यक्ष रूप से युद्ध तो नहीं होता, फिर भी प्रत्येक राष्ट्र अपने आपको प्रभावशाली तथा सशक्त बनाने के लिए ऐसी राजनीतिक चालें चलता है जिनके कारण दूसरे राष्ट्रों के सामने बड़ी बड़ी उलझनें खड़ी हो जाती हैं। (कोल्ड वार)

शीत-रश्मि—पुं० [सं० ब० स०] १. चन्द्रमा। २. कपूर।

शीत-रस—पुं० [सं० ब० स०] प्राचीन भारत में, ईख के कच्चे रस की बनी हुई एक प्रकार की मदिरा।

शीतरुच—पुं० [सं० ब०स०] चन्द्रमा।

शीतरुह—पुं० [सं० ब० स०] सफेद कमल।

शीतल—वि० [सं० शीत√ ला+क] १. शीत उत्पन्न करनेवाला। सर्द। ठंढा। 'उष्ण' का विपर्याय। २. जिसमें कुछ कुछ ठंढक हो। जैसे—शीतल समीर। ३. जो शीतलता या ठंढक प्रदान करता हो। ४. जिसमें आवेश न हो। शांत। ५. प्रसन्न। ६. संतुष्ट।

पुं० १. कसीस। २. छरीला। ३. चन्दन। ४. मोती। ५. उशीर। खस। ६. बनसनई। ७. लिसोड़ा। ८. चंपा। ९. राल। १०. पद्मकाठ। ११. पीत चंदन। १२. भीमसेनी कपूर। १३. शाल वृक्ष। १४. हिम। १५. मटर। १६. चन्द्रमा। १७. जैनों का एक प्रकार का व्रत।

शीतलक—पुं० [सं० शीतल√कन्] १. मरुआ। मरुवक। २. कुमुद।

वि० शीतल करनेवाला।

शीतल-चीनी—स्त्री० [सं० शीतल+हिं० चीनी] कबाब चीनी।

शीतलच्छाय—वि० [सं० ब० स०]=शीतच्छाय।

शीतलता—स्त्री० [सं० शीतल+तल्—टाप्] १. शीतल होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। २. जड़ता।

शीतलताई†—स्त्री०=शीतलता।

शीतलत्व—पुं० [सं० शीतल+त्व]=शीतलता।

शीतल-पाटी—स्त्री० [सं०+हिं०] एक प्रकार की चिकनी, पतली और बढ़िया चटाई।

शीतल भंडार--पुं०[सं० ब० स०]१. विशेष प्रकार से निर्मित तथा यंत्रों आदि से संचालित वह भंडार गृह जिसका तापमान कृत्रिम रूप से कम कर दिया जाता है तथा जिसके फल स्वरूप उसमें रखी हुई चीज़ें ताप के कुप्रभाव से सुरक्षित रहती हैं। ठंढा गोदाम। (कोल्ड स्टोरेज) २. शीतागार। सर्दखाना।

शीत-लहरी—स्त्री०[सं०]=शीत तरंग। (देखें)

शीतला--स्त्री०[सं० शीतल--टाप्]१. एक प्रसिद्ध रोग जिसमें शरीर पर दाने या फफोले निकल आते हैं। २. उक्त की अधिष्ठात्री देवी। ३. नीली दूब। ४. अर्क पुष्पी।

शीतला-वाहन--पुं०[ष० त० स०] गधा, जो शीतला देवी का वाहन कहा गया है।

शीतला-षष्ठी--स्त्री० [ष० त०] माघ शुक्ला षष्ठी जो शीतला देवी के पूजन की तिथि कही गई है।

शीतलाष्टमी—स्त्री० [सं० ष० त० स०] चैत्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी जो शीतलादेवी के पूजन की तिथि कही गई है।

शीतली—स्त्री०[सं० शीतल-ङीप्]१. जल में होनेवाला एक प्रकार का पौधा। २. श्रीवल्ली। ३. चेचक या शीतला नामक रोग।

शीतवल्ली--स्त्री०[सं० ब० स०] नीली दूब।

शीतवासा--स्त्री०[सं० ब० स०] जूही। यूथिका।

शीत-वीर्य--पुं० [सं० ब० स०]१. पदुम काठ। २. पाषाण-भेद नामक वनस्पति। ३. पित्त-पापड़ा। ४. पाकर वृक्ष। ५. नीली दूब। ६. बच।

वि० (पदार्थ) जो खाने पर शरीर में ठंढक लाता हो। ठंढी तासीर वाला।

शीत-शिव--पुं०[सं० कर्म० स०] १. सेंधा नमक। २. छरीला। पत्थर-फूल। ३. सोआ नामक साग। ४. शमी वृक्ष। ५. कपूर।

शीतशिवा--स्त्री०[सं० शीत-शिव-टाप्]१. शमी वृक्ष। २. सौंफ।

शीतशूक—पुं०[सं० ब० स०] जौ। यव।

शीत-संग्रह—पुं०[सं० ष० त० स०]=शीतल भंडार।

शीत-सन्निपात—पुं० [सं० मध्यम० स०] एक प्रकार का सन्निपात जिसमें शरीर सुन्न और ठंढा हो जाता है।

शीत-सह—पुं०[सं० शीत√सह (सहन करना)+अच्] पीलू। झल्ल वृक्ष।

वि० जिसमें शीत अर्थात् ठंढ या सरदी सहने की विशेष क्षमता हो।

शीत-सहा—स्त्री०। [सं० शीतसह-टाप्] १. शेफालिका। २. नेवारी। ३. मोतिया। बेला। ४. चमेली। ५. पीलू वृक्ष।

शीत-सीमांत--पुं० दे० 'शीताग्र'।

शीतांग--पुं०[सं० ब० स०] शीत सन्निपात।

वि० ठंढे अंगोंवाला।

शीतांगी—स्त्री० [सं० शीतांग—ङीप्] हंसपदी लता।

शीतांशु--पुं० [सं० ब० स०] १. चन्द्रमा। २. कपूर।

शीता—स्त्री० [सं० शीत—टाप्] १. सरदी। ठंढ। २. एक प्रकार की दूब। ३. शिल्पिका नामक घास। ४. अमलतास।

शीतागार—पुं० [सं०]=शीतल भंडार।

शीताग्र—पुं०[सं०ष० त०] किसी ओर से आनेवाली शीतल वायु की धारा का वह अग्र भाग जो गरम वायु के सामने आ पड़ने के कारण कुछ नीचे दब जाता है और शीत की हलकी तह के रूप में किसी प्रदेश के ऊपर से होता हुआ आगे बढ़ता है। (कोल्ड फ्रन्ट)

विशेष--जब यह शीताग्र किसी प्रदेश के ऊपर से होकर गुजरता है तब उस प्रदेश में तापमान और वायुभार गिर जाता है, आँधी आती और वर्षा होती है।

शीतातप—पुं० [सं० द्व० स०] शीत और आतप दोनों। जाड़ा और गरमी।

शीताद--पुं० [सं० शीत-आ√दा (देना) +का] एक प्रकार का रोग जिसमें मसूड़ों से दुर्गंध निकलने लगती है।

शीताद्रि—पुं० [सं० मध्यम० स०] हिमालय पर्वत।

शीताद्य— पुं० [सं० शीताद+यत्] शीतज्वर। जूड़ी बुखार।

शीताभ—पुं० [सं० ब० स०]१. चन्द्रमा। २. कपूर।

शीतालु—वि०[सं० शीत+आलुच्]१. शीत के फलस्वरूप जो काँप रहा हो। २. शीत से संत्रस्त।

शीताश्म (मन्)—पुं०[सं० कर्म० स०] चंद्रकांत मणि।

शीतोदक—पुं०[सं० ब० स०] एक नरक का नाम।

शीतोष्ण--वि०[सं० द्व० स०] १. ठंढा और गरम। २. कुछ कुछ ठंढा और कुछ कुछ गरम।

शीतकार—पुं०=सीत्कार।

शीधु—पुं०[सं० शी+धुक्] मदिरा। शराब। विशेषतः ऊख के रस को सड़ाकर बनाई जानेवाली शराब।

शीन--वि०[सं० √ श्यै (गमनादि)+क्त-संप्रसा० त=न] १. मूर्ख। २. जमा हुआ।

पुं०=अजगर।

पुं०[अ०]१. अरबी-फारसी वर्णमाला का एक वर्ण जिसका उच्चारण तालव्य 'श' का सा होता है। २. उक्त वर्ण का सूचक लिपिचिह्न।

मुहा०--शीन काफ दुरुस्त होना=शब्दों के ठीक उच्चारण का उचित ज्ञान होना।

शीर—पुं०[सं० क्षीर से फा०] दूध।

पुं०[सं०] अजगर।

वि० नुकीला।

शीरखिस्त—पुं०[फा०] एक प्रकार की यूनानी रेचक ओषधि।

शीरखोरा—वि० [फा० शीरख्वार] (बालक) जो अभी अपनी माँ का दूध पीता हो।

शीरगर्म–वि० [फा०] (तरल पदार्थ) जो उबलता हुआ न हो, बल्कि साधारण गर्म हो। उतना ही गरम जितना पीने योग्य दूध होता है।

शीरमाल—पुं०[फा०] एक प्रकार की मीठी रोटी जिसे पकाते समय दूध का छींटा दिया जाता है।

शीरा—पुं०[फा० शीरः] गुड़, चीनी, मिसरी आदि के घोल को उबालकर तैयार की हुई चाशनी।

शीराज—पुं० [फा०] एक प्रसिद्ध ईरानी नगर।

शीराजा—पुं० [फा० शीराजः]१. वह फीता जो किताबों की सिलाई की छोर पर शोभा और मजबूती के लिए लगाया जाता है। २. इन्तजाम। प्रबन्ध। व्यवस्था। ३. क्रम। सिलसिला। ४. कपड़ों की सिलाई। सीयन।

क्रि० प्र०—खुलना।—टूटना।

शीराज़ी—वि०[फा०] शीराज का।

पुं०१. शीराज का निवासी। २. एक प्रकार का कबूतर।

शीरीं—वि०[फा०] १. मधुर। मीठा। २. प्रिय। रुचिकर।

शीरी—पुं०[सं० शीर+इनि]१. कुश। कुशा। २. मूंज। ३. कलिहारी। लांगली।

शीरीनी—स्त्री० [फा०] १. मिठास। मधुरिमा। २. मिठाई। मिष्ठान्न। ३. गुरु, देवता, पीर आदि के सामने आदरपूर्वक रखी जानेवाली मिठाई।

क्रि० प्र०—चढ़ाना। बाँटना।

शीर्ण—भू० कृ०[सं० √ शॄ (टुकड़े होना)+क्त] [भाव० शीर्णता] १. खंड-खंड। टुकड़े-टुकड़े। २. गिरा हुआ। च्युत। ३. टूटा या फटा हुआ और फलतः बहुत पुराना। ४. कुम्हलाया या मुरझाया। हुआ। ५. दुबला-पतला। कृश।

पुं० थुनेर नामक गन्ध द्रव्य।

शीर्णता—स्त्री०[शीर्ण+तल्—टाप्] शीर्ण होने की अवस्था या भाव।

शीर्णत्व—पुं०[शीण+त्व]=शीर्णता।

शीर्णपत्र—पुं० [सं० ब० स०] १. कर्णिकार। कनियारी। २. पठानी लोध। ३. नीम।

शीर्णपर्ण—पुं०[सं० ब० स०] निंब। नीम।

शीर्णपाद—पुं० [सं० ब० स०] यमराज।

शीर्णपुष्पी—स्त्री० [सं० शीर्णपुष्प—ङीप्] सौंफ।

शीर्ति—पुं०[सं०√शॄ (टुकड़े करना)+क्तिन्] तोड़ने-फोड़ने की क्रिया। खंडन।

शीर्य—वि०[सं० शॄ (खंड करना)+ क्विप्-यत्] १. जो तोड़ा-फोड़ा जा सके। २. भंगुर। नाशवान्।

पुं० एक प्रकार की घास।

शीर्ष—पुं०[शिरस् -शीर्ष पृषो० √शॄ+क, सुक् वा] १. किसी चीज का सबसे ऊपरी तथा उन्नत सिरा। २. सिर। ३. मस्तक। ललाट। ४. काला अगर। ५. एक प्रकार की घास। ६. एक प्राचीन पर्वत। ७. ज्यामिति में वह विंदु जिस पर दो ओर से दो तिरछी रेखाएँ आकर मिलती हों। (वर्टेक्स) ८. खाते में किसी मद का नाम। (हेड)

शीर्षक—पुं०[सं० शीर्ष√कै (होना)+क] १. सिर। २. मस्तक। माथा। ३. ऊपरी भाग। चोटी। ४. सिर की हड्डी। ५. टोपी आदि शिरस्त्राण। ६. लेखों आदि के ऊपर दिया जानेवाला उनका ऐसा नाम जिससे उनके विषय का कुछ परिचय मिलता हो। (हेडिंग) ७. राहु ग्रह।

शीर्ष-कोण—पुं० [सं० मध्य० स०] ज्यामिति में, किसी आकृति का वह कोण जो तल के ठीक ऊपरी भाग में खड़े बल में होता है। (वर्टिकल एंगिल)

शीर्ष-नाम—पुं०[सं० मध्य० स०] लेख्य, विधान आदि का वह पूरा नाम जो उसके आरम्भ में विशेषतः मुख-पृष्ठ पर रहता है।

शीर्ष-पट—पुं० [सं० ष० त० स०] सिर पर लपेटा जानेवाला वस्त्र अर्थात् पगड़ी या साफा।

शीर्ष-रक्ष—पुं०[शीर्ष√ रक्ष् (रक्षा करना)+अण्] शिरस्त्राण।

शीर्ष-रेखा—स्त्री० [सं० मध्य० स०] १. किसी वर्ण के ऊपरवाली रेखा या लकीर। २. देव-नागरी लिपि में चिह्नों के ऊपर की सीधी बेड़ी रेखा।

शीर्ष-विंदु—[सं० ष० त० स०] १. आँख का मोतिया-विंद नामक रोग। २. दे० 'शिरोविंदु'।

शीर्ष-स्थान—पुं० [सं० मध्य० स०]१. सबसे ऊँचा स्थान। २. सिर।

शीर्षण्य—पुं०[सं० शीर्ष+यत्—शीर्षन्] १. टोपी। २. सिरके साफ और सुलझे बाल। ३. खाट या चारपाई का सिरहाना। ४. पगड़ी। साफा।

शीर्षासन—पुं०[सं० शीर्ष+आसन] हठयोग, व्यायाम आदि में एक प्रकार का आसन या मुद्रा जिसमें सिर नीचे और पैर ऊपर करके सीधे खड़ा हुआ जाता है।

शीर्षोदय—पुं०[सं० ष० त० स०] मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुंभ और मीन राशियाँ जिनका उदय शीर्ष की ओर से होना माना गया है।

शील—पुं०[सं० √शील (अभ्यास)+अच्]१. मनुष्य का नैतिक आचरण और व्यवहार; विशेषतः उत्तम और प्रशंसनीय या शुभ आचरण और व्यवहार। (डिस्पोजीशन)

विशेष—शील वस्तुतः मनुष्य की प्रकृति और व्यक्तित्व से संबद्ध होता है, और इसी लिए कहीं कहीं यह स्वभाव के पर्याय के रूप में भी प्रयुक्त होता है। यह प्रायः सुनिश्चित और अस्थायी या स्थिर भी होता है। यह स्वभाव के चारित्रिक पक्ष या रूप में होता है; इसीलिए इसे देह-स्वभाव भी कहते हैं।

मुहा०—शील निभाना=(क) सद्-व्यवहार में अंतर न आने देना। (ख) किसी के द्वारा अनिष्ट होने पर भी उसका अनिष्ट न करना। **(किसी स्त्री का) शील भंग करना**=किसी स्त्री के साथ व्यभिचार करके उसका सतीत्व नष्ट करना।

३. हमारे मन की वह सद्भावना पूर्ण वृत्ति जो विकट प्रसंग आने पर भी हमें उग्र, उद्धत या कटु नहीं होने देती और जो हमारी विनम्रता, शिष्टता आदि की सूचक होती है। (माडेस्टी)

विशेष—यह वृत्ति बहुत कुछ अर्जित होती और शिक्षा तथा शिष्ट समाज के संपर्क से प्राप्त होती है।

३. वह मानसिक वृत्ति जिसमें लज्जा और संकोच की प्रधानता होती है, और इसी लिए उचित अवसरों पर भी प्रायः कोई बात नहीं कहने देती। मुरौवत।

मुहा०—शील तोड़ना=मुरौवत न करना या न रखना।

शीलन—पुं०[सं०√शील् (अभ्यास करना)+ल्युट्—अन]१. अभ्यास। २. विवेचना। ३. प्रवर्तन। ४. धारण करना। ५. ग्रहण करना।

शीलवान्—वि० [सं० शील+मतुप्—म=व-नुम् शीलवत्] [स्त्री० शीलवती] १. उत्तम शीलवाला। २. शीलों का पालन करनेवाला। (बौद्ध)

शीलींध्र—पुं०[सं० शिली √धृ (रखना)+क पृषो० मुम्]१. केले का फूल। २. ओला। ३. कुकुरमुत्ता। ४. शिलिंद मछली।

शीश—पुं० दे० 'शीर्ष'।

शीश-तरंग—पुं० [हिं० शीश+सं० तरंग] जलतरंग की तरह का एक

बाजा। जिसमें दो पटरियों पर शीशे के छोट-बड़े बहुत से टुकड़े जड़े होते हैं। इन्हीं शीशों पर आघात करने से अनेक प्रकार के स्वर निकलते हैं।

शीशम—पुं०[सं० शिंशिपा से फा०] एक प्रकार का पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत बढ़िया होती है और इमारत तथा मेज, कुरसियाँ आदि बनाने के काम आती है।

शीश-महल—पुं०[फा० शीश+अ० महल] १. शीशे का बना हुआ मकान। २. वह कमरा या कोठरी जिसकी दीवारों में सर्वत्र शीशे जड़े हों।

पद—शीशमहल का कुत्ता=ऐसा व्यक्ति जो उस कुत्ते की तरह घबराया या बौखला गया हो जो शीशमहल में पहुँचकर अपने चारों ओर कुत्ते ही कुत्ते देखकर घबरा या बौखला जाता है।

शीशा—पुं० [फा०] १. एक प्रसिद्ध कड़ा और भंगुर पदार्थ जो बालू, रेह या खारी मिट्टी को आग में गलाने से बनता है, और जिससे अनेक प्रकार के पात्र, दर्पण आदि बनते हैं। २. उक्त का वह रूप जिसमें ठीक ठीक प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। आईना। दर्पण।

पद—शीशा-बाशा=बहुत नाजुक चीज।

मुहा०—शीशे में मुँह तो देखो=पहले अपनी पात्रता या योग्यता तो देखो। (व्यंग्य)

३. उक्त पदार्थ का बना हुआ वह पात्र जिसमें प्राचीन काल में शराब रखी जाती थी।

पद—शीशे का देव=शराब।

मुहा०—शीशे में उतारना= (क) भूत, प्रेत आदि को मंत्र बल से बाँधकर शीशे के पात्र में बन्द करना। (ख) किसी को अपनी ओर आकृष्ट या अनुरक्त करके अपने वश में करना।

४. झाड़, फानूस आदि काँच के बने सजावट के सामान। ५. लाक्षणिक अर्थ में बहुत ही चिकनी तथा चमकीली वस्तु।

शीशागर—पुं०[फा०] [भाव० शीशागरी] शीशे बनानेवाला कारीगर।

शीशागरी—स्त्री० [फा०] शीशे की चीजें बनाने का काम तथा हुनर।

शीशी—स्त्री० [फा० शीशा] काँच की लम्बी कुप्पी। बोतल के आकार का छोटा पात्र।

मुहा०—शीशी सुँघाना=अस्त्र चिकित्सा करने से पहले एक खास दवा सुँघाकर रोगी को इसलिए बेहोश करना कि चीर-फाड़ से उसे कष्ट या पीड़ा न हो।

शुंग—पुं०[सं० शम्+ग, अ=उ] १. वट वृक्ष। बरगद। २. आँवला। ३. पाकड़। ४. वृक्षों आदि का नया पत्ता। ५. फूल के नीचे की कटोरी। ६. एक क्षत्रिय राजवंश जिसने मौर्यों के उपरांत मगध पर शासन किया था।

शुंगी (गिन्)—पुं०[सं० शुंग+इनि शुङ्गिन्] १. पाकर। पाकड़ का पेड़। २. वट-वृक्ष। बरगद।

शुंठी—स्त्री०[सं० शुंठ—ङीप्] सोंठ।

शुंड—पुं०[सं० शुन्+ड] १. हाथी का सूँड़। २. हाथी का मद। ३. एक तरह की शराब।

शुंडक—पुं०[सं० शुंड+कन्] १. एक प्रकार की रणभेरी। २. शौंडिक।

शुंडा—स्त्री०[सं० शंड—टाप्] १. सूँड़। २. शराबखाना। हौली। ३. मदिरा। शराब। ४. रंडी। वेश्या। ५. कुटनी।

शुंडा-दंड—पुं०[सं० उपमि० स०] हाथी का सूँड़।

शुंडार—पुं०[सं० शुंडा+र] १. हाथी की सूँड़। २. साठ वर्ष की अवस्था का हाथी। ३. कलवार।

शुंडाल—पुं० [सं० शुंडा+लच्] हाथी।

शुंडिक—पुं०[सं० शुंडा+ठक्—इक] १. वह जो शराब बनाने का व्यवसाय करता हो। २. शराब बनानेवाली एक जाति। ३. मद्य बिकने का स्थान। मद्यशाला।

शुंडिका—स्त्री०[सं० शुंडिक—टाप्] गले के अन्दर की घाँटी। अलिजिह्वा। ललरी। घाँटी।

शुंडी—पुं०[सं० शुंड+अच्—ङीष् शुंडिन्] १. हाथी। २. कलवार। शौंडिक।

स्त्री० १. हाथी सूँड़ी नाम का पौधा। २. गले के अन्दर की घाँटी। कौआ।

शुंभ—पुं० [सं० √शुंभ् (दीप्त होना आदि)+अच्] प्रह्लाद का पौत्र एक असुर जिसे दुर्गा ने मारा था।

शुंभ-मर्दिनी—स्त्री०[शुंभ√मृद् (मर्दन करना)+णिनि—ङीप्] दुर्गा।

शुक—पुं० [√शुक् (गमनादि)+क] १. तोता। सुग्गा। २. शुकदेव मुनि। ३. कपड़ा। वस्त्र। ४. पहने हुए कपड़े का आँचल। ५. पगड़ी। साफा। ६. सिरिस का पेड़। ७. लोध। ८. सोनापाठा। ९. भड़-भाँड़। १०. तालीश पत्र। ११. एक प्रकार की गठिवन।

शुक-कीट—पुं०[सं० उपमि० स०] हरे रंग का एक प्रकार का फतिंगा जो प्रायः खेतों में उड़ता फिरता है।

शुक-कूट—पुं०[सं० ष० त० स०] दो खंभों के बीच में शोभा के लिए लटकाई हुई माला।

शुकच्छद—पुं०[सं० ष० त० स०] १. तोते का पर। २. गठिवन। ३. तेजपत्ता।

शुकतरु—पुं०[सं० मध्य० स०] शिरीष (वृक्ष)।

शुकतुंड—पुं०[सं० ष० त० स०] १. तोते की चोंच। २. हाथ की एक मुद्रा जो तांत्रिक पूजन के समय बनाई जाती है।

शुकतुंडी—स्त्री० [सं० शुक-तुंड—ङीप्] सूआठोंठी नामक पौधा।

शुकदेव—पुं०[सं० मध्यम० स०] कृष्ण द्वैपायन व्यास के पुत्र जो पुराणों के बहुत बड़े वक्ता और ज्ञानी थे।

शुकद्रुम—पुं०[सं० मध्य० स०] शिरीष वृक्ष।

शुकनलिकान्याय—पुं० [सं० ष० त० मध्य० स०] एक प्रकार का न्याय। जिस प्रकार तोता फँसाने की नली में लोभ के कारण फँस जाता है, वैसे ही फँसने की क्रिया या भाव।

शुकनास—पुं० [सं० ब० स०] १. केवाँच। कौंछ। २. गंभारी। ३. नलिका नामक गंध-द्रव्य। ४. श्योनाक। सोना-पाढ़ा। ५. अगस्त का पेड़।

शुकपुष्प—पुं०[सं० ब० स०] १. थुनेर। २. सिरिस का पेड़। ३. गन्धक। ४. अगस्त का पेड़।

शुकप्रिय—वि०[सं० ष० त०] तोते को प्रिय लगनेवाला।

पुं० १. सिरिस का पेड़। २. कमरख।

शुकप्रिया—स्त्री०[सं० शुकप्रिय—टाप्]१. नीम। २. जामुन।

शुक-फल—पुं०[सं० ब० स०] १. आक। मदार। २. सेमल।

शुक-वाहन—वि०[सं० ब० स०] जिसका वाहन शुक हो।

पुं० कामदेव।

शुकशिबा, शुकशिबि—स्त्री० [सं० उपमि० स०] कपिकच्छु। केवाँच। कौंछ।

शुकशीर्षा—स्त्री० [सं० ब० स०] १. थुनेर। २. तालीश पत्र। ३. तेजपत्ता।

शुकाबन—पुं०[सं० शुक√अद्(खाना)+ल्युट्—अन] अनार। दाड़िम।

शुकायन—पुं०[सं० ब० स०]१. गौतम बुद्ध। २. अर्हत्।

शुकी—स्त्री०[सं० शुक्—ङीप्] १. तोते की मादा। तोती। सुग्गी। २. कश्यप मुनि की पत्नी का नाम।

शुकेष्ट—पुं०[सं० ष० त० स०] शिरीष वृक्ष।

शुकोदर—पुं०[सं० ब० स०] तालीश पत्र।

शुकोह—पुं०[फा०] दे० 'शिकोह'।

शुक्त—भू० कृ०[सं० √ शुच् (शोक करना)+क्त] [भाव० शुक्ति] १. स्वच्छ। निर्मल। २. खट्टा। अम्लीय। ३. कड़ा। ४. खुरदरा। ५. अप्रिय। ६. उजाड़। ७. निर्जन। ८. मिला हुआ। मिश्रित। ९. श्लिष्ट।

पुं०१. अम्लता। खटाई। २. सड़ाकर खट्टी की हुई चीज। खमीर। ४. काँजी। ५. सिरका। ६. चुक नाम की खटाई। ७. गोश्त। मांस। ८. अप्रिय और कठोर बात।

शुक्ता—स्त्री०[सं० शुक्त—टाप्] १. चुक का पौधा। २. काँजी।

शुक्ति—स्त्री० [सं० √ शुच् (शोकादि)+क्तिन्]१. सीप। सीपी। २. सुतुही। ३. शंख। ४. बेर। ५. नखी नामक गन्ध द्रव्य। ६. अर्श या बवासीर नामक रोग। ७. कापालिकों के हाथ में रहनेवाला कपाल। ८. अस्थि। हड्डी। ९. दो कर्ष या चार तोले की एक तौल। १०. आँख का एक रोग जिसमें मांस की एक बिंदी सी निकल आती है। ११. घोड़े के गरदन की एक भौंरी।

शुक्तिक—पुं० [सं० शुक्ति+कन्] १. एक प्रकार का नेत्र रोग। २. गन्धक।

शुक्तिका—स्त्री० [सं० शुक्तिक—टाप्]१. सीप। २. चुक नामक साग। ३. आँख का शुक्ति नामक रोग।

शुक्तिज—पुं० [सं० शुक्ति√जन् (उत्पन्न करना)+ड] मोती।

वि० शुक्ति अर्थात् सीप से उत्पन्न।

शक्तिपुट—पुं० [सं० ष० त० स०] १. सीप का खोल। २. शंख। ३. सुतुही नामक जल-जन्तु तथा उसका खोल।

शुक्तिबीज—पुं०[सं० ष० त०स०] मोती।

शुक्तिमणि—पुं० [ष० त० स०] मोती।

शुक्तिमती—स्त्री०[सं० शुक्ति+मतुप्—ङीप्] १. एक प्राचीन नदी। २. चेदि राज्य की राजधानी।

शुक्तिमान्(मत्)—पुं० [सं० शुक्तिमत्—नुम्—दीर्घ] एक पर्वत जो आठ कुल-पर्वतों में से है।

शुक्ति वधू—स्त्री० [सं० मध्य० स०] १. सीप। सीपी। २. सीपी में रहनेवाला कीड़ा।

शुक्र—वि० [सं० शुच्+रक्] १. चमकीला। देदीप्यमान। २. साफ।

पुं०१. अग्नि। आग। २. हमारे सौर ग्रह का एक प्रमुख तथा बहुत चमकीला ग्रह जो कभी कभी दिन के प्रकाश में भी दिखाई देता है तथा जो पुराणानुसार दैत्यों का गुरु कहा गया है।

विशेष—यह सूर्य से ६७,०००,००० मील दूर है। यह सूर्य का पूरा चक्कर प्रायः २०० से कुछ अधिक दिनों में लगाता है।

३. शुद्ध और स्वच्छ सोम। ४. सोना। स्वर्ण। ५. धन-सम्पत्ति। दौलत। ६. सार भाग। सत्त। ७. पुरुष का वीर्य। ८. पौरुष। ९. चित्रक या चीता नामक वृक्ष। १०. एरंड। रेंड। ११. आँख की पुतली का फूली नामक रोग। १२. दे० 'शुक्रवार'।

पुं०[अ०] किसी उपकार या लाभ के लिए किया जानेवाला कृतज्ञता का प्रकाश। जैसे—शुक्र है, आप आ तो गये।

शुक्र-कर—वि०[सं० शुक्र√कृ (करना)+अच्] वीर्य बनानेवाला।

पुं० मज्जा, जिससे शुक्र या वीर्य का बनना कहा गया है। (वैद्यक)

शुक्र-कृच्छ्—पुं०[सं० ब० स०] मूत्रकृच्छ् रोग। सूजाक।

शुक्रगुजार—वि०[अ० शुक्र+फा० गुज़ार] [भाव० शुक्रगुजारी] १. किसी का शुक्र अर्थात् आभार माननेवाला। २. आभार प्रकट या प्रदर्शित करनेवाला।

शुक्रगुज़ारी—स्त्री० [अ०+फा०] शुक्रगुजार होने की अवस्था या भाव। आभार प्रकट या प्रदर्शित करना।

शुक्रज—पुं० [सं० शुक्र√ जन् (उत्पन्न करना)+ड]१. पुत्र। बेटा। २. जैन देवताओं का एक वर्ग।

वि० शुक्र से उत्पन्न।

शुक्र-ज्योति—स्त्री०[सं० ब० स०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

शुक्र-दोष—पुं०[सं० ब० स०] नपुंसकता।

शुक्र-पुष्प—पुं०[सं० ब० स०] १. कटसरैया। २. सफेद अपराजिता।

शुक्र-प्रमेह—पुं०]सं० ब० स०] वीर्य के क्षय होने का एक रोग। धातु का गिरना।

शुक्रभुज—पुं०[सं० शुक√भुज् (खाना)+क्विप्] मयूर। मोर।

शुक्रभू—पुं० [सं० शुक्र√भू (होना)+क्विप्] मज्जा।

शुक्रमेह—पुं० [सं०] वीर्य के क्षय होने का एक रोग।

शुक्रल—वि०[सं० शुक्र√ला (लेना)+क]१. जिसमें शुक्र या वीर्य हो। २. शुक्र या वीर्य उत्पन्न करने या बढ़ानेवाला।

शुक्रवार—पुं०[सं० ष० त० स० मध्यम० स० वा]सप्ताह का छठा दिन। बृहस्पतिवार के बाद का और शनिवार से पहले का दिन। जुमेरात।

शुक्र-वासर—पुं०[ष० त० स०]—शुक्रवार।

शुक्र-शिष्य—पुं०[सं०] १. शुक्राचार्य। २. असुर।

शुक्र-स्तंभ—पुं०[सं० ब० स०] काम का वेग रोकने के फलस्वरूप होनेवाली नपुंसकता।

शुक्रांग—पुं०[सं० ब ०स०] मयूर। मोर।

शुक्राचार्य—पुं०[सं० कर्म० स०] १. असुरों के देवता जो महर्षि भृगु के पुत्र थे और युद्ध में मरे हुए असुरों को मंत्र-बल से फिर से जिला देते थे। पुराणों के अनुसार वामन रूप धारण करके विष्णु ने इन्हें काना कर दिया था। २. काना या एकाक्ष व्यक्ति। (व्यंग्य)

शुक्राणु—पुं०[सं० ष० त०] नर या पुरुष के वीर्य का वह अणु जो मादा या स्त्री के अंड अथवा गर्भ में प्रविष्ट होकर संतान उत्पत्ति का कारण होता है। (स्पर्म)

शुक्राना—पुं०[फा० शुक्रानः] वह धन जो किसी को शुक्रिया अदा करते समय दिया जाता है। जैसे—वकील या डाक्टर को दिया जानेवाला शुक्राना।

शुक्रिम—वि०[सं० शुक्र+इमनिच]=शुक्ल।

शुक्रिय—वि०[सं० शुक्र+घ–इय] १. शुक्र-सम्बन्धी। शुक्र का। २. जिसमें शुद्ध रस हो। ३०. शुक्र बढ़ानेवाला।

शुक्रिया—पुं० [फा० शुक्रियः] किसी के उपकार या अनुग्रह के बदले में कृतज्ञता प्रकट करते समय कहा जानेवाला शब्द। धन्यवाद।

क्रि० प्र०—अदा करना।

शुक्ल—वि०[सं० √शुच(पवित्र करना आदि)+लच्, कुत्व]१. सफेद। श्वेत। २. सात्विक। ३. यशस्कर। ४. चमकीला।

पुं०१. सरयूपारी आदि ब्राह्मणों के एक वर्ग का अल्ल या कुल नाम। २. चान्द्रमास का शुक्ल पक्ष। ३. सफेद रेंड का पेड़। ४. आँखों का एक प्रकार का रोग जो उसके सफेद तल या डेले पर होता है। ५. कुन्द का पौधा और फूल। ६. सफेद लोध। ७. मक्खन। ८. चाँदी। ९. धव। घी। १०. योग।

शुक्ल-कंद—पुं० [सं० ब० स०] १. भैंसाकंद। २. शंखालू। साँख। ३. अतीस।

शुक्ल-कंदा—स्त्री० [सं० कर्म० स० टाप्] १. सफेद अतीस। २. विदारी कंद।

शुक्लक—पुं०[सं० शुक्ल+कन्]१. शुक्ल पक्ष। २. खिरनी का पेड़।

वि०=शुक्ल।

शुक्ल-कुष्ठ—पुं०[सं० कर्म० स०] सफेद कोढ़।

शुक्ल-क्षेत्र—पुं० [सं० कर्म० स०] १. पवित्र स्थान। २. तीर्थ स्थान।

शुक्लता—स्त्री०[सं० शुक्ल+तल्—टाप्] शुक्ल होने की अवस्था धर्म या भाव।

शुक्लत्व—पुं०[सं० शुक्ल+त्व]=शुक्लता।

शुक्ल-पक्ष—पुं०[सं० कर्म० स०] चांद्रमास में कृष्ण पक्ष से भिन्न दूसरा पक्ष। चाँदना पक्ष।

शुक्ल-पुष्प—पुं०[सं० ब० स०]१. छत्रक वृक्ष। २. कुंद का पौधा और फूल। ३. मरुआ पौधा। ४. सफेद ताल-मखाना। ५. पिंडार। ६. मैन-फल।

शुक्लपुष्पा—स्त्री० [सं० शुक्ल पुष्प-टाप्]१. हाथी शुंडी नामक क्षुप। २. शीत कुंभी। ३. कुंद नामका पौधा और फूल।

शुक्लपुष्पी—स्त्री० [सं० शुक्ल पुष्प–ङीप्] १. नागदंती। २. कुंद का पौधा और फूल।

शुक्लफेन—पुं०[सं० ब स०] समुद्र फेन।

शुक्ल-बल—पुं०[सं० ब० स०] जैनों के अनुसार एक जिन देव का नाम।

शुक्ल-मंडल—पुं०[सं०ब०स०] आँखों का सफेद भाग जो पुतली से भिन्न होता है।

शुक्ल-मेह—पुं०[सं०] चरक के अनुसार एक प्रकार का प्रमेह रोग।

शुक्ल-शाल—पुं०[सं० ब०स०]१. गिरि निंब। २. सफेद शाल का वृक्ष।

शुक्लांग—वि० [सं० ब० स०] श्वेत अंगों वाला।

शुक्लांगा—स्त्री० [सं० शुक्लांग-टाप्] शेफालिका।

शुक्लांबर—पुं०[सं० कर्म० स०} सफेद कपड़ा।

वि० जो श्वेत वस्त्र पहने हो।

शुक्ला—स्त्री० [सं० शुक्ल+अच्–टाप्] १. सरस्वती। २. चीनी। ३. काकोली। ४. शेफालिका। ५. विदारी कन्द। ६. शूकर कन्द।

शुक्लाभिसारिका स्त्री० [सं० मध्य० स०] साहित्य में वह परकीया नायिका जो शुक्ल पक्ष या चाँदनी रात में अपने प्रेमी से मिलने के लिए सजधज कर संकेत-स्थल पर जाती है।

शुक्लाम्ल—पुं०[सं० कर्म० स०] चूका या चुक्रिका नामक साग।

शुक्लिमा (मन्)—स्त्री०[सं० शुक्ल+इमनिच्] सफेदी। श्वेतता।

शुक्लोदन—पुं०[सं० ब स०] ललित विस्तर के अनुसार महाराज शुद्धोदन के भाई का नाम

शुक्लोपला—स्त्री०[सं० कर्म० ब० स० अच् टाप्]चीनी। शर्करा।

शुक्लौदन—पुं० [सं० कर्म० स०] अरवा चावल।

शुगल†—पुं०=शगल।

शुचा—स्त्री० [सं० √शुच् (शोक करना) +क्विप्—टाप्] शोक।

स्त्री०=शुचि।

शुचि—वि०[सं०√शुच्+कि]। [भाव० शुचिता] १. शुद्ध। पवित्र। २. साफ। स्वच्छ। ३. निर्दोष। ४. स्वच्छ हृदयवाला। ईमानदार और सच्चा। ५. चमकीला।

स्त्री० १. पवित्रता। शुद्धता। २. स्वच्छता।

पुं०१. सफेद रंग। २. सूर्य। ३. चन्द्रमा। ४. अग्नि। ५. शिव। ६. शुक्र नामक ग्रह। ७. ग्रीष्म ऋतु। गरमी के दिन। ८. ज्येष्ठ मास। जेठ का महीना।

पुं० [सं० शुच्+कि]१. अग्नि। २. चन्द्रमा। ३. ग्रीष्म ऋतु। ४. शुक्र। ५. ब्राह्मण। ६. कार्तिकेय। ७. चित्रक या चीता नामक वृक्ष।

शुचिकर्मा (र्मन्)—वि०[सं० ब० स०] सदाचारी।

शुचिता—स्त्री०[सं० शुचि+तल्—टाप्] १. शुचि होने की अवस्था, धर्म या भाव। २. स्वास्थ्य रक्षा की दृष्टि से खान-पान, रहन-सहन आदि में भद्रता और सफाई रखने की अवस्था या भाव। (सैनिटेशन)

शुचिद्रुम—पुं०[सं० कर्म० स०] पीपल।

शुचिरोचि—पुं० [सं० ब० स० शलिरोचिस्] चन्द्रमा।

शुचिश्रवा (वस्)—पुं० [सं० ब० स०] विष्णु का एक नाम।

शुची—वि० [सं०शुच्(पवित्र करना)+क्विप्—इति, शुचिन्] शुचि अर्थात् पवित्र या शुद्ध रहनेवाला।

शुजा—वि०[अ० शुजाअ] शूरवीर। दिलेर।

शुजाअत—स्त्री०[अ०] वीरता। शूरता

शुटीर्य—पुं०[सं०] १. वीरता। २. वीर्य।

शुतुद्रि, शुतुद्रु—स्त्री०[सं०] शतद्रु या सतलज नदी।

शुतुर†—पुं०[सं० उष्ट्र से फा०] ऊँट।

शुतुर ग़मजा—पुं० [फा०] वह भद्दा और भोंडा नखरा जो ऊंट के नखरे की तरह का जान पड़े।

शुतुर बे मुहार—वि० [फा०] बिना सोचे-समझे अनियंत्रित रूप में इधर-उधर या किसी ओर चल पड़नेवाला।

शुतुरमुर्ग—पुं० [फा०]मुर्गे की जाति का एक पक्षी जिसकी गरदन काफी लम्बी होती है।

शुतुरी—वि० [फा०] १. ऊँट-संबंधी। २. ऊँट के रंग का। ३. ऊँट के बालों का बना हुआ।

शुदनी—स्त्री० [फा०]आकस्मिक और निश्चित रूप से होनेवाली घटना या बात। भावी। होनी। होनहार।

शुदबुद—स्त्री० [फा०] किसी काम या बात का थोड़ा ज्ञान।

†स्त्री०=सुध-बुध।

शुदा—वि० [फा० शुदः] जो हो या बीत चुका हो। (समास में के अंत में) जैसे—पासशुदा, रजिस्ट्रीशुदा।

शुद्ध—वि० [सं०√शुध् (शोधन करना)+क्त] १. (पदार्थ) जिसमें किसी प्रकार का खोट या मैल न हो। खालिस। २. (पदार्थ या व्यक्ति) जिसमें कोई ऐब या दोष न हो। निर्दोष। ३. (व्यक्ति) जिसका धार्मिक या नैतिक दृष्टि से पतन न हुआ हो। जो भ्रष्ट न हुआ हो। ४. (आचरण, विचार या व्यवहार) जिसमें कोई त्रुटि या दोष न हो। ५. पाप से रहित। निष्पाप। ६. साफ और सफेद। ७. उज्ज्वल। चमकीला। ८. (गणना या लेख) जिसमें कोई अशुद्धि, गलती या भूल न हो। ९. अनुपम। बेजोड़। १०. (शास्त्र) जिसकी धार चोखी या तेज की गई हो। सान पर चढ़ाया हुआ।

पुं० १. सेंधा नमक। २. काली मिर्च। ३. चाँदी। ४. एक तरह की घास। ५. शिव। ६. चौदहवें मन्वंतर के सप्तर्षियों में से एक। ७. संगीत शास्त्र में प्राचीन अथवा मार्ग रागों की संज्ञा। जैसे—भैरव, मेघ आदि राग।

शुद्ध-कर्मा (र्मन्)—वि० [ब० स०] शुद्ध और पवित्र कर्म करनेवाला।

शुद्ध-तरंगिणी—स्त्री० [सं० ब० स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

शुद्धता—स्त्री० [सं० शुद्ध+तल्–टाप्] शुद्ध होने की अवस्था, धर्म या भाव।

शुद्धत्व—पुं० [सं० शुद्ध+त्व]=शुद्धता।

शुद्ध-पक्ष—पुं० [सं०] चान्द्र मास का शुक्ल पक्ष।

शुद्ध-भोगी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

शुद्ध-मंजरी—स्त्री० [सं० ब० स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

शुद्ध-मनोहरी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

शुद्धमांस—पुं० [सं०] पकाया हुआ ऐसा मांस जिसमें हड्डी न हो। (वैद्यक)

शुद्धांत—पुं० [सं० ब० स०] १. प्राचीन भारत में, राजाओं का अंतःपुर जो शुद्ध और पवित्र माना जाता था। २. दे० 'धवलगृह'।

शुद्धांत पालक—पुं० [सं० ष० त०]वह जो अंतःपुर के द्वार पर पहरा देता हो।

शुद्धांता—स्त्री० [सं० शुद्धांत–टाप्] रानी।

शुद्धा—स्त्री० [सं० शुद्ध–टाप्]कुटज बीज। इन्द्र-जौ।

शुद्धात्मा (त्मन्)—पुं० [सं० ब० स०] शिव का एक नाम।

शुद्धाद्वैत—पुं० [सं० शुद्ध+अद्वैत] वल्लभाचार्य का चलाया हुआ एक वेदांतिक सम्प्रदाय। इसमें मायारहित ब्रह्म को अद्वैत तत्त्व माना जाता है और सारा जगत् प्रपंच उसी की लीला का विलास है।

शुद्धापह्नुति—स्त्री० [सं० मध्य० स०] साहित्य में, अपह्नुति अलंकार का एक भेद जिसमें अति सादृश्य के कारण सत्य होने पर भी उपमेय को असत्य कहकर उपमान को सत्य सिद्ध किया जाता है।

शुद्धाशुद्धि—स्त्री० [सं० द्व० स० या ब० स०] शुद्ध और अशुद्ध होने की अवस्था या भाव।

शुद्धि—स्त्री० [सं०√शुध् (शोधन करना)+क्तिन्] १. शुद्ध होने की अवस्था, धर्म या भाव। शुद्धता। २. सफाई। स्वच्छता। ३. पवित्रता। शुचिता। ४. चमक। द्युति। ५. ऋण आदि का चुकता होना या चुकाया जाना। परिशोध। ६. गणित में घटाने की क्रिया। बाकी। ७. कोई ऐसा धार्मिक कृत्य जो किसी अपवित्र वस्तु को पवित्र अथवा धर्म-च्युत व्यक्ति को फिर से धर्म में मिलाने या धार्मिक बनाने के लिए किया जाय। ८. दुर्गा का एक नाम।

शुद्धिकंद—पुं० [सं० ब० स०] लहसुन।

शुद्धिपत्र—पुं० [सं० मध्यम० स०] १. आज-कल ग्रन्थों आदि के अन्त में लगाया जानेवाला वह पत्र जिससे सूचित हो कि कहाँ क्या अशुद्धि है। (एर्राटा) २. प्राचीन भारत में वह व्यवस्था पत्र जो प्रायश्चित्त के उपरान्त शुद्धि के प्रमाण में पंडितों की ओर से दिया जाता था। (शुक्र-नीति)

शुद्धोद—पुं० [सं० ब० स०] समुद्र। सागर।

शुद्धोदन—पुं० [सं० ब० स०] भगवान् बुद्धदेव के पिता का नाम।

शुद्धोदनि—पुं० [सं० शुद्धोदन+इन्] विष्णु का एक नाम।

शुनः शेफ—पुं० [सं०]अजीगर्त ऋषि के पुत्र जिन्हें अजीगर्त ने यज्ञ में बलि चढ़ाने के लिए दे दिया था पर जिन्होंने कुछ वेदमंत्र सुनाकर अपने आपको बलिदान होने से बचाया था।

शुन—पुं० [सं०√शुन् (गमनादि)+क] १. कुत्ता। २. वायु। हवा। ३. आराम। सुख।

शुनक—पुं० [सं० शुन+कन्] १. कुत्ता। २. एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि।

शुनहोत्र—पुं० [सं० शुन√हृ (देना-लेना)+ष्ट्रन ष० त० स० वा] १. एक प्राचीन ऋषि का नाम। २. भारद्वाज ऋषि के पुत्र जो ऋग्वेद के कई मंत्रों के द्रष्टा हैं।

शुनामुख—पुं० [सं० ब० स०] हिमालय के उत्तर का एक प्राचीन प्रदेश

शुनाशीर, शुनासीर—पुं० [सं० ब० स०] १. इंद्र। २ सूर्य। ३. देवता।

शुनासीरी (रिन्)—पुं० [सं० शुनासीर+इनि] [वि० शुनासीरीय] इंद्र।

शुनि—पुं० [सं०√शुन् (गमनादि)+क–इनि] [स्त्री० शुनी] कुत्ता।

शुबहा—पुं० [अ० शुबहः] १. अनुमानजन्य परन्तु आधार रहित यह दृढ़ धारणा की अमुक आपत्तिजनक या अपराधपूर्ण आचरण संभवतया अमुक व्यक्ति ने ही किया है। २. सन्देह। शक। ३. धोखा। भ्रम।

शुभंकर—वि० [सं० शुभ√कृ (करना)+खच् मुम्] [स्त्री शुभंकरी] मंगलकारक। शुभकारी।

शुभंकरी—स्त्री० [सं०√शुभं√कर–ङीज्] १. पार्वती। २. शमीवृक्ष।

शुभ—वि० [सं०√शुभ् (दीप्ति करना)+क] १. चमकीला । २. सुन्दर । जैसे—शुभ दंत । ३. (चिन्ह, मुहूर्त, लक्षण, समय आदि) जो अनुकूल, लाभप्रद तथा सुखप्रद हो अथवा अनुकूलता, लाभ, सुख आदि का सूचक हो । ४. पवित्र ।

पुं० १. कल्याण । मंगल । २. विष्कंभादि सत्ताईस योगों के अंतर्गत एक योग । ३. पदुम काठ । ४. चाँदी । ५. बकरा ।

शुभकर—वि० [सं० शुभ√कृ (करना)+अच्] शुभ या मंगल करनेवाला ।

शुभकरी—स्त्री० [सं० शुभकर-ङीष्] पार्वती ।

शुभकूट—पुं० [सं० मध्यम० स०] सिंहल द्वीप या लंका का एक प्रसिद्ध पर्वत जिसपर चरण-चिह्न बने हुए हैं ।

शुभग—वि० [सं० शुभ√गम् (जाना)+ड] १. सुन्दर । २. भाग्यवान् ।

शुभ-ग्रह—पुं० [सं० कर्म० स०] फलित ज्योतिष के अनुसार बृहस्पति, शुक्र, अपापयुक्त बुध और अर्द्धाधिक चंद्रमा जो शुभ माने जाते हैं।

शुभ-चिंतक—वि० [सं० ष० त०] १. शुभ-चिंतन करनेवाला । २. किसी की भलाई की बातें सोचनेवाला । शुभेच्छु ।

शुभ-चिंतन—पुं० [सं० ष० त०] शुभ या भला चाहना ।

शुभदंता—स्त्री० [सं० ब० स०] पुराणानुसार पुष्प-दंत नामक हाथी की हथनी का नाम ।

शुभद—पुं० [सं० शुभ√दा (देना) +क] पीपल का पेड़ ।

वि० शुभ फल देनेवाला । शुभकारक ।

शुभ-दर्शन—वि० [सं० ब० स०] १. जिसका दर्शन होने पर शुभ फल होता हो । २. सुन्दर ।

शुभ-प्रद—वि० [सं० ष० त०] शुभद । मंगलकारी ।

शुभमस्तु—अव्य० [सं०] शुभ हो । मंगल हो ।

शुभराज—पुं० [सं० सुभ्राज] महाराज का शुभ हो । (आशीर्वाद) उदा०—साम्हड वीस आविया पु शुभराज ।—ढो० मा० ।

शुभ-वासन—वि० [सं० शुभ्√वासि+ल्यु-अन] मुख को सुगन्धित करनेवाला (द्रव्य) ।

शुभव्रत—पुं० [सं० मध्यम० स०] एक प्रकार का व्रत जो कार्तिक शुक्ला पंचमी को किया जाता है ।

शुभशंसी(सिन्)—वि० [सं० शुभ√शस्+णिनि] शुभ सूचना देनेवाला ।

शुभ-सूचन—पुं० [सं० शुभ्√सूच्+णिच्-ल्युट्—अन] शुभ सूचना । मंगल सूचना ।

शुभस्थली—स्त्री० [सं० मध्य० स०] १. मंगलकारक भूमि । २. यज्ञ भूमि ।

शुभांग—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० शुभांगी] १. शुभ अंगोंवाला । २. सुन्दर ।

शुभांगी—स्त्री० [सं० शुभांग-ङीष्] १. कुबेर की पत्नी का नाम । २. कामदेव की पत्नी, रति । ३. संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी ।

शुभांजन—पुं०=शोभांजन ।

शुभा—स्त्री० [सं० शुभ+—क—टाप्] १. शोभा । २. इच्छा । ३. अच्छी या सुन्दर स्त्री । ४. देवताओं की सेना । ५. वंशलोचन । ६. गोरोचन । ७. शमी । ८. सफेद दूब । ९. बकरी । १०. अरारोट । ११. पुरइन की पत्ती । १२. सोआ नामक साग । १३. सफेद बच । १४. असबरग ।

पुं०=शुबहा ।

शुभाकांक्षी(क्षिन्)—वि० [सं० शुभ-आ√ कांक्ष् (चाहना)+णिनि] १. (किसी के) शुभ या मंगल की आकांक्षा करनेवाला । २. किसी की भलाई चाहनेवाला । शुभचिंतक ।

शुभाक्ष—पुं० [सं० ब० स०] शिव ।

शुभागमन—पुं० [सं० कर्म० स०] मंगलप्रद और सुखद आगमन ।

शुभानन—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० शुभानना] सुन्दर मुखवाला । खूबसूरत ।

पुं०=चन्द्रमा ।

शुभाशय—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० शुभाशया] (वह) जिसका आशय शुभ हो । अच्छे विचारवाला ।

शुभेच्छु—वि० [सं० ब० स०] १. शुभ कामना करनेवाला । २. किसी की भलाई चाहनेवाला । शुभचिंतक ।

शुभ्र—वि० [सं० √शुभ्+रक्] [भाव० शुभ्रता] १. श्वेत । सफेद । २. उज्ज्वल । चमकीला ।

पुं० १. चाँदी । २. अबरक । ३. साँभर नमक । ४. कसीस । ५. पदुम काठ । ६. खस । ७. चरबी । ८. रूपामक्खी । ९. वंशलोचन । १०. फिटकरी । ११. चीनी । १२. सफेद विधारा । १३. चन्द्रमा ।

शुभ्रक—वि० [सं०] शुभ या सफेद करनेवाला ।

पुं० अंगराग या प्रसाधन सामग्री के रूप में एक प्रकार का तैलाक्त तरल पदार्थ जिसके व्यवहार से बालों में चमक आती है । (ब्रिलियन्टीन)

शुभ्रकर—पुं० [सं०] १. चन्द्रमा । २. कपूर ।

शुभ्रता—स्त्री० [सं० शुभ्र+तल्—टाप्] १. शुभ्र होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव ।

शुभ्र-भानु—पुं० [सं० ब० स०] चन्द्रमा ।

शुभ्र-रश्मि—पुं० [सं० ब० स०] चन्द्रमा ।

शुभ्रांशु—पुं० [सं० ब० स०] १. चन्द्रमा । २. कपूर ।

शुभ्रा—स्त्री० [सं० शुभ्र—टाप्] १. गंगा । २. बंसलोचन । ३. फिटकरी । ४. चीनी ।

शुभ्रालु—पुं० [सं० कर्म० स०] १. भैंस कंद । २. शंखालु ।

शुभ्रिका—स्त्री० [सं० शुभ्रि+कन्—टाप्] मधुशर्करा ।

शुमार—पुं० [फा०] [भाव० शुमारी] १. संख्या । २. लेखा । हिसाब ।

मुहा०—(किसी बात का) शुमार बाँधना=अनुमान या कल्पना से यह समझाना कि आगे चलकर अमुक बात या उसका अमुक रूप होगा ।

शुमार-कुनिंदा—पुं० [फा० शुमार-कुनिंदः] वह जिसका काम किसी प्रकार की गिनती करना हो ।

शुमारी—स्त्री० [फा०] शुमार करने या गिनने की क्रिया या भाव । जैसे—मर्दुमशुमारी ।

शुमाल—पुं० [अ०] [वि० शुमाली] १. बायाँ हाथ । २. उत्तर दिशा जो सूर्योदय की दिशा (पूरब) की ओर मुँह करके खड़े होने पर बाँई ओर पड़ती है ।

शुमाली—वि० [अ०] उत्तर दिशा में होनेवाला । उत्तरीय ।

शुरबा—पुं०=शोरबा ।

शुरुआत—स्त्री०[अ० शुरूआत] पहल ।

शुरू—पुं०[अ० शुरुऊ] प्रारंभ। आरंभ ।

शुल्क—पुं०[सं० √ शुल्क्+घञ्] १. वह धन जो वस्तुओं की उत्पत्ति, उपभोग, आयात, निर्यात आदि करने पर कानूनन कर के रूप में देय हो। २. वह धन जो किसी संस्था को विशिष्ट सुविधा प्रदान करने पर दिया जाता है। जैसे—प्रवेश शुल्क, चिकित्सा शुल्क, शिक्षा शुल्क। ३. प्राचीन भारत में वह धन जो कन्या का विवाह करने के बदले में उसका पिता वर के पिता से लेता था। ४. कन्या के विवाह में दिया जानेवाला दहेज। ५. बाजी। शर्त। ६. किराया। भाड़ा। ७. दाम। मूल्य।

शुल्क-शाला—स्त्री०[सं० ष० त० स०]१. वह स्थान जहाँ पर घाट, मार्ग आदि का अथवा और किसी प्रकार का शुल्क या महसूल चुकाया जाता हो। २. चुंगीघर।

शुल्काध्यक्ष—पुं०[सं० ष० त०] लोगों से शुल्क लेनेवाले विभाग का प्रधान अधिकारी। (कौ०)

शुल्कार्ह—वि०[सं०] १. (पदार्थ) जिसका शुल्क देय हो। २. शुल्क लगाये जाने के योग्य। (ड्यूटिएबुल)

शुल्व—पुं०[सं० √शुल्व् (मान-दान करना)+घञ्, अच् वा] १. ताँबा। २. रस्सी। ३. यज्ञ-कर्म। ३. आचार-विचार।

शुल्वज—पुं०[सं० शुल्व√जन् (उत्पन्न करना) ड] पीतल ।

सुल्वावारि— पु० [सं० ष० त० स०] गंधक ।

शुल्वा-सूत्र—पुं०[सं० ब० स०] वैदिक काल में ज्यामिति का नाम।

शुश्रू—स्त्री०[सं०] माँ। माता।

शुश्रूषक—वि० [सं०√श्रु(सुनना)+सन—शुश्रुष+ण्वुल्—अक] सेवा-सुश्रूषा करनेवाला।

शुश्रूषण—पुं० [सं०] शुश्रूषा करने की कला, क्रिया या विधा।

शुश्रूषा—स्त्री०[सं० शुश्रूष+अ—टाप्] [वि० शुश्रूष्य]१. सुनने की इच्छा। २. वह सेवा जो किसी के कहने के अनुसार की जाय। ३. सेवा। टहल। ४. खुशामद। चापलूसी।

शुश्रुषु—वि०[सं० शुश्रुष+उ] १. शुश्रूषा या सेवा करने को उत्सुक। २. आज्ञानुवर्ती। ३. सुनने का अभिलाषी।

शुषिर—पुं० [सं०√शुष् (सोखना)+किरच्] १. लौंग। २. अग्नि। आग। ३. भूसा। ४. आकाश। ५. फूँककर बजाया जानेवाला बाजा।

शुषिरा—स्त्री० [सं० शुषिर—टाप्] १. नदी। २. पृथ्वी। ३. नली नामक गन्ध द्रव्य।

शुषेण—वि०, पुं०=सुषेण ।

शुष्क—वि०[सं०√शुष्(सोखना)+क] [भाव० शुष्कता]। १. (पदार्थ या वातावरण) जो आर्द्र या नम न हो। २. (स्थान) जहाँ वर्षा न हुई हो या न होती हो। ३. (व्यक्ति) जिसमें कोमलता, ममता, मोह, सहृदयता आदि का अभाव हो। ४. (विषय) जो संपूर्ण न हो। जिससे मनोरंजन न होता हो। नीरस। जैसे—शुष्क वाद-विवाद। ५. जिसमें साथ रहने या न रह सकनेवाली कोई दूसरी बात न हो। पुं० काला अजगर।

शुष्क-कृषि—स्त्री०[सं० कर्म० स०] सूखी खेती। (देखें)

शुष्क-क्षेत्र—पुं० [सं० ब० स०] वितस्ता नदी के किनारे का एक पर्वत।

शुष्कगर्भ—पुं०[सं० ब० स०] एक रोग जिसमें वात के कुप्रभाव से गर्भ सूख जाता है। (वैद्यक)

शुष्कता—स्त्री०[सं० शुष्क+तल्—टाप्] शुष्क होने की अवस्था या भाव। सूखापन।

शुष्कल—पुं०[सं० शुष्क√ला (लेना)+क]मांस।
वि० मांस-भक्षी।

शुष्क व्रण—पुं० [सं० कर्म० स०, ब० स० वा] वह घाव जो सूख तथा भर गया हो।

शुष्कांग—पुं० [सं० ब० स०] धव वृक्ष। धौ।
वि०[स्त्री० शुष्कांगी] सूखे हुए अंगोंवाला। दुबला-पतला।

शुष्कांगी—पुं०[सं० शुष्कांग—ङीष्] १. प्लव जाति का एक प्रकार का पक्षी। २. गोह नामक जन्तु।

शुष्का—स्त्री० [सं० शुष्क—टाप्] स्त्रियों का योनिकंद नामक रोग।

शुष्णा—पुं०[सं०√शुष् (सुखाना)+नक्] १. सूर्य। २. अग्नि। ३. बल। शक्ति

शुष्म—पुं०[सं० शुष+मन्]१. अग्नि। २. सूर्य। ३. तेज। पराक्रम। ४. वायु। ५. चिड़िया। पक्षी।

शुष्मा (मन्)—पुं०[सं० शुष+मनिन्]१. अग्नि। २. चित्रक या चीता नामक वृक्ष। ३. पराक्रम। ४. तेज।

शुहदा—पुं०=शोहदा।

शुहरत—स्त्री०=शोहरत ।

शुह्म—पुं० [सं०] एक प्राचीन आर्येतर जाति जो बाद में आर्यों में मिल गई थी।

शूक—पुं०[सं०√शि (पतला करना)+कक्]१. अन्न की बाल या सींका जिसमें दाने लगते हैं। २. जौ। यव। ३. काँटा। ४. एक प्रकार का कीड़ा। ५. नुकीला सिरा। नोक। ६. एक प्रकार का रोग जो लिंग-वर्द्धक ओषधियों के लेप के कारण होता है। ७. दे० 'शूकतृण'।

शूकक—पुं०[सं० शूक√कै(होना आदि)+क] १. एक तरह का अन्न। २. अनुकम्पा। दया। ३. वर्षाकाल। ४. शरीर का रस नामक धातु।

शूक-कीट—पुं०[सं० मध्य० स०]एक प्रकार का नुकीले औंवाना कीड़ा।

शूक-तृण—पुं०[सं० मध्य० स०] एक प्रकार की घास। इसे सूकड़ी भी कहते हैं।

शूक धान्य—पुं०[मध्य० स०]अन्नों का वह वर्ग जिसके दाने या बीज बालों में लगते हैं।

शूकपत्र—पुं०[सं० ब० स०] ऐसा साँप जिसमें विष न होता हो। जैसे—पानी का साँप।

शूकर—पुं०[सं०शूक√रा(लेना)+क]१. सूअर। २.वाराह (अवतार)। स्त्री० शूकरी।

शूकरकंद—पुं०[सं० मध्य० स०] वाराही कंद।

शूकरक—पुं०[सं० शूकर+कन्] एक प्रकार का शालिधान्य।

शूकर-क्षेत्र—पुं०[सं० मध्यम० स०] एक प्राचीन तीर्थ जो नैमिषारण्य के पास है।

शूकरता—स्त्री०[सं० शूकर+तल्-टाप] सूअर होने की अवस्था या भाव। सूअरपन।

शूकर-दंष्ट्र—पुं० [सं० ब० स०] एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसे सूअर दाढ़ कहते हैं।

शूकरपादिका—स्त्री०[सं० ब० स०] १. केवाँच। कौंछ। २. कोलशिंबी। सेम।

शूकरमुख—पुं० [सं० ब० स०] एक नरक का नाम।

शूकराक्षिता—स्त्री०[सं० शूकराक्षि, ब०स०+तल्—टाप्] एक प्रकार का नेत्र-रोग।

शूकरास्या—स्त्री०[सं० ब० स०] एक बौद्ध देवी जिसे वाराही भी कहते हैं।

शूकरिक—पुं०[सं० शूकर+ठन्—इक] एक प्रकार का पौधा।

शूकरिका—स्त्री०[सं० शूकरिक—टाप्] एक प्रकार की चिड़िया।

शूकरी—स्त्री०[सं० शूकर—ङीष्]१. सुअरी । वाराही। २. खैरी साग। ३. वाराही कंद। गेंठी। ४. सूँस नामक जल-जंतु। ५. विधारा।

शूकल—पुं०[सं० शूक√ला(लेना)+क] ऐसा घोड़ा जो जल्दी चौंक या भड़क जाता हो और फिर जल्दी वश में आता हो।

शूका—स्त्री०[सं० शूक+अच्—टाप्] कौंछ। केवाँच।

शूकी—स्त्री०[सं० शूक] छोटा नुकीला काँटा। (स्पाइक)

शूक्त—पुं०[सं० शुक्त] सिरका।

शूक्ष्म—वि०=सूक्ष्म।

शूची—स्त्री०=सूई।

शूद्र—पुं०[सं० शुच्+रक् पृषो० च=द—दीर्घ] [स्त्री० शूद्रा] १. हिन्दुओं में चार प्रकार के प्रमुख वर्णों या जातियों में से एक जिसका मुख्य आचरण अन्य तीन वर्णों (अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) की सेवा करना कहा गया है। २. उक्त वर्ण का व्यक्ति। ३. दास। सेवक। ४. नैऋत्य कोण में स्थित एक देश।

वि०[भाव० शूद्रता] बहुत खराब या बुरा। निकृष्ट।

शूद्रक—पुं०[सं० शुद्र+कन्]१. संस्कृत के प्रसिद्ध 'मृच्छकटिक' के रचयिता। २. शूद्र। ३. दे० 'शंबुक'।

शूद्रक्षेत्र—पुं० [सं० उपमि० स०] काले रंग की ऐसी भूमि जिसमें अनेक प्रकार की घास, तृण तथा अनेक प्रकार के धान उत्पन्न होते हैं।

शूद्रता—स्त्री० [सं० शूद्र+तल्—टाप्] शूद्र होने की अवस्था, धर्म या भाव।

शूद्र-द्युति—पुं० [सं० उपरि ब० स०] नीला रंग जो रंगों में शूद्र वर्ण का माना जाता है।

शूद्र-प्रेष्य—पुं०[सं० ष० त० स०] ऐसा ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य जो किसी शुद्र की नौकरी करता हो।

शूद्रा—स्त्री०[सं० शूद्र—टाप] शूद्र जाति की स्त्री। शूद्राणी।

शूद्राणी—स्त्री० [सं० शूद्र—ङीष्—आनुक] शूद्र जाति की स्त्री। शूद्रा।

शूद्रान्न—पुं०[सं० ष० त० स०]शूद्र वर्ण के स्वामी से प्राप्त होनेवाला अन्न या चलनेवाली जीविका।

शूद्री—स्त्री०[सं० शूद्र—ङीष्] शूद्र की स्त्री। शूद्रा।

शून—वि० दे० 'शून्य'।

शूना—स्त्री०[सं०√शिव (गति वृद्धि)+क्त—न—सं०प्र०दीर्घ—टाप्] १. गृहस्थ के घर के वे स्थान जहाँ नित्य अनजान में अनेक जीवों की हत्या हुआ करती है। जैसे—चूल्हा। २. गले के अन्दर की घंटी। ललरी। ३. थूहड़। स्नूही।

शून्य—वि०[सं० शूना+यत्] [भाव० शून्यता]१. जिसमें कुछ न हो। खाली। जैसे—शून्यगर्भ। २. जिसका कोई आकार या रूप न हो। निराकार। ३. जिसका अस्तित्व न हो। ४. जो वास्तविक न हो। असत्। ५. समस्त पदों के अंत में, रहित। जैसे—ज्ञानशून्य।

पुं० १. खाली स्थान। अवकाश। २. आकाश। ३. एकांत स्थान। ४. गणित में, अभाव सूचक चिह्न। ५. विंदु। विंदी। ६. अभाव। ७. विष्णु। ८. स्वर्ग। ९. ईश्वर। परमात्मा। १०. विज्ञान में, ऐसा अवकाश जिसमें वायु भी न हो।

शून्य-गर्भ—वि०[सं० ब० स०]१. जिसके गर्भ में कुछ न हो। २. मूर्ख। ३. निस्सार।

पुं० पपीता।

शून्य-चक्र—पुं०[सं० मध्य० स०]हठ योग में सहस्रार चक्र का एक नाम। (नाथ-पंथी)

शून्यता—स्त्री०[सं० शून्य+तल्—टाप्]१. शून्य होने की अवस्था या भाव। २. अभाव।

शून्यत्व—पुं०[सं० शून्य+त्व] शून्यता।

शून्य-दृष्टि—स्त्री०[सं० कर्म० स०]ऐसी दृष्टि जिससे सूचित होता हो कि मन में नाम को भी कोई भाव नहीं है।

शून्यपथ—पुं०[सं० कर्म० स० ब० स०वा] आकाश।

शून्यपाल—पुं० [सं० शून्य√पाल् (पालन करना)+णिच—अच्]१. प्राचीन काल में, वह व्यक्ति जो राजा की अविद्यमानता, असमर्थता या अल्पवयस्कता के कारण अस्थायी रूप से राज्य का प्रधान बनाया जाता था। २. स्थानापन्न अधिकारी।

शून्य-बहरी—स्त्री०[सं०] सोन बहरी (रोग)।

शून्य-मंडल—पुं०[सं० कर्म० स०]हठ योग में, सहस्रार चक्र का एक नाम।

शून्य-मध्य—वि०[सं० ब० स०]जिसके मध्य में शून्य या अवकाश हो।

शून्य-मनस्क—वि० [सं० ब० स० —कप्] अन्यमनस्क।

शून्य-मूल—पुं०[सं० ब० स०]१. प्राचीन भारत में, सेना की एक प्रकार की व्यूह-रचना। २. ऐसी सेना जिसका वह केन्द्र नष्ट हो गया हो जहाँ से सिपाही आते रहे हों। (कौ०)

शून्यवाद—पुं०[सं० शून्य√ वद् +घञ्] [वि० शून्यवादी] बौद्धों की महायान शाखा के माध्यमिक नामक विभाग का मत या सिद्धान्त जिसमें संसार को शून्य और उसके सब पदार्थों को सत्ताहीन माना जाता है। (विज्ञानवाद से भिन्न)

शून्यवादी (दिन्)—पुं०[सं०शून्य√ वद् +णिनि]१. शून्यवाद का अनुयायी। २. बौद्ध। ३. नास्तिक।

वि० शून्यवाद-सम्बन्धी।

शून्यहर—पुं० [सं० शून्य√हृ (हरण करना)+अच्] १. प्रकाश। उजाला। २. सोना। स्वर्ण।

शून्य-हृदय—वि०[सं० ब० स०] १. अनवधान। २. खुले दिलवाला।

शून्या—स्त्री० [सं० शून्य+अच्—टाप्]१. नलिका या नली नाम का गंध द्रव्य। २. बाँझ स्त्री। ३. थूहड़।

शून्यालय—स्त्री०[सं० कर्म० स०] एकांत स्थान।

शून्यावस्था—स्त्री०[सं० कर्म० स०] नाथ-पंथ में, वह अवस्था जिसमें आत्मा शून्य चक्र या सहस्रार में पहुँचकर सब द्वन्द्वों से मुक्त हो जाती है।

शून्याशून्य—पुं०[सं० ब० स०] जीवन्मुक्ति।

शूप—पुं०= सूप।

शूम—पुं०=सूम।

शूमी—स्त्री०[फा०]१. शूम होने की अवस्था या भाव। सूमपन। २. मनहूसी।

शूर—पुं०[सं० √शूर्+अच्] [भाव० शूरता, शौर्य]१. वीर। बहादुर। २. योद्धा। सूरमा। ३. वह जो किसी काम या बात में औरों से बहुत बढ़-चढ़कर हो। जैसे—दान-शूर, शब्द-सूर आदि। ४. सूर्य। ५. सिंह। शेर। ६. सूअर। ७. चीता। ८. साखू का पेड़। ९. बड़हर। १०. मसूर। ११. चित्रक या चीता नामक वृक्ष। १२. आक। मदार। १३. कृष्ण के पितामह का नाम। १४. जैन हरिवंश के अनुसार उत्तर दिशा के एक देश का नाम।

शूरण—पुं० [सं० √ शूर् (हिंसा करना)+ल्यु—अन्]१. सूरन। ओल। २. श्योनाक। सोनापाढ़ा।

शूरता—स्त्री०[सं० √ शूर्+तल्-टाप्] १. शूर होने की अवस्था या भाव। २. शूर का धर्म।

शूरताई†—स्त्री०=शूरता।

शूरत्व—पुं०=शूरता।

शूरन—पुं०=सूरन (जमीकंद)।

शूरमन्य—वि०[सं० शूर्√मन्य (मानना)+खच्—मुम्] अपनी बहादुरी के किस्से बढ़ा-चढ़ाकर सुनानेवाला।

शूर-मानी (निन्)—पुं०[सं० शूर√मन् (मानना)+णिनि] वह जिसे अपनी शूरता या वीरता का अभिमान हो।

शूरवीर—पुं० [सं० सप्त० त० स०, कर्म० स० वा] [भाव०शूरवीरता] बहुत बड़ा वीर। वीर-शिरोमणि।

शूरसेन—पुं०[सं० ब० स०] १ मथुरा के एक प्रसिद्ध राजा जो कृष्ण के पितामह और वसुदेव के पिता थे। २. मथुरा और उसके आस-पास के क्षेत्र का नाम।

शूर-सेनप—पुं० [सं० शूर-सेना√ पा (पालना)+क] वीर सेना के रक्षक, कार्तिकेय।

शूरा—स्त्री०[सं० शूर—टाप्] क्षीरकाकोली।

पुं०=शूर।

†पुं०=सूर्य।

शूर्प—पुं०[सं० √शूर्प् (परिमाण)+घञ्]१. अनाज फटकने का सूप। २. दो द्रोण का एक प्राचीन परिमाण।

शूर्पक—पुं०[सं० शूर्प+कन्] एक असुर जो किसी के मत से कामदेव का शत्रु था।

शूर्पकर्ण—वि०[सं० ब स०] जिसके सूप के समान कान हों।

पुं० १. हाथी। २. गणेश। ३. एक प्राचीन देश। ४. उक्त देश का निवासी। ५. एक पौराणिक पर्वत।

शूर्पकारि—पुं०[सं० ष० त० स०] शूर्पक का शत्रु अर्थात् कामदेव।

शूर्पणखा—वि० [सं० ब० स०] (स्त्री)जिसके नख सूप के समान हों।

स्त्री० रावण की बहन।

शूर्पनखा—स्त्री०= सूर्पणखा।

शूर्प-श्रुति—पुं०[सं० ब० स०] शूर्पकर्ण।

शूर्पाद्रि—पुं० [सं० मध्यम० स०] दक्षिण भारत का एक पर्वत।

शूर्पारक—पुं०[स०] बंबई प्रांत के थाना जिले के सोयारा नामक स्थान का प्राचीन नाम।

शूर्पी—स्त्री० [सं० सूर्प-ङीष्] १. छोटा सूप। २. शूर्पणखा। ३. एक प्रकार का खिलौना।

शूर्म—पुं०[सं० ब० स० अच्] [स्त्री० शूर्मि]१ लोहे की बनी हुई मूर्ति। २ निहाई।

शूल—पुं०[सं० √ शूल्+क]१. बरछे की तरह का एक प्राचीन अस्त्र। विशेष दे० 'त्रिशूल'। २. बड़ा, लंबा और नुकीला काँटा। ३. वायु के प्रकोप से पेट या आँतों में होनेवाली एक प्रकार की प्रबल और विकट पीड़ा। (कॉलिक पेन) ४. किसी नुकीली चीज के चुभने की तरह की शारीरिक पीड़ा। ५. सूली जिस पर प्राचीन काल में लोगों को प्राणदंड दिया जाता था। ६. पीड़ा विशेषतः छाती और पेट में होनेवाली ऐसी पीड़ा जो बरछी की तरह चुभती हुई जान पड़ती है। ७. एक रोग जिसमें रह रहकर उक्त प्रकार की पीड़ा होती है। ८. छड़। सलाख। ९. मृत्यु। मौत। १०. ज्योतिष में, विष्कंभ आदि सत्ताईस योगों के अन्तर्गत नवाँ योग। ११. झंडा। पताका। १२. पोस्ते की पत्तियों की वह तह जो अफीम की चक्की चलाने के समय उसके चारों ओर ऊपर-नीचे लगाई जाती है। (बंगाल)

वि०=नुकीला।

शूलक—पुं० [सं० शूल+कन्]१. पुराणानुसार एक ऋषि का नाम। २. दुष्ट या पाजी घोड़ा।

शूलकार—पुं०[सं० सूल√कृ (करना)+अण् उप० प० स०] पुराणानुसार एक नीच जाति।

शूलगव—पुं०[सं० ब० स०] शिव।

शूलगिरि—पुं० [सं० उपमि० मध्य० स० वा] मदरास राज्य का एक पर्वत।

शूलग्रह—पुं०[सं० शूल√ग्रह् (रखना)+अच्] शिव।

शूलग्राही (हिन्)—पुं०[सं० शूल√ ग्रह् (रखना)+णिनि] शिव। महादेव।

शूलघ्नी—स्त्री०[सं०] सज्जी मिट्टी।

शूल-धन्वा (न्वन्)—पुं०[सं० ब० स०] शिव।

शूल-धर—पुं०[सं० ष० त० स०] शिव।

शूल-धरा—स्त्री०[सं० शूलधर—टाप्] दुर्गा।

शूल-धारिणी—स्त्री०[सं० ष० त० स०] दुर्गा।

शूलधारी (रिन्)—पुं०[सं० शूल√ धृ (रखना)+णिनि] शिव।

शूलना—अ० [हिं० शूल+ना] १. शूल की तरह गड़ना। २. शूल गड़ने के समान पीड़ा होना।

स० शूल गड़ाना या चुभाना।

शूल-नाशन—पुं० [सं० शूल√नश्+णिच्—ल्यु—अन] १. सौवर्चल्य लवण। २. हींग। ३. पुष्कर मूल। ४. वैद्यक में, एक प्रकार का चूर्ण जिसका व्यवहार प्रायः शूल रोग में किया जाता है।

शूल-पत्नी—स्त्री० एक प्रकार की घास, जिसे शूली भी कहते हैं।

शूल-पाणि--पुं०[सं० ब० स०] शिव।

शूल-स्तूप—पुं०[सं०उपमि० स०] शूल के आकार-प्रकार का स्तूप।

शूल-हंत्री—स्त्री०[सं० ष० त० स०] अजवाइन।

शूलहस्त—पुं०[सं० ब० स०] शिव।

शूलांक—पुं०[सं० ब० स०] शिव। महादेव।

शूला--स्त्री० [सं० शूल--टाप्]१. वेश्या। रंडी। २. छड़। सलाख। ३. दे० 'सूली'।

शूलि--पुं० [सं० शूल+इनि] शिव का एक नाम।

†स्त्री०=सूली।

शूलिक—पुं०[सं० शूल+ठन्--इक]१. खरगोश। खरहा। २. वह जो लोगों को शूली पर चढ़ाता था।

शूलिका—स्त्री०[सं० शूलिक--टाप्] सीख में गोद कर भूना हुआ मांस। कबाब।

शूलिनी—स्त्री०[सं० शूलिन--ङीप्] १. दुर्गा का नाम। २. नागवल्ली। पान। ३. पुत्रदात्री नाम की लता।

शूली (लिन्)—वि० [सं० शूल+इनि] शूल रोग से ग्रस्त।

पुं०१. शिव। २. एक नरक। ३. खरगोश।

†स्त्री०=सूली।

शूल्य —पुं०[सं० शूल+यत्]=शूलिका।

शूल्यपाक—वि०[सं० ब० स०]सीख पर पकाया हुआ।

पुं० कबाब।

शूल्यवाण—पुं०[सं० ब० स०] भूतयोनि।

श्रृंखल--पुं० [सं० श्रृंग√खल् (तुष्टता करना) +अच्—पृषो०]१. मेखला। २. सिक्कड़। ३. बेड़ी और हथकड़ी। ४. नियम। कायदा।

वि० [भाव० श्रृंखलता] १. श्रृंखला के रूप में हो। सुश्रृंखल। २. व्यवस्थित तथा ठीक। ३. नियम, नियंत्रण आदि के अधीन।

श्रृंखलक—पुं०[सं० श्रृंखल+कन्] १. ऊँट। २. दे० 'श्रृंखला'।

श्रृंखलता—स्त्री० [सं० श्रृंखल+तल्--टाप्] श्रृंखल होने की अवस्था या भाव। सिलसिलेवार या क्रमबद्ध होने का भाव।

श्रृंखला--स्त्री०[सं० श्रृंखल--टाप्]१. एक दूसरी में पिरोई हुई बहुत सी कड़ियों का समूह। २. क्रम से आने या होनेवाली बहुत-सी बातें, चीजें, घटनाएँ आदि। (चेन, उक्त दोनों अर्थों में)। ३. एक प्रकार के कार्यों, वस्तुओं आदि का एक के बाद एक करके चलनेवाला क्रम। माला। (सीरीज) ४. कतार। श्रेणी। पंक्ति। ५. मेखला। ६. करधनी। ७. साहित्य में, एक अलंकार जिसमें कहे हुए पदार्थों का क्रम से वर्णन किया जाता है।

श्रृंखला-बद्ध--वि०[सं० तृ० त० स०] १. जंजीर या सिक्कड़ से बँधा हुआ। २. जो श्रृंखला के रूप में किसी विशिष्ट क्रम से लगा हो।

श्रृंखलित—भू० कृ०[सं० श्रृंखला+इतच्]१. सिक्कड़ से बंधा हुआ। २. श्रृंखला के रूप में बँधा या लाया हुआ। ३. तागे आदि में पिरोया हुआ।

श्रृंग—पुं० [सं०√श्रृ (हिंसा करना)+गन्नुट्] १. पशुओं का सींग। २. चोटी। शिखर। जैसे—पर्वत श्रृंग। ३. कँगूरा। ४. सिंगी नामक बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता है। ५. कमल। ६. जीवक नामक ओषधि। ७. सोंठ। ८. अदरक। आदी। ९. अगरु। १०. काम-वासना। ११. चिह्न। निशान। १२. स्त्री की छाती। स्तन। १३. प्रधानता। प्रमुखता। १४. पानी का फुहारा। १४. दे० 'ऋष्यश्रृंग' (ऋषि')

वि० तीक्ष्ण। तेज।

श्रृंगकंट—पुं०[सं० ब० स०] सिंघाड़ा।

श्रृंगज--पुं०[सं० श्रृंग√ जन् (उत्पन्न करना)+ड]१. अगर। अगरु। २. तीर। बाण।

वि० श्रृंग से उत्पन्न।

श्रृंग-धर--पुं०[सं० ष० त० स०] पर्वत। पहाड़।

श्रृंगनाम--पुं०[सं० ब० स०] एक प्रकार का विष।

श्रृंग-पुर—पुं०[सं० मध्यम० स०] श्रृंगवेरपुर।

श्रृंगला—स्त्री० [सं० श्रृंग √ला (लेना)+क] मेढ़ासिंगी।

श्रृंगवान् (वत्)—वि०[सं० श्रृंग+मतुप्-म=व-नुम्—दीर्घ, नलोप] श्रृंगवाला।

पुं० पर्वत। पहाड़।

श्रृंगवेर—पुं० [सं० ब० स०]१. आदी। अदरक। २. सोंठ। ३. दे० 'श्रृंगवेरपुर'।

श्रृंगवेरपुर—पुं०[सं० मध्यम० स०] इलाहाबाद जिले में गंगा तट पर स्थित सिंगरौर नामक स्थान जो प्राचीन काल में निषाद राजा गुह की राजधानी थी।

श्रृंगवेरिका—स्त्री०[सं० श्रृंगवेर+कन्--टाप्, इत्व]गोभी।

श्रृंगसुख--पुं०[सं० मध्यम० स०] सिंगी या सिंघा नामक बाजा।

श्रृंगसोर—पुं०[सं० उपमि स०] सोर नामक मछली।

श्रृंगाट—पुं०[सं० श्रृंग√अट् (प्राप्त होना)+अच्]१. सिंघाड़ा। २. गोखरू। ३. विककंत। कँटाई। ४. चौमुहानी या चौराहा। ५. कामरूप देश का एक पर्वत।

श्रृंगाटक—पुं०[सं० श्रृंगाट+कन्]१. सिंघाड़ा। २. प्राचीन काल का एक प्रकार का खाद्य-पदार्थ जो मांस से बनाया जाता था। ३. तीन चोटियोंवाला पर्वत। ४. चौमुहानी। ५. दरवाजा। ६. वैद्यक में, शरीर का एक मर्मस्थान जो मस्तक में उस स्थान पर माना जाता है, जहाँ नाक, कान, आँख और जीभ से संबंध रखनेवाली चारों शिराएँ हैं।

श्रृंगार—पुं०[सं० श्रृंग√ऋ (गमन करना आदि)+अण्]१. मूर्ति, शरीर आदि में ऐसी चीजें जोड़ना या लगाना जिनसे उनकी शोभा या सौन्दर्य और भी बढ़ जाय, और वे अधिक आकर्षक तथा प्रिय-दर्शन बन जायँ। २. लाक्षणिक अर्थ में, ऐसा तत्त्व या गुण जिससे किसी की शोभा बढ़ती तथा सौन्दर्य निखरता है। जैसे--लज्जा स्त्री का श्रृंगार है। ३. स्त्रियों की वह क्रिया जो वे सुन्दर कपड़े, गहने आदि लगाकर अपने आप को अधिक आकर्षक तथा सुन्दर बनाने के लिए करती हैं। सजावट। ४. वे सब पदार्थ जिनके योग से किसी चीज की शोभा या सौंदर्य बढ़ता हो। प्रसाधन-सामग्री। सजावट का सामान। ५. साहित्य का नौ रसों में से एक रस जिसमें प्रेमी और प्रेमिका के पारस्परिक प्रेमपूर्ण व्यवहारों की चर्चा होती है।

विशेष—श्रृंगार का मूल शब्दार्थ ही है-ऐसी स्थिति जिसमें काम-वासना की प्राप्ति या वृद्धि हो। मनुष्य की काम-वासना से सम्बद्ध बातों से

मिलनेवाला आनन्द या सुख ही इस रस का मूल आधार है; और यह सब रसों में प्रधान माना गया है। इसके दो मुर्ख्य विभाग किए गए हैं--संयोग और वियोग श्रृंगार।

५. उक्त के आधार पर भक्ति का वह पक्ष जिसमें भक्त अपने इष्टदेव को पति तथा अपने आपको उसकी पत्नी मानकर उसकी आराधना करता है। ६. मैथुन। रति। संभोग। ७. सिंधूर जो स्त्रियों के सौभाग्य का मुख्य चिह्न है। ८. लौंग। ९. अदरक। आदी। १०. चूर्ण। ११. काला अगर। १२. सोना। स्वर्ण।

श्रृंगारक—पुं०[सं० श्रृंगार+कन्]१. प्रेम। प्रीति। २. सिंधूर। ३. लौंग। ४. अदरक। आदी। ५. काला अगर।

वि० श्रृंगार करनेवाला।

श्रृंगार-जन्मा (न्मन्)—पुं० [सं० ब० स०] कामदेव।

श्रृंगारण—पुं०[सं० √ श्रृंगार√ नी (ढोना)+ड] कामवासना से प्रेरित होने पर किया जानेवाला प्रेमप्रदर्शन।

श्रृंगारना—स० [हिं० श्रृंगार+हिं० ना (प्रत्य०)] श्रृंगार करना। सजाना। सँवारना।

श्रृंगारभूषण—पुं० [सं० ष० त०]१. सिंधूर। २. हरताल।

श्रृंगारयोनि—पुं०[सं० ष० स०] कामदेव।

श्रृंगारवेग—पुं०[सं० ष०त०] वह सुन्दर वेग जिसे धारण करके प्रेमी अपनी प्रेमिका के पास जाता है, अथवा प्रेमिका अपने प्रेमी के पास जाती है।

श्रृंगारहाट—स्त्री०[सं०श्रृंगार+हिं० हाट] वह हाट या बाजार जिसमें मुख्यतः वेश्याएँ रहती हों। चकला।

श्रृंगारिक—वि० [सं० श्रृंगार+ठक—इक] १. श्रृंगार-संबंधी। श्रृंगार का। जैसे—श्रृंगारिक सामग्री। २. श्रृंगार रस से संबंध रखनेवाला। जैसे—श्रृंगारिक काव्य।

श्रृंगारिणी—स्त्री०[सं०]१. श्रृंगार करनेवाली स्त्री। २. वह स्त्री जिसका यथेष्ट श्रृंगार हुआ हो। ३. संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी। ४. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक पाद में चार रगण (ऽ।ऽ) होते हैं। उसको 'स्नाग्विणी' 'कामिनी' 'मोहन' 'लक्षीधरा' और 'लक्ष्मीधरा' भी कहते हैं।

श्रृंगारित—भू० कृ०[सं० श्रृंगार+इतच्]१. जिसका श्रृंगार हुआ हो। सजाया हुआ। २. मुग्ध।

श्रृंगारिया—पुं०[सं० श्रृंगार+हिं० इया (प्रत्य०)] १. वह जो श्रृंगार करने की कला में निपुण हो। २. देव-मूर्तियों का श्रृंगार करनेवाला व्यक्ति। ३. बहुरूपिया।

श्रृंगारी—वि०[सं० श्रृंगारिन्]१. श्रृंगार-संबंधी। श्रृंगार का। २. श्रृंगार रस का प्रेमी। ३. किसी के प्रेमपाश में बँधा हुआ। अनुरक्त।

पुं०१. वेश-भूषा और सजावट आदि। २. हाथी। ३. चुन्नी या मानिक नामक रत्न। ४. सुपारी।

श्रृंगाह्व—पुं०[सं० ब० स०] १. जीवक नामक ओषधि। २. सिंघाड़ा।

श्रृंगाह्वा—स्त्री०[सं० श्रृंगाह्व-टाप्]=श्रृंगाह्व।

श्रृंगि—पुं०[सं० श्रृंग+इनि] सिंघी मछली।

वि० श्रृंगी।

श्रृंगिक—पुं०[सं० श्रृंगी+कन्] सिंगिया नामक विष।

श्रृंगिका—स्त्री० [सं० श्रृंगिक—टाप्] १. सिंघी नामक बाजा। २. अतीस। ३. काकड़ा-सिंगी। ४. मेढ़ा-सिंगी। ५. पीपल।

श्रृंगिणी—स्त्री०[सं० श्रृंग+इनि—ङीष्]१. गाय। गौ। २. मोतिया। ३. माल-कंगनी। ४. अतीस।

श्रृंगी—वि०[सं० श्रृंगिन्] [स्त्री० श्रृंगिणी] जिसमें श्रृंग हो। श्रृंग से युक्त।

पुं०१. सींगवाला जानवर। २. पर्वत। पहाड़। ३. हाथी। ४. पेड़। वृक्ष। ५. बरगद। ६. पाकर। ७. अमड़ा। ८. जीवक नामक ओषधि। ९. ऋषभक नामक ओषधि। १०. सिंगिया नामक विष। ११. सिंगी नामक बाजा। १२. महादेव। शिव। १३. एक प्राचीन देश। १४. एक प्रसिद्ध ऋषि जो शमीक के पुत्र थे।

स्त्री०१. अतीस। २. काकड़ा-सिंगी। ३. सिंगी मछली। ४. मजीठ। ५. आँवला। ६. पोई का साग। ७. पाकर। ८. बरगद। ९. जहर। विष। १०. सोना। ११. ऋषभक नामक ओषधि।

श्रृंगी गिरि—पुं०[सं० मध्यम० स०] एक प्राचीन पर्वत जिस पर श्रृंगी ऋषि तप किया करते थे।

श्रृंगेरी—पुं०[सं०] मैसूर राज्य में स्थित शंकराचार्य के मतानुयायी संन्यासियों का एक प्रसिद्ध मठ।

श्रृंगोन्नति—स्त्री०[सं० ष० त० स०] ज्योतिष में ग्रहों, नक्षत्रों आदि की एक प्रकार की गति।

श्रृग—पुं०=श्रृगाल।

श्रृगाल—पुं०[सं० असृक √ला+क, पृषो०] १. सियार। गीदड़। २. बौद्ध साधुओं की परिभाषा में ज्ञानवान् मन का प्रतीक जो वासनामय मन के प्रतीक सिंह का शिकार करनेवाला कहा गया है। ३. वासुदेव। ४. कायर या डरपोक व्यक्ति। ५. निर्दय व्यक्ति। ६. खल। दुष्ट।

श्रृगालिका—स्त्री०[सं०श्रृगाल+कन्—टाप्—इत्व]१. गीदड़ की माता। गीदड़ी। २. लोमड़ी। ३. बिदारी कंद।

श्रृगाली—स्त्री० [सं० श्रृगाल—ङीष्]१. ताल-मखाना। २. बिदारी कंद। ३. मादा सियार।

श्रृत—पुं०[सं० √ शृ (पाक करना)+क्त]१. काढ़ा। क्वाथ। २. उबाला या औटाया हुआ दूध।

श्रृत-शीत—पुं० [सं० मध्य० स० (शृतरूपात् श्रीतः)] औटाया हुआ पानी जो प्रायः ज्वर के रोगियों को दिया जाता है।

श्रृष्टि—पुं०[सं०] कंस के आठ भाइयों में से एक।

†स्त्री०=सृष्टि।

शेख—पुं०[अ०] [स्त्री०शेखानी]१. पैगंबर मुहम्मद के वंशजों की उपाधि। २. मुसलमानों की चार जातियों में से एक जो अन्य तीनों से श्रेष्ठ मानी गई है। ३. इस्लाम धर्म का उपदेशक। ४. वृद्ध और पूज्य व्यक्ति। पीर।

†पुं०=शेष।

शेखचिल्ली—पुं०[अ०+हिं०]१. एक कल्पित मूर्ख व्यक्ति जिसके संबंध में बहुत-सी विलक्षण और हास्यास्पद कहानियाँ कही जाती हैं। २. ऐसा मूर्ख व्यक्ति जो बिना समझे-बूझे बहुत बढ़-चढ़कर बे-सिर पैर की बातें कहता हो।

शेखर—पुं० [सं० √ शिखि+अरन—पृषो०]१. शीर्ष। सिर। माथा। २. सिर पर पहनने का किरीट या मुकुट। ३. सिर पर लपेटी जानेवाली

माला। ४. पहाड़ का चोटी। शिखर। ५. ऊपरी सिरा। ६. उच्चता या श्रेष्ठता का सूचक पद। ७. छंद शास्त्र में टगण के पाँचवे भेद की संज्ञा (।।S।) जैसे—व्रजनाथ। ८. संगीत में, ध्रुव या स्थायी पद का एक प्रकार का भेद।

शेखर-चंद्रिका—स्त्री०[सं०ष०त०]संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

शेखरापीड़ योजन—पुं० [सं० ब० स०] चौसठ कलाओं में से एक कला। जिसमें सिर पर पगड़ी, माला आदि सुन्दर रूप से पहनाई जाती है।

शेखरी—स्त्री० [सं० शेखर—ङीप्]१. वंदाक। बाँदा। २. लौंग। ३. सहिजन की जड़। ४. संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

शेखसद्दो—पुं०[अ० शेख+देश० सद्दो]मुसलमान स्त्रियों के उपास्य एक कल्पित पीर जो कभी कभी भूत-प्रेत की तरह उनके सिर पर आते या उन्हें आविष्ट करते हैं।

शेखावत—पुं० [अ० शेख] राजस्थान के राजपूतों की एक उपजाति।

शेखी—स्त्री०[फा० शेखी]१. मुसलमानों की शेख नामक जाति या वर्ग का अभिमान या घमंड। २. इस प्रकार का झूठा अभिमान कि हमने अमुक अमुक बड़े काम किये हैं अथवा हम ऐसे ऐसे काम कर सकते हैं। डींग। ३. झूठी शान। अकड़।

क्रि० प्र०—बघारना।—हाँकना।

शेखीबाज—वि०[अ० शेखी+फा० बाज़] [भाव० शेखीबाजी] शेखी बघारने या डींग हाँकनेवाला।

शेप—पुं०[सं० शी+पन्]१. पुरुष की इंद्रिय। लिंग। २. अण्डकोष। ३. दुम।

शेफ—पुं०[सं० शी+फन्] शेप।

शेफालि, शेफालिका, शेफाली—स्त्री० [सं० ब० स०] नील सिंधुआर का पौधा। निर्गुंडी।

शेयर—पुं०[अं०]१. संपत्ति आदि में होनेवाला अंश। २. व्यापार आदि में होनेवाला हिस्सा। पत्ती।

शेर—पुं०[सं० दंशेर से फा०] [स्त्री० शेरनी] १. एक प्रसिद्ध हिंसक पशु। सिंह।

पद—**शेर बबर, शेर बच्चा, शेरमर्द**।

मुहा०—**शेर और बकरी का एक घाट पर पानी पीना**=ऐसी स्थिति होना जिसमें दुर्बल को सबल का कुछ भी भय न हो।

२. अत्यन्त निर्भीक, वीर और साहसी पुरुष। (लाक्षणिक) ३. बहुत उग्र या तीव्र पदार्थ या व्यक्ति।

मुहा०—**(बत्ती) शेर करना**=चिराग की बत्ती बढ़ाकर रोशनी तेज करना।

वि० बहुत गहरा या चटकीला (रंग)। जैसे—शेर गुलाब या शेर लाल।

पु०[अ०] फारसी, उर्दू आदि की कविता के दो चरणों का समूह।

शेर अफगान—वि०[फा०] शेर को गिराने या पछाड़नेवाला।

शेरगढ़ी—स्त्री०[हिं०]सम्राट् अशोक के स्तम्भों पर की वह आकृति जिसमें चारों ओर चार शेरों के मुँह होते हैं और जिसकी अनुकृति स्वतन्त्र भारत का राजचिह्न है।

शेर-दरवाजा—पुं०]०ाफा]=सिंह-द्वार।

शेर-दहाँ—वि०=शेरमुहाँ। (दे०)

शेर-पंजा—पुं० [फा० शेर+पंजः] शेर के पंजों के आकार का एक अस्त्र। बघनहाँ।

शेरपा—पुं० [फा० शेर+पा (नेपाली प्रत्य०] १. चीता। बाघ। २. वह पहाड़ी मजदूर जो २४-२५ हजार फुट से भी अधिक ऊँचाई वाले पहाड़ों पर चढ़ने का अभ्यस्त हो। ३. साधारणतः ऊँचे पहाड़ों पर, विशेषतः हिमालय पर चढ़नेवाला मजदूर।

शेर-बच्चा—पुं०[फा०शेर-बच्चः]१. बहुत ही पराक्रमी तथा वीर व्यक्ति। २. पुरानी चाल की एक प्रकार की छोटी बन्दूक।

शेर-बबर—पुं०[फा०] सिंह। केसरी।

शेर-मर्द—पुं० [फा०] [भाव० शेरमर्दी] बहुत ही पराक्रमी और वीर व्यक्ति।

शेर-मुहाँ—वि०[फा०+हिं०]१. जिसका मुँह या अगला भाग शेर की आकृतिवाला हो। जैसे—शेरमुहाँ कड़ा। २. (जमीन या मकान) जिसका अगला भाग चौड़ा और पिछला भाग सँकरा हो। नाहर-मुखी। (अशुभ)

शेरवानी—स्त्री०[देश०] मुसलमानी ढंग का एक प्रकार का अंगा।

शेल—पुं०=दे० 'सेल'।

शेलुक—पुं०[सं० शेलु+कन्]१. लिसोड़ा। २. मेथी। ३. लोध।

शेलुका—स्त्री०[सं० शेलुक—टाप्]वनमेथी।

शेव—पुं० [सं० शी+वन्]१. उन्नति। २. उच्चता। ऊंचाई। ३. धन-दौलत। ४. लिंग। ५. मछली। ६. साँप। ७. अग्नि।

शेवड़ा—पुं०[सं० श्रावक] जैन यति या साधू।

शेवल—पुं० [सं० शेव√ला (लेना)+क] सेवार। शैवाल।

शेवलिनि—स्त्री०[सं० शेवल+इनि]१. ऐसी नदी जिसमें सेवार हो। २. नदी।

शेवा—पुं०[फा० शेवः]तौर तरीका। (आचार-व्यवहार आदि का) ढंग।

शेवाल—पुं०[सं० √शी +विच्√ वल्+घञ्] सेवार। सेवाल।

शेवाली—स्त्री०[सं०शेवाल—ङीप्]एक प्रकार की जटामासी (वनस्पति)।

शेष—वि० [सं०√शिष् (मारना)+अच्] १. औरों विशेषतः साथ वालों के न रह जाने पर भी जो अभी विद्यमान हो। २. अनावश्यक या आवश्यकता से अधिक होने पर जिसका आभोग या उपयोग न किया जा सका हो। ३. जो पूर्णतया क्षीण, नष्ट या समाप्त हो गया हो। ४. जिसका उल्लेख, कथन आदि अभी होने को हो। जैसे—कहानी अभी खतम नहीं हुई शेष फिर सुनाऊँगा।

पुं०१. बाकी बची हुई चीज या भाग। अवशिष्ट अंश। २. किसी घटना या व्यक्ति का स्मरण करनेवाला कोई बचा हुआ पदार्थ या वस्तु। स्मारक। ३. बड़ी संख्या में से छोटी संख्या घटाने से बची हुई संख्या। बाकी। ४. वह पद या शब्द जो किसी वाक्य का अर्थ या आशय पूरा और स्पष्ट करने के लिए लगाना पड़ता हो। अध्याहार। ५. अंत। समाप्ति। ६. परिणाम। फल। ७. मृत्यु मौत। ८. नाश। ९. पुराणानुसार सहस्र फणों के सर्पराज जो पाताल में हैं और जिनके फनों पर पृथ्वी का ठहरा होना कहा गया है। १०. रामचन्द्र के भाई लक्ष्मण जो उक्त सर्पराज के अवतार माने जाते हैं। ११. बलराम। १२. एक प्रजापति। १३. दस दिग्गजों में से एक। १४. परमेश्वर। १५.

हाथी। १६. जमालगोटा। १७. पिंगल में टगण के पाँचवे भेद का नाम। १८. छप्पय छंद के पचीसवें भेद का नाम जिसमें ४६ गुरु, ६० लघु कुल १०६ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं।

शेष जाति—स्त्री० [सं० ष० त०] गणित में बचे हुए अंक को लेने की क्रिया।

शेषधर—पुं० [सं० ष० त०] शेष अर्थात् सर्प को धारण करनेवाले, शिवजी।

शेषनाग—पुं०[सं० मध्य० स०] सर्पराज शेष जो पुराणानुसार पृथ्वी को अपने सिर पर धारण करनेवाले माने गये हैं।

शेषवाद—पुं०[सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

शेषर—पुं०=शेखर।

शेषराज—पुं०[सं०]१. एक प्रकार का वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो मगण होते हैं। विद्युल्लेखा। २. शेषनाग।

शेषव्रत—पुं०[शेष+मतुप् म=व]न्याय में अनुमान का एक भेद जिसमें किसी परिणाम के आधार पर पूर्ववर्ती कारण या घटना का अनुमान किया जाता है। जैसे—नदी की बाढ़ देखकर ऊपर हुई वर्षा का अनुमान।

शेषशायी (यिन्)—पुं०[सं० शेष√शी+णिनि]शेषनाग पर शयन करने वाले, विष्णु।

शेषांश—पुं०[सं० कर्म० स०]१. बचा हुआ अंश या भाग। २. अन्तिम अंश या भाग।

शेषा—स्त्री० [सं० शेष—टाप्] देवताओं को चढ़ी हुई वस्तु जो दर्शकों या उपासकों को बाँटी जाय। प्रसाद।

शेषाचल—पुं०[सं० मध्यम० स०] दक्षिण भारत का एक पर्वत।

शेषोक्त—भू० कृ० [सं० सप्त० त० स०] कइयों में से अन्त में कहा हुआ। जिसका उल्लेख सब के अन्त में हुआ हो।

शै—स्त्री०[अ०] १. वस्तु। पदार्थ। चीज। २. भूत-प्रेत।

†स्त्री० दे० 'शह।' (उत्तेजना)।

शैक्य—पुं०[सं० शैक+यत्] सिकहर। छीका।

शैक्ष—पुं०[सं० शिक्षा+अण्] आचार्य के पास रहकर शिक्षा प्राप्त करने वाला शिष्य।

शैक्षणिक—स्त्री० [सं० शिक्षण+ठक्—इक] १. शिक्षण या शिक्षा-सम्बन्धी। (एजुकेशन) २. शिक्षाप्रद। ३. शास्त्रीय ज्ञान अथवा उसके शिक्षण से संबंध रखनेवाला। शास्त्रीय। (एकेडेमिक)

शैक्षिक—वि० [सं० शिक्षा+ठक्—इक] शिक्षा-संबंधी। शिक्षा का। (एजुकेशनल)

पुं० १. वह जो शिक्षा (वेदांग) का ज्ञाता या पंडित हो। २. वह जो आधुनिक शिक्षा-विज्ञान का पंडित हो। (एजुकेशनिष्ट)

शैख—पुं०[सं०] नीच तथा पतित ब्राह्मण की संतान। (स्मृति)

शैखरिक—पुं०[सं० शिखर+ठक्—इक]अपामार्ग। चिचड़ा। लटजीरा।

शैघ्रय—पुं०[सं० शीघ्र+अण्] शीघ्रता। तेजी।

शैतान—पुं०[अ०] १. ईश्वर के सन्मार्ग का विरोध करनेवाली शक्ति जो कुछ सामी धर्मों (यथा इस्लाम धर्म, ईसाई आदि) में एक दुष्ट देवता और पतित देवदूतों के अधिनायक के रूप में मानी गई है। यह भी माना जाता है कि यही मनुष्यों को बहकाकर कुमार्ग में लगाता और ईश्वर तथा धर्म से विमुख करता है।

पद—शैतान का बच्चा=बहुत दुष्ट आदमी। **शैतान की आँत**=बहुत लंबी-चौड़ी चीज या बात। (व्यंग्य) **शैतान की खाला**=बहुत दुष्ट या पाजी औरत (गाली)। **शैतान के कान बहरे**=ईश्वर करे, शैतान यह शुभ बात न सुन सके और इसमें बाधक न हो। (मंगलाकांक्षा का सूचक)।

२. दुष्टदेव योनि। भूत-प्रेत आदि।

मुहा०—(सिर पर) शैतान चढ़ना या लगना= भूत-प्रेत आदि का आवेश होना। °प्रेत का भाव पड़ना।

३. बहुत बड़ा अत्याचारी या दुष्ट व्यक्ति। ४. दुर्वृत्ति, प्रबल काम-वासना, क्रोध आदि।

मुहा०—शैतान सवार होना=दुर्वृत्तियों का बहुत प्रबल होना।

५. लड़ाई-झगड़ा या उपद्रव।

मुहा०—शैतान उठाना या मचाना=झगड़ा खड़ा करना। उपद्रव मचाना।

शैतानी—वि०[अ० शैतान] १. शैतान-संबंधी। शैतान का। जैसे—शैतानी गोल। शैतानियों की तरह का बहुत दुष्ट।

स्त्री०१. दुष्टता। पाजीपन। शरारत। २. ऐसा आचरण जो किसी को परेशान करने के लिए किया जाय।

शैत्य—पुं०[सं० शीत+ष्यञ्] शीतलता। ठंढक।

शैथिल्य—पुं०[सं० शिथिल+ष्यञ्]१. शिथिल होने की अवस्था या भाव। शिथिलता। २. तत्परता का अभाव। सुस्ती।

शैदा—वि०[फा०] जो किसी के प्रेम में मुग्ध हो। प्रेम से पागल।.

शैन्य—पुं०[सं० शिनि+यञ्] शिनि का वंश।

शैल—वि०[सं० √ शिला+अण्] १. शिला संबंधी। पत्थर का। २. जिसमें पत्थर के टुकड़े मिले हों। पथरीला। ३. कड़ा। कठोर। सख्त।

पुं०१. पर्वत। पहाड़। २. चट्टान। ३. छरीला नामक वनस्पति। शैलेय। ४. रसौत। ५. शिलाजीत। ६. लिसोड़ा।

शैलक—पुं० [सं० शैल+कन्] छरीला। शैलेय।

शैलकटक—पुं०[सं० ष० त०] पहाड़ की ढाल।

शैल-कन्या—स्त्री० [सं० ष० त० स०] हिमालय पर्वत की पुत्री,पार्वती।

शैलकुमारी—स्त्री० [सं० ष० त० स०]=शैलकन्या। पार्वती।

शैल-गंगा—स्त्री०[सं० ष० त० स०] गोवर्द्धन पर्वत की एक नदी जिसमें श्री कृष्ण ने सब तीर्थों का आवाहन किया था।

शैल-गंध—पुं०[सं० ब० स०] शबर चंदन। बर्बर चन्दन।

शैलगृह—पुं० [सं० सप्त० त०] पहाड़ या चट्टान में खोदकर बनाया हुआ प्रसाद या मन्दिर।

शैलज—पुं०[सं० शैल√जन् (उत्पन्न करना)+ड] पत्थर। फूल। छरीला।

वि० [स्त्री० शैलजा] पर्वत से उत्पन्न।

शैलजा—स्त्री०[सं० शैलज—टाप्] १. पार्वती। २. गज पिप्पली। ३. दुर्गा। ४. सैंहली।

शैलजात—पुं० =शैलेय।

शैल-तटी—स्त्री०[सं० ष० त० स०] पहाड़ की तराई।

शैल-धन्वा (न्वन्)—पुं०[सं० ब० स०] महादेव। शिव।

शैलधर—पुं०[सं० ष० त० स०] गोवर्धन पर्वत धारण करनेवाले, श्रीकृष्ण।

शैलनंदिनी—स्त्री० [सं०] पार्वती।

शैलनिर्यास—पुं०[सं०] शिलाजीत।

शैलपति—पुं०[सं० ष० त० स०] हिमालय पर्वत।

शैलपत्र—पुं०[सं० ष० त० स०] बेल का पेड़ और फल।

शैलपुत्री—स्त्री०[सं० ष० त० स०]१. पार्वती। २. नौ दुर्गाओं में से एक। ३. गंगा नदी।

शैल-पुष्प—पुं० [सं० ष० त० स०] शिलाजीत। शिलाजतु।

शैलबीज—पु० [सं० ष० त०] भिलावाँ।

शैलभेद—पुं०[सं० ष० त० स०] पखान-भेदी (पौधा)।

शैलमंडप—पुं० [सं० स० त०]=शैल-गृह।

शैलरंध्र—पुं० [सं० ष० त०] गुफा।

शैलराज—पुं०[सं० ष० त०] हिमालय पर्वत।

शैलशिविर—पुं० [सं० ष० त०, ब० स० वा] समुद्र। सागर।

शैल-संभव—पुं०[सं० ब० स०] शिलाजीत।

शैल-सुता—स्त्री०[सं० ष० त० स०]१. पार्वती। २. दुर्गा। ३. गंगा नदी।

शैलाग्र—पुं० [सं० ष० त० स०] पर्वत का शिखर।

शैलाट—पुं०[सं० शैल√ अट्(चलना)+अच्] १. पहाड़ी आदमी। परबतिया। २. बिल्लौर। स्फटिक। ३. शेर। सिंह।

शैलाधिप, शैलाधिराज-पुं० [सं० ष० त०] हिमालय।

शैलाभ—पुं० [सं० ब० स०] विश्वदेवों में से एक।

शैलाली—पुं०[सं० शिलालि+णिनि—दीर्घ-नलोप] नट।

शैलिक—पुं०[सं० शिला+ठक्—इक] शिलाजीत।

शैली—स्त्री०[सं० शैल-ङीप्]१. ढंग। तरीका। २. साहित्य में, बोल या लिखकर विचार प्रकट करने का वह विशिष्ट ढंग जिसपर वक्ता या उसके काल, समाज आदि की छाप लगी होती है। जैसे—भारतेंदु की शैली, द्विवेदीयुगीन शैली। ३. कोई काम करने अथवा कोई चीज निर्मित, प्रस्तुत या प्रदर्शित करने का कलापूर्ण ढंग। जैसे—चित्र-कला की पहाड़ी शैली, मुगल शैली, राजस्थानी शैली आदि। ४. कठोरता। सख्ती।

शैलीकार—पुं० [सं० शैली√कृ+अण्] वह जिसने कला, काव्य, साहित्य आदि के किसी क्षेत्र में किसी नई और विशिष्ट शैली का प्रचलन किया हो।

शैलू—पुं०[देश०] लिसोड़ा।

स्त्री० गुजरात और दक्षिण भारत में बननेवाली एक प्रकार की चटाई।

शैलूक—पुं०[सं० शैल+ऊकञ्]१. लिसोड़ा। २. भसींड।

शैलूष—पुं०[सं० शिलूष+अण्]१. अभिनय करनेवाला व्यक्ति। अभिनेता। नट। २. गंधर्वों का नेता। ३. बेल का पेड़।

वि० धूर्त।

शैलूषिक—पुं० [सं० शिलूष+ठक्-इक] [स्त्री० शैलूषिकी] अभिनेता। वि०, पुं०=शैलूष।

शैलेंद्र—पुं०[सं० नित्य० स०] हिमालय पर्वत।

शैलेय—वि०[सं० शिला+ढक्—एय] १. जिसमें पत्थर हो। पथरीला। २. पहाड़ का। पहाड़ी। ३. जो पत्थर से उत्पन्न हो।

पुं० १. शिलाजीत। २. छरीला। ३. मूसलीकंद। ४. सेंधा नमक। ५. सिंह। ६. भौंरा।

शैलेयी—स्त्री०[सं० शैलेय-ङीप्].पार्वती।

शैलेश्वर—पुं०[सं० ष० त० स०] शिव। म्हादेव।

शैलोदा—स्त्री०[सं० ब० स०] उत्तर दिशा की एक प्राचीन नदी।

शैल्य—वि० [सं० शिला+ष्यञ्] १. पत्थर का। २. पथरीला। ३. पहाड़ी। ४. कठोर। सख्त।

शैव—वि० [सं० शिव+अण्] १. शिव-संबंधी। शिव का। जैसे—शैव दर्शन। २. शैव सम्प्रदाय का अनुयायी।

पुं०१. शिव का उपासक या भक्त। २. हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध संप्रदाय (वैष्णव से भिन्न) जो शिव का उपासक है। ३. पाशुपत अस्त्र। ४. धतूरा। ५. अड़ूसा। ६. जैनों के अनुसार पाँचवें कृष्ण या वासुदेव का एक नाम।

शैवपत्र—पुं०[सं० ब० स०]विल्व वृक्ष, जिसकी पत्तियाँ शिव पर चढ़ती हैं। बेल।

शैव पुराण—पुं०[सं० कर्म० स०] शिव पुराण।

शैवल—पुं०[सं० √शी(शयन करना)+वलञ्]१. पद्म काष्ठ। पदमकाठ। २. सेवार। ३. एक प्राचीन पर्वत।

शैवलिनी—स्त्री०[सं० शैवल+इनि—ङीप्] नदी।

शैवागम—पुं०[सं०]शैवमत के प्रतिपादक धर्म ग्रन्थ जो प्रायः ई० सातवीं शती से पहले बने थे।

शैवाल—पुं० [सं० √ शि (शयन करना)+वालञ्] सेवार।

शैवी—स्त्री०[शैव-ङीप्]१. पार्वती। २. मनसा देवी। ३. कल्याण। मंगल।

शैव्य—वि० [सं० शिव+ञ्य] शिव-संबंधी। शिव का।

पुं०१. कृष्ण के एक घोड़े का नाम। २. पाण्डवों की सेना का एक यूथप।

शैव्या—स्त्री० [सं० शैव्य—टाप्] अयोध्या के सत्यव्रती राजा हरिश्चन्द्र की रानी। (चंड कौशिक)

शैशव—वि०[सं० शिशु+अण्]१. शिशु संबंधी। बच्चों का। २. शिशु या छोटे बच्चों की अवस्था से सम्बन्ध रखनेवाला।

पुं० १. शिशु होने की अवस्था या भाव। २. १६ वर्ष से कम अवस्था। बचपन। ३. लड़कपन।

शैशविक—वि०[सं० शैशव+ठक्—इक-] शैशव-संबंधी। शैशव का।

शैशविकी—स्त्री० [सं०] आधुनिक चिकित्सा-प्रणाली की वह शाखा जिसमें शिशुओं के लालन-पालन, रक्षण आदि के प्रकारों एवं सिद्धान्तों का विवेचन होता है। (पेडियाट्रिक्स)

शैशिर—वि०[सं० शिशिर+अण्] १. शिशिर-संबंधी। शिशिर काल या ऋतु का। २. शिशिर-ऋतु में होनेवाला।

पुं०१. ऋग्वेद की एक शाखा के प्रवर्तक एक ऋषि। २. चातक।

शैषिक—वि०[सं० शेष+ठञ्—इक] शेष या अन्तिम भाग से संबंध रखनेवाला। शेष का।

शोक—पुं०[सं० √शुच्(शोक करना)+घञ्]१. किसी आत्मीय या

महान् पुरुष की मृत्यु के कारण होनेवाला घोर दुःख। सोग। (मोर्निंग) २. बहुत अधिक दुःख।

शोकघ्न—पुं० [सं० शोक √हन् (मारना)+टच्, कुत्व] अशोक वृक्ष।

शोकहर—पुं०[सं० ब० स०]१. एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक पद में ८, ८, ८, ६ के विश्राम से (अंत में गुरु सहित) तीस मात्राएँ होती हैं। प्रत्येक पद के दूसरे, चौथे और छठे चौकाल में जगण न पड़े। इसे शुभंगी भी कहते हैं।

वि० शोक दूर करनेवाला।

शोकाकुल—वि०[सं० तृ० त० स०] शोक से विकल।

शोकारि—पुं०[सं० ष० त० स०] कदम का पेड़। कदंब का वृक्ष।

शोकार्त—वि०[सं० तृ० त० स०] शोक से विकल।

शोकी (किन्)— वि०[सं० शोक+इनि] [स्त्री० शोकिनी] जिसे शोक हुआ हो या जो शोक कर रहा हो।

स्त्री० रात।

शोख—वि० [फा०] [भाव० शोखी]१. ढीठ तथा निडर। २. ऐसा चंचल या चपल जो केवल दूसरों को चिढ़ाने या तंग करने के लिए बढ़-बढ़कर धृष्टतापूर्ण बातें तथा व्यवहार करता हो। नटखट। (उर्दू-फारसी की कविताओं में प्रेम-पात्र का विशेषण)। ३. (रंग) जो बहुत चटकीला या तेज हो।

शोखी—स्त्री० [फा०] शोख होने की अवस्था, गुण या भाव। (उर्दू-फारसी कविताओं में प्रेमपात्र का एक विशिष्ट गुण) २. रंग की चटकाहट।

शोच (न्)—पुं०[सं०]१. दुःख। रंज। २. चिन्ता। फिक्र।

शोचन—पुं०[सं० √ शुच् (शोक करना)+ल्युट्—अन] [वि० शोचनीय, शोचितव्य, शोच्य] १. शोक करना। रंज करना। २. चिन्ता करना। ३. शोक।

शोचनीय—वि०[सं० √शुच् (शोक करना)+अनीयर्] जिसके संबंध में शोच करना पड़ता हो। जो चिन्ता या फिक्र का विषय हो।

शोचि—स्त्री०[सं०]१. लौ। लपट। २. चमक। दीप्ति। ३. रंग। वर्ण।

शोच्य—वि०[सं० शुच्+ण्यत्]=शोचनीय।

शोटीर्य—पुं०[सं० शुटीर+यत्]बल। वीर्य। पराक्रम।

शोठ—वि०[सं० √ शुठ् (आलस्य करना)+अच्]१. मूर्ख। बेवकूफ २. दुष्ट। बुरा। ३. आलसी।

शोण—वि०[सं० √शोण् (गत्यादि)+अच्]१. रक्त वर्ण। लाल। उदा०—अरुण जलज के शोण कोण थे।—प्रसाद।

पुं० १. लाल रंग २. अरुणता। लाली। ३. अग्नि। ४. सिंदूर। ५. रक्त। लहू। ६. पद्मराग मणि। ७. लाल गदहपूरना। ८. सोनापाठा। ९. लाल गन्ना। १०. सोन (नद)।

शोणक—पुं०[सं० शोण+कन्]१. सोनापाठा। २. लाल गन्ना।

शोणगिरि—पुं०[सं० मध्य० स०] बिहार की एक पहाड़ी जिस पर मगध देश की पुरानी राजधानी (राजगृह) बसी थी।

शोणझिंटी—सं० स्त्री०[सं० कर्म० स०] पीली कटसरैया।

शोणपत्र—पुं०[सं० ब० स०] लाल पुनर्नवा।

शोणपद्म—पुं०[सं० कर्म० स०] लाल कमल।

शोणपुष्प—पुं०[सं० ब० स०] कचनार।

शोणपुष्पी—स्त्री०[सं०] सिंदूर पुष्पी।

शोणभद्रा—पुं०[सं० शोणभद्र-टाप्] सोन नामक नद।

शोणरत्न—पुं०[सं० कर्म० स०] मानिक। लाल।

शोणांबु—पुं०[सं० ब० स०] प्रलयकाल के मेघों में से एक मेघ।

शोणा—स्त्री०[सं० शोण्—टाप्]१. सोन नामक नद। २. लाल कटसरैया।

शोणित—वि० [सं०√शोण् (रंग)+क्त शोण्+इतच् वा] लाल। जैसे—शोणित चंदन।

पुं०१. रक्त। लहू। २. वनस्पतियों का रस। ३. केसर। ४. सिंदुर। ५. ताँबा। ६. तृण-केसर।

शोणितपुर—पुं०[सं० मध्य० स०] वाणासुर की राजधानी का नाम।

शोणित-शर्करा—स्त्री०[सं० कर्म० स०] शहद की चीनी।

शोणितार्बुद—पुं०[सं० ब० स०] एक प्रकार का रोग जिसमें लिंग पर फुंसियाँ हो जाती हैं।

शोणितोपल—पुं०[सं० मध्य० स०] मानिक। लाल।

शोणिमा (मन्)—स्त्री०[सं० शोण+इमनिच्]लालिमा। लाली।

शोणोपल—पुं०[सं० मध्य० स०] मानिक। लाल।

शोथ—पुं०[सं०√शु (गत्यादि)+यन्] १. शरीर के किसी अंग का फूलना। सूजन। २. अंग में सूजन होने का रोग। (इन्फ्लेमेशन)

शोथक—वि०[सं० शोथ+कन्] शोक उत्पन्न करनेवाला।

पुं०१. शोथ। सूजन। २. मुरदाशंख।

शोथघ्नी—स्त्री०[सं० शोथ √हन्+टच्—कुत्व—ङीप्]१. गदहपूरना। पुनर्नवा। २. शालिपर्णी। सरिवन।

शोथजित्—पुं०[सं० शोथ√जि+क्विप्—तुक्]१. भिलावाँ। भल्लनातक। २. गदहपूरना।

शोथारि—पुं०[सं० ष० त० स०] पुनर्नवा। गदहपूरना।

शोद्धव्य—वि०[सं०√शुध् (शोधन करना)+तव्य] शोधे जाने के योग्य।

शोध—पुं०[सं० √ शुध् (शोधन करना) +अच्]१. शुद्ध करना या बनाना। २. कमी, त्रुटियाँ आदि ठीक तथा दुरुस्त करना। ३. छिपी हुई तथा रहस्यपूर्ण बातों की खोज करना। ४. ऋण चुकाना। ५. जाँच। परीक्षण।

शोधक—वि०[सं० √शुध्+णिच्—ण्वुल्—अक]१. शुद्ध या साफ करनेवाला। जैसे—तेल-शोधक यंत्र। २. शोध या अन्वेषण करनेवाला। ३. ढूँढ़ने या पता लगानेवाला।

शोधन—पुं०[सं०√ शुध्(शोधन करना)+णिच्—ल्युट्+अन] १. शुद्ध या साफ करने की क्रिया या भाव। अनमेल या हानिकर तत्त्व निकालकर किसी चीज को शुद्ध बनाना। २. अशुद्धि, दोष, भूल आदि का सुधार करना। (करेक्शन) ३. वह प्रक्रिया जिसमें धातुओं को शुद्ध करके ओषधि का रूप दिया जाता है। ४. नई बातों की खोज करना। खोज का कार्य। अन्वेषण। ५. ऋण चुकाना। ६. प्रायश्चित्त। ७. विरेचन। ८. भाज्य में से भाजक को घटाना। ९. मल। विष्ठा। १०. नींबू। १६. हीरा कसीस।

शोधनक—वि०[सं० शोधन+कन्]शोधन करनेवाला।

शोधना—स०[सं० शोधन]१. शुद्ध या साफ करना। २. ठीक या दुरुस्त

करना। ३. तलाश करना। खोजना। ढूँढ़ना। ४. वैद्यक में, धातुओं को विशेष रीति से इस प्रकार शुद्ध करना कि वे ओषधियाँ बन जायँ।

शोध-निबंध—पुं०[सं० मध्य० स०] ऐसा निबंध जिसमें किसी गंभीर विचारणीय विषय के सब अंगों की अच्छी तरह जाँच-पड़ताल करके उसके संबंध में कोई मत या विचार स्थिर किया गया हो। (डिस्सर्टेशन)

शोधनी—स्त्री०[सं० शोधन-ङीप्] १. मार्जन। झाड़ू। २. ताम्रवल्ली। ३. नील। ४. ऋद्धि नामक औषधि। ५. जमालगोटा।

शोधनीय—वि० [सं०√शुध् (शोधन करना)+अनीयर्] १. जिसका शोधन होने को हो। २. (ऋण या देन) जो चुकाया जाने को हो। ३. जो ढूँढ़ा जाने को हो।

शोधवाना—स०[हिं० शोधना का प्रे०] १. शोधने का काम किसी से कराना। शुद्ध कराना। २. तलाश कराना। ढुँढ़वाना।

शोध-शाला—स्त्री०[सं०]१. वह स्थान जहाँ किसी प्रकार का शोधकार्य होता हो। २. वह स्थान जहाँ धातुओं को शोधकर उनकी ओषधियाँ बनाई जाती हैं। ३. आज-कल वह कारखाना जहाँ तेल, धातु आदि प्राकृतिक पदार्थों को रासायनिक प्रक्रियाओं से शुद्ध और निर्मल करके काम में लाने योग्य बनाया जाता हो। (रीफ़ाइनरी)

शोधा—पुं० [हिं० शोधना]सोना-चाँदी शुद्ध करनेवाला व्यक्ति। शोधन करने या शोधनेवाला।

शोधाक्षम—वि० [सं० शोध+अक्षम] (व्यक्ति) जो अपना ऋण चुकाने में अक्षम या असमर्थ हो। दिवालिया।

शोधित—भू० कृ०[सं० शोध+इतच्] १. जिसका शोधन हुआ हो। शुद्ध या साफ किया हुआ। २. जो दोष या भूल सुधारकर ठीक किया गया हो। (करेक्टेड) ३. जिसका या जिसके संबंध में शोध हुआ हो। ४. (ऋण या देन) जिसका परिशोधन हुआ हो। चुकाया हुआ।

शोधैया—वि०[हिं० शोधना+ऐया (प्रत्य०)] शोधनेवाला।

शोध्य—पुं० [सं० शुध+यत्]अपने अपराध के विषय में सफाई देनेवाला। अपराधी व्यक्ति।

वि०=शोधनीय।

शोध्यपत्र—पुं०[सं० कर्म० स०] छापाखाने में छापनेवाली चीज का वह नमूना जो छापने से पहले भूलें आदि सुधारने के लिए तैयार होता है। (प्रूफ़)

शोफ—पुं०[सं०]१. शरीर पर होनेवाली ऐसी सूजन जिसमें जलन या पीड़ा न हो। (ओएडिमा) २. शरीर पर होनेवाली गाँठ। अर्बुद।

शोफघ्नी—स्त्री० [सं० शोफ√हन्+टच्—ङीप्-कुत्व] रक्त पुनर्नवा।

शोफहारी—पुं०[सं० शोफ√हृ (हरण करना)+णिनि] जंगली बर्बरी का पौधा।

शोफारि—पुं०[सं० ष० त० स०] हाथीकंद। हस्तिकंद।

शोबदा—पुं०[अ० शुअबदः]१. इंद्रजाल। जादू। २. बाजीगरी। ३. हाथ की चालाकी।

शोभ—पुं०[सं०]१. एक प्रकार के देवता। २. एक प्रकार के नास्तिक।

वि०=शोभन।

शोभन—वि०[सं० √शुभ् (शोभित होना)+ण्वुल्—अक]१. शोभा से युक्त। २. शोभा बढ़ानेवाला। ३. उपयुक्त जान पड़ने तथा फबनेवाला। ४. मंगलकारक। शुभ।

पुं० १. शिव। २. अग्नि। ३. ग्रह। ४. कमल। ५. राँगा। ६. आभूषण। ७. कल्याण। ८. पुण्यकार्य। ९. सुन्दरता। सौन्दर्य। १०. सिन्दूर। ११. ज्योतिष में विष्कंभक आदि सत्ताइस योगों में से पाँचवाँ योग। १२. बृहस्पति का ग्यारहवाँ संवत्सर। १३. संगीत में, एक प्रकार का राग जो मालकोश राग का पुत्र कहा गया है। १४. २४ मात्राओं का एक छंद जिसमें १४ और १० मात्रा पर यति होती है और अंत में जगण होता है। इसका दूसरा नाम 'सिंहिका' है।

शोभनक—पुं०[स० शोभन+कन] सहिजन या शोभांजन।

शोभना—पुं० [सं० शोभन—टाप्]१. सुन्दरी स्त्री। २. हल्दी। ३. गोरोचन। ४. स्कन्द की एक मातृका।

अ० [सं० शोभन]शोभित होना। सुहावना लगना।

शोभनिक—पुं०[सं०शोभन+ठन्—इक] एक प्रकार के नट या कुशल अभिनेता।

शोभनी—स्त्री०[सं० शोभन—ङीप्]संगीत में, एक रागिनी जो मालकोश की पुत्री कही गई है।

शोभांजन—पुं०[सं० ब० स०] सहिंजन (पेड़)।

शोभा—स्त्री० [सं० शुभ+अ—टाप्] १. कांति। चमक। २. ऐसी सुन्दरता या सौन्दर्य जिसका देखने वाले पर विशेष प्रभाव पड़ता हो। जैसे—पर्वतमालाओं की शोभा। ३. वह तत्त्व या बात जिससे किसी का सौन्दर्य बढ़ता हो। ४. अच्छा गुण। ५. रंग। वर्ण। ६. हल्दी। ७. बीस अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसमें यगण मगण, दो नगण, दो तगण और दो गुरु होते हैं तथा छः और सात पर यति होती है। ८. फारसी संगीत से गृहीत कुछ विशिष्ट गायन-तत्व जिसकी संख्या २४ कही जाती है। ९. दलाली के रूप में मिलनेवाला धन। दलाली की रकम। (दलाल) १०. गोरोचन।

शोभानक—पुं०[सं०] शोभांजन। सहिंजन।

शोभान्वित—वि०[सं० तृ० त० स०] शोभा से युक्त।

शोभायमान—वि०[सं०] शोभा देता हुआ। सुन्दर।

शोभा-यात्रा—स्त्री० [सं०] १. जलूस। २. बरात। (बँगला से गृहीत)।

शोभित—भू० कृ० [सं०√ शुभ् (शोभित)+क्त]१. शोभा से युक्त। फबता हुआ। सुन्दर। २. सजा हुआ।

शोभिनी—स्त्री० [सं० शोभा+इनि—ङीप्] शोभा देनेवाली।

शोभी—वि०[सं०] [स्त्री० शोभिनी] शोभा देनेवाला।

शोर—पुं० [फा०]१. ऊँची, तीखी तथा कर्णकटु आवाज या आवाजें। जैसे—रात भर कुत्ते शोर करते रहे। २. लोगों के चीखने-चिल्लाने आदि की सामूहिक ध्वनि। ३. लाक्षणिक अर्थ में, किसी चीज की सहसा होनेवाली व्यापक चर्चा।

क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

शोरबा—पुं०[फा० शोर्बः] १. तरकारी, दाल आदि का जूस। रसा। २. पकाये हुए मांस का रसा।

शोरा—पुं० [फा० शोरः] सफेद रंग का एक प्रकार का क्षार जो मिट्टी में से निकलता है।

मुहा०—शोरे की पुतली=बहुत गोरी स्त्री।

शोरा आलू—पुं०[हिं० शोरा+आलू] बन आलू।

शोरा पुश्त—वि० [फा० शोरः पुश्त]१. लड़ाका। २. उपद्रवी। फसादी।

शोरिश—स्त्री०[फा०] १. खलबली। हलचल। २. बगावत। विद्रोह।

शोरी—पुं०[फा० शोरः] फारसी संगीत में एक मुकाम का पुत्र।

शोला—पुं०[अ०] एक प्रकार का छोटा पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत हल्की होती है।

पुं०[अ० शुअलः] आग की लपट। ज्वाला।

शोशा—पुं०[फा० शोशः]१. आगे निकली हुई नोक। २. किसी बात में निकाली हुई कोई ऐसी अनोखी और नई शाखा जो उसे किसी दूसरी ओर प्रवृत्त कर सकती हो या उसमें कोई त्रुटि दिखलाती हो।

मुहा०—शोशा निकालना= कोई दोष दिखाते हुए साधारण आपत्ति खड़ी करना।

३. कोई व्यंग्यपूर्ण या झगड़ा लगानेवाली बात कहना।

क्रि० प्र०—छोड़ना।

शोष—पुं०[सं० √शुष् (सोखना)+घञ्]१. सूखने की क्रिया या भाव। २. शुष्कता। खुश्की। ३. क्षीण होना। क्षय। ४. धीरे-धीरे शरीर का क्षीण या दुबला होना। ५. क्षय नामक रोग। तपेदिक। ६. बच्चों का सुखंडी नामक रोग।

शोषक—वि० [सं० √ शुष्(सोखना)+णिच्, ण्वुल्—अक]१. सोखनेवाला। २. आर्द्रता, नमी आदि चूस या सोख लेनेवाला। ३. क्षीण करनेवाला। ४. अपने लाभ या स्वार्थ के लिए नष्ट करनेवाला। ५. दूर करने या हटानेवाला।

पूं० १. वह जो दूसरों का धन हरण करता हो, तथा उनका पूरा पूरा वास्तविक देय भाग न देता हो। २. समाज का वह वर्ग जो धन खींचता तथा बटोरता चलता हो और गरीबों को और अधिक गरीब बनाता चलता हो। (एक्सप्लाइटर, उक्त दोनों अर्थों में)

शोष-कर्म—पुं०[सं० कर्म० स०] बावली या तालाब आदि से पानी निकलवाना और उससे खेत सिंचवाना। (जैन)

शोषण—पुं०[सं० √शुष् (सोखना)+ल्युट्—अन] [वि० शोषी, शोषनीय]१: एक पदार्थ का किसी दूसरे पदार्थ में से उसका जलीय या तरल अंश धीरे धीरे खींचकर अपने अन्दर करना या लेना। सोखना। (ऐब्ज़ार्पशन) २. सुखाना। ३. किसी चीज की ताजगी या हरापन धीरे धीरे कम या दूर करना। ४. परोक्ष उपायों से किसी की कमाई या धन धीरे धीरे अपने हाथ में करना। (एक्सप्लाएटेशन) ५. न रहने देना। दूर करना। ६. क्षीण या दुबला करना। ७. कामदेव के पांच बाणों में से एक जो मनुष्य को चिंतित करके उसका रक्त सोखनेवाला कहा गया है। ८. सोंठ। ९. सोनापाढ़ा। १०. पिप्पली।

शोषणीय—वि०[सं० √शुष् (सोखना)+अनीयर्] जिसका शोषण हो सके या होने को हो।

शोषयितव्य—वि०[सं०√शुष्(सोखना)+णिच्—तव्य]=शोषणीय।

शोषहा—वि० [सं० शोष√हन् (मारना)+क्विप्] शोष रोग का नाश करनेवाला।

पुं० अपामार्ग। चिचड़ा।

शोषित—भू० कृ०[सं० √शुष् (सोखना)+णिच्—क्त]१. जिसका शोषण हुआ हो। सोखा हुआ। २. सूखा या सुखाया हुआ। ३. (व्यक्ति या वर्ग) जिसका देय भाग उसे पूरा पूरा न मिलता हो और इस प्रकार जिसकी दुर्बलता या असहाय अवस्था का दूसरे फायदा उठाते हों।

शोषी (षिन्)—वि०[सं०√शुष् (सोखना)+णिनि] [स्त्री० शोषिणी] १. शोषण करने या सोखने वाला। २. सुखानेवाला।

शोषना—स०[सं० शोषण] शोषण करना। सोखना।

शोहदा—वि०[अ० शहीद के बहु० शुहदा से शुहदः]१. व्यभिचारी। लंपट। २. बदमाश। लुच्चा। ३. आवारा और गुंडा।

शोहदापन—पुं०[हिं० शोहदा+पन (प्रत्य०)]१. शोहदा होने की अवस्था या भाव। २. शोहदे की कोई हरकत।

शोहरत—स्त्री० [अ० शुहरत] १. ख्याति। प्रसिद्धि। २. जोरों की चर्चा या फैली हुई खबर।

शोहरा—पुं०=शोहरत।

शौंग—पुं०[सं० शुंग+अण्]भरद्वाज ऋषि का एक नाम जो शुंग के अपत्य थे।

शौंगेय—पुं०[सं० शुंगा+ढक्—एय]१. गरुड़। २. बाज पक्षी।

शौंड—पुं०[सं० शुंड+अण्][भाव० शौंडता]१. कुक्कुट पक्षी। मुरगा। २. देव-धान्य। पुनेरा। ३. वह जो शराब पीकर मतवाला हो जाता हो।

शौंडायन—पुं० [सं० शुंडा+फक्-आयन] प्राचीन भारत की एक प्रकार की योद्धा जाति।

शौंडिक—वि०[सं० शुंडा+ठक्—इक] [स्त्री० शौंडिकी] शराब बनाने तथा बेचनेवाला।

पुं० पिप्पलीमूल।

शौंडिकागार—पुं०[सं० ष० त० स०] शराब की दुकान। हौली। मधुशाला।

शौंडी—पुं०[सं० शौंड +इनि—दीर्घ—नलोप शौंडिन्] प्राचीन काल की शौंडिक नामक एक प्रकार की जाति।

स्त्री०[सं० शौंड—ङीष्] १. पीपल। पिप्पली। २. चव्य। चाव। ३. मिर्च।

शौंडीर—वि०[सं० √ शुंडा+ईरन–अण्] अभिमानी। अहंकारी।

शौक—पुं०[सं० शुक्+अण्]शुकों का समूह। तोतों का झुंड।

शौक—पुं०[अ०]१. मनोविनोद या आनन्द प्राप्ति के लिए कोई काम बराबर या पुनः पुनः करने की स्वाभाविक या अभ्यास जन्य लालसा। २. उक्त के आधार पर ऐसा काम या खेल जिसमें कोई मग्न रहता हो। जैसे—क्रिकेट या ताश का शौक। ३. सुख-भोग।

मुहा०—शौक करना या फरमाना=किसी पदार्थ का भोग करके उसमें सुख प्राप्त करना। जैसे—चाय हाजिर है, शौक फरमाइए। **शौक चर्राना**=शौक पैदा होना। (व्यंग्य)

पद—शौक से=प्रसन्नतापूर्वक।

४. कोई शुभ आकांक्षा या कामना। ५. किसी काम या बात का चसका।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

६. किसी काम या बात की ओर विशेष रूप से होनेवाली प्रवृत्ति या रुचि।

शौकत—स्त्री०[अ०]१. बल। शक्ति। २. दबदबा। ३. शानदार। ठाठ-बाट।

पद—शान-शौकत।

४. गौरव।

शौकर—पुं० दे० 'शूकर-क्षेत्र'।

शौकरी—स्त्री० [सं० शूकर+अण्—ङीप्] बराही कंद। गेंठी।

शौकिया—क्रि० वि० [अ० शौकियः] शौक के कारण अर्थात् यों ही। बिना किसी विशिष्ट प्रयोजन के।

वि० शौक से भरा हुआ। जैसे—शौकिया सलाम।

शौकीन—वि०[अ० शौक+हिं० ईन (प्रत्य०)] [भाव० शौकीनी] १. जिसे किसी काम, चीज या बात का बहुत शौक हो। जैसे—खाने-पीने का शौकीन, ताश खेलने का शौकीन। २. जो सदा सजा-सँवारा तथा बना-ठना रहता हो। ३. वेश्यागामी।

शौकीनी—स्त्री०[हिं० शौकीन]१. शौकीन होने की अवस्था या भाव। २. सदा बने-ठने रहने की इच्छा। ३. वेश्या-गमन की वृत्ति। रंडीबाजी।

शौक्तिक—वि० [सं० शुक्तिका+अण्] शुक्तिका या सीपी से उत्पन्न। पुं० मोती। मुक्ता।

शौक्तिका—स्त्री० [सं० शौक्तिक-टाप्] सीप।

शौक्तिकेय—वि०, पुं०=शौक्तिक।

शौक्तेय—पुं० [सं० शुक्ति+ठक्–एय] मोती।

शौक्र—वि० [सं० शुक्र+अण्] १. शुक्र-संबंधी। २. शुक्र से उत्पन्न।

शौक्ल—वि० [सं० शुक्ल+अण्] शुक्ल-संबंधी। शुक्ल का।

शौच—पुं० [सं० शुचि+अण्] शुचि होने की अवस्था या भाव। शुचिता। शुद्धता। २. शास्त्रीय परिभाषा में सब प्रकार से पवित्रता या शुद्धता-पूर्वक जीवन व्यतीत करना। ३. शरीर की शुचिता के लिए सवेरे सोकर उठते ही किये जानेवाले कृत्य। जैसे—पाखाने जाना, कुल्ला करना, नहाना आदि। ४. पाखाने जाना। टट्टी जाना।

† पुं० अशौच।

शौच-कर्म—पुं० [सं० मध्य० स०] मल-मूत्र आदि का त्याग करना।

शौच-गृह—पुं० [सं० ष० त०] वह कोठरी जिसमें लोग बैठकर मल-मूत्र का विसर्जन करते हैं। पाखाना।

शौचनी—स्त्री० [सं० शौच से] आज-कल का वह पात्र जिसमें लोग पाखाना फिरते हैं।

शौच-विधि—स्त्री० [सं०]=शौच-कर्म।

शौचागार—पुं० [ष० त० स०] शौचालय।

शौचालय—पुं० [सं० शौच+आलय] १. घरों आदि में वह स्थान जहाँ लोग मल त्याग करने के लिए जाते हैं और जहाँ हाथ, मुँह धोने के लिए जल की व्यवस्था रहती है। (लेवेटरी) २. कोई ऐसा स्थान जहाँ पर सार्वजनिक उपयोग के लिए पाखाने बने हुए हों।

शौचासनी—स्त्री० [सं० शौच+आसन] काठ आदि का बना हुआ एक प्रकार का पात्र जिस पर बैठकर लोग पाखाना फिरते हैं। (कामोड)

शौचिक—पुं० [सं० शौच+ठन्-इक] प्राचीन काल की एक वर्ण संकर जाति जिसकी उत्पत्ति शौंडिक पिता और कैवर्त्त माता से कही गई है।

वि० शौच-संबंधी। शौच का।

शौची (चिन्)—वि० [सं०√शुच् (शुद्ध करना) +णिनि+दीर्घ, नलोप] [स्त्री० शौचिनी] विशुद्ध। पवित्र।

शौचेय—पुं० [सं० शौच+ठक् एक] रजक। धोबी।

शौटीर—पुं० [सं०√शौट् (करना)+ईरन्] [भाव० शौटीरता] १. वीर। बहादुर। २. अभिमानी। ३. त्यागी।

शौटीर्य—पुं० [सं० शौटीर+ष्यञ्] १. वीर्य। शुक्र। २. वीरता। बहादुरी। ३. अभिमान। ४. त्याग।

शौत—स्त्री०=सौत (सपत्नी)।

शौद्धोदनि—पुं० [सं० शुद्धोदन–इञ्] महाराज शुद्धोदन के पुत्र, बुद्ध।

शौद्र—पुं० [सं० शूद्रा+अण्] ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य पिता और शूद्रा माता से उत्पन्न पुत्र।

शौध—वि०=शुद्ध।

शौन—पुं० [सं० शुन्+अण्] बेचा जानेवाला अथवा बिक्री के निमित्त रखा हुआ मांस।

वि० श्वान-सम्बन्धी। कुत्ते का।

शौनक—पुं० [सं०शुनक्+अण्] एक वैदिक आचार्य और ऋषि जो शुनक ऋषि के पुत्र थे।

शौनायण—पुं० [सं० शुन+फक्–आयन] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

शौनिक—पुं० [सं० शुन+ठक्–इक] १. मांस बेचनेवाला। कसाई। २. शिकारी। ३. आखेट। शिकार।

शौनिक शास्त्र—पुं० [सं० ष०त० स०] वह शास्त्र जिसमें शिकार खेलने, घोड़ों आदि पर चढ़ने की विद्या का वर्णन हो।

शौनिकायन—पुं० [सं० शौनिक+फक्–आयन] वह जो शुनक के गोत्र में उत्पन्न हुआ हो।

शौभ—पुं० [सं० शोभा+अण्] १. देवता। २. राजा हरिश्चन्द्र की वह कल्पित नगरी जो आकाश में मानी गई है। ३. चिकनी सुपारी।

शौभांजन—पुं० [सं० शोभांजन+अण्] शोभांजन। सहिंजन।

शौभायन—पुं० [सं० शुभ+फक्–आयन] प्राचीन भारत की एक योद्धा जाति।

शौभिक—पुं० [सं० शोभा+ठक्–इक] ऐन्द्रजालिक। जादूगर।

शौभ्रायण—पुं० [सं० शुभ्र+फक्–आयन] १. एक प्राचीन देश। २. उक्त देश का निवासी।

शौभ्रेय—वि० [सं० शुभ्रा+ठक्, एय] शुभ्र वस्तु या व्यक्ति-संबंधी। पुं० एक प्राचीन योद्धा जाति।

शौरसेन—पुं० [सं० शूरसेन+अण्] मथुरा के आस-पास के प्रदेश का नाम।

शौरसेनिका—स्त्री० [सं० शौरसेन+कन्–टाप्–इत्व]=शौरसेनी।

शौरसेनी—स्त्री० [सं०] शौरसेन प्रदेश की एक प्रसिद्ध प्राचीन प्राकृत साहित्यिक भाषा जिसमें आधुनिक खड़ी बोली का विकास माना गया है।

शौरि—पुं० [सं० शूर+इञ्] १. विष्णु। २. कृष्ण। ३. बलदेव। ४. वसुदेव। ५. शनैश्चर ग्रह।

शौरि-रत्न—पुं० [सं० ष० त० स०] नीलम।

शौर्प—वि० [सं० शूर्प+अण्] १. शूर्प। सूप-संबंधी। २. सूप द्वारा नापा हुआ।

शौर्पारक—पुं० [सं० शूर्पारक+अण्] शूपारक प्रदेश में पाया जानेवाला काले रंग का एक प्रकर का हीरा।

वि० शूर्पारक सम्बन्धी। शूर्पारक का।

शौर्पिक—वि० [सं०]=शौर्प।

शौर्य—पुं० [सं० शूर-ष्यञ्] १. शूर होने की अवस्था, धर्म या भाव। शूरता। २. पराक्रम। शूरतापूर्ण कोई कृत्य। ३. नाटकों में आरभटी नाम-की वृत्ति।

शौलायन—पुं० [सं० शूल+फक्-आयन] एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि।

शौल्क—वि०[सं० शुल्क-अण्] शुल्क-संबंधी। शुल्क का।

शौल्किक—पुं०[सं० शुल्क+ठक्+इक] प्राचीन भारत में वह अधिकारी जो लोगों से शुल्क लेता था। शुल्काध्यक्ष।

शौल्किकेय—पुं०[सं० शुल्किक+ठक्–एय] एक प्रकार का विष।

शौल्फ—पुं० [सं० शुल्फ+अण्] १. सौंफ। शतपुष्पा। २. सुल्फा नाम का साग।

शौल्विक—पुं० [सं० शुल्व+ठक्–इक] १. प्राचीन भारत की एक वर्ण संकर जाति। २. उक्त जाति का व्यक्ति। ३. कसेरा। ठठेरा।

शौवन—पुं० [सं० श्वन्+अण्] १. कुत्ते का स्वभाव। २. कुत्ते का मांस। ३. कुत्तों का झुंड।

वि० १. स्वान-संबंधी। कुत्ते का। २. जिसमें कुत्तों के से गुण हों।

शौवापद—वि० [सं० श्वापद+अण्] श्वापद-संबंधी। जंगली जानवरों का।

शौहर—पुं० [फा०] खाविंद। पति।

श्नुष्टि—स्त्री० [सं० श्नुस्+क्तिन् षत्व-ष्टुत्व] वैदिक काल में, समय का एक परिमाण।

श्मशान—पुं० [सं० ब० स०, ष० त० स०] १. मुरदे या शव जलाने का स्थान। मसान। मरघट। २. कब्रिस्तान। ३. लाक्षणिक अर्थ में, ऐसा स्थान जो बिलकुल उजड़ा हुआ हो।

श्मशान-कालिका—स्त्री० [सं० ष० त० स०] तांत्रिकों के अनुसार काली का एक रूप जिसका पूजन मांस-मछली खाकर, मद्य पीकर और नंगे होकर श्मशान में किया जाता है।

श्मशानपति—पुं० [सं० ष० त० स०] १. श्मशान के स्वामी, शिव। २. एक प्रकार के पुराने ऐन्द्रजालिक।

श्मशान-भैरवी—स्त्री० [सं० मध्यम० स०] १. श्मशान में रहनेवाली देवियों में से हर एक। (तंत्र) २. दुर्गा।

श्मशानवासिनी—स्त्री० [सं० श्मशान√वस् (रहना)+णिनि–ङीष्] काली।

श्मशानवासी (सिन्)—पुं० [सं० श्मशान्-वासिन्–दीर्घ, नलोप] १. महादेव। शिव। २. चांडाल। ३. भूत-प्रेत।

वि० श्मशान में रहनेवाले।

श्मशान-बैताल—पुं० [सं० मध्य० स०] एक भूत-योनि जिसके संबंध में प्रसिद्ध है कि वह श्मशानों में रहती है और मुरदों का मांस खाती है।

श्मशान-वैराग्य—पुं० [सं० सप्त० त०] वह क्षणिक वैराग्य जो श्मशान में मृत शरीरों को जलाते हुए देखकर संसार की असारता के सम्बन्ध में मन में उत्पन्न होता है।

श्मशान-साधन—पुं० [सं० सप्त० त०] तांत्रिकों की एक प्रकार की साधना जो कुछ विशिष्ट महीनों में रात के समय श्मशान में किसी मृत शरीर की छाती पर बैठकर की जाती है।

श्मश्रु—पुं० [सं० श्म√श्रि (रहना)+उल्] दाढ़ी और मूँछें।

श्मश्रुकर—पुं० [सं० श्मश्रु√कृ (करना)+अच्] नाई। नापित। हज्जाम।

श्मश्रुमुखी—वि० [सं० ब० स०] दाढ़ी-मूँछोंवाली (स्त्री)।

श्मश्रुल—वि० [सं० श्मश्रु+लनच्] दाढ़ी-मूँछोंवाला।

श्याम—वि० [सं० श्यै+मक् ब० स०] १. काला और नीला मिला हुआ (रंग)। २. काला। कृष्ण। ३. हलका काला। साँवला।

पुं० १. श्री कृष्ण का एक नाम, जो उनके शरीर के श्याम वर्ण होने के कारग पड़ा था। २. प्रयाग के अक्षयवट का एक नाम। ३. संगीत में, एक प्रकार का राग जो श्रीराग का पुत्र कहा गया है। ४. बादल। मेघ। ५. कोयल पक्षी। ६. प्राचीन भारत में कन्नौज के पश्चिम का एक प्रदेश। ७. साँवाँ नामक कदन्न।

श्यामकंठ—पुं० [सं० ब० स०] १. शिव। २. मोर। मयूर। ३. नील कंठ नामक पक्षी।

श्यामक—पुं० [सं० श्याम-+कन्] १. साँवाँ नामक कदन्न। २. गन्ध-तृण। राम-कपूर। ३. भारत के पूर्व का स्याम नामक देश।

श्याम-कर्ण—पुं० [सं० ब० स०] ऐसा घोड़ा जिसका शरीर सफेद और कान काले हों। ऐसा घोड़ा बहुत बढ़िया समझा जाता है।

वि० शुभ।

श्यामकांडा—स्त्री० [सं० ब० स०] गाँडर दूब।

श्याम-कृष्ण—वि० [सं० मध्य० स०] जिसका रंग कुछ कालापन लिये नीला हो।

पुं० कुछ कालापन लिये हुए नीला रंग।

श्याम-घन—पुं० [सं० मध्य० स०] घनश्याम।

श्याम-चकेना—पुं० [?] एक प्रकार का लोक गीत। (मैथिल)

श्यामचिंतामणि—पुं० [सं० ब० स०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

श्यामचूड़ा—स्त्री० [सं० ब० स०] श्यामा (पक्षी)।

श्यामता—स्त्री० [सं० श्याम+तल्–टाप्] १. श्याम होने की अवस्था, गुण या भाव। २. कालापन। कृष्णता। ३. मलिनता। ४. उदासी। फीकापन। ५. एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर का रंग काला होने लगता है।

श्याम-नीलांबरी—स्त्री० [सं० ब० स०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

श्यामपत्र—पुं० [सं० ब० स०] तमाल वृक्ष।

श्यामपर्ण—पुं० [सं० ब० स०] सिरिस का पेड़। शिरीस वृक्ष।

श्यामपर्णी—स्त्री० [सं० श्यामपर्ण-ङीष्] चाय।

श्यामपूरबी—पुं० [सं० श्याम+हिं० पूरबी] संगीत में, एक प्रकार का संकर राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं, केवल मध्यम तीव्र लगता है।

श्याम-भैरव—पुं० [सं०] संगीत में, एक प्रकार का राग।

श्याम-मंजरी—स्त्री० [सं० उपमि० स०] उड़ीसा देश की एक प्रकार की काली मिट्टी जिसका वैष्णव तिलक लगाते हैं।

श्यामल—वि० [सं० श्याम+लच्] १. श्याम वर्ण का, काला। साँवला।

पुं० १. पीपल। २. काली मिर्च। ३. भ्रमर। ४. काला रंग।

श्यामलता—स्त्री० [सं० श्यामल+तल्–टाप्] १. श्यामल होने की अवस्था, गुण या भाव। साँवलापन। कालापन।

श्यामलांगी—स्त्री० [सं० उपमि० स०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

श्यामला—स्त्री० [सं० श्यामल+टाप्] १. अश्वगंधा। २. कटभी। ३. जामुन। ४. कस्तूरी। ५. पार्वती का एक नाम।

वि० सं० श्यामल का स्त्री०।

श्यामलिका—वि० [सं०] नीली।

श्यामलिमा—स्त्री० [सं० श्यामल+इमनिच्] श्यामलता।

श्यामली—स्त्री०=श्यामला।

श्याम-शबल—पुं० [सं० द्व० स०] पुराणानुसार यम के अनुचर दो कुत्ते जो पहरा देने का काम करते हैं।

श्याम-शर—पुं० [सं०] एक प्रकार की ईख जो गुणकारक और अच्छी मानी जाती है।

श्याम-शालि—पुं० [सं० मध्यम० स०] काला शालिधान्य।

श्याम सुंदर—पुं० [सं० उपमि० स० कर्म० स०] १. श्रीकृष्ण का एक नाम। २. एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

श्यामांग—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० श्यामांगला] जिसका शरीर कृष्ण वर्ण का हो। काले रंग के अंगोंवाला।

पुं० बुध ग्रह।

श्यामांगी—स्त्री० [सं० श्यामांग-ङीष्] नीली दूब।

श्यामा—वि० स्त्री० [सं० श्याम+टाप्] श्याम रंग वाली। काली। २. तपाये हुए सोने के रंग वाली।

स्त्री० १. राधा या राधिका का एक नाम। २. कालिका का एक नाम। ३. काले रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जिसका स्वर बहुत मधुर होता है। ४. सोम लता। ५. कस्तूरी। ६. यमुना नदी। ७. काले रंग की गौ। ८. सोलह वर्ष की तरुणी। ९. सुन्दरी स्त्री। १०. एक प्रकार की लता। ११. हलदी। १२. सोमराजी। बकुची। १३. गुग्गुल। १४. तुलसी। १५. कस्तूरी। १६. लता कस्तूरी। मुश्कदाना। १७. गोरोचन। १८. हर्रे। १९. काली निसोथ। २०. प्रियंगु। २१. नील। २२. भद्रमोथा। २३. हरी दूब। २४. गिलोय। गुडुच। २५. पाषाणभेदी। वटपत्री। २६. पिप्पली। २७. कमलगट्टा। २८. विधारा। २९. शीशम। ३०. काली गदहपूरना। ३१. मेढ़ासिंगी। ३२. बांदा। ३३. कोयल नामक पक्षी। ३४. सांवा नामक अन्न। ३५. रात्रि। रात। ३६. मादा कबूतर। कबूतरी। ३७. छाया।

श्यामाक—पुं० [सं० श्यामा+कन्] साँवाँ नामक कदन्न।

श्यामायन—पुं० [सं० ब० स०] विश्वामित्र के एक पुत्र जो गोत्र-प्रवर्त्तक ऋषि थे।

श्यामायनी—पुं० [सं० श्यामायनि+दीर्घ नलोप] १. वैशंपायन के शिष्यों का एक सम्प्रदाय। २. उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।

श्यामा-रजनी—स्त्री०=रजनीगंधा (पौधा और फूल)।

श्यामिका—स्त्री० [सं० श्यामा+कन्–टाप् इत्व] १. कालापन। श्यामता। २. हलकी काली धारी या रेखा। ३. युवावस्था में ऊपरी होंठ पर उभरने वाली मूँछों की रेखा। ४. काला रंग। ५. मलिनता। ६. मल। मैल। ७. ऐब। खराबी। दोष। बुराई।

श्यामित—भू० कृ० [सं० श्याम+इतच्] काला किया हुआ।

श्यामेक्षु—पुं० [सं० कर्म० स०] काली ईख। कजली ईख।

श्याल—पुं० [सं०√श्यै (प्राप्त होना) कालन् बाहु०] १. पत्नी का भाई। साला। २. बहनोई।

पुं०=शृगाल।

श्यालक—पुं० [सं० श्याल+कन] [स्त्री० श्यालिका] किसी की पत्नी का भाई। साला।

श्याल काँटा—पुं० [सं० श्याल+हिं० काँटा] सत्यानाशी। भड़भाँड़।

श्यालकी—स्त्री० [सं० श्यालक–ङीष्] किसी की पत्नी की बहन। साली।

श्याली—स्त्री० [सं० श्याल-ङीष्] साली।

श्याव—वि० [सं०√श्यै+कन्] [भाव० श्यावता] कालापन लिये पीला। कपिश।

पुं० उक्त प्रकार का रंग जो काले और पीले रंग के योग से बनता है। कपिश।

श्याव-दंत—पुं० [सं० ब० स०] दांतों का एक रोग जिसमें रक्त मिश्रित पित्त से दाँत जलकर काले, पीले या नीले हो जाते हैं।

वि० काले रंग के दाँतोंवाला।

श्येत—वि० [सं०√श्यै (गमनादि)+क्तन्व] श्वेत। सफेद।

श्येन—पुं० [सं० श्यै+इनन्] १. बाज (पक्षी)। २. हिंसा। ३. पीला रंग। ४. दोहे का एक भेद जिसमें दो गुरु और दस लघु मात्राएँ होती हैं।

श्येन-करण—पुं० [सं० उपमि० स०] किसी काम में होनेवाली उतनी ही तेजी और दृढ़ता जितनी बाज के शिकार पर झपटने में होती है।

श्येन-व्यूह—पुं० [सं० मध्य० स०] एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना।

श्योनाक—पुं० [सं०√श्यै (गत्यादि)+निपा० ओनाक सिद्ध] सोनापाढ़ा।

श्रंथन—पुं० [सं०√श्रंथ्+ल्युट-अन] १. ढीला करना। २. मुक्त करना।

श्रग†—पुं०=स्वर्ग।

श्रद्ध—वि० [सं० श्रत्√धा (रखना)+अङ] श्रद्धा करनेवाला। श्रद्धावान्।

श्रद्धांजलि—स्त्री० [सं० श्रद्धा-अंजलि मध्य० स०] किसी पूज्य या बड़े व्यक्ति के संबंध में श्रद्धा और आदरपूर्वक कही जानेवाली बातें।

श्रद्धा—स्त्री० [सं०] [वि० श्रद्धालु, श्रद्धेय] १. किसी काम या बात की प्रवल इच्छा या उत्कट वासना। २. गर्भवती स्त्री के मन में उत्पन्न होती रहनेवाली अनेक प्रकार की इच्छाएँ और वासनाएँ। दोहद। ३. आचार, धर्म आदि के क्षेत्र में किसी की अच्छी चीज या बात (जैसे—ईश्वर, धर्म, मोक्ष, स्वर्ग आदि) अथवा पूज्य और बड़े लोगों के प्रति मन में रहनेवाली आदरपूर्ण आस्था या भावना, अथवा उनके प्रति होनेवाला विश्वास। ४. बौद्ध धर्म में, बुद्ध, धर्म और संघ के प्रति होनेवाला उक्त प्रकार का विश्वास। ५. शुद्धाचरण आदि के द्वारा मन में होनेवाली प्रसन्नता। ६. कर्दम मुनि की कन्या जो अत्रि ऋषि की पत्नी थी। ७. वैवस्वत मनु की पत्नी जो कामदेव और रति की कन्या थी। कामायनी।

श्रप्प†—पुं०=शाप।

श्रम—पुं० [सं०√श्रम्+घञ् न वृद्धिः] [वि० श्रमिक, भू० कृ० श्रमित, कर्ता श्रमी] १. कोई ऐसा शारीरिक या मानसिक काम जिसे लगातार कुछ समय तक करते करते शरीर में थकावट या शिथिलता आने लगती हो। शरीर को थकानेवाला काम। परिश्रम। मेहनत। (लेबर) क्रि० प्र०—उठाना।—करना।—पड़ना।—होना।

मुहा०—श्रम साधना=(क) उक्त प्रकार का कोई कठिन काम करना। (ख) किसी काम या बात का अभ्यास करना। उदा०—मुंकुति हेतु जोगी स्रम (श्रम) साधैं असुर विरौधै पावें। –सूर। २. जीविका-निर्वाह या धन-उपार्जन के लिए किया जानेवाला उक्त प्रकार का कोई काम। ३. उक्त प्रकार के काम करनेवालों का वर्ग या समूह। ४. हाथ में लिये हुए किसी काम में पड़नेवाली मशक्कत। (लेबर, उक्त सभी अर्थ के लिए) ५. क्लांति। थकावट। ६. दौड़-धूप और प्रयत्न। प्रयास। ७. थकावट के कारण शरीर से निकलनेवाला पसीना। ८. साहित्य में, एक प्रकार का संचारी भाव जिसमें कोई काम करते करते मनुष्य थककर शिथिल हो जाता है। ९. कंसरत। व्यायाम। १०. अस्त्र-शस्त्र आदि चलाने का अभ्यास। ११. इलाज। चिकित्सा। १२. खेद। रंज। १३. तपस्या।

श्रम-कार्यालय—पुं० [सं० मध्य० स०] श्रमिकों की संख्या, स्थिति संबंधी जानकारी देनेवाला राजकीय कार्यालय। (लेबर ब्यूरो)

श्रमणा—स्त्री० [सं०√श्रम (श्रम् करना)+ल्युट्-अन टाप्] १. सुंदरी स्त्री। २. सुदर्शना ओषधि। ३. गोरखमुंडी। ४. जटामासी।

श्रमणी—स्त्री० [सं० श्रमण-ङीष्] बौद्ध संन्यासिनी।

श्रमना—अ० [सं० श्रम] श्रमित होना। थकना। उदा०—सूखे से, कसे से, सकबके से, सके से, थके से, भूले से, भ्रमे से, भभरे से, भकुआने से।—रत्नाकर।

श्रम-विभाजन—पुं० [सं० मध्यम० स०] अर्थशास्त्र में, किसी कार्य के अलग अलग अंगों की क्रिया, रचना आदि के सम्पादन के लिए अलग अलग व्यक्ति नियत करना। (डिस्ट्रीब्यूशन आफ लेबर)

श्रम-विवाद—पुं० [सं० मध्यम० स०] श्रमिकों के वेतन, अधिक लाभांश तथा अन्य प्रश्नों के संबंध में मालिकों से होनेवाला विवाद या झगड़ा। (लेबर डिस्प्यूट)

श्रम-संघ—पुं० [सं० ष० त० स०] कारखानों आदि में काम करनेवाले श्रमिकों का संघ जो उनके स्थिति-सुधार तथा हित-रक्षा की ओर ध्यान रखता है। (लेबर यूनियन)

श्रमिक-कल्याण-कार्य—पुं० [सं० ष० त० स०] श्रमिकों की भलाई के लिए किये जानेवाले कार्य। जैसे—स्वास्थ्य रक्षा, साफ और हवादार मकानों की व्यवस्था आदि। (लेबर वेलफेयर)

श्रमिक-संघ—पुं० [सं० ष० त० स०]=श्रम-संघ।

श्रयण—पुं० [सं०√श्रि+ल्युट्–अन] आश्रय।

श्रवण—पुं० [सं०√श्रु+ल्युट्–अन] [वि० श्रवणीय] १. सुनने की क्रिया या भाव। सुनना। २. देवताओं के चरित्र, कथाएँ आदि सुनना जो कि नवधा भक्ति में से एक प्रकार की भक्ति है। ३. सुनने की इंद्रिय। कान। ४. उक्त इन्द्रिय के द्वारा प्राप्त होनेवाला ज्ञान। ५. ज्योतिष में अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों में से बाइसवाँ नक्षत्र जिसमें तीन तारे हैं और जिसका आकार तीर की तरह माना गया है।

श्रवण-दर्शन—पुं० [सं० ब० स०] साहित्य में, वह अवस्था जब कोई किसी के गुण सुनकर ही उसके प्रति मन में अनुरक्त होता है।

श्रवण-द्वादशी—स्त्री० [सं० मध्य० स०] भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की ऐसी द्वादशी जो श्रवण नक्षत्र में पड़ती हो। कहते हैं कि भगवान् का वामन अवतार ऐसी ही द्वादशी को हुआ था इसीलिए यह पुण्य तिथि मानी जाती है।

श्रवणपूर—पुं० [सं०] कान में पहनने का ताटंक नामक गहना।

श्रवणेंद्रिय—स्त्री० [सं० मध्य० स०] सुनने की इन्द्रिय। कान।

श्रव्य—वि० [सं०√श्रु+यत्] [भाव० श्रव्यता] १. जो सुना जा सके या सुनाई देता हो। २. सुनने के योग्य फलतः प्रशंसनीय।

श्रव्यता—स्त्री० [सं० श्रव्य+तल्-टाप्] श्रव्य होने या सुने जा सकने की अवस्था या भाव। (आडिबिलिटी)

श्रांत—वि० [सं०√श्रम्+क्त] [भाव० श्रांति] १. अधिक श्रम करने के कारण थका हुआ। २. खिन्न। दुःखी। ३. जितेन्द्रिय। ४. शान्त। ५. जो सुख-भोग से तृप्त हो चुका हो।

पुं० तपस्वी।

श्राद्ध—पुं० [सं० श्रद्धा+अण्] १. वह काम जो श्रद्धापूर्वक किया जाय। २. सनातनी हिन्दुओं में पितरों या मृत व्यक्तियों के उद्देश्य से किये जानेवाले पिंड-दान, ब्राह्मण-भोजन आदि कृत्य जो उनके प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए किये जाते हैं। ३. आश्विन मास का कृष्ण पक्ष जिसमें विशिष्ट रूप से उक्त प्रकार के कृत्य करने का विधान है। पितृ-पक्ष। ४. कोई काम या बात बहुत ही बुरी तरह से बिगाड़ते हुए करने की क्रिया या भाव। (व्यंग्य) जैसे—अपनी इस रचना में तो उन्होंने कविता का श्राद्ध ही किया है। ५. प्रीति। ६. विश्वास।

वि० श्रद्धा से युक्त।

श्राद्ध-देव—पुं० [सं० मध्य० स०] १. यमराज। २. विवस्वान्। ३. वैवस्वत मनु। ४. ब्राह्मण।

श्रावक—पुं० [सं०√श्रु+ण्वुल्–अक] [स्त्री० श्राविका] १. बौद्ध संन्यासी। २. जैन संन्यासी। ३. जैन धर्म का अनुयायी। जैनी। ४. नास्तिक। ५. दूर से आनेवाला शब्द। ६. कौआ। ७. छात्र। शिष्य।

वि० श्रवण करने या सुननेवाला। श्रोता।

श्रावकमान—पुं० [सं०]बौद्धों के हीनयान का शिष्टाचारसूचक नाम।

श्रावण—वि० [स० श्रावणी+अण्] १. श्रवण-संबंधी। कान-संबंधी। २. श्रवण नक्षत्र-संबंधी। श्रवण नक्षत्र का।

पद—श्रावण वर्ष। (देखें)

३.श्रावण नक्षत्र में उत्पन्न।

पुं० १. चांद्र गणना के अनुसार वह महीना जिसकी पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र होता और जो असाढ़ तथा भादों के बीच में पड़ता है। सावन। २. उक्त मास की पूर्णिमा। ३. श्रवणेंद्रिय का विषय अर्थात् आवाज या शब्द। ४. पुराणानुसार योगियों के योग में होनेवाले पाँच प्रकार के विघ्नों में से एक प्रकार का विघ्न या उपसर्ग जिसमें योगी हजार योजन तक के शब्द ग्रहण करके उनके अर्थ हृदयंगम करता था। ५. पाखंड।

श्रावण वर्ष—पुं० [सं० मध्य० स०] ज्योतिष की गणना में, एक प्रकार का

वर्ष जो उस दिन से माना जाता है जिस दिन श्रवण या धनिष्ठा नक्षत्र में बृहस्पति उदित होता है। फलित ज्योतिष के अनुसार ऐसे वर्ष में साधारण लोग धन-धान्य से सुखी रहते हैं; परन्तु दुष्ट और पाखंडी बहुत ही दुःखी रहते हैं।

श्रावणिक—पुं० [सं० श्रावणी+ठन्–इक] गुप्त काल में, वह कर्मचारी या सेवक जो न्यायालय में वाद उपस्थित होने पर वादी, प्रतिवादी और साक्षी को बुलाने के लिए जोर से आवाज लगाता था।

श्रावणी—स्त्री० [सं० श्रावण–ङीप्] श्रावण मास की पूर्णिमा को होनेवाला एक प्रकार का धार्मिक कृत्य जिसमें यज्ञोपवीत का पूजन भी होता है।

श्राविका—स्त्री० [सं० श्रु (सुनना)+णिच्–ण्वुल् अक-इत्व–टाप्] सं० श्रावक का स्त्री० रूप।

श्रावित—भू० कृ० [सं० श्रु (सुनना)+णिच्-क्त] सुनाया हुआ।

श्राव्य—वि० [सं०√श्रु+ण्यत्] [भाव० श्राव्यता] १. जो सुना जा सके। सुनाई पड़ने के योग्य। २. जो इतना आवश्यक या उपयोगी हो कि लोग उसे सुनना पसंद करें। ३. जो बिलकुल स्पष्ट सुनाई पड़ता हो।

श्रित—भू० कृ० [सं०√श्रि (सेवा करना)+क्त] १. आश्रय या शरण के लिए आया हुआ। २. रक्षित। ३. सेवित। ४. पका हुआ।

श्रितवान् (वत्)—वि० [सं०√श्रि (सेवा करना)+क्तवत्–नुम्, दीर्घ] १. आश्रयदाता। २. सेवक।

श्रिति—स्त्री० [सं०√श्रि (सेवा करना)+क्तिन्] आश्रय। सहारा।

श्री–स्त्री० [सं०√श्रि+क्विप्] १. विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी। २. सरस्वती। ३. सिद्धि। ४. धन-दौलत। संपत्ति। ५. ऐश्वर्य। वैभव। ६. धर्म, अर्थ और काम तीनों का समूह। त्रिवर्ग। ७. कीर्ति। यश। ८. शोभा। सौंदर्य। ९. कांति। चमक। १०. अधिकार। ११. कमल। १२. सफेद चंदन। १३. लौंग। १४. ऋद्धि नामक ओषधि। १५. मस्तक पर ऊर्ध्व पुंड्र के बीच में लगाई जानेवाली लंबी रेखा। १६. स्त्रियों का माथे पर पहनने की बेंदी नामक गहना। १७. धूपसरल नामक वृक्ष। १८. सामुद्रिक के अनुसार पैर के तलुए में होनेवाली एक प्रकार की शुभ रेखा। १९. बेल का पेड़ और फल। २०. षाड़व जाति की एक रागिनी जो सूर्यास्त के समय गाई जाती है। वि० १. योग्य। २. शुभ। ३. सुन्दर। ४. श्रेष्ठ। ५. एक प्रकार का आदरसूचक विशेषण जो पुरुषों के नाम के पहले लगाया जाता है। जैसे—श्री नारायणदास।

पुं० १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. कुबेर। (डिं०) ४. एक प्रसिद्ध वैष्णव सम्प्रदाय। ५. एक प्रकार का एकाक्षरी छंद या वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक गुरु वर्ण होता है। जैसे—गो। श्री। धी। ही। ६. संगीत में, ६ रागों के अन्तर्गत सम्पूर्ण जाति का एक राग जो शरद् ऋतु में गाया जाता है। कहते हैं कि यह राग गाने से सूखा वृक्ष भी हरा हो जाता है। ७. बैल।

श्रीकंठी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

श्रीकरी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

श्रीकांत—पुं० [सं० ष० त०] विष्णु।

श्रीकृच्छ्र—पुं० [सं० ब० स० या मध्यम० स०] एक प्रकार का व्रत जिसमें केवल श्रीफल (बेल) खाकर रहते हैं।

श्रीगणेश—पुं० [सं० मध्य० स०] किसी कार्य का आरंभ या सूत्रपात (जो पहले प्रायः 'श्रीगणेशाय नमः' कहकर किया जाता था)।

श्रीधर—पुं० [सं०] विष्णु।

श्रीफल—पुं० [सं० ब० स०] १. बेल। २. नारियल। ३. शरीफा। ४. खिरनी। ५. आँवला। ६. कच्ची सुपारी। ७. द्रव्य। धन।

श्रीबन—पुं०=वृन्दावन।

श्रीमंडप—पुं० [सं० मध्य० स०] प्राचीन भारत में, धवलगृह का वह भाग जिसमें राजा अपने अतिथियों से मिलते थे। (प्रेज़ेन्स चैम्बर)

श्रीमंत, श्रीमान्—वि० [सं०] १. श्री से युक्त। २. धनवान्। सम्पन्न। ३. 'श्री' की तरह प्रयुक्त एक आदरसूचक विशेषण।

श्रीमालवी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

श्रीमुख—पुं० [सं० ब० स०] १. विष्णु का मुख अर्थात् वेद। २. सुशोभित या सुन्दर मुख।

श्रीरंजनी—स्त्री० [सं०] संगीत में, काफी ठाठ की एक रागिनी।

श्रील—वि० [सं० श्री+लच्] १. शोभायुक्त। २. जो अश्लील न हो। ३. धनवान्।

श्रुत—भू० कृ० [सं०√श्रु+क्त] १. सुना हुआ। २. फलतः प्रसिद्ध।

श्रुतादान—पुं० [सं० ष० त०] ब्रह्मवाद।

श्रुतानुश्रुत—पुं० [सं०] इधर-उधर से या दूसरे लोगों से सुनी हुई ऐसी बात जिसकी प्रामाणिकता अनिश्चित हो। (हियरसे)

श्रुतार्थ—पुं० [सं० कर्म० स०] जबानी कही या सुनी हुई बात।

श्रुति—स्त्री० [सं०√श्रु+क्तिन्] १. सुनने की क्रिया या भाव। श्रवण करना। सुनना। २. सुनने की इन्द्रिय। कान। ३. कही या सुनी हुई बात। ४. आवाज। शब्द। ५. अफवाह। किंवदन्ती। जनश्रुति। ६. उक्ति। कथन। ७. भारतीय आर्यों और सनातनी हिन्दुओं की दृष्टि में चारों वेद जिनमें उनके विश्वास के अनुसार सृष्टि के आरंभ से चला आया हुआ सारा अपौरुषेय और पवित्र ज्ञान भरा है। (स्मृति से भिन्न)

विशेष—परवर्ती काल में उपनिषदों की गिनती भी (श्रुति) में होने लगी।

८. चारों वेदों के आधार पर, चार की संख्या का सूचक शब्द। ९. भाषा-विज्ञान में, वह ध्वनि जो किसी शब्द का उच्चारण करने के समय एक वर्ण या स्वर से दूसरे वर्ण या स्वर तक पहुँचने के समय प्रायः अज्ञात तथा अस्पष्ट रूप से मध्यवाले अवकाश में होती है। १०. संगीत शास्त्र में, उक्त के आधार पर वह विशिष्ट प्रकार की ध्वनि जो किसी स्वर का उच्चारण करने में आंशिक रूप से सहायक होती है।

विशेष—संगीत शास्त्र के आचार्यों का मत है कि नाभि के नीचे की ब्रह्म-ग्रंथि में जो वायु रहती है, उसके स्फुरण से २२ नाड़ियों के द्वारा २२ प्रकार की अलग अलग ध्वनियाँ होती हैं जो पारिभाषिक क्षेत्र में २२ श्रुतियों के नाम से प्रसिद्ध हैं। संगीत के सातों स्वर कई कई श्रुतियों के योग से उत्पन्न होते हैं। यथा—तीव्रा, कुमुद्वती, मुद्रा और वृंदावती के योग से षड़ज; पद्मावती, रंजनी और रतिका के योग से गांधार; वज्रिका, प्रसारिणी, प्रीति और मार्जनी के योग से मध्यम; क्षिति, रक्ता, संदीपनी और आलापिनी के योग से पंचम; मदंती, रोहिणी और रम्या के योग से धैवत; तथा उग्रा और शोभिणी के योग से निषाद स्वर बनता है।

११. ज्यामिति में, समकोणिक त्रिभुज के समकोण के सामने की भुजा। १२. नाम। संज्ञा। १३. पांडित्य। विद्वत्ता। १४. विद्या। १५. अत्रि ऋषि की कन्या जो कर्दम ऋषि की पत्नी थी। १६. दे० 'श्रुत्यानुप्रास'।

श्रुति-कटु—वि० [सं० सप्त० त०] जो सुनने में बहुत अप्रिय या बुरा लगता हो। कर्कश।

श्रुति-धर—पुं० [सं० ष० त०] [भाव० श्रुतिधरता] १. वह जो एक बार सुनकर ही हर बात याद कर ले। बहुत बड़ा पंडित या विद्वान्।

श्रुति-धरता—स्त्री० [सं० श्रुतिधर+तल्—टाप्] श्रुतिधर होने का भाव।

श्रुति-भाल—पुं० [सं० ब० स०] ब्रह्मा।

श्रुति-मधुर—वि० [सं० सप्त० त०] जो सुनने में भला और मीठा लगता हो।

श्रुति-रंजनी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

श्रुति-सुख—वि० [सं० सप्त० त०] सुनने में मधुर। सुमधुर।

श्रुति-हर—वि० [सं० श्रुति√हृ+अच्] कानों को अपनी ओर आकृष्ट करनेवाला; अर्थात् श्रुति-मधुर।

श्रुवा—पुं०=स्रुवा।

श्रूयमाण—वि० [सं०√श्रु (सुनना)+शानच् मुक्] १. जो सुना जाय या सुनाई दे। २. प्रसिद्ध।

शृंखल—पुं०=शृंखला।

शृंखला—स्त्री० [सं० शृंख√ला+क टाप्] १. एक दूसरी में पिरोई हुई बहुत-सी कड़ियों की लड़ी। जंजीर। सिकड़ी। २. लगातार एक क्रम से आने या होनेवाली बहुत सी घटनाएँ, चीजें, बातें आदि। (चेन, उक्त दोनों अर्थों के लिए)। ३. एक ही प्रकार के कार्यों, वस्तुओं आदि का एक के बाद एक करके चलनेवाला क्रम। माला। (सीरीज़) जैसे—कार्य-शृंखला। ४. एक ही दिशा, रूप, विभाग आदि से कुछ दूर तक चलता रहनेवाला क्रम। माला। श्रेणी। (रेंज) ५. क्रम। सिलसिला। ६. कमर में पहनने की करधनी। तागड़ी। ७. साहित्य में, एक प्रकार का अलंकार जिसमें पहले एक क्रम से कुछ चीजें या बातें गिनाई जाती हैं; और तब उसी क्रम से उनका वर्णन किया जाता है।

शृंग-नाद—पुं० [सं०] शृंगी या सिंगी नाम का बाजा। उदा०—सूने गिरि पथ में गुंजारित शृंगनाद की ध्वनि चलती।—प्रसाद।

शृंगार-सामग्री—स्त्री० [ष० त०] अनेक प्रकार के सुगंधित चूर्ण, तेल आदि ऐसे पदार्थ जिनका उपयोग कुछ लोग विशेषतः स्त्रियाँ अपने अंग, बालों, शरीर की रंगत आदि का सौंदर्य बढ़ाने के लिए करती हैं। अंगराग। (कास्मेटिक्स)

श्रेढ़िक—वि० [सं०] १. श्रेढ़ी-संबंधी। २. श्रेढ़ी से युक्त। २. क्रमशः आगे बढ़ता हुआ। प्रगतिशील। (प्रोग्रेसिव)

श्रेढ़ी—स्त्री० [सं० श्रि√ढौक्+क, पृषो० ङीष्] [वि० श्रेढ़िका] १. गणित में, संख्याओं आदि का नियमित क्रमिक रूप से घटते या बढ़ते चलना। २. किसी कार्य या बात का निरंतर बढ़ते चलना। (प्रोग्रेशन)

श्रेणी—स्त्री० [सं० श्रि√नि+क्विप्, ङीष्] १. अवली। कतार। पंक्ति। २. लगातार चलता रहनेवाला क्रम या सिलसिला। शृंखला। ३. एक ही तरह की ऐसी चीजों या बातों का वर्ग जो कुछ दूर तक एक ही रूप में चलता रहे। (सीरीज़) ४. प्राचीन भारत में, एक ही प्रकार के व्यवसाय करनेवाले व्यापारियों का संघटन। (कार्पोरेशन) ५. कार्य, योग्यता आदि के विचार से पदार्थों, व्यक्तियों आदि का होनेवाला वर्ग या विभाग। दरजा। (क्लास) ६. जीना। सीढ़ी। ७. दल। समूह। ८. जंजीर। सिकड़ी। ९. किसी चीज का अगला भाग या सिरा। १०. पानी भरने का डोल।

श्रेणीकरण—पुं० [सं० ष० त०] [भू० कृ० श्रेणीकृत] १. श्रेणी के रूप में रखने या लाने की क्रिया। वर्गीकरण। २. क्रम से या व्यवस्थित रूप से रखना या लगाना।

श्रेणी-पाद—पुं० [सं०] प्राचीन भारत में, ऐसा राष्ट्र या जनपद जिसमें श्रेणियों या पंचायतों की प्रधानता हो। (कौ०)

श्रेणी-प्रमाण—पुं० [सं० ब० स०] प्राचीन भारत में, वह शिल्पी या व्यापारी जो किसी श्रेणी के अन्तर्गत हो और उसके मंतव्यों के अनुसार काम करता हो। (कौ०)

श्रेय (स्)—वि० [सं०√श्रि+इयसुन्-श्रादेशश्च्] १. किसी की तुलना में अधिक बढ़कर। बेहतर। २. उत्तम। श्रेष्ठ। ३. वांछनीय। मंगलकारक। ४. शुभ। ५. कीर्ति या यश देनेवाला।

पुं० १. अच्छापन। अच्छाई। उत्तमता। २. कल्याण। मंगल। ३. शुभ आचरण। ४. कर्ता को मिलनेवाला यश। ५. आध्यात्मिक क्षेत्र में ऐसा धार्मिक कृत्य जो मोक्ष की प्राप्ति में सहायक होता हो। 'प्रेय' का विपर्याय।

श्रेय मार्ग—पुं० [सं० मध्य० स०] धार्मिक क्षेत्र में, ऐसा काम या मार्ग जो मनुष्य को स्वर्ग पहुँचाता या मोक्ष दिलाता हो।

श्रेष्ठ—वि० [सं०√श्रि+इष्ठन्, श्रादेश] १. गुण, मान आदि के विचार से बढ़कर। जैसे—श्रेष्ठ विचार। २. (व्यक्ति) जो उच्च मानवीय गुणों से सम्पन्न हो।

पुं० १. ब्राह्मण। २. राजा। ३. विष्णु। ४. कुबेर।

श्रेष्ठाश्रम—पुं० [सं० कर्म० स०] गृहस्थाश्रम जिससे शेष तीनों आश्रमों का पालन होता है।

श्रेष्ठि-चत्वर—पुं० [सं० ष० त० स०] प्राचीन भारत में, वह चबूतरा जिसपर बैठकर सेठ-साहूकार आपस का लेन-देन करते थे।

श्रोणि—स्त्री० [सं० श्रोण+इन] १. कटि। कमर। २. नितंब। चूतड़। ३. पेड़ू। ४. मार्ग। पंथ।

श्रोत—पुं० [सं०√श्रु (सुनना)+असुन्-तुट्] १. कर्ण। कान। २. इन्द्रिय (जिनके मार्ग से शरीर के मल तथा आत्मा निकलती हैं)। ३. हाथी का सूँड़। ४. नदी का वेग या स्रोत।

श्रोतव्य—वि० [सं०√श्रु (सुनना)+तव्य] १. जो सुना जाय। जो सुना जाने के योग्य हो।

श्रोत्र—पुं० [सं० श्रोत्र+अण्] १. कर्ण। कान। २. वेदों का ज्ञान। ३. वेद।

श्रोत्र-ग्राह्य—वि० [सं० तृ० त०] जिसका ग्रहण या ज्ञान श्रोत्र या कानों के द्वारा हो सकता हो। जो सुनाई पड़ता हो या पड़ सकता हो। (ऑडिटरी)

श्रोत्रिय—पुं० [सं० छन्दस्+घ-इय, श्रोत्रादेश] प्राचीन भारत में, वह विद्वान् जो छन्द आदि कंठस्थ करके उनका अध्ययन और अध्यापन करता था।

श्रोन*—पुं० १. =श्रवण। २. =शोण।

श्रौत—वि० [सं० श्रुति+अण्] १. श्रुति-संबंधी। २. श्रुतियों में कहा या बताया हुआ। ३. कान-संबंधी। कान का।

श्रौती—स्त्री० [सं०] साहित्य में, पूर्णोपमा के दो भेदों में से एक। दूसरा भेद 'आर्थी' कहलाता है।

श्रौत्र—पुं० [सं० श्रोत्र+अण्] १. श्रोत्रिय-कर्म। २. श्रोत। कान। ३. वेदों का ज्ञान।

वि० कान संबंधी।

श्लथन—पुं० [सं०√श्लथ्+ल्युट्-अन] मानसिक अशांति मिटाने के लिए तथा शरीर में फुरती लाने के लिए अंगों को ढीला छोड़ना।

श्लिष्ट—भू० कृ० [सं०√श्लिष्+क्त] १. किसी के साथ जुड़ा, मिला या लगा हुआ। २. जो श्लेषण या संश्लेषण की क्रिया के अनुसार किसी से मिलकर एक हो गया हो। संश्लिष्ट (सिन्थेटिक)। ३. साहित्यिक क्षेत्र में, जो श्लेष से युक्त हो, अर्थात् दो अर्थोंवाला।

विशेष—श्लिष्ट और द्व्यर्थक में भेद यह है कि श्लिष्ट का प्रयोग तो ऐसे पदों, वाक्यों, शब्दों आदि के संबंध में होता है जो जान-बूझकर इस दृष्टि से कहे गये हों कि सुभीते के अनुसार उनका दूसरा अथवा कोई और अर्थ भी निकाला या लगाया जा सके, परन्तु द्व्यर्थक का प्रयोग ऐसे पदों, वाक्यों, शब्दों आदि के संबंध में होता है जिनके साधारणतः और स्वभावतः दो अर्थ होते हैं।

श्लीपद—पुं० [सं० ब० स० पृषो०] फीलपाँव। (दे०)

श्लेष—पुं० [सं०√श्लिष्+घञ्] [वि० श्लेषक, श्लेषी, भू०कृ०श्लिष्ट] १. संयोग होना। जुड़ना। मिलना। २. आलिंगन। परिरंभण। ३. बोल-चाल, लेख आदि में वह स्थिति जिसमें कोई शब्द इस प्रकार प्रयुक्त होता है कि उसके दो या अधिक अर्थ निकलें और फलतः वह लोगों के परिहास का विषय बने। ४. साहित्य में, एक प्रकार का अलंकार जो कुछ अवस्थाओं में अर्थालंकार और कुछ अवस्थाओं में शब्दालंकार होता है। इसमें किसी या कुछ शब्दों के दो या अधिक अर्थ निकलते हैं। (पैरोनोमेशिया)

विशेष— इसमें ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है जिनके कई कई अर्थ होते हैं और प्रसंगों के अनुसार उनके अलग अलग अर्थ होते हैं। यथा—नाहीं नाहीं करैं थोरे माँगें बहु देन कहैं, मंगन को देखि पट देत बार बार हैं। इसमें कही हुई बातें अलग अलग प्रकार से कृपण पर भी घटती हैं और दाता पर भी। इसके दो भेद होते हैं—अभंग पद और भंग-पद।

श्लेषक— वि० [सं०√श्लिष्+ण्वुल्-अक] श्लेषण करने या मिलानेवाला।

श्लेष-चित्र—पुं० [सं० मध्य० स०] १. साहित्य में, ऐसा चित्र जिसमें स्पष्ट रूप से व्यक्त होनेवाले भाव के सिवा कोई और भाव भी छिपा हो। जैसे—यदि कोई नायक कई नायिकाओं में से किसी एक नायिका पर रीझकर अन्य नायिकाओं को भूल जाय और उससे चिढ़कर कोई मानिनी नायिका ऐसा चित्र अंकित करे जिसमें वह नायक कई कुमुदिनियों के बीच में से किसी एक कुमुदिनी का रस लेता हुआ दिखाई दे तो ऐसा चित्र श्लेष-चित्र कहा जायगा। २. दे० 'कूट चित्र'।

श्लेषण—पुं० [सं०√श्लिष्+ल्युष्-अन] [वि० श्लेषणी, श्लेषी, भू० कृ० श्लेषित, श्लिष्ट] १. संयोग करना। मिलाना। २. किसी के साथ जोड़ना या लगाना। ३. गले लगाना। आलिंगन।

श्लेष्म—पुं० [सं०] श्लेष्मा।

श्लेष्मा—पुं० [सं० श्लिष+मनिन्, श्लेष्मन्] १. शरीर में का कफ नामक विकार जो शरीर की तीन धातुओं में से एक माना गया है। बलगम। २. बाँधने की डोरी या रस्सी। ३. लिसोड़ा।

श्लोक—पुं० [सं०√श्लोक्+अच्] १. आवाज। ध्वनि। शब्द। २. पुकारने का शब्द। आह्वान। पुकार। ३. प्रशंसा। स्तुति। ४. कीर्ति। यश। ५. किसी गुण या विशेषता का प्रशंसात्मक कथन या वर्णन। जैसे—शूर-श्लोक अर्थात् शूरता का वर्णन। ६. संस्कृत के अनुष्टुप छंद का पुराना नाम। ७. आज-कल संस्कृत का कोई छंद या पद्य।

श्वः—पुं० [सं० श्वस्] आनेवाला दूसरा दिन। आगामी कल।

श्वपच—वि० [सं० श्व√पच्+अच्] [स्त्री० श्वपचा, श्वपची] कुत्ते का मांस खानेवाला।

पुं० प्राचीन भारत में, एक प्रकार के चांडाल जिनकी उत्पत्ति भिन्न भिन्न स्मृतियों में अलग अलग वर्णों के माता-पिता से कही गई है।

श्वबंधक—पुं० [सं०]=श्वपच (चंडाल)।

श्ववानर—पुं० [सं० (श्वान)+वानर] अफ्रीका और अरब में पाया जानेवाला एक प्रकार का भीषण बंदर जिसका थूथन और दाँत प्रायः कुत्तों के से होते हैं। (बेबून)

श्वसन—पुं० [सं०√श्वस् (साँस लेना)+ल्युट् अन] साँस लेने की क्रिया।

श्वसित—पुं० [सं०√श्वस् (साँस लेना)+क्त] १. श्वास। २. आह।

वि० १. श्वास निकालने या ग्रहण करनेवाला। श्वास युक्त। जीवित। २. आह भरनेवाला।

श्वसुर, श्वसुरक—पुं० [सं०] किसी के पति या पत्नी का पिता। ससुर।

श्वान्—पुं० [सं०√श्वि+कनिन्] कुत्ता।

श्वान—पुं० [सं०] [स्त्री० श्वानी] कुत्ता।

श्वास—पुं० [सं०√श्वस्+घञ्] १. प्राणियों का नाक से हवा खींचकर अन्दर फेफड़ों या हृदय तक पहुँचाना और फिर बाहर निकालना जो जीवन का मुख्य लक्षण है। साँस। (ब्रेथ) २. श्वासनली का एक प्रसिद्ध रोग जिसमें साँस बहुत जोर जोर से चलती और रोगी को बहुत कष्ट होता है। दमा। (एज़्मा)

श्वासनली—स्त्री० [सं०] सिर, गले और छाती के अंदर की वह नली जिससे प्राणी साँस लेते और निकालते हैं। (ट्रैकिया)

श्वासायाम—पुं० [सं०] १. साँस लेने में होनेवाली कठिनता या कष्ट। २. कठिनता या कष्ट से लिया जानेवाला साँस।

श्वासावरोध—पुं० [सं० श्वास+अवरोध] साँस के आने-जाने में होनेवाली बाधा। दम घुटना। (एस्फ़िक्सिया)

श्वासी (सिन्)—पुं० [सं०√श्वस् (साँस लेना)+णिच्-णिनि, श्वास इनि वा] १. श्वास लेनेवाला प्राणी। २. वायु।

श्वित—वि० [सं०√श्वित् (सफेदी)+क्विप्]=श्वेत।

स्त्री० [सं० श्वित+इनि] श्वेतता। सफेदी।

श्वेत—वि० [सं०√श्वेत+अच् या घञ्] [भाव० श्वेतता, श्वेतिमा]

१. जिसमें किसी प्रकार का रंग या वर्ण दिखाई न देता हो। बिना किसी विशिष्ट रंग का। चाँदी, दही आदि की तरह का। उजला। धवल। सफेद।

विशेष—आधुनिक विज्ञान के मत से सातों रंगों के मेल से ही चीजें श्वेत या सफेद दिखाई देती हैं, क्योंकि सूर्य की किरणें जो सफेद दिखाई देती हैं; वस्तुतः सातों रंगों से युक्त होती हैं।

२. निर्मल। साफ। स्वच्छ। ३. कलंक, दोष आदि से रहित। ४. उज्वल वर्ण का। गोरा।

पुं० १. सफेद रंग। २. चाँदी। रजत। ३. शंख। ४. कौड़ी। कपर्दक। ५. सफेद घोड़ा। ६. सफेद बादल। ७. सफेद जीरा। ८. शिव का एक अवतार। ९. वराह की सफेद मूर्ति या रूप। १०. पुराणानुसार एक पर्वत जो रम्य वर्ष और हिरण्य वर्ष के बीच में माना गया है। ११. पुराणानुसार एक द्वीप। १२. आयुर्वेद में, शरीर की त्वचा की तीसरी तह की संज्ञा। १३. स्कन्द का एक अनुचर। १४. शोभांजन। सहिजन। १५. शुक्र ग्रह का एक नाम जो उसके सफेद रंग के कारण पड़ा है। १६. एक केतु या पुच्छल-तारा।

श्वेतकुंजर—पुं० [सं० कर्म० स०] इन्द्र का ऐरावत नामक हाथी।

श्वेतकुष्ठ—पुं० [सं० कर्म० स०] रक्त-विकार के कारण होनेवाला एक रोग, जिसमें शरीर पर सफेद दाग या धब्बे बनने और बढ़ने लगते हैं। यह कोढ़ में गिना जाता है। (ल्यूकोडरमा)

श्वेतकेतु—पुं० [सं० कर्म० स०] गौतम बुद्ध।

श्वेतच्छद—पुं० [सं० ब० स०] हंस।

श्वेत-द्युति—पुं० [सं० ब० स०] चन्द्रमा।

श्वेत-द्वीप—पुं० [सं० कर्म० स०] वैकुंठ।

श्वेत-पत्र—पुं० [सं० मध्य० स०] आधुनिक राजनीति में, वह राजकीय विज्ञप्ति जो किसी महत्त्वपूर्ण राजनीतिक चर्चा, वार्ता आदि के संबंध में (प्रायः सफेद कागज पर लिखकर) प्रकाशित की जाती है। (ह्वाइट पेपर)

श्वेत-प्रदर—पुं० [सं० कर्म० स०] स्त्रियों के प्रदर नामक रोग का एक प्रकार जिसमें योनि से सफेद रंग का गाढ़ा और बदबूदार पानी निकलता है और जिसके कारण वे बहुत क्षीण तथा दुर्बल हो जाती हैं। (ल्यूकोरिया)

श्वेतरथ—पुं० [सं० ब० स०] ब्रह्मा जिनकी सवारी हंस है।

श्वेतवाजी—पुं० [सं० ब० स०] चन्द्रमा।

श्वेतवाह—पुं० [सं० ब० स०] १. चन्द्रमा। २. इन्द्र। ३. अर्जुन। ४. कपूर।

श्वेतसार—पुं० दे० 'जलांक'।

श्वेतांक—पुं० [सं० ब० स०] अनाजों, आलुओं, मटरों आदि में पाया जानेवाला एक प्रकार का गंधहीन सफेद खाद्य पदार्थ जिसका उपयोग औषधों और शिल्पीय कार्यों में भी होता है। चावलों में से यही माँड़ के रूप में निकलता है। (स्टार्च)

श्वेतिमा (मन्)— स्त्री० [सं० श्वेत+इमनिच् टाप्] श्वेतता।

ष

ष—नागरी वर्णमाला का इकतीसवाँ व्यंजन जो भाषा-विज्ञान तथा व्याकरण के अनुसार ऊष्म, मूर्धन्य, अघोष, महाप्राण तथा ईषद्विवृत है। अवधी में इसका उच्चारण 'ख' की तरह होता है।

षंजन—पुं० [सं०] १. आलिंगन। २. मिलन।

षंड—पुं० [सं०√सन्+ड, पृषो० षत्व] १. साँड़। बैल। २. नपुंसक। ३. ढेर। राशि। ४. भेड़ों आदि का झुंड। ५. पद्मों का समूह।

षंडक—पुं० [सं० षण्ड+कन्] नपुंसक।

षंडता—स्त्री० [सं० षंड+तल्+टाप्] नपुंसकता।

षंडत्व—पुं० [सं० षण्ड+त्व] नपुंसकता।

षंडयोनि—स्त्री० [सं०] = षंडी।

षंडाली—स्त्री० [सं०] १. तालाब। २. व्यभिचारिणी स्त्री।

षंडी—स्त्री० [सं०] ऐसी स्त्री जिसमें स्त्री के मुख्य लक्षणों का अभाव हो, अर्थात् न तो जिसके स्तनों का विकास हुआ हो और न रजस्वलता होती हो। (ऐसी स्त्री पुरुष समागम के अयोग्य होती है।)

षंढ—पुं० [सं०√सन्+ढ] १. नपुंसक। २. क्लीव। ३. शिव।

षंढा—स्त्री० [सं० षंढ-टाप्] मरदानी औरत। (शरीर तथा स्वभाव के विचार से)

षंढिता—स्त्री० [सं०]=षंडयोनि।

ष—पुं० [सं०] १. केश। बाल। २. स्वर्ग। ३. बुद्धिमान्। ४. विद्वान् आदमी। ५. निद्रा। ६. अंत। ७. बची हुई वस्तु। ८. हानि। ९. ज्ञान-हानि। १०. चूचुक। ११. मोक्ष। १२. गर्भ-स्राव। १३. भ्रूण। १४. सहिष्णुता।

वि० १. विद्वान्। विज्ञ। २. बुद्धिमान्। ३. उत्तम। श्रेष्ठ।

षट्—वि० [सं०√सो+क्विप्,+सु] जो गिनती में पाँच से एक अधिक हो। छः।

पुं० १. छः का सूचक अंक या संख्या। २. संगीत में, षाड़व जाति का एक राग जो सबेरे के समय गाया जाता है। ३. कुछ लोगों के मत से यह असावरी, टोड़ी, भैरवी आदि छः रागिनियों के योग से बना हुआ संकर राग है।

षट्क—वि० [सं०] १. छः गुना। २. छठी बार होनेवाला या किया जानेवाला।

पुं० १. छः का अंक या संख्या। २. एक ही प्रकार की वस्तुओं का वर्ग या समूह। ३. दर्शन-शास्त्रों के अनुसार इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और ज्ञान का वर्ग या समूह।

षट्-कर्म—पुं० [सं० द्वि० स०] १. शास्त्रों के अनुसार ब्राह्मणों के ये छः कर्म—यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान और प्रतिग्रह। २. स्मृतियों के अनुसार ये छः कर्म जिनके द्वारा आपत्काल में ब्राह्मण अपना निर्वाह कर सकते हैं—उंछवृत्ति, दान लेना, भिक्षा, कृषि, वाणिज्य और महाजनी (लेन-देन)। ३. तंत्र-शास्त्र के अनुसार मारण, मोहन (या वशीकरण), उच्चारण, स्तंभन, विदूषण और शांति ये छः कर्म। ४. योगशास्त्र में, धौति, वस्ति, नेती, नौलिक, त्राटक, और कपाल-

भाती ये छः कर्म। ५. साधारण लोगों के लिए विहित ये छः काम जो उन्हें नित्य करने चाहिए—स्नान, संध्या, तर्पण, पूजन, जप और होम। ६. लोक-व्यवहार और बोल-चाल में व्यर्थ के झगड़े-बखेड़े या प्रपंच।

षट्-कर्मा—पुं० [सं० ब० स०] षट्-कर्म करनेवाला, ब्राह्मण, तांत्रिक, योगी या गृहस्थ।

षट्-कला—स्त्री० [सं० ब० स०] संगीत में, ब्रह्मताल के चार मुख्य भेदों में से एक।

षट्क-संपत्ति—स्त्री० [सं० द्वि० स०] धर्मशास्त्र के अनुसार ये ६ कर्म—दम, शम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा, समाधान।

षट्कोण—वि० [सं० ब० स०] छः कोणोंवाला। (हेक्सेंगुलर)
पुं० ज्यामिति में छः कोणोंवाली आकृति।

षट्-चक्र—पुं० [सं० द्वि० स०] १. योग में ये छः चक्र—मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा। २. झगड़े-बखेड़े या झंझट के काम।

षट्-चरण—वि० [सं० ब० स०] छः पैरोंवाला।
पुं० १. भौंरा। २. जूं। ३. टिड्डी।

षट्-ताल—पुं० [सं०] संगीत में, मृदंग का एक प्रकार का ताल।

षट्-तिला—स्त्री० [सं०] माघ के कृष्ण पक्ष की एकादशी जिस दिन तिल-दान करने का माहात्म्य है।

षट्-दर्शन—पुं० [सं० द्वि० स०] हिन्दुओं के तत्त्व-ज्ञान सम्बन्धी ये छः दर्शन या शास्त्र–सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्व-मीमांसा और उत्तर मीमांसा।

षट्-दर्शनी—पुं० [सं० ब० स०] वह जो हिन्दुओं के षट् दर्शनों का अच्छा ज्ञाता या पंडित हो।

षट्-पद—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० षट्पदी] छः पैरोंवाला।

षट्पदी—स्त्री० [सं०ब०स०] छप्पय छंद जिसमें छः पद या चरण होते हैं।

षट्-प्रज्ञ—वि० [सं० ब० स०] चारों पुरुषार्थ अर्थात् लोकार्थ और तत्त्वार्थ का ज्ञाता।

षट्-भुज—पुं० [सं० ब० स०] ज्यामिति में, वह क्षेत्र या आकृति जिसकी छः भुजाएँ हों। (हेक्सागन)

षट्-रस—पुं० [सं० द्वि० स०] खाने-पीने की चीजों के ये छः रस या स्वाद—मधुर, लवण, तिक्त, कटु, कषाय और अम्ल।

षट्-राग—पुं० [सं० द्वि० स०] १. संगीत के ये छः मुख्य राग—भैरव, मलार, श्री, हिंडोल, मालकोश और दीपक। २. व्यर्थ का झगड़ा या बखेड़ा।

षट्-रिपु—पुं० [सं० द्वि० स०] धर्मशास्त्र के अनुसार ये छः मनोविकार जो मनुष्य के शत्रु माने गये हैं—काम, क्रोध, भय, मोह, लोभ और अहंकार या (किसी किसी के मत से) मत्सर।

षट्-वर्ग—पुं० [सं० द्वि० स०] १. एक ही तरह की छः चीजों का वर्ग या समूह। २. फलित ज्योतिष में, क्षेत्र होरा, प्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश और त्रिशांश का वर्ग या समूह। ३. दे० 'षट्-रिपु'।

षट्वांग—पुं० [सं०] एक प्राचीन राजर्षि जिन्हें केवल दो घड़ी की साधना से मुक्ति प्राप्त हुई थी।

षट्-विकार—पुं० [सं० द्वि० स०] १. दार्शनिक क्षेत्र में, प्राणियों के ये छः विकार या परिणाम—जन्म, शरीर-वृद्धि, बाल्यावस्था, प्रौढ़ता, वार्द्धक्य और मृत्यु। २.=षट्-रिपु।

षट्-शास्त्र—पुं० [सं०]=षट्-दर्शन।

षडंग—पुं० [सं० द्वि० स०] १. वेदों के ये छः अंग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष। २. शरीर के ये छः अंग—दो पैर, दो-हाथ, सिर और धड़।

षडक्षरी—पुं० [सं० द्वि० स०] रामानुज के श्री-वैष्णव सम्प्रदाय का दीक्षामंत्र जो छः अक्षरों का है।

षडग्नि—स्त्री० [सं०] कर्मकांड के अनुसार ये छः प्रकार की अग्नियाँ—गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, सम्याग्नि, आवसथ्य और औपासनाग्नि।

षडज—पुं०=षड्ज (स्वर)।

षड़ानन—वि० [सं० ब० स०] छः मुखोंवाला। जिसके छः मुंह हों।
पुं० १. कार्तिकेय जिनके छः मुँह कहे गये हैं। २. संगीत में, स्वर-साधना की एक प्रणाली जो आरोही में इस प्रकार है—सा रे ग म प ध रे ग म प ध नि, ग म प ध नि सा और अवरोही में इसके विपरीत है।

षड्-अक्षरी—स्त्री०=षडक्षरी।

षड्गुण—पुं० [सं० द्वि० स०] १. छः गुणों का समूह। २. प्राचीन भारतीय राजनीति में राज्य के ये छः गुण या कार्य—सन्धि, विग्रह, यान (चढ़ाई), आसन (विराम), द्वैधीभाव और संशय।

षड्ज—पुं० [सं० षट्√जन्] संगीत के सात स्वरों में से पहला स्वर जो साधारणतः 'सा' कहलाता है।

विशेष—संगीत-शास्त्र के अनुसार इस स्वर का उच्चारण नासा, कण्ठ, उर, तालु, जीभ, और दाँतों के सम्मिलित प्रयत्न से होता है, इसलिए इसका नाम षड्ज पड़ा है।

षड्-दर्शन—पुं० =षट्-दर्शन।

षड्-भाग—पुं० [सं०] भूमि की उपज का वह छठा अंश जो भूमि-कर के रूप में लिया जाता था।

षड्भाषा—स्त्री० [सं०ब०स०] संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, शौरसेनी, मागधी और पैशाची शब्दों के योग से बनी हुई एक प्राचीन मिश्र भाषा जिसका रूप चन्दवरदाई कृत पृथ्वीराज रासों में देखने को मिलता है।

षड्यंत्र—पुं० [सं०] १. वह योजना जो कुछ लोग सामूहिक रूप से कोई अनुचित तथा अपराधपूर्ण काम करने के लिए बनाते हैं। २. कोई बड़ा परिवर्तन करने के लिए गुप्त रूप से की जानेवाली कार्रवाई। (कान्सपिरेसी)
क्रि० प्र०–रचना।

षड्रस—पुं० [सं०] षट्-रस।

षड्रिपु—पुं० [सं०]=षट्-रिपु।

षड्वर्ग—पुं० [सं०] षट्-वर्ग।

षड्विंदु—पुं० [सं० ब० स०] १. विष्णु। २. गुबरैले की तरह का एक प्रकार का कीड़ा जिसकी पीठ पर बुंदकियाँ होती हैं।

षड्विकार—पुं०=षट्-विकार।

षण्मुख—वि० [सं०]=षडानन।

षष्टि—वि० [सं० षट्+दशति, नि० सिद्धि] जो गिनती में पचास से दस अधिक हो। साठ।

स्त्री० साठ की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६०।

षष्टिक—पुं० [सं०] साठी नामक धान।

षष्टिका—स्त्री० [सं०] साठी धान।

षष्ठ—वि० [सं० षष्+डट्–थुक्] गिनती में छः के स्थान पर पड़नेवाला। छठा।

षष्ठान्न—पुं० [सं०] वह अन्न जो तीन दिन का व्रत रखकर उन तीन दिनों में केवल एक बार खाया जाय।

षष्ठी—स्त्री० [सं० षष्ठ+ङीप्] १. चांद्र मास के शुक्ल या कृष्ण पक्ष की छठी तिथि। छठ। २. संस्कृत व्याकरण में संबंध सूचक विभक्ति। ३. बच्चे के जन्म से छठे दिन होनेवाला कृत्य। छठी। ४. सोलह मातृकाओं में एक मातृका। ५. दुर्गा का एक नाम।

षांड—पुं० [सं०] शिव।

षांड्य—पुं० [सं०]=षंडता।

षाड़व—पुं० [सं० षष्√अज्+अच्+अण्] संगीत में, ऐसा राग जिसमें केवल छः स्वर लगते हों और कोई एक स्वर न लगता हो।

षाड़व-ओड़व—पुं० [सं०] संगीत में, ऐसा राग जो आरोही में षाड़व और अवरोही में ओडव हो।

षाड़व-संपूर्ण—पुं० [सं०] संगीत में ऐसा राग जो आरोही में षाडव और अवरोही में संपूर्ण हो।

षाड्गुण्य—पुं० [सं०] १. किसी संख्या को छः से गुणा करने पर प्राप्त होनेवाला गुणनफल। २. षड्गुण (देखें) होने की अवस्था या भाव।

षाण्मातुर—वि० [सं० षण्मातृ+अण्, उत्व] जिसकी छः माताएँ हों।
पुं० कार्तिकेय।

षाण्मासिक—वि० [सं० षण्मास+ठक्] १. अवस्था में छः महीनेवाला। २. जिसकी अवधि छः मास की हो। जैसे—षाण्मासिक चंदा।
पुं० मृतक का होनेवाला वह श्राद्ध जो उसकी मृत्यु के छः महीने बाद किया जाता है। छ-माही।

षाण्मुख—वि० [सं०] छः मुखोंवाला।
पुं० कार्तिकेय।

षाष्टिक—वि० [सं०] षष्ठी-संबंधी।

षोडश—वि०[सं० षोडशन्+डट्] जो गिनती में दस से छः अधिक हो। सोलह।
पुं० सोलह की संख्या।

षोडशक—पुं०[सं० षोडश+कन्] सोलह।

षोडश कला—स्त्री० [सं० द्वि० स०] चन्द्रमा की सोलहों कलाएँ। (दे० 'कला')

षोडश गण—पुं० [सं० द्वि० स०] दार्शनिक क्षेत्र में, पाँचों ज्ञानेन्द्रियों, पाँचों कर्मेन्द्रियों, पाँचों भूतों और मन का वर्ग या समूह।

षोडश दान—पुं०[सं० द्वि० स०] धार्मिक क्षेत्र में, नीचे लिखी १६ चीजों का एक साथ किया जानेवाला दान—भूमि, आसन, जल, वस्त्र, अन्न, दीपक, पान, छत्र, सुगंधित द्रव्य, पुष्प माला, फल, शास्त्र, खड़ाऊँ, गौ, सोना और चाँदी।

षोडश पूजन—पुं० [सं०]=षोडशोपचार।

षोडश मातृका—स्त्री० [सं० द्वि० स०] इन सोलह मातृकाओं (एक प्रकार की देवियों) का वर्ग या समूह—गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शालि, पुष्टि, धृति, तुष्टि, मातृ और आत्म-देवता।

षोडश शृंगार—पुं० [सं०] सम्पूर्ण शृंगार जिसमें सोलह बातें होती हैं—उबटन लगाना, स्नान करना, वस्त्र धारण करना, बाल सँवारना, अंजन लगाना, सिंदूर भरना, महावर लगाना, भाल पर तिलक बनाना, ठोड़ी पर तिल बनाना, मेंहदी रचाना, सुगन्धित द्रव्यों का प्रयोग करना, अलंकार धारण करना, पुष्पहार पहनना, पान खाना, होठ रँगना और मिस्सी लगाना।

षोडश-संस्कार—पुं०[सं०] गर्भाधान से लेकर मृत्यु तक के सोलह संस्कार। विशेष दे० 'संस्कार'।

षोडशांग—वि० [सं०] जिसके १६ अंग या अवयव हों।
पुं० सोलह गंध-द्रव्यों से तैयार किया हुआ धूप।

षोडशांशु—पुं० [सं० ब० स०] शुक्र ग्रह।

षोडशाह—पुं० [सं० ब० स०] १. सोलह दिन तक किया जानेवाला एक प्रकार का उपवास। २. मृतक की षोडशी (देखें) नामक कृत्य।

षोडशिक—वि० [सं० षोडश+ठक्] १. सोलह से संबंध रखनेवाला। २. सोलहवाँ।

षोडशी—वि० [सं०] सोलह वर्षों की (युवती)।
स्त्री० १. सोलह वर्षों की युवती स्त्री। २. वह कृत्य जो किसी के मरने के दसवें या ग्यारहवें दिन होता है। (हिन्दू) ३. दस महाविद्याओं में से एक महाविद्या। ४. नीचे लिखी १६ वस्तुओं का वर्ग या समूह—ईक्षण, प्राण, श्रद्धा, आकाश, वायु, जल, अग्नि, पृथ्वी, इन्द्रिय, मन, अन्न, वीर्य, तप, मंत्र, कर्म और नाम।

षोडशोपचार—पुं० [स० कर्म० स०] पूजन के सोलह अंगा या कृत्य—आसन, स्वागत, अर्घ्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, परिक्रमा और वंदना।

ष्ठीवन—पुं० [सं०√ष्ठीव्+ल्युट्] [भू० कृ० ष्ठ्यूत] १. थूकने की क्रिया या भाव। २. थूक।

ष्ठीवी—स्त्री० [सं०] =ष्ठीवन।

ष्ठ्यूत—भू० कृ० [सं०√ष्ठिव्+क्त, ऊठ्] थूका हुआ।

ष्ठ्यूति—स्त्री० [सं०√ष्ठिव्+क्तिन् ऊठ्] थूकने की क्रिया या भाव।

स

स—नागरी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यंजन जो भाषा-विज्ञान तथा व्याकरण के अनुसार ऊष्म, दन्त्य, अघोष, महाप्राण तथा ईषद्विवृत है।

सं—उप० [सं० सम्] एक संस्कृत उपसर्ग जो कुछ शब्दों के पहले लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—१. संग, सहित या साथ; जैसे—संगम, संभाषण, संयुक्त आदि। २. अच्छी या पूरी तरह से; जैसे—संतोष, संन्यास, संपादन आदि। ३. उत्कृष्टता या सुन्दरता; जैसे—संस्तुति।
विशेष—कभी-कभी इसके योग से मूल शब्द का अर्थ प्रायः ज्यों का त्यों बना रहता है; और उसमें कोई विशेषता नहीं आती। जैसे—संप्राप्ति।
† अव्य० द्वारा। से।

संइतना†—स०=सैंतना।

सँउपना†--स०=सौंपना।

संका†--स्त्री०=शंका।

संकट--पुं०[सं० सम्√कट् (बरसना या ढकना)+अच्] १. सँकरा रास्ता। तंग राह। २. विशेषतः जल या स्थल के दो भागों को जोड़नेवाला तंग रास्ता। जैसे--गिरि-संकट, जल-संकट, स्थल-संकट। ३. दो पहाड़ों के बीच का रास्ता। दर्रा। ४. ऐसी स्थिति जिसमें दोनों ओर कष्टों या विपत्तियों का सामना करना पड़ता हो और बीच में निश्चितता या सुखपूर्वक रहने के लिए बहुत ही थोड़ा अवकाश रह गया हो। ५. आफत। विपत्ति।

वि० सँकरा। जैसे--संकट मुख।

संकट-चौथ--स्त्री० [सं० संकट+हिं० चौथ] माघ मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी।

संकट-मुख--वि० [सं०] जिसका मुँह सँकरा हो।

संकट-संकेत--पुं० [सं० ष० त०] विपत्ति या संकट में पड़े हुए लोगों का वह सांकेतिक संदेश जो आस-पास के लोगों को अपनी रक्षा या सहायता के लिए भेजा जाता है। (एस० ओ० एस०) जैसे--डूबते या जलते हुए जहाज का संकट-संकेत।

संकटा--स्त्री० [सं० संकट-टाप्] १. एक प्रसिद्ध देवी जो संकट या विपत्ति का निवारण करनेवाली मानी जाती है। २. फलित ज्योतिष में, अष्ट योगिनियों में से एक।

संकटापन्न--भू० कृ० [सं० द्वि० त०] १. संकट या कष्ट में पड़ा हुआ। २. संकटपूर्ण।

संकटी (टिन्)--वि० [सं० संकट+इनि] जो संकट में पड़ा हो।

संकत†--पुं०=संकेत।

संकना†--अ० [सं० शंका] १. शंका करना। संदेह करना। २. आशंकित या भयभीत होना। डरना।

संकर--वि० [सं० सम्√कृ (फेंकना) +अप्] १. दो या अधिक भिन्न भिन्न तत्त्वों या पदार्थों के मेल से बना हुआ। जैसे--संकर राग। २. दो अलग अलग जातियों, वर्णों आदि के जीवों या प्राणियों के संसर्ग से उत्पन्न। दोगला।

पुं० १. अलग अलग तरह की दो चीजों का आपस में मिलकर एक होना। २. वह जिसकी उत्पत्ति भिन्न भिन्न वर्गों या जातियों के पिता और माता से हुई हो। दोगला। ३. साहित्य में, ध्वनि का वह प्रकार या भेद जिसमें एक ही आश्रय से कई अभिप्राय या ध्वनियाँ निकलती हों। जैसे--प्रिय के आने पर पीन स्तनों और चंचल तथा विशाल नेत्रोंवाली नायिका द्वार पर मंगल कलश और कमलों के वंदनवार का काम बिना आयास के ही संपादित कर रही थी। यहाँ स्तनों से कलशों और नेत्रों से कमलों के वंदनवार का भी भाव निकलता है। ४. साहित्य में, दो या अधिक अलंकारों के इस प्रकार एक साथ और मिले-जुले रहने की अवस्था जिसमें या तो वे एक दूसरे से अलग न किए जा सकें या जिनका उस प्रसंग में स्वतंत्र रूप सिद्ध न हो सके। (काम्मिक्सचर) उदाहरणार्थ--यदि किसी वर्णन में दो या अधिक अलंकार समान रूप से घटित होते हों तो उन्हें संकर कहा जायगा। इसकी गणना स्वतंत्र अलंकार के रूप में होती है। ५. न्याय के अनुसार किसी एक ही स्थान या पदार्थ में अत्यंताभाव और समानाधिकरण का एक ही में होना। जैसे--मन में मूर्तत्व तो है, पर भूतत्त्व नहीं है, और आकाश में भूतत्त्व है, पर मूर्तत्व नहीं है। परन्तु पृथ्वी में भूतत्व भी है और मूर्तत्व भी है। ६. झाड़ देने पर उड़नेवाली धूल। ७. आग के जलने का शब्द।

†पुं०=शंकर।

संकरक--वि० [सं० संकर+कन्] १. मिलाने या मिश्रण करनेवाला। २. संकर रूप में लानेवाला।

संकरखण†--पुं०=संघर्षण।

संकर घरनी--स्त्री० [सं० शंकर+गृहणी] शंकर की पत्नी, पार्वती।

संकरण--पुं० [सं०] १. संकर या मिश्रित करने की क्रिया या भाव। २. दो भिन्न भिन्न जातियों या वर्गों के प्राणियों, वनस्पतियों आदि का संयोग करा के किसी अच्छी या नई जाति का प्राणी या वनस्पति उत्पन्न करने की क्रिया, प्रणाली या भाव। (क्रास ब्रीडिंग)

संकरता--स्त्री० [सं० संकर+तल्+टाप्] १. संकर होने की अवस्था, धर्म या भाव। सांकर्य। २. दोगलापन।

संकर पद--पुं० [सं०] भाषा में, ऐसा समस्त पद जो दो विभिन्न स्रोतों या भाषाओं के शब्दों के योग से बना हो।

संकर समास--पुं० [सं०] व्याकरण में, दो ऐसे शब्दों का समास जिनमें से एक शब्द किसी एक भाषा का और दूसरा किसी दूसरी भाषा का हो।

सँकरा--वि० [सं० संकीर्ण][स्त्री० सँकरी] १. (रास्ता) जिसकी चौड़ाई कम हो। २. (वस्त्र) जो पहनने पर कस जाता हो या जो बहुत मुश्किल से पहना जाता हो। तंग।

†पुं० कठिनता, विपत्ति आदि की स्थिति।

†पुं० [सं० शृंखला] सिक्कड़।

संकरा--पुं०=शंकराभरण (राग)।

सँकराना†--स० [हिं० सँकरा+आना (प्रत्य०)] संकुचित करना। तंग करना।

स० [हिं० साँकल] अन्दर बन्द करके बाहर से साँकल लगाना।

†अ० सँकरा या तंग होना।

संकरित--भू० कृ० [सं० संकर+इतच्] किसी के साथ मिला या मिलाया हुआ।

संकरिया--पुं० [सं० संकर ?] एक प्रकार का हाथी।

संकरी (रिन्)--पुं० [सं० संकर+इनि] वह जो भिन्न वर्ण या जाति के पिता और माता से उत्पन्न हो। संकर। दोगला।

†स्त्री०=शंकरी।

संकरीकरण--पुं० [सं० संकर+च्वि√कृ (करना)+ल्युट्-अन] १. दो या अधिक अलग अलग जातियों, जीवों, पदार्थों आदि के योग से नया जीव या पदार्थ उत्पन्न करने की क्रिया। २. धर्म-शास्त्र में, नौ प्रकार के पापों में से एक जो जातियों या प्राणियों में वर्ण-संकरता उत्पन्न करने से लगता है।

संकर्षण--पुं० [सं०] १. अपनी ओर खींचने की क्रिया या भाव। २. खेत में हल जोतना। ३. ग्यारह रुद्रों में से एक रुद्र। ४. श्रीकृष्ण के भाई बलदेव का एक नाम। ५. वैष्णवों का एक संप्रदाय जिसके प्रवर्तक निम्बार्क जी थे। ६. कानून में अधिकार, उत्तरदायित्व आदि के विचार से किसी वस्तु या व्यक्ति के स्थान पर दूसरी वस्तु या व्यक्ति का रखा या नाम चढ़ाया जाना। (सबरोगेशन)

संकर्षी (र्षिन्)—वि०[सं०√कृष्(खींचना)+णिनि अथवा संकर्ष+इनि] १. खींचने या खींचकर मिलानेवाला। २. छोटा करनेवाला।

संकल—पुं० [सं० सम्√कल् (गणना करना)+अच्] १.दो या अधिक चीजों को एक में मिलाना। ३. इकट्ठा करना। संकलन। ३. गणित में जोड़ या योग नाम की क्रिया। ४. पश्चिमी पंजाब की एक प्राचीन पहाड़ी और उसके आस-पास का स्थान। (आज-कल का साँगला) †स्त्री० [सं० शृंखला] साँकल। सिकड़ी।

संकलन—पुं० [सं० सम्√कल्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० संकलित] १. एकत्र करने की क्रिया। संग्रह करना। जमा करना। २. काम की और अच्छी चीजें चुनकर एक जगह एकत्र करना। ३. कोई ऐसी साहित्यिक कृति जिसमें अनेक ग्रन्थों या स्थानों से बहुत-सी बातें इकट्ठी करके रखी गई हों। (कम्पाइलेशन) ४. ढेर। राशि। ५. गणित में, योग नाम की क्रिया। जोड़।

संकलप†—पुं० =संकल्प।

संकलपना—स० [सं० संकल्प+हिं० ना (प्रत्य०)] १. किसी बात का संकल्प या दृढ़ निश्चय करना। २. धार्मिक रीति से संकल्प या मंत्र-पाठ करते हुए कोई चीज दान करना। इस प्रकार छोड़ देना मानों संकल्प करके दान कर दिया हो। उदा०—सुख संकलपि दुख सांबर लीन्हेंऊँ—जायसी। ४. मन में किसी बात की कल्पना या विचार करना। सोचना।

संकला†—पुं० [सं० शाक] शाक द्वीप।

सँकलाना†—स० [हिं० संकल्पना] १. धार्मिक वृत्ति से संकल्प का मंत्र-पाठ करते हुए दान करना। उदा०—जब मेरे बाबा सँकलाए हे होइवों तोहारि।—लोकगीत।

संकलित—भू० कृ० [सं० सम्√कल्+क्त] १. जिसका संकलन हुआ हो। २. जो संकलन की क्रिया से बना हो। ३. चुन या छाँटकर इकट्ठा किया हुआ। ४. (राशियों या संख्याएँ) जिसका जोड़ लगाया गया हो। ५. इकट्ठा या एकत्र किया हुआ। ६. जो थोड़ा-थोड़ा करके बढ़ा या इकट्ठा होकर एक हो गया हो। (एग्रिगेट)

संकल्प—पुं० [सं० सम्√कृप्+घञ्,र—ल] १. कोई कार्य करने की इच्छा जो मन में उत्पन्न हो। विचार। इरादा। २. कोई कार्य करने का मन में होनेवाला दृढ़ निश्चय। ३. सभा-समिति में किसी विषय में विचार-पूर्वक किया हुआ पक्का निश्चय। (रिज़ोल्यूशन) ४. धार्मिक क्षेत्र में, दान, पुण्य या और कोई देवकार्य आरंभ करने से पहले एक निश्चित मंत्र का उच्चारण करते हुए अपना दृढ़ निश्चय या विचार प्रकट करना। ५. वह मंत्र जिसका उच्चारण करते हुए उक्त प्रकार का निश्चय या विचार कार्य-रूप में परिणत किया जाता है।

मुहा०—(कोई चीज) संकल्प करना=दान करना या दान करने का दृढ़ निश्चय करना।

संकल्पक—वि० [सं० संकल्प+कन्] संकल्प करनेवाला।

संकल्पना—स्त्री० [सं०] १. संकल्प करने की क्रिया या भाव। २. शब्द, प्रतीक आदि का लगाया हुआ सामान्य से भिन्न विचारपूर्ण तथा बौद्धिक अर्थ। (कन्सेपशन) ३. धारणा। ४. इच्छा।

स०=संकल्पना।

संकल्पा—स्त्री० [सं० संकल्प+टाप्] दक्ष की एक कन्या जो धर्म की भार्या थी।

संकल्पित—भू० कृ० [सं० संकल्प+इतच्] १. संकल्प किया हुआ। २. निश्चयपूर्वक स्थिर किया हुआ। ३. जिसकी संकल्पना की गई हो।

संकल्य—वि० [सं० सम्√कल्+ण्यत् वृद्धयभाव] १. जिसका संकलन होने को हो या हो सकता हो। २. जो जोड़ा या युक्त किया जाने को हो। योग्य।

संकष्ट—पुं० [सं०] संकट (कष्ट)।

संका—स्त्री०=शंका।

संकाना*—अ० [सं० शंका] १. शंकित होना। २. भयभीत होना। डरना।

स० १. शंकित करना। भयभीत करना। २. डराना।

संकाय—स्त्री० [सं०] उच्च कोटि के अध्ययन के लिए ज्ञान-विज्ञान आदि का कोई विशिष्ट विभाग या शाखा। (फैकल्टी)

संकायाध्यक्ष—पुं० [सं०] आज-कल विश्वविद्यालयों में किसी संकाय का प्रधान अधिकारी। (डीन आफ़ फ़ैकल्टी)

संकार—पुं० [सं० सम्√कृ (करना)+घञ्] १. कूड़ा-करकट। २. वह धूल जो झाड़ देने से उड़े। ३. आग के जलने का शब्द।

स्त्री० [हिं० सँकारना] १. सँकारने की क्रिया या भाव। २. इशारा। संकेत।

सँकारना†—स० [हिं० संकार+ना (प्रत्य०)] संकेत करना। इशारा करना।

सँकारा†—पुं०=सकारा (प्रातःकाल)।

संकाश—वि० [सं० सम्√काश् (प्रकाश करना)+अच्] समस्त पदों के अंत में, सदृश्य या समान। जैसे—अग्निसंकाश।

पुं० १. प्रकाश। रोशनी। २. चमक। दीप्ति।

अव्य० १. सदृश। समान। २. पास। समीप।

संकास—वि०, पुं०, अव्य०=संकाश।

संकिस्त—वि० [सं० संकृष्ट] जो अधिक चौड़ा न हो। सँकरा। तंग।

संकीर्ण—वि० [सं० सम्√कृ+क्त] [भाव० संकीर्णता] १. जो अधिक चौड़ा या विस्तृत न हो। संकुचित। तंग। सँकरा। २. किसी के साथ मिला हुआ। मिश्रित। ३. छोटा। ४. तुच्छ। ५. नीच। ६. वर्ण-संकर। ७. लाक्षणिक अर्थ में, जो उदार न हो। जिसमें व्यापकता न हो। जैसे—संकीर्ण विचारधारा।

पुं० १. ऐसा राग या रागिनी जो दो अन्य रागों या रागिनियों के मेल से बना हो। २. विपत्ति। संकट। ३. साहित्य में, एक प्रकार का गद्य जिसमें कुछ वृत्तगंधि और कुछ अवृत्तगंधि का मेल होता है।

संकीर्णता—स्त्री० [सं० संकीर्ण+टल्+टाप्] १. संकीर्ण होने की अवस्था या भाव। २. नीचता। ३. ओछापन। क्षुद्रता।

संकीर्तन—पुं० [सं० सम्√कीर्त् (वर्णन करना)+ल्युट्—अन] १. भली-भाँति किसी की कीर्ति का वर्णन करना। २. ईश्वर, देवता आदि का नाम जपना या यश गाना। कीर्तन।

संकुचक—वि० [सं०] संकुचित करने या सिकोड़नेवाला।

पुं० कुछ ऐसी मछलियाँ जो सिकुड़कर छोटी और फैलकर बड़ी हो सकती हैं।

संकुचन--पुं० [सं० सम्√कुच् (संकुचित होना)+ल्युट्–अन] १. संकुचित करने या होने की किया या भाव। सिकुड़ना। २. एक प्रकार का बाल ग्रह रोग।

सँकुचना†—अ०=सकुचना।

संकुचित—भू० कृ० [सं० सम्√कुच् (संकोच करना)+क्त] १. जिसमें संकोच हो। संकोच युक्त। लज्जित। जैसे--संकुचित दृष्टि। २. सिकुड़ा या सिकोड़ा हुआ। ३. तंग। सँकरा। संकीर्ण। ४. जिसमें उदारता का अभाव हो। अनुदार।

संकुड़ित†--विं०=संकुचित।

संकुरना†--अ०=सिकुड़ना।

संकुल--वि० [सं० सम्√कुल् (इकट्ठा होना)+क] [भाव० संकुलता] १. संकुलित। घना। २. भरा हुआ। पूर्ण। ३. पूरा। सारा। समूचा।

पुं० १. युद्ध। समर। २. झुंड। दल। ३. जन-समूह। भीड़। ४. जनता। ५. असंगत वाक्य। ६. ऐसे वाक्य जो परस्पर विरोधी हों।

संकुलता--स्त्री० [सं० संकुल+तल्+टाप्] संकुल होने की अवस्था या भाव।

संकुलित--भू० कृ० [सं० संकुल+इतच् अथवा सम्√कुल (इकट्ठा होना)+क्त वा] १. घना किया हुआ। २. भरा हुआ। ३. पूरा किया हुआ। ४. इकट्ठा किया हुआ।

संकृष्ट--भू० कृ० [सं० सम्√कृष् (खींचना)+क्त] १. खींचकर नजदीक लाया हुआ। २. एक साथ किया हुआ।

संकृष्टि—स्त्री०=संकर्षण।

संकेंद्रण—पुं० [सं०] १. चारों ओर से इकट्ठा करके एक केन्द्र पर लाना या स्थिर करना। २. मन के भाव या विचार किसी एक ही बात या विषय पर लाकर लगाना। (कान्सेन्ट्रेशन)

सँकेत†--वि०=सँकरा।

पुं०=संकेत।

संकेत--पुं० [सं० सम्√कित् (बहाना)+घञ्] १. चिह्न। निशान। २. वह चीज जो किसी को किसी प्रकार की निशानी या पहचान के लिए दी जाय। (टोकन) ३. ऐसी शारीरिक चेष्टा जिससे किसी पर अपना उद्देश्य, भाव या विचार प्रकट किया जाय। इंगित। इशारा। जैसे--आँख या हाथ से किया जानेवाला संकेत। ४. कोई ऐसी बात या क्रिया जो किसी विशेष और बँधी हुई बात या कार्य की सूचक हो। ५. किसी घटना, प्रसंग अदि पर प्रकाश डालनेवाली कोई बात। प्रतीक। ६. संकेत-स्थल। (दे०)

संकेतकी--स्त्री० [सं० संकेत] आपस के व्यवहार में संक्षेप और गोपन के लिए स्थिर की हुई वह वार्ता-प्रणाली जिसमें साधारण शब्दों और पदों के लिए छोटे छोटे सांकेतिक शब्द बना लिए जाते हैं। व्यापारिक और राजनीतिक क्षेत्रों में प्रायः तार द्वारा समाचार और आदेश भेजने के लिए इसका उपयोग होता है। सांकेतिक भाषा। (कोड)

संकेत-ग्रह—पुं० [सं० ब० स०] साहित्य में, शब्द की अभिधा शक्ति से ग्रहण किया जाने अथवा निकलनेवाला अर्थ। 'विबग्रहण' से भिन्न।

संकेत-चित्र--पुं० [सं०] ऐसा चित्र जिसमें प्रतीक के सहारे कोई बात दिखाई गई हो।

संकेत चिह्न--पुं० [सं०] १. वह चिह्न जो शब्द के संक्षिप्त रूप के आगे लगाया जाता है। जैसे—पुं० में का—०। २. शब्द का संक्षिप्त रूप। जैसे--मध्य प्रदेश का संकेत चिह्न है—म० प्र०।

संकेतन--पुं० [सं० सम्√कित् (बहाना)+ल्युट्–अन] १. संकेत करने की क्रिया या भाव। ३. ठहराव। निश्चय। ३. संकेत-स्थल।

संकेतना--अ० [सं० संकेत+हिं० ना (प्रत्य०)] संकेत या इशारा करना।

स० [सं० संकीर्ण] संकट में डालना।

संकेत-स्थल—पुं० [सं० ष० त०] १. साहित्य में, वह स्थल जहाँ पर प्रेमी और प्रेमिका मिलते हों। २. वह स्थान जो औरों से छिपाकर कुछ लोगों ने किसी विशेष कार्य के लिए नियत या स्थिर किया हो।

संकेताक्षर--पुं० [सं० ब० स०] ऐसी लिपि-प्रणाली जिसमें वर्ण-माला के अक्षर अपने शुद्ध रूप में नहीं बल्कि निश्चित संकेत रूप में लिखे जाते हैं। (साइफ़र)

संकेतित--भू० कृ० [सं० सम्√कित् (बहाना) +क्त, अथवा संकेत+इतच्] १. संकेत के रूप में लाया हुआ। जिसके संबंध में संकेत हुआ हो। २. ठहराया हुआ। निश्चित। ३. आमंत्रित।

संकेतितार्थ--पुं० [सं० संकेतित+अर्थ] शब्द या पद का संकेत रूप से निकलनेवाला अर्थ। (साधारण शब्दार्थ से भिन्न)

संकेलना†—स० [सं० संकुल] १. इकट्ठा करना। २. समेटना।

संकोच--पुं० [सं०] १. सिकुड़ने की क्रिया या भाव। २. वह मानसिक स्थिति जिसमें भय या लज्जा अथवा साहस के अभाव के कारण कुछ करने को जी नहीं चाहता। ३. असमंजस। आगा-पीछा। ४. थोड़े में बहुत सी बातें कहना। ५. साहित्य में, एक प्रकार का अलंकार जिसमें 'विकास अलंकार' के विरुद्ध वर्णन होता है या किसी वस्तु का अतिशय संकोच पूर्वक वर्णन किया जाता है। ६. एक प्रकार की मछली। ७. केसर।

संकोचक--वि० [सं० सम्√कुच् (सिकुड़ना)+ण्वुल्–अक] १. संकोच करनेवाला। २. सिकोड़नेवाला।

संकोचन—पुं० [सं० सम्√कुच्+ल्युट्–अन्] सिकुड़ने या सिकोड़ने की क्रिया या भाव।

सँकोचना--स० [सं० संकोच] संकुचित करना।

अ० मन में संकोच करना। असमंजस में पड़ना।

संकोचित--भू० कृ० [सं० संकोच+इतच्] १. संकोच युक्त। जिसमें संकोच हुआ हो। लज्जित। शरमिन्दा।

पुं० तलवार चलाने का एक ढंग।

संकोची (चिन्)—वि० [सं० सम्√कुच्+णिनि, अथवा संकोच इति] १. संकोच करनेवाला। २. सिकुड़नेवाला। ३. जिसे स्वभावतः या प्रायः संकोच होता हो। संकोचशील।

सँकोपना*—अ० [सं० संकोप+हिं० ना (प्रत्य०)] कोप या क्रोध करना। क्रुद्ध होना। गुस्सा करना।

संकोरना—स०=सिकोड़ना।

संक्रंदन—पुं० [सं० सम्√क्रन्द (रोदन) +ल्युट्–अन] १. शक्र। इंद्र। २. पुराणानुसार भौत्य मनु का एक पुत्र। ३. दे० 'क्रंदन'।

संक्रम--पुं० [सं०] १. सीधी अर्थात् सामने की ओर होनेवाली गति। 'विक्रम' का विपर्याय। २. सूर्य की दक्षिणायन गति। ३. दे० 'संक्रमण'।

संक्रमण--पुं० [सं० सम्√क्रम् (चलना)+ल्युट्–अन] १. आगे की ओर चलना या बढ़ना। 'विक्रमण' का विपर्याय। २. अतिक्रमण। लाँघना। ३. घूमना-फिरना। ४. एक अवस्था से धीरे धीरे बदलते हुए दूसरी अवस्था में पहुँचना। जैसे–संक्रमण काल। ५. एक के हाथ या अधिकार से दूसरे के हाथ या अधिकार में जाना। (पासिंग) ६. सूर्य का एक राशि से निकलकर दूसरी राशि में प्रवेश करना। ७. एक स्थिति पार करते हुए दूसरी स्थिति में जाना या पहुँचना। ८. कीटाणु, रोग, आदि का फैलते हुए एक से दूसरे को होना।

संक्रमण-काल--पुं० [सं० ष० त०] १. वह समय जब कोई पहले रूप से बदलकर दूसरे रूप में आ रहा हो। २. दे० 'संक्रांति'।

संक्रमण-नाशक--वि० [सं० ष० त०] रोग के संक्रमण से बचाने या मुक्त करनेवाला। (डिसइनफ़ेक्टेंट)

संक्रमना†--अ० [सं० संक्रामण] संक्रमण करना या होना। जैसे--सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमना।

संक्रमिक--वि० [सं० सम्√क्रम्+ठन्] १. जिसका संक्रमण हुआ या हो रहा हो। २. अंतरित या हस्तांतरित होनेवाला।

संक्रमित--भू० कृ० [सं० सम्√क्रम्+क्त] १. जिसका या जिसमें संक्रमण हुआ हो। २. किसी में युक्त या सम्मिलित किया हुआ। जैसे--संक्रमित वाक्य। ३. किसी के अन्दर पहुँचाया या प्रविष्ट किया हुआ। ४. परिवर्तित किया या बदला हुआ।

संक्रमिता (तृ)--वि० [सं० सम्√क्रम्+तृच्] १. संक्रमण करनेवाला। २. जानेवाला। गमन करनेवाला। ३. प्रवेश करनेवाला।

संक्रांत--पुं० [सं० सम्√क्रम् (चलना)+क्त] १. दायभाग के अनुसार वह धन जो कई पीढ़ियों से चला आ रहा हो। २. दे० 'संक्रांति।

संक्रांति--स्त्री० [सं० सम्√क्रम् (चलना)+क्तिन्] १. सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाना। २. वह समय जब सूर्य एक राशि पार करके दूसरी राशि में पहुँचता है। ३. वह दिन जिसमें सूर्य का उक्त प्रकार का संचार होता है और इसी लिए जो हिन्दुओं में पर्व या पुण्य-काल माना जाता है। ४. अंतरण या हस्तांरण।

संक्राम--पुं० [सं० सम्√क्रम् (चलना)+घञ्] १. कठिनाई से गमन करना। २. दुर्गम मार्ग। ३. संक्रमण।

संक्रामक--वि० [सं०] १. (रोग) जो या तो रोगी के संसर्गज से या पानी हवा आदि के द्वारा भी उत्पन्न होता अथवा फैलाता हो। संसर्ग से भिन्न। (कान्टेजियस)

विशेष--संक्रामक और संसर्गज रोगों का अंतर जानने के लिए देखें 'संसर्गज' का विशेष।

२. (काम या बात) जिसके औचित्य या अनौचित्य का विचार किये बिना और केवल दूसरों की देखादेखी प्रचलन या प्रचार होता हो। (कांटेजियस)

संक्रामित--भू० कृ० [सं० सम्√क्रम् (चलना)+क्त] संक्रमण के द्वारा कहीं तक पहुँचाया हुआ।

संक्रीडन--पुं० [सं० सम्√क्रीडा (खेलना) करना)+ल्युट्–अन] १. क्रीड़ा करना। खेलना। २. परिहास करना।

संक्रोन*-- स्त्री०=संक्रांति।

†पुं०=संक्रमण।

संक्रोश--पुं० [सं० सं√क्रुश् (चिल्लाना)+घञ्] जोर से शब्द करना। चिल्लाना।

संक्षय--पुं० [सं० सम्√क्षि+अच्] १. पूरी तरह से होनेवाला नाश। २. प्रलय।

संक्षारक--वि० [सं०√क्षर्+ण, क्षार+कन्, सम्+क्षारक] संरक्षण करनेवाला। (कोरोसिव)

संक्षारण--पुं० [सं०] [भू० कृ० संक्षारित] क्षार आदि की उत्पत्ति या योग के कारण किसी पदार्थ का धीरे धीरे क्षीण होकर नष्ट होना। (कोरोज़न)

संक्षालन--पुं० [सं० सम्√क्षल् (धोना)+णिच्-ल्युट्-अन] [भू० कृ० संक्षालित] १. धोने की क्रिया। २. वह जल जो धोने, नहाने आदि के काम में आता हो।

संक्षिप्त--वि० [सं० √क्षिप् (फेंकना)+क्त] १. ढेर के रूप में आया या लगाया हुआ। २. जो संक्षेप में कहा या लिखा गया हो। ३. (लेख, पुस्तक आदि का वह रूप) जिसमें कुछ बातें घटाकर उसका रूप छोटा कर दिया गया हो। ४. (शब्द आदि का रूप) जो लघु हो।

संक्षिप्तक--पुं० [सं० संक्षिप्त] शब्द या पद का संक्षिप्त रूप या संकेत चिह्न। (एब्रिविएशन)

संक्षिप्त लिपि--स्त्री० [सं० कर्म० स०] एक प्रकार की लेखन-प्रणाली जिसमें ध्वनियों के सूचक अक्षरों या वर्णों के स्थान पर छोटी रेखाओं, विन्दुओं आदि का प्रयोग करके लिपि का रूप बहुत संक्षिप्त कर दिया जता है। (शार्ट हैन्ड)

विशेष--इसमें लिपि उतनी ही जल्दी लिखी जाती है, जितनी जल्दी आदमी बोलता चलता है।

संक्षिप्ता--स्त्री० [सं० संक्षिप्त–टाप्] ज्योतिष में, बुध ग्रह की एक प्रकार की गति।

संक्षिप्ति--स्त्री० [सं० सम्√क्षिप् (संक्षिप्त करना)+क्तिन्] नाटक में चार प्रकार की आरभटियों में से एक।

संक्षेप--पुं० [सं० सम्√क्षिप् (संक्षिप्त करना)+घञ्] १. थोड़े में कोई बात कहना। २. थोड़े में कही हुई बात का रूप। ३. कम करना। घटाना। ४. लेख आदि का काट-छाँट कर कम किया हुआ रूप। समाहार। ५. चुंबक पत्थर।

संक्षेपक--वि० [सं०] १. फेंकनेवाला। २. नष्ट करनेवाला। ३. संक्षिप्त रूप में लानेवाला।

संक्षेपण--पुं० [सं० सम्√क्षिप् (कम करना)+ल्युट्–अन] काट-छाँट्कर कर या और किसी प्रकार संक्षिप्त (कम या छोटा) करने की क्रिया या भाव।

संक्षेपतः--अव्य० [सं० संक्षिप+तमिल्] संक्षेप में। थोड़े में।

संक्षेपतया--अव्य० [सं० संक्षेप+तल्–टाप्–टा] संक्षेप में। संक्षेपतः।

संक्षोभ--पुं० [सं० सम्√क्षुभ् (चंचल होना)+घञ्] १. चंचलता। २. कंपन। ३. विप्लव। ४. उलट-फेर। ५. अहंकार। घमंड। ६. किसी अप्रिय घटना के कारण मन को लगनेवाला गहरा आघात या धक्का। (शॉक)

संख†—पुं०=शंख।

संख दराउ—पुं० [सं० शंखद्राव] अमलबेंत।

संख-नारी—स्त्री० [सं० शंखनारी] एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में दो यगण (य, य) होते हैं। सोमराजी वृत्त।

संखा हुली—स्त्री० दे० 'शंखपुष्पी'।

संखिया—पुं० [सं० शृंगिका या शृंग विष] १. एक प्रकार की बहुत जहरीली प्रसिद्ध उपधातु जो प्रायः सफेद पत्थर की तरह होती है। २. उक्त धातु की भस्म। सोमल।

संख्यक—वि० [सं० संख्य+कन्] जिसकी या जिसमें संख्या हो। संख्यावाला। जैसे—अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक।

संख्यता—स्त्री० [सं० संख्य+तल्–टाप्] संख्या का गुण, धर्म या भाव। संख्यत्व।

संख्यांक—पुं० [सं० सख्या+अंक] गणित में, कोई संख्या सूचित करनेवाला अंक। (न्यूमरल) जैसे—१ से ९ तक के अंक।

संख्यांकन—पुं० [सं०] पदार्थों पर क्रम से संख्या-सूचक अंक लगाना या लिखना। (नम्बरिंग)

संख्या—स्त्री० [सं० संख्या+अङ्–टाप्] १. गिनती। तादाद। २. राशि। ३. १,२, ३ आदि अंक। ४. जोड़। ५. विचार। ६. सामयिक पत्र का कोई अंक। ७. बुद्धि।

संख्याता—स्त्री० [सं० संख्यात-टाप्] संख्या के सहारे बनी हुई एक तरह की पहेली।

वि० संख्या या गिनती करनेवाला।

संख्यातीत—वि० [सं० संख्या√अत् (गमन करना)+क्त] जिसकी गणना न हो सके। बहुत अधिक। अनगिनत।

संख्यान—पुं० [सं० सं√ख्या (ख्याल होना)+ल्युट–अन्] १. संख्या। गिनती। २. गिनने की क्रिया या भाव। ३. ध्यान। ४. प्रकाश।

संख्या-लिपि—स्त्री० [सं०] वह सांकेतिक लिपि-प्रणाली जिसमें अक्षरों के स्थान पर संख्या-सूचक अंकों का प्रयोग किया जाता है।

संख्येय—वि० [सं० संख्या+यत्] १. जो गिना जा सके। गणनीय। २. विचारणीय।

संग—पुं० [सं० सङ्ग] १. मिलने की क्रिया। मिलन। २. साथ होने या रहने की अवस्था या भाव। सहवास। सोहबत। साथ।

विशेष—संग और साथ के अंतर के लिए दे० 'साथ' का विशेष।

३. सांसारिक विषयों या सुख-भोग के प्रति होनेवाला अनुराग या आसक्ति। ४. नदियों का संगम। ५. संपर्क। सम्बन्ध। ६. मैत्री। ७. युद्ध। लड़ाई। ८. रुकावट। बाधा।

क्रि०वि० साथ। हमराह। सहित। जैसे—कोई किसी के संग नहीं जाता।

मुहा०—(किसी के) संग लगना=साथ हो लेना। पीछे लगना। **(किसी को) संग लेना**=अपने साथ लेना या ले चलना। **(किसी के) संग सोना**=मैथुन या संभोग करना।

पुं० [फा०] [वि० संगी, संगीन] पत्थर। पाषाण। जैसे—संगमूसा, संगमरमर।

वि० पत्थर की तरह का। बहुत कठोर। बहुत कड़ा। जैसे—संग दिल।

संग अंगूर—पुं० [फा० संग+हिं० अंगूर] एक प्रकार की वनस्पति जो हिमालय पर होती है।

संग-असवद—पुं० [फा० संग+अ० असवद] काले रंग का एक बहुत प्रसिद्ध पत्थर।

संगकूपी—स्त्री० [?] एक प्रकार की वनस्पति जो ओषधि के काम आती है।

संग खारा—पुं० [फा० संग+खार] चकमक पत्थर।

संगच्छध्वं—अव्य० [सं०] साथ साथ चलो। उदा०—संगच्छध्वं के पुनीत स्वर, जीवन के प्रति पग गाओ।—पंत।

संग जराहत—पुं० [फा०संग+अ० जराहत] एक प्रकार का सफेद चिकना पत्थर।

संगठित—भू० कृ०=संघटित।

संगणन—पुं० [सं०] १. गणना का वह गंभीर और जटिल प्रकार या रूप जिसमें साधारण गणना के सिवा अनुभवों, घटनाओं, नियत सिद्धांतों आदि का भी उपयोग किया जाता है। (कम्प्यूटेशन) जैसे—फलित ज्योतिष में आँधियों, भूकंपों आदि की भविष्यद्वाणी संगणन के आधार पर ही होती है। २. दे० 'अनुगणन'।

संगणना—स्त्री [सं०] अभिकलन। (दे०)

संगत—वि० [सं०] १. किसी के साथ जुड़ा, मिला या लगा हुआ। २. इकट्ठा किया हुआ। ३. जो किसी वर्ग, जाति आदि का होने के कारण उसके साथ रखा, बैठाया या लगाया जा सका हो। ४. पूर्वापर या आस-पास की बातों के विचार से अथवा और किसी प्रकार से ठीक बैठने या मेल खानेवाला। (रेलेवेन्ट) ५. जिसमें संगति हो। ६. किसी के साथ दाम्पत्य या वैवाहिक बंधन से बँधा हुआ।

स्त्री० [सं०√गम् (जाना)+क्त] १. संग रहने या होने का भाव। साथ रहना। सोहबत। संगति। २. साथ रहनेवालों का दल या मंडली। ३. गाने-बजानेवालों के साथ रहकर सारंगी, तबला, मँजीरा आदि बजाने का काम।

क्रि० प्र०—बजाना।—में रहना।

मुहा०—संगत करना=गानेवाले के साथ साथ ठीक तरह से तबला, सारंगी, सितार आदि बजाना।

४. गाने-बजाने वालों का दल या मंडली। उदा०—इधर और उधर रखके कंधे पे हाथ। चलो नाचती गाती संगत के साथ।—कोई शायर। ५. वह जो इस प्रकार किसी गाने या नाचनेवाले के साथ रहकर साज बजाता हो। ६. उदासी, निर्मले आदि साधुओं के रहने का मठ। ७. लगाव। संपर्क। संसर्ग। ८. स्त्री और पुरुष का मैथुन। संभोग। (बाजारू)

संगतरा†—पुं०=संतरा (मीठी नारंगी)।

संग-तराश—पुं० [फा०] १. पत्थर काटने या गढ़नेवाला मजदूर। पत्थर-कट। २. पत्थर काटने का एक प्रकार का औजार।

संग-तराशी—स्त्री० [फा०] संग-तराश का कार्य, पद या भाव।

संगत-संधि—स्त्री० [सं० ष० त०] प्राचीन भारतीय राजनीति में अच्छे राष्ट्र के साथ होनेवाली संधि जो अच्छे और बुरे दिनों में एक-सी बनी रहती है। कांचन संधि।

संगति—स्त्री० [सं०] [वि० संगत] १. संगत होने की अवस्था, क्रिया या भाव। (कम्पैटिबिलिटी) २. किसी के संग मिलने की क्रिया या भाव। मेल। मिलाप।

मुहा०—संगति बैठाना, मिलाना या लगाना=दो चीजों या बातों का

मेल मिलाकर उन्हें संगत सिद्ध करना ।

३. संग। साथ । सोहबत । ४. संपर्क। संबंध। ५. साहित्य में आगे-पीछे कहे जानेवाले वाक्यों आदि का अर्थ के विचार से या कार्यों आदि का पूर्वापर के विचार से ठीक बैठना या मेल खाना। (कन्सिस्टेन्सी)

क्रि० प्र०—बैंठना।—बैठान।—मिलना।—मिलाना।

६. कला के क्षेत्र में, किसी कृति के भिन्न भिन्न अंगों की ऐसी सुसंघटित स्थिति जिसमें कहीं से कोई चीज या बात उखड़ती या टूटती हुई न जान पड़े और उसका सारा प्रवाह या रूप कहीं से खटकता हुआ न जान पड़े। तालमेल । सामंजस्य । (हॉर्मनी) ७. लोक-व्यवहार में, आस-पास की बातों या पूर्वापर स्थितियों के विचार से सब बातों के उपयुक्त और ठीक रूप से यथा-स्थान होने की ऐसी अवस्था या भाव जिसमें कहीं परस्पर विरोधी तत्त्व न दिखाई देते हों। (रेलेवेन्सी)

क्रि० प्र०—बैंठना।—बैठाना—मिलना।—मिलाना।

८. कोई बात जानने या समझने के लिए उसके संबंध में बार-बार प्रश्न करना। ९. जानकारी। ज्ञान। १०. सभा। समाज। ११. मैथुन। संभोग। १२. मुक्ति। मोक्ष।

संगतिया—पुं० [सं० संगत+हिं० इया (प्रत्य०)] १. गवैया या नाचनेवालों के साथ रहकर तबला, मँजीरा, सांरगी आदि बजानेवाला व्यक्ति। साजिंदा। २. संगी। साथी।

संगती—पुं० [सं० संगत+हिं० ई (प्रत्य०)] १. वह जो साथ में रहता हो। संग रहनेवाला। २. दे० 'संगतिया'।

संगथ—पुं० [सं०] संग्राम। युद्ध।

संगदिल—वि० [फा०] [भाव० संगदिली] पत्थर हो दिल जिसका। अर्थात् निर्दय।

संगपुश्त—वि० [फा०] जिसकी पीठ पत्थर के समान कड़ी हो।

पुं० कछुआ।

संगबसरी—पुं० [फा०] एक प्रकार की मिट्टी जिसमें लोहे का अंश अधिक होता है।

संगम—पुं० [सं० सम्√गम् (जाना)+अप्] १. दो वस्तुओं के मिलने की क्रिया या भाव। मिलाप। संयोग। मेल। २. दो धाराओं या नदियों के मिलने का स्थान। जैसे—गंगा और यमुना का संगम। ३. दो या अधिक रेखाओं, वस्तुओं आदि के एक साथ मिलने का भाव या स्थान। (जंक्शन) ४. संग। साथ। ५. मैथुन। संभोग। ६. सम्पर्क। सम्बन्ध। उदा०—तेउ पुनि तिहि चलीं रँगीली तजिगृह संगम।—नन्ददास। ७. वर्तमान काल की सब बातों का ज्ञान। उदा०—आगम संगम निगम मति ऐसे मंत्र विचारि।—केशव। ८. ज्योतिष में ग्रहों का योग। कई ग्रहों आदि का एक स्थान पर मिलना या एकत्र होना।

संगमन—पुं० [सं० सम्√गम् (जाना)+ल्युट्–अन] लोगों में आपस में होनेवाला पत्राचार, मेल–मिलाप और व्यवहार। संचार। (कम्यूनिकेशन)

संग-मरमर—पुं० [फा० संग+अ० मर्मर] सफेद रंग का एक प्रकार का बहुत चिकना और मुलायम प्रसिद्ध पत्थर।

संग-मूसा—पुं० [फा०] काले रंग का एक प्रकार का चिकना बहुमूल्य पत्थर।

संग-यशब—पुं० [फा०] एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर जो नीले सफेद, हरे आदि रंगों का होता है।

विशेष—हौलदिली इसी पत्थर की बनती है।

संगर—पुं० [सं० सम्√गृ (शक करना)+अप्] १. युद्ध। समर। संग्राम। २. विपत्ति। संकट। ३. प्रतिज्ञा। ४. अंगीकरण। स्वीकरण। ५. प्रश्न। सवाल। ६. नियम। ७. जहर। विष। ६. शमी वृक्ष का फल।

पुं० [फा०] १. वह धुस या दीवार जो ऐसे स्थान में बनाई जाती है जहाँ सेना ठहरती है। रक्षा के लिए सैनिक पड़ाव के चारों ओर बनाई हुई खाई, धुस या दीवार। २. मोरचेबन्द।

सँगरा—पुं० [फा० संग ?] १. कूओं के तख्ते पर बना हुआ वह छेद जिसमें पानी खींचने का पंप बैठाया हुआ होता है।

†पुं० =सेंगरा।

संग-रासिख—पुं० [फा०] ताँबें की मैल जो खिजाब बनाने के काम में आती है।

संगरेजा—पुं० [फा० संग+रेज:] पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े। कंकड़। बजरी।

संग-रोध—पुं० [सं०] वह क्रिया या व्यवस्था जो देश में बाहर से आनेवाले किसी संक्रामक रोग को रोकने के लिए मार्ग में किसी स्थान पर की जाती है; और जिसके अनुसार यात्री आदि निरीक्षण, परीक्षण आदि के लिए कुछ समय तक रोक रखे जाते हैं। (क्वारंटीन)

संगल—पुं० [देश०] एक प्रकार का रेशम।

†स्त्री० [सं० शृंखला] १. लोहे की जंजीर या सिक्कड़। २. अपराधियों के पैरों में पहनाई जानेवाली बेड़ी।

संगव—पुं० [सं०] प्रातः स्नान के तीन मुहूर्त बाद का समय जो दिन के पाँच भागों में से दूसरा है और जिस में गौएँ दुहने के बाद चरने के लिए ले जायी जाती थीं।

संगवाना†—स० [सं० संगर ?] १. हत्या कराना। मरवा डालना। २. अधिकार या वश में करना।

संगविनी—स्त्री० [सं० संगव+इनि] वह स्थान जहाँ गौएँ दुहने के लिए एकत्र की जाती थीं।

संग-सार—पुं० [फा०] प्राचीन काल का एक प्रकार का प्राण-दंड जिसमें अपराधी को पत्थरों के साथ दीवार के रूप में चुनवा दिया जाता था।

वि० पूरी तरह से ध्वस्त या बरबाद किया हुआ।

संग-सुरमा—पुं० [फा० संग-सुर्म:] काले रंग की एक प्रकार की उपधातु जिसे पीसकर आँखों में लगाने का सुरमा बनाया जाता है।

संगाती†—पुं० [हिं० संग+आती (प्रत्य०)] १. वह जो संग रहता हो। साथी। संगी। २. दोस्त। मित्र।

वि० पूरी तरह से ध्वस्त या बरबाद किया हुआ।

संग-सुरमा—पुं० [फा० संग-सुर्म:] काले रंग की एक प्रकार की उपधातु जिसे पीसकर आँखों में लगाने का सुरमा बनाया जाता है।

संगाती†—पुं० [हिं० संग+आती (प्रत्य०)] १. वह जो संग रहता हो। साथी। संगी। २. दोस्त। मित्र।

संगायन—पुं० [सं० सम्√ (गान करना)+ल्युट्-अन] १. साथ-साथ गाना या स्तुति करना। २. प्राचीनकाल में वह सभा जिसमें बौद्ध भिक्षु साथ मिलकर महात्मा बुद्ध के उपदेशों का गान या पाठ करते थे। ३. आज-कल कोई बड़ी धर्म-सभा।

संगिनी—स्त्री० [हिं० संगी का स्त्री० रूप] १. साथ रहनेवाली स्त्री। सहचरी। २. पत्नी। भार्या।

संगिस्तान—पुं० [फा०] पथरीला-प्रदेश।

संगी—पुं० [सं० संग+हिं० ई (प्रत्य०)] [स्त्री० संगिनी] १. वह जो सदा या प्रायः संग रहता हो। साथी। २. दोस्त। मित्र।

स्त्री० [देश०] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

वि० [फा० संग=पत्थर] पत्थर का।

संगीत—पुं० [सं० सम्√गै (गाना)+क्त] मधुर ध्वनियों या स्वरों का कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार और कुछ विशिष्ट लय में होनेवाला प्रस्फुटन। यह दो प्रकार का होता है—(क) कंठ्य संगीत और (ख) वाद्य संगीत।

संगीतक—पुं० [सं० संगीत+कन्] १. गान, नृत्य और वाद्य के द्वारा लोगों का मनोरंजन। २. एक प्रकार का अभिनयात्मक और संगीत प्रधान नृत्य।

संगीत कला—स्त्री० [सं०] गाने-बजाने की विद्या।

संगीतज्ञ—पुं० [सं०] संगीत (कला तथा शास्त्र) में निपुण।

संगीत-रूपक—पुं० [सं०] आज-कल प्रायः रेडियो से प्रसारित होनेवाला एक प्रकार का छोटा नाटक या रूपक, जिसमें गीतों की प्रधानता होती है और जिसकी मुख्य कथा कहीं तो पात्रों के वर्तालाप के द्वारा और कहीं रूपक प्रस्तुत करनेवाले व्यक्ति की वार्ता से सम्बद्ध रूप में बतलाई जाती है।

संगीत विद्या—स्त्री०=संगीत शास्त्र।

संगीत शास्त्र—पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें गाने-बजाने की रीतियों, प्रकारों आदि का विवेचना होता है।

संगीति—स्त्री० [सं० सम्√गै (गाना)+क्तिन्] १. वार्तालाप। बातचीत। २. दे० 'संगीत'।

संगीतिका—स्त्री० [सं०] पाश्चात्य शैली का ऐसा नाटक जिसका अधिकांश संगीत के रूप में होता है। गेय नाटक। सांगीत। (ऑपिरा)

संगीन—वि० [फा०] [भाव० संगीनी] १. पत्थर का बना हुआ। जैसे—संगीन इमारत। २. मोटी तह या मोटे दलवाला। जैसे—संगीन पोत का कपड़ा। ३. पत्थर की तरह कठोर। ४. मजबूत। ५. घोर तथा दंडनीय (अपराध)।

स्त्री० [फा०] लोहे का एक प्रकार का अस्त्र जो तिपहला और नुकीला होता है।

संगीनी—स्त्री० [फा०] संगीन होने की अवस्था, गुण या भाव।

संगुप्ति—स्त्री० [सं० सं√गुप् (रक्षा करना)+क्तिन्] १. छिपाव। दुराव। २. सुरक्षा।

संगढ़—पुं० [सं० सम्√ ग्रह् (संवरण करना)+क्त] चीजों का ऐसा ढेर या राशि जिस पर सुरक्षा आदि के विचार से रेखाएँ अंकित हों।

संगृहीत—भू० कृ० [सं०] १. संग्रह किया हुआ। एकत्र किया हुआ जमा किया हुआ। संकलित। २. प्राप्त। लब्ध। ३. शासित। ४. स्वीकृत। ५. संक्षिप्त किया हुआ।

संगृहीता (तृ)—वि० [सं० सम्√ग्रह् (रखना)+तृच्] संग्रह करनेवाला।

संगोपन—पुं० [सं० सम्√गुप् (रक्षा करना)+ल्युट्–अन्] अच्छी तरह से छिपाकर रखना।

संग्रह—पुं० [सं०] १. एकत्र करने की क्रिया या भाव। इकट्ठा या जमा करना। संचय। जैसे—धन संग्रह करना। २. इकट्ठी की हुई चीजों का ढेर या समूह। जैसे—चित्रों या पुस्तकों का संग्रह। ३. ग्रहण करने या लेने की क्रिया। ४. जमघट। जमावड़ा। ५. गोष्ठी या सभा-समाज। ६. पाणिग्रहण। विवाह। ७. स्त्री-प्रसंग। मैथुन। संभोग। ८. वह ग्रंथ जिसमें अनेक विषयों की बातें एकत्र की गई हों। ९. अपना फेंका हुआ अस्त्र मंत्र-बल से अपने पास लौटाने की क्रिया। १०. तालिका। सूची। फेहरिस्त। ११. निग्रह। संयम। १२. रक्षा। हिफाजत। १३. कोष्ठ-बद्धता। कब्जियत। १४. स्वीकार। मंजूरी। १५. शिव का एक नाम। १६. सोम याग।

संग्रहक†— वि०=संग्राहक।

संग्रहण—पुं० [सं०] १. ग्रहण करना। लेना। २. प्राप्ति। लाभ। ३. गहनों में नग आदि जड़ना। ४. मैथुन। संभोग। ५. व्यभिचार। ६. स्त्री के गोप्य अंगों का किया जानेवाला स्पर्श। ७. अपहरण।

संग्रहणी—स्त्री० [सं०] पाचन क्रिया के विकार के कारण होनेवाला एक रोग जिसमें बराबर और बार बार पतले दस्त होते रहते हैं। (स्प्रू)

संग्रहणीय—वि० [सं० सम्√ग्रह् (रखना)+अनीयर्] १. संग्रह किए जाने के योग्य। संग्राह्य। २. (ओषधि या औषध) जिसका सेवन आवश्यक और उपयोगी हो।

संग्रहना*—स० [सं० संग्रहण] संग्रह करना। संचय करना। जमा करना।

संग्रहाध्यक्ष—पुं०=संग्रहालयाध्यक्ष।

संग्रहालय—पुं० [सं० ष० त०] १. वह स्थान जहाँ एक ही अथवा अनेक प्रकार की बहुत सी चीजों का संग्रह हो। २. वह भवन अथवा उसका कोई अंग जिसमें स्थायी महत्त्व की वस्तुएँ प्रदर्शित की तथा सुरक्षित रखी गई हों। (म्यूज़ियम)

संग्रहालयाध्यक्ष—पुं० [?] किसी संग्राहलय (म्यूजियम) की देखरेख या व्यवस्था करनेवाला प्रधान अधिकारी। (क्यूरेटर)

संग्रही (हिन्)—वि० [सं०] १. संग्रह या एकत्र करनेवाला। संग्राहक। जैसे—सर्व-संग्रही। २. सांसारिक वैभव की कामना रखने और धन-दौलत इकट्ठा करनेवाला। 'त्यागी' का विपर्याय।

पुं० महसूल या लगान आदि उगाहनेवाला कर्मचारी। कर एकत्र करनेवाला अधिकारी।

संग्रहीता (तृ)—पुं० [सं० सं√ग्रह् (रखना)+तृच्] वह जो संग्रह करता हो। जमा करनेवाला। एकत्र करनेवाला।

संग्राम—पुं० [सं०] युद्ध। लड़ाई। समर।

संग्राम-तुला—स्त्री० [सं०] युद्ध के रूप में होनेलाली अग्निपरीक्षा।

संग्राम-पटह—पुं० [सं०] रण में बजनेवाला एक प्रकार का बाजा। रण भेरी। रण-डिमडिम।

संग्राह—पुं० [सं० सम्√ग्रह् (रखना)+घञ्] १. औजार या हथियार का दस्ता या मूठ पकड़ना। २. मुट्ठी। ३. मुक्का।

संग्राहक—वि० [सं० संग्राह+कन्] जो संग्रह करता हो। एकत्र या जमा करनेवाला। संग्रहकारी।

संग्राही (हिन्)—पुं० [सं०] १. वैद्यक में वह पदार्थ जो कफादि दोष, धातु, मल तथा तरल पदार्थों को खींचता हो। वह पदार्थ जो मल

के पेट से निकलने में बाधक होता है । कब्जियत करनेवाली चीज। २. कुटज ।

वि० संग्रह करनेवाला । संग्राहक ।

संप्राह्य--वि० [सं० सम्√ग्रह् (रखना)+ण्यत्] संग्रह किए जाने के योग्य। जमा करके रखने लायक ।

संघ--पुं० [सं०] १. लोगों का समुदाय या समूह। २. लोगों का एक साथ मिलकर रहना । ३. आपस में गठे या मिले हुए होने की अवस्था या भाव । ४. मनुष्यों का वह समाज या समुदाय जो किसी विशिष्ट उद्देश्य की सिद्धि के लिए बना हो। ५. प्राचीन भारत में, एक प्रकार का लोकतंत्री राज्य या शासन प्रकार जिसकी व्यवस्था जनता के चुने हुए प्रतिनिधि करते थे। ६. उक्त के अनुकरण पर गौतम बुद्ध की बनाई हुई वह प्रतिनिधिक संस्था जो बौद्ध धर्म के अनुयायियों और विशेषतः भिक्षुओं आदि के संबंध में आचार, व्यवहार आदि के नियम बनाती और व्यवस्था करती थी। इसका महत्त्व इतना अधिक था कि बुद्ध और धर्म के साथ इसकी गणना भी बौद्धों में होने लगी थी। ७. साधु संन्यासियों विशेषतः बौद्ध भिक्षुओं और श्रमणों के रहने का मठ। ८. आधुनिक राजनीति में, राज्यों, राष्ट्रों आदि के पारस्परिक समझौते से बननेवाला ऐसा संघटन जो कुछ विशिष्ट बातों में एक केन्द्रीय सत्ता का अधिकार और अनुशासन मानता हो। (फेडरेशन)

संघचारी (रिन्)--वि०[सं०] १. (पक्षी या पशु) जो झुंड बनाकर रहता हो। २. (व्यक्ति) जो अधिकतर लोगों अर्थात् बहुमत के अनुसार कोई काम करता हो।

पुं० मछली।

संघट--पुं० [सं० सम्√घट् (मिलना)+अच्] १. समूह। राशि। ढेर। २. मुठ-भेड़ । संघर्ष। ३. दे० 'संघटन' ।

संघटन--पुं० [सं०] १. किसी चीज के विभिन्न अवययों को जोड़कर उसे प्रतिष्ठित करना। रचना। २. व्यक्तियों का मिलना। ३. किसी विशिष्ट वर्ग या कार्य-क्षेत्र के लोगों का मिलकर एक इकाई का रूप धारण करना जिससे वे सामूहिक रूप से अपने हितों की रक्षा कर सकें। ४. बिखरी हुई शक्तियों को एक में मिलाकर उन्हें किसी काम के लिए तैयार करना। '५. इस उद्देश्य से बनाई हुई संस्था। (आरगनाइज़ेशन, अंतिम तीनों अर्थों के लिए)

२.स्वरों या शब्दों का संयोग ।

संघटित--भू०कृ० [सं०] १. जिसका संघटन हुआ हो। २. (व्यक्तियों का वर्ग) जो एक होकर तथा सामूहिक रूप से अपने ध्येय की सिद्धि के लिए प्रयत्नशील हो। ३. युद्ध, प्रतियोगिता आदि में लगा हुआ। उदा०--सुर बिमान हिम-भानु, भानु संघटित परस्पर । --तुलसी। ४. बजाता हुआ।

संघट्ट--पुं० [सं०] १. रचना का प्रकार या स्वरूप। बनावट। गठन। २. संघर्ष।

संघट्ट-चक्र--पुं० [सं० कर्म० स०] फलित ज्योतिष में, युद्ध का परिणाम जानने के लिए बनाया जानेवाला एक प्रकार का चक्र।

संघट्टन--पुं० [सं०] १. बनावट। रचना। गठन। २. मिलन। संयोग। ४. घटना। ४. दे० 'संघटन'।

संघट्टित--भू०कृ० [सं० सं√घट्ट् (इकट्ठा करना)+क्त] १. एकत्र किया हुआ। २. बनाया हुआ। निर्मित। रचित। ३. चलाया हुआ। चालित। ४. रगड़ा या पीसा हुआ। घर्षित ।

संघतिया†--पुं० १. =संगतिया । २.=संघाती (साथी) ।

संघती†--पुं० [सं० संघ, हिं० संग] १. संगी। साथी। सहचर। २. दे० 'संगतिया'।

संघ-न्यायालय--पुं०[ष० त०]संघराज्य का सर्वोच्च न्यायालय। (फ़ेडरल कोर्ट)

संघपति--पुं० [सं० ष० त०] किसी संघ का प्रधान अधिकारी।

संघरना*--स० [सं० संहार+हिं० ना (प्रत्य०)] १. संहार करना। मार डालना। २. नाश करना।

सँघराना†--स० [हिं० संग ?] दुःखी या उदास गौ को, उसका दूध दूहने के लिए, परचाना और पुचकारना ।

संघर्ष--पुं० [सं०] १. कोई चीज घिसने, घोटने या रगड़ने की क्रिया। २. किसी चीज के कण अलग करने या उसका तल घटाने या घिसने के लिए की जानेवाली कोई ऐसी क्रिया जिसमें बल लगाकर किसी कड़ी चीज से बार बार रगड़ते हैं। रगड़। ३. दो विरोधी दलों या पक्षों में एक दूसरे को दबाने के लिए होनेवाला कोई ऐसा प्रयत्न जिसमें दोनों अपनी सारी शक्ति लगा देते और यथा-साध्य एक दूसरे का उपकार या हानि करने पर तुले रहते हैं। ४. उक्त के आधार पर, कठिनाइयों, बाधाओं आदि से बचने तथा प्रबल विरोधी शक्तियों को दबाने के लिए प्राणपन से की जानेवाली चेष्टा या प्रयत्न। (स्ट्रगल; अंतिम दोनों अर्थों के लिए) ५. आधुनिक पाश्चात्य साहित्यकारों के मत से नाटक में वह स्थिति जिसमें दो परस्पर विरोधी शक्तियाँ एक दूसरी को दबाने का प्रयत्न करती हैं। ६. वह अहंकारपूर्ण बात जो अपने प्रतिपक्षी को अपना बड़प्पन जतलाने के लिए कही जाय। ७. बाजी या शर्त लगाना। ८. स्पर्धा। होड़। ९. द्वेष। वैर। १०. काम की प्रबल वासना। ११. धीरे धीरे खिसकना, चलना या रेंगना।

संघर्षण--पुं० [सं० सम्√घृष् (रगड़ना)+ल्युट्--अन] १. संघर्ष करने की क्रिया या भाव। २. भूगोल में, धारा में बहते हुए कंकड़ों की चट्टानों आदि से होनेवाली रगड़। (कोरेसन)

संघर्षी (र्षिन्)--वि० [सं०] १. संघर्ष-रत। संघर्ष करनेवाला। २. घिसने या रगड़नेवाला।

पुं० व्याकरण में ख् ग् फ् व् और द् व्यंजन वर्ग जिनका उच्चारण करते समय मुख द्वार खुला रहता है परन्तु फिर भी हवा टकराती हुई भटके से बाहर निकलती है।

संघ-वृत्ति--स्त्री०[सं०] मिलकर काम करने के लिए सम्मिलित होने की क्रिया या प्रवृत्ति।

संघाट--वि० [सं० संघ√अट् (गमनादि)+यज्] दल या समूह में रहनेवाला। जो दल बाँधकर रहता हो।

संघाटिका--स्त्री० [सं० सम्√घट् (मिलना)+णिच्-ण्वुल्--अक-इत्व-टाप्] १. प्राचीन भारत में स्त्रियों का एक प्रकार का पहनावा। २. कुटनी। दूती। ३. सिंघाड़ा। ४. कुंभी।

संघाटी--स्त्री० [सं०] बौद्ध भिक्षुओं के पहनने का चीवर ।

संघाणक--पुं० [सं०] श्लेष्मा। कफ।

संघात--पुं० [सं०] १. जमाव। समूह । समष्टि। २. आघात;

विशेषतः अकस्मात् तथा जोर से लगनेवाला आघात। टक्कर। (इम्पैक्ट) ३. वध। हत्या। ४. कफ। श्लेष्मा। ५. देह। शरीर। ६. रहने की जगह। निवास-स्थान। ७. एक नरक का नाम।

संघातक--वि० [सं० संघात+कन्] १. घात करनेवाला। २. प्राण लेनेवाला। ३. नष्ट या बरबाद करनेवाला।

संघातन--पुं० [सं०] संघात करने की क्रिया या भाव।

सँघाती†--पुं०=सँगाती (संगी)।

संघाती--पुं० [सं० संघात+इनि] संघातक। प्राणनाशक।

संघाधिप--पुं० [सं० ष० त०] १. धार्मिक संघ का प्रधान। (जैन) २. किसी प्रकार के संघ का अध्यक्ष।

संघार*--पुं०=संहार।

संघारना* --स०=संहारना।

संघाराम--पुं० [सं० ष० त०] बौद्ध भिक्षुओं, श्रमणों आदि के रहने का मठ। विहार।

संघी--वि० [सं० संघीय] १. दे० 'संघीय'। २. किसी संघ से संबद्ध। जैसे--जन-संघी। ३. समूहों में रहनेवाला।

पुं० किसी संघ का सदस्य।

संघीय--वि० [सं०] १. संघ-संबंधी। संघ का। २. जिसका संघटन संघ के रूप में हुआ हो। (फेडरल)

संघृष्ट--भू० कृ० [सं० सं√घृष् (रगड़ना)+क्त] १. रगड़ खाया हुआ २. रगड़ा हुआ।

संघेला--पुं० [सं० संग] १. साथी। सहचर। संगी। २. दोस्त। मित्र।

संघोष--पुं० [सं० सम्√घुष् (ध्वनि होना)+घञ्] जोर का शब्द। घोष।

संच--पुं० [सं० सम्√चि (संग्रह करना)+ड] लिखने की स्याही।

†पुं० संचने की क्रिया या भाव।

संचक--पुं० [सं० संच+कन्] साँचा।

संचकर*--वि० [सं० संचय+कर] १. संचय करनेवाला। २. देख-भाल करनेवाला। ३. कंजूस। कृपण।

संचना*--पुं० [सं० संचयन] १. एकत्र या संग्रह करना। संचय करना। २. देख-भाल करना।

*अ० [सं० सं०+चर] प्रविष्ट होना।

संचय--पुं० [सं० सम्√चि (चयन करना)+अच्] [भू० कृ० संचित] १. चीजें इकट्ठी करने की क्रिया या भाव। २. जमा करना। संकलन। २. इकट्ठी की हुई चीजों का ढेर या राशि। (एक्यूमुलेशन) ३. अधिकता। बहुलता।

संचयन--पुं० [सं० सम्√चि (एकत्र करना)+ल्युट्-अन] १. संचय करने या होने की क्रिया या भाव। २. किसी वस्तु का धीरे धीरे एकत्र होते हुए किसी बड़ी राशि का चित्र धारण करना। इकट्ठा या जमा होना। (एक्यूमुलेशन)

संचयिक--वि० [सं० संचय+ठञ्-इक] जो संचय करता हो। एकत्र या जमा करनेवाला।

संचयी (यिन्)--वि० [सं० संचय+इनि] संचय करनेवाला जमा करनेवाला।

पुं० कंजूस। कृपण।

संचर--पुं० [सं० सम्√चर् (चलना)+घ] १. गमन। चलना। २. पुल। सेतु। ३. पानी निकलने का रास्ता। ४. मार्ग। रास्ता। ५. जगह। स्थान। ८. देह। शरीर। ७. संगी। साथी।

संचरण--पुं० [सं० सम्√चर् (चलना)+ल्युट्-अन] १. संचार करने की क्रिया या भाव। चलना। गमन। २. पसरना। फैलना। ३. काँपना।

संचरना*--अ० [सं० संचरण] १. घूमना-फिरना। चलना। २. फैलना। ३. प्रचलित होना।

†स०=संचारना।

संचल--पुं० [सं० सम्√चल (अस्थिर)+अच्] सौवर्च्चल लवण। साँचर नमक।

वि० काँपता हुआ।

संचलन--पुं० [सं० सम्√चल् (हिलना)+ल्युट्-अन] १. हिलना-डोलना। २. चलना। ३. काँपना।

संचार--पुं० [सं०] १. गमन। चलना। २. चलाना। ३. किसी के अन्दर पैठकर दूर तक फैलना। ४. वह राह जिसपर से होकर कोई चीज फैलती हो। ५. आज-कल संदेश, समाचार आदि तथा आदमी सामान आदि भेजने की क्रिया प्रकार और साधन। (कम्यूनिकेशन) ६. रास्ता दिखाना। मार्गदर्शन। ७. विपत्ति। ८. साँप की मणि। ९. देश। १०. उत्तेजित करना। भड़कना। ११. संक्रमण (ग्रह आदि का)।

संचारक--वि० [सं० सम्√चर् (चलना)=ण्वुल्-अक] [स्त्री० संचारिका] संचार करने या फैलानेवाला।

पुं० १. नेता। सरदार। २. अन्वेषक।

संचारण--पुं० [सं० सम्√चर् (चलना)+णिच्-ल्युट्-अन] [भू० कृ० संचारित] संचार करने की क्रिया या भाव।

संचारना*--स० [सं० संचारण] १. संचार करना। फैलाना। २. चलाना। ३. चलने और घूमने फिरने में प्रवृत्त करना। उदा०--पुनि इबलीस सँचारेउ डरत रहे सब कोउ।--जायसी।

संचार-साधन--पुं० [ष० त०] दो या अधिक स्थानों या व्यक्तियों के बीच संबंध स्थापित करने के साधन। डाक, तार, समुद्री तार, रेडियो आदि और गमनागमन के साधन। (मीन्स ऑफ़ कम्यूनिकेशंस)

संचारिका--स्त्री० [सं०] १. दूती। कुटनी। २. नासिका। नाक। ३. बू। गंध।

वि० 'संचारक' का स्त्री०।

संचारिणी--स्त्री० [सं० सम्√चर् (चलना)+णिनि-ङीप्] १. हंसपदी नाम की लता। २. लाल लजालू।

वि० 'संचारी' का स्त्री।

संचारित--भू० कृ० [सं० सम्√चर् (चलना)+णिच्-क्त] १. जिसका संचार किया गया हो। चलाया या फैलाया हुआ। २. भड़काया हुआ। ३. पहुँचाया हुआ।

संचारी--वि० [सं० सम्√चर् (चलना)+णिनि-दीर्घ-नलोप] [स्त्री० संचारिणी] १. संचरण या संचार करनेवाला। २. आया हुआ। आगंतुक।

पुं० १. साहित्य में वे तत्त्व, पदार्थ या भाव जो रस में संचार करते हुए उसके परिपाक में उपयोगी तथा सहायक होते हैं। इन्हीं को 'व्यभिचारी भाव' भी कहते हैं। (स्थायी भाव से भिन्न)

विशेष—यह माना गया है कि स्थायी भाव तो रस के परिपाक तक स्थिर रहते हैं परन्तु संचारी भाव अस्थिर होते और आवश्यकता तथा सुभीते के अनुसार सभी रसों में संचार करते रहते हैं। इसकी संख्या ३३ कही गई है, यथा—निर्वेद ग्लानि, शंका, असूया, श्रम, मद, धृति, आलस्य, विषाद, मति, चिंता, मोह, स्वप्न, विबोध, स्मृति, आमर्ष, गर्व, उत्सुकता, अवहित्थ, दीनता, हर्ष, व्रीड़ा, उग्रता, निद्रा, व्याधि, मरण, अपस्मार, आवेग, भास, उन्माद, जड़ता, चपलता और वितर्क।

२. संगीत में किसी गीत के चार चरणों में से तीसरा। ३. वायु। हवा। ४. धूप नामक गंध-द्रव्य।

संचाल—पुं० [सं०सम्√चल् (काँपना)+ण—घञ् या संचालन] १. काँपना। २. चलना।

संचालक—वि० [सं० संचाल+कन्, सम्√चल् (चलना)+ण्वुल—अक] जो संचालन करना हो। चलाने या गति देनेवाला। परिचालक।

पुं० वह प्रधान अधिकारी जो किसी कार्य, विभाग, संस्था आदि चलने की सारी व्यवस्था करता हो। निरीक्षण तथा निर्देशन करनेवाला विभागीय अधिकारी। निदेशक। (डाइरेक्टर)

संचालन—पुं० [सं० सम्√चल् (चलना)+णिच्—ल्युट्—अन] १. चलाने की क्रिया। परिचालन। २. ऐसा प्रबन्ध या व्यवस्था जिसमें कोई काम चलता या होता रहे। किसी कार्य आदि का किया जानेवाला निर्देशन। ३. नियंत्रण।

संचालित—भू० कृ० [सं०] (कार्य, विभाग या संस्था) जिसका संचालन किया गया हो या किया जा रहा हो।

संचाली—स्त्री० [सं० संचाल—ङीप्] गुंजा। घुँघची।

वि० दे० 'संचालक'।

संचिका—स्त्री० [सं० संचय] वह नत्थी जिसमें पत्र, कागज आदि इकट्ठे करके रखे जाते हैं। मिसिल। (फ़ाइल)

संचित—भू० कृ०[सं०] १. संचय किया हुआ। इकट्ठा, एकत्र या जमा किया हुआ। २. ढेर के रूप में रखा, लगाया या लाया हुआ। (एक्यूमुलेटेड) ३. संचिका या नत्थी में लगाया हुआ।

संचित कर्म—पुं० [सं०] १. वैदिक युग में यज्ञ की अग्नि संचित कर लेने पर किया जानेवाला एक विशिष्ट कर्म। २. आज-कल, पूर्व जन्म में किए हुए वे सब कर्म जिनका फल इस जन्म में अथवा आनेवाले जन्मों में भोगना पड़ता है।

संचिति—स्त्री० [सं० सम्√चि (रखना)+क्तिन्] १. संचित करने की क्रिया या भाव। संचय। २. तह लगाना।

संछर्दन—पुं० [सं० सं√छर्द् (वमन करना)+ल्युट्—अन] ग्रहण में एक प्रकार का मोक्ष। (ज्योतिष)

संज—पुं० [सं० सम्√जन् (उत्पन्न करना)+ड] १. शिव। २. ब्रह्मा।

संजन—पुं० [सं०√ सञ्ज् (बाँधना)+ल्युट्—अन] १. बाँधना। २. बन्धन। ३. संघठन।

संजनन—पुं० [सं० सम्√जन् (उत्पन्न करना)+ल्युट्—अन][भूत कृ० संजनित]=जनन।

संजनी—स्त्री० [सं० संजन-ङीप्] वैदिक काल का एक प्रकार का अस्त्र जिससे वध या हत्या की जाती थी।

संजनीपति—पुं० [सं०] यमराज। (डिं०)

संजम†—पुं०=संयम।

संजमी†—वि०=संयमी।

संजय—पुं०[सं० सं√जि (जीतना)+अष्] १. ब्रह्मा। २. शिव। ३. धृतराष्ट्र का मुख्य मंत्री जिसने उन्हें युद्ध-क्षेत्र का सारा हाल सुनाया था।

संजल्प—पुं० [सं०] साथ बैठकर आपस में की जानेवाली बात-चीत।

संजात—भू० कृ० [सं०] १. किसी के साथ उत्पन्न। २. किसी से उत्पन्न। जात। जैसे—वात-संजात=हनुमान्। ३. मिला हुआ। प्राप्त।

पुं० पुराणानुसार एक प्राचीन जाति।

संजात बलि—वि० [सं०] मरे हुए प्राणियों का मांस खानेवाला।

पुं० डोमकौआ।

संजाफ—स्त्री०[फा० संजाफ़] १. झालर। किनारा। कोर। २. रजाइयों आदि में लगाई जानेवाली गोट। मगजी।

पुं० वह घोड़ा जिसका आधा भाग लाल तथा आधा भाग सफेद (या हरा) होता है।

संजाफी—वि० [हिं० संजाफ] जिसमें संजाफ लगी हो। किनारेदार। झालरदार।

संजाब—पुं० [फा०] १. चूहे के आकार का एक जंतु जो प्रायः तुर्किस्तान में होता है। २. एक प्रकार का चमड़ा। ३. संजाफ (घोड़ा)।

संजीदगी—स्त्री० [फा०] १. संजीदा होने की अवस्था या भाव। २. आचरण, विचार या व्यवहार की गंभीरता। ३. स्वभाव संबंधी शिष्टता तथा सौम्यता।

संजीदा—वि० [फा० संजीदा][भाव० संजीदगी] १. जिसके व्यवहार या विचारों में गम्भीरता हो। गंभीर और शांत। २. बुद्धिमान्। समझदार।

संजीव—पुं० [सं०] १. मरे हुए को फिर से जिलाना। पुनः जीवन देना। २. वह जो मरे हुए को फिर से जीवित करता हो। ३. बौद्धों के अनुसार एक नरक।

संजीवक—वि० [सं० सम्√जीव् (जिलाना)+ण्वुल्—अक] पुनर्जीवित करनेवाला। नया जीवन देनेवाला।

संजीवकरणी—स्त्री० [सं०] १. एक कल्पित बूटी जिसके द्वारा मृत को फिर से जीवित किया जाता था। २. एक प्रकार की विद्या जिसके प्रभाव से मृत प्राणी फिर से जीवित किया जाता है।

संजीवन—पुं०[सं० सम्√जीव् (जीवित करना)+ल्युट्—अन] १. भली-भाँति जीवन व्यतीत करने की क्रिया। अच्छी तरह जीवित रहना या जीवन बिताना। २. पुनर्जीवित करना। नया जीवन देना। ३. मनुस्मृति के अनुसार एक नरक।

वि० जीवन देने या जिलानेवाला।

संजीवनी—स्त्री० [सं० संजीवन—ङीप्] १. पुनर्जीवित करनेवाली एक कल्पित ओषधि। २. पुनर्जीवित करने की विद्या।

संजीवित—भू० कृ० [सं० सम्√जीव् (जीवित रखना)+क्त] १. जो मर जाने पर फिर से जीवित किया गया हो। २. संजीवनी द्वारा जिसे पुनर्जीवित किया गया हो।

संजीवी (विन्)—वि० [सं० सम्√जीव् (जीवित करना)+णिनि] मृत को जीवित करनेवाला।

संजुक्त†--वि०=संयुक्त।

संजुग*—पुं० [सं० संयुक्त] संग्राम। युद्ध। लड़ाई।

संजुत†--वि०=संयुक्त।

संजुता--स्त्री० [सं० संयुक्ता] एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में स, ज, ज, ग होते हैं। इसे 'संयुक्त' या 'संयुक्ता' भी कहते हैं।

संजूत--वि० [?] सावधान। उदा०--होहू संजूत बहुरि नहिं अवना।--जायसी।

सँजोइल* --वि० [सं० सज्जित, हिं० सँजोना] १. अच्छी तरह सजाया हुआ। सुसज्जित। २. एकत्र किया हुआ।

सँजोऊ* --पुं० [हिं० सँजोना] १. सजावट। २. तैयारी। उपक्रम। ३. सामग्री। सामान।

† पुं०=संयोग।

सँजोग†--पुं० =संजोग।

संजोगिता†--स्त्री०=संयोगिता।

संजोगिनी--स्त्री०=संयोगिनी (जो वियोगिनी न हो अर्थात् जिसका प्रेमी उसके पास हो)।

संजोगी --वि० [सं० संयोगिन्] १. संयुक्त। मिला हुआ। २. जो अपने प्रियतम के पास या साथ हो। संयोगी। 'वियोगी' का विपर्याय। पुं० एक तरह का बड़ा पिंजरा जो वस्तुतः दो पिंजरों को जोड़कर बनाया गया होता है।

सँजोना†—स० [सं० सज्जा] १. सज्जित करना। अलंकृत करना। सजाना। २. सामग्री आदि एकत्र करके क्रम से रखना।

सँजोवन†--पुं० [हिं० सँजोना] सज्जित करने की क्रिया या भाव। सजाने का व्यापार।

सँजोवना†—स०=सँजोना।

सँजोवल†—वि० [हिं० सँजोना] १. सुसज्जित। २. आवश्यक सामग्री से युक्त। ३. सेना या सैनिक सामग्री से युक्त। ४. सजग। सावधान।

सँजोवस†--वि०=संजोवल।

सँजोवा†—पुं० [हिं० सँजोना] १. सजावट। शृंगार। २. लोगों का जमघट। जमावड़ा।

सँजोह†—पुं० [सं० संयोग] लकड़ी का वह चौखटा जो जुलाहे कपड़ा बुनते समय छत से लटका देते हैं और जिसमें राछ या कंघी लटकी रहती है।

संज्ञ--वि० [सं० सम्√ज्ञा (जानना)+क] १. जिसे संज्ञा प्राप्त हो। चेतन। २. नामधारी। ३. चलते समय जिसके घुटने टकराते हों। पुं० झाऊ या पीतकाष्ठ नामक पौधा।

संज्ञक—वि० [सं० संज्ञ+कन्] जिसकी कुछ संज्ञा हो। संज्ञा से युक्त। जैसे--गोपाल संज्ञक व्यक्ति।

संज्ञपन--पुं० [सं० सम्√ज्ञप् (जानना)+ल्युट्-अन] १. मार डालने की क्रिया। हत्या। २. कोई बात किसी पर अच्छी तरह प्रकट करना। ठीक और पूरी तरह से बतलाना।

संज्ञप्त--भू० कृ० [सं०] [भाव० संज्ञप्ति] सूचित किया हुआ।

संज्ञप्ति--स्त्री० [सं० सम्√ज्ञप् (बताना)+क्तिन्] सूचित करना। संज्ञपन।

संज्ञा--स्त्री० [सं०] १. प्राणियों के शारीरिक अंगों की वह शक्ति जिससे उन्हें बाह्य पदार्थों का ज्ञान और अपने शरीर या मन के व्यापारों की अनुभूति होती है। चेतनाशक्ति। होश। (सेन्स) २. बुद्धि। ३. ज्ञान। ४. वस्तु, व्यक्ति आदि के पुकारे जाने का नाम। ५. किसी वस्तु या कार्य के लिए पारिभाषिक रूप में प्रचलित नाम। (टेक्निकल टर्म) ६. व्याकरण में वह विकारी शब्द जो किसी वास्तविक या कल्पित वस्तु का बोधक होता है। जैसे--राम, पर्वत, घोड़ा, दया आदि। (नाउन) ७. आँख, हाथ आदि हिलाकर किया जानेवाला इशारा या संकेत। ८. विश्वकर्मा की एक कन्या जो सूर्य को ब्याही थी। ९. गायत्री का एक नाम।

संज्ञात—भू० कृ० [सं० सम्√ज्ञा (जानना)+क्त] अच्छी तरह जाना या समझा हुआ।

संज्ञान—पुं० [सं० सम्√ज्ञा (जानना)+ल्युट्-अन] १. संकेत। इशारा। २. ज्ञान विशेषतः सम्यक् ज्ञान।

संज्ञापद—पुं० [सं०] वह शब्द जो किसी वस्तु या भाव की संज्ञा या नाम के रूप में प्रचलित हो। नामवाचक शब्द।

संज्ञापन--पुं० [सं० सम्√ज्ञा (जानना)+णिच्-प्रक-ल्युट्-अन्] १. ज्ञान कराना या सूचित करना। २. सूचना-पत्र, विशेषतः ऐसा सूचना पत्र जो माल के साथ भेजा जाता है और जिसमें भेजे हुए माल का मूल्य, विवरण आदि रहता है। (एडवाइस) ३. कथन।

संज्ञापुत्री—स्त्री० [सं० ष० त०] सूर्य की पुत्री, यमुना जो संज्ञा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी।

संज्ञावलि--स्त्री०=नामावली।

संज्ञावान् (वत्)—वि० [सं० संज्ञा+मतुप्- य=व-नुम्-दीर्घ] १. जो संज्ञा से युक्त हो। २. जिसमें चेतना या होश-हवास हो। ३. जिसका कोई नाम हो।

संज्ञाहीन—वि० [सं० तृ० त०] जिसे संज्ञा या चेतना न हो। चेतना-रहित। बेहोश। बेसुध।

संज्ञिका--स्त्री० [सं० संज्ञा+कन्-इत्व-टाप्]=संज्ञा (नाम)।

संज्ञी--वि०=संज्ञावान्।

पुं० जीव। प्राणी।

संज्वर—पुं० [सं० सं√ज्वर (ताप बढ़ना)+णिच्-अच्] १. बहुत तीव्र ज्वर। बहुत तेज बुखार। २. क्रोध का उग्र आवेश।

सँझ—स्त्री० हिं० 'साँझ' का संक्षिप्त रूप जो उसे यौ० पदों के पहले लगने पर प्राप्त होता है। जैसे--सँझला, सँझवाती।

सँझला—वि० [सं० संध्या, प्रा० संझा+हिं० ला (प्रत्य०)] संध्या संबंधी। संध्या का।

वि० [हिं० मँझली का अनु०] मँझला से कुछ छोटा, और छोटा से बड़ा।

सँझवाती—स्त्री० [सं० संध्या +वर्ती] १. संध्या के समय जलाया जानेवाला दीपक। शाम का चिराग। २. देहात में दीपक जलाने के समय गाया जानेवाला गीत।

वि० सन्ध्या-सम्बन्धी। संध्या का।

संझा†—स्त्री०=सन्ध्या।

संझिया, सँझैया†—पुं० [सं० संध्या] वह भोजन जो संध्या समय किया जाता है। रात्रि का भोजन।

स्त्री०=साँझ (संध्या का समय)।

सँझोखा—पुं० [सं० सन्ध्या] सन्ध्याकाल।

वि०[स्त्री० संझोखी] सन्ध्या के समय का। उदा०—चलि बरि अलि अभिसार को, भली सँझोखी सैल।—बिहारी।

संझोखे†—अव्य०=संध्या समय।

सँठ—पुं०[सं० शांत] १. शांति। २. निस्तब्धता। ३. चुप्पी। मौन।

मुहा०—सँठ मारना=चुप हो जाना। चुप्पी साधना।

†वि०=शठ।

संड—पुं०[सं० शंड] साँड़।

पद—संड-मुसंड।

संड-मुसंड—वि०[सं० शुंड, मुशुंडि=हाथी, हिं० संड+मुसंड (अनु०)] हट्टा-कट्टा। मोटा-ताजा।

सँडसा—पुं०[हिं० सँड़सी] बड़ी सँड़सी।

सँड़सी—स्त्री०[?] रसोई में बरता जानेवाला एक तरह का कैंची-नुमा उपकरण जिसके द्वारा बटलोई, तसला आदि चूल्हे पर से उतारे जाते हैं।

संडा—वि०[हिं० साँड़] साँड़ के समान ताकतवाला। हृष्ट-पुष्ट। उदा०—मुल्कों में सरनाम कि जिनके अधिक विराजें झंडे। जितने चेले गुरु नानक के, सदा बने रहे संडे।

पद—संडा-मुसंडा।

पुं० बलवान् और हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति या प्राणी।

संड़ाई†—स्त्री०[हिं० साँड़] मशक की तरह बना हुआ भैंस आदि का वह हवा भरा हुआ चमड़ा जो नदी आदि पार करने के लिए नाव के स्थान पर काम में लाते हैं।

संडास—पुं०[?] कूएँ की तरह का एक प्रकार का गहरा गड्ढा जिसमें लोग मल-त्याग करते हैं। शौच-कूप।

संडास टंकी—स्त्री०[हिं०] एक प्रकार की लोहे की टंकी जिसमें घर भर का मल या पाखाना इकट्ठा होता रहता है। (सेप्टिक टैंक)

संत—पुं०[सं० सत्] १. साधु, संन्यासी, विरक्त या त्यागी पुरुष। सज्जन और महात्मा। २. परम धार्मिक और साधु व्यक्ति। ३. साधुओं की परिभाषा में, वह सम्प्रदाय मुक्त साधु जो विवाह करके गृहस्थ बन गया हो। ४. एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में २१ मात्राएँ होती हैं।

वि० बहुत ही निर्मल और पवित्र।

संतत—अव्य०[सं०] निरंतर। बराबर। लगातार।

वि०१. फैला या फैलाया हुआ। विस्तृत। २. लगातार चलता या बना रहनेवाला। जैसे—संतत ज्वर, संतत वर्षा।

†स्त्री०=संतति।

संतति—स्त्री०[सं०]१. फैलाव। विस्तार। २. किसी काम या बात का लगातार होता रहना। ३. बाल-बच्चे। संतान। औलाद। ४. प्रजा। रिआया। ५. गोत्र। ६. झुंड। दल। ७. मार्कंडेय पुराण के अनुसार ऋतु की पत्नी जो दत्त की कन्या थी।

संतति होम—पुं०[सं० मध्यम० स०] एक प्रकार का यज्ञ जो संतान की कामना से किया जाता था।

संतपन—पुं०[सं० सम्√ तप् (तप्त होना)+ल्युट्—अन]१. अच्छी तरह तपने या तपाने की क्रिया या भाव। २. बहुत अधिक संताप या दुःख देना।

संतप्त—भू० कृ०[सं०]१. बहुत अधिक तपा या जला हुआ। दग्ध। २. जिसे बहुत अधिक संताप या मानसिक कष्ट पहुँचा हो। ३. जिसका मन बहुत दुःखी हो। ४. थका हुआ। श्रान्त। ५. गला या पिघला हुआ।

संतरण—पुं० [सं० सम्√ तृ (तैरकर पार होना)+ल्युट्—अन]१. अच्छी तरह से तरने या पार होने की क्रिया या भाव।

वि०१. तारनेवाला। २. नष्ट करनेवाला। (यौ० के अन्त में)

संतरा—पुं०[पुर्त० संगतरा] एक प्रकार का बड़ा और मीठा नींबू। बड़ी नारंगी।

संतरी—पुं०[अं० सेंटरी]१. किसी स्थान पर पहरा देनेवाला सिपाही। पहरेदार। २. द्वारपाल।

संतर्जन—पुं०[सं०] [भू० कृ० संतर्जित]१. डाँट-डपट करना। डराना-धमकाना। २. कार्तिकेय का एक अनुचर।

संतर्पक—वि०[सं० सम्√ तृप् (तृप्त करना)+ण्वुल्—अक] संतर्पण करनेवाला।

संतर्पण—पुं०[सं०] [कर्ता संतर्पक, भू० कृ० संतृप्त] १. अच्छी तरह तृप्त, प्रसन्न या संतुष्ट करने की क्रिया या भाव। २. आधुनिक विज्ञान में, कोई ऐसी प्रक्रिया जिससे (क) कोई घोल किसी वस्तु के अन्दर पूरी तरह से समा जाय; या (ख) कोई तत्त्व या वस्तु किसी दूसरे पदार्थ के अन्दर अच्छी तरह भर जाय।

संतान—पुं०[सं०] १. स्त्री और पुरुष या नर और मादा के संयोग से उत्पन्न होनेवाले उसी प्रकार या वर्ग के अन्य जीव आदि। २. बाल-बच्चे लड़के-बाले। संतति। औलाद। ३. कुल। वंश। ४. विस्तार। फैलाव। ५. लगातार चलता रहनेवाला क्रम। धारा। ६. प्रबंध। व्यवस्था। ७. कल्पतरु। ८. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

संतान गणपति—पुं०[सं०] पुराणानुसार एक विशिष्ट गणपति जो संतान देनेवाले कहे गये हैं।

संतान-संधि—स्त्री०[सं०] राजनीतिक क्षेत्र में ऐसी संधि जो अपना लड़का या लड़की देकर की जाय।

संतानिक—वि०[सं० संतान+ठन्—इक] कल्पतरु के फूलों से बना हुआ।

वि० संतान-सम्बन्धी। संतान का।

संतानिका—स्त्री०[सं० संतानिक—टाप्]१. क्षीर सागर। २. फेन। ३. मलाई। ४. चाकू का फल। ४. एक तरह की घास।

संतानिनी—स्त्री०[सं० संतान+इनि—ङीप्] दूध या दही पर की मलाई। साढ़ी।

वि० संतान अर्थात् बाल-बच्चोंवाली (स्त्री)।

संताप—पुं० [सं० सम्√तप् (तपना)+घञ्]१. अग्नि, धूप आदि का बहुत तीव्र ताप। आँच। २. शरीर में किसी कारण से होनेवाली बहुत अधिक जलन। ३. ज्वर। बुखार। ४. शरीर में होनेवाला दाह नामक रोग। ५. कोई ऐसा बहुत बड़ा कष्ट या दुःख जिससे मन जलता हुआ सा जान पड़े। बहुत तीव्र मानसिक क्लेश या पीड़ा। ६. दुश्मन। शत्रु। ७. पाप आदि करने पर मन में होनेवाला अनुताप।

संतापन—पुं०[सं० सम्√ तप् (तपाना)+णिच्—ल्युट्—अन] १. संताप देने या संतप्त करने की क्रिया। जलाना। २. किसी को बहुत

अधिक कष्ट या दुःख देना। संतप्त करना। ३. एक हथियार। ४. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

वि० संतप्त करनेवाला।

संतापना*—स० [सं० संतापन] संताप देना। बहुत अधिक दुःख देना। सताना।

संतापित—भू० कृ० [सं० सम्√ तप् (ताप पहुँचाना)+णिच्—क्त] जिसे बहुत संताप पहुँचाया गया हो। पीड़ित। संतप्त।

संतापी (पिन्)—वि० [सं० सम्√तप् (तप्त करना)+णिन्, संतापिन्] संतप्त करने या संताप देनेवाला।

संताप्य—वि० [सं० सम्√तप् (तपाना)+णिच्—ण्यत्] १. जलाये या तपाये जाने के योग्य। २. पीड़ित या संतप्त किये जाने के योग्य।

संति—स्त्री० [सं०√सन् (दान करना)+क्तिच्] १. दान। २. अन्त। समाप्ति।

संती—अव्य० [सं० संति?] १. बदले में। एवज में। स्थान पर। २. द्वारा।

संतुलन—पुं० [सं०] १. अच्छी तरह तौलने की क्रिया या भाव। २. तौलते समय तराजू के दोनों पलड़े बराबर या ठीक करना या होना। ३. लाक्षणिक अर्थ में, वह स्थिति जिसमें सभी अंग या पक्ष बराबर के या यथास्थान हों। (बैलेन्स)

संतुलित—भू० कृ० [सं०] १. जिसका संतुलन हुआ हो। २. जिसमें दोनों पक्षों का बल या प्रभाव समान हो या रखा जाय। ३. न अधिक, न कम। ठीक। (बैलेन्संड)

संतुष्ट—भू०कृ० [सं० सम्√तुष् (संतोष होना)+क्त] [भाव० संतुष्टि] १. जिसका संतोष कर दिया गया हो अथवा हो गया हो। जिसकी तृप्ति हो गई हो। तृप्त। २. जो समझाने-बुझाने से राजी हो गया या मान गया हो।

संतुष्टि—स्त्री० [सं० सम्√तुष् (तुष्ट होना)+क्तिच्] १. संतुष्ट होने की क्रिया या भाव। तृप्ति। २. संतोष। ३. प्रसन्नता।

संतूर—पुं० [कश्मी०] शत-तंत्री वीणा का कश्मीरी नाम।

संतोख†—पुं०=संतोष।

संतोष—पुं० सं० सं√ तुष् (संतोष करना)+घञ्] १. वह मानसिक अवस्था जिसमें व्यक्ति प्राप्त होनेवाली वस्तु को यथेष्ट समझता है और उससे अधिक की कामना नहीं रखता। २. वह अवस्था जिसमें अभीष्ट कार्य होने या वांछित वस्तु प्राप्त होने पर क्षोभ मिट जाता है और फलतः कुछ अवस्थाओं में हर्ष भी होता है। जैसे—मजदूरों की माँगें पूरी हो जाने पर ही संतोष होगा। २. हर्ष। आनन्द। ४. धैर्य।

संतोषक—वि० [सं० संतोष+कन्] १. संतुष्ट करनेवाला। २. प्रसन्न करनेवाला।

संतोषण—पुं० [सं० सम्√तुष् (संतोष होना)+ल्युट्—अन] १. सन्तोष करने की क्रिया या भाव। २. सन्तुष्ट करने की क्रिया या भाव।

संतोषणीय—वि० [सं० सम्√ तुष् (संतोष करना)+अनीयर्] जिससे या जितने में सन्तोष हो सके।

संतोषना—अ० [सं० संतोष] १. संतोष होना। २. संतुष्ट होना। स० १. सन्तोष करना। २. संतुष्ट करना।

संतोषी (षिन्)—वि० [सं० सम्√तुष् (प्रसन्न रहना)+णिनि] (व्यक्ति) जो प्राप्त होनेवाली वस्तु को यथेष्ट समझता होता हो और उसी में संतुष्ट रहता हो।

संतोष्य—वि० [सं० सम्√तुष् (संतोष करना)+यत्] जिसका संतोष करना या जिसे संतुष्ट करना आवश्यक या उचित हो।

सत्रस्त—भू० कृ० [सं०] १. जिसे बहुत संताप हुआ हो। २. बहुत डरा हुआ। ३. भय से काँपता हुआ।

संत्रास—पुं० [सं० सम् √ त्रस् (भयभीत होना)+घञ्] १. बहुत अधिक या तीव्र त्रास। २. आतंक।

संत्री†—पुं०=संतरी।

संथा—स्त्री० [सं० संहिता?] एक बार में पढ़ा या पढ़ाया हुआ अंश। पाठ। सबक।

संदंश—पुं० [सं० सं√दंश् (पकड़ना)+अच्] १. संडसी नाम का औजार। २. सुश्रुत के अनुसार संडसी के आकार का, प्राचीन काल का एक प्रकार का, औजार जिसकी सहायता से शरीर में गड़ा हुआ काँटा आदि निकालते थे। कंकमुख। ३. न्याय या तर्कशास्त्र में अपने प्रतिपक्षी को दोनों ओर से उसी प्रकार जकड़ या बाँध देना जिस प्रकार संडसी से कोई बरतन पकड़ते हैं।

संदंशक—पुं० [सं० संदंश+कन्] [स्त्री० अल्पा० संदंशिका] १. चिमटा। २. सँड़सी।

संदंशिका—स्त्री० [सं० सं√ दंश् (पकड़ना)+ण्वुल्—अक—टाप्-इत्व] १. संडसी। २. चिमटी। ३. कैंची।

संद†—स्त्री० [सं० संधि] १. दरार। छेद। बिल। २. दबाव। †पुं०=चंद्र।

संदन*—पुं०=स्यंदन (रथ)।

संदर्प—पुं० [सं० सं√दर्प् दप् (गर्व करना)+घञ्] अहंकार। घमंड।

संदर्भ—पुं० [सं०] १. भिन्न भिन्न तत्त्वों या वस्तुओं को मिलाकर कोई नया और उपयोगी रूप देना। जैसे—पिरोना, बुनना, सीना आदि। २. बनावट। रचना। ३. पुस्तक, लेख आदि में वर्णित प्रसंग, विषय आदि जिसका विचार या उल्लेख हो। (कन्टेक्स्ट) जैसे—यह पद्य 'रामवनगमन' संदर्भ का है। ४. किसी गूढ़ विषय पर लिखा हुआ कोई विवेचनात्मक ग्रन्थ। ५. किसी ग्रन्थ में लिखा हुआ वह पाठ जिसके आधार पर पूर्वापर के विचार से संगति बैठाकर उसका अर्थ लगाया जाता है। (कन्टेक्स्ट) जैसे—संदर्भ से तो इसका यही अर्थ ठीक जान पड़ता है। ६. एक ग्रन्थ में आई हुई ऐसी बातें जिनका उपयोग लोग अपनी जानकारी बढ़ाने के लिए या संदेह दूर करने के लिए करते हैं। वि० दे० 'संदर्भ ग्रंथ'।

संदर्भ ग्रंथ—पुं० [सं०] ऐसा ग्रन्थ जिसमं जानकारी या विमर्श के लिए कुछ विशिष्ट प्रसंगों की बातें देखी जाती हों।

विशेष—ऐसा ग्रन्थ आद्योपान्त पढ़ा नहीं जाता बल्कि किसी जिज्ञासा की पूर्ति या संदेह के निवारण के उद्देश्य से देखा जाता है। जैसे—कोश, विश्वकोश, साहित्य कोश आदि संदर्भ ग्रन्थ हैं।

संदर्भ साहित्य—पुं० [सं०] साहित्य का वह अंश या वर्ग जिसमें ऐसे बड़े और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ आते हैं जिनमें एक अथवा अनेक विषयों की गूढ़ बातों की पूरी छान-बीन और विवेचन होता है।

विशेष—ऐसे साहित्य का उपयोग साधारण रूप से पढ़ी जानेवाली

पुस्तकों की तरह नहीं, बल्कि विशिष्ट अवसरों पर विशेष प्रकार की गंभीर जानकारी प्राप्त करने के लिए ही किया जाता हो। जैसे—विश्व कोश, शब्द कोश, विभिन्न जातियों, देशों और साहित्य के इतिहास आदि। (रेफरेन्स बुक्स)

संदर्भिका—स्त्री० [सं० संदर्भ] किसी विशिष्ट विषय से सम्बन्ध रखनेवाले संदर्भ ग्रन्थों की नामावली या सूची। (बिब्लियोग्राफ़ी)

संदर्श—पुं० [सं० सं √दृश (देखना)+अच्] दे० 'परिदृष्टि'।

संदर्शन—पुं० [सं०] १. अच्छी तरह देखना या दिखाना। अवलोकन करना या कराना। २. जाँच। परीक्षा। ३. ज्ञान। ४. आकृति। शक्ल। सूरत। ५. दर्शन।

संदल—पुं० [सं० चन्दन से फा०] चंदन।

संदली—वि० [फा० संदल] १. संदल अर्थात् चन्दन के रंग का। हलका पीला (रंग)। २. चन्दन की लकड़ी का बना हुआ। ३. (खाद्य पदार्थ) जिसमें संदल का सत्त छोड़ा गया हो फलतः जिसमें संदल की महक हो।
पुं० १. हल्का पीला रंग। २. वह हाथी जिसके बाहरी दांत नहीं होते।

संदष्ट—भू० कृ० [सं०] १. जिसे अच्छी तरह डंक या दंश लगा हो या लगाया गया हो। २. कुचला या रौंदा हुआ।
पुं० वीणा, सितार आदि की तूँबी की घोड़िया में तारों के बैठने के लिए बनाये हुए खाँचे या निशान।

संदान—पुं० [फा०] १. एक प्रकार की निहाई जिसका एक कोना नुकीला और दूसरा चौड़ा होता है। अहरन। २. बाँधने की रस्सी या सिकड़ी। ३. बाँधने की क्रिया या भाव। ४. हाथी का गंडस्थल जहाँ से उसका मद बहता है।

संदानिनी—स्त्री० [सं० संदान+इनि—ङीप्] गौओं के रहने का स्थान। गोशाला।

संदाह—पुं० [सं० सं√ दह् (जलना)+घञ्] वैद्यक के अनुसार मुख, तालू और होंठों में होनेवाली जलन।

संदि†—स्त्री०=संधि।

संदिग्ध—वि० [सं०] १. (कथन या वाक्य) जिसके संबंध में निर्विवाद रूप से कुछ भी कहा न जा सकता हो। २. (अर्थ, निर्वचन या व्याख्या) जिसके संबंध में किसी प्रकार का अनिश्चय हो। ३. (व्यक्ति) जिसके संबंध में अनुमान हो कि वह अपराधी या दोषी है। (सस्पेक्टेड)
पुं० १. अस्पष्ट कथन। २. अनिश्चय। ३. एक प्रकार का व्यंग्य। ४. वह व्यक्ति जिसके अपराधी होने का संदेह हो। ५. तर्क में एक प्रकार का मिथ्या उत्तर।

संदिग्धत्व—पुं० [सं० संदिग्ध+त्व] १. संदिग्ध होने की अवस्था, धर्म या भाव। संदिग्धता। २. साहित्य में, एक प्रकार का दोष जो उस समय माना जाता है जब किसी आलंकारिक उक्ति का ठीक ठीक अर्थ प्रकट नहीं होता या अर्थ के संबंध में कुछ संदेह बना रहता है।

संदिग्धार्थ—वि० [सं० कर्म० स०] जिसका अर्थ संदिग्ध या अस्पष्ट हो।
पुं० विवादग्रस्त विषय।

संदिष्ट—वि० [सं० सं√ दिश् (कहना)+क्त] १. कहा हुआ। उक्त। कथित। २. सन्देह के रूप में कहा या कहलाया हुआ।
पुं० १. वार्ता। २. समाचार। ३. संदेशवाहक।

संदी—स्त्री० [सं०सं√दो (बँधना)+ड—ङीप्] शय्या। पलंग। खाट।

संदीपक—वि० [सं० सं √दीप् (प्रदीप्त)+ण्वुल्—अक] संदीपन करनेवाला। उद्दीपक।

संदीपन—पुं० [सं० सं√ दीप् (प्रदीप्त करना)+ल्युट्—अन] १. उद्दीप्त अर्थात् तीव्र या प्रबल करने की क्रिया या भाव। उद्दीपन। २. श्रीकृष्ण के गुरु का नाम। ३. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।
वि० उद्दीप्त करनेवाला।

संदीपनी—स्त्री० [सं० संदीपन—ङीप्] संगीत में, पंचम स्वर की चार श्रुतियों में से तीसरी श्रुति।
वि० संदीपन या उद्दीपन करनेवाली।

संदीपित—भू० कृ० =संदीप्त।

संदीप्त—भू० कृ० [सं०] [भाव० संदीप्ति] १. जिसका भली-भाँति संदीपन या उद्दीपन हुआ हो। २. जलता हुआ। प्रज्वलित। ३. खूब चमकता हुआ या प्रकाशमान्।

संदीप्य—पुं० [सं० सं√ दीप् (प्रदीप्त करना)+श—यक्] मयूर शिखा नामक वृक्ष।
वि० जिसका संदीपन हो सके या होने को हो। संदीपनीय।

संदुष्ट—भू० कृ० [सं० सं√ दुष् (खराब करना)+क्त] १. दूषित या कलुषित किया हुआ। खराब किया हुआ। २. दुष्ट। ३. कमीना।

संदूक—पुं० [अ० संदूक़] [अल्पा० संदूकचा] लकड़ी, लोहे, चमड़े आदि का बना हुआ एक प्रकार का चौकोर आधान या पिटारा जिसमें प्रायः कपड़े, गहने आदि चीजें रखते हैं। पेटी। बकस।

संदूकचा—पुं० [अ० संदूक+चः (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० संदूकची] छोटा संदूक। छोटा बकस। छोटी पेटी।

संदूकची†—स्त्री०=संदूकचा।

संदूकड़ी†—स्त्री० [अ० संदूक+हिं० ड़ी (प्रत्य०)] छोटा संदूक। छोटा बकस।

संदूकी—वि० [अ०] १. संदूक की शक्ल का। २. जो चारों ओर से संदूक की तरह बंद हो।

संदूर†—पुं०=सिंदूर।

संदूषण—पुं० [सं० सं√दूष् (दूषित करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० संदूषित, संदुष्ट] १. कलुषित करना। २. गंदा या खराब करना।

संदेश—पुं० [सं०] १. खबर। समाचार। २. वह कथन या बात जो लिखित या मौखिक रूप से एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को भेजी गई हो। संदेशा। ३. अलौकिक, ईश्वरी या दैवी प्रेरणादायक विचार। ४. आजकल किसी बहुत बड़े आदमी का वह कथन जिसमें उसके मतों या विचारों का मुख्य सारांश होता है और प्रायः जिसमें किसी विशिष्ट प्रकार का आचार-व्यवहार करने का उल्लेख होता है। (मेसेज; अन्तिम दोनों अर्थों के लिए) ५. आज्ञा। आदेश।

संदेश-काव्य—पुं० [सं०] ऐसा काव्य जिसमें विरही की विरह-वेदना किसी के द्वारा संदेश के रूप में अपने प्रिय के पास भेजने का वर्णन होता है।
विशेष—ऐसे काव्यों की परम्परा कालिदास के सुप्रसिद्ध काव्य मेघदूत से चली थी। उसके अनुकरण पर पवन-दूत, हंस-दूत, आदि अनेक काव्यों की रचना हुई थी।

संदेश-हर—पुं० [सं०] संदेश या समाचार ले जानेवाला दूत। वार्तावह।

संदेशा†—पुं०= संदेश।

संदेशी--पुं० [सं० सं√ दिश् (कहना)+णिनि, संदेशिन्]संदेश लाने या ले जानेवाला। संदेशवाहक।

संदेसा†--पुं०=संदेश।

संदेसी†--पु० [हिं० संदेसा+ई (प्रत्य०)] वह जो संदेशा ले जाता हो।

संदेह--पुं०[सं०]१. किसी चीज या बात के संबंध में मन में उत्पन्न होनेवाला यह भाव या विचार कि कहीं यह अनुचित, त्याज्य या दूषित तो नहीं है अथवा क्या इसकी वास्तविकता या सत्यता मानने योग्य है। शक। (सस्पिशन)

विशेष--मन में इस प्रकार का भाव प्रायः यथेष्ट प्रमाण के अभाव में ही उत्पन्न होता है, और ऊपर से दिखाई देनेवाले तथ्य या रूप पर सहसा विश्वास नहीं होता। दे०'शंका' और 'संशय'।

क्रि० प्र०--करना।--डालना।--मिटना।--मिटाना।--होना।

२. उक्त के आधार पर साहित्य में, एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी चीज या बात को देखकर उसकी यथार्थता या वास्तविकता के संबंध में मन में संदेह बने रहने का उल्लेख होता । इस प्रकार का कथन कि जो कुछ सामने है, वह अमुक है अथवा कुछ और ही है। यथा (क) कैधौं फूली दुपहरी, कैधौं फूली साँझ।--मतिराम। (ख) निद्रा के उस अलसित वन में वह क्या भावों की छाया। दृग पलकों में विचर रही या वन्य देवियों की माया।--पंत।

संदेहवाद--पुं०[सं०] दार्शनिक क्षेत्र में यह मत या सिद्धान्त कि वास्तविक या सत्य का कभी ठीक और पूरा ज्ञान नहीं होने पाता, इसलिए हर बात के सम्बन्ध में मन में संदेह का भाव बना ही रहना चाहिए।

विशेष--इसमें जिज्ञासा की तृप्ति के लिए संदेह का स्थायी रूप में बना रहना आवश्यक माना जाता है।

संदेहवादी--वि०[सं०] संदेहवाद-सम्बन्धी।

पुं० वह जो संदेहवाद का अनुयायी और समर्थक हो।

संदेहात्मक--वि०[सं०] संदिग्ध। (दे०)

संदेहास्पद--वि० [सं०] संदिग्ध। (दे०)

संदोल--पुं० [सं० सं√ दुल् (झूलना)+घञ्] कान में पहनने का कर्ण-फूल नाम का गहना।

संदोह--पुं०[सं० सं√ दुह् (पूरा करना)+घञ्] १. दूध दोहना। २. किसी वस्तु का समूचा मान या रूप। ३. ढेर। राशि। ४. समूह। झुंड।

संद्रव--पुं०[सं० सं√द्रू (थना)+अच्] गूँथने की क्रिया। गुंथन।

संद्राव--पुं०[सं० सं√ द्रु (भागना)+घञ्] युद्ध-क्षेत्र से पराजित होने पर अथवा पराजय के भय से भागना। पलायन।

संध†--स्त्री०[सं० संधि]१. जोड़। संधि। २. दो चीजों के बीच में पड़नेवाली थोड़ी सी जगह। ३. दे० सेंध'।

संधउरा†--पुं०=सिंधोरा।

संधना†--अ०[सं० संधि] संयुक्त होना। मिलना।

†स० संयुक्त करना। मिलाना।

†स०=संधानना।

संधा--वि०[सं०] १. अभिसंधि या अभिप्राय से युक्त। जैसे--संधा भाषा। स्त्री०१. मेल। संधि। २. घनिष्ठ संबंध। ३. अभिप्राय। आशय। ४. आपस में होनेवाला करार, निश्चय या समझौता। ५. किसी प्रकार का दृढ़ निश्चय। ६. सीमा। हद। ७. स्थिति। ८. सवेरे और संध्या के समय दिखाई पड़नेवाली सूर्य की लालिमा या उसके कारण होनेवाला प्रकाश। ९. संध्या का समय। १०. अनुसंधान। तलाश।

संधाता--पुं०[सं० सं√ धा (रखना)+तृच्, संधातृ]१. शिव। २. विष्णु।

संधान--पुं०[सं०] [भू० कृ० संधानित] १. निशाना लगाने के लिए कमान पर तीर ठीक तरह से लगाना। निशाना बैठाना। २. ढूँढ़ने या पता लगाने का काम। ३. युक्त करना। मिलाना। ४. मृत शरीर को जीवित करना। संजीवन। ५. दो चीजों का मिलना। संधि। ६. किसी का किसी उद्देश्य से किसी ओर मिलना। संश्रय। (एलायन्स) ७. धातु आदि के खंडों को मिलाकर जोड़ना। (वेल्डिग) ८. किसी चीज को सड़ाकर उसमें खमीर उठाना। (फ़र्मटेशन) ९. मदिरा या शराब चुआना। १०. मदिरा। शराब। ११. कांजी। १२. अचार। १३. सीमा। हद। १४. काठियावाड़ या सौराष्ट्र प्रदेश का पुराना नाम। १५. संधि।

संधानना†--स० [सं० संधान+ना (प्रत्य०)]१. धनुष पर बाण चढ़ाकर लक्ष्य करना। निशाना लगाना। २. तीर या वाण चलाना। ३. किसी प्रकार का शस्त्र चलाने के लिए निशाना साधना।

संधाना--पुं०[सं० संधानिका] अचार।

संधानित--भू० कृ०[सं० संधान+इतच्]१. जोड़ा बाँधा या मिलाया हुआ। २. लक्ष्य किया हुआ। जिस पर निशाना साधा गया हो।

संधानिनी--स्त्री० [सं० संधान+इनि--ङीप्] गौओं के रहने का स्थान। गौशाला।

संधानी--स्त्री०[सं०] १. एक में मिलने या मिश्रित होने की क्रिया या मिलन। मिश्रण। २. प्राप्ति। लाभ। ३. बन्धन। ४. अन्वेषण। तलाश। ५. पालन-पोषण। ६. काँजी। ७. अचार। ८. शराब बनाने की जगह। ९. धातुओं आदि की ढलाई करने की जगह। १०. दे० 'संधान'।

संधापगमन--पुं०[सं०] समीपवर्ती शत्रु से संधि करके दूसरे शत्रु पर चढ़ाई करना।

संधा भाषा--स्त्री०[सं०] बौद्ध तांत्रिकों और परवर्ती साधकों में प्रचलित एक प्राचीन भाषा-प्रणाली जिसमें अलौकिक और रहस्यात्मक बातें सीधे सादे शब्दों में नहीं, बल्कि ऐसे प्रतीकात्मक जटिल शब्दों में कही जाती थीं, जिनसे जन-साधारण कुछ भी मतलब नहीं निकाल सकते थे।

संधा-वचन--पुं०=संधा भाषा।

संधि--स्त्री०[सं०] १. दो या अधिक चीजों का एक में जुड़ना या मिलना। मेल। संयोग। २. वह स्थान जहाँ कई चीजें एक में जुड़ी या मिली हों। मिलने की जगह। जोड़। ३. शरीर में वह स्थान जहाँ कई हड्डियाँ एक दूसरी से मिलती हैं। गाँठ। जोड़। (ज्वाइन्ट) जैसे--कोहनी, घुटना आदि। ४. व्याकरण में शब्दों के रूपों में होनेवाला वह विकार जो दो अक्षरों के पास-पास आने पर उनके मेल या योग के कारण होता है। ५. एक युग की समाप्ति और दूसरे युग के आरम्भ के बीच का समय। युग-संधि। ६. एक अवस्था की समाप्ति और दूसरी अवस्था के आरम्भ के बीच का समय। जैसे--वयःसंधि। ७. दो चीजों के

बीच की खाली जगह। अवकाश। ८. दरज। दरार। ९. राजाओं या राज्यों आदि में होनेवाला वह निश्चय या प्रतिज्ञा जिसके अनुसार पारस्परिक युद्ध बन्द किया जाता है, मित्रता या व्यापार-संबंध स्थापित किया जाता है, अथवा इसी प्रकार का और कोई काम होता है। (ट्रीटी) १०. नाटक में किसी प्रधान प्रयोजन के साधक कथांशों का किसी एक मध्यवर्ती प्रयोजन के साथ होनेवाला संबंध। ये संधियाँ पाँच प्रकार की कही गई हैं—मुखसंधि, प्रतिमुख-संधि, गर्भसंधि, अवमर्श या विमर्श-संधि और निर्वहण संधि। ११. चोरी आदि करने के लिए दीवार में किया हुआ छेद। सेंध। १२. स्त्री की भग। योनि। १३. दोस्ती। मित्रता। १४. संघटन। १५. भेद। रहस्य। १६. कार्य करने का साधन।

संधिक—पुं० [सं०[वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का सन्निपात, जिसमें शरीर की संधियों में वायु के कारण बहुत पीड़ा होती है।

संधि-गुप्त—पुं०[सं०] वह स्थान जहाँ शत्रु की आनेवाली सेना पर छापा मारने के लिए सैनिक लोग छिपकर बैठते हैं।

संधि-चौर—पुं०[सं०] सेंध लगाकर चोरी करनेवाला। सेंधिया चोर।

संधिच्छेद—पुं०[सं०] १. चोरी करने के लिए किसी के घर में सेंध लगाना। २. प्राचीन भारतीय राजनीति में, पारस्परिक संधि के नियम भंग करनेवाला पक्ष। ३. दे० 'संधिविच्छेद'।

संधिज—पुं०[सं०] १. (चुआकर तैयार किया हुआ) मद्य, आसव आदि। २. शरीर के संधि-स्थान पर होनेवाली गाँठ या फोड़ा।

वि० संधि से उत्पन्न या बना हुआ।

संधित—भू० कृ० [सं० संधा+इतच्] जिसमें संधि हो। संधियुक्त।

पुं० आसव। अरक।

संधिनी—स्त्री० [सं० संधा+इनि—ङीप्] १. गाभिन गौ। २. ऐसी गौ जो गाभिन होने की दशा में भी दूध देती हो। ३. ऐसी गौ जो बछड़ा पास न रहने पर भी दूध देती हो। ४. दिन-रात में केवल एक बार दूध देनेवाली गौ।

संधिप्रच्छादन—पुं० [सं०] संगीत में, स्वर-साधन की एक विशिष्ट प्रणाली जो इस प्रकार होती है। आरोही—सारेग, रेगम, गमप, मपध, पधनि, धनिसा। अवरोही—सानिध, निधप, धपम, पमग, मगरे, गरेसा।

संधि-पत्र—पुं०[सं०] वह पत्र जिस पर आपस की संधि या मेल-जोल की बात निश्चित होने पर उसके सम्बन्ध की शर्तें लिखी जाती हैं।

संधि-बंधन—पुं०[सं०] शिरा। नाड़ी। नस।

संधि-भंग—पुं०[सं०] १. संधि की शर्तों का टूटना या तोड़ना। २. वैद्यक के अनुसार हाथ या पैर आदि के किसी जोड़ की हड्डी टूटना।

संधिभग्न—पुं०[सं०] एक प्रकार का रोग जिसमें अंग की संधियों में बहुत पीड़ा होती है।

संधि-मोक्ष—पुं०[सं० ष० त०] १. राजनीति में पुरानी सन्धि तोड़ना। संधिभंग। २. दे० 'समाधिमोक्ष'।

संधिरंध्रिका—स्त्री०[सं०] १. सुरंग। २. सेंध।

संधि-राग—पुं०[सं०] सिंदूर।

संधिला—स्त्री० [सं०] १. सुरंग। २. सेंध। ३. नदी। ४. मदिरा। शराब।

संधि-विग्रहक (हिक)—पुं० [सं०] प्राचीन भारत में परराष्ट्रों के साथ युद्ध या संधि का निर्णय करनेवाला मंत्री या राजकीय अधिकारी।

संधि-विग्रही—पुं०=संधि-विग्रहक।

संधि-विच्छेद—पुं०[सं०] १. आपस की संधि या समझौता तोड़ना या टूटना। २. व्याकरण में किसी पद को संधि के स्थान से तोड़कर उसके शब्द अलग अलग करना। जैसे—'मतैक्य' का संधि विच्छेद होगा=मत+ऐक्य।

संधि-विद्ध—पुं०[सं०] एक प्रकार का रोग जिसमें हाथ पैर के जोड़ों में सूजन और पीड़ा होती है।

संधिवेला—स्त्री०[सं०] संध्या का समय। सायंकाल। शाम।

संधिहारक—पुं०[सं० संधि√हृ (हरण करना)+ण्वुल्—अक] वह चोर जो सेंध लगाकर चोरी करता हो। सेंधिया चोर।

संधेय—वि० [सं० सं√ धा (रखना) यत्] जिसके साथ संधि की जा सके।

संध्यंग—पुं०[सं० ष० त०] नाटक में मुखसंधि आदि संधियों के अंग।

संध्यंतर—पुं०[सं० संधि+अन्तर]=उप-सन्धि।

संध्य—वि०[सं० संधि+यत्] सन्धि-संबंधी। संधि का।

संध्यांश—पुं०[सं०] दो युगों के बीच का समय। युग-संधि।

संध्या—स्त्री०[सं०] १. दिन और रात दोनों के मिलने का समय। संधि-काल। २. वह समय जब दिन का अंत और रात का आरंभ होने को होता है। सूर्यास्त से कुछ पहले का समय। सायंकाल। शाम।

मुहा०—संध्या फूलना=दिन ढलने पर धीरे-धीरे सन्ध्या का सुहावना समय आना।

३. भारतीय आर्यों की एक प्रसिद्ध उपासना जो सवेरे, दोपहर, और संध्या को होती है। ४. एक युग की समाप्ति और दूसरे युग के बीच का समय। दो युगों के मिलने का समय। युग-संधि। ५. सीमा। हद। ६. एक प्राचीन नदी। ७. एक प्रकार का फूल और उसका पौधा। ८. दे० 'संधा भाषा'।

संध्याचल—पुं०[सं० ष० त०]=अस्ताचल।

संध्याबल—पुं०[सं०] निशाचर। निश्चर।

संध्या भाषा—स्त्री० दे० 'संधा भाषा'।

संध्याराग—पुं०[सं०] १. संगीत में, श्याम कल्याण राग। २. सिंदूर।

संध्यालोक—पुं०[सं०] सांध्य प्रकाश।

संध्यावधू—स्त्री०[सं० ष० त०] रात्रि। रात। निशि।

संध्यासन—पुं०[सं०] आपस में लड़कर शत्रुओं का कमजोर होकर बैठ जाना। (कामंदक)

संध्योपासन—पुं०[सं० ष० त०] संध्या के समय की जानेवाली आर्यों की सन्ध्या-पूजा आदि।

संनिक्षप्ता—पुं०[सं० सम् नि√ क्षिप्त् (फेंकना)+तृच्] श्रेणी या संघ के धन का रक्षक या खजांची। (कौ०)

संन्यसन—पुं० [सं० सम्-नि√ अस् (होना)+ल्युट्—अन] [वि० संन्यस्त [१. फेंकना। छोड़ना। २. अलग या दूर करना। हटाना। ३. सांसारिक विषयों से सम्बन्ध छोड़कर अलग होना। ४. धरना। रखना। ५. जमाना। बैठाना। ६. खड़ा करना।

संन्यस्त—भू० कृ० [सं०] १. फेंका या छोड़ा हुआ। २. हटाया

या अलग किया हुआ। ३. धरा या रखा हुआ। ४. जमाया या बैठाया हुआ। ५. खड़ा कियां हुआ। ६. जिसने संन्यास आश्रम में प्रवेश किया हो।

संन्यास—पुं०[सं०] [वि० संन्यस्त] १. पूरी तरह से छोड़ना। परित्याग करना। २. हिंदुओं के चार आश्रमों में से अंतिम, जिसमें सब प्रकार के सांसारिक बंधन या संबंध तोड़कर और त्यागी तथा विरक्त होकर सब कार्य निष्काम भाव से किये जाते हैं। चतुर्थ आश्रम। ३. किसी निश्चित क्षेत्र या सीमा के अन्दर ही रहने अथवा कोई काम करने या उस क्षेत्र या सीमा से बाहर न निकलने की प्रतिज्ञा या व्रत। जैसे—गृह-संन्यास, क्षेत्र-संन्यास। (देखें) ४. अपने विधिक या कानूनी अधिकारों का स्वेच्छापूर्वक त्याग। (सिविल सुइसाइड) ५. अपस्मार, भीषण ज्वर, विषययोग आदि के कारण होनेवाली वह अवस्था जिसमें रोगी की चेतना-शक्ति बिलकुल नष्ट हो जाती है। (कॉमा)

विशेष—मूर्च्छा और संन्यास में यह अन्तर है कि मूर्च्छा तो अनेक अवस्थाओं में आप से आप दूर हो जाती है, परन्तु संन्यास किसी प्रकार के उपचार या चिकित्सा के बिना दूर नहीं होता।

६. सहसा होनेवाली मृत्यु। अचानक मर जाना। ७. बहुत अधिक थक जाना या परम शिथिल होना। ८. थाती। धरोहर। न्यास। ९. इकरार। वादा। १०. प्रतिस्पर्धा। होड़।

संन्यासी(सिन्)—पुं०[सं० संन्यास+इनि] १. वह जिसने संन्यास आश्रम ग्रहण किया हो। संन्यास आश्रम में रहने और उसके नियमों का पालन करनेवाला। २. त्यागी और विरक्त व्यक्ति। यति।

सँपई†—स्त्री०[हिं० साँप] १. एक प्रकार का लंबा कीड़ा जो मनुष्यों और पशुओं की आँतों में उत्पन्न होता है। पेट का केंचुआ। २. बेला नाम का पौधा और फूल।

संपक—वि०[सं० सम्√ पच् (पकाना)+क्त—व] १. अच्छी तरह उबाला या पकाया हुआ। २. जो पूरा पक चुकने पर अन्त या समाप्ति के समीप पहुँच चुका हो।

संपत्—स्त्री०[सं०] संपद्।

संपति†—स्त्री०=संपत्ति।

संपत्कुमार—पुं०[सं०] विष्णु का एक नाम।

संपत्ति—स्त्री० [सं०] १. धन-दौलत और जायदाद आदि जो किसी के अधिकार में हो और जो खरीदी या बेची जा सकती हो। जायदाद। (प्रापर्टी; एफ़ेक्ट्स) २. कोई ऐसी चीज जो महत्त्व की और स्वामी के लिए लाभदायक हो। जैसे—वन्य-संपत्ति, पशु-संपत्ति आदि। ३. ऐश्वर्य। वैभव। ४. अधिकता। बहुतायत।

संपत्तिकर—पुं० [सं०] वह कर जो किसी पर उसकी संपत्ति के विचार से लगाया जाता है। (प्रापर्टी टैक्स)

संपद्—स्त्री०[सं०] १. कार्य की पूर्णता या सिद्धि। काम पूरा होना। २. धन-दौलत। सम्पत्ति। २. भण्डार। जैसे—शब्द-संपद। ४. सुख और सौभाग्य की स्थिति। ५. जैसे—संपद-विपद् सबमें साथ देनेवाला व्यक्ति। ६. प्राप्ति। लाभ। ७. अधिकता। बहुतायत। ८. मोतियों की माला। ९. वृद्धि नामक ओषधि।

संपदा—स्त्री०[सं० संपद्] १. धन। दौलत। २. ऐश्वर्य। वैभव।

संपना†—अ० [सं० सम्पन्न] १. (कार्य) पूरा होना। २. (पदार्थ समाप्त होना। न बचना।

संपन्न—वि०[सं०] १. पूरा किया हुआ। पूर्ण। सिद्ध। साधित। मुकम्मल। २. (कार्य) जो पूरा या सिद्ध हो चुका हो। ३. किसी गुण या वस्तु से भली-भाँति युक्त। जैसे—धन-संपन्न, विद्या-संपन्न। ४. धनवान्। अमीर।

पुं० अच्छा और स्वादिष्ट भोजन। व्यंजन।

संपन्न-क्रम—पुं०[सं०] एक प्रकार की समाधि। (बौद्ध)

संपराय—पुं०[सं० सम्-पर √इण (गमनादि)+घञ्] १. ऐसी स्थिति जो सदा से चली आ रही हो। २. मृत्यु। मौत। ३. युद्ध। लड़ाई। ४. आपत्ति। मुसीबत। ५. भविष्य।

संपरिग्रह—पुं०[सं०] अच्छी तरह आदर या स्वागत करना।

संपरीक्षण—पुं०[सं० सं परि√इक्ष (देखना)+ल्युट्—अन] लेख्य आदि की अच्छी तरह जाँच करके यह देखना कि वह सब प्रकार से नियमानुसार ठीक है या नहीं। (स्क्रुटिनी)

संपर्क—पुं०[सं० सं√पृच् (मिलाना)+घञ्] [वि० संपृक्त] १. मिश्रण। मिलावट। २. मेल। संयोग। ३. आपस में होनेवाला किसी प्रकार का लगाव, वास्ता या संसर्ग। ४. स्पर्श। ५. गणित में, राशियों या संख्याओं का जोड़। योग।

संपर्क-अधिकारी—पुं०[सं०] वह राजकीय अधिकारी जो (क) प्रजा और सरकार में अथवा (ख) भिन्न देशों के साथ सैनिक अथवा और किसी प्रकार का संपर्क बनाये रखने के लिए नियत होता है। (लिएसन आफ़िसर)

संपा—स्त्री०[सं० सम्√ यत् (गिरना)+ड—टाप्] विद्युत्। बिजली।

संपाक—पुं०[सं० ब० स०] १. अच्छी तरह पकना। परिपाक। २. अमलतास।

वि० १. तर्क-वितर्क करनेवाला। २. लम्पट। ३. चालाक। धूर्त। ४. अल्प। कम। थोड़ा।

संपाट—पुं०[सं० √पट् (गत्यादि)+घञ्] १. ज्यामिति में, किसी त्रिभुज की बढ़ी हुई भुजा पर लम्ब का गिरना। २. चरखे का तकला।

संपात—पुं०[सं०] [वि० संपातिक] १. एक साथ गिरना या पड़ना। २. संपर्क। संसर्ग। ३. संगम। समागम। ४. मिलने का स्थान। संगम। ५. वह स्थान जहाँ एक रेखा दूसरे पर पड़ती या उससे मिलती हो। ६. किसी पर झपटना या टूट पड़ना। ७. पहुँच। पैठ। प्रवेश। ८. घटित होना। ९. गाद। तलछट। १०. उपयोग में आ चुकने के बाद किसी चीज का बचा हुआ अंश।

संपाति—पुं० [सं० सम्√पत् (गिरना)+णिच्—इनि] १. एक गीध जो गरुड़ का ज्येष्ठ पुत्र और जटायु का भाई था। २. माली नामक राक्षस का एक पुत्र जो विभीषण का मंत्री था।

संपाती (तिन्)—वि०[सं०] [स्त्री० संपातिनी] १. एक साथ टूटने या झपटनेवाला। २. उड़ने, कूदने आदि में होड़ लगानेवाला।

पुं०=संपाति।

संपादक—वि०[सं० सम्√ पद् (स्थान आदि)+णिच् ण्वुल्—अक] १. कार्य संपन्न करनेवाला। कोई काम पूरा करनेवाला। २. प्रस्तुत या तैयार करनेवाला।

पुं० वह जो किसी पुस्तक, सामयिक पत्र आदि के सब लेख या विषय

अच्छी तरह ठीक करके या देख कर क्रम से लगाता और उन्हें प्रकाशन के योग्य बनाता हो। (एडिटर)

संपादकत्व--पुं०[सं० संपादक+त्व] संपादक का कार्य या पद।

संपादकी--स्त्री०[सं० संपादक+हिं० ई (प्रत्य०)] संपादक का काम या पद। जैसे--उन्हें एक पत्र की संपादकी मिल गई है।

संपादकीय--वि० [सं०] १. संपादक-संबंधी। संपादक का। २. स्वयं संपादक का लिखा हुआ।

वि० संपादक द्वारा लिखी हुई टिप्पणी या अग्रलेख।

संपादन--पुं०[सं०] [वि० संपादनीय, संपादी, संपाद्य] १. किसी काम को अच्छी और ठीक तरह से पूरा करना। अंजाम देना। २. तयार या प्रस्तुत करना। ३. ठीक या दुरुस्त करना। ४. किसी पुस्तक का विषय या सामयिक पत्र के लेख आदि अच्छी तरह देखकर, उनकी त्रुटियाँ आदि दूर करके और उनका ठीक क्रम लगाकर उन्हें प्रकाशन के योग्य बनाना। (एडिटिंग)

संपादयिता--वि० [सं० सम्√ पद् (स्थान आदि)+णिच्-तृच्, संपादयितृ]=संपादक।

संपादित--भू० कृ०[सं० सम्√ पद् (स्थान आदि)+णिच्--क्त] १. (काम) जो पूरा किया गया हो। २. (ग्रन्थ, सामयिक-पत्र या लेख) जिसका क्रम, पाठ आदि ठीक करके सम्पादन किया गया हो।

संपादी--वि०[सं० संपादित] [स्त्री० संपादिनी]=संपादक।

संपाद्य--वि०[सं०] १. जिसका संपादन किया जाने को हो या होने को हो। २. दे० 'निर्मेय'।

संपालक--पुं० [सं० सं√ पाल् (पालन करना)+णिच्--ण्वुल्--अक] =अभिरक्षक।

संपित--पुं०[देश०] असम में होनेवाला एक प्रकार का बांस जिसके टोकरे बनते हैं।

संपिष्ट--भू० कृ० [सं० सम्√ विष् (चूर करना)+क्त] १. अच्छी तरह पीसा हुआ। २. अच्छी तरह दबाकर नष्ट किया हुआ।

संपीडन--पुं०[सं०] [भू० कृ० संपीडित] १. चारों ओर से इस प्रकार दबाना कि आयति या विस्तार कम हो जाय। (काम्प्रेशन) २. निचोड़ना, मलना या मसलना। ३. बहुत अधिक कष्ट या दुःख देना। पीड़ित करना। ४. साहित्य में, शब्दों के उच्चारण का एक दोष जो उस दशा में माना जाता है जब किसी शब्द पर व्यर्थ ही बहुत जोर दिया या जोर से उच्चारण किया जाता है।

संपुट--पुं०[सं० सम्√ पुट् (संबंध रखना)+क] १. किसी पदार्थ को कुछ मोड़कर दिया हुआ वह रूप जिसके अन्दर कुछ खाली जगह बन गई हो और इसी लिए जिसमें कुछ रखा जा सके। आधान या पात्र का-सा गोलाकार और अन्दर से खाली अवकाश रखनेवाला रूप। जैसे--पत्तों का संपुट, हथेली का संपुट। २. पत्तों का बना हुआ दोना। ३. ढक्कन-दार डिब्बा, पिटारी या सन्दूक। ४. हथेली की अंजलि। ५. फूल के दलों का ऐसा समूह जिसके बीच खाली जगह हो। कोश। ६. वैद्यक में औषध पकाने या रस बनाने के समय किसी पात्र को दिया जानेवाला वह रूप जिसमें गीली मिट्टी आदि से उसका मुँह बन्द करके उसे चारों ओर से गीली मिट्टी से लपेट देते हैं। ७. मृतक की खोपड़ी। कपाल। खप्पर। ८. लेन-देन में वह धन जो उधार दिया गया हो या किसी के यहाँ बाकी पड़ा हो। ९. कटसरैया का फूल। कुरवक।

संपुटक- पुं० [सं० संपुट+कन्] १. ढकने की चीज। आवरण। २. गोल डिब्बा या पिटारा। ३. एक प्रकार का आसन या रतिबन्ध।

संपुटिका--स्त्री०[सं०] १. औषध के रूप में खाने के लिए ऐसी गोली या टिकिया जो ऐसे आवरण के अन्दर बन्द हो जो किसी खाद्य पदार्थ का बना हो। २. कोई ऐसा संपुट किसी जो दूसरे पदार्थ के चारों ओर से आवृत्त या बन्द हो। (कैपस्यूल)

संपुटी--स्त्री०[सं० संपुट-ङीप्] एक तरह की छोटी कटोरी जिसमें पूजन के लिए घिसा हुआ चन्दन, अक्षत आदि रखते हैं।

संपुष्टि--स्त्री०[सं०] १. अच्छी तरह होनेवाली पुष्टि। २. दे० 'परि-पुष्टि।'

संपूज्य--वि० [सं० सम्√ पूज् (पूजा करना)+ण्यत्] बहुत आदरणीय या पूज्य।

संपूरक--वि० [सं०] १. संपूर्ण या पूरा करनेवाला। २. विशेष रूप से किसी पूर्ण वस्तु की उपादेयता, सार्थकता आदि बढ़ाने के लिए उसके अंत में जोड़ा या मिलाया जानेवाला। 'अनुपूरक' से भिन्न। (काम्प्लीमेन्टरी)

विशेष--अनुपूरक और संपूरक में मुख्य अन्तर यह है कि अनुपूरक तो किसी पूरी चीज के पीछे या बाद में स्वतन्त्र इकाई के रूप में जोड़ा या लगा हुआ होता है, परन्तु संपूरक किसी चीज या बात का कोई अभाव या कमी पूरी करने के लिए आकर उसमें मिल जाता है।

पुं० वह अंश, मात्रा या भाव जो किसी पदार्थ में उसे पूर्ण करने के लिए लगाया जाता हो या लगाना आवश्यक होता हो। किसी चीज को पूर्ण बनाने के लिए बाद में जोड़ा जानेवाला अंग। 'अनुपूरक' से भिन्न। (काम्प्लिमेन्ट)

संपूरण--पुं०[सं० सम्√ पूर (पूरा होना)+ल्युट्--अन] [भू० कृ० संपूरित] अच्छी तरह भरना।

संपूर्ण--वि०[सं०] १. अच्छी तरह भरा हुआ। २. आदि से अंत तक सब। पूरा। सारा। ३. पूरा या समाप्त किया हुआ। ४. जो अपने पूर्ण रूप में हो।

पुं० १. संगीत में ऐसा राग जिसमें सातों स्वर लगते हों। २. दार्शनिक क्षेत्र में, आकाश नामक भूत।

संपूर्ण ओड़व--पुं०[सं०] संगीत में ऐसा राग जो आरोही में संपूर्ण और अवरोही में ओड़व हो।

संपूर्णतः--अव्य० [सं० संपूर्ण+तसिल] पूरा पूरा। पूर्ण रूप से।

संपूर्णतया--अव्य० [सं० संपूर्ण+तल्--टाप् टा] संपूर्णतः।

संपूर्णता--स्त्री० [सं० संपूर्ण+तल्--टाप्] १. संपूर्ण होनेकी अवस्था या भाव। पूरापन। २. अन्त। समाप्ति।

संपेला†--पुं०=सँपोला।

संपृक्त--भू० कृ० [सं० सम्√ पृ (मिलना)+क्त] १. जिससे संपर्क स्थापित हो चुका हो या किया गया हो। २. संबद्ध। २. लगा या सटा हुआ।

संपृष्ट--वि० [सं० सं√प्रच्छ् (पूछना)+क्त-] १. जिससे प्रश्न किए गये हों। २. जिससे पूछ-ताछ की गई हो।

संपेखना†--स० [सं० संप्रेक्षण] देखना।

सँपेरा--पुं० [हिं० साँप+एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० सँपेरिन] वह जो साँप पकड़कर पालता और लोगों को उनके तमाशे दिखाता हो। मदारी।

सँपेला†--पुं०=सँपोला।

संपै†--स्त्री० १.=संपत्ति। २. =शंपा। (बिजली)।

सँपोला--पुं० [हिं० साँप+ओला (अल्पा० प्रत्य०)] १. साँप का छोटा बच्चा। २. लाक्षणिक अर्थ में, खतरनाक व्यक्ति।

सँपोलिया†--पुं० [हिं० साँप+ओलिया] =सँपेरा।

संपोषक--वि० [सं०] [स्त्री० संपोषिका] १. भली-भाँति पालन-पोषण करनेवाला। २. अच्छी तरह बढ़ानेवाला।

संपोषण--पुं० [सं०] [भू० कृ० संपोषित, वि० संपोष्य] अच्छी तरह पोषण करना।

संपोष्य--वि०[सं० सम्√पुष् (पालन करना)+ण्यत्] जिसका संपोषण हो सकता हो या होना उचित हो।

संप्रक्षाल--वि०[सं० सम् प्र√ क्षाल् (धोना)+अच्] पूर्ण विधि से स्नान करनेवाला।

पुं० १. एक प्रकार के यति या साधु। २. एक ऋषि जिनके संबंध में कहा गया है कि ये प्रजापति के चरणोदक से उत्पन्न हुए थे।

संप्रक्षालन--पुं०[सं० संप्र √क्षाल् (धोना)+ल्युट्+अन] १. अच्छी तरह धोना। खूब धोना। २. पूरी तरह से स्नान करना। ३. जल-प्रलय।

संप्रज्ञात--भू० कृ० [सं०] अच्छी तरह जाना हुआ।

पुं० योग में समाधि का एक भेद जिसमें विषय-भावना बनी रहती है।

संप्रति--अव्य० [सं०] १. इस समय। अभी। २. वर्तमान समय में। ३. किसी के सामने। ४. तुलना या मुकाबले में। ५. ठीक तरह से।

पुं० १. पूर्व अवसर्पिणी के २४वें अर्हत का नाम। (जैन) २. अशोक के पुत्र कुणाल का एक पुत्र।

संप्रतिपत्ति--स्त्री० [सं०] १. पहुँच। गुजर। २. प्राप्ति। लाभ। ३. किसी बात का ठीक और पूरा ज्ञान। ४. बुद्धि। समझ। ५. किसी के साथ होनेवाली मत या विचार की एकता। मतैक्य। ६. कार्य का संपादन। ७. मंजूरी। स्वीकृति। ८. अभियुक्त द्वारा न्यायालय में सच्ची बात मानना या कहना।

संप्रतिपन्न--भू० कृ० [सं० सम्-प्रति√पद् (स्थान आदि)+क्त] १. आया या पहुँचा हुआ। उपस्थित। २. मंजूर। स्वीकृत। ३. उपस्थित बुद्धि। प्रत्युत्पन्न-मति।

संप्रतीति--स्त्री० [सं० सम्-प्रति√इ (गमनादि)+क्तिन्] १. पूर्ण विश्वास। ३. पूर्ण ज्ञान। ३. विनय।

संप्रत्यय--पुं० [सं० सं०-प्रति√इ (गमनादि)+घञ्] १. स्वीकृति। मंजूरी। २. दृढ़ विश्वास। ३. सम्यक् ज्ञान या बोध। ४. मन की भावना या विचार।

संप्रदा†--पुं०=संप्रदाय।

†स्त्री०=संपदा।

संप्रदान--पुं० [सं० सम्-प्र√दा (देना)+ल्युट्-अन] १. दान देने की क्रिया या भाव। २. दीक्षा के समय शिष्य को गुरु का मंत्र देना। ३. उपहार। भेंट। ४. व्याकरण में, एक कारक जो उस संज्ञाकी स्थिति का बोध कराता है जिसके निमित्त कोई कार्य किया गया होता है। इसकी विभक्ति 'को' तथा 'के लिए' है। ५. किसी की वस्तु उसे देना या उसके पास तक पहुँचाना। (डेलिवरी)

संप्रदाय--वि० [सं०] [वि० सांप्रदायिक] देनेवाला।

पुं० १. परम्परा से चला आया हुआ ज्ञान, मत या सिद्धान्त। २. परम्परा से चली आई हुई परिपाटी, प्रथा या रीति। ३. गुरु-परम्परा से मिलनेवाला उपदेश या मंत्र। ४. किसी धर्म के अन्तर्गत कोई विशिष्ट मत या सिद्धान्त। ५. उक्त प्रकार का मत या सिद्धान्त माननेवालों का वर्ग या समूह। जैसे--वैष्णव या शैव सम्प्रदाय। फिरका। ६. कोई विशिष्ट धार्मिक मत या सिद्धान्त। धर्म। जैसे--भारत में अनेक मतों और सम्प्रदायों के लोग रहते हैं। ७. किसी विचार, विषय या सिद्धान्त के संबंध में एक ही तरह के विचार या मत रखनेवाले लोगों का वर्ग। (स्कूल) ८. मार्ग। रास्ता।

संप्रदायक†--वि०=सांप्रदायिक।

संप्रदायी (यिन्)--वि० [सं० सम्-प्र√दा (देना)+णिनि-युक्] [स्त्री० संप्रदायिनी] १. देनेवाला। २. कोई काम करने या कोई बात सिद्ध करनेवाला। ३. किसी संप्रदाय का अनुयायी।

संप्रभु--वि० [सं०] ऐसा प्रभु या सत्ताधारी जिसके ऊपर और कोई प्रभु या सत्ताधारी न हो। सर्वप्रधान प्रभु अथवा सत्ताधारी (व्यक्ति या राष्ट्र)। (सावरेन)

संप्रभुता--स्त्री० [सं०] संप्रभु होने की अवस्था, गुण या भाव। (सावरेंटी)

संप्रयुक्त--भू० कृ० [सं० सम्-प्र√युज् (मिलाना)+क्त] १. किसी के साथ अच्छी तरह जोड़ा या मिलाया हुआ। २. किसी के साथ बाँधा या लगाया हुआ। ३. प्रयुक्त।

संप्रयोग--पुं० [सं० सम्-प्र√युज् (संयोग करना)+घञ्] १. जोड़ने या मिलाने की क्रिया या भाव। एक साथ करना। मिलाना। २. मेल। समागम। ३. मैथुन। संभोग। ४. उपयोग। प्रयोग। ५. ज्योतिष में, किसी नक्षत्र के साथ चन्द्रमा का होनेवाला योग। ६. इन्द्रजाल। जादूगरी। ७. उच्चाटन, मोहन, वशीकरण आदि का प्रयोग।

संप्रयोगी (गिन्)--पुं० [सं० सम्-प्र√युज् (संबंध करना)+घिनुण्, संप्रयोग+इनि वा] [स्त्री० संप्रयोगिनी] १. कामुक। लंपट। २. ऐन्द्रजालिक। जादूगर।

संप्रयोजन--पुं० [सं० सम्-प्र√युज् (मिलाना)+ल्युट्-अन] [वि० संप्रयोजनीय, संप्रयोज्य, भू० कृ० संप्रयोजित, संप्रयुक्त] अच्छी तरह जोड़ना या मिलाना।

संप्रवर्तक--वि०[सं० सम्-प्र√वृत् (वर्तमान रहना)+ण्वुल्-अक] १. चलानेवाला। २. जारी या प्रचलित करनेवाला।

संप्रवर्तन--पुं० [सं० सम-प्र√वृत् (वर्तमान रहना)+ल्युट्-अन] [वि० संप्रवर्तनीय] १. गीति देना। चलाना। २. घुमाना। मोड़ना। ३. जारी या प्रचलित करना।

संप्रवर्ती (तिन्)--वि० [सं० सम्-प्र√वृत (रहना)+णिनि] ठीक या व्यवस्थित करनेवाला।

संप्रवाह--पुं० [सं० सं–प्र√वह् (ढोना)+घञ्] लगातार चलता रहनेवाला क्रम या होता रहनेवाला प्रवाह।

संप्रवृत्त—वि० [सं० सम्-प्र√वृत्त् (रहना)+क्त] १. आगे आया या बढ़ा हुआ। अग्रसर। २. प्रस्तुत। मौजूद। ३. आरम्भ या प्रचलित किया हुआ।

संप्रवृत्ति--स्त्री० [सं० सम्-प्र√वृत्त् (रहना)+क्तिन्] १. आसक्ति। २. किसी का अनुकरण करने की इच्छा। ३. उपस्थिति। मौजूदगी। ४. मिलकर एक होना। संघटन।

संप्रसादन--पुं० [सं०] [वि० संप्रसाद्य, भू० कृ० संप्रसादित] किसी को अच्छी तरह या सब प्रकार से प्रसन्न करना।

संप्रसाद्य--वि० [सं०] [स्त्री० संप्रसाद्या] जिसे सब प्रकार से प्रसन्न और संतुष्ट रखना आवश्यक या उचित हो।

संप्राप्त—भू० कृ० [सं०] [भाव० संप्राप्ति] १. आया या पहुँचा हुआ। उपस्थित। २. मिला हुआ। प्राप्त। ३. जो घटित हुआ हो।

संप्राप्ति--स्त्री० [सं०] १. संप्राप्त होने की अवस्था या भाव। २. शरीर विज्ञान में, वह क्रिया या प्रक्रम जो शरीर में किसी रोग के कीटाणु पहुँचने, उस रोग के परिपक्व होने और बाह्य लक्षण या स्वरूप होने तक होती है। (इन्क्यूबेशन) जैसे —चेचक का संप्राप्ति-काल दो सप्ताह माना गया है। ३. घटना आदि का उपस्थित या घटित होना।

संप्रेक्षक—पुं० [सं०-सम्-प्र√इक्ष् (देखना)+ण्वुल–अक] देखनेवाला। दर्शक।

संप्रेक्षण—पुं० [सं० सम्-प्र√इक्ष् (देखना)+ल्युट्–अन] [भू० कृ० संप्रेक्षित, वि० संप्रेक्ष्य] १. अच्छी तरह देखना। २. जाँच-पड़ताल या देख-भाल करना।

संप्रेक्ष्य—वि० [सं०] जिसका संप्रेक्षण होने को हो या हो सकता हो। देखने या निरीक्षण करने योग्य।

संप्रेषक—वि० [सं०] संप्रेषण करनेवाला। (ट्रान्समिटर)

संप्रेषण—पुं० [सं०] १. अच्छी तरह एक जगह से दूसरी जगह भेजना। २. मार्ग, माध्यम या साधन बनकर कोई चीज (जैसे–आज्ञा, प्रकाश, विद्युत्, समाचार आदि) एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाना। (ट्रान्समिशन) ३. काम या नौकरी से अलग करना। बरखास्त करना।

संप्रेषणी—स्त्री० [सं० संप्रेषण-ङीष्] हिन्दुओं में मृतक का एक कृत्य जो द्वादशाह को होता है।

संप्रेष—पुं० [सं० सम्-प्र√इष् (इच्छा करना)+घञ्] १. यज्ञादि में ऋत्विजों को नियुक्त करना। २. आमंत्रण। आह्वान।

संप्रोक्त—भू० कृ० [सं० सम्-प्र√वच् (कहना)+क्त–व-ड] १. संबोधित। २. कथित। ३. घोषित।

संप्रोक्षण—पुं० [सं०] [भू० कृ० संप्रोक्षित, वि० संप्रोक्ष्य] १. खूब पानी छिड़ककर (मंदिर आदि) साफ करना। ३. धोना। ३. मदिरा आदि का उत्सर्ग।

संप्लव—पुं० [सं० सम्√प्लु (डूबना)+अप्] [भू० कृ० संप्लुत] १. पानी की बाढ़। २. बहुत बड़ी राशि या समूह। ३. हो-हल्ला। शोर-गुल। ४. आन्दोलन। हलचल।

संप्लुत—भू० कृ० [सं० सम्-प्लु (डूबना)+क्त] १. जल से तराबोर। २. डूबा हुआ।

संफेट—पुं० [सं०] १. क्रोध में आकर किसी से भिड़ना। भिड़ंत। लड़ाई। २. कहासुनी। तकरार।

संबंध—पुं० [सं०] १. किसी के साथ बँधना, जुड़ना या मिलना। २. वह स्थिति जिसमें कोई किसी के साथ जुड़ा बँधा या लगा रहता है। ताल्लुक। लगाव। (कनेक्शन) ३. एक कुल में होने के कारण अथवा विवाह, दत्तक आदि संस्कारों के कारण होनेवाला पास्परिक लगाव। नाता। रिश्ता। ४. आपस में होनेवाली बहुत अधिक घनिष्ठता या मेल-जोल। ५. किसी प्रकार का मेल या संयोग। ६. विवाह। शादी। ७. व्याकरण में एक कारक जिससे एक शब्द के साथ दूसरे शब्द का संबंध या लगाव सूचित होता है। जैसे--राम का घोड़ा। ८. प्रसंगवश किसी सिद्धान्त का किया जानेवाला उल्लेख। हवाला। ९. ग्रन्थ। पुस्तक। १०. एक प्रकार की ईति या उपद्रव।

संबंधक--वि० [सं० संबंध+कन्] १. संबंध रखनेवाला। संबंधी। विषयक। २. उपयुक्त। योग्य। ३. जो दो वस्तुओं, व्यक्तियों आदि में पारस्परिक संबंध करता या कराता हो (कनेक्टिंग)

पुं० १. रक्त या विवाह का संबंधी। २. मैत्री। ३. मित्र। ४. रिश्तेदार। संबंधी। ५. राजाओं में होनेवाली वह संधि जो आपस में विवाह-संबंध स्थापित करके की जाती थी।

संबंध तत्त्व--पुं० [सं०] भाषा विज्ञान में, वह तत्त्व जो किसी पद या वाक्य में आये हुए अर्थ तत्त्ववाले शब्दों का पारस्परिक संबंध मात्र बतलाता है। 'अर्थतत्त्व' का विपर्याय। (मॉरफ़ीम) जैसे---'समाज का स्वरूप' में 'का' शब्द संबंधतत्त्ववाला, है; क्योंकि वह 'समाज' और 'स्वरूप' में संबंध-मात्र स्थापित करता है।

संबंधातिशयोक्ति--स्त्री० [सं० मध्यम० स०] अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें पारस्परिक संबंध का अभाव होते हुए भी संबंध दिखाया जाता है।

संबंधित—भू० कृ० [सं०] जिसका किसी से संबंध स्थापित हो। संबद्ध।

संबंधी (धिन्)—वि० [सं०] [स्त्री० संबंधिनी] १. संबंध या लगाव रखनेवाला। २. किसी विषय से लगा हुआ। विषयक।

पुं० १. वह जिसके साथ रक्त अथवा विवाह का सम्बन्ध हो। रिश्तेदार। २. दे० 'समधी'।

संबंधु--पुं० [सं० सम्√बन्ध् (बाँधना)+ड] १. आत्मीय। भाई-बिरादर। २. नातेदार। सम्बन्धी।

संब†--पुं०=शंब।

संबत†--पुं०=संवत्।

संबद्ध--वि० [सं०] १. किसी के साथ जुड़ा, मिला या लगा हुआ। २. किसी प्रकार का संबंध रखनेवाला।

संबद्ध लिंग--पुं० दे० 'लिंग' (न्याय-शास्त्रवाला विवेचन)।

संबद्धीकरण—पुं० [सं०] १. संबद्ध करने की क्रिया या भाव। २. विद्यालय, संस्था आदि को अपना अंग या सदस्य मानकर उसे अपने साथ संबद्ध करना। अपने परिवार या संघटन का सदस्य बनाना। (एफ़िलिएशन)

संबरन†—पुं०=संवरण।

संबरना*—स० [सं० संवरण] संवरण करना। रोकना।

संबल--पुं० [√सम्ब्+कलच्] १. कहीं जाने के समय रास्ते के लिए साथ में रखा हुआ खाने-पीने का सामान। २. कोई ऐसी चीज, बात या साधन जिससे किसी काम या बात में आगे-बढ़ने में पूरी-पूरी सहायता मिलती हो या जिसका आश्रय लिया जाता हो। (रिसोरसेज) ३. सहारा। ४. गेहूँ की फसल का एक रोग जो पूरब की हवा अधिक चलने से होता है। ४. सेमल का वृक्ष।

†पुं०=संबुल (संखिया)।

संबाद*--पुं०=संवाद।

संबाध--पुं०[सं०सम्√बाध् (बाधा देना)+घञ्, ब० स०] १. बाधा। अड़चन। २. भीड़। समूह। ३. संघर्ष। ४. भग। योनि। ५. कष्ट। तकलीफ। ६. नरक का मार्ग।

वि० १. संकीर्ण। २. भरा हुआ। ३. जनाकीर्ण।

संबाधक--वि० [सं० सम्√बाध (बाधा देना)+ण्वुल्–अक] १. बाधा डालनेवाला। बाधक। २. तंग करने या सतानेवाला।

संबाधन--पुं० [सं० ब० स०] १. बाधक होना। बाधा डालना। २. रेल-पेल। ३. रुकावट। ४. द्वारपाल। ५. शूल की नोक। ६. भग। योनि।

†पुं०=शंबुक या शंबूक।

संबुद्ध--वि० [सं० सम्√बुध् (ज्ञान प्राप्त करना)+क्त] १. जिसे बोध या ज्ञान हो चुका हो। २. जिसे ज्ञान प्राप्त हो चुका हो। ३. जागा हुआ। जाग्रत। ४. अच्छी तरह जाना हुआ। ज्ञात।

पुं० १. ज्ञानी। २. गौतम बुद्ध। ३. जैनों के जिन देव।

संबुद्धि--स्त्री० [सं० सम्√बुध् (ज्ञान प्राप्त करना) क्तिन्] १. संबुद्ध होने की अवस्था या भाव। २. पूरी तरह से होनेवाला ज्ञान या बोध। ३. बुद्धिमत्ता।.समझदारी। ४. आह्वान। पुकार।

संबुल--पुं० [अ० सुंबुल] १. बाल-छड़ नामक सुगंधित वनस्पति। २. अनाज की बाल जिसमें दाने रहते हैं।

संबुल खताई--पुं० [फा०] तुर्किस्तान में होनेवाला एक प्रकार का पौधा जो औषध के काम में आता है और जिसकी पत्तियों की नसें मिठाई में पड़ती हैं।

संबेसर†--पुं० [सं० सं+हिं० बसेरा] नींद। (डिं०)

संबोध--पुं० [सं० सम्√बुध् (ज्ञान करना)+घञ्] १. सम्यक् ज्ञान। पूरा बोध। २. अच्छी और पूरी जानकारी। ३. ढारस। सान्त्वना।

संबोधक--वि० [सं०] संबोधन करनेवाला।

ोधन--पुं० [सं० सम्√बुध् (ज्ञान प्राप्त करना)+ल्युट्–अन] [वि० संबोधित, संबोध्य] १. नींद से उठाना। जगाना। ४. ज्ञान या बोध कराना। ३. समझाना-बुझाना। ४. अह्वान करना। पुकारना। ५. व्याकरण में, वह शब्द जिससे किसी को पुकारा जाता है।

विशेष—भूल से इसकी गिनती कारकों में की जाती है, जबकि यह क्रिया के रूप का साधन नहीं करता है।

६. वह स्थिति जिसमें किसी से कुछ कहने के लिए उसके प्रति ध्यान दिया या मुख किया जाता है।

संबोधनगीति—स्त्री० [सं०] आधुनिक साहित्य में ऐसा विशद जाति-काव्य जो किसी को संबोधित करके लिखा गया हो और उच्च भावनाओं से युक्त हो। (ओड) जैसे--दिनकर कृत 'हिमालय' या पंत कृत 'भावी पत्नी के प्रति'।

संबोधना*--स० [सं०] १. समझाना-बुझाना। बोध कराना। २. ढारस या सान्त्वना देना।

संबोधि--स्त्री० [सं० संबोध+इनि] पूर्ण ज्ञान। (बौद्ध)

संबोधित--भू० कृ० [सं०] १. जिसे संबोधन किया गया हो। २. जिसका ध्यान आकृष्ट किया गया हो। ३. जिसे बोध कराया गया हो। ४. (विषय) जिसका ज्ञान या संबोधन कराया गया हो।

संबोध्य--वि० [सं०] १. जिसे संबोधन किया जाय। २. जिसे बोध या ज्ञान कराया जाय।

संभ†--पुं०=शंभु।

संभक्त--भू० कृ०[सं० सम्√भज् (भाग करना)+क्त] [भाव० संभक्ति] १. बँटा हुआ। विभक्त। २. भाग या हिस्सा पाने या लेनेवाला। ३. भोग करनेवाला।

पुं० अच्छा और पूरा भक्त।

संभक्ति--स्त्री०[सं० सम्√भज् (भाग करना)+क्तिन्] १. विभाजन। २. विभाग। ३. उपभोग। ४. उत्तम और पूरी भक्ति।

संभक्ष--वि०[सं० सम्√भक्ष् (खाना)+अच्] खानेवाला (समास में)।

पुं० १. किसी के साथ बैठकर खाना। सहभोज। २. खाद्य पदार्थ।

संभग्न--वि०[सं०] १. बहुत टूटा फूटा। २. हारा हुआ। परास्त। ३. विफल।

पुं० शिव।

संभर—वि० [सं० सम्√भृ (भरण करना)+अच्] भरण पोषण करनेवाला।

पुं०=साँभर (झील)।

संभरण—पुं० [सं० सम्√भृ (भरण करना)+ल्युट्—अन] [वि० संभरणीय, संभृत] १. पालन-पोषण। २. एकत्र करना। चयन। संचय। ३. किसी काम या बात की योजना या विधान। ४. सामग्री। सामान। ५. लोगों की आवश्यकता की चीजें उनके पास पहुँचाने की व्यवस्था। समायोजन। (सप्लाई) ६. यज्ञ की वेदी में लगाई जानेवाली ईंटें।

संभरणी—स्त्री०[सं० संभरण—ङीप्] सोमरस रखने का एक यज्ञपात्र।

सँभरना†—अ०=संभलना।

†स०[सं० स्मरण]=स्मरण करना।

संभल--पुं०[सं०] १. किसी लड़की से विवाह करने की इच्छा रखनेवाला व्यक्ति। २. स्त्रियों का दलाल। ३. वह स्थान जहाँ विष्णुव्यास नामक ब्राह्मण के घर विष्णु का दसवाँ कल्कि अवतार होने को है। इसे कुछ लोग मुरादाबाद जिले का संभल नाम का कसबा समझते हैं।

सँभलना--अ० [सं० संभरण] १. किसी ओर गिरने, फिसलने, लुढ़कने, भ्रष्ट आदि होने से रुकना। २. किसी बोझ आदि का रोका या किसी कर्तव्य आदि का निर्वाह किया जा सकना। ३. किसी आधार या सहारे पर रुका रहना। ४. होशियार या सावधान रहना। ५. चोट या हानि से बचाव करना। ६. स्वस्थ होना। ७. बुरी दशा से बचकर रहना। ८. अच्छी दशा में आना।

*स०[सं० श्रवण] सुनना।

सँभला†--पुं०[हिं० सँभलना]एक बार बिगड़कर फिर सँभली हुई फसल।

सँभली--स्त्री० [सं० संभली] कुटनी। दूती।

संभव--वि०[सं०] १. (काम) जो किया जा सकता हो अथवा हो सकता हो। किए जाने अथवा हो सकने के योग्य। २. जिसके घटित होने की संभावना हो। जिसके संबंध में यह समझा या सोचा जा सकता हो कि ऐसा हो सकता है। मुमकिन। (पॉसिबुल)

पुं० १. उत्पत्ति। जन्म। पैदाइश। जैसे--कुमार संभव। २. कोई काम या बात घटित होने की अवस्था या भाव। ३. मूल कारण। हेतु। मिलन। ४. संयोग। ५. स्त्री-प्रसंग। सहवास। ६. उपयुक्तता। समीचीनता। ७. किसी को अंतर्गत कर सकने की योग्यता। समाई। ८. ध्वंस। नाश। ९. मान, मूल्य आदि में समान होने की अवस्था या भाव जो तर्क में एक प्रकार का प्रमाण माना जाता है। जैसे--एक रुपया और सौ नये पैसे दोनों बराबर हैं। १०. वर्तमान अवसर्पिणी के तीसरे अर्हत। (जैन) ११. बौद्धों के अनुसार एक लोक का नाम।

संभवतः--अव्य० [सं० संभू+तसिल्] १. हो सकता है। संभव है कि। मुमकिन है कि। गालिबन। २. संभावना है कि। हो सकता है कि।

संभवन--पुं०[सं० सम्√भू (होना)+ल्युट्--अन] [वि० संभवनीय, संभाव्य, भू० कृ० संभूत] १. उत्पन्न होना। पैदा होना। २. संभव या मुमकिन होना। ३. घटित या संभूत होना।

संभवना*--स० [सं० सम्भव+हिं० ना (प्रत्य०)] उत्पन्न करना। पैदा करना।

अ० उत्पन्न होना।

संभवनाथ--पुं०[सं० ष० त०] वर्तमान अवसर्पिणी के तीसरे तीर्थंकर। (जैन)

संभवनीय--वि० [सं० सम्√भू (होना)+अनीयर्] १. जो हो सकता हो। मुमकिन। २. जिसकी संभावना हो।

संभविष्णु--पुं०[सं० सम्√भू(होना)+इष्णुच्] १. जनक। २. उत्पादक। ३. स्रष्टा।

संभवी--वि० [सं० संभविन्] १. किसी से संभूत या उत्पन्न होनेवाला। जैसे--स्वतः संभवी वस्तु या हेतु। २. जो हो सकता हो। मुमँकिन। संभव।

संभव्य--पुं०[सं० सम्√ भू (होना)+यत्] कपित्थ। कैथ।

वि० जो हो सकता हो। संभव।

संभाखन†--पुं०=संभाषण।

सँभार†--स्त्री०=सँभाल।

संभार--पुं०[सं०]१. एकत्र या इकट्ठा करना। संचय। २. साज-सामान। सामग्री। ३. आयोजन। तैयारी। ४. धन-संपत्ति। ५. दल। झुंड। ६. ढेर। राशि। ७. पालन-पोषण। ८. देख-रेख। निगरानी। ९. नियंत्रण। निरोध।

संभार तंत्र--पुं०[सं०]आधुनिक युद्ध कला का वह अंग जिसमें सेना के संचालन, निवास आदि और सैनिकों को उनकी आवश्यक सामग्री पहुँचाने की व्यवस्था होती है।

सँभारना*--स० [सं० स्मरण] स्मरण करना। याद करना।

†स०=सँभालना।

संभाराधिप--पुं०[सं०] राजकीय पदार्थों का अध्यक्ष। तोशा खाने का अफसर। (शुक्रनीति)

संभारी (रिन्)--वि०[सं० संभार+इनि सं० √भृ (भरण करना)+णिनि, सम्भारिन्] [स्त्री० संभारिणी] १. संभार करनेवाला। २. भरा हुआ। पूर्ण।

सँभाल--स्त्री०[सं० सम्भार]१. सँभलने या सँभालने की क्रिया या भाव। २. कोई चीज संभालकर रखने की क्रिया या भाव। देख-रेख। हिफाजत। ३. शरीर के अंग आदि संभालकर रखने की शक्ति या समझ। तन-बदन की सुध। जैसे--वह इतना वृद्ध हो गया है कि उसे शरीर की भी सँभाल नहीं रहती। ४. प्रबंध। व्यवस्था। जैसे--गृहस्थी की सँभाल। ५. किसी का किया जानेवाला पालन-पोषण।

सँभालना--स०[हिं० सँभलना का स०] १. ऐसी क्रिया करना जिससे कुछ या कोई सँभले। २. गिरते हुए को बीच में ही रोकना। बीच में ही पकड़ या रोक रखना। ३. बिगड़ते हुए के संबंध में ऐसी क्रिया करना कि वह अधिक बिगड़ने न पावे और धीरे धीरे सुधरने लगे। ४. ऐसी देख-रेख रखना कि बिगड़ने या नष्ट न होने पाए। निगरानी करना। जैसे--घर की चीजें सँभालकर रखना। ५. किसी का पालन-पोषण करना। ६. उचित प्रबंध या व्यवस्था करना। ७. कर्तव्य, कार्य-भार आदि अपने ऊपर लेकर उसका ठीक तरह से निर्वाह करना। जैसे--शासन का कार्य सँभालना। ८. यह देखना कि कोई चीज जितनी या जैसी होनी चाहिए उतनी या वैसी ही है न। जैसे--अपना सब सामान सँभाल लो। ९. अपने आपको आवेग-युक्त या क्षुब्ध न होने देना। जैसे--उस पर क्रोध मत करना; अपने आपको सँभाले रहना।

संयो० क्रि०--देना।--लेना।

सँभाला--पुं०[हिं० सँभलना]१. सँभलने या सँभालने की क्रिया या भाव। २. मरणासन्न व्यक्ति की वह स्थिति जिसमें वह कुछ समय के लिए थोड़ा चैतन्य हो जाता है और ऐसा जान पड़ता है कि उसकी स्थिति सँभल जायगी--वह मरने से बच जायगा। उदा०--बीमारे मुहब्बत ने लिया तह से सँभाला लेकिन वह सँभाले से सँभल जाय तो अच्छा।--कोई शायर।

क्रि० प्र० --लेना।

सँभालू--पुं०[हिं० सिंधुवार] श्वेत सिंधुवार वृक्ष।

संभावन--पुं०[सं० सम्√ भू (होना)+णिच्--ल्युट्--अन सम्भावन] [वि० संभावनीय, संभावितव्य, संभाव्य, भू० कृ० संभावित] १. कल्पना। भावना। अनुमान। २. इकट्ठा करना। ३. ठीक या पूरा करना। ४. आदर-सम्मान। ५. किसी के प्रति होनेवाली पूज्य बुद्धि या श्रद्धा। ६. पात्रता। योग्यता। ७. ख्याति। प्रसिद्धि। ८. स्वीकृति।

संभावना--स्त्री०[सं० संभावन-टाप्] १. किसी घटना या बात के संबंध की वह स्थिति जिसमें उस घटना के घटित होने या उस बात के पूरे होने की शक्यता होती है। ऐसा जान पड़ता है कि अमुक घटना या बात होना बहुत कुछ संभव प्रतीत होता है। (पॉसिबिलिटी) २. साहित्य में, उक्त के आधार पर एक प्रकार का अलंकार जिसमें इस बात का उल्लेख होता है कि यदि अमुक बात हो जाय तो अमुक बात हो सकती है। जैसे--एहि विधि उपजै लच्छि जब होइ सीय सम तूल।--तुलसी। ३ दे० 'संभावन'।

संभावनीय--वि०[सं० सम्√भू(होना)+णिच्---अनीयर्] १. जिसकी संभावना हो या हो सकती हो। २. जिसकी कल्पना की जा सकती हो। ध्यान या विचार में आ सकने योग्य।

संभावित---भू० कृ०[सं०]१ जिसकी कल्पना या विचार किया गया हो। २. उपस्थित या प्रस्तुत किया हुआ। ३. आदृत। ४. प्रसिद्ध। ५. उपयुक्त। योग्य। ६. जिसकी संभावना हो । संभावनीय।
संभव। मुमकिन।

संभावितव्य---वि०[सं० सं√ भू (होना)+णिच्---तव्य] १. कल्पना या अनुमान के योग्य। २. जिसके सम्बन्ध में अनुमान या कल्पना की जा सके। ३. जिसका सत्कार किया जा सकता हो या किया जाने को हो। ४. मुमकिन। संभव।

संभाव्य--वि०[सं० सम्√ भू (होना)+णिच्---यत्] १. जिसकी संभावना हो। जो हो सकता हो। २. प्रशंसनीय। ३. आदर या पूजा का अधिकारी अथवा पात्र। पूज्य और मान्य। ४. जो कल्पना या विचार में आ सकता हो।

संभाव्यतः---अव्य०[सं०] संभावना है कि।

संभाष---पुं०[सं० सं√ भाष् (कहना)+घञ्, सम्भाष] १. कथन। बातचीत। संभाषण। २. करार। वादा।

संभाषण--पुं०[सं० सम्√ भाष् (भाषण करना)+ल्युट्---अन] [भू० कृ० संभाषित, वि० संभाषणीय, संभाष्य] आपस में होनेवाली बातचीत । वार्तालाप।

संभाषणीय---वि०[सं० सम्√ भाष् (भाषण करना)+अनीयर्] जिसके साथ बात-चीत या वार्तालाप किया जा सकता हो।

संभाषा---स्त्री०[सं० सम्√भाष् (कहना)+अङ---टाप्] १. संभाषण। २. किसी बात या विषय का तथ्य या स्वरूप जानने के लिए होनेवाला वाद-विवाद या विचार। (डिबेट)

संभाषित--भू० कृ०[सं० सं√ भाष् (भाषण देना)+क्त]१. अच्छी तरह कहा हुआ। २. जिसके साथ बात-चीत की गई हो।

संभाषी(षिन्)--वि०[सं०संभाष् (भाषण करना)+णिनि] [स्त्री०संभाषिणी]१. कहनेवाला। २. बातचीत करनेवाला।

संभाष्य--वि०[सं० सम्√ भाष् (बातचीत करना)+यत्]१. जिससे बातचीत करना उचित हो। जिससे वार्तालाप किया जा सकता हो। २. (विषय) जिस पर संभाष हो सके। (डिबेटेबुल)

संभिन्न—भू० कृ०[सं०] १. पूर्णतः टूटा हुआ। २. तोड़ा-फोड़ा हुआ। ३. जिसमें क्षोभ या हलचल उत्पन्न की गई हो। ४. गठा हुआ। ठोस। ५. खिला हुआ। प्रस्फुटित। ६. ठोस।

संभिन्न प्रलाप---पुं०[सं०] व्यर्थ की बातचीत जो बौद्ध शास्त्र के अनुसार एक पाप है।

संभीत---भू० कृ०[सं० सम्√भी (डरना)+क्त] बहुत अधिक डरा हुआ।

संभु---पुं०[सं० सम्√ भू (होना)+डु]=शंभु।

संभुक्त---भू० कृ०[सं० सं√ भुज् (खाना)+क्त] १. खाया हुआ। २. उपभोग किया या भोगा हुआ। प्रयोग में लाया हुआ। ३. अतिक्रांत।

संभूत—भू० कृ०[सं०] [भाव० संभूति] १. जो किसी दूसरे के साथ उत्पन्न हुआ हो। २. उत्पन्न। जात। ३. युक्त। सहित। ४. बिलकुल बदला हुआ। ५. उपयुक्त। योग्य। ६. बराबर। समान।

संभूति---स्त्री०[सं०]१. संभूत होने की अवस्था या भाव। उत्पत्ति। २. विभूति। वैभव। ३. बढ़ती । वृद्धि। ४. योग से प्राप्त होनेवाली विभूति या अलौकिक शक्ति। ५. क्षमता। शक्ति। ६. शक्ति का प्रदर्शन। ७. उपयुक्तता। ८. पात्रता। योग्यता। ९. मरीचि की पत्नी जो दक्ष प्रजापति की कन्या थी।

संभूय---अव्य०[सं०] १. एक में। एक साथ। २. साझे में।

संभूयकारी---पुं०[सं०] १. प्राचीन भारत में, किसी संघ में मिलकर व्यापार करनेवाला व्यापारी जो उस संघ का हिस्सेदार होता था। (स्मृति)२. किसी के साथ साथ काम करनेवाला।

संभूय-क्रय—पुं०[सं०] थोक माल बेचना या खरीदना। (कौ०)

संभूय-गमन—पुं०[सं०] शत्रु पर होनेवाली ऐसी चढ़ाई जिसमें सब सामंत भी अपने दलबल के साथ हों। (कामंदक)

संभूय-समुत्थान—पुं०[सं०] कई हिस्सेदारों के साथ मिलकर किया जानेवाला व्यापार। साझे का कारबार।

संभृत---भू० कृ०[सं०] [भाव० संभृति]१. इकट्ठा या जमा किया हुआ। एकत्र। २. पूरी तरह से भरा या लदा हुआ। ३. युक्त। सहित। ४. पाला-पोसा हुआ। ५. जिसका आदर या सम्मान किया गया हो। ६. तैयार। प्रस्तुत। ७. बनाया हुआ। निर्मित।
पुं० चीख-पुकार। हो-हल्ला।

संभृति—स्त्री० [सं० सम्√ भृ (भरण करना)+क्तिन्, सम्भृति]१. एकत्र करने की क्रिया या भाव। २. भीड़। समूह। ३. ढेर। राशि। ४. अधिकता। बहुतायत। ५. सामान। सामग्री। ६. पालन-पोषण।

संभृष्ट---भू० कृ०[सं० सम्√भ्रस्ज्(भूनना)+क्त—भ्र=भृ षत्व—ष्टुत्व] १. खूब भुना या तला हुआ। कुरकुरा। २. भूने या तले जाने के कारण जो करारा हो गया हो।

संभेद—पुं०[सं० सम्√ भिद् (पृथक् करना)+घञ्, सम्भेद] १. अच्छी तरह छिदना या भिदना। २. ढीला होकर खिसकना या स्थान-भ्रष्ट होना। ३. अलग या जुदा होना। ४. भेद-नीति। ५. प्रकार। भेद। ६. मिलन।

संभेदन—पुं० [सं० सम्√ भिद् (भेदन करना)+ल्युट्—अन] [वि० संभेदनीय, संभेद्य, भू० कृ० संभिन्न] अच्छी तरह छेदना या आर-पार घुसाना। खूब धँसाना।

संभेद्य—वि० [सं० सम्√भिद् (फाड़ना)+यत्] जिसका संभेदन होने को हो या हो सकता हो।

संभोग—पुं०[सं०] १. किसी वस्तु का भली-भाँति किया जानेवाला पूरा उपयोग। २. स्त्री और पुरुष का मैथुन। रति-क्रीड़ा। ३. हाथी के कुम्भ या मस्तक का एक विशिष्ट भाग। ४. साहित्य में शृंगार का वह अंश जो संयोग शृंगार कहलाता है। (दे० 'शृंगार')

संभोग काय—पुं०[सं०] बौद्धों के अनुसार वह शरीर जिसमें आकर इस संसार के सुख-दुःख आदि भोगे जाते हैं।

संभोग-शृंगार—पुं०=संयोग-शृंगार।

संभोगी (गिन्)---वि०[सं० संभोग+इनि] [स्त्री० संभोगिनी] १. संभोग करनेवाला। २. व्यवहार करके सुख भोगनेवाला।
पुं०१. विलासी व्यक्ति। २. कामुक व्यक्ति।

संभोग्य—वि० [सं० सम्√भुज् (भोग करना)+ण्यत्]१. जिसका भोग या

व्यवहार होने को हो। जो काम में लाया जाने को हो। २. जिसका भोग या व्यवहार हो सकता हो।

संभोज--पुं०[सं० सं√ भुज् (खाना)+घञ्] १. भोजन। खाना। २. खाद्य पदार्थ।

संभोजक--वि० [सं० सम्√भुज् (खाना)+ण्वुल-अक] १. भोजन करने या खानेवाला। २. स्वाद लेनेवाला।

संभोजन--पुं०[सं० सम्√भुज् (खाना)+ल्युट्—अन] [वि०संभोजनीय, संभोज्य, भू० कृ० संभुक्त] १. बहुत से लोगों का मिलकर खाना। २. भोज। दावत। ३. खाने की चीजें। भोजन की सामग्री।

संभोजनीय--वि० [सं० सम्√भुज् (खाना)+अनीयर्] १. जो खाया जाने को हो। २. जो खाया जा सकता हो।

संभोज्य—वि०[सं०]=संभोजनीय।

संभ्रम--पुं०[सं०]१. चारों ओर घूमना या चक्कर लगाना। फेरा। २. उतावली। जल्दबाजी। ३. घबराहट। ४. बेचैनी। विकलता। ५. किसी का सामना होने पर उससे सहमना या सिटपिटाना। ६. किसी को बड़ा समझकर उसके आगे आदरपूर्वक सिर झुकाना। ७. किसी की वह स्थिति जिसके कारण लोग उसका आदर करते या उससे सहमते हों। ८. किसी के प्रति होनेवाला पूज्य भाव। ९. गहरी चाह। उत्कंठा। १०. साहस। हौसला। ११. गलती। चूक। भूल। १२. छवि। शोभा। १३. शिव के एक प्रकार के गण।

संभ्रांत—भू० कृ० [सं०] [भाव० संभ्रांति] १. चारों ओर घुमाया हुआ। २. क्षुब्ध। ३. प्रतिष्ठित। सम्मानित।

संभ्रांति--स्त्री०[सं०]१. संभ्रांत होने की अवस्था या भाव। २. क्षोभ। ३. प्रतिष्ठा। सम्मान।

संभ्राजना*—अ०[सं० संभ्राज] पूर्णतः सुशोभित होना।

संमत—वि०[सं० संम्√ मन् (मानना)+क्त नलोप]=सम्मत।

संमान--पुं०[सं०√ मन् (मानना)+अच्]=सम्मान।

`**संमित**—भू० कृ०[सं०√ मा (नाप)+क्त]=सम्मित।

संमुख—वि०[सं०]१. जो किसी के सामने या किसी की ओर मुँह किए हो। २. सामने आया हुआ। उपस्थित। प्रस्तुत।

अव्य० समक्ष। सामने।

संमुखीन†—वि०=संमुख।

संमुद्रण—पुं०[सं०] बहुत बढ़िया छपाई करना।

संमेलन--पुं० [सं० सं√ मिल् (मिलना) ल्युट्—अक]=सम्मेलन।

संम्राज*—पुं०=साम्राज्य।

संयंता—वि० [सं० सम्√यम् (संयम करना)+तृच्, संयंतृ]१. संयम करनेवाला। निग्रही। २. शासक।

संयंत्रित—भू० कृ०[सं० संयंत्र+इतच्]१. बँधा या जकड़ा हुआ। बद्ध। २. दबाया या रोका हुआ। ३. बन्द।

संयत्—वि०[सं० सम्√यत्न (पद्य करना)+क्विप्—यम्+क्विप्—तुक वा] १. संबद्ध। लगा हुआ। २. जिसका क्रम न टूटे। लगातार होनेवाला।

पुं० १. नियत स्थान। २. करार। वादा। ३. लड़ाई-झगड़ा। ४. एक प्रकार की पुरानी चाल की ईंट जो वेदी बनाने के काम आती थी।

संयत—वि० [सं०]१. बँधा या जकड़ा हुआ। बद्ध। २. दबाया या रोका हुआ। ३. कैद या बन्द किया हुआ। ४. किसी प्रकार की मर्यादा या सीमा के अन्दर रहनेवाला। मर्यादित। (मॉडरेट) ५. क्रम, नियम आदि से व्यवस्थित किया हुआ। ६. उद्धत। सन्नद्ध। ७. इन्द्रिय-निग्रही। ८. सीमा के अन्दर रखा हुआ।

पुं०१. शिव। २. योगी।

संयत-प्राण--वि०[सं०] जिसने प्राणायाम के द्वारा प्राणवायु या श्वास को वश में किया हो।

संयतात्मा (त्मन्)--वि०[सं० ब० स०] जिसने मन को वश में किया हो। चित्तवृत्ति का विरोध करनेवाला।

संयति--स्त्री०[सं० सम्√यम् (रोकना)+क्तिन्—नलोप] १. संयत रहने या होने की अवस्था या भाव। २. निरोध। रोक।

संयद्वसु—पुं०[सं०] सूर्य की सात किरणों में से एक।

वि० धनवान्। सम्पन्न।

संयम--पुं० [सं० सम्√ यम्(संयम करना)+घञ्] [कर्ता संयमी, भू० कृ० संयमित, वि० संयत] १. दबा या रोक कर रखने की क्रिया या भाव। वश में रखना। २. धार्मिक तथा नैतिक दृष्टि से मन को विषय-वासनाओं को अनुचित, बुरे या हानिकारक मार्गों में प्रवृत्त होने से रोकना। चित्त की अनुचित वृत्तियों का निरोध। इंद्रिय-निग्रह। ३. शरीर-रक्षा अथवा स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक कार्यों या बातों से बचते हुए अलग या दूर रहना। परहेज। ४. व्यावहारिक दृष्टि से अपने आपको अनौचित्य की सीमा से बचाना। अनुचित कामों या बातों से अपने आपको रोकना। (मॉडरेशन) ५. क्रोध आदि में न आना। शांत बने रहना। ६. अच्छी तरह या व्यवस्थित रूप से बंद करना या बाँधना। जैसे—केश-संयम। ७. खुला न रहने देना। मूँदना। ८. बंधन। ९. योग में, ध्यान, धारणा, और समाधि का साधन। १०. उद्योग। प्रयत्न। ११. प्रलय।

संयमक--वि० [सं० सम्√यम् (रोकना) + ण्वुल्—अक या संयम+कन्] संयम करनेवाला।

संयमन--पुं०[सं० सम्√यम् (रोकना)+ल्युट्—अन]१. संयम करने की क्रिया या भाव। २. अनुचित या बुरी बातों से मन को रोकना। निग्रह। ३. दमन। ४. आत्म-निग्रह। ५. बन्धन या रुकावट में रहना। ६. अच्छी तरह बाँधना। जकड़ना। ७. अपनी ओर खींचना या तानना। ८. यम की पुरी। संयमिनी।

संयमनी—स्त्री०=संयमिनी।

संयमित--भू०कृ०[सं० सम्√यम् (रोकना)+णिच्—क्त संयम+ इतच्-वा]१. जिसके विषय या सम्बन्ध में संयम किया गया हो। २. रोककर वश में किया या लाया हुआ। ३. जिसका दमन किया गया हो अथवा हुआ हो। ४. कसा या बाँधा हुआ। ५. अच्छी तरह पकड़ा हुआ।

वि० इन्द्रियों का संयम करनेवाला। इन्द्रिय-निग्रही।

संयमिता--स्त्री० [सं०√ यम्(रोकना आदि)+णिच्—तृच्] संयम करने की अवस्था, क्रिया या भाव ।

संयमिनी--स्त्री० [सं० संयम+इनि—ङीप्] १. यमराज की नगरी। यमपुरी जो मेरु पर्वत पर स्थित कही गई है। २. काशी पुरी।

संयमी (मिन्)--वि०[सं० संयमिन्—दीर्घ, नलोप] १. संयम करनेवाला।

२. संयमपूर्वक जीवन बितानेवाला। संयम से रहनेवाला। आत्म-निग्रही।

पुं०१. योगी। २. राजा। ३. शासक।

संयात—वि०[सं० सम्√ या (गमनादि)+क्त]१. साथ चलने या जानेवाला। २. साथ लगा हुआ। ३. आया या पहुँचा हुआ। प्राप्त।

संयात्रा—स्त्री०[सं०]१. यात्रा में किसी का साथ होना। साथ साथ यात्रा करना। २. ऐसी यात्रा जिसमें समुद्र पार करना पड़े।

संयान—पुं०[सं० सम्√ या (गमनादि)+ल्युट्—अन] [वि० संयात, संयायी]१. किसी के साथ चलना या जाना। सह-गमन। २. यात्रा।

पद—**उत्तम संयान**=मृत शरीर को अन्त्येष्टि क्रिया के लिए ले जाना।

३. प्रस्थान। रवानगी। ४. गाड़ी। यान।

संयाम—पुं०[सं० सं√ यम् (रोकना)+घञ्]=संयम।

संयुक्त—भू० कृ० [सं० सं√युज् (जोड़ना)+क्त] १. किसी के साथ जुड़ा, मिला, लगा या सटा हुआ। २. (संघटन या संस्था) जिसका विघटन न हुआ हो। जैसे—संयुक्त परिवार। ३. जिसके दो या अधिक भागीदार हों। जैसे—संयुक्त खाता। ४. सहित। ५. साथ रहकर या मिलकर काम करनेवाले। जैसे—संयुक्त संपादक।

संयुक्त खाता—पुं०[सं० +हिं०]लेन-देन आदि का वह लेखा या हिसाब जो एक से कुछ अधिक आदमियों के नाम से चलता हो। (ज्वाइन्ट एकाउन्ट)

संयुक्त राष्ट्र संघ—पुं०[सं०]पुराने राष्ट्र संघ की तरह की वह संस्था जो दूसरे महायुद्ध के उपरांत उसके स्थान पर अप्रैल १९४६ में बनाई गई थी, और आज-कल जो सारे संसार में शांति बनाये रखने, मानव-हितों की रक्षा करने तथा इसी प्रकार के और अनेक लोक-कल्याण के कार्यों में सक्रिय है। (युनाइटेड नेशन्स ऑर्गनिज़ेशन)

संयुक्त लेखा—पुं०=संयुक्त खाता।

संयुक्त वाक्य—पुं० [सं०] व्याकरण में ऐसा वाक्य जिसमें दो या अधिक ऐसे उपवाक्य होते हैं जो एक दूसरे के अधीन न हों। (कम्पाउन्ड सेन्टेन्स)

संयुक्त सरकार—स्त्री०[सं० +हिं०] किसी देश की वह सरकार जो किसी आपात या विशेष संकट के समय सभी प्रमुख राजनीतिक दलों के सहयोग से बनी हो। (कोएलिशन गवर्नमेंट)

संयुक्ताक्षर—पुं० [सं० संयुक्त+अक्षर] वह अक्षर जो दो अक्षरों के मेल से बना हो। जैसे—क् और त् के योग से 'क्त' या प् और ल् के योग से 'प्ल'।

संयुग—पुं० [सं० सम्√ युम् (मना करना)+अच्—नलोप—पृषो०]१. मेल। मिलाप। २. संयोग। समागम। ३. भिड़न्त। ४. युद्ध। लड़ाई।

संयुत—वि०[सं०] १. किसी के साथ मिला या लगाया हुआ। २. जो कई वस्तुओं के योग से बहुत अधिक या इकट्ठा हो गया हो। (क्युमुलेटेड)

संयुति—स्त्री०[सं०]१. संयुत होने की अवस्था या भाव। २. दो या अधिक पदार्थों का एक में या एक स्थान पर इकट्ठा होना या मिलना। जैसे—ग्रहों की संयुति। (कंजंक्शन)

संयोग—पुं० [सं०]१. दो या अधिक वस्तुओं का एक में या एक साथ होना। मेल। मिश्रण। (काम्बिनेशन) २. समागम। ३. लगाव। संबंध। ४. स्त्री और पुरुष या प्रेमी और प्रेमिका का मिलन। ५. मैथुन। रतिक्रीड़ा। संभोग। ६. वैवाहिक संबंध। ७. किसी काम या बात के लिए कुछ लोगों में होनेवाला मेल। ८. आकस्मिक रूप से आनेवाली वह स्थिति जिसमें एक घटना के साथ ही कोई दूसरी घटना भी घटित हो।

पद—**संयोग से**=बिना पहले से निश्चित किए हुए और आकस्मिक रूप से। जैसे—मैं वहाँ बैठा हुआ था; इतने में संयोग से वे भी आ पहुँचे।

९. किसी बात या विचार में होनेवाला पारस्परिक मतैक्य। 'भेद' का विपर्याय। १०. व्याकरण में, कई व्यंजनों का एक साथ होनेवाला मेल। १०. अनेक संख्याओं का योग। जोड़।

संयोग-पृथकत्व—पुं० [सं० द्व० स०-त्व, या ब० स०] ऐसा पार्थक्य या अलगाव जो नित्य न हो। (न्याय)

संयोग-मंत्र—पुं०[सं० ष० त०, या मध्य० स०] विवाह के समय पढ़ा जानेवाला वेदमंत्र।

संयोग-विरुद्ध—पुं० [सं० तृ० त०] ऐसे पदार्थ जो साथ साथ खाने के योग्य नहीं होते, और यदि खाये जायँ तो रोग उत्पन्न करते हैं। **जैसे**—घी और मधु; मछली और दूध।

संयोगिता—स्त्री०[सं०] जयचंद की कन्या जिसका पृथ्वीराज ने हरण किया था।

संयोगिनी—स्त्री० [सं० संयोग+इनि—ङीप्] वह स्त्री जो अपने पति या प्रियतम के साथ हो। 'वियोगिनी' का विपर्याय।

संयोगी (गिन्)—वि०[सं० संयोगिन्—दीर्घ—नलोप] [स्त्री० संयोगिनी]१. जिसका संयोग हो चुका हो। २. जो संयोग के फलस्वरूप हुआ हो। ३. विवाहित। ४. जिसकी प्रिया उसके पास या साथ रहती हो।

संयोजक—वि०[सं० सम्√युज् (मिलाना)+ण्वुल्—अक] संयोजन करनेवाला।

पुं०१. व्याकरण में वह शब्द (अव्यय) जो दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ने का काम करता हो। जैसे—अथवा, और, या। २. आज-कल सभा-समितियों का वह सदस्य जो अन्य सदस्यों को बुलाकर उनका अधिवेशन कराता हो तथा सभापति के कर्तव्यों का पालन भी करता हो (कन्वीनर)

संयोजन—पुं०[सं०सम्√ युज् (जोड़ना)+ल्युट्—अन] [वि० संयोगी, संयोजनीय, संयोज्य, संयोजित] १. संयोग करने अर्थात् जोड़ने या मिलाने की अवस्था या भाव। युग्मन। (कान्जुगेशन) २. एक के साथ किसी दूसरी चीज को संलग्न या सम्मिलित करने की क्रिया या भाव। (अटैचमेन्ट) ३. दो या अधिक चीजों का आपस में मिलना या मिलाया जाना। (काम्बिनेशन) ४. मैथुन। संभोग। ५. कार्य का आयोजन या व्यवस्था। प्रबन्ध। ६. संसार के जंजाल में मनुष्य को लगाये रखनेवाला भव-बंधन या कारण। (बौद्ध)

संयोजना—स्त्री०[सं० संयोजन—टाप्]=संयोजन।

संयोजित—भू० कृ०[सं० सम्√युज् (मिलाना)+णिच्—क्त] जिसका संयोजन हुआ हो या किया गया हो।

संयोज्य—वि०[सं० सम्√युज् (मिलाना)+ण्यत्] जिसका संयोजन हो सकता हो अथवा होने को हो।

संयोध—पुं० [सं०]युद्ध । लड़ाई ।

संयोना†—स०=सँजोना

संरंभ—पुं० [सं०] १. ग्रहण करना । पकड़ना । २. आतुरता । उत्कंठा । ३. उद्विग्नता । उद्वेग । ४. खलबली । क्षोभ । ५. उत्साह । उमंग । ६. क्रोध । कोप । ७. शोक । ८. ऐंठ । ठसक । ९. अधिकता । बाहुल्य । १०. आरंभ । शुरू । ११. प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र । १२. फोड़े या घाव का सूजना या लाल होना । (सुश्रुत)

संरक्त—वि० [सं० √रञ्ज् (राग होना)+क्त] १. अनुरक्त । आसक्त । २. आकर्षक । मनोहर । ३. जो क्रोध से लाल हो रहा हो ।

संरक्षक—वि० [सं० सम्√ रक्ष् (रक्षा करना)+ण्वुल्—अक] [स्त्री० संरक्षिका] १. संरक्षण करनेवाला । २. देख-रेख, पालन-पोषण आदि करनेवाला । ३. आश्रय या शरण देनेवाला ।

पुं० १. वह जो किसी बालक, स्त्री आदि की देख-रेख, भरण-पोषण आदि का भार वहन करता हो । अभिभावक । (गार्जियन) २. वह जिसके निरीक्षण या देख-रेख में किसी वर्ग के कुछ लोग रहते हों । (वार्डन) ३. आज-कल संस्थाओं आदि में वह बहुत बड़ा और मान्य व्यक्ति जो उसके प्रधान पोषकों या समर्थकों में माना जाता हो । (पेट्रन)

विशेष—प्रायः संस्थाएं अपनी प्रामाणिकता , मान्यता आदि बढ़ाने के लिए गणमान्य विशिष्ट व्यक्तियों को अपना संरक्षक बना लेती हैं ।

संरक्षकता—स्त्री० [संरक्षक+तल्—टाप्] १. संरक्षक होने की अवस्था या भाव । २. संरक्षक का कार्य या पद ।

संरक्षण—पू० [सं० सम्√रक्ष् (रक्षा करना)+ल्युट्—अन] १. अच्छी और पूरी तरह से रक्षा करने की क्रिया या भाव । पूरी देख-रेख और हिफाजत । २. अधिकार । कब्जा । ३. अपने आश्रय में रखकर पालना-पोसना । ४. आर्थिक क्षेत्र में, देशी तथा विदेशी माल की प्रतियोगिता होने पर शासन द्वारा देशी माल की रक्षा करना । (प्रोटेक्शन; उक्त सभी अर्थों में)

संरक्षणवाद—पुं० [सं०] आधुनिक राजनीति में यह सिद्धान्त कि राष्ट्र को अपने आर्थिक क्षेत्र में राष्ट्रीय उद्योग-धन्धों का संरक्षण करना और बाहरी प्रतियोगिता के दुष्परिणामों से बचाना चाहिए । (प्रोटेक्शनिज़्म)

संरक्षण शुल्क—पुं० [सं०] आधुनिक अर्थशास्त्र में, वह शुल्क या कर जो अपने देश में बनी हुई चीजों को प्रतियोगिता के कारण नष्ट होने से बचाने के लिए ऐसी विदेशी चीजों पर लगाया जाता है जो सस्ती बिक सकती हों । भरण्य शुल्क (प्रोटेक्शन ड्यूटी) । जैसे—देशी चीनी का व्यापार बढ़ाने के लिए पहले यहाँ विदेशी चीनी पर संरक्षण शुल्क लगाया गया था ।

संरक्षणीय—वि० [सं० सम्√रक्ष् (रक्षा करना)+अनीयर] १. जिसका संरक्षण करना आवश्यक या उचित हो । संरक्षण का अधिकारी या पात्र । २. बचाकर रखे जाने के योग्य ।

संरक्षित—भू०कृ० [सं०सं √रक्ष् (रक्षा करना)+क्त] १. जिसका संरक्षण किया गया हो या हुआ हो । २. जो अच्छी तरह बचाकर रखा गया हो ।

पुं० वह जो किसी संरक्षक की देखरेख में रहता हो । प्रतिपाल्य । (वार्ड)

संरक्षित राज्य—पुं० [सं०]आधुनिक राज्य में वह दुर्बल राज्य जिसे किसी दूसरे सबल राज्य ने अपने संरक्षण में ले लिया हो । (प्रोटेक्टोरेट)

संरक्षितव्य—वि० [सं० √रक्ष् (रक्षा करना)+तव्य]जिसका संरक्षण करना आवश्यक या उचित हो ।

संरक्षी—वि० [सं० सम्√रक्ष् (रक्षा करना)+णिनि संरक्षा+इति] [स्त्री० संरक्षिणी] १. संरक्षण करनेवाला । २. देखभाल करनेवाला ।

संरक्ष्य—वि० [सं० सम्√रक्ष् (रक्षा करना)+ण्यत्—यत वा] =संरक्षणीय ।

संरचना—स्त्री० [सं०] [भू० कृ० संरचित] १. कोई ऐसी चीज बनाने की क्रिया या भाव जिसमें अनेक प्रकार के बहुत से अंगों-उपांगों का प्रयोग करना पड़ता हो । जैसे—किले, पुल या भवन की संरचना । लाक्षणिक रूप में, किसी अमूर्त वस्तु का सारा ढाँचा । बनावट । २. उक्त प्रकार से बनी हुई कोई चीज । (स्ट्रक्चर)

संरब्ध—वि० [सं० सम्√रभ् (मिलना)+क्त] १. किसी के साथ अच्छी तरह जुड़ा, मिला या लगा हुआ । २. जो किसी के साथ हाथ मिलाये हो । ३. उद्विग्न । क्षुब्ध । ४. क्रोध से भरा हुआ । ५. फूला या सूजा हुआ । ६. घबराया हुआ ।

संराधक—वि० [सं० सम्√राध् (ध्यान करना)+ण्वुल्—अक] १. संराधन करनेवाला । आराधना करनेवाला ।

संराधन—पुं० [सं०] [वि० संराधनीय, संराध्य, भू० कृ० संराधित] १. आराधना या पूजन और ध्यान करना । २. जयजयकार । ३. आज-कल किसी अप्रसन्न व्यक्ति को समझा-बुझाकर तुष्ट और प्रसन्न करना । (कान्सिलिएशन)

संराधन अधिकारी—पुं० [ष० त०] आज-कल वह राजकीय अधिकारी जो कल-कारखानों आदि में काम करनेवाले कर्मचारियों और उनके मालिकों में झगड़ा होने पर दोनों को समझा-बुझाकर उनमें समझौता कराता हो । (कन्सलिएशन आफ़िसर)

संराधनीय—वि० [सं० सम्√राध् (आराधना करना)+अनीयर्] जिसकी आराधना करना उचित या आवश्यक हो ।

संराधित—भू० कृ० [सं० सम्√ राध् (पूजा करना)+क्त] जिसका संराधन किया गया हो ।

संराध्य—वि० [सं० सम्√राध् (आराधना करना)+ण्यत्] =संराधनीय ।

संराव—पुं० [सं०] १. कोलाहल । शोर । २. हलचल । धूम ।

संरुद्ध—वि० [सं०] १. अच्छी तरह रोका हुआ । २. चारों ओर से घिरा या घेरा हुआ । ३. अच्छी तरह बन्द किया हुआ । ४. छाया या ढका हुआ । ५. पूरी तरह से भरा हुआ । ६. मना किया हुआ । वर्जित ।

संरूढ—वि० [सं०] १. अच्छी तरह चढ़ा हुआ । २. किसी पर अच्छी तरह लगा या जमा हुआ । ३. अंकुरित । ४. (घाव) जो पूज या सूख रहा हो । ५. आगे निकला या बाहर आया हुआ । ६. धृष्ट । प्रगल्भ । ७. पुष्ट और प्रौढ़ ।

संरोदन—पुं० [सं० सम्√ रुद् (रोना)+ल्युट्—अन] जोर-जोर से या ढाड़ मारकर रोना ।

संरोध—पुं० [सं०] १. रोक । रुकावट । २. अड़चन । बाधा । ३. आधुनिक राजनीति में शत्रु के किसी देश या स्थान को चारों ओर से इस प्रकार घेरना कि बाहरी जगत से उसे कोई सहायता न मिल सके । नाकेबंदी (ब्लाकेड) । ४. बंद करना । मुँदना । ५. हिंसा ।

संरोधन—पुं० [सं०] [वि० संरोधनीय, संरोध्य, संरुद्ध] १. रुकावट

डालना। रोकना। २. बाधा खड़ी करना। बाधक होना। ३. चारों ओर से घेरना। ४. सीमा या हद बनाना। ५. बन्द करना। मूँदना। ६. बंदी बनाना। कैद करना। ७. दमन करना। दबाना।

संरोधनीय--वि०[सं० सम्√रुध् (घेरना)+अनीयर्] जिसका संरोधन हो सके या किया जाने को हो।

संरोध्य--वि०[सं० सम्√रुध् (ढकना)+ण्यत्]=संरोधनीय।

संरोपण--पुं०[सं० सम्√ रुह् (अंकुरित होना)+णिच्--ह=प--ल्युट्--अन][वि० संरोपणीय, संरोप्य, भू०कृ० संरोपित] १. पेड़-पौधा लगाना। जमाना। बैठाना। रोपना। २. घाव को सुखाकर अच्छा करना।

संरोपित--भू० कृ० [सं० √रुह् (उगना)+णिच्—ह=प--क्त]१. जिसका संरोपण हुआ हो अथवा किया गया हो। २. ऊपर से लगाया या रोपा हुआ।

संरोप्य--वि० [सं०√रुह् (उगना)+णिच्--ह=प--ण्यत्] जिसका संरोपण हो सकता हो या किया जाने को हो।

संरोह--पुं०[सं० सम्√ रुह् (उगना)+अच्]१. ऊपर चढ़ना, जमना या बैठना। २. घाव सूखने पर पपड़ी जमना या बनना। ३. बीज आदि का अंकुरित होना। ४. आविर्भूत या प्रकट होना। आविर्भाव।

संरोहण--पुं०[सं० सम्√ रुह् (अंकुरित होना)+ल्युट्--अन] [वि० संरोहणीय, संरोही, भू० कृ० संरोहित] संरोह होने की क्रिया या भाव।

संलक्षण--पुं० [सं० सम्√लक्ष् (देखना आदि)+ल्युट्-अन] [वि० संलक्षणीय, संलक्ष्य, भू० कृ० संलक्षित] १. रूप या उसका लक्षण निश्चित करना। २. पहचानना। ३. ताड़ना। लखना।

संलक्षित--भू० कृ० [सं० सम्√लक्ष् (देखना आदि)+क्त] १. लक्षणों से जाना या पहचाना हुआ। २. ताड़ा या लखा हुआ।

संलक्ष्य--वि० [सं०सम्√लक्ष् (देखना आदि)+यत्] १. जो लक्षण से पहचाना जाय। २. जो देखने में आ सके। ३. जो ताड़ा या लखा जा सके।

संलक्ष्य क्रम व्यंग्य—पुं० [सं०सम्लक्ष्य,-क्रम-ब० स०,-व्यंग्य-मध्य० स०] साहित्य में, व्यंग्य के दो भेदों में से एक, ऐसा व्यंग्य या व्यंजना जिसमें वाच्यार्थ से व्यंग्यार्थ की प्राप्ति का क्रम लक्षित हो।

संलग्न--वि०[सं०√लग् (संग रहना)+क्त पषोण, सम्√लाज् (लज्जित आदि)+क्त-न] १. किसी के साथ मिला हुआ। २. किसी काम या बात में लगा हुआ। ३. जुड़ा हुआ। संबद्ध। ४. किसी दूसरे के साथ अन्त में या पीछे से जोड़ा या लगाया हुआ। (एपेंडेड, अटैच्ड)

संलपन--पुं०[सम्√लप् (कहना)+ल्युट्-अन] इधर-उधर की बातचीत। गप-शप।

संलब्ध—वि० [सम्√लभ् (प्राप्त होना)+क्त] =लब्ध।

संलय—पुं० [सम्√ली (गमनादि)+अच] [वि० संलीन] १. पक्षियों का उतरना या नीचे आना। २. निद्रा। नींद। ३. प्रलय।

संलयन—पुं०[सं√ली (गमनादि)+ल्युट्-अन] १. पक्षियों का नीचे आना या उतरना। २. लय को प्राप्त होना। लीन होना। ३. नष्ट होना। न रह जाना।

संलाप--पुं० [सम्√लप् (कहना)+घञ्] १. आपस की बात-चीत। वार्त्तालाप। २. नाटक में, ऐसी बात-चीत या संवाद जो धीरतापूर्ण हो और जिसमें आवेश या क्षोभ न हो। ३. साहित्य में, जो आप ही आप कुछ बोलना या बड़बड़ाना जो पूर्व राग की दस दशाओं में से एक माना गया है। ४. वियोग की दशा में प्रिय से मन ही मन की जानेवाली बातें।

संलापक—पुं० [संलाप+कन्] नाटक में, संलाप।
वि० संलाप करनेवाला।

संलिप्त—भू० कृ० [सम्√लिप् (लेप करना)+क्त] १. भली-भांति लिप्त या लीन। २. अच्छी तरह लगा हुआ।

संलीन—वि० [सं०] १. अच्छी तरह लगा हुआ। ३. छाया या ढका हुआ। ३. पूरी तरह से किसी में समाया हुआ। ४. सिकुड़ा हुआ। संकुचित।

संलेख—पुं० [सं०] १. बौद्ध धर्म के अनुसार पूरा-पूरा संयम। २. आजकल कोई ऐसा पत्र या लेख जिसमें किसी विधिक कृत्य का प्रामाणिक विवरण हो। विलेख। ३. विधिक क्षेत्र में, वह लेख या विलेख जो नियमानुसार लिखा हुआ, ठीक और प्रामाणिक माना जाता हो। (वैलिड डीड) ४. राज्यों में होनेवाली संधि का वह पूर्व रूप या मसौदा जिस पर पारस्परिक समझौते की मुख्य मुख्य बातें लिखी हों तथा जिस पर संबद्ध पक्षों के प्रतिनिधियों के हस्ताक्षर हुए हों। पूर्व-लेख। (प्रोटोकोल)

संलोडन—पुं० [सम्√लोड् (घोलना)+ल्युट्-अन] [वि० संलोडित] १.(जल आदि को) खूब हिलाना या चलना। मथना। २. झकझोरना। ३. उलटना-पुलटना। ४. उथल-पुथल करना या मचाना।

संलोभन--पुं०=प्रलोभन।

संवत्—पुं० [सं०] १. वर्ष। साल। २. किसी विशिष्ट गणना-क्रम वाली काल-गणना। जैसे—विक्रमी संवत्, शक संवत्।

विशेष—इसका प्रयोग मुख्यतः भारतीय गणना प्रणालियों के सम्बन्ध में ही होता है। पाश्चात्य गणना प्रणालियों के सम्बन्ध में प्रायः सन् का प्रयोग होता है।

संवत्सर—पुं० [सं०] १. वर्ष। साल। २. फलित ज्योतिष में, पाँच-पाँच वर्षों के युगों में से प्रत्येक का प्रथम वर्ष। ३. शिव का एक नाम।

संवत्सरीय—वि० [सम्वत्सर+छ-ईय] १. संवत्सर सम्बन्धी। संवत्सर का। २. हर साल होनेवाला। वार्षिक।

संवदन—पुं० [सम्√वद् (बोलना)+ल्युट-अन] १. बातचीत। वार्त्तालाप। २. संदेशा। ३. आलोचनात्मक विचार। ४. जाँच-पड़ताल।

संवदना—स्त्री० [सम्वदन-टाप्] मंत्र-तंत्र आदि से अथवा और किसी प्रकार किसी को वश में करने की क्रिया। वशीकरण।

संवनन—पुं०[सम्√वन् (वश करना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० संवनित] १. यंत्र-मंत्र आदि के द्वारा स्त्रियों को फँसाना या वश में करना। २. दे० 'संवदन'।

सँवरा—स्त्री० [सं० स्मरण] १. याद। स्मृति। २. वृत्तान्त। हाल। ३. खबर। समाचार।
स्त्री० [हिं० सँवरना] सँवरे अर्थात् सजे हुए होने की अवस्था या भाव।

संवर—पुं० [सम्√वृ (वरण करना)+अप्] १. संवरण करने की क्रिया

या भाव। २. रुकावट। रोक। ३. इन्द्रिय-निग्रह। ४. जैन दर्शन में कर्मों का प्रवाह रोकना। ५. बौद्ध मतानुसार एक प्रकार का व्रत। ६. जलाशयों आदि का बाँध। ७. पुल। सेतु। ८. चुनने की क्रिया या भाव। चुनाव। ९. कन्या का अपने लिए वर चुनना। स्वयंवर।

संवरण—पुं० [सं०] [वि० संवरणीय] १. दूर करना। हटाना। २. बन्द करना। ३. आच्छादित करना। ढकना। ४. छिपाना। ५. कोई ऐसी चीज जिसमें कोई दूसरी चीज छिपाई, ढकी या रोकी जाय। ६. आड़ करने या बचानेवाली चीज। ७. मनोवेग आदि को दबा या रोककर वश में रखना। नियंत्रण से बाहर न होने देना। निग्रह। जैसे—क्रोध या लोभ संवरण करना। ८. जलाशयों आदि का बाँध। १०. पुल। सेतु। ११. पसंद करना। चुनना। १२. कन्या का विवाह के लिए अपना पति या वर चुनना। १३. वैद्यक में गुदा के चमड़े की तीन तहों या परतों में से एक। १४. आज-कल सभा-समितियों, संसदों आदि में किसी विषय पर यथेष्ट वाद-विवाद हो चुकने परं किया जानेवाला उसका अन्त या समाप्ति। (क्लोज़र)

संवरणीय—वि० [सम्√वृ (वरण करना)+अनीयर्] [स्त्री० संवरणीया] १. जिसका संवरण हो सकता हो या होना उचित हो। २. जिसे छिपाकर रखना वांछित हो। गोपनीय। ३. जो वरण अर्थात् विवाह के योग्य हो चुका हो।

सँवरना—अ० [सं० संवर्णन] १. बनकर अच्छी या ठीक दशा को प्राप्त होना, अथवा सुन्दर रूप में आना। सँवारा जाना। २. अलंकृत या सज्जित होना।

स० [सं० स्मरण] स्मरण करना। उदा०—सँवरौ आदि एक करतारू। —जायसी।

†अ० स्मरण होना। याद आना। उदा०—पुनि बिसरा भा सँवरना, जनु सपने भइ भेंट।—जायसी।

सँवरा†—वि०=साँवला।

सँवरिया†—वि०=साँवला।

†पुं०=साँवलिया।

संवर्ग—पुं० [सम्√वृजी (मना करना)+घञ्] १. अपनी ओर समेटना। २. इकट्ठा करना। ३. खा जाना। भक्षण। ४. खपत। ५. विलय। ६. (गणित में) गुणन-फल।

संवर्जन—पुं० [सम्√वृज् (त्यागना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० संवर्जित, वि० संवर्जनीय, संवृक्त] १. बलपूर्वक ले लेना। हरण करना। छीनना। २. उड़ा डालना। समाप्त कर देना।

संवर्त—पुं० [सं०] १. लपेटना। २. घुमाव। फेरा। लपेट। ३. लपेट कर बनाई हुई पिंडी। ४. शत्रु से भिड़ना। ५. गोली। बटी। ६. बड़ी राशि या समूह। ७. संवत्सर। ८. एक प्रकार का दिव्यास्त्र। ९. ग्रहों का एक प्रकार का योग। १०. एक केतु का नाम। ११. एक कल्प का नाम। १२. प्रलय काल के भेदों में से एक। १३. इन्द्र का अनुचर एक मेघ, जिससे बहुत जल बरसता है। १४. बादल। मेघ। १५. बहेड़ा।

संवर्तक—वि० [सं√वृत् (रहना)+णिच्-ण्वुल्—अक] १. संवर्तन करने या लपेटनेवाला। २. नाश या लय करनेवाला।

पुं० १. कृष्ण के भाई बलराम का एक नाम। २. बलराम का अस्त्र, हल। ३. बड़वानल। ४. बहेड़ा। ५. प्रलय नामक मेघ। ६. प्रलय मेघ की अग्नि।

संवर्तकल्प—पुं० [मध्यम० स०] बौद्धों के अनुसार प्रलय का एक प्रकार या रूप।

संवर्तकी—पुं० [संवर्तक+इति, संवर्तकिन्] कृष्ण के भाई बलराम का एक नाम।

संवर्तन—पुं० [सं०√वृत् (रहना)+ल्युट्-अन] [वि० संवर्तनीय, संवृत, भू० कृ० संवर्तित] १. लपेटना। २. चक्कर या फेरा देना। ३. किसी ओर प्रवृत्त होना या मुड़ना। ४. पहुँचना। ५. खेत जोतने का हल। ६. भारतीय युद्ध कला में, शत्रु का प्रसार रोकना।

संवर्तनी—स्त्री० [संवर्तन-ङीष्] सृष्टि का लय। प्रलय।

संवर्तनीय—वि० [सं√वृत् (रहना)+अनीयर्] जिसका संवर्तन हो सकता हो या होने को हो।

संवर्ति—स्त्री० [संवृत+इति] दे० 'संवर्तिका'।

संवर्तिका—स्त्री० [संवर्त्ति+कन्+टाप्] १. लपेटी हुई वस्तु। २. बत्ती। ३. ऐसा बँधा हुआ पत्ता जो अभी खिलने या खुलने को हो। ४. खेत जोतने का हल।

संवर्तित—भू० कृ० [सं√वृत् (रहना)+क्त] १. लपेटा हुआ। २. घुमाया, फेरा या मोड़ा हुआ।

संवर्ती—वि० [सं०] [स्त्री० संवर्तिनी] १. किसी के साथ वर्तमान रहने या होनेवाला। २. किसी के समान पद या स्थिति में रहनेवाला। ३. एक ही काल में औरों के साथ, प्रायः उसी रूप में परन्तु भिन्न-भिन्न स्थानों में होनेवाला। (कान्करेन्ट) जैसे—संवर्ती घोषणा या सूची =ऐसी घोषणा या सूची जो एक साथ कई स्थानों से प्रकाशित हो।

संवर्द्धक—वि० [सम्√वृध् (बढ़ाना)+णिच्-ण्वुल्-अक] संवर्धन करनेवाला।

संवर्द्धन—पुं० [सम्√वृध् (बढ़ाना)+णिच्-ल्युट्-अन] [वि० संवर्द्धनीय, संवर्द्धित, संवृद्ध] १. अच्छी तरह बढ़ना या बढ़ाना। २. जितना या जो पहले से वर्तमान हो उसमें कुछ और अधिकता या वृद्धि करना। (आग्मेन्टेशन) ३. पशु-पक्षियों, पौधों आदि के संबंध में ऐसी क्रिया और देख-भाल करना जिससे उनके वंश आदि का विकास, विस्तार या वृद्धि हो। (कल्चर) जैसे—पपीते के पेड़ों, मधुमक्खियों आदि का संवर्धन। पाल पोसकर बड़ा करना। ५. उन्नत करना। बढ़ाना।

संवर्द्धनीय—वि० [सम्√वृध् (बढ़ाना)+णिच्-अनीयर्] १. जिसका संवर्द्धन करना आवश्यक या उचित हो। २. जिसका पालन-पोषण करना आवश्यक या उचित हो।

संवर्द्धित—भू० कृ० [सम्√वृध् (बढ़ना)+णिच्-क्त] जिसका संवर्द्धन किया गया हो या हुआ हो।

संवर्धन—पुं०=संवर्द्धन।

संवल—पुं० [सम्√वल् (संवरण करना)+क]=संवल।

संवलन—पुं० [सं० सम्+वलन] [वि० संवलित] १. किसी ओर घुमाना या मोड़ना। २. मिलाना। मिश्रण। ३. मेल। ४. मिलावट। मिश्रण। ५. ऐसी व्यवस्था करना कि आवश्यकता के अनुसार घटाया-बढ़ाया जा सके। (कंडीशनिंग) जैसे—वायु-संवलन। ६. बल दिखाने के लिए मुठ-भेड़ करना। भिड़ना।

सँवलाना—अ० [हिं० साँवला] रंग का साँवला पड़ना या होना। उदा०—लड़की का चेहरा और ज्यादा सँवला गया।—सआदत हसन मन्टो। स० साँवला करना। जैसे—धूप ने उस का रंग सँवला दिया था।

संवलित—भू० कृ० [सम्√वल् (पकड़ना)+क्त] १. जिसका संकलन हुआ हो या किया गया हो। २. किसी के साथ मिला हुआ। युक्त। सहित। ३. घिरा या घेरा हुआ। ४. जो शत्रु से भिड़ या लड़ गया हो।

संवसथ—पुं० [सम्√वस् (रहना)+अथ] मनुष्यों की बस्ती।

संवह—वि० [सम्√वह् (ढोना)+अच्] १. वहन करनेवाला। ले जानेवाला।

पुं० १. एक वायु जो आकाश के सात मार्गों में से तीसरे मार्ग में रहती है। २. अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

संवहन—पुं० [सम्√वह् (ढोना)+ल्युट्–अन] [भू० कृ० संवहित] १. वहन करना। ले जाना। ढोना। २. प्रदर्शित करना। दिखाना।

संवाच्य—पुं० [सम्√वच् (कहना)+ण्यत्] अच्छी तरह बात-चीत करने या कथा कहने का ढंग जो ६४ कलाओं में से एक है।

संवातन—पुं० [सं०] [वि० संवाती, भू० कृ० संवातित] ऐसी अवस्था या व्यवस्था जिससे कमरे, कोठरी आदि में हवा ठीक तरह से आती-जाती रहे। हवादारी। (वेंटिलेशन)

संवाद—पुं० [सं०] [वि० संवादिक] १. एक-रूपता, सादृश्य आदि के कारण चीजों, बातों आदि का आपस में ठीक बैठना या मेल खाना। २. किसी से की जानेवाली बातचीत। वार्तालाप। ३. किसी के पास भेजा हुआ या आया हुआ विवरण या वृत्तान्त। ४. खबर। समाचार। ५. चर्चा। ६. नियुक्ति। ७. मुकदमा। व्यवहार। ८. सहमति। ९. स्वीकृति।

संवादक—वि० [सम्√वद् (कहना)+विच् ण्वुल–अक] १. बोलने या बात-चीत करनेवाला। २. संवाद या समाचार देनेवाला। ३. किसी के मत से सहमत होनेवाला। ४. बात मान लेनेवाला। ५. बजानेवाला।

संवाददाता—पुं० [सं०] १. वह जो किसी प्रकार का संवाद या खबर देता हो। २. आज-कल वह व्यक्ति जो समाचारपत्रों में छपने के लिए स्थानिक घटनाओं का विवरण लिखकर भेजता हो। (रिपोर्टर, कारेस्पान्डेन्ट)

संवादन—पुं० [सम्√वद् (कहना)+णिच्–ल्युट्–अन] [भू० कृ० संवादित] [वि० संवादनीय, संवादी, संवाद्य] १. बात-चीत करना। बोलना। २. किसी के कथन या मत से सहमत होना। ३. किसी का अनुरोध या बात मान लेना। ४. बाजे आदि बजाना।

संवादिका—स्त्री० [सम्√वद् (कहना)+णिच्–ण्वुल्–अक–टाप्] १. कीट। कीड़ा। २. च्यूँटी।

संवादित—भू० कृ० [सं√वद् (कहना)+णिच्–क्त] १. संवाद अर्थात् बात-चीत में लगाया या प्रवृत्त किया हुआ। २. प्रसन्न करके मनाया या राजी किया हुआ।

संवादिता—स्त्री० [संवादित–टाप्] संवादी होने की अवस्था, गुण या भाव।

संवादी—वि० [सम्√वद् (कहना)+णिनि] [स्त्री० संवादिनी] १. संवाद अर्थात् बातचीत करनेवाला। २. राजी या सहमत होनेवाला। ३. किसी के साथ अनुकूल पड़ने, बैठने या होनेवाला। ४. बाजा बजानेवाला।

पुं० संगीत में, वह स्वर जो किसी राग के वादी स्वर के साथ मिलकर उसका सहायक होता और उसे अधिक श्रुति-मधुर बनाता है। जैसे—पंचम से षडज तक जाने में बीच के तीन स्वर संवादी होंगे।

सँवार†—स्त्री० [हिं० सँवरना] १. सँवरने या सँवारने की क्रिया, भाव या स्थिति। २. सँवारा या सँवारा हुआ रूप। ३. संशोधन। उदा०—केर सँवार गोसाँई जहाँ परै कछु चूक।—जायसी। ४. 'मार' के स्थान पर मंगल-भाषित रूप में बोला जानेवाला शब्द। (मुसलमान स्त्रियाँ) जैसे—तुझ पर खुदा की सँवार (अर्थात् मार)।

†पुं० [सं० संवाद या स्मरण] हाल। समाचार। उदा०—पुनि रे सँवार कहेसि अरु दूजी।—जायसी।

संवार—पुं० [सम्√वृ (ढकना)+घञ्] १. आवरण डालकर कोई चीज छिपाना या ढकना। २. शब्दों के उच्चारण के समय कंठ के भीतरी भाग का कुछ दबना या सिकुड़ना। ३. उच्चारण के बाह्य प्रयत्नों में से एक जिसमें कंठ का आकुंचन होता है। 'विवार' का उलटा। ४. बाधा। अड़चन।

संवारण—पुं० [सम्√वृ (वारण करना)+णिच्–ल्युट्–अन] [भू० कृ० संवादित, वि० संवार्य] १. दूर करना। निवारण करना। हटाना। २. न आने देना। रोकना। ३. निषेध करना। मनाही। ४. छिपाना। ५. ढकना।

संवारणीय—वि० [सम्√वृ (दूर करना)+णिच्–अनीयर] जिसका संवारण हो सके या होने को हो।

सँवारना—स० [सं० संवर्णन] १. किसी चीज को ऐसा रूप देना कि वह अच्छा या सुन्दर जान पड़े। २. ठीक और दुरुस्त करके काम में आने के योग्य बनाना। ३. अलंकृत करना। सजाना। ४. क्रम से लगाकर या ठीक करके रखना। ५. सुचारु रूप से कोई कार्य सम्पन्न करना। जैसे—ईश्वर ही हमारे सब काम सँवारता है।

संवारित—भू० कृ० [सम्√वृ (हटाना)+णिच्–क्त] जिसका संवारण किया गया हो या हुआ हो।

संवार्य—वि० [सम्√वृ (मना करना)+णिच्–ण्यत्]=संवारणीय।

संवास—पुं० [सम्√वस् (रहना)+घञ्] १. साथ बसना या रहना। २. पारस्परिक सम्बन्ध। ३. स्त्री संभोग। मैथुन। ४. सभा। समाज। ५. जन-साधारण के उपयोग के लिए नियत खुला स्थान। ६. घर। मकान।

संवासन—पुं० [सं०] [भू० कृ० संवासित] १. संवास करने की क्रिया या भाव। २. अच्छी तरह सुगन्धित करने की क्रिया या भाव।

संवासी (सिन्)—वि० [सम्√वस् (रहना)+णिनि] संवास करनेवाला।

संवाह—पुं० [सम्√वह् (ढोना)+णिच्–अच्] १. ले जाना। ढोना। २. पैर दबाना। ३. पीड़ित करना। सताना। ४. बाजार। मंडी। ५. जन-साधारण के लिए उपयोग के लिए रक्षित खुला स्थान।

संवाहक—वि० [सं०] ढोकर अथवा और किसी प्रकार एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जानेवाला। वहनक। वाहक। (कैरिअर)
पुं० शरीर के हाथ-पैर आदि अंग दबानेवाला सेवक।

संवाहकता—स्त्री० [सं०] १. संवाहक होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। २. आधुनिक विज्ञान में, किसी पदार्थ का वह गुण या धर्म जिसके फल-स्वरूप ताप, विद्युत्, शीत आदि उसके एक अंग से बढ़कर शेष अंगों में पहुँचते अथवा दूसरे सधर्मी पदार्थों में संवहन करते हैं। (कन्डक्टिविटी)

संवाहन—पुं०[सं०] [भू० कृ० संवाहित, कर्ता संवाहक, संवाही; वि० संवाहनीय, संवाह] १. कोई चीज एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने की क्रिया या भाव। २. ताप, वाष्प, विद्युत् आदि एक स्थान से किसी दूसरे अंश या विंदु तक पहुँचाने की क्रिया या भाव। (कन्डक्शन) ३. परिचालित करना। चलाना। ४. शरीर के हाथ-पैर, अंग आदि दबाना या उनमें मालिश करना।

संवाहित—भू० कृ० [सम्√वह् (ढोना)+णिच्-क्त] १. जिसका संवाहन हुआ हो या किया गया हो।

संवाही—वि०[सम्√वह् (ढोना)+णिनि] [स्त्री० संवाहिनी]=संवाहक।

संवाह्य—वि० [सम्√वह् (ढोना)+ण्यत्] जिसका संवाहन हो सके या होने को हो। संवाहन का अधिकारी या पात्र।

संविग्न—वि० [सं०] १. घबराया हुआ। उद्विग्न। २. क्षुब्ध। ३. डरा हुआ। भीत।

संविज्ञ—वि० [सम् वि√ज्ञा (जानना)+क] अच्छा जानकार। सुविज्ञ।

संविज्ञान—पुं० [सं०] १. ठीक और पूरा ज्ञान। सम्यक् बोध। २. स्वीकृति। मंजूरी। ३. सहमति।

संवित्—स्त्री० [सं०]='संविद्'।

संवित्ति—स्त्री०[सम्√विद् (जानना)+क्तिन्] १. प्रतिपत्ति। २. सहमति। ३. चेतना। संज्ञा। ४. अनुभव। तजरुबा। ५. बुद्धि। समझ।

संवित्पत्र—पुं० [सं०] १. वह पत्र जिसमें दो ग्रामों या प्रदेशों के बीच किसी बात के लिए मेल की प्रतिज्ञा या शर्त लिखी हों। (शुक्रनीति) २. किसी प्रकार का इकरारनामा या पट्टा। संविदापत्र।

संविद्—स्त्री० [सं०] १. चेतना-शक्ति। चैतन्य। २. ज्ञान। बोध। समझ। ३. सांख्य में, महत्त्व। ४. अनुभूति। संवेदन। ५. आपस में होनेवाला इकरार या समझौता। ६. उपाय। तदबीर। युक्ति। ७. वृत्तान्त। हाल। ८. प्रथा। रीति। ९. नाम। संज्ञा। १०. तुष्टि। तृप्ति। ११. युद्ध। लड़ाई। १२. प्रचारणा। ललकार। १३. इशारा। संकेत। १४. प्राप्ति। लाभ। १५. जायदाद। सम्पत्ति। १६. मिलने के लिए नियत किया हुआ स्थान। संकेत-स्थल। १७. योग में प्राणायाम से प्राप्त होनेवाली एक भूमि। १८. भाँग। विजया।

वि० चेतनायुक्त। चेतन।

संविदा—स्त्री० [सं०] १. कुछ खास शर्तों पर आपस में होनेवाला किसी प्रकार का इकरार, ठहराव या समझौता। (कन्ट्रैक्ट) २. गाँजे या भाँग का पौधा।

संविदापत्र—पुं०[सं०] वह पत्र जिस पर किसी संविदा की शर्तें लिखी हों। इकरारनामा। ठीकानामा। (कन्ट्रैक्ट डीड)

संविदा प्रविधि—स्त्री० [सं०] वह प्रविधि या कानून जिसमें संविदा या ठीके से सम्बन्ध रखनेवाले नियमों का विवेचन हो। (लॉ ऑफ़ कन्ट्रैक्ट)

संविदित—भू० कृ०[सम्√विद् (जानना)+क्त] १. अच्छी तरह जाना हुआ। पूर्णतया ज्ञात। २. खोजा या ढूँढ़ा हुआ। ३. सबकी सम्मति से ठहराया या निश्चित किया हुआ। ४. जिसके सम्बन्ध में वचन दिया या वादा किया गया हो। ५. अच्छी तरह बतलाया या समझाया हुआ।

संविद्वाद—पुं० [ष० त०] पाश्चात्य दर्शन का एक सिद्धान्त जिसमें वेदान्त के समान चैतन्य के अतिरिक्त और किसी वस्तु की पारमार्थिक सत्ता नहीं मानी जाती। चैतन्यवाद।

संविधा—स्त्री० [सम्-वि√धा (रखना)+क–टाप्] १. रहन-सहन। आचार-व्यवहार। २. प्रबन्ध। व्यवस्था।

संविधाता (तृ)—वि० [सम्-वि√धा (रखना)+तृच्] संविधान करनेवाला।

पुं० विधाता (स्रष्टा)।

संविधान—पुं० [सं० वि√धा (रखना)+ल्युट्–अन] १. ठीक तरह से किया गया विधान या व्यवस्था। उत्तम प्रबंध। २. बनावट। रचना। ३. आधुनिक राजनीति और शासन-तंत्र में, कानून या विधान के रूप में बने हुए वे मौलिक नियम और सिद्धान्त जिनके अनुसार किसी राज्य, राष्ट्र या संस्था का संघटन, संचालन और व्यवस्था होती है। (कान्स्टिट्यूशन) ४. दस्तूर। प्रथा। रीति। ५. अनूठापन। विलक्षणता।

संविधानक—वि० [सं० संविधान+कन्] संविधान करनेवाला। संविधाता।

पुं० १. कोई विचित्र घटना या व्यापार। २. उपन्यास, नाटक आदि की कथनानुसार कथानक। (प्लाट)

संविधान परिषद्—स्त्री० [सं० मध्य० सं०] वह परिषद् या सभा जो किसी देश, राष्ट्र या संस्था की व्यवस्था और शासन के लिए नियमावली या संविधान बनाने के लिए नियुक्त या संघटित की गई हो। (कांस्टिट्यूएन्ट एसेम्बली)

संविधानवाद—पुं० [सं० संविधान√वद्+घञ्] [वि० संविधानवादी] १. यह मत या सिद्धान्त कि किसी देश या राज्य का शासन निश्चित संविधान के अनुसार होना चाहिए। (कान्स्टिट्यूशनलिज़्म)

संविधानवादी—वि० [सं० संविधान√वद्+णिनि] संविधानवाद सम्बन्धी। संविधानवाद का।

पुं० वह जो संविधानवाद का अनुयायी और पोषक हो। (कांस्टिट्यूशनलिस्ट)

संविधानसभा—स्त्री०=संविधान परिषद्।

संविधानिक—वि० [सं० संविधान+ठन्–इक] संविधान अथवा उसके नियमों आदि से सम्बन्ध रखनेवाला। (कांस्टिट्यूशनल)

संविधानी—वि०=संविधान्कि।

संविधि—वि० स्त्री०[सम् वि√धा (रखना)+कि] १. विधान। रीति। दस्तूर। २. प्रबन्ध। व्यवस्था। ३. दे० 'प्रविधान'।

पुं० [सं०] विधान सभा द्वारा पारित प्रस्ताव जो विधान के अंग के रूप में स्वीकार किया जाता है। (स्टैच्यूट)

संविधेय—वि० [सम्–वि√धा (रखना)+यत्–आ=ए] १. जिसका संविधान होने को हो या हो सकता हो। २. (काम) जो किया जाने को हो या जिसका प्रबन्ध होने को हो।

संविभक्त—वि० [सम् वि√भज (देना)+क्त] १. अच्छी तरह बँधा हुआ। २. ठीकऔर सुन्दर बना हुआ। सुडौल। ३. विभक्त किया हुआ।

संविभाग—पुं० [सम्-वि√भज् (देना)+घञ्] १. ठीक तरह से किया गया विभाग। २. प्रदान। ३. राज्य के मंत्री का कार्यालय और वह विशिष्ट विभाग जिसके सब कार्य वहाँ होते हों। (पोर्टफ़ोलियो)

संविभागी (गिन्)—पुं० [संविभाग+इनि] अपना अंश या भाग लेनेवाला। हिस्सेदार।

संविभाजन—पुं० [सं० संवि√भज्+णिचि-ल्युट्-अन] [भू० कृ० संविभाजित, [संविभक्त]=विभाजन।

संविवेक—पुं० [सं० सं-वि√विच्+घञ्] १. विवेक। २. वह मानसिक शक्ति जिसके द्वारा विकट अवसरों पर हम सब बातें सोच-समझकर उचित कर्तव्य या निर्णय करते हैं। (डिस्क्रीशन)

संविष्ट—वि० [सं√विस् (प्रवेश करना)+क्त] १. आया या पहुँचा हुआ। प्राप्त। २. लेटा या सोया हुआ। ३. बैठा हुआ।

संवीक्षण—पुं० [सम्-वि√ईक्ष् (देखना)+ल्युट्–अन] [वि० संवीक्षणीय, संवीक्ष्य] १. अच्छी तरह इधर-उधर देखना। अवलोकन। २. तलाश करना। ढूँढ़ना। ३. जाँच-पड़ताल। अन्वेषण।

संवीक्षा—स्त्री० [सं०√संवीक्ष्+अ–टाप्] [भू० कृ० संवीक्षित, वि० संवीक्ष्य] किसी चीज या बात के बिलकुल ठीक होने की ऐसी जाँच-पड़ताल जिसमें ब्यौरे की छोटी से छोटी भूल-चूक पर भी पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है। (स्क्रूटिनी)

संवीत—भू० कृ० [सम्√वृ (संवरण करना)+क्त-य-इए] १. ढका हुआ। आवृत्त। २. कवच द्वारा सुरक्षित किया हुआ। ३. जो कुछ पहने हुए हो। ४. रुका हुआ। रुद्ध। ५. जो दिखाई न दे रहा हो। अदृश्य। लुप्त। ६. देखकर भी अनदेखा किया या टाला हुआ। पुं० १. पहनने के कपड़े। परिच्छद। पोशाक। २. सफेद कटभी।

संवीती—वि० [सं० संवीत+इनि] जो यज्ञोपवीत पहने हो।

संवृक्त—भू० कृ० [सम्√वृज् (रखना आदि)+क्त,√वृक् (लेना)+क्त वा] १. छीना हुआ। हरण किया हुआ। २. लापरवाही से खरचा, खाया या उड़ाया हुआ (धन)।

संवृत—भू० कृ० [सम्√वृ (ढकना)+क्त] १. ढका या बंद किया हुआ। आच्छादित। २. लपेटा हुआ। ३. घिरा या घेरा हुआ। ४. युक्त। सहित। ५. रक्षित। ६. जिसका दमन किया गया हो। दबाया हुआ। ७. जो अलग या दूर हो गया हो। ८. धीमा किया हुआ। ८. रुँधा हुआ (गला)। ९. (अक्षर या वर्ण) जिसके उच्चारण में संवार नामक बाह्य प्रयत्न होता हो। 'विवृत' का विपर्याय।
पुं० [सं√वृ (लेना)+क्त] १. वरुण देवता। २. गुप्त स्थान। ३. एक प्रकार का जलबेंत।

संवृति—स्त्री० [सम्√वृ (छिपाना)+क्तिन्] संवृत होने की अवस्था या भाव।

संवृत्त—भू० कृ० [सं० संवृत् (रहना)+क्त] १. पहुँचा हुआ। समागत। प्राप्त। २. जो घटित हो चुका हो। ३. (उद्देश्य या विचार) जो पूरा सिद्ध हो चुका हो। ४. उत्पन्न। ५. उपस्थित। मौजूद। पुं० वरुण देवता।

संवृत्ति—स्त्री० [सम्√वृत् (रहना))+क्तिन्] १. उद्देश्य, कार्य आदि की निष्पत्ति। सिद्धि। २. एक देवी का नाम।

संवृद्ध—वि० [सम्√वृध् (बढ़ना)+क्त] १. बढ़ा या बढ़ाया हुआ। २. ऊपर उठा हुआ। उन्नत।

संवृद्धि—स्त्री० [सम्√वृध् (बढ़ना)+क्तिन्] १. बढ़ने की क्रिया या भाव। बढ़ती। वृद्धि। २. समृद्धि।

संवेग—पुं० [सम्√विज् (आकुल होना)+घञ्] १. गति आदि का पूरा वेग। चाल की तेजी। २. मन में होनेवाली खलबली। उद्विग्नता। घबराहट। ३. डर। भय। ४. अतिरेक। ५. दे० 'मनोवेग'।

संवेजन—पुं० [सम्√विज् (घबड़ाना)+ल्युट्–अन] [भू० कृ० संवेजित, वि० संवेजनीय] १. उद्विग्न करना। २. खलबली या हलचल मचाना। ३. भयभीत करना। डराना। ४. उत्तेजित करना। भड़काना। ५. ऊपर उठना या खड़ा होना। जैसे—रोम-संवेजन।

संवेत गान—पुं० [सं० कर्म० स०] ऐसा संगीत जिसमें अनेक प्रकार के बाजे एक साथ बजते हों। २. कई आदमियों का एक साथ मिलकर कोई चीज गाना। सहगान। (कोरस)

संवेद—पुं० [सम्√विद् (जानना)+घञ्] १. सुख-दुःख आदि की अनुभूति। २. ज्ञान। बोध।

संवेदन—पुं० [सं० सम√विद्+ल्युट्–अन] [वि० संवेदनीय, संवेद्य, भू० कृ० संवेदित] १. मन में सुख-दुःख आदि की होनेवाली अनुभूति या प्रतीति। २. किसी प्रकार के प्रभाव, स्पर्श आदि के कारण शरीर के अंगों या स्नायुओं में प्राकृतिक रूप से होनेवाला वह स्पन्दन जिससे मन को उसकी अनुभूति होती है। उदा०—मनु का मन था विकल हो उठा संवेदन से खाकर चोट।—प्रसाद। ३. किसी को किसी बात का ज्ञान या बोध कराना। ४. नक-छिकनी नाम की घास।

संवेदन-सूत्र—पुं० [सं० मध्य० स०] प्राणियों के सारे शरीर में जाल के रूप में फैली हुई बहुत ही सूक्ष्म नसों में से प्रत्येक नस। (नर्व) विशेष दे० 'तंत्रिका'।

संवेदनहारी—वि० दे० 'निश्चेतक'।

संवेदना—स्त्री० [सं० संवेदन+टाप्] १. मन में होनेवाला अनुभव या बोध। अनुभूति। २. किसी को कष्ट में देखकर मन में होनेवाला दुःख। किसी की वेदना देखकर स्वयं भी बहुत कुछ उसी प्रकार की वेदना का अनुभव करना। सहानुभूति। (सिम्पेथी) ३. उक्त प्रकार का दुःख या सहानुभूति प्रकट करने की क्रिया या भाव। (कन्डोलेन्स)

संवेदनीय—वि० [सम्√विद् (जानना)+अनीयर्] १. जिसमें या जिसे संवेदन या ज्ञान हो सकता हो। २. जो जतलाया या बतलाया जा सकता हो।

संवेदित—भू० कृ० [सम्√विद् (जानना)+णिच्–क्त] १. जिसकी संवेदना के रूप में अनुभूति हुई हो। २. जतलाया या बतलाया हुआ।

संवेद्य—वि० [सम्√विद् (जानना)+ण्यत्] [भाव० संवेद्यता] १. संवेदना के रूप में जिसकी अनुभूति या ज्ञान हो सकता हो। २. (बात या विषय) जिसका अनुभव या ज्ञान कराया जा सकता हो। ३. संवेदनीय।

संवेद्यता—स्त्री० [सं० संवेद्य+तल्-टाप्] संवेद्य होने की अवस्था, गुण या भाव। (सेन्सिबिलिटी)

संवेश—पुं० [सम्√विश् (घुसना)+घञ्] १. पास आना या जाना। पहुँचना। २. प्रवेश। भेंट। ३. आसन लगाना। बैठना। ४. लेटना या सोना। ५. बैठने का आसन या पीढ़ा। ६. काम-शास्त्र में, एक प्रकार का रति-बन्ध। ७. अग्नि देवता जो रति के अधिष्ठाता माने गये हैं।

संवेशक—वि० [सम्√विश्+णिच्-ण्वुल्–अक] चीजें क्रम से तथा यथा-स्थान रखनेवाला।

संवेशन—पुं० [सम्√विश् (बैठना)+णिच्-ल्युट्–अन] [वि० संवेषणीय, संवेश्य, भू० कृ० संवेशित] १. बैठना। २. लेटना या सोना। ३. घुसना। पैठना। ४. स्त्री-संभोग। मैथुन। रति।

संवेशी—वि० [सम्√विश् (रहना)+णिनि]=संवेशक।

संवेश्य—वि० [सम्√विश् (बैठना)+ण्यत्] १. जिस पर लेटा जा सके। २. जिसके अन्दर घुसा या पैठा जा सके।

संवेष्ट—पुं० [सम्√वेष्ट् (लपेटना)+घञ्] लपेटने का कपड़ा। बेठन।

संवेष्टक—पुं० [सं० सम्√वेष्ट्+णिच्-ण्वुल्-अक, कन, वा] वह जो वस्तुओं का संवेष्टन करता हो। पोटली आदि बाँधनेवाला। (पैकर)

संवेष्टन—पुं० [सं० सम्√वेष्ट्+णिन्-ल्युट्-अन] [भू० कृ० संवेष्टित] १. कोई चीज चारों तरफ से अच्छी तरह से लपेटकर बाँधना। २. वह कपड़ा, कागज, टाट या ऐसी और कोई चीज जिसमें कहीं भेजने के लिए कोई चीज बाँधी जाय। (पैकिंग) ३. चारों ओर से घेरना। ४. बंद करना।

संवेष्टित—वि० [सम्√वेष्ट (लपेटना)+णिच–क्त] चारों ओर से घेरा या बंद किया हुआ। परिवेष्टित। (एन्कलोज्ड)

संवैधानिक—वि० [सं० संविधान+ठक्–इक] संविधान से संबंध रखनेवाला। संविधान संबंधी। (कन्स्टिच्यूशनल)

संवैधानिक राजतंत्र—पुं० [सं० कर्म० स०] किसी राज्य का ऐसा तंत्र या शासन जिसका प्रधान अधिकारी ऐसा राजा हो जिसके अधिकार और कर्त्तव्य संविधान द्वारा नियमित और मर्यादित हों। (कान्स्टिच्यूशनल मॉनर्की)

संव्यवहार—पुं० [सम्-वि-अव√हृ (हरण करना)+घञ्] १. अच्छा व्यवहार या सलूक। एक दूसरे के प्रति उत्तम आचरण। २. बातचीत का प्रसंग या विषय। ३. लेन-देन या व्यवहार। ४. लगाव। सम्पर्क। ५. किसी पदार्थ का उपयोग या व्यवहार। ६. व्यवसायी। रोजगारी। ७. महाजन। ८. लोक में प्रचलित सुबोध शब्द।

संशप्त—वि० [सम्√शप् (शाप देना)+क्त] १. जो शापग्रस्त हो। जिसे शाप मिला हो। २. जिसने किसी से प्रतिज्ञा की हो या किसी को वचन दिया हो। वचन-बद्ध।

संशप्तक—पुं० [संशप्त ब० स०+कप्] १. ऐसा योद्धा जिसने बिना सफल हुए लड़ाई आदि से न हटने की शपथ खाई हो। २. कुरुक्षेत्र के युद्ध में एक दल जिसने उक्त प्रकार से अर्जुन के वध की प्रतिज्ञा की थी पर स्वयं मारा गया था।

संशब्द—पुं० [सम्√शब्द् (शब्द करना)+घञ्] १. ललकार। २. उक्ति। कथन। ३. प्रशंसा। स्तुति।

संशम—पुं० [सम्√शम् (शान्त होना)+अच्] कामना, वासना आदि से पूरी तरह से निवृत्त होना। इच्छाओं आदि का दमन।

संशमन—पुं० [सम्√ शम् (शान्त होना)+ल्युट्—अन] १. शान्त करना। २. नष्ट करना। ३. वैद्यक में, ऐसी दवा जो दोषों को बिना घटाए-बढ़ाए रोग दूर करे।

संशमन वर्ग—पुं० [ष० त०] वैद्यक में, संशमन करनेवाली ओषधियों (कुट, देवदारु, हलदी आदि) का वर्ग।

संशय—पुं० [सं० सम्√शी+अच्] १. पड़े रहना। लेटना। २. मन की वह स्थिति जिसमें किसी बात के सम्बन्ध में निराकरण या निश्चय नहीं होता; 'और उस बात का ठीक रूप जानने या समझने के लिए मन में उत्कंठा या जिज्ञासा बनी रहती है। तथ्य या वास्तविकता तक पहुँचने के लिए मन की जिज्ञासापूर्ण वृत्ति। शक। (डाउट)

विशेष—संशय बहुधा ऐसी बातों के सम्बन्ध में होता है जिनपर पहले से और लोग कोई निश्चय तो कर चुके हों, फिर भी उस निश्चय से हमारा सन्तोष या समाधान न होता हो। हमारे मन में यह भाव बना रहता है कि ऐसा हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता। यथा—कछु संशय तो फिरती बारा।—तुलसी। प्रायः शंका और सन्देह के स्थान पर भी इसका प्रयोग होता है। दे० 'शंका' और 'सन्देह'। इसी आधार पर यह न्यायशास्त्र में १६ पदार्थों में एक माना गया है।

३. खतरे या संकट की आशंका या संभावना। जैसे—प्राणों का संशय। ४. होना। साहित्य में, सन्देह नामक काव्यालंकार का दूसरा नाम।

संशयवाद—पुं० [सं० संशय√वद्+घञ्] १. दार्शनिक क्षेत्र में, वह सैद्धान्तिक स्थिति जिसमें अन्धविश्वास या श्रद्धा और शब्द प्रमाण की उपेक्षा करके यह सोचा जाता है कि अब तक जो मान्यताएँ चली आ रही हैं, वे ठीक भी हैं, तथा नहीं भी और वे ठीक हो भी सकती हैं और नहीं भी हो सकतीं। (स्केप्टिसिज़्म)

विशेष—इसमें प्रत्यय, प्रमाण और प्रयोगात्मक अनुभव ही ग्राह्य या मान्य होते हैं। शेष बातों के सम्बन्ध में मन में संशय ही बना रहता है।

संशयवादी—पुं० [सं० संशय√वद्+णिनि] वह जो संशयवाद का अनुयायी या समर्थक हो।

संशय-सम—पुं० [सं०] न्याय दर्शन में २४ जातियों अर्थात् खंडन की असंगत युक्तियों में से एक। वादी के दृष्टान्त में साध्य और असाध्य दोनों प्रकार के धर्मों का आरोप करके उसके साध्य विषय को संदिग्ध सिद्ध करने का प्रयत्न।

संशयाक्षेप—पुं० [ष० त०] १. संशय का दूर होना। २. साहित्य में एक प्रकार का अलंकार।

संशयात्मक—वि० [ब० स०] जिसमें संशय के लिए अवकाश हो।

संशयात्मा—पुं० [मध्य० स०] वह जिसका मन किसी बात पर विश्वास न करता हो। वह जिसके मन में हर बात के विषय में कुछ न कुछ संशय बना रहता हो।

संशयालु—वि० [संशय+आलुच्] बात-बात में संशय या सन्देह करनेवाला।

संशयावह—वि० [संशय—आ√ वह (ढोना)+अच्] १. मन में संशय उत्पन्न करनेवाला। २. जो संकट उत्पन्न कर सकता हो। भयावह।

संशयित—भू० कृ० [सम्√ शी (शयन करना)+क्त] १. (व्यक्ति) जिसके मन में संशय उत्पन्न हुआ हो। २. (बात) जिसके विषय में संशय किया गया हो। संदिग्ध।

संशयिता--वि० [सम्√शी (शयन करना)+तृच्] संशय करनेवाला।

संशयी--वि०[सं० संशय+इनि] १. जिसके मन में प्रायः संशय होता रहता हो। शक्की स्वभाववाला। २. जिसके मन में संशय उत्पन्न हुआ हो। ३. जो प्रायः संशय करता रहता हो। जैसे--संशयी वुद्धि या स्वभाव।

संशयोपमा--स्त्री०[मध्य० स०] साहित्य में, संशय अलंकार का एक भेद जिसमें कई वस्तुओं की समानता का उल्लेख करके संशय का भाव प्रकट किया जाय।

संशरण--पुं०[सम्√शृ (चूर्ण करना)+ल्युट्--अन्] १. भंग करना। तोड़ना। २. चूर-चूर या टुकड़े टुकड़े करना। २. किसी की शरण लेना।

संशारुक--वि० [सम्√शृ (भंग करना)+उन्--कन्] संशरण करनेवाला।

संशासन--पुं० [सम्√शास् (शासन करना)+ल्युट्--अन] अच्छा शासन। उत्तम राज्य-प्रबन्ध।

संशित--भू० कृ० [सं० सम्√ शो+क्त] १. सान पर चढ़ाकर चोखा या तेज किया हुआ। ३. उद्यत। तत्पर। ३. दक्ष। निपुण। ४. दृढ़। पक्का। जैसे--संशित व्रत।

संशितात्मा (त्मन्)--वि०[कर्म०स०] जिसने दृढ़ संकल्प कर लिया हो।

संशिति--स्त्री०[सं० √शो (तेज करना आदि)+क्तिच्]१. संशय। सन्देह। शक। २. सान पर चढ़ाकर धार तेज करने की क्रिया या भाव।

संशीत--भू० कृ० [सम्√शौ (गमनादि)+क्त--संप्र०] १. ठंढा किया हुआ। २. ठंढ के कारण जमा हुआ।

संशीलन--पुं०[सम्√शील् (अभ्यास करना)+ल्युट्--अन] १. नियमित रूप से अभ्यास करना। २. संसर्ग।

संशुद्ध--वि०[सं०]१. यथेष्ट शुद्ध। विशुद्ध। २. अच्छी तरह साफ किया हुआ। ३. (ऋण या देन) चुकाया हुआ। ४. जाँचा हुआ। परीक्षित। ५. अपराध, दोष आदि से मुक्त किया हुआ। ६. प्रायश्चित्त आदि के द्वारा पापों से मुक्त किया हुआ।

संशुद्धि--स्त्री० [सम्√शुध् (शुद्ध करना)+क्तिन्] संशुद्ध होने की अवस्था या भाव।

संशुष्क--वि० [सं०√शुष्(सूखना)+क्त=क] १. बिलकुल सूखा हुआ। खुश्क। २. नीरस। फीका। ३. जो रसिक या सहृदय न हो।

संशोधक--वि० [सम्√शुध् (शुद्ध करना)+णिच्-ण्वुल्--अक] १. शोधन करनेवाला। दुरुस्त या ठीक करनेवाला। २. संस्कार या सुधार करनेवाला। ३. ऋण या देन चुकानेवाला। ४. (तत्त्व) जो किसी बात या पदार्थ की शुद्धि में सहायक होता हो। (करेक्टिव)

संशोधन--पुं० [सम्√शुध् (शुद्ध करना)+णिच्-ल्यूट-अन] [वि० संशोधनीय संशोधत, संशुद्ध, संशोध्य] १. शुद्ध करना या साफ करना। २. त्रुटि, दोष आदि दूर करके ठीक और दुरुस्त करना। (करेक्शन) ३. आजकल विशेष रूप से किसी प्रस्ताव या प्रस्तुत किए हुए विचार के सम्बन्ध में यह कहना कि इसमें अमुक बात घटाई या बढ़ाई जाय अथवा उसका रूप बदलकर उसे अमुक प्रकार का बनाया जाय। (अमेण्डमेण्ट) ४. ऋण, देन आदि चुकाने की क्रिया या भाव।

संशोधनीय--वि० [सम्√शुध् (शुद्ध करना)+अनीयर्] जिसका संशोधन हो सके या होने को हो।

संशोधित--भू० कृ० [सम्√शुध् (शुद्ध करना)+णिच्+क्त] १. जिसका संशोधन हुआ हो। २. जो ठीक, दुरुस्त या शुद्ध किया गया हो। ३. (ऋण या देन) जो चुकाया गया हो।

संशोधी--वि०[सं० √शुध् (शुद्ध करना)+णिनि] [स्त्री० संशोधिनी] संशोधक।

संशोध्य--वि०[सं० √ शुध् (शुद्ध करना)+ण्यत्]=संशोधनीय।

संशोभित--वि०[सम्√शुभ्] (शोभित होना)+णिच्+क्त]१. अलंकृत। २. सुशोभित।

संशोषण--पुं० [सम्√शुष् (सोखना)+णिच् --ल्युट्--अन] [वि० संशोषणीय, संशोष्य] १. अच्छी तरह सोखना। २. सुखाना।

संशोषित--भू० कृ०[सम् √ शुष् (सोखना)+क्त] सुखाया या सोखा हुआ।

संशोषी (षिन्)--वि० [सम्+शुष् (सुखना)+णिनि] १. सोखनेवाला। २. सुखानेवाला। जैसे--संशोषी ज्वर।

संशोष्य--वि० [सम्√ शुष् (सुखाना)+ण्यत्] जो सोखा जा सकता हो या सोखा जाने को हो।

संश्रय--पुं०[सम्√श्रि (सेवा करना)+अच्] [भू० कृ० संश्रित] १. संयोग। मेल। २. आज-कल कुछ विशिष्ट प्रकार के दलों, शक्तियों आदि का किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए आपस में मेल या मैत्री स्थापित करना। (एलायन्स) ३. लगाव। सम्पर्क। ४. आश्रय। शरण। ५. अवलम्ब। सहारा। ६. आश्रय या शरण लेने की जगह। ७. अंश। भाग। ८. घर। मकान। ९. उद्देश्य। लक्ष्य। १०. अंश। भाग। ११. राजाओं में पारस्परिक और सहायता के लिए होनेवाली संधि।

संश्रयण-- पुं० [सम् √ श्रि (सेवा करना)+ल्युट्-अन] [वि० संश्रयणीय, संश्रयी, भू० कृ० संश्रित] १. सहारा लेना। अवलम्ब पकड़ना। २. किसी के पास जाकर उसका आश्रय लेना। पनाह लेना।

संश्रयणीय--वि०[सम्+श्रि (सेवा करना)+अनीयर्]१. जिसका आश्रय लिया जा सके। २. जिसे आश्रय दिया जा सके।

संश्रयी--वि०[सम्+श्रि (सेवा करना)+इनि]१. संश्रय अर्थात् आश्रय या सहारा लेनेवाला। २. शरण लेनेवाला।
पुं० नौकर। भृत्य।

संश्रवण--पुं०[सम्√श्रु (सुनना)+ल्युट्--अन] [वि० संश्रवणीय, संश्रुत]१. अच्छी तरह ध्यान लगाकर सुनना। २. अंगीकृत या स्वीकृत करना। ३. वचन देना। वादा करना।

संश्राव--पुं० [सम्√श्रु (सुनना)+घञ्] [वि० संश्रावणीय, भू० कृ० संश्रावित]=संश्रवण।

संश्रावक--वि०[सम्√ श्रु (सुनना)+ण्वुल्--अक] १. सुननेवाला। श्रोता। २. सुनकर मान लेनेवाला।
पुं० चेला। शिष्य।

संश्रावित--भू० कृ० [सम्+श्रु (सुनना)+णिच्--क्त]१. सुनाया हुआ। २. जोर से पढ़कर सुनाया हुआ।

संश्राव्य--वि० [सम्√ श्रु (सुनना)+ण्यत्]१. जो सुना जा सके। २. जो सुनाया जा सके।

संश्रित--भू० कृ०[सं० √ श्रि (सेवा करना)+क्त]१. जुड़ा या मिला

हुआ। संयुक्त। २. साथ लगा हुआ। संलग्न। ३. जो किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए किसी दल या वर्ग में मिल गया हो। जिसने किसी के साथ संश्रय स्थापित किया हो। (एलायड) ४. टाँगा, टिकाया या लटकाया हुआ। ५. गले से लगाया हुआ। आलिंगित। ६. शरण में आया हुआ। शरणागत। ७. जिसे आश्रय देकर शरण में रखा गया हो। ८. जिसने सेवा करना स्वीकृत किया हो। ९. जो किसी काम या बात के लिए दूसरे पर आश्रित हो। परावलम्बी।

पुं० नौकर। भृत्य।

संश्रुत—भू० कृ०[सम्√श्रु (सुनना)+क्त]१. अच्छी तरह सुना हुआ। २. अंगीकृत। स्वीकृत।

संश्लिष्ट—भू० कृ०[सं०]१. किसी से अच्छी तरह जुड़ा, मिला, लगा या सटा हुआ। २. किसी के साथ मिलाकर एक किया हुआ। एकीकृत। ३. मिश्रित या सम्मिलित किया हुआ। ४. गले लगाया हुआ। आलिंगित। ५. संश्लेषण की क्रिया से किसी के साथ बना या मिला हुआ। श्लिष्ट। (सिन्थेटिक)

पुं०१. ढेर। राशि। २. समूह। ३. वास्तु-शास्त्र में, एक प्रकार का मंडप।

संश्लेष—पुं०[सं० √श्लिष् (मिलाना)+घञ्]१. मिलने या मिलाये जाने की क्रिया या भाव। २. गले लगाना। आलिंगन। परिरम्भण।

संश्लेषक—वि०[सं०] संश्लेषण या संश्लेष करनेवाला।

संश्लेषण–पुं० [सम्√ श्लिष् (मिलाना)+ल्युट्—अन] [वि० संश्लेषणीय, भू० कृ० संश्लेषित, संश्लिष्ट]१. किसी के साथ जोड़ना, मिलाना या लगाना। २. टाँगना या लटकाना। ३. वह जिससे कुछ जोड़ा या बाँधा जाय। बंधन। ४. कार्य से कारण अथवा किसी नियम या सिद्धान्त से किसी चीज या बात के परिणाम या फल का विचार करना। मिलान करना। 'विश्लेषण' का विपर्याय। (सिन्थेसिस) ५. भाषा-विज्ञान में, वह स्थिति जिसमें किसी पद से अर्थ का भी और पर-सर्ग आदि के द्वारा संबंध का भी बोध होता है। जैसे—'मेरा' शब्द में 'मैं' वाले अर्थ तत्त्व के सिवा 'रा' पर-सर्ग के कारण संबंध सूचक तत्त्व भी सम्मिलित है। (एग्लूटिनेशन)

विशेष—संस्कृत व्याकरण में इसी तत्त्व या प्रक्रिया को 'सामर्थ्य' कहते हैं।

संश्लेषित—भू० कृ०[सम् √श्लिष् (मिलाना)+णिच्—क्त] जिसका संश्लेषण किया गया हो या हुआ हो।

संश्लेषी—वि०[सम् √ श्लिष् (मिलाना)+इनि] [स्त्री० संश्लेषिणी] संश्लेषक।

संष†—स्त्री०=संख्या।

†पुं०=शंख।

संस†—पुं०=संशय।

संसइ†—पुं०=संशय।

संसक्त—भू० कृ०[सं०]१. किसी के साथ मिला, लगा या सटा हुआ। (कन्टिगुअस) २. जुड़ा हुआ। सम्बद्ध। ३. किसी कार्य में लगा हुआ या प्रवृत्त। ४. किसी के प्रेम में फँसा हुआ। आसक्त। ५. सांसारिक विषय-वासना में लगा हुआ। ५. प्रतियोगिता, युद्ध, विवाद आदि में किसी से भिड़ा हुआ। ७. युक्त। सहित। ८. घना। सघन।

संसक्ति—स्त्री०[सं०] [वि० संसक्त]१. किसी के साथ सटे या लगे होने का भाव। (कन्टीगुइटी) २. एक ही तरह के पदार्थों या तत्त्वों का आपस में मिल या सटकर एक रूप होना। ३. वह शक्ति जिससे वस्तु के सब अंग एक साथ लगे या सटे रहते हैं। (कोहेशन) ४. संबंध। लगाव। ५. विशेष अनुराग या आसक्ति। लगन। ६. लीनता। ७. प्रवृत्ति।

संसगर†—वि०[सं० शस्य=अन्न, फसल+आगार]१. (भूमि) जिसमें पैदावार अधिक हो। उपजाऊ। उर्वर। २. लाभ-दायक।

संसज्जन—पुं०[सं० सम्√सज्ज् (तैयार होना)+ल्युट्—अन, [भू० कृ० संसज्जित]१. अच्छी तरह सजाने की क्रिया या भाव। २. आज-कल युद्ध आदि के लिए सैनिक एकत्र करने और उन्हें अस्त्र-शस्त्र आदि से पूर्णतः युक्त करने की क्रिया। (मोबिलाइज़ेशन)

संसद—स्त्री० [सं०] १. समाज। सभा। मंडली। २. किसी विशेष कार्य के लिए संगठित बहुत से लोगों का निकाय या समुदाय। (एसोसिएशन) ३. आज-कल राज्य या शासन सम्बन्धी कार्यों में सहायता देने, पुराने विधानों में संशोधन करने तथा नये विधान बनाने के लिए प्रजा के प्रतिनिधियों की चुनी हुई सभा। (पार्लमेण्ट) ४. प्राचीन भारत में (क) राज-सभा। (ख) न्याय सभा। ५. एक प्रकार का यज्ञ जो २४ दिनों में पूरा होता था।

संसदीय—वि०[सं० संसद] संसद-संबंधी। सांसद।

संसय†—पुं०=संशय।

संसरण—पुं०[सम्√सृ (गमनादि)+ल्युट्—अण्] [वि० संसरणीय, संसरित, संसृत]१. आगे की ओर खिसकना या बढ़ना। सरकना। २. गमन करना। चलना। ३. सेना या सैनिकों का बिना बाधा के आगे बढ़ते चलना। ४. एक जीवन त्यागकर दूसरा नया जन्म लेना। ५. बहुत दिनों से चला आया हुआ मार्ग या रास्ता। ६. जगत्। संसार। ७. युद्ध का आरम्भ। ८. लड़ाई छिड़ना। ९. प्राचीन भारत में, नगर के मुख्य द्वार के बाहर बना हुआ वह स्थान जहाँ फाटक बन्द हो जाने के बाद आये हुए यात्री रात के समय ठहरा करते थे।

संसर्ग—पुं०[सं०]१. ऐसा लगाव या सम्बन्ध जो पास या साथ रहने से उत्पन्न होता है। (कन्टैक्ट) जैसे—(क) संसर्ग से ही गुण और दोष उत्पन्न होते हैं। (ख) यह रोग संसर्ग से फैलता है। २. व्यावहारिक घनिष्ठता। मेल-जोल। २. संपर्क। संबंध। ४. किसी के साथ रहने की क्रिया या भाव। सहवास। ५. मैथुन। संभोग। ६. संपत्ति का ऐसी स्थिति में होना कि परिवार के सब लोगों का उसपर समान अधिकार हो। ७. वैद्यक में, बात, पित्त, और कफ में से दो का एक साथ होनेवाला प्रकोप या विकार। ८. वह विन्दु जहाँ एक रेखा दूसरी को काटती हो।

संसर्गज—वि०[सं०]१. संसर्ग से उत्पन्न होनेवाला। २. (रोग) जो किसी रोगी को छूने से उत्पन्न होता है। छुतहा। (इन्फ़ेक्सस)

विशेष—संक्रामक और संसर्गज रोगों में अंतर यह है कि संक्रामक रोग तो पानी, हवा आदि के द्वारा भी फैलते हैं, परन्तु संसर्गज रोग केवल रोगी के संसर्ग में रहने अथवा उसे छूने मात्र से उत्पन्न होते हैं। अर्थात् संसर्गज रोग तो केवल प्रत्यक्ष संबंध से उत्पन्न होते हैं, परन्तु संक्रामक रोग अप्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष दोनों रूपों में फैलते हैं।

संसर्ग-दोष—पुं०[सं०] वह दोष या बुराई जो किसी के संसर्ग से उत्पन्न हो।

संसर्ग-रोध—पुं०[सं०] १. ऐसी व्यवस्था जो किसी स्थान को संक्रामक रोगों आदि से बचाने के लिए बाहर से आनेवाले लोगों को कुछ समय तक कहीं अलग रखकर की जाती है। २. उक्त कार्य के लिए अलग या नियत किया हुआ स्थान। (क्वारेन्टाइन)

संसर्ग-विद्या—स्त्री० [ष० त०] लोगों से मेल-जोल पैदा करने की कला। व्यवहार-कुशलता।

संसर्गाभाव—पुं०[ष० त०] १. संसर्ग का अभाव। सम्बन्ध का न होना। २. न्याय शास्त्र में अभाव का वह प्रकार या भेद जो संसर्ग न रहने की दशा में माना जाता है। जैसे—यदि घर में घड़ा न हो तो वह संसर्गाभाव माना जायगा। क्योंकि घर में न होने पर भी कहीं बाहर तो घड़ा होगा ही।

संसर्गी—वि० [संसर्ग+इति, सम्√सृज्(छोड़नादि)+घिनुण वा][स्त्री० संसर्गिन] १. संसर्ग या लगाव रखनेवाला। २. प्रायः या सदा साथ रहनेवाला। संगी। साथी।

पुं० धर्मशास्त्र आदि के अनुसार वह जो पैतृक सम्पत्ति का विभाग हो जानेपर भी कुटुम्बियों आदि के साथ रहता हो।

संसर्जन—पुं०[सम्√सृज् (देना आदि)+ल्युट्—अन] [वि० संसर्जनीय, संसर्ज्य भू० कृ० संसर्जित] १. संयोग होना। मिलना। २. जुड़ना या सटना। ३. अपनी ओर मिलाना। ४. त्याग करना। छोड़ना।

संसर्प—पुं०[सम्√सृप(धीरे चलना)+घञ्] १. रेंगना। २. खिसकना। सरकना। ३. ज्योतिष में, चन्द्र-गणना के अनुसार वह अधिक भाग जो किसी क्षय मास वाले वर्ष में पड़ता है।

संसर्पण—पुं०[सं०√सृप् (धीरे चलना)+ल्युट्—अन] [वि० संसर्पणीय, भू० कृ० संसर्पित] १. धीरे धीरे आगे की ओर चलना या बढ़ना। २. खिसकना या रेंगना। ३. उक्त प्रकार या रूप से ऊपर की ओर बढ़ना या चढ़ना। ४. सहसा आक्रमण करना। अकस्मात् हमला करना।

संसर्पी—वि० [संसर्प+इनि, सम्√सृप् (धीरे चलना)+णिनि वा] १. संसर्पण करनेवाला। २. वैद्यक में पानी पर तैरने या उतरनेवाला।

संसा†—पुं० १.=संशय। २.=साँस। ३.=सँड़सा।

संसादन—पुं० [सं० सम्√सद् (गत्यादि)+णिच्—ल्युट—अन] [वि० संसादनीय, संसाद्य, भू० कृ० संसादित] १. इकट्ठा करना या एकत्र करना। जमा करना। २. क्रम या सिलसिले से रखना या लगाना।

संसाधक—वि०[सम्√साध् (सिद्ध करना)+ण्वुल्—अक] जीतने या वश में करनेवाला।

संसाधन—पुं० [सम्√साध् (सिद्ध करना)+ल्युट्—अन] [वि० संसाधनीय, संसाध्य, भू० कृ० संसाधित] १. कोई काम अच्छी तरह पूरा करना। २. काम की तैयारी। आयोजन। ३. जीत या दबाकर वश में करना। दमन करना।

संसाधनीय—वि०[सम्√साध् (सिद्ध करना)+अनीयर्]=संसाध्य।

संसाध्य—वि० [सम्√ साध्(सिद्ध करना)+ण्यत्] १. काम जो पूरा किया जा सकता हो या हो सकता हो। २. जो जीता या दबाया जा सकता हो। ३. जो किये जाने के योग्य हो। ४. जो जीते या दबाए जाने के योग्य हो।

संसार—पुं०[सं०] १. लगातार एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाते रहना। २. यह जगत् या दुनिया जिसमें जीव या प्राणी आते-जाते रहते हैं। इहलोक। मर्त्यलोक। ३. इस संसार में बार बार जन्म लेने और मरने की अवस्था। ५. जीवन तथा संसार का प्रपंच और माया। ५. घर-गृहस्थी और उसमें का जीवन। उदा०—मेरे सपनों में कलरव का संसार आँख जब खोल रहा।—प्रसाद। ६. समूह। (क्व०) ७. दुर्गन्ध खादिर। विट् खदिर।

संसार-गुरु—पुं०[सं०] १. संसार को उपदेश देनेवाला। जगद्गुरु। २. कामदेव।

संसार-चक्र—पुं०[मध्यम० स०] १. बार बार इस संसार में आकर जन्म लेने और मरकर यह संसार छोड़ने का क्रम या चक्र। २. संसार का जंजाल या झंझट। सांसारिक प्रपंच। ३. संसार में होता रहनेवाला उलट-फेर या परिवर्तन।

संसारण—पुं० [सम्√सृ (गमनादि)+णिच्—ल्युट्—अन] [भू० कृ० संसारित] गति देना। चलाना।

संसार-तिलक—पुं०[सं० प० त०] १. एक प्रकार का बढ़िया चावल।

संसार-पथ—पुं० [ष०त०] १. संसार में आने का मार्ग। २. स्त्रियों की जननेंद्रिय। भग। योनि।

संसार-भावन—पुं०[सं०] संसार को दुःखमय समझना।

संसार-सारथि—पुं०[सं०] १. संसार की जीवन यात्रा चलानेवाला; परमेश्वर। २. शिव।

संसारी—वि०[सम्√सृ(गत्यादि)+णिन् संसार+इनि वा][स्त्री० संसारिणी] १. संसार-सम्बन्धी। लौकिक। सांसारिकि। २. घर में रहकर घर-गृहस्थी चलाने या गृहस्थ जीवन व्यतीत करनेवाला। ३. संसार में आकर बार-बार जन्म लेने और मरनेवाला। ४. लोक-व्यवहार में कुशल। दुनियादार।

संसिक्त—भू० कृ० [सम्√सिच् (सींचना)+क्त] अच्छी तरह सींचा हुआ। जिसपर खूब पानी छिड़का गया हो।

संसिद्ध—वि० [सम्√सिध् (पूरा करना)+क्त] १. (काम) जो अच्छी तरह किया गया हो या ठीक तरह से पूरा उतरा हो। २. (खाद्य पदार्थ) जो अच्छी तरह सीझा या पका हो। ३. प्राप्त। लब्ध। ४. नीरोग। स्वस्थ। ५. उद्यत। प्रस्तुत। ६. कुशल। दक्ष। निपुण। ८. जिसने योग-साधन करके सिद्धि प्राप्त कर ली हो।

संसिद्धि—स्त्री० [सम्√सिध् (पूरा होना)+क्तिन्] १. संसिद्ध होने की अवस्था या भाव। २. सफलता। ३. पक्वता। ४. पूर्णता। ५. स्वस्थता। ६. परिणाम। ७. मुक्ति। ८. अवश्य और निश्चित होनेवाली बात। अवश्यंभावी। ९. निसर्ग। प्रकृति। १०. स्वभाव। ११. मदमत्त स्त्री।

संसी†—स्त्री०=सँड़सी।

संसुप्त—भू० कृ०[सम्√सुप् (शयन करना)+क्त] गहरी नींद में सोया हुआ।

संसुप्ति—स्त्री०[सं०] गहरी नींद।

संसूचक—वि० [सम्√ सूच् (सूचना देना)+णिच्—ण्वुल्—अक] स्त्री० संसूचिका] १. प्रकट करने या जतानेवाला। २. भेद या रहस्य बतलानेवाला। ३. समझाने-बुझानेवाला। ४. डाँटने-डपटनेवाला।

संसूचन––पुं० [सम्√सूच् (सूचना देना)+णिच्––ल्युट्––अन] [भू० कृ० संसूचित] [वि० संसूचनीय, संसूच्य] १. प्रकट या जाहिर करना। २. बतलाना। ३. भेद·खोलना। ४. समझाना-बुझाना। ५. डाँटना-डपटना। फत्कार बताना।

संसूची––वि०[सम्√ सूच् (सूचना देना)+णिनि] [स्त्री० संसूचिनी]= संसूचक।

संसूच्य––वि० [सम्√ सूच् (सूचना देना)+ण्यत्] जिसके सम्बन्ध मे या जिसके प्रति संसूचन हो सके। संसूचन का अधिकारी या पात्र। पुं० दे० 'सूच्य'। (नाटक का)

संसृति––स्त्री० [सम्√सृ (गत्यादि)+क्तिन्] १. संसार में बार-बार जन्म लेने की परम्परा। आवागमन। २. जगत्। संसार।

संसृष्ट––भू० कृ० [सं०] १. जो एक साथ उत्पन्न या आविर्भूत हुए हों। २. जो आपस में एक दूसरे से मिले हों। संश्लिष्ट। ३. परस्पर संबद्ध। ४. जो किसी के अंतर्गत या अंतर्भूत हों। ५. बहुत अधिक हिला-मिला हुआ। बहुत मेल-जोलवाला। ६. (काम) पूरा या सम्पन्न किया हुआ। ७. इकट्ठा किया हुआ। संगृहीत। ८. वैद्यक में, (रोगी) जिसका पेट वमन, विरेचन आदि के द्वारा साफ कर दिया गया हो। ९. धर्म शास्त्र में, (परिवार) जो बँटवारा हो चुकने के बाद भी मिल कर एक हो गये हों।

पुं०१. घनिष्ठता। हेल-मेल। २. एक पौराणिक पर्वत।

संसृष्टत्व––पुं० [सं० संसृष्ट+त्व] १. संसृष्ट होने की अवस्था, गुण या भाव। २. संपत्ति का बँटवारा हो जाने के बाद फिर हिस्सेदारों का एक में मिलकर रहना। (स्मृति)

संसृष्ट होम––पुं० [सं०] अग्नि और सूर्य को एक साथ दी जानेवाली आहुति।

संसृष्टि––स्त्री० [सं० सम्√सृज् (बना)+क्तिव्+षत्व स्टुत्व] १. संसृष्ट होने की अवस्था, गुण या भाव। २. घनिष्ठता। हेल-मेल। ३. मिलावट। मिश्रण। ४. लगाव। सम्बन्ध। ५. बनावट। रचना। ६. संग्रह। ७. धर्म-शास्त्र में, बँटवारा या विभाजन हो जाने पर भी परिवारों का फिर मिलकर एक हो जाना। ८. साहित्य में, दो या अधिक काव्यालंकारों का इस प्रकार संसृष्ट होना या साथ साथ आना कि वे सब अलग अलग दिखाई दें। इसकी गणना एक स्वतन्त्र अलंकार के रूप में होती है।

संसृष्टी (ष्टिन्)––पुं० [सं० सृष्ट+इनि] धर्मशास्त्र में, ऐसे परिवार या सम्बन्धी जो विभाजन हो चुकने पर भी मिलकर एक हो गये हों।

संसेक––पु०[सं० सम्√सिच् (सींचना)+घञ्] अच्छी तरह किया जानेवाला पानी आदि का छिड़काव।

संसेचन––पुं०[सं०] संभोग के समय नर का वीर्य मादा के अंड में मिलना जो प्रजनन के लिए आवश्यक होता है। (इन्सेमिनेशन)

विशेष––अब यह क्रिया रासायनिक पद्धतियों में भी होने लगी है।

संसेवन––पुं०[सं० सम्√सेव् (सेवा करना)+ल्युट्––अन] [भू० कृ० संसेवित, वि० संसेवनीय, संसेव्य] १. अच्छी तरह की जानेवाली सेवा। २. सदा सेवा में उपस्थित रहने की क्रिया या भाव। ३. अच्छी तरह किया जानेवाला उपयोग या व्यवहार। ४. अच्छी तरह किया जानेवाला आदर-सत्कार।

संसेवा––स्त्री०[सं० सं√सेव् (सेवा करना)+अ]=संसेवन।

संसेवित––भू० कृ० [सं० सम् √सेव् (सेवा करना)+क्त] जिसका अच्छी तरह से संसेवन किया गया हो अथवा हुआ हो। उदा०–– सुरांगना, संपदा, सुराओं से संसेवित, नर पशुओ भूभार मनुजता जिनसे लज्जित।––पन्त।

संसेवी (विन्)––वि०[सं०, सम्√ सेव् (सेव् करना)+णिनि] संसेवन करनेवाला।

पुं० टहलुआ। खिदमतगार।

संसेव्य––वि० [सं० सम्√सेव् (सेवा करना)+यत्] जिसका संसेवन हो सकता हो अथवा आवश्यक या उचित हो।

संसौ†––पुं० [सं० श्वास] १. श्वास। साँस। २. जीवनी-शक्ति। प्राण।

पुं०=संशय।

संस्करण––पुं० [सं० सम्√कृ (करना)+ल्युट––अन ––सुट्] १. संस्कार करने की क्रिया या भाव। २. अच्छी तरह ठीक, दुरुस्त या शुद्ध करना। सुधारना। ३. अच्छा, नया और सुन्दर रूप देना। ४. द्विजातियों के लिए विहित संस्कार करना। ५. आज-कल पुस्तकों, समाचार-पत्रों आदि की एक बार में और एक तरह की होनेवाली छपाई। आवृत्ति (एडिशन) जैसे––(क) पुस्तक का राज संस्करण, (ख) समाचार पत्र का प्रातः संस्करण।

संस्कर्ता––वि०[सं० सम्√कृ (करना)+तृच्-सुट्] संस्कार करनेवाला।

संस्कार––पुं०[सं०] १. किसी चीज को ठीक या दुरुस्त करके उचित रूप देने की क्रिया। जैसे––व्याकरण में होनेवाला शब्दों का संस्कार। २. किसी चीज की त्रुटियाँ, दोष, विकार आदि दूर करके उसे उपयोगी तथा निर्मल बनाने की क्रिया। जैसे––वैद्यक में होनेवाला पारे का संस्कार। ३. किसी प्रकार की असंगति, भद्दापन आदि दूर करके उसे शिष्ट और सुन्दर रूप देने की क्रिया। जैसे––भाषा का संस्कार। ४. धो-पोंछ या माँजकर की जानेवाली सफाई। जैसे––शरीर का संस्कार। ५. किसी को उन्नत, सभ्य, समर्थ, आदि बनाने के लिए कुछ बताने, सिखाने या अच्छे मार्ग पर लाने की क्रिया। जैसे––बुद्धि का संस्कार। ६. मनोवृत्ति, स्वभाव आदि का परिष्करण तथा संशोधन करने की क्रिया। (कल्चर) ७. उपदेश, शिक्षा संगीत, आदि के प्रभाव का वह बहुत कुछ स्थायी परिणाम जो मन में अज्ञात अथवा ज्ञात रूप से बना रहता है और हमारे परवर्ती आचार-व्यवहार, रहन-सहन आदि का स्वरूप स्थिर करता है। जैसे––बाल्यावस्था का संस्कार, देश, समाज आदि के कारण बननेवाला संस्कार। ८. भारतीय दार्शनिक क्षेत्र में, इन्द्रियों के विषय-भोग से मन पर पड़नेवाला संस्कार। ९. धार्मिक क्षेत्र में पूर्वजन्मों के किए हुए आचार-व्यवहार, पाप-पुण्य आदि का आत्मा पर पड़ा हुआ वह प्रभाव जो मनुष्य के परवर्ती जन्मों में उसके कार्यों, प्रवृत्तियों, रुचियों आदि के रूप में प्रकट होता है। १०. सामाजिक क्षेत्र में, धार्मिक दृष्टि से किया जानेवाला कोई ऐसा कृत्य जो किसी में कोई पात्रता अथवा योग्यता उत्पन्न करनेवाला माना जाता हो और जिसका कुछ विशिष्ट अवसरों के लिए विधान हो। (सेक्रामेन्ट) जैसे––(क) जातिच्युत या विधर्मी को जाति या धर्म में मिलाने के लिए किया जानेवाला संस्कार। (ख) मृतक का अन्त्येष्टि संस्कार। ११. हिन्दुओं में, जन्म से मरण

तक होनेवाले वे विशिष्ट धार्मिक कृत्य जो द्विजातियों के लिए विहित हैं। जैसे--मुंडन, यज्ञोपवीत, विवाह आदि संस्कार। (रिचुअल, राइट) **विशेष**--मनुस्मृति में, ये १२ संस्कार कहे गये हैं—गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जाति-कर्म, नाम-कर्म, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ा-कर्म उपनयन, केशांत, समावर्तन और विवाह। परवर्ती स्मृतिकारों ने इनमें चार और संस्कार बढ़ाकर इनकी संख्या १६ कर दी है। परन्तु इन नये संस्कारों के नामों के संबंध में उनमें मतभेद है।

१२. वैशेषिक दर्शन में गुण का वह धर्म जिसके कारण या फलस्वरूप वह अपने आपको अभिव्यक्त करता है। १३. अन्न आदि कूट-पीसकर पकाने और उन्हें खाद्य बनाने की क्रिया। १४. स्मरण-शक्ति। १५. अलंकरण। सजावट। १६. पत्थर आदि का वह टुकड़ा जिससे रगड़कर कोई चीज साफ की जाती हो। जैसे--पैर के तलुओं के रगड़ने का झाँवाँ, धातुएँ चमकाने के लिए पत्थर की बटिया आदि।

संस्कारक--वि०[सं०] संस्कार करनेवाला।

संस्कारवर्जित--वि० [सं०] (व्यक्ति) जिसका धर्मशास्त्र के अनुसार संस्कार न हुआ हो। व्रात्य।

संस्कारवान् (वत्)--वि० [सं० संस्कार+मतुप्--म=व-नुम् दीर्घ] १. जिसका संस्कार हुआ हो। २. जिस पर किसी संस्कार का प्रभाव दिखाई देता हो। ३. सुन्दर।

संस्कारहीन--वि० [सं०] (व्यक्ति) जिसका धर्म-शास्त्र के अनुसार संस्कार न हुआ हो। व्रात्य।

संस्कारी--वि०[सं० सं√ कृ (करना)+णिनि, संस्कारिन्] जिसका संस्कार हुआ हो।

पुं० एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती हैं।

संस्कार्य--वि० [सं० सं√कृ (करना)+ण्यत्] १. जिस का संस्कार हो सकता हो। २. जिसका संस्कार होना आवश्यक या उचित हो।

संस्कृत--वि० [सम् √ कृ (करना)+क्त--सुट्] [भाव० संस्कृति] १. जिसका संस्कार किया गया हो। २. परिमार्जित। परिष्कृत। ३. निखारा और साफ किया हुआ। ४. (खाद्य पदार्थ) पकाया या सिझाया हुआ। ५. ठीक किया या सुधारा हुआ। ६. अच्छे रूप में लाया हुआ। सँवारा या सजाया हुआ। ७. जिसका उपनयन संस्कार हो चुका हो।

स्त्री० भारतीय आर्यों की प्राचीन साहित्यिक और शिष्ट समाज की भाषा जो जन-साधारण की बोल-चाल की तत्कालीन प्राकृत भाषा को परिमार्जित करके प्रचलित की गई थी। देव-वाणी।

विशेष--इस भाषा के दो मुख्य रूप हैं—वैदिक और लौकिक। पाणिनी ने अपने व्याकरण के द्वारा इसे एक निश्चित और परिनिष्ठित रूप दिया था।

संस्कृति--स्त्री०[सं० सम्√कृ (करना)+क्तिन्-सुट्] [वि० सांस्कृतिक] १. संस्कार करने अर्थात् किसी वस्तु को संस्कृत रूप देने की क्रिया या भाव। परिमार्जित, शुद्ध या साफ करना। संस्कार। २. अलंकृत करना। सजाना। ३. आज-कल किसी समाज की वे सब बातें जिनसे विदित होता है कि उसने आरम्भ से अब तक कुछ विशिष्ट क्षेत्र में कितनी उन्नति की है।

विशेष--आधुनिक विद्वानों के मत से संस्कृति भी सभ्यता का ही दूसरा अंग या पक्ष है। सभ्यता मुख्यतः आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक सिद्धियों से संबद्ध है, और संस्कृति आध्यात्मिक, बौद्धिक तथा मानसिक सिद्धियों से संबद्ध है। यह संस्कृति कला-कौशल के क्षेत्र की उन्नति, सामाजिक रहन-सहन और परम्परागत योग्यताओं तथा विशिष्टताओं के आधार पर आँकी जाती है। सभ्यता मानव समाज की बाह्य और भौतिक सिद्धियों की मापक है, और संस्कृति लोगों के आंतरिक तथा मानसिक उन्नति की परिचायक होती है। इसी लिए सभ्यता समाज-गत और संस्कृति मनोगत होती है।

४. छंदशास्त्र में २४ वर्णों वाले वृत्तों की संज्ञा।

संस्कृतीकरण--पुं०[सं०] १. कोई चीज संस्कृत करने की क्रिया या भाव। २. अन्य भाषा के शब्दों को संस्कृत रूप देना।

संस्क्रिया--स्त्री०[सं० सम्√कृ(करना)+श्-यक--रिपङ्--रिङ् इयङ् वा] सस्कार।

संस्खलन--पुं० [सं० सम्√स्खल् (गिरना)+ल्युट्--अन] [भू० कृ० स्खलित]=स्खलन।

संस्तंभ--पुं० [सम्√स्तम्भ् (रोकना)+घञ्] १. गति का सहसा होनेवाला रोध। एकबारगी रुक जाना। २. निश्चेष्टता। ३. स्तब्धता। ४. लकवा या इसी प्रकार का कोई ऐसा रोग जिसमें कोई अंग बेकार और सुन्न हो जाता हो। ५. दृढ़ता। ६. वीरता। ७. जिद। हठ। ८. आधार। सहारा।

संस्तंभन--पुं० [सं०] [वि० संस्तब्ध, संस्तंभनीय, संस्तंभित] १. गति का सहसा रुकना या रोकना। एकबारगी ठहर जाना। २. निश्चेष्ट या स्तब्ध करना या होना। ३. सहारा देना या लेना।

संस्तंभी (भिन्)--वि० [सं० सम्√स्तम्भ् (रोकना)+णिनि] संस्तंभन करनेवाला।

संस्तब्ध--वि० [सं० सम्√स्तम्भ् (रुकना)+क्त=ध-भ्-म लोप] १. एकबारगी रुका या ठहरा हुआ। २. निश्चेष्ट। स्तब्ध। ३. सहारा देकर रोका हुआ।

संस्तर--पुं० [सं० सम्√स्तृ (रुकना)+अच्] १. तह। परत। २. घास, फूस आदि की चटाई या बिछौना। ३. घास, फूस आदि का छप्पर। ४. बिछौना या बिस्तर। ५. जलाशय या नदी का नीचेवाला भू-भाग। तल। ६. भू-गर्भ में, कोई ऐसी तह या परत जो एक ही तरह के तत्त्व या पदार्थ की बनी हो, अथवा किसी विशिष्ट काल में जमी हो। (बेड) जैसे--कोयले का संस्तर, चूने का संस्तर आदि।

संस्तरण--पुं०[सं० सम्√स्तृ (आच्छादन करना)+ल्युट्-अन] १. फैलाना। पसारना। २. बिछौना। बिछावन। ३. छितराना। बिखेरना। ४. तह या परत चढ़ाना। ५. बिछौना। बिस्तर।

संस्तव--पुं०[सं०] १. प्रशंसा। स्तुति। तारीफ। २. उल्लेख। कथन। जिक्र। ३. जान-पहचान। परिचय। ४. घनिष्ठता। हेल-मेल।

संस्तवन--पुं० [सं० सम्√स्तु (प्रशंसा करना)+ल्युट्-अन] १. प्रशंसा करना। स्तुति करना। २. कीर्ति या यश का गान करना। ३. आज-कल किसी की प्रशंसा करते हुए उसके सम्बन्ध में यह कहना कि यह अमुक (काम, बात या सेवा के लिए उपयुक्त और योग्य है। (कॉमिन्डेशन)

संस्तार--पुं० [सं०] १. तह। परत। २. बिछौना। बिस्तर। ३. खाट या पलंग। शय्या। ४. एक प्रकार का यज्ञ।

संस्ताव—पुं० [सं०सम्√स्तु (स्तुति करना)+घञ्] १. यज्ञ में स्तुति करनेवाले ब्राह्मणों के बैठने का स्थान। २. प्रशंसा। स्तुति। ३. जान-पहचान। परिचय।

संस्ताव्य—वि० [सम्√स्तु (प्रशंसा करना)+विच्+यत्] प्रशंसनीय। जिसका या जिसके सम्बन्ध में संस्तवन हो सकता हो। (कॉमेंडेबिल)

संस्तीर्ण—वि० [सं० सम्√स्तॄ (अच्छादन)+कु—रू-दीर्घ] १. फैलाया या पसारा हुआ। २. बिछाया हुआ। ३. छिटकाया या बिखेरा हुआ। ४. ढका या छिपाया हुआ।

संस्तुत—वि०[सं०सम्√स्तु (स्तुति करना)+क्त] १. जिसकी खूब प्रशंसा या स्तुति की गई हो। २. साथ में गिना हुआ। ३. जाना हुआ। ज्ञात। ४. परिचित।

संस्तुति—स्त्री०[सं० सम्√स्तु (स्तुति करना)+क्तिन्] १. अच्छी या पूरी तरह से होनेवाली तारीफ या स्तुति। २. अनुशंसा। सिफारिश। (रिकमेन्डेशन)

संस्तृत—भू० कृ० [सं० सम्√स्तृ (आच्छादन करना)+क्त]=संस्तीर्ण।

संस्थ—पुं० [सं० सं√स्था (ठहरना)+क] १. अपने देश का निवासी। स्वदेश वासी। २. चर। दूत।

संस्था—स्त्री० [सं०] १. ठहरने की क्रिया या भाव। ठहराव। स्थिति। २. प्रगट होने की क्रिया या भाव। अभिव्यक्ति। आविर्भाव। ३. बँधा हुआ नियम, मर्यादा या विधि। रुढ़ि। ४. आकृति। रूप। ५. गुण। सिफत। ६. कोई काम, चीज या बात ठिकाने लगाने की क्रिया। आवश्यक या उचित परिणाम तक पहुँचना। ७. अंत। समाप्ति। ८. मृत्यु। मौत। ९. ध्वंस। नाश। १०. वध। हिंसा। ११. प्रलय। १२. यज्ञ का मुख्य अंग। १३. गुप्तचरों या भेदियों का दल या वर्ग। १४. पेशा। व्यवसाय। १५. गिरोह। जत्था। दल। १६. राजाज्ञा। फरमान। १७. समानता। सादृश्य। १८. समाज। १९. आज-कल कोई संघटित वर्ग, समाज या समूह। (बॉडी) २०. किसी विशिष्ट सामाजिक या सार्वजनिक कार्य की सिद्धि के उद्देश्य से संघटित मंडल या समाज। (इन्स्टिच्यूशन) २१. व्यावसायिक दृष्टि से कुछ विशिष्ट नियमों और सिद्धांतों के अनुसार काम करनेवाला कोई संघटित दल, वर्ग या समाज। (सोसाइटी) जैसे—सहकारी संस्था। २२. राजनीतिक या सामाजिक जीवन से संबंध रखनेवाला कोई नियम, विधान या परम्परागत प्रथा जो किसी समाज में समान रूप से प्रचलित हो। (इन्स्टिच्यूशन) जैसे—हिन्दुओं में विवाह धार्मिक संस्था है, अन्यान्य जातियों की तरह मात्र सामाजिक समझौता नहीं।

संस्थान—पुं० [सं०] १. ठहराव। स्थिति। २. बैठाना। स्थापन। ३. अस्तित्व। ४. देश। ५. सर्व-साधारण के इकट्ठे होने का स्थान। ६. किसी राज्य के अंतर्गत जागीर आदि। ७. साहित्य, विज्ञान, कला आदि की उन्नति के लिए स्थापित समाज। (इन्स्टीच्यूशन) ८. प्रबंध। व्यवस्था। १०. किसी काम या बात का अच्छी तरह किया जानेवाला अनुसरण या पालन। १०. जनपद। बस्ती। ११. आकृति। रूप। शकल। १२. कांति। चमक। १३. सुंदरता। सौंदर्य। १४. प्रकृति। स्वभाव। १५. अवस्था। दशा। १६. जोड़। योग। १७. समष्टि। १८. अंत। समाप्ति। १९. नाश। ध्वंस। २०. मृत्यु। मौत। २१. निर्माण। रचना। २२. निकटता। सामीप्य। २३. पास-पड़ोस। २४. चौमुहानी। चौराहा। २५. चौखटा या ढाँचा। २६. साँचा। २७. रोग का लक्षण। २९. ब्रिटिश शासन के समय देशी रियासत। (दक्षिणभारत)

संस्थापक—वि० [सं० सम्√स्था (ठहरना)+विच् पुक्—ष्टवुल्-अक] [स्त्री० संस्थापिका] १. संस्थापन करनेवाला। २. बनाकर खड़ा या तैयार करनेवाला ३. नये काम या बात का प्रवर्तन करनेवाला। प्रवर्तक। ४. चित्र, खिलौना आदि बनानेवाला। ५. किसी प्रकार का आकार या रूप देनेवाला।

पुं० आज-कल किसी संस्था, सभा या समाज का वह मूल व्यक्ति, जिसने पहले-पहल उसकी स्थापना की हो।

संस्थापन—पुं० [सं० सम्√स्था (ठहरना)+णिच्-यक, ल्युट्—अन] [वि० संस्थापनीय, संस्थाप्य, भू० कृ० संस्थापित] १. अच्छी तरह जमाकर बैठाना या रखना। २. मशीनों, यंत्रों आदि को किसी स्थान पर लगाना। प्रतिष्ठित करना। ३. उक्त रूप में बैठाये या लगाये हुए यंत्रों की सामूहिक संज्ञा। प्रस्थापन। (इन्स्टालेशन) ४. कोई नई चीज बनाकर खड़ी या तैयार करना। निर्मित करना। जैसे—भवन का संस्थापन। ५. कोई नया काम या नई बात चलाना या जारी करना; अथवा उसके लिए कोई संस्था स्थापित करना। ६. उक्त प्रकार से स्थापित की हुई संस्था अथवा उसमें काम करनेवाले लोगों का वर्ग या समूह। (एस्टैब्लिशमेन्ट) ७. किसी काम, चीज या बात को कोई नया आकार या रूप देना। ८. नियंत्रित करना। रोकना। ९. शांत करना।

संस्थापना—स्त्री० [सं० संस्थापन-टाप्]=संस्थापन।

संस्थापनीय—वि० [सं० सं√स्था (ठहरना)+णिच्-पुक्—अनीयर्] जिसका संस्थापन हो सकता हो अथवा होने को हो।

संस्थापित—भू० कृ० [सं० सम्√स्था (ठहरना)+णिच्-पुक्, क्त] १. जिसका संस्थापन किया गया हो या हुआ हो। २. जमा कर बैठाया, रखा या स्थित किया हुआ। ३. चलाया या प्रचलित किया हुआ। ४. इकट्ठा किया हुआ। संचित।

संस्थाप्य—वि० [सं० सम्√स्था (ठहरना)+णिच्-पुक्, यत्] जिसका संस्थापन हो सकता हो या होना उचित हो।

संस्थित—वि०[सं० सम्√स्था (ठहरना)+क्त] १. टिका, ठहरा या रुका हुआ। २. अच्छी तरह जमा या बैठा हुआ। ३. किसी नये और विशिष्ट रूप में आया या लाया हुआ। ४. बनाकर खड़ा या तैयार किया हुआ। ५. इकट्ठा या एकत्र किया हुआ। ६. मरा हुआ। मृत।

संस्थिति—स्त्री०[सं० सम्√स्था (ठहरना)+क्तिन्] १. खड़े होने की क्रिया, अवस्था या भाव। २. ठहराव। स्थिरता। ३. बैठने की क्रिया या भाव। ४. एक ही अवस्था में बने रहने की क्रिया या भाव। संस्थान। ५. दृढ़ता। मजबूती। ६. धीरता। ७. अस्तित्व। हस्ती। ८. आकृति। रूप। ९. गुण। १०. क्रम। सिलसिला। ११. प्रबंध। व्यवस्था। १२. प्रकृति। स्वभाव। १३. अन्त। समाप्ति। १४. मृत्यु। मौत। १५. नाश। १६. कोष्ठबद्धता। कब्जियत। १७. ढेर। राशि।

संस्पर्द्धा—स्त्री० [सं० सम्√स्पर्ध (संघर्ष करना)+घञ् टाप्] १. स्पर्धा। २. ईर्ष्या।

संस्पर्द्धी—वि०[सं०सम्√स्पर्ध (स्पर्धा करना)+णिनि][स्त्री०संस्पर्द्धिनी] संस्पर्धा करनेवाला।

संस्पर्श—पुं० [सं० सम्√स्पृश् (छूना)+घञ्] अच्छी या पूरी तरह से होनेवाला स्पर्श।

संस्पर्शी—वि० [सं० सम्√स्पृश् (छूना)+णिनि संस्पर्शिन्] स्पर्श करने या छूनेवाला।

संस्पृष्ट—भू० कृ० [सं०] १. छूआ हुआ। जिसका किसी के साथ स्पर्श हुआ हो। २. किसी के साथ लगा या सटा हुआ। ३. किसी के साथ जुड़ा या बँधा हुआ। ४. जो बहुत पास हो। समीपस्थ। ५. जिस पर किसी का बहुत थोड़ा या नाममात्र का प्रभाव पड़ा हो।

संस्फुट—वि०[सं० सम्√स्फुट् (विकसित होना)+क] १. अच्छी तरह फूटा या खुला हुआ। २. अच्छी तरह खिला हुआ।

संस्फोट—पुं० [सं० सम्√स्फुट् (भेदन करना)+घञ्] युद्ध। लड़ाई।

संस्मरण—पुं० [सं० सम्√स्मृ (स्मरण करना)+ल्युट्-अन] [वि० संस्मरणीय] १. अच्छी तरह या बार-बार स्मरण करना। २. इष्टदेव आदि का बार बार स्मरण करना या उनका नाम जपना। ३. पूर्व-जन्म के संस्कारों आदि के कारण उत्पन्न या प्राप्त होने अथवा बना रहने वाला ज्ञान। ४. आजकल किसी व्यक्ति विशेषतः मृत व्यक्ति के संबंध की महत्त्वपूर्ण और मुख्य घटनाओं या बातों का उल्लेख या कथन। (रेमिनिसेन्सेज)

संस्मरणीय—वि० [सं० सम्√स्मृ (स्मरण करना)+अनीयर्] १. जिसका प्रायः संस्मरण होता रहता है। बहुत दिनों तक याद रहने लायक। २. जिसका संस्मरण (नाम, जप आदि) करना अवश्यक और उचित हो।

संस्मारक—वि० [सं० सम्√स्मृर् (स्मरण करना)+णिच्+ण्वुल्-अक] [स्त्री० संस्मारिका] स्मरण करनेवाला। याद दिलानेवाला।

संस्मारण—पुं० [सं० सम्√स्मृ (स्मरण करना)+णिच्-ल्युट्-अन] [भू० कृ० संस्मरित] १. स्मरण करना। याद दिलाना। २. चौपायों आदि की गिनती करना।

संस्मृत—वि० [सं० सं√स्मृर् (स्मरण करना)+क्त] स्मरण किया हुआ। याद किया हुआ।

संस्मृति—स्त्री० [सं० सम्√स्मृ (स्मरण करना)+क्तिन्] पूर्ण स्मृति। पूरी याद।

संस्रव—पुं० [सं० सम्√स्रु (बहाव में जाना)+णिच्] [स्त्री० संस्रवा] १. मिल जुल कर एक साथ बहना। २. अच्छी तरह बहना। ३. बहती हुई चीज। ४. जल की धारा या प्रवाह। ५. तरल पदार्थ का रस कर टपकना या बहना। ६. किसी चीज में से उखाड़ा या नोचा हुआ अंश। ७. एक प्रकार का पिंड-दान।

संस्रवण—पुं० [सं० सम्√स्रु (बहना)+ल्युट्-अन] १. प्रवाहित होना। बहना। २. गिरना। चूना या टपकना। जैसे—गर्भ का संस्रवण।

संस्रष्टा—वि०[सं०सम्√सृज् (सृजन करना)+क्तच, ज, त्र-तत्र संस्रष्ट] [स्त्री० संस्रष्टी] १. आयोजन करनेवाला। २. मिलाने-जुलाने वाला। ३. बनानेवाला। रचयिता। ४. लड़ाई-झगड़ा करानेवाला।

संस्राव—पुं० [सं० सम्√स्रु (बहना)+घञ्] १. प्रवाह। बहाव। २. शरीर के घाव, फोड़े आदि में मवाद का इकट्ठा होना। ३. गाद। तलछट।

संस्रावण—पुं० [सं० सम√स्रु (बहना)+णिच्-ल्युट्-अन] [भू० कृ० संस्रावित] १. प्रवाहित करना। बहाना। २. प्रवाहित होना। बहना।

संस्रावित—भू० कृ० [सं० सम्√सु (बहना)+णिच्—क्त] १. बहाया हुआ। २. बहा हुआ। ३. चू, टपक या रसकर निकला हुआ।

संस्राव्य—वि० [सं० सं√स्रु (बहाना)+णिच्— यत्] १. बहाने या टपकाने योग्य। २. बहाये या टपकाये जाने के योग्य।

संस्वेद—पुं० [सं०] स्वेद। पसीना।

संस्वेदी (दिन्)—वि० [सं√स्विद् (पसीना होना)+णिच्] १. जिसके बदन से पसीना निकल रहा हो। २. जिसके प्रभाव से बहुत पसीना आता या आने लगता हो। पसीना लानेवाला।

संहंता—वि० [सं०सम्√हन् (मारना)+तृच्, संहंतृ] [स्त्री० संहंत्री] हनन या वध करनेवाला। मार डालनेवाला।

संहत—वि०[सं०सम्√हन् (मारना)+क्त] १. अच्छी तरह गठा, जुड़ा, मिला या सटा हुआ। २. जो जमकर बिलकुल ठोस हो गया हो। ३. गाढ़ा या घना। ४. दृढ़। मजबूत। ५. इकट्ठा या एकत्र किया हुआ। ६. अच्छी तरह मिलाकर एक किया हुआ। (कन्सालिडेटेड्) ७. चोट खाया हुआ आहत। घायल।

पुं० नृत्य में एक प्रकार की मुद्रा।

संहत जानु—पुं० [सं०] दोनों घुटने सटाकर बैठने की मुद्रा।

संहतांग—वि० [सं० कर्म० स०, ब० स० वा] हृष्ट-पुष्ट। मजबूत।

संहति—स्त्री० [सं०] १. आपस में चीजों का मिलना। मेल। २. इकट्ठा या एकत्र होना। ३. ढेर। राशि। ४. झुंड। दल। ५. घनत्व। घनापन। ६. जोड़। संधि। ७. गठकर या मिलकर एक होना। संघटन। (कंसालिडेशन)

संहनन—पुं० [सं० सम्√हन् (मारना)+ल्युट्-अन] १. संहत करना। एक में मिलाना। जोड़ना। २. अच्छी तरह घना या ठोस करना। ३. मार डालना। वध करना। ४. मिलन। मेल। ५. दृढ़ता। मजबूती। ६. पुष्टता। ७. सामंजस्य। ८. देह। शरीर। ९. कवच। १०. शरीर की मालिश।

संहरण—पुं० [सं० सम्√हृ (हरण करना)+ल्युट्-अन] १. एकत्र या संग्रह करना। बटोरना। २. सिर के बाल इकट्ठे करके बाँधना। ३. जबरदस्ती लेना। छीनना। हरण। ४. नाश या संहार करना। ५. प्रलय।

संहरता—वि०=संहर्ता (संहारक)।

संहरना—स० [सं० संहार] संहार करना।

अ० १. संहार होना। २. नष्ट होना।

संहर्ता—वि० [सम्√हृ (हरण करना)+तृच्][स्त्री० सहर्त्री] १. इकट्ठा करने वाला। बटोरने या समेटने वाला। २. नाश या संहार करनेवाला ३. मार डालने या वध करनेवाला।

संहर्ष—पुं०[सं० सम्√हृष् (हर्षित होना)+घञ्] १. प्रसन्नता के कारण शरीर के रोओं का खड़ा होना। **पुलक**। उमंग। २. भय से रोएँ खड़े

होना। रोमांच । ३. लाग-डाँट । स्पर्धा । होड़। ४. ईर्ष्या। डाह । ५. रगड़ । संघर्ष ६. शरीर की मालिश ।

संहर्षण—पुं० [सं० सम्√हृष् (प्रसन्न होना)+ल्युट्–अन] [भू० कृ० संहर्षित, संहृष्ट] १. पुलकित होना। २. लाग-डाँट। स्पर्धा। होड़।

संहर्षी—वि० [सं० सम्√हृष् (रोमांच होना)+णिनि, संहर्षिन्] [स्त्री० संहर्षिणी] १. पुलकित होनेवाला। २. पुलकित करनेवाला। ३. ईर्ष्या करनेवाला। ४. स्पर्धा करनेवाला।

संहात—पुं० [सं० सम्√हन् (मारना)+क्त, न—आ, कुत्वाभाव] १. समूह। २. एक नरक का नाम। ३. दे० 'संघात'।

संहार—पुं० [सं०] १. एक में करना या मिलाना। इकट्ठा करना। २. संचय। ३. सिर के बाल अच्छी तरह बाँधना। ४. अंत। समाप्ति। जैसे—वेणी संहार। ५. ध्वंस। नाश। ६. बहुत से व्यक्तियों की युद्ध आदि में एक साथ होने वाली हत्या। ७. कल्पांत। प्रलय। ८. संक्षेप में और सार रूप में कही हुई बात। ९. किसी काम या बात को निष्फल या व्यर्थ करने की क्रिया। निवारण। परिहार। जैसे—किसी के चलाये हुए अस्त्र का संहार अर्थात् विफलीकरण। १०. अपना छोड़ा हुआ अस्त्र फिर से लौटाना या वापस लाना। ११. कौशल। निपुणता। १२. सिकुड़ना। आकुंचन। १३. पुराणानुसार एक नरक का नाम।

संहारक—वि० [सं० सम्√हृ (हरण करना)+णिच्-ण्वुल्-अक, संहार+कन् वा] [स्त्री० संहारिका] संहार करनेवाला। संहर्ता।

संहारकारी—वि० [सं० संहार√कृ (करना)+णिनि] [स्त्री० संहार-कारिणी] संहार या नाश करनेवाला।

संहार काल—पुं० [सं०] विश्व के नाश का समय। प्रलय काल।

संहारना—स० [सं० संहरण] मार डालना।

संहार भैरव—पुं० [सं०] भैरव के आठ रूपों या मूर्तियों में से एक। काल भैरव।

संहार-मुद्रा—स्त्री० [सं०] तांत्रिक पूजन में अंगों की एक प्रकार की स्थिति, जिसे विसर्जन मुद्रा भी कहते हैं।

संहारिक—वि० [सं० संहार+ठन्-इक्] १. संहार करनेवाला। संहारक। २. संहार संबंधी। संहार का।

संहारी (रिन्)—वि० [सं० सम्√हृ (हरण करना)+णिनि] संहार या नाश करनेवाला।

संहार्य—वि० [सं० सम्√हृ (हरण करन)+ण्यत्] १. समेटने या बटोरने योग्य। संग्रह करने योग्य। इकट्ठा करने लायक। २. जिसका संहार किया जाने को हो या किया जा सकता हो। ३. जो कहीं दूसरी जगह ले जाया जा सकता हो या ले जाया जाने को हो। ४. जिसका निवारण या परिहार हो सकता हो।

संहित—वि० [सं० सम्√धा (रखना) क्ति, धा=हि] १. एक स्थान पर जोड़ या मिलाकर रखा हुआ। एकत्र किया या बटोरा हुआ। २. मिलाया या सम्मिलित किया हुआ। ३. संबद्ध। संश्लिष्ट। ४. अन्वित। युक्त। ५. अनुकूल। अनुरूप। ६. आज-कल जो अधिकारियों के द्वारा नियमों, विधियों आदि की संहिता के रूप में लाया गया हो। (कोडिफ़ायड)

संहिता—स्त्री० [सं०] १. संहित अर्थात् एक में मिले हुए होने की अवस्था या भाव। मेल। संयोग। २. वह नया रूप जो बहुत सी चीजें एकत्र करने या एक साथ रखने पर प्राप्त होता है। संकलन। संग्रह। ३. कोई ऐसा ग्रंथ जिसके पाठ आदि का क्रम परम्परा से किसी नियमित और निश्चित रूप में चला आ रहा हो। जैसे—अत्रि (या मनु) की धर्म-संहिता। ४. वेदों का वह मंत्र (ब्राह्मण नामक भाग से भिन्न) जिसके पद, पाठ आदि का क्रम निश्चित है और जिसमें स्तोत्र, आशीर्वादात्मक सूक्त, यज्ञ-विधियों से संबंध रखनेवाले मंत्र और अरिष्टों आदि की शांति से संबंध रखनेवाली प्रार्थनाएँ सम्मिलित हैं। ५. व्याकरण में अक्षरों की होनेवाली पारस्परिक संधि। ६. राजकीय अधिकारियों द्वारा प्रस्तुत किया हुआ नियमों, विधियों, आदि का संग्रह। (कोड) जैसे—भारतीय दंड संहिता। (इन्डियन पेनल कोड) ७. ब्रह्म जो समस्त विश्व को धारण किये है और उसका नियंत्रण करता है।

संहिताकरण—पुं० [सं०] [भू० कृ० संहिताकृत] नियमों, विधानों आदि को व्यवस्थित रूप देने की क्रिया या भाव। किसी बात या विषय को संहिता का रूप देना। (कोडिफिकेशन)

संहिति—स्त्री० [सं०] १. संहित होने की अवस्था या भाव। २. दे० 'संश्लेषण'।

संहृत—भू० कृ० [सं० सम्√हृ (हरण करना)+क्त] १. एकत्र किया हुआ। समेटा हुआ। २. ध्वस्त। नष्ट। बरबाद। ३. पूरा किया हुआ। समाप्त। ४. दूर किया या रोका हुआ। निवारित।

संहृति—स्त्री० [सं० सम्√हृ (हरण करना)+क्तिन्] १. बटोरने या समेटने की क्रिया। २. संग्रह। ३. नाश। ४. प्रलय। ५. अन्त। समाप्ति। ६. परिहार। रोक। ७. लूट-खसोट। हरण।

संहृष्ट—भू० कृ० [सं०] १. खड़ा (रोम)। २. (व्यक्ति) जिसके रोएँ भय से खड़े हों या हुए हों। रोमांचित। ३. पुलकित।

संह्लाद—पुं० [सं सम्√ह्लाद् (अव्यक्त ध्वनि)+घञ्] १. कोलाहल। शोर। २. हिरण्यकशिपु का एक (पुत्र)।

संह्लादन—पुं० [सं० सम्√ह्लाद् (अव्यक्त ध्वनि)+ल्युट्–अन] [भू० कृ० संह्लादित] १. कोलाहल करना। शोर मचाना। २. चीखना। चिल्लाना।

स—उप० एक उपसर्ग जिसका उपयोग शब्दों के आरम्भ में कई प्रकार के अर्थ सूचित करने के लिए होता है। यथा—१. 'एक ही' का भाव सूचित करने के लिए; जैसे—सकुल, सगोत्र आदि। २. 'एक ही तरह का' या 'एक सा' का भाव सूचित करने के लिए; जैसे—सदृश, समान आदि। ३. संज्ञाओं से विशेषण और क्रिया विशेषण बनाने के लिए; जैसे—सतृष्ण, सप्रेम आदि। ४. बहुव्रीहि समास में 'युक्त' या 'सह' का भाव सूचित करने के लिए; जैसे—सजीव, सपरिवार आदि। ५. हिन्दी शब्दों में 'सु' या अच्छा का भाव प्रगट करने के लिए; जैसे—सपूत आदि। पुं० [सं० षो (नाश करना)+ड] १. ईश्वर। २. महादेव। शिव। ३. चन्द्रमा। ४. जीवात्मा। ५. भृगु। ६. वायु। हवा। ७. ज्ञान। ८. चिन्ता। ९. चमक। दीप्ति। १०. चिड़िया। पक्षी। ११. साँप। १२. रास्ता। सड़क। १३. संगीत में षडज स्वर का सूचक अक्षर। जैसे—रे, ग, म, ध, नि, स। १४. छंद शास्त्र में 'सगण' का सूचक अक्षर या संक्षिप्त रूप।

सआदत—स्त्री०[अ०]१. अच्छाई। भलाई। २. सौभाग्य।

सआदतमंद—वि०[अ०+फ़ा०] [भाव० सआदतमंदी] १. भला। सज्जन। २. आज्ञाकारी (सन्तान आदि के लिए प्रयुक्त)। ३. भाग्यवान्। सौभाग्यशाली।

सइ†—अव्य०[सं० सह] से। साथ।

सइअन†—पुं०=सहिंजन।

सइन†—स्त्री०[सं० संधि] नाड़ी का व्रण। नासूर।

स्त्री०=सेना (फौज)।

सइना†—स्त्री०=सेना।

सइयाँ†—पुं०=सैयाँ।

सइयो†—स्त्री०[सं० सखी] सखी। सहेली।

सइल†—स्त्री०=सैल।

†पुं०=शैल।

*वि०=सरल।

सइवर†—पुं०=सेवार।

सई†—स्त्री०[सं० सरस्वती] सरस्वती नदी।

स्त्री०१.=सखी। २.=सती।

स्त्री०[अ०] कोशिश। प्रयत्न।

स्त्री० [?] वृद्धि। बरकत। उदा०—खग मृग सबर निसाचर सब की पूँजी बिनु बाढ़ी सई।—तुलसी।

सईकंदा—पुं०[?] एक प्रकार का पेड़।

सईद—वि०[अ०]१. शुभ। मांगलिक। २. उत्तम। भला।

सईस†—पुं०=साईस।

सउँ—अव्य०=सों।

सउखा—पुं०=शौक।

सउजा—पुं०=साउज (शिकार)।

पुं०=सौंजा।

सउत†—स्त्री०=सौत।

सउतेला†—वि०=सौतेला।

सऊँस—वि० [?] सब। सारा। उदा०—सऊँस अयोध्या में रामजी दुलरूआ।—लोकगीत।

सऊँह—अव्य०=सौंह (सामने)।

सऊँ*—वि०=सौ (संख्या)।

स्त्री०=संक्रान्ति। जैसे—मकर सऊ=मकर संक्रान्ति।

सऊदी अरब—पुं० मध्य अरब का एक आधुनिक राज्य जो पहले हिजाज कहलाता था और जिसकी राजधानी मक्का है।

सऊर†—पुं०=शऊर।

सकूंकर—पुं०[रूमी सक़न्कूर] गोह की तरह का लाल रंग का एक जंतु। इसका मांस बहुत बलवर्द्धक माना जाता है। इसे रेत की मछली या 'रेगमाही' भी कहते हैं।

सक*—पुं०[सं० शाका]१. वीरता का कार्य। साका। २. शक्ति का आतंक। धाक।

मुहा०—सक बाँधना= अपने प्रभुत्व, बल आदि की धाक जमाना।

३. मर्यादा। सीमा।

क्रि० प्र०—बाँधना।

†स्त्री०[शक्ति]१. ताकत। बल। २. सामर्थ्य।

†पुं० शक (सन्देह)।

सकट—पुं०[सं० अव्य० स०] शाखोट वृक्ष। सिहोर।

†पुं०[सं० शकट] [अल्पा० सकटी] छकड़ा। गाड़ी।

सकट चौथ†—स्त्री०=संकट चौक (गणेश चौथ)।

सकटान्न—पुं०[सं० अव्य० स०] ऐसे व्यक्ति का अन्न जिसे किसी प्रकार का अशौच हो। ऐसा अन्न अग्राह्य कहा गया है।

सकटी—स्त्री०[सं० शकट] छोटा सग्गड़। सगड़ी।

सकड़ी†—स्त्री०=सिकरी।

सकत†—स्त्री०[सं० शक्ति]१. बल। शक्ति। २. सामर्थ्य। ३. धन-सम्पत्ति।

अव्य० जहाँ तक हो सके। भर-सक। यथा-साध्य।

वि०, पुं०=शाक्त।

सकता—स्त्री०[सं० शक्ति]१. शक्ति। ताकत। बल। २. सामर्थ्य। बूता।

पुं०[अ० सक्तः]१. बेहोशी या मूर्च्छा नाम का रोग। २. भौचक्कापन। स्तब्धता। ३. पद्य के चरणों में होनेवाली यति। विराम। ४. कविता में यति-भंग नामक दोष।

क्रि० प्र०—पड़ना।

सकति†—स्त्री०=शक्ति।

पुं०=शाक्त।

सकती†—स्त्री०=शक्ति।

सकन—पुं०[देश०] १. लता। २. कस्तूरी। मुश्कदाना।

अव्य० [सं० स+कर्ण] कान लगाकर। उदा०—जदि तोहें चंचल सुनह सकन भए अपना धधन काए।—विद्यापति।

सकना—अ०[सं० शक् या शक्य] कोई काम करने में समर्थ होना। करने योग्य होना। जैसे—कह सकना, खा सकना, जा सकना, बैठ सकना आदि।

†अ०[सं० शंका, हिं० शकना= शंका करना] १. शंका के कारण घबराना, डरना या संकोच करना। उदा०—सूखे से, श्रमे से, सकबके से, सके से, थके से, भूले से, भ्रमे से, भभरे से, भकआने से।—रत्नाकर।

२. दे० 'सकाना'।

सकपक—स्त्री०[अनु०] सकपकाने की क्रिया, अवस्था या भाव।

सकपकाना—अ०[अनु० सकपक]१. चकित होना। चकपकाना। २. आगापीछा करना। हिचकना। ३. लज्जित होना। शरमाना। ४. संकोच करना।

स० १. चकित करना। २. असमंजस या दुबिधा में डालना। ३. लज्जित या संकुचित करना।

सकरकंदी—स्त्री०=शकरकंद।

सकर-खंडी—स्त्री०[फा० शकर+हिं० खाँड] लाल और बिना साफ की हुई चीनी। खाँड़। शक्कर।

सकरना—अ०[सं० स्वीकरण]१. सकारा जाना। स्वीकृत या अंगीकृत होना। मंजूर होना। जैसे—हुंडी सकरना। २. माना जाना। जैसे—दाम या देन सकरना।

संयो० क्रि०—जाना।

सकरपाला†—पुं० =शकर-पारा।

सकरा--वि० १.=संकरा। २.=सखरा।

सकरिया --स्त्री०[फा० शकर] लाल शकरकंद। रतालू।

सकरुंड--पुं०[गुज०] एक प्रकार का वृक्ष जिसकी पत्तियों आदि का व्यवहार ओषधि के रूप में होता है।

सकरुण--वि०[सं० अव्य० स०] जिसे करुणा हो। दयाशील।

सकर्ण--पुं०[सं०] वह जो सुनता या सुन सकता हो।

वि० जिसके कान हों। कानोंवाला।

सकर्मक--वि०[सं०]१. जो किसी प्रकार के कर्म से युक्त हो।

पद--सकर्मक क्रिया। (देखें)

२. जो किसी प्रकार का कर्म या क्रिया कर रहा हो। क्रियाशील। उदा०--प्रस्फुटित उत्तर मिलते, प्रकृति सकर्मक रही समस्त।--कामायनी।

सकर्मक क्रिया--स्त्री० [सं०] व्याकरण में दो प्रकार की क्रियाओं में से वह क्रिया जिसका कार्य उसके कर्म पर समाप्त होता हो। जैसे--खाना, देना, माँगना, रखना आदि।

सकल--वि०[सं०] सब। समस्त। कुल।

पुं०१. निर्गुण ब्रह्म और सगुण प्रकृति। २. दर्शन-शास्त्र के अनुसार तीन प्रकार के जीवों में से पशुवर्ग के जीव। ३. रोहित घास या तृण।

सकलात--पुं०[?] [वि० सकलाती]१. ओढ़ने की रजाई। दुलाई। २. उपहार। भेंट। ३. सौगात। मखमल नाम का कपड़ा।

सकलाती--वि०[हिं० सकलात]१. जो उपहार या भेंट के रूप में दिया जा सके। २. अच्छा। बढ़िया।

सकली--स्त्री०[डिं०] मत्स्य। मछली।

सकलेंदु--पुं०[सं०] पूर्णिमा का चन्द्रमा। पूरा चाँद।

सकस†--पुं०=शख्स।

सकसकाना--अ० [अनु०] बहुत अधिक डरना या डर कर काँपना।

सकसना--अ०[सं० शंका, हिं० सकना]१. भयभीत होना। डरना। २. अड़ना। ३. धँसना। उदा०--निकसे सकसिन न बचन भयौ हिचकिनी गहवर भर।--रत्नाकर।

सकसाना*--स०[अनु०] भयभीत करना। डराना।

सका†--पुं०=सक्का।

सकाकुल--पुं०[सं० शकाकुल] १. एक प्रकार का कंद जिसे अंबर कंद कहते हैं। २. एक प्रकार का शतावर। ३. सुधा-मूली।

सकाकोल--सं० [अव्य० स०] मनु के अनुसार एक नरक का नाम।

सकाना--अ०[सं० शंका, हिं० सकना]१. मन में शंका या संदेह करना। २. संशकित होकर पीछे हटना। आगे बढ़ने से हिचकना। उदा०--क्षत्रिय तनु धरि समर सकाना।--तुलसी। ३. भयभीत होना। डरना। उदा०--सोच सबै सकाइ कहा करिहै कमलासन।--रत्नाकर। ४. मन में दु:खी होना। उदा०--सुनि मुनिवर के परुष बचन, कछु भूप सकाए।--रत्नाकर।

स० हिं० 'सकना' का सकर्मक और प्रेरणार्थक रूप।

जैसे--सके तो सकाओ, नहीं तो छोड़ दो। (परिहास)

सकाम--वि०[सं० अव्य० स०] जिसके मन में कोई कामना या इच्छा हो। २. जिसकी कामना या इच्छा पूरी हो गई हो। सफल-मनोरथ। ३. मैथुन या संयोग की इच्छा रखनेवाला। कामी। ४. प्रेम करनेवाला। प्रेमी। ५. स्वार्थ साधन की भावना से काम करनेवाला।

सकाम निर्जरा--स्त्री०[सं० ब०स०] जैन धर्म में चित् की वह वृत्ति जिसमें बहुत अधिक क्षति होने पर भी शत्रु को परम शांतिपूर्वक क्षमा कर दिया जाता है।

सकामा--स्त्री०[सं० अव्य० स०] ऐसी स्त्री जो मैथुन की इच्छा रखती हो। कामवती स्त्री।

सकामी (मिन्)--वि०[सं० सकाम+इनि,]१. जिसे किसी प्रकार की कामना हो। कामनायुक्त। वासनायुक्त। २. कामुक। विषयी।

सकार--पुं०[सं० स+कार] १. 'स' अक्षर। २. 'स' वर्ण की या उससे मिलती-जुलती ध्वनि। जैसे--उस समय किसी के मुँह से सकार भी न निकाला।

स्त्री०[हिं० सकारना] सकार अर्थात् स्वीकृत करने की क्रिया या भाव। स्वीकृति। (ऐक्सेप्टेन्स)

सकारना--स०[सं० स्वीकरण] [भाव० सकारा]१. स्वीकृत करना। मंजूर करना। २. महाजनी बोलचाल में, हुंडी की मिती पूरी होने के एक दिन पहले हुंडी देखकर उस पर हस्ताक्षर करना और रुपए चुकाने का उत्तरदायित्व मानना। (ऑनरिंग आफ़ ए ड्राफ्ट)

सकारा--पुं०[हिं० सकारना] १. सकारने की क्रिया या भाव। २. २. महाजनी लेन-देन में, वह धन जो हुंडी सकारने और उसका समय फिर से बढ़ाने के बदले में लिया जाता है।

पुं०[सं० सकाल]=सकाल (सबेरा)।

सकारात्मक--वि०[सं०]१. (उत्तर या कथन) जो सहमति या स्वीकृति का सूचक हो। नकारात्मक के विपरीत। (एफ़र्मेटिव) २. जिसका कोई निश्चित मान या स्थिर स्वरूप हो। निश्चयी। (पाज़िटिव)

सकारी--पुं०[हिं०सकारना] वह जो कोई हुंडी सकारता हो या जिसके नाम कोई हुंडी लिखी गई हो। (ड्राई)

सकारे--अव्य०[सं० सकाल] १. प्रातःकाल। सबेरे। तड़के। २. नियत समय से कुछ पहले ही। जल्दी।

सकालत--स्त्री०[अ०]१. सकील या गरिष्ठ होने की अवस्था या भाव। गरिष्ठता। २. गुरुता। भारीपन।

सकाश--अव्य०[सं० अव्य० स०] पास। निकट। समीप।

सकिया†--स्त्री०[?] एक प्रकार की बड़ी गिलहरी जिसके पंजे काले होते हैं।

सकिलना--अ०[हिं० सरकना]१. फिसलना। सरकना। २. सिकुड़ना। सिमटना। ३. कुछ कर सकने के योग्य या समर्थ होना। ४. (कार्य) पूरा होना।

सकीन--पुं०[देश०] एक प्रकार का जंतु।

सकील--वि०[अ०] [भाव० सकालत] १. जो जल्दी हजम न हो। गरिष्ठ। गुरुपाक। २. भारी। वजनी।

सकुच*--स्त्री०--संकोच।

सकुचाई*--स्त्री०[सं० संकोच, हिं० सकुच+आई (प्रत्य०)]१. संकुचित होने की क्रिया या भाव। २. संकोच।

सकुचाना--अ०[सं० संकोच, हिं० सकुच+आना (प्रत्य०)] १. संकोच करना। लज्जा करना। शरमाना। २. फूलों आदि का संपुटित या बन्द होना। ३. सिकुड़ना।

स०[हिं० सकुचाना का प्रे०] किसी को संकोच करने में प्रवृत्त करना। लज्जित करना।

सकुची--स्त्री०[सं० शकुल मत्स्य] एक प्रकार की मछली जो साधारण मछलियों से भिन्न और प्रायः कछुए के आकार की होती है। इसके चार छोटे-छोटे पैर होते हैं; और एक लम्बी पूंछ होती है। इसी पूंछ से यह शत्रु पर आघात करती है। जहाँ पर इसकी चोट लगती है, वहाँ घाव हो जाता है, और चमड़ा सड़ने लगता है। यह स्थल में भी रह सकती है।

सकुचीला--वि०[हिं० सकुच+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० सकुचीली] जिसे अधिक और प्रायः संकोच होता हो। संकोच करनेवाला। शरमीला।

सकुचीली--स्त्री०[हिं० सकुचीला] लजवंती। लज्जावती लता।

सकुचौहाँ--वि०[सं० संकोच+हिं० औहाँ (प्रत्य०) [स्त्री० सकुचौहीं] अधिक और प्रायः संकोच करनेवाला। लजीला।

सकुड़ना†--अ०=सिकुड़ना।

सकुन*--पुं०[सं० शकुंत] पक्षी। चिड़िया।

पुं०=शकुन।

सकुनी*--स्त्री०[सं० शकुंत] चिड़िया। पक्षी।

सकुपना*--अ०=सकोपना।

सकुल--पुं०[सं० कर्म० स०] अच्छा कुल। उत्तम कुल। ऊँचा खानदान।

पुं०=सकुची (मछली)।

सकुलज--वि०[सं० सकुल√ जन् (उत्पन्न करना)+ड] एक ही कुल में उत्पन्न (दो या अधिक व्यक्ति)।

सकुला--पुं०[सं० सकुल--टाप्] बौद्ध भिक्षुओं का नेता या सरदार।

सकुलादनी--स्त्री०[सं० ब० स०]१. महाराष्ट्री या मेरठी नाम की लता। २. कुटकी।

सकुली--स्त्री०=सकुची (मछली)।

सकुल्य--वि०[सं० सकुल+यत्] (दो या अधिक) जो एक ही कुल में उत्पन्न हुए हों।

सकूतरा--पुं०[?]एक द्वीप जो अरब सागर में अफ्रीका के पूर्वी तट के समीप है। यहाँ मोती और प्रवाल अधिक मिलते हैं।

सकूनत--स्त्री०[अ०] रहने का स्थान। निवास-स्थान। पता। जैसे--वहाँ वल्दियत और सकूनत भी पूछी जाती है।

सकृत्--अव्य०[सं०]१. एक बार। एक मरतबा। २. सदा। हमेशा। ३. सहित। साथ। उदा०--जँह तँह काक उलूक, बक, मानस सकृत मराल।--तुलसी।

पुं०१ गुह। मल। विष्ठा। २. कौआ।

सकृत्प्रज--वि०[सं०] जिसे एक ही बच्चा हो।

पुं० कौआ।

सकृतप्रजा--स्त्री०[सं०] १. बंध्या रोग। बाँझपन। २. शेर या सिंह की मादा। शेरनी।

सकृत्फल--वि०[सं० ब० स०] [स्त्री० सकृत्फला] (पौधा या वृक्ष) जो एक ही बार फलता हो। जैसे--केला।

सकृत्सू--बि० स्त्री०[सं० सकृत्√षू (उत्पन्न करना)+क्विप] (स्त्री) जिसने अभी बालक प्रसव किया हो।

सकृद्--अव्य०[सं० सकृत् का वह रूप जो उसे समस्त पदों के पहले लगने पर प्राप्त होता है। जैसे--सकृद्ग्रह।

सकृदागामी मार्ग--पुं०[सं० कर्म० स०] बौद्ध मतानुसार एक प्रकार का धार्मिक मार्ग जिसमें जीव केवल एक बार जन्म लेकर मोक्ष प्राप्त करता है।

सकेत†--पुं०[सं० संकेत]१. संकेत। इशारा। २. प्रेमी और प्रेमिका के मिलने का कोई एकान्त स्थान।

†वि०[सं० संकीर्ण] सँकरा। संकीर्ण।

पुं०१. संकट की स्थिति। २. कष्ट। दुःख। उदा०--खिनहीं उठै खिन बूड़ै, अस हिय कँवल सकेत।--जायसी।

सकेतना*--अ०[हिं० सकेत] संकुचित होना। सिकुड़ना।

स० संकुचित करना। सिकोड़ना।

सकेती--स्त्री०[हिं० सकेत]१. कष्ट या विपत्ति में होने की अवस्था या भाव। २. कष्ट। दुःख।

सकेरना†--स०=सकेलना।

सकेलंग--पुं०[अं० सक्लिंग] एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष जिसकी लकड़ी नरम और सफेद होती है और इमारत आदि बनाने के काम में आती है।

सकेलना†--स०[सं० संकलन या सकल]१. इकट्ठा करना। जमा करना। उदा०--जो वनिता सुत-जूथ सकेलै, हय गय विभव घनेरो।--सूर। २. बिखरे हुए काम या चीजें समेटना। उदा०--ज्यों बाजीगर स्वाँग सकेला।--कबीर। २. काम पूरा करना। निपटाना।

सकेला--स्त्री०[अ० सैकल] एक प्रकार की तलवार जो कड़े और नरम लोहे के मेल से बनाई जाती है।

पुं० [अ० सकील?] एक प्रकार का लोहा।

सकोच†--पुं०=संकोच।

सकोचना*--स० [सं० संकोच+हिं० ना (प्रत्य०)] संकुचित करना। सिकोड़ना।

अ० संकोच करना। शरमांना।

सकोड़ना†--स०=सिकोड़ना।

सकोतरा†--पुं०=चकोतरा।

सकोपना*†--अ० [सं० कोप+ना (प्रत्य०)] कोप करना। गुस्सा करना।

सकोपित†--वि०=कुपित।

सकोरना†--स०=सिकोड़ना।

सकोरा†--पुं०[हिं० कसोरा] [स्त्री० सकोरी] मिट्टी की एक प्रकार की छोटी कटोरी। कसोरा।

सक्कर†--स्त्री०=शक्कर।

सक्करी--स्त्री०[सं० शर्करी] शर्करी नामक छन्द।

सक्का--पुं०[अ० सक्कः]१. भिश्ती। माशकी। २. वह जो मशक में पानी भरकर लोगों को पिलाता फिरता हो।

सक्त--वि०[सं०]१. किसी के साथ लगा या सटा हुआ। संलग्न। २. आसक्त

†वि०=सख्त। (कड़ा)।

सक्त-चक्र--पुं०[सं०] ऐसा राष्ट्र जो चारों ओर शक्ति-शाली राष्ट्रों से घिरा हो। राष्ट्रचक्र।

सक्तमूत्र—पुं० [सं०] चरक के अनुसार वह व्यक्ति जिसे थोड़ा थोड़ा पेशाब होता हो।

सक्ति†—स्त्री०=शक्ति।

सक्तु—पुं०[सं० शक्तु]भुने हुए अनाज को पीसकर तैयार किया हुआ आटा। सत्तू।

सक्तुक—पुं०[सं०] १. एक प्रकार का विषावतफल जिसकी गाँठ में सत्तू के समान चूरा भरा रहता है। २. सत्तू।

सक्तुकार—पुं०[सं०] वह जो सत्तू बनाता और बेचता हो।

सक्तुफला—स्त्री०[सं०] शमी वृक्ष। सफेद कीकर।

सक्थि—पुं०[सं०√सज्ज्(मिलना)+क्थिन्] सुश्रुत के अनुसार एक मर्म-स्थान जो शरीर के ग्यारह मुख्य मर्म स्थानों में माना गया है।

सक्थी—पुं०[सं० सक्थिन्—दीर्घ न लोप, सक्थिन्]१. हड्डी। अस्थि। २. जंघा। जाँघ। ३. छकड़े या बैलगाड़ी का एक अंग या अंश।

सक्र†—पुं०=शक्र (इन्द्र)।

सक्रघण†—पुं०[सं० शक्रघन] इन्द्र का अस्त्र, वज्र। (डिं०)

सक्रपति—पुं०[सं० शक्रपति] विष्णु। (डिं०)

सक्र सरोवर—पुं०[सं० शक्र-सरोवर] इंद्र-कुंड नामक स्थान जो व्रज में है।

सक्रारि*—पुं०[सं० शक्रारि] इंद्र का शत्रु, मेघनाद।

सक्रिय—वि०[सं० अव्य० स०]१. जो अपनी अथवा कोई क्रिया कर रहा हो। २. (काम) जिसमें कुछ करके दिखाया जाय। ३. जो क्रियात्मक रूप में हो। (ऐक्टिव)

सक्रियता—स्त्री०[सं०] सक्रिय होने या अवस्था का भाव। (ऐक्टिविटी)

सक्ष—वि०[सं०]१. जिसका अतिक्रमण हो सके। जो लाँघा जा सके। २. हारा हुआ। पराजित।

सक्षम—वि०[सं०]१. जिसमें किसी विशिष्ट कार्य के लिए क्षमता हो। क्षमताशाली। २. जो किसी विशिष्ट कार्य करने के लिए उपयुक्त और फलतः उसका अधिकारी या पात्र हो। (काम्पीटेन्ट)

सक्षमता—स्त्री०[सं०] सक्षम होने की अवस्था, गुण या भाव। (कॉम्पीटेन्सी)

सख—पुं०[सं० सखि]१. सखा। मित्र। साथी। २. एक प्रकार का वृक्ष।

सखत†—वि०=सख्त।

सखती†—स्त्री०=सख्ती।

सखत्व—पुं० [सं० सख+त्व] सखा होने की अवस्था, धर्म या भाव। सखापन। मित्रता। दोस्ती।

सखयाऊ †—पुं०[हिं० सखा] एक प्रकार का फाग जो बुन्देलखंड में गाया जाता है।

सखर—पुं०[सं० अव्य० स०] एक राक्षस का नाम।

†वि०[सं० स+खर]१. तेज धारवाला। चोखा। पैना। २. प्रखर। ३. प्रबल,।

सखरच, सखरज*—वि०[फा० शाह-खर्च] खुलकर अमीरों की तरह खर्च करनेवाला। शाहखर्च। उदा०—बनिय क सखरच, ठकुर क हीन। वैद क पूत, व्याधि नहिं चीन्ह। —घाघ।

सखरण†—पुं०=शिखरन।

सखरस—पुं०[सख ?+हिं० रस] मक्खन। नैनू।

सखरा—वि०[हिं० निखरा का अनु०] (भोजन) जिसकी गिनती कच्ची रसोई में होती हो। 'निखरा' का विपर्याय।

†पुं० दे० 'सखरी'।

सखरी—स्त्री० [हिं० निखरी (अनु०)] हिन्दुओं में, दाल भात, रोटी आदि, खाद्य-पदार्थ जो घी में नहीं तले या पकाये जाते और इसलिए जो चौके के बाहर या किसी अन्य जाति के आदमी के हाथ के बनाए हुए खाने में छूत और दोष मानते हैं। 'निखरी' का विपर्याय।

स्त्री०[सं० शिखर] छोटा पहाड़। पहाड़ी। (डिं०)

सखस†—पुं०=शख्स (व्यक्ति)।

सखसावन—पुं०[?] १. पालकी। २. आरामकुरसी। पलंग।

सखा(खिन्)—पुं०[सं०] [स्त्री० सखी]१. ऐसा व्यक्ति जो सदा साथ-साथ रहता हो। साथी। संगी। २. दोस्त। मित्र। ३. साहित्य में, वह व्यक्ति जो नायक का सहचर हो और जो सुख-दुःख में बराबर उसका साथ देता हो। ये चार प्रकार के होते हैं। पीठमर्द, विट, चेट और विदूषक।

सखावत—स्त्री०[अ०]१. सखी या दाता होने की अवस्था, गुण या भाव। दानशीलता। २. आर्थिक उदारता।

सखिता—स्त्री०[सं० सखी+तल्—टाप्] १. सखी होने की अवस्था, गुण या भाव। २. बन्धुता। मित्रता।

सखित्व—पुं०[सं० सखि+त्व]=सखिता।

सखिनी†—स्त्री०=सखी (सखा का स्त्री०)।

सखी—स्त्री० [सं०] १. सहेली। सहचरी। संगिनी। २. साहित्य में, नायिका के साथ रहनेवाली वह स्त्री जो उसकी अंतरंग संगिनी होती, सब बातों में उसकी सहायक रहती और नायक से उसे मिलाने का प्रयत्न करती है। श्रृंगार रस में इसकी गणना उद्दीपन विभावों में होती है। इसके कार्य मंडन, शिक्षा, उपालंभ और परिहास कहे गये हैं। ३. एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में १४ मात्राएँ और अंत में १ भगण या १ यगण होता है। इसकी रचना में आदि से अंत तक दो दो कलें होती हैं—२+२+२+२+२+२ और कभी कभी २+३+३+२+२+२ भी होती हैं और विराम ८ तथा ६ पर होता है।

वि० [अ० सखी] दाता। दानी। दानशील। जैसे—सखी से सूम भला जो तुरत दे जबाब। (कहावत)

सखीभाव—पुं०[सं० ष० त०, मध्यम० स० वा] वैष्णव संप्रदाय में, भक्ति का एक प्रकार जिसमें भक्त अपने आपको इष्ट-देवता की पत्नी या सखी मानकर उनकी उपासना करते हैं। विशेष दे० 'सखी संप्रदाय'।

सखी संप्रदाय—पुं०[सं०] निम्बार्क मत की एक शाखा जिसकी स्थापना स्वामी हरिदास (जन्म सं० १४४१ वि०) ने की थी। इसमें भक्त अपने आपको श्रीकृष्ण की सखी मानकर उनकी उपासना तथा सेवा करते और प्रायः स्त्रियों के भेष में रहकर उन्हीं के आचारों, व्यवहारों आदि का पालन करते हैं।

सखुआ—पुं०[सं० शाकः]=साखू (शाल वृक्ष)।

सखुन—पुं० [फा० सखुन] १.=बातचीत। वार्तालाप। २. उक्ति। कथन।

मुहा०—सखुन डालना=किसी से (क) कुछ चाहना या माँगना। (ख) प्रश्न करना। पूछना।

३. कविता। काव्य। ४. किसी को दिया जानेवाला वचन। वादा।

क्रि० प्र०—देना।—मिलना।

सखुनचीन—वि०[फा०] [भाव० सखुनचीनी] इधर की बात उधर लगानेवाला। चुगुलखोर।

सखुनतकिया—पुं० [फा० सखुन-तकियः] वह शब्द या वाक्यांश जो कुछ लोगों की जबान पर ऐसा चढ़ जाता है कि बातचीत करने में प्रायः मुँह से निकला करता है। तकिया कलाम। जैसे—क्या नाम, जो है सो, राम आसरे आदि।

सखुनदाँ—पुं०[फा०] १. वह जो सखुन अर्थात् काव्य अच्छी तरह समझता हो। काव्य का रसिक। २. वह जो बातचीत का आशय अच्छी तरह समझता हो।

सखुनदानी—स्त्री० [फा०] सखुनदाँ होने की अवस्था, गुण या भाव।

सखुन-परवर—पुं०[फा०] [भाव० सखुनपरवरी] १. वह जो अपनी कही हुई बात का सदा पालन करता हो। जबान या बात का धनी।

२. वह जो अपनी बात पर अड़ा रहता हो। हठी।

सखुन-शनास—पुं०[फा०] [भाव० सखुनशनासी] १. वह जो सखुन या काव्य भली भाँति समझता हो। काव्य का मर्मज्ञ। २. वह जो बातचीत का अर्थ ठीक तरह से समझता हो।

सखुन-संज—पुं०[फा०] १. वह जो बातचीत अच्छी तरह समझता हो। २. काव्य का मर्मज्ञ।

सखुन-साज—पुं०[फा०] [भाव० सखुन-साजी] १. वह जो सखुन कहता हो। काव्य-रचना करनेवाला। कवि। शायर। २. वह जो प्रायः झूठी मनगढ़न्त बातें कहा करता हो।

सख्त—वि०[फा०सख्त] [भाव० सख्ती] १. कठोर। कड़ा। जैसे—पत्थर की तरह सख्त। २. दृढ़। पक्का। ३. कठिन। मुश्किल। जैसे—सख्त सवाल। ४. तीक्ष्ण। प्रखर। तेज। जैसे—सख्त गरमी। ५. दया, ममता आदि से रहित या हीन। जैसे—सख्त दिल, सख्त बरताव। ६. बहुत अधिक। औरों से बहुत बढ़ा हुआ। (केवल दुर्गुणों और दुर्गुणियों के संबंध में) जैसे—सख्त नालायकी, सख्त बेवकूफी।

सख्ती—स्त्री०[फा०] १. सख्त या कड़े होने की अवस्था या भाव। कड़ापन। २. व्यवहार आदि की उग्रता या कठोरता। जैसे—बिना सख्ती किये काम न चलेगा। ३. कष्ट। विपत्ति। संकट। उदा०—सख्तियाँ दो ही सही थीं, मैंने सारी उम्र में। एक तेरे आने से पहले एक तेरे जाने के बाद।—कोई शायर।

सख्य—पुं०[सं०] १. सखा होने की अवस्था या भाव। २. मित्रता। दोस्ती। ३. बराबरी। समानता। ४. वैष्णव धर्म में भक्ति का वह प्रकार या रूप जिसमें भक्त अपने इष्टदेव को अपना सखा मानकर उसकी आराधना तथा उपासना करता है। (नौ प्रकार की भक्तियों में से एक)

सख्यता—स्त्री० [सख्य+तल्—टाप्]=सख्य।

सगंध—वि०[सं० अव्य० स०] १. जिसमें गंध हो। गंधयुक्त। महकदार। २. अभिमानी। घमंडी।

सगधा—स्त्री० [सं० सगंध—टाप्] सुगंधशालि। बासमती चावल।

वि० [स्त्री० सगंधी]=सगा।

सगधी—वि० [सं० सगन्ध+इनि=संगधिन्] जिसमें गंध हो। महकदार।

सग—पुं०[फा०] कुत्ता। श्वान।

सग-जुबान—पुं० [फा०] ऐसा घोड़ा जिसकी जीभ कुत्ते की जीभ के समान पतली और लम्बी हो। ऐसा घोड़ा ऐबी समझा जाता है।

सगड़ी†—स्त्री०[हिं० सग्गड़]। छोटा सग्गड़।

सगण—पुं०[सं० अव्य० स०] छंद शास्त्र में एक गण जिसमें दो लघु और एक गुरु अक्षर होता है। जैसे—उपमा-कमला-मनसा आदि। इस गण का प्रयोग छंद के आदि में अशुभ है। इसका रूप ।।ऽ है।

सगत†—स्त्री०[सं० शक्ति] १. शिव की भार्या। पार्वती। (डिं०) २. शक्ति।

सगती†—स्त्री० =शक्ति।

सगदा†—पुं०[देश०] एक प्रकार का मादक पदार्थ जो अनाज से बनाया जाता है।

सगन—पुं०[?] १. दे० 'सगण'। २. दे० 'शकुन'।

सगनौती—स्त्री०=शकुनौती।

सगपन†—पुं०=सगापन।

सग-पहती—स्त्री० [हिं० साग+पहती=दाल] ऐसी दाल जो साग के साथ पकाई गई हो।

सगबग—वि०[अनु०] १. सराबोर। लथपथ। २. पिघला हुआ। द्रवित। ३. भरा हुआ। परिपूर्ण।

क्रि० वि० १. जल्दी या तेजी से। २. चटपट। तुरन्त।

सगबगाना—अ० [अनु० सग-बग] १. लथपथ होना। २. जल्दी या फुरती करना। ३. दे० 'सकपकाना'।

सगभत्ता†—पुं०[हिं० साग+भात] एक प्रकार का भात जो चावल में साग मिलाकर पकाया जाता है।

सगर—पुं०[सं०] अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो रामचन्द्र के पूर्वज थे। (जब इनके सौवें अश्वमेघ यज्ञ का घोड़ा चुराकर इन्द्र पाताल ले गया था तब इनके ६०००० पुत्रों ने पाताल पहुँचने के लिए पृथ्वी खोदी थी जिससे समुद्र की सीमा बढ़ी थी। इसी लिए समुद्र का नाम सागर पड़ा था।

†वि०=सगरा (सब)।

पुं०[हिं० तगर] तगर का फूल या पौधा।

सगरा†—वि०[सं० समग्र] [स्त्री० सगरी] सब। तमाम। सकल। कुल।

पुं०[सं० सागर] १. समुद्र। सागर। २. झील। ३. तालाब।

सगर्भ—वि०[सं० ब० स०] एक ही गर्भ से उत्पन्न। सहोदर। सगा। (भाई, बहन आदि)।

सगर्भा—वि० स्त्री०[सं० सगर्भ+आ] १. (स्त्री) जिसे गर्भ हो। गर्भवती स्त्री। २. दो या कइयों में से कोई जो एक ही गर्भ से हुई हों। सहोदरा।

सगर्भ्य—वि०[सं० सगर्भ+यत्]=सगर्भ।

सगल†—वि०=सकल (सब)।

सग-लगी—स्त्री०[हिं० सगा+लगना] १. किसी से बहुत सगापन दिखाने की क्रिया या भाव। बहुत अधिक आत्मीयता या आपसदारी दिखलाना। २. खुशामद।

सगलत*—स्त्री०[हिं० सगल=सकल]१. सकल या समस्त का भाव। समस्तता। २. समष्टि।

वि० पूरा। सारा। सब।

सगला†—वि०[सं० सकल] सब। समस्त। कुल।

सगवती†—स्त्री०[?] खाने का मांस। गोश्त। कलिया।

सगवारा†—पुं०[सं० स्वक्, हिं० सगा] गाँव के आस-पास की और उससे संबंध रखती हुई भूमि।

सगा—वि०[सं० स्वक्] [स्त्री० सगी] [भाव० सगापन]१. एक ही माता से उत्पन्न। सहोदर। २. संबंध या रिश्ते में अपने ही कुल या परिवार का। जैसे—सगा चाचा।

*पुं०=सगापन। उदा०—स्वारथ को सबको सगा, जग सगला ही जाणि।—कबीर।

सगाई—स्त्री० [हिं० सगा+आई (प्रत्य०)] १. सगे होने का भाव। सगापन। २. घनिष्ठ पारिवारिक संबंध। नाता। रिश्ता। उदा०—देखहु लोग हरि कैं सगाई। माय घरैं पुत्र धिया संग जाई।—कबीर। ३. आत्मीयता और घनिष्ठता का संग-साथ। उदा०—(क) परिहरि झूठा करि सगाई।—कबीर। (ख) सबसों ऊँची प्रेम सगाई।—सूर। ४. बिलकुल एक से या एक वर्ग के होने की अवस्था या भाव। जैसे—बैन सगाई=वर्णमैत्री या अनुप्रास। ५. विवाह का निश्चय। मँगनी। ६. विधवा स्त्री के साथ पुरुष का वह संबंध जो कुछ जातियों में विवाह के ही समान माना जाता हो। ७. संबंध। नाता। रिश्ता।

सगापन—पुं०[हिं० सगा+पन (प्रत्य०)]सगा होने की अवस्था या भाव।

सगाबी—स्त्री०[फा० सग+आबी] ऊद-बिलाव नामक जन्तु।

सगारत—स्त्री०[हिं० सगा+आरत (प्रत्य०)] सगा होने का भाव। सगापन।

सगीर—वि०[अ०]१. छोटा। २. उमर या पद में छोटा। ३. हीन।

सगुण—वि०[सं०] गुण से युक्त। जिसमें गुण हो।

पुं० सत्त्व, रज, तम तीनों गुणों से युक्त परमात्मा का वह रूप जिसमें वह अवतार धारण करके प्राणियों या मनुष्यों के से आचरण और व्यवहार करता है। साकार ब्रह्म। 'निर्गुण' का विपर्याय।

विशेष—मध्ययुग में उत्तर भारत में भक्ति मार्ग में दो संप्रदाय हो गये थे—निर्गुण और सगुण। राम, कृष्ण आदि के अवतार ब्रह्म के सगुण रूप के अंतर्गत आते हैं। निर्गुण रूप में अवतार की कल्पना नहीं होती।

सगुणता—स्त्री०[सं०] सगुण होने की अवस्था, धर्म या भाव। सगुण-पन।

सगुणी†—वि०=सगुण।

सगुन†—पुं० १.=सगुण। २.=शकुन।

सगुनाना—स०[सं० शकुन+हिं० आना (प्रत्य०)] शकुन शास्त्र की विशिष्ट प्रक्रियाओं के अनुसार शकुन देखकर शुभ और अशुभ फलों का विचार करना।

सगुनिया†—पुं० [सं० शकुन, हिं० सगुन+इया (प्रत्य०)] वह मनुष्य जो लोगों को शकुनों के शुभाशुभ फल बतलाता हो। शकुन विचारने और उनका फल बतलानेवाला।

सगुनौती—स्त्री०[हिं० सगुन] १. शकुन विचारने की क्रिया या भाव। २. वह पुस्तक जिसमें शकुनों के अच्छे और बुरे फलों का विवेचन हो। ३. मंगलाचरण। मंगलपाठ।

सगुरा†—वि०[हिं० स+गुरु]१. जिसने किसी गुरु से दीक्षा ली हो। २. जिसने किसी गुरु से, किसी अच्छी बात या काम की शिक्षा पाई हो। 'निगुरा' का विपर्याय।

सगृह—पुं०[सं० अव्य० स०]=गृहस्थ।

सगोत†—वि०=सगोत्र।

सगोती—पुं०[सं० सगोत्र] एक ही गोत्र अथवा कुल या परिवार के लोग भाई-बंद। सगोत्र।

सगोत्र—पुं०[सं० ब० स०, अव्य० स० वा]१. ऐसे लोग जो एक ही गोत्र के अर्थात् एक ही पूर्वज से उत्पन्न हुए हों। (किन्ड्रेड, किन्समेन) २. कुल। वंश। ३. जाति।

सगोत्रता—स्त्री०[सं०] सगोत्र होने की अवस्था या भाव। (किनशिप्)

सगौती—स्त्री०[देश०] खाने का मांस। गोश्त। कलिया।

†पुं०=सगोत्र।

सघन—वि०[सं० अव्य० स०] १. घना। गझिन। अविरल। गुंजान। 'विरल' का विपर्याय। जैसे—सघन वन। २. ठोस।

सघनता—स्त्री०[सं० सघन+तल्—टाप्] सघन होने की अवस्था, गुण या भाव।

सघला†—वि०[सं० सकल] [स्त्री० सघली] सब। सारा।

सच—वि०[सं० सत्य] १. जो यथार्थ हो। वास्तविक। २. झूठ रहित। सत्य।

सचक्री—पुं०[सं० सचक्र+इनि] वह जो रथ चलाता हो। सारथी।

सचन—पुं०[सं० चन्+अच् —समान=स] सेवा करने की क्रिया या या भाव। सेवन।

सचना†—स०[सं० संचयन]१. संचय करना। इकट्ठा करना। २. कार्य का संपादन करना। काम पूरा करना। ३. बनाना। रचना।

†अ०=सचरना।

†अ० १. संचित या एकत्र होना। उदा०—मालती मल्लि मलैज लवंगनि सेवाती संग समूह सची है।—देव। २. कार्य का सम्पादित या पूरा होना। उदा०—बहु कुंड शोनित सों भरे, पितु तर्पणादि क्रिया सची।—कबीर। ३. रचा जाना। बनना।

सचनावत्—पुं० [सं० सचन√अन् (रक्षा करना)+क्रिय—तुक] परमेश्वर जिसका भजन सब लोग करते हैं।

सच-मुच—अव्य०[हिं० सच+मुच(अनु०)] १. यथार्थतः। ठीक ठीक। वास्तव में। वस्तुतः। २. निश्चित रूप से। अवश्य।

सचरना—अ०[सं० संचरण]१. किसी के ऊपर प्रविष्ट होकर संचरित होना। फैलना। २. किसी वर्ग या समाज में पहुँचकर लोगों से हेल-मेल बढ़ाना। उदा०—जा दिन तैं सचरे गोपिन में, ताहि दिन तै करत लगरैया।—सूर। ३. किसी चीज या बात का लोगों में प्रचलन या प्रचार होना। फैलना।

सचराचर—पुं०[सं० द्व० स०] संसार की सब चर और अचर वस्तुएँ। स्थावर और जंगम सभी वस्तुएँ।

सचल—वि०[सं०] [भाव० सचलता]१. जो अचल न हो। चलता हुआ। जंगम। २. जो एक से दूसरी जगह आ-जा सके। ३. जो बराबर एक जगह से दूसरी जगह जाता रहता हो। (मूविंग) जैसे—सचल पुस्तकालय, सचल निरीक्षण आदि। ४. जो स्थिर न रहे। चंचल। ५. जंगम।

सचल-लवण—पुं०[सं० मध्यम० स०] साँचर नमक।

सचा†—पुं० =सखा।

सचाई†—स्त्री०=सच्चाई।

सचान—पुं०[सं० संचान=श्येन] श्येन पक्षी। बाज।

सचाना†—स० [हिं० सच=सत्य] सच्चा कर दिखलाना।

उदा०—झूठहिं सचावै, कर कलम मचावै, अहो जुलुम मचावै ये अदालत के अमला।

सचारना†—स०[हिं० संचरना का सकर्मक रूप] संचारित करना। फैलाना।

सचावट†—स्त्री० [हिं० सच+आवट (प्रत्य०)] सच्चापन। सच्चाई। सत्यता।

सचिंत—वि०[सं० अव्य० स०] जिसे चिंता हो। फिक्रमंद।

सचिक्कण—वि० [सं० अव्य० स०] बहुत अधिक चिकना। जैसे—सचिक्कण केश।

सचिक्कन—वि०=सचिक्कण।

सचित—वि०[सं० √चित् (ज्ञान करण)+क्विप्=स] जिसमें अथवा जिसे चित् अर्थात् ज्ञान या चेतना हो।

सचित्त—वि०[सं० अव्य० स०] जिसका ध्यान किसी एक ओर लगा हो।

सचिव—पुं०[सं०]१. मित्र। दोस्त। २. मंत्री या वजीर। २. सहायक। मददगार। ४. आज-कल किसी बड़े अधिकारी या विभाग का वह व्यक्ति जो अभिलेख आदि सुरक्षित रखता हो और मुख्य रूप से पत्र-व्यवहार आदि की व्यवस्था करता हो। (सेक्रेटरी)

विशेष—प्राचीन भारत में, मंत्री और सचिव प्रायः समानक शब्द माने जाते थे; परन्तु आज-कल सचिव से मंत्री का पद भिन्न होता है। मंत्री का काम मंत्रणा या परामर्श देना होता है परन्तु सचिव को ऐसा कोई अधिकार नहीं होता।

५. धतूरे का पेड़।

सचिवता—स्त्री०[सं० सचिव+तल्—टाप्] सचिव होने की अवस्था, पद या भाव।

सचिव-मंडल—पुं०[सं०]=मंत्रि-मंडल।

सचिवाधिकार—पुं०[सं० सचिव+अधिकार] किसी राज्य के मंत्रियों अर्थात् सचिवों का शासन-काल। (मिनिस्टरी) जैसे—कांग्रेस सचिवाधिकार से शासन-विधि में अनेक प्रकार के परिवर्तन हुए हैं।

सचिवालय—पुं०[सं०] वह स्थान जहाँ राज्य के प्रमुख विभागों के सचिवों और प्रमुख अधिकारियों के कार्यालय हों। (सेक्रेटेरिएट)

सची†—स्त्री०[सं० शची] अगर। अगुरु।

†स्त्री०=शची (इन्द्राणी)।

सची-सुत—पुं०[सं० शची-सुत]१. शची का पुत्र, जयंत। २. श्री चैतन्य महाप्रभु।

सचु†—पुं०[?]१. प्रसन्नता। खुशी। २. सुख।

वि०=सच।

सचेत—वि०[सं० सचेतन]१. जिसे या जिसमें चेतना हो। चेतन-युक्त। सचेतन। २. समझदार। सयाना। ३. सजग। सावधान।

सचेतक—वि०[सं०] सचेत या सजग करनेवाला।

पुं० विधायिका, सभाओं, संसदों आदि में वह अधिकारी जिसका कर्तव्य सदस्यों को इस विषय में सचेत कराना होता है कि अमुक प्रस्ताव या विषय पर मत देने के लिए आपकी उपस्थिति आवश्यक है। (ह्विप)

सचेतन—पुं०[सं० अव्य० स०]१. ऐसा प्राणी जिसमें चेतना हो। विवेकयुक्त प्राणी। २. ऐसी वस्तु जो जड़ न हो। चेतन।

वि०१. चेतनायुक्त। चेतन। २. सजग। सावधान। ३. चतुर। होशियार।

सचेता (तस्)—वि०[सं० चित्+असन्—सह=स] समझदार।

†वि०=सचेत।

सचेती—स्त्री० [हिं० सचेत+ई (प्रत्य०)] सचेत होने की अवस्था, गुण या भाव।

सचेष्ट—वि०[सं० अव्य० स०]१. जिसमें चेष्टा हो। २. जो चेष्टा या प्रयत्न कर रहा हो।

पुं० आम का पेड़।

सचैयत—स्त्री०[हिं० सच्च-ऐयत (प्रत्य०)]=सच्चाई।

सच्चरित—वि० [सं० कर्म० स०] जिसका चरित्र अच्छा हो। सच्चरित्र। सदाचारी।

सच्चा—वि०[सं० सत्य] [स्त्री० सच्ची]१. सच बोलनेवाला। जो कभी झूठ न बोलता हो। सत्यवादी। २. जिसमें किसी प्रकार का छल-कपट या झूठा व्यवहार न हो। अथवा जिसकी प्रामाणिकता, सत्यता आदि में किसी प्रकार के अंतर या संदेह की संभावना हो। जैसे—(क) जबान का सच्चा अर्थात् सदा सत्य बोलनेवाला और अपने वचन का पालन करनेवाला। (ख) लंगोट का सच्चा अर्थात् जो परस्त्रीगामी न हो और पूर्ण ब्रह्मचारी हो। (ग) हाथ का सच्चा, जो कभी चोरी या बेईमानी न करता हो। ३. जिसमें कोई खोट या मेल न हो। खरा। विशुद्ध। जैसे—सच्चा सोना। ४. जितना या जैसा होना चाहिए उतना या वैसा। त्रुटि, दोष आदि से रहित। जैसे—सच्ची जड़ाई करना, सच्चा हाथ मारना। ५. जो नकली या बनावटी न हो, बल्कि असली या वास्तविक हो। जैसे—साड़ी पर सच्ची जरी का काम।

सच्चाई—स्त्री०[हिं० सच्चा+आई (प्रत्य०)] सच अर्थात् सत्य होने का गुण या भाव। सत्यता।

सच्चापन—पुं० [हिं० सच्चा+पन (प्रत्य०)] सच अर्थात् सत्य होने का गुण या भाव। सत्यता।

सच्चाहट—स्त्री०=सच्चाई। (क्व०)

सच्चित्—पुं०[सं० द्व० स०] सत् और चित् से युक्त। ब्रह्म।

सच्चिदानंद—पुं०[सं० कर्म० स०] सत्, चित् और आनन्द से युक्त परमात्मा का एक नाम। ईश्वर। परमेश्वर।

सच्चिन्मय—वि०[सं० सच्चित्-मयट्]१. सत् और चैतन्य स्वरूप। २. सत् और चैतन्य से युक्त।

सच्ची टिपाई—स्त्री० [हिं०] भारतीय मध्य-युगीन चित्र कला में चित्र बनाने के समय पहले रूप-रेखा अंकित कर चुकने पर गेरू से होनेवाला अंकन।

सच्छंद*—वि०=स्वच्छंद।

सच्छ*—वि०=स्वच्छ।

सच्छत†—वि०[सं० स+क्षत] जिसे क्षत लगा हो। घायल।

सच्छांति—स्त्री०[सं० सद्+शांति] सद् या उत्तम शांति। पूरी या विशुद्ध शांति।

सच्छाय —वि०[सं० अव्य० स०]१. छायादार। २. सुन्दर रंगोंवाला। ३. चमकदार। ४. एक ही रंग का।

सच्छी*—स्त्री०=साक्षी।

सच्छील—पुं० [सं० कर्म० स०] सदाचार।

वि० अच्छे शीलवाला। शीलवान्।

सज—स्त्री०[सं० सज्जा] [वि० सजीला] १. सजाने अथवा सजे हुए होने का गुण या भाव। सजावट । २. गठन या बनावट का ढंग। (स्टाइल) जैसे—इमारत की सज मुसलमानी है। ३. शोभा। ४. सुन्दरता।

पुं०[देश०] पियासाल नामक वृक्ष।

सजग—वि० [सं० जागरण] १. सावधान। सचेत। सतर्क। २. चालाक। होशियार।

सजड़ा†—पुं०=सहिंजन (वृक्ष)।

सजदार—वि०[हिं० सज+फा० दार (प्रत्य०)] जिसकी सज या बनावट अच्छी हो। सुन्दर।

सज-धज—स्त्री० [हिं० सज+धज अनु०] बनाव-सिंगार। सजावट। जैसे—उसकी बरात बहुत सज-धज से निकली थी।

सजन—पुं०[सं० सत्+जन=सज्जन] [स्त्री० सजनी]१. भला आदमी। सज्जन। सरीफ। २. स्त्री का पति। स्वामी। ३. प्रियतम या प्रिय के लिए शिष्ट सम्बोधन।

वि० [सं०] लोगों से युक्त! जन-सहित।

सजना—स० [सं० सज्जा] १. सज्जित करना। सजाना। २. शरीर पर कपड़े या हथियार आदि धारण करना। जैसे—सिपाहियों का ढाल, तलवार आदि से सजना। ३. कपड़े आदि पर साज टाँकना या लगाना। अ० १ आभूषण, वस्त्रादि से सज्जित या अलंकृत होना। सजाया जाना। **पद—सजना-बजना**= भली भाँति या बहुत सज्जित होना। २. सेना या सैनिकों का अस्त्र-शस्त्र आदि से युक्त होना। ३. उपयुक्त, भला या सुन्दर जान पड़ना। सुशोभित होना।

*पुं० १.=साजन। २.=सहिंजन।

सजनी—स्त्री०[हिं० सजन]१. सखी। सहेली। २. मिथिला में गाये जानेवाले षट गभनी (दे०) नामक लोक-गीत का दूसरा नाम।

सजप—पुं०[सं० ब० स०] एक प्रकार के यति।

सज-बज†—स्त्री०=सजधज।

सजल—वि० [सं०] [स्त्री० सजला]१. जल से युक्त या पूर्ण। जिसमें पानी हो। २. तरल पदार्थ से युक्त। ३. आँसुओं से युक्त। जैसे—सजल नेत्र। ४. जिसमें आब या चमक हो। चमकदार।

सजला†—वि०=सँझला।

सजवना* —स०=सजाना।

†पुं०=सजावट।

सजवाई—स्त्री०[हिं० सजना+वाई (प्रत्य०)]सजवाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

सजवाना—स० [हिं० सजाना का प्रे० रूप] सजाने का काम किसी से कराना। किसी को कुछ सजाने में प्रवृत्त करना।

सजा—स्त्री०[फा० सज़ा]१. अपराध आदि के कारण अपराधी को दिया जानेवाला दंड। २. कारागार या जेल में रखे जाने का दंड। कारावास। (इम्प्रिजनमेन्ट)

सजाइ*—स्त्री०=सजा (दंड)।

सजाई—स्त्री०[सं० सजाना+आई (प्रत्य०)]सजाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

†स्त्री०= सजा (दंड)।

सजागर—वि०[सं० अव्य० स०]१. जागता हुआ। २. सजग। होशियार।

सजात—वि०[सं०]१. जो किसी के साथ उत्पन्न हुआ हो। २. जो अपने सम्बन्धियों से युक्त या उनके सहित हो। ३. जो उत्पत्ति, उद्गम अथवा आपेक्षिक स्थिति के विचार से एक प्रकार या वर्ग के हों। (होमोलोगम)

सजाति—वि०[सं० ब० स०]१. जो जाति या वर्ग में हो। २. (पदार्थ) जो एक ही प्रकार, प्रकृति या स्वरूप के हों।

सजातीय—वि०[सं० कर्म० स० जाति+छ—ईय] एक ही जाति या **जोत्र** के (दो या अधिक)।

सजात्य—वि० [सं० जाति+यत्] =सजातीय।

सजान—वि० [सं० सज्ञान] १. जानकार। जाननेवाला। २. चतुर। होशियार।

सजाना—सं०[सं० सज्जा]१. चीजें ऐसे क्रम और ढंग से रखना या लगाना कि वे आकर्षक और सुन्दर जान पड़ें। जैसे—आलमारी में पुस्तकें सजाना। २. (व्यक्ति या स्थान) ऐसी चीजों से युक्त करना कि देखने में भला और सुन्दर जान पड़े। अलंकृत करना। किसी चीज की शोभा या सुन्दरता बढ़ाने के लिए उसमें और भी अच्छी चीजें मिलाना या लगाना। (डिकोरेशन)

सजाय—वि०[सं० उपव्य० स०] जो अपनी जाया अर्थात् पत्नी के साथ उपस्थित या वर्तमान हो।

†स्त्री०=सजा (दंड)।

सजा-याफ्ता—वि०[फा० सजायाफ़्तः] जिसने दंडविधान के अनुसार दंड पाया हो। । जो सजा भोग चुका हो।

सजायाब—वि०[फा०]१. जो दंड पाने के योग्य हो। दंडनीय। २. जो कारागार का दंड भोग चुका हो। सजायाफ्ता।

सजार, सजारू—पुं०[सं० शल्य] शल्य।

सजाल—वि०[सं० उपव्य० स०] अयाल से युक्त।

सजाव—पुं०[सं० सजाना] एक प्रकार का दही।

†पुं०=सजावट।

सजावट—स्त्री०[हिं० सजाना] १. सजे हुए होने की अवस्था, क्रिया या भाव। जैसे—दुकान या मकान को सजावट। २. किसी चीज के आस-पास या इधर-उधर पड़नेवाले खाली स्थानों में ऐसी चीजें भरना या लगाना जिनमें उसकी शोभा या सौंदर्य बहुत बढ़ जाय। (डेकोरेशन) ३. शोभा।

सजावन—पुं०[हिं० सजाना]१. सजाने की क्रिया। अलंकृत करना। मंडन। २. तैयार करना। प्रस्तुत करना।

सजावल—पुं०[तु० सज़ावुल्]१. सरकारी कर उगाहनेवाला कर्मचारी।

तहसीलदार। २. राज-कर्मचारी। सरकारी नौकर। ३. सिपाहियों का जमादार।

सजावली—स्त्री०[हिं० सजावल] सजावल का पद या काम।

सजावार—वि०[फा०] जो दंड का भागी हो। जो सजा पाने के योग्य हो। दंडनीय।

सजिन—पुं०=सहिजन।

सजीउ†—वि०=सजीव।

सजीला—वि०[हिं० सजना+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० सजीली] १. सज-धज से या बनठनकर रहनेवाला। छैला। २. सुन्दर। आकर्षक। ३. जो बनावट के ढंग के विचार से बहुत अच्छा हो। सुन्दर और सुडौल। तरहदार। (स्टाइलिश)

सजीव—वि०[सं० अव्य० स०] १. जीवयुक्त। जिसमें प्राण हों। २. जिसमें जीवनी-शक्ति है। ३. जो देखने में जीवयुक्त या जीवित सा जान पड़ता हो। ओज-पूर्ण। ४. तेज। फुरतीला।

पुं० जीवधारी। प्राणी।

सजीवता—स्त्री०[सं० सजीव+तल्—टाप्] सजीव होने की अवस्था, गुण या भाव। सजीवपन।

सजीवन—पुं०[सं० संजीवन] संजीवनी नामक बूटी।

सजीवन बूटी—स्त्री०[सं० संजीवनी+हिं० बूटी] १. रुदंती। रुद्रवंती। २. दे० 'सजीवनी'।

सजीवनी मंत्र—पुं०[सं० संजीवन+मंत्र] १. वह कल्पित मंत्र जिसके संबंध में लोगों का विश्वास है कि मरे हुए मनुष्य या प्राणी को जिलाने की शक्ति रखता है। २. ऐसी मंत्रणा जिससे कठिन काम सहज में पूरा हो सकता हो।

सजीवनमूर, सजीवनमूरि†—स्त्री०=संजीवनी (बूटी)।

सजुग—वि०=सजग (सचेत)।

सजुता—स्त्री०[सं० संयुता] एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक सगण, दो जगण और एक गुरु होता है। (सजजग)

सजूत—वि०=संयुत (संयुक्त)।

सजरी—स्त्री०[?] एक प्रकार की मीठी पूरी।

सजोना—स०[हिं० सजाना] १. सज्जित करना। शृंगार करना। सजाना। २. आवश्यक सामग्री एकत्र करके व्यवस्थित रूप से रखना। ३. दे० 'सँजोना'।

सजोयल†—वि०=सँजोइल।

सज्ज†—पुं०=साज।

स्त्री० १.=सज्जा। २.=सेज।

सज्जक—पुं०[सं० सज्ज+कन्] सज्जा। सजावट।

वि० सज्जा या सजावट करनेवाला।

सज्जण—पुं०[सं०] १. =सज्जन। २.=सज्जा। ३.=साजन।

सज्जता—स्त्री०[सं० सज्ज+तल्—टाप्] सज्जा अर्थात् सजे हुए होने का भाव। सजावट।

सज्जन—पुं०[सं० कर्म० स०, सत् +जन्] १. भला आदमी। सत्पुरुष। शरीफ। २. अच्छे कुल का व्यक्ति। ३. प्रिय व्यक्ति। ४. पहरेदार। संतरी। ५. जलाशय का घाट। ६. दे० 'सज्जा'।

सज्जनता—स्त्री०[सं० सज्जन+तल्—टाप्] सज्जन होने की अवस्था, गुण या भाव।

सज्जनताई—स्त्री०=सज्जनता।

सज्जा—स्त्री०[सं० सज्ज-अच्—टाप्] १. सजाने की क्रिया या भाव। सजावट। २. वेष-भूषा। ३. कोई काम सुन्दर रूप में प्रस्तुत करने के लिए सभी आवश्यक उपकरण, साधन आदि एकत्र करके यथास्थान बैठाना या लगाना। ४. उक्त कार्य के लिए सभी आवश्यक और उपयोगी उपकरणों और साधनों का समूह। (ईक्विपमेन्ट, अंतिम दोनों अर्थों के लिए)

स्त्री०[सं० शय्या] १. सोने की चारपाई। शय्या। २. श्राद्ध आदि के समय मृतक के उद्देश्य से दान की जानेवाली शय्या जिसके साथ ओढ़ाने, विछाने आदि के कपड़े भी रहते हैं।

वि० [सं० सव्य] दाहिना (पश्चिम)।

सज्जाकला—स्त्री०[सं०] चीजों, स्थानों आदि को अच्छी तरह सजाकर आकर्षक तथा मनोहर बनाने की कला या विद्या। (डेकोरेटिव आर्ट)

सज्जाद—वि०[अ०] सिजदा करनेवाला। पूजक। उपासक।

सज्जाद नशीन—पुं० [अ० सज्जादः+फा० नशीन] मुसलमानों में वह पीर या फकीर जो गद्दी और तकिया लगाकर बैठता हो।

सज्जादा—पुं०[अ० सज्जादः] १. बिछाने का वह कपड़ा जिसपर मुसलमान नमाज पढ़ते हैं। मुसल्ला। २. पीरों, फकीरों आदि की गद्दी। ३. आसन।

सज्जित—भू० कृ०[सं० √ सज्ज् (सजावट करना)+क्त] १. जिसकी खूब सजावट हुई हो। सजाया हुआ। अलंकृत। आरास्ता। २. आवश्यक उपकरणों, साधनों, सामग्री आदि से युक्त। (इक्विप्ड) जैसे—सज्जित सेना।

सज्जी—स्त्री०[सं० सर्जि, सर्जिका] मिट्टी की तरह का एक प्रकार का प्रसिद्ध क्षार जो सफेदी लिए हुए भूरे रंग का होता है। (फुलर्स अर्थ)

सज्जीखार—पुं०=सज्जी।

सज्जीबूटी—स्त्री०[सं० संजीवनी] क्षुप जाति की एक वनस्पति जिसकी शाखाएँ कोमल और पत्ते बहुत छोटे और तिकोने होते हैं। प्रायः इसी के डंठलों और पत्तियों से सज्जीखार तैयार होता है।

सज्जुता—स्त्री०[सं० संयुता] संजुता या संयुता नामक छंद।

सज्जे—सर्व० [सं० सर्व] सब।

अव्य० पूरी तरह से। सर्वतः।

अव्य०[सं० सव्य] दाहिनी ओर। (पश्चिम)

सज्ञान—वि०[सं० अव्य० स०] १. जिसे ज्ञान हो। ज्ञानवाला। २. समझदार। सयाना। ३. प्रौढ़। वयस्क। बालिग। ४. सचेत। सावधान।

सज्या—स्त्री० १.=सज्जा। २.=शय्या।

सझ—स्त्री०[सं० सज्जा] १. सजावट। २. तैयारी। (डिं०)

सझणू—पुं०[सं० सज्जा] सेना को सज्जित करने की क्रिया। फौज तैयार करना। (डिं०)

सझनी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का छोटा पक्षी जिसकी पीठ काली, छाती सफेद और चोंच लम्बी होती है।

सझिदार—पुं०[भाव० सझिदारी]=साझीदार।

सझिया—वि०=साझीदार।

सह्ह्य—वि० १.=साध्य। २.=सह्य।

सट—पुं०[सं० √सट्+अच्] जटा।

अव्य०[अनु०] सट शब्द करते हुए।

सटई—स्त्री०[देश०] अनाज रखने का एक प्रकार का बरतन।

सटक—स्त्री०[अनु० सट से]१. सटकने अर्थात् धीरे से चंपत होने या खिसकने की क्रिया। २. तंबाकू पीने का लंबा लचीला नैचा जो अन्दर छल्लेदार तार देकर बनाया जाता है। ३. पतली लचीली छड़ी या डंठल।

सटकन—स्त्री०[हिं० सटकना] सटकने की क्रिया या भाव।

सटकना—अ० [अनु० सट से] धीरे से खिसक जाना। रफूचक्कर होना। चल देना। चंपत होना।

स० बालों में से अनाज निकालने के लिए उसे कूटने की क्रिया। कूटना। पीटना।

सटकाना—स०[अनु० सट से]१. छड़ी, कोड़े आदि से इस प्रकार मारना कि 'सट' शब्द हो। जैसे—कोड़ा सटकाना, बेंत सटकाना। २. सट-सट शब्द करते हुए कोई क्रिया करना।

सटकार—स्त्री०[अनु० सट]१. सटकाने की क्रिया या भाव। २. सटकाने से होनेवाला शब्द। ३. गौ, बैल आदि छड़ी से हाँकने की क्रिया। ४. दे० 'झटकार'।

सटकारना—स०—१.=सटकाना। २.=झटकारना।

सटकारा—वि० [अनु०] चिकना और लंबा (बाल)। उदा०—लसत लछारे सटकारे तेरे केस हैं।—सेनापति।

सटकारी—स्त्री०[अनु०] ऐसी पतली छड़ी जिसे तेजी से हिलाने पर सट शब्द हो।

सटक्का—पुं०[अनु० सट से]१. दौड़। २. झपट।

क्रि० प्र०—मारना।

३. दे० 'सटका'।

सटना—अ०[?]१. दो चीज़ों का इस प्रकार एक में मिलना जिसमें दोनों के पार्श्व एक दूसरे से लग जायँ। जैसे—दीवार से आलमारी सटना। २. चिपकना। ३. मैथुन या संभोग करना। ४. लाठियों आदि से मारपीट होना। (बाजारू)

संयो० क्रि०—जाना।

सट-पट—स्त्री०[अनु०] १. सिटपिटाने की क्रिया। चकपकाहट। २. शील। संकोच। ३. असमंजस या दुबिधा की स्थिति। आगा-पीछा। ४. डर। भय। ५. घबराहट। उदा०—अरी खरी सट-पट परी विधु आगैं मग हेरि।—बिहारी।

सटपटाना—अ० [अनु०] १. सटपट की ध्वनि होना। २. दे० 'सिटपिटाना'।

स० सटपट शब्द उत्पन्न करना।

सटपटी—स्त्री० [अनु०]१. सटपटाने की क्रिया या भाव। २. सट-पट।

सटर-पटर—वि० [अनु०] १. छोटा-मोटा। तुच्छ। जैसे—सटर-पटर सामान। २. बहुत ही साधारण और सामान्य।

पुं० उलझन, झंझट या बखेड़े का काम।

सट-सट—अव्य० [अनु०] १. सट शब्द करते हुए। सटापट। २. झटपट। तुरन्त। शीघ्र।

सटा—स्त्री० [सं० सट-टाप्] १. साधुओं आदि के सिर पर की जटा। २. घोड़े, शेर आदि के कंधों पर के बाल। अयाल। ३. सूअर के बाल। ४. बालों की चोटी। ५. चोटी। शिखर।

सटाक—पुं० [अनु०] सट शब्द।

मुहा०—**सटाक से**=सट या सटाक शब्द करते हुए।

सटाकी—स्त्री० [अनु०] चमड़े की वह रस्सी या पट्टी जो कुछ छड़ियों के सिरे पर बँधी रहती है।

सटान—स्त्री० [हिं० सटना+आन (प्रत्य०)] १. सटने की अवस्था या भाव। मिलान। २. वह स्थान जहाँ दो चीजें सटती हैं। सन्धि-स्थल।

सटाना—स० [हिं० सटना का स०] १. दो तलों, पार्श्वों आदि को इस प्रकार एक दूसरे के समीप ले जाना कि दोनों एक दूसरे को स्पर्श करने लगें। जैसे—(क) मेज को दीवार से सटा दो। (ख) खटिया को खटिया से सटाना। २. किसी लसीले पदार्थ की सहायता से एक चीज को दूसरी चीज पर चिपकाना। जैसे—दीवार पर इश्तहार सटाना। ३. पुरुष का परस्त्री या वेश्या से सम्बन्ध कराना। (बाजारू) ४. लाठियों आदि से मार-पीट या लड़ाई करना। (गुंडे)

सटाय—वि० [देश०] १. दलालों की परिभाषा में उचित या नियत से कम। न्यून। २. निम्न कोटि का। घटिया। हलका।

सटाल—पुं० [सं० सटा+लच्] शेर बबर। केसरी। सिंह।

वि० भरा हुआ।

†पुं० =स्टाल

सटासट—क्रि० वि० [अनु०] १. सटसट शब्द उत्पन्न करते हुए। जैसे—सटासट बेंत चलाना। २. बहुत जल्दी-जल्दी या फुरती। जैसे—सटासट काम निपटाना।

सटि—स्त्री० [सं० सट+इनि] कचूर।

सटियल—वि० [देश० सटाय] घटिया। रद्दी।

सटिया—स्त्री० [हिं० सटना] १. सोने, चाँदी आदि की एक प्रकार की चूड़ी। २. माँग में सिन्दूर भरने का एक उपकरण। ३. दे० 'साटी'।

सटी—स्त्री० [सं० सआटि+ङीष्] वनआदी। जंगली कचूर।

सटीक—वि० [सं० अव्य० स०] (पुस्तक) जिसमें मूल के साथ टीका भी हो। टीका-सहित। व्याख्यासहित। जैसे—सटीक रामायण।

वि० [हिं० स+ठीक] १. बिलकुल ठीक। उपयुक्त।

सटैया† —वि० [देश० सटाय] १. कम गुण या मूल्यवाला। घटिया। निकम्मा। रद्दी।

सटैला† —पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

सटोरिया—पुं० [हिं० सट्टा+ओरिया (प्रत्य०)] व्यक्ति जो सट्टा खेलने का शौकीन हो। सट्टेबाज।

सट्ट—पुं० [सं० सट्ट+अच्] दरवाजे के चौखटे में दोनों ओर की लकड़ियाँ। बाजू।

† पुं०=सट्टा।

सट्टक—पुं० [सं० सट्ट+कन्] १. एक प्रकार का उपरूपक जिसमें अद्भुत रस की प्रधानता होती है। इसमें प्रवेशक और विष्कंभक नहीं होते। इसके अंक जवनिका कहलाते हैं। किसी समय में केवल प्राकृत भाषा में लिखे जाते थे। २. जीरा मिला हुआ मट्ठा।

सट्टा—पुं० [सं० सार्थ या प्रा० सट्ट, पु० हिं० साट] १. वह इकरारनामा जो दो पक्षों में कोई निश्चित काम करने या कुछ शर्तें पूरी करने के लिए होता है। इकरारनामा। जैसे—बाजेवालों को पेशगी देकर उनसे सट्टा लिखा लो। २. काश्तकारों में खेत की उपज के बँटवारे के सम्बन्ध में होनेवाला इकरारनामा। ३. साधारण व्यापार से भिन्न क्रय-विक्रय का एक कल्पित प्रकार जिसमें लाभ-हानि का निश्चय भाव के उतरने-चढ़ने के हिसाब से होता है; और इसी लिए जिसकी गिनती एक प्रकार के जूए में होती है। (स्पेक्यूलेशन)

स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का पक्षी। २. बाजा।

†पुं०=हाट (बाजार)।

सट्टा-बट्टा—पुं० [हिं० सटना+अनु० बट्टा] १. उद्देश्य-सिद्धि के लिए की हुई धूर्तता-पूर्ण युक्ति। चालबाजी।

क्रि० प्र०—लड़ाना।

२. किसी प्रकार की अभिसन्धि के रूप में या दुष्ट उद्देश्य से किसी के साथ किया जानेवाला मेल-जोल।

क्रि० प्र—भिड़ाना।—लड़ाना।

३. स्त्री और पुरुष का अनुचित और गुप्त संबंध।

सट्टी—स्त्री० [हिं० हाट या हट्टी] वह बाजार जिसमें एक ही मेल की बहुत सी चीजें लोग दूर दूर से लाकर बेचते हों। हाट। जैसे—तरकारी की सट्टी; पान की सट्टी।

मुहा०—**सट्टी करना**—सट्टी में से सामान खरीदना। **सट्टी मचाना**=सट्टी में जैसा शोर होता है वैसा शोर मचाना। **सट्टी लगाना**=बहुत सी चीजें इधर-उधर फैला देना।

सट्टे—अव्य० [अनु० सट से] १. दफा। बार। २. अवसर पर। मौके पर। जैसे—हर सट्टे यही कहते थे—पान खिलाओ। (केवल 'हर' के साथ प्रयुक्त)

सट्टेबाज—पुं० [हिं०] [भाव० सट्टेबाजी] वह जो सट्टे की तरह का व्यापार और भाव की तेजी-मन्दी के हिसाब से (बिना माल खरीदे-बेचे) लेन-देन करता हो। (स्पेक्यूलेटर)

सट्वा—स्त्री० [सं०] २. एक तरह का पक्षी। २. एक तरह का बाजा।

सठ† —पुं०=शठ।

सठई†—स्त्री०=शठता।

सठता†—स्त्री०=शठता।

सठमति—वि० [सं० शठ+मति] दुष्ट प्रकृतिवाला। दुष्ट। उदा०—तजतु अठान न हठ परचौ सठमति, आठौ जाम।—बिहारी।

सठियाना—अ० [हिं० साठ=६०] [भाव० सठियाव] १. साठ वर्ष का बुड्ढा होना। २. मनुष्य का ६० वर्ष या इससे अधिक का हो जाने पर मानसिक शक्तियों के क्षीण हो जाने के कारण ठीक तरह से काम-धंधा करने या सोचने-समझने के योग्य न रह जाना।

मुहा०—सठिया जाना=ऐसी अवस्था में पहुँचना जब कि बुद्धि ठीक से काम करना छोड़ देती है।

सठियाव—पुं० [हिं० सठियाना+आव (प्रत्य०)] सठिया जाने या सठियाये हुए होने की अवस्था या भाव। वह अवस्था जिसमें मनुष्य ६० वर्ष या अधिक का हो जाने पर ठीक तरह से काम-धंधा करने या सोचने-समझने के योग्य नहीं रह जाता। (सेनिलिटी)

सठुरी†—स्त्री० [हिं० सीठी या साँठी] गेहूँ, जौ आदि के डंठलों का वह गठीला अंश जिसका भूसा नहीं होता और जो ओसाकर अलग कर दिया जाता है। गठुरी। कूँटा। कूँटी।

सठेरा—पुं० [हिं० साँठा] सन का वह डंठल जो सन निकाल लेने पर बच रहता है। संठा। सरई। सलई।

सठोरना—स० [हिं० बटोरना का अनु०; बटोरना-सठोरना] एकत्र या संचित करना।

सठोरा†—पुं०=सोंठौरा।

सठ्ठो—पुं० [?] ऊँट। (राज०)

सड़क—स्त्री० [अ० शरक] १. वह कच्चा या पक्का मार्ग जिस पर गाड़ियाँ, टाँगे, मोटरें आदि भी चलती हों। २. लाक्षणिक अर्थ में, पथ या मार्ग। जैसे—राम नाम स्वर्ग तक पहुँचाने की सड़क है।

सड़क्का† —पुं० दे० 'सटक्का'।

सड़न—स्त्री० [हिं० सड़ना] १. सड़ने की अवस्था, क्रिया या भाव। (डिकाम्पोजिशन) २. दे० 'पूयन'।

सड़ना—अ० [सं० शादन या सरण ?] १. किसी पदार्थ में ऐसा विकार होना जिससे उसके संयोजक तत्त्व या अंग अलग अलग होने लगें; उसमें से दुर्गंध आने लगे और वह काम के योग्य न रह जाय। जैसे—अनाज या फल सड़ना। २. लाक्षणिक अर्थ में, हीन अवस्था में पड़े रहना। जैसे—जेल में कैदियों का सड़ना। ३. जल मिले हुए पदार्थ में खमीर उठना या आना।

संयो० क्रि०—जाना।

४. बहुत ही कष्ट या बुरी दशा में पड़े-पड़े समय बिताना। जैसे—बरसों उसे जेल में सड़ना पड़ा।

पद—सड़ी गरमी=प्रायः वर्षा ऋतु में होनेवाली वह गरमी जिसमें उमस बहुत अधिक हो।

† अ० जलना। (पश्चिम)

सड़सठ—वि० [हिं० सड़ (सात का रूप)+साठ] जो गिनती में साठ से सात अधिक हो।

पुं० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६७।

सड़सी†—स्त्री०=सँड़सी।

सड़ा—पुं० [हिं० सड़ना] कुछ चीजों को सड़ाकर बनाया हुआ वह घोल जो गौओं को बच्चा होने के समय पिलाते हैं।

सड़ाक—पुं० [अनु० सड़ से] कोड़े आदि की फटकार की आवाज, जो प्रायः सड़ के समान होती है।

पद—सड़ाक से=बहुत जल्दी।

सड़ान—स्त्री० [हिं० सड़ना] सड़ने की क्रिया या भाव। सड़न।

सड़ाना—स० [हिं० सड़ना का स० रूप] १. किसी वस्तु को सड़ने में प्रवृत्त करना। किसी पदार्थ में ऐसा विकार उत्पन्न करना कि उसके अवयव गलने लगें और उसमें से दुर्गन्ध आने लगे। जैसे—सब आम तुमने रखे-रखे सड़ा डाले।

संयो० क्रि०—डालना।—देना।

२. बहुत अधिक कष्ट या दुर्दशा में इस प्रकार रखना कि कोई उपयोग न हो सके। जैसे—किसी को जेल में रखकर सड़ाना।

सड़ायँध—स्त्री० [हिं० सड़ना+गंध] सड़ी हुई चीज से निकलनेवाली दूषित उग्र गंध। सड़ने से उठनेवाली बदबू।

सड़ाव—पुं० [हिं० सड़ना+आव (प्रत्य०)] १. सड़ने की क्रिया या भाव। २. सड़ने के फलस्वरूप होनेवाला विकृत रूप या स्थिति।

सड़ासड़—अव्य० [अनु०-सड़ से] सड़ शब्द के साथ। जिसमें सड़ शब्द हो। जैसे—सड़ासड़ कोड़े या बेंत लगाना।

सड़ियल—वि० [हिं० सड़ना+इयल (प्रत्य०)] १. सड़ा या गला हुआ। २. बहुत ही निकम्मा, निम्न कोटि का या रद्दी। ३. (व्यक्ति) जो जला-भुना उत्तर देता हो।

सणगार†—पुं०=श्रृंगार। (डिं०)

सत्—वि० [सं०√अस् (होना)+शतृ-अलोप] १. सच। सत्य। २. सज्जन। साधु। ३. धीर। ४ स्थायी। ५. पंडित। विद्वान्। ६. पूज्य। मान्य। ७. प्रशस्त। ८. पवित्र। शुद्ध। ९. उत्तम। श्रेष्ठ।

पुं० १. ब्रह्मा। २. माध्व संप्रदाय का एक नाम।

सत—पुं० [सं० सत्] सत्यता-पूर्ण धर्म।

मुहा०—सत करना या सत पर चढ़ना=पति का मृत शरीर लेकर पत्नी का चिता पर बैठना और उसके साथ सती होना। उदा०—(क) मूवाँ पीछे यत करे, जीवत क्यूं न कराइ।—कबीर। (ख) जब सती सत पर चढ़े तब पान खाना रस्म है। **सत पर रहना**=(क) सत्य धर्म का पालन करना। (ख) स्त्री का पतिव्रता और साध्वी होना।

पुं० [स० सत्य] १. किसी चीज में से निकला हुआ सार भाग। तत्त्व। २. जीवनी शक्ति।

वि० १. सत्यतापूर्ण। जैसे—सतगुरु, सतनाम। २. अच्छा। भला। जैसे—सत भाय। ३. शत। सौ। जैसे—सतदल।

वि० 'सात' (संख्या) का संक्षिप्त रूप (यौ० के आरंभ में, जैसे—सतकोना, सतनजा, सतपदी, सतसई आदि)।

सतकार†—पुं०=सत्कार।

सतकारना*—स० [सं० सत्कार+हिं० ना (प्रत्य०)] सत्कार या सम्मान करना। इज्जत करना।

सत-कोना—वि० [हिं० सात+कोना] सात कोनोंवाला।

सत-खंडा—वि० [हिं० सात+खंड] सात खंडों या मंजिलोंवाला। (मकान या महल)

सत-गँठिया—स्त्री० [हिं० सात+गाँठ] एक प्रकार की वनस्पति, जिसकी तरकारी बनाई जाती है।

सत-गजरा—पुं० दे० 'सतनजा'। (बुन्देल०) उदा०—सतगजरा की सोंधी रोटी, मिरच हरीरी मेवा।—लोकगीत।

सत-गुरु—पुं० [हिं० सत=सच्चा+गुरु] १. अच्छा गुरु। २. ईश्वर। परमात्मा।

सतजीत†—पुं०=सत्यजित्।

सत-जुग—पुं०=सत्य युग।

सतत—अव्य० [सं०] १. निरन्तर। बराबर। लगातार। २. सदा। हमेशा।

वि० [भाव० सतति] निरन्तर चलता रहनेवाला। (परपेचुअल) जैसे—सतत उत्तरोत्तरता या अनुक्रम। (परपेचुअल सक्सेशन)

सततक—वि० [सं०] दिन में दो बार आने या होनेवाला। जैसे—सततक ज्वर।

सततग—वि० [सं०] वह जो सदा चलता रहता हो। निरंतर गतिशील।

पुं० वायु। हवा।

सतत-ज्वर—पुं० [सं०] ऐसा ज्वर जो दिन में दो बार आए; या कभी दिन में एक बार और फिर रात को भी एक बार आए। द्विकालिक विषम ज्वर।

सतत्व—पुं० [सं० अव्य० स०] स्वभाव। प्रकृति।

सत-दंता—वि० [हिं० सात+दाँत] (पशु) जिसके सात दाँत हों।

सत-दल†—वि०, पुं०=शत-दल।

सत-ध्रत†—पुं०=शतधृत (ब्रह्मा)।

सतनजा—पुं० [हिं० सात+अनाज] सात भिन्न प्रकार के अनाजों का मिश्रित रूप। वह मिश्रण जिसमें सात भिन्न-भिन्न प्रकार के अनाज हों।

वि० अनेक प्रकार के तत्त्वों, पदार्थों आदि से मिल-जुल कर बना हुआ।

सतनी†—स्त्री० [सं० सप्तपर्णा] १. सप्तपर्ण वृक्ष। सतिवन। छतिवन। २. एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी से सन्दूक आदि बनते हैं।

सतनु—वि० [सं० अव्य० स०] तन या शरीर से युक्त। शरीरधारी।

सत-पतिमा—वि० स्त्री० [हिं० सात+पति] १. (स्त्री) जिसने सात पति किये हों। २. दुश्चरित्रा। पुंश्चली।

वि० सात पत्तियोंवाला (या वाली)।

†स्त्री०=सतपुतिया।

सतपदी—स्त्री०=सप्तपदी।

सत-परब†—पुं० [सं० शतपर्वा] १. शत पर्व्वा। बाँस। २. ऊख। गन्ना।

सत-पात†—पुं० [सं० शतपत्र] शतपत्र। कमल।

सत-पुतिया—स्त्री० [सं०सप्तपुत्रिका] एक प्रकार की तरोई जिसमें प्रायः पाँच या सात फलियाँ एक साथ गुच्छे के रूप में लगती हैं।

सत-पुरिया—स्त्री० [?] एक प्रकार की जंगली मधुमक्खी।

सतफल—पुं० [सं० शतफला] घुँघची।

सतफेरा—पुं० [हिं० सात+फेरा] विवाह के समय होनेवाला सप्तपदी नामक कर्म।

सतबरग†—पुं०=सदबरग (पौधा)।

सतबरवा†—पुं० [सं० शतपर्व=बाँस] एक प्रकार का वृक्ष जिसके रेशों से नैपाली कागज बनाया जाता है।

सतभइया†—वि० स्त्री० [हिं० सात+भइया] १. जो सात भाई हों। २. जिसके सात भाई हों।

स्त्री० पेंगिया मैना।

सत-भाएँ—अव्य० [सं० सद्भाव] अच्छे भाव से।

सत-भाय*—पुं०=सद्भाव।

सतभाव—पुं० [सं० सद्भाव] १. सद्भाव। अच्छा भाव। २. सरलता। सीधापन। ३. सचाई। सत्यता।

सतभिखा†—स्त्री०=शतभिषा (नक्षत्र)।

सतभौंरी—स्त्री० [सं० सप्त भ्रमण] सप्तपदी। (दे०)

सतम*—वि०=सप्तम (सातवाँ)।

सतमख—पुं० [सं० शतमख] इंद्र। (डिं०)

सत-माय†—स्त्री० [हिं० सौत+माँ] सौतेली माँ।

सतमासा—वि० [हिं० सात+मास] [स्त्री० सतमासी] (शिशु या बालक) जो गर्भ में सात ही महीने रहने के उपरान्त जनमा हो, नौ महीने अर्थात् पूरी अवधि तक न रहा हो।

पुं० एक रसम जो गर्भाधान के सातवें महीने में होती है।

सतमूली†—स्त्री०=शतमूली।

सत-युग—पुं० [सं० सत्य युग] १. सत्य युग। २. ऐसा समय जब कि लोग सब प्रकार से सुखी, सच्चे और सदाचारी हों।

सतयुगी—वि० [हिं० सत-युग] १. सत-युग के समय का। २. बहुत पुराना। ३. बहुत ही सच्चा, सात्विक या सीधा।

सत-रंग—वि०=सत-रंगा।

सतरंगा—वि० [हिं० सात+सं० रंग] [स्त्री० सत-रंगी] जिसमें सात रंग हों। सात रंगोंवाला। जैसे—सतरंगा साफा, सतरंगी साड़ी।

पुं० इन्द्र-धनुष।

सतरंज†—स्त्री०=शतरंज।

सतरंजी—स्त्री०=शतरंजी।

सतर—पुं० [अ०] १. छिपाव। २. मनुष्य का वह अंग जो ढका रखा जाता है और जिसके न ढके रहने पर उसे लज्जा आती है। गुह्य इंद्रिय।

पद—**बे-सतर**=(क) नंगा। नग्न। (ख) बुरी तरह से अपमानित किया हुआ।

३. आड़। ओट। परदा।

स्त्री० [अ०] १. लकीर। रेखा।

क्रि० प्र०—खींचना।

२. अवली। कतार। पंक्ति।

वि० १. टेढ़ा। वक्र। २. कुपित। क्रुद्ध।

†अव्य० [सं० सत्वर] जल्दी या तेजी से।

सतरकी†—स्त्री०=सत्रहीं (मृतक की क्रिया)।

सतराई*—स्त्री० [सं० शत्रु+हिं० आई (प्रत्य०)] दुश्मनी। शत्रुता।

सतराना—अ० [हिं० सतर या सं० सतर्जन] १. क्रोध करना। कोप करना। २. कुढ़ना। चिढ़ना।

संयो० क्रि०—जाना।

३. चोचला, दुलार या नखरा दिखाते हुए धृष्टता-पूर्ण आचरण करना।

स० १. क्रोध चढ़ाना। २. चिढ़ाना।

सतराहट†—स्त्री० [हिं० सतराना+हट (प्रत्य०] सतराने की अवस्था, क्रिया या भाव।

सतरी—स्त्री० [सं० सर्पदंष्ट्रा] सर्पदंष्ट्रा नामक ओषधि।

सतरू†—पुं०=शत्रु।

सतरौहाँ+—वि० [हिं० सतराना] [स्त्री० सतरौहीं] १. कुपित। क्रोधयुक्त। २. सतरानेवाला। सतराहट से युक्त। (फलतः कुढ़ने, चिढ़ने या रूठनेवाला)

सतरौहें†—अव्य० [हिं० सतराना] सतराते हुए। सतराहट लिये हुए।

सतर्क—वि० [सं०] [भाव० सतर्कता] १. जो तर्क करने में कुशल हो। २. (व्यक्ति) जो अपनी तथा दूसरों की आवश्यकताओं, विचारों, भावनाओं का पूरा-पूरा ध्यान रखता हो। (कानसिडरेट) ३. जो दूसरों के व्यापारों, कार्यों, आदि की थाह पहले से लगा या अनुमान कर लेता हो और इसी लिए चौकन्ना रहता हो। सावधान।

सतर्कता—स्त्री० [सं० सतर्क+तल्–टाप्] १. सतर्क होने की अवस्था, गुण या भाव। २. सावधानी। होशियारी।

सतर्पना*—स० [सं० संतपर्ण] भली-भाँति तृप्त या संतुष्ट करना।

सतर्ष—वि० [सं० अव्य० स०] तृषित। प्यासा।

सतलज—स्त्री० [सं० शतद्रु] पंजाब की पाँच नदियों में से एक। शतद्रु नदी।

सत-लड़ा—वि० [हिं० सात+लड़] [स्त्री० सतलड़ी] सात लड़ोंवाला। जैसे—सतलड़ा हार।

पुं० [स्त्री० अल्पा० सतलड़ी] सात लड़ियोंवाला बड़ा हार।

सतवंती†—स्त्री० [सं० सत्यवती] पतिव्रता या सती और साध्वी स्त्री।

सतवाँसा† —वि० पुं०=सतमासा।

सतवार —वि० [सं० सत्] सत् या धर्म पर होनेवाला। सदाचारी और धर्मनिष्ठ।

सतवारा† —पुं० [हिं० सात+वार] सात दिनों का समूह। सप्ताह।

सतसंग† —पुं०=सत्संग।

सतसंगत† —स्त्री०=सत्संग।

सतसंगी†—वि०=सत्संगी।

सतसई†—स्त्री० [सं० सप्तशती] वह ग्रंथ जिसमें सात सौ पद्य हों। सात सौ पद्यों का समूह या संग्रह। सप्तशती। जैसे—बिहारी-सतसई।

सतसठ† —वि०=सड़सठ।

सतसल—पुं० [देश०] शीशम का पेड़।

सतह—स्त्री० [अ०] [वि० सतही] १. किसी वस्तु का ऊपरी भाग या विस्तार। १. बाहर या ऊपर का फैलाव। तल। (लेबिल) जैसे—जमीन या समुद्र की सतह। २. रेखागणित में, वह विस्तार जिसमें लम्बाई-चौड़ाई तो हो पर मोटाई न हो।

सतहत्तर—वि० [सं० सप्त सप्तति; पा० सत्तसत्तति; प्रा० सत्तहत्तरि] जो गिनती में सत्तर से सात अधिक हो।

पुं० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७७।

सतही—वि० [हिं० सतह] १. सतह या ऊपरी स्तर पर होनेवाला। २. ऊपरी। दिखौआ।

सतांग—पुं०=शतांग (रथ)।

सतानंद—पुं० [सं० ब० स०] गौतम ऋषि के पुत्र, जो राजा जनक के पुरोहित थे।

सताना—स० [सं० संतापन, प्रा० संतावन] १. संतप्त करना। २. मानसिक क्लेश पहुँचाकर परेशान करना। ३ तंग या परेशान करना।

सतार—पुं० [सं० अव्य० स०] जैनों के अनुसार ग्यारहवाँ स्वर्ग।

वि० १. तारकों या तारों से युक्त। उदा०—चुनरी स्याम सतार नभ, मुख ससि के अनुहारि।—बिहारी। २. जिसमें तारे टँके, बने या लगे हुए हों।

सतारुक—पुं०[सं० अव्य० स०] एक रोग जिस में शरीर पर लाल और काली फुंसियाँ निकलती हैं ।

सतारू† —पुं०=सतारुक।

सतालुई—वि० [हिं० सतालू] सतालू (फल) की तरह का हलका लाल। (क्रिम्सन)

पुं० उक्त प्रकार का रंग जो गुलनारी से हलका होता है ।

सतालू—पुं० [सं० सप्तालुक मि० फा० शफ्तालू] १. एक प्रकार का पेड़ जिसके गोल फल खाये जाते हैं। २. उक्त पेड़ का फल। आड़ू। शफताल़ू ।

सतावना† —स०=सताना ।

सतावर—स्त्री०[सं० शतावरी] एक प्रकार का झाड़दार बेल जिसकी जड़ और बीज औषध के काम आते हैं। शतमूली। नारायणी।

सतासी—वि०, पुं०=सत्तासी।

सति† —पुं० दे० 'सत्य' ।

† वि०=सत्।

† स्त्री०=सती ।

सतिगुर† —पुं०=सद्गुरु ।

सतिभाएँ† —अव्य०=सतभाएँ ।

सतिया† —वि०=सौतेला ।

† पुं०=सथिया ।

सतिवन—पुं० [सं० सप्तपर्ण; प्रा० सत्तवन्न] एक सदाबहार बड़ा पेड़ जिसकी छाल दवा के काम आती है। सप्तपर्णी। छतिवन।

सती—वि० स्त्री० [सं०] १. अपने पति के अतिरिक्त और किसी पुरुष का ध्यान मन में न लानेवाली। साध्वी। पतिव्रता। २. अपने पति के मरने पर उसके साथ ही जल या मर जानेवाली। सहगामिनी। क्रि० प्र०—होना।

स्त्री० १. दक्ष प्रजापति की कन्या जो शिव को ब्याही थी। २. विश्वामित्र की पत्नी का नाम। ३. पतिव्रता स्त्री। साध्वी। ४. वह स्त्री जो अपने पति के शव के साथ चिता में जले। सहगामिनी स्त्री। **मुहा०—(पति के साथ) सती होना**=मरे हुए पति के शरीर के साथ चिता में जल मरना। सहगमन करना। **(किसी काम या बात के लिए) सती होना**=बहुत अधिक कष्ट झेलते हुए मर मिटना ।

६. मादा पशु। ७. सुगंधित या सोंधी मिट्टी। ७. एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण और एक गुरु होता है ।

पुं० [सं० सत्] १. वह जो सत्धर्म का पालन करता हो। २. सात्विक वृत्तियोंवाला साधु या महात्मा। जैसे—बड़े-बड़े जोगी, जती और सती भी उसकी महिमा का पार नहीं पा सके।

† स्त्री० १. =शती। २. =शक्ति।

सती-चौरा—पुं० [सं० सती+हिं० चौरा] वह वेदी या छोटा चबूतरा जो किसी स्त्री के सती होने के स्थान पर उसके स्मारक में बनाया जाता है।

सतीत्व—पुं० [सं० सती+त्व] सती होने की अवस्था, धर्म या भाव। पातिव्रत्य।

मुहा०—(किसी स्त्री का) सतीत्व बिगाड़ना या नष्ट करना=किसी स्त्री से बलात्कार करना।

सतीत्व-हरण—पुं० [सं० ष० त०] किसी सच्चरित्रा स्त्री के साथ बलात्कार करके उसका सतीत्व बिगाड़ना।

सतीदोषोन्माद—पुं० [सं० मध्यम० स०] स्त्रियों का वह उन्माद रोग जिसका प्रकोप किसी सतीचौरे को अपवित्र करने के कारण माना जाता है।

सतीन—पुं० [सं० सती√नी (ढोना)+ड] १. एक प्रकार का मटर। २. अपराजिता या कोयल नाम की लता।

सतीपन† —पुं०=सतीत्व ।

सतीर्थ—पुं० [सं० ब० स०] १. एक ही आचार्य से पढ़नेवाले विद्यार्थी या ब्रह्मचारी। सहाध्यायी। २. सहपाठी।

सतील—पुं० [सं० अव्य० स०] १. बाँस। २. अपराजिता। ३. वायु। हवा।

सतुआ†—पुं०=सत्तू।

सतुआन† —स्त्री०=सतुआ संक्रांति ।

सतुआ संक्रांति—स्त्री०[हिं० सतुआ+सं० संक्रान्ति] मेघ की संक्रांति जो प्रायः वैशाख में पड़ती है। इस दिन लोग सत्तू दान करते और खाते है।

सतुआ सोंठ—स्त्री० [हिं० सतुआ+सोंठ] एक प्रकार की सोंठ।

सतुला—स्त्री० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का जाँघिया जो घुटनों तक होता है।

सतून—पुं० [सं० स्थाणु से फा० सुतून] स्तंभ। खंभा।

सतूना—पुं०[हिं० सतून=खंभा] बाज की एक प्रकार की झपट जिसमें वह पहले शिकार के ठीक ऊपर उड़ जाता है और फिर एक-बारगी नीचे की ओर उस पर टूट पड़ता है ।

सतेरक—पुं० [सं० सतेर+कन्] ऋतु। मौसम।

सतेरी†—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मधुमक्खी।

सतोखना* —स०[सं० संतोषण] १. संतुष्ट करना। प्रसन्न करना। २. समझा-बुझाकर संतोष या ढाढ़स दिलाना।

सतोगुण—पुं०=सत्त्वगुण।

सतोगुणी—वि०=सत्त्वगुणी।

सतोदर† —पुं०=शतोदर (शिव)।

सतौला—पुं० [हिं० सात+औला (प्रत्य०)] प्रसूता स्त्री का वह विधिवत् स्नान जो प्रसव के सातवें दिन होता है।

सतौसर—वि० [सं० सप्तसृक्] सात लड़ों का। सतलड़ा।

सत्कदंब—पुं० [सं० कर्म० स०] एक प्रकार का कदंब।

सत्करण—पुं० [सं० ष० त०, कर्म० स०] [वि० सत्करणीय, भू० कृ० सत्कृत] १. सत्कार करना। आदर करना। २. मृतक की अन्त्येष्टि-क्रिया करना।

सत्करणीय—वि० [सं० सत्√कृ (करना)+अनीयर, कर्म० स०] जिसका सत्कार करना आवश्यक और उचित हो। सत्कार का पात्र। आदरणीय। पूज्य।

सत्कर्ता (र्तृ)—वि० [सं० कर्म० स०] [स्त्री० सत्कर्त्री] १. अच्छा काम करने वाला। सत्कर्म करनेवाला। २. आदर-सत्कार करनेवाला।

पुं० आज-कल वह व्यक्ति जो आगत और निमंत्रित व्यक्तियों का किसी रूप में सत्कार करता हो।

सत्कर्म—पुं० [सं० कर्म० स०, सत्कर्मन्] १. अच्छा कर्म। अच्छा काम। २. धर्म या पुण्य का काम।

सत्कर्मा (र्मन्)—वि० [सं० ब० स०] सत्कर्म करनेवाला।

सत्कला—स्त्री० [सं० कर्म० स०] =ललित कला।

सत्काय दृष्टि—स्त्री० [सं०] मृत्यु के उपरांत आत्मा, लिंग-शरीर आदि के बने रहने का सिद्धान्त जो बौद्धों की दृष्टि में मिथ्या है।

सत्कार—पुं० [सं०] १. अभ्यागत, अतिथि आदि की की जानेवाली खातिरदारी तथा सेवा। २. न आदि भेंट देकर किसी का किया जानेवाला आदर-सम्मान या सेवा।

सत्कारक—वि० [सं०] सत्कार करनेवाला। सत्कर्ता।

सत्कार्य—वि० [सं० सत्√कृ(करना)+ण्यत्] १. जिसका सत्कार होना आवश्यक या उचित हो। सत्कार का पात्र। २. (मृतक) जिसकी अन्त्येष्टि क्रिया होने को हो।

पुं० उत्तम कार्य। अच्छा काम।

सत्कार्यवाद—पुं० [सं० मध्यम० स०] १. सांख्य का यह दार्शनिक सिद्धान्त कि बिना कारण के कार्य की उत्पत्ति नहीं हो सकती। फलतः यह सिद्धान्त कि इस जगत् की उत्पत्ति शून्य से नहीं किसी मूल सत्ता से है। (यह सिद्धान्त बौद्धों के शून्यवाद के विपरीत है।) २. दे० 'परिणामवाद'।

सत्कीर्ति—स्त्री० [सं० कर्म० स०] उत्तम कीर्ति। यश। नेकनामी।

सत्कुल—पुं० [सं० कर्म० स०] उत्तम कुल। अच्छा या बड़ा खानदान।

वि० जो अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ हो।

सत्कृत—वि० [सं० सत्√कृ (करना)+क्त] १. अच्छी तरह किया हुआ। २. जिसका सत्कार किया गया हो। ३. सजाया हुआ। अलंकृत।

पुं० १. सत्कार। २. सत्कर्म।

सत्कृति—स्त्री० [सं०] अच्छी या उत्तम कृति।

वि० सत्कर्मा।

सत्क्रिया—स्त्री० [सं० कर्म० स०] १. धर्म का काम। सत्कर्म। २. आदर-सत्कार। ३. किसी कार्य का आयोजन या तैयारी।

सत्त—पुं० [सं० सत्व] १. किसी पदार्थ का सार भाग। असली तत्व। रस। जैसे—गेहूँ का सत्त; मुलेठी का सत्त। २. मुख्य उपयोगी तत्व। ३. बल। शक्ति।

†वि०=सत्य।

†पुं० १. =सत्य। २. =सतीत्व।

सत्तम—वि० [सं० सत्+तमप्] १. सबसे अधिक सत् या अच्छा। २. सर्वश्रेष्ठ। ३. परम पूज्य।

सत्तर—वि० [सं० सप्तति, प्रा० सत्तरि] जो गिनती में साठ से दस अधिक हो।

पुं० उक्त की बोधक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७०।

सत्तरह—वि० [सं० सप्तदश, प्रा० सत्तरह] जो गिनती में दस से सात अधिक हो।

पुं० उक्त की बोधक संख्या जो अंकों में इस प्रकार लिखी जाती है—१७।

सत्तांतरण—पुं० [सं० सत्ता+अंतरण] [भू० कृ० सत्तांतरित] १. सत्ता का एक के हाथ से दूसरे के हाथ में जाना। २. सत्ताधारी का सत्ता दूसरे को सौंपना। (ससेसन, उक्त दोनों अर्थों में)

सत्तांतरित—भू० कृ० [सं० सत्तांतरण] (देश या राज्य) जिसके शासन की सत्ता दूसरे को सौंप दी गई हो। (सीडेड)

सत्ता—स्त्री० [सं० सत्+तल्–टाप्] १. मूर्त रूप से वर्तमान रहने या होने की अवस्था, गुण या भाव। अस्तित्व। हस्ती। 'अभाव' का विपर्याय। (बींइग) २. शक्ति। सामर्थ्य। ३. वह अधिकार, शक्ति या सामर्थ्य जो किसी प्रकार का उपभोग करती हुई और अपनी सक्षमता दिखलाती हुई काम करती हो। (पावर) जैसे—राज सत्ता।

मुहा०—(किसी पर) सत्ता चलाना=अपना अधिकार दिखलाते हुए और वश में रखते हुए उपभोग, व्यवहार, शासन आदि करना। ४. राजनीति-शास्त्र में, किसी विशिष्ट राष्ट्र का वह अधिकार या शक्ति जिससे बढ़कर और कोई अधिकार या शक्ति न हो। (सावरेंटी)

पुं० [हिं० सात] ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें सात बूटियाँ हों।

सत्ताईस—वि० [सं० सप्त-विंशति, प्रा० सत्ताईस] जो गिनती में बीस से सात अधिक हो।

पुं० उक्त की बोधक संख्या जो अंकों में इस प्रकार लिखी जाती है–२७।

सत्ताधारी (रिन्)—वि० [सं० सत्ता√धृ (रखना)+णिनि] जिसे किसी प्रकार की सत्ता प्राप्त हो। सत्तावान। जैसे—सत्ताधारी राज्य।

पुं० सत्ताप्राप्त अधिकारी। प्राधिकारी। (देखें)

सत्तानबे—वि० [सं० सप्तनवति, प्रा० सत्तानव] जो गिनती में सौ से तीन कम हो।

पुं० उक्त की बोधक संख्या जो अंकों में इस प्रकार लिखी जाती है—९७।

सत्तानाश†—पुं०=सत्यानाश।

सत्तानाशी—वि०=सत्यानाशी।

सत्तार—वि० [अ०] दोषों आदि पर परदा डालनेवाला।

पुं० ईश्वर का एक नाम।

सत्तारूढ़—वि० [सं० सत्ता+आरूढ़] जो सत्ता प्राप्त कर उसका उपयोग और पालन कर रहा हो।

सत्तावन—वि० [सं० सप्तपंचाशत, प्रा० सत्तावन्न] जो गिनती में पचास से सात अधिक हो।

पुं० उक्त की बोधक संख्या जो अंकों में इस प्रकार लिखी जाती है—५७।

सत्तावाद—पुं० [सं०] [वि० सत्तावादी] यह मत या सिद्धान्त कि किसी अधिनायक या अधिनायक वर्ग के तंत्र या शासन की सभी बातें बिना किसी विरोध के मानी जानी चाहिए। (ऑथॉरिटेरियनिज़्म)

सत्ताशास्त्र—पुं० [सं० मध्यम० स०] पाश्चात्य दर्शन की वह शाखा जिसमें मूल या पारमार्थिक सत्ता का विवेचन होता है।

सत्ता-सामान्यत्व—पुं० [सं० ब० स०, त्व] न्याय में, वह स्थिति जब अनेक द्रव्यों, रूपों आदि में एक ही तत्त्व सामान्य रूप से पाया जाता हो। जैसे—कुंडल, कंकण आदि अनेक गहनों में 'सोना' नामक द्रव्य सामान्य रूप से पाया जाता है।

सत्तासी—वि० [सं० सप्ताशीति, प्रा० सत्तासी] जो गिनती में अस्सी से सात अधिक हो।

पुं० उक्त की बोधक संख्या जो अंकों में इस प्रकार लिखी जाती है–८७।

सत्तू—पुं० [सं० सक्तुक, प्रा० सत्तुअ] भुने हुए जौ, चने आदि का आटा या चूर्ण।

सत्त्व—पुं० [सं०] १. सत्ता से युक्त होने की अवस्था या भाव। अस्तित्व। हस्ती। २. किसी वस्तु में से निकाला हुआ मूल और सार भाग। तत्त्व। सत्त। (एब्सट्रैक्ट) ३. किसी वस्तु की मुख्य और वास्तविक प्रवृत्ति। गुण संबंधी विशिष्टता। खासियत। ४. चित्त या मन की प्रवृत्ति। ५. अच्छे और शुभ कर्मों की ओर होनेवाली प्रवृत्ति। शुभवृत्ति। ६. सांख्य के अनुसार प्रकृति के तीन गुणों में से एक जो सब में उत्तम कहा गया है; और जिसके लक्षण, ज्ञान, शांति, शुद्धता आदि हैं। ७. आत्म-तत्त्व। चित्-तत्त्व। चैतन्य। ८. जीवनी-शक्ति। प्राण-तत्त्व। ९. जीवधारी। प्राणी। १०. भूत-प्रेत। ११. मन की दृढ़ता और धीरता। १२. बल। शक्ति। १३. गर्भ। हमल।

सत्त्वक—पुं० [सं०] मृत मनुष्य की जीवात्मा। प्रेत।

सत्त्वगुण—पुं० [सं० मध्यम० स०] सत्त्व अर्थात् अच्छे कर्मों की ओर प्रवृत्त करनेवाला गुण, जो प्रकृति के तीन गुणों में से एक तथा तीनों में सर्वश्रेष्ठ है।

सत्त्वगुणी—वि० [सं० सत्वगुण+इनि] १. सत्त्वगुण से युक्त। २. साधु और विवेकी। उत्तम प्रकृति का।

सत्त्व-दीप्ति—स्त्री० [सं०] मनुष्य के स्वभाव की तेजस्विता।

सत्त्वधाम—पुं० [सं० ब० स०] विष्णु का एक नाम।

सत्त्वलक्षण—वि० स्त्री० [सं० ब० स०] जिसमें गर्भ के लक्षण हों। गर्भवती। हामिला।

सत्त्ववती—वि० [सत्त्व+मतुप्-म=व ङीष्] १. सत्त्वगुण से सम्पन्न (स्त्री)। २. गर्भवती।

स्त्री० बौद्ध तांत्रिकों की एक देवी।

सत्त्ववान्—वि० [सं० सत्त्ववत्–नुम्-दीर्घ सत्त्ववत्] [स्त्री० सत्त्ववती] १. सत्त्व या सार भाग से युक्त। २. जीवनी-शक्ति या प्राणों से युक्त। ३. साहसी। ४. दृढ़। मजबूत।

सत्त्वशाली—वि० [सं० सत्त्वशालिन्] [स्त्री० सत्त्वशालिनी] दृढ़, धीर और साहसी।

सत्त्वशील—वि० [सं० ब० स०] १. सात्त्विक प्रकृतिवाला। अच्छी प्रकृति का। २. सदाचारी और धर्मात्मा।

सत्त्वस्थ—वि० [सं०] १. अपनी प्रकृति में स्थित। २. अपनी बात या स्थान पर दृढ़तापूर्वक ठहरा रहनेवाला। ३. बलवान्। सशक्त। ४. जीवनी-शक्ति से युक्त। प्राणवान्।

सत्यक—पुं० [पा०] कैंची। (डिं०)

सत्यी—स्त्री० [?] जाँघ का मोटा भाग। (राज०)

सत्पथ—पुं० [सं०] १. उत्तम मार्ग। २. उत्तम पंथ या सम्प्रदाय। ३. अच्छा आचरण। सदाचार।

सत्पशु—पुं० [सं०] ऐसा पशु जिसे देवता को बलि चढ़ाया जा सकता हो।

सत्पात्र—पुं० [सं०] १. उपदेश, दान आदि देने के योग्य उत्तम अधिकारी व्यक्ति। २. श्रेष्ठ और सदाचारी व्यक्ति। ३. विवाह के योग्य उत्तम वर।

सत्पुरुष—पुं० [सं० कर्म० स०] सदाचारी और योग्य व्यक्ति।

सत्यंकार—पुं० [सं०] [भू० कृ० सत्यंकृत] १. किसी को दिया हुआ वचन सत्य करना। वादा पूरा करना। २. पेशगी दिया जानेवाला धन जो इस बात का सूचक होता है कि जिस काम के लिए वह दिया गया है वह अवश्य किया या कराया जायगा। ३. किसी निश्चय, संविदा आदि को ठीक या सत्य ठहराना। विशेष दे० 'सत्यांकन'।

सत्य—वि० [सं०] [भाव० सत्यता] १. सत् संबंधी। सत् का। २. सत् से युक्त। जैसे—संसार में ईश्वर का नाम ही सत्य है। ३. (कथन या बात) जो मूल या वास्तविक के ठीक अनुरूप हो। जिस पर पूरा पूरा विश्वास किया जा सकता हो। जिसमें झूठ या मिथ्या का लेश भी न हो। जैसे—वह सदा सत्य बोलता है। ४. (घटना का उल्लेख या विवरण) जो सत्य या वास्तविकता के ठीक अनुरूप हो। ठीक। यथार्थ। जैसे—यह सत्य है कि आप वहाँ नहीं गये थे। ५. जैसा हो या होना चाहिए, ठीक वैसा ही। जैसे—सत्यव्रत, सत्यसंघ। (ट्रू अंतिम तीनों अर्थों के लिए।) ६. असल। वास्तविक।

पुं० १. ठीक, यथार्थ और वास्तविक तथ्य या बात। जैसे—सत्य कहीं छिपा नहीं रह सकता। २. उचित और न्याय-संगत पक्ष या बात। जैसे—उन्हें सत्य से कोई डिगा नहीं सकता। ३. वह पारमार्थिक सत्ता जिसमें कभी कोई विकार नहीं होता। जैसे—ब्रह्म ही सत्य है, और यह जगत् मिथ्या है। ४. पुराणानुसार ऊपर के सात लोकों में से सबसे ऊपर का लोक। ५. विष्णु। ६. विश्वदेवों में से एक। ७. नांदीमुख श्रद्धा के अधिष्ठाता देवता। ८. एक प्रकार का दिव्यास्त्र। ९. पुराणानुसार नवें कल्प का नाम। १०. अश्वत्थ। पीपल। ११. प्रतिज्ञा। १२. कसम। शपथ। १३. दे० 'सत्य युग'।

सत्यक—वि० [सं० सत्य+कन्] =सत्यंकार।

सत्यकाम—वि० [सं० ब० स०] सदा सत्य की कामना रखनेवाला। बहुत सच्चा।

सत्यकीर्ति—पुं० [सं० ब० स०] एक प्रकार का अस्त्र जो मंत्रबल से चलाया जाता था।

सत्यकेतु—पुं० [सं० ब० स०] १. एक बुद्ध का नाम। २. अक्रूर का एक पुत्र।

सत्यजित्—पुं० [सं०] १. तीसवें मन्वंतर के इन्द्र का नाम। २. वसुदेव का एक भतीजा।

सत्यतः—अव्य० [सं०] सत्य यह है कि। वास्तव में। यथार्थतः। सचमुच।

सत्यता—स्त्री० [सं० सत्य+तल्—टाप्] १. सत्य होने की अवस्था, धर्म या भाव। सच्चाई। २. वास्तविकता। ३. नित्यता।

सत्य-नारायण—पुं० [सं०] नारायण या विष्णु भगवान का एक नाम जिसके संबंध में आज-कल लोक में एक कथा बहुत प्रचलित तथा प्रसिद्ध है।

सत्यपर—वि० [सं०] [भाव० सत्यपरता] सत्य में प्रवृत्त। ईमानदार।

सत्य-पुरुष—पुं० [सं०] १. सारी सृष्टि उत्पन्न करनेवाला वह तत्त्व जो सबसे अतीत, ऊपर और परे माना गया है। २. परमात्मा।

सत्य-प्रतिज्ञ—वि० [सं० ब० स०] अपनी प्रतिज्ञा पर सदा दृढ़ रहने और उसका पूर्णतः पालन करनेवाला।

सत्यभामा—स्त्री०[सं०] श्री कृष्ण की आठ पटरानियों में से एक जो सत्राजित् की कन्या थी।

सत्यभूषणी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सत्य युग—पुं०[सं० मध्यम० स०] पौराणिक काल-गणना के अनुसार चार युगों में से पहला युग जो इसलिए सर्वश्रेष्ठ कहा गया है कि इसमें धर्म और सत्य की पूरी प्रधानता थी। इसकी अवधि १७२८००० वर्ष कही गई है। इसे कृत् युग भी कहते हैं।

सत्ययुगाद्या—स्त्री०[सं०] वैशाख शुक्ल तृतीया जिस दिन से सत्य युग का आरंभ माना गया है।

सत्ययुगी—वि०[सं० सत्य-युग+इनि]१. सत्य-युग का। सत्य-युग सम्बन्धी। २. सत्य-युग में होनेवाला। ३. सत्य युग के लोगों की तरह का अर्थात् बहुत धर्मात्मा और सच्चा। ४. बहुत पुराना।

सत्यलोक—पुं०[सं०] ऊपर के सात लोकों में से सबसे ऊपर का लोक जहाँ ब्रह्मा का अवस्थान माना गया है। (पुराण)

सत्यवती—वि०[सं० सत्यवान् का स्त्री०]१. सत्य का आचरण और पालन करनेवाली। २. पतिव्रता। सती। ३. कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

स्त्री०१. पराशर की पत्नी और व्यास की माता मत्स्यगंधा का वास्तविक नाम। २. एक प्राचीन नदी।

सत्य-वसु—पुं० [सं०] एक विश्वेदेवा।

सत्यवाच्—पुं०[सं०]१. सत्य वचन। २. प्रतिज्ञा। ३. मंत्र-बल से चलनेवाला एक प्रकार का अस्त्र। ४. कौआ।

सत्यवाद—पुं०[सं०] [वि० सत्यवादी]१. सत्य बोलना। सच कहना। २. धर्म पर दृढ़ रहना।

सत्यवादिनी—स्त्री०[सं०]१. दाक्षायिणी का एक नाम। २. बोधिद्रुम की एक देवी।

सत्यवादी—वि० [सं० सत्यवादिन्] [स्त्री० सत्यवादिनी] १. सत्य कहनेवाला। सच बोलनेवाला। २. अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला। ३. धर्म पर दृढ़ रहनेवाला। ४. सत्यवाद संबंधी।

सत्यवान्—वि०[सं०] [स्त्री० सत्यवती] सत्य का आचरण और पालन करनेवाला।

पुं० शाल्व देश का एक प्रसिद्ध राजा जो सावित्री का पति था। (पुराणों में कहा गया है कि जब ये युवावस्था में ही मर गयें, तब इनकी पत्नी सावित्री ने अपने पातिव्रत्य के बल पर इन्हें यम के हाथों से छुड़ाकर पुनरुज्जीवित किया था।)

सत्यव्रत—वि०[सं०] जिसने सत्य बोलने का व्रत लिया हो।

पुं० सत्य का पालन करने का नियम या व्रत।

सत्यशील—वि०[सं०] [स्त्री० सत्यशीला] सदा सत्य का पालन करनेवाला। सच्चा।

सत्य-संकल्प—वि०[सं०] जो अपने संकल्प पर सदा दृढ़ रहे।

सत्यसंध—वि०[सं०] [स्त्री० सत्यसंधा] वचन को पूरा करनेवाला। सत्य-प्रतिज्ञ।

पुं०१. भगवान् रामचन्द्र का एक नाम। २. भरत का एक नाम। ३. जनमेजय का एक नाम। ४. कार्तिकेय का एक अनुचर।

सत्या—स्त्री०[सं० सत्य-टाप्] १. सच्चाई। सत्यता। २. व्यास की माता सत्यवती का एक नाम। ३. सीता का एक नाम। ४. दुर्गा।

सत्याकृति—स्त्री०[सं० सत्य+डाच्-आकृति, ष० त०]=सत्यंकार।

सत्याग्रह—पुं०[सं०]१. सत्य का पालन और रक्षा करने के लिए किया जानेवाला आग्रह या हठ। २. आधुनिक राजनीति में, वह अहिंसात्मक कार्रवाई जो किसी अधिकारी या सत्ता के किसी निश्चय, व्यवहार आदि के प्रति अपना असंतोष, विरोध आदि प्रकट करने के लिए की जाती है; और जिसका मुख्य अंग उस निश्चय या व्यवहार के अनुसार कार्य न करने अथवा उसका पालन न करने के रूप में होता है। (पैसिव रेज़िस्टेन्स)

सत्याग्रही—वि०[सं०] सत्य के पालन या रक्षा के लिए आग्रह या हठ करनेवाला।

पुं०वह जो सत्याग्रह (देखें) करता हो। सत्याग्रह करनेवाला व्यक्ति।

सत्यात्मा (त्मन्)—वि०[सं० ब० स०] पूर्ण रूप से सत्यपरायण।

सत्यानाश—पुं०[सं० सत्ता+नाश] पूरी तरह से होनेवाला नाश। सर्वनाश। मटियामेट। बरबादी।

सत्यानाशी—वि०[हिं० सत्यानाश+ई(प्रत्य०)][स्त्री० सत्यानाशिनी] १. सत्यानाश करनेवाला। चौपट करनेवाला।

स्त्री० भड़भाँड़ नाम का कँटीला पौधा।

सत्यानृत—पुं०[सं० ब० स०]१. झूठ और सच का मेल। ऐसी बात जिसमें कुछ सच भी हो और कुछ झूठ भी हो। २. रोजगार। व्यापार।

सत्यापन—पुं०[सं० सत्य+णिच् आ-युक्—ल्युट्—अन] [भू० कृ० सत्यापित]१. जाँच या मिलान करके देखना कि ज्यों का त्यों और ठीक या सत्य है कि नहीं। (वेरीफ़िकेशन)

सत्यापना—स्त्री०[सं० सत्याप+णुच्—अन—टाप्]=सत्यापन।

सत्यापित—भू० कृ०[सं०] जिसका सत्यापन हुआ या हो चुका हो। (वेरीफ़ाइड)

सत्यार्जव—वि०[सं०] सीधा-सादा और सच्चा।

सत्येतर—वि०[सं०] सत्य से भिन्न अर्थात् मिथ्या।

सत्योत्तर—पुं०[सं० कर्म० स०] १. सत्य बात की स्वीकृति देना। २. अपने किए हुए अपराध, दोष आदि का स्वीकरण। इकबाल।

सत्र—पुं०[सं०]१. यज्ञ। २. सौ दिनों में पूरा होनेवाला एक प्रकार का सोम याग। ३. आड़ या ओट करके छिपाना। ४. ऐसा स्थान जहाँ आदमी छिप सकता हो। छिपने की जगह। ५. घर। मकान। ६. धोखा। भ्रांति। ७. धन-संपत्ति। ८. तालाब। ९. जंगल। वन। १०. विकट समय या स्थान। ११. वह स्थान जहाँ गरीबों को भोजन दिया जाता हो। अन्नसत्र। सदावर्त। १२. आज-कल वह नियत काल जिसमें कोई काम एक बार आरंभ होकर कुछ समय तक निरंतर चलता रहता हो। (सेशन) १३. संस्था, सभा आदि की निरंतर नियमित रूप से कुछ समय तक होनेवाली बैठक या अधिवेशन। (सेशन)

†पुं०=शत्रु।

सत्र-न्यायालय—पुं०[सं०] किसी जिले के जज का वह न्यायालय जिसमें कुछ विशिष्ट गुरुतर अपराधों का विचार होता है और जिसमें किसी मुकदमे का आरम्भ होने पर उसका विचार और सुनवाई तब तक चलती रहती है जब तक उसका निर्णय नहीं हो जाता। (सेशन कोर्ट)

सत्रप—पुं० दे० 'क्षत्रप'।

सत्रह—वि० दे० 'सत्तरह'।

सत्राजित्—पुं०[सं० सत्र—आ√जि (जीतना)+क्विप्—तुक्]१. सत्यभामा का पिता, एक यादव। २. एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

सत्राजिती—स्त्री०[सं० सत्राजित्—ङीप्]सत्राजित् की कन्या सत्यभामा का एक नाम।

सत्रायण—पुं०[सं० सत्र+फक्—आयन] यज्ञों का लगातार चलनेवाला क्रम।

सत्रावसान—पुं०[सं० ष० त०] आधुनिक राजतंत्र में, विधानमंडल या संसद के सर्वप्रधान अधिकारी के द्वारा अनिश्चित और दीर्घ काल के लिए किया जानेवाला स्थगन। (प्रोरोगेशन)

सत्रि—वि०[सं० सत्र+इनि] बहुत यज्ञ करनेवाला।

पुं०१. हाथी। २. बादल। मेघ।

सत्री—वि०[सं० सत्रिन्—दीर्घ-नलोप सत्रिन्] यज्ञ करनेवाला।

पुं० राजदूत।

सत्रु†—पुं०=शत्रु।

सत्रुघन, सत्रुहन†—पुं०=शत्रुघ्न।

सत्व†—पुं०=सत्त्व।

सत्वर—अव्य०[सं० अव्य० स०]१. त्वरापूर्वक। शीघ्र। २. तुरन्त। झटपट।

वि० शीघ्रगामी। तेज-रफ्तार।

सत्संग—पुं०[सं०]१. सज्जनों के साथ उठना-बैठना। अच्छा साथ। भली संगत। अच्छी सोहबत। २. साधु-महात्मा या धर्म-निष्ठ व्यक्ति के साथ उठना-बैठना और धर्म-संबंधी बातों की चर्चा करना। ३. बोलचाल में, वह समाज या जनसमूह जिसमें कथा-वार्ता या राम-नाम का पाठ होता हो।

सत्संगति†—स्त्री०=सत्संग।

सत्संगी—वि०[सं० सत्संग+इनि, सत्संगिन्] [स्त्री० सत्संगिनी]१. सत्संग करनेवाला। अच्छी सोहबत में रहनेवाला। २. सबसे मेल-जोल रखनेवाला। ३. धार्मिक व्यक्तियों के साथ रहकर धर्म-चर्चा करनेवाला।

सत्समागम—पुं०[सं०ष० त०]१. भले आदमियों का संसर्ग। २. सत्संग।

सत्सार—पुं०[सं० ब० स०]१. चित्रकार। चितेरा। २. कवि। ३. एक प्रकार का पौधा।

सथर*—स्त्री०[सं० स्थल] पृथ्वी। भूमि।

सथरी†—स्त्री०=साथरी।

सथिया—पुं०[सं० स्वास्तिक]१. आर्यों का स्वस्तिक चिह्न जो इस प्रकार लिखा जाता है卐 २. सामुद्रिक के अनुसार उक्त प्रकार का वह चिह्न जो देवताओं आदि के तलुए में रहता है। ३. भारतीय ढंग से फोड़ों की चीरफाड़ करनेवाला। अस्त्र-चिकित्सक। ४. साँझी नामक लोक-कला का वह प्रकार या रूप जो गुजरात में प्रचलित है। ५. जुलाहों के काम की बाँस या सरकंडे की पतली छड़ी। सर।

सद्—वि०[सं०] सत् का वह रूप जो उसे कुछ विशिष्ट अवस्थाओं में यौ० के आरम्भ में लगाने पर प्राप्त होता है। जैसे—सदुपदेश।

सदंजन—पुं०[सं० कर्म० स०] पीतल से बनाया जानेवाला एक प्रकार का अंजन।

सदंशक—पुं०[सं० अव्य० स०] केकड़ा।

सद—पुं०[सं० सदस्]१. सभा। समिति। मंडली। २. यज्ञशाला में बनाया जानेवाला एक प्रकार का छोटा मंडप।

अव्य०[सं० सद्यः] तत्क्षण। तुरंत। तत्काल।

वि०१. नवीन। नया। २. हाल का। ताजा।

स्त्री०[सं० सत्व]१. प्रकृति। स्वभाव। २. आदत। टेव। बान।

स्त्री०[अ० सदा=आवाजा]गड़रियों का एक प्रकार का गीत। (पंजाब)

†पुं०=शब्द।

सदइ†—अव्य०[सं० सद्यः] तुरंत।

†वि०=सदय।

सदई—अव्य०[सं०] सदैव।

वि०=सदय।

सदका—पुं०[अ० सद्कः]१. वह वस्तु जो ईश्वर के नाम पर दी जाय। दान। २. वह वस्तु जो कुदृष्टि या नजर, रोग आदि के निवारण के लिए टोने-टोटके के रूप में किसी के सिर पर से उतार कर किसी को दी या रास्ते में रखी जाय। उतारा।

क्रि० प्र०—उतारना।—करना।

३. निछावर।

पद—सदके जाऊँ—मैं तुम पर निछावर होऊँ या बलि जाऊँ। (मुसल०)

सदन—पुं०[सं०]१. रहने का स्थान। निवास-स्थान। २. घर। मकान। ३. वह स्थान जहाँ प्राणियों या व्यक्तियों को आश्रय और रहने-सहने का सुभीता मिलता हो। जैसे—गो-सदन। ४. वह स्थान जहाँ विशिष्ट रूप से कोई लोकोपकारी कार्य हो। जैसे—सेवा सदन। ५. वह मकान जिसमें किसी देश या राज्य के विधान बनाने के कार्य होते हों। (हाउस)

विशेष—कुछ देशों में तो इस प्रकार का एक ही सदन होता है; और कुछ देशों में दो-दो सदन होते हैं; जिनमें से एक में तो साधारण जनता के प्रतिनिधि और दूसरे में कुछ विशिष्ट वर्गों के प्रतिनिधि सदस्य होते हैं। भारत में केंद्रीय सदन के दो अंग हैं—लोक-सभा और राज्य-सभा।

६. उक्त भवन में अथवा किसी सभा-समिति के अधिवेशन के समय उपस्थित होनेवाले आधिकारिक व्यक्तियों, सदस्यों आदि का वर्ग या समूह। (हाउस) जैसे—सदन की यही इच्छा जान पड़ती है कि इस विषय का निर्णय आज ही हो जाय। ७. ठहराव। विराम। ८. शिथिलता। ९. एक प्रसिद्ध भगवत्भक्त कसाई।

सदन-त्याग—पुं०[सं०] संसद, सभा आदि के किसी कार्य या अध्यक्ष की किसी व्यवस्था या निर्णय से असंतुष्ट होकर किसी या कुछ सदस्यों का सदन छोड़कर वहाँ से हट जाना। (वॉक-आउट)

सदन-नेता—पुं०[सं०] संसद् या विधान-सभा द्वारा निर्वाचित वह नेता जो कार्यक्रम आदि निश्चित करता और बहुधा देश या राज्य का प्रधान मंत्री होता है। (लीडर आफ़ दि हाउस)

सदन-सचिव—पुं०[सं०ष० त०] विधान-सभा या लोक-सभा का वह वैतनिक सदस्य जो किसी मंत्री के साथ रहकर उसके समस्त विभागीय कार्यों में सहायता करता हो। संसद-सचिव। (पार्लमेन्टरी सेक्रेटरी)

सदना--अ०[सं० सदन=थिराना] १. छेद में से रसना। चूना। २. नाव के पेंदे के छेदों से पानी अन्दर आना।

†पुं०=सदन (भगवद्भक्त कसाई)।

सदफ़--स्त्री०[अ०] सीपी।

सद-बरग†--पुं०=सद्वर्ग।

सदबर्ग--पुं०[फा०] हजारा गेंदा नामक पौधा और उसके फूल।

सदमा--पुं० [अ० सद्मः] १. आघात। धक्का। चोट। २. ऐसा मानसिक आघात जो बहुत अधिक कष्ट-प्रद हो। ३. बहुत बड़ी हानि।

क्रि०---उठाना।---पहुँचना।---लगना।

सदय--वि०[सं०] १. दयावान्। दयालु। २. दयापूर्ण।

सदर--वि०[सं० अव्य० स०] भययुक्त। डरा हुआ।

क्रि० वि० डरते हुए।

सदर--वि०[अ० सद्र] प्रधान। मुख्य। जैसे--सदर अमीन, सदर दरवाजा, सदर बाजार।

पुं०१. छाती। सीना। २. सबसे ऊपर का भाग या स्थान। ३. उच्च पदस्थ लोगों के बैठने या रहने का स्थान। ४. सभा का सभापति। ५. किसी संस्था या राज्य का प्रधान शासक। जैसे--सदरे रियासत।

अव्य० ऊपर।

सदर आला--पुं०[अ०] दीवानी अदालत का वह हाकिम जो जज के नीचे हो। छोटा जज।

सदर-नशीन--पुं०[अ०+फा०] [भाव० सदरनशीनी] मजलिस या सभा का सभापति।

सदर बाजार--पुं०[अ०+फा०] १. नगर का बड़ा या खास बाजार। २. छावनी के पास का बाजार।

सदरी--स्त्री०[अ० सद्र=छाती] बिना आस्तीन की एक प्रकार की कुरती या बंडी जो और कपड़ों के ऊपर पहनी जाती है। सीनाबंद।

†वि० स्त्री० सदर का स्त्री० स्थानिक रूप। जैसे--सदरी दरवाजा। (पूरब)

सदर्थ--पुं०[सं० कर्म० स०] १. असल या मुख्य बात अथवा विषय। २. धनवान् व्यक्ति।

सदर्थना--स०[सं० सदर्थ] समर्थन या पुष्टि करना।

सदस्--पुं०[सं०] १. रहने का स्थान। मकान। घर। २. सभा। समाज। ३. यज्ञशाला में, एक प्रकार का छोटा मंडप।

सदसत्--वि०[सं० द्व० स०] १. सत् और असत्। २. सच और झूठ। ३. अच्छा और बुरा।

पुं०१. किसी वस्तु के होने और न होने का भाव। २. सच्ची और झूठी बातें। ३. अच्छाई और बुराई।

सदसद्विवेक--पुं०[सं० ष० त०] सद् और असद् अर्थात् अच्छे और बुरे की पहचान। भले-बुरे का ज्ञान या विवेक।

सदसि†--स्त्री०[सं० सदस्] सदस्यों या सभ्यों के बैठने का स्थान। उदा०--बिपुल भूपति सदसि महँ नर-नारि कह्यौ प्रभु पाहिं।--तुलसी।

सदस्य--पुं०[सं० सदस्+यत्] [भाव० सदस्यता] १. यज्ञ करनेवाला। याजक। २. उन व्यक्तियों में से हर एक जिनके योग से कुटुंब, परिवार, संघ, समाज आदि बनते हैं। ३. विशेषतः वह व्यक्ति जिसका संबंध किसी समुदाय से हो और जिसका वह नियमित रूप से चंदा आदि देता हो अथवा जिसके कार्यों आदि में सम्मिलित होता हो। (मेम्बर, उक्त दो अर्थों के लिए)

सदस्यता--स्त्री०[सं० सदस्य+तल्--टाप्] सदस्य होने की अवस्था या भाव। मेंबरी। (मेंबरशिप)

सदहा--पुं०[सं०] यज्ञ करनेवाला। याजक। २. सभासद। सदस्य।

पुं०[देश०] अनाज लादने की बड़ी बैलगाड़ी।

वि०[फा०] सैकड़ों। बहुत से।

सदही--क्रि० वि०=सदैव।

सदा--अव्य०[सं०] १. हर समय। हर वक्त। जैसे--सदा भगवान् का नाम लेते रहना चाहिए। २. निरंतर। लगातार। ३. किसी भी अवस्था या स्थिति में। जैसे--मनुष्य को सदा सच्च बोलना चाहिए।

स्त्री०[अ०, मि० सं० शब्द, प्रा० सद्द] १. गूंज। प्रतिध्वनि। २. आवाज। शब्द। ३. पुकारने की आवाज। पुकार।

मुहा०--सदा देना या लगाना=फकीर का भीख पाने के लिए पुकारना। उदा०--देर से हम दरे दौलत पे सदा देते हैं। --कोई शायर।

४. कोई मनोहर या सुन्दर ध्वनि।

सदाकत--स्त्री०[अ० सदाक़त] सच्चाई। सत्यता।

सदाकारी--त्रि०[सं० सदाकार+इनि] अच्छे आकार या आकृतिवाला।

सदा-कुसुम--पुं०[सं०] धव। धातकी।

सदा-गति--पुं०[सं० ब० स०] १. वायु। पवन। २. शरीर में का वात। ३. सूर्य। ४. ब्रह्म।

वि० सदा चलता रहनेवाला।

सदागम--पुं०[सं० ष० त०] १. सज्जन का आगमन। २. श्रेष्ठ आगम या शास्त्र।

सदाचरण--पुं०[सं० कर्म० स०] अच्छा चाल-चलन। सात्विक व्यवहार। सदाचार।

सदाचार--पुं०[सं०] १. धर्म, नीति आदि की दृष्टि से किया जानेवाला अच्छा और शुभ आचरण। अच्छा चाल-चलन। २. उक्त का भाव। (मॉरैलिटी) ३. शिष्टतापूर्ण व्यवहार। ४. प्रथा। रीति।

सदाचारिता--स्त्री०[सं० सदाचार+इनि--तल्--टाप्]=सदाचार।

सदाचारी (रिन्)--त्रि० [सं० सदाचार+इनि] [स्त्री० सदाचारिणी] १. अच्छे आचरणवाला व्यक्ति। अच्छे चाल-चलन का आदमी। सद्वृत्तिशील। २. धर्मात्मा। पुण्यात्मा।

सदातन--पुं०[सं० सदा+ल्यु--अन, तुट् आगम] विष्णु।

सदात्मा (त्मन्)--वि० [सं० ब० स०] अच्छे स्वभाव का। नेक। सज्जन।

सदादान--पुं०[सं० ब० स०] १. ऐसा हाथी जिसका मद सदा बहता रहता हो। २. ऐरावत। ३. गणेश।

सदानंद--पुं०[सं० सद्+आनन्द] १. सदा बना रहनेवाला परम सुख। परमानंद। २. शिव। ३. विष्णु। ४. परमात्मा।

वि० सदा प्रसन्न रहने और रखनेवाला।

सदानर्त--वि०[सं० सदा√ नृत् (नाचना)+अच्] जो बराबर नाचता हो।

पुं० खंजन नामक पक्षी।

सदापुष्प—पुं०[सं०] १. नारिकेल। नारियल। २. आक। मदार। ३. कुन्द का फूल।

वि० हमेशा फूलनेवाला (वृक्ष या फूल)।

सदापुष्पी—स्त्री०[सं०]१. आक। मदार। २. कपास। ३. चमेली। मल्लिका।

सदा-प्रसून—पुं०[सं०]१. रोहितक वृक्ष। २. आक। मदार। ३. कुन्द का पौधा।

सदाफर†—वि०=सदाफल।

सदा-फल—वि०[सं०] सदा अर्थात् बारहों महीने फलता रहनेवाला (वृक्ष)।

पुं०१. गूलर। २. नारियल। ३. बेल का वृक्ष। ४. एक प्रकार का नींबू।

सदाफली—स्त्री० [सं० सदाफल—टाप् ङीष्] १. जपापुष्प। गुड़हर। देवीफूल। २. एक प्रकार का बैंगन।

सदाबरत†—पुं०=सदावर्त।

सदाबर्त—पुं०=सदावर्त।

सदा-बहार—वि०[सं० सदा+फा० बहार=फूल-पत्ती का समय] १. (वृक्ष या पौधा) जो सदा हरा-भरा रहे और जिसमें पतझड़ न होता हो। २. जिसमें सदा फूल लगते रहते हों।

सदार—वि०[सं० अव्य० स०] जो दारा अर्थात् पत्नी के साथ हो।

सदारत—स्त्री०[अ०] सभापतित्व।

सदावर्त—पुं० [सं० सदा+व्रत] १. हमेशा अन्न बाँटने का व्रत। नित्य दीन-दुखियों तथा भूखों को भोजन देना।

क्रि० प्र०—खुलना।—खोलना।—चलना।—चलाना।

२. इस प्रकार दिया जानेवाला भोजन।

क्रि० प्र०—बँटना।—बाँटना।

सदावर्ती—वि०[हिं० सदावर्त] १. सदावर्त बाँटनेवाला। भूखों को नित्य अन्न बाँटनेवाला। २. बहुत बड़ा दाता या दानी।

सदाव्रत—पुं०=सदावर्त।

सदाशय—वि० [सं०] [भाव० सदाशयता] जिसके मन का आशय या भाव उदार और श्रेष्ठ हो। उच्च विचारोंवाला। सज्जन। भला मानस।

पुं० वह स्थिति जिसमें कोई व्यक्ति अच्छे और शुभ आशय में कोई काम करता हो। 'कदाशयता' का विपर्याय। (बोनाफाइडीज़)

सदाशयी—वि०[सं०]१. सदाशय संबंधी। २. (व्यक्ति) जो सदाशय से युक्त हो। ३. (काम या बात) जिसमें अच्छा आशय ही हो, बुरा आशय न हो। 'कदाशयी' का विपर्याय। (बोनाफ़ाइड)

सदाशयता—स्त्री० [सं०]१. सदाशय होने की अवस्था, गुण या भाव। २. विधिक क्षेत्र में वह स्थिति जिसमें मनुष्य ईमानदारी और सच्चाई से अथवा मन में सद् आशय रखकर कोई काम करता है; और जिसके फल स्वरूप कोई अनुचित कार्य हो जाने पर भी वह दोषी नहीं माना जाता।

सदाशिव—वि०[सं०] सदा कल्याण और मंगल करनेवाला।

पुं० शिव का एक नाम।

सदा-सुहागिन—वि० स्त्री० [सं० सदा+हिं० सुहागिन] (स्त्री) जो सदा सौभाग्यवती रहे। जो कभी पतिहीन न हो।

स्त्री०१. वेश्या। (परिहास) २. सिंदूरपुष्पी। ३. स्त्रियों का वेश बनाकर रहने वाले मुसलमान फकीरों का एक सम्प्रदाय।

सदिया—स्त्री०[फा० सादः=कोरा] लाल पक्षी का एक भेद जिसका शरीर भूरे रंग का होता है। बिना चित्ती की मुनियाँ।

सदी—स्त्री०[अ०]१. सौ वर्षों का समूह। शताब्दी। शती। जैसे—पहली सदी (१—१०० सन्); बीसवीं सदी (१९०१—२००० सन्)। २. सौ चीजों का समूह। जैसे—फी सदी दस आदमी लिये जायेंगे।

सदुपदेश—पुं०[सं० कर्म० स०] १. अच्छा उपदेश। उत्तम शिक्षा। २. अच्छा परामर्श। बढ़िया सलाह।

सदूर*—पुं० [सं० शार्दूल] सिंह। उदा०—पदुमनि अंब्रित हंस सदूर।—जायसी।

सदृश—वि०[सं०] [भाव० सादृश्य] जो आकार-प्रकार, रूप-रंग आदि के विचार से किसी दूसरे से बिलकुल मिलता-जुलता हो। (सिमिलर)

विशेष—'सदृश' और 'समान' में यह अन्तर है कि सदृश का प्रयोग तो वहाँ होता है जहाँ चीज़ें या बातें ऊपर से देखने पर एक सी जान पड़ें। परन्तु 'समान' का प्रयोग वहाँ होता है जहाँ चीजों या बातों के महत्त्व, मान, मूल्य आदि में बराबरी बतलाना अभीष्ट होता है। 'तुल्य' में इन दोनों से भिन्न तौल अर्थात् गुरुता या भार का भाव निहित है।

सदृशता—स्त्री०[सं० सदृश+तल्—टाप्]१. सदृश होने की अवस्था, गुण या भाव। २. समानता। तुल्यता।

सदेह—वि०[सं०]१. देह या शरीर से युक्त। २. जो कोई विशिष्ट देह धारण करके सामने आया हो। उदा०—और कर्ण से पूछ लो जो सदेह उत्पात।—मैथिलीशरण। ३. प्रत्यक्ष। मूर्तिमान्।

क्रि० वि० शरीर धारण किये रहने की अवस्था में। जैसे—आप तो यहाँ सदेह बैठे हैं।

सदैव—अव्य०[सं० सर्व+दाच्, सर्वस-एव] सदा। सर्वदा। हमेशा।

सदोष—वि०[सं०] [भाव० सदोषता]१. जिसने दोष किया हो। दोषी। २. जिसमें दोष हो या हों। दोष से युक्त या दोष से भरा हुआ।

सद्गति—स्त्री०[सं०]१. अच्छी दशा या हालत। २. अच्छा आचरण। सदाचरण। ३. मरने के उपरांत होनेवाली उत्तम लोक की प्राप्ति, और दुर्गति से होनेवाली रक्षा। मुक्ति।

सद्गुण—पुं०[सं०] अच्छा गुण। उदा०—जिमि सद्गुण सज्जन पहँ आवा।—तुलसी।

सद्गुणी(णिन्)—वि०[सं० सद्–गुण+इनि] अच्छे गुणोंवाला।

सद्गुरु—पुं०[सं०]१. अच्छा और श्रेष्ठ गुरु। २. धार्मिक क्षेत्र में, ऐसा गुरु या पथ-प्रदर्शक जिसे स्वानुभूति हो चुकी हो, और जो साधना का ठीक मार्ग या प्रणाली बतला सके। ३. परमात्मा।

सद्ग्रंथ—पुं०[सं० सद्+ग्रंथ] आध्यात्मिक दृष्टि से अच्छा ग्रन्थ। सन्मार्ग बतलानेवाली पुस्तक।

सद्द*†—पुं०[सं० शब्द, प्रा० सद्द] शब्द। ध्वनि।

अव्य०=सद्य (तत्काल)।

सद्दर†—पुं०[हिं० सात+दाँत] सात दांतोंवाला बैल।

सद्भाव—पुं०[सं०]१. अच्छा अर्थात् शुभ भाव। हित का भाव। २. दो व्यक्तियों या पक्षों में होनेवाली मैत्रीपूर्ण स्थिति। ३. छल-कपट, द्वेष आदि से रहित भाव या विचार।

सद्भावना—स्त्री०[सं०]=सद्भाव।

सद्भावी—वि०[सं०]१. सद्भाववाला। सद्भाव से युक्त। २. सदाशयी। (बोनाफाइडी)

सद्म—पुं०[सं० सद्+मनिन्, सद्मन्]१. रहने का स्थान। २. घर। मकान। ३. दर्शक। ४. युद्ध। लड़ाई। ५. पृथ्वी और आकाश।

सद्मिनी—स्त्री० [सं० सद्म] १. बड़ा मकान। हवेली। २. प्रासाद। महल।

सद्य—पुं०[सं०] शिव का एक नाम।

अव्य०=सद्यः।

सद्यः—अव्य०[सं०]१. आज ही। २. इसी समय। अभी। ३. तत्काल। तुरन्त।

पुं० शिव का एक नाम।

सद्यःपाक—वि०[सं०] जिसका फल तुरन्त मिले। जिसके परिणाम में विलंब न हो।

पुं० रात के चौथे पहर का स्वप्न (जो लोगों के विश्वास के अनुसार ठीक घटा करता है)।

सद्यःप्रसूत—वि०[सं०] तुरंत का उत्पन्न।

सद्यःप्रसूता—वि० स्त्री० [सं०] जिसने अभी या कुछ ही समय पहले बच्चा प्रसव किया हो।

सद्यस्क—वि०[सं० सद्यस्√कै (करना)+क]१. वर्तमान काल का। २. इसी समय का। ३. ताजा। ४. आज-कल जिसके संबंध में बहुत ही जल्दी जल्दी या तुरंत कोई उपचार या काम करना आवश्यक हो। बहुत आवश्यक या जरूरी। (अर्जेन्ट) जैसे—उन्हें सद्यस्क तार (या पत्र) भेजो।

सद्योजात—वि०[सं० कर्म० स०] [स्त्री० सद्योजाता] जो अभी या कुछ ही समय पहले उत्पन्न हुआ हो।

पुं० शिव का एक रूप या मूर्ति।

सद्र—वि० [अ०] अव्य० दे० 'सदर'।

सधना—अ०[हिं० साधना]१. किसी काम या बात का पूरा या सिद्ध होना। जैसे—काम सधना। २. अभिप्राय या उद्देश्य सिद्ध होना। मतलब निकलना। ३. हाथ से किये जानेवाले किसी काम का ठीक तरह से अभ्यस्त होना। जैसे—आरी या हथौड़ा चलाने में हाथ सधना। ४. ठीक जगह पर जाकर लगना। जैसे—गोली या तीर चलाने में निशाना सधना। ५. शिक्षा आदि पाकर किसी विशिष्ट उपयोग या कार्य के लिए उपयुक्त होना। जैसे—(क) सवारी के लिए घोड़े का सधना। (ख) बाइसिकिल पर बैठने में शरीर सधना। ७. नाप-तौल आदि में ठीक या पूरा उतरना या बैठना। जैसे—(क) शरीर पर कुरता सधना। (ख) पसँगा निकल जाने पर तराजू सधना।

सधर—पुं०[सं० अव्य० स०] ऊपर का ओंठ। 'अधर' का विपर्याय।

वि०[?] कठोर। कड़ा। उदा०—धर धर शृंग सधर सुपीन पयोधर। —प्रिथीराज।

सधर्म—वि०=सधर्मक।

सधर्मक—वि०[सं०]१. समान गुण या क्रियावाला। एक ही प्रकार का। २. तुल्य। समान। ३. पुण्यात्मा। ४. सच्चा और सरल। ५. किसी की दृष्टि से उसी के धर्म या सम्प्रदाय का अनुयायी।

सधर्मा (र्मन्)—वि०[सं० ब० स०] =सधर्मक।

सधर्मिणी—स्त्री० [सं० सहधर्म+इति—सह=स-ङीष्]=सहधर्मिणी (पत्नी)।

सधर्मी (र्मिन्)—वि०[सं०] [स्त्री० सधर्मिणी] किसी की दृष्टि से उसी के धर्म का अनुयायी।

सधवा—स्त्री० [सं० अव्य० स०] ऐसी स्त्री जिसका पति जीवित हो। जो विधवा न हो। सुहागिन। सौभाग्यवती। 'विधवा' का विपर्याय।

वि० धव अर्थात् पति से युक्त (स्त्री)।

सधाना—स० [हिं० सधना का प्रे०] १. साधने का काम दूसरे से कराना। दूसरे को साधने में प्रवृत्त करना। २. जंगली पशु-पक्षियों को अपने पास या साथ रखकर पालतू बनाना और उन्हें विशिष्ट प्रकार के आचरण सिखाना। उदा०—मुद्दत में अब इस बच्चे को है हमने सधाया। लड़ने के सिवा नाच भी है इसको सिखाया।—नजीर। ३. उचित आचरण या उपयोग करते हुए किसी काम या चीज का अंत या समाप्ति करना। ४. किसी को अपने अनुकूल बनाने के लिए परचाना।

सधाव—पुं०[हिं० साधना] सधे या साधे हुए होने की अवस्था या भाव। जैसे—संगीत में स्वरों का सधाव।

सधावर—पुं०[हिं० सधवा] वह उपहार जो गर्भवती स्त्री को गर्भ के सातवें महीने दिया जाता है।

सधिया—स्त्री०१.=सदिया। २.=साध।

सधौर†—पुं० दे० 'सधावर'।

सध्रीची—स्त्री०[सं० सह√अञ्च् (पूजित होना)+क्विम् सह=सध्रि अलोप, ङीष्—दीर्घ] सखी। (डिं०)

सन्—पुं० [सं० संवत् में, के सं से फा०] १. वर्ष। साल। संवत्सर। २. गणना में कोई विशिष्ट वर्ष। ३. किसी विशिष्ट गणना क्रमवाली काल-गणना।

विशेष—इसका प्रयोग प्रायः पाश्चात्य गणना प्रणालियों के संबंध में ही होता है। जैसे—ईसवी सन्, हिजरी सन् आदि। भारतीय गणना प्रणालियों के संबंध में संवत् का प्रयोग होता है।

सनंक—पुं०[अनु० सन् सन्] सन्नाटा। नीरवता।

सनंदन—पुं०[सं० ब० स०] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक।

सन—पुं०[सं०] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक।

पुं०[सं० शरण] एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी छाल के रेशों से टाट, बोरे रस्सियाँ आदि बनती हैं।

प्रत्य०[सं० संग] अवधी में करण कारक का चिह्न; से। साथ।

स्त्री०[अनु०] वेग से निकल जाने का शब्द। जैसे—तीर सन से निकल गया।

वि०=सन्न (स्तब्ध)।

पुं०=सन् (वर्ष)।

सनअत—स्त्री०[अ०] १. कारीगरी। २. हुनर। पेशा। ३. साहित्यिक क्षेत्र में, अलंकार (अर्थालंकार और शब्दालंकार दोनों)।

सनई—स्त्री ०[हिं० सन] छोटी जाति का सन।

सनक—पुं०[सं०] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक।

पद—सनक नंदन।

स्त्री०[हिं० सनकना]१. वह अवस्था जिसमें मनुष्य का मस्तिष्क ठीक तरह से और पूरा काम न करता हो और किसी ओर प्रवृत्त होने पर प्रायः उधर ही बना रहता हो। २. पागलों की-सी धुन, प्रवृत्ति या आचरण।

मुहा०—सनक चढ़ना या सवार होना=पागलपन की सीमा तक पहुँचती हुई धुन चढ़ना।

सनकना—अ०[सं० स्वनः] १. पागल हो जाना। २. पागलों की तरह व्यर्थ बढ़-बढ़ कर बातें करना।

अ०[अनु० सन-सन] सन-सन शब्द करते हुए उड़ना, दौड़ना या भागना।

सनकाना†—स०[हिं० सनकना] ऐसा काम करना जिससे कोई सनके या पागल हो।

*अ० दे० 'सनकना'।

सनकारना — स०[हिं० सैन+करना]१. किसी काम या बात के लिए संकेत करना। इशारा करना। २. इशारे से पास बुलाना।

संयो० क्रि०—देना।

सनकियाना—स०[हिं० सनकाना का स०] किसी को सनकाने में प्रवृत्त करना।

अ०=सनकना।

स०=**सनकारना**।

सनकी—वि०[हिं० सनक] जिसे किसी तरह की सनक या झक हो। झक्की। (एस्सेन्ट्रिक)

स्त्री०[हिं० सैन=संकेत] आँख से किया जानेवाला संकेत। आँख का इशारा।

मुहा०—सनकी मारना= आँख से इशारा करना।

सनत्—पुं०[सं०] ब्रह्मा।

सनत्कुमार—पुं०[सं० मध्यम० स०]१. ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक। २. बारह सार्वभौमों या चक्रवर्तियों में से एक। (जैन) ३. जैनियों के अनुसार तीसरा स्वर्ग।

सनत्ता—पुं०[हिं० सन] ऐसा वृक्ष जिस पर रेशम के कीड़े पाले जाते हों। जैसे—शहतूत, बेर आदि।

सनत्सुजान--पुं०[सं० मध्यम० स०] ब्रह्मा के सात मानस पुत्रों में से एक।

सनद—स्त्री० [अ०] १. वह स्थान जहाँ बड़े अधिकारी, फकीर आदि तकिया लगाकर बैठते हैं। २. ऐसी चीज या बात जिस पर भरोसा किया जा सके। ३. प्रामाणिक कथन या बात। ४. प्रमाण-पत्र।

सनदयाफ्ता—वि०[अ० सनद+फा० याफ्ता] १. जिसे किसी बात की सनद मिली हो। प्रमाण-प्राप्त। २. जिसे किसी परीक्षा में उत्तीर्ण होने की सनद या प्रमाण-पत्र मिला हो।

सनदी—वि०[अ०]१. जिसे सनद मिली हुई हो। २. सनद सम्बन्धी। ३. प्रामाणिक।

सनना—अ० [सं० संधम्]१. आटे, मैदे, सत्तू आदि का घी, दूध, जल आदि के योग से गूँधा जाना। २. सूखे मसाले में पानी मिलाकर गीला किया जाना। ३. सम्मिलित होना या किया जाना। जैसे—हमें क्यों सान रहे हो। ४. लीन होना।

सननी†—स्त्री०=सानी (चौपायों का खाना)।

सनबंध†—पुं०=संबंध।

सनम—पुं०[अ०]१. प्रेमपात्र अथवा प्रियतम। २. देवमूर्ति।

सनमकदा—पुं० [अ० सनम+फा० कदः] देव-मन्दिर।

सनमान†—पुं०=सम्मान।

सनमानना*—स० [सं० सम्मान+हिं० ना (प्रत्य०)] सम्मान अर्थात् आदर-सत्कार करना। इज्जत बढ़ाना।

सनमुख*—अव्य०=सम्मुख।

सनय—वि०[सं०] प्राचीन। पुराना।

सनस†—पुं०=संशय।

सनसनाना —अ०[अनु० सनसन] १. सनसन शब्द होना। २. सनसन शब्द करते हुए उड़ना, दौड़ना या भागना। ३. झुनझुनी के कारण अंग का हिलना और सन सन शब्द करना।

सनसनी—स्त्री० [अनु० सनसन]१. शरीर की वह स्थिति जिसमें आश्चर्य, भय आदि के कारण संवेदनसूत्रों में रक्त सन सन करता हुआ जान पड़ता है। २. किसी विकट या विलक्षण घटना के कारण समाज या समूह में फैलनेवाली हलकी उत्तेजना और घबराहट। खलबली। (सेन्सेशन)

क्रि० प्र०—फैलना।

सनहकी—स्त्री०[अ० सहनक] मिट्टी का एक प्रकार का बरतन जो बहुधा मुसलमान काम में लाते हैं।

सनहाना—पुं०[देश०] नाँद की तरह का वह बरतन जिसमें जूठे बरतन इसलिए डाल दिए जाते हैं कि वे भीग जायँ और उनमें लगी हुई जूठन फूल जाय जिससे उन्हें माँजते समय आसानी हो।

सना—पुं०[अ०] प्रशंसा। स्तुति।

स्त्री०=सनाय।

सनाई —स्त्री० [हिं० सनना] सनने या साने जाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

†स्त्री०=शहनाई।

सनाका†—पुं०[अनु०]१. सनसनाहट। २. किसी आकस्मिक आघात के कारण उत्पन्न होनेवाली चंचलता या विकलता। उदा०—चंद्रलेखा का हृदय सनाका खा गया।—हजारीप्रसाद द्विवेदी।

क्रि० प्र०—खाना।

सनाढ्य—पुं०[सं० सन=दक्षिण+आढ्य=संपन्न] गौड़ ब्राह्मणों की एक शाखा या वर्ग।

सनातन—वि०[सं०] [भाव० सनातनता] १. जो आदि अथवा बहुत प्राचीन काल से बराबर चला आ रहा हो। जिसके आदि का समय ज्ञात न हो। जो परंपरानुसार आचार-विचार आदि पर निष्ठा रखता हो। परंपरानिष्ठ। (आर्थोडाक्स)। २. सदा बना रहनेवाला। नित्य। शाश्वत। ४. निश्चल। स्थिर। ४. अनादि और अनंत।

पुं०[वि० सनातनी] १. अत्यन्त प्राचीन काल। २. बहुत दिनों से चला आया हुआ व्यवहार, क्रम या परम्परा। (विशेषतः धार्मिक आचार, विश्वास आदि के संबंध में)। ३. वह जिसे श्राद्ध आदि में भोजन कराना आवश्यक हो। ४. ब्रह्मा। ५. विष्णु। ६. शिव।

सनातन धर्म—पुं० [सं० मध्यम० स०, कर्म० स० वा] १. ऐसा धर्म जो अनादि अथवा बहुत प्राचीन काल से चला आ रहा हो। २. वर्तमान हिंदू धर्म जिसके संबंध में उसके अनुयायियों का विश्वास है कि यह अनादि

काल से चला आ रहा है। इसके मुख्य अंग है—बहुत से देवी-देवताओं की उपासना, मूर्ति-पूजा, तीर्थ-यात्रा, श्राद्ध, तर्पण आदि।

सनातन-धर्मी—पुं० [सं०] सनातन धर्म का अनुयायी या माननेवाला।

सनातन पुरुष—पुं०[सं०] विष्णु भगवान्।

सनातनी—पुं०[सं० सनातन+ई (प्रत्य०)] सनातन धर्म का अनुयायी।

वि० १. सनातन। २. सनातन धर्मावलम्बियों में प्रचलित या होनेवाला।

सनाथ—वि० [सं० अव्य० स०] [स्त्री० सनाथा] जिसकी रक्षा करनेवाला कोई स्वामी हो। जिसके ऊपर कोई मददगार या सरपरस्त हो। 'अनाथ' का विपर्याय।

मुहा०—**किसी को सनाथ करना**=शरण में लेकर आश्रय देना। पूरा सहायक बनना।

†अव्य० नाथ-सहित।

सनाथा—वि०[सं० सनाथ—टाप्](स्त्री) जिसका पति जीवित हो। सधवा।

सनाभ—पुं०[सं० ब० स०]१. सगा भाई। २. सगा संबंधी।

सनाभि—पुं० [सं० ब स०] १. संबंध के विचार से एक ही माँ के पेट से उत्पन्न दो बच्चे चाहे वे एक ही पिता की सन्तान हों या एक से अधिक पिताओं की। २. दे० 'सनाभ'।

सनामक, सनामा(मन्)—वि० [सं०] एक ही नामवाले (दो या अधिक)। नाम-रासी।

सनाय—स्त्री० [अ० सना] एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियाँ रेचक होती हैं। सोनामुखी।

सनासना†—अव्य०[अनु०] सनसन शब्द करते हुए।

सनाह†—पुं०=सन्नाह।

सनि†—पुं०=शनि (शनैश्चर)।

सनित—भू० कृ०[हिं० सनना] किसी के साथ सना या मिला हुआ।

सनिद्र—वि०[सं० अव्य० स०] सोया हुआ। निद्रायुक्त।

सनीचर—पुं०१.=शनैश्चर। २.=शनिवार।

सनीचरी—स्त्री०[हिं० सनीचर]फलित ज्योतिष के अनुसार शनि की दशा जिसमें दुःख, व्याधि आदि की अधिकता होती है।

वि० १. शनि से ग्रस्त। २. मनहूस और अशुभ। जैसे—सनीचरी सूरत।

सनीड़—अव्य०[सं० अव्य० स०] १. पड़ोस में। बगल में। २. निकट। पास।

वि०१. जो एक ही नीड़ या घोंसले में रहते हों। २. एक ही स्थान पर साथ साथ रहनेवाले। ३ पड़ोसी।

सनु†—विभ० हिं० 'से' विभक्ति का अवधी रूप।

सनेम*—अव्य०[हिं० स+नेम=नियम]१. नियमपूर्वक। २. व्रत आदि का पालन करते हुए। सदाचारपूर्वक। उदा०—आयुस होइ त रहहुँ सनेमा।—तुलसी।

सनेस, सनेसा*—पुं०=संदेसा।

सनेह†—पुं०=स्नेह।

सनेही†—वि०=स्नेही।

सनै सनै*—अव्य०=शनैः शनैः।

सनोबर—पुं०[अ०] चीड़ का पेड़।

सनौढ़िया—पुं०=सनाढ्य (गौड़ ब्राह्मणों की एक शाख)।

सन्न—वि०[सं० शून्य, हिं० सुन्न] १. संज्ञाशून्य। संवेदनारहित। बिना चेतना का-सा। जड़। २. भौचक्का। स्तंभित। स्तब्ध। जैसे—यह सुनते ही वह सन्न रह गया। ३. बिलकुल चुप। मौन।

मुहा०—**सन्न मारना**=बिलकुल चुप हो जाना। आवश्यकता होने पर भी कुछ न बोलना। सन्नाटा खींचना।

पुं०[सं०] चिरौंजी का पेड़।

सन्नक—वि०[सं०] बौना।

सन्नत—भू० कृ०[सं० सम् √ नम् (झुकना)+क्त=न]१. अच्छी तरह झुका हुआ। २. नीचे आया हुआ। ३. भरा हुआ।

सन्नति—स्त्री०[सं० सम्√ नम् (झुकना)+क्तिन्]१. झुकाव। नति। २. नम्रता। विनय। ३. किसी ओर होनेवाली प्रवृत्ति। ४. कृपा-दृष्टि। मेहरबानी की नजर। ५. आवाज। शब्द। ६. दक्ष की एक कन्या जो क्रतु को ब्याही थी।

सन्नद्ध—वि०[सं० सम्√नह् (बाँधना)+क्त]१. किसी के साथ कसा या बँधा हुआ। २. जो कवच आदि पहनकर युद्ध के लिए तैयार हो गया हो। ३. कोई कार्य करने के लिए उद्यत। तैयार। ४. किसी के साथ जुड़ा या लगा हुआ। ५. पास या समीप का।

सन्नयन—पुं०[सं०]१. ले जाना। २. संपत्ति विशेषतः अचल संपत्ति का लेख्य आदि के द्वारा एक के हाथ से दूसरे के हाथ में जाना या दिया जाना। अभिहस्तांतरण। (कन्वेएन्स)

सन्नयनकार—पुं०[सं०] वह जो सन्नयन संबंधी लेख्य आदि लिखकर प्रस्तुत करता हो। (कन्वेएंसर)

सन्नयन-लेखक—पुं०=सन्नयनकार।

सन्नयन-लेखन—पुं०[सं०] सन्नयन विषयक लेख्य आदि लिखने का काम। (कन्वेयंसिंग)

सन्नयन-विद्या—स्त्री०[सं०] वह विद्या या शास्त्र जिसमें सन्नयन संबंधी लेख्य आदि प्रस्तुत करने का विवेचन होता है। (कन्वेयंसिंग)

सन्नाटा—पुं० [सं० संनष्ट] १. ऐसी वातावरणीय स्थिति जिसमें किसी भी प्रकार का शब्द न हो रहा हो। २. उक्त स्थिति में पड़कर भयभीत तथा भौचक होने का भाव।

मुहा०—**सन्नाटे में आना**=भयभीत तथा स्तब्ध हो जाना।

३. मौन। चुप्पी।

क्रि० प्र०—खींचना।—मारना।

४. निर्जनता। ५. चहल-पहल का अभाव।

मुहा०—**सन्नाटा बीतना**=उदासी में समय काटना।

६. लेन-देन, व्यापार आदि में सहसा आनेवाली मंदी। जैसे—आज-कल बाजार में सन्नाटा है।

विशेष—इस अर्थ में इसका प्रयोग विशेषण की तरह भी होता है। जैसे—आज-कल बाजार सन्नाटा है।

वि०१. जहाँ किसी प्रकार का शब्द न सुनाई पड़ता हो। नीरव। स्तब्ध। २. निराला। निर्जन। ३. (स्थान) जिसमें किसी प्रकार की क्रिया न हो रही हो।

पुं०[अनु० सन सन] १. हवा के जोर से चलने की आवाज। वायु के बहने का शब्द।

पद—सन्नाटे का=सन सन शब्द करता हुआ और तेजी से चलता हुआ। जैसे—सन्नाटे की हवा।

सन्नादी—पुं०[सं० सम्+नादिन्] व्याकरण में, ऐसा अक्षर या वर्ण जिसका उच्चारण किसी स्वर की सहायता से ही होता हो; बिना स्वर लगाये जिसका उच्चारण हो ही न सकता हो। (कान्सोनेन्ट) जैसे—क, ख, ग आदि।

विशेष—बिना स्वर की सहायता के जहाँ किसी वर्ण का उच्चारण होता है, वहाँ वह हल कहलाता है।

वि०१. नाद या स्वर से युक्त। २. नाद करनेवाला।

सन्नाह—पुं०[सं० सम्√नह् (बाँधना)√ +घञ्] १. कवच। बकतर। २. उद्योग। प्रयत्न।

सन्निकट—अव्य०[सं० सम्-निकट] बहुत निकट। बिलकुल पास।

सन्निकर्ष—पुं०[सं० सम्+नि√ कृष् (समीप करना)+घञ्] [भू० कृ०सन्निकृष्ट] १. संबंध। लगाव। २. निकटता। समीपता। ३. नाता। रिश्ता। ४. आधार। आश्रय। ५. न्याय में, इन्द्रियों से होनेवाला विषयों का सम्बन्ध।

सन्निकाश—वि० [सं० सम्-निकाश] सदृश। समान।

सन्निकृष्ट—भू० कृ० [सं० सम्-नि√कृष् (समीप करना)+क्त] १. पास लाया हुआ। २. निकट। करीब। पास।

सन्निध—पुं० [सं० सम्-नि√ धा (रखना)+क] १. सामीप्य। २. आमने-सामने होने की स्थिति।

सन्निधाता (तृ)—पुं०[सं० सम्-नि√ धा (रखना)+तृच]१. प्राचीन भारत में,वह राजकर्मचारी जो लोगों को अपने साथ ले जाकर न्यायालय में उपस्थित करता था। २. राजकोष का प्रधान अधिकारी।

सन्निधान—पुं०[सं० सन्-नि √धा (रखना)+ल्युट्—अन]१. दो या अधिक चीजों को साथ-साथ या अलग-अलग रखना। २. वह अवस्था जिसमें चीजें साथ साथ या अगल-बगल रहती या होती हैं। निकटता। समीपता। ३. पड़ोस। ४. इंद्रियों का विषय। ५. स्थापित करना। स्थापन।

*अव्य० निकट। पास।

सन्निधि—स्त्री० [सं० सम्-नि√ धा (रखना)+कि] सन्निधान। (दे०)

सन्निपात—पुं० [सं० ब० स०] १. नीचे आना, उतरना या गिरना विशेषतः साथ साथ नीचे आना, उतरना या गिरना। २. जुड़ना। मिलना। ३. टकराना। भिड़ना। ४. इकट्ठा या एकत्र होना। ५. कई घटनाओं का एक साथ घटित होना। ६. बहुत-सी चीजों या बातों का मिश्रण। समाहार। ७. वैद्यक में, ज्वर की एक अवस्था जिसमें कफ, पित्त और वात एक साथ कुपित होकर बहुत उग्र रूप धारण करते हैं। त्रिदोष। सरसाम।

सन्निबंध—पुं०[सं० सम्-नि √वन्ध् (बांधना)+घञ्][भू० कृ० सन्निबद्ध] १. एक में बांधना। जकड़ना। २. लगाव। सम्बन्ध। ३. आसक्ति। ४. असर। प्रभाव। ५. परिणाम। फल। नतीजा।

सन्निबद्ध—भू० कृ० [सं० सम्—नि√बन्ध् (बांधना)+क्त, नलोप] १. एक में बांधा या जकड़ा हुआ। २. अटका या फँसा हुआ। ३. सहारे पर टिका हुआ।

सन्निभ—वि०[सं० सम्-नि√ भा (प्रकाशित करना)+क]मिलता-जुलता। सदृश। समान।

सन्निभृत—वि० [सं० सम्-नि√भृ (भरण-पोषण करना)+क] १. छिपा हुआ। २. समझ-बूझकर बातें करनेवाला।

सन्निमग्न—वि०[सं०]१. खूब डूबा हुआ। २. सोया हुआ।

सन्नियोग—पुं० [सं० सम्-नि √युज् (मिलना)+घज्] १. संबंध। २. संयोग। ३. आसक्ति। ४. नियुक्ति। ५. आदेश।

सन्निरुद्ध—भू० कृ०[सं०]१. ठहराया या रोका हुआ। २. दमन किया या दबाया हुआ। ३. अच्छी तरह या कसकर भरा हुआ।

सन्निरोध—पुं० [सं० सम्-नि √रुध् (रोकना)+घञ्] १. रोक। रुकावट। २. बाधा। ३. निवारण। ४. दमन। ५. तंगी। संकोच। ६. तंग रास्ता।

सन्निवास—पुं०[सं० सम्-नि√ वस् (रहना)+घञ्]१. साथ रहना। २. बसना। ३. घोंसला।

सन्निविष्ट—भू० कृ० [सं० सम् -नि √विश् (प्रवेश करना)+क्त] १. अंदर या भीतर आया या लगाया हुआ। २. जुटा या जुटाया हुआ। ३. बीच में जोड़ा, बढ़ाया या लगाया हुआ। (इन्सर्टेड) ४. किसी के साथ जमा, बैठा या रखा हुआ। ५. स्थापित किया हुआ।

सन्निवेशन—पुं० [सं०] १. अंदर जाना या साथ में ले जाना। प्रवेश करना या कराना। २. एकत्र होना या करना। जुटना या जुटाना। ३. किसी के बीच में जोड़ना, बढ़ाना या लगाना। ४. किसी के पास या साथ बैठना। ५. सजा या जमाकर रखना। ६. आधार। आश्रय। ७. वास-स्थान। ८. घर। मकान। ९. समूह। १०. प्रबंध। व्यवस्था। ११. रचना। गठन।

सन्निवेशित—भू० कृ०[सं०]१. जिसका सन्निवेश हुआ या किया गया हो। २. बीच में जोड़ा, बढ़ाया या लगाया हुआ।

सन्निहित—भू० कृ०[सं० सम्—नि√ धा (रखना)+क्त, धा=हि] १. किसी के साथ या पास रखा हुआ। २. समीपस्थ। ३. पड़ोस का। ४. टिकाया, ठहराया या रखा हुआ। ५. कोई काम करने के लिए उद्यत। तैयार।

सन्नी—वि०[हिं०] १. सन या पटसन से संबंध रखनेवाला। २. सन या पटसन से बना हुआ।

स्त्री०१. सन से बुना हुआ कपड़ा। २. सन की जाति का एक प्रकार का छोटा पौधा जो बगीचों में शोभा के लिए लगाया जाता है।

†पुं०=शनिवार।

सन्मन—पुं०[सं० सद्+मन्] शुद्ध या अच्छा मन। उदा०—किसी अपर सत्ता के सन्मुख सन्मन से नत होना।—दिनकर।

वि० अच्छे या सद् मनवाला।

सन्मान—पुं०[सं० ष० त०] सम्मान।

सन्मानना†—स०=सनमानना।

सन्मार्ग—पुं०[सं०] उत्तम या भला मार्ग।

सन्मुख—पुं०[सं०] अच्छा या सुन्दर मुख।

वि० अव्य० सं० 'सम्मुख' का अशुद्ध रूप।

सन्यास†—पुं०=संन्यास।

सपंक (1)—वि० [सं० स+पंक=कीचड़] १. कीचड़ से भरा हुआ। २. जिसे पार करना बहुत कठिन हो। बीहड़। विकट।

सपई†—स्त्री०=संपई।

सपक्ष—वि० [सं० ब० स०] १. जिसे पक्ष या पर हों। परोंवाला। २. किसी की दृष्टि से, उसके पक्ष में रहने या होनेवाला। ३. पोषक या समर्थक। ४. सहायक और साथी।

पुं० १. अनुकूल पक्ष। २. न्याय में, वह बात या दृष्टांत जिसमें साध्य अवश्य हो। जैसे—जहाँ धुआँ होता है, वहाँ आग भी रहती है। इस दृष्टि से रसोई घर का दृष्टान्त सपक्ष कहलाता है।

सपक्षी†—वि०=सपक्ष।

सपचना—अ०=सपुचना (पूरा होना)।

सपच्छ*—वि०=सपक्ष।

सपटा—पुं० [देश०] १. सफेद कचनार। २. एक प्रकार का टाट।

सपत†—स्त्री०=शपथ।

†वि०=सप्त (सात)।

सपतना—अ० [?] किसी स्थान पर पहुँचना। (राज०)

सपत्न—वि० [सं०] सपत्नी या सौत की तरह का द्वेष और वैर रखनेवाला।

पुं० दुश्मन। वैरी। शत्रु।

सपत्नता—स्त्री० [सं० सपत्न+तल्—टाप्] वैर। शत्रुता।

सपत्नी—स्त्री० [सं० ब० स० ङीप्] किसी विवाहिता स्त्री की दृष्टि से उसके पति की दूसरी पत्नी। सौत। सौतिन।

सपत्नीक—वि० [सं० अव्य० स०—कप] (व्यक्ति) जो अपनी पत्नी या भार्या के साथ हो। जैसे—वह यहाँ सपत्नीक आनेवाले हैं।

सपथ†—पुं०=शपथ।

सपदि—अव्य० [सं० सम् √पद् (गत्यादि)+इन—नलोप पृषो०] १. उसी समय। तुरंत। २. शीघ्र। जल्दी।

सपन†—पुं०=सपना।

सपना—पुं० [सं० स्वप्न] १. वह घटना, बात या दृश्य जो सोये होने पर अंतर्मन में काल्पनिक रूप से भासित होता है। स्वप्न। २. लाक्षणिक अर्थ में, ऐसी बात (क) जिसका अस्तित्व ही न हो। (ख) जो अब दुर्लभ हो गई हो अथवा (ग) जो मनगढंत या कपोल-कल्पित हो और कार्य रूप में न लाई जा सकती हो।

सपनाना†—अ० [सं० स्वप्न] स्वप्न देखना। जैसे—तुम तो दिन भर बैठे सपनाते रहते हो।

स० स्वप्न दिखाना। जैसे—आज देवी ने उन्हें फिर कुछ सपनाया है (अर्थात् स्वप्न दिखाया है)।

सपनीला—वि० [स्त्री० सपनीली]=स्वप्निल।

सपरदाई—पुं० [सं० संप्रदायी] तवायफ के साथ तबला, सारंगी या और कोई साज बजानेवाला। समाजी। साजिन्दा।

सपरना—अ० [सं० संपादन, प्रा० संपाड़न] १. किसी काम का पूरा होना। समाप्त होना। निबटना।

मुहा०—(व्यक्ति का) सपर जाना=मर जाना। परलोकगत होना। २. काम का किया जा सकना। हो सकना। जैसे—यह काम हमसे नहीं सपरेगा। ३. काम-धन्धे आदि से निवृत्त होना। निपटना। ४. किसी काम की तैयारी के लिए पहले और कामों से निवृत्त होना। जैसे—वह सवेरे से मेले में चलने के लिए सपर रहे हैं।

सपराना—स० [हिं० सपरना का स०] १. काम पूरा करना। निबटाना। खतम करना। २. अन्त या समाप्त करना।

सपरिकर—वि० [सं०] अनुचर वर्ग के साथ।

सपरिच्छद—वि० [सं० अव्य० स०] तैयारी या ठाट-बाट के साथ।

सपरिजन—वि० [सं० अव्य० स०] १. सपरिकर।

सपरिवार—वि० [सं० अव्य० स०] परिवार के सदस्यों के साथ।

सपरिश्रम कारावास—पुं० [सं०] कैद की वह सजा जिसमें कैदी को कठिन परिश्रम भी करना पड़ता है। कड़ी सजा। (रिगरस इम्प्रीजनमेन्ट)

सपर्ण—वि० [सं० अव्य० स०] पत्तियों से युक्त।

सपाट—वि० [सं० स+पट्ट, हिं० पाटा=पीढ़ा] १. जिसका तल बराबर या सम हो। समतल। २. जिसके तल पर कोई दूसरी चीज उभरी, खड़ी या टिकी न हो। जैसे—सपाट मैदान। ३. जो क्षितिज की ओर एक ही सीध में दूर तक चला गया हो। क्षैतिज। (हारिज़न्टल)

सपाटा—पुं० [सं० सर्पण] १. चलने या दौड़ने का वेग। २. तीव्र गति। दौड़।

पद—सैर-सपाटा—मन बहलाने के लिए कहीं जाकर घूमना-फिरना। **सपाटे की तान**=संगीत में एक प्रकार की तान जिसमें स्वरों का उतार-चढ़ाव बहुत तेजी से होता है।

३. आक्रमण करने के लिए झपटने की क्रिया या भाव। उदा०—दो सौ सवारों का सपाटा पड़ा।—वृंदावनलाल वर्मा।

क्रि० प्र०—पड़ना।—भरना।—**मारना**।

४. तमाचा। थप्पड़।

क्रि० प्र०—लगाना।

५. छल। धोखा।

सपाद—वि० [सं०] १. पाद या चरण से युक्त। २. (ऐसा पूरा) जिसके साथ चतुर्थांश और भी मिला हो। सवाया। जैसे—सपाद लक्ष=एक लाख और पचीस हजार।

सपिंड—पुं० [सं० ब० स०] धर्म-शास्त्र में पारस्परिक दृष्टि से एक ही कुल की सात पीढ़ियों तक के लोग जो एक दूसरे को पिंडदान कर सकते और उनका श्राद्ध करने के अधिकारी होते हैं।

सपिंडी—स्त्री० [सं० सपिंड—ङीष्] मृतक के निमित्त किया जानेवाला वह कर्म जिसमें वह और पितरों या परिवारों के मृत प्राणियों के साथ पिंडदान द्वारा मिलाया जाता है।

सपिंडीकरण—पुं० [सं० सपिंड+च्वि√कृ (करना)+ल्युट्—अनदीर्घ] एक प्रकार का श्राद्ध जिसमें मृतक को पिंड-दान द्वारा पितरों के साथ मिलाते हैं।

सपीड—वि० [सं० अव्य० स०] पीड़ा युक्त।

सपुन†—वि०=संपूर्ण। उदा०—सपुन सुधानिधि दधि भल भेल।—विद्यापति।

सपुर्द—वि० [फा० सिपुर्द] [भाव० सपुर्दगी] १. देख-रेख, पालन-पोषण, रक्षण आदि के निमित्त किसी को सौंपा हुआ। जैसे—बालक या मकान किसी को सपुर्द करना। २. उचित कार्य, विचार आदि के लिए किसी

अधिकारी के हाथ सौंपा हुआ।(कमिटेड) जैसे—चोर को पुलिस के सपुर्द करना।

सपुर्दगी—स्त्री०[फा० सिपुर्दगी] सपुर्द करने या सौंपने की अवस्था, क्रिया या भाव। (कमिटमेन्ट)

सपूत—पुं०[सं० सत्पुत्र, प्रा० सपुत्र, सउत्त] १. वह पुत्र जो अपने कर्तव्य का पालन करे। अच्छा पुत्र। २. वह पुत्र जिसने अपने कुल या पूर्वजों की कीर्ति बढ़ाई हो।

सपूती—स्त्री०[हिं० सपूत+ई (प्रत्य०)]१. सपूत होने की अवस्था या भाव। २. ऐसी स्त्री जिसने सपूत को जन्म दिया हो।

सपेट†—पुं० [?]झपट।

सपेटा—पुं०[?]१. महोगनी वृक्ष का फल। चीकू। २. [हिं० सप्रेटा] वह दूध जिसे कच्चे ही मथकर उसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो।

सपत (द)†—वि०=सफेद।

सपेती (दी)†—स्त्री०=सफेदी।

सपेरा†—पुं०=सँपेरा।

सपेला†—पुं०=सँपोला।

सपोला†—पुं०=सँपोला।

सप्त—वि० [सं०] जो गिनती में सात हो। जैसे—सप्तभुज, सप्तऋषि।

सप्तऋषि—पुं०=सप्तर्षि।

सप्तक—पुं०[सं०]१. एक ही तरह की सात वस्तुओं, कृतियों आदि का समूह। सात वस्तुओं का संग्रह। जैसे—तारसप्तक, सतसई सप्तक। २. संगीत में, सातों स्वरों का समूह।'षड़ज' से 'निषाद' तक के सातों स्वर। (ऑक्टेव)

विशेष—साधारणतः गाने-बजाने के तीन सप्तक होते हैं। संगीत सदा मध्य सप्तक में होता है। पर कभी कभी स्वर नीचा होकर मन्द्र में और ऊँचा होकर तार में भी पहुँच जाता है।

वि० १. सात। २. सातवाँ।

सप्तकी—स्त्री०[सं० सप्तक—ङीष्]सात लड़ियोंवाली करधनी।

सप्तकृत—पुं०[सं० त० त०] विश्वेदेवों में से एक।

सप्तग्रही—स्त्री०[सं०]एक ही राशि में सात ग्रहों का एकत्र होना, जो फलित ज्योतिष के अनुसार अशुभ फल देता है।

सप्तच्छद—पुं०[सं०] सप्तवर्ण वृक्ष। छतिवन।

सप्तजिह्व—वि०[सं०] जिसकी सात जिह्वाएँ हों।

पुं० अग्नि।

विशेष—अग्नि की सात जिह्वाएँ हैं—काली, कराली मनोजवा, सुलोहिता, सुधूम्रवर्णा, उग्रा, और प्रदीपा।

सप्त-तंत्री—स्त्री० [सं०] वह वीणा जिसमें बजाने के लिए सात तार लगे हों।

सप्तति—वि०[सं० सप्तान् +ति—नलोप] सत्तर।

सप्ततितम—वि० [सं० सप्तति+तमप्] सत्तरवाँ।

सप्तत्रिंश—वि० [सं० सप्तत्रिंशत—ड] सैंतीसवाँ।

सप्तत्रिंशत्—वि०[सं०] सैंतीस।

सप्तदश (न्)—वि०[सं०] सत्रह।

सप्तद्वीप—पुं०[सं० कर्म० स०] पुराणानुसार पृथ्वी के ये सात बड़े और मुख्य विभाग—जम्बू, कुश, प्लक्ष, क्रौंच, शाल्मलि, शाक और पुष्कर द्वीप।

सप्त-धातु—पुं०[सं०]१. आयुर्वेद के अनुसार शरीर के ये सात संयोजक द्रव्य—रक्त, पित, मांस, वसा, मज्जा, अस्थि और शुक्र। २. चन्द्रमा का एक घोड़ा।

सप्तधान्य—पुं०[सं०] जौ, धान, उरद आदि सात अन्नों का मेल जो पूजा के काम आता है। सत-नजा।

सप्तनाड़ी चक्र—पुं०[सं० मध्यम० स०] फलित ज्योतिष में, एक प्रकार का चक्र जिसमें सब नक्षत्रों के नाम रहते हैं; और जिसके द्वारा वर्षा का आगम बताया जाता है।

सप्तपंचाश—वि०[सं० सप्तपंचाशत+ड, मध्यम० स०] सत्तावनवाँ।

सप्तपंचाशत—वि० [सं०] सत्तावन।

सप्तपत्र—वि०[सं० ब० स०] जिसमें सात पत्ते या दल हों। सात पत्तों वाला।

पुं०१. सूर्य। २. मोतिया या मोगरा नाम का बेला। ३. सप्तपर्ण। छतिवन।

सप्तपदी—स्त्री०[सं०] १. हिन्दुओं में एक वैवाहिक रीति जिसमें वर और वधू एक दूसरे का वरण करते समय अग्नि को साक्षी मानकर उसकी सात परिक्रमाएँ करते हैं। भँवरी। भाँवर। २. उक्त के आधार पर अग्नि को साक्षी करके कोई बात पक्की करने या वचन देने की क्रिया।

सप्तपर्ण—पुं०[सं०]१. छतिवन का पेड़। २. प्राचीन काल की एक प्रकार की मिठाई।

सप्तपर्णी—स्त्री०[सं०] लज्जालु। लज्जाबंती लता।

सप्त-पाताल—पुं०[सं०] पृथ्वी के नीचे के सात लोक—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, और पाताल।

सप्तपुत्री—स्त्री०[सं०] सतपुतिया। (दे०)

सप्तपुरी—स्त्री०[सं०] पुराणानुसार ये सात पवित्र नगर या तीर्थ जो मोक्ष दायक कहे गये हैं—अयोध्या, मथुरा, माया (हरद्वार), काशी, कांची, अवन्तिका (उज्जयिनी) और द्वारका।

सप्त-प्रकृति—स्त्री०[सं०]प्राचीन भारतीय राजनीति में, राज्य के ये सात अंग—राजा, मंत्री, सामंत, देश, कोश, गढ़ और सेना।

सप्तबाह्य—पुं०[सं०] वाह्लीक देश। बलख।

सप्त-भंगी—स्त्री०[सं०] जैन न्याय के सात मुख्य अंग जिनपर उनका स्याद्वाद मत आश्रित है।

सप्तभद्र—पुं०[सं० ब० स०] १. सिरसि। शिरीष वृक्ष। २. नवमल्लिका। नेवारी। ३. गुंजा। घुँघची।

सप्तभुवन—पुं०[सं०] भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनर्लोक, तपर्लोक और सत्यलोक ये सात भुवन या लोक।

वि० सत मंजिल। सात खण्डोंवाला। (मकान)

सप्तभूम—वि०[सं०] सात खंडों का। सतमंजिला (मकान)।

सप्तम—वि०[सं० सप्तन्+उट्—मट्] [स्त्री० सप्तमी] सातवाँ।

सप्तमातृका—स्त्री०[सं०] ये सात माताएँ या शक्तियाँ जिनका पूजन, विवाह आदि शुभ अवसरों के पहले होता है—ब्राह्मी, माहेश्वरी. कौमारी. वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी और चामुंडा।

सप्तमी--स्त्री०[सं०]१. चांद्र मास के किसी पक्ष की सातवीं तिथि। सातवाँ दिन। २. व्याकरण में, अधिकरण कारक की विभक्ति।

सप्त-मृत्तिका--स्त्री०[सं०] शांति-पूजन में काम आनेवाली इन सात स्थानों की मिट्टी--अश्वशाला, गजशाला, गोशाला, तीर्थस्थान, राजद्वार, गुरुद्वार और नदी।

सप्त-रक्त--पुं०[सं०] शरीर के सात अवयव जिनका रंग लाल होता है। यथा--हथेली, तलवा, जीभ, आँख, पलक का निचला भाग, तालू और हों ।

सप्त-रात्र--पुं०[सं०] सात रातों का समय।

वि० सात रातों में समाप्त होनेवाला।

सप्त-राशिक--पुं०[सं० ब० स०] गणित की एक क्रिया जिसमें सात राशियों के आधार पर किसी प्रश्न का उत्तर निकाला जाता है।

सप्तरुचि--पुं०[सं०] अग्नि का एक नाम।

सप्तर्षि--पुं०[सं० कर्म० स०] १. सात प्राचीन ऋषियों का समूह या मंडल।

विशेष--(क) शतपथ ब्राह्मण के अनुसार ये सात ऋषि--गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, यमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप और अत्रि हैं। (ख) महाभारत के अनुसार ये सात ऋषि--मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य और वसिष्ठ हैं। २. उत्तरी आकाश में के सात तारों का एक प्रसिद्ध मंडल या समूह जो रात में ध्रुव तारे की आधी परिक्रमा करता हुआ दिखाई देता है। (उर्सा मेजर)

विशेष--वास्तव में ये सातों तारे एक बड़े नक्षत्र पुंज के (जिसमें कुल मिलाकर ५३ दृश्य नक्षत्र हैं) अंग या उनके अंतर्गत हैं, जो पुराणानुसार ध्रुव की परिक्रमा करते हुए कहे गये हैं।

सप्तला--स्त्री०[सं०]१. सातला। २. चमेली। ३. रीठा। ४. घुँघची।

सप्तवादी--पुं०[सं० सप्तवादिन्] सप्तभंगी न्याय का अनुयायी अर्थात् जैन।

सप्तविंश--वि०[सं० सप्तविंशत्] सत्ताईसवाँ।

सप्तविंशति--वि०[सं०] सत्ताईस।

स्त्री० उक्त संख्या जो अंकों में इस प्रकार लिखी जाती है--२७।

शप्तशती--स्त्री०[सं० द्वि० स०] १. एक ही तरह की सात चीजों का वर्ग या समूह। २. सात सौ पदों या वृत्तों का संग्रह। सतसई। जैसे--दुर्गा सप्तशती।

पुं० बंगाली ब्राह्मणों की एक जाति या वर्ग।

सप्तशीर्ष--पुं०[सं०] विष्णु का एक नाम।

सप्तषष्ठ--वि०[सं० मध्यम० स०] सड़सठवाँ।

सप्तषष्ठि--वि०[सं०] सड़सठ।

वि० सड़सठ की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है--६७।

सप्तसप्त--वि०[सं०] सतहत्तरवाँ।

सप्तसप्तति--वि०[सं०] सतहत्तर।

स्त्री० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है--७७।

सप्तसागर--पुं० [सं०] १. पृथ्वी पर के सातों सागरों का समूह। २. एक प्रकार का दान जिसमें सात पात्रों में घी, दूध, मधु, दही आदि रखकर ब्राह्मण को दिया जाता है।

सप्तसिंधु--पुं०[सं०] प्राचीन आर्यावर्त की ये प्रसिद्ध सात नदियाँ, सिन्धु परुष्णी (रावी), शतुद्री (सतलज), वितस्ता (झेलम), सरस्वती, यमुना और गंगा।

सप्तस्वर--पुं०[सं०] संगीत के ये सातों स्वर--स, रे ग, म, प, ध, नि।

सप्त-स्वरा--स्त्री० [सं०] पुरानी चाल की एक प्रकार की वीणा।

सप्तांग--वि०[सं०] ष० त०] सात अंगोंवाला।

पुं०=सप्त-प्रकृति। (राजनीति का)।

सप्तांशु--पुं०[सं०] अग्नि।

वि० सात किरणोंवाला।

सप्तात्मा (त्मन्)--पुं०[सं० ब० स०] ब्रह्मा।

सप्तार्चि--पुं० [सं०] १. शनि ग्रह। २. चित्रक या चीता नामक वृक्ष।

सप्तार्णव--पुं०[सं० कर्म० स०] पृथ्वी पर के सातों समुद्र।

सप्तालु--पुं०[सं० सप्त+अलुच्] सतालू। शफतालू।

सप्ताशीति--वि०[सं० मध्यम० स०] सत्तासी।

स्त्री० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है--८७।

सप्ताश्र--पुं०[सं० ब० स०] ज्यामिति में, सात भुजाओंवाला क्षेत्र।

सप्ताश्व--पुं०[सं० ब० स०] सूर्य (जिनके रथ में सात घोड़े जुते हुए माने गये हैं)।

सप्ताह--पुं०[सं० कर्म० स०]१. सात दिन। सात दिनों की अवधि। जैसे--वे एक सप्ताह बाहर रहेंगे। २. सात दिनों का समय विशेषतः सोमवार से रविवार तक के सात दिन। ३. उक्त सात दिनों में पड़नेवाले, काम, व्यापार या नौकरी के दिन। जैसे--दो सप्ताह स्कूल और जाना है। ४. कोई ऐसा कृत्य या अनुष्ठान जो सप्ताह भर चलता रहे। जैसे--भागवत का सप्ताह, रडियो सप्ताह।

क्रि० प्र०--बैठना।--बैठाना।--सुनना।--सुनाना।

विशेष--महीनों को चार सप्ताहों में विभक्त किया जाता है। परन्तु कई महीनों में अट्ठाइस से अधिक दिन होते हैं। २८ से जितने अधिक दिनों का महीना हो उन दिनों की गिनती अंतिम सप्ताह में होती है। इस प्रकार का अंतिम सप्ताह ८, ९, १० या ११ दिनों का भी होता है।

सप्ताहांत--पुं० [सं० सप्ताह+अंत] सप्ताह का अंतिम दिन जो शुक्रवार की आधी रात से रविवार के सवेरे तक माना जाता है। (वीक-एंड)

सप्पन--पुं०[देश०] बक्कम का पेड़।

स-प्रमाण--वि०[सं० अव्य० स०] १. प्रमाण से युक्त। [illegible] प्रामाणिक।

क्रि० वि० प्रमाण या सबूत के साथ।

सप्रेटा--पुं०[अं० सेपरेटेड मिल्क] ऐसा दूध जिसमें से मक्खन या चिकना अंश निकाल लिया गया हो। मखनिया दूध।

सफ--स्त्री०[अ० साफ़] १. पंक्ति। कतार। २. बिछाने की चटाई। ३. बिछौना। बिस्तर।

पुं० शफ।

सफगोला--पुं०=इसबगोल।

सफदर--वि० [अ०] सफों अर्थात् सैनिक पंक्तियाँ तोड़ने या भेदनेवाला।

पुं०१. बहुत बड़ा वीर। २. एक प्रकार का बढ़िया आम।

सफर--पुं०[अ० सफ़र]१. हिजरी सन् का दूसरा महीना। २. रास्ते में चलना। २. रवाना होना। ३. वह अवस्था जब कोई एक स्थान से

दूसरे नजदीक या दूर के स्थान को जा रहा हो। ३. यात्रा काल में तै की जानेवाली दूरी। जैसे—५० मील लंबा सफर उन्हें करना पड़ा।

†पुं०=सफरी (मछली)।

सफरदाई —पुं०=सपरदाई।

सफर भत्ता—पुं० दे० 'यात्राभत्ता'।

सफरमैना—स्त्री० [अं० सैपर्स ऐंड माइनर्स] सेना के वे सिपाही जो सुरंग लगाने तथा खाइयाँ आदि खोदने को आगे चलते हैं।

सफरा—पुं०[अ० सफ़रः] [वि० सफरावी] पित्त।

सफरी—वि०[अ० सफ़र]१. सफर-संबंधी। २. सफर में साथ ले जाया जानेवाला। जैसे—सफरी बिस्तर।

स्त्री० रास्ते का व्यय और सामग्री।

†पुं०[?] अमरूद नामक फल।

†स्त्री०=शफरी (मछली)।

स्त्री० [?] टिकली जो हिंदू स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं।

सफल—वि० [सं० अव्य० स०]१. वृक्ष जिसमें फल लगा हो। फलयुक्त। २. (कार्य) जिसका उद्दिष्ट फल या परिणाम हुआ हो। जैसे—परिश्रम सफल होना। ३. (व्यक्ति) जिसका उद्देश्य या परिश्रम अपना परिणाम या फल दिखा चुका हो। जैसे—विद्यार्थी का परीक्षा में सफल होना। ४. पशु जिसका अंडकोश कटा न हो या जो बधिया न किया गया हो।

स-फलक—वि०[सं० अव्य० स०] जिसके पास फलक अर्थात् ढाल हो।

सफलता—स्त्री०[सं० सफल+तल्—टाप्]१. सफल होने की अवस्था या भाव। कामयाबी। सिद्धि। २. सफल होने पर होनेवाली सिद्धि।

सफला—स्त्री०[सं० सफल—टाप्] पौष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

सफलित—वि०[सं० सफल+इतच्]=सफलीभूत।

सफलीकरण—पुं० [सं० सफल+ च्वि√ कृ (करना)+ल्युट्—अन, दीर्घ] [भू० कृ० सफलीकृत] सफल करने की क्रिया या भाव।

सफलीभूत—भू० कृ०[सं० सफल+चि√भू (होना)+क्त दीर्घ] १. (व्यक्ति) जिसे सफलता मिली हो। जो सफल हो चुका हो। २. (कार्य) जो पूरा या सिद्ध हो चुका हो।

सफहा—पुं० [अ० सफ़हः]१. तल। पार्श्व। २. पुस्तक का पृष्ठ। पन्ना। वरक।

सफा—वि० [अ० सफ़ा]१. साफ। स्वच्छ। जैसे—सफा कमरा। २. निर्मल। पवित्र। ३. साफ करनेवाला। जैसे—बालसफा पाउडर। ४. खाली। रहित। जैसे—रात भर में उनका जेब सफा हो गया।

सफाई—स्त्री०[अ० सफ़ा+हिं० ई (प्रत्य०)]१. साफ होने की अवस्था या भाव। स्वच्छता। निर्मलता। २. कूड़े-करकट, मैल आदि से रहित करने या होने की अवस्था या भाव। जैसे—कपड़े, बरतन या मकान की सफाई। ३. त्रुटि, दोष आदि से रहित होने की अवस्था या भाव। जैसे—बोलने या लिखने में दिखाई देनेवाली सफाई। ४. छल-कपट आदि से रहित होने की अवस्था या भाव। जैसे—व्यवहार या हृदय की सफाई। ५. ऋण आदि का परिशोध। लेन-देन या हिसाब चुकता होना। ६. लगायें हुए इलजाम या आरोपित दोष से रहित होने की अवस्था या भाव। जैसे—मामले-मुकदमे में दी जानेवाली सफाई। क्रि० प्र०—देना।

७. वाद-विवाद आदि का निपटारा या निर्णय।

सफा-चट—वि० [अ०+हिं०] १. (तल) जो ऊपर से पूरी तरह से साफ कर दिया गया हो। जिसके ऊपर कुछ भी जमा या लगा न रहने दिया गया हो। जैसे—सफाचट खोपड़ी, सफाचट दाढ़ी। २. तल जिस पर कुछ भी जमा या लगा न रह गया हो। जो बिलकुल चिकना हो। जैसे—सफाचट मैदान। ३. बिलकुल साफ और स्वच्छ। जैसे—सफाचट दीवार। ४. जिसका कुछ भी अंश या चिह्न बाकी न रहने दिया गया हो। जैसे—जो कुछ उसने पाया वह सब सफाचट कर दिया।

सफाया—पुं०[अ० सफ़ा] १. जीवों के संबंध में, उनका होने या किया जानेवाला पूरा संहार। जैसे—(क) युद्ध में जातियों का होनेवाला सफाया। २. वस्तुओं के सम्बन्ध में, उनका किया जानेवाला ऐसा उपयोग या भोग कि वे नष्ट या समाप्त हो जायँ। जैसे—दो ही वर्षों में उसने बाप-दादा की कमाई का सफाया कर दिया।

सफीना—पुं०[अ० सफ़ीनः,]१. बही। किताब। नोट-बुक।

२. अदालत का लिखा हुआ परवाना। हुकुमनामा।

सफीर—पुं०[अ० सफ़ीर] एलची। राजदूत।

स्त्री०१. चिड़ियों के बोलने की आवाज। २. सीटी, विशेषतः वह सीटी जो पक्षियों, साथियों आदि को अपने पास बुलाने के लिए बजाई जाती है।

सफील—स्त्री०[अ० फ़सील]१. पक्की चहारदीवारी। २. शहरपनाह। परकोटा।

सफेद—वि० [सं० श्वेत से फा० सुफ़ेद] १. जो रंगीन न हो। जैसे—सफेद बाल।

पद—सफेद खून =पुरुष का वीर्य।

२. स्वच्छ तथा उज्ज्वल। जैसे—सफेद पोशाक। ३. (कागज आदि) (क) जिस पर कुछ लिखा न हो। कोरा। (ख) जिस पर लकीरें आदि न खिची हों।

पद—स्याह सफेद=(क) भला-बुरा। (ख) हानि-लाभ।

मुहा०—खून सफेद होना=मोह, ममता, सहानुभूति आदि का भाव मन में न रह जाना।

४. साफ। स्पष्ट।

पद—सफेद-झूठ। (देखें)

सफेद-झूठ—पुं० [हिं०] ऐसा झूठ जो ऊपर से देखने पर ही साफ झूट जान पड़ता हो, और वस्तु-स्थिति के स्पष्ट विपरीत हो।

विशेष—हिन्दी में यह पद **अँगरेजी** के 'व्हाइट लाई' के अनुकरण पर बना है, पर इसका आशय बिलकुल उलटा लिया जाने लगा है। वस्तुतः अँगरेजी में 'व्हाइट लाई' ऐसे झूठ को कहते हैं जो केवल औपचारिक रूप में प्रायः बोला जाता है और जिसमें किसी के अनिष्ट या छल-कपट का कुछ भी उद्देश्य नहीं होता।

सफेद पलका—पुं० [फा० सुफ़ैद+हिं० फलक] ऐसा कबूतर जिसके पर कुछ सफेद और काले हों।

सफेद-पोश—वि० [फा०] [भाव० सफेद-पोशी] १. साफ कपड़े पहननेवाला।

पुं० कुलीन और शिक्षित और सभ्य व्यक्ति।

सफेद सुरमा—पुं० [हिं०] चिरोड़ी नामक खनिज पदार्थ जो सफेद रंग का होता है। (जिप्सम)

सफ़ेद हाथी—पुं० [हिं०] १. बरमा में पाया जानेवाला सफ़ेद रंग का हाथी जो वहाँ बहुत पवित्र माना जाता है और जिससे कोई काम नहीं लिया जाता। २. ऐसा व्यक्ति विशेषतः वेतन-भोगी कर्मचारी, जिसपर व्यय तो बहुत अधिक पड़ता हो, पर जिसका उपयोग प्रायः बहुत कम या नहीं के समान होता हो। (व्हाइट एलिफ़ेन्ट)

सफ़ेदा—पुं० [फा० सुफ़ेदा] १. जस्ते का चूर्ण या भस्म जो दवा तथा लोहे, लकड़ी आदि की रँगाई में रंग में मिलने के काम में आती है। ३. एक प्रकार बढ़िया आम। ४. एक प्रकार का बड़ा और बढ़िया खरबूजा। ५. एक प्रकार का पाकवान जिसका प्रचलन मुसलमानों में है। ६. पंजाब और कश्मीर में होनेवाला एक बहुत ऊँचा और खंभे की तरह सीधा जानेवाला पेड़ जिसकी छाल का रंग सफ़ेद होता है। इसकी लकड़ी सजावट के समान बनाने के काम में आती है।

सफ़ेदी—स्त्री० [फा० सुफ़ेदी] १. सफ़ेद होने की अवस्था या भाव। श्वेतता। धवलता। २. बालों के सफ़ेद होने की अवस्था जो वृद्धावस्था की सूचक होती है।

मुहा०—सफ़ेदी आना=दाढ़ी मूँछें और सिर के बाल सफ़ेद होना। बुढ़ापा आना।

३. दीवारों आदि पर होनेवाली चूने के घोल की पोताई जिससे वे बिलकुल सफ़ेद हो जाती हैं। ४. सूर्य के निकलने के पहले का उज्ज्वल प्रकाश जो पूर्व दिशा में दिखाई पड़ता है।

सफ्तालू†—पुं०=शफ्तालू।

सबंध, सबंधक—वि० [सं०] जिसके लिए या जिसके संबंध में कोई बंध लिखा गया हो या कोई जमानत दी गई हो।

सब—वि० [सं० सर्व] १. अवधि, मान, मात्रा, विस्तार आदि के विचार से जितना है वह कुल। जैसे—(क) यहाँ सब दिन रोना पड़ा रहता है। (ख) सब खुशियाँ वह अपने साथ लेता गया। (ग) सब सामान उसके पास है। २. अंग, अंश, सदस्य आदि के विचार से हर एक। जैसे—वहाँ सब जा सकते हैं किसी के लिए मनाही नहीं है। ३. जोड़ के विचार से होनेवाला।

पद—सब मिलाकर=गिनती में जितना जोड़ हुआ है उसके विचार से। जैसे—सब मिलाकर उन्होंने १००००) विवाह में खर्च किये हैं।

सर्व० कुल व्यक्ति। जैसे—सब ने यही मत दिया।

वि० [अं०] १. किसी के आधीन रहकर उसी की तरह काम करनेवाला। जैसे—सब रजिस्ट्रार। २. किसी के अंतर्गत और गौण या छोटा। उप। जैसे—सब-डिवीज़न।

सबक—पुं० [फा० सबक] १. अध्ययन के समय उतना अंश जितना एक बार में पढ़ाया जाय। पाठ। २. नसीहत। शिक्षा।

क्रि० प्र०—मिलना।—सीखना।

सबकत—स्त्री० [अ० सबक़त] किसी विषय में औरों की अपेक्षा आगे बढ़ जाना। विशिष्टता प्राप्त करना।

सबज†—वि०=सब्ज।

सबद*—पुं० [सं० शब्द] १. शब्द। आवाज। २. किसी महात्मा की वाणी या भजन आदि। जैसे—कबीर जी के सबद, दादू दयाल के सबद।

सबदी—वि० [हिं० सबद] किसी साधु-महात्मा के सबद (वचन या आज्ञा) पर विश्वास रखनेवाला।

सबब—पुं० [अ०] १. कारण। वजह। हेतु। २. किसी प्रकार की क्रिया का द्वार या साधन। जैसे—कोई सबब निकालो तो यह काम हो।

सबर†—पुं० =सब्र।

सबरा—पुं० [?] वह औजार जिससे कसेरे टाँका लगाते हैं। बरतन में जोड़ लगाने का औजार।

† वि०=सब (पूरा या सारा)।

सबल—वि० [सं० अव्य० स०] [भाव० सबलता] १. जिसमें बहुत बल हो। बलवान्। बलशाली। ताकतवर। २. जिसकी सेना या सैनिक सबल हों।

सबा—स्त्री० [अ०] १. रास्ता। मार्ग। २. पूरब की ओर से आनेवाली अच्छी और ठंढी हवा जो प्रिय लगती है।

सबात—स्त्री० [अ०] १. स्थिरता। स्थायित्व। २. दृढ़ता। मजबूती।

सबार*—अव्य० [हिं० सबेरा] उचित समय से कुछ पहले ही।

सबील—स्त्री० [अ०] १. द्वार। साधन। २. उपाय। युक्ति।

क्रि० प्र० निकालना।

३. वह स्थान जहाँ लोगों को धर्मार्थ जल या शरबत पिलाया जाता हो। पौंसरा। प्याऊ।

क्रि० प्र०—बैठाना।—लगाना।

सबीह†—स्त्री०=शबीह।

सबुज†—वि०=सब्ज (हरा)।

सबुनाना—स० [हिं० साबुन] साबुन लगाना।

सबू—पुं० [फा० सुबू] १. मिट्टी का घड़ा। मटका। गगरी। २. शराब रखने का पात्र।

सबूत—पुं० [अ० सुबूत] वह चीज या बात जिससे कोई और बात साबित अर्थात् प्रमाणित होती हो। प्रमाण।

† वि०=साबूत (पूरा या सारा)।

सबून†—पुं०=साबुन।

सबूरा—पुं० [अ० सब्र] [स्त्री० अल्पा० सबूरी] काठ, कपड़े, चमड़े आदि का बना हुआ एक प्रकार का लंबा खंड जिससे कुँआरी, विधवा या पतिहीना स्त्रियाँ अपनी काम-वासना तृप्त करती हैं। (मुसल० स्त्रियाँ)

सबूरी—स्त्री० [अ० सब्र] १. संतोष। सब्र। **उदा०**—कहत कबीर सुनो भाई संतों साहब मिलत सबूरी में।—कबीर। २. किसी के द्वारा पीड़ित होने पर तथा असमर्थ या असहाय होने के कारण चुप-चाप बैठकर किया जानेवाला सब्र।

मुहा०—(किसी की) सबूरी पड़ना=किसी पीड़ित के उक्त प्रकार के सब्र के फलस्वरूप उत्पीड़क को दैवी गति से दंड मिलना या उसका कोई उपकार होना।

सबेरा—पुं०=सवेरा।

सब्ज—वि० [फा० सब्ज़] १. कच्चा और ताजा (फल, फूल आदि)।

मुहा०—(किसी को) सब्ज बाग दिखलाना=अपना काम निकालने या जाल में फँसाने के लिए भविष्य के संबंध में बड़ी बड़ी आशाएँ दिखलाना।

२. (रंग) हरा। हरित । ३. भला। शुभ । जैसे—सब्ज-बख्त=भाग्यवान् ।

सब्ज-कदम—वि० [फा० सब्ज+अ० कदम] जिसके कहीं पहुँचते ही कोई अशुभ घटना हो। जिसके चरण अशुभ हों। (उपहास और व्यंग्य)

सब्जा—पुं० [फा० सब्ज़ः] १. हरी घास और वनस्पति आदि। हरियाली। क्रि० प्र०—लहलहाना।

२. भंग। भाँग। विजया । ३. पन्ना नामक रत्न। ४. कान में पहनने का एक प्रकार का गहना। ५. घोड़े का एक रंग जिसमें सफेदी के साथ कुछ कालापन भी मिला होता है। ६. उक्त रंग का घोड़ा। ७. सौ रुपयों का नोट जो प्रायः सब्ज या हरे रंग की स्याही से छपा होता है। (बाजारू) जैसे—एक सब्जा उसके हाथ पर रखो तो काम हो जाय।

सब्जी—स्त्री० [फा०] १. सब्ज होने की अवस्था या भाव। हरापन। २. हरी घास और वनस्पति आदि। हरियाली। ३. हरी तरकारी। साग-सब्जी । ४. पकाई हुई तरकारी। जैसे—आलू-मटर की सब्जी।

सब्र—पुं० [अ०] १. वह मानसिक स्थिति जिसमें मनुष्य उत्तेजित, उत्पीड़ित, दुःखी या संतप्त किये जाने अथवा किसी प्रकार की विपत्ति या विलम्ब का सामना होने पर भी धीरे और शांत भाव से चुप रहता या सहन करता है। जैसे—(क) थोड़ा सब्र करो, समय आने पर उससे समझ लिया जायगा। (ख) अपमानित होने (या मार खाने) पर भी वह सब्र करके बैठ रहा।

मुहा०—सब्र आना=किसी का कुछ अनिष्ट करके अथवा बदला चुकाकर ही चुप या शांत होना। उदा०—मारा जमीं में गाड़ा, तब उसको सब्र आया।—कोई शायर। **सब्र कर बैठना या कर लेना**=चुपचाप और शांत भाव से सहन करते हुए कष्ट, हानि आदि का प्रतिकार न करना। **(किसी पर किसी का) सब्र पड़ना**=उत्पीड़क को उत्पीड़ित के सब्र के फलस्वरूप किसी प्रकार का दुष्परिणाम या प्रतिफल भोगना पड़ना। जैसे—तुम पर मेरा सब्र पड़ेगा, अर्थात् ईश्वर की ओर से तुम्हें इसका दुष्परिणाम भोगना पड़ेगा। **(किसी का) सब्र समेटना**—किसी को पीड़ित करने पर उसके सब्र के फल भोग का भागी बनना।

२. जल्दी, हड़बड़ी आदि छोड़कर धैर्य धारण करना। जैसे—सब्र करो, गाड़ी छूटी नहीं जाती है।

सब्रह्मचारी—पुं० [सं० अव्य० स०] वे ब्रह्मचारी जिन्होंने एक साथ एक ही गुरु के यहाँ रहकर शिक्षा प्राप्त की हो।

सभंग—वि० [सं०] जिसके खंड या टुकड़े किये गये हों। टूटा या तोड़ा हुआ। भग्न।

सभंग श्लेष—पुं० [सं०] साहित्य में, श्लेष अलंकार के दो मुख्य भेदों में से जो उस समय माना जाता है जब किसी शब्द या पद का भंग अर्थात् खंड या विच्छेद करके कोई दूसरा अर्थ निकाला या लगाया जाता है। यथा—भोगी ह्वै रहत बिलसत अपनी के मध्य कनकन जौरै दान पाठ परिवार है।—सेनापति। इसमें के 'कनकन' पद का भंग करने पर एक अर्थ होगा—'कनक न जौरै' का और दूसरा अर्थ होगा—कन कन जौरै का।

विशेष—इसका दूसरा और विपरीत भेद 'अभंग श्लेष' कहलाता है।

सभ†—वि०=सब।

सभय†—वि० [सं० अव्य० स०] १. डरा हुआ। भयभीत। २. जिसमें या जिससे भय की आशंका हो। भय-कारक। खतरनाक।

क्रि० वि० भयपूर्वक। डरते हुए।

सभर्तृका—वि० स्त्री० [सं० अव्य० स०] (स्त्री) जिसका पति जीवित हो। सधवा।

सभा—स्त्री० [सं०] १. एक स्थान पर बैठे हुए बहुत से भले आदमियों का समूह। परिषद्। समिति। जैसे—राज-सभा। २. सभ्य लोगों की वह मंडली जो किसी कार्य की सिद्धि या किसी विषय पर विचार, करने के लिए एकत्र हुई हो। जैसे—इसका निर्णय करने के लिए पंडितों की सभा की जानी चाहिए। ३. वह संस्था जो किसी विशिष्ट उद्देश्य या कार्य की सिद्धि के लिए संघटित हुई हो, और नियमित रूप से अपना कार्य करती हो। जैसे—नागरी प्रचारिणी सभा, विद्यार्थी सहायक सभा। ४. वैदिक काल की एक संस्था जिसमें कुछ लोग एकत्र होकर राजनीतिक, सामाजिक आदि विषयों पर विचार करते थे। ५. प्राचीन भारत में, उक्त प्रकार की संस्था का सदस्य। सभासद। सामाजिक। ६. जुआड़ियों का जमघट या समूह। ७. जूआ द्यूत। ८ झुंड। समूह। ९. घर। मकान।

सभाई—वि० [सं० सभा+हिं० आई (प्रत्य०)] सभा से संबंध रखनेवाला। सभा का। जैसे—विधान सभाई दल, हिंदू सभाई प्रतिनिधि।

सभाकक्ष—पुं० [सं० ष० त०] दे० 'प्रकोष्ठ'।

सभाग—वि० [सं०] १. जिसका हिस्सा हुआ हो। २. सामान्य। ३. सार्वजनिक।

वि० [सं० स+भाग्य] [स्त्री० सभागी] १. भाग्यवान्। खुशकिस्मत।

वि०=सुभग (सुन्दर)।

सभा-गृह—पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ सार्वजनिक सभाएँ या किसी बड़ी संस्था के अधिवेशन होते हों। (एसेम्बली हाउस)

सभाग्रणी—पुं० दे० 'सदन-नेता'।

सभा-चतुर—वि० [सं०] [भाव० सभा-चातुरी] १. वह जो सभा या शिष्ट समाज में बातचीत करने का अच्छा ढंग जानता हो। विशेषतः जो अपनी चतुराई से लोगों को अपने अनुकूल बना, प्रभावित और प्रसन्न कर सकता हो।

सभा-चातुरी—स्त्री० [सं० सभा-चतुर+हिं० ई (प्रत्य०)] सभा-चतुर होने की अवस्था गुण या भाव।

सभाचार—पुं० [सं०] १. वे आचरण और व्यवहार जिनका पालन करना किसी सभा में जाने पर आवश्यक तथा उचित माना जाता हो। २. समाज के रीति-रिवाज। ३. न्यायालयों में काम होने का ढंग या तरीका।

सभा-त्याग—पुं० [सं०] किसी सभा के कार्य या व्यवहार से असन्तुष्ट होकर उसके अधिवेशन से उठकर चले जाना। सदन-त्याग।

सभानेता—पुं० दे० 'सदननेता'।

सभापति—पुं० [सं०] किसी गोष्ठी या सार्वजनिक सभा के कार्यों के संचालन के लिए प्रधान रूप में चुना हुआ व्यक्ति। (प्रेसिडेन्ट)

विशेष—किसी समिति, संस्था आदि का स्थायी प्रधान अध्यक्ष कहलाता

है, जिसका कार्यालय उस समिति, संस्था आदि के विधान द्वारा नियत होता है, परन्तु सभापति अस्थायी होता है। किसी अधिवेशन के लिए ही चुना जाता है। फिर भी लोक-व्यवहार में दोनों शब्द एक दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त होते हुए देखे जाते हैं।

सभा-परिषद्—स्त्री०[सं०]१. बहुत से लोगों का एकत्र होकर साहित्य, राजनीति आदि से संबंध रखनेवाले किसी विषय पर विचार करना। २. उक्त कार्य के लिए बनी हुई परिषद् या सभा। ३. सभा-भवन।

सभार्यक—वि०=सपत्नीक।

सभावी—पुं०[सं० सभाविन्] सभिक।

सभासचिव—पुं०=सदन-सचिव।

सभासद—पुं०[सं०] वह जो किसी संस्था, समुदाय आदि का सदस्य हो। (मेम्बर)

सभिक—पुं० [सं०] वह जो लोगों को अपने यहाँ बैठाकर जूआ खेलाता हो। जूए खाने का मालिक।

सभीत*—क्रि० वि०[सं० स+भीति] डरते हुए। भयपूर्वक।

सभेय—वि० [सं० सभा+ढक्—एय] जो सभा या शिष्ट समाज के उपयुक्त हो।

पुं०१. विद्वान्। २. शिष्ट व्यक्ति। ३. वह जो सभा समाज में बैठ कर अच्छी तरह बातचीत कर सकता हो। सभा-चतुर।

सभ्य—वि० [सं० सभा+यत्] [भाव० सभ्यता] १. सभा से सम्बन्ध रखनेवाला। २. सभा, समाज आदि के लिए उपयुक्त। ३. अच्छे विचार रखने और भले आदमियों का सा व्यवहार करनेवाला। शिष्ट। ४. (काम या बात) जो भले आदमियों के उपयुक्त और शोभन हो। शिष्ट। (सिविल) जैसे—सभ्य व्यवहार।

पुं०१. वह जो किसी सभा, संस्था आदि का सदस्य हो। सभासद। २. भला आदमी।

सभ्यता—स्त्री०[सं०]१. सभ्य होने की अवस्था, गुण या भाव। २. किसी सभा या समाज की सदस्यता। २. शीलवान् और सज्जन होने की अवस्था और भाव। ४. आज-कल वे सब काम और बातें जो किसी जाति या देश के लोग प्रकृति पर विजय पाने और जीवन निर्वाह में सुगमता लाने के लिए भौतिक साधनों का उपयोग करते हुए आरंभ से अब तक करते आये हैं। किसी जाति या देश की बाह्य तथा भौतिक उन्नतियों का सामूहिक रूप। (सिविलिज़ेशन)

विशेष—सभ्यता और संस्कृति का अन्तर जानने के लिए दे० 'संस्कृति' का विशेष।

सभ्येतर—वि०[सं० पंच० त०] जो सभ्य न होकर उससे भिन्न हो। अर्थात् उजड्ड या बेशउर।

समंग—वि० [सं० ब० स०] सभी अंगों से युक्त पूर्ग।

समंगा—स्त्री० [सं० ब० स०—टाप्] १. मंजीठ। २. लजालू लज्जाती। ३. वराह क्रांता। गेंठी। ४. बला या बाला नामक ओषधि।

समंगिनी—स्त्री० [सं० समंग+इनि–ङीष्] बौद्धों की एक देवी।

समंगी (गिन्)—वि० [सं० समंगिन्–दीर्घ, नलोप] [स्त्री० समंगिनी] १. जिसके सभी अंग पूर्ण हों। २. सभी आवश्यक साधनों से युक्त। ३. जिसके सभी अंग समान हों।

समंचार†—पुं०=समाचार।

समंजन—पुं०[सं०] [वि० समंजनीय, भू० कृ० समंजित]१. एक चीज दूसरी चीज के साथ जोड़ना, बैठाना या मिलाना। २. यंत्रों के पुरजों आदि को ठीक तरह से यथा-स्थान बैठाना। ३. जमा-खर्च आदि का हिसाब यथास्थान ले जाकर ठीक और पूरा करना। लेखा-जोखा बराबर करना। (ऐडजस्टमेंट) ४. मेल मिलाना। ५. लेप करना या लगाना ६. मालिश करना। मलना।

समंजस—वि०[सं० ब० स०-अच] [भाव० सामंजस्य]१. उचित। ठीक। वाजिब। २. आस-पास की बातों, वस्तुओं आदि के साथ ठीक जान पड़ने या मेल खानेवाला। ३. किसी काम या बात का अभ्यस्त।

समंजित—भू० कृ०[सं०]१. जिसका समंजन हुआ हो। २. जो ठीक करके परिस्थितियों के अनुकूल या उपयुक्त किया अथवा बनाया गया हो। (एडजेस्टेड)

समंत—पुं०[सं०] किनारा। सिरा।

वि०१. समस्त। सारा। २. सार्वजनिक।

समंतदर्शी—वि० [सं० समन्तदर्शिन्] जिसे सब कुछ दिखाई देता हो। सर्वदर्शी।

पुं० गौतम बुद्ध।

समंत-पंचक—पुं०[सं०] कुरुक्षेत्र का एक नाम।

विशेष—कहा गया है कि परशुराम समस्त क्षत्रियों को मार कर उनके लहू से यहीं पाँच तालाब बनाए थे, और उन्हीं में लहू से उन्होंने अपने पिता का तर्पण किया था। इसी से इस स्थान का नाम समंत-पंचक पड़ा।

समंत-भद्र—पुं०[सं०] गौतम बुद्ध।

समंतर—पुं० [सं० ब० स०] १. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश। २. उक्त देश का निवासी।

समंतालोक—पुं० [सं० ब० स०] योग में ध्यान करने का एक प्रकार।

समंद—पुं० [फा०] १. बदामी रंग का ऐसा घोड़ा जिसका अयाल, दुम और पुट्ठे काले हों। २. घोड़ा। ३. अच्छा या बढ़िया घोड़ा।

समंदर—पुं०[फा०]एक कल्पित जंतु जो फारसी कवि-समय के अनुसार अग्निकुंड में उत्पन्न होता और उससे बाहर निकलने पर तुरन्त मर जाता है।

†पुं०=समुद्र।

सम–वि० [सं०] [स्त्री० समा, भाव० साम्य, समता] १. जो आदि से अंत तक प्रायः एक-सा चला गया हो। जिसमें कहीं बहुत उतार-चढ़ाव या हेर-फेर न हो। २. जिसका तल बराबर हो, ऊबड़-खाबड़ न हो। चौरस। ३. एक बराबर। तुल्य। समान। (इक्वल) यौ० के आरंभ में; जैसे—समकोण, समसीमांत। ४. (संख्या) जिससे दो से भाग देने पर शेष कुछ न बचे। जूस। (ईवेन) ५. सब। समस्त। ६. (किसी के) समान या बराबर। की तरह। के समान। जैसे—पुत्र-सम मानना।

पुं०१. संगीत में वह स्थान जहाँ लय के विचार से गति की समाप्ति होती है और जहाँ गाने-बजानेवालों का सिर हिलता या हाथ आप से आप आघात सा करता है। २. साहित्य में, एक अलंकार जिसमें स्थिति के ठीक अनुरूप किसी कार्य का अथवा रूप या नाम के अनुरूप

कार्यों, गुणों आदि का वर्णन होता है। (इक्वल) ३. ज्योतिष में, वह राशि जो सम संख्या पर पड़े। दूसरी, चौथी, छठी आदि राशियाँ। वृष, कर्कट, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन ये छः राशियाँ। ४. गणित में, वह सीधी रेखा जो उस अंक के ऊपर दी जाती है जिसका वर्गमूल निकालना होता है।

†पुं०=शम (शमन)।

पुं०[अ०] जहर। विष।

पुं० [फा० कसम] कसम। शपथ। सौगंध।

सम-अजिर—पुं०[सं०] प्राचीन भारत में, वह स्थान जहाँ जनसाधारण के मनोविनोद के लिए कुश्तियाँ, नाटक और तरह तरह के खेल होते थे।

सम-कक्ष—वि०[सं० ब० स०]१. कद के विचार से एक ही ऊँचाई वाले। २. अधिकार, पद, विद्या, संपत्ति, आदि के विचार से तुल्य। ३. सब बातों में किसी की बराबरी करनेवाला। जोड़ या बराबरी का।

समकक्ष सरकार—स्त्री०[सं०+फा०] वह नई सरकार जो किसी देश की पुरानी सरकार को अयोग्य या अवैध समझकर उसे नष्ट करने और उसका स्थान स्वयं ग्रहण करने के लिए बनाई या गठित की जाती है। (पैरेलल गवर्नमेंट)

समकना†—अ०=चमकना (चौंकना)।

समकर्णा—पुं०[सं० ब० स०]१. ज्यामिति में किसी चतुर्भुज के आमने सामने वाले कोणों के ऊपर की रेखाएँ। २. शिव। ३. गौतमबुद्ध।

समकालिक—वि०[सं०]१. (वे दो या कई काम या बातें) जो एक ही समय में या एक साथ घटित हों। युगपत्। (साइमल्टेनियस) २. दे० 'सम-कालीन'।

समकालीन—वि०[सं०] १. जो उसी काल या समय में जीवित अथवा वर्तमान रहा हो, जिसमें कुछ और विशिष्ट लोग भी रहे हैं। एक ही समय में रहनेवाले। जैसे—महाराणा प्रताप अकबर के समकालीन थे। २. जो उत्पत्ति, स्थिति आदि के विचार से एक ही समय में हुए हों। (कन्टेम्पोरेरी)

समकोण—वि०[सं० ब० स०] (त्रिभुज या चतुर्भुज) जिसके आमने सामने के दोनों कोण समान हों।

सम-कोणक—वि०=सम-कोण।

समक्रमण—पुं०[सं०] [भू० कृ० समक्रमित, कर्ता समक्रामक] एक से अधिक कार्यों या घटनाओं का एक ही समय में, पर भिन्न भिन्न स्थानों में घटित होना। समकालन। (सिंक्रोनाइज़ेशन)

सम-क्रमिक—वि०[सं०] [भाव० समक्रमिकता] (कार्य या घटनाएँ) जो एक ही समय में भिन्न भिन्न स्थानों पर घटित हुई हों। (सिंक्रोनस)

सम-क्रामक—वि०[सं०] समक्रमण करने या करनेवाला। (सिंक्रोनाइज़र)

सम-क्वाथ—पुं०[सं० कर्म० स०] वैद्यक में, वह क्वाथ या काढ़ा जिसका पानी आदि जलाकर आठवाँ भाग रह जाय।

समक्ष—अव्य०[सं०] १. आँखों के सामने। २. सामने। जैसे—अब वह कभी आप के समक्ष न आएगा।

समक्षता—स्त्री०[सं० समक्ष+तल्—टाप्]१. समक्ष होने की अवस्था या भाव। २. गोचर या दृश्य होने की अवस्था या भाव।

समग्र—वि०[सं०] [भाव० समग्रता] आदि से अन्त तक जितना हो, वह सब। समस्त। समूचा। सारा।

समग्री†—स्त्री०=सामग्री।

समचतुर्भुज—वि०[सं० ब० स०] (ज्यामिति में, क्षेत्र) जिसके चारों भुज या बाहु तो एक से लंबे हों, पर जो समकोणिक न हो। (रहॉम्बस) पुं० उक्त प्रकार की आकृति या क्षेत्र। (रहॉम्बस)

सम-चर—वि०[सं०] १. सदा समान व्यवहार करनेवाला। २. सब के साथ एक-सा आचरण करनेवाला।

समचार†—पुं०=समाचार।

सम-चित्त—वि०[सं०] जिसके चित्त की अवस्था सदा समान रहती हो। जिसका चित्त कभी दुःखी या क्षुब्ध न होता हो। समचेता।

समचेता (तस्)—वि० [सं०]=समचित।

समज—पुं० [सं०]१. वन। जंगल। २. पशुओं का झुंड।

†स्त्री०=समझ।

सम-जातिक—वि०[सं०] पारस्परिक विचार से एक ही जाति, प्रकार या वर्ग के। एक से। सह-जातिक। (होमोजीनिअस)

सम-जातीय—वि० [सं०] १. एक ही जाति के। सजातीय। २. दे० 'सम-जातिक'।

समज्ञा—स्त्री०[सं०]१. कीर्ति। यश। २. ख्याति। प्रसिद्धि।

समज्या—स्त्री०[सं०]१. प्राचीन भारत में, वह उत्सव जिसमें छोटे बड़े स्त्रियाँ-पुरुष सभी मिलकर तरह तरह के खेल-तमाशे करते और देखते थे। बाद में साधारण बोलचाल में इसी को समाज्य कहने लगे थे। २. बहुत से लोगों का समाज या समूह। सभा। जैसे—विद्वानों की समज्या में उनका यथेष्ट आदर हुआ था।

समझ—स्त्री०[सं० संबुद्धि, प्रा० समुज्झ] वह मानसिक शक्ति जिससे प्राणियों को देखकर मन में तर्क-वितर्क करके सब चीजों और बातों के अर्थ, आशय, भलाई, बुराई आदि का परिज्ञान होता है। अक्ल। बुद्धि। (इन्टलेक्ट)

पद—समझ में=ध्यान या विचार के अनुसार। ख्याल से। जैसे—हमारी समझ में तो यह बात ठीक नहीं जान पड़ती है।

समझदार—वि०[हिं० समझ+फा० दार (प्रत्य०)] [भाव० समझदारी] जिसमें अच्छी समझ हो। बुद्धिमान्। अक्लमंद।

समझदारी—स्त्री०[हिं० समझदार+ई (प्रत्य०)] समझदार होने की अवस्था, गुण या भाव।

समझना—अ०[हिं० समझ+ना (प्रत्य०)]१. वह जो कुछ सामने हो, उसे ध्यान में रखकर उसके आशय, प्रकार, स्वरूप आदि से अवगत होना। ठीक और पूरा ज्ञान प्राप्त करना। जैसे—पहले यह तो समझ लो कि बात क्या है। २. किसी बात का स्वरूप आदि देखकर उसके संबंध की दूसरी आवश्यक बातों का अनुमान या कल्पना करना। (डीम)

क्रि० प्र०—जाना।—पड़ना।—रखना।—लेना।

पद—समझ बूझकर=अच्छी तरह ज्ञान, परिचय आदि प्राप्त करके। सारी स्थिति अच्छी तरह जानकर। जैसे—**समझकर** मैंने ही तुम्हें वहाँ जाने से मना किया था।

मुहा०—(अपने आपको) कुछ समझना=अपने मन में यह अभिमान-पूर्ण भाव रखना कि हममें भी कुछ विशिष्ट योग्यता है।

३. किसी के व्यवहार के बदले में उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना। जैसे—कोई कहीं समझता है, कोई कहीं।

मुहा०—(किसी से) समझना या समझ लेना=(क) निपटारा या समझौता करना। जैसे—दोनों को आपस में समझ लेने दो। (ख) अनिष्ट, अपकार, अपमान आदि का उचित और उपयुक्त बदला लेना। जैसे—अच्छा हम भी तुमसे समझ लेंगे।

समझाना—स० [हिं० समझना का स०]१. शब्द, संकेत आदि के अर्थ से किसी को भली भाँति परिचित कराना। २. कोई बात अच्छी तरह किसी के मन में बैठाना। जैसे—न जाने इसे इसकी माँ ने क्या समझाकर यहाँ भेजा था।

समझावा—पुं०[हिं० समझना] समझने या समझाने की क्रिया या भाव।

समझौता—पुं० [हिं० समझना+औता (प्रत्य०)] १. लड़ाई-झगड़े, लेन-देन, विवाद आदि के संबंध में दो या अधिक पक्षों में होनेवाला ऐसा निपटारा या निर्णय जिसके अनुसार आगे निर्विरोध रूप में सब काम होते रहें। (कॉम्प्रोमाइज़) २. आपस में होनेवाला करार या निश्चय।

समत†—पुं०=संवत्।

सम-तट—पुं०[सं०]१. समुद्र के किनारे पर का प्रदेश। २. बंगाल के पूर्व का एक प्राचीन देश।

सम-तत्त्व—पुं० [सं०] वेदांत में अद्वैत और द्वैत दोनों से परे और भिन्न तत्त्व।

सम-तल—वि० [सं०] (पदार्थ) जिसका तल सम हो, ऊबड़-खाबड़ न हो। जिसकी सतह बराबर हो। हमवार। जैसे—समतल भूमि।

समतलन—पुं० [सं०] [भू० कृ० समतलित] किसी पदार्थ (जैसे—जमीन आदि) के ऊबड़-खाबड़ तल को सम या बराबर करने की क्रिया या भाव। चौरसाई। (लैवलिंग)

समता—स्त्री०[सं०]१. सम या समान होने का भाव। बराबरी। तुल्यता। (इक्वैलिटी)। २. ऐसी स्थिति जिसमें कोई अंग या पक्ष आनुपातिक दृष्टि से अनुपयुक्त, बेढंगा या भारी जान न पड़े। संतुलन।

सम-तोल—वि०[सं० सम+हिं० तोल (तौल)]भार, महत्त्व आदि के विचार से, एक बराबर। समान।

सम-तोलन—पुं०[सं०]१. भार, महत्त्व आदि के विचार से सब को समान रखना। २. दोनों पक्षों या पलड़ों को समान रखना। घटने-बढ़ने न देना। (बैलेंसिंग)

समत्थ†—वि०=समर्थ।

†पुं०=सामर्थ्य।

सम-त्रय—पुं०[सं० ष० त०] हर्रे, नागरमोथा, और गुड़ इन तीनों के समान भागों का समूह। (वैद्यक)

सम-त्रिभाजन—पुं०[सं०] [भू० कृ० समत्रिभक्त] किसी चीज को तीन बराबर भागों में काटना। (ट्राईसेक्सन)

सम-त्रिभुज—पुं०[सं० ब० स०] ऐसा त्रिभुज जिसके तीनों त्रिभुज बराबर या समान हों।

समत्व—पुं०[सं०] सम या समान होने की अवस्था या भाव। समता।

सम-थल—वि०=समतल (भूमि)।

समद—वि० [सं०]१. मद से मत्त। मतवाला। मस्त। २. प्रसन्न।

पुं०=समुद्र।

स-मदन—वि० [सं०] [स्त्री० समदना] प्रबल कामवासना से युक्त। कामातुर।

क्रि० वि० खुशी या प्रसन्नता से। उदा०—भेंटि घाट समदन कै फिरें नाड कै माथ।—जायसी।

समदन—पुं०[सं०] युद्ध। लड़ाई।

†स्त्री०[सं० हिं० समदना] उपहार भेंट।

समदना—अ०[सं० समद=प्रसन्न]१. प्रेमपूर्वक मिलना। भेंटना। २. आनन्द या खुशी मनाना।

स०१. उपहार या भेंट देना। २. किसी के साथ विवाह करना। ३. सपुर्द करना। सौंपना। ४. धरना। रखना।

स० [संवाद] संवाद या समाचार देना।

सम-दर्शन—पुं०[सं०] सब को एक समान समझना और सब कार्यों या बातों में एक सा भाव रखना।

वि०=समदर्शी।

समदर्शी (शिन्)—वि० [सं०] [स्त्री० समदर्शिनी] जो सब मनुष्यों, स्थानों, पदार्थों आदि को समान दृष्टि से देखता हो। किसी प्रकार का भेद-भाव न रखता हो। सब को एक सा देखने या समझनेवाला।

समदाना—स०[हिं० समझना]१. विवाह के बाद बहू को विदा करना या कराना। २. ठीक या दुरुस्त करना। ३. समदना।

समदावन—पुं० [हिं० समदना (विवाह करना)] एक प्रकार के गीत जो दुलहिन की विदाई के समय गाये जाते हैं। (मिथिला)

सम-दृष्टि—स्त्री०[सं०] ऐसी दृष्टि जो सब अवस्थाओं में और सब पदार्थों को देखने के समय समान रहे। समदर्शी की दृष्टि।

समद्वादशास्त्र—पुं०[सं०] बारह बराबर भुजाओंवाला क्षेत्र।

सम-द्विभाजन—पुं०[सं०] [भू० कृ० समद्विभाजित] किसी चीज को दो समान भागों में बाँटना या विभक्त करना। (बाई सेक्सन)

समद्विभुज—पुं० [सं०] ऐसा चतुर्भुज जिसकी प्रत्येक भुजा अपने सामनेवाले भुजा के समान हो। वह चतुर्भुज जिसके आमने-सामने के भुजाएँ बराबर हों।

समधाना†—स०=समदाना।

समधिक—वि० [सं०] १. जितना होना चाहिए, उससे अधिक या बढ़ा हुआ। (एक्सीडिंग) २. बहुत। अधिक।

समधिन—स्त्री०[हिं० समधी का स्त्री०] समधी की पत्नी। किसी के पुत्र या पुत्री की सास।

समधियाना—पुं०[हिं० समधी+इयाना]१. किसी की दृष्टि से उसके पुत्र या पुत्री की ससुराल। २. पुत्र या पुत्री के ससुरालवाले।

समधी—पुं० [सं० सम्बन्धी] [स्त्री० समधिन] सम्बन्ध के विचार से किसी के पुत्र या पुत्री के ससुर।

समधीन—वि०[सं० कर्म० स०] १. (व्यक्ति) जिसने अच्छी तरह अध्ययन किया हो। २. (विषय) जिसका किसी ने अच्छी तरह अध्ययन किया हो।

समधौस—पुं०[हिं० समधी] विग्रह की एक रसम जिसमें समधी परस्पर मिलते हैं। मिलनी।

सम-ध्वनि--पुं० [सं०] ऐसे शब्द जो उच्चारण या ध्वनि के विचार से तो एक हों पर जिनके अर्थ भिन्न भिन्न हों। (होमोनिम) जैसे--हिंदी मेल (मिलाप) और अँगरेजी 'मेल' (डाक) समध्वनिक हैं।

वि० (शब्द) जो भिन्नार्थक होने पर भी उच्चारण के विचार से समान ध्वनिवाले हों। (होमोनिमस)

समनंतर--वि०[सं०] ठीक बगलवाला। बिलकुल सटा हुआ। बराबरी का।

अव्य० अनंतर। उपरांत। बाद।

समन--वि० [सं० शमन] [स्त्री० समनि] शमन करनेवाला। पु० दे० 'शमन'।

स्त्री ०[फा०] चमेली का पौधा और फूल।

पुं०=सम्मन।

समनगा--स्त्री०[सं० ब० स०] १. बिजली। विद्युत्। २. सूर्य की किरण।

समनचार†--पुं०=समाचार।

समनीक--पुं०[सं०] युद्ध। लड़ाई।

समनुज्ञा--स्त्री० [सं० प्रा० स०] [भू० कृ० समनुज्ञात] १. अनुमति। २. दे० 'अनुज्ञा'।

समन्यु--पुं०[सं० अव्य० स०] शिव का एक नाम।

समन्वय--पुं०[सं०] १. समान रूप से मिलना। इस प्रकार मिलना कि एक इकाई बन जाय। २. एक को दूसरे में विलय करना। ३. परस्पर विरोध न होने की अवस्था या भाव। विरोध का अभाव। ४. कार्य और कारण का निर्वाह या संबंध। ५. वह अवस्था जिसमें कथनों या बातों का पारस्परिक भेद या विरोध दूर करके उनमें एकता या एकरूपता लाई जाती है।

समन्वित--भू० कृ०[सं०]१. जिसका समन्वय हुआ हो। २. किसी के साथ जुड़ा, मिला या लगा हुआ। ३. जिसमें कोई बाधा या रुकावट न हो।

समन्वेषक--वि०[सं०] समन्वेषण करनेवाला। (एक्सप्लोरेटर)

समन्वेषण--पुं०[सं०] [भू० कृ० समन्वेषित] १. अच्छी तरह किया जानेवाला अन्वेषण। २. आज-कल मुख्य रूप से, घूम-घूमकर ऐसे देशों, स्थानों आदि का पता लगाना जिन्हें लोग पहले न जानते रहे हों या जिनके संबंध में बहुत कम जानते हों। (एक्सप्लोरेशन)

सम-पद--पुं०[सं०] १. धनुष चलानेवालों का खड़े होने का एक ढंग जिसमें वे अपने दोनों पैर बराबर रखते हैं। २. संयोग का एक प्रकार का आसन या रतिबंध।

समपना†--स० सौंपना।

सम-पाद--वि०[सं०] (कविता या छंद) जिसके सब चरण बराबर या समान हों।

पुं०१. उक्त प्रकार का छंद या वृत्त।

२. दे० 'समपद'।

समप्पन†--पुं०=समर्पण।

समबुद्धि--वि०[सं०] जिसकी बुद्धि सुख और दुःख, हानि और लाभ सब में समान रहती हो।

सम-बाहु--वि०=समभुज।

समबोल--पुं०=समध्वनिक।

समभिहरण--पुं०[सं० प्रा० स०]=समापहरण।

समभिहार--पुं०[स० सम्-अभि √ हृ (हरण करना)+घञ्] १. किसी काम या बात के बार बार होने का भाव। २. अधिकता। ज्यादती।

सम-भुज--वि०[सं०] (क्षेत्र) जिसकी सब भुजाएँ बराबर या समान हों। सम-बाहु। (इक्विलेटरल्)

समभूमिक--वि०[सं०] समतल।

सममति--वि०[सं० ब० स०]=समबुद्धि।

सममित--वि० [सं०] [भाव० सम-मिति] जिसके अंगों में अनुपात और सुरूपता के विचार से पारस्परिक समानता और एकरूपता हो। सम-मिति से युक्त। (सिमेटिकल)

सममिति--स्त्री० [सं०] [वि० सममित] किसी मूर्त कृति या रचना के आकार, बनावट, मान आदि के भिन्न भिन्न अंगों में अनुपात और सुरूपता के विचार से होनेवाली आपेक्षिक और पारस्परिक एकरूपता। किसी वस्तु के भिन्न भिन्न अंगों का ठीक और समंजित विन्यास। (सिमेट्री)

समय--पुं०[सं०] [वि० सामयिक] १. सवेरे-संध्या या दिन-रात के विचार से काल का कोई मान। वक्त। २. अवसर। मौका। वक्त।

पद--समय विशेष पर=(क) किसी निश्चित समय पर। (ख) आनेवाले किसी ऐसे समय पर जबकि कोई बात हो सकती हो और जिसके संबंध में कोई विधान या व्यवस्था की गई हो। (फार दि टाइम बीइंग) **समय कुसमय**=(क) अच्छे या शुभ दिन और बुरे या संकट के दिन। (ख) उपयुक्त अवसर पर भी और अनुपयुक्त अवसर पर भी। मौके-बेमौके। **जैसे**--आप समय कुसमय अपना ही राग अलापते रहते।

३. अवकाश। फुरसत। खाली वक्त।

क्रि० प्र०--निकालना।

४. किसी काम या बात का नियत या निश्चित काल। जैसे--अब उसका समय आ गया था अतः उन्हें बचाने के लिए सब प्रयत्न विफल हुए। ६. आपस में होनेवाला किसी प्रकार का निश्चय, करार या समझौता। ७. कोई धार्मिक सामाजिक या प्रथा या परिपाटी। जैसे--कवि समय। (देखें) ८. सिद्धांत। ९. परिणाम। अंत। १०. प्रतिज्ञा। ११. शपथ। १२. आकृति। शकल। १३. ठहराव। समझौता। १४. आज्ञा। निर्देश। १५. भाषा। १६. इशारा। संकेत। १७. व्यवहार। १९. धन-दौलत। सम्पत्ति। १९. कर्तव्य-पालन। २०. घोषणा। २१. उपदेश। २२. कष्टों या दुखों का अंत या समाप्ति। २३. कायदा। नियम। २४. धर्म। २५. संन्यासियों, वैदिकों, व्यापारियों आदि के संघों में प्रचलित नियम। (स्मृति)

समय-क्रिया--स्त्री० [सं०] प्राचीन भारत में, शिल्पियों या व्यापारियों का परस्पर व्यवहार के लिए नियम स्थिर करना। (बृहस्पति)

समयज्ञ--वि०[सं०] [भाव० समयज्ञता] जो समय की प्रवृत्ति, स्थिति आदि का ज्ञान रखता हो। समय के अनुसार चलनेवाला।

पुं० विष्णु।

समय-निष्ठ--वि० [सं० ब० स०] [भाव० समय-निष्ठता, समय-निष्ठा] १. जो निश्चित समय का ध्यान रखकर ठीक उसी समय काम करता हो। २. अपने ठीक या निश्चित समय पर नियत रूप से होनेवाला। (पंक्चुअल)

समय-निष्ठता—स्त्री० [सं०] समय-निष्ठ होने की अवस्था या भाव। (पंक्चुएलिटी)

समय-बम—पुं० [सं०+अं० बाम्ब] वह विशेष प्रकार का बम (गोला) जिसमें ऐसी योजना होती है कि कहीं रखे जाने पर पहले से निर्धारित किये हुए समय पर वह आप से आप फूटकर अपना घातक कार्य करता है। (टाइम-बॉम्ब)

समय-संकेत—पुं० [सं०] वह नियत संकेत जो मुख्यतः यह सूचित करने के लिए होता है कि इस समय घड़ी के अनुसार बिलकुल ठीक समय यह है। (टाइम सिगनल) जैसे—दोपहर बारह बजे या रात आठ बजे का समय-संकेत।

समय-सारिणी—स्त्री० [सं० ष० त०] १. समय सूचित करने के लिए बनाई हुई सारणी। २. वह पुस्तिका जिसमें विभिन्न गाड़ियों के विभिन्न स्टेशनों पर पहुँचने तथा छूटने के समय का उल्लेख सारणियों में किया जाता है। (टाइम-टेबुल)

समय-सूची—स्त्री०=समय-सारिणी।

समयानंद—पुं० [सं० ब० स०] तांत्रिकों के एक भैरव।

समयानुवर्ती (र्तिन्)—वि० [सं० ष० त०] समय देखकर उसी के अनुसार चलनेवाला। (अपॉर्च्यूनिस्ट)

समयानुसार—वि० [सं० समय+अनुसार] जो समय की आवश्यकता देखते हुए उचित या ठीक हो।

अव्य० समय की उपयुक्तता या औचित्य का ध्यान रखते हुए।

समयानुसारी—वि० [सं०] प्रस्तुत समय को देखते हुए उसकी प्रथा या रीति के अनुसार काम करने या चलनेवाला।

समयुगल—पुं० [सं०] बौद्धकाल में, एक प्रकार का पटका (धोती या साड़ी) जो बराबर लंबाई के रंगोंवाले वस्त्रों को एक साथ सटाकर पहना या बाँधा जाता था।

समयोचित—वि० [सं० चतु० स०] जो प्रस्तुत समय की आवश्यकता देखते हुए उचित अर्थात् उपयुक्त और ठीक हो। कालोचित। (एक्सपीडिएन्ट)

समयोचितता—स्त्री० [सं०] समयोचित होने की अवस्था, गुण या भाव। कालोचितता। (एक्सपीडिएन्सी)

समर—पुं० [सं०] युद्ध। संग्राम। लड़ाई।

पुं० [सं० स्मर] १. कामदेव। २. काम-वासना। उदा०—सम-रस समर-सकोच बस बिबस न ठिक ठहराइ।—बिहारी।

पुं० [फा०] १. वृक्ष का फल। २. कार्य का परिणाम या फल।

समरकंद—पुं० [फा०] [वि० समरकंदी] तुर्किस्तान का एक इतिहास प्रसिद्ध नगर जो अमीर तैमूर की राजधानी था और अब उजबक (सोवियत) प्रजातंत्र के अंतर्गत है। उजबक प्रजातंत्र का एक सूबा।

सम-रज्जु—स्त्री० [सं० ब० स०] बीज-गणित में, वह रेखा जिससे दूरी या गहराई जानी जाती है।

सम-रत—पुं० [सं० ब० स०] कामशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का रति-बंध या आसन।

समरत्थ*—वि०=समर्थ।

समरना†—स०=सुमिरना।

†अ०=सँवरना।

समर-भूमि—स्त्री० [सं०] युद्ध-क्षेत्र। लड़ाई का मैदान।

समरशायी—वि० [सं० समरशायिन्] जो युद्ध में मारा गया हो। वीरगति को प्राप्त।

सम-रस—वि० [सं०] [भाव० समरसता] १ (पदार्थ) जिसमें एक ही प्रकार का रस या स्वाद हो। २. (व्यक्ति) जो सदा एक ही प्रकार की मानसिक स्थिति में रहता हो। जो न तो कभी क्रोध करता हो और न असाधारण रूप से प्रसन्न होता हो। सदा एक-सा रहनेवाला। ३. (परस्पर ऐसे पदार्थ या व्यक्ति) जो एक ही प्रकार या विचार के हों। जिनके गुण, प्रकृति आदि में कोई अन्तर न हो।

समरांगण—पुं० [सं० कर्म० स०, ष० त०] लड़ाई का मैदान। युद्ध-क्षेत्र।

समरा—पुं० [अ० समरः] नतीजा। परिणाम। फल।

समराजिर—पुं० [सं० कर्म० स०] युद्ध-क्षेत्र।

समराना*—स० हिं० 'समरना' का स०।

समर्घ—वि० [सं०] [भाव० समर्घता] कम दाम का। सस्ता।

समर्चक—वि०, पुं० [सं० सम्√अर्च् (पूजा करना)+ण्वुल्–अक] समर्चन या पूजा करनेवाला।

समर्चन—पुं० [सं० सम्√अर्च् (पूजा करना)+ल्युट्-अन] अच्छी तरह अर्चन या पूजा करने का काम।

समर्चना—स्त्री० [सं०]=समर्चन।

समर्थ—वि० [सं० सम्√अर्थ् (गत्यादि)+अच्] [भाव० समर्थता, सामर्थ्य] १. शक्तिशाली। २. जो कोई काम सम्पादित करने की शक्ति या योग्यता रखता हो। आर्थिक, मानसिक या शारीरिक बल से कुछ कर सकने के योग्य। ३. अनुभव, प्रशिक्षण आदि द्वारा जिसने किसी पद के कर्तव्यों का निर्वाह करने की योग्यता प्राप्त कर ली हो। ४. लंबा। चौड़ा। प्रशस्त। ५. अभिलषित। ६. युक्ति-संगत।

समर्थक—वि० [सं० समर्थ+कन्] १. जो समर्थन करता हो। समर्थन करनेवाला। २. पुष्टि या पोषण करनेवाला।

वि०=समानार्थक।

पुं० चन्दन की लकड़ी।

समर्थता—स्त्री० [सं०] समर्थ होने की अवस्था, गुण या भाव। सामर्थ्य। शक्ति। ताकत।

समर्थन—पुं० [सं० सम्√अर्थ् (गत्यादि)+ल्युट्-अन] किसी के प्रस्ताव, मत, विचार के संबंध में यह कहना कि इससे हमारी भी सहमति है। अनुमोदन। (सेकैंडिंग)

समर्थनीय—वि० [सं० सम्√अर्थ् (गत्यादि)+अनीयर्] जिसका समर्थन किया जा सकता हो या हो सकता हो।

समर्थित—भू० कृ० [सं० सम्√अर्थ् (गत्यादि)+क्त] १. जिसका समर्थन किया गया हो। समर्थन किया हुआ। २. जिसका अच्छी तरह विवेचन हुआ हो। विवेचित। ३. स्थिर किया हुआ। निश्चित। ४. जिसकी संभावना हो। संभावित।

समर्थ्य—वि० [सं० सम्√अर्थ् (गत्यादि)+यत्-व्यत्] जिसका समर्थन किया जा सके या किया जाने को हो।

समर्द्धक—पुं० [सं० सम्√ऋध् (बढ़ना)+ण्वुल्-अक] वरदान देनेवाले, देवता आदि।

समर्पक—वि० [सं० सम्√अर्प् (देना)+णिच्-ण्वुल्-अक] [स्त्री० समर्पिका] १. जो समर्पण करता हो। समर्पण करनेवाला। २. कहीं पहुँचाने के लिए कोई माल देने या भेजनेवाला। परेषक। (कन्साइनर) ३. (काम या बात) जिससे कोई दूसरा काम या बात ठीक तरह से पूरी हो सके या उद्देश्य सिद्ध हो सके। जैसे—समर्पक व्याख्या।

समर्पण—पुं० [सं०] [भू० कृ० समर्पित, वि० समर्पणीय, सामर्प्य; कर्ता समर्पक] १. किसी को आदरपूर्वक कुछ देना। भेंट या नजर करना। २. धर्म-भाव से या श्रद्धाभक्ति पूर्वक कुछ कहते हुए अर्पित करना। (डेडिकेशन) ३. अपना अधिकार, स्वामित्व, भार आदि किसी दूसरे के हाथ में देना। सौंपना। ४. युद्ध, विवाद आदि बंद करके अपने आपको शत्रु या विपक्षी के हाथ में सौंपना। (सरेन्डर, अंतिम दोनों अर्थों में) ६. वैष्णवों में किसी भक्त को भगवान् के विग्रह के सामने उपस्थित करके उसे नियमित रूप से आचारवान् भक्त या वैष्णव बनाना। ७. स्थापित करना। स्थापना। ८. दे० 'आत्मसमर्पण'।

समर्पण-मूल्य—पुं० [सं०] आधुनिक अर्थ-शास्त्र में, वह धन जो बीमा करनेवाले को अवधि पूरी होने से पहले ही अपना बीमा रद्द कराने या बीमा पत्र लौटा देने पर मिलता है। (सरेन्डर वैल्यू)

समर्पणी—पुं० [सं० समर्पण] वह जो भगवान् का पूरा भक्त और आचारवान् वैष्णव बन गया हो। विशेष दे० 'समर्पण'।

समर्पना*—स० [सं० समर्पण] १. समर्पण करना। २. सौंपना।

समर्पित—भू० कृ० [सं० सम्√अर्प् (देना)+क्त] १. जो समर्पण किया गया हो। समर्पण किया हुआ। २. स्थापित।

समर्प्य—वि० [सं० सम्√अर्प् (देना)+णिच्-यत्] जो समर्पण किया जा सके या किया जाने को हो। समर्पण किये जाने के योग्य।

समर्याद—वि० [सं० अव्य० स०] १. मर्यादा-युक्त। २. अच्छे आचरण-वाला। सदाचारी।

अव्य० निकट। पास। समीप।

स-मल—वि० [सं०] १. मल से युक्त। २. मलिन। मैला।

समल—पुं० [सं० अव्य० स०] मल। विष्ठा। पुरीष। गू।

सम-लिंगी-रति—स्त्री० [सं०] यौन विज्ञान तथा लोक में, कामवासना की वह तृप्ति जो पु ष किसी अन्य पुरुष (मुख्यतः बालक) के साथ अथवा स्त्री किसी दूसरी स्त्री के साथ संभोग करके करती है।

समली—स्त्री० [सं० श्यामली ?] चील।

समवकार—पुं० [सं०] रूपक का एक भेद जिसमें देवासुरों के संग्राम या संघर्ष से सम्बन्ध रखनेवाले वीरतापूर्ण कार्यों का उल्लेख होता है। इसमें तीन अंक होते हैं।

समवतार—पुं० [सं० सम्-अव√तॄ (पार करना)+घञ्] १. उतरने की जगह। उतार। २. उतरने की क्रिया। अवतरण।

समवयस्क—वि० [सं०] [भाव० समवयस्कता] समान वय या अवस्था-वाला।

समवरोध—पुं० [सं०] [भू० कृ० समवरुद्ध, कर्ता समवरोधक] चारों ओर से अच्छी तरह रोकना।

समवर्गी—वि० [सं०] १. वे जो किसी एक वर्ग के अंतर्गत हों या गिनाये गये हों। २. दे० 'संश्रित'।

समवर्तन—पुं० [सं०] आवश्यकता, उपयोगिता आदि के विचार से किसी वस्तु का ठीक या यथोचित रूप में होनेवाला विभाजन या संचार। समान वर्तन या व्यवहार। जैसे—शरीर में शर्करा का ठीक तरह से सम वर्तन न होने पर रक्त विषाक्त होने लगता है।

समवर्ती—वि० [सं०] १. जो समान रूप से स्थित रहता हो। २. जो पास ही स्थित हो।

पुं० यमराज का एक नाम।

समवलंब—पुं० [सं० ब० स०] ऐसा चतुर्भुज जिसकी दोनों लंबी रेखाएँ समान हों।

समवसरण—पुं० [सं० सम्-अव√सृ (गत्यादि)+ल्युट्-अन] वह स्थान जहाँ किसी प्रकार का धार्मिक उपदेश होता हो।

समवाक—पुं० [सं०] सम-ध्वनिक। (दे०)

समवाय—पुं० [सं०] [भाव० समवायत्व, समवायता] १. समूह। झुंड। २. ढेर। राशि। ३. मेल। संयोग। ४. आपस में होनेवाला अभेद्य घनिष्ठ और नित्य संबंध। ५. न्यायदर्शन में, तीन प्रकार के संबंधों में ऐसा संबंध जो सदा एक सा बना रहता हो और जिसमें कभी अंतर न पड़ता हो। नित्य संबंध। जैसे—अंग और अंगी अथवा गुण और गुणी में समवाय संबंध होता है। ६. कोई ऐसा संबंध जो सदा एक सा बना रहता हो। ७ कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार बनी हुई वह व्यापारिक संस्था जिसके हिस्सेदारों को अपनी लगाई पूँजी के अनुपात से नफे या लाभ का अंश मिलता हो। (कम्पनी)

समवायिक—वि० [सं० समवाय+ठक्-इक] १. समवाय सम्बन्धी। समवाय का।

समवायी (यिन्)—वि० [सं०] १. किसी के साथ समवाय संबंध रखने-वाला। २. जो इकट्ठा करके ढेर के रूप में लगाया हो।

पुं० १. अंग। अवयव। २. साझेदार। हिस्सेदार।

सम-वृत—पुं० [सं० त० त०] ऐसा छंद जिसके चारों चरण समान हों।

समवेग—पुं० [सं०] कृष्ण के रथ का घोड़ा।

समवेत—वि० [सं० सम्-अव√इण् (गत्यादि)+क्त] १. एक जगह इकट्ठा किया हुआ। एकत्र। २. जमा किया हुआ। संचित। ३. किसी वर्ग या श्रेणी से मिलाया या लाया हुआ। ४. संबद्ध।

समवेतन—पुं० [सं०] १. समवेत होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. आजकल बालचरों, अनुयायियों, सैनिकों आदि का एक स्थान पर जमा होना। (रैली)

सम-व्यूह—पुं० [सं० ब० स०] प्राचीन भारत में, ऐसी सेना जिसमें २२५ सवार, ६७५ सिपाही तथा इतने ही घोड़े और रथ होते थे।

सम-शंकु—पुं० [सं० ब० स०] ठीक मध्याह्न का समय।

समशीतोष्ण कटिबंध—पुं० [सं० समशीतोष्ण-ब० स०, कटिबन्ध कर्म० स०] भूमध्य रेखा और उष्णकटिबंध के मध्य में पड़नेवाले प्रदेश। (टेम्परेट ज़ोन)

समशील—वि० [सं०] शील, स्वभाव, प्रकृति आदि के विचार से एक ही तरह के। समान।

समष्टि—स्त्री० [सं० सम्√अश् (व्याप्त होना)+क्तिन्] १. जितने हों, उन सब का सम्मिलित या सामूहिक रूप। वह रूप या स्थिति जिसमें सभी अंगों, व्यष्टियों या सदस्यों का अंतर्भाव या समावेश हो। 'व्यष्टि' का विपर्याय। २. साधु-संन्यासियों आदि का ऐसा

भंडारा या भोज जिसमें सभी स्थानिक साधु-संन्यासी आदि निमंत्रित किये गये हों।

समष्टि-निगम--पुं० [सं] ऐसा निगम जो समष्टि या समुदाय पर आश्रित हों, अथवा बहुतों या सब के सहयोग से काम करता हो, या चलता हो। (एग्रिगेट कारपोरेशन)

समष्टिवाद--पुं० [सं०] आधुनिक साम्यवाद की वह शाखा जिसका सिद्धांत यह है कि सभी पदार्थों के उत्पादन और वितरण का सारा अधिकार समष्टि रूप से सारे राष्ट्र के हाथ में रहना चाहिए। (कलेक्टिविज़्म)

समष्टिवादी--वि० [स०] समष्टिवाद सम्बन्धी। समष्टिवाद का। पुं० समष्टिवाद का अनुयायी या समर्थक।

समष्ठिल--पुं० [सं० सम्√स्था (ठहरना)+इलच्] कोकुआ नाम का कँटीला पौधा। २. गंडीर या गिंडिनी नाम का साग।

समष्ठिला--स्त्री० [सं० समष्ठिल+टाप्] १. समष्ठिल। कोकुआ। २. जमींकद। सूरन। ३. गिंडिनी नामक साग।

समक्ष†--वि०=समक्ष।

सम-संधि--स्त्री० [सं० कर्म० स०] प्राचीन भारतीय राजनीति में, ऐसी सन्धि जिसमें सन्धि करानेवाले राजा या राष्ट्र आपत्काल में अपनी पूरी शक्ति के साथ सहायता करने को तैयार हों। (कौ०)

सम-समुन्नत--वि० [सं०] [भाव० सम-समुन्नति] १. जो थोड़ी थोड़ी दूरी पर, एक के बाद एक करके पहलेवाले धरातल से बराबर कुछ और ऊँचा होता जाता हो। २. जो कुछ रह रहकर सीढ़ियों की तरह बराबर अधिक ऊँचा होता जाता हो। सीढ़ीनुमा। (टेरेस-लाइक)

सम-सर (सरि)*--वि० [सं० सम+हिं० सर (सदृश)] तुल्य। बराबर। समान। उदा०--मोंहि समसारि पापी।--कबीर। स्त्री० बराबरी। समता। उदा०--...उपमा समसरि है न।--नागरीदास।

सम-सामयिक--वि० [सं०] समकालीन। (दे०)

समस्त--वि० [सं०] [भाव० समस्तता] १. आदि से अंत तक जितना हो, वह सब। कुल। पूरा। (होल) जैसे--समस्त भारत, समस्त संसार। २. किसी के साथ जुड़ा, मिला या लगा हुआ। संयुक्त। ४. (व्याकरण में पद या शब्द-समूह) जो समास के नियमों के अनुसार मिलकर एक हो गया हो। समास-युक्त। (कम्पाउंड)

समस्तिका--स्त्री० [सं० समस्त से] कथन, लेख आदि का संक्षिप्त रूप या सारांश। (एब्सट्रैक्ट)

सम-स्थली--स्त्री० [सं० कर्म० स०] गंगा और यमुना के बीच का देश। अंतर्वेद।

समस्य--वि० [सं० सम्√अस् (होना)+ण्यत्-क्यब् वा] १. जो किसी के साथ मिलाया जा सके या मिलाया जाने को हो। २. (पद या शब्द) जिन्हें व्याकरण के अनुसार समास के रूप में मिलाया जा सकता हो।

समस्यमान्--वि० [सं०] (व्याकरण में वह पद) जो किसी दूसरे पद के साथ मिलकर समस्त पद बनाता हो या बना सकता हो।

समस्या--स्त्री० [सं० समस्य-टाप्] १. मिलने की क्रिया या भाव। मिलन। २. मिश्रण। संघटन। ३. उलझनवाली ऐसी विचारणीय बात जिसका निराकरण सहज में न हो सकता हो। कठिन या विकट प्रसंग। (प्रॉब्लेम) ५. छंद, श्लोक आदि का ऐसा अंतिम चरण या पद जो काव्य-रचना के कौशल की परीक्षा करने के लिए इस उद्देश्य से कवियों के सामने रखा जाता है कि वे उसके आधार पर अथवा उसके अनुरूप पूरा छंद या श्लोक प्रस्तुत करें।

क्रि० प्र०--देना।--पूर्ति करना।

समस्या-पूर्ति--स्त्री० [सं० ष० त०] साहित्यिक क्षेत्र में, किसी समस्या के आधार पर कोई छंद या श्लोक बनाकर तैयार करना।

समह†--अव्य० [सं० समस्त] साथ। संग।

समहर†--पुं० =समर (युद्ध)। उदा०--मारु परधर मारका ठहरे समहर ठौड़।--बाँकीदास।

†वि०=सम-थल।

समहित--पुं० [सं०] वह स्थिति जिसमें अनेक देश या राष्ट्र प्रायः एक से विचार रखते हों, एक ही तरह के स्वार्थों का ध्यान रखते हों और अनेक विषयों में एक ही नीति के अनुसार मिलकर चलते हों। (एन्टेन्ट)

समाँ--पुं० [सं० समय] १. समय। वक्त।

मुहा०--समाँ बंधना=(संगीत आदि कार्यों का) इतनी उत्तमता से सम्पन्न होता रहना कि सभी उपस्थित लोग स्तब्ध हो जायँ, और ऐसा जान पड़े कि मानों समय भी उसका आनंद लेने के लिए ठहर या रुक गय है।

विशेष--आशय यही है कि लोगों को यह पता नहीं चलने पाता कि इतना अधिक समय कैसे बीत गया।

२. ऋतु। ३. जमाना। युग। जैसे--आज-कल ऐसा समाँ आ गया है कि कोई किसी की नहीं सुनता। ४. अवसर। मौका। ५. सुंदर और सुहावना दृश्य। उदा०--अजब गंगा के बहने का समाँ है।--नजीर बनारसी।

समांग--वि० [सं० सम+अंग] जिसके सब अंग या तत्त्व एक-से अथवा एक ही प्रकार के हों। 'विषमांग' का विपर्याय। (होमोजीनियस)

समांजन--पुं० [सं०] सुश्रुत के अनुसार आँखों में लगाने का एक प्रकार का अंजन।

समाँण†--पुं० [सं०] १. श्मशान। २. शव। (राज०)

वि०=मसान।

समांत--पुं० [सं० ष० त०] १. वर्ष का अन्त। २. पड़ोसी।

समांतक--पुं० [सं० समांत+कन्] कामदेव।

समांशिक--वि० [सं० समांश+ठन्-इक] १. समान भागोंवाला। २. समान अंग या भाग पानेवाला।

समा--स्त्री० [सं०] १. वर्ष। साल। उदा०--राका राज जरा सारा मास मास समा समा।--केशव। २. ग्रीष्म ऋतु।

वि० सं० 'सम' का स्त्री०। जैसे--कामिनी समा=कामिनी के समान।

† पुं० दे० 'समाँ'।

समाअत--स्त्री० [अ०] १. सुनने की क्रिया या भाव। २. ध्यान देने या विचार करने के लिए अवधानपूर्वक सुनने की क्रिया या भाव। जैसे--फरियाद की समाअत, मुकदमे की समाअत।

समाई--स्त्री० [हिं० समान+आई (प्रत्य०)] १. समाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. वह अवकाश जिसमें कोई चीज समाती हो।

जैसे—इस घर में पंद्रह आदमियों की समाई नहीं हो सकती। ३. धारण करने की गुंजाइश तथा समर्थता। जैसे—जिसकी जितनी समाई होगी, वह उतना ही खरच करेगा।

समाउ†—पुं०=समाई।

समाकर्षण—पुं० [सं०] [भू० कृ० समाकर्षित, समाकृष्ट] विशेष रूप से होनेवाला आकर्षण। खिंचाव।

समाकलन—पुं० [सं०] [भू० कृ० समाकलित] एक ही तरह की बहुत सी इकट्ठी की हुई चीजों का मिलान करके देखना कि उनका क्रम या व्यवस्था ठीक है या नहीं। (कोल्लेशन)

समाकार—वि० [सं० कर्म० स०] जो आकार के विचार से आपस में समान हों।

समाकुल—वि० [सं० सम्-आ√कुल् (बन्धु आदि)+अच्] बहुत अधिक आकुल या घबराया हुआ।

समाक्षार—पुं० [सं०] उन पदार्थों का वर्ग या समूह जो किसी अम्ल या खट्टे पदार्थ के साथ मिलकर लवण और जल बनाते हैं।

समाख्या—स्त्री० [सं० सम्-आ√ख्या (ख्यात होना)+अङ] १. यश। कीर्ति। २. आख्या। नाम। संज्ञा।

समागत—भू० कृ० [सं०] १. आया हुआ। जैसे—समागत अतिथि। २. जो आकर सामने उपस्थित या घटित हुआ हो। जैसे—समागत परिस्थिति, समागत प्रसंग।

समागता—स्त्री० [सं० समागत-टाप्] एक तरह की पहेली जिसका अर्थ पदों का सन्धि-विच्छेद करने पर निकलता है।

समागति—स्त्री० [सं० सम्-आ√गम् (जाना)+क्तिन्] १. समागत होने की अवस्था या भाव। आगमन। २. आकर मिलना। योग।

समागम—पुं० [सं०] १. पास या सामने आना। पहुँचना। २. बहुत से लोगों का एक स्थान पर एकत्र होना। जैसे—संतों का या साहित्यकारों का समागम। ३. स्त्री-प्रसंग। संभोग। मैथुन।

समाघात—पुं० [सं० सम्-आ√हन् (मारना)+घञ् कुत्व, न=त] १. युद्ध। लड़ाई। २. वध। हत्या।

समाचरण—पुं० [सं०] [भू० कृ० समाचरित] १. अच्छा, ठीक या शुद्ध आचरण। २. कार्य या व्यवहार करना। आचरण। ३. कार्य का सम्पादन।

समाचरना*—स० [सं० समाचरण] (किसी का) आचरण या व्यवहार करना।

अ० १. आचरण या व्यवहार के रूप में होना। २. व्याप्त या संचरित होना। उदा०—(क) ऐसी बुधि समचरी घर माँहि तिआहीं।—कबीर। (ख) समाचरे उसको मेरा ही सोदर निस्संकोच अहो।—मैथिलीशरण।

समाचार—पुं० [सं०] १. आगे बढ़ना। चलना। २. अच्छा आचरण या व्यवहार। ३. (मध्य और परवर्ती काल में) किसी कार्य या व्यापार की सूचना। उदा०—समाचार मिथिलापति पाए।—तुलसी। ४. ऐसी ताजी या हाल की घटना की सूचना जिसके संबंध में पहले लोगों को जानकारी न हो। (न्यूज़) ५. हाल-चाल। ६. कुशल-मंगल।

समाचार-पत्र—पुं० [सं० ष० त०, समाचार+पत्र] १. नियमित समय पर प्रकाशित होनेवाला वह पत्र जिसमें अनेक प्रदेशों, राष्ट्रों आदि से संबंधित समाचार रहते हों। खबर का कागज। अखबार। (न्यूज़-पेपर) २. उक्त प्रकार के सभी पत्रों का वर्ग या समूह।

समाच्छन्न—वि० [सं०] ऊपर या चारों ओर से पूरी तरह छाया या ढका हुआ।

समाच्छादन—पुं० [सं०] [भू० कृ० समाच्छादित] ऊपर या चारों ओर से अच्छी तरह छाया या ढका हुआ।

समाज—पुं० [सं०] १. बहुत से लोगों का गरोह या झुंड। समूह। जैसे—सत्संग समाज। २. एक जगह रहनेवाले अथवा एक ही प्रकार का काम करनेवाले लोगों का वर्ग, दल या समूह। समुदाय। ३. किसी विशिष्ट उद्देश्य से स्थापित की हुई सभा। जैसे—आर्य समाज, संगीत समाज। ४. किसी प्रदेश या भूखंड में रहनेवाले लोग जिनमें सांस्कृतिक एकता होती है। ५. किसी सम्प्रदाय के लोगों का समुदाय। जैसे—अग्रवाल समाज। (सोसाइटी, उक्त सभी अर्थों में)। ६. प्राचीन भारत का समज्या (देखें) नामक सार्वजनिक उत्सव। ७*. आयोजन। तैयारी। उदा०—वेगि करहु बन गवन समाजू।—तुलसी।

समाजत—स्त्री० [अ०] १. शरमिन्दगी। लज्जा। २. विनय। ३. निवेदन। प्रार्थना।

समाजवाद—पुं० [सं०] यह आर्थिक तथा राजनीतिक विचार-प्रणाली कि सत्ता तथा स्वामित्व व्यक्तिगत हाथों में नहीं रहना चाहिए, बल्कि समष्टिक या सामूहिक रूप से समाज में निहित रहना चाहिए। (सोशलिज़्म)

विशेष—समाजवाद प्रतिस्पर्धा के स्थान पर सहकारिता को, मुनाफाखोरी के स्थान पर लोकहित तथा समाज सेवा की भावना को प्रधानता देना चाहता है, और धन के वितरण में आज जैसी विषमता है उसे बहुत कुछ कम करना चाहता है।

समाजवादी—वि० [सं०] समाजवाद-संबंधी। समाजवाद का।

पुं० वह जो समाजवाद का अनुयायी या समर्थक हो। (सोशलिस्ट)

समाज-शास्त्र—पुं० [सं०] वह आधुनिक शास्त्र जिसमें मनुष्य को सामाजिक प्राणी मानकर उनके समाज और संस्कृति की उत्पत्ति, विकास, संघटन और समस्याओं आदि का विवेचन होता है। (सोशियालॉजी)

समाज-शास्त्री—पुं० [सं०] वह जो समाज-शास्त्र का अच्छा ज्ञाता हो।

समाजशील—वि० [सं०] समाज के सदस्यों अर्थात् लोगों से बराबर मिलता-जुलता रहनेवाला। (सोशिअल)

समाज-सुधार—पु० [सं०] मानव समाज अथवा किसी देश में रहनेवाले समाज में फैली हुई कुरीतियाँ, दुर्गुण, दोष आदि दूर करके उन्हें सुधारने का प्रयत्न। (सोशल रिफ़ार्म)

समाज-सुधारक—पुं० [सं०] वह जो मानव-समाज के दुर्गुणों, दोषों आदि को दूर करने का प्रयत्न करता हो। (सोशल रिफ़ार्मर)

समाजी—वि० [सं० समाज] समाज-सम्बन्धी। समाज का।

पुं० वह जो वेश्याओं, गाने-बजानेवाली मंडलियों आदि के साथ रहकर तबला, सारंगी या ऐसा ही और कोई साज बजाता हो। साजिन्दा।

पुं०=आर्य-समाजी।

समाजीकरण—पुं० [सं०] किसी काम, बात या व्यवहार को ऐसा रूप देना कि उस पर समाज का अधिकार या स्थापत्य हो जाय और सब लोग समान रूप से उसका लाभ उठा सकें। (सोशलाइज़ेशन)

समाज्ञप्त—वि० [सं० सम्-आ√ज्ञप् (बताना)+क्त] जिसे समाज्ञा दी गई हो या मिली हो।

समाज्ञा—स्त्री० [सं०] १. आज्ञा। आदेश। २. नाम। संज्ञा। ३. कीर्ति। यश।

समाता (तृ)—स्त्री० [सं० ष० त०] ऐसी स्त्री जो माता के समान हो। २. सौतेली माँ। विमाता।

समातृक—वि० [सं०] [स्त्री० समातृका] जिसके साथ उसकी माता भी हो।

अव्य० माता के साथ।

समातृका—वि० स्त्री० [सं०] (वेश्या) जो किसी खाला या वृद्धा कुटनी के साथ और उसकी देख-रेख में रहती हो।

समादर—पुं० [सं० सम्-आ√दृ (आदर करना)+अप्] अच्छा और उचित आदर। सम्मान। खातिर।

समादरणीय—वि० [सम्-आ√दृ (आदर करना)+अनीयर्] जिसका समादर करना आवश्यक और उचित हो। समादर का अधिकारी या पात्र।

समादान—पुं० [सं० सम्-आ√दा (देना)+ल्युट्-अन] १. पूरी तरह से ग्रहण या प्राप्त करना। २. उपयुक्त उपहार; भेंट आदि ग्रहण करना। ३. बौद्धों का सौगताह्निक नामक नित्य कर्म। ४. जैनों में ग्रहण किये हुए आचारों, व्रतों, आदि की अवज्ञा या उपेक्षा। ५. निश्चय।

समादिष्ट—भू० कृ० [सं०] १. नियोजित। २. निर्दिष्ट।

समादृत—वि० [सं० सम्-आ√दृ (आदर करना)+क्त] जिसका अच्छी तरह आदर हुआ हो। सम्मानित।

समादेय—वि० [सं०] १. जो समादान के लिए उपयुक्त हो। २. समादरणीय।

समादेश—पुं० [सं०] [भू० कृ० समादिष्ट] १. अधिकारपूर्वक किसी को कोई काम करने का आदेश या आज्ञा देना। २. इस प्रकार दिया हुआ आदेश या आज्ञा। (कमांड) ३. निषेधाज्ञा। व्यादेश।

समादेशक—पुं० [सं०] १. वह जो किसी को कोई काम करने का आदेश दे। २. वह प्रधान सैनिक अधिकारी जिसके आदेश से सेना के सब काम होते हैं। (कमांडर)

समादेश याचिका—स्त्री० [सं०] विधिक क्षेत्र में, वह याचिका या प्रार्थना-पत्र जो उच्च न्यायालय में इस उद्देश्य से उपस्थित किया जाता है कि कोई राजनीतिक या विधिक आदेश कार्यान्वित होने से तब तक के लिए रोक दिया जाय जब तक उच्च न्यायालय में उसके औचित्य का निर्णय न हो जाय। परमादेश। (रिट ऑफ़ मैन्डमस)

समाधा†—स्त्री०=समाधि।

समाधा—पुं० [सं० सम्-आ√धा (रखना)+अङ] १. निराकरण। निपटारा। २. विरोध दूर करना। ३. सिद्धांत। ४. दे० 'समाधान'।

समाधान—पुं० [सं० सम्-आ√धा (रखना)+ल्युट्—अन] [वि० समाधानीय] १. एक ही आधान या स्थल पर रखना। २. मन को सब ओर से हटाकर एकाग्र करना और ब्रह्म में लीन करना। ३. संशय दूर करना। ४. आपत्ति की निवृत्ति करना। ५. समस्या का निराकरण करना। ६. असंगति, भ्रांति, विरोध आदि दूर करना। ७. नियम। ८. वह युक्ति या योजना जिसके द्वारा समस्या हल की जाती हो। ९. तपस्या। १०. अनुसंधान। अन्वेषण। ११. किसी के कथन या मत की पुष्टि। समर्थन। १२. ध्यान। १३. नाटक की मुख्य संधि के १२ अंगों में से एक अंग जिसमें बीज ऐसे रूप में फिर से प्रदर्शित किया जाता है कि वह नायक अथवा नायिका का अभिमत प्रतीत होता है।

समाधानना*—स [सं० समाधान] १. किसी का समाधान करना। संशय दूर करना। २. सान्त्वना देना।

समाधि—स्त्री० [सं०] १. ईश्वर के ध्यान में मग्न होना। २. योग-साधना का चरम फल, जिसमें मनुष्य सब क्लेशों से मुक्त होकर अनेक प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त करता है। यह चार प्रकार की कही गई हैं—संप्रज्ञात, सवितर्क, सविचार और सानन्द।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

३. वह स्थान जहाँ किसी का मृत शरीर या अस्थियाँ गाड़ी गई हों। ४. प्राणियों की वह अवस्था जिसमें उनकी संज्ञा या चेतना नष्ट हो जाती है और वे कोई शारीरिक क्रिया नहीं करते। ५. साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी आकस्मिक कारण से सहायता मिलने पर किसी के कार्य में सुगमता होने का उल्लेख होता है। इसे 'समाहित' भी कहते हैं। ६. साहित्य में, काव्य का एक गुण जिसके द्वारा दो घटनाओं का दैव संयोग से एक ही समय में होना प्रकट होता है और जिसमें एक ही क्रिया का दोनों कर्ताओं के साथ अन्वय होता है। ७. किसी असंभव या असाध्य कार्य के लिए किया जानेवाला प्रयत्न। ८. किसी कष्ट-साध्य काम के लिए मन एकाग्र करना। ९. झगड़े या विवाद का अंत या समाप्ति करना। १०. चुप्पी। मौन। ११. समर्थन। १२. नियम। १३. ग्रहण या अंगीकृत करना। १४. आरोप। १५. प्रतिज्ञा। १६. बदला चुकाना। प्रतिशोध। १७. निद्रा। नींद।

†स्त्री०=समाधान। (क्व०) उदा०—व्याधि भूत जनित उपाधि काहू खल की समाधि कीजै तुलसी को जानि जन फुरकै।—तुलसी।

समाधि-क्षेत्र—पुं० [सं० ष० त०] १. वह स्थान जहाँ योगियों के मृत शरीर गाड़े जाते हों। २. मुरदे गाड़ने की जगह। कब्रिस्तान।

समाधित—भू० कृ० [सं० सम्-आ√धा (रखना)+क्त] जिसने समाधि लगाई हो। समाधि अवस्था को प्राप्त।

समाधित्व—पुं० [सं० समाधि-त्व] समाधि का गुण, धर्म या भाव।

समाधिदशा—स्त्री० [सं० ष० त०] योग में वह दशा जब योगी समाधि में स्थित होता और तन्मय होकर परमात्मा में लीन हो जाता और चारों ओर ब्रह्म ही ब्रह्म देखता है।

समाधि-लेख—पुं० [सं०] वह लेख जो किसी मृत व्यक्ति का संक्षिप्त परिचय कराने के लिए उसकी समाधि या कब्र पर लिखा या अंकित किया रहता है। (एपिटैफ़)

समाधिस्थ—वि० [सं० समाधि√स्था (ठहरना)+क] जो समाधि में स्थित हो। जो समाधि लगाये हुए हो।

समाधि-स्थल—पुं० [सं० ष० त०] 'समाधि-क्षेत्र'।

समाधी (धिन्)—वि० [सं० समाधि+इनि] समाधिस्थ।

स्त्री०=समाधि।

समाधेय—वि० [सं० सम्-आ√धा (रखना)+यत्] जिसका समाधान हो सके या होने को हो।

समान—व० [सं०] [भाव० समानता] १. गुण, मूल्य महत्त्व आदि के विचार से किसी के अनुरूप या बराबरी का। बराबर। तुल्य। (ईक्वल) जैसे—दोनों बातें समान हैं। २. आकार, प्रकार रूप आदि के विचार से किसी की तरह का। सदृश। (सिमिलर) जैसे—ये दोनों गहने समान हैं।

विशेष—सदृश, समान और तुल्य का अंतर जानने के लिए दे० 'सदृश' का 'विशेष'।

पद—**एक समान**= एक ही जैसे। बराबर। **समान वर्ण**=ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण एक ही स्थान से होता हो। जैसे—क, ख, ग, घ, समान वर्ण हैं।

पुं० १. सत्। २. शरीर से, नाभि के पास रहनेवाली एक वायु। स्त्री०=समानता।

समानक—वि० [सं०] १.=समान। २.=समानार्थक।

समान-कालीन—वि०=समकालीन।

समान-गोत्र—पं० [सं०] सगोत्र।

समान-तंत्र—पुं० [सं०] १. सम-व्यवसायी। हमपेशा। २. वेद की किसी एक शाखा का अध्ययन करने तथा उसके अनुसार यज्ञ आदि करनेवाले व्यक्ति।

समानता—स्त्री० [सं० समान+तल्—टाप्] १.समान होने की अवस्था या भाव। तुल्यता। बराबरी। जैसे—इन दोनों में बहुत कुछ समानता है। २. वह गुण, तत्त्व या बात जो दो या अधिक वस्तुओं आदि में समान रूप से हो।

समानत्व--पुं० [सं० समान+त्व]=समानता।

समाननाम--पुं० [सं० समाननामन्] ऐसे व्यक्ति जिनके नाम एक से ही हों। एक ही नामवाले। नाम-रासी।

समानयन—पुं० [सं० सम् - आ √नी (ढोना)+ल्युट—अन] [भू० कृ० समानीत] अच्छी तरह अथवा आदरपूर्वक ले आने की क्रिया।

समानर्ष—पुं० [सं० ब० स०] वे जो एक ही ऋषि के गोत्र या वंश में उत्पन्न हुए हो।

समानस्थान—पुं० [सं०] १. मध्यवर्ती स्थान। २. भूगोल में, वह स्थान जहाँ दिन-रात का मान बराबर हो।

समाना—अ० [सं० समावेशन] १. अंदर आना। भरना। अटना। जैसे—इस घड़े में २० सेर पानी समाता है। २. व्याप्त होना। जैसे—दिल में भय समाना। ३. कहीं से चलकर आना। पहुँचना। †स० अंदर करना। भरना।

समानाविकरण—पुं० [सं० ब० स०] १. समान आधार। २. व्याकरण में, वे दो शब्द या पद जो एक ही कारक की विभक्ति से युक्त हों। जैसे—राजा दशरथ के पुत्र राम को वनवास मिला ; 'यहाँ राजा दशरथ के पुत्र' पद 'राम' का समानाविकरण है क्योंकि 'को' विभक्ति समान रूप से उक्त दोनों पक्षों में लगती है।

समानाधिकार—पुं० [सं० कर्म० स०] १. जातीय गुण, धर्म या विशेषता। २. बराबर का अधिकार।

समानार्थ—पुं० [सं० ब० स०] वे शब्द आदि जिनका अर्थ एक ही हो। पर्याय। (सिनॉनिम)

समानार्थक—वि० [सं० ब० स०] (किसी शब्द के) समान अर्थ रखने वाला (दूसरा शब्द)। पर्यायवाची। (सिनॉनिमस)

समानार्थी—वि० [सं०]=समार्थनाक।

समानिका—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, जगण और एक गुरु होता है।

समानी—स्त्री०=समानिका।

समानुपात—पुं० [सं० सम-अनुपात] [वि० समानुपातिक] किसी वस्तु के भिन्न भिन्न अंगों में होनेवाला वह तुलनात्मक संबंध जो आकार, प्रकार विस्तार आदि के विचार से स्थिर होता है और जिससे उन सब अंगों में संगति, सामंजस्य, स्वरूपता आती है। (प्रोपोर्शन)

समानुपातिक—वि० [सं०] समानुपात की दृष्टि, विचार या हिसाब से होनेवाला। समानुपात संबंधी। (परोपोर्शनेट)

समानोदक—पुं० [सं० ब० स०] धर्म-शास्त्र में ऐसे लोग जिनकी ग्यारहवीं से चौदहवीं पीढ़ी तक के पूर्वज एक हों।

वि० साथ-साथ तर्पण करनेवाले।

समानोपमा—स्त्री० [सं० मध्यम स०] उपमा अलंकार का एक प्रकार जिसमें उच्चारण की दृष्टि से एक ही शब्द भिन्न प्रकार से खंड करने पर भिन्न अर्थों का द्योतक होता है।

समापक—वि० [सं० सम्√आप् (प्राप्त होना)+ण्वुल्]-अक] समापन पर करनेवाला।

समापत†—वि०=समाप्त।

समापत्ति—स्त्री० [सं०] १. बहुतों का एक ही समय में और एक ही स्थान पर उपस्थित होना। मिलना। २. भेंट। मिलन। ३. अवसर। मौका। ४. योग में ध्यान का एक अंग। ५. अन्त। समाप्ति। ६. आज-कल दंगा, दुर्घटना, युद्ध आदि के कारण लोगों के प्राणों या शरीर पर आनेवाला संकट। (कैजुएलटी)

समापन—पुं० [सं०] १. समाप्त करने की क्रिया या भाव। पूरा करना। (डिस्पोज़ल) २. विचार, विवाद आदि का अन्त करने के लिए कोई विशेष बात कहना। (बाइंडिंग अप) ३. मार डालना।

समापनीय—वि० [सं० सम्√अप् (प्राप्त होना)+अनीयर] १. जिसका समापन होने की हो अथवा होना उचित हो। समाप्त किये जाने के योग्य। २. मारे जाने के योग्य।

समापन्न—भू० कृ० [सं० सम्-आ√पद् (गमनादि)+क] १. प्राप्त किया हुआ। २. घटना के रूप में आया हुआ। घटित। ३. पहुँचा हुआ। ४. पूरा किया हुआ। ५. दुःखी। ६. मृत।

समापवर्तक—वि० [सं०] समापवर्तन करनेवाला।

पुं० गणित में, वह राशि जिससे दो या अधिक राशियों को अलग-अलग भाग देने पर शेष कुछ न बचे। (कॉमन फ़ैक्टर) जैसे—यदि २४, ३६ या ४८ को १२ से भाग दिया जाय तो शेष कुछ नहीं बचता। अतः १२ उक्त तीनों राशियों का समापवर्तक है।

समापवर्तन—पुं० [सं० सम-अपवर्तन] गणित में, वह क्रिया जिससे राशियों या संज्ञाओं का अपवर्तन करके उनका समापवर्तक निकाला जाता है। (दे० 'अपवर्तन' और 'समापवर्तन')।

समापिका क्रिया—स्त्री० [सं०] व्याकरण में, वाक्य के अंतर्गत अपने स्थान के विचार से क्रिया के दो भेदों में से एक। वह पूर्ण क्रिया जिसका काल

किसी दूसरी अपूर्ण क्रिया के काल के बाद आता है और जिससे किसी कार्य की समाप्ति सूचित होती है। जैसे—वह घर जाकर बैठ रहा। में 'बैठ रहा' समापिका क्रिया है, क्योंकि उससे कार्य की समाप्ति सूचित होती है। (दूसरा भेद पूर्वकालिक क्रिया कहलाता है। उक्त वाक्य में 'जाकर' पूर्वकालिक क्रिया है।)

समापित†—भू० कृ०=समाप्त।

समापी (पिन्)—वि० [सं० सम्√ आप् (प्राप्त करना) +णिनि] [स्त्री समापिनी] १. समापन करनेवाला। २. समाप्त करनेवाला।

समाप्त—भू० कृ० [सं०] १. (कार्य) जिसे पूरा कर दिया गया हो। जैसे—विद्यालय का कार्य समाप्त हो गया है। २. (वस्तु) जिसका भोग, संहार आदि के कारण अस्तित्व नष्ट हो गया हो। जैसे—धन समाप्त होना। ३. (वस्तु) जो बिक चुकी हो फलतः विक्रयार्थ उपलब्ध न हो। जैसे—पापलीन समाप्त हो गई है, नई दो चार दिन में आ जायगी। ४. (नौकरी या सेवा) जिसका कार्य-काल बीत चुका हो। जैसे—उनकी नौकरी समाप्त हो चुकी है। ५. मृत।

समाप्त सैन्य—पुं० [सं०] प्राचीन भारत में, ऐसी सेना जो किसी एक ही ढंग की लड़ाई करना जानती थी।

समाप्ति—स्त्री० [सं० सम्√आप् (प्राप्त होना)+क्तिन्] १. समाप्त होने की अवस्था या भाव। खतम या पूरा होना। २. अवधि, सीमा आदि का अंत होना। (एक्सपायरी, एक्सपायरेशन) ३. किसी काम, चीज या बात का सदा के लिए स्थायी रूप से अन्त होना। न रह जाना। (एक्स्टिंक्शन)

समाप्तिक—पु० [सं०] वह जो वेदों का अध्ययन समाप्त कर चुका हो। वि० समाप्त या पूरा करने वाला।

समाप्य—वि० [सं० सम् √आप् (प्राप्त होना)+ण्यत्] समाप्त किये जाने के योग्य। खतम या पूरा करने या होने के लायक।

समाम्ना—पुं० [सं० सम्+आ √ म्ना+य] [वि० समाम्नायिक] १. शास्त्र। २. समष्टि। समूह।

समाम्नायिक—पुं० [सं० समाम्नाय+ठन्—इक] वह जिसे शास्त्रों का अच्छा ज्ञान हो। शास्त्रवेत्ता।

वि० समाम्नाय या शास्त्र संबंधी। शास्त्रीय।

समायत—वि० [सं०] [स्त्री० समायता] १. बढ़ा या फैला हुआ। विस्तृत। २. बड़ा। विशाल।

†स्त्री०=समाअत (सुनवाई)।

समायुक्त—वि० [सं० सम्—आ√युज् (मिलाना)+क्त] १. जोड़ा हुआ। २. तैयार किया हुआ। ३. नियुक्त। ४. संपर्क में लाया हुआ। ५. दत्तचित्त। ६. आवश्यकता पड़ने पर दिया या किसी के पास पहुँचाया हुआ। (सप्लायड)

समायुक्तक—पुं० [सं०] समायोजक। (दे०)

समायुत—भू० कृ० [सं० सम्-आ√यु (मिलाना)+क्त] १. जोड़ा या लगाया हुआ। २. एकत्र किया हुआ। संगृहीत।

समायोग—पुं० [सं०] १. संयोग। २. जनसमूह। भीड़। ३. दे० 'समायोजन'।

समायोजक—पुं० [सं०] समायोजन करनेवाला। (सप्लायर)

समायोजन—पुं० [सं० सम्-आ√युज् (मिलाना)++ल्युट्—अन] [भू० कृ० समायोजित] १. समायोग। २. लोगों की आवश्यकता की चीजें उनके पास पहुँचाने की व्यवस्था। संभरण। (सप्लाई)

समारंभ—पुं० [सं० सम्-आ√रम् (शीघ्रता करना)+घञ्-मुम्] १. आरंभ। शुरुआत। २. कोई काम, क्रिया या व्यापार। ३. समारोह। ४. लेप।

समारंभण—पुं० [सं० सम्-आ√रभ् (शीघ्रता करना)+ल्युट्-अन—मुम्] [भू० कृ० समारंभित] १. कार्य आरम्भ करना। २. गले लगाना। आलिंगन।

समारना†—स० १.=सँवारना। २.=सँभालना।

समारब्ध—भू० कृ० [सं० सम्-आ√ रम्भ् (प्रारम्भ करना)+क्त] जिसका समारंभ हुआ हो। आरंभ किया हुआ।

समारम्य—वि० [सं० सम्-आ √रभ् (शीघ्रता करना)+यत्] जिसका समारम्भ हो सकता हो या होने को हो।

समारूढ़—भू० कृ० [सं० सम्-आ √रुह् (होना)+क्त] १. किसी के ऊपर चढ़ा हुआ। आरूढ़। २. बढ़ा हुआ। ३. अंगीकृत। ४. (घाव) जो भर गया हो। (वैद्यक)

समारोप(ण)—पुं० [सं०] [वि० समारोपित] अच्छी तरह आरोप या आरोपण करने की क्रिया या भाव।

समारोह—पुं० [सं० सम-आ √रुह् (होना)+घञ्] १. ऊपर जाना विशेषतः चढ़ाई करना। २. कोई ऐसा शुभ आयोजन जिसमें चहल-पहल तथा धूमधाम हो। (फंक्शन)

समार्थ—वि०=समार्थक।

समार्थक—वि० [सं० ब० स० कप्] समान अर्थवाले (शब्द)। समानक। पुं० पर्याय।

समार्थी (थिन्)—वि० [सं० समार्थ+इनि] बराबरी करने की इच्छा रखनेवाला। २. दे० 'समार्थक'।

समालंभन—पुं० [सं०] [भू० कृ० समालंभित] १. शरीर पर केसर आदि का लेप करना। २. वध। हत्या। ३. गले लगाना। आलिंगन। ३. सहारा होना।

समालय—पुं० [सं० सम्-आ√ लय् (करना)+घञ्] अच्छी तरह बात-चीत करना।

समालिंगन—पुं० [सं० सम्-आ√लिंग (गत्यादि)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० समालिंगित] प्रगाढ़ आलिंगन।

समालोकन—पुं० [सं० सम् -आ √लोक् (देखना)+ल्युट्+अन] [भू० कृ० समालोकित] अच्छी तरह देखना।

समालोचक—पुं० [सं० सम्+आ √लोच् (देखकर कहना)+ण्वुल् अक] वह जो समालोचना करता हो। समीक्षक।

समालोचन—पु० [सं० सम्-आ√ लोच् (देखना)+ल्युट्—अन] समालोचना।

समालोचना—स्त्री० [सं० समालोचन+टाप्] १. अच्छी तरह देखना। २. किसी कृति के गुण-दोषों का किया जानेवाला विवेचन। ३. साहित्य में, वह लेख जिसमें किसी कृति के गुण-दोषों के संबंध में किसी ने अपने विचार प्रकट किये हों। (रिव्यू) ४. साहित्यिक कृतियों के गुण-दोष विवेचन करने की कला या विद्या।

समालोची—वि० [सं० सम्-आ √लोच् (देखना)+णिनि]=समालोचक।

समालोच्य--वि० [सं०] जिसकी समालोचना हो सकती हो या होने को हो।

समावा--पुं०=समाई।

समावरण--पुं० [सं०] [भू० कृ०समावृत] कोई छोटा लेख या सूचना जो किसी बड़े पत्र के साथ एक ही लिफाफे में रखकर कहीं भेजी जाय। (एन्क्लोज़र)

समावर्जन--पुं० [सं० सम्-आ √ वृज् (मना करना)+ल्युट्-अन] १. अपनी ओर झुकाना या मोड़ना। २. उपयोग के लिए अपने अधिकार में लाना या लेना। ३. वश में करना।

समावर्जित--भू० कृ० [सं०] १. अपनी ओर झुकाया या मोड़ा हुआ। २. अपने अधिकार या वश में लाया हुआ।

समावर्त--पुं०[सं० सम-आ√वृत् (रहना)+घञ्] १. वापस आना। लौटना। २. दे० 'समावर्तन'।

समावर्तन--पुं०[सं०]१. वापस आना। लौटना। २. प्राचीन भारत में, वह समारोह जिसमें गुरुकुल के स्नातकों को विद्याध्ययन कर लेने के उपरांत विदाई दी जाती थी। ३. आज-कल विश्वविद्यालयों आदि में होनेवाला वह समारोह जिसमें उच्च परीक्षाओं में उत्तीर्ण होनेवाले परीक्षार्थियों को उपाधियाँ, पदक, प्रमाण-पत्र आदि दिये जाते हैं। (कान्वोकेशन)

समावर्तनीय--वि०[सं० सम्-आ √वृत् (रहना)+अनीयर्] १. वापस होने के योग्य। लौटाने लायक। २. जो समावर्तन संस्कार के योग्य हो गया हो।

समावर्ती (र्तिन्)--वि०[सं०] समावर्तन संस्कार के उपरान्त गुरुकुल से लौटनेवाला स्नातक।

समावास--पुं०[सं० सम्-आ√वस् (रहना)+घञ्] १. निवास स्थान। २. टिकने या ठहरने का स्थान। ३. शिविर। पड़ाव।

समाविष्ट--भू०कृ०[सं०सम्-आ√विश्(प्रवेश करना)+क्त]१. जिसका समावेश हो चुका हो या कर दिया गया हो। २. जो छा, भर या व्याप्त हो चुका हो। ३. बैठा हुआ। आसीन। ४. एकांतचित्त।

समावृत्त--वि० [सं० सम्-आ √वृ (वरण ररना)+क्त] [भाव० समावृत्ति]१. अच्छी तरह ढका, छाया या लपेटा हुआ। २. समावर्तन संस्कार के उपरान्त घर लौटा हुआ। ३. सूचनात्मक टिप्पणी या लेख) जो किसी पत्र के साथ एक ही लिफाफे में बन्द करके कहीं भेजा गया हो। (इन्क्लोज्ड) जैसे--इस पत्र के साथ सभा का कार्य-विवरण समावृत है।

समावृत्ति--स्त्री०[सं०]१. समावृत्त होने की अवस्था या भाव। २. समावर्तन।

समावेश--पुं०[सं० सम्-आ√ विश् (प्रवेश करना)+घञ्]१. एक या एक जगह जाना, पहुँचना, साथ रहना या होना। २. किसी चीज या बात का दूसरी चीज में होना। ३. चित्त या मन किसी ओर लगाना। मनोनिवेश।

समावेशक--वि०[समावेश+कन्] समावेश करनेवाला।

समावेशन--पुं०[सं० सम्-आ √विश् (प्रवेश करना)+ल्युट्--अन] २. किसी के अन्दर पैठना। प्रवेश। ३. अधिकार या वश में करना। ३. विवाह-संस्कार।

समावेशित--भू० कृ० सं० [सम--आ√ विश् (प्रवेश करना)+णिच्--क्त समावेश+इतच् वा]=समाविष्ट।

समाश्रय--पुं०[सं०]१. आश्रय। सहारा। २. मदद। सहायता।

समाश्रित--भू० कृ० [सं० सम्-आ √श्रि (सेवा करना)+क्त] १. जिसने किसी स्थान पर अच्छी तरह आश्रय लिया हो। २. सहारे पर टिका हुआ।

पुं० वह जो भरण-पोषण के लिए किसी पर आश्रित हो।

समासंग--पुं० [सं० सम्-आ√ सञ्ज्(साथ करना)+घञ्] मिलन। मिलाप। मेल।

समासंजन--पुं०[सं० सम्-आ √सञ्ज् (मिलना)+ल्युट्--अन] [भू० कृ० समासजित] १. संयुक्त करना। मिलाना। २. किसी पर जड़ना या रखना। ३. संपर्क। संबंध।

समास--पुं०[सं०]१. योग। मेल। २. संग्रह। संचय। ३. संक्षेप। ४. संस्कृत व्याकरण में, वह अवस्था जब अनेक पदों का एक पद, अनेक विभक्तियों की एक विभक्ति या अनेक स्वरों का एक स्वर होता है। इसके अव्ययी भाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि और द्वन्द्व चार भेद हैं।

समासक--वि०[सं० समास+कन्] विराम-चिह्नों के अन्तर्गत एक प्रकार का चिह्न जो समस्त पदों के अलग अलग शब्दों के बीच लगाया जाता है। समास का चिह्न।

समासक्ति--स्त्री०[सं०सम-आ√सञ्ज् (मिलना)+क्तिन्] [वि० समासक्त] १. योग। मेल। २. संबंध। ३. अनुराग। ४. समावेश। अंतर्भाव।

समासन्न--भू० कृ०[सं० सम्-आ √सद् (गत्वादि)+क्त] १. पहुँचा हुआ। प्राप्त। २. निकटवर्ती। पास का।

समासीन--वि०[सं० सम्√ आस् (बैठना)+क्विप--ख-ईन] अच्छी तरह आसीन या बैठा हुआ।

समासोक्ति--स्त्री०[सं० समास+उक्ति] साहित्य में, एक अलंकार जिसमें श्लिष्ट संज्ञाओं की सहायता से कोई ऐसा वर्णन किया जाता है जो प्रस्तुत विषय के अतिरिक्त किसी दूसरे अप्रस्तुत विषय पर भी समान रूप से घटता है। जैसे--बड़ो डील लखि पील को सबन तज्यो बन थान। धनि सरजा तू जगत में ताकों हरयों गुमान। इसमें 'सरजा' (संज्ञा) प्रस्तुत(सिंह या शेर) अप्रस्तुत (शिवाजी) के संबंध में घटता है। यह अप्रस्तुत प्रशंसा के विरुद्ध या उल्टा है। (स्पीच ऑफ़ ब्रेविटी)

समाहना--अ०[सं० समाहन] सामना करना। सामने आना। उदा०--त्रिबली, नाभि दिखाई कर, सिर कि सकुचि समाहिं।--बिहारी।

समाहरण--पुं०[सं० सम्-आ√हृ (हरण करना)+ल्युट्--अन] १. चीजें आदि एक स्थान पर एकत्र करना। संग्रह। २. ढेर। राशि। ३. कर, चन्दा, प्राप्य धन आदि उगाहना। वसूली। (कलेक्शन) ४. क्रम, नियम आदि के अनुसार ठीक ढंग से या सजाकर बनाया या रखा जाना। (फार्मेशन) जैसे--वायु-यानों का समाहरण। ५. दे० 'समाहार'।

समाहर्ता (र्तृ)--वि० [सं०-सम्-आ√हृ(हरण करना)+तृच्]१. समाहार अर्थात् एकत्र या पुंजीभूत करनेवाला। २. संक्षिप्त रूप देनेवाला। ३. मिलने या सम्मिलित होनेवाला।

पुं० वह राज कर्मचारी जिसके जिम्मे किसी जिले से राज-कर या प्राप्त धन आदि उगाहने का काम होता है। (कलेक्टर)

समाहार--पुं० [सं० सम्-आ√ हृ (हरण करना)+घञ्] १. बहुत सी चीजों को एक जगह इकट्ठा करना। संग्रह। २. ढेर। राशि। ३. मिलन। मिलाप।

समाहार द्वंद्व--पुं० [सं० मध्यम० स०] व्याकरण में, ऐसा द्वंद्व समास जिससे उसके पदों के अर्थ के सिवा कुछ और अर्थ भी सूचित होता है। जैसे--सेठ-साहूकार, हाथ-पाँव, दाल-रोटी आदि। इनमें से प्रत्येक अपने पदों के अर्थ के सिवा उसी प्रकार वे कुछ और व्यक्तियों या पदार्थों का भी बोध कराता है।

समाहित--वि० [सं०] १. एक जगह इकट्ठा किया हुआ, विशेषतः सुंदर और व्यवस्थित रूप से इकट्ठा किया या सजाकर लगाया हुआ। १. केन्द्रित २. शांत। ३. समाप्त। ४. व्यवस्थित। ५. प्रतिपादित। ६. स्वीकृत। ७. सदृश। समान।

पुं० १. पुण्यात्मा और साधु पुरुष। २. साहित्य में, वह अवस्था जब कोई भावशांति (देखें) इस प्रकार होती है कि वह किसी दूसरे भाव के सामने दबकर गौण रूप धारण कर लेती है। इसकी गिनती अलंकारों में होती है। ३. 'समाधि' नामक अलंकार का दूसरा नाम।

समाहूत--भू० कृ० [सं० सम्-आ√ह्वे(बुलाना)+क्त, व=उ-दीर्घ] १. जिसे बुलाया गया हो। आहूत। २. जिसे ललकारा गया हो। ३. एकत्र किया हुआ।

समाहृत--भू० कृ० [सं०] जिसका समाहरण या समाहर हुआ हो।

समाह्वान--पुं० [सं० सम्-आ√ ह्वे (बुलाना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० समाहूत] १. आवाहन। बुलाना। २. जूआ खेलने के लिए बुलाना या ललकारना।

समित--भू० कृ० [सं० सम्√इण् (गत्यादि)+क्त] १. मिला हुआ। संयुक्त। २. समानांतर। ३. अंगीकृत। स्वीकृत। ४. पूरा किया हुआ। ५. मापा हुआ। ६. निरंतर लगा हुआ। जैसे--समित प्रवाह। पुं० युद्ध। लड़ाई। समर।

समिता--स्त्री० [सं० समित-टाप्] बहुत महीन पीसा हुआ आटा। मैदा।

समितिंजय--पुं० [सं० समिति√जि (जीतना)+खच्-मुम्] १. वह जिसने वाद-विवाद, प्रतियोगिता, युद्ध आदि में विजय प्राप्त की हो। विजयी। २. यम। ३. विष्णु।

समिति--स्त्री० [सं०] १. सभा। समाज। २. प्राचीन भारत में, राजनीतिक विषयों पर विचार करनेवाली एक संस्था। ३. आज-कल शासन, संस्था, समाज, मुहल्लेवालों आदि द्वारा चुने या मनोनीत किये गये व्यक्तियों का वह दल जिसके जिम्मे कोई विशेष कार्य-भार सौंपा गया हो। जैसे--जलकर समिति, सहकारी समिति।

समिथ--पुं० [सं० सम्√इण् (गत्यादि)+थक्] १. अग्नि। २. आहुति। ३. युद्ध। लड़ाई।

समिद्ध--भू० कृ० [सं० सम्√इन्ध् (जलना)+क्त, नलोप] जलता हुआ। प्रज्वलित। प्रदीप्त।

समिद्धन--पुं० [सं० सम्√इन्ध् (जलने की लकड़ी)+ल्युट्--अन] १. आग जलाने या सुलगाने की क्रिया। २. जलाने की लकड़ी। ईंधन। ३. उत्तेजित या उद्दीप्त करने की क्रिया।

समिध--पुं० [सं० सम्√इन्ध् (जलना)+क्त] अग्नि।

स्त्री०=समिधा।

समिधा--स्त्री० [सं० समिधि] १. लकड़ी, विशेषतः यज्ञकुंड में जलाने की लकड़ी। २. हवन, यज्ञ आदि की सामग्री।

समिधि--स्त्री०=समिधा।

समिर†--पुं०=समीर।

समी-- वि०=सम (समान)। उदा०--लिखमी समी रुक्मणी लाड़ी। --प्रिथीराज।

समीक--पुं० [सं० सम्+ईकक्] युद्ध। समर। लड़ाई।

समीकरण--पुं० [सं०] [भू० कृ० समीकृत] १. दो या अधिक राशियों, वस्तुओं आदि को समान या बराबर करने की क्रिया या भाव। २. गणित में, वह क्रिया जिससे किसी ज्ञात राशि की सहायता से कोई अज्ञात राशि जानी जाती है। ३. यह सिद्ध कर दिखलाना कि अमुक अमुक राशियाँ या मान आपस में बराबर हैं। (इंक्वेशन)

समीकार--वि० [सं० सम्-च्वि√कृ (करना)+घञ्] जो छोटी-बड़ी, ऊँची-नीची या अच्छी बुरी चीजों को समान करता हो। बराबर करनेवाला।

समीकृत--भू० कृ० [सं० सम्-च्वि√कृ (करना)+क्त] १. जिसका समीकरण किया गया हो। २. सामान किया हुआ। बराबर किया हुआ।

समीकृति--स्त्री० [सं० सम्+च्वि√कृ (करना)+क्तिन]=समीकरण।

समीक्रिया--स्त्री०=समीकरण।

समीक्ष--पुं० [सं० सम्√ईक्ष् (देखना)+घञ्] १. समीकरण। २. समीक्षा।

समीक्षक--वि० [सं० समीक्ष+कन्] सम्यक् रूप से देखने या समीक्षा करनेवाला। समालोचक।

समीक्षण--पुं० [सं० सम्√ईक्ष् (देखना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० समीक्षित] १. दर्शन। देखना। २. अनुसन्धान। जाँच-पड़ताल। ३. दे० 'समीक्षा'।

समीक्षा--स्त्री० [सं० सम्√ईक्ष् (देखना)+अ-टाप्] १. अच्छी तरह देखने की क्रिया। २. छान-बीन या जाँच-पड़ताल करने के लिए अच्छी तरह और ध्यानपूर्वक देखना। परीक्षण। (एग्जैमिनिंग) ३. ग्रन्थों, लेखों आदि के गुण-दोषों का विवेचन। समालोचन। (रिव्यू) ४. मीमांसा दर्शन। ५. सांख्य दर्शन में, पुरुष प्रकृति, बुद्धि, अहंकार आदि तत्त्व। ६. बुद्धि। समझ। ७. कोशिश। प्रयत्न।

समीक्षित--भू० कृ० [सं० सम्√ईक्ष् (देखना)+क्त] जिसकी समीक्षा की गई हो। जो भली-भाँति देखा गया हो।

समीक्ष्य--वि० [सं०] जिसकी समीक्षा हो सकती हो या होने को हो।

समीच--पुं० [सं० सम्√इण् (गत्यादि)+चट्-दीर्घ] समुद्र। सागर।

समीचीन--वि० [सं० समीच+ख-ईन] [भाव० समीचीनता] १. यथार्थ। ठीक। २. उचित। वाजिब। ३. न्याय-संगत।

समीति†--स्त्री०=समिति।

समीप--वि० [सं०] निकट। पास। 'दूर' का विपर्याय।

समीपता--स्त्री० [सं० समीप+तल्-टाप्] समीप होने की अवस्था या भाव। निकटता।

समीपवर्ती (तिन्)--वि० [सं०] जो किसी के समीप या पास में स्थित हो। जैसे--भारत के समीपवर्ती टापुओं में सिंहल प्रधान है।

समीपस्थ--वि० [सं०] जो समीप में स्थित हो। पास का। समीपवर्ती।

समीभाव--पुं० [सं० सम्+च्वि√भू (होना)+घञ्] १. सामान्य अवस्था। साधारण स्थिति। २. आचरण और जीवन संबंधी सब बातों में रखा जानेवाला समता का भाव।

समीय--वि० [सं० सम+छ-ईय] सम संबंधी। सम का।

समीर--पुं० [सं० सम्√ईर् (गमनादि)+क] १. वायु। हवा। २. आधुनिक वायुविज्ञान के अनुसार भली जान पड़नेवाली वह हलकी हवा जिसकी गति प्रति घंटे १३ से १८ मील तक की हो। (मॉडरेट ब्रीज़) ३. प्राण-वायु। ४. शमी वृक्ष।

समीरण--पुं० [सं०] [भू० कृ० समीरित] १. चलना। २. वायु। हवा। ३. पथिक। बटोही। ४. प्रेरणा। ५. मरुआ नाम का पौधा। वि० १. चलता हुआ या चलनेवाला। गतिशील। २. उद्दीपक।

समीरित--भू० कृ० [सं० सम्√ईर् (प्रेरित करना)+क्त] १. चलाया हुआ। २. भेजा हुआ। ३. प्रेरित। ४. उच्चरित (शब्द)।

समीहा--स्त्री० [सं० सम्√ईह (चेष्टा करना)+अच्-टाप्] [भू० कृ० समीहित] १. उद्योग। प्रयत्न। कोशिश। २. इच्छा। कामना। ३. अन्वेषण। तलाश। ४. जाँच-पड़ताल।

समीहित--भू० कृ० [सं०] चाहा हुआ। इच्छित।

समुंद*--पुं० १.=समुद्र। २. समंद।

समुंदर†--पुं०=समुद्र।

समुंदर-पात--पुं०=समुंदर-सोख।

समुंदर फल--पुं० [सं० समुद्र-फल] एक प्रकार का बहुत बड़ा सदाबहार वृक्ष जो नदियों और समुद्रों के किनारे और तर भूमि में बहुत अधिकता से पाया जाता है।

समुंदर-फेन†--पुं०=समुद्र-फेन।

समुंदर फेन--पुं० [हिं०] समुद्र की लहरों पर की झाग जो सुखाकर ओषधि के रूप में काम में लाई जाती है।

समुंदर-सोख--पुं० [हिं० समुंदर+सोखना] एक प्रकार का पौधा जिसके बीज वैद्यक में दवा के काम आते हैं। इसके डंठल बहुत चमकीले और मजबूत होते हैं। समुंदर-पात।

समुक्त--वि० [सं० सम√वच् (कहना)+क्त, वा=उ] १. जिससे कुछ कहा गया हो। सम्बोधित। २. जिसकी भर्त्सना की गई हो।

समुख--वि० [सं० अव्य० स०] १. बहुत अधिक बोलनेवाला। २. सुवक्ता। वाग्मी।

समुचित--वि० [सं० सम्√उच् (एक होना)+क्त] १. जो हर तरह से उचित या ठीक हो। वाजिब। २. उपयुक्त। योग्य। ३. जैसा होना चाहिए, अथवा होता आया हो, वैसा।

समुच्च--वि०[सं० सम्√उत्√चि (चयन करना)+ड] बहुत ऊँचा। †वि०=समूचा।

समुच्चक--वि० [सं०] १. ऊपर उठानेवाला। २. आगे की ओर ले जाने या बढ़ानेवाला।

समुच्चय--पुं० [सं०][भू० कृ० समुच्चित] १. कुछ वस्तुओं का एक में मिलना। (कॉम्बिनेशन) २. समूह। राशि। ३. कुछ वस्तुओं या बातों का एक साथ एक जगह इकट्ठा होना। संयुति। (क्युमुलेशन) ४. प्राचीन भारतीय राजनीति में, वह स्थिति जिसमें प्रस्तुत उपाय के सिवाय अन्य उपायों से भी कार्य सिद्ध हो सकता हो। ५. साहित्य में, एक अलंकार जिसमें कई भावों के एक साथ उदित होने, कई कार्यों एक साथ होने या कई कारणों में एक ही कार्य होने का वर्णन होता है। (कन्जंक्शन)

विशेष--इसके दो भेद कहे गये हैं। एक तो वह जिसमें आश्चर्य, हर्ष, विषाद आदि अनेक भावों का एक साथ उल्लेख होता है। दूसरा वह जिसमें एक कार्य के अनेक उपायों से सिद्धि हो सकने का वर्णन होता है।

समुच्चयक--वि० [सं०] १. समुच्चय संबंधी। २. समुच्चय के रूप में होनेवाला।

समुच्चयन--पुं० [सं०] १. ऊपर उठाने की क्रिया या भाव। २. इकट्ठा करने या ढेर लगाने की क्रिया या भाव।

समुच्चय बोधक--पुं० [सं०] व्याकरण में, अव्यय का एक भेद जिसका कार्य दो वाक्यों में परस्पर संबंध स्थापित करना होता है। और, किंतु, तथा, परन्तु, बल्कि या वरन् आदि समुच्चय बोधक हैं।

समुच्चयार्थक--वि० [सं०] समुच्चय या सारे वर्ग के अर्थ से संबंध रखने या वैसा अर्थ सूचित करनेवाला। (कलेक्टिव) जैसे--भीड़ और समाज समुच्चयार्थक संज्ञाएँ हैं।

समुच्चयोपमा--पुं० [सं०] उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमेय में उपमान के अनेक गुण या धर्मों का एक साथ आरोप होता है।

समुच्चित--भू० कृ० [सं० सम्√उत्√चि (ढेर लगाना) +क्त] १. जो धीरे-धीरे बढ़कर इकट्ठा और एकाकार हो गया हो। पुंजीभूत। २. संग्रहीत। (क्युमुलेटेड)

समुच्छिन्न--भू० कृ० [सं०] बुरी तरह से उखड़ा, तोड़ा या फाड़ा हुआ।

समुच्छेद--पुं० [सं० सम्-उत्√छिद् (नष्ट करना)+घञ्] १. जड़ से उखाड़ना। उन्मूलन। २. ध्वंस। नाश। बरबादी।

समुच्छेदन--पुं० [सं० सम्-उत्√छिद् (नष्ट करना)+ल्युट्-अन] १. जड़ से उखाड़ना। २. नष्ट करना।

समुज्ज्वल--वि०[सं०सम्-उत्√ज्वल् (चमकना)+-अच्]खूब उज्ज्वल। चमकता हुआ।

समुज्झित--वि० [सं० सम्√उज्झ् (त्यागना)+क्त] १. त्यागा हुआ। परित्यक्त। २. मिला हुआ। युक्त।

समुझ*--स्त्री०=समझ।

समुझना†--अ०=समझना।

समुत्थ--वि० [सं० सम्-उत्√स्था (ठहरना)-+क, स=थ लोप] १. उठा हुआ। २. उत्पन्न। जात।

समुत्थान--पुं० [सं० सम्-उद्√स्था (ठहरना)+ल्युट्-अन] १. ऊपर उठाने की क्रिया। २. उन्नति। ३. उत्पत्ति। ४. आरंभ। ५. रोग का निदान। ६. रोग का शमन या शान्ति।

समुत्थित--भू०कृ० [सं० सम्-उद्√स्था (ठहरना)+क्त] १. अच्छी तरह उठा हुआ। २. जो प्रकट हुआ हो। ३. उद्भूत। उत्पन्न। ४. घिरा हुआ (बादल)। ५. प्रस्तुत। ६. जो आरोग्य लाभ कर चुका हो। ७. फूला हुआ। ८. किसी के मुकाबले में उठा हुआ।

समुत्पन्न--वि० [सं० सम्-उत्√पद् (गत्यादि))+क्त=न] =उत्पन्न।

समुत्सुक--वि० [सं० सम्-उत्√सुच् (शोक करना)+अच्, कर्म० स०] विशेष रूप से उत्सुक। उत्कंठित।

समुद--वि० [सं०] मोद या प्रसन्नता से युक्त।

अव्य० मोद या प्रसन्नतापूर्वक।

†पुं०=समुद्र।

समुदय--पुं० [सं० समुदयः] [भू० कृ० समुदित] १. ऊपर उठना या चढ़ना। २. ग्रह, नक्षत्र आदि का उदित होना। उदय। ३. शुभ लग्न। साइत। ४. ढेर। राशि। झुंड। समुदाय। ५. कोशिश। प्रयत्न। ६. युद्ध। समर। ७. राज-कर।

वि० समस्त। सब। सारा।

समुदाचार--पुं० [सं० सम्-उद् आ√चर् (चलना)+घञ्] १. भलमनसाहत का व्यवहार। शिष्टाचार। २. नमस्कार। ३. प्रणाम। ४. अभिप्राय। आशय। मतलब।

समुदाय--पुं० [सं० सम्-उद्√अय् (गत्यादि)+घञ्] [वि० सामुदायिक] १. बहुत से लोगों का समूह। २. झुंड। दल। ३. ढेर। राशि। ४. उदय। ५. उन्नति। ६. सेना का पिछला भाग। ७. किसी वर्ग, जाति के लोगों द्वारा बनाई हुई ऐसी संस्था जिसका मुख्य उद्देश्य सामान्य हितों की रक्षा होता है। (एसोसियेशन)

समुदाव†--पुं०=समुदाय।

समुदित--भू० कृ० [सं० सम्-उद्√इण् (गत्यादि)+क्त] १. जिसका समुदय हुआ हो। २. उदित। उठा हुआ। ३. उन्नत। ४. उत्पन्न। जात।

समुद्गत--भू० कृ० [सं० सम्-उद्√गम् (जाना)+क्त] १. जो ऊपर उठा हो। उदित। २. उत्पन्न। जात।

समुद्गार--पुं० [सं० कर्म० स०] बहुत अधिक वमन होना। ज्यादा कै होना।

समुद्धरण--पुं० [सं०] [भू० कृ० समुद्धृत] १. ऊपर उठाना। २. उद्धार। ३. वह अन्न जो वमन करने पर पेट से निकला हो। ४. दूर करना। हटाना।

समुद्धर्ता (र्तृ)--वि० [सं० सम्√उद्√हृ (हरण करना)+तृच्] १. ऊपर की ओर उठाने या निकालनेवाला। २. उद्धार करनेवाला। ३. ऋण चुकानेवाला।

समुद्धार†--पुं०=समुद्धरण।

समुद्भव--पुं० [सं०] १. उत्पत्ति। जन्म। २. पुनरुज्जीवन। ३. उपनयन के समय, हवन के लिए जलाई हुई आग।

समुद्भूति--स्त्री० [सं० सम्-उद्√भू (होना)+क्तिन्] [वि० समुद्भूत]=समुद्भव।

समुद्यत--वि० [सं० सम्-उद्√यम् (शान्त होना)+क्त] जो पूर्ण रूप से उद्यत हो। अच्छी तरह से तैयार।

समुद्यम--पुं० [सं० कर्म० स०] १. उद्यम। चेष्टा। २. आरंभ। शुरू।

स-मुद्र--वि० [सं०] १. मुद्रा से युक्त। २. जिस पर मुद्रा अंकित हो।

समुद्र--पुं० [सं०] १. वह विशाल जल-राशि जो इस पृथ्वी तल के प्रायः तीन-चौथाई हिस्से में व्याप्त है। सागर। अंबुधि। जलधि। रत्नाकर। २. लाक्षणिक अर्थ में, बहुत बड़ा आगार या आश्रय। जैसे--विद्यासागर, शब्द-सागर आदि। ३. एक प्राचीन जाति।

समुद्र-कंप--पुं० [सं०] समुद्र के किसी भाग में सहसा उत्पन्न होनेवाला वह कंप जो आस-पास के स्थलों में भू-कंप होने अथवा भूगर्भ में प्राकृतिक विस्फोट होने के कारण उत्पन्न होता है। (सी-क्वेक)

समुद्र-कफ--पुं० [सं०] समुद्र फेन।

समुद्र-कांची--स्त्री० [सं० ब० स०] पृथ्वी जिसकी मेखला समुद्र है।

समुद्र-कांता--स्त्री० [सं०] नदी जिसका पति समुद्र माना जाता है। समुद्र की स्त्री अर्थात् नदी।

समुद्रगा--स्त्री० [सं०] १. नदी जो समुद्र की ओर गमन करती है। २. गंगा नदी।

समुद्रगुप्त--पुं० [सं०] मगध के गुप्त राजवंश के एक बहुत प्रसिद्ध और वीर सम्राट् जिनका समय सन् ३३५ से ३७५ तक माना जाता है। इनकी राजधानी पाटलिपुत्र में थी।

समुद्र-चुलुक--पुं० [सं०] अगस्त्य मुनि जिन्होंने चुल्लुओं से समुद्र पी डाला था।

समुद्रज--वि० [सं०] समुद्र से उत्पन्न। समुद्र-जात।

पुं० मोती, हीरा आदि रत्न जिनकी उत्पत्ति समुद्र से होती या मानी जाती है।

समुद्र-झाग--पुं०=समुंदर-फेन।

समुद्र-तारा--स्त्री० [सं०] एक प्रकार की समुद्री मछली जिसका आकार तारे की तरह का होता है। (स्टार फ़िश)

समुद्र-नवनीत--पुं० [सं०] १. अमृत। २. चन्द्रमा।

समुद्रनेमि--स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

समुद्र-पत्नी--स्त्री० [सं०] नदी। दरिया।

समुद्र-फेन--पुं०=समुंदर-फेन।

समुद्र-मंडूकी--स्त्री० [सं०] सीपी। सीप।

समुद्र-मंथन--पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध पौराणिक कथा जिसमें देवताओं और दानवों ने मिलकर समुद्र मथा था। इस मंथन के फलस्वरूप उन्हें लक्ष्मी, मणि, रंभा, वारुणी, अमृत, शंख, ऐरावत हाथी, कल्पवृक्ष, चन्द्रमा, कामधेनु, धन, धनवंतरि, विष और अश्व ये चौदह पदार्थ मिले थे। २. कुछ ढूँढ़ने के लिए बहुत अधिक की जानेवाली छान-बीन।

समुद्र-मालिनी--स्त्री० [सं०] पृथ्वी जो समुद्र को अपने चारों ओर माला की भाँति धारण किये हुए है।

समुद्र-मेखला--स्त्री० [सं०] पृथ्वी जो समुद्र को मेखला के समान धारण किये हुए है।

समुद्र-यात्रा--स्त्री० [सं०] समुद्र के द्वारा दूसरे देशों की होनेवाली यात्रा। (सी वॉयेज)

समुद्र-यान--पुं० [सं०] १. समुद्र के मार्ग से होनेवाली यात्रा। २. समुद्र के तल पर चलने वाली सवारी। समुद्री जहाज।

समुद्र-रसना--स्त्री० [सं० ब० स०] पृथ्वी।

समुद्र-लवण--पुं० [सं०] करकच नाम का नमक जो समुद्र के जल से तैयार किया जाता है।

समुद्र-लहरी--पुं० [सं०+हिं०] समुद्र के रंग की तरह का हरा रंग। (सी ग्रीन)

वि० उक्त रंग के रंग का।

समुद्र-वसना--स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

समुद्र-वह्नि--पुं० [सं०] बड़वानल।

समुद्र-वासी (सिन्)--वि० [सं०] [स्त्री० समुद्र-वासिनी] १. जो समुद्र में रहता हो। २. जो समुद्र के किनारे रहता हो।

समुद्र-वृष्टि न्याय—पुं० [सं०] कहावत की तरह प्रयुक्त होनेवाला एक प्रकार का न्याय जिसका प्रयोग यह जानने के लिए होता हैकि अमुक काम या बात भी उसी प्रकार व्यर्थ है जैसे समुद्र के ऊपर वृष्टि होना।

समुद्र-सार—पुं० [सं०] मोती।

समुद्र-स्थली—स्त्री० [सं० ष० त०] एक प्राचीन तीर्थ जो समुद्र के तट पर था।

समुद्रांबरा—स्त्री० [सं० ब० स०] पृथ्वी।

समुद्राभिसारिणी—स्त्री० [सं० ष० त०] वह कल्पित देवबाला जो समुद्र देव की सहचरी मानी जाती है।

समुद्रारु—पुं० [सं० समुद्र√ऋ (गमनादि)+उण्] १. कुंभीर नामक जल जंतु। २. तिमिंगल नामक जल-जन्तु। ३. समुद्र के किसी अंश पर बना हुआ पुल।

समुद्रावरण—स्त्री० [सं० ब० स०] पृथ्वी।

समुद्रिय—वि० [सं० समुद्र+घ–इय] १. समुद्र-संबंधी। समुद्र का। २. समुद्र से उत्पन्न। ३. समुद्र में या उसके तट पर रहने या होने वाला। ४. नौ-सैनिक। (नैवेल)

समुद्री—वि०=समुद्रिय।

समुद्री गाय—स्त्री० [हिं०] नीले रंग का एक प्रकार का समुद्री पशु जो प्रायः गौ के आकार का होता है। इसका मांस खाया जाता है और चरबी अच्छे दामों पर बिकती है।

समुद्री डाकू—पुं० [हिं०] वह जो समुद्र में चलनेवाले जहाजों आदि पर डाके डालता हो। जल-दस्यु। (पाइरेट)

समुद्री तार—पुं० [सं० कर्म० स०]समुद्र में पानी के भीतर से जानेवाला तार। (केबिल)

समुद्वह—वि० [सं० सम्–उद्√वह् (ढोना)+अच्] १. श्रेष्ठ। उत्तम। बढ़िया। ३. ढोने या वहन करनेवाला।

समुद्वाह—पुं० [सं० सम्–उद्√वह् (ढोना)+घञ्] विवाह।

समुन्नत—वि० [सं० सम्–उत्√नम् (झुकना)+क्त] [भाव० समुन्नति] १. जिसकी यथेष्ट उन्नति हुई हो। खूब बढ़ा-चढ़ा। २. बहुत ऊँचा।

पुं० वास्तु शास्त्र में एक प्रकार का खंभा या स्तंभ।

समुन्नद्ध—वि० [सं० सम्–उत्√नह् (बाँधना)+क्त] १. जो अपने आपको पंडित समझता हो। २. अभिमानी। घमंडी। ३. उत्पन्न। जात।

पुं० प्रभु। मालिक। स्वामी।

समुन्नयन—पुं० [सं०] [भाव० समुन्नति] १. ऊपर की ओर उठाने या ले जाने की क्रिया। २. प्राप्ति। लाभ।

समुपकरण—पुं०[सं० सम्–उप√कृ (करना)+ल्युट्–अन]१. उपकरण। २. सामग्री।

समुपवेशन—पुं० [सं० सम्–उप√विश् (प्रवेश करना)+ल्युट्–अन] १. अच्छी तरह बैठने की क्रिया। २. अभ्यर्थना।

समुपस्थान—पुं० [सं० सम्–उप√स्था (ठहरना)+ल्युट्–अन] सामने आकर उपस्थित होना।

समुपस्थित—वि० [सं० सम्–उप√स्था (ठहरना)+क्त] [भाव० समुपस्थिति] १. सामने आया हुआ। उपस्थित। २. प्रकट।

समुपस्थिति—स्त्री० [सं० सम्–उप√स्था (ठहरना)+क्तिन्]=समुपस्थान।

समुपेत—वि० [सं० सम्-उप√इण् (गत्यादि)+क्त] १. पास आया या पहुँचा हुआ। २. एकत्र किया हुआ। ३. ढेर के रूप में लगाया हुआ। ३. बसा हुआ। आबाद।

समुल्लास—पुं० [सं० सम्-उत्√लस् (क्रीड़ा करना)+घञ्] [भू० कृ० समुल्लसित] १. उल्लास। आनन्द। प्रसन्नता। खुशी। २. ग्रन्थ आदि का परिच्छेद या प्रकरण।

समुहा†— वि० [सं० सम्मुख] १. सामने का। २. सामने की दिशा में स्थित।

अव्य० १. सामने। २. सीधे।

समुहाना—अ० [हिं० समुहा] सामने आना या होना।

स० सामने करना या लाना। उदा०—सबही तन समुहानि छिन चलति सबनि पै दीठ।–बिहारी।

समुहैं†— अव्य०=सामुहै। (सामने)।

समूचा—वि० [सं० समुच्चय] आदि से अन्त तक जितना हो, वह सब। जिसके खंड या विभाग न किये गए हों। कुल। पूरा। सब।

समूढ—वि० [सं० सम्√वह् (ढोना)+क्त, ह=दृढ़-त=थ=ढ-व=ड] १. ढेर के रूप में लगाया हुआ। २. इकट्ठा किया हुआ। संगृहीत। ३. पकड़ा हुआ। ४. भोगा हुआ। भुक्त। ५. विवाहित। ६. जो अभी उत्पन्न हुआ हो। सद्यःजात। ७. जो मेल में ठीक बैठता हो। संगत।

पुं० १. ढेर। समूह। २. आगार। भंडार।

समूर—पुं० [फा० समूरु से] शंबर या साँबर नामक हिरन।

समूल—वि० [सं० अव्य० स०] १. जिसमें मूल या जड़ हो। २. जिसका कोई मुख्य कारण या हेतु हो।

क्रि० वि० जड़ या मूल से। जैसे—किसी का समूल नाश करना।

समूह—पुं० [सं०] १. एक स्थान पर एक ही तरह की संख्या में अत्यधिक वस्तुओं की स्थिति। जैसे—पक्षियों या पशुओं का समूह। २. बहुत से व्यक्तियों का जमघट। समुदाय।

समूहतः—क्रि० वि० [सं०] समूह के रूप में। सामूहिक रूप से। (एन ब्लॉक) जैसे—सुधारवादियों ने समूहतः त्याग-पत्र दे दिया।

समूहना—पुं० [सं०] [भू० कृ० समूहित] १. कई चीजों को एक में मिलाकर उन्हें समूह का रूप देना। २. राशि। ढेर। ३. दे० 'संश्लेषण'। (भाषा-विज्ञान)

समूहनी—स्त्री० [सं० समूहन-ङीष्] झाड़ू। बुहारी।

समूहित—भू० कृ० [सं०] समूह के रूप में रखा या लाया हुआ।

समूहीकरण—पुं० [सं० समूह+करण] वस्तुओं के ढेर या समूह बनाने की क्रिया या भाव।

समृति—स्त्री०=स्मृति।

समृद्ध—वि० [सं० सम्√ऋध् (वृद्धि करना)+क्त] [भाव० समृद्धि] १. जिसके पास बहुत अधिक संपत्ति हो। संपन्न। धनवान्। समृद्धिशाली। २. कृतार्थ। सफल। ३. सशक्त। ४. अधिक। बहुत। ५. प्रभावशील।

समृद्धि--स्त्री० [सं०] १. समृद्ध होने की अवस्था या भाव। २. बहुत अधिक संपन्नता। ऐश्वर्य। अमीरी। ३. कृतकार्यता। सफलता। ४. अधिकता। बहुलता। ५. शक्ति। ६. प्रभावकारक प्रधानता।

समृद्धी (द्धिन्)--वि० [सं० समृद्धि+इनि] जो बराबर अपनी समृद्धि करता रहता हो।

स्त्री०=समृद्धि।

समृष्ट--भू० कृ० [सं०] झाड़-पोंछ की अच्छी तरह साफ किया हुआ।

समेकन--पुं० [सं० सम+एकन] [वि० समेकनीय, भू० कृ० समेकित] १. दो या अधिक वस्तुओं आदि का आपस में मिलकर पूर्णतः एक हो जाना। २. रसायन-शास्त्र में, दो या अधिक पदार्थों का गलकर या और किसी रूप में एक हो जाना (फ्यूज़न)

समेकनीय--वि० [सं०] जिसका समेकन हो सके। जो दूसरों में पूर्णतः मिलकर उसके साथ एक हो सके। (फ्यूज़िबुल)

समेकित--भू० कृ० [सं०] जिसका समेकन किया गया हो अथवा हुआ हो। (फ़्यूज़्ड)

समेट--स्त्री० [हिं० समेटना] १. समेटने की क्रिया या भाव। २. समेटी हुई वस्तु।

समेटना--स० [हिं० सिमटना] १. बिखरी हुई चीजों को इकट्ठा करना। २. ग्रहण या धारण करना जैसे--किसी का सत्र समेटना।

समेत--वि० [सं०] १. किसी के साथ मिला या लगा हुआ। संयुक्त। २. पास आया हुआ।

अव्य० सहित। साथ।

समेध--पुं० [सं० सम्√ एध् (वृद्धि करना)+अच्] पुराणानुसार मेरु के अंतर्गत एक पर्वत।

समै, समैया*--पुं०=समय।

समो*--पुं०=समय।

समोखना*--स० [?] जोर देकर या ताकीद से कहना।

समोच्च रेखा--स्त्री० दे० 'रूप-धेय'।

समोदक--वि० [सं० ब० स०, सम +उदक] जिसमें आधा पानी हो।

पुं० १. घोल। २. मठा।

समोना--स० [सं० समन्वय] १. कोई चीज अच्छी तरह किसी दूसरी चीज में भरना या मिलाना। समाविष्ट या सम्मिलित करना। जैसे--इतना बड़ा कथानक छोटी-सी कहानी में समो दिया है। २. इकट्ठा या संगृहीत करना। ३. प्रस्तुत करना। बनाना।

अ० १. निमग्न होना। डूबना। २. मग्न या लीन होना। उदा०--यों ही वृच्छ गये तें अब लौं राजस रंग समोये।--नागरीदास।

समोसा--पुं० [?] १. मैदे का बना हुआ तथा घी में तला हुआ नमकीन पकवान जिसके अन्दर आलू आदि भरे जाते हैं। २. उक्त प्रकार का बना हुआ कोई पकवान। जैसे--मलाई का समोसा।

समोह--पुं० [सं०] समर। युद्ध।

समौ†--पुं०=समय।

समौरिया--वि० [सं० सम+हिं० उमर-इया (प्रत्य०)] किसी की तुलना में समान वय वाला। समवयस्क।

सम्मत--वि० [सं० सम्√मन् (मानना)+क्त] १. जिसकी राय किसी की बात से मिलती हो। २. जो किसी बात पर राजी या सहमत हो।

पुं० १. सम्मति। राय। २. अनुमति।

सम्मति--स्त्री० [सं०] [वि० सम्मत] १. सलाह। राय। २. अनुज्ञा। अनुमति। ३. किसी विषय में प्रकट किया जानेवाला मत या विचार। राय। (ओपीनियन) ४. किसी विषय में कुछ लोगों का एकमत होना। सहमति। (एग्रीमेन्ट) ५. किसी के प्रस्ताव या विचार को ठीक और उचित मानकर उसके निर्वाह के लिए दी जानेवाली अनुमति। सहमति। (कन्सेन्ट) ५. प्रतिष्ठा। सम्मान। ७. इच्छा। कामना। ८. आत्म-ज्ञान।

सम्मद--वि० [सं० सम् √ मद् (हर्षित होना)+अप्] आनंदित। प्रसन्न।

पुं० १. आमोद। प्रसन्नता। २. एक प्रकार की बहुत बड़ी मछली।

सम्मन--पुं० [अं० समन] न्यायालय द्वारा प्रेषित वह पत्र जिसमें किसी को न्यायालय में उपस्थित होने का आदेश दिया जाता है।

सम्मर्द--पुं० [सं० सम्√मृद् (मर्दन करना)+घञ्] १. युद्ध। लड़ाई। ३. जन-समूह। भीड़। ३. वाद-विवाद। ४. लड़ाई-झगड़ा।

सम्मर्दन--पुं० [सं० सम् √ मृद् (मर्दन करना)+ल्युट्--अन] [भू० कृ० सम्मर्दित] अच्छी तरह किया जानेवाला मर्दन।

सम्मर्दी (र्दिन्)--वि० [सं० सम्√ मृद् (मर्दन करना)+णिनि] अच्छी तरह मर्दन करनेवाला।

सम्मातृ--वि० [सं० ब० स०] जिसकी माता पतिव्रता हो। सती माता वाला।

सम्माद--पुं० [सं० सम्√ मद् (उन्मत्त होना)+घञ्] १. उन्माद। पागलपन। २. नशा।

सम्मान--पुं० [सं० सम्√ मान् (मान करना)+अच्] १. किसी के प्रति मन में होनेवाला आदरपूर्ण भाव। २. वे सब बातें जिनके द्वारा किसी के प्रति पूज्य भाव प्रकट या प्रदर्शित किया जाता है।

वि० मान या प्रतिष्ठा से युक्त।

अव्य० मान या प्रतिष्ठापूर्वक।

सम्मानन--पुं० [सं० सम्√मान् (आदर करना)+ल्युट्--अन] [भू० कृ० सम्मानित] १. सम्मान या आदर करना। २. बतलाना या सिखलाना।

सम्मानना--स० [सं० सम्मान] सम्मान करना। आदर करना।

स्त्री० [सं०] सम्मान।

सम्मानित--भू० कृ० [सं० सम्√मान् (सम्मानित होना)+क्त] १. जिसका सम्मान किया गया हो। २. जिसे सम्मानपूर्वक लोग देखते हों।

सम्मानी (निन्)--वि० [सं० सम्√ मान् (आदर करना)+णिनि] जिसमें सम्मान का भाव हो।

सम्मान्य--वि० [सं० सम्√ मान् (आदर करना)+यत्] जिसका सम्मान किया जाना आवश्यक और उचित हो। आदरणीय।

सम्मार्ग--पुं० [सं० कर्म० स०] १. अच्छा मार्ग। सत् मार्ग। २. ऐसा मार्ग जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो।

सम्मार्जक--वि० [सं० सम्√ मृज् (युद्ध करना)+ण्वुल्--अक] सम्मार्जन करनेवाला।

पुं० झाड़।

सम्मार्जन--पुं० [सं० सम्√मृज् (युद्ध करना)+विच् ल्युट्-अन] [भू० कृ० सम्मार्जित] १. झाड़ना-बुहारना। २. साफ करना। ३. स्नानादि (मूर्ति का)। ४. स्रुवा के साथ काम आनेवाला कुश का मुट्ठा। ५. झाड़ू।

सम्मार्जनी--स्त्री० [सं० सम्मार्जन--ङीष्] झाड़ू। बुहारी। कूँचा।

सम्मित--भू० कृ० [सं० सम्√मा (सदृश करना)+क्त] १. मापा हुआ। २. समान। सदृश। ३. जिसके अंगों में आनुपातिक एकरूपता तथा सामंजस्य हो। (सिमेट्रिकल)

सम्मिति--स्त्री० [सं० सम्√मा (ऊँची कामना)+क्तिन्] १. तुल्य या समान करना। २. तुलना। करना।

सम्मिलन--पुं० [सं० सम्√ मिल् (मिलना)+ल्युट्--अन] १. मेल-मिलाप। २. दो विभिन्न इकाइयों का मिलकर एक होना। जैसे--भारत में गोवा का सम्मिलन। ३. सम्मेलन। (दे०)

सम्मिलनी†--स्त्री०=सम्मेलन। उदा०--सम्मिलनी का बिगुल बजा। --अज्ञेय।

सम्मिलित--भू० कृ० [सं० सम्√मिल् (मिलना)+क्त] १. किसी के साथ मिला या मिलाया हुआ। २. जो मिल-जुल कर किया गया हो। सामूहिक। जैसे--सम्मिलित प्रयास से ही यह संभव हुआ है।

सम्मिश्र--वि० [सं० सम्√ मिश्र् (मिलाना)+अच्] एक में या साथ-साथ मिलाया हुआ।

सम्मिश्रक--पुं० [सं०] १. वह जो किसी प्रकार का सम्मिश्रण करता हो। २. वह व्यक्ति जो ओषधियों, विशेषतः विलायती ओषधियों आदि के मिश्रण प्रस्तुत करता हो। (कम्पाउंडर)

सम्मिश्रण--पुं० [सं०] [भू० कृ० सम्मिश्रित, कर्ता सम्मिश्रक] १. अच्छी तरह मिलाने की क्रिया। २. मेल। मिलावट। ३. औषध तैयार करने के लिए कई प्रकार की ओषधियाँ एक में मिलाना। (कम्पाउंडिंग)

सम्मीलन--पुं० [सं० सम् √ मिल् (संकुचित होना)+ल्युट्--अन] [भू० कृ० सम्मिलित] १. (पुष्पादि का) संकुचित होना। मुँदना। २. ढका जाना। ३. (चन्द्रमा) या सूर्य का पूर्णग्रहण। खग्रास।

सम्मुख--अव्य० [सं० ब० स०] १. सामने। समक्ष। आगे। २. बिलकुल सीधे।

सम्मुखी--वि० [सं० सम्मुख+इनि] जो सम्मुख या सामने हो। सामने का।

पुं० दर्पण। आइना।

सम्मुखीन--वि० [सं० सम्मुख+ईन] जो सम्मुख हो। सामने का।

सम्मढ़--वि० [सं० सम्√मुह् (मुग्ध होना)+क्त] १. मोह में पड़ा हुआ। २. मूढ़। मूर्ख। ३. अनजान। अबोध। ४. टूटा हुआ। ५. ढेर के रूप में लगा हुआ।

सम्मूढ़-पीड़िका--स्त्री० [सं०] वैद्यक में, एक प्रकार का शुक्र रोग जिसमें लिंग टेढ़ा हो जाता है और उस पर फुंसियाँ निकल आती हैं।

सम्मूर्च्छन--पुं० [सं० सम्√ मूर्च्छा (मुग्ध होना आदि)+ल्युट्--अन] [भू० कृ० सम्मूर्च्छित] १. भली भाँति व्याप्त होने की क्रिया। अभिव्याप्ति। २. मूर्च्छा। बेहोशी। ३. बढ़ती। वृद्धि। ४. फैलाव। विस्तार।

सम्मृष्ट--भू० कृ० [सं० सम्√मृज् (शुद्ध होना)+क्त] १. अच्छी तरह साफ किया हुआ। २. छाना हुआ।

सम्मेलन--पुं० [सं०] १. मनुष्यों का किसी विशेष उद्देश्य से अथवा किसी विशेष विषय पर विचार करने के लिए एकत्र होनेवाला समाज। (कॉन्फ्रेंस) २. जमावड़ा। जमघट। ३. मिलाप। संगम। ४. कोई बहुत बड़ी संस्था। जैसे--हिन्दी साहित्य सम्मेलन।

सम्मोद--पुं० [सं० सम्√मुद् (हर्षित होना)+घञ्] १. प्रीति। प्रेम। २. मोद। हर्ष।

सम्मोह--पुं० [सं० सम्√मुह् (मोहित करना)+घञ्] १. मोह। २. प्रेम। ३. भ्रम। धोखा। ४. सन्देह। ५. मूर्च्छा। बेहोशी। ६. एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण और एक गुरु होता है।

सम्मोहक--वि० [सं० सम्√मुह् (मुग्ध होना)+णिच्-ण्वुल्-अक] १. सम्मोहन करनेवाला। सम्मोहन-शक्ति से युक्त। २. मनोहर। सुन्दर।

पुं० सन्निपात ज्वर का एक भेद।

सम्मोहन--पुं० [सं०] १. इस प्रकार किसी को मुग्ध करना कि उसमें हिलने-डुलने, करने-धरने तथा सोचने-विचारने की शक्ति न रह जाय। २. वह गुण या शक्ति जिसके द्वारा किसी को उक्त प्रकार से मुग्ध किया जाता है। ३. शत्रु को मुग्ध करने का एक प्राचीन अस्त्र। ४. कामदेव का एक वाण।

वि० सम्मोहक।

सम्मोहनी--स्त्री० [सं० सम्मोहन-ङीप्] १. लोगों को मोह में डालने या मुग्ध करनेवाली एक तरह की माया। २. लाक्षणिक अर्थ में, वह शक्ति जो मनुष्य को असमर्थ बनाकर भुलावे में डाल देती है।

सम्मोहित--भू० कृ० [सं० सम्-मुह् (मुग्ध करना)+णिच्-क्त] १. सम्मोहन के द्वारा जो मुग्ध, मोहित या वशीभूत किया गया हो। २. बेहोश किया हुआ।

सम्म्राज*--पुं०=साम्राज्य।

सम्यक्--पुं० [सं०] समुदाय। समूह।

वि० १. पूरा। सब। समस्त। २. उचित। उपयुक्त। ३. ठीक। सही। ४. मनोनुकूल।

क्रि० वि० १. पूरी तरह से। २. सब प्रकार से। ३. अच्छी तरह। भली भाँति।

सम्यक्-चरित्र--पुं० [सं०] जैनियों के अनुसार धर्मत्रय में से एक धर्म। बहुत ही धर्म का तथा शुद्धतापूर्वक आचरण करना।

सम्यक्-ज्ञान--पुं० [सं०] उचित ज्ञान।

पुं० [सं०] जैनियों के अनुसार धर्मत्रय में से एक। रत्नत्रय, सातों तत्त्वों, आत्मा आदि में पूरी पूरी श्रद्धा होना।

सम्यक्-संबुद्ध--वि० [सं०] वह जिसे सब बातों का पूरा और ठीक ज्ञान प्राप्त हो गया हो।

पुं० गौतम बुद्ध का एक नाम।

सम्यक् समाधि--स्त्री० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक प्रकार की समाधि।

सम्याना†--पुं०=शामियाना।

सम्रथ†--वि०=समर्थ।

सम्राजना---अ० [सं० सम्राज्] अच्छी तरह प्रतिष्ठित, स्थापित या विराजमान होना। उदा०---नाम-प्रताप शम्भु सम्राजे।---निराला।

सम्राज्ञी---स्त्री० [सं०] १. वह स्त्री जो किसी साम्राज्य की स्वामिनी हो। २. सम्राट् की पत्नी।

सम्राट्---पुं० [सं०] साम्राज्य का स्वामी।

विशेष---प्राचीन भारत में, यह पद उसी बड़े राजा को प्राप्त होता था जो राजसूय यज्ञ कर चुका होता था।

सम्रिति†---स्त्री०=स्मृति।

सम्हलना---अ०=सँभलना।

सयण†---पुं० [सं० सज्जन]=साजन (प्रियतम)। (राज०)

सयन---पुं० [सं०] बंधन।

†पुं०=शयन।

सयल†---वि० [सं० सकल] सब उदा०---सवालष्ष उत्तर सयल, कमऊँ गढ़ दूरंग।---चंदवरदायी।

†स्त्री०=सैर।

†पुं०=शैल।

सयान†---वि०=सयाना।

पुं०=सयानपन।

सयानप*---स्त्री०=सयानपन।

सयानपत*---स्त्री० [हिं० सयाना+पत (प्रत्य०)] १. सयाने होने की अवस्था या भाव। २. चालाकी। होशियारी।

सयानपन---पुं० [हिं० सयान+पन (प्रत्य०)] १. सयाना होने की अवस्था, गुण या भाव। २. चतुरता। होशियारी। ३. चालाकी। धूर्तता।

सयाना---वि० [सं० सज्ञान] [स्त्री० सयानी] १. जो बाल्यावस्था पार करके युवक या वयस्क हो चला हो। जैसे---अब तुम लड़के नहीं हो, सयाने हुए। २. बुद्धिमान्। समझदार। ३. चालाक। होशियार। ४. कपटी और धूर्त।

पुं० १. अनुभवी तथा बुद्धिमान् विशेषतः अधिक अवस्थावाला। अनुभवी तथा बुद्धिमान् व्यक्ति। २. ओझा। ३. हकीम। ४. गाँव का मुखिया।

सयानाचारी---स्त्री० [हिं० सयाना+चार (प्रत्य०)] वह रसूम जो गाँव के मुखिया को मिलता था।

सयानी---स्त्री० [हिं० सयाना] १. सयाने होने की अवस्था या भाव। सयानपन। २. चतुराई। चालाकी। उदा०---तू काहै कौं करति सयानी।---सूर। ४. अनुभवी तथा बुद्धिमान् स्त्री। जैसे---किसी सयानी से राय लेनी थी।

सयोनि---वि० [सं० ब० स०] [भाव० सयोनिता] १. जो एक ही योनि से उत्पन्न हुए हों। २. एक ही जाति या वर्ग के।

पुं० इंद्र।

सरंग---वि० [सं० √ सं (गायादि)+अङ्गच्] १. रंगदार। २. सानुनासिक।

पुं० १. चौपाया। २. चिड़िया। पक्षी। ३. एक तरह का हिरन।

सरंगा†---स्त्री० [हिं० सारंग?] पुरानी चाल का एक प्रकार की नाव जो बहुत तेज चलती थी। उदा०---सरंगा सरंगा पेलि चलाएसि खिनखिन जियहि सकाइ।---मल्ला दाऊद।

†पुं० [हिं० सारंगी] बड़ी सारंगी (बाजा)।

सरंगी---स्त्री०=सारंगी।

सरंजाम---पुं० [फा०] १. काम का पूरा होना। पूर्ति। २. प्रबंध। व्यवस्था। ३. तैयारी।

सरंड---पुं० [सं० √सृ (गत्यादि)+अ डच्] १. पक्षी। २. लंपट। ३. गिरगिट। ४. दुष्ट व्यक्ति। ५. एक प्रकार का आभूषण।

सरंदीप---पुं०=सरनदीप।

सरंध्र---वि० [सं०] जिसमें छिद्र हो। दे० 'छिद्रल'।

सर (स)---पुं० [सं०] बड़ा तालाब। ताल।

स्त्री० [सं० सदृक् या सदृश] समानता। बराबरी।

मुहा०---**किसी की सर पूजना**=किसी की बराबरी तक पहुँचना।

†स्त्री० [सं० शर] चिता। उदा०---अब सर चढ़ौं, जरौं जरु सती।---जायसी।

†पुं० [सं० स्वर] आवाज। ध्वनि। उदा०---कोकिल कंठ सुहाइ सर।---प्रिथीराज।

पुं० [सं० अवसर का अनु०] ऐसा अवसर जो किसी काम के लिए उपयुक्त न हो।

मुहा०---**सर अवसर न देखना या समझना**= यह न सोचना कि अमुक काम के लिए यह अवसर ठीक है या नहीं। उदा०---नृप सिसुपाल महापद पायौ, सर अवसर नहिं जान्यौ।---सूर।

†अव्य० [सं० सह] सं० 'सं' की तरह युक्त या 'सहित' के अर्थ में प्रयुक्त होनेवाला अव्यय। जैसे---सरजीव=सजीव, सरधन=धनवान।

†पुं० दे० 'साथिया'।

पुं० [सं० शीर्ष या शिरस् से फा०] १. सिर। (मुहा० के लिए दे० 'सिर' के मुहा०) २. अंतिम या ऊपरी भाग। सिरा। ३. चरम सीमा। हद।

मुहा०---**(कोई काम या बात) सर पहुँचाना**= (क) समाप्त करना। (ख) ठिकाने या हद तक पहुँचना।

वि० १. बलपूर्वक दबाया हुआ। जैसे---प्रतियोगी को सर करना। २. हराया हुआ। पराजित। जैसे---लड़ाई में दुश्मन की फौज को सर करना। ३. (काम) पूरा या समाप्त किया हुआ। ४. सबसे बड़ा, प्रधान या मुख्य। जैसे---अगर वह खूनी है तो मैं सर खूनी हूँ।

स्त्री० १. गंजीफा, ताश, आदि के खेल में, ऐसा पत्ता जिससे जीत निश्चित हो। २. उक्त खेलों में जीती जानेवाली बाजी या हाथ। जैसे---हमारी चार सरें बनी हैं।

पुं० [अं०] १. महोदय २. ब्रिटिश राज्य की एक सम्मानित उपाधि। जैसे---सर फीरोजशाह मेहता।

सर अंजाम---पुं० [फा०]=सरंजाम।

सरई†---स्त्री०=सरहरी (सरपत)।

सरकंडा---पुं० [सं० शरकंड] सरपत की जाति का एक पौधा जिसमें गाँठ वाली छड़ें होती हैं।

सरक---पुं० [सं० √सृ (गत्यादि)+वुन्---अक] १. सरकने की क्रिया। खिसकना। चलना। २. यात्रियों का दल। ३. शराब पीने का पात्र। ४. गुड़ की शराब। ५. शराब पीना। मद्य-पान। ६. शराब की खुमारी।

सरकना—अ० [सं० सरक, सरण] १. गोजर, छिपकली, साँप आदि के संबंध में, पेट से रगड़ खाते हुए आगे बढ़ना। २. धीरे-धीरे तथा थोड़ा-थोड़ा आगे बढ़ना। ३. लाक्षणिक अर्थ में, काम चलना।

मुहा०—सरक जाना= मर जाना। (बाजारू)

सरकश—वि० [फा०] [भाव० सरकशी] १. किसी के विरुद्ध सिर उठानेवाला। २. सहज में न दबनेवाला। उद्दंड। उद्धत। ३. विद्रोही। बागी। ४. बहुत बड़ा दुष्ट और पाजी।

सरकशी—स्त्री० [फा०] सरकश होने की अवस्था या भाव ।

सरका—पुं० [अ० सर्क] चोरी।

†पुं० [हिं० सरकना] हस्त-क्रिया। हस्त-मैथुन।

क्रि० प्र०—कूटना।

सरकार—स्त्री ० [फा०] [वि० सरकारी] १. किसी देश के वे सब राज्य-कर्मचारी जिनके हाथ में प्रशासन संबंधी अधिकार होते हैं। शासन। २. किसी देश के सम्राट्, राष्ट्रपति या मुख्य मन्त्री द्वारा चुने हुए मंत्रियों का वह दल जो सामूहिक रूप से उस देश को शासित करता है। (गवर्नमेंट)

पुं० १. प्रभु। २. मालिक। स्वामी। २. राजा, शासक या सम्राट्।

सरकारी—वि० [फा०] १. सरकार-संबंधी। जैसे—सरकारी काम, सरकारी हुकुम। २. जिसका दायित्व या भार सरकार पर हो। जैसे—वे सरकारी खर्च पर दिल्ली गये हैं। ३. राज्य-संबंधी। जैसे—सरकारी गवाह। ४. नौकर की दृष्टि से उसके मालिक का।

सरकारी कागज—पुं० [हिं०] १. सरकारी कार्यालय या विभाग का कागज। २. प्रामिसरी नोट।

सरकारी गवाह—पुं० [हिं०] वह व्यक्ति जो अपराधियों का साथ छोड़कर उनके विरुद्ध गवाही देता हो। भेद-साक्षी।

सरक्क*—वि० [हिं० सरक=मद्य-पात्र] मत्त। मस्त। उदा०—मद सरक्क, पट्टे तिना।—चंदबरदाई।

सरखत—पुं० [फा०] १. वह कागज या छोटी बही जिस पर मकान आदि के किराये या इसी प्रकार के और लेन-देन का ब्योरा लिखा जाता है। २. किसी प्रकार का अधिकार-पत्र या प्रमाण-पत्र। उदा०—तुलसी निहाल कै कै दियो सरखतु हैं।—तुलसी। ३. आज्ञापत्र। परवाना। ४. इकरारनामा।

सरखप*—पुं०=सर्षप (सरसों)।

सरग*—पुं०=स्वर्ग।

सरगना†—पुं० [फा० सर्गनः] सरदार। अगुवा। जैसे—चोरों का सरगना।

†अ० [?] डींग हाँकना। शेखी बघारना।

सरग दुवारी†—पुं०=स्वर्ग-द्वार।

सरग-पताली—वि० [सं० स्वर्ग+पताल +हिं० **ई** (प्रत्य०)] १. एक ओर स्वर्ग को और दूसरी ओर पताल को छूनेवाला। २. (गाय या बैल) जिसका एक सींग ऊपर उठा हो और दूसरा नीचे झुका हो। ३. (व्यक्ति) जिसकी एक आँख की पुतली ऊपर की ओर और दूसरी नीचे की ओर रहती हो।

सरगम—पुं० [हिं० सा, रे, ग, म] १. संगीत में, षडज से निषाद तक के सातों स्वरों का समूह। स्वर-ग्राम। २. उक्त स्वर भिन्न भिन्न प्रकारों से साधने की क्रिया या प्रणाली। ३. किसी गीत, तान या राग में लगनेवाले स्वरों का उच्चारण। जैसे—इस तान या लय का सरगम तो कहो।

सर-गरोह—पुं० [फा०] किसी गरोह (जत्थे या दल) का प्रधान नेता। मुखिया।

सरगर्म—वि० [फा०] [भाव० सरगर्मी] १. जोशीला। आवेशपूर्ण। २. उत्साह या उमंग से भरा हुआ।

सरगर्मी—स्त्री० [फा०] १. सरगर्म होने की अवस्था या भाव। २. बहुत बढ़ा हुआ आवेग, उत्साह या उमंग।

सर-गुजश्त—स्त्री० [फा०] १. सिर पर बीती हुई बात। २. बयान। वर्णन। ३. जीवन-चरित्र।

सरगुना†—वि०=सगुण।

सरगुनिया—पुं० [हिं० सरगुन] सगुण ब्रह्म का उपासक।

सरगोशी—स्त्री० [फा०] १. कान में कोई बात कहना। २. किसी के पीठ पीछे उसकी शिकायत करना।

सर-घर—पुं० [सं० शर+हिं० घर] तरकश। तूणीर।

सरघा—स्त्री० [सं० सर√हन् (मारना) +ड, निपा० सिद्ध] मधुमक्खी।

सरज†—स्त्री० [सं० सृज्] माला। उदा०—सरज दिहें तें स्रवन लजाना।—नूरमोहम्मद।

स्त्री० [अं० सर्ज] एक प्रकार का बढ़िया ऊनी कपड़ा।

सरजद—वि० [फा० सर-जदन से] १. प्रकट। जाहिर। २. किया हुआ। कृत।

सरजना*—स० [सं० सर्जन] १. सर्जन करना। २. बनाना। रचना।

सर-जमीन—स्त्री० [फा०] १. भूमि। जमीन। २. देश। मुल्क।

सरजा—वि० [सं०] ऋतुमती (स्त्री)।

पुं० [फा० सरजाह] १. सरदार। २. सिंह। शेर। ३. छत्रपति शिवाजी की उपाधि।

सरजिव (जीव)*—वि०=सजीव। उदा०—सरजीउ काटहिं, निरजीउ पूजहिं अंत काल कहुँ भारी।—कबीर।

सर जीवन†—वि० [सं० संजीवन] १. संजीवन। जिलानेवाला। २. उपजाऊ। २. हरा-भरा।

सरजेंट†—पुं०=सार्जेंट (एक सैनिक अधिकारी)।

सर-जोर—वि० [फा०] [भाव० सरजोरी] १. जबरदस्त। प्रबल। २. उद्दंड। उद्धत।

सरट—पुं० [सं० √सृ (गत्यादि)+अरन्] १. छिपकली। २. छिपकली की तरह के सरीसृपों का एक वर्ग जिनका शरीर और दुम प्रायः दोनों बहुत लंबे होते हैं। (लिजर्ड)

विशेष—जीव-सृष्टि के आरंभिक युगों में इस वर्ग के बहुत बड़े-बड़े जंतु हुआ करते थे, पर आज-कल उनके वंशज अपेक्षया छोटे होते हैं।

३. गिरगिट। ४. वायु। ५. धागा।

सरण—पुं० [सं०] १. धीरे धीरे आगे बढ़ना या चलना। २. सरकना। खिसकना।

†स्त्री०=शरण।

सरणि—स्त्री० [सं०]=सरणी।

सरणी—स्त्री०[सं०]१. मार्ग। रास्ता। २. पगडंडी। ३. सीधी रेखा। लकीर। ४. चली आई हुई परिपाटी या प्रथा। ढर्रा।

सरण्यु—पुं०[सं० √सृ (गत्यादि)+अन्यु] १. वायु। २. बादल। ३. जल। ४. बसंत। ५. अग्नि। ६. यम।

सरतान—पुं० [अ०] १. केकड़ा। २. कर्क राशि। ३. कर्कट नामक सांघातिक व्रण। कर्कटार्बुद। (कैन्सर)

सरता-बरता—पुं०[सं० वर्त्तन, हिं० बरतना+अनु० सरतना] आपस में बाँटने या विभाजन करने की क्रिया या भाव।

सर-ताबी —स्त्री०[फा०]१. विद्रोह। २. उद्दंडता।

सरतारा*—वि० [?] १. जिसे सब प्रकार की निश्चिन्तता हो। २. अपना काम पूरा कर लेने के उपरान्त जो निश्चिन्त हो गया हो।

सरद†—स्त्री०=शरद ऋतु।

वि०=सर्द (ठंढा)।

सरदई—वि० [हिं० सरदा+ई (प्रत्य०)] सरदे के रंग का। हरापन लिये पीला।

पुं० उक्त प्रकार का रंग।

सरद-परब (पर्ब)—पुं० दे० 'शरद् पूर्णिमा'।

सर-दर—अव्य०[फा० सर+दर=भाव] १. एक सिर से। २. सब मिलाकर एक साथ। सबको एक मानकर उनके विचार से। ३. औसत के विचार या हिसाब से।

सरदल—पुं०[देश०] दरवाजे का बाजू या साह।

अव्य०=सर-दर।

सरदा—पुं०[फा० सर्दः] कश्मीर तथा अफगानिस्तान में होनेवाला खरबूजे की जाति का एक प्रकार का फल जो खरबूजे की अपेक्षा अधिक बड़ा तथा अधिक मीठा होता है।

सरदाना†—अ० [हिं० सरदी] सरदी लगने के कारण ठंढा, मन्द या शिथिल होना।

स० सरदी के प्रभाव से युक्त करके ठंढा या मन्द करना।

सरदाबा—पुं०[फा० सर्दाबः] १. ठंढे जल से किया जानेवाला स्नान। २. वह स्थान जहाँ ठंढा करने के लिए पानी रखा जाता हो। ३. जमीन के नीचे बना हुआ कमरा। तहखाना। ४. कब्रिस्तान या समाधि-स्थल।

सरदार—पुं०[फा०]१. किसी मंडली का नेता। नायक। अगुआ। नेता। जैसे—मजदूरों या सिपाहियों का सरदार। २. किसी छोटे प्रदेश का प्रधान शासक। ३. अमीर। रईस। ४. सिक्खों के नाम से पहले लगनेवाली एक मान-सूचक उपाधि। जैसे—सरदार योगेन्द्र सिंह। ५. वह जिसका वेश्या से संबंध हो। (वेश्याएँ)

सरदारी—स्त्री०[फा०] सरदार का पद, भाव या स्थिति। सरदारपन।

सरदियाना—अ०[हिं० सरदी]१. (जीव का) सरदी लगने से अस्वस्थ होना। २. लाक्षणिक अर्थ में, आवेश आदि शान्त होना। ठंढा पड़ना।

सरदी—स्त्री० [फा० सर्दी]१. ऋतु या वातावरण की वह स्थिति जिसमें भारी और मोटे कपड़े ओढ़ने-पहनने की आवश्यकता प्रतीत होती है। जाड़ा। शीत। 'गरमी' का विपर्याय। २. जाड़े का मौसिम। पूस-माघ के दिन। शीत काल। ३. जुकाम या प्रतिश्याय नामक रोग।

मुहा०—सरदी खाना=ठंढ सहना। शीत सहना।

सरदेशमुखी—स्त्री० [फा० सर=शीर्ष+सं० देश +मुखी ?] चौथ की तरह का एक प्रकार का राज-कर जो मराठा शासन-काल में जनता पर लगता था।

सरधन†—वि०=धनवान्।

सरधा†—स्त्री०=श्रद्धा।

पुं०=सरदा (फल)।

सरन*—स्त्री०=शरण।

सरन-दीप—पुं०[सं० स्वर्ण द्वीप या सिंहल द्वीप] उर्दू साहित्य में लंका द्वीप का पुराना नाम जो अरब वालों में प्रसिद्ध था।

सरना—अ० [सं० सरण=चलना, सरकना] १. सरकना। खिसकना। २. हिलना-डोलना। ३. कार्य आदि का निर्वाह होना। पूरा होना। जैसे—ब्याह का काम सरना। ४. उपयोग में आना। उदा०—हाथ वही, उन गात सरै।—रसखान। ५. शक्ति या सामर्थ्य के अनुसार होना। जैसे—जितना हमसे सरेगा, उतना हम भी दे देंगे। ६. परस्पर सद्भाव बना रहना। निभना। पटना।

सरनाई*—स्त्री०[सं० सरणागति] किसी की विशेषतः ईश्वर की शरण में जाने की अवस्था या भाव। शरणागति।

सरनापन्न†—वि०=शरणापन्न।

सरनाम—वि०[फा०] [भाव० सरनामी] जिसका नाम हो। प्रसिद्ध। मशहूर। विख्यात।

सरनामा—पुं०[फा०]१. किसी लेख या विषय का निर्देश जो ऊपर लिखा रहता है। शीर्षक। २. चिट्ठी-पत्री आदि के आरम्भ में सम्बोधन के रूप में लिखा जानेवाला पद। ३. भेजे जानेवाले पत्रों आदि पर लिखा जानेवाला पता।

सरनी†—स्त्री०=सरणी (मार्ग)।

सर-पंच—पुं०[फा० सर+हिं० पंच] पंचों में बड़ा और मुख्य व्यक्ति। पंचायत का सभापति।

सरपट—स्त्री०[सं० सर्पण] घोड़े की बहुत तेज चाल जिसमें वह दोनों अगले पैर साथ-साथ आगे फेंकता है।

अव्य० घोड़े की उक्त चाल की तरह तेज या दौड़ते हुए।

सरपत—पुं० [सं० शरपत्र] कुश की तरह की एक घास जिसमें टहनियाँ नहीं होतीं, बहुत पतली और हाथ दो हाथ लंबी पत्तियाँ ही मध्य भाग से निकलकर चारों ओर फैली रहती हैं। यह छप्पर आदि बनाने के काम में आता है। सरकंडा। सेंठा।

सरपना—अ०[सं० सर्पण] १. खिसकना। २. आगे बढ़ना।

सर-परदा—पुं० [फा० सर-पर्दः] संगीत में, बिलावल ठाठ का एक राग।

सर-परस्त—वि० [फा०] [भाव० सरपरस्ती] १. रक्षा करनेवाला। २. संरक्षक।

सर-परस्ती—स्त्री० [फा०] सरपरस्त होने की अवस्था या भाव। संरक्षण।

सरपी†—पुं०=सर्पी।

सर-पुत†—पुं०[हिं० सार=साला+पुत्त] साले का लड़का।

सर-पेच—पुं०[फा०]१. पगड़ी के ऊपर कलगी की तरह लगाने का एक जड़ाऊ गहना। २. एक प्रकार का गोटा जो दो-ढाई अंगुल चौड़ा होता है।

सर-पोश—पुं०[फा०] थाल या तश्तरी ढकने का कपड़ा।

सर-फ़राज—वि०[फा०] १. ऊँचे पद पर पहुँचा हुआ। २. जो कोई बड़ा काम करके धन्य हुआ हो। ३. जिसका सम्मान बढ़ाया गया हो।
मुहा०—किसी को सरफराज करना= वेश्या के साथ प्रथम समागम करना। (बाजारू)

सरफराना†—अ० [अनु०] व्यग्र होना। घबराना।

सरफा—पुं०[फा० सर्फ़ः] १. खर्च। व्यय। २. मितव्ययिता। कम-खर्ची।

सर-फोंका†—पुं०=सरकंडा।

सरबंग*—पुं०=सर्वांग।
अव्य० सर्वांगपूर्ण रूप से। सब तरह से।

सरबंधी—पुं०[सं० शरबंध] तीरंदाज। धनुर्धर।
†पुं०१.=संबंधी। २. समधी।

सरब†—वि०=सर्व।
†पुं०=सर्वस्व।

सरबग्य*—वि०=सर्वज्ञ।

सरबदा†—अव्य०=सर्वदा।

सर-बर—स्त्री०[हिं० सर+अनु० बर] समानता। बराबरी।
स्त्री० [अनु०] व्यर्थ की बकवाद या बहुत बढ़-चढ़कर की जानेवाली बात।

सरबरना*—अ०[हिं० सर-बर] किसी की समता य बराबरी करना।

सर-बराह—वि० [फा०] [भाव० सर-बराही] १. प्रबंधक। व्यवस्थापक। २. राज, मजदूरों आदि का सरदार। ३. रास्ते में खान-पान का और ठहरने आदि का प्रबंध करनेवाला।

सर-बराही—स्त्री०[फा०] सर-बराह का कार्य, पद या भाव।

सर-बरि†—स्त्री०=सरबर (बराबरी)। उदा०—प्रथमै बैस न सरबरि कोई।—जायसी।

सरबस†—पुं०=सर्वस्व।

सर-बुलंद—वि० [फा०] जिसका सिर ऊँचा हो या हुआ हो, फलतः प्रतिष्ठित या सफल।

सरबेटा—पुं० दे० 'सर-पूत'।

सरबोर†—वि०=शराबोर।

सरभंग—पुं०[सं० शर+भंग] अघोर पंथ (देखें) का एक नाम।

सरम†—पुं०=श्रम।
†स्त्री०=शरम।

सर-मग्जी—स्त्री० [फा० सर+मग्ज] माथा-पच्ची। सिर-खपाई।

सरमद—वि०[अ०]१. सदा बना रहनेवाला। २. मस्त। मत्त।

सरमना*—अ०=शरमाना (लज्जित होना)।
*स०=शरमाना (लज्जित करना)।

सरमा—स्त्री० [सं०]१. कुतिया। २. देवताओं की एक कुतिया। ३. दक्ष प्रजापति की एक कन्या। ४. कश्यप की पत्नी।
पुं०[फा०] [हिं० सरमाई] शीत-काल।

सरमाई—वि०[फा०] जाड़े का।
स्त्री० जाड़े के कपड़े। जड़ावर।

सरमाया—पुं० [फा० सरमायः] १. मूल-धन। पूँजी। २. धन-दौलत। सम्पत्ति।

सरया—पुं०[देश०] एक प्रकार का मोटा धान जिसका चावल लाल होता है। सारो।

सरयू—स्त्री० [सं०√सृ (गत्यादि)+अण्] उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी। इसी के तट पर अयोध्या बसी है।

सरयूपारी—वि०[हिं०] मध्य देशवालों की दृष्टि में, सरयू नदी के उस पार का। जैसे—सरयूपारी बैल।
पुं० ब्राह्मणों का वह वर्ग जो सरयू के उस पार अर्थात् गोरखपुर बस्ती आदि के रहनेवाले हैं।

सरर—पुं०[हिं०सरकंडा] बाँस या सरकंडे की पतली छड़ी जो ताना ठीक करने के लिए जुलाहे लगाते हैं। सथिया। सतगारा।

सरराना—अ०[अनु० सर सर] हवा बहने या हवा में किसी वस्तु के वेग से चलने का शब्द होना।

सरल—वि० [सं०] [स्त्री० सरला]१. जो सीधा किसी ओर चला गया हो; बीच में कहीं इधर-उधर घूमा या मुड़ा न हो। २. जो टेढ़ा या वक्र न हो। सीधा। ३. जिसकें मन में छल-कपट न हो। सीधा और भोला। ४. ईमानदार और सच्चा। ५. (कार्य) जिसे पूरा करने में कुछ भी कठिनता न हो। ६. (लेख आदि) जिसका अर्थ समझने में कठिनता न हो। आसान। सहज। ७. असली। खरा।
पुं०१. अग्नि। २. चीड़ का पेड़। ३. चीड़ का गोंद। गंधा बिरोजा। ४. एक प्रकार का पक्षी। ५. गौतम बुद्ध का एक नाम।

सरल-काष्ठ—पुं०[सं० ब० स०] चीड़ की लकड़ी।

सरलता—स्त्री०[सं०]१. सरल होने की अवस्था गुण या भाव। २. चरित्र, व्यवहार, स्वभाव आदि का सीधापन। सिधाई। भोलापन। ३. ईमानदारी और सच्चाई। ४. आसानी। सुगमता।

सरल-द्रव—पुं०[सं०]१. गंधा-बिरोजा। २. ताड़पीन का तेल।

सरल-निर्यास—पुं० [सं० ब० स०, ष० त० वा]१. गंधा-बिरोजा। २. ताड़पीन का तेल।

सरल-रस—पुं०[सं०]१. गंधा-बिरोजा। २. ताड़पीन का तेल।

सरलांग—पुं०[सं० ब० स०]१. गंधा-बिरोजा। २. ताड़पीन का तेल।

सरला—स्त्री०[सं० सरल-टाप्]१. चीड़ का पेड़। २. काली तुलसी। ३. मल्लिका। मोतिया। ४. सफेद निसोथ।

सरलित—भू० कृ०[सं० सरल+इतच्]सीधा या सहज किया हुआ।

सरलीकरण—पुं०[सं०] किसी कठिन काम,चीज, बात या विषय आदि को सरल करने की क्रिया या भाव। (सिम्प्लफ़िकेशन) जैसे—भाषा का सरलीकरण, वैज्ञानिक प्रक्रिया का सरलीकरण।

स-रव—वि०[सं० अव्य० स०]१. जिसमें रव या शब्द होता हो। २. शब्द करता हुआ।
†पुं०१.=सरो। २.=सराव।

सरवत—स्त्री०[अ० सर्वत] अमीरी। सम्पन्नता।

सरवती—स्त्री०[सं० सरवत्-ङीष्] वितस्ता नदी।

सरवन—पुं०[सं० श्रमण] अंधक मुनि के पुत्र श्रवण जो अपने पिता को एक बहँगी में बैठाकर ढोया करते थे।

सरवनी†—स्त्री०=सुमरनी।

सरवर—पुं०[फा०] सरदार। अधिपति।

†पुं०=सरोवर।

†स्त्री०=सरवरि।

सरवरि—स्त्री०[सं० सदृश, प्रा० सरिस+वर] बराबरी। तुलना। समता।

†स्त्री०=शर्वरी (रात)।

सरवरिया—वि०[हिं० सरवर] सरयूपार या सरवार का।

पुं०=सरयूपारी ब्राह्मण।

सरवरी—स्त्री०[फा०] सरवर होने की अवस्था या भाव। सरदारी।

सरवा†—पुं०[सं० शरावक] १. कटोरा। २. कसोरा। उदा०—द्वै उलटे सरवा मनौं दीसत कुछ उनहार।—रहीम।

†पुं०=साला (गाली)।

सरवाक—पुं०[सं० शरावक=प्याला] १. संपुट। प्याला। २. कसोरा। ३. दीया।

सरवान*—पुं०[?]१. तंबू। खेमा। २. झंडा। पताका।

†पुं०[फा० सारवान] [स्त्री० सरवानी] ऊँट चलानेवाला। उदा०—सरवानी विपरीत रस, किय चाहै न डराई।—रहीम।

सरवार—पुं० [हिं० सरयू+पार] सरयू नदी के उस पार का भूखण्ड, जिसमें गोरखपुर, देवरिया, बस्ती आदि नगर हैं।

सरवाला—पुं०[देश०] एक प्रकार की लता जिसे घोड़ा-बेल भी कहते हैं। बिलाई कंद इसी की जड़ होती है। घोड़ा-बेल।

†पुं०=सरवाला (सह-बाला)।

सर-शार—वि०[फा०] [भाव० सरशारी]१. मुँह तक भरा हुआ। लबालब। २. नशे में चूर। ३. मद-मत्त।

सरस—वि०[सं०] [भाव० सरसता]१. रस अर्थात् जल या किसी अन्य द्रव-पदार्थ से युक्त। २. किसी की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक अच्छा। ३. हरा और ताजा। ४. (रचना) जो भावमयी हो तथा जिसमें पाठक के मन के कोमल भाव जगाने की शक्ति हो। ५. रसिक। सहृदय। ६. सुन्दर। मनोहर।

पुं० छप्पय छंद के ३५वें भेद का नाम जिसमें ३६ गुरु, ८० लघु, कुल ११६ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं।

पुं०[सं० सरः] [स्त्री० अल्पा० सरसी] तालाब। जलाशय।

सरसई†—स्त्री०[हिं० सरसों] फल के छोटे अंकुर या दाने जो पहले दिखाई पड़ते हैं। जैसे—आम की सरसई।

स्त्री०१.=सरस्वती (देवी और नदी)। २.=सरसता।

सरसता—स्त्री०[सं०]१. सरस होने की अवस्था, गुण या भाव। २. रचना आदि का वह गुण जिसमें वह बहुत ही भावमयी और प्रिय लगती है। ३. व्यक्ति में होनेवाली रस ग्रहण करने की शक्ति। रसिकता। ४. मधुरता।

सरसती†—स्त्री०=सरस्वती।

सरसना—अ० [सं० सरस] १. हरा होना। पनपना। २. उन्मत्त होना। ३. अधिक होना। बढ़ना। ४. शोभित होना। सोहना। ५. रसपूर्ण होना। ६ बहुत अधिक कोमल या सरल भाव से युक्त होना। उदा०—सब देवनि सादर प्रनाम कर अति सुख सरसे।—रत्नाकर। ७. (आशय, कार्य आदि) पूरा होना। उदा०—कहि कबीर मन सरसी काज।—कबीर।

सर-सब्ज़—वि० [फा०] [भाव० सर-सब्जी] १. हरा-भरा। जो सूखा या मुरझाया न हो। लहलहाता हुआ। जैसे—सर-सब्ज पेड़। २. वनस्पतियों या हरियाली से युक्त। जैसे—सर-सब्ज मैदान।

सर-सर—पुं० [अनु०] १. जमीन पर रेंगने का शब्द। विशेषतः गोजर, साँप आदि जीवों के रेंगने से होनेवाला सर सर शब्द। २. वायु के चलने से होनेवाला सर सर शब्द।

क्रि० वि० १. सर-सर शब्द करते हुए। २. बहुत तेजी या फुरती से।

सरसराना—अ०[अनु० सर-सर]१. सर-सर की ध्वनि होना। जैसे—वायु का सरसराना, साँप का चलने में सरसराना। २. जल्दी जल्दी काम करना।

स० सर-सर शब्द उत्पन्न करना।

सरसराहट—स्त्री० [हिं० सर-सर+आहट (प्रत्य०)] १. वायु आदि चलने या साँप आदि के रेंगने से उत्पन्न ध्वनि। २. शरीर के किसी अंग में होनेवाली सुरसुराहट।

सरसरी—वि०[फा० सरासरी]१. जमकर या अच्छी तरह नहीं, बल्कि यों ही और जल्दी में होनेवाला। जैसे—सरसरी नजर से देखना। २. चलते ढंग से या मोटे तौर पर होनेवाला। (समरी) जैसे—सरसरी प्रक्रिया। (समरी प्रोसिडिंग); सरसरी व्यवहार दर्शन (समरी ट्रायल)।

सरसाई†—स्त्री० [हिं० सरसना+आई] सरसने की अवस्था या भाव। शोभा। सुहावनापन।

†स्त्री०=सरसता।

सरसाना—स० [हिं० सरसना का स०] सरसने में प्रवृत्त करना। दे० 'सरसना'।

†अ०=सरसना।

सरसाम—पुं०[फा०]सन्निपात या त्रिदोष नामक रोग।

सरसार—वि०=सरशार (मग्न)।

सरसिका—स्त्री० [सं०] १. छोटी सरसी। तलैया। २. बावली। ३. हिंगुपत्री।

सरसिज—वि० [सं० सरसि √ जन् (उत्पन्न करना)+ड] जो ताल में होता हो।

पुं० कमल।

सरसिज-योनि—पुं०[सं० ब० स०] कमल से उत्पन्न, ब्रह्मा।

सरसिरुह—वि०, पुं०=सरसिज।

सरसी—स्त्री०[सं०]१. छोटा सरोवर या जलाशय। २. बावली। ३. एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में २७ मात्राएँ (१६ वीं मात्रा पर यति) और अंत में गुरु और लघु होते हैं। इसे सुमंदर भी कहते हैं। होली के दिनों में गाया जानेवाला कबीर प्रायः इसी छंद में होता है।

†स्त्री०[हिं० सरस] वह जमीन जिसमें सरसता या नमी हो।

सरसीक—पुं०[सं० सरसी√कै (शब्द करना)+क] सारस पक्षी।

सरसीरुह—पुं०[सं०]१. कमल। २. संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सरसुति†—स्त्री०=सरस्वती।

सरसेटना—स० [अनु०] किसी को दबाने के लिए खरी-खोटी सुनाना। फटकारना।

सरसों—स्त्री० [सं० सर्षप] १. एक प्रसिद्ध फसल जिसकी खेती होती है। इसमें पीले-पीले रंग के फूल और काले रंग के छोटे छोटे दाने लगते हैं। **मुहा०—(किसी की) आँखों में सरसों फूलना**=अभिमान, प्रेम आदि के कारण सब जगह हरा-भरा दिखाई पड़ना।

२. उक्त पौधे के बीज जिन्हें पेर कर कड़ुआ तेल निकाला जाता है।

सरसौहाँ†—वि० [हिं० सरसना+औहाँ (प्रत्य०)] १. सरस। २. मधुर। ३. प्रिय।

सरस्वती—स्त्री० [सं०] [वि० सारस्वत] १. भारतीय पुराणों में, विद्या और वाणी की अधिष्ठात्री देवी जिनका वाहन हंस कहा गया है; और जिनके एक हाथ में पुस्तक दिखाई जाती है। वाग्देवी। भारती। शारदा। २. विद्या। इल्म। ३. पंजाब की एक प्राचीन नदी जिसका सूक्ष्म अंश अब भी कुरुक्षेत्र के पास वर्तमान है। ४. हठयोग में, सुषुम्ना नाड़ी। ५. संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी। ६. उत्तरभारतीय संगीत में, एक प्रकार की संकर रागिनी। ७. सोम लता। ८. ब्राह्मी बूटी। ९. मालकंगनी। १०. गौ। ११. एक प्रकार का छंद या वृत्त।

सरस्वती-कंठाभरण—पुं० [सं०] १. ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक। २. धार के परमार वंशी राजा भोज के द्वारा स्थापित की हुई एक प्रसिद्ध प्राचीन पाठशाला।

सरस्वती-पूजा—स्त्री० [सं०] १. सरस्वती की की जानेवाली पूजा। २. वसंत पंचमी जिस दिन सरस्वती की पूजा की जाती है। ३. उक्त अवसर पर होनेवाला उत्सव।

सरस्वान् (स्वत्)—वि० [सं० सरस्वत-नुम्-दीर्घ, नलोप] [स्त्री० सरस्वती] १. जलाशय-संबंधी। २. रसीला। ३. स्वादिष्ट। ४. सुन्दर। ५. भावुक।

पुं० १. समुद्र। २. नद। ३. भैंसा।

सरहंग—पुं० [फा०] [भाव० सरहंगी] १. सेना का प्रधान अधिकारी और नायक। २. पैदल सिपाही। ३. पहलवान। मल्ल। ४. चोबदार। पहरेदार। ५. कोतवाल।

वि० बलवान्। शक्तिशाली।

सरह—पुं० [सं० शलभ, प्रा० सरह] १. फतिंगा। २. टिड्डी।

सरहज—स्त्री०=सलहज।

सरहटी—स्त्री० [सं० सर्पाक्षी] सर्पाक्षी नाम का पौधा। नकुल कंद।

सरहत†—पुं० [देश०] खलिहान में फैला हुआ अनाज बुहारने का झाड़ू।

सरहतना†—**स० [देश०] साफ करने के लिए अनाज फटकना। पछोड़ना।**

सरहथ—पुं० [सं० शर या शल्य+हिं० हाथ] बरछी की तरह का एक हथियार जिससे बड़ी मछलियों का शिकार किया जाता है।

सरहद—स्त्री० [फा० सर+अ० हद] [वि० सरहदी] १. किसी देश, भू-खंड या राज्य की सीमा। (दे० 'सीमा') २. ऐसी सीमा के आस-पास का प्रदेश।

सरहद-बंदी—स्त्री० [फा०] कार्य, क्षेत्र आदि की सरहद या सीमा निश्चित करने का काम।

सरहदी—वि० [फा० सरहद+ई (प्रत्य०)] १. सरहद-संबंधी। सीमा-संबंधी। जैसे—सरहदी झगड़े। २. सरहद या सीमा प्रांत का निवासी। जैसे—सरहदी गांधी।

सरहना†—स्त्री० [देश०] मछली के ऊपर का छिलका। चूईं।

सरहर†—पुं०=सरपत।

सरहरा—वि० [सं० सरल+धड़] १. सीधा ऊपर को गया हुआ। जिस से इधर-उधर शाखाएँ न निकली हों (पेड़)। २. चिकना।

सरहरी—स्त्री० [सं० शर] १. मूँज या सरपत की जाति का एक पौधा जिसकी छड़ पतली, चिकनी और बिना गाँठ की होती है। २. गंडनी या सार्पाक्षी नाम की वनस्पति।

सराँग—स्त्री० [सं० शलाका] १. लोहे का एक मोटा छड़ जिसपर पीटकर लोहार बरतन बनाते हैं। २. कोई ऐसी लकड़ी जिसकी सहायता से सीधी रेखाएँ खींची जाती हों। ३. किसी प्रकार का सीधा छड़ या पट्टी। ४. खंभा।

सराँ दीप†—पुं०=स्वर्णद्वीप।

सरा*—स्त्री० [सं० शर] चिता।

स्त्री० [तातारी] १. किला। दुर्ग। २. महल। प्रासाद। जैसे—ख्वाजा सरा, ३. दे० 'सराय'।

*पुं०=शर (वाण)।

सराई—स्त्री० [सं० शलाका] १. सरकंडे की पतली छड़ी। २. दे० 'सलाई'।

स्त्री० [सं० शराव=प्याला] मिट्टी का प्याला या दीया। सकोरा।

†स्त्री० [?] पाजामा।

सराक—पुं० [सं० शराक या श्रावक] बिहार और बंगाल में रहनेवाली जुलाहों की एक जाति।

सराख†—स्त्री०=सलाख।

सराजामा†—पुं०=सरंजाम।

सराध*—पुं०=श्राद्ध।

सराना—स० [हिं० सरना या सारना का प्रे०] (काम) पूरा या संपन्न करना।

सरापना*—स० [सं० शाप, हिं० सराप+ना (प्रत्य०)] १. शाप देना। बद्दुआ देना। अनिष्ट मनाना। कोसना। २. बुरा-भला कहना और गालियाँ देना।

सरापा—पुं० [फा० सर=सिर+पा=पैर] किसी के सिर से पैर तक के सब अंगों का काव्यात्मक वर्णन। नख-सिख।

अव्य० १. सिर से पैरों तक। २. ऊपर से नीचे तक। ३. आदि से अंत तक।

सराफ—पुं० [अ० सर्राफ़] १. सोने-चाँदी का व्यापारी। २. वह दूकानदार जो बड़े सिक्कों को कुछ दलाली लेकर छोटे सिक्कों में बदल देता हो। ३. प्रामाणिक और सम्पन्न व्यापारी। ४. अच्छा पारखी।

सराफा—पुं० [अ० सर्राफ़ः] १. सराफ का पेशा। २. वह बाजार जिसमें अनेक सराफों की दूकान हों।

सराफी—स्त्री० [हिं० सराफ़+ई (प्रत्य०)] १. सराफ का अर्थात् चाँदी-सोने या सिक्कों आदि के परिवर्तन का रोजगार। २. महाजनी लिपि। मुंडा।

सराब--पुं०[अ०]१. मृगतृष्णा। २. धोखा देनेवाली चीज या बात। ३. धोखेबाजी।

†स्त्री०=शराब।

सराबोर--वि०=शराबोर।

सराय--स्त्री०[तातारी सरा=दुर्ग या प्रासाद।]१. रहने का स्थान। २. मध्ययुग में, यात्रियों, सौदागरों आदि के ठहरने का स्थान जहाँ उनके खाने-पीने तथा मनोरंजन आदि की व्यवस्था भी होती थी।

पद--**सराय का कुत्ता**=बहुत ही तुच्छ या नीच और स्वार्थी व्यक्ति।

सरायत--स्त्री०[अ०] प्रवेश करना। घुसना। पैठना।

सरार*--पुं० [देश०] घोड़ा-बेल नाम की लता जिसकी जड़ बिलाई कंद कहलाती है।

सराव*--पुं० [सं० शराब]१. मद्यपात्र। शराब पीने का प्याला। २. कटोरा। ३. कसोरा। दीया। ४. एक प्रकार की पुरानी तौल जो ६४ तोले की होती थी।

†पुं०[?] एक प्रकार का जंगली, डरपोक और सीधा जानवर जो बकरी और हिरन दोनों से कुछ-कुछ मिलता तथा हिमालय के पहाड़ों में पाया जाता है।

सरावग†--पुं०=श्रावक (जैन)।

सरावगी--पुं०[सं० श्रावक] श्रावक धर्मावलंबी। जैन।

सरावना--पुं०[सं० सरण, हिं० सरना] पाटा। हेंगा।

सरास†--पुं०[?] भूसी।

सरासन†--पुं०=शरासन (धनुष)।

सरासर--अव्य०[फा०] १. एक सिरे से दूसरे सिरे तक। यहाँ से वहाँ तक। २. एक सिरे से। पूर्णतया। बिलकुल। जैसे--सरासर झूठ बोलना। ३. प्रत्यक्ष। साक्षात्। जैसे--यह तो सरासर जबरदस्ती है।

सरासरी--स्त्री०[फा०]१. सरासर होने की अवस्था या भाव। २. किसी काम या बात में की जानेवाली ऐसी तीव्रता और शीघ्रता जिसमें ब्योरे की बातों पर विशेष ध्यान न दिया जाय।

अव्य० १. जल्दी में। २. मोटे हिसाब से। अनुमानतः।

सराह*--स्त्री०=सराहना।

सराहत--स्त्री०[अ०] किसी बात को स्पष्ट करने के लिए की जानेवाली उसकी व्याख्या। स्पष्टीकरण।

सराहना--स०[सं० श्लाघन] तारीफ करना। बड़ाई करना। प्रशंसा करना।

स्त्री० तारीफ। प्रशंसा।

सराहनीय--वि० [बंगला से गृहीत] १. प्रशंसा के योग्य। तारीफ के लायक। श्लाघनीय। प्रशंसनीय। २. अच्छा। बढ़िया। (असिद्ध रूप)

सरि--स्त्री० [सं०√ सृ (गत्यादि)+इनि] झरना। निर्झर।

†स्त्री०=सरिता (नदी)।

स्त्री०[सं० सृक] लड़ी। श्रृंखला। उदा०--मोतिन की सरि सिर कंठमाल हार।--केशव।

स्त्री०=सरवर (बराबरी)।

सरिका--स्त्री० [सं० सरिक-टाप्] १. मुक्ता। मोती। २. मोतियों की माला या लड़ी। ३. जवाहर। रत्न। ४. छोटा ताल या तालाब। ५. एक प्राचीन तीर्थ। ६. हिंगुपत्री।

सरिगम†--पुं०=सरगम।

सरित्--स्त्री० [सं०√सर् (गत्यादि)+इति] नदी।

सरित--स्त्री०=सरिता (नदी)।

सरितराज--पुं०=समुद्र।

सरिता--स्त्री०[सं० सरित्=बहा हुआ]१. धारा या प्रवाह। २. नदी।

सरिताल--वि०[सं० सरिता+ल (प्रत्य०)]सरिताओं या नदियों से युक्त (प्रदेश)।

सरित्त--स्त्री०=सरिता।

सरित्पति--पुं०[सं० ष० त०] समुद्र।

सरित्वान्(त्वत्)--पुं०[सं० सरित+मतुप्+म-व नुम्] समुद्र।

सरित्सुत--पुं०[सं० ष० त०] (गंगा के पुत्र) भीष्म।

सरिद्--स्त्री०[सं०] 'सरित्' का वह रूप जो उसे समस्त पद के आरंभ में लगाने पर प्राप्त जाता हो है।

सरिदिही--स्त्री० [फा० सर=सरदार+देह=गाँव] वह नजर या भेंट जो मध्य युग में जमींदार या उसका कारिंदा किसानों से हर फसल पर लेता था।

सरिमा (मन्)--पुं० [सं० √ सृ (गत्यादि)+इमनिच्] वायु।

स्त्री० गति। चाल।

सरियाँ--स्त्री०[?] एक प्रकार का गीत जो बुंदेलखंड में बच्चा होने के समय गाया जाता है।

सरिया--पुं० [सं० शर] १. सरकंडे का छड़ जो सुनहले या रुपहले तार बनाने के काम आता है। सरई। २. पतली छड़ी। ३. लोहे का पतला लंबा छड़ जो स्लैब, लिंटल आदि के काम आता है।

†स्त्री०[?] ऊँची जमीन।

†पुं०[?] सुनारों की परिभाषा में पैसा या ऐसा ही और कोई सिक्का।

सरियाना--स०[?]१. तरतीब से लगाकर इकट्ठा करना। बिखरी हुई चीजें ढंग से समेटना। जैसे--लकड़ी सरियाना; कागज सरियाना। २. पीटना या मारना। (व्यंग्य) ३. कपड़ों की तह लगाना। जैसे--कमीज सरियाना।

सरिवन--पुं०[सं० शालपर्ण] शाल पर्ण नाम का पौधा। त्रिपर्णी। अंशुमती।

सरिवर, सरिवरि*--स्त्री०=सरवर (बराबरी)।

†पुं०=सरोवर।

सरिश्त--स्त्री०[सं० सृष्टि से फा०]१. सृष्टि। २. बनावट। ३. प्रकृति। स्वभाव।

सरिश्ता--पुं० [फा० सरिश्तः] १. अदालत। कचहरी। २. शासनिक कार्यालय का कोई विभाग। ३. उक्त विभाग का दफ्तर।

सरिश्तेदार--पुं०[फा० सरिश्तःदार] १. किसी विभाग या सरिश्ते का प्रधान अधिकारी। २. अदालतों में मुकदमों की नत्थियाँ आदि रखनेवाला कर्मचारी।

सरिश्तेदारी--स्त्री०[फा०]१. सरिश्तेदार होने का काम, पद या भाव।

सरिस*--वि०[सं० सदृश, प्रा० सरिस] सदृश। समान। तुल्य।

*पुं०=सिरस (वृक्ष)।

सरी--स्त्री० [सं० सरि--ङीप्] १. छोटा सरोवर। २. सोता। ३. झरना। नदी।

सरीक†--वि०[भाव० सरीकता]=शरीक।

सरीकत--स्त्री०[फा० शिरकत]१. शिरकत। २. साझा।

सरीकता*--स्त्री०[अ० शरीक+हिं० ता (प्रत्य०)]१. शिरकत। २. साझा। ३. हिस्सा।

सरीख†--वि०=सरीखा।

सरीखा--वि०[सं० सदृश, प्रा० सरिस] [स्त्री० सरीखी] अवस्था, गुण, रूप आदि में किसी के तुल्य। जैसा। जैसे--तुम सरीखा।

सरीर*--पुं०=शरीर (देह)।

वि०=शरीर (शरारती)।

सरीसृप--पुं०[सं०]१. वे जन्तु जो जमीन पर रेंगते हुए चलते हैं। जैसे--कनखजूरा, छिपकली, मगर, साँप, आदि। २. विष्णु का एक नाम।

सरीसृप विज्ञान--पुं० [सं०] जीव-विज्ञान की वह शाखा जिसमें सरोसृपों के गुणों, विभागों, स्वभावों आदि का विवेचन होता है। (हर्पेटॉलोजी)

सरीह--वि०[अ०] १. प्रकट। खुला हुआ। २. स्पष्ट।

सरु--वि०[सं० √सृ (गत्यादि)+उन]१. पतला। २. छोटा।

पुं०१. तीर। वाण। २. तलवार की मूठ।

सरुज--वि०[सं०] रोग-युक्त। रोगी।

सरुष--वि०[सं० अव्य० स०] रोष या क्रोध युक्त। कुपित।

अव्य० क्रोधपूर्वक। रोषपूर्वक।

सरुहना*--अ० १.=सुधरना। २.=सुलझना।

सरुहाना--स०[सं० सरुज?]१. चंगा करना। २. सुधारना। ३. सुलझाना।

सरूप--वि०[सं० ब० स०] [भाव० सरूपता]१. जिसका वैसा ही रूप हो। किसी के रूप जैसा। समान। सदृश। २. सुन्दर रूपवाला। ३. आकार वाला। रूप युक्त।

†अव्य० रूप में। तौर पर।

सरूपता--स्त्री०[सं०]१. सरूप होने की अवस्था, गुण या भाव। वह स्थिति जिसमें एक का रूप दूसरे से मिलता हो। २. ब्रह्मरूप हो जाना।

सरूपत्व--पुं०=सरूपता।

सरूपा--स्त्री०[सं० सरूप--टाप्] भूत की स्त्री जो असंख्य रुद्रों की माता कही गई है।

सरूपी--वि० [सं० सरूप+इनि] सरूप। (दे०)

सरूर--पुं०[फा० सुरूर] १. आनन्द। खुशी। प्रसन्नता। २. किसी मादक पदार्थ का हलका और सुखद नशा। ३. खुमार।

सरूव†--पुं०=स्वरूप।

सरेख--वि०[सं०श्रेष्ठ][स्त्री०सरेखी]१. अवस्था में बड़ा और समझदार। सयाना। २. चतुर। चालाक।

सरेखना--स०=सहेजना।

सरेखा--पुं०[हिं० सरेखना] सरेखने की क्रिया या भाव।

†स्त्री०=श्लेषा (नक्षत्र)।

सरे-दस्त--अव्य०[फा०]१. इस समय। अभी। २. प्रस्तुत समय में। फिलहाल।

सरे-नौ--अव्य०[फा०]१. प्रारंभ से। शुरू से। २. नये सिरे से।

सरेबाजार--अव्य०[फा०] खुले बाजार में और जनता के सामने।

सरेला--पुं०[सं० शृंखला]१. पाल में लगी हुई रस्सी जिसे ढीला करने से पाल की हवा निकल जाती है। २. वह रस्सी जिसमें मछली फँसाने का काँटा या बंसी बँधी रहती है। शिस्त।

सरेश†--पुं०=सरेस।

सरे-शाम--अव्य०[फा०] सन्ध्या होते ही या उससे कुछ पहले ही।

सरेष--वि०=सरेख (चतुर)।

सरेस--पुं०[फा० सरेश] एक प्रसिद्ध लसदार पदार्थ जो ऊँट, गाय, भैंस आदि के चमड़े और हड्डियों या मछली के पोटे को पकाकर निकालते हैं। तथा जो मुख्य रूप से लकड़ियाँ आदि जोड़ने के काम आता है। सहरेश। सरेश।

वि० लसीला और चिपकनेवाला।

सरेस-माही--पुं०[फा० सरेश-माही] मछली के पोटे को उबालकर बनाया हुआ सरेस।

सरोंट*--स्त्री०=सिलवट (कपड़ों की)।

सरो--पुं०[फा० सर्व] एक प्रकार का सीधा छतनार पेड़ जो बगीचों में शोभा के लिए लगाया जाता हैं। बनझाऊ।

विशेष--उर्दू-फारसी कविताओं में इसका प्रयोग मनुष्य की ऊँचाई या कद की सुन्दरता सूचित करने के लिए उपमा के रूप में होता है।

सरोई--पुं०[हिं० सरा?] एक प्रकार का बड़ा पेड़।

सरोकार--पुं० [फा०] १. परस्पर व्यवहार का संबंध। २. लगाव। वास्ता। सम्बन्ध।

सरोकारी--वि०[फा०] १. सरोकार रखनेवाला। २. जिससे सरोकार या संबंध हो।

सरोज--पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० सरोजिनी]१. कमल। २. एक प्रकार का छंद या वृत्त।

वि० सर अर्थात् जलाशय से उत्पन्न।

सरोजना*--सं०[?] प्राप्त करना। पाना।

सरोजमुख--वि०[सं०] [स्त्री० सरोजमुखी] कमल के समान सुन्दर मुखवाला।

सरोजिनी--स्त्री०[सं०]१. कमल से भरा हुआ ताल। २. जलाशय में खिले हुए कमलों का समूह। कमलवन। ३. कमल।

सरोजी (जिन्)--वि० [सं० सरोज+इनि--दीर्घ, नलोप]१. कमल संबंधी। कमल का। २. (स्थान) जहाँ बहुत से कमल हों। ३. कमलों से युक्त।

पुं० १. ब्रह्मा। २. गौतम बुद्ध का एक नाम।

सरोट†--स्त्री०=सिलवट।

सरोत†--पुं०=श्रोत (कान)।

सरोतर†--क्रि० वि०[सं० सर्वत्र] आदि से अंत तक।

वि०१. आदि से अंत तक बिलकुल ठीक या पूरा। २. सांगोपांग।

सरोता--पुं०१.=श्रोता। २.=सरौता।

सरोत्सव--पुं० [सं० ब० स०]१. बगला पक्षी। बक। २. सारस।

सरोद--पुं०[सं० स्वरोदय से फा०]१. वीणा की तरह का एक प्रकार का बाजा। २. नाच-गाना।

सरोधा--पुं०=स्वरोदय (विद्या)।

सरोरुह--पुं० [सं० सरस्√ रुह् (उत्पन्न होना)+क]कमल।

सरोला--पुं०[देश०] एक प्रकार की मिठाई।

सरोवर--पुं० [सं० सरस्√वृ (वरण करना)+अप्]१. तालाब। २. बड़ा ताल। झील।

स-रोष--वि०[सं० अव्य० स०] रोष या क्रोध से युक्त। कुपित।
क्रि० वि० रोष या क्रोधपूर्वक।

सरोसामान--पुं०[फा० सर+व+सामान] सामग्री। असबाब।

सरोही†--स्त्री०=सिरोही।

सरौ--पुं०[सं० शराब]१. कटोरी। प्याली। २. ढकना। ढक्कन।
पुं०=सरो (वृक्ष)।

सरौता--पुं०[सं० सार=लोहा+यंत्र, प्रा० सारवत्त] [स्त्री० अल्पा० सरौती]१. कैंची की तरह का एक प्रकार का उपकरण जो सुपारी काटने के काम आता है। २. काठ में जड़ा हुआ एक प्रकार का उपकरण जो कच्चे आम आदि काटने के काम आता है।

सर्क--पुं०[सं० √सृ (गत्यादि) क, इत्वाभाव]१. मन। चित्त। २. वायु। हवा। ३. एक प्रजापति का नाम।

सर्कस--पुं० [अं०]१. वह स्थान जहाँ जानवरों का खेल दिखाया जाता है। २. वह बड़ी मंडली जिसके लोग अपने तथा पशुओं के अनोखे तथा साहसपूर्ण खेल दिखलाते हैं। ३. उक्त मंडली के खेलों का प्रदर्शन। जैसे--हम सरकस देखने जा रहे हैं।

सर्का--पुं०[अ० सर्कः] चोरी।
†पुं०=सरका।

सर्कार†--स्त्री०=सरकार।

सर्कारी†--वि०=सरकारी।

सर्किल--पुं०[अं०]१. वृत्त। २. घेरा। ३. मंडल। ४. किसी प्रदेश का छोटा खंड या विभाग।

सर्कुलर--पुं० [अं०] गश्ती चिट्ठी। परिपत्र।

सर्ग--पुं०[सं०]१. चलना या आगे बढ़ना। गमन। २. गति। चाल। ३. प्रवाह। बहाव। ४. अस्त्र आदि चलाना, छोड़ना या फेंकना। ५. चलाया, छोड़ा या फेंका हुआ अस्त्र। ६. उत्पत्ति स्थान। उद्गम। ७. जगत्। संसार। ८. जीव। प्राणी। ९. औलाद। संतान। १०. प्रकृति। स्वभाव। ११. झुकाव। प्रवृत्ति। रुझान। १२. चेष्टा। प्रयत्न। १३. दृढ़ निश्चय या विचार। संकल्प। १४. बेहोशी। मूर्छा। १५. किसी ग्रन्थ विशेषतः काव्य-ग्रंथ का अध्याय या प्रकरण। १६. शिव का एक नाम।

सर्गक--वि०[सं० सर्ग+कन्] जन्म देनेवाला। उत्पादक।

सर्ग-पताली--वि०=सरग-पताली।

सर्ग-पुट--पुं०[सं० ब० स०] संगीत में, शुद्ध राग का एक भेद।

सर्गबंध--वि० [सं० ब० स०] ग्रन्थ या काव्य जो कई अध्यायों में विभक्त हो। जैसे--सर्गबंध काव्य।

सर्ग-लेख--पुं०[सं०]वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें ब्रह्माण्ड या विश्व की रचना, विस्तार, स्वरूप आदि का विवेचन हो। (कास्मोग्राफ़ी)
विशेष--आधुनिक विचारकों के मत से ज्योतिष, भूगोल, भौमिकी आदि इसी के अंग या विभाग हैं।

सर्गुन†--वि०=सगुण।

सर्जंट--पुं० [अं० सर्जेन्ट] सिपाहियों का हवलदार। जमादार।

सर्ज--पुं०[सं०] १. बड़ी जाति का शाल वृक्ष। अजकर्ण वृक्ष। २. सलई का पेड़। ३. धूना। राल। ४. विजय साल नामक वृक्ष।
स्त्री०[अं०] एक प्रकार का बढ़िया ऊनी कपड़ा। सरज।

सर्जक--वि० [सं०]१. सर्जन करने या चलानेवाला। २. सृष्टि या रचना करनेवाला। स्रष्टा।
पुं०१. बड़ी जाति का शाल वृक्ष। २. विजयसाल नामक वृक्ष। ३. सलई का पेड़। ४. मठा डालकर फाड़ा हुआ दूध।

सर्जन--पुं०[सं० √सृज् (त्यागना)+ल्युट--अन] [वि० सर्जनीय, सर्जित] १. छोड़ना। त्याग करना। फेंकना। २. निकालना। ३. उत्पन्न करना या जन्म देना। ४. सेना का पिछला भाग। ५. सरल का गोंद।
पुं०[अं०] पाश्चात्य चिकित्सा प्रणाली के अनुसार चीर-फाड़ आदि के द्वारा चिकित्सा करनेवाला चिकित्सक। शल्य-चिकित्सक।

सर्जनी--स्त्री०[सं० सर्जन-ङीप्] गुदा की वलियों में से बीचवाली वली जिसके द्वारा पेट का मल और वायु बाहर निकलती है।

सर्जमणि--पुं०[सं० ष० त०]१. सेमल का गोंद। मोचरस। २. धूना। राल।

सर्जि--स्त्री०=सज्जी।

सर्जिका--स्त्री०[सं०] सज्जीखार।

सर्जिक्षार--पुं०[सं० ष० त०] सज्जीखार।

सर्जित--भू० कृ०[सं०] जिसका सर्जन हुआ हो। सृष्ट। २. बनाया हुआ। रचित।

सर्जु--पुं० सं०√सृज् (लगना)+उन्] वणिक। व्यापारी।
स्त्री० बिजली। विद्युत्।

सर्जू--पुं० [सं० √ सृज् (त्यागना)+ऊ] १. वणिक। व्यापारी। २. माला। हार।
स्त्री०=सरयू।
स्त्री०=सर्जु (बिजली)।

सर्जेंट--पुं०[अं०] पुलिस, सेना आदि के सिपाहियों का जमादार। हवलदार।

सर्टिफ़िकेट--पुं०[अं०] प्रमाण-पत्र ()। सनद।

सर्त†--स्त्री०=शर्त्त।

सर्द--वि०[फा०]१. इतना अधिक ठंढा कि कँपकँपी होने लगे। जैसे--सर्द हवा।
मुहा०--सर्द हो जाना=मर जाना।
२. ढीला। शिथिल। ३. धीमा। मंद। ४. काहिल। सुस्त। ५. आवेग, उत्साह, प्रखरता आदि से रहित या हीन।
क्रि० प्र०--पड़ना।
६. नपुंसक। नामर्द। ७. स्वाद-रहित। फीका।

सर्दई--वि०, पुं०=सरदई।

सर्दखाना--पुं०[फा० सर्दखानः] १. वह बड़ा और ठंढा कमरा जो

मध्ययुग में कस्बों और छोटे छोटे नगरों में घनी छाँह वाले वृक्षों के नीचे इस उद्देश्य से बनाया जाता था कि गरमी के दिनों में लोग दोपहर के समय वहाँ आकर ठंढक में समय बितावें। २. आज-कल विशिष्ट प्रकार से बनाई हुई वह इमारत जिसमें यांत्रिक साधनों से ठंडक की व्यवस्था रहती है ; और इसी लिए जहाँ तरकारियाँ, फल आदि सड़ने से बचाने के लिए सुरक्षित रूप में रखे जाते हैं। ठंढा गोदाम। शीतागार। (कोल्ड स्टोरेज)

सर्द-बाई—स्त्री० [फा० सर्द+हिं० बाई] हाथी की एक बीमारी जिसमें उसके पैर जकड़ जाते हैं।

सर्द-बाजारी—स्त्री० [फा०+हिं०] बाजार की वह अवस्था जब माल तो यथेष्ट होता है परन्तु उसके ग्राहक नहीं होते।

सर्दमिज़ाज—वि० [फा०+अ०] [भाव० सर्द-मिजाजी] १. (व्यक्ति) जिसमें आवेग, उमंग, प्रखरता आदि बातें सहसा न आती हों। उत्साह-हीन। मुर्दादिल। २. जिसमें शील, संकोच, आदि का अभाव हो। रूखे स्वभाववाला।

सर्दा†—पुं०=सरदा (फल)।

सर्दाबा†—पुं०=सरदाबा।

सर्दार†—पुं०=सरदार।

सर्दी†—स्त्री०=सरदी।

सर्धा†— स्त्री०=श्रद्धा।

†पुं०=सरदा (फल)।

सर्प—पुं० [सं० √ सप् (जाना)+अच्—घञ् वा] [स्त्री० सर्पिणी] १. रेंगते हुए चलने की क्रिया या भाव। २. सरीसृप वर्ग का प्रसिद्ध जन्तु; साँप। ३. पुराणानुसार ग्यारह रुद्रों में से एक। ४. एक प्राचीन म्लेच्छ जाति। ५. नागकेसर। ६. ज्योतिष में, एक दुष्ट योग।

सर्पकाल—वि० [सं० ष० त०] जो सर्प का काल हो।

पुं० गरुड़।

सर्पगंधा—स्त्री० [सं०] १. गंध नाकुली। २. नकुलकंद। ३. नाग-दमन।

सर्पगति—वि० [सं० ष० त०] १. साँप की तरह टेढ़ी चाल चलनेवाला। २. कुटिल प्रकृति का।

स्त्री० टेढ़ी चाल।

सर्पच्छत्र—पुं० [सं०] छत्राक। खुमी। कुकुरमुत्ता।

सर्पण—पुं० [सं० √सप् (धीरे चलना)+ल्युट्—अन] [वि० सर्पणीय, भू० कृ० सर्पित] १. पेट के बल खिसकना। रेंगना। २. धीरे-धीरे चलना। ३. छोड़े हुए तीर का जमीन से कुछ ही ऊपर रहकर चलना। ४. टेढ़ा चलना।

सर्प-तृण—पुं० [सं०] नकुलकंद।

सर्पवंती—स्त्री० [सं०] नागदंती। हाथी शुंडी।

सर्प-दंष्ट्र—पुं० [सं०] १. साँप का दांत। २. विशेषतः साँप का विष दांत। ३. साँप के विष-दाँत से लगनेवाला घाव। ४. जमाल गोटा। ५. दंती।

सर्प-दंष्ट्री—स्त्री० [सं० सर्पदंष्ट्र—ङीप्] १. वृश्चिकाली। २. दंती।

सर्प-नेत्रा—स्त्री० [सं०] १. सर्पाक्षी। २. गंव-नाकुली।

सर्पपति—पुं० [सं०] शेषनाग।

सर्पपुष्पी—स्त्री० [सं०] १. नागदंती। २. बाँझ ककोड़ा।

सर्प-फण—पुं० [सं०] अफीम। अहिफेन।

सर्प-बंध—पुं० [सं०] १. कुटिल या पेचीली गति, रेखा आदि। २. कपटपूर्ण-युक्ति।

सर्प-बेलि—स्त्री० [सं०] नागवल्ली। पान।

सर्प-भक्षक—पुं० [सं०] १. नकुलकंद। नाकुलीकंद। २. मोर। मयूर।

सर्पभुक्, सर्पभुज्—पुं० [सं०] सर्प-भक्षक।

सर्प-मीन—पुं० [सं०] एक प्रकार की समुद्री मछली जो साँप की तरह लंबी होती है और जिनके शरीर में डैने या पंख नहीं होते। (ईल)

सर्प-यज्ञ—पुं० [सं०] जनमेजय का वह प्रसिद्ध यज्ञ जो उन्होंने नागों अर्थात् सर्पों का नाश करने के लिए किया था। नाग-यज्ञ।

सर्पयाग—पुं० [सं०] सर्पयज्ञ।

सर्पराज—पुं० [सं०] १. साँपों के राजा, शेषनाग। २. वासुकि।

सर्प-लता—स्त्री० [सं०] नागवल्ली। पान।

सर्प-वल्ली—स्त्री० [सं०] नागवल्ली।

सर्प-विद्या—स्त्री० [सं०] १. वह विद्या जिसमें, सर्पों उनकी जातियों, उनके स्वभावों आदि का विवेचन होता है। २. साँपों के पकड़ने और उनको वश में करने की विद्या।

सर्प-व्यूह—पुं० [सं०] प्राचीन भारत में, एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना जिसमें सैनिकों की स्थापना सर्प के आकार की होती थी।

सर्प-शीर्ष—पुं० [सं०] १. एक प्रकार की ईंट जो यज्ञ की वेदी बनाने के काम में आती थी। २. तांत्रिक पूजन में, पंजे और हाथ की एक मुद्रा। ३. एक प्रकार की मछली जिसका सिर साँप की तरह होता है। (ओफिसेफैलस)

सर्प-सत्र—पुं० [सं० मध्यम० स०] सर्प-यज्ञ।

सर्प-सत्री—पुं० [सं० सर्पसत्र+इनि] सर्प-सत्र अर्थात् नाग-यज्ञ रचनेवाले राजा जनमेजय।

सर्पहा (हन्)—वि० [सं०] सर्प को मारनेवाला।

पुं० नेवला।

स्त्री० सर्पाक्षी। सरहँटी।

सर्पांगी—स्त्री० [सं० ब० स०] १. सरहँटी। २. नकुलकंद। ३. सिंहली पीपल।

सर्पा—स्त्री० [सं० सर्प-टाप्] १. साँपिन। सर्पिणी। २. फणि-लता।

सर्पाक्ष—पुं० [सं० ब० स०] १. रुद्राक्ष। शिवाक्ष। २. सर्पाक्षी। सरहँटी।

सर्पाक्षी—स्त्री० [सं० सर्पाक्ष-ङीप्] १. सरहँटी। गंध-नाकुली। ४. सफेद अपराजिता। ५. शंखिनी।

सर्पादनी—स्त्री० [सं० ब० स०] १. गंध नाकुली। गंधरास्ना। रास्ना। २. नकुलकन्द।

सर्पारि—पुं० [सं० ष० त०] १. गरुड़। २. नेवला। ३. मोर।

सर्पावास—पुं० [सं० ष० त०] १. साँप के रहने का स्थान। २. चन्दन का पेड़।

सर्पाशन—वि० [सं० ब० स०] सर्प जिसका भोजन हो।

पुं० १. गरुड़। २. मोर।

सर्पास्य—वि० [सं० ब० स०] साँप के समान मुखवाला।

सर्पास्या—स्त्री० [सं० सर्पास्य—टाप्] पुराणानुसार एक योगिनी।

सर्पि--पुं०[सं०√ सृप् (इत्यादि)+इति] घृत। घी।

सर्पिका--स्त्री० [सं० सर्प्+कन्—टाप्--इत्व]१. छोटा साँप। २. एक प्राचीन नदी।

सर्पिणी--स्त्री०[सं०√सृप् (धीरे धीरे चलना)+णिनि—ङीप्]१. साँप की मादा। साँपिन। २. भुजंगी नाम की लता। ३. रहस्य संप्रदाय में, माया की एक संज्ञा।

सर्पित--भू० कृ० [सं० सर्प+इतच्]१. सर्प के रूप में आया या लाया हुआ। २. साँप की तरह टेढ़ा-मेढ़ा चलता या रेंगता हुआ। उदा०--सुख से सर्पित मुखर स्रोत नित प्रीति स्रवित पिक कूजन।—पंत।

पुं० साँप के काटने से शरीर में होनेवाला क्षत या घाव। सर्प-दंश।

सर्पिल--वि०[सं०][भाव० सर्पिलता] जो साँप की तरह टेढ़ा-मेढ़ा होता हुआ आगे बढ़ता हो। (सर्पेन्टाइन)

सर्पी(र्पिन्)--वि० [सं०] [सं० सर्पिणी] १. रेंगनेवाला। २. धीरे धीरे चलनेवाला।

†पुं०=सर्पि।

सर्पेष्ट--पुं०[सं० ष० त०] सर्प का इष्ट अर्थात् चंदन का वृक्ष।

सर्पेश्वर--पुं०[सं० ष० त०] सर्पों के स्वामी, वासुकि।

सर्पोन्माद--पुं०[सं०] उन्माद(रोग) का एक भेद जिसमें मनुष्य साँप की तरह फुफकारने लगता है। (वैद्यक)

सर्फ--वि०[अ० सर्फ़] व्यय किया हुआ। खर्च किया हुआ। जैसे—इस काम में सौ रुपए सर्फ हो गये।

पुं० शब्द-शास्त्र। व्याकरण।

सर्फा--पुं०[अ० सर्फः]१. खर्च। व्यय। २. किफायत। मित-व्यय। ३. वह अवस्था जिसमें मनुष्य आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं करता बल्कि धन जोड़ता चलता है।

सर्बरी--स्त्री०=शर्वरी (रात)।

सर्बस†—वि०=सर्वस्व।

सर्म†—पुं०=शर्म (आनन्द)।

स्त्री०=शर्म (लज्जा)।

सर्रक--स्त्री०[हिं० सर्राना] सर्राते हुए आगे बढ़ने की क्रिया या भाव।

सर्रा--पुं० [अनु० सरसर] लोहे या लकड़ी का वह छड़ जिस पर गराड़ी घूमती है। धुरी। धुरा।

सर्राटा--पुं० [अनु० सरसर] १. हवा के तेज चलने से होनेवाला शब्द। २. किसी के तेज चलने से होनेवाला सर-सर शब्द।

मुहा०--सर्राटे भरना=तेजी से इधर-उधर आना-जाना।

सर्राना—अ०[अनु०] सरसर करते हुए आगे बढ़ना।

सर्राफ—पुं० दे० 'सराफ'।

सर्राफा--पुं०=सराफा।

सर्राफी—स्त्री०=सराफी।

सर्वंकष--वि०[सं० सर्व√ कष् (हिंसा करना)+खच्-नुम्] १. सबको पीड़ित करनेवाला। २. सब से कुछ न कुछ ऐंठकर या छीन-झपटकर ले लेनेवाला।

पुं०१. दुष्ट व्यक्ति। २. पाप।

सर्व--वि० [सं०] आदि से अन्त तक। सब। समस्त। सारा।

पुं० १. शिव। २. विष्णु। ३. पारा। ४. रसौत। ५. शिलाजीत।

पुं०=सरो (पेड़)।

सर्वक--वि० [सं० सर्व+कन्] सब। समस्त। सारा।

सर्वकर्ता—पुं०[सं० ष० त० सर्वकर्तृ] ब्रह्मा।

सर्व-काम—वि०[सं०] ? सब प्रकार की कामनाएँ रखनेवाला। २. सब प्रकार की कामनाएँ पूरी करनेवाला।

पुं०१. शिव। २. एक अर्हत् या बुद्ध का नाम।

सर्व-कामद—वि० [सं०] [स्त्री० सर्व-कामदा] सभी प्रकार की कामना पूरी करनेवाला।

पुं० शिव।

सर्व-काल--अव्य०[सं०] हर समय। सदा।

सर्व-केसर—पुं०[सं०] बकुल वृक्ष या पुष्प। मौलसिरी।

सर्व-क्षमा—स्त्री०[सं०] प्रधान शासक द्वारा बंदियों विशेषतः राजनीतिक बंदियों को सामूहिक रूप से किया जानेवाला क्षमा-दान। (एमनेस्टी)

सर्व-क्षार—पुं० [सं०] १. सब कुछ क्षार अर्थात् नष्ट करना। २. युद्ध में, हारती हुई सेना का पीछे हटते समय फसलों, पुलों आदि को इस उद्देश्य से नष्ट करना कि शत्रु उससे लाभ न उठा सकें। (स्कार्च्ड अर्थ)

सर्व-गंध—पुं०[सं०]१. दालचीनी। २. इलायची। ३. केसर। ४.तेजपत्ता। ५. शीतलचीनी। ६. लौंग। ७. अगर। अगरु। ८. शिला रस। ९. नाग-केसर।

सर्वग--वि०[सं० सर्व√ गम् (जाना)+ड] [स्त्री० सर्वगा] जिसकी गति सभी ओर या सब जगह हो।

पुं०१. ब्रह्मा। २. जीवात्मा। ३. शिव। ४. जल। पानी।

सर्वगत—वि०[सं०] १. जो सब में व्याप्त हो। सर्वव्यापक। २. जो किसी जाति, वर्ग या समष्टि के सभी अंगों, सदस्यों आदि के सामान्य रूप से पाया जाता हो।

पुं० प्राचीन काल में, ऐसा राजकर्मचारी जिसे सभी जगहों में आने-जाने का पूर्ण अधिकार हो।

सर्व-गति—वि०[सं०]१. सब को गति प्रदान करनेवाला। २. जो सब को गति (आश्रय या शरण) देता हो। जैसे—सर्व-गति परमात्मा।

सर्व-गामी—वि०=सर्वग।

सर्व-ग्रास--पुं०[सं०]१. चन्द्र या सूर्य के ग्रहण का वह प्रकार या स्थिति जिसमें उसका मंडल पूर्ण रूप से छिप जाता है। पूर्ण ग्रहण। खग्रास। २. किसी का सब कुछ लेकर खा या पचा जाना।

सर्वग्रासी (सिन्)—वि०[सं०] १. सब कुछ ग्रस या अपने वश में कर लेनेवाला। २. किसी का सर्वस्व हर लेनेवाला।

सर्व-चक्रा—स्त्री०[सं०] बौद्ध तान्त्रिकों की एक देवी।

सर्व-चारी—वि०[सं० सर्वचारिन्] [स्त्री० सर्वचारिणी]१. सब जगह घूमने-फिरनेवाला। २. सब में रहने या संचार करनेवाला। सर्व-व्यापक।

पुं० शिव का एक नाम।

सर्व-जन—वि०[सं०]१. सब लोगों से संबंध रखनेवाला। सार्वजनिक। सार्विक। २. सभी स्थानों में प्रायः समान रूप से पाया जानेवाला। सार्वदेशिक।

सर्व-जनीन—वि०[सं०]१. जिसका सम्बन्ध जाति, राष्ट्र या समाज से हो। 'व्यक्तिगत' का विपर्याय। जैसे—सर्वजनीन आज्ञा। २. जिसके उपभोग पर किसी को मनाही न हो। जैसे—सर्वजनीन चित्र।

सर्वजया—स्त्री०[सं०]१. सबजय नाम का पौधा जो बगीचों में फूलों के लिए लगाया जाता है। देवकली। ३. मार्गशीर्ष महीने में होनेवाला स्त्रियों का एक प्राचीन पर्व।

सर्वजित्—वि०[सं०]१. सब को जीतनेवाला। २. जो सब से बढ़-चढ़ कर हो। सर्व-श्रेष्ठ। उत्तम।

पुं० १. काल या मृत्यु जो सबको जीतकर अपने अधीन कर लेती है। २. एक प्रकार का एकाह यज्ञ। ३. २१वाँ संवत्सर।

सर्व-जीवी (विन्)—वि० [सं०] जिसके पिता, पितामह और प्रपितामह तीनों जीवित हों।

सर्वज्ञ—वि०[सं०] [स्त्री० सर्वज्ञा] सब कुछ जाननेवाला। जिसे सारी बातों या विषयों का ज्ञान हो।

पुं०१. ईश्वर। २. देवता। ३. गौतम बुद्ध। ४. अर्हत्। ५. शिव।

सर्वज्ञता—स्त्री०[सं० सर्वज्ञ+तल्—टाप्] सर्वज्ञ होने की अवस्था, गुण या भाव।

सर्वज्ञत्व—पुं०[सं० सर्वज्ञ+त्व]=सर्वज्ञता।

सर्वज्ञानी—वि०[सं०] सब बातों का ज्ञान रखनेवाला। सर्वज्ञ।

सर्व-तंत्र—पुं०[सं०]१. सभी प्रकार के शास्त्रीय सिद्धान्त। २. व्यक्ति जिसने सब शास्त्रों का अध्ययन किया हो।

वि० जो सभीं प्रकार के शास्त्रीय सिद्धान्तों के अनुकल हो। जिससे सभी शास्त्र सम्मत हों।

सर्वतः—अव्य०[सं० सर्व+तस्] १. सभी ओर। चारों तरफ। २. सभी जगह। ३. सभी प्रकार से। हर तरह से। ४. पूर्ण रूप से। पूरी तरह से।

सर्व-तापन—पुं०[सं० ष० त०]१. (सब को तपानेवाला) सूर्य। २. कामदेव।

सर्वतो—अव्य०[सं०] संस्कृत सर्वतः का वह रूप जो उसे समस्त पदों के आरंभ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—सर्वतोचक्र, सर्वतोभद्र आदि।

सर्वतोचक्र—पुं०[सं०] फलित ज्योतिष में, एक प्रकार का वर्गाकार चक्र जो कुछ विशिष्ट प्रकार के शुभाशुभ फल जानने के लिए बनाया जाता है।

सर्वतोभद्र—वि०[सं०] १. सब ओर से मंगल कारक। सर्वांश में शुभ या उत्तम। २. जिसके दाढ़ी, मूँछें और सिर के बाल मुंडे हुए हों।

पुं०१. विष्णु के रथ का नाम। २. ऐसा चौकोर प्रासाद या भवन जो चारों ओर से खुला हो और जिसकी परिक्रमा की जा सकती हो। ३. कर्मकाण्ड में, एक प्रकार का चौकोर चक्र जो पूजन के समय भूमि, वस्त्रों आदि पर बनाया जाता है। ४. प्राचीन भारत में, एक प्रकार की चौकोर सैनिक व्यूह-रचना। ५. साहित्य में, एक प्रकार का चित्र-काव्य जिसमें चौकोर स्थापित किए हुए बहुत से खानों में कविता के चरणों के अक्षर लिखे जाते हैं। ५. योग-साधन का एक प्रकार का आसन या मुद्रा। ६. एक प्रकार की पहेली जिसमें शब्द के खंडाक्षरों के भी अलग-अलग अर्थ लिए जाते हैं। ७. एक प्रकार का गंध-द्रव्य। ८. नीम का पेड़। ९. बांस।

सर्वतोभद्रा—स्त्री० [सं० सर्वतोभद्र-टाप्]१. काश्मरी। गंभारी। २. अभिनेत्री। नटी।

सर्वतोभाव—अव्य०[सं०]१. सब प्रकार से। संपूर्ण रूप से। २. अच्छी तरह। भली-भाँति।

सर्व-तोभोगी—पुं०[सं०] प्राचीन भारतीय राजनीति में, वश में किया हुआ ऐसा मित्र जो आसपास के जांगलिकों, पड़ोसी जातियों आदि से रक्षित रहने में सहायता देता हो।

सर्वतोमुख—वि०[सं०] सर्वतोमुखी।

पुं०. १. ब्रह्मा। २. जीव। ३. शिव। ४. अग्नि। ५. जल। ६. स्वर्ग। ७. आकाश। ८. एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना।

सर्वतोमुखी (खिन्)—वि०[सं०]१. जिसका मुँह चारों ओर हो। २. जो सभी ओर प्रवृत्त रहता हो। ३. जो सभी तरह के कार्यों या क्षेत्रों के हर विभाग में दक्ष हो। (आल राउण्डर)

पुं०=सर्वतोमुख।

सर्वतोवृत्त—वि०[सं० ब० स०] सर्व-व्यापक।

सर्वथा—अव्य०[सं० सर्व+थाल्]१. सब प्रकार से। सब तरह से। २. हर दृष्टि से। हर विचार से। ३. निरा। बिलकुल। सरासर। जैसे—आप का यह कथन सर्वथा मिथ्या है।

सर्वथैव—अव्य०[सं० सर्वथा+एव] १. पूरी तरह से। निरा। बिलकुल। २. सर्वथा।

सर्वदंड-नायक—पुं० [सं० सर्वदण्ड-कर्म० स०-नायक ष० त०] प्राचीन भारत में, सेना या पुलिस का एक ऊँचा अधिकारी।

सर्वद—वि०[सं० सर्व√दा (देना)+क] सब कुछ देनेवाला।

पुं० शिव का एक नाम।

सर्वदमन—पुं०[सं० ब० स०] शकुंतला के पुत्र भरत का एक नाम।

सर्वदर्शी (शिन्)—वि० [सं० सर्व√ दृश् (देखना)+णिनि] [स्त्री० सर्वदर्शिणी] विश्व में होनेवाली सभी बातें देखनेवाला।

सर्व-दल—पुं०[सं०] [वि० सर्वदलीय] किसी विषय पर विचार करने अथवा किसी क्षेत्र में काम करनेवाले सभी दल या वर्ग। जैसे—उस समय एक सर्वदल सम्मेलन हुआ था।

वि०=सर्वदलीय।

सर्व-दलीय—वि०[सं०]१. सब दलों से संबंध रखनेवाला। २. जिसमें सभी दल योग दे रहे हों। सभी दलों द्वारा सामूहिक रूप से किया जानेवाला। (आल पार्टी)

सर्वदा—अव्य०[सं०] सब समयों में हमेशा। सदा।

सर्वधारी (रिन्)—पुं०[सं० सर्व √ धृ (रखना)+णिनि] १. साठ संवत्सरों में से बाइसवाँ संवत्सर। २. शिव।

सर्वनाभ—पुं०[सं० ब० स०] एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

सर्वनाम—पुं०[सं० सर्व-नामन्]१. वह जो सब का नाम हो, अथवा हो सकता हो। २. व्याकरण में, ऐसे विकारी शब्दों का भेद या वर्ग जिनका प्रयोग सभी नामों या संज्ञाओं के स्थान पर, उनके प्रतिनिधि के रूप में होता है। (प्रोनाउन) जैसे—तुम, हम, यह, वह आदि। ३. उक्त शब्द-भेद का कोई शब्द।

सर्वनाश—पुं०[सं० ष० त०, पंच०, त० वा] पूरी तरह से होनेवाला ऐसा नाश जिसके उपरांत कुछ भी बच न रहे। पूरा विनाश।

सर्व-नाशक—वि०[सं०] सर्वनाश करनेवाला। विध्वंसकारी।

सर्वनाशन—पुं०[सं०] सर्वनाश करना।

वि० सर्वनाशक।

सर्व-नाशी—वि०=सर्व-नाशक।

सर्व-निधान—पुं०[सं०]१. सब का नाश या वध। २. एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

सर्व-नियंता(तृ)—वि०[सं०] सब को अपने नियंत्रण या वश में रखनेवाला।

सर्वपा—वि०[सं०] सब कुछ पीनेवाला।

स्त्री० बलि की स्त्री का नाम।

सर्व-प्रिय—वि०[सं०] [भाव० सर्वप्रियता] सब को प्यारा। जिसे सब चाहें। जो सब को अच्छा लगे। (पापुलर)

सर्व-प्रियता—स्त्री० [सं०]सब का प्रिय होने या अच्छा लगने का भाव। लोक-प्रियता। (पापुलैरिटी)

सर्वभक्षी—वि०[सं० सर्वभक्षिन्] [स्त्री० सर्वभक्षिणी] सब कुछ खानेवाला।

पुं० अग्नि। आग।

सर्वभाव—पुं०[सं०]१. संपूर्ण सत्ता। सारा अस्तित्व। २. संपूर्ण आत्मा। विश्वात्मा। ३. पूरी तरह से होनेवाली तुष्टि।

सर्वभावन—पुं०[सं०] महादेव। शिव।

सर्व-भोग—पुं०[सं० ब० स०]प्राचीन भारतीय राजनीति में, ऐसा वैश्य मित्र, जो सेना कोश तथा भूमि से सहायता करे। (कौ०)

सर्वभोगी(गिन्)—वि०[सं०] [स्त्री० सर्वभोगिनी]१. सब का भोग करने और आनन्द लेनेवाला। २. सब कुछ खा लेनेवाला।

सर्व-मंगला—वि०[सं० ब० स०] सब प्रकार का मंगल करनेवाली।

स्त्री० १. दुर्गा। २. लक्ष्मी।

सर्व-मान्य—वि०[सं०] [भाव० सर्वमान्यता] जिसे सब लोग मानते हों।

सर्व-मूषक—पुं०[सं०] (सब को मूसने या ले जानेवाला) काल या मृत्यु।

सर्व-मेध—पुं० [सं०] १. सार्वजनिक सत्र। २. एक प्रकार का सोमयाग।

सर्वयोगी (गिन्)—पुं०[सं० सर्वयोगिन्] शिव का एक नाम।

सर्वरत्नक—पुं०[सं०] जैन पुराणों की नौ निधियों में से एक।

सर्व-रस—पुं०[सं०] १. वह जो सभी विद्याओं या विषयों का अच्छा ज्ञाता हो। २. राल। धूना। ३. नमक। ४. प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा।

सर्व-रसा—स्त्री०[सं०] धान की खीलों का माँड़। (वैद्यक)

सर्वरी*—स्त्री०=शर्वरी (रात)।

सर्व-रूप—वि०[सं० ब० स०] जो सब रूपों में हो। सर्वस्वरूप। जो सभी रूपों में वर्तमान या व्याप्त रहता हो।

पुं० एक प्रकार की समाधि।

सर्वलिंगी(गिन्)—वि०[सं०] [स्त्री० सर्वलिंगिनी] आडंबर रचनेवाला। पाखंडी।

पुं० नास्तिक।

सर्व-लोकेश—पुं० [सं०] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। ४. कृष्ण।

सर्व-लोचना—स्त्री०[सं०] एक प्रकार का पौधा जो औषध के काम में आता है।

सर्वलौह—पुं० [सं०] १. तांबा। ताम्र। २. तीर। बाण।

सर्व-वर्तुल—वि०[सं०] (पिंड)जिसका प्रत्येक विंदु उसके मध्य विन्दु से समान अन्तर पर हो। गोल। (स्फेरिकल)

सर्व-वल्लभा—स्त्री०[सं०] कुलटा या पुंश्चली।

सर्ववाद—पुं०[सं०] सर्वेश्वरवाद।

सर्ववास—पुं०[सं०] शिव का एक नाम।

सर्वविद्—वि०[सं० सर्व √विद् (जानना)+क्विप्] सर्वज्ञ।

पुं० १. ईश्वर। २. ओंकार।

सर्व-वैनाशिक—वि०[सं०]आत्मा आदि सब को नाशवान् माननेवाला।

पुं० बौद्ध।

सर्व-व्यापक, सर्वव्यापी(पिन्)—वि० [सं०] जो सब पदार्थों और सब स्थानों में व्याप्त हो।

पुं०१. ईश्वर। २. शिव।

सर्वशः—अव्य०[सं०] १. पूरा-पूरा। बिलकुल। २. पूरी तरह से। ३. सभी प्रकारों या दृष्टियों से। ४. अपने पूर्ण रूप में। (टोटली)

सर्व-शक्तिमान्(मत्)—वि० [सं०] [भाव० सर्वशक्तिमत्ता] [स्त्री० सर्वशक्तिमती] जिसमें सम्पूर्ण शक्ति निहित हो।

पुं० ईश्वर का एक नाम। (ओम्नीपोटेन्ट)

सर्व-शून्यवादी—पुं०[सं०] बौद्ध।

सर्व-श्री—वि०[सं०] एक आदरसूचक विशेषण जो अनेक व्यक्तियों के नामों का उल्लेख होने पर उन सबके साथ अलग-अलग श्री न लगाकर उन सब के साथ सामूहिक सूचक के रूप में, आरंभ में लगाया जाता है। जैसे—सर्वश्री सीताराम, माधोप्रसाद, बालकृष्ण, नारायणदास आदि।

सर्व-श्रेष्ठ—वि०[सं०] [भाव० सर्वश्रेष्ठता] सब में बड़ा। सब से बढ़कर।

सर्व-संहार—पुं०[सं०]१. ऐसा संहार जिससे कोई न बच निकला हो। (पोग्रोम) २. काल, जो सब का संहार करता है।

सर्वस†—पुं०=सर्वस्व।

सर्व-सख—वि०[सं०] १. जो सब का सखा हो। २. जो सब के साथ हिल-मिल जाता हो। जो सब के साथ मिलता या सख्य-भाव स्थापित कर लेता हो। यारबाश।

सर्व-सत्ता—स्त्री० [सं०] [वि० सर्व-सत्ताक] किसी कार्य या विषय से संबंध रखनेवाली सब प्रकार की सत्ताएँ या अधिकार।

सर्व-सत्ताक—वि०[सं०]१. सब प्रकार की सत्ताओं से संबंध रखनेवाला। २. सब प्रकार की सत्ताएँ या अधिकार रखनेवाला।

सर्व-सम्मत—भू० कृ०[सं०] जो सब की सम्मति से हुआ हो। (यूनैनिमस) जैसे—वह प्रस्ताव सर्व-सम्मत था।

सर्व-सम्मति—स्त्री० [सं०] सब की एक सम्मति या राय। मतैक्य। (यूनैनिमिटी)

सर्वसर—पुं०[फा०] एक प्रकार का रोग जिसमें मुंह में छाले से पड़ जाते हैं और खुजली तथा पीड़ा होती है।

सर्व-सहा—स्त्री०[सं०] पृथ्वी का एक नाम।

सर्वसाक्षी (क्षिन्)——पुं० [सं०] १. ईश्वर। परमात्मा। २. अग्नि। आग। ३. वायु। हवा।

सर्वसाधन——पुं०[सं०]१. सोना। स्वर्ण। २. धन। दौलत। ३. शिव का एक नाम।

वि० सब का साधन।

सर्व-साधारण——पुं० [सं०] सभी प्रकार के लोग। जनता। आम लोग।

वि०[भाव० सर्व-साधारणता]१. जो सब में समान रूप से पाया जाता हो। सामान्य। (कामन) २. जो सब लोगों के लिए हो। (पब्लिक)

सर्व-सामान्य——वि०[सं०] [भाव० सर्व-सामान्यता]१.जो सब में समान रूप में पाया जाय। (कामन) २. जो सब लोगों के लिए हो। (पब्लिक)

सर्व-सिद्धा——स्त्री०[सं०] फलित ज्योतिष में, चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी ये तीन तिथियाँ।

सर्व-सिद्धि——स्त्री०[सं०]१.सब प्रकार की इच्छाओं तथा कार्यों की सिद्धि होना। २. बेल का पेड़ और फल।

सर्व-सोख——वि०[सं० सर्व+हिं० सोखना]सब कुछ सोख लेने, निगल जाने या ले लेनेवाला। उदा०——सत्यानासी जुद्ध कालहूँ सर्व-सोख सों।——रत्ना०।

सर्वस्तोम——पुं०[सं०] एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

सर्वस्व——पुं०[सं०]१. किसी की दृष्टि से वह सारी संपत्ति जिसका वह स्वामी हो। जैसे——लड़के की पढ़ाई में उसने सर्वस्व गँवा दिया। २. अमूल्य तथा महत्त्वपूर्ण पदार्थ। जैसे——यही लड़का उस बुढ़िया का सर्वस्व था।

सर्वस्व-संधि——स्त्री०[सं०] प्राचीन भारतीय राजनीति में, शत्रु को अपना सर्वस्व देकर उससे की जानेवाली संधि।

सर्वस्वाहा——स्त्री० दे० 'सर्वक्षार'।

सर्वस्वी (स्विन्)——पुं०[सं०] [स्त्री० सर्वस्विनी] नापित पिता और गोप माता से उत्पन्न एक संकर जाति। (ब्रह्म-वैवर्त्त पुराण)

सर्वहर——वि०[सं०]१. सब कुछ हर लेनेवाला।

पुं० १. यमराज। २. काल। मृत्यु। ३. शिव। ४. वह जो किसी की समस्त सम्पत्ति का उत्तराधिकारी हो।

सर्वहारा——वि०[सं० सर्व+हरण; बंगला से गृहीत]१. जिसका सब कुछ हरण कर लिया गया हो। २. जो अपना सब कुछ खो या गँवा चुका हो।

पुं०१. वह जो अपना सर्वस्व गँवाकर कंगाल हो गया हो। २. आधुनिक राजनीति में, समाज का वह परम निर्धन व्यक्ति या वर्ग जो केवल मेहनत-मजदूरी करके ही निर्वाह करता हो। (प्रोलिटेरिएट)

सर्वहारी (रिन्)——वि०[सं०] [स्त्री० सर्वहारिणी] सब कुछ हरण कर लेनेवाला।

सर्वांग——पुं०[सं०]१. सब अंग। समस्त अवयव। २. विशेषतः शरीर के सभी अंग। ३. समूह। ३. सभी अंगों का समूह। शरीर। ४. सभी वेदांग। ५. शिव।

सर्वांगपूर्ण——वि०[सं०] अपने सब अंगों या अवयवों से युक्त।

सर्वांगिक——वि० [सं० सर्वाङ्ग+ठन्-इक] १. सब अंगों से संबद्ध। २. सब अंगों में होनेवाला।

सर्वांगीण——वि०[सं० सर्वाङ्ग+ख——ईन]१. जो सभी अंगों से युक्त हो। २. सभी अंगों से संबंध रखने या उनमें व्याप्त रहनेवाला।

सर्वांत——पुं०[सं०] सब का अन्त।

सर्वांतक——वि० [सं० सर्वांत-कन्] सब का अन्त या नाश करनेवाला।

सर्वांतरस्थ——वि०[सं० सर्वांतर √स्था (ठहरना)+कन्] जो सबके अन्दर स्थित हो।

पुं० परमात्मा।

सर्वांतरात्मा (त्मन्)——पुं० [सं० ष० त०] ईश्वर।

सर्वांतर्यामी (मिन्)——वि०[सं० ष० त०] सब के अन्तःकरण में रहनेवाला।

पुं० ईश्वर।

सर्वांत्य——पुं०[सं०] साहित्य में, ऐसा पद्य जिसके चारों चरणों के अन्त्याक्षर एक से हों।

सर्वाक्ष——पुं०[सं० ब० स०] रुद्राक्ष। शिवाक्ष।

सर्वाक्षी——स्त्री०[सं० सर्वाक्ष-ङीप्]दुधिया घास। दुद्धी।

सर्वाजीव——वि० [सं० ष० त०] सब की जीविका चलानेवाला।

पुं० ईश्वर। परमात्मा।

सर्वाणी——स्त्री०[सं० सर्व-ङीष्——आनुक्] दुर्गा। पार्वती।

सर्वातिथि——पुं०[सं० ब० स०] वह जो सभी अतिथियों का आतिथ्य करता हो।

सर्वात्मवाद——पुं०[सं०] १. भारतीय दर्शन में, शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित अद्वैतवाद जिसमें सृष्टि की सभी चीजों को एक ही आत्मा से युक्त माना गया है। २. आज-कल पाश्चात्य दर्शन के आधार पर माना जानेवाला यह मत या सिद्धान्त कि सृष्टि के सभी पदार्थ आत्मा से युक्त हैं, भले ही अचेतन या जड़ पदार्थों की आत्मा सुप्तावस्था में हो। सर्वेश्वर-वाद। (पैनन्थिइज्म)

विशेष——इसमें ईश्वर का कोई पृथक् अस्तित्व या स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं माना जाता, बल्कि यह माना जाता है कि जो कुछ है वह सब ईश्वर की आत्मा या शक्ति से युक्त है और ईश्वर की व्याप्ति सब में है।

सर्वात्मवादी——वि० [सं०] सर्वात्मवाद-संबंधी। सर्वात्मवाद का।

पुं० वह जो सर्वात्मवाद का अनुयायी या समर्थक हो। (पैन्थिईस्ट)

सर्वात्मा (त्मन्)——पुं०[सं० ष० त०] १. सब की या सारे विश्व की आत्मा। सत्ता। २. परमात्मा। ब्रह्म। ३. शिव। ४. अर्हत्।

सर्वाधिक——वि०[सं० पंच० त०] संख्या में, सबसे अधिक। जैसे——निर्दल उम्मीदवार को सर्वाधिक मत मिले हैं।

सर्वाधिकार——पुं०[सं०]१. सब कुछ करने का अधिकार। पूर्ण प्रभुत्व। पूरा इख्तियार। २. सभी प्रकार के अधिकार।

सर्वाधिकारी (रिन्)——पुं०[सं० सर्वाधिकार+इनि] वह जिसे सब प्रकार के अधिकार प्राप्त हों। सबसे बड़ा तथा सब अधिकारियों का अधिकारी।

सर्वाधिपति——पुं०[सं०] [भाव० सर्वाधिपत्य] वह जो सब का अधिपति (प्रधान या स्वामी) हो।

सर्वाधिपत्य——पुं०[सं० ष० त०] सब पर होनेवाला आधिपत्य।

सर्वाध्यक्ष——पुं०[सं० ष० त०] सब का शासन, निरीक्षण आदि करनेवाला। अधिकारी या स्वामी।

सर्वापहरण——पुं०=सर्वापहार।

सर्वापहार——पुं०[सं०]१. किसी के पास जो कुछ हो, वह सब छीन, लूट या ले लेना। २. जितनी बातें कोई पहले कह चुंका हो उन सबसे इन्कार कर जाना या मुकर जाना।

सर्वापेक्षा न्याय—पुं०[सं०] कहावत की तरह का एक प्रकार का न्याय जिसका प्रयोग उस समय किया जाता है जब कोई निमंत्रित व्यक्ति सबसे पहले नियत स्थान पर पहुँच जाता है, और तब उसे वहाँ और सब लोगों के आने की प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

सर्वार्थ—पुं०[सं०]१. सभी प्रकार के अर्थ अर्थात् पदार्थ और योग के विषय। २. फलित ज्योतिष में, एक प्रकार का मुहूर्त।

सर्वार्थवाद—पुं०[सं०] यह दार्शनिक मत या सिद्धान्त कि अंत में सभी आत्माओं को ईश्वर की कृपा से मोक्ष प्राप्त होगा। (यूनीवर्सलिज़्म)

सर्वार्थ-साधन—पुं०[सं०] सभी प्रकार के प्रयोजन सिद्ध करना या होना। सारे मतलब पूरे करना या होना।

सर्वार्थ-सिद्धि—पुं०[सं०]१. सब प्रकार के अर्थों के प्राप्ति या सिद्धि। २. जैनों के अनुसार सबसे ऊपर का अर्थात् स्वर्गों के ऊपर का लोक। ३. गौतम बुद्ध।

सर्वावसर—पुं०[सं० ब० स०] आधी रात।

सर्वावसु—पुं०[सं० ब० स०] सूर्य की एक किरण का नाम।

सर्वावासी (सिन्)—वि०[सं०] सब में तथा सब स्थानों पर वास करने वाला।

पुं० ईश्वर।

सर्वाशय—वि०[सं०] जो सबका आधार या आश्रय हो।

पुं० शिव।

सर्वाशी (शिन्)—वि०[सं०] [स्त्री० सर्वाशिनी] सब कुछ खानेवाला। जो खाने में किसी पदार्थ का परहेज न करता हो।

सर्वाश्रय—वि० [सं० ब० स०] सब को आश्रय देनेवाला।

पुं० शिव।

सर्वास्तिवाद—पुं०[सं०] १. एक प्रकार का दार्शनिक सिद्धान्त जिसमें यह माना जाता है कि संसार की सभी वस्तुओं की सत्ता या अस्तित्व है वे असार नहीं हैं। २. बौद्ध दर्शन के वैभाषिक सिद्धान्तों के चार भेदों में से एक जिसके प्रवर्तक गौतम बुद्ध के पुत्र राहुल कहे जाते हैं।

सर्वास्तिवादी (दिन्)—वि०[सं०] सर्वास्तिवाद सम्बन्धी।

पुं० १. सर्वास्तिवाद का अनुयायी। २. बौद्ध।

सर्वास्त्र—वि०[सं०] सब प्रकार के अस्त्रों से सज्जित।

पुं० सब प्रकार के अस्त्र।

सर्वास्त्रा—स्त्री०[सं० ब० स०] जैनों की सोलह विद्या देवियों में से एक।

सर्वीय—वि०[सं० सर्व+छ—ईय]१. सबसे संबंध रखनेवाला। सार्विक। २. सब में समान रूप से होनेवाला।

सर्वेक्षक—पुं०[सं०] सर्वेक्षण करनेवाला। (सर्वेयर)

सर्वेक्षण—पुं०[सं० सर्व+ईक्षण] [भू०कृ० सर्वेक्षित, वि० सर्वेक्ष्य]१. किसी विषय के सही तथ्यों की जानकारी के लिए उस विषय के सब अंगों का किया जानेवाला अधिकारिक निरीक्षण। जैसे—भूमि-सर्वेक्षण। २. कोई ऐसा परिदर्शन या विवेचन जिसमें किसी विषय के सब अंगों का ध्यान रखा गया हो। (सर्वे)

सर्वेश—पुं०=सर्वेश्वर।

सर्वेश्वर—पुं०[सं० ष० त०]१. सब का स्वामी या मालिक। २. ईश्वर। ३. चक्रवर्ती राजा। ४. एक प्रकार की ओषधि।

सर्वेश्वरवाद—पुं०[सं०] दार्शनिक क्षेत्र का यह मत या सिद्धान्त कि संसार के सभी तत्त्वों, पदार्थों और प्राणियों में ईश्वर वर्तमान है, और ईश्वर ही सब कुछ है, अर्थात् ईश्वर ही जगत् और जगत् ही ईश्वर है। सर्वात्मवाद। (पैन्थिइज़्म)

सर्वेश्वरवादी—वि०[सं०] सर्वेश्वरवाद-संबंधी। सर्वेश्वरवाद का।

पुं० वह जो सर्वेश्वरवाद का अनुयायी या समर्थक हो। (पैन्थिइस्ट)

सर्वे-सर्वा—पुं०[सं० सर्वे सर्वः]किसी घर, दफ्तर, संस्था आदि में वह व्यक्ति जिसे सब प्रकार के काम करने का अधिकार होता है। पूरा मालिक।

सर्वोच्च—वि०[सं० सर्व+उच्च्] [भाव० सर्वोच्चता] १. जो सबसे ऊँचा और बढ़कर हो। सर्वोपरि। २. जो पद, मर्यादा आदि के विचार से और सबसे बढ़कर हो और दूसरों को अपने अधीन रखता हो। (सुप्रीम) जैसे—सर्वोच्च न्यायालय।

सर्वोच्च न्यायालय—पुं०[सं० सर्वोच्च पंच० त०; न्यायालय कर्म० स०]१. किसी देश या राज्य का वह सबसे बड़ा न्यायालय जिसके अधीन वहाँ की सारी न्यायपालिका हो और जिसमें वहाँ के उच्च न्यायालयों के निर्णयों आदि के संबंध में अंतिम रूप से पुनर्विचार होता हो। उच्चतम न्यायालय। (सुप्रीम कोर्ट) २. भारतीय संघ का प्रधान न्यायालय।

सर्वोत्तम—वि०[सं० पंच त०] सबसे अच्छा। सर्वश्रेष्ठ।

सर्वोदय—पुं०[सं० सर्व+उदय] १. सभी लोगों का उदय अर्थात् उन्नति। २. भारत की आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक आदि समस्याओं के निराकरण के लिए महात्मा गांधी का चलाया हुआ एक सामूहिक आन्दोलन जो मानव-जीवन के दार्शनिक पक्ष पर आश्रित है और जिसका उद्देश्य समाज को ऐसा रूप देना है जिसमें आर्थिक विषमता, दरिद्रता, शोषण आदि के लिए कोई अवकाश न रहे और सब लोग समान रूप से उन्नत, समृद्ध तथा सुखी हो सकें।

सर्वोपकारी—वि०[सं० ष ० त०] सबका उपकार करनेवाला।

सर्वोपयोगी—वि०[सं०सर्व+उपयोगी] १. जो सब के लिए उपयोगी हो। २. जो सब लोगों के उपयोग में आता या आ सकता हो।

सर्वोपरि—वि०[सं०]१.जो सबसे ऊपर हो। २. जो अधिकार, प्रभाव आदि के विचार से अपने क्षेत्र में सबसे ऊपर और बढ़कर हो। (पैरामाउन्ट) जैसे—सर्वोपरि सत्ता।

सर्वोपरि सत्ता—स्त्री० [सं०] सबसे बड़ा या प्रधान सत्ता। (पैरामाउन्ट पावर)

सर्वौघ—पुं०[सं० कर्म० स०] १. सर्वांगपूर्ण सेना। २. एक प्रकार का शहद।

सर्वौषधि—वि० [सं०ब०स०, कर्म० स० वा]जिसमें सब तरह की ओषधियाँ हों।

सर्वौषध—स्त्री० [सं०कर्म० स०] आयुर्वेद में ओषधियों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत दस जड़ी-बूटियाँ हैं और जिनका उपयोग कर्मकांडी पूजनों आदि में भी होता है।

सर्षप—पुं०[सं०] १. सरसों। २. सरसों के बराबर तौल या मान। ३. एक प्रकार का विष।

सर्षप-कंद—पुं०[सं०] एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ जहरीली होती है।

सर्षपक—पुं०[सं० सर्षप+कन्] एक प्रकार का साँप।

सर्षप नाल—पुं० [सं०] सरसों का साग।

सर्षपा—स्त्री० [सं० सर्षप-टाप्] सफेद सरसों।

सर्षपारुण—पुं० [सं०] ष० त० त०, ब० स०] पारस्कर गृह्य-सूत्र के अनुसार असुरों का एक गण।

सर्षपिक—पुं०[सं० सर्षप+ठक्—इक] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का बहुत जहरीला कीड़ा जिसके काटने से आदमी मर जाता है।

सर्षपिका—स्त्री० [सं० सर्षप+कन्—टाप्—इत्व] एक प्रकार का लिंग रोग। २. मसूरिका रोग का एक भेद।

सर्षपी—स्त्री०[सं० सर्षप-ङीष्]१. अविद्या। २. सफेद सरसों। ३. खंजन पक्षी। भभोला। ४. एक प्रकार का रोग जिसमें सारे शरीर में सरसों के समान दाने निकल आते हैं।

सर्सों†—स्त्री०=सरसों।

सर्हद—स्त्री०=सरहद।

सलंबा नोन—पुं०[सलंबा+हिं० नोन] कचिया नोन। काच लवण।

सल—पुं०[सं०]१. जल। पानी। २. सरल वृक्ष। ३. घास-पात में रहनेवाला बोंट नाम का कीड़ा।

सलई—स्त्री०[सं० शल्लकी]१. शल्लकी वृक्ष। चीड़। २. चीड़ का गोंद। कुंदुरू।

सलग†—वि०[सं० संलग्न]१. किसी के साथ लगा हुआ। संलग्न। २. जिसके सब अंग साथ लगे हों, अलग न किये गये हों। अखंडित। ३. समग्र। सारा।

सलगम†—पुं०=शलजम।

सलगा—स्त्री०[सं० शल्लकी] शलकी। सलई। चीड़।

सलज—पुं०[सं० सल=जल] पहाड़ी बरफ का पानी।

वि० सलज्ज। लजीला।

सलजम†—पुं०=शलजम।

सलज्ज—वि०[सं० तृ० त०]१. जिसमें या जिसे लज्जा हो। शर्म और हयावान। लज्जाशील। २. जो शरमा रहा हो।

अव्य०१. लजाते हुए। २. लाज से।

सलतनत—स्त्री० दे० 'सल्तनत'।

सलना—अ० [सं० शल्य, हिं० सालना का अ०]१. साला जाना। छिदना। भिदना। २. छेद में डाला या पहनाया जाना।

†पुं० लकड़ी में छेद करने का बरमा।

पुं०[सं०] मोती।

सलपन—पुं०[देश०] एक प्रकार की झाड़ी जिसकी टहनियों पर सफेद रोएँ होते हैं। यह वर्षा ऋतु में फूलती है। इसके पत्तों आदि का व्यवहार ओषधि रूप में होता है।

सलब—वि०[अ० सल्ब] नष्ट। बरबाद।

सलभ†—पुं०=शलभ।

सलमा—पुं०[अ० सल्मः] कपड़ों पर बेल-बूटे काढ़ने के काम आनेवाला सोने-चाँदी का सुनहला-रुपहला तार। बादला।

सलवट†—स्त्री०=सिलवट।

सलवन—पुं०[सं० शालिपर्ण] सरिवन।

सलवात—स्त्री०[अ०]१. बरकत। २. अनुग्रह। मेहरबानी। ३. गाली। दुर्वचन। (परिहास और व्यंग्य)

क्रि० प्र०—सुनाना।

सलसलबोल—पुं०[अ०]१. बहुमूत्र रोग। २. मधु-प्रमेह नामक रोग।

सलसलाना—अ०[अनु०]१. धीरे-धीरे खुजली होना। सरसराहट होना। गुदगुदी होना। ३. दे० 'सरसराना'।

स०१. खुजलाना। २. गुदगुदाना। ३. दे० 'सरसराना'।

सलसलाहट—स्त्री०[अनु०]१. सलसलाने की क्रिया या भाव। २. खुजली। ३. गुदगुदी। ४. सलसल होनेवाला शब्द।

सलसी—स्त्री०[देश०] माजूफल की जाति का एक प्रकार का बड़ा वृक्ष। बूक।

सलहज—स्त्री०[हिं० साला] संबंध के विचार से साले अर्थात् पत्नी के भाई की स्त्री।

सलाई—स्त्री०[सं० शलाका] १. काठ, धातु आदि का छोटा, पतला छड़। जैसे—सुरमा लगाने की सलाई, घाव में दवा भरने की सलाई, मोजा, गुलूबन्द आदि बुनने की सलाई।

मुहा०—(आँखों में) सलाई फेरना= अंधा करना। (मध्य-युग में, दण्ड रूप में अपराधी की आँखों में गरम-गरम सलाई फेरी जाती थी। २. दीया सलाई।

†स्त्री०=सलई।

सलाक*—स्त्री०[फा० सलाख]१. सलाख। छड़। २. वाण। तीर।

सलाकना†—स०[हिं० सलाक]१. सलाख या शलाका से किसी चीज पर निशान करना या लकीर खींचना। २. किसी की आँखों में तपी हुई सलाई फेरकर उसे अंधा करना।

सलाख—स्त्री०[फा० सलाख, मि० सं० शलाका]१. धातु का छड़। शलाका। सलाई। २. रेखा। लकीर।

सलाखना†—स०=सलाकना।

सलाजीत†—स्त्री०=शिलाजीत।

सलाद—पुं०[अं० सैलाड]१. एक प्रकार के कंद के पत्ते जो पाचक होने के कारण कच्चे खाये जाते हैं। २..कंद, फल आदि जो बिना पकाये हुए, केवल कच्चे काटकर भोजन के साथ, प्रायः नमक, मिर्च, खटाई आदि मिलाकर खाये जायँ। जैसे—खीरे, टमाटर, मूली आदि का सलाद।

सलाबत—स्त्री०[अ०]१. कठोरता। २. व्यवहार आदि की कठोरता। ३. वीरता। ४. प्रताप।

सलाम—पुं०[अ०] अभिवादन का एक मुसलमानी ढंग जिसमें दाहिने हाथ की उँगलियाँ जोड़कर माथे तक ले जाई जाती हैं।

क्रि० प्र०—करना।—लेना।

मुहा०—(अमुक को) सलाम देना=अमुक से हमारा सलाम कहो। (आशय यह होता है कि ये आकर हमसे मिलें।) **सलाम फेरना**=(क) नमाज खतम करने के बाद ईश्वर को अंत में फिर से नमस्कार करना। (ख) रोष आदि के कारण किसी का सलाम स्वीकार न करना। **किसी को दूर से सलाम करना**=किसी बुरी वस्तु या व्यक्ति से बिलकुल अलग या बहुत दूर रहना। जैसे—उनको तो हम दूर से ही सलाम करते हैं, अर्थात् उनके पास जाना पसन्द नहीं करते।

सलाम अलैकुम—अव्य० [अ०] एक अरबी पद जिसका प्रयोग किसी को सलाम करने के समय किया जाता है, और जिसका अर्थ है—आप सकुशल और सुखी रहें। (मुसल०)

सलाम-कराई--स्त्री०[अ० सलाम+हिं० कराई]१. सलाम करने की क्रिया या भाव। २. वह धन जो दूल्हे या दुल्हिन को ससुराल में बड़े लोगों को सलाम करने पर मिलता है।

सलामत--वि०[अ०]१. (व्यक्ति) जो जीवित तथा कुशलपूर्वक हो। २. (वस्तु) जो रक्षित या अच्छी दशा में हो। ३. जो कायम या स्थितहो।

क्रि० वि० कुशलतापूर्वक।

सलामती--स्त्री०[अ०]१. सलामत होने की अवस्था या भाव। २. कुशल। क्षेम। ३. अच्छी तन्दुरुस्ती। उत्तम स्वास्थ्य। जैसे--किसी की सलामती मनाना।

पद--सलामती से=सकुशल। कुशलतापूर्वक।

सलामी--स्त्री०[अ०]१. सलाम करने की क्रिया या भाव। २. विशेषतः सिपाहियों, सैनिकों, स्काउटों आदि का एक साथ किसी बड़े अधिकारी, अभ्यागत आदि का अभिवादन करना।

क्रि० प्र०--देना।--लेना।

३. किसी बड़े आदमी के आगमन के समय उसके स्वागतार्थ बंदूकों, तोपों आदि का दागा जाना।

मुहा०--सलामी उतारना= किसी महान् व्यक्ति के स्वागतार्थ तोपों को दागना।

४. वह धन जो मकान, दुकान आदि को किराये पर देने के समय पगड़ी के रूप में लिया जाता है।

वि० १. ढालुआँ। जैसे--सलामी छत। २. गाव-दुम।

सलार†--पुं०[देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

सलासत--स्त्री०[अ०]१. भाषा के सलीस अर्थात् सरल और सुबोध होने की अवस्था या भाव। २. कोमलता। मृदुता। ३. सफ़ाई।

सलाह--स्त्री०[अ०]१. अच्छापन। भलाई। जैसे--खैर-सलाह= कुशल-मंगल। २. यह बतलाना कि अमुक कार्य इस प्रकार होना चाहिए। सम्मति। राय। ३. आपस में होनेवाला विचार-विमर्श। परामर्श। ४. भविष्य के संबंध में होनेवाला विचार। इरादा। ५. राय। सम्मति।

वि०[?] जो गिनती में दस हो। (दलाल)

सलाहकार--पुं०[अ० सलाह+फा० कार (प्रत्य०)] वह जो सलाह या परामर्श देता हो। राय देनेवाला। परामर्शदाता।

सलाहियत--स्त्री० [अ०] १. भलाई। २. योग्यता। ३. नरमी। ४. व्यवहार आदि की कोमलता।

सलाही†--पुं०=सलाहकार।

सलि†--स्त्री०=सर (चिता)।

सलिता†--स्त्री०=सरिता (नदी)।

सलिल--पुं०[सं०] जल। पानी।

सलिल कुंतल--पुं०[सं०] शैवल। सिवार।

सलिल क्रिया-स्त्री० [सं०]१. जलांजलि। उदक क्रिया। २. पितरों का तर्पण।

सलिल-चर--पुं०[सं०] जल-जीव।

सलिलज--वि०[सं० सलिल√जन् (उत्पन्न करना)+ड]जो जल से उत्पन्न हो। जल-जात।

पुं० कमल।

सलिलद--वि०[सं०]१. सलिल देनेवाला। जल देनेवाला। जो जल दे। २. पितरों का तर्पण करनेवाला।

पुं० बादल। मेघ।

सलिल-निधि--पुं०[सं०] १. जलनिधि। समुद्र। २. सरसरी छंद का एक नाम।

सलिलपति--पुं०[सं०]१. जल के अधिष्ठाता देवता वरुण। २. समुद्र।

सलिल-योनि--वि०[सं०] जो जल में उत्पन्न हो, जल-जात।

पुं०=ब्रह्मा।

सलिलराज--पुं०[सं०]=सलिल-पति।

सलिल-स्थलचर--वि०[सं०] (जंतु या प्राणी) जो जल और स्थल दोनों में विचरण करता हो। जैसे--हंस, साँप आदि।

सलिलांजलि--स्त्री०[सं० ष० त०]=जलांजलि।

सलिलाकर--पुं०[सं० ष० त०]समुद्र। सागर।

सलिलाधिप--पुं०[सं० ष० त०] जल के अधिष्ठाता देवता, वरुण।

सलिलार्णव--पुं०[सं०] समुद्र। सागर।

सलिलालय--पुं०[सं० ष० त०] समुद्र। सागर।

सलिलाशन--वि०[सं० ब० स०] जिसका आहार मात्र जल हो। जल पीकर जीवित रहनेवाला।

सलिलाशय--पुं०[सं० ष० त०] जलाशय।

सलिलाहार--वि०=सलिलाशन।

सलिलेंद्र--पुं०[सं० ष० त०] जल के अधिष्ठाता देवता, वरुण।

सलिलेंधन--पुं०[सं० ब० स०] बाड़वानल।

सलिलेचर--पुं०[सं० सलिले √चर (चरना)+ट-अलुक] जल-जीव। जलचर।

सलिलेश--पुं०[सं० ष० त०] जल के अधिष्ठाता देवता, वरुण।

सलिलेशय--वि० [सं० सलिले√शी (सोना)+अच्--अलुक] जल में सोनेवाला। जलशायी।

पुं० विष्णु।

सलिलेश्वर--पुं०[सं० ष० त०] वरुण।

सलिलोद्भव--वि०[सं० ब० स०] जो जल में या जल से उत्पन्न हो।

पुं० कमल।

सलिलोदन--पुं० [सं० मध्यम० स०] जल में पकाया हुआ अन्न।

सलीका--पुं०[अ० सलीक:] १. कार्य संपादन करने का सामान्य तथा स्वाभाविक ढंग। प्रचलित या रूढ़ फलतः अच्छा या मान्य ढंग। २. शऊर। तमीज। ३. योग्यता। लियाकत। ४. आचरण और व्यवहार। ५. सभ्यता और शिष्टता।

सलीकामंद--वि० [अ० सलीका+फा० मंद (प्रत्य०)]१. जिसे अच्छा सलीका आता हो। शऊरदार। २. शिष्ट और सभ्य।

सलीता--पुं०[सं० सत्तलिका=मोटी चादर] मारकीन की तरह का परन्तु उससे उधिक मोटा तथा गझिन कपड़ा, जिसकी चादरें, चाँदनियाँ आदि बनाई जाती हैं।

सलीब--स्त्री० [अ०] सूली।

सलीबी--वि०[अ०] सलीब सम्बन्धी। सलीब का।

पुं० ईसाई, जो उस सूली को अपना पवित्र धर्म-चिह्न मानते हैं, जिसपर ईसा मसीह टाँगे गये थे।

सलीम—वि० [अ०] १. ठीक। दुरुस्त। २. सच्चा और सीधा। सरल-हृदय।

सलीमशाही—पुं० [अ०+फा०] पुरानी चाल का एक प्रकार का बढ़िया जूता।

सलीमी—स्त्री० [अ० सलीम] पुरानी चाल का एक प्रकार का कपड़ा।

सलील—वि० [सं०] १. क्रीड़ाशील। लीला-रत। २. खिलाड़ी। ३. किसी प्रकार की भाव-भंगी से युक्त।

अव्य० क्रीड़ा के रूप में या क्रीड़ा करते हुए। उदा०—दुर्भर की गर्भ-मधुर पीड़ा, झेलती जिसे जननी सलील।—प्रसाद।

सलीस—वि० [अ०] [भाव० सलासत] १. सहज। सुगम। आसान। २. सम-तल। हमवार। ३. भाषा या लेख जो सरल और शिष्टोचित या शिष्ट-सम्मत हो।

सलूक—पुं० [अ०] १. तौर। तरीका। ढंग। (क्व०) २. किसी के प्रति किया जानेवाला व्यवहार। जैसे—पत्नी का पति से सलूक अच्छा नहीं है। ३. लोगों के साथ रखा जानेवाला मेल-मिलाप। ४. किसी का किया जानेवाला उपकार। नेकी। भलाई।

सलूका—पुं० [फा० शलूकः] पूरी बाँह की कुरती या बंडी।

सलूग—पुं० [सं० त० त०] एक प्रकार का बहुत छोटा कीड़ा। २. जूँ। लीख।

सलूना—पुं० [सं० स+लवण] पकाई या बनाई हुई तरकारी। सालन। (पश्चिम)। जैसे—आलू का सलूना।

वि०=सलोना।

सलूनी—स्त्री० [हिं० स+लोन=नमक] चूका शाक। चुक्रिका।

सलेक—पुं० [सं०] तैत्तिरीय संहिता के अनुसार एक आदित्य का नाम।

सलेमशाही†—स्त्री०=सलीमशाही।

सलैला†—वि० [सं० सलिल+हिं० ऐला (प्रत्य०)] १. जिसमें पानी मिला हो।. २. इतना चिकना कि उस पर पैर या हाथ फिसले।

सलोक—पुं० [सं० त० त० ब० स० वा] १. नगर। शहर। २. नगर निवासी। नागरिक।

†पुं०=श्लोक।

सलोकता—स्त्री० [सं० सलोक+तल्—टाप्] =सालोक्य।

सलोट†—स्त्री०=सिलवट।

सलोतर†—पुं०=शालिहोत्र।

सलोतरी†—पुं०=शालिहोत्री।

सलोन†—वि०=सलोना।

सलोना—वि० [हिं० स+लोन=नमक] [स्त्री० सलोनी] १. (पदार्थ) जिसमें नमक पड़ा हो। नमक मिला हुआ। नमकीन। २. (व्यक्ति का रूप) जिसमें लावण्य अर्थात् कोमल और मोहक सौन्दर्य हो।

स्त्री० [फा० साले नौ=नव वर्ष।] श्रावण शुक्ला पूर्णिमा अर्थात् रक्षा-बंधन का दिन और त्यौहार। राखी पूनो।

विशेष—फसली सन् का आरंभ इसी के दूसरे दिन से होता है; इसलिए भारत के मुसलमान शासक इसे साले-नौ (नव-वर्ष) कहते थे। इसी 'साले-नौ' का अपभ्रंश रूप सलोना' है।

सलोनापन—पुं० [हिं० सलोना+पन (प्रत्य०)] सलोना होने की अवस्था, गुण या भाव।

सलोनो—स्त्री० [सं० श्रावणी] श्रावणी पूर्णिमा को होनेवाला रक्षा-बन्धन का नामक त्योहार।

सल्तनत—स्त्री० [अ०] १. सुल्तान के अधीन रहनेवाला राज्य। बादशाहत। साम्राज्य। २. शासन। हुकूमत। ३. सुख और सुभीते की स्थिति। जैसे—तुम्हारी तो किसी तरह सल्तनत ही नहीं बैठती।

क्रि० प्र०—जसना।—बैठना।

सल्ल—पुं० [सं० सरल] सरल वृक्ष। सरल द्रुम।

†पुं० [सं० शल्प] काँटा।

सल्लकी—स्त्री० [सं० शल्लकी] १. शल्लकी वृक्ष। सलई। २. सलई का गोंद। कुँदरु।

सल्लम—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का मोटा कपड़ा। गजी। गाढ़ा।

सल्लाह†—स्त्री०=सलाह।

सल्ली—स्त्री० [सं० शल्लकी] शल्लकी। सलई।

सल्लू—पुं० [हिं० सलना] चमड़े की डोरी।

वि० [?] बेवकूफ। मूर्ख।

सल्लेअला—अव्य [अ०] वाहवाह। बहुत खूब। सुभानअल्ला। (मुसल०)

सल्व—पुं०=शल्व।

सव—पुं० [सं० √ स् (उत्पन्न होना)+अव] १. जल। पानी। २. फूलों का रस। ३. यज्ञ। ४. सूर्य। ५. चन्द्रमा। ६. औलाद। संतान।

वि० अज्ञ। ना-समझ।

†पुं०=शव (लाश)।

मुहा०—सबसाजना= चिता के ऊपर शव रखना।

सवत (ति)†—स्त्री०=सौत।

सवतिया†—वि०=सौतिया।

स-वत्स—वि० [सं०] [स्त्री० स-वत्सा] जिसके साथ उसका बच्चा भी हो। जैसे—स-वत्सा गौ।

सवन—पुं० [सं०] १. बच्चा जनना। प्रसव। २. यज्ञ। ३. यज्ञ के स्नान समय का सोम-पान। ४. यज्ञ के उपरांत होनेवाला स्नान। अवभृत स्नान। ५. चन्द्रमा। ६. अग्नि। ७. स्वायंभुव मनु के एक पुत्र। ८. रोहित मन्वंतर के सप्तर्षियों में से एक ऋषि का नाम।

†पुं० [?] बतख की जाति का एक प्रकार का जल-पक्षी। कलहंस। काज।

सवनिक—वि० [सं०] सवन-संबंधी। सवन का।

सवय—वि० [सं०] [स्त्री० सवया] १. जिसका वय किसी के वय के समान हो। २. समान वय वाले। समवयस्क।

पुं० सखा।

सवयस्क—वि०, पुं०=सवय।

सवर—पुं० [सं० सव√रा (लेना)+क] १. जल। पानी। २. शिव का एक नाम।

सवर्ण--वि०[सं० ब० स०] १. (वे) जो वर्ण या रूप-रंग के विचार से एक ही प्रकार के हों। सदृश। समान। २. (वे) जो एक ही जाति या वर्ग के हों। ३. (शब्द जिनका उच्चारण तो भिन्न हो परन्तु) वर्ण या अक्षर एक-से हों। जैसे--फा० कौल और सं० कौल सवर्ण शब्द हैं।

सवर्ण-विवाह--पुं०[सं०]१. हिंदुओं में वह विवाह जिसमें कन्या और वर दोनों एक ही वर्ण या जाति के हों। २. साधारणतः अपनी जाति, धर्म, वर्ग या समाज में किया जानेवाला विवाह। 'अंतर्जातीय विवाह' से भिन्न। (एन्डोगैमी)

सवर्णा--स्त्री०[सं०] सूर्य की पत्नी छाया का नाम।

सवाँग†--पुं०[हिं० स्वाँग]१. कृत्रिम वेष। भेस। स्वाँग। (देखें) २. व्यक्तियों के लिए संख्या सूचक शब्द। (पूरब) जैसे--चार सवाँग तो घर के ही हो जायँगे।

सवाँगना†--अ० [हिं० स्वाँग] १. नकली भेस बनाना। २. किसी का रूप धारण करना। रूप भरना।

सवा--वि०[सं० स+पाद] पूरा और एक चौथाई। संपूर्ण और एक अंग का चतुर्थांश जो अंकों में इस प्रकार लिखा जाता है--४$\frac{१}{४}$।

सवाई--स्त्री० [हिं० सवा+ई (प्रत्य०)] ऋण का वह प्रकार जिसमें मूलधन का चतुर्थांश ब्याज के रूप में देना पड़ता है।

†वि०=सवाया।

पुं०[?] मध्ययुग में, जयपुर (राजस्थान) के महाराजाओं की उपाधि। जैसे--सवाई मानसिंह।

स्त्री०[?] मूत्रेंद्रिय का एक प्रकार का रोग।

सवाद†--पुं०=स्वाद।

सवादिक†--वि०=स्वादिष्ठ।

सवाब--पुं०[अ०]१. शुभ कृत्य का फल जो स्वर्ग में पहुँचने पर मिलता है। पुण्य। २. नेकी। भलाई। ३. सत्कर्मों का पर-लोक में मिलनेवाला शुभ फल।

सवाया--वि०[हिं० सवा] [स्त्री० सवाई]१. पूरे से एक चौथाई से अधिक। सवा गुना। २. किसी की तुलना में कुछ अधिक या बढ़ा हुआ। उदा०--निज से भी पर-दुःख देखकर स्वयं सवाया।--मैथिली शरण। ३. पहले जितना रहा हो, उससे भी कुछ और अधिक। उदा० --राणा राख छत्र कौं व्यापै करि करि प्रीति सवाई।--कबीर।

सवार--पुं०[फा०]१. वह जो किसी सवारी या यान पर आरूढ़ हो। जैसे --पाँचवाँ सवार। २. वह जो सवारी करने में कुशल हो। जैसे--घुड़सवार। ३. वह जो किसी दूसरे के ऊपर चढ़ा या बैठा हो और उसे किसी रूप में दबाये हुए हो।

मुहा०--(किसी पर या किसी के सिर पर) सवार होना=किसी को पूर्ण रूप से अभिभूत करके (क) उसे अपने वश में रखना अथवा (ख) उसे अपने विचारों के अनुसार चलाना।

सवारी--स्त्री०[फा०]१. सवार होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. कोई ऐसा साधन जिस पर सवार होकर लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हों। यान। जैसे--गाड़ी, घोड़ा, नाव, मोटर, रेल, हवाई जहाज आदि। ३. वह जो उक्त पर चढ़कर कहीं जाता हो। उक्त पर सवार होनेवाला व्यक्ति। ४. कोई ऐसा जुलूस जिसमें कोई बहुत बड़ा व्यक्ति, कोई धर्मग्रन्थ या देवता की मूर्ति किसी यान पर कहीं ले जाई जाती हो। जैसे--राष्ट्रपति की सवारी, रामजी या वेद भगवान् की सवारी।

क्रि० प्र०--निकलना।--निकालना।

५. कुश्ती में, एक प्रकार का पेंच जिसमें विपक्षी को जमीन पर गिराकर उसकी पीठ पर बैठकर उसे चित करने का प्रयत्न करते हैं।

क्रि० प्र०--कसना।

६. संभोग या प्रसंग के लिए स्त्री पर चढ़ने की क्रिया। (बाजारू)

क्रि० प्र०--कसना।--गाँठना।

सवारे†--अव्य० [सं० स+वेला] १. प्रातःकाल। सवेरे। २. समय से कुछ पहले। जल्दी। ३. आनेवाले दूसरे दिन। कल के दिन।

सवारै*--अव्य०=सवारे।

सवाल--पुं०[अ०] [बहु० सवालात] १. पूछने की क्रिया या भाव। २. वह बात जो पूछी जाय। प्रश्न।

पद--सवाल-जवाब।

३. गणित में, कोई ऐसी समस्या जिसका उत्तर निकालना या निराकरण करना हो। प्रश्न। (क्वेश्चन, उक्त सभी अर्थों में)। ४. कुछ पाने या माँगने के लिए की जानेवाली प्रार्थना। जैसे--भिखारिन ने रूखे सिख के सामने दांत निकालकर सवाल किया।--उग्र। ५. वह प्रार्थना-पत्र जो न्यायालय में किसी पर कोई अभियोग चलाने के लिए न्यायाधीश के सामने उपस्थित किया जाता है।

मुहा०--(किसी पर) सवाल देना=(क) नालिश करना। (ख) फरियाद करना।

६. प्रार्थना। विनती।

सवाल-जवाब--पुं० [अ०]१. प्रश्न और उसका उत्तर। २. तर्क-वितर्क। वाद-विवाद। बहस। जैसे--बड़ों से सवाल-जवाब करना ठीक नहीं। ३. झगड़ा। तकरार। हुज्जत।

सवालिया--वि०[अ० सवालियः]१. सवाल के रूप में होनेवाला। २. (व्याकरण में, वाक्य) जो पाठक या श्रोता से उत्तर की अपेक्षा रखता हो। प्रश्नात्मक।

सवाली--वि० [हिं० सवाल]=सवालिया।

पुं० वह जिसने कोई सवाल अर्थात् प्रार्थना या याचना की हो।

सविकल्प--वि०[सं०]१. जिसमें किसी प्रकार का विकल्प हो। २. जिसके विषय में कोई सन्देह हो। संदिग्ध। ३. जो स्वयं कुछ निश्चय न कर सकने के कारण किसी प्रश्न के दोनों पक्षों को थोड़ा बहुत ठीक समझता हो। ४. समाधि का एक प्रकार। ५. वेदांत में ज्ञाता और ज्ञेय के भेद का ज्ञान।

स-विचार--पुं० [सं० अव्य० स०] चार प्रकार की विकल्प समाधियों में से एक प्रकार की समाधि।

क्रि० वि० विचारपूर्वक। सोच-समझकर।

सवितर्क--पुं०[सं० ब० स०] चार प्रकार की सविकल्प समाधियों में से एक प्रकार की समाधि।

क्रि० वि० तर्क-वितर्कपूर्वक।

सविता--पुं०[सं०√सू(प्राण प्रदान करना)+तृच्] १. सूर्य। दिवाकर। २. बारह आदित्यों के आधार पर १२ की संख्या का वाचक शब्द।

३. आक। मदार। ४. कुछ लाली लिए हुए सफ़ेद रंग की एक धातु जो प्रायः निकल और लोहे के साथ पाई जाती है। (कोबाल्ट)

सविता-तनय—पुं० [सं० सवितृ+तनय, ष० त०] सूर्य के पुत्र हिरण्यपाणि।

सविता-दैवत—पुं० [सं० सवितृ दैवत, ब० स०] हस्त नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता देवता सूर्य्य माने जाते हैं।

सविता-पुत्र—पुं०[सं० सवितृपुत्र, ष० त०] सूर्य्य के पुत्र, हिरण्यपाणि।

सवितासुत—पुं० [सं० सवितृसुत ष० त०] सूर्य के पुत्र, शनैश्चर।

सवित्र—पुं०[सं० सू (प्रसव करना)+इत्र] प्रसव करना। लड़का जनना।

सवित्रिय—वि० [सं० सवित्+ घ—इय] सविता-संबंधी। सविता या सूर्य का।

सवित्री—स्त्री०[सं० सवित्र— ङीप्] १. प्रसव करानेवाली धाई। धात्री। दाई। २. माता। माँ। ३. गाय। गौ।

सविद्य—वि०[सं० अव्य० स०] विद्वान्। पंडित।

स-विधि—वि०[सं० त० त०] विधि युक्त।

अव्य० विधि के अनुसार। विधिपूर्वक।

सविनय—वि०[सं०] १. विनय से पूर्ण। २. विनम्र। ३. शिष्टतापूर्ण या शिष्ट।

अव्य० विनय या नम्रतापूर्वक।

सविनय अवज्ञा—स्त्री०[सं०] नम्रता या भद्रतापूर्वक राज्य या प्रधान अधिकारी की किसी ऐसी व्यवस्था या आज्ञा को न मानना जो अन्यायमूलक प्रतीत हो और ऐसी अवस्था में राज्य या अधिकारी की ओर से होनेवाले पीड़न तथा कारादंड आदि को धीरतापूर्वक सहन करना। (सिविल डिसओबीडिएंस)

सविभास—पुं० [सं० त० स०] सूर्य का एक नाम।

सविभ्रम—वि०[सं० अव्य० स०] विभ्रम अर्थात् क्रीड़ा, प्रणय, चेष्टा, विलास आदि से युक्त।

क्रि० वि० विभ्रमपूर्वक।

सविभ्रमा—स्त्री०=विचित्र विभ्रमा (नायिका)।

सविशेष—वि०[सं० तृ० त०] किसी विशेष गुण, बात या विशिष्टता से युक्त। 'निर्विशेष' का विपर्याय। जैसे—ब्रह्म का सविशेष रूप।

सविस्तार—अव्य० [सं०] विस्तारपूर्वक।

सवेरा—पुं०[हिं० स+सं० वेला] १. प्रातःकाल। सुबह। २. निश्चित समय के पूर्व का समय। (क्व०)

सवेरे—अव्य०[हिं० सवेरा] १. प्रातःकाल के समय। २. नियत या साधारण समय से कुछ पहले। जैसे—न सोना सवेरे, न उठना सवेरे। —गालिब।

सवैया—पुं०[हिं० सवा+ऐया (प्रत्य०)] १. तौलने का वह बाट जो सवा सेर का हो। २. वह पहाड़ा जिसमें एक, दो, तीन आदि संख्याओं का सवाया मान बतलाया जाता है। ३. हिन्दी छन्दशास्त्र में, वर्णिक वृत्तों के चरणवाले प्रायः सभी जाति-छंद आ जाते हैं। इन छंदों में लय की प्रधानता होती है, अतः इन्हें पढ़ते समय कुछ स्थलों पर गुरु मात्राओं का ह्रस्व मात्राओं के समान उच्चारण करना पड़ता है। इसके १४ भेद कहे गये हैं, दुर्मिल, मदिरा मानिनी, सुन्दरी आदि।

सव्य—वि०[सं०] १. वाम। बायाँ। २. दक्षिण। दाहिना। ३. प्रतिकूल। विपरीत।

पुं० १. यज्ञोपवीत। जनेऊ। २. विष्णु। ३. अंगिरा के पुत्र, एक ऋषि जो ऋग्वेद के कई मंत्रों के द्रष्टा थे। ४. चन्द्र या सूर्य ग्रहण के दस प्रकार के ग्रासों में से एक प्रकार का ग्रास।

सव्यचारी (रिन्)—पुं० [सं०] १. अर्जुन का एक नाम। २. अर्जुन वृक्ष। ३. दे० 'सव्यसाची'।

सव्यभिचार—पुं०[सं०] भारतीय न्यायशास्त्र में, ५ प्रकार के हेत्वाभासों में से एक।

सव्यसाची (चिन्)—पुं०[सं०] अर्जुन (पांडव)।

वि० जो दाहिने और बायें दोनों हाथों से सब काम समान रूप से कर सकता हो।

सशंक—वि०[सं०] १. जिसके मन में कोई शंका हो। २. शंका के कारण जो भयभीत हो रहा हो। ३. शंका या भय उत्पन्न करनेवाला।

सशंकना—अ० [सं० सशंक+हिं० ना (प्रत्य०)] १. शंकायुक्त होना। शंकित होना। २. भयभीत होना। डरना।

सशस्त्र—वि० [सं०] १. जिसके पास शस्त्र हो या हों। २. शस्त्र या शस्त्रों से लैस या शस्त्रधारी। जैसे—सशस्त्र बल।

क्रि० वि० शस्त्र या शस्त्रों से सज्जित होकर।

सशस्त्र तटस्थता—स्त्री०[सं०] आधुनिक राजनीति में, किसी राष्ट्र अथवा राष्ट्रों से बिलकुल अलग या तटस्थ रहने पर भी अस्त्र-शस्त्रों से इतने सज्जित रहना है कि किसी ओर से आक्रमण होने पर तत्काल अपना बचाव या रक्षा कर सकें। (आर्मड न्यूट्रैलिटी)

सशेष—वि० [सं० सं० त०] १. जिसका कुछ अंश अभी बचा हो। २. (काम) जिसका कुछ अंश अभी पूरा होने को बाकी हो। अधूरा।

सषुन†—पुं०=सखुन (उक्ति)।

स-श्रम—वि०[सं० त० त०] थका हुआ। श्रमित।

क्रि० वि० परिश्रमपूर्वक।

ससंकना*—अ०=सशंकना।

सस†—पुं०[सं० शशि] चंद्रमा। शशि।

†पुं०[सं० शशक] खरगोश।

†पुं०[सं० शस्य] १. अनाज। धान्य। २. खेती-बारी। ३. फसल। ४. हरियाली।

ससक—पुं०[सं० शशक] १. खरगोश। २. रहस्य सम्प्रदाय में, (क) जीव या आत्मा। (ख) ओंकार शब्द।

ससकना†—अ० १.=ससंकना। २.=सिसकना।

ससत†—अव्य०[सं० स+सत्य] सचमुच। वस्तुतः। उदा०—साखियात गुणमैं ससत।—प्रिथिराज।

स-सत्त्व—वि०[सं० त० त०] [स्त्री० ससत्त्वा] १. सत्त्व से युक्त। २. जीवन से युक्त। जानदार। ३. जीव से युक्त। जैसे—ससत्त्वा स्त्री=गर्भवती स्त्री।

ससन—पुं०[सं० √सस् (हिंसा करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० ससित] यज्ञ के बलि-पशु का हनन। बलिदान।

†पुं०[सं० श्वसन]१. साँस। २. उच्छ्वास।

ससना––स०[सं० ससन]१. यज्ञ में पशु का बलिदान करना। २. मार डालना। वध करना।

अ० १. बलिदान होना। २. मारा जाना।

†अ०[सं० श्वसन] साँस लेना।

†अ० १.=ससंकना। २.=सिसकना।

ससमा†––पुं०[सं० शशि] चन्द्रमा। उदा०––प्रगट परिपूरन ससमा। ––भगवत रसिक।

ससरना––अ०[सं० सरण] सरकना। खिसकना।

ससवाना†––स०[हिं० ससना का प्रे०] १. सशंकित करना। २. भयभीत करना। डरवाना।

स०[सं० ससन] हत्या कराना।

ससहर†––पुं०[सं० शशधर] चन्द्रमा।

ससा†––पुं०[सं० शशा] खरगोश। शशक।

पुं०=शशि (चन्द्रमा)।

ससाना†––सं० [सं० सशंक] १. सशंकित करना। २. बेचैन या विकल करना।

स०[सं० शासन]१. दंड देना। २. कष्ट देना।

†अ० १.=ससंकना। २.=सिसकना।

ससि*––पुं०=शशि (चंद्रमा)।

ससिअर*––पुं०=शशिधर (चन्द्रमा)। दा०––अनु धनि तूँ ससिअर निसि माहाँ।––जायसी।

ससि-गोती––पुं०[सं० शशि+गोत्र] मोती। उदा०––हार लागि बेधा ससि-गोती।––नूर मुहम्मद।

ससिता†––स्त्री०=शिशुता (बचपन)।

ससिधर†––पुं०=शशधर (चंद्रमा)।

ससिभान†––पुं०=शशुभानु (चंद्रमा)।

ससिहर†––पुं०=शशिधर (चन्द्रमा)।

ससी†––पुं०=शशि (चन्द्रमा)।

ससीम––वि०[सं० स+सीमा] [भाव० ससीमता] जिसकी सीमा हो या नियत हो। सीमित। (लिमिटेड)

ससुर––पुं०[सं० श्वसुर]१. विवाहित व्यक्ति के संबंध के विचार से उसकी पत्नी (या पति) का पिता। २. संबंध के विचार से ससुर के समान और उसके स्थान पर होनेवाला व्यक्ति। जैसे––चचिया ससुर, ममिया ससुर।

ससुरा––पुं० [सं० श्वसुर]१. श्वसुर। ससुर। २. एक प्रकार की गाली। जैसे––उस ससुरे को मैं क्या समझता हूँ। ३. दे० 'ससुराल'।

ससुरार†––स्त्री०=ससुराल।

ससुराल––स्त्री० [सं० श्वसुरालय] १. श्वसुर का घर। पति या पत्नी के पिता का घर। २. लाक्षणिक अर्थ में, ऐसा घर जहाँ पहुँचने पर पका-पकाया भोजन ठाठ से मिलता हो। ३. कारागृह। जेलखाना। (गुंडे और बदमाश)

पद––ससुराल का कुत्ता=वह दामाद जो ससुराल में पड़ा रहता हो।

सस्ता––वि०[सं० स्वस्थ] [स्त्री० सस्ती]१. (पदार्थ) जिसका मूल्य अपेक्षया साधारण से कुछ कम हो। २. (पदार्थ) जिस के मूल्य में पहले की अपेक्षा कमी हो। जिसका भाव उतर गया हो। ३. जो बहुत ही थोड़े व्यय से अथवा सहज में मिल जाय। जैसे––सस्ता यश। ४. जिसका महत्त्व बहुत ही कम या प्रायः नहीं के समान हो। जैसे––सस्ता अनुवाद, सस्ता परिहास।

सस्ताना––अ०[हिं० सस्ता+ना (प्रत्य०)] किसी वस्तु का कम दाम पर बिकना। सस्ता हो जाना।

स० भाव कम करना। सस्ता करना।

सस्ती––स्त्री०[हिं० सस्ता+ई (प्रत्य०)] १. सस्ते होने की अवस्था या भाव। सस्तापन। २. ऐसा समय जब सब चीजें अपेक्षया कम मूल्य पर बिकती हों।

वि० स्त्री० हिं० 'सस्ता' का स्त्री०।

सस्त्रीक––वि०[सं० त० त०] जिसके साथ उसकी पत्नी या स्त्री हो। सपत्नीक।

सस्मित––वि० [सं०] मुस्कराहट या हँसी से युक्त। जैसे––सस्मित मुखारविंद।

क्रि० वि० मुस्कराते हुए।

सस्य––पुं०[सं० शस्य]१. अनाज। धान्य। २. पौधों, वृक्षों आदि का उत्पादन। ३. शस्त्र। हथियार। ४. विशेषता। गुण।

सस्यक––पुं० [सं० सस्य+कन्] १. बृहत्संहिता के अनुसार एक प्रकार की मणि। २. असि। तलवार। ३. शस्य। धान्य। ४. साधु व्यक्ति।

वि० गुणों या विशेषताओं से युक्त।

सस्वेदा––स्त्री०[सं० अव्य० स०] ऐसी कन्या जिसका हाल ही में कौमार्य भंग हुआ हो। दूषित कन्या।

सहंगा*––वि०[हिं० महँगा का अनु०] [स्त्री० सहँगी, भाव० सहँगापन] सस्ता। उदा०––मनि, मानिक सहँगे किए महँगे तृन जल नाज। ––तुलसी।

सह––अव्य०[सं०]सहित। समेत।

वि०१. उपस्थित। विद्यमान। २. सदृश। समान। ३. सक्षम। समर्थ। ४. सहनशील। सहिष्णु। ५. (पदार्थ) जो किसी प्रकार का प्रभाव सहन करने में यथेष्ट समर्थ हो। (प्रूफ़) जैसे––अग्निसह-तापसह आदि।

उप० कुछ विशेषणों, संज्ञाओं आदि के पहले यह उपसर्ग के रूप में लगकर यह अर्थ देता है––किसी के साथ में; जैसे––सहगामी, सहचर, सहजात आदि।

पुं० १. सादृश्य। समानता। बराबरी। २. शक्ति। सामर्थ्य। ३. अगहन का महीना। मार्गशीर्ष। ५. पांशु लवण। ५. शिव का एक नाम।

स्त्री० समृद्धि।

सह-अपराधी––पुं०[सं०] वह जो किसी अपराधी के साथ रहकर उसके अपराध में सहायक हुआ हो। अभिषंगी। (एकम्लिप्स)

सह-अस्तित्व––पुं०[सं०]=सह-जीवन।

सहकर्मी(मिन्)––वि०[सं०]१. (वह) जो किसी के साथ काम करता हो। किसी के साथ मिलकर काम करनेवाला। २. किसी कार्यालय, संस्था आदि में जो साथ-साथ मिलकर काम करते हों। (कॉलीग, उक्त दोनों अर्थों में)

सहकार—पुं०[सं०]१. सुगंधित पदार्थ। २. आम का वृक्ष। ३. एक दूसरे के कार्यों में सहयोग करना। ४. औरों के साथ मिलकर काम करने की वृत्ति, क्रिया या भाव। सहयोग।(कोऑपरेशन)५. दे० 'सहकर्मी'।

सहकारता—स्त्री० [सं० सहकार+तल्—टाप्]=सहकारिता।

सहकार-समिति—स्त्री०[सं०] वह समिति या संस्था जो कुछ विशेष प्रकार के उपभोक्ता, व्यवसायी आदि आपस में मिलकर सब के हित के लिए बनाते हैं और जिसके द्वारा वे कुछ चीजें बनाने-बेचने आदि की व्यवस्था करते हैं। (कोआपरेटिव सोसाइटी)

सहकारिता—स्त्री०[सं०]१. साथ मिलाकर काम करना। सहकारी-होना। (कोआपरेशन) २. सहकारी या सहायक होने का भाव। ३. मदद। सहायता।

सहकारी—वि० [सं०] १. सहकार-संबंधी। सहकार का। २. सहकारिता संबंधी।३. (व्यवित) जो साथ-साथ काम करते हों तथा एक दूसरे के कामों में सहायता करते हों। ४. सहायक। मददगार।

सहगण—पुं०[सं०]=संश्रय।

सह-गमन—पुं०[सं० सह√गम् (जाना)+ल्युट्—अन्] १. किसी के साथ जाने की क्रिया। २. मृत पति के शव के साथ पत्नी का चिता पर चढ़ना।

सहगवन†—पुं०=सहगमन।

सह-गान—पुं०[सं०] १. कई आदमियों का साथ मिलकर गाना। २. ऐसा गाना जो कई आदमी मिलकर गाते हों। संवेतगान। (कोरस)

सहगामिनी—स्त्री० [सं० सह√ गम् (जाना)+णिनि—ङीप्]१. वह स्त्री जो मृत पति के शव के साथ सती हो। पति की मृत्यु पर उसके साथ जल मरनेवाली स्त्री। २. पत्नी। ४. सहचरी।

सहगामी (मिन्)—वि० [सं० सह√ गम् (जावा)+णिनि] [स्त्री० सहगामिनी]१. साथ चलनेवाला। साथी। २. अनुयायी।

सहगौन†—पुं० =सहगमन।

सहचर—वि०[सं०] [स्त्री० सहचरी]१. साथ-साथ चलनेवाला। २. उठने-बैठने, चलने-फिरने आदि में प्रायः साथ रहनेवाला। साथी।

पुं० १. मित्र। २. सेवक।

सहचरी—स्त्री०[सं० सह√ चर् (चलना)+ङीप्]१. सहचर का स्त्री० रूप। २. साथ रहनेवाली स्त्री। सखी। ३. पत्नी। भार्या।

सहचार—पुं०[सं०]१. दो या अधिक व्यक्तियों का साथ चलना। २. वह अवस्था जिसमें व्यक्तियों, विचारों आदि में पूरी पूरी संगति होती है। (एसोसिएशन)३. सहचर। साथी।

सहचार उपाधि लक्षणा—स्त्री०[सं० सहचार-उपाधि-ब० स० लक्षणा मध्यम० स०] साहित्य में, एक प्रकार की लक्षणा जिसमें जड़ सहचारी के कहने से चेतन सहचारी का बोध होता है।

सहचारिणी—वि०[सं०]१. साथ में रहनेवाली। सहचरी। २. पत्नी। भार्या।

सहचारिता—स्त्री०[सं० सहचारि—तल्—टाप्] सहचारी होने की अवस्था, गुण या भाव।

सहचारित्व—पुं०[सं० सहचारि+त्व]=सहचारिता।

सहचारी (रिन्)—वि० [सं०] [स्त्री० सहचारिणी] साथ चलने या रहनेवाला।

पुं०१. संगी। साथी। २. नौकर। सेवक।

सहज—वि० [सं०] [स्त्री० सहजा, भाव० सहजता]१.(गुण, तत्त्व, पदार्थ या प्राणी) जो किसी के साथ उत्पन्न हुआ हो। जैसे—सहज क्लैब्य, सहज ज्ञान आदि। ३. प्राकृतिक। स्वाभाविक। ३. जो सभी दृष्टियों से ठीक और पूरा हो। पूरी तरह और निर्विवाद रूप से ठीक और आदर्श। उदा०—मिलहिं सो बर सहज सुन्दर साँवरो।—तुलसी। ४. जिसके प्रतिपादन या संपादन में कोई कठिनता न हो। सरल। सुगम। ५. जन्म से प्रकृति के साथ उत्पन्न होने अथवा अपने साधारण रूप में रहनेवाला। प्रकृत। (नार्मल) ६. मामूली। साधारण।

पुं० १. सगा भाई। सहोदर। २. प्रकृति। स्वभाव। ३. बौद्धों के अनुसार वह मानसिक स्थिति जो प्रज्ञा और उपाय के योग से उत्पन्न होती है। ४. फलित ज्योतिष में, जन्म-लग्न से तृतीय स्थान जिसमें भाइयों, बहनों आदि का विचार किया जाता है। ५. दे० 'सहज-ज्ञान'।

सहज-ज्ञान—पुं०[सं०] १. ऐसा ज्ञान जो जीव या प्राणी के जन्म के साथ ही उत्पन्न हुआ हो। प्रकृति-दत्त ज्ञान। सहज-बुद्धि। (देखें) २. वह ज्ञान या चेतना-शक्ति जिससे आत्मा सदा आनन्द और शांति से सम्पन्न रहती है।

सहजता—स्त्री०[सं० सहज+तल्—टाप्]१. सहज होने की अवस्था; गुण या भाव। २. सरलता। आसानी।

सहजधारी(धारिन्)—पुं० [सं०] सिक्ख संप्रदाय में, वह व्यक्ति जो सिर तथा दाढ़ी के बाल न बढ़ाता हो पर फिर भी गुरु ग्रंथ साहब का अनुयायी समझा जाता हो।

सहज-ध्यान—पुं०[सं०] सहज समाधि। (दे०)

सहजन†—पुं०=सहिजन।

सहजन्मा (न्मन्)†—वि० [सं०] १. किसी के साथ एक ही गर्भ से उत्पन्न। सहोदर। सगा (भाई आदि)। २. यमज (सन्तान)।

सहजपंथ—पुं०[हिं० सहज+पंथ] पूर्वी भारत में प्रचलित एक गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय जो बौद्ध तथा हिन्दू तांत्रिकों से प्रभावित है।

विशेष—यह संप्रदाय मूलतः बौद्धों के सहजयान का एक विकृत रूप है।

सहज-बुद्धि—स्त्री०[सं०] वह बुद्धि या समझ जो जीवों या प्राणियों में जन्म-जात होती है; और जिसके फलस्वरूप वे विशिष्ट अवस्थाओं में आप ही आप कुछ विशिष्ट प्रकार के आचरण और व्यवहार करते हैं। (इंस्टिंक्ट) जैसे—स्तनपायी जंतुओं का अपने बच्चों को दूध पिलाना; चिड़ियों का घोंसला बनाना आदि।

सहज-मार्ग—पुं०[सं०] सहजयान वाली साधना का प्रकार।

सहज-मित्र—पुं०[सं० कर्म० स०] ऐसे व्यक्ति जो प्रायः तथा स्वभावतः मित्रता का भाव रखते हों और जिनसे किसी प्रकार के अनिष्ट की आशंका न की जाती हो।

विशेष—हमारे शास्त्रों में भानजा, मौसेरा भाई और फुफेरा भाई सहज-मित्र और वैमात्रेय तथा चचेरे भाई सहज-शत्रु कहे गये हैं।

सहज-यान—पुं०[सं०] एक बौद्ध संप्रदाय जो हठयोग के कुछ सिद्धान्तों के अनुसार धार्मिक साधना करता था।

सहज-यानी—वि०[सं० सहज-यान] सहज-यान संबंधी। सहज-यान का।
पुं० वह जो सहज-यान संप्रदाय का अनुयायी हो।

सहज-योग—पुं०[सं०] ईश्वर के नाम के जप के रूप में की जानेवाली साधना, जिसमें हठयोग आदि की कष्टदायक क्रियाओं की आवश्यकता नहीं होती।

सहजवाद—पुं०[सं०] सहज पंथ का मत या सिद्धान्त।

सहजवदी—वि०[सं०] सहजवाद-सम्बन्धी। सहजवाद का।
पुं० वह जो सहजवाद का अनुयायी हो।

सहज-शत्रु—पुं०[सं० कर्म० स०] सौतेला या चचेरा भाई जो संपत्ति के लिए प्रायः झगड़ा करता है। (शास्त्र)

सहज-शून्य—पुं०[सं०] ऐसी स्थिति जिसमें किसी प्रकार का परिज्ञान, भावना या विकार नाम को भी न रह जाय।

सहज-समाधि—स्त्री०[सं०]१. बौद्ध तांत्रिकों और हठयोगियों के अनुसार वह स्थिति जिसमें मनुष्य समस्त बाह्य आडंबरों से रहित होकर सरलतापूर्वक जीवन निर्वाह करता है। २. वह अवस्था जिसमें मनुष्य बिना समाधि लगाये जीते जी ईश्वर का साक्षात्कार कर लेता है। जीवन्मुक्ति।

सहज-सुंदरी—स्त्री०[सं०] बौद्ध तंत्र शास्त्र में, चांडाली या सुषुम्ना नाड़ी का वह रूप जो उसे अपनी ऊर्ध्व गति से डोम्बी में पहुँचाने पर प्राप्त होता है।

सहजस्थान—पुं०[सं०] जन्म-कुंडली में का तीसरा घर, जिससे इस बात का विचार होता है कि किसी के कितने भाई या बहनें होंगी।

सहजात—वि०[सं०] १. जो किसी के साथ उत्पन्न हुआ हो। २. (परस्पर वे) जो एक ही माता-पिता से उत्पन्न हुए हों। (कान्जेनिटल)। ३. यमज।
पुं० सगा भाई। सहोदर।

सहजाधिनाथ—पुं०[सं०] जन्म-कुंडली के सहज स्थान (तीसरे घर) का अधिपति ग्रह।

सहजानंद—पुं०[सं० सहज+आनन्द] वह आनन्द या सुख जो योगियों को सहजावस्था में पहुँच जाने पर मिलता है।

सहजानि—स्त्री० [सं०] पत्नी। स्त्री। जोरू।

सहजारि—पुं०[सं०]=सहज-शत्रु।

सहजार्श—पुं०[सं०] ऐसा अर्श या बवासीर (रोग) जिसके मस्से कठोर पीले रंग के और अंदर की ओर मुँहवाले हों। (वैद्यक)

सहजावस्था—स्त्री०[सं० सहज+अवस्था] योग-साधन में, मन की वह अवस्था जिसमें वह पूर्ण रूप से सहज-शून्य (देखें) या इच्छा, ज्ञान, विकार आदि से बिलकुल रहित हो जाता है।

सहजिया—पुं० दे० 'सहजपंथी'।

सहजीवन—पुं०[सं०]१. सब देशों और राष्ट्रों के लोगों का आपस में मिल-जुलकर शांतिपूर्वक रहना और युद्ध आदि से बचना। (को-एग्ज़िस्टेन्स) २. वनस्पति विज्ञान में, अलग-अलग प्रकार के दो पेड़-पौधों (या एक पौधे और एक जीव) का इस प्रकार सटकर या एक दूसरे पर आश्रित और स्थित होकर रहना कि दोनों का एक दूसरे से पोषण हो। (सिम्बायोसिस) जैसे—मूंगा और उसके साथ रहनेवाला समुद्री जीव।

सहजीवी (विन्)—वि०[सं०] किसी के साथ रहकर जीवन बितानेवाला। विशेष दे० 'सहजीवन'।

सहजेंद्र—पुं० [सं०] 'सहजाधिनाथ'। (दे०)

सहजैं*—अव्य०[हिं० सहज] बहुत सहज में। आसानी से। अनायास।

सहत†—पुं०=शहद।
†वि०=सस्ता।

सहत-महत—पुं०=श्रावस्ति।

सहतरा—पुं०[फा० शाहतरह] पित्त पापड़ा। पर्पटक।

सहता—वि०[हिं० सहना] [स्त्री० सहती]१. जो सहज में सहन किया जा सके। २. जो इतना गरम हो कि सहन किया जा सके। जैसे—सहते पानी से स्नान करना।
†वि०=सस्ता। उदा०—आँखिया के आँधर सूझत नाहीं, दरुआ ले सहता बा धीउ।—बिरहा।

सहताना*—अ०[हिं० सहता=सस्ता] सस्ता होना।
अ०=सुस्ताना।

सहतूत†—पुं०=शहतूत।

सहत्व—पुं०[सं० √सह् (सहन करना)+अच्—त्व]१. सह अर्थात् साथ होने की अवस्था या भाव। २. एकता। ३. मेलजोल।

सह-दान—पुं०[सं० कर्म० स०] बहुत से देवताओं के उद्देश्य से एक या एक में किया जानेवाला दान।
†स्त्री०=सहदानी।

सहदानी—स्त्री०[सं० सज्ञान] स्मृति-चिह्न। निशानी। यादगार। उदा०—रैदास संत मिले मोहिं सतगुरु दीन्हीं सुरत सहदानी।—मीराँ।

सहदूल†—पुं०=शार्दूल (सिंह)।

सहदेई—स्त्री०[सं० सहदेवा] क्षुप जाति की एक पहाड़ी वनस्पति जिसका उपयोग ओषधि के रूप में होता है।

सहदेव—पुं०[सं० ब० स०, त० त० वा]१. राजा पांडु के पाँच पुत्रों में से सबसे छोटे पुत्र का नाम। २. जरासन्ध का एक पुत्र।

सहदेवा—स्त्री० [सं० सहदेव—टाप्] १. सहदेई। पीतपुष्पी। २. बरियारा। बला। ३. अनन्तमूल। ४. दंदोत्पल। ५. प्रियंगु। ६. नोल। ७. सर्पाक्षी। ८. सोनवली। ९. भागवत के अनुसार देवक की कन्या और वसुदेव की पत्नी का नाम।

सहदेवी—स्त्री०[सं० सह√दिव् (पूजन करना आदि)+अच्—ङीप्] १. सहदेई। पीतपुष्पी। २. सर्पाक्षी। सरहंटी। ३. महानीली। ४. प्रियंगु।

सहदेवीगण—पुं०[सं० ष० त०] वैद्यक में, सहदेई, बला, शतमूली, शतावर, कुमारी, गुडुच, सिंही और व्याघ्री आदि ओषधियों का वर्ग जिनसे देव-प्रतिमाओं को स्नान कराया जाता है।

सहदेस†—वि०[?] स्वतन्त्र। उदा०—तासौं नेह जो दिढ़ करै थिर आछहिं सहदेस।—जायसी।

सह-धर्मचारिणी—स्त्री०[सं०] पत्नी। भार्या।

सह-धर्मिणी—स्त्री०[सं०] पत्नी। भार्या।

सह-धर्मी (मिन्)—वि०[सं०] [स्त्री० सहधर्मिणी] १. पारस्परिक दृष्टि से वे जो एक ही धर्म के अनुयायी हों। २. साथ मिलकर धर्म का आचरण या पालन करनेवाले।

सहन--पुं०[सं०]१. सहने की क्रिया या भाव। २. आज्ञा या निर्णय मानकर उसका पालन करना। (एबाइड) ३. क्षमा। तितिक्षा।
पुं०[अ०]१. घर के बीच का खुला भाग। आँगन। चौक। २. घर के सामने का और उससे संलग्न खुला भाग। ३. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। ४. गजी या गाढ़ा नाम का मोटा सूती कपड़ा।

सहनक--स्त्री०[अ०]१. एक प्रकार की छिछली रकाबी जिसका व्यवहार प्रायः मुसलमान लोग करते हैं। तबक। २. बीबी फातिमा की निमाज या फातिहा। (मुसल०)

सहनची--स्त्री०[अ० सहन से स्त्री० अल्पा० फा०] सहन या आँगन के इधर-उधर वाली छोटी कोठरी।

सहनशील--वि०[ब० स०] [भाव० सहनशीलता] (व्यक्ति) जिसमें अत्याचार, दुर्व्यवहार, विपत्ति आदि सहन करने की स्वाभाविक क्षमता या प्रवृत्ति हो।

सहनशीलता--स्त्री०[सं० सहनशील+तल्--टाप्] १. सहनशील होने की अवस्था, गुण या भाव। २. संतोष। सब्र।

सहना--स०[सं० सहन]१.कोई अनुचित, अप्रिय अथवा हानिकारक बात होने पर अथवा कष्ट आदि आने पर किसी कारण-वश चुपचाप अपने ऊपर लेना।

विशेष--यद्यपि झेलना, भोगना और सहना बहुत कुछ समानार्थक समझे जाते हैं, परन्तु तीनों में कुछ अन्तर है। झेलना का प्रयोग ऐसी विकट परिस्थितियों के प्रसंग में होता है जिनमें मनुष्य को अध्यवसाय और साहस से काम लेना पड़ता है। जैसे--विधवा माता ने अनेक कष्ट झेलकर लड़के को अच्छी शिक्षा दिलाई थी। भोगना का प्रयोग कष्ट या दुःख के सिवा प्रसन्नता या सुख के प्रसंगों में भी होता है, पर कष्टप्रद प्रसंगों में मुख्य भाव यह रहता है कि आया हुआ कष्ट या संकट दूर करने में हम असमर्थ हैं; इसी लिए विवशतापूर्वक सिर झुकाकर उसका भोग करते हैं। परन्तु सहना मुख्यतः मनुष्य की शक्ति पर आश्रित होता है। जैसे--इतना घाटा तो हम सहज में सह लेंगे। सहना में मुख्य भाव यह है कि हम व्यर्थ की झंझट नहीं बढ़ाना चाहते, मन की शांति नष्ट नहीं करना चाहते अथवा जानबूझकर उपेक्षा कर रहे हैं। जैसे--हम उनके सब अत्याचार चुपचाप सहते रहे।

२. अपने ऊपर कोई भार लेकर उसका निर्वाह या वहन करना। ३. किसी प्रकार का परिणाम या फल अपने ऊपर लेना।

अ० किसी वस्तु का ग्रहण, धारण या भोग करने पर उसका सह्य या अच्छी तरह फलदायक सिद्ध होना। जैसे--(क) यह नीलम मुझे सह गया है। (ख) वह मकान उन्हें नहीं सहा।

अ०हिं० 'रहना' के साथ प्रयुक्त होनेवाला उसका अनुकरण-वाचक शब्द। जैसे--कहीं या किसी के साथ रहना-सहना।

†पुं० साहनी।

सहनाइन†--स्त्री०[फा० शहनाई+आयन (प्रत्य०)] शहनाई बजानेवाली स्त्री।

सहनाई†--स्त्री०=शहनाई।

सहनीय--वि०[सं० √सह् (सहन करना)+अनीयर्] जो सहा जा सके। सहे जाने योग्य। सह्य।

सहपति--पुं०[सं०] ब्रह्मा का एक नाम।

सहपाठी (ठिन्)--पुं० [सं०] [स्त्री० सहपाठिन] १. वे जो साथ साथ किसी गुरु से या किसी विद्यालय में पढ़ते हों या पढ़े हों। सहाध्यायी। २. जो एक ही कक्षा में पढ़ते हों। (क्लासफ़ैलो; उक्त दोनों अर्थों में)

सहपिंड--पुं०[सं० त० त०] कर्मकांड में, सपिंड नाम की क्रिया।

सहबा--स्त्री० [अ०] एक प्रकार की अंगूरी शराब।

सह-भागिनी--वि०[सं० सह-भागी का स्त्री०]समानता के भाव से किसी कार्य में सम्मिलित होनेवाली। 'सह-भागी' का स्त्री०।
स्त्री० पत्नी। जोरू।

सह-भागी (गिन्)--वि०[सं०] [स्त्री० सहभागिनी] समानता के भाव से किसी काम में किसी के साथ सम्मिलित होनेवाला।
पुं०१. वह जो व्यापार आदि में किसी के साथ समानता के भाव से सम्मिलित हो और हानि-लाभ आदि का समान रूप से भागी हो। हिस्सेदार। (को-पार्टनर, शेयरर) २. धर्म-शास्त्रीय या विधिक दृष्टि से वह जो किसी संपत्ति का आंशिक रूप से उत्तराधिकारी हो। (को-पार्टनर)

सहभावी--वि०[सं० सहभाविन्] सहवर्ती।
पुं०१. सगा भाई। सहोदर। २. सहचर। साथी। ३. मददगार। सहायक।

सहभू--वि०[सं०] साथ साथ उत्पन्न। सहजात।

सह-भोज, सह-भोजन--पुं०[सं०]बहुत से लोगों का साथ बैठकर भोजन करना। ज्योनार।

सहभोजी (जिन्)--वि० [सं०] (वे) जो एक साथ बैठकर खाते हों। साथ भोजन करनेवाले।

सहम--पुं०[फा०] १. डर। भय। खौफ। २. लिहाज। ३. संकोच।

सह-मत--वि०[सं०] [भाव० सहमति]१. जिसका मत किसी दूसरे के साथ मिलता हो। २. जो दूसरे के मत को ठीक मानकर उसकी पुष्टि करता हो। ३. जो दूसरे से बातचीत, संधि, समझौता आदि करने के लिए तैयार हो।

सहमति--स्त्री०[सं०]१. किसी बात या विषय में किसी से सहमत होने की अवस्था या भाव। २. किसी बात या विषय में कुछ या बहुत से लोगों का आपस में एक-मत होना। (एग्रीमेन्ट)

सहमना--अ० [फा० सहम+हिं० ना (प्रत्य०)] भय खाना। भयभीत होना। डरना।
संयो० क्रि०--जाना।--पड़ना।

सह-मरण--पुं०[सं० त० त०] [भू० कृ० सह-मृत]१. साथ साथ मरना। २. पत्नी का पति के शव के साथ सती होना।

सह-मात†--स्त्री०=शह-मात।

सहमाना--स०[हिं० सहमना का स०]ऐसा काम करना जिससे कोई सहम जाय। भयभीत करना। डराना।
संयो० क्रि०--देना।

सहमृता--वि०[सं० ब० स०] (स्त्री) जो अपने पति के शव के साथ सती हो जाय।

सह-युक्त--भू० कृ०[सं०]१. किसी के साथ में मिला या लगा हुआ। २. जिसका साथ युक्त किया गया हो।

सहयोग—पुं०[सं० सह√ युज् (मिलना)+घञ्]१. किसी के काम में योग देकर या सम्मिलित होकर उसका हाथ बटाना। किसी के साथ मिलकर उसके काम में सहायता करना। २. बहुत से लोगों के साथ मिलकर कोई काम करने का भाव। (कोआपरेशन) ३. सहायता।

सहयोगवाद—पुं०[सं० सहयोग√ वद् (कहना)+ घञ्]ब्रिटिश शासन में, राजनीतिक क्षेत्र में सरकार से सहयोग अर्थात् उसके साथ मिलकर काम करने का सिद्धान्त। 'असहयोगवाद' का विपर्याय।

सहयोगवादी--वि०[सं० सहयोग√वद् (कहना)+णिनि] सहयोगवाद-सम्बन्धी।

पुं० सहयोगवाद का अनुयायी।

सहयोगिता--स्त्री० [सं० सहयोग+इतच्—टाप्-वृचि, मध्यम० स०] सहयोगी होने की अवस्था या भाव।

सहयोगी—वि०[सं० सह√युज् (मिलना) णिनि, सहयोग+इनि वा] १. सहयोग करने अर्थात् काम में साथ देनेवाला। साथ काम करनेवाला। २. समकालीन। ३. समवयस्क।

पुं०१. वह जो किसी के साथ मिलकर कोई काम करता हो। सहयोग करनेवाला। साथ काम करनेवाला। २. ब्रिटिश शासन में, असहयोग आन्दोलन छिड़ने पर सब कामों में सरकार के साथ मिले रहने, उसकी काउंसिलों आदि में सम्मिलित होने और उसके पद तथा उपाधियाँ आदि ग्रहण करनेवाला व्यक्ति।

सहयोजन—पुं०[सं०] [भू० कृ० सहयुक्त, सहयोजित] १. साथ मिलाने की क्रिया या भाव। २. आज-कल वह रीति या व्यवस्था जिसके अनुसार किसी सभा या समिति के सदस्य ऐसे लोगों को भी अपने साथ सम्मिलित कर लेते हैं, जो मूलतः निर्वाचित नहीं हुए होते ; फिर भी जिनसे काम में सहायता मिलने की आशा होती है। (कोआप्शन)

सहयोजित—भू०कृ०[सं०] आज-कल किसी सभा-समिति का वह सदस्य जिसे दूसरे सदस्यों ने अपनी सहायता के लिए चुनकर अपने साथ सम्मिलित किया हो। (कोआप्टेड)

सहर—स्त्री०[अ०] प्रातःकाल। सवेरा।

पुं०१.=शहर। २.=सिहोर (वृक्ष)।

पुं० [अ० सेह्र?] जादू। टोना।

सहर-गही—स्त्री०[अ०सहर+फा० गह] वह आहार जो किसी दिन निर्जल व्रत रखने से पूर्व प्रातः किया जाता है। सरघी।

विशेष—मुसलमान 'रोजों' में और सधवा हिंदू स्त्रियाँ तीज, करवा-चौथ आदि के दिन सहरगही खाती हैं।

सहरना†—अ०=सिहरना।

सहरा—पुं०[अ०] [वि० सहराई]१. वन। जंगल। २. चित्रकला में, चित्र की वह भूमिका जिसमें जंगल, पहाड़ आदि दिखाये गये हों। ३. सियाहगोश नामक जंतु।

†पुं०दे० 'सेहरा'।

सहराई—वि०[अ०]१. जंगली। वन्य। २. लाक्षणिक अर्थ में, पागल।

सहराज्य—पुं०[सं०] ऐसा राज्य जिसमें दो या अधिक प्रभुसत्ताएं अथवा राष्ट्र मिलकर शासन करते हों। (कन्डोमीनियम)

सहराना*—स०=सहलाना।

†अ०=सिहरना।

सहरिया—पुं०[?] एक प्रकार का गेहूँ।

†वि०=शहरी (नागर)।

सहरी—स्त्री०[सं० शफ़री] सफरी मछली। शफरी।

†स्त्री०=सहर-गही।

†वि०[सं० सदृशी, प्रा० सरिसी] सदृश। समान। (राज०) उदा०—जुँ सहरी भ्रूह नयण मृग जूता।—प्रिथीराज।

वि०=शहरी (नागर)।

सहरुण—पुं० [सं० ब० स०] चंद्रमा के एक घोड़े का नाम।

सहल—वि०[सं० सरल से अ०] आसान। सरल।

सहलगी—पुं०[हिं० साथ+लगना] वह जो चलते समय किसी के साथ हो ले। रास्ते का साथी। हमराही।

सहलाना—स०[हिं० सहर=धीरे]१. किसी अक्रिय, सुप्त या दुखते हुए अंग पर इस प्रकार धीरे धीरे हाथ या उँगलियाँ फेरना तथा बार बार रगड़ना कि उसमें चेतना या सक्रियता आ जाय अथवा सुख की अनुभूति हो। जैसे—किसी का हाथ, पैर या सिर सहलाना। २. प्यार से किसी पर हाथ फेरना। ३. मलना।

सहवन—पुं०[देश०] एक प्रकार का तेलहन।

सहवर्ती—वि० [सं०] [स्त्री० सहवर्तिनी] किसी के साथ वर्तमान रहनेवाला। साथ में रहने या होनेवाला। (कान्कामिटेंट)

सहवर्ती लिंग—पुं० दे० 'लिंग' (न्यायशास्त्र वाला विवेचन)।

सहवाद—पुं०[सं० सह√वद् (कहना)+घञ्] आपस में होनेवाला तर्क-वितर्क। वाद-विवाद। बहस।

सह-वास—पुं०[सं०]१. किसी के साथ रहना। २. एक ही घर में दो परिवारों का या एक ही कमरे में दो विद्यार्थियों, कर्मियों आदि का मिलकर रहना। २. मैथुन। संभोग।

सहवासी(सिन्)—वि०[सं० सहवासिन्]साथ रहनेवाला।

पुं० संगी-साथी।

सहव्रता—स्त्री०[सं० ब० स०] पत्नी। भार्या। जोरू।

सहसंभव—वि० [सं० ब० स०] जो एक साथ उत्पन्न हुए हों। सहज।

सहस—वि०, पुं०=सहस्र (हजार)।

सहसकिरन†—पुं०=सहस्र-किरण (सूर्य)।

सहसगो†—पुं०=सहस्रगु (सूर्य)।

सहसजीभ†—पुं०=सहस्रजिह्व (शेषनाग)।

सहसदल*—पुं०=सहस्रदल (कमल)।

सहसनयन—पुं०=सहस्रनयन (इंद्र)।

सहसफण—पुं०=सहस्रफन (शेषनाग)।

सहसबदन—पुं०=सहस्रवदन (शेषनाग)।

सहस-बाहु†—पुं०=सहस्रबाहु।

सहसमुख†—पुं०=सहस्रमुख (शेषनाग)।

सहसमेखी†—स्त्री०[सं० सहस्र +हिं० मेख] युद्ध के समय हाथ में पहनने का एक प्रकार का प्राचीन दस्ताना जिसमें मेखें लगी होती थीं और जो कोहनी से कलाई तक का भाग ढकता था।

सहससीस—पुं०=सहस्रशीर्ष (शेषनाग)।

सहसा—अव्य० [सं०] १. इस प्रकार एकदम जल्दी से या ऐसे रूप में जिसकी पहले से आशा या कल्पना न की गई हो। अकस्मात्।

अचानक। एकाएक। जैसे—वह सहसा उठकर वहाँ से चला गया। २. बिना विचारे उतावली से। जैसे—सहसा वह भी नदी में कूद पड़े।

विशेष—सहसा में मुख्य भाव बिना कुछ सोचे-विचारे शीघ्रतापूर्वक कोई काम कर बैठने का है। जैसे—वह सहसा डरकर चिल्ला पड़ा। अकस्मात् में मुख्य भाव अकल्पित या अतर्कित रूप से कोई बात होने का है। जैसे—अकस्मात डाकुओं ने आकर गोलियाँ चलानी शुरू कर दीं। अचानक भी बहुत कुछ वही है, जो अकस्मात् है, फिर भी इसमें उग्रता और तीव्रतावाला तत्त्व अपेक्षया कम है। जैसे—अचानक घर में आग लग गई। एकाएक में किसी चलते हुए क्रम में एकदम से कोई नया परिवर्तन होने का प्रधान भाव है। जैसे—एकाएक आँधी चलने लगी; और आकाश में बादल घिर आए।

सहसाक्षि—पुं०=सहसाक्ष (इंद्र)।

सहसाखी†—पुं०=सहस्राक्ष (इंद्र)।

सहसानन†—पुं०=सहस्रानन (शेषनाग)।

सहस्त—वि० [सं० अव्य स०] १. हस्तयुक्त। २. हथियार चलाने में कुशल।

सहस्र—वि० [सं०] १. जो गिनती में दस सौ हो। हजार। २. लाक्षणिक अर्थ में, अत्यधिक। जैसे—सहस्र धी।

पुं० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१००० ।

सहस्रक—वि०[सं० सहस्र+कन्] १. सहस्र-सम्बन्धी। २. एक हजार वाला।

पुं० एक ही प्रकार या वर्ग की एक हजार वस्तुओं का समाहार या कुलक।

सहस्रकर—पुं० [सं०] सूर्य।

सहस्र-किरण—पुं० [सं०] सूर्य।

सहस्रगु—पुं० [सं०] सूर्य।

सहस्रचक्षु(स्)—पुं०[सं०] इंद्र।

सहस्र-चरण—पुं० [सं० ब० स०] विष्णु।

सहस्रजित—पुं०[स०] १. विष्णु। २. मृगमद। कस्तूरी। ३. जांबवती के गर्भ से उत्पन्न श्री कृष्ण का एक पुत्र।

सहस्रणी—पुं० [सं० सहस्र√नी (ढोना)+क्विप्] हजारों रथियों की रक्षा करनेवाले, भीष्म।

सहस्र-दंष्ट्रा—स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार की मछली जिसके मुँह में बहुत अधिक दाँत होते हैं। २. कुछ लोगों के मत से पाठीन नामक मछली।

सहस्रद—पुं०[सं० सहस्र√दा (देना)+क] १. बहुत बड़ा दानी। २. हजारों गौएँ आदि दान करनेवाला बहुत बड़ा दानी। ३. पहिना या पाठीन मछली।

सहस्रदल—पुं० [सं० ब० स०] हजार दलोंवाला अर्थात् कमल।

सहस्रदृश—पुं०[सं०] १. विष्णु। २. इन्द्र।

सहस्रधारा—स्त्री०[सं०] देवताओं आदि का अभिषेक करने का एक प्रकार का पात्र जिसमें हजारों छेद होते हैं।

सहस्रधी—वि०[सं० ब० स०] बहुत बड़ा बुद्धिमान्।

सहस्रधौत—वि०[सं० मध्यम० स०] हजार बार धोया हुआ।

पुं० हजार बार पानी से धोया हुआ घी जिसका व्यवहार औषध के रूप में होता है।

सहस्रनयन—पुं०[सं० ब० स०] १. विष्णु। २. इन्द्र।

सहस्रनाम—पुं० [सं० ब० स०, कम० स० ?] वह स्तोत्र जिसमें किसी देवता या देवी के हजार नाम हों। जैसे—विष्णु सहस्रनाम, शिव सहस्रनाम, दुर्गा सहस्रनाम आदि।

सहस्रनामा(मन्)—पुं० [सं० ब० स०] १. विष्णु। २. शिव। ३. अमलबेंत।

सहस्रनेत्र—पुं०[सं०] १. इंद्र। २. विष्णु।

सहस्रपति—पुं०[सं० ष० त०] प्राचीन भारत में, हजार गाँवों का स्वामी और शासक।

सहस्रपत्र—पुं०[सं०] कमलपत्र।

सहस्रपाद—पुं०[सं० ब० स०] १. विष्णु। २. शिव। २. महाभारत के एक ऋषि।

सहस्रपाद—पुं०[सं० ब० स०] १. सूर्य। २. विष्णु। ३. सारस पक्षी।

सहस्रबाहु—पुं० [सं० ब० स०] १. शिव। २. कार्तवीर्यार्जुन या हैहय का एक नाम। ३. राजा बलि के सबसे बड़े पुत्र का नाम।

सहस्र-भागवती—स्त्री०[सं०] देवी की एक मूर्ति।

सहस्रभुज—पुं०=सहस्रबाहु।

सहस्रभुजा—स्त्री०[सं० ब स०] दुर्गा का हजार बाहोंवाला वह रूप जो उन्होंने महिषासुर को मारने के लिए धारण किया था।

सहस्र-मूर्ति—पुं० [सं० ब० स०] विष्णु।

सहस्र-मूर्द्धा (र्द्धन्)—पुं०[सं०] १. विष्णु। २. शिव।

सहस्रमूलिका, सहस्रमूली—स्त्री०[सं०] १. कांडपत्री। २. बड़ी दंती। ३. मूसाकाणी। ४. बड़ी शतावर। ५. मुद्गपर्णी। बनमूँग।

सहस्रमौलि—पुं०[सं० ब० स०] १ विष्णु। २. अनंतदेव का एक मास।

सहस्ररश्मि—पुं० [सं० ब० स०] सूर्य।

सहस्र-लोचन—पुं०[सं० ब० स०] इंद्र।

सहस्र-वीर्य—वि०[सं०ब०स०] बहुत बड़ा बलवान्। बहुत बड़ा ताकतवर।

सहस्रशः (शस्)—अ०[सं० सहस्+शस्] हजारों तरह से।

वि० कई हजार। हजारों।

सहस्रशाख—पुं०[सं० ब० स०] वेद, जिनकी हजार शाखाएँ हैं।

सहस्र-शिखर—पुं०[पुं० ब० स०] विंध्य पर्वत का एक नाम।

सहस्र-शीर्ष(न्)—पुं[सं० ब० स०] विष्णु।

सहस्र-श्रुति—पुं० [सं० ब० स०] पुराणानुसार जंबूद्वीप का एक वर्ष-पर्वत।

सहस्रसाव—पुं०[सं० ब० स०] अश्वमेध यज्ञ।

सहस्रांक—पुं०[सं० ब० स०] सूर्य।

सहस्रांशु—पुं० [सं० ब० स०] सूर्य।

सहस्रांशुज—पुं०[सं० सहस्रांशु√जन् (उत्पन्न करना)+ड] शनिग्रह।

सहस्रा—स्त्री०[सं० सहस्त्र—टाप्] १. मात्रिका। अंबष्टा। मोइया। २. मयूरशिखा।

सहस्राक्ष—वि०[सं० ब० स०] हजार आँखोंवाला।

पुं० १. इंद्र। २. विष्णु। ३. उत्पलाक्षी देवी का पीठ स्थान। (देवी भागवत)

सहस्रात्मा (त्मन्)—पुं०[सं० ब० स०] ब्रह्मा।

सहस्राधिपति—पुं०[सं० ष० त०] प्राचीन भारत में, वह अधिकारी जो

किसी राजा की ओर से एक हजार गाँवों का शासन करने के लिए नियुक्त होता था।

सहस्रानन--पुं० [सं० ब० स] विष्णु।

सहस्राब्दि--स्त्री०[सं०] किसी संवत् या सन् के हरएक से हर हजार तक के वर्षों अर्थात् दस शताब्दियों का समूह। (माइलीनियम)

सहस्रायु--वि० [सं० ब० स०] हजार वर्ष जीनेवाला।

सहस्रार--पुं०[सं० ब० स०] १. हजार दलोंवाला एक प्रकार का कल्पित कमल। २. जैन पुराणों के अनुसार बारहवें स्वर्ग का नाम। ३. हठयोग के अनुसार शरीर के अन्दर के आठ कमलों या चक्रों में से एक जो हजार दलों का माना गया है। इसका स्थान मस्तक का ऊपरी भाग माना जाता है। इसे शून्य चक्र भी कहते हैं। आधुनिक विज्ञान के अनुसार यह विचार-शक्ति और शरीर का विकास करनेवाली ग्रन्थियों का केंद्र है।

सहस्रार्चि (स्)--वि०[सं० ब० स०] हजार किरणोंवाला।

पुं० सूर्य।

सहस्रावर्ता--स्त्री०[सं० सहस्रावर्त्ता--टाप्] देवी की एक मूर्ति।

सहस्रास्य--पुं०[सं० ब० स०] १. विष्णु। २. अनंत नामक नाग।

सहस्रिक--वि० [सं० सहस्र+ठन्--इक] हजार वर्ष तक चलता रहने या होनेवाला।

सहस्री (स्रिन्)--पुं० [सं० सहस्र+इनि] वह वीर या नायक जिसके पास हजार योद्धा, घोड़े, हाथी आदि हों।

स्त्री० एक ही तरह की हजार चीजों का वर्ग या समूह।

सहस्रेक्षण--पुं०[सं० ब० स०] इंद्र।

सहांश--पुं०[सं० सह+अंश] किसी और के साथ रहने या होने पर मिलनेवाला अंश या भाग।

सहांशी--पुं०[सं० सह+अंशी]वह जो किसी के साथ किसी प्रकार के लाभ या संपत्ति में अपना भी अंश या हिस्सा पाने का अधिकारी हो। साझीदार। (कोशेयरर)

सहा--स्त्री० [सं०√ सह् (सहन करना)+अच्--टाप्] १. घीकुआर। ग्वारपाठा। २. बनमूँग। ३. दंडोत्पल। ४. सफेद कटसरैया। ५. कंघी का ककही नामक वृक्ष। ६. सर्पिणी। ७. रासना। ८. सत्यानाशी। ९. सेवती। १०. हेमंत ऋतु। ११. अगहन मास। १२. मयवन। १३. देवताड़ का वृक्ष। १४. मेंहदी।

सहाइ†--स्त्री०=सहायता।

†वि०=सहायक।

सहाई*--वि० [सं० सहाय्य] सहायक। मददगार। उदा०--नैन सहाई पलक ज्यौं देह सहाई हाथ।

†स्त्री०=सहायता।

सहाउ†--वि०, पुं०=सहाय।

सहाध्यायी (यिन्)--वि०[स० सह-आ-अधि√ ई (पढ़ना)+णिनि] जिसने किसी के साथ अध्ययन किया हो। सहपाठी।

पुं० साथ साथ अध्ययन करनेवाले शिक्षार्थी।

सहाना--स० [हिं० सहना का स०] ऐसा काम करना जिससे किसी को कुछ सहना पड़े।

†पुं०=शहाना (राग)।

सहानी--वि० स्त्री०=शहानी।

सहानुगमन--पुं०=सहगमन। (दे०)

सहानुभूति--स्त्री०[सं० सह-अनु √भू (होना)+क्तिन्] १. ऐसी अनुभूति जो साथ साथ दो या अधिक व्यक्तियों को हो। २. वह अवस्था जिसमें मनुष्य दूसरे की अनुभूति (विशेषतः कष्टपूर्ण अनुभूति) का अनुभव शुद्ध हृदय से करता है और उससे उसी प्रकार प्रभावित होता है जिस प्रकार दूसरा व्यक्ति हो रहा हो। संवेदना। हमदर्दी। (सिम्पैथी) ३. अनुकम्पा। दया।

सहानुसरण--पुं० [सं०सह-अनु√सृ (गत्यादि)+ल्युट्--अन]=सहानुगमन (सह-गमन)।

सहापराधी--पुं० [सं० सहापराध+इनि] किसी अपराध में मुख्य अपराधी का साथ देने और उसकी सहायता करनेवाला (व्यक्ति)। (एकाम्प्लिस)

सहाब--पुं० =शहाब।

सहाबी--पुं० [अ०][स्त्री० सहाबिया] वे लोग जो मुहम्मद साहब के उपदेश से मुसलमान हो गये थे और मरण पर्यन्त इस्लाम धर्म को मानते रहे।

सहाय--वि०[सं०] सहायता करनेवाला।

पुं० १. वह जो दूसरों की सहायता करता हो और उसके कष्ट-दुःख दूर करता हो। २. साथी। ३. अनुयायी। ४. सहायता। ५. आश्रय। सहायता। ६. एक प्रकार का हंस। ७. एक प्रकार की वनस्पति।

सहायक--वि०[सं०] १. किसी की सहायता करनेवाला। जैसे--दुःख-सुख में अपने ही सहायक होते हैं। २. कार्य, प्रयोजन आदि के संपादन या सिद्धि में योग देनेवाला। जैसे--पढ़ने में आँखें ही सहायक होंगी। ३. (वह अधिकारी या कर्मचारी) जो किसी उच्च अधिकारी के अधीन रहकर उसके कार्यों के संपादन में योग देता हो। जैसे--सहायक मंत्री; सहायक संपादक। ४. किसी के साथ मिलकर उसकी वृद्धि करनेवाला। जैसे--सहायक आजीविका, सहायक नदी।

सहायक-नदी--स्त्री०[सं०] भूगोल में, किसी बड़ी नदी में आकर मिलनेवाली कोई छोटी नदी। (ट्रिब्यूटरी)

सहायता--स्त्री० [सं०] १. सहाय होने की अवस्था या भाव। २. उद्योग या प्रयत्न जो दूसरे का काम संपादित करने या सहज बनाने के निमित्त किया जाता है। जैसे--उसने उन्हें पुस्तक लिखने में सहायता दी। ३. अभावग्रस्त का अभाव दूर करने के लिए उसे दिया जानेवाला धन या अनुदान। जैसे--सरकारी सहायता से यह उद्योग चल रहा है। ४. अनाथों; निर्धनों आदि को निर्वाह या भरण-पोषण के उद्देश्य से दिया जानेवाला धन या वस्तुएँ।

सहायन--पुं०[सं०सह√अच् (गत्यादि)+ल्युट्--अन √इण (गत्यादि) +ल्युट्--अन वा] १. साथ चलना या जाना। २. साथ देना। ३. सहायता करना।

सहायी†--वि० =सहायक।

†स्त्री०=सहायता।

सहार--पुं० [सं० सह√ऋ (गमनादि)+अच्, त० त० वा] १. आम का पेड़। सहकार। २. महा प्रलय।

स्त्री०[हिं० सहारना]१. सहारने की क्रिया या भाव। २. सहनशीलता। जैसे—अब उनमें कष्ट सहने की सहार नहीं रह गई है।

सहारना†—स०[सं० सहन या हिं० सहारा]१. सहन करना। ४. बरदाश्त करना। सहना। २. किसी प्रकार का भार अपने ऊपर लेकर उसे सँभाले रहना। ३. उत्पात, कष्ट आदि होने पर उसकी ओर ध्यान न देना। गवारा करना।

सहारा—पुं०[हिं० सहारना]१. कोई ऐसा तत्त्व या बात जिससे कष्ट आदि सहन करने या कोई बड़ा काम करने में सहायता मिलती हो या कष्ट की अनुभूति कम होती हो। २. ऐसी वस्तु या व्यक्ति जिस पर किसी प्रकार का भार सहज में रखा जा सके और जो वह भार सह सके। कोई ऐसा तत्त्व या बात जिससे किसी प्रकार का आश्वासन मिलता हो।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

सहारिया—वि०, पुं०=सहराई। उदा०—गाँव क्या था सहारियों की पर्ण-कुटीरों का समूह।—वृन्दावनलाल वर्मा।

सहार्थ—वि० [सं०] १. समान अर्थ रखनेवाले। २. समान उद्देश्य रखनेवाले।

पुं०१. आनुषंगिक विषय। २. सहयोग।

सहार्द—वि०[सं० तृ० त०] स्नेहयुक्त।

सहार्ह—वि० [सं० सह (न)+अर्ह] जो सहन किया जा सके। योग्य।

सहालग—पुं० [सं० सह+लग] १. वह वर्ष जो हिन्दू ज्योतिषियों के मत से शुभ माना जाता हो। २. फलित ज्योतिष के अनुसार वे दिन जिनमें विवाह आदि शुभ कृत्य किये जा सकते हों।

सहावल†—पुं०=साहुल (सीध नापने का उपकरण)।

सहासन—वि०[सं० सह+आसन]१. किसी के साथ उसके बराबर के आसन पर बैठनेवाला। २. साथ बैठनेवाला।

पुं० बराबरी का हिस्सेदार। उदा०—सहासन का भाग छीनकर, दो मत निर्जन बन को।—दिनकर।

सहिंजन—पुं०=सहिजन।

सहि—वि०=सभी। उदा०—समाचार इणि माहि सहि।—प्रिथीराज।

सहिक—वि०[सं० सह+हिं० इक (प्रत्य०)]१. जो सचमुच वर्तमान हो। सत्ता से युक्त। वस्तविक। २. जिसमें कोई विशिष्ट तत्त्व या भाव वर्तमान हो। ३. जिसमें किसी प्रकार की दुविधा या संकोच न हो। ठीक और निश्चित। ४. (कथन या मत) जो निश्चित और स्पष्ट रूप से प्रतिपादित या प्रस्थापित किया गया हो। ठीक मानकर और साफ साफ कहा हुआ। ५. गणित में, शून्य की अपेक्षा अधिक, जो 'धन' कहलाता है। ६. (प्रतिकृति या मूर्ति) जिसमें मूल के समान ही छाया या प्रकाश हो। जो उलटा न जान पड़े। सीधा। 'नहिक' का विपर्याय। (पॉज़ीटिव, उक्त सभी अर्थों के लिए)

पुं० १. ऐसा कथन या बात जिसमें किसी सत्त्व, मत या सिद्धान्त का निश्चत रूप से निरूपण या प्रस्थापन किया गया हो। ठीक मानकर दृढ़तापूर्वक कही हुई बात। २. किसी विषय, निश्चय आदि का वह अंश या पक्ष जिसमें उक्त प्रकार का निरूपण या प्रस्थापन हो। ३. ऐसी प्रतिकृति या मूर्ति जिसमें मूल की छाया के स्थान पर छाया और प्रकाश के स्थान पर प्रकाश हो। ऐसी नकल जो देखने में सीधी जान पड़े, उल्टी नहीं। ४. छाया चित्र में, नहिक शीशे पर से कागज पर छापी हुई वह प्रति जो मूल के ठीक अनुरूप होती है। 'नहिक' का विपर्याय। (पॉजिटिव, उक्त सभी अर्थों के लिए)

सहिकता—स्त्री० [हिं० सहिक+ता (प्रत्य०)] 'सहिक' होने की अवस्था या भाव। (पॉजिटिविटी, पॉजिटिवनेस)

सहिजन—पुं०[सं० शोभांजन] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लंबी फलियाँ तरकारी, अचार आदि बनाने के काम आती हैं। मुनगा।

सहिजनी†—स्त्री०[सं० संज्ञान] निशानी। चिह्न। पहचान। (दे० 'सहदानी')

स-हित—क्रि० वि०[सं० स+हित]हितपूर्वक। प्रेम से।

सहित—अव्य०[सं० सह से] (किसी के) साथ। समेत।

वि०१. किसी के साथ मिला हुआ। युक्त।

विशेष—सहित और युक्त में मुख्य अंतर यह है कि सहित का प्रयोग तो प्रायः क्रिया विशेषण पदों में होता है और युक्त का विशेषण पदों में। जैसे—(क) चतुर्थांश सहित दे दो। (ख) चतुर्थांशयुक्त रूप।

२. (प्राणायाम) जिसमें पूरक और रेचक दोनों क्रियाएँ की जाती हैं। ('केवल' से भिन्न)

भू० कृ०[सं० सहन से] जो सहन किया गया हो। सहा हुआ।

सहितत्व—पुं० [सं० सहित+त्व] सहित का धर्म या भाव।

सहितव्य—वि०[सं०√सह् (सहन करना)+तव्य] सहन होने के योग्य। जो सहा जा सके। सह्य।

सहिथी†—स्त्री०[?] बरछी।

सहिदान* —पुं०=सहदानी (निशानी)।

सहिदानी†—स्त्री०=सहदानी।

सहिरिया—स्त्री०[देश०] वसंत ऋतु की वह फसल जो बिना सींचे हुए होती है।

सहिष्णु—वि०[सं० √सह् (सहन करना)+इष्णुच्] जो कष्ट या पीड़ा आदि सहन कर सके। बरदाश्त कनेरवाला। सहनशील।

सहिष्णुता—स्त्री० [सं०] सहिष्णु होने की अवस्था, गुण या भाव। सहनशीलता।

सही—वि०[अ० सहीह]१. जिसमें किसी प्रकार का झूठ या मिथ्यात्व न हो। यथार्थ। वास्तविक। २. सच। सत्य। ३. जिसमें कोई त्रुटि, दोष या भूल न हो। बिलकुल ठीक। जैसे—यह इस हिसाब का सही जवाब है।

स्त्री०१. किसी बात को मान्य, यथार्थ या सत्य होने की साक्षी के रूप में किया जानेवाला हस्ताक्षर। दस्तखत। २. किसी बात की प्रामाणिकता या मान्यता का सूचक कथन। उदा०—ब्रह्मा वेद सही कियो, सिव जोग पसारा हो।—कबीर।

मुहा०—(किसी कथन या बात की) सही भरना=सत्यता की साक्षी देना। यह कहना कि हाँ, यह बात ठीक है। उदा०—सही भरी लोमस भुसुंडि बहु बारिखौ।—तुलसी।

३. किसी बात की प्रामाणिकता या उसके फलस्वरूप होनेवाली मान्यता। जैसे—चुप रहने की सही नहीं। ४. प्रामाणिकता, मान्यता या शुद्धता सूचक शब्द। जैसे—चलो, यही सही।

अव्य०[सं० सहन, हिं० सहना या सं० सिद्ध] एक अव्यय जो विशिष्ट प्रसंगों में वाक्य के अंत में आकर ये अर्थ देता है—(क) कोई बात सुनकर मान या सह लेना। जैसे—अच्छा यह भी सही। (ख) अधिक नहीं, तो इतना अवश्य। जैसे—आप वहाँ चलिए तो सही। (ग) कोई असंभावित बात होने पर कुछ जोर देते हुए आश्चर्य प्रकट करना। जैसे—फिर भी आप वहाँ गये सही। उदा०—प्रभु आसुतोष कृपालु शिव अबला निरखि बोले सही।—तुलसी।

†स्त्री०=सखी। (राज०)

सहीफा—पुं०[अ० सहीफ़ः] १. ग्रन्थ। पुस्तक। २. चिट्ठी। पत्र। ३. सामयिक पत्र।

सहुँ*—अव्य०[सं० सन्मुख] १. सन्मुख। सामने। २. ओर। तरफ।

सहु†—वि०[सं० सर्व+ही] सभी। उदा०—मन पं थियौ सहु सेन मुरछित।—प्रिथीराज।

सहुह†—पुं०[सं० सह्व] भूल-चूक। अपराध। दोष। उदा०—सहुह दूरि देखै ता भउ पवै।

सहूलत—स्त्री० =सहूलियत।

सहूलियत—स्त्री०[अ० सहूलत] १. आसानी। सुगमता। २. सुभीता। ३. शिष्टता और सभ्यतापूर्वक आचरण करने की कला और पात्रता। जैसे—अब तुम सयाने हुए, कुछ सहूलियत सीखो।

सहृदय—वि० [सं०] [भाव० सहृदयता] १. (व्यक्ति) जो दूसरे के सुख-दुःख की अनुभूति करता हो। २. कोमल गुणों से युक्त हृदयवाला। ३. काव्य, साहित्य आदि के गुणों की परख रखने और उसकी विशेषताओं से प्रभावित होनेवाला। साहित्य का अधिकारी और योग्य पाठक। रसिक। ४. अच्छे गुणों और स्वभाववाला। भला। सज्जन। ५. प्रायः या सदा प्रसन्न रहनेवाला।

सहृदयता—स्त्री०[सं० सहृदय+तल्—टाप्] १. सहृदय होने की अवस्था, गुण या भाव। २. वह कार्य या बात जो इस तथ्य की सूचक हो कि व्यक्ति सहृदय है। सहृदय व्यक्ति का कोई कार्य।

सहेज†—पुं०[देश०] वह दही जो दूध जमाने के लिए उसमें डाला जाता है। जामन।

स्त्री०[हिं० सहेजना] १. सहेजने की क्रिया या भाव। २. चीजें सहेज कर रखने की प्रवृत्ति या स्वभाव।

सहेजना—स०[अ० सही ?] १. कोई चीज लेने के समय अच्छी तरह देखना कि वह ठीक या पूरा है या नहीं। जैसे—कपड़े, गहने या रुपए सहेजना। संयो० क्रि०—लेना।

२. अच्छी तरह दिखला या बतलाकर कोई चीज किसी को सौंपना। सुपुर्द करना। जैसे—सब चीजें उन्हें सहेज देना। संयो० क्रि०—देना।

सहेजवाना—स०[हिं० सहेजना का प्रे०] सहेजने का काम दूसरे से कराना।

सहेट—पुं०=सहेत। उदा०—भवन तें निकसि वृषभानु की कुमारी देख्यो ता समै सहेट को निकुंज गिर्‌यों तीर को।—मतिराम।

सहेत†—पुं०[सं० संकेत] वह निर्दिष्ट एकान्त स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका मिलते हैं। अभिसार का पूर्व निर्दिष्ट स्थान।

सहेतु—वि० =सहेतुक।

सहेतुक—वि०[सं० ब० स०] जिसका कोई हेतु हो। जिसका कुछ उद्देश्य या मतलब हो। जैसे—यहाँ यह पद सहेतुक आया है, निरर्थक नहीं है।

सहेलरी†—स्त्री०=सहेली। उदा०—विजन-मन-मुदित सहेलरियाँ।—निराला।

सहेली—स्त्री०[सं० सह=हिं० एली (प्रत्य०)] १. साथ में रहनेवाली स्त्री। संगिनी। २. परिचारिका। दासी। (क्व०) ३. सखी। ४. गौरैया की तरह की काले रंग की एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

सहैया*—वि०[हिं० सहाय] सहायता करनेवाला। सहायक।

वि० [हिं० सहना] १. सहनेवाला। २. सहनशील।

सहो—पुं० [अ० सहव] १. अपराध। दोष। २. भूल-चूक। गलती।

सहोक्ति—स्त्री०[सं०] साहित्य में, एक अलंकार जिसमें 'सह' 'संग' 'साथ' आदि शब्द इस प्रकार प्रयुक्त होते हैं कि किसी क्रिया के (क) एक कार्य के साथ और भी कई आर्यों का होना सूचित होता है। जैसे—रात्रि के समय तुम्हारे मुख के साथ ही चंद्रमा भी सुशोभित हो जाता है अथवा (ख) कोई श्लिष्ट शब्द इस प्रकार प्रयुक्त होता है कि अलग अलग प्रसंगों में अलग अलग अर्थ देता है। (कनेक्टेड डेस्क्रिप्शन) जैसे—यौवन में उसके ओष्ठ तथा प्रिय दोनों साथ ही रागयुक्त (क्रमात् लाल और प्रेमपूर्ण या अनुरक्त) हो गये। उदा०—बल प्रताप बीरता बड़ाई। नाक पिनाकी संग सिधाई।—तुलसी।

सहोढ़—पुं०[सं०] १. वह चोर जो चोरी के माल के साथ पकड़ा गया हो। २. धर्मशास्त्र में, बारह प्रकार के पुत्रों में से वह जो गर्भवती कन्या के साथ विवाह करने पर विवाह के उपरांत उत्पन्न होता है।

सहोदक—वि०[सं० ब० स०] समानोदक।

सहोदर—वि०[सं० ब० स०] [स्त्री० सहोदरा] १. (जन्म के विचार से वे) जो एक ही माता के उदर या गर्भ से उत्पन्न हुए हों। २. सम्बन्ध के विचार से अपना और सगा।

पुं० १. सगा भाई। २. वैज्ञानिक क्षेत्रों में, वे सब जो एक ही मूल से उत्पन्न हुए हों और जिनमें परस्पर रक्त या वंश का सम्बन्ध हो। एक ही कुल या वंश के सदस्य।

सहोपमा—स्त्री०[सं० ब० स०, मध्य० स० वा] साहित्य में, उपमा अलंकार का एक प्रकार या भेद।

सहोर—पुं०[सं० शाखोट] एक प्रकार का जंगली वृक्ष।

सह्य—वि०[सं०] १. जो सहा जा सके। जो सहन हो सके। २. आरोग्य। ३. प्रिय।

पुं०=सह्याद्रि।

सह्याद्रि—पुं०[सं० मध्यम० स०] वर्तमान महाराष्ट्र राज्य की एक पर्वत-माला।

साँई—पुं०[सं० स्वामी] १. स्वामी। मालिक। २. ईश्वर। परमात्मा। ३. स्त्री का पति। ४. मुसलमान फकीर। ५. बोलचाल में, सिंधियों के लिए प्रयुक्त आदरसूचक संबोधन।

साँकड़—पुं० १.=सिक्कड़। २.=साँकड़ा।

*वि० [सं० संकीर्ण] संकरा। उदा०—जमुनक तिरे तिरे साँकड़ बाटी।—विद्यापति।

†स्त्री०=साँकल।

साँकड़ा—पुं०[सं० श्रृंखला] पैरों में पहना जानेवाला कड़े की तरह का एक प्रकार का गहना।

साँकर*—वि०[सं० संकीर्ण] १. सँकीर्ण। तंग। सँकरा। २. कष्टदायक।

पुं० कष्ट या संकट की दशा अथवा समय।

स्त्री०=साँकल।

साँकरा†—पुं०=साँकड़ा।

†वि०=सँकरा।

सांकरिक—वि०[सं० संकर+ठञ्—इक] वर्ण-संकर। दोगला।

साँकल—स्त्री० [सं० श्रृंखला] १. श्रृंखला। जंजीर। २. दरवाजे में लगाई जानेवाली जंजीर। ३. पशुओं के गले में बाँधने की जंजीर। ४. गहने की तरह गले में पहनने की चाँदी-सोने की जंजीर। सिकड़ी।

सांकल्पिक—वि० [सं० संकल्प+ठञ्+इक]१. संकल्प-सम्बन्धी। २. काल्पनिक।

सांकेतिक—वि०[सं०]१. संकेत-संबंधी। २. संकेत के रूप में होनेवाला। ३. शब्द की अभिधा-शक्ति से संबंध रखने अथवा उससे निकलनेवाला। जैसे— सांकेतिक अर्थ।

सांकेतिक भाषा—स्त्री०[सं०] कुछ विशष्ट लोगों के निजी व्यवहार के लिए उनकी बनाई हुई गोपनीय तथा कृत्रिम भाषा। साधारण या जन-भाषा से भिन्न भाषा। (कोड-लैंगवेज)

सांकेतिकी—स्त्री०=संकेतकी।

सांक्रामिक—वि०[सं०] संक्रामक।

सांक्षेपिक—वि०[सं० संक्षेप+ठञ्—इक]१. संक्षिप्त। २. संकुचित।

सांख्य—वि०[सं०]१. संख्या-संबंधी। जो संख्या के रूप में हो।

पुं०१. संख्याएँ आदि गिनने गौर हिसाब लगाने की क्रिया। २. तर्क-वितर्क या विचार करने की क्रिया। ३. भारतीय हिन्दुओं के छः प्रसिद्ध दर्शनों में से एक दर्शन जिसके कर्ता महर्षि कपिल कहे गये हैं।

विशेष—यह दर्शन इसलिए सांख्य कहा गया है कि इसमें २५ मूल तत्त्व गिनाये गये हैं, और कहा गया कि अंतिम या पचीसवें तत्त्व के द्वारा मनुष्य आत्मोपलब्धि या मोक्ष प्राप्त कर सकता है। इसमें आत्मा को ही पुरुष या ब्रह्म माना गया है।

सांख्य-मार्ग—पुं०[सं०]सांख्य-योग।

सांख्य-योग—पुं०[सं०]ऐसा सांख्य जो अच्छी तरह चित्त शुद्ध करके और पूरा ज्ञान प्राप्त करके सच्चे त्याग के आधार पर ग्रहण किया जाय।

सांख्यायन—पुं०[सं० सांख्य+क-फ—आयन] एक प्रसिद्ध वैदिक आचार्य जिन्होंने ऋग्वेद के सांख्याय ब्राह्मण की रचना की थी। इनके कुछ श्रौत्र सूत्र भी हैं। सांख्यायन कामसूत्र इन्हीं का बनाया हुआ माना जाता है।

सांख्यिक—वि०[सं०] संख्या या गिनती से संबंध रखनेवाला। संख्या-संबंधी।

सांख्यिकी—स्त्री०[सं०]१. किसी विषय की (यथा—अपराध, उत्पादन, जन्ममरण, रोग आदि की) संख्याएँ एकत्र करके उनके आधार पर कुछ सिद्धांत स्थिर करने या निष्कर्ष निकालने की विद्या। स्थिति-शास्त्र। २. इस प्रकार एकत्र की हुई संख्याएँ। (स्टैटिस्टिक्स)

साँग—स्त्री० [सं० शक्ति] [अल्पा० साँगी]१. एक प्रकार की छोटी पतली बरछी। २. एक प्रकार का औजार जो कूआँ खोदते समय पानी फोड़ने के काम में आता है। ३. भारी बोझ उठाने या खिसकाने के काम में आनेवाला एक प्रकार का डंडा।

पुं०[हिं० स्वाँग]१. स्वाँग। २. जाटों में प्रचलित एक प्रकार का गीत काव्य।

सांग—वि० [सं० स+अंग] अंग या अंगों से युक्त।

पद—**सांगोपांग**। (दे०)

सांगतिक—वि० [सं० संगति+ठक्—इक] १. संगति-संबंधी। २. सामाजिक।

पुं० १. अतिथि। २. वह जो किसी कारबार के सिलसिले में आया हो। अपरिचित। अजनबी।

सांगम—पुं०[सं० संगम+अण्]=संगम।

साँगर†—पुं०[?] शामी वृक्ष। (राज०)

साँगरी—स्त्री०[फा० जंगार] कपड़े रँगने का एक प्रकार का रंग जो जंगार अर्थात् तूतिये से निकाला जाता है।

साँगी—पुं०[हिं० साँग] वह जो साँग नामक गीत काव्य लोगों को सुनाता हो।

स्त्री० छोटी साँग (बरछी)।

स्त्री० [सं० शंकु] १. बैलगाड़ी में गाड़ीवान के बैठने का स्थान। २. एक्के, गाड़ी आदि में जाली का वह छींका जिसमें छोटी छोटी आवश्यक चीजें रखी जाती हैं।

सांगीत—पुं०[सं०]=संगीतिका। (ऑपेरा)

पुं०=सेनापति।

सांगोपाग—वि०[सं० अंग+उपांग] जो अपने सभी अंगों और उपांगों अव्य०१. सभी अंगों और उपांगों सहित। २. अच्छी और पूरी तरह से।

सांग्रामिक—वि०[सं०] १. संग्राम या युद्ध-संबंधी। २. जो अस्त्र-शस्त्रों से युक्त या सम्पन्न हो।

सांघाटिका—स्त्री०[सं० संघाट+ठञ्—इक—टाप्]१. मैथुन। रति। २. कुटनी। दूती। ३. एक प्रकार का वृक्ष।

सांघात—पुं०[सं० संघात+अण्]=संघात।

सांघातिक—वि०[सं० संघात्+ठञ्—इक]१. संघात या समूह-सम्बन्धी। २. जो संघात अर्थात् हनन कर सकता हो। ३. जिसके फलस्वरूप मृत्यु तक हो सकती हो। जिससे आदमी मर सकता हो। (फ़टल) ४. जिससे प्राणों पर संकट आ सकता हो। बहुत जोखिम का।

पुं० फलित ज्योतिष में, जन्म नक्षत्र से सोलहवाँ नक्षत्र जिसके प्रभाव से मृत्यु तक होने की संभावना मानी जाती है।

सांघिक—वि०[सं०] संघ-संबंधी। संघीय।

साँच*—वि०[सं० सत्य] [स्त्री० साँची]=सच्चा (सत्य)।

साँचना*—स०[सं० संचय] १. संचित या एकत्र करना। उदा०—दे० 'भाँड़ा' (संपत्ति) में। २. किसी चीज में भरना।

†अ०[?]१. किसी बड़े का कहीं आना। पदार्पण करना। पधारना। (गुज०, राज०) उदा०—सामलो घरे नू म्हारे साँचु दे।—मीराँ।

साँचर—पुं०[सं० सौवर्चल]एक प्रकार का नमक। सौवर्चल लवण।

साँचला†—वि० [हिं० साँच+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० साँचली] जो सच बोलता हो। सच्चा। सत्यवादी।

साँचा†—पुं०[सं० संचक]१. वह उपकरण जिसमें कोई तरल या गाढ़ा पदार्थ ढालकर किसी विशिष्ट आकार-प्रकार की कोई चीज बनाई जाती है। (मोल्ड) जैसे—ईंट या मूर्तियाँ बनाने का साँचा।

मुहा०—**(किसी चीज का) साँचे में ढला होना**=अंग-प्रत्यंग से बहुत सुन्दर होना। रूप, आकार, आदि में बहुत सुन्दर होना। **साँचे में ढालना**=आकर्षक, प्रशंसनीय या सुन्दर रूप देना। उदा०—हमारे इश्क ने साँचे में तुमको ढाला है।—दाग।

२. वह उपकरण जिसके ऊपर कोई चीज रख या लगाकर उसे कोई नया आकार या रूप दिया जाता है। कलबूत। फरमा। जैसे—जूता या पगड़ी बनाने का साँचा।

विशेष—वस्तुतः साँचा वही होता है जिसका विवेचन ऊपर पहले अर्थ में किया गया है। दूसरे अर्थ में प्रायः लोग भूल से उसका उपयोग करते हैं। दूसरा रूप वस्तुतः 'कलबूत' कहलाता है।

३. वह छोटी आकृति जो कोई बड़ी आकृति बनाने से पहले नमूने के तौर पर तैयार की जाती है और जिसके अनुकरण पर दूसरी बड़ी आकृति बनाई जाती है। प्रतिमान। (मॉडल) ४. कपड़े पर आकृति बनाने का रंगरेजों का ठप्पा।

सांचारिक—वि०[सं० संचर+ठक्—इक] १. संचार-संबंधी। २. जो संचार करता हो। ३. चलता हुआ। जंगम।

साँचिया—पुं०[हिं० साँचा+इया (प्रत्य०)]१. किसी चीज का साँचा बनानेवाला कारीगर। २. साँचे में ढालकर चीजें बनानेवाला कारीगर।

साँचिला*—वि०=साँचा (सच्चा)।

साँची—स्त्री०[?] छपाई का वह प्रकार जिसमें पंक्तियाँ बेड़े अर्थात् लम्बाई के बल छापी जाती थीं।

विशेष—अब यह प्रकार बहुत कुछ उठ-सा चला है।

पुं०[साँची नगर] एक प्रकार का पान और उसकी बेल।

साँझ—स्त्री०[सं० सन्ध्या]१. सूर्य डूबने से कुछ पहले तथा कुछ बाद तक का समय। शाम।

पद—साँझ ही=(क) उचित समय से बहुत पहले ही। (ख) बहुत जल्दी ही और अनुपयुक्त समय पर। उदा०—तेकर भाग साँझ ही फूटे।—घाघ।

२. सूर्य ढलने के बाद का समय।

†स्त्री०=साझा।

साँझ-पाती*—स्त्री०=साझा-पत्ती।

साँझला—पुं०[सं० संध्या, हिं० साँझ+ला (प्रत्य०)] उतनी भूमि जितनी एक हल से दिन भर में जोती जा सके।

साँझा†—पुं०=साझा।

साँझी—स्त्री०[हिं० साँझ] प्रायः स्त्रियों में प्रचलित एक लोक-कला जिसमें त्योहारों आदि पर घरों और मंदिरों की भूमि या फर्श पर रंगीन चूर्णों, अनाज के दानों और भूसियों तथा फूल-पत्तियों से बेल-बूटों, पशु-पक्षियों या दूसरे पदार्थों की आकृतियाँ बनाई जाती हैं। (गुजरात में इसी को सथिया, महाराष्ट्र में रंगोली, बंगाल में अल्पना तथा दक्षिण भारत में कोलं (कोलम्) कहते हैं।

†पुं०=साझेदार।

साँझेदार†—पुं०=साझेदार।

साँट—स्त्री० [सट से अनु०]१. पतली कमची या छड़ी। २. कोड़ा। ३. शरीर पर कोड़े, छड़ी, थप्पड़ आदि की मार का ऐसा दाग या निशान जो आकार में बहुत कुछ उसी वस्तु के अनुरूप होता है, जिससे आघात किया या मारा गया हो।

क्रि० प्र०—उभड़ आना।—पड़ना।

†स्त्री०[हिं० सटना]१. सटने या संलग्न होने की क्रिया या भाव। उदा०—ललित किशोरी मेरी बाकी, चित की साँट मिला दे रे।—ललित किशोरी। २. लगन। लौ। ३. किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए किसी से किया जानेवाला मेल।

पद—साँट-गाँठ। (देखें)

†स्त्री०[?]लाल गदहपूरना।

†स्त्री० दे० 'साँठ'।

साँट-गाँठ—स्त्री०[हिं० साँट (सटना)+गाँठ] आपस में होनेवाला ऐसा निश्चय जिसका कोई गुप्त या गूढ़ उद्देश्य हो। किसी अभिसंधि के कारण होनेवाला मेलजोल।

विशेष—यद्यपि 'सटना' का भाव० रूप 'साट' ही होता है, पर उक्त में गाँठ के साथ संपृक्त होने के कारण 'साट' का रूप भी 'साँट' हो गया है।

साँट-नाँठ†—स्त्री०=साँट-गाँठ।

साँटा—पुं०[हिं० साँट=छड़ी]१. करघे के आगे लगा हुआ वह डंडा जिसे ऊपर-नीचे करने से ताने के तार ऊपर-नीचे होते हैं। २. मोटे कपड़े का बटकर बनाया हुआ कोड़ा। ३. सवारी के घोड़े को लगाई जानेवाली एड़। ४. ईख। गन्ना।

साँटिया†—पुं०[हिं० साँटी]१. डौंडी पीटनेवाला। डुग्गी बजानेवाला। २. साँटेमार। (दे०)

साँटी—स्त्री०[हिं० साँटा का स्त्री० अल्पा०]छोटी और पतली छड़ी।

स्त्री०[हिं० सटना] प्रतिकार। बदला।

†स्त्री०=१.=साँट। २. साँठ-गाँठ।

साँटे-मार—पुं० [हिं० साँटा+मारना] वह चोबदार या सिपाही जो हाथ में साँटा या कपड़े का बना हुआ कोड़ा रखता और आवश्यकता पड़ने पर भीड़ हटाने, घोड़े, हाथियों आदि को वश में करने के लिए उन पर साँटे चलाता है।

विशेष—मध्ययुग में, राजाओं की सवारी के साथ साँटेमार चलते थे।

साँठ—पुं०[देश०]१. पैरों में पहनने का साँकड़ा नामक गहना। २. ईख। गन्ना। ३. सरकंडा। ४. डंडा। ५. वह डंडा जिससे पीटकर फसल की बालों में से अनाज के दाने अलग किये जाते हैं।

†स्त्री०[सं० संस्था] मूलधन। पूंजी। उदा०—साँठि नाहिं लागि बात को पूछा।—जायसी।

†स्त्री०=साँट।

साँठ-गाँठ†—स्त्री०=साँट-गाँठ।

साँठ-नाँठ†—स्त्री०=साँट-गाँठ।

साँठना—स०[हिं० साँठ]१. हाथ में लेना। पकड़ना। २. ग्रहण करना।

साँठा*—पुं०[सं० शरकांड]१. सरकंडा। २. गन्ना।

साँठि†—स्त्री०=साँठ।

साँठी—स्त्री०[सं० संस्था] पूँजी। धन।

†स्त्री०[?] गदहपूरना। पुनर्नवा।

†पुं०=साठी (धान)।

साँठें—अव्य०[हिं० साँठ]१. कारण या वजह से। २. आधार पर। उदा०—बलि बलि गयो चलि बात के साँठे।—तुलसी।

साँड़—पुं०[सं० षंड]१. गौ का वह नर जो संतान उत्पन्न करने के उद्देश्य से बिना बधिया किये पाला गया हो और इसी लिए जिससे कोई काम न लिया जाता हो। २. गौ का उक्त प्रकार का वह नर जो हिंदुओं में, किसी मृतक की स्मृति में दागकर यों ही छोड़ दिया जाता है। वृषोत्सर्गवाला वृष। ३. लाक्षणिक अर्थ में, वह निश्चित व्यक्ति जो हृष्टपुष्ट हो तथा लड़ने-भिड़ने और उत्पात करने में तेज तथा स्वतन्त्र हो।

मुहा०—साँड़ की तरह घूमना=बिलकुल निश्चित और स्वतन्त्र रहकर इधर-उधर घूमते रहना। **साँड़ की तरह डकरना**= मदमत्त होकर अभिमानपूर्वक जोर जोर से बातें करना या चिल्लाना।

४. वह घोड़ा जिसे जोता न जाता हो, बल्कि घोड़ियों से संतान उत्पन्न करने के लिए पाला जाता हो।

†पुं० [?] [स्त्री० साँड़नी] ऊँट।

साँड़नी—स्त्री०[हिं० साँड़ ?] सवारी के काम में आनेवाली तथा बहुत तेज दौड़नेवाली ऊँटनी।

पद—साँड़नी सवार।

साँड़सी†—स्त्री०=सँड़सी।

साँड़ा—पुं०[हिं० साँड़] छिपकली की जाति का पर उससे कुछ बड़ा एक प्रकार का जंगली जानवर जिसकी चरबी दवा के काम में आती है।

साँड़िया—पुं०[हिं० साँड़] १. तेज चलनेवाला ऊँट। २. उक्त प्रकार के ऊँट का सवार। (राज०)

साँड़ी—स्त्री०=साढ़ी (मलाई)। उदा०—कुम्हरा कै धरि हाँड़ी आछै अहीरा कै घर साँडी।—गोरखनाथ।

साँढ़िया†—पुं०=साँड़िया।

सांत—वि०[सं० सांत] अंत से युक्त। जिसका अंत या सीमा हो। 'अनंत' का विपर्याय।

†वि०=शांत।

सांततिक—वि०[सं० संतति+ठञ्—इक] संतति प्रदान करनेवाला।

सांतपन कृच्छ्र—पुं० [सं०] एक प्रकार का व्रत जिसमें व्रत करनेवाला भोजन त्यागकर पहले दिन गोमूत्र, गोमय, दूध, दही और घी को कुश के जल में मिलाकर पीता और दूसरे दिन उपवास करता है।

सांतानिक—वि० [सं० संतान+ठक्—इक] संतान-संबंधी। संतान या औलाद का।

सांतापिक—वि०[सं० संताप+ठक्—इक] संताप देने या उत्पन्न करनेवाला।

सांतर—वि०[सं० तृ० त०]१. अन्तर या अवकाश से युक्त। २. झीना।

सांति†—स्त्री०=शांति।

सांतीड़ा†—पुं० [हिं० साँड़ ?] बिगड़ैल बैलों को नाथने का मजबूत और मोटा रस्सा। उदा०—सतनां सांतीड़ा समधावो।—गोरखनाथ।

सांत्वन—पुं०[सं०√सांत्व् (अनुकूल करना)+ल्युट्—अन]१. किसी दुःखी को सहानुभूतिपूर्वक शांति देने की क्रिया। आश्वासन। ढारस। २. आपस में स्नेहपूर्वक होनेवाली बात-चीत। ३. प्रणय। प्रेम। ४. मिलन। मिलाप।

सांत्वना—स्त्री०[सं० सांत्वन—टाप्]१. दुःखी, शोकाकुल या संतप्त व्यक्ति को शांत करने तथा समझाने-बुझाने की क्रिया। २. किसी को यह समझाना कि जो कुछ हो गया है या बिगड़ गया वह अनिवार्य था। अब साहस तथा धैर्य से उसका परिमार्जन किया जा सकता है। ३. उक्त आशय की सूचक उक्ति या कथन। ४. चित्त की शांति और स्वस्थता। ५. प्रणय। प्रेम।

सांत्ववाद—पुं०[सं०√ सांत्व (अनुकूल करना)+अच्√ वद् (कहना)+घञ् उप० स०] वह बात जो किसी को सांत्वना देने के लिए कही जाय। सांत्वना का वचन।

सांत्वित—भू० कृ०[सं० √ सांत्व् (अनुकूल करना)+क्त] जिसे सांत्वना दी गई हो या मिली हो।

साँथरी—स्त्री० [सं० संस्तर] १. चटाई। २. बिछौना। बिस्तर। ३. बिछाने की गद्दी।

साँथा†—पुं०[देश०] लोहे का एक औजार जो चमड़ा कूटने के काम आता है।

साँथी—स्त्री० [देश०]१. करघे की वह लकड़ी जो ताने के तारों को ठीक रखने के लिए करघे के ऊपर लगी रहती है। २. बुनाई के समय ताने के सूतों का ऊपर उठना और नीचे गिरना।

साँद (ा)—पुं०[देश०] वह भारी लकड़ी जो पशुओं के गले में इसलिए बाँध दी जाती है कि वे भागने न पावें। लंगर। ढेका।

सांदृष्टिक—वि०[सं० संदृस्+ठञ्—इक] एक ही दृष्टि में होनेवाला। देखते ही तुरन्त होनेवाला। तात्कालिक।

सांदृष्टिक न्याय—पुं०[सं० संदृष्ट+ठञ्—इक-न्याय—मध्य० स०] एक प्रकार का न्याय जिसका प्रयोग उस समय किया जाता है जब कोई चीज देखकर उसी तरह की कोई दूसरी चीज याद आ जाती है।

सांद्र—वि०[सं०] [भाव० सांद्रता]१. एक में गुथा, जुड़ा या मिला हुआ। २. गंभीर। घना। उदा०—उठा सांद्र तन का अवगुंठन।—दिनकर। ३. हृष्ट-पुष्ट। हट्टा-कट्टा। ४. तीव्र। प्रबल। ५. बहुत अधिक। प्रचुर। ६. चिकना। स्निग्ध। ७. कोमल। मृदु। ८. मनोहर। सुन्दर।

पुं०। जंगल। वन।

सांद्रता—स्त्री०[सं० सांद्र+तल्—टाप्] सांद्र होने की अवस्था, गुण या भाव।

सांद्र-प्रसाद—पुं० [सं०] एक प्रकार का कफज प्रमेह जिसमें मूत्र का कुछ अंश गाढ़ा और कुछ अंश पतला निकलता है।

सांद्रमेह—पुं०=सांद्र-प्रसाद।

साँध—स्त्री०[सं० संधान] निशाना। लक्ष्य।

†स्त्री०[सं० संधि]१. सीमा। हद। २. दे० 'संधि'। ३. दे० 'सेंध'।

†स्त्री०=साँझ।

सांध—वि०[सं० संधि+अण्] संधि-संबंधी। संधि का।

साँधना—स०[सं० संधान] निशाना साधना। लक्ष्य करना। संधान करना।

स०[सं० साधन] काम पूरा करना।

स०[सं० सन्धि]१. आपस में मिलाकर एक करना। २. चीजों में जोड़ या टाँका लगाना।

साँधा—पुं०[सं० संधि] दो रस्सियों आदि में दी हुई गाँठ। (लश०)
क्रि० प्र०—मारना।—लगाना।

सांधिक—पुं०[सं० संधा+ठक्—इक] वह जो मद्य बनाता या बेचता हो। शौंडिक।
वि० सन्धि या मेल करानेवाला।

सांधि-विग्रह—पुं०[सं० संधि-विग्रह, द्व० स० ठन्—क] प्राचीन भारत में, वह राजकीय अधिकारी जिसे दूसरे राज्यों के साथ संधि और विग्रह करने का अधिकार होता था।

सांध्य—वि० [सं०] १. संध्या-संबंधी। संध्या का। २. संध्या के समय होनेवाला।

सांध्य कुसुमा—स्त्री०[सं०] ऐसी वनस्पतियाँ या वेलें जो संध्या के समय फूलती हों।

सांध्य गोष्ठी—स्त्री०[सं०] संध्या के समय आमंत्रित मित्रों की गोष्ठी जिसमें जलपान भी होता है। (इवनिंग पार्टी)

सांध्य प्रकाश—पुं०[सं०] सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय दिखलाई पड़नेवाला धुँधला प्रकाश।

साँप—पुं० [सं० सर्प, प्रा० सप्प] [स्त्री० साँपिन] एक प्रसिद्ध रेंगनेवाला जंतु जो काफी लंबा होता है तथा बिलों, पेड़ों, पानी आदि में रहता है।
विशेष—इनकी हजारों जातियाँ होती हैं, जिनमें से अधिकतर ऐसी होती हैं जिनके काटने से जीव मर जाते हैं। अजगर, नाग आदि जंतु इसी वर्ग के होते हैं।
पद—साँप की लकीर=पृथ्वी पर का चिह्न जो साँप के चलने से बनता है। **साँप की लहर**=साँप के काटने से उसके जहर के कारण शरीर में होनेवाली वह बेहोशी जिसमें आदमी लहरों की तरह छटपटाता रहता है। **साँप के मुँह में**=बहुत ही जोखिम या साँसत की स्थिति में।
मुहा०—साँप की तरह केंचुली झाड़ना या बदलना=(क) पुराना भद्दा रूप-रंग छोड़कर नया सुन्दर रूप धारण करना। (ख) जैसा समय देखना, वैसा रूप बनाना, या वैसा आचरण-व्यवहार करना। **साँप खेलाना**= मंत्र बल से या और किसी प्रकार साँप को पकड़ना और उससे क्रीड़ा करना। **साँप-छछूँदर की दशा होना**=ऐसी विकट स्थिति में पड़ना कि दोनों ओर घोर संकट की संभावना हो।
विशेष—लोक में ऐसा प्रवाद है कि साँप यदि छछूँदर को एक बार मुँह में पकड़ ले तो उसके लिए छछूंदर को छोड़ना भी घातक होता है और निगलना भी, क्योंकि उसे उगलने पर वह अंधा हो जाता है और निगलने पर कोढ़ी हो जाता है।
मुहा०—(किसी को) साँप सूंघ जाना= (क) साँप का काट लेना जिससे आदमी प्रायः मर जाता है। (ख) किसी का इस प्रकार बेसुध होकर पड़ जाना कि मानों उसे साँप ने काट लिया हो और वह बेहोश होकर मरणासन्न हो रहा हो। **(किसी के) कलेजे पर साँप लोटना**= ईर्ष्याजन्य घोर कष्ट होना। अत्यन्त दुःख होना।
२. आतिशबाजी में वह दाना जो जलाये जाने पर साँप की तरह लंबा होता जाता है। ३. वह व्यक्ति जो समय का लाभ उठाकर विश्वासघात करने से भी न चूकता हो।

साँपड़ना†—अ०[सं० संप्रापण] प्राप्त होना। मिलना।
†अ०[सं० संपूर्ण] काम पूरा करके निवृत्त होना। सपरना। उदा०—साँपड़ किया असनान सूरज सारी जप करे।—मीराँ।

सांपत्तिक—वि०[सं०] संपत्ति से संबंध रखनेवाला। संपत्ति का। जैसे—सांपत्तिक व्यवस्था।

सांपद—वि०[सं० साम्पद] संपदा-सम्बन्धी। संपदा का।

साँप-धरन—पुं० [हिं० साँप+धरना] सर्पधारण करनेवाले, शिव। महादेव।

सांपातिक—वि०[सं० संपात+ठञ्—इक] १. संपात-संबंधी। संपात का। २. संपात काल में होने अथवा संपात काल से संबंध रखनेवाला। (ज्योतिष)

साँपिन—स्त्री०[हिं० साँप+इन (प्रत्य०)] १. साँप की मादा। २. साँप के आकार की एक प्रकार की भौंरी या शारीरिक चिह्न जो सामुद्रिक के अनुसार बहुत शुभ माना जाता है। ३. बहुत अधिक दुष्ट या विश्वासघातिनी स्त्री।

साँपिया—वि०[हिं० साँप+इया (प्रत्य०)] साँप के रंग का मैलापन लिये काले रंग का।
पुं० उक्त प्रकार का काला रंग।

सांप्रत—अव्य०[सं० साम्प्रत] १. इसी समय। अभी। तत्काल। २. इस समय। आज-कल। ३. उचित। उपयुक्त। ४. सामयिक।
वि० किसी के साथ मिला हुआ। युक्त।

सांप्रतिक—वि० [सं०]१. जो संप्रति या इस समय हो या चल रहा हो। (करेन्ट) २. जो इस समय या आवश्यकता को देखते हुए ठीक और उपयुक्त हो।

सांप्रदायिक—वि०[सं०] [भाव० सांप्रदायिकता]१. संप्रदाय-संबंधी। संप्रदाय का। २. किसी विशिष्ट संप्रदाय से ही संबद्ध रहकर शेष संप्रदायों का विरोध करने या उनसे द्वेष रखनेवाला। ३. विभिन्न संप्रदायों के पारस्परिक विरोध के फलस्वरूप होनेवाला। (कम्यूनल; उक्त सभी अर्थों में)

सांप्रदायिकता—स्त्री०[सं०]१. सांप्रदायिक होने का भाव। २. केवल अपने संप्रदाय की श्रेष्ठता और हितों का विशेष ध्यान रखना और दूसरे संप्रदायों से द्वेष रखना। (कम्यूनलिज्म)

सांबंधिक—वि०[स० संबंध+ठक्—इक] संबंध का। संबंधी।
पुं० किसी की पत्नी का भाई। साला।

सांब—पुं०[सं० साम्ब] १. अम्बा अर्थात् पार्वती सहित शिव। २. कृष्ण के एक पुत्र जो जाम्बवती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

सांबपुर—पुं०[सं० साम्बीपुर] पाकिस्तान के मुलतान नगर का प्राचीन नाम।

सांबपुराण—पुं०[सं०] एक उपपुराण का नाम।

साँबर*—पुं०=संबल (राह-खर्च)।

सांबर—पुं०[सं०]१. साँभर (हिरण)। २. साँभर (नमक)।

साँबरी—स्त्री०[सं० सांबर-ङीप्] १. सब को धोखे में रखनेवाली माया। २. इन्द्रजाल। जादूगरी।

साँभर—पुं० [सं० सम्भल या साम्भल] १. राजस्थान की एक झील जिसके खारे पानी से नमक बनाया जाता है। २. उक्त झील के पानी

से बनाया हुआ नमक जिसे साँभर कहते हैं। ३. एक प्रकार का बड़ा बारहसिंघा।

†पुं०=संवल (पाथेय)।

साँभलना†—स० [सं० स्मृत] १. स्मरण करना। २. सुनना। उदा०—साँभल्याँ रास गंगा-फल होइ।—नरपतिनाल्ह।

†अ०=सँभलना।

साँमुहे†—अव्य० [सं० सम्मुखे] सामने। सम्मुख।

साँवक—पुं० [देश०] वह ऋण जो हलवाहों को दिया जाता है और जिसके सूद के बदले में वे काम करते हैं।

†पुं० [सं० श्यामक] साँवा नामक कदन्न।

साँवटा—वि० [?] १. समतल। बराबर। २. पूरी तरह से समाप्त किया हुआ। सफाचट। उदा०—तुमने खा पीकर साँवटा कर दिया होगा।—वृन्दावनलाल वर्मा।

साँवत†—पुं०=सामंत।

साँवती†—स्त्री० [देश०] बैलगाड़ी आदि के नीचे की वह जाली जिसमें बैलों के लिए घास आदि रखते हैं।

सांवत्सर—वि०, पुं० [सं०]=सांवत्सरिक।

सांवत्सरिक—वि० [सं०] १. संवत्सर-सम्बन्धी। २. प्रतिवर्ष होनेवाला। वार्षिक।

पुं० १. ज्योतिषी। २. चांद्र मास।

सांवत्सरीय—वि० [सं० संवत्सर+इण्—ईष] १. संवत्सर-सम्बन्धी। २. वार्षिक।

साँवन—पुं० [?] मझोले आकार का एक प्रकार का पहाड़ी पेड़ जिसका गोंद ओषधि के रूप में काम आता है। कहते हैं कि यह गोंद मछली के लिए बहुत घातक होता है।

†पुं०=सावन (महीना)।

साँवर†—वि०=साँवला।

साँवलताई†—स्त्री०=साँवलापन।

साँवला—वि० [सं० श्यामल] [स्त्री० साँवली, भाव० साँवलापन] जिसके शरीर का रंग हलका कालापन लिए हुए हो। श्याम वर्ण का।

पुं० १. कृष्ण। २. पति के लिए संबोधन।

साँवलापन—पुं० [हिं० साँवला+पन (प्रत्य०)] साँवला होने की अवस्था, गुण या भाव। वर्ण की श्यामता।

साँवलिया—वि० [हिं० साँवला] साँवले रंग का (व्यक्ति)।

पुं० श्रीकृष्ण का एक नाम।

साँवाँ—पुं० [सं० श्यामक] कंगनी या चेना की जाति का एक अन्न जो जेठ में तैयार होता है।

सांवादिक—वि० [सं० संवाद+ठञ्—इक] १. विवादास्पद। २. प्रचलित। ३. संवाद-संबंधी। ४. समाचार-संबंधी।

पुं० १. नैयामियक। २. पत्रकार।

सांवेदिक—वि० [सं०] शरीर के संवेदन सूत्रों से संबंध रखनेवाला। (सेन्सरी)

सांशयिक—वि० [सं० संशय+ठञ्—इक] १. संशय-संबंधी। २. जिसके सम्बन्ध में कुछ संशय हो।

साँस—पुं० [सं० श्वास] १. प्राणियों का जीवन धारण के लिए नाक या मुंह से हवा अंदर खींचकर फेफड़ों तक पहुँचाने और उसे फिर बाहर निकालने की क्रिया। श्वास। दम। (ब्रीद)

विशेष—(क) जल में रहनेवाले जीवों और वनस्पतियों में भी यह क्रिया होती है, पर उनका प्रकार और स्वरूप कुछ भिन्न होता है। जब तक यह क्रिया चलती रहती है, तब तक प्राणी या शरीर जीवित रहता है। (ख) सं० श्वास से व्युत्पन्न हिं० साँस सर्वथैव पुल्लिग है। पर उर्दू के कुछ कवियों ने भूल से इसका प्रयोग स्त्रीलिंग में किया है, और उनके अनुकरण पर हिंदी कोशों में भी इसे स्त्रीलिंग माना गया है जो ठीक नहीं है।

क्रि०प्र०—आना।—खींचना।—छोड़ना।—जाना।—निकलना।—लेना। **मुहा०**—**साँस उखड़ना**=(क) साँस लेने की क्रिया का बीच में कुछ समय के लिए रुकना। जैसे—गाने में गवैये का साँस उखड़ना। (ख) मरने के समय रोगी का बहुत कष्ट से और रुक-रुककर साँस लेना। **साँस ऊपर-नीचे होना**=चिंता, भय आदि के कारण साँस की क्रिया बार बार रुकना। **साँस खींचना**=वायु अंदर खींचकर उसे इस प्रकार रोक रखना कि ऊपर से देखने पर निर्जीव या मृत जान पड़े। जैसे—शिकारी को देखते ही हिरन साँस खींचकर पड़ गया। **साँस चढ़ना**=बहुत परिश्रम करने के कारण थक जाने पर साँस का जल्दी जल्दी आना-जाना। **साँस चढ़ाना**=प्राणायाम के समय अथवा यों ही वायु अंदर खींचकर उसे कुछ समय के लिए रोक रखना। **साँस छूटना**=साँस लेने की क्रिया बंद होना जो मृत्यु का लक्षण है। **साँस टूटना**= दे० 'ऊपर 'साँस उखड़ना'। **साँस तक न लेना**=इस प्रकार चुप या मौन हो जाना कि मानों अस्तित्व या उपस्थिति ही नहीं है। जैसे—जब मैंने उसे फटकारना शुरू किया, तब उसने साँस तक न लिया। **साँस फूलना**= अधिक शारीरिक श्रम करने के कारण साँस का जल्दी जल्दी चलने लगना। (ख) दमे का रोग होना। **साँस भरना**=दे० नीचे 'ठंडा साँस लेना'। **साँस रहते**= जब तक जीवन रहे। जीते जी। जैसे—साँस रहते तो मैं कभी ऐसा न होने दूंगा। **साँस लेना**= परिश्रम करते-करते थक जाने पर सुस्ताने के लिए ठहरना या रुकना। **उलटा साँस लेना**= (क) मरने के समय बहुत कष्ट से और रुक-रुक कर साँस लेना। (ख) दे० नीचे 'गहरा या ठंढा या लंबा साँस लेना'। **गहरा, ठंढा या लंबा साँस लेना**=(क) बहुत अधिक मानसिक कष्ट के कारण अथवा (ख) मन पर पड़ा हुआ भार हलका होने के कारण कुछ अधिक देर तक हवा अंदर खींचते हुए फिर कुछ अधिक देर तक उसे बाहर निकालना जो ऐसे अवसरों पर प्रायः शरीर का स्वाभाविक व्यापार होता है।

विशेष—साँस के शेष मुहा० के लिए दे० 'दम' के मुहा०।

२. किसी प्रकार की जीवनी-शक्ति या सक्रियता। दम। जैसे—अब मामले में कुछ भी साँस नहीं रह गया, अर्थात् उसके संबंध में अब कुछ भी नहीं हो सकता; या अब यह और आगे नहीं बढ़ाया जा सकता। ३. निरंतर बहुत समय तक काम करते रहते या थक जाने पर सुस्ताने के लिए बीच में किया जानेवाला विश्राम या लिया जानेवाला अवकाश। **मुहा०**—**साँस लेना**=कोई काम करते समय सुस्ताने के लिए बीच में कुछ ठहरना या रुकना। जैसे—जब तक यह काम पूरा न हो जाय, तब तक मुझे साँस लेने की भी फुरसत न मिलेगी।

४. किसी चीज के फटने आदि के कारण उसके तल में पड़नेवाली पतली दरज या संकीर्ण संधि।

मुहा०—(किसी चीज का) साँस लेना=किसी चीज का बीच में से इस प्रकार फटना कि उसकी दरज में से हवा आ जा सके। जैसे—दीवार या फर्श का साँस लेना, अर्थात् बीच में से फटना।

५. उक्त प्रकार के अवकाश, दरज या संधि में भरी हुई हवा।

मुहा०—(किसी चीज में का) साँस निकलना= अंदर भरी हुई हवा का बाहर निकल जाना। जैसे—गुब्बारे या रबर के गेंद का साँस निकलना। **(किसी चीज में) साँस भरना**= अंदर हवा पहुँचाना या भरना।

६. एक प्रसिद्ध रोग जिसमें साँस बहुत जोर जोर से और जल्दी जल्दी चलता है। दम या साँस फूलने का रोग। दमा।

साँसत—स्त्री०[हिं० साँस+त (प्रत्य०)] १. दम घुटने का सा कष्ट। २. बहुत अधिक शारीरिक कष्ट या यातना। ३. बहुत कठोर शारीरिक दंड।

साँसत घर—पुं०[हिं० साँसत+घर]१. कारागार की बहुत ही तंग तथा अत्यन्त अंधकारपूर्ण कोठरी जिसमें दुष्ट कैदी इसलिए रखे जाते हैं कि उन्हें बहुत अधिक शारीरिक कष्ट हो। २. बहुत ही अँधेरी और छोटी कोठरी।

सांसद—वि० [सं० संसद] (कथन, व्यवहार या आचरण) जो संसद या उसके सदस्यों की मर्यादा के अनुकूल हो। पूर्ण भद्रोचित। (पार्लमेन्टरी)

सांसद सचिव—पुं०[सं०] किसी राज्य के मंत्री से सम्बद्ध वह सचिव जो उसे संसद के कार्यों में सहायता देता हो। (पार्लमेन्टरी सेक्रेटरी)

सांसदी—पुं०[सं० संसद] वह जो संसद के रीति-व्यवहारों का अच्छा ज्ञाता हो और उसमें बैठकर सब काम ठीक तरह से चलाने में पूर्ण पटु हो। (पार्लमिन्टेरियन)

साँसना*—स० [सं० शासन] १. शासन करना। दंड देना। २. डाँटना-डपटना। ३. साँसत में डालकर बहुत कष्ट या दुःख देना।

सांसर्गिक—वि०[सं० संसर्ग+ञ्—इक] १. संसर्ग सम्बन्धी। २. संसर्ग से उत्पन्न होने या बढ़नेवाला। (कन्टेजस)

साँसल—पुं० [?] १. एक प्रकार का कंबल। २. खेतों में बीज बोना।

साँसा—पु० [हिं० साँस] १. श्वास। साँस। २. जीवन। जिंदगी। जैसे—जब तक साँसा, तब तक आशा।

पुं०[सं० संशय]१. संदेह। शक। उदा०—सतगुर मिलिया साँसा भाग्या, सैन बताई साँची।—मीराँ। २. भय। डर।

†पुं०=साँसत। जैसे—मेरी जान तभी से साँसे में पड़ी है।

†वि०=साँचा (सच्चा)।

सांसारिक—वि० [सं०] [भाव० सांसारिकता] १. जिसका संबंध इस संसार या उसकी वस्तुओं, व्यापारों आदि से हो। आध्यात्मिक तथा पारलौकिक से भिन्न। २. जिसका संबंध मुख्यतः जीवन की आवश्यकताओं , विषय-भोगों आदि से हो।

सांसिद्धिक—वि०[सं० सांसिद्धि+ठञ्—इक]१. संसिद्धि सम्बन्धी। २. प्राकृतिक। स्वाभाविक। ३. आत्म-भू। स्वतः प्रसूता।

साँसी—पुं०[?] एक जंगली और यायावर या खानाबदोश जाति।

सांस्कारिक—वि० [सं० संस्कार+ठञ्-इक] १. संस्कार-संबंधी। २. संस्कार-जन्य। ३. अन्त्येष्टि क्रिया से सम्बन्ध रखनेवाला।

सांस्कृतिक—वि०[सं० संस्कृति+ठञ्—इक] संस्कृति से सम्बन्ध रखने या संस्कृति के क्षेत्र में आने या होनेवाला। (कलचरल)

सांस्थानिक—वि० [सं० संस्थान+ठक्—इक] संस्थान-सम्बन्धी। संस्थान का।

सांस्पर्शिक—वि० [सं० संस्पर्श+ठञ्—इक] १. संस्पर्श-सम्बन्धी। २. संस्पर्श से उत्पन्न होने या फैलनेवाला। २. दे० 'संक्रामक'।

साँहि—पुं०[सं०स्वामी]१.स्वामी। मालिक। २. देख-रेख और रक्षा करनेवाला। उदा०—साँहि नाहि जग बात को पूछा।—जायसी।

सा—अव्य०[सं० सम=समान]१. एक संबंध-सूचक अव्यय जिसका प्रयोग कहीं क्रिया विशेषण की तरह और कहीं विशेषण की तरह नीचे लिखे आशय या भाव सूचित करने के लिए होता है—१. तुल्य, बराबर, सदृश या समान। जैसे—कमल सी आँखें, फूल सा शरीर। २. किसी की तरह या प्रकार का। बहुत कुछ मिलता-जुलता। जैसे—बूतों के से काम, बच्चों की सी बातें। ३. सादृश्य होने पर भी किसी प्रकार की आंशिक अल्पता, न्यूनता या हीनता का भाव सूचित करने के लिए। जैसे—(क) वहाँ बैठे-बैठे मुझे नींद सी आने लगी। (ख) वह एक मरियल सा टट्टू ले आया। ४. अवधारण या निश्चय सूचित करने के लिए। जैसे—तुम्हें इनमें की कौन सी पुस्तक चाहिए। ५. किसी अनिश्चित मात्रा या मान पर जोर देने के लिए। जैसे—जरा सा नमक, थोड़े से आदमी, बहुत सी बातें। ६. पूरा-पूरा न होने पर भी बहुत कुछ। जैसे—वहाँ एक गड्ढा-सा बन गया।

विशेष—(क) जैसा कि ऊपर के कुछ उदाहरणों से सूचित होता है इस अव्यय का कुछ अवस्थाओं में विशेषण के समान भी प्रयोग होता है, इसी लिए विशेष्य के लिंग और वचन के अनुसार इसके रूप भी बदलकर सी और से हो जाते हैं। (ख) यह अव्यय क्रिया विशेषणों, विशेषणों और संज्ञाओं के साथ लगता ही है, क्रियाओं के भूत-कृदंत रूपों और विभक्तियों के साथ भी लगता है। जैसे—(क) उठता हुआ सा; चलता हुआ-सा। (ख) घर का सा व्यवहार, मूर्खों का सा आचरण।

प्रत्य० एक प्रत्यय जो कुछ विशेषणों के अंत में लगकर तरह, प्रकार, रूप रंग आदि का भाव सूचित करता है। जैसे—ऐसा=इस-सा, कैसा=किस-सा, वैसा=उस-सा।

पुं०[सं० षड़ज] संगीत में, षडज स्वर का सूचक शब्द या संक्षिप्त रूप। जैसे—सा, रे, ग, म।

साअत—स्त्री०[अ०] दे० 'साइत'।

साइंस—पुं०[अं०] दे० 'विज्ञान'।

साइक—पुं०=शासक।

†पुं०=सायंकाल।

साइकिल—स्त्री०[अं०] दो पहियोंवाली एक प्रसिद्ध सवारी। पैरगाड़ी। बाइसिकिल।

साइक्क†—पु०=शायक (तीर)।

साइत—स्त्री०[अ० साअत] १. एक घंटे या ढाई घड़ी का समय। २. समय का बहुत ही छोटा विभाग। क्षण। पल। लमहा। ३. किसी शुभ कार्य के लिए फलित ज्योतिष के विचार से स्थिर किया हुआ कोई

शुभ काल या समय। मुहूर्त। जैसे—द्वारचार की साइत, भाँवर की साइत।

क्रि० प्र०—दिखाना।—देखना।—निकलना।—निकालना।

†अव्य०=शायद।

साइनबोर्ड—पुं०[अं०]वह तख्ता या धातु आदि का टुकड़ा जिस पर किसी व्यक्ति, संस्था आदि का नाम और संक्षिप्त विवरण सर्वसाधारण के सूचनार्थ लिखा रहता है। नाम-पट्ट।

साइयाँ†—पुं०=साँई (स्वामी या ईश्वर)।

साइर—वि०, पुं०=सायर।

†पुं०=सागर। उदा०—सर सरिता साइर गिरि भारे।—नन्ददास।

साईं†—पुं०=साँई।

साई—स्त्री०[हिं० साइत]१. कार्य आदि के सम्पादन के लिए बातचीत पक्की होने पर दिया जानेवाला पेशगी धन। बयाना। २. विशेषतः वह धन जो गाने-बजानेवाले से किसी कार्यक्रम की बात पक्की होने पर उन्हें दिया जाता है।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।—लेना।

†स्त्री०[सं० सहाय] सहायता।

स्त्री०[देश०]१. वे छड़ जो बैलगाड़ी के अगले हिस्से में बेड़े बल में मजबूती के लिए एक दूसरे को काटते हुए रखे जाते हैं। २. एक प्रकार का कीड़ा।

†स्त्री०=साई-काँटा।

साई-काँटा—पुं०[हिं० शाही(जंतु)+काँटा]एक प्रकार का वृक्ष जो दक्षिण भारत; गुजरात और मध्य प्रदेश में होता है। साई। मोगली।

साईस—पुं० [रईस का अनु०] [भाव० साईसी] किसी रईस का वह नौकर जो उसके घोड़े या घोड़ों की देख-भाल करता हो।

साईसी—स्त्री०[हिं०साईस+ई(प्रत्य०)] साईस का काम, भाव या पद।

साउज†—पुं०=सावज (पशु)।

साएर†—पुं०=१. सायर। २. सागर।

साकंभरी†—पुं०=शाकंभरी (झील)।

साक†—पुं० [सं० शाक] शाक। साग। सब्जी। तरकारी। भाजी।

†पुं०=साखू।

साकचोरि—स्त्री०[?] मेंहदी। हिना।

साकट†—पुं०=साकत।

साकत—पुं०[सं० शाक्त]१. शाक्त मत का अनुयायी। २. वह जो मद्य, मांस आदि का सेवन करता हो। ३. वह जिसने गुरु से दीक्षा न ली हो। निगुरा।

वि० दुष्ट। पाजी।

साकर†—स्त्री० १.=साँकल। २.=शक्कर।

वि०=साँकर (सँकरा)।

साकल्य—पुं०[सं०]सकल की अवस्था, गुण या भाव। सकलता। समग्रता।

†पुं०=शाकल्य।

साकवर†—पुं०[?] बैल। वृषभ।

साकांक्ष—वि०[सं० त० त०]१. (व्यक्ति) जिसके मन में कोई आकांक्षा हो। आकांक्षा रखनेवाला। २. (काम, चीज या बात) जिसे किसी और की कुछ अपेक्षा हो। सापेक्ष।

पुं० भारतीय साहित्य में, एक प्रकार का अर्थदोष जो ऐसे वाक्यों में माना जाता है जिनमें किसी अपेक्षित आशय का स्पष्ट उल्लेख न हो, और फलतः उस अपेक्षित आशय के सूचक शब्दों की आकांक्षा बनी रहती हो। यथा—'जननी, रुचि, मुनि पितु वचन क्यों तजिहैं वन राम।—तुलसी। इसमें मुख्य आशय तो यह है कि राम वन जाना क्यों छोड़े। परन्तु 'क्यों तजिहैं बन राम' से यह आशय पूरी तरह से प्रकट नहीं होता, इसलिए इसमें साकांक्ष नामक अर्थ दोष है।

साका—पुं०[सं० शाका]१. संवत्। शाका।

क्रि० प्र०—चलना।—चलाना।

२. ख्याति। प्रसिद्धि। ३. कीर्ति। यश। ४. बड़ा काम जिससे कर्ता की बहुत कीर्ति हो।

मुहा०—साका करके (कोई काम) करना= सबके सामने, दृढ़ता और वीरतापूर्वक। उदा०—तस फल उन्हहिं देउँ करि साका।—तुलसी।

५. कोई ऐसा बड़ा काम जो सहसा सब लोग न कर सकते हों और जिसके कारण कर्ता की कीर्ति हो।

मुहा०—साका पूजना=किसी का अभीष्ट या उक्त प्रकार का कोई बहुत बड़ा काम सम्पन्न या सम्पादित होना। उदा०—आजु आइ पूजी वह साका।—जायसी।

६. धाक। रोब।

मुहा०—साका चलाना या बाँधना= (क) आतंक फैलाना। (ख) रोब जामाना।

साकार—वि०[सं० तृ० त०] [भाव० साकारता]१. जिसका कुछ या कोई आकार हो। आकारयुक्त। २. विशेषतः ऐसा अमूर्त, असांसारिक या पारलौकिक जीव या तत्त्व जो मूर्त रूप धारण करके पृथ्वी पर अवतरित हुआ हो। ३. बात या योजना जिसे उद्दिष्ट, उपयोगी या क्रियात्मक आकार अथवा रूप प्राप्त हुआ हो। जैसे—सपने साकार होना। ४. मोटा। स्थूल।

पुं०ईश्वर का वह रूप जो साकार हो। ब्रह्म का मूर्तिमान् रूप। जैसे—अवतारों आदि में दिखाई देनेवाला रूप।

साकारोपासना—स्त्री० [सं० ष० त०]ईश्वर की वह उपासना जो उसका कोई आकार या मूर्ति बनाकर की जाती है। ईश्वर अथवा उसके किसी अवतार की यों ही अथवा मूर्ति बनाकर की जानेवाली उपासना। निराकार उपासना से भिन्न।

साकिन—वि०[अ०] १. जो एक ही स्थान पर स्थिर रहता हो। अचल। २. चो चलता-फिरता या हिलता-डोलता न हो। गति-रहित। ३. किसी विशिष्ट स्थान पर रहने या निवास करनेवाला। निवासी। जैसे—चुन्नीलाल साकिन मौजा नरहरपुर।

स्त्री०[अ० साकी का स्त्री०] साकी (मद्य पिलानेवाला) का स्त्री०रूप।

पुं०[?] कश्मीर से नेपाल तक के जंगलों में पाया जानेवाला बकरी की तरह का एक प्रकार का पशु जिसका मांस खाया जाता है। कश्मीर में इसे 'कैल' कहते हैं।

साकी—पुं०[अ०] [स्त्री० साकिन]१. वह जो लोगों को मद्य का पात्र भर कर देता और हुक्का पिलाता हो। शराब और हुक्का पिलाने का काम करनेवाला व्यक्ति। २. उर्दू-फारसी काव्यों में प्रेमिका की एक संज्ञा जिसका काम मद्य पिलाना माना जाता है।

विशेष—हमारे यहाँ कुछ संत कवियों ने इसके स्थान पर 'कलाली' (देखें) का प्रयोग किया है।

†स्त्री०[?] कपूर-कचरी।

साकुश†—पुं० [?] घोड़ा। अश्व। (डिं०)

साकृतिक—वि०[सं०] आकृति से युक्त अर्थात् साकार किया हुआ।

साकेत—पुं० [सं०]१. अयोध्या नगरी। अवधपुरी। २. भगवान् रामचन्द्र का लोक जिसमें उनके भक्तों को मरने पर स्थान मिलता है।

साकेतक—पुं०[सं० साकेत+कन्] साकेत का निवासी। अयोध्या का रहनेवाला।

वि० साकेत-सम्बन्धी। साकेत का।

साकेतन—पुं०[सं०] साकेत। अयोध्या।

साकोह†—पुं०=साखू (शाल वृक्ष)।

साक्तुक—पुं०[सं० शक्तु+ढक्=क] जौ, जिससे सत्तू बनता है।

वि० १. सत्तु-सम्बन्धी। सत्तू का। २. सत्तू से बना हुआ।

साक्ष—वि०[सं० त० त०]१. अक्ष से युक्त। २. आँखों या नेत्रों से युक्त। आँखोंवाला।

साक्षर—वि०[सं०] [भाव० साक्षरता]१. अक्षर या अक्षरों से युक्त। २. (व्यक्ति) जो अक्षरों को पढ़-लिख सकता हो। ३. शिक्षित। सुशिक्षित। (लिटरेट; उक्त दोनों अर्थों में)

साक्षरता—स्त्री०[सं०] साक्षर अर्थात् पढ़े-लिखे होने की अवस्था या भाव। (लिटरेसी)

साक्षात्—अव्य० [सं०]१. आँखों के सामने। प्रत्यक्ष। सम्मुख। २. प्रत्यक्ष या सीधे रूप में। ३. शरीरधारी व्यक्ति (या वस्तु) के रूप में। जैसे—विद्या में तो आप साक्षात् बृहस्पति थे।

वि० मूर्तिमान्। साकार। जैसे—आप तो साक्षात् सत्य हैं।

पुं०=साक्षात्कार। (क्व०)

साक्षात्कार—पुं०[सं०]१. आँखों के सामने प्रत्यक्ष या साक्षात् उपस्थित होना। सामने आना या होना। जैसे—ईश्वर या देवी-देवताओं का (या से) होनेवाला साक्षात्कार। २. प्रत्यक्ष रूप से होनेवाली भेंट। मुलाकात। ३. इन्द्रियों या मन को (किसी बात या विषय का) होनेवाला पूरा या स्पष्ट ज्ञान। जैसे—मानसिक साक्षात्कार।

साक्षातकारी (रिन्)—वि०[सं०] साक्षात् करनेवाला।

साक्षिता—स्त्री०[सं०]१. साक्षी होने की अवस्था या भाव। २. गवाही। साक्ष्य।

साक्षिभूत—पुं०[सं० कर्म० स०] विष्णु का एक नाम।

साक्षी (क्षिन्)—पुं० [सं०] [स्त्री० साक्षिणी] १. वह मनुष्य जिसने किसी घटना को घटित होते हुए अपनी आँखों से देखा हो। २. उक्त प्रकार का ऐसा व्यक्ति जो किसी बात की प्रामाणिकता सिद्ध करता हो। गवाह। ३. वह जो कोई घटना घटित होते हुए देखता हो। प्रत्यक्षदर्शी। जैसे—हमारे शरीर में आत्मा साक्षी रूप में रहती है, भोग से उसका कोई सम्बन्ध नहीं होता।

स्त्री० किसी बात को कहकर प्रमाणित करने की क्रिया। गवाही। शहादत।

साक्षीकरण—पुं०[सं० साक्षि√च्वि√कृ(करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० साक्षीकृत] दे० 'साक्ष्यंकन'।

साक्षीकृत—भू० कृ०[सं०] दे० साक्ष्यंकित'।

साक्षेप—वि०[सं० तृ० त०]१. जिसके सम्बन्ध में किसी प्रकार का आक्षेप या आपत्ति की जा सकती हो। २. आक्षेप अर्थात् ताने या व्यंग्य से युक्त (कथन)।

क्रि० वि० आक्षेपपूर्वक।

साक्ष्यंकन—पुं०[सं० साक्षी+अंकन] [भू० कृ० साक्ष्यंकित] किसी पत्र, लेख्य, हस्ताक्षर आदि के सम्बन्ध में साक्षी के रूप में यह लिखवाना कि यह ठीक और वास्तविक है। प्रमाणीकरण। (एटेस्टेशन)

साक्ष्यंकित—भू० कृ०[सं०] जिस पर साक्ष्यंकन हुआ हो। (एटेस्टेड)

साक्ष्य—पुं०[सं० साक्षि+यत्]१. वह जो कुछ अपनी आँखों से देखा गया हो। २. आँखों से देखी हुई घटना का कथन। ३. गवाही। शहादत।

साख—स्त्री०[सं० शाका, हिं० साका]१. धाक। रोब। २. लेन-देन और व्यापार-व्यवहार में, खरेपन की ऐसी प्रामाणिकता और मान्यता जिसके विषय में किसी का कोई सन्देह न हो। (क्रेडिट) जैसे—आजकल बाजार (या समाज) में उनकी बहुत साख है।

विशेष—ऐसी प्रामाणिकता व्यक्ति की प्रतिष्ठा और मर्यादा की सूचक होती है।

३. प्रतिष्ठा। मर्यादा।

क्रि० प्र०—बँधना।—बनना।—बनाना।—बाँधना।—बिगड़ना।—बिगाड़ना।

†स्त्री० [सं० शाखा] १. वृक्षों आदि की डाल। शाखा। २. खेत की उपज। पैदावार। ३. पीढ़ी। पुश्त। उदा०—बिन मेहरारु घर करै, चौदह साख लबार।—घाघ।

स्त्री०[सं० साक्षी] गवाही। शहादत। साक्षी।

साखत†—पुं०[सं० शाक्त]१. शक्ति या देवी का उपासक। शाक्त। २. देवी-देवताओं का उपासक। देव-पूजक। (क्व०) उदा०—साषित (साखत) के तू हरता-करता हरि भगतन कै चेरी।—कबीर।

साखना*—स० [सं० साक्षि, हिं० साख+ना (प्रत्य०)] साक्षी या गवाही देना। शहादत देना।

साखर*—वि०=साक्षर।

स्त्री०=शक्कर। (महाराष्ट्र)

साखा*—स्त्री० [सं० शाखा]१. वह कीली जो चक्की के बीच में लगी होती है। चक्की का धुरा। २. दे० 'शाखा'।

साखिआ*—वि०=सारखा (सरीखा या सदृश)।

*स्त्री०=शाखा।

साखियात*—अव्य०=साक्षात्।

साखी—पुं०[सं० साक्षिन्]१. गवाह। २. आपसी झगड़ों का निपटारा करनेवाला पंच। ३. मित्र और सहायक। ४. संगी। साथी।

स्त्री०१. साक्षी। गवाही। शहादत।

मुहा०—साखी पुकारना= गवाही देना।

२. ज्ञान और भक्ति के क्षेत्र में, महापुरुषों, संतों, साधु-महात्माओं आदि के वे पद जिनमें वे अपने अनुभव, मत या साक्षात्कार की प्राप्ति के लिए अन्य साधु-महात्माओं के वचन साक्षी रूप में उद्धृत करते हैं। जैसे—कबीर की साखी।

†पुं०[सं० साखिन्=शाखी] पेड़। वृक्ष।

साखू—पुं०[सं० शाल] एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसकी लकड़ी इमारत के काम आती है।

स्त्री० उक्त वृक्ष की लकड़ी।

साखेय—वि०[सं० सखि+इक्—एय] १. सखा-सम्बन्धी। सखा का। २. लोगों को सहज में अपना सखा बना लेनेवाला, अर्थात् मिलनसार। यार-बाश।

साखोचारण—पुं०=शाखोचार।

साखोट—पुं०[सं० शाखोट] सिहोर वृक्ष। सिहोरा।

साख्त—स्त्री०[फा०] १. किसी चीज की बनावट या रचना का कार्य। २. बनावट या रचना का ढंग या प्रकार। ३. बनाकर तैयार की हुई चीज।

साख्ता—वि०[फा० साख्तः]१. बनाया हुआ। २. नकली। बनावटी।

साख्य—पुं०[सं० सखि+ष्यञ्]=सख्यता।

साग—पुं०[सं० शाक] १. कुछ विशिष्ट प्रकार के पौधों की वे पत्तियाँ जो तरकारी आदि की तरह पकाकर खाई जाती हैं। शाक। भाजी। जैसे—सोए, पालक, मरसे या बथुए का साग।

पद—साग-पात=(क) खाने के साग, पत्ते, कन्द, मूल आदि। (ख) बहुत ही उपेक्ष्य और तुच्छ वस्तु। जैसे–वह तो औरों को अपने सामने साग-पात समझता है।

२. पकाई हुई भाजी। तरकारी। जैसे—आलू का साग, कुम्हड़े का साग। (वैष्णव)

सागर—पुं०[सं०]१. समुद्र, जो पुराणानुसार महाराज सगर का बनाया हुआ माना जाता है। उदधि। जलधि। २. बहुत बड़ा तालाब। झील। ३. दशनामी संन्यासियों का एक भेद। ४. उक्त प्रकार के संन्यासियों की उपाधि। ५. एक प्रकार का हिरन।

पुं०[अ० सागर] १. बड़ा प्याला। कटोरा। २. शराब पीने का प्याला।

सागरज—वि०[सं०] सागर या समुद्र से उत्पन्न।

पुं० समुद्री नमक।

सागर-धरा—स्त्री०[सं०] पृथ्वी। भूमि।

सागरनेमि—स्त्री०[सं०] पृथ्वी।

सागरमुद्रा—स्त्री०[सं०] इष्टदेव का ध्यान या आराधना करने की एक प्रकार की मुद्रा।

सागर-मेखला—स्त्री०[सं०] पृथ्वी।

सागर-लिपि—स्त्री० [सं० मध्यम० स०] एक प्राचीन लिपि।

सागरवासी (सिन्)—वि० [सं० सागर√ वस् (रहना)+णिनि]१. समुद्र में वास करने या रहनेवाला। २. समुद्र के तट पर रहनेवाला।

सागर-संगम—पुं०[सं०] नदी और समुद्र का संगम स्थान, विशेषतः वह स्थान जहाँ समुद्र की लहरें नदी की धारा से मिलती हैं। (एस्चुअरी)

सागरांत—पुं०[सं०ष०त०] १. समुद्र का किनारा। समुद्र-तट। २. समुद्र-तट का विस्तार।

सागरांता—स्त्री०[सं० सागरांत-टाप्] पृथ्वी।

सागरांबरा—स्त्री० [सं० ब० स० सागराम्बरा] पृथ्वी।

सागरालय—पुं०[सं० ब० स०] सागर में रहनेवाले, वरुण।

सागस†—अव्य० [?] सामने। सम्मुख। उदा०—प्रीतम कौं जब सागस लहै।—नंददास।

सागा†—पुं०[सं० सह] संग। साथ। (राज०)

सागार—वि० [सं० स+आगार] आगार से युक्त। आगार या घर वाला। पुं० गृहस्थ।

सागी†—क्रि० वि० दे० 'सागे'। उदा०—मेरी आरति मेटि गुसांईं आई मिलौ मोंहि सांगी री।—मीराँ।

सागू—पुं०[अं० सैगो]१. ताड़ की जाति का एक प्रकार का पेड़ जिसके तने से आटे की तरह गूदा निकलता है। दे० 'सागूदाना'।

सागूदाना—पुं०[हिं० सागू+दाना] सागू नामक वृक्ष के तने का गूदा जो पहले आटे के रूप में होता है और फिर कूटकर दानों के रूप में बनाकर सुखा लिया जाता है। यह पौष्टिक होता है और जल्दी पच जाता है, इसी लिए प्रायः रोगियों को पथ्य के रूप में दिया जाता है।

सागें†—क्रि० वि०[सं० सह] संग। साथ। (राज०)

सागो†—पुं०=सागू।

सागौन—पुं०[सं० शाल] एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसकी लकड़ी बहुत सुन्दर तथा मजबूत होती है और इमारत के काम आती है। शाल वृक्ष।

साग्निक–वि० [सं०] १. अग्नि से युक्त। अग्निसहित। २. यज्ञ की अग्नि से युक्त।

पुं०वह गृहस्थ जो सदा घर में अग्निहोत्र की अग्नि रखता हो। अग्निहोत्री।

साग्र—वि०[सं० तृ० त०] आदि से लेकर, पूरा। कुल। सब।

साचक़—स्त्री०[तु०] मुसलमानों में विवाह की एक रसम जिसमें से एक दिन पहले वर पक्ष वाले कन्या के लिए मेंहदी, मेवे, फल, सुगंधित द्रव्य आदि भेजते हैं।

साचरी—स्त्री०[सं०] संगीत में, एक प्रकार की रागिनी।

साचिव—वि०[सं० सचिव] १. सचिव-संबंधी। सचिव का। २. सचिव के कार्य, पद आदि से संबंध रखने या उनके पारस्परिक व्यवहार के रूप में होनेवाला। (मिनिस्टीरियल) जैसे—अब दोनों राज्यों में साचिव स्तर पर बात-चीत होगी।

साचिव्य—पुं०[सं० सचिव+ष्यञ्]१. सचिव होने की अवस्था या भाव। सचिवता। २. सचिव का पद। ३. मदद। सहायता।

साची कुम्हड़ा—पुं० [देश० साची+कुम्हड़ा] सफेद कुम्हड़ा। पेठा।

साछी†—पुं०, स्त्री०=साक्षी।

साज–पुं०[सं० त० त०] पूर्व भाद्रपद नक्षत्र।

साज—पुं०[सं० सज्जा से फा० साज़]१. सजाने की क्रिया या भाव। सजावट। सजाने के उपकरण या सामग्री।

पद—साज-सामान (देखें)। बड़े साज से=खूब सजधज कर।

२. संगीत में, बाजे या वाद्य-यंत्र जो गाने-बजाने में विशेष रोचकता उत्पन्न करते हैं।

मुहा०—साज छेड़ना=बाजा बजाने का काम आरम्भ करना। **साज मिलाना**=बाजा बजाने से पहले उसका सुर आदि ठीक करना।

३. लड़ाई में काम आनेवाले हथियार। जैसे—तलवार, बंदूक, ढाल, भाला आदि। ५. बढ़इयों का एक प्रकार का रंदा जिससे गोल गलता बनाया जाता है। ६. पारस्परिक अनुकूलता के कारण आपस में होनेवाला मेल-जोल या घनिष्ठता।

पद—साज-बाज । (देखें)

वि०[भाव० साजी]१. बनानेवाला। जैसे—कारसाज=काम बनानेवाला; जिल्दसाज=पुस्तकों की जिल्द बनानेवाला। २. चीजों की मरम्मत करके उन्हें ठीक बनानेवाला। जैसे—घड़ी-साज =घड़ियों की मरम्मत करनेवाला।

साजगिरी—स्त्री०[देश०] संपूर्ण जाति की एक रागिनी जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

साजड़†—पुं०=साजर।

साजन—पुं०[सं० सज्जन]१. पति। भर्ता। स्वामी। २. प्रेमी। ३. ईश्वर। ४. भला आदमी। सज्जन। ४. संगीत में, खम्माच ठाठ का एक राग।

साजना†—स०=सजाना।

†पुं० 'साजन' के लिए सम्बोधक संज्ञा।

साज-बाज—पुं०[सं० साज+बाज (अनु०)]१. आवश्यक सामग्री। साज-सजाना। २. किसी काम या बात के लिए होनेवाली तैयारी और सजावट। ३. आपस में होनेवाली घनिष्ठता। मेल-जोल। हेल-मेल।

साजर—पुं०[देश०] गुलू नामक वृक्ष जिससे कतीरा गोंद निकलता है। (दे० 'गुलू')

साज-संगीत—पुं० [फा०+सं०] साज या बाजों पर होनेवाला संगीत। वाद्य संगीत। कंठ-संगीत से भिन्न।

साज-सामान—पुं०[फा०] १. वे सब आवश्यक चीजें जो प्रतिष्ठा या मर्यादा के अनुरूप हों। सामग्री। उपकरण। असबाब। जैसे—बरात का साज-सामान। ३. ठाट-बाट।

साजा†—वि०[हिं० सजाना]१. सजा हुआ। २. सुन्दर। ३. अच्छा। बढ़िया।

साजात्य—पुं०[सं० सजानि+ष्यञ्] सजात या सजाति होने की अवस्था, गुण या भाव जो वस्तु के दो प्रकार के धर्मों में से एक हैं। 'वैजात्य' का विपर्याय।

साजिंदा—पुं०[फा० साज़िन्दः] १. वह जो कोई साज (बाजा) बजाता हो। साज या बाजा बजानेवाला। २. वेश्याओं आदि के साथ कोई साज या बाजा बजानेवाला।

साजिया—वि०[फा० साज़+हिं० इया (प्रत्य०)] सजानेवाला।

साजिश—स्त्री०[फा०]१. मेल। मिलाप। २. दुष्ट उद्देश्य की सिद्धि के लिए होनेवाली अभिसन्धि। षड़-यन्त्र।

साजिशी—वि०[फा०]१. जिसमें किसी प्रकार की साजिश हो। २. साजिश करनेवाला। कुचक्री।

साजुज्य†— पुं०=सायुज्य।

साझा—पुं०[सं० सहार्द्ध या सहार्घ्य, प्रा० सहायों,]१. व्यापार आदि के लिए किसी काम में कुछ लोगों को मिलाकर रुपए लगाने, परिश्रम या व्यवस्था करने और उससे होनेवाले हानि-लाभ के आंशिक रूप से दायी और अधिकारी होने के लिए आपस में होनेवला समझौता। हिस्सेदारी। क्रि० प्र०—करना।–रखना।—लगाना।

२. उक्त प्रकार के समझौते के फलस्वरूप उत्पन्न होनेवाली स्थिति। ३. उक्त प्रकार के कार्यों में किसी व्यक्ति का उतना अंश जिसके विचार से वह लाभ के उचित अंश का अधिकारी या हानि के उचित अंश का उत्तरदायी होता है। ४. किसी वस्तु या सम्पत्ति में से कुछ अंश या भाग पाने का अधिकार। हिस्सेदारी। जैसे—उस मकान में तीनों भाइयों का साझा है।

साझा-पत्ती—स्त्री०[हिं०]१. किसी कार्य या व्यापार में होनेवाला साझा या हिस्सेदारी। २. कुछ लोगों में किसी चीज का होनेवाला बटवारा।

साझी—पुं०=साझेदार।

साझेदार—पुं०[हिं० साझा+दार (प्रत्य०)]१. शरीक होनेवाला। हिस्सेदार। साझी। २. व्यापार आदि में साझा करनेवाला व्यक्ति। हिस्सेदार।

साझेदारी—स्त्री०[हिं० साझेदार+ई (प्रत्य०)] साझेदार होने की अवस्था या भाव। हिस्सेदारी। शराकत।

साट†—स्त्री० १. दे० 'साड़ी'। (स्त्रियों के पहनने की) २. दे० 'साँट'।

पुं०[सं० सार्थ या प्रा० सह]१. बेचने की क्रिया । विक्रय। २. आपस में होनेवाला विनिमय या लेन-देन। उदा०—जबहि पाइअहि पारखू, तब हीरन की साट।—कबीर। ३. व्यापार। ४. सट्टा।

स्त्री०[हिं० सटना]१. सटने की क्रिया या भाव। २. दे० 'साँट'।

साटक—पुं० [?] १. अन्न आदि का छिलका या भूसी। २. बहुत ही तुच्छ या निकम्मी चीज। ३. एक प्रकार का छन्द।

साट-गाँठ—स्त्री०[सं० शाठ्य-ग्रंथि] किसी को कष्ट देने या हानि पहुँचाने के उद्देश्य से कुछ लोगों का आपस में मिलकर गुट या दल बनाना। (कोल्यूजन)

विशेष—मिली-भगत और साट-गाँठ में कई मुख्य अन्तर हैं। मिली भगत एक तो अस्थायी या क्षणिक होती है और दूसरे उसका उद्देश्य अपने आपको बिलकुल निर्दोष दिखलाते हुए या तो अपना कोई छोटा-मोटा स्वार्थ सिद्ध करना होता है या दूसरे को केवल ठगना और धोखा देना होता है। पर साटगाँठ प्रायः बहुत कुछ स्थायी या दीर्घकाल व्यापी होता है और दूसरे उसका उद्देश्य अधिक उग्र, कठोर या क्रूर होता है।

साटन—स्त्री०[अं० सैटिन] एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा जो प्रायः एकरुखा और कई रंगों का होता है।

साटना*—स०=सटाना।

साटनी—स्त्री०[देश०] भालू का नाच । (कलंदर)

साटा—पुं० [हिं० सट्टा]१. सट्टाबाजी अथवा इसी प्रकार के किसी अन्य अनुचित तथा निन्दनीय उपाय से अर्जित किया हुआ धन। २. दे० 'सट्टा'।

पुं०[?]अदला-बदली परिवर्तन। विनिमय।

साटी—स्त्री०[हिं० सटना]१. साथ रहनेवाली चीजें। २. सामग्री। सामान।

†स्त्री०[?]१. पतली छड़ी। कमची। २. गदहपूरना। पुनर्नवा।

†वि०=साँठी।

साटे†—अव्य०[देश०] बदले में। परिवर्तन में।

साटोप—वि०[सं० त० त०]१. घमंड से फूला हुआ। २. गरजता हुआ (बादल)।

साठ—वि०[सं० षष्ठि] जो गिनती में पचास में दस अधिक हो।

पुं० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६०।

†स्त्री०=साटी।

पुं०=साथ (संग)।

साठ-नाठ—वि०[हिं० साँठि+नाठ (नष्ट)]१. जिसकी पूँजी नष्ट हो गई हो। निर्धन। दरिद्र। २. फीका या रूखा। नीरस। २. छिन्न-भिन्न। तितर-बितर।

स्त्री०१. मेल-जोल। २. अनुचित संबंध। ३. षडयंत्र।

साठसाती†—स्त्री०=साढ़ेसाती।

साठा—वि०[हिं० साठ] जिसकी अवस्था साठ वर्ष की हो गई हो। साठ वर्ष की उम्र वाला। जैसे—साठा सो पाठा। (कहा०)

पुं०[देश०]१. बहुत बड़ा या लंबा चौड़ा खेत। २. ईख। गन्ना। ३. एक प्रकार की मधुमक्खी जिसे सठपुरिया भी कहते हैं।

†पुं०=साठी (धान)।

साठी—पुं०[सं० षष्टिक] एक प्रकार का धान जो लगभग ६० दिन में पककर तैयार हो जाता है।

साड़ा—पुं०[देश०]१. घोड़े का एक प्राण-घातक रोग। २. बाँस का वह टुकड़ा जो नाव में मल्लाहों के बैठने के स्थान के नीचे लगा रहता है।

साड़ी—स्त्री०[सं० शाटिका] १. स्त्रियों के पहनने की धोती। २. विशेषतः ऐसी धोती जो रेशमी हो तथा जिस पर कला-पूर्ण काम हुआ हो। जैसे—बनारसी साड़ी, मदरासी साड़ी।

साढ़साती†—स्त्री०=साढ़ेसाती।

साढ़ी —स्त्री०[?] मलाई (दूध की)।

†स्त्री०=असाढ़ी (असाढ़ की फसल)।

स्त्री०[सं० शाल] शाल वृक्ष का गोंद।

†स्त्री०=साड़ी।

साढ़ू—पुं० [सं० श्यालिवोढ़] संबंध के विचार से पत्नी की बहन का पति। साली का पति।

साढ़े-चौहरा—पुं० [हिं० चाढ़े+चौ (चार)+हरा (प्रत्य०)] मध्ययुग में, फसल की एक प्रकार की बँटाई जिसमें फसल का ५।१६ भाग जमींदार को मिलता था और शेष ११।१६ भाग काश्तकार को मिलता था।

साढ़े-साती—स्त्री०[हिं० साढ़े-सात+ई(प्रत्य०)] शनि ग्रह की अशुभ और कष्ट-दायक दशा या प्रभाव जो प्रायः साढ़े सात वर्ष, साढ़े सात महीने, या साढ़े सात दिन तक रहता है।

क्रि० प्र०—आना।—उतरना।—चढ़ना।—चलना।—बीतना।

सात—वि०[सं०सप्त] जो गिनती में पाँच और दो हो। छः से एक अधिक।

पद—सात-पाँच= (क) कुछ लोग। उदा०—सात-पाँच की लकड़ी एक जने का बोझ। (ख) चालाकी और बहानेबाजी या शरारत की बातें। जैसे— हमसे इस प्रकार सात-पाँच मत किया करो। **सात समुद्र पार**= बहुत अधिक दूर विशेषतः विदेश में। जैसे—उन्होंने सात समुद्र पार की चीजें लाकर इकट्ठी की थीं।

मुहा०—सात परदे में रखना=(क) अच्छी तरह छिपाकर रखना। अच्छी तरह सँभालकर रखना। **सात राजाओं की साक्षी देना**=(ख) बहुत दृढ़तापूर्वक कोई बात कहना। किसी बात की सत्यता पर बहुत जोर देना। **सात सींकें बनाना**—शिशु जन्म के छठे दिन की एक रीति जिसमें सात सींकें रखी जाती हैं। **सातों भूल जाना**=विपत्ति या संकट आने पर पाँचों इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि का ठिकाने न रह जाना और ठीक तरह से अपना काम न कर सकना।

पुं० पाँच और दो के योग की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७।

सातत्य—पुं०[सतत+ष्यञ्]१. सतत होने की अवस्था या भाव। सदा होते रहना। निरंतरता। (कन्टिन्यइटी) २. सदा बने रहने का भाव। स्थायित्व। (पर्पिचुइटी)

सातपूती—वि० [हिं० सात-पूत+ई (प्रत्य०)] (स्त्री) जिसके सात पुत्र हों।

†स्त्री०=सतपुतिया।

सातला—पुं०[सं० सप्तला] थूहर पौधे का एक प्रकार।

सातव*—वि०=सातवाँ।

सातवाँ—वि० [हिं० सात+वाँ (प्रत्य०)] क्रम या गिनती में सात के स्थान पर पड़नेवाला।

सातिक (तिग)†—वि०=सात्विक।

साती—स्त्री०[देश०] साँप काटने की एक प्रकार की चिकित्सा जिसमें साँप के काटे हुए स्थान को चीर कर उस पर नमक या बारूद मलते हैं।

वि०[हिं० सात+ई (प्रत्य०)] सात वर्षों, महीनों, दिनों, घड़ियों, पलों तक चलनेवाला। (ज्यो०) जैसे—साढ़े-साती अर्थात् साढ़े सात वर्षों तक चलनेवाली दशा।

सात्त्व—वि० [सं० सात्त्व+अञ्] १. सत्त्व गुण-संबंधी। सात्त्विक। २. सत्त्व या सार संबंधी।

सात्त्विक—वि०[सं० सत्त्व+ठन्—क] १. जिसमें सत्त्व गुण हो। सतोगुणी। २. सत्त्व गुण से संबंध रखनेवाला। ३. सत्य-निष्ठ। ४. प्राकृतिक। ५. वास्तविक। ६. अनुभूति या भावना-जन्य।

पुं०१. साहित्य में, सतोगुण से उत्पन्न होनेवाले निसर्ग जाति में आठ अंगविकार—स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वर-भंग, कंप या वेपथु, वैवर्ण्य, अश्रु-पात और प्रलय।

विशेष—वस्तुतः ये बातें अन्तःकरण के सत्त्व से ही उत्पन्न होनेवाली मानी गई हैं। इसलिए इन्हें सात्त्विक कहा गया है। बाद में कुछ आचार्यों ने इनमें जृंभा नामक नवाँ अंग-विकार भी बढ़ाया था।

२. नाट्य-शास्त्र में, स्त्रियों के अंगज और अपलज कुछ शारीरिक गुण तथा विशेषताएँ जो आकर्षक तथा मोहक होती हैं, और इसी लिए जिनकी गणना स्त्रियों के अलंकारों में की गई है।

विशेष—हिन्दी में इनका अन्तर्भाव 'हाव' में ही होता है। दे० 'हाव'।

३. नाट्य-शास्त्र में, नाटक के नायक के विशिष्ट गुण जो आठ माने गये हैं। यथा—शोभा, विलास, माधुर्य, गांभीर्य, स्थैर्य, तेज, ललित और औदार्य। ४. नाट्य-शास्त्र में, चार प्रकार के अभिनयों में से एक जिसमें केवल सात्त्विक भावों का प्रदर्शन होता है। ५. काव्य और नाट्य-शास्त्र की सात्वती नाम की वृत्ति। (दे० सात्वती) ६. ब्रह्मा। ७. विष्णु।

सात्त्विक अलंकार—पुं०[सं०] नाट्यशास्त्र में, नायिकाओं के वे क्रिया-कलाप तथा सौन्दर्यवर्धक तत्त्व जिनके अंगज, अयत्नज और स्वभावज ये तीन भेद किये गये हैं। (दे० अंगज अलंकार, अयत्नज अलंकार और स्वभावज अलंकार)

सात्त्विकी—स्त्री० [सं० सात्त्विक+ङीप्]। १. दुर्गा का एक नाम। २.

गौणी भक्ति का एक प्रकार या भेद जिसमें विशुद्ध भक्ति-भाव बनाये रखने के उद्देश्य से ही इष्टदेव का अर्चन और पूजन होता है।

वि० सं० 'सात्विक' का स्त्री०।

सात्म—वि०[सं० त० स०] [भाव० सात्म्य] आत्मा से युक्त। आत्मा-सहित।

सात्म्य—वि०[सं० सात्म+कन्] सात्मन्।

सात्म्यक—वि० [सं० आत्मन्+ष्यञ्, त० स०]१. सात्म-संबंधी। सात्म का। २. प्रकृति के अनुकूल। स्वास्थ्यकर।

पुं० १. सात्म्य होने की अवस्था या भाव। २. सरूपता। सारूप्य। ३. एक विशेष प्रकार का रस जिसके सेवन से प्रकृति विरुद्ध कार्य करने पर शारीरिक शक्ति क्षीण नहीं होती। ४. अवस्था, समय, स्थान आदि के अनुकूल पड़नेवाला आहार-विहार।

सात्यकि—पुं०[सं०] कृष्ण का सारथी एक प्रसिद्ध यादव वीर जो सत्यक का पुत्र था।

सात्यरथि—पुं०[सं० सत्यरथ+इल, क० स०] वह जो सत्यरथ के वंश में उत्पन्न हुआ हो।

सात्यवत्—पुं० [सं० सत्यवती+अण्] सत्यवती के पुत्र, वेदव्यास।

वि० सत्यवती-संबंधी। सत्यवती का।

सात्राजित्—पुं०[सत्राजित्+अच्] राजा शतानीक जो सत्राजित् के वंशज थे।

सात्राजिती—स्त्री०[सं० सत्राजित्+ङीप्] सत्यभामा का एक नाम।

सात्वत—पुं०[सं० सत्त्वत्+अञ्]१. यदुवंशी। यादव। २. श्रीकृष्ण। ३. बलराम। ४. विष्णु। ५. एक प्राचीन देश। ६. एक प्राचीन वर्ण-संकर जाति।

पुं०[सं०]१. एक प्राचीन क्षत्रिय जाति जो उत्तर भारत के शूरसेन मंडल में रहती थी। २. उक्त जाति का मत जो 'पांचरात्र' कहलाता था।

सात्वती—स्त्री०[सं० सात्वत+ङीप्] १. साहित्य में, चार प्रकार की नाट्य-वृत्तियों में से एक जिसका प्रयोग मुख्य रूप से वीर, रौद्र, अद्भुत आदि रसों में होता है तथा जिसमें ज्ञान, न्याय, औचित्य आदि की प्रधानता रहती है। २. शिशुपाल की माता का नाम। ३. सुभद्रा का एक नाम।

साथ—पुं०[सं० सह या सहित]१. वह अवस्था जिसमें (क) दो या अधिक वस्तुएँ एक दूसरे के निकट स्थित हों। जैसे—दोनों मकान साथ ही हैं। और (ख) दो या अधिक जीव निकट संपर्क में रहते हों। जैसे—छात्रावास में हम दोनों का कुछ दिनों तक साथ रहा है।

विशेष—संग और साथ में मुख्य अंतर यह है कि संग तो अधिक गहरा या घनिष्ठ और चिर-कालिक होता है, पर साथ अपेक्षया कम घनिष्ठ और प्रायः अल्पकालिक होता है।

पद—साथ का (या को)=पूरी, रोटी आदि के साथ खाई जानेवाली तरकारी, भाजी या सालन। **साथ का खेला**=बचपन का ऐसा साथी जिससे मिलकर खेलते रहे हों।

मुहा०—(किसी का) साथ देना=किसी काम में संग रहना। सहानुभूति रखते हुए सहायता देना। जैसे—इस काम में हम तुम्हारा साथ देंगे। **(किसी को अपने) साथ लेना**= अपने संग रखना या ले चलना। जैसे—जब तुम चलने लगना, तो हमें भी साथ ले लेना। **(किसी के) साथ सोना**= मैथुन या संभोग करना।

२. वह जो संग रहता हो। बराबर पास रहनेवाला। साथी। संगी। ३. आपस में होनेवाली घनिष्ठता या मेल-जोल। जैसे—आज-कल उन दोनों का बहुत साथ है। ४. मिलकर उड़नेवाले कबूतरों का झुंड या टुकड़ी। (लखनऊ)

अव्य० १. एक संबंध सूचक अव्यय जो प्रायः सहचार या संग रहने का भाव या स्थिति सूचित करता है। सहित। से। जैसे—तुम भी उनके साथ रहना।

पद—साथ ही= सिवा। अतिरिक्त। जैसे—साथ ही यह भी एक बात है कि आप वहाँ नहीं जा सकेंगे। **साथ ही साथ**=एक साथ। एक सिलसिले में। जैसे—साथ ही साथ दोहराते भी चलो। **एक साथ**= एक सिलसिले में। जैसे—(क) एक साथ दोनों काम हो जायँगे। (ख) जब एक साथ इतने आदमी पहुँचेंगे तो वे घबरा जायेंगे। **के साथ**=(क) साथ रहते हुए। पूर्वक। जैसे—आराम के साथ काम करना चाहिए। (ख) प्रति। से। जैसे—छोटों के साथ हँसी-मजाक करना ठीक नहीं। २. द्वारा। उदा०—नखन साथ तब उदर बिदार्यो।—सूर।

साथर†—पुं०=साथरा।

साथरा†—पुं०[सं० स्तरण] [स्त्री० अल्पा० साथरी]१. बिछौना। बिस्तर। २. चटाई, विशेषतः कुश की बनी चटाई।

साथिया†—पुं०=स्वास्तिक।

साथी—पुं०[हिं० साथ+ई (प्रत्य०)]१.वे दो या अधिक व्यक्ति जिनका परस्पर साथ हो। २. साथ रहनेवालों में से एक की दृष्टि से दूसरा। जैसे—पुरुष को स्त्री का सच्चा साथी होना चाहिए। ३. मित्र। सखा।

साद—पुं०[सं० सादः]१. अस्त होना। डूबना। २. क्लांति। थकावट। ३. विषाद। ४. क्षीणता। ५. नाश। ६. कष्ट। पीड़ा। ७. विशुद्धता। ८. स्वच्छता। ९. क्षरण। १०. दे० 'अवसाद'।

†पुं० १.=शब्द। (राज०)२. =स्वाद।

वि०[अ०]१. अच्छा। भला। २. मांगलिक। शुभ।

पुं० अरबी वर्ण-माला का एक वर्ण जिसका उच्चारण 'स' के समान होता है और जिसका उपयोग लाक्षणिक रूप में किसी बात को ठीक मानकर उससे अपनी सहमति प्रकट करने के लिए होता है। जैसे—उस्ताद ने उसकी बात का साद किया।

सादक—वि०[सं०] निःशक्त या शिथिल करनेवाला।

सादगी—स्त्री० [फा० सादा का भाववाचक रूप]१. सादा होने की अवस्था, गुण या भाव। सादापन। सरलता। २. आचरण, व्यवहार आदि की निष्कपटता और सिधाई। ३. खान-पान, रहन-सहन आदि में आडंबर, तड़क-भड़क, कृत्रिमता आदि का होनेवाला अभाव।

सादन—पुं०[सं०] [भू० कृ० सादित]१. नष्ट करना। २. क्लांत होना। थकना। ३. थकावट। ४. पात्र। बरतन। ५. सदन (घर या मकान)।

सादर—अव्य० [सं० स+आदर] आदरपूर्वक। इज्जत से। जैसे—सादर नमस्कार या प्रणाम।

सादरा—पुं०[?] उच्च शास्त्रीय संगीत में,एक विशिष्ट प्रकार की गायन-शैली जिसके गाने या पद अनेक राग-रागिनियों में निबद्ध होते हैं।

सादा—वि० [सं० साध् से फा० साद] [स्त्री० सादी] १. जिसमें एक ही तत्त्व हो या एक ही प्रकार के तत्त्व हों। जिसमें औरों का मेल या योग न हो। जैसे—सादा पानी। २. जिसमें किसी तरह की उलझन, झंझट, पेंच की बात या बनावट न हो। सरल। जैसे—सादा हिसाब। ३. जिसकी बनावट या रचना में स्वाभाविकता ही हो, विशेष कौशल न हो। ४. जिस पर किसी तरह के बेल-बूटे, सजावट आदि का काम न हो। जिस पर किसी प्रकार का अंकन न हो। जैसे—सादे कपड़े, सादा कागज। ५. जिसे समझने में विशेष कठिनता न हो। ६. (व्यक्ति) जो छल-कपट से रहित हो। सरल। सीधा। (सिम्पुल)

पद—सीधा-सादा। (देखें)

७. बुद्धि और विवेक से रहित। ना-समझ। मूर्ख। (पश्चिम) जैसे—यहाँ कौन सा सादा है जो तुम्हारी ये बातें मान लेगा।

सादात—पुं०[अ०] सैयद जाति या वंश।

सादापन—पुं०[फा० सादा+हिं० पन (प्रत्य०)] सादगी। (दे०)

सादाशिव—वि०[सं० सदाशिव+अव्] सदाशिव-संबंधी।

सादिक—वि०[अ०]१. सच्चा। २. ठीक। दुरुस्त।

मुहा०—सादिक आना=(क) सत्य रूप में घटित होना। (ख) ठीक आना। पूरा उतरना।

सादिर—वि०[अ०]१. बाहर निकलनेवाला। २. जारी किया हुआ। जैसे—हुक्म सादिर होना।

सादी—स्त्री०[हिं० सादा]१. वह पूरी या रोटी जिसके अन्दर पूरन या कोई चीज भरी न हो। 'कचौरी' का विपर्याय। २. लाल नामक पक्षी की मादा जिसके शरीर पर चित्तियाँ नहीं होतीं। मुनियाँ। सदिया।

पुं० [सं० सदिः] १. रथ चलानेवाला। सारथी। २. योद्धा। ३. हवा। वायु।

पुं० [फा० सद=शिकार] १. शिकारी। २. घोड़ा। ३. सवार। (डिं०)

†स्त्री०=शादी।

सादी सजा—स्त्री०[हिं० +फा०]कारावास का ऐसा दंड (कड़ी सजा से भिन्न) जिसमें कैदी को कोई काम न करना पड़ता हो। (सिम्पुल इम्प्रिजन्मेन्ट)

सादूर†—पुं०=सार्दूल (सिंह)।

सादृश्य—पुं० [सं०] १. सदृश्य होने की अवस्था, गुण या भाव। एक-रूपता। (सिमिलेरिटी) २. तुलना। बराबरी। ३. मृग। हिरन।

साद्यंत—विं० [सं०] आदि से अंत तक का अर्थात् संपूर्ण। सारा।

अव्य० आदि से अंत तक।

साद्यस्क—वि०[सं० ब० स०]=सद्यस्क।

साध—स्त्री०[सं०श्रद्धा=प्रबल वासना] १. ऐसी अभिलाषा या आकांक्षा जो बहुत समय से मन में हो और जिसकी पूर्ति के लिए व्यक्ति उत्कंठित हो।

मुहा०—(किसी बात की) साध न रहने देना=सब प्रकार से इच्छा पूरी कर लेना। कुछ कमी या कसर न रखना। उदा०—व्याध अपराध की साध राखी कहा, पिंगलै कौन मति भक्ति भई।—तुलसी। **साध राधना**=अभिलाषा पूरी करना या होना।

२. गर्भवती स्त्री के मन में प्राकृतिक रूप से उत्पन्न होनेवाली अनेक प्रकार की अभिलाषाएँ और इच्छाएँ। दोहद। ३. स्त्री के गर्भवती होने के सातवें महीने में होनेवाली एक प्रकार की रसम।

पुं०[सं० साधु] १. साधु। संत। महात्मा। भला आदमी। सज्जन। २. उत्तर भारत का एक प्रसिद्ध संप्रदाय जिस पर आगे चलकर कबीर पंथ का विशेष प्रभाव पड़ा था। ३. उक्त संप्रदाय का अनुयायी जो ईश्वर के सिवा और किसी को प्रणाम, नमस्कार आदि का अधिकारी नहीं समझता, और इसलिए व्यक्तियों के सामने सिर नहीं झुकाता।

†वि०[सं० साधु] उत्तम। अच्छा।

साधक—वि०[सं०√साध्(सिद्ध होना)+ण्वुल्—अक] [स्त्री०साधिका] १. साधना करनेवाला। २. साधनेवाला। ३. जो साध्य या ध्येय की प्राप्ति में साधन बना हो फलतः सहायक हुआ हो।

पुं०१. वह जो आध्यात्मिक या धार्मिक क्षेत्र में फल-प्राप्ति के उद्देश्य से किसी प्रकार साधना में लगा हुआ हो। जैसे—तांत्रिक, योगी, तपस्वी आदि। २. कोई ऐसी चीज या बात जिससे कोई कार्य पूरा या सिद्ध करने में सहायता मिलती हो। जरिया। वसीला। साधन। ३. वह जो किसी काम या बात में अनुकूल रहकर सहायक होता हो। ४. वह जो ऊपर से तटस्थ रहकर, परन्तु मन में कपट रखकर किसी का दुष्ट उद्देश्य सिद्ध करने में सहायक होता हो। जैसे—वे दोनों सिद्ध-साधक बनकर मेरे पास आये थे।

पद—सिद्ध-साधक। (देखें)

५. न्याय में, वह लक्षण जिसके आधार पर कोई बात सिद्ध करने का प्रयत्न किया जाता है। हेतु। ६. भूत-प्रेत आदि को साधने या अपने वश में करनेवाला। ओझा। ७. पुत्रजीव नामक वृक्ष। ८. दमनक। दौना। ९. पित्त।

साधकता—स्त्री०[सं० साधक+तल्—टाप्]१. साधक होने की अवस्था या भाव। २. उपयुक्तता। ३. उपयोगिता।

साधकत्व—पुं०[सं० साधक+त्व]१. साधकता। २. जादू या बाजीगरी। ३. सिद्धि।

साधन—पुं० [सं०] [वि० साधनिक, साध्य, भू० कृ० साधित, कर्ता साधक]१. किसी कार्य का आरंभ करके उसे सिद्ध या पूरा करना। २. आज्ञा, निर्णय आदि के अनुसार किसी काम या बात को उचित और पूरा रूप देना। कार्यान्वित करना। पालन करना। ३. विधिक क्षेत्र में, आदेशों, लेख्यों, सूचनाओं आदि के अनुसार ठीक तरह से काम पूरा करना। निष्पादन। पालन। ४. अपने कार्यों का निर्वाह या अपने पद के कर्तव्यों आदि का पालन करना। ५. कोई चीज तैयार करने का सामान। सामग्री। ६. कोई ऐसी बात जिससे किसी प्रकार की क्षति, त्रुटि, दोष आदि का परिहार होता हो। उपचार। प्रतिविधि। ७. कोई काम पूरा करने में सहायता देनेवाली कोई चीज या सब चीजें। उपकरण। (इन्स्ट्रमेंट)८. कोई ऐसी चीज या बात जिससे कुछ कर सकने की शक्ति या समर्थता आती हो। (मीन्स) जैसे—युद्ध करने के लिए सैनिक साधन। ९. वे सब तत्त्व जिनके सहारे कोई काम पूरा होता हो अथवा आवश्यकता पड़ने पर जिनका उपयोग किया जा सकता हो। (रिसोर्सेज) १०. कोई ऐसा तत्त्व या वस्तु जिसके द्वारा या

सहायता से काम पूरा होता हो। (एजेन्सी) ११. वैद्यक में, औषध बनाने के लिए धातुएँ आदि फूँकने और शोधने का काम। १२. उपाय। तरकीब। युक्ति। १३. मदद। सहायता। १४. कारण। सबब। १५. धन-संपत्ति। दौलत। १६. पदार्थ। वस्तु। १७. प्रमाण। सबूत। १८. जाना। गमन। १९. उपासना। २०. संधान। २१. मृतक का अग्नि-संस्कार। दाह-कर्म। २२. दे० 'साधना'।

साधन-क्रिया—स्त्री० [सं०] समापिका क्रिया। (दे०)

साधनता—स्त्री०[सं०]१. साधन का धर्म या भाव। २. साधन की क्रिया। साधना।

साधनहार*—वि०[सं० साधन+हिं० हार (प्रत्य०)]१. साधने करने या साधनेवाला। साधक। २. जो साध या सिद्ध किया जा सके। साध्य।

साधना—स्त्री०[सं०]१. कोई कार्य सिद्ध या संपन्न करने की क्रिया। साधन। २. ऐसी आराधना तथा उपासना जो विशेष कष्ट सहन, परिश्रम तथा मनोयोगपूर्वक बहुत दिनों तक करनी पड़ती हो, अथवा जिसमें किसी विशिष्ट प्रकार की सिद्धि प्राप्त होती हो। जैसे—तंत्र या योग की साधना। ३. उक्त के आधार पर किसी बहुत बड़े तथा महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए विशेष त्याग, परिश्रम तथा मनोयोगपूर्वक बहुत दिनों तक किया जानेवाला प्रयत्न या प्रयास। जैसे—अधिकतर बड़े बड़े आविष्कार विशिष्ट साधना करने से होते हैं।

स०[सं० साधना]१. विशेष परिश्रम तथा प्रयत्नपूर्वक निरंतर कोई कार्य करते हुए उसमें पारंगत या सिद्धहस्त होना। जैसे—योग साधना। २. किसी काम या बात का इस प्रकार अभ्यास करना कि वह ठीक तरह से, बहुत सहज में या स्वाभाविक रूप से सम्पादित होने लगे। जैसे—दम साधना=दम या साँस रोकने का अभ्यास करना। ३. किसी चीज को ऐसी स्थिति में लाना कि वह ठीक तरह से और संतुलित रूप में अपने स्थान पर रहकर पूरा काम कर सके। जैसे—(क) गुड्डी या पतंग साधना=उसमें चिप्पी या पुछल्ला लगाकर उसे संतुलित करना। (ख) तराजू या बटखरा साधना=यह देखना कि तराजू या बटखरा ठीक या पूरा तौलता है या नहीं। (ग) बाइसिकिल पर चढ़ने या रस्से पर चलने में शरीर साधना=शरीर को ऐसी अवस्था में रखना कि वह इधर-उधर गिरने न पाए। ४. शुद्ध या सत्य प्रमाणित करना। ५. निश्चित या पक्का करना। ठहराना। ६. किसी को अपनी ओर मिलाकर अपने अनुकूल या वश में करना। उदा०—गाधिराज को पुत्र साधि सब मित्र शत्रु बल।—केशव।

स० [सं० संधान, पु० हिं० संधानना] निशाना लगाना। संधान करना।

साधनिक—वि०[सं०] १. साधन-संबंधी। साधन का। २. किसी या कई प्रकार के साधनों से युक्त या सम्पन्न। ३. किसी राज्य या संस्था के प्रबंध, शासन या कार्य-साधन से सम्बन्ध रखनेवाला। कार्यकारी। अधिशासी।

पुं० प्राचीन भारत में, एक प्रकार के राज-कर्मचारी जो सेना आदि के किसी उप-विभाग के व्यवस्थापक होते थे।

साधनी—स्त्री०[सं० साधन]१. लोहे या लकड़ी का एक औजार जिससे दीवार या जमीन की सतह की सीध नापते हैं। २. राज। मेमार। उदा०—बोलि साधनी-पुंज मंजु मंडप रचवायौ।—रत्ना०।

साधनीय—वि०[सं०] १. जिसका साधन हो सके। २. जिसकी साधना होने को हो। ३. जो साधना से प्राप्त किया जा सकता हो।

साधयितव्य—वि० [सं० √सिध्‌ (गत्यादि)+णिच्-साधादेश, तव्य] (कार्य) जिसका साधन हो सकता हो या किया जा सकता हो।

साधयिता—वि० [सं० √सिध्‌ (गत्यादि)+णिच्-साधादेश-तृच्] जो साधन करता हो। साधन करनेवाला। साधक।

सार्धमिक—पुं०[सं० सधर्म-ष० स०—ठक्-इक] किसी की दृष्टि से उसी के धर्म का दूसरा अनुयायी। सधर्मी।

साधर्म्य—पुं०[सं० सधर्म+ष्यञ्] समान धर्म से युक्त होने की अवस्था, गुण या भाव। एकधर्मता। समान-धर्मता। तुल्य-धर्मता। जैसे—इनमें कुछ भी साधर्म्य नहीं है।

साधस—पुं० दे० 'साध्वस'।

साधार—वि०[सं०]१. (रचना) जो आधार या नींव पर स्थित हो। २. कथन, विचार आदि जिसका कुछ या कोई आधार हो। तथ्यपूर्ण।

साधारण—वि०[सं० साधारण, अव्य० स०-अण्] १. जैसा साधारणतः सब जगह पाया जाता अथवा होता हो। आम। (यूज़ुअल) २. जिसमें औरों की अपेक्षा कोई विशेषता न हो। (कॉमन) ३. प्रकार, प्रकृति, रूप आदि के विचार से जैसा सब जगह होता हो, वैसा। प्रकृत। सहज। ४. जिसमें कोई बहुत बड़ी उत्कृष्टता या विशेषता न हो, फिर भी जो अच्छे या बढ़िया से कुछ हलके दरजे का हो। मामूली। (आर्डिनरी) ५. जो प्रायः सभी लोगों के करने या समझने के योग्य हो। सरल। सहज। सुगम। ६. तुल्य। सदृश। समान। ७. दे० 'सामान्य'।

पुं०१. भावप्रकाश के अनुसार ऐसा प्रदेश जहाँ जंगल अधिक हों, रोग अधिक होते हों, और जाड़ा तथा गरमी भी अधिक पड़ती हो। २. उक्त प्रकार के देश का जल।

साधारण गांधार—पुं०[सं० कर्म० स०] संगीत में, एक प्रकार का विकृत स्वर जो वजिका नामक श्रुति से आरम्भ होता है। इसमें तीन श्रुतियाँ होती हैं।

साधारणतः—अव्य०[सं०]=साधारणतया।

साधारणतया—अव्य० [सं० साधारण+तल्—टाप्-टा] साधारण रूप से। आमतौर पर। साधारणतः।

साधारणता—स्त्री०[सं० साधारण] साधारण होने की अवस्था, गुण धर्म या भाव।

साधारण धर्म—पुं०[सं०]१. ऐसा कर्तव्य, कर्म या कार्य जो साधारणतः और समान रूप से सब के लिए बना हो। २. ऐसा कर्तव्य, कर्म या धर्म जिसका विधान किसी वर्ग के सब लोगों के लिए हुआ हो। ३. ऐसा गुण, तत्त्व या धर्म जो साधारणतः किसी प्रकार के सब पदार्थों आदि में समान रूप से पाया जाता हो।

विशेषः—साधरणीकरण ऐसे ही गुणों, तत्त्वों या धर्मों के आधार पर किया जाता है।

साधारण निर्वाचन—पुं०[सं०] वह निर्वाचन जिसमें हर चुनाव-क्षेत्र से प्रतिनिधि चुने जाते हों। आम-चुनाव। (जनरल इलेक्शन)

साधारण वाक्य—पुं०[सं०] व्याकरण में, तीन प्रकार के वाक्यों में से पहला जो प्रायः बहुत छोटा होता है और जिसमें एक कर्ता और एक

क्रिया (सकर्मक होने पर क्रिया के साथ कर्म भी) होती है। (वाक्य के शेष दो प्रकार मिश्र और संयुक्त कहलाते हैं)।

साधारणीकरण—पुं०[सं०] [भू० कृ० साधारणीकृत]१. हमारे प्राचीन साहित्य में, रस-निष्पत्ति की वह स्थिति जिसमें दर्शक या पाठक कोई अभिनय देखकर या काव्य पढ़कर उससे तादात्म्य स्थापित करता हुआ उसका पूरा-पूरा रसास्वादन करता है।

विशेष—यह वही स्थिति है जिसमें दर्शक या पाठक के मन से 'मैं' और 'पर' का भाव दूर हो जाता है और वह अभिनय या काव्य के पात्रों या भावों में विलीन होकर उनके साथ एकात्मता स्थापित कर लेता है।

२. आज-कल एक ही प्रकार के बहुत से विशिष्ट गुणों, तत्त्वों आदि के आधार पर किसी विषय में कोई ऐसा साधारण नियम या सिद्धांत स्थिर करना जो उन सब गुणों या तत्त्वों पर समान रूप से प्रयुक्त हो सके। ३. किसी सामान्य गुण या धर्म के आधार पर अनेक गुणों, तत्त्वों आदि को एक तल पर एक वर्ग में लाना। गुणों आदि के आधार पर समानता निरूपित करना। (जेनरलाइज़ेशन)

साधारण्य—पुं०[सं० साधारण+ष्यञ्]=साधारणता।

साधिका—वि० स्त्री० [सं०√सिध् (गत्यादि)+षिच्—साधादेश-ण्वुल्—अक, टाप्] सं० 'साधक' का स्त्री०।

स्त्री० गहरी नींद।

साधिकार—अव्य०[सं०] १. अधिकारपूर्वक। २. आधिकारिक रूप से। (ऑथॉरिटेटिव्ली)

वि० १. जिसे कोई अधिकार प्राप्त हो। २. अधिकारपूर्वक या आधिकारिक रूप से कहा या किया हुआ। (ऑथॉरिटेटिव) जैसे—साधिकार घोषणा।

साधित—भू० कृ०[सं० √सिध् (गत्यादि)+णिच्-साधादेश-क्त] १. जिसका साधन किया गया हो। सिद्ध किया हुआ। २. (काम) जो पूरा सिद्ध किया गया हो। ३. जिसे दंड दिया गया हो। दंडित। ४. शुद्ध किया हुआ। शोधित। ५. नष्ट किया हुआ। ६. (ऋण या देन) जो चुका दिया गया हो। शोधित।

साधित्र—पुं०[सं०] कोई ऐसी वस्तु या साधन जिसकी सहायता से कोई काम पूरा किया जाता हो। उपकरण। (एपरेटस)

साधी (धिन्)—वि० [सं० √सिध् (गत्यादि)+णिनि–साधादेश] साधक।

वि० [हिं० साधक या साधना=सिद्ध करना] किसी के दुष्ट उद्देश्य की सिद्धि में सहायक होनेवाला। साधक। उदा०—जो सो चोर, सोई साधी।—कबीर।

साधु—वि०[सं०] [भाव० साधुता, स्त्री० साध्वी]१. अच्छा। भला। २. जिसमें कोई आपत्तिजनक बात या दोष न हो; फलतः ग्राह्य और प्रशंसनीय। ३. सच्चा। ४. चतुर। निपुण। होशियार। ५. उपयुक्त। योग्य। ६. उचित। मुनासिब। वाजिब।

अव्य०१. बहुत अच्छा किया या बहुत अच्छा हुआ।

मुहा०—साधु साधु कहना=किसी के कोई अच्छा काम करने पर उसकी बहुत प्रशंसा करना।

२. बहुत ठीक, ऐसा ही किया जाय अथवा ऐसा ही हो। ३. बस बहुत हो चुका, अब रहने दो।

पुं०१. वह जिसका जन्म उत्तम कुल में हुआ हो। कुलीन। आर्य। २. वह जिसकी कोई साधना, विशेषतः आध्यात्मिक या धार्मिक साधना पूरी हो चुकी हो। सिद्ध। ३. वह धार्मिक, परोपकारी और सदाचारी व्यक्ति जो धर्म, सत्य आदि का उपदेश करके दूसरों का कल्याण करता हो। महात्मा। संत। ४. वह जो सांसारिक प्रपंच छोड़कर त्यागी और विरक्त हो गया हो। ५. बहुत ही शांत भाव से रहनेवाला सदाचारी और सुशील व्यक्ति। बहुत ही भला आदमी। सज्जन। ६. वणिक। व्यापारी। ७. वह जो लोगों को धन आदि उधार देकर उनके ब्याज या सूद से अपना निर्वाह करता हो। महाजन। साहु। ८. जैन यति, मुनि या साधु। ९. जिन देव। १०. दौना नामक पौधा। दमनक। ११. वरुण वृक्ष।

साधुकारी (रिन्)—वि०[सं० साधु√कृ (करना)+णिनि] जो उत्तम कार्य करता हो। अच्छे काम करनेवाला।

साधुज—वि०[सं०] जिसका जन्म उत्तम कुल में हुआ हो। कुलीन।

साधुजात—वि०[सं०] १. सुन्दर। खूबसूरत। २. चमकीला। उज्ज्वल। ३. साफ। स्वच्छ। ४. कुलीन।

साधुता—स्त्री०[सं० साधु+तल्—टाप्]१. साधु होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। साधुपन। २. भलमनसाहत। सज्जनता। ३. नेकी। भलाई। ४. सीधापन। सिधाई।

साधुत्व—पुं० [सं० साधु+त्व]=साधुता।

साधुमती—स्त्री०[सं० साधु-मतुप् ङीप्]१. तांत्रिकों की एक देवी। ३. दसवीं पृथ्वी। (बौद्ध)

साधुवाद—पुं०[सं०]१. किसी के कोई उत्तम कार्य करने पर "साधु साधु" कहकर उसकी प्रशंसा करना। २. उक्त रूप में की हुई प्रशंसा या कही हुई बात।

साधु-वृत्त—वि०[सं०] उत्तम स्वभाव और चरित्रवाला। साधु आचरण करनेवाला।

साधु-वृत्ति—स्त्री०[सं०] उत्तम और श्रेष्ठ आचरण तथा वृत्ति।

साधु-साधु—अव्य० [सं०] साधुवाद का सूचक पद। धन्य-धन्य।

साधू—पुं०[सं० साधु]१. महात्मा और संत पुरुष। २. विरक्त और संसार त्यागी व्यक्ति।

साधो—पुं०[सं० साधु] हिं० 'साधु' का सम्बोधन कारक का रूप। जैसे—कहे कबीर सुनो भई साधो।—कबीर।

साध्य—वि०[सं०]१. (कार्य) जिसका साधन हो सके। जो सिद्ध या पूरा किया जा सके। जैसे—यह कार्य सबके लिए साध्य नहीं है। २. आसान। सहज। सुगम। ३. तर्क या न्याय में, (पक्ष या विषय) जो प्रमाणित किया जाने को हो। ४. वैद्यक में, (रोग) जो चिकित्सा के द्वारा दूर किया जा सकता हो। ५. (काम या बात) जिसका प्रतिकार हो सकता हो अथवा किया जा सकता हो। ६. (विषय) जो प्रयत्न करने पर जाना जा सकता हो।

पुं०१. कोई काम पूरा कर सकने की योग्यता या शक्ति। सामर्थ्य। जैसे—यह काम हमारे साध्य के बाहर है। २. न्याय में, वह पदार्थ जिसका अनुमान किया जाय। जैसे—पर्वत से धुँआँ निकलता है अतः वहाँ अग्नि है। यहाँ अग्नि साध्य है, जिसका अनुमान किया गया है। ३. इक्कीसवाँ योग। (ज्यो०) ४. गुरु से लिये जानेवाले चार प्रकार के

मंत्रों में से एक प्रकार का मंत्र। (तंत्र) ५. एक प्रकार के गण देवता जिनकी संख्या १२ है। ६. देवता।

साध्यता—स्त्री०[सं० साध्य+तल्—टाप्] साध्य होने की अवस्था, गुण या भाव।

साध्यवसान रूपक—पुं०[सं०] साहित्य में, रूपक अलंकार का वह प्रकार या भेद जो साध्यवसाना लक्षणा से युक्त होता है। (एलिगोरी)

साध्यवसाना—स्त्री०[सं०] साहित्य में, लक्षणा का वह प्रकार या भेद जिसमें स्वयं उपमान में उपमेय का अध्यवसाय या तादात्म्य किया जाता अर्थात् उपमेय को बिलकुल हटाकर केवल उपमान इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि उपमेय से उसका कोई अंतर या भेद नहीं रह जाता। जैसे—किसी परम मूर्ख के विषय में कहना—यह तो गधा (या बैल) है। उदा०—अद्भुत् एक अनूप बाग। जुगल कमल पर गज क्रीड़त है, तापर सिंह करत अनुराग।.....फल पर पुहुप, पहुप पर पल्लव ता पर सुक, पिक, मृग-मद काग। इसमें केवल उपमानों का उल्लेख करके राधा के सब अंगों के सौंदर्य का वर्णन किया है।

साध्यवसानिका—स्त्री०=साध्यवसाना (लक्षणा)।

साध्यवसाय—वि०[पुं० ब० स०] (उक्ति या कथन) जो साध्यवसाना लक्षणा से युक्त हो।

साध्यवान् (वत्)—वि० [सं०साध्य+मतुप् म=व] (व्यवहार में, वह पक्ष) जिस पर अपना कथन या मत प्रमाणित करने का भार हो।

साध्यसम—पुं०[सं०]भारतीय नैयायिकों के अनुसार पाँच प्रकार के हेत्वाभासों में से एक, जिसमें किसी हेतु को साध्य के ही समान सिद्ध करने की आवश्यकता होती है। जैसे—यदि कहा जाय "छाया भी द्रव्य है क्योंकि उसमें द्रव्यों के ही समान गति होती है।" तो यहाँ यह सिद्ध करना आवश्यक होगा कि स्वतः छाया में गति होती है।

साध्याभक्ति—स्त्री०=परा-भक्ति। (देखें)

साध्र—स्त्री०=साध (कामना)। उदा०—रमण रोक मनि साध्र रही।—प्रिथीराज।

साध्वस—पुं०[सं०] १. भय। डर। २. घबराहट। ३. बेचैनी। विकलता। ४. प्रतिभा।

साध्वाचार—पुं०[सं० उपमि० स०]१. साधुओं का सा आचार और व्यवहार। २. शिष्टाचार।

साध्वी—वि०[सं० साधु-ङीप्]१. भली तथा शुद्ध आचरणवाली (स्त्री)। २. पतिपरायण। पतिव्रता।

पद—सती-साध्वी। (दे०)

स्त्री० मेदा (ओषधि)।

सानंद—वि०[सं० स+आनंद] जो आनन्द से युक्त हो। जैसे—यहाँ सब लोग सानंद हैं।

अव्य० आनंद या प्रसन्नतापूर्वक। जैसे—आप सानंद वहाँ जा सकते हैं।

पुं०१. एक प्रकार की संप्रज्ञात समाधि। २. संगीत में, १६ प्रकार के ध्रुवकों में से एक जिसका व्यवहार प्रायः वीर रस के वर्णन में होता है। ३. गुच्छ करंज।

सान—पुं०[सं० शाण]१. प्रायः चक्की के पाट के आकार का वह कुरुंड पत्थर जिस पर रगड़कर धारदार औजारों और हथियारों की धार चोखी या तेज और साफ की जाती है। (ह्वटस्टोन)

मुहा०—(किसी चीज पर) सान देना, धरना या रखना=उक्त पत्थर पर रगड़कर औजारों की धार चोखी या तेज करना।

२. प्रायः चक्कर के आकार का वह यंत्र जिसमें उक्त पत्थर लगा रहता है और जिसे तेजी से घुमाते हुए औजारों आदि पर सान रखते हैं।

पुं०[सं० संज्ञपन] संकेत। इशारा। (पूरब) उदा०—काहु के पान काहु दिअ सान।—विद्यापति।

पद—सान-गुमान=किसी काम या बात का बहुत ही अल्प रूप में हो सकनेवाला अनुमान या नाम मात्र को हो सकनेवाली कल्पना। जैसे—मुझे तो इस बात का कोई सान-गुमान ही नहीं था कि वह चोर निकलेगा।

†स्त्री०=शान (ठाठ-बाट)।

सानना†—स०[हिं० सनना का स०]१. दो वस्तुओं को आपस में मिलाना विशेषतः चूर्ण आदि को तरल पदार्थ में मिलाकर गीला करना। गूँधना। जैसे—आटा सानना। मसाला सानना। २. मिश्रित करना। मिलाना। ३. लाक्षणिक रूप में, किसी को उत्तरदायी या दोषी ठहराने के उद्देश्य से कोई ऐसा काम करना या ऐसी बात कहना कि दूसरों की दृष्टि में वह (दूसरा व्यक्ति) भी किसी अपराध या दोष में सम्मिलित जान पड़े। जैसे—आप तो व्यर्थ ही मुझे इस मामले में सानते हैं।

संयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।

स०[हिं० सान+ना (प्रत्य०)]सान पर चढ़ाकर धार तेज करना। (क्व०)

सानल—वि० [सं० तृ० त०] १. अग्नि-युक्त। २. कृतिका नक्षत्र से युक्त।

साना*—अ०[सं० शांत] १. शांत होना। २. समाप्त होना। न रह जाना। उदा०—कृपा-सिंधु बिलोकिए जन मन की साँसति सान।—तुलसी।

स०१. शांत करना। २. नष्ट करना। ३. समाप्त करना।

सानी—स्त्री०[हिं० सान (ना)+ई (प्रत्य०)]१. गौओं, बैलों, बकरियों आदि को खली-कराई में सानकर दिया जानेवाला भूसा।

पद—सानी-पानी=खली-कराई और भूसे को एक में मिलाना।

२. अनुपयुक्त रूप से एक में मिलाये हुए कई प्रकार के खाद्य पदार्थ।

स्त्री०[?] गाड़ी के पहिये में लगाई जानेवाली गिट्टक। वि० [अ०] १. दूसरा। द्वितीय। जैसे—औरंगजेब सानी। २. जोड़ का। बराबरी का। तुल्य। समान।

पद—ल-सानी=अद्वितीय। अतुल्य।

†स्त्री०=सनई।

सानु—पुं० [सं०] १. पर्वत की चोटी। शिखर। २. छोर। सिरा। ३. समतल भूमि। चौरस मैदान। ४. जंगल। वन। ५. मार्ग। रास्ता। ६. पेड़ का पत्ता। पर्ण। ७. सूर्य। ८. पंडित। विद्वान्।

वि०[?] १. लंबा-चौड़ा। २. चौरस। सपाट।

सानुकंप—वि० [सं० ब० स०] जिसके मन में अनुकंपा या दया हो। दयालु।

क्रि० वि० अनुकंपा या दया करते हुए।

सानुकूल—वि० [सं० तृ० त०] पूरी तरह से अनुकूल।

सानुज—पुं०[सं० सानु√जन् (उत्पन्न करना)+ज, तृ० त०] १. प्रपौंड्रीक वृक्ष। पुंडेरी। २. तुंबुरु नामक वृक्ष।

अव्य० अनुज सहित। छोटे भाई के साथ।

सानुनय—वि०[सं० तृ० त०] विनयशील। शिष्ट।

अव्य० अनुनय या विनयपूर्वक।

सानुनासिक—वि० [सं० तृ० त०] १. (अक्षर या वर्ण) जिसके उच्चारण के समय मुँह के अतिरिक्त नाक से अनुस्वारात्मक ध्वनि निकलती हो। २. नकियाकर गाने या बोलनेवाला।

सानुप्रास—वि० [सं० अव्य० स०] अनुप्रास से युक्त।

अव्य० अनुप्रास सहित।

सानुमान्(मत्)—पुं० [सं० सानु+मतुप्] पर्वत।

सानो†—पुं०[?] सूअर की तरह का एक प्रकार का जंगली जानवर।

सान्नाहिक—वि० [सं० सन्नाह+ठञ्-इक] जो सन्नाह पहने हो। कवचधारी।

सान्निध्य—पुं० [सं० सन्निध+यज्] १. वह अवस्था जिसमें दो या अधिक जीव या वस्तुएँ साथ-साथ रहती हैं। २. सन्निध होने अर्थात् निकट या समीप होने की अवस्था या भाव। निकटता। समीपता। ३. वह स्थिति जिसमें यह माना जाता है कि आत्मा चलकर ईश्वर के पास पहुँच गई है।

सान्निपातकी—स्त्री० [सं० सन्निपात+ठञ्—इक—ङीप्] वैद्यक में, एक प्रकार का योनि-रोग जो त्रिदोष से उत्पन्न होता है।

सान्निपातिक—वि० [सं०] १. सन्निपात-संबंधी। सन्निपात का। २. त्रिदोष के कारण उत्पन्न होनेवाला (रोग)।

सान्न्यासिक—पुं० [सं० सन्न्यास+ठक—इक]=संन्यासी।

सान्वय—वि० [सं० अव्य० स०] १. किसी विशिष्ट अर्थ से युक्त। २. वंशपरंपरा से आने या होनेवाला। आनुवंशिक। वंशानुगत।

अव्य० परिवार अथवा वंशजों के साथ।

साप*—पुं०=शाप।

सापत्न—वि०[सं० सपत्न+अण्]१. सपत्नी या सौत सम्बन्धी। २. सौत से उत्पन्न। सौतेला।

पुं० सौत के लड़के-बाले। सौत की सन्तान।

सापत्नेय—वि०[सं० सपत्नि+ठक्—एय] सत्पनी से उत्पन्न। सौतेला।

सापत्न्य—पुं० [सं० सपत्न+ष्यज्] १. सपत्नी होने की अवस्था, धर्म या भाव। सौतपन। २. सपत्नियों में होनेवाली द्वेष-भावना, लाग-डाँट या स्पर्धा। ३. सपत्नी या सौत का लड़का। ४. दुश्मन। शत्रु।

सापत्न्यक—पुं०[सं०सापत्न्य+कन्]१. सपत्नियों में होनेवाली प्रतिद्वंद्विता या लाग-डाँट का भाव। २. शत्रुता।

सापत्य—वि०[सं०]१. जिसके आगे संतान हो। २. जो अपनी संतान के साथ हो।

सापन—पुं० [?] सिर के बाल के झड़ने का एक रोग।

सापना*—स० [सं० शाप, हिं० साप+ना (प्रत्य०)] १. शाप देना। कोसना। उदा०—सापत ताड़त परुष कहन्ता।—कबीर। २. गालियाँ देना। दुर्वचन कहना।

सापवाद—वि०[सं०] (नियम या सिद्धान्त) जिसके अपवाद भी हों।

सापह्नवातिशयोक्ति—स्त्री०[सं०] साहित्य में, अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें रूपकातिशयोक्ति के साथ अपह्नुति भी मिली रहती है। इसे कुछ लोग रूपकातिशयोक्ति के अंतर्गत और कुछ लोग परिसंख्या के अंतर्गत भी मानते हैं।

सापिंड्य—पुं०[सं० सपिंड+ष्यज्] सपिंड होने की अवस्था या भाव। वे लोग जो किसी एक ही पितर को पिंड-दान करते हों।

सापुरस†—पुं० [सं० स+पुरुष] शूरवीर। उदा०—सिंह सीचाणो सापुरस। —जटमल।

सापेक्ष—वि०[सं०] [भाव० सापेक्षता]१. जो किसी दूसरे तत्त्व, विचार, दृष्टिकोण आदि से संबद्ध होने के कारण उसकी अपेक्षा रखता हो। बिना किसी दूसरे संबद्ध अंग के ठीक या पूरा न होनेवाला। (रिलेटिव) २. किसी की अपेक्षा करनेवाला।

सापेक्षता—स्त्री०[सं०] १. सापेक्ष होने की अवस्था या भाव। २. सुप्रसिद्ध जर्मन वैज्ञानिक आइन्स्टीन का सिद्धान्त जिसमें विश्व-संबंधी पुराने गुरुत्वाकर्षण आदि के सिद्धांतों का खंडन करके यह सिद्ध किया गया है कि विश्व की सारी गति सापेक्ष है। (रिलेटिविटी)

सापेक्षवाद—पुं०[सं०]१. वह वाद या सिद्धांत जिसमें दो बातों या वस्तुओं को एक दूसरी का अपेक्षक माना जाता है। २. दे० 'सापेक्षता'।

सापेक्षवादी—वि०[सं०] सापेक्षवाद-संबंधी।

पुं० सापेक्षवाद के सिद्धांतों का अनुयायी या समर्थक।

सापेक्षिक—वि०[सं०]=सापेक्ष।

साप्ततंतव—पुं०[सं० ब० स०] एक प्राचीन धार्मिक संप्रदाय।

साप्तपद—वि०[सं० सप्तपद+अण्] सप्तपदी-सम्बन्धी।

पुं०१. सप्तपदी। २. मैत्री। ३. घनिष्ठता।

साप्तपदीन—वि०[पुं० सं० सप्तपद-खञ्—ईन]=साप्तपद।

साप्तमिक—वि०[सं० सप्तमी+ठक्—इक] सप्तमी-संबंधी। सप्तमी का।

साप्तहिक—वि० [सं० सप्ताह+ठञ्-इक] १. सप्ताह-सम्बन्धी। २. सात दिनों तक लगातार चलनेवाला। जैसे—साप्ताहिक समारोह। ३. सप्ताह में एक बार होनेवाला। हर सातवें दिन होनेवाला। जैसे—साप्ताहिक पत्र। साप्ताहिक छुट्टी।

पुं० वह पत्र जिसका प्रकाशन हर सातवें दिन होता हो।

साफ—वि०[अ० साफ़] [भाव० सफाई] १. जिस पर या जिसमें कुछ भी धूल, मैल आदि न हो। निर्मल। 'गंदा' या 'मैला' का विपर्याय। जैसे—साफ कपड़ा, साफ पानी, साफ शीशा। २. जो दोष, विकार आदि से रहित हो। जैसे—साफ तबीयत, साफ दिल, साफ हवा। ३. जिसमें किसी प्रकार का खोट या मिलावट न हो। खालिश। जैसे—साफ दूध, साफ सोना। ४. जिसका तल ऊबड़-खाबड़, गाँठदार या शाखा-प्रशाखाओं से युक्त न हो। समतल। जैसे—साफ रास्ता, साफ़ लकड़ी। ५. जिसकी बनावट, रचना, रूप आदि में कोई त्रुटि या दोष न हो। जैसे—साफ तसवीर, साफ लिखावट। ६. जिसमें किसी प्रकार का छल, कपट या धोखा-धड़ी न हो। नैतिक दृष्टि से बिलकुल ठीक और शुद्ध। जैसे—साफ बरताव, साफ मामला, साफ लेन-देन। ७. जो इतना स्पष्ट हो कि उसके संबंध में किसी प्रकार का भ्रम या संदेह न रह गया हो। जैसे—अभी बात साफ नहीं हुई। ८. जिसमें किसी प्रकार का अंधकार या धुँधलापन न हो। देखने में निर्मल और स्वच्छ। जैसे—साफ आसमान, साफ रोशनी। ९. (कार्य)

जिसके सम्पादन में अनुचित या नियम-विरुद्ध बात न हो। जैसे—साफ खेल, साफ लेन-देन। १०. (उक्ति या कथन) जिसमें किसी प्रकार का छिपाव या दुराव न हो। निश्छल और स्पष्ट रूप से कहा हुआ। जैसे—साफ इन्कार, साफ जवाब।

पद—साफ और सीधा=(क) स्पष्ट और बाधाहीन। (ख) स्पष्ट और उपयुक्त।

मुहा०—साफ साफ सुनाना=बिलकुल स्पष्ट और ठीक बात कहना। खरी बात कहना।

११. जो स्पष्ट सुनाई पड़े या समझ में आवे। जिसके समझने या सुनने में कोई कठिनाई न हो। जैसे—साफ आवाज, साफ खबर, साफ प्रतिलिपि। १२. जिसके तल पर कुछ भी अंकित न हो। जैसे—साफ कागज। १३. जिसमें कुछ भी तत्त्व या दम न रह गया हो। जैसे—(क) मुकदमे ने उन्हें पूरी तरह से साफ कर दिया। (ख) हैजे से गाँव के गाँव साफ हो गये। १४. जिसका पूरी तरह से अंत कर दिया गया हो। समाप्त किया हुआ। जैसे—(क) इस लड़ाई में दोनों तरफ की बहुत सी फौज साफ हो गई। (ख) कुछ ही दिनों में उसने घर का सारा माल साफ कर दिया। १५. (ऋण या देन) जो पूरी तरह से चुका दिया गया हो। चुकता किया हुआ। जैसे—जब तक कर्ज साफ न कर लो, तब तक कुछ भी फजूल खरच मत करो। १६. जो अनावश्यक या रद्दी अंश निकालकर ठीक और काम में आने लायक कर दिया गया हो। जैसे—दस्तावेज का मसौदा साफ करना।

अव्य० १. निश्चित और स्पष्ट रूप से। पूरी तरह से। जैसे—यह साफ जाहिर है कि किताब आप ही ले गये हैं। २. इस प्रकार कि किसी को कुछ पता न चल सके या कोई कुछ भी बाधक न हो सके। जैसे—कहीं से कोई चीज साफ उड़ा ले जाना। ३. इस प्रकार कि कुछ भी आँच न आने पाए। बिना कुछ भी कष्ट भोगे या हानि सहे। जैसे—किसी संकट से साफ बच निकलना। ४. बिना लांछित हुए। निर्दोष भाव या रूप से। जैसे—किसी मुकदमे से साफ छूटना। ५. निरा। बिलकुल। जैसे—यह तो साफ झूठ या (बेईमानी) है।

साफल्य—पुं०[सं० सफल+ष्यञ्]१. सफल होने की अवस्था या भाव। सफलता। २. कृतकार्यता। ३. प्राप्ति। लाभ।

साफा—पुं०[अ०साफ़] १. सिर पर बाँधने की पगड़ी। मुरेठा। मुड़ासा। २. पहनने के कपड़ों आदि में साबुन लगाकर उन्हें साफ करने की क्रिया।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

पद—साफा-पानी=नगर के बाहर कहीं एकान्त में जाकर भाँग पीने और कपड़ों में साबुन लगाकर उन्हें साफ करने की क्रिया।

३. शिकारी जानवरों को शिकार के लिए या कबूतरों को दूर तक उड़ने के लिए तैयार करने के उद्देश्य से उन्हें उपवास कराना कि उनका पेट साफ हो जाय और शरीर भारी न रहे।

क्रि० प्र०—देना।

साफी—स्त्री०[अ० साफ़]१. हाथ में रखने का रूमाल। दस्ती। २. वह कपड़ा जिसमें पीसी और घोली हुई भाँग छानते हैं। ३. चिलम के नीचे लपेटा जानेवाला कपड़ा। ४. कपड़े का वह टुकड़ा जिसकी सहायता से चूल्हे पर से बरतन उतारा जाता है। ५. एक प्रकार का रंदा।

वि०१. साफ करनेवाला। २. खून साफ करनेवाला (औषध)।

साबड़†—पुं० साबर (चमड़ा)।

साबत—पुं०[सं० सामंत] सामंत। सरदार। (डिं०)

†वि०=साबुत (समूचा)।

साबति*—स्त्री० [अ० साबूत=पूरा] साबुत या पूरे होने की अवस्था या भाव। पूर्णता।

वि० दे०'साबुत'।

साबर—पुं०[सं० शंबर]१. साँभर मृग का चमड़ा, जो बहुत मुलायम होता है। २. शबर नामक जाति। ३. थूहड़। ४. मिट्टी खोदने की सबरी। ५. एक प्रकार का सिद्ध मंत्र, जो शिवकृत माना जाता है।

†स्त्री० साँभर (झील)।

साबल†—पुं०[सं० शबर] बरछी। भाला।

साबस†—पुं०=शाबास।

साबिक—वि० [अ० साबिक़] पूर्व का। पहले का। पुराने समय का।

पद—साबिक दस्तूर=ठीक पहले जैसा। वैसा ही।

साबिका—पुं०[अ० साबिक़]१. जान-पहचान। मुलाकात। २. लेन-देन आदि का व्यवहार या व्यावहारिक सम्बन्ध। सरोकार। वास्ता।

मुहा०—किसी से साबिका पड़ना=ऐसी स्थिति आना कि लेन-देन, व्यवहार या और किसी प्रकार का निकट का सम्बन्ध हो।

साबित—वि०[फा०] १. सबूत (अर्थात् प्रमाण) द्वारा सिद्ध किया हुआ (तथ्य)। २. दृढ़। पक्का।

पुं० वह नक्षत्र, तारा आदि जो एक स्थान पर स्थिर रहता हो।

†वि०=साबुत।

साबिर—वि०[अ०]१. सब्र करनेवाला। २. सहन करनेवाला। सहनशील।

साबुत—वि० [फा० सबूत] १. जो संपूर्ण इकाई के रूप में हो। जैसे—साबूत आम, साबुत रोटी। २. समूचा। सारा। ३. ठीक। दुरुस्त। जैसे—काम साबुत उतरना।

†पुं०=सबूत (प्रमाण)।

†वि०=साबित।

साबुन—पुं०[अ०] तेल, सोडे आदि के योग से रासायनिक क्रिया से प्रस्तुत किया हुआ एक प्रसिद्ध पदार्थ, जिससे शरीर के अंग और कपड़े आदि साफ किये जाते है।

विशेष—साधारणतः यह छोटी वटी के रूप में बनता है। परन्तु आज-कल चूर्ण के रूप में और तरल रूप में भी साबुन बनने लगे हैं।

साबूदाना—पुं० दे० 'सागूदाना'।

साभा—वि०[सं० स+आभा] १. आभा से युक्त। २. चमकदार। चमकीला।

साभिप्राय—वि० [सं० तृ० त०] १. अभिप्राय से युक्त। २. विशेष अर्थ-युक्त। ३. जिसका कोई विशिष्ट प्रयोजन या हेतु हो।

अव्य० किसी प्रकार का अभिप्राय अर्थात् आशय या उद्देश्य सामने रखते हुए।

साभिमान—वि०[सं० तृ० त०] गर्वीला। घमंडी।

अव्य० अभिमान या घमंड से। अभिमानपूर्वक।

सामंजस्य—पुं०[सं०]१. समंजस होने की अवस्था या भाव। २. उपयुक्तता। ३. औचित्य। ४. अनुकूलता। ५. वह स्थिति जिसमें परस्पर किसी प्रकार की विपरीतता या विषमता न हो।

सामंत—वि०[सं०] सीमा पर या पड़ोस में रहनेवाला।

पुं०१. पड़ोसी। २. राजा के अधीन रहनेवाला बड़ा सरदार। ३. प्रजावर्ग का श्रेष्ठ व्यक्ति। ४. वीर। योद्धा। ५. पड़ोस। ६. निकटता। समीपता। ७. संगीत में कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

सामंत-तंत्र—पुं०[सं०] आधुनिक राजनीति में, आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक आदि क्षेत्रों की वह व्यवस्था, जिसमें अधिकतर अधिकार बड़े-बड़े सामंतों या सरदारों के हाथ में रहते हैं। (फ्यूडल सिस्टम)

सामंत-प्रणाली—स्त्री०=सामंत-तंत्र। (दे०)

सामंत-प्रथा—स्त्री०[सं०]=सामंत-तंत्र।

सामंत-भारती—पुं०[सं०] संगीत में, मल्लार और सारंग के मेल से बना हुआ एक प्रकार का संकर राग।

सामंतवाद—पुं०[सं०] यह सिद्धान्त कि राजनीतिक और सामाजिक आदि क्षेत्रों में सामंत-तन्त्र ही अधिक उपयोगी सिद्ध होता है (फ़्यूडलिज़्म)

सामंतशाही—स्त्री०=सामंत-तंत्र।

सामंत-सभा—स्त्री०[सं०]१. सामंतों की सभा। २. इंग्लैण्ड में सामंतों की सभा, जिसके बहुत कुछ अधिकार भारतीय राज्य-सभा के समान हैं। (हाउस आफ़ लार्डस्)

सामंत सारंग—पुं०[सं० मध्यम० स०] संगीत में, एक प्रकार का सारंग राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

सामंतिक—वि०[सं०]१. सामंत-संबंधी। सामंत का। २. सामंत-प्रणाली से संबंध रखनेवाला। सामंती (फ़्यूडल)

सामंती—स्त्री०[सं० सामंत—ङीप्] संगीत में, एक प्रकार की रागिनी, जो मेघराग की पत्नी मानी जाती है।

स्त्री०[हिं० सामंत] सामंत होने की अवस्था या भाव।

वि०=सामंतिक।

सामंतेश्वर—पुं०[सं० ष० त०]१. सामंतों का मुखिया। २. चक्रवर्ती सम्राट्। शाहंशाह।

साम—पुं०[सं० सामन्]१. भारतीय आर्यों के वे वेदमंत्र, जो प्राचीन काल में यज्ञ आदि के समय गाये जाते थे। (दे० 'सामवेद') २. प्राचीन भारतीय राजनीति में, चार प्रकार के उपायों में से पहला उपाय, जिसमें विरोधी या वैरी से मीठी-मीठी बातें करके अपनी ओर मिलाने अथवा संतुष्ट करने का प्रयत्न किया जाता था।

विशेष—शेष तीन उपाय, दाम, दंड और भेद कहलाते हैं।

स्त्री० १. मीठी-मीठी बातें करना। मधुर भाषण। २. दोस्ती। मित्रता। ३. मित्रता या स्नेह के कारण प्राप्त होनेवाली कृपा। उदा०—अवर न पाइए गुरु की साम।—कबीर।

पुं०[यू० सेम, इब्रा० शेम] [वि० सामी] पुरातत्व के क्षेत्र में, दक्षिणी-पश्चिमी एशिया और उत्तर-पूर्वी अफ्रीका के उन क्षेत्रों का सामूहिक नाम, जिनमें अरब, एसीरिया (या असुरिया), फिनीशिया, बैबिलोन आदि प्रदेश पड़ते हैं।

विशेष—इन देशों के प्राचीन निवासी एक विशिष्ट जाति के थे, जिन्हें आज-कल सामी कहते हैं, और इनकी भाषा भी 'सामी' कहलाती थी। दे० ''सामी''।

*वि०, पुं०=श्याम।

*पुं० १. स्वामी। २. सामान। उदा०—बाल्मीकि अजामिल के कछु हुतो न साधन सामी।—तुलसी।

*पुं०=श्याम देश।

*स्त्री०१.शाम (संध्या)। २. सामी (छड़ी या डंडे की)।

सामक—वि०[सं०] सामवेद संबंधी।

पुं०१. वह जो साम वेद का अच्छा ज्ञाता हो। २. वह मूलधन जो ऋण-स्वरूप लिया या दिया गया हो। कर्ज का असल रुपया। ३. सान रखने का पत्थर।

*पुं०=श्यामक (साँवाँ)।

सामकारी—वि०[सं० सासकारिन्-साम √कृ (करना)+णिनि] जो मीठे वचन कहकर किसी को ढारस देता हो। सांत्वना देनेवाला।

पुं० एक प्रकार का सामगान।

सामग—पुं० [सं० साम√गम् (जाना)+ड=√गै (शब्द करना)+टक्] [स्त्री० सामगी] १. वह जो सामवेद का अच्छा ज्ञाता हो, और अनेक मंत्र ठीक तरह गा या पढ़ सकता हो। २. विष्णु का एक नाम।

साम-गान—पुं० [सं०]१. एक प्रकार का साम नामक वेद-मंत्र। २. दे० 'सामग'।

सामग्री—स्त्री० [सं० समग्र+ष्यञ्-ङीष् यलोपः] १. वे चीजें जिनका सामूहिक रूप से किसी काम में उपयोग होता है। जैसे—**लेखन**-सामग्री, यज्ञ-सामग्री। २. किसी उत्पादन, निर्माण, रचना आदि के सहायक अंग या तत्व। सामान। ३. साधन। ४. घर-गृहस्थी की चीजें।

विशेष—इसका प्रयोग सदा एकवचन में होता है।

सामज—वि० [सं० साम√जन् (उत्पन्न करना)+ड]जो सामवेद से उत्पन्न हुआ हो।

पुं० हाथी, जिसकी उत्पत्ति सामगान से मानी गई है।

सामत—पुं० दे० 'सामंत'।

†स्त्री०=शामत।

सामत्रय—पुं० [सं० ष० त०] हर्रे, सोंठ और गिलोय तीनों का समूह।

सामत्व—पुं० [सं० सामन्+त्व] साम का धर्म या भाव। सामता।

सामध—स्त्री० [हिं० समधी] विवाह के समय समधियों की आपस में मिलने की रसम। मिलनी।

सामधी—पुं० दे० 'समधी'।

सामन†—पुं०=सावन (महीना)।

स्त्री० [अं० सैल्मन] एक विशेष प्रकार की ऐसी मछलियों का वर्ग जिनका मांस पाश्चात्य देशों में बहुत चाव से खाया जाता है। (सैल्मन)

सामना—पुं० [हिं० सामने, पु० हिं० सामुहें] १. किसी के समक्ष होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

पद—**सामने का**=(क) जो किसी के देखते हुआ हो। जो किसी की उपस्थिति में हुआ हो। जैसे—यह तो तुम्हारे सामने का लड़का

है। (ख) किसी की वर्तमानता में। जैसे—यह तो हमारे सामने की घटना है।

२. भेंट। मुलाकात। जैसे—जब उनसे सामना हो, तब पूछना। ३. किसी पदार्थ का अगला भाग। आगे की ओर का हिस्सा। आगा। जैसे—उस मकान का सामना तालाब की ओर पड़ता है। ४. किसी के विरुद्ध या विपक्ष में खड़े होने की अवस्था, क्रिया या भाव। मुकाबला। जैसे—(क) वह किसी बात में आप का सामना नहीं कर सकता। (ख) युद्ध-क्षेत्र में दोनों दलों का सामना हुआ।

मुहा०—(किसी का) **सामना करना**=सामने होकर जवाब देना। धृष्टता या गुस्ताखी करना। जैसे—जरा सा लड़का अभी से सबका सामना करता है।

५. प्रतियोगिता। लाग-डाँट। होड़। जैसे—आज अखाड़े में दोनों पहलवानों का सामना होगा।

साम-नारायणी—स्त्री०[सं०]संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सामनी—स्त्री० [सं०] पशुओं को बाँधने की रस्सी।

†वि०, स्त्री०=सावनी।

सामने—अव्य० [हिं० सामना] १. उपस्थिति में। आगे। समक्ष। जैसे—बड़ों के सामने ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए।

मुहा०—(किसी के) **सामने करना, रखना या लाना**=किसी के समक्ष उपस्थित करना। आगे करना, रखना या लाना। (स्त्रियों का किसी के) **सामने होना**=परदा न करके समक्ष आना। जैसे—उनके घर की स्त्रियाँ किसी के सामने नहीं होतीं।

२. किसी के वर्तमान रहते हुए। जैसे—इस किताब के सामने उसे कौन पूछेगा। ३. जिस ओर मुँह हो, सीधे उसी ओर। जैसे—सामने चले जाओ; थोड़ी दूर पर उनका मकान है। ४. मुकाबले में। विरुद्ध। जैसे—वह तुम्हारे सामने नहीं ठहर सकता।

मुहा०—(किसी को किसी के) **सामने करना या लाना**=प्रतियोगी, विपक्षी आदि के रूप में खड़ा करना। मुकाबले के लिए खड़ा करना। जैसे—वे तो आड़ में बैठे रहे, और मुकदमा लड़ने के लिए लड़के को सामने कर दिया।

सामयिक—वि० [सं०] [भाव० सामयिकता] १. समय अर्थात् परिपाटी के अनुसार होनेवाला। २. अनुबंध के अनुसार या अनुरूप होनेवाला। ३. ठीक समय पर होनेवाला। ४. प्रस्तुत या वर्तमान समय का। जैसे—सामयिक पत्र।

सामयिकता—स्त्री० [सं०] १. सामयिक होने का भाव। २. वर्तमान समय, परिस्थिति आदि के विचार से उपयुक्त दृष्टि-कोण या अवस्था।

सामयिक पत्र—पुं० [सं०कर्म०स०] १. भारतीय धर्मशास्त्र में, वह इकरारनामा या दस्तावेज जिसमें बहुत से लोग अपना-अपना धन लगाकर किसी मुकदमे की पैरवी करने के लिए आपस में लिखा-पढ़ी करते थे। २. आज-कल नियत समय पर बराबर निकलता रहनेवाला कोई पत्र या प्रकाशन। (पीरियॉडिकल)

सामयिकी—स्त्री० [सं० सामयिक] १. सामयिक होने की अवस्था या भाव। २. सामयिक बातों से संबंध रखनेवाली चर्चा या विवेचन।

सामयोनि—पुं० [सं० ब० स०] १. ब्रह्म। २. हाथी।

सामर—वि० [सं० समर+अण्] समर-संबंधी। समर का। युद्ध का।

†पुं०=समर (युद्ध)।

सामरथ—स्त्री०=सामर्थ्य।

†वि०=समर्थ।

सामरा—वि० पुं० [स्त्री० सामरी] =साँवला। उदा०—तहु दुहु सुललित नयन सामरा।—विद्यापति।

सामराधिप—पुं० [सं० ष० त०] सेनापति।

सामरिक—वि० [सं० समर+ठक्–इक] [भाव० सामरिकता]समर संबंधी। युद्ध का। जैसे—सामरिक सज्जा।

सामरिकता—स्त्री० [सं० सामरिक+तल्-टाप्] १. सामरिक होने की अवस्था, गुण या भाव। (मिलिटरिज़्म) २. युद्ध। लड़ाई। समर।

सामरिकवाद—पुं० [सं० कर्म० स०] यह मत या सिद्धान्त कि राष्ट्र को सदा सैनिक दृष्टि से सशक्त रहना चाहिए; और अपने हितों की रक्षा युद्ध या समर की सहायता से करनी चाहिए। (मिलिटरिज़्म)

सामरेय—वि० [सं० समर+ढक्-एय] समर-संबंधी। सामरिक।

सामर्थ—पुं० दे० 'सामर्थ्य'।

सामर्थी—वि० [सं० सामर्थ्य+ई (प्रत्य०)] १. सामर्थ्य रखनेवाला। जिसमें सामर्थ्य हो। २. कोई कार्य करने में समर्थ। ३. ताकतवर। बलवान्।

सामर्थ्य—पुं० [सं०] १. समर्थ होने की अवस्था या भाव। २. कोई कार्य संपादित करने की योग्यता और शक्ति। (कैपेसिटी) ३. साहित्य में, शब्द की व्यंजना शक्ति। शब्द की वह शक्ति जिससे वह भाव प्रकट करता है। ४. व्याकरण में, शब्दों का पारस्परिक सम्बन्ध। (मूल से स्त्री० में प्रयुक्त)

सामल†—वि०=श्यामल।

सामवायिक—वि० [सं० समवाय+ठञ्–इक] १. समवाय-संबंधी। २. समूह-सम्बन्धी।

पुं० मंत्री।

सामवायिक राज्य—पुं० [सं० समवाय+ठक्-इक राज्य, कर्म० स०] प्राचीन भारतीय राजनीति में, वे राज्य जो किसी युद्ध के निमित्त मिलकर एक हो जाते थे।

सामविद्—पुं० [सं० साम√विद् (जानना)+क्विप्] वह जो सामवेद का अच्छा ज्ञाता हो।

साम-विप्र—पुं०[सं०] वह ब्राह्मण जो अपने सब कर्म सामवेद के विधानानुसार करता हो।

साम-वेद—पुं० [सं० सामन्-मध्य० स०] भारतीय आर्यों के चार वेदों में से प्रसिद्ध तीसरा वेद, जिसमें साम (देखें) नामक वेद मंत्रों का संग्रह है।

सामवेदिक, सामवेदीय—वि० [सं०] सामवेद-संबंधी।

पुं० सामवेद का अनुयायी ब्राह्मण।

साम-सर—पुं० [सं० श्यान+शर ?] एक प्रकार का गन्ना जो डुमराँव (बिहार) में होता है।

साम-साली*—पुं० [सं० साम+शाली] राजनीति के साम, दाम, दंड और भेद नामक अंगों को जाननेवाला राजनीतिज्ञ।

सामस्त्य—पुं० [सं० समस्त+ष्यञ्] =समस्तता।

सामहिं*—अव्य० [सं० सम्मुख] सामने। सम्मुख। समक्ष।

सामाँ—पुं० १.=सामान। २.=साँवा।

†स्त्री०=श्यामा।

सामाजिक—वि० [सं० समाज+ठक्-इक] १. प्राचीन भारत में 'सभा' नामक संस्था से संबंध रखनेवाला। २. आज-कल समाज विशेष जन-समाज से संबंध रखनेवाला। समाज का। जैसे—सामाजिक व्यवहार, सामाजिक सुधार। ३. सामाजिक संबंधों के फलस्वरूप होनेवाला। जैसे—सामाजिक रोग।

पुं० १. प्राचीन भारत में, वह जो 'सभा' नामक संस्था का सदस्य होता था। २. वह जो जीविका निर्वाह या धनोपार्जन के लिए समाज (या समज्या अर्थात् तरह-तरह के खेल-तमाशों की व्यवस्था करता था। ३. वे लोग जो उक्त प्रकार के खेल-तमाशे देखने के लिए एकत्र होते थे। ४. साहित्यिक क्षेत्र में, वह जो काव्य, संगीत आदि का अच्छा मर्मज्ञ हो। रसिक। सहृदय।

सामाजिकता—स्त्री० [सं० सामाजिक+तल्–टाप्] १. सामाजिक होने की अवस्था या भाव। लौकिकता। २. मनुष्य में समाजशील बनने की होनेवाली वृत्ति।

सामान—पुं० [फा०] १. किसी कार्य के लिए साधन स्वरूप आवश्यक और उपयुक्त वस्तुएँ। उपकरण। सामग्री। जैसे—लड़ाई का सामान, सफर का सामान। २. घर-गृहस्थी की उपयोगिता की चीजें। असबाब। जैसे—चोर घर का सारा सामान उठा ले गये। ३. उपकरण। औजार। जैसे—बढ़ई या लोहार का सामान।

विशेष—'सामग्री' की तरह सदा एक वचन में प्रयुक्त।

४. इन्तजाम। प्रबन्ध। व्यवस्था।

सामानिक—वि० [सं० समान+ठञ्-इक] पद, योग्यता आदि के विचार से किसी के समान।

सामान्य—वि० [सं०] [भाव० सामान्यता] १. जिसमें कोई विशेषता न हो। मामूली। २. सब या बहुतों से संबंध रखनेवाला। ३. प्रायः सभी व्यक्तियों, अवसरों, अवस्थाओं आदि में पाया जानेवाला या उनसे संबंध रखनेवाला। सार्वजनिक। आम। (जनरल, उक्त दोनों अर्थों के लिए) ४. जो अपनी संगत या साधारण अवस्था, स्थिति आदि में ही हो; विशेष घटा-बढ़ा या इधर-उधर हटा हुआ न हो। प्रसम। (नार्मल)

पुं० १. समान होने की अवस्था, गुण या भाव। समानता। बराबरी। २. वैशेषिक दर्शन में, वह गुण या धर्म जो किसी जाति के सब प्राणियों या किसी प्रकार की सब वस्तुओं में समान रूप से पाया जाता हो। जाति-साधर्म्य। जैसे—मनुष्यों में मनुष्यत्व सामान्य और पशुओं में पशुत्व।

विशेष—वैशेषिक में यह ६ पदार्थों में से एक माना गया है और इसी को 'जाति' भी कहा गया है।

३. एक प्रकार का लोक-न्याय मूलक अलंकार जिसमें उपमान और उपमेय अथवा प्रस्तुत और अप्रस्तुत का स्वरूप पृथक् होने पर भी दोनों में गुणों, धर्मों आदि के बिलकुल समान या एक से होने का उल्लेख रहता है। जैसे—यह कहना कि चाँदनी रात में अटारी पर खड़ी हुई नायिका और चंद्रमा में इतनी समानता है कि यह पता नहीं चलता कि मुख कौन है और चंद्रमा कौन। ४. दे० 'मध्यक'।

सामान्य छल—पुं० [सं० मध्यम० स०] न्याय शास्त्र में, एक प्रकार का छल, जिसमें संभावित अर्थ के स्थान में जाति-सामान्य अर्थ के योग से असंभूत अर्थ की कल्पना की जाती है।

सामान्यतः—अव्य० [सं० सामान्य+तासिल्] सामान्य रूप से। सामान्यतया। (नार्मेली)

सामान्यतया—अव्य० [सं० सामान्य+तल्–टाप्-टा] सामान्य रूप से। मामूली तौर से। सामान्यतः।

सामान्यता—स्त्री० [सं०] १, सामान्य या मामूली होने की अवस्था या भाव। २. वह गुण, तत्त्व या बात जो सामान्य हो। ३. सामान्य होने या सब जगह सामान्य रूप से होने या पाये जाने की अवस्था या भाव। (जनरैलिटी)

सामान्यतोदृष्ट—पुं० [सं० सामान्यतस्√दृश् (देखना)+क्त] १. तर्क और न्याय शास्त्र में, अनुमान-संबंधी एक प्रकार का दोष या भूल, जो उस समय मानी जाती है जब किसी ऐसे पदार्थ के आधार पर अनुमान किया जाता है जो न तो कार्य हो और न कारण। जैसे—आम को बौरते देखकर कोई यह अनुमान करे कि अन्य वृक्ष भी बौरने लगे होंगे। २. दो वस्तुओं या बातों में ऐसा साम्य, जो कार्य-कारण संबंध से भिन्न हो। जैसे—बिना चले कोई दूसरे स्थान पर नहीं पहुँच सकता। इसी से यह भी समझ लिया जाता है कि यदि किसी को कहीं पहुँचना हो तो उसे किसी प्रकार चलने में प्रवृत्त करना पड़ेगा।

सामान्य-निबंधना—स्त्री० [सं०] साहित्य में, अप्रस्तुत प्रशंसा नामक अलंकार का एक भेद जिसमें प्रस्तुत के लिए किसी अप्रस्तुत सामान्य का कथन होता है।

सामान्य बुद्धि—स्त्री० [सं०] प्रायः सब प्रकार के जीवों में पाई जानेवाली वह सामान्य या सहज बुद्धि जिससे वे साधारण बातें बिना किसी प्रयत्न के या आप से आप समझ लेते हैं। (कॉमन सेन्स)

सामान्य भविष्यत्—पुं० [सं० मध्यम० स०] व्याकरण में, भविष्यत् काल का एक भेद, जिससे यह ज्ञात होता है कि अमुक बात आगे चलकर होगी अथवा आगे चलकर अमुक व्यक्ति कोई क्रिया करेगा। धातु में 'एगा' 'ऊँगा' लगाकर इस काल के क्रिया-पद बनाये जाते हैं। जैसे—जाएगा, खाएगा, हँसेगा, खेलूँगा। इनमें उद्देश्य के लिंग-वचन के अनुसार परिवर्तन होता है।

सामान्य भूत—पुं० [सं० मध्यम० स०] व्याकरण में, भूतकालिक क्रिया का एक भेद, जिसमें किसी बीती हुई घटना का उल्लेख मात्र होता है। धातु में 'आ' या 'या' प्रत्यय जोड़कर सामान्य भूत काल का क्रिया-पद बनाते हैं। जैसे—उठा, हँसा, नाचा, आया, लाया, नहाया आदि।

सामान्य लक्षण—पुं० [सं०] तर्क में, एक ही जाति या प्रकार के सब जीवों या पदार्थों में समान रूप से पाया जानेवाला वह लक्षण या वे लक्षण जिनके आधार पर उस जाति या प्रकार के सब जीवों या पदार्थों की पहचान होती है। जैसे—क़िसी घोड़े के सामान्य लक्षण की सहायता से ही शेष सब घोड़ों की पहचान होती है

सामान्य वर्तमान—पुं० [सं० मध्यम० स०] व्याकरण में, वर्तमान काल का एक भेद जिससे किसी कार्य के प्राकृतिक रूप से घटित होते रहने या तत्क्षण घटित होने का पता चलता है। धातु में ता है, ता हूँ आदि प्रत्यय लगाये जाते हैं। जैसे—आता है, जाता है, सोता है, हँसता

हूँ आदि ।

सामान्य विधि—स्त्री० [सं०] १. कोई साधारण विधि या आज्ञा । जैसे—बुरे काम मत करो । २. किसी देश या राष्ट्र में प्रचलित विधि-प्रविधियों का वह सामूहिक मान जिसके अनुसार उस देश या राष्ट्र के निवासियों का आचरण या व्यवहार परिचालित होता है । (कॉमन लॉ)

सामान्य विभाजक—पुं० [सं०] गणित में, समापवर्तक राशि । (दे० 'समापवर्तक')

सामान्या—स्त्री० [सं० सामान्य-टाप्] १. ऐसी स्त्री जो सर्व-साधारण के लिए उपलब्ध या सुलभ हो । २. साहित्य में वह नायिका जो धन कमाने के उद्देश्य से पर-पुरुष से प्रेम करने का ढोंग करती है ।

सामान्यीकरण—पुं०=साधारणीकरण । (प्राचीन भारतीय साहित्य का)

सामायिक—वि० [सं०] माया से युक्त । माया सहित ।

पुं० जैनों के अनुसार एक प्रकार का व्रत या आचरण जिसमें सब जीवों पर सम भाव रखकर एकांत में बैठकर आत्म-चिंतन किया जाता है ।

सामाश्रय—पुं० [सं० ब० स०-अण्] प्राचीन भारतीय वास्तु में, ऐसा भवन या प्रासाद जिसके पश्चिम ओर वीथिका या सड़क हो ।

सामासिक—वि० [सं० समास+ठक्-इक] १. समास से संबंध रखनेवाला । समास का । २. समास के रूप में होनेवाला । ३. लघु या संक्षिप्त किया हुआ ।

सामिक—पुं० [सं० सामि+कन्] १. यज्ञों में, बलि पशु को अभिमंत्रित करनेवाला व्यक्ति । २. पेड़ । वृक्ष ।

सामिग्री†—स्त्री०=सामग्री ।

सामित्य—वि० [सं० समिति+घञ्] समिति सम्बन्धी । समिति का ।

पुं० समिति का गुण, धर्म या भाव ।

सामिधेन—वि० [सं० सम्√इन्ध् (प्रदीप्त करना)+ल्युट्-अन] समिधा या यज्ञ की अग्नि से सम्बन्ध रखनेवाला ।

सामिधेनी—स्त्री० [सं० सामिधेन-ङीष्] १. एक प्रकार का ऋक मंत्र जिसका पाठ होम की अग्नि प्रज्वलित करने के समय किया जाता है । २. ईंधन । ३. कोई ऐसी चीज या बात जो किसी प्रकार का ताप या तेज उत्पन्न करती हो । उग्र, तीव्र या प्रबल करनेवाली चीज या बात ।

सामिधेन्य—पुं० [सं० सामिधेनी+यत्]=सामिधेनी ।

सामियाना†—पुं० =शामियाना ।

सामिल†—वि०=शामिल ।

सामिष—वि० [सं० तृ० त०] १. मांस से युक्त । २. गोश्त सहित । जैसे—सामिष भोजन ।

सामिष श्राद्ध—पुं० [सं० कर्म० स०] पितरों आदि के उद्देश्य से किया जानेवाला वह श्राद्ध जिसमें मांस, मत्स्य आदि का भी व्यवहार होता था । जैसे—मांसाष्टका आदि सामिष श्राद्ध हैं ।

सामी—पुं० [हिं० साम (देश०)] पुरातत्त्व के अनुसार प्राचीन साम (देखें) नामक भू-भाग के निवासी जिनके अंतर्गत अरब, इब्रानी, एसीरिया (या असुरिया) और फिनीशिया तथा बैबिलोन के लोग आते हैं ।

स्त्री० उक्त प्रदेश की प्राचीन भाषा जिसकी शाखाएँ आज-कल की अरबी, इब्रानी फिनिशिया और बैबिलोन आदि की भाषाएँ हैं ।

†स्त्री०=शामी (छड़ी, डंडें आदि की) ।

†पुं०=स्वामी ।

सामीची—स्त्री० [सं०] १. वंदना । प्रार्थना । स्तुति । २. नम्रता । ३. शिष्टता ।

सामीचीन्य—पुं० [सं० समीचीनी+ष्यञ्]=समीचीनता ।

सामीप्य—पुं० [सं० समीप+ष्यञ्] १. समीपता । २. मुक्ति की चार अवस्थाओं में से एक, जिसमें मुक्तात्मा ईश्वर के समीप होती है ।

सामीर—पुं० [सं०]=समीर (पवन) ।

सामीर्य—वि० [सं०] समीर-संबंधी । समीर का । हवा का ।

सामुझि†—स्त्री०=समझ ।

सामुदायिक—वि० [सं० समुदाय+ठक्-इक] १. समुदाय-संबंधी । समुदाय का । २. समुदाय के प्रयत्न से होनेवाला ।

पुं० बालक के जन्म के समय के नक्षत्र से आगे के अठारह नक्षत्र जो फलित ज्योतिष के अनुसार अशुभ माने जाते हैं और जिनमें किसी प्रकार का शुभ कर्म करने का निषेध है ।

सामुद्र—वि० [सं०] १. समुद्र-संबंधी । समुद्र का । २. समुद्र से निकला हुआ । समुद्र से उत्पन्न ।

पुं० १. समुद्र के पानी से तैयार किया हुआ नमक । समुद्री नमक । २. समुंदर फेन । ३. समुद्र के द्वारा दूर-दूर के देशों में जाकर व्यापार करनेवाला व्यापारी । ३. शरीर में होनेवाले ऐसे चिह्न या लक्षण जिन्हें देखकर शुभाशुभ फलों का विचार किया जाता है । दे० 'सामुद्रिक' । ४. नारियल ।

सामुद्रक—वि० [सं० सामुद्र+कन] समुद्र संबंधी । समुद्र का ।

पुं० १. समुद्र के जल से बनाया हुआ नमक । समुद्री नमक । २. दे० 'सामुद्रिक' ।

सामुद्र-स्थलक—पुं० [सं० कर्म० स०] समुद्र की तह का विस्तार ।

सामुद्रिक—वि० [सं० समुद्र+ठक्–इक] समुद्र से संबंध रखनेवाला । समुद्र या सागर-संबंधी । समुंदरी ।

पुं० १. फलित ज्योतिष का वह अंग या शाखा जिसमें इस बात का विचार होता है कि मनुष्य की हस्तरेखाओं तथा शरीर पर के अनेक प्रकार के चिह्नों या लक्षणों के क्या-क्या शुभ और अशुभ फल होते हैं । २. उस शास्त्र का ज्ञाता या पंडित । ३. दे० 'आकृति-विज्ञान' ।

सामुहाँ*—अव्य० [सं० सम्मुख] सामने । सम्मुख ।

वि० सामने का ।

†पुं०=सामना ।

सामुहिक—वि० [सं० समूह+ठक्-इक]=सामूहिक ।

सामुहें*—अव्य० [सं० सम्मुख] सामने । सम्मुख ।

सामूहिक—वि० [सं०] [भाव० सामूहिकता] १. समूह या बहुत से लोगों से संबंध रखनेवाला । 'वैयक्तिक' का विपर्याय । २. समूह द्वारा होनेवाला । (कलेक्टिव) जैसे—सामूहिक खेती ।

सामृद्ध्य—पुं० [सं० समृद्धि+ष्यञ्] समृद्ध होने की अवस्था, गुण या भाव ।

सामोद—वि० [सं० तृ० त०] १. आमोद या आनंद से युक्त । प्रसन्न । २. सुगंधित ।

सामोद्भव—पुं० [सं० ब० स०] हाथी ।

सामोपनिषद्—स्त्री० [सं० मध्यम० अ०] एक उपनिषद् का नाम ।

साम्नी—स्त्री० [सं०] १. पशुओं को बाँधने की रस्सी। २. कुछ विशिष्ट प्रकार के वैदिक छन्दों का एक वर्ग। जैसे—साम्नी अनुष्टुप, साम्नी गायत्री, साम्नी जगती, साम्नी बृहती आदि ।

साम्मत्य—पुं० [सं० सम्मति+ष्यञ्] सम्मति का गुण, धर्म या भाव ।

साम्मुखी—स्त्री० [सं० सम्मुख+अण्–ङीष्] गणित ज्योतिष में, ऐसी तिथि जो सायंकाल तक रहती हो।

साम्मुख्य—पुं० [सं० सम्मुख+ष्यञ्] सम्मुख होने की अवस्था या भाव। सामना ।

साम्य—पुं० [सं०] समान होने का भाव । समानता । जैसे—इन दोनों पुस्तकों में बहुत कुछ साम्य है ।

साम्यता—स्त्री०=साम्य ।

साम्यवाद—पुं० [सं० साम्य+√वद् (कहना)+घञ्] मार्क्स द्वारा प्रतिष्ठित तथा लेनिन द्वारा संबंधित वह विचारधारा जो व्यक्ति के बदले सार्वजनिक उत्पादन, प्रबंध और उपयोग के सिद्धान्त पर समाज-व्यवस्था स्थिर करना चाहती है और इसकी सिद्धि के लिए हर संभव उपाय से शोषित वर्ग को सशक्त करना चाहती है। (कम्युनिज्म)

साम्या—स्त्री० [सं०] साधारण न्याय के अनुसार सब लोगों के साथ निष्पक्ष और समान भाव से किया जानेवाला व्यवहार। समदर्शितापूर्ण व्यवहार । (इक्विटी)

साम्यामूलक—वि० [सं० साम्या+मूलक] जिसमें साम्या या समदर्शिता का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया हो । साम्यिक । (ईक्विटेबुल)

साम्यावस्था—स्त्री० [सं०] १. दार्शनिक क्षेत्र में, वह अवस्था जिसमें सत्त्व, रज और तम तीनों गुण बराबर हों; उनमें किसी प्रकार का विकार या वैषम्य न हो। प्रकृति। २. आज-कल लौकिक क्षेत्र में, वह अवस्था या स्थिति जिसमें परस्पर विरोधी शक्तियाँ इतनी तुली हों कि एक दूसरी पर अपना अनिष्ट प्रभाव डालकर कोई गड़बड़ी उत्पन्न न कर सकें। (ईक्विलिब्रियम)

साम्यिक—वि० [सं०]=साम्या-मूलक ।

साम्राज्य—पुं० [सं०] १. वे अनेक राष्ट्र या देश जिन पर कोई एक शासन-सत्ता राज करती हो। सार्वभौम राज्य। सलतनत । २. किसी कार्य या क्षेत्र में होनेवाला किसी का पूर्ण आधिपत्य।

साम्राज्य-लक्ष्मी—स्त्री० [सं०] १. साम्राज्य का वैभव । २. तंत्र के अनुसार एक देवी जो साम्राज्य की अधिष्ठात्री मानी गई है।

साम्राज्यवाद—पुं० [सं०] [वि० साम्राज्यवादी] वह वाद या सिद्धान्त जिसमें यह माना जाता है कि किसी देश को अपने अधिकृत क्षेत्रों में वृद्धि करते हुए अपने साम्राज्य का बराबर विस्तार करते रहना चाहिए। (इम्पीरियलिज्म)

साम्राज्यवादी—वि० [सं०] साम्राज्यवाद-संबंधी ।

पुं० वह जो साम्राज्यवाद के सिद्धांतों का अनुयायी तथा समर्थक हो। (इम्पिरियलिस्ट)

साम्हना†—पुं०=सामना ।

साम्हने†—अव्य०=सामने ।

साम्हर†—पुं०=साँभर ।

साम्हा†—अव्य०=सामने । उदा०—घर गिरि पुर साम्हा धावंति। —प्रिथीराज ।

पुं०=सामना । (राज०)

सायं—वि० [सं०] संध्या-संबंधी । सायंकालीन । संध्याकालीन ।

अव्य० सन्ध्या के समय । शाम को ।

पुं० १. संध्या का समय । शाम । २. तीर । बाण ।

सायंकाल—पुं० [सं०] [वि० सायंकालीन] दिन का अंतिम भाग । दिन और रात के बीच का समय । संध्या । शाम ।

सायंकालीन—वि० [सं०] संध्या के समय का । शाम का ।

सायं-गृह—वि० [सं०] जो सन्ध्या समय जहाँ पहुँचता हो, वहीं अपना डेरा जमा लेता है ।

सायंतन—वि० [सं०] सायंकालीन । संध्या-संबंधी । संध्या का ।

सायं-भव—वि० [सं० सायं√भू (होना)+अच्] १. संध्या का। शाम का । २. संध्या के समय उत्पन्न होनेवाला ।

सायं-संध्या—स्त्री० [सं०] १. संध्या नाम की वह उपासना जो सायंकाल में की जाती है। २. सरस्वती देवी जिसकी उपासना संध्या समय की जाती है ।

सायंस—स्त्री० [अं० साइन्स] १. विज्ञान। शास्त्र । २. भौतिक विज्ञान। ३. रसायन विज्ञान।

साय—पुं० [सं०√सो (नष्ट करना)+घञ्] १. संध्या का समय । शाम । २. तीर । बाण ।

सायक—पुं० [सं०] १. बाण। तीर । शर। २. कामदेव के पाँच बाणों के आधार पर पाँच की संख्या का वाचक शब्द । ३. खड्ग । ४. भद्रमुंज। रामसर। ५. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक पाद में सगण, भगण, तगण, एक लघु और एक गुरु होता है। (।।ऽ, ऽ।। ऽऽ।, ।ऽ)

सायण—पुं० [सं०√सो (नष्ट करना)+ल्युट्—अन] एक प्रसिद्ध आचार्य जिन्होंने चारों वेदों के विस्तृत और प्रसिद्ध भाष्य लिखे हैं।

सायणीय—वि० [सं० सायण+छ-ईय] सायण-संबंधी। सायण का ।

सायत—स्त्री०=साइत ।

†अव्य०=शायद ।

सायन—वि० [सं० स+अयन] १. जो अयन से युक्त हो। २. (ज्योतिष में कालगणना) जो अयन अर्थात् राशिचक्र की गति पर अवलंबित या आश्रित हो।

पुं० १. किसी ग्रह का वह देशांतर जो वसंत-संपात के आधार पर स्थिर किया जाता है। २. भारतीय ज्योतिष में, काल की गणना करने और पंचांग बनाने की वह पद्धति या विधि (निरयण से भिन्न) जो अयन अर्थात् राशिचक्र की गति पर अवलंबित या आश्रित होती है। (विशेष विवरण के लिए दे० 'निरयण'।)

सायब†—पुं० [फा० साहब] पति। स्वामी। (डिं०)

सायबान—पुं० [फा० सायः बान] मकान या कमरे के आगे बनाई जानेवाली टीन आदि की छाजन ।

सायबी†—स्त्री०=साहबी ।

सायमाहुति—स्त्री० [सं०] संध्या के समय दी जानेवाली आहुति ।

सायर—पुं० [अ०] १. ऐसी भूमि जिसकी आय पर कर न लगता हो। २. ब्रिटिश शासन में जमींदारों की आमदनी की वे मदें जिन पर उन्हें कोई

कर नहीं देना पड़ता था। जैसे—जंगल, ताल, नदी, बाग आदि से होनेवाली आय की मदें। ३. चुंगी, महसूल या ऐसा ही और कोई कर। ४. फुटकर खरचों की मदें। मुतफर्रकात।

पुं० [देश०] १. हेंगा। २. पशुओं के रक्षक एक देवता। ३. किसी बीज का ऊपरी भाग।

*पुं०=सागर।

सायल—वि० [अ०] १. सवाल या प्रश्न करनेवाला। प्रश्नकर्ता। २. सवाल अर्थात् याचना करनेवाला। माँगनेवाला।

पुं० १. वह जिसने न्यायालय में किसी विवाद के निर्णय के लिए प्रार्थना-पत्र दिया हो। प्रार्थी। २. वह जो कोई नौकरी या सुभीता माँगता हो। ३. भिखमंगा। भिखारी।

पुं० [देश०] एक प्रकार का धान जो असम देश में होता है।

साया—पुं० [सं० छाया से फा० सायः] १. छाया। छाँह। २. परछाँई।
मुहा०—**(किसी के) साये से भागना**=बहुत अलग या दूर रहना। बहुत बचना।

३. जिन, भूत, प्रेत, परी आदि जिनके संबंध में माना जाता है कि ये छाया के रूप में होते हैं और उस छाया से युक्त होने पर लोग रोगी, विक्षिप्त आदि हो जाते हैं।

मुहा०—**साये में आना**=भूत-प्रेत आदि के प्रभाव से आविष्ट होकर रोगी या विक्षिप्त होना। प्रेत-बाधा से युक्त होना।

४. ऐसा संपर्क या संबंध जो किसी को अपने अधीन करता अथवा उसे अपने गुण, प्रभाव आदि से युक्त करता हो।

मुहा०—**(किसी पर अपना) साया डालना**=(क) किसी को अपने प्रभाव से युक्त करना। **(किसी पर किसी का) साया पड़ना**=संगति आदि के कारण अथवा यों ही किसी के गुण, प्रभाव आदि से युक्त होना।

पुं० [अं० शेमीज] १. घाघरे की तरह का एक प्रकार का पहनावा जो प्रायः पाश्चात्य देशों की स्त्रियाँ पहनती हैं। २. एक प्रकार का छोटा लहँगा जिसे स्त्रियाँ प्रायः महीन साड़ियों के नीचे पहनती हैं। अस्तर।

सायाबंदी—स्त्री० [फा० सायःबंदी] विवाह के लिए मंडप बनाने की क्रिया। (मुसलमान)

सायाम—वि० [सं० स+आयाम] लंबा-चौड़ा। विस्तृत।

सायास—अव्य० [सं० स+आयास] आयास अर्थात् परिश्रम या प्रयत्नपूर्वक।

सायाह्न—पुं० [सं० ष० त०] दिन का अंतिम भाग। संध्या का समय। शाम।

सायुज्य—पुं० [सं०] १. किसी में मिलकर उसके साथ एक होने की अवस्था या भाव। इस प्रकार पूरी तरह से मिलना कि दोनों में कोई अंतर या भेद न रह जाय। पूर्ण मिलन। २. पाँच प्रकार की मुक्तियों में से एक प्रकार की मुक्ति जिसके संबंध में यह माना जाता है कि जीवात्मा जाकर परमात्मा के साथ मिल गयी और उसमें लीन हो गयी। ३. विज्ञान में, दो पदार्थों का गलकर और किसी रासायनिक प्रक्रिया से मिलकर एक हो जाना। समेकन। (फ़्यूजन)

सायुज्यता—स्त्री० [सं० सायुज्य+तल्-टाप्] सायुज्य का गुण, धर्म या भाव। सायुज्यत्व।

सायुज्यत्व—पुं० [सं० सायुज्य+त्व] =सायुज्यता।

सायुध—वि० [सं० स+आयुध] आयुध या शस्त्रों से युक्त। जिसके पास हथियार हों। स-शस्त्र। (आर्म्ड) जैसे—सायुध रक्षा-दल।

सारंग—वि० [सं०] [स्त्री० सारंगी] १. रँगा हुआ या रंगदार। रंगीन। २. सुंदर। सुहावना। ३. रसीला। सरस।

पुं० १. चितकबरा रंग। २. कांति। चमक। दीप्ति। ३. छटा। शोभा। ४. दीपक। दीआ। ५. ईश्वर। ६. सूर्य। ७. चंद्रमा। ८. शिव। ९. श्रीकृष्ण। १०. कामदेव। ११. आकाश। १२. आकाश के ग्रह, तारे और नक्षत्र। १३. बादल। मेघ। १४. बिजली। विद्युत्। १५. समुद्र। १६. सागर। १७. तालाब। १८ सर। १९. जल। पानी। २०. शंख। २१. मोती। २२. कमल। २३. जमीन। भूमि। २४. चिड़िया। पक्षी। २५. हंस २६. मोर। २७. चातक। पपीहा। २८. कबूतर। २९. कोयल। ३०. सोन-चिड़ी। खंजन। ३१. बाज। श्येन। ३२. कौआ। ३३. शेर। सिंह। ३४. हाथी। ३५. घोड़ा। ३६. हिरन। ३७. साँप। ३८. मेंढक। ३९. सोना। स्वर्ण। ४० आभूषण। गहना। ४१. दिन। ४२. रात। ४३. खड्ग। तलवार। ४४. तीर। बाण। ४५. हिरन। ४६. बारहसिंगा। ४७. चीतल। ४८. भौंरा। भ्रमर। ४९. एक प्रकार की मधुमक्खी। ५०. सुंगधित पदार्थ। ५१. कपूर। ५२. चंदन। ५३. कर। हाथ। ५४. कुच। स्तन। ५५. सिर के बाल। केश। ५६. हल। ५७. पुष्प। फूल। ५८. कपड़ा। ५९. छाता। ६०. काजल। ६१. एक प्रकार का छंद जिसमें चार तगण होते हैं। इसे मैनावली भी कहते हैं। ६२. छप्पय छंद के २६ वें भेद का नाम। ६३. संपूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं। ६४. सारंगी नाम का बाजा।

स्त्री० नारी। स्त्री।

पुं० [सं० शार्ँग] १. कमान। धनुष। २. विष्णु का धनुष।

सारंग-नट—पुं० [सं० ब० स०] संगीत में, सारंग और नट के योग से बना हुआ एक संकर राग।

सारंगनाथ—पुं० [सं० सार्ंगनाथ] काशी के समीप स्थित एक स्थान जो अब सारनाथ कहलाता है।

सारंगपाणि—पुं० [सं० शार्ंगपाणि] सारंग नामक धनुष धारण करनेवाले, विष्णु।

सारंग-भ्रमरी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सारंग-लोचन—वि० [सं०] [स्त्री० सारंग-लोचना] जिसकी आँखें हिरन की आँखों के समान सुंदर हों।

सारंगा—स्त्री० [सं० सारंग] १. एक प्रकार की छोटी नाव जो एक ही लकड़ी की बनती है। २. एक प्रकार की बहुत बड़ी नाव जिस पर हजारों मन माल लादा जा सकता है। ३. संगीत में, एक प्रकार की रागिनी।

†पुं० [हिं० सारंगी] साधारण से बड़ी सारंगी। (व्यंग्य)

सारंगिक—पुं० [सं० सारंग+ठक्-इक] १. चिड़ीमार। बहेलिया। २. एक प्रकार का छन्द या वृत्त।

सारंगिका—स्त्री०=सारंगी।

सारंगिया--पुं० [हिं० सारंगी+आ (प्रत्य०)] सारंगी बजानेवाला कलाकार।

सारंगी--स्त्री० [सं० सारंग] एक प्रकार का बहुत प्रसिद्ध बाजा जिसमें लगे हुए तार कमानी से रेत कर बजाये जाते हैं।

सारंभ--पुं० [सं० तृ० त०] १. क्रोधपूर्ण बात-चीत। २. गरमा-गरम बहस।

सार--वि० [सं०] [भाव० सारता] १. जो मूल तत्त्व के रूप में हो। २. उत्तम। बढ़िया। श्रेष्ठ। जैसे--सार धान्य। ३. असली। वास्तविक। ४. सब प्रकार की त्रुटियों, दोषों आदि से रहित। ५. पक्का। मजबूत। ६. न्यायसंगत।

पुं० १. किसी पदार्थ का वह मुख्य और मूल अंश या भाग जो उसमें प्राकृतिक रूप से वर्तमान रहता है और जो उसके गुण, रूप, विशेषता आदि का आधार होता है। तत्त्व। सत्त। जैसे--इस चीज या बात में कुछ भी सार नहीं है। २. किसी चीज में से निकाला हुआ उसका ऐसा उक्त अंश या भाग जिसमें उस चीज की यथेष्ट गंध, गुण या स्वाद वर्तमान हो। किसी चीज का निकाला हुआ अरक, रस या ऐसी ही और कोई चीज। (एसेन्स, उक्त दोनों अर्थों के लिए) जैसे--इत्र या तेल में फूलों का सार रहता है। ३. किसी चीज के अंदर रहनेवाला वह तत्त्व जिससे उस चीज का पोषण और वर्धन होता है। गूदा। मग्ज। (मैरो) ४. चरक के अनुसार शरीर के अंतर्गत आठ स्थिर पदार्थ जिनके नाम इस प्रकार से हैं--त्वक्, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा, शुक्र और सत्व (मन)। ५. कही या लिखी हुई बातों, विवरणों आदि का वह संक्षिप्त रूप जिसमें दिग्दर्शन के लिए उनकी सभी मुख्य बातों का समावेश हो। तात्पर्य या निष्कर्ष। सारांश। (ऐबस्ट्रैक्ट) जैसे--इस पुस्तक में दर्शन (या व्याकरण) का सार दिया गया है। ६. साहित्य में, एक अलंकार जिसमें एक बात कहकर उत्तरोत्तर उसके उत्कर्ष-सूचक सार के रूप में दूसरी अनेक बातों का उल्लेख होता है। (क्लाइमेक्स) जैसे--सब प्राणियों में मनुष्य श्रेष्ठ है और सब मनुष्यों में उदार, धर्मात्मा और सज्जन श्रेष्ठ है। ७. पिंगल में, एक प्रकार का मातृक सम छंद जिसके प्रत्येक चरण में २८ मात्राएँ होती हैं। अंत में दो गुरु होते हैं; तथा १७ मात्राओं पर यति होती है। ८. पिंगल में, एक प्रकार का वर्णिक समवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक गुरु और एक लघु होता है। जैसे--राम। नाम। सत्य। धाम। ९. आध्यात्मिक साधकों की परिभाषा में, भाषा या वाणी के चार भेदों में से एक जो भ्रम दूर करनेवाली और बहुत ही सुबोध तथा स्पष्ट होती है। १०. बल। शक्ति। ११. धन। दौलत। १२. काढ़ा। क्वाथ। १३. परिणाम। फल। १४. जल। पानी। १५. दही, दूध आदि में से निकाला हुआ मक्खन या मलाई। १६. लोहा। १७. लोहे आदि का बना हुआ औजार या हथियार। १८. तलवार। १९. वैद्यक में, रासायनिक क्रिया से फूँका हुआ लोहा। वंग। २०. चौसर, शतरंज आदि खेलने की गोट। २१. जुआ खेलने का पासा। २२. अमृत। २३. अस्थि। हड्डी। २४. आम, इमली आदि का पना। पन्ना। २५. वायु। हवा। २६. बीमारी। रोग। २७. खेती-बारी की जमीन। २८. खेतों में दी जानेवाली खाद। २९. चिरौंजी का पेड़। पियाल। ३०. अनार का पेड़। ३१. नील का पौधा। ३२. मूँग।

†पुं० [सं० शल्य, हिं०, 'साल' का पुराना रूप] १. बरछी, भाला या इसी प्रकार का और कोई नुकीला औज़ार या हथियार। २. काँटा। ३. मन में खटकती रहनेवाली कोई बात। उदा०--मोइ दुसार कियौ हियौ तन द्युति भेदै सार।--बिहारी।

†स्त्री० [हिं० सारना] १. सारने की क्रिया, ढंग या भाव। २. पालन-पोषण। ३. देख-रेख। ४. एक प्रकार के गीत जो शिशु की छठी के दिन उसे नहलाने-धुलाने के समय गाये जाते हैं। ५. खाट। पलंग।

†पुं० [सं० शाला] गौएँ, भैंसें आदि बाँधने की जगह।

†पुं० [सं० शस्य] खेतों की उपज या पैदावार। फसल। उदा०--चूल्ही कै पीछे उपजै सार।--घाघ।

†पुं० [सं० घनसार] कपूर।

†पुं० [सं० सारिका] मैना। पक्षी।

†पुं० १. =साल। २. =साला (पत्नी का भाई)।

†स्त्री०=साल।

सारक--वि० [सं० सार+कन्] १. सारण करने या निकालनेवाला। २. दस्तावर। विरेचक।

†पुं० जमालगोटा।

सार-खदिर--पुं० [सं० ब० स०] दुर्गंध खदिर। बबुरी।

सारखा*--वि०=सरीखा।

सार-गंध--पुं० [सं० ब० स०] चंदन।

सार-गर्भित--वि० [सं०] १. जिसमें सार या तत्त्व भरा हो। तत्त्वपूर्ण। २. महत्त्वपूर्ण तथा मूल्यवान तथ्यों, युक्तियों आदि से युक्त। जैसे--सार-गर्भित भाषण।

सार-ग्राही--वि० [सं०] [भाव० सरग्राहिता] वस्तुओं या विषयों का तत्त्व या सार ग्रहण करनेवाला।

सारघ--पुं० [सं० सरघा+अण्] मधु या शहद जो मधुमक्खी तरह-तरह के फूलों से संग्रह करती है।

वि० मधु-मक्खियों से सम्बन्ध रखनेवाला।

सारजंट--पुं० [अं०] पुलिस और सेना में, सिपाहियों का छोटा अफसर। जमादार।

सारज--पुं० [सं० सार√ जन् (उत्पन्न करना)+ड] मक्खन।

सारजासव--पुं० [सं० मध्यम० स०] वैद्यक में, धान, फल, फूल, मूल, सार, टहनी, पत्ते, छाल और चीनी--इन नौ चीजों से बनाया जानेवाला एक प्रकार का आसव।

सारटिफिकट--पुं० [अं०] प्रमाण-पत्र। सनद।

सारण--पुं० [सं०] [भू० कृ० सारित, कर्ता सारक] १. कहीं से हटाना या हटाने में प्रवृत्त करना। २. अवांछित, विरोधी या हानिकारक तत्त्वों या व्यक्तियों को कहीं से निकालना या हटाना। (पर्जिंग) ३. अतिसार नामक रोग। ४. वैद्यक में, पारे आदि रसों का शोधन। ५. मक्खन। ६. गंध। महक। ७. गंध-प्रसारिणी। ८. आँवला। ९. आम्रातक। अमड़ा। १०. रावण का एक मंत्री जो रामचन्द्र की सेना में उनका भेद लेने गया था।

सारणा--स्त्री० [सं० सारण--टाप्] दे० 'सारण'।

सारणि--स्त्री० [सं० √सृ (गत्यादि)+णिच्--अनि] १. नाले या छोटी

नहर के रूप में होनेवाला जल-मार्ग। २. गंध प्रसारिणी। ३. गदह-पूरना। पुनर्नवा।

सारणिक—पुं०[सं० सरणि+ठक्—इक] १. पथिक। राही। २. सौदागर।

सारणित—भू० कृ०[सं०] सारणी के रूप में अंकित किया हुआ।

सारणी—स्त्री०[सं०]१. पानी बहने की नाली। २. छोटी नदी। ३. नहर। ४. आज-कल कोई ऐसा कागज या फलक जिसमें बहुत से कोठे, खाने या स्तम्भ बने रहते हैं और जिनके कोठों आदि में किसी विशेष प्रकार के तुलनात्मक अध्ययन, गणना या विवेचन के लिए कुछ अंक, पद या शब्द आदि अंकित होते हैं। (टेबुल)

सारणीक—पुं०[सं०] १. ऐसा टाइपराइटर जिसमें अलग-अलग स्तम्भों में अंकादि भरकर सारणी तैयार की जाती हो। (टेबुलेटर) २. दे० 'सारणीकार'।

सारणीकरण—पुं०[सं०]१. सारणी बनाने की क्रिया या भाव। २. तथ्यों आदि को सारणी के रूप में अंकित करना। सारणीयन। (टेबुलेशन; उक्त दोनों अर्थों में)

सारणीकार—पुं०[सं०] वह जो अनेक प्रकार की सारणियाँ बनाने का काम करता हो। (टेबुलेटर)

सारणी-यंत्र—पुं०[सं०]एक प्रकार का आधुनिक यंत्र जिसकी सहायता से सारणियाँ बनाई जाती हैं। (टेबुलेटर)

सारणीयन—पुं०[सं०] सारणीकरण।

सारणेश—पुं० [सं० ब० स०, ष० त० वा] एक प्राचीन पर्वत।

सार-तंडुल—पुं०[सं०] चावल।

सार-तरु—पुं०[सं०]१. केले का पेड़। २. खैर का वृक्ष।

सारता—स्त्री०[सं० सार+तल्—टाप्] सार के रूप में होने की अवस्था, धर्म या भाव।

सारथि—पुं०[सं०√सृ (गत्यादि)+अथिन्]१. रथ का चालक। सूत। २. समुद्र। ३. नायक। ४. साथी।

सारथित्व—पुं०[सं० सारथि+त्व] सारथि का कार्य, धर्म या पद।

सारथी—पुं०[सं० सारथि] [भाव० सारथित्व, सारथ्य] १. रथ चलानेवाला। सूत। २. सब कारबार चलाने, देखने या सँभालनेवाला व्यक्ति। ३. सागर। समुद्र।

सारथ्य—पुं० [सं० सारथि+ष्यञ्] सारथी का काम या पद।

सारद—वि०[सं०] [स्त्री० सारदा] सार या तत्त्व देनेवाला।

†वि०=शारदीय।

†स्त्री०=शारदा (सरस्वती)।

सारदा†—स्त्री०=शारदा।

पुं०[सं० शरद] स्थल कमल।

†स्त्री०=शारदा (सरस्वती)।

सार-दारु—पुं०[सं०]ऐसी लकड़ी जिसमें सार या हीर वाला अंश अपेक्षया अधिक हो।

सारदा-सुंदरी—स्त्री०[सं०] दुर्गा का एक नाम।

सारदी—वि०=शारदीय।

सारदूल—पुं०=शार्दूल (सिंह)।

सार-द्रुम—पुं०[सं०]१. खैर का वृक्ष। २. वह पेड़ जिसकी लकड़ी में हीर या सार-भाग अधिक हो।

सारधाता(तृ)—पुं०[सं०]१. ज्ञान या बोध करानेवाला व्यक्ति। २. शिव।

सारना*—स० [हिं० सरना का स०]१. (काम) पूरा या ठीक करना। बनाना। २. सुन्दर बनाना। सजाना। ३. रक्षा करना। बचाना। ४. (आँखों में अंजन या सुरमा) लगाना। ५. (अस्त्र-शस्त्र) चलाना। ६. प्रहार करना। ७. पालन-पोषण या देख-रेख करना। सँभालना। ८. पूरा करना। जैसे—पैज सारना=प्रतिज्ञा पूरी करना। ९. दूर करना। हटाना। १०. हटाने में प्रवृत्त करना। ११. बुझाना। १२. साफ करना। १३. (खेत में) खाद डालना।

सारनाथ—पुं०[सं० सारंगनाथ] वाराणसी की उत्तर-पूर्वी सीमा पर स्थित एक प्राचीन नगरी जहाँ से गौतम बुद्ध ने अपने धर्म का प्रचार आरंभ किया था।

सारपद—पुं० [सं० ब० स०]१. ऐसा पत्ता जिसमें सार अर्थात् खाद हो। २. एक प्रकार का पक्षी।

सारपाक—पुं० [सं० ब० स०] एक प्रकार का जहरीला फल। (सुश्रुत)

सार-फल—पुं०[सं० ब० स०] जँबीरी नींबू।

सारबान—पुं०[फा०] [भाव० सारबानी] वह जो ऊँट चलाने या हाँकने का काम करता हो।

सार-भांड—पुं० [सं० ब० स०] १. असली, चोखा या बढ़िया माल। २. उक्त प्रकार के माल का व्यापार। ३. कस्तूरी।

सार-भाग—पुं०[सं०] किसी कथन, तथ्य, पदार्थ आदि का वह संक्षिप्त अंश जिसमें उसके मुख्य तथा मूल तत्त्व सम्मिलित हों।

सार-भाटा—पुं०[हिं० सार+भाटा] ज्वार आने के बाद की समुद्र की वह स्थिति जब लहरें उतार पर होती हैं।

सारभुक्—पुं० [सं० सार√भुज् (खाना)+क्विप्] अग्नि। आग।

सार-भूत—वि०[सं०]१. जो किसी तत्त्व या पदार्थ के सार रूप में निकाला गया हो। २. सबसे बढ़िया। श्रेष्ठ।

सारभृत—वि० [सं० सार√ भृ (भरण करना)+क्विप्—तुक्] १. सार ग्रहण करनेवाला। सारग्राही। २. अच्छी चीजें चुनने या छाँटने वाला।

सार-मती—स्त्री०[सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सारमिति—स्त्री०[सं०] वेद। श्रुति।

सारमेय—पुं०[सं०]१. सरमा नामक वैदिक कुतिया की संतान, चार चार आँखोंवाले दो कुत्ते जो यम के द्वार पर रहते हैं। २. कुत्ता। श्वान। वि० सरमा-संबंधी। सरमा का।

सार-लोह—पुं०[सं० सप्त० त०] इस्पात। लोहसार।

सारल्य—पुं०[सं० सरल+ष्यञ्] सरल होने की अवस्था, गुण या भाव। सरलता।

सारवती—स्त्री०[सं०]१. एक प्रकार का सम-वृत्त वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में तीन भगण और गुरु होता है। यथा—मोहि चलौ बन संग लिये। पुत्र तुम्है हम देखि जिये।—केशव। २. योग में, एक प्रकार की समाधि।

सारवत्ता—स्त्री०[सं० सारवत्+तल्—टाप्]१. सारवान् होने की अवस्था या भाव। २. सार ग्रहण करने का कार्य या भाव।

सारवर्ग—पुं०[सं० ष० त०]ऐसे वृक्षों तथा वनस्पतियों की सामूहिक संज्ञा जिनमें से दूध सा सफेद निर्यास निकलता हो। (वैद्यक)

सारवान् (वत्)—वि०[सं०]१. जो सार या तत्त्व से युक्त हो। २. ठोस। ३. पक्का। मजबूत। ४. (वृक्ष) जिसमें से निर्यास निकलता हो।

सार-संग्रह—पुं०[सं०] किसी विषय की संक्षिप्त और सार-भूत बातों का संग्रह। (कम्पेन्डियम)

सारस—वि०[सं०] सर या सरसी अर्थात् तालाब से सम्बन्ध रखनेवाला।

पुं०१. लंबी टाँगोंवाला एक प्रकार का प्रसिद्ध और बड़ा सफेद पक्षी जो प्रायः जलाशयों के पास अपनी मादा के साथ रहता है, और मछलियाँ खाता है। सरसीरु। २. हंस। ३. चन्द्रमा। ४. कमर में पहनने का एक प्रकार का गहना। ५. कमल। ६. छप्पय नामक छन्द के ३७ वें भेद का नाम।

सारसक—पुं०[सं० सारस+कन्] सारस पक्षी।

सारस-प्रिय—पुं० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सारसाक्ष—पुं०[सं०ब०स०] लाल नामक रत्न का एक प्रकार या भेद।

वि०[स्त्री०सारसाक्षी] सारस अर्थात् कमल के समान सुन्दर नेत्रोंवाला।

सारसिका—स्त्री० [सं० सारस+कन्—टाप् इत्व] मादा सारस।

सारसी—स्त्री०[सं० सारस—ङीप्] १. आर्या छंद का २३ वाँ भेद। २. मादा सारस।

सार-सुता*—स्त्री० [सं० सुरसुता]=यमुना।

सारसुती*—स्त्री०=सरस्वती।

सार-सूची—स्त्री० [सं०] कोई ऐसी सूची जिसमें किसी विषय से संबंध रखनेवाली मुख्य-मुख्य बातों का सार रूप में उल्लेख हो। (ऐब्सट्रैक्ट)

सारसैंधव—पुं०[सं० मध्यम० स०] सेंधा नमक।

सारस्वत—वि०[सं०] १. सरस्वती से सम्बन्ध रखनेवाला। सरस्वती का। २. विद्या, विद्वत्ता, शास्त्रीय ज्ञान आदि से संबंध रखनेवाला। शास्त्रीय। (एकेडेमिक) ३. सरस्वती नदी से संबंध रखने या उसके आस-पास होनेवाला। ४. सारस्वत देश या जाति से संबंध रखनेवाला।

पुं० १. प्राचीन भारत में, सरस्वती नदी के दोनों तटों पर का प्रदेश जो आधुनिक दिल्ली के उत्तर-पश्चिम में पड़ता है और जो अब पंजाब का दक्षिणी भाग है। प्राचीन आर्यों का यही पवित्र मूल निवास-स्थान था। २. उत्तर प्रदेश में बसनेवाले ब्राह्मणों और उनके वंशजों की संज्ञा। ३. एक मुनि जो सरस्वती नदी के पुत्र कहे गये हैं। ४. वैद्यक में, एक प्रकार का चूर्ण जो उन्माद, प्रमेह, वायु-विकार आदि में गुणकारी माना जाता है। ५. पुराणानुसार सरस्वती को प्रसन्न करने के उद्देश्य से किया जानेवाला एक प्रकार का व्रत जो प्रति रविवार या प्रति पंचमी को किया जाता है। कहते हैं कि यह व्रत करने से आदमी बहुत बड़ा विद्वान् और भाग्यवान् होता है।

सारस्वती†—वि०=सारस्वतीय।

†स्त्री०=सरस्वती।

सारस्वतीय—वि० [सं० सरस्वती+घञ्—ईय]१. सरस्वती का। सरस्वती संबंधी। २. सारस्वत का।

सारस्वतोत्सव—पुं० [सं० कर्म० स०]१. एक प्राचीन उत्सव जिसमें सरस्वती का पूजन होता था। २. आज-कल बसंत पंचमी को होनेवाला सरस्वती-पूजन।

सारस्वत्य—वि० [सं० सरस्वती+ष्यञ्] सरस्वती का। सरवस्ती-सम्बन्धी।

पुं० सरस्वती का पुत्र जिसे राजशेखर ने काव्य-पुरुष कहा है।

विशेष—महाभारत में कथा है कि भगवान ने सरस्वती को एक पुत्र इसलिए दिया था कि वह वेदों का अध्ययन करके संसार में उनका प्रचार करे। वही सारस्वत्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

सार-हल—पुं०[सं० सार (शल्य)+फल] [स्त्री अल्पा० सार-हली] बरछी, भाले आदि की नुकीली अनी या फल। उदा०—सारहली जिउँ सल्हियाँ सज्जण मंझ शरीर।—ढोलामारू।

सारहली†—स्त्री० दे० 'साँडनी'। (डिं०) उदा०—असंष सारहली बाजइ ढूल।—नरपतिनाल्ह।

सारांभस—पुं० [सं० ब० स०] नींबू का रस।

सारांश—पुं०[सं० सार+अंश]१. किसी पूरे तथ्य, पदार्थ आदि के मुख्य तत्त्वों का ऐसा छोटा या संक्षिप्त रूप जिससे उसके गुण, स्वरूप आदि का ज्ञान हो सके। मुख्य सार भाग। खुलासा। निचोड़। समस्तिका। (ऐब्सट्रैक्ट) २. किसी पूरी बात या विवरण की मुख्य और सारभूत विशेषताएँ जो एक जगह एकत्र की गई हों। (समरी) ३. कोई ऐसा छोटा लेख जिसमें कि बड़े लेख की सब बातें आ गई हों। सार-संग्रह। (कम्पेन्डियम) ४. तात्पर्य। मतलब। जैसे—सारांश यह कि आप को वहाँ नहीं जाना चाहिए था। ५. परिणाम। नतीजा। ६. उपसंहार।

सारांशक—पुं०[सं०] वह कथन या लेख जो किसी विस्तृत उल्लेख या विवरण के सारांश के रूप में हो। (समरी)

सारा—वि०[सं० समग्र] [स्त्री० सारी]१. जितना हो वह सब। कुल। समस्त। २. आदि से अंत तक जितना हो, वह सब। पूरा। समग्र।

स्त्री०[सं०]१. काली निसोथ। २. दूब। ३. सातला। ४. थूहड़। ५. केला। ६. तालीश पत्र।

पुं०[?] एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक वस्तु दूसरी से बढ़कर कही जाती है।

†पुं०=साला।

साराम्ल—पुं०[सं० ब० स०] १. जँबीरी नींबू। २. धामिन।

सारावती—स्त्री०[सं०] सारवली। (दे०)

सारि—पुं०[सं० सार+इनि,√सृ (गत्यादि)+इण् वा]१. जूआ खेलने का पासा। २. पासे से जुआ खेलनेवाला जुआरी। ३. शतरंज आदि की गोटी या मोहरा।

सारिउँ*—स्त्री०=सारिका (मैना पक्षी)।

सारिक—वि०[सं० सार से] १. जो सार रूप में हो या सारांश से संबंध रखता हो। २. संक्षेप में कहा गया या संक्षिप्त रूप में लाया हुआ। (ब्रीफ़) ३. सारांश के रूप में एक जगह इकट्ठा या संघटित किया हुआ। (कन्साइज़)

पुं० दे० 'सारिका'।

सारिका—स्त्री०[सं० सारिक+टाप्] मैना नामक पक्षी।

सारिखा†—वि०=सरीखा।

सारिणी—स्त्री० [सं०] १. गन्ध प्रसारिणी लता। २. लाल पुनर्नवा। ३. दुरालभा। ४. दे० 'सारणी'।

वि० सं० सारी (सारिन्) का स्त्री०।

सारित—भू० कृ०[सं०] दूर किया या हटा या हटाया हुआ।

सारिफलक—पुं०[सं० ब० स०] चौपड़ की गोटी या पासा। बिसात।

सारिवा—स्त्री०[सं० सारिव—टाप्]१. अनंतमूल। २. कृष्ण अनन्तमूल।

सारिष्ट—वि०[सं०] [भाव० सारिष्टता] १. सबसे अच्छा। श्रेष्ठ। २. अच्छी तरह बढ़ा हुआ। उन्नत। ३. मृत्यु के समीप पहुँचा हुआ। मरणासन्न।

सारी—स्त्री० [सं०] १. सारिका पक्षी। मैना। २. जूआ खेलने की गोटी या पासा। ३. थूहर।

वि०[सं० सारिन्] अनुकरण या अनुसरण करनेवाला।

*स्त्री० [हिं० सारना] १. सारने (बनाने, रक्षित रखने आदि) की क्रिया या भाव। उदा०—कबीर सारी सिरजन हार की जानै नाहीं कोइ।—कबीर। २. रची या बनाई हुई चीज। रचना। सृष्टि।

वि० हिं० 'सारा' का स्त्री०। सब। समस्त।

स्त्री० १. दे० 'साड़ी'। २. दे० 'साली'।

सारु*—पुं०=सार।

सारूप, सारूप्य—पुं०[सं०] १. दो या अधिक वस्तुओं के रूप अर्थात् आकार-प्रकार के विचार से होनेवाली समानता। समरूपता। (सेम्ब्लेन्स) २. पाँच प्रकार की मुक्तियों में से एक जिसके संबंध में यह माना जाता है कि इसमें भक्त अपने उपास्य देवता के साथ मिलकर रूप विचार से ठीक उसी के अनुरूप हो जाता है।

सारूप्यता—स्त्री०[सं० सारूप्य+तल्—टाप्]=सारूप्य।

सारूप्य निबंधना—स्त्री०[सं०] साहित्य में, अप्रस्तुत प्रशंसा नामक अलंकार का एक भेद जिसमें प्रस्तुत का कथन न करके उसी तरह के किसी अप्रस्तुत का उल्लेख होता है।

सारो†—पुं०[सं० शालि] एक प्रकार का धान जो अगहन में पक जाता है।

†स्त्री०=सारिका (मैना)।

†वि०, पुं०=सारा।

सारोदक—पुं०[सं० कर्म० स०, ब० स० वा] अनंतमूल या सारिवा का रस।

सारोपा—स्त्री०[सं०] साहित्य में, लक्षणा का एक प्रकार या भेद जो उस समय माना जाता है जब उपमेय में उपमान का इस प्रकार आरोप होता है कि उपमेय से उपमान का कोई विशिष्ट गुण या धर्म सूचित होने लगे। जैसे—विद्या में आप बृहस्पति हैं, अर्थात् आप बृहस्पति के समान विद्वान् हैं। इसके गौण सारोपा तथा शुद्ध सारोपा दो भेद हैं।

सारोष्ट्रिक—पुं०[सं० सारोष्ट्र-ब० स०—ठक्-इक] एक प्रकार का विष।

सारौं†—स्त्री०=सारिका (मैना पक्षी)।

सारौ†—स्त्री०=सारिका (मैना)।

सार्गिक—पुं०[सं० सर्ग+ठञ्—इक] वह जो सृष्टि कर सकता हो। स्रष्टा।

सार्ज—पुं०[सं० √सृज् (त्यागना)+अण्] धूना। राल।

सार्टिफिकेट—पुं०[अं०]प्रमाण-पत्र।

सार्थ—वि० [सं०] १. अर्थयुक्त । अर्थवान्। २. धनी। ३. उद्देश्य-पूर्ण। ४. उपयोगी।

पुं०१. धनी व्यक्ति। २. व्यापारियों का जत्था। ३. सेना की टुकड़ी। ४. समूह। गोल। ५. यात्रियों का दल।

सार्थक—वि०[सं० सार्थ+कन्] [भाव० सार्थकता] १. (शब्द या पद) जिसका कुछ अर्थ हो। अर्थवान्। २. जिसका उपयोग निरुद्देश्य न हो। जो किसी उद्देश्य की पूर्ति करता हो। जैसे—वाक्य में होनेवाला किसी शब्द का सार्थक प्रयोग। ३. उपयोगी तथा लाभप्रद।

सार्थकता—स्त्री०[सं० सार्थक+तल्—टाप्] सार्थक होने की अवस्था गुण या भाव।

सार्थपति—पुं०[सं०] व्यापार करनेवाला। वणिक।

सार्थवाह—पुं०[सं०] व्यापारी (विशेषतः दूर तक माल बेचने जानेवाला)।

सार्थिक—वि०[सं० सार्थ+ठक्—इक्] जो किसी के साथ यात्रा कर रहा हो।

पुं० यात्रा काल में संग-साथ रहने के कारण बननेवाला साथी।

सार्थी—पुं०[सं० सार्थ+इनि, सारथिन्]=सारथी।

सार्दूल—वि०, पुं०=शार्दूल।

सार्द्ध—वि०=सार्ध।

सार्द्र—वि०[सं० अव्य० स०]=आर्द्र (गीला या तर)।

सार्ध—वि०[सं०]जो मान, मात्रा आदि के विचार से किसी पूरे एक से आधा और बढ़ गया हो। जैसे—साढ़े चार, साढ़े दस।

सार्प, सार्प्य—वि०[सं०] सर्प-संबंधी। सर्प का।

पुं० अश्लेषा नक्षत्र।

सार्व—पुं०[सं०]१. सर्व अर्थात् सब से संबंध रखनेवाला। सब का। जैसे—सार्वजनिक। २. सब के लिए उपयुक्त।

पुं०१. गौतम बुद्ध। २. जिन देव।

सार्वकामिक—वि० [सं०]१. सब प्रकार की कामनाओं से संबंध रखनेवाला। २. जो सब तरह की कामनाएँ पूरी करता हो।

सार्वकालिक—वि०[सं०]१. जो हर समय होता हो। २. सब कालों में होनेवाला। सब समयों का। ३. जिसका संबंध सब कालों से हो। सर्वकाल संबंधी।

सार्वगुण—वि० [सं० सर्वगुण+अण्] सर्वगुण संबंधी। सब गुणों का।

पुं०=खारा नमक।

सार्वजनिक—वि०[सं०]१. सब लोगों से संबंध रखनेवाला। सर्वसाधारण संबंधी। (पब्लिक) जैसे—सार्वजनिक उपयोग। २. समान रूप से सब लोगों के काम में आनेवाला। (कॉमन) जैसे—सार्वजनिक कूआँ या धर्मशाला।

सार्वजनीन—वि०=सार्वजनिक।

सार्वजन्य—वि०[सं०] सार्वजनिक।

सार्वज्ञ्य—पुं०[सं०]=सर्वज्ञता।

सार्वत्रिक—वि०[सं०]जो सब स्थानों तथा स्थितियों में प्रायः समान रूप से मिलता, रहता या होता हो। (युनिवर्सल)

सार्वदेशिक—वि०[सं०]१. जो सब देशों में होता हो। २. जिसका संबंध सब देशों से हो। (युनिवर्सल) ३. संपूर्ण देश में होनेवाला।

सार्वनामिक—वि०[सं० सर्वनाम] १. सर्वनाम संबंधी। सर्वनाम का। २. सर्वनाम से निकला या बना हुआ। जैसे—सार्वनामिक विशेषण।

सार्वभौतिक—वि०[सं०]१. जिसका संबंध सब भूतों या तत्त्वों से हो। २. सब प्राणियों से संबंध रखने या उनमें होनेवाला।

सार्वभौम—वि० [सं०]१. संपूर्ण भूमि से संबंध रखनेवाला। २. सब देशों से संबंध रखने या मन में होनेवाला।

पुं०१. चक्रवर्ती राजा। २. हाथी।

सर्वभौमिक—वि०[सं०] सार्वभौम। (दे०)

पुं० वह जिसका दृष्टिकोण इतना विस्तृत हो कि संसार के सब देशों तथा उनके निवासियों को एक समान देखता, समझता तथा मानता हो। ऐसा व्यक्ति स्थानिक, राष्ट्रीय, जातीय तथा अन्य संकुचित विचारों से रहित होता है। (कॉस्मोपालिटन)

सार्वराष्ट्रीय—वि० [सं०] [भाव० सार्वराष्ट्रीयता] १. सब या अनेक राष्ट्रों से संबंध रखनेवाला। अंतर्राष्ट्रीय। (इन्टरनेशनल) २. (नियम या सिद्धान्त) जिसे सब राष्ट्र में मान्यता मिली हो।

सार्व-लौकिक—वि०[सं०] १. जो संपूर्ण लोक या विश्व में प्रचलित या व्याप्त हो। २. जिसका संबंध सब लोगों से हो। ३. जिसे सब लोग जानते हों। ४. विश्वक।

सार्विक—वि० [सं० सर्व] [भाव० सार्विकता] १. जो साधारणतः सब जगह या सब बातों में प्रायः समान रूप से देखने में आता हो। (युनिवर्सल) २. विशेषतः किसी जाति, राष्ट्र, समाज आदि के सब सदस्यों में समान रूप से मिलने या होनेवाला। आम। (जेनरल)

सार्विक वध—पुं० [सं०] किसी स्थान पर रहने या एकत्र होनेवालों की की जानेवाली सामूहिक हत्या। (मैसेकर)

सार्विक हड़ताल—स्त्री०[सं०+हिं०] ऐसी हड़ताल जिसमें साधारणतया सभी संबंधित कर्मचारीगण सम्मिलित होते हैं।

सार्षप—पुं०[सं० सर्षप+अण्]१. सरसों। २. सरसों का तेल। ३. सरसों संबंधी। सरसों का।

सार्ष्टि—स्त्री०[सं० सृष्टि+इञ्] पाँच प्रकार की मूर्तियों में से एक।

वि० [भाव० सार्ष्टिता] अधिकार, पद, स्थिति आदि में किसी के समान।

सार्ष्टिता—स्त्री०[सं०] अधिकार, पद, स्थिति आदि के विचार से होनेवाली समानता।

सालंक—पुं०[सं०] संगीत में, राग के तीन प्रकारों में ते एक। ऐसा राग जो बिलकुल शुद्ध और स्वतन्त्र होने पर भी किसी दूसरे राग की छाया से युक्त जान पड़ता हो।

सालंकार—वि०[सं० तृ० त०] अलंकारों से सजा हुआ। अलंकृत।

सालंग—पुं०[सं० सलंग+अण्]=सालंक (राग)।

सालंब—वि०[सं०] तृ० त०] अवलंब या सहारे से युक्त। (समास में)

साल—पुं०[पहलवी सालक से फा०, मि० सं० शारद] १. किसी सन् या संवत् के आरंभिक महीने से अंतिम महीने तक का पूरा समय। वर्ष। बरस। जैसे—इस साल अच्छी वर्षा (या फसल) होने की आशा है। २. किसी दिन या महीने से आरंभ करते हुए बारह महीनों का समय। जैसे—यह इमारत साल भर में बनकर तैयार होगी।

स्त्री० [हिं० सालना]१. 'सालने' की क्रिया या भाव। २. सालने, खटकने या चुभनेवाली कोई चीज। जैसे—काँटा या सूई। उदा०—कछु सालतें लोभ विशाल से हैं।...।—केशव। ३. मन में होनेवाला कष्ट। वेदना। पीड़ा। कसक। ४. क्षत। घाव। ५. लकड़ियाँ जोड़ने के लिए उनमें किया जानेवाला चौकोर छेद। ६. छेद। सूराख।

पुं० [सं०] १. पेड़। वृक्ष। २. जड़। मूल। ३. धूना। राल। ४. चहारदीवारी। परकोटा। ५. एक प्रकार की मछली। ६. गीदड़। सियार। ७. किला। गढ़। (डिं०)

†पुं० [?]१. कूचबंदों की परिभाषा में, खस की जड़ जिससे वे कूच बनाते हैं। २. एक प्रकार का जंगली जंतु जिसके मुँह में दाँत नहीं होते और जो च्यूँटियाँ, दीमक आदि खाता है।

†पुं० १.=शाल (वृक्ष)। २.=शालि। ३.=शल्य।

†स्त्री०=शाला। जैसे—धर्मसाला।

सालक—वि० [हिं० सालना+क (प्रत्य०)] सालने या दुःख देनेवाला।

सालग—पुं०[सं०]=सालंक।

सालगा†—पुं० दे० 'सलई'।

साल-गिरह—स्त्री०[फा०] वर्ष-गाँठ। जन्म-दिन।

सालग्राम—पुं०=शालग्राम।

सालग्रामी—स्त्री०[सं० शालग्राम] गंडक नदी।

सालज—पुं०[सं० साल√जन् (उत्पन्न करना)+ड] सर्जरस। धूना। राल।

साल-द्रुम—पुं०[सं० मध्यम० स०, व० स० वा] सागौन का पेड़। साखू।

सालन—पुं०[सं० सलवण] मांस-मछली या साग-सब्जी की मसालेदार तरकारी।

†पुं०[सं० साल] धूना। राल।

सालना—अ०[सं० शूल]१. किसी कँटीली चीज का शरीर के किसी अंग में गड़कर या चुभकर पीड़ा उत्पन्न करना। २. लाक्षणिक रूप में, किसी कष्टदायक बात का मन में इस प्रकार घर करना कि वह रह-रहकर विशेष कष्ट देती रहे। ३. गड़ना। चुभना।

संयो० क्रि०—जाना।

स०१. कोई नुकीली चीज किसी दूसरी चीज के अंदर गाड़ना या धँसाना। २. चुभाना। ३. किसी को दुःख देना।

साल-निर्यास—पुं०[सं० ष० त०] धूना। राल।

सालपर्णी—स्त्री०[सं० ब० स० ङीप्] शालपर्णी। सरिवन।

सालपान—पुं०[सं० शालिपर्णी?] एक प्रकार का क्षुप जो वर्षा ऋतु के अंत में फूलता है। इसकी जड़ का व्यवहार ओषधि के रूप में होता है। कसरवा। चाँचर।

साल-पुष्प—पुं०[सं०] स्थल कमल।

सालब मिसरी—स्त्री० दे० 'सालम मिसरी'।

साल भंजिका—स्त्री०=शाल भंजिका।

सालम मिसरी—स्त्री०[अ० सअलब+मिस्री=मिस्र देश का] एक प्रकार के पौधे का कन्द जो पौष्टिक होने के कारण ओषधियों में प्रयुक्त होता है। वीरकंदा। सुधामूली।

सालर†—पुं०=सलई।

सालरस—पुं० [सं० ष० त०] धूना। राल।

सालस—पुं० [अ० सालस=तीसरा]१. वह तीसरा व्यक्ति जो दो व्यक्तियों के झगड़े का निपटारा करता हो। तिंसरैत। २. पंच।

साल-साँभर—पुं० दे० 'बारहसिंगा'।

सालसा—पुं०[अं०] रक्त शोधक ओषधियों के योग से बना हुआ पाश्चात्य ढंग का एक प्रकार का काढ़ा।

सालसी—स्त्री०[अ०]१. सालस होने की अवस्था या भाव। २. दूसरों का झगड़ा निपटाने के लिए तीसरे व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों की बनी हुई पंचायत।

सालहज†—स्त्री० =सलहज।

साला—पुं० [सं० श्यालक] [स्त्री० साली]१. संबंध के विचार से किसी व्यक्ति की दृष्टि में उसकी पत्नी का भाई। २. लोक-व्यवहार में उक्त प्रकार का संबंध सूचित करनेवाली एक गाली।

पुं०[सं०] सरिका। मैना पक्षी।

†स्त्री०=शाला।

वि०[हिं० साल= वर्ष] नियत साल या वर्ष पर होनेवाला या उससे सम्बन्ध रखनेवाला। जैसे—दो-साला पेड़=दो साल का लगा हुआ पेड़। तिन-साला बंदोबस्त = तीन साल के लिए होगेवाला बन्दोबस्त।

सालाना—वि० [फा० सालानः] हर साल होनेवाला। वार्षिक।

सालार—पुं०[फा०] नायक। नेता। जैसे—सिपह-सालार=सिपाहियों (फौजियों) का नेता।

सालारजंग—पुं०[फा०]१. योद्धा। २. प्रधान सेनापति। ३. 'साला' (पत्नी का भाई) के लिए उपहासात्मक शब्द।

सालि†—पुं०=शालि।

सालिक—वि०[अ०]१. पथिक। यात्री। २. मुसलमानों में वह साधक जो गृहस्थाश्रम में रहकर भी ईश्वराधना में रत रहता हो।

सालिका—स्त्री०[सं०] बाँसुरी।

सालिग्राम—पुं०=शालग्राम।

सालिनी—स्त्री०=शालिनी (गृहिणी)।

सालिब मिश्री—स्त्री०=सालम मिस्री।

सालिम—वि०[अ०] जो कहीं से खंडित न हो। पूर्ण। संपूर्ण। समूचा। जैसे—सालिम तरबूज।

सालियाना—वि०=सालाना (वार्षिक)।

सालिसी—स्त्री०[अ०] दे० 'सालसी'।

सालिहोत्री—पुं०=शालिहोत्री।

साली—स्त्री०[हिं० साला]१. संबंध के विचार से पत्नी की बहन। २. हठयोगियों की परिभाषा में माया, वासना आदि।

स्त्री०[फा० साल]१. साल या वर्ष का भाव। (यौ० के अंत में) जैसे—कहतसाली, खुश्कसाली। २. हर साल या प्रति वर्ष के हिसाब से दिया जानेवाला पारिश्रमिक, पुरस्कार या वेतन।

सालू*—पुं० [हिं० सालना] १. वह जिसके मन को दूसरों का उत्कर्ष सालता हो। ईर्ष्यालु। २. सालनेवाली बात।

पुं०[?] एक प्रकार का लाल कपड़ा जिसे मांगलिक अवसरों पर स्त्रियाँ ओढ़ती हैं। (पश्चिम)

सालूर—पुं०=शालूर (मेंढ़क)

सालेया—स्त्री०[सं० सालेय+टाप्] सौंफ।

सालोक्य—पुं०[सं० सलोक, ब० स० ष्यञ्] पाँच प्रकार की मुक्तियों में से एक प्रकार की मुक्ति, जिसके फल-स्वरूप साधक अपने इष्टदेव के लोक में जाकर उसमें लीन हो जाता है।

सालोहित—पुं०[सं० ब० स०]१. ऐसा व्यक्ति जिसके साथ रक्त-संबंध हो। नातेदार। २. कुल या वंश का व्यक्ति।

साल्मली†—पुं०=शाल्मली (सेमल का पेड़)।

साल्व—पुं० [सं०] १. एक प्राचीन जाति जो किसी समय मध्य (या उत्तरी?) पंजाब में रहती थी। २. पंजाब का मध्यप्रदेश जिसमें उक्त जाति रहती थी। २. उक्त प्रदेश का निवासी। ४. एक दैत्य जिसका वध विष्णु ने किया था।

साल्वेय—वि०[सं० साल्व+ढक्—एय] साल्व देश-संबंधी। साल्व का।

सावँकरन†—पुं०=श्यामकर्ण (घोड़ा)।

सावंत†—पुं०=सामंत।

साव—पुं०[सं० सावक=शिशु] बालक। पुत्र। (डिं०)

†पुं०=साहु।

सावक†—पुं०=श्रावक (जैन या बुद्ध भिक्षु)।

सावका†—अव्य० [अ० साबिक?] नित्य। सदा। उदा०—वायु सावका करै लराई, माइआ सद मतवारी।—कबीर।

सावकाश—अव्य० [सं०] अवकाश होने पर। छुट्टी या फुरसत के समय।

†पुं०=आकाश।

सावगी†—पुं०=सरावगी।

†स्त्री०=किशमिश। (पंजाब)

सावचेत*—वि०[सं० सा+हिं० चेत] [भाव० सावचेती] = सावधान।

सावज†—पुं० [सं० शावक ?]। जंगली जानवर जिसका शिकार किया है। (गेम)

सावणिक—पुं०[सं० श्रावण] श्रावण मास। (डिं०)

सावत—स्त्री०[हिं० सौत]१. सौतों का आपस में भेद या डाह। सौतिया डाह। २. ईर्ष्या। जलन। डाह। उदा०—तहँ गये मद मोह लोभ अति, सरगहुँ मिटत न सावत।—तुलसी।

सावद्य—वि० [सं०] जिसके संबंध में कोई आपत्तिजनक बात कही जा सकती हो। जो किसी रूप में दोष, भ्रम आदि से युक्त हो। 'निरवद्य' का विपर्याय। जैसे—आपका यह कथन मेरी दृष्टि में कुछ सावद्य है।

पुं० योग में तीन प्रकार की सिद्धियों में से एक। (शेष दो प्रकार निवद्य और सूक्ष्म कहलाते हैं।)

सावधान—वि०[सं० अव्य० स०] [भाव० सावधानता]१. जो अवधान या ध्यानपूर्वक कोई काम करता हो। २. जिसे ठीक समय पर तथा ठीक तरह से काम करने की प्रवृत्ति हो। २. जो परिस्थितियों आदि की क्रियाशीलता के प्रति जागरूक तथा सचेत हो।

सावधानता—स्त्री०[सं० सावधान+तल्—टाप्]१. सावधान होने की अवस्था, गुण या भाव। २. वह सुरक्षात्मक कार्रवाई जो खतरे आदि से सावधान रहने के लिए की जाती है।

सावधि—वि०[सं०]१. जिसकी कोई अवधि निश्चित हो। निश्चित कार्य-कालवाला। २. जिसकी सीमा बाँध दी गई हो।

सावन—पुं०[सं० श्रावण]१. असाढ़ के बाद और भाद्रपद के पहले का महीना। श्रावण। २. वर्षा ऋतु में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत।

पुं०[सं०]१. सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का काल या समय। पूरा एक दिन और एक रात जिसका मान ६० दंड है। २. यज्ञ का अंत या समाप्ति। ३. यजमान। ४. वरुण।

वि० १. एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक के काल से संबंध रखनेवाला। २. (काल-मान) जिसकी गणना एक सूर्योदय से दूसरे

सूर्योदय तक के काल के विचार से हो। जैसे—सावन दिन, सावन मास, सावन वर्ष आदि।

पुं०[?] मँझोले आकार का एक प्रकार का वृक्ष जिसका गोंद ओषधि के रूप में काम में आता और मछलियों के लिए विष होता है।

†पुं०=सावनी (गीत)।

सावन दिन—पुं०[सं०]१. उतना समय जितना सूर्य को एक बार याम्योत्तर रेखा से चलकर फिर वहीं आने में लगता है। २. एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय। ६० दंडों का समय।

विशेष—(क) यह नाक्षत्र दिन से कभी कुछ छोटा और कभी कुछ बड़ा होता है इसी लिए ज्योतिषी लोग नक्षत्र दिन-मान का ही व्यवहार करते हैं। (ख) तीन सौ साठ सौर दिनों का एक सावन वर्ष होता है।

सावन-भादों—पुं०[हिं०] राजमहल का वह विभाग जिसमें जल-विहार के लिए तालाब, झरने, फुहारे आदि होते थे।

अव्य० सावन और भादों के महीने में।

सावन मास—पुं०[सं०] भारतीय ज्योतिष की गणना के अनुसार व्यापारिक और व्यावहारिक कार्यों के लिए माना जानेवाला एक प्रकार का मास जो किसी तिथि से आरंभ होकर उसके तीसवें दिन तक होता है। यदि गणना चांद्र मास की तिथि के अनुसार हो तो उसे चांद्र सावन कहते हैं, और यदि सौर मास की तिथि के अनुसार हो तो उसे सौर सावन मास कहते हैं।

सावन वर्ष—पुं०[सं०] ज्योतिष की गणना में वह वर्ष जो ३६० सौर दिनों का होता है। (ट्रापिकल ईयर)

सावन-हिंडोला—पुं०[हिं०] वे सब गीत जो (क) स्त्रियाँ सावन में झूला झूलने के समय गाती हैं, अथवा (ख) देवताओं के झूलन के उत्सव के समय गाये जाते हैं। ऐसे गीत प्रायः श्रृंगारात्मक होते हैं।

सावनी—वि०[हिं० सावन (महीना)] १. सावन संबंधी। सावन का। २. सावन में होनेवाला।

स्त्री०१. सावन में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत। २. सावन में वर पक्ष से कन्या के लिए भेजे जानेवाले कपड़े, फल, मिठाइयाँ आदि। ३. सावन के लगभग तैयार होनेवाली फसल। ४. एक प्रकार का पौधा और उसके फूल।

†पुं० सावन में तैयार होनेवाला एक प्रकार का धान।

†स्त्री०=श्रावणी।

सावनी कल्याण—पुं०[हिं० सावनी+सं० कल्याण] सावनी और कल्याण के मेल से बना हुआ एक प्रकार का संकर राग। (संगीत)

सावर—पुं० [सं० सवर+अण्] १. लोध। २. अपराध। दोष। ३. पाप।

†पुं०१.=शाबर। २.=साबर।

सावरणी—स्त्री०[सं० सावरण—ङीप्] वह बुहारी जो जैन यति अपने साथ रखते हैं।

सावरिका—स्त्री०[सं० सावर+कन्–टाप्, इत्व]एक प्रकार की जोंक जो जहरीली नहीं होती।

सावर्ण—वि०[सं० सवर्ण+अण्] जो एक जाति या वर्ण के हों। सवर्ण।

पुं० दे० सावर्णि'।

सावर्णक—पुं०[सं०सावर्ण+कन्]=सावर्णि।

सावर्णि—पुं०[सं० सवर्णा+इञ्]१. सूर्य के पुत्र आठवें मनु। २. उक्त मनु का मन्वन्तर।

सावर्णिक—वि०[सं० सावर्णि+कन्] जिनका संबंध एक ही जाति या वर्ग से हो।

सावर्ण्य—पुं० [सं० सवर्ग+ष्यञ्] सवर्ण होने की अवस्था, गुण या भाव।

सावष्टंभ—पुं० [सं० अव्य० स०] ऐसा मकान जिसके उत्तर-दक्षिण सड़क हो। (ऐसा मकान बहुत शुभ माना जाता है।)

वि०१. मजबूत। दृढ़। २. आत्म-निर्भर।

साविका—स्त्री०[सं० अव्य० स०] धाय। दाई।

सावित्र—वि०[सं०] १. सविता अर्थात् सूर्य-संबंधी। जैसे—सावित्र होम। २. सविता या सूर्य से उत्पन्न।

पुं०१. सूर्य। २. शिव। ३. वसु। ४. ब्राह्मण। ५. सूर्य के पुत्र। कर्ण। ६. गर्भ। ७. यज्ञोपवीत। ८. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

सावित्री—स्त्री०[सं०]१. सूर्य की किरण। २. ऋग्वेद का गायत्री नामक मंत्र जिसमें सूर्य की स्तुति की गई है। ३. सरस्वती। ४. सूर्य की एक पुत्री जो ब्रह्मा को ब्याही थी। ५. दक्ष की एक कन्या जो धर्म की पत्नी थी। ६. मत्स्य देश के राजा अश्वपति की कन्या जो सत्यवान को ब्याही थी और जिसने सत्यवान को काल के हाथ से छुड़ाया था। इसकी गणना परम सती स्त्रियों में होती है। ७. कोई सती-साध्वी स्त्री। ८. सधवा स्त्री। ९. सरस्वती नदी। १०. यमुना नदी। ११. उपनयन संस्कार। १२. आँवला।

सावित्री व्रत—पुं० [सं०] एक व्रत जो स्त्रियाँ जेष्ठ कृष्ण चतुर्दशी को अपने पति की दीर्घायु की कामना से करती हैं।

सावित्री सूत्र—पुं०[सं० ष० त०, मध्यम० स०] यज्ञोपवीत। यज्ञोपवीत जो सावित्री दीक्षा के समय धारण किया जाता है।

सावित्रेय—पुं०[सं० सावित्री+ढक्—एय] यमराज। यम।

सावेरी—स्त्री०[?] संगीत में भैरव ठाठ की एक प्रकार की रागिनी।

साशंस—वि०[सं०] इच्छुक। आकांक्षी।

साशिव—पुं०[सं० ब० स०]१. प्राचीन देश। २. उक्त देश का निवासी। ३. ऋषि का पुत्र। ऋषीक।

साश्चर्य—वि० [सं०] १. आश्चर्यजनक। चकित करनेवाला। २. चकित।

साश्रु—वि०[सं० ब० स०] १. आँसुओं से युक्त। अश्रुपूर्ण। २. रोता हुआ।

अव्य० १. आँसुओं से युक्त होकर। २. आँखों में आँसू भरकर। रोते हुए।

साश्वत†—वि०=शाश्वत।

साष्टांग—वि० [सं० तृ० त०] आठों अंगों से युक्त।

क्रि० वि० आठों अंगों से। जैसे—साष्टांग प्रणाम करना।

साष्टांग प्रणाम—पुं०[सं०] सिर, हाथ, पैर, हृदय, आँख, जाँघ, वचन और मन इन आठों से युक्त होकर और जमीन पर सीधे लेटकर किया जानेवाला प्रणाम।

सास—स्त्री०[सं० श्वश्रू]१. संबंध के विचार से किसी की पत्नी या पति की माता। २. संबंध के विचार से उक्त स्थान पर पड़नेवाली स्त्री। जैसे—चचिया सास, ममिया सास। ३. नाथ और सिद्ध सम्प्रदायों

में मणिपूर चक्र में स्थित अपान वायु जो माया, मोह, वासना आदि की जननी मानी गई है। उदा०—सास ननद को मार अदल मैं दिहा चलाई।—पलटूदास।

सासण†—पुं० =शासन।

सासत†—स्त्री०=साँसत।

सासति†—स्त्री०=शास्ति।

सासन†—पुं०=शासन।

सासन लेट—स्त्री०[?] एक प्रकार का सफेद जालीदार कपड़ा।

सासना†—स०[सं० शासन] १. शासन करना। २. दंड देना। ३. कष्ट देना।

†पुं०=शासन।

सासरा†—पुं०=ससुराल।

सासा *—स्त्री०[सं० संशय] संदेह।

पुं० साँस।

सासु—वि० [सं० तृ० त०] प्राणयुक्त। जीवित।

†स्त्री० सास।

सासुर†—पुं० १. ससुर। २. ससुराल

सास्मित—पुं०[सं० व० स०, तृ० त० वा] शुद्ध सत्व को विषय बनाकर की जानेवाली भावना।

सास्वादन—पुं०[सं० व० स०] जैनों में, निर्वाण प्राप्ति की चौदह अवस्थाओं में से दूसरी अवस्था।

साह—पुं०[सं० साधु]१. सज्जन और साधु पुरुष। २. वणिक। महाजन। साहूकार। ३. धनी और प्रतिष्ठित व्यक्ति। ४. चीते आदि की तरह का एक प्रकार का पहाड़ी हिंसक जंतु जिसके शरीर पर छल्लेदार चित्तियाँ या धव्वे होते हैं। ५. लकड़ी या पत्थर का वह लंवा टुकड़ा जो दरवाजे के चौखटे में देहलीज के ऊपर दोनों पार्श्वों में लगा रहता है।

†स्त्री०[सं० शाखा या स्कंध] वाँह। भुजदंड। उदा०—सकल भुआन संगल-मंदिर के द्वार बिसाल सुहाई साहैं।—तुलसी।

†पुं०=शाह (वादशाह)।

साहचर्य—पुं०[सं०]१. सहचर होने की अवस्था या भाव। २. साथ साथ रहने या होने का भाव। संग-साथ। (एसोसियेशन)

साहजिक—वि०[सं०]१.(कार्य या व्यापार) जो प्राणी की सहज बुद्धि या आन्तरिक प्रेरणा से संपन्न होता हो। वृत्तिक। सहज। (इंस्टिक्टिव) २. स्वाभाविक।

साहजिक धन—पुं०[सं०] पारितोषिक, वेतन, विजय आदि में मिला हुआ धन। (शुक्र नीति)

साहण—पुं० [सं साधन] १. साथी। संगी। २. सेना। फौज। ३. परिषद्। (डिं०)

साहना—स० [सं० सह] १. ग्रहण या प्राप्त करना। लेना। उदा०—खाँतातार मारुफ खाँ लिए पान कर साहि।—चन्दबरदाई। २. भैंस से भैंसे का संभोग कराना।

स०[सं० साधन] १. सहारा देना। २. दे० 'साधना'।

†स्त्री०=साधना।

साहनी—पुं० [सं० साधनिक, प्रा० साहनिअ] १. प्राचीन भारत में, एक प्रकार के राजकर्मचारी जो किसी सैनिक विभाग में अधिकारी होते थे। २. मध्ययुग में, एक प्रकार के राजकर्मचारी जो नगर की व्यवस्था करते थे। उदा०—भरत सकल साहनी वोलाये।—तुलसी। ३. परिषद्। दरवारी। ४. संगी। साथी।

स्त्री० सेना। फौज।

साहब—पुं० [अ० साहिव] [स्त्री० साहिबा] १. मालिक। स्वामी। २. परमात्मा। ३. मित्र। साथी। शिष्ट समाज में, भले आदमियों के नाम या पेशे के साथ प्रयुक्त होनेवाला आदरार्थक शब्द। जैसे—वावू कालिकाप्रसाद साहब, डा० साहव, वकील साहव। ५. अंग्रेजी शासन-काल में, इंगलैण्ड या युरोप का कोई निवासी।

साहबजादा—पुं० [अ० साहिव+फा० जादा] [स्त्री० साहवजादी] भले आदमी या रईस का लड़का।

साहब-सलामत—स्त्री० [अ०] परस्पर मिलने के समय होनेवाला अभिवादन। वंदगी। सलाम। जैसे—अव तो दोनों में साहव-सलामत भी वंद हो गई है।

साहबान—पुं० [अ०] 'साहव' का वहु०।

†पुं० सायवान।

साहबाना—वि० [अ०] १. साहबों अर्थात् पाश्चात्य देशों के गोरे अथवा अफसरों की तरह का या उनके रंग-ढंग जैसा। २. साहवों अर्थात् भले आदमियों की तरह का।

साहबी—वि०[अ० साहिव+ई (प्रत्य०)] साहव का। साहव संवंधी। जैसे—साहवी ठाट-वाट, साहवी रंग-ढंग।

स्त्री०१. साहव अर्थात् स्वामी होने की अवस्था या भाव। अधिकार-पूर्ण प्रभुत्व या स्वामित्व। २. साहव अर्थात् पाश्चात्य देश के गोरे निवासी होने की अवस्था, ढंग या भाव। ३. वड़प्पन। महत्त्व।

साहबीयत—स्त्री०[?]'साहवी' या साहव होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव।

साहस—पुं० [सं०] [वि० साहसिक, साहसी] १. प्राचीन भारत में, वलपूर्वक किया जानेवाला कोई अनुचित, क्रूरतापूर्ण तथा नीति-विरुद्ध कार्य। जैसे—किसी के धन या स्त्री का अपहरण, मार-काट, लूट-पाट आदि।

विशेष—इसी लिए यह शब्द अत्याचार, दुष्कर्म, बलात्कार आदि का भी वाचक हो गया था।

२. वैदिक युग में, वह अग्नि जिस पर यज्ञ के लिए चरु पकाया जाता था। ३. आज-कल मन की दृढ़ता और शक्ति का सूचक वह गुण या तत्त्व जिसके फलस्वरूप मनुष्य बिना किसी भय या संकोच के कोई बहुत कठिन, जोखिम का बहुत वड़ा या बूते के बाहर का काम करने में प्रवृत्त होता है। (करेज) ४. अर्थशास्त्र में, उत्पत्ति के पाँच साधनों में से एक जिसमें उत्पत्ति के शेष साधनों (भूमि, श्रम, पूँजी तथा प्रबंध) को एकत्र करके उनके द्वारा किसी वस्तु की उत्पत्ति की जाती है। उद्यम। (एन्टरप्राइज़) ५. दंड। सजा। ६. जुरमाना।

साहसांक—पुं० [सं० व० स०] राजा विक्रमादित्य का एक नाम।

साहसिक—वि० [सं०] १. साहस संवंधी। साहस का। २. जिसमें साहस हो। साहसी। हिम्मतवर। ३. पराक्रमी। ४. निडर। निर्भीक। ५. अत्याचार या क्रूरतापूर्ण अथवा निंदनीय कृत्य करनेवाला। जैसे—चोर, डाकू, लुटेरा, लंपट, झूठा, बेईमान आदि।

साहसी (सिन्)—वि० [सं०] १. साहसपूर्ण काम करनेवाला। २.जिसमें साहस हो।

पुं० १. अर्थशास्त्र में वह व्यक्ति जो उत्पत्ति के साधन (भमि, श्रम, पूँजी तथा प्रबंध) एकत्र करके किसी वस्तु का उत्पादन करता हो। (एन्टरप्राइज़र) २. दे० 'साहसिक'।

साहस्र—वि० [सं०] सहस्र-संबंधी। हजार की संख्या से संबंध रखनेवाला।

पुं० १. हजार का समूह। २. हजार सैनिकों का दल।

साहस्रिक—वि० [सं० सहस्र+ठक्–इक] सहस्र-संबंधी। साहस्र।

पुं० किसी इकाई का हजारवाँ अंश।

साहस्री—स्त्री० [सं०] १. एक ही प्रकार की एक हजार चीजों का वर्ग या समूह। २. दे० 'सहस्राब्दि'।

साहा—पुं० [सं० साहित्य] १. वह वर्ष जो हिंदू ज्योतिष के अनुसार विवाह के लिए शुभ माना जाता है। २. विवाह का मुहूर्त। (पश्चिम) ३. किसी प्रकार का शुभ मुहूर्त। उदा०—सकल दोख विवरजित साहौ।—प्रिथीराज।

साहाय्य—पुं० [सं०] सहायता। मदद।

साहि*—पुं० [फा० शाह] १. शाह या बादशाह। २. मालिक। स्वामी। ३. धनी। महाजन। साहू। ४. मुसलमान फकीरों की उपाधि।

साहित्य—पुं० [सं०] १. 'सहित' या साथ होने की अवस्था या भाव। एक साथ होना, रहना या मिलना। २. वे सभी वस्तुएँ जिनका किसी कार्य के संपादन के लिए उपयोग होता है। आवश्यक सामग्री। जैसे—पूजा का साहित्य=अक्षत, जल, फूल-माला, गंध-द्रव्य आदि। ३. किसी भाषा अथवा देश के उन सभी (गद्य और पद्य) ग्रंथों, लेखों आदि का समूह या सम्मिलित राशि, जिसमें स्थायी, उच्च और गूढ़ विषयों का सुंदर रूप से व्यवस्थित विवेचन हुआ हो। (लिटरेचर) **विशेष**—वाङमय और साहित्य में मुख्य अंतर यह है कि वाङमय के अंतर्गत तो ज्ञान-राशि का वह सारा संचित भंडार आता है जो मनुष्य को नवीन दृष्टि देता और उसे जीवन-संबंधी सत्यों का परिज्ञान मात्र कराता है। परंतु साहित्य उक्त समस्त भंडार का वह विशिष्ट अंश है जो मनुष्य को ऐसी अंतर्दृष्टि देता है जिससे कलाकार किसी प्रकार की कलासृष्टि करके आत्मोपलब्धि करता है, और रसिक लोग उस कला का आस्वादन करके लोकोत्तर आनंद का अनुभव करते हैं। ४. वे सभी लेख, ग्रंथ आदि जिनका सौंदर्य गुण, रूप या भावुकतापूर्ण प्रभावों के कारण समाज में आदर होता है। ५. किसी विषय, कवि या लेखक से संबंध रखनेवाले सभी ग्रन्थों और लेखों आदि का समूह। जैसे—वैज्ञानिक साहित्य, तुलसी साहित्य। ६. किसी विषय या वस्तु से संबंध रखनेवाली सभी बातों का विस्तृत विवरण जो प्रायः उसके विज्ञापन के रूप में वँटता है। जैसे—किसी बड़े ग्रन्थ, संस्था, यंत्र आदि का साहित्य। (लिटरेचर) ७. गद्य और पद्य की शैली और लेखों तथा काव्यों के गुण-दोष, भेद-प्रभेद, सौंदर्य अथवा नायिका-भेद और अलंकार आदि से संबंध रखनेवाले ग्रन्थों का समूह।

साहित्य शास्त्र—पुं० [सं० मध्यम० स०] १. वह विद्या या शास्त्र जिसमें रचनाओं के साहित्य पक्ष तथा स्वरूप पर शास्त्रीय ढंग से विचार किया जाता है। २. काव्य-शास्त्र। ३. विशेषतः प्राचीन काव्य शास्त्र जिसमें रसों, अलंकारों, रीतियों आदि पर विचार किया जाता था।

साहित्यिक—वि० [सं० साहित्य] १. साहित्य (विशेषतः साहित्यिक कृतियों) से संबंध रखनेवाला अथवा उसके अनुरूप होनेवाला। जैसे—साहित्यिक रचना। २. जो साहित्य का ज्ञाता या पारखी हो अथवा साहित्य की रचना करना ही जिसका पेशा हो। जैसे—साहित्यिक व्यक्ति, साहित्यिक संस्था।

साहित्यिक चोरी—स्त्री० [सं०+हिं०] किसी की साहित्यिक कृति चुराकर (कविता, लेख आदि) उसको अपनी मौलिक कृति के रूप में लोगों के सामने उपस्थित करना। (प्लेजिअरीज़्म)

साहिनी†—पुं०=साहनी।

साहिब†—पुं०=साहब।

साहिबी—स्त्री०=साहबी।

साहियाँ*—पुं०=साँई।

साहिर—पुं० [अ०] [भाव० साहिरी] जादूगर।

साहिल—पुं० [अ०] १. किनारा। तट। २. विशेषतः समुद्र-तट।

साहिली—स्त्री० [अ० साहिल=समुद्र-तट] १. काले रंग का एक पक्षी जिसकी लंबाई एक बालिश्त से कुछ अधिक होती है। २. बुलबुल-चश्म।

वि० १. साहिल या तट से संबंध रखनेवाला। २. साहिल पर रहने या होनेवाला।

साही—स्त्री० [सं० शल्यकी] एक प्रकार का जंतु जिसके सारे शरीर पर लंबे लंबे खड़े काँटे होते हैं। सेई।

†स्त्री० [फा० शाही] एक प्रकार की पुरानी चाल की तलवार।

साहु†—पुं०=साह।

साहुरड़ा*—पुं० [पं० सौहरा] ससुराल। उदा०—पेवकड़े दिन भारी हैं, साहुरड़े जाणा।—कबीर।

साहुल—पुं० [फा० शाकूल] १. समुद्र की गहराई नापने का एक उपकरण जिसमें एक लंबी डोरी के एक सिरे पर सीसे का लट्टू लगा रहता है। २. वास्तु में, उक्त आकार-प्रकार वह उपकरण जिससे दीवारें आदि बनाने के समय उनकी सीध नापते हैं। (प्लम्मेट)

†पुं० [?] शोर-गुल। होहल्ला। (राज०)

साहू—पुं० =साह।

साहूकार—पुं० [हिं० साहु+सं० कार (प्रत्य०)] [भाव० साहूकारी] १. वह व्यक्ति जिसके पास यथेष्ट संपत्ति हो। बड़ा महाजन। २. धनाढ्य व्यापारी। कोठीवाला।

साहूकारा—पुं० [हिं० साहूकार+आ (प्रत्य०)] १. साहूकारों का कार्य, पद या व्यवसाय। महाजनी। रुपयों का लेन-देन। २. वह बाजार जिसमें मुख्य रूप से रुपयों का लेन-देन होता है।

वि० १. साहूकारों का। २. साहूकारों का-सा।

साहूकारी—स्त्री० [हिं० साहूकार+ई (प्रत्य०)] साहूकार होने की अवस्था या भाव।

साहूत—पुं० [अ० नासूत का अनु०] कुछ मुसलमान विशेषतः सूफी फकीरों के अनुसार ऊपर के नौ लोकों में से सातवाँ लोक।

साहेब†—पुं०=साहब।

साहैं†—अव्य०=सामुहें (सामने)।

स्त्री० [हिं० बाँह] भुज-दंड।

सिउँ*—अव्य=त्यों ।

सिंकना—अ० [हिं० सेंकना का अ०] सेंका जाना ।

सिंकरी†—स्त्री०=सिकड़ी ।

सिंग†—पुं०=१.=शृंग। २.=सींग।

सिंगड़ा—पुं० [सं० शृंग+ड़ा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० सिंगड़ी] सींग की वह नली जिसमें सैनिक लोग बारूद रखते थे ।

सिंगरफ—पुं०=शिंगरफ (ईंगुर) ।

सिंगरी—स्त्री०=सिंगी (मछली) ।

सिंगल—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

†पुं० दे० 'सिंगनल' ।

सिंगा—पुं० [हिं० सींग] सींग के आकार-प्रकार का एक बाजा जिसे फूँककर बजाते हैं।

सिंगार†—पुं०=शृंगार ।

सिंगारदान—पुं० [हिं० सिंगार+सं० आधान या फा० दान (प्रत्य०)] शृंगार की सामग्री रखने का छोटा संदूक ।

सिंगारना—स० [हिं० सिंगार+ना (प्रत्य०)] शृंगार करना। प्रसाधन सामग्री तथा आभूषणों से अपने को या किसी को सजाना ।

सिंगारहाट—पुं०[सं० शृंगारहट्ट] वह बाजार जिसमें वेश्याएँ रहती हों। चकला ।

सिंगारहार—पुं० [सं० हारशृंगार] १. हरसिंगार नामक वृक्ष। परजाता। २. उक्त के फूल ।

सिंगारिया—पुं० [हिं० सिंगार+इया (प्रत्य०)] १. शृंगार करनेवाला। २. वह पुजारी जो देव-मूर्तियों का शृंगार करता हो।

सिंगारी—वि० [हिं० सिंगार+ई (प्रत्य०)] सिंगार-संबंधी।

पुं०=सिंगारिया ।

सिंगाल—पुं० [देश०] एक प्रकार का पहाड़ी बकरा जो कुमायूँ से नैपाल तक पाया जाता है ।

सिंगाला—वि० [हिं० सींग+वाला (प्रत्य०)] [स्त्री० सिंगाली] सींगवाला (जन्तु)।

सिंगिया—पुं० [सं० शृंगिक] एक प्रसिद्ध विष जो एक पौधे की जड़ है।

सिंगी—स्त्री० [हिं० सींग] १. सींग का बना हुआ एक प्रकार का बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता है। तुरही। २. सींग की तरह वह नली जिससे जर्राह लोग फसद लगाते अर्थात् शरीर का दूषित रक्त चूसकर निकालते हैं ।

क्रि० प्र०—लगाना ।

३. बरसाती पानी में होनेवाली एक प्रकार की मछली । ४. सींग के आकार का घोड़ों का एक अशुभ लक्षण।

सिंगी-मोहरा—पुं० [हिं० सिंगी+मुहरा] सिंगिया (विष) ।

सिंगौटी—स्त्री० [हिं० सींग+औटी (प्रत्य०)] १. बैल के सींग पर पहनाने का एक आभूषण। २. सींग का बना हुआ घोटना जिससे चमक लाने के लिए कपड़े आदि घोटे जाते हैं। ३. सींग को खोखला करके बनाया हुआ एक प्रकार का पात्र जिसमें घी, तेल आदि रखते थे। ४. जंगलों में मरे हुए जानवरों के सींग ।

स्त्री० [हिं० सिंगार+औटी (प्रत्य०)] वह पिटारी जिसमें स्त्रियाँ शृंगार की सामग्री रखती हैं।

सिंघ†—पुं०=सिंह (शेर) ।

सिंघल†—पुं०=सिंहल द्वीप ।

सिंघली—वि०=सिंहली।

सिंघाड़ा—पुं० [सं० शृंगाटक] १. पानी में होनेवाला एक पौधा। २. उक्त पौधे का फल जिसके दोनों ओर सींगों की तरह दो काँटे होते हैं। पानी-फल। (वॉटर चेस्टनट) ३. चित्र-कला में, पत्तों की तरह का तिकोना अंकन । ४. सिंघाड़े के आकार की तिकोनी सिलाई या बेल-बूटे। ५. समोसा नामक पकवान। ६. एक प्रकार की मुनिया (पक्षी)। ७. एक प्रकार की आतिशबाजी। ८. रहट की लाट में ठोंकी हुई लकड़ी जो लाट को पीछे की ओर घूमने से रोकती है। ९. सुनारों का एक औजार जिससे वे माला बनाते हैं।

सिंघाड़ी—स्त्री० [हिं० सिंघाड़ा+ई (प्रत्य०)] वह ताल जिसमें सिंघाड़ा होता है ।

सिंघाण—पुं० दे० 'सिंहाण' ।

सिंघाली—वि० [सं० सिंह] १. वीर । २. श्रेष्ठ । (डिं०)

वि०, पुं०, स्त्री० दे० 'सिंहली' ।

सिंघासन†—पुं०=सिंहासन ।

सिंघिनी†—स्त्री०=सिंहिनी (सिंह का मादा) ।

सिंघिया—पुं० =सिंगिया (विष) ।

सिंघी—स्त्री० [हिं० सींग] १. सोंठ । शुंठी। २. दे० 'सिंगी'।

†स्त्री०=सिंगिया (विष) ।

सिंघू—पुं० [देश०] एक प्रकार का जीरा जो फारस से आता और प्रायः काले जीरे की तरह होता है।

सिंघेला—पुं०[हिं० सिंघ+एला (प्रत्य०)] १. शेर का बच्चा। २. वीरपुत्र।

सिंचन—पुं० [सं०√सिंच् (सींचना)+ल्युट्—अन] १. खेतों आदि में पानी सींचने की क्रिया या भाव। सिंचाई। २. पानी का छिड़काव।

सिंचना—अ० [हिं० सींचना का अ०] १. सिंचाई होना । २. जल का छिड़काव होना ।

सिंचाई—स्त्री० [हिं० सींचना] १. सींचने या पानी छिड़कने का काम या भाव। २. आब-पाशी। ३. वह स्थिति जिसमें फसल उपजाने के उद्देश्य से खेतों में नदी, कुएँ, ताल, वर्षा आदि का जल पहुँचता या पहुँचाया जाता है। (इरिगेशन) ४. खेत सींचने के काम का पारिश्रमिक या मजदूरी।

सिंचाना—स० [हिं० सींचना का प्रे०] सींचने का काम किसी और से कराना।

†अ०=सिंचना ।

सिंचित—भू० कृ० [सं०√सिंच् (सींचना)+क्त] जिसकी सिंचाई हो चुकी हो। सींचा हुआ ।

सिंचौनी†—स्त्री०=सिंचाई ।

सिंजा—स्त्री० [सं० सिंज-टाप्] शरीर पर पहने हुए गहनों की खनक या झंकार ।

सिंजाफ—पुं० [फ़ा० सिंजाफ़] =संजाफ ।

सिंजित—स्त्री० [सं० सिंजा+इतच्] १. सिंजा। २. ध्वनि । शब्द । उदा०—घुटरुन चलत घुँघरू बाजै। सिंजित सुनत हंस हिय लाजै।—लाल कवि ।

सिंदन*—पुं०=स्यंदन (रथ)।

सिंदुक—पुं० [सं० सिंदु+कन्] सिंधुआर या सँभालू नामक पौधा।

सिंदुरिया†—वि०=सिंदूरी।

सिंदुवार—पुं० [सं०] निर्गुण्डी। सँभालू।

सिंदूर—पुं० [सं०] १. ईंगुर को पीसकर बनाया हुआ एक प्रकार का लाल चूर्ण जो सौभाग्यवती हिन्दू स्त्रियाँ अपनी माँग में भरती हैं। गणेश और हनुमान् की मूर्तियों पर भी यह घी में मिलाकर पोता जाता है। (वर्मिलियन)

मुहा०—सिंदूर चढ़ना=कुमारी का विवाह होना। **सिंदूर भरना या देना**=विवाह के समय वर का कन्या की माँग में सिंदूर डालना। २. बबूल की जाति का एक पहाड़ी पेड़ जो हिमालय के निचले भागों में पाया जाता है।

वि०=सिंदूरी।

सिंदूर-तिलक—पुं० [सं० ब० स०] हाथी।

सिंदूर-तिलका—स्त्री० [सं० सिंदूर-तिलक–टाप्] सधवा स्त्री जिसके माथे पर सिंदूर रहता है।

सिंदूरदान—पुं० [सं०] विवाह के समय वर का कन्या की माँग में सिंदूर भरना।

सिंदूर-पुष्पी—स्त्री० [सं० ब० स०] एक पौधा जिसमें लाल फूल लगते हैं। वीर-पुष्पी। सदासुहागिन। सिंदूरी।

सिंदूर-बंदन—पुं० [सं०] विवाह-संस्कार के समय एक रीति जिसमें वर कन्या की माँग में सिंदूर भरता है।

सिंदूर रस—पुं० [सं०] रस सिंदूर नामक खनिज पदार्थ। रस कपूर।

सिंदूरिया—स्त्री० [सं० सिंदूर+हिं० इया (प्रत्य०)] सिंदू के रंग का। जैसे—सिंदूरिया आम

स्त्री० सिंदूरपुष्पी। सदासुहागिन।

सिंदूरिष्ठा—स्त्री० [सं० सिंदूर+कन–टाप्-इत्व] सिंदूर।

सिंदूरी—वि० [सं०सिंदूर+हिं० ई (प्रत्य०)] सिंदूर के रंग का। पीला मिला लाल।

पुं० १. उक्त प्रकार का रंग जो पीलापन लिए चमकीला लाल होता है। (वर्मिलियन) २. एक प्रकार का बढ़िया आम। ३. बलूत की जाति का एक प्रकार का छोटा पेड़। ४. लाल हलदी। ५. धव। धातकी। ६. सिंदूरपुष्पी। ७. लाल रंग का कपड़ा।

सिंदोरा†—पुं०=सिंधोरा।

सिंध—पुं० [सं० सिंधु] अखण्ड भारत की पश्चिमी सीमा पर (आज-कल पाकिस्तान की पश्चिमी सीमा पर) स्थित एक प्रदेश जो अब पश्चिमी पाकिस्तान में है।

विशेष—दे० 'सिंधु'।

स्त्री० सैंधवी नामक रागिनी।

सिंधव†—पुं०=सैंधव। (दे०)

सिंधवी—स्त्री०=सैंधवी (रागिनी)।

सिंधारा†—पुं० [देश०] भेंट आदि के रूप में सावन बदी तथा सुदी तृतीया के दिन विवाहिता कन्या के घर भेजे जानेवाले पकवान, मिठाइयाँ आदि।

सिंधी—वि० [हिं० सिंध] १. सिंध प्रदेश-संबंधी। २. सिंध प्रदेश में बनने या होनेवाला।

पुं० १. सिंध प्रदेश का निवासी। २. सिंध देश का घोड़ा जो बहुत तेज चलनेवाला और सशक्त होता है।

स्त्री० सिंध देश की भाषा।

सिंधु—पुं० [सं०] १. समुद्र। सागर। २. एक प्रसिद्ध नद जो पंजाब के पश्चिम भाग से होता हुआ सिंध देश में समुद्र में मिलता है। ३. वरुण देवता। ४. सिंध नामक देश। ५. उक्त देश का निवासी। ६. हाथी के सूँड़ से निकलनेवाला पानी। ७. हाथी का मद। ८. कुछ लोगों के मत से चार और कुछ लोगों के मत से सात की संख्या का सूचक शब्द। ९. खूब सफेद और साफ सोहागा। १०. सिंधुआर या निर्गुंडी का वृक्ष। ११. संपूर्ण जाति का एक राग जो मालकोश का पुत्र कहा गया है।

स्त्री० एक छोटी नदी जो यमुना में मिलती है।

सिंधुआर—पुं० [सं० सिंधुवार] निर्गुंडी। सँभालू।

सिंधु-कन्या—स्त्री० [सं० ष० त०] सिंधु की पुत्री, लक्ष्मी।

सिंधु-कफ—पुं० [सं० ष० त०] समुद्र-फेन।

सिंधु-कालक—पुं० [सं० ब० स०] एक प्राचीन देश जो नैर्ऋत्य कोण में था।

सिंधु-खेल—पुं० [सं० ब० स०] सिंध प्रदेश।

सिंधुज—वि० [सं० सिंधु√जन् (उत्पन्न होना)+ड] १. सिंधु अर्थात् समुद्र से निकलने या समुद्र में उत्पन्न होनेवाला। २. सिंधु देश में उत्पन्न होनेवाला।

पुं० १. सेंधा नमक। २. सिंधी घोड़ा। ३. शंख। ४. पारा। ५. सोहागा।

सिंधु-जन्मा (न्मन्)—पुं० [सं० ब० स०] १. समुद्र से निकली हुई कोई वस्तु। २. सिंधुपुत्र, चन्द्रमा। ३. सिंधु-प्रदेश में उत्पन्न होनेवाला व्यक्ति।

सिंधुजा—स्त्री० [सं० सिंधुज–टाप्] १. सिंधु की पुत्री, लक्ष्मी। २. मोती का सीप या सीपी।

सिंधु-जात—पुं० [सं०] सिंधुज। (दे०)

सिंधु-नंदन—पुं० [सं० सिंधु√नंद् (हर्षित करना)+ल्यु-अन] सिंधुपुत्र, चन्द्रमा।

सिंधुपति—पुं० [सं० ष० त०] १. सिंधु प्रदेश का शासक। २. जयद्रथ।

सिंधुपर्णी—स्त्री० [सं० ब० स०] गंभारी का पेड़।

सिंधु-पुत्र—पुं० [सं० ष० त०] १. चन्द्रमा। २. तिंदुक जाति का वृक्ष। तेंदू।

सिंधुपुष्प—पुं० [सं० ष० त०, ब० स०] १. शंख। २. कदम। कदंब। ३. बकुल। मौलसिरी।

सिंधु-भैरवी—स्त्री० [सं०] संगीत में एक प्रकार की रागिनी।

सिंधु-मंदारी—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सिंधु-माता—स्त्री० [सं० सिंधु-मातृ] सरस्वती, जो नदियों की माता मानी जाती है।

सिंधुर—पुं० [सं० सिंधु√रा (ग्रहण करना)+क] [स्त्री० सिंधुरा] १. हाथी। २. आठ की संख्या का वाचक शब्द।

सिंधुर-मणि—पुं० [सं० ष० त०] गज-मुक्ता।

सिंधुर-वदन—पुं० [सं० ब० स०] गजवदन। गणेश।

सिंधुरागामी—वि० [सं०] स्त्री० सिंधुरागामिनी]=गजगामी। स्त्री० गज-गामिनी।

सिंधु-लवण—पुं० [सं०] सेंधा नमक।

सिंधुवार—पुं० [सं०] निर्गुंडी। सँभालू।

सिंधुविष—पुं० [सं०] हलाहल जो समुद्र-मंथन करते समय निकला था।

सिंधु-शयन—पुं० [सं० ब० स०] विष्णु।

सिंधु-संगम—पुं० [सं०] १. वह स्थान जहाँ पर नदी और समुद्र मिलते हों। नदी और सागर का संगम-स्थल। २. नदियों का संगम-स्थल।

सिंधु-सुत—पुं० [सं० ष० त०] जलंधर नामक राक्षस जिसे शिव जी ने मारा था।

सिंधु-सुता—स्त्री० [सं० ष० त०] १. लक्ष्मी। २. सीप।

सिंधूरा—पुं० [सं० सिंधुर] संगीत में एक प्रकार का राग।

सिंधूरी—स्त्री० [सं० सिंधुर] संगीत में एक प्रकार की रागिनी। †स्त्री०= सिंदूरी।

सिंधोरा—पुं० [सं० सिंदूर+हिं० ओरा (प्रत्य०)] सिंदूर रखने की काठ की डिबिया।

सिंब—पुं० दे० 'शिंब'।

सिंबा—स्त्री० दे० 'शिंबा'।

सिंबी—स्त्री० [सं०] शिंबी (छीमी या फली)।

सिंसप—पुं० [सं० शिंशपा] शीशम का पेड़।

सिंसपा—स्त्री०=शिंशपा (शीशम)।

सिंह—पुं० [सं०] [स्त्री० सिंहिनी] १. बिल्ली की जाति का, पर उससे बहुत बड़ा एक प्रसिद्ध हिंसक जंतु जो अपने वर्ग में सबसे अधिक पराक्रमी, बलवान् और देखने में भव्य होता है। इसकी गरदन पर बड़े-बड़े बाल (केसर) होते हैं। शेर बबर। केसरी। २. लोक-व्यवहार में, उक्त के आधार पर बल-वीर्य और श्रेष्ठता का सूचक शब्द। जैसे—पुरुष सिंह। ३. ज्योतिष में, मेष आदि बारह राशियों में से पाँचवीं राशि। ४. छप्पय छंद के सोलहवें भेद का नाम। २. वास्तुकला में ऐसा प्रासाद जिसमें बारह कोनों पर सिंह की मूर्तियाँ बनी होती थीं। ६. एक प्रकार का आभूषण जो रथ के बैलों के माथे पर पहनाया जाता था। ७. वर्तमान अवसर्पिणी के २४ वें अर्हत् का चिह्न जो जैन लोग रथ यात्रा आदि के समय झंडों पर बनाते हैं। ८. दिगम्बर जैन साधुओं के चार भेदों में से एक। ९. संगीत में एक प्रकार का राग। १०. वेंकट गिरि का एक नाम। ११. एक प्रकार का कल्पित पक्षी। १२. लाल सहिंजन।

सिंह-कर्ण—पुं० [सं०] खिड़की या गवाक्ष का कोना।

सिंहकर्मा(र्मन्)—वि० [सं० ब० स०] सिंह के समान पराक्रम दिखानेवाला। पराक्रमी। वीर।

सिंह-केसर—पुं० [सं० ष० त०] १. सिंह की गरदन पर के बाल। २. फेनी नामक पकवान का पुराना नाम। ३. बकुल। मौलसिरी।

सिंहग—पुं० [सं० सिंह√गम् (जाना)+ड] शिव का एक नाम।

सिंह-घोष—पुं० [सं० ष० त०, ब० स०, वा] एक बुद्ध का नाम।

सिंहच्छदा—स्त्री० [सं० ब० स०] सफेद दूब।

सिंह-तुंड—पुं०[सं० ब० स०] एक प्रकार की विकट मछली जो नदियों से सटी हुई चट्टानों की दरारों में रहती है।

सिंह-द्वार—पुं० [सं०] १. प्राचीन भारतीय वास्तु में, किले, नगर या महल का वह प्रधान और बड़ा द्वार, जिसकी बाहरी तरफ दोनों ओर सिंह की आकृतियाँ बनी होती थीं। २. बड़ा और मुख्य द्वार। सदर फाटक।

सिंह-नंदन—पुं० [सं०] संगीत में, ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

सिंह-नाद—पुं० [सं०] १. शेर की गरज या दहाड़। २. प्रतियोगिता, युद्ध आदि के समय गरजकर की जानेवाली ललकार। जोरदार शब्दों में ललकार कर कही जानेवाली बात। ३. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से सगण, जगण, सगण, सगण और एक गुरु वर्ण होता है। इसे कलहंस और नंदिनी भी कहते हैं। ४. संगीत में, एक प्रकार का ताल। ५. शिव का एक नाम। ६. बौद्धों में धार्मिक ग्रंथों आदि का होनेवाला पाठ।

सिंहनादक—पुं० [सं० सिंह√नद् (ध्वनि करना) ण्वुल्-अक्, ब० स०] सिंघी नामक बाजा।

सिंहनादी (दिन्)—वि० [सं० नाद+इन्] [स्त्री० सिंहनादिनी] १. जो सिंहनाद करता हो। २. जो सिंह के समान गर्जना करता हो। पुं० एक बोधिसत्व का नाम।

सिंहनी—स्त्री० [सं०] १. शेर की मादा। शेरनी। २. एक प्रकार का छंद जिसके चारों चरणों में क्रम से १२, १८, २० और २२ मात्राएँ होती हैं। यह क्रम उलट देने पर जो रूप होता है उसे 'गाहिनी' कहते हैं।

सिंह-पर्णी—स्त्री० [सं०] माषपर्णी।

सिंह-पिप्पली—स्त्री० [सं०] सिंहली पीपल।

सिंह-पुच्छ—पुं० [सं०] पिठवन। पृश्निपर्णी।

सिंह-पुच्छी—स्त्री० [सं०] १. चित्रपर्णिका या चित्रपर्णी। २. बन उड़द। माषपर्णी। ३. पिठवन। पृश्निपर्णी।

सिंह-पुरुष—पुं० [सं० उपमि० स०] १. सिंह के समान पराक्रमी पुरुष। २. जैनियों के नौ वासुदेवों में से एक।

सिंह-पुष्पी—स्त्री० [सं०] पृश्निपर्णी। पिठवन।

सिंह पौर—पुं०=सिंह-द्वार।

सिंह भैरवी—स्त्री० [सं०] संगीत में, भैरवी रागिनी का एक प्रकार या भेद।

सिंह-मल—पुं० [सं०] एक प्रकार की मिश्र धातु। पंच-लौह।

सिंह-मुख—वि० [सं० ब० स०] जिसके मुख की आकृति शेर के मुख की आकृति जैसी हो।
पुं० १. शिव का एक गण। २. एक राक्षस।

सिंह-मुखी—वि० [सं०] सिंह-मुख।
स्त्री० १. अड़ूसा। २. बाँस। ३. बन उड़द। ४. एक प्रकार की खारी मिट्टी। ५. काली निर्गुण्डी या सँभालू।

सिंहयाना—स्त्री० [सं० ब० स०] सिंह पर सवारी करनेवाली, दुर्गा।

सिंहल—पुं० [सं०] [वि० सिंहली] १. पीतल। २. टीन। ३. प्राचीन भारत के दक्षिण का एक द्वीप जो कुछ लोगों के मत में आधुनिक 'लंका' (देश) है। लंका-द्वीप। ४. उक्त देश का निवासी। सिंहली।

सिंहलक—वि० [सं० सिंहल+कन्] सिंहल-संबंधी। सिंहल का। पुं० १. पीतल। २. दारचीनी।

सिंहला—स्त्री० [सं० सिंहल-टाप्] १. सिंहल द्वीप। लंका। २. राँगा। ३. पीतल। ४. छाल या बकला। ५. दारचीनी।

सिंहली—वि० [सं० सिंहल+हिं० ई० (प्रत्य०)] सिंहल द्वीप में होनेवाला। लंका-संबंधी।

पुं० १. सिंहलद्वीप का निवासी। लंकानिवासी। २. सिंहल द्वीप का हाथी।

स्त्री० सिंहल द्वीप की भाषा।

सिंहली पीपल—स्त्री० [सं० सिंह-पिप्पली] सिंहल में होनेवाली एक प्रकार की लता जिसके बीज दवा काम में आते हैं।

सिंहलील—पुं० [सं०] १. संगीत में, एक प्रकार का ताल। २. कामशास्त्र में एक प्रकार का आसन या रति-बंध।

सिंह-वाहना—स्त्री० [सं० ब० स०] दुर्गा (जिनका वाहन सिंह है)।

सिंह-वाहिनी—स्त्री० [सं०] १. सिंह पर सवारी करनेवाली, दुर्गा। २. संगीत में, कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सिंह-विक्रम—वि० [सं० ब० स०] घोड़ा जिसमें सिंह के समान शक्ति हो।

पुं० १. घोड़ा। २. संगीत में, एक प्रकार का ताल।

सिंह-विक्रांत—पुं० [सं०] १. शेर की चाल। २. शेर के समान पराक्रमी और वीर पुरुष। ३. घोड़ा। ४. ऐसे दंडक वृत्त जिनके प्रत्येक चरण में दो नगण और सात अथवा सात से अधिक यगण हों।

सिंह विक्रीड—पुं० [सं०] दंडक वृत्त का एक भेद जिसमें नौ से अधिक यगण होते हैं। इसका प्रयोग अधिकता से प्राकृत भाषा के कवियों ने किया है।

सिंह-विक्रीडित—पुं० [सं०] १. योग में एक प्रकार की समाधि। २. संगीत में, एक प्रकार का ताल। ३. दे० 'सिंह-विक्रीड'।

सिंह विजृंभित—पुं० [सं० ब० स०, उपमि० स०] बौद्ध मत में, एक प्रकार की समाधि।

सिंहस्थ—वि० [सं० सिंह√स्था (ठहरना)+क] सिंह राशि में स्थित कोई (ग्रह)। जैसे—सिंहस्थ बृहस्पति।

पुं० वह समय जब बृहस्पति सिंह राशि में होता है, और इसी लिए तब विवाह आदि कुछ शुभ कार्य वर्जित हैं।

सिंह-हनु—वि० [सं० ब० स०] जिसकी दाढ़ सिंह के समान हो।

पुं० गौतम बुद्ध के पितामह का नाम।

सिंहा—स्त्री० [सं०] १. करेमू का साग। २. कटाई। भटकटैया। ३. बहती। बन-भाँटा।

पुं० १. नाग देवता। २. सिंह लग्न। ३. वह समय जब सूर्य इस लग्न में रहता है।

†पुं०=नर-सिंघा (बाजा)।

सिंहाण (क)—पुं० [सं० सिंघ+आनच् पृषो० सिद्ध] १. लोहे पर लगनेवाला जंग या मोर्चा। २. नाक में से निकलनेवाला मल। रेंट। सीड़।

सिंहानन—पुं० [सं० ब० स०] १. काला सँभालू। काली निर्गुंडी। २. अड़ूसा।

वि० सिंह के समान मुखवाला।

सिंहारव—पुं० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सिंहार-हार†—पुं०=हर-सिंगार।

सिंहाली—स्त्री० [सं० सिंह+लच्+ङीप] १. सिंहली पीपल। सैंहली। २. दे० 'सिंहली'।

सिंहावलोकन—पुं० [सं०] १. सिंह की तरह पीछे देखते हुए आगे बढ़ना। २. किये हुए कामों या बीती हुई बातों का स्वरूप जानने या बतलाने के लिए उन पर दृष्टिपात करना। ३. संक्षेप में पिछली बातों का दिग्दर्शन या वर्णन। (रिट्रास्पेक्शन) ४. कविता में ऐसी रचना जिसमें किसी चरण के अंत में आये हुए कुछ शब्दों से ही फिर उसके बाद वाले चरण का आरंभ किया जाता है। जैसे—यदि पहले चरण के अंत में 'पारिजात' हो और उसके बादवाले चरण का आरंभ भी 'पारिजात' से हो तो यह सिंहावलोकन कहलाएगा। ५. साहित्य में, यमक अलंकार का एक प्रकार या भेद जिसमें छंद का अंत भी उसी शब्द से किया जाता है जिससे उसका आरंभ होता है।

सिंहावलोकनिक—वि० [सं०] १. सिंहावलोकन के रूप में या उसके सिद्धांत से संबंध रखनेवाला। जिसमें सिंहावलोकन होता हो। (रिट्रासपेक्टिव) २. दे० 'प्रतिवर्ती।

सिंहावलोकित—भू० कृ० [सं०] जिसका या जिसके संबंध में सिंहावलोकन हुआ हो। (रिट्रास्पेक्टेड)

सिंहासन—पुं० [सं० सिंह+आसन, मध्य० स०] १. राजाओं के बैठने या देवमूर्तियों की स्थापना के लिए बना हुआ एक विशेष प्रकार का आसन जो चौकी के आकार का होता है और जिसके दोनों ओर शेर के मुख की आकृति बनी होती है। २. देवताओं का एक प्रकार का आसन जो कमल के पत्ते के आकार का होता है। ३. काम-शास्त्र में, सोलह प्रकार के रतिबंधों में से एक। ४. चंदन, रोली आदि का वह टीका या तिलक जो दोनों भौंहों के बीच में लगाया जाता है। ५. लोहे की कीट। मंडूर। ६. फलित ज्योतिष में, एक प्रकार का चक्र जिसमें मनुष्य की आकृति में विभक्त २७ कोठे या खाने होते हैं। इन कोठों या खानों में नक्षत्रों के नाम भरे जाते हैं और उनसे शुभाशुभ फल जाना जाता है।

सिंहास्य—पुं० [सं० ब० स०] १. अड़ूसा। २. कचनार। ३. एक बड़ी मछली।

सिंहिका—स्त्री० [सं०] १. दाक्षायणी देवी की एक मूर्ति का रूप। २. एक राक्षसी जो कश्यप की पत्नी और राहु की माता थी। ३. ऐसी कन्या जिसके घुटने चलने के समय आपस में टकराते हों और इसी लिए जो विवाह के अयोग्य कही गई है। ४. शोभन नामक छंद। ५. कंटकारी। भटकटैया। ६. अड़ूसा। ७. वन-भंटा।

सिंहिकेय—पुं० [सं० सिंहिका+ढक्–एय] सिंहिका (राक्षसी) के पुत्र राहू।

सिंही—स्त्री० [सं०] १. सिंह या शेर की मादा। शेरनी। सिंहनी। २. आर्या नामक छन्द का एक भेद। ३. राहु की माता, सिंहिका। ४. अड़ूसा। ५. थूहड़। ६. बन-मूँग। ७. पीली कौड़ी। ८. नर-सिंघा नाम का बाजा।

स्त्री०=सिंगी।

सिंहेश्वरी—स्त्री० [सं० ष० त०] दुर्गा।

सिंहोड़†—पुं०=सेहुँड़।

सिंहोदरी—वि० स्त्री० [सं० ब० स०] सिंह की कमर की तरह पतली कमरवाली (सुन्दरी स्त्री)।

सिंहोन्नता—स्त्री० [सं० ब० स०, उपमि० स०] बसंत-तिलका छंद का दूसरा नाम ।

सिअरा†—वि० [सं० शीतल] ठंढा। शीतल।

पुं० १. वृक्ष की छाया से युक्त स्थान जो साधारणतः ठंढा होता है। २. छाँह। छाया।

†पुं० =सियार (गीदड़) ।

सिआर†—पुं०=सियार ।

सिउँ*—स्त्री०=सीमा ।

*विभ० से। उदा०—आन देव सिउँ नाँहीं काम ।—कबीर ।

सिएटो—पुं०[अं० साउथ ईस्ट एशिया ट्रीटी आर्गेनाइज़ेशन के आरंभिक अक्षरों का समूह] दक्षिण-पूर्वी एशिया की सुरक्षा के उद्देश्य से स्थापित एक राजनीतिक संघटन जिसमें अमेरिका, ब्रिटेन, पाकिस्तान आदि राष्ट्र सम्मिलित हैं।

सिकंजबी—स्त्री० [फा० शिकंजबीन] १. नींबू के रस या सिरके में पकाया हुआ शरबत। २. मधुर पेय, जो जल में नींबू का रस और चीनी मिलाकर तैयार किया जाता है ।

सिकंजा†—पुं०=शिकंजा ।

सिकंदर—पुं० [फा०] एक प्रसिद्ध यूनानी सम्राट् ।

पद—तकदीर का सिकंदर=बहुत बड़ा भाग्यवान् आदमी।

सिकंदरा—पुं० [फा० सिकंदर] रेल-लाइन के किनारे लगाया जानेवाला वह ऊँचा खंभा जिसके ऊपर हाथ के आकार की पटरियाँ लगी होती हैं। इन पटरियों के ऊपर उठे या नीचे गिरे हुए होने के संकेत से गाड़ियाँ आगे बढ़तीं या उस स्थान पर रुककर खड़ी रहती हैं। सिगनल ।

सिकटा—पुं० [देश०] टूटे हुए मिट्टी के बरतन या खपड़े का छोटा टुकड़ा।

सिकड़ी—स्त्री० [सं० शृंखला] १. जंजीर । शृंखला। २. किवाड़ बन्द करने के लिए उसमें लगाई जानेवाली जंजीर । साँकल। ३. जंजीर के आकार का गले में पहनने का एक प्रकार का गहना । ४. कमर में पहनने की करधनी। ५. जंजीर के आकार की कोई बनावट या रचना ।

सिकता—स्त्री० [सं० सिक+अतच्-टाप्] १. रेतीली भूमि। २. रेत। बालू। ३. चीनी। ४. पथरी (रोग) । ५. लोनी का साग ।

सिकता-मेह—पुं० [सं० मध्य० स०] प्रमेह का एक भेद जिसमें पेशाब के साथ रेत के-से कण निकलते हैं।

सिकतिल—वि० [सं० सिकता+इलच्] रेतीला । बलुआ ।

सिकत्तर†—पुं० [अं० सेक्रेटरी] मंत्री।

सिकदार†—पुं० [अ० सिकः=विश्वसनीय] विश्वसनीय और बलवान् अधिकारी या रक्षक। उदा०—एक कोटु पंच सिकदारा पंचे माँगहिं हाला।—कबीर ।

सिकमार†—पुं० [?] जंगली बिल्ली की तरह का एक जन्तु ।

सिकरी†—स्त्री०=सिकड़ी।

सिकली—स्त्री० [अ० सैक़ल] १. हथियारों की धार तेज करने और उन्हें चमकाने के उद्देश्य से उन्हें विशेष प्रकार से रगड़कर माँजने का काम। २. उक्त की मजदूरी।

सिकलीगर—पुं० [हिं० सिकली (अ० सैक़ल)+फा० गर] सिकली करनेवाला कारीगर । हथियारों को माँजने तथा उन पर सान धरनेवाला कारीगर ।

सिकसोनी—स्त्री० [देश०] काकजंघा नामक वनौषधि ।

सिकहर†—पुं० [सं० शिक्या] छत में टाँगा जानेवाला छींका ।

वि० दे० 'छींका' ।

सिकहुली—स्त्री० [हिं० सींक+औली] मूँज, कास आदि की बनी हुई छोटी डलिया ।

सिकार†—पुं०=शिकार ।

सिकारी†—वि०, पुं०=शिकारी।

सिकुड़न—स्त्री० [हिं० सिकुड़ना] १. सिकुड़े हुए होने की अवस्था या भाव। वह स्थिति जिसमें कोई वस्तु पहले की अपेक्षा कम विस्तार घेरने लगती है । २. किसी चीज के सिकुड़ने के कारण उसके तल या विस्तार में पड़नेवाला बल । शिकन। जैसे—चाँदनी की सिकुड़न, माथे की सिकुड़न।

सिकुड़ना—अ०[सं० संकुचन] १. ताप, शीत आदि के प्रभाव से अथवा और किसी कारण से किसी विस्तृत पदार्थ का ऐसी स्थिति में आना या होना कि उसका तल या विस्तार कुछ कम हो जाय। आयाम में खिंचाव आना । आकुंचित होना । बटुरना। 'फैलना' का विपर्याय। जैसे—धुलने से कपड़ा सिकुड़ना । चलने या बैठने से चाँदनी सिकुड़ना । २. व्यक्ति अथवा उसके अंगों के संबंध में ऐसी स्थिति में आना या होना कि अपेक्षया विस्तार कम हो जाय । जैसे—(क) टूटने से हाथ या पैर सिकुड़ना । (ख) भीड़ या सरदी के कारण किसी का कोने में सिकुड़ना ।

संयो० क्रि०—जाना ।

सिकुरना †—अ०=सिकुड़ना

सिकोड़ना—स० [हिं० सिकुड़ना] १. ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज सिकुड़ जाय। २. (प्राणी द्वारा) अपने अंग या अंगों को इस प्रकार एक दूसरे से सटाना कि वह पहले की अपेक्षा कम जगह घेरने लगे ।

सिकोरना†—स०=सिकोड़ना ।

सिकोरा*—पुं० दे० 'कसोरा' ।

सिकोली—स्त्री० [देश०] कास, मूंज, बेंत या बाँस की कमाचियों की बनी हुई टोकरी।

सिकोही—वि० [फा० शिकोह=तड़क-भड़क] १. आन-बानवाला । २. गरबीला । ३. बहादुर । वीर ।

सिक्कक—पुं० [सं०√सिक् (सींचना)+ककन्] बाँसुरी में लगाने की जीभी या उसका स्वर मधुर बनाने के लिए लगाया हुआ तार ।

सिक्कड़—पुं० [हिं० सिकड़ी] लोहे आदि की बड़ी और मोटी सिकड़ी।

सिक्कर†—पुं०=सिक्कड़।

सिक्का—पुं० [अ० सिक्कः] १. प्राचीन काल में, वह ठप्पा जिससे धातु-खंडों की प्रामाणिकता और शुद्धता सूचित करने के लिए विशिष्ट चिह्न अंकित किये जाते थे। मोहर करनेवाला ठप्पा। २. आज-कल निर्दिष्ट मूल्य का वह धातु-खंड जो किसी राजकीय टकसाल में ढला या ठप्पे से दबाकर बनाया गया हो और पदार्थों के क्रय-विक्रय, लेन-देन

आदि विनिमय के साधन के रूप में काम आता हो। जैसे—रुपया, अठन्नी, पैसा, अशरफी, गिन्नी आदि। (कॉयन) ३. किसी व्यक्ति का ऐसा अधिकार, प्रभाव या प्रभुत्व जिसके आगे प्रायः सभी लोग विशेषतः विरोधी लोग दबते या सिर झुकाते हों।

मुहा०—सिक्का जमना या बैठना=ऐसी आतंकपूर्ण स्थिति होना जिससे सब लोग दबे रहें या विरोध न कर सकें।

४. खरीदे हुए माल का दिया जानेवाला नगद दाम। (दलाल) ५. लकड़ी का एक विशिष्ट टुकड़ा जो नाव के अगले भाग पर लगा होता है। ६. धातु की वह नली जिससे मशाल पर तेल डाला जाता है।

सिक्की—स्त्री० [अ० सिक्कः] १. छोटा सिक्का। २. आठ आने वाला सिक्का, अठन्नी।

सिक्के—क्रि० वि० [हिं० सिक्का] सिक्कों के रूप में अर्थात् नगद पूरा दाम देने पर।

विशेष—महाजनी बोल-चाल में इस शब्द का प्रयोग यह सूचित करने के लिए होता है कि जो दाम दिया या लिया जायगा उसमें किसी तरह की छूट या बट्टा अथवा दलाली आदि की रकम सम्मिलित नहीं होगी।

सिक्ख—पुं० [सं० शिष्य] १. शिष्य। चेला। उदा०—कबीर गुरु बैस बनारसी, सिक्ख समुंदर पार।—कबीर। २. गुरु नानक के पंथ का अनुयायी। ३. इन अनुयायियों का वर्ग जिसने अब एक स्वतंत्र जाति का रूप धारण कर लिया है।

विशेष—ये अनुयायी केश, कंघा, कड़ा, कृपाण और कच्छा (जाँघिया) सदा धारण करते हैं।

*स्त्री० [सं० शिक्षा] सीख। शिक्षा।

स्त्री० [सं० शिखा] शिखा। चोटी।

सिक्खी—स्त्री० [हिं० सिख+ई (प्रत्य०)] सिक्ख धर्म-मत।

सिक्खेकार—पुं० [हिं० सीखना+कार] [भाव० सिक्खेकारी] वह जिसने किसी गुरु या विशेषज्ञ से किसी कला या विद्या की नियमित रूप से और यथेष्ट शिक्षा पाई हो। 'अताई' का विपर्याय। (संगीतज्ञ)

सिक्त—भू० कृ० [सं०√सिच् (सींचना)+क्त] सींचा हुआ। सिंचित। २. भीगा हुआ। तर।

सिक्थ—पुं० [सं०] १. भात। २. उबाले हुए चावलों या भात का कोई दाना। सीथ। ३. भात का कौर या ग्रास। ४. पिंड-दान के लिए बनाया हुआ भात का पिंड। ५. मोतियों का ऐसा गुच्छा जो तौल में एक धरण या ३२ रत्ती हो। ६. मोम। ७. नील।

सिखंड†—पुं०=शिखंड।

सिखंडी†—पुं०=शिखंडी।

सिख—पुं०=सिक्ख।

†स्त्री० १. शिखा (चोटी)। जैसे—नख-सिख। २. सीख (शिक्षा)।

सिखड़ा†—पुं० [हिं० सिख] सिख के लिए उपेक्षासूचक शब्द।

सिखर†—पं०=शिखर।

†वि० चरम। अत्यंत।

सिखरन†—स्त्री०=शिखरन (श्रीखंड)।

सिखलाना—स०=सिखाना।

सिखवन†—स्त्री०=सिखावन।

सिखा†—स्त्री०=शिखा।

सिखाना—स० [हिं० सीखना का प्रे० रूप] १. किसी को कोई नया काम, बात या विषय सीखने में प्रवृत्त करना। २. सब प्रकार की संबद्ध बातें बताकर शिक्षित या प्रशिक्षित करना। ३. लाक्षणिक अर्थ में, किसी व्यक्ति को विशेष ढंग से कोई काम करने के लिए अच्छी तरह समझाना-बुझाना।

मुहा०—(किसी को) सिखाना-पढ़ाना=किसी से विशेष प्रकार का आचरण कराने के उद्देश्य से उसके मन में कोई बात अच्छी तरह बैठाना।

सिखावन—स्त्री० [पुं० हिं० सिखावना=सिखाना] १. सिखाने की क्रिया या भाव। २. सिखाया हुआ काम, बात या विद्या। ३. उपदेश। नसीहत। शिक्षा।

सिखावना*—स०=सिखाना।

सिखिर†—पुं० १.=शिखर। २.=शिशिर।

सिखी†—पुं०=शिखी।

सिगता†—स्त्री०=सिकता।

सिगनल—पुं० [अं०] १. किसी विशिष्ट उद्देश्य की सिद्धि के लिए अथवा कोई कार्य आरंभ कराने के लिए किया जानेवाला संकेत। २. रेल-लाइन के पास लगा हुआ सिकदरा (देखें)।

सिगरा†—वि० [सं० समग्र] [स्त्री० सिगरी] सब। संपूर्ण। समस्त। उदा०—सिगरे जग माँझ हँसावत हैं। रघुबंसिन्ह पाप नसावत हैं।—केशव।

सिगरेट—पुं० [अं०] कागज में गोलाकार लपेटा हुआ सुरती का चूरा जिसका धुआँ पीया जाता है, और जिसके अनुकरण पर हमारे यहाँ बीड़ी बनी है।

सिगार—पुं० [अं०] एक विशेष प्रकार का बड़ा तथा मोटा सिगरेट। चुरूट।

सिगोती—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

सिगोन—स्त्री० [सं० सिकता; सिगता] रेत मिली लाल मिट्टी जो प्रायः नालों के पास पाई जाती है।

सिचान*—पुं०=संचान (बाज पक्षी)।

सिच्छक†—पुं०=शिक्षक।

सिच्छा†—स्त्री०=शिक्षा।

सिजदा—पुं० [अ० सज्दः] १. घुटने टेककर और सिर झुकाकर किया जानेवाला प्रणाम। (विशेषतः ईश्वर-प्रार्थना के समय)

सिजल—वि० [हिं० सजीला] १. जो रूप-रंग के विचार से देखने में अच्छा हो। सजा हुआ। सुकर। २. किसी की तुलना में, बढ़िया। जैसे—सिजल मिठाई।

सिजली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पौधा जो दवा के काम में आता है।

सिझना—अ० दे० 'सीझना'।

सिझान—स्त्री० [हिं० सीझना] १. सीझने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. व्यापारिक क्षेत्र में, दलाली, ब्याज आदि के रूप में मिलनेवाला धन। क्रि० प्र०—सिझाना।—सीझना।

सिझाना—स० [सं० सिद्ध] १. आँच पर पकाकर गलाना। २. कष्ट देना। ३. मिलने के योग्य कराना। प्राप्य कराना। जैसे—हम्हीं ने तुम्हारी

दलाली सिझा दी। ४. अनुचित रूप से या बहकाकर वसूल करना। उतारना। जैसे—उन्होंने जुए में उनसे सौ रुपए सिझा लिए। (बाजारू) ५. खाल को विशिष्ट प्रक्रियाओं से पक्का और मुलायम करना। (टैनिंग) ६. विशेष दे० 'सीझना'।

सिटकिनी—स्त्री० [अनु० सिट-सिट] खिड़कियों, दरवाजों को अंदर से बंद करने के लिए उनमें लगायी जानेवाली एक प्रकार की विदेशी कुंडी जो ऊँची उठाये जाने पर ऊपरी चौखट से जा चिपकती है।

सिटपिटाना—अ०[अनु०]प्रायः असमंजस में पड़ने के कारण और किसी के प्रश्न का उसे तत्काल ठीक या स्पष्ट उत्तर न दे सकने की दशा में कुछ लज्जित होकर इधर-उधर करने लगना।

अ० [हिं० सीटना]१.खिन्न तथा व्यथित होकर अनुनय-विनय करना। २. इधर-उधर की हाँकना तथा बढ़-बढ़कर बोलना

सिटी—पुं०[अं०] नगर। शहर। जैसे—कानपुर सिटी, बनारस सिटी।

सिट्टी—स्त्री० [हिं० सीटना] सीटने अर्थात् बहुत बढ़-बढ़ कर बोलने की क्रिया या भाव।

मुहा०—**सिट्टी गुम होना या भूल जाना**=इस प्रकार घबरा या सिटपिटा जाना कि मुँह से उत्तर तक न निकल सके।

सिट्ठी†—स्त्री०=सीठी।

सिठना†—पुं०=सीठना।

सिठनी†—स्त्री०=सीठनी।

सिठाई—स्त्री०[हिं० सीठी] सीठे होने की अवस्था या भाव। सीठापन। सीठी।

सिड़—स्त्री० [हिं० सिड़ी]उन्माद या पागलपन का एक हलका रूप जिसमें आदमी हठपूर्वक कोई काम करता चलता है और रोकने या समझाने पर भी नहीं मानता। झक। सनक।

क्रि० प्र०—चढ़ना।—सवार होना।

सिड़-बिल्ला—पुं० [हिं० सिड़ी+बिल्ला] [स्त्री० सिड़बिल्ली]१. पागल। सिड़ी। २. बुद्धू। बेवकूफ।

सिड़ी—वि०[सं० श्रृणीक] [स्त्री० सिड़िन] जिसे सिड़ नामक रोग हो। झक्की। सनकी।

सिड़ीपन—पुं० [हिं०] सिड़ी होने की अवस्था या भाव।

सिणगा*—पुं०=श्रृंगार। (डिं०)

सितंबर—पुं०[अं० सेप्टेंबर] पाश्चात्य पंचांग में वर्ष का नवाँ महीना जो अगस्त के बाद और अक्तूबर से पहले पड़ता है। यह सदा ३० दिनों का होता है।

सित—वि०[सं०] [भाव० सितता]१. उजला। श्वेत। सफेद। २. चमकीला और साफ। स्वच्छ।

पुं०१. शुक्र नामक ग्रह। २. शुक्राचार्य का एक नाम। ३. चान्द्र मास का शुक्ल पक्ष। ४. चीनी। शक्कर। ५. चन्दन। ६. सफेद कचनार। ७. मूली। ८. सफेद तिल। ९. भोजपत्र। १०. चाँदी। रजत।

सित-कंठ—वि०[सं० शितिकंठ] जिसका गला सफेद हो।

पुं०१. शिव। २. दात्यूह पक्षी। मुरगाबी।

सितकर—पुं०[सं०]१. भीमसेनी कपूर। २. चन्द्रमा।

सितकर्णी—स्त्री०[सं०] अड़ूसा। वासक।

सित-काच—पुं०[सं० ब० स०, मध्य० स० वा]१. हल्की शीशा। २. बिल्लौर।

सितकारिका—स्त्री० [सं० सित√कृ (करना)+ण्वुल्—अक, टाप्-इत्व] बरियार। बला (पौधा)।

सित-कुंजर—पुं०[सं० मध्य० स०]१. ऐरावत हाथी। २. इन्द्र।

सित-कुंभी—स्त्री०[सं० मध्यम० स०] सफेद पाँड़र। श्वेत पाटल (वृक्ष)।

सितक्षार—पुं०[सं० मध्य० स०, ब० स०] सोहागा।

सितच्छद—पुं०[सं० ब० स०]१. हंस। २. लाल सहिजन।

सितच्छदा—स्त्री०[सं० सितच्छद—टाप्] सफेद दूब।

सितता—स्त्री०[सं० सित+तल्—टाप्] सित अर्थात् सफेद होने की अवस्था, गुण या भाव। सफेदी।

सित-तुरग—पुं०[सं० ब० स०] अर्जुन।

सित-दीधिति—पुं०[सं० ब० स०] सफेद किरणोंवाला। चन्द्रमा।

सित-द्रुम—पुं०[सं० मध्य० स०] १. अर्जुन वृक्ष। २. मोरट नामक क्षुप।

सित-पक्ष—पुं०[सं० ब० स०] हंस।

सित-पच्छ*—पुं०=सित-पक्ष।

सितपर्णी—स्त्री०[सं०] अर्कपुष्पी। अंधाहुली।

सित-पुष्प—पुं०[सं० ब० स०]१. तगर का पेड़ या फूल। गुल चाँदनी। २. सिरिस का पेड़। ३. पिंड खजूर। ४. एक प्रकार का गन्ना।

सित-पुष्पा—स्त्री० [सं० सितपुष्प-टाप्] १. बला। बरियार। २. कंघी (पौधा)। ३. चमेली। मल्लिका। ४. सफेद कुष्ठ।

सित-पुष्पी—स्त्री०[सं० सितपुष्प—ङीप्] १. सफेद अपराजिता। २. केवटी मोथा। ३. काँसा नामक तृण। ४. पान का पौधा। नागवल्ली। ५. नागदंती।

सित-प्रभ—पुं०[सं० ब० स०] चाँदी।

सित-भानु—पुं०[सं० ब० स०] चन्द्रमा।

सितम—पुं० [फा०]१. ऐसा क्रूर कार्य जो दूसरों पर विशेषतः निरीहों पर बलात् किया जाय। ३. शासक या अधिकारी द्वारा अपनी प्रजा पर किया जानेवाला अत्याचार। ३. अनर्थ। गजब।

मुहा०—**सितम टूटना**=बहुत बड़ा अनर्थ होना। भारी विपत्ति या संकट आना। **सितम ढाना**=बहुत बड़ा अनर्थ या अत्याचार करना।

सितमगर—वि०[फा०] [भाव० सितमगरी] दूसरों पर विशेषतः निरीहों पर अत्याचार करनेवाला। दुःखियों तथा बेगुनाहों को सतानेवाला।

सितमणि—स्त्री०[सं० ब० स०, मध्य० स०] बिल्लौर। स्फटिक।

सित-माष—पुं०[सं०] बोड़ा। लोबिया। राज-माष।

सित-रश्मि—पुं०[सं० ब० स०] सफेद किरणोंवाला। चन्द्रमा।

सित-राग—पुं०[सं० ब० स०] चाँदी। रजत।

सित-रुचि—पुं०[सं० ब० स०] चन्द्रमा।

सितली—स्त्री०[सं० शीतल] बेहोशी या अधिक दर्द के समय निकलनेवाला पसीना।

क्रि० प्र०—छूटना।

सित-सागर—पुं०[सं० मध्यम० स०] क्षीर सागर।

सित-सिंधु—पुं०[सं० मध्य० स०]१. क्षीर सागर। २. गंगा।

सित-हूण—पुं०[सं० मध्य० स०] हूणों की एक शाखा।

सितांक—पुं०[सं० ब० स०] एक प्रकार की मछली।

सितांग—पुं०[सं० ब० स०]१. श्वेत रोहितक वृक्ष। सफेद रोहेड़ा। २. बेला। ३. कपूर। ४. शिव।

सितांबर—वि०[सं० ब० स०]=श्वेतांबर।

सितांशु—पुं०[सं० ब० सं०]१. चन्द्रमा। २. कपूर।

सितांशुक—वि०[सं० ब० स०] श्वेत वस्त्रधारी। सफेदपोश।

सिता—स्त्री०[सं० सित—टाप्]१. चन्द्रमा का प्रकाश। चन्द्रिका। चाँदनी। २. चान्द्र मास का शुक्ल पक्ष। ३. चीनी। ४. सफेद दूब। ५. मद्य। शराब। ६. त्रायमाणा लता। ७. चमेली। मल्लिका। ८. सफेद भटकटैया। ९. बकुली। सोमराजी। १०. बिदारीकंद। ११. वच। १२. अंधाहुली। १३. सिंहली पीपल। १४. गोरोचन। १५. चाँदी। १६. सफेद गदहपूरना।

सिताइश—स्त्री०[फा०] तारीफ। प्रशंसा। वाहवाही।

सिताखंड—पुं०[सं०]१. मधु शर्करा। शहद से बनाई हुई शक्कर। २. मिसरी।

सितानन—वि०[सं० त० स०] सफेद मुँह वाला।

पुं० १. गरुड़। २. बेल का पेड़।

सिताब†—क्रि० वि० [फा० शताब] १. शीघ्र। जल्दी। २. सहज में। उदा०—नूपुर के ऊपर बढ़ी कहत न बनत सिताब।—विक्रम।

सिताबी†—क्रि० वि० दे० 'सिताब'।

स्त्री० शीघ्रता। जल्दी।

†स्त्री० महताबी नाम की आतिशबाजी। उदा०—सिताबी मोड़ रहा विधुकांत, बिछा है सेज कमलिनी जाल।—प्रसाद।

सिताब्ज—पुं० [सं० कर्म० स०] सफेद कमल।

सिताभ—पुं० [सं० ब० स०] कपूर।

सितार—पुं० [फा० सेहतार]१. बीन की तरह का, पर उससे छोटा एक प्रसिद्ध बाजा, जिसके तारों को तर्जनी में पहनी हुई मिराब से झनकारते हैं तथा इस प्रकार राग-रागिनियाँ निकालते हैं। २. उक्त वाद्य की ध्वनि या उससे निकलनेवाला स्वर-क्रम।

सितारबाज—पुं० [फा० सेहतारबाज] [भाव० सितारबाजी] १. वह जो सितार बजाकर अपनी जीविका अर्जित करता हो। सितारिया। २. सितार बजाने का शौकीन। ३. सितार बजाने की कला में पारंगत।

सितारा—पुं०[सं० सप्त तारक से फा० सितारः[१. आकाश का तारा या नक्षत्र। २. मनुष्य का भाग्य जो आकाश के ग्रहों और नक्षत्रों से प्रभावित माना जाता है।

मुहा०—सितारा चमकना=भाग्योदय होना। **सितारा बुलन्द होना**=सितारा चमकना। **सितारा मिलना**=ग्रह मैत्री मिलना। गणना बैठना। (फलित ज्योतिष)

३. रुपहले या सुनहले पत्तरों के छोटे गोलाकार टुकड़े जो कपड़ों आदि की शोभा के लिए टाँके जाते या गाल और माथे पर सौन्दर्य बढ़ाने के लिए चिपकाये जाते हैं। चमकीला।

†पुं० [हिं० सितार]सितार नामक ऐसा बाजा जो अपेक्षया अधिक बड़ा हो।

सितारा-पेशानी—वि०[फा०](घोड़ा) जिसके माथे पर सफेद टीका या बिन्दी हो। (ऐसा घोड़ा बहुत ऐबी समझा जाता है।)

सितारिया—पुं०[हिं० सितार+इया (प्रत्य०)] वह जो सितार बजाकर अपनी जीविका अर्जित करता हो। वि० दे० 'सितारवाज'।

सितारी—स्त्री०[हिं० सितार+ई (प्रत्य०)] छोटी सितार (बाजा)। वि० सितार-संबंधी।

सितारे हिंद—पुं० [फा० सितारए हिन्द] एक प्रकार की उपाधि जो ब्रिटिश शासन काल में बड़े लोगों को सम्मानार्थ दी जाती थी। जैसे–राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द।

सितालक—पुं० [सं० ब० स०] सफेद मदार।

सितालता—स्त्री० [सं० मध्य० स०] १. अमृतवल्ली। अमृतस्रवा। २. सफेद दूब।

सितालिका—स्त्री०[सं० ब० स० सितालक—टाप्-इत्व] तालाबों में होनेवाली सीपी।

सिताब—स्त्री०[देश०]एक प्रकार का बरसाती पौधा जो दवा के काम में आता है। सर्पदंष्ट्रा।

सितावर—पुं० [सं० सिता√वृ (वरण करना)+अच्—टाप्] सुसना नामक साग। सिरियारी।

सितावरी—स्त्री०[सं० सितावर-ङीप्] बकची। सोमराजी।

सिताश्व—पुं०[सं० ब० स०] १. अर्जुन का एक नाम। २. चन्द्रमा।

सितासित—वि०[सं० द्वं० स०] श्वेत और श्याम। सफेद और काला।

पुं०१. बलदेव। २. शुक्र और शनि ग्रह जो क्रमशः सफेद और काले हैं। ३. गंगा और यमुना जिनका जल क्रमशः सफेद और काला है। ४. आँख का एक रोग।

सिताह्वय—पुं० [सं० ब० स०] १. शुक्र ग्रह। २. सफेद रोहित वृक्ष। ३. सफेद फूलोंवाला सहिजन। ४. सफेद तुलसी।

सिति—वि०=शिति (सफेद)।

सितिकंठ†—वि०, पुं०=सितकंठ।

सितिमा—स्त्री०[सं० सित+इमनिच्] श्वेतता। सफेदी।

सितिवार—पुं० [सं० शितिवार]१. सुसना नामक साग। २. कुटज। कुड़ा।

सितिवास—पुं०[सं० शितिवासस् ब० स०] (नीले वस्त्रवाले) बलराम।

सितुही†—स्त्री० [सं० शुक्तिका] ताल की सीपी। सुतुही।

सितून—पुं०[फा०] १. स्तंभ। खंभा। २. चाँड़। थूनी। ३. मीनार। लाट।

सितेतर—वि० [सं० पंच० त०] (श्वेत से भिन्न) काला या पीला।

पुं०१. काला धान। २. कुलथी।

सितोत्पल—पुं० [सं० मध्य० स०] सफेद कमल।

सितोदर—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० सितोदरा] श्वेत उदर वाला।

पुं० कुबेर का एक नाम।

सितोपल—पुं०[सं० कर्म० स०]१. खरिया मिट्टी। दुद्धी। २. बिल्लौर। स्फटिक।

सितोपला—स्त्री०[सं० सितोपल—टाप्]१. चीनी। २. मिसरी।

सित्त†—वि०[सं० शत] सौ।

वि० [सं० सप्त] सात।

सिथिल*—वि०=शिथिल।

सिदका†—पुं०=सदका।

सिदना†—अ०, स०=सीदना।

सिदरा—पुं०[फा० सेह =तीन+दर] [स्त्री० अल्पा० सिदरी] तीन दरों वाला कमरा या दालान।

सिदामा†—पुं०=श्रीदामा।

सिदिक—वि० [अ० सिद्दीक] सच्चा। सत्यनिष्ठ।

सिदौसी†—अव्य०=सुदौसी।

सिद्ध—वि०[सं०] [भाव० सिद्धि, सिद्धता] १. (काम या बात) जिसका साधन या साधना हो चुकी हो। अच्छी तरह पूरा किया हुआ। जैसे—उद्देश्य या कार्य सिद्ध होना। २. (आध्यात्मिक साधन) जो पूरा हो चुका हो या पूरा किया जा चुका हो। जैसे—मंत्र सिद्ध होना। ३. जिसने किसी काम में पूरी दक्षता या सफलता प्राप्त की हो। दक्ष और सफल। जैसे—सिद्धहस्त। ४. (व्यक्ति) जिसने योग की सिद्धियाँ प्राप्त कर ली हों। जैसे—सिद्ध पुरुष, सिद्ध महात्मा। (बात, मत या विषय) जो तर्क प्रमाण आदि के द्वारा ठीक या सत्य मान लिया गया हो या माना जाता हो। (एस्टैब्लिश्ड) जैसे—(क) अब यह सिद्ध हो चुका है कि भारी चीजें भी हवा में उड़ सकती हैं। (ख) अब यह सिद्ध हो चुका है कि अणु-शक्ति के द्वारा बहुत बड़े-बड़े काम सहज में पूरे हो सकते हैं। ५. जो प्रमाण, युक्ति आदि के द्वारा ठीक ठहर चुका हो। प्रमाणित। (प्रूव्ड) जैसे—उन्होंने अपना पक्ष सिद्ध कर दिखलाया। ६. जो नियमों, विधियों, सिद्धांतों आदि के अनुसार ठीक हो। शुद्ध। जैसे—व्याकरण से सिद्ध प्रयोग अथवा शब्द का रूप। ७. (खाद्य पदार्थ) जो आग पर रखकर उबाला, पकाया या सिझाया गया हो। जैसे—सिद्ध अन्न। ८. (कथन या वचन) जो ठीक ठहरा या पूरा उतरा हो। जैसे—किसी का आशीर्वाद (या भविष्यवाणी) सिद्ध होना। ९. (वाद या विवाद) जिसका निर्णय या फैसला हो चुका हो। १०. (ऋण या देन) जो चुकाया जा चुका हो। ११. जो नियम, सिद्धांत आदि के अनुसार ठीक तरह से होता हो। जैसे—जन्म-सिद्ध अधिकार, स्वभाव-सिद्ध बात। १२. जो किसी अभिप्राय या उद्देश्य के अनुकूल कर लिया गया हो। जैसे—उसे तो तुमने खाली बातों से ही सिद्ध कर लिया। १३. बनाकर तैयार किया हुआ। १४. प्रसिद्ध। विख्यात।

पुं० १. वह जो किसी प्रकार की साधना पूरी करके उसमें पारंगत हो चुका हो। साधना में निष्णात। २. वह जिसने तपस्या, योग आदि के द्वारा किसी प्रकार की अलौकिक दक्षता, शक्ति या सिद्धि प्राप्त कर ली हो, अथवा जो मोक्ष का अधिकारी हो चुका हो। ३. वह जिसने अणिमा, महिमा आदि आठों सिद्धियाँ प्राप्त कर ली हों और इसी लिए जिसमें अनेक प्रकार के अलौकिक तथा चमत्कारपूर्ण कृत्य करने की शक्ति आ गई हो। **विशेष**—मध्य युग में ऐसे लोग अजर-अमर तथा परम पवित्र धर्मात्मा तथा डाकिनियों, देवों, यक्षों के स्वामी माने जाते थे।

४. ऐसा त्यागी या विरक्त जो आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत बड़ा महात्मा या संत हो अथवा माना जाता हो।

मुहा०—सिद्ध-साधक बनना=एक व्यक्ति का सिद्ध का स्वांग रचना और दूसरे लोगों का उसकी अलौकिक सिद्धियों की प्रशंसा करके उसका लाभ कराना। विशेष दे० 'साधक'।

५. एक प्रकार के गण देवता। ६. बौद्ध योगी। (नाथ संप्रदाय के अथवा अन्य हिन्दू योगियों से भिन्न) ७. अर्हत्। जिन। ८. ज्योतिष में एक प्रकार का योग जो सभी कार्यों के लिए शुभ माना गया है। ९. गुड़। १०. काला धतूरा। ११. सफेद सरसों।

सिद्धई†—स्त्री०[सं० सिद्धि] पीसी और छानी हुई भाँग।

†स्त्री०[सं० सिद्ध+ई (प्रत्य०)] सिद्धता।

सिद्धक—वि०[सं० सिद्ध+कन्] कार्य सिद्ध करनेवाला।

पुं०१. सँभालू। सिंदुवार वृक्ष। २. शाल वृक्ष। साखू।

सिद्धक-साधक—पुं० दे० 'सिद्ध-साधक'।

सिद्ध-काम—वि० [सं० ब० स०] जिसकी कामनाएँ पूरी हो गई हों। सफल-मनोरथ।

सिद्ध-कामेश्वरी—स्त्री० [सं० ष० त०] कामाख्या अर्थात् दुर्गा की एक मूर्ति या रूप।

सिद्धकारी (रिन्)—वि० [सं० सिद्ध√ कृ (करना)+णिनि] [स्त्री० सिद्धकारिणी] धर्मशास्त्रों के अनुसार आचरण करनेवाला।

सिद्ध-क्षेत्र–पुं० [सं० ष० त०]१. वह स्थान जहाँ योग या तंत्र प्रयोग जल्दी सिद्ध हो। २. दंडक वन के एक विशिष्ट क्षेत्र का नाम।

सिद्ध-गंगा—स्त्री० [सं० ष० त०] आकाश-गंगा। मन्दाकिनी।

सिद्ध-गति—स्त्री० [सं, कर्म० स०, ब० स०] जैन मतानुसार वे कर्म जिनसे मनुष्य सिद्ध बनता या होता हो।

सिद्ध-गुटिका—स्त्री० [सं० कर्म० स०]एक प्रकार की कल्पित मंत्र-सिद्ध गोली जिसे मुँह में रख लेने से अदृश्य होने आदि की अद्भुत् शक्ति आ जाती है।

सिद्ध-ग्रह—पुं०[सं० मध्य प० स०]उन्माद या पागलपन का विशेष प्रकार।

सिद्ध-जल—पुं०[सं० ब० स०] १. औटाया हुआ पानी। २. काँजी।

सिद्धता—स्त्री०[सं० सिद्ध+तल्—टाप्]१. सिद्ध होने की अवस्था या भाव। सिद्धि। २. पूर्णता।

सिद्धत्व—पुं०[सं० सिद्ध+त्व]=सिद्धता।

सिद्ध-देव—पुं० [सं० कर्म० स०] शिव। मह

सिद्ध-धातु—पुं०[सं० कर्म० स०] पारा

सिद्ध-नाथ—पुं०[सं० ष० त०] सिद्धेश्वर [illegible] व।

सिद्ध-पक्ष—पुं०[सं० कर्म० स०]किसी तर्क [illegible] वह अंश जो सिद्ध हो चुका हो और इसी लिए मान्य हो।

सिद्ध-पथ—पुं०[सं०] अंतरिक्ष।

सिद्ध-पीठ—पुं०[सं० मध्य० स०]१. वह स्थान जहाँ योग या आध्यात्मिक अथवा तांत्रिक साधन सहज में सम्पन्न होता हो। २. कोई ऐसा स्थान जहाँ पहुँचने पर कोई कामना या कार्य प्रायः सहज में सिद्ध होता हो।

सिद्ध-पुर—पुं० [सं० ष० त०] एक कल्पित नगर जो किसी के मत से पृथ्वी के उत्तरी छोर पर और किसी के मत से पाताल में है। (ज्योतिष)

सिद्ध-पुष्प—पुं०[सं० ब० स०] करवीर। कनेर।

सिद्ध-भूमि—स्त्री० [सं० कर्म० स०, ष० त०] सिद्ध-पीठ। सिद्ध-क्षेत्र।

सिद्ध-मातृका—स्त्री०[सं० मध्य० स०]१. एक देवी का नाम। २. एक प्रकार की प्राचीन लिपि।

सिद्ध-यामल—पुं०[सं०] तंत्र शास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ।

सिद्ध-योग—पुं०[सं० मध्य० स०] ज्योतिष में, एक प्रकार का योग जो सर्वकार्य सिद्ध करनेवाला माना गया है।

सिद्ध-योगी (गिन्)—पुं०[सं० कर्म० स०] शिव। महादेव।

सिद्धर—पुं० [?] एक बाह्मण जो कंस की आज्ञा से कृष्ण को मारने आया था।

सिद्ध-रस—पुं० [सं० मध्य० स०] १. पारा। पारद। २. वह योगी जिसने पारा सिद्ध कर लिया अर्थात् रसायन बना लिया हो।

सिद्ध-रसायन—पुं० [सं० कर्म० स०] वह रसौषध जिसके सेवन से दीर्घ जीवन और यथेष्ट शक्ति प्राप्त होती है।

सिद्ध-वस्ति—पुं० [सं०] तैल आदि की वस्ति या पिचकारी। (आयुर्वेद)

सिद्ध-विद्या—स्त्री० [सं० मध्य० स०] एक महाविद्या।

सिद्ध-विनायक—पुं० [सं० मध्य० स०] गणेश की एक मूर्ति।

सिद्ध-शिला—स्त्री० [सं० ब० स०] ऊर्ध्व लोक का एक स्थान। (जैन)

सिद्ध-सरित्—स्त्री० [सं० ष० त०] १. आकाश-गंगा। २. गंगा।

सिद्ध-सलिल—पुं० [सं० ब० स०] काँजी। २. सिद्धजल।

सिद्ध-साधक—पुं० [सं० कर्म० स०] १. शिव। २. कल्प-वृक्ष जो सब प्रकार के मनोरथ सिद्ध करनेवाला माना गया है। ३. ऐसे दो व्यक्ति जिनमें से एक तो झूट-मूठ सिद्ध या सत्पुरुष बन बैठा हो और दूसरा सबको उसकी सिद्धता का विश्वास दिलाकर उसके फन्दे में फँसाता हो।

विशेष—प्रायः ऐसा होता है कि कोई ढोंगी और स्वार्थी व्यक्ति सिद्ध या महात्मा बनकर कहीं बैठ जाता है, और उसका कोई साथी लोक में उसका बड़प्पन या महत्त्व स्थापित करता फिरता और लोगों को लाकर उसके जाल में फँसाता है। इसी आधार पर उक्त पद अपने तीसरे अर्थ में प्रचलित हुआ है।

सिद्ध-साधन—पुं० [सं० ष० त] १. सिद्धि प्राप्त करने के लिए योग या तंत्र की क्रिया करना। २. जो बात सिद्ध या प्रमाणित हो चुकी हो, उसे फिर से सिद्ध या प्रमाणित करना। ३. सफेद सरसों।

सिद्ध-साधित—वि० [सं० ब० स०] जिसने किसी कला, विद्या या शास्त्र का ठीक तरह [illegible], जिसके किये बिना ही केवल प्रयोग या व्यवहार के द्वारा उसमें थोड़ी-[illegible] योग्यता प्राप्त कर ली हो। अताई।

सिद्ध-साध्य—वि० [सं० ष० त०] १. जो सिद्ध किया जा चुका हो। प्रमाणित। २. जिसे संपादित कर दिया गया हो।

पुं० एक प्रकार का मन्त्र।

सिद्ध-सिंधु—पुं० [सं०] आकाश गंगा।

सिद्ध-सेन—पुं० [सं० तृ० स०] १. कार्तिकेय। २. संगीत में कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

सिद्ध-सेवित—पुं० [सं० तृ० त०] शिव का एक रूप।

सिद्ध-स्थाली—स्त्री० [सं० ष० त०] सिद्ध योगियों की वह बटलोई जिसके विषय में यह माना जाता है कि उसमें से इच्छानुसार अपेक्षित अन्न निकाला जा सकता है।

सिद्ध-हस्त—वि० [सं० ब० स०] १. जिसने कोई काम करते-करते उसमें कुशलता प्राप्त कर ली हो। जिसका हाथ किसी काम में मंजा हो। २. जिसे कुछ विशेष प्रकार के काम करने का बहुत अच्छा अभ्यास हो।

सिद्धांगना—स्त्री० [सं० ष० त०] सिद्ध नामक देवताओं की स्त्रियाँ।

सिद्धांजन—पुं० [सं० मध्य० स०] एक प्रकार का कल्पित अंजन जिसके विषय में यह माना जाता है कि इसे आँख में लगा लेने से भूमि के नीचे की वस्तुएं (गड़े खजाने आदि) भी दिखाई देने लगती हैं।

सिद्धांत—पुं० [सं० सिद्ध+अंत, ब० स०] १. किसी विषय का वह अंत अर्थात् अंतिम निर्णय या निश्चय जो पूरी तरह से ठीक सिद्ध या प्रमाणित हो चुका हो और इसलिए जिसमें किसी प्रकार के परिवर्तन के लिए अवकाश न रह गया हो। २. किसी विषय में तर्क-वितर्क, विचार-विमर्श आदि के उपरांत निश्चित किया हुआ ऐसा मत जो सभी दृष्टियों से ठीक माना जाता हो। असूल। उसूल। (प्रिंसिपुल) ३. कला, विज्ञान, शास्त्र आदि के संबंध में ऐसी कोई मूल बात या मत जो किसी विद्वान् द्वारा प्रतिपादित या स्थापित हो और जिसे बहुत से लोग ठीक मानते हैं। उपपत्ति। (थिअरी) ४. धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में वे सुविचारित तत्त्व जिनका प्रचलन किसी विशिष्ट वर्ग में प्रायः सर्वमान्य होता है। मत। (डाक्ट्रिन) ५. कोई ऐसा ग्रंथ जिसमें उक्त प्रकार की बातें या मत निरूपित हों। जैसे—सूर्य-सिद्धांत। ६. साधारण बोल-चाल में किसी बात या विषय का तत्वार्थ या सारांश। मतलब की या सारभूत बात।

सिद्धांतज्ञ—वि० [सं० सिद्धांत√ज्ञा (जानना)+क] सिद्धांत की बात जाननेवाला। तत्त्वज्ञ। विद्वान्। २. दे० 'सिद्धांतवादी'।

सिद्धांत-वाद—पुं० [सं० सिद्धांत√वद् (बोलना)+घञ्] यह विचार-प्रणाली कि अपने सिद्धांत का दृढ़तापूर्वक पालन करना चाहिए।

सिद्धांत-वादी (दिन्)—वि० [सं० सिद्धांत√वद् (कहना)+णिनि] सिद्धांतवाद-संबंधी।

पं० वह जो अपने मान्य सिद्धान्तों के अनुसार चलता हो।

सिद्धांताचार—पुं० [सं० ष० त०] तांत्रिकों का आचार अर्थात् एकाग्र चित्त से शक्ति की उपासना करना।

सिद्धांतित—भू० कृ० [सं० सिद्धांत+इतच्] तर्क आदि के द्वारा प्रमाणित। साबित।

सिद्धांती—वि० [सं० सिद्धांत] १. शास्त्रों आदि के सिद्धांत जाननेवाला। २. अपने सिद्धांत पर दृढ़ रहनेवाला।

पुं० तर्कशास्त्र का ज्ञाता या पंडित।

सिद्धांतीय—वि० [सं० सिद्धांत+छ+ईय] सिद्धांत-संबंधी।

सिद्धांबा—स्त्री० [सं० कर्म० स०] दुर्गा।

सिद्धा—स्त्री० [सं० सिद्ध-टाप्] १. सिद्ध की स्त्री। देवांगना। २. एक योगिनी। ३. चन्द्रशेखर के मत से आर्याछन्द का १५वाँ भेद जिसमें १३ गुरु और ३१ लघु होते हैं। ४. ऋद्धि नामक ओषधि।

सिद्धाई—स्त्री० [सं० सिद्ध+हिं० आई] सिद्ध होने की अवस्था, गुण या भाव। सिद्धता।

सिद्धाग्नि—स्त्री० [सं० सिद्ध+अग्नि] १. खूब जलती हुई अग्नि। २ ऐसी पवित्र अग्नि जो दूसरों को भी पवित्र और शुद्ध कर दे।

सिद्धान्न—पुं० [सं० कर्म० स०] पकाया हुआ अन्न। जैसे—भात, रोटी आदि।

सिद्धापगा—स्त्री० [सं० ष० त०] १. आकाश गंगा। २. गंगा नदी।

सिद्धापिका—स्त्री० [सं०] जैनों की चौबीस देवियों में से एक जो अर्हंतों का आदेश कार्यान्वित करती है।

सिद्धारि—पुं० [सं० ब० स०] एक प्रकार का मंत्र।

सिद्धार्थ—वि० [सं० ब० स०] जिसका अर्थ अर्थात् उद्देश्य या कामनाएँ पूर्ण हो चुकी हों। सफल-मनोरथ। पूर्णकाम।

पुं० १. गौतम बुद्ध का एक नाम। २. स्कंद या कार्तिकेय का एक अनुचर। ३. ज्योतिष में, साठ संवत्सरों में से एक। ४. महावीर स्वामी के पिता। (जैन)

सिद्धार्थक—पुं० [सं० सिद्धार्थ+कन्] १. श्वेत सर्षप। सफेद सरसों। २. एक प्रकार का मरहम।

सिद्धार्था—स्त्री० [सं० सिद्धार्थ-टाप्] १. जैनों के चौथे अर्हत् की माता का नाम। २. सफेद सरसों।

सिद्धासन—पुं० [सं० मध्य० स०] ८४ आसनों में से एक। (हठ योग)

सिद्धि—स्त्री० [सं०] १. कोई काम या बात सिद्ध करने या होने की अवस्था या भाव। कोई काम ठीक तरह से पूरा करना या होना। २. कार्य का ठीक रूप में पूरा उतरना। ३. कोई ऐसा उद्देश्य पूरा होना अथवा किसी ऐसे लक्ष्य तक पहुँचना जिसके लिए विशेष परिश्रम और प्रयत्न किया गया हो। (अटेनमेन्ट) ४. ऐसी विशिष्ट क्षमता, योग्यता या स्थिति जो उक्त प्रकार के परिश्रम या प्रयत्न के फल-स्वरूप प्राप्त हुई हो। (अटेन्मेन्ट) ५. परिणाम या फल के रूप में होनेवाली प्राप्ति, लाभ या सफलता। जैसे—इस प्रकार की कहा-सुनी से तो कोई सिद्धि होगी नहीं। ६. ऐसा तथ्य या निर्णय जिसके ठीक होने में कोई संदेह न रह गया हो। ७. वाद-विवाद, व्यवहार आदि का अंतिम निर्णय। झगड़े या मुकदमे का फैसला। ८. किसी प्रकार की समस्या की मीमांसा। ९. आपस में होनेवाला किसी प्रकार का निर्णय। निश्चय। १०. नाट्यशास्त्र में, वह स्थिति जिसमें कोई उद्देश्य पूरा करनेवाले साधनों के प्रस्तुत होने का उल्लेख होता है। ११. छंद शास्त्र में, छप्पय के ४१वें भेद का नाम जिसमें ३० गुरु और ९२ लघु वर्ण और कुल १५२ मात्राएँ होती हैं। १२. तपस्या, तांत्रिक उपासना, हठयोग की साधना आदि के फल-स्वरूप साधक को प्राप्त होनेवाली कोई विशिष्ट प्रकार की अलौकिक या लोकोत्तर क्षमता या शक्ति।

विशेष—योग-साधन से प्राप्त होनेवाली ये आठ सिद्धियाँ कही गई हैं—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व। बौद्ध तंत्रों के अनुसार आठ सिद्धियाँ ये हैं—खड्ग, अंजन, पादलेप, अंतर्धान, रस-रसायन, खेचर, भूचर और पाताल।

१३. खाद्य पदार्थ या भोजन का आग पर पकाया जाना या पककर तैयार होना। १४. दक्ष-प्रजापति की एक कन्या जो धर्म को ब्याही थी। १५. गणेश की एक पत्नी का नाम। १६. दुर्गा का एक नाम। १७. ऋण का परिशोध। कर्ज चुकता होना। १८. कार्य-कुशलता। क्षमता। पटुता। १९. बुद्धि। २०. सुख-समृद्धि। २१. मुक्ति। मोक्ष। २२. ऋद्धि या वृद्धि नामक ओषधि। २३. विजया। भाँग।

सिद्धि-गुटिका—स्त्री० [सं० मध्य० स०] =सिद्ध गुटिका।

सिद्धिद—वि० [सं० सिद्धि√दा (देना)+क] सिद्धि देनेवाला।
पुं० १. वटुक भैरव का एक नाम। २. पुत्र-जीव नामक वृक्ष।

सिद्धिदाता(तृ)—वि० [सं० सिद्धि√दा (देना)+तृच्, ब० स०] [स्त्री० सिद्धिदात्री] सिद्धि देने या कार्य सिद्धि करानेवाला।
पुं० गणेश का एक नाम।

सिद्धि-भूमि—स्त्री० [सं० ष० त०] १. ऐसी भूमि जहाँ लोगों को सिद्धियाँ प्राप्त हुई हों। सिद्धि-स्थान। २. ऐसा स्थान जहाँ तपस्या या धार्मिक साधना करने पर सहज में अनेक प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

सिद्धि-योग—पुं० [सं० ष० त०] ज्योतिष में, एक प्रकार का योग जो सब कार्य सहज में सिद्ध करनेवाला माना जाता है।

सिद्धि-योगिनी—स्त्री० [सं०]=सिद्ध-योगिनी।

सिद्धि-रस—पुं०=सिद्ध-रस।

सिद्धि-स्थान—पुं० [सं० ष० त०] १. पुण्य स्थान। तीर्थ। २. आयुर्वेद के ग्रन्थों में, वह अंश जिसमें चिकित्सा-संबंधी बातों का विवेचन होता है। ३. दे० 'सिद्धि-पीठ' और 'सिद्ध-भूमि'।

सिद्धीश्वर—पुं० [सं० ष० त०] १. शिव। महादेव। ३. एक प्राचीन पुण्य-क्षेत्र।

सिद्धेश्वर—पुं० [सं० ब० स० या कर्म० स०] [स्त्री० सिद्धेश्वरी] १. बहुत बड़ा सिद्ध। महायोगी। २. महादेव। शिव। ३. गुलतुर्रा। शंखोदरी।

सिद्धोदक—पुं० [सं० ब० स०] १. एक प्राचीन तीर्थ का नाम। २. काँजी।

सिद्धौघ—पुं० [सं० ब० त०] तांत्रिकों के आचार्यों या गुरुओं का एक वर्ग।

सिध†—वि०, पुं०=सिद्ध।

सिधरी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

सिधवाई†—स्त्री० [हिं० सीधा, सिधवाना] वह लकड़ी जो टेक के रूप में तथा पहिये के स्थान पर लगाई जाती थी।

सिधवाना†—स० [हिं० सीधा] सीधा करना।

सिधाई—स्त्री० [हिं० सीधा] सीधापन। सरलता।

सिधाना*—अ०=सिधारना (जाना)।

सिधारना—अ० [सं० सिद्ध=पूरा किया हुआ] १. गमन या प्रस्थान करना। जाना। (सम्मान सूचक) २. इस लोक से उठ जाना। परलोकवासी होना। ३. परलोक-गत या स्वर्गवासी होना। जैसे—वे तो कल रात्रि में ही सिधार गये।
संयो० क्रि०—जाना।
†स०=सुधारना।

सिधि*—स्त्री०=सिद्धि।

सिधु†—पुं०=सीधु।

सिधोई†—स्त्री०=सिधवाई।

सिध्म—वि० [सं०] १. जिस पर सफेद दाग हों। २. जिसे श्वेत कुष्ठ नामक रोग हो।
पुं० सेहुआँ नामक रोग।

सिध्मल—वि० [सं० सिध्म+लच्] १. जिस पर सफेद दाग हो। २ जिसे श्वेत कुष्ठ रोग हुआ हो।

सिध्मा—स्त्री० [सं० सिध् (गत्यादि)+मन-टाप्] १. कुष्ठ का दाग। २. कुष्ठ रोग।

सिध्य—पुं० [सं०√सिध् (गत्यादि)+क्यच्] पुष्य (नक्षत्र)।

सिध्र—वि० [सं०√सिध् (गमनादि)+रक्] १. साधु। २. अपना प्रभाव दिखानेवाला।
पुं० पेड़। वृक्ष।

सिन—पुं० [सं०√षिज् (बाँधना) नक्] १. शरीर। देह। २. पहनने के कपड़े। पोशाक। ३. कौर। ग्रास। ४. कुंभी नामक वृक्ष।
वि० १. एक आँखवाला। काना। २. सफेद।
पुं० [अ०] अवस्था। उमर।

सिनक—स्त्री० [हिं० सिनकना] १. सिनकने की क्रिया या भाव । २. सिनकने पर निकलनेवाला मल । नाक का मल ।

सिनकना—स० [सं० शिंघण] अन्दर से जोर की वायु निकालते हुए नाक का मल या कफ़ बाहर करना । जैसे—नाक सिनकना ।

सिनि—पुं० [सं० शिनि] १. क्षत्रियों की एक प्राचीन शाखा। २. सात्यकि यादव के पिता का नाम ।

सिनी†—पुं०=शिनि ।
स्त्री०=सिनीवाली ।

सिनीत—स्त्री० [देश०] सात रस्सियों को बटकर बनाई गई चिपटी रस्सी। (लश्करी)

सिनीवाली—स्त्री० [सं०] १. एक वैदिक देवी जिसका आह्वान, वैदिक मंत्रों में सरस्वती आदि के साथ होता है। २. दुर्गा। ३. शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा । ४. चाँदनी रात ।

सिनेट—स्त्री० [अं०] दे० 'सीनेट'।

सिनेटर—पुं० दे० 'सीनेटर'।

सिनेमा—पुं० [अं०] १. चल-चित्र । २. वह भवन जिसमें लोगों को चल-चित्र दिखाये जाते हैं।

सिन्नी*—स्त्री० [फ़ा० शीरीनी] १. मिठाई। २. मुराद पूरी होने पर अथवा देवता, पीर आदि को प्रसन्न करने के लिए चढ़ाई तथा प्रसाद रूप में बाँटी जानेवाली मिठाई ।
क्रि० प्र०—चढ़ाना ।—बाँटना ।

सिपर—स्त्री० [फ़ा०] तलवार आदि का वार रोकने की ढाल। (शील्ड)

सिपरा†—स्त्री०=शिप्रा (नदी)।

सिपरिहा—पुं० [?] क्षत्रियों की एक जाति या भेद।

सिपह—स्त्री० [फ़ा०] समस्त पद में पूर्वपद के रूप में प्रयुक्त होनेवाला। सिपाह (सेना) का लघु रूप । जैसे—सिपहसालार=सेनापति।

सिपहगरी—स्त्री० [फ़ा०] सैनिक का पद या पेशा ।

सिपहरा*—पुं०=सिपाही । (उपेक्षासूचक)

सिपह-सालार—पुं० [फ़ा० सिपह (=फौज)+सालार (=नेता)] सेना का प्रधान अधिकारी। सेना-पति।

सिपाई*—पुं०=सिपाही।

सिपारस*—स्त्री० [फ़ा० सिपास] १. संस्तुति। २. खुशामद ।

सिपारसी*—वि० [हिं० सिपारस] जो सिपारस के रूप में हो। प्रशंसात्मक।
पुं० खुशामदी ।

सिपारसी टट्टू—पुं० [हिं०] वह जो केवल सिपारस अर्थात् खुशामद करके अपना काम या जीविका चलाता हो।

सिपारा—पुं० [फ़ा० सिपारः] कुरान के तीस भागों में से कोई एक।

सिपाव—पुं० [फ़ा० सेहपाव] लकड़ी की एक प्रकार की टिकठी या तीन पायों का ढाँचा जो छकड़े, बैलगाड़ी आदि में आगे की ओर इसलिए लगाया जाता है कि छकड़ा या गाड़ी आगे की ओर न झुकने पाये ।

सिपावा-भाथी—स्त्री० [फ़ा० सेहपाव+हिं० भाथी] हाथ से चलाई जानेवाली धौंकनी या भाथी ।

सिपास—स्त्री० [फ़ा०] १. कृतज्ञता । २. धन्यवाद । ३. कृतज्ञता-प्रकाश । धन्यवाद प्रकाशन ।

सिपासनामा—पुं० [फ़ा० सिपासनामः] कृतज्ञता तथा सम्मान प्रकट करने के उद्देश्य से लिखा हुआ पत्र । अभिनन्दन-पत्र ।

सिपाह—स्त्री० [फ़ा०] फ़ौज । सेना ।

सिपाहगिरी—स्त्री०=सिपाहगरी।

सिपाहियाना—वि० [फ़ा० सिपाहियानः] १. सैनिकों या सिपाहियों से संबंध रखनेवाला । २. सैनिकों या सिपाहियों के रंग-ढंग जैसा अथवा उनकी मर्यादा के अनुकूल।

सिपाही—पुं० [फ़ा०] १. सेना में युद्ध का काम करनेवाला व्यक्ति । फौजी आदमी। सैनिक। २. पुलिस विभाग में साधारण कर्मचारी जो पहरे आदि का काम करता है । (कांस्टेबल) ३. चपरासी । जैसे—तहसील का सिपाही।

सिपुर्द†—वि०, पुं०=सुपुर्द।

सिप्पर—स्त्री०=सिपर (ढाल)।

सिप्पा—पुं० [देश०] १. पुरानी चाल की एक प्रकार की छोटी तोप । २. निशाने पर किया हुआ वार । लक्ष्य-वेध। ३. कार्य-साधन का कौशल-पूर्ण उपाय या युक्ति । तरकीब । (बाजारू)
क्रि० प्र०—बैठाना ।—भिड़ाना ।—लगाना ।
मुहा०—सिप्पा लड़ाना=कार्य-साधन का कौशल पूर्ण उपाय या युक्ति करना ।
४. कार्य-साधन की आरंभिक कार्रवाई या योजना । डौल ।
मुहा०—सिप्पा जमाना=किसी काम या बात की भूमिका तैयार करना।

सिप्पी†—स्त्री०=सीपी।
स्त्री० [हिं० सिप्पा का अल्पा० रूप] छोटी तोप ।

सिप्र—पुं० [सं०√षप् (एकत्र होना)+रक् पृषो० सिद्ध] १. चन्द्रमा । २. पसीना । ३. एक प्राचीन सरोवर ।

सिप्रा—स्त्री० [सं० सिप्र+टाप्] १. महिषी । भैंस । २. स्त्रियों का कटि-बंध। ३. दे० 'शिप्रा'।

सिफत—स्त्री० [अ० सिफ़त] [भाव० सिफाती] कोई ऐसा गुण या विशेषता (क) जो किसी व्यक्ति का स्वभाव बन गई हो अथवा (ख) किसी वस्तु की प्रशंसा या प्रसिद्धि का कारण बन गई हो । जैसे—(क) इस नौकर की सिफत यह है कि वह काम से घबराता नहीं। (ख) इस कपड़े की सिफत है कि यह फटता नहीं है ।

सिफर—वि० [अ० सिफ़र] १. (पात्र) जिसमें कुछ भरा न हो। खाली । रिक्त । २. (व्यक्ति) जिसमें गुण, बुद्धि, योग्यता, विद्या आदि का पूरा-पूरा अभाव हो। बिलकुल अयोग्य और निकम्मा । जैसे—मुझे तो यह आदमी बिलकुल सिफर मालूम होता है ।
पुं० १. गिनती में वह अंक जहाँ से गिनती आरम्भ होती है । वस्तुतः 'कुछ नहीं' का यह सूचक होता है। जैसे—उसे हिसाब के परचे में सिफर मिला है । ३. उक्त का चिह्न —०।

सिफलगी—स्त्री०=सिफलापन ।

सिफला—वि० [अ० सिफ्लः] [स्त्री० सिफली; भाव० सिफलापन] १. नीच। कमीना । २. ओछा। छिछोरा। ३. घटिया दरजे का ।

सिफलापन—पुं० [अ० सिफ्लः+हिं० पन (प्रत्य०)] सिफला होने की अवस्था या भाव। कमीनापन । नीचता।

सिफा—स्त्री०=शफा (आरोग्य)।

सिफात—स्त्री० [फा० सिफ़ात] 'सिफत' का बहु० ।

सिफाती—वि० [अ० सिफ़ाती] १. सिफत अर्थात् गुण से सम्बन्ध रखनेवाला । २. सिफत के रूप में होनेवाला । ३. अभ्यास, शिक्षा आदि के द्वारा प्राप्त किया हुआ (गुण या विशेषता) ।

सिफारत—स्त्री० [अ० सिफ़ारत] सफीर अर्थात् राजदूत का कार्य, पद या भाव। २. सफीर अर्थात् राजदूत का कार्यालय । दूतावास ।

सिफारिश—स्त्री० [फा० सुफ़ारिश] १. किसी से कही जानेवाली कोई ऐसी बात जिससे अपना या किसी दूसरे का उपकार या भलाई होती हो। २. कोई ऐसी बात जो किसी का अपराध क्षमा कराने के लिए किसी अधिकारी से कही जाय । ३. किसी के गुण, योग्यता आदि का परिचय देनेवाली ऐसी बात जो किसी ऐसे दूसरे आदमी से कही जाय जो उस पहले व्यक्ति का कोई उपकार या भलाई कर सकता हो। संस्तुति।(रिकमेन्डेशन) जैसे—उन्हें यह नौकरी शिक्षा-मंत्रालय की सिफारिश से मिली है । ४. बोल-चाल में, प्रार्थना के रूप में किसी से कही जानेवाली अपने संबंध में अथवा किसी दूसरे के संबंध में ऐसी बात जिसका मुख्य उद्देश्य कृपा-दृष्टि या अनुग्रह प्राप्त करना होता है ।

सिफारिशी—वि० [फा० सुफ़ारिशी] १. सिफारिश संबंधी। जैसे—सिफारिशी बातें । २. जो सिफारिश के रूप में हो । जैसे—सिफारिशी चिट्ठी। ३. जो सिफारिश के द्वारा हुआ हो । ४. खुशामदी ।

सिफारिशी टट्टू—पुं० दे० 'सिपारसी टट्टू' ।

सिबिका*—स्त्री०=शिविका (पालकी) ।

सिमंत†—पुं०=सीमंत ।

सिमई†—स्त्री०=सिवँई।

सिमट—स्त्री० [हिं० सिमटना] सिमटने की अवस्था, क्रिया या भाव।

सिमटना—अ० [हिं० समेटना का अ०] १. दूर तक फैली या बिखरी हुई चीज या चीजों का खिंचकर थोड़े विस्तार या स्थान में आना । संकुचित होना । समेटा जाना । २. दूर तक फैली हुई चीज या तल में शिकन या सिलवट पड़ना । ३. इकट्ठा होना । बटुरना । ४. क्रम या तरतीब से लगना । ५. काम पूरा या समाप्त होना। ६. भय, लज्जा, आदि के कारण व्यक्ति का संकुचित होना। सिकुड़ना। जैसे—वह सिमटकर कोने में बै गया ।
 संयो० क्रि०—जाना ।

सिमटी—स्त्री० [देश०] खेस की तरह का एक प्रकार का मोटा कपड़ा।

सिमरख†—पुं०=शिंगरफ (ईंगुर) ।

सिमर-गोला—पुं० [देश० सिमर ? +हिं० गोला] एक प्रकार की मेहराब।

सिमरना †—स०=सुमिरना ।

सिमरनी† —स्त्री०=सुमिरनी ।

सिमरिख—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया ।

सिमल—पुं० [सं० सीर+हल+माला] १. हल का जूआ । २. उक्त जूए में लगी हुई ख़ूंटी ।

सिमला आलू—पुं० [हिं० शिमला+आलू] एक प्रकार का पहाड़ी बड़ा आलू । मरबुली।

सिमाना†—पुं० [सं० सीमान्त] सिवाना । हद ।
 † स०=सिलाना ।

सिमिटना†—अ०=सिमटना ।

सिमृति*—स्त्री०=स्मृति ।

सिमेंट—स्त्री०=सीमेंट।

सिमेटना* —स०=समेटना ।

सिम्त—स्त्री० [अ०] ओर। तरफ।

सिम्रिति†—स्त्री०=स्मृति ।

सिय†—स्त्री० [सं० सीता] सीता । जानकी।

सियना* —स० [सं० सर्जन] उत्पन्न करना । रचना ।
 स०=सीना (सिलाई करना) ।
 अ० [हिं० सीना] सीया जाना ।

सियरा* —वि० [सं० शीतल, प्रा० सीअड़] [स्त्री० सियरी, भाव० सियराई] १. ठंढा। शीतल। २. अपरिपक्व । कच्चा ।

सियराई* —स्त्री० [हिं० सियरा+ई (प्रत्य०)] १. शीतलता । ठंढक । २. कच्चापन । कचाई।

सियह†—वि० [फा०]=सियाह (काला) ।

सिया*—स्त्री०=सीता ।

सियाना†—स०=सिलाना ।
 †वि०=सयाना ।

सियापा—पुं०=स्यापा ।

सियार —पुं० [सं० शृगाल, प्रा० सिआड़] [स्त्री० सियारी, सियारिन] गीदड़ ।

सियार लाठी—पुं० [हिं०] अमलतास ।

सियारा—पुं० [सं० सीता, प्रा० सरिया+रा] एक प्रकार का फावड़ा जिससे जोती हुई जमीन समतल की जाती है।
 *पुं०=सियाला ।
 *वि०=सियरा ।

सियारी—स्त्री० [हिं सियार] गीदड़ की मादा।

सियाल—पुं० [सं० श्रृगाल] गीदड़।

सियाला—पुं०[सं० शीतकाल] जाड़े का मौसम । शीत काल ।

सियाला पोका—पुं० [हिं० सीप+पोका=कीड़ा] एक प्रकार का बहुत छोटा कीड़ा जो सफेद चिपटे कोश के अन्दर रहता है, और पुरानी लोनी मिट्टीवाली दीवारों पर मिलता है । लोना-पोका ।

सियाली—स्त्री० [देश०]एक प्रकार का विदारन कंद ।
 वि० [सं० शीतकाल, हिं सियाला] जाड़े में तैयार होनेवाली फसल । खरीफ।

सियावड़†—पुं०=सियावड़ी ।

सियावड़ी—स्त्री० [हिं० सीता+वटी] १. अनाज का वह हिस्सा जो फसल कटने पर खलिहान में से साधुओं के निमित्त निकाला जाता है। २. बिजूखा । (दे०)

सियासत—स्त्री० [अ०] [वि० सियासती] १. देश का शासन-प्रबंध तथा व्यवस्था। २. राजनीति ।
 †स्त्री०=साँसत ।

सियासती—वि० [अ०] राजनीतिक ।

सियाह—वि० [फा० स्याह] कृष्ण वर्ण का। काला । २. दुषित । बुरा। जैसे—सियाह-बख्त =अभागा। ३. दे० 'स्याह' ।

सियाह कलम—स्त्री० दे० 'स्याह कलम' । (चित्र-कला)

सियाहगोश—वि० पुं० =स्याह-गोश ।

सियाहत—स्त्री० [अ०] १. सैर करने की क्रिया या भाव। सैर। २. देश-देशान्तरों का पर्यटन या भ्रमण।

सियाहपोश†—पुं०=स्याहपोश ।

सियाहा—पुं० [फा० स्याँहः] १. वह पंजी या बही जिसमें नित्य के आय-व्यय का हिसाब लिखा जाता है। २. मुगल-शासन में वह पंजी जिसमें सैनिकों की उपस्थिति लिखी जाती थी। ३. आज-कल वह पंजी या रजिस्टर जिसमें सरकार को प्राप्त होनेवाली मालगुजारी या लगान का हिसाब लिखा जाता है।

सियाहा-नवीस—पुं० [फा०] वह कर्मचारी जो सियाहा लिखता हो।

सियाही†—स्त्री०=स्याही।

सिर—पुं० [सं० शिरस्] १. मनुष्यों, जीव-जन्तुओं आदि के शरीर में गरदन से आगे या ऊपर का वह गोलाकार भाग जिसमें आँख, कान, नाक, मुँह आदि अंग होते हैं, और जिसके अन्दर मस्तिष्क रहता है। कपाल। खोपड़ी। (हेड)

विशेष—कुछ अवस्थाओं में यह प्राणियों की जान या प्राण का सूचक होता है; और कुछ अवस्थाओं में व्यक्तियों की प्रतिष्ठा या सम्मान का सूचक होता है।

मुहा०—(किसी को) सिर आँखों पर बैठाना=बहुत आदर-सत्कार करना। बहुत आवभगत करना। **(किसी की आज्ञा, कथन आदि) सिर-आँखों पर होना**=सहर्ष मान्य या स्वीकृत होना। शिरोधार्य होना। जैसे—आपकी आज्ञा सिर-आँखों पर है। **सिर उठाकर चलना** =अभिमानपूर्वक, अथवा अपनी प्रतिष्ठा या मर्यादा के भाव से युक्त होकर चलना। **सिर उठाना**=(क) किसी के विरोध में खड़े होना। जैसे—प्रजा का राजा के विरुद्ध सिर उठाना। (ख) सिर और मुंह ऊपर करके किसी की ओर प्रतिष्ठा, प्रयत्न या साहसपूर्वक देखना। जैसे—अब वह तुम्हारे सामने सिर नहीं उठा सकता। **सिर उठाने की फुरसत न होना**=कार्य में बहुत अधिक व्यस्त होने के कारण इधर-उधर की बातों के लिए नाम को भी अवकाश न होना। **(किसी का) सिर उतारना**=सिर काट कर हत्या करना। **सिर ऊँचा करना**=दे० ऊपर 'सिर उठाना'। **सिर ऊँचा होना**=आदर, प्रतिष्ठा या सम्मान में वृद्धि होना। **(स्त्रियों का) सिर करना**=बाल सँवारना। चोटी गूँथना। **सिर काढ़ना**=दे० 'नीचे सिर निकालना।' **सिर का बोझ उतरना** =दे० नीचे 'सिर से बोझ उतारना'। **(किसी के पास) सिर के बल जाना**=बहुत ही आदर, प्रेम या श्रद्धा से युक्त होकर और सब प्रकार के कष्ट सहकर जाना। **सिर खपाना**=ऐसा काम या बात करना जिससे कोई लाभ न हो और व्यर्थ मस्तिष्क थक जाय। माथापच्ची करना। **(किसी का) सिर खाना**=व्यर्थ की बातें करके किसी को तंग या परेशान करना। **सिर खाली करना**=दे० ऊपर 'सिर खपाना'। **(किसी का) सिर खुजलाना**=ऐसा उपद्रव या शरारत करना कि उसके लिए यथेष्ट दंड मिल सके। शामत आना। जैसे—तुम्हारी इन चालों से तो ऐसा जान पड़ता है कि तुम्हारा सिर खुजला रहा है, अर्थात् तुम मार खाना चाहते हो। **सिर गूँथना**= (क) सिर के बाल बाँधने के लिए कंघी-चोटी करना। (ख) कलियों, फूलों आदि से सिर अलंकृत करना। **सिर घुटवाना**=दे० 'नीचे सिर मुंड़वाना'। **सिर घूमना**= (क) सिर में चक्कर आना। (ख) कोई विकट स्थिति सामने आने पर बुद्धि चकराना। जैसे—उन लोगों की मार-पीट देखकर तो मेरा सिर घूमने लगा। **सिर चकराना**=सिर घूमना। **(किसी के) सिर चढ़कर मरना**=(किसी को) सिर चढ़ाना। किसी के ऊपर जान देना। **(किसी के आगे अपना) सिर चढ़ाना**= किसी देवी या देवता के सामने अपना सिर काटकर गिराना। आप ही अपना बलिदान करना। **(किसी को) सिर चढ़ाना**=किसी की छोटी-मोटी बातों की उपेक्षा करते हुए उसे बहुत उद्दंड या गुस्ताख बना देना। **(कोई चीज अपने) सिर चढ़ाना**=आदरपूर्वक या पूज्य भाव से ग्रहण करना। शिरोधार्य करना। **सिर जाना**=मृत्यु हो जाना। उदा०—सर (सिर) जाता है, सर (सिर) से तेरी उलफत नहीं जाती।—कोई शायर। **(किसी के साथ) सिर जोड़कर बैठना**=बहुत ही पास सटकर या हिल-मिलकर बैठना। **सिर जोड़ना**=किसी काम या बात के लिए कुछ लोगों को इकट्ठा करना। **सिर झाड़ना**=सिर के बालों में कंघी करना। **(किसी का) सिर झुकाना**=किसी को इस प्रकार परास्त करना कि वह नत मस्तक होने के लिए विवश हो जाय। **(किसी के आगे) सिर झुकाना**= (क) नम्रतापूर्वक सिर नीचे करना। नत-मस्तक होना। (ख) लज्जा आदि के कारण सिर नीचा करना। **(किसी के) सिर डालना**=किसी प्रकार का उत्तरदायित्व या भार किसी को देना या किसी पर रखना। **सिर ढारना**=प्रसन्न होकर सिर हिलाना या झूमना। उदा०—मुरली की धुनि सुनि सुर वधू सिर ढोरैं। —सूरदास मदन मोहन। **(किसी का) सिर तोड़ना**=अभिमान, उद्दंडता, शक्ति आदि नष्ट करना। जैसे—यदि वे मुझसे मुकदमेबाजी करेंगे तो मैं उनका सिर तोड़ दूंगा। **(किसी काम, बात या व्यक्ति के लिए) सिर देना**=प्राण निछावर करना। जान देना। **(किसी के) सिर धरना**=किसी के सिर मढ़ना या रखना। **(कोई चीज या बात) सिर धरना**=आदरपूर्वक या पूज्यभाव से ग्रहण करना। शिरोधार्य करना। **सिर धुनना**=पश्चात्ताप या शोक के कारण बहुत अधिक दुःख प्रकट करना। **(अपना) सिर नंगा करना**=सिर के बाल खोल कर इधर-उधर बिखेरना। **(किसी का) सिर नंगा करना**=अपमानित या बेइज्जत करना। **सिर नवाना**=दे० ऊपर 'सिर झुकाना'। **सिर निकालना**=दबी हुई, शांत या साधारण स्थिति से बाहर निकलने का प्रयत्न करना। **सिर नीचा होना**=(क) अप्रतिष्ठा होना। इज्जत बिगड़ना। मान भंग होना। (ख) पराजय या हार होना। (ग) खेद, लज्जा आदि का अनुभव होना। **सिर पचाना**=दे० ऊपर 'सिर खपाना'। **सिर पटकना**=बहुत कुछ विवश होते हुए भी किसी काम के लिए निरंतर परिश्रम और प्रयत्न करते रहना। **सिर पड़ना**=दे० नीचे 'सिर पर पड़ना'। **(भूत, प्रेत, देवी, देवता आदि का) सिर पर आना**=किसी व्यक्ति का भूत-प्रेत आदि के आवेश या वश में होना। भूत-प्रेत, देवी-देवता आदि के आवेश से प्रभावित होना। **(कोई अवसर) सिर पर आना**=बहुत ही पास आ जाना। जैसे—बरसात (या होली) सिर पर आ गई है। **(कोई कष्टदायक अवसर या बात) सिर पर आना या आ पड़ना**=बहुत ही पास या बिलकुल सामने आ जाना। जैसे—कोई आफत या संकट सिर पर आना या आ पड़ना। **(कुछ) सिर पर उठा लेना**=इतना अधिक उपद्रव करना या हल्ला मचाना कि

आस-पास के लोग ऊब या घबरा जायँ। जैसे—तुमने जरा-सी बात पर सारा घर सिर पर उठा लिया। **सिर पर काल चढ़ना**=मृत्यु या विनाश का समय बहुत पास आना। **(किसी के सिर पर) खून चढ़ना या सवार होना**=(क) इतना अधिक आवेश या क्रोध चढ़ना कि मानों किसी के प्राण ले लेंगे। (ख) हत्याकारी का अपने अपराध की भीषणता के विचार से आपे में न रह जाना या सुध-बुध खो बैठना। **(अपने) सिर पर खेलना**=ऐसा काम करना जिसमें जान तक जा सकती हो। जान जोखिम में डालना। **(किसी बात का) सिर पर चढ़कर बोलना**=प्रत्यक्ष रूप से सामने आकर अपना अस्तित्व प्रकट करना। जैसे—जादू वह जो सिर पर चढ़कर बोले। **(किसी के) सिर पर पड़ना**=(क) उत्तरदायित्व या भार आकर पड़ना। जैसे—जिसके सिर पर पड़ेगी वह आप ही सँभालेगा। (ख) कष्ट, संकट आदि घटित होना। गुजरना। जैसे—सारी आफत तो उसी के सिर पड़ी है। **(अपने) सिर पर पाँव रखकर भागना**=बहुत जल्दी या तेजी से भाग जाना। जैसे-सिपाही की आवाज सुनते ही चोर सिर पर पाँव रखकर भागा। **(किसी के) सिर पर बीतना**=कष्ट, संकट आदि घटित होना। जैसे—जिसके सिर पर बीतती है, वही जानता है। **(कोई चीज या बात) सिर पर रखना**=आदरपूर्वक ग्रहण करना। शिरोधार्य करना। **सिर पर लेना**=अपने ऊपर उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी लेना। जैसे—झगड़े या बदनामी की बात अपने सिर पर लेना। **सिर पर शैतान चढ़ना**=क्रोध, भय आदि के कारण विवेक नष्ट होना। जैसे—सिर पे शैतान के एक और भी शैतान चढ़ा।—कोई शायर। **सिर पर सींग जमना**=ऐसी स्थिति में आना कि औरों से व्यर्थ लड़ाई-झगड़ा करने को जी चाहे। **सिर पर सींग होना**=कोई विशेषता होना। (परिहास और व्यंग्य) जैसे—क्या तुम्हारे सिर पर सींग है जो तुम्हारी हर बात मान ली जाय। **सिर पर सेहरा होना**=किसी प्रकार की विशेषता होना। (व्यंग्य) जैसे—क्या तुम्हारे सिर पर सेहरा है जो सब चीजें तुम्हीं को दे दी जायँ! **(किसी काम या बात का किसी के) सिर पर सेहरा होना**=किसी कार्य का श्रेय प्राप्त होना। वाहवाही मिलना। जैसे—इस काम का सेहरा तुम्हारे सिर पर ही रहा। **(किसी के) सिर पर हाथ फेरना**=किसी को आश्वस्त करने के लिए प्रेमपूर्वक उसके सिर पर हाथ फेरना। **(किसी के) सिर पर हाथ रखना**=किसी अनाथ या पीड़ित को अपनी रक्षा में लेकर उसका समर्थक और सहायक बनना। **(किसी का किसी के) सिर पर होना**=पोषक, समर्थक या संरक्षक का वर्तमान होना। जैसे—उसके सिर पर कोई होता तो यह नौबत न आती। **(कोई बात) सिर पर होना**=(क) सामने या समक्ष होना। बहुत पास होना। (ख) थोड़े ही समय में घटित होने की आशा या संभावना होना। जैसे—होली सिर पर है, कपड़े जल्दी बनवा लो। **सिर फिरना या फिर जाना**=बुद्धि या मस्तिष्क का ठिकाने न रहना। पागलपन के लक्षण प्रकट होना। जैसे—तुम्हारी इन बातों से तो ऐसा जान पड़ता है कि तुम्हारा सिर फिर गया। **(किसी से) सिर फोड़ना**=व्यर्थ का प्रयत्न या बकवाद करना। जैसे—तुम तो किसी की बात मानोगे नहीं, तुमसे कौन सिर फोड़े। **सिर बाँधना**=सिर के बाल बाँधना या कंघी-चोटी करना। **(किसी का) सिर बाँधना**=सिर पर आक्रमण या वार करना। (पटेबाज) **(घोड़े का) सिर बाँधना**=लगाम इस प्रकार खींचे या पकड़े रहना कि चलने के समय घोड़े का सिर सीधा या सामने रहे। (सवार) **सिर बेचना**=सेना की नौकरी में नाम लिखाना। **सिर भारी होना**=सिर में पीड़ा होना या थकावट जान पड़ना। (रोगी होने के पूर्व लक्षण) **सिर भन्नाना**=दे० ऊपर 'सिर घूमना'। **(कोई काम या बात किसी के) सिर मढ़ना**=(क) कोई काम या बात जबरदस्ती किसी के जिम्मे लगाना। (ख) किसी को किसी अपराध या दोष के लिए उत्तरदायी ठहराना या बनाना। **(कोई काम या बात) सिर मानकर करना**=आज्ञा के रूप में मानकर कोई काम करना। उदा०—सहज सुहृद् गुरु, स्वामी सिख, जो न करइ सिर मानि।—तुलसी। **(किसी से) सिर मारना**=दे० ऊपर 'सिर खपाना'। **(कोई चीज किसी के) सिर मारना**=बहुत ही उपेक्षापूर्वक कोई चीज किसी को देना या लौटाना। जैसे—तुम यह किताब लेकर क्या करोगे? जिसकी है, उसके सिर मारो। **सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना**=प्रारंभ में ही कार्य बिगड़ना। कार्यारंभ होते ही विघ्न पड़ना। **सिर मुँड़ाना**=(क) सिर के बाल मुँड़वाकर त्यागी या साधु बनना। (ख) अपने पास का धन गँवा डालना। **(किसी का) सिर रँगना**=लाठी आदि से प्रहार करके सिर लहू-लुहान करना। **(किसी के) सिर रखना**=दे० ऊपर '(किसी के) सिर मढ़ना'। **सिर रहना**=(क) मान रहना। प्रतिष्ठा बनी रहना। (ख) जीवन या प्राण रहना। जैसे—सिर रहते मैं कभी यह काम न होने दूँगा। **(किसी काम या बात के) सिर रहना**=इस बात का बराबर ध्यान रखना कि कोई काम किस प्रकार हो रहा है। **(किसी का किसी व्यक्ति के) सिर रहना**=किसी के अतिथि, आश्रित या भार बनकर रहना। जैसे—वहाँ जायँगे तो किसी दोस्त (या ससुराल) के सिर रहेंगे। **(अपराध या दोष किसी के) सिर लगाना**=अपराधी या दोषी ठहराना या बताना। उदा०—तुम तो दोष लगावनि कौं सिर बैठे देखत तेरें।—सूर। **सिर सफेद होना**=सिर के बाल पकना। वृद्धावस्था का लक्षण) **(किसी का) सिर सहलाना**=किसी को प्रसन्न करने के लिए उसका आदर-सत्कार करना। **सिर सूंघना**=छोटों पर अपना प्रेम दिखाते हुए उनका सिर सूंघने की क्रिया करना। उदा०—दै असीस तुम सूँघि सीस सादर बैठायो।—रत्नाकर। **सिर से कफन बाँधना**=जान-बूझकर मरने के लिए तैयार होना। **सिर से खेल जाना**=जान-बूझकर प्राण दे देना। **सिर से खेलना**=(क) सिर पर भूत-प्रेत आदि का आवेश होने की दशा में बार बार सिर इधर-उधर हिलाना। अभुआना। (ख) जान जोखिम में डालना। **सिर से पानी गुजरना**=ऐसी स्थिति में पड़ना कि कष्ट या संकट पराकाष्ठा तक पहुँच जाय और बचने की कोई आशा न रह जाय। (बाढ़ में डूबते हुए आदमी की तुलना के आधार पर) **सिर से पैर तक**=(क) ऊपर से नीचे तक। (ख) आदि से अंत तक। (ग) पूरी तरह से। **सिर से पैर तक आग लगना**=अत्यंत क्रोध चढ़ना और दुःख होना। जैसे—उसकी बातें सुनकर मेरे तो सिर से पैर तक आग लग गई। **सिर से बला टलना**=व्यर्थ की झंझट या परेशानी दूर होना। **सिर से बोझ उतरना**=(क) उत्तरदायित्व से मुक्त होने या काम पूरा हो चुकने पर निश्चित होना। (ख) झंझट या बखेड़ा दूर होना। **सिर हिलाना**=(क) स्वीकृति या अस्वीकृति जताने के लिए सिर को गति देना। (ख) प्रसन्नता सूचित करने के लिए सिर को गति देना। जैसे—अच्छा संगीत सुनकर सिर हिलाना।

(किसी काम या बात के) सिर होना=कोई गुप्त काम या बात होने पर लक्षणों से उसे ताड़ या समझ लेना। जैसे—हमने तो सबकी आँख बचाकर उसे रुपया दिया था; पर तुम सिर हो गये (अर्थात् तुमने ताड़ या समझ लिया)। **(किसी के) सिर होना**=किसी के पीछे पड़ना। जैसे—अब तुम उन्हें छोड़कर हमारे सिर हुए हो। **(दोष आदि किसी के) सिर होना**=जिम्मे होना। ऊपर पड़ना। जैसे—यह सारा दोष तुम्हारे सिर है।

२. ऊपर का सिरा। चोटी।

वि० १. बड़ा। महान्। २. उत्तम। श्रेष्ठ। ३. अच्छा। बढ़िया।

*अव्य० १. के ऊपर। पर। २. ठीक अवसर पर। जैसे—सब काम समय सिर होते हैं। उदा०—कही समय सिर भगत गति।—तुलसी। ३. आधार या आश्रय पर। जैसे—(क) वह बहाने-सिर वहाँ से उठकर चला गया अर्थात् बहाना बनाकर चला गया। (ख) मैं तो वहाँ काम सिर गया था; अर्थात् काम होने के कारण गया था।

सिरई†—स्त्री० [हिं० सिर+ई (प्रत्य०)] खाट या पलंग के चौखट में उस ओर की लकड़ी जिस ओर सोने के समय सिरहाना रखते हैं।

सिर-कटा—वि० [हिं० सिर+कटा] [स्त्री० सिर-कटी] १. जिसका सिर कट गया हो। जैसे—सिर-कटी लाश। २. दूसरों का सिर काटने अर्थात् बहुत अधिक अपकार करनेवाला।

सिरका—पुं० [फा० सिर्कः] अंगूर, ईख, जामुन, आदि के रस का वह रूप जो उसे धूप में रखकर और सूर्य की गरमी से पकाकर तैयार किया जाता है।

सिरका-कश—पुं० [फा०]सिरका या अर्क खींचने का एक प्रकार का यंत्र।

सिरकी—स्त्री० [हिं० सरकंडा] १. सरकंडा। सरई। सरहरी। २. सरकंडे की तीलियों की बनी हुई टट्टी, जिसे बैल-गाड़ियों पर धूप, बरसात आदि से बचने के लिए लगाते हैं। ३. बाँस की पतली नली जिसमें बेल-बूटे काढ़ने का कलाबत्तू भरा रहता है।

*पुं०=कुंजर (जाति)।

सिर-खप—वि० [हिं० सिर+खपना] १. दूसरों का सिर खपानेवाला। बक-बककर तंग या परेशान करनेवाला। २. बहुत अधिक परिश्रम करके अपना सिर खपानेवाला। ३. (काम) जिसमें बहुत अधिक सिर खपाना पड़ता हो। जैसे—यह बहुत ही वाहियात और सिर-खप काम है।

सिर-खपना†—वि०=सिर-खप।

सिर-खपी—स्त्री० [हिं० सिर+खपना] सिर खपाने की क्रिया या भाव।

सिर-खिली—स्त्री० [देश०] मटमैले रंग की एक प्रकार की चिड़िया जिसकी चोंच और पैर काले होते हैं।

सिरखिस्त—पुं० [फा० शीरख़िश्त] दवा के काम आनेवाला एक प्रकार का गोंद। यवशर्करा।

सिरगा—पुं० [देश०] घोड़ों की एक जाति।

सिरगिरी—स्त्री० [हिं० सिर+गिरि=चोटी] १. टोपी, पगड़ी आदि में लगाने की कलगी। २. चिड़ियों के सिर पर की कलगी।

सिरगोला—पुं० [?] दुग्ध पाषाण।

सिर-घुरई*—स्त्री० [हिं० सिर+घूरना=घूमना] ज्वरांकुश तृण।

सिर-चंद—पुं० [हिं० सिर+चंद्र] हाथी के मस्तक पर शोभा के लिए लगाया जानेवाला एक प्रकार का अर्द्ध चन्द्राकार आभूषण।

सिरजक*—वि० [सं० सृजक, हिं० सिरजना] सृजन या सर्जन करनेवाला। रचनेवाला।

पुं० ईश्वर।

सिरजन-हार*—वि० [सं० सर्जन+हिं० हार (=वाला)] सृजन करने अर्थात् बनाने या रचनेवाला।

पुं० ईश्वर। परमात्मा।

सिरजना*—स० [सं० सर्जन] सृजन करना। बनाना। रचना।

*स०=संचना (संचय करना)।

सिरजित†—वि० [सं० सर्जित] सिरजा अर्थात् बनाया या रचा हुआ।

सिर-ढकाई—स्त्री० [हिं० सिर+ढकना] १. सिर ढाँकने की क्रिया। २. कुमारी वेश्या के संबंध की वह रसम जिसमें वह पहले-पहल पुरुष से समागम करती है और उसका सिर ढककर उसे वधू का रूप धारण कराया जाता है।

सिर-ताज—वि० [फा० सर+अ० ताज] अग्र-गण्य। प्रधान। मुख्य।

पुं० १. सिर पर पहनने का ताज। मुकुट। २. अपने वर्ग में सर्वश्रेष्ठ वस्तु या व्यक्ति। शिरोमणि।

सिरतान†—पुं० [हिं० सीर+तान ?] १. काश्तकार। २. मालगुजार।

सिर-ता-पा—अव्य० [फा० सर-ता-पा] १. सिर से पाँव तक। २. ऊपर से नीचे तक। ३. कुल का कुल। पूरा का पूरा।

सिरती*—स्त्री० [हिं० सीर]वह रकम जो असामी जमीन जोतने के बदले में जमींदार को देता था। लगान।

सिरत्राण*—पुं०=शिरस्त्राण।

सिरदार*—पुं०=सरदार।

सिरदारी*—स्त्री०=सरदारी।

सिरदुआली—स्त्री० [फा० सरदुआल] घोड़े के मुँह पर का वह साज जिसमें लगाम अटकी रहती है।

सिर-धरा—वि० [हिं० सिर+धरना] १. जिसे सिर पर रखा जा सके। शिरोधार्य। २. बहुत अधिक प्यार-दुलार में पला हुआ।

पुं० वह जो किसी को अपने सिर पर रखता अर्थात् उसका संरक्षक होता है।

सिरधरू†—वि०=सिर-धरा।

सिर-नामा—पुं० [फा० सरनाम; मि० सं० शीर्ष-नाम] १. पत्र के आरभ में पत्र पानेवाले का नाम, उपाधि, अभिवादन आदि। २. पानेवाले का नाम और पता जो चिट्ठी या लिफाफे के ऊपर लिखा जाता है। ३. लेखों आदि का शीर्षक।

सिरनेत—पुं० [हिं० सिर+सं० नेत्री=धज्जी या डोरी] १. पगड़ी। २. क्षत्रियों का एक वर्ग या शाखा।

सिर-पच्ची—स्त्री० [हिं० सिर+पचाना] १. सिर खपाने की क्रिया या भाव। २. सिर खपाने के कारण होनेवाला कष्ट।

सिर-पाव*—पुं०=सिरोपाव। (दे०)

सिर-पेच—पुं० [फा० सर-पेच] १. पगड़ी। २. पगड़ी के ऊपर बाँधा जानेवाला एक प्रकार का आभूषण या गहना।

सिर-पोश—पुं० [फा० सर-पोश] [भाव० सिरपोशी] १. सिर ढकने का टोप। सिर पर का आवरण। २. बन्दूक का गिलाफ। ३. किसी चीज को ऊपर से ढकने का गिलाफ।

सिर-फिरा—वि० [हिं० सिर+फिरना] [स्त्री० सिर-फिरी] १. जिसका सिर फिर गया अर्थात् मस्तिष्क उलट या विकृत हो गया हो। २. जिसकी बुद्धि सामान्य स्तर से बहुत घट कर हो और इसी लिए जो ऊल-जलूल काम करता हो। ३. कुछ-कुछ पागलों का-सा। जैसे—सिर-फिरी बातें।

सिर-फूल—पुं० [हिं० सिर+फूल] सिर पर पहना जानेवाला स्त्रियों का एक आभूषण।

सिर-फेंटा—पुं० [हिं० सिर+फेंटा] साफा। पगड़ी। मुरेठा।

सिर-बंद—पुं० [हिं० सिर+फा० बंद] साफा।

सिर-बंदी—स्त्री० [हिं० सिर+फा० बंदी] माथे पर पहनने का स्त्रियों का एक आभूषण।

पुं० एक प्रकार का रेशम का कीड़ा।

सिर-बेंदी†—स्त्री०=सिर-बंदी।

सिर-बोझी—पुं० [हिं० सिर-बोझ] एक प्रकार का पतला बाँस जो पाटन के काम आता है।

सिरमट—पुं०=सीमेंट। उदा०—'सार्थकता, को पुष्ट करनेवाला सिरमट है उनका परस्पर समीपत्व।—अज्ञेय।

सिरमनि*—वि०, पुं०=शिरोमणि।

सिरमिट†—पुं०=सीमेंट।

सिरमौर—वि० [हिं० सिर+मौर] शिरोमणि। सिर-ताज।

पुं० सिर का मुकुट।

सिररुह*—पुं०=शिरोरुह (सिर के बाल)।

सिरवा—पुं० [हिं० सरा] वह कपड़ा जिससे खलिहान में अनाज बरसाने के समय हवा करते हैं। ओसाने में हवा करने का कपड़ा।

क्रि० प्र०—मारना।

सिरवार—पुं० [हिं० सीर+कार] जमींदार का वह कारिंदा जो उसकी खेती का प्रबंध करता है।

*पुं०=सिवार।

सिरस—पुं० [सं० शिरीष] शीशम की तरह का लम्बा एक प्रकार का ऊँचा पेड़।

सिरसा*—पुं०=सिरस।

सिरसी—पुं० [देश०] एक प्रकार का तीतर।

सिरहर—वि० [हिं० सिर+हर] शिरोमणि।

वि०=सिर-धरा।

सिरहाना—पुं० [सं० शिरस्+आधान] १. तकिया जिसे सिर के नीचे रखते हैं। (पश्चिम) २. खाट या पलंग का वह स्थान जहाँ तकिया (सोते समय) साधारणतया रखते हैं।

सिराँचा—पुं० [देश०] एक प्रकार का पतला बाँस जिससे कुरसियाँ और मोढ़े बनते हैं।

सिरा—पुं० [हिं० सिर] १. किसी चीज के सिर या ऊपरी भाग का अंतिम अंश। शीर्ष भाग। जैसे—सिरे की चमेली। २. किसी लम्बी चीज के दोनों छोरों या अंतिम अंशों में से हर एक। जैसे—उनकी दूकान बाजार के इस सिरे पर और मकान उस सिरे पर है। ३. किसी काम, चीज या बात का वह अंतिम अंश जो उसकी समाप्ति का सूचक होता है।

पद—**सिरे का**=सबसे बड़ा-चढ़ा। उच्च कोटि या प्रथम श्रेणी का।

मुहा०—**(किसी काम या बात का) सिरे चढ़ना**=ठीक तरह से पूर्णता या समाप्ति तक पहुँचना।

४. आरंभ का भाग। शुरू का हिस्सा। जैसे—अब वह काम नये सिरे से करना पड़ेगा। ५. किसी चीज के आगे या सामने का भाग।

स्त्री० [सं० शिरा] १. रक्त-नाड़ी। २. सिंचाई की नाली। ३. खेत की सिंचाई। ४. पानी की पतली धार।

पुं० पानी रखने का कलसा या गगरा।

सिराज—पुं० [अ०] १. सूर्य। २. दीपक। चिराग।

सिराजी—वि०, पुं०=शीराजी।

सिराना—अ० [सं० शीतल, प्रा० सीअड़, पु० हिं० सीयर, सीरा] १. ठंढा या शीतल होना। २. धीमा या मंद होना। ३. तृप्त होना।

स० [हिं० सीरा=शीतल] १. ठंढा या शीतल करना। २. धीमा या मंद करना। ३. धार्मिक अवसरों पर गेहूँ, जौ आदि की उगाई हुई बालें, या पत्तियाँ किसी जलाशय या नदी में ले जाकर प्रवाहित करना। ४. तृप्त करना। ५. गाड़ना।

अ० [हिं० सिरा] १. सिरे अर्थात् पूर्णता या समाप्ति तक पहुँचना। २. खतम होना। न रह जाना। ३. गुजरना। बीतना। ४. निपटना। तै होना।

स० [हिं० सिरा] १. सिरे अर्थात् पूर्णता या समाप्ति तक पहुँचाना। समाप्त करना। २. बनाकर तैयार करना। ३. न रहने देना। नष्ट करना। उदा०—एहि विधि धरि मन धीर चीर अँसुवन सिराई कै।—नन्ददास। ४. समय गुजारना। बिताना। ५. तै करना। निपटाना।

सिरापत्र—पुं० [सं०] १. पीपल। अश्वत्थ। २. एक प्रकार की खजूर।

सिरामूल—पुं० [सं०] नाभि।

सिरा-मोक्ष—पुं० [सं०] शरीर का दूषित रक्त निकलवाना। फसद खुलवाना।

सिरार†—स्त्री० [हिं० सिरा] पाई के सिरे पर लगाई जानेवाली लकड़ी। (जुलाहे)

सिराल—वि० [सं० सिरा+लच्] १. शिराओं से युक्त। २. जिसमें लंबी या बहुत-सी शिराएँ हों।

सिरालक—पुं० [सं० सिराल+कन्] एक प्रकार का अंगूर।

सिराला—स्त्री० [सं० सिराल+टाप्] १. एक प्रकार का पौधा। २. कमरख।

सिराली—स्त्री० [हिं० सिर] मोर की कलगी। मयूर-शिखा।

सिरालु—वि० [सं० सिरा+आलुच्] शिराओंवाला। सिराल।

सिरावन†—वि० [हिं० सिराना] १. ठंढा या शीतल करनेवाला। २. संताप दूर करनेवाला।

*पुं० सिराने की क्रिया या भाव। (पूरब)

पुं० [सं० सीर=हल] हेंगा।

सिरावना†—स०=सिराना।

वि०=सिरावन।

सिराहर्ष—पुं० [सं०] १. पुलक। रोमांच। २. आँखों के डोरों की लाली।

सिरिख*—पुं०=सिरस वृक्ष।

सिरिन†—पुं० [देश०] लाल सिरस वृक्ष। रक्तवृक्ष।

सिरिफल†—पुं०=श्रीफल।

सिरियारी—स्त्री० [सं० शिरियारी] सुसना का साग। हाथी शुंडी।

सिरिश्ता—पुं०=सरिश्ता (विभाग)।

सिरिश्तेदार—पुं०=सरिश्तेदार।

सिरी—स्त्री० [सं० सिर+ङीष्] १. करघा। २. कलिहारी। लांगली।
†स्त्री० [सं० श्री] १. लक्ष्मी। २. शोभा। ३. रोली।
†स्त्री० [हिं० सिर] १. सिर पर पहनने का एक गहना। २. 'सिर' का अल्पा० रूप। छोटा सिर। ३. काटी या मारी हुई बकरी, मछली, मुरगी आदि के गले के ऊपर का सारा अंश जो बहुत चाव से खाया जाता है।

सिरीस†—पुं०=सिरस (वृक्ष)।

सिरी-साफ—पुं० [?] एक प्रकार की मखमल।

सिरेयस*—पुं०=श्रेयस्।

सिरोना—पुं० [हिं० सिर+ओना] इंडुरी। (दे०)

सिरोपाव—पुं० [हिं० सिर+पाँव] सिर से पैर तक पहनने के सब कपड़े, (अंगा, पगड़ी, पाजामा, पटका और दुपट्टा) जो राज-दरबार से किसी को सम्मान के रूप में दिया जाता है। खिलअत।

सिरोमनि†—पुं०=शिरोमणि।

सिरोरुह†—पुं०=शिरोरुह (बाल)।

सिरोही—पुं० [?] राजपूताने का एक नगर जहाँ की बनी हुई तलवार बहुत ही लचीली और बढ़िया होती है।
स्त्री० तलवार, विशेषतः उक्त नगर की बनी हुई तलवार।
स्त्री० [देश०] काले रंग की एक चिड़िया जिसकी चोंच और पंजे लाल रंग के होते हैं।

सिर्का†—पुं०=सिरका।

सिर्फ—अव्य० [अ० सिर्फ़] १. किसी निश्चित तथा निर्दिष्ट परिमाण या मात्रा में। जैसे—(क) सिर्फ दस आदमी वहाँ गये थे। (ख) सिर्फ दो सेर मिठाई भेजी गई है। २. बस इतना ही या यही, और कुछ नहीं। जैसे—मैं सिर्फ कह ही सकता था।
वि० अकेला।

सिल—स्त्री० [सं० शिला] १. पत्थर की चट्टान। शिला। २. पत्थर की चौकोर पटिया जो छतें आदि पाटने के काम आती है। सिल्ली। ३. पत्थर की चौकोर पटिया जिस पर बट्टे से मसाला आदि पीसते हैं। ४. उक्त आकार-प्रकार का ढला हुआ चाँदी, सोने आदि का खंड। (इनगॉट) जैसे—चाँदी की सिलें बेचकर सोने की सिल खरीदना। ५. काठ की वह पटरी जिससे दबाकर रूई की पूनी बनाते हैं।
पुं० [सं० शिल] कटे हुए खेत में गिरे हुए अनाज के दाने चुनकर निर्वाह करने की वृत्ति। दे० 'शिलौंछ'।
पुं० [देश०] बलूत की जाति का एक प्रकार का पहाड़ी वृक्ष जिसे 'बंज' और 'मारू' भी कहते हैं।
पुं० [अ०] क्षय नामक रोग। राजयक्ष्मा। तपेदिक। दिक।

सिलक—स्त्री० [हिं० सलग=लगातार] १. लड़ी। शृंखला। २. गले में पहनने की माला या हार, विशेषतः चाँदी या सोने का। ३. पंक्ति। श्रेणी। ४. तागा। धागा।
*पुं०=सिल्क (रेशम)।

सिलकी†—स्त्री० [देश०] बेल। लता। बलरी।

सिल-खड़ी—स्त्री० दे० 'गोरा-पत्थर'।

सिलगना*—अ०=सुलगाना।

सिलना†—अ० [हिं० सीना] सिलाई होना। सीया जाना। जैसे—कुरता सिल रहा है।

सिलप*—पुं०=शिल्प।

सिलपची†—स्त्री०=चिलमची।

सिलपट—वि० [सं० शिला-पट्ट] १. जिसका तल चिकना, चौरस और साफ हो। २. घिसने आदि के कारण जिसके ऊपर के अंक, चिह्न आदि नष्ट हो गये हों। जैसे—सिलपट अठन्नी। ३. बुरी तरह से नष्ट किया हुआ। चौपट।

सिलपोहनी—स्त्री० [हिं० सिल+पोहना] विवाह की एक रीति।

सिलफची—स्त्री० [फा० सैलाबी] चिलमची।

सिल-फोड़ा—पुं० [हिं० सिल+फोड़ना] पत्थर-चूर नाम का पौधा। पाषाण-भेद।

सिल-बरुआ—पुं० [देश०] एक प्रकार का बाँस जो पूरबी बंगाल की ओर होता है।

सिलवट—स्त्री० [देश०] किसी समतल तथा कोमल तल के मुड़ने, दबने, पिचकने या सूखने के कारण उसमें उभरनेवाला वह रेखाकार अंश जो उसकी समतलता नष्ट करता है। शिकन। सिकुड़न।
क्रि० प्र०—डालना।—पड़ना।

सिलवाना—स० [हिं० सीना का प्रे०] किसी को कुछ सीने में प्रवृत्त करना।

सिलसिला—पुं० [अ०] १. वह संबंध जो एक क्रम में होनेवाली घटनाओं, बातों आदि में होता है। एक के बाद एक करके चलता रहनेवाला क्रम। २. कोई बँधा हुआ क्रम। परम्परा। ३. कतार। पंक्ति। श्रेणी। ४. लड़ी। शृंखला। ५. ठीक तरह से लगा हुआ क्रम। तरतीब।
वि० [सं० सिक्त] [स्त्री० सिल-सिली] १. भीगा हुआ। आर्द्र। गीला। तर। २. ऐसा चिकना जिसपर पैर या हाथ फिसलता हो।

सिलसिलाबंदी—स्त्री० [अ०+फा०] १. क्रम का बँधान। तरतीब। २. पंक्ति, श्रेणी आदि के रूप में लगे हुए होने की अवस्था या भाव।

सिलसिलेवार—वि० [अ०+फा०] सिलसिले या क्रम से लगा हुआ।
अव्य० सिलसिले या क्रम का ध्यान रखते हुए। क्रमिक रूप से।

सिलह—पुं० [अ० सिलाह] १. हथियार। शस्त्र। २. कवच। (राज०)

सिलहखाना—पुं० [अ० सिलाह+फा० खानः] वह स्थान जहाँ सब तरह के बहुत-से हथियार रखे जाते हैं। शस्त्रागार।

सिलहट—पुं० [?] १. असम प्रदेश का एक नगर। २. उक्त नगर के आस-पास की नारंगी जो बहुत बढ़िया होती है। ३. एक प्रकार का अगहनी धान।

सिलहबंद—वि० [अ० सिलह+फा० बंद] सशस्त्र। हथियारबंद। शस्त्रों से सुसज्जित।

सिलहसाज—पुं० [अ० सिलह+फा० साज] [भाव० सिलहसाजी] हथियार बनानेवाला कारीगर।

सिलहार, सिलहारा—वि० दे० 'सिलाहर'।

सिलहिला—वि० [हिं० सील, सीड+हीला=कीचड़] [स्त्री० सिलहिली] (स्थान) जिस पर पैर फिसले। रपटन वाला। कीचड़ से चिकना।

सिलही—स्त्री० [देश०] बतख की जाति का एक प्रकार का पक्षी जो प्रायः जलाशयों के पास रहता और सिवार खाता है।

सिला—पुं० [सं० शिल] १. फसल कट चुकने के बाद खेत में गिरे-पड़े या बचे-खुचे अन्न-कण चुनने की वृत्ति। २. उक्त प्रकार से बचे और खेत में बिखरे हुए अनाज के दाने।

क्रि० प्र०—चुनना।—बीनना।

३. अनाज का वह ढेर जो अभी पछोरा तथा फटका जाने को हो।

†स्त्री०=शिला।

पुं० [अ० सिलह] १. प्रतिकार। बदला। २. पारिश्रमिक या पुरस्कार। इनाम।

सिलाई—स्त्री० [हिं० सिलना+आई (प्रत्य०)] १. सूई से सीने की क्रिया, ढंग या भाव। जैसे—कपड़े या किताब की सिलाई। २. सीने पर दिखाई पड़नेवाले टाँके। सीवन। ३. सीने के बदले में मिलनेवाला पारिश्रमिक या मजदूरी।

† स्त्री०=सलाई।

स्त्री० [सं० शलाका] बिजली। उदा०—सिहरि सिहरि समरवै सिलाइ प्रिथीराज।

स्त्री० [देश०] ऊखकी फसल को हानि पहुँचानेवाला भूरापन लिए गहरे लाल रंग का कीड़ा।

सिलाजीत—पुं०=शिलाजीत (शिलाजतु)।

सिलाना—स० [हिं०सिलना का प्रे०] सीने का काम किसी दूसरे से कराना। जैसे—दरजी से कपड़े या जिल्दसाज से किताबें सिलाना।

स० [हिं० सीलना का प्रे०] सीड़ या सील में रखकर ठंढा या गीला करना।

† अ०=सीलना।

सिलापाक—पुं० [हिं० शिला+पाक] पथरफूल। छरीला। शैलज।

सिलाबी—वि० [हिं० सील+फा० आब=पानी या फा० सैलाबी] सीड़वाला। तर।

सिलारस—पुं० [सं० शिलारस] १. सिल्हक वृक्ष। २. उक्त वृक्ष का गोंद या निर्यास जो सुगंधित होता है।

सिलावट—पुं० [सं० शिला+पट्ट] पत्थर काटने और गढ़ने वाले। संग-तराश।

† स्त्री० [हिं० सिलना] सिलने या सीये जाने की क्रिया या ढंग। सिलाई।

सिलासार—पुं० [सं० शिलासार] लोहा।

सिलाह—पुं० [अ०] १. जिरह-बकतर। कवच। २. अस्त्र-शस्त्र। हथियार।

सिलाहखाना—पुं०=सिलहखाना (शस्त्रागार)।

सिलाहर†—वि० [हिं० सिला+हर (प्रत्य०)] १. जो सिला वृत्ति से अपनी जीविका चलाता हो। २. बहुत ही निर्धन। अकिंचन। दरिद्र।

सिलाही—पुं० [अ० सिलाह+ई (प्रत्य०)] शस्त्र धारण करनेवाला। सैनिक। सिपाही।

सिलिंगिया—स्त्री० [शिलांग नगरी] पूरबी हिमालय के शिलांग प्रदेश में पाई जानेवाली एक प्रकार की भेड़।

सिलिप†*—पुं०=शिल्प।

सिलिमुख*—पुं०=शिलीमुख (भौंरा)।

सिलिया—पुं० [सं० शिला] एक प्रकार का पत्थर जो मकान बनाने के काम में आता है।

सिलियार, सिलियारा†—पुं० दे० 'सिलाहर'।

सिली—स्त्री० [सं० शिली] १. धारदार या नुकीली चीज। २. आँख में अंजन लगाने की सलाई। (राज०)

सिलीपर—पुं० [अं० स्लिपर] १. एक प्रकार का हलका जूता जिसके पहनने पर पंजा ढका रहता है और एड़ी खुली रहती है। आराम पाई। २. लकड़ी की बड़ी धरन। ३. विशेषतः रेल की पटरी के नीचे बिछाई जानेवाली लकड़ी की धरन।

पुं० [अं० स्लीपर] शयनिका। (दे०)

सिलीमुख—पुं०=शिलीमुख (भौंरा)।

सिलेट—स्त्री० [अं० स्लेट] १. एक प्रकार का कोमल मटमैला पत्थर। २. उक्त पत्थर की वह चौकोर पट्टी जिस पर छोटे बालक लिखने का अभ्यास करते हैं। ३. उक्त प्रकार की पट्टी जिसमें पत्थर के बजाय लोहे, शीशे आदि की चद्दर भी लगी होती है।

सिलेटी—पुं० [हिं० सिलेट] सिलेट की तरह का खाकी रंग।

वि० उक्त प्रकार के रंग का।

सिलेदार—पुं० [फा० सिलहदार] १. सिलहखाने या शस्त्रागार का प्रधान अधिकारी।

सिलोंध—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बड़ी मछली जो प्रायः ६ फुट तक लंबी होती है।

सिलोच्च—पुं० [सं० शिलोच्च] एक पर्वत जो गंगा-तट पर विश्वामित्र के सिद्धाश्रम से मिथिला जाते समय राम को मार्ग में मिला था।

सिलौआ—पुं० [देश०] सन के मोटे रेशे जिनसे टोकरियाँ बनाई जाती हैं।

सिलौट†—स्त्री० =सिलौटी।

सिलौटा—पुं० [हिं० सिल+बट्टा] १. चीजें पीसने की सिल और बट्टा दोनों। २. बड़ी सिल।

सिलौटी—स्त्री० हिं० 'सिलौट' का स्त्री० अल्पा०।

सिल्क—पुं० [अं०] १. रेशम। २. रेशमी कपड़ा।

सिल्किन—वि० [अं० सिल्केन] सिल्क का। रेशमी। जैसे—सिल्किन साड़ी।

सिल्प†—पुं०=शिल्प।

सिल्लकी—स्त्री० [सं० सिल्ल+कन् ङीष्] =शल्लकी (सलई)।

सिल्ला—पुं० दे० 'सीला'।

सिल्ली—स्त्री० [सं० शिला] १. पत्थर की छोटी पतली पटिया जो प्रायः छत पाटने के काम आती है। २. लकड़ी का वह तख्ता जो उक्त पत्थर की तरह छत पाटने के काम आता है। (पश्चिम) ३. एक विशेष प्रकार के पत्थर का वह छोटा टुकड़ा जिस पर रगड़कर नाई लोग उस्तरे

की धार तेज करते हैं। (ह्वेट-स्टोन)। ४. उक्त प्रकार के रूप में ढाली हुई चाँदी या सोने का खंड। सिल।

स्त्री० [हिं० सिल्ला] फटकने के लिए लगाया हुआ अनाज का ढेर।

स्त्री० [?] १. नदी में वह स्थान जहाँ पानी कम और धारा बहुत तेज होती है। (माझी) २. एक प्रकार का जल-पक्षी जिसका मांस खाया जाता है।

सिल्हक—पुं० [सं०] १. सिलारस नामक वृक्ष। २. उक्त वृक्ष से निकलने वाला गन्ध द्रव्य।

सिल्हकी—स्त्री० [सं० सिल्हक-ङीष्]=सिल्हक।

सिव—पुं०=शिव।

†पुं० [सं० सिवक] दरजी।

सिवई—स्त्री०=सेंवई।

सिवक—वि० [सं० षिव् (सीना)+ण्वुल्-अक] सिलाई करनेवाला।

पुं० दरजी।

सिव-रात†—स्त्री०=शिव-रात्रि।

सिवा—अव्य० [अ०] १. जो है या हो, उसके अतिरिक्त। इसे छोड़ या बाद देकर। अलावा। जैसे—सिवा उसके यहाँ कोई नहीं पहुँचा था।

विशेष—वाक्य के बीच में सिवा से पहले 'के' विभक्ति लगती है। जैसे—इन बातों के सिवा एक और बात भी है। तुम्हारे सिवा, हमारे सिवा आदि प्रयोगों में यह 'के' विभक्ति 'तुम्हारे', 'हमारे' आदि शब्दों में अंतर्भुक्त होती है।

२. किसी की तुलना में और अधिक या बढ़कर। उदा०—तुम जुदाई में बहुत याद आये। मौत तुम से भी सिवा याद आई।—कोई शायर।

वि० फालतू और व्यर्थ।

*स्त्री०=शिवा।

सिवाइ*—अव्य०=सिवा।

सिवाई—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मिट्टी।

†स्त्री०=सिलाई।

सिवान—पुं० [सं० सीमांत] १. किसी राज्य की सीमा। २. सीमा पर स्थित प्रदेश। ३. गाँव की सीमा पर की भूमि।

सिवाय—अव्य०, वि०=सिवा।

सिवार—स्त्री०=सेवार (घास)।

सिवाल—स्त्री०=सेवार।

सिवाला†—पुं०=शिवालय।

सिवाली—पुं० [सं० शैवाल] कुछ हलके रंग का एक प्रकार का मरकत या पन्ना जिसमें ललाई की झलक भी होती है।

सिवि†—पुं०=शिवि।

सिविका—स्त्री०=शिविका (पालकी)।

सिविर†—पुं०=शिविर।

सिविल—वि० [अं०] १. नगर-निवासियों से संबंध रखनेवाला। २. नगर या जनपद की व्यवस्था से संबंध रखनेवाला। जनपद। जैसे—सिविल पुलिस। ३. आर्थिक। माली। ४. सभ्य। शिष्ट। ५. दे० 'दीवानी'।

सिवैयाँ†—स्त्री०=सेवई।

सिखंड†—पुं०=शिखंड (चोटी)।

सिष—पुं० १.=शिष्य। २.=सिक्ख।

*स्त्री०=सीख (शिक्षा)।

सिष्ट†—वि०=शिष्ट।

स्त्री० [फा० शिस्त] मछली फँसानेवाली बंसी की डोरी।

सिष्य†—पुं०=शिष्य।

सिस†—पुं०=शिशु।

स्त्री०=सिसक।

सिसक—स्त्री० [हिं० सिसकना] १. सिसकने की क्रिया या भाव। २. सिसकने से होनेवाला शब्द।

सिसकना—अ० [अनु० सी-सी] १. इस प्रकार धीरे-धीरे रोना कि नाक और मुँह से सी-सी ध्वनि निकलती रहे।

विशेष—रोने में मुँह खुला रहता है और गले से आवाज भी निकलती है। सिसकते समय प्रायः मुँह बंद रहता है और गले से आवाज धीमी हो जाती है।

†२. हिचकना।

सिसकारना—अ० [अनु० सीसी+हिं० करना] १. जीभ दबाते हुए वायु मुँह से इस प्रकार छोड़ना जिसमें सीटी का-सा सी-सी शब्द होता है। जैसे—किसी को बुलाने या कुत्ते को किसी पर झपटाने के लिए सिसकारना।

संयो० क्रि०—देना।

२. सीत्कार करना।

सिसकारी—स्त्री० [हिं० सिसकारना] १. सिसकारने की क्रिया, भाव या शब्द। जीभ दबाते हुए मुँह से वायु छोड़ने का सीटी का-सा शब्द।

२. दे० 'सीत्कार'।

क्रि० प्र०—देना।

सिसकी—स्त्री० [हिं० सिसकना] १. सिसकने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—भरना।—लेना।

२. दे० 'सिसकारी'।

सिस-बोनी—स्त्री० [हिं० शीशम+बोना] वह स्थान जहाँ शीशम के बहुत-से पेड़ लगाये गये हों अथवा हों। (पूरब)

सिसहर†—पुं०=शशिधर। (चंद्रमा)

सिसियाँद†—स्त्री० [?+गंध] मछली की-सी-गंध। बिसायँध।

सिसिर†—पुं०=शिशिर (जाड़ा)।

सिसु†—पुं०=शिशु।

सिसुता*—स्त्री०=शिशुता (बचपन)।

सिसुपाल*—पुं०=शिशुपाल।

सिसुमार*—पुं०=शिशुमार।

सिसृक्षा—स्त्री० [सं०√सृज् (बनना)+सन्-द्वित्व-अ-टाप्] रचने या निर्माण करने की इच्छा।

सिसृक्षु—वि० [सं० √सृज् (बनाना)+सन्+द्वित्व-उ] सृष्टि करने की इच्छा रखनेवाला। रचना का इच्छुक।

सिसोदिया—पुं० [सिसोद (स्थान)] गहलौत राजपूतों की एक प्रतिष्ठित शाखा, जिसकी प्राचीन राजधानी चित्तौड़ में और फिर आधुनिक उदयपुर में थी।

सिस्न†—पुं०=शिश्न (पुरुष का लिंग)।

सिस्य†—पुं०=शिष्य ।

सिहद्दा—पुं० [फा० सेह=तीन+अ० हद] १. तीन देशों या प्रदेशों की सीमाओं के एक स्थान पर मिलने का भाव। २. वह स्थान जहाँ तीन हदें मिलती हों।

सिहर†—पुं० [सं० शिखर] चोटी। शिखर ।
†स्त्री०=सिहरन ।

सिहरन—स्त्री० [हिं० सिहरना] १. सिहरने की क्रिया, दशा या भाव। २. सहलाने के फल-स्वरूप होनेवाला रोमांच ।

सिहरना†—अ० [सं० शिशिर+हिं० ना (प्रत्य०)] १. ठंढ से काँपना। २. भय आदि से रोमांचित होना। ३. भयभीत होने के कारण हिचकना ।

सिहरा†—पुं०=सेहरा ।

सिहराना—स० [हिं० सिहरना का स०] ऐसा काम करना जिसमें कोई सिहरे ।
*अ०=सिहरना ।
*स०=सहलाना ।

सिहरावन—पुं० [हिं०सिहरना] १. सिहरन। २. सरदी। ठंढ। जाड़ा।

सिहरी—स्त्री०[हिं० सिहरना+ई (प्रत्य०)] १. सिहरने की क्रिया या भाव। सिहरन। २. सरदी के कारण होनेवाली कँपकँपी। ३. जूड़ी-बुखार। ४. रोंगटे खड़े होना। रोमांच ।

सिहरू—पुं० [देश०] सँभालू ।

सिहलाना†—स०=सहलाना ।
अ०=सीलना ।

सिहली—स्त्री० [सं० शीतली] शीतली लता ।

सिहान—पुं० [सं० सिहाण] मंडूर । लोहकिट्ट ।

सिहाना†—अ० [सं० ईर्ष्या ?] १. ईर्ष्या करना। डाह करना। २. पाने या लेने के लिए ललचना। उदा०——मेरी भलो कि अबतें सकुचाहुँ सिहाहूँ।—तुलसी। ३. मुग्ध या मोहित होना ।
स० ईर्ष्या या लोभ की दृष्टि से देखना ।

सिहारना†—स० [देश०] १. तलाश करना। ढूँढ़ना। २. इकट्ठा, एकत्र या संचित करना।

सिहिकना—अ० [सं० शुष्क] १. सूखना। २. विशेषतः पौधों या फसल का सूखना। जैसे—धान सिहिकना ।
†अ०=सिसकना ।

सिहिटि*—स्त्री०=सृष्टि।

सिहुंड—पुं० [सं०] =थूहर (पेड़) ।

सिहोर†—पुं० [सं० सिहुंड] थूहर ।

सिह्लकी—स्त्री०=सिल्हकी ।

स्रिग*—पुं०=सृक् (माला) ।

सींक—स्त्री० [सं० इषीका] १. मूँज, सरपत आदि जातियों के पौधों का सीधा पतला डंठल जिसमें फूल या घूआ लगता है। २. किसी प्रकार की वनस्पति का बहुत पतला और लंबा डंठल। लंबा तिनका। ३. सूई की तरह का कोई पतला और लंबा खंड या टुकड़ा। ४. नाक में पहनने का कील या लौंग नाम का गहना। ५. किसी चीज पर की पतली, लंबी धारी।

सींक-पार—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बत्तख ।

सींकर—पुं० [हिं० सींक] सींक में लगा फूल या घूआ ।

सींक-सलाई—वि० [हिं०] बहुत ही दुबला-पतला ।

सींका—पुं० [हिं० सींक] पेड़-पौधों की वह बहुत पतली और सबसे छोटी उपशाखा या टहनी जिसमें पत्तियाँ और फूल लगते हैं।

सींकया—वि० [हिं० सींक] १. सींक-सा पतला । २. बहुत अधिक दुबला-पतला। कमजोर। जैसे—सींकिया पहलवान । ३. जिसमें सींकों के आकार की लंबी-लंबी धारियाँ या रेखाएँ हों। जैसे—सींकिया कपड़ा, सींकिया छपाई।
पुं० एक प्रकार का रंगीन कपड़ा जिसमें सींकों के आकार की लंबी-लंबी धारियाँ होती हैं।

सींकिया-पहलवान—पुं० [हिं०] दुबला-पतला आदमी जो अपने को बहुत बड़ा शक्तिशाली समझता हो। (व्यंग्य और परिहास)

सींग—पुं० [सं० श्रृंग] १. वे कठोर, लंबे और नुकीले अवयव जो खुरवाले पशुओं के सिर पर दोनों ओर निकलते हैं। विषाण। जैसे—गौ, बैल या हिरन के सींग ।
मुहा०—**सींग जमना या निकलना**= साधारण-सी बात के लिए भी लड़ने को उद्यत या प्रवृत्त होना। **सिर पर सींग होना**=कोई विशेषता होना। (परिहास) **सींग लगाना**=अभिमान बल, या महत्त्व प्रदर्शित करने के लिए कोई अनोखा और नया काम या बात करना। **(किसी के) कहीं सींग समाना**=कहीं रहने पर गुजारा या निर्वाह होना। ठिकाना लगना। (आश्चर्यसूचक) जैसे—तुम अभी से इतने उद्दंड हो, तुम्हारे सींग कहाँ समाएँगे ।
कहा०—**सींग कटाकर बछड़ों में मिलना**=वयस्क या वृद्ध हो जाने पर भी लड़कों में खेलना अथवा उनका-सा आचरण या व्यवहार करना।
२. हाथ का अँगूठा जो प्रायः उपेक्षा सूचित करने के लिए दूसरों को दिखाया जाता है और अशिष्ट लोगों में पुरुषेन्द्रिय का प्रतीक माना जाता है।
क्रि० प्र०—दिखाना ।
मुहा०—**सींग पर मारना, रखना या समझना**=बहुत ही उपेक्षित तथा तुच्छ समझना ।
३. सिंगी नाम का बाजा ।
†पुं० [सं० शार्ङ्ग] धनुष की प्रत्यंचा। (डिं०)

सींगड़ा—पुं० [हिं० सींग+ड़ा (प्रत्य०)] १. ऐसा पशु जिसके सिर पर सींग हों। २. सिंगी नामक बाजा। ३. वह चोंगा या सींग जिसमें प्राचीन काल में बारूद रखते थे ।

सींगण—पुं०[सं० सींग] सींग का बना हुआ नरसिंहा नाम का बाजा। (राज०)

सींगदाना†—पुं०=मूँग-फली।

सींगना—स०[हिं० सींग] चुराए हुए पशु पकड़ने के लिए उनके सींग देखना और उनकी पहचान करना।

सींगरी—स्त्री०[देश०]१. एक प्रकार का पौधा। २. उक्त पौधे की फली जिसकी तरकारी बनाते हैं। मोगरे की फली। सींगर ।

सींगी—स्त्री० [हिं० सींग] १. वह पोला सींग जिससे जर्राह शरीर का दूषित रक्त खींचते हैं।

क्रि० प्र०—लगाना ।

२. सिंघी नाम का बाजा। ३. छोटी नदियों तथा तालाबों में होनेवाली एक प्रकार की मछली जिसके मुँह के दोनों ओर सींग सदृश पतले लंबे काँटे होते हैं।

सींघन—पुं० [देश०] घोड़ों के माथे पर ऐसा टीका या निशान जिसमें दो या अधिक भौंरियाँ हों।

सींच—स्त्री० [हिं० सींचना] १. सींचने की क्रिया या भाव। सिंचाई। २. छिड़काव।

सींचना—स० [सं० सिंचन] १. खेतों में या जमीन पर बोई हुई चीजों की जड़ों तक पहुँचाने के लिए पानी गिराना, डालना या बहाना। आबपाशी करना। २. तर करना। भिगोना।

सींचाण†—पुं०=सचान (बाज पक्षी)।

सींची—स्त्री० [हिं० सींचना] खेतों या फसल को पानी से सींचने का समय।

सींड़—पुं० [सं० शिंघण या सिंहाण] नाक के अन्दर से निकलनेवाला कफ-युक्त मल।

सींथ—स्त्री० [सं० सीमंत] स्त्रियों के सिर की माँग।

मुहा०—**(किसी स्त्री का) सींथ भरना**=किसी स्त्री की माँग में सिन्दूर डालकर उससे विवाह करना। पत्नी बनाना।

सींव*—स्त्री० [सं० सीमा] १. सीमा। २. मर्यादा।

मुहा०—**(किसी को) सींव काटना**=सीमा या मर्यादा का उल्लंघन करके किसी को दबाना या पीड़ित करना।

सी—स्त्री० [अनु०] वह शब्द जो अत्यंत पीड़ा, प्रसन्नता या रसास्वाद के समय मुँह से निकलता है। शीत्कार। सिसकारी।

मुहा०—**सी करना**=असहमति या असंतोष प्रकट करना।

†स्त्री० [सं० सीत] बीज बोने की क्रिया। बोआई।

अव्य० हिं० 'सा' का स्त्री०। जैसे—जरा सी बात।

†पुं०=शीत (सरदी)।

सीउ*—पुं० १.=शीत। २.=शिव।

*स्त्री०=सीमा।

सीक†—पुं० [सं० इषीक] तीर। उदा०—सीक धनुष सायक संधाना। —तुलसी।

†स्त्री०=सींक।

सीकचा—पुं० [हिं० सीखचा] १. सीखचा। लोहे का छड़। २. बरामदे आदि के किनारे आड़ के लिए लगाया हुआ लकड़ी का वह ढाँचा जिसमें छड़ लगे होते हैं।

सीकर—पुं० [सं० सीक् (सींचना)+अन्] १. पानी की बूँदें। जल-कण। २. पसीने की बूँदें। स्वेद-कण।

†पुं०=सिक्कड़।

सीकल—पुं० [देश०] डाल का पका हुआ आम।

स्त्री० दे० 'सिकली'।

सीकस—पुं० [देश०] ऊसर।

सीका—पुं० [सं० शीर्षक] सोने का एक आभूषण जो सिर पर पहना जाता है।

†पुं० [स्त्री० अल्पा० सीकी] =छींका।

†पुं० =सींका।

पुं० [देश०] चवन्नी। (दलाल)

सीका-काई—स्त्री० [?] एक प्रकार का वृक्ष जिसकी फलियाँ रीठे की तरह सिर के बाल आदि मलने के काम में आती हैं।

सीकी†—स्त्री० [हिं० सीका] चवन्नी। (दलाल)

सीकुर†—पुं० [सं० शूक] गेहूँ, जौ, धान आदि की बालों में निकलनेवाले सूत की तरह पतले और नुकीले अंग।

सीख—स्त्री० [सं० शिक्षा] १. शिक्षा। तालीम। २. सिखाई हुई अच्छी बात। ३. अनुभव से प्राप्त होनेवाला ज्ञान। ४. परामर्श।

स्त्री० [फा० सीख] १. लोहे की सलाई। २. तीली। ३. वह कबाब जो लोहे की सलाई पर चिपका कर आग पर भूना जाता है।

सीखचा—पुं० [फा० सीखचः] १. लोहे की सीख जिस पर मांस लपेट कर भूनते हैं। २. लोहे का पतला लंबा छड़ जो खिड़कियों, दरवाजों आदि में आड़ या रोक के लिए लगाया जाता है।

सीखन*—स्त्री० [हिं० सीखना] शिक्षा। सीख।

सीखना—स० [सं० शिक्षण, प्रा० सिक्खग] १. किसी से कला विद्या आदि का ज्ञान या शिक्षा प्राप्त करना। जैसे—अँगरेजी या संस्कृत सीखना, चित्रकारी या सिलाई सीखना। २. स्वयं अभ्यास या अनुभव से कोई क्रिया, शिल्प या विद्या सीखना। जैसे—लड़का बोलना सीख रहा है। ३. किसी प्रकार का कटु अनुभव होने पर भविष्य में सचेत रहने की शिक्षा ग्रहण करना। जैसे—सौ रुपये गँवाकर तुम यह तो सीख गये कि अनजान आदमियों का विश्वास नहीं करना चाहिए।

संयो० क्रि०—जाना।—लेना।

सीगा—पुं० [अ० सीगः] १. साँचा। ढाँचा। २. कार्य, व्यापार आदि का कोई विशिष्ट विभाग। ३. मुसलमानों में विवाह के समय कहे जाने-वाले कुछ विशिष्ट अरबी वाक्य।

क्रि० प्र०—पढ़ना।

सीझना—अ० [सं० सिद्ध] [भाव० सीझ] १. आँच पर पकना या गलना। २. आग में पड़कर भस्म होना। जलना। उदा०—लै करसी प्रयाग कब सीझे।—तुलसी। ३. शारीरिक कष्ट सहना। दुःख भोगना। ४. तपस्या करना। ५. इमारत आदि के काम के लिए वृक्ष की ताजी कटी हुई लकड़ी का कुछ दिनों तक पड़े रहकर सूखना और पक्का या टिकाऊ होना। (सीज़निंग) ६. सूखे हुए चमड़े का मसाले आदि में भीग कर मुलायम और टिकाऊ होना। (टैनिंग) ७. दलाली, ब्याज, लाभ आदि के रूप में कुछ धन मिलना या उसकी प्राप्ति का निश्चित हो जाना। (दलाल)। जैसे—(क) बात की बात में पाँच रुपये सीझ गये। (ख) इस रोजगार में रुपए सैकड़े का ब्याज सीझता है।

सीट—स्त्री० [अं०] बैठने का स्थान। आसन।

स्त्री० [हिं० सीटना=घमंड भरी बातें कहना] सीटने की क्रिया या भाव।

पद—**सीट-पटाँग**।

सीटना—स० [अनु०] बढ़-बढ़कर बातें करना। डींग हाँकना। शेखी बघारना।

सीट-पटाँग—स्त्री० [हिं० सीटना+(ऊँट) पर टाँग] बहुत बढ़-बढ़ कर की जानेवाली बातें। आत्म-प्रशंसा की घमंड-भरी बात। डींग।

सीटी—स्त्री० [सं० शीत] १. वह पतला महीन शब्द जो होंठों को गोल सिकोड़कर नीचे की ओर आघात के साथ वायु निकालने से होता है। २. किसी विशिष्ट क्रिया के द्वारा कहीं से उत्पन्न होनेवाला उक्त प्रकार का शब्द। जैसे—रेल की सीटी।

मुहा०—सीटी देना=बुलाने या संकेत करने के लिए उक्त प्रकार का शब्द उत्पन्न करना।

३. एक प्रकार का छोटा उपकरण या बाजा जिसमें मुँह से हवा भरने पर उक्त प्रकार का शब्द निकलता है

क्रि० प्र०—बजाना।

सीठ†—स्त्री०=सीठी।

सीठना—पुं० [सं० अशिष्ट, प्रा० असिट्ठ+ना (प्रत्य०)] एक प्रकार के गीत जो स्त्रियाँ विवाह के अवसर पर गाती हैं और जिनके द्वारा संबंधियों का उपहास करती हैं।

सीठनी—स्त्री०=सीठना।

सीठा—वि० [सं० शिष्ट, प्रा० सिट्ठ=बचा हुआ] [भाव० सीठापन] बिना रस या स्वाद का। नीरस। फीका।

सीठी—स्त्री० [प्रा० सिट्ठ] १. पत्ते, फाँक, फल आदि का वह अंश जो रस निचोड़ लेने पर शेष बचता है। जैसे—मोसम्मी की सीठी। २. लाक्षणिक अर्थ में ऐसी वस्तु जो सारहीन हो।

सीड़—स्त्री० [सं० शीत] १. वह तरी या नमी जो आस-पास में पानी की अधिकता के कारण कहीं उत्पन्न हो जाती है। सील। सीलन। २. ठंडक। उदा०—कीन्हेसि धूप, सीड़ औ छाँहाँ।—जायसी।

सीढ़ी—स्त्री० [सं० श्रेणी] १. वास्तु-कला मे वह रचना अथवा रचनाओं का समूह जिस या जिन पर क्रमशः पैर रखकर ऊपर चढ़ा या नीचे उतरा जाता है। २. बाँस के दो बल्लों या काठ के लम्बे टुकड़ों का बना लम्बा ढाँचा जिसमें थोड़ी-थोड़ी दूर पर पैर रखने के लिए डंडे लगे रहते हैं और जिसके सहारे किसी ऊँचे स्थान पर चढ़ते हैं।

पद—सीढ़ी का डंडा=पैर रखने के लिए सीढ़ी में बना हुआ स्थान।

३. लाक्षणिक रूप में, उन्नति या बढ़ाव के मार्ग पर पड़नेवाली विभिन्न स्थितियों में से प्रत्येक स्थिति।

मुहा०—सीढ़ी-सीढ़ी चढ़ना=क्रम-क्रम से ऊपर की ओर बढ़ना। धीरे-धीरे उन्नति करना।

४. छापे आदि के यंत्रों में काठ की सीढ़ी के आकार का वह खंड जिस पर से होकर बेलन आदि आगे-पीछे आते जाते हैं। ४. किसी प्रकार के यंत्र में उक्त आकार-प्रकार का कोई अंश या खंड।

सीढ़ीनुमा—वि० [हिं०+फा०] जो देखने में सीढ़ियों की तरह बराबर एक के बाद एक ऊँचा होता गया हो। सम-समुन्नत।(टेरेस-लाइक)

सीत—पुं० [?] बहुत ही थोड़ा-सा अंश। उदा०—हाँड़ी के चावलों की एक सीत थी।—वृंदावनलाल।

†पुं०=शीत (सरदी)।

सीत-पकड़—पुं० [सं० शीत+हिं० पकड़ना] १. शीत द्वारा ग्रस्त होने का रोग। २. हाथियों का एक रोग जो उन्हें सरदी लगने से होता है।

सीतल†—वि०=शीतल।

सीतल-चीनी—स्त्री० दे० 'कबाब चीनी'।

सीतल-पाटी—स्त्री० [सं० शीतल+हिं० पाटी] १. पूर्वी बंगाल और असम के जंगलों में होनेवाली एक प्रकार की झाड़ी जिससे चटाइयाँ बनती हैं। २. उक्त झाड़ी के डंठलों से बनी हुई चटाई। ३. एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

सीतल-बुकनी—स्त्री० [सं० शीतल+हिं० बुकना] १. सत्तू। सतुआ। २. साधुओं की परिभाषा में सन्तों की बानी जो हृदय को शीतल करती है।

सीतला†—स्त्री०=शीतला।

सीता—स्त्री० [सं० √षिञ् (बाँधना)+क्त बाहु० दीर्घ—टाप्] १. वह रेखाकार गड्ढा जो जमीन जोतते समय तल के फाल के धँसने से बनता है। कूँड़। २. मिथिला के राजा सीरध्वज जनक की कन्या जो रामचन्द्र को ब्याही थी। जानकी। वैदेही।

पद—सीता की रसोई=(क) बच्चों के खेलने के लिए बने हुए रसोई के छोटे-छोटे बरतन। (ख) एक प्रकार का गोदना। **सीता की पंजीरी**=कर्पूर वल्ली नाम की लता।

३. वह भूमि जिस पर राजा की खेती होती हो। राजा की निज की भूमि। सीर। ४. वह अन्न जो प्राचीन भारत में सीताध्यक्ष प्रजा से लेकर एकत्र करता था। ५. दाक्षायणी देवी का एक नाम या रूप। ६. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, तगण, मगण, यगण और रगण होते हैं। ७. आकाश-गंगा की उन चार धाराओं में से एक जो मेरु पर्वत पर गिरने के उपरांत हो जाती है। ८. मदिरा। शराब। ९. पाताल-गारुड़ी नाम की लता। ककही या कंघी नाम का पौधा।

सीता-जानि—पुं० [सं० ब० स०] श्रीरामचन्द्र।

सीतात्यय—पुं० [सं०] किसानों पर होनेवाला जुरमाना। खेती के संबंध का जुरमाना। (कौ०)

सीताधर—पुं० [सं० सीता√धृ+अच्] सीता (हल) धारण करनेवाले बलराम।

सीताध्यक्ष—पुं० [सं० ष० त०] प्राचीन भारत में वह राज-अधिकारी जो राजा की निजी भूमि में खेतीबारी आदि का प्रबंध करता था।

सीता-नाथ—पुं० [सं० ष० त०] श्रीरामचन्द्र।

सीता-पति—पुं० [सं० ष० त०] श्रीरामचन्द्र।

सीता-फल—पुं० [सं० मध्य० स० ब० स०, १. शरीफा। २. कुम्हड़ा।

सीता-यज्ञ—पुं० [सं० मध्य० स०] प्राचीन भारत में हल जोतने के समय होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

सीता-रमण—पुं० [सं० ष० त०] श्रीरामचन्द्र।

सीतारवन, सीतारौन*—पुं०=सीता-रमण।

सीता-वट—पुं० [सं० मध्य० स०] १. प्रयाग और चित्रकूट के बीच स्थित एक वट वृक्ष जिसके नीचे राम और सीता ने विश्राम किया था। २. उक्त वृक्ष के आस-पास का स्थान।

सीतावर—पुं० [सं० ष० त०] श्रीरामचन्द्र।

सीता-वल्लभ—पुं० [सं० ष० त०] श्रीरामचन्द्र।

सीताहार—पुं० [सं० ब० स०] एक प्रकार का पौधा।

सीत्कार—पुं० [सं०] मुँह से निकलनेवाला सी-सी शब्द जो शीघ्रतापूर्वक साँस खींचने या लेने से होता है। सी-सी ध्वनि।

विशेष—यह ध्वनि अत्यधिक आनंद, पीड़ा या सरदी के फल-स्वरूप होती है।

सीत्कृति–स्त्री०[सं०] सीत्कार। (दे०)

सीत्य—पुं०[सं० सीत+यत्]१. धान्य। धान। २. खेत।

सीथ—पुं०[सं० सिक्थ] उबाले या पकाये हुए अन्न का दाना।

सीद—पुं०[सं०√सद् (नष्ट करना) जिच् सद्]१. ब्याज या रुपये देने का धंधा। २. सूदखोरी। कुसीद।

सीदना—अ०[सं० सीदति] १. दुःख पाना। कष्ट झेलना। २. नष्ट होना।

स०१. दुःख देना। २. नष्ट करना।

सीदिया—पुं०[?]दक्षिण-पूर्वी युरोप का एक प्राचीन देश जिसकी ठीक सीमाएँ अभी तक निर्धारित नहीं हुई हैं। कहते हैं कि शक लोग मूलतः यहीं के निवासी थे और यहीं से भारत आये थे।

सीदी—पुं०[सीदिया देश] सीदिया देश का अर्थात् शक जाति का मनुष्य।

वि० सीदिया नामक देश का।

सीद्य—पुं०[सं० √सद् (नष्ट करना)+यत् सद-सीद]१. आलस्य। काहिली। २. शिथिलता। सुस्ती। ३. अकर्मण्यता। निकम्मापन।

सीद्यमान—वि० [सं० सीद्य से] ठंढा या सुस्त पड़ा हुआ।

सीध—स्त्री०[सं० सिद्धि]१. सीधे होने की अवस्था, गुण या भाव। २. सीधे या ठीक सामने का विस्तार या स्थिति। जैसे—बस इसी सीध में चले जाओ, आगे एक कूआँ मिलेगा।

पद—सीध में=किसी बिंदु से अमुक ओर सीधे।

मुहा०—सीध बाँधना=(क) सड़क, क्यारी आदि बनाने के लिए पहले सीधी रेखा बनाना। (ख) सीधी रेखा स्थिर करना।

३. निशाना। लक्ष्य।

मुहा०—सीध बाँधना= निशाना या लक्ष्य साधना।

सीधा—वि०[सं० शुद्ध, व्रज० सूधा, सूधो] [स्त्री० सीधी, भाव० सिधाई, सीधापन]१. जो बिना घूमे, झुके या मुड़े कुछ दूर तक किसी एक ही ओर चला गया हो। जिसमें फेर या घुमाव न हो। सरल। ऋजु। 'टेढ़ा' का विपर्याय। जैसे—सीधी लकड़ी, सीधा रास्ता। २. जो ठीक एक ही ओर प्रवृत्त हो। जो ठीक लक्ष्य की ओर हो। जैसे—सीधा निशाना।

मुहा०—**सीधी सुनाना**= साफ साफ कहना। खरी बात कहना।

३. (व्यक्ति) जो कपटी, कुटिल या धूर्त न हो। निष्कपट और सरल प्रकृति का।

पद—सीधा-सादा= जो कुछ भी छल-कपट न जानता हो।

४. शांत और सुशील। भला। जैसे—सीधा आदमी, सीधी गौ। ५. (व्यवहार) जिसमें उद्दंडता, कपट या छल न हो।

पद—सीधी तरह=शिष्टता और सभ्यतापूर्वक। जैसे—पहले उसे सीधी तरह समझाकर देखो। **सीधे सुभाव (या स्वभाव)**=मन में बिना कोई छल-कपट रखे। सरल और सहज भाव से। जैसे—मैंने उन लोगों को सीधे-सुभाव क्षमाकर दिया था। **सीधे-से**=स्पष्ट रूप से। जैसे—उन्होंने सीधे से कह दिया कि मैं यह काम नहीं करूँगा।

मुहा०—(किसी को) सीधा करना= कठोर व्यवहार करके अथवा दंड देकर किसी को अपने अनुकूल बनाना या ठीक रास्ते पर लाना।

६. अच्छा, अनुकूल और लाभदायक। जैसे—जब भाग्य सीधा होगा (या सीधे दिन आएँगे) तब सब बातें आप से आप ठीक हो जायँगी। ७. (संबंध) जिसमें और किसी प्रकार का अंतर्भाव, फेर या लगाव न हो। प्रत्यक्ष।

पद—सीधा-सीधा=सुगम और प्रत्यक्ष।

८. (कार्य) जिसके संपादन या साधन में कोई कठिनता या जटिलता न हो। सरल और सुगम। आसान। सहज। जैसे—सीधा काम। ९. (बात या विषय) जिसे समझने में कोई कठिनता न हो। जैसे—सीधी बात, सीधा सवाल। १०. (पदार्थ) जिसका अगला या ऊपरी भाग सामने या ठीक जगह पर हो। 'उल्टा' का विपर्याय। जैसे—सीधा करके पहनो। ११. दाहिना। दक्षिण। जैसे—सीधे हाथ से रुपये दे दो।

क्रि० वि०—ठीक सामने की ओर (सम्मुख)।

पुं० किसी पदार्थ के आगे, ऊपर या सामने का भाग। 'उलटा' का विपर्याय (आववर्स) जैसे—इस कपड़े में सीधे और उलटे का जल्दी पता नहीं चलता।

पुं०[असिद्ध] बिना पका हुआ अन्न जो प्रायः ब्राह्मणों आदि को भोजन बनाने के लिए दिया जाता है।

सीधापन—पुं०[हिं० सीधा+पन (प्रत्य०)]१. सीधा होने की अवस्था, गुण या भाव। सिधाई। २. व्यवहारगत वह विशेषता जिसमें किसी प्रकार का छल-बल नहीं होता।

सीधु—पुं०[सं०]१. गुड़ या ईख के रस से बना हुआ मद्य। गुड़ की शराब। २. अमृत।

सीधु-गंध—पुं०[सं०] मौलसिरी। बकुल।

सीधुप—पुं०[सं०] मद्यप।

सीधु-पुष्प—पुं०[सं०]१. कदंब। कदम। २. बकुल। मौलसिरी।

सीधु-रस—पुं०[सं० ब० स०] आम का पेड़।

सीधे—अव्य०[हिं० सीधा]१. ठीक ऊपर की ओर उठे हुए बल में। जैसे—सीधे खड़े हो। २. सीध में। बराबर सामने की ओर। सम्मुख। ३. बिना बीच में इधर-उधर घूमे या मुड़े हुए। जैसे—इसी सड़क से सीधे चले जाओ। ४. बिना बीच में कहीं ठहरे या रुके हुए। जैसे—पहले तुम सीधे उन्हीं के पास जाओ। ५. नरमी या शिष्ट व्यवहार से। जैसे—वह सीधे रुपया न देगा। ६. शान्त भाव से। जैसे—सीधे बैठो।

सीध—पुं०[सं० √षिध् (गमन करना आदि)+रक्—पृषो० दीर्घ] गुदा। मलद्वार।

सीन—पुं०[अं०]१. दृश्य। २. रंग मंच का परदा जिसपर अनेक प्रकार के दृश्य अंकित रहते हैं।

सीनरी—स्त्री०[अं०] प्राकृतिक दृश्य।

सीना—स०[सं० सीवन]१.सूई-धागे या सूजे-रस्सी आदि की सहायता से दो या अधिक कपड़े, कागज, टाट, नाइलन, प्लास्टिक, मांस, चमड़े आदि के टुकड़ों को साथ साथ जोड़ना। जैसे—फटी हुई धोती सीना; कापी या किताब सीना, जूता सीना। २. सिलाई करना। जैसे—कमीज या पाजामा सीना।

पद—सीना-पिरोना=सिलाई, बेलबूटे आदि का काम करना।

३. लाक्षणिक अर्थ में, दो पक्षों के मत-भेद दूर करना।

पुं०[फा० सीनः]१. छाती। वक्षस्थल।

मुहा०-(किसी को) सीने से लगाना=प्रेमपूर्वक गले लगाना। आलिंगन करना।

२. स्त्री का स्तन।

*पुं०=सीवाँ (कीड़ा)।

सीना-कोबी—स्त्री० [फा० सीनःकोबी] छाती पीटते हुए शोक प्रकट करना।

सीना-जोर—वि०[फ़ा० सीनः ज़ोर] [भाव० सीना-जोरी] १. अपने बल के जोर पर या अभिमान से दूसरों से जबरदस्ती काम करानेवाला। जबरदस्त। २. अत्याचारी।

सीना-जोरी—स्त्री०[फा० सीनःज़ोरी] १. जबरदस्ती। २. अत्याचार।

सीना-तोड़—पुं०[हिं० सीना+तोड़ना] कुश्ती का एक पेंच।

सीना-पनाह—पुं०[फा०] जहाज के निचले खंड में लंबाई के बल दोनों ओर का किनारा। (लश०)

सीना-बंद—पुं०[फा० सीनबन्द] १. सीना बाँधनेवाला वस्त्र या पट्टी। २. अंगिया। चोली। ३. एक प्रकार की कुरती जिसे सदरी भी कहते हैं। ४. पट्टी विशेषतः घोड़े की पेटी। ५. ऐसा घोड़ा जिसका अगला पैर लंगड़ाता हो।

सीना-बाँह—स्त्री० [हिं० सीना+बाँह] एक प्रकार की कसरत।

सीना-मोढ़ा—पुं०[फा०सीनः=छाती+हिं० मोढ़ा=कन्धा] छाती, कन्धों आदि का विचार जो प्रायः व्यक्तियों, विशेषतः पशुओं के पराक्रम, बल आदि का अनुमान करने के लिए होता है। जैसे—घोड़े, बकरे आदि का दाम, उनके सीने-मोढ़े पर ही लगता है।

सीनियर—वि०[अं०]१. बड़ा। वयस्क। २. पद मर्यादा आदि में श्रेष्ठ। प्रवर। ज्येष्ठ।

सीनी—स्त्री०[फा०]१. तश्तरी। थाली। २. छोटी नाव।

सीनेट—स्त्री०[अं०]१. विश्वविद्यालय की प्रवंधकारिणी सभा। २. अमेरिका की राज्य सभा।

सीनेटर—पुं० [अं०] सीनेट का सदस्य।

सीप—पुं०[सं० शुक्ति, प्रा० सुत्ति] [स्त्री० अल्पा० सीपी]१. घोंघे, शंख आदि के वर्ग का और कठोर आवरण के भीतर रहनेवाला एक जल-जन्तु जो छोटे तालाबों और झीलों से लेकर बड़े-बड़े समुद्रों तक में पाया जाता है। शुक्ति। मुक्ता माता। २.उक्त जल-जन्तु का सफेद, कड़ा और चमकीला आवरण या संपुट जो बटन, चाकू आदि के दस्ते आदि बनाने के काम में आता है, और जिससे छोटे बच्चों को दूध पिलाया जाता है। ३. एक प्रकार का लंबोतरा पात्र जिसमें देव-पूजा, तर्पण आदि के लिए जल रखा जाता है।

सीपति—पुं०=श्रीपति (विष्णु)।

सीपर*—पुं०=सिपर (ढाल)।

सीप-सुत—पुं०[हिं० सीप+सं० सुत] मोती।

सीपारा—पुं०[फा०] दे० 'सिपारा'।

सीपिज—वि० सीप या सीपी से उत्पन्न।

पुं०[हिं० सीपी+सं० ज] सीपी से उत्पन्न अर्थात् मोती।

सीपी—स्त्री हिं० 'सीप' का स्त्री० अल्पा०।

सीबी—स्त्री०[अनु० सी-सी] सीत्कार। (दे०)

सीमंत—पुं०[सं०] १. सीमा-रेखा। २. स्त्रियों के सिर की माँग। ३. शरीर में हड्डियों का जोड़। ४. दे० 'सीमंतोन्नयन'।

सीमंतक—पुं०[सं० सीमंत √ कृ (करना)+क]१. माँग निकालने की क्रिया। २. सिंदूर जो स्त्रियों की माँग में डालते हैं। २. जैन पुराणों के अनुसार एक नरक। ४. उक्त नरक का निवासी। ५. एक प्रकार का माणिक (रत्न)।

सीमंतवान् (वन्)—वि० [सं० सीमंत+मतुप्-य=व-नुम्-दीर्घ] [स्त्री० सीमंतवती] जिसके सिर के बालों में माँग निकली हो।

सीमंतित—भू० कृ०[सं०सीमंत +इतच्] सीमंत के रूप में लाया हुआ। माँग निकाला हुआ। जैसे—सीमंतित केश।

सीमंतिनी—स्त्री०[सं० सीमंत+इनि—ङीप्] १. स्त्री। नारी।

विशेष—स्त्रियाँ माँग निकालती हैं, इससे उन्हें सीमंतिनी कहते हैं।

२. संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सीमंतोन्नयन—पुं० [सं० ब० स०] द्विजों के दस संस्कारों में से तीसरा संस्कार, जो गर्भाधान के चौथे, छठे, आठवें महीने होता है, तथा जिसमें गर्भवती स्त्री के सिर के बालों में माँग निकाली जाती है।

सीम†—पुं०[सं० सीमा] सीमा। हद।

मुहा०—सीम काँड़ना या चरना=(क)अपने अधिकारों का उल्लंघन करते हुए दूसरे के अधिकार-क्षेत्र में अतिक्रमण करना। (ख) जोर-जबरदस्ती करना।

पुं०[फा०] चाँदी।

सीमक—पुं०[सं० सीम+कन्] सीमा। हद।

सीमल†—पुं०=सेमल।

सीम-लिंग—पुं०[सं० ष० त०]प्रदेश की सीमा का चिह्न। हद का निशान।

सीमांकन—पुं०[सं० सीमा+अंकन, ष० त०] [भू० कृ० सीमांकित] अधिकार, कार्य, क्षेत्र आदि के अलग-अलग विभाग करके उनकी सीमा निर्धारित या निश्चित करना। (डिमार्केशन)

सीमांकित—भू० कृ०[सं०] जिसका सीमांकन हुआ हो। (डिमार्केटेड)

सीमांत—पुं०[सं०]१.वह स्थान जहाँ किसी सीमा का अंत होता हो। वह जगह जहाँ तक हद पहुँचती हो। सरहद। (फ़्रन्टियर) २. गाँव की सीमा। सिवाना। ३. सीमा पर का प्रदेश।

सीमांत-पूजन—पुं० [सं० ष० त०] वर का वह पूजन या स्वागत जो बरात आने के समय वधू-पक्ष की ओर से गाँव की सीमा पर होता है।

सीमांत-बंध—पुं०[सं० ष० त०, ब० स०]आचरण-संबंधी नियम या मर्यादा।

सीमा—स्त्री०[सं०]१. किसी प्रदेश या स्थान के चारों ओर के विस्तार की अंतिम-रेखा या स्थान। हद। सरहद। (बाउंडरी)

मुहा०—सीमा बंद करना=ऐसी राजनीतिक व्यवस्था करना कि देश की सीमा पर से आदमियों और माल का आना-जाना रुक जाय।

२. किसी विस्तार की अंतिम लंबाई या घेरा। (बार्डर) जैसे—सीमा के प्रदेश। ३. वह अंतिम स्थान जहाँ तक कोई बात या काम हो सकता हो। या होना उचित हो। नियम या मर्यादा की हद। (लिमिट)

मुहा०—सीमा से बाहर जाना=उचित से अधिक बढ़ जाना। **(निषिद्ध)**

४. भाँग। विजया।

सीमा-कर—पुं०[सं०ष०त०]वह कर जो किसी प्रदेश की सीमा पर आने-जानेवाले व्यक्तियों या सामान पर लगता है। (टरमिनल टैक्स)

सीमा-चौकी—स्त्री० [सं०+हिं०] सीमा पर स्थित वह स्थान जहाँ पर सीमा-रक्षा के निमित्त सैनिक रखे जाते हों।

सीमातिक्रमण—पुं० [सं० ष० त०] अपनी सीमा का उल्लंघन करके दूसरे के प्रदेश में किया जानेवाला अनधिकार प्रवेश।

सीमातिक्रमणोत्सव—पुं०[सं०] प्राचीन भारत में, युद्ध यात्रा के समय सीमा पार करने का उत्सव। विजय-यात्रा। विजयोत्सव।

सीमापाल—पुं०[सं०]सीमा प्रान्त का रक्षक अधिकारी।

सीमाब—पुं०[फा०] पारा। पारद।

सीमा-बद्ध—भू० कृ०[सं०]१. जिसकी सीमा निश्चित कर दी गई हो। हद के भीतर किया हुआ। जैसे—सीमा-बद्ध प्रदेश। २. सीमाओं अर्थात् मर्यादाओं से बँधा हुआ।

सीमा-शुल्क—पुं०[सं०] वह कर या शुल्क जो किसी राज्य की सीमा पर कुछ विशिष्ट प्रकार के पदार्थों या उनके आयात तथा निर्यात के समय लिया जाता है। (ड्यूटी)

सीमा-संधि—स्त्री० [सं० ष० त०] वह स्थान जहाँ पर दो या अनेक देशों, राज्यों आदि की सीमाएँ मिलती हों।

सीमा-सेतु—पुं० [सं० मध्य० स०] वह पुश्ता या मेड़ जो सीमा निश्चित करने के लिए बनाई जाती है।

सीमिक—पुं० [सं०√स्वम् (शब्द करना)+किनन्-संतृप्ता+दीर्घ] १. एक प्रकार का वृक्ष। २. दीमक। ३. दीमकों की बाँबी।

सीमिका—स्त्री० [सं० सीमिक+टाप्] १. दीमक। २. चींटी। च्यूँटी।

सीमित—भू० कृ०[सं०]१. सीमाओं से बँधा हुआ। २. जिसका प्रभाव या विस्तार एक निश्चित सीमा के अन्तर्गत हो। २. राजनीति शास्त्र में जिसपर सांविधानिक बंधन लगे हों। 'परम' का विरुद्धार्थक। (लिमिटेड) जैसे—सीमित राज्य-तंत्र।

सीमी—वि०[फा०] चाँदी का बना हुआ।

सीमेंट—पुं०[अं०]दीवारों आदि की चुनाई में काम आनेवाला एक प्रकार का चूर्ण जिसमें बालू मिलाने पर गारा बनता है तथा जो जुड़ाई और प्लास्तर के काम आता है एवं सूखने पर बहुत कड़ा और मजबूत हो जाता है।

सीय*—स्त्री०[सं० सीता] सीता। जानकी।

†पुं०[सं० शीत] ठंढ।

वि० ठंढा।

सीयन*—स्त्री०=सीवन।

सीयरा*—वि०=सियरा (ठंढा)।

सीर—पुं०[सं०] १. हल। २. जोता जानेवाला बैल। ३. सूर्य। ४. आक। मदार।

स्त्री० १. वह जमीन जिसे भू-स्वामी या जमींदार स्वयं जोतता या अपनी ओर से किसी दूसरे से जोतवाता आ रहा हो, अर्थात् जिस पर उसकी निज की खेती होती हो। २. वह जमीन जिसकी उपज या आमदनी कई हिस्सेदारों में बँटती हो। ३. हिस्सेदारी। साझेदारी।

स्त्री०[सं० शिरा] रक्तवाहिनी नाड़ी। नस।

मुहा०—सीर खुलवाना=नश्तर से शरीर का दूषित रक्त निकलवाना।

पुं०[?] १. चौपायों का एक संक्रामक रोग। २. पानी का ऐसा बहाव जो किनारे की जमीन काटता हो। (लश०)

†*वि०=सियरा (ठंढा)।

सीरक—पुं० [सं० सीर+कन्] १. हल। २. सूर्य। ३. शिशुमार। सूँस।

वि०[हिं० सीरा] ठंढा या शीतल करनेवाला।

सीरख*—पुं०=शीर्ष।

सीरत—स्त्री०[अ०]१. प्रकृति। स्वभाव। २. गुण। विशेषता।

सीर-धर—वि०[सं० ष० त०] हल धारण करनेवाला।

पुं० बलराम का एक नाम।

सीर-ध्वज—पुं० [सं० ब० स०] राजा जनक का पहला और वास्तविक नाम। २. बलराम।

सीरन†—पुं०[?] बच्चों का एक प्रकार का पहनावा।

सीरनी—स्त्री०[फा० शीरीनी] मिठाई। (दे० 'सिरनी')

सीर-पाणि—पुं०[सं० ब० स०] बलराम का एक नाम।

सीर-भृत्—पुं०[सं० सीर√भृ (सुरक्षित रखना आदि)+क्विप्—तुक्] १. हल चलानेवाला अर्थात् खेतिहर या हलवाहा। २. बलराम।

सीरम—पुं० [अं०] कुछ विशिष्ट प्रकार के प्राणियों और मनुष्यों के शरीर के रक्त में से निकला हुआ एक तरल पदार्थ जिसमें कुछ विशिष्ट रोगों का आक्रमण रोकने की शक्ति होती है; और इसीलिए जो दूसरे प्राणियों या व्यक्तियों के शरीर में उन्हें किसी रोग से रक्षित रखने के उद्देश्य से सूई के द्वारा प्रविष्ट किया जाता है।

सीरवाह(क)—पुं०[सं०]१. हल चलाने या जोतनेवाला। हलवाहा। २. जमींदार की ओर से उसकी खेती का प्रबंध करनेवाला कारिन्दा।

सीरष†—पुं०=शीर्ष।

सीरा—स्त्री०[सं०] एक प्राचीन नदी।

वि०[सं० शीतल, प्रा० सीअड़] [स्त्री० सीरी]१. ठंढा। शीतल। २. धीर और शांत प्रकृतिवाला।

†पुं०[फा० शीरः]१. चीनी आदि का पकाया हुआ शीरा। २. मोहन-भोग। हलुआ।

पुं० १.=सिरा (शीर्ष या सिरहाना)। २.=सिरहाना।

सीरायुध—पुं०[सं० ब० स०] बलराम।

सीरियल—पुं०[अं०]१. वह लंबी कहानी या लेख जो कई बार और कई हिस्सों में प्रकाशित हो। २. ऐसी कहानी या खेल जो सिनेमा में उक्त प्रकार से कई भागों में विभक्त करके दिखाया जाता हो।

सीरी (रिन्)—पुं०[सं०] (हल धारण करनेवाले) बलराम।

वि०हिं० 'सीरा' का स्त्री०।

सीरीज़—स्त्री० [सं०]१. किसी एक क्रम में पूर्वापर घटित होनेवाली घटनाओं का समाहार या समूह। २. पुस्तक प्रकाशन के क्षेत्र में, किसी एक प्रकाशन संस्था द्वारा प्रकाशित वह पुस्तक-माला जिसका विषय, मूल्य या जिल्द समान हो।

सीलंध—स्त्री०[सं०] एक प्रकार की मछली।

सील—स्त्री०[सं० शलाका] लकड़ी का एक हाथ लंबा औजार जिस पर चूड़ियाँ गोल और सुडौल की जाती हैं।

†स्त्री०=सीड़।

†पुं०=शील।

स्त्री०[अं०]१. पत्रों आदि पर लगाई जानेवाली मोहर। छाप। मुद्रा। २. प्रायः ठंढे देशों के समुद्रों में रहनेवाला एक प्रकार का बड़ा स्तनपायी चौपाया जो मछलियाँ खाकर रहता है।

सीलना—अ०[हिं० सील]१. सील से युक्त या प्रभावित होना। जैसे—दीवार या फरश सीलना। २. सील या नमी के कारण ठंढा होकर विकृत होना।

सीला†—पुं०=सिला।

सीवँ*—स्त्री०=सीमा।

सीवक—वि०[सं०] सीनेवाला। सिलाई करनेवाला।

सीवड़ा(ड़ो)—पुं० [सं० सीमांत] ग्राम का सीमांत। सिवाना। (डिं०)

सीवन—पुं०[सं० √ षिवु (सीना)+ल्युट्—अन]१. सीने का काम। सिलाई। २. सीने के कारण पड़े हुए टाँके। सिलाई के जोड़। उदा०—सीवन को उधेड़कर देखोगे क्यों मेरी कन्या को।—पंत। ४. दरज। दरार। संधि।

*स्त्री०=सीवनी।

सीवना*—स०=सीना।

सीवनी—स्त्री० [सं०सीवन-ङीप्]वह रेखा जो लिंग के नीचे से गुदा तक जाती है। सीवन।

सीवाँ—पुं०[सं०सीमिक] एक प्रकार का कीड़ा जो ऊनी कपड़ों को काट डालता है।

सीवी—स्त्री०=सीवी (सीत्कार)।

सीव्य—वि०[सं०√षिवु (सीना)+यत् (क्यप्)] जो सीया जा सके। सीये जाने के योग्य।

सीस—पुं०[सं० शीर्ष]१. सिर। माथा। मस्तक। २. कंधा। (डिं०) ३. अंतरीप। (लश०)

†पुं०=सीसा (धातु)।

सीसक—पुं०[सं०] सीसा नामक धातु।

सीसज—पुं०[सं०] सिंदूर।

वि० 'सीसा' नामक धातु से उत्पन्न या बना हुआ।

सीस-ताज—पुं०[हिं० सीस+फा०ताज] वह टोपी या ढक्कन जो शिकार पकड़ने के लिए पाले हुए जानवरों के सिर चढ़ा रहता है और शिकार के समय उतारा या खोला जाता है। कुलहा।

सीस-त्रान†—पुं०=शिरस्त्राण।

सीस-पत्र—पुं०[सं०] सीसा नामक धातु।

सीस-फूल—पुं०[हिं० सीस+फूल] सिर पर पहनने का फूल के आकार का एक प्रकार का गहना।

सीसम†—पुं०=शीशम।

सीस-महल†—पुं०=शीश-महल।

सीसर—पुं०[सं० सीस√रा (रोना)+क)१. देवताओं की सरमा नाम की कुतिया का पति। (पाराशर गृह्यसूत्र) २. एक प्रकार का बालग्रह जिसका रूप कुत्ते का-सा कहा गया है।

सीसल†—पुं०=राम-बाँस।

सीसा—पुं०[सं० सीसम] मटमैले रंग की एक मूल धातु जो अपेक्षया बहुत भारी या वजनी होती है। (लेड)

पुं०=शीशा।

सीसी—स्त्री०[अनु०]१. सी-सी शब्द। २. दे० 'सीत्कार'।

स्त्री० शीशी

सीसों*—पुं०=शीशम।

सीसोपधातु—पुं०[सं०]सिंदूर या ईंगुर जिसे सीसे की उपधातु माना गया है।

सीसोदिया—पुं०=सिसोदिया।

सीस्तान—पुं०[फा०] ईरान के दक्षिण में स्थित एक प्रदेश।

सीह—स्त्री०[सं० सीधु=मद्य] महक। गंध।

†पुं०१.=सिंह। २. सेही (साही जन्तु)। ३.=शीत।

सीह गोस—पुं०=स्याह-गोश।

सीहण(णी)*—स्त्री० [सं० सिंहनी] १ सिंह की मादा। शेरनी। उदा०—'सीहण रण साकै नहीं, सीह जणे रणसूर।'—बाँकीदास।

सीहुँड—पुं०[सं०सीहुंड+वृषो दीर्घा] सेहुँड़। थूहर।

सुंखड़—पुं०[?] साधुओं का एक संप्रदाय।

सुंग—पुं०[सं०] एक प्रसिद्ध प्राचीन राजवंश जो अंतिम मौर्य-सम्राट् बृहद्रथ के प्रधान सेनापति पुष्यमित्र ने ईसा से प्रायः दो सौ वर्ष पूर्व प्रतिष्ठित किया था।

सुंघनी—स्त्री०[हिं० सूँघना] तम्बाकू को पीस तथा छानकर तैयार किया हुआ चूर्ण जिसे लोग सूंघते हैं तथा दाँतों आदि पर भी मलते हैं।

सुंघाना—स०[हिं० सूँघना का प्रे०] किसी को कुछ सूँघने में प्रवृत्त करना।

मुहा०—**(किसी को) कुछ सुंघाना**=ऐसी चीज सुँघाना जिससे कोई बेहोश हो जाय।

सुंठि†—स्त्री०=सोंठ।

सुंड†—पुं०१.=शुंड। २.=सूँड़।

सुंड-दंड†—पुं०=शुंडादंड।

सुंड-भुसुंड—पुं० [सं० शुंड भुशुंडि] जिस का अस्त्र सूंड़ हो। हाथी।

वि०=संड-मुसंड।

सुंडस—पुं० [?] लद्दू गधे की पीठ पर रखने की गद्दी।

सुंडा—पुं०[सं० शुंडि] [स्त्री०अल्पा० सुंडी] हरे रंग का एक प्रकार का कीड़ा जो प्रायः तरकारियों, फलियों आदि में लगकर उन्हें कुतरता है।

पुं०[?] लद्दू गधे की पीठ पर रखने की गद्दी या गद्दा।

पुं०=सूँड़।

सुंडाल—पुं०[स० सुंडा+लच्] हाथी।

सुंडाली—वि०[सं० शुंडाल=सूँड़वाला] सूँड़वाला।

स्त्री० एक प्रकार की मछली।

सुंडी-बेंत—पुं०[सुँडी ?+हिं० बेंत]एक प्रकार का बेंत जो बंगाल, असम और खसिया की पहाड़ियों पर होता है।

सुंद—पुं०[सं० √सुद्(नष्ट करना)+अप्]१. एक प्रसिद्ध असुर जो निसुंद का पुत्र और उपसुन्द का भाई था। २. विष्णु।

सुंदर—वि० [सं०] [स्त्री० सुन्दरी, भाव० सुन्दरता, सौंदर्य] १. जो गठन, रंग, रूप आदि के विचार से देखने में सुखद लगता हो। २. इंद्रियों को भला प्रतीत होनेवाला। जैसे—सुन्दर बात, सुन्दर विचार, सुन्दर समाचार। ३. शुभ। जैसे—सुंदर मुहूर्त

पुं०१. कामदेव। २. लंका का एक पर्वत। ३. एक प्रकार का वृक्ष।

सुंदरक—पुं०[सं० सुंदर–कन] एक प्राचीन तीर्थ।

सुंदरता—स्त्री० [सं० सुन्दर+तल्—टाप्] १. भौतिक या शारीरिक रचना, प्रकार या रूप-रंग जो नेत्रों को भला प्रतीत होता हो। २. लाक्षणिक अर्थ में कोई सुन्दर वस्तु।

सुंदरताई*—स्त्री० [सं० सुन्दर+हिं० ताई (प्रत्य०)]=सुन्दरता।

सुंदरत्व—पुं० [सं० सुन्दर+त्व] सुन्दरता। सौन्दर्य।

सुंदरम्मन्य—वि०[सं० सुन्दर√मिन्(मानना)+खश पक्-मुम्]जो अपने आपको बहुत सुन्दर मानता या समझता हो। अपने आपको सुन्दर समझनेवाला।

सुंदराई†—स्त्री०=सुन्दरता।

सुंदरापा—पुं०[सं० सुन्दर+हिं० आपा (प्रत्य०)] सुंदरता। सौन्दर्य।

सुंदरी—वि० स्त्री० [सं०] सुन्दर रूपवाली। अच्छी सूरत-शकल वाली। रूपवती।

स्त्री०१. सुन्दर रूपवाली स्त्री। खूबसूरत औरत। २. त्रिपुर-सुन्दरी देवी। ३. एक योगिनी का नाम। ४. सवैया नामक छंद का दसवाँ भेद जिसके प्रत्येक चरण में आठ सगण और एक गुरु होता है। ५. एक प्रकार का सम-वृत्त वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चार भगण होते हैं। इसका एक प्रसिद्ध नाम मोदक भी है। ६. तेइस अक्षरों की एक प्रकार की वर्ण-वृत्ति। ७. द्रुत-विलंबित नामक छंद का दूसरा नाम। ८. हलदी। ९. एक प्रकार की मछली। १०. एक प्रकार का बड़ा जंगली वृक्ष जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती और नाव बनाने तथा इमारत के काम आती है। ११. पीतल आदि के वे लंबे टुकड़े जो बीन, सारंगी, सितार आदि के दंड पर बँधे रहते हैं और जो स्वर उतारने-चढ़ाने के लिए ऊपर-नीचे खिसकाये जाते हैं। १२. शहनाई की तरह का एक प्रकार का बाजा।

सुंदोपसुंद—पुं० [सं० द्वं० स०]सुंद और उपसुंद नाम के दो भाई जो तिलोत्तमा (अप्सरा) को प्राप्त करने के लिए आपस में लड़ मरे थे।

विशेषः—इन दोनों भाइयों ने यह वर प्राप्त किया था कि हम तब तक नहीं मरें जब तक स्वयं एक दूसरे को न मारें। अतः इन्द्र द्वारा प्रेषित तिलोत्तमा अप्सरा की प्राप्ति के लिए ये आपस में लड़ मरे थे।

सुंदोपसुंद न्याय—पुं० [सं०] एक प्रकार का न्याय जिसका प्रयोग ऐसे अवसरों पर होता है जहाँ दो शक्तिशाली व्यक्ति आपस में घनिष्ठ मित्र होने पर भी अन्त में सुन्द और उपसुन्द नामक दैत्यों की तरह लड़ मरते हैं।

सुंधाई—स्त्री०[हिं० सोंधा] सोंधे होने की अवस्था, गुण या भाव। सोंधापन।

सुंधावट†—स्त्री०=सुंधाई।

सुंधिया—स्त्री०[हिं० सोंधा+इया (प्रत्य०)]१.गुजरात में होनेवाली एक प्रकार की वनस्पति जो पशुओं के चारे के काम में आती है। २. एक प्रकार की ज्वार।

सुंबा—पुं०[देश०] [स्त्री० अल्पा० सुंबी]१. वह गीला कपड़ा या पुचारा जिसे तोप की गरम नाल पर उसे ठंढा रखने के लिए फेरते या फैलाते थे। २. तोप की नाल साफ करने का गज। ३. लोहे में छेद करने का एक प्रकार का औजार। ४. इस्पंज।

सुंबी—स्त्री० [हिं० सुंबा] लोहा काटने की छेनी।

सुंबुल†—पुं०=संबुल।

सुंभ—पुं०१.=शुंभ। २.=सुम।

सुंभा†—पुं० [स्त्री० अल्पा० सुंभी]=सुंबा।

सुंभी†—स्त्री०=सुंबी।

सुंसारी—स्त्री० [देश०] अनाजों में लगनेवाला एक प्रकार का काला कीड़ा।

सु—उप० [सं०] एक संस्कृत उपसर्ग जो प्रायः संज्ञाओं और विशेषणों के पहले लगकर उनमें नीचे लिखे अर्थों की वृद्धि करता है। १. अच्छा, उत्तम या भला। जैसे—सुगंधि, सुनाम, सुमार्ग। २. मनोहर या सुन्दर। जैसे—सुदर्शन, सुकेशी। ३. अच्छी या पूरी तरह से। भली भाँति। जैसे—सुयोजित, सुव्यवस्थित। ४. सरलतापूर्वक या सहज में। जैसे—सुकर, सुगम, सुसाध्य,। ५. बहुत अधिक। जैसे—सुदीर्घ, सुसम्पन्न। ६. मांगलिक या शुभ। जैसे—सुदिन, सुसमाचार। ७. उचित और अधिकारी। जैसे—सुपात्र।

पुं०१. सुन्दरता। खूबसूरती। २. उत्कर्ष। उन्नति। ३. आनन्द। प्रसन्नता। हर्ष। ४. समृद्धि। ५. अर्चन। पूजन। ६. अनुमति। सहमति। ७. कष्ट। तकलीफ।

†सर्व०[सं० सः] सो। वह।

†अव्य० [सं० सह] कुछ क्षेत्रीय भाषाओं में चरण तथा अपादान कारकों का और कहीं-कहीं संबंध-सूचक चिह्न।

†वि०=स्व (अपना)।

सुअ†—पुं०=सुत (बेटा)।

सुअटा—पुं०[सं० शुक, प्रा० सूअ, हिं० सूआ] तोता।

सुअन†—पुं० [सं० सुत, प्रा० सुअ] पुत्र। बेटा।

†वि०=सोना (स्वर्ण)। जैसे—सुअन जरद=सोनजर्द।

सुअना*—अ० [हिं० सुअन] १. उत्पन्न होना। २. उदित होना। उगना।

†पुं०=सुगना (तोता)।

सुअर—पुं० हिं०'सूअर' का वह रूप जो उसे यौगिक शब्दों के पहले लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—सुअरदंता।

सुअर-दंता†—वि० [हिं० सुअर+दन्ता=दाँतवाला] सुअर के-से दाँतों वाला।

पुं० वह हाथी जिसके दाँत झुके हुए हों।

सुअर्ग†—पुं०=स्वर्ग।

सुअर्ग-पताली—पुं० दे० 'स्वर्ग-पताली'।

सु-अवसर—पुं०[स० क० स०]ऐसा अवसर या समय जिसमें कार्य साधन के लिए अनुकूल तथा उपयुक्त परिस्थितियाँ होती हों।

सुआ—स्त्री० [?]साफ पानी में रहनेवाली हरे रंग की एक मछली जिसके दाँत अत्यन्त मजबूत और लंबे होते हैं।

†पुं०=सुअटा (तोता)। २.=सूआ (बड़ी सूई)।

सुआउ†—वि० [सं० सु+आयु] जिसकी आयु बड़ी हो। दीर्घायु।

सुआद—पुं०[?] स्मरण। याद। (डिं०)

†पुं०=स्वाद।

सुआन†—पुं०[देश०] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसके पत्ते प्रतिवर्ष

झड़ जाते हैं। इसकी लकड़ी इमारत और नाव के काम में आती है।

†पुं०=श्वान।

पुं०=सूनु (पुत्र)।

सुआना—स० [हिं० सूना का प्रे०] सूने में प्रवृत्त करना। उत्पन्न या पैदा कराना।

†स०=सुलाना।

सुआयी†—पुं०=स्वामी।

सुआर†—पुं० [सं० सूपकार] भोजन बनानेवाला, रसोइया।

सुआरव—वि०[सं० ब० स०] उत्तम शब्द करनेवाला। मीठे स्वर से बोलने या बजनेवाला।

सुआसिन†—स्त्री०=सुआसिनी।

सुआसिनी*†—स्त्री० [सं० सुवासिनी] १. स्त्री, विशेषतः आस-पास में रहनेवाली स्त्री। २. सौभाग्यवती स्त्री। सधवा।

सुआहित—पुं०[सं०सु+आहत?]तलवार के ३२ हाथों में से एक हाथ।

सुइना†—पुं०=सोना (स्वर्ण)।

सुइया—स्त्री०[हिं० सूआ] एक प्रकार की चिड़िया।

†स्त्री०=सूई।

सुइस†—स्त्री० दे० 'सूँस'।

सुई†—स्त्री०=सूई।

सुकंकवान् (वत्)—पुं० [सं० सुकंक+मतुप्-म-व] मार्कण्डेय पुराण के अनुसार मेरु के दक्षिण का एक पर्वत।

सुकंटका—स्त्री०[सं० ब० स०]१. घीकुआर। २. पिंडखजूर।

सुकंठ—वि०[सं० ब० स०]१. जिसका कंठ सुन्दर हो। सुन्दर गलेवाला। २. जिसके गले का स्वर कोमल और मधुर हो।

पुं० सुग्रीव का एक नाम।

सुकंद—पुं०[सं० कर्म० स०] कसेरू।

सुकंदक—पुं०[सं० सुकंद+कन्]१. महाभारत काल का एक प्राचीन देश। २. उक्त देश का निवासी। ३. बाराही कंद। गेंठी। ४. प्याज।

सुकंदन—पुं०[सं० ब० स०]१. बैजयंती तुलसी। २. बबई तुलसी। वर्वरक।

सुकंदा—स्त्री० [सं०] १. लक्षणा कंद। पुत्रदा। २. बाँझ ककोड़ा।

सुकंदी—पुं०[सं० सुकंद-ङीप्] सूरन। जमीकंद।

सुक*—पुं०१. दे० 'शुक'। २. दे० 'शुकदेव'।

†पुं०१. दे० 'शुक्र'। २. दे० 'शुक्रवार'।

सुकचण—पुं० [सं० संकुचण] लज्जा। संकोच। (डिं०)

सुचकना†—अ०=सकुचना।

सुकचाना†—अ०=सकुचाना।

सुकटि—वि०[सं० ब० स०] अच्छी कमरवाली। जिसकी कमर सुन्दर हो।

स्त्री०१. सुन्दर कमर। २. सुन्दर कमरवाली स्त्री।

सुकड़ना†—अ०=सिकुड़ना।

सुकदेव*—पुं०=शुकदेव।

सुकन*—पुं०=शकुन। (डिं०)

सुकना†—पुं०[देश०]एक प्रकार का धान जो भादों के अंत में होता है।

†स०=सूखना। (पश्चिम)

सुक-नासा*—स्त्री०[सं० शुक+नासिका]१. तोते की ठोर जैसी नाक। २. स्त्री जिसकी नाक तोते की ठोर जैसी हो।

सुकमार†—वि०=सुकुमार (कोमल)।

सुकर—वि०[सं० सु√कृ (करना)+खल्] [भाव० सुकरता] (कार्य) जो सहज में किया जा सके। सरल। आसान।

सुकरता—स्त्री०[सं० सुकर+तल्—टाप्]१. सुकर होने की अवस्था या भाव। सौन्दर्य। २. सुन्दरता।

सुकरा—स्त्री०[सं० सुकर-टाप्] ऐसी अच्छी और सीधी गौ जो सहज में दुही जा सके।

सुकरात—पुं० एक प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक जो अफलातून (प्लेटो) का गुरु था। (सॉक्रटीज़)

सुकराना†—पुं०=शुकराना।

सुकरित—वि०[सं० सुकृत]१. अच्छा। भला। २. मांगलिक। शुभ।

सुकरीहार†—[पुं०] गले में पहनने का एक प्रकार का हार।

सुकर्णक—वि०[सं० ब० स०] सुन्दर कानोंवाला।

पुं० हस्तिकंद। हाथीकंद।

सुकर्णिका—स्त्री०[सं० सुकर्ण+कन्—टाप्, इत्व] १. मूसाकानी नाम की लता। २. महाबला।

सुकर्णी—स्त्री०[सं० सुकर्ण -ङीप्] इन्द्रवारुणी। इन्द्रायन।

सुकर्म—पुं०[सं० कर्म० स०]१. अच्छा या उत्तम काम। सत्कर्म। २. देवताओं का एक गण या वर्ग।

सुकर्मा (र्मन्)—वि० [सं० सुकर्मन्+सु लोप दीर्घ-नलोप] अच्छे कार्य करनेवाला। सुकर्मी।

पुं०१. विषकंभ आदि २७ योगों में से सातवाँ योग। २. विश्वकर्मा। ३. विश्वामित्र।

सुकर्मी (र्मिन्)—वि०[सं० सुकर्म+इनि] १. अच्छा काम करनेवाला। २. धर्म और पुण्य के कार्य करनेवाला। ३. सदाचारी।

सुकल—वि०[सं० ब० स०] १. कोमल और मधुर परन्तु अस्फुट स्वर करनेवाला। २. वह जो धन के दान तथा व्यय करने में उदार तथा सुख्यात हो।

†वि०, पुं०=शुक्ल।

†पुं०=सुकुल (आम)।

सुकवाना—अ०[?]अचंभे में आना। आश्चर्यान्वित होना।

†स०=सुखवाना। (पश्चिम)

सुकवि—पुं०[सं० कर्म० स०] उत्तम कवि।

सुकांड—वि०[सं० ब० स०] सुन्दर कांड या डालोंवाला।

पुं० करेले का पौधा या बेल।

सुकांडी—वि०[सं० सुकांडिन्, सुकांड +इनि] सुन्दर कान्ड या शाखाओं वाला।

पुं० भ्रमर। भौंरा।

सुकाज—पुं०[सं० सु+हिं० काज] उत्तम कार्य। अच्छा काम। सुकार्य।

सुकातिज—पुं०[सं० शुक्तिज] मोती। (डिं०)

सुकाना*—स०=सुखाना।

सुकानी*—पुं०[अ० सुक्कान=पतवार] मल्लाह। माझी।

सुकाम—वि०[सं०] अच्छी कामनाएँ करनेवाला।

सुकाम-व्रत—पुं०[सं० चतु० स०] किसी उत्तम कामना से धारण किया जानेवाला व्रत।

सुकामा—स्त्री०[सं० सुकाम-टाप्] त्रायमाणा लता। त्रायमान।

सुकार—वि०[सं० सु√कृ (करना)+अण्] [स्त्री० सुकारा]१. सहज साध्य। सहज में होनेवाला। (काम) जो सहज में हो सके। सुकर। २. (पशु) जो सहज में वश में किया जा सके। ३. (पदार्थ) जो सहज में प्राप्त हो सके।

सुकाल—पुं०[सं० कर्म० स०]१. अच्छा या उत्तम समय। २. ऐसा समय जब अन्न यथेष्ट होता हो और सहज में मिलता हो। 'अकाल' का विपर्याय।

सुकाली (लिन्)—पुं०[सं० सुकाल+इनि] मनु के अनुसार शूद्रों के पितरों का एक वर्ग।

सुकावना†—स०=सुखाना।

सुकाशन—वि०[सं० सु√काश्(चमकना)+ल्युट्—अन]अत्यन्त दीप्तिमान्। बहुत चमकीला।

सुकाष्ठ—पुं०[सं० ब० स०] अच्छी लकड़ीवाला (वृक्ष)।

पुं० काष्ठाग्नि।

सुकाष्ठक—पुं०[सं० सुकाष्ठ+कन्] देवदारु।

वि०=सुकाष्ठ।

सुकाष्ठा—स्त्री०[सं० सुकाष्ठ-टाप्]१. कुटकी। २. कठ-केला।

सुकिज*—पुं०=सुकृत (अच्छा कर्म या कार्य)।

सुकिया†—स्त्री०=स्वकीया (नायिका)।

सुकी—स्त्री० हिं० सुक (तोता)का स्त्री०। तोते की मादा।

सुकीय*—स्त्री०=स्वकीया (नायिका)।

सुकुंद—पुं०[सं० ब० स०] राल। धूना।

सुकुंदक—पुं०[सं० ब० स०] प्याज।

सुकुआर†—वि०=सुकुमार।

सुकुट्ट—पुं०[सं० ब० स०]महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद।

सुकुड़ना†—अ०=सिकुड़ना।

सुकुति*—स्त्री०=शुक्ति।

सुकुमार—वि०[सं० कर्म० स०] [स्त्री० सुकुमारी, भाव० सुकुमारता] १. (व्यक्ति या शरीर) जिसमें सौन्दर्यपूर्ण कोमलता हो। २. (पदार्थ)जो सहज में कुम्हला या मुरझा सकता अथवा थोड़ी-सी असावधानी से खराब हो सकता हो।

पुं०१. सुन्दर कुमार। सुन्दर बालक। २ः वह जो बालकों के समान कोमल अंगोंवाला हो। ३. ईख। ४. वनचंपा। ५. चिचड़ा। ६. कँगनी। ७. मेरु पर्वत के नीचे का वन।

सुकुमारक—पुं०[सं० ब० स०]१. तम्बाकू का पत्ता। २. तेजपत्ता। ३. साँवा नामक अन्न।

सुकुमारता—स्त्री० [सी० सुकुमार+घल—टाप्] सुकुमार होने की अवस्था, गुण या भाव। सौन्दर्य-पूर्ण कोमलता।

सुकुमारा—स्त्री०[सं० सुकुमार-टाप्]१. जूही। चमेली। ३. केला। ४. मालती।

सुकुमारिका—स्त्री०[सं० सुकुमारिक—टाप्] केले का पेड़।

सुकुमारी—वि०[सं० सु√कुमार(खेलना)+अच्—ङीप्]सं०सुकुमार का स्त्री०। कोमल और सुन्दर अंगोंवाली।

स्त्री०१. कुमारी कन्या। २. पुत्री। बेटी। ३. चमेली। ४. ऊख। ५. केला। ६. स्पृक्का। ७. शंखिनी नामक ओषधि। ८. करेला।

सुकुरना†—अ०=सिकुड़ना।

सुकुर्कुर—पुं०[सं० ब० स०]बालकों का एक प्रकार का रोग जिसकी गणना बालग्रहों में होती है।

सुकुल—वि०[सं०] जो अच्छे कुल या वंश में उत्पन्न हुआ हो।

पुं०१. उत्तम या श्रेष्ठ कुल। २. एक प्रकार का बढ़िया आम जो उत्तर प्रदेश और बिहार में होता है।

†वि०, पुं० शुक्ल।

सुकुलता—स्त्री०[सं० सुकुल+तल्-टाप्] सुकुल होने की अवस्था या भाव। कुलीनता।

सुकुल-वेद—पुं०[सं० शुक्ल+हिं० बेत] एक प्रकार का वृक्ष।

सुकुवाँर(वार)*—वि०=सुकुमार।

सुकूत—पुं०[अ०[१. मौन। चुप्पी। २. नीरवता।

सुकूनत—स्त्री०[अ० सकूनत] १. ठहरने की जगह। २. निवास। ३. निवास-स्थान।

सुकृत्—वि०[सं० सु+√कृ (करना)+क्विप्—तुक्]१. उत्तम और शुभ कार्य करनेवाला। २. धर्म के और पुण्य कार्य करनेवाला। ३. भाग्यवान्। ४. धार्मिक, पवित्र तथा शुभ।

पुं० निपुण कारीगर। दक्ष शिल्पी।

सुकृत—भू० कृ०[सं०]१. (काम) जो अच्छे ढंग से किया गया हो। जैसे—सुकृत कर्म अर्थात् पुण्य का और शुभ काम। २. (कृति) जो बहुत बढ़िया बनाई गई हो।

पुं०१. कोई भलाई का कार्य। सत्कार्य। पुण्य कार्य। २. धर्मशील और पुण्यात्मा व्यक्ति। ३. भाग्यवान् व्यक्ति।

मुहा०—सुकृत मनाना=अपने सुकृतों का स्मरण करते हुए यह मनाना कि उनके फलस्वरूप हमारा संकट दूर हो। उदा०—लगी मनावन सुकृत, हाथ कानन पर दीन्हे।—रत्ना०।

सुकृत-कर्मा—पुं०[सं० सुकृतकर्मा कर्म०स०]धर्मात्मा या पुण्यात्मा व्यक्ति।

सुकृत-व्रत—पुं०[सं० मध्य० स०]एक प्रकार का व्रत जो प्रायः द्वादशी के दिन किया जाता है।

सुकृतात्मा—वि०[सं० सुकृतात्मन्, ब० स०] पुण्य कर्म करने की जिसकी वृत्ति हो।

सुकृति—स्त्री०[सं० सु√कृ (करना)+क्तिन्]१. धर्म और पुण्य का काम। २. तपश्चर्या। ३. कोई अच्छी या सुन्दर कृति। सत्कर्म।

सुकृतित्व—पुं०[सं० सुकृति+त्व] सुकृति का भाव या धर्म।

सुकृती (तिन्)—वि० [सं० सुकृत+इनि] १. सत्कर्म करनेवाला। २. धार्मिक और पुण्यशील। ३. भाग्यवान्। ४. बुद्धिमान्।

सुकृत्य—पुं०[सं० सु√कृ (करना)+क्यप्—तुक्] उत्तम कार्य। सत्कर्म।

सुकेत—पुं०[सं० ब० स०] आदित्य। सूर्य।

सुकेतु—वि०[सं० ब० स०] सुन्दर केशों या बालोंवाला।

पुं०१. चित्रकेतु राजा का एक नाम। २. ताड़का राक्षसी के पिता का नाम। ३. वह जो पशु-पक्षियों तक की बोली समझता हो।

सुकेश—वि०[सं० ब० स०] [स्त्री० सुकेशा] उत्तम केशोंवाला। जिसके बाल सुन्दर हों।

पुं०=सुकेशि।

सुकेशा—वि० स्त्री०[सं० सुकेश-टाप्] सुन्दर अर्थात् घने तथा लंबे बालों वाली (स्त्री)।

सुकेशि—पुं० [सं०] विद्युत्केश राक्षस का पुत्र तथा माल्यवान्, सुमाली और माली नामक राक्षसों का पिता।

सुकेशी—स्त्री० [सं० सुकेश-ङीप्] १. सुन्दर अर्थात् घने तथा लंबे बालों वाली स्त्री। २. एक अप्सरा का नाम।

वि०=सुकेशा।

सुकेसर—पुं०[सं० ब० स०] सिंह। शेर।

सुक्कान—पुं०[अ०] नाव की पतवार।

सुक्कानी—पुं० [अ०] पतवार थामनेवाला अर्थात् मल्लाह। माझी।

सुक्की—वि०[सं० स्वकीय] अपना। निजी। उदा०—ए बार सुर बंदहु नहिं बंधि लेहु सुक्की बधुअ।—चंदवरदाई।

स्त्री० [सं० सुकीर्ति] नेकनामी। सुयश।

सुक्ख†—पुं०=सुख।

सुक्त—पुं०[सं०] एक प्रकार की काँजी।

सुक्ता—स्त्री०[सं० सुक्त–टाप्] इमली।

सुक्ति—पुं०[सं० ब० स०] एक प्राचीन पर्वत।

†स्त्री०=शुक्ति।

सुक्र—पुं०[सं० सक्रतु] अग्नि। (डिं०)

†वि०, पुं०=शुक्र।

सुक्रत*—पुं०=सुकृत।

सुक्रति*—पुं०=स्त्री०=सुकृति।

सुक्रतु—वि०[सं० ब० स०] सत्कर्म करनेवाला। पुण्यशील।

पुं० १. अग्नि। २. शिव। ३. इन्द्र। ४. सूर्य। ५. सोम। ६. वरुण।

सुक्ल*—वि०=शुक्ल।

सुक्षत्र—वि० [सं० ब० स०] १. बहुत बड़ा धनवान्। २. बहुत बड़ा राज्यशाली। ३. बलवान्। शक्तिशाली।

सक्षिति—स्त्री०[सं० कर्म० स०, ब० स०] १. सुन्दर निवास-स्थान। २. उक्त प्रकार के स्थान में रहनेवाला व्यक्ति। ३. वह जो धन, धान्य और संतान से बहुत सुखी हो।

सुक्षेत्र—वि० [सं० ब० स०] जिसका जन्म अच्छे गर्भ से हुआ हो।

पुं० ऐसा घर जिसके दक्षिण, पश्चिम और उत्तर की ओर दीवारें या मकान हों, और जो पूर्व की ओर से खुलता हो। (ऐसा मकान बहुत शुभ माना जाता है।)

सुखंकर—वि० [सं० सुख√कृ (करना)+रच्] सुकर। सहज।

सुखंडी—स्त्री० [हिं० सूखना] प्रायः बच्चों को होनेवाला एक रोग जिसमें उनका शरीर अत्यन्त क्षीण हो जाता है।

वि० लाक्षणिक अर्थ में, अत्यन्त क्षीण अशक्त और दुर्बल।

सुखंद†—वि०=सुखद।

सुख—पुं० [सं०] १ वह प्रिय अनुभूति जो अनुकूल या अभीप्सित वातावरण या स्थिति की प्राप्ति पर होती है। जैसे—इस शुभ समाचार से उसे सुख मिला। २. साधारणतया व्यक्ति की वह स्थिति जिसमें वह आर्थिक, मानसिक तथा शारीरिक कष्टों से मुक्त रहता है और उसे अपेक्षित सुविधाएँ प्राप्त होती हैं, अथवा प्राप्त सुविधाओं से संतोष होता है मुहा०—**सुख की नींद सोना**=निश्चिन्त होकर आनन्द से सोना या रहना। खूब मजे में समय बिताना। **सुख मानना**=किसी विशिष्ट परिस्थिति की अनुकूलता के कारण, अच्छी तरह प्रसन्न और संतुष्ट रहना। जैसे—यह पेड़ सभी प्रकार की जमीनों में सुख मानता है।

३. कल्याण। मंगल। ४. धन-धान्य आदि की संपन्नता। ५. स्वर्ग। ६. सुखी नामक छंद का दूसरा नाम।

वि० यौ० पदों के आरम्भ में, १. जो अनुकूल और प्रिय रूप में होता हो। जैसे—सुखक्रिया। २. जहाँ या जिसमें सुख प्राप्त होता हो। जैसे—सुख-कंदर। ३. जो सहज में या सुभीते से होता हो। जैसे—सुख-दोहन। ४. स्वभावतः अच्छे रूप में होनेवाला। उदा०—जाके सुख-मुख वास से वासित होत दिगंत।—केशव।

क्रि० वि० सुखपूर्वक। आराम से। सुखद रूप से।

सुख-आसन—पुं० [सं० मध्य० स०]=सुखासन।

सुख-कंद—वि०[सं० मव्य० स० सुख+कंद] सब प्रकार के सुख देनेवाला।

सुख-कंदन†—वि०=सुखकंद।

सुख-कंदर—वि०[सं० सुख+कंदरा] ऐसा स्थान जहाँ बहुत सुख मिलता हो।

सुखक*—वि० [हिं० सूखा] सूखा शुष्क।

†वि०=सुखद।

सुखकर—वि०[सं०] १. सुख देनेवाला। सुखद। २. जो सहज में किया जा सके। सुकर।

सुख-करण—वि० [सं० ष० त० सुख+करण] सुख उत्पन्न करनेवाला।

सुखकरन—वि०=सुख-करण।

सुखकरी—स्त्री०[सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सुखकारक—वि० [सं०] सुख देनेवाला। सुखद।

सुखकारी—वि०=सुखकारक।

सुख-क्रिया—स्त्री० [सं०] १. सुख-प्राप्ति के लिए किया जानेवाला कार्य। २. ऐसा कार्य जिसे करते समय सुख मिलता हो। ३. ऐसा कार्य जिसे करने में किसी प्रकार का कष्ट न होता हो।

सुख-गंध—वि० [सं० ब० स०] अच्छी गंधवाला। सुगंधित।

सुखग—वि०[सं० सुख√गम् (जाना)+ड] सुख या आराम से चलने या जानेवाला।

सुख-गम—वि० [सं० सुख√गम् (जाना)-अच्]=सुगम।

सुख-चार—पुं० [सं० सुख√चर् (चलना)+घञ्] अच्छा या उत्तम घोड़ा। बढ़िया घोड़ा।

वि०=सुख-गम।

सुख-चाव—पुं० [सं०+हिं] १. ऐसा कार्य करने का शौक जिससे सुख मिलता हो। २. आनंद-मंगल।

सुख-जात—वि० [सं० तृ० त०] सुखी।

सुख-जीवी (विन्)—पुं० [सं०] १. वह जो सुखी जीवन बिता रहा हो अथवा सुखी जीवन बिताने के लिए इच्छुक हो। २. वह जो परिश्रम न करना चाहता हो और पकी-पकाई खाना चाहता हो।

सुख-डैना*—पुं० [हिं० सूखना+डैना (प्रत्य०)] बैलों का एक प्रकार का रोग़।

सुख-ढरन—वि० [सं० सुख+हिं० ढरना] १.सुख देनेवाला। सुखदायक। २. सहज में अनुकूल या प्रसन्न होनेवाला।

सुखता—स्त्री० [सं०] सुख का धर्म या भाव। सुखत्व।

सुखथर*—पुं० [सं० सुख+स्थल] ऐसा प्रदेश जहाँ के लोग सुखी हों।

सुखद—वि० [सं०] [स्त्री० सुखदा] सुख देनेवाला। जो सुख दे या देता हो। सुखदायी। आरामदेह।

पुं० १. विष्णु। २. विष्णु का लोक या स्थान। ३. संगीत में एक प्रकार का ताल।

सुखद-गीत—वि० [सं० ब० स० सुखद+गीत] जिसकी बहुत अधिक प्रशंसा हो। प्रशंसनीय।

सुख-दनियाँ*—वि०, स्त्री०=सुख-दानि।

सुखदा—वि० [सं० सुखद का स्त्री०] सुख देनेवाली। सुखदायिनी।

स्त्री० १. गंगा। २. अप्सरा। ३. शमीवृक्ष। ४. एक प्रकार का छन्द।

सुख-दाता (दातृ)—वि० [सं०] सुख देनेवाला। सुखद।

सुख-दानि*—वि० [सं० सुखदायिनी] सुखदेनेवाला। सुखद।

पुं०=प्रियतम।

स्त्री० [सं०] १. सुंदरी नाम का छंद का दूसरा नाम। २. कुछ आचार्यों के मत से एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में ८ मात्राएँ होती हैं। कुछ लोग अंत में गुरु और लघु रखना भी आवश्यक समझते हैं।

सुखदानी—वि० स्त्री० [हिं० सुखदान] सुख देनेवाली। आनंद देनेवाली।

स्त्री०=सुख-दानि।

सुखदायक—वि० [सं० सुख√दा (देना)+ण्वुल्–अक् पुक्] सुखदेनेवाला। सुखद।

पुं० एक प्रकार का छन्द।

सुखदायी (दायिन्)—वि० [सं० सुख√दा (देना)+णिनि-युक्] [स्त्री० सुखदायिनी] सुख देनेवाला। सुखद।

सुखदायो*—वि०=सुखदायी।

सुखदाव*—वि०=सुखदायी।

सुखदास—पुं० [देश०] एक प्रकार का अगहनी धान।

सुखदेनी—वि०, स्त्री०=सुखदायिनी।

सुखदेव†—पुं०=शुकदेव।

सुखदेन—वि०=सुखदायी।

सुखदैनी—वि०, स्त्री०=सुखदायिनी।

सुखदोह्या—वि० स्त्री० [सं०] (मादा पशु विशेषतः गाय) जिसे आसानी से दूहा जा सके।

सुख-धाम—पुं० [सं० ष० त०] १. ऐसा स्थान जहाँ सब प्रकार के सुख प्राप्त हों। २. वह जिसमें सब प्रकार के सुख वर्तमान हों। ३. स्वर्ग।

सुख ध्वनि—पुं० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सुखन | पुं० [फा० सखुन] १. बात-चीत। ५. कविता।

विशेष—सुख़ुन के यौ० पदों के लिए दे० 'सखुन' के यौ०।

सुखना†—अ०=सूखना।

सुख-नीलांबरी—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सुख-पर—वि० [सं०]=सुखी।

सुख-पति†—स्त्री०=सुषुप्ति। (क्व०)

सुखपाल—पुं० [सं० सुख+हिं० पालकी में का पाल] पुरानी चाल की एक प्रकार की पालकी जिसका ऊपरी भाग शिवालय के शिखर-सा होता है।

सुखपूर्वक—अव्य० [सं०] सुख से। जैसे—वे सुखपूर्वक वहाँ रहते हैं।

सुखप्रद—वि० [सं० सुख-प्र√दा+क] सुखदेनेवाला। सुखद।

सुख-प्रश्न—पुं० [सं०] किसी का सुख-क्षेम जानने के लिए की जानेवाली जिज्ञासा।

सुख-प्रसवा—वि० स्त्री० [सं०] जिसे प्रसव करने के समय विशेष कष्ट न होता हो।

सुख-प्रिय—वि० [सं० ब० स०] जो सदा सुख से रहना चाहता हो।

पुं० संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सुख-बोध—वि० [सं०] (बात या विषय) जिसका बोध या ज्ञान सहज में हो सकता हो।

सुख-मंदिर—पुं० [सं० मध्य० स०] महल का वह विभाग जिसमें राजा लोग बैठकर नृत्य संगीत आदि देखते-सुनते थे।

सुखमणा†—स्त्री०=सुषुम्ना (नाड़ी)।

सुखमणि—पुं० [सं० सुख+मणि] सिक्खों का एक छोटा धर्मग्रन्थ जिसका वे प्रायः नित्य पाठ करते हैं।

सुखमन*—स्त्री० [सं० सुषुम्ना] सुषुम्ना नाम की नाड़ी।

†पुं०=सुख-मणि।

सुखमा—स्त्री० [सं० सुषमा] १. एक प्रकार का वृत्त। २. सुषमा। शोभा।

सुख-मानी (मानिन्)—वि० [सं०] १. किसी विशिष्ट अवस्था में सुख माननेवाला। २. हर अवस्था में सुखी रहनेवाला।

सुख-मुख—वि० [सं०] १. (शब्द या वर्ण) जिसका उच्चारण सरलता से किया जा सकता हो। २. सुन्दर बातें करनेवाला। ३. जो मुँहजोर न हो।

सुख-राज—पुं० दे० 'महासुख'।

सुख-रात †—स्त्री०=सुख-रात्रि।

सुख-रात्रि—स्त्री० [सं० ष० त०] १. दीपावली की रात। कार्तिक मास की अमावस्या की रात। २. वह रात जिसमें पति-पत्नी सुख के लिए रति करते हैं।

सुख-रात्रिका—स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

सुख-रास†—वि० [सं० सुख+राशि] जो सर्वथा सुखमय हो। सुख की राशि।

सुख-रासी* —वि०=सुख-रास।

सुख-रूप—वि० [सं०] सुहावने रूपवाला।

सुख-रूपी—वि०=सुख-रूप।

सुख-रोग—पुं० [हिं०] [वि० सुख-रोगी] कोई ऐसा बे-नाम का अथवा नाम-मात्र का रोग जिसका बड़े आदमी प्रायः काल्पनिक रूप में अपने आप में आरोप कर लिया करते हैं।

सुखलाना—पुं०=सुखाना। (पश्चिम)

सुखवंत—वि० [सं०] १. सुखी। प्रसन्न। खुश। २. सुख देनेवाला। सुखद।

सुखवत्—वि० [सं० सुख+मतुप्-म=व] सुखयुक्त। सुखी।

सुखवती—स्त्री० [सं० सुखवत्-ङीष्] अमिताभ बुद्ध का स्वर्ग।

वि० सं० सुखवान् का स्त्री०।

सुखवत्ता—स्त्री० [सं० सुखवत्+तल्-टाप्] १. सुख का भाव या धर्म। २. सुखी होने की अवस्था या भाव।

सुखवन†—पुं० [हिं० सूखना] १. सुखाने की क्रिया या भाव। २. वह फसल जो सूखने के लिए धूप में डाली जाती है। ३. कोई चीज सूखने या सुखाने पर उसकी तौल या मान में होनेवाली कमी। ४. गीले अक्षरों को सुखाने के लिए उन पर छिड़का या छोड़ा जानेवाला बालू।

सुखवाद—पुं० [सं०] १. यह मत या सिद्धांत कि इस दुःखपूर्ण संसार में रहकर भी मनुष्य को यथासाध्य सुखभोग करना चाहिए और भविष्य में भी सुख तथा शुभ फल की आशा तथा कामना बनाये रखनी चाहिए। इसमें केवल अर्थ और काम पुरुषार्थ माने जाते हैं। 'दुःखवाद' का विपर्याय। २. दे० 'आशावाद'।

सुखवादी—वि० [सं०] सुखवाद-संबंधी।

पुं० १. वह जो सुखवाद का अनुयायी हो। २. आशावादी।

सुखवान् (वत्)—वि० [सं० सुख+मतुप्-म=व-नुम-दीर्घ] [स्त्री० सुखवती] सुखी।

सुखवार—वि० [सं० सुख+हिं० वार (प्रत्य०)] [स्त्री० सुखवारी] १. सुखी। २. सहज। सरल।

सुखवास—पुं० [सं० मध्य० स०] वह स्थान जहाँ का निवास सुखकर हो।

सुख-सलिल—पुं० [सं० मध्य० स०] उष्ण जल। गरम पानी।

सुख-साध्य—वि० [सं० तृ० त०] [भाव० सुखसाध्यता] १. जिसे सुखपूर्वक प्राप्त किया जा सके। २. सुगम। सहज।

सुख-सार—पुं० [सं० सुख+सार] मुक्ति। मोक्ष।

सुख-सुभीता—पुं० [सं०+हिं०] १. ऐसी बातें जिनके होने पर मनुष्य सुख-पूर्वक जीवन बिता सके। (एमेनिटी) २. सुख और सहूलियत।

सुख-स्पर्श—वि० [सं० मध्य० स०] जिसे छूने से सुख मिलता हो।

सुख-स्वप्न—पुं० [सं०] भावी सुख की ऐसी कल्पना जिसका कोई दृढ़ आधार न हो।

सुख-स्वरावली—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सुखांत—वि० [सं० ब० स०] १. जिसका अंत या समाप्ति सुखमय वातावरण में होती हो। २. (साहित्यिक रचना) जिसका अंतिम अंश मुख्य-पात्र के भावी सुखी-जीवन की ओर इंगित करता हो।

सुखांबु—पुं० [सं० मध्य० स०] गरम पानी।

सुखा—स्त्री० [सं० सुख-टाप्] वरुण की पुरी का नाम।

सुखाई*—क्रि० वि० [हिं० सुखी] १. सुखपूर्वक। अच्छी तरह। २. बिना किसी परिश्रम के। सहज में। उदा०—प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई।—तुलसी।

स्त्री० [हिं० सुखाना+आई (प्रत्य०)] सुखाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

सुखाकर—पुं० [सं० ब० स०] बौद्धों के अनुसार एक लोक।

सुखाधार—वि० [सं० ष० त०, ब० स०] जो सुख का आधार।

पुं० स्वर्ग।

सुखाधिकार—पुं० [सं० सुख+अधिकार] विधिक क्षेत्र में, जमीन, मकान आदि के संबंध में सुख-सुभीते का वह अधिकार जो उसे पहले से या बहुत दिनों से प्राप्त हो; और इसी लिए दूसरों के द्वारा उसका अतिक्रमण दंडनीय अपराध माना जाता है। (राइट आफ़ ईज़मेन्ट) जैसे—किसी मकान में पहले से यदि कोई खिड़की चली आ रही हो, तो उसे इस संबंध में सुखाधिकार प्राप्त होता है। यदि कोई पड़ोसी उस खिड़की से ठीक सटाकर नई दीवार खड़ी करता है तो वह दूसरों के सुखाधिकार का अतिक्रमण करता है।

सुखाना—स० [हिं० सूखना का प्रे०] १. ऐसी क्रिया करना जिससे किसी चीज की नमी दूर हो जाय। जैसे—धूप में बाल सुखाना। २. (शरीर के संबंध में) क्षीण तथा दुर्बल करना। ३. नष्ट करना। जैसे—खून सुखाना।

अ० [सं० सुख+हिं० आना (प्रत्य०)] १. सुखकर प्रतीत होना। अच्छा या भला लगना। २. शरीर के लिए अनुकूल तथा सह्य होना।

सुखानी—पुं० [अ० सुक्कान ?] माँझी। मल्लाह। (लश०)

सुखायत—वि० [सं०] सहज में वश में आनेवाला। सीखा और सधा हुआ।

सुखारा—वि० [सं० सुख+हिं० आरा (प्रत्य०)] [स्त्री० सुखारी] १. सुखी। २. सरल।

सुखारि—पुं० [सं० सुख√ऋ (गत्वादि)+अण्+इति] उत्तम हवि भक्षण करनेवाले अर्थात् देवता आदि।

सुखारी†—वि०=सुखारा।

पुं०=सुखारि (देवता)।

सुखार्थी (र्थिन्)—वि० [सं०] [स्त्री० सुखार्थिनी] सुख चाहनेवाला। सुख की इच्छा करनेवाला।

सुखाला—वि० [सं० सुख+हिं आला (प्रत्य०)] [स्त्री० सुखाली] १. सुखी। २. सहज। सुगम। (पश्चिम)

सुखालोक—वि० [सं० ब० स०] सुन्दर। मनोहर।

सुखावत्†—वि०=सुखवत्।

सुखावती—स्त्री० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक स्वर्ग।

सुखावतीश्वर—पुं० [सं० ष० त०] १. बुद्ध देव। २. बौद्धों के एक देवता।

सुखावह—वि० [सं० सुख-आ√वह् (ढोना)+अच्] सुख देनेवाला। सुखद।

सुखाश—वि० [सं० सुख+अश् (खाना)+अच्] जो खाने में बहुत अच्छा जान पड़े।

पुं० १. वरुण। २. तरबूज।

वि० जिससे सुख प्राप्त होने की आशा हो।

सुखाशा—स्त्री० [सं० ष० त०] सुख पाने की आशा। आराम की उम्मीद।

सुखाश्रय—वि० [सं० ष० त०] जिस पर सुख अवलम्बित हो। सुख का आधार।

पुं० ऐसा स्थान जहाँ सुख मिलता हो।

सुखासन—पुं० [सं० मध्य० स०] १. वह आसन जिस पर बैठने से सुख हो। सुखद आसन। २. पालकी। ३. आजकल, आराम कुर्सी।

सुखिआ†—वि०=सुखी।

सुखित†—वि० [हिं० सूखना] सूखा हुआ। शुष्क।
वि० [हिं० सुख] सुखी।

सुखिता—स्त्री० [सं० सुख+इतच्-टाप्] सुखी होने की अवस्था या भाव। सुख। आनंद।

सुखित्व—पुं० [सं० सुखी+त्व]=सुखिता।

सुखिया*—वि०=सुखी। उदा०—नानक दुखिया सब संसार। सोइ सुखिया जिन राम अधार।—गुरु नानक।

सुखिर—पुं० [सं० सुषिर?] साँप के रहने का बिल। बाँबी।

सुखी (खिन्)—वि० [सं० सुख+इनि] १. जिसे सुख की अनुभूति हो रही हो। २. जिसे सुख प्राप्त हो। सुखपूर्ण वातावरण में रहने या पलनेवाला। ३. सुखों से भरा। जैसे—सुखी जीवन।
स्त्री० सवैया छंद का चौदहवाँ भेद जिसके प्रत्येक चरण में आठ सगण और तब लघु और गुरु वर्ण होता है। इसमें १२ और १४ वर्णों पर यति होती है।

सुखीन—पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी जिसकी पीठ लाल, छाती और गर्दन सफेद तथा चोंच चिपटी होती है।

सुखेतर—पुं० [सं० पंच० त०] सुख से इतर या भिन्न अर्थात् दुःख क्लेश, कष्ट आदि।

सुखेन—अव्य० [सं०] १. सुखपूर्वक। सुख से। २. बहुत ही सहज में। बिना विशेष प्रयास के। उदा०—(क) लरहिं सुखेन काल किन होऊ।—तुलसी। (ख) जो करिवर मुख मूक ही गिरा नचाव सुखेन।—दीनदयाल गिरि।
†पुं० =सुषेण (करमर्द)।

सुखेलक—पुं० [सं० सु√खेल (लना)+ण्वुल्-अक्] एक प्रकार का वृत्त या छन्द।

सुखेष्ठ—पुं० [सं० सुख+इष्ठन्] शिव। महादेव।

सुखैना*—वि० [सं० सुख+हिं० ऐना (प्रत्य०)] १. सुखी। २. सुख देनेवाला। ३. सहज में प्राप्त होनेवाला।

सुखोदक—पुं० [सं० मध्य० स०] गरम पानी। उष्ण जल।

सुखोदय—वि० [सं० ष० त०] जिसका परिणाम सुखद हो।
पुं० १. ऐसी स्थिति जिसमें सुख-समृद्धि का आरम्भ हो रहा हो। २. सुख की होनेवाली अनुभूति। ३. कोई मादक पेय। ४. पुराणानुसार एक वर्ष या भू-खंड।

सुखोष्ण—वि० [सं० मध्य० स०] जो इतना उष्ण हो कि सुखद प्रतीत होता हो। गुनगुना।
पुं० कुनकुना जल।

सुख्य—वि० [सं० √सुख्+पत्, सु√(प्रसिद्ध करना)] सुख-संबंधी। सुख का।

सुख्यात—वि० [सं० सु√ख्या (प्रसिद्ध करना)+क्त] [भाव०सुख्याति] जिसकी अच्छी या विशेष प्रसिद्धि हो। प्रसिद्ध। मशहूर।

सुख्याति—स्त्री० [सं० सु√ख्या+क्तिन्] सुख्यात होने की अवस्था या भाव। विशेष रूप से होनेवाली प्रसिद्धि।

सुगंध—स्त्री० [सं०] १. ऐसी गंध जो प्रिय लगती हो। प्रिय महक। सुवास। खुशबू। २. वह पदार्थ जिसमें से अच्छी गंध निकलती हो। खुशबूदार चीज। ३. अगिया घास। गंधतृण। ४. श्रीखंड चंदन। ५. गंधराज। ६. नील कमल। ७. काला जीरा। ८. गठिवन। ९. चना। १०. भूतृण। ११. लाल सहिजन। १२. मरुआ। १३. माधवी लता। १४. कसेरू। १५. सफेद ज्वार। १६. केवड़ा। १७. रूसा घास। १८. शिलारस। १९. राल। धूना। २०. गंधक। २१. एक प्रकार का कीड़ा।
वि० १. गंधयुक्त। २. सुगंध से युक्त। सुगंधित। ३. यशस्वी। उदा०—गंध्रपसेन सुगंध नरेसू।—जायसी।
†स्त्री०=सौगंध।

सुगंधक—पुं० [सं० ब० स०] १. द्रोण-पुष्पी। गूमा। २. साठी धान। ३. धरणी कंद। कंदालु। ४. लाल तुलसी। ५. गंध-तृण। ६. नारंगी। ७. ककोड़ा। ८. गंधक।

सुगंध-केसर—पुं० [सं०] लाल सहिजन।

सुगंध-कोकिला—स्त्री० [सं० मध्य० स०] गंधकोकिला नामक गंध द्रव्य।

सुगंध-गंधा—स्त्री० [सं० ब० स०] दारुहलदी। दारुहरिद्रा।

सुगंध-गण—पुं० [सं०] वैद्यक में सुगंधित द्रव्यों का एक गण या वर्ग।

सुगंध-तृण—पुं० [सं० मध्य० स०] गंध-तृण। रूसा घास।

सुगंध-त्रय—पुं० [सं० ष० त०] चंदन, बला और नागकेसर, इन तीनों का वर्ग या समूह।

सुगंध-त्रिफला—स्त्री० [सं० ष० त०] जायफल, लौंग और इलायची अथवा जायफल, सुपारी तथा लौंग इन तीनों का समूह। (वैद्यक)

सुगंधन—पुं० [सं० सु√गन्ध (गत्यादि)+ल्युट्-अन्] जीरा।

सुगंधनाकुली—स्त्री० [सं० मध्य० स०] =गंधनाकुली।

सुगंध-पत्रा—स्त्री० [सं० ब० स०] १. शतमूली। सतावर। २. अपराजिता। ३. धमासा। ४. कठ-जामुन। ५. बनभाँटा। ६. जीरा। ७. बरियारा। बवला। ८. विधारा। ९. रुद्रजटा।

सुगंधपत्री—स्त्री० [सं० सुगंधपत्र+ङीष्] १. जावित्री। २. फूल प्रियंगु। ३. रुद्र-जटा। ४. कंकोल।

सुगंध-बाला—स्त्री० [सं० सुगंध+हिं० बाला] क्षुप जाति की एक बनौषधि।

सुगंध-भूतृण—पुं० [सं०] १. रूसा घास। अगिया घास। २. दे० 'भूतृण'।

सुगंध-मुख्या—स्त्री० [सं० ब० स०] कस्तूरी। मृगनाभि।

सुगंध-मूल—पुं० [सं० ब० स०] हरफा-रेवड़ी। लवलीफल।

सुगंध-मूला—स्त्री० [सं० सुगंध-मूल-टाप्] १. स्थल कमल। स्थल पद्म। २. रासना। ३. आँवला। ४. कपूरकचरी। ५. हरफा-रेवड़ी।

सुगंध-मूली—स्त्री० [सं० सुगंधमूल+ङीष्] गंध पलाशी। कपूरकचरी।

सुगंध-मूषिका—स्त्री० [सं० मध्य० स०] छछूंदर।

सुगंधरा—पुं० [सं० सुगंध+हिं० रा] एक प्रकार का क्षुप और उसका फूल।

सुगंध-रौहिष—पुं० [सं० मध्य० स०] रोहिष घास। अगिया घास।

सुगंध-वल्कल—पुं० [सं० ब० स०] दारचीनी।

सुगंध-शालि—पुं० [सं० नध्य० स०] वह चावल जिसमें से मीठी भीनी गंध निकलती है। बासमती चावल।

सुगंध-षट्क—पुं० [सं० ष० त०, जायफल, कंकोल (शीतल चीनी), लौंग, इलायची, कपूर और सुपारी का वर्ग या समूह। (वैद्यक)

सुगंध-सार—पुं० [सं० ब० स०] सागोन। शाल वृक्ष।

सुगंधा—स्त्री० [सं०] १. रासन। रासना। २. काला जीरा। ३. कपूर कचरी। ४. रुद्रजटा। ५. सौंफ। ६. बाँझ-ककोड़ा। ७. नवमल्लिका। नेवारी। ८. पीली जूही। ९. नकुल-कंद। नाकुली। १०. असबरग। ११. सलई। १२. माधवी लता। १३. अनंतमूल। १४. बिजौरा नींबू। १५. तुलसी। १६. निर्गुंडी। १७. एलुआ। १८. बकुची। सोमराजी। १९. एक देवी जिनका स्थान माधव वन में कहा गया है और जिनकी गणना बाइस पीठ-स्थानों में होती है

सुगंधाढ्य—वि० [सं० तृ० त०] सुगंधित। खुशबूदार।

सुगंधाढ्या—स्त्री० [सं०] १. त्रिपुरमाली। त्रिपुर मल्लिका। २. बासमती चावल।

सुगंधि—स्त्री० [सं०] प्रिय लगनेवाली गंध। खुशबू। वास।

पुं० १. परमात्मा। २. आम। ३. कसेरू। ४. पिपरा मूल। ५. धनियाँ। ६. अगिया घास। ७. मोथा। ८. एलुआ। ९. वन-तुलसी। १०. गोरख ककड़ी। ११. चन्दन। १२. तुंबरू। १३. अनंतमूल।

वि०=सुगंधित।

सुगंधिक—पुं० [सं० सुगंधि+कन्] १. गाँडर की जड़। उशीर। खस। २. बासमती चावल। ३. कुमुदिनी। कूईं। ४. पुष्करमूल। ५. काला जीरा। ६. मोथा। ७. एलुआ। ८. शिलारस। ९. कपित्थ। कैथा। १०. पुन्नाग। ११. गंधक।

सुगंधिका—स्त्री० [सं०] १. कस्तूरी। मृगनाभि। २. केवड़ा। ३. सफेद अनंतमूल। ५. काली निर्गुंडी।

सुगंधि-कुसुम—पुं० [सं० ब० स०] १. पीला कनेर। २. असबरग।

सुगंधित—भू० कृ० [सं०] १. सुगंध से युक्त किया हुआ। २. (पदार्थ) जिसमें से सुगंधि निकल रही हो।

सुगंधिता—स्त्री० [सं०]=सुगंधि।

सुगंधि-त्रिफला—स्त्री० [सं०]=सुगंध त्रिफला।

सुगंधिनी—स्त्री० [सं०] १. आराम शीतला नाम का शाक। सुनंदिनी। २. पीली केतकी।

सुगंधि-पुष्प—पुं० [सं०] धारा कदंब।

सुगंधि-फल—पुं० [सं०] शीतल चीनी। कबाब चीनी।

सुगंधि-माता (तृ)—स्त्री० [सं० ष० त०] पृथिवी।

सुगंधि-मूल—पुं० [सं०] खस। उशीर।

सुगंधि-मूषिका—स्त्री० [सं०] छछूँदर।

सुगंधी (धिन्)—वि० [सं० सुगंध+इनि] जिसमें अच्छी गंध हो। सुवासित। सुगंधयुक्त। खुशबूदार।

पुं० एलुआ।

†स्त्री०=सुगंधि।

सुग—वि० [सं० सु+ग=गति] १. अच्छी तरह, तेज या बहुत चलनेवाला। २. खूब जागते या सचेत रहनेवाला। ३. अच्छा गानेवाला। ४. सुगम। सहज। ५. सुलभ। ६. सुबोध।

पुं० १. सुमार्ग। २. सुख। ३. विष्ठा। मल।

सु-गठन—स्त्री० [सं० सु (उप०)+हिं० गठन] शरीर के अंगों की अच्छी गठन।

वि०=सुगठित।

सुगठित—वि० [सं० सु+हिं० गठित] १. अच्छी तरह से गठा हुआ। २. संघटित।

सुगत—पुं० [सं०] १. बुद्ध देव का एक नाम। २. बुद्ध देव का अनुयायी। बौद्ध।

वि० [सं० सुगति] १. अच्छी गतिवाला। अच्छे आचरणवाला। २. जिसे सुगति अर्थात् मोक्ष प्राप्त हुआ हो। ३. सुगम।

†स्त्री०=सुगति।

सुगतदेव—पुं० [सं० कर्म० स०] गौतम बुद्ध।

सुगतापतन—पुं० [सं० ष० त०] बौद्ध मन्दिर।

सुगति—स्त्री० [सं० कर्म० स०] १. अच्छी या उत्तम गति। २. सदाचरण। ३. मरने के उपरांत होनेवाली उत्तम गति। मोक्ष। ४. एक प्रकार का छन्द या वृत्त।

सुगन—पुं० [देश०] छकड़े में गाड़ीवान के बैठने की जगह के सामने आड़ी लगी हुई दो लकड़ियाँ जिनकी सहायता से बैल खोल लेने पर भी गाड़ी खड़ी रहती है।

†पुं०=सगुन।

सुगना†—पुं० [सं० शुक, हिं० सुग्गा] सुग्गा। तोता।

†पुं०=सहिजन।

सुगभस्ति—वि० [सं० ब० स०] अत्यंत दीप्तिमान्। बहुत चमकीला।

सुगम—वि० [सं० सु√गम् (जाना)+अच्] [भाव० सुगमता] १. (स्थान) जहाँ सरलता से पहुँचा जा सके। २. (मार्ग) जिस पर आसानी से चला और आगे बढ़ा जा सके। ३. (कार्य) जिसका संपादन या साधन सुखपूर्वक किया जा सके।

सुगमता—स्त्री० [सं० सुगम+तल्—टाप्] १. सुगम होने की अवस्था या भाव। सरलता। आसानी। जैसे—इससे आप के कार्य में बहुत सुगमता हो जायगी। २. वह गुण या तत्त्व जिससे कोई कार्य सरलता से और जल्दी से संपन्न हो जाता है।

सुगम्य—वि० [सं० सु√गम् (जाना)+यत्] स्थान जिसमें सहज में प्रवेश हो सके। सरलता से जाने योग्य।

सुगर—पुं० [सं० ब० स०] शिगरफ। हिंगुल।

†वि०=सुघड़।

†वि०=सुगम।

सुगरूप—पुं० [देश०] एक प्रकार की सवारी जो प्रायः रेतीले देशों में काम आती है।

सुगल†—पुं०=सुग्रीव।

सुग-सुग†—स्त्री० [अनु०] कानाफूसी।

सुग-सुगाना†—अ० [अनु०] कानाफूसी करना।

सुगह—वि० [सं० सु+गाह] जो सहज में पकड़ा या ग्रहण किया जा सके।

सुगहना—स्त्री० [सं०] प्राचीन काल में यज्ञ-भूमि के चारों ओर बनाया जानेवाला घेरा जिसके परिणाम-स्वरूप अस्पृश्यों का प्रवेश रुक जाता था।

सुगाली—स्त्री० [सं० ब० स०] १. सुन्दर शरीरवाली स्त्री। २. संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सुगाध—वि० [सं० ब स०] (नदी) जिसमें सुख से स्नान किया जा सके; अथवा जिसे सहज में पार किया जा सके।

सुगाना*—अ० [सं० शोक] १. दुःखी होना। २. दुःखी होकर नाराज होना। बिगड़ना।
†स०=दुःखी करना।
†अ० [?] शक या सन्देह करना।

सुगाल†—पुं०=सुकाल। (डिं०)

सुगीत—पुं० [प्रा० स०] =सुगीतिका।

सुगीतिका—स्त्री० [सं० ब० स०] आर्या छन्द का एक भेद।

सुगुंडा—स्त्री० [सुगुण्डा, ब० स०] गुंडासिनी तृण। गुंडाला।

सुगुरा†—वि० [सं० सुगुरु] १. जिसने अच्छे गुरु से मंत्र लिया हो। २. जिसने अच्छे गुरु से शिक्षा पाई हो।

सुगृह—पुं० [सं० प्रा० स०] सुन्दर घर।

सुगृही—वि० [सं० सुगृह+इनि] १. जिसके पास सुन्दर घर हो। २. जिसकी पत्नी सुन्दर और सुयोग्य हो।

सुगेष्णा—वि० स्त्री० [सं० ब० स०] सुंदर रूप से गानेवाली।
स्त्री० किन्नरी।

सुगैया—स्त्री० [हिं० सुग्गा] अँगिया। चोली।

सुगौतम—पुं० [सं० प्रा० स०] गौतम बुद्ध।

सुग्गा†—पुं० [सं० शुक] [स्त्री० सुग्गी] तोता।

सुग्गा-पंखी—पुं० [हिं० सुग्गा+पंख] एक प्रकार का अगहनी धान।

सुग्गा-सांप—पुं० [हिं० सुग्गा+साँप] एक प्रकार का साँप।

सुग्गी—स्त्री० [हिं० सुग्गा का स्त्री०] मादा तोता। तोती।

सुग्द—पुं० [?] वंक्षु और सीर नदियों के बीच के प्रदेश का पुराना नाम।

सुग्दी—वि० [सुग्ग प्रदेश से] सुग्द प्रदेश का।
पुं० सुग्द प्रदेश का निवासी।
स्त्री० सुग्द प्रदेश की बोली।

सुग्रंथि—पुं० [सं० ब० स०] १. चोरक नामक गंध द्रव्य। २. पिपरामूल।

सुग्रह—पुं० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार शुभ या अच्छे ग्रह। जैसे—बृहस्पति, शुक्र आदि।

सुग्रीव—वि० [सं० ब० स०] अच्छी या सुन्दर ग्रीवा (गरदन) वाला।
पुं० १. विष्णु या कृष्ण के चार घोड़ों में से एक। २. वानरों का राजा जो वलि का भाई और श्रीरामचन्द्र का सखा तथा सहायक था। ३. वर्तमान अवसर्पिणी के नवें अर्हत के पिता का नाम। ४. इन्द्र। ५. शिव। ६. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। ७. शंख। ८. राज-हंस। ९. एक प्राचीन पर्वत। १०. वास्तु-कला में एक प्रकार का मंडप। ११. नायक। सरदार।

सुग्रीवी—स्त्री० [सं० सुग्रीव-ङीष्] दक्ष की एक कन्या तथा कश्यप की पत्नी जो घोड़ों, ऊँटों तथा गधों की जननी कही गई है।

सुग्रीवेश—पुं० [सं० ष० त०] श्रीरामचन्द्र।

सुघट—वि० [सं०] १. जिसकी सुंदर गठन या बनावट हो। सुडौल। २. जो अच्छी तरह और सहज में बन सकता हो।

सुघटित—वि० [सं० सुघट+इतच्] १. गठन या बनावट के विचार से जो सुडौल फलतः सुन्दर हो। २. गठे हुए शरीरवाला। २. संघटित।

सुघट्य—वि० [सं०] जिसे मनमाने ढंग से दबा या मोड़कर सभी प्रकार के रूपों में लाया जा सके। (प्लैस्टिक) जैसे—सुघट्य मिट्टी।
पुं० दे० 'सुनम्य'।

सुघट्यता—स्त्री० [सं० सुघटच+तल्-टाप्] सुघट्य होने की अवस्था, गुण या भाव। (प्लैस्टिसिटी)

सुघड़—वि० [सं० सुघट] [भाव० सुघड़ई, सुघड़पन] १. अच्छी तरह गढ़ा हुआ; फलतः सुडौल और सुन्दर। २. जो हर काम अच्छी तरह या ठीक ढंग से कर सकता हो। कुशल। निपुण। होशियार।

सुघड़ई—स्त्री० १. =सुघड़पन। २.=सुघरई (रागिनी)।

सुघड़ता—स्त्री०=सुघड़पन।

सुघड़पन—पुं० [हिं० सुघड़+पन (प्रत्य०)] सुघड़ होने की अवस्था, गुण या भाव। सुघड़ई।

सुघड़-भलाई—स्त्री० [हिं०] १. कौशल या चतुराई से भरी हुई चापलूसी की बातें। २. मीठी पर स्वार्थपूर्ण बातें करने का गुण या योग्यता।

सुघड़ाई†*—स्त्री०=सुघड़ई।

सुघड़ापा—पुं० [हिं० सुघड़+आपा (प्रत्य०)]=सुघड़पन।

सुघड़ी—स्त्री० [हिं० सु+घड़ी] अच्छी शुभ घड़ी।

सुघर†—वि०=सुघड़।

सुघरई†—स्त्री०=सुघड़ई (सुघड़पन)।

सुघरई-कान्हड़ा—पुं० [हिं०सुघरई+कान्हड़ा] संपूर्ण जाति का एक संकर राग।

सुघरई-टोड़ी—स्त्री० [हिं० सुघरई+टोड़ी] संपूर्ण जाति की एक संकर रागिनी।

सुघरता—स्त्री०=सुघड़ता (सुघड़पन)।

सुघरपन†—पुं०=सुघड़पन।

सुघराई—सुघड़ाई (सुघड़पन)।

सुघरी—वि० हिं० सुघर (सुघड़) का स्त्री०।
स्त्री० [हिं० सु+घड़ी] अच्छी घड़ी। शुभ काल या समय। सुघड़ी।

सुघोष—वि० [सं०] जो उच्च या मधुर घोष करता हो। सुन्दर घोष या स्वरवाला।
पुं० चौथे पांडव नकुल के शंख का नाम।

सुघोषक—पुं० [सं० ब० स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा।

सुचंग—वि० [हिं० सु+चंगा] १. अच्छा। बढ़िया। २. सुन्दर।
पुं० घोड़ा। (डिं०)

सुचंद—वि०=सुचंग।
पुं० [हिं० सु+चाँद] पूर्णिमा का चंद्रमा। उदा०—गुन ज्ञान-मान सुचंद है।—पद्माकर।

सुचंदन—पुं० [सं० ब० स० प्रा० स०] पतंग या बक्कम नाम की लकड़ी जिसका व्यवहार औषध और रंग आदि में होता है। रक्तसार। सुरंग।

सुचंद्र—पुं० [सं० ब० स०] १. एक गंधर्व का नाम। २. सिंहिका के पुत्र का नाम।

सुचंद्रा—स्त्री० [सं० सुचंद्र-टाप्] एक प्रकार की समाधि। (बौद्ध)

सुच*—वि०=शुचि।

सुचकना†—अ०=सकुचना। उदा०—वो जब घर से निकले सुचकते-सुचकते। कुछ कदम भी उठाये झिझकते झिझकते।—नजीर।

सुचक्षु(स्)—वि० [सं० ब० स०] १. सुन्दर चक्षुओं या नेत्रोंवाला ।

पुं० १. शिव । २. पण्डित । विद्वान् । ३. गूलर ।

स्त्री० एक प्राचीन नदी ।

सुचना—स० [सं० संचय] संचय करना । एकत्र करना । इकट्ठा करना ।

*अ० एकत्र किया जाना । इकट्ठा होना ।

†अ० [हिं० सोचना का अ०] सोचा या विचारा जाना । (क्व०)

सुचरित—वि० [सं०] सुचरित्र ।

सुचरिता—स्त्री० [सं० सुचरित-टाप्] १. अच्छे आचरणवाली स्त्री । २. पतिव्रता स्त्री ।

सुचरित्र—वि० [सं० ब० स०] [भाव० सुचरित्रता] जिसका चरित्र शुद्ध हो । उत्तम आचरणवाला । सच्चरित्र ।

सुचरित्रा—वि० [सं०] अच्छे चरित्र या शुद्ध आरचण वाली (स्त्री) ।

स्त्री० सुचरिता ।

सुचा*—स्त्री० [सं० सूचना] ज्ञान । चेतना । सुध ।

*वि०=शुचि ।

सुचाना—स० [हिं० सोचना का प्रे०] १. किसी को कुछ सोचने या समझने में प्रवृत्त करना । २. किसी का किसी बात की ओर ध्यान आकृष्ट करना । सुझाना ।

सुचार*—स्त्री० [सं० सु+हिं० चाल] सुचाल । अच्छी चाल ।

वि० सदाचारी और सच्चरित्र ।

वि० [सं० सुचारु] मनोहर । सुन्दर ।

सुचारु—वि० [सं० सु+चारु] अत्यंत सुन्दर । अतिशय मनोहर । बहुत खूबसूरत ।

सुचाल—स्त्री० [सं० सु+हिं० चाल] उत्तम आचरण । अच्छी चाल । सदाचार ।

सुचालक—वि० [सं०] वह (वस्तु) जिसमें विद्युत्, ताप आदि का परिचालन सुगमता से हो सके । सुसंवाहक । (गुड कंडक्टर)

सुचाली—वि० [सं० सु+हिं० चाल+ई (प्रत्य०)] १. जिसकी चाल या गति अच्छी हो । २. अच्छे आचरणवाला । सच्चरित्र ।

†स्त्री० पृथ्वी । (डिं०)

सुचाव—पुं० [हिं० सुचाना] १. सुचाने की क्रिया या भाव । २. दे० 'सुझाव' ।

सुचि—स्त्री० [सं० सूची] सुई ।

वि०=शुचि ।

सुचित—वि० [सं० सुचित्त] १. सुंदर चित्तवाला अर्थात् जिसके चित्त में विकार न हो । २. जिसे किसी प्रकार की चिंताग्रस्त न किये हुए हो । ३. जो सब प्रकार के कामों, झगड़ों आदि से निवृत्त हो चुका हो ।

†वि० शुचि (पवित्र) ।

सुचितई†—स्त्री० [हिं० सुचत+ई (प्रत्य०)] १. सुचित होने की अवस्था या भाव । निश्चितता । बे-फिक्री । २. मन की एकाग्रता और शान्ति । ३. अवकाश । फुरसत ।

सुचिता—स्त्री०=शुचिता (पवित्रता) ।

शुचिती—वि०=सुचित ।

सुचित्त—वि० [सं० ब० स०] [भाव० सुचित्तता] सुचित । (दे०)

सुचित्र—वि० [सं०] अनेक प्रकारों या रंगों का ।

पुं० सुंदर चित्र ।

सुचित्रक—पुं० [सं० सुचित्र+कप्] १. मधुरंग नामक पक्षी । मुरगाबी । २. चितला साँप ।

सुचित्रा—स्त्री० [सं० सुचित्र-टाप्, ब० स०] चिर्भटा या फूट नामक फल ।

सुचिमंत—वि० [सं० शुचि+मत्] शुद्ध आचरणवाला । सदाचारी ।

सुचिर—वि० [सं० प्र० स०] १. बहुत दिनों तक बना रहनेवाला । चिरस्थायी । २. बहुत दिनों का । पुराना । प्राचीन ।

पुं० बहुत अधिक समय । दीर्घ काल ।

सुचिरायु(स्)—वि० [सं० ब० स०] दीर्घ या लंबी आयुवाला ।

पुं० देवता ।

सुची*—वि०=शुचि (पवित्र) ।

स्त्री०=शची (इन्द्राणी) ।

सुचीत*—वि० [सं० सुचित्त] १. उत्तम । भला । शुभ । २. मनोहर । सुन्दर । ३. दे० 'सुचित' ।

सुचुटी—स्त्री० [सं० प्रा० स०] १. चिमटा । २. सँड़सी ।

सुचेत (स्)—वि० [सं०] सचेत । सावधान ।

*वि०=सुचित्त ।

सुचेतन—पुं० [सं०] विष्णु । (डिं०)

वि०=सुचेत ।

सुचेता—वि०=सुचेत ।

सुचेलक—पुं० [सं० सुचेल+कन्] बढ़िया और बहुमूल्य कपड़ा । पट ।

वि० जो अच्छे कपड़े पहने हो ।

सुच्छंद*—वि०=स्वच्छंद ।

सुच्छ†—वि०=स्वच्छ ।

सुच्छत्र—पुं० [सं० ब० स०] शिव का एक नाम ।

सुच्छत्री—स्त्री० [सं०] पंजाब की सतलज नदी ।

सुच्छद—वि० [सं०] सुन्दर पत्तोंवाला ।

सुच्छम—पुं० [?] घोड़ा । (डिं०)

†वि०=सूक्ष्म ।

सुच्छाय—वि० [सं० ब० स०] १. (वृक्ष) जिसकी छाया अच्छी और यथेष्ट हो । २. (रत्न) जो यथेष्ट चमकीला हो ।

सुजंगो—पुं० [गढ़वाली] भाँग का वह पौधा जिसमें बीज लगे हों ।

सुजंघ—वि० [सं० ब० स०] सुन्दर जाँघोंवाला ।

सुजड़—पुं० [?] तलवार । (डिं०)

सुजड़ी—स्त्री० [?] कटारी । (डिं०)

सुजन—वि० [कर्म० स०] [भाव० सुजना] १. नेक । भला । २. कृपालु । दयालु ।

पुं० १. भला आदमी । नेक आदमी । २. दूसरों की सहायता करनेवाला । आदमी ।

पुं०=स्वजन ।

सुजनता—स्त्री० [सं० सुजन+तल्-टाप्] १. सुजन अर्थात् भले होने की अवस्था या भाव । भलमनसत । २. कृपालुता ।

सुजन-रंजनी—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी ।

सुजनी—स्त्री० [फा० सोजनी] एक तरह की बड़ी और मोटी बिछाने की चादर।

सुजन्मा (न्मन्)—वि० [सं० ब० स०] १. जिसका उत्तम रूप से जन्म हुआ हो। उत्तम रूप से जन्मा हुआ। सुजातक। २. जो विवाहित पुरुष और स्त्री से उत्पन्न हुआ हो फलतः जो जारज न हो। ३. अच्छे कुल में उत्पन्न।

सुजय—वि० [सं० सु√जी (जीतना)+अच्] जो सहज में जीता जा सकता हो।

सुजल—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० सुजला] जहाँ जल यथेष्ट हो और सहज में मिलता हो।

पुं० कमल। पद्म।

सुजल्प—पुं० [सं० प्रा० स०] १. उत्तम या सुन्दर कथन। २. सुन्दर भाषण।

सुजस†—पुं०=सुयश।

सुजाक†—पुं०=सूजाक।

सुजागर—वि० [सं० सु=भली-भाँति+जागर=प्रकाशित होना] प्रकाशमान्। शोभन और सुन्दर।

सुजात—वि० [सं० कर्म० स०] १. जो उत्तम कुल में जन्मा हो। २. जो औरस संतान हो, जरज़ न हो। ३. सुन्दर।

पुं० साँड़। (बौद्ध)

सुजातक—पुं० [सं० सुजात+कन्] सौंदर्य। सुन्दरता।

सुजाता—स्त्री० [सं०] १. गोपी चन्दन। २. मगध की एक बौद्ध-कालीन ग्रामीण कन्या जिसने गौतम बुद्ध को बुद्धत्व प्राप्त करने के उपरांत अपने यहाँ निमंत्रित करके भोजन कराया था।

सुजाति—वि० [सं० प्रा० स०] अच्छी जाति का।

स्त्री० अच्छी और उत्तम जाति।

सुजातिया—वि० [सं० सु+जाति+इया (प्रत्य०)] उत्तम जाति का। अच्छे कुल का।

†वि० [सं० स्व+जाति+इया (प्रत्य०)] किसी व्यक्ति की दृष्टि से उसकी जाति का।

सुजान—वि० [सं० सज्ञान] [भाव० सुजानता] १. समझदार। चतुर। सयाना। २. कुशल। निपुण। प्रवीण। ३. सुविज्ञ। ४. सज्जन।

पुं० १. पति या प्रेमी। २. परमात्मा।

सुजानता—स्त्री० [हि० सुजान+ता (प्रत्य०)] सुजान होने की अवस्था धर्म या भाव। सुजानपन।

सुजानी†—वि०=सुजान।

सुजाव—पुं० [सं० सुजात] पुत्र। (डि०)

सुजावा—पुं० [देश०] बैलगाड़ी में की वह लकड़ी जो पैंजनी और फड़ में जड़ी रहती है।

सुजिह्व—वि० [सं० ब० स०] १. जिसकी जिह्वा या जीभ सुन्दर हो। २. मीठा बोलनेवाला। मधुर-भाषी।

सुजीता—स्त्री० [सं० ब० स०] गोपी चंदन।

सुजीर्ण—वि० [सं० प्रा० स०] १. (भोजन) अच्छी तरह पचा हुआ। (खाना) जो खूब पच गया हो। २. (पदार्थ) जो बहुत पुराना और जर्जर हो गया हो।

सुजेय—वि० [सं० सु√जी (जीतना)+यत्] जो सहज में जीता जा सकता हो।

सुजोग*†—पुं०=सुयोग।

सुजोधन*—पुं०=सुयोधन।

सुजोर—वि० [सं० सु (या फा० शह ?)+फा० ज़ोर] [भाव० सुजोरी] १. जोरदार। प्रबल। २. दृढ़। पक्का। मजबूत।

सुज्ञ—वि० [सं० सु√ ज्ञा+क] सुविज्ञ।

सुझाखा—वि० [हिं० सूझना] [स्त्री० सुझाखी] १. जिसे दिखाई देता हो। 'अंधा' का विपर्याय। २. चतुर। होशियार। (पश्चिम)

सुझाना—स० [हिं० सूझना का प्रे०] १. किसी के ध्यान में कोई नई बात लाना। नई तरकीब बताना। २. सुझाव के रूप में किसी के सामने कोई बात रखना। किसी को उसे सुझाये हुए ढंग से काम करने के लिए प्रवृत्त करना।

सुझाव—पुं० [हिं० सुझाना] १. सुझाने की क्रिया या भाव। २. वह नयी बात जो किसी को सुझाई गई हो या जिसकी ओर ध्यान आकृष्ट किया गया हो। (सजेशन)

सुटंक—वि० [सं०] कठोर, कर्कश या जोर का (शब्द)।

सुटकुन†—स्त्री० [हिं० सुटका का अल्पा०] पतली छोटी छड़ी।

†स्त्री०=सिटकिनी।

सुटुकना—स० [हिं० सुटका+ना (प्रत्य०)] सुटका मारना। चाबुक लगाना।

अ० १.=सटकना। २.=सुड़कना। ३.=सिकुड़ना।

सुठ†—वि०=सुठि (सुन्दर)।

सुठहर†—पुं० [सं० सु०+हिं० ठहर=जगह] अच्छा ठिकाना। ठहरने का अच्छा स्थान।

सुठार*—वि०=सुढार (सुडौल)।

सुठि†—वि० [सं० सुष्ठु] १. सुन्दर। २. बढ़िया। अच्छा। ३. बहुत अधिक। ४. पूरा। समूचा।

अव्य० निरा। बिलकुल।

सुठोना†—वि०=सुठि (सुन्दर)।

सुठौन*—वि० दे० 'सुठि'।

†स्त्री० [हिं० सु+ठवन] सुन्दर ठवन या बैठने आदि का ढंग।

सुड़क—स्त्री० [हिं० सुड़कन] १. सुड़कने की क्रिया या भाव। २. कोई चीज सुड़कते समय होनेवाला शब्द।

सुड़कना—स० [अनु०] किसी तरल पदार्थ को नाक की राह, साँस के साथ भीतर खींचना। नास लेना।

सुड़-सुड़—स्त्री० [हिं० सुड़सुड़ाना] १. सुड़सुड़ाने की क्रिया या भाव। २. सुड़सुड़ाने पर उत्पन्न होनेवाला शब्द।

सुड़सुड़ाना—स० [अनु०] कोई कार्य करते समय सुड़सुड़ शब्द उत्पन्न करना। जैसे—नाक सुड़सुड़ाना। हुक्का सुड़सुड़ाना।

†अ० सुड़सुड़ शब्द करना।

सुडीनक—पुं० [सं० प्रा० स०] पक्षियों की एक विशेष प्रकार की उड़ान।

सुड़ुकना—स०=सुड़कना।

सुडौल—वि० [सं० सु+हिं० डौल] [भाव० सुडौलपन] १. सुन्दर डौल या आकारवाला। २. जिसके अंगों में आनुपातिक सामंजस्य हो।

सुड्ढा†—पुं०[देश०] [स्त्री० अल्पा० सुड्ढी] धोती की वह लपेट जिसमें रुपया-पैसा रखते हैं। अंटी। आँट।

सुढंग—वि०[सं० सु+हिं० ढंग] जिसका ढंग, प्रकार या रीति सुन्दर हो।

पुं० अच्छा ढंग, प्रकार या रीति।

सुढर—वि०[सं० सु+हिं० ढलना] प्रसन्न और दयालु होकर सहज में अनुकम्पा करनेवाला।

†वि०=सुघड़।

सुढार*—वि०=सुडौल।

सुण-घड़िया†—पुं० [हिं० सुण (सोना)+घड़िया (गढ़नेवाला)]सुनार। (डिं०)

सुणना—स०१.=सुनना। २.=सुनाना।

सुतंत, सुतंतर†—वि०=स्वतंत्र।

सुतंतु—पुं०[सं० ब० स०]१. शिव। २. विष्णु।

सुतंत्र†—वि०=स्वतन्त्र।

सुतंत्रि—पुं०[सं० ब० स०]१. वह जो तार के बाजे (वीणा आदि) बजाने में प्रवीण हो। वह जो तंत्र-वाद्य अच्छी तरह बजाता हो। २. वह जो कोई बाजा अच्छी तरह बजाता हो।

वि०१. बढ़िया तारोंवाला (बाजा)। २. फलतः मधुर स्वरवाला।

सुत—पुं०[सं०] [स्त्री० सुता]१. माता या पिता अथवा दोनों की दृष्टि से वह बालक जो उसके रज और वीर्य से उत्पन्न हुआ हो। पुत्र। आत्मज। बेटा। २. जन्म-कुंडली में लग्न से पाँचवाँ घर जहाँ सन्तान के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

वि०१. उत्पन्न। जात। २. पार्थिव।

पुं० बीस की संख्या।

सुतकरी—स्त्री०[हिं० सूत+करी] स्त्रियों के पहनने की पुरानी चाल की जूती।

सुत-जीवक—पुं०[सं० सुत√जीव (जीवित करना) ण्वुल्—अक्]पुत्र-जीव (वृक्ष)।

सुतत्व—पुं०[सं० सुत+त्व] सुत होने की अवस्था, धर्म या भाव।

सुतदा—वि०, स्त्री०[सं० सुत√दा (देना)+क—टाप्] सुत या पुत्र देनेवाली।

स्त्री०=पुत्रदा (लता)।

सुतधार†—पुं०=सूत्रधार।

सुतनु—वि०[सं० सु+तनु] १. सुन्दर शरीरवाला। खूबसूरत। २. सुकुमार शरीरवाला। नाजुक और दुबला-पतला।

स्त्री०१. सुन्दरी स्त्री। २. अक्रूर की पत्नी का नाम। ३. उग्रसेन की एक कन्या।

सुतनुता—स्त्री०[सं० सुतनु+तल्—टाप्] सुतनु होने की अवस्था, गुण या भाव। सुन्दरता।

सुतप—वि०[सं० सुत√पा (पीना)+क, ब० स०] सोमपान करनेवाला।

सुतपा (पस्)—वि० [सं० ब० स०] बहुत अधिक तपस्या करनेवाला।

पुं० १. सूर्य। २. विष्णु।

सुत-पेय—पुं०[सं०] यज्ञ में सोम पीने की क्रिया। सोमपान।

सुत-याग—पुं०[सं०] पुत्र की कामना से किया जानेवाला यज्ञ। पुत्रेष्टि-यज्ञ।

सुतर—वि०[सं० ब० स०] (जलाशय) जो सुख या आराम से तैरकर या नाव आदि से पार किया जा सके।

†पुं०=शुतुर (ऊँट)।

सुतर-नाल—स्त्री०=शुतुरनाल।

सुतरां—अव्य० [सं० सुतराम्] १. अतः। इसलिए। २. और भी। अपितु। कि बहुना। ३. विवश होकर। लाचारी की हालत में। ४. बहुत अधिक। अत्यन्त। ५. अवश्य। जरूर।

सुतरा—पुं०[हिं० सूत] सूत की तरह का वह पतला चमड़ा जो प्रायः उँगलियों में नाखून की जड़ के पास उचड़कर निकलने लगता है।

सुतरी—पुं०[फा० शुतुर] ऊँट के से रंगवाला बैल।

स्त्री०[?]१. करघे में की वह लकड़ी जो पाई में साँथी अलग करने के लिए साँथी के दोनों तरफ लगी रहती है। २. एक प्रकार की घास जिसे हर-बाल भी कहते हैं।

†स्त्री० १.=सुतारी। २.=सुतली।

सुतर्दन—पुं०[सं० ब० स०] कोकिल पक्षी। कोयल।

सुतल—पुं०[सं० ब० स०]पुराणानुसार सात पाताल लोकों में से एक जो किसी के मत से दूसरा और किसी के मत से छठा लोक है।

सुतली—स्त्री०[हिं० सूत+ली (प्रत्य०)] रुई, सन या इसी प्रकार के और रेशों के सूतों या डोरों को एक में बटकर बनाया हुआ लंबा और कुछ मोटा खंड जिसका उपयोग चीजें बाँधने, कूएँ से पानी खींचने, पलंग बुनने आदि कामों में होता है। डोरी। रस्सी।

सुत-वस्करा—स्त्री०[सं०]वह स्त्री जिसने सात पुत्रों को जन्म दिया हो।

सुतवान् (वत्)—वि०[सं० सुत+मतुप्-म=व-नुम्-दीर्घ] पुत्रोंवाला।

सुतवाना†—स०=सुलवाना।

सुत-स्थान—पुं०[सं० ष० त०]जन्म-कुंडली में लग्न से पाँचवाँ स्थान जहाँ से सन्तान सम्बन्धी विचार होता है।

सुतहर†—पुं०=सुतार।

सुतहा†—वि०, पुं० [हिं० सूत+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० सुतही] १. सूत-संबंधी। सूत का। २. सूत का बना हुआ। सूती।

पुं० सूत का व्यापारी।

सुतहार†—पुं०=सुतार।

सुतही†—स्त्री०=सुतुही।

सुतहौनिया†—पुं०=सुथौनिया।

सुता—स्त्री०[सं०]१. पुत्री। बेटी। २. सखी। सहेली। (डिं०)

सुतात्मज—पुं०[सं० ष० त०] [स्त्री० सुतात्मजा] १. लड़के का लड़का। पोता। २. लड़की का लड़का। नाती।

सुतान—वि०[सं० ब० स०] अच्छे स्वरवाला। सु-स्वर।

सुताना†—स०=सुलाना।

सुता-पति—पुं०[सं० ष० त०] किसी की दृष्टि से उसकी कन्या का पति। दामाद। जामाता।

सुतार—वि०[सं०]१. चमकीला। २. जिसकी आँखों की पुतलियाँ सुन्दर हों।

पुं०१. एक प्रकार का सुगन्धि द्रव्य। २. गुरु से पढ़े हुए अध्यात्म-शास्त्र का ठीक और पूरा ज्ञान जिसकी गिनती सांख्य-दर्शन में सिद्धियों में की गई है।

पुं०[सं० सूत्रकार] [भाव० सुतारी]१. बढ़ई। २. कारीगर।

†पुं०[?]१. सुख-सुभीता। २. हुद-हुद (पक्षी)।

सुतारका—स्त्री०[सं०] चौबीस शासन देवियों में से एक। (बौद्ध)

सुतारा—स्त्री०[सं०]१. सांख्य के अनुसार (क) नौ प्रकार की तुष्टियों में से एक और (ख) आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक।

सुतारी—स्त्री०[हिं० सुतार+ई (प्रत्य०)]१. सुतार या बढ़ई का काम। २. वह सूआ जिससे मोची चमड़ा सीते हैं। ३. पुरानी चाल का एक प्रकार का हथियार।

पुं० कारीगर। शिल्पी।

सुतार्थी (र्थिन्)—वि० [सं०] पुत्र की कामना करनेवाला। जिसे पुत्र की अभिलाषा हो।

सुताल—पुं०[सं०] ताल का एक भेद (संगीत)।

सुताली†—स्त्री०=सुतारी।

सुतावना†—स०=सुलाना।

सुतासुत—पुं०[सं० ष० त०] पुत्री का पुत्र। दौहित्र। नाती।

सुतिक्त—पुं०[सं०] पित्त-पापड़ा।

वि० बहुत अधिक तिक्त या तीता।

सुतिक्तक—पुं० [सं०] १. चिरायता। २. पारिभद्र। परहद। ३. पित्त-पापड़ा।

सुत्तिका—स्त्री०[सं०]१. तोरई। कोशातकी। २. शल्लकी। सलई।

सुतिन*—स्त्री०=सुतनु (सुन्दर स्त्री)।

सुतिनी—स्त्री०[सं०] पुत्रवती। स्त्री जिसे पुत्र हो।

सुतिया†—स्त्री०[देश०] गले में पहनने का हंसुली नाम का गहना।

सुतिहार†—पुं०=सुतार (बढ़ई)।

सुती (तिन्)—पुं० [सं० सुति] [स्त्री० सुतिनी] जिसके आगे बेटा या बेटे हों, फलतः पिता।

सुतीक्षण—पुं०=सुतीक्ष्ण।

सुतीक्ष्ण—वि० [सं०] १. बहुत अधिक तीक्ष्ण या तीखा। २. बहुत अधिक तीता। ३. दरद-भरा। पीड़ा-युक्त।

पुं०१. अगस्त्य मुनि के भाई जो वनवास के समय श्री रामचन्द्र जी से मिले थे। २. सहिजन।

सुतीक्ष्णक—पुं०[सं०] सुतीक्ष्ण।

सुतीक्ष्णका—स्त्री०[सं०] सरसों। सर्षप।

सुतीखन†—पुं०=सुतीक्ष्ण।

सुतीर्थ—वि०[सं०] (जलाशय) जो सहज में पार किया जा सके।

पुं०१. शिव। २. एक पौराणिक पर्वत।

सुतुंग—वि०[सं०] बहुत अधिक ऊँचा।

पुं० १. नारियल का पेड़। २. ज्योतिष में ग्रहों का उच्चांश।

सुतुहा†—पुं०[हिं० सुतुही] बड़ी सुतुही।

सुतुही—स्त्री० [सं० शुक्ति]१. सीपी, जिससे प्रायः छोटे बच्चों को दूध पिलाते हैं। २. बीच में से घिसकर काटी हुई वह सीपी जिससे आम के छिलके छीले जाते हैं, पोस्ते में से अफीम खुरची जाती है, तथा इसी प्रकार के कुछ और काम किये जाते हैं।

सुतून—पुं०[फा०] खंभा। स्तम्भ।

सुतेकर—पुं०[सं०] वह जो यज्ञ करता हो। ऋत्विक्।

सुतेजन—पुं०[सं०]१. धामिन नामक वृक्ष। २. बहुत नुकीला तीर।

वि० १. तेज धारवाला। २. नुकीला।

सुतेजा (जस्)—पुं० [सं०]१. जैनों के अनुसार गत उत्सर्पिणी के दसवें अर्हत का नाम। २. हुरहुर नाम का पौधा।

सुतोष—वि०[सं०] संतुष्ट।

पुं० पूर्ण तुष्टि। २. संतोष।

सुत्ता†—वि० [हिं० सोना] [स्त्री० सुत्ती] सोया हुआ। (पश्चिम)

सुत्तुर†—पुं०[हिं० सूत या फा० शुतुर?]जुलाहों के करघे का वह बाँस जिसमें कंघी बँधी रहती है। कुलवाँसा।

सुत्थना—पुं०[स्त्री०अल्पा० सुत्थनी] कुछ खुली मोरीवाला एक तरह का पाजामा। सूथन। (पश्चिम)

सुत्या—स्त्री०[सं०] १. सोमरस निकालना या बनाना। २. यज्ञ के लिए सोमरस निकालने का दिन।

सुत्रामा (मन्)—पुं०[सं०] १. वह जो उत्तम रूप से रक्षा करता हो। २. इन्द्र। ३. पुराणानुसार तेरहवें मन्वंतर का एक देवगण।

सुत्री†—स्त्री०[सं० सु+त्री]१. सुन्दरी स्त्री। २. औरत। स्त्री। (डिं०)

सुथना†—पुं०=सुत्थना।

सुथनिया†—स्त्री०=सुथनी।

सुथनी—स्त्री०[देश०]१. स्त्रियों के पहनने का एक प्रकार का ढीला पाजामा। सूथन। २. पिंडालू। रतालू।

सुथरा—वि०[सं० स्वस्थ] [स्त्री० सुथरी] स्वच्छ। निर्मल। साफ।

पुं० [सुथरेशाह] सुथरेशाह के पंथ का अनुयायी साधु।

सुथराई†—स्त्री०=सुथरापन।

सुथरापन—पुं० [हिं० सुथरा+पन (प्रत्य०)] सुथरे अर्थात् साफ होने की अवस्था, गुण या भाव।

सुथरेशाह—पुं०[भाव० सुथरेशाही] गुरु नानक के एक प्रसिद्ध शिष्य जिन्होंने अपना एक स्वतन्त्र संप्रदाय चलाया था।

सुथरेशाही—स्त्री० [सुथरेशाह (महात्मा)] १. सुथरेशाह का चलाया हुआ एक संप्रदाय।

पुं० उक्त संप्रदाय का अनुयायी साधु। ऐसे साधु प्रायः सुथरेशाह के बनाये हुए पद गाकर भीख माँगते हैं।

सुथौनिया—पुं०[देश०] जहाज के मस्तूल के ऊपरी भाग में वह छेद जिसमें पाल लगाने के समय उसकी रस्सी पहनाई जाती है। (लश०)

सुदंड—पुं०[सं० ब० स०] बेंत। बेल।

सुदंडिका—स्त्री० [सं०] १. गोरख इमली। गोरक्षी। २. अजदंडी। ब्रह्म-दंडी।

सुदंत—वि०[सं० ब० स०] सुन्दर दाँतोंवाला।

पुं० १. अभिनेता। नट। २. नर्तक। ३. हाथी।

सुदंती—स्त्री०[सं०]१. एक दिग्गज की हथिनी का नाम। २. मादा हाथी। हथिनी।

सुदंष्ट्र—वि०[सं० ब० स०] सुन्दर दांतोंवाला।

पुं० श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

सुदक्षिणा—स्त्री० [सं०] १. राजा दिलीप की पत्नी का नाम। २. पुराणानुसार श्रीकृष्ण की एक पत्नी।

सुदत—वि० [सं०] [स्त्री० सुदती] सुन्दर दाँतोंवाला।

सुदम†—वि०=दमदार।

सुदमन—पुं०[सं०] आम का पेड़ और फल।

सुदरसन—वि०, पुं०=सुदर्शन।

सुदर्भा—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का तृण जिसे 'इक्षुदर्भा' भी कहते हैं।

सुदर्श—वि०[सं०] सुदर्शन। (दे०)

सुदर्शक—पुं० [सं०] एक प्रकार की समाधि।

सुदर्शन—वि० [सं०] [स्त्री० सुदर्शना]१. जो देखने में बहुत अच्छा और भला लगे। सुन्दर। २. जिसके दर्शन सरलता से होते हों या हो सकते हों।

पुं०१. विष्णु के हाथ का चक्र। २. शिव। ३. एक प्रकार का पौधा और उसके फूल। ४. वैद्यक में, एक प्रकार का चूर्ण जिसका प्रयोग विषम ज्वर में होता है। ५. कबीर पंथियों के अनुसार एक श्वपच भक्त जो कबीर का शिष्य था। ६. सुमेरु पर्वत। ७. इन्द्र की पुरी, अमरावती। ८. वर्तमान अवसर्पिणी के अठारहवें अर्हत के पिता का नाम। (जैन) ९. जैनों के नौ बलदेवों में से एक। १०. दधीचि का एक पुत्र। ११. भरत का एक पुत्र। १२. मछली। १३. एक प्रकार की संगीत-रचना। १४. जामुन। १५. जंबूद्वीप। १६. गिद्ध। १७. संन्यासियों का एक दंड जिसमें छः गाँठें होती हैं। १८. सोम लता। १९. मदनमस्त नामक पौधा और उसका फूल।

सुदर्शन-पाणि—पुं० [सं० ब० स०] विष्णु जिनके हाथ में सुदर्शन नामक चक्र रहता है।

सुदर्शना—स्त्री०[सं०]१. सुन्दरी स्त्री। रूपवती नारी। २. इन्द्र की पुरी, अमरावती। ३. शुक्ल पक्ष की रात। ४. एक प्रकार की मदिरा। ५. कमलों का सरोवर। ६. सोमलता। ७. जामुन का पेड़। ८. आज्ञा। आदेश।

वि० सं० 'सुदर्शन' का स्त्री०।

सुदर्शनी—स्त्री०[सं०] इन्द्र की पुरी, अमरावती।

सुदल—पुं०[सं० प्रा० स०] १. अच्छा और बड़ा दल। २. मोरट या क्षीर मोरट नाम की लता। ३. मुचकुंद।

वि० अच्छे दलवाला।

सुदला—स्त्री०[सं० ब० स०]१. सरिवन। शालपर्णी। २. सेवती।

सु-दर्शन—वि०[सं०] [स्त्री० सुदर्शना] सुन्दर दाँतोंवाला। सुदंत।

सुदांत—वि०[सं०] बहुत अधिक शांत और सुशील।

पुं० एक प्रकार की समाधि।

सुदाम—पुं०[सं०]१. श्रीकृष्ण के सखा, एक गोप। सुदामा। २. एक प्राचीन जनपद। (महाभारत)

सुदामन—वि०[सं०] उदारतापूर्वक देनेवाला।

पुं० राजा जनक के एक मंत्री का नाम। २. देवताओं का एक प्रकार का अस्त्र। ३. सुदामा।

सुदामा (मन्)—पुं०[सं०] १. एक दरिद्र ब्राह्मण जो श्रीकृष्ण का सहपाठी और परम सखा था तथा जिसे श्रीकृष्ण ने ऐश्वर्यवान् बना दिया था। २. इन्द्र का हाथी, ऐरावत। ३. एक प्राचीन पर्वत। ४. समुद्र। ५. बादल। मेघ।

स्त्री०१. रामायण के अनुसार उत्तर भारत की एक नदी। २. पुराणानुसार स्कंद की एक मातृका।

वि० अच्छी तरह और बहुत दान देनेवाला।

सुदाय—पुं०[सं०]१. उत्तम दान। २. उपहार के रूप में दिया जानेवाला सुन्दर पदार्थ। ३. यज्ञोपवीत संस्कार के समय ब्रह्मचारी को दी जानेवाली भिक्षा। ४. उपहार, दान या भिक्षा देनेवाला व्यक्ति। ५. विवाह के अवसर पर कन्या या जामाता को दिया जानेवाला दान। दहेज। ६. उक्त प्रकार का धन या चीजें देनेवाला व्यक्ति।

सुदारु—पुं० [सं०] १. देवदारु। देवदार। २. सरल नामक वृक्ष। ३. विंध्य पर्वत के पारिपात्र खंड का एक नाम।

सुदारुण—वि०[सं०] बहुत अधिक दारुण, भीषण या विकट।

पुं० एक प्रकार का दिव्य या दैवी अस्त्र।

सुदावन†—पुं०=सुदामन।

सुदास—पुं० [सं०]१. एक प्राचीन जनपद। २. वह जो सम्यक् रूप से ईश्वर की आराधना या उपासना करता हो।

सुदि—स्त्री० दे० 'सुदी'।

सुदिन—पुं०[सं० सु+दिन्]१. अच्छा दिन। साफ दिन। विशेषतः जिस दिन-सुबह सुबह बादल न छाये हों। 'दुर्दिन' का विपर्याय। २. शुभ दिन।

सुदिव—वि०[सं०] बहुत अधिक दीप्तिमान्।

सुदिह—वि० [सं०]१. बहुत तीखा। धारदार। नुकीला। २. बहुत चिकना। ३. बहुत उज्ज्वल।

सुदी—स्त्री० [सं० शुक्ल में का शु+दिवस में का दि=शुदि] चान्द्र मास का शुक्ल पक्ष। जैसे—कार्तिक सुदी छठ।

सुदीक्षा—स्त्री०[सं०] लक्ष्मी।

सुदीप्ति—वि०[सं०] बहुत अधिक दीप्तिमान्। बहुत उज्ज्वल और चमकीला। अंगिरस गोत्र के एक ऋषि।

सुदीर्घ—वि०[सं०] [स्त्री० सुदीर्घा] [भाव० सुदीर्घता] बहुत अधिक लंबा-चौड़ा। खूब-विस्तृत।

पुं० चिचड़ा।

सुदीर्घा—स्त्री० [सं०] चीना ककड़ी।

सुदुघ—वि०=सुदुघा।

सुदुघा—वि०[सं०]१. अच्छा और बहुत दूध देनेवाली। २. जो सहज में दूही जाती हो। (गौ, बकरी, भैंस आदि)

सुदूर—वि०[सं०] बहुत दूर। अति दूर। जैसे—सुदूर पूर्व।

†पुं०=शार्दूल। उदा०—लंक देखि कै छपा सुदूरू।—जायसी।

सुदृढ़—वि०[सं०] [भाव० सुदृढ़ता] बहुत दृढ़। खूब मजबूत। जैसे—सुदृढ़ बंधन।

सुदृष्टि—वि०[सं०]१. अच्छी या शुभ दृष्टिवाला। २. दूरदर्शी।

स्त्री० अच्छी और शुभ दृष्टि।

पुं० गिद्ध।

सुदेल्ल—पुं०=सुदेष्ण (पर्वत)।

सुदेव—पुं०[सं०]१. उत्तम देवता। २. विष्णु का एक पुत्र।

वि० अच्छी क्रीड़ा या खेल करनेवाला।

सुदेवस—पुं० [हिं० सु+देव=देवता] देवता का नाम लेकर किया जाने-

वाला (किसी काम या बात का) आरम्भ। जैसे—अब आप अपने काम का सुदेवस कीजिए।

सुदेव्य—पुं॰[सं॰] भले या श्रेष्ठ देवों का समुदाय ।

सुदेश—पुं॰[सं॰]१. अच्छा और सुन्दर देश। २. किसी काम या बात के लिए उपयुक्त स्थान।

वि॰ मनोहर। सुन्दर।

सुदेशिक—पुं॰[सं॰] अच्छा पथ-प्रदर्शक।

सुदेष्ण—पुं॰[सं॰]१. रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र। २. एक प्राचीन जनपद। ३. एक पौराणिक पर्वत ।

सुदेष्णा—स्त्री॰[सं॰]१. बलि की पत्नी। २. विराट् की पत्नी।

सुदेस†—वि॰[सं॰ सु+दृश्] देखने में सुन्दर।

पुं॰[सं॰ सु+देश] अच्छा देश या स्थान।

*पुं॰=स्वदेश।

सुदेसी†—वि॰=स्वदेशी।

सुदेह—पुं॰[सं॰] सुन्दर देह। सुंदर शरीर।

वि॰ सुन्दर देह या शरीर वाला।

सुदैव—पुं॰[सं॰]१. सौभाग्य। २. अच्छा संयोग।

सुदोग्ध्री—वि॰[सं॰] अधिक दूध देनेवाली।

स्त्री॰ अधिक दूध देनेवाली गाय।

सुदोघ—वि॰[सं॰] दानशील। उदार।

सुदोघा—वि॰, स्त्री [सं॰] सुदोग्ध्री। (दे॰)

सुदोह—वि॰[सं॰] (मादा जंतु) जिसे दूहने में कोई कष्ट न हो।

सुदौसी†—अव्य॰ [सं॰ सद्यस्=तुरन्त] उचित या ठीक समय से। कुछ पहले ही। कुछ जल्दी ही। (पश्चिम) जैसे—रेल पकड़ने के लिए घर से कुछ सुदौसी ही चलना चाहिए।

सुद्दा—पुं॰ [सं॰ सुद्दः] [स्त्री॰ अल्पा॰ सुद्दी] वह मल जो पेट के अंदर सूखकर आँतों से चिपक गया हो, और बहुत कष्ट से बाहर निकलता हो।

सुद्ध†—वि॰ [सं॰ शुद्ध] १. शुद्ध। खालिश। २. (उपकरण) जो प्रसम गति या स्थिति में हो अथवा ठीक तरह से काम कर रहा हो। जैसे—लट्टू सुद्ध चल रहा है।

स्त्री॰=सुध (चेतना)। उदा॰=होनहार हिरदे बसै बिसर जाय सुद्ध। —कहावत।

सुद्धाँ†—अव्य॰ [सं॰ सह] सहित। समेत। मिलाकर। जैसे—उसके सुद्धां वहाँ चार आदमी थे।

सुद्धांत†—पुं॰=सुद्धांत (अंतःपुर)।

सुद्धा*—अव्य॰=सुद्धाँ।

सुद्धि*—स्त्री॰ १. दे॰ 'शुद्धि'। २. दे॰ 'सुध'।

सुद्युत—वि॰[सं॰ प्रा॰ स॰] खूब प्रकाशमान्।

सुद्युम्न— पूं॰[सं॰] वैवस्वत मनु का पुत्र जो इड़ के नाम से ख्यात है।

सुद्रष्ट—वि॰[सं॰ सदृष्ट] दयावान्। कृपालु। (डिं॰)

सुधंग (गा)—वि॰[हिं॰ सीधा+अंग या सु+ढंग?] १. सरल या सीधे स्वभाव वाला। २. सीधा।

पुं॰ अच्छा या सुन्दर ढंग।

सुध—स्त्री॰[सं॰ सुधी?]१. अच्छी बुद्धि। २. सचेतनता। होश। ३. स्मृति। याद।

क्रि॰ प्र॰—खोना।—बिसरना।

मुहा॰—**सुध दिलाना**=याद दिलाना। **सुध बिसारना या भूलना**=याद न रखना। **सुध लेना**= (क) किसी का हाल-चाल पूछने के लिए उसके पास जाना। (ख) किसी बात की ओर ध्यान देना।

सुधन (स्)—वि॰[सं॰] बहुत धनी। बड़ा अमीर।

सुधनु—पुं॰ [सं॰]१. राजा कुरु का एक पुत्र जो सूर्य की पुत्री तपती के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। २. गौतम बुद्ध के एक पूर्वज।

सुधन्वा (न्वन्)—वि॰[सं॰ ब॰ स॰] १. उत्तम धनुष धारण करनेवाला। २. अच्छा धनुर्धर। होशियार तीरन्दाज।

पुं॰१. विष्णु। २. विश्वकर्मा। ३. अंगिरा ऋषि। ४. पुराणानुसार एक प्राचीन जाति जिसकी उत्पत्ति व्रात्य वैश्य और सवर्णा स्त्री से कही गई है। ५. शेषनाग।

सुध-बुध—स्त्री॰[सं॰ शुद्ध+बुद्धि]१. होश-हवाश। चेतना। संज्ञा। २. ज्ञान।

क्रि॰ प्र॰—ठिकाने न रहना।—भूलना।—मारी जानी।

सुध-मना—वि॰ [हिं॰ सुध=होश+मना] [स्त्री॰ सुधमनी] जिसे होश हो। सचेत।

सुधर—पुं॰[सं॰]१. जैनों के एक अर्हत। २. बया पक्षी। (डिं॰)

सुधरना—अ॰[हिं॰ सुधारना]१. खराब होने या बिगड़ी हुई चीज का मरम्मत आदि होने पर ठीक होना। त्रुटि, दोष आदि का दूर होना। जैसे—हालत सुधरना। २. व्यक्ति के संबंध में, अच्छे आचरणों की ओर प्रवृत्त होना तथा बुरे आचरणों की पुनरावृत्ति न करना। जैसे—लड़के का सुधरना।

सुधरमा—वि॰, स्त्री॰=सुधर्मा।

सुधराई—स्त्री॰[हिं॰ सुधरना+आई (प्रत्य॰)] सुधरने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

सुधर्म (न्)—वि॰[सं॰] धर्मपरायण। धर्मात्मा।

पुं॰[सं॰]१. अच्छा और उत्तम धर्म। २. जैन तीर्थंकर महावीर के दस शिष्यों में से एक।

सुधर्मा—वि॰ [सं॰ सुधर्मन्] अपने धर्म पर दृढ़ रहनेवाला। धर्मपरायण।

पुं॰१. कुटुंब से युक्त व्यक्ति। गृहस्थ। २. क्षत्रिय। ३. जैनों के एक गणाधिप।

स्त्री॰ देवताओं की सभा। देव-सभा।

सुधर्मी (र्मिन्)—वि॰[सं॰] धर्मपरायण। धर्मनिष्ठ।

स्त्री॰ देवताओं की सभा।

सुधवाना—स॰ [हिं॰ सुधरना का प्रे॰] १. सोधने या ठीक करने का काम किसी से कराना। ठीक या दुरुस्त कराना। २. मुहूर्त आदि के संबंध में, निकलवाना।

सुधांग—पुं॰[सं॰ ब॰ स॰] चन्द्रमा।

सुधांशु—पुं॰[सं॰] १. चन्द्रमा। २. कपूर।

सुधांशु-रक्त—पुं॰ [सं॰] मोती। मुक्ता।

सुधा—स्त्री॰[सं॰] १. अमृत। पीयूष। २. जल। पानी। ३. गंगा। ४. दूध। ५. किसी चीज का निचोड़ा हुआ रस। ६. पृथ्वी। ७. बिजली। विद्युत्। ८. जहर। विष। ९. चूना। १०. ईंट। ११.

रुद्र की पत्नी। १२. एक प्रकार का छन्द या वृत्त। १३. पुत्री। बेटी। १४. वधू। १५. शहद। १६. घर। मकान। १७. मकरन्द। १८. आँवला। १९. हर्रे। २०. मरोड़ फली। २१. गिलोय। गुडुच। २२. सरिवन। शालपर्णी।

सुधाई—स्त्री०[हिं० सूधा+आई (प्रत्य०)] सिधाई। सरलता।
स्त्री०[हिं० सोधना] सोधने की क्रिया या भाव।

सुधा-कंठ—वि० [सं०] मधुर-भाषी।
पुं० कोकिल। कोयल।

सुधाकर—पुं० [सं०] चन्द्रमा।

सुधाकार—पुं०[सं०] १. चूना पोतने या सफेदी करनेवाला मजदूर। २. मकान बनानेवाला मिस्तरी। राज।

सुधा-क्षार—पुं०[सं०] चूने का खार।

सुधा-गेह—पुं०[सं०] चन्द्रमा।

सुधा-घट—पुं०[सं० सुधा+घट] चन्द्रमा।

सुधाजीवी(विन्)—पुं०[सं०] सुधाकार। (दे०)

सुधाता (तृ)—वि० [सं०] सुव्यवस्थित करनेवाला।

सुधातु—पुं०[सं०] सोना।

सुधातु-दक्षिण—पुं०[सं०] वह जो यज्ञादि में अथवा यों ही दक्षिणा में सुधातु अर्थात् सुवर्ण देता हो।

सुधा-दीधिति—पुं०[सं० ब० स०] सुधांशु। चन्द्रमा।

सुधाधर—वि०[सं० ष० त०] चन्द्रमा जिसके अधरों में अमृत हो।
पुं० चन्द्रमा।

सुधाधरण—पुं०[सं० सुधाधर] चन्द्रमा। (डिं०)

सुधा-धवल—वि०[सं०]१. चूने के समान सफेद। २. जिस पर चूना पुता हुआ हो।

सुधा-धाम—पुं०[सं० सुधा+धाम] चन्द्रमा।

सुधाधार—पुं०[सं०]१. वह बरतन जिसमें अमृत रखा हो। २. चन्द्रमा।

सुधाधी—वि०[सं०] सुधा के समान। अमृत के तुल्य।

सुधा-धौत—वि०[सं०] चूना या सफेदी किया हुआ।

सुधा-नजर—वि० [हिं० सूधा=सीधा+नजर] दयावान्। कृपालु। (डिं०)

सुधाना—स०[हिं०सुध+आना(प्रत्य०)] स्मरण कराना। याद दिलाना।
स०†=सुधवाना।

सुधा-निधि—पुं० [सं०] १. चन्द्रमा। २. कपूर। ३. समुद्र। सागर। ४. दंडक वृत्त का एक प्रकार या भेद।

सुधा-पाणि—वि०[सं० ब० स०]१. जिसके हाथ में अमृत हो। २. (चिकित्सक) जिसकी दवा से सबको तुरन्त लाभ होता हो।
पुं० देवों के वैद्य। धन्वन्तरि।

सुधापाषाण—पुं०[सं०] सफेद खली।

सुधा-भवन—पुं०[सं०] अस्तर कारी किया हुआ मकान।

सुधाभित्ति—स्त्री०[सं०] दीवार, जिस पर चूना पुता हुआ हो।

सुधाभुज—पुं०[सं०]=सुधा-भोजी (देवता)।

सुधाभृति—पुं०[सं०]१. चन्द्रमा। २. यक्ष।

सुधाभोजी(जिन्)—वि० [सं०] अमृत भोजन करनेवाले।
पुं० अमृत खानेवाला, देवता।

सुधाम—पुं०[सं०] अच्छा घर या स्थान।
पुं०=सुधामा।

सुधामय—वि०[सं०] [स्त्री० सुधामयी] १. जिसमें अमृत हो। अमृत से युक्त। २. सुधा से भरा हुआ। अमृत-स्वरूप। ३. चूने का बना हुआ।
पुं० राज-प्रासाद। महल।

सुधा-मयूख—पुं०[सं०] चन्द्रमा।

सुधामा(मन्)-पुं०[सं०] चन्द्रमा।

सुधा-मूली—स्त्री०[सं०] सालम मिस्री। सालब मिस्री।

सुधा-योनि—पुं० [सं०] चन्द्रमा।

सुधार—पुं०,[हिं० सुधारना] १. वह तत्त्व जो किसी के सुधरने या सुधरे हुए होने पर लक्षित होता है। २. वह प्रक्रिया जो किसी के दोष, विकार आदि दूर करने के लिए की जाती है। ३. वह काट-छाँट या संशोधन-परिवर्तन जो रचना को अच्छा रूप देने के लिए किया जाता है।

सुधारक—वि०[हिं० सुधार+क(प्रत्य०)] (कार्य) जो सुधार के उद्देश्य या विचार से हो। (रिफ़ार्मेटरी)
पुं०१. दोषों या त्रुटियों का सुधार करनेवाला। संशोधक। २. धार्मिक या सामाजिक सुधार के लिए प्रयत्न करनेवाला। (रिफ़ार्मर)

सुधारना—स०[सं० शोधन]१. बिगड़ी हुई वस्तु को इस प्रकार ठीक करना कि वह फिर से काम करने या काम में आने के योग्य हो जाय। २. दोषों, विकारों आदि का उन्मूलन कर अथवा उनमें परिवर्तन लाकर किसी स्थिति में सुधार करना। ३. लेख आदि की गलतियाँ दूर करना।

सुधा-रश्मि—पुं०[सं०] चन्द्रमा।

सुधारा†—वि०=सूधा (सीधा)।

सुधारालय—पुं०[हिं० सुधार+सं० आलय] वह स्थान जहाँ पर अपराधियों के जीवन-सुधार की व्यवस्था की जाती है। (रिफ़ार्मेटरी)

सुधारू†—वि० [हिं० सुधारना+ऊ(प्रत्य०)] सुधारनेवाला। सुधारक।

सुधा-लता—स्त्री०[सं०] एक प्रकार की गिलोय।

सुधाव—पुं०[हिं० सुधरना+आव(प्रत्य०)]सोधने या सुधाने की क्रिया या भाव। सुधार।

सुधा-वर्षी (षिन्)—वि०[सं०] सुधा अर्थात् अमृत बरसानेवाला।
पुं० १. ब्रह्मा। २. बुद्ध का एक नाम।

सुधावास—पुं०[सं०]१. चन्द्रमा। २. खीरा।

सुधाश्रवा—वि०[सं० सुधा+स्रवण] अमृत बरसानेवाला।

सुधा-सदन—पुं०[सं० सुधा+सदन] चन्द्रमा।

सुधासित—भू० कृ०[सं०] जिस पर चूना पोतकर सफ़ेदी की गई हो।

सुधासू—पुं०[सं०] चन्द्रमा।

सुधासूति—पुं० [सं०]१. चन्द्रमा। २. यज्ञ। ३. कमल।

सुधा-स्पर्धी—वि०[सं० सुधा-स्पर्धिन्] १. अमृत की बराबरी करनेवाला। २. अमृत के समान मधुर (भाषण आदि)।

सुधास्रवा—स्त्री० [सं०]१. गले के अंदर की घंटी। मोटी जीभ। कौआ। २. रुदंती या रुद्रवंती नामक वनस्पति।

सुधाहर—पुं०[सं०] गरुड़।

सुधि—स्त्री०[सं० शुद्ध या शोध]१. चेतना। होश। २. ज्ञान। ३. याद। स्मृति। विशेष दे० 'सुध'। ४. 'दोहा नामक' छंद का दूसरा नाम। ५. दे० 'सुध'।

सुधित—भू० कृ०[सं०]१. सुधा से युक्त किया हुआ। २. सुधा जैसा फलतः मधुर। ३. जो सुधा या अमृत के रूप में लाया गया हो। ४. सुव्यवस्थित।

सुधी—वि० [सं०] १. अच्छी बुद्धिवाला। २. बुद्धिमान्। समझदार।
पुं० १. पण्डित। विद्वान्। २. धार्मिक व्यक्ति।

सुधीर—वि० [सं०] जिसमें यथेष्ट धैर्य हो। बहुत धैर्यवान्।

सुधुम्नानी—स्त्री० [सं०] पुराणानुसार पुष्कर द्वीप के सात खंडों में से एक।

सुधूपक—पुं० [सं०] चन्द्रमा।

सुधूम्र-वर्णा—स्त्री० [सं०] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

सुधोद्भव—पुं० [सं०] धन्वन्तरि।

सुधोद्‌भवा—स्त्री० [सं०] हरीतकी। हर्रे।

सुनंद—पुं० [सं०] १. एक देव-पुत्र। २. बलराम का मूसल। ३. कुजृंभ नामक दैत्य का मूसल जो विश्वकर्मा का बनाया हुआ माना जाता है। ४. वास्तुशास्त्र में, बारह प्रकार के राज-भवनों में से एक।
वि० आनंददायक।

सुनंदन—पुं० [सं०] कृष्ण के एक पुत्र का नाम। (पुराण०)

सुनंदा—स्त्री० [सं०] १. उमा। गौरी। २. श्रीकृष्ण की एक पत्नी। ३. सार्वभौम दिग्ज की हथिनी। ४. भरत की पत्नी। ६. एक प्राचीन नदी। ६. सफेद गौ। ७. गोरोचन। ८. अर्कपत्री। इसरौल। ९. औरत। स्त्री।

सुनंदिनी—स्त्री० [सं०] १. आरामशीतला नामक पत्रशाक। २. एक प्रकार का छन्द या वृत्त।

सुन—वि० १.=सुन्न। २.=शून्य।

सुनका—पुं० [देश०] चौपायों के गले का एक रोग। गरारा। घुरकवा।

सुन-कातर—पुं० [हिं० सोन+कातर ?] एक प्रकार का साँप।

सुनकार—वि० [हिं० सुनना+कार (प्रत्य०)] जो गाना-बजाना सुनने-समझनेवाला हो। अच्छी तरह ध्यानपूर्वक गुणों की परख करते हुए गाना सुननेवाला। उदा०—बसन्त बहार का खयाल था; और महफिल सुनकार थी।—अमृतलाल नागर।

सुन-किरवा†—पुं०=सोन-किरवा।

सु-नक्षत्र—वि० [सं०] १. उत्तम नक्षत्रवाला। २. भाग्यवान्।
पुं० उत्तम नक्षत्र।

सुनक्षत्रा—स्त्री० [सं०] १. कर्म मास का दूसरा नक्षत्र। २. स्कंद की एक मातृका।

सुन-खरचा—पुं० [?] एक प्रकार का धान जो आश्विन के अंत और कार्तिक के आरंभ में होता है।

सुन-गुन—स्त्री० [हिं० सुनना+अनु० गुनना] १. किसी बात की बहुत दबी हुई चर्चा जो लोगों में होती है। जैसे—अविश्वास प्रस्ताव रखने की सुन-गुन इधर कुछ दिनों से होने लगी है।
क्रि० प्र०—होना।
२. वह बात या भेद जिसकी दबी हुई चर्चा सुनाई पड़ी हो।
क्रि० प्र०—लगना।

सु-नजर—वि० [सं० सु+फा० नज़र] दयावान्। कृपालु। (डिं०)

सुनत(ति)†—स्त्री०=सुन्नत।

सुनना—स० [सं० श्रवण] १. ऐसी स्थिति में होना कि कानों के द्वारा ध्वनि, शब्द आदि की अनुभूति हो। जैसे—वर्षों से इस घंटे की आवाज सुनता आया हूँ। २. सुनकर ज्ञान प्राप्त करना। जैसे—खबर सुनना। ३. किसी निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए ध्यानपूर्वक लोग या लोगों की बातें सुनना। ४. किसी की प्रार्थना आदि पर विचार करने के लिए सहमत होना। जैसे—उन्होंने कहा है कि आपकी फरियाद सुनी जायगी। ५. कठोर वचनों का श्रवण करना। जैसे—तुम्हारे लिए दूसरों की बातें मुझे सुननी पड़ीं।
क्रि० प्र०—पड़ना।
६. रोग आदि के संबंध में, उपचार आदि से कम होना या बढ़ने से रुकना।

सुनफा—स्त्री० [सं० ?] ज्योतिष में ग्रहों का एक योग।

सुन-बहरी—स्त्री० [हिं० सुन्न+बहरी] एक प्रकार का चर्म रोग जिसकी गिनती कुष्ठ रोग में होती है।

सुनम्य—वि० [सं०] १. जो सहज में झुकाया या दबाया जा सके। २. जो गीला होने पर मनमाने ढंग से और मनमाने रूप में लाया जा सके। (प्लैस्टिक) जैसे—सुनम्य मिट्टी।
पुं० आज-कल रासायनिक प्रक्रियाओं से तैयार किया हुआ गीला द्रव्य जो सभी प्रकार के साँचों में ढाला जा सकता है और जिससे खिलौने, जूते, तस्मे आदि सैकड़ों प्रकार की चीजें बनाई जाती हैं। (प्लास्टिक)

सुनय—पुं० [सं०] उत्तम नीति। सुनीती।

सुनयन—वि० [सं०] [स्त्री० सुनयना] सुन्दर नेत्रोंवाला।
पुं० मृग। हिरन।

सु-नयना—स्त्री० [सं०] १. सुन्दर स्त्री। सुंदरी। २. राजा जनक की एक पत्नी जिन्होंने सीता जी को पाला था।
वि० सं० सुनयन का स्त्री०।

सुनर—वि० [सं० प्रा० स०] नरों में श्रेष्ठ।
पुं० अर्जुन। (डिं०)
†वि०=सुंदर।
†स्त्री० [सं० सु+हिं नार] =सुनारि।

सुनरिया†—स्त्री०=सुंदरी (रूपवती स्त्री)।

सुनर्द—वि० [सं०] बहुत गरजने या जोर का शब्द करनेवाला।

सुनवाई—स्त्री० [हिं० सुनना+वाई (प्रत्य०)] १. सुनने की क्रिया या भाव। २. मुकदमे या विवाद के विचार के लिए न्यायकर्ता के द्वारा दोनों पक्षों की बातें सुनने की क्रिया या भाव। (हियरिंग) ३. किसी तरह की शिकायत या फरियाद आदि का सुना जाना। जैसे—तुम लाख चिल्लाया करो, वहाँ कुछ सुनवाई नहीं होगी।

सुनवैया—वि० [हिं० सुनना+वैया (प्रत्य०)] सुननेवाला।
वि० [हिं० सुनाना+वैया (प्रत्य०)] सुनानेवाला।

सुनस—वि० [सं०] सुंदर नाकवाला।

सुनसर—पुं० [?] एक प्रकार का गहना।

सुनसान—वि० [सं० शून्य+स्थान] १. जिसमें व्यक्तियों का वास न हो। जैसे—सुनसान कोठरी। २. जिसमें जीवों का आवागमन न हो। जैसे—सुनसान दोपहरी।

पुं० निर्जन स्थान। उजाड़।

सुनहरा, सुनहरी—वि०=सुनहला।

सुनहला—वि० [हिं० सोना] [स्त्री० सुनहली] १. सोने का बना हुआ। २. चमक, रंग आदि में सोने की तरह का। (गोल्डन्) जैसे—सुनहले फूल, सुनहली आँखें।

सुनहा†—पुं० [सं० श्वान] १. कुत्ता। उदा०—दरपन केरि गुफा में सुनहा पैठा आया।—कबीर। २. कोशी नामक जंतु।

सुनाई†—स्त्री० [हिं० सुनना+आई (प्रत्य०)] १. सुनने की क्रिया या भाव। २. सुनवाई।

सुनाद—वि० [सं०] सुन्दर नादवाला।

पुं० शंख।

सुनादक—वि० [सं०] सुंदर शब्द करनेवाला।

पुं० शंख।

सुनाद-प्रिय—पुं० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सुनाद-विनोदनी—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सुनाना—स० [हिं० सुनना का प्रे०] १. दूसरों को सुनने में प्रवृत्त करना। विशेषतः उस दृष्टि से ऊँचे स्वर में पढ़ना कि दूसरे के कानों तक वह पहुँच जाय। २. कोई ऐसी क्रिया करना जिससे लोग कुछ सुन सकें। जैसे—ग्रामोफून या रेडियो सुनाना। ३. अपना रोष प्रकट करने के लिए खरी-खोटी बातें कहना। जैसे—(क) भरी सभा में उन्होंने मंत्री जी को खूब सुनाईं। (ख) कोई एक कहेगा तो चार सुनाएँगे।

सं० क्रि—डालना।—देना।

सुनानी†—स्त्री०=सुनावनी।

सुनाभ—पुं० [सं०] १. सुदर्शन चक्र। २. मैनाक पर्वत।

वि०=सुनाभि।

सुनाभि—वि० [सं०] १. सुन्दर नाभिवाला। २. जिसका केन्द्र-स्थल सुन्दर हो।

सुनाम—पुं० [सं०] लोक में होनेवाला अच्छा नाम जो कीर्ति या यश का सूचक होता है।

सुनाम-द्वादशी—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का व्रत जो वर्ष की बारहों शुक्ला द्वादशियों को किया जाता है।

सुनामा (मन्)—वि० [सं०] जिसका अच्छा नाम या कीर्ति हो। कीर्तिशाली।

पुं० १. कंस के आठ भाइयों में से एक। २. कार्तिकेय का एक पारिषद।

सुनामिका—स्त्री० [सं०] त्रायमाणा लता।

सुनार—पुं० [सं० स्वर्णकार] [स्त्री० सुनारिन, भाव० सुनारी] १. वह जिसका पेशा सोने-चाँदी के आभूषण बनाना हो। २. जो सुनारों के वंश में उत्पन्न हुआ हो।

पुं० [सं०] १. कुतिया का दूध। २. साँप का अंडा। ३. चटक पक्षी। गौरैया।

सुनारि—स्त्री० [सं०] सुंदर स्त्री। सुंदरी।

सुनारिन—स्त्री० [हिं० सुनार+इन (प्रत्य०)] १. सुनार की पत्नी। २. सुनार जाति की स्त्री।

सुनारी—स्त्री० [हिं० सुनार+ई (प्रत्य०)] १. सुनार का काम, पेशा या भाव। २. दे० 'सुनारिन'।

सुनाल—पुं० [सं०] लाल कमल।

सुनालक—पुं० [सं०] अगस्त्य का पेड़ या फूल।

सुनावनी—स्त्री० [हिं० सुनाना] १. परदेश या विदेश से किसी सगे-संबंधी की मृत्यु का आया हुआ समाचार जो स्थानिक संबंधियों के पास सूचनार्थ भेजा जाता है।

क्रि० प्र०—आना।

२. उक्त प्रकार का दुःखद समाचार आने पर सगे-संबंधियों आदि का होनेवाला सामूहिक शोक प्रकट, स्नान आदि।

सुनासा—स्त्री० [सं०] कौआ ठोढ़ी। काकनासा।

सुनासिक—वि० [सं०] सुंदर नाकवाला। सुनास।

सुनासीर—पुं० [सं०] १. इन्द्र। २. देवता।

सुनाहक†—अव्य०=नाहक (व्यर्थ)।

सुनिद्र—पुं० [सं०] खूब सोना।

सुनिनद—वि० [सं०] सुन्दर नाद या शब्द करनेवाला।

सुनियाना†—अ० [हिं० सोना?+इयाना (प्रत्य०)] पौधों, फसल आदि का शीतरोग आदि से नष्ट-प्राय हो जाना। (रुहेल खंड)

सुनिरुहन—पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का वस्तिकर्म जिससे पेट और आँतें बिलकुल साफ हो जाती हैं।

सुनिश्चय—पुं० [सं०] १. पक्का निश्चय। २. सुंदर निश्चय।

सुनिश्चित—भू० कृ० [सं०] अच्छी तरह या दृढ़ता से निश्चय किया हुआ। भली भाँति निश्चित किया हुआ।

पुं० एक बुद्ध का नाम।

सुनिश्चित पुर—पुं० [सं०] काश्मीर का एक प्राचीन नाम।

सुनिहित—भू० कृ० [सं०] अच्छी तरह से छिपा या दबा हुआ। उदा०—था समर्पण में ग्रहण का एक सुनिहित भाव।—पन्त।

सुनीच—पुं० [सं०] ज्योतिष में, किसी ग्रह का किसी राशि में किसी विशेष अंश का होनेवाला अवस्थान।

सुनीत—वि० [सं०] [भाव० सुनीति] १. नीतिपूर्ण व्यवहार करनेवाला। २. उदार।

सुनीति—स्त्री० [सं०] १. उत्तम नीति। २. भक्त ध्रुव की माता।

पुं० शिव।

सुनीथ—पुं० [सं०] १. कृष्ण का एक पुत्र। २. सुषेण का एक पुत्र। ३. शिशुपाल का एक नाम। ४. एक प्रकार का छन्द या वृत्त।

वि० १. नीतिमान्। २. न्यायशील।

सुनीथा—स्त्री० [सं०] मृत्यु की पुत्री और अंग की पत्नी।

सुनील—वि० [सं०] १. गहरा नीला। २. गहरा काला।

पुं० १. अनार का पेड़। २. लाल कमल।

सुनीलक—पुं० [सं०] १. नीलम नामक रत्न। २. काला भँगरा।

सुनीला—स्त्री० [सं०] १. चणिका तृण। चनिका घास। २. नीली अपराजिता। ३. तीसी।

सुनु—पुं० [सं०] जल।

सुनेत्र—वि० [सं०] [स्त्री० सुनेत्रा] सुंदर नेत्रोंवाला। सुलोचन।
पुं० १. धृतराष्ट्र का एक पुत्र। २. बौद्धों के अनुसार मार का एक पुत्र। ३. चकवा पक्षी।

सुनेत्रा—स्त्री० [सं०] सांख्य के अनुसार नौ तुष्टियों में से एक।

सुनैया†—वि०=सुनवैया।

सुनोची—पुं० [देश०] एक प्रकार का घोड़ा।

सुन्न—वि० [सं० शून्य] १. जिसमें कुछ न हो। शून्य। २. शरीर का अंग जिसमें रक्त का संचार बिलकुल शून्य होने के फल-स्वरूप स्पंदन-हीनता हो। स्पंदनहीन। ३. शीत अथवा विशिष्ट उपचार के फल-स्वरूप किसी अंग का संज्ञाहीन होना। जैसे—आपरेशन से पहले उनका हाथ सुन्न कर लिया गया था। ४. व्यक्ति के संबंध में, स्तब्ध और किंकर्तव्य-विमूढ़। जैसे—मित्र की मृत्यु का समाचार सुनते ही वह सुन्न हो गया।
क्रि० प्र०—होना।

सुन्नत—स्त्री० [अ०] [वि० सुन्नती] लिंगेन्द्रिय के अगले भाग का चमड़ा काटने की कुछ धर्मों की प्रथा जिसे मुसलमानों में मुसलमानी और सुन्नत कहते हैं। खतना। (सरकमसीजन)

सुन्नती—वि० [हिं० सुन्नत] जिसकी सुन्नत हुई हो।
पुं० मुसलमान।

सुन्नर†—वि०=सुंदर।

सुन्नसान—वि०=सुनसान।

सुन्ना—पुं० [सं० शून्य] बिंदी। सिफर। जैसे—एक (१)पर सुन्ना (०) लगाने से दस (१०) होता है।
†स०=सुनना।

सुन्नी—पुं० [अ०]मुसलमानों का एक वर्ग या संप्रदाय जो चारों खलीफाओं को प्रधान मानता है। चार-पारी।

सुन्नैया†—वि०=सुनवैया।

सुपंख—वि०[सं०] १. सुन्दर पंखों या परोंवाला। २. सुन्दर तीरोंवाला।

सुपंथ—पुं० [सं०] सन्मार्ग।

सुपक†—वि०=सुपक्व।

सुपक्व—वि० [सं०] अच्छी तरह पका हुआ।
पुं० बढ़िया और सुगंधित आम।

सुपक्ष—वि० [सं०] जिसके सुंदर पंख हों। सुंदर पंखों वाला।

सुपच—पुं०=श्वपच।
†वि०=सुपाच्य।

सुपट—वि० [सं०] सुंदर वस्त्रों से युक्त। अच्छे वस्त्रोंवाला।
पुं० सुन्दर पट या वस्त्र। बढ़िया कपड़ा।

सुपठ—वि० [सं०] जो सहज में पढ़ा जा सके।

सुपड़ा—पुं०[देश०] लंगर का वह अँकुड़ा जो जमीन में धँस जाता है।

सुपत—वि० [सं० सु+हिं० पत=प्रतिष्ठा]अच्छी पत या प्रतिष्ठावाला। प्रतिष्ठित।

सुपतिक—पुं० [डिं०] ऐसा डाका जो रात के समय पड़े।

सुपत्थ†—पुं०=सुपथ।

सुपत्नी—स्त्री० [सं०] १. अच्छी पत्नी। २. स्त्री जिसका पति अच्छा हो।

सुपत्र—वि०[सं०] १. सुंदर पत्तोंवाला। २. सुंदर पंखों या परोंवाला।
पुं० [सं०] १. तेजपत्र। तेजपत्ता। २. इंगुदी। हिंगोट। ३. ३. हुरहुर। आदित्य-पत्र। ४. एक पौराणिक पक्षी।

सुपत्रक—पुं० [सं०] सहिजन।

सुपत्रा—स्त्री० [सं०] १. रुद्रजटा। २. शतावर। ३. शालपर्णी। सरिवन। ४. पालक का साग।

सुपत्रित—भू० कृ० [सं०] १. सुन्दर पत्तों या पत्रों से युक्त। २. सुन्दर पंखों या परों से युक्त। ३. अच्छे तीरों से युक्त।

सुपत्री (त्रिन्)—वि० [सं०] पंखों या तीरों से भली-भाँति युक्त।
स्त्री० गंगापत्री नाम का पौधा।

सुपथ—पुं० [सं०] १. उत्तम मार्ग। अच्छा रास्ता। सत्पथ। सदाचरण। २. एक प्रकार का छन्द या वृत्त।
वि० सम-तल। हमवार।

सुपथी (थिन्)—वि० [सं०] सुपथ पर चलनेवाला।

सुपथ्य—पुं०[सं०] १. ऐसा आहार या भोजन जो रोगी के लिए हितकर हो। अच्छा पथ्य। २. आम।

सुपथ्या—स्त्री० [सं०] बथुआ नामक साग।

सुपद—वि० [सं०] १. सुंदर पैरोंवाला। २. तेज चलने या दौड़नेवाला।

सुपद्मा—स्त्री० [सं०] बच। वचा।

सुपन*—पुं०=स्वप्न।

सुपनक—वि० [हिं० सपना=स्वप्न] स्वप्न देखनेवाला। जिसे स्वप्न दिखाई देता हो।

सुपना†—पुं०=सपना।

सुपनाना†—स० [हिं० सुपना] १. सपना देखना। २. सपना दिखाना।

सुपरण†—पुं०=सुपर्ण।

सुपरन†—पुं०=सुपर्ण।

सुपरमतुरिता—स्त्री० [सं०] एक देवी। (बौद्ध)

सुपर रायल—पुं० [अं०] छापेखाने में कागज आदि की एक नाप जो २२ इंच चौड़ी और २९ इंच लंबी होती है।

सुपरवाइजर—पुं० [अं०]=पर्यवेक्षक।

सुपरस*—पुं०=स्पर्श।

सुपरिंटेंडेंट—पुं० [अं०]=अधीक्षक।

सुपर्ण—वि० [सं०]१. सुंदर पत्तोंवाला। २. सुंदर पंखों या परोंवाला।
पुं० १. विष्णु। २. गरुड़। ३. देव-गन्धर्व। ४. सोम। ५. किरण। ६. एक वैदिक शाखा जिसमें १०३ मंत्र हैं। ७. एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना। ८. घोड़ा। ९. चिड़िया। पक्षी। १०. मुरगा। ११. अमलतास। १२. नागकेसर।

सुपर्णक—पुं० [सं०] १ गरुड़ या दिव्य पक्षी। २ अमलतास। ३ सप्तपर्ण। सतिवन।
वि०=सुपर्ण।

सुपर्णकुमार—पुं० [सं०] जैनियों के एक देवता।

सुपर्णकेतु—पुं० [सं०] १ विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

सुपर्णराज—पुं० [सं०] गरुड़।

सुपर्णसद्—वि० [सं०] पक्षी पर चढ़नेवाला।
पुं० विष्णु।

सुपर्णांड—पुं० [सं०] शूद्रा माता और सूत पिता से उत्पन्न पुत्र।

सुपर्णा—स्त्री० [सं०] १. पद्मिनी। कमलिनी। २. गरुड़ की माता। ३. एक प्राचीन नदी।

सुपर्णिका—स्त्री० [सं०] १. स्वर्ण जीवंती। पीली जीवंती। २. रेणुका नामक गन्ध द्रव्य। ३. पलाशी। ४. शालपर्णी। सरिवन।

सुपर्णी—स्त्री० [सं०] १. गरुड़ की माता। सुपर्णा। २. एक देवी का नाम। ३. अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। ४. रात। रात्रि। ५. मादा पक्षी। चिड़िया। ६. कमलिनी। ७. रेणुका नामक गन्ध द्रव्य। ८. पलाशी।

सुपर्णेय—पुं० [सं०] सुपर्णी के पुत्र, गरुड़।

सुपर्व—वि० [सं०] १. सुंदर जोड़ोंवाला। जिसके जोड़ या गाँठें सुंदर हों। २. (ग्रन्थ) जिसमें सुन्दर पर्व या अध्याय हों।

पुं० १. शुभ मुहूर्त। शुभ काल। २. देवता। ३. तीर। वाण। ४. धूआँ। ५. बाँस।

सुपर्वा—स्त्री० [सं०] सफेद दूब।

सु-पश्चात्—अव्य० [सं०] बहुत रात गये।

सुपाकिनी—स्त्री० [सं०] आमा हल्दी।

सुपाक्य—पुं० [सं०] विडलोण नामक नमक जो अत्यंत पाचक माना गया है।

सुपाच्य—वि० [सं०] सहज में पचने या हजम हो जानेवाला (खाद्य पदार्थ)।

सुपात्र—पुं० [सं०] [स्त्री० सुपात्री] [भाव० सुपात्रता] १. अच्छा और उपयुक्त पात्र या बरतन। २. उत्तम आधार। ३. कोई अधिकारी तथा उपयुक्त व्यक्ति। ४. सुयोग्य व्यक्ति।

सुपाद—वि० [सं०] जिसके अच्छे या सुंदर पैर हों।

सुपार—वि० [सं०] जिसे सहज में पार किया जा सके।

सुपारग—वि० [सं०] जो सहज में पार जा सकता हो।

पुं० शाक्य मुनि।

सुपारा—स्त्री० [सं०] नौ प्रकार की तुष्टियों में से एक। (सांख्य)

सुपारी—स्त्री० [सं० सुप्रिय] १. नारियल की जाति का एक बहुत ऊँचा पेड़। २. उक्त वृक्ष का फल जो छोटी कड़ी गोलियों के रूप में होता है और जिसके छोटे छोटे टुकड़े यों ही अथवा पान के साथ खाये जाते हैं। कसैली। छालिया।

मुहा०—सुपारी लगना=सुपारी खाने पर उसका कोई टुकड़ा गले की नली में अटकना जिससे कुछ खाँसी और बेचैनी सी होती है। उदा०—सोर भयो सकुचे समुझे हरवाहि कह्यो हरि लागि सुपारी।—केशव। ३. लिंगेंद्रिय का अगला अंडाकार भाग जो प्रायः सुपारी (फल) की तरह होता है। (बाजारू)

सुपारी का फूल—पुं० [हिं० सुपारी+फूल] मोचरस या सेमल का गोंद।

सुपार्श्व—पुं० [सं०] १. परास पीपल। राजदंड। गर्दभांड। २. पाकर का पेड़। ३. एक प्राचीन पर्वत। ४. एक पौराणिक पीठ-स्थान। ५. जैन धर्म में, सातवें तीर्थंकर। ६. जटायु के भाई संपाती के पुत्र का नाम।

वि० सुन्दर पार्श्ववाला।

सुपिंगला—स्त्री० [सं०] १. जीवंती। डोडी शाक। २. मालकंगनी।

सुपीत—वि० [सु+पीत (पीला)] बहुत या बढ़िया पीला।

भू० कृ० [सं० सु+पीतं (पीया हुआ) १. अच्छी तरह या जी भर कर पीया हुआ। २. जिसने अच्छी तरह या जी भरकर पीया हो।

पुं० [सं०] १. गाजर। २. पीली कटसरैया। ३. चन्दन। ४. ज्योतिष में, एक प्रकार का मुहुर्त।

सुपीन—वि० [सं०] बहुत बड़ा, भारी या मोटा।

सुपुंसी—स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पति वीर्यवान् और सुपुरुष हो।

सुपुट—पुं० [सं०] १. कोलकंद। चमार आलू। २. विष्णुकंद।

सुपुटा—स्त्री० [सं०] सेवती। वनमल्लिका।

सुपुत्र—पुं० [सं०] १. अच्छा, सुशील और सुयोग्य पुत्र। २. जीवक पुत्र।

सुपुत्रिका—वि० [सं०] अच्छे पुत्र या पुत्रोंवाली (स्त्री)।

स्त्री० जतुका लता। पपड़ी।

सुपुर—पुं० [सं०] पक्का और मजबूत दुर्ग।

सुपुरुष—पुं० [सं०] १. सुन्दर पुरुष। उत्तम या श्रेष्ठ पुरुष। सत्पुरुष।

सुपुर्द—पुं०=सपुर्द।

सुपुष्करा—स्त्री० [सं०] स्थल कमलिनी। स्थल पद्मिनी।

सुपुष्प—पुं० [सं०] १. लौंग। लवंग। २. परास पीपल। ३. मुचकुंद वृक्ष। ४. शहतूत। ५. पारिभद्र। फरहद। ६. सिदिस। ७. हरिद्रु। हलदुआ। ८. बड़ी सेवती। ९. सफेद मदार। १०. देवदार। ११. पुंडेरी।

वि० सुन्दर फूलों से युक्त।

सुपुष्पक—पुं० [सं०] १. शिरीष वृक्ष। सिरिस। २. मुचकुंद। ३. सफेद मदार। ४. पलास। ५. बड़ी सेवती।

सुपुष्पा—स्त्री० [सं०] १. कोशातकी। तरोई। तुरई। २. द्रोणपुष्पी। गूमा। ३. सौंफ। ४. सेवती।

सुपुष्पिका—स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का विधारा। जीर्णदारु। २. सौंफ। ३. सोआ नामक साग। ४. पातालगारुड़ी। ५. बन-सनई।

सुपुष्पी—स्त्री० [सं०] १. श्वेत अपराजिता। सफेद कोपल लता। २. सौंफ। ३. केला। ४. सोआ नामक साग। ५. विधारा। ६. द्रोणपुष्पी। गूमा।

सुपूत—वि० [सं०] अत्यन्त पूत या पवित्र।

†पुं०=सपूत (सुपुत्र)।

सुपूती—स्त्री० [हिं० सुपूत+ई (प्रत्य०)] १ सुपूत होने की अवस्था या भाव। सुपूतपन। २. सुपूत का कोई कौशल। सुपूत का वीरतापूर्ण कार्य। ३. स्त्री, जो सुपूतों की जननी हो। सुपूतों की माता।

सुपूर—पुं० [सं०] वीजपूर। बिजौरा नींबू।

वि० १. जिसे अच्छी तरह भरा जा सके। २. खूब भरा हुआ। ३. (कार्य) जो सहज में पूरा हो सके।

सुपूरक—पुं० [सं०] अगस्त वृक्ष। वक वृक्ष। २. बिजौरा नींबू।

सुपेती*—स्त्री० १.=सुपेदी। २.=सफेदी।

सुपेद†—वि०=सफेद।

सुपेदा†—पुं०=सफेदा।

सुपेदी—स्त्री० [फा० सफ़ेदी] १. ओढ़ने की रजाई। २. बिछाने की तोशक। ३. बिछौना। बिस्तर। ४. दे० 'सफेदी'।

सुपेली—स्त्री० [हिं० सूप+एली (प्रत्य०)] छोटा सूप।

सु-पोष—वि० [सं०] जिसका पालन-पोषण सहज में हो सकता हो।

सुप्त—वि० [सं०] [भाव० सुप्ति] १. सोया हुआ। निद्रित। शयित। २. सोने के उद्देश्य से लेटा हुआ। ३. (पदार्थ का गुण, प्रभाव या बल) जो अन्दर वर्तमान होने पर भी कुछ कारणों से दबा हुआ हो और सक्रिय न हो। प्रसुप्त। (डॉरमेन्ट) ४. ठिठुरा या सिकुड़ा हुआ। ५. जो खिला या खुला न हो। मूंदा हुआ। ६. जो अभी काम में न आ रहा हो या आ सकता हो। बेकार। ७. सुस्त।

सुप्तक—पुं० [सं०] निद्रा। नींद।

सुप्तघ्न—वि० [सं०] १. १. सोये हुए प्राणी पर आघात या वार करनेवाला। २. हिंसक।

सुप्तज्ञान—पुं० [सं०] स्वप्न।

सुप्तता—स्त्री० [सं०] सुप्त होने की अवस्था या भाव।

सुप्त-प्रलपित—पुं० [सं०] निद्रित अवस्था में होनेवाला प्रलाप। सोये-सोये बकना।

सुप्तमाली—पुं० [सं० सुप्तमालिन्] पुराणानुसार तेइसवें कल्प का नाम।

सुप्त-वाक्य—पुं० [सं०] निद्रित अवस्था में कहे हुए वाक्य या बातें।

सुप्त-विज्ञान—पुं० [सं०] स्वप्न। सपना।

सुप्तस्थ—वि० [सं०] सोया हुआ। निद्रित।

सुप्तांग—पुं० [सं०] वह अंग जिसमें चेतना या चेष्टा न रह गई हो। निश्चेष्ट अंग।

सुप्तांगता—स्त्री० [सं०] सुप्तांग होने की अवस्था या भाव। अंगों की निश्चेष्टता।

सुप्ति—स्त्री० [सं०] १. सोये हुए होने की अवस्था या भाव। निद्रा। नींद। २. उँघाई। निदाँस। ३. प्रत्यय। विश्वास। ४. सुप्तांगता।

सुप्तोत्थित—वि० [सं०] जो अभी सोकर उठा हो। नींद से जागा हुआ।

सुप्रकेत—वि० [सं०] १. ज्ञानवान्। २. बुद्धिमान्।

सुप्रचेता—वि० [सं० सुप्रचेतस्] बहुत बड़ा बुद्धिमान् या समझदार।

सुप्रज—वि० [सं०] अच्छी और यथेष्ट सन्तान से युक्त।

सुप्रजा—स्त्री० [सं०] १. उत्तम संतान। अच्छी औलाद। २. अच्छी प्रजा या रिआया।

सुप्रजात—वि० [सं०] सुप्रज। (दे०)

सुप्रज्ञ—वि० [सं०] बहुत बुद्धिमान्।

सुप्रतर—वि० [सं०] (जलाशय) जो सहज में तैरकर या नाव से पार किया जा सके।

सुप्रतिज्ञ—वि० [सं०] जो अपनी प्रतिज्ञा से न हटे। दृढ़-प्रतिज्ञ।

सुप्रतिभा—स्त्री० [सं०] मदिरा। शराब।

सुप्रतिष्ठ—वि० [सं०] १. अच्छी प्रतिष्ठावाला। २. बहुत प्रसिद्ध।
पुं० १. एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना। २. एक प्रकार की समाधि। (बौद्ध)

सुप्रतिष्ठा—स्त्री० [सं०] १. देव-मन्दिर, प्रतिमा आदि की स्थापना। २. अभिषेक। ३. अच्छी प्रतिष्ठा या स्थिति। ४. प्रसिद्धि। ५. कार्तिकेय की एक मातृका।

सुप्रतिष्ठित—भू० कृ० [सं०] १. जिसकी अच्छी तरह से प्रतिष्ठा या स्थापना की गई हो। २. जिसकी लोक में प्रतिष्ठा हो।
पुं० १. गूलर। २. एक प्रकार की समाधि।

सुप्रतीक—पुं० [सं०] १. अच्छा या उपयुक्त प्रतीक। २. शिव। ३. कामदेव। ३. ईशान कोण के दिग्गज का नाम।
वि० १. सुन्दर। २. सज्जन।

सुप्रतीकिनी—स्त्री० [सं०] सुप्रतीक नामक दिग्गज की हथिनी।

सुप्रदर्श—वि० [सं०] जो देखने में सुन्दर हो। प्रियदर्शन। सुदर्शन।

सुप्रदीप—पुं० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सुप्रदोहा—वि० स्त्री० [सं०] (मादा प्राणी) जिसका दूध सहज में दूहा जा सके।

सु-प्रबुद्ध—वि० [सं०] जिसे यथेष्ट बोध या ज्ञान हो। अत्यन्त बोधयुक्त।
पुं० गौतम बुद्ध।

सुप्रभ—वि० [सं०] १. सुन्दर प्रभा या चमकवाला। प्रकाशवान्। २. सुन्दर।
पुं० १. पुराणानुसार शाल्मली द्वीप के अन्तर्गत एक वर्ष या भू-भाग। २. जैनियों के नौ बलों (जिनों) में से एक।

सुप्रभा—स्त्री० [सं०] १. स्कंद की एक मातृका। २. अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। ३. सात सरस्वतियों में से एक। ४. सोमराजी। बकुची।
पुं० पुराणानुसार पृथ्वी का एक वर्ष या खंड जिसके अधिष्ठाता देवता 'सुप्रभ' कहे गये हैं।

सुप्रभात—पुं० [सं०] १. प्रभात का आरम्भिक समय। २. मंगलमय प्रभात। ३. वह प्रभात जिससे आरंभ होनेवाला दिन मंगलकारक और शुभ हो।

सुप्रभाता—स्त्री० [सं०] १. पुराणानुसार एक नदी का नाम।
वि० (रात) जिसका प्रभाव शुभ या सुन्दर हो।

सुप्रभाव—वि० [सं०] १. प्रभावपूर्ण। २. शक्तिशाली।

सुप्रलंभ—वि० [सं०] जो सहज में प्राप्त हो सके। सुलभ।

सुप्रलाप—पुं० [सं०] सुन्दर भाषण।

सुप्रश्न—पुं० [सं०] कुशल-मंगल जानने के लिए किया जानेवाला प्रश्न।

सुप्रसन्न—वि० [सं०] १. अत्यन्त प्रसन्न। २. अत्यन्त निर्मल। ३. अच्छी तरह खिला या फूला हुआ।
पुं० कुबेर का एक नाम।

सुप्रसाद—पुं० [सं०] १. अत्यन्त प्रसन्नता। २. शिव। ३. विष्णु। ४. कार्तिकेय का एक अनुचर।

सुप्रसादक—पुं०=सुप्रसाद।

सुप्रसिद्ध—वि० [सं०] [भाव० सुप्रसिद्धि] बहुत अधिक प्रसिद्ध। बहुत मशहूर।

सुप्रसू—वि० स्त्री० [सं०] (मादा प्राणी) जो सहज में अर्थात् बिना विशेष कष्ट के प्रसव करे।

सुप्रिय—वि० [सं०] अत्यन्त प्रिय। बहुत प्यारा।

सुप्रिया—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का सम-वृत्त वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण और एक सगण रहता है। यह चौपाई का ही एक

रूप है। यथा—कहुँ द्विज गन मिलि सुख स्रुति पढ़हीं।—केशव। (कुछ लोग इसे 'सुचिरा' भी कहते हैं।)

सुफरा—पुं०[देश०] चौकी या मेज पर बिछाने का कपड़ा।

सुफल—वि०[सं०]१. सुन्दर फलवाला। २. जिसका या जिसके फल अच्छे और सुन्दर हों। २. कृतकार्य। सफल।

पुं०[सं०]१. वृक्ष का अच्छा और सुन्दर फल। २. किसी काम या बात का अच्छा परिणाम या फल।

मुहा०—**सुफल बोलना**=धार्मिक कृत्य, श्राद्ध आदि के उपरान्त अन्तिम दक्षिणा लेकर पंडे, पुरोहित आदि का यजमान से कहना कि तुम्हें इस कार्य का सुफल मिलेगा।

३. अनार। ४. बादाम। ५. बेर। ६. कैथ। ७. मूँग। ८. बिजौरा नींबू।

सुफलक—पुं०[सं०] अक्रूर के पिता का नाम।

सुफला—वि० स्त्री० [सं०] १. यथेष्ट या सुन्दर फल अथवा फलों से युक्त। २. तेज धारवाली (कटार, छुरी या तलवार)।

स्त्री० १. इन्द्रायण। इन्द्रवारुणी। २. कुम्हड़ा। ३. केला। ४. मुनक्का। ५. काश्मरी। गंभारी।

सुफुल्ल—वि०[सं०]१. सुन्दर फूलोंवाला। २. अच्छी तरह फूला हुआ (पेड़ या पौधा)।

सुफेद—वि०[भाव० सुफेदी]=सफेद।

सुफेन—पुं०[सं०] समुद्र-फेन।

सुफेर—पुं०[सं० सु+हिं० फेर]१. शुभ या लाभदायक अवसर या स्थिति। २. अच्छी दशा या अच्छे दिन। 'कुफेर' का विपर्याय।

सुबंत—वि०[सं०] (व्याकरण में शब्द) जो सुप् विभक्तियों से (अर्थात् प्रथमा से सप्तमी तक की किसी विभक्ति से) युक्त हो।

सुबंध—वि० [सं०] अच्छी तरह बँधा हुआ।

पुं० तिल।

सुबंधु—वि०[सं०] जिसके अच्छे बंधु या मित्र हों।

सुबड़ा—पुं०[देश०] ऐसी चाँदी जिसमें ताँबा या और कोई धातु मिली हुई हो।

सुबरन†—पुं०१.=स्वर्ण (सोना)। २.=सुवर्ण।

सुबरनी†—स्त्री०[सं० सुवर्ण] छड़ी।

सुबल—वि०[सं०] [स्त्री० सुबला] बली। शक्तिशाली।

पुं०१. शिवजी का एक नाम। २. वैनतेय का वंशज एक पक्षी। ३. पुराणानुसार भौत्य मनु का एक पुत्र। ४. धृतराष्ट्र के ससुर गंधार नरेश।

सुबस*—वि०[हिं० सु+बसना] अच्छी तरह बसा हुआ।

वि०[सं० स्ववश] स्वतन्त्र। स्वाधीन।

अव्य०१. स्वतन्त्रतापूर्वक। २. अपनी इच्छा से।

सुबह—स्त्री०[अ०]१. दिन के निकलने का समय। सवेरा।

मुहा०—**सुबह-शाम करना**=(क) किसी प्रकार जीवन के दिन बिताना। (ख) बार बार यह कहकर टालना कि आज संध्या को अमुक काम कर देंगे, कल सबेरे कर देंगे। टाल-मटोल करना।

२. व्यापक अर्थ में मध्याह्न से पहले तक का समय। जैसे—कालेज आजकल सुबह का है। ४. आरंभिक अंश। जैसे—जिंदगी की सुबह।

सुबह-दम—अव्य० [अ० सुबह+फा० दम] बहुत सबेरे। तड़के।

सुबहान—पुं०[अ०] ईश्वर को पवित्र भाव से स्मरण करना। लोक में 'सुभान' के रूप में प्रचलित।

सुबहान अल्ला—अव्य० [अ०] जिसका अर्थ है—मैं ईश्वर को पवित्र हृदय से स्मरण करता हूँ; और जिसका प्रयोग प्रसंशात्मक रूप में विशेष आश्चर्य या हर्ष प्रकट करने के लिए होता है।

सुबहानी—वि०[अ०] ईश्वरीय।

सुबही—वि०[अ० सुबह+ही (प्रत्य०)] सुबह का। जैसे—सुबही तारा।

सुबाल—वि०[सं०]१. जो अभी बिलकुल बच्चा (अर्थात् अबोध या नादान) हो। २. बच्चों का सा। बचकाना।

पुं० १. अच्छा बालक। अच्छा लड़का। २. एक देवता का नाम। ३. एक उपनिषद्।

सुबास—पुं०[सं० सु+वास] एक प्रकार का अगहनी धान।

स्त्री०=सुवास (सुगंध)।

सुबासना—स्त्री०[सं० सु+वास] अच्छी महक। सुगंध। खुशबू।

स० सुवास या सुगन्ध से युक्त करना। सुगंधित करना। महकाना।

सुबासिक†—वि०=सुवासित।

सुबासित†—वि०=सुवासित।

सुबाहु—वि०[सं०]१. सुन्दर बाहोंवाला। २. सशक्त भुजाओंवाला। ३. वीर। बहादुर।

पुं०१. एक बोधिसत्व। २. नागासुर। ३. कार्तिकेय का एक अनुचर। ४. शत्रुघ्न का एक पुत्र। ५. पुराणानुसार श्रीकृष्ण का एक पुत्र। ६. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ७. एक राक्षस, जो मारीच का भाई था और अगस्त मुनि के शाप से राक्षस हो गया था।

स्त्री० सेना।

सुबिस्ता†—पुं०=सुभीता।

सुबीज—वि० [सं०] अच्छे बीजोंवाला।

पुं० १. अच्छा और बढ़िया बीज। २. शिव। महादेव। ३. पोस्ते का दाना। खसखस।

सुबीता†—पुं०=सुभीता।

सुबुक—वि० [फा०] १. कम भारवाला। हलका। जैसे—सुबुक गहने। २. जो अधिक गहरा या तेज न हो। जैसे—सुबुक रंग। ३. जिसमें ज्यादा जोर न लगे या न लगाया जाय। जैसे—सुबुक हाथ से लिखना।

पुं० एक प्रकार का घोड़ा।

सुबुक-दोश—वि० [फा०] [भाव० सुबुक-दोशी] जिसके कन्धों पर से उत्तरदायित्व या कोई और भार उतर गया हो।

सुबुकी—स्त्री०[फा०]१. सुबुक होने की अवस्था या भाव। हलकापन। २. लोक में होनेवाली कुछ या सामान्य अप्रतिष्ठा। हेठी।

सुबुद्धि—वि०[सं०] उत्तम बुद्धिवाला। बुद्धिमान्।

स्त्री० अच्छी या उत्तम बुद्धि।

सुबुध—वि०[सं०]१. बुद्धिमान्। धीमान्। २. सतर्क। सावधान।

स्त्री०=सुबुद्धि।

सुबू—पुं०[फा०] मिट्टी का घड़ा।

स्त्री०=सुबह (सबेरा)।

सूबूत†—वि०=साबुत।

†पुं०=सबूत (प्रमाण)।

सुबोध—वि०[सं०] (बात या विषय) जो सहज में समझ में आ जाय। सरल और बोधगम्य। जैसे—सुबोध व्याख्यान।

पुं० अच्छा बोध या ज्ञान।

सुब्रह्मण्य—वि०[सं०] ब्रह्मण्य के सब गुणों से युक्त।

पुं० १. शिव। २. विष्णु। ३. कार्तिकेय। ४. यज्ञों में उद्गाता पुरोहित या उसके तीन सहकारियों में से एक। ५. कन्नड़ प्रदेश का एक प्राचीन प्रदेश जो पवित्र तीर्थ माना जाता था।

सुब्रह्म वासुदेव—पुं०[सं०] श्रीकृष्ण।

सुभंग—पुं०[सं०] नारियल का पेड़।

सुभ†—वि०=शुभ।

सुभक्ष्य—वि०[सं०] भक्षण के योग्य।

पुं० अच्छा और बढ़िया भोजन।

सुभग—वि०[सं०] [स्त्री० सुभगा, भाव० सुभगता] १. जिसका भाग्य अच्छा हो। भाग्यवान्। फलतः समृद्ध और सुखी। २. सुन्दर। ३. प्रिय। ४. सुखद।

पुं० १. सौभाग्य। २. सौभाग्य का सूचक कर्म। (जैन) ३. शिव। ४. चंपा। ५. अशोक वृक्ष। ५. पत्थरफूल। ७. गंधक।

सुभगता—स्त्री०[सं०] १. सुभग होने की अवस्था, गुण या भाव। २. सौभाग्य का सूचक लक्षण। ३. प्रेम। स्नेह। ४. स्त्री के द्वारा प्राप्त होनेवाला सुख।

सुभगा—स्त्री०[सं०] १. सौभाग्यवती स्त्री। सधवा। २. ऐसी स्त्री जो अपने पति को प्रिय हो। प्रियतमा पत्नी। ३. कार्तिकेय की एक अनुचरी। ४. पाँच वर्ष की बालिका। ५. संगीत में एक प्रकार की रागिनी। ६. तुलसी। ७. हलदी। ८. नीली दूब। ९. केवटी मोथा। १०. कस्तूरी। ११. प्रियंगु। १२. सोन केला। १३. बेला।

वि०[सं०] 'सुभग' का स्त्री०।

सुभगानन्द—पुं०[सं०] तांत्रिकों के एक भैरव।

सुभग्ग†—वि०=सुभग।

सुभट—पुं०[सं०] [भाव० सुभटता] बहुत बड़ा योद्धा या वीर।

सुभटवंत—पुं०=सुभट।

सुभट्ट—पुं०[सं०] बहुत बड़ा पण्डित। दिग्गज विद्वान्।

सुभड़†—पुं०=सुभट।

सुभद*—वि०=शुभद (शुभकारक)।

सुभद्र—पुं० [सं०] १. विष्णु। २. सनत्कुमार। ३. पुराणानुसार प्लक्ष द्वीप का एक वर्ष या भू-भाग। ४. भैरवी के गर्भ से उत्पन्न वसुदेव का एक पुत्र। ५. सौभाग्य। ६. मंगल। कल्याण।

वि० १. अत्यन्त भाग्यवान्। २. भला।

सुभद्रक—पुं०[सं०] १. देवरथ। २. बेल का पेड़ या दल।

सुभद्रा—स्त्री०[सं०] १. श्रीकृष्ण और बलराम की बहन तथा अभिमन्यु की माता जो अर्जुन को ब्याही थी। २. दुर्गा की एक मूर्ति या रूप। ३. कुछ आचार्यों के मत से संगीत में एक श्रुति। ५. बालि की पुत्री जो अवीक्षित को ब्याही थी। ५. एक प्राचीन नदी। ६. अनन्तमूल। ७. काश्मरी। गंभारी। ८. मकड़ा नाम की घास।

सुभद्राणी—स्त्री०[सं०] त्रायमाण लता। त्रायंती।

सुभद्रिका—स्त्री०[सं०] १. श्री कृष्ण की छोटी बहन। २. एक प्रकार का छन्द या वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में न, न, र, ल और ग होता है।

सुभद्रेश—पुं०[सं०] सुभद्रा के पति, अर्जुन।

सुभना*—अ०[सं० सुशोभन] सुशोभित होना। सुन्दर जान पड़ना।

सुभर†—वि०=शुभ्र।

†पुं०=सुभट।

सुभव—वि०[सं०] जिसका उद्‌भव या जन्म अच्छे रूप से हुआ हो।

पुं० साठ संवत्सरों में से अंतिम संवत्सर।

सुभांजन—पुं०=शोभांजन (सहिजन)।

सुभा†—स्त्री०=शोभा।

†स्त्री०=सुबह।

सुभाइ*—पुं०=स्वभाव।

अव्य०=सुभाएँ।

सुभाउ* —पुं०=स्वभाव।

सुभाएँ —अव्य० [सं० स्वभावतः] स्वभाव से ही। स्वभावतः।

अव्य० [सं० सद्-भावतः] अच्छे भाव या विचार से। सहज भाव से।

सुभाग—वि०[सं०] भाग्यवान्। खुशकिस्मत।

†पुं०=सौभाग्य।

सुभागी—वि०[सं० सुभाग] भाग्यवान्। भाग्यशाली। खुशकिस्मत।

वि०[हिं० सुभाग] [स्त्री० सुभागिनी] भाग्यवान्। सौभाग्यशाली।

सुभाग्य—वि०[सं०] अत्यन्त भाग्यशाली। बहुत बड़ा भाग्यवान्।

पुं०=सौभाग्य।

सुभान—पुं० दे० 'सुबहान'।

सुभान-अल्ला—अव्य० दे० 'सुबहान-अल्ला'।

सुभाना* —अ०[हिं० शोभना] १. शोभित होना। देखने में भला जान पड़ना। २. फबना।

सुभानु—पुं० [सं०] १. चतुर्थ हुतास नामक युग के दूसरे वर्ष का नाम। २. कृष्ण का एक पुत्र।

वि० बहुत अधिक प्रकाशमान्।

सुभाय†—पुं०=स्वभाव।

सुभायक*—वि० [सं० स्वाभाविक] जो स्वभाव से ही होता हो।

सुभाव†—पुं०=स्वभाव।

सुभावित—भू० कृ०[सं०] १. अच्छी तरह सोचा-विचारा हुआ। २. (औषध) जिसकी अच्छी तरह भावना की गई हो। अच्छी तरह तैयार किया हुआ।

सुभाषण—पुं०[सं०] [भू० कृ० सुभाषित] सुन्दर भाषण।

सुभाषिणी—वि०[सं०] सं० 'सुभाषी' का स्त्री०।

स्त्री० संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सुभाषित—भू० कृ० [सं०] अच्छे ढंग से कहा हुआ (कथन आदि)।

पुं० १. वह उक्ति या कथन जो बहुत अच्छा या सुन्दर हो। सूक्ति। २. कोई ऐसी विलक्षण और सुन्दर बात जिससे हास्य भी उत्पन्न हो। चोज। (विट) ३. एक बुद्ध का नाम।

सुभाषी (षिन्)—वि० [सं०] १. अच्छी तरह से बोलनेवाला। २. प्रिय और मधुर बातें करनेवाला।

सुभास—वि०[सं०] बहुत प्रकाशमान्। खूब चमकीला।

सुभास्वर—वि०[सं०] खूब चमकनेवाला। दीप्तिमान्।

पुं० पितरों का एक गण या वर्ग।

सुभिक्ष—पुं०[सं०]१. मूलतः ऐसा समय जब भिक्षुकों को सहज में यथेष्ट भिक्षा मिलती हो। २. फलतः ऐसा काल या समय जब देश में अन्न पर्याप्त हो और सब लोगों को सहज में यथेष्ट मात्रा में मिलता हो। सुकाल। 'दुर्भिक्ष' का विपर्याय। ३. अन्न की प्रचुरता।

सुभी—वि० स्त्री०[सं०] शुभकारक। मंगलकारक।

सुभीता—पुं०[सं० सुविधा]१. ऐसी स्थिति जो किसी व्यक्ति या बात के लिए अनुकूल हो और जिसमें कठिनाइयाँ, बाधाएँ आदि अपेक्षया कम हों या कुछ भी न हों। अच्छा अनुकूल और उपयुक्त अवसर या परिस्थिति। २. आराम। सुख।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

सुभुज—वि०[सं०] सुन्दर भुजाओंवाला। सुबाहु।

सुभूता—स्त्री०[सं०] उतर दिशा जिसमें प्राणी भली प्रकार स्थित होते हैं। (छांदोग्य)

सुभूति—स्त्री०[सं०]१. कुशल। क्षेम। मंगल। २. उन्नति। तरक्की।

सुभूम —पुं०[सं०] कार्तवीर्य जो जैनियों के आठवें चक्रवर्ती थे।

सुभूमिक—पुं०[सं०] एक प्राचीन जनपद जो सरस्वती नदी के किनारे था। (महाभारत)

सुभूषण—वि०[सं०] सुन्दर आभूषणों से अलंकृत। अच्छे अलंकार धारण करनेवाला।

सुभूषित—भू० कृ०[सं०] अच्छी तरह भूषित किया हुआ। भली भाँति अलंकृत।

सुभृष—वि० [सं०] बहुत अधिक। अत्यन्त।

सुभोग्य—वि०[सं०] अच्छी तरह भोगे जाने के योग्य।

सुभौटी*—स्त्री० [सं० शोभा+हिं० टी (प्रत्य०)] शोभा।

सुभौम—पुं०[सं०] एक चक्रवर्ती राजा जो कार्तवीर्य के पुत्र थे।(जैन)

सुभ्र—पुं०[?] जमीन में का बिल। (डिं०)

†वि०=शुभ्र।

सुभ्रू—वि० [सं०] सुन्दर भौंहोंवाला।

स्त्री०१. नारी। स्त्री। औरत। २. कार्तिकेय की एक मातृका।

सुमंगल —वि०[सं०]१. अत्यन्त शुभ। कल्याणकारी। २. सदाचारी।

पुं० एक प्रकार का विष।

सुमंगला—स्त्री०[सं०]१. कार्तिकेय की एक मातृका। २. एक प्राचीन नदी। ३. मकड़ा नामक घास।

सुमंगली—स्त्री०[सं० सुमंगला] १. विवाह के समय सप्तपदी पूजा करने के उपलक्ष्य में पुरोहित को दी जानेवाली दक्षिणा। २. नव-विवाहिता स्त्री। वधू।

सुमंगा—स्त्री०[सं०] एक पौराणिक नदी।

सुमंत*—पुं०=सुमंत्र।

सुमंत्र—पुं०[सं०]१. राजा दशरथ के मंत्री और सारथि का नाम। २. प्राचीन भारत में राज्य के आय-व्यय की व्यवस्था करनेवाला मंत्री। अर्थमंत्री।

सुमंत्रित—भू० कृ०[सं०]१. जिसे अच्छी सलाह मिली या दी गई हो। जो विचार-विमर्श के उपरान्त प्रस्तुत किया गया हो। जैसे—सुमंत्रित योजना।

सुमंथन —पुं०[सु+मंथ=पर्वत] मंदर पर्वत।

सुमंदर†—पुं०=समुद्र।

सुमंदा—स्त्री०[सं०] एक प्रकार की दिव्य शक्ति।

सुमंद्र—पुं०[सं०] एक प्रकार का छन्द या वृत्त।

सुम—पुं०[सं०]१. पुष्प। फूल। २. चन्द्रमा। ३. आकाश।

पुं०[देश०] एक प्रकार का पेड़ जो असाम में होता है और जिस पर 'मूगा' (रेशम) के कीड़े पाले जाते हैं।

पुं०[फा०] चौपायों का खुर। टाप।

सुमख—पुं०[सं०] आनन्दोत्सव।

सुम-खारा—पुं०[फा० सुम+खार] ऐसा घोड़ा जिसकी एक (आँख की) पुतली बेकार हो गई हो।

सुमत†—वि०=सुमति।

सुमर्तिजय—पुं०[सं०] विष्णु।

सुमति—वि०[सं०] सुन्दर मति (बुद्धि या विचार) वाला। २. बुद्धिमान्। होशियार।

स्त्री०१. अच्छी मति या बुद्धि। २. लोगों में आपस में होनेवाला मेल-जोल और सद्भाव। उदा०—जहाँ सुमति तहँ संपति नाना।—तुलसी। ३. राजा सगर पत्नी जिससे ६० हजार पुत्र उत्पन्न हुए थे। (पुराण) ४. मैना पक्षी।

पुं०१. वर्तमान अवसर्पिणी के पाँचवें अर्हत। (जैन) २. भरत का एक पुत्र। ३. जनमेजय का एक पुत्र।

सुमद—वि०[सं०] मदोन्मत्त। मतवाला।

सुमदन—पुं० [सं०] आम का पेड़ और फल।

सुमदना—स्त्री०[सं०] एक पौराणिक नदी।

सुमधुर—वि०[सं०] बहुत अधिक मधुर या मीठा।

पुं० जीव शाक।

सुमध्य—वि०[सं०] [स्त्री० सुमध्या] १. जिसका मध्य भाग सुंदर हो। २. पतली कमरवाला।

सुमध्यमा—वि० स्त्री०[सं०] सुन्दर कमरवाली (स्त्री)।

सुमन—वि० [सं० सुमनस्] १. अच्छे मन या हृदय वाला। सहृदय। २. मनोहर। सुन्दर।

पुं० १. देवता। २. पण्डित। विद्वान्। ३. पुष्प। फूल। ४. पुराणानुसार प्लक्ष द्वीप का एक पर्वत। ५. मित्र और सहायक। (डिं०) ६. गेहूँ। ७. धतूरा। ८. नीम। ९. घृतकरंज।

सुमन-चाप—पुं० [सं०] कामदेव जिसका धनुष फूलों का माना गया है।

सुमनस (नस्)—वि०[सं०]१. अच्छे हृदयवाला। सहृदय। २. सदा प्रसन्न रहनेवाला।

पुं०१. देवता। २. फूल।

सुमन-प्रध्वज—पुं०[सं० सुमनस्+ध्वज]कामदेव।

सुमनस्क—वि०[सं०]१. प्रसन्न। खुश। २. सुखी।

सुमना—स्त्री० [सं०] १. चमेली। २. सेवती। ३. कबरी गाय। ४. दशरथ की पत्नी कैकेयी का वास्तविक नाम।

सुमनायन—पुं०[सं०] एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि।

सुमनित—भू० कृ०[सं० सुमणि+त (प्रत्य०)] सुन्दर मणियों से युक्त किया हुआ। उत्तम मणियों से जड़ा हुआ।

वि०[सं० सुमन से] फूलों से युक्त।

सुमनोत्तरा—स्त्री०[सं०] राजाओं के अन्तःपुर में रहनेवाली स्त्री।

सुमनौकस—पुं०[सं०] देवलोक। स्वर्ग।

सुमन्यु—वि०[सं०] अत्यन्त क्रोधी। बहुत गुस्सेवर।

सुम-फटा—पुं० [फा० सुम+हिं० फटना]घोड़ों का एक प्रकार का रोग जो उनके खुर के ऊपरी भाग से तलवे तक होता है।

सुमर—पुं०[सं०] १. वायु। हवा। २. स्वाभाविक रूप से होनेवाली मृत्यु।

सुमरन†—पुं०=स्मरण।

†स्त्री०=सुमरनी।

सुमरना†—स०=सुमिरना।

सुमरनी—स्त्री०=सुमिरनी।

सुमरा—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की मछली जो नदियों और विशेष कर गरम झरनों में पाई जाती है।

सुमरीचिका—स्त्री०[सं०] पाँच बाह्य तुष्टियों में से एक। (सांख्य)

सुमर्मग—वि०[सं०] (तीर या वाण) जो मर्मस्थान के अन्दर तक घुस जाता हो।

सुमल्लिक—पुं०[सं०] एक प्राचीन जनपद।

सुम-सायक—पुं०[सं० सुमन+सायक] कामदेव। (डिं०)

सुम-सुखड़ा—वि०[फा० सुम+हिं० सूखना] (घोड़ा) जिसके खुर सूख कर सिकुड़ गये हों।

पुं० घोड़ों का एक रोग जिसमें उनके सुम या खुर सूखने लगते हैं।

सुमात्रा—पुं० मलय द्वीप-पुंज का एक प्रसिद्ध बड़ा द्वीप जो बोर्नियो के पश्चिम और जावा के उत्तर-पश्चिम में है।

सुमानस—वि०[सं०] अच्छे मनवाला। सहृदय।

सुमनिका—स्त्री०] एक प्रकार का छन्द या वृत्त।

सुमानी (निन्)—वि०[सं०] १. बहुत बड़ा अभिमानी। २. प्रतिष्ठित। सम्मानित। उदा०—ये हमारे मार्ग के तारे सुमानी।—मैथिलीशरण।

सुमान्य—वि०[सं०] विशेष रूप से मान्य और प्रतिष्ठित।

पुं० १. आज-कल कलकत्ते, बम्बई आदि बड़े नगरों में एक विशिष्ट अवैतनिक सम्मानित राजपद, जिस पर नियुक्त होनेवाले व्यक्ति को शान्ति, रक्षा और न्याय संबंधी कुछ अधिकार प्राप्त होते हैं। २. इस पद पर नियुक्त होनेवाला व्यक्ति। (शेरिफ़)

सुमाय—वि०[सं०]१. माया से युक्त। २. बहुत बुद्धिमान्।

सुमार—स्त्री०[हिं० सु+मारना] अच्छी तरह पड़नेवाली मार। गहरी मार। उदा०—'हूठ्यौ दै इठलाय हम करै गँवारि सुमार।—विहारी।

पुं०=शुमार (गिनती)।

सुमार्ग—पुं०[सं०] उत्तम और श्रेयस्कर रास्ता।

सुमार्गी—वि०[सं०] अच्छे मार्ग पर चलनेवाला।

सुमाल—पुं०[सं०] एक प्राचीन जनपद। (महाभारत)

सुमालिनी—स्त्री०[सं०] एक प्रकार का वर्णवृत्त।

सुमाली (लिन्)—पुं० [सं०] एक राक्षस जो सुकेश का पुत्र था। २. राम की सेना का एक वानर।

पुं० [फा० शुमाल] एक अरब जाति जो अफ्रीका के उत्तर-पूर्वी सिरे पर और अदन की खाड़ी के दक्षिणी भाग में रहती है।

सुमाल्यक—पुं०[सं०] एक पौराणिक पर्वत।

सुमावलि—स्त्री०[सं०]१. फूलों की अवली या कतार। २. फूलों की माला।

सुमित्र—पुं०[सं०]१. पुराणानुसार श्रीकृष्ण का एक पुत्र। २. अभिमन्यु का सारथि। ३. मगध का एक राजा जो अर्हत सुव्रत का पिता था। ४. इक्ष्वाकु वंश के अंतिम राजा सुरथ के पुत्र का नाम।

सुमित्रभू—पुं०[सं०] १. जैनियों के चक्रवर्ती राजा सगर का नाम। २. वर्तमान अवसर्पिणी के वीसवें अर्हत का नाम।

सुमित्रा—स्त्री० [सं०]१. राजा दशरथ की एक पत्नी जो लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता। २. मार्कण्डेय ऋषि की माता का नाम।

सुमित्रा-नंदन—पुं०[सं०] रानी सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण और शत्रुघ्न।

सुमित्र्य—वि० [सं०] उत्तम मित्रोंवाला। जिसके अच्छे मित्र हों।

सुमिरण†—पुं०१.=स्मरण। २.=सुमरन।

सुमिरना*—स० [सं० स्मरण] १. स्मरण करना। चिंतन करना। ध्यान करना। २. सुमिरनी फेरते हुए देवता आदि का बार बार नाम लेते रहना।

सुमिरनी—स्त्री०[हिं० सुमरना+ई (प्रत्य०)] १. नाम जपने की छोटी माला जो सत्ताइस दानों की होती है। २. हाथ में पहनने का एक प्रकार का दानेदार गहना।

सुमिराना†—स०[हिं० सुमिरना] किसी को सुमिरने में प्रवृत्त करना।

सुमिरिनिया†—स्त्री०=सुमिरनी।

सु-मिल—वि०[सं० सु+हिं० मिलना]१. किसी के साथ सहज में मिल जानेवाला। २. सहज में हेल-मेल बढ़ानेवाला। मिलनसार। ३. मेल-जोल या स्नेह का संबंध रखनेवाला। ४. अनुकूल रहकर ठीक तरह से साथ देनेवाला। उदा०—सरस सुमिल चित तुरंग कीकरि करि अमित उठान।—विहारी।

सुमुख—वि०[सं०] [स्त्री० सुमुखी]१. सुन्दर मुखवाला। २. मनोहर। सुन्दर। ३. प्रसन्न। ४. अनुकूल। ५. अत्यन्त नुकीला (तीर)। पुं०१. शिव। २. गणेश। ३. पण्डित। विद्वान्। ४. गरुड़ का एक पुत्र। ५. द्रोण का पुत्र। ६. एक प्रकार का जलपक्षी। ७. एक प्रकार का साग। ८. तुलसी। ९. राई।

सुमुखा—स्त्री०[सं०] सुन्दरी स्त्री।

वि० स्त्री० जिसका प्रवेश-द्वार अच्छा हो।

सुमुखी—स्त्री०[सं० सुमुख—ङीष्]१. सुन्दर मुखवाली स्त्री। २. दर्पण। ३. संगीत में एक प्रकार की मूर्च्छना। ४. सवैया छंद का तीसरा भेद जिसके प्रत्येक चरण में सात जगण और तब लघु और गुरु वर्ण होता है। मदिरा सवैया के आदि में लघु वर्ण जोड़ने से यह छंद बनता है। इसमें ११ और १२ वर्णों पर यति होती है। ५. नीली अपराजिता। नीली कोयल। ६. शंखपुष्पी। शंखाहुलि।

सुमूर्ति—पुं०[सं०] शिव का एक गण।

सुमूल—वि०[सं०]१. (वृक्ष) जिसकी जड़ें अच्छी हों। दीर्घ तथा पुष्ट जड़ोंवाला। २. उत्तम आधार वाला। ३. जिसका मूल अर्थात् आरम्भ अच्छा हो।

पुं०१. उत्तममूल। २. सफेद सहिंजन।

सुमूलक—पुं०[सं०] गाजर।

सुमूला—स्त्री०[सं०]१. सरिवन। शालपर्णी। २. पिठवन।

सुमृग—पुं०[सं०]१. श्रेष्ठ जानवर। २. वन या वनस्थली जिसमें बहुत से जंगली जानवर रहते हों। ३. वह स्थान जहाँ शिकार के लिए जंगली जानवर मिलते हों।

सुमृति†—स्त्री०=स्मृति।

सुमेखल—पुं०[सं०] मूँज। मुंजतृण।

सुमेड़ी—स्त्री०[?] खाट बुनने का बाध।

सुमेघ—पुं०[सं०] रामायण के अनुसार एक पर्वत।

सुमेध—वि०=सुमेधा।

सुमेधा (धस्)—वि०[सं०] जिसकी मेधा-शक्ति अर्थात् बुद्धि बहुत अच्छी हो। मेधावी।

पुं०१. चाक्षुष मन्वन्तर के एक ऋषि। २. पाँचवें मन्वन्तर के विशिष्ट देवता। ३. पितरों का एक गण या वर्ग।

स्त्री० मालकंगनी।

सुमेध्य—वि०[सं०] अत्यन्त पवित्र। बहुत पवित्र।

सुमेर—पुं०[सं० सुमेरु] १. गंगाजल रखने का बड़ा पात्र। २. दे० 'सुमेरु'।

सुमेरु—पुं०[सं०]१. एक कल्पित पर्वत जो पुराणों में सब पर्वतों का राजा और सोने का कहा गया है। कहते हैं कि अस्त होने पर सूर्य इसी की ओट में हो जाता है। २. जप करने की माला में सबके ऊपर वाला अपेक्षाकृत् कुछ बड़ा दाना। ३. उत्तरी ध्रुव। (नार्थ पोल) ४. दक्षिणी इराक का पुराना नाम। ५. पिंगल में एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में १९ मात्राएँ होती हैं। अंत में यगण होता है, १२ मात्राओं पर यति होती है, तथा पहली आठवीं और पन्द्रहवीं मात्राओं का लघु होना आवश्यक होता है। ६. शिव।

वि० १. सबसे अच्छा। सर्वश्रेष्ठ। २. बहुत अधिक ऊँचा। ३. बहुत सुन्दर।

सुमेरुजा—स्त्री०[सं०] सुमेरु पर्वत से निकली हुई नदी।

सुमेरु-ज्योति—स्त्री०[सं०] सुमेरु अर्थात् उत्तरी ध्रुव के आस-पास के क्षेत्रों में कभी-कभी रात के समय दिखाई पड़नेवाली एक विशेष ज्योति या विद्युत् का प्रकाश। 'कुमेरु ज्योति' का विपर्याय। (आरोरा बोरियालिस)

सुमेरु-वृत्त—पुं०[सं०] वह रेखा जो उत्तर ध्रुव से २३॥ अक्षांश पर स्थित है।

सुमेरु-समुद्र—पुं०[सं०] उत्तर महासागर का एक नाम।

सुम्मा—पुं०[स्त्री० सुम्मी] दे० 'सुंबा'।

†पुं०[देश०] बकरा।

सुम्ह—पुं०[सं० सुम्म] एक प्राचीन जाति।

†पुं०=सुम (खुर)।

सुम्हार—पुं० [?] एक प्रकार का धान।

सुयं*—अव्य०=स्वयं।

सुयंत्रित—वि०[सं०]१. अच्छी तरह शासित। २. स्व-नियंत्रित। ३. अच्छे यंत्रों से युक्त।

सुयंबर†—पुं०=स्वयंवर।

सुयज्ञ—वि० [सं०] उत्तमता या सफलता से यज्ञ करनेवाला। जिसने उत्तमता से यज्ञ किया हो।

पुं०१. उत्तम यज्ञ। २. वसिष्ठ का एक पुत्र। ३. ध्रुव का एक पुत्र। ४. रुचि नामक प्रजापति का एक पुत्र।

सुयत—वि०[सं०]०१. उत्तम रूप से संयत। सुसंयत। २. जितेन्द्रिय।

सुयम—पुं०[सं०] देवताओं का एक गण जिसका जन्म सुयज्ञ की पत्नी दक्षिणा के गर्भ से कहा गया है। (पुराण)

सुयश—पुं०[सं०] अच्छा यश। अच्छी कीर्ति। सुख्याति। सुकीर्ति।

वि० जिसे अच्छा या यथेष्ट यश प्राप्त हुआ हो।

सुयशा—स्त्री० [सं०]१. राजा दिवोदास की पत्नी का नाम। २. राजा परीक्षित की एक पत्नी। ३. अवसर्पिणी।

सुयाम—पुं० [सं०] ललित विस्तर के अनुसार एक देवपुत्र।

सुयामुन—पुं०[सं०]१. विष्णु। २. एक प्रकार का मेघ। ३. एक पौराणिक पर्वत। ४. राजभवन। महल।

सुयुद्ध—पुं०[सं०] १. धर्म, नीति और न्यायपूर्वक किया जानेवाला युद्ध। २. धर्म की रक्षा के लिए किया जानेवाला युद्ध।

सुयोग—पुं० [सं०] ऐसा अवसर या समय, जो उपयुक्त तथा समयानुकूल हो।

सुयोग्य—वि०[सं०] [भाव० सुयोग्यता] जिसमें अच्छी योग्यता हो।

सुयोधन—पुं०[सं०] धृतराष्ट्र के बड़े पुत्र दुर्योधन का एक नाम।

सुरंग—वि०[सं०]१. अच्छे रंग का। २. लाल रंग का। ३. रस-पूर्ण। ४. सुन्दर। ५. सुडौल। ६. स्वच्छ। साफ।

पुं० १. नारंगी। २. रंग के विचार से घोड़ों का एक भेद। ३. शिंगरफ। ४. पतंग। बक्कम।

स्त्री०[सं० सुरंगी] [अल्पा० सुरंगिका] १. जमीन खोदकर या बारूद से उड़ाकर उसके नीचे बनाया हुआ रास्ता। बोगदा। (टनेल) २. बारूद आदि की सहायता से किला या उसकी दीवार उड़ाने के लिए उसके नीचे खोद कर बनाया हुआ गहरा और लंबा गड्ढा। ३. एक प्रकार का आधुनिक यंत्र, जिससे (क) समुद्र में शत्रुओं के जहाजों के पेंदे में छेदकर उन्हें डुबाया अथवा (ख) जिसे स्थल में शत्रुओं के रास्ते में बिछाकर उनका नाश किया जाता है। (माइन, उक्त सभी अर्थों के लिए) ४. चोरी करने के लिए दीवार में लगाई जानेवाली सेंध।

क्रि० प्र०—लगना।

मुहा०—सुरंग मारना= दीवार में सेंध लगाकर चोरी करना।

सुरंगद—पुं०[सं०]पतंग या बक्कम जिससे आल नामक बढ़िया लाल रंग निकलता हैं।

सुरंग-धातु—पुं०[सं०] गेरू मिट्टी।

सुरंग-प्रसार—पुं०[फा०+सं०] एक प्रकार का जहाज जो समुद्र के किसी भाग में शत्रु का संचार रोकने के लिए जगह-जगह सुरंगें बिछाता चलता है। (माइन लेयर)

सुरंग-बुहार—पुं०[सं० सुरंग+हिं० बुहारना] एक विशेष प्रकार का समुद्री जहाज जो समुद्र में बिछाई हुई सुरंगें हटाकर अलग करता या निकालता और दूसरे जहाजों के लिए आगे बढ़ने का रास्ता साफ करता है। (माइन स्वीपर)

सुरंग-मार्जक—पुं०=सुरंग-बुहार।

सुरंगा—स्त्री० [सं०]१. कैवर्तिका लता। २. सेंध ।

सुरंगिका—स्त्री०[सं०]१. छोटी सुरंग। २. ईंट, गारे आदि से बनी हुई वह नलाकार नाली जिसके द्वारा जल, तेल आदि तरल पदार्थ दूर तक पहुँचाये जाते हैं। (एक्वेडक्ट) ३. शरीर के अन्दर की कोई ऐसी छोटी नली या नस जिससे होकर कोई चीज इधर-उधर आती-जाती हो। जैसे—मूत्राशय की सुरंगिका जिससे होकर मूत्र जननेंद्रिय के ऊपरी भाग तक पहुँचता है। ४. मरोड़फली। मूर्वा। ५. पोई का साग। ५. सफेद मकोय।

सुरंगी—स्त्री०[सं०] १. काकनासा। कौआठोठी। २. सुलताना चंपा। पुन्नाग। ३. लाल सहिंजन। ४. आल का पेड़ वृक्ष जिससे आल नामक रंग निकलता है।

वि०[सं० सुरंग+हिं० ई (प्रत्य०)] सुन्दर रंग या रंगोंवाला।

सुरंजन—पुं० [सं०] सुपारी का पेड़।

सुरंधक—पुं०[सं०] १. एक प्राचीन जनपद। २. उक्त जन पद का निवासी :

सुर—पुं०[सं०] [भाव० सुरता, सुरत्व]१. देवता। २. सूर्य। ३. अग्नि का एक विशिष्ट रूप। ४. ऋषि या मुनि। ५. पण्डित। विद्वान्। ६. पुराणानुसार एक प्राचीन नगर जो चन्द्रभागा नदी के तट पर था।

पुं०[सं० स्वर] गले, बाजे आदि से निकलनेवाला स्वर।

मुहा०—सुर देना= किसी के गाने के समय उसे सहारा देने के लिए किसी बाजे से कोई एक स्वर निकालना (संगत करने से भिन्न)। **सुर-पूरना**= (क) फूंककर बजाये जानेवाले बाजे के बजाने के लिए उनमें मुँह से हवा भरना। उदा०—मंद मंद सुर पूरत मोहन, राग मल्लार बजावता।—सूर। (ख) दे० 'किसी के सुर में सुर मिलाना'। **(किसी के) सुर में सुर मिलाना**=किसी की हाँ में हाँ मिलाना। खुशामद करते हुए किसी का समर्थन करना। **नया सुर अलापना**=कोई विलक्षण, नई या औरों से अलग तरह की बात कहना।

सुरकंत*—पुं०[सं० सुर+कान्त] देवों के अधिपति, इन्द्र।

सुरक—स्त्री०[हिं० सुरकना]१. सुरकने की क्रिया या भाव। २. सुरकने से होनेवाला शब्द।

पुं०[सं०] भाले के आकार का तिलक जो नाक पर लगाया जाता है।

सुरकना—स०[अनु०] सुर-सुर शब्द करते हुए तथा एक-एक घूँट भरते हुए कोई तरल पदार्थ पीना। जैसे—गरम दूध सुरकना चाहिए।

सुर-करी (रिन्)—पुं०[सं०] देवताओं का हाथी। दिग्गज। सुरराज।

सुर-कली—स्त्री०[हिं०सुर+कली] संगीत में एक प्रकार की रागिनी।

सुर-कानन—पुं०[सं०] देवताओं का वन।

सुर-कारु—पुं०[सं०] देवताओं के कारीगर, विश्वकर्मा।

सुर-कार्मुक—पुं० [स०] इन्द्र-धनुष।

सुर-काष्ठ—पुं०[सं०] देवदारु (वृक्ष और उसकी लकड़ी)।

सुर-कुदाव†—पुं० [सं० सुर=स्वर+कुदाना] १. दूसरों को धोखे में डालने के लिए स्वर बदल कर बोलना। २. उक्त प्रकार से बोलने का ढंग। ३. स्वर बदल कर बोले जानेवाले शब्द।

सुर-कुनठ—पुं०[सं०] ईशानकोण में स्थित एक देश। (वृहत्संहिता)

सुर-कुल—पुं०[सं०] देवताओं का निवास-स्थान। स्वर्ग।

सुर-केतु—पुं०[सं०]१. देवताओं या इन्द्र की ध्वजा। २. इन्द्र।

सुरक्त—वि० [सं०] [भाव० सुरक्तता]१. जिसमें अच्छा रक्त हो। २. फलतः स्वस्थ और सुन्दर। ३. गहरे लाल रंग का। ४. बहुत अधिक अनुरक्त।

सुरक्तक—पुं०[सं०]१. कोशाम्र। कोसम। सोनगेरू।

सुरक्ष—पुं०[सं०] एक पौराणिक पर्वत।

वि०=सुरक्षित।

सुरक्षण—पुं० [सं०] [भू० कृ० सुरक्षित] अच्छी तरह से रक्षा करने की क्रिया या भाव। रखवाली। हिफाज़त।

सुरक्षा—स्त्री०[सं०]१. अच्छी तरह या समुचित रूप से की जानेवाली रक्षा। २. आक्रमण, आघात आदि से बचने के लिए किया जानेवाला प्रबन्ध। (सिक्योरिटी) जैसे—सुरक्षा परिषद्।

सुरक्षात्मक—वि०[सं०] १. सुरक्षा-संबंधी। २. सुरक्षा के विचार से किया जानेवाला। जैसे—सुरक्षात्मक कार्रवाई।

सुरक्षा-परिषद्—स्त्री०[सं०]संयुक्त राष्ट्र-संघ का वह अंग या शाखा, जो यथासाध्य इस बात का प्रयत्न करती है कि राष्ट्रों में परस्पर लड़ाई-झगड़े न होने पावें। (सिक्योरिटी कौंसिल)

सुरक्षित—भू० कृ०[सं०]१. जिसकी समुचित रक्षा का प्रबन्ध हो। २. जो अच्छी तरह तथा अच्छी अवस्था में रखा गया हो। जैसे—आपकी पुस्तक मेरे पास सुरक्षित है।

सुरक्षी (क्षिन्)—पुं०[सं० सुरक्षिन्] उत्तम या विश्वस्त रक्षक। अच्छा अभिभावक या रक्षक।

सुरक्ष्य—वि०[सं०]१. जिसे सुरक्षित रखना आवश्यक हो। २. जिसकी सहज में सुरक्षा की जा सकती हो।

सुर-खंडनिका—स्त्री०[सं०] एक प्रकार की वीणा जिसे सुर-मंडलिका भी कहते हैं।

सुरख—वि०[फा० सुर्ख] गहरा लाल।

सुरखा—पुं०[फा० सुर्ख]१. वह सफेद घोड़ा जिसकी दुम लाल हो। २. वह घोड़ा जिसका रंग सफेदी या भूरापन लिए काला हो। ३. मद्य। शराब।

वि०=सुर्ख (लाल)।

पुं०[?] एक प्रकार का लंबा पौधा जिसमें पत्ते बहुत कम होते हैं।

सुरखाब—पुं०[फा०] चकवा या चक्रवाक नामक पक्षी।

पद—सुरखाब का पर=विलक्षण विशेषता।

स्त्री० बलख प्रदेश की एक नदी।

सुरखिया—पुं० [फा० सुर्ख+इया (प्रत्य०)] बगले की जाति का एक प्रकार का छोटा पक्षी जो प्रायः गायों के पास रहता और इसी लिए 'गाय बगला' भी कहलाता है।

सुरखी—स्त्री०[हिं० सुरख+ई (प्रत्य०)]१. ईंटों का बनाया हुआ महीन चूरा जिसमें चूना मिलाकर जुड़ाई के लिए गारा बनाया जाता है।

स्त्री० दे० 'सुर्खी'।

सुरखुरू—वि०=सुर्खरू।

सुरगंड—पुं०[सं०] एक प्रकार का फोड़ा।

सुरग†—पुं०=स्वर्ग ।

†वि०=सुरंग (सुन्दर) ।

सुर-गज—पुं०[सं०]१. देवताओं का हाथी। २. ऐरावत।

सुर-गति—स्त्री०[सं०] दैवी गति। भावी।

सुरग-बेसाँ—स्त्री०[सं० स्वर्ग-वेश्या] अप्सरा। (डिं०)

सुर-गर्भ—पुं०[सं०] देवताओं की संतान।

सुर-गाय—स्त्री०[सं० सुर+गो] कामधेनु।

सुर-गायक—पुं०[सं०] देवों के गायक। गंधर्व ।

सुर-गिरि—पुं०[सं०] देवों के रहने का पर्वत

सुरगी—पुं०[सं० स्वर्गीय] देवता। (डिं०)

वि० स्वर्ग का रहनेवाला।

सुरगी-नदी—स्त्री० [सं० स्वर्गीय+नदी] गंगा। (डिं०)

सुर-गुरु—पुं०[सं०] देवों के गुरु, बृहस्पति।

सुर-गृह—पुं० [सं०]१. देवताओं का निवास-स्थान। २. देव-मन्दिर। देवालय।

सुर-गैया—स्त्री० [सं० सुर+गैया] कामधेनु।

सुर-ग्रामणी—पुं०[सं०] देवताओं का नेता, इन्द्र।

सुर-चाप—पुं० [सं०] इन्द्रधनुष ।

सुरच्छन†—पुं०=सुरक्षण।

सुरज (स्)—वि०[सं०] (फूल) जिसमें उत्तम या यथेष्ट पराग हो।

†पुं०=सूरज (सूर्य) ।

सुरजन—पुं०[सं०] देवताओं का वर्ग। देव-समूह ।

†वि०[हिं० सुजन] चतुर। चालाक।

†पुं०=सुजन (सज्जन)।

सुरजनपन—पुं०[हिं० सुरजन+पन (प्रत्य०)] १. सज्जनता। भलमनसत। २. चालाकी। होशियारी।

सुरजा—स्त्री०[सं०] एक पौराणिक नदी।

सुर-जेठ—पुं०[सं० सुरज्येष्ठ] ब्रह्मा। (डिं०)

सुर-ज्येष्ठ—पुं०[सं०] देवताओं में बड़े, ब्रह्मा।

सुरझन†—स्त्री०=सुलझन।

सुरझना†—अ०=सुलझना ।

सुरझाना†—स०=सुलझाना।

सुरझावना†—स०=सुलझाना।

सुर-टीप†—स्त्री०[हिं० सुर+टीप] स्वर का आलाप। सुर की तान।

सुरत—पुं० [सं०] १. रति-क्रीड़ा। काम-केलि। संभोग। मथुन। २. दे० 'सुरति'।

स्त्री०[सं० स्मृति] १. याद। स्मृति। २. ध्यान। सुध।

मुहा०—(किसी पर) सुरत धरना=किसी की ओर ध्यान देना। जैसे—पराये धन पर सुरत नहीं धरनी चाहिए। **(किसी) की सुरत बिसराना या बिसारना**=किसी को बिलकुल भूल जाना और उसे याद न करना। **(किसी ओर) सुरत लगाना**=किसी ओर ध्यान बँधना या लगना। **सुरत सँभालना**=होश संभालना। चेतन अवस्था में आना।

सुरत-ग्लानि—स्त्री० [सं० मध्य० स०] रति या संभोग के उपरान्त होनेवाली ग्लानि या ग्लानिजन्य विरक्ति।

सुरत-ताली—स्त्री०[सं०]१. नायक और नायिका के बीच की दूती। २. सिर पर पहना या बाँधा जानेवाला सेहरा।

सुरत-बंध—पुं०[सं० च० त०] संभोग का एक आसन। (कामशास्त्र)

सुर-तरंगिणी—स्त्री० [सं० ष० त०] १. गंगा। २. सरयू नदी। ३. आकाश-गंगा।

सुर-तरु—पुं० [सं० ष० त०] कल्पवृक्ष।

सुरता—स्त्री०[सं० सुर+तल्—टाप्]१. सुर अर्थात् देवता होने की अवस्था या भाव। २. वह गुण जिसके कारण देवताओं की प्रतिष्ठा मानी जाती है। देवत्व। ३. देवताओं का समूह। ४. रति-सुख।

स्त्री०[सं० स्मृति, हिं० सुरत]१. चेत। सुध। २. किसी की ओर लगा रहनेवाला ध्यान।

†वि० समझदार और सयाना। होशियार।

†पुं०[?] बाँस की वह नली जिसमें डालकर बीज बोने के लिए छिड़के जाते हैं।

सुर-तात—पुं०[सं०] १. देवताओं के पिता, कश्यप। २. देवताओं के राजा, इन्द्र।

सुरतान—स्त्री०[हिं० सुर+तान्] संगीत में सुर के आधार पर ली जानेवाली तान।

†पुं०=सुलतान।

सुरति—स्त्री०[सं०]१. पति पत्नी का वह प्रेम जो काम-वासना की तृप्ति से उत्पन्न होता है। २. मैथुन। संभोग। ३. दे० 'रति'।

†स्त्री०[सं० श्रुति]१. अपौरुषेय ज्ञान का भंडार, वेद। श्रुति। उदा०—सुरति, स्मृति दोउ को विसवास। —कबीर। २. हठयोग के अनुसार अंतःकरण में होनेवाला अन्तर्नाद। वि० दे० 'सुरति-निरति'। उदा०—सुरति समानी निरति में, निरति रही निरधार।—कबीर।

†स्त्री०१.=सुरत। २.=सूरत।

सुरति-कमल—पुं०[सं० च० त०] हठ-योग में आठ कमलों या चक्रों में से अंतिम चक्र जिसका स्थान मस्तक में सहस्रार के ऊपर माना गया है।

सुरति-गोपना—स्त्री०[सं०] साहित्य में ऐसी नायिका जो रति-क्रीड़ा करके आई हो और अपनी सखियों आदि से यह बात छिपाती हो।

सुरति-निरति—स्त्री०[सं० श्रुति+निर्ऋति] परवर्ती हठ-योगियों की परिभाषा में अन्तर्नाद सुनना और उसी में लीन हो जाना। (अर्थात् ससीम का असीम में या व्यक्त का अव्यक्त में समा जाना।)

सुरति-रव—पुं० [सं० मध्य० स०] रति-क्रीड़ा के समय होनेवाली भूषणों की ध्वनि।

सुरतिवंत—वि० [सं० सुरत+वान्] कामातुर।

सुरति-विचित्रा—स्त्री० [सं० ब० स०] साहित्य में ऐसी मध्या नायिका जिसकी रति-क्रिया विचित्र हो।

सुरती—स्त्री० [सूरत (नगर)+ई (प्रत्य०)] १. तंबाकू का पत्ता। २. उक्त पत्तों का वह चूरा, जो पान के साथ या यों ही चूना मिलाकर खाया जाता है। खैनी।

सुर-तोषक—पुं०[सं० ष० त०] कौस्तुभ मणि।

सुरत्त†—स्त्री०=सुरति।

सुरत्न—पुं०[सं० प्रा० स०] १. उत्तम या बढ़िया रत्न। २. माणिक। लाल। ३. स्वर्ण। सोना।

वि०१. उत्तम रत्नों से युक्त। २. सब में श्रेष्ठ।

सुर-त्राण—पुं०=सुर-त्राता।

सुर-त्राता—पुं०[सं० ष० त०]१. विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३. इन्द्र।

सुरथ—पुं०[सं० प्रा० स०]१. अच्छा या सुन्दर रथ। २. द्रुपद का एक पुत्र। ३. जनमेजय का एक पुत्र। ४. एक पौराणिक पर्वत। ५. कुश द्वीप का एक वर्ष या खंड।

सुरथा—स्त्री०[सं० सुरथ—टाप्] एक पौराणिक नदी।

सुरथाकार—पुं०[सं०] एक पौराणिक वर्ष या भू-खंड।

सुर-थान—पुं० [सं० सुर+स्थान] स्वर्ग। (डिं०)

सुरदार—वि०[हिं० सुर+फा० दार]१. अच्छे सुरवाला। सुरीला। जैसे—सुरदार बाजा। २. बढ़िया स्वर में गानेवाला। जैसे—सुरदार गला।

सुर-दारु—पुं०[सं० ष० त०] देवदार।

सुर-दीर्घिका—स्त्री०[सं० ष० त०] आकाश-गंगा।

सुर-दुंदुभि—स्त्री०[सं० ष० त०]१. देवताओं का नगाड़ा। २. तुलसी।

सुर-देवी—स्त्री०[सं० ष० त०] योगमाया। (दे०)

सुर-देश—पुं०[सं० ष० त०] देवताओं का देश। देव-लोक। स्वर्ग।

सुर-द्रुम—पुं०[सं० ष० त०]१. कल्प-वृक्ष। २. नरकट। नरकुल।

सुर-द्विप—पुं०[सं० ष० त०]१. देवताओं का हाथी। देवहस्ती। २. ऐरावत।

सुर-द्विष्—वि०[सं०] देवताओं से द्वेष करनेवाला।
पुं० १. राक्षस। २. राहु।

सुर-धनुष (षस्)—पुं०[सं० ष० त०] इन्द्र-धनुष।

सुर-धाम (मन्)—पुं०[सं० ष० त०] देव-लोक। स्वर्ग।
क्रि० प्र०—सिधारना।

सुर-धुनी—स्त्री०[सं० ष० त०] गंगा।

सुर-धूप—पुं०[सं० ष० त०] धूना। राल। सर्जरस।

सुर-धेनु—स्त्री०[सं० ष० त०] कामधेनु।

सुर-ध्वज—पुं० [सं० ष० त०] इन्द्र-ध्वज।

सुर-नंदा—स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदी।

सुर-नगर—पुं०[सं० ष० त०] स्वर्ग।

सुर-नदी—स्त्री०[सं०ष०त०] १. गंगा। २. आकाश-गंगा। ३. सरयू नदी।

सुर-नाथ—पुं०[सं० ष० त०] देवताओं के स्वामी, इन्द्र।

सुर-नायक—पुं०[सं० ष० त०] इन्द्र।

सुर-नारी—स्त्री०[सं० ष० त०] देवांगना। देव-वधू।

सुर-नाल—पुं०[सं०] बड़ा नरसल। देवनल।

सुर-नाह*—पुं०=सुर-नाथ (इन्द्र)।

सुर-निम्नगा—स्त्री०[सं० ष० त०] गंगा।

सुर-निर्झरिणी—स्त्री०[सं० ष० त०] आकाश-गंगा।

सुर-निलय—पुं० [सं० ष० त०] १. देवताओं के रहने का स्थान, स्वर्ग। २. सुमेरु पर्वत।

सुर-पंवरी—स्त्री०=सुरपौरी।

सुरप*—पुं०[सं० सुरपति] इन्द्र।

सुरपति—पुं०[सं० ष० त०]१. देवराज इन्द्र। २. विष्णु।

सुरपति-गुरु—पुं०[सं० ष० त०] बृहस्पति।

सुरपति-चाप—पुं० [सं० ष० त०] इन्द्र-धनुष।

सुरपतित्व—पुं०[सं० सुरपति+त्व] सुरपति होने की अवस्था, पद या भाव।

सुर-पथ—पुं०[सं० ष० त०] आकाश।

सुरपन—पुं०[सं० सुरपुन्नाग] पुन्नाग। सुलताना चंपा।

सुर-पर्ण—पुं०[सं० ष० त०] एक प्रकार का सुगंधित शाक।

सुर-पर्णिक—पुं०[सं० सुरपर्ण+कन्—टाप्, इत्व] पुन्नाग वृक्ष।

सुर-पर्णी—स्त्री०[सं०]१. पलासी। पलाशी। २. पुन्नाग।

सुर-पर्वत—पुं०[सं० ष० त०] सुमेरु।

सुर-पांसुला—स्त्री०[सं० ष० त०] अप्सरा।

सुर-पादप—पुं०[सं० ष० त०] कल्पतरु।

सुरपाल—पुं०[सं० सुर-पालक] इंन्द्र।

सुरपुन्नाग—पुं० [सं०] एक प्रकार का पुन्नाग।

सुर-पुर—पुं०[सं० ष० त०][स्त्री० सुरपुरी] देवताओं की पुरी,अमरावती।
क्रि० प्र०—सिधारना।

सुरपुर-केतु—पुं० [सं० ष० त०] इन्द्र।

सुर-पुरोधा(धस्)—पुं०[सं० ष० त०] देवताओं के पुरोहित, वृहस्पति।

सुरपौरी—स्त्री० [हिं० सुर-पौर] राज-दरबार या राजमहल की पहली ड्योढ़ी। राजद्वार।

सुर-प्रतिष्ठा—स्त्री०[सं० ष० त०] देवमूर्ति की स्थापना।

सुर-प्रिय—पुं०[सं० ष० त०] १. इन्द्र। २. बृहस्पति। ३. एक पौराणिक पर्वत। ४. अगस्त का पेड़। ५. एक प्रकार का पक्षी।
वि० जो देवताओं को प्रिय हो।

सुर-प्रिया—स्त्री०[सं० ष० त०]१. चमेली। २. सोन-केला।

सुर-फाँकताल—पुं० [हिं०सुर+फाँक=खाली+ताल]तबला और पखावज बजाने का एक प्रकार का ताल।

सुर-फाख्ता—पुं०=सुर-फाँक (ताल)।

सुर-बहार—पुं०[हिं० सुर+फा० बहार] सितार की तरह का एक प्रकार का बाजा।

सुर-बाला—स्त्री०[सं० ष० त०] देवता की स्त्री। देवांगना।

सुरबुली†—स्त्री०[सं० सुरबल्ली ?] चिरवल नाम का पौधा।

सुरबृच्छ*—पुं०=सुर-वृक्ष (कल्पतरु)।

सुर-बेल—स्त्री०[सं० सुर+वल्ली] कल्पलता।

सुर-भंग—पुं०[सं० स्वरभंग] प्रेम, आनंद और भय आदि के अतिरेक के कारण होनेवाला स्वर का विपर्यास जो साहित्य में सात्विक भावों के अन्तर्गत माना गया है।

सुर-भवन—पुं०[सं० ष० त०]१. देवताओं का निवास-स्थान। मंदिर। २. देवताओं की नगरी। अमरावती।

सुरभान—पुं०[सं० सुर+भानु]१. इन्द्र। २. सूर्य।

सुरभि—स्त्री०[सं०]१. पृथ्वी। २. गौ। ३. कामधेनु। ४. गौओं की जननी और अधिष्ठात्री देवी। ५. कार्तिकेय की एक मातृका। ६. सुगंध। खुशबू। ७. मदिरा। शराब। ८. सेवंती। ९. तुलसी। १०. सलई। ११. सप्तजटा। १२. एलुआ। १३. केवाँच। कौंछ। १४. सुगन्धित शालिधान्य। १५. रासना। १६. चन्दन।
पुं० [सं०] १. बसंत काल। २. चैत का महीना। ३. वह आग जो

यज्ञ-यूप की स्थापना के समय जलाई जाती थी। ४. सोना। स्वर्ण। ५. गन्धक। ६. जायफल। ७. कदंब। कदम। ८. चंपक। चंपा। ९. वकुल। मौलिसिरी। १०. सफेद कीकर। शमी। ११. रोहित घास। १२. धूना। राल। १३. बर्बर चन्दन।

वि० १. सुगंधित। सुवासित। २. मनोरम। सुन्दर। ३. उत्तम। श्रेष्ठ। ४. गुणवान्। गुणी। ५. सदाचारी। ६. बदन पर ठीक और चुस्त बैठनेवाला (कपड़ा)।

सुरभि-कांता—स्त्री० [सं० ब० स०] वासंती। नेवारी।

सुरभिका—स्त्री० [सं० सुरभि+कन्—टाप्–इत्व] स्वर्णकदली। सोनकेला।

सुरभि-गंध—वि० [सं० ब० स०] सुरभित। सुगंधित।

पुं० तेजपत्ता।

सुरभि-गंधा—स्त्री० [सं० ब० स०] चमेली।

सुरभित—भू० कृ० [सं०] सुरभि से युक्त किया हुआ। सुगंधित। सुवासित।

सुरभि-तनय—पुं० [सं० ष० त०] १. बैल। २. साँड़।

सुरभि-तनया—स्त्री० [सं०] गाय। गौ।

सुरभिता—स्त्री० [सं०] १. सुरभि का गुण या भाव। २. सुगंध। खुशबू।

सुरभि-त्रिफला—स्त्री० [सं० ष० त०] जायफल, सुपारी और लौंग इन तीनों का समूह। (वैद्यक)

सुरभित्वक्—स्त्री० [सं० ब० स०] बड़ी इलायची।

सुरभि-दारु—पुं० [सं० मध्य० स०] धूप सरल।

सुरभि-पत्रा—स्त्री० [सं० ब० स०] गुलाब जामुन का पेड़ और फल।

सुरभि-पुत्र—पुं० [सं० ष० त०] १. साँड़। २ बैल।

सुरभि-भक्षण—पुं० [सं०] हठ-योग की एक क्रिया जिसमें साधक खेचरी मुद्रा के द्वारा अपनी जीभ उलटकर तालू के मूल वाले छेद में लगाता और सहस्रार में स्थित चन्द्रमा से निकलनेवाला अमृत पीता है। इसे गोमांस-भक्षण भी कहते हैं।

सुरभि-मंजरी—स्त्री० [सं० ब० स०] सफेद तुलसी।

सुरभि-मान—वि० [सं० सुरभिमत्] सुगंधित। सुवासित।

पुं० अग्नि।

सुरभि-मास—पुं० [सं० मध्य० स०] वसंत (ऋतु)।

सुरभि-मुख—पुं० [सं० ब० स०] वसंत ऋतु का प्रारम्भिक काल।

सुरभि-वल्कल—पुं० [सं० ब० स०] दालचीनी।

सुरभि-वाण—पुं० [सं० ब० स०] कामदेव।

सुरभि-शाक—पुं० [सं० मध्य० स०] एक प्रकार का सुगंधित साग।

सुर-भिषक्—पुं० [सं० ष० त०] देवताओं के वैद्य, अश्विनीकुमार।

सुरभि-समय—पुं० [सं० मध्य० स०] वसंत ऋतु, जिसमें फूलों की मधुर गंध चारों ओर फैलती है।

सुरभी—स्त्री०=सुरभि।

सुरभीपुर—पुं० [सं० ष० त०] गोलोक।

सुर-भूप—पुं० [सं० ष० त०] १. इन्द्र। २. विष्णु।

सुर-भूषण—पुं० [सं० ष० त०] देवताओं के पहनने का १००८ मोतियों का चार हाथ लंबा हार।

सुर-भूषणी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सुर-भूरुह—पुं० [सं० ष० त०] १. कल्पतरु। २. देवदार।

सुर-भोग—पुं० [सं० ष० त०] देवताओं के भोग की वस्तु, अमृत।

सुर-भौन†—पुं०=सुर-भवन (स्वर्ग)।

सुर-मंडल—पुं० [सं० ष० त०] १. देवताओं का मंडल। २. सारंगी, सितार आदि की तरह का एक प्रकार का बाजा।

सुर-मंडलिका—स्त्री०=सुर-खंडनिका।

सुर-मंत्री (त्रिन्)—पुं० [सं० ष० त०] बृहस्पति।

सुर-मंदिर—पुं० [सं० ष० त०] देव-मन्दिर। देवालय।

सुरमई—वि० [फा०] १. सुरमे के रंग का। नीला। सफेदी लिए हलका नीला या काला। जैसे—सुरमई कबूतर, सुरमई घोड़ा। २. सुरमे के रंग में रँगा हुआ।

पुं० एक प्रकार का काला रंग।

स्त्री० काले रंग की एक प्रकार की चिड़िया जिसकी गरदन नीली होती है।

सुरमई कलम—स्त्री० [फ़ा०] आँखों में सुरमा लगाने की सलाई। सुरमचू।

सुरमचू—पुं० [फा० सुरमः+चू (प्रत्य०)] आँखों में सुरमा लगाने की सलाई।

सुर-मणि—पुं० [सं० ष० त०] चिंतामणि (रत्न)।

सु-रमण्य—वि० [सं० प्रा० स०] बहुत अधिक रमणीय। बहुत सुन्दर।

सुरमा—पुं० [फ़ा० सुरमः] हलके सफेद रंग का एक प्रकार का भुरभुरा खनिज पदार्थ जिसका प्रयोग धातुओं में मिलाने तथा रासायनिक कार्यों के लिए होता है, और जिसका महीन चूर्ण आँखों की सुन्दरता बढ़ाने और उसके अनेक प्रकार के रोग दूर करने के लिए अंजन के रूप में होता है।

पुं० [?] एक प्रकार का पक्षी।

स्त्री० [?] असम देश की एक नदी।

†पुं०=शूरमा (शूर-वीर)।

सुर-मानी (निन्)—वि० [सं०] अपने आप को देवता समझनेवाला।

सुर-मृत्तिका—स्त्री० [सं० ष० त०] गोपीचंदन। सौराष्ट्र मृत्तिका।

सुर-मेदा—स्त्री० [सं०] महामेदा।

सुरमे-दानी—स्त्री० [फ़ा० सुरमः+दान (प्रत्य०)] लकड़ी या धातु का शीशीनुमा पात्र जिसमें आँखों में लगाने का सुरमा रखा जाता है।

सुरमै*—वि०, पुं०=सुरमई।

सुर-मौर—पुं० [सं० सुर+ हिं० मौर] विष्णु।

सुरम्य—वि० [सं० प्रा० स०] १. अत्यन्त मनोरम और रमणीय। २. बहुत सुन्दर।

सुरया†—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की दाँती, जो झाड़ियाँ काटने के काम आती है।

सुर-यान—पुं० [सं० ष० त०] देवताओं की सवारी का रथ।

सुर-युवती—स्त्री० [सं० ष० त०] अप्सरा।

सुर-योषित्—स्त्री० [सं० ष० त०] अप्सरा।

सुर-राई*—पुं० [सं० सुरराज] १. इन्द्र। २. विष्णु।

सुर-राज—पुं० [सं०] देवताओं के राजा, इन्द्र।

सुर-राजगुरु—पुं० [सं० ष० त०] बृहस्पति।

सुर-राजता—स्त्री०[सं०] सुर-राज होने की अवस्था, पद या भाव। इन्द्रत्व। इन्द्रपद।

सुरराज वृक्ष—पुं०[सं० ष० त०] पारिजात। परजाता।

सुरराजा (जन्)—पुं०[सं० ष० त०] इन्द्र।

सुरराय*—पुं०=सुरराज।

सुरराव*—पुं०=सुरराज।

सुर-रिपु—पुं०[सं०] १. देवताओं के शत्रु, असुर। राक्षस। २. राहु।

सुर-रुख—पुं०[सं० सुर+हिं० रुख=वृक्ष†] कल्पवृक्ष।

सुरर्षभ—पुं०[सं० सप्त० स०] १. देवताओं में श्रेष्ठ, इन्द्र। २. महादेव। शिव।

सुरर्षि—पुं०[सं० ष० त०] देवऋषि। देवर्षि।

सुर-लता—स्त्री०[ष० त०] बड़ी मालकंगनी। महाज्योतिष्मती लता।

सुर-ललना—स्त्री० [सं० ष० त०] देवबाला। देवांगना।

सुरला—स्त्री०[सं०] १. गंगा। २. एक प्राचीन नदी।

सुर-लासिका—स्त्री० [सं०]१. वंशी। बाँसुरी। २. वंशी की ध्वनि।

सुरली—स्त्री०[सं० सु+हिं० रली] सुन्दर और प्रेमपूर्ण क्रीड़ा।

सुरलोक—पुं० [सं० ष० त०] देवताओं का लोक। स्वर्ग। देवलोक।

सुर-वधू—स्त्री०[सं० ष० त०] देवता की पत्नी। देवांगना।

सुर-वर—पुं०[सं० सप्त० त०] देवताओं में श्रेष्ठ, इन्द्र।

सुर-वर्त्म (र्त्मन्)—पुं० [सं० ष० त०]१. देवों का मार्ग। आकाश। २. स्वर्ग।

सुर-वल्लभा—स्त्री०[सं०] सफेद दूब।

सुर-वल्ली—स्त्री०[सं० ष० त०] तुलसी।

सुरवस†—पुं० [देश०] जुलाहों की वह पतली, हलकी छड़ी या सरकंडा जिसका व्यवहार ताना तैयार करने में होता है।

सुरवा*—पुं०=श्रुवा।

†पुं०=शोरबा।

सुरवाड़ी—स्त्री०[हिं० सूअर+वाड़ी (प्रत्य०)] सूअरों के रहने का स्थान। सूअरबाड़ा।

सुर-वाणी—स्त्री० [सं० ष० त०] देवताओं की वाणी, संस्कृत।

सुरवाल—पुं०=सलवार।

†पुं०[?] सेहरा।

सुरवास—पुं०[सं० ष० त०] देव-स्थान। स्वर्ग।

सुर-वाहिनी—स्त्री०[सं०]१. गंगा।

सुर-विटप—पुं० [सं० ष० त०] कल्पवृक्ष।

सुर-वीथी—स्त्री०[सं० ष० त०] नक्षत्रों का मार्ग।

सुर-वीर—पुं०[सं० सप्त० त०] इन्द्र।

सुर-वृक्ष—पुं०[सं० ष० त०] कल्पतरु।

सुर-वेश्म (मन्)—पुं०[सं० ष० त०] स्वर्ग। देवलोक।

सुर-वैरी—पुं०[सं० सुरवैरिन्] देवों के शत्रु, असुर।

सुर-शत्रु—पुं०[सं० ष० त०]१. राक्षस। २. राहु।

सुर-शत्रुहन्—पुं० [सं० सुरशत्रु√हन् (मारना)+क्विप्] देवताओं के शत्रुओं का नाश करनेवाले, शिव।

सुर-शयनी—स्त्री०[सं० ष० त०] आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी। विष्णु-शयनी एकादशी। देव-शयनी एकादशी।

सुर शाखी (खिन्)—पुं० [सं० ष० त०] कल्पवृक्ष।

सुर-शिल्पी (ल्पिन्)—पुं०[सं० ष० त०] विश्वकर्मा।

सुर-श्रेष्ठ—पुं०[सं० सप्त० त०]१. वह जो देवों में श्रेष्ठ हो। २. विष्णु। ३. शिव। ४. गणेश। ५. इन्द्र। ६. धर्म।

सुर-श्रेष्ठा—स्त्री०[सं० सुरश्रेष्ठ—टाप्] ब्राह्मी।

सुरस—वि० [सं०] १. सुन्दर रसवाला। २. रसीला। सरस। ३. मधुर। ४. स्वादिष्ट। ५. सुन्दर।

पुं० १. तेजपत्ता। २. दालचीनी। ३. तुलसी। ४. रूसा घास। ५. सँभालू। ६. मोचरस। ६. बोल नामक गन्धद्रव्य। ८. पीत-शाल।

†पुं० दे० 'सुरवस' (जुलाहों का)।

सुर-सख—पुं०[सं० ष० त०] देवताओं के सखा, इन्द्र।

सुर-सत—स्त्री०=सरस्वती। (डिं०)

सुरसत-जनक—पुं०[सं० सरस्वती+जनक] ब्रह्मा। (डिं०)

सुरसती*—स्त्री० [सं० सरस्वती] १. सरस्वती। २. एक प्रकार की नाव।

सुर-सत्तम—पुं०[सं० सप्त० स०] सुरश्रेष्ठ। (दे०)

सुर-सदन—पुं० [सं० ष० त०] देवताओं के रहने का स्थान, स्वर्ग।

सुर-सद्म (मन्)—पुं०[स० ष० त०] स्वर्ग।

सुर-समिध—स्त्री० [सं० ष० त०] देवदारु।

सुर-सर—पुं०[सं० सुर+सर] मानसरोवर।

†स्त्री०=सुरसरि।

सुरसर-सुता—स्त्री०[सं०] सरयू नदी।

सुरसरि—स्त्री० [सं० सुरसरिन्] १. गंगा। २. गोदावरी। ३. कावेरी।

सुर-सरित—स्त्री०[सं० ष० त०] गंगा।

सुर-सरिता—स्त्री० =सुरसरित्।

सुर-सरी—स्त्री०=सुरसरि।

सुर-सर्षक—पुं०[सं० ष० त०] देव-सर्षप।

सुरसा—स्त्री०[सं० सुरस—टाप्]१. पुराणानुसार एक राक्षसी, जो नागों या सर्पों की माता कही गई है और जिसने हनुमान् को लंका जाते समय समुद्र पार करने से रोकना चाहा था। २. एक प्रकार का छंद या वृत्त। ३. संगीत में एक प्रकार की रागिनी। ४. दुर्गा का एक नाम। ५. एक पौराणिक नदी। ६. अंकुश के आगे का नुकीला भाग। ७. ब्राह्मी। ८. तुलसी। ९. सौंफ। १०. बड़ी शतावर। ११. जूही। १२. सफेद निसोथ। १३. शल्लकी। सलई। १४. निर्गुंडी। १५. रास्ना। १६. भटकटैया। कँटेरी। १७. बन-भंटा। बहती।

सुरसाई—पुं० [सं० सुर+हिं० साँई=स्वामी]१. इन्द्र। २. शिव। ३. विष्णु।

सुर-सागर—पुं०[सुर=स्वर से+सागर]एक तरह का बाजा जिसमें बजाने के लिए तार लगे होते हैं।

सुरसाग्रज—पुं०[सं०] सफेद तुलसी।

सुरसाग्रणी—स्त्री०=सुरसाग्रज।

सुरसारी—स्त्री० = सुरसरि।

सुरसालु*—पुं० [सं० सुर+हिं० सालना] देवताओं को सतानेवाला अर्थात् असुर या राक्षस।

सुरसाष्ट—पुं०[सं० ष० त०] सँभालू, तुलसी, ब्राह्मी, बनभंटा, कंटकारी और पुनर्नवा—इन सब का वर्ग या समूह।

सुर-साहब—पुं०[सं० सुर+फा० साहब] देवताओं के स्वामी, इन्द्र।

सुर-सिंधु—पुं०[सं० ष०-त०]१. गंगा। २. संगीत में कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

सुर-सुंदर—पुं० [सं० सप्त० स०] सुन्दर देवता।

वि० देवता के समान सुन्दर।

सुर-सुंदरी—स्त्री०[सं०]१ दुर्गा। २. देवकन्या। ३. एक योगिनी का नाम। ४. अप्सरा।

सुर-सुत—पुं० [सं० ष० त०] [स्त्री० सुर-सुता] देवपुत्र।

सुर-सुरभी—स्त्री०[सं० सुर+सुरभी] देवताओं की गाय, कामधेनु।

सुरसुराना—अ० [अनु०] १. कीड़ों आदि का सुरसुर करते हुए रेंगना। २. शरीर में हलकी खुजली या सुरसुराहट होना।

स० कोई ऐसी क्रिया करना जिससे सुरसुर शब्द हो।

सुरसुराहट—स्त्री०[हिं० सुरसुराना+आहट(प्रत्य०)] १. सुरसुराने की क्रिया या भाव। २. शरीर में होनेवाली हलकी खुजली। ३. गुदगुदी।

सुरसुरी—स्त्री०[अनु०]१. एक प्रकार का कीड़ा जो चावल, गेहूँ आदि में होता है। २. दे० 'सुरसुराहट'।

सुरसेन—पुं०[सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सुरसेनप—पुं० [सं० सुर+सेनापति] देवताओं के सेनापति, कार्तिकेय।

सुरसेना—स्त्री०[सं० ष० त०] देवताओं की सेना।

सुरसैनी—स्त्री०=सुर-शयनी (एकादशी)।

सुरसैयाँ*—पुं०[सं० सुर+हिं० सैयाँ (स्वामी)]=सुर-साई (इन्द्र)।

सुर-स्त्री—स्त्री०[सं० ष० त०] देवता की स्त्री। देवांगना।

सुर-स्थान—पुं०[सं०ष०] देवताओं के रहने का स्थान, स्वर्ग। सुर-लोक।

सुर-स्रवंती—स्त्री०[सं०] आकाश-गंगा।

सुर-स्रोतस्विनी—स्त्री०[सं०] गंगा।

सुर-स्वामी—पुं०[सं० ष० त०] देवताओं के स्वामी, इन्द्र।

सुरहउ†—स्त्री०= सुरभि।

सुरहट†—वि० [?] ऊँचा। उच्च।

सुरहना=—अ०[?] (घाव आदि का) भरना या सूखना।

सुरहर (ा)—वि० [सं० सरल] जो सीधा ऊपर की ओर गया हो।

वि०[अनु० सुरसुर] जो सुर-सुर या सुर-हुर शब्द करता हो।

†वि० सुनहरा।

सुरहिया†—स्त्री०=१. सोरहिया। २.=सुरही।

सुरही†—स्त्री०[हिं० सोलह] १. सोलह। १. सोलह चित्ती कौड़ियाँ जिनसे जूआ खेलते हैं। २. उक्त कौड़ियों से खेला जानेवाला जूआ।

स्त्री०[सं० सुरभि] १. सुरभि। २. गाय। उदा०—इन सुरही का दूध न मीठा।—कबीर। ३. चमरी गाय। ५. परती जमीन में होनेवाली एक प्रकार की घास।

सुरही भच्छन†—पुं०=सुरभि-भक्षण।

सुरहुर(ा)—वि०=सुरहरा।

सुरहोनी†—पुं०[कर्ना० सुरहोनेप] पुन्नाग की जाति का एक पेड़।

सुरांगना—स्त्री०[सं० ष० त०]१. देवपत्नी। देवांगना। २. अप्सरा।

सुरा—स्त्री०[सं०√सु+कट्, सुष्टु रापनत्वनरेति वा अङ्—टाप्]१. मद्य। मदिरा। शराब। २. जल। पानी। ३. पानी पीने का पात्र। ४. साँप। ५. दे० 'सुरासव'।

सुराई—स्त्री०[सं० सुर]१. 'सुर' होने की अवस्था या भाव। २. आधिपत्य। प्रभुत्व।

*स्त्री०=शूरता (वीरता)। उदा०—हमरे कुल इन्ह पर न सुराई।—तुलसी। ३. रानियों की छतरी या समाधि। (बुंदेल०)

सुरा कर्म (न्)—पुं०[सं० मध्य० स०] वह यज्ञ-कर्म जो सुरा द्वारा किया जाता है।

सुराकार—पुं०[सं०]१. वह जो सुरा या शराब बनाता हो। कलाल। कलवार। २. शराब चुआने की भट्ठी।

सुराख—पुं०=सूराख (छेद)।

†पुं०=सुराग।

सुराग—पुं०[अ० सुराग़] किसी गुप्त अपराध या रहस्य का वह सूत्र जिससे उसका ठीक पता चल सके।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।—लगना।—लगाना।

पुं० [सं० सु+राग] १. उत्तम प्रेम। गहरा प्यार। २. बढ़िया राग।

सुरा गाय—स्त्री०[सं० सुर+गाय] एक प्रकार की दो नस्ली गाय जिसकी पूँछ गुफ्फेदार होती है और जिससे चँवर बनता है। लोग इसका दूध भी पीते हैं और इस पर बोझ भी ढोते हैं। चमरी। बन-चौर।

विशेष—उत्तरी हिमालय और तिब्बत में इसी को 'याक' कहते हैं।

सुरागार—पुं०[सं० ष० त०]१. देवताओं का स्थान। २. मद्य बनाने या बेचने का स्थान। मदिरालय।

सुरागृह—पुं०=सुरागार।

सुराचार्य—पुं०[सं० ष० त०] देवताओं के आचार्य, बृहस्पति।

सुराज (न्)—वि०[सं०] सुन्दर राजा वाला। अच्छे राजा द्वारा शासित (देश)।

पुं०१.=सुराज्य।२.=स्वराज्य।

सुराजा (जन्)*—पुं०[सं०] उत्तम राजा। अच्छा राजा।

†पुं०=सुराज्य।

सुराजिका—स्त्री०[सं०] छिपकली।

सुराजीव—पुं०[सं०] विष्णु।

सुराजीवी (विन्)—वि०[सं०]१ जो मद्य पीकर जीता हो। २. जिसका पेशा शराब बनाना और बेंचना हो।

सुराज्य—पुं०[सं० प्रा० स०]१. अच्छा राज्य। २. ऐसा राज्य जिसमें प्रजा सुखी और सुरक्षित हो। सुराज।

†पुं०=स्वराज्य।

सुराथी—स्त्री०[?] लकड़ी का वह डंडा जिससे अनाज के दाने निकालने के लिए बाल आदि पीटते हैं।

सुराद्रि—पुं०[सं० ष० त०] देवताओं का पर्वत, सुमेरु।

सुराधा (धस्)—वि०[सं० प्रा० स०]१. उत्तम दान देनेवाला। बहुत बड़ा दाता। २. बहुत बड़ा धनवान्।

सुराधानी—स्त्री०[सं०] मद्य रखने का पात्र।

सुराधिप—पुं०[सं० ष० त०] देवताओं के स्वामी, इन्द्र।

सुराधीश—पुं०=सुराधिप।

सुराध्यक्ष—पुं०[सं० ष० त०]१. ब्रह्मा । २. शिव। ३. इन्द्र। ४. श्रीकृष्ण।

सुराध्वज—पुं०[सं० ष० त०] मद्यशाला पर लगाया जानेवाला झंडा।

सुरानक—पुं०[सं०ष० त०] देवताओं का नगाड़ा।

सुरानीक—पुं०[सं० ष० त०] देवताओं की सेना।

सुराप—वि०[सं० सुरा√पा (पीना)+क] १. सुरा या मद्य पान करने वाला। मद्यप। शराबी। २. बुद्धिमान्। समझदार। ३. मधुर। प्रिय।

सुरापगा—स्त्री०[सं० ष० त०] आकाश गंगा।

सुरा-पात्र—पुं०[सं०ष० त०] वह पात्र (विशेषत: प्याला) जिसमें शराब पीते हैं।

सुरा-पान—पुं०[सं०]१. मद्यपान करने की क्रिया। शराब पीना। २. शराब पीने के समय खाई जानेवाली चटपटी चीजें। चाट।

सुरापी (पिन्)—वि०[सं०] शराब पीनेवाला।

सुरा-पीत—भू० कृ०[सं० ब० स०] जिसने शराब पी हो।

सुराब्धि—पुं०[सं० ष० त०] सुरा का समुद्र।

सुराभाग—पुं०[सं०] वह खमीर जिससे शराब तैयार की या बनाई जाती है।

सुरामंड—पुं०[सं० ष० त०] शराब की माँड़।

सुरा-मुख—वि० [सं० ब० स०] जिसके मुँह में शराब हो या शराब की दुर्गन्ध आती हो। जो शराब पीये हुए हो।

सुरा-मेह—पुं०[सं०] वैद्यक के अनुसार प्रमेह रोग का एक भेद।

सुरामेही (हिन्)—वि०[सं० सुरामेह+इनि] सुरामेह से पीड़ित।

सुराय*—पुं०[सं० सु+हिं० राय] अच्छा राजा।

सुरायुध—पुं०[सं० ष० त०] देवताओं का आयुध या अस्त्र।

सुराराणि—स्त्री०[सं० ष० त०] देवताओं की माता, अदिति।

सुरारि—पुं०[सं० ष०त०] देवताओं का शत्रु, राक्षस।

सुरारिघ्न—पुं०[सं० सुरारि√हन् (मारना) +ठक्] असुरों का नाश करनेवाले, विष्णु।

सुरारिहंता (तृ)—पुं०[सं० ष० त०] असुरों का नाश करनेवाले, विष्णु।

सुरारी—पुं०[देश०] एक प्रकार की बरसाती घास।

सुरार्चन—पुं०[सं० ष० त०] देवताओं की की जानेवाली अर्चना। देव-पूजा।

सुरार्दन—पुं०[सं० सुर√अर्द् (मारना)+ल्यु—अन] देवताओं को सतानेवाले, राक्षस।

सुरार्ह—पुं०[सं०]१. हरिचन्दन। २ सोना। स्वर्ण।

सुराल—पुं०[सं०] धूना। राल।

पुं०[?] घोड़ा बेल नाम की लता जिसकी जड़ बिलाईकन्द कहलाती है।

सुरालय—पुं०[सं० ष० त०]१. देवताओं के रहने का स्थान। स्वर्ग। २. सुमेरु पर्वत। ३. देव मन्दिर। ४. शराब बनाने या बेचने की जगह। शराबखाना।

सुरालिका—स्त्री० [सं०] सातला या सप्तला नाम की जंगली बेल।

सुराव—पुं०[सं० प्रा० स०]१. अच्छी ध्वनि। २. एक प्रकार का घोड़ा।

सुरावट—स्त्री० [हिं० सुर+ आवट (प्रत्य०)] १. संगीत में, स्वरों का ठीक तरह से होनेवाला आरोह और अवरोह। स्वरों का संगत उतार-चढ़ाव। २. सुरीलापन। उदा०—सुरज वीणा वेणु आदिक बज उठे। विरां वैतालिक सुरावट सज उठे।—मैथिली०।

सुरावती—स्त्री०=सुरावनि।

सुरावनि—स्त्री० [सं० ष० त०]१. देवताओं की माता, अदिति। २. पृथ्वी।

सुरा-वारि—पुं० [सं० ष० त०] सुरा का समुद्र।

सुरावास—पुं०[सं० ब० स०] सुमेरु।

सुरावृत्त—पुं०[सं०] सूर्य।

सुराश्रय—पुं०[सं० ष० त०]सुमेरु।

सुराष्ट्र—पुं०[सं० प्रा० स०, ब० स०] सौराष्ट्र देश का दूसरा नाम।

सुराष्ट्रज—पुं०[सं० सुराष्ट्र√जन् (उत्पन्न होना)+ड]१. गोपी चंदन। सौराष्ट्र मृत्तिका। २. काला मूँग। ३. लाल कुलथी। ४. एक प्रकार का विष।

वि० सुराष्ट्र देश में उत्पन्न।

सुराष्ट्रजा—स्त्री०[सं०] गोपीचन्दन।

सुरा-संधान—पुं०[स० ष० त०] भभके से शराब चुआने की क्रिया।

सुरा-समुद्र—पुं०=सुराब्धि।

सुरासव—पुं०[सं० सुरा+आसव]१. वैद्यक, में एक प्रकार का आसव। २. एक प्रकार का बहुत तेज मादक आसव या द्रव पदार्थ जो भभके से चुआकर बनाया जाता है और जिसका व्यवहार विलायती दवाओं, शराबों, सुगंधियों आदि में मिलाने अथवा तेज आँच पैदा करने के लिए जलावन के रूप में होता है। (स्पिरिट)

सुरासार—पुं० [सं०] वह तात्त्विक तथा मूल तरल मादक द्रव्य जिससे शराब बनती है। (एलकोहल)

सुरासुर—पुं० [सं० द्व० स०] सुर और असुर। देवता और दानव।

सुरासुर-गुरु—पुं०[सं० ष० त०]१. शिव। २. कश्यप।

सुरास्पद—पुं०[सं० ष० त०] देव-मन्दिर।

सुराही—स्त्री०[अ०]१. जल रखने का एक प्रकार का प्रसिद्ध मिट्टी, धातु, शीशे आदि का पात्र, जिसके नीचे और बीच का भाग बड़े लोटे की तरह और ऊपर का भाग लम्बे चोंगे या नल की तरह होता है। २. कुछ आभूषणों तथा दूसरे पदार्थों के सिरे पर का उक्त आकार का छोटा खंड। ३. कपड़े की एक प्रकार की काट। (दरजी)

सुराहीदार—वि० [अ० सुराही+फा० दार] सुराही के आकार-प्रकार वाला। सुराही की सी आकृतिवाला।

सुराहीनुमा—वि०[अ० +फा०]१. जो देखने में सुराही के समान हो। सुराही के आकार का। २. दे० 'सुराहीदार'।

सुराह्व—पुं०[सं०]१. देवदार। २. मरुआ। ३. हलदुआ।

सुराह्वय—पुं०[सं० ब० स०] १. एक प्रकार का पौधा। २. देवदारु वृक्ष।

सुरियं—पुं० [सं० सुर] इन्द्र। (डिं०)

सुरिया-खार—पुं०[फा० शोरा+हिं० खार] शोरा।

सुरी—स्त्री० [सं०] देवपत्नी। देवांगना

सुरीला—वि० [हिं० सुर+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० सुरीली; भाव० सुरीलापन]१. संगीत में (आलाप, तान आदि) जिसका गायन स्वरों के अनुरूप या अनुसार हो रहा हो। २. महीन और मीठा (स्वर)।

सुरुंगा—स्त्री०=सुरंग।

सुरुक्म—वि०[सं०] अच्छी तरह प्रकाशित। प्रदीप्त।

सुरुख—वि० [हिं० सु+फा० रुख] १. सुन्दर आकृति या रूपवाला। खूबसूरत। २. प्रसन्न रहकर दया करनेवाला। अनुकूल। उदा०—सुरुख सुमुख एक रस एक रूप तोहि।—तुलसी।

वि० दे० 'सुर्ख'।

सुरूखरू—वि०=सुर्खरू।

सुरुच—वि०[सं०] उज्ज्वल या सुन्दर प्रकाशवाला।

पुं० उज्ज्वल प्रकाश। अच्छी रोशनी।

सुरुचि—स्त्री०[सं० प्रा० स०]१. अच्छी विशेषतः नागर और परिष्कृत रुचि। २. प्रसन्नता। ३. ध्रुव की विमाता।

वि० सुरुचिपूर्ण।

सुरुचिर—वि०[सं० प्रा० स०]१. जिसमें तबीयत खूब रुचती हो। २. व्यापक अर्थ में सुन्दर। ३. उज्ज्वल। चमकीला। प्रकाशमान्।

सुरुज—वि०[सं०] बहुत बीमार। अस्वस्थ। रुग्ण।

†पुं०=सूर्य।

सुरुजमुखी†—पुं०=सुर्यमुखी।

सुरुति*—स्त्री०=श्रुति।

सुरुद्रि—स्त्री०[सं०] शतद्रु (वर्तमान सतलज) नदी का एक पुराना नाम।

सुरुर—पुं० दे० 'सरूर'।

सुरुल—पुं०[देश०] मूँगफली के पौधों में होनेवाला एक रोग।

सुरुवा—पुं० १.=स्रुवा। २.=शोरवा।

सुरूप—वि०[सं० ब० स०] [स्त्री० सुरूपा, भाव० सुरूपता]१. जिसका रूप या आकृति अच्छी हो। २. सुन्दर। खूबसूरत। ३. पण्डित। विद्वान्। ४. बुद्धिमान्। समझदार।

पुं०१. शिव। २. कपास। ३. पलास। ४. पीपल।

†पुं०=स्वरूप।

सुरूपक—वि०=स्वरूपवान्।

सुरूपता—स्त्री०[सं० सुरूप+तल्—टाप्] सुरूप होने की अवस्था या भाव। सुन्दरता। खूबसूरती।

सुरूपा—स्त्री०[सं० सुरूप—टाप्]१. सखिन। शालपर्णी। २. भारंगी। ३. सेवती ४. बेला।

वि० सुन्दर रूपवाली (स्त्री)।

सुरूहक—पुं०[सं०] खच्चर।

सुरेंद्र—पुं० [सं० ष० त०]१. सुरराज। इन्द्र। २. बहुत बड़ा राजा।

सुरद्र-कंद—पुं०=सुरेंद्रक।

सुरेंद्रक—पुं० [सं०] जंगली ओल या सूरन।

सुरेंद्रगोप—पुं०[सं०] इन्द्रगोप नामक कीड़ा। बीरबहूटी।

सुरेंद्रचाप—पुं० [सं० ष० त०] इन्द्रधनुष।

सुरेंद्रजित्—पुं०[सं० सुरेन्द्र √जि (जीतना)+क्विप्—तुक्] इन्द्र को जोतनेवाले, गरुड़।

सुरेंद्रता—स्त्री० [सं० सुरेन्द्र +तल्—टाप्] सुरेन्द्र होने की अवस्था, गुण या भाव। इन्द्रत्व।

सुरेंद्रपूज्य—पुं०[सं० ष० त०] बृहस्पति।

सुरेंद्रलोक—पुं०[सं० ष० त०] इन्द्रलोक।

सुरेंद्रवज्रा—स्त्री० [सं०] इन्द्रवज्रा नामक वृत्त का दूसरा नाम।

सुरेंद्रवती—स्त्री०[सं० सुरेन्द्र+मतुप्—य-व—ङीप्] शची। इन्द्राणी।

सुरेख—वि०[सं० ब० स०] १. सुन्दर रेखाएँ बनानेवाला। २. सुन्दर रेखाओं से युक्त।

स्त्री० [प्रा० स०] सुन्दर रेखा।

सुरेज्य—पुं० [सं० ष० त०] बृहस्पति।

सुरेज्या—स्त्री०[सं०]१. तुलसी। २. ब्राह्मी।

सुरेणु—स्त्री०[सं०] १. त्रसरेणु। २. एक प्राचीन नदी। ३. विवस्वान् की पत्नी जो त्वाष्ट्री की पुत्री थी।

सुरेतना†—स०[?] खराब अनाज में से अच्छे अनाज अलग करना।

सुरेतर—पुं०[सं० पंच० त०] असुर।

वि० सुरों से इतर या भिन्न।

सुरेता (तस्)—वि० [सं० ब० स०] १. बहुत वीर्यवान्। २. विशेष सामर्थ्यवान्।

सुरेतिन*—स्त्री०[सं० सुरति] उपपत्नी। रखेली।

सुरेथ—पुं० [?] सूँस। शिशुमार।

सुरेनुका—स्त्री०=सुरेणु।

सुरेभ—वि० [सं० ब० स०] सुन्दर स्वरवाला। सुरीला।

पुं० देवहलदी।

सुरेश—पुं० [सं० ष० त०]१. देवताओं के राजा, इन्द्र। २. शिव। ३. विष्णु। ४. श्रीकृष्ण। ५. राजा।

सुरेशी—स्त्री०[सं० सुरेश+ङीप्] दुर्गा।

सुरेश्वर—पुं०[सं० ष० त०]१. देवताओं के राजा, इन्द्र। २. ब्रह्मा। ३. रुद्र। ४. शिव।

सुरेश्वरी—स्त्री०[सं० सुरेश्वर—ङीप्] देवताओं की स्वामिनी, दुर्गा। २. लक्ष्मी। ३. राधा। ४. आकाश-गंगा।

सुरेष्ट—पुं०[सं०]१. सुर-पुन्नाग। २. अगस्त्य का पेड़ और फूल। ३. मौलसिरी। ४. शालवृक्ष। साखू।

सुरेष्टक—पुं०[सं०] शाल वृक्ष। साखू।

सुरेष्टा—स्त्री०[सं०] ब्राह्मी।

सुरेस—पुं०=सुरेश।

सुरैं—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की घास जो गर्मी के दिनों में पैदा होती है।

†स्त्री०=सुरभि।

सुरैत—स्त्री०[सं० सुरति]१. विषय-भोग के निमित्त रखी जानेवाली स्त्री। उपपत्नी। रखेल। २. वेश्या।

सुरैतवाल—पुं०[हिं०सुरैत+वाल] सुरैत या उपपत्नी से उत्पन्न सन्तान।

सुरैतिन—स्त्री० दे० 'सुरैत'।

सुरोचन—पुं०[सं०] पुराणानुसार एक वर्ष या भू-खंड।

सुरोचना—स्त्री०[सं०] कार्तिकेय की एक मातृका।

सुरोचि—वि० [सं० सुरुचि] सुन्दर।

सुरोत्तम—पुं०[सं० सप्त त०]१. देवताओं में श्रेष्ठ, विष्णु। २. सूर्य।

सुरोत्तर—पुं०[सं०] चंदन।

सुरोद—पुं०[सं० ष० त०] मदिरा का समुद्र।

सुरोदक—पुं०=सुरोद।

सुरोदय†—पुं०=स्वरोदय।

सुरोधा (धस्)—पुं०[सं०] एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि।

सुरोपम—वि० [सं० ब० स०] १. देवताओं के समान। देव-तुल्य।

सुरोमा (मन्)—वि० [सं० ब० स०] सुन्दर रोमोंवाला। जिसके रोएँ सुन्दर हों।

सुरौका (कस्)—पुं०[सं० ष० त०] १. स्वर्ग। २. देव-मन्दिर।

सुर्ख—वि० [फा० सुर्ख] रक्त-वर्ण। लाल। जैसे—सुर्ख गाल।
पुं० लाल रंग। रक्त वर्ण।

सुर्खदाना—पुं०[फा० सुर्ख दानः] एक प्रकार की वनस्पति।

सुर्खरू—वि०[फा०] [भाव० सुर्खरूई] १. जिसके मुखपर लाली और फलतः तेज हो। तेजस्वी। २. यश या सफलता प्राप्त करने के कारण जिसके चेहरे पर लाली अर्थात् प्रफुल्लता या प्रसन्नता आ गई हो। कीर्तिशाली। यशस्वी। ३. प्रतिष्ठित।

सुर्खरूई—स्त्री०[फा०]१. सुर्खरू होने की अवस्था या भाव। २. कीर्ति। यश। ३. प्रतिष्ठा। मान।

सुर्खा—पुं०[फा० सुर्ख] लाल रंग का एक प्रकार का कबूतर।

सुर्खाब—पुं०=सुरखाब (चकवा)।

सुर्खी—स्त्री० [फा० सुर्खी]१. लाली। ललाई। २. लेखों आदि का शीर्षक जो पहले लाल स्याही से लिखा जाता था। ३. लाल स्याही। ४. खून। रक्त। लहू। ५. दे० 'सुरखी'।

सुर्खीदार सुरमई—पुं० [फा०] एक प्रकार का सुरमई या बैंगनी रंग जो कुछ लाली लिए होता है।

सुर्जना†—पुं० =सहिजन (वृक्ष)।

सुर्ता—वि०=सुरता (समझदार)।

सुर्ती—स्त्री०=सुरती।

सुर्त्त†—स्त्री०१.=सुरत। २.=सुरति।

सुर्मा†—पुं०=सुरमा।

सुर्रा—पुं०[देश०]१. एक प्रकार की मछली। २. छोटी थैली। बटुआ।
पुं०[अनु० सुर-सुर] हवा का सुर-सुर करता हुआ तेज झोंका।

सुलंक†—पुं० दे० 'सोलंक'।

सुलंकी†—पुं०=सोलंकी।

सुलक्ष—वि०=सुलक्षण।

सुलक्षण—वि०[सं० ब० स०] [स्त्री० सुलक्षणा] १. अच्छे या शुभ लक्षणोंवाला। २. भाग्यवान्।
पुं०[प्रा० स०]१. शुभलक्षण। २. एक प्रकार का छंद।

सुलक्षणता—स्त्री० [सं० सुलक्षण+तल्—टाप्] १. सुलक्षण होने की अवस्था या भाव। २. वह तत्त्व जिससे सुलक्षण होने का भाव सूचित होता है।

सुलक्षणत्व—पुं०[सं०] सुलक्षणता।

सुलक्षणा—स्त्री०[सं० ब० स०] अच्छे लक्षणोंवाली स्त्री।

सुलक्षणी—वि० स्त्री०=सुलक्षणा।

सुलक्षित—भू० कृ० [सं०]१. अच्छी तरह से देखा तथा पहचाना हुआ। २. लक्ष्य के रूप में आया हुआ। ३. सुपरीक्षित। ४. सुनिश्चित।

सुलखना†—वि० [सं० सुलक्षणा] [स्त्री० सुलखनी]१. अच्छे लक्षणोंवाला। २. शुभ। जैसे—सुलखनी घड़ी। (पश्चिम)
*अ०=सुलगना।

सुलग—स्त्री०[हिं० सुलगना] सुलगने की क्रिया, अवस्था या भाव।
स्त्री०[हिं० सु+लगना] समीप होना।
अव्य० समीप। पास।

सुलगन—स्त्री०[हिं० सुलगना] सुलगने की अवस्था, क्रिया या भाव। सुलग।

सुलगना—अ०[सं० सु+हिं० लगना] १. किसी चीज का इस प्रकार जलना कि उसमें से लपट न निकले, बल्कि धूआँ निकले। जैसे—बीड़ी या सिग्रेट सुलगना। २. धीरे-धीरे जलने लगना। जैसे—आग सुलग रही है। ३. लाक्षणिक अर्थ में, ईर्ष्या, क्रोध, घुटन आदि के कारण मन ही मन बहुत कुढ़ना या संतप्त होना।

सुलगाना—स०[हिं० सुलगना] इस प्रकार प्रयास करना कि कोई चीज सुलगने लगे। जैसे—बीड़ी सुलगाना।

सुलग्न—पुं० [सं० प्रा० स०] शुभ मुहूर्त। शुभ लग्न। अच्छी सायत।
वि० किसी के साथ अच्छी तरह लगा हुआ।

सुलच्छन*—वि० [स्त्री० सुलच्छनी]=सुलक्षण।

सुलछ†—वि०[सं० सुलक्ष] १. जो भली भाँति दिखाई पड़ रहा हो। २. अच्छे लक्षणोंवाला। ३. सुन्दर।

सुलझन—स्त्री०[हिं० सुलझना] सुलझने की क्रिया या भाव। सुलझाव। 'उलझन' का विपर्याय।

सुलझना—अ०[हिं० उलझना का अनु०]१. उलझनों से मुक्त होना। २. समस्या की जटिलता, पेचीदगी आदि का दूर होना।

सुलझाना—स०[हिं० सुलझना का स० रूप]१. किसी उलझी हुई वस्तु की उलझन दूर करना। उलझन या गुत्थी खोलना। २. किसी बात या विषय की जटिलताएँ दूर करना। 'उलझाना' का विपर्याय। जैसे—मामला सुलझाना।

सुलझाव—पुं० [हिं० सुलझना+आव(प्रत्य०)] सुलझने या सुलझाने की क्रिया या भाव। सुलझन।

सुलटा—वि०[हिं० उलटा का अनु०] [स्त्री० सुलटी] जो उलटा न हो। सीधा।

सुलतान—पुं०[फा०] बादशाह। सम्राट्।

सुलताना चंपा—पुं० [फा० सुलतान+हिं० चंपा] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी इमारती कामों और जहाज के मस्तूल तथा रेल की पटरियाँ बनाने के काम आती हैं। पुन्नाग।

सुलतानी—वि० [फा० सुलतान]१. सुलतान या बादशाह संबंधी। २. लाल (रंग का)।
स्त्री०१.सुलतान होने की अवस्था, पद या भाव। २. सुलतान का राज्य या शासन-काल। बादशाही। राजत्व।
पुं०१. प्रकार का बढ़िया महीन रेशमी कपड़ा। २. पुरानी चाल का एक प्रकार का कागज जो फारस से बनकर आता था।
वि० लाल रंग का। रक्त-वर्ण। सुर्ख।

सुलप†—पुं० [सु+आलाप] सुन्दर आलाप। (क्व०)
†वि० [सं० स्वल्प]१. बहुत थोड़ा। अल्प। २. धीमा। मन्द।

सुलफ—वि०[सं० सु+हिं० लफना]१. सहज में लचनेवाला। लचीला। २. कोमल। नाजुक। मुलायम।

सुलफा—पुं० [फा० सुल्फ़ः] १. गाँजा, चरस आदि। २. तम्बाकू की चिलम भरने का वह प्रकार जिसमें मिट्टी के तवे का प्रयोग नहीं होता। २. सूखा तम्बाकू जिसे गाँजे की तरह पतली चिलम में भरकर पीते हैं। कंकड़। ३. चरस।

क्रि० प्र०—पीना।—भरना।

पुं०[सं० शौल्फ] एक प्रकार का साग।

सुलफेबाज—वि०[हिं० सुल्फा+फा० बाज़] [भाव० सुल्फेबाजी] गाँजा या चरस पीनेवाला। गँजेड़ी या चरसी।

सुलब—पुं०[?] गंधक। (डिं०)

सुलभ—वि०[सं०] [भाव० सुलभता, सुलभत्व] १. जो प्राप्त हो सकता हो। जिसे प्राप्त करने में विशेष कठिनाई या परिश्रम न हो। २. सरल। सहज। ३. साधारण। मामूली। ४. उपयोगी।

पुं० अग्निहोत्र की अग्नि।

सुलभ-गणक—पुं० [सं०] ऐसी सारिणी या सारिणी-संग्रह जिसके द्वारा नित्य के व्यवहार की गणित-संबंधी प्रक्रियाओं के फल या परिकलन सहज में जाने जा सकें। (रेडी-रेकनर) जैसे—किसी निश्चित दर से १२ दिनों का वेतन, २३ दिनों का ब्याज आदि जानने की सारिणी।

सुलभता—स्त्री० [सं० सुलभ+तल्—टाप्] सुलभ होने की अवस्था, गुण या भाव। सुलभत्व।

सुलभत्व—पुं०[सं०] सुलभता।

सुलभ-मुद्रा—स्त्री०[सं०]अर्थशास्त्र में, किसी ऐसे देश की मुद्रा जो किसी राष्ट्र या राज्य को उस देश से माल मँगाने के लिए सहज में प्राप्त हो सके। (सॉफ़्ट करेन्सी)

विशेष—यदि हमारे देश में किसी दूसरे देश से आयात कम और निर्यात अधिक होता हो तो फलतः उस देश की मुद्रा हमारे लिए सुलभ और इसकी विपरीत दशा में दुर्लभ होगी।

सुलभा—स्त्री०[सं०]१. वैदिक काल की एक ब्रह्मवादिनी विदुषी। २. तुलसी। ३. बेला। ४. जंगली उड़द। मषवन।

सुलभेतर—वि०[सं० पं० त०]१. जो सहज में प्राप्त न हो सके। 'सुलभ' से भिन्न। दुर्लभ। २. कठिन। मुश्किल। ३. महँगा।

सुलभ्य—वि० [सं० सु√लभ् (प्राप्त होना)+यत्] जो सहज में मिलता या मिल सकता हो। सुलभ।

सुललित —वि०[सं० प्रा० स०] अति ललित। अत्यन्त सुन्दर।

सुलवण—वि० [सं० प्रा० स०] (खाद्य पदार्थ) जिसमें उचित मात्रा में नमक मिला हो।

सुलस—पुं०[?] स्वीडन देश का एक प्रकार का बढ़िया लोहा।

सुलह—स्त्री०[फा०]१. वह स्थिति जब दो विरोधी पक्ष परस्पर विरोध-भाव छोड़कर मित्रता का संबंध स्थापित करते हैं। मेल। मिलाप। २. वह मेल जो किसी प्रकार की लड़ाई या झगड़ा समाप्त होने पर हो। ३. उक्त प्रकार के मेल के उपरान्त होनेवाली सन्धि।

सुलहनामा—पुं०[अ० सुलह+फा० नामः]१. वह कागज जिसपर आपस में लड़नेवाले दलों या व्यक्तियों में मेल होने पर उसकी शर्तें लिखी रहती हैं। २. वह कागज जिसपर दो या अधिक परस्पर लड़नेवाले राजाओं या राष्ट्रों में सुलह या मेल होने पर उस मेल की शर्तें लिखी रहती हैं। संधिपत्र। (ट्रीटी)

सुलाक—पुं०[फा० सूराख़] सूराख। छेद। (लश०)

†स्त्री०=सलाख।

सुलाखना†—स० [सं० सु +हिं० लखना=देखना] सोने या चाँदी को तपाकर परखना।

†स० [फा० सलाख] सलाख से या और किसी प्रकार छेद करना।

सुलागना†—अ०=सुलगना।

सुलाना—स० [हिं० सोना का प्रे०]१. किसी को सोने में प्रवृत्त करना। शयन कराना। निद्रित कराना। २. किसी को मैथुन या संभोग के लिए अपने पास लेटाना।

सुलाभ†—वि०=सुलभ।

सुलास†—पुं०[सं० सु+लास्य] अच्छा नाच। उत्तम नृत्य। उदा०—आरंभित तव रुचिर राम, अद्भुत सुलास जहँ।—नन्ददास।

सुलाह†—स्त्री०=सुलह।

सुलिपि—स्त्री०[सं० प्रा० स०] उत्तम और स्पष्ट लिपि।

सुलूक—पुं०=सलूक।

सुलेक—पुं०[सं०] एक आदित्य का नाम।

सुलेख—वि०[सं० ब० स०] १. शुभ रेखाओंवाला। २. शुभ रेखाएँ बनानेवाला।

पुं०[?] अच्छा या उत्तम लेख। अच्छी और बढ़िया लिखावट की लिपि।

सुलेमाँ†—पुं०=सुलेमान।

सुलेमान—पुं०[फा०]१. यहूदियों का एक प्रसिद्ध बादशाह जो पैगम्बर माना जाता है। २. पश्चिमी पंजाब (आज-कल के पाकिस्तान) और बलोचिस्तान के बीच का एक पहाड़।

सुलेमानी—वि०[फा०] सुलेमान संबंधी। सुलेमान का। जैसे—सुलेमानी सुरमा।

पुं०१. एक प्रकार का प्रसिद्ध पाचक नमक जो कई ओषधियों के योग से बनता है। २. सफेद आँखोंवाला घोड़ा। ३. एक प्रकार का पत्थर जो कहीं से सफेद और कहीं से काला होता है।

सुलोक—पुं०[सं० प्रा०स०]१. उत्तम लोक। २. स्वर्ग।

सुलोचन—वि०[सं० ब० स०] [स्त्री० सुलोचना] सुन्दर आँखोंवाला। जिसके नेत्र सुन्दर हों।

पुं०१=हिरन। २.=चकोर।

सुलोचना—स्त्री०[सं० सुलोचन—टाप्] वासुकी की एक कन्या जो मेघनाद की पत्नी थी।

वि० सुन्दर नेत्रोंवाली।

सुलोचनी—वि० स्त्री०[सं० सुलोचना] सुन्दर नेत्रोंवाली। जिसके नेत्र सुन्दर हों।

सुलोम—वि०[सं०] [स्त्री० सुलोमा] सुन्दर लोमों या रोमों से युक्त। जिसके रोएँ सुन्दर हों।

सुलोमनी—स्त्री०[सं०] जटामाँसी। बालछड़।

सुलोमश—वि०=सुलोम।

सुलोमशा—स्त्री०[सं०]१ काकजंघा। २. जटामाँसी।

सुलोमा—स्त्री०[सं०]१. ताम्रवल्ली। २. मांस-रोहिणी।

वि० सं० 'सुलोम' का स्त्री०।

सुलोल—वि०[सं० प्रा० स०] बहुत इच्छुक या उत्सुक।

सुलोह—पुं०[सं०] एक प्रकार का बढ़िया लोहा।

सुलोहक—पुं०[सं०] पीतल।

सुलोहित—पुं०[सं० प्रा० स०] सुन्दर रक्तवर्ण। अच्छा लाल रंग।

वि० उक्त प्रकार के रंगों का।

सुलोहिता—स्त्री०[सं०] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

सुल्टा—वि०=सुलटा ('उलटा' का विपर्याय)।

सुल्तान—पुं०=सुलतान।

सुल्तानी—वि०, स्त्री०, पुं०=सुलतानी।

सुल्फ—पुं०[?]१. संगीत में बहुत चढ़ी या तेज लय। २. किश्ती। नाव।

पद—**सौदा-सुल्फ**।

सुवंश—पुं०[सं० ब० स०] वसुदेव का एक पुत्र। (भागवत)

सुवंस†—पुं०=सुवंश।

सुव†—पुं०=सुअन।

सुवक्ता—वि०[सं० सु+वक्तृ] सुन्दर बोलनेवाला। उत्तम व्याख्यान देनेवाला। वाक्पटु। वाग्मी।

सुवक्त्र—पुं०[सं० ब० स०]१. शिव। २. कार्तिकेय का एक अनुचर।

वि० सुन्दर मुखवाला। ३. वन-तुलसी।

सुवक्ष—वि०[सं० सुवक्षस्] [स्त्री० सुवक्षा] सुन्दर या विशाल वक्षवाला। जिसकी छाती सुन्दर या चौड़ी हो।

सुवक्षा—स्त्री०[सं०] मय दानव की पुत्री और त्रिजटा तथा विभीषण की माता का नाम।

सुवच—वि०[सं०] जो सहज में कहा जा सके। जिसके उच्चारण में कठिनता न हो।

सुवचन—वि०[सं० ब० स०]१. सुन्दर वचन बोलनेवाला। सुवक्ता। वाग्मी। २. मधुर-भाषी।

पुं० मधुर वचन।

सुवचनी—स्त्री०[सं०] एक देवी का नाम।

वि० हिं० 'सुवचन' का स्त्री०।

सुवज्र—पुं०[सं० ब० स०] इन्द्र।

सुवटा†—पुं०=सुअटा (तोता)।

सुवण*—पुं०[सं० सुवर्ण] सोना। सुवर्ण। (डिं०)

सुवदन—वि०[सं० ब० स०] [स्त्री० सुवदना] सुन्दर मुखवाला। सुमुख।

पुं० वन-तुलसी।

सुवदना—स्त्री०[सं०] सुन्दर मुखवाली स्त्री। सुन्दरी स्त्री।

सुवन—पुं०[सं०]१. सूर्य। २. अग्नि। ३. चन्द्रमा।

†पुं०१.=सुअन। २. सुमन।

सुवना†—पुं०=सुगना (तोता)।

सुवनारा†—पुं०=सुअन।

सुवपु—वि०[सं० ब० स०] सुन्दर शरीरवाला। सुदेह।

सुवयसी—स्त्री०[सं० ब० स०] १. ऐसी स्त्री जिसमें पुरुषों के से कुछ लक्षण आ गये हों। २. प्रौढ़ा स्त्री।

सुवया—स्त्री०[सं० सुवयस्] प्रौढ़ा स्त्री।

सुवर-कोन्ना†—पुं०[हिं० सूअर ?+हिं० कोना] ऐसी हवा जिसमें पाल न उड़ सके। (मल्लाह)

सुवरण†—वि०, पुं०=सुवर्ण।

सुवर्च्चक—पुं०[सं०]१. स्वर्जिकाक्षार। सज्जी। २. एक वैदिक ऋषि।

सुवर्च्चना—स्त्री०=सुवर्च्चला।

सुवर्च्चल—पुं०[सं०]१. एक प्राचीन देश। २. काला नमक।

सुवर्च्चला—स्त्री० [सं०] १. सूर्य की एक पत्नी का नाम। २. ब्राह्मी। ३. तीसी। हुरहुर।

सुवर्च्चस—वि० [सं० ब० स०] दीप्तिमान्।

पुं० शिव।

सुवर्च्चसी (सिन्)—पुं०[सं०]१. शिव का एक नाम। २. सज्जी।

सुवर्चा (र्चस्)—पुं०[सं०] १. गरुड़ का एक पुत्र। २. दसवें मनु का एक पुत्र। ३. धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ४. कार्तिकेय का एक अनुचर।

वि०१. शक्तिशाली। २. तेजस्वी।

सुवर्च्चिक—पुं०=सुवर्च्चक।

सुवर्च्चिका†—स्त्री०[सं०] १. स्वर्जिकाक्षार। सज्जी। २. जतुका या पहाड़ी नाम की लता।

सुवर्च्ची—पुं०=सुवर्च्चक।

सुवर्ण—वि०[सं० ब० स०] १. सुन्दर वर्ण या रंग का। २. सोने के रंग का। सुनहला। ३. धनवान्। सम्पन्न।

पुं०१. सोना नामक धातु। स्वर्ण। २. प्राचीन भारत में सोने का एक प्रकार का सिक्का जो प्रायः दश माशे का होता था। ३. किसी के मत से दश माशे की और किसी के मत से सोलह माशे की एक पुरानी तौल या मान। ४. एक प्रकार का यज्ञ। ५. एक प्रकार का छन्द या वृत्त। ६. रँगे हुए सूत से बुना हुआ पुरानी चाल का एक प्रकार का कपड़ा। ७. दशरथ का एक मंत्री। ८. सोनागेरू। ९. हरिचन्दन। १०. हलदी। ११. नागकेसर। १२. धतूरा। १३. पीली सरसों।

सुवर्णक—पुं०[सं०]१. सोना। स्वर्ण। २. सोलह माशे की एक पुरानी तौल। ३. पीतल। ४. अमलतास।

वि० १. सोने का बना हुआ। २. सोने के रंग का। सुनहला।

सुवर्ण-कदली—स्त्री० [सं० उपमि० स०] चंपा केला।

सुवर्ण-कमल—पुं०[सं० उपमि० स०] लाल कमल। रक्त कमल।

सुवर्ण-करणी—स्त्री०[सं० सुवर्ण+करण] एक प्रकार की जड़ी।

सुवर्ण-कर्ता—पुं०=स्वर्णकार (सुनार)।

सुवर्णकर्ष—पुं०[सं०] सोने की एक प्राचीन तौल जो किसी के मत से दश माशे की और किसी के मत से सोलह माशे की होती थी।

सुवर्णकार—पुं०[सं० सुवर्ण√कृ (करना)+अण्] सोने के गहने बनानेवाला कारीगर। सुनार।

सुवर्ण-केतकी—स्त्री० [सं० उपमि० स०] लाल केतकी। रक्त केतकी।

सुवर्ण क्षीरिणी—स्त्री०[सं० उपमि० स०] कटेरी। कटुपर्णी। स्वर्णक्षीरी।

सुवर्ण-गणित—पुं०[सं० ष० त०] प्राचीन भारत में, बीज-गणित की वह शाखा जिसके अनुसार सोने की तौल आदि जानी जाती थी और उसके दाम का हिसाब लगाया जाता था।

सुवर्ण-गर्भ—पुं०[सं० ब० स०] एक बोधिसत्व का नाम।

सुवर्ण-गिरि—पुं०[सं० उपमि० स०]१. राजगृह के पास का एक पर्वत।

२. अशोक की एक राजधानी जो किसी के मत से राजगृह में और किसी के मत से दक्षिण भारत के पश्चिमी समुद्र-तट पर थी।

सुवर्ण-गैरिक—पुं०[सं० मध्य० स०] लाल गेरू।

सुवर्णगोत्र—पुं०[सं० ब० स०] बौद्धों के अनुसार एक प्राचीन राज्य।

सुवर्णघ्न—पुं०[सं० सुवर्ण√हन् (मारना)+टक] राँगा। वंग।

सुवर्ण-चूड़—पुं०[सं० ब० स०] एक प्रकार का पक्षी।

सुवर्ण-जीविक—पुं० [सं० ब०स०] एक प्राचीन वर्णसंकर जाति जो सोने का व्यापार करती थी।

सुवर्णता—स्त्री०[सं० सुवर्ण+तल्—टाप्] सुवर्ण का गुण, धर्म या भाव। सुवर्णत्व। २. सुनहलापन।

सुवर्ण-तिलका—स्त्री० [सं० ब० स०] मालकंगनी।

सुवर्ण-द्वीप—पुं०[सं०] सुमात्रा टापू का पुराना नाम।

सुवर्ण-धेनु—स्त्री०[सं० ष० त०] दान देने के लिए सोने की बनाई हुई गौ।

सुवर्ण-पक्ष—वि० [सं० ब० स०] जिसके पंख या पर सोने के हों।
पुं० गरुड़।

सुवर्ण-पद्म—पुं०[सं० उपमि० स०] लाल कमल। रक्त कमल।

सुवर्ण-पद्मा—स्त्री०[सं०] आकाश गंगा।

सुवर्ण-पार्श्व—पुं०[सं० ब० स०] एक प्राचीन जनपद।

सुवर्ण-पालिका—स्त्री०[सं०] सोने का बना हुआ एक प्रकार का प्राचीन पात्र।

सुवर्ण-पुष्प—पुं०[सं० ब० स०] बड़ी सेवती। राजतरुणी।

सुवर्ण-फला—स्त्री०[सं० ब० स०] चंपा केला। सुवर्ण कदली।

सुवर्ण-बिंदु—पुं०[सं० ब० स०] विष्णु।

सुवर्ण-भूमि—पुं०[सं० ब० स०] सुवर्ण द्वीप (सुमात्रा) का पुराना नाम।

सुवर्ण-माक्षिक—पुं०[सं० मध्य० स०] सोनामक्खी। स्वर्णमाक्षिक।

सुवर्ण-माषक—पुं०[सं०] बारह धान की एक पुरानी तौल।

सुवर्ण-मित्र—पुं०[सं०] सुहागा, जिसकी सहायता से सोना जल्दी गल जाता है।

सुवर्ण-मुखरी—स्त्री० [सं० ब० स०] एक प्राचीन नदी।

सुवर्ण-यूथिका—स्त्री० [सं० उपमि० स०] सोनजुही। पीली जुही।

सुवर्ण-रंभा—स्त्री० [सं० मध्य० स०] चंपा केला। सुवर्ण कदली।

सुवर्ण-रूपक—पुं० [सं०] सुवर्ण द्वीप (सुमात्रा) का एक प्राचीन नाम।

सुवर्ण-रेखा—स्त्री० [सं०] उड़ीसा और बंगाल की एक प्रसिद्ध नदी।

सुवर्णरेता(तस्)—पुं०[सं० ब० स०] शिव का एक नाम।

सुवर्णरोमा (मन्)—वि०[सं० ब० स०] जिसके रोएँ सुनहले हों।
पुं० भेड़। मेष।

सुवर्णलता—स्त्री०[सं० मध्य० स०] मालकंगनी। ज्योतिष्मतीलता।

सुवर्ण-वणिक्—पुं०[सं०] बंगाल की एक वणिक् जाति।

सुवर्ण-वर्ण—वि०[सं० ब० स०] जिसका रंग सोने के रंग की तरह हो। सुनहला।
पुं० विष्णु।

सुवर्ण-श्री—स्त्री०[सं० ब० स०] आसाम की एक नदी जो ब्रह्मपुत्र की मुख्य शाखा है।

सुवर्ण-सिद्ध—पुं० [सं० ब० स०] वह जो इन्द्रजाल से सोना बना लेता हो।

सुवर्ण स्तेय—पुं०[सं० ष० त०] सोने की चोरी जो मनु के अनुसार पाँच महापातकों में से एक है।

सुवर्णस्तेयी (यिन्)—पुं०[सं० ष० त०] सोना चुरानेवाला, जो मनु के अनुसार महापातकी होता है।

सुवर्ण-स्थान—पुं०[सं० ष० त०]१. एक प्राचीन जनपद। २. आधुनिक सुमात्रा द्वीप का पुराना नाम।

सुवर्णा—स्त्री०[सं०]१. अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। २. इक्ष्वाकु की पुत्री और सुहोत्र की पत्नी। ३. हलदी। ४. काला अगर। ५. बरियारा। बला। ६. कटेरी। सत्यानाशी। ६. इन्द्रायन। इनारू।

सुवर्णाकर—पुं०[स० ष० त०] सोने की खान।

सुवर्णाक्ष—पुं०[सं० ब० स०] शिव।

सुवर्णाख्य—पुं० [सं० ब० स०] १. नागकेसर। २. धतूरा। ३. एक प्राचीन तीर्थ।

सुवर्णाभ—वि०[सं० ब० स०] जिसमें सोने की-सी आभा या चमक हो।
पुं० रागावर्त नामक मणि। लाजवर्द।

सुवर्णार—पुं०[सं०] लाल कचनार।

सुवर्णाह्वा—स्त्री०[सं० ब० स०] पीलीजूही। सोनजूही।

सुवर्णिका—स्त्री०[सं०] पीली जीवंती। स्वर्ण जीवंती।

सुवर्णी—स्त्री० [सं०] मूसाकानी। आखुपर्णी।

सुवर्तुल—वि०[सं०] ठीक और पूरा गोल।
पुं० तरबूज।

सुवर्म्मा (वर्म्मन्)—वि०[सं० ब० स०] उत्तम कवच से युक्त। जिसके पास उत्तम कवच हो।
पुं० धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

सुवर्षा—स्त्री०[सं० सुवर्ष-टाप्, प्रा० स०] १. अच्छी वर्षा। २. मोतिया। मल्लिका।

सुवल्लिका—स्त्री०[सं०]१. जतुका लता। २. सोमराजी।

सुवल्ली—स्त्री०[सं०]१. बकुची। सोमराजी। २. पुत्रदात्री लता। ३. कुटकी।

सुवसंत—पुं०[सं० प्रा० स०]१. चैत्र की पूर्णिमा। चैत्रावली। २. मदनोत्सव जो उक्त पूर्णिमा के दिन मनाया जाता था।

सुवसंतक—पुं०[सं०]१. मदनोत्सव जो प्राचीन काल में चैत्र पूर्णिमा को मनाया जाता था। २. नेवारी।

सुवसंता—स्त्री०[सं०] १. माधवी लता। २. चमेली।

सुवस*—वि०[सं० स्व+वश] जो अपने वश या अधिकार में हो। वशवर्ती।

सुवह—वि०[सं०]१. जो सहज में वहन किया या उठाया जा सके। २. धैर्यशाली। धीर।
पुं० एक प्रकार का वायु।

सुवहा—स्त्री०[सं०]१. वीणा। बीन। २. रासना। ३. सँभालू। ४. हंसपदी। ४. रुद्रजटा। ६. मूसली। ७. सलई। ८. गन्धनाकुली। ९. निसोथ। १०. शेफालिका।

सुवाँग†—पुं०=स्वाँग।

सुवाँगी†—पुं०=स्वाँगी।

सुवा—पुं०=सुआ (तोता)।

सुवाक्य—वि०[सं०] सुन्दर वचन बोलनेवाला। मधुरभाषी। सुवाग्मी।

सुवाच्य—वि०[सं० प्रा० स०] जो सहज में पढ़ा जा सके।

सुवाजी (जिन्)—वि० [सं०] (तीर) जिसमें अच्छे या सुन्दर पंख लगे हों।

सुवाना†—स०=सुलाना।

सुवामा—स्त्री०[सं०] वर्तमान रामगंगा नदी का पुराना नाम।

सुवार—पुं०[सं० प्रा० स०] उत्तम वार। अच्छा दिन।

†पुं०=सूपकार (रसोइया)।

सुवाल†—पुं०=सवाल।

सुवास—पुं०[सं० प्रा० स०]१. अच्छी वास या महक। खुशबू। सुगंध। २. अच्छा निवास-स्थान। ३. शिव। ४. एक प्रकार का छन्द या वृत्त।

वि० जो अच्छे कपड़े पहने हो।

†पुं०=श्वास। (डिं०)

सुवासक—पुं०[सं०] तरबूज।

सुवासरा—स्त्री०[सं०] हालों नाम का पौधा। चंसुर। चन्द्रशूर।

सुवासा (सस्)—पुं० [सं० ब० स०]१. जो अच्छे और सुन्दर कपड़े पहने हुए हो। २. (तीर) जिसमें अच्छे या सुन्दर पर लगे हों।

सुवासिक—वि०[सं०] [स्त्री० सुवासिका] सुवास या सुगन्ध से युक्त। सुगंधित।

सुवासित—भू० कृ०[सं०] सुवास या सुगंध से युक्त किया हुआ।

सुवासिन†—स्त्री०=सुवासिनी।

सुवासिनी—स्त्री०[सं० प्रा० स०]१. ऐसी विवाहिता या कुआँरी स्त्री जो अपने पिता के घर में ही रहती हो। २. सधवा स्त्री।

सुवासी (सिन्)—वि०[सं० सु√ वस् (वास करना)+णिनि] [स्त्री० सुवासिनी] उत्तम या भव्य भवन में रहनेवाला।

सुवास्तु—स्त्री०[सं०] गांधार देश की आधुनिक स्वात नामक नदी का वैदिक-कालीन नाम।

पुं०१. उक्त नदी के तटवर्ती देश का पुराना नाम। २. उक्त देश का निवासी।

सुवाह—पुं०[सं० प्रा० स०]१. स्कंद का एक पारिषद्। २. अच्छा या बढ़िया घोड़ा।

वि०१. जो सहज में वहन किया या उठाया जा सके। २. अच्छे घोड़ों से युक्त।

सुविक्रम—वि०[सं० ब० स०] बहुत बड़ा विक्रमी या पुरुषार्थी।

सुविक्रांत—वि०[सं० प्रा० स०]१. अत्यन्त विक्रमशाली। अतिशय पराक्रमी। २. बहादुर। वीर।

पुं० बहादुर। वीर।

सुविख्यात—वि० [सं० प्रा० स०] [भाव० सुविख्याति] अत्यन्त प्रसिद्ध।

सुविगुण—वि०[सं० प्रा० स०]१. जिसमें कोई गुण या योग्यता न हो। गुणहीन। २. बहुत बड़ा दुष्ट। नीच या पाजी।

सुविग्रह—वि०[सं० ब० स०] सुन्दर शरीर या रूपवाला। सुदेह। सुरूप।

सुविचार—पुं०[सं० प्रा० स०] १. अच्छी तरह और सूक्ष्मतापूर्वक किया हुआ विचार। २. अच्छी तरह समझ-बूझकर किया हुआ निर्णय। ३. रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न कृष्ण का एक पुत्र।

सुविचारित—भू० कृ०[सं० प्रा० स०] सूक्ष्म या उत्तम रूप से विचार किया हुआ। अच्छी तरह सोचा-समझा हुआ।

सुविज्ञ—वि० [सं० प्रा० स०] बहुत अधिक विज्ञ या ज्ञानवान्। अच्छा जानकार।

सुविज्ञान—वि०[सं० प्रा० स०]१. जो सहज में जाना जा सके। २. बहुत बड़ा चतुर या बुद्धिमान्।

सुविज्ञेय—वि०[सं० प्रा० स०] जो सहज में जाना जाता हो या जाना जा सकता हो।

पुं० शिव।

सुवित—वि०[सं०] जो सहज में प्राप्त हो सके।

पुं० १. अच्छा मार्ग। सुपथ। २. कल्याण। मंगल। ३. सौभाग्य।

सुवितल—पुं०[सं०] विष्णु की एक प्रकार की मूर्ति।

सुवित्त—वि० [सं० ब० स०] बहुत बड़ा धनी या अमीर।

सुवित्ति—पुं०[सं०] एक देवता का नाम।

सुविद्—पुं०[सं० सु √ विद् (जानना)+क्विप्] [स्त्री० सुविदा]विद्वान् या चतुर व्यक्ति।

सुविद—पुं०[सं०] १. अंतःपुर या निवास का रक्षक। सौविद्। कंचुकी। २. तिलकपुष्प नामक वृक्ष।

सुविदत्र—वि०[सं० प्रा० स०] १. अतिशय सावधान। २. सहृदय। ३. उदार।

पुं० १. अनुग्रह। कृपा। २. धन-संपत्ति। ३. कुटुंब। परिवार। ४. ज्ञान।

सुविदर्भ—पुं०[सं० प्रा० स०] एक प्राचीन जाति।

सुविदला—स्त्री०[सं०] विवाहिता स्त्री।

सुविद्य—वि०[सं० ब० स०] उत्तम विद्वान्। अच्छा पण्डित।

सुविध—वि०[सं० ब० स०] अच्छे स्वभाव का। सुशील।

सुविधा—स्त्री०[सं० प्रा० स०]१. वह तत्त्व या बात जिसके सहज उपलब्ध होने से किसी काम को सरलता से निष्पन्न किया जाता है। २. वह आराम या छूट जो विशेष रूप से उपलब्ध हुई हो। जैसे—यहाँ दोपहर को एक घंटे की फुरसत मिल जाती है; यही एक सुविधा मेरे लिए बहुत है।

†स्त्री०=सुभीता।

सुविधि—पुं०[सं०] जैनियों के अनुसार वर्तमान अवसर्पिणी के नवें अर्हत का नाम।

स्त्री० १. अच्छी विधि। २. सुन्दर ढंग या युक्ति।

सुविनय—वि०[सं० ब० स०]=सुविनीत।

सुविनीत—वि०[सं० प्रा० स०] [स्त्री० सुविनीता]१. अतिशय नम्र या विनीत। २. (पशु) जो अच्छी तरह सिखाकर अपने अनुकूल कर लिया गया हो।

सुविनेय—वि०[सं० सु-वि√नी (ढोना)+यत्] जो सहज में शिक्षा आदि के द्वारा विनीत और अनुकूल किया जा सकता हो।

सु-विपिन—वि०[सं० ब० स०] जहाँ या जिसमें बहुत-से जंगल हों। जंगलों से भरा हुआ।

सुविशाल—वि०[सं० प्रा० स०] बहुत अधिक विशाल या बड़ा।

सुविशाला—स्त्री०[सं०] कार्तिकेय की एक मातृका।

सुविशुद्ध—पुं०[सं० प्रा० स०] एक लोक। (बौद्ध)

सुविषाण—वि०[सं० ब० स०] बड़े दाँतों वाला (हाथी)।

सुविष्टंभी (भिन्)—पुं०[सं०] शिव का एक नाम।

वि० अच्छी तरह पालन-पोषण करने या सँभालनेवाला।

सुविस्तर—वि०[सं० प्रा० स०] १. बहुत अधिक विस्तारवाला। खूब लंबा-चौड़ा। २. विस्तारपूर्वक कहा हुआ।

पुं०१. बहुत अधिक फैलाव या विस्तार। २. प्रचुरता। बहुतायत।

सुवीथी—स्त्री०[सं० प्रा० स०] प्राचीन भारत में, वह दालान या पाटनदार रास्ता जो चतुश्शाल के कमरों के आगे होता था।

सुवीर—पुं०[सं० प्रा० स०]१. बहुत बड़ा वीर या योद्धा। २. शिव। ३. कार्तिकेय। ४. एकवीर नामक कन्द। छाछ की बनाई हुई खड़ी।

सुवीरक—पुं०[सं०]१. बेर नाम का पेड़ और फल। २. एक वीर नामक वृक्ष। ३. सुरमा।

सुवीरज—पुं०[सं० सुवीर√जन् (उत्पन्न करना)+ड] सुरमा। सौवीराजन।

सुवीर्य—वि० [सं० ब० स०] बहुत बड़ा वीर्यशाली या शक्तिमान्।

पुं० बेर का पेड़ और फल।

सुवीर्या—स्त्री० [सं० सुवीर्य—टाप्]१. बनकपास। २. बड़ी शतावर। ३. नाड़ी हींग। डिकामाली।

सुवृत्त—वि०[सं० ब० स०] १. सच्चरित्र। २. गुणवान्। ३. सज्जन और साधु। ४. भली-भाँति छन्दों या वृत्तों में बाँधा हुआ (काव्य)।

पुं० ओल। जमींकन्द। सूरन।

सुवृत्ता—स्त्री०[सं० प्रा० स०]१. एक प्रकार का छन्द या वृत्त। २. किशमिश। ३. सेवती।

सुवृत्ति—स्त्री०[सं० प्रा० स०]१. उत्तम वृत्ति या जीविका। २. सदाचार।

वि०१. जिसकी जीविका या वृत्ति उत्तम हो। २. सदाचारी।

सुवृद्ध—पुं०[सं० प्रा० स०] दक्षिण दिशा के दिग्गज का नाम।

वि०१. बहुत वृद्ध। २. बहुत पुराना।

सुवेग—वि०[सं० ब० स०] तेज गतिवाला। वेगवान्।

सुवेणा—स्त्री०[सं० ब० स०] एक प्राचीन नदी।

सुवेद—वि०[सं० प्रा० स०]१. वेदों का ज्ञाता। २. बहुत बड़ा ज्ञाता।

सुवेल—वि०[सं० ब० स०]१. बहुत झुका हुआ। प्रणत।

पुं० लंका में समुद्र-तट का एक पर्वत जहाँ रामचन्द्र सेना सहित ठहरे थे।

सुवेश—वि० [सं० ब० स०] [भाव० सुवेशता]१. सुन्दर वेश-भूषावाला। २. सुन्दर।

पुं०१. सुन्दर वेष-भूषा। २. सफेद ईख।

सुवेशित—भू० कृ०[सं० सुवेश+इतच्]जिसने सुन्दर वेश धारण किया हो।

सुवेशी (शिन्)—वि०[सं० सुवेश+इनि] जिसने सुन्दर वेश धारण किया हो। अच्छे भेषवाला।

सुवेष†—वि०=सुवेश।

सुवेषी†—वि०=सुवेशी।

सुवेस†—वि०=सुवेश।

सुवेसल†—वि०[सं० सुवेश+हिं० ल (प्रत्य०)] सुन्दर। मनोहर।

सुवैणा—पुं०[सं० सु+हिं० वैन (वचन)] १. सुन्दर वचन। २. मित्रता। दोस्ती। (डिं०)

सुवैया†—वि०[हिं० सोना+ऐया (प्रत्य०)] सोनेवाला।

सुवो†—पुं०=सुवा (तोता)।

†स्त्री०=सुवा।

सु व्यवस्था—स्त्री०[सं० प्रा० स०] [वि० सुव्यवस्थित] अच्छी और सुन्दर व्यवस्था। सुप्रबंध।

सुव्यवस्थित—वि०[स० प्रा० स०] जिसकी या जिसमें अच्छी या सुन्दर व्यवस्था हो।

सुव्रत—वि०[सं० ब० स०]१. दृढ़ता से अपने व्रत का पालन करनेवाला। २. धर्मनिष्ठ। ३. नम्र। विनीत।

पुं० [सं०] १. स्कंद का एक अनुचर। २. एक प्रजापति। ३. रौच्य मनु का एक पुत्र। ४. जैनों में वर्तमान अवसर्पिणी के २९ वें अर्हत्। मुनि सुव्रत। ५. भावी उत्सर्पिणी के ११ वें अर्हत। ६. ब्रह्मचारी।

सुव्रता—स्त्री०[सं० ब० स०]१. सहज में दूही जानेवाली गौ। २. गुणवती और पतिव्रता स्त्री। ३. दक्ष की एक पुत्री। ४. वर्तमान कल्प के १५ वें अर्हत् की माता का नाम। ५. गन्ध पलाशी।

सुशंस—वि०[सं० प्रा० स०]१. अच्छी तरह से कहा जानेवाला। २. प्रसिद्ध। मशहूर। ३. प्रशंसनीय।

सु-शक—वि० [सं०] (काम) जो आसानी से किया जा सके। सहज। सुगम।

सुशक्त—वि० [सं० प्रा० स०] अच्छी शक्तिवाला। शक्तिशाली।

सुशख्य—पुं०[सं० प्रा० स०] शिव। महादेव।

सुशब्द—वि०[सं० ब० स०] अच्छा शब्द या ध्वनि करनेवाला। जिसकी आवाज अच्छी हो।

पुं० अच्छा शब्द।

सुशरीर—वि०[सं० ब० स०] सुन्दर शरीरवाला।

पुं० सुन्दर शरीर।

सुशर्मा (र्मन्)—पुं०[सं०]१. निन्दनीय अथवा निंन्दित ब्राह्मण। (व्यंग्य) २. मैथुन अभिलाषी व्यक्ति।

सुशांत—वि०[सं० प्रा० स०] [भाव० सुशांति] अत्यन्त शांत।

सुशांति—पुं०[सं० प्रा० स०]१. पूर्ण शांति। २. तीसरे मन्वन्तर के इन्द्र का नाम। ३. अजमीढ़ का एक पुत्र।

सुशाक—पुं०[सं० प्रा० स०] १. अदरक। आर्द्रक। २. चौलाई का साग। ३. चेंच का साग। ४. भिंडी।

सुशारद—पुं०[सं०] शालंकायन गोत्र के एक वैदिक आचार्य।

सुशासित—वि०[सं० प्रा० स०] (प्रदेश) जिसकी शासन-व्यवस्था अच्छी। हो।

सुशिक्षित—वि०[सं० प्रा० स०] [स्त्री० सुशिक्षिता] (व्यक्ति, संप्रदाय या समाज) जिसने अच्छी शिक्षा प्राप्त की हो।

सुशिख—पुं०[सं० ब० स०] अग्नि का एक नाम।

सुशिखा—स्त्री०[सं० सुशिख—टाप्]१. मोर की चोटी। २. मुरगे की कलगी या चोटी।

सुशिर (शिरस्)—वि० [सं० ब० स०] सुन्दर शिरवाला। जिसका सिर सुन्दर हो।

†पुं०=सुषिर।

सुशीत—पुं०[सं० प्रा० स०]१. पीला चंदन। हरिचंदन। २. पाकर। ३. जल-बेंत।

वि० बहुत अधिक शीतल या ठंढा।

सुशीतल—पुं०[सं० प्रा० स०] १. गंधतृण। २. सफेद चंदन। ३. नागदौन।

वि० बहुत अधिक शीतल या ठंढा।

सुशीम—वि०,पुं०=सुषीम।

सुशील—वि०[सं० ब० स०] [स्त्री० सुशीला, भाव० सुशीलता] १. जिसका शील (प्रवृत्ति तथा स्वभाव) अच्छा हो। शीलवान्। २. सज्जन तथा सदाचारी। ३. सरल। सीधा।

सुशीलता—स्त्री०[सं० सुशील+तल्—टाप्] सुशील होने की अवस्था, गुण या भाव। सुशीलत्व।

सुशीला—स्त्री० [सं० ब० स०] १. श्री कृष्ण की एक पत्नी। २. राधा की एक सखी। ३. यम की पत्नी। ४. सुदामा की पत्नी।

सुशीली (लिन्)—वि०[सं०]=सुशील।

सुशृंग—वि०[सं० ब० स०] सुन्दर शृंग से युक्त। सुन्दर सींगोंवाला।

पुं० शृंगी ऋषि।

सुशोण—वि० [सं० प्रा० स०] गहरा लाल रंग।

सुशोभन—वि० [सं० प्रा० स०]१. बहुत अधिक शोभावाला। २. फबनेवाली (चीज)। ३. प्रियदर्शन। सुन्दर।

सुशोभित—भू० कृ० [सं० प्रा० स०] उत्तम रूप से शोभित। अत्यन्त शोभायमान्।

सुश्रव—वि०[सं० प्रा० स०] जो सहज में और अच्छी तरह सुना जा सके।

सुश्रवा—वि०[सं०]१. उत्तम हवि से युक्त। २. कीर्तिमान्। यशस्वी। ३. प्रसिद्ध। मशहूर।

पुं० एक प्रजापति का नाम।

सुश्राव्य—वि०[सं० प्रा० स०]१. जो सुनने में अच्छा जान पड़े। २. जो अच्छी तरह और सहज में सुनाई पड़े।

सुश्री—वि० [सं० ब० स०] १. बहुत सुन्दर। शोभायुक्त। २. बहुत बड़ा धनी।

स्त्री० आज-कल स्त्रियों विशेषतः अविवाहित स्त्रियों के नाम के पहले लगनेवाला एक आदरसूचक और शिष्टतापूर्ण संबोधन-पद। जैसे—सुश्री पद्मा देवी।

सुश्रीक—पुं०[सं० ब० स० कप्] सलई। शल्लकी।

वि०=सुश्री।

सुश्रुत—भू० कृ०[सं० प्रा० स०]१. अच्छी तरह सुना हुआ। २. प्रसिद्ध। मशहूर।

पुं० १. श्राद्ध के समय ब्राह्मण को भोजन करा चुकने पर उनसे यह पूछना कि आप भली भाँति तृप्त हो गये न? २. प्रसिद्ध आयुर्वेदीय ग्रंथ 'सुश्रुत-संहिता' के रचयिता।

सुश्रुत-संहिता—स्त्री० [सं० मध्य० स०] आचार्य सुश्रुत का बनाया आयुर्वेद का एक प्रसिद्ध और सर्वमान्य ग्रन्थ।

सुश्रूखा*—स्त्री०=शुश्रूषा।

सुश्रूषा—स्त्री०=शुश्रूषा।

सुश्रोणा—स्त्री०[सं० ब० स०] एक पौराणिक नदी।

सुश्रोणि—स्त्री०[सं० ब० स०] एक देवी का नाम।

वि० जिसके नितंब सुन्दर हों।

सुश्लिष्ट—वि०[सं० सु√श्लिष् (संयोग)+क्त] [भाव० सुश्लिष्टता] १. अच्छी तरह से मिला हुआ। व्यवस्थित। २. फबनेवाला। उपयुक्त।

सुश्लोक—वि०[सं० ब० स]१. पुण्यात्मा। पुण्यकीर्ति। २. प्रसिद्ध। मशहूर।

सुष*—पुं०=सुख।

सुषम—वि०[सं० पं० त०] १. बहुत सुन्दर। सुषमा-पूर्ण। २. तुल्य। समान।

सुषमना*—स्त्री०=सुषुम्ना।

सुषमनि—स्त्री०=सुषुम्ना।

पुं०=सुखमणि (सिक्खों का धर्म-ग्रन्थ)।

सुषम-प्राषमा—स्त्री०[सं०] जैन मतानुसार काल-चक्र के दो आरे।

सुषमा—स्त्री०[सं० प्रा० स०]१. परम शोभा। अत्यन्त सुन्दरता। २. विशेषतः नैसर्गिक शोभा। प्राकृतिक सौंदर्य। ३. एक प्रकार का छन्द या वृत्त। ४. एक प्रकार का पौधा। ५. जैनों के अनुसार काल का एक नाम।

सुषमित—भू० कृ०[सं० सुषमा+इतच्] सुषमा से युक्त।

सुषाढ़—पुं०[सं० ब० स०] शिव का एक नाम।

सुषाना*—अ०=सुखाना।

सुषारा*—वि०=सुखारा।

सुषि—स्त्री० [सं० सु√ सो (विनाश करना)+कि बाहु० √शुष् (सोखना)+इनिश=पृषो० स०] [भाव० सुषित्व]१. छिद्र। छेद। सूराख। २. शरीर अथवा किसी तल परके वे छोटे-छोटे छेद जिसमें से होकर तरल पदार्थ अन्दर पहुँचते या बाहर निकलते हैं।

सुषिक—पुं०[सं० सुषि+कन्] शीतलता। ठंढक।

वि० ठंढा। शीतल।

सुषिम—वि० पुं०=सुषीम।

सुषिर—वि० [सं० √शुष् (शोषण करना)+किरच् श=स पृषो०] छेदों या सूराखों से भरा हुआ।

पुं०१. छेद। २. दरार। ३. फूंककर बजाया जानेवाला बाजा। ४. वायु-मंडल। ५ अग्नि। ६. लकड़ी। ७. बाँस। ८. लौंग। ९. चूहा।

सुषिरच्छेद—पुं०[सं० ब० स०] एक प्रकार की वंशी।

सुषिरत्व—पुं०[सं० सुषिर+त्व] दे० 'छिद्रलता'।

सुषिरा—स्त्री० [सं० सुषिर—टाप्] १. कलिका। विद्रुम लता। २. दरिया। नदी।

सुषीम—पुं०[सं० सुशीम+पृषो०]१. एक प्रकार का साँप। २. चन्द्रकान्त मणि।

वि०१. मनोहर। सुन्दर। २. ठंढा। शीतल।

सुषुपु(स्)—वि० [सं०] सोने की इच्छा करनेवाला। निद्रातुर।

सुषुप्त—भू० कृ०[सं० सु √स्वप्(सोना) +क्त] १. सोया हुआ, विशेषतः गहरी नींद में सोया हुआ। २. (गुण या तत्त्व) जो निष्क्रिय अवस्था में किसी चीज में स्थित हो।

सुषुप्ति—स्त्री०[सं० सु√स्वप्(सोना)+क्तिन्]१. गहरी नींद में सोये हुए

होने की अवस्था या भाव। २. पातंजलि दर्शन के अनुसार चित्त की एक वृत्ति या अनुभूति। ३. वेदान्त के अनुसार जीव की अज्ञानावस्था।

सुषुप्सा—स्त्री०[सं०√स्वप् (सोना)+सन्-संयु द्वित्व—टाप्] १. सोने की इच्छा। २. नींद में होने की अवस्था।

सुषुम्ना—स्त्री०[सं० सुषु√म्ना (अभ्यास)+क—टाप्] [वि० सौषुम्न] शरीर-शास्त्र के अनुसार एक नाड़ी जो नाभि से आरंभ होकर मेरुदंड में से होती हुई ब्रह्मरंध्र तक गई है। (स्पाइनल कार्ड)

विशेष—(क) हठयोग के अनुसार यह इड़ा और पिंगला के बीच में है, और इसी के अन्तर्गत वह ब्रह्मनाड़ी है जिससे चलकर कुंडलिनी ब्रह्मरंध्र तक पहुँचती है।(ख) वैद्यक में, यह शरीर की चौदह प्रधान नाड़ियों में से एक है जिसके साथ बहुत-सी छोटी-छोटी नाड़ियाँ लिपटी हुई हैं।

सुषेण—पुं० [सं० सु√सेन+अच्, षत्व] १. विष्णु। २. दूसरे मनु का एक पुत्र। ३. परीक्षित का एक पुत्र। ४. धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ५. श्रीकृष्ण का एक पुत्र। ६. करमर्द (वृक्ष)। ७. बेंत।

सुषेणी—स्त्री०[सं०] निसोथ। त्रिवृता।

सुषोपति*—स्त्री०=सुषुप्ति।

सुषोप्ति*—स्त्री०=सुषुप्ति।

सुष्ट—पुं०[सं० दुष्ट का अनु०] [भाव० सुष्टता] अच्छा। भला। 'दुष्ट' का विपर्याय।

सुष्ठु—अव्य० [सं० सु√स्था (ठहरना)+कु] [भाव० सुष्ठुता]१. अतिशय। अत्यंत। २. अच्छी तरह। भली-भाँति। ३. जैसा चाहिए, ठीक वैसा। यथा-तथ्य। ४. वास्तव में।

†वि०=सुष्ट।

सुष्म—पुं०[सं० √सु (गमनादि)+मक्—सुक्—षत्व] रस्सी। रज्जु।

सुष्मना—स्त्री०=सुषुम्ना।

सुसंकट—वि०[सं० प्रा० स०] १. दृढ़तापूर्वक बंद किया हुआ। २. जिसकी व्याख्या करना कठिन हो।

पुं०१. कठिन काम। २. कठिनता। दिक्कत।

सु-संग—पुं०[सं०+हिं० संग] अच्छा संग। सु-संगति।

सु-संगत—वि० [सं० सु+संगत, प्रा० स०] उत्तम या विशिष्ट रूप से संगत। बहुत युक्ति-युक्त। बहुत उचित।

स्त्री०=सुगति।

वि० [सु+संगति] अच्छी संगतिवाला।

सु-संगति—स्त्री०[सं० प्रा० स०] अच्छे लोगों से होनेवाला संग-साथ। अच्छा संग-साथ। सत्संग।

सुसंध—वि०[सं० ब० स०] बचन का सच्चा। बात का पक्का।

सु-संस्कृत—वि०[सं० सु -सम् √कृ (करना)+क्त सुट्]१. (व्यक्ति या समाज) जो सांस्कृतिक दृष्टि से उन्नत हो। २. (आचरण या व्यवहार) जो शिष्टतापूर्ण और संस्कृति के अनुरूप हो।

सुसंहत—वि० [सं० प्रा० स०] [भाव० सुसंहति] जो अच्छी तरह या विशिष्ट रूप से संहत हो। खूब अच्छी तरह गठा हुआ।

सुस—स्त्री०=सुसा।

सुसकना†—अ०=सिसकना।

सुसकल्यो—पुं० [सं० शश] खरगोश। खरहा। शशा। (डिं०)

सुसका—पुं० [अनु०] हुक्का। (सुनार)

सुसज्जित—भू० कृ० [सं० प्रा स०] १. भली-भाँति सजा या सजाया हुआ। भली-भाँति श्रृंगार किया हुआ। शोभायमान्। २. तैयार। लैस।

सुसताना—अ०[फा० सुस्त +आना (प्रत्य०)] सुस्ताना।

सुसती†—स्त्री०=सुस्ती।

सुसत्या—स्त्री० [सं० ब० स०] जनक की एक पत्नी। (पुराण)

सुसत्त्व—वि० [स० ब० स०]१. दृढ़। पक्का। २. वीर। बहादुर।

सुसना—पुं० [?] एक प्रकार का साम।

सु-सबद†—पुं० [सं० सुशब्द] कीर्ति। यश। (डिं०)

सु-सभेय—वि० [सं० सुसभा+ढक्—एय]जो सभ्यों के समाज या सभा में अच्छी तरह अपना कौशल या चातुर्य दिखा सकता हो।

सुसमन*—स्त्री०=सुषुम्ना (नाड़ी)।

सुसमय—पुं० [सं० प्रा० स०]१. सुन्दर समय। अच्छा वक्त। २. वे दिन जिनमें अकाल न हो। सुकाल। सुभिक्ष। ३. ऐसा समय जब सब प्रकार की उन्नति और कल्याण होता हो।

सुसमा†—स्त्री०[सं० ऊष्मा] अग्नि। (डिं०)

†स्त्री०=सुषमा।

†पुं०=सुसमय।

सु-समुझि*—वि० [सं० सु+हिं० समझ] अच्छी समझवाला। समझदार।

सुसर†—पुं०=ससुर।

सुसरण—पुं०[सं०] शिव का एक नाम।

सुसरा—पुं०=ससुर। (उपेक्षासूचक)

सुसरार†—स्त्री०=ससुराल।

सुसराल†—स्त्री०=ससुराल।

सु-सरित—स्त्री०[सं० सु+सरित] १. अच्छी नदी। २. नदियों में श्रेष्ठ, गंगा।

सुसरी†—स्त्री०[?] अनाजों में लगनेवाला एक प्रकार का लाल रंग का छोटा कीड़ा। (पश्चिम)

†स्त्री०१.=ससुरी। २. सुरसरी।

सुसह—वि०[सं० प्रा० स०] जो सहज में सहन किया जा सके।

पुं० शिव का एक नाम।

सुसा†—स्त्री० [सं० स्वसृ] बहन। भगिनी।

†पुं०[?] एक प्रकार का पक्षी।

†पुं०=शश (खरगोश)।

सुसाइटी†—स्त्री०=सोसाइटी (समाज)।

सु-साध्य—वि०[सं० प्रा० स०] (कार्य)जिसका सहज में साधन किया जा सके। जो सहज में पूरा किया जा सके। सुख-साध्य।

सुसाना†—अ०[सं० श्वसन] सिसकियाँ भरना। सिसकना।

सुसार—पुं०[सं० ब० स०] जिसका सार उत्तम हो। तत्त्वपूर्ण।

पुं०१. अच्छा सार या तत्त्व। २. नीलम। ३. लाल खैर।

सुसारवान् (वत्)—वि० [सं० सुसार+मतुप्—म व नुम्—दीर्घ] सुसार। (दे०)

पुं० स्फटिक।

सु-सिकता—स्त्री० [सं० प्रा० स०]१. अच्छी रेत। २. चीनी। शर्करा।

सुसिद्ध—वि० [सं० प्रा० स०, ब० स०] [भाव० सुसिद्धि]१. अच्छी

तरह पका या पकाया हुआ (खाद्य पदार्थ)। २. (व्यक्ति) जिसे अच्छी सिद्धि प्राप्त हो।

सुसिद्धि—स्त्री०[सं० प्रा० स०] साहित्य में, एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें एक व्यक्ति के प्रयत्न करने पर दूसरे व्यक्ति को उसके फल प्राप्त करने का उल्लेख होता है।

सुसीतलताई*—स्त्री०=सुशीतलता।

सुसीता—स्त्री० [सं० प्रा० स०] सेवती। शतपत्री।

सुसीम—वि०[सं० सुषिम] शीतल। ठंढा। (डिं०)

सुसुकना*—अ०=सिसकना।

सुसुड़ी†—स्त्री०=सुसरी (कीड़ा)।

सुसुपि*—स्त्री०=सुषुप्ति।

सुसुम*—वि०[सं० सुषुम] सुषुमापूर्ण। सुन्दर।

†वि०=सूक्ष्म।

सुसूक्ष्म—वि०[सं० प्रा० स०] अत्यन्त सूक्ष्म। बहुत अधिक सूक्ष्म। बहुत ही छोटा।

†पुं० परमाणु।

सुसेन*—पुं०=सुषेन।

सुसेव्य—वि०[सं० प्रा० स०] १. जिसकी अच्छी तरह सेवा की जानी चाहिए। २. जिसका अनुसरण सहज में किया जा सके।

सुसैंधवी—स्त्री०[स० प्रा० स०] सिंध देश की अच्छी घोड़ी।

सुसो*—पुं०[सं० शश] खरगोश। खरहा। (डिं०)

सुसौभग—पुं०[सं० प्रा० स०] पति-पत्नी संबंधी सुख। दाम्पत्य सुख।

सुस्त—वि०[फा०] [भाव० सुस्ती]१. (जीव) जो भली-भाँति और मन लगाकर काम न करता हो। 'उद्योगी' का विपर्याय। २. फलतः स्वभाव से अकर्मण्य तथा मंद गति से काम करनेवाला। ३. चिंता, रोग आदि के कारण अथवा निराश होने या उदास रहने के कारण अस्वस्थ या शिथिल। ४. अस्वस्थ। बीमार। (लश०) ५. जिसके शरीर में बल न हो। दुर्बल। कमजोर। ६. चिंता, परिश्रम, रोग आदि के कारण जो मंद या शिथिल हो गया हो। ७. जिसका उत्साह या तेज मंद पड़ गया हो। हतप्रभ। जैसे—मेरे रुपये माँगने पर वह सुस्त हो गया। ८. जिसकी तीव्रता या प्रबलता कम हो गई हो। जिसकी गति या वेग मंद हो गया हो। जैसे—यह घड़ी कुछ सुस्त है। ९. जिसे कोई काम करने या कोई बात समझने में आवश्यक या उचित से अधिक समय लगता हो। जैसे—इधर की गाड़ियाँ भी बहुत सुस्त हैं।

क्रि० वि० सुस्ती से। मंद गति से। जैसे—गाड़ी बहुत सुस्त चल रही है।

सु-स्तना—वि० स्त्री० [सं० ब० स०] सुन्दर छातियों या स्तनोंवाली (स्त्री)।

स्त्री० वह स्त्री जो पहले-पहल रजस्वला हुई हो।

सुस्तनी—वि० स्त्री०=सुस्तना।

सुस्त-पाँव—पुं०[फा० सुस्त+हिं० पाँव] एक प्रकार का चतुष्पाद जन्तु जो प्रायः वृक्षों की शाखा में लटका रहता और बहुत कम तथा बहुत मंद गति से चलता है। (स्लॉफ़)

सुस्त-रीछ—पुं०[फा० सुस्त+हिं० रीछ] एक प्रकार का पहाड़ी रीछ।

सुस्ताई†—स्त्री०=सुस्ती। उदा०—पंथी कहाँ, कहाँ सुस्ताई।—जायसी।

सुस्ताना—अ०[फ़ा० सुस्त+हिं० आना (प्रत्य०)] अधिक श्रम करने पर तथा थकावट मिटाने के उद्देश्य से थोड़ी देर के लिए दम लेना या विश्राम करना।

सुस्ती—स्त्री०[फ़ा० सुस्त]१. सुस्त होने की अवस्था या भाव। शिथिलता। २. आलस्य, चिंता, रोग आदि के कारण उत्पन्न होनेवाली वह अवस्था जिसमें शरीर कुछ-कुछ शिथिल होता है तथा मन में कुछ करने के प्रति अरुचि होती है। ३. पुंस्त्व का अभाव या कमी। ४. बीमार होने की अवस्था। (लश०)

सुस्तैन†—पुं०=स्वस्त्ययन।

सुस्थ—वि०[सं० सु√स्था (ठहरना)+क]१. ठीक तरह से स्थित होना। २. भला। चंगा। नीरोग। स्वस्थ। तंदुरुस्त। ३. सब प्रकार से सुखी। ४. मनोहर। सुन्दर।

सुस्थ-चित्त—वि०[सं० ब० स०] जिसका चित्त सुखी या प्रसन्न हो।

सुस्थता—स्त्री०[सं० सुस्थ+तल्—टाप्] सुस्थ होने की अवस्था या भाव।

सुस्थत्व—पुं०=सुस्थता।

सुस्थल—पुं०[सं० प्रा० स०]१. अच्छा स्थान। २. एक प्राचीन जनपद।

सुस्थावती—स्त्री० [सं० सुस्था+मतुप्—म-व—ङीप्] संगीत में एक प्रकार की रागिनी।

सुस्थित—वि०[सं० प्रा० स०] [स्त्री० सुस्थिता, भाव० सुस्थिति] १. उत्तम रूप से या भली-भाँति स्थित। २. दृढ़। पक्का। मजबूत। ३. स्वस्थ। तन्दुरुस्त। ४. भाग्यवान्।

पुं०१. ऐसा मकान जिसके चारों ओर छज्जे हों। २. एक प्रकार का रोग जिसमें घोड़े अपने को निहारते और हिनहिनाते रहते हैं।

सुस्थितत्व—पुं०[सं० सुस्थित+त्व] सुस्थित होने की अवस्था या भाव।

सुस्थिति—स्त्री०[सं० प्रा० स०]१. अच्छी या उत्तम स्थिति। सुखपूर्ण अवस्था। २. कल्याण। मंगल। ३. प्रसन्नता। हर्ष। ४. अच्छा स्वास्थ्य।

सुस्थिर—वि०[सं० प्रा० स०] [स्त्री० सुस्थिरा]१. जो अच्छी तरह स्थिर या शान्त हो। २. जो अच्छी तरह या दृढ़तापूर्वक जमाया, बैठाया या लगाया गया हो।

सुस्थिरा—स्त्री०[सं० प्रा० स०] रक्तवाहिनी। नस। लाल रंग।

सुस्ना—स्त्री०[स० ब० स०] खेसारी। त्रिपुट।

सुस्नात—वि०[सं० प्रा० स०] १. जिसने यज्ञ के उपरान्त स्नान किया हो। २. जो नहा-धोकर पवित्र हो गया हो।

सुस्मित—पुं०[सं० ष० त०] [स्त्री० सुस्मिता] मधुर हँसी हँसनेवाला।

सुस्वध—पुं०[सं० ब० स०] पितरों की एक श्रेणी या वर्ग।

सुस्वधा—स्त्री०[सं०]१. कल्याण। मंगल। २. सौभाग्य।

सुस्वन—वि०[सं० ब० स०]१. उत्तम ध्वनि या अच्छा शब्द करनेवाला। २. बहुत ऊँचा। ३. मनोहर। सुन्दर।

पुं० शंख।

सुस्वप्न—पुं०[सं० प्रा० स०]१. शुभ स्वप्न। अच्छा सपना। २. शिव का एक नाम।

सुस्वर—वि०[सं० प्रा० स०] [स्त्री० सुस्वरा] [भाव० सुस्वरता] १. मधुर। २. सुरीला। ३. उच्च या घोर।

पुं०१. मधुर, सुरीला या उच्च स्वर। २. शंख। ३. वह कर्म जिससे मनुष्य का स्वर मधुर, सुरीला या उच्च होता है। (जैन)

सुस्वरता—स्त्री०[सं०] सुस्वर होने की अवस्था, गुण या भाव।

सुस्वादु—वि० [सं० ब० स०] अत्यन्त स्वादयुक्त। बहुत स्वादिष्ट। बहुत जायकेदार।

सुस्वाप—पुं०[सं० प्रा० स०] प्रगाढ़ निद्रा। गहरी नींद।

सुहँग*—वि०=सुहँगा।

सुहँगम†—वि०[सं० सुगम] सहज। आसान।

सुहँगा†—वि०[हिं० महँगा का अनु०] अपेक्षया कम मूल्य का या कम मूल्य पर मिलनेवाला। सस्ता। 'महँगा' का विपर्याय।

सुहटा*—वि०[हिं० सुहावना] [स्त्री० सुहटी] सुहावना। सुन्दर।

सुहड़—पुं०]सं० सुभट] सुभट। योद्धा। शूर-वीर। (डिं०)

सुहनी†—स्त्री०=सोहनी।

सुहबत†—स्त्री०=सोहबत।

सुहराना†—स०=सहलाना।

सुहराब—पुं०[फा०] ईरान के सुप्रसिद्ध वीर रुस्तम का बेटा जो उसी के हाथों मारा गया था।

सुहल†—पुं०=सुहेल (तारा)।

सुहव†—पुं०=सूहा (राग)।

सुहवि (विस्)—पुं०[सं०] एक अंगिरस का नाम।

सुहवी†—स्त्री०=सूहा (राग)।

सुहस्त—वि०[सं० ब० स०] १. सुन्दर हाथोंवाला। २. जिसके हाथ किसी काम में मँज गये हों, फलतः जो कोई काम सहज में तथा बढ़िया रूप में करता हो।

सुहा—पुं०[हिं० सुआ] [स्त्री० सुही] लाल नामक पक्षी।

†पुं०=सूहा (राग)।

सुहाग—पुं० [सं० सौभाग्य] १. विवाहिता स्त्री की वह स्थिति जिसमें उसका पति जीवित और वर्तमान हो। अहिवात। सौभाग्य।

मुहा०—सुहाग भरना=स्त्री की माँग में सिंदूर भरना। **सुहाग मनाना**=स्त्री का सदा सुहाग या सौभाग्य बना रहने की कामना करना। पति-सुख के अखंड रहने के लिए कामना करना।

२. वह वस्त्र जो वर विवाह के समय पहनता है।,जामा। ३. विवाह के समय कन्या पक्ष में गाये जानेवाले मांगलिक गीत, जिनमें कन्या के सौभाग्यवती बने रहने की कामना होती है।

क्रि० प्र०—गाना।

पुं०[?] मंझोले आकार का एक प्रकार का सदाबहार पेड़ जिसके बीजों से जलाने के लिए और औषध के काम में लाने के लिए तेल निकाला जाता है।

†पुं०=सुहागा।

सुहाग-घर—पुं०=सुहाग-मंदिर।

सुहागन—वि० स्त्री०=सुहागिन।

सुहाग-मंदिर—पुं०[सं०] १. राजमहल का वह विभाग जिसमें राजा अपनी रानियों के साथ विहार करते थे। २. वह कोठरी या कमरा जिसमें वर और वधू सोते हों।

सुहागा—पुं०[सं० सुभग] एक प्रकार का क्षार जो गरम पानी वाले गंधकी सोतों से निकलता है।

†पुं०[?] खेत की मिट्टी बराबर करने का पाटा। हेंगा।

सुहागिन—वि० स्त्री०[हिं० सुहाग+इन (प्रत्य०)] सुहाग अर्थात् सौभाग्य प्राप्ता (स्त्री)। सधवा।

सुहागिनी†—स्त्री०=सुहागिन।

सुहागिल*—स्त्री०=सुहागिन।

सुहाता—वि०[हिं० सहना] जो सहा जा सके। सहने योग्य। सह्य।

†वि०=सुहावना। जैसे—उसे मेरी कोई बात नहीं सुहाती है।

सुहान†—पुं०=सोहान।

सुहाना—अ०[सं० शोभन]१. देखने में सुन्दर प्रतीत होना। २. भला लगना। सुखद होना। ३. सत्य होना।

सुहामण†—वि०=सुहावना।

सुहार†—पुं०=सुहाल (पकवान)। उदा०—हारके सरोज सूकि होत हैं सुहार से।—सेनापति।

सुहारी†—स्त्री०[सं० सु+आहार] पूरी। सादी।

सुहाल—पुं० [सं० सु+आहार] एक प्रकार का नमकीन पकवान जो मैदे का बनता है और जिसका आकार तिकोना तथा परतदार होता है।

सुहाली†—स्त्री०=सुहारी।

सुहाव*—वि०[हिं० सुहाना] सुहावना। सुन्दर।

पुं०[सं० सु+हाव] सुन्दर हाव-भाव।

सुहावता†—वि०[हिं० सुहाना] [स्त्री० सुहावती]१. सुहानेवाला। देखने में अच्छा लगनेवाला। सुहावना।

सुहावन†—वि०=सुहावना।

सुहावना—वि०[हिं० सुहाना] [स्त्री० सुहावनी] जो सुन्दर भी हो और सुखद भी। जैसे—सुहावनी बात, सुहावनी रात।

†अ०=सुहाना।

सुहावनापन—पुं०[हिं० सुहावना+पन (प्रत्य०)] 'सुहावना' होने की अवस्था या भाव। सुन्दरता। मनोहरता।

सुहावला*—वि०=सुहावना।

सुहास—वि०[सं० ब० स०] [स्त्री० सुहासा] सुन्दर हंसी हंसनेवाला।

सुहासिनी—वि० स्त्री [सं०] हिं० 'सुहासी' का स्त्री०।

सुहासी (सिन्)—वि० [सं० सुहास+इनि—दीर्घ, नलोप] [स्त्री० सुहासिनी] सुन्दर हंसी हंसनेवाला।

सुहिणा*—पुं०=स्वप्न। (राज०)

सुहित—वि०[सं० ब० स०]१. बहुत अधिक हित अर्थात् उपकार करने या लाभ पहुँचानेवाला। २. (कार्य) जो पूरा किया गया हो। सम्पादित। ३. तृप्त। सन्तुष्ट। ४. उपयुक्त। ठीक।

सुहिता—स्त्री०[सं० ब० स०] १. अग्नि की एक जिह्वा का नाम।. २. रुद्रजटा।

सुहिया†—स्त्री०=सुहा (राग)।

सुहुत†—वि०=सुस्त।

सुहृत्—वि०, पुं०=सुहृद।

सुहृत्ता—स्त्री०=सुहृदता।

सुहृद—वि०[सं०] [भाव० सुहृदता] अच्छे हृदयवाला। प्यारा।

पुं०[सं०]१. शिव का एक नाम। २. मित्र।

सुहृदय—वि०[सं० ब० स०] [भाव० सुहृदयता]१. अच्छे हृदयवाला। २. सबसे प्यार करनेवाला। ३. सहृदय।

सुहेल—पुं०[अ०] एक कल्पित तारा, जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यह यमन देश में दिखलाई देता है और इसके उदित होने पर चमड़े में सुगंध आ जाती है, तथा सब जीव मर जाते हैं। (हिंदी के कवियों ने इसका निकलना शुभ माना है।)

सुहेलरा*—वि०=सुहेला।

सुहेला—वि० [सं० शुभ?] १. सुहावना। सुन्दर। २. सुखदायक। सुखद।

पुं०१. विवाह के अवसर पर गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत। २. प्रशंसा, स्तुति।

सुहेस†—वि० [सं० शुभ] अच्छा। सुन्दर। भला।

सुहोता—पुं०[सं० सुहेत] वह जो उत्तम रूप से हवन करता हो। अच्छा होता।

सुहोत्र—पुं०[सं० प्रा० स०]१. एक वैदिक ऋषि। २. एक बार्हस्पत्य का नाम। ३. सहदेव का एक पुत्र। ४. सुधन्वा का एक पुत्र। ५. वितथ का एक पुत्र।

सुह्म—पुं०[सं०]१. एक प्राचीन प्रदेश जो गौड़ देश के पश्चिम में था। ताम्रलिप्ति (आधुनिक तामलूक) यहीं का राजनगर था। २. यवनों की एक जाति।

सुह्मक—पुं०=सुह्म।

सूं*—अव्य० [सं० सह] ब्रजभाषा में करण और अपादान का चिह्न। सों। से।

सूंइस†—स्त्री०=सूँस (जल-जन्तु)।

सूंघना—स० [सं० सिंघण]१. किसी पदार्थ की गंध जानने के उद्देश्य से उसे नाक के पास ले जाकर साँस खींचना। जैसे—फूल सूँघना। २. कोई विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए उक्त क्रिया करना। जैसे—रीछ ने उस मृतप्राय व्यक्ति को सूँघा।

मुहा०—जमीन सूंघना=बैठे बैठे इस प्रकार ऊँघना कि सिर बार बार जमीन की ओर झुकता रहे। (व्यंग्य) **(किसी छोटे का) सिर सूंघना**=अपनी मंगल-कामना प्रकट करने के लिए छोटों का मस्तक सूँघना या सूंघने का नाट्य करना। **(किसी को) साँप सूँघना**=साँप का काटना जिससे आदमी मर जाता है। (व्यंग्य) जैसे—बोलते क्यों नहीं क्या साँप सूँघ गया है?

३. बहुत अल्प आहार करना। बहुत कम या नाम-मात्र का भोजन करना। (व्यंग्य) जैसे—आपने भोजन क्या किया है, सिर्फ सूंघकर छोड़ दिया है।

सूंघा—पुं० [हिं० सूंघना]१. वह जो केवल सूँघकर यह जान लेता हो कि अमुक पदार्थ या व्यक्ति किधर गया है; अथवा किसी स्थान पर अमुक पदार्थ है या नहीं?

विशेष—प्राचीन तथा मध्य युग में कुछ लोग ऐसे होते थे जो केवल सूँघकर यह बतला देते थे कि चीजें चुराकर चोर कहाँ या किधर गये हैं, अथवा अमुक जमीन के नीचे पानी या खजाना है कि नहीं।

२. सूंघकर शिकार तक पहुँचनेवाला कुत्ता। ३. जासूस। भेदिया।

सूंठ†—स्त्री०=सोंठ।

सूँड़—पुं०[सं० शुण्ड]१. हाथी की नाक जो बहुत लंबी होती और नीचे की ओर प्रायः जमीन तक लटकती रहती है। २. जन्तुओं के मुँह के आगे का निकला हुआ उक्त प्रकार का छोटा अंग।

सूँड़डंड—पुं० [सं० शुण्ड-दंड] हाथी। (डिं०)

सूँड़हल—वि०[सं० शुण्डाल] सूँडवाला।

पुं० हाथी।

सूँडा—पुं०[हिं० सूँड] बड़ी शूंड़।

सूँडाल—वि०[सं० शुंडाल] सूँडवाला।

पुं० हाथी।

सूँडी—स्त्री०[सं० शुण्डी] पौधों, फलों आदि में लगनेवाला एक प्रकार का छोटा लंबोतरा कीड़ा।

सूँधी—स्त्री० [सं० शोधन] सज्जी मिट्टी।

सूँस—स्त्री० [सं० शिशुमार] प्रायः आठ-दस हाथ लंबा एक प्रसिद्ध बड़ा जल-जन्तु, जिसके जबड़े में तीस दाँत होते हैं।

सूँह†—अव्य०=सौंहें (सामने)।

सू—वि० [सं० √षू (उत्पन्न करना) +क्विप्] उत्पन्न करनेवाला (समासांत में)। जैसे—रत्नसू।

स्त्री०[फा०] ओर। दिशा।

सूअर—पुं०[सं० शूकर, सूकर] [स्त्री० सुअरी]१. एक प्रसिद्ध स्तनपायी जन्तु जो मुख्यतः दो प्रकार का होता है। (क) वन्य या जंगली और (ख) ग्राम्य या पालतू।

विशेष—ग्राम्य या पालतू सूअर छोटा और डरपोक होता है, पर जंगली सूअर बहुत बड़ा शक्तिशाली और परम हिंसक प्रवृत्ति का होता है।

२. एक गाली।

पद—**सूअर कहीं का**=नालायक।

सूअर-दाढ़—स्त्री०[सं० शूक-दंष्ट्र] एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसमें मसूड़ों में अंकुर-सा निकलने लगता है।

सूअर-बियान†—पुं० [हिं० सूअर+बिआना=जनना] मादा सूअर की तरह बहुत अधिक संतान उत्पन्न करना।

वि० स्त्री० मादा सूअर की तरह बहुत अधिक संतान प्रसव करनेवाली (भार्या या स्त्री)।

सूअरमुखी—स्त्री० [हिं० सूअर+मुखी] एक प्रकार की बड़ी ज्वार।

सूआ†—पुं० [सं० शुक, प्रा० सूअ] सुग्गा। तोता। शुक। कीट।

पुं०[हिं० सूई] १. बड़ी, मोटी और लंबी सूई जिससे टाट आदि सीते हैं। २. बड़ी नहर की छोटी उपशाखा। (पश्चिम) ३. सींक। (लश०)

सूई—स्त्री०[सं० सूची]१. लोहे का वह नुकीला, पतला और लंबा उपकरण जिसके छेद में धागा पिरोकर कपड़े आदि सीते हैं।

मुहा०—सूई का फावड़ा या भाला बनाना=जरा सी बात को बहुत अधिक बढ़ाना। व्यर्थ विस्तार करना। **आँखों की सूइयाँ निकालना**=किसी विकट काम के प्रायः समाप्त हो चुकने पर उसका शेष थोड़ा-सा सुगम अंश पूरा करके उसका श्रेय पाने का प्रयत्न करना।

२. किसी विशेष परिणाम, अंक, दिशा आदि का सूचक तार या काँटा। जैसे—घड़ी की सूई। ३. पौधे का छोटा पतला अंकुर। ४. चिकित्सा

क्षेत्र में नली के आकार का एक प्रसिद्ध छोटा उपकरण, जिसकी सहायता से कुछ तरल दवाएँ शरीर के रगों या पट्ठों में पहुँचाई जाती हैं। पिचकारी। शृंगक। (सीरिंज) ५. उक्त उपकरण से शरीर के रगों या पट्ठों में तरल औषध आदि पहुँचाने की क्रिया। (इंजेक्शन)

मुहा०—सूई लगाना=उक्त नली के द्वारा शरीर के अंदर दवा पहुँचाना। सूई लेना=रोगी का उक्त उपकरण द्वारा कोई दवा अपने शरीर में प्रविष्ट कराना

सूईकारी—स्त्री०[हिं० सूई+फा० कारी (किया हुआ काम)] १. कपड़े पर सूई और डोरे की सहायता से (तीलीकारी से भिन्न) बनाये हुए बेल, बूटे आदि। सूची-शिल्प। (नीडल वर्क, स्टिच-क्रैफ़्ट) २. चित्र-कला में, उक्त आकार-प्रकार का अंकन।

सूई-डोरा—पुं०[हिं० सूई+डोरा] मालखंभ की एक कसरत।

सूक—पुं० [सं० √ सू (प्रेरणा देना) +क्विप्—कन्] १. बाण। २. वायु। हवा। ३. कमल।

†पुं० १.=शुक्र। २.=शुक।

सूकना*—अ०=सूखना।

सूकर—पुं० [सं० सू√कृ (करना)+अच्] [स्त्री० सूकरी] १. सूअर। शूकर। २. एक प्रकार का हिरन। ३. कुम्हार। ३. सफेद धान। ५. पुराणानुसार एक नरक का नाम।

विशेष—'सूकर' के यौ० के लिए देखो 'शूकर' के यौ०।

सूकर-खेत†—पुं०=शूकर-क्षेत्र।

सूकरी—स्त्री० [सं० शूकर—ङीप्] १. मादा सूअर। सूअरी। शूकरी। २. वराहक्रांता। ३. वाराहीकंद। ४. बाराही देवी। ५. एक प्रकार की चिड़िया।

सूकरेष्ट—पुं०[सं० ष० त०] १. कसेरू। २. एक प्रकार का पक्षी।

सूका—पुं०[सं० संपादक=चतुर्थांश सहित] [स्त्री० सूकी] चार आने (अर्थात् २५ नये पैसे) के मूल्य का सिक्का। चवन्नी।

†वि०=सूखा।

†पुं०[?] प्रभात।

मुहा०—सूका उगना=सवेरा होना।

सूकी†—स्त्री० [हिं० सूका=चवन्नी?] रिश्वत। घूस।

†स्त्री०=सूका (चवन्नी)।

सूक्त—वि०[सं० सु√ वच् (कहना)+क्त] उत्तम रूप से या भली भाँति कहा हुआ।

पुं० १. उत्तम रूप से या भली-भाँति कही हुई बात। अच्छी उक्ति। सूक्ति। २. ऋचाओं या वेद-मंत्रों का विशिष्ट वर्ग या विभाग। जैसे—देवी-सूक्त; श्रीसूक्त आदि।

सूक्तचारी (रिन्)—वि०[सं० सूक्त√चर् (प्राप्तादि)+णिनि] उत्तम वाक्य या परामर्श माननेवाला।

सूक्तदर्शी (शिन्)—पुं०[सं० सूक्त√दृश् (देखना)+णिनि] वह ऋषि जिसने वेदमंत्रों का अर्थ किया हो। मंत्रद्रष्टा।

सूक्तद्रष्टा—पुं० [सं० ष० त०] दे० 'सूक्त-दर्शी'।

सूक्ता—स्त्री० [सं० सूक्त—टाप्] मैना। सारिका।

सूक्ति—स्त्री० [सं० प्रा० स०] अच्छे और सुन्दर ढंग से कही हुई कोई बढ़िया बात। अच्छी उक्ति।

सूक्तिक—पुं०[सं० सूक्ति+कन्] एक प्रकार की झाँझ।

सूक्षम†—वि०, पुं०=सूक्ष्म।

सूक्ष्म—वि०[सं० √सूक् (चुगुली करना)+स्मन्-मन्-सुकुवी] [स्त्री० सूक्ष्मा, भाव० सूक्ष्मता] १. बहुत छोटा, पतला या थोड़ा। २. जो अपनी बारीकी के कारण सब के ध्यान या समझ में जल्दी न आ सके। बारीक। (सट्ल) ३. बहुत ही छोटे-छोटे अंगों या उनकी प्रक्रिया, विचार आदि से संबंध रखनेवाला। (फ़ाइन)

पुं० १. साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी सूक्ष्म चेष्टा या सांकेतिक व्यापार से ही अपने मन का भाव प्रकट करने का, अथवा किसी के प्रश्न या संकेत का उत्तर देने का, उल्लेख होता है। यथा—लखि गुरुजन बिच कमल सौं सीस छुवायौ स्याम। हरि सन्मुख करि आरसी हियै लगाई बाम।—बिहारी। २. योग में, तीन प्रकार की सिद्धियों में से एक प्रकार की सिद्धि। (शेष दो प्रकार निरवद्य और सावद्य कहलाते हैं) ३. दे० 'सूक्ष्म शरीर'। ४. परमाणु। ५. परब्रह्म। ६. शिव। ७. जैनों के अनुसार एक प्रकार का कर्म जिसके उदय होने से मनुष्य सूक्ष्म जीवों की योनि में जन्म लेता है। ८. वह ओषधि जो रोम-कूप के मार्ग से शरीर में प्रवेश करे। जैसे—नीम, शहद, रेंडी का तेल, सेंधा नमक आदि। ९. बृहत्संहिता के अनुसार एक प्राचीन देश। १०. जीरा। ११. सुपारी। १२. निर्मली। १३. रीठा। १४. छल। कपट।

सूक्ष्म कोण—पुं०[सं० मध्य० स०] ज्यामिति में, वह कोण जो समकोण से छोटा हो।

सूक्ष्म-घंटिका—स्त्री०[सं०] सनई। क्षुद्र शणपुष्पी।

सूक्ष्म-तंडुल—पुं० [सं० ब० स०] १. पोस्त-दाना। खसखस। २. धूना। राल।

सूक्ष्म-तंडुला—स्त्री०[सं० सूक्ष्म-तंडुल—टाप्] १. पीपल। पिप्पली। २. धूना। राल।

सूक्ष्मता—स्त्री०[सं० सूक्ष्म+तल्—टाप्] सूक्ष्म होने की अवस्था, गुण या भाव। बारीकी।

सूक्ष्म-तुंड—पुं०[सं० ब० स०] एक प्रकार का कीड़ा। (सुश्रुत)

सूक्ष्मदर्शक यंत्र—पुं० [सं० मध्य० स०] सूक्ष्मवीक्षक यंत्र। (दे०)

सूक्ष्म-दर्शिता—स्त्री०[सं० सूक्ष्मदर्शी+तल—टाप्] सूक्ष्मदर्शी होने की अवस्था, गुण या भाव। सूक्ष्म या बारीक बात सोचने-समझने का गुण।

सूक्ष्मदर्शी—वि० [सं० सूक्ष्म√दृश् (देखना)+णिनि] १. सूक्ष्म बातें या विशेष समझनेवाला। बारीक बातें सोचने-समझनेवाला। कुशाग्र-बुद्धि। २. फलतः विशेष बुद्धिमान् या समझदार।

पुं० एक प्रकार का यंत्र जिसके द्वारा कोई बहुत छोटी चीज या उसका कोई अंश बहुत बड़े आकार का दिखाई देता है। (माइक्रोस्कोप)

सूक्ष्म-दल—पुं०[सं० ब० स०] एक प्रकार की सरसों। देवसर्षप।

सूक्ष्म-दृष्टि—स्त्री०[सं० कर्म० स०] ऐसी दृष्टि जिससे बहुत ही सूक्ष्म बातें भी दिखाई दें या समझ में आ जायँ।

वि० उक्त प्रकार की दृष्टि रखनेवाला।

सूक्ष्म-देह—पुं०=सूक्ष्म-शरीर।

सूक्ष्म-देही (हिन्)—वि०[सं० सूक्ष्म-देह+इनि] सूक्ष्म शरीरवाला। जिसका शरीर बहुत ही सूक्ष्म या छोटा हो।

पुं० परमाणु।

सूक्ष्म-नाभ—पुं०[सं० ब० स०] विष्णु का एक नाम।

सूक्ष्म-पत्र—पुं०[सं० ब० स०]१. धनिया। धन्याक। २. बन-तुलसी। ३. लाल ईख। ४. काली जीरी। ५. देव-सर्षप। ६. बेर। ७. माची-पत्र । ८. कुकरौंदा। ९. कीकर। बबूल। १०. धमासा। ११. उड़द। १२. अर्कपत्र।

सूक्ष्म-पत्रक—पुं० [सं० सूक्ष्मपत्र+कप्] १. पित्तपापड़ा। पर्पटक। २. बन-तुलसी।

सूक्ष्म-पत्रा—स्त्री० [सं० सूक्ष्मपत्र—टाप्] १. बन-जामुन। २. धमासा। वृहती। ४. शतमूली। ५. अपराजिता। ६. जीरे का पौधा। ७. बला।

सूक्ष्मपत्रिका—स्त्री० [सं० सूक्ष्मपत्रक—टाप्-इत्व] १. सौंफ। शतपुष्पा। २. शतावर। ३. छोटी पत्तियोंवाली ब्राह्मी। ४. पोई नाम का साग।

सूक्ष्मपत्री—स्त्री० [सं० सूक्ष्मपत्र—ङीप्] १. आकाश मांसी। २. शतावर।

सूक्ष्मपर्णा—स्त्री०[सं० ब० स०]१. विधारा। २. वन-भंटा। वृहती। ३. छोटी सनई।

सूक्ष्म-पर्णी—स्त्री०[सं० सूक्ष्मपर्ण—ङीप्] रामतुलसी। रामदूती।

सूक्ष्म-पाद—वि०[सं० ब० स०] छोटे पैरोंवाला। जिसके पैर छोटे हों।

सूक्ष्म-पिप्पली—स्त्री० [सं० मध्य० स०] जंगली पीपल। बन-पिप्पली।

सूक्ष्म-पुष्पा—स्त्री०[सं० ब० स०] सनई। शण-पुष्पी।

सूक्ष्म-पुष्पी—स्त्री०[सं० सूक्ष्म-पुष्प—ङीप्]१. शंखिनी। २. यव-तिक्ता नाम की लता।

सूक्ष्म-फल—पुं०[सं० ब० स०]१. लिसोड़ा। २. बेर।

सूक्ष्म-फला—स्त्री०[सं० सूक्ष्म-फल—टाप्]१. भुईं आँवला। भूम्यामलकी। २. मालकंगनी। ३. तालीशपत्र।

सूक्ष्म-बदरी—स्त्री०[सं० मध्य० स०] झड़बेरी। भूबदरी।

सूक्ष्म-बीज—पुं०[सं० ब० स०] पोस्तदाना। खसखस।

सूक्ष्म-भूत—पुं०[सं० कर्म० स०] आकाश, अग्नि, जल आदि ऐसे शुद्ध भूत जिनका पंचीकरण न हुआ हो।

सूक्ष्म-मति—वि०[सं० ब० स०] सूक्ष्म और तीव्र बुद्धिवाला।

सूक्ष्म-मूला—स्त्री०[सं० ब० स०]१. जीवती। २. ब्राह्मी।

सूक्ष्म-रूपी—पुं०[सं० सूक्ष्मरूप+इनि] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सूक्ष्म-लोभक—पुं०[सं०] जैन मतानुसार मुक्ति की चौदहवीं अवस्थाओं में से दसवीं अवस्था।

सूक्ष्मवल्ली—स्त्री० [सं० कर्म० स०] १. ताम्रवल्ली। २. जतुका। ३. करेली।

सूक्ष्म-वीक्षक—वि० [सं० ष० त०] बहुत ही सूक्ष्म चीजें देखनेवाला। पुं०=सूक्ष्मदर्शी (यंत्र)।

सूक्ष्म-शरीर—पुं०[सं०कर्म० स०] वेदांत दर्शन के अनुसार जीव या प्राणी के तीन प्रकार के शरीरों में से एक जो उसके स्थूल शरीर के ठीक अनुरूप परन्तु बहुत छोटा और अँगूठे के बराबर होता है। लिंग शरीर।

विशेष—यह माना जाता है कि मृत्यु के समय यह शरीर स्थूल शरीर से निकल कर परलोक में अपने पाप-पुण्य का फल भोगता है। यह भी माना जाता है कि आत्मा इसी शरीर से आवृत्त रहती है। शेष दो कारण-शरीर और स्थूल-शरीर कहलाते हैं।

सूक्ष्म-शर्करा—स्त्री०[सं० कर्म० स०] बालू। रेत।

सूक्ष्म-शाक—पुं० [सं० कर्म०स०] एक प्रकार की बबुरी जिसे जल-बबुरी भी कहते हैं।

सूक्ष्म-शालि—पुं० [सं० कर्म० स०] सोरों नामक धान।

सूक्ष्म-स्फोट—पुं०[सं०कर्म० स०] एक प्रकार का कोढ़। विर्चचिका रोग।

सूक्ष्मा—स्त्री०[सं० सूक्ष्म—टाप्] १. जूही। यूथिका। २. छोटी इलायची। ३. मूसली। ४. छोटी जटामासी। ५. करुणी नाम का पौधा। ६. विष्णु की नौ अक्तियों में से एक।

सूक्ष्माक्ष—वि० [सं० ब० स०] सूक्ष्म-दृष्टिवाला। तीव्रदृष्टि।

सूक्ष्मात्मा (त्मन्)—पुं०[सं० ब० स०] शिव। महादेव।

सूक्ष्माह्वा—स्त्री० [सं० ब० स०] महामेदा नामक अष्टवर्गीय ओषधि।

सूक्ष्मेक्षिका—स्त्री०[सं० कर्म० स०]१. प्राचीन भारत में, किसी बात या विषय की ऐसी छानबीन या जाँच-पड़ताल जो बहुत सूक्ष्म दृष्टि से की गई हो। २. सूक्ष्म दृष्टि।

सूक्ष्मैला—स्त्री०[सं० कर्म० स०] छोटी इलायची।

सूख†—वि०=सूखा।

स्त्री०[हिं० सूखना] सूखने की अवस्था, क्रिया या भाव।

सूखना—अ० [सं० शुष्क, हिं० सूखा+ना (प्रत्य०)] १. किसी आर्द्र या तर पदार्थ का ऐसी स्थिति में आना कि उसकी आर्द्रता या तरी नष्ट हो जाय। जैसे—गीली धोती सूखना, तरकारी या फल सूखना। २. किसी आधार में के पानी का किसी प्रकार नष्ट हो जाना या न रह जाना। जैसे—कूआँ, तालाब, नदी सूखना। ३. जल के अभाव में किसी पदार्थ का जीवनी-शक्ति से हीन होना। जैसे—वर्षा न होने से फसल सूखना; चिंता या डर से जान सूखना। ४. कष्ट, चिंता, रोग आदि के कारण शरीर का क्षीण और दुर्बल होना। जैसे—चार दिन की बीमारी में उनका सारा शरीर सूख गया।

मुहा०—सूखकर काँटा होना=बहुत ही क्षीण और दुर्बल हो जाना। **सूखकर सोंठ होना**= सूखकर बिलकुल चुचुक या सिकुड़ जाना। **सूखे खेत लहलहाना**=कष्ट, चिंता, दुःख आदि दूर होने पर फिर से यथेष्ट प्रसन्न या सुखी होना।

संयो० क्रि०—जाना।

सूखर—पुं०[?] एक शैव संप्रदाय।

सूखा—वि० [सं० शुष्क][स्त्री० सूखी, भाव० सूखापन] १. जिसमें जल या उसका कोई अंश न हो या न रह गया हो। निर्जल। जैसे—सूखा कपड़ा, सूखी नदी। २. जिसमें आर्द्रता या नमी न हो या न रह गई हो। शुष्क। जैसे—सूखा मौसम=ऐसा मौसम जिसमें वर्षा न हो और हवा में नमी न हो। ३. जिसमें से जीवनी-शक्ति का सूचक हरापन निकल गया हो। जैसे—सूखा पत्ता, सूखा वृक्ष। ४. जिसमें जीवनी-शक्ति बहुत कम या नहीं के समान हो। जैसे—सूखा चेहरा, सूखा शरीर। ५. जिसमें भावुकता, मनोरंजकता, सरसता आदि कोमल गुणों का अभाव हो। जैसे—सूखा व्यवहार, सूखा स्वभाव। (ड्राई, उक्त सभी अर्थों के लिए) ६. कोरा। निरा। जैसे—सूखा अन्न, सूखी शेखी।

मुहा०—सूखा जवाब देना=साफ इन्कार करना।

७. जिसमें जल आदि का योग न हो। जिसमें आवश्यकता होने पर भी जल का उपयोग न किया गया हो। जैसे—(क) यह चूरन सूखा ही घोंट आओ। (ख) वह बोतल की सारी शराब सूखी ही पी गया। ८. (बात या व्यवहार) जो दिखाने भर को या नाममात्र को हो। तत्त्व, तथ्य आदि से रहित। उदा०—लेके मैं ओढ़ूँ, बिछाऊँ या लपेटूँ, क्या करूँ, । रूखी, फीकी, ऐसी सूखी मेहरबानी आपकी।—इन्शा।

पुं० १. पानी न बरसने की दशा या समय। अनावृष्टि। खुश्क-साली। (ड्रॉट)

क्रि० प्र०—पड़ना।

२. ऐसा स्थान जहाँ जल न हो। स्थल। जैसे—सूखे पर नाव लगाना। ३. तम्बाकू का सुखाया हुआ चूरा या पत्ता। ४. एक प्रकार की खाँसी जिसमें कफ नहीं निकलता और साँस जोरों से चलता है। हब्बा-डब्बा। ५. कोई ऐसा रोग जिससे शरीर जल्दी-जल्दी सूखने लगता हो।

क्रि० प्र०—लगना।

६. भाँग की सूखी हुई पत्तियाँ।

सूखिम†—वि०=सूक्ष्म।

सूखी खाँसी—स्त्री० [हिं०] ऐसी खाँसी जिसमें गले से कफ या बलगम न निकलता हो।

सूखी खेती—स्त्री० [हिं०] खेती करने की एक आधुनिक प्रणाली जिससे उन स्थानों में भी कुछ फसल उत्पन्न कर ली जाती है, जिनमें वर्षा अपेक्षया बहुत कम होती है, और जल के अभाव में सिंचाई की भी कोई व्यवस्था नहीं हो सकती। (ड्राई फ़ार्मिंग)

विशष—इस प्रणाली में कई प्रकार के उपाय होते हैं; जैसे—(क) जमीन बहुत गहरी जोतना, जिसमें पानी गहराई में समाकर जमा रहे। (ख) जमीन का ऊपरी भाग पत्थरों आदि से ढक देना, जिसमें उसकी तरी बनी रहे। (ग) खेत के सीढ़ीनुमा विभाग कर देना जिसमें वर्षा के जल का बहाव नियंत्रित किया जा सके आदि।

सूखी धुलाई—स्त्री० [हिं०] रासायनिक द्रव्यों के योग से कपड़े साफ करने की वह क्रिया जिसमें जल का उपयोग न हो। (ड्राइ-वाशिंग)

सूघर†—वि०=सुघड़।

सूच—पुं० [सं०] कुश का अंकुर, जो सूई की तरह नुकीला होता है।

†वि०=शुचि। (डिं०)

सूचक—वि० [सं० √ सूच् (सूचित करना)+णवुल्—अक] [स्त्री० सूचिका] सूचना देनेवाला। सूचित करने या बतानेवाला। ज्ञापक। बोधक।

पुं० १. कपड़ा, चमड़ा आदि सीने की सूई। सूची। २. सिलाई का काम करनेवाला कारीगर। ३. प्राचीन भारत में अभिनय का व्यवस्थापक। सूत्रधार। ४. सिद्ध पुरुष। ५. गौतम बुद्ध का एक नाम। ६. चुगलखोर अथवा दुष्ट और नीच व्यक्ति। ७. आयोगव माता और क्षत्रिय पिता से उत्पन्न पुत्र। ८. गुप्तचर। जासूस। भेदिया। ९. पिशाच। १०. कुत्ता। ११. बिल्ली। १२. कौआ। १३. गीदड़। १४. ऊँची दीवार। १५. कटघरा या जंगला। १६. छज्जा या बरामदा। १७. सोरों नामक धान।

सूचकांक—पुं० [सं०] खाद्यान्न, वस्त्र तथा अन्य वस्तुओं का विभिन्न समय का मूल्य बतलानेवाला अंक या लेखा। (सामान्य स्थिति के समय का मूल्य प्रायः १०० मान लिया जाता है। इससे बढ़ते या घटते हुए अंक आपेक्षिक महँगी या सस्ती के परिदर्शक होते हैं।) (इन्डेक्स नंबर)

सूचन—पुं० [सं० √ सूच् (बताना)+ल्युट्—अन] [स्त्री० सूचनी] १. सूचित करने अर्थात् बताने या जताने की क्रिया। ज्ञापन। उदा०—जगत का अविरत हृत्कंपन। तुम्हारा ही है भय सूचन।—पन्त। २. सुगंध फैलाने की क्रिया या भाव।

सूचना—स्त्री० [सं० सूच+णिच्+युच्—टाप्] [वि० सूचनीय, भू० कृ० सूचित] १. सूई आदि के छेदने या भेदने की क्रिया या भाव। २. वह बात जो किसी व्यक्ति को किसी विषय का ज्ञान या परिचय कराने के लिए कही या बतलाई जाय। अवगत कराने या जताने के लिए कही हुई बात। (इन्फ़ार्मेशन) ३. वह बात जो किसी व्यक्ति या जन-समाज को किसी विषय में सचेत या सावधान करने के लिए कही जाय। (नोटिस) ४. वह कागज या पत्र जिस पर उक्त प्रकार की कोई बात छपी या लिखी हो। इश्तहार। विज्ञापन। (नोटिस) ५. वह बात जो कोई कार्रवाई करने से पहले संबद्ध व्यक्ति या जन-समूह को पहले से विदित कराने के लिए कही या प्रकाशित की जाय। (नोटिस) ६. दुर्घटना आदि के संबंध में अदालती या और किसी तरह की कार्रवाई करने से पहले पुलिस या किसी और उपयुक्त अधिकारी से उसका हाल कहना। प्रतिवेदन। (रिपोर्ट) ७. कहीं से आनेवाले माल के साथ या उसके संबंध में आया हुआ विवरण, सूची आदि। बीजक। चलान। (एडवाइस)

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—भेजना।—मिलना।

८. अभिनय। ९. नजर। दृष्टि। १०. टोह या भेद लेना। रहस्य का पता लगाना। ११. हिंसा।

†स० [सं० सूचन से] अवगत या सूचित करना। जतलाना। बतलाना।

सूचना अधिकारी—पुं० [सं० ष० त०] किसी राज्य या विभाग अथवा संस्था आदि का वह अधिकारी जो जन-साधारण को मुख्य मुख्य बातों की सूचना देता रहता हो। (इनफ़ार्मेशन आफ़िसर)

सूचना-पत्र—पुं० [सं०ष०त०] वह पत्र या विज्ञप्ति जिसके द्वारा कोई बात लोगों को बताई जाय। विज्ञप्ति। इश्तहार। (नोटिस)

सूचनालय—पुं० [सं०ष०त०] राज्य या उसके किसी विभाग का वह कार्यालय जहाँ से जन-साधारण को समय-समय पर उपयोगी सूचनाएँ दी जाती हैं। (इनफ़ार्मेशन ब्यूरो)

सूचनीय—वि० [सं०√ सूच् (बताना)+अनीयर] (बात या विषय) जिसकी सूचना किसी को देना आवश्यक हो अथवा जिसकी सूचना दी जा सकती हो।

सूचयितव्य—वि०=सूचनीय।

सूचा†—स्त्री० [हिं० सुचित] जो होश में हो। सचेत। सावधान।

स्त्री० [सं०]=सूचना।

†वि० [सं० स्वच्छ] १. शुद्ध। साफ। २. जिसमें से किसी ने कुछ खाया या चखा न हो। 'जूठा' का विपर्याय।

सूचि—पुं० [सं० √सूच्+णिन्] १. निषाद पिता और वैश्या माता से उत्पन्न पुत्र। २. सूप बनानेवाला कारीगर। ३. उपकरण।

स्त्री०=सूची।

†वि०=शुचि (पवित्र)।

सूचिक—पुं०[सं० सूची+ठन्—इक]१. सूई से काम करनेवाला व्यक्ति। २. दरजी।

सूचिका—स्त्री०[सं० सूचि+कन्—टाप्]१. सूई। २. हाथी का सूँड़। ३. केतकी। केवड़ा।

सूचिका-धर—पुं०[सं० ष० त०] सूँड़ धारण करनेवाला, हाथी।

सूचिकाभरण—पुं०[सं०] वैद्यक में एक प्रकार की औषधि जो सन्निपात, विसूचिका आदि प्राणनाशक रोगों तथा साँप के काटने की अंतिम ओषधि मानी गई है।

विशेष—इसका प्रयोग सूई की नोक से मस्तक की त्वचा के अन्दर पहुँचा कर भी किया जाता है और बहुत छोटी छोटी गोलियों के रूप में खिलाकर भी।

सूचिका-मुख—वि० [सं० ब० स०] जिसका मुँह सूई के समान नुकीला हो।

पुं० शंख।

सूचिकार—पुं० [सं० सूचि√कृ करना)+अण्] वह जो सुइयाँ बनाने का काम करता हो।

सूचित—भू० कृ०[√सूच् (बताना)+क्त]१. जिसमें सूई आदि से छेद किया गया हो। २. जिसकी ओर इशारा या संकेत किया गया हो। जताया हुआ। ३. सूचना के रूप में कहा या भेजा हुआ। ४. जिसे सूचना दी गई हो।

सूचिनी—स्त्री०[सं०√ सूच् (कहना)+णिनि-इन्—ङीप्] सूचना देनेवाली स्त्री।

स्त्री०१. सूई। २. रात।

सूचिपत्र—पुं०[सं० ब० स०] १. एक प्रकार का ऊख। २. चौपतिया नामक साग। ३. दे० 'सूचीपत्र'।

सूचिपुष्प—पुं०[सं० ब० स०] केवड़ा। केतकी।

सूचिभेद्य—वि०[सं० तृ० त०]१. जो सूई से छेदा या भेदा जा सकता हो। २. जो इतना घना हो कि उसे छेदने या भेदने के लिए सुई की सहायता की आवश्यकता पड़ती हो। जैसे—सूचिभेद्य अन्धकार।

सूचिरदन—पुं०[सं० ब०स०] नेवला, जिसके दाँत बहुत नुकीले होते हैं।

सूचिवदन—पुं०[सं० ब० स०]१. नेवला। नकुल। २. मच्छर।

सूचिवान् (वत्)—वि०[सं० सूचि+मतुप्म=वनुम=दीर्घ] नुकीला।

पुं० गरुड़।

सूचि-शालि—पुं०[सं० कर्म० स०] सोरों नामक धान।

सूचि-सूत्र—पुं०[सं० ष० त०] १. सूई में पिरोया जानेवाला धागा। २. सूई-धागा।

सूची—स्त्री० [सं० √सिव् (सीना)+चट्—टेरुत्वं—ङीप्] १. कपड़ा सीने की सूई। २. शल्य चिकित्सा में, सूई के आकार-प्रकार का एक उपकरण जिससे क्षत सीया जाता था। (सुश्रुत) ३. एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना, जो लंबी और सुई के आकार की होती थी। ४. किसी प्रकार की चीजों, नामों, बातों आदि का क्रम-बद्ध लेखा या विवरण। अनुक्रमणिका। ५. ऐसा लेखा या विवरण जिसमें बहुत से नाम किसी क्रम में आये हों। तालिका। फेहरिस्त। (लिस्ट) ६. सूचीपत्र। ७. चहारदीवारी आदि में हर दो खंभों के ऊपर आड़ा रखा जानेवाला पत्थर। ९. छन्दःशास्त्र में प्रत्यय के अन्तर्गत वह प्रक्रिया जिससे यह जाना जाता है कि कुछ नियत वर्णों या मात्राओं से कितने प्रकार के छंद या वृत्त बनते या बन सकते हैं और उनके आदि तथा अंत में कितनी लघु और कितनी गुरु मात्राएँ होती हैं। ९. एक प्रकार का नृत्य। १०. दृष्टि। नजर। ११. केतकी। केवड़ा। १२. सफेद कुश। १३. कटघरा। जंगला। १४. दरवाजे में लगाने की सिटकिनी। १५. मैथुन या संभोग का एक प्रकार।

पुं०[सं० सूचिन्] १. गुप्तचर। भेदिया। २. चुगलखोर। पिशुन। ३. दुष्ट और नीच। ४. दे० 'स्वयंभुक्ति' (साक्षी)।

सूचीक—पुं०[सं० सूची+कन्] मच्छर आदि ऐसे जंतु जिनके डंक सूई के समान होते हैं।

सूचीकटाह-न्याय—पुं०[सं० मध्य० स०] लोक व्यवहार में प्रचलित एक प्रकार का न्याय जिसका प्रयोग ऐसे अवसर पर होता है जहाँ कोई कठिन और बड़ा काम करने से पहले सहज और छोटा काम पूरा कर लिया जाता है अथवा करना अभीष्ट होता है।

सूचीकर्म—पुं०[सं० ष० त०] सूई का काम। सिलाई। सूईकारी।

सूचीपत्र—पुं०[सं० ष० त०]१. वह पत्र जिसपर कोई सूची लिखी या छपी हुई हो। २. विशेषतः वह सूचना-पत्र या पुस्तिका जिसमें किसी संस्था में उपलब्ध सामग्री का विवरण होता है। जैसे—(क) प्रकाशन संस्था का सूची-पत्र। (ख) चित्रशाला का सूची-पत्र। (कैटलाग)

सूचीपद्म—पुं०[सं० ब० स०] एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना।

सूचीपाश—पुं०[सं०] सूई में होनेवाला भेद।

सूचीभेद—वि०=सूचिभेद्य।

सूचीमुख—पुं०[सं० ष० त०]१. सूई की नोक या छेद जिसमें धागा पिरोया जाता है। २. हीरा। ३. कुश। ४. पुराणानुसार एक नरक।

वि० सूई के मुख के समान नुकीला।

सूचीवक्त्र—पुं०[सं० ब० स०] स्कंद का एक अनुचर।

सूचीवक्त्रा—स्त्री०[सं० सूची वक्त्र—टाप्]ऐसी योनि जिसका द्वार इतना छोटा हो कि वह पुरुष के संसर्ग के योग्य न हो।

सूच्छम*—वि०=सूक्ष्म।

सूच्य—वि०[सं०] जो सूचित किया जा सकता हो या सूचित किये जाने के योग्य हो। जो जताया जा सकता हो या जताया जाने को हो।

पुं० नाटकों या रूपकों में वे अनुचित, गर्हित, रसहीन और वर्जित बातें जो रंगमंच पर अभिनय के लिए अनुपयुक्त होने के कारण केवल अर्थोपेक्षकों के द्वारा सूचित कर दी जाती हैं। संसूच्य।

सूच्यग्र—पुं०[सं० ष० त०] सूई का अगला भाग। सूई की नोक।

वि०१. जिसकी नोक सूई के समान नुकीली हो। २. सूई की नोक के बराबर, अर्थात् बहुत ही थोड़ा।

सूच्याकार—वि०[सं० सूची+आकार] सूई के आकार का। लंबा और नुकीला।

सूच्यार्थ—पुं०[सं० ष० त०] साहित्य में, पद आदि का वह अर्थ जो शब्दों की व्यंजना शक्ति से निकलता या सूचित होता है।

सूछम*—वि०=सूक्ष्म।

सूछिम*—वि०=सूक्ष्म।

सूजंध*—स्त्री०=सुगंध। (डिं०)

सूज*—स्त्री०१.=सूजन। २.=सूई।

सूजन—स्त्री०[हिं० सूजना]१. सूजे हुए होने की अवस्था या भाव। २. वह विकार जो उक्त के फलस्वरूप शरीर या शरीर के किसी अंग में दृष्टिगत होता है। शोथ। (इन्फ्लेमेशन)

सूजना—अ० [फा० सोजिश, मि० सं० शोथ] रोग, चोट, वात आदि के प्रकोप के कारण शरीर के किसी अंग का अधिक फूल या फैल जाना। शोथ होना।

मुहा०—(किसी का) मुँह सूजना=आकृति से अप्रसन्नता, रोष आदि के लक्षण स्पष्टतः व्यक्त होना। जैसे—रुपये माँगते ही उनका मुँह सूज गया।

सूजनी†—स्त्री०=सुजनी (बिछाने की चादर)।

सूजा—पुं०[सं० सूची, हिं० सूई, सूजी]१. बड़ी और मोटी सूई। सूआ। २. उक्त आकार का कूचबंदों का एक औजार, जिससे कैंचियाँ बनाने के लिए दस्ते में छेद किया जाता है। ३. वह खूँटा जो छकड़ा गाड़ी के पीछे की ओर उसे टिकाने के लिए लगाया जाता है।

*वि०[अ० शुजाअ=बहादुर] बहादुर। वीर।

सूज़ाक—पुं०[फ़ा०] मूत्रेंद्रिय का एक रोग जिसमें उसके अंदर घाव हो जाता है और बहुत तेज जलन होती है। उपदंश। (गनोरिया)

सूजी—स्त्री०[?]१. चूर्ण से भिन्न कणों के रूप में होनेवाला गेहूँ का पिसा हुआ रूप। २. एक प्रकार का सरेस जो माँड़ और चूने के मेल से बनता है और बाजों के पुरजों को जोड़ने के काम में आता है।

स्त्री०[सं० सूची]१. सूई। २. वह सूआ जिससे गड़ेरिए लोग कम्बल की पट्टियाँ सीते हैं।

पुं०=सूचिक (दरजी)।

सूझ—स्त्री०[हिं० सूझना]१. सूझने की क्रिया, धर्म या भाव। २. दृष्टि। नजर। ३. मन में सूझने अर्थात् उत्पन्न होनेवाली कोई ऐसी नई बात, जो अनोखी या असाधारण भी हो। उद्भावना। उपज। जैसे—कवियों की सूझ अनोखी होती है।

पद—सूझ-बूझ । (देखें)

सूझना—अ०[सं० संज्ञान]१. दृष्टि में आना। दिखाई पड़ना। २. ध्यान में आना। ३. युक्ति के रूप में उद्भासित होना। जैसे—पते की सूझना।

अ० [हिं० सुलझना] छुट्टी पाना। मुक्त होना।

सूझ-बूझ—स्त्री०[हिं० सूझना+बूझना]१. देखने और देखकर अच्छी तरह समझने की विशिष्ट योग्यता या शक्ति। २. समझदारी।

पद—सूझ बूझ से=समझदारी से। किसी बात के सब पक्ष सोच-समझकर।

सूझा—पुं० [देश०] फारसी संगीत में एक मुकाम (राग) के पुत्र का नाम।

सूट—पुं०[अं०] १. कई ऐसे कपड़ों का जोड़ा, जो एक साथ पहने जाते हों। जैसे—कोट, पतलून, आदि का सूट ; सलवार, कमीज आदि का सूट। २. दावा। नालिश। ३. मुकदमा।

सूट-केस—पुं०[अं०]१. सूट (अर्थात् कपड़ों के जोड़) रखने का केस या खाना। २. एक प्रकार का चिपटा छोटा बक्स जिसमें यात्रा आदि के समय पहनने के कपड़े रखे जाते हैं।

सूटा—पुं० [अनु०] मुँह से तंबाकू, चरस या गाँजे का धूआँ जोर से खींचने की क्रिया।

क्रि० प्र०—मारना।—लगाना ।

सूठरी†—स्त्री०=सुठरी (भूसा) ।

सूड़ा—पुं०[सं० शुक] शुक पक्षी। तोता। (डिं०)

सूणहर—पुं०[सं० शयन+गृह] शयनागार। (राज०)

सूत—पुं० [सं०सूत्र]१. रूई, रेशम आदि का वह पतला बटा हुआ तागा, जिससे कपड़ा बुनते हैं। तंतु। धागा। डोरा। सूत्र। (थ्रेड) २. किसी चीज में से निकलनेवाला इस प्रकार का तार। ३. लंबाई नापने का एक छोटा मान। ४. इमारत के काम में जमीन, लकड़ी आदि पर विभाजन की रेखाएँ या निशान डालने की डोरी।

मुहा०—सूत धरना, फटकना या बाँधना=मकान आदि बनाने के समय नींव डालने से पहले उसकी छेंकन ठीक करने या कमरों, दालानों, आँगन आदि का विभाजन करनेवाली रेखाएँ निश्चित करना। (पहले उक्त सूत या डोरी पर चूने का चूरा लगाते हैं, और तब डोरी को सीध में रखकर फटकते या झटकारते हैं, जिस से जमीन पर चूने की रेखा बन जाती है।) ५. गले, बाँह आदि में पहनने का वह डोरा, जिसमें कोई जंतर या तावीज बँधा रहता है। ६. वह मोटा डोरा, जो कमर में करधनी की तरह पहना जाता है। ७. करधनी।

पुं०=सूत्र।

†पुं० [सं० सुत] पुत्र। बेटा।

पुं०[सं०] १. एक प्राचीन वर्णसंकर जाति, जिसकी उत्पत्ति क्षत्रिय पिता और ब्राह्मणी माता से कही गई है और जिसका कार्य रथ हाँकना था। २. रथ हाँकनेवाला व्यक्ति। सारथि। ३. चारण। भाट। वंदीजन। ४. पुराणों की कथाएँ सुनानेवाला व्यक्ति। पौराणिक। ५. बढ़ई। सूत्रकार। ६. सूर्य। ७. पारा।

†वि०[?] अच्छा। भला।

वि०१.=प्रसूत। २.=प्रेरित।

सूतक—पुं० [सं० सुतक=जन्म] १. जन्म। २. घर में संतान होने या किसी के मरने पर परिवारवालों को लगनेवाला अशौच। ३. अस्पृश्यता। छूत। उदा०—जलि है सूतकु घलि है सूतकु, सूतक सूतक ओपति होई।—कबीर। ४. चन्द्रमा या सूर्य का ग्रहण। उपराग। ५. पारद। पारा।

सूतक-गेह†— पुं०=सूतिकागार।

सूतका—स्त्री० [सं०] जच्चा ।

सूतका-गृह—पुं० [सं०] जच्चा-घर। सूतिकागार।

सूतकान्न—पुं० [सं०] १. वह खाद्य पदार्थ जो संतान-जन्म के कारण अशुद्ध हो जाता है। २. ऐसे घर या व्यक्ति का अन्न, जिसे सूतक लगा हो और इसी लिए जो अन्न अग्राह्य कहा गया है।

सूतकाशौच—पुं० [सं०] वह अशौच जो घर में संतान उत्पन्न होने के कारण होता है। जननाशौच।

सूतकी(किन्)—वि० [सं०] जिसे सूतक (अशौच) लगा हो।

सूतज—वि० [सं०] =सूत से उत्पन्न ।

पुं०=सूत-तनय (कर्ण)।

सूत-तनय—पुं० [सं० ष० त०] कर्ण का एक नाम, जो उनके सूत-पुत्र होने के कारण पड़ा था।

सूतता—स्त्री० [सं० सूत+तल्–टाप्] सूत का कार्य, पद या भाव।

सूत-धार—पुं० [सं० सूत्रधार] बढ़ई ।

सूतनंदन—पुं० [सं० सूत√नंद् (सुखदेनेवाला)+ल्यु–अन] १. उग्रश्रवा। २. सूत-तनय (कर्ण)।

सूतना†—अ०=सोना।

सूत-पुत्र—पुं० [सं० ष० त०] १. सारथि का पुत्र। २. सारथि। ३. कर्ण। ४. कीचक।

सूत-फूल—पुं० [हिं० सूत+फूल] महीन आटा। मैदा। (ब्व०)

सूतरी†—स्त्री०=सुतली।

सूत-लड़†—पुं० [हिं० सूत+लड़] अरहर। रहँट।

सूता—पुं० [सं० सूत्र] १. भूरे रंग का एक प्रकार का रेशम जो मालदह (बंगाल) से आता है। २. जूते में वह बारीक चमड़ा, जिसमें टूक का पिछला हिस्सा आकर मिलता है। (चमार) ३. सूत। धागा।

पुं० [सं० शुक्ति] वह सीपी जिससे डोड़े में की अफीम काछते हैं।

स्त्री० [सं०]=प्रसूता।

सूति—स्त्री० [सं०√सू(प्रसव करना)+क्तिन्] १. जन्म। २. जनन। प्रसव। ३. उत्पत्ति का स्थान। उद्गम। ४. फसल की पैदावार। ५. यज्ञों में सोम का रस निकालने की क्रिया। ६. वह स्थान जहाँ यज्ञों के लिए सोम का रस निकाला जाता था। ७. कपड़ा सीने की क्रिया या भाव।

पुं० हंस।

सूतिका—स्त्री० [सं०] १. वह स्त्री या मादा जीव जिसने अभी हाल में बच्चा जना हो। सद्यःप्रसूता। २. वैद्यक में प्रसूता स्त्री को होनेवाले कुछ विशिष्ट प्रकार के रोग जो अनुचित आहार, विहार आदि के कारण होते हैं।

सूतिकागार—पुं० [सं० ष० त०] १. वह कमरा या घर जिसमें स्त्री बच्चा जनती है। सौरी। प्रसव-गृह। २. चिकित्सालय का वह पार्श्व या विभाग जिसमें प्रसव कराने के लिए प्रसूता स्त्रियाँ रखी जाती हैं। (मैटरनिटी वार्ड)

सूतिका-गृह—पुं०=सूतिकागार।

सूति-काल—पुं० [सं० ष० त०] प्रसव करने या बच्चा जनने का समय।

सूतिकावास—पुं०=सूतिकागार।

सूतिकाषष्ठी—स्त्री० [सं०] संतान के जन्म से छठे दिन होनेवाला एक संस्कार तथा जच्चा का नहाना।

सूति-गृह—पुं०=सूतिकागार।

सूति-मास—पुं० [सं०] वह मास जिसमें किसी स्त्री को संतान उत्पन्न हो। प्रसव-मास। वैजनन।

सूति-वात—पुं० [सं०] प्रसव के समय प्रसूता को होनेवाली पीड़ा।

सूती—वि० [हिं० सूत+ई (प्रत्य०)] सूत का बना हुआ। जैसे—सूती कपड़ा। सूती गलीचा।

†स्त्री० [सं० शुक्ति] सीपी।

स्त्री० सं० सूत का स्त्री०। (सूत जाति की स्त्री)

सूती-गृह—पुं० [सं०] सूतिकागार।

सूतीघर—पुं०=सूतिकागार।

सूतीमास—पुं०=सूतिमास।

सूत्कार—पुं०=सीत्कार।

सूत्तर—वि० [सं०] बहुत श्रेष्ठ। बहुत बढ़कर।

†पुं०=सूत। (पश्चिम)

सूत्त्य—पुं०=सुत्य।

सूत्या—स्त्री० [सं०] १. यज्ञ के उपरांत होनेवाला स्नान। अवभृथ। २. यज्ञों में सोम का रस निकालना और पीना।

सूत्याशौच—पुं० [सं०] =सूतकाशौच।

सूत्र—पुं० [सं०] [भू० कृ० सूत्रित] १. कपास का बटा हुआ बहुत पतला और महीन डोरा या तागा। सूत। २. किसी प्रकार के रेशों का बटा या बढ़ा हुआ लंबा रूप। (थ्रेड) ३. गले में पहनने का जनेऊ। यज्ञोपवीत। ४. कमर में करधनी की तरह पहना या बाँधा जानेवाला डोरा। कटि-सूत्र। ५. शरीर के अंदर की डोरी की तरह की नली या मोटी नस। (कॉर्ड) जैसे—स्वर-सूत्र। ६. यथासाध्य बहुत थोड़े शब्दों में कहा हुआ कोई ऐसा कथन, पद या वाक्य जिसमें बहुत-कुछ गूढ़ अर्थ भरा हो। जैसे—कल्प-सूत्र। ७. बौद्ध साहित्य में, कोई ऐसा मूल ग्रंथ जिसकी टीका या व्याख्या हुई हो। ८. कोई ऐसी संकेतात्मक बात, जिसके सहारे किसी दूसरी बहुत बड़ी बात, घटना, पहेली, रहस्य, आदि का पता लगे। संकेत। पता। सूराग। (क्ल्यू) ९. वह सांकेतिक पद या शब्द, जिसमें कोई वस्तु बनाने या कार्य करने के मूल सिद्धांत, प्रक्रिया आदि का संक्षिप्त विधान निहित हो। (फ़ार्मूला) १०. किसी कार्य या योजना के संबंध में उन अनेक बातों में से कोई, जो उस कार्य या योजना की सिद्धि के लिए सोची जाय। (प्वाइन्ट) जैसे—इस योजना के चार सूत्रों में से दो बहुत ही उपयोगी और आवश्यक हैं। ११. रेखा। लकीर। १२. किसी प्रकार की व्यवस्था करने के नियम। १३. वह मूल कारण या बात जिससे कुछ और चीजें या बातें निकली हों।

सूत्र-कंठ—पुं० [सं० ष० त०] १. वह जो गले में यज्ञ-सूत्र या यज्ञोपवीत पहनता हो या पहने हो। २. ब्राह्मण। ३. कबूतर। ४. खंजन पक्षी।

सूत्रक—पुं० [सं०] १. सूत्र। तंतु। तार। २. माला या हार। ३. सेवई नामक पकवान। ४. लोहे के तारों का बना हुआ कवच।

सूत्रकर्ता—पुं० [सं० सूत्रकर्तृ] सूत्र-ग्रंथ का रचयिता। सूत्र-प्रणेता।

सूत्र-कर्म (र्मन्)—पुं० [सं०] १. बढ़ई का काम। २. मेमार या राज का काम।

सूत्रकार—पुं० [सं०] १. वह जिसने सूत्रों में किसी ग्रंथ की रचना की हो। सूत्र-रचयिता। २. बढ़ई। ३. जुलाहा। ४. मेमार। राज। ५. मकड़ी।

सूत्र कृमि—स्त्री० [सं०] आँतों में उत्पन्न होनेवाले एक प्रकार के धागे की तरह पतले कीड़े जो शरीर में अनेक विकार उत्पन्न करते हैं। (थ्रेडवर्म)

सूत्र-कोण—पुं० [सं०] डमरू।

सूत्र-कोश—पुं० [सं०] सूत्र की अंटी। लच्छी।

सूत्र-क्रीड़ा—स्त्री० [सं०] धागों की सहायता से कठपुतलियाँ नचाने का काम, जो ६४ कलाओं के अन्तर्गत माना गया है।

सूत्र-ग्रंथ—पुं० [सं०] १. ऐसा ग्रंथ जिसमें सूत्रों का संग्रह हो। २. सूत्र-रूप में प्रस्तुत किया हुआ ग्रंथ।

सूत्र-ग्रह—वि० [सं०] सूत धारण या ग्रहण करनेवाला।

सूत्रण—पुं० [सं०] [भू० कृ० सूत्रित] सूत्र बनाने या बटने की क्रिया या भाव।

सूत्र-तर्कुटी—स्त्री० [सं०] सूत कातने का तकला। टेकुवा।

सूत्र-धार—पुं० [सं० सूत्र√धृ (धारण करना)+अण्] १. प्राचीन भारत में मूलतः वह व्यक्ति जो अपने हाथ में पकड़े या बँधे हुए सूत्रों अर्थात् डोरों की सहायता से कठपुतलियाँ नचाता और उनके तमाशे दिखाता था। २. परवर्ती काल में नाट्यशाला का वह प्रधान व्यवस्थापक, जो नटों को अभिनय-कला सिखाकर उनसे अभिनय कराता और रंग-मंच की व्यवस्था करता था। ३. लाक्षणिक रूप में वह व्यक्ति, जिसके हाथ में किसी कार्य की सारी व्यवस्था हो। ४. पुराणानुसार एक प्राचीन वर्णसंकर जाति, जिसकी उत्पत्ति शूद्रा माता और विश्वकर्मा पिता से कही गई है और जो प्रायः बढ़ई का काम करती थी। ५. बढ़ई। सुतार। ६. इन्द्र का एक नाम।

सूत्रधारी (रिन्)—वि० [सं०] सूत्र धारण करनेवाला।
स्त्री० सूत्रधार की स्त्री। नटी।

सूत्र-पात—पुं० [सं०] १. नींव आदि रखने के समय होनेवाली नाप-जोख। २. किसी नये तथा बड़े काम का होनेवाला आरम्भ। जैसे—इस योजना का सूत्र-पात सन् ६२ में हुआ था।

सूत्र-पिटक—पुं० [सं०] बौद्ध सूत्रों का एक प्रसिद्ध संग्रह।
दे० 'त्रिपिटक'।

सूत्र-पुष्प—पुं० [सं०] कपास का पौधा जिसके फूलों डोड़ों से सूत बनता है।

सूत्रभृत—पुं०=सूत्रधार।

सूत्र-यंत्र—पुं० [सं०] १. करघा। २. करघे की ढरकी। ३. सूत का बुना हुआ जाल।

सूत्रयी—वि० [सं० सूत्र] सूत्र जानने या रचनेवाला।

सूत्रला—स्त्री० [सं०] तकला। टेकुवा।

सूत्रवाप—पुं० [सं०] सूत से कपड़ा बुनने की क्रिया। वपन। बुनाई।

सूत्र-वीणा—स्त्री० [सं०] प्राचीन काल की एक प्रकार की वीणा, जिसमें बजाने के लिए तार की जगह सूत्र लगे रहते थे।

सूत्र-वेष्ठन—पुं० [सं०] १. करघा। २. सूतों की बुनाई।

सूत्र-शाख—पुं० [सं०] शरीर।

सूत्र-शाला—स्त्री० [सं०] वह स्थान या कारखाना जहाँ सूत काता, तैयार किया या बनाया जाता है।

सूत्रांग—पुं० [सं०] उत्तम काँसा।

सूत्रांत—पुं० [सं०] बौद्ध सूत्रों की संज्ञा।

सूत्रांतक—वि० [सं०] बौद्ध सूत्रों का ज्ञाता या पंडित।

सूत्रा—स्त्री० [सं० सूत्रकार] मकड़ी। (अनेकार्थ)

सूत्रात्मा (त्मन्)—पुं० [सं०] १. एक प्रकार की परम सूक्ष्म वायु जो धनंजय से भी अधिक सूक्ष्म कही गई है। २. जीवात्मा।

सूत्राध्यक्ष—पुं० [सं०] कपड़ों के व्यापार या व्यवसाय का अध्यक्ष। (कौ०)

सूत्रामा (मन्)—पुं० [सं०] इन्द्र।

सूत्राली—स्त्री० [सं०] १. सूत को लपेटकर बनाई जानेवाली माला। हार। २. गले में पहनने की मेखला।

सूत्रिका—स्त्री० [सं०] १. सेवईं। २. हार। माला।

सूत्रिता—भू० कृ० [सं०] १. सूत से बाँधा या नत्थी किया हुआ। २. सूत्रों के रूप में कहा या लाया हुआ। ३. क्रम या सिलसिले से लगाया हुआ।

सूत्री (त्रिन्)—वि० [सं०] समस्त पदों के अंत में—(क) जिसमें सूत्र हों। सूत्रों से युक्त। जैसे—त्रिसूत्री योजना। (ख) नियमों से युक्त। जैसे—दीर्घसूत्री।
पुं० १. काक। कौआ। २. दे० 'सूत्रधार'।

सूत्रीय—वि० [सं०] १. सूत्र-संबंधी। सूत्र का। २. सूत्रों से युक्त। सूत्री।

सूथन—स्त्री० [देश०] १. पाजामा। सुथना।
पुं० एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी बहुत अच्छी होती है। खेऊँ।

सूथनी—स्त्री० [सुथना का स्त्री० अल्पा०] १. स्त्रियों के पहनने का पाजामा। सुथना।
†स्त्री०=सुथनी (कन्द)।

सूथार†—पुं०=सुतार (बढ़ई)।

सूद—पुं० [सं०√षूद् (नष्ट करना)+अच्] १. रसोइया। सूपकार। पाचक। २. पकी हुई दाल, रसेदार तरकारी आदि। ३. सारथि का काम या पद। सारथ्य। ४. अपराध। दोष। ५. एक प्राचीन जनपद। ६. उक्त जनपद का सूचक पद जो व्यक्तिवाचक नामों के साथ उत्तर पद के रूप में लगता था। जैसे—दामोदर सूद। ७ आज-कल खत्रियों और कुछ दूसरी जातियों के वर्गों का नाम। ८. लोध।
पुं० [फा०] १. लाभ। फायदा। २. ऋण के रूप में दिये हुए धन के उपभोग के बदले में दिया या लिया जानेवाला वह धन जो मूल धन के अतिरिक्त होता है। ब्याज। (इन्टरेस्ट)
क्रि० प्र०—चढ़ना।—बढ़ना।—लगना।
पद—सूद दर सूद। (देखें)
*पुं०=शूद्र। उदा०—तुम कत बाम्हन, हम कत सूद।—कबीर।

सूदक—वि० [सं०] सूदन। (दे०)

सूद-कर्म (न्)—पुं० [सं०] भोजन बनाना। खाना पकाना।

सूदखोर—पुं० [फा०] [भाव० सूदखोरी] १. वह जो अत्यधिक ब्याज की दर पर ऋण देता हो। २. वह जिसकी जीविका मिलनेवाले ब्याज से चलती हो।

सूदता—स्त्री० [सं०] सूद अर्थात् रसोइए का काम, पद या भाव। रसोईदारी।

सूदत्व—पुं० [सं०]=सूदता।

सूद-दर-सूद—पुं० [फा०] १. उधार दिये हुए धन के सूद या ब्याज पर भी जोड़ा जानेवाला सूद या ब्याज। चक्रवृद्धि। शिखा-वृद्धि। (कम्पाउंड इन्टरेस्ट) २. उक्त के अनुसार ब्याज जोड़ने की प्रक्रिया या रीति।

सूदन—वि० [सं०] १. नष्ट करने या मार डालनेवाला। जैसे—मधुसूदन, रिपुसूदन। २. प्रिय। प्यारा।
पुं० १. नाश या हनन। २. फकना।

सूदना*—स० [सं० सूदन] १. नष्ट करना। २. मार डालना।

सूदर†—पुं०=शूद्र। (डिं०)

सूद-शाला—स्त्री० [सं० सूदशाला] रसोई-घर। पाकशाला। (डिं०)

सूद-शास्त्र—पुं० [सं०] भोजन बनाने की कला। पाक-शास्त्र।

सूदा—पुं० [देश०] मध्य युग में ठगों, के गिरोह का वह आदमी, जो यात्रियों को फुसलाकर अपने दल में ले आता था।

सूदाध्यक्ष—पुं० [सं०] रसोइयों का मुखिया या सरदार। पाकशाला का अधिकारी।

सूदित—भू० कृ० [सं०] १. जो मार डाला गया हो। हत। २. नष्ट किया हुआ। विनष्ट। ३. आहत। घायल।

सूदी—वि० [फा० सूद] १. सूद से संबंध रखनेवाला अथवा सूद के रूप में होनेवाला। २. (पूंजी या रकम) जो सूद या ब्याज पर लगी हो। ब्याजू। ३. (कर्ज) जो सूद पर लिया गया हो।

सूद्र†—पुं०=शूद्र।

सूध†—पुं० [सं० सौध] महल। प्रासाद। उदा०—मणि दीपक करि सूध मणि।—प्रिथीराज।

वि० १.=सूधा। २. सीधा।

†वि०=शुद्ध।

सूधन†—पुं० [सं० शोधन] शुद्ध करना। (डिं०)

सूधना*—अ० [सं० शुद्ध] १. ठीक या सत्य सिद्ध होना। २. शुद्ध होना।

† स०=शोधना।

सूधरा†*—वि०=सूधा (सीधा)।

सूधे†—अव्य० [हिं० सूधा] सीधी तरह से या सीध रूप में।

सून—वि० [सं०] १. प्रसव किया हुआ। २. उत्पन्न। जात। ३. खिला हुआ। विकसित। (फूल)

पुं० १. जनन। प्रसव। २. पुत्र। बेटा। ३. प्रसून। फूल। ४. फल।

†वि० [सं० शून्य] १. रहित। हीन। २. निर्जन। सूना।

सून-नायक—पुं० [सं०] कामदेव।

सून-शर—पुं० [सं०] कामदेव।

सूनरी†—स्त्री० [सं० सु+नर] सुखी स्त्री।

† स्त्री०=सुंदरी।

सूनसान†—वि०=सुनसान।

सूना—वि० [सं० शून्य] [स्त्री० सूनी] १. (स्थान) जहाँ लोगों की चहल-पहल या आना-जाना बिलकुल न हो। जनहीन। निर्जन। जैसे—सूना घर। २. (पदार्थ या रचना) जो किसी आवश्यक, उपयुक्त या शोभन तत्त्व अथवा वस्तु के अभाव के कारण अप्रिय जान पड़े या खटके। जैसे—सीता बिना रसोइयाँ सूनी।—गीत।

मुहा०—सूना लगना या सूना-सूना लगना=किसी वस्तु या व्यक्ति के अभाव के कारण निर्जीव मालूम होना। उदास मालूम होना।

स्त्री० [सं० सून—टाप्] १. पुत्री। बेटी। २. वध। हत्या। ३. धर्मशास्त्र के अनुसार घर-गृहस्थी की ऐसी जगह जहाँ अनजान में प्रायः छोटे-छोटे जीवों की हत्या होती रहती है। जैसे—अनाज कूटने-पीसने की जगह, रसोई आदि। दे० 'पंच-सूना'। ४. वह स्थान जहाँ मांस के लिए पशुओं की हत्या की जाती हो। कसाई-खाना। ५. खाने के लिए मांस बेचने का काम। ६. हाथी के अंकुश का दस्ता।

पुं० एकांत या निर्जन स्थान।

सूना-दोष—पुं० [सं०] वह दोष जो अनजान में गृहस्थी के कामों में होनेवाली जीव-हत्या के कारण लगता है। दे० 'पंच-सूना'।

सूनापन—पुं० [हिं० सूना+पन (प्रत्य०)] सूना होने की अवस्था या भाव।

सूनिक—पुं० [सं०] जीव-हत्या करनेवाला।

पुं० १. कसाई। २. शिकारी।

सूनी—पुं० [सं० सूनिन्] मांस बेचनेवाला। बूचड़।

सूनु—पुं० [सं०] १. पुत्र। बेटा। २. औलाद। सन्तान। ३. छोटा भाई। अनुज। ४. दौहित्र। नाती। ५. सूर्य। ६. आक-मदार। ७. वह जो यज्ञों में सोम का रस निकालता था।

सूनू—स्त्री० [सं०] पुत्री। बेटी।

सूनृत—पुं० [सं०] १. सत्य और प्रिय भाषण (जो जैन धर्मानुसार सदाचार के पाँच गुणों में से एक है)। २. आनन्द। प्रसन्नता।

वि० १. प्रिय और सत्य। २. अनुकूल। ३. दयालु।

सूनृता—स्त्री० [सं०] १. सत्य और प्रिय भाषण। २. सत्यता। सचाई। ३. धर्म की पत्नी का नाम।

सून्मद—वि०=सून्माद।

सून्माद—वि० [सं०] जिसे उन्माद रोग हुआ हो। पागल।

सूप—पुं० [सं०] १. खाने के लिए पकाई हुई दाल। २. उक्त प्रकार की दाल का पतला पानी या रसा। ३. रसेदार तरकारी। ४. पात्र। बरतन। ५. सूपकार। पाचक। रसोइया। ६. तीर। बाण।

पुं० [सं० शूर्प] अनाज फटकने का बना हुआ पात्र। सरई या सींक का छाज।

पद—सूप भर=ढेर सा। बहुत।

पुं० [देश०] कपड़े या सन का झाड़ू; जिससे जहाज के डेक आदि साफ किये जाते हैं। (लश०)

पुं० [अ० सूफ़=ऊन] १. एक प्रकार का काला कपड़ा। २. दे० 'सूफ'।

सूपक—पुं० [सं० सूप] रसोइया। सूपकार।

सूपकार—पुं० [सं०] रसोइया। पाचक।

सूपकारी—पुं०=सूपकार।

सूपच*—पुं०=श्वपच (चांडाल)।

सूप झरना—पुं० [हिं० सूप+झरना] अनाज फटकने का एक प्रकार का सूप जिसका तल झरने की तरह छेददार होता है। इससे बारीक अनाज नीचे गिर जाता है, और मोटा ऊपर रह जाता है।

सूपड़ा†—पुं० [हिं० सूप] सूप। छाज। (डिं०)

सूप तीर्थ—पुं० [सं० ब० स०] ऐसा जलाशय जिसमें नहाने के लिए अच्छी सीढ़ियाँ बनी हों।

सूप-नखा—स्त्री०=शूर्पणखा।

सूप-पर्णी—स्त्री० [सं०] बनमूँग। मुँगवन। मुद्रपर्णी।

सूप-शास्त्र—पुं० [सं०] भोजन बनाने की कला। पाक-शास्त्र।

सूप-स्थान—पुं० [सं०] पाकशाला। रसोइघर।

सूपा—पुं० [हिं० सूप] सूप। छाज।

सूपिक—पुं० [सं०] १. पकी हुई दाल या तरकारी का रसा। २. रसोइया। सूपकार।

सूप्य—वि० [सं०] १. सूप-संबंधी। सूपका। २. जिस का सूप, अर्थात् रसा या शोरबा बनाया जा सकता हो।

पुं० रसेदार तरकारी आदि।

सूफ—पुं० [अ० सूफ़] १. ऊन। २. वह लत्ता जो देशी काली स्याही वाली दवात में डाला जाता है।

†पुं० =सूप (अनाज फटकने का)।

सूफिया—पुं० [अ० सूफ़ियः] मुसलमान साधुओं का एक संप्रदाय।

सूफियाना—वि० [अ० सूफ़ियाना] सूफियों की तरह का सादा, परन्तु सुन्दर।

सूफी—वि० [अ० सूफ़ी] १. ऊनी वस्त्र पहननेवाला। २. पवित्र और स्वच्छ। ३. निरपराध। निर्दोष।

पुं० १. मुसलमानों का एक रहस्यवादी संप्रदाय, जो यह मानता है कि मनुष्य पवित्र और स्वच्छ रहकर तपस्या और साधना के द्वारा ही परमात्मा को प्राप्त कर सकता है। इसमें यह भी माना जाता है कि जीवात्मा में परमात्मा के साथ मिलने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। इसके चार मुख्य भेद हैं; यथा—मिश्ती, कादिरी, सुहरा वरदी और नक्शबंदी। २. उक्त संप्रदाय का अनुयायी।

सूब—पुं० [देश०] ताँबा। (सुनार)

सूबड़ा†—पुं० [सं० सुवर्ण] वह चाँदी जिसमें तांबे और जस्ते का मेल हो। (सुनार)

सूबा—पुं० [फा० सूबः] १. किसी देश का कोई विशिष्ट खंड या भाग। प्रांत। प्रदेश। २. दे० 'सूबेदार'।

सूबेदार—पुं० [फा० सूबा+दार (प्रत्य०)] [भाव० सूबेदारी] १. किसी सूबे या प्रांत का प्रधान अधिकारी या शासक। प्रादेशिक शासक। २. सेना विभाग में वह सैनिक जिसके अधीन कुछ और सैनिक भी रहते हों।

सूबेदारी—स्त्री० [फा०] १. सूबेदार होने की अवस्था या भाव। २. सूबेदार का पद।

सूभर*—वि० [सं० शुभ्र] १. सफेद। २. सुन्दर।

सूम—पुं० [सं०] १. दूध। २. जल। पानी। ३. आकाश। ४. स्वर्ग।

†पुं० [सं० कुसुम] फूल। (डिं०)

पुं० [अ० शूभ =अशुभ] कंजूस। कृपण।

सूमड़ा—वि० पु० [स्त्री० सूमड़ी] सूम। कंजूस।

सूमां†—स्त्री० [देश०] टूटी हुई चारपाई की रस्सी।

सूमी—पुं० [देश०] एक प्रकार का बहुत बड़ा पेड़ जिसकी लकड़ी इमारतों में लगती और मेज, कुर्सी आदि बनाने के काम में आती है। इसे रोहन और सोहन भी कहते हैं।

सूय—पुं० [सं०] १. सोम रस निकालने की क्रिया। २. यज्ञ। जैसे—राजसूय।

सूरंजान—पुं० [फा०] केसर की जाति का एक पौधा जिसका कंद दवा के काम में आता है। यह दो प्रकार का होता है। मीठा और कड़ुआ।

सूर—पुं० [सं०] [स्त्री० सूरी] १. सूर्य। २. आक। मदार। ३. बहुत बड़ा पंडित। आचार्य। ४. वर्तमान अवसर्पिणी के सत्रहवें अर्हत् कुंथु के पिता का नाम। (जैन) ५. छप्पय छंद के ७१ भेदों में से ५४ वाँ भेद जिसमें १६ गुरु, १२० लघु, कुल १३६ वर्ण और १५२ मात्राएँ होती हैं। ६. मसूर। ७. दे० 'सूरदास'।

वि० अन्धे या नेत्र-हीन व्यक्ति के लिए आदरसूचक विशेषण।

पुं० [सं० शूकर, प्रा० शूअर] १. सूअर। २. भूरे रंग का घोड़ा।

पुं० [देश०] पठानों का एक भेद। जैसे—शेरशाह सूर।

†पुं० १.=शूर (वीर)। २.=शूल।

सूर-कंद—पुं० [सं०] जमीकंद। सूरन। ओल।

सूर-कांत—पुं०=सूर्यकांत।

सूर-कुमार—पुं० [सं० सूर=शूरसेन+कुमार=पुत्र] वसुदेव।

सूरज—वि० [सं० सूर+ज] सूर (अर्थात् सूर्य) से उत्पन्न।

पुं० १. शनि। २. सुग्रीव।

पुं० [सं० शूर+ज] शूर अर्थात् बहादुर या वीर की संतान।

पुं० [सं० सूर्य] १. सूर्य। रवि।

मुहा०—सूरज को दीपक दिखाना= (क) जो स्वयं अत्यन्त कीर्तिशाली या गुणवान् हो, उसे कुछ बतलाना। (ख) जो स्वयं प्रसिद्ध या विख्यात हो, उसका सामान्य परिचय देना। **सूरज पर धूल फेंकना**= किसी साधु व्यक्ति पर कलंक लगाना या उसका उपहास करना। २. एक प्रकार का गोदना जो स्त्रियाँ दाहिने हाथ में गुदाती हैं।

†पुं० दे० 'सूरदास'।

सूरजजी—पुं० [सं० सूर्य+हिं० जी] राजस्थान, मालवे आदि में प्रचलित एक प्रकार के गीत जो शिशु के जन्म के दसवें दिन सूर्य की पूजा के समय गाये जाते हैं।

सूरज-तनी*—स्त्री०=सूर्य-तनया (यमुना)।

सूरज-भगत—पुं० [सं० सूर्य + भक्त] असम और नैपाल की एक प्रकार की गिलहरी जो भिन्न-भिन्न ऋतुओं के अनुसार रंग बदलती है।

सूरज-मुखी—पुं० [सं० सूर्यमुखी] १. एक प्रकार का पौधा जिसमें पीले रंग का बहुत बड़ा फूल लगता है। २. उक्त पौधे का फूल जिसका मुख सबेरे से संध्या तक प्रायः सूर्य की ओर ही रहता है। ३. आतिशी शीशा। (देखें) ४. ऐसा व्यक्ति जिसके शरीर का वर्ण लाल और आँखें प्रकृत या साधारण से कुछ भिन्न रंग की और अप्रसम हों। (एल्बाइनो)

विशेष—ऐसे लोगों का शरीर और बाल प्रायः सफेद रंग के और आँखें नीले या पीले रंग की होती हैं।

स्त्री० १. उक्त प्रकार की फूल के आकार की एक प्रकार की आतिशबाजी। २. जलूसों, राज-दरबारों आदि में प्रदर्शन और शोभा के लिए रहनेवाला एक प्रकार का पंखा, जिस पर सलमे-सितारे आदि से सूर्य की आकृति बनी रहती है। ३. सुबह या शाम के समय सूर्य के आस-पास दिखाई पड़नेवाली हलकी बदली।

सूरज-सुत—पुं०=सूर्य-पुत्र। (१. सुग्रीव। २. कर्ण। ३. शनि।)

सूरज-सुता—स्त्री०=सूर्य-सुता (यमुना)।

सूरजा—स्त्री० [सं०] सूर्य की पुत्री यमुना।

सूरण—पुं० [सं०] सूरन। जमीकंद।

सूरत—स्त्री० [अ०] १. जीव-जंतु, पदार्थ, व्यक्ति आदि की आकृति या रूप जिससे उसकी पहचान होती है। शकल (विशेषतः व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त)

मुहा०—सूरत दिखाना=सामने आना। जैसे—तुम तो कभी

सूरत भी नहीं दिखाते। **सूरत बनाना**=(क) ऐसी अच्छी आकृति या रूप बनाना जो देखने योग्य हो जाय। (ख) किसी का वेश धारण करना। भेस बनाना। (ग) अरुचि, उपेक्षा आदि सूचित करने के लिए नाक-भौंह सिकोड़ना। (उपहास और व्यंग्य) जैसे—आप तो कभी-कभी ऐसी सूरत बनाते हैं कि बात करने को जी नहीं चाहता। २. चित्र, मूर्ति आदि के रूप में बनी हुई आकृति। ३. अवस्था। दशा। जैसे—ऐसी सूरत में वहाँ जाना ठीक नहीं। ४. किसी जटिल समस्या के निराकरण के लिए सोचा हुआ उपाय या युक्ति। जैसे—अब तो तुम्हीं कोई सूरत निकालो तो काम चले।

क्रि० प्र०—निकालना।

५. शोभापूर्ण सौंदर्य। (क्व०)

पुं० [सं० सौराष्ट्र, पु० हिं० सोता] गुजरात या सौराष्ट्र प्रदेश का एक प्रसिद्ध नगर।

वि० [सं० सुरत] जो अनुरक्त होने के कारण अनुकूल, दयालु या प्रसन्न हुआ हो।

†स्त्री० १.=सुरत (स्मृति) २. =सुरति।

पुं० [देश०] एक प्रकार का जहरीला पौधा।

स्त्री० [अ० सूरः] कुरान का कोई प्रकरण।

सूरत-परस्त—वि० [अ०+फा०] [भाव० सूरत-परस्ती] १. रूप का उपासक। सौन्दर्योपासक। ३. मूर्ति-पूजक।

सूरत-हराम—वि० [अ०+फा०] १. जो अपने सौंदर्य से दूसरों को मुसीबत में डालता हो। २. जो शक्ल-सूरत से अच्छा, परन्तु तात्त्विक दृष्टि से निस्सार हो।

सूरताई*—स्त्री०=शूरता (वीरता)।

सूरति*—स्त्री०=सूरत।

*स्त्री०=सुरति।

सूरतीखपरा—पुं० [सूरती=सूरत शहर का+सं० खर्पटी] खपरिया नामक खनिज द्रव्य।

सूरदास—पुं० [सं०] १. कृष्ण-भक्ति शाखा के प्रसिद्ध वैष्णव कवि जो 'सूर-सागर', 'साहित्य लहरी', आदि काव्य ग्रंथों के रचयिता माने जाते हैं। ये जन्मांध थे। [जन्म १५४० वि०—मृत्यु १६२० वि०] २. लाक्षणिक अर्थ में अन्धा व्यक्ति।

सूरन—पुं० [सं० सूरण] एक प्रसिद्ध कंद जो स्वाद में कसैला तथा गुण में अग्नि दीपक और अर्श रोगनाशक होता है। ओल। जमी-कंद।

सूरपनखा†—स्त्री०=शूर्पनखा।

सूर-पुत्र—पुं० [सं०] सूर्य-सुत्र (१. सुग्रीव। २. कर्ण। ३. शनि)।

सूर-बीर*—पुं०=शूर-वीर।

सूरमस—पुं० [सं०] १. संभवतः असम-देश की सूरमा नदी की दून और उपत्यका का पुराना नाम। २. उक्त उपत्यका का निवासी।

सूरमल्लार—पुं० [सूरदास (कवि)+मल्लार (राग)] सारंग और मल्लार के योग से बना हुआ एक संकर राग जो वर्षा ऋतु में दिन के दूसरे पहर में गाया जाता है।

सूरमा—पुं० [सं० शूर] [भाव० सूरमापन] योद्धा। वीर। बहादुर।

सूर-मुखी*—पुं० स्त्री०=सूरजमुखी।

सूरवाँ†—पुं०=सूरमा।

सूरसावत—पुं० [सं० शूर+सामंत] १. युद्ध-मंत्री। २. नायक। सरदार।

सूरसुत—पुं० [सं०] १. शनि ग्रह। २. सुग्रीव।

सूर-सुता—स्त्री० [सं०] यमुना।

सूर-सूत—पुं० [सं० ष० त०] सूर्य के सारथि, अरुण।

सूरसेन*—पुं०=शूरसेन।

सूरसेनपुर†—पुं० [सं० शूरसेन+पुर] मथुरा नगरी।

सूरा—पुं० [हिं० सुंडी] अनाज के गोले में पाया जानेवाला एक प्रकार का कीड़ा, जिससे अनाज को किसी प्रकार की हानि नहीं होती। अनाज के व्यापारी इसे मांगलिक समझते हैं।

पुं० [अ०] कुरान के प्रकरणों में से कोई एक प्रकरण।

सूराख—पुं० [फा०] १. छेद। छिद्र। २. छोटी कोठरी या घर। (लश०)

सूरापण†—पुं०=सूरमापन। (राज०)

सूरिंजान—पुं० =सूरंजान।

सूरि—पुं० [सं०] १. यज्ञ करानेवाला पुरोहित। ऋत्विज्। २. बहुत बड़ा पंडित या विद्वान् आचार्य। ३. बृहस्पति का एक नाम। ४. कृष्ण का एक नाम। ५. सूर्य। ६. यादव।

सूरी (रिन्)—पुं० [सं०] १. विद्वान्। पंडित। आचार्य। २. जैन विद्वान् यतियों की उपाधि।

स्त्री० [सं०] १. विदुषी। पंडिता। २. सूर्य की पत्नी। ३. कुंती। ४. राई।

†स्त्री० [सं० शूल] भाला।

†स्त्री०=सूली।

सूरुज*—पुं०=सूर्य।

सूरुवाँ*—पुं०=सूरमा।

पुं०=शोरबा।

सूरेठ—पुं० [देश०] एक हाथ लम्बी खपची जिससे बहेलिये चोंगे में से लासा निकालते हैं।

सूर्मि, सूर्मी—स्त्री० [सं०] १. लोहे की बनी हुई स्त्री की मूर्ति। २. पानी बहने की नाली।

सूर्य—पुं० [सं०] १. हमारे सौर जगत् का वह सबसे उज्ज्वल बड़ा और मुख्य ग्रह, जिसकी अन्य सब ग्रह परिक्रमा करते और जिससे सब ग्रहों को ताप तथा प्रकाश प्राप्त होता है। दिनकर। प्रभाकर।

विशेष—हमारे यहाँ यह बहुत बड़ा देवता माना गया है और छाया तथा संज्ञा नाम की इसकी दो पत्नियाँ कही गई हैं; और इसके रथ का सारथि अरुण माना गया है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार यह जलती हुई गैसों का बहुत बड़ा गोला है, जो समस्त सौर जगत् को ऊर्जा तथा जीवनी-शक्ति प्रदान करता है। पृथ्वी से यह ९३०००,००० मील की दूरी पर है। इसका व्यास ८०५,००० मील है और यह पृथ्वी से १३००,००० गुना बड़ा है, परंतु इस का घनत्व पृथ्वी के घनत्व का चौथाई ही है। **मुहा०—सूर्य को दीपक दिखाना**= जो स्वयं परम प्रसिद्ध, महान् या श्रेष्ठ हो, उसके संबंध में कुछ कहना, बतलाना या उसका परिचय देना। **सूर्य पर थूकना**=जो बहुत महान् हो, उसके संबंध में कोई अनुचित या निंदनीय बात कहना।

२. पुराणानुसार सूर्यों की संख्या बारह होने के कारण, साहित्य में बारह की संख्या का सूचक । ३. अपने क्षेत्र या विषय का बहुत बड़ा कर्ता, ज्ञाता या पंडित। ४. आक । मदार।

सूर्य-कमल—पुं० [सं०] सूरजमुखी फूल।

सूर्य-कर—पुं० [सं०] सूर्य की किरण।

सूर्यकांत-मणि—पुं० [सं०] १. एक प्रकार का कल्पित रत्न या मणि। कहते हैं कि जब यह धूप में रखा जाता है, तब इसमें से आग निकलने लगती है। सूर्यमणि। २. सूरजमुखी शीशा । आतशी शीशा । ३. आदित्यपर्णी।

सूर्यकांति—स्त्री० [सं०] १. सूर्य की दीप्ति या प्रकाश । २. तिल का फूल । ३. आदित्यपर्णी नाम का पौधा और उसका फूल ।

सूर्य-काल—पुं० [सं० १. सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक का समय। २. दिन का समय। ३. फलित ज्योतिष में, शुभाशुभ का विचार करने के लिए एक प्रकार का चक्र।

सूर्यकालानल—पुं० [सं०] फलित ज्योतिष में, मनुष्य का शुभाशुभ जानने का एक प्रकार का चक्र।

सूर्य-क्रांत—पुं० [सं०] १. संगीत में एक प्रकार का ताल। २. एक प्राचीन जनपद ।

सूर्य-ग्रह—पुं० [सं०] १. सूर्य। २. सूर्य पर लगनेवाला ग्रहण। ३. राहु। ४. केतु। ५. घड़े का पेंदा।

सूर्य-ग्रहण—पुं०[सं०] १. पृथ्वी और सूर्य के बीच में चन्द्रमा के आ जाने और सूर्य आड़ में हो जाने के कारण होने वाला ग्रहण। (सोलर इक्लिप्स) २. हठयोग की परिभाषा में, वह अवस्था जब प्राण पिंगला नाड़ी से होकर कुंडलिनी में पहुँचते हैं।

सूर्य-चित्रक—पुं० [सं०] एक प्रकार का उपकरण या यंत्र जिससे सूर्य के चित्र लिए और उसके ताप की घनता नापी जाती है। (हीलियोग्राफ़)

सूर्य-चित्रीय—वि० [सं०] १. सूर्य के चित्र से संबंध रखनेवाला । २. सूर्य-चित्रक से संबंध रखनेवाला। (हीलियोग्राफ़िक)

सूर्यज—वि० [सं०] सूर्य से उत्पन्न।

पुं० १. शनिग्रह। २. यम। ३. सावर्णि । ४. कर्ण। ५. सुग्रीव। ६. रेवंत।

सूर्यजा—स्त्री० [सं०] यमुना नदी।

सूर्य-तनय—पुं० [सं०] सूर्य-पुत्र।

सूर्य-तनया—स्त्री० [सं० ष० त०] यमुना।

सूर्य-ताप—पुं० [सं०] सूर्य की किरणों से उत्पन्न होनेवाला ताप या गरमी जिससे वातावरण गरम होता है; और जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों आदि की जीवनी शक्ति प्राप्त होती है। आतप। (इन्सोलेशन)

सूर्य-तापिनी—स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम।

सूर्य-ध्वज—पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

सूर्य-नंदन—पुं० [सं०] १. शनि। २. कर्ण। ३. सुग्रीव।

सूर्य-नमस्कार—पुं० [सं०] आज-कल एक विशिष्ट प्रकार का व्यायाम जो सूर्योदय के समय धूप में खड़े होकर किया जाता है।

सूर्य-नाड़ी—स्त्री० [सं०] पिंगला नाड़ी। (हठयोग)

सूर्यपति—पुं० [सं०] सूर्यदेवता।

सूर्यपत्र—पुं० [सं०] १. ईसरमूल। अर्कपत्री। २. हुरहुर। ३. आक। मदार।

सूर्यपर्णी—स्त्री०[सं०] १. ईसरमूल। अर्कपत्री। २. बनउड़द। मखवन।

सूर्य-पर्व्व (न्)—पुं०[सं०] किसी नई राशि में सूर्य के प्रवेश करने का काल। सूर्य-संक्रांति।

सूर्य-पाद—पुं० [सं०] सूर्य की किरण।

सूर्य-पुत्र—पुं० [सं०] १. शनि। २. यम। ३. वरुण। ४. अश्विनी-कुमार। ५. सुग्रीव। ६. कर्ण।

सूर्य-पुत्री—स्त्री० [सं०] १. यमुना। २. बिजली। विद्युत्।

सूर्य प्रदीप—पुं० [सं०] एक प्रकार का ध्यान या समाधि। (बौद्ध)

सूर्य-प्रभ—वि० [सं०] सूर्य के समान प्रभावाला।

पुं० योग में एक प्रकार की समाधि।

सूर्य-प्रशिष्य—पुं० [सं०] राजा जनक का एक नाम।

सूर्य फणि†—पुं०[सं०] फलित ज्योतिष में, एक प्रकार का चक्र, जिससे कोई कार्य प्रारंभ करते समय उसका शुभाशुभ परिणाम निकलाते हैं।

सूर्य-भक्त—पुं० [सं०] बंधूक नामक पौधा और उसका फूल। गुल-दुपहरिया।

सूर्य-भक्तक—पुं० [सं०] १. सूर्य का उपासक। २. गुल-दुपहरिया। बन्धूक।

सूर्यभक्ता—स्त्री० [सं०] हुरहुर। आदित्य भक्ता।

सूर्यभा—वि० [सं०] सूर्य के समान अर्थात् बहुत अधिक प्रकाशमान।

सूर्य-भ्राता—पुं० [सं० सूर्यभ्रातृ] ऐरावत हाथी का एक नाम।

सूर्य-मणि—पुं० [सं०] सूर्यकांत मणि।

सूर्यमाल—पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

सूर्यमास— पुं० =सौर मास।

सूर्यमुखी (खिन्)—पुं०, स्त्री० सूरजमुखी।

सूर्य-रश्मि—पुं० [सं०] १. सूर्य की किरण। २. सविता नामक वैदिक देवता।

सूर्यर्क्ष—पुं० [सं०] वह नक्षत्र जिसमें सूर्य की स्थिति हो।

सूर्य-लता—स्त्री० [सं०] =सूर्य-वल्ली।

सूर्य-लोक—पुं० [सं०] सूर्य का लोक।

विशेष—ऐसा प्रवाद है कि वीर गति प्राप्त होने के उपरांत योद्धा इसी लोक में आते हैं।

सूर्य-वंश—पुं० [सं०] क्षत्रियों के दो आदि और प्रधान वंशों में से एक जिसका आरंभ इक्ष्वाकु से माना जाता है।

सूर्यवंशी (शिन्)—पुं० [सं०] सूर्यवंश में जन्म लेनेवाला।

सूर्य-वंशीय—पुं०[सं०]=सूर्यवंश संबंधी।

सूर्य-वन—पुं०[सं०] एक प्राचीन तीर्थ।

सूर्य-वर्चस्—वि०[सं०] सूर्य की भाँति अर्थात् बहुत अधिक प्रकाशमान्।

सूर्य-वल्लभा—स्त्री०[सं०] १. हुरहुर। आदित्यभक्ता। २. कमलिनी।

सूर्य-वल्ली—स्त्री०[सं०] १. अंधाहुली। अर्कपुष्पी। २. क्षीर काकोली।

सूर्यवान् (वत्)—पुं०[सं०] रामायण में उल्लिखित एक पर्वत।

सूर्यवार—पुं०[सं०] रविवार।

सूर्य-विलोकन—पुं० [सं०] हिन्दुओं में एक प्रकार का मांगलिक कार्य जिसमें चार महीने के बच्चे को सूर्य के दर्शन कराये जाते हैं।

सूर्य वृक्ष—पुं०[सं०] १. आक। मदार। २. अंधाहुली।

सूर्य व्रत—पुं०[सं०]१. एक प्रकार का व्रत जो सूर्य भगवान् को प्रसन्न करने के लिए रविवार को किया जाता है। २. ज्योतिष में, एक प्रकार का चक्र।

सूर्य-शिष्य—पुं० [सं०]१. याज्ञवल्क्य का एक नाम। २. राजा जनक का एक नाम।

सूर्य श्री—पुं० [सं०] विश्वेदेवा में से एक।

सूर्य-संक्रमण—पुं० [सं०]=सूर्य-संक्रांति।

सूर्य संक्रांति—स्त्री० [सं०] सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश, जो एक पर्व माना गया है। संक्रांति।

सूर्य संज्ञ—पुं० [सं०] १. सूर्य। २. आक। मदार। ३. केसर। ४. तांबा। ५. एक प्रकार का मानिक।

सूर्य-सारथि—पुं०[सं०] (सूर्य का सारथि) अरुण।

सूर्य-सावर्णि—पुं०[सं०] मार्कण्डेय पुराण के अनुसार आठवें मनु का नाम। ये सूर्य और संज्ञा के गर्भ से उत्पन्न (औरस) माने गये हैं।

सूर्यसावित्र—पुं०[सं०] विश्वेदेवों में से एक।

सूर्य-सुत—पुं०[सं०]=सूर्य-पुत्र।

सूर्यसूक्त—पुं० [सं०] ऋग्वेद का एक सूत्र, जिसमें सूर्य की स्तुति है।

सूर्यसूत—पुं०[सं०] सूर्य का सारथि, अरुण (देव)।

सूर्य स्नान—पुं०[सं०] धूप-स्नान।

सूर्यांशु—पुं०[सं०] सूर्य की किरण।

सूर्या—स्त्री०[सं०]१. सूर्य की पत्नी, संज्ञा। २. नव-विवाहिता स्त्री। नवोढ़ा। ३. इन्द्र-वारुणी।

सूर्याकर—पुं० सं०] एक प्राचीन जनपद। (रामायण)

सूर्याक्ष—पुं०[सं०] विष्णु।

वि० सूर्य के समान नेत्रोंवाला।

सूर्याणी—स्त्री० [सं०] सूर्य की पत्नी, संज्ञा।

सूर्यातप—पुं०[सं०]१. सूर्यताप। २. धूप। घाम।

सूर्यात्मज—पुं०[सं०] सूर्य-पुत्र।

सूर्यायाम—पुं०[सं०] सूर्यास्त का समय।

सूर्यालोक—पुं०[सं०] १. सूर्य का प्रकाश। २. धूप।

सूर्यावर्त—पुं० [सं०] १. अधकपारी या आधासीसी नाम का सिर का दर्द। २. हुरहुर। ३. सुवर्चला। ४. गज पिप्पली। ५. एक प्रकार का जल-पात्र। ६. बौद्धों में एक प्रकार की समाधि।

सूर्याश्म (श्मन्)—पुं०[सं०] सूर्यकान्त मणि।

सूर्याश्व—पुं० [सं०] सूर्य का घोड़ा। ।

सूर्यास्त—पुं०[सं०]१. सूर्य का अस्त होना। २. सूर्य के अस्त होने का समय।

सूर्याह्व—पुं० [सं०]१. तांबा। ताम्र। २. आक। मदार। ३. महेन्द्र वारुणी।

सूर्येन्दुसंगम—पुं० [सं०] अमावस्या, जिसमें सूर्य और इन्दु अर्थात् चन्द्रमा एक ही राशि में स्थित रहते हैं।

सूर्योच्च—पुं०[सं०]=रवि-उच्च। (देखें)

सूर्योदय—पुं०[सं०]१. सूर्य का उदित होना या निकलना। २. सूर्य के उदित होने का समय। प्रातःकाल। सवेरा।

सूर्योदय-गिरि–पुं०[सं०]=उदयाचल।

सूर्योदयन–पुं०[सं०]=सूर्योदय।

सूर्योद्यान—पुं०[सं०] सूर्यवन नामक तीर्थ।

सूर्योपनिषद्—स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम।

सूर्योपस्थान—पुं० [सं०] सूर्य की एक प्रकार की उपासना।

सूर्योपासक—पुं०[सं०] सूर्य की उपासना करनेवाला। सूर्यपूजक। सौर।

सूर्योपासना—स्त्री०[सं०] सूर्य की आराधना, उपासना या पूजा।

सूल—पुं०[सं० शूल]१. बरछा। भाला। साँग। २. कोई नुकीली चीज। ३. किसी नुकीली चीज के गड़ने की सी पीड़ा। ४. पेट की शूल नामक पीड़ा या रोग।

क्रि० प्र०—उठना।

५. माला के ऊपर का फुंदन। ६=दे० शूल।

वि०=वसूल। (दलालों की बोली)।

सूलधर, सूलधारी*—पुं०=शूलधर (शिव)।

सूलना–स०[हिं० सूल+ना (प्रत्य०)]१. भाले से छेदना। २. नुकीली चीज चुभाना। ३. कष्ट देना। पीड़ित करना।

अ० १. कोई नुकीली चीज गड़ना या चुभना। २. कष्ट पाना। पीड़ित होना।

सूलपानि*—पुं० =शूलपाणि (शिव)।

सूली—स्त्री० [सं० शूल] १. प्राणदंड की एक प्राचीन प्रणाली जिसमें दंडित मनुष्य एक नुकीले लोहे के डंडे पर बैठा दिया जाता था और उसके सिर पर मुँगरे से आघात किया जाता था। इससे नीचे से ऊपर तक उसका सारा शरीर छिद जाता था और वह मर जाता था।

क्रि० प्र०—चढ़ना।—चढ़ाना।—देना।—पाना।—मिलना।

२. आज-कल फाँसी नामक प्राणदंड। ३. बहुत अधिक कष्ट या पीड़ा की स्थिति।

मुहा०—प्राण सूली पर टँगा रहना= किसी प्रकार की दुबधा में पड़ने के कारण बहुत अधिक मानसिक कष्ट होना। जैसे—जब तक लड़का लौटकर नहीं आया था, तब तक प्राण सूली पर टँगे थे।

३. एक प्रकार का नरम लोहा जिसके छड़ बनाये जाते हैं। (लुहार)

४. दक्षिण दिशा। (लश०)

†पुं०=शूली (शिव)।

सूवना*—अ०[सं० स्रवण] प्रवाहित होना। बहना।

†स० प्रसव करना। जनना। (पश्चिम)

†पुं० सूआ (तोता)।

सूवर†—पुं०=सूअर।

सूवा—पुं० [?] फारसी संगीत के अंतर्गत २४ शोभाओं में से एक।

†पुं०=सूआ, (तोता)।

सूस—पुं० [सं० शिशुमार]=सूँस (जल-जन्तु)।

सूसमार—पुं०[सं० शिशुमार] सूँस (जल-जन्तु)।

सूसला†—पुं०[सं० शश] खरगोश।

सूसि*—पुं०=सूँस (जल-जन्तु)।

सूसी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

सूहवा†—वि०=सधवा (स्त्री)।

†पुं०=सूहा (राग)।

सूहा—पुं०[हिं० सोहना] एक प्रकार का चमकीला गहरा लाल रंग। (ब्राइट रेड)

वि० [स्त्री० सूही] उक्त प्रकार के लाल रंग का। लाल। सुर्ख।

पुं०[सं० सुहव?] संगीत में ओड़व-षाड़व जाति का एक राग जो दिन के दूसरे पहर के अंत में गाया जाता है।

सूहा-टोड़ी—स्त्री०[हिं० सूहा+टोड़ी] संगीत में संपूर्ण जाति की एक संकर रागिनी।

सूहा-बिलावल—पुं० [हिं० सूहा+बिलावल] संगीत में संपूर्ण जाति का एक संकर राग।

सूहा-श्याम—पुं०[हिं० सूहा+श्याम] संगीत में संपूर्ण जाति का एक संकर राग।

सृंखला†—स्त्री०=श्रृंखला।

सृंग†—पुं०=श्रृंग (चोटी)।

सृंगबेरपुर†—पुं०=श्रृंगबेरपुर।

सृंगी*—पुं०=श्रृंगी (ऋषि)।

सृंजय—पुं०[सं०]१. देववात का एक पुत्र। (ऋग्वेद) २. मनु का एक पुत्र। ३. पुराणानुसार एक प्राचीन राजवंश जिसमें धृष्टद्युम्न हुए थे।

सृकंडू—स्त्री०[सं०] खाज या खुजली नामक रोग। कंडु।

सृक—पुं० [सं०] १. शूल। २. बरछा। भाला। ३. तीर। बाण। ४. वायु। हवा। ५. कमल।

†पुं० [सं० स्रक] माला या हार।

सृकाल*—पुं०=श्रृगाल (गीदड़)।

सृक्कणी, सृक्किणी—स्त्री० [सं०] होंठों का कोना। मुँह का कोना।

सृक्व (न्)—पुं०[सं०] होंठों का छोर। मुँह का कोना।

सृग*—पुं०[सं० सृक]१. बरछा। भाला। २. तीर। बाण।

†पुं०[सं० स्रक्] माला या हार।

सृगाल†—पुं०=श्रृगाल (गीदड़)।

विशेष—'सृगाल' के यौ० के लिए दे० 'श्रृगाल' के यौ०।

सृग्विनी*—स्त्री०=स्रग्विणी (छंद)।

सृजक*—पुं० [सं०] सृजन (सर्जन) करनेवाला।

सृजन*—पुं० [सं० सृज, सर्जन] १. सृष्टि करने अर्थात् जन्म देने की क्रिया या भाव। सर्जन। रचना। २. उत्पत्ति। सृष्टि। ३. छोड़ना या निकालना।

सृजनहार*—पुं० [सं० सृज, सर्जन+हिं० हार] सृजन (सर्जन) करनेवाला। सृष्टिकर्ता।

सृजना—स० [सं० सृज+हिं० ना (प्रत्य०)] सृष्टि करना। जन्म देना। उत्पन्न करना, रचना या बनाना।

सृज्य—वि०[सं०]१. जो उत्पन्न किया जाने को हो। २. जो सृजन किये जाने के योग्य हो। ३. छोड़े या निकाले जाने के योग्य।

सृणि—पुं०[सं०]१. चन्द्रमा। २. शत्रु।

स्त्री० हाथी को वश में करनेवाला, अंकुश।

सृणिक—पुं०[सं०] महावत का अंकुश।

स्त्री० थूक।

सृणीक—पुं०[सं०]१. वायु। हवा। २. अग्नि। ३. वज्र। ४. मदोन्मत्त व्यक्ति।

सृणीका—स्त्री० [सं०] थूक। लार।

सृत—भू० कृ०[सं०] १. जो खिसक गया हो। सरका हुआ। २. जो चला गया हो।

पुं० चकमा देकर शत्रु पर शस्त्र से प्रहार करना।

सृता—स्त्री० [सं०] सृति। (दे०)

सृति—स्त्री०[सं०]१. जाने या खिसकने की क्रिया या भाव। २. आवागमन। ३. जाने का मार्ग। पथ। ४. आचरण। ५. जन्म। ६. निर्माण।

सृत्वन्—पुं० [सं०] १. खिसकने या सरकने की क्रिया या भाव। २. बुद्धि। ३. प्रजापति।

सृत्वर—वि०[सं०] १. जो जा या चल रहा हो। २. चलता हुआ। गतिशील।

सृत्वरी—स्त्री०[सं०]१. नदी। धारा। २. माता।

सृप—पुं०[सं०] चन्द्रमा।

सृप्त—भू० कृ०[सं०] खिसका या फिसला हुआ।

सृप्र—वि०[सं०]१. चिकना। स्निग्ध। २. जिस पर हाथ या पैर फिसलता हो।

पुं०१. चन्द्रमा। २. मधु। शहद।

सृप्रा—स्त्री०[सं०]=सिप्रा (नदी)।

सृमर—वि०[सं०]१. जो चल रहा हो। २. गतिशील।

पुं० एक प्रकार का पशु। (कदाचित बालमृग)

सृष्ट—भू० कृ०[सं०]१. बनाया या रचा हुआ। २. उत्पन्न या पैदा किया हुआ। ३. मिला हुआ। युक्त। ४. छोड़ा या निकाला हुआ। त्यागा हुआ। परित्यक्त। ६. जिसके संबंध में दृढ़ निश्चय या संकल्प किया गया हो। ७. अलंकृत। भूषित।

पुं० तिन्दुक या तेंदू का वृक्ष।

सृष्ट-मारुत—वि०[सं०] वैद्यक में पेट की वायु को निकालनेवाला (औषध या खाद्य पदार्थ)।

सृष्टि—स्त्री०[सं० √सृज् (सर्जन करना)+क्तिन्]१. बना या रचकर तैयार करने की क्रिया या भाव। निर्माण। रचना। २. उत्पत्ति। पैदाइश। ३. वह चीज जो बनाकर या पैदा करके तैयार की गई हो। ४. जगत् या संसार का आविर्भाव या उत्पत्ति। ५. यह सारा विश्व और इसमें के सभी चर और अचर प्राणी तथा पदार्थ। (क्रियेशन, उक्त सभी अर्थों में) ६. निसर्ग। प्रवृत्ति। ७. उदारता या दानशीलता। ८. एक प्रकार की ईंट जो यज्ञ की वेदी के लिए बनाई जाती थी। ९. गंभारी का पेड़।

सृष्टिकर्ता—पुं० [सं० सृष्टिकर्तृ]१. सृष्टि या संसार की रचना करनेवाला, ब्रह्मा। २. ईश्वर। परमात्मा।

सृष्टि-तत्त्व—पुं० [सं०] सृष्टि-विज्ञान।

सृष्टिपत्तन—पुं० [सं०] एक प्रकार की मंत्र-शक्ति।

सृष्टि-विज्ञान—पुं०[सं०] वह विज्ञान जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि ब्रह्माण्ड में ग्रह, तारे, नक्षत्र आदि किस प्रकार उत्पन्न होते, बढ़ते और अन्त में नष्ट होते हैं। (कास्मोलोजी)

सृष्टि-शास्त्र—पुं० =सृष्टि-विज्ञान।

सृष्ट्यंतर—पुं० [सं०] चार वर्णों के अंतर्गत अंतर-जातीय विवाह से उत्पन्न होनेवाली संतान।

सेक—पुं० [हिं० सेंकना] १. सेंकने की क्रिया या भाव। २. ताप। गरमी। ३. शरीर के किसी रुग्ण अंग पर गर्म चीज से पहुँचाई जानेवाली गर्मी। टकोर। (फ़ोमेन्टेशन) ४. किसी प्रकार का सामान्य कष्ट, विपत्ति या संकट। (पश्चिम) जैसे—ईश्वर करे, तुम्हें जरा भी सेंक न लगे।

क्रि० प्र०—आना।—लगना।

स्त्री० [हिं० सींक] लोहे की कमानी जो छीपी कपड़े छापने के काम में लाते हैं।

सेंकना—स० [सं० श्रेषण=जलाना, तपाना] १. आँच के पास या आग पर रखकर भूनना। जैसे—रोटी सेंकना। २. आँच के पास या ताप के सामने रखकर गरम करना। जैसे—(क) सरदी में अँगीठी से हाथ-पैर सेंकना। (ख) खुली जगह में बैठकर धूप सेंकना। ३. कपड़ा, रूई, आदि गरम करके पीड़ित अंग पर उसका ताप पहुँचाना। जैसे—पेट या फोड़ा सेंकना। (फ़ोमेन्टेशन)

मुहा०—आँखें सेंकना= रूपवती या सुन्दरी स्त्री को बारंबार देखकर तृप्त या प्रसन्न होना।

सेंकाई—स्त्री० [हिं० सेंकना] सेंकने की क्रिया या भाव।

सेंकी†—स्त्री० [फा० सीनी, हिं० सनहकी] तश्तरी। रकाबी।

सेंगर—पुं० [सं० शृंगार] १. एक प्रकार का पौधा जिसकी फलियों की तरकारी बनती है। २. उक्त पौधे की फली। ३. बबूल की फली। ४. एक प्रकार का अगहनी धान।

पुं० क्षत्रियों की एक जाति।

सेंगरा†—पुं० [फा० सग या सं० शृंखल ?] मोटे बाँस का वह छोटा टुकड़ा जिसकी सहायता से पेशराज लोग मिलकर भारी धरनें, पत्थर आदि उठाते हैं।

विशेष—सेंगरे में मोटे रस्से बाँधे जाते हैं और उन्हीं रस्सों पर धरनें, पत्थर आदि लटकाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाये जाते हैं।

†पुं० संगरा।

सेंजी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास। (पंजाब)

सेंट*—स्त्री० [?] दूध की धार।

पुं० [अं०] १. खुशबू। २. सुगंधिपूर्ण द्रव्य। जैसे—इत्र।

सेंटर—पुं० [अं०] केन्द्र। (दे०)

सेंट्रल—वि० [अं०] केंद्रीय। (दे०)

सेंठा—पुं० [देश०] १. मूंज या सरकंडे के सींके का निचला मोटा मज़बूत हिस्सा जो मोढ़े आदि बनाने के काम में आता है। कन्ना। २. एक प्रकार की घास, जो प्रायः छप्पर छाने के काम आती है। ३. वह पोली लकड़ी जिसमें जुलाहे ऊरी फँसाते हैं। डांड़।

सेंढ़—पुं० [देश०] सुनारी के काम में आनेवाला एक प्रकार का खनिज पदार्थ।

सेंत†—स्त्री०= सेंती।

सेंतना†—स०=संतना।

सेंत-मेंत—अव्य० [हिं० सेंत+मेंत (अनु०)] १. बिना दाम दिये सेंत में। २. बिना कुछ किये या दिये। मुफ्त में। ३. फजूल। व्यर्थ।

सेंति†—विभ० आधुनिक हिंदी की 'से' विभक्ति का पुराना रूप।

स्त्री०=सती।

सेंती†—स्त्री० [सं० संहति=(क) किफायत (ख) ढेर या राशि] ऐसी स्थिति जिसमें या तो (क) पास का कुछ भी व्यय न करना पड़े, (ख) कुछ भी परिश्रम न करना पड़े, अथवा (ग) अनायास ही कोई चीज बहुत अधिक मात्रा या संख्या में प्राप्त हो।

मुहा०—सेंती का या सेंती-मेंती का=(क) जिसके लिए कुछ भी परिश्रम न करना पड़ा हो। मुफ्त का या मुफ्त में। जैसे—उन्हें बाप-दादा का सेंती का माल मिला है। (ख) जिसके लिए कुछ भी व्यय न करना पड़ा हो। उदा०—सखा संग लीन्हें जु सेंति के फिरत रैन दिन बन में छाये।—सूर। (ग) जो बहुत अधिक मात्रा या मान में उपस्थित या प्रस्तुत हो। उदा०—दधि मैं परी सेंति की चींटी, मो पै सबै कढ़ाई।—सूर। (घ) बिलकुल अकारण या व्यर्थ। जैसे—इसके लिए कोई सेंती का प्रयत्न क्यों करे।

प्रत्य० [प्रा० सुंतो, पंचमी विभक्ति] पुरानी हिन्दी की करण और अपादान की विभक्ति; से। उदा०—राजा सेंति कुँवर सब कहहीं। अस अस मच्छ समुद महँ अहहीं।—जायसी।

सेंथा†—पुं०=सेंठा।

सेंथी†—स्त्री० [सं० शक्ति] छोटा भाला। बरछी।

सेंद†—स्त्री०=सेंध।

सेंदुर†—पुं० [सं० सिन्दूर] ईंगुर की बुकनी जो प्रायः सौभाग्यवती स्त्रियाँ माँग में लगाती हैं। सिंदूर।

क्रि० प्र०—भरना।—लगाना।

मुहा०—सेंदुर चढ़ना=स्त्री का विवाह होना। **सेंदुर पहनना**=माँग में सिन्दुर भरना या लगाना। **(किसी की माँग में) सेंदुर देना**=किसी स्त्री की माँग में सिन्दूर डालकर उससे विवाह करना या उसे अपनी पत्नी बनाना।

सेंदुरदानी†—स्त्री० [हिं० सेंदुर+फा० दानी] सिंदूर रखने का छोटा डिब्बा। सिंदूर की डिबिया।

सेंदुरा, सेंदुरिया—वि०, पुं०=सिंदूरिया।

सेंदुरी†—वि० स्त्री० [हिं० सेंदुर+ई (प्रत्य०)] सिंदूरी गाय।

सेंद्रिय—वि० [सं०] १. जिसमें इन्द्रियाँ हों। इन्द्रियोंवाला। जैव। (जीव या जन्तु) (आर्गनिक) २. पुंस्त्व या पौरुष से युक्त।

सेंध—स्त्री० [सं० संधि] १. चोरी करने के लिए मकान की दीवार में किया हुआ बड़ा छेद, जिसमें से होकर चोर किसी कमरे या कोठरी में घुसता है। संधि। नकब।

क्रि० प्र०—देना।—मारना।—लगाना।

२. इस प्रकार छेद करके की जानेवाली चोरी।

क्रि० प्र०—लगना।

स्त्री० [देश०] १. गोरख ककड़ी। फूट।। २. कचरी नामक फल। पेहँटा।

सेंधना†—स० [हिं० सेंध] चोरी करने के उद्देश्य से दीवार में छेद करके मकान में घुसने के लिए रास्ता बनाना।

सेंधा नमक—पुं०[सं० सैंधव] एक प्रकार का नमक जो पश्चिमी पाकिस्तान की खानों से निकलता है। सैंधव। लाहौरी नमक।

सेंधिया—वि० [हिं० सेंध] दीवार में सेंध लगाकर चोरी करनेवाला। जैसे—सेंधिया चोर।

पुं० [?] १. ककड़ी की जाति की एक बेल जिसमें तीन-चार अंगुल लम्बे छोटे-छोटे फल लगते हैं। कचरी। सेंध। पेहँटा। २. फूट नामक फल। ३. एक प्रकार का विष।

†पुं०=सिंधिया।

सेंधी—स्त्री०[सिंध (देश०)]१. खजूर। २. खजूर की शराब।

†स्त्री०=सेंधिया (फल)।

सेंधुआर†—पुं०=सिंधुआर (जन्तु)।

सेंधुर†—पुं० =सिंदुर।

सेंबर†—पुं०=सेमल।

सेंभा†—पुं०[देश०] घोड़ों का एक वात रोग।

सेंवई†—स्त्री०=सेवई।

सेंवर†—पुं०=सेमल।

सेंशर—पुं०[अं०]१. यह कहना कि तुमने यह दोष या भूल की है। २. निंदात्मक भर्त्सना।

सेंसर—पुं०[अं०]१. वह सरकारी अफसर जिसे पुस्तकें, समाचार-पत्र आदि छपने या प्रकाशित होने, नाटक खेले जाने, चित्रपट दिखाये जाने पर या तार से कहीं समाचार भेजे जाने के पूर्व उन्हें देखने या जाँचने और टोकने का अधिकार होता है। २. उक्त प्रकार की जाँच का काम।

सेंसर-बोर्ड—पुं० [सं०] सेंसर करनेवाले अधिकारियों की समिति।

सेंह†—स्त्री० =सेंध।

सेंहा—पुं०[हिं० सेंध] कूआँ खोदने का पेशा करनेवाला मजदूर। कुइँरा।

†स्त्री०=सेंध।

सेंही†—स्त्री०=सेंध।

सेंहुड़—पुं० [सं० सेहुण्ड] थूहर।

से—विभ०[प्रा० सुंतो, पु० हिं० सेंति]१. करण और अपादान कारक का चिह्न। तृतीया और पंचमी की विभक्ति, जिसका प्रयोग इन अर्थों में होता है—(क) द्वारा ; जैसे—हाथ से देना, (ख) आपेक्षिक मान में कम या अधिक ; जैसे—इससे कम, (ग) सीमा का आरम्भ; जैसे—यहाँ से।

मुहा०—(स्त्री का किसी पुरुष) से रहना=पर-पुरुष से संभोग करना। उदा०—मीर गुल से अब के रहने में हुई वह बेकली। टल गई क्या नाफदानी पेड़ पत्थर हो गया।—जानसाहब।

२. पुरानी हिंदी और बोलचाल में, कहीं-कहीं सप्तमी या अधिकरण के चिह्न 'पर' की तरह प्रयुक्त। उदा०—कहहिं कबिर गूँगे गुर खाया, पूछे से का कहिया।—कबीर।

वि० हिं० 'सा' (समान) का बहु०। जैसे—थोड़े से कपड़े, बहुत से लोग।

*सर्व० हिं० 'सो' (वह) का बहु०।

स्त्री०[सं०]१. सेवा। २. कामदेव की पत्नी रति का एक नाम।

सेई†—स्त्री०[हिं० सेर] अनाज नापने का काठ का एक गहरा बरतन।

†सर्व० [हिं० से (वह)+ई (प्रत्य०)] वही। उदा०—सेई तुम सेई हम कहियत।—कबीर।

सेउ*—पुं० १. दे० 'सेव' (पकवान)। २. दे० 'सेव' (फल)। ३. दे० 'शिव'।

सेउवा†—स्त्री०=सेवा।

सेकंड—पुं०[अं०] एक मिनट का ६०वाँ भाग।

वि० गिनती में दो के स्थान पर पड़नेवाला। दूसरा।

सेक—पुं०[सं०]१. पानी से सींचने की क्रिया या भाव। सिंचाई। २. पानी का छिड़काव। ३. अभिषेक। ४. तेल आदि की मालिश। (वैद्यक)

†पुं०=सेंक। (पश्चिम)

सेकड़ा†—पुं० [देश०]वह चाबुक या छड़ी, जिससे हलवाहे बैल हाँकते हैं। पैना।

सेकतव्य—वि०[सं०] १. छिड़के या सींचे जाने के योग्य। २. मालिश के योग्य।

सेक-पात्र—पुं० [सं०] पानी छिड़कने या सींचने का पात्र या बरतन।

सेकुआ†—पुं० [देश०] काठ के दस्ते का लंबा करछी या डौआ, जिससे हलवाई दूध औटाते हैं।

सेक्ता—वि०[सं० सेक्तृ] [स्त्री० सेक्त्री] १. सींचनेवाला। २. गौ, घोड़ी आदि में गर्भाधान करानेवाला।

पुं० स्त्री का पति। शौहर।

सेक्रेटरी—पुं०[अं०] १. मंत्री। २. सचिव।

सेक्रेटरियट—पुं० [अं०]=सचिवालय।

सेक्शन—पुं०[अं०]१. विभाग। जैसे—इस दरजे में दो सेक्सन हैं। २. धारा।

सेख†—वि०, पुं०=शेष।

†पुं० =शेख।

सेखर*—पुं०=शेखर।

†पुं०=शिखर।

सेखी†—स्त्री०=शेखी।

सेगा—पुं०[अ० सेग़ः] १.किसी काम या बात का कोई विशिष्ट विभाग या शाखा। २. व्यवस्था, शासन आदि का महकमा।

सेगुन†—पुं०=सागोन (वृक्ष)।

सेगोन, सेगौन—पुं०[देश०]मटमैले रंग की वह लाल मिट्टी जो नालों के पास पाई जाती है।

†पुं०=सागोन (वृक्ष)।

सेच—पुं०[सं०]१. सिंचाई। २. छिड़काव।

सेचक—वि० [सं०]१. सेचन करने या सींचनेवाला। २. छिड़कनेवाला। तर करनेवाला।

पुं० बादल। मेघ।

सेचन—पुं०[सं०√सिच् (सींचना)+ल्युट्—अन] १. पानी से सींचने की क्रिया या भाव। सिंचाई करना। २. पानी छिड़कना। ३. पानी के छींटे देना। ४. अभिषेक। ५. धातुओं की ढलाई। ६. वह कड़ाहीनुमा छोटा बरतन जिससे नाव में का पानी बाहर फेंका जाता है।

सेचनक—पुं० [सं०] अभिषेक।

सेचनी—स्त्री०[सं०] पानी भरने का बरतन। जैसे—डोल, बालटी आदि।

सेचनीय—वि०[सं०] जिसका सेचन हो सके या होने को हो।

सेचित—भू० कृ० [सं०] जो सींचा गया हो। तर किया हुआ।

सेच्य—वि०[सं०]= सेचनीय।

सेज—स्त्री०[सं० शय्या प्रा० सज्जा]१. बिछौना, विशेषतः सुन्दर और कोमल बिछौना। २. साहित्यिक तथा शृंगारिक क्षेत्र में वर या वधू का बिछौना।

क्रि० प्र०—करना।

सेजपाल—पुं०[हिं० सेज+पाल] प्राचीन काल में, वह सैनिक जो राजा की शय्या पर पहरा देता था।

सेजरिया*—स्त्री० = सेज।

सेजा—पुं०[देश०] आसाम और बंगाल में होनेवाला एक प्रकार का पेड़ जिस पर टसर के कीड़े पाले जाते हैं।

सेजिया, सेज्या†—स्त्री० = सेज।

सेझ†—स्त्री० = सेज।

सेझदादि†—पुं०=सह्याद्रि (पर्वत)।

सेझदारि*—पुं०=सह्याद्रि (पर्वत)।

सेझना—अ० [सं० सेधन =दूर करना, हटाना] दूर होना। हटना स० दूर करना। हटाना।

सेट—पुं०[सं०] एक प्राचीन तौल या मान।

पुं०[अं०] एक साथ पहनी या काम में लाई जानेवाली चीजों का समूह। कुलक। जैसे—गहनों का सेट, कपड़ों का सेट, बरतनों का सेट।

पुं०=सेंठा।

सेटना—अ०[सं० श्रुत] किसी का महत्त्व, मान आदि स्वीकार करना या मानना।

सेटिल—वि०[अं० सेटिल्ड]१. (झगड़ा या विवाद) जो निपट गया हो। २. जो निश्चित या तै हो गया हो।

सेटिलमेंट—पुं०[अं०]१. खेती के लिए भूमि को नापकर उसका राज-कर निर्धारित करने का काम। बंदोबस्त। २. आपस में होनेवाला निपटारा या समझौता। ३. नई बसाई हुई जगह।

सेठ—पुं०[सं० श्रेष्ठी] [स्त्री० सेठानी]। १. बहुत बड़ा कोठीवाल, महाजन, व्यापारी या साहूकार। २. बहुत बड़ा धनवान् या सम्पन्न व्यक्ति। ३. खत्रियों की एक जाति। ४. सुनारों का अल्ल या जाति-नाम। ५. दलाल। (डिं०)

सेठन—पुं०[देश०] झाड़ू। बुहारी।

सेठा—पुं०[हिं० सेंठा] सरकंडे का निचला भाग।

सेठानी—स्त्री०[हिं० सेठ+आनी (प्रत्य०)]१. सेठ की पत्नी। २. महाजन स्त्री।

सेड़ा†—पुं० [देश०] भादों में होनेवाला एक प्रकार का धान।

सेड़ी—स्त्री० [सं० चेटि, प्रा० चेड़ि, हिं० चेरी] सहेली। सखी। (डिं०)

सेढ़—पुं० [अं० सेल] बादवान। पाल। (लश०)

क्रि० प्र०—खोलना।—चढ़ाना।—तानना।—बाँधना।—लगाना।

मुहा०—सेढ़ बजाना=पाल में से हवा निकालना जिससे वह लपेटा जा सके। (लश०) **सेढ़ सपटाना**=रस्सा खींचकर पाल तानना।

सेढ़खाना—पुं० [सं० सेल=फा० खाना] १. जहाज में वह कमरा या कोठरी जिसमें पाल भरे रहते हैं। २. वह स्थान जहाँ पाल बनाये जाते हैं।

सेढ़ा†—पुं०[देश०] सेड़ा नामक भादों मास में होनेवाला धान।

सेत*—वि०=श्वेत (सफेद)।

पुं०=सेतु।

सेतकुली—पुं०[सं० श्वेतकुलीय] सर्पों के अष्ट कुल में से एक। सफेद जाति के नाग।

सेतदीप*—पुं०=श्वेतदीप।

सेत-दुति†—पुं० [सं० श्वेतद्युति] चन्द्रमा।

सेतना†—स०=सैंतना (संचित करना)।

सेतबंध†—पुं०=सेतुबंध।

सेतवा—पुं० [सं० शुक्ति, हिं० सितुही] अफीम काछने की लोहे की कलछी।

सेतवारी†—स्त्री०[सं० सिक्ता,=बालू+बारी (प्रत्य०)] हरापन लिए हुए बलुई चिकनी मिट्टी।

सेतवाह†—पुं०[सं० श्वेतवाहन]१. अर्जुन। २. चन्द्रमा। (डिं०)

सेता†—वि०[सं० श्वेत] [स्त्री० सेती] सफेद। उदा०—सेतो सेतो सब भलो सेतो भलो न केस।

सेतिका†—स्त्री० [सं० साकेत] अयोध्या नगरी का एक नाम।

सेती†—अव्य०[प्रा० सुत] १. किसी के प्रति। को। २. द्वारा। विभ० दे० 'से'।

सेतु—पुं०[सं०]१. बाँधने की क्रिया या भाव। बन्धन। २. नदी आदि पार करने के लिए बनाया हुआ रास्ता। पुल। ३. दूर रहनेवाली दो चीजों को आपस में मिलानेवाला अंग या रचना। (ब्रिज)४. पानी की रुकावट के लिए बंधा हुआ बाँध। ५. खेत की मेंड़। ६ सीमा। हद। मर्याद। उदा०—राखहिं निज श्रुति सेतु।—तुलसी। ७. सीमा की सूचक किसी प्रकार की रचना। जैसे—डाँड़, मेंड़ आदि। ८. ओंकार या प्रणव की एक संज्ञा। ९. ग्रन्थ की टीका या व्याख्या। १०. वरुण वृक्ष। बरना।

†वि०=श्वेत।

सेतुक—पुं०[सं०] १. पुल। २. जलाशय का धुस्स। बाँध। ३. वरुण नामक वृक्ष। बरना।

सेतु-कर—पुं०[सं०] सेतु या पुल बनानेवाला।

सेतु-कर्म (न्)—पुं०[सं०]सेतु या पुल बनाने का काम।

सेतुज—पुं०[सं०] दक्षिणापथ के एक स्थान का नाम।

सेतुपति—पुं०[सं०] दक्षिण भारत के पुराने रामनद राज्य के राजाओं की वंश परम्परागत उपाधि।

सेतु-पथ्य—पुं०[सं०] दुर्गम स्थानों में जानेवाली सड़क। ऊँची-नीची पहाड़ी घाटियों में जानेवाली सड़क। (कौ०)

सेतुप्रद—पुं०[सं०] कृष्ण का एक नाम।

सेतुबंध—पुं० [सं०] १. पुल बनाने या बाँधने की क्रिया। २. नहर। ३. वह पथरीला मार्ग जो रामेश्वरम् से कुछ दूर आगे लंका की ओर समुद्र में बना हुआ है। प्रवाद है कि इसे नील और उनके साथियों ने श्रीरामचन्द्र जी के लंका पर चढ़ाई करने के समय बनाया था।

सेतुबंध रामेश्वर—पुं० [सं०] भारत की दक्षिणी सीमा का वह स्थान

जहाँ लंका पर चढ़ाई करने के लिए रामचन्द्र ने पुल बनाया और शिवलिंग स्थापित किया था।

सेतुवा†—पुं०=सूस।

†पुं०=सेहुँवा (चर्म रोग)।

सेतुशैल—पुं०[सं०] दो देशों के बीच का सीमा-सूचक पर्वत। सरहद का पहाड़।

सेथिया—पुं० [तेलगू चेहि, चेट्टिया, हिं० सेठिया] आँख, गुदा, मूत्रेंद्रिय आदि संबंधी रोगों की चिकित्सा करनेवाला चिकित्सक। (दक्षिण)

सेद†—पुं०=स्वेद (पसीना)।

सेदज†—वि० [स्वेदज] पसीने से उत्पन्न होनेवाला कीड़ा।

सेदरा—पुं०[फा० सेह=तीन+दर=दरवाजा] वह मकान, जिसके तीन तरफ खुली जमीन हो। तिदरी।

सेध—पुं०[सं०] मनाही। निवारण।

सेधक—वि०[सं०] हटाने या रोकनेवाला।

सेधा—स्त्री०[सं०] साही नाम का जन्तु।

सेन—पुं० [सं०] १. तन। शरीर। २. जीवन। ३. प्राचीन भारत में, व्यक्तियों के नाम के अंत में लगनेवाला एक पद। जैसे—शूरसेन। ४. चार प्रकार के दिगम्बर जैन साधुओं में से एक। ५. बंगाल का सिद्ध राजवंश जिसने ११वीं से १५वीं शताब्दी तक राज्य किया था। ६. बंगाल की वैद्य नामक जाति का अल्ल।

वि०१. जिसके सिर पर कोई मालिक हो। सनाथ। २. अधीन। आश्रित।

†वि०=सेना (फौज)।

†पुं०=श्येन (बाज पक्षी)।

†स्त्री०=सेंध।

सेनजित्—वि०[सं०] सेना को जीतनेवाला।

सेनप—पुं०[सं० सेनापति] सेनापति।

सेनपति*—पुं०=सेनापति।

सेनांग—पुं०[सं०]१. सेना के चार अंगों (हाथी, घोड़े, रथ और पैदल) में से हर एक। २. सैनिकों का छोटा दल या टुकड़ी। सेना का विभाग।

सेना—स्त्री०[सं०]१. युद्ध के लिए सिखाये हुए और अस्त्र-शस्त्र से सजे हुए सैनिकों या सिपाहियों का बड़ा दल या समूह। फौज। पलटन। (आर्मी) २. किसी विशिष्ट उद्देश्य या कार्य की सिद्धि के लिए संघटित किया हुआ कोई बड़ा दल या समूह। जैसे—बालसेना, मुक्ति सेना, वानर सेना आदि।३. इन्द्र का वज्र। ४. भाला। ५. साँग। ६. इन्द्राणी। ७. वर्तमान अवसर्पिणी के तीसरे अर्हत् शंभव की माता का नाम। (जैन) ८. प्राचीन भारत में स्त्रियों के नाम के साथ लगनेवाला एक पद। जैसे—बसंतसेना।

†स०[सं० सेवन]१. सेवा-टहल करना।

मुहा०—चरण सेना=(क) पैर दबाना। (ख) तुच्छ चाकरी या सेवा करना।

२. आराधना या उपासना करना। ३. औषध आदि का नियमित रूप से प्रयोग या व्यवहार करना। ४. पवित्र स्थान पर निरन्तर वास करना। जैसे—काशी या वृन्दावन सेना। ५. यों ही किसी चीज पर बराबर पड़े रहना। जैसे—चारपाई सेना। ६. मादा पक्षी का गरमी पहुँचाने के लिए अपने अंडों पर बैठना। ७. कोई चीज व्यर्थ लेकर बैठे रहना। (व्यंग्य)

सेना-कक्ष—पुं०[सं०] सेना का पार्श्व। फौज का बाजू।

सेना-कर्म—पुं०[सं०]१. सेना का संचालन या व्यवस्था। २. सैनिक सेवा का काम।

सेनागोप—पुं०[सं०] प्राचीन भारत में, वह व्यक्ति जो सेना रखता था।

सेनाग्र—पुं०[सं०] सेना का अग्रभाव। फौज का अगला हिस्सा।

सेनाग्रणी—पुं०[सं०]१. सेना का अग्रणी या प्रधान नायक। २. संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सेनाचर—पुं०[सं०]१. सैनिक। २. शिविर में रहनेवाला सैनिक।

सेनाजयंती—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सेनाजीवी (विन्)—पुं० [सं०] सेना में रहकर अपनी जीविका चलानेवाला सैनिक। सिपाही। योद्धा।

सेनादार—पुं०[सं सेना+फा० दार] सेना-नायक। फौजदार।

सेनाधिकारी—पुं० [सं०] फौज का अफसर। सेना का अधिकारी।

सेनाधिप—पुं०[सं०] =सेनापति।

सेनाधिपति—पुं०[सं०]=सेनापति।

सेनाधीश—पुं०[सं०] सेनापति।

सेनाध्यक्ष—पुं०[सं०] फौज का अफसर। सेनापति।

सेनानायक—पुं० [सं०] सेना का अफसर। फौजदार।

सेनानी—पुं० [सं०] १. सेनापति। सिपहसालार। २. कार्तिकेय का एक नाम। ३. एक रुद्र का नाम। ४. जूआ खेलने का एक प्रकार का पासा।

सेनापति—पुं०[सं०]१. सेना का नायक। फौज का अफसर। सिपहसालार। २. कार्तिकेय, जो देवताओं की सेना के प्रधान अधिकारी माने गये हैं। ३. शिव का एक नाम।

सेनापत्य—पुं०[सं०] सेनापति होने की अवस्था, पद या भाव।

सेनापरिधान—पुं०[सं०] सेना के साथ रहनेवाले आवश्यक व्यक्तियों का सारा सामान। लवाजमा। (एकाउन्टरमेन्ट)

सेनापाल—पुं०[सं० सेनापाल] सेनापति।

सेनाभक्त—पुं०[सं०] सेना के लिए रसद और बेगार। (कौ०)

सेनाभक्ति—स्त्री०[सं०] प्राचीन भारत में, वह कर जो राजा या राज्य की ओर से सेना के भरण-पोषण के लिए लिया जाता था।

सेनामणि—पुं०[सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सेनामनोहरी—स्त्री०[सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सेनामुख—पुं० [सं०] १. सेना का अगला भाग। २. सेना का एक विभाग, जिसमें ३ हाथी, ३ रथ, ९ घोड़े और १५ पैदल सवार रहते थे। ३. नगर के मुख्य द्वार के सामने का बाहरी रास्ता।

सेनायोग—पुं०[सं०] सैन्य-सज्जा। फौज की तैयारी।

सेनावास—पुं०[सं०] १. वह स्थान जहाँ सेना रहती हो। छावनी। २. खेमा। डेरा। शिविर।

सेनावाह—पुं०[सं०] सेनानायक।

सेनाव्यूह—पुं० [सं०] युद्धकाल में विभिन्न स्थानों पर की गई सेना के विभिन्न अंगों की स्थापना या नियुक्ति। सैन्य-विन्यास। दे० '**व्यूह**'।

सेनि†—स्त्री०=श्रेणी।

सेनिका—स्त्री०[सं० श्येनिका]१. बाज पक्षी की मादा। मादा बाज पक्षी। २. श्येनिका नामक छन्द।

सेनी—स्त्री० [फा० सीनी] १. तश्तरी। रकाबी। २. एक विशेष प्रकार की नक्काशीदार तश्तरी।

स्त्री०[सं० श्येनी]१. बाज पक्षी की मादा। मादा बाज पक्षी।

†स्त्री० [सं० श्रेणी] १. अवली। पंक्ति। २. सीढ़ी। ३. दे० 'श्रेणी'।

पुं०[?]विराट् के यहाँ अज्ञातवास करते समय का सहदेव का रखा हुआ कल्पित नाम।

सेनुर—पुं०=सिंदूर।

सेनेट—स्त्री० दे० 'सीनेट'।

सेनेटर—पुं०=सीनेटर।

सेफ़—पुं०[अं०] लोहे की मोटी चादर का बना हुआ एक प्रकार का छोटा अल्मारीनुमा बक्स, जिसमें रोकड़ और बहुमूल्य पदार्थ रखे जाते हैं।

वि० [अं०] सुरक्षित।

†पुं०=शेफ।

सेब—पुं०[फा०] १. नाशपाती की जाति का मझोले आकार का एक पेड़। २. उक्त पेड़ का फल, जो मेवों में गिना जाता है।

†पुं०=सेव।

सेभ्य —पुं०[सं०] शीतलता। ठंढक।

वि० ठंढा। शीतल।

सेमंतिका—स्त्री०=सेमंती।

सेमंती—स्त्री० [सं०] सफेद गुलाब का फूल। सेवती।

सेम—स्त्री० [सं० शिंबी] एक प्रकार की फली, जिसकी तरकारी खाई जाती है।

सेमई—पुं० [हिं० सेम] सेम की तरह का हल्का सब्ज रंग।

वि० उक्त प्रकार के रंग का।

† स्त्री०=सेवईं।

सेम का गोंद—पुं० [हिं०] एक प्रकार के कचनार का गोंद, जो इंद्रिय-जुलाब और स्त्रियों का रुका हुआ रज खोलने के लिए उपयोगी माना जाता है।

सेमर† —पुं० [देश०] दलदली जमीन।

† पुं०=सेमल।

सेमल—पुं० [सं० शाल्मलि] १. एक बहुत बड़ा पेड़, जिसके फल में से एक प्रकार की रूई निकलती है। २. उक्त वृक्ष के फल की रूई, जो रेशम की तरह चिकनी और मुलायम होती है। (सिल्क-कॉटन)

पद—सेमल का सूआ=व्यर्थ का काम या परिश्रम करके उसके बुरे परिणाम से दुःखी होने और पछतानेवाला। (सेमल के बीज में चोंच मारनेवाले तोते के दृष्टांत पर) उदा०—कतहूँ सुवा होत सेमर कौ, अंतहि कपट न बचिवौ।—सूर।

सेमल-मूसला—पुं० [सं० शाल्मलि-मूल] सेमल की जड़।

सेमा—पुं० [हिं० सेम] बड़ी सेम।

सेमार† —पुं०=सिवार।

सेमिटिक—पुं० [अं०] दे० 'सामी' (साम देश का)।

सेर—पुं० [?]१. एक मान या तौल, जो सोलह छटाँक या अस्सी तोले की होती है। मन का चालीसवाँ भाग।

मुहा०—सेर का सवा सेर मिलना=किसी अच्छे या जबरदस्त का उससे भी बढ़कर अच्छे या जबरदस्त से मुकाबला या सामना होना।

२. पानों की १०६ ढोलियों का समूह। (तमोली)

पुं० (देश०) एक प्रकार का धान, जो अगहन महीने में तैयार हो जाता है और जिसका चावल बहुत दिनों तक रह सकता है।

स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

वि० [फा०] जिसका पेट या मन भर गया हो। तृप्त।

† पुं० =शेर।

सेरन—स्त्री० [देश०] पहाड़ी देशों में होनेवाली एक प्रकार की घास।

सेरवा† —पुं० [सं० शट ?] वह कपड़ा, जिससे हवा करके अन्न बरसाते समय भूसा उड़ाया जाता है। झूली।

† पुं० [हिं० सिर] चारपाई या बिस्तर का सिरहाना।

पुं० [हिं० सेराना=ठंढा करना, शांत करना] दीवाली के प्रातःकाल 'दरिद्दर' (दरिद्रता) भगाने की रस्म, जो सूप बजाकर की जाती है।

सेरही—स्त्री०[हिं० सेर]एक प्रकार का कर या लगान, जो किसान को फसल की उपज के अपने हिस्से पर देना पड़ता था।

सेरा—पुं० [हिं० सेर]चारपाई की वह पाटी, जो सिरहाने की ओर रहती है।

पुं० [फा० सेराब] आबपाशी की हुई जमीन। सींची हुई जमीन।

† पुं०=सेढ़।

सेराना† —अ०, स०=सिराना।

सेराब—वि० [फा०] [भाव० सेराबी] १. पानी से तर किया या भरा हुआ। सींचा हुआ।

सेराबी—स्त्री० [फा०] सेराब करने की क्रिया या भाव।

सेराह—पुं० [सं०] दूध की तरह सफेद रंगवाला घोड़ा।

सेरी—स्त्री० [फा०] सेर होने अर्थात् अच्छी तरह तृप्त और संतुष्ट होने की अवस्था, क्रिया या भाव। तृप्ति।

स्त्री० [सं० श्रेणी] लंबी पतली गली। (राज०)

स्त्री० [हिं० सेर] सेर भर का बटखरा या बाट। (पश्चिम)

सेरीना—स्त्री० [हिं० सेर] अनाज या चारे का वह हिस्सा जो असामी जमींदार को देता था।

सेरुआ—पुं० [?] १. वैश्य। (सुनार)। २. वेश्याओं की परिभाषा में वह व्यक्ति, जो मुजरा सुनने आया हो।

† पुं०=सेरवा।

सेरू† —पुं० [सं० शेलु] लिसोड़े का पेड़। लभेड़ा।

† पुं० [हिं० सिर] चारपाई में सिरहाने और पैताने की ओर की लकड़ियाँ। (पश्चिम)

सेल—पुं० [सं० शल, प्रा० सेल] बरछा। भाला। साँग।

पुं० [सं० सिलना=एक पौधा जिसके रेशों से रस्से बनते थे] १. एक प्रकार का सन का रस्सा, जो पहाड़ों में पुल बनाने के काम में आता है। २. हल में लगी हुई वह नली, जिसमें से होकर कूंड में भरे हुए बीज जमीन पर गिरते हैं।

पुं० [?] नाव से पानी उलीचने का काठ का बरतन।

स्त्री० [?] १. गले में पहनने की माला। २. एक प्रकार की समुद्री मछली, जिसके ऊपरी जबड़े बहुत तेज धारवाले होते हैं।

पुं० [अं० शेल] तोप का वह गोला, जिसमें गोलियाँ आदि भरी रहती हैं। (फौजी)

पुं० [अं०] बिक्री। विक्रय।

पद—सेल टैक्स=बिक्री-कर।

सेलखड़ी†—स्त्री०=सिलखड़ी (खड़िया)।

सेलग—पुं० [सं०] लुटेरा। डाकू।

सेलना—अ० [प्रा० सेल=जाना] मर जाना। चल बसना।

सेला—पुं० [सं० शल्लक, शल्क=छिलका; मछली का सेहरा] १. रेशमी चादर या दुपट्टा। २. एक प्रकार का रेशमी साफ़ा।

पुं० [सं० शालि] भुँजिया चावल।

सेलार—पुं०=सेलिया (घोड़ा)।

सेलिया—पुं० [सं० सेराह] सफेद घोड़ा। सेराह।

सेली—स्त्री० [हिं० सेल] बरछी।

स्त्री० [हिं० सेला] १. छोटा दुपट्टा। २. गाँती। ३. गोरखपंथियों में वे ऊनी धागे, जिनमें गले में पहनने की सींग की सीटी (नाद या शृंगीनाद) बँधी रहती है। ४. ऊन, रेशम या सूत की वह माला जो योगी लोग गले में पहनते या सिर पर लपेटते हैं। ५. गले में पहनने का एक प्रकार का गहना।

स्त्री० [सं० शल्क=मछली का सेहरा] एक प्रकार की मछली।

स्त्री० [देश०] दक्षिण भारत में होनेवाला एक प्रकार का पेड़, जिसकी लकड़ी से खेती के औजार बनाये जाते हैं।

सेलून—पुं० [अं०] १. उत्सवों आदि के लिए सजाया हुआ बड़ा कमरा। २. जहाजों में ऊँचे दरजे के यात्रियों के रहने का कमरा। ३. विशिष्ट प्रतिष्ठित यात्रियों के लिए बना हुआ रेल का बढ़िया डब्बा। ४. आमोद-प्रमोद, क्षौरकर्म, मद्यपान आदि के लिए बना हुआ बढ़िया और सजाया हुआ कमरा।

सेलो†—पुं० [देश०] खेती की ऐसी जमीन जिस पर वृक्ष आदि की छाया पड़ती हो।

सेल्ला—पुं०=सेल (भाला)।

सेल्ह*—पुं०=सेल (भाला)।

सेल्हा—पुं० [सं० शाल] एक प्रकार का अगहनी धान जिसका चावल बहुत दिनों तक रह सकता है।

†पुं० [स्त्री० अल्पा० सेल्ही] =सेला (भाला)।

सेवँ†—पुं० [देश०] एक प्रकार का ऊँचा पेड़ जिसकी लकड़ी कुछ पीलापन या ललाई लिए सफेद रंग की, नरम, चिकनी, चमकीली और मजबूत होती है। कुमार।

सेवँई †—स्त्री० = सेवइँ।

सेवंत †—पुं० [सं० सामंत] एक राग जो हनुमत के अनुसार मेघ राग का पुत्र है।

सेवँर†—पुं०=सेमल।

सेव—पुं० [सं० सेविका] सूत के रूप में बना हुआ आटे, मैदे आदि का एक पकवान।

पुं० [?] खेत की हलकी या कम गहरी जोताई। 'अवाई' का विपर्याय।

†पुं०=सेब (फल)।

स्त्री०=सेवा।

सेवइँ—स्त्री० [सं० सेविका] मैदे के सुखाये हुए बहुत पतले सूत के से लच्छे जो घी में तलकर या दूध में पकाकर खाये जाते हैं।

क्रि० प्र०—पूरना।—बढ़ना।

स्त्री० [सं० श्यामक, हिं० सावाँ] एक प्रकार की लंबी घास, जिसकी बालें चारे के काम आती हैं। कहीं-कहीं इसके दाने या बीज बाजरे के साथ मिलाकर खाये भी जाते हैं। सेवन।

सेवक—वि० [सं०] [स्त्री० सेविका] किसी की सेवा या खिदमत करनेवाला। जैसे—देश-सेवक, समाज-सेवक।

पुं० [स्त्री० सेविका, सेवकिन, सेवकी] १. वह जो किसी की सेवा करने के काम पर नियुक्त हो। नौकर। २. वह जो किसी की छोटी-मोटी सेवाएँ या टहल करने के काम पर नियुक्त हो। चाकर। परिचारक। ३. वह जो किसी देवता का विशिष्ट रूप से आराधक, उपासक या पूजक हो। देवता का भक्त। ४. वह जो किसी वस्तु का सेवन अर्थात् उपभोग या व्यवहार करता हो। जैसे—मद्य-सेवक। ५. वह जो धार्मिक दृष्टि से किसी विशिष्ट पवित्र स्थान में नियमित या स्थायी रूप से रहता हो। जैसे—तीर्थ-सेवक। ६. सिलाई का काम करनेवाला व्यक्ति। दरजी। ७. अनाज आदि रखने का बोरा।

सेवकाई†—स्त्री० [सं० सेवक+हिं० आई (प्रत्य०)] १. ब्राह्मणों, साधु-महात्माओं की दृष्टि से, अनेक सेवकों, शिष्यों, यजमानों आदि का वर्ग या समूह। २. सेवा। टहल। उदा०—इहै हमार बड़ी सेवकाई। —तुलसी।

सेवग*—पुं०=सेवक।

सेवड़ा—पुं० [हिं० सेव+ड़ा (प्रत्य०)] मैदे का एक प्रकार का मोटा सेव या पकवान।

पुं० [सं० श्वेतपट] १. एक प्रकार के देवता। २. एक प्रकार के जैन साधु।

सेवति†—स्त्री०=स्वाती (नक्षत्र)।

सेवती—स्त्री० [सं० सेमंती] सफेद गुलाब।

वि० उक्त गुलाब की तरह सफेद।

पुं० सफेद रंग।

सेव-दाना—पुं० [हिं०] सोयाबीन के दाने।

सेवन—पुं० [सं०] [वि० सेवनीय, सेवित, सेव्य; कर्ता सेवी] १. परिचर्या। टहल। सेवा। २. उपासना। आराधना। ३. नियमित रूप से किया जानेवाला प्रयोग या व्यवहार। इस्तेमाल। जैसे—औषध का सेवन। ४. बराबर किसी बड़े के पास या किसी पवित्र स्थान पर रहना। जैसे—काशी-सेवन। ५. उपभोग। जैसे—मद्य-सेवन, स्त्री-सेवन। ६. कपड़े सीने का काम। सिलाई।

†पुं०=सेवइँ (घास)।

सेवना†—स०=सेना।

स० [सं० सेवन] सेवा-टहल करना।

स० दे० 'सेना'।

सेवनी—स्त्री० [सं०] १. सूई। सूची। २. सिलाई के टाँके। सीअन।

सीवन। ३. शरीर के अंगों में सीअन की तरह दिखाई पड़नेवाला जोड़। ४. जूही।

†स्त्री०=सेविका।

सेवनीय—वि० [सं०] १. जिसका सेवन करना आवश्यक या उचित हो। २. पूज्य। ३. जो सीये जाने के योग्य हो।

सेवरा†—पुं० १.=सेवड़ा। २.=सेहरा। (राज०)

सेवरी†—स्त्री०=शबरी।

सेवल—पुं० [देश०] ब्याह की एक रस्म।

सेवांजलि—स्त्री० [सं०] कर-संपुट या अंजलि में भरी या रखी वस्तु गुरु, देवता आदि को समर्पण करना।

सेवा—स्त्री० [सं०] १. बड़े, पूज्य, स्वामी आदि को सुख पहुँचाने के लिए किया जानेवाला काम। परिचर्या। टहल।

मुहा०—सेवा में=बड़े के सामने आदरपूर्वक।

२. सेवक या नौकर होने की अवस्था या काम। नौकरी। ३. व्यक्ति, संस्था आदि से कुछ वेतन लेकर उनका कुछ काम करने की क्रिया या भाव। नौकरी। ४. किसी लोकोपयोगी वस्तु, विषय, कार्य आदि में रुचि होने के कारण उसके हित, वृद्धि उन्नति आदि के लिए किया जानेवाला काम। जैसे—साहित्य-सेवा, देश-सेवा आदि। ५. सार्वजनिक अथवा राजकीय कार्यों का कोई विशेष विभाग जिसके जिम्मे कोई विशेष प्रकार का काम हो। जैसे—वैचारिक-सेवा (जुडिशियल सर्विस)। साधनिक सेवा। (इक्जिक्यूटिव सर्विस) ६. इस प्रकार के किसी विभाग में काम करनेवालों का समूह या वर्ग। (सर्विस, उक्त सभी अर्थों के लिए) ७. धार्मिक दृष्टि से देवताओं की मूर्तियों आदि को स्नान कराना, फूल चढ़ाना, भोग लगाना आदि। जैसे—ठाकुरजी की सेवा। ८. किसी के पालन-पोषण, रक्षण, संवर्धन आदि के लिए किये जानेवाले उपयुक्त काम। जैसे—गौ की सेवा, पेड़-पौधों की सेवा। ९. उपभोग। जैसे—स्त्री-सेवा। १०. आश्रम। शरण। जैसे—वे बहुत दिनों तक महाराज की सेवा में पड़े रहे।

सेवा-काकु—स्त्री० [सं०] सेवा काल में स्वर-परिवर्तन या आवाज बदलना। (अर्थात् कभी जोर से बोलना, कभी मुलायमियत से, कभी क्रोध से और कभी दुःख भाव से।)

सेवा-काल—पुं० [सं०] वह अवधि, जिसमें कोई किसी सेवा में नियुक्त रहा हो। (पीरियड आफ़ सर्विस)

सेवाजन—पुं० [सं०] सेवा करनेवाले व्यक्ति।

सेवा-टहल—स्त्री० [सं० सेवा+हिं० टहल] बड़ों, रोगियों आदि की परिचर्या। खिदमत। सेवा-शुश्रुषा।

सेवाती—स्त्री०=स्वाती (नक्षत्र)।

सेवादार—पुं० [सं०+फा०] [भाव० सेवादारी] १. वह सिक्ख जो किसी सिक्ख गुरु की सेवा में रहकर परम निष्ठा और श्रद्धा-भक्तिपूर्वक उसकी सेवा करता था। २. आज-कल वह सिक्ख, जो किसी गुरुद्वारे में रहकर गुरुग्रन्थ साहब की पूजा आदि के काम पर नियुक्त रहता है। ३. द्वारपाल।

सेवादास—पुं० [सं०] [स्त्री० सेवा-दासी] छोटी-छोटी सेवाएँ करनेवाला नौकर। टहलुआ।

सेवाधर्म—पुं० [सं०] सेवक का धर्म।

सेवाधारी—पुं०=सेवादार।

सेवा-पंजी—स्त्री० [सं०] वह पंजी या पुस्तिका जिसमें सेवकों विशेषतः राजकीय सेवकों के सेवा-काल की कुछ मुख्य बातें लिखी जाती हैं। (सर्विस-बुक)

सेवा-पद्धति—स्त्री० [सं०] वैष्णव संप्रदायों में देवताओं आदि की सेवा-पूजा की कोई विशिष्ट प्रणाली।

सेवापन—पुं० [सं० सेवा+हिं० पन (प्रत्य०)] सेवा करने की क्रिया, ढंग या भाव।

सेवा-बंदगी—स्त्री० [सं० सेवा+फा० बंदगी] १. साहब-सलामत। २. आराधना। पूजा।

सेवा-भाव—पुं० [सं०] सेवा विशेषतः उपकार करने की भावना। जैसे—वे साहित्य-साधना सेवा-भाव से ही करते हैं।

सेवाय†—अव्य०=सिवा (अतिरिक्त)।

सेवायत†—पुं० [हिं० सेवा] वह जो किसी देव-मूर्ति की सेवा आदि के काम पर नियुक्त हो।

सेवार—स्त्री० [सं० शैवाल] १. नदियों, तालों आदि में होनेवाली लंबे, कड़े तथा तेज किनारोंवाली घास। २. मिट्टी की तहें जो किसी नदी के आस-पास जमी हों।

†पुं० पान। (सुनार)

सेवारा†—पुं०=सेवड़ा (पकवान)।

सेवाल†—स्त्री०=सेवार।

सेवावाद—पुं० [सं०] खुशामद। चापलूसी।

सेवावादी—पुं० [सं०] खुशामदी। चापलूस।

सेवा वृत्ति—स्त्री० [सं०] सेवा या नौकरी करके जीविका उपार्जन करना या जीवन बिताना।

सेविंग बैंक—पुं० [अं०] आधुनिक अर्थ-व्यवस्था में वह संस्था, जिसमें लोग अपनी बचत के रूप में जमा करते हैं और उस पर ब्याज भी प्राप्त करते हैं।

सेवि—पुं० [सं०] १. बदर फल। बेर। २. सेव नामक फल।

वि० १.=सेवी। २.=सेव्य। ३.=सेवित।

सेविका—स्त्री० [सं०] १. सेवा करनेवाली स्त्री। दासी। परिचारिका। नौकरानी। २. सेवई नामक व्यंजन।

सेवित—भू० कृ० [सं०] १. जिसकी सेवा या टहल की गई हो। उपचरित। २. जिसकी आराधना, उपासना या पूजा की गई हो। ३. जिसका सेवन अर्थात् उपयोग या व्यवहार किया गया हो। ४. आश्रित। ५. उपभुक्त।

पुं० १. बेर। २. सेव। (फल)

सेवितव्य—वि० [सं०]=सेव्य।

सेविता—स्त्री० [सं०] १. सेवक का कर्म। सेवा। दास-वृत्ति। २. आराधना। उपासना। ३. आश्रय।

पुं० [सं० सेवितृ] सेवक।

सेवी(विन्)—वि० [सं०] १. सेवा करनेवाला। २. आराधना या पूजा करनेवाला। ३. किसी वस्तु या स्थान का सेवन करनेवाला।

सेवोपहार—पुं० दे० 'आनुतोषिक'।

सेव्य—वि० [सं०] [स्त्री० सेव्या] १. जिसकी सेवा करना आवश्यक,

उचित या उपयुक्त हो। २. जिसकी आराधना, उपासना या पूजा करना आवश्यक, उचित या उपयुक्त हो। ३. जिसका सेवन अर्थात् उपभोग या व्यवहार करना आवश्यक, उचित या उपयुक्त हो। ४. जिसकी रक्षा करना आवश्यक या उचित हो। ५. जिसका उपभोग या भोग करना आवश्यक या उचित हो।

पुं० १. स्वामी। मालिक। २. उशीर। खस। ३. अश्वत्थ। पीपल। ४. हिज्जल नामक वृक्ष। ५. लमज्जक नामक घास, या तृण। ६. गौरैया पक्षी। चिड़ा। ७. सुगंधबाला। ८. लाल चंदन। ९. समुद्री नमक। १०. जल । पानी। ११. दही । १२. पुरानी चाल की एक प्रकार की शराब ।

सेव्य-सेवक भाव—पुं० [सं०] उस प्रकार का भाव, जिस प्रकार का वस्तुतः सेव्य और सेवक के बीच में रहता हो या रहना चाहिए। स्वामी और सेवक अथवा उपास्य और उपासक के बीच का पारस्परिक भाव ।

सेव्या—स्त्री० [सं०] १. बंदा या बाँदा नामक वनस्पति जो दूसरे पेड़ों पर रहकर पनपती है। २ आँवला। ३. एक प्रकार का जंगली धान।

सेशन कोर्ट—पुं० [अं०] =सत्र-न्यायालय ।

सेश्वर—वि० [सं०] १. ईश्वरयुक्त। २. जिसमें ईश्वर का अंश या सत्ता मानी गई हो।

सेष†—पुं० १.=शेष। २.=शेख।

सेषुक—वि० [सं०] तीर या वाण से युक्त।

सेस†—वि०, पुं०=शेष।

सेस-रंग*—पुं० [सं० शेष+रंग] सफेद रंग। (शेष नाग का रंग सफेद माना गया है ।)

सेसर—पुं० [फा० सेह=तीन+सर=बाजी] १. ताश का एक प्रकार का खेल जिसमें तीन-तीन ताश हर एक आदमी को बाँटे जाते हैं और उसकी बिंदियों के जोड़ पर हार-जीत होती है। २. जालसाजी। ३. धोखेबाजी।

सेसरिया—वि० [हिं० सेसर+इया (प्रत्य०)] छल-कपट करके दूसरों का माल मारनेवाला। जालिया।

सेसी—पुं० [देश०] एक प्रकार का बहुत ऊँचा पेड़ जिसकी लकड़ी के सामान बनते हैं। पगूर।

सेह—वि० [फा०] दो और एक तीन। यौ० के आरम्भ में। जैसे—सेहखानी। सेह-हजारी।।

†पुं०=सेहा।

सेहखाना—पुं० [फा० सेह=तीन+खाना=घर] ऐसा घर जिसमें तीन खंड हों। तिमंजिला मकान।

सेहत—स्त्री० [अ०] [वि० सेहती] १. सुख। चैन। राहत। २. तन्दुरुस्ती। स्वास्थ्य। ३. रोग से रहित होने की अवस्था। आरोग्य ।

क्रि० प्र०—पाना।—मिलना।

सेहत-खाना—पुं० [अ० सेहत+फा० खाना] पेशाब आदि करने और नहाने-धोने के लिए जहाज पर या मकान में बनी हुई एक छोटी-सी कोठरी।

सेहती—वि० [अ० सेहत] १. सेहत अर्थात् स्वास्थ्य संबंधी। २. स्वस्थ।

सेहथना†—स० [सं० सह+हस्त=सहस्थ+ना (प्रत्य०)] १. हाथ से लीप कर साफ करना । सैंतना। २. झाड़ देना। बुहारना।

सेहर—पुं० [अ० सेह्र] जादू-मंतर। टोना-टोटका।

†पुं०=शेखर।

सेहरा—पुं० [हिं० सिर+हार] १. विवाह के समय वर को पहनने के लिए फूलों या सुनहले-रुपहले तारों आदि की बड़ी मालाओं की पंक्ति या पुंज। २. विवाह का मुकुट। मौर।

क्रि० प्र०—बँधना।—बाँधना।

पद—**सेहरा बंधाई**=वह धन या नेग जो दूल्हे को सेहरा बाँधने पर दिया जाता है। **सेहरे-जलवे की बीबी**= वह स्त्री जिसके साथ रीतिपूर्वक सेहरा बाँधकर और धूम-धाम से बरात निकालकर विवाह किया गया हो। (उपपत्नी या रखेली से भिन्न)

मुहा०—**(किसी काम या बात का) किसी के सिर सेहरा बंधना**=किसी कार्य के सफलतापूर्ण सम्पादन का श्रेय प्राप्त होना। किसी काम या बात का यश मिलना।

३. विवाह के समय वर-पक्ष से गाये जानेवाले मांगलिक गीत या पढ़े जानेवाले पद्य। ४. मछली के शरीर पर के सीपी की तरह चमकीले छिलके जो छोटे-छोटे टुकड़ों के रूप में निकलते हैं। (फ़िश-स्केल) ५. चित्रकला में, सजावट के लिए उक्त आकार-प्रकार का अंकन।

सेहराबंदी—स्त्री० [हिं० सेहरा+फा० बन्दी] विवाह के अवसर पर बरात निकलने से पहले वर को सेहरा बाँधने का धार्मिक और सामाजिक कृत्य।

सेहरी—स्त्री० [सं० शफरी] छोटी मछली। सहरी ।

सेहवन—पुं०=सेहुआँ (रोग) ।

सेह-हजारी—पुं० [फा०] एक उच्च पद जो मुसलमान बादशाहों के समय में सरदारों और दरबारियों को मिलता था। (ऐसे लोग या तो तीन हजार सवार या सैनिक रख सकते थे अथवा तीन हजार सैनिकों के नायक होते थे।)

सेहा—पुं० [हिं० सेंध] कूआँ खोदनेवाला मजदूर।

सेहियान—पुं० [हिं० सेहियना] खलियान साफ करने का कूँचा।

सेही—स्त्री० [सं० सेधा, सेधी] =साही (जन्तु) ।

सेहुँड़†—पुं० [सं० सेहुण्ड] थूहर का पेड़।

सेहुँआँ—पुं० [?] एक प्रकार का चर्म रोग, जिसमें शरीर पर भूरी-भूरी महीन चित्तियाँ-सी पड़ जाती हैं।

सेहुआन—पुं० [देश०] एक प्रकार का करम-कल्ला, जिसके बीजों से तेल निकलता है।

सैंगर—पुं०=सेंगर।

सैंणर—पुं० [सं० स्वामी+नर=साईं-नर] पति। (डिं०)

सैंतना†—स० [सं० संचय] १. संचित करना। इकट्ठा करना। उदा०—कंचन मनि तजि काँचहि सैंतत, या माया के लीन्हें।—सूर। २. हाथों से समेटना। ३. सँभाल और सहेज कर लेना। ४. सँभाल कर ठीक जगह पर रखना। उदा०—(क) सैंतति महरि खिलौना हरि के।—सूर। (ख) मानों संध्या के प्रकाश को जंगल और पहाड़ सैंत रखने की होड़-सी लगा रहे हों।—वृन्दावनलाल वर्मा। ५. रसोई-घर में चौका लगाना और बरतन साफ करके ठीक जगह पर रखना। ६. आघात करना। ७. मार डालना। (बाजारू)

सैंतालीस—वि० [सं० सप्तचत्वारिंशत्, पा० सत्तचत्तालीसति, प्रा० सत्तालीस] जो गिनती में चालीस से सात अधिक हो। चालीस और सात।

पुं० उक्त की संख्या, जो अंकों में इस प्रकार लिखी जाती है—४७।

सैंतालीसवाँ—वि० [हिं० सैंतालीस+वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम या गिनती में सैंतालीस के स्थान पर आता या पड़ता हो।

सैंतीस—वि० [सं० सप्तत्रिंशत्, पा० सत्ततिंसति, प्रा० सत्तिसइ] जो गिनती में तीस से सात अधिक हो। तीस और सात।

पुं० उक्त की सूचक संख्या, जो अंकों में इस प्रकार लिखी जाती है—३७।

सैंतीसवाँ—वि० [हिं० सैंतीस+वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम या गिनती में सैंतीस के स्थान पर आता या पड़ता हो।

सैंथी†—स्त्री० [सं० शक्ति] छोटा भाला। बरछी।

सैंदूर—वि० [सं०] १. सिंदूर से रँगा हुआ। २. सिंदूर के रंग का।

सैंधव—वि० [सं०] १. सिंध देश संबंधी। सिंध का। २. सिंध देश में होने या पाया जानेवाला। ३. सिंधु अर्थात् समुद्र संबंधी। समुद्र का। ४. समुद्र में उत्पन्न होने या पाया जानेवाला।

पुं० १. सिंध देश का निवासी। २. सिंध देश का घोड़ा। ३. सेंधा नमक। ४. राजा जयद्रथ का एक नाम।

सैंधवक—वि० [सं०] सैंधव संबंधी।

सैंधवपति—पुं० [सं० सैंधव+पति] जयद्रथ का एक नाम।

सैंधवायन—पुं० [सं०] १. एक प्राचीन ऋषि। २. उक्त ऋषि के वंशज।

सैंधवी—स्त्री० [सं०] सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी, जो भैरव राग की पुत्र-वधू मानी गई है।

सैंधी—स्त्री० [सं०] १. खजूर या ताड़ का रस। २. उक्त को सड़ाकर बनाई जानेवाली शराब।

सैंधू—स्त्री०=सैंधवी।

सैंबल†—पुं०=सेमल।

सैंयाँ†—पुं०=सैयाँ।

सैंवर†—पुं०=साँभर।

सैंह—वि० [सं०] १. सिंह संबंधी। सिंह का। २. सिंह की तरह।

†क्रि० वि०=सौंह (सामने)।

सैंहथी†—स्त्री०=सैंथी (बरछी)।

सैंहल—वि० [सं०] [स्त्री० सैंहली] सिंहली। (दे०)

सैंहली—स्त्री० [सं०] सिंहली पीपल।

सैंहिक—पुं० [सं०] सिंहिका से उत्पन्न, राहु।

वि०=सैंह।

सैंहिकेय—पुं० [सं०] (सिंहिका के पुत्र) राहु।

सैंहुड़†—पुं०=सेहुँड़।

सैंहूँ—पुं० [हिं० गेहूँ का अनु०] गेहूँ के वे दाने जो छोटे, काले और बेकार होते हैं।

सै—स्त्री० [सं० सत्त्व] १. तत्त्व। सार। २. बल-वीर्य। ओज। शक्ति। ३. प्राप्ति। लाभ। ४. वृद्धि। बढ़ती।

वि० [सं० शत] सौ।

सैकंट—पुं० [सं० शतकंटक] बबूल की जाति का एक पेड़ जिसकी छाल सफेद होती है। धौला खैर। कुमतिया।

सैकड़ा—पुं० [सं० शतकाण्ड, प्रा० सयकंड] सौ का समूह या समष्टि। जैसे—चार सैकड़े आम।

सैकड़े—अव्य० [हिं० सैकड़ा] प्रति सौ के हिसाब से। प्रतिशत। फी सदी। जैसे—ब्याज की दर २) सैकड़े है।

वि० सैकड़े के रूप में होनेवाला। जैसे—दो सैकड़े आम खरीदे जायँगे।

सैकड़ों—वि० [हिं० सैकड़ा] १. कई सौ। २. बहुत अधिक।

सैकत—वि० [सं०] [स्त्री० सैकती] १. सिकता या रेत से संबंध रखनेवाला। २. रेतीला। बलुआ। बालुकामय। ३. बालू से बना हुआ।

पुं० १. नदी आदि का रेतीला तट। रेती। २. रेतीली जमीन या मिट्टी।

सैकतिक—पुं० [सं०] १. साधु। संन्यासी। क्षपणक। २. कलाई, गले आदि में बाँधा जानेवाला गंडा। मंगलसूत्र।

वि० १. सिकता या रेत से संबंध रखनेवाला। २. मरीचिका या सन्देह में पड़ा रहनेवाला।

सैकती (तिन्)—वि० [सं०] सिकता-युक्त। रेतीला। बलुआ। (तट या भूमि)

सैकल—पुं० [अ०] धातु के बरतन। हथियार आदि साफ करने और उन्हें चमकाने का काम।

सैकलगर—पुं० [अ० सैकल+फा० गर] बरतनों, हथियारों आदि पर सैकल करनेवाला कारीगर। सिकलीगर।

सैका—पुं० [सं० सेक (पात्र)] [स्त्री० अल्पा० सैकी] १. घड़े की तरह का मिट्टी का एक बरतन जिससे कोल्हू से गन्ने का रस निकालकर पकाने के लिये कड़ाहे में डालते हैं। २. मिट्टी का वह छोटा बरतन जिससे रेशम रँगने का रंग ढाला जाता है। ३. रबी की कटी हुई फसल का ढेर या राशि।

पुं० [सं० शत, हिं० सै] घास, डंठलों आदि के सौ पूलों का समूह।

सैक्य—वि० [सं०] १. ऐक्य, अर्थात् एकता से युक्त। २. सिंचाई से सम्बन्ध रखनेवाला।

पुं० एक प्रकार का बढ़िया पीतल।

सैक्षव—वि० [सं०] ईख के रस आदि से युक्त, अर्थात् मीठा।

सैक्सन—पुं० [अं०] योरप की एक प्राचीन जाति जो पहले जर्मनी के उत्तरी भाग में रहती थी; पर पाँचवीं और छठी शताब्दी में जो इंगलैंड पर धावा करके वहाँ जा बसी थी।

सैचान†—पुं०=सचान (बाज)।

सैजन†—पुं०=सहिजन।

सैढ़†—पुं० [देश०] गेहूँ की कटी हुई फसल, जो दाँई गई हो, पर ओसाई न गई हो।

सैण*—पुं० [सं० स्वजन] मित्र। (डिं०)

†पुं०=सैन (संकेत)।

*स्त्री०=सेना।

सैतव—वि० [सं०] सेतु संबंधी। सेतु का।

सैथी—स्त्री० [सं०]=सैंथी (बरछी)।

सैद—पुं० [अ०] १. वह जानवर जिसका शिकार किया जाता हो या जो जाल में फँसाया जाता हो। २. किसी के जाल या फन्दे में फँसे हुए होने की अवस्था या भाव।

†पुं०=सैयद।

सैदपुरी—स्त्री० [सैदपुर स्थान] एक प्रकार की नाव, जिसके आगे और पीछे दोनों ओर के सिक्के लंबे होते हैं।

सैद्धांतिक—वि० [सं०] १. सिद्धान्त के रूप में होनेवाला। २. सिद्धांत संबंधी।

पुं० १. सिद्धांतों के अनुसार चलनेवाला व्यक्ति। सिद्धांतों का पालन करनेवाला। २. तांत्रिक।

सैध्रक—वि० [सं०] सिध्रक (वृक्ष) की लकड़ी का बना हुआ।

सैन—स्त्री० [सं० संज्ञपन] १. संकेत विशेषतः शरीर के किसी अंग से किया जानेवाला संकेत। २. चिह्न। निशान। ३. लक्षण।

पुं० [सं० श्येन] १. बाज पक्षी। २. एक प्रकार का बगला।

† पुं०=शयन।

† स्त्री०=सेना।

सैनक—पुं० [फा० सनी, सहनक] रिकाबी। तश्तरी।

† पुं०=सैनिक।

† स्त्री०=सहनक।

सैनप—पुं०=सेनापति।

सैनपति†—पुं० =सेनापति।

सैन-भोग †—पुं०=शयन-भोग (देवताओं का)।

सैना—स्त्री० =सेना।

† स०=सेना।

सैनानीक—वि० [सं०] सेना के अग्र भाग का।

सैनान्य—पुं० [सं०] सेनानी या सेनापति का कार्य या पद। सैनापत्य। सेनापतित्व।

सैनापति†—पुं०=सेनापति।

सैनापत्य—पुं० [सं०] सेनापति का कार्य या पद। सेनापतित्व।

वि० सेनापति सम्बन्धी।

सैनिक—वि० [सं०] १. सेना संबंधी। सेना का। (मिलिटरी) जैसे—सैनिक न्यायालय, सैनिक आयोजन। २. जो सेना के लिए उपयुक्त हो, उसके ढंग पर चलता हो या उसके प्रति अनुरक्त हो। (मार्शल)

पुं० १. सेना या फौज में रहकर युद्ध करनेवाला सिपाही। फौजी आदमी। २. वह जो किसी प्राणी का वध करने के लिए नियुक्त किया गया हो। ३. पहरेदार। सन्तरी।

सैनिकता—स्त्री० [सं०] १. सैनिक या योद्धा होने की अवस्था या भाव। २. सैनिक सामग्री से युक्त और युद्ध करने की शक्ति का भाव या दशा। ३. यह विश्वास या सिद्धान्त कि सैनिक बल की सहायता से सब काम निकाले जा सकते हैं। (मिलिटरिज्म) ४. युद्ध। लड़ाई।

सैनिक-न्यायालय—पुं० सैनिक विभाग का वह विशिष्ट न्यायालय, जो साधारणतः सेना-विभाग में होनेवाले अपराधों का विचार और न्याय करता है। (कोर्ट मार्शल)

सैनिक सहचारी—पुं० राजदूत के साथ रहनेवाला वह सैनिक अधिकारी जो सामरिक दृष्टि से उसका सलाहकार और सहायक हो। (मिलिटरी एटेची)

सैनिका—स्त्री० [सं० श्येनिका] एक प्रकार का छन्द।

सैनिकीकरण—पुं० दे० 'सैन्यीकरण'।

सैनिटोरियम—पुं० दे० 'आरोग्य-निवास'।

सैनी—पुं० [सेनाभगत नाई] नाई। हज्जाम।

† स्त्री०=सेना (फौज)।

सेनूं—पुं० [हिं० नैनूं का अनु०] नैनूं की तरह का एक प्रकार का बूटीदार कपड़ा।

सैनेय*—वि०=सैन्य।

सैनेश, सैनेस—पुं० [सं० सैन्य+ईश=सैन्येश] सेनापति।

सैन्य—वि० [सं०] सेना का।

पुं० १. सैनिक। २. सेना। ३. पहरेदार। सन्तरी। ४. छावनी। शिविर।

सैन्य-क्षोभ—पुं० [सं० ष० त०] १. सैनिकों में होने या फैलनेवाला क्षोभ। २. सैनिक विद्रोह। गदर।

सैन्य नायक—पुं० [सं० ष० त०] सेनापति।

सैन्य-पति—पुं० [सं० ष० त०] सेनापति।

सैन्य-पाल—पुं० [सं०] सेनापति।

सैन्यवाद—पुं० [सं०] यह वाद या सिद्धांत कि राज्य के नागर तथा राजनीतिक आदर्श सैनिक आदर्शों के अनुसार स्थिर होने चाहिए और राज्य को सदा सैनिक दृष्टि से पूर्ण सबल तथा समर्थ रहना चाहिए। (मिलिटरिज़्म)

सैन्यवादी—वि० [सं०] सैन्यवाद संबंधी। जैसे—सैन्यवादी नीति।

पुं० वह जो सैन्यवाद का अनुयायी या समर्थक हो। (मिलिटरिस्ट)

सैन्य-वास—पुं० [सं०] सेना का पड़ाव। छावनी। शिविर।

सैन्य-वियोजन—पुं० दे० 'विसैन्यीकरण'।

सैन्य-सज्जा—स्त्री० [सं० ष० त०] युद्ध के लिए होनेवाली सैनिक तैयारी। लाम-बंदी। युद्ध के लिए हथियारों से लैस होना।

सैन्याधिपति—पुं० [सं०] सेनापति।

सैन्याध्यक्ष—पुं० [सं०] सेनापति।

सैन्यीकरण—पुं० [सं० सैनिक+करण] लोगों को सैनिक बनाने और सैनिक सामग्री से सज्जित करने का काम। (मिलिटराइजेशन)

सैफ—स्त्री० [अ० सैफ़] तलवार।

सैफग†—पुं० [सं० शतफल ?] लाल देवदार।

सैफा—पुं० [अ० सैफ़] जिल्दसाजों का एक औजार, जिससे वे किताबों का हाशिया काटते हैं।

सैफी—वि० [अ० सैफ़=तलवार] १. तलवार की तरह टेढ़ा। वक्र। २. आड़ा। तिरछा।

सैमंतिक—पुं० [सं०] सीमंत अर्थात् माँग सम्बन्धी।

पुं० सिंदूर।

सैम—पुं० [देश०] धीवरों के एक देवता या भूत।

सैयद—पुं० [अ०] [स्त्री० सैयदा, सैयदानी, सैदानी] १. मुहम्मद साहब के नाती हुसैन के वंश का आदमी। २. मुसलमानों के चार वर्गों या जातियों में से दूसरी जाति।

सैयाँ—पुं० [सं० स्वामी, हिं० साईं] १. स्त्री का पति। स्वामी। २. प्रियतम।

सैया†—स्त्री०=शय्या।

सैयाद—पुं० [अ०] १. वह जो पशु-पक्षियों को जाल में फँसाता हो। चिड़ीमार। बहेलिया। २. व्याध। शिकारी। ३. मछुआ।

सैयार—वि० [अ०] [भाव० सैयारी] सैर या भ्रमण करनेवाला।

सैयारा—पुं० [अ० सैयारः] आकाश में परिक्रमा करनेवाला तारा, नक्षत्र या ग्रह।

सैयाह—पुं० [अ०] [भाव० सैयाही] सियाहत अर्थात् पर्यटन करनेवाला। पर्यटक।

सैरंध्र—पुं० [सं०] [स्त्री० सैरंध्री] १. घर-गृहस्थी में काम करनेवाला नौकर। २. एक संकर जाति जो स्मृतियों में दस्यु (पुरुष) और अयोगवी (स्त्री) से उत्पन्न कही गई है।

सैरंध्रिका—स्त्री० [सं०] परिचारिका। दासी।

सैरंध्री—स्त्री० [सं०] १. सैरंध्र जाति की स्त्री। २. अंतःपुर की दासी।

सैरिंध्र—पुं० [सं०] १. पुराणानुसार एक प्राचीन जन-पद। २. दे० 'सैरंध्र'।

सैरिंध्री—स्त्री०=सैरंध्री।

सैर—स्त्री० [फा०] १. मन बहलाने के लिए और साफ जगह में घूमना-फिरना। मनोरंजन या वायु-सेवन के लिए भ्रमण। परिमार्गन। (एक्स-कर्सन) २. मित्र-मंडली का शहर या बस्ती के बाहर केवल मौज लेने के लिए होनेवाला खान-पान आदि। गोष्ठी। ३. बहार। मौज। आनंद। ४. कौतुकपूर्ण और मनोरंजक दृश्य। ५. असाढ़-सावन में गाये जानेवाले एक प्रकार के लोक-गीत। (बुंदेल०) ६. रासलीला की तरह का एक प्रकार का अभिनय। (बुंदेल०)

सैर-गाह—पुं० [फा०] सैर करने की अच्छी और खुली जगह।

सैर-सपाटा—पुं० [फा० सैर+ हिं० सपाटा] सैर करने के लिए इधर-उधर घूमना-फिरना।

सैरा—पुं० [फा० सैर] १. हाथ से अंकित चित्रों में भूमिका के रूप में वह प्राकृतिक दृश्य, जिसके आगे व्यक्तियों या घटनाओं का चित्र अंकित होता है। २. असाढ़ में गाया जानेवाला एक प्रकार का लोक-गीत। (बुंदेल०)

सैरि—पुं० [सं०] १. कार्तिक महीना। २. पुराणानुसार एक प्राचीन जनपद।

सैरिक—पुं० [सं०] १. हलवाहा। हलधर। किसान। कृषक। २. हल में जोता जानेवाला बैल। ३. आकाश।

वि० सीर अर्थात् हल से संबंध रखनेवाला।

सैरिभ—पुं० [सं०] १. आकाश। २. इंद्र की पुरी या लोक। ३. भैंसा नामक पशु।

सैरिभी—स्त्री० [सं०] भैंस। महिषी।

सैरीय—पुं० [सं०] कटसरैया। झिंटी।

सैल—स्त्री० [फा० सैर] १. मनोविनोद के लिए किया जानेवाला पर्यटन। सैर।

स्त्री० [अ०] १. पानी का बहाव। २. बाढ़। सैलाब।

†पुं० १. शैल। २. सैला।

सैल-कुमारी—स्त्री०=शैलकुमारी (पार्वती)।

सैलजा†—स्त्री०=शैलजा (पार्वती)।

सैलवेशन आर्मी—स्त्री० [अं०]=मुक्ति सेना। (दे०)

सैल-सुता*—स्त्री० =शैल-सुता (पार्वती)।

सैला—पुं० [सं० शल्य] [स्त्री० अल्पा० सैली] १. लकड़ी की वह गुल्ली या पच्चड़ जो किसी छेद या संधि में ठोंकी जाय। किसी छेद में डालने या फँसाने का टुकड़ा। मेख। २. लकड़ी की बड़ी मेख। खूँटा। ३. नाव की पतवार की मुठिया। ४. लकड़ी की वह खूँटी जो बैलगाड़ी में कँधावर के पास दोनों ओर लगी होती है और जिसके कारण बैल अपनी गरदन इधर-उधर नहीं कर सकता। ५. यह मुँगरी जिससे कटी हुई फसल के डंठल दाना झाड़ने के लिए पीटते हैं। ६. जलाने की लकड़ी का छोटा टुकड़ा। चैला।

†पुं० [फ़ा० सैर] मध्य प्रदेश के गोड़ों और भीलों का एक प्रकार का नृत्य।

सैलात्मजा*—स्त्री० [सं० शैलात्मजा] पार्वती।

सैलानी—वि० [हिं० सैल (=सैर)+आनी (प्रत्य०)] १. जो बहुत अधिक सैर करता हो। २. इधर-उधर घूमता-फिरता रहनेवाला।

सैलाब—पुं० [फ़ा०] नदियों आदि की बाढ़।

सैलाबा—पुं० [फ़ा० सैलाब] वह फसल जो पानी में डूब गई हो।

सैलाबी—वि० [फा०] १. सैलाब संबंधी। सैलाब या बाढ़ का। जैसे—सैलाबी पानी। २. (जमीन) जिसकी सिंचाई सैलाब या बाढ़ के पानी से होती हो।

†स्त्री०=सीड़ (सील)।

सैली—स्त्री० [हिं० सैला] १. ढाक की जड़ के रेशों की बनी रस्सी। २. एक प्रकार की टोकरी।

वि०=सैलानी।

सैलूख*—पुं० [स्त्री० सैलूखी]=शैलूष (अभिनेता)।

सैलून—पुं०=सेलून।

सैव†—वि०, पुं०=शैव।

सैवल*—पुं०=शैवल (पौधा)।

सैवलिनी*—स्त्री०=शैवलिनी (नदी)।

सैवाल*—स्त्री० [सं० शैवाल] १. सेवार। २. जाल।

सैविक—वि० [स०] सेवा-संबंधी। सेवा का।

सैव्य†—पुं०=शैव्य (घोड़ा)।

सैसक—वि० [सं०] १. सीसे से संबंध रखनेवाला। २. सीसे का बना हुआ।

सैसव*—पुं० [भाव० सैसवता]=शैशव।

सैहथी—स्त्री० [सं० शक्ति]=सैंथी (बरछी)।

सैहा†—पुं० [सं० सेक=सिंचाई+हिं० हा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० सैही] पानी, रस आदि ढालने का मिट्टी का बरतन।

सों†—प्रत्य० [प्रा० सुन्तो] करण और अपादान कारक का चिह्न। द्वारा। से।

†क्रि० वि० १. संग। साथ। २. समक्ष। सामने।

†सर्व०=सो (वह)।

†स्त्री०=सौंह (सौगंद)।

†वि०=सा (सदृश)।

सोंइटा†—पुं०=चिमटा।

सोंच†—पुं०=सोच।

सोंचर नमक—पुं० [सं० सौवर्चल† फा० नमक]=काला नमक।

सोंज†—स्त्री०=सौंज।

सोंझिया†—पुं०=सझिया (साझीदार)।

सोंट†—पुं०=सोंटा।

सोंटना†—स०[?] सुधारना।

सोंटा—पुं०[सं० शुण्ड या हिं० सटना] [स्त्री० अल्पा० सोंटी] १. मोटी-लंबी सीधी लकड़ी या बाँस जो हाथ में लेकर चलते हैं। मोटी छड़ी। डंडा। लट्ठ।

मुहा०—सोंटा चलाना या जमाना=सोंटे से प्रहार करना।

२. भाँग घोटने का मोटा डंडा। भंग-घोटना। ३. लोबिये का पौधा। ४. ऐसा लट्ठा जिससे मस्तूल बनाया जा सके। (लश०)

सोंट-बरदार—पुं०[हिं० सोंटा+फा० बरदार] सोंटा या आसा लेकर किसी राजा या अमीर की सवारी के साथ चलनेवाला। आसाबरदार। बल्लमदार।

सोंठ—स्त्री०[सं० शुण्ठी] सुखाया हुआ अदरक। शुण्ठी।

वि०१. जो जान-बूझकर बिलकुल चुप हो गया हो। २. बहुत बड़ा कंजूस।

पुं० चुप्पी। मौन।

मुहा०—सोंठ मारना=बिलकुल चुप हो जाना। सन्नाटा खींचना।

सोंठ-मिट्टी—स्त्री०[सोंठ?+हिं० मिट्टी] एक प्रकार की पीली मिट्टी जो तालों या धान के खेतों में पाई जाती है। यह काबिस बनाने के काम आती है।

सोंठराय—पुं०[हिं० सोंठ+राय=राजा] बहुत बड़ा कंजूस। (व्यंग्य)

सोंठौरा†—पुं० [हिं० सोंठ+औरा (प्रत्य०)]एक प्रकार का सूजी का लड्डू जिसमें मेवों के सिवा सोंठ भी पड़ती है। यह प्रायः प्रसूता स्त्रियों को खिलाया जाता है।

सोंध†—अव्य०=सौंह।

सोंधा—वि०[सं० सुगंध] [स्त्री० सोंधी] १. सुगंध युक्त। सुगंधित। खुशबूदार। २. मिट्टी के नये बरतन या सूखी जमीन पर पानी पड़ने या चना, बेसन आदि भुनने से निकलनेवाली सुगंध से युक्त अथवा उसके समान। जैसे—सोंधी मिट्टी, सोंधा चना।

पुं०१. एक प्रकार का सुगंधित मसाला जिससे स्त्रियाँ सिर के बाल धोती हैं। २. एक प्रकार का सुगंधित मसाला जिसे बंगाल में स्त्रियाँ नारियल के तेल में उसे सुगंधित करने के लिए मिलाती हैं।

†पुं०=सुगंध।

सोंधिया—पुं०[हिं० सोंधा=सुगंधित+इया (प्रत्य०)] सुगंध तृण। रोहिष घास।

सोंधी—पुं०[हिं० सोंधा] एक प्रकार का बढ़िया धान जो दलदली जमीन में होता है।

वि०[सं० सुगंध] मीठी-मीठी सुगंधवाला। जैसे—सोंधी मिठाई।

सोंधु†—वि०=सोंधा।

सोंपना†—स०=सौंपना।

सोंवनिया—पुं०[सं० सुवर्ण] नाक में पहनने का एक प्रकार का आभूषण।

सोंह*—स्त्री०=सौंह (सौगंद)।

†अव्य०=सौंह (सामने)।

सोंहट†—वि०[?] सीधा-सादा। सरल।

सोंही†—अव्य०=सौंह (सामने)।

सोंहैं—अ०=सौंह।

सो—सर्व०[सं० सः या सा+उ] 'जो' के साथ आनेवाला संबंध-सूचक शब्द। वह। अव्य० इसलिए। अतः। जैसे—वह आ गया, सो मैं उससे बातें करने लगा।

*वि० दे० 'सा'।

स्त्री०[सं०] पार्वती का एक नाम।

सोऽहम्—अव्य०=सोऽहमस्मि।

सोऽहमस्मि—अव्य०[सं० सः+अहम+अस्मि] वही मैं हूँ—अर्थात् मैं ही ब्रह्म हूँ। (वेदान्त का प्रसिद्ध सैद्धान्तिक वाक्य)

सोअना†—अ०=सोना।

†पुं०=सोना (स्वर्ण)।

सोअर†—स्त्री०=सौरी।

सोआ—पुं०[सं० मिकेया]१. एक पौधा। २. उक्त पौधे की पत्तियाँ जिनका साग बनाया जाता है।

पद—सोआ-पालक=सोआ और पालक का साग।

सोई—स्त्री० [सं० स्रोत, हिं० सोता] वह जमीन या गड्ढा जहाँ बाढ़ या नदी का पानी रुका रह जाता है और जिसमें अगहनी धान की फसल रोपी जाती है। डाबर।

†वि० सर्व०=वही (वह ही)।

†अव्य०=सो।

सोक†—पुं० [देश०] चारपाई बुनने के समय बुनावट में का वह छेद जिसमें से रस्सी या निवार निकालकर कसते हैं।

†पुं०=शोक।

सोकन†—पुं०=सोखन।

सोकना†—अ० [सं० शोक+हिं० ना (प्रत्य०)] शोक-विह्वल होना।

†स०=सोखना।

सोकनी†—वि०[?] कालापन लिए सफेद रंग का।

पुं०१. कालापन लिए सफेद रंग। २. उक्त रंग का बैल।

सोकार†—पुं०[हिं० सोकना, सोखना] वह स्थान जहाँ पर मोट का पानी गिराया जाता है जिससे वह खेत तक पहुँच जाय। चौंढ़ा।

सोकित*—वि०[सं० शोक] जिसे शोक हुआ हो या हो रहा हो।

सोखक*—वि० [सं० शोषक]१. शोषण करनेवाला। शोषक। २. नाशक।

सोखता—वि०, पुं०=सोख्ता।

सोखन—पुं०[देश०] १. स्याही लिए सफेद रंग का बैल। सोकनी। २. एक प्रकार का जंगली धान जो नदियों के रेतीले तट पर होता है।

सोखना—स०[सं० शोषण]२. किसी चीज का जल या दूसरे तरल पदार्थ को अपने में खींच लेना। जैसे—आटे का घी सोखना। २. पीना। (व्यंग्य)

†पुं०=सोख्ता।

सोखा†—वि० [सं० सूक्ष्म या चोखा?]चतुर। चालाक। होशियार।

पुं० जादूगर।

सोखाई—स्त्री०[हिं० सोखना] १. सोखने की क्रिया या भाव। २. सोखने का पारिश्रमिक या मजदूरी।

स्त्री० [हिं० सोखा] जादूगर।

सोख्त—स्त्री०[फ़ा०] जलन।

सोख्ता—वि० [फ़ा० सोख्तः]१. जला हुआ। २. बहुत अधिक दुखी या सन्तप्त।

पुं० स्याही सोखनेवाला एक प्रकार का मोटा खुरदरा कागज। स्याही-चूस। स्याही-सोख। (ब्लॉटिंग पेपर)

सोगंद†—स्त्री०=सौगंध।

सोग—पुं० [सं० शोक]१. किसी के मरने से होनेवाला दुःख। शोक।

मुहा०—सोग मनाना= उक्त दुःखपूर्ण भाव सूचित करने के लिए मैले-कुचैले या विशेष प्रकार के कपड़े पहनना, उत्सवों आदि में सम्मिलित न होना।

सोगन—स्त्री० [हिं० सौगंध] सौगंध। कसम। (राज०) उदा०—थानें सोगन म्हारी।—मीराँ।

सोगवार—वि०[हिं० सोग (शोक)+वार (प्रत्य०)] [भाव० सोगवारी] सोग अर्थात् शोक से युक्त।

सोगवारी—स्त्री०[हिं० सोगवार] मृतक का शोक मनाने की अवस्था, क्रिया या भाव। जैसे—अभी तो उनका जवान लड़का मरा है। साल भर उसी की सोगवारी रहेगी।

सोगिनी*—वि० स्त्री० [हिं० सोग] विरह के कारण शोक करनेवाली। शोकाकुल। शोकमाना।

सोगी—वि०[सं० शोक, हिं० सोग] [स्त्री० सोगिनी] जो शोक मना रहा हो। शोक विह्वल।

सोच—स्त्री०[हिं० शोचना]१. सोचने की क्रिया या भाव। २. यह बात जिसके सम्बन्ध में कोई बराबर सोचता रहता हो। ३. चिंता। फिक्र। ४. दुःख। रंज। ५. पछतावा। पश्चात्ताप।

सोचक—पुं० [सं० सौचिक] दरजी। (डिं०)

सोचना—अ० [सं०शोचन] १. किसी विषय पर मन में विचार करना। जैसे—ठीक है, हम सोचेंगे। २. विशेषतः किसी कार्य, परिणाम या प्रणाली के विषय में विचार करना। जैसे—वह सोच रहा था कि आगे पढ़ूँ या नौकरी करूँ। ३. चिंता या फिक्र में पड़ना। जैसे—वह अपनी बूढ़ी माँ के बारे में सोचता रहता है।

स० कल्पना करना। अनुमान करना। जैसे—उसने एक युक्ति सोची है।

सोच-विचार—पुं०[हिं०सोच+सं० विचार]सोचने और समझने या विचार करने की क्रिया या भाव।

सोचाई†—स्त्री०[हिं० सोचना] सोचने की क्रिया या भाव।

सोचाना†—स०=सुचाना।

सोचु*—पुं० सोच।

सोच्छ्वास—वि०[सं०]१. उच्छ्वास-युक्त। २. हाँफता हुआ।

अव्य० गहरा साँस लेते हुए।

सोज—स्त्री०[हिं० सूजना] वह विकार जो सूजे हुए होने का सूचक होता है।

पुं०[फ़ा०]१. जलन। दाह। २. तीव्र मानसिक कष्ट या वेदना। ३. ऐसा मरसिया या शोक-सूचक शब्द जो लय-सुर में गाकर पढ़ा जाता हो। (मुसल०)

†स्त्री०=सौंज।

सोजन*—पुं०[फा०]१. सूई। २. काँटा। (लश०)।

सोजना†—अ०[हिं० सजना] शोभा देना। भला जान पड़ना।

सोजनी†—स्त्री० =सुजनी।

सोजा—पुं०[हिं० सावज] शिकार करने के योग्य पशु या पंछी।

सोजि—वि०[हिं० सो+जु]१. वह भी। २. वही।

सोजिश—स्त्री०[फा०] सूजन। शोथ।

सोझ—वि०, =सोझा।

सोझण†—पुं०=शोधन। (राज०)

सोझना—स०[सं० हि० सोधता]१. शुद्ध करना। शोधना। २. ढूँढ़ना।

सोझा—वि०[सं० सम्मुख, म० प्रा० समुज्झ] [स्त्री० सोझी]१. जो ठीक सामने की ओर गया हो। २. सरल प्रकृति का। सीधा।

सोटा†—पुं०१.=सोंटा। २.=सुअटा (तोता)।

सोडा—पुं०[अं०] एक प्रकार का क्षार जो सज्जी को रासायनिक क्रिया से साफ करके बनाते हैं।

सोडा-वाटर—पुं०[अं०] एक प्रकार का पाचक पेय जो प्रायः मामूली पानी में कारबोनिक एसिड मिला करके बनाते हैं और बोतल में हवा के जोर से बंद करके रखते हैं। खारा-पानी।

सोढ—भू० कृ०[सं०] सटा हुआ।

वि० सहनशील।

सोढर—वि० [हिं० सु+ढरना=झुकना, अनुरक्त होना] १. जो सहज में किसी ओर प्रवृत्त या अनुरक्त होता हो। सुढर। २. बेवकूफ। मूर्ख।

सोढव्य—वि० [सं०] सहन करने के योग्य। सत्य।

सोढी (ढिन्)—वि०[सं०] १. सहनशील। २. समर्थ। सशक्त।

सोणक†—वि० [सं० शोण] लाल रंग का। सुर्ख। (डिं०)

सोणत—पुं०[सं० शोणित] खून। लोहू। रक्त।(डिं०)

सोत†—पुं०=स्रोत।

सोता—पं० [सं० स्रोत] [स्त्री० अल्पा० सोतिया]१. जल की बराबर बहनेवाली या निकलनेवाली छोटी धारा। झरना। चश्मा। जैसे—पहाड़ का सोता, कूएँ का सोता। २. नदी की छोटी शाखा।

सोतिया†—स्त्री०[हिं० सोता=इया (प्रत्य०)] पानी का छोटा सोता।

सोतिहा†—वि० [हिं० सोता+इहा (प्रत्य०)] कूआँ या तालाब जिसमें नीचे से सोते का पानी आता है।

सोती—स्त्री०[हिं० सोता का स्त्री० अल्पा०] १. पानी का छोटा सोता। २. किसी नदी से निकली हुई कोई छोटी धारा। जैसे—गंगा की सोती।

†स्त्री० =स्वाती (नक्षत्र)।

†पुं०=श्रोत्रिय (ब्राह्मणों की एक जाति)।

सोत्कंठ—वि०[सं० स०+उत्कंठा] जिसे विशेष उत्कंठा या प्रबल उत्सुकता हो।

क्रि० वि० विशेष उत्कंठा या गहरी उत्सुकता से।

सोत्कर्ष—वि०[सं०] उत्कर्ष युक्त। उत्तम।

सोत्प्रास—वि० [सं०]१. बढ़ाकर कहा हुआ। अतिरंजित। २. व्यंग्य-पूर्ण।

पुं०१. प्रिय या मधुर बात। २. खुशामद से भरी बात। ३. जोर की हँसी। ठहाका।

सोत्संग—वि०[सं०] शोकाकुल। दुःखित।

सोत्सव—वि० [सं०] १. उत्सव-युक्त। उत्सव-सहित। २. खुश। प्रसन्न।

सोत्साह—अव्य०[सं० स+उत्साह] उत्साहपूर्वक। उमंग से।

सोत्सुक—वि०[सं०] उत्सुकता से युक्त। उत्कंठित।

सोत्सेक—वि०[सं०] अभिमानी। घमंडी।

सोथ†—पुं०=शोथ (सूजन)।

सोदकुंभ—पुं०[सं०]पितरों के उद्देश्य से किया जानेवाला एक प्रकार का कृत्य।

सोदन—पुं०[देश०] वह कागज जिसमें छोटे-छोटे छेद करके बेल-बूटे बनाये जाते हैं और राखी की सहायता से कपड़े पर छापते हैं।(कढ़ाई-बुनाई)।

सोदय—वि०[सं०]१. जो बढ़ोतरी की ओर हो। २. ब्याज या सूद-समेत। वृद्धि-युक्त।

पुं० वह मूल-धन जिसमें ब्याज या सूद भी मिल गया हो।

सोदर—वि०[सं० ब० स०] [स्त्री० सोदरा] एक ही उदर से जन्म लेने वाले। सगे। जैसे—ये तीनों सोदर भाई हैं।

पुं० सगा भाई।

सोदरा (री)—स्त्री० [सं०] सहोदरा भगिनी। सगी बहिन।

सोदरीय—वि०=सोदर।

सोदर्य—वि०[सं०] सहोदर। सोदर। सगा।

पुं० सगा भाई।

सोध—पुं०[सं० सौध]१. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम। २. राज-प्रासाद। महल। (डिं०)

†पुं०=शोध।

सोधक†—वि०, पुं०=शोधक।

सोधणी—स्त्री०[सं० शोधनी] झाड़ू। बुहारी। मार्जनी। (डिं०)

सोधन†—पुं०=शोधन।

सोधना†—स० [सं० शोधन]१. शुद्ध या साफ करना। शोधन करना। २. शुद्धता की जाँच की परीक्षा करना। उदा०—सिय लौं सोधति तिय तनहि लगनि अगनि की ज्वाल।—विहारी। ३. दोष या भूल दूर करना। ४. तलाश करना। पता लगाना। ढूँढ़ना। उदा०—सोधेउ सकल विश्व मनमाहीं।—तुलसी। ५. अच्छी तरह गणना या विचार करके अथवा खूब सोच-समझकर कोई निर्णय अथवा निश्चय करना या परिणाम निकालना। ६. कुछ संस्कार करके धातुओं को औषधरूप में काम में लाने के योग्य बनाना। ७ ठीक या दुरुस्त करना। ८. ऋण या देन चुकाना। ९. मैथुन या संभोग करना।

सोधवाना—स०=शोधवाना।

सोधस—पुं०[सं० स+उद]१. जलाशय, ताल आदि। २. किनारे पर का जल।

सोधाना†—स० [हिं० सोधना का प्रे० रूप] सोधने का काम दूसरे से कराना। किसी को सोधने में प्रवृत्त करना।

सोधी†—स्त्री० [सं० शुद्ध या शुद्धि या हिं० सुध का पुराना रूप] १. शुद्ध करने की क्रिया या भाव। शोधन। शुद्धि। उदा०—दादू सोधी नाहिं सरीर की, कहै अगम की बात।—दादूदयाल। २. परमात्मा के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान। केवल ज्ञान। उदा०—सतगुरु थैं सोधी भई, तब पाया हरि का खोज।—दादूदयाल। ३. याद। स्मृति। ४. ईश्वर या भगवान् का ध्यान या स्मरण।

सोन—पुं०[सं०शोण] एक प्रसिद्ध नद का नाम जो मध्य प्रदेश के अमरकंटक की अधित्यका से निकला है और मध्य प्रदेश तथा बुंदेलखंड होता हुआ विहार में दानापुर से १० मील उत्तर में गंगा में मिला है। शोणभद्र नद।

वि० रक्तवर्ण का। लाल।

स्त्री०[हिं० सोना=स्वर्ण]एक प्रकार की सदाबहार लता जिसमें पीले फूल लगते हैं।

वि० हिं० 'सोना' का संक्षिप्त रूप जो यौ० शब्दों के पहले लगकर प्रायः पीले रंग का वाचक होता है। जैसे—सोन-जर्द, सोन-जूही आदि।

†पुं०=सोना (स्वर्ण)। उदा०—मारग मानुस सोन उछारा।—जायसी।

पुं०[सं० रसोनक] लहसुन। (डिं०)

पुं०[देश०] एक प्रकार का जल-पक्षी।

सोन-किरवा—पुं०[हिं० सोन+किरवा=कीड़ा]१. चमकीले तथा सुनहरे परोंवाला एक प्रकार का कीड़ा। २. जुगनूँ।

सोनकीकर—पुं०[हिं० सोना+कीकर] कीकर की जाति का एक प्रकार का बहुत बड़ा पेड़।

सोन-केला—पुं०[हिं० सोना+केला] चंपा केला। सुवर्ण कदली। पीला केला।

सोन-गढ़ी—पुं०[सोनगढ़ (स्थान)] एक प्रकार का गन्ना।

सोन-गहरा—वि०, पुं०[हिं० सोना+गहरा] गहरा सुनहला (रंग)।

सोन-गेरू—पुं० दे० 'सोना गेरू'।

सोन-चंपा—पुं०[हिं० सोना+चंपा] पीला चंपा। सुवर्ण चंपक। स्वर्ण चंपक।

सोन-चिरी—स्त्री० [हिं० सोना+ चिरी=चिड़िया] १. नटी। २. नर्तकी।

सोन-जरद (जर्द)—वि०[हिं० सोना=स्वर्ण+फा० जर्द=पीला] सोने की तरह के पीले रंगवाला।

पुं० उक्त प्रकार का रंग। (गोल्डेन येलो)

सोन-जूही—स्त्री० [हिं० सोना+जूही] एक प्रकार की जूही जिसके फूल हलके पीले रंग के और अधिक सुगंधित होते हैं।

सोन-पेडुकी—स्त्री०[हिं० सोना+पेड़की] एक प्रकार का पक्षी जो सुनहलापन लिए हरे रंग का होता है।

सोनभद्र—पुं०=सोन (नद)।

सोनवाना†—वि० [हिं० सोना+वाना (प्रत्य०)] [स्त्री० सोनावानी] १. सोने का बना हुआ। २. सोने के रंग का। सुनहला।

सोनहला†—वि०=सुनहला।

सोनहा†—पुं० [सं० शुन=कुत्ता] १. कुत्ते की जाति का एक छोटा जंगली हिंसक जन्तु जो झुंड में रहता है। २. एक प्रकार का पक्षी।

सोनहार—पुं०[देश०] एक प्रकार का समुद्री पक्षी।

सोना—पुं०[सं० स्वर्ण]१. एक प्रसिद्ध बहु-मूल्य पीली धातु जिसके गहने आदि बनते हैं। स्वर्ण। कांचन। (गोल्ड)

पद—सोने की कटार=ऐसी चीज जो सुन्दर होने पर भी घातक या

हानिकारक हो। **सोने की चिड़िया**=ऐसा संपन्न व्यक्ति जिससे बहुत कुछ धन प्राप्त किया जा सकता हो।

मुहा०—सोने का घर मिट्टी करना=बहुत अधिक धन-संपत्ति व्यर्थ और पूरी तरह से नष्ट करना। **सोने में घुन लगना**=परम असंभव बात होना। **सोने में सुगंध होना**=किसी बहुत अच्छी चीज में और भी कोई ऐसा अच्छा गुण या विशेषता होना कि जिससे उसका महत्त्व या मूल्य और भी बढ़ जाय।

विशेष—लोक में भूल से इसी की जगह 'सोने में सुहागा होना' भी प्रचलित है।

२. बहुत सुन्दर या बहुमूल्य पदार्थ। ३. राजहंस।

स्त्री०[?] प्रायः एक हाथ लंबी एक प्रकार की मछली जो भारत और बरमा की नदियों में पाई जाती है।

पुं०[?] मझोले आकार का एक प्रकार का वृक्ष।

अ०[सं० शयन] १. लेटकर शरीर और मस्तिष्क को विश्राम देनेवाली निद्रा की अवस्था में होना। नींद लेना।

मुहा०—सोते-जागते=हर समय।

२. शरीर के किसी अंग का एक ही स्थिति में रहने के कारण कुछ समय के लिए सुन्न हो जाना। जैसे—पैर या हाथ सोना। ३. किसी विषय या बात की ओर से उदासीन होकर चुप या निष्क्रिय रहना।

सोना-कुत्ता—पुं०=सोनहा (जन्तु)।

सोना-गेरू—पुं०[हिं० सोना+गेरू]एक प्रकार का गेरू जो मामूली गेरू से अधिक लाल, चमकीला और मुलायम होता है।

सोना-पठा—पुं० [सं० शोण+हिं० पाठा]एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष जो भारत और लंका में सर्वत्र होता है और जिसके कई भेद होते हैं। श्योनक।

सोनापुर—पुं०[हिं०] स्वर्ग।

मुहा०—सोनापुर सिधारना=मर जाना।

सोना-पेट—पुं० [हिं० सोना+ पेट=गर्भ] सोने की खान।

सोना-फूल—पुं०[हिं० सोना+फूल] आसाम और खसिया पहाड़ियों पर होनेवाली एक प्रकार की झाड़ी।

सोना-मक्खी—स्त्री० [सं० स्वर्णमक्षिका] १. माक्षिक नामक खनिज पदार्थ का वह भेद जो पीला होता है। (देखें मक्षिका) २. रेशम का एक प्रकार का कीड़ा।

सोना-माखी†—स्त्री०=सोनामक्खी।

सोनार†—पुं०=सुनार।

सोनित*—पुं०=शोणित (खून)।

सोनी—पुं०[देश०] तुन की जाति का एक वृक्ष।

†पुं०=सुनार।

सोनैया—स्त्री०[देश०] देवदाली। घघरबेल। बंदाल।

सोप—पुं० [देश०] एक प्रकार की छपी हुई चादर।

पुं० [अं०] साबुन।

पुं०[अं० स्वाब] बुहारी। झाड़ू। (लश०)

सोपकरण—वि०[सं०] सभी प्रकार के उपकरणों या साज-सामान से युक्त। जैसे—सोपकरण शय्या।

सोपकार—पुं०[सं०] ब्याज-सहित मूलधन। असल मैं सूद।

सोपचार—वि०[सं०] शिष्टतापूर्वक बर्ताव करनेवाला।

अव्य० उपचार-पूर्वक।

सोपत—पुं०[सं० सूपपत्ति]=सुभीता।

सोप सर्प—वि०[सं०] [स्त्री० सोपसर्पा] १. उठान या उभार पर आया हुआ। २. काम-वासना से युक्त। गरमाया हुआ।

सोपाक—पुं०[सं०] १. काष्ठौषधि बेचनेवाला। वनौषधि बेचनेवाला। २. चांडाल। श्वपच। श्वपाक।

सोपाधि (क)—वि०[सं०] उपाधि (दे०) से युक्त।

सोपाधिकप्रदान—पुं०[सं०] ऋण लेनेवाले से ऋण की रकम बिना दिये अपनी चीज ले लेना।

सोपान—पुं०[सं०] १. सीढ़ी। जीना। २. जैन धर्म में मोक्ष प्राप्ति का उपाय या साधन।

सोपानक—पुं०[सं०] सोने के तार में पिरोई हुई मोतियों की माला।

सोपान-कूप—पुं०[सं० मध्य० स०] सीढ़ीदार कूआँ। बावली।

सोपानावरोहण-न्याय—पुं०[सं०] एक प्रकार का न्याय या कहावत जिसका प्रयोग ऐसे प्रसंगों में होता है, जहाँ सीढ़ियों की तरह क्रम-क्रम से एक एक स्थल पार करते हुए आगे बढ़ना अभीष्ट होता है।

सोपानित—भू० कृ०, वि० [सं०] सोपान से युक्त किया हुआ। सीढ़ियों से युक्त।

सोपारी†—स्त्री०=सुपारी।

सोपाश्रय—वि०[सं०] जो आश्रय या अवलम्ब से युक्त हो।

अव्य० आश्रय या अवलंब का उपयोग करते हुए।

पुं० योग में एक प्रकार की समाधि।

सोऽपि—वि०[सं० सः+अपि] १. वह भी। २. वही।

सोफता—पुं०[हिं० सुभीता] १. एकांत स्थान। निराली जगह। २. अवकाश का समय। फुरसत का समय। ३. चिकित्सा के फलस्वरूप रोगों आदि में होनेवाली कमी।

सोफ़ा—पुं०[अं०] एक प्रकार का बढ़िया गद्देदार कोच या लंबी बेंच जिस पर दो या तीन आदमी आराम से ढासना लगाकर बैठ सकते हैं।

सोफ़ा-सेट—पुं०[अं०] कमरों की सजावट के लिए रखा जानेवाला एक प्रकार का जोड़ जिसमें साधारणतः एक सोफा और वैसी ही दो, तीन या चार कुर्सियाँ होती हैं।

सोफियाना—वि०[अ० सूफ़ी+फा० इयाना (प्रत्य०)] १. सूफियों का। सूफी-संबंधी। २. सूफियों की तरह का अर्थात् सुन्दर और स्वच्छ। सूफियाना।

सोफी†—पुं०=सूफी।

सोब्रन*—पुं०=सुवर्ण।

सोभ—पुं०[सं०] स्वर्ग में गंधर्वों के नगर का नाम।

†स्त्री०=शोभा।

सोभन†—वि०, पुं०=शोभन।

सोभना*—अ० [सं० शोभन] शोभित होना। भला लगना। सोहना।

सोभनीक†—वि०=शोभन (सुन्दर)।

सोभर—पुं०[?] वह कोठरी या कमरा जिसमें स्त्रियाँ प्रसव करती हैं। सौरी। सूतिकागार।

सोभांजन†—पुं०=शोभांजन।

सोभा†—स्त्री०=शोभा।

सोभाकारी†—वि॰=शोभन (सुन्दर)।

सोभायमान†—वि॰=शोभायमान।

सोभार—वि॰[सं॰ स+हिं॰ उभार] उभारदार।

क्रि॰ वि॰ उभरते हुए। उभरकर।

सोभित*—वि॰=शोभित।

सोम—पुं॰ [सं॰]१. एक प्राचीन भारतीय लता जिसके रस का सेवन वैदिक ऋषि विशेषतः यज्ञों के समय मादक पदार्थ के रूप में करते थे। २. हठ-योग में, तालू की जड़ में स्थित चन्द्रमा से निकलनेवाला रस। विशेष दे॰ 'अमृत'। ३. एक प्राचीन वैदिक देवता। ४. चन्द्रमा। ५. सोमवार। ६. अमृत। ७. जल। ८. कुबेर। ९. यम। १०. वायु। हवा। ११. सोम-यज्ञ। १२. वह जो सोम-यज्ञ करता हो। १३. एक प्राचीन पर्वत। १४. एक प्रकार की ओषधि। १५. आकाश। १६. स्वर्ग। १७. आठ वसुओं में से एक वसु। १८. पितरों का एक गण या वर्ग। १९. स्त्री का विवाहित पति। २०. स्त्रियों में होनेवाला एक प्रकार का रोग। २१. यज्ञ की सामग्री। २२. काँजी। २३. माँड। २४. संगीत में एक प्रकार का राग जो मालकोश राग का पुत्र कहा गया है। २५. एक प्रकार का ऊँचा और बड़ा पेड़ जिसकी लकड़ी चिकनी और मजबूत होती तथा चीरी जानेपर लाल हो जाती है। २६. दक्षिणी भारत की पथरीली भूमि में होनेवाला एक प्रकार का क्षुप जिसकी डालों में पत्ते कम और गाँठें अधिक होती हैं।

सोमक—पुं॰[सं॰]१. एक प्राचीन ऋषि का नाम। २. पुराणानुसार कृष्ण का एक पुत्र। ३. स्त्रियों का सोम नामक रोग।

सोम-कर—पुं॰ [सं॰ सोम+कर] चन्द्रमा की किरण। चन्द्र-किरण।

सोम-कल्प—पुं॰[सं॰] पुराणानुसार २१ वें कल्प का नाम।

सोम-कांत—पुं॰[सं॰] चन्द्रकांत मणि।

वि॰१. जो चन्द्रमा के समान प्रिय तथा सुन्दर हो। २. जिसे चन्द्रमा प्रिय हों।

सोम-काम—पुं॰[सं॰] सोमपान करने की इच्छा।

वि॰ सोम-पान की कामना करनेवाला।

सोम-क्रिय—पुं॰[सं॰] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सोम-क्षय—पुं॰[सं॰]१. चन्द्रमा की कलाओं का घटना। २. अमावस्या, जिसमें चन्द्रमा के दर्शन नहीं होते।

सोम-खड्डक—पुं॰[सं॰] नैपाल के एक प्रकार के शैव साधु।

सोम-गर्भ—पुं॰[सं॰] विष्णु।

सोम-गिरि—पुं॰[सं॰]१. महाभारत के अनुसार एक पर्वत। २. मेरु-ज्योति। ३. संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सोम-ग्रह—पुं॰ [सं॰] १. चन्द्रमा का ग्रहण। चन्द्रग्रहण। २. घोड़ों का एक ग्रह जिससे ग्रस्त होने पर वे काँपा करते हैं।

सोम-ग्रहण—पुं॰[सं॰] चन्द्र-ग्रहण।

सोम-चमस—पुं॰[सं॰] सोमपान करने का पात्र।

सोमज—वि॰[सं॰] चन्द्रमा से उत्पन्न।

पुं॰ १. बुध नामक ग्रह। २. दूध।

सोमजाजी†—पुं॰[सं॰ सोमयाजी] सोम याग करनेवाला।

सोमदिन—पुं॰[सं॰ सोम=दिन] सोमवार। चन्द्रवार।

सोम-दीपक—पुं॰[सं॰] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सोमदेव—पुं॰[सं॰]१. सोम नामक देवता। २. चन्द्रमा।

सोम-देवत (त्य)—वि॰[सं॰] जिसके देवता सोम हों।

सोम-दैवत—पुं॰[सं॰] मृगशिरा (नक्षत्र)।

सोम-धारा—स्त्री॰ [सं॰] १. आकाश। आसमान। २. स्वर्ग। ३. आकाश-गंगा।

सोम-धेय—पुं॰[सं॰] एक प्राचीन जनपद। (महाभारत)

सोमन—पुं॰[सं॰ सौमन] एक प्रकार का अस्त्र।

सोमनस†—पुं॰=सौमनस्य।

सोमनाथ—पुं॰[सं॰]१. प्रसिद्ध द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक। २. काठियावाड़ के दक्षिणी तट पर स्थित एक प्राचीन नगर जहाँ उक्त ज्योतिर्लिंग का मंदिर है। इस मंदिर के अतुल धन-रत्न की प्रसिद्धि सुनकर सन् १०२४ ई॰ में महमूद गजनवी इसे ध्वस्त करके यहाँ से करोड़ों की सम्पत्ति गजनी ले गया था। अब स्वतन्त्र भारत में इस मन्दिर का जीर्णोद्धार हो गया है।

सोमनेत्र—वि॰[सं॰]१. जिसका नेता या रक्षक सोम हो। २. जिसकी आँखें सोम के समान हों।

सोमप—वि॰[सं॰]१. सोम-रस पीनेवाला। २. जिसने यज्ञ में सोम रस का पान किया हो।

पुं॰ १. वह जिसने सोम यज्ञ किया हो, अथवा जो सोमयज्ञ करता हो। सोमयाजी। २. विश्वेदेवों में से एक का नाम। ३. एक प्राचीन ऋषि वंश। ४. पितरों का एक वर्ग। ५. कार्तिकेय का एक अनुचर। ६. एक पौराणिक जनपद।

सोमपति—पु॰[सं॰] इन्द्र का एक नाम।

सोमपत्र—पुं॰[सं॰] कुश की तरह की एक घास। डाभ। दर्भ।

सोमपद—पुं॰[सं॰]१. एक लोक। (हरिवंश) २. महाभारत काल का एक तीर्थ।

सोम-पर्व (न्)—पुं॰[सं॰]१. सोमपान करने का उत्सव या पुण्य काल। २. कोई ऐसा पर्व जिसमें लोग सोम पीते थे।

सोमपा—वि॰, पुं॰=सोमप।

सोम-पान—पुं॰[सं॰] सोम रस पान करना।

सोपपायी (यिन्)—वि॰[सं॰] [स्त्री॰ सोमपायिनी] सोम रस पीनेवाला।

सोमपाल—पुं॰[सं॰] सोम के रक्षक, गन्धर्व लोग।

सोम-पुत्र—पुं॰[सं॰] सोम या चन्द्रमा के पुत्र, बुध।

सोम-पुरुष—पुं॰[सं॰] १. सोम का रक्षक। २. सोम का अनुचर या भक्त।

सोमपेय—पुं॰[सं॰]१. एक प्रकार का यज्ञ जिसमें सोमपान किया जाता था। २. सोमपान।

सोम-प्रताप—पुं॰ [सं॰] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सोम-प्रदोष—पुं॰[सं॰] सोमवार को पड़नेवाला प्रदोष (व्रत), जो विशेष महत्त्वपूर्ण माना गया है।

सोम प्रभ—वि॰ [सं॰]सोम या चन्द्रमा के समान प्रभावाला। परम कांतिमान।

सोम-प्रभावी—स्त्री॰[सं॰] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सोमबंधु—पुं॰[सं॰]१. सूर्य। २. बुध ग्रह। ३. कुमुद।

सोमभवा—स्त्री॰[सं॰] नर्मदा (नदी)।

सोमभू—वि० [सं०]१. सोम से उत्पन्न। २. जो चन्द्रवंश में उत्पन्न हुआ हो। चन्द्रवंशी।

पुं०१. चन्द्रमा के पुत्र, बुध। २. जैनों के चौथे कृष्ण वसुदेव का एक नाम।

सोमभूपाल—पुं०[सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सोम-भैरवी—स्त्री०[सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सोम-मंजरी—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सोम-मद—पुं०[सं०] सोमरस पान करने से होनेवाला नशा।

सोममुखी—पुं०[सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सोम-यज्ञ—पुं० [सं०] एक प्रकार का त्रैवार्षिक यज्ञ जिसमें मुख्यतः सोम रस पीया जाता था।

सोमयाजी (जिन्)—पुं०[सं०] वह जो सोमयाग करता हो। सोम-पान करनेवाला।

सोम-योनि—पुं०[सं०]१. देवता। २. ब्राह्मण। ३. पीला चन्दन।

सोम-रस—पुं०[सं०]१. वैदिक काल में सोम नामक लता का रस जो ऋषि, मुनि आदि पीते थे। २. हठयोग में, तालु-मूल में स्थित माने जानेवाले चन्द्रमा से निकलनेवाला रस जो योगी लोग जीभ उलटकर और उसे तालु-मूल तक ले जा कर पान करते हैं।

सोमरा—पुं० [देश०] जुते हुए खेत का दोबारा जोता जाना। दो चरस।

सोमराज—पुं०[सं०] चन्द्रमा।

सोमराजी—स्त्री०[सं०] १. बकुची। २. एक प्रकार का समवृत्त वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में दो रगण होते हैं। यथा—गुनी, एक रूपी, सुनी बेद गावै। महादेव जा कौं सदाचित्त लावै।—केशव।

सोम-राज्य—पुं०[सं०] चन्द्रलोक।

सोमराष्ट्र—पुं०[सं०] एक प्राचीन जनपद।

सोमल—पुं०[देश०]एक प्रकार का संखिया जिसे सफेद संबुल भी कहते हैं।

सोम-लता—स्त्री०[सं०]१. सोम नामक वनस्पति की लता। २. गिलोय। गुडुच।

सोम-लोक—पुं०[सं०] चन्द्र-लोक।

सोम-वंश—पुं०[सं०]१. युधिष्ठिर का एक नाम। २. क्षत्रियों का चन्द्र-वंश।

सोमवंशीय—वि०[सं०] १. चन्द्रवंश में उत्पन्न। २. चन्द्रवंश सम्बन्धी।

सोमवंश्य—वि० [सं०] सोमवंशीय।

सोमवत्—वि०[सं०] [स्त्री० सोमवती]१. सोमयुक्त। २. चन्द्रमा से युक्त (ग्रह)। ३. चन्द्रमा के समान शीतल या सुन्दर।

सोमवती—स्त्री०[सं०]१. एक प्राचीन तीर्थ। २. दे० 'सोमवती अमावस्या'।

सोमवती अमावस्या—स्त्री० [सं०] १. सोमवार को पड़नेवाली अमावस्या जो पुराणों के अनुसार पुण्यतिथि मानी गई है। प्रायः लोग इस दिन गंगास्नान और दान-पुण्य करते हैं।

सोमवर्चस्—पुं०[सं०] विश्वेदेव में से एक।

वि० सोम के समान तेजवाला।

सोम-वल्क—पुं० [सं०] १. सफेद खैर। २. कायफल। ३. करंज। ४. रीठा करंज। ५. बबूल।

सोम-वल्लरी—स्त्री० [सं०] १. सोम नामक लता। २. ब्राह्मी। ३. एक प्रकार का वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, जगण, रगण, जगण, और रगण होते हैं। इसे 'चामर' और 'तूण' भी कहते हैं।

सोम-वल्लिका—स्त्री०[सं०]१. बकुची। सोमराजी। २. सोमलता।

सोम-वल्ली—स्त्री०[सं०]१. गिलोय। गुडूची। २. सोमराजी। बकुची। ३. पाताल गारुड़ी। छिरेंटी। ४. ब्राह्मी। ५. सुदर्शन नामक पौधा। ६. कठकरंज। लता करंज। ७. गज-पीपल। ८. बन-कपास। ९. सोमलता।

सोम वायव्य—पुं०[सं०] एक ऋषि-वंश का नाम।

सोमवार—पुं०[सं०] सात वारों में से एक वार जो सोम अर्थात् चन्द्रमा का दिन माना जाता है। यह रविवार के बाद और मंगलवार के पहले पड़ता है। चन्द्रवार।

सोमवारी—वि०[सं० सोमवार] सोमवार संबंधी। सोमवार का। जैसे—सोमवारी बाजार, सोमवारी अमावस्या।

स्त्री० = सोमवती अमावस्या।

सोम-वीथी—स्त्री० [सं०] चन्द्र-मंडल।

सोम-वृक्ष—पुं०[सं०]१. कायफल। कटहल। २. सफेद खैर।

सोम-संस्था—स्त्री० [सं०] सोम यज्ञ का एक प्रारंभिक कृत्य।

सोम-सलिल—पुं०[सं०] सोमलता का रस।

सोम-सव—पुं०[सं०] यज्ञ में किया जानेवाला एक प्रकार का कृत्य जिसमें सोम का रस निकाला जाता था।

सोम-सार—पुं० [सं०] १. सफेद खैर। श्वेत खदिर। २. कीकर। बबूल।

सोम-सिंधु—पुं०[सं०] विष्णु का एक नाम।

सोम-सिद्धांत—पुं०[सं०] १. एक बुद्ध का नाम। २. फलित ज्योतिष।

सोम-सुंदर—वि०[सं०] चन्द्रमा के समान सुन्दर। बहुत सुन्दर।

सोम-सुत्—वि०, पुं० [सं०] सोमरस निकालनेवाला।

पुं० यज्ञ में सोमरस की आहुति देनेवाला ऋत्विज्।

सोम-सुत—पुं०[सं०] चन्द्रमा के पुत्र, बुध।

सोम-सुता—पुं०[सं०] (चन्द्रमा की पुत्री) नर्मदा नदी।

सोम-सूत्र—पुं०[सं०] शिवलिंग की जलधरी से जल निकलने का स्थान या नाली।

सोमांग—पुं०[सं०] सोम-याग का एक अंग।

सोमांशु—पुं०[सं०]१. चन्द्रमा की किरण। २. सोम लता का अंकुर। ३. सोमयज्ञ का एक कृत्य।

सोमा—स्त्री०[सं०]१. सोम लता। २. एक पौराणिक नदी।

सोमाख्य—पुं०[सं०] लाल कमल।

सोमाद—वि०[सं०] सोम भक्षण करनेवाला। सोमपायी।

सोमाधार—पुं० [सं०] पितरों का एक गण या वर्ग।

सोमापूषण—पुं०[सं०] [वि० सोमापौष्ण] सोम और पूषण नामक देवता।

सोमापौष्ण—पुं०[सं०] सोम और पूषण संबंधी।

सोमाभ—वि०[सं०] जिसमें चन्द्रमा की-सी आभा हो।

स्त्री० चन्द्रमा की किरणें। चन्द्रावली।

सोमायन—पुं०[सं०]महीने भर का एक व्रत जिसमें २७ दिन दूध पीकर रहने और तीन दिन तक उपवास करने का विधान है।

सोमारुद्र—पुं०[सं०] [वि० सौमारौद्र] सोम और रुद्र नामक देवता।

सोमारौद्र—वि०[सं०] सोम और रुद्र संबंधी।

सोमार्च्चि—पुं०[सं० सोमार्च्चिस्] स्वर्ग में देवताओं का एक प्रासाद। (रामा०)

सोमार्द्धधारी (रिन्)—पुं० [सं०] (मस्तक पर अर्द्ध चन्द्र धारण करनेवाले) शिव।

सोमाल—वि०[सं०] कोमल। नरम। मुलायम।

सोमालक—पुं०[सं०] पुष्पराग मणि। पुखराज।

सोमावली—स्त्री०[सं०] चन्द्रमा की माता का नाम।

†स्त्री० =सोमावती अमावस्या।

सोमाष्टमी—स्त्री०[सं०] सोमवार को पड़नेवाली अष्टमी तिथि। इस दिन व्रत का विधान है।

सोमास्त्र—पुं०[सं०] चन्द्रमा का अस्त्र।

सोमाह—पुं० [सं०] चन्द्रमा का दिन, सोमवार।

सोमाहुत—वि० [सं०]१. जिसे सोम की आहुति दी गई हो। २. जिसकी सोमरस से तृप्ति की गई हो।

सोमाहुति—स्त्री०[सं०] यज्ञ-कुण्ड में दी जानेवाली सोम की आहुति।

पुं० मंत्र-द्रष्टा भार्गव ऋषि का एक नाम।

सोमाह्वा—स्त्री०[सं०] महा-सोमलता।

सोमी (मिन्)—वि० [सं०] १. जिसमें सोम हो। सोम-युक्त। २. यज्ञ में सोम की आहुति देनेवाला।

पुं० सोमयाजी।

सोमीय—वि० [सं०] १. सोम-सम्बन्धी। सोम का। २. सोमरस से युक्त।

सोमेंद्र—वि०[सं०] सोम और इन्द्र सम्बन्धी।

सोमेश्वर—पुं०[सं०]१. एक शिवलिंग जो काशी में स्थापित है। २. श्रीकृष्ण का एक नाम। २. दे० 'सोमनाथ'।

सोमोत्पत्ति—पुं० [सं०]१. चन्द्रमा का जन्म। २. अमावस्या के उपरान्त चन्द्रमा का फिर से निकलना।

सोमोद्भव—पुं० [सं०] (चन्द्रमा को उत्पन्न करनेवाले) श्रीकृष्ण का एक नाम।

वि० चन्द्रमा से उत्पन्न।

सोमोद्भवा—स्त्री०[सं०] नर्मदा नदी का एक नाम।

सोमौती†—स्त्री० =सोमवती अमावस्या।

सोम्य—वि०[सं०]१. सोम-सम्बन्धी। सोम का। २. सोम से युक्त। ३. जो सोम-पान कर सकता हो या जिसे सोम-पान करने का अधिकार हो। ४. यज्ञ में सोम की आहुति देनेवाला। ५. अच्छा। सुन्दर।

सोय†—सर्व० =सो।

सोया†—पुं० =सोआ (साग)।

सोयाबीन—पुं० दे० 'भटवाँस'।

सोरंजान†—स्त्री० =सूरंजान (ओषधि)।

†पुं० =सूरंजन (सुपारी का पेड़)।

सोर†—पुं०[फा० शोर]१. कोलाहल। हल्ला। २. प्रसिद्धि। ख्याति।

†स्त्री०[सं० शटा] पेड़ों की जड़। मूल।

†पुं०[?] बारूद (राज०)। उदा०—उठै सोर फाला अनल, आभ धुआँ अँधियार।—बाँकीदास।

पुं०[तामिल शुड़ा, तेलुगु सोर] हाँगर की जाति की एक प्रकार की बहुत भीषण और बड़ी समुद्री मछली। (शार्क)

पुं० [सं०] वक्र गति। टेढ़ी चाल।

सोरट्ठ†—पुं० =सोरठ।

सोरठ—पुं०[सं० सौराष्ट्र] १. सौराष्ट्र (प्रदेश)। २. उक्त प्रदेश की प्राचीन राजधानी, सूरत। ३. ओड़व जाति का एक राग जो हिंडोल का पुत्र कहा जाता है।

मुहा०—खुली सोरठ कहना=खुले आम कहना। कहने में संकोच या भय न करना।

सोरठ मल्लार—पुं०[हिं० सोरठ+मल्लार] सोरठ और मल्लार के योग से बना हुआ एक संकर राग।

सोरठा—पुं०[सं० सौराष्ट्र, हिं० सोरठ (देश)] अड़तालीस मात्राओं का एक छंद जिसके पहले और तीसरे चरण में ग्यारह-ग्यारह और दूसरे तथा चौथे चरण में तेरह-तेरह मात्राएँ होती हैं। इसके सम चरणों में जगण का निषेध है। दोहे के चरणों को आगे-पीछे कर देने से सोरठा हो जाता है।

सोरठी—स्त्री० [सोरठ (देश)] संगीत में एक रागिनी जो मेघराग की पत्नी कही गई है।

वि० सोरठ-सम्बन्धी। सोरठ का।

सोरण—वि० [सं०] जो स्वाद में उग्र हो। विशेषतः खट्टा और चरपरा।

सोरनी—स्त्री०[सं० शोधनी]१. झाड़ू। बुहारी। २. जलाये हुए शव की राख बहाने का संस्कार।

सोरबा†—पुं० =शोरबा।

सोरभ†—पुं० =सौरभ (सुगंध)।

सोर-भखी†—स्त्री०[सं० शूरभक्षी] तोप या बन्दूक। (डिं०)

सोरह†—वि०, पुं० =सोलह।

सोरहिया†—स्त्री०[हिं० सोलह ?] पुरानी चाल की एक प्रकार की नाव जो सोलह हाथ चौड़ी होती थी।

†स्त्री० =सोरही।

सोरही†—स्त्री० =सोलह।

सोरा†—पुं० =शोरा।

सोराना—अ०[हिं० सोर=जड़] बोई हुई चीज में सोर या जड़ निकलना। उदा०—तुम्हारा आलू सोरा कर ऐसा ही रह जायगा।—जयशंकर प्रसाद।

सोरी—स्त्री० [सं० स्रवण=बहना या चूना] बरतन में का महीन छेद जिसमें से होकर पानी बह जाता हो।

सोर्मि, सोर्मिक—वि० [सं०] तरंग-युक्त।

सोलंकी—पुं० [देश०] क्षत्रियों का एक प्राचीन राजवंश जिसने बहुत दिनों तक गुजरात पर शासन किया था।

सोल—वि० [सं०] १. शीतल। ठंडा। २. कसैला, खट्टा और तिक्त या तीता।

पुं० १. शीतलता। ठंढक। २. स्वाद। जायका।

सोलपंगो—पुं० [हिं० सोलह+पग] केंकड़ा। (डिं०)

सोलह—वि० [सं० षोडस, प्रा० सोलस, सोरह] जो गिनती में दस से छः अधिक हो। षोड़श।

पुं० उक्त संख्या का सूचक अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१६।

मुहा०—सोलहो आने=कुल का कुल। सब का सब। **सोलह-सोलह गंडे सुनाना**=खूब गालियाँ देना।

सोलह-नहाँ—पुं० [हिं० सोलह+नहँ=नख] एक प्रकार का ऐबी हाथी जिसके १६ नाखून होते हैं।

सोलहवाँ—वि० [हिं० सोलह+वाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० सोलहवीं.] संख्या के विचार से १६ की जगह पड़नेवाला।

सोलह सिंगार—पुं० [हिं० सोलह+सिंगार] स्त्रियों के पूरा शृंगार करने के लिए बताये हुए ये सोलह कार्य—अंग में उबटन लगाना; नहाना; स्वच्छ वस्त्र धारण करना; बाल सँवारना; काजल लगाना; सिंदुर से माँग भरना; महावर लगाना; भाल पर तिलक लगाना; चिबुक पर तिल बनाना; मेंहदी लगाना; इत्र आदि सुगंधित द्रव्य लगाना; आभूषण पहनना; फूलों की माला पहनना; मिस्सी लगाना; पान खाना और होंठों को लाल करना।

मुहा०—सोलह सिंगार सजाना=बनना-ठनना।

सोलही†—स्त्री० [हिं० सोलह+ई (प्रत्य०)] १. सोलह चित्ती कौड़ियाँ। २. उक्त कौड़ियों से खेला जानेवाला जूआ। ३. पैदावार की १६-१६ अँटियों या पूलों के रूप में होनेवाली गिनती।

सोला—पुं० [?] १. एक प्रकार की रेशमी धोती। २. एक प्रकार का बड़ा झाड़ जिसकी डालियाँ बहुत मजबूत और सीधी होती हैं।

विशेष—सोला हैट नामक अँगरेजी ढंग का टोप इसी की डालियों से बनता है।

सोलाना†—स०=सुलाना।

सोलाली—स्त्री० [?] पृथ्वी। (डिं०)

सोल्लास—वि० [सं०] उल्लास-युक्त। प्रसन्न। आनंदित।

अव्य० उल्लास-पूर्वक। हर्ष से भर कर। बहुत प्रसन्न होकर।

सोवज—पुं० १.=सावज। २.=सौजा।

सोवड़†—पुं० [सं० सूत,—प्रा० सूड़आ] सूतिकागार। सौरी।

सोवणी†—स्त्री० [सं० शोधनी] बुहारी। झाड़ू। (डिं०)

सोवन*—पुं० [हिं० सोवना] सोने की क्रिया या भाव। शयन।

†वि० १.=शोभन। २.=सुनहला।

सोवन-बानी—वि० [सं० सुवर्ण+वर्ण] सुनहला। (राज०)

सोवना†—वि० [हिं० सोना=स्वर्ण] १. सोने के रंग का। सुनहला। २. सोने का। उदा०—चोंच मढ़ाऊँ थारी सोवनी री।—मीराँ।

†अ०=सोना (शयन करना)।

सोवनार*—स्त्री० [सं० शयनागार] सोने का कमरा। शयनागार।

सोवरी†—स्त्री०=सौरी (सूतिकागार)।

सोवा—पुं०=सोआ (साग)।

सोवाना†—स०=सुलाना।

सोवारी—पुं० [?] संगीत में पन्द्रह मात्राओं का एक ताल जिसमें पाँच आघात और तीन खाली होते हैं।

सोवियत—पुं० [रूसी सोविएट] १. परिषद्। सभा। २. प्रतिनिधियों की सभा। ३. आज-कल समाजवाद के सिद्धांतों पर आश्रित रूस की वह शासन-प्रणाली जिसमें सभी छोटे-छोटे क्षेत्रों में मजदूर, सैनिकों आदि के चुने हुए प्रतिनिधियों के हाथ में सारे अधिकार रहते हैं। यही लोग जिले की शासन-परिषद् के लिए प्रतिनिधि चुनते हैं। फिर जिले की परिषदें प्रांत के शासन के लिए और तब प्रांतीय परिषदें केंद्रीय शासन के लिए प्रतिनिधि चुनती हैं।

वि० (स्थान) जहाँ उक्त प्रकार की शासन-प्रणाली प्रचलित हो। जैसे—सोविएट रूस।

सोवैया†—पुं० [हिं० सोवना+इया (प्रत्य०)] सोनेवाला।

सोशल—वि० [अं०] १. समाज-संबंधी। सामाजिक। जैसे—सोशल कानफ्रेंस। २. समाज के लोगों के साथ हेल-मेल बढ़ाकर रहनेवाला। समाजशील। जैसे—सोशल लड़का।

सोशलिज्म—पुं०=समाजवाद।

सोशलिस्ट—पुं० = समाजवादी।

सोषक*—वि०=शोषक।

सोषण†—पुं०=शोषण।

सोषना†—स०=सोखना।

सोषु†—वि० [हिं० सोखना] सोखनेवाला। शोषक।

सोष्णीष—पुं० [सं०] ऐसा घर जिसके अग्रभाग में बरामदा भी हो।

सोष्यंती—स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके शीघ्र ही प्रसव होने को हो। आसन्न-प्रसवा।

सोष्यंती-कर्म—पुं० [सं० सोष्यंती-कर्मन्] आसन्न-प्रसवा स्त्री के संबंध में किया जानेवाला कृत्य या संस्कार।

सोस†—वि० [सं० शुष्क] १. सूखा। २. सोखनेवाला। शोषक।

†पुं०=शोषण।

सोसन—पुं० [फा० सौसन] १. एक पौधा जो कश्मीर में होता है। २. उक्त पौधे का फूल।

सोसनी—वि० [फा० सौसन] सोसन के फूल के रंग का। लाली लिए नीला।

पुं० उक्त प्रकार का रंग।

सोसाइटी, सोसायटी—स्त्री० [अं०] १. समाज। २. संगत। सोहबत। ३. सार्वजनिक संस्था।

सोस्मि†—अव्य०=सोऽहमस्मि।

सोहँ†—स्त्री०=सौंह (कसम)।

*अव्य०=सौंह (सामने)।

सोहंज†—दे०=सोऽहम्।

सोहंग†—अव्य०=सोहम्।

†पुं०=सांस।

सोहंम—अव्य०=सोऽहम्।

सोहगी—स्त्री० [हिं० सोहाग] विवाह से पूर्व कन्या के लिए वर-पक्षवालों की तरफ से भेजी जानेवाली चीजें जो सौभाग्य-सूचक मानी जाती हैं।

सोहगैला—पुं० [हिं० सुहाग या सोहाग] [स्त्री० अल्पा० सोहगैली] लकड़ी की वह कँगूरेदार डिबिया जिसमें विवाह के दिन सिंदूर भर कर देते हैं। सिंदूरा।

सोहड़†—पुं०=सुभट। (राज०)

सोहन—वि० [सं० शोभन, प्रा० सोहण] [स्त्री० सोहनी] अच्छा लगनेवाला। सुंदर। सुहावना।

पुं० १. सुन्दर पुरुष। २. स्त्री के लिए उसका पति या प्रेमी।

पुं० एक प्रकार का बड़ा जंगली वृक्ष।

स्त्री०=सोहन चिड़िया।

पुं० [?] एक प्रकार का रंदा।

सोहन-चिड़िया—स्त्री० [हिं०] एक प्रकार का बड़ा पक्षी जिसका मांस स्वादिष्ट होता है।

सोहन-पपड़ी—स्त्री० [हिं० सोहन+पपड़ी] मैदे की बनी हुई एक प्रकार की मिठाई जो जमे हुए कतरों या लच्छों के रूप में होती है।

सोहन-हलुआ—पुं० [हिं० सोहन+हलुआ] एक प्रकार की बहुत बढ़िया और स्वादिष्ट मिठाई जो जमे हुए कतरों के रूप में और घी से तर होती है।

सोहना—अ० [सं० शोभा] सुशोभित होना। फबना।

वि० [स्त्री० सोहनी] सुंदर और सुहावना।

पुं० [फा० सोहान] कसेरों का छेद करने का एक औजार।

स० [सं० शोधन] १. साफ करना। २. निराई करना।

सोहनी—स्त्री० [हिं० सोहना] १. झाड़। बुहारी। २. खेत में की जानेवाली निराई। ३. निराई करते समय गाया जानेवाला गीत। ४. आधी रात के बाद गायी जानेवाली एक रागिनी।

सोहबत—स्त्री० [अ०] १. संग-साथ। संगत।

पद—**सोहबत का फल**=वह बात (विशेषतः बुरी बात) जो बुरी संगत के कारण सीखी गयी हो।

२. स्त्री-प्रसंग। संभोग।

सोहबतदारी—स्त्री० [अ०+फा०] स्त्री-प्रसंग। संभोग।

सोहबती—वि० [अ० सुहबत] जिससे सोहबत हो। साथी। संगी।

सोहमस्मि—अव्य०=सोऽहमस्मि।

सोहर—पुं० [हिं० सोहना; सोहला] १. घर में संतान होने पर गाया जानेवाला मंगल गीत। २. उक्त अवसर पर गाये जानेवाले गीतों की संज्ञा। ३. मांगलिक गीत।

स्त्री० [?] १. नाव का फर्श। २. पाल खींचने की रस्सी।

विशेष—खिलौना (गीत) और सोहर में यह अंतर है कि सोहर में तो पुत्र-जन्म की पूर्व-पीठिका का उल्लेख होता है; परन्तु खिलौना में उत्तर-पीठिका का उल्लेख होता है। इसमें आनन्द और उत्साह की मात्रा अधिक होती है।

सोहरत*—स्त्री०=शोहरत (प्रसिद्धि)।

सोहराना†—स०=सहलाना।

सोहला†—पुं०=सोहर (गीत)।

सोहली†—स्त्री० [?] माथे पर पहनने का एक गहना। (राज०)

सोहाइन†—वि०=सुहावना।

सोहाई—स्त्री० [हिं० सोहना=आई (प्रत्य०)] १. सोहने की क्रिया या भाव। निराई करना। २. निराई करने की मजदूरी।

सोहाग†—पुं०=सुहाग।

सोहागा†—पुं०=सुहागा।

सोहागिन(नी)†—स्त्री०=सुहागिन।

सोहागिल†—स्त्री०=सुहागिन।

सोहाता—वि० [हिं० सोहाना] [स्त्री० सोहानी] १. सोहानेवाला। फबनेवाला। २. सत्य।

सोहान—पुं० [फा०] रेती नामक औजार।

सोहाना—अ०=सुहाना (भला लगना)।

अ० [सं० सहन] बरदाश्त होना। जैसे—आप की बात उनको नहीं सोहाती। (पश्चिम)

सोहापा†—वि०=सुहावना।

सोहारद†—पुं०=सौहार्द (सद्भाव)।

सोहारी†—स्त्री० [हिं० सोहाना=रचना] पूरी नाम का पकवान।

सोहाल†—पुं०=सुहाल (पकवान)।

सोहाली—स्त्री० [?] ऊपर के दाँतों का मसूड़ा। ऊपरी दाँतों के निकलने की जगह।

†स्त्री०=सोहारी।

सोहावटी—स्त्री० [हिं० सोहाना ?] १. पत्थर की वह पटिया या लकड़ी का मोटा तख्ता जो खिड़की या दरवाजे के ऊपरी भाग पर पाटन के रूप में लगा रहता है। करगहना। २. ईंटों आदि की उक्त प्रकार की जोड़ाई या सीमेंट आदि की ऐसी रचना। (लिन्टेल)

सोहावन†—वि०=सुहावना।

सोहावना†—वि०=सुहावना।

†अ०=सुहाना (भला लगना)।

सोहासित†—वि० [सं० सुभाषित] प्रिय लगनेवाला। रुचिकर।

पुं० चापलूसी की बातें। ठकुर-सुहाती।

सोहिं†—अव्य०=सौंह (सामने)।

सोहिनी—वि०, स्त्री०=सोहनी।

सोहिल†—पुं०=सुहेल (अगस्त्य तारा)।

सोहिला†—पुं०=सोहला (सोहर)।

सोहीं (हैं)†—अव्य०=सौंह (सामने)।

सोहौटी†—स्त्री०=सोहावटी।

सौं†—अव्य० १. दे० 'सों'। २. दे० 'सा' (समान)। उदा०—हरि सौं ठाकुर और न जन कौं।—सूर। ३. दे० 'सौंह' (सामने)।

†स्त्री०=सौंहि (शपथ)।

सौंकारा†—पुं० [सं० सकाल] प्रातःकाल। सवेरा। तड़का।

सौंकारे, सौंकेरे*—अव्य० [सं० सकाल, पु० हिं० सकारे] १. तड़के। सबेरे। २. उचित या ठीक समय से कुछ पहले ही।

सौंघाई—स्त्री० [हिं० सोहागा=सस्ता] अधिकता। बहुतायत। ज्यादती।

सौंघी—वि० [?] १. अच्छा। २. उचित। ठीक। वाजिब।

सौंचन†—स्त्री० [सं० शौच] मल-त्याग। शौच।

सौंचना†—स० [सं० शौच] १. शौच करना। मल-त्याग करना। २. मल-त्याग के उपरान्त हाथ-पैर आदि धोना।

सौंचर—पुं०=सोंचर (नमक)।

सौंचाना†—स० [हिं० सौंचना का प्रे०] शौच कराना या मल-त्याग कराना। (मुख्यतः बच्चों के संबंध में प्रयुक्त)

सौंज*—स्त्री० [फा० साज़] साज (सामान)।

सौंजा—पुं॰ [हिं॰ सौंपना] १. सुपुर्द करना। सौंपना। २. जोतने-बोने के लिए किसी को खेत देना। ३. आपस में होनेवाला परामर्श या समझौता।

†पुं॰ [सं॰ श्वापद] जंगली (विशेषतः शिकारी) जानवर।

सौंड़ (ड़ा) †—पुं॰ [हिं॰ सोना+ओढ़ना] ओढ़ने का (विशेषतः सोते समय ओढ़ने का) भारी कपड़ा। जैसे—रजाई, लिहाफ, आदि।

सौंण†—पुं॰=शकुन। (राज॰)

सौंतुख—अव्य॰ [सं॰ सम्मुख] १. आँखों के आगे। प्रत्यक्ष। सामने। २. आगे। सामने।

पुं॰ आगा। सामना।

सौंदन—स्त्री॰ [हिं॰ सौंदना] रेह मिले पानी में कपड़े भिगोना। (धोबी)

सौंदना—स॰ [सं॰ संधम्=मिलना] १. सौंदन का काम करना। २. दे॰ 'सानना'।

सौंदर्ज*—पुं॰=सौंदर्य।

सौंदर्य—पुं॰ [सं॰] १. सुंदर होने की अवस्था, गुण या भाव। सुंदरता। खूबसूरती। २. किसी वस्तु का वह गुण या तत्त्व समूह जो उसके आकार या रूप को आकर्षक और नेत्रों के लिए सुखद बनता है। सुंदरता। (ब्यूटी)

विशेष—यह तत्त्व प्रायः व्यक्तिगत रुचि और विचार पर आश्रित रहता है; और कला के क्षेत्र तक ही परिमित नहीं हैं।

३. संगीत में कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

सौंदर्यता†—स्त्री॰=सौंदर्य।

सौंदर्यवाद—पुं॰ [सं॰] यह मत या सिद्धान्त कि कला में सौन्दर्य की ही प्रधानता होनी चाहिए और मनुष्य की सुरुचि उसी के प्रति रहनी चाहिए। (एस्थिटिसिज़्म)

सौंदर्यवादी—वि॰ [सं॰] सौन्दर्यवाद-संबंधी। सौंदर्यवाद का।

पुं॰ वह जो सौन्दर्यवाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो।

सौंदर्यविज्ञान—पुं॰ [सं॰] =सौंदर्य-शास्त्र।

सौंदर्यशास्त्र—पुं॰ [सं॰] वह शास्त्र जिसमें कलात्मक कृतियों, रचनाओं आदि से अभिव्यक्त होनेवाले अथवा उनमें निहित रहनेवाले सौंदर्य का तात्त्विक, दार्शनिक और मार्मिक विवेचन होता है। (एस्थेटिक्स)

विशेष—किसी सुंदर वस्तु को देखकर हमारे मन में जो आनन्ददायिनी अनुभूति होती है उसके स्वभाव और स्वरूप का विवेचन तथा जीवन की अन्यान्य अनूभूतियों के साथ उसका समन्वय स्थापित करना इनका मुख्य उद्देश्य होता है।

सौंध†—पुं॰=सौध।

†स्त्री॰=सुगंध।

सौंधना†—स॰ [सं॰ सुगंधि] सुगंधित करना। सुवासित करना। वासना।

†स॰ सौंदना।

सौंधा—वि॰, पुं॰=सोंधा। उदा॰—गंधी कौ सौंधने नहीं, जन जन हाथ बिकाय।—नन्ददास।

सौंनी—पुं॰=सुनार।

सौंपना—स॰ [सं॰ समर्पण, प्रा॰ सउप्पण] १. किसी के अधिकार में देना। २. पूरी तरह से और सदा के लिए किसी को दे देना। ३. समर्पण करना।

सौंफ—स्त्री॰ [सं॰ शतपुष्पा] १. पाँच-छः फुट ऊँचा एक पौधा जिसकी पत्तियाँ सोए की पत्तियों के समान ही बहुत बारीक और फूल सोए के समान ही कुछ पीले होते हैं। फूल लंबे सींकों में गुच्छों के रूप में लगते हैं। २. उक्त पौधे के बीज जो जीरे के रूप में होते और मसाले के काम में आते हैं।

सौंफिया—स्त्री॰ [हिं॰ सौंफ=इया (प्रत्य॰)] १. सौंफ की बनी हुई शराब। २. रूसा नाम की घास जब कि वह पुरानी और लाल हो जाती है।

सौंफी—वि॰ [हिं॰ सौंफ] सौंफ संबंधी। सौंफ का।

स्त्री॰ =सौंफिया (शराब)।

सौंभरि—पुं॰=सौभरि।

सौंर—पुं॰ [हिं॰ सौरी] मिट्टी के बरतन, भाँड़ें आदि जो संतानोत्पत्ति के दसवें दिन (अर्थात् सूतक हटने पर) तोड़ दिये जाते हैं।

†स्त्री॰=सौरी।

सौंरई†—स्त्री॰ [हिं॰ साँवरा] सांवलापन।

सौंरना*—स॰ [सं॰ स्मरण, हिं॰ सुमरना] स्मरण करना। चिंतन करना। ध्यान करना।

†अ॰ =सँवरना।

सौंरा*—वि॰ =साँवला।

सौंराई*—स्त्री॰=साँवलापन।

सौंसे*—वि॰ [सं॰ समस्त] सब। कुल। पूरा। (पु॰ हिं॰)

सौंह†—स्त्री॰ [हिं॰ सौगंद] शपथ। कसम। (पश्चिम)

क्रि॰ प्र॰—करना।—खाना।—देना।

अव्य॰=सोंहें।

सौंहन—पुं॰=सोहन।

सौंही—स्त्री॰ [?] एक प्रकार का हथियार।

†अव्य॰=सोंहें (सामने)।

सौ—वि॰ [सं॰ शत] जो गिनती में पचास का दूना हो। नब्बे और दस। शत।

पुं॰ उक्त की संख्या का सूचक अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१००।

पद—सौ की एक बात या सौ की सीधी एक बात=ठीक और सार-भूत बात। वास्तविक तात्पर्य। **सौ जान से**=पूरी शक्ति से। सब तरह से।

†अव्य॰ सा।

सौक—वि॰ [हिं॰ सौ+एक] सौ के लगभग। अर्थात् बहुत-सा। उदा॰—लीन्हीं सौक माला, परे अँगुरीन जप-छाला···।—सेनापति।

†पुं॰=शौक।

†स्त्री॰=सौत (सपत्नी)।

सौकन†—स्त्री॰=सौत।

सौकन्य—वि॰ [सं॰] सुकन्या-संबंधी। सुकन्या का।

सौकर—वि॰ [सं॰] [स्त्री॰ सौकरी] १. सूकर या सूअर संबंधी। सूअर का। २. सूअर की तरह का। ३. सूअर या वाराह अवतार से सबंध रखनेवाला।

पुं॰ वाराह सेन नामक तीर्थ।

सौकरक—पुं० [सं०] सौकर तीर्थ।

सौकरायण—पुं० [सं०] शिकारी। व्याध। अहेरी।

सौकरिक—पुं०[सं०] १. सूअर, रीछ आदि का शिकार करनेवाला शिकारी। २. शिकारी। अहेरी। ३. सूअरों का व्यापारी।
वि० सूअर संबंधी। सूअर का।

सौकरीय—वि० [सं०] सूअर संबंधी। सूअर का।

सौकर्य—पुं० [सं०] १. सुकर होने की अवस्था, गुण या भाव। सुकरता। सुसाध्यता। २. सुभीता। ३. कुशलता। दक्षता।
पुं० [सं० सूकर+ता] सूकर अर्थात् सूअर होने की अवस्था गुण या भाव।

सौकीन†—वि०=शौकीन।

सौकुमारक—पुं० [सं०] सौकुमार्य।

सौकुमार्य—पुं० [सं०] १. सुकुमार होने की अवस्था, गुण या भाव। सुकुमारता। २. यौवन। जवानी। ३. काव्य का एक गुण जो ग्राम्य और श्रुति-कटु शब्दों का त्याग करने और सुंदर तथा कोमल शब्दों का प्रयोग करने से उत्पन्न होता है। ४. यौवन काल। जवानी।
वि०=सुकुमार।

सौकृति—पुं० [सं०] १. एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि। २. उक्त ऋषि का गोत्र।

सौकृत्य—पुं० [सं०] १. यज्ञादि पुण्य कर्म का सम्यक् अनुष्ठान। २. दे० 'सौकर्म'।

सौकृत्यायन—पुं० [सं०] वह जो सुकृत्य के गोत्र या वंश में उत्पन्न हुआ हो।

सौक्तिक—वि० [सं०] १. सूक्त-संबंधी। सूक्त का। २. सूक्त के रूप में होनेवाला।
पुं०=शौक्तिक।

सौक्ष्म—पुं०=सूक्ष्मता।

सौक्ष्मक—पुं० [सं०] छोटा घोड़ा।

सौक्ष्म्य—पुं० [सं०] =सूक्ष्मता।

सौख—पुं० [सं०] सुख का गुण, धर्म या भाव। सुख। आराम।
†पुं०=शौक।

सौख शायिक—पुं० [सं०] वैतालिक। स्तुति पाठक। बंदी।

सौखा†—वि० [हिं० सुख] सहज। सुगम।

सौखिक—वि० [सं०] १. सुख-संबंधी। २. सुख के रूप में होनेवाला। ३. सुख चाहनेवाला। सुखार्थी।

सौखी†—पुं० [फा० शोख़ या शौकीन] गुंडा। बदमाश।

सौखीन†—वि०=शौकीन।

सौख्य—पुं० [सं०] १. सुख का गुण, धर्म या भाव। सुखता। सुखत्व। २. सुख। आराम।

सौख्यद—वि० [सं०] =सुखदायी। सौख्य देनेवाला।

सौख्यदायी (यिन्)—वि० [सं०] सुखदायी।

सौगंद—स्त्री० [सं० सौगन्ध] शपथ। कसम। सौंह।
क्रि० प्र०—खाना।—देना।

सौगंध—पुं० [सं०] १. सुगंधित तेल, इत्र आदि का व्यापार करनेवाला, गंधी। २. सुगंध। खुशबू। ३. एक प्राचीन वर्ण-संकर जाति। ४. अगिया घास। भूतृण।
वि० सुगंधित। खुशबूदार।
†स्त्री०=सौगंद (शपथ)।

सौगंधक—पुं० [सं०] नीला कमल। नील कमल।

सौगंधिक—वि० [?] सुगंधवाला।
पुं० [सं०] १. नील कमल। २. लाल कमल। ३. सफेद कमल। ४. गंध-तृण। राम-कपूर। ५. रूसा नामक घास। ६. गंधक। ७. पुखराज नामक रत्न। ८. सुगंधित तेल, इत्र आदि का व्यवसायी। गन्धी। ९. एक प्रकार का कीड़ा जो श्लेष्मा से उत्पन्न होता है। (चरक) १०. एक प्रकार का नपुंसक जिसे किसी पुरुष की इंद्री अथवा स्त्री की योनि सूंघने से उद्दीपन होता है। नासायोनि। (वैद्यक) ११. दालचीनी, इलायची और तेजपत्ता इन तीनों का समूह। त्रिसुगंधि। १२. एक पौराणिक पर्वत।
वि०=सुगंधित।

सौगंधिका—स्त्री० [सं०] अलकापुरी की एक नदी।

सौगंध्य—पुं० [सं०] सुगंधि का भाव या धर्म। सुगंधता। सुगंधत्व।

सौगत—पुं० [सं०] सुगत (बुद्ध) का अनुयायी। बौद्ध।
वि० सुगत-संबंधी। सुगत का।

सौगतिक—पुं० [सं०] १. बौद्ध धर्म का अनुयायी। २. बौद्ध भिक्षु। ३. नास्तिक। ४. नास्तिकता।

सौगम्य—पुं० [सं०] सुगम होने की अवस्था, गुण या भाव। सुगमता। आसानी।

सौगरिया—पुं० [?] क्षत्रियों की एक जाति या वंश।

सौगात—स्त्री० [तु०] किसी प्रदेश विशेष की कोई नई चीज जो उपहार के रूप में किसी को भेजी या दी जाती है। तोहफा।

सौगाती—वि० [हिं० सौगात] १. जो सौगात के रूप में हो या जो सौगात के रूप में दिया गया हो। जैसे—सौगाती सेब। २. जो सौगात के रूप में दिये जाने के योग्य हो; अर्थात् बहुत बढ़िया।

सौघा†—वि० [हिं० महँगा का अनु०] सस्ता। अल्प मूल्य का। कम दाम का। 'महँगा' का विपर्याय।

सौच†—पुं०=शौच।

सौचिक—पुं० [सं०] सूची कर्म या सिलाई द्वारा जीविका निर्वाह करने वाला, अर्थात् दरजी। सूचिक।

सौचिक्य—पुं० [सं०] सूचिक का कार्य। दरजी का काम। कपड़े आदि सीने का काम। सिलाई।

सौचित्ति—पुं० [सं०] वह जो सुचित्त के अपत्य हो।

सौज—वि० [सं० सौजस्] शक्तिशाली। बलवान्। ताकतवर।
†स्त्री० [फा० साज] साज-सामान। उपकरण। सामग्री।

सौजना†—अ०=सजना (शोभित होना)।

सौजन्य—पुं० [सं०] सुजन होने की अवस्था, गुण या भाव। सुजनता। भलमनसत।

सौजन्यता—स्त्री०=सौजन्य। (असिद्ध रूप)

सौजा†—पुं०=सावज (शिकार का जानवर)।

सौजात—पुं० [सं०] सुजात के वंश में उत्पन्न व्यक्ति।
वि० सुजात संबंधी। सुजात का।

सौड़†—पुं०=सौड़ (चादर)।

सौत—स्त्री० [सं० सपत्नी] किसी स्त्री की दृष्टि से उसके पति या प्रेमी की दूसरी पत्नी या प्रेमिका। सपत्नी।

पद—सौतिया डाह। (दे०)

वि० [सं०] १. सूत से संबंध रखनेवाला। सूत का। २. सूत से बना हुआ। सूती।

सौतन†—स्त्री०=सौत।

सौतापा—पुं० [हिं० सौत+आपा (प्रत्य०)] १. सौत होने की अवस्था या भाव। सौतपन। २. सौतों में होनेवाली पारस्परिक ईर्ष्या या डाह। सौतिया डाह।

सौति—पुं० [सं०] सूत के अपत्य, कर्ण।

†स्त्री० =सौत (सपत्नी)।

सौतिन†—स्त्री०=सौत।

सौतिया—वि० [हिं० सौत+इया (प्रत्य०)] सौत सम्बन्धी। सौत का।

पद--सौतिया डाह।

सौतियाडाह--स्त्री० [हिं०] सौतों में होनेवाली पारस्परिक ईर्ष्या या डाह।

सौतुक (तुख)†—पुं० =सौंतुख।

सौतेला—वि० [हिं० सौत+एला (प्रत्य०)] [स्त्री० सौतेली भाव० सौतेलापन] १. सौत से उत्पन्न। सौत का। जैसे—सौतेला लड़का। २. जो सौत के संबंध के विचार से नाते या रिश्ते में किसी स्थान पर पड़ता हो। जैसे—सौतेला भाई; अर्थात् माँ की सौत का लड़का। सौतेली माँ अर्थात् किसी की माँ की सौत।

सौत्य—पुं० [सं०] सूत या सारथि का काम।

वि० १. सूत या सारथी से संबंध रखनेवाला। २. सुत्य अर्थात् सोम के अभिषेक से संबंध रखनेवाला।

सौत्र—वि० [सं०] १. सूत-संबंधी। सूत का। २. सूत्र-संबंधी। सूत्रों का या सूत्रों के रूप में लिखा हुआ।

पुं० ब्राह्मण।

सौत्रांतिक--पुं० [सं०] बौद्धों का एक भेद।

सौत्रामण--वि० [सं०] [स्त्री० सौत्रामणी] इन्द्र-संबंधी। इन्द्र का।

पुं० एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

सौत्रामणिक—वि० [सं०] सौत्रामणी से संबंध रखनेवाला।

सौत्रामणी—स्त्री० [सं०] इन्द्र के प्रीत्यर्थं किया जानेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

पुं० पूर्व।

सौत्रिक—वि० [सं०] १. सूत्रों से संबंध रखनेवाला। २. सूत से बना या बुना हुआ। सूती।

पुं० १. वह जो कते हुए सूत बेचने का व्यापार करता हो। २. जुलाहा। ३. सूतों से बुना हुआ कपड़ा या और कोई चीज।

सौदंति—वि० [सं०] सुदंत सम्बन्धी।

पुं० सुदंत के अपत्य या वंशज।

सौदंतेय—पुं० [सं०] = सौदंति।

सौदक्ष—वि० [सं०] १. सुदक्ष-संबंधी। सुदक्ष का। २. सुदक्ष से उत्पन्न।

सौदक्षेय—पुं० [सं०] सुदक्ष के अपत्य या वंशज।

सौदत्त—वि० [सं०] १. सुदत्त-संबंधी। सुदत्त का। २. सुदत्त से उत्पन्न।

सौदर्य--वि० [सं०] १. जो एक ही उदर से उत्पन्न हुए हों। सहोदर। २. सहोदरों का। ३. सहोदरों-जैसा।

पुं० भाई-चारा। भ्रातृत्व।

सौदा—पुं० [अ०] १. खरीदने और बेचने की चीज। क्रय-विक्रय की वस्तु। माल।

यौ०--सौदा-सुल्फ (सुलुफ)=खरीदने की चीजें या वस्तुएँ। कई तरह की चीजें। **सौदा सूत**=सौदा-सुलुफ।

२. खरीदने-बेचने या लेन-देन की बात-चीत या व्यवहार। ३. ऐसा व्यवहार जिसमें किसी का कोई काम या हित करके उसके बदले में उससे अपना कोई काम या हित कराया जाता हो।

मुहा०--सौदा करना या पटाना=बात-चीत करके लेन-देन, आदान-प्रदान आदि का कोई व्यापार या व्यवहार पक्का या स्थिर करना।

४. खरीदने या बेचने की बात-चीत पक्की करना। (बार्गेन, उक्त सभी अर्थों में) जैसे—उन्होंने पचास गाँठ का सौदा किया।

पद--सौदागर। (देखें)

५. काट-छाँट कर साफ किये हुए वे पान जो ढोली में सड़ गये हों। (तंबोली)। ६. यूनानी चिकित्सा-पद्धति में माने हुए शरीर के चार दूषित तत्वों में से एक जिसका रंग काला कहा गया है। ७. उन्माद या पागलपन नामक रोग जो उक्त दूषित तत्व के प्रकोप से उत्पन्न माना गया है।

सौदाई—पुं० [अ० सौदा+ई (प्रत्य०)] जिसे सौदा या पागलपन हुआ हो। पागल। बावला।

मुहा०--(किसी का) सौदाई होना=(किसी के प्रेम में) पागल-सा हो जाना।

सौदाकारी—स्त्री० [अ०+फा०] १. सौदा खरीदने या बेचने अथवा उसके निश्चय करने के संबंध में होनेवाली बातचीत। (बार्गेनिंग) २. दे० 'सौदेबाजी'।

सौदागर—पुं० [फा०] [भाव० सौदागरी] रोजगारी। चीजें खरीदने और बेचने का व्यापार करनेवाला। व्यापारी।

सौदागर-बच्चा—पुं० [फा० सौदागर+हिं० बच्चा] ऐसा पुत्र या वंशज जो स्वयं भी सौदागरी करता हो। पुश्तैनी सौदागर।

सौदागरी—स्त्री० [फा०] सौदागर का काम, पद या भाव। व्यापार। व्यवसाय। रोजगार।

सौदामनी—स्त्री० [सं०] १. बिजली। विद्युत्। २. विशेषतः माला के आकार की विद्युत् या बिजली। ३. संगीत में एक प्रकार की रागिनी जो मेघ राग की सहचरी कही गई है।

सौदामनीय—वि० [सं०] १. सौदामनी या विद्युत् से संबंध रखनेवाला। २. सौदामनी या विद्युत्-सा।

सौदामिनी†—स्त्री०=सौदामनी।

सौदामिनीय—वि० [पं०]=सौदामनी संबंधी।

सौदामेय--पुं० [सं०] सुदामा के अपत्य या वंशज।

सौदाम्नी†--स्त्री०=सौदामनी।

सौदायिक--पुं० [सं० सुदाय+ठक्—इक] १. विवाह के समय वधू को उसके माता-पिता तथा संबंधियों के द्वारा मिलनेवाला धन। २. इस अवसर पर वधू को दिया जानेवाला उपहार।

सौदेबाजी—स्त्री० [अ० सौदा+फा० बाज़ी (प्रत्य०)] (खूब समझ-बूझकर या अड़कर अथवा अपने लाभ का पूरा ध्यान रखकर किसी ठहराव, लेनदेन या व्यवहार के संबंध में की जानेवाली बात-चीत। (बारगेनिंग)

सौदेव—पुं० [सं०] सुदेव के पुत्र, दिवोदास।

सौद्युम्नि—पुं० [सं०] सुद्युम्न के वंशज।

सौध—वि० [सं०] १. सुधा से बना हुआ। २. सफेदी या पलस्तर किया हुआ।

पुं० १. वह ऊँचा और बड़ा पक्का मकान जिस पर चूना पुता हुआ हो। २. प्रासाद। महल। ३. प्राचीन भारत में धवलगृह का वह ऊपरी भाग (वासभवन से भिन्न) जो केवल रानियों के उठने-बैठने के लिए रक्षित रहता था। ४. चाँदी। रजत। ५. दूधिया पत्थर। दुग्धपाषाण।

सौधकार—पुं०[सं०] सौध अर्थात् प्रासाद या भवन बनानेवाला कारीगर। राज। मेमार।

सौधना†—स०=सोधना।

सौधन्य—वि० [सं०] १. सुधन-संबंधी। २. सुधन से उत्पन्न।

सौधन्वा (न्वन्)—पुं० [सं०] १. सुधन्वा के पुत्र, ऋभु। २. एक प्राचीन वर्ण-संकर जाति।

सौधर्म—पुं० [सं०] १. 'सुधर्म' का गुण या भाव। २. सुधर्म का पालन। ३. सुजनता। साधुता। ४. जैनों के अनुसार देवताओं का निवास-स्थान। कल्प-भवन।

सौधर्मज—पुं० [सं०] सौधर्म में उत्पन्न एक प्रकार के देवता। (जैन)

वि० सौधर्म में उत्पन्न।

सौधर्म्य—पुं० [सं०] १. सुधर्म का गुण या भाव। २. भलमनसत। सज्जनता। ३. ईमानदारी।

सौधाकर—वि० [सं०] सुधाकर या चन्द्रमा-संबंधी। चान्द्र।

सौधात—पुं० [सं०] ब्राह्मण और भृज्जकंठी से उत्पन्न संतान।

सौधातिक—पुं० [सं०] सुधाता के वंशज।

सौधार—पुं० [सं०] नाट्य-शास्त्र के अनुसार नाटक के चौदह भागों में से एक।

सौधावति—पुं० [सं०] सुधावति के अपत्य।

सौधृतेय—पुं० [सं०] सुधृति के वंशज।

सौनंद—पुं० [सं०] बलराम के मूसल का नाम।

सौनंदी (दिन्)—पुं० [सं०] सौनंदधारी बलराम।

सौन—वि० [सं०] १. सून या सूना से संबंध रखनेवाला। २. पशु-पक्षियों के वध या हत्या से संबंध रखनेवाला।

पुं० १. कसाई। बूचड़। २. बिल्ली के लिए रखा हुआ ताजा मांस।

†अव्य० [सं० सम्मुख] प्रत्यक्ष। सामने।

सौनक—पुं०=शौनक (ऋषि)।

सौनन†—स्त्री०=सौंदन।

सौनना—स०=सौंदना।

सौनहोत्र—पुं०=शौनहोत्र।

सौना†—पुं०=सोना।

†पुं०=सौंदन।

सौनाग—पुं० [सं०] वैयाकरणों की एक शाखा, जिसका उल्लेख पतंजलि के महाभाष्य में है।

सौनामि—पुं० [सं०] वह जो सुनाम के गोत्र में उत्पन्न हुआ हो।

सौनिक—पुं० [सं०] १. मांस बेचनेवाला। कसाई। वैतंसिक। मांसिक। २. बहेलिया। व्याध।

सौनीतेय—पुं० [सं०] सुनीति के पुत्र, ध्रुव।

सौपर्ण—पुं० [सं०] १. पन्ना। मरकत। २. सोंठ। ३. ऋग्वेद का एक सूक्त। ४. गरुड़ के अस्त्र का नाम। ५. गरुड़ पुराण का एक नाम।

वि० सुपर्ण संबंधी। सुपर्ण का।

सौपर्णेय—पुं० [सं०] सुपर्णी के पुत्र, गरुड़।

सौपर्ण्य—पुं० [सं०] सुपर्ण पक्षी (बाज या चील) का स्वभाव या धर्म।

वि० सौपर्ण।

सौपर्व—वि० [सं०] सुपर्व-संबंधी। सुपर्व का।

सौपाक—पुं० [सं०] एक प्राचीन वर्ण-संकर जाति।

सौपिक—वि० [सं०] १. सूप या व्यंजन से संबंध रखनेवाला। २. जिसमें सूप या शोरबा मिला या लगा हो। शोरबेदार।

सौपिष्ट—पुं० [सं०] वह जो सुपिष्ट के गोत्र में उत्पन्न हुआ हो।

सौपुष्पि—पुं० [सं०] वह जो सुपुष्प के गोत्र में उत्पन्न हुआ हो। सुपुष्प का गोत्रज।

सौप्तिक—वि० [सं० सुप्त+ठक्–इक] सुप्ति या नींद-संबंधी।

पुं० १. रात के समय किया जानेवाला आक्रमण। २. सोते हुए व्यक्ति पर किया जानेवाला आक्रमण।

सौप्रजास्त्व—पुं० [सं०] अच्छी संतानों का होना। अच्छी औलाद होना।

सौप्रतीक—वि० [सं०] १. सुप्रतीक दिग्गज संबंधी। २. हाथी से संबंध रखनेवाला। हाथी का।

सौबल—पुं० [सं०] गांधार देश के राजा सुबल का पुत्र, शकुनि।

वि० सुबल संबंधी। सुबल का।

सौबलक—पुं० [सं०] =सौबल (शकुनि)।

सौबली—स्त्री० [सं०] सुबल की पुत्री, गांधारी (धृतराष्ट्र की पत्नी)।

सौबलेय—पुं० [सं०]=सौबल (शकुनि)।

सौबिगा—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की बुलबुल जो ऋतु के अनुसार रंग बदलती है।

सौबीर†—पुं०=सौवीर।

सौभ—पुं०[सं०] १. राजा हरिश्चन्द्र की उस कल्पित नगरी का नाम जो आकाश में मानी गई है। कामचारिपुर। (महाभारत) २. प्राचीन भारत में, शाल्वों का एक नगर या जनपद।

सौभकि—पुं०[सं०] द्रुपद का एक नाम।

सौभग—पुं०[सं०]१. सुभग होने की अवस्था, धर्म या भाव। सौभाग्य। खुशकिस्मती। २. सुख। ३. धन-संपत्ति। ४. सुन्दरता।

वि० सुभग सम्बन्धी। सुभग का।

सौभद्र—वि०[सं०] सुभद्रा-संबंधी।

पुं०१. सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु। २. वह युद्ध जो सुभद्राहरण के समय हुआ था। ३. एक प्राचीन तीर्थ।

सौभद्रेय—पुं०[सं०]१. सुभद्रा के पुत्र, अभिमन्यु। २. बहेड़ा।

सौभर—पुं०[सं०] एक वैदिक ऋषि।

सौभरायण—पुं०[सं०] वह जो सौभर के गोत्र में उत्पन्न हुआ हो। सौभर का गोत्रज।

सौभरि—पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि, जो बड़े तपस्वी थे। (भागवत)

सौभागिनी—स्त्री०]सं० सौभाग्य] सधवा स्त्री। सुहागिन।

सौभागिनेय—पुं०[सं०] प्रिय पत्नी का पुत्र।

सौभाग्य—पुं०[सं०]१. अच्छा भाग्य। उत्तम प्रारब्ध। अच्छी किस्मत। २. यथेष्ट सुख। ३. कल्याण। मंगल। ४. स्त्रियों के पक्ष में वह अवस्था, जिसमें उनका पति जीवित और वर्तमान रहता है। अहिवात। सुहाग। ५. सिन्दूर जो सौभाग्यवती स्त्रियों का मुख्य चिह्न है। ६. अनुराग। प्रेम। ७. धन-संपत्ति। ८. सुंदरता। ९. शुभ-कामना। मंगल-कामना। १०. सफलता। ११. एक प्रकार का व्रत जो सब तरह से सुखी रहने के लिए किया जाता है। १२. ज्योतिष में, विष्कंभ आदि सताइस योगों में से चौथा योग जो बहुत शुभ माना जाता है। १३. एक प्रकार का पौधा। १४. सुहागा।

सौभाग्य तृतीया—स्त्री०[सं०] भाद्र शुक्ल पक्ष की तृतीया जो स्त्रियों के लिए बहुत पवित्र मानी गई है। हरितालिका तीज।

सौभाग्यवती—स्त्री०[सं०] १. (स्त्री) जिसका सौभाग्य या सुहाग बना हो। जिसका पति जीवित और वर्तमान हो। सधवा। सुहागिन। २. अच्छे भाग्यवाली।

सौभाग्यवान् (वत्)—वि०[सं०] [स्त्री० सौभाग्यवती]१. जिसका भाग्य अच्छा हो। अच्छे भाग्यवाला। खुशकिस्मत। खुशनसीब। २. सब प्रकार से सुखी और सम्पन्न।

सौभाग्य-व्रत—पुं०]सं०] फागुन शुक्ल तृतीया को किया जानेवाला एक व्रत।

सौभासिक—वि०[सं०] चमकीला। प्रकाशमान्।

सौभिक—पुं०[सं०] जादूगर। इन्द्रजालिक।

सौभिक्ष—वि०[सं०] सुभिक्ष या सुसमय लानेवाला।

पुं० घोड़ों को होनेवाला एक प्रकार का शूल रोग।

सौभिक्ष्य—पुं०[सं०] =सुभिक्ष।

सौभूत—पुं०[सं०] एक प्राचीन स्थान जो संभवतः केकय देश में था।

सौभेय—पुं०[सं०] सौभ जनपद या नगर का निवासी।

सौभेषज—वि०[सं०] जिसमें सुभेषज या उत्तम ओषधियाँ हों। उत्तम औषधियों से युक्त।

सौभ्रात्र—पुं०[सं०] अच्छा भाई-चारा। सुभ्रातृत्व।

सौमंगल्य—पुं० [सं०] १. सुमंगल। कल्याण। २. मांगलिक द्रव्य या सामग्री।

सौमंत्रिण—पुं०[सं०] वह जिसके अच्छा मंत्री हो।

सौम—वि०[सं०] १. सोमलता-संबंधी। २. सोम अर्थात् चन्द्रमा सम्बन्धी।

†वि० =सौम्य।

सौमन—पुं०[सं०]१. एक प्रकार का अस्त्र (रामायण)। २. सुमन। फूल।

सौमनस—वि०[सं०]१. सुमन या फूल संबंधी। २. फूलों का बना हुआ। ३. फूल के जैसा सुन्दर और कोमल।

पुं०१. आनन्द। प्रसन्नता। २. अनुग्रह। कृपा। ३. पश्चिम दिशा के दिग्गज। ४. कर्म मास या सावन की आठवीं तिथि। ५. अस्त्रों को निष्फल करने का एक संहारक अस्त्र। ६. जायफल।

सौमनस्य—वि० [सं०] आनन्द देनेवाला। प्रसन्न करनेवाला।

पुं०१. प्रसन्नचित्तता। प्रसन्नता। आनंद। २. आपस में होनेवाला सद्भाव। ३. किसी विषय की सुबोधता। ४. श्राद्ध में पुरोहित या ब्राह्मण के हाथ में फूल देना। (भागवत)

सौमायन—पुं०[सं०] (सोम अर्थात् चन्द्रमा के पुत्र) बुध।

सौमिक—वि०[सं०]१. सोमरस से किया जानेवाला (यज्ञ)। २. सोम यज्ञ संबंधी। ३. चन्द्रमा संबंधी। (ल्यूनर) जैसे—सौमिक ग्रहण।

पुं०१. चान्द्रायण व्रत करनेवाला। २. सोम रखने का पात्र।

सौमिकी—स्त्री०[सं०] १. यज्ञ के समय सोम का रस निचोड़ने की क्रिया। २. एक प्रकार का यज्ञ जिसे दीक्षणीयेष्टि भी कहते हैं।

सौमित्तिका—स्त्री०[सं०]१. पालकी, रथ आदि के ऊपर उन्हें ढकने के लिए डाला जानेवाला कपड़ा। ओहार। २. घोड़े, हाथी आदि की पीठ पर डाला जानेवाला कपड़ा। झूल।

सौमित्र—वि० [सं०] सुमित्रा-सम्बन्धी। सुमित्रा का।

पुं०१. सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण। २. दोस्ती। मित्रता।

सौमित्रा—स्त्री०=सुमित्रा।

सौमित्रि—पुं०[सं०] [वि० सौमित्रीय] सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण।

सौमित्रीय—वि० [सं०] लक्ष्मण संबंधी।

सौमिलिक—पुं०[सं०] बौद्ध भिक्षुओं का एक प्रकार का दंड जिसमें रेशम का गुच्छा लगा रहता है।

सौमी—स्त्री०=सौम्यी (चाँदनी)।

सौमुख्य—पुं०[सं०] १. सुमुखता। चित्त की प्रसन्न अवस्था। २. प्रसन्नता।

सौमेंद्र—वि०[सं०] सोम और इन्द्र का। सोम और इन्द्र-सम्बन्धी।

सौमेधिक—वि०[सं०]१. सुमेधा से युक्त। २. दिव्य ज्ञान-सम्पन्न। जिसे दिव्य ज्ञान हो।

पुं० सिद्ध पुरुष।

सौमेरु—वि०[सं०] सुमेरु संबंधी। सुमेरु का।

सौमेरुक—वि०, पुं० [सं०] सोना। सुवर्ण।

वि० =सौमेरु।

सौम्य—वि०[सं० सोम+ष्यञ्] [स्त्री० सौम्या]१. सोम संबंधी। २. चन्द्रमा संबंधी। ३. सोमलता संबंधी। ४. सोम नामक देवता से संबंध रखनेवाला। ५. शीतल और स्निग्ध। ६. कोमल ठंढा और रसीला। ७. कोमल, नम्र तथा शांत प्रकृतिवाला। ८. उत्तर दिशा का। ९. मांगलिक। शुभ। १०. प्रसन्न। ११. मनोहर। सुन्दर। १२. उज्ज्वल। चमकीला। प्रकाशमान्।

पुं० १. सोमयज्ञ। २. चन्द्रमा के पुत्र, बुध। ३. ब्राह्मण। ४. ब्राह्मणों के पितरों का एक वर्ग। ५. एक प्रकार का कृच्छ्र व्रत। ६. पुराणानुसार एक द्वीप। ७. एक प्रकार का दिव्यास्त्र। ८. साठ संवत्सरों में से एक। ९. मृगशिरा नक्षत्र। १०. मार्गशीर्ष मास। अगहन। ११. फलित ज्योतिष में वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन राशियाँ जो सौम्य प्रकृतिवाली मानी गई हैं। १२. पुराणानुसार सातवें युग

की संज्ञा। १३. आयुर्वेद में लाल होने से पहले की रक्त की अवस्था या रूप। १४. आधुनिक विज्ञान में, रक्त का वह अंश या तत्त्व जिसके फलस्वरूप जीव-जंतु कुछ विशिष्ट रोगों से रक्षित रहते हैं। लस। (सीरम) दे० 'सौम्य-विज्ञान'। १५. पित्त। १६. बायाँ हाथ। १७. बाईं आँख। १८. हथेली का मध्य भाग। १९. सज्जनता और सुशीलता। २०. गूलर।

सौम्य-कृच्छ्र—पुं०[सं०] एक प्रकार का व्रत जिसमें पाँच दिन क्रम से खली (पिण्याक) भात, मट्ठे, जल और सत्तू पर रहकर छठे दिन उपवास करना पड़ता है।

सौम्यगंधा—स्त्री०[सं०] सेवती।

सौम्य-गोल—पुं०[सं०] उत्तरी गोलार्द्ध।

सौम्य-ग्रह—पुं०[सं० मध्य० स०] चंद्र, बुध, बृहस्पति और शुक्र ग्रहों में से हर एक।

विशेष—फलित ज्योतिष में इनकी गिनती शुभ ग्रहों में होती है।

सौम्य-ज्वर—पुं०[सं०] एक प्रकार का ज्वर जिसमें कभी शरीर गरम हो जाता है और कभी ठंढा। (वैद्यक)

सौम्यता—स्त्री०[सं०]१, सौम्य होने की अवस्था, गुण या भाव। २. सुशीलता। ३. सुन्दरता। ४. शीतलता।

सौम्यत्व—पुं०=सौम्यता।

सौम्य-दर्शन—वि० [सं०] जो देखने में सुन्दर हो। प्रिय-दर्शन।

सौम्यवार—पुं०[सं०] बुधवार।

सौम्य-विज्ञान—पुं० [सं०] वह विज्ञान जिसमें औषध के काम के लिए जीवों के रक्त से सौम्य बनाने का विवेचन होता है।

विशेष—अनेक जीव-जन्तुओं के रक्त में कुछ ऐसे तत्त्व होते हैं, जो उन्हें कुछ विशिष्ट रोगों से रक्षित रखते हैं। जैसे—बकरी के रक्त में क्षय रोग से और कबूतर के रक्त में पक्षाघात आदि से रक्षित रखनेवाले कुछ विशिष्ट तत्त्व होते हैं जो 'सौम्य' कहलाते हैं। सौम्यविज्ञान इसी प्रकार के तत्त्वों की परीक्षा करके और उसके रूप में उन्हें निकालकर क्षीण प्राणियों के शरीर में इसलिए प्रविष्ट करते हैं कि वे उन रोगों से रक्षित रहें।

सौम्य-शिखा—स्त्री० [सं०] छन्द-शास्त्र में मुक्तक विषम वृत्त के दो भेदों में से एक जिसके पूर्व दल में १६ गुरु वर्ण और उत्तर दल में ३२ लघु वर्ण होते हैं।

सौम्या—स्त्री०[सं०]१. दुर्गा का एक नाम। २. मृगशिरा नक्षत्र। ३. मोती। ४. आर्या छन्द का एक भेद। ५. ब्राह्मी। ६. बड़ी इन्द्रायन। ७. रुद्रजटा। ८. बड़ी मालकंगनी। ९. पाताल गारुड़ी। १०. घुँघुची। ११. कचूर। १२. मोतिया। १३. शालिपर्णी। सरिवन।

सौम्यी—स्त्री०[सं०] चाँदनी। चन्द्रिका।

सौर—वि०[सं० सूर या√सृ (गत्यादि)+अण्] १. सूर्य संबंधी। सूर्य का। २. सूर्य से उत्पन्न। ३. जिसकी गणना सूर्य के परिभ्रमण के आधार पर होती हो। जैसे—सौर मास, सौर-वर्ष। ४. सूर्य के प्रभाव से होनेवाला। (सोलर) ५. सुर या देवता से संबंध रखनेवाला। ६. सुरा या मद्य से संबंध रखनेवाला। जैसे—सौर ऋण अर्थात् वह ऋण जो सुरा या मद्य पीने के लिए दिया जाता था।

पुं०१. सूर्य का उपासक या भक्त। २. शनि ग्रह जो सूर्य का पुत्र माना गया है। ३. पुराणानुसार बीसवें कल्प का नाम। ४. तुंबरु। ५. धनियाँ। ६. दाहिनी आँख। ७. यम।

स्त्री०[सं० शाट, हिं० सौंड] चादर। ओढ़ना। उदा०—कुस साँथरि भई सौर सुपेता।—जायसी।

†स्त्री०=सौरी (मछली)।

पुं०[अ०]१. बैल या साँड़। २. वृष राशि।

सौरज—पुं०[सं०]१. तुंबुरू। तुंबरू। २. धनियाँ।

पुं०=शौर्य (शूरता)।

सौर-जगत्—पुं० [सं०] हमारे सूर्य और उसकी परिक्रमा करनेवाले नौ ग्रहों, अट्ठाइस उपग्रहों आदि का वर्ग या समूह जो आकाशचारी पिंडों में स्वतन्त्र ईकाई के रूप में है। (सोलर सिस्टम)

सौरण—वि०[सं०] सूरन-संबंधी।

सौरत—वि०[सुरत+अण्]१. सुरति से संबंध रखनेवाला। २. सुरति के परिणामस्वरूप होनेवाला।

पुं०१. रति-क्रीड़ा। सुरति। २. रति-सुख।

सौरत्य—पुं०[सं०] सुरति। रति-क्रीड़ा।

सौरथ—पुं०[सं०]१. नायक। २. योद्धा।

सौर-दिन—पुं०[सं०] एक सूर्योदय के आरम्भ से दूसरे सूर्योदय के पूर्व तक का समय, जो पूरे एक दिन के रूप में माना जाता है। इसी को सावन दिन भी कहते हैं।

सौरध्री—स्त्री०[सं०] एक प्रकार का तंबूरा या सितार।

सौरपत—पुं०[सं०] सूर्योपासक। सूर्य-पूजक।

सौर-परिकर, सौर-परिवार—पुं० दे० 'सौर जगत'।

सौरभ—वि०[सं०] १. सुरभि-संबंधी। सुगंधित। २. सुरभि (गाय) संबंधी अथवा उससे उत्पन्न।

पुं०१. सुरभि का भाव या धर्म। सुगंध। खुशबू। महक। २. केसर। ३. तुंबरू। ४. धनियाँ। ५. बोल नामक गन्ध-द्रव्य। ६. आम।

सौरभक—पुं०[सं०]एक प्रकार का वर्ण-वृत्त, जिसके पहले चरण में, सगण, जगण, सगण और लघु; दूसरे में नगण, सगण, जगण और गुरु, तीसरे में रगण, नगण, भगण और गुरु तथा चौथे में सगण, जगण, सगण, जगण और गुरु होता है।

सौरभित—भू० कृ०[सं० सौरभ] सौरभ से युक्त। सुगंधित।

सौरभी—स्त्री० [सं०] १. सुरभि नाम की गाय की पुत्री। २. गाय। गौ।

सौरभीला*—वि० [सं० सौरभ+ईला (प्रत्य०)] १. सौरभ या सुगंधि से युक्त। २. सब प्रकार से सुन्दर और सुखद। उदा०—उनका पूरा सदन उसने सौरभीला बनाया।—हरिऔध।

सौरभेय—वि०[सं०] सुरभि-संबंधी। सुरभि का।

पुं० सुरभि का पुत्र अर्थात् वृष या साँड़।

सौरभेयक—पुं०[सं०] साँड़। वृष।

सौरभेयी—स्त्री०[सं०] गाय। गौ।

सौरभ्य—पुं० [सं०] १. सुरभि का गुण या भाव। सुरभिता। २. सुगंध। खुशबू। ३. सुन्दरता। ४. कीर्ति। यश। ५. कुबेर का एक नाम।

सौर-मंडल—पुं०=सौर-जगत्।

सौर मास—पुं० [सं०] एक सूर्य-संक्रान्ति से दूसरी सूर्य-संक्रान्ति तक का सारा समय जो लगभग ३० या ३१ दिनों का होता है।

विशेष—सौर गणना के अनुसार कार्तिक, माघ, फागुन और चैत ३०-३० दिनों के, मार्ग-शीर्ष और पौष २९-२९ दिनों के, आषाढ़ ३२ दिनों का और शेष सब मास ३१-३१ दिनों के होते हैं।

सौर-वर्ष—पुं० [सं०] उतना काल जितना सूर्य को मेष, वृष आदि बारह राशियों में भ्रमण करने में लगता है। एक मेष संक्रान्ति से दूसरी मेष संक्रान्ति तक का समय। (सोलर इयर)

सौरस—पुं० [सं०] १. सुरसा का अपत्य या पुत्र। २. जूं नाम का कीड़ा। ३. तरकारी आदि का नमकीन रस या शोरबा।

वि० सुरसा-संबंधी। सुरसा का।

सौर-सावन याम—पुं० दे० 'सावन मास' के अन्तर्गत।

सौरसेन†—पुं० =शूरसेन।

†पुं० [सं० शौरसेन] आधुनिक ब्रज-मंडल। शौरसेन।

सौरसेय—पुं० [सं०] कार्त्तिकेय या स्कंद का एक नाम।

सौरसैंधव—वि० [सं०] १. गंगा का। गंगा-संबंधी। २. गंगा से उत्पन्न

पुं० १ भीष्म जो गंगा से उत्पन्न हुए थे। २. सूर्य का घोड़ा।

सौरस्य—पुं० [सं०] सुरस अर्थात् रसपूर्ण तथा स्वादिष्ट होने की अवस्था या भाव।

सौराज्य—पुं० [सं०] १. अच्छा राज्य। सुराज्य। २. अच्छा शासन।

सौराटी—स्त्री० [सं०] संगीत में एक प्रकार की रागिनी।

सौराष्ट्र—पुं० [सं०] [वि० सौराष्ट्रिक] १. गुजरात-काठियावाड़ का प्राचीन नाम। सूरत के आस-पास का प्रदेश। सोरठ देश। २. उक्त देश का निवासी। ३. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त। ४. संगीत में सोरठ नाम का राग। ५. काँसा नामक धातु। ६. कुंदरू नामक गंध-द्रव्य।

वि० सोरठ या सौराष्ट्र देश का।

सौराष्ट्रक—पुं० [सं०] १. सौराष्ट्र या सोरठ प्रदेश का रहनेवाला। २. एक प्रकार का विष। ३. पंच लौह।

वि० =सौराष्ट्रिक।

सौराष्ट्र-मृत्तिका—स्त्री० [सं०] गोपीचंदन।

सौराष्ट्रिक—वि० [सं०] १. सौराष्ट्र संबंधी। २. सौराष्ट्र में होनेवाला।

पुं० सौराष्ट्र का निवासी।

सौराष्ट्री—स्त्री० [सं०] १. गोपीचंदन। २. सौराष्ट्र की भाषा।

सौराष्ट्रेय—वि० [सं०] सोरठ प्रदेश का। गुजरात-काठियावाड़ का।

सौरास्त्र—पुं० [सं०] एक प्रकार का दिव्यास्त्र।

सौरिंध्र—पुं० [सं०] [स्त्री० सौरिंध्री] १. ईशान कोण में स्थित एक जनपद। (बृहत्संहिता) २. उक्त जनपद का निवासी।

सौरि—पुं० [सं०] १. सूर्य के पुत्र, शनि। २. असन या विजैसार नामक वृक्ष। ३. दक्षिण भारत का एक प्राचीन जनपद।

†पुं० =शौरि।

सौरिक—पुं० [सं०] १. शनैश्चर ग्रह। २. स्वर्ग। ३. वह ऋण जो सुरा या शराब पीने के लिए लिया गया हो।

वि० १. सुर अर्थात् देवता-संबंधी। २. सुरा-संबंधी। ३. स्वर्ग का। स्वर्गीय।

सौरिरत्न—पुं० [सं०] नीलम नामक मणि।

सौरी—स्त्री० [सं० सूति-गृह] वह कोठरी, जिसमें स्त्री बच्चा प्रसव करती है। सूतिकागार। जच्चाखाना। (लेबर रूम)

मुहा०—**सौरी कमाना**=नाइन चमारी आदि का सौरी में जाकर प्रसूता की सेवा-सुश्रूषा करना।

स्त्री० [सं०] १. सूर्य की पत्नी। २. गाय।

†स्त्री० =शफरी (मछली।

सौरीय—वि० [सं०] सूर्य-संबंधी। सूर्य का। सौर।

पुं० १. एक प्रकार का वृक्ष जिसमें से विषैला गोंद निकलता है। २. उक्त वृक्ष का विष।

सौरेयक—पुं० [सं०] सफेद कटसरैया। श्वेत झिंटी।

सौर्य—वि० [सं०] १. सूर्य-संबंधी। सूर्य का। २. सूर्य से उत्पन्न होनेवाला।

पुं० १. सूर्य का पुत्र, शनिदेव। २. साठ संवत्सरों में से एक। ३. हिमालय की एक चोटी का नाम।

सौर्य-याम—वि० [सं०] सूर्य और यज्ञ संबंधी। सूर्य और यम का।

सौर्योदयिक—वि० [सं०] सूर्योदय-संबंधी।

सौलंकी—पुं० =सोलंकी (राजवंश)।

सौल—पुं० [सं० शकुल] एक प्रकार की बड़ी मछली जिसका सिर साँप के सिर की तरह का होता है।

†पुं० =साहुल।

सौलक्षण्य—पुं० [सं०] शुभ या अच्छे लक्षणों का होना। सुलक्षणता। सुलक्षणों से युक्त होने की अवस्था, गुण या भाव। सुलक्षणता।

सौलभ्य—पुं० [सं०] सुलभता।

सौली†—स्त्री० =सौल (मछली)।

सौल्विक—पुं० [सं०] धातु के बरतन आदि बनानेवाला अर्थात् ठठेरा।

सौव—पुं० [सं०] अनुशासन। आदेश।

वि० १. 'स्व' से सम्बन्ध रखनेवाला। २. निज का। अपना। ३. स्वर्गीय।

सौवर—वि० [सं०] स्वर-संबंधी।

सौवर्चल—वि० [सं०] सुवर्चल प्रदेश-संबंधी। सुवर्चल का।

पुं० १. सोंचर (नमक)। २. सज्जी।

सौवर्चला—स्त्री० [सं०] रुद्र की पत्नी का नाम।

सौवर्चस—वि० [सं०] =सुवर्चस (दीप्तिमान्)।

सौवर्ण—वि० [सं०] १. स्वर्ण-संबंधी। सोने का। २. सोने का बना हुआ। ३. जो तौल में एक सौवर्ण या कर्ष भर हो।

पुं० १. स्वर्ण। सोना। २. सोना तौलने की एक पुरानी तौल जो एक कर्ष या १६ माशे के बराबर होती थी। ३. सोने की बाली।

सौवर्णिक—वि० [सं०] सुवर्ण-संबंधी।

पुं० सुनार।

सौवर्णिका—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का विषैला कीड़ा। (सुश्रुत)

सौवर्ण्य—पुं० [सं०] १. 'सुवर्ण' होने की अवस्था, गुण या भाव। २. वर्णों का शुद्ध और सुन्दर उच्चारण।

सौवस्तिक—वि० [सं०] स्वस्ति कहने अर्थात् मंगल-कामना करनेवाला।

पुं० कुल-पुरोहित।

सौवाध्यायिक—वि०[सं०] स्वाध्याय-संबंधी।

पुं० स्वाध्यायी।

सौवासिनी—स्त्री०]=सुवासिनी (भद्र स्त्री)।

सौवास्तव—वि०[सं०]१. सुवास्तु अर्थात् भवन निर्माण की कुशलता से युक्त। अच्छी कारीगरी का (मकान)। २. अच्छे स्थान पर बना हुआ (मकान)।

सौविद—पुं०[सं०] अंतःपुर या रनिवास का रक्षक। कंचुकी। सुविद।

सौविदल्ल—पुं०=सौविद।

सौवीर—पुं०[सं०]१. सिंधु नद के आसपास के एक प्राचीन प्रदेश का नाम। २. उक्त प्रदेश का निवासी या राजा। ३. संगीत में कर्णाटकी पद्धति का एक राग। ४. जौ की काँजी और फल। ५. वेर का पेड़। ६. जयद्रथ।

सौवीरक—पुं० [सं०] १. जयद्रथ का एक नाम। २. सौवीर।

सौवीरांजन—पुं० [सं० सौवीर+अंजन] सौवीर प्रदेश में होनेवाला प्रसिद्ध सुरमा।

सौवीरा—स्त्री०=सौवीरी।

सौवीरी—स्त्री० [सं०] १. संगीत में एक प्रकार की मूर्च्छना। २. सौवीर की एक राजकुमारी।

सौवीर्य—पुं० [सं०] १. 'सुवीर' होने की अवस्था, गुण या भाव। पराक्रम। वहादुरी। २. सौवीर का राजा।

वि० वहुत बड़ा वीर।

सौव्रत्य—पुं० [सं०] १. सुव्रत का भाव। २. एक निष्ठा। भक्ति। ३. आज्ञा-पालन।

सौशम्य—पुं० [सं०] सुशमता। सुशांति।

सौशल्य—पुं० [सं०] एक प्राचीन जनपद। (महाभारत)

सौशील्य—पुं० [सं०] सुशीलता।

सौश्रय—पुं० [सं०] ऐश्वर्य। वैभव।

सौश्रवस—पुं० [सं०] १. सुश्रवा के अपत्य, उपगु। २. अच्छी कीर्ति। सुयश।

वि० कीर्तिशाली। यशस्वी।

सौश्रुत—वि० [सं०] १. सुश्रुत-संबंधी। सुश्रुत का। २. सुश्रुत का बनाया या रचा हुआ। ३. सुश्रुत के गोत्र में उत्पन्न।

सौषिर—पुं० [सं०] १. दाँतों तथा मसूड़ों का एक रोग। २. वाद्य-यंत्र जो हवा के जोर से या हवा फूँकने पर बजता हो। जैसे—बाँसुरी आदि।

सौषिर्य—पुं० [सं०]=सुषिरता (पीलापन)।

सौषुम्न—वि० [सं०] सषुम्ना नाड़ी से संबंध रखने या उसमें होनेवाला। (स्पाइनल)

पुं० सूर्य की एक विशिष्ट किरण।

सौष्ठव—पुं० [सं०] १. सुष्ठु होने की अवस्था, गुण या भाव। सुष्ठुता। २. सुन्दरता। ३. तेजी। ४. नृत्य में एक प्रकार की मुद्रा।

सौसन—पुं०=सोसन।

पुं० [फा०] १. फारस देश का एक पौधा जिसमें लाली लिए नीले रंग के फूल लगते हैं। २. उक्त का फूल।

सौसनी—वि० पुं०=सोसनी।

वि० [फा० सौसन] १. सौसन-संबंधी। २. सौसन-जैसा। ३. सौसन के रंग का।

सौस्थित्य—पुं० [सं०] १. अच्छी स्थिति में होने की अवस्था या भाव। २. फलित ज्योतिष में ग्रहों की अच्छी या शुभ स्थिति।

सौस्नातिक—वि० [सं०] यज्ञ के अन्त में यजमान का याज्ञिक से यह प्रश्न कि स्नान सफल हो गया न?

सौस्वर्य—पुं० [सं०] सु-स्वर होने की अवस्था या भाव। सु-स्वरता।

सौहँ—स्त्री० [सं० शपथ, प्रा० सवह] शपथ। कसम।

अव्य० समक्ष। सामने।

सौहन—पुं० [देश०] पैसे का चौथाई भाग। छदाम। टुकड़ा। (सुनार)

†पुं०=सोहन।

सौहर†—पुं० १.=शौहर। २.=सोहर (गीत)।

सौहरा†—पुं० [हिं० सुसर] १. ससुर। श्वसुर। २. ससुराल। (पश्चिम)

सौहाँग†—पुं० [देश०] दो भर का बाट या बटखरा। (सुनार)

सौहार्द—पुं० [सं०] १. सुहृद का भाव। मित्रता। मैत्री। दोस्ती। २. सुहृद् अर्थात् मित्र का पुत्र।

सौहार्द-व्यंजक—पुं० [सं०] मैत्रीभाव को प्रकट करनेवाला।

सौहार्द्य—पुं० [सं०] सौहार्द।

सौहित्य—पुं० [सं०] १. तृप्ति। संतोष। २. पूर्णता। ३. सुन्दरता।

सौहीं—स्त्री० [फा० सोहन] १. एक प्रकार की रेती। २. एक प्रकार का अस्त्र या हथियार।

अव्य०=सौंह (सामने)।

सौहृद—वि० [सं०] सुहृद् या मित्र-संबंधी।

पुं० १. सुहृद्। मित्र। २. एक प्राचीन जनपद।

सौहृद्य—पुं० [सं०] सौहार्द। मित्रता। दोस्ती।

सौहोत्र—पुं० [सं०] सुहोत्र के अपत्य अजमीड और पुरुमीड नामक वैदिक ऋषि।

सौह्म—वि० [सं०] सुह्म देश का।

स्कंद—पुं० [सं०] [वि० स्कंदित] १. निकलना या बाहर आना। २. विनाश। ध्वंस। ३. कार्तिकेय जो देवों के सेनापति और युद्ध के देवता माने जाते हैं। ४. शरीर। देह। ५. तरल पदार्थ का वह रूप जो उसके गाढ़े होकर गाँठ के रूप में जमने पर प्राप्त होता है। (क्लाट) जैसे—रक्त-स्कंद। ६. पारा। ७. शिव। ८. पंडित। विद्वान्। ९. राजा। १०. नदी का तट या किनारा। ११. बालकों के नौ प्राणघातक ग्रहों या रोगों में से एक।

स्कंदक—वि० [सं०] उछलने या उछालने वाला।

पुं० १. सैनिक। सिपाही। २. एक प्रकार का प्राचीन छन्द।

स्कंद-गुप्त—पुं० [सं०] गुप्तवंश के एक प्रतापी तथा प्रसिद्ध सम्राट् जिनका राज्य-काल ई० ४५० से ४६७ तक माना जाता है।

स्कंद-जननी—स्त्री० [सं०] (स्कंद या कार्तिकेय की माता) पार्वती।

स्कंदजित्—पुं० [सं०] (स्कंद को जीतनेवाले) विष्णु।

स्कंदता—स्त्री० [सं०] स्कंद का धर्म या भाव।

स्कंदत्व—पुं०=स्कंदता।

स्कंदन—पुं० [सं०] [भू० कृ० स्कंदित; वि० स्कंदनीय] १. बाहर होना।

निकलना। २. पेट का मल बाहर निकलना। रेचन। ३. सोखना। शोषण। ४. जाग। गम। ५. शरीर के रक्त का जमना।

स्कंद पुराण—पुं० [सं०] अठारह पुराणों में से एक प्रसिद्ध पुराण।

स्कंद-माता—स्त्री० [सं० स्कंदमातृ] (स्कंद की माता) दुर्गा।

स्कन्द-षष्ठी—स्त्री० [सं०] १. चैत सुदी छठ जो कार्त्तिकेय के देव सेनापति पद पर अभिषिक्त होने की तिथि मानी जाती है। २. तांत्रिकों की एक देवी जो स्कंद की पत्नी मानी गई हैं।

स्कंदापस्मार—पुं० [सं०] एक प्रकार का बालग्रह या रोग।

स्कंदापस्मारी (रिन्)—वि० [सं०] जो स्कंदापस्मार से ग्रस्त हो।

स्कंदित—भू० कृ० [सं०] निकला हुआ। गिरा हुआ। झड़ा हुआ। स्खलित। पतित।

स्कंदी—वि० [सं० स्कंदिन्] १. बहने या गिरनेवाला। पतनशील। २. उछलने या कूदने वाला।

स्कंदेश्वर—पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ।

स्कंदोपनिषद्—स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम।

स्कंध—पुं० [सं०] १. मोढ़ा। कंधा। २. वृक्ष के तने का वह ऊपरी भाग जिसमें से डालियाँ निकलती हैं। कांड। (स्टेम) ३. कोई ऐसा मूल और बड़ा अंग जिसके साथ दूसरे छोटे अंग या उपांग लगे हों। (स्टेम) ४. शाखा। डाल। ५. समूह। झुंड। ६. वह स्थान जहाँ विक्रय, उपयोग आदि के लिए बहुत-सी चीजें जमा रहती हैं। भंडार। (स्टाक) ७. ग्रंथ का वह विभाग जिसमें कोई पूरा विषय हो। ८. शरीर। देह। ९. युद्ध। लड़ाई। १०. हिन्दू दर्शन शास्त्र में शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध। ११. बौद्ध दर्शन में रूप, वेदना, विज्ञान, संज्ञा और संस्कार। १२. मार्ग। रास्ता। १४. राज्याभिषेक के समय काम आनेवाली सामग्री। १४. राजा। १५. आचार्य। १६. आपस में होनेवाला करार या संधि। १७. आर्या छन्द का एक भेद। १८. सफेद चील।

स्कंधक—पुं० [सं०] आर्या गीत या स्वधा नामक छंद का एक नाम।

स्कंध-चाप—पुं० [सं०] विहंगिका। बहँगी।

स्कंधज—पुं० [सं०] १. सलई। शल्लकी वृक्ष। २. बड़ का पेड़। वट-वृक्ष।

स्कंध-देश—पुं० [सं०] १. कंधा। २. हाथी के शरीर का वह भाग जिस पर महावत बैठता है। ३. तना।

स्कंध-पंजी—स्त्री० [सं०] वह पंजी या बही जिसमें स्कंध या भंडार में रखी हुई वस्तुओं का विवरण हो। (स्टाक-बुक)

स्कंध-पथ—पुं० [सं०] पगडंडी।

स्कंध-परिनिर्वाण—पुं० [सं०] बौद्धों के अनुसार शरीर के पाँचों स्कंधों का नाश। मृत्यु।

स्कंध-पाल—पुं० [सं०] वह अधिकारी जो किसी स्कंध या भंडार की देख-रेख आदि के लिए नियत हो। (स्टोर-कीपर)

स्कंध-फल—पुं० [सं०] १. नारियल का पेड़। २. गूलर।

स्कंध-बीज—पुं० [सं०] ऐसी वनस्पति या वृक्ष जिसके स्कंध से ही शाखाएँ निकलकर जमीन तक पहुँचती और वृक्ष का रूप धारण करती हों। जैसे—बड़, पाकर आदि।

स्कंध-मणि—पुं० [सं०] एक प्रकार का यंत्र या तावीज।

स्कंध-मार—पुं० [सं०] बौद्धों के चार मारों अर्थात् कामदेवों में से एक।

स्कंधरुह—पुं० [सं०] वट वृक्ष। बड़ का पेड़।

स्कंधवाह—पुं० [सं०] १. वह जो कंधों पर माल ढोता हो। २. ऐसा पशु जो कंधों के बल बोझ खींचता हो। जैसे—बैल, घोड़ा आदि।

स्कंध-वाहक—वि० [सं०] कंधे पर बोझ उठानेवाला। जो कंधे पर रखकर बोझ ढोता हो।

पुं०=स्कंद-वाह।

स्कंधा—स्त्री० [सं०] १. पेड़ की डाल। शाखा। २. लता। बेल।

स्कंधाक्ष—पुं० [सं०] कार्त्तिकेय के अनुसार देवताओं का एक गण।

स्कंधावार—पुं० [सं०] १. प्राचीन भारत में, किसी बड़े राजा की वह सारी छावनी या पड़ाव जिसमें घोड़े, हाथी, सेना, सामंत और छोटे या बाहर से आये हुए राजाओं के शिविर आदि होते थे। २. सेना का पड़ाव। छावनी। ३. सेना। ४. वह स्थान जहाँ पर यात्री, व्यापारी आदि डेरा डाले पड़े हों।

स्कंधी—वि० [सं० स्कंधिन्] कांड से युक्त। तने से युक्त।

पुं० पेड़। वृक्ष।

स्कंधोपनेय—पुं० [सं०] राजाओं में होनेवाली एक प्रकार की संधि जिसमें नियत या निश्चित बातें क्रम-क्रम से और कुछ दिनों में पूरी होती थीं। (कौ०)

स्कंध्य—वि० [सं०] स्कंध-संबंधी। स्कंध का।

स्कंभ—पुं० [सं०] १. खंभा। स्तंभ। २. परमेश्वर जो सारे विश्व को धारण किये हुए हैं।

स्कन्न—वि० [सं०] १. गिरा हुआ। पतित। च्युत। स्खलित। जैसे—स्कन्न-वीर्य। २. गया या बीता हुआ। गत। ३. सूखा हुआ। शुष्क।

स्कब्ध—वि० [सं०] सहारा देकर ठहराया या रोका हुआ।

स्कांद—वि० [सं०] स्कंद-संबंधी। स्कंद का।

पुं०=स्कंद पुराण।

स्कांधी (धिन्)—पुं० [सं०] स्कंध के शिष्य या उनकी शाखा के अनुयायी।

स्काउट—पुं० [अं०] १. चर। भेदिया। २. दे० 'बाल-चर'।

स्कालर—पुं० [अं०] १. वह जो स्कूल में पढ़ता हो। छात्र। विद्यार्थी। २. बहुत बड़ा अध्ययनशील और विद्वान्।

स्कालरशिप—पुं० [अं०] =छात्र-वृत्ति।

स्कीम—स्त्री० [अं०]=योजना।

स्कूल—पुं० [अं०] १. वह विद्यालय जहाँ किसी भाषा, विषय या कला आदि की आरम्भिक या सामान्य शिक्षा दी जाती हो। मदरसा। २. किसी ज्ञान या विज्ञान की कोई विशिष्ट शाखा और उसके अनुयायियों का वर्ग। शाखा।

स्कूली—वि० [अं० स्कूल+हिं० ई (प्रत्य०)] १. स्कूल-संबंधी। स्कूल में होनेवाला। जैसे—स्कूली पढ़ाई। २. स्कूल जानेवाला। जैसे—स्कूली लड़का।

स्क्रू—पुं० [अं०] वह कील या काँटा जिसके नुकीले आधे भाग पर चक्करदार गराड़ियाँ बनी होती हैं और जो ठोंक कर नहीं, बल्कि घुमाकर जड़ा जाता है। पेच।

क्रि० प्र०—कसना।—खोलना।—जड़ना।—लगना।

पद—स्क्रू-होल्डर=पेचकस।

स्खदन—पुं० [सं०] [भू० कृ० स्खदित] १. फाड़ना। चीरना। टुकड़े-टुकड़े करना। विदारण। २. वध। हत्या। ३. कष्ट देना। उत्पीड़न। ४. स्थिरता।

स्खलन—पुं० [सं०] १. अपने स्थान से नीचे आना या गिरना। पतन। २. मार्ग से च्युत या विचलित होना। विशेष दे० 'विचलन'। ३. काम में गलती या भूल करना। ४. वंचित या विफल होना। ५. बोलने में हकलाना। ६. रगड़। संघर्ष।

स्खलित—भू० कृ० वि० [सं०] १. अपने स्थान से गिरा हुआ। च्युत। पतित। २. खिसका या फिसला हुआ। ३. चूका हुआ। ४. डगमगाया हुआ। विचलित।

पुं० प्राचीन भारत में धर्मयुद्ध के नियमों को छोड़कर युद्ध में छल-कपट या घात करना।

स्खलीकरण—पुं० [सं०] १. स्खलित करने की क्रिया या भाव। २. उपेक्षा। लापरवाही।

स्टांप—पुं० [अं०] १. ठप्पा। २. कागजों आदि पर की जानेवाली मोहर। ३. कुछ निश्चित मूल्य का कागज का कोई ऐसा टुकड़ा या कागज जिस पर राजकीय ठप्पा या मोहर छपी हो; और जिसका मूल्य किसी प्रकार के शुल्क के रूप में चुकाया जाता हो। जैसे—डाक का टिकट; अदालतों में अभियोग-पत्र उपस्थित करने का सरकारी कागज आदि।

स्टाक—पुं० [अं०] १. बिक्री करने के लिए संचित करके रखा हुआ माल। २. वह माल जो घर में हो और अभी बिका न हो। जैसे—उसकी दूकान में स्टाक कम है। ३. वह स्थान जहाँ उक्त प्रकार की वस्तुएँ रहती हों। भंडार। ४. वह धन या पूँजी जो व्यापारी लोग या उनका कोई समूह किसी काम में लगाता हो। ५. साझे के काम में लगाई हुई पूँजी।

स्टाफ़—पुं० [अं०] किसी कार्यालय, विभाग या संस्था के कार्यकर्ताओं का वर्ग या समूह। अमला।

स्टाल—पुं० [अं०] १. प्रदर्शिनी, मेले आदि में वह छोटी दूकान जिस पर बेचने के लिए चीजें सजाई रहती हैं। २. छोटी दूकान।

स्टीम—पुं० [अं०] भाप। वाष्प।

मुहा०—**(किसी में) स्टीम भरना**=आवेश, उत्साह आदि से युक्त करना। जोश दिलाना।

स्टीम इंजिन—पुं० [अं०] भाप से चलनेवाला इंजन।

स्टीमर—पुं० [अं०] नदियों में चलनेवाला एक प्रकार का छोटा जहाज जो भाप से चलता है।

स्टूल—पुं० [अं०] एक प्रकार की ऊँची छोटी चौकी।

स्टेज—पुं० [अं०] १. रंग-मंच। २. मंच।

स्टेट—पुं० [अं०] १. राज्य। २. किसी संघ राज्य की कोई इकाई। राज्य। ३. अँगरेजी। शासन में भारतीय देशी रियासत।

पुं० [अं० एस्टेट] १. बड़ी जमींदारी। २. किसी की सारी जंगम और स्थावर संपत्ति। जैसे—वह दस लाख का स्टेट छोड़कर मरे थे।

स्टेशन—पुं० [अं०] १. वह स्थान जहाँ रेलगाड़ियाँ, मोटरें आदि यात्रियों को उतारने, चढ़ाने के लिए ठहरती या रुकती हों। जैसे—रेलवे-स्टेशन, बस स्टेशन। २. किसी विशेष कार्य के संचालन के लिए नियत स्थान। अवस्थान।

स्टोव—पुं० [अं०] एक विशेष प्रकार का आधुनिक चूल्हा जो खजाने में भरे हुए तेल, गैस आदि से या बिजली के द्वारा गरम होकर ताप उत्पन्न करता है।

स्ट्राइक—स्त्री० [अं०] कर्मचारियों आदि की हड़ताल।

स्तंब—पुं० [सं०] १. ऐसा पौधा जिसकी जड़ से कई पौधे निकलें और जिसमें कड़ी लकड़ी या डंठल न हो। गुल्म। २. घास का पूला। ३. रोहतक या रोहेड़ा नामक वृक्ष।

स्तंबक—पुं० [सं०] १. गुच्छा। २. नक-छिकनी।

स्तंबपुर—पुं० [सं०] ताम्रलिप्तपुर का एक नाम।

स्तंभ—पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० स्तंभिका] १. खंभा। २. वह व्यक्ति, तत्त्व या तथ्य जो किसी संस्था, कार्य, सिद्धांत आदि के आधार के रूप में हो। जैसे—आप उस संस्था के स्तंभ हैं। ३. समाचार पत्रों के पृष्ठों, सारिणियों आदि में खड़े बल का वह विभाग, जिसमें ऊपर से नीचे तक कुछ विशेष बातें, अंक आदि होते हैं। ४. समाचार पत्रों में उक्त प्रकार के विभागों का वह वर्ग जिसमें किसी विशेष विषय का प्रतिपादन या निरूपण होता है। जैसे—संपादकीय स्तंभ, स्थानिक स्तंभ आदि (कालम, उक्त सभी अर्थों के लिए) ५. पेड़ का तना। ६. [वि० स्तंभित] किसी कारण या घटना (जैसे—हर्ष, लज्जा, भय आदि) से अंगों का बिलकुल शिथिल हो जाना। ७. साहित्य में उक्त आधार पर माना जानेवाला एक सात्त्विक अनुभाव जिसमें भय, रोग, लज्जा, विषाद, हर्ष आदि के कारण शरीर सुन्न हो जाता है और उसमें अंग-संचालन की शक्ति नहीं रह जाती। ८. जड़ता। अचलता। ९. प्रतिबंध। रुकावट। १०. तंत्र में किसी शक्ति को रोकनेवाला प्रयोग। ११. अभिमान। घमंड। १२. रोग आदि के कारण होनेवाली मूर्च्छा।

स्तंभक—वि० [सं०] १. स्तंभन करने या रोकनेवाला। रोधक। २. कब्जियत करनेवाला। ३. वीर्य को गिराने या स्खलित होने से कुछ समय तक रोक रखनेवाला।

पुं० १. खंभा। २. शिव का एक नाम।

स्तंभ-कर—वि० [सं०] १. रोकनेवाला। रोधक। २. जड़ता उत्पन्न करनेवाला। जड़ बनानेवाला।

स्तंभकी (किन्)—पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जिस पर चमड़ा मढ़ा होता था।

स्त्री० एक देवी का नाम।

स्तंभ-तीर्थ—पुं० [सं०] आधुनिक खंभात नगर का प्राचीन नाम।

स्तंभन—पुं० [सं०] [भू० कृ० स्तंभित] १. रोकने की क्रिया या भाव। रुकावट। अवरोध। २. वीर्य आदि को स्खलित होने या मल को पेट से बाहर निकलने से रोकना। ३. वीर्यपात रोकने की दवा। ४. जड़ या निश्चेष्ट करना। जड़ीकरण। ५. किसी की चेष्टा, क्रिया या शक्ति रोकने वाला तांत्रिक प्रयोग। ६. कामदेव के पाँचों बाणों में से एक। ७. गिरने से रोकने के लिए लगाया जानेवाला सहारा।

स्तंभनी—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का इन्द्रजाल या जादू, जिससे लोगों को स्तंभित वा जड़ कर दिया जाता था।

स्तंभनीय—वि० [सं०] जिसका स्तंभन हो सके या होने को हो।

स्तंभ-लेखक—पुं० [सं०] वह जो प्रायः भिन्न-भिन्न सामयिक पत्रों के स्तंभों के लिए लेख आदि लिखता हो। (कालमिस्ट)

स्तंभ-वृत्ति—स्त्री० [सं०] प्राणों को जहाँ का तहाँ रोक देना, जो प्राणायाम का एक अंग है।

स्तंभि—पुं० [सं०] समुद्र। सागर।

स्तंभिका—स्त्री० [सं०] १. चौकी या आसन का पाया। २. छोटा खंभा। खँभिया।

स्तंभित—भू० कृ० [सं०] १. जो जड़ या अचल कर दिया गया हो या हो गया हो। जड़ीभूत। निश्चल। २. निस्तब्ध। सुन्न। ३. ठहरा या रुका हुआ।

स्तंभिनी—स्त्री० [सं०] योग के अनुसार पाँच धारणाओं में से एक।

स्तंभी (भिन्)—वि० [सं०] १. स्तंभ या खंभों से युक्त। २. दे० 'स्तंभक'।

पुं० समुद्र। सागर।

स्तंभोत्कीर्ण—वि० [सं०] जो खंभों में खोदकर बनाया गया हो। (आकृति, मूर्ति आदि)

स्तन—पुं० [सं०] स्त्रियों या मादा पशुओं की छाती जिसमें से दूध निकलता है। जैसे—गौ का स्तन।

क्रि० प्र०—पिलाना।—पीना।

स्तन-कलश—पुं० [सं० उपमि० स०] कलश की तरह गोल और बड़े या मोटे स्तन।

स्तन-कील—पुं० [सं०] स्त्रियों की छाती में होनेवाला थनैला नाम का फोड़ा।

स्तन-चूचुक—पुं० [सं०] स्तन या कुच के ऊपर की घुंडी। चूची। ढेंपनी।

स्तन-दात्री—वि० स्त्री० [सं०] (छाती का) दूध पिलानेवाली।

स्तनन—पुं० [सं०] [भू० कृ० स्तनित] १. ध्वनि। नाद। शब्द। आवाज। २. बादलों की गड़गड़ाहट। ३. कराहने की आवाज। कराह।

स्तनप—वि०, पुं०=स्तनपायी।

स्तन-पतन—पुं० [सं० ष० त०] स्तन का ढीला पड़ना या लटकना।

स्तन-पान—पुं० [सं०] स्तन पान करना। स्तन चूसकर दूध पीना।

स्तनपायी (यिन्)—वि० [सं०] स्तनपान करनेवाला। स्तन चूसकर दूध पीनेवाला।

पुं० १. वह जो स्तन पान करता हो। दूध पीनेवाला बच्चा। २. वे जीव जो माता का दूध पीते या दूध पीकर बड़े होते हैं। ३. उक्त प्रकार के जीवों का वर्ग।

स्तन-बाल—पुं० [सं०] १. एक प्राचीन जनपद। (विष्णु पुराण) २. उक्त देश का निवासी।

स्तन-भर—पुं० [सं०] १. स्थूल या पुष्ट स्तन। बड़ी और भारी छाती। २. ऐसा पुरुष जिसकी छातियाँ स्त्रियों की छातियों की सी बड़ी या मोटी हों।

स्तन-भव—पुं० [सं०] एक प्रकार का रति-बंध या संभोग का आसन।

स्तन-मध्य—पुं० [सं०] स्त्री के दोनों स्तनों के बीच का स्थान या गड्ढा।

स्तन-मुख—पुं० [सं०] स्तन या कुच का अगला भाग। चूचुक। चूची।

स्तन-रोग—पुं० [सं०] गर्भवती और प्रसूता स्त्रियों के स्तनों में होनेवाला रोग।

स्तन-विद्रधि—पुं० [सं०] स्तन पर होनेवाला फोड़ा। थनैली।

स्तन-वृंत—पुं० [सं०] स्तन या कुच का अग्रभाग। चूचुक। चूची।

स्तन-शिखा—स्त्री० [सं०]=स्तनवृंत।

स्तन-शोष—पुं० [सं०] स्त्रियों को होनेवाला एक प्रकार का रोग जिससे उनके स्तन सूख जाते हैं।

स्तनांतर—पुं० [सं०] १. हृदय। दिल। २. स्त्रियों के स्तनों पर होनेवाला एक प्रकार का चिह्न जो वैधव्य का सूचक माना जाता है। (सामुद्रिक)

स्तनाशुक—पुं० [सं०] कपड़े की चौड़ी पट्टी जिससे स्त्रियाँ स्तन बाँधती हैं।

स्तनाग्र—पुं० [सं०] स्तन का अगला भाग। चूचुक।

स्तनाभुज—वि०, पुं०=स्तनपायी।

स्तनित—पुं० [सं०] १. मेघ-गर्जन। बादलों की गरज। २. आवाज। ध्वनि। शब्द। ३. ताली बजाने का शब्द। करतल ध्वनि।

भू० कृ० १. ध्वनित। २. गर्जित।

स्तनित-कुमार—पुं० [सं०] १. भुवनाधीश नामक जैन देवों का वर्ग। २. उक्त वर्ग का कोई देवता।

स्तनी (निन्)—वि० [सं०] स्तनोंवाला। स्तन-युक्त।

स्तनोत्तरीय—पुं० [सं० पुं० त०] प्राचीन काल की वह पट्टी जो स्त्रियाँ स्तनों पर बाँधती थीं। कुचांशुक। स्तनांशुक।

स्तन्य—वि० [सं०] १. स्तन-संबंधी। स्तन का। २. जो स्तन में हो।

पुं० १. माता का दूध। २. दूध।

स्तन्य-त्याग—पुं० [सं०] माता का दूध पीना छोड़ना।

स्तन्यदा—वि० [स्त्री०] जिसके स्तनों में से दूध निकलता हो। दूध देनेवाली।

स्तन्य-दान—पुं० [सं०] स्तन पिलाना। स्तन का दूध पिलाना।

स्तन्यप—वि० [सं०] [स्त्री० स्तन्यपा] स्तन या दूध पीनेवाला। स्तनपायी।

पुं० दूध पीता बच्चा। शिशु।

स्तन्य-पान—पुं० [सं०] स्तन-पान।

स्तन्य-पायी (यिन्)—वि०, पुं०=स्तनपायी।

स्तन्य-रोग—पुं० [सं०] माता के दूध के कारण होनेवाला रोग। स्तनपान करने से होनेवाला रोग।

स्तन्य-स्राव—पुं० [सं०] १. वात्सल्य भाव से विह्वल होने पर आप से आप स्तनों से दूध बहने लगना। २. इस प्रकार बहनेवाला दूध।

स्तब्ध—वि० [सं०] [भाव० स्तब्धता] १. जो जड़ या अचल हो गया हो। जड़ीभूत। निश्चेष्ट। सुन्न। २. अच्छी तरह जकड़ा या बाँधा हुआ। ३. दृढ़। पक्का। मजबूत। ४. धीमा। मन्द। सुस्त। ५. दुराग्रही। हठी। ६. अक्खड़ और अभिमानी।

पुं० वंशी के छः दोषों में से एक जिसमें उसका स्वर कुछ धीमा होता है।

स्तब्धता—स्त्री० [सं०] १. स्तब्ध होने की अवस्था या भाव। जड़ता। २. दृढ़ता। ३. बहरापन।

स्तब्ध-पाद—वि० [सं०] [भाव० स्तब्धपादता] जिसके पैर जकड़ गये हों। लँगड़ा। पंगु।

स्तब्ध-मति—वि०[सं०] मंदबुद्धि। कुंद-जहन।

स्तब्धि—स्त्री०[सं०] स्तब्धता।

स्तर—पुं०[सं०] १. एक दूसरी के ऊपर पड़ी या लगी हुई तह। परत। २. ऊपर का वह सपाट भाग, जो कुछ दूर तक समान रूप से चला गया हो और जो वैसे दूसरे भागों से अलग या स्वतन्त्र हो। तल। (लेवेल) जैसे—देश या समाज का स्तर। ३. भूमि आदि का एक प्रकार का विभाग जो भिन्न-भिन्न कालों में बनी हुई उसकी तहों के आधार पर किया गया है। (स्ट्रेटा) ४ शय्या। सेज।

स्तरण—पुं० [सं०]१. फैलाना या बिखेरना। २. वह स्थिति जिसमें कोई वस्तु स्तरों या परतों के रूप में बनी हुई होती है। ३. भू-विज्ञान में प्राकृतिक कारणों से पृथ्वी के धरातल, पर्वतों आदि के भिन्न-भिन्न स्तरों का बनना या बनावट। (स्ट्रैटिफ़िकेशन) ४. दीवारों आदि की अस्तरकारी। ५. बिछौना। बिस्तर।

स्तरणीय—वि०[सं०] १. फैलाये या बिखेरे जाने के योग्य। २. बिछाये जाने के योग्य।

स्तरिमा (मन्)—पुं० [सं०] पलंग। शय्या।

स्तरी—स्त्री०[सं०]१. धूआँ। धूम्र। २. ऐसी गाय जो दूध न दे रही हो।

स्तर्य—वि०=स्तरणीय।

स्तव—पुं० [सं०] १. किसी देवता का छंदबद्ध स्वरूप-कथन या गुणगान। स्तुति। स्तोत्र। जैसे—शिव-स्तव, दुर्गास्तव। २. ईश-प्रार्थना।

स्तवक—पुं० [सं०]१. फूलों का गुच्छा। २. एक या अनेक तरह के बहुत से फूलों को सजाकर बनाया हुआ रूप, जिसे शोभा के लिए मेजों आदि पर रखते हैं। गुलदस्ता। ३. ढेर। राशि। ४. मोर का पंख। ५. पुस्तक का अध्याय या परिच्छेद। ६. स्तोत्र। स्तव।

वि० स्तव या स्तुति करनेवाला।

स्तविक—भू० कृ० [सं०] फूलों के गुच्छों, गुलदस्तों, फूल-मालाओं आदि से युक्त या सजा हुआ।

स्तवन—पुं० [सं०] १. स्तुति करने की क्रिया या भाव। २. स्तुति।

स्तवनीय—वि० [सं०] जिसका स्तव या स्तुति की जा सके या की जाने को हो।

स्तवरक—पुं० [सं०]१. कमखाब की तरह का एक पुराना रेशमी कपड़ा। २. घेरा।

स्तवितव्य—वि० [सं०] स्तवनीय।

स्तविता (तृ)—पुं० [सं०] स्तुति करनेवाला। गुण-गान करनेवाला।

स्तव्य—वि० [सं०] =स्तवनीय।

स्तान—पुं० [सं० स्थान से फा०] [वि० स्तानी] एक स्थान वाचक शब्द जो कुछ जातियों, पदार्थों आदि के नामों के अन्त में लगकर उनके रहने या होने के स्थान का अर्थ देता है। जैसे—अफगानिस्तान, हिन्दुस्तान, गुलिस्तान, चमनिस्तान आदि।

स्तावक—वि० [सं०] १. स्तव या स्तुति करनेवाला। गुण-कीर्तन करनेवाला। प्रशंसक। उदा०—स्तावक, स्तुत्य, निन्द्य और निंदक जब कि सभी हैं एक।—पन्त। २. खुशामद करनेवाला।

पुं० बन्दीजन। भाट।

स्ताव्य—वि० [सं०] स्तव के योग्य। स्तुत्य।

स्तिमित—वि० [सं०] १. भीगा हुआ। तर। नम। आर्द्र। २. निश्चल। स्थिर। ३. शांत। ४. प्रसन्न। ५. सन्तुष्ट।

पुं० १. आर्द्रता। तरी। नमी। २. निश्चलता।

स्तीर्ण—वि० [सं०] १. फैला या विखेरा हुआ। छितराया हुआ। २. लंबा-चौड़ा। विस्तृत।

पुं० शिव का एक अनुचर।

स्तुत—भू० कृ० [सं०] १. जिसकी स्तुति की गई हो। २. प्रशंसित। ३. चूआ या वहा हुआ।

पुं० १. शिव। २. स्तुति।

स्तुति—स्त्री० [सं०] १. आदर-भाव से किसी के गुणों का कथन करना। जैसे—देवता की स्तुति करना। २. वह पद या रचना जिसमें किसी देवता आदि का गुण कथन हो। ३. प्रशंसा। तारीफ। बड़ाई। ४. दुर्गा का एक नाम।

पुं० शिव का एक नाम।

स्तुति-पाठक—पुं० [सं०] बंदी जिसका काम प्राचीन काल में राजाओं की स्तुति या यशोगान करना था। चारण। मागध। सूत।

स्तुतिवाद—पुं० [सं०] प्रशंसात्मक कथन। यशोगान। गुणगान।

स्तुति-वादक—पुं० [सं०] १. स्तुति या प्रशंसा करनेवाला। प्रशंसक। २. खुशामदी।

स्तुत्य—वि० [सं०] १. स्तुति या प्रशंसा का अधिकारी या पात्र। प्रशंसनीय। २. जिसकी स्तुति या प्रशंसा होने को हो या होनी चाहिए।

स्तुभ—पुं० [सं०] १. एक प्रकार की अग्नि। २. बकरा।

स्तूप—पुं० [सं०] १. मिट्टी, पत्थर आदि का ऊँचा ढूह। २. वह ढूह या टीला जो भगवान् बुद्ध या किसी बौद्ध-महात्मा की अस्थि, दांत, केश आदि स्मृति-चिह्नों को सुरक्षित रखने के लिए उनके ऊपर बनाया गया हो। ३. ऊँचा ढेर। ४. केश-गुच्छ। बालों की लट। ५. इमारत में लगा हुआ बहुत बड़ा शहतीर।

स्तृत—भू० कृ० [सं०] १. ढका हुआ। आच्छादित। २. फैला हुआ। विस्तृत।

स्तृति—स्त्री० [सं०] १. ढाँकने की क्रिया। आच्छादन। २. फैलाने की क्रिया।

स्तेन—पुं० [सं०] १. चोर। डाकू। तस्कर। २. चोरी। ३. चोर नामक गन्ध-द्रव्य।

स्तेय—पुं० [सं०] चोरी।

वि० चुराया हुआ।

स्तेयी (यिन्)—पुं० [सं०] १. चोर। २. चूहा। ३. सुनार।

स्तैन—पुं० =स्तैन्य।

स्तैन्य—पुं० [सं०] १. चुराने या डाका डालने का काम। २. दे० 'स्तेन'।

स्तोक—वि० [सं०] १. थोड़ा। जरा। २. कुछ। कम। ३. छोटा। ४. नीचा।

पुं० १. बूंद। विंदु। २. चातक। पपीहा।

स्तोतक—पुं० [सं०] १. पपीहा। चातक। २. वत्सनाग नामक विष। बछनाग।

स्तोतव्य—वि० [सं०] स्तव या स्तुति का अधिकारी या पात्र। स्तुत्य।

स्तोता(तृ)—वि० [सं०] १. स्तुति करनेवाला। २. उपासना करनेवाला। ३. प्रार्थना करनेवाला।
पुं० विष्णु का एक नाम।

स्तोत्र—पुं० [सं०] १. स्तव। स्तुति। २. वह रचना, विशेषतः पद्यबद्ध रचना जिसमें किसी देवता आदि की स्तुति की गयी हो। जैसे—दुर्गा-स्तोत्र, शिव-स्तोत्र।

स्तोत्रिय, स्तोत्रीय—वि० [सं०] स्तोत्र-संबंधी। स्तोत्र का।

स्तोभ—पुं० [सं०] १. सामवेद का एक अंग। २. अवज्ञा, उपेक्षा या तिरस्कार। ३. स्तंभन।

स्तोभित—भू० कृ० [सं०] १. जिसकी स्तुति की गई हो। स्तुत। २. जिसका जय-जयकार किया गया हो।

स्तोम—पुं० [सं०] १. स्तुति। २. यज्ञ। ३. वह जो यज्ञ करता हो। ४. ढेर। राशि। ५. मस्तक। ६. धन-सम्पत्ति। ७. अनाज। अन्न। ८. पुरानी चाल की एक प्रकार की ईंट। ९. ऐसा डंडा जिसमें लोहे की नोक लगी हो। लोहासी। १०. दस धन्वन्तर अर्थात् चालीस हाथ की एक माप।
वि० टेढ़ा। वक्र।

स्तोमायन—पुं० [सं०] यज्ञ में बलि दिया जानेवाला पशु।

स्तोमीय—वि० [सं०] स्तोम-संबंधी। स्तोम का।

स्तोम्य—वि० [सं०] = स्तुत्य।

स्तौपिक—पुं० [सं०] १. किसी महापुरुष के वे अस्थि, चिह्न जिन पर स्तूप बनाया गया हो। (बौद्ध) २. वह मार्जनी जो जैन यति अपने साथ रखते हैं।

स्तौभ—वि० [सं०] स्तोभ-संबंधी। स्तोभ का।

स्तौभिक—वि० [सं०] स्तोभ से युक्त। जिसमें स्तोभ हो।

स्त्यान—वि० [सं०] १. समूहों में इकट्ठा किया हुआ। २. कठोर। ३. घना। ४. चिकना। ५. ध्वनि या शब्द करनेवाला।
पुं० १. घनापन। घनता। २. आवाज। शब्द। ३. सत्कर्म के प्रति होनेवाला आलस्य। ४. अमृत।

स्त्येन—पुं० [सं०] १. चोर। २. डाकू। ३. अमृत।

स्त्यैन—पुं० [सं०] १. चोर। २. डाकू।
वि० कम। थोड़ा।

स्त्रियम्मन्य—वि० [सं०] जो अपने को स्त्री मानता या समझता हो।

स्त्रियोपयोगी—वि० [सं० स्त्री+उपयोगी; शुद्ध और सिद्ध रूप स्त्र्युपयोगी] जो विशेष रूप से स्त्रियों के काम का हो। जैसे—स्त्रियोपयोगी साहित्य।

स्त्रींद्रिय—स्त्री० [सं०] स्त्री की योनि। भग।

स्त्री—स्त्री० [सं०] [भाव० स्त्रीत्व, वि० स्त्रैण] १. मनुष्य जाति की वयस्क मादा। 'पुरुष' का विपर्याय। २. उक्त जाति की कोई विशेष सदस्या। जैसे—पुरुष स्त्री का गुलाम बन जाता है। ३. पत्नी। जोरू। ४. मादा जन्तु। पुरुष या नर का विपर्याय। ४. एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो-दो गुरु वर्ण होते हैं। कामा। ५. दीमक। ६. प्रियंगुलता। ७. व्याकरण में स्त्रीलिंग का संक्षिप्त रूप।
† स्त्री० = इस्त्री।

स्त्री-करण—पुं० [सं०] १. स्त्री बनाना। पत्नी बनाना। २. संभोग। मैथुन।

स्त्री गमन—पुं० [सं०] स्त्री-संभोग। मैथुन।

स्त्री ग्रह—पुं० [सं०] ज्योतिष के अनुसार बुध, चन्द्र और शुक्र ग्रह जो स्त्री जाति के माने गये हैं।

स्त्री-चंचल—वि० [सं०] १. कामुक। कामी। २. लंपट।

स्त्री-चिह्न—पुं० [सं०] वे सब बातें या चिह्न जिनसे यह जाना जाता है कि प्राणी स्त्री जाति का है।

स्त्री-चौर—पुं० [सं०] लंपट। व्यभिचारी।

स्त्री-जननी—स्त्री० [सं०] केवल लड़कियों को जन्म देनेवाली स्त्री। (मनु)

स्त्री-जित्—वि० [सं०] (ऐसा पुरुष) जो पत्नी की जी-हुजूरी करता हो।

स्त्रीता—स्त्री० = स्त्रीत्व।

स्त्रीत्व—पुं० [सं०] १. 'स्त्री' होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। औरतपन। २. गुण, धर्म आदि के विचार से स्त्रियों का-सा होने का भाव। जनानापन। ३. शब्दों के अंत में लगनेवाला स्त्रीलिंग का सूचक प्रत्यय। (व्याकरण)

स्त्री-देहार्द्ध—पुं० [सं०] शिव जिनके आधे अंग में पार्वती का होना माना गया है।

स्त्री-धन—पुं० [सं०] ऐसा धन जिस पर स्त्रियों का विशेष रूप से पूरा अधिकार हो और जो पुरुषों को न मिल सकता हो। यह छः प्रकार का कहा गया है—अन्वाधेय, बन्धुदत्त, भौतक, सौदायिक, शुल्क, परिणाम, लावण्यार्जित और पादवन्दनिक।

स्त्री-धर्म—पुं० [सं०] १. स्त्री या पत्नी का कर्तव्य। २. स्त्री का रजस्वला होना। रजोदर्शन। ३. मैथुन। संभोग। ४. स्त्रियों से संबंध रखनेवाला नियम या विधान।

स्त्री-धर्मिणी—स्त्री० [सं०] रजस्वला स्त्री।

स्त्री-धूर्त—पुं० [सं०] स्त्री को छलनेवाला पुरुष।

स्त्री-ध्वज—वि० [सं०] जिसमें स्त्रियों के चिह्न हों। स्त्री के चिह्नों से युक्त।
पुं० हाथी।

स्त्रीपण्योपजीवी—पुं० = स्त्र्याजीव।

स्त्री-पर—वि० [सं०] कामुक। विषयी।
पुं० व्यभिचारी पुरुष।

स्त्री-पुर—पुं० [सं०] अंतःपुर। जनानखाना।

स्त्री-पुष्प—पुं० [सं०] स्त्री का रज।

स्त्री-प्रसंग—पुं० [सं०] मैथुन। संभोग।

स्त्री-प्रिय—पुं० [सं०] १. आम का पेड़। २. अशोक।
वि० जिसे स्त्री प्यार करती हो।

स्त्री-प्रेक्षा—स्त्री० [सं०] ऐसा खेल-तमाशा जिसमें स्त्रियाँ ही जा सकती हों।

स्त्री-भोग—पुं० [सं०] मैथुन। प्रसंग।

स्त्री-मंत्र—पुं० [सं०] ऐसा मंत्र जिसके अंत में 'स्वाहा' हो।

स्त्री-मय—वि० [सं०] १. जनाना। २. जनखा।

स्त्री-रत्न—स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

स्त्री-राज्य—पुं० [सं०] ऐसी राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था जिसमें सब प्रकार के अधिकार और कार्य स्त्रियों के हाथों में ही रहते हों, पुरुषों के हाथ में कुछ भी सत्ता न रहती हो। (जाइनार्की)

स्त्री-लिंग—पुं० [सं०] १. हिन्दी व्याकरण में, दो लिंगों में से एक जो स्त्री जाति का अथवा किसी शब्द के अल्पार्थक रूप का वाचक होता है। (फ़ैमिनिन) जैसे—'लड़का' का स्त्रीलिंग 'लड़की' या 'छुरा का स्त्री० लिंग 'छुरी' है। २. स्त्री का चिह्न अर्थात् भग या योनि।

स्त्री-वश(श्य)—वि० [सं०] (पुरुष) जो स्त्री के वश में हो।

स्त्री-वार—पुं० [सं०] सोम, बुध और शुक्रवार। (ज्योतिष में चंद्र, बुध और शुक्र ये तीनों स्त्री-ग्रह माने गए हैं; अतः इनके वार भी स्त्री-वार कहे जाते हैं।)

स्त्री-वास (सस्)—पुं० [सं०] ऐसा वस्त्र जो रतिबंध या संभोग के समय के लिए उपयुक्त हो।

स्त्री-विषय—पुं० [सं०] संभोग। मैथुन।

स्त्री-व्रण—पुं० [सं०] योनि। भग।

स्त्री-व्रत—पुं० [सं०] अपनी स्त्री के अतिरिक्त दूसरी स्त्री की कामना न करना। एक स्त्री-परायणता। पत्नी-व्रत।

स्त्री-संग—पुं० [सं०] संभोग। मैथुन।

स्त्री-संग्रहण—पुं० [सं०] किसी स्त्री से बलात् संभोग आदि करना। व्यभिचार।

स्त्री-संभोग—पुं० [सं०] स्त्री-प्रसंग। मैथुन।

स्त्री-समागम—पुं० [सं०] स्त्री-प्रसंग। मैथुन।

स्त्री-सुख—पुं० [सं०] १. स्त्री का सुख। २. मैथुन। संभोग। ३. ३. सहिजन।

स्त्री-सेवन—पुं० [सं०] संभोग। मैथुन।

स्त्रैण—वि० [सं०] १. स्त्री-संबंधी। स्त्रियों का। २. स्त्रियों का-सा। स्त्रियों की तरह का। ३. स्त्री या पत्नी के वश में रहनेवाला। स्त्री-रत (पुरुष)। ४. सदा स्त्रियों की मंडली में रहने की प्रकृति रखनेवाला।

स्त्रैणकी—स्त्री० [सं० स्त्रैण से] चिकित्सा शास्त्र की वह शाखा जिसमें स्त्रियों के रोगों विशेषतः उनकी जननेन्द्रिय के रोगों के निदान और चिकित्सा का विवेचन होता है। (जैनिकॉलोजी)

स्त्रै-राजक—पुं० [सं०] स्त्री-राज्य का निवासी।

स्त्र्यध्यक्ष—पुं० [सं०] रानियों की देख-रेख करनेवाला और अंतःपुर का प्रधान अधिकारी।

स्त्र्याजीव—पुं० [सं०] १. वह पुरुष जो स्त्री या स्त्रियों की सम्पत्ति का भोग करता हो। २. स्त्री या स्त्रियों से वेश्या-वृत्ति कराकर दलाली खानेवाला व्यक्ति।

स्त्र्युपयोगी—वि० [सं० स्त्री+उपयोगी] विशेष रूप से स्त्रियों के उपयोग में आनेवाला। (भूल से 'स्त्रियोपयोगी' रूप में प्रचलित)

स्थंडिल—पुं० [सं०] १. भूमि। जमीन। २. यज्ञ के लिए साफ की हुई भूमि। ३. सीमा। हद। ४. मिट्टी का ढेर। ५. एक प्राचीन ऋषि।

स्थंडिल शय्या—स्त्री० [सं०] (व्रत के कारण) भूमि या जमीन पर सोना। भूमि-शयन।

स्थंडिलशायी—पुं० [सं० स्थंडिल-शायिन्] वह जो व्रत के कारण भूमि या यज्ञ-स्थल पर सोता हो।

स्थंडिलेशय—पुं० [सं०] दे० 'स्थंडिलशायी'।

स्थ—प्रत्य० [सं०] एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लगकर अर्थ देता है—(क) स्थित। जैसे—तटस्थ। (ख) उपस्थित। वर्त्तमान। जैसे—कंठस्थ। (ग) किसी विशिष्ट स्थान में रहने या होनेवाला। जैसे—आत्मस्थ, काशीस्थ। (घ) लीन। रत। मान। जैसे——ध्यानस्थ।

स्थकित—वि० [हिं० थकित] थका हुआ। शिथिल। ढीला।

स्थग—पुं० [सं०] १. धूर्त। २. ठग।

स्थगन—पुं० [सं०] [वि० स्थगित] १. छिपाना या ढाँकना। २. सभा की बैठक, बात की सुनवाई अथवा और कोई चलता हुआ काम कुछ समय के लिए रोक रखना। (ऐडजोर्नमेंट) ३. विचार आदि के लिए कुछ समय तक रोकना। (निलंबन)

स्थगनक प्रस्ताव—पुं० [सं०] वह प्रस्ताव जो विधायिका सभाओं आदि में यह कहकर उपस्थित किया जाता है कि और काम छोड़ कर पहले इसी पर विचार होना चाहिए। (एडजोर्नमेन्ट मोशन)

स्थगिका—स्त्री० [सं०] १. पनडब्बा। पानदान। ३. अँगूठे, उँगलियों और लिंगेन्द्रिय के अग्रभाग पर के घाव पर बाँधी जानेवाली (पनडब्बे के आकार की) एक प्रकार की पट्टी। (वैद्यक)

स्थगित—भू० कृ० [सं०] १. ढका हुआ। आच्छादित। २. ठहराया या रोका हुआ। ३. जो कुछ समय के लिए रोक दिया गया हो। मुलतवी। (एडजोर्न्ड) ४. छिपा हुआ। गुप्त। ५. बन्द किया या रोका हुआ।

स्थगी—स्त्री० [सं०] स्थगिका।

स्थपति—पुं० [सं०] १. राजा। २. सामंत। ३. शासक। ४. अंतःपुर का रक्षक। कंचुकी। ५. वास्तुशास्त्र का ज्ञाता या पंडित। ६. रथ बनानेवाला कारीगर। ७. सारथी। ८. वह जिसने बृहस्पति-सवन नामक यज्ञ किया हो। ९. कुबेर। १०. बृहस्पति।

वि० प्रधान। मुख्य।

स्थपनी—स्त्री० [सं०] भौंहों के मध्य का स्थान जिसकी गिनती मर्मस्थानों में होती है।

स्थपुट—वि० [सं०] १. कुबड़ा। कुब्ज। २. पीड़ित। विपन्न। ३. कठिन स्थिति में पड़ा हुआ।

पुं० कुबड़ा।

स्थल—पुं० [सं०] [वि० स्थलीय] १. भूमि। जमीन। २. भूमि का खंड या विभाग। भू-भाग। ३. जल से रहित भूमि। खुश्की। (लैण्ड) जैसे—स्थल मार्ग से जाने में बहुत दिन लगेंगे। ४. स्थान। जगह। (स्पेस) ५. ऐसी जगह जिसमें जल बहुत कम हो। निर्जल और मरुभूमि। ६. कोई ऐसी जगह, जहाँ कोई विशेष बात, रचना आदि हो या होने को हो। (साइट) ७. अवसर। मौका। ८. टीला। ढूह। ९. खेमा। तंबू। १०. पुस्तक का अध्याय या परिच्छेद।

स्थल-कंद—पुं० [सं०] जंगली सूरन। कटैला जमीकंद।

स्थल-कमल—पुं० [सं०] १. स्थल में होनेवाला एक प्रकार का पौधा जिसमें कमल जैसे फूल लगते हैं। २. उक्त पौधे का फूल।

स्थल-कमलिनी—स्त्री० [सं०] स्थल कमल का पौधा।

स्थल-काली—स्त्री० [सं०] दुर्गा की एक सहचरी।

स्थल-कुमुद—पुं० [सं०] कनेर। करवीर।

स्थलग—वि० [सं०]=स्थलचर।

स्थलगामी (मिन्)—वि० [सं०] [स्त्री० स्थलगामिनी]=स्थलचर।

स्थल-चर—वि० [सं०] स्थल पर रहने या विचरण करनेवाला। 'जल-'चर' और 'नभ-चर' से भिन्न।

स्थलचारी (रिन्)—वि०[सं०] [स्त्री० स्थल-चारिणी]=स्थल-चर।

स्थलज—वि० [सं०] १. स्थल में उत्पन्न होनेवाला। २. स्थल या सूखी जमीन पर रहनेवाला। (टेरेस्ट्रिअल)

स्थल-डमरुमध्य—पुं०[सं०] दाहिने और बाँयें पानी से घिरा हुआ, स्थल का वह लंबा भाग, जो दोनों ओर के दो बड़े स्थलों के बीच में हो और उन्हें मिलाता हो।

स्थल-नलिनी—स्त्री०=स्थल-कमलिनी।

स्थल-पद्म—पुं०[सं०] १. स्थल-कमल। २. मान-कच्चू। ३. गुलाब।

स्थल-पद्मिनी—स्त्री०=स्थल-कमलिनी।

स्थल-युद्ध—पुं० [सं०] जमीन पर होनेवाला युद्ध। हवाई और समुद्री युद्ध से भिन्न।

स्थल-रुहा—स्त्री० [सं०] स्थल-कमल।

स्थल-विहंग—पुं० [सं०] स्थल पर विचरण करनेवाले मुर्ग, मोर आदि पक्षी।

स्थल-सेना—स्त्री० [सं०] स्थल या जमीन पर लड़नेवाली फौज। पैदल सिपाही और घुड़सवार आदि। (आर्मी)। वायु और जल सेना से भिन्न।

स्थला—स्त्री० [सं०] जल-शून्य भू-भाग। स्थल।

स्थलालेख्य—पुं० [सं० स्थल+आलेख्य] किसी स्थल का रेखा-चित्र। (साइट प्लान)

स्थली—स्त्री० [सं०] १. जल-शून्य भूभाग। खुश्क जमीन। भूमि। २. ऊँची सम भूमि। ३. जगह। स्थान। ४. ऐसा मैदान जिसमें सुन्दर प्राकृतिक दृश्य हों।

स्थली देवता—पुं० [सं०] ग्राम-देवता।

स्थलीय—वि० [सं०] १. स्थल या भूमि-संबंध। स्थल का। जमीन का। २. दे० 'स्थानीय।'

स्थलेशय—पुं० [सं०] (स्थल अर्थात् भूमि पर सोनेवाले) कुरंग, कस्तूरी मृग आदि जन्तु।

स्थलौक (स्)—पुं० [सं०] स्थल-चर जीव-जन्तु।

स्थवि—पुं० [सं०] १. थैला या थैली। २. स्वर्ग। ३. अग्नि। ४. फल। ५. जंगल। ६. जुलाहा। ७. कोढ़ी।

स्थविर—पुं० [सं०] [भाव० स्थविरता] १. लकड़ी टेककर चलने वाला बुड्ढा। २. बौद्ध भिक्षुओं का एक संप्रदाय। ३. ब्रह्मा। ४. कदंब। ५. छरीला।

वि० वृद्ध और पूज्य।

स्थविरा—स्त्री० [सं०] १. वृद्ध और पूज्य स्त्री। २. गोरखमुंडी।

स्थांडिल—वि० [सं०] व्रत के कारण भूमि पर शयन करनेवाला।

स्थाई†—वि०=स्थायी।

स्थाणव—वि० [सं०] स्थाणु अर्थात् वृक्ष के तने से बना या उत्पन्न।

स्थाणवीय—वि० [सं०] स्थाणु या शिव संबंधी। शिव का।

स्थाणु—पुं० [सं०] १. पेड़ का ऐसा धड़ जिसके ऊपर की डालियाँ और पत्ते आदि न रह गये हों। ठूंठ। २. खंभा। ३. शिव का एक नाम। ४. ग्यारह रुद्रों में से एक। ५. एक प्रजापति। ६. एक प्रकार का बरछा या भाला।। ७. धूप-घड़ी का काँटा। ८. स्थावर पदार्थ। ९. जीवक नामक अष्ट-वर्गीय ओषधि। १०. दीमक की बाँबी। ११. घोड़े का एक प्रकार का रोग जिसमें उसकी जाँघ में व्रण या फोड़ा निकलता है। १२. कुरुक्षेत्र के थानेश्वर नामक स्थान का प्राचीन नाम जो किसी समय बहुत प्रसिद्ध तीर्थ माना जाता था।

वि० अचल। स्थावर।

स्थाण्वीश्वर—पुं० [सं०] स्थाणु तीर्थ में स्थित एक प्रसिद्ध शिवलिंग। (वामन पुराण)

स्थाता (तृ)—वि० [सं०] १. स्थित या स्थिर रहनेवाला। दृढ़। २. अचल।

स्थान—पुं० [सं०] [वि० स्थानिक, स्थानीय] १. स्थिति। ठहराव। २. खुला हुआ भूमि-भाग। जमीन। मैदान। ३. निश्चित और परिमित स्थितिवाला वह भू-भाग जिसमें कोई बस्ती, प्राकृतिक रचना या कोई विशेष बात हो। जगह। स्थल। (प्लेस) जैसे—वहाँ देखने योग्य अनेक स्थान हैं। ४. रहने की जगह (मकान, घर आदि)। ५. सेवा या लोकोपकार आदि के काम करने की जगह। पद। ओहदा। (पोस्ट) ६. बैठने का वह विशिष्ट स्थान जो निर्वाचित अथवा प्रतिनिधित्व करनेवाले लोगों के लिए होता है। ७. देवालय, आश्रम या इसी प्रकार का और कोई पवित्र स्थान। ८. अवसर। मौका। ९. देश। प्रदेश। १०. मुँह के अन्दर का वह अंग या स्थल जहाँ से किसी वर्ण या शब्द का उच्चारण हो। जैसे—कंठ, तालु, मूर्धा, दंत, ओष्ठ। (व्याकरण) ११. किसी राज्य के मुख्य आधार या बल जो चार माने गये हैं। यथा—सेना, कोश, नगर और देश। (मनु०) १२. प्राचीन भारतीय राजनीति में, वह स्थिति जब युद्ध-यात्रा न करके राजा लोग किसी उद्देश्य से चुप-चाप या उदासीन भाव से बैठे रहते थे १३. आखेट में शरीर की एक प्रकार की मुद्रा। (यह आसन का एक भेद माना गया है)। १४. अभिनय में अभिनेता का कार्य या चरित्र। १५. अवस्था। दशा। १६. गोदाम। भंडार। १७. कारण। हेतु। १८. किला। दुर्ग। १९. ग्रंथ का अध्याय या परिच्छेद।

स्थानक—पुं०[सं०] १. अवस्था। स्थिति। २. रूपक में कोई विशेष स्थिति। जैसे—पताका स्थानक। ३. जगह। स्थान। ४. नगर। शहर। ५. दरजा। पद। ६. वृक्ष का थाला। आलबाल। ७. फेन। ८. नृत्य में एक प्रकार की मुद्रा।

स्थानकवासी—पुं०[सं०] जैनों में एक विशिष्ट संप्रदाय।

स्थान-चिंतक—पुं०[सं०] वह सैनिक अधिकारी जो सेना के पड़ाव डालने, चौकी बनाने आदि के उद्देश्य से स्थान-स्थान की व्यवस्था करता है।

स्थान-च्युत—भू० कृ०[सं०] [भाव० स्थान-च्युति] १. जो अपने स्थान से गिर, हट या अलग हो गया हो। २. पद से हटाया हुआ। पद-च्युत।

स्थान-पदिक—वि०[सं०] नियमित रूप से या प्रायः किसी एक स्थान अथवा प्रदेश में होने या पाया जानेवाला। (एन्डेमिक) जैसे—स्थान-पदिक रोग।

स्थान-पाल—पुं०[सं०] १. स्थान या देश का रक्षक। २. चौकीदार। पहरेदार।

स्थान-भ्रष्ट—भू० कृ० [सं०] स्थान-च्युत।

स्थानविद्—वि०[सं०] जो किसी स्थान का जानकार हो।

स्थानस्थ—वि० [सं०]१. किसी स्थान पर टिका या टिककर रहनेवाला। २. स्थानीय।

स्थानांतर—पुं०[सं०]१. प्रकृत या प्रस्तुत से भिन्न कोई और स्थान। दूसरा स्थान। २. एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया या भाव। बदली।

स्थानांतरण—पुं०[सं०] भू० कृ० स्थानांतरित] किसी वस्तु या व्यक्ति को एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर पहुँचाना, देखना या भेजना। बदली। (ट्रान्सफ़रेन्स)

स्थानांतरित—भू० कृ०[सं०] जो अपने पहले स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर भेज दिया गया हो। (ट्रान्सफ़र्ड)

स्थानाध्यक्ष—पुं०[सं०] वह व्यक्ति जिसपर किसी स्थान की रक्षा का भार हो। स्थान-रक्षक।

स्थानापत्ति—स्त्री०[सं०] स्थानापन्न होने की अवस्था या भाव। किसी की जगह पर या बदले में काम करना।

स्थानापन्न—वि०[सं०]१. जिसने किसी दूसरे का स्थान ग्रहण किया हो। २. शासनिक क्षेत्र में किसी अधिकारी की अस्वस्थता, अनुपस्थिति या अविद्यमानता में उसके स्थान पर अस्थायी रूप से काम करनेवाला। (आफ़िशिएटिंग)

स्थानिक—वि०[सं०] १. स्थान-संबंधी। २. किसी स्थान विशेष में ही होनेवाला। जिसका क्षेत्र किसी स्थान विशेष तक ही सीमित हो। स्थानीय। जैसे—स्थानिक शब्द।

पुं०१. स्थान-रक्षक। २. देव मंदिर का प्रबंधक।

स्थानिक अधिकरण—पुं०[सं०] किसी विशेष स्थान पर रहनेवाले अधिकारियों का समूह वर्ग या निकाय। (लोकल ऑथॉरिटी)

स्थानिक-कर—पुं० [सं०] किसी स्थान विशेष पर लगनेवाला कर। (लोकल टैक्स)

स्थानिक-परिषद्—स्त्री०[सं०] किसी बस्ती के निवासियों के प्रतिनिधियों की वह परिषद् या सभा जिस पर वहाँ के कुछ विशिष्ट लोक-हित संबंधी सार्वजनिक कार्यों का भार हो। (लोकल बोर्ड)

स्थानिक स्वराज्य—पुं०, दे० 'स्थानिक स्वायत्त शासन'।

स्थानिक स्वायत्त शासन—पुं०[सं०] १. लोकतंत्र शासन प्रणाली में शहरों, कसबों, गाँवों आदि के लोगों द्वारा की जानेवाली अपने यहाँ की शासन-व्यवस्था। २. उक्त शासन का अधिकार। ३. उक्त शासन-प्रणाली। (लोकल सेल्फ़ गवर्नमेंट)

स्थानी (निन्)—वि० [सं०]१. स्थान या पद से युक्त। २. उपयुक्त। ३. स्थायी।

स्थानीकरण—पुं०[सं०] [भू० कृ० स्थानीकृत] इधर-उधर या दूर तक फैले हुए कार्यों, व्यापारों आदि को नियंत्रित करके एक केन्द्र या स्थान में आबद्ध या सीमित करना। (लोकलाइजेशन)

स्थानीकृत—भू० कृ० [सं०] जो या जिसका स्थानीकरण हुआ हो या किया गया हो। (लोकलाइज्ड)

स्थानीय—वि०[सं०] १. उस स्थान या नगर का जिसके संबंध में कोई उल्लेख हो। उल्लिखित, वक्ता या लेखक के स्थान का। मुकामी। स्थानिक। (लोकल) जैसे—स्थानीय पुलिस कर्मचारी। स्थानीय समाचार। २. किसी स्थान पर ठहरा हुआ। स्थित।

पुं० १. नगर। शहर। २. प्राचीन भारत में ८०० गाँवों के बीच में बना हुआ किला या गढ़।

स्थानीय स्वशासन—पुं०[सं०] = स्थानिक स्वायत्त शासन।

स्थानेश्वर—पुं०[सं०]१. कुरुक्षेत्र का थानेश्वर नामक स्थान जो किसी समय एक प्रसिद्ध तीर्थ था। २. स्थानाध्यक्ष।

स्थापक—वि०[सं०]१. स्थापन या स्थापना करनेवाला। २. मूर्तियाँ आदि बनानेवाला। ३. अमानत या धरोहर रखनेवाला। ४. दे० 'संस्थापक'।

पुं० भारतीय नाट्यशास्त्र में वह नट जो पूर्व-रंग में सूत्रधार के मंगलाचरण करके चले जाने पर वैष्णव रूप में आकर नाटक की कथावस्तु के काव्यार्थ की स्थापना करता अर्थात् सूचना देता है।

स्थापत्य—पुं०[सं०] १. स्थपति का अर्थात् मकान आदि बनाने का कार्य। राजगीरी। मेमारी। २. भवन बनाने की विद्या। वास्तु-विज्ञान। ३. अंतःपुर का रक्षक।

स्थापत्य-वेद—पुं०[सं०] चार उपवेदों में से एक जिसमें वास्तु-शिल्प या भवन-निर्माण कला का विषय वर्णित है। कहते हैं कि यह विश्वकर्मा ने अथर्ववेद से निकाला था।

स्थापन—पुं०[सं०] [वि० स्थापनीय, भू० कृ० स्थापित, कर्ता० स्थापक] १. उठाना या खड़ा करना। २. दृढ़तापूर्वक जमाना, रखना या बैठाना। जैसे—वृक्ष या देवता का स्थापन। ३. दृढ़ या पुष्ट आधार पर स्थिर करना। स्थायी रूप देना। ४. कोई नई संस्था या व्यापारिक कार-बार खड़ा करना। (एस्टैब्लिशमेन्ट)५. किसी को किसी पद पर काम करने के लिए लगाना या नियत करना। (पोस्टिंग) ६. कोई मत या विचार इस प्रकार युक्तिपूर्वक लोगों के सामने रखना कि वह ठीक या प्रामाणिक जान पड़े। प्रतिपादन। ७. (शरीर की) रक्षा या आयुवृद्धि का उपाय। ८. रक्त-स्राव रोकने का उपाय या क्रिया। ९. समाधि। १०. प्रसवन। ११. रहने की जगह। घर। मकान। १२. अनाज का ढेर। १३. दे० 'स्थापना'।

स्थापन-निक्षेप—पुं० [सं०] अर्हत् की मूर्ति का पूजन। (जैन)

स्थापना—स्त्री० [सं०] १. स्थापित करने की क्रिया या भाव। स्थापन। २. तर्क, प्रमाण, युक्ति आदि के द्वारा अपना पक्ष या मत ठीक सिद्ध करते हुए दूसरों के सामने रखना। अपना पक्ष स्थापित करना। निरूपण। प्रतिपादन। (एस्टैब्लिशमेंट) ३. इकट्ठा या जमा करना। ४. भारतीय नाट्य-शास्त्र में नाटक के पूर्व-रंग में सूत्रधार के द्वारा मंगलाचरण हो चुकने पर स्थापक नामक नट के द्वारा इस बात का सूचित किया जाना कि नाटक की कथा-वस्तु और उसका काव्यार्थ क्या है। ५. जैन धर्म में किसी मूर्ति में देवता, व्यक्ति आदि का आरोप करना। † स० ठीक तरह से जमाना, बैठाना या रखना। स्थापित करना।

स्थापनिक—वि० [सं०] १. स्थापन संबंधी। स्थापन का। २. एकत्र या जमा किया हुआ।

स्थापनीय—वि० [सं०] स्थापित किये जाने के योग्य। जिसका स्थापन हो सके या होने को हो।

स्थापयितव्य—वि० [सं०] =स्थापनीय।

स्थापयिता (तृ)—वि० [सं०] =स्थापक।

स्थापित—भू० कृ० [सं०] १. जिसकी स्थापना की गई हो। कायम किया हुआ। २. इकट्ठा या जमा किया हुआ। ३. सँभालकर रखा हुआ। रक्षित। ४. निर्धारित या निश्चित। ५. व्यवस्थित। ६. विवाहित। ७. दृढ़। पक्का। मजबूत।

स्थापी (पिन्)—पुं० [सं०] प्रतिमा निर्माण करने या मूर्ति बनानेवाला कारीगर।

स्थाप्य—वि० [सं०] =स्थापनीय।

पुं० १. देवता आदि की मूर्ति। देव-प्रतिमा। २. अमानत। धरोहर।

स्थाय—पुं० [सं०] १. वह जिसमें कोई चीज रखी जाय। वह जिसमें धारिता शक्ति हो। २. जगह। स्थान।

स्थाया—स्त्री० [सं०] पृथ्वी। धरती।

स्थायिक—वि० [सं०] १. स्थायी। २. विश्वसनीय।

स्थायिता—स्त्री०=स्थायित्व।

स्थायित्व—पुं० [सं०] १. 'स्थायी' होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। २. किसी वस्तु विशेषतः सेवा या नौकरी के पद आदि पर होनेवाला ऐसा अधिकार जो कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार सुरक्षित और नियत काल के लिए स्थायी हो। (टेन्योर)

स्थायी—वि० [सं०] १. किसी स्थान पर स्थित होनेवाला। २. सदा स्थित रहनेवाला। हमेशा बना रहनेवाला। (परमानेन्ट) जैसे—स्थायी पद। ३. बहुत दिनों तक चलनेवाला। टिकाऊ। ४. स्थायी भाव। (दे०)

स्थायीकरण—पुं० [सं०] [भू० कृ० स्थायीकृत] १. किसी वस्तु, कार्य या बात को स्थायी रूप देना। २. किसी पद पर, अस्थायी रूप से अथवा परीक्षण के रूप में काम करनेवाले व्यक्ति को उस पर स्थायी रूप से नियत करना। ३. उक्त कार्य के लिए दी जानेवाली आज्ञा या स्वीकृति। (कन्फ़र्मेशन)

स्थायी कोष—पुं० [सं०] किसी संस्था आदि का वह कोष या धन राशि जो उसे स्थायी रूप से बनाये रखने के लिए क्रम-क्रम से बराबर संचित होती रहती है और जिसका उपयोग उस संस्था को पुष्ट रूप देने और स्थायी बनाये रखने में होता है।

स्थायी निधि—स्त्री० [सं०] १. वह निधि जो कोई काम चलाये चलने के लिए स्थापित की गई हो और जिसके ब्याज मात्र से वह काम चलता हो। २. स्थायी कोष। (एन्डाउमेन्ट)

स्थायी भाव—पुं० [सं०] साहित्य में वे मूल तत्त्व या भाव जो मूलतः मनुष्यों के मन में प्रायः सदा निहित रहते और कुछ विशिष्ट अवसरों पर अथवा कुछ विशिष्ट कारणों से स्पष्ट रूप से प्रकट होते हैं। जैसे—प्रेम, हर्ष या उससे उत्पन्न होनेवाला हास्य, खेद, दुःख, शोक, भय, वैराग्य आदि। इन्हीं तत्त्वों या भावों के आधार पर साहित्य के ये नौ रस स्थिर हुए हैं—शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स और शांत। इन्हीं रसों में मूल तथा स्थायी रूप से स्थापित रहने और किसी दूसरे भाव के आने पर भी प्रबलता तथा स्पष्ट रूप से व्यक्त होने के कारण ये भाव स्थायी कहलाते हैं।

स्थायी समिति—स्त्री० [सं०] १. वह समिति जो स्थायी रूप से बनी रहकर काम करने के लिए नियुक्त की गई हो। २. किसी सम्मेलन या महासभा आदि की यह समिति जो उस सम्मेलन या महासभा के अगले अधिवेशन तक सब कार्यों की व्यवस्था के लिए चुनी जाती है। (स्टैंडिंग कमिटी)

स्थाल—पुं० [सं०] १. पात्र (बरतन)। २. बड़ी थाली। थाल। ३. देगची। पतीला। ४. दाँत का खोखलापन।

स्थाली—स्त्री० [सं०] १. मिट्टी के वे बरतन जो भोजन बनाने और खाने-पीने के काम में आते हों। जैसे—कसोरा, तश्तरी, हाँडी आदि। २. मिट्टी की वह तश्तरी जिसमें यज्ञ के समय सोम का रस निचोड़ा जाता था। ३. थाली। ४. खीर। ५. पाटला नामक वृक्ष।

स्थाली-पाक—पुं० [सं०] १. आहुति के लिए एक प्रकार का चरु जो दूध में चावल या जौ डालकर पकाने से बनता था। २. वैद्यक में लोहे की एक पाकविधि।

स्थाली-पुलाक न्याय—पुं० [सं०] एक प्रकार का न्याय या कहावत जिसका प्रयोग यह आशय सूचित करने के लिए होता है कि हाँड़ी में उबाले हुए चावलों का एक दाना देखने से ही यह पता चल जाता है कि सब चावल अच्छी तरह पके हैं या नहीं। जैसे—मैं ने उनका एक ही व्याख्यान सुन कर स्थाली पुलाक-न्याय से सब विषयों में उनका मत जान लिया।

स्थाल्य—वि० [सं०] १. स्थल-संबंधी। २. स्थल पर होनेवाला।

पुं० १. अन्न। २. जड़ी-बूटी।

स्थावर—वि० [सं०] [भाव० स्थावरता] १. इस प्रकार जड़ा, रखा या लगाया हुआ कि हट न सके। स्थिर। २. जो सदा एक ही जगह जमा रहता हो और वहाँ से कभी हटता न हो। ('जंगम' का विरु०) ३. अचल। गैर मनकूला। (इम्मूवेबुल) ४. उक्त प्रकार के पदार्थों से उत्पन्न होने या संबंध रखनेवाला। जैसे—स्थावर विष।

पुं० १. अचल संपत्ति। जैसे—खेत, बाग, मकान आदि। २. पर्वत। ३. अचेतन पदार्थ। जैसे—मिट्टी, बालू आदि। ४. वह पारिवारिक वस्तु जिसे बेचने का अधिकार किसी को नहीं होता। ५. स्थूल शरीर।

स्थावरता—स्त्री० [सं०] स्थावर होने की अवस्था, गुण या भाव।

स्थावर-नाम—पुं० [सं०] वह पाप कर्म जिसके उदय से जीव स्थावर काय (स्थूल शरीर) में जन्म ग्रहण करते हैं। (जैन)

स्थावर-राज—पुं० [सं०] हिमालय।

स्थावर-विष—पुं० [सं०] वह विषय जो वृक्षों की जड़ों, पत्तों, फल, फूल, छाल, दूध, सार, गोंद, धातु और कंद में होता है। स्थावर पदार्थों में होनेवाला जहर। (वैद्यक)

स्थाविर—पुं० [सं०] वृद्धावस्था। वार्धक्य। बुढ़ौती।

स्थाविर-लगुडन्याय—पुं० [सं०] जैसे वृद्ध की लाठी निशाने पर नहीं पहुँचती वैसे यदि कोई बात लक्ष्य तक पहुँचने में विफल हो, तो यह न्याय प्रयुक्त होता है।

स्थित—भू० कृ० [सं०] [भाव० स्थिति] १. किसी स्थान पर खड़ा, ठहरा या बना हुआ। जैसे—दिल्ली स्थित मकान। २. बसा हुआ। जैसे—प्रयाग स्थित पारिवारिक सदस्य। ३. दृढ़। पक्का। जैसे—स्थित प्रज्ञ। ४. प्रतिष्ठित या प्रस्थापित किया हुआ। ५. बैठा हुआ। ६. ऊपर की ओर उठा हुआ। ७. अचल। ८. उपस्थित। मौजूद।

पुं० १. अवस्थान। निवास। २. कुल या परिवार की मर्यादा।

स्थितता—स्त्री० [सं०] स्थित होने की अवस्था, गुण या भाव। स्थिति।

स्थित-धी—वि० [सं०] १. स्थिर बुद्धिवाला । २. सोच-समझ कर निश्चय करने और उस पर स्थिर रहनेवाला । ३. दुःख-सुख में विचलित या विह्वल न होनेवाला ।

स्थित-पाठ्य—पुं० [सं०] नाट्य-शास्त्र में विरही नायक या नायिका का एकान्त में बैठकर दुःखी मन से आप ही आप बातें करना या बड़बड़ाना।

स्थित-प्रज्ञ—वि० [सं०] १. जिसकी विवेक-बुद्धि स्थिर हो। २. सब प्रकार के मनोविकारों से रहित या शून्य और सदा आत्मा में ही प्रसन्न तथा संतुष्ट रहनेवाला ।

स्थिति—स्त्री० [सं०] [वि० स्थित] १. स्थित होने की क्रिया, दशा या भाव। रहना या होना । अवस्थान । अस्तित्व । २. एक ही स्थान पर या एक ही रूप में बना रहना । टिकाव । ठहराव । ३. आपेक्षिक, आर्थिक, सामाजिक आदि दृष्टियों से समझी जानेवाली किसी विषय या व्यक्ति की अवस्था । दशा । हालत । जैसे---(क) आज-कल उनकी स्थिति अच्छी नहीं है । (ख) देश की राजनीतिक (या सामाजिक) स्थिति बिलकुल बदल गई है। ४. पद, मर्यादा आदि के विचार से समाज में किसी को प्राप्त होनेवाला स्थान । (पोज़ीशन) ५. किसी व्यक्ति, संस्था आदि की वह विधिक दशा या मर्यादा जो उसे अपने क्षेत्र में कुछ निश्चित सीमा में प्राप्त होती है, और जो उसके पद, सम्मान आदि की सूचक होती है। (स्टेटस) ६. वे बातें जो कोई पक्ष अपने वक्तव्य, अभियोग, आरोप आदि के संबंध में कहता या उपस्थित करता है । (केस) जैसे---इस विषय में मैं अपनी स्थिति आप को बतला चुका हूँ। ७. निवास-स्थान। ८. अस्तित्व । ९. पालन-पोषण । १०. नियम या विधान । ११. विचारणीय विषय का निर्णय या निष्पत्ति । १२. मर्यादा। १३. सीमा। हद। १४. छुटकारा । निवृत्ति। १५. ढंग। तरीका। १६. आकृति । रूप।

स्थिति गणित---पुं०[सं०] गणित की वह शाखा जिसमें सांख्यिक विवरण संगृहीत तथा वर्गीकृत किये जाते हैं और विशेष रूप से पदार्थों की साम्यावस्था पर प्रभाव डालनेवाली शक्तियों का अंकों में विवेचन होता है। (स्टैटिस्टिक्स)

स्थितिता—स्त्री० [सं०] १. स्थिति का भाव या धर्म । २. स्थिरता।

स्थितिमान् (मत्)—वि० [सं०] १. जिसमें दृढ़ता या धीरता हो । २. स्थायी। ३. धार्मिक ।

स्थिति-शील—वि० [सं०] [भाव० स्थितिशीलता] १. बराबर एक ही स्थिति में होता या बना रहनेवाला । २. जो किसी स्थिति में पहुँचकर ज्यों का त्यों रह जाय। (स्टेटिक)

स्थिति-स्थापक--वि० [सं०] [भाव० स्थिति-स्थापकता] १. दाब हट जाने पर फिर ज्यों का त्यों हो जानेवाला। नमनीय। लचीला। २. दे० 'तन्यक' ।

स्थिर—वि० [सं०] [भाव० स्थिरता] १. सदा एक ही दशा, रूप या स्थिति में रहनेवाला। अचर। निश्चल। (कांस्टेन्ट) २. बहुत दिनों तक या सदा ज्यों का त्यों बना रहनेवाला। स्थायी। (स्टैबल) ३. इस प्रकार निश्चित किया हुआ जिसमें जल्दी या सहज में कोई परिवर्तन या हेर-फेर न हो सके। जैसे—मत स्थिर करना। ४. जो किसी स्थान पर पहुँचकर स्थायी रूप से रुक या ठहर गया हो। एक ही जगह पर बहुत दिनों तक टिका रहनेवाला। (स्टेशनरी) ५. जिसमें किसी प्रकार का उद्वेग, चंचलता आदि न हो। धीर। शांत । ६. (प्रस्ताव या विचार) जो निश्चय के रूप में लाया गया हो। निश्चित। ७. एक ही स्थान पर जड़ा, बैठाया या लगाया हुआ । ८. स्थायी। ९. विश्वसनीय ।

पुं० १. शिव । २. देवता । ३. मोक्ष । ४. पर्वत। ५. वृक्ष ६. शनिग्रह। ७. ज्योतिष में एक प्रकार का योग। ८. ज्योतिष में वृष, सिंह, वृश्चिक, और कुंभ—ये चारों राशियाँ स्थिर मानी गई हैं। ९. एक प्रकार का मंत्र जिससे शास्त्र अभिमंत्रित किये जाते थे। १०. वह कर्म जिससे जीव को स्थिर अवयव प्राप्त होते हैं। (जैन) ११. वृष। साँड़। १२. धौ का पेड़।.

स्थिर गंध—वि० [सं०] जिसकी सुगंध स्थिर रहती हो। स्थिर या स्थायी गंध युक्त ।

पुं० चंपक चंपा ।

स्थिर-गंधा—स्त्री० [सं०] १. केवड़ा। केतकी। २. पाटला । पाढर।

स्थिर-चक्र---पुं० [सं०] मंजुघोष या मंजुकी नामक प्रसिद्ध बोधिसत्व का एक नाम।

स्थिर-चित्त—वि०[सं०] १. जिसका मन स्थिर या दृढ़ हो। २. उत्तेजित, विचलित या विह्वल न होनेवाला।

स्थिर-चेता—वि०=स्थिर-चित्त ।

स्थिर-जीवी (विन्)—पुं०[सं०] कौआ, जिसका जीवन बहुत दीर्घ होता है।

स्थिरता—स्त्री०[सं०]१. स्थिर रहने या होने की अवस्था, गुण या भाव। २. दृढ़ता। मजबूती। ३. धीरता। ४. स्थायित्व।

स्थिरत्व—पुं०=स्थिरता।

स्थिर-दंष्ट्र—पुं० [सं०] १. साँप। सर्प। २. ध्वनि। ३. विष्णु का वाराह अवतार।

स्थिर-पत्र—पुं० [सं०] १. श्रीताल वृक्ष। २. हिंताल वृक्ष।

स्थिर पुष्प—पुं०[सं०] १. चंपक वृक्ष। चंपा। २. बकुल। मौलसिरी। ३. तिल-पुष्पी।

स्थिर-बुद्धि—वि०[सं०] जिसकी बुद्धि स्थिर हो। ठहरी हुई बुद्धिवाला। दृढ़चित्त।

स्थिर-मति—वि०=स्थिर-बुद्धि।

स्थिरमना—वि०=स्थिर-चित्त।

स्थिर-मूल्य—पुं० [सं०] किसी वस्तु का वह निश्चित मूल्य जिसमें कमी-बेशी न हो सकती हो। (फ़िक्स्ड प्राइस)

स्थिर-यौवन—वि० [सं०] [स्त्री० स्थिरयौवना] जिसका यौवन-काल या जवानी अधिक दिनों तक बनी रहे।

पुं० विद्याधर।

स्थिर-यौवना—वि० स्त्री० [सं०] (स्त्री) जिसका यौवन अपेक्षया अधिक समय तक बना या स्थिर रहे।

स्थिरा—स्त्री० [सं०] १. दृढ़ चित्तवाली स्त्री। २. पृथ्वी। ३. काकोली। ४. बनमूँग। ५. सेमल। ६. मूसाकानी। ७. माषपर्णी। मखवन।

स्थिरात्मा (त्मन्)--वि० [सं०] दृढ़ चित्तवाला।

स्थिरायु—वि० [सं०] १. जिसकी आयु बहुत अधिक हो। चिरजीवी। २. अमर।

पुं० सेमल का पेड़।

स्थिरीकरण—पुं० [सं०] १. स्थिर करने की क्रिया या भाव। २. घटती-बढ़ती रहनेवाली वस्तुओं का स्वरूप या मानक स्थिर करना। (स्टैबिलाइज़ेशन) जैसे—मूल्य या भाव का स्थिरीकरण। ३. पुष्टि। समर्थन।

स्थूण—पुं०[सं०]१. थूनी। २. खंभा।

स्थूणा—स्त्री० [सं०] १. थूनी। २. खंभा। ३. पेड़ का ठूँठ। ४. लोहे का पुतला। ५. निहाई। ६. एक प्रकार का रोग।

स्थूणाकर्ण—पुं० [सं०] १. एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना। २. एक प्रकार का तीर। ३. एक प्रकार का रोग-ग्रह।

स्थूणापक्ष—पुं० [सं०] सेना की एक प्रकार की व्यूह-रचना।

स्थूणीय, स्थूण्य—वि०[सं०] स्तंभ-संबंधी।

स्थूल—वि०[सं०] [भाव० स्थूलता]१. भारी और मोटे अंगोंवाला। मोटा। 'सूक्ष्म' का विपर्याय। २. तुरन्त या बिना परिश्रम के समझ में आनेवाला। ३. जिसमें छोटे और बारीक अंगों का विचार न हो। (रफ़)४. मोटे हिसाब से अनुमान किया या ध्यान में आया हुआ। (रफ़) ५. अभी जिसमें से लागत, व्यय आदि न निकाला गया हो। 'पक्का' का विपर्याय। (ग्रास) जैसे—स्थूल आय। ६. जिसका तल सम न हो। ७. मूर्ख।

पुं० १. वह पदार्थ जिसका साधारणतया इंद्रियों द्वारा ग्रहण हो सके। वह जो स्पर्श, घ्राण, दृष्टि आदि की सहायता से जाना जा सके। गोचर-पिंड। २. वैद्यक के अनुसार शरीर की सातवी त्वचा। ३. अन्नमय कोश। ४. ढेर। राशि। समूह। ५. विष्णु। ६. शिव का एक गण। ७. कटहल। ८. कंगनी। प्रियंगु। ९. ईख। ऊख। १०. एक प्रकार का कदंब।

स्थूल-कंटक—पुं० [सं०] बबूल की जाति का एक प्रकार का पेड़ जिसे आरी भी कहते हैं।

स्थूल-कंद—पुं०[सं०] १. लाल लहसुन। २. जमीकंद। सूरन। ३. हाथीकंद। ४. मान कंद। ५. मुखालु।

स्थूल-जंघा—स्त्री० [सं०] नौ प्रकार की समिधाओं में से एक। (गृह्यसूत्र)

स्थूल-जिह्व—वि०[सं०] जिसकी जीभ बहुत बड़ी हो।

पुं० एक प्रकार के भूत।

स्थूल-जीरक—पुं०[सं०] मँगरैला।

स्थूल-तंडुल—पुं०[सं०] एक प्रकार का मोटा धान।

स्थूलता—स्त्री०[सं०]१. स्थूल होने की अवस्था, गुण या भाव। स्थूलत्व। २. मोटाई। ३. भारीपन।

स्थूलत्व—पुं०=स्थूलता।

स्थूल-दर्भ—पुं०[सं०] मूंज नामक तृण।

स्थूल-दर्शक—पुं०[सं०] सूक्ष्म-दर्शक यंत्र।

स्थूल-देह—पुं०[सं०]=स्थूल शरीर।

स्थूल-नास (नासिक)—पुं०[सं०] सूअर। शूकर।

वि० लम्बी नाकवाला।

स्थूल-पत्र—पुं० [सं०]१. दौना नामक क्षुप। दमनक। २. सप्तपर्ण। छतिवन।

स्थूल-पर्णी—स्त्री०[सं०] सत्यपर्ण। छतिवन।

स्थूल-पाद—पुं०[सं०]१. वह जिसे श्लीपद या फीलपा रोग हो। २. हाथी।

स्थूल-पुष्प—पुं०[सं०]१. वक या अगस्त नामक वृक्ष। २. गुलमखमली। झंटुक।

स्थूल-पुष्पी—स्त्री०[सं०] शंखिनी। यवतिका।

स्थूल-फल—पुं०[सं०] १. सेमल। शाल्मली। २. बड़ा नीबू।

स्थूल फला—स्त्री० [सं०]१. शणपुष्पी। बनसनई। २. सेमल।

स्थूल-भद्र—पुं०[सं०] जैनियों का भेद या वर्ग। श्रुतकेवलिक।

स्थूल मरिच—पुं०[सं०] शीतलचीनी। कबाबचीनी। कक्कोल।

स्थूल रोग—पुं० [सं०] मोटा होने का रोग। मोटाई की व्याधि।

स्थूल-लक्ष—पुं० [सं०][भाव० स्थूललक्षिता] १. वह जो बहुत अधिक दान करता हो। बहुत बड़ा दानी। २. पंडित। विद्वान्। ३. कृतज्ञ।

स्थूल-लक्षिता—स्त्री० [सं०] १. दानशीलता। २. पांडित्य। विद्वत्ता। ३. कृतज्ञता।

स्थूल-लक्ष्य—पुं०[सं०]१. वह जो बहुत अधिक दान करता हो। बहुत बड़ा दाता। २. किसी विषय की ऊपरी या मोटी बातें बताना।

स्थूल-शर—पुं०[सं०] रामशर।

स्थूल-शरीर—पुं०[सं०] वेदान्त के अनुसार जीव या प्राणी के तीन प्रकार के शरीरों में से वह जो भौतिक तत्त्वों या हाड़-मांस का बना होता है और जो प्राण, बुद्धि, मन, कर्मेन्द्रियों तथा ज्ञानेन्द्रियों से युक्त होता है। जीव इसी शरीर में जन्म लेता और संसार के सब काम करता है।

विशेष—शेष दोनों कारण शरीर और सूक्ष्म शरीर कहलाते हैं।

स्थूल-शालि—पुं०[सं०] एक प्रकार का मोटा चावल। स्थूल तंडुल।

स्थूल-हस्त—पुं०[सं०] हाथी की सूंड़।

वि० लंबे या मोटे हाथोंवाला।

स्थूलांत्र—पुं०[सं०] पेड़ू के अन्दर की बड़ी अँतड़ी।

स्थूला—स्त्री०[सं०]१. बड़ी इलायची। २. गजपीपल। ३. सौंफ। ४. मुनक्का। ५. कपास। ६. ककड़ी। ७. सोआ नामक साग।

स्थूलाम्र—पुं०[सं०] कलमी आम।

स्थूलास्य—पुं०[सं०] साँप। सर्प।

स्थूली (लिन्)—पुं०[सं०] ऊँट।

स्थूलोच्चय—पुं० [सं०] हाथी की मध्यम चाल, जो न बहुत तेज हो और न बहुत सुस्त।

स्थूलोदर—वि०[सं०] बड़ी तोंदवाला।

स्थेय—वि०[सं०] स्थापित किये जाने के योग्य। जो स्थापित किया जा सके या किया जाने को हो।

पुं०१. पुरोहित। २. विवाद आदि का निर्णायक। न्यायकर्ता या पंच।

स्थैर्य—पुं०[सं०]१. स्थिरता। २. दृढ़ता।

स्थौर—पुं०[सं०]१. स्थिरता। २. दृढ़ता। ३. उतनी सामग्री जितनी एक बार में अपनी या किसी की पीठ पर लादकर ले जाते हैं। खेप।

स्थौल्य—पुं०[सं०]१. स्थूल होने की अवस्था, गुण या भाव। स्थूलता। २. शरीर की देह-वृद्धि जो वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग है। मोटापा। ३. भारीपन।

स्नपन--पुं० [सं०] [भू० कृ० स्नपित] नहाने की क्रिया। स्नान।

स्नसा—स्त्री०[सं०] स्नायु।

स्नात—भू० कृ० [सं०] जिसने स्नान किया हो। नहाया हुआ। जैसे—चन्द्रिका स्नात।

पुं०=स्नातक।

स्नातक—पुं०[सं०]१. वह जिसने विद्या का अध्ययन और ब्रह्मचर्य व्रत समाप्त कर लिया हो। २. वह जिसने किसी विश्वविद्यालय की कोई परीक्षा पारित की हो। (ग्रैजुएट)

स्नातकोत्तर—वि०[सं०] (अध्ययन या परीक्षा) जो स्नातक हो जाने के उपरान्त और आगे हो। (पोस्ट ग्रैजुएट)

स्नातव्य—वि०[सं०] जिसे स्नान कराना आवश्यक या उचित हो।

स्नान—पुं०[सं०] [वि० स्नात] १. स्वच्छ या शीतल करने के लिए सारा शरीर जल से धोना या जलराशि में प्रवेश करना। नहाना। २. धार्मिक दृष्टि से (क) कुछ दिनों तक बराबर नियमपूर्वक किसी जलाशय में जाकर वहाँ की जानेवाली उक्त क्रिया। जैसे—कार्तिक स्नान, माघ स्नान आदि। (ख) कुछ विशिष्ट अवसरों या पर्वों पर उक्त कार्य के संबंध में किसी तीर्थ या पवित्र स्थान में लगनेवाला मेला। जैसे—कुंभ स्नान, प्रयाग स्नान आदि। ३. धूप, वायु आदि के सामने इस प्रकार बैठना, लेटना या होना कि सारे शरीर पर उसका पूरा प्रभाव पड़े। जैसे—वायु-स्नान, आतप-स्नान। ४. इस प्रकार किसी वस्तु पर किसी दूसरी वस्तु का पड़नेवाला प्रभाव या प्रसार। जैसे—चन्द्रमा की चाँदनी में पृथ्वी का स्नान। (बाथ)

स्नान-गृह—पुं०[सं०] नहाने का कमरा। गुसलखाना। हमाम।

स्नान-तृण—पुं० [सं०] कुश जिसे हाथ में लेकर नहाने का शास्त्रों में विधान है।

स्नान-यात्रा—स्त्री० [सं०] ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को होनेवाला एक उत्सव जिसमें विष्णु को महास्नान कराया जाता है। इस दिन जगन्नाथजी के दर्शन का बहुत माहात्म्य कहा गया है।

स्नान-वस्त्र—पुं० [सं०] वह वस्त्र जिसे पहनकर स्नान किया जाता है। (बेदिंग सूट)

स्नान-शाला--स्त्री० [सं०] स्नान-गृह। गुसलखाना।

स्नानागार—पुं० [सं०] स्नान-गृह।

स्नानी (निन्)—वि० [सं०] स्नान करनेवाला।

स्त्री०=स्नान-गृह।

स्नानीय—वि० [सं०] १. जो नहाने के योग्य हो। २. जल जिसमें स्नान किया जा सके।

स्नानोदक—पुं० [सं०] नहाने के काम में आनेवाला जल। नहाने का पानी।

स्नापक—वि० [सं०] स्नान कराने या नहलानेवाला।

पुं० वह सेवक जो स्वामी को स्नान कराता हो अथवा स्नान करने के लिए जल आदि लाता हो।

स्नापन—पुं० [सं०] स्नान कराना। नहलाना।

स्नापित—भू० कृ० [सं०] नहलाया हुआ।

स्नायन—पुं० [सं०] स्नान। नहाना।

स्नायविक—वि० [सं०] स्नायु-संबंधी। स्नायु का। (नर्वस)

स्नायवीय—वि० [सं०] स्नायु-संबंधी। स्नायविक।

पुं० आँख, पैर, हाथ आदि कर्मेन्द्रियाँ।

स्नायी (यिन्)—वि० [सं०] जो स्नान करता हो। नहानेवाला।

स्नायु—स्त्री० [सं०] १. धनुष की डोरी। २. दे० 'तंत्रिका'। (नर्व)

स्नायुक—पुं० [सं०] नहरुआ नामक रोग।

स्नायु-वर्म (न्)—पुं० [सं०] आँख का एक प्रकार का रोग जिसमें उसकी कौड़ी या सफेद भाग पर एक छोटी गाँठ-सी निकल आती है। (वैद्यक)

स्नायु शूल—पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग, जिसमें स्नायु में शूल के समान तीव्र वेदना होती है।

स्निग्ध—वि० [सं०] [भाव० स्निग्धता] १. जिसमें स्नेह या प्रेम हो। २. जिसमें स्नेह या तेल रहता हो या लगा हो। चिकना (ऑयली) ३. जो अपने तेलवाले अंश और चिकनेपन के कारण यंत्रों के पहियों, पुरजों आदि को सरलतापूर्वक चलने में सहायता देता हो। (ल्युब्रिकेटिंग)

पुं० १. लाल रेंड़। २. धूपसरल या सरल नामक वृक्ष। ३. गन्धाबिरोजा। ४. दूध पर की मलाई।

स्निग्धता—स्त्री० [सं०] १. स्निग्ध या चिकना होने की अवस्था, गुण या भाव। चिकनापन। चिकनाहट। २. प्रेमपूर्ण भाव या व्यवहार से युक्त होने की अवस्था या गुण।

स्निग्धत्व—पुं०=स्निग्धता।

स्निग्ध-दारु—पुं० [सं०] १. देवदारु का पेड़। २. धूपसरल। ३. शाल वृक्ष।

स्निग्ध-पत्र—पुं० [सं०] १. घृतकरंज। घीकरंज। २. गुच्छ करंज। ३. भगवतवल्ली। ४. माजुरघास।

स्निग्ध-पत्रा—स्त्री० [सं०] १. बेर। २. पालक का साग। ३. अमलोनी। ४ काश्मरी। गंभारी।

स्निग्ध-पत्री—स्त्री० [सं०]=स्निग्धपत्रा।

स्निग्ध-पर्णी—स्त्री० [सं०] १. पृश्निपर्णी। पिठवन। २. मरोड़ फली। मूर्वा।

स्निग्ध-फल—पुं० [सं०] गुच्छ करंज।

स्निग्ध-फला—स्त्री० [सं०] १. फूट नामक फल। २. नकुलकंद। नाकुली।

स्निग्धबीज—पुं० [सं०] यशब गोल। ईसबगोल।

स्निग्ध-मज्जक—पुं० [सं०] बादाम।

स्निग्ध-राजि—पुं० [सं०] एक प्रकार का साँप जिसकी उत्पत्ति काले साँप और राजमती जाति की साँपिनी से होती है। (सुश्रुत)

स्निग्धा—स्त्री० [सं०] १. मेदा नामक अष्टवर्गीय ओषधि। २. अस्थि के अन्दर का गूदा। मज्जा। ३. विकंकत।

स्नुषा—स्त्री० [सं०] १. पुत्र-वधू। लड़के की स्त्री। २. थूहड़।

स्नुहा (ही)—स्त्री० [सं०] थूहड़।

स्नेय—वि० [सं०] १. जिसमें या जिससे स्नान किया जा सके। २. जो स्नान करने को हो या जिसे स्नान करना आवश्यक या उचित हो।

स्नेह—पुं० [सं०] १. चिकना पदार्थ। चिकनाहटवाली चीज। जैसे—

घी, तेल, चरबी आदि। २. प्रेमियों, हमजोलियों, बच्चों आदि के प्रति होनेवाला प्रेम-भाव। ३. कोमलता। मुलायमत। ४. सिर के अन्दर का गूदा। मज्जा। ५. एक प्रकार का राग जो हनुमत के मत से हिंडोल राग का पुत्र है। ६. सरसों। ७. दही या दूध पर की मलाई।

स्नेहक—पुं० [सं०] १. वह तेल या चिकना पदार्थ जो यंत्रों के पहियों आदि में उन्हें सरलता से चलाने के लिए डाला जाता है। (लूब्रिकेन्ट) २. प्रेमी। स्नेही।

वि० १. स्निग्ध या चिकना करनेवाला। २. स्नेही।

स्नेहन—पुं० [सं०] १. किसी चीज में स्नेह या तेल लगाने अथवा उसे चिकना करने की क्रिया या भाव। चिकनाना। २. यंत्रों आदि के अंगों और पहियों में उन्हें सरलता से चलाने के लिए तेल डालना। (ल्युब्रिकेशन) ३. किसी चीज से चिकनाहट उत्पन्न करना या लाना ४. शरीर में तेल लगाना। ५. नवनीत। मक्खन। ६. कफ। श्लेष्म।

स्नेहनीय—वि० [सं०] १. जिस पर तेल लगाया जा सके। २. जिसके साथ स्नेह किया जा सके।

स्नेह-पात्र—वि० [सं०] [स्त्री० स्नहपात्री] जो स्नेह का पात्र या भाजन हो। जिसके प्रति स्नेह हो।

स्नेह-पान—पुं० [सं०] १. तेल पीना। २. वैद्यक के अनुसार एक प्रकार की क्रिया जिसमें कुछ विशिष्ट रोगों में तेल, घी, चरबी आदि पीने का विधान है।

स्नेह-फल—पुं० [सं०] तिल।

स्नेह-बीज—पुं० [सं०] चिरौंजी।

स्नेह-मापक—पुं० [सं०] एक प्रकार का यंत्र जिससे यह पता चलता है कि दूध में स्नेह या चिकनाई (मक्खन, घी आदि का अंश) कितना होता है। (बुटाइरोमीटर)

स्नेह-मीन—पुं० [सं०] एक प्रकार की बड़ी समुद्री मछली जिसका मांस खाया जाता है और चरबी का उपयोग कई प्रकार के रोगों में पौष्टिक ओषधि के रूप में होता है। (कॉड)

स्नेहल—वि० [सं०] १. स्नेह-पूर्ण। २. कोमल। ३. चिकना।

स्नेह-वस्ति—स्त्री० [सं०] १. वह वस्ति या पिचकारी जिसमें तेल भर कर गुदा के द्वारा रोगी के शरीर में प्रविष्ट किया जाता है। (वैद्यक) २. उक्त क्रिया या भाव।

स्नेह-वृक्ष—पुं० [सं०] देवदारु।

स्नेह-सार—पुं० [सं०] मज्जा नामक धातु। अस्थिसार।

स्नेहांश—पुं० [सं०] दीपक। चिराग।

स्नेहिक—वि० [सं०] १. स्नेह-युक्त। चिकना। २. रोगनदार।

स्नेहित—भू० कृ० [सं०] १. स्नेह से युक्त किया हुआ। २. जिसे किसी का स्नेह प्राप्त हो। ३. जिस पर चिकनाई लगाई गई हो।

स्नेही (हिन्)—वि० [सं०] १. जो स्नेह करता हो। ३. जिससे स्नेह किया जाता हो।

पुं० १. मित्र। २. लेप आदि करनेवाला चिकित्सक। ३. चित्रकार।

स्नेहोत्तम—पुं० [सं०] तिल का तेल।

स्नेह्य—वि० [सं०] जिसके साथ स्नेह किया जा सके। स्नेह या प्रेम का अधिकारी या पात्र।

स्पंज—पुं० दे० 'इस्पंज'।

स्पंजी—वि० दे० 'इस्पंजी'।

स्पंद—पुं० [सं०] [वि० स्पंदित] १. धीरे-धीरे हिलना या काँपना। २. स्पंदन की क्रिया में होनेवाला हल्का आघात या फड़क। (पल्स) विशेष दे० 'स्पंदन'।

स्पंदन—पुं० [सं०] [भू० कृ० स्पंदित] १. रह-रहकर धीरे-धीरे हिलना या काँपना। २. जीवों के शरीर में रक्त के प्रवाह या संचार के कारण कुछ रुक-रुक कर होनेवाली वह लपक गति जो हृदय के बार-बार फूलने और संकुचित होने से आघात या खटक के रूप में उत्पन्न होती है। (बीट) जैसे—नाड़ी या हृदय का स्पंदन। ३. भौतिक क्षेत्रों में किसी प्रक्रिया से होनेवाला उक्त प्रकार का व्यापार या स्थिति। फड़क। (पल्सेशन)

स्पंदित—भू० कृ० [सं०] जिसमें स्पंदन उत्पन्न हुआ हो अथवा उत्पन्न किया गया हो। हिलता या काँपता हुआ।

स्पंदिनी—स्त्री० [सं०] १. रजस्वला स्त्री। २. बराबर या सदा दूध देती रहनेवाली गौ। ३. काम-धेनु।

स्पंदी (दिन्)—वि० [सं०] जिसमें स्पंदन हो। हिलने, काँपने या फड़कनेवाला। स्पंदशील।

स्परांटो†—स्त्री०=एस्परांटो।

स्प(र्द्ध)र्धन—पुं० [सं०]=स्पर्धा करने की क्रिया या भाव।

स्प(र्द्ध)र्धनीय—वि० [सं०] १. जिससे स्पर्धा की जा सके। २. जिसके विषय में स्पर्धा की जा सके।

स्पर्द्धा—स्त्री० [सं०] [भू० कृ० स्पर्द्धित] १. रगड़। संघर्ष। २. प्रतियोगिता आदि में किसी से होनेवाली होड़। ३. सामर्थ्य या योग्यता से अधिक कुछ करने या पाने की इच्छा। ४. किसी में कोई अच्छी बात देखकर सद्भावपूर्वक उसके समान होने की कामना। (एम्यूलेशन) ५. साहस। हौसला। ६. ईर्ष्या। डाह। ७. बराबरी। समता।

स्पर्द्धी (र्द्धिन्)—वि० [सं०] स्पर्द्धा करनेवाला।

पुं० ज्यामति में किसी कोण में की उतनी कमी जिसकी पूर्ति से वह कोण १८० अंश का अथवा अर्द्ध-वृत्त होता है।

स्पर्धा—स्त्री०=स्पर्द्धा।

स्पर्धित—भू० कृ० =स्पर्द्धित।

स्पर्धी—वि०=स्पर्द्धी।

स्पर्श—पुं० [सं०] [भू० कृ० स्पर्शित, स्पृष्ट] १. त्वचा का वह गुण जिससे छूने, दबने आदि का अनुभव होता है। २. एक वस्तु के तल का दूसरी वस्तु के तल से सटना या छूना। (टच) ३. व्याकरण के उच्चारण के चार प्रकार के आभ्यन्तर प्रयत्नों में से एक जिसमें उच्चारण करते समय जीभ कुछ ऊपर उठकर और तालु को स्पर्श करके बहुत थोड़े समय के लिए श्वास रोक देती है। ('क' से 'म' तक के व्यंजनों का उच्चारण इसी प्रयत्न से होता है।) ४. ग्रहण के समय सूर्य अथवा चन्द्रमा पर छाया पड़ने लगना। ग्रहण का आरम्भ। 'मोक्ष' का विपर्याय।

५. संभोग का एक प्रकार का आसन या रति-बंध । ६. दान । ७. वायु । हवा । ८. कष्ट । पीड़ा ।

स्पर्श-कोण—पुं० [सं०] ज्यामिति में वह कोण जो किसी वृत्त पर खींची हुई स्पर्श रेखा के कारण उस वृत्त और स्पर्श रेखा के बीच में बनता है ।

स्पर्श-ग्राह्य—वि० [सं०] [भाव० स्पर्श-ग्राह्यता] स्पर्श द्वारा जिसे जाना तथा समझा जाता हो । (टैक्टाइल)

स्पर्श-जन्य—वि० [सं०] १. स्पर्श के परिणाम स्वरूप होनेवाला । जैसे—स्पर्श-जन्य सुख । २. छुतहा । संक्रामक ।

स्पर्शतन्मात्र—पुं० [सं०] स्पर्श भूत का आदि, अमिश्र और सूक्ष्म रूप । दे० 'तन्मात्र' ।

स्पर्शता—स्त्री० [सं०] स्पर्श का धर्म या भाव । स्पर्शत्व ।

स्पर्श-दिशा—स्त्री० [सं०] वह दिशा जिधर से सूर्य या चन्द्रमा को ग्रहण लगा हो या लगने को हो । चन्द्रमा या सूर्य पर ग्रहण की छाया आने अर्थात् स्पर्श का आरम्भ होने की दिशा ।

स्पर्शन—पुं० [सं०] १. स्पर्श करने या छूने की क्रिया या भाव । २. देने की क्रिया । दान । ३. लगाव । सम्बन्ध । ४. वायु । हवा ।

स्पर्शना—स्त्री० [सं०] छूने की शक्ति या भाव ।

स्पर्शनीय—वि० [सं०] जिसे स्पर्श किया या छूआ जा सके । स्पृश्य ।

स्पर्शनेंद्रिय—स्त्री० [सं०] वह इन्द्रिय जिससे स्पर्श किया जाता है । छूने की इन्द्रिय । त्वक् ।

स्पर्श-मणि—पुं० [सं०] पारस-पत्थर ।

स्पर्श-रेखा—स्त्री० [सं०] ज्यामिति में वह सरल रेखा, जो किसी वृत्त को किसी एक बिंदु पर स्पर्श करती हुई (बिना उस वृत्त को कहीं से काटे) एक ओर से दूसरी ओर निकल जाती है । (टैनजेन्ट)

स्पर्श-संघर्षी (षिन्)—वि० [सं०] (शब्दों के उच्चारण में होनेवाला प्रयत्न) जिसमें पहले श्वास-नली के साथ जीभ का थोड़ा स्पर्श और तब कुछ संघर्ष होता है । (एफ़्रिकेट) जैसे—च् या ज् का उच्चारण ।

स्पर्श-संचारी (रिन्)—पुं० [सं०] शुक्र रोग का एक भेद ।

स्पर्श-हानि—स्त्री० [सं०] शूक रोग में रुधिर के दूषित होने के फलस्वरूप लिंग के चमड़े में स्पर्श-ज्ञान न रह जाना ।

स्पर्शा—स्त्री० [सं०] दुश्चरित्रा स्त्री । छिनाल । पुंश्चली ।

स्पर्शाक्रामक—वि० [सं०] स्पर्श होने पर आक्रमण करनेवाला । संक्रामक । छुतहा ।

स्पर्शाज्ञ—वि० [सं०] जिसे स्पर्श की अनुभूति न होती हो ।

स्पर्शास्पर्श—पुं० [सं०] १. स्पर्श और अस्पर्श । छूना और न छूना । २. छूआछूत का भाव ।

स्पर्शिक—वि० [सं०] १. स्पर्श करनेवाला । २. जिसे छूने से ज्ञान प्राप्त होता है ।

पुं० वायु । हवा ।

स्पर्शी (शिन्)—वि० [सं०] स्पर्श करनेवाला । छूनेवाला । जैसे—हृदय-स्पर्शी ।

स्पर्शेंद्रिय—स्त्री० [सं०] वह इन्द्रिय जिससे स्पर्श का ज्ञान होता है । त्वचा । चमड़ा ।

स्पर्शोपल—पुं० [सं०] पारस पत्थर । स्पर्श-मणि ।

स्पष्ट—वि० [सं०] [भाव० स्पष्टता] १. जिसे देखने, समझने, सुनने आदि में नाम को भी कोई कठिनता या बाधा न हो । बिलकुल साफ़ । २. (बात या व्यवहार) जिसमें किसी तरह का छल-कपट या धोखा न हो । चालाकी, दाँव-पेंच आदि से रहित और सत्यतापूर्ण । जैसे—(क) आपसी व्यवहार सदा स्पष्ट होना चाहिए । (ख) तुम्हें जो कुछ कहना हो, वह स्पष्ट कह दो ।

पुं० १. फलित ज्योतिष में, ग्रहों का वह स्फुट साधन, जिससे यह जाना जाता है कि जन्म के समय अथवा किसी और विशिष्ट काल में कौन-सा ग्रह किस राशि के कितने अंश, कितनी कला और कितनी विकला में था । इसकी आवश्यकता ग्रहों का ठीक-ठीक फल जानने के लिए होती है । २. व्याकरण में, वर्णों के उच्चारण का एक प्रकार का प्रयत्न जिसमें दोनों होंठ एक दूसरे से छू जाते हैं । जैसे—प या म के उच्चारण में स्पष्ट प्रयत्न होता है ।

स्पष्ट कथन—पुं० [सं०] व्याकरण की दृष्टि से कथन का वह प्रकार जिसमें किसी द्वारा कही हुई बात का उल्लेख ठीक उसी रूप में बिना किसी प्रकार का व्याकरणगत अंतर उपस्थित किये किया जाता है । (डायरेक्ट स्पीच)

स्पष्टतया—अव्य० [सं०] १. स्पष्ट रूप से । साफ़-साफ़ । २. स्पष्ट शब्दों में ।

स्पष्टता—स्त्री० [सं०] १. स्पष्ट होने की अवस्था, गुण या भाव । जैसे—उसकी बातों की स्पष्टता ने सभी को प्रभावित किया । २. सफ़ाई ।

स्पष्टवक्ता—वि० [सं०] १. स्पष्ट बात या बातें कहनेवाला । २. बिना भय या संकोच के बातें कहनेवाला ।

स्पष्टवादी (दिन्)—वि० [सं०] [भाव० स्पष्टवादिता] स्पष्टवक्ता । (दे०)

स्पष्टीकरण—पुं० [सं०] [वि० स्पष्टीकृत] १. कोई बात इस प्रकार स्पष्ट या साफ़ करना कि उसके संबंध में कोई भ्रम न रहे । (एल्यूसिडेशन) २. जो बात स्पष्ट होने से रह गई हो उसे इस प्रकार स्पष्ट करना कि औरों का भ्रम दूर हो जाय । (क्लैरिफ़िकेशन) ३. इस प्रकार भ्रम दूर करने के उद्देश्य से कही जानेवाली बात । ४. किसी अपने किये हुए कार्य के विषय में आपत्ति होने पर यह बतलाना कि किन कारणों से यह काम इस रूप में किया गया है । विवृत्ति । व्याख्या । (एक्सप्लेनेशन)

स्पष्टीकार्य—वि० [सं०] जिसका स्पष्टीकरण करना आवश्यक या उचित हो ।

स्पष्टीकृत—भू० कृ० [सं०] जिसका स्पष्टीकरण हुआ हो । साफ़ या खुलासा किया हुआ ।

स्पष्टीक्रिया—स्त्री० [सं०] ज्योतिष में, वह क्रिया जिससे ग्रहों का किसी विशिष्ट समय में किसी राशि के अंश, कला, विकला आदि में अवस्थान जाना जाता है ।

स्पिरिट—स्त्री० [अं०] १. शरीर में रहनेवाली आत्मा । २.

वह सूक्ष्म-शरीर जिसका निवास स्थूल-शरीर के अन्दर माना जाता है। ३. आवेश, उत्साह आदि से युक्त जीवनी शक्ति। ४. किसी पदार्थ का सत्त या सार। जैसे—स्पिरिट एमोनिया=नौसादर का सत्त। ५. दे० 'सुरासव'।

स्पीकर—पुं०[अं०]१. वह जो व्याख्यान देता हो। वक्ता। २. कुछ विशिष्ट राज्यों में विधान-सभा का अध्यक्ष या सभापति। ३. एक प्रकार का उच्चभाषक की तरह का यंत्र जो प्रेषित की हुई ध्वनि-तरंगों को शब्दों में बदल कर कहता है।

स्पीच—स्त्री० [अं०] भाषण। व्याख्यान।

स्पीड—स्त्री०[अं०] गति। चाल।

स्पृक्का—स्त्री० [सं०] १. असबरग। २. लजालू। लज्जावंती। ३. ब्राह्मी। ४. मालती। ५. सेवती। ६. गंगापुत्री। पानी-लता।

स्पृश—वि० [सं०] स्पर्श करनेवाला। छूनेवाला।

स्पृश्य—वि०[सं०]१. जिसे स्पर्श कर सकें। जो छुआ जा सके। २. जिसे छूने में कोई दोष या पाप न माना जाता हो।

स्पृश्या—स्त्री०[सं०] हवन की नौ समिधाओं में से एक।

स्पृष्ट—भू० कृ०[सं०] जिसे छुआ गया हो।

पुं० व्याकरण में वर्णों के उच्चारण का एक प्रकार का आभ्यन्तर प्रयत्न।

विशेष—क् से म् तक के वर्णों का उच्चारण इसी प्रयत्न से होता है।

स्पष्टका—पुं०[सं०] संभोग आदि के समय आलिंगन का एक प्रकार।

स्पृष्टास्पृष्टि—स्त्री० [सं०]१. एक दूसरे को छूना। २. छुआछूत।

स्पृष्टि—स्त्री०[सं०] छूने की क्रिया या भाव। स्पर्श।

स्पृष्टी(टिन्)—वि० [सं०]=स्पर्शी।

स्पृहण—पुं०[सं०]=स्पृहा।

स्पृहणीय—वि०[सं०] जिसके लिए स्पृहा अर्थात् अभिलाषा या कामना की जा सके। वांछनीय; अर्थात् उत्तम, गौरवपूर्ण या प्रशंसनीय।

स्पृहयालु—वि०[सं०]१. जो स्पृहा या कामना करे। स्पृहा करनेवाला। २. लोभी। लालची।

स्पृहा—स्त्री०[सं०] किसी अच्छे काम, चीज या बात की प्राप्ति अथवा सिद्धि के लिए मन में होनेवाली अभिलाषा, इच्छा या कामना।

स्पृहित—वि०[सं०]१. जिसकी प्राप्ति की अभिलाषा की गई हो। २. जो स्पृहा या ईर्ष्या का विषय हो।

स्पृही(हिन्)—वि०[सं०]१. स्पृहा अर्थात् कामना या इच्छा करनेवाला। २. स्पर्धा करनेवाला।

स्पृह्य—वि०[सं०]=स्पृहणीय।

स्पेशल—वि०[अं०] विशेष। (दे०)

पुं०१. विशेष अवसर पर चलनेवाली गाड़ी। २. विशेष अधिकारी को ले चलनेवाली गाड़ी।

स्पेशलिस्ट—पुं० [अं०] किसी विद्या या विषय का विशेषज्ञ।

स्प्रिंग—स्त्री० [सं०] यंत्रों या यांत्रिक उपकरणों में लगनेवाली कमानी।

स्प्रिंगदार—वि०[अं० स्प्रिंग+फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें स्प्रिंग या कमानी लगी हो। कमानीदार।

स्प्लिंट—पुं० [अं०] वह पटरी जो मोच निकले या हड्डी टूटे हुए अंग पर बाँधी जाती है। (आधुनिक चिकित्सा)

स्फट—पुं०[सं०]१. फट-फट शब्द। २. साँप का फन।

स्फटिक—पुं०[सं०]१. एक प्रकार का सफेद बहुमूल्य पारदर्शी पत्थर या रत्न, जिसका व्यवहार मालाएँ, मूर्तियाँ तथा दस्ते आदि बनाने में होता है। इसके कई भेद और रंग होते हैं। बिल्लौर। (पेबुल) २. सूर्यकान्त मणि। ३. काँच। शीशा। ४. कपूर। ५. फिटकिरी।

स्फटिका—स्त्री०[सं०] फिटकिरी।

स्फटिकाचल—पुं०[सं०] कैलास पर्वत, जो दूर से देखने में स्फटिक के समान जान पड़ता है।

स्फटिकाद्रि—पुं०[सं०]=स्फटिकाचल (कैलास)।

स्फटिकी—स्त्री०[सं०] फिटकिरी।

स्फटिकीकरण—पुं० दे० 'मणिभीकरण'।

स्फटिकोपल—पुं०[सं०] स्फटिक। बिल्लौर।

स्फटित—भू० कृ०[सं०] फटा हुआ। विदीर्ण।

स्फटी—स्त्री०[सं०] फिटकिरी।

स्फरण—पुं०[सं०]१. काँपना। फड़कना। २. प्रवेश करना।

स्फाटक—पुं०[सं०]१. स्फटिक। बिल्लौर। २. पानी की बूँद।

स्फाटिक—वि०[सं०] स्फटिक संबंधी। बिल्लौर का।

पुं०=स्फटिक।

स्फार—वि०[सं०]१. बहुत अधिक। प्रचुर। विपुल। उदा०—ऊपर हरीतिमा नभ गुंजित, नीचे चन्द्रातप छना स्फार।—पन्त। २. बड़ा और विस्तृत।

पुं०१. अधिकता। २. विस्तार।

स्फारण—पुं०=स्फुरण।

स्फीत—वि० [सं०] [भाव० स्फीतता, स्फीति]१. बढ़ा हुआ। वर्द्धित। २. फूला या उभरा हुआ। जैसे—गर्व से स्फीत वक्षःस्थल। ३. समृद्ध। सम्पन्न। ४. इस रूप में फूला हुआ कि बाहर से देखने में तो बड़ा या भारी जान पड़े परन्तु अन्दर अपेक्षया कम तत्त्व या सार हो। (इन्फ़्लेटेड)

स्फीतता, स्फीति—स्त्री०[सं०] स्फीत होने की अवस्था, गुण या भाव। स्फीतता। (इन्फ़्लेशन)

स्फुट—वि० [सं०] [भाव० स्फुटता] १. फूटा या टूटा हुआ। २. खुला या खिला हुआ। विकसित। ३. स्पष्ट। व्यक्त। ४. शुक्ल। सफ़ेद। ५. अनिश्चित प्रकारों या वर्गों का। फुटकर।

पुं० जन्म-कुंडली में यह दिखाना कि कौन-सा ग्रह किस राशि में कितने अंश, कितनी कला और कितनी विकला में है। (फलित ज्योतिष)

स्फुटता—स्त्री०[सं०] स्फुट होने की अवस्था, गुण या भाव।

स्फुटत्व—पुं० [सं०]=स्फुटता।

स्फुटन—पुं० [सं०] [भू० कृ० स्फुटित]१. फटना या फूटना। २. विकसित होना। खिलना।

स्फुटा—स्त्री०[सं०] साँप का फन।

स्फुटिका—स्त्री०[सं०]१. किसी चीज का टूटा हुआ या काटकर निकाला हुआ अंश। २. फूट नामक फल। ३. फिटकिरी।

स्फुटित—भू० कृ०[सं०]१. फूटा हुआ। २. विकसित। खिला हुआ। ३. मुँह से कहकर अथवा और किसी प्रकार स्पष्ट रूप से प्रकट या व्यक्त किया हुआ।

स्फुटित-कांड-भग्न—पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार हड्डी टूटने का वह रूप जिसमें उसके टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर जाते हैं।

स्फुटी—स्त्री० [सं०]१. पादस्फोट नामक रोग। पैर की बिवाई फटना। २. फूट नामक फल।

स्फुटीकरण—पुं०[सं० स्फुट+करण] स्फुट अर्थात् प्रकट, व्यक्त या स्पष्ट करने की क्रिया या भाव।

स्फुर—पुं०[सं०]१. वायु। हवा। २. स्फुरण।

स्फुरण—पुं० [सं०]१. किसी पदार्थ का जरा-जरा काँपना, लहराना या हिलना। २. अंग का फड़कना। ३. स्फूर्ति।

स्फुरण—स्त्री०[सं०] अंगों का फड़कना।

स्फुरति*—स्त्री०=स्फूर्ति।

स्फुरना—अ०[सं० स्फुरण]१. प्रकट या व्यक्त होना। २. काँपना, फड़कना, या हिलना। ३. मन में कोई बात सहसा उत्पन्न होना।

स्फुरित—भू० कृ०[सं०] जिसका या जिसमें स्फुरण हो।

स्फुलिंग—पुं०[सं०] वह जलता हुआ चमकीला कण, जो जलती हुई या जोर से रगड़ी जानेवाली चीजों में से निकलकर उड़ता हुआ दिखाई देता है। चिनगारी। (स्पार्क)

स्फुलिंगिनी—स्त्री०[सं०] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

स्फुलिंगी—वि०[सं०] जिसमें से स्फुलिंग निकलते हों या निकल रहे हों।

स्फूर्ज—पुं०[सं०]१. अचानक होनेवाला स्फोट। २. बादलों की गड़-गड़ाहट। मेघ-गर्जन। ३. इन्द्र का वज्र। ४. नायक-नायिका का प्रथम मिलन जिससें आनन्द के साथ भय भी मिला होता है।

स्फूर्जन—पुं०[सं०]१. बादल की गरज। २. तिंदुक या तेंदू नामक वृक्ष।

स्फूर्जा—स्त्री०=स्फूर्ज।

स्फूर्त—भू० कृ०[सं०]१. जो स्फूर्ति के फलस्वरूप हुआ हो। २. मन में अचानक आया हुआ।

स्फूर्ति—स्त्री० [सं०] १. धीरे-धीरे हिलना। फड़कना। स्फुरण। २. किसी काम या बात के लिए मन में होनेवाला किसी विचार का आकस्मिक आविर्भाव। ३. तेजी। फुरती।

स्फोट—पुं०[सं०] [वि० स्फुट]१. अंदर से भर जाने के कारण किसी वस्तु के ऊपरी आवरण का फटना और उसमें की चीज का वेगपूर्वक बाहर निकलना। फूटना। (इरप्शन) जैसे—ज्वालामुखी का स्फोट। २. शरीर पर होनेवाला फोड़ा। ३. साधना के क्षेत्र में उपाधिरहित शब्दतत्त्व। ओंकार। प्रणव। ४. मोती।

स्फोटक—वि०[सं०] स्फोट उत्पन्न करनेवाला।
पुं० १. शरीर में होनेवाला फोड़ा। २. भिलावाँ।

स्फोटन—पुं०[सं०]१. स्फोट उत्पन्न करने की क्रिया या भाव। २. विदीर्ण करना। फाड़ना। ३. सामने लाना। प्रकट करना। ४. सुश्रुत के अनुसार वायु के प्रकोप से सिर में होनेवाली पीड़ा, जिसमें वह फटता हुआ सा जान पड़ता है।

स्फोटवाद—पुं०[सं० [वि० स्फोटवादी] यह दार्शनिक मत या सिद्धान्त कि सारी सृष्टि की उत्पत्ति स्फोट अर्थात् अनित्य दैवी शब्द से ही हुई है।

स्फोटा—स्त्री० [सं०]१. साँप का फन। २. सफेद अनन्तमूल।

स्फोटिक—पुं०[सं०] पत्थर, जमीन आदि तोड़ने-फोड़ने का काम।

स्फोटिका—स्त्री०[सं०] छोटा फोड़ा। फुंसी।

स्फोरण—पुं० [सं०]=स्फुरण।

स्मय—पुं०[सं०] अभिमान। घमंड।
वि० अद्भुत। विलक्षण।

स्मर—पुं०[सं०]१. कामदेव। मदन। २. याद। स्मृति। ३. संगीत में शुद्ध राग का एक भेद।

स्मर-कथा—स्त्री० [सं०] श्रृंगार रस की बातें।

स्मर-कार—वि०[सं०] काम-वासना उद्दीप्त करनेवाला।

स्मर-कूप—पुं०[सं०] भग। योनि।

स्मर-गृह—पुं०[सं०] भग। योनि।

स्मर-चंड—पुं०[सं०] एक प्रकार का रतिबंध।

स्मर-चक्र—पुं०[सं०] एक प्रकार का रतिबंध।

स्मरण—पुं० [सं०] [वि० स्मरणीय, भू० कृ० स्मृत]१. किसी ऐसी देखी-सुनी या बीती हुई बात का फिर से याद आना या ध्यान होना जो बीच में भूल गई हो, या ध्यान में न रह गई हो। कोई बात फिर से याद आने की क्रिया या भाव।
क्रि० प्र०—आना।—करना।—दिलाना।—रखना।—रहना।—होना।
२. भक्ति के नौ प्रकारों में से एक, जिसमें उपासक अपने इष्टदेव को बराबर याद करता रहता या मन में उसका ध्यान रखता है। ३. साहित्य में, एक प्रकार का अर्थालंकार, जिसमें पहले की देखी हुई कोई चीज या सुनी हुई कोई बात उसी प्रकार की कोई चीज देखने या बात सुनने पर फिर से याद आने या मन में उसका ध्यान आने का उल्लेख होता है। यथा—मैं पाता हूँ मधुर ध्वनि में गूँजने में खगों के। मीठी तानें परम प्रिय की मोहिनी वंशिका की—अयोध्यासिंह उपाध्याय।
विशेष—इस अलंकार को कुछ लोगों ने 'स्मृति' भी कहा है।

स्मरण-पत्र—पुं०[सं०] कोई बात स्मरण करने के लिए लिखा जानेवाला पत्र। (रिमाइंडर)

स्मरण-शक्ति—स्त्री०[सं०] वह मानसिक शक्ति जो अपने सामने होनेवाली घटनाओं और सुनी जानेवाली बातों को ग्रहण करके मन में रक्षित रखती हैं और आवश्यकता पड़ने, प्रसंग आने पर फिर हमारे मन में, स्पष्ट कर देती है। याद रखने की शक्ति। याददाश्त। (मेमरी)

स्मरणासक्ति—स्त्री० [सं०] भगवान् के स्मरण में होनेवाली आसक्ति जिसके कारण भक्त दिन-रात भगवान् या इष्टदेव का स्मरण करता है। उदा०—(यह भक्ति) एक रूप ही होकर गुणमहात्मासक्ति, रूपासक्ति, पूजासक्ति, स्मरणासक्ति, दासासक्ति, सख्यासक्ति, कांतासक्ति, वात्सल्यासक्ति, आत्मनेवेदनासक्ति, तन्मयासक्ति, और परमविरहासक्ति रूप से एकादश प्रकार की होती है।—(हरिश्चन्द्र)

स्मरणी—स्त्री०[सं०] सुमिरनी।

स्मरणीय—वि०[सं०] (घटना या बात) जो स्मरण रखी जाने के योग्य हो। याद रखने लायक। जैसे—यह दृश्य भी सदा स्मरणीय रहेगा।

स्मरता—स्त्री० [सं०] १. स्मर या कामदेव का भाव या धर्म। २. स्मरण रखने की शक्ति। स्मृति।

स्मर-दशा—स्त्री०[सं०] साहित्य में वह दशा, जो प्रेमी या प्रेमिका के न मिलने पर उसके विरह में होती है। विरह की अवस्था।

स्मर-दहन—पुं० [सं०] १. कामदेव को भस्म करनेवाले, शिव। २. शिव के द्वारा कामदेव के भस्म किये जाने की घटना।

स्मर-दीपन—वि०[सं०] जिससे काम उत्तेजित हो। कामोत्तेजक।

स्मर-ध्वज—पुं० [सं०]१. पुरुष का लिंग। २. एक प्रकार का बाजा।

स्मरना*—पुं० [सं० स्मरण+ना (प्रत्य०)] १. स्मरण करना। याद करना। २. सुमिरना।

स्मर-प्रिया—स्त्री० [सं०] कामदेव की प्रिया, रति।

स्मर-मंदिर—पुं०[सं०] भग। योनि।

स्मर-यम—वि०[सं०]१. प्रेम या वासना से युक्त। २. प्रेम या वासना से उद्भूत।

स्मर-वल्लभ—पुं० [सं०] अनिरुद्ध का एक नाम।

स्मरवती—स्त्री०[सं०] स्त्री जिससे प्यार किया जा रहा हो।

स्मर-वीथिका—स्त्री०[सं०] वेश्या। रंडी।

स्मर-शासन—पुं०[सं०] काम-देव।

स्मर-शास्त्र—पुं०[सं०] कामशास्त्र।

स्मरसख—वि० [सं०] जिससे काम की उत्तेजना हो। कामोद्दीपक। पुं० १. चन्द्रमा। २. वसंत।

स्मर-स्तंभ—पुं०[सं०] पुरुषेन्द्रिय।

स्मर-हर—पुं०[सं०] शिव। महादेव।

स्मरागार—पुं०[सं०] भग। योनि।

स्मरांकुश—पुं०[सं०] पुरुष की लिंगेंद्रिय। लिंग।

स्मरारि—पुं०[सं०] कामदेव के शत्रु, महादेव।

स्मरासव—पुं०[सं०]१. ताड़ में से निकलनेवाला ताड़ी नामक मादक द्रव्य। २. थूक। लाला।

स्मर्ण†—पुं०=स्मरण।

स्मर्तव्य—वि०[सं०]=स्मरणीय।

स्मर्ता (तृ)—वि०[सं०] स्मरण करने या याद रखने वाला।

स्मर्य—वि०[सं०]=स्मरणीय।

स्मशान—पुं०=श्मशान।

स्मारक—वि०[सं०] स्मरण करनेवाला।

पुं० १. वह कार्य, पदार्थ या रचना जो किसी की स्मृति बनाये रखने के लिए हो। यादगार। (मेमोरियल) २. वह चीज जो किसी को अपना स्मरण बनाये रखने के लिए दी जाय। यादगार। ३. वह पत्र जो किसी बड़े आदमी को कुछ बातों का स्मरण कराने या कुछ बातें स्मरण रखने के लिए दिया जाय। (मेमोरियल)। ४. दे० 'स्मारिका'।

स्मारक-ग्रंथ—पुं० [सं०] वह ग्रंथ जो किसी महापुरुष की स्मृति बनाये रखने के लिए प्रस्तुत करके उसे भेंट किया गया हो। (कमेमोरेशन वॉल्यूम)

स्मारण—पुं० सं०] स्मरण कराने की क्रिया या भाव। याद दिलाना।

स्मारिका—स्त्री० [सं०] १. किसी महत्त्वपूर्ण घटना या समारोह स्थान आदि को रक्षित रखने के उद्देश्य से प्राप्त की हुई कोई वस्तु। २. उक्त से सम्बद्ध कोई विवरणात्मक विशेषतः सचित्र पुस्तिका। (सुवेनीर) ३. दे० 'स्मरणपत्र'।

स्मारित—पुं०[सं०] ऐसा साक्षी जिसका नाम कागज-पत्र पर न लिखा हो, परन्तु जिसे प्रार्थी अपने पक्ष के समर्थन के लिए स्वयं स्मरण करके बुलावे।

स्मारी (रिन्)—वि०[सं०] १. स्मरण रखनेवाला। २. स्मरण कराने या याद दिलानेवाला।

स्मार्त—वि०[सं०]१. स्मृति संबंधी। स्मृति का। याद किया हुआ। २. स्मृति या स्मृतियों में उल्लिखित।

पुं०१. वह जो स्मृतियों का ज्ञाता हो। २. वह जो स्मृतियों में बतलाये हुए धार्मिक विधानों का पालन करता हो।

स्मार्तिक—वि०[सं०] स्मृति संबंधी। स्मृतिका।

स्मित—पुं०[सं०] मंद हास्य। धीमी हँसी।

वि०१. हँसता हुआ। २. खिला हुआ। विकसित।

स्मिति—स्त्री०[सं०] मंदहास्य। मुस्कराहट।

स्मिति चर—वि० [सं०] मुस्कराता हुआ चलनेवाला। उदा०—उड़ती फिरतीं सुख के नभ में, स्मिति के आतप में ज्यों स्मितिचर।—पन्त।

स्मितित—वि०[सं०] हँसता या मुस्कराता हुआ।

स्मृत—भू० कृ०[सं०] १. स्मरण किया हुआ। २. स्मृति में आया हुआ। ३. स्मृति में आया हुआ।

स्मृति—स्त्री० [सं०] [वि० स्मृत, स्मृतिक] १. स्मरण-शक्ति; जिससे बीती हुई बातें मन में किसी रूप में बनी रहती हैं। (मेमरी) २. बीती हुई बातों का वह ज्ञान जो स्मरण-शक्ति के द्वारा फिर से एकत्र या प्राप्त होता है। याद। अनुस्मरण। (रिफ़्लेक्शन) ३. साहित्य में, (क) किसी पुरानी या भूली हुई बात का फिर से याद आना, जो एक संचारी भाव माना गया है। (ख) प्रिय के संबंध की देखी या सुनी हुई बातें रह-रहकर याद आना, जो पूर्व राग की दस दशाओं में से एक है। सिर झुकाकर नीचे देखना, भौंहें चढ़ना आदि इसके अनुभाव कहे गये हैं। ४. धर्म, दर्शन, आचार, व्यवहार आदि से संबंध रखनेवाले हिंदू धर्म-शास्त्र, जिनकी रचना ऋषि-मुनियों ने वेदों का स्मरण या चिंतन करके की थी। ५. उक्त प्रकार के अठारह मुख्य ग्रन्थों के आधार पर १८ की संख्या का सूचक शब्द। ६. एक प्रकार का छंद। ७. 'स्मरण' नामक अलंकार का दूसरा नाम।

स्मृति-उपायन—पुं०=स्मारिका (पदार्थ या पुस्तिका)।

स्मृतिकार—पुं०[सं०] स्मृति या धर्मशास्त्र बनानेवाला आचार्य।

स्मृति-कारक—पुं०[सं०] ऐसा औषध जिसके सेवन से स्मरण-शक्ति तीव्र होती हो। (वैद्यक)

स्मृतिचित्र—पुं०[सं०] वह चित्र जो किसी व्यक्ति या घटना आदि की सामान्य स्मृति के आधार पर बनाया जाय और जिसमें भाव की अपेक्षा रूप या दृश्य आदि की ही प्रधानता हो।

स्मृति-चिह्न—पुं०[सं०] कोई ऐसा तत्त्व या पदार्थ जो किसी वस्तु या व्यक्ति की स्मृति बनाये रखने के लिए बचा हो अथवा दिया या लिया गया हो। निशानी।

स्मृति-पत्र—पुं०[सं०] १. वह पत्र, पुस्तिका आदि जिसमें किसी विषय की कुछ मुख्य-मुख्य बातें स्मरण रखने या कराने के विचार से एकत्र की गई हों। २. दे० 'ज्ञापन-पत्र'।

स्मृति-शास्त्र—पुं०[सं०] स्मृति नाम का धर्मशास्त्र।

स्मृति-शेष—वि० [सं०] जिसकी केवल स्मृति रह गई हो, अस्तित्व न रह गया हो।

पुं० किसी बहुत पुरानी चीज का वह थोड़ा-सा टूटा-फूटा और बचा हुआ अंश, जो उस चीज का स्मरण कराता हो। (रेलिक)

स्यंद—पुं०[सं०]=स्यंदन।

स्यंदन—पुं०[सं०]१. तरल पदार्थ का चूना, टपकना, बहना या रसना। क्षरण। २. गलकर तरल होना। ३. शरीर से पसीना निकलना। ४. चलना या जाना। गमन। ५. वायु। हवा। ६. जल। पानी। ७. चित्र। तसवीर। ८. घोड़ा। ९. चन्द्रमा। १०. एक प्रकार का मंत्र, जिससे अस्त्र मंत्रित किये जाते थे। ११. गत उत्सर्पिणी के २३वें अर्हत् का नाम। (जैन) १२. तिनिश वृक्ष। १३. तिन्दुक वृक्ष। तेंदू।

स्यंदनिका—स्त्री०[सं०]१. छोटी नदी। नहर। २. थूक या लार की बूँद।

स्यंदनी—स्त्री० [सं०]१. थूक। लार। २. वह नाड़ी जिसके द्वारा मूत्र शरीर के बाहर निकलता है।

स्यंदिनी—स्त्री०[सं०]१. वह गाय जिसने एक साथ दो बच्चों को जन्म दिया हो। २. थूक। लार।

स्यंदी (दिन्)—वि०[सं०] १. चूने, बहने या रिसनेवाला। २. तेज चलनेवाला।

स्यंध*—स्त्री०=संधि।

स्यंभ*—पुं०=सिंह।

स्यमंतक—पुं० [सं०] पुराणोक्त एक प्रसिद्ध मणि जिसकी चोरी का झूठा आरोप श्रीकृष्ण पर लगा था।

विशेष—कहा गया है कि सत्राजित् यादव ने सूर्य भगवान् को प्रसन्न करके उनसे यह मणि प्राप्त की थी, जो नित्य २००० पल सोना देती थी। जब उसका भाई प्रसेनजित् इसे गले में पहनकर जंगल में शिकार खेलने गया, तब शेर उसे उठाकर जांबवंत की गुफा में ले गया, जहाँ उस मणि के प्रकाश से सारी गुफा जगमगा उठी। सत्राजित् कहने लगा कि श्रीकृष्ण ने ही मेरे भाई को मारकर वह मणि ले ली है। श्रीकृष्ण वह मणि ढूँढ़ते-ढूढ़ते जांबवंत की गुफा में पहुँचे। वहाँ जांबवंत ने उस मणि के साथ अपनी कन्या जांबवती भी उन्हें अर्पित कर दी। जब श्रीकृष्ण ने वह मणि लाकर सत्राजित् को दी, तब उसने भी प्रसन्न होकर उस मणि समेत अपनी कन्या सत्यभामा श्रीकृष्ण को अर्पित कर दी। पर, श्रीकृष्ण ने वह मणि नहीं ली। बाद में शतधन्वा ने सत्राजित् को मारकर वह मणि ले ली। पर अंत में शतधन्वा भी श्रीकृष्ण के हाथों मारा गया और इस प्रकार वह मणि फिर सत्यभामा को मिल गई।

स्यमंत-पंचक—पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ भागवत के अनुसार परशुराम ने पितरों का रक्त से तर्पण किया था।

स्यमिक—पुं०[सं०]१. चींटियों या दीमकों का बनाया हुआ मिट्टी का घर। बाँबी। वल्मीक। २. एक प्रकार का वृक्ष।

स्यमिका—स्त्री०[सं०]१. नील का पौधा। २. एक प्रकार का कीड़ा।

स्यमीक—पुं०[सं०] १. समय। काल। २. जल। पानी। ३. बादल। मेघ। ४. दीमकों का भीटा। ५. एक प्राचीन राजवंश।

स्यात्—अव्य०[सं०] शायद।

स्याद्वाद—पुं०[सं०]१. जैन दर्शन जिसमें नित्यता, अनित्यता, सत्त्व, असत्व, आदि में से किसी एक को निश्चित न मानकर कहा जाता है कि स्याद् यही हो, स्याद् वही हो। इसे अनेकान्तवाद भी कहते हैं। २. उक्त के आधार पर जैन धर्म का दूसरा नाम।

स्याद्वादी—वि०[सं०] स्याद्वाद-संबंधी। स्याद्वाद का।

पुं० स्याद्वाद मत का अनुयायी, पोषक या समर्थक, अर्थात् जैन।

स्यान†—वि०=स्याना।

स्यानप†—स्त्री०=सयानपन।

स्यानपत—स्त्री०[हिं० स्याना+पत (प्रत्य०)]१. बहुत अधिक सयाने या चतुर होने की अवस्था, गुण या भाव। २. चालाकी। धूर्तता।

स्यानपन†—पुं०=सयानपन।

स्याना—पुं०, वि०=सयाना।

स्यानाचारी†—स्त्री० [हिं स्याना+चारी (प्रत्य०)] १. वह नियमित उपहार या कर मध्य युग में गाँव के मुखिया को मिलता था। २. सयानपन।

स्यानापन—पुं०=सयानपन।

स्यापा—पुं०[फा० स्याहपोश] १. किसी की मृत्यु पर शोक के कारण होनेवाला रोना-पीटना। २. पश्चिम भारत की कुछ विशिष्ट जातियों में मरे हुए मनुष्य के शोक में कुछ काल तक घर की तथा नाते-रिश्ते की स्त्रियों के प्रति दिन एकत्र होकर रोने और शोक मनाने की रीति।

मुहा०—स्यापा पड़ना=(क) रोना-चिल्लाना मचाना। (ख) स्थान का बिलकुल उजाड़ या सुनसान हो जाना।

स्याबत†—वि०१. दे० 'साबित'। २. दे० 'साबुत'।

स्याबास†—अव्य०=शाबास।

स्याम—पुं० [सं० श्याम] भारतवर्ष के पूर्व के एक देश का नाम।

†वि०=पुं०=श्याम।

स्यामक—पुं०=श्यामक (अन्न)।

स्यामकरन*—पुं०=श्यामकर्ण।

स्यामता†—स्त्री० श्यामता।

स्यामल†—वि०=श्याम।

स्यामलता†—स्त्री०=श्यामलता।

स्यामलिया—पुं०=साँवलिया।

स्यामा*—स्त्री०=श्यामा।

स्यामि (मी)*—पुं०=स्वामी।

स्यार*—पुं०[सं० शृगाल] [स्त्री० स्यारनी, स्यारी] १. गीदड़। सियार। २. रहस्य संप्रदाय में जगत् या संसार।

स्यार-काँटा—पुं०[स्यार? +हिं० काँटा] सत्यानासी। स्वर्णक्षीरी।

स्यारपन—पुं०[हिं० सियार+पन (प्रत्य०)] सियार या गीदड़ का सा स्वभाव। शृगालवृत्ति।

स्यार-लाठी†—स्त्री०[हिं० स्यार+लाठी] अमलतास।

स्यारी†—स्त्री०[सं० शीत-काल] १. जाड़े के दिन। शीत-काल। २. खरीफ (फसल)।

†स्त्री० हिं० 'स्यार' की स्त्री।

स्याल—पुं०[सं०] पत्नी का भाई। साला।

†पुं०[सं० शीतकाल] जाड़े के दिन। (पश्चिम)

†पुं०=श्रृगाल (गीदड़)।

स्यालक—पुं० [सं०] सम्बन्ध के विचार से पत्नी का भाई। साला।

स्याल-काँटा—पुं०=स्यारकाँटा।

स्याला—पुं० [देश०] बहुतायत। अधिकता। ज्यादती।

पुं०=स्याल (शीतकाल)।

स्यालिका—स्त्री०[सं०] पत्नी की छोटी बहन। साली।

स्यालिया†—पुं०[हिं० सियार] सियार। गीदड़। श्रृगाल।

स्याली—स्त्री०[सं०] संबंध के विचार से पत्नी की बहन। साली।

स्यालीपति—पुं० [सं०] साली का पति। साढ़ू।

स्यालू—पुं० [हिं० सालू] स्त्रियों के ओढ़ने की चादर। ओढ़नी। उपैरनी।

स्यालो—पुं०[सं० स्याल, हिं० साला] पत्नी का भाई। साला।

स्यावाज†—पुं०=सावज (शिकार)।

स्याह—वि० [फा०] काला। कृष्ण वर्ण।

पुं० काले रंग का घोड़ा।

स्याह-कलम—पुं०[फा०] मुगल चित्रशैली के एक प्रकार के बिना रंग भरे रेखाचित्र जिनमें एक-एक बाल तक अलग-अलग दिखाया जाता है और होंठों, आँखों और हथेलियों में नाममात्रकी और बहुत हलकी रंगत रहती है। (लाइन ड्राइंग)

स्याह-काँटा—पुं०[फा० स्याह+हिं० काँटा] किंगरई नाम का कटीला पौधा। दे० 'किंगरई'।

स्याह-गोश—वि० [फा०] काले कानवाला। जिसके कान काले हों।

पुं० बन-बिलाव नामक जंगली जंतु।

स्याह-जबान—पुं०[फा० स्याह+जबान] वह हाथी या घोड़ा, जिसकी जबान स्याह या काली हो। (ऐसे जानवर ऐबी समझे जाते हैं)।

स्याह-जीरा—पुं०[फा० स्याह+हिं० जीरा] काला जीरा।

स्याह-तालू—पुं० [फा० वह हाथी या घोड़ा जिसका स्याह+हिं० तालू] तालू बिलकुल स्याह या काला हो। ऐसे हाथी-घोड़े ऐबी समझे जाते हैं।

स्याह-दिल—वि०[फा०] दिल का काला। खोटा। दुष्ट।

स्याहपोश—पुं०[फा०] वह व्यक्ति जिसने शोक या मातम मनाने के उद्देश्य से काले वस्त्र पहने हों। (मुसलमान)

स्याह-भूरा—वि०[फा० स्याह+हि भूरालू] काला (रंग)।

स्याहा—स्त्री०[फा०]१. स्याह अर्थात् काले होने की अवस्था, गुण या भाव। कालापन। कालिमा।

मुहा०—स्याही जाना=बेलों का कालापन जाना। जवानी बीतना और बुढ़ापा आना। **स्याही छाना**= चेहरे का रंग काला पड़ना। २. कालिख। कलौंछ।

क्रि० प्र०—पोतना।—लगाना।

३. वह प्रसिद्ध रंगीन तरल अथवा कुछ गाढ़ा पदार्थ, जो लिखने या कपड़े, कागज आदि छापने के काम में आता है। रोशनाई। (इंक)

विशेष—स्याही यद्यपि निरुक्ति के विचार से काली ही होगी, पर लोक-व्यवहार में नीली, लाल, हरी आदि स्याहियाँ भी होती हैं।

४. कड़ए तेल के धूएँ से पारा हुआ एक प्रकार का काजल, जिससे शरीर के अंगों में गोदना गोदते हैं।

स्त्री०=साही (जंतु)।

स्याही-चूस—पुं०[हिं०]=सोख्ता (कागज)।

स्याही-सोख—पुं०[हिं०]=सोख्ता (कागज)।

स्युवक—पुं०[सं०] एक प्राचीन जनपद। (विष्णुपुराण)

स्यू—स्त्री०[सं०] सूत। सूत्र।

स्यूत—वि० [सं०] [भाव० स्यूति] १. बुना हुआ। २. सीया हुआ।

पुं० थैला।

स्यूति—स्त्री०[सं०]१. कपड़े आदि सीने की क्रिया या भाव। सिलाई। २. सीयन। ३. थैली। ४. संतान।

स्यून—पुं० [सं०] १. किरण। रश्मि। २. सूर्य। ३. थैली।

स्यूम—पुं०[सं०]१. किरण। रश्मि। २. जल। पानी।

स्यों—अव्य० [सं० सह, पु० हिं० सौं] १. सहित। साथ। उदा०—कहूँ हंसिनी हंस स्यों चित्त चोरै।—केशव। (ख) २. पास। समीप। उदा०—बिनती करै आइहौ दिल्ली।—चितवर कै मोंहि स्यो है किल्ली।—जायसी। विशेष दे० 'सौं'।

स्योती†—स्त्री०=सेवती (सफेद गुलाब)।

स्योन—पुं० [सं०] १. किरण। रश्मि। २. सूर्य। ३. सुख। ४. थैला।

स्योनाक—पुं०[सं०]=श्योनाक (सोना-पाढ़ा)।

स्योरंजनी—पुं०[सं०] संगीत में एक प्रकार की रागिनी।

स्रंस—पुं०[सं०]१. गिरना। २. पतन होना। ३. फिसलन।

स्रंसन—वि०[सं०]१. गिराने या नीचे लानेवाला। २. गर्भपात करनेवाला। ३. दस्तावर।

पुं०[भू० कृ० स्रंसित] १. गिरना। पतन होना। २. गर्भपात। ३. दस्त लानेवाली दवा।

स्रंसिनी—स्त्री०[सं०] १. एक प्रकार का योनि-रोग जिसमें प्रसंग के समय योनि बाहर निकल आती है, और गर्भ नहीं ठहरता। (भावप्रकाश) २. गर्भस्राव।

स्रंसी (सिन्)—वि०[सं०] १. गिरनेवाला। पतनशील। २. असमय में गिरनेवाला (गर्भ)।

पुं०१. सुपारी का पेड़। २. पीलू वृक्ष।

स्रक्—स्त्री०[सं०]१. फूलों की माला। २. विशेष रूप से फूलों की ऐसी माला, जिसे सिर पर लपेटते हैं। ३. ज्योतिष में एक प्रकार का योग। ४. एक वृत्त का नाम, जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण और एक सगण होता है तथा छठे और नवें वर्णों पर यति होती है।

स्रग*—स्त्री०=स्रक्।

स्रगाल†—पुं०=श्रृगाल (सियार)।

स्रग्दाम (न्)—पुं० [सं०] वह डोरा या सूत, जिसमें माला के फूल पिरोये रहते हैं।

स्रग्धर—वि०[सं०] पुष्प-हार धारण करनेवाला।

स्रग्धरा—स्त्री०[सं०]१. एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में म र भ न य य य) SSS SIS SII III ISS ISSISS होता है और ७,७,७ पर यति होती है। २. बौद्धों की एक देवी।

स्रग्वान्(वत्)—वि०[सं०]१. जो माला पहने हो। २. जो स्रक् नामक माला पहने हो।

स्रग्विणी—स्त्री०[सं०]१. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार रगण होते हैं। २. एक देवी का नाम।

स्रग्वी (विन्)—वि०[सं०] जो माला पहने हो। मालाधारी।

स्रज—पुं०[सं०] एक विश्वेदेवा का नाम।

†स्त्री०=स्रक् (माला)।

स्रजन—पुं०[सं० सर्जन] रचना या सृष्टि करना। सर्जन।

स्रजना*—स०=सृजना (सृष्टि करना)।

स्रणिता†—वि०[सं० शोणित] लाल।

स्रद्धा*—स्त्री० =श्रद्धा।

स्रपाटी—स्त्री०[?] पक्षी की चोंच।

स्रम†—पुं०=श्रम।

स्रमित†—भू० कृ० दे० 'श्रमित'।

स्रवंती—स्त्री०[सं०]१. नदी। २. एक प्रकार की वनस्पति।

स्रव—पुं०[सं०]१. बहाव। प्रवाह। २. झरना। क्षरण। ३. पेशाब। मूत्र।

†पुं० दे० 'श्रवण'।

स्रवण—पुं०[सं०] [वि० स्रवणीय] १. बहने की क्रिया या भाव। बहाव। प्रवाह। २. गर्भ का समय से पहले गिरना। गर्भपात। ३. स्तन जिससे दूध निकलता है। छाती। (क्व०) उदा०—'बिनु स्रवणा खीर पिला उआ।'—कबीर। ४. पसीना। ५. मूत्र। पेशाब।

स्रवण क्षेत्र—पुं०[सं०]वह सारा क्षेत्र जहाँ का वर्षा-जल एकत्र होकर किसी नदी के मूल का रूप धारण करता हो। अपवाह-क्षेत्र। जाली। (कैचमेन्ट एरिया)

स्रवद्गर्भा—वि०[सं०] (स्त्री या मादा पशु) जिसका गर्भ गिर गया हो।

स्रवन†—पुं०१.=स्रवण। २.=श्रवण।

स्रवना*—अ०[मं० स्रवण]१. बहना। चूना। टपकना। २. गिरना। उदा०—अति गर्व गनई न सगुन असगुन स्रवहिं आयुध हाथ तें। —तुलसी।

स०१. बहाना। २. गिराना। उदा०—चलत दशानन डोलति अवनी। गर्जत गर्भ स्रवहिं सुररवनी।—तुलसी।

स्रवा—स्त्री०[सं०]१. मरोड़फली। मूर्वा। २. जीवंती। डोडी।

स्रष्टव्य—वि०[सं०] जिसकी सृष्टि होने को हो या हो जानी चाहिए।

स्रष्टा—वि० [सं० स्रष्ट्र] १. सृष्टि या रचना करनेवाला। निर्माता। रचयिता।

पुं०१. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव।

स्रष्टृता —स्त्री०[सं०] सृष्टि करने का कार्य या भाव।

स्रष्टृत्व—पुं०[सं०]=स्रष्टता।

स्रसतर—पुं०[० स्रस्तर] घास-पात का बिछावन। (डिं०)

स्रस्त—भू० कृ०[सं०]१. अपने स्थान से गिरा हुआ। च्युत। २. शिथिल। ढीला। उदा०—तान, सरिता वह स्रस्त अरोर।—निराला। ३. तोड़ा फोड़ा हुआ। ४. आहत। घायल। उदा०—'थके, टूटे गरुड़ से स्रस्त पन्नगराज जैसे।—दिनकर। ५. अलग किया हुआ। ६. धँसा हुआ। जैसे—स्रस्त नेत्र। ७. हिलता हुआ।

स्रस्तर—पुं०[सं०] बैठने का आसन।

स्रस्ति—स्त्री०[सं०] स्रस्त होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

स्राकिशमिशी—स्त्री०[फा०] हलके बैंगनी रंग का एक प्रकार का छोटा अंगूर, जो क्वेटे में होता है और जिसको सुखाकर किशमिश बनाते हैं।

स्राध†—पुं०=स्राद्ध।

स्राप†—पुं०=शाप।

स्रापित†—भू० कृ०=शापित।

स्राव—पुं०[सं०]१. जीव-जंतुओं और पेड़-पौधों के भीतरी अंगों से निकलनेवाला वह तरल पदार्थ या रस, जो विशेष उद्देश्य सिद्ध करता है। (सीक्रेशन) २. गर्भपात। गर्भस्राव। ३. वृक्षों आदि का निर्यास।

स्रावक—वि० [सं०] [स्त्री० स्राविका] १. चुआनेवाला। २. बहाने या निकालनेवाला।

पुं० काली (गोल) मिर्च ।

†पुं०=श्रावक।

स्रावकत्व—पुं०[सं०] पदार्थों का वह गुण या धर्म, जिसके कारण कोई अन्य पदार्थ उनमें से होकर निकल या रस जाता है।

स्रावगी†—पुं०=सरावगी।

स्रावण—पुं०[सं०] [वि० स्रावित]१. बहा या चुआकर निकालना। २. दे० 'अभिस्रावण'।

†वि०[सं०]=स्रावक।

†पुं०=श्रावण।

स्रावणी—स्त्री०[सं०] ऋद्धि नामक अष्टवर्गीय औषध।

†स्त्री०=श्रावणी।

स्रावित—भू० कृ०[सं०] स्राव के रूप में चुआया या निकाला हुआ।

स्रावी (विन्)—वि०[सं०]१. चुआनेवाला। २. बहानेवाला।

स्राव्य—वि०[सं०] जो चुआया, टपकाया या बहाया जा सके।

स्रिग†—पुं०[सं० शृंग] चोटी। शिखर।

स्रिजन†—पुं०=सर्जन।

स्रुक्—स्त्री०[सं०]स्रुवा। (दे०)

स्रुगा†—पुं०=स्वर्ग । (डिं०)

स्रुग्जिह्व—पुं०[सं०] अग्नि।

स्रुत—भू० कृ०[सं०] बहा या चूआ हुआ। क्षरित।

†वि०=श्रुत। उदा०—तदपि जथा स्रुत कहउँ बखानी। सुमिरि गिरापति प्रभु धनुपानी।—तुलसी।

स्रुति—स्त्री०[सं०] बहाव। क्षरण।

†स्त्री०=श्रुति।

स्रुतिमाथ†—पुं०[सं० श्रुति+हिं० माथ] विष्णु।

स्रुव—पुं०[सं०] एक प्रकार की छोटी स्रुवा।

स्रुवा—स्त्री०[सं०] १. लकड़ी की बनी हुई एक प्रकार की छोटी करछी जिससे हवनादि में कंघी की आहुति देते हैं। २. सलई का पेड़। ३. मरोड़-फली।

स्रू—स्त्री०[सं०]१. स्रुवा । (दे०) २. झरना। प्रपात।

स्रेनी†—स्त्री०=श्रेणी।

स्रोणि—पुं०[सं०] नितंब। चूतड़।

स्रोत—पुं०[सं० स्रोतस्]१. पानी का बहाव। धारा। २. विशेषतः तीव्र धारा। ३. पानी का सोता। झरना। ४. आधार या साधन, जिससे कोई वस्तु बराबर निकलती या आती हुई किसी को मिलती रहे। (सोर्स) ५. वंश-परम्परा। ६. वैद्यक के अनुसार शरीर के वे छिद्र या मार्ग जो पुरुषों में प्रधानतः ९ और स्त्रियों में ११ माने गये हैं। इनके द्वारा प्राण, अन्न, जल, रस, रक्त, मांस, मेद, मल, मूत्र, शुक्र और आर्तव का शरीर में संचार होना माना जाता है।

स्रोत आपत्ति—स्त्री०[सं०] बौद्ध शास्त्र के अनुसार निर्वाण-साधना की प्रथम अवस्था जिसमें सांसारिक बन्धन शिथिल होने लगते हैं।

स्रोत आपन्न—वि०[सं०] जो निर्वाण साधना की प्रथम अवस्था पर पहुँचा हो।

स्रोत-पत—पुं०[सं० स्रोत+पति] समुद्र। (डिं०)

स्रोतस्य—पुं०[सं०]१. शिव का एक नाम। २. चोर।

स्रोतस्वती—स्त्री०[सं०]१. धारा। २. नदी।

स्रोतस्विनी—स्त्री०[सं०]१. धारा। २. नदी।

स्रोता†—पुं०=श्रोता (सुननेवाला)।

स्रोतोंजन—पुं०[सं०] आँखों में लगाने का सुरमा।

स्रोन†—पुं०=श्रवण।

स्रोनित†—पुं०=शोणित (रक्त)।

स्रौतिक—पुं०[सं०] सीप। शुक्ति।

स्लिप—स्त्री०[अं०] कागज का वह छोटा टुकड़ा, जिस पर कुछ लिखा जाता हो। चिट।

स्लीपर—पुं०[अं०]१. एक प्रकार की जूती, जो एड़ी की ओर से खुली होती है। चट्टी। २. बड़ी धरन। ३. रेलगाड़ियों में वह डिब्बा, जिसमें से यात्रियों के सोने के लिए जगह आरक्षित होती है।

स्लेज—स्त्री०[अं०] एक प्रकार की बिना पहिए की गाड़ी, जो बर्फ पर घसीटती हुई चलती है।

स्लेट—स्त्री०[सं०] लोहे की चद्दर या काले पत्थर की बनी हुई चौरस पतली पटरी, जिस पर बच्चे चाक आदि से लिखते हैं।

स्वंग—पुं०[सं०] आलिंगन।

स्वंजन—पुं०[सं०] [भू० कृ० स्वंजित] आलिंगन करना। गले लगाना।

स्वः—पुं० [सं०]१. अपनापन। आत्मत्व। निजत्व। २. भाई-बन्धु। गोती। ३. स्वर्ग। ४. विषाद। ५. धन-सम्पत्ति। ६. विष्णु का एक नाम।

वि० अपना । निज का।

स्वःपथ—पुं०[सं०] (स्वर्ग का मार्ग) मृत्यु।

स्वःसरित (ा)—स्त्री०[सं०] गंगा।

स्वःसुंदरी—स्त्री०[सं०] अप्सरा।

स्व—वि०[सं०] [भाव० स्वत्व] १. अपना। निज का। (सेल्फ़) यौ० के आरम्भ में। जैसे—स्वतंत्र, स्वदेश। २. आपसे आप होने वाला। जैसे—स्वचालित।

प्रत्य० एक प्रत्यय जो कुछ शब्दों के अंत में लगाकर ता, त्व, आदि की भाँति भाव-वाचकता (जैसे—निजस्व, परस्व) या प्राप्य धन (जैसे—धर्मस्व, राजस्व, स्वामिस्व) आदि का अर्थ देता है।

सर्व० आप। स्वयं।

स्व-अर्जित—भू० कृ०[सं०] जिसका अर्जन किसी ने आप किया हो। स्वयं प्राप्त किया हुआ। (सेल्फ़ एक्वायर्ड)

स्व-कंपन—पुं०[सं०] वायु। हवा।

स्वक—वि०[सं०] अपना, निजी।

पुं०१. अपनी संपत्ति। २. स्वजन।

स्व करण—पुं०[सं०] किसी चीज पर अपना स्वत्व जताना। दावा करना। (कौ०)

स्व करणभाव—पुं० [सं०] किसी वस्तु पर बिना अपना स्वत्व सिद्ध किये अधिकार करना। बिना हक साबित किये कब्जा करना।

स्वकर्म—पुं०[सं०] १. अपना काम। २. अपना कर्तव्य और धर्म।

स्वकर्मी (मिन्)—वि० [सं०] १. अपना काम करनेवाला। २. अपने कर्तव्य और धर्म का पालन करनेवाला। ३. स्वार्थी।

स्वकीय—वि०[सं०] [स्त्री० स्वकीया] अपना। निजी।

पुं०=स्वजन।

स्वकीया—वि० सं० स्वकीय का स्त्री० रूप।

स्त्री० साहित्य में, वह नायिका जो विवाहिता हो तथा अपने ही पति से अनुराग करती हो। 'परकीया' का विपर्याय।

स्वक्ष*—वि०=स्वच्छ।

स्वगत—अव्य० [सं०] आप ही आप। स्वतः।

वि०१. अपने में ग्रहण किया हुआ। २. मन में आया हुआ।

पुं० स्वगत-कथन। (दे०)

स्वगत-कथन—पुं०[सं०]१. मन में आई हुई बात। २. मन में आई हुई बात कहना। ३. भारतीय नाटकों में तीन प्रकार के संवादों में से एक, जिसमें अभिनेता कोई बात ऐसे ढंग से कहता है कि मानों दूसरे अभिनेता या पात्र उसकी बात सुन ही न रहे हों और वह मन ही मन कुछ कह अथवा सोच-समझ रहा हो। इसे 'अश्राव्य' भी कहते हैं। (सोलिलोक्वी)

विशेष—इस प्रकार वह मानों दर्शकों पर अपने मनोभाव प्रकट कर देता है। आधुनिक नाटकों में इस प्रकार का कथन या संवाद अच्छा नहीं माना जाता।

स्व-गुप्ता—वि० स्त्री०[सं०]१. जो अपने आप को गुप्त रखता या छिपाता हो। २. केवाँच। कौंछ।

स्त्री० लजालू। लज्जालू।

स्व-ग्रह—पुं०[सं०] बालकों को होनेवाला एक प्रकार का रोग।

स्व-चर—वि०[सं०] जो खुद चलता हो।

स्व-चल—वि०[सं०]१. आप से आप चलनेवाला। २. (कार्य) जो बिना किसी चेतन-प्रेरणा के अथवा आप से आप या प्राकृतिक रूप से होता हो। (ऑटोमेटिक)। ३. दे० 'स्वचालित'।

पुं० प्रायः मनुष्य के आकार का एक प्रकार का यंत्र, जो अंदर के कल-पुरजों के द्वारा इधर-उधर चलता-फिरता और कई तरह के काम करता है। (ऑटोमेटन)

स्व-चालक—वि०[सं०] (यंत्र या उसका कोई अंग) जो बिना किसी विशिष्ट प्रक्रिया के केवल साधारण खटके आदि की सहायता से स्वयं चलता या यंत्र को चलाता हो। (सेल्फ़ स्टार्टर)

स्व-चालित—वि०[सं०] (यंत्र) जिसके अंदर ऐसे कल-पुरजे लगे हों कि

एक पुरजा चलाने से ही वह आप से आप चलने या कई काम करने लगता हो। (ऑटोमेटिक)

स्वचित्त-कारु—पुं०[सं०] वह शिल्पी, जो किसी श्रेणी के अन्तर्गत होते हुए भी स्वतन्त्र रूप से काम करता हो। स्वतन्त्र कारीगर। (कौ०)

स्वच्छंद—वि०[सं०] [भाव० स्वच्छंदता]१. इच्छा, मौज या रुचि के अनुसार अथवा सनक में आकर काम करनेवाला। २. किसी प्रकार के अंकुश, नियंत्रण या मर्यादा का ध्यान न रखते हुए मनमाने ढंग से आचरण या व्यवहार करनेवाला। ३. नैतिक और सामाजिक दृष्टि से अनुचित तथा निंदनीय आचरण या व्यवहार करनेवाला। भ्रष्ट चरित्रवाला। (वॉन्टन) ४. (जीव, जंतु या प्राणी) जो बिना किसी प्रकार की अड़चन या बाधा के जहाँ चाहे वहाँ विचरण करता फिरता हो। ५. (पेड़ पौधा या वनस्पति) जो जंगलों और मैदानों में आप से आप उत्पन्न हो।

क्रि० वि० बिना किसी भय, विचार या संकोच के।

पुं० कार्तिकेय या स्कंद का एक नाम।

स्वच्छंदचारिणी—स्त्री० [सं०] १. दुश्चरित्रा स्त्री। पुंश्चली। २. वेश्या। रंडी।

स्वच्छंदचारी(रिन्)—वि० [सं०] [स्त्री० स्वच्छंदचारिणी]१. अपनी इच्छा के अनुसार चलनेवाला। स्वेच्छाचारी। मनमौजी। २. मनमाने ढंग पर इधर-उधर घूमता रहनेवाला।

स्वच्छंदता—स्त्री०[सं०] स्वच्छंद होने की अवस्था, गुण या भाव।

विशेष—स्वच्छंदता, स्वतंत्रता और स्वाधीनता का अन्तर जानने के लिए दे० 'स्वाधीनता' का विशेष।

स्वच्छ—वि०[सं०] [भाव० स्वच्छता]१. जिसमें किसी प्रकार की मैल या गंदगी न हो। निर्मल। साफ। २. उज्ज्वल। शुभ्र। चमकीला। ३. नीरोग। स्वस्थ। ४. स्पष्ट। ५. पवित्र। शुद्ध। ६. निष्कपट।

पुं०१. बिल्लौर। स्फटिक। २. मोती। मुक्ता। ३. अभ्रक। अबरक। स्वर्णमाक्षिक। रौप्यमाक्षिक। ४. सोनामक्खी। ५. रूपामक्खी। ६. सोने और चाँदी का मिश्रण। ७. विमल नामक उपधातु। ८. बेर का पेड़। बदरीवृक्ष। ९. विमल नामक उपधातु।

स्वच्छक—वि० [सं०] १. स्वच्छ करनेवाला। (क्लीनर) २. बहुत साफ या चमकीला।

स्वच्छता—स्त्री०[सं०] १. स्वच्छ होने की अवस्था, गुण या भाव। २. निर्मलता। विशुद्धता। ३. सफाई विशेषतः शरीर और आसपास की वस्तुओं-स्थानों आदि की ऐसी सफाई, जो स्वास्थ्य-रक्षा के लिए आवश्यक हो। (सैनिटेशन)

स्वच्छना*—स०[सं० स्वच्छ] स्वच्छ या निर्मल करना। साफ करना।

स्वच्छ-भास—वि०[सं०] स्वच्छ प्रकाशवाला। उदा०—गृहस्थी सीमा के स्वच्छ भास।—निराला।

स्वच्छ-मणि—पुं०[सं०] बिल्लौर। स्फटिक।

स्वच्छा—स्त्री०[सं०] श्वेत दूर्वा। सफेद दूब।

स्वच्छी†—वि०=स्वच्छ।

स्वज—वि०[सं०] [स्त्री० स्वजा]१. स्वयं उत्पन्न होनेवाला। २. जिसे स्वयं उत्पन्न किया हो। ३. स्वाभाविक। प्राकृतिक।

पुं०१. पुत्र। २. पसीना। ३. खून।

स्वजन—पुं०[सं०]१. अपने परिवार के लोग। आत्मीय जन। २. सगे-संबंधी। रिश्ते-नाते के लोग। रिश्तेदार।

स्वजनता—स्त्री० [सं०] १. स्वजन होने का भाव। आत्मीयता। २. नातेदारी। रिश्तेदारी।

स्व-जन्मा (न्मन्)—वि०[सं०] जो अपने आप उत्पन्न हुआ या जन्मा हो। अपने आप से उत्पन्न या जनमा हुआ (ईश्वर आदि)।

स्वजा—स्त्री०[सं०] पुत्री। बेटी।

स्व-जात—वि०[सं०] अपने से उत्पन्न।

पुं० पुत्र। बेटा।

स्व-जाति—स्त्री० [सं०]१. अपनी जाति। अपनी कौम। २. अपनी किस्म। अपना प्रकार।

स्व-जातीय—वि०[सं०]१. किसी की दृष्टि से उसी की जाति या वर्ग का। जैसे—अपने स्वजातियों के साथ खान-पान करने में कोई हानि नहीं है। २. एक ही जाति या वर्ग का। जैसे—ये दोनों वृक्ष स्वजातीय हैं।

स्वतंत्र—वि०[सं०] [भाव० स्वतंत्रता]१. जिसका तंत्र या शासन अपना हो। फलतः जो किसी के तंत्र अर्थात् दबाव या शासन में न हो। २. जो बिना किसी प्रकार के दबाव या नियंत्रण के स्वयं सोच-समझ कर सब काम कर सकता हो। ३. जो किसी प्रकार के दबाव या बंधन में न पड़ा हो। जो बिना बाधा या रुकावट के इधर-उधर आ-जा सकता हो। आजाद। (फ्री) ४. (काम या बात) जिसमें किसी दूसरे का अवलंब, आधार या आश्रय न लिया गया हो। जैसे—(क) स्वतन्त्र रूप से कविता करना या ग्रंथ लिखना। (ख) स्वतन्त्र मत-दान। ५. जो औरों के संपर्क आदि से रहित या सबसे अलग हो। जैसे—इस मकान में दोनों किरायेदारों के आने-जाने के स्वतन्त्र मार्ग हैं। ६. अलग। जुदा। भिन्न। जैसे—ये दोनों प्रश्न एक दूसरे से स्वतन्त्र हैं। ७. नियमों, विधियों आदि के बंधन से मुक्त या रहित। ८. (व्यक्ति) जो ऐसे राज्य का नागरिक या प्रजा हो, जिसमें निरंकुश या स्वेच्छाचारी शासन न हो। (फ्री) जैसे—जब से भारत स्वाधीन हुआ है, तब से यहाँ के निवासी भी स्वतंत्र नागरिक हो गये हैं। ९. बालिग। वयस्क। सयाना।

स्वतंत्रता—स्त्री० [सं०]१. स्वतन्त्र रहने या होने की अवस्था या भाव। २. ऐसी स्थिति जिसमें बिना किसी बाहरी दबाव, नियंत्रण या बंधन के स्वयं अपनी इच्छा से सोच-समझकर सब काम करने का अधिकार होता है। आजादी। (फ्रीडम) ३. वह अवस्था, जिसमें बिना किसी प्रकार की राजकीय या शासनिक बाधा या रोक-टोक के सभी उचित और संगत काम या व्यवहार करने का अधिकार होता है। स्वातन्त्र्य। आजादी। (लिबर्टी) जैसे—भारत में सब को धर्म, भाषण और विवेक संबंधी स्वतन्त्रता प्राप्त है।

विशेष—स्वच्छंदता, स्वतन्त्रता और स्वाधीनता का अंतर जानने के लिए दे० 'स्वाधीनता' का विशेष।

स्वतः—अव्य० [सं० स्वतस्] आप से आप। अपने आप। आपही। स्वयं। जैसे—मैंने स्वतः उसे रुपये दे दिये।

स्वतोविरोध—पुं०[सं० स्वतः+विरोध] आप ही अपना विरोध या खंडन करना।

स्वतोविरोधी—वि०[सं० स्वतः+विरोधी] अपना ही विरोध या खंडन करनेवाला।

स्वत्त्व—पुं० [सं०]१. स्व का भाव। अपनापन। २. वह अधिकार जिसके आधार पर कोई चीज अपने पास रखी या किसी से ली या माँगी जा सकती हो। अधिकार। हक। (राइट) ३. वह स्थिति जिसमें किसी वस्तु या विषय के हानि-लाभ से किसी व्यक्ति का विशेष रूप से संबंध हो। हित।

स्वत्त्व-शुल्क—पुं० [सं०] वह आवर्त्तक और नियतकालिक धन, जो किसी भूमि के स्वामी, किसी नई वस्तु के आविष्कारक किसी ग्रंथ के रचयिता अथवा ऐसे ही और किसी व्यक्ति को इसलिए बराबर मिलता रहता है कि दूसरे लोग उसकी वस्तु या कृति से आर्थिक लाभ उठाने का अधिकार या स्वत्त्व प्राप्त कर लेते हैं। (रायल्टी)

स्वत्त्वाधिकार—पुं० [सं० स्वत्त्व+अधिकार] वह अधिकार, जो स्वत्त्व के रूप में हो। दे० 'स्वत्त्व'।

स्वत्त्वाधिकारी (रिन्)—पुं० [सं०] [स्त्री० स्वत्त्वाधिकारिणी] १. वह जिसे किसी बात का पूरा स्वत्त्व या अधिकार प्राप्त हो। २. स्वामी। मालिक।

स्वदन—पुं०[सं०]१. खा या चखकर स्वाद लेना। आस्वादन। २. लोहा।

स्वदेश—पुं०[सं०] अपना देश। मातृभूमि। वतन।

स्वदेशाभिष्यंदव—पुं०[सं०] राष्ट्र में जहाँ आबादी बहुत अधिक हो गई हो, वहाँ से कुछ जनता को दूसरे प्रदेश में बसाना। (कौ०)

स्वदेशी—वि०[सं० स्वदेशीय]१. अपने देश में होनेवाला। जैसे—स्वदेशी कपड़ा। २. अपने देश से संबंध रखनेवाला।

स्वध—पुं०[सं०]१. अपना धर्म। २. अपना कर्त्तव्य और कर्म।

स्वधर्म—पुं० [सं०]१. अपना धर्म या संप्रदाय। २. अपना उचित कर्त्तव्य।

स्वधर्म-शास्त्र—पुं०] व्यक्तिक विधि।

स्वधा—स्त्री०[सं०]१. पितरों के निमित्त दिया जानेवाला अन्न या भोजन। पितृ अन्न। २. दक्ष की एक कन्या, जो पितरों की पत्नी कही गई है।

अव्य० एक शब्द या मंत्र, जिसका उच्चारण देवताओं या पितरों को हवि देने के समय किया जाता है। जैसे—तस्मैस्वधा।

स्वधाधिप—पुं०[सं०] अग्नि।

स्वधाप्रिय—पुं०[सं०] अग्नि।

स्वधाभुक्—पुं०[सं० स्वधाभुज्]१. पितर। २. देवता।

स्वधाभोजी (जिन्)—पुं०[सं०] पितृगण। पितर।

स्वधाशन—पुं०[सं०] पितृगण। पितर।

स्वधिति—पुं० स्त्री० [सं०]१. कुल्हाड़ी। कुठार। २. वज्र।

स्वधिष्ठान—वि०[सं०] अच्छी स्थिति या स्थान से युक्त।

स्वधिष्ठित—भू० कृ० [सं०] १. जो ठहरने या रहने के लिए अच्छा हो। २. अच्छी तरह सिखलाया या सधाया हुआ हो।

स्वधीत—भू० कृ०[सं०] अच्छी तरह पढ़ा हुआ। सम्यक् रूप से अध्ययन किया हुआ।

स्वनंदा—स्त्री०[सं०] दुर्गा।

स्वन—पुं०[सं०] शब्द। ध्वनि। आवाज।

स्वन-चक्र—पुं०[सं०] संभोग का एक प्रकार का आसन या रतिबन्ध।

स्वनाम-धन्य—वि०[सं०] (व्यक्ति) जो अपने नाम से ही धन्य या प्रसिद्ध हो।

स्वनामा (मन्)—वि०[सं०] स्वनाम-धन्य।

स्वनि—पुं०[सं०]१. शब्द। आवाज। २. अग्नि। आग।

स्वनिक—वि०[सं०] शब्द करनेवाला।

स्वनित—भू० कृ०[सं०] ध्वनित। शब्दित।

पुं० १. आवाज। २. शब्द। २. बादलों की गरज। ३. किसी प्रकार का जोर का शब्द या गड़गड़ाहट।

स्वन्न—पुं०[सं०]१. उत्तम अन्न। २. अच्छा आहार या भोजन।

स्वपच†—पुं०=श्वपच (चांडाल)।

स्वपन—पुं०[सं०]१. सोने की क्रिया या भाव। २. सोने की अवस्था। निद्रा। नींद। ३. सपना। स्वप्न।

स्वपनीय—वि०[सं०] निद्रा के योग्य। सोने लायक।

स्वपना†—पुं०=सपना (स्वप्न)।

स्वप्तव्य—वि०[सं०] निद्रा के योग्य।

स्वप्न—पुं०[सं०]१. सोने की क्रिया या अवस्था। निद्रा। नींद। २. सोये रहने की दशा में मानसिक दृष्टि के सामने आनेवाली कुछ विशिष्ट असंबद्ध और काल्पनिक घटनाएँ, चित्र और विचार। सोये रहने पर दिखाई देनेवाली ऐसी विचित्र घटनाएँ, जो अवास्तविक होती हैं। सपना। ख्वाब। ३. उक्त प्रकार से दिखाई देनेवाली घटनाओं का सामूहिक रूप। सपना। ख्वाब। ४. मन ही मन की जानेवाली बड़ी-बड़ी कल्पनाएँ और बाँधे जानेवाले बाँधनूँ। (ड्रीम, अंतिम तीनों अर्थों के लिए) जैसे—आप तो उसी तरह रईस बनने के स्वप्न देखा करते हैं।

स्वप्नक—वि०[सं० स्वप्नज] सोनेवाला। निद्राशील।

स्वप्न-गृह—पुं०[सं०] सोने का कमरा। शयनागार। शयन-गृह।

स्वप्न-दर्शन—पुं०[सं०] साहित्य में वह अवस्था, जब किसी को स्वप्न में कोई देखता है और इसी देखने के फलस्वरूप उसके प्रति मन में उस पर अनुरक्त होता है।

स्वप्नदर्शी (शिन्)—वि० [सं०] १. स्वप्न देखनेवाला। २. स्वप्न-दर्शन करनेवाला। ३. मन ही मन बड़ी-बड़ी कल्पनाएँ करने और बड़े-बड़े बाँधनू बाँधने वाला। (ड्रीमर)

स्वप्न-दोष—पुं०[सं०] निद्रावस्था में शृंगारिक स्वप्न देखने पर वीर्यपात होना, जो एक प्रकार का रोग है।

स्वप्न-स्थान—पुं०[सं०] सोने का कमरा। शयन-गृह। शयनागार।

स्वप्नांतिक—पुं०[सं०] वह चेतना, जो स्वप्न देखने के समय होती है।

स्वप्नादेश—पुं० [सं०] वह आदेश, जो किसी को किसी बड़े स्वप्न में मिला हो।

स्वपनाना*—स० [सं० स्वप्न+हिं० आना (प्रत्य०)] स्वप्न देना। स्वप्न दिखाना।

स्वप्नालु—वि०[सं०] जिसे नींद आ रही हो। निद्राशील। निद्रालु।

स्वप्नावस्था—स्त्री०[सं०] १. वह अवस्था, जिसमें स्वप्न दिखाई देता है। २. धार्मिक क्षेत्र में लाक्षणिक रूप से सांसारिक जीवन की अवस्था, जो स्वप्न के समान अवास्तविक और निस्सार मानी गई है।

स्वप्निल—वि०[सं०]१. स्वप्न के रूप में होनेवाला। २. स्वप्न के समान जान पड़नेवाला। ३. सोया हुआ। सुप्त।

स्व-प्रकाश—वि०[सं०] जो स्वयं प्रकाशमान् हो।

पुं० निजी प्रकाश।

स्व-प्रमितिक—वि० [सं०] जो बिना किसी की सहायता के अपना सारा काम स्वयं करता हो। जैसे—सूर्य जो आप ही प्रकाश देता है।

स्व-बरन†—पुं०=सुवर्ण।

स्वबीज—पुं०[सं०] आत्मा।

स्वभाउ†—पुं०=स्वभाव।

स्वभाव—पुं०[सं०] [वि० स्वाभाविक] १. अपना या निजी भाव। २. किसी पदार्थ का वह क्रियात्मक गुण या विशेषता, जो उसमें प्राकृतिक रूप से सदा वर्तमान रहती है। खासियत। जैसे—अग्नि का स्वभाव पदार्थों को जलाना और जल का स्वभाव उन्हें ठंढा करना है। ३. जीव-जन्तुओं और प्राणियों का वह मानसिक रूप या स्थिति, जो उनकी समस्त जाति में जन्मजात होती और सदा प्रायः एक ही तरह से काम करती हुई दिखाई देती है। प्रकृति। (नेचर उक्त दोनों अर्थों के लिए) जैसे—चीते, भालू और शेर स्वभाव से ही हिंसक होते हैं। ४. मनुष्य के मन में वह पक्ष, जो बहुत कुछ जन्मजात तथा प्राकृतिक होता है और जो उसके आचार-व्यवहार आदि का मुख्य रूप से प्रवर्तक होता और उसके जीवन में प्रायः अथवा सदा देखने में आता है। मिजाज। (डिस्पोजीशन) जैसे—वह स्वभाव से ही क्रोधी (चिड़चिड़ा, दयालु अथवा शांत) है। ५. आदत। बान। (हैबिट) जैसे—तुम्हारा तो सबसे लड़ने का स्वभाव पड़ गया है।

क्रि० प्र०—पड़ना।—होना।

स्वभाव-कृपण—पुं० [सं०] ब्रह्मा का एक नाम।

स्वभावज—वि०[सं०] जो स्वभाव या प्रकृति से उत्पन्न हुआ हो। प्राकृतिक। स्वाभाविक। सहज।

स्वभावज अलंकार—पुं०[सं०] साहित्य में, संयोग-शृंगार के प्रसंग में स्त्रियों की कुछ विशिष्ट आकर्षक या मोहक अंग-भंगियाँ और बातें, जिनसे उनकी आंतरिक भावनाएँ प्रकट होती हैं, और इसी लिए जिनकी गिनती उनके अलंकारों में होती है। लोक में इसी तरह की बातों को 'हाव' कहते हैं। दे० 'हाव'।

विशेष—यह नायिकाओं के सात्त्विक अलंकारों के तीन भेदों में से एक है।

स्वभावतः (तस्)—अव्य०[सं०] स्वभाव के फलस्वरूप। स्वाभाविक अर्थात् प्रकृतिजन्य रूप से। जैसे—उसे इस प्रकार झूठ बोलते देखकर मुझे स्वभावतः क्रोध आ गया।

स्वभाव-दक्षिण—वि० [सं०] जो स्वभाव से ही मीठी-मीठी बातें करने में निपुण हो।

स्वभाव-सिद्ध—वि० [सं०] स्वभाव से ही होनेवाला। प्राकृतिक। स्वाभाविक। सहज।

स्वभाविक†—वि०=स्वाभाविक।

स्वभावी—वि०[सं० स्वभाविन्] [स्त्री० स्वभाविनी] १. स्वभाव वाला। जैसे—उग्र-स्वभावी। क्षमा-स्वभावी। २. मनमाना आचरण करनेवाला। ३. मनमौजी।

स्वभावोक्ति—स्त्री०[सं०] साहित्य में एक प्रकार का अलंकार, जिसमें किसी वस्तु या व्यक्ति की स्वाभाविक क्रियाओं, गुणों, विशेषताओं आदि का ठीक उसी रूप में वर्णन किया जाता है, जिस रूप में वे कवि को दिखाई देती हैं। यथा—विहँसति सी दिये कुच आँचर बिच बाँह। भीजे पट तट को चली न्हान सरोवर माँह। —बिहारी।

विशेष—इसमें किसी जातिवाचक पदार्थ के स्वाभाविक गुणों का वर्णन होता है, इसलिए कुछ लोग इस अलंकार को 'जाति' भी कहते हैं। कुछ आचार्यों ने इसके 'सहज' और 'प्रतिज्ञाबद्ध' नाम के दो भेद भी माने हैं।

स्वभू—वि०, पुं०=स्वयंभू।

स्वयं—वि०[सं० स्वयम्]१. सर्वनाम जिसके द्वारा वक्ता अपने व्यक्तित्व पर जोर देते हुए कोई बात कहता है। जैसे—मैं स्वयं वहाँ गया था। २. अपने आप सब काम करनेवाला। जैसे—स्वयं-चालित; स्वयं-गामी। स्वयंभर।

अव्य०१. एक आप से आप। बिना किसी जोर या दबाव के। जैसे—उन्होंने स्वयं सब बातें मान लीं। २. बिना किसी प्रयत्न के। जैसे—स्वयं बातें खुल जायँगी।

स्वयं-ज्योति—वि०[सं०] आप से आप प्रकाशमान् होने या चमकनेवाला।

पुं० परब्रह्म। परमात्मा।

स्वयं-तथ्य—पुं०[सं०]ऐसा तथ्य या बात जो स्वयं ही ठीक और सिद्ध हो और जिसे ठीक या सिद्ध करने के किसी प्रकार के तर्क प्रमाण आदि की अपेक्षया आवश्यकता न हो। (एक्जिअम)

स्वयं-दत्त—पुं० [सं०] ऐसा पुत्र जो अपने माता-पिता के मर जाने अथवा उनकी मृत्यु के उपरान्त अथवा उनके द्वारा परित्यक्त होने पर अपने आप को किसी के हाथ सौंप दे और उसका पुत्र बन जाय। (धर्म-शास्त्र)

स्वयं-दूत—पुं० [सं०] साहित्य में वह नायक, जो स्वयं अपना प्रेम या वासना नायिका पर प्रकट करता हो।

स्वयं-दूतिका, स्वयं-दूती—स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका, जो अपना दूतत्व आप ही करती हो। नायक पर स्वयं ही वासना प्रकट करनेवाली परकीया नायिका।

स्वयं-पाक—पुं० [सं०] अपनी उदर-पूर्ति के लिए भोजन स्वयं बनाना।

स्वयं-पाकी—पुं० [सं०] १. अपना भोजन स्वयं बनानेवाला व्यक्ति। २. ऐसा व्यक्ति जो खुद बनाया हुआ ही भोजन करता हो और दूसरों के हाथ का बनाया हुआ न खाता हो।

स्वयं-प्रकाश—वि०[सं०] जो स्वतः प्रकाशित हो।

पुं०१. ज्योतिपुंज। २. परमात्मा।

स्वयं-प्रभ—पुं०[सं०] भावी २४ अर्हतों में से चौथे अर्हत् का नाम। (जैन)

वि० स्वयं-प्रकाश।

स्वयं-प्रभा—स्त्री०[सं०] इन्द्र की एक अप्सरा, जिसे मय दानव हर लाया था और जिसके गर्भ से मंदोदरी उत्पन्न हुई थी।

स्वयं-प्रमाण—वि०[सं०] जो आप ही अपने प्रमाण के रूप में हो और जिसके लिए किसी दूसरे प्रमाण की आवश्यकता न हो। जैसे—वेद आदि स्वयं प्रमाण हैं।

स्वयं-फल—वि०[सं०] जो आप ही अपना फल हो अर्थात् किसी दूसरे कारण से उत्पन्न न हुआ हो।

स्वयं-भर—वि० [सं०]१. अपने आप को या अपने में का रिक्त स्थान आप ही भरनेवाला। २. (पिस्तौल या बंदूक) जो अपने अंदर रखी हुई गोलियों में से क्रमशः एक-एक गोली आप ही लेकर छोड़े। (सेल्फ़ लोडिंग)

स्वयं-भु—पुं० [सं०] १. ब्रह्मा। २. अज। ३. वेद। ४. जैनियों के नौ वासुदेवों में से एक। ५. स्वयंभू।

स्वयं-भुक्ति—पुं० [सं०] धर्मशास्त्र में पाँच प्रकार के साक्षियों में से ऐसा साक्षी, जो बिना बुलाये आकर किसी बात की गवाही दे।

स्वयंभू—वि० [सं०] १. आप से आप उत्पन्न होनेवाला। २. आप से आप बन जानेवाला (बिना किसी शिक्षा, अधिकार, योग्यता आदि प्राप्त किये)। जैसे—स्वयंभू नेता या संपादक।

पुं०१. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। ४. कामदेव। ५. काल। ६. शिवलिंगी नामक लता। ७. दे० 'स्वायंभुव'।

स्वयंभूत—भू० कृ०[सं०] जिसने अपना निर्माण स्वयं किया हो। जो अपनी इच्छा शक्ति से अवतीर्ण हुआ या अस्तित्व में आया हो। स्वयंभू।

स्वयंभू-रमण—पुं० [सं०] अंतिम महाद्वीप और उसके समुद्र का नाम। (जैन)

स्वयंवर—पुं० [सं०]१. स्वयं वरण करना। स्वयं चुनना। २. प्राचीन काल में वह उत्सव या समारोह, जिसमें कन्या स्वयं अपने लिए उपस्थित व्यक्तियों में से वर को वरण करती थी। ३. कन्या द्वारा स्वयं अपने लिए वर को वरण करने की रीति या विधान।

स्वयं-वरण—पुं०[सं०] कन्या का अपने इच्छानुसार अपने लिए पति चुनना या वरण करना।

स्वयंवरा—स्त्री० [सं०] ऐसी कन्या, जिसने अपने पति का वरण अपनी इच्छा से किया हो।

स्वयंवह—पुं० [सं०] ऐसा बाजा, जो चाबी देने पर आप से आप बजे। वि० स्वयं अपने आप को वहन करनेवाला।

स्वयंवादि-दोष —पुं० [सं०] न्यायालय में झूठी बात बार-बार दोहराने का अपराध।

स्वयंवादी—पुं०[सं०] मुकदमे में जिरह के समय कोई झूठ बात बार-बार दोहरानेवाला व्यक्ति।

स्वयं-सिद्ध—वि०[सं०] [भाव० स्वयं-सिद्धि] (बात या तत्त्व) जो किसी तर्क या प्रमाण के बिना आप ही ठीक और सिद्ध हो। सर्वमान्य। (एग्जिओमेटिक)

स्वयं-सिद्धि—स्त्री०[सं०] [वि० स्वयं सिद्ध] वह सर्वमान्य सिद्धान्त या तत्त्व, जिसे सिद्ध या प्रभावित करने की कोई आवश्यकता न हो। (एग्जियम)

स्वयं-सेवक—पुं०[सं०] [स्त्री० स्वयं-सेविका] १. व्यक्ति, जो किसी सेवा-कार्य में अपनी इच्छा से लगता हो। २. किसी ऐसे संगठन का सदस्य, जिसका मुख्य उद्देश्य लोगों की सेवा करना हो। (वालन्टियर)

स्वयंसेवा—स्त्री०[सं०] १. अपनी इच्छा या अंतःप्रेरणा से की जानेवाली दूसरों की सेवा। २. अपना काम स्वयं करना।

स्वयंसेवी—पुं०=स्वयं-सेवक।

स्वयमर्जित—पुं०[सं०] स्वयं कमाया हुआ धन या संपत्ति। अपनी कमाई।

स्वयमुक्ति—पुं० [सं०] पाँच प्रकार के साक्षियों में से एक प्रकार का साक्षी। ऐसा साक्षी, जो बिना वादी या प्रतिवादी के बुलाये स्वयं ही आकर किसी घटना या व्यवहार के संबंध में कुछ बातें कहे। (व्यवहार)

स्वयमुपगत—पुं०[सं०] वह जो अपनी इच्छा से किसी का दास हो गया हो। (धर्मशास्त्र)

स्वयमेव—अव्य०[सं०] आप ही आप। खुद ही। स्वयं ही।

स्व-योनि—वि०[सं०] जो अपना कारण अथवा अपनी उत्पत्ति का उद्गम आप ही हो।

स्वर्—पुं०[सं०]१. स्वर्ग। २. परलोक। ३. आकाश।

स्वर—पुं०[सं०] [वि० स्वरिक, स्वरित, भाव० स्वरता] १. कोमलता, तीव्रता, उतार-चढ़ाव आदि से युक्त वह शब्द, जो प्राणियों के गले अथवा एक वस्तु पर दूसरी वस्तु का आघात पड़ने से निकलता है। २. स्वर-तंत्रियों के ढीले पड़ने और तनने के परिणाम-स्वरूप उत्पन्न होनेवाली कंठध्वनि। सुर। (साउन्ड)

मुहा०—स्वर फूंकना=कोई ऐसा काम या बात करना, जिसका दूसरे पर पूरा प्रभाव पड़े अथवा वह अनुयायी या वशवर्ती हो जाय। **स्वर मिलाना**= किसी सुनाई पड़ते हुए स्वर के अनुसार स्वर उत्पन्न करना।

३. संगीत में, उक्त प्रकार के वे सात निश्चित शब्द या ध्वनियाँ जिनका स्वरूप, तन्यता, तीव्रता आदि विशिष्ट प्रकार से स्थिर हैं। यथा—षड़ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद।

विशेष—साम वेद में सातों स्वरों के नाम इस प्रकार हैं—कृष्ट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मंद और अतिस्वार (या अतिस्वर) हैं। परन्तु यह उनका अवरोहण क्रम है और आजकल के म, ग, रे, स, नि ध, प के समान है।

मुहा०—स्वर उतारना= स्वर नीचा या धीमा करना। **स्वर चढ़ाना**= स्वर ऊँचा या तेज करना। **स्वर निकालना**=कंठ या बाजे से स्वर उत्पन्न करना। **स्वर भरना**=अभ्यास के लिए किसी एक ही स्वर का कुछ समय तक उच्चारण करना।

३. व्याकरण में, वह वर्णात्मक ध्वनि या शब्द जिसका उच्चारण बिना किसी दूसरे वर्ण की सहायता के और आप से आप होता है और जिसके बिना किसी व्यंजन का उच्चारण नहीं हो सकता। (वॉवेल) यथा —अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ और औ।

विशेष—आज-कल का ध्वनि विज्ञान बतलाता है कि कुछ अवस्थाओं में बिना स्वर की सहायता के भी कुछ व्यंजनों का उच्चारण संभव है।

४. वेदपाठ में होनेवाले शब्दों का उतार-चढ़ाव जो उदात्त, अनुदात्त और स्वरित नामक तीन प्रकारों का होता है। ५. साँस लेने के समय नाक से निकलनेवाली वायु के कारण उत्पन्न होनेवाला शब्द। ६. आकाश।

स्वर-कर—पुं०[सं०] ऐसा पदार्थ जिसके सेवन से गले का स्वर मधुर और सुरीला होता है।

स्वर-कलानिधि—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

स्वर-क्षय—पुं०=स्वर-भंग।

स्व-रक्षा—स्त्री०[सं०] किसी प्रकार के आक्रमण से स्वयं या अपने आप की जानेवाली अपनी रक्षा। (सेल्फ़ डिफ़ेन्स)

स्वरक्षु—स्त्री०[सं०] वक्षु महानदी का एक नाम।

स्वरग*—पुं०=स्वर्ग।

स्वर-ग्राम—पुं० [सं०] संगीत में, सा से नि तक के सातों स्वरों का समूह। सप्तक।

स्वरघ्न—पुं०[सं०] सुश्रुत के अनुसार वायु के प्रकोप से होनेवाला गले का एक रोग जिसके कारण गले से ठीक स्वर नहीं निकलता। गला बैठना।

स्वर-तंत्री—स्त्री०[सं०] स्वर-सूत्र। (दे०)

स्वरता—स्त्री०[सं०]१. 'स्वर' होने का भाव। २. 'स्वरित' होने की अवस्था या भाव। (सोनोरिटी)

स्वर-नलिका—स्त्री०[सं०] स्वर-सूत्र। (दे०)

स्वरनादी (दिन्)—पुं०[सं०] मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला बाजा। (संगीत)

स्वर नाभि—पुं०[सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा।

स्वर-पत्तन—पुं० [सं०] सामवेद।

स्वर-पात—पुं०[सं०]१. किसी शब्द का उच्चारण करने में उसके किसी वर्ण पर कुछ ठहरना या रुकना। २. उचित वेग, रुकाव आदि का ध्यान रखते हुए होनेवाला शब्दों का उच्चारण। (ऐक्सेन्ट)

स्वर प्रधान—वि०[सं०] ऐसा राग जिसमें स्वर का ही आग्रह या प्रधानता हो। ताल की प्रधानता न हो।

स्वर-बद्ध—भू० कृ० [सं०] स्वरों में बाँधा हुआ। (संगीत)

स्वर-ब्रह्म—पुं० [सं०] ब्रह्म की स्वर में होनेवाली अभिव्यक्ति।

स्वर-भंग—पुं०[सं०]१. उच्चारण में होनेवाली बाधा या अस्पष्टता। २. आवाज या गला बैठना, जो एक रोग माना गया है। ३. साहित्य में हर्ष, भय, क्रोध, मद आदि से गला भर आना अथवा जो कुछ कहना हो उसके बदले मुख से और कुछ निकल जाना, जो एक सात्त्विक अनुभाव माना गया है।

स्वर-भंगी (गिन्)—पुं०[सं०] १. वह जिसे स्वरभंग रोग हुआ हो। २. वह जिसका गला बैठ गया हो और मुँह से साफ आवाज न निकलती हो। ३. एक प्रकार का पक्षी।

स्वर-भाव—पुं० [सं०] संगीत में, बिना अंग-संचालन किये केवल स्वर से ही दुःख-सुख आदि के भाव प्रकट करने की क्रिया। (यह चार प्रकार के भावों में एक माना गया है।)

स्वर-भूषणी—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

स्वरभेद—पुं०[सं०] स्वर भंग। (दे०)

स्वरमंडल—पुं०[सं०] वीणा की तरह का एक बाजा जिसका प्रचार आजकल बहुत कम हो गया है।

स्वर-मंडलिका—स्त्री०[सं०]=स्वर-मंडल।

स्वर-यंत्र—पुं०[सं०] गले के अंदर का वह अवयव या अंश जिसकी सहायता या प्रयत्न से स्वर या शब्द निकलते हैं। (लैरिंक्स)

स्वर-रंजनी—स्त्री०[सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

स्वर-लहरी—स्त्री० [सं०] १. ऊँचे-नीचे स्वरों की वह लहर या क्रम जो प्रायः संगीत आदि के लिए उत्पन्न की जाती है। २. संगीत में, वह झंकार या आलाप, जो कुछ समय तक एक ही रूप में होता है।

स्वर-लासिका—स्त्री०[सं०] बाँसुरी या मुरली।

स्वर लिपि—स्त्री० [सं०] संगीत में किसी गात, तान, राग, लय आदि में आनेवाले सभी स्वरों का क्रमबद्ध लेख। (नोटेशन)

स्वरवाही (हिन्)—पुं० [सं०] वह बाजा या बाजों का समूह जो स्वर उत्पन्न करता हो। ताल देनेवाले बाजों से भिन्न। जैसे—वंशी, वीणा, सारंगी, आदि। (ढोल, तबले, मँजीरे आदि से भिन्न)

स्वर-वेधी—वि०=शब्द-वेधी।

स्वर शास्त्र—पुं०[सं०] वह शास्त्र जिसमें स्वर-संबंधी सब बातों का विवेचन हो। स्वर-विज्ञान।

स्वर-शून्य—वि० [सं०] [भाव० स्वर-शून्यता] (ध्वनि) जिसमें मधुरता, संगीतमयता या लय न हो।

स्वर-संक्रम—पुं० [सं०] संगीत में, स्वरों का आरोह और अवरोह। स्वरों का उतार और चढ़ाव।

स्वर-संधि—स्त्री०[सं०] व्याकरण तथा भाषा-विज्ञान में, दो या अधिक पास-पास आनेवाले स्वरों का मिलकर एक होना। स्वरों का मेल।

स्वरस—पुं०[सं०]१. वैद्यक में, पत्ती आदि को भिगोकर और अच्छी तरह कूट, पीस और छानकर निकाला हुआ रस। २. किसी चीज का अपना प्राकृतिक स्वर।

स्वर-समुद्र—पुं०[सं०] एक प्रकार का पुराना बाजा, जिसमें बजाने के लिए तार लगे होते थे।

स्वरसादि—पुं० [सं०] ओषधियों को पानी में औटाकर तैयार किया हुआ काढ़ा। कषाय।

स्वर-साधन—पुं० [सं०] संगीत में, बार-बार कंठ से उच्चारण करते हुए प्रत्येक स्वर ठीक तरह से निकालने की क्रिया या भाव।

स्वर-सूत्र—पुं० [सं०] गले और छाती के अंदर का सूत्र के आकार का वह अंग, जिसकी सहायता से स्वर या आवाज निकलती है। (वोकल कॉर्ड)

स्वरांत—वि०[सं०] (शब्द) जिसके अंत में कोई स्वर हो। जैसे—माला, रोटी आदि।

स्वरांतर—पुं० [सं०] दो स्वरों के उच्चारण के बीच का अन्तर या विराम।

स्वरांश—पुं०[सं०] संगीत में, स्वर का आधा या चौथाई अंग।

स्वरा—स्त्री० [सं०] ब्रह्मा की बड़ी पत्नी जो गायत्री की सपत्नी कही गई है।

स्वरागम—पुं०[सं० स्वर+आगम] निरुक्त में किसी शब्द के दो वर्णों के बीच में किसी प्रकार कोई स्वर आ लगना। जैसे—कर्म से करम रूप बनने में अ का स्वरागम हुआ है।

स्वराघात—पुं०[सं० स्वर+आघात] किसी शब्द का उच्चारण करने, किसी को पुकारने, कुछ कहने, गाने आदि के समय किसी व्यंजन या स्वर पर साधारण से अधिक जोर देने या अधिक प्राण-शक्ति लगाने की क्रिया या भाव। (ऐक्सेन्ट)

विशेष—साधारणतः ध्वनियों पर होनेवाला आघात या प्राण-शक्ति का प्रयोग दो प्रकार का होता है। पहले प्रकार में तो जिज्ञासा विधि, निषेध, विस्मय, संतोष, हर्ष आदि प्रकट करने के लिए होता है। उदाहरणार्थ जब हम कहते हैं—हम जायेंगे—तो कभी तो हमें 'हम' पर जोर देना अभीष्ट होता है, जिसका आशय होता है—हम ही जायेंगे, और कोई नहीं जायेगा। और कभी हमें 'जायेंगे' पर जोर देना अभीष्ट होता है, जिसका आशय होता है—हम अवश्य जाएँगे, बिना गये नहीं मानेंगे। ध्वनियों पर दूसरे प्रकार का आघात वह होता है, जिसमें या तो मात्रा खींचकर बढ़ाई जाती है (जैसे—क्या—ा–ा–ा, जी—ी–ी–ी, हाँ—ाँ–ाँ–ाँ–आदि या उच्चारण ही कुछ अधिक या कम जोर लगाकर किया जाता है। वैदिक मंत्रों के उच्चारण के संबंध में जो उदात्त, अनुदात्त और स्वरित नामक तीन भेद हैं, वे इसी प्रकार के अन्तर्गत आते हैं। पाश्चात्य देशों की अँगरेजी आदि कुछ आर्य परिवारवाली भाषाओं में शब्दों के उच्चारण का शुद्ध रूप बतलानेवाला कुछ विशिष्ट प्रकार का स्वराघात भी होता है, जो छपाई-लिखाई आदि में एक विशिष्ट प्रकार के चिह्न (') से सूचित किया जाता है।

स्वराजी—पुं० [सं० स्वराज्य] १. वह जो 'स्वराज्य' नामक राजनीतिक पक्ष या दल का हो। २. स्वराज्य-प्राप्ति के लिए आन्दोलन तथा प्रयत्न करनेवाले राजनीतिक दल का मनुष्य।

वि० स्वराज्य संबंधी। स्वराज्य का।

स्वराज्य—पुं० [सं०] १. अपना राज्य। अपना देश। २. वह अवस्था जिसमें शासन-सत्ता विदेशी शासकों के हाथ से निकलकर देशवासियों के हाथों में आ चुकी होती है।

स्वराट्—वि० [सं०] जो स्वयं प्रकाशमान हो और दूसरों को प्रकाशित करता हो।

पुं० १. ईश्वर। २. ब्रह्म। ३. वह राजा जो किसी ऐसे राज्य का स्वामी हो, जिसमें स्वराज्य-शासन प्रणाली प्रचलित हो। ४. ऐसा वैदिक छंद जिसके सब पादों में से मिलकर नियमित वर्णों में दो वर्ण कम हों।

स्वरापगा—स्त्री० [सं०] आकाश-गंगा। मन्दाकिनी।

स्वराभरण—पुं० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

स्वरालाप—पुं० [सं० स्वर+आलाप] संगीत में ऊँचे-नीचे स्वरों को नियत और नियमित रूप से लयदार और सुन्दर बनाकर उच्चारण करने की क्रिया या भाव।

स्वरालाप—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

स्वराष्टक—पुं० [सं०] संगीत में, एक प्रकार का संकर राग जो बंगाली, भैरव, गांधार, पंचम और गुर्जरी के मेल से बनता है।

स्वराष्ट्र—वि० [सं०] जिसका संबंध अपने राष्ट्र से हो। फलतः अन्य राष्ट्रों, उपनिवेशों से संबंध न रखनेवाला। (होम) जैसे—स्वराष्ट्र मंत्रालय; स्वराष्ट्र मंत्री।

पुं० १. अपना राष्ट्र या राज्य। २. सुराष्ट्र नामक प्राचीन देश। ३. तामस मनु के पिता, जो पुराणानुसार एक सार्वभौम राजा थे और जिन्होंने बहुत से यज्ञादि किए थे।

स्वराष्ट्र-मंत्री—पुं० [सं०] किसी देश की सरकार या मंत्रिमंडल का वह सदस्य जिसके अधीन राष्ट्र की आन्तरिक व्यवस्था और सुरक्षा-संबंधी विभागों की देख-रेख और संचालन हो। (होम मिनिस्टर)

स्वरित—वि० [सं०] १. (अक्षर या वर्ण) जो स्वर से युक्त हो। जिसमें स्वर हो या लगा हो। २. जिसमें कुछ ऊँचा और स्पष्ट रूप से सुने जाने के योग्य स्वर हो। ३. जो अच्छे या मधुर स्वर से युक्त हो। ४. (स्थान) जिसमें स्वर भर या गूँज रहा हो। (सोनोरस)

पुं० व्याकरण में स्वरों के उच्चारण के तीन प्रकारों या भेदों में से एक। स्वर का ऐसा उच्चारण जो न तो बहुत ऊँचा या तीव्र हो और न बहुत नीचा या कोमल हो। मध्यम या सम-भाव से स्वरों का होनेवाला उच्चारण। (शेष दो भेद उदात्त और अनुदात्त कहलाते हैं)

स्वरितत्व—पुं० [सं०] स्वरित का गुण, धर्म या भाव।

स्वरु—पुं० [सं०] १. वज्र। २. यज्ञ। ३. सूर्य की किरण। ४. तीर। बाण। ५. एक प्रकार का बिच्छू।

स्व-रुचि—वि० [सं०] अपनी ही रुचि या प्रवृत्ति के अनुसार सब काम करनेवाला। मन-मौजी।

स्त्री० अपनी रुचि।

स्वरूप—पुं० [सं०] [वि० स्वरूपी] १. किसी चीज का वह पक्ष, जिसमें वह उपस्थित या प्रस्तुत होती है। रंग, रूप सामग्री आदि से भिन्न। २. किसी वस्तु, विषय, व्यक्ति का अपना या निजी आकार-प्रकार तथा बनावट, जो समान तत्त्वधारी वस्तुओं के आकार-प्रकार तथा बनावट से भिन्न तथा स्वतन्त्र होती है। आकृति। रूप। शक्ल। ३. उक्त के आधार पर किसी देवता या देवी का बना हुआ चित्र या मूर्ति। जैसे—वैष्णव भक्तों की स्वरूप-सेवा। ४. लीला आदि में किसी देवता या देवी का वह रूप, जो किसी पात्र या व्यक्ति ने धारण किया हो। जैसे—रामलीला में राम और सीता के स्वरूप। ५. किसी चीज का बँधा हुआ क्रम, ढंग या पद्धति। जैसे—वाक्य का यह स्वरूप व्याकरण सम्मत नहीं है। ६. पंडित। विद्वान्। ७. आत्मा। ८. प्रकृति। स्वभाव।

वि० १. सुन्दर। खूबसूरत। २. तुल्य। समान।

अव्य० (किसी के) तौर पर या रूप में। जैसे—प्रमाण-स्वरूप कोई मंत्र कहना या ग्रंथ का उद्धरण सामने रखना।

†पुं०=सारूप्य (मुक्ति)।

स्वरूपज्ञ—पुं० [सं०] वह जो परमात्मा और आत्मा का वास्तविक स्वरूप जानता हो। तत्त्वज्ञ।

स्वरूपता—स्त्री० [सं०] स्वरूप का गुण, धर्म या भाव।

स्वरूप दया—पुं० [सं०] जैनों में ऐसी दया या जीवरक्षा जो वास्तविक न हो केवल इहलोक और परलोक में सुख पाने के लिए लोगों की देखा-देखी की जाय।

स्वरूप-प्रतिष्ठा—स्त्री० [सं०] जीव का अपनी स्वाभाविक शक्तियों और गुणों से युक्त होना।

स्वरूपमान†—वि०=स्वरूपवान् (सुन्दर)।

स्वरूपवान्—वि० [सं० स्वरूपवत्] [स्त्री० स्वरूपवती] जिसका स्वरूप अच्छा हो। सुन्दर। खूबसूरत।

स्वरूप-संबंध—पुं० [सं०] ऐसा संबंध जो किसी से उसके अपने स्वरूप के समान होने की अवस्था में माना जाता है।

स्वरूपाभास—पुं० [सं०] कोई वास्तविक स्वरूप न होने पर भी उसका आभास होना। जैसे—गंधर्वनगर या मरीचिका जिसका वास्तव में

अस्तित्व न होने पर भी उनके रूप का आभास (स्वरूपाभास) होता है।

स्वरूपासिद्ध—वि०[सं०] जो स्वयं अपने स्वरूप से ही असिद्ध होता हो। कभी सिद्ध न हो सकनेवाला।

स्वरूपी (पिन्)—वि०[सं०]१. स्वरूपवाला। स्वरूपयुक्त। २. जो किसी के स्वरूप के अनुसार बना हो अथवा जिसने किसी का स्वरूप धारण किया हो।

†पुं०=सारूप्य।

स्वरूपोपनिषद्—स्त्री०[सं०] एक उपनिषद् का नाम।

स्वरेणु—स्त्री०[सं०] सूर्य की पत्नी संज्ञा का एक नाम।

स्वरोचिस्—पुं० [सं०] पुराणानुसार स्वारोचिष् मनु के पिता जो कलि नामक गंधर्व के पुत्र थे और वरूथिनी नाम की अप्सरा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

स्वरोद—पुं०=सरोद (बाजा)।

स्वरोदय—पुं०[सं०] वह शास्त्र जिसके द्वारा इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना आदि नाड़ियों के श्वासों के आधार पर सब प्रकार के शुभ और अशुभ फल जाने जाते हैं। दाहिने और बाएँ नथुने से निकलते हुए श्वासों को देखकर शुभ और अशुभ फल कहने की विद्या।

स्वर्गंगा—स्त्री०[सं०] आकाश-गंगा। मंदाकिनी।

स्वर्ग—पुं०[सं०] [वि० स्वर्गीय] १. हिंदुओं के अनुसार ऊपर के सात लोकों में से तीसरा लोक, जिसका विस्तार सूर्यलोक से ध्रुवलोक तक कहा गया है और जिसमें ईश्वर तथा देवताओं का निवास माना गया है। यह भी माना जाता है कि पुण्यात्माओं और सत्कर्मियों की मृत्यु होने पर उनकी आत्माएँ इसी लोक में जाकर निवास करती हैं। देवलोक।

पद—स्वर्ग की धार=आकाश-गंगा। मंदाकिनी।

मुहा०—स्वर्ग के पथ पर पैर रखना=(क) यह लोक छोड़कर परलोक के लिए प्रस्थान करना। मरना। (ख) जान जोखिम में डालना। **स्वर्ग छूना**= स्वर्ग के सुख का इसी जीवन में अनुभव करना। उदा०—मदोन्मत्ता महर्षि-मुख देख थी स्वर्ग छूती।—हरिऔध। **स्वर्ग जाना या सिधारना**=परलोकगामी होना। मरना।

२. अन्य धर्मों के अनुसार इसी प्रकार का वह विशिष्ट स्थान जो आकाश में माना जाता है। बिहिश्त। (हेवेन)

विशेष—भिन्न-भिन्न धर्मों में स्वर्ग की कल्पना अलग-अलग प्रकार से की गई है। तो भी प्रायः सभी धर्मों के अनुसार इसमें ईश्वर, देवताओं, देवदूतों और पवित्र आत्माओं का निवास माना जाता है और यह सभी प्रकार के सुखों और सौन्दर्यों का भंडार कहा गया है।

३. बोल-चाल में पृथ्वी के ऊपर का वह सारा विस्तार, जिसमें सूर्य, चाँद, तारे, बादल आदि निकलते, डूबते या उठते-बैठते हैं। ४. कोई ऐसा स्थान, जहाँ सभी प्रकार के सुख प्राप्त हों और नाम को भी कोई कष्ट या चिंता न हो। जैसे—यहाँ तो हमें स्वर्ग जान पड़ता है। ५. आकाश। आसमान।

पद—स्वर्ग-सुख=सभी प्रकार का बहुत अधिक सुख।

मुहा०—(किसी चीज का) स्वर्ग छूना=बहुत अधिक ऊँचा होना। जैसे—वहाँ की अट्टालिकाएँ स्वर्ग छूती थीं।

६. ईश्वर। ७. सुख। ८. प्रलय।

स्वर्ग-काम—वि०[सं०] जो स्वर्ग की कामना रखता हो। स्वर्ग-प्राप्ति की इच्छा रखनेवाला।

स्वर्ग-गत—भू० कृ०, वि०[सं०] जो स्वर्ग चला गया हो। मरा हुआ। स्वर्गीय।

स्वर्ग गति—स्त्री०[सं०] स्वर्ग जाना। मरना।

स्वर्ग गमन—पुं०[सं०] स्वर्ग सिधारना। मरना।

स्वर्ग-गामी (मिन्)—वि० [सं०]१. स्वर्ग की ओर गमन करनेवाला। स्वर्ग जानेवाला। २. जो स्वर्ग जा चुका अर्थात् मर चुका हो। मृत। स्वर्गीय।

स्वर्ग गिरि—पुं०=स्वर्णगिरि (सुमेरु पर्वत)।

स्वर्ग-तरंगिणी—स्त्री०[सं०] स्वर्ग की नदी, मंदाकिनी। आकाश-गंगा।

स्वर्ग तरु—पुं०[सं०]१. कल्पतरु। २. पारिजात। परजाता।

स्वर्गति—स्त्री० [सं०] स्वर्ग की ओर जाने की क्रिया। स्वर्ग-गमन।

स्वर्गद—वि०[सं०] जो स्वर्ग पहुँचाता हो। स्वर्ग देनेवाला।

स्वर्गदायक—वि०=स्वर्गद।

स्वर्ग धेनु—स्त्री०[सं०] कामधेनु।

स्वर्ग नदी—स्त्री०[सं० स्वर्ग+नदी] आकाश गंगा।

स्वर्ग-पताली—स्त्री० [सं० स्वर्ग+पाताल] ऐसा बैल जिसका एक सींग सीधा ऊपर को उठा हुआ और दूसरा सीधा नीचे की ओर झुका हुआ हो।

स्वर्ग-पति—पुं०[सं०] स्वर्ग के स्वामी, इन्द्र।

स्वर्ग पुरी—स्त्री०[सं०] इन्द्र की पुरी, अमरावती।

स्वर्ग भूमि—स्त्री०[सं०] १. एक प्राचीन जनपद जो वाराणसी के पश्चिम ओर था। २. ऐसा स्थान जहाँ स्वर्ग का-सा आनन्द और सुख हो।

स्वर्ग-मंदाकिनी—स्त्री०[सं०] आकाशगंगा। मंदाकिनी।

स्वर्ग-योनि—पुं०[सं०] यज्ञ, दान आदि वे शुभ कर्म, जिनके कारण मनुष्य स्वर्ग जाता है।

स्वर्ग-लाभ—पुं०[सं०] स्वर्ग की प्राप्ति। स्वर्ग पहुँचना। मरना।

स्वर्ग-लोक—पुं० दे० 'स्वर्ग'।

स्वर्ग-लोकेश—पुं०[सं०] १. स्वर्ग के स्वामी, इन्द्र। २. तन। शरीर।

स्वर्ग-वधू—स्त्री० [सं०] अप्सरा।

स्वर्ग-वाणी—स्त्री०[सं० स्वर्ग+वाणी] आकाशवाणी।

स्वर्ग वास—पुं०[सं०]१. स्वर्ग में निवास करना। स्वर्ग में रहना। २. मर कर स्वर्ग जाना। मरना। जैसे—आज उनका स्वर्गवास हो गया।

स्वर्गवासी (सिन्)—वि०[सं०] [स्त्री० स्वर्गवासिनी] १. स्वर्ग में रहनेवाला। २. जो मरकर स्वर्ग जा चुका हो। मृत। स्वर्गीय।

स्वर्गसार—पुं०[सं०] ताल के चौदह मुख्य भेदों में से एक। (संगीत)

स्वर्ग-स्त्री—स्त्री०[सं०] अप्सरा।

स्वर्गस्थ—भू० कृ०, वि०[सं०]१. स्वर्ग में स्थित। स्वर्ग का। २. जो मरकर स्वर्ग जा चुका हो। मृत। स्वर्गीय।

स्वर्गापगा—स्त्री०[सं०] आकाश-गंगा। मंदाकिनी।

स्वर्गामी (मिन्)—वि०[सं० स्वर्गामिन्]=स्वर्गगामी।

स्वर्गारूढ—भू० कृ०, वि० [सं०] स्वर्ग सिधारा हुआ। स्वर्ग पहुँचा हुआ। मृत। स्वर्गवासी।

स्वर्गारोहण—पुं०[सं०]१. स्वर्ग की ओर जाना या चढ़ना। २. मरकर स्वर्ग जाना।

स्वर्गावास—पुं०[सं०]=स्वर्गवास।

स्वर्गिक—वि०=स्वर्गीय।

स्वर्गि-गिरि—पुं०[सं०] सुमेरु पर्वत, जिसके शृंग पर स्वर्ग की स्थिति मानी जाती है।

स्वर्गी (गिन्)—वि०[सं०]=स्वर्गीय।

पुं० देवता।

स्वर्गीय—वि० [सं०] [स्त्री० स्वर्गीया]१. स्वर्ग-संबंधी। स्वर्ग का। २. स्वर्ग में रहने या होनेवाला। ३. जो मरकर स्वर्ग चला गया हो। (मृत व्यक्ति के लिए आदरसूचक) ४. जिसकी मृत्यु अभी हाल में अथवा कुछ ही दिन पहले हुई हो। (लेट) ५. जिसमें लौकिक पवित्रता या सौन्दर्य की पराकाष्ठा हो। दिव्य। जैसे—स्वर्गीय रूप।

स्वर्ग्य—वि०[सं०] स्वर्ग-संबंधी। स्वर्ग तक पहुँचानेवाला।

स्वर्चन—पुं०[सं०] ऐसी अग्नि जिसमें से सुन्दर ज्वाला निकलती हो।

स्वर्जि—स्त्री०[सं०]१. सज्जी मिट्टी। २. शोरा।

स्वर्जिक—पुं०[सं०] सज्जी मिट्टी।

स्वर्जिकाक्षार—पुं०[सं०] सज्जी मिट्टी।

स्वर्जित–वि०[सं०] जिसने स्वर्ग पर विजय प्राप्त कर ली हो। स्वर्ग-जेता।

पुं० एक प्रकार का यज्ञ।

स्वर्ण—पुं०[सं०] १. सुवर्ण या सोना नामक बहुमूल्य धातु। कनक। २. धतूरा। ३. नाग केसर। ४. गौर स्वर्ण नामक साग। ५. कामरूप देश की एक नदी।

वि० सोने की तरह का पीला।

स्वर्णकाय—वि० [सं०] जिसका शरीर सोने का अथवा सोने का-सा हो।

पुं० गरुड़।

स्वर्णकार—पुं० [सं०]१. एक जाति जो सोने-चाँदी के आभूषण आदि बनाती है। २. सुनार।

स्वर्णकारी—स्त्री०[हिं० स्वर्णकार] सोने-चाँदी के गहने आदि बनाने का व्यवसाय। सुनारी।

स्वर्ण कूट—पुं० [सं०] हिमालय की एक चोटी।

स्वर्ण-केतकी—स्त्री०[सं०] पीली केतकी।

स्वर्ण-गिरि—पुं०[सं०] सुमेरु पर्वत।

स्वर्ण गैरिक—पुं० [सं०] सोनागेरू।

स्वर्ण ग्रीवा—स्त्री०[सं०] कालिका पुराण के अनुसार एक पवित्र नदी जो नाटक शैल के पूर्वी भाग से निकली हुई मानी गई है।

स्वर्ण-चूड़, स्वर्ण-चूल—पुं०[सं०] नीलकंठ नामक पक्षी।

स्वर्णज—वि० [सं०] १. सोने से उत्पन्न। २. सोने का बना हुआ।

पुं०१. राँगा वंग। २. सोनामक्खी।

स्वर्ण-जयंती—स्त्री०[सं०] किसी व्यक्ति, संस्था आदि या किसी महत्त्वपूर्ण कार्य के जन्म या आरम्भ होने के ५० वर्ष पूरा होने पर होनेवाली जयंती। (गोल्डेन जुबली)

स्वर्णजीवी (विन्)—पुं०[सं०] स्वर्णकार। सुनार।

स्वर्णद—वि०[सं०]१. स्वर्ण या सोना देनेवाला। २. स्वर्ण या सोना दान करनेवाला।

स्वर्णदी—स्त्री० [सं०] १. मंदाकिनी। स्वर्गंगा। २. कामाख्या के पास की एक नदी।

स्वर्ण-द्वीप—पुं०[सं०] आधुनिक सुमात्रा द्वीप का मध्ययुगीन नाम।

स्वर्ण नाभ—पुं०[सं०] एक प्रकार के शालग्राम।

स्वर्ण पत्र—पुं०[सं०] सोने का पत्तर या तबक।

स्वर्ण-पर्पटी—स्त्री०[सं०] वैद्यक में एक प्रसिद्ध औषध, जो संग्रहणी रोग के लिए सबसे अधिक गुणकारी मानी जाती है।

स्वर्ण पाटक—पुं०[सं०] सुहागा जिसके मिलाने से सोना गल जाता है।

स्वर्ण-पुष्प—पुं० [सं०] १. अमलतास। २. चंपा। ३. कीकर। बबूल। ४. कैथ। ५. पेठा।

स्वर्ण-पुष्पा—स्त्री० [सं०] १. कलिहारी। लांगली। २. सातला नामक थूहर। ३. मेढ़ा-सिंगी। ४. अमलतास। ५. पीली केतकी।

स्वर्ण-पुष्पी—स्त्री० [सं०]१. स्वर्ण-केतकी। पीला केवड़ा। २. अमलतास ३. सातला।

स्वर्ण-प्रस्थ—पुं०[सं०] पुराणानुसार जंबू द्वीप का एक उपद्वीप।

स्वर्ण-फल—पुं०[सं०] धतूरा।

स्वर्ण-फला—स्त्री०[सं०] स्वर्ण कपाली। चंपा केला।

स्वर्ण-बीज—पुं०[सं०] धतूरे का बीज।

स्वर्ण-भाज—पुं०[सं०] सूर्य।

स्वर्ण मय—वि०[सं०]१. स्वर्ण से युक्ति। २. जो बिलकुल सोने का हो। जैसे—स्वर्णमय सिंहासन।

स्वर्ण-माक्षिक—पुं०[सं०] सोनामक्खी नामक उपधातु।

स्वर्ण-माता—स्त्री०[सं० स्वर्णमातृ] हिमालय की एक छोटी नदी।

स्वर्ण-मान—पुं०[सं०] अर्थशास्त्र में, सिक्कों के संबंध की वह प्रणाली जिसमें कोई देश अपनी मुद्रा की इकाई या मानक का अर्घ सोने की एक निश्चित तौल के अर्घ के बराबर रखता है। (गोल्ड स्टेन्डर्ड)

विशेष—जिस देश में यह प्रणाली प्रचलित रहती है, वहाँ (क) या तो सोने के ही सिक्के चलते हैं या (ख) ऐसी मुद्रा चलती है, जो तत्काल सोने के सिक्कों में बदली जा सकती है या (ग) लोग अपना सोना देकर टकसाल से उसके सिक्के ढलवा सकते हैं।

स्वर्ण मानक—पुं०=स्वर्णमान।

स्वर्ण मीन—पुं०[सं०] सुनहले रंग की एक प्रकार की मछली।

स्वर्ण-मुखी (खिन्)—स्त्री०[सं०]१. मध्ययुग में, ६४ हाथ लंबी, ३२ हाथ ऊँची और ३२ हाथ चौड़ी नाव। २. सनाय।

स्वर्ण-मुद्रा—स्त्री० [सं०] सोने का सिक्का। अशरफी।

स्वर्ण-यूथिका, स्वर्ण-यूथी—स्त्री० [सं०] पीली जूही। सोनजूही।

स्वर्ण-रंभा—स्त्री०[सं०] स्वर्ण कदली। चंपा केला।

स्वर्ण-रस—पुं०[सं०]१. मध्यकालीन तांत्रिकों और रासायनिकों की परिभाषा में ऐसा रस, जिसके स्पर्श से कोई धातु सोना बन जाता हो या बन सकती हो। २. परवर्ती रहस्यवादी साधकों या संप्रदायों में वह क्रिया या तत्त्व, जिसमें मन की चंचलता नष्ट होती हो और वह पूर्ण रूप से शांत हो जाता हो।

स्वर्ण-रेखा—स्त्री०=सुवर्ण-रेखा (नदी)।

स्वर्ण-लता—स्त्री० [सं०] १. मालकंगनी। ज्योतिष्मती। २. पीली जीवंती।

स्वर्ण-वज्र—पुं० [सं०] एक प्रकार का लोहा।

स्वर्ण-वर्ण—पुं० [सं०] १. कण-गुग्गुल। २. हरताल। ३. सोना गेरू। ४. दारुहलदी।

स्वर्ण-वर्णा—स्त्री०[सं०]१. हलदी। २. दारुहलदी।

स्वर्ण-वल्ली—स्त्री०[सं०]१. सोनावल्ली। रक्तफला। २. पीली जीवंती।

स्वर्ण-विंदु—पुं०[सं०]१. विष्णु। २. एक प्राचीन तीर्थ।

स्वर्ण-शिख—पुं०[सं०] स्वर्णचूड़ या नीलकंठ नामक पक्षी।

स्वर्ण-शृंगी (गिन्)—पुं० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वत जो सुमेरु पर्वत के उत्तर ओर माना जाता है।

स्वर्ण-सिंदूर—पुं०=रस-सिंदूर।

स्वर्णाकर—पुं० [सं०] सोने की खान।

स्वर्णाचल—पुं०[सं०] उड़ीसा प्रदेश का भुवनेश्वर नामक तीर्थ।

स्वर्णाद्रि—पुं०[सं०]=स्वर्णाचल।

स्वर्णाभ—वि०[सं०]१. सोने की सी आभा या चमकवाला। २. सोने के रंग का। सुनहला। ३. (प्रतिभूति) जो सब प्रकार से सुरक्षित हो और जिसके डूबने या व्यर्थ होने की कोई आशंका न हो। (गिल्ट-एज्ड)

पुं० हरताल।

स्वर्णारि—पुं०[सं०]१. गंधक। २. सीसा नामक धातु।

स्वर्णिम—वि०[सं०] सोने का। सुनहला।

स्वर्णुली—स्त्री०[सं०] एक प्रकार का क्षुप। हेमपुष्पी। सोनुली।

स्वर्णोपधातु—पुं०[सं०] सोनामक्खी नामक उपधातु।

स्वर्धनी—स्त्री०[सं०] गंगा।

स्वर्नगरी—स्त्री०[सं०] स्वर्ग की पुरी, अमरावती।

स्वर्नदी—स्त्री०[सं०] आकाश-गंगा।

स्वर्पति—पुं०[सं०] स्वर्ग के स्वामी, इन्द्र।

स्वर्भानु—पुं०[सं०]१. सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। २. राहु नामक ग्रह।

स्वर्लोक—पुं०[सं०] स्वर्ग।

स्वर्वधू—स्त्री०[सं०] अप्सरा।

स्वर्वापी—स्त्री०[सं०] गंगा।

स्वर्वेश्या—स्त्री०[सं०] अप्सरा।

स्वर्वैद्य—पूं० [सं०] स्वर्ग के वैद्य, अश्विनीकुमार।

स्वल्प—वि०[सं०] बहुत ही अल्प या कम। बहुत थोड़ा।

पुं० नखी नामक गन्ध द्रव्य।

स्वल्पक—वि०[सं०]=स्वल्प।

स्वल्प-विराम ज्वर—पुं० [सं०] ठहर ठहर कर थोड़ी देर के लिए उतरकर फिर आनेवाला ज्वर।

स्वल्प-व्यक्ति तंत्र—पुं० दे० 'अल्प-तंत्र'।

स्वल्पायु (स्)—वि० [सं०] जिसकी आयु बहुत अल्प या थोड़ी हो। अल्पजीवी।

स्वल्पाहार—पुं०[सं०] बहुत कम या थोड़ा भोजन करना।

स्वल्पाहारी (रिन्)—वि०[सं०] बहुत कम या थोड़ा भोजन करनेवाला।

स्वल्पिष्ठ—वि०[सं०]१. अत्यन्त अल्प। बहुत ही कम। २. बहुत ही छोटा।

स्ववरन†—पुं०]=सुवर्ण (सोना)।

स्ववर्णो रेखा†—स्त्री०=सुवर्ण रेखा (नदी)।

स्ववश—वि०[सं०] [भाव० स्ववशता] १. जो अपने वश में हो। स्वतन्त्र। २. जितेन्द्रिय।

स्ववशता—स्त्री०[सं०] स्ववश होने की अवस्था, गुण या भाव।

स्ववश्य—वि०[सं०] [भाव० स्ववश्यता] जो अपने ही वश में हो। अपने आप पर अधिकार रखनेवाला।

स्ववासिनी—वि० स्त्री० [सं०] (स्त्री) जो अपने घर में रहती हो।

स्त्री० वह कुँआरी या विवाहिता कन्या, जो वयस्क होने के उपरान्त अपने पिता के घर में ही रहती हो।

स्व-विवेक—पुं०[सं०] कुछ विशिष्ट नियमों और बंधनों के अधीन रह कर उचित-अनुचित और युक्त-अयुक्त का विचार करने की शक्ति। (डिस्क्रीशन)

स्व-बीज—वि०[सं०] जो अपना बीज या कारण आप ही हो।

पुं० आत्मा।

स्व-शासन—पुं०[सं०] [भू० कृ० स्वशासित] १. अपने अधिक्षेत्र में शासन, राजनीतिक प्रबन्ध आदि स्वयं करने का पूरा अधिकार। (सेल्फ़ गवर्नमेंट) २. दे० 'स्वायत्त-शासन'।

स्वशुर—पुं०=श्वसुर।

स्व-संभूत—वि०[सं०] जो स्वयं से उत्पन्न हो। स्वयंभू।

स्व-संवेद्य—वि०[सं०] जिसका संवेदन स्वयं ही किया जा सके।

स्व-समुत्थ—वि०[सं०] अपने ही देश में उत्पन्न, स्थित या एकत्र होनेवाला। जैसे—स्व-समुत्थ कोष। स्व-समुत्थ बल।

स्वसा (सृ)—स्त्री०[सं०] भगिनी। बहन।

स्वसित—वि०[सं०] बहुत काला।

स्वसुर—पुं०=ससुर।

स्वस्ति—अव्य०[सं०]१. शुभ हो। (प्रायः शुभ-कामना प्रकट करने के लिए पत्रों के आरम्भ में) २. कल्याण हो। मंगल हो। भला हो। (आशीर्वाद) ३. मान्य है। ठीक है।

स्त्री०१. कल्याण। मंगल। २. सुख। ३. ब्रह्मा की तीन पत्नियों में से एक।

स्वस्तिक—पुं०[सं०]१. एक प्रकार का बहुत प्राचीन मंगल-चिह्न जो शुभ अवसरों पर दीवारों आदि पर अंकित किया जाता है। आज-कल इसका यह रूप प्रचलित है (卐)। सथिया। २. सामुद्रिक में, शरीर के किसी अंग पर होनेवाला उक्त प्रकार का चिह्न जो बहुत शुभ माना जाता है। ३. एक प्रकार का मंगल-द्रव्य जो विवाह आदि के समय भिगोये हुए चावल पीसकर तैयार किया जाता है और जिसमें देवताओं का निवास माना जाता है। ४. प्राचीन काल का एक प्रकार का यंत्र जो शरीर में गड़े हुए शल्य आदि बाहर निकालने के काम में आता था। ५. वैद्यक में घाव या फोड़े पर बाँधी जानेवाली एक प्रकार की तिकोनी पट्टी। ६. वास्तु-शास्त्र में ऐसा घर, जिसमें पश्चिम ओर एक और पूर्व ओर दो दालान हों। ७. साँप के फन पर की नीली रेखा। ८. हठयोग की साधना में एक प्रकार का आसन या मुद्रा। ९. प्राचीन

काल की एक प्रकार की बढ़िया नाव, जो प्रायः राजाओं की सवारी के काम आती थी। १०. चौमुहानी। चौराहा। ११. लहसुन। १२. रतालू। १३. मूली। १४. सुसना नामक साग। शिरियारी।

स्वस्तिका—स्त्री० [सं०] चमेली।

स्वस्तिकृत—पुं० [सं०] शिव। महादेव।

वि० कल्याणकारी। मंगलकारक।

स्वस्तिद—वि० [सं०] मंगलकारक।

पुं० शिव का एक नाम।

स्वस्तिमती—स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका।

वि० सं० 'स्वस्तिमान्' का स्त्री।

स्वस्तिमान् (मत्)—वि० [सं०] [स्त्री० स्वस्तिमती] १. सब प्रकार से सुखी। २. भाग्यवान्।

स्वस्ति-मुख—वि० [सं०] जिसके मुख से शुभ, सुख देनेवाली या अशीर्वाद-पूर्ण बातें निकलती हों।

पुं० १. ब्राह्मण। २. राजाओं का स्तुति-पाठक। बंदी।

स्वस्ति-वाचक—वि० [सं०] १. जो मंगल-सूचक बात कहता हो। २. आशीर्वाद देनेवाला।

स्वस्ति-वाचन—पुं० [सं०] मंगल-कार्यों के आरम्भ में किया जानेवाला एक प्रकार का धार्मिक कृत्य, जिसमें कलश-स्थापन, गणेश का पूजन और मंगल-सूचक मंत्रों का पाठ किया जाता है।

स्वस्तेन—पुं०=स्वस्त्ययन।

स्वस्त्ययन—पुं० [सं०] एक प्रकार का धार्मिक कृत्य, जो किसी विशिष्ट कार्य की अशुभ बातों का नाश करके मंगल की स्थापना के विचार से किया जाता है।

स्वस्थ—वि० [सं०] [भाव० स्वस्थता] १. जो स्वयं अपने बल पर या सहारे से खड़ा हो। २. फलतः आत्म-निर्भर। ३. जो शारीरिक दृष्टि से आत्म-निर्भर हो। फलतः जिसमें आलस्य, रोग, विकार आदि न हों। तन्दुरुस्त। (हेल्दी) ४. जिसमें किसी प्रकार की त्रुटि न हो। (साउन्ड) जैसे—स्वस्थ प्रश्न। ५. सामाजिक या मानसिक स्वास्थ्य का रक्षक। जैसे—स्वस्थ साहित्य।

स्वस्थ-चित्त—वि० [सं०] जिसका चित्त स्वस्थ हो। मानसिक दृष्टि से स्वस्थ।

स्वस्थता—स्त्री० [सं०] १. स्वस्थ होने की अवस्था या भाव। तंदुरुस्ती। २. सावधानता।

स्वस्रीय—पुं० [सं०] [स्त्री० स्वस्रीया] स्वसृ अर्थात् बहन का लड़का। भानजा।

स्वहाना†—अ०=सुहाना (भला लगना)।

†वि०=सुहावना।

स्वांकिक—पुं० [सं०] ढोल, मृदंग आदि ऐसे बाजे बजानेवाला, जो अपने अंक या गोद में रखकर बजाये जाते हों।

स्वांग—पुं० [सं० स्व+अंग] १. किसी दूसरे की वेश-भूषा अपने अंग पर इसलिए धारण करना कि देखने में लोगों को वही दूसरा व्यक्ति जान पड़े। कृत्रिम रूप से दूसरे का धारण किया हुआ भेस। रूप भरने की क्रिया या भाव। जैसे—(क) रामलीला में राम और लक्ष्मण के स्वाँग। (ख) अभिनय में दुष्यंत और शकुंतला के स्वाँग। २. विशेषतः उक्त प्रकार से धारण किया जानेवाला वह भेस या रूप, जो या तो केवल मनोरंजन के लिए हास्यजनक हो या जिसका उद्देश्य दूसरों का उपहास करना अथवा हँसी उड़ाना हो। जैसे—(क) बाल-विवाह या वृद्ध-विवाह का स्वाँग। (ख) नाँक-कटैया या रामलीला के जलूस में निकलनेवाले स्वाँग। ३. जन साधारण में प्रचलित एक प्रकार का संगीत-रूपक जो किसी लोककथा पर आधारित होता है। जैसे—पूरनमल या राजा हरिश्चन्द्र का स्वाँग। ४. कोई बहाना बनाकर दूसरों को भ्रम में डालने या अपना कोई काम निकालने के लिए धारण किया जानेवाला झूठा रूप। जैसे—बीमारी का स्वाँग रचकर घर बैठना।

क्रि० प्र०—बनाना।—रचना।

मुहा०—स्वाँग लाना=किसी दूसरे का भेस बनाकर या कोई कृत्रिम रूप धारण करके सामने आना। जैसे—जन्म भर में एक स्वाँग भी लाये तो कोढ़ी का। (कहा०)

स्वांग—पुं० [सं०] अपना ही अंग।

स्वाँगना*—स० [हिं० स्वाँग] बनावटी वेश या रूप धारण करना। स्वाँग बनाना।

स्वाँगी—पुं० [हिं० स्वाँग] १. वह जो स्वाँग रचकर जीविका उपार्जन करता हो। नकल करनेवाला। नक्काल। २. बहुरूपिया।

वि० अनेक प्रकार के रूप धारण करनेवाला।

स्वांगीकरण—पुं० [सं०] [भू० कृ० स्वांगीकृत] १. किसी एक वस्तु का दूसरी वस्तु या वस्तुओं को इस प्रकार पूर्णतः अपने आप में मिला लेना कि वे उसके अंग के रूप में हों जायँ। आत्मीकरण।

स्वांत—पुं० [सं०] १. अपना अंत या मृत्यु। २. अपना प्रदेश या राज्य। ३. अंतःकरण। मन। ४. मन की शांति। ५. गुफा।

स्वांतः सुखाय—अव्य० [सं०] केवल अपना अंतःकरण या मन प्रसन्न करने के लिए। अपनी ही तृप्ति या संतोष के लिए।

स्वांतज—पुं० [सं०] १. कामदेव। २. प्रेम।

स्वाँस†—पुं०=साँस।

स्वाँसा—पुं० [देश०] वह सोना जिसमें ताँबे का खोट हो। ताँबे के खोट-वाला सोना।

†पुं०=साँस।

स्वाक्षर—पुं० [सं०] १. अपने ही हाथों से लिखे हुए अक्षर। अपना हस्त-लेख। २. (किसी का) अपने हाथ से लिखा हुआ कोई छोटा लेख या हस्ताक्षर, जिसे लोग अपने पास स्मृति के रूप में रखते हैं। (ऑटोग्राफ) ३. हस्ताक्षर।

स्वाक्षरित—भू० कृ० [सं०] १. जिस पर किसी ने अपने हाथ से अपना नाम, पता, लेख आदि लिख रखा हो। २. दस्तखत किया हुआ। हस्ताक्षर से युक्त। (साइन्ड)

स्वागत—पुं० [सं०] १. किसी मान्य या प्रिय के आने पर आगे बढ़कर आदरपूर्वक उसका अभिनन्दन करना। अभ्यर्थना। (रिसेप्शन)

*२. उक्त अवसर पर पूछा जानेवाला कुशल-मंगल। उदा०—स्वागत पूँछि निकट बैठारे।—तुलसी। ३. किसी के कथन, विचार आदि को अच्छा या अनुकूल समझकर ग्रहण अथवा मान्य करने की क्रिया या भाव। जैसे—हम आपके इस विचार (या सम्मति का) स्वागत करते हैं। ४. एक बुद्ध का नाम।

अव्य० आप के आगमन पर (हम) आप का अभिनन्दन करते हैं। जैसे—स्वागत! स्वागत! बन्धुवर, भले पधारे आप।

स्वागतक—पुं०[सं०] [स्त्री० स्वागतिका] १. वह जिस पर आगत सज्जनों के स्वागत और सत्कार का भार हो। (रिसेप्शनिस्ट) २. घर का वह मालिक, जो आगत सज्जनों का स्वागत-सत्कार करता हो। (होस्ट)

स्वागतकारिणी सभा—स्त्री०=स्वागत-समिति।

स्वागतकारी(रिन्)—वि० [सं०] [स्त्री० स्वागतकारिणी] स्वागत या अभ्यर्थना करनेवाला। पेशवाई करनेवाला।

स्वागत-पतिका—स्त्री०[सं०] वह नायिका जो अपने पति के परदेश से लौटने से प्रसन्न होकर उसके स्वागत के लिए प्रस्तुत हो। आगत-पतिका। (नायिका के अवस्थानुसार दस भेदों में से एक।)

स्वागत-प्रिया—पुं० [सं०] वह नायक जो अपनी पत्नी के परदेश से लौटने से उत्साहपूर्ण और प्रसन्न होकर उसका स्वागत करने के लिए प्रस्तुत हो।

स्वागत-समिति—स्त्री०[सं०] वह समिति, जो किसी बड़े सम्मेलन आदि में आनेवालों के स्वागत-सत्कार के लिए बनती है। (रिसेप्शन कमिटी)

स्वागता—स्त्री०[सं०] चार चारणों का एक समवृत्त वर्णिक छन्द, जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, नगण, भगण, और दो गुरु होते हैं। यथा—राज-राजा दशरत्थ तनैजू। रामचन्द्र भव-चन्द्र बने जू।—केशव।

स्वागतिक—वि० [सं०] [स्त्री० स्वागतिका] स्वागत करनेवाला। आनेवाले की अभ्यर्थना या सत्कार करनेवाला।

पुं० घर का वह मालिक, जो किसी विशिष्ट अवसर पर अपने यहाँ आये हुए लोगों का स्वागत-सत्कार करता हो। (होस्ट)

स्वागतिका—स्त्री० [सं०] १. स्वागत करनेवाली गृहस्वामिनी। २. आज-कल हवाई जहाजों में वह स्त्रियाँ, जो यात्रियों की सेवा और सत्कार के लिए नियुक्त होती हैं। (एयर होस्टेस)

स्वागती—पुं०=स्वागतक।

स्वाग्रह—पुं०[सं० स्व+आग्रह] १. अपने संबंध में होनेवाला आग्रह। २. अपने अधिकार, योग्यता, शक्ति के संबंध में होनेवाला ऐसा आग्रह जिसके फलस्वरूप कोई अपना विचार प्रकट करता हो या अपने लिए उपयुक्त स्थान ग्रहण करने का प्रयत्न करता हो। (एसर्शन)

स्वाग्रही(हिन्)—वि०[सं०] जिसमें स्वाग्रह की धारणा या भावना प्रबल हो। (एसर्टिव)

स्वाच्छंद्य—पुं०=स्वच्छंदता।

स्वाजन्य—पुं०=स्वजनता।

स्वाजीव, स्वाजीव्य—वि० [सं०] (स्थान या देश) जहाँ जीविका के लिए कृषि, वाणिज्य आदि साधन यथेष्ट और सुलभ हों। जैसे—स्वाजीव्य देश।

स्वातंत्र†—पुं०=स्वातंत्र्य।

स्वातंत्र्य—पुं०=स्वतंत्रता।

स्वातंत्र्य-युद्ध—पुं० [सं०] वह युद्ध, जो अपने देश को विदेशी शासन से मुक्त करके स्वतन्त्र बनाने के लिए किया गया हो, या किया जाय। (वार ऑफ़ इन्डिपेन्डेन्स)

स्वात—स्त्री०[सं० सुवास्तु] अफगानिस्तान की एक नदी।

*स्त्री०=स्वाति।

स्वाति—स्त्री०[सं०] आकाशस्थ पन्द्रहवाँ नक्षत्र, जो फलित ज्योतिष के अनुसार शुभ माना जाता है।

वि० जिसका जन्म स्वाति नक्षत्र में हुआ हो।

स्वातिकारी—स्त्री०[सं०] कृषि की देवी। (पारस्कर गृह्य-सूत्र)

स्वाति-पंथ—पुं० [सं० स्वाति+पथ] आकाश-गंगा।

स्वाति-योग—पुं०[सं०] फलित ज्योतिष में, आषाढ़ के शुक्ल-पक्ष में स्वाति नक्षत्र का चन्द्रमा के साथ होनेवाला योग।

स्वाति-सुत—पुं०[सं० स्वाति+सुत] मोती। मुक्ता।

विशेष—लोगों का विश्वास है कि जब सीपी में स्वाति-नक्षत्र की वर्षा की बूंद पड़ती है, तब उसमें मोती पैदा होता है।

स्वाति-सुवन—पुं०=स्वाति-सुत।

स्वाती†—स्त्री०=स्वाति।

स्वाद—पुं०[सं०] १. कोई चीज खाने या पीने पर जबान या रसनेन्द्रिय को होनेवाली अनुभूति। ज़ायका। (टेस्ट) जैसे—नींबू का स्वाद खट्टा होता है। २. किसी काम, चीज या बात से प्राप्त होनेवाला आनन्द। रसानुभूति। मजा। सुख। जैसे—उन्हें दूसरों की निन्दा करने में बहुत स्वाद आता है।

क्रि० प्र०—आना।—मिलना।—लेना।

मुहा०—**स्वाद चखाना**=किसी को उसके किये हुए अनुचित कार्य का दंड देना। बदला लेना। जैसे—मैं भी तुम्हें इसका स्वाद चखाऊँगा। ३. आदत। अभ्यास। जैसे—भीख माँगने का उन्हें स्वाद पड़ गया है।

क्रि० प्र०—पड़ना।

४. इच्छा। कामना। चाह। ५. मीठा रस। (डिं०)

स्वादक—पुं०[सं० स्वाद] वह जो भोज्य पदार्थ प्रस्तुत होने पर यह देखने के लिए चखता है कि उन सबका स्वाद ठीक है या नहीं।

स्वादन—पुं०[सं०] १. चखना। स्वाद लेना। २. किसी काम या बात का आनन्द या रस लेना।

स्वादनीय—वि०[सं०] १. जिसका स्वाद लिया जाने को हो या लिया जा सकता हो। २. स्वादिष्ट।

स्वादित—भू० कृ०[सं०] १. जिसका स्वाद लिया जा चुका हो। चखा हुआ। ३. स्वादिष्ट। ३. जो प्रसन्न हो गया हो।

स्वादित्व—पुं०[सं०] स्वाद का भाव। स्वादु।

स्वादिमा (मन्)—स्त्री० [सं०] १. सुस्वादुता। २. माधुर्य।

स्वादिष्ट, स्वादिष्ठ—वि०[सं० स्वादिष्ठ] जिसका जायका या स्वाद बहुत अच्छा हो। जो खाने में बहुत अच्छा जान पड़े।

स्वादी (दिन्)—वि० [सं०] १. स्वाद चखनेवाला। २. आनन्द के लिए रस लेने वाला। रसिक।

†वि०=स्वादिष्ट। (पश्चिम)

स्वादीला†—वि० [सं० स्वाद+ईला (प्रत्य०)] स्वाद-युक्त। स्वादिष्ट।

स्वादु—पुं०[सं०] १. मधुर रस। मीठा रस। २. मधुरता। मिठास। ३. गुड़। ४. महुआ। ५. कमला नींबू। ६. चिरौंजी। ७. बेर। ८. जीवक नामक अष्टवर्गीय ओषधि। ९. अगर की लकड़ी। अगरु। १०. काँस नामक तृण। ११. दूध। १२. सेंधा नमक। सैंधव लवण।

वि०१. मधुर। मीठा। २. स्वादिष्ट। ३. सुन्दर।
स्त्री० द्राक्षा। दाख।

स्वादुकंद—पुं० [सं०] १. सफेद पिंडालू। २. कोबी। केउँआ। केमुक।

स्वादुकर—पुं०[सं०] प्राचीन काल की एक वर्णसंकर जाति। (महाभारत)

स्वादुगंधा—स्त्री०[सं०] लाल सहिजन। रक्त शोभांजन।

स्वादुता—स्त्री०[सं०]१. स्वादु का गुण, धर्म या भाव। २. मधुरता।

स्वादु-फल—पुं० [सं०] १. बेर। बदरी फल। २. धामिन वृक्ष। धन्व वृक्ष।

स्वादु-फला—स्त्री० [सं०] १. बेर। बदरी वृक्ष। २. खजूर। ३. केला। ४. मुनक्का।

स्वादु-रसा—स्त्री० [सं०] १. मदिरा। शराब। २. काकोली। ३. दाख। ४. शतावर। ५. अमड़ा।

स्वादुलुंगी—स्त्री०[सं०] मीठा नींबू।

स्वाद्वम्ल—पुं०[सं०]१. नारंगी का पेड़। नागरंग वृक्ष। २. कदंब वृक्ष।

स्वादेशिक—वि०[सं०] स्वदेशी।

स्वाद्य—वि०[सं०] जिसका स्वाद लिया जा सके या लिया जाने को हो। चखे जाने के योग्य।

स्वाधिकार—पुं०[सं० स्व+अधिकार]१. किसी व्यक्ति या समाज की दृष्टि से उसका अपना अधिकार। २. स्वाधीनता। स्वतन्त्रता।

स्वाधिपत्य—पुं०[सं० स्व+आधिपत्य] किसी दूसरे के अधीन न होकर परम स्वतन्त्र रहने की अवस्था या भाव।

स्वाधिष्ठान—पुं०[सं० स्व+अधिष्ठान] हठयोग के अनुसार शरीर के आठ चक्रों में से दूसरा, जिसका स्थान शिश्न का मूल या पेड़ू है। यह मूलाधार और मणिपुर के बीच में छः दलों का और सिंदुर वर्ण का माना गया है। आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार इसी केन्द्र की ग्रंथियों से यौवन और शरीर में प्रजनन-शक्ति उत्पन्न और विकसित होती है। (हाइपोगैस्ट्रिक प्लेक्सस)

स्वाधीन—वि०[सं०] [भाव० स्वाधीनता]१. जो अपने अधीन हो। जैसे—स्वाधीन पतिका, अर्थात् वह नायिका जिसका पति उसके वश में हो। २. जो प्रत्येक दृष्टि से आत्म-निर्भर हो। जो किसी के अधीन अर्थात् पराधीन न हो। जैसे—स्वाधीन राष्ट्र। ३. अपनी इच्छा के अनुसार काम करने में स्वतन्त्र। निरंकुश।
†वि०=अधीन।

स्वाधीनता—स्त्री०[सं०]१. स्वाधीन होने की अवस्था, धर्म या भाव। 'पराधीनता' का विपर्याय। आजादी।२. ऐसी स्थिति, जिसमें व्यक्तियों राष्ट्रों आदि को बाहरी नियंत्रण, दबाव, आदि प्रभाव से मुक्त होकर अपनी इच्छा से सब काम करने का अधिकार प्राप्त होता है और वे किसी बात के लिए दूसरों के मुखापेक्षी नहीं होते। सब प्रकार से आत्म-निर्भर होने की अवस्था या भाव। (इन्डिपेंडेंस)

विशेष—स्वाधीनता, स्वतन्त्रता और स्वच्छन्दता में मुख्य अन्तर यह है कि स्वाधीनता का प्रयोग राजनीतिक और वैधानिक क्षेत्रों में यह सूचित करने के लिए होता है कि अपने सब कामों की व्यवस्था या संचालन करने का किसी, को पूरा अधिकार है। स्वतन्त्रता मुख्यतः लौकिक और सामाजिक क्षेत्रों का शब्द है और इसमें परकीय तन्त्र या शासन से मुक्त या रहित होने का भाव प्रधान है। स्वच्छन्दता मुख्यतः आचारिक और व्यावहारिक क्षेत्रों का शब्द है और इसमें शिष्ट सम्मत नियमों और विधि-विधानों के बंधनों से रहित होने का भाव प्रधान है।

स्वाधीन-पतिका—स्त्री० [सं०] साहित्य में वह नायिका, जिसका पति उसके वश में हो।

विशेष—इसके मुग्धा, मध्या, प्रौढ़ा और परकीया ये चार भेद हैं।

स्वाधीन-भर्तृका—स्त्री०=स्वाधीन-पतिका।

स्वाधीनी†—स्त्री०=स्वाधीनता।

स्वाध्याय—पुं०[सं०]१. वेदों की निरंतर और नियमपूर्वक आवृत्ति या अभ्यास करना। वेदाध्ययन। धर्म-ग्रंथों का नियम-पूर्वक अनुशीलन करना। २. किसी गंभीर विषय का अच्छी तरह किया जानेवाला अध्ययन या अनुशीलन। ३. वेद।

स्वाध्यायी (यिन्)—वि०[सं०] स्वाध्याय करनेवाला।

स्वान—पुं०[सं०] शब्द। आवाज।
†पुं०=श्वान।

स्वाना*—स०=सुलाना।

स्वानुभव—पुं०[सं०] ऐसा अनुभव जो अपने को हुआ हो।

स्वानुभूति—स्त्री० [सं०] १. ऐसी अनुभूति जो अपने को हुई हो। २. धार्मिक क्षेत्र में, परब्रह्म के तत्त्व का परिज्ञान।

स्वानुरूप—वि०[सं०] [भाव० स्वानुरूपता]१. अपने अनुरूप। २. योग्य। ३. सहज।

स्वाप—पुं० [सं०] १. नींद। निद्रा। २. स्वप्न। ३. अज्ञान। ४. निष्पंदता।

स्वापक—वि०[सं०] नींद लानेवाला। निद्राकारक।

स्वापद†—पुं०=श्वापद।
†वि०=स्वापक।

स्वापन—पुं०[सं०]१. सुलाना। २. प्राचीन काल का एक अस्त्र, जिससे शत्रु निद्रित किये जाते थे। ३. ऐसी दवा, जिसे खाने से नींद आ जाती हो।
वि० नींद लाने या सुलानेवाला। निद्राकारक।

स्वापराध—पुं०[सं०] अपने प्रति किया जानेवाला अपराध।

स्वापी (पिन्)—वि०[सं०] स्वापक।

स्वाप्न—वि० [सं०] स्वप्न संबंधी। स्वप्न का।

स्वाप्निक—वि०[सं०]१. स्वप्न में होने या उससे संबंध रखनेवाला। २. स्वप्न के कारण या फलस्वरूप होनेवाला।

स्वाब—पुं०[अं०] कपड़े या सन की बुहारी या झाड़ू जिससे जहाज के डेक आदि साफ किये जाते हैं। (लश०)

स्वाभाव—पुं० [सं०] स्व का अभाव।

स्वाभाविक—वि०[सं०]१. जो स्वभाव से उत्पन्न हुआ हो। जो आप ही हुआ हो। प्राकृतिक। (नैचुरल)। २. जो या जैसा प्रकृति के या स्वभाव के अनुसार साधारणतः हुआ करता हो। जैसे—तुम्हें उनकी बात पर क्रोध आना स्वाभाविक था।

स्वाभाविकी—वि०[सं०]=स्वाभाविक।

स्वाभाव्य—वि०[सं०] स्वयं उत्पन्न होनेवाला। आप ही आप होनेवाला। स्वयंभू।

स्वाभिमान—पुं० [सं०]१. अपनी जाति, राष्ट्र, धर्म आदि का सद् अभिमान। अपनी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा का अभिमान । आत्म-गौरव। (सेल्फ़-रेस्पेक्ट)

स्वाभिमानी (निन्)—वि०[सं०] जिसमें स्वाभिमान हो। स्वाभिमान-वाला।

स्वामिकता—स्त्री०=स्वामित्व।

स्वामि कार्तिक—पुं० [सं०] १. कार्तिकेय। स्कंद। उदा०—धरे चाप इखु हाथ स्वामि कार्तिक बल सोहत।—गोपाल। २. छः आघात और दस मात्राओं का ताल जिसका बोल इस प्रकार है—धा धि धो गे ना ग ति न तिराकेट तिना तिना तिना केत्ता धिना।

स्वामित्व—पुं० [सं०]१. वह अवस्था जिसमें कोई किसी वस्तु का स्वामी या मालिक होता है। मालिक होने का भाव। मालिकी। (ओनरशिप) २. प्रभुता। प्रभुत्व।

स्वामित्व चिह्न—पुं० [सं०] वह चिह्न जो यह सूचित करता हो कि अमुक वस्तु अमुक आदमी की है। (प्रापर्टी मार्क)

स्वामिन†—स्त्री०=स्वामिनी।

स्वामिनी—स्त्री० [सं०] १. 'स्वामी' का स्त्री०। २. वल्लभ संप्रदाय में राधिकाजी की एक संज्ञा।

स्वामि-भृत्य न्याय—पुं० [सं०] नौकर के काम से जब मालिक खुश होता है, तो नौकर भी निहाल हो जाता है; अतएव दूसरों का काम सिद्ध हो जाने पर यदि अपना भी कार्य सिद्ध हो जाय तो या प्रसन्नता हो तो यह न्याय प्रयुक्त होता है।

स्वामिस्व—पुं० [सं०] १. वह धन जो किसी वस्तु के स्वामी को आधिरूप से मिलता हो या मिलने को हो। २. दे० 'स्वत्व-शुल्क'।

स्वामिहीनत्व—पुं० [सं०] किसी वस्तु के सम्बन्ध की वह स्थिति, जिसमें उसका कोई स्वामी न मिल रहा हो। चीज के लावारिस होने की अवस्था या भाव। ला-वारिसी। (बोना वैकेशिया)

स्वामिहीन-भूमि—स्त्री० [सं०] वह भूमि, जिसका कोई अधिकारी, शासक या स्वामी न हो; जैसी कभी-कभी दो राज्यों की सीमाओं पर हुआ करती है। (नो मैन्स लैण्ड)

स्वामी—पुं० [सं० स्वामिन्] [स्त्री० स्वामिनी, भाव० स्वामित्व] १. वह जिसे किसी वस्तु पर पूरे और सब प्रकार के अधिकार प्राप्त हों। धनी। मालिक। (ओनर, प्रोप्राइटर) २. घर का प्रधान व्यक्ति। ३. पति । शौहर। ४. साधु, संन्यासी आदि का संबोधन। ५. ईश्वर। ६. राजा। ७. सेनापति। ८. शिव। ९. विष्णु। १०. स्वामीकार्तिक। ११. गरुड़। १२. गत उत्सर्पिणी के ११ वें अर्हत् का नाम।

स्वाम्नाय—वि०[सं०] जो परंपरा से चला आ रहा हो। परंपरागत।

स्वाम्य—पुं० [सं०] स्वामी होने की अवस्था, गुण या भाव। (ओनरशिप)

स्वाम्युपकारक—पुं०[सं०] घोड़ा। अश्व।

स्वायंभुव—पुं०[सं०] पुराणानुसार चौदह मनुओं में से पहला मनु, जो स्वयंभू ब्रह्मा से उत्पन्न माने गये हैं।

स्वायंभुवी—स्त्री० [सं०] ब्राह्मी (बूटी)।

स्वायंभू—पुं०=स्वायंभुव।

स्वायत्त—वि० [सं०] [भाव० स्वायत्तता] १. जिस पर अपना अधिकार हो। २. जिसे स्थानीय स्वशासन का अधिकार या शक्ति प्राप्त हो। (ऑटॉनोमस)

स्वायत्त शासन—पुं०[सं०] [वि० स्वायत्तशासी] १. राजनीति या शासन की दृष्टि से स्थानिक क्षेत्रों में अपने सब काम आप करने की स्वतन्त्रता। (ऑटोनोमी) २. दे० 'स्थानिक-स्वशासन'।

स्वायत्त-शासी—वि० [सं०] (देश) जिसे शासन स्वयं ही करने का अधिकार प्राप्त हो। (ऑटॉनोमस)

स्वायत्तता—स्त्री० [सं०] अपनी सरकार बनाने का अधिकार। स्थानीय स्वशासन का अधिकार। (ऑटोनोमी)

स्वार—पुं०[सं०]१. घोड़े के घर्राटे का शब्द। २. बादल की गरज। मेघ-ध्वनि।

वि० स्वर-सम्बन्धी। स्वर का।

†पुं०=सवार।

स्वारक्ष्य—वि०[सं०] जिसकी सहज में रक्षा की जा सकती हो।

स्वारथ—वि० [सं० सार्थ] सफल। सिद्ध। फलीभूत। सार्थक। जैसे—चलिए, आपका परिश्रम स्वारथ हो गया।

†पुं०=स्वार्थ।

स्वारथी†—वि०=स्वार्थी।

स्वारसिक—वि०[सं०]१. (काव्य) जो सुरस युक्त हो। २. (काम या बात) जिसमें अच्छा रस मिलता हो। ३. प्राकृतिक। स्वाभाविक।

स्वारस्य—पुं० [सं०] १. सरसता। रसीलापन। २. आनन्द। मजा। ३. स्वाभाविकता।

स्वाराज्य—पुं०[सं०]१. स्वर्ग का राज्य या लोक। स्वर्ग। २. स्वाधीन राज्य।

स्वाराट्—पुं० [सं० स्वाराज्] स्वर्ग के राजा, इन्द्र।

स्वारी†—स्त्री०=सवारी।

स्वारोचिष—पुं०[सं०] मनु जो स्वरोचिष के पुत्र थे। विशेष दे० 'मनु'।

स्वार्जित—वि०[सं०] अपना अर्जित किया या कमाया हुआ। (सेल्फ़-एक्वायर्ड)

स्वार्थ—पुं०[सं०] [वि० स्वार्थिक, कर्ता स्वार्थी, भाव० स्वार्थता] १. अपना अर्थ या उद्देश्य । अपना मतलब। २. अपना हित साधने की उग्र भावना। ३. ऐसी बात, जिसमें स्वयं अपना लाभ या हित हो। **मुहा०—(किसी बात में) स्वार्थ लेना**=किसी होनेवाले काम में अनुराग रखना। (आधुनिक, पर भद्दा प्रयोग)

४. विधिक क्षेत्रों में, किसी वस्तु या संपत्ति के साथ होनेवाला किसी व्यक्ति का वह संबंध जिसके अनुसार उसे उस वस्तु या संपत्ति पर अथवा उससे होनेवाले लाभ आदि पर स्वामित्व अथवा इसी प्रकार का और कोई अधिकार प्राप्त रहता है। (इन्टरेस्ट)

†वि०=स्वारथ।

स्वार्थता—स्त्री०[सं०] स्वार्थ का धर्म या भाव। स्वार्थपरता। खुदगरजी।

स्वार्थ-त्याग—पुं०[सं०] (दूसरे के हित के लिए कर्तव्य बुद्धि से) अपने स्वार्थ या हित को निछावर करना। किसी भले काम के लिए अपने हित या लाभ का विचार छोड़ना।

स्वार्थ-त्यागी (गिन्)—वि० [सं० स्वार्थत्यागिन्] जो (दूसरों के हित के लिए कर्तव्य-बुद्धि से) अपने स्वार्थ या हित को निछावर कर दे। दूसरे के भले के लिए अपने हित या लाभ का विचार न रखनेवाला। स्वार्थ त्याग करनेवाला।

स्वार्थ-पंडित—वि०[सं०] बहुत बड़ा स्वार्थी या खुदगरज। परम स्वार्थी।

स्वार्थपर—वि० [सं०] जो केवल अपना स्वार्थ या मतलब देखता हो। अपना स्वार्थ या मतलब साधनेवाला। स्वार्थी। खुदगरज।

स्वार्थ-परता—स्त्री०[सं०] स्वार्थपर होने की अवस्था या भाव। खुदगरजी।

स्वार्थ-परायण—वि० [सं०] [भाव० स्वार्थ-परायणता] १. जो अपने स्वार्थों की सिद्धि में रत रहता हो। २. अन्य कामों या बातों की अपेक्षा अपने स्वार्थ को अधिक महत्त्व देनेवाला।

स्वार्थ-परायणता—स्त्री०[सं०] स्वार्थ-परायण होने की अवस्था, गुण-या भाव। स्वार्थपरता। खुदगरजी।

स्वार्थ-साधक—वि०[सं०] अपना मतलब साधनेवाला। अपना काम निकालनेवाला। खुदगरज। स्वार्थी।

स्वार्थ-साधन—पुं०[सं०] अपना प्रयोजन सिद्ध करना। अपना काम या मतलब निकालना।

स्वार्थांध—वि०[सं०] [भाव० स्वार्थांधता] १. जो अपने स्वार्थ के फेर में पड़कर अंधा हो रहा हो और भले-बुरे का ध्यान न रखता हो।

स्वार्थिक—वि०[सं०]१. स्वार्थ से संबंध रखनेवाला। २. जिससे अपना अर्थ या काम निकले। ३. लाभदायक। (प्रॉफ़िटेबुल) ४. वाच्यार्थ से युक्त (कथा या वाक्य)। ५. अपने अर्थ या धन से किया या लिया हुआ (कार्य या पदार्थ)।

स्वार्थी (थिन्)—वि०[सं०]१. मात्र अपने स्वार्थों की सिद्धि चाहनेवाला। २. जिसमें परमार्थ-भावना न हो। खुदगरज।

स्वाल†—पुं०=सवाल।

स्वाल्प—पुं०[सं०] स्वल्प होने की अवस्था या भाव। स्वल्पता। वि०=स्वल्प।

स्वावलंबन—पुं०[सं०] अपनी समर्थता से आत्म-निर्भर होने की अवस्था, गुण या भाव।

स्वावलंबी (बिन्)— वि० [सं०] १. जिसमें स्वावलंबन की भावना हो। २. जिसने अपनी समर्थता से आत्म-निर्भरता अर्जित की हो।

स्वाश्रित—वि०[सं०]=स्वावलंबी।

स्वास†—पुं०=श्वास (साँस)।

स्वासा—स्त्री०[सं०] श्वास। साँस। श्वास।

स्वास्थ्य—पुं०[सं०]१. स्वस्थ अर्थात् नीरोग होने की अवस्था, गुण या भाव। नीरोगता। आरोग्य। तन्दुरुस्ती। जैसे—उनका स्वास्थ्य आज-कल अच्छा नहीं है। २. मन की वह अवस्था, जिसमें उसे कोई उद्वेग, कष्ट या चिन्ता न हो। (हेल्थ)

स्वास्थ्यकर—वि०[सं०] जिससे स्वास्थ्य अच्छा बना रहे। तंदुरुस्त करनेवाला। आरोग्य-वर्द्धक। जैसे—देवघर स्वास्थकर स्थान है।

स्वास्थ्य-निवास—पुं० [सं०] विशेष रूप से निश्चित या निर्मित वह स्थान, जहाँ जाकर लोग स्वास्थ्य-सुधार के लिए रहते हैं। आरोग्य-निवास। (सैनेटोरियम)

स्वास्थ्य-रक्षा—स्त्री०[सं०] ऐसा स्वच्छतापूर्ण आचरण और व्यवहार जिससे स्वास्थ्य अच्छा बना रहे, बिगड़ने न पाये। (सैनिटेशन)

स्वास्थ्य-विज्ञान—पुं०[सं०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें शरीर को नीरोग और स्वस्थ बनाये रखने के नियमों और सिद्धांतों का विवेचन हो। (हाईजीन)

स्वास्थिकी—स्त्री०=स्वास्थ्य-विज्ञान।

स्वाहा—अव्य० [सं०] एक शब्द जिसका प्रयोग देवताओं को हवि देने के समय मंत्रों के अन्त में किया जाता है। जैसे—इंद्राय स्वाहा। वि०१. जो जलाकर नष्ट कर दिया गया हो। २. जिसका पूरी तरह से अन्त या नाश कर दिया गया हो। पूर्णतः विनष्ट। जैसे—कुछ ही दिनों में उसने लाखों रुपयों की सम्पत्ति स्वाहा कर दी। स्त्री० अग्नि की पत्नी।

स्वाहा-ग्रसण—पुं० [सं० स्वाहा+ग्रसन] देवता। (डिं०)

स्वाहापति—पुं०[सं०] स्वाहा के पति, अग्नि देवता।

स्वाहा-प्रिय—पुं०[सं०] अग्नि।

स्वाहाभुक्—पुं० [सं० स्वाहाभुज्] देवता।

स्वाहार—पुं०[सं०] अच्छा आहार या भोजन।

स्वाहार्ह—वि० [सं०]१. स्वाहा के योग्य। हवि पाने के योग्य। २. जो स्वाहा किया अर्थात् पूरी तरह से जलाया या नष्ट किया जा सके या किया जाने को हो।

स्वाहाशन—पुं०[सं०] देवता।

स्विदित—भू० कृ०[सं०] १. जिसे स्वेद या पसीना निकला हो। २. जिसका स्वेद या पसीना निकाला गया हो। ३. पिघला या पिघलाया हुआ।

स्विन्न—वि० [सं०]१. पसीने से भरा हुआ। २. उबला, पका या सीझा हुआ।

स्वीकरण—पुं० [सं०]१. स्वीकार या अंगीकार करना। अपनाना। २. कबूल करना। मानना। ३. स्त्री को पत्नी के रूप में ग्रहण करना।

स्वीकरणीय—वि०[सं०] स्वीकृत किये या माने जाने के योग्य।

स्वीकर्त्तव्य—वि०[सं०]=स्वीकरणीय।

स्वीकर्त्ता (र्तृ)—वि० [सं०] स्वीकार करनेवाला। मंजूर करनेवाला।

स्वीकार—पुं०[सं०]१. अपना बनाने या अपनाने की क्रिया या भाव। अंगीकार। २. ग्रहण करना। लेना। परिग्रह। ३. कोई बात मान लेना। कबूल या मंजूर करना। ४. किसी बात की प्रतिज्ञा करना या वचन देना।

स्वीकारना*—स० [सं० स्वीकार] १. स्वीकार करना। मानना। २. ग्रहण करना। लेना। ३. अपनाना।

स्वीकारात्मक—वि०[सं०] (कथन) जिससे कोई बात स्वीकृत की गई या मानी गई हो अथवा उसकी पुष्टि की गई हो। (अफ़र्मेटिव)

स्वीकारोक्ति—स्त्री०[सं०] वह कथन या बयान, जिसमें अपना अपराध स्वीकृत किया जाय। दोष, अपराध, पाप आदि की स्वीकृति। अपने मुँह से कहकर यह मान लेना कि हमने अमुक अनुचित या बुरा काम किया है। (कन्फ़ेशन)

स्वीकार्य—वि० [सं०] जो स्वीकृत किया या माना जा सके। माने जाने के योग्य।

स्वीकृच्छ्र—पुं०[सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का व्रत, जिसमें तीन-तीन दिन तक क्रमशः गोमूत्र, गोबर तथा जौ की लप्सी खाकर रहते थे।

स्वीकृत—भू० कृ०[सं०] [भाव० स्वीकृति] १. जिसे स्वीकार कर लिया गया हो। जिसके संबंध में स्वीकृति दी जा चुकी हो। (सैंकशन्ड) २. ग्रहण किया या माना हुआ। प्रतिपन्न। मंजूर। (ऐक्सेप्टेड) ३. जिसे आधिकारिक रूप से मान्यता मिली हो। मान्य। मान्यता-प्राप्त। (रिकग्नाइज़्ड)

स्वीकृति—स्त्री०[सं०] १. स्वीकार करने की क्रिया या भाव। सम्मति। उदा०—(क) राष्ट्रपति ने उस बिल पर अपनी स्वीकृति दे दी है। (ख) उनकी स्वीकृति से यह नियुक्ति हुई है। २. प्रस्ताव, शर्तें आदि मान लेने या उपहार, देन आदि ग्रहण करने की क्रिया या भाव। (ऐक्सेप्टेन्स) ३. बड़ों, अधिकारियों आदि के द्वारा छोटों की प्रार्थना आदि मान लेने की क्रिया या भाव। मंजूरी। (सैन्कशन)
क्रि० प्र०—देना।—माँगना।—मिलना।—लेना।

स्वीय—वि०[सं०] [स्त्री० स्वीया] स्वकीय। अपना।
पुं० स्वजन। आत्मीय। संबंधी। नाते-रिश्तेदार।

स्वीया—स्त्री०[सं०] स्वकीया।

स्वे*—वि०=स्व।

स्वेच्छया—अव्य०[सं०] अपनी इच्छा से और बिना किसी दबाव के। स्वेच्छापूर्वक। (वालन्टरिली) जैसे—स्वेच्छया किया हुआ काम।

स्वेच्छा—स्त्री०[सं०] अपनी इच्छा। अपनी मर्जी। जैसे—वे सब काम स्वेच्छा से करते हैं।

स्वेच्छाचार—पुं०[सं०] भले-बुरे का ध्यान रखे बिना मन-माना आचरण करना। जो जी में आये, वही करना। यथेच्छाचार।

स्वेच्छाचारिता—स्त्री०[सं०] स्वेच्छाचार का भाव या धर्म।

स्वेच्छाचारी (रिन्)—वि० [सं०] [स्त्री० स्वेच्छाचारिणी] स्वेच्छाचार अर्थात् मन-माना काम करनेवाला। निरंकुश। अबाध्य। जैसे—वहाँ के राज-कर्मचारी बहुत स्वेच्छाचारी हैं।

स्वेच्छा-मृत्यु—वि० [सं०] १ अपनी इच्छा से आप मरनेवाला। २. जिसने मृत्यु को इस प्रकार वश में कर रखा हो कि अपनी इच्छा से ही मरे, इच्छा न हो तो न मरे।
पुं० भीष्म पितामह, जिन्हें उक्त प्रकार का मनोबल या शक्ति प्राप्त थी।

स्वेच्छा-सेवक—पुं० [सं०] [स्त्री० स्वेच्छा-सेविका] दे० 'स्वयंसेवक'।

स्वेच्छित—भू० कृ०[सं०] जो किसी की अपनी इच्छा के अनुकूल या अनुरूप हो। मन-चाहा।

स्वेटर—पुं० [अं०] बनियाइन या गंजी आदि की तरह का एक प्रकार का ऊनी पहनावा, जो कमीज के ऊपर तथा कोट आदि के नीचे पहना जाता है।

स्वेत*—वि०=श्वेत।

स्वेत-रंगी—स्त्री० [सं० श्वेत+हिं० रंगी] कीर्ति। यश। (डिं०)

स्वेद—पुं०[सं०] १. पसीना। २. साहित्य में, रोष, लज्जा, हर्ष, श्रम आदि से शरीर का पसीने से भर जाना, जो एक सात्विक अनुभाव माना गया है। ३. भाप। वाष्प। ४. वह प्रक्रिया, जिससे कोई वस्तु भाप आदि की सहायता से आर्द्र या तर की जाती हो। (बाथ) जैसे—उष्मा-स्वेद। (देखें) ५. गरमी। ताप।

स्वेदक—वि०[सं०] पसीना लानेवाला। प्रस्वेदक।
पुं० १. कांतिसार लोहा। २. दे० 'प्रस्वेदक'।

स्वेदकारी—वि० [सं०]=स्वेदक।

स्वेदज—वि०[सं०] २. पसीने से उत्पन्न होनेवाला। २. गर्म भाप या उष्ण वाष्प से उत्पन्न होनेवाला (जूँ, लीक, खटमल, मच्छर आदि कीड़े-मकोड़े)।

स्वेद-जल—पुं०[सं०] पसीना। प्रस्वेद।

स्वेदन—पुं० [सं०] [भू० कृ० स्वेदित] १. पसीना निकलना। २. पसीना निकालना या लाना। ३. ओषधियाँ शोधने का एक यंत्र। (वैद्यक)

स्वेदनत्व—पुं० [सं०] स्वेदन का गुण, धर्म या भाव।

स्वेदनिका—स्त्री० [सं०] १. तवा। २. रसोई-घर। ३. अरक, शराब आदि चुआने का भभका।

स्वेदांबु—पुं०[सं०]=स्वेद जल (पसीना)।

स्वेदायन—पुं०[सं०] रोम-कूप। लोम-छिद्र।

स्वेदित—भू० कृ०[सं०] १. स्वेद या पसीने से युक्त। २. जिसे किसी प्रकार की भाप से बफारा दिया गया हो।

स्वेदी (दिन्)—वि०[सं०] पसीना लानेवाला। प्रस्वेदक।

स्वेद्य—वि०[सं०] जिसे पसीना लाया जा सके या लाया जाने को हो।

स्वेष्ट—वि०[सं०] जो अपने आप को इष्ट या प्रिय हो।

स्वै—वि०[सं० स्वीय] अपना। निज का। (डिं०)
सर्व०=सो।

स्वैच्छिक—वि० [सं०] १. जो किसी की अपनी या निजी इच्छा के अनुसार हो। २. किसी की निजी इच्छा से सम्बन्ध रखनेवाला। (वॉलेन्टरी)

स्वैर—वि०[सं०] १. अपने इच्छानुसार चलनेवाला। मन-माना काम करनेवाला। यथेच्छाचारी। २. मनमाना। यथेच्छा। ३. धीमा। मन्द।

स्वैरचार—पुं०[सं०] मन-माना आचरण। स्वेच्छाचार।

स्वैरचारिणी—स्त्री० [सं०] १. मनमाना काम करनेवाली स्त्री। २. व्यभिचारिणी स्त्री।

स्वैरचारी (रिन्)—वि०[सं०] [स्त्री० स्वैरचारिणी] मनमाना काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी। निरंकुश।

स्वैरता—स्त्री०[सं०] मन-माना आचरण करने की अवस्था या भाव।

स्वैरवर्ती—वि०[सं० स्वैरवर्तिन्]=स्वेच्छाचारी।

स्वैरवृत्त—वि० [सं०] स्वेच्छाचारी।

स्वैराचार—पुं०[सं०] [वि० स्वैराचारी] ऐसा मनमाना आचरण जो नैतिक, धार्मिक, सामाजिक आदि नियमों या बंधनों की उपेक्षा करके किया जाय।

स्वैराचारी (रिन्)—वि०[सं०] [स्त्री० स्वैराचारिणी] १. मन-माना काम करनेवाला। २. व्यभिचारी। लंपट।

स्वैरालाप—पुं० [सं०] मौज में आकर की जानेवाली इधर-उधर की बात-चीत। गप-शप।

स्वैरिंध्री—स्त्री०=सैरिंध्री।

स्वैरिणी—स्त्री०[सं०] व्यभिचारिणी स्त्री। पुंश्चली।

स्वैरिता—स्त्री० [सं०] यथेच्छाचारिता। स्वच्छंदता। स्वाधीनता।

स्वैरी (रिन्)—पुं०[सं०] [स्त्री० स्वैरिणी] १. वह जो मनमाना आचरण करता हो। २. दुराचारी। बदचलन। ३. व्यभिचारी।

स्वोदय—पुं०[सं०] किसी आकाशीय पिंड का विशेष स्थान पर उदित होना।

स्वोपार्जन—पुं०[सं० स्व+उपार्जन] [भू० कृ० स्वोपार्जित] स्वयं या अपने बाहु-बल से अपने लिए कुछ अर्जन करना। स्वयं प्राप्त करना या कमाना।

स्त्रोपार्जित—वि०[सं०] स्वयं उपार्जन किया हुआ। अपना कमाया हुआ। जैसे—उनकी सारी संपत्ति स्वोपार्जित है।

ह

ह—देवनागरी वर्णमाला का तेंतीसवाँ व्यंजन, जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से कंठ्य घोष, महाप्राण तथा ऊष्म माना जाता है।

हंक†—स्त्री० दे० 'हाँक'।

हँकड़ना†—अ० [हिं० हाँक] [भाव० हँकड़ाव] १. झगड़े के समय शेखी-भरे शब्दों में ललकारना। २. अकड़ना।

हँकड़ान—स्त्री०=हँकड़ाव।

हँकड़ाव—पुं० [हिं० हँकड़ना] हँकड़ने की क्रिया या भाव।

हँकनी—स्त्री० [हिं० हाँकना] १. हाँकने की क्रिया या भाव। हँकान। २. वह पतली या छोटी छड़ी, जिससे पशुओं को हाँकते हैं। ३. हाँका (पशुओं का)।

हँकरना—अ० १.=हँकड़ना। २.=अकड़ना।

हँकराना—स० [हिं० हँकारना का प्रे०] किसी को हँकारने में प्रवृत्त करना। उदा०—मोहन ग्वाल बाल हँकराए।—सूर।

†अ०=हँकारना।

हँकराव(ा)†—पुं० [हिं० हाँक] १. पुकारने या बुलाने की क्रिया या भाव। २. बुलाहट। बुलावा। ३. निमंत्रण। ४.=हँकवा।

हँकवा—पुं० [हिं० हाँकना] १. हाँकनेवाला। २. वह व्यक्ति जो ढोल आदि पीटकर जंगल में सोये या छिपे हुए जानवरों को अपने स्थान से भगाता हो और शिकारी की दिशा में ले जाता हो। ३. शिकार किये जाने के उद्देश्य से जंगली जानवरों को डरा तथा घेर कर मचान की ओर भागने में प्रवृत्त करने की क्रिया। हाँका।

हँकवाना—स० [हिं० हाँकना का प्रे०] हाँकने का काम किसी दूसरे से कराना

संयो० क्रि० देना।

स० [हिं० हाँक] हाँक लगाने, अर्थात् पुकारने का काम किसी से कराना। हाँक दिलवाना।

हँकवैया†—वि० [हिं० हाँकना+वैया (प्रत्य०)] हाँकनेवाला।

वि० [हिं० हँकवाना] हँकवानेवाला।

हँका—पुं० [हिं० हाँक] १. हाँक। पुकार। २. ललकार।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

हँकाई—स्त्री० [हिं० हाँकना] हाँकने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

हँकाना†—स० १.=हँकवाना। २.=हाँकना।

हँकार—स्त्री० [हिं० हँकारना] १. जोर से पुकारने या बुलाने की क्रिया या भाव। पुकार। हाँक। २. उक्त प्रकार से पुकारने पर होनेवाला शब्द।

मुहा०—हाँक पड़ना=बुलाहट होना।

३. वीरों की ललकार।

हंकार†—पुं०=अहंकार।

पुं०=हुंकार।

हँकारना†—अ० [सं० हुंकार या हिं० हाँक] १. जोर से आवाज देकर किसी दूर के मनुष्य को पुकारना या बुलाना। हाँक देना या लगाना।

†स०=हँकराना।

† अ०=हुंकार करना।

हँकारा—पुं० [हिं० हँकारना] १. पुकार। हाँक। २. निमंत्रण। बुलाहट।

क्रि० प्र०—आना।—जाना।—भेजना।

हँकारी—पुं० [हिं० हँकार+ई (प्रत्य०)] १. वह व्यक्ति जो किसी को बुलाने के लिए उसके यहाँ भेजा जाता हो। २. दूत।

†पुं० हुँकार।

हंकालना†—स०=हाँकना। (मध्य प्रदेश)

हँकुआ†—पुं० १.=हँकवा। २.=हाँका।

हँगल—पुं० [?] कश्मीर के जंगलों में रहनेवाला एक प्रकार का बारहसिंघा।

हंगाम—पुं० [फा०] १. समय। काल। २. इरादा। विचार। ३. ताकत। बल। शक्ति। ४. बुद्धिमत्ता। समझदारी। ५. सेना।

हंगामा—पुं० [फा० हंगामः] १. सभा-समिति में या मेला-तमाशा देखने के लिए एकत्र होनेवाले लोगों में उत्तेजना फैलने पर होनेवाली अव्यवस्था तथा शोरगुल। २. उक्त के फलस्वरूप होनेवाला उपद्रव या उत्पात। ३. आज-कल राजनीतिक क्षेत्र में अचानक उत्पन्न होनेवाली कोई ऐसी विकट स्थिति, जिससे देश की शांति, सुरक्षा आदि में बाधा पड़ने की संभावना हो। (एमर्जेंसी)

हंगामी—वि० [फा०] हंगामा संबंधी। (एमर्जेंट)

हंगोरी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का बहुत बड़ा पेड़, जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है।

हंझ*—पुं०=हंस।

हंटर—पुं० [अं०] लंबा चाबुक। कोड़ा।

क्रि० प्र०—जमाना।—मारना। लगाना।

हँडकुलिया—स्त्री० [हिं० हँडिया+कुलिया] १. लकड़ी, धातु आदि के बने हुए तवा, परात, चकला, बेलन आदि वे छोटे-छोटे बरतन, जिनसे बच्चे खेलते हैं। २. लाक्षणिक अर्थ में, चूल्हे-चौके का सामान।

हँडना—अ० [सं० हिंडन] १. पैदल चलते हुए चारों तरफ घूमना-फिरना। २. व्यर्थ इधर-उधर घूमना या मारे-मारे फिरना। ३. वस्त्रों आदि का अच्छी तरह से अधिक समय तक उपयोग में आते रहना।

हंडर—पुं०=हंडरवेट।

हंडरवेट—पुं० [अं० हंड्रेडवेट] एक अँगरेजी तौल, जो ११२ पौंड या प्रायः १ मन १४॥ सेर की होती है।

हँडवना—अ० [सं० रंभण ?] १. गौओं आदि का रँभाना। २. जोर का शब्द या घोष करना। उदा०—हरि का संतु मुरै हाँड दैत सगली सैन तराई।—कबीर।

हंडा—पुं० [सं० भांडक] [स्त्री० अल्पा० हंडी, हँडिया, हाँड़ी] १. पानी रखने या भरने का पीतल या ताँबे का एक प्रकार का बड़ा बरतन। २. एक विशिष्ट प्रकार की वह बड़ी रोशनी, जिसके ऊपर हंडे के आकार की शीशे की बहुत बड़ी चिमनी लगी रहती है। (गैस)

हँडाना—स० [सं० अभ्यटन] १. घुमाना। फिराना। २. कपड़े आदि पहनकर उनका उपयोग या व्यवहार करना।

हँडिक—पुं० [देश०] तौलने का बाट। (सुनार)

हँडिका—स्त्री० [सं०] हँडिया। हाँडी।

हँडिया—स्त्री० [सं० भांडिका] १. बड़े लोटे के आकार का तथा चौड़े मुँहवाला मिट्टी का बरतन; जिसमें चावल, दाल आदि पकाते या कोई चीज रखते हैं। हंडी। हाँडी।

मुहा०—हँडिया चढ़ाना=कोई चीज पकाने के लिए हाँडी में डालकर आँच पर रखना।

२. उक्त प्रकार का शीशे का एक पात्र, जिसे शोभा के लिए छत में लटकाते और उसके अन्दर मोमबत्ती जलाते हैं। ३. जौ, चावल आदि अनाज सड़ाकर बनाई हुई शराब।

हंडी†—स्त्री०=हँडिया।

हंत—अव्य० [सं०] खेद या शोक-सूचक शब्द। जैसे—हा हंत!

हंतकार—पुं० [सं० हंत√कृ (करना)+अण्] अतिथि, संन्यासी आदि के लिए निकाला हुआ भोजन। हंदा।

हंतव्य—वि० [सं०√हन् (हिंसा करना)+तव्य] १. जिसका हनन किया जा सकता हो या किया जाने को हो। २. (आज्ञा या आदेश) जिसका उल्लंघन हो सकता हो।

हंता(तृ)—वि० [सं०√हन् (हिंसा करना)+तृच्] [स्त्री० हंत्री] हनन अर्थात् हत्या करने या मार डालनेवाला। जैसे—पितृ-हंता।

हंतोक्ति—स्त्री० [सं० ष० त०] १. हंत शब्द का प्रयोग। हंतकार। २. सहानुभूति। ३. करुणा।

हंत्री—वि० स्त्री० [सं० हंतृ+ङीप्] हनन या वध करनेवाली।

हँथोरी*—स्त्री०=हथेली।

हँथौड़ा†—पुं० १.=हथौड़ा। २. हथ-कंडा।

हंदा—पुं० [सं० हंतकार] १. पुरोहित या ब्राह्मण द्वारा अपने यजमान के यहाँ से नियमित रूप से (प्रायः प्रतिदिन) लाया जानेवाला भोजन। २. पुरोहित या ब्राह्मण के लिए अलग निकाला हुआ भोजन।

हँफनि—स्त्री० [हिं० हाँफना] हाँफने की क्रिया या भाव। हाँफ।
क्रि० प्र०—चढ़ना।—मिटना।—मिटाना।

हंबा—स्त्री० [सं०] गाय, बैल आदि का रँभना।
†अव्य० सहमति या स्वीकृति का सूचक शब्द। हाँ। (राज०)

हंभा—स्त्री० [सं०] गाय या बैल आदि के बोलने का शब्द। रँभाने का शब्द।

हंस—पुं० [सं०√हस्+अच् पृषो० सिद्ध] [स्त्री० हंसिनी, हंसी] १. बत्तख की तरह का एक प्रसिद्ध जलपक्षी, जो नीर-क्षीर का बिलगाव करनेवाला और सरस्वती का वाहन माना गया है। २. सूर्य। ३. ब्रह्मा। ४. माया से निर्लिप्त, मुक्त और शुद्ध आत्मा, जो चैतन्य-रूप होती है। जीवात्मा। ५. जीवनी-शक्ति। प्राण।

मुहा—हंस उड़ जाना=शरीर से प्राण निकल जाना। उदा०—काँचे बासन टिकै न पानी। उड़ि गौ हंस काया कुम्हिलानी।—कबीर।

६. ज्ञानी और भक्त पुरुष। ७. दशनामी संन्यासियों का एक भेद। ८. प्राण वायु (आत्मा, विशुद्ध रूप में)। ९. पैर में पहनने का नूपुर नामक गहना। १० ईश्वर। नारायण। ११. विष्णु का एक अवतार। १२. लोक-रंजक और श्रेष्ठ राजा। १३. आचार्य। विद्वान्। १४. गुरु-मंत्र या दीक्षा देनेवाला गुरु। १५. कामदेव। १६. एक प्रकार का नृत्य। १७. प्राचीन भारत में एक प्रकार का प्रासाद, जो प्रायः हंस के आकार का होता था; और जिसके ऊपर ऊँचा शृंग बना होता था। १८. घोड़ा। १९. भैंसा। २०. ईर्ष्या या द्वेष की मनोवृत्ति। २१. पर्वत। पहाड़। २२. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक भगण और दो गुरु होते हैं। इसे 'पंक्ति' भी कहते हैं। यथा—राम खरारी। २३. दोहे के नवें भेद का नाम जिसमें १४ गुरु और २० लघु वर्ण होते हैं। (पिंगल)

हंसक—पुं० [सं० हंस√कै+क] १. हंस पक्षी। २. पैर की उँगलियों में पहना जानेवाला बिछुआ नाम का गहना।

हंस-कूट—पुं० [सं० ब० रा०] बैल का डिल्ला।

हंस-गंधर्व—पुं० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

हंस-गति—स्त्री० [सं० ष० त०] १. हंस के समान सुन्दर तथा धीमी चाल। २. ब्रह्मत्व या सायुज्य की प्राप्ति। ३. एक प्रकार का मात्रिक छन्द, जिसके प्रत्येक चरण में २० मात्राएँ होती हैं। मंजुतिलका।

हंसगदा—स्त्री० [सं० ब० स०] प्रिय भाषिणी स्त्री।

हंस-गमनी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

हंस-गर्भ—पुं० [सं०] एक प्रकार का रत्न।

हंस-गामिनी—वि० स्त्री० [सं० हंस्√गम् (जाना)+णिनि-ङीप्] जिसकी चाल हंस की चाल के समान मंद तथा सुन्दर हो।
स्त्री० संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

हंस-गिरि—पुं० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

हंसचौपड़—पुं० [सं० हंस+हिं० चौपड़] चौपड़ का एक प्रकार का पुराना खेल।

हंसजा—स्त्री० [सं० हंस√जन् (पैदा होना)+टाप्] (सूर्य की कन्या) यमुना।

हँसता-मुखी†—वि०=हँस-मुख।

हंस-दीपक—पुं० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

हंस-देह—स्त्री० [सं० उपमि० स०] पाँचों तत्त्वों से रहित व्यक्ति का वह रूप, जिसमें वह परम प्रकाश तथा चैतन्य-स्वरूप ब्रह्म का अंश रहता है।

हंस-ध्वनि—स्त्री० [सं०] संगीत में बिलावल ठाठ की एक रागिनी।

हंस-नादिनी†—वि० स्त्री० [सं० हंस√नद् (बोलना)+णिनि–ङीप्] मधुर भाषिणी।

हंसन—स्त्री०=हँसनि (हँसी)।

हंस-नटनी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

हँसना—अ० [सं० हसन] १. आनंद, तृप्ति आदि प्रकट करने की एक क्रिया, जिसमें चेहरा खिल उठता है, आँखें कुछ फैल जाती हैं, मुँह खुल जाता है और गले में से ध्वनियाँ निकलने लगती हैं।

मुहा०—**हँसते-हँसते**=(क) प्रसन्नता से। (ख) सहज में। **हँसना-खेलना या हँसना बोलना**=प्रसन्नता और आमोद-प्रमोद की बातचीत करना। **हँस कर बात उड़ाना**=तुच्छ या साधारण समझकर हँसते हुए कोई बात टाल देना।

२. दिल्लगी या परिहास करना। ३. घर, स्थान आदि का इतना सुन्दर लगना कि हँसता हुआ-सा जान पड़े।

स० किसी की हँसी या उपहास करना। हँसी उड़ाना। उदा०—हँसा गया मैं, हँसने गया था।—मैथिलीशरण।

मुहा०—**(किसी पर) हँसना**=किसी की हँसी उड़ाना। उपहास करना। **हँसा जाना**=उपहासास्पद बनना। ऐसा मूर्ख बनना कि सब लोग हँसी उड़ावें।

हंस-नाद—पुं० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

हंस-नारायणी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

हंसनि†—स्त्री०=हँसी।

हंस-नीलांबरी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

हंस-पंचम—पुं० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

हंस-पदी—स्त्री० [सं० ब० स० ङीप्] एक प्रकार की लता।

हंस-पादी—स्त्री० [सं०]=हंसपदी।

हंस-भूषणी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

हंसभ्रमरी—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

हंस-मंगला—स्त्री० [सं०] एक संकर रागिनी।

हंस-मंजरी—स्त्री० [सं०] संगीत में, काफी ठाठ की एक प्रकार की रागिनी।

हंसमाला—स्त्री० [सं० ष० त०] १. हंसों की पंक्ति। २. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त।

हँस-मुख—वि० [हिं० हँसना+सं० मुख] १. जिसका मुख सदा हँसता हुआ-सा रहता हो। २. जो खूब हँसी-मजाक की बातें किया करता हो; हँसी-मजाक की बातें सुनकर प्रसन्न होता हो।

हंस-रथ—पुं० [सं० ब० स०] ब्रह्मा (जिनका वाहन हंस है)।

हंसराज—पुं० [सं०] १. एक प्रकार की जड़ी या बूटी जो पहाड़ों में चट्टानों से लगी हुई मिलती है। समलपत्ती। २. एक प्रकार का अगहनी धान।

हँसली—स्त्री० [सं० अंसली] १. गरदन के नीचे और छाती के ऊपर की धन्वाकार हड्डी। २. गले में पहनने का एक गहना, जो प्रायः उक्त हड्डी के समानान्तर रहता है।

हंसवती—स्त्री० [सं० हंस+मतुप् ङीप् म=व] १. एक प्रकार की लता। २. एक प्रकार की रागिनी।

हँस-वाहन—पुं० [सं० ब० स०] ब्रह्मा (जिनकी सवारी हंस है)।

हंस-वाहिनी—स्त्री० [सं० हंस√वह् (ढोना)+णिनि-ङीप्] सरस्वती जिनकी सवारी हंस है।

हंस-श्री—स्त्री० [सं०] संगीत में खम्माच ठाठ की एक प्रकार की रागिनी।

हंस-सुता—स्त्री० [सं० ष० त०] यमुना नदी। उदा०—हंससुता की सुन्दर कगरी।—सूर।

हँसाई—स्त्री० [हिं० हँसना] १. हँसने की क्रिया या भाव। २ उपहास-पूर्ण निन्दा। जैसे—यह तो जगत् में हँसाई का काम है।

हंसाधिरूढा—स्त्री० [सं० हंस-अधि√रुह् (चढ़ना)+क्त–टाप्] सरस्वती का एक नाम।

हंसानदी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

हँसाना—स० [हिं० हँसना] किसी को हँसने में प्रवृत्त करना। ऐसी बात कहना जिससे दूसरा हँसे।

संयो० क्रि०—देना।

हँसाय†—स्त्री०=हँसाई।

हंसारूढ़—पुं० [सं० हंस+आ√रुह् (चढ़ना)+क्त] ब्रह्मा (जो हंस पर सवार होते हैं)।

हंसारूढ़ा—स्त्री० [सं०] सरस्वती।

हँसाल—पुं० [सं०] झूलना नामक मात्रिक रामदंडक छंद का एक भेद।

हंसालि—स्त्री० [सं०]=हंसाल (छन्द)

हंसावधूत—पुं० [सं० हंस+अवधूत] तंत्र के अनुसार चार प्रकार के अवधूतों में से एक, जो पूर्ण होने पर 'परमहंस' तथा अपूर्ण रहने पर 'परिव्राजक' कहलाते हैं।

हंसावर—पुं० [सं० हंस] बत्तख, हंस आदि की जाति का एक सुन्दर पक्षी, जिसकी गरदन और टाँगे लंबी होती हैं।

हंसावली—स्त्री० [सं० ष० त०] हंसों की पंक्ति।

हंसिका—स्त्री० [सं० हंस+कन्-टाप्] हंस की मादा। हंसी।

हंसिनी—स्त्री०=हंसी (मादा हंस)।

हँसिया—स्त्री० [सं० हंस] १. लोहे का एक धारदार औजार जो अर्द्ध-चन्द्राकार होता है और जिससे खेत की फसल, तरकारी आदि काटी जाती है।

विशेष—इस आकार-प्रकार के कुछ औजार जो चमड़ा छीलने आदि के तथा कुछ और कामों में भी आते हैं।

२. हाथी के अंकुश के आगे का उक्त आकार का अंश।

हँसी—स्त्री० [हिं० हँसना] १. हँसने की क्रिया, ध्वनि या भाव।

पद—**हँसी-खुशी**=प्रसन्नता। **हँसी ठट्ठा**=विनोद। मजाक।

क्रि० प्र०—आना।—निकलना।

मुहा०—**हँसी छूटना**=हँसी आना।

२. परिहास। दिल्लगी। मजाक। ठट्ठा।

मुहा०—**(किसी की) हँसी उड़ाना**=व्यंग्यपूर्ण निन्दा या उपहास करना। **हँसी या हँसी-खेल समझना**=किसी काम या बात को साधारण या तुच्छ समझना। **हँसी में उड़ाना**=साधारण समझकर हँसते हुए टाल देना। **हँसी में ले जाना**=गंभीर बात को हँसी की बात समझना।

३. हँसने-हँसाने के लिए होनेवाली बातें। मजाक। दिल्लगी। ४. किसी को तुच्छ या हेय समझकर उसके संबंध में कही जानेवाली विनोदपूर्ण बात। उपेक्षापूर्ण हास्य की बातें। ५. लोक में होनेवाली उपहासपूर्ण निंदा या बदनामी। जैसे—ऐसा काम मत करो, जिससे चार आदमियों में हँसी हो।

हंसी—स्त्री० [सं० हंस+ङीप्] १. हंस की मादा। स्त्री-हँस । २. पंजाब में अच्छी गायों की एक नसल या जाति। ३. २२ अक्षरों की एक वर्ण-वृत्ति, जिसके प्रत्येक चरण में दो मगण, एक तगण, तीन नगण, एक सगण और एक गुरु होता है ।

हँसीला†—वि०[हिं० हँसना+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० हँसीली] १. हँसता हुआ या हँसता रहनेवाला। हास्य-प्रिय । २. हँसी-मजाक करनेवाला । हँसोड़ा।

हँसुआ†—वि० [हिं० हँसना] हँसनेवाला । हँसोड़। उदा०—हँसुआ ठाकुर खँसुआ चोर।—घाघ।†

†पुं०=हँसिया ।

हँसुली—स्त्री०=हँसली ।

हँसेल†—स्त्री० [देश०] नाव खींचने की रस्सी। गून।

हँसोड़—वि० [हिं० हँसना+ओड़ (प्रत्य०)] १. जो खूब तथा ठहाका लगाकर हँसता हो । २. जो दूसरों को खूब हँसाता हो।

हँसोर†—वि०=हँसोड़।

हँसौंहाँ—वि० [हिं० हँसना+औंहाँ (प्रत्य०)] १. हँसी से भरा हुआ। हँसता हुआ। जैसे—हँसौंहीं सूरत। २. हँसने वाला।

ह—पुं० [सं०] १. शून्य। २. आकाश । ३. स्वर्ग। ४. ज्ञान। ५. ध्यान। ६. चन्द्रमा। ७. शिव। ८. जल। पानी। ९. कल्याण। मंगल। १०. विष्णु। ११. चिकित्सक। वैद्य। १२. कारण। सबब। १३. कल्याण। मंगल। १४. रक्त। खून। १५. डर। भय। १६. घोड़ा। १७. युद्ध। लड़ाई १८. अभिमान। घमंड। १९. योग में एक प्रकार का आसन। २०. हास। हँसी।

हअना†—स० [सं० हनन] १. हनन करना। मार डालना। २. नष्ट करना। उदा०—लोभ छोभ मोह गर्व शम शम ना हई।—केशव

†अ०[अनु० हाहा से] आश्चर्य करना। चकित होना। उदा०—हौं हिय रहति हई छई-नई जुगुति जग जोय।—बिहारी।

हई—पुं० [सं० हयिन्, हयी] घुड़सवार।

हउँ*—सर्व०=हौं (मैं)।

अ०=हौं (हूँ)।

हउम*—पुं० [सं० अहं] १. अहं का भाव या विचार। उदा०—तउ मनु मानै जाते हउमै जइहै।—कबीर। २: अहंकार। घमंड।

हक—वि० [अ० हक़] १. जो झूठ न हो। सच। सत्य। २. जो धर्म, न्याय आदि की दृष्टि से उचित या ठीक हो। जैसे—हक तौ यह है कि उसकी चीज उसे मिल जानी चाहिए।

पद—**हक-नाहक**। (देखें)

पुं०. ३. ईश्वर। परमात्मा। उदा०—कहे एक इन्साँ सुने जबकि दो। कि हक ने जबाँ एक दी कान दो।—कोई शायर। ४. उचित, न्यायसंगत पक्ष या बात। ५. लेने या अपने पास रखने, काम में लाने आदि का अधिकार। इख्तियार। जैसे—इस मकान पर हमारा भी हक है।

क्रि० प्र०—दबाना।—दिखाना।—माँगना।—मारना।

६. कोई काम करने-कराने का अधिकार। जैसे—इस बीच में तुम्हें बोलने का हक नहीं है। ७. न्याय, प्रथा आदि के अनुसार प्राप्त अधिकार। जैसे—ब्याह-शादी के समय नौकर-चाकरों का भी कुछ हक होता है। ८. किसी का कोई ऐसा अंग या पक्ष, जिसके साथ लाभ और हानि भी संबद्ध हो।

पद—**हक में**=(लाभ या हित के विचार से) पक्ष में। जैसे—उनकी मदद करना तुम्हारे हक में अच्छा नहीं होगा।

मुहा०—**हक अदा करना**=कर्तव्य का पालन करना। फर्ज पूरा करना।

पुं० [अनु०] १. वह धक्का जो सहसा चकपका उठने या घबरा उठने से हृदय में लगता है। धक। २. शोर-गुल। हो-हल्ला। (राज०) उदा०—होइ पीरिहक गँगहण।—प्रिथीराज।

हकतलफी—स्त्री० [अ० हक़+फा० तलफ़ी] किसी के हक या अधिकार पर होनेवाला आघात।

हकदक—वि० [अनु०] हक्का-बक्का। चकित।

हकदार—पुं० [अ० हक़+फा० दार] [भाव० हकदारी] वह जिसे किसी कार्य या चीज का कोई हक हासिल हो। स्वत्व या अधिकार रखनेवाला। जैसे—इस जायदाद के कई हकदार हैं।

हक-नाहक—अव्य० [अ० हक़+फा० नाहक] १. बिना उचित-अनुचित का विचार किये। जबरदस्ती। धींगा-धींगी से। २. बिना किसी कारण के। व्यर्थ।

हक़परस्त—वि० [अ०+फा०] [भाव० हक-परस्ती] १. ईश्वर को माननेवाला। आस्तिक। २. न्याय और सत्य के पक्ष में रहनेवाला।

हक-बक†—वि०=हक्का-बक्का।

हक-बकाना—अ० [अनु० हक्का-बक्का] अचानक घटित होनेवाली विलक्षण बात पर स्तंभित होना। भौचक्का होना।

हक-मालिकाना—पुं० [अ०+फा०] वह हक या अधिकार, जो किसी चीज के मालिक होने के कारण प्राप्त होता है।

हक-मौरूसी—पुं० [अ०] वह अधिकार, जो पैतृक परम्परा से प्राप्त हो।

हकला—वि० [हिं० हकलाना] रुक-रुक कर बोलनेवाला। हकलानेवाला।

हकलाना—अ० [अनु०] [भाव० हकलाहट] स्वरनाली के ठीक काम न करने या जीभ के तेजी से न चलने के कारण बोलने के समय बीच-बीच में अटकना। रुक-रुककर बोलना।

हकलापन—पुं० [हिं०] हकला होने की अवस्था, धर्म या भाव।

हकलाहट—स्त्री०=हकलापन।

हकलाहा†—वि०=हकला।

हक-शफा—पुं० [अ० हक्के-शुफ़: =पड़ोसी का अधिकार] जमीन, मकान आदि खरीदने का वह हक, जो गाँव के हिस्सेदारों अथवा पड़ोसियों को औरों से पहले प्राप्त होता है। पूर्व-क्रय। (प्रिएम्पशन)

हक-शिनास—वि० [अ०+फा०] [भाव० हक-शिनासी] जो न्याय, सत्य आदि का पालक और समर्थक हो।

हक-शुफा—पुं० [अ०+फा०]=हक-शफा।

हकार—पुं० [सं० ह+कार] 'ह' अक्षर या वर्ण।

हक़ारत—स्त्री० [अ०] १. 'हकीर' अर्थात् तुच्छ होने की अवस्था या भाव। तुच्छता। २. किसी तुच्छ वस्तु के प्रति होनेवाला घृणायुक्त भाव। जैसे—वह सब को हकारत की नजर से देखता अर्थात् तुच्छ समझता है।

हकारना—स० [देश०] १. पाल तानना या खड़ा करना। २. झंडा या निशान उठाना। (लश०)
†स०=हँकारना।

हक़ीक़त—स्त्री० [अ० हक़ीक़त] १. वास्तविक स्थिति। असल और सच्ची बात। तथ्य। वास्तविकता। २. वास्तविक विवरण या वृत्तांत।
पद—**हकीकत में**=वास्तव में। वस्तुतः।
मुहा०—**हकीकत खुलना**=वास्तविक रूप सामने आना।
३. इस्लाम, विशेषतः सूफी संप्रदाय में साधना की वह चौथी और अंतिम स्थिति, जिसमें साधक सत्य का ज्ञान प्राप्त करके द्वैत भाव से रहित हो जाता और परमात्मा में लीन होकर परम पद प्राप्त कर लेता है। **विशेष**—इससे पहले की तीन स्थितियाँ शरीअत, तरीकत और मारफत कहलाती हैं।

हकीकी—वि० [अ० हक़ीक़ी] १. सच्चा। ठीक। २. रिश्ते या सम्बन्ध के विचार से, सगा। जैसे—हकीकी भाई=सगा भाई। ३. जो हकीकत अर्थात् ईश्वर से सम्बन्ध रखता हो अथवा उसकी ओर उन्मुख हो। जैसे—इश्क हकीकी=ईश्वर के प्रति होनेवाला प्रेम।

हकीम—पुं० [अ०] १. अनेक विषयों, विशेषतः तत्त्वज्ञान या दर्शन-शास्त्र का अच्छा ज्ञाता और पंडित। जैसे—हकीम लुकमान। २. यूनानी चिकित्सा-पद्धति से चिकित्सा करनेवाला वैद्य। जैसे—हकीम अजमल खाँ।

हक़ीमी—स्त्री० [अ० हकीम+ई (प्रत्य०)] १. यूनानी आयुर्वेद। यूनानी चिकित्सा-शास्त्र। २. हकीम का पद या व्यवसाय।
वि० हकीम सम्बन्धी। हकीम का। जैसे—हकीमी इलाज, हकीमी नुसखा।

हकीयत—स्त्री० [अ० हक़ीयत] १. 'हक' का गुण, धर्म या भाव। २. अधिकार। स्वत्व। ३. ऐसी सम्पत्ति, जिस पर न्यायतः किसी का अधिकार होना उचित हो। ४. संपत्ति आदि के अधिकारी होने की अवस्था या भाव।

हक़ीर—वि० [अ० हक़ीर] तुच्छ। हेय।

हकूक—पुं० [अ० हक़ूक़] 'हक' का बहुवचन। अनेक और कई प्रकार के स्वत्व या अधिकार।

हकूमत†—स्त्री०=हुकूमत।

हक्क—पुं० [अनु०] हाथी को बुलाने का शब्द।
†पुं०=हक।

हक्का—पुं० [देश०] लाठी द्वारा आघात करने का एक प्रकार। (लखनऊ)

हक्काक—पुं० [?] वह कारीगर, जो नगीने तराशता तथा जड़ता हो।

हक्का-बक्का—वि० [अनु०] १. अप्रत्याशित घटना देख या बात सुनकर जो घबरा तथा शिथिल हो गया हो। २. आश्चर्यचकित।

हक्कार—पुं० [सं०] चिल्ला कर बुलाने का शब्द। पुकार।

हगनहटी†—स्त्री० [हिं० हगना] १. मल त्याग करने की इन्द्रिय। गुदा। २. पाखाना फिरने की जगह।

हगना—अ० [देश०] १. गुदा के मार्ग से मल त्याग करना।
मुहा०—**हग मारना**=भयभीत होकर पीछे हटना।
स० १. गुदा मार्ग से कोई चीज प्रसव करना। जैसे—मुरगी सोने के अंडे हगती है। २. दबाव आदि के फलस्वरूप दे देना।

हगनेटी†—स्त्री०=हगनहटी (गुदा)।

हगाना—स० [हिं० हगना का स०] १. किसी से हगने की क्रिया कराना। पाखाना फिरने के लिए प्रवृत्त करना। जैसे—बच्चे को हगाना।
संयो० क्रि०—देना।

हगास—स्त्री० [हिं० हगना+आस (प्रत्य०)] हगने की आवश्यकता या प्रवृत्ति।
संयो० क्रि०—लगना।

हगोड़ा—वि० [हिं० हगना+ओड़ा (प्रत्य०)] [स्त्री० हगोड़ी] १. बहुत हगनेवाला। बहुत झाड़ा फिरनेवाला। २. भय के कारण जिसका पाखाना निकल जाता हो। बहुत बड़ा डरपोक।

हगू—वि० [हिं० हगना+ऊ (प्रत्य०)] हगोड़ा।

हचक—स्त्री० [हिं० हचकना] हचकने की क्रिया, भाव या आघात।

हचकना†—अ० [अनु० हच हच] भार पड़ने पर चारपाई, गाड़ी आदि का झोंका खाना या बार-बार हिलना। धचकना।

हचका†—पुं० [हिं० हचकना] धीरे से लगनेवाला धक्का। धचका।
संयो० क्रि०—देना।—मारना।—लगाना।

हचकाना—स० [हिं० हचकना का स०] झोंका देकर हिलाना।

हचकोला—पुं० [हिं० हचकना] १. वह धक्का जो गाड़ी, चारपाई आदि के हिलाये-डुलाये जाने पर लगे। धक्का। २. किसी चलती या हिलती हुई चीज के कारण रह-रहकर लगनेवाला हलका झटका या धक्का। जैसे—रेलगाड़ी या पालकी पर बैठने से हचकोले उठते हैं।
क्रि० प्र०—आना।—लगना।

हचना†—अ०=हिचकना।

हज—पुं० दे० 'हज्ज'।

हजम—वि० [अ० हज़्म] १. (खाद्य-पदार्थ) जो खा लिये जाने पर आमाशय में पच गया हो। २. लाक्षणिक रूप में, जो अनुचित रूप से ले या दबाकर रख लिया गया हो।

हजर—पुं० [अ०] पत्थर।

हजरत—पुं० [अ० हज़रत] १. महात्मा। महापुरुष। जैसे—हजरत मुहम्मद साहब। २. आदर-सूचक सम्बोधन। जैसे—हजरत, कहाँ चले? ३. बहुत बड़ा दुष्ट, धूर्त या लुच्चा व्यक्ति। (उपहास और व्यंग्य) जैसे—वे भी बड़े हजरत हैं।

हजरत सलामत—पुं० [अ०] १. बदशाहों या नवाबों के लिए परम आदर-सूचक संबोधन का पद। २. बादशाहों का वाचक पद।

हजल—पुं० [अ० हज्ल] फूहड़ या भद्दा परिहास।

हजाज—पुं० दे० 'हिजाज'।

हजाम—पुं०=हज्जाम।

हजामत—स्त्री० [अ०] १. सिर के बाल काटने और दाढ़ी के बाल मूँड़ने का काम। क्षौर।
क्रि० प्र०—बनाना।

२. सिर या दाढ़ी के बढ़े हुए वाल, जिन्हें कटाना या मुड़ाना हो। जैसे—बीमारी के दिनों में महीनों हजामत बढ़ती रही।

क्रि० प्र०—बढ़ाना।—बनवाना।

३. कोई ऐसी क्रिया, जिसमें जबरदस्ती किसी से कुछ ले लिया जाय, अथवा और किसी प्रकार उसकी दुर्दशा की जाय। उदा०—कल मियाँ हज्जाम थे फिरते सबों को मूँड़ते। शेख के कूचे में आज उनकी हजामत बन गई।—कोई शायर।

क्रि० प्र०—बनना। —बनाना।

हजार—वि० [फा० हज़ार] १. जो गिनती में दस सौ हो। २. बहुत अधिक।

मुहा०—हजार हो=सब कुछ होने पर भी। जैसे—हजार हो, तो भी वह अपने ही आदमी हैं।

क्रि० वि० कितना ही। चाहे जितना अधिक हो। जैसे—तुम हजार कहो, तुम्हारी बात मानता कौन है?

पुं० दस सौ की सूचक संख्या, जो इस प्रकार लिखी जाती है—१०००।

हजार-दास्ताँ—स्त्री० [फा०] एक प्रकार की बढ़िया बुलबुल।

वि० बहुत-सी अच्छी-अच्छी और बढ़िया बातें कहनेवाला।

हजारहा—वि० [फा० हज़ारहा] १. हजारों। सहस्रों। २. बहुत अधिक।

हजारा—वि० [फा० हज़ारा] (फूल) जिसमें हजार या बहुत अधिक पँखड़ियां हों। सहस्रदल। जैसे—हजारा गेंदा।

पुं० १. एक प्रकार का बड़ा बरतन, जिसके मुँह पर बहुत से छेदोंवाला ढक्कन होता है, और जिससे गमलों आदि में पानी डाला जाता है। २. फुहारा। ३. एक प्रकार की आतिशबाजी।

हजारी—पुं० [फा० हज़ारी] १. एक हजार सिपाहियों का सरदार। वह सरदार या नायक, जिसके अधीन एक हजार फौज हो। मुगल-शासन में सरदारों को दिया जानेवाला एक ओहदा या पद।

पद—हजारी बाजारी=बड़े सरदारों से लेकर साधारण नागरिकों तक सब। सर्वसाधारण।

वि० १. हजार संबंधी। जैसे—चार हजारी, तीस हजारी। २. बहुत से पुरुषों से संबंध रखनेवाली स्त्री से उत्पन्न वर्ण-संकर। दोगला।

हजारों—वि० [फा० हजार+हिं० ओं (प्रत्य०)] १. कई हजार। सहस्रों। २. बहुत अधिक।

हजूम—पुं० [अ०] किसी स्थान पर इकट्ठे हुए बहुत-से लोग। भीड़।

हजूर†—पुं०=हुजूर।

हजूरी—स्त्री० दे० 'हुजूरी'।

हजो—स्त्री० [अ० हज्व] अपकीर्ति। निन्दा। बुराई।

हज्ज—पुं० [अ०] १. मन में किसी बात का किया जानेवाला दृढ़ संकल्प। २. किसी पवित्र स्थान की की जानेवाली परिक्रमा। ३. मुसलमानों में, मक्के और मदीने की तीर्थ-यात्रा। जैसे—मौलाना साहब दो बार हज्ज कर आये हैं।

हज्जाम—पुं० [अ०] हजामत बनानेवाला। नाई। नापित।

हज्जामी—स्त्री० [हिं० हज्जाम] हज्जाम या नाई का धंधा या पेशा।

हज्म—वि० दे० 'हजम'।

हट†—पुं०=हठ।

हटक†—स्त्री० [हिं० हटकना] हटकने अर्थात् मना करने या रोकने की क्रिया या भाव। मनाही। वर्जन।

मुहा०—**हटक मानना**=मना करने पर किसी काम से बाज आना। निषेध का पालन करना।

हटकन—स्त्री०=हटक।

हटकना—स०[हिं० हट=दूर होना+करना] १. निषेध या वारण करना। मना करना। २. किसी दिशा में बढ़ते हुए चौपायों को उस दिशा में बढ़ने से रोकना तथा दूसरी ओर मोड़ना।

हटका†—पुं० [हिं० हटकना=रोकना] वह अर्गल या डंडा, जो दरवाजे को खुलने से रोकने के लिए लगाया जाता है।

हटकि*—स्त्री० [हिं० हटकना] १. हठात्; जबरदस्ती। २. बिना कारण।

हटतार†—पुं० [?] वह डोरा, जिसमें माला के दाने पिरोये रहते हैं।

हटताल†—स्त्री०=हड़ताल।

हटना—अ०[सं० घट्टन्] १. अपने स्थान से खिसक या चलकर इधर-उधर होना। एक जगह से सरकते हुए दूसरी जगह जाना। जैसे—आग के पास से जरा हटकर बैठो।

पद—हटना-बढ़ना=अपने स्थान से कुछ इधर-उधर होना या सरकना। २. जो काम या बात कोई कर रहा हो या जिसे करने का समय आया हो, उससे दूर होना, बचना या विमुख होना। मुँह मोड़ना। जैसे—वह लड़ने-भिड़ने से नहीं हटता। ३. किसी के मना करने या रोकने पर किसी काम या बात से रुकना या विमुख होना। जैसे—लाख मना करो, यह लड़का खेल-कूद से किसी तरह हटता ही नहीं। ४. अभ्यास, प्रतिज्ञा वचन आदि का पालन करने से रुकना या हिचकना। विचलित होना। जैसे—मैंने जो कह दिया उससे कभी हटूँगा नहीं। ५. किसी काम या बात का समय टलना। स्थगित होना। ६. न रह जाना। दूर होना। मिटना। जैसे—चलो, तुम्हारे सिर से बला हटी।

संयो० क्रि०—जाना।

†स०=**हटकना** (मना करना)। उदा०—देत दुख बार बार कोउ नहिं हटत।—सूर।

हटरीं—स्त्री० [हिं० हटना+उड़ना] मालखंभ की एक कसरत, जिसमें पीठ के बल होकर ऊपर जाते हैं।

हटबया—पुं० [हिं० हाट+बया (तौला)] स्त्री० हटबयी] वह जो हाट में दुकान लगाता हो। हाटवाला।

हटवा—पुं०[हिं० हाट] हाट में दुकान लगानेवाला व्यक्ति।

हटवाई—स्त्री०[हिं० हाट] हाट में जाकर सौदा लेना या बेचना। क्रय-विक्रय।

पुं० हाट में बैठकर सौदा बेचनेवाला।

स्त्री०[हिं० हटवाना] हटवाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

हटवाना—स०[हिं० हटाना का प्रे०] कोई चीज किसी को किसी स्थान से हटाने में प्रवृत्त करना।

हटवार†—पुं०=हटवा।

हटवैया—वि० [हिं० हटवाना+वैया (प्रत्य०)] हटवानेवाला।

हटाना—स०[हिं० हटना का स०] १. किसी को उसके स्थान से हटने में प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना, जिससे कुछ या कोई अपनी जगह

से हटे। जैसे—(क) भीड़ हटाना। (ख) कुरसी या चौकी हटाना।

संयो॰ क्रि॰—देना।—लेना।

२. आक्रमण या बल-प्रयोग करके अथवा किसी उपाय से दूर करना। जैसे—शत्रु को सीमा पर से हटाना। ३. किसी को उसके काम या पद से अलग करना। जैसे—इस दफ्तर से चार आदमी हटाये गये हैं। ४. ऐसा उपाय करना, जिससे कोई काम या बात दूर हो जाय या प्रस्तुत न रहे। जैसे—यह बखेड़ा अपने सिर से हटाओ।

संयो॰ क्रि॰—देना।

हटिआ—स्त्री॰=हटिया।

हटिया—स्त्री॰[हिं॰ हाट] १. छोटा हाट। छोटा बाजार। जैसे—लोहटिया=लोहे का छोटा बाजार।

हटी†—स्त्री॰=हट्टी (दूकान)। उदा॰—प्रेमहटी का तेल मँगा लें, जग रह्या दिन ते राती।—मीराँ।

हटुआ†—वि॰[हिं॰ हाट] हाट सम्बन्धी। हाट का। जैसे—हटुआ माल।

पुं॰१. हाट में बैठकर सौदा बेचनेवाला व्यक्ति। २. दूकानदार। ३. मंडियों में अनाज तौलनेवाला कर्मचारी। बया।

हटैता—पुं॰[हिं॰ हाट+ऐता (प्रत्य॰)] [स्त्री॰ हटैती] १. हाट में बिकने के लिए आई हुई चीज या जीव। २. वह जिसे हाट में से खरीदा गया हो।

हटौती—स्त्री॰[हिं॰ हाड़+औती (प्रत्य॰)] शरीर की गठन। जैसे—उसकी हटौती बहुत अच्छी है।

हट्ट—पुं॰[सं॰ √हट् (चमकना)+ट नेत्वम्] १. बाजार। २. दूकान।

हट्ट-चौरक—पुं॰[सं॰ हट्टचौर+क] वह उचक्का, जो हाट में से चीजें चुरा ले जाता हो।

हट्टा—पुं॰ [सं॰ हट्ट] १. बाजार। हाट। जैसे—पसर-हटटा। २. मार्ग। रास्ता। जैसे—चौहट्टा।

वि॰=हृष्ट।

पद—हट्टा-कट्टा।

हट्टा-कट्टा—वि॰[सं॰ हृष्ट+काष्ठ] [स्त्री॰ हट्टी-कट्टी] हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा।

हट्टी—स्त्री॰[सं॰ हट्ट] दूकान। (पश्चिम)

हठ—पुं॰[√हठ् (टेक रखना)+अच्] [वि॰ हठी, हठीला] १. बहुत आग्रहपूर्वक और बराबर यही कहते रहना कि अमुक बात ऐसी ही है अथवा ऐसे ही होगी या होनी चाहिए। अड़। जिद। टेक।

मुहा॰—हठ ठानना या पकड़ना=किसी बात के लिए अड़ना। किसी बात के लिए हठ या जिद करना। दुराग्रह करना। **हठ माँडना†**=हठ पकड़ना। **(किसी का) हठ रखना**=किसी की हठपूर्वक कही हुई बात पूरी करना या मान लेना।

२. दृढ़तापूर्वक की हुई प्रतिज्ञा या संकल्प। ३. बल-प्रयोग। ४. शत्रु पर पीछे से किया जानेवाला आक्रमण। ५. किसी काम या बात की अनिवार्यता।

हठ-धर्म—पुं॰[सं॰ मध्य॰ स॰] अपने हठ पर अड़े या जमे रहना।

हठ-धर्मी—स्त्री॰ [सं॰] १. सत्य-असत्य, उचित-अनुचित का विचार छोड़कर अपनी बात पर जमे रहना। दूसरे की बात जरा भी न मानना। दुराग्रह। २. अपने धर्म, मत या संप्रदाय के संबंध में होनेवाला कट्टरपन, जो विचारों की संकीर्णता का सूचक हो।

हठना*—अ॰ [हिं॰ हठ+ना (प्रत्य॰)] १. हठ करना। जिद पकड़ना। दुराग्रह करना। २. दृढ़ प्रतिज्ञा या संकल्प करना।

हठ-योग—पुं॰ [सं॰ मध्य॰ स॰, तृ॰ त॰] योग का वह अंग या प्रकार जिसका प्रचलन नाथ-पंथियों ने अपनी साधना के लिए किया था और जिसमें ईश्वर-प्राप्ति के लिए नेती, धोती आदि क्रियाओं, कठिन मुद्राओं और आसनों का विधान है। इसमें शरीर के अन्दर कुण्डलिनी और अनेक प्रकार के चक्रों का भी अधिष्ठान माना गया है।

विशेष—इसके सबसे बड़े आचार्य योगी मत्स्येन्द्रनाथ (मछंदरनाथ) और उनके शिष्य गोरखनाथ माने जाते हैं।

हठ-विद्या—स्त्री॰ [सं॰] हठयोग।

हठ-शील—वि॰ [सं॰ ब॰ स॰] [भाव॰ हठशीलता] हठ करनेवाला। हठी।

हठात्—अव्य॰[सं॰] १. लोगों के मना करने पर भी, अपना हठ रखते हुए। हठपूर्वक। २. बल प्रयोग करते हुए। जबरदस्ती। बलात्। ३. अचानक। सहसा। ४. निश्चित रूप से। अवश्य। जरूर।

हठात्कार—पुं॰[सं॰] अपने हठ के अनुसार काम करते रहने का भाव।

हठि*—अव्य॰ [हिं॰ हठ] १. हठपूर्वक। २. जबरदस्ती। उदा॰—तौ तुम मोंहि दरसु हठि दीन्हा।—तुलसी।

हठी(ठिन्)—वि॰ [सं॰ हठ+इनि] हठ करनेवाला। जिद्दी। टेकी।

हठीला—वि॰[सं॰ हठ+ईला (प्रत्य॰)] [स्त्री॰ हठीली] १. हठ करनेवाला। हठी। जिद्दी। २. विरोध, विवाद आदि के समय अपनी प्रतिज्ञा या स्थान पर दृढ़तापूर्वक जमा रहनेवाला। उदा॰—ऐसो तोंहि न बूझिए हनुमान हठीले।—तुलसी।

हड़—पुं॰ [हिं॰ हाड़=अस्थि] हिं॰ 'हाड़' (अस्थि) का वह संक्षिप्त रूप, जो उसे यौ॰ पदों के आरम्भ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—हड़-जोड़, हड़-फूटन।

स्त्री॰=हर्रे (देखें)।

हड़-कंप—पुं॰[हिं॰ हाड़+काँपना] भारी हल-चल या उथल-पुथल। तहलका। जैसे—बाजार में आग लगते ही सारे शहर में हड़-कंप मच गया।

क्रि॰ प्र॰—मचना।—मचाना।

हड़क—स्त्री॰[अनु॰] १. पागल कुत्ते के काटने पर पानी के लिए होने वाली गहरी आकुलता।

क्रि॰ प्र॰—उठना।

२. तीव्र आकुलता। उत्कट चाह।

क्रि॰ प्र॰—लगना।

हड़कना—अ॰[हिं॰ हड़क] किसी प्रकार के अभाव से दुःखी होना। तरसना।

हड़का—पुं॰[हिं॰ हड़कना] हड़कने की अवस्था, क्रिया या भाव।

हड़काना—स॰[देश॰] १. किसी को इस प्रकार से प्रेरित तथा उत्तेजित करना कि वह किसी पर आक्रमण करने के लिए उसके पीछे लग जाय। २. तरसाना।

†अ०=हटकना।

हड़काया—वि०[हिं० हड़काना] १. जिसे हड़का कर किसी के पीछे उस पर आक्रमण करने के उद्देश्य से लगाया गया हो। २. बावला। पागल। ३. अत्यन्त विकल।

हड़काव—पुं०[हिं० हड़कना] जल-संत्रास। (दे०)

हड़-गिल्ल†—पुं०=हड़गीला।

हड़-गीला—पुं०[हिं० हाड़+गिलना ?] एक प्रकार की चिड़िया। चनियारी।

हड़-जोड़†—पुं० [हिं० हाड़=हड्डी+जोड़ना] एक प्रकार का पौधा जिसके पत्ते शरीर पर चोट लगने पर बाँधे जाते हैं। कहते हैं कि इससे टूटी हुई हड्डी भी जुड़ जाती है।

हड़ताल—स्त्री०[सं० हट्ट=दूकान+ताला] दुःख, विरोध या असंतोष प्रकट करने के लिए कल-कारखानों, कार्यालयों आदि के कर्मचारियों या जनसाधारण का सब कारबार, दूकानें आदि बंद कर देना। (स्ट्राइक)

स्त्री० दे० 'हरताल'।

हड़ताली—पुं०[हिं० हड़ताल] वह व्यक्ति या वे लोग, जो हड़ताल कर रहे हों।

वि० हड़ताल-सम्बन्धी।

हड़ना†—अ० [हिं० धड़ा] तौल में जाँचा जाना।

हड़प—वि०[अनु०]१. मुँह में डालकर निगला या पेट में उतारा हुआ। २. छिपाकर या बेईमानी से उड़ाया और अपने अधिकार में किया हुआ।

हड़पना—स०[अनु० हड़प]१. मुँह में डालकर निगलना या पेट में उतारना। २. किसी की चीज अनुचित रूप से लेकर दबा बैठना।

संयो० क्रि०—जाना।—लेना।

हड़प्पा—पुं०[हिं० हड़पना] हड़पने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—मारना।

पुं०[?] सिन्धु प्रदेश का एक प्राचीन जनपद, जहाँ एक बहुत प्राचीन संस्कृति के भग्नावशेष मिले हैं।

हड़-फूटन†—स्त्री० [हिं० हाड़+फूटना] शरीर में होनेवाला दर्द, जो हड्डियों के भीतर तक जान पड़े। हड्डियों तक की पीड़ा।

हड़-फूटनी†—स्त्री० [हिं० हड़-फूटन] चमगादड़ (जिसकी हड्डी की गुरिया पैर के दर्द में पहनी जाती है)।

हड़-फोड़—पुं०[हिं० हाड़+फोड़ना] एक प्रकार की चिड़िया।

हड़-बड़†—स्त्री०=हड़बड़ी।

हड़बड़ाना—अ० [अनु०] जल्दी मचाते हुए आतुर होना। जैसे—अभी हड़बड़ाओ मत, गाड़ी आने में देर है।

संयो० क्रि०—जाना।

स० जल्दी मचाते हुए कोई काम करने के लिए किसी से कहना या किसी को विवश करना।

संयो० क्रि०—देना।

हड़बड़िया—वि०[हिं० हड़बड़ी+ इया (प्रत्य०)] हड़बड़ी करनेवाला। जल्दी मचानेवाला। उतावला।

हड़बड़ी—स्त्री० [अनु०] १. हड़बड़ाते हुए मचाई जानेवाली जल्दी। २. वह स्थिति, जिसमें हड़बड़ाते हुए कोई काम करना पड़ता हो। जैसे—वह हड़बड़ी में पुस्तक वहीं छोड़ आया।

हड़हड़ाना†— अ०[अनु०] हड़-हड़ शब्द होना।

स० हड़-हड़ शब्द उत्पन्न करना।

†अ०, स०=हड़बड़ाना।

हड़हा†—वि०[हिं० हाड़] [स्त्री० हड़ही] जिसकी देह में हड्डियाँ ही रह गई हों। बहुत दुबला-पतला।

पुं०१. वह जिसने किसी की हत्या की हो। हत्यारा। २. जंगली साँड़।

हड़ा—पुं०[अनु०]१. चिड़ियों को उड़ाने का शब्द, जो खेत के रखवाले करते हैं। २. पुरानी चाल की पत्थर-कला नामक बन्दूक।

हड़ावर† —पुं० [हिं० हाड़=आषाढ़ मास] पहनने के वे कपड़े जो नौकरों को गरमी के मौसिम के लिए दिए जाते हैं। 'जड़ावर' का विपर्याय।

†पुं०=हड़ावल।

हड़ावल—स्त्री० [हिं० हाड़+सं० अवलि] १. हड्डियों की पंक्ति या समूह। २. हड्डियों का ढाँचा। ३. हड्डियों की माला।

हड़ीला—वि० [हिं० हाड़+ईला (प्रत्य०)] १. जिसमें हड्डी या हड्डियाँ हों। २. जिसके शरीर में हड्डियाँ ही रह गई हों या दिखाई देती हों, अर्थात् बहुत दुबला-पतला।

हड्ड—पुं० [सं०√हठ्+ड नेत्वम् पृषो० सिद्ध] अस्थि हड्डी। हाड़।

हड्डा—पुं० [सं० इड़ाचिका] बर्रे या ततैया नाम का कीड़ा। दे० 'बर्रे'।

हड्डी—स्त्री० [सं० अस्थि, प्रा० अट्ठि, अत्थि] १. रीढ़वाले जीव-जंतुओं के शरीर के ढाँचे का वह प्रमुख अंग या तत्त्व, जो बहुत कड़ा और सफेद होता है, प्रायः नली के रूप का होता है और जोड़ों के बीच में रहता है।

पद—**पुरानी हड्डी**=वृद्ध आदमी का शरीर, जो नई पीढ़ी के नवयुवकों की तुलना में अधिक दृढ़ और पुष्ट माना जाता है।

मुहा०—**हड्डी उखड़ना**=हड्डी का अपने जोड़ों पर से खिसक या हट जाना जिससे बहुत कष्ट होता है। **(किसी की) हड्डियाँ तोड़ना**=बहुत बुरी तरह से मारना-पीटना।

२. कुल। वंश। खानदान। जैसे—हिंदुओं में हड्डी देखकर ब्याह किया जाता है।

हणवंत†—पुं०=हनुमंत्।

हत—भू० कृ० [सं० √हन् (हिंसा करना)+क्त] १. वध किया हुआ। जो मारा गया हो। २. जिस पर आघात हुआ हो। आहत। ३. जो किसी बात या वस्तु से रहित या विहीन हो गया हो। जैसे—श्री-हत, हत-प्रभ। ४. जिस पर आघात या ठोकर लगी हो। ५. बिगड़ा हुआ। विकृत। ६. परेशान तथा दुःखी। ७. रोग-ग्रस्त। ८. छूआ हुआ। ९. गुणा किया हुआ। गुणित।

हतक—स्त्री० [अ०]अपमान। बेइज्जती। हेठी।

पुं० [सं० हत] बहुत बड़ा अनर्थ या अनिष्ट। (पूरब)

हतक-इज्जती—स्त्री० [अ० हतक+इज्जत] दे० 'मानहानि'।

हत-ज्ञान—वि० [सं० ब० स०] १. जिसका ज्ञान विकृत या शून्य हो गया हो। २. संज्ञा-शून्य।

हत-दैव—वि०[सं० ब० स०] जिस पर दैव या ईश्वर का प्रकोप हुआ हो।

हतना—स० [सं० हत+हिं० ना (प्रत्य०)] १. हत्या करना। मार डालना। २. मारना। पीटना। ३. आघात करना। चोट लगाना।

उदा०—सीता-चरण चोंचि हति भागा।—तुलसी। ४. पालन न करना। न मानना। ५. भंग करना। तोड़ना। उदा०—ज्यों गज फटिक सिला में देखत दसननि डारत हति।—सूर।

हत-प्रभ—वि० [सं० ब० स०] जिसकी प्रभा (अर्थात्) कांति या तेज नष्ट हो गया हो।

हत-बल—वि० [सं० ब० स०] १. जिसका बल नष्ट हो गया हो। २. शक्ति-विहीन। उदा०—यह देश प्रथम ही था हत-बल।—निराला।

हत-बुद्धि—वि० [सं० ब० स०] बुद्धि-शून्य। मूर्ख।

हत-भागी—वि० [सं० हत+भाग्य] [स्त्री० हतभागिन, हतभागिनी] अभागा। भाग्य-हीन।

हत-भाग्य—वि० [सं० ब० स०] भाग्य-हीन। बद-किस्मत। अभागा।

हतवाना—स० [हिं० हतना का प्रे०] हत्या या वध कराना। मरवा डालना।

हत-वीर्य—वि० [सं० ब० स०] १. जिसका वीर्य नष्ट हो चुका हो। २. बल-हीन।

हता—वि० स्त्री० [सं० हत—टाप्] १. (स्त्री) जिसका चरित्र नष्ट हो गया हो। २. व्यभिचारिणी।

†अ० [स्त्री० हती] ब्रज भाषा में 'होना' क्रिया का भूतकालिक रूप। था।

हताई—स्त्री० [हिं० हतना] हत होने की अवस्था या भाव।

हतादर—वि० [सं०] जिसका आदर नष्ट हो गया हो। अनादृत।

हताना†—स० [हिं० हतना]=हतवाना।

†अ० मारा जाना।

हताश—वि० [सं० हत+आशा] जिसकी आशा नष्ट हो या मिट चुकी हो। भग्नाश।

हताश्वास—वि० [सं० ब० स०] १. जिसे कहीं से कोई आश्वासन या सान्त्वना न मिल रही हो। उदा०—पाते प्रहार अब हताश्वास।—निराला। २. हताश। उदा०—यह हताश्वास मन भार, श्वास भर बहता।—निराला।

हताहत—वि० [सं० द्व० स०] हत और आहत। मारे गये और घायल।

हतियार†—पुं०=हथियार।

हतो*—अ०=हता (था)।

हतोत्तर—वि० [सं० ब० स०] जो उत्तर न दे सके। निरुत्तर।

हतोत्साह—वि० [सं० ब० स०] जिसका उत्साह नष्ट हो चुका हो।

हत्ता†—पुं०=हत्था।

हत्तुलमकदूर—अव्य० [अ०] यथा-शक्ति। शक्ति भर।

हत्थ*—पुं०=हाथ।

हत्था—पुं० [हिं० हत्थ, हाथ] १. हाथ से चलाये जानेवाले बड़े औजारों और छोटी कलों का वह हिस्सा, जिसे हाथ से पकड़कर घुमाने या चलाने से वे चलते हैं। दस्ता। (हैंडिल) २. कुछ विशिष्ट प्रकार के ऐसे औजार, जो प्रायः हाथ का-सा काम करते हैं। जैसे—(क) करघे में का हत्था जिसे चलाने से बुने हुए सूत आपस में सट जाते हैं। (ख) नालियों में से खेतों में पानी उलीचने का हत्था। ३. हथेली और पंजे का वह छापा, जो मांगलिक अवसरों पर ऐपन से दीवारों पर लगाया जाता है। ४. केले के फलों का बड़ा गुच्छा। पंजा। ५. हाथ की वह स्थिति जिसमें उससे कोई चीज पकड़ी जाती है, या कोई विशिष्ट क्रियात्मक प्रयत्न किया जाता है।

मुहा०—**हत्थे पर से उखड़ना**=(क) पतंग उड़ाते समय गुड्डी की नख परेते या हाथ के पास से कट जाती है। (ख) किसी काम, चीज या बात के संबंध में प्राप्ति, सिद्धि आदि के बहुत कुछ समीप आ जाने पर भी पूर्णतया विफल हो जाना।

† पुं० [?] एक प्रकार का भद्दा मटमैला रंग, जिसमें कुछ पीलापन और कुछ लाली भी होती है।

हत्था-जड़ी—स्त्री० [हिं० हाथी+जड़ी] एक प्रकार का छोटा पौधा जिसकी पत्तियों का रस घाव, फोड़े आदि पर और जहरीले जानवरों के डंक लगने पर लगाया जाता है।

हत्था-जोड़ी—स्त्री० [हिं० हाथ+जोड़ना] सरकंडे की वह जड़, जो दो मिले हुए पंजों के आकार की होती है।

हत्थि*—पुं०=हाथी।

हत्थी—स्त्री० [हिं० हत्था, हाथ] १. औजार या कल का छोटा हत्था। दे० 'हत्था'। २. पत्थर आदि के वे दो चौकोर छोटे टुकड़े, जिन पर हाथ रखकर पहलवान लोग डंड पेलते हैं। ३. वह लकड़ी जिससे कड़ाही में खौलता हुआ ऊख का रस चलाते हैं। ४. चमड़े का वह टुकड़ा, जिसे छीपी कपड़े छापते समय हाथ में लगा लेते हैं। ५. वह थैली, जिसे हाथ में पहनकर साईस लोग घोड़े का बदन पोंछते हैं। ६. जुलाहों की वह लकड़ी, जिसमें पीतल के दाँत लगे रहते हैं और जो कपड़ा बुनते समय उसे ताने रहने के लिए करघे में लगाई जाती है। ७. गुप्त रूप से और बुरे उद्देश्य से दिया जानेवाला प्रोत्साहन।

क्रि० प्र०—देना।

हत्थे—अव्य० [हिं० हाथ] हाथ से। द्वारा। जैसे—नौकर के हत्थे पुस्तक मिली।

मुहा०—**(कोई चीज) हत्थे चढ़ना**=(क) हाथ में आना। अधिकार में आना। (ख) हस्तगत होना। मिलना। **(किसी काम का) हत्थे चढ़ना**=अभ्यास हो जाने पर किसी काम का सरलता से होते चलना।

हत्थे-दंड—पुं० [हिं० हत्था+दंड] वह दंड (कसरत) जो ऊँची ईंट या पत्थर पर हाथ रखकर किया जाता है।

हत्या—स्त्री० [सं०] १. किसी को मार डालने की क्रिया। वध। खून।

मुहा०—**हत्या लगना**=किसी को मार डालने का पाप लगना।

२. अनजान में अथवा यों ही संयोगवश (मार डालने के उद्देश्य से नहीं) किसी के प्राण ले लेना। (होमीसाइड) ३. बहुत ही झगड़े-बखेड़े का या बिलकुल व्यर्थ का और कष्टदायक काम या बात।

मुहा०—**हत्या टलना**=झंझट दूर होना। **हत्या (अपने) पीछे लगाना**=व्यर्थ की झंझट या झगड़ा अपने जिम्मे लेना। **हत्या सिर लेना**=हत्या पीछे लगाना। (दे०)

हत्यार†—वि०=हत्यारा।

हत्यारा—वि० [सं० हत्या+हिं० आरा (प्रत्य०)] [स्त्री० हत्यारिन, हत्यारी] दूसरों को जान से मार डालनेवाला। हिंसा करनेवाला।

हत्यारी—स्त्री० [हिं० हत्यारा] १. हत्या। हिंसा। वध। २. हत्या के फल-स्वरूप लगनेवाला पाप।

क्रि॰ प्र॰—लगना।

३. हत्या करने का अपराध ।

हथ†—पुं॰=हाथ।

उप॰ [हिं॰ हाथ] 'हाथ' का वह संक्षिप्त रूप, जो उपसर्ग के रूप में यौगिक शब्द के आरम्भ में लगता है । जैसे—हथ-कड़ी, हथ-गोला, हथ-बाँही, हथ-लेवा आदि।

उप॰ [हिं॰ हाथी] हाथी का वह संक्षिप्त रूप, जो उपसर्ग के रूप में यौगिक शब्दों के आरम्भ में लगता है। जैसे—हथ-नाल, हथ-सार, आदि।

हथ-उधार—पुं॰ [हिं॰ हाथ+उधार] वह कर्ज जो थोड़े समय के लिए यों ही बिना किसी प्रकार की लिखा-पढ़ी के लिया जाय। हथ-फेर।

क्रि॰ प्र॰—देना।—माँगना।—लेना।

हथ-कंडा—पुं॰ [हिं॰ हाथ+कंडा] १. हाथ से किये जानेवाले कामों में दिखाई पड़नेवाला कौशल और सफाई। २. कोई उद्देश्य सिद्ध करने का ऐसा कौशल, जो चालाकी या धूर्तता से युक्त हो।.

क्रि॰ प्र॰—दिखलाना।

हथ-कड़ी—स्त्री॰ [हिं॰ हाथ+कड़ी] अपराधियों के हाथ में शासनिक अधिकारियों के द्वारा पहनाई या बाँधी जानेवाली वह कड़ी या जंजीर जिसका मुख्य उद्देश्य उन्हें कोई और अपराधपूर्ण काम करने से रोकना होता है।

क्रि॰ प्र॰—डालना।—पड़ना।—लगना।—लगाना।

हथ-करघा—पुं॰ [हिं॰ हाथ+करघा] कपड़ा बुनने का वह करघा, जो हाथ से (यांत्रिक बल से नहीं) चलाया जाता है। (हैंड-लूम)

हथ-करा—पुं॰ [हिं॰ हाथ+करना] १. धुनिये की कमान में बँधा हुआ कपड़े या रस्सी का टुकड़ा, जिसे वह हाथ से पकड़े रहता है। २. चमड़े का वह दस्ताना, जो कँटीले झाड़ काटते समय हाथ में पहनते हैं।

हथ-करी—स्त्री॰ [हिं॰ हाथ+कड़ा] दूकान के किवाड़ों में लगा हुआ एक प्रकार का ताला, जो एक कड़ी से जुड़े हुए लोहे के दो कड़ों के रूप में होता है और दोनों ओर ताले के अँकुड़े की तरह खुला रहता है। इसी में हाथ डालकर कुंजी लगा दी जाती है।

† स्त्री॰=हथकड़ी।

हथ-कल—स्त्री॰ [हिं॰ हाथ+कल] १. कोई ऐसी छोटी कल या यंत्र जो हाथ से चलाया जाता हो। २. लोहारों का एक प्रकार का पेच-कस। ३. करघे की दो डोरियाँ जिनका एक छोर तो हत्थे के ऊपर बँधा रहता है और दूसरा लग्घे में।

† स्त्री॰=हथ-कड़ी।

हथ-कोड़ा—पुं॰ [हिं॰ हाथ+कोड़ा] कुश्ती का एक पेंच।

† पुं॰=हथ-कंडा।

हथ-गोला—पुं॰ [हिं॰ हाथ+गोला] शत्रुओं पर हाथ से फेंका जानेवाला कोई विस्फोटक गोला। (ग्रेनेड, हैंड-बाम्ब) तोप से फेंके जानेवाले गोले से भिन्न।

हथ-छुट—वि॰ [हिं॰ हाथ+छूटना] जिसका हाथ मारने के लिए बहुत जल्दी छूटता या उठता है। जो बात-बात में दूसरों को पीटने लगता हो।

हथ-धरी†—स्त्री॰ [हिं॰ हाथ+धरना] लकड़ी की वह पटरी, जो नाव से जमीन तक लगाकर दो आदमी इसलिए पकड़े रहते हैं कि उस पर से होकर सवार लोग उतर जायँ।

हथ-नार†—स्त्री॰=हथ-नाल।

हथ-नाल†—पुं॰ [हिं॰ हाथी+नाल] वह तोप जो हाथियों पर रखकर चलाई जाती थी। गजनाल। उदा॰—हल नालि हवाई कुहक बान कवि। —प्रिथीराज।

हथनी—स्त्री॰ [हिं॰ हाथी] १. मादा हाथी। २. तालाबों आदि के घाट पर की वह वास्तु-रचना, जो ऊपर की ओर बहुत ऊँची रहती और नीचे की ओर क्रमशः बड़ी-बड़ी सीढ़ियों के रूप में नीची होती जाती है।

हथ-पान—पुं॰ [हिं॰ हाथ+पान] हथेली की पीठ पर पहनने का पान के आकार का एक गहना।

हथ-फूल—पुं॰ [हिं॰ हाथ+फूल] १. हथेली की पीठ पर पहनने का एक जड़ाऊ गहना जो सिकड़ियों के द्वारा एक ओर तो अँगूठियों से बँधा रहता है, और दूसरी ओर कलाई से। हाथ-साँकला। हथ-संकर। २. एक प्रकार की आतिशबाजी।

हथ-फेरी—पुं॰ [हिं॰ हाथ+फेरना] १. प्यार करते हुए शरीर पर हाथ फेरने की क्रिया। २. 'हथ-फेरी'। ३. दे॰ 'हथ-उधार'।

हथ-फेर—स्त्री॰ [हिं॰ हाथ+फेरना] कभी यहाँ और कभी वहाँ चालाकी से भरी हुई की जानेवाली कारवाइयाँ। उदा॰—बदमाशों की हथ-फेरियाँ दिन पर दिन बढ़ती जा रही थीं।—शौकत थानवी।

हथ-बेंटा—पुं॰ [हिं॰ हाथ+बेंट] एक प्रकार की कुदाल जो खेत में से गन्ने काटने के काम आती है।

हथरकी—स्त्री॰ [हिं॰ हाथ] चरखे की मुठिया जिसे पकड़कर चरखा चलाते हैं।

हथ-रस—पुं॰ [हिं॰ हाथ+रस] हस्त-मैथुन। हस्त-क्रिया।

हथ-लेवा—पुं॰ [हिं॰ हाथ+लेना] विवाह के समय वर का अपने हाथ में कन्या का हाथ लेने की रीति। पाणि-ग्रहण। उदा॰— दियौ हियौं संग हाथ कैं, हथ लेमैं (लेवैं) ही हाथ।—बिहारी।

हथ-बाँस—पुं॰ [हिं॰ हाथ+बाँस (प्रत्य॰)] नाव चलाने के उपकरण। जैसे—लग्गा, पतवार, डाँड़ा इत्यादि।

हथ-बाँसना†—स॰ [हिं॰ हाथ+अवाँसना] किसी व्यवहार में लाई जानेवाली वस्तु में पहले-पहल हाथ लगाना। प्रयोग या व्यवहार का आरम्भ करना।

हथ-संकर—पुं॰ [हिं॰ हाथ+साँकर] हथेली की पीठ पर पहनने का हाथ-फूल नाम का एक गहना।

हथ-साँकला†—पुं॰=हथ-संकर।

हथ-सार—स्त्री॰ [हिं॰ हाथी+सं॰ शाला, हिं॰ सार] वह घर जिसमें हाथी रखे जाते हैं। गज-शाला।

हथा—पुं॰ [हिं॰ हाथ] मांगलिक अवसरों पर गीले पिसे हुए चावल और हल्दी पोतकर बनाया हुआ पंजे का चिह्न। ऐपन का छापा।

† पुं॰=हत्या।

हथा-हथी*—अव्य [हिं॰ हाथ] १. हाथों-हाथ। २. चटपट। तुरन्त।

स्त्री॰=हाथा-पाई।

हथिनी†—स्त्री॰=हथनी।

हथिया—पुं॰ [सं॰ हस्त(नक्षत्र), प्रा॰ हत्थ] हस्त नक्षत्र जिसमें प्रायः मूसल-धार वर्षा होती है।

क्रि॰ प्र॰—बरसना।

२. करघे में कंघी के ऊपर की लकड़ी।

स्त्री० [हिं० हाथ] छोटा हत्था।

हथियाना—स० [हिं० हाथ+आना (प्रत्य०)] १. हाथ में लेना। हाथ से पकड़ना। २. दूसरे की चीज पर कौशल से या बलात् कब्जा कर लेना। ३. अपने प्रभुत्व या अधिकार में कर लेना। जैसे—उन्होंने संस्था को हथिया लिया है।

संयो० क्रि०—लेना।

हथियार—पुं० [हिं० हथियाना+आर (प्रत्य०)] १. कोई चीज जो हाथ में पकड़कर दूसरों को मारने के लिए चलाई जाय। शस्त्र। जैसे—छुरा, तलवार, बन्दूक आदि।

क्रि० प्र०—चलाना।

मुहा०—हथियार बाँधना या लगाना=अस्त्र-शस्त्र धारण करना।

२. कोई ऐसा उपकरण जिसकी सहायता से हाथ से कोई चीज बनाई जाय। औजार। ३. पुरुष का लिंग। (बाजारू)

हथियार-बंद—वि० [हिं० हथियार+फा० बंद, सं० बंध] [भाव० हथियार-बंदी] (व्यक्ति) जो हथियारों से लैस हो। सशस्त्र। (आर्मड) जैसे—हथियार-बंद फौज।

हथियार-बंदी—स्त्री० [हिं० हथियार बंद+ई (प्रत्य०)] हथियारों से लैस होना या करना। (आर्मामेंट)

हथुई-मिट्टी—स्त्री० [हिं० हाथ+मिट्टी] वह मिट्टी जो कच्ची दीवारों का तल चिकनाने के लिए उन पर लगाई जाती हो।

हथुई-रोटी—स्त्री० [हिं० हाथ+रोटी] वह रोटी जो गीले आटे को हाथ से गढ़कर बनाई गई हो। (चकले पर बेलने से बेलकर बनाई हुई रोटी से भिन्न।)

हथेरा—पुं० [हिं० हाथ+एरा (प्रत्य०)] खेतों में पानी डालने का हाथा (देखें) नामक उपकरण।

हथेरी—स्त्री०=हथेली।

हथेल—स्त्री० [हिं० हाथ] वह लचीली कमाची जिस पर बना हुआ कपड़ा तानकर रखा जाता है। पनिक। पनखट।

हथेली—स्त्री० [सं० हस्त+तल] हाथ पर का कलाई के आगे का वह ऊपरी चौड़ा हिस्सा, जिसके आगे उँगलियाँ होती हैं। कर-तल। हस्त-तल।

पद—हथेली सा=बिलकुल सपाट या समतल।

मुहा०—हथेली खुजलाना=(क) द्रव्य मिलने का आगम सूचित होना। कुछ मिलने का लक्षण होना। (ख) कोई नया और विलक्षण काम करने को जी चाहना या प्रवृत्ति होना। **(किसी काम में) हथेली देना या लगाना**=सहायता या सहारा देना। **हथेली पर जान लेकर**=जान जोखिम में डालकर। **हथेली पर दही या सरसों जमाना**=इतनी उतावली या जल्दबाजी करना कि मानो समय-साध्य काम क्षण भर में हो सकता हो। (हास्यास्पद तथा शीघ्रतासूचक)। **हथेली पर लिए फिरना**=यह ढूँढ़ने या देखते रहना कि हमारी अमुक चीज कौन लेता है। कुछ देने के लिए हर समय किसी का तैयार रहना। **हथेली बजाना**=कर-तल ध्वनि करना। ताली बजाना।

कहा०—किस की हथेली में बाल जमे हैं? संसार में ऐसा कौन वीर है? जैसे—किसकी हथेली में बाल जमे हैं जो उसे मार सकता है।

हथेवा†—पुं० [हिं० हाथ] हथौड़ा। घन।

हथोरी*—स्त्री०=हथेली।

हथौटी—स्त्री० [हिं० हाथ+औटी (प्रत्य०)] कारीगरी या दस्तकारी का काम करने का विशिष्ट ढंग या हाथ चलाने का प्रकार।

हथौड़ा—पुं० [हिं० हाथ+औड़ा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० हथौड़ी] एक प्रसिद्ध औजार जिससे चीजें ठोंकी-पीटी जाती हैं। (हैमर)

विशेष—यह प्रायः लोहे का ऐसा लम्बोतरा टुकड़ा होता है, जिसके बीच में दस्ता या मूठ लगी रहती है। बढ़इयों, लुहारों-सुनारों, आदि के हथौड़े अलग-अलग आकार-प्रकार के होते हैं।

हथौना†—पुं० [हिं० हाथ+औना (प्रत्य०)] दूल्हे और दुलहन के हाथों में आशीर्वाद देने या शुभ कामना प्रकट करने के लिए मिठाई रखने की रीति। (पूरब)

हथ्याना†—स०=हथियाना।

हथ्यार†—पुं०=हथियार।

हद—स्त्री० [अ०] १. किसी वस्तु के विस्तार का अंतिम सिरा। किसी चीज की लम्बाई, चौड़ाई, उँचाई या गहराई की सब से अन्तिम रेखा या पार्श्व। सीमा। मर्यादा। जैसे—गाँव या बगीचे की हद। २. किसी प्रकार की मर्यादा या सीमा।

पद—हद से ज्यादा या बाहर=नियत सीमा के आगे। मर्याद. के बाहर।

मुहा०—हद करना=कोई काम या बात चरम सीमा तक पहुँचाना। जैसे—तुमने भी मिलनसारी की हद कर दी।

हदका*—पुं०=धक्का।

हद-बंदी—स्त्री० [अ०+फा०] दो खेतों, प्रदेशों, राज्यों, देशों की सीमा निर्धारण करना।

हदस—स्त्री० [अ० हादसा ?] वह भय जो मन से जाता न हो।

हदसना†—अ० [हिं० हदस] डर जाना। भयभीत होना। जैसे—इस तरह डराने से लड़का हदस जायगा।

हदसाना†—स० [हिं० हदसना का स०] ऐसा काम करना, जिससे कोई हदस जाय। किसी के मन में डर या भय बैठाना।

हदीस—स्त्री० [अ०] मुसलमानों का वह धर्म-ग्रन्थ, जिसमें मुहम्मद साहब के कार्यों के वृत्तान्त और भिन्न-भिन्न अवसरों पर कहे हुए वचनों का संग्रह है और जिसका व्यवहार बहुत-कुछ स्मृति के रूप में होता है।

हद्द†—स्त्री०=हद।

हन†—अव्य०=हाँ। (राज०)

†सर्व०=उन। (पूरब)

हनन—पुं० [सं० √हन् (हिंसा करना)+ल्युट्—अन] [वि० हननीय, भू० कृ० हनित] १. मार डालना। वध करना। २. आघात या प्रहार करना। चोट लगाना। ३. गणित में, गुणन या गुणा करना।

हनना†—स० [सं० हनन] १. मार डालना। वध करना। २. आघात या प्रहार करना। ३. ठोंकना-पीटना।

हननीय—वि० [सं० √हन् (हिंसा करना)+अनीयर्] जिसका हनन किया जाना उचित अथवा संभव हो। जो हनन किया जाने को हो या किया जा सकता हो।

हनफी—पुं० [अ० हनफ़ी] सुन्नियों का एक वर्ग या संप्रदाय।

हनवाना—स०[हिं० हनना का प्रे०] हनने का काम दूसरे से कराना। किसी को हनने में प्रवृत्त करना।
†स०=नहवाना (नहलाना)।

हनाना†—अ०=नहाना। (बुन्देल०)

हनितवंत†—पुं०=हनुमंत्।

हनिवंत†—पुं०=हनुमान्।

हनु—स्त्री०[सं० √हन् (मारना)+उन्] १. दाढ़ की हड्डी। जबड़ा। २. चिबुक। ठोढ़ी।
†पुं० हनुमान्।

हनुका—स्त्री०[सं०] दाढ़ की हड्डी।

हनु-ग्रह—पुं०[सं०] एक रोग जिसमें जबड़े बैठ जाते हैं और जल्दी खुलते नहीं।

हनु-फाल—पुं०[सं० हनु+हिं० फाल] एक प्रकार का मात्रिक छन्द, जिसके प्रत्येक चरण में बारह मात्राएँ और अन्त में गुरु-लघु होते हैं।

हनु-भेद—पुं०[सं०] जबड़े का खुलना।

हनुमंत—पुं०=हनुमान्।

हनुमंत-उड़ी—स्त्री०[हिं० हनुमंत+उड़ना] मालखंभ की एक कसरत जिसमें सिर नीचे और पैर ऊपर की ओर करके सामने लाते हैं और फिर ऊपर खसकते हैं।

हनुमंती—स्त्री०[हिं० हनुमंत] मालखंभ की एक कसरत जिसमें एक पाँव के अँगूठे से बेंत पकड़कर और फिर दूसरे पाँव को अंटी देकर और उससे बेंत पकड़कर बैठते हैं।

हनुमत्कवच—पुं० [सं०] १. हनुमान् को प्रसन्न करने का एक मंत्र जिसे लोग तावीज वगैरह में रखकर पहनते हैं। २. हनुमान् का एक स्तोत्र।

हनुमद्धारा—स्त्री०[सं०] चित्रकूट का एक पवित्र स्थल।

हनुमान्—वि० [सं० हनुमत्] १. दाढ़वाला। जबड़ेवाला। २. बहुत बड़ा वीर।
पुं० पंपा के प्रसिद्ध एक वीर बानर जिन्होंने सीता-हरण के उपरान्त रामचन्द्र की पूरी सेवा और सहायता की थी। ये रामचन्द्र के परम भक्त कहे गये हैं और देवताओं के रूप में माने जाते हैं।

हनुमान—पुं०=हनुमान्।

हनुमान-बैठक—स्त्री०[हिं० हनुमान+बैठक]एक प्रकार की बैठक (कसरत) जिसमें एक पैर पैंतरे की तरह आगे बढ़ाते हुए बैठते-उठते हैं।

हनु-मोक्ष—पुं०[सं०] दाढ़ का एक रोग जिसमें बहुत दर्द होता है और मुँह खोलने में बहुत कष्ट होता है।

हनुल—वि०[सं० हनु√ ला (लेना)+क] जिसकी दाढ़ें तथा जबड़े पुष्ट हों।

हनुवँ†—पुं०=हनुमान्।

हनु-स्तंभ—पुं० [सं०]१. किसी प्रकार के शारीरिक विकार के कारण जबड़ों का इस प्रकार जमकर बैठ जाना कि वे खुल या हिल न सकें। २. धनुर्वात का एक प्रकार, जिसमें उक्त अवस्था होती है। (लॉक-जॉ)

हनूं†—पुं०=हनुमान्।

हनूमान—पुं०=हनुमान्।

हनूष—पुं०[सं०] दैत्य। राक्षस।

हनोज—अव्य०[फा० हनोज़]१. अभी। २. अभी तक।

हनोद—पुं०[देश०] संगीत में, एक प्रकार का राग जो हिंडोल राग का पुत्र कहा गया है।

हन्नाह†—पुं०=सन्नाह (कवच)।

हन्यमान—वि०[सं०]=हननीय।

हप—पुं०[अनु०] कोई चीज मुँह में चट से लेकर होठ बंद करने का शब्द। जैसे—हप से खा गया।

हपना—स०[हिं० हप+ना (प्रत्य०)]१. हप शब्द करते हुए कोई चीज मुँह में रखना या निगलना। २. हड़पना।

हप्पा—पुं०[हिं० हड़पना या अनु०]१. बच्चों की बोली में, खाने की कोई अच्छी चीज। २. घूस। रिश्वत। (पश्चिम)

हप्पू—पुं०[हिं० हपना] वह जो बहुत खाता हो या बहुत खाने के लिए लालायित रहता हो। पेटू।
†पुं०=आफू (अफीम)।

हफ्त—वि०[फा० हफ़्त] सात।

हफ्तगाना—पुं०[फा० हफ्त गानः] गाँव के पटवारी के ये सात कागज जिनमें वह जमीन लगान आदि का लेखा रखता है—खसरा, बहीखाता, जमाबंदी, स्याहा, बुझारत, रोजनामचा और जिंसवार।

हफ्ता—पुं०[सं० सप्ताह से फा० हफ़्तः]१. सात दिनों का समय। २. विशेषतः एक सोमवार (या एतवार) से दूसरे सोमवार (या एतवार) तक का समय।

हफ्ती—स्त्री०[फा० हफ़्ती] एक प्रकार की जूती।

हफ्तेवार—वि० [फा०] साप्ताहिक। (वीकली)

हबकना—स० [अनु०] झपटकर किसी को दाँत से काटना।

हबड़ा—वि०[देश०] १. जिसके बहुत बड़े-बड़े दाँत हों। बड़दंता। २. कुरूप। भद्दा।

हबर-दबर—अव्य०[अनु०] जल्दी-जल्दी। उतावली से।

हबराना†—स०=हड़बड़ाना।

हबश—पुं०[अ० हब्श] उत्तरी अफ्रीका का एक प्रदेश जो हबशियों की जन्म-भूमि है।

हबशिन (शन)—स्त्री० [हिं० हबशी]१. हबशी स्त्री। २. काली-कलूटी स्त्री। ३. शाही महल की चौकीदारी करनेवाली स्त्री।

हबशी—पुं०[फा०]१. हबश देश का निवासी जिसके शरीर का रंग बहुत काला होता है। २. एक प्रकार का बड़ा और काला अंगूर।
वि० १. हबश देश-संबंधी। २. हबशियों का।

हबशी-सनर—पुं०[फा०] एक प्रकार का अफ्रीकी गैंड़ा जिसके दो सींग या खाँग होते हैं।

हबाब—पुं०[अ०] १. पानी का बुलबुला। २. शीशे का एक प्रकार का गोला जो अन्दर से बिलकुल पोला होता है, और प्रायः सजावट के लिए छतों में लटकाने के काम आता है।

हबाबी—वि०[अ०]१. हबाब सम्बन्धी। २. हबाब या पानी के बुलबुले की तरह का। बहुत कमजोर और जल्दी टूट जानेवाला।

हबाबी-आइना—पुं० [फा०] वह शीशा जिसका दल बहुत पतला होता और जल्दी टूट जाता है।

हबि†—पुं०=हवि।

हबीब†—पुं०[अ०]१. दोस्त। मित्र। २. प्रिय व्यक्ति।

हबूब—पुं०[अ० हबाब या हुबाब]१. पानी का बुलबुला। बुल्ला। २. तुच्छ और निस्सार चीज़ं या बात।

हबेली†—स्त्री०=हवेली।

हब्बा—पुं०[अ० हब्ब:]१. अन्न का दाना। २. बहुत ही अल्प या सूक्ष्म अंश। ३. एक रत्ती की तौल।

हब्बा-डब्बा—पुं०[हिं० हाँफ, अनु० डब्बा] ज़ोर-जोर से साँस या पसली चलने की बीमारी जो बच्चों को होती है। पसली चलने (अर्थात् फड़कने) का रोग।

हब्बुल-आस—पुं०[अ०] एक प्रकार की मेंहदी, जो बगीचों में लगाई जाती है और दवा के काम में आती है। बियालती मेंहदी।

हब्स—पुं०[अ०] १. कैद। कारावास। २. कारागार। कैदखाना। ३. ऐसी स्थिति जिसमें थोड़ी-सी बन्द जगह में बहुत-से लोगों के रहने या हवा न आने के कारण दम घुटता हो।

हब्स-दम—पुं० [अ०+फा०]१. दमा या श्वास नामक रोग। प्राणायाम।

हब्स-बेजा—पुं०[अ०+फा०] अनुचित रीति से किसी को कहीं बन्द कर रखना जो विधि की दृष्टि से अपराध है।

हम—सर्व०[सं० अहम् या अस्मत् पा०, प्रा० अम्हे] उत्तम पुरुष बहुवचन का सूचक सर्वनाम। 'मैं' का बहुवचन।

पुं० अहंभाव। अहंकार। घमंड।

उप०[सं० सम से फा०] एक उपसर्ग जो कुछ संज्ञाओं से पहले लगकर ये अर्थ देता है—(क) तुल्य या समान। जैसे—हम-उम्र=समवयस्क। (ख) संग या साथ। जैसे—हमदर्दी=सहानुभूति। हमराही=साथ चलनेवाला पथिक या यात्री।

हम-असर—पुं०[फा०+अ०]१. वे जिन पर एक ही प्रकार का प्रभाव पड़ा हो। २. समान संस्कार या प्रवृत्ति वाले। ३. सम-कालीन। ४. प्रतियोगी। प्रतिस्पर्धी।

हम-अहद—वि०[फा०+अ०] सम-कालीन।

हम-उम्र—वि० [फा० हम+अ० उम्र] अवस्था में समान। समवयस्क।

हम-कदम—वि०[फा०+अ०] बराबर साथ-साथ कदम मिलाकर चलनेवाला अर्थात् संगी या साथी।

हम-कौम—वि०[फा० हम+अ० कौम] एक ही जाति के। सजातीय।

हम-जिंस—वि०[फा०] एक ही वर्ग या जाति के। एक ही प्रकार के।

हम-जोली—पुं० [फा०+हिं० जोड़ी?] वे जो प्रायः साथ रहते हों। साथी। सखा।

हमता*—स्त्री० [हिं० हम+ता (प्रत्य०)] अहंभाव। अहंकार।

हम-दम—वि०[फा०]१. (वह) जो अपने मित्र का आखिरी दम तक साथ देता हो। २. अत्यन्त घनिष्ट मित्र।

हम-दर्द—पुं०[फा०] [भाव० हमदर्दी] १. किसी की दृष्टि से वह व्यक्ति जो उसके दुःख में शरीक होता हो या सहानुभूति प्रकट करता हो। २. दूसरे के दुःख से द्रवित होनेवाला।

हम-दर्दी—स्त्री० [फा०]१. हमदर्द होने की अवस्था, गुण या भाव। २. दूसरे के दुःख से दुःखी होने का भाव। सहानुभूति।

हमन†—सर्व० [हिं० हम]१. हम लोग। उदा०—हमन हैं इश्क मनाना हमन को होशियारी क्या।—कोई शायर।

हम-निवाला—वि०[फा०] वे मित्र जो एक साथ बैठकर भोजन करते हों। आहार-विहार के सखा। घनिष्ठ मित्र।

पद—**हम-निवाला हम-प्याला**=(मित्र) जो एक साथ खाते-पीते और सुख भोग करते हों।

हम-पंच†—सर्व०[हिं० हम पंच] हमलोग।

हम-पल्ला—वि०[फा० हम-पल्ल:] बराबरी का। जोड़ का। समकक्ष।

हम-पेशा—वि०[फा० हम-पेश:] एक ही तरह का पेशा करनेवाले। जो व्यवसाय एक करता हो, वही व्यवसाय करनेवाला दूसरा। सह-व्यवसायी।

हम-बिस्तर—वि०[फा०] किसी के विचार से वह व्यक्ति जो उसके साथ एक ही बिछौने पर सोता हो।

हम-बिस्तरी—स्त्री०[फा०]१. एक ही बिछौने पर साथ सोने की क्रिया। २. स्त्री-प्रसंग। संभोग।

हम-मजहब—वि०[फा० हम+अ० मज़हब] किसी के विचार से वह व्यक्ति जो उसी के मजहब को मानता हो। सह-धर्मी।

हम-रकाब—पुं०[फा०] १. घुड़सवारी में साथ रहनेवाला। १. बराबर साथ रहनेवाला संगी। साथी। उदा०—हम-रकाब, साथ लेता सेना निज।—निराला।

हमरा†—सर्व०, वि०=हमारा।

हम-राह—अव्य०[फा०](कहीं जाने में किसी के) साथ। संग में। जैसे—लड़का उसके हमराह गया।

वि०[भाव० हमराही] जो साथ-साथ एक ही रास्ते पर चलते हों।

हम-राही—पुं०[फा०] १. हमराह होने की अवस्था या भाव। २. रास्ते में साथ चलने या यात्रा करनेवाला। रास्ते का साथी।

हमल—पुं०[सं० हम्ल] स्त्री के पेट में बच्चे का होना। गर्भ। वि० दे० 'गर्भ'।

क्रि० प्र०—रहना।—होना।

मुहा०—**हमल गिरना**=गर्भ-पात या गर्भ-स्राव होना।

हमला—पुं०[अ० हम्ल:]१. मारने या प्रहार करने के लिए आगे बढ़ना। आक्रमण। (अटैक) २. प्रहार। वार। ३. शत्रु पर की जानेवाली चढ़ाई। आक्रमण। (अटैक) जैसे—हावई हमला। ४. किसी को नीचा दिखाने या हानि पहुँचाने के लिए किया जानेवाला कार्य या कही जानेवाली बात।

हमला-आवर—वि० [अ०+फा०] [भाव० हमला आवरी] चढ़ाई करनेवाला। आक्रमणकारी।

हमलावर—वि०=हमला-आवर।

हम-वतन—पुं०[फा०+अ०] एक ही प्रदेश के रहनेवाले। देशभाई। किसी की दृष्टि से वह व्यक्ति जो उसी के वतन का हो।

हमवार—वि०[फा०] [भाव० हमवारी] जिसकी सतह बराबर हो। समतल। जैसे—जमीन हमवार करना।

†पुं०[हिं० हम+वार (प्रत्य०)] हमलोग या हमारे जैसे लोग।

हम-शीरा—स्त्री०[फा० हम+शीर:] सगी बहन। भगिनी।

हम-सफर—वि०[फा०+अ० सफ़र] सफर में साथ देनेवाला। सह-यात्री।

हम-सबक—वि०[फा० हम-सबक़] एक साथ पढ़नेवाले। सह-पाठी।

हम-सर—वि०[फा०] [भाव० हम-सरी] १. बराबर का। बराबरी के दरजे का। २. प्रतिद्वंद्वी।

हम-सरी—स्त्री०[फा०]१. समानता का भाव या स्थिति। बराबरी। २. प्रतियोगिता। प्रतिस्पर्धा।

हम-साया—पुं० [फा० हमसायः] [स्त्री० हमसाई, भाव० हम-सायगी] पड़ोसी। प्रतिवेशी।

हम-सिन—वि० [फा०+अ०] बराबरी की उमरवाला। सम-वयस्क।

हम-हमी—स्त्री०=हमाहमी।

हमाम—पुं०=हम्माम।

हमायल—स्त्री० [अ०]१. गले में डालने का परतला। २. छोटे आकार का कुरान जिसे गले में डाल सकें। २. गले में पहनने का एक गहना।

हमार†—वि०=हमारा।

हमारा—वि०, सर्व० [हिं० हम=आरा (प्रत्य०)] [स्त्री० हमारी] 'हम' का संबंधकारक रूप। जैसे—हमारा काम। हमारा मकान।

हमाल—पुं०[अ० हम्माल]१. भार ढोनेवाला। मजदूर। कुली। २. देख-रेख करनेवाला व्यक्ति। रक्षक। (क्व०)

हमालय—पुं० [सं० हिमालय] सिंहल या सीलोन का सबसे ऊँचा पहाड़ जिसे 'आदम की चोटी' कहते हैं।

हमाहमी—स्त्री०[हिं० हम+हम]१. यह समझना कि जो कुछ हैं, वह हम ही हैं। अहंमन्यता। २. दृढ़ता या हठपूर्वक यह कहना कि जो बात हम कह रहे हैं, वही होनी चाहिए। हद दरजे की जिद।

हमीर—पुं०=हम्मीर।

हमें—सर्व०[हिं० हम]'हम' का कर्म और संप्रदान कारक का रूप। हमको। जैसे—(क) हमें बताओ। (ख) हमें दो।

हमेल†—स्त्री०=हुमेल (गहना)।

हमेव†—पुं० [सं० अहम्+एव] १. यह समझना कि जो कुछ हैं, वह हम ही हैं, या हम भी बहुत कुछ हैं। २. अभिमान। घमंड।

हमेशा—अव्य० [फा० हमेशः] सब दिन या सब समय। सदा। सर्वदा।

हमेस†—अव्य०=हमेशा।

हमैं†—सर्व०=हमें।

हम्द—पुं० [अ०] ईश्वर की महिमा का गान। ईश्वर की स्तुति।

हम्माम—पुं० [अ०] स्नान करने का कमरा। स्नानागार।

हम्मामी—पुं० [अ०] हम्माम में लोगों को नहलानेवाला कर्मचारी।

हम्माल—पुं० [अ०] बोझ उठानेवाला मजदूर। कुली।

हम्मीर—पुं० [सं०] १. संपूर्ण जाति का एक संकर राग जो शंकराभरण और मारू के मेल से बना है। २. रणथंभोर गढ़ का एक वीर चौहान राजा जो सन् १३०० ई० में अलाउद्दीन खिलजी के हाथों युद्ध में मारा गया था।

हम्मीर-नट—पुं० [सं०] संपूर्ण जाति का एक संकर राग जो नट और हम्मीर के मेल से बना है।

हम्हा†—सर्व० [सं० अहम्]=हम।

हयंद—पुं० [सं० हयेन्द्र] बड़ा या अच्छा घोड़ा।

हय—पुं० [सं०] [स्त्री० हया, हयी] १. घोड़ा। अश्व। २. उच्चैश्रवा के सात मुखों के आधार पर काव्य में सात की संख्या का सूचक पद। ३. इन्द्र। ४. एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चार मात्राएं होती हैं।

हय-ग्रीव—पुं० [सं० ब० स०] १. विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक। २. एक राक्षस जो कल्पान्त में ब्रह्मा की निद्रा के समय वेद उठा ले गया था। विष्णु ने मत्स्य अवतार लेकर वेद का उद्धार और इस राक्षस का वध किया था। ३. बौद्ध तांत्रिकों के एक देवता।

वि० जिसकी गरदन घोड़े की गरदन की तरह हो।

हयग्रीवा—स्त्री० [सं० हयग्रीव—टाप्] दुर्गा का एक नाम।

हयन—पुं० [सं०√हि (प्रकृति आदि)+ल्युट्—अन] वर्ष। साल।

हयना—स० [सं० हत, प्रा० हय+हिं० ना(प्रत्य०)]१. मार डालना। २. नष्ट करना।

हय-नाल—स्त्री० [सं० हय+हिं० नाल] वह तोप जिसे घोड़े खींचते हैं।

हय-मुख—पुं० [सं० ब० स०] १. एक कल्पित देश जिसके संबंध में प्रसिद्ध है कि वहाँ घोड़े के से मुँहवाले आदमी बसते हैं। २. और्व ऋषि का क्रोध रूपी तेज जो समुद्र में स्थित होकर 'बड़वानल' कहलाता है। (रामायण)

हय-मेध—पुं० [सं० ष० त०] अश्वमेध।

हय-लास—पुं० [सं० हय+लास्य] घोड़ा नचानेवाला, घुड़सवार।

हय-शाला—स्त्री० [सं० ष० त०] अश्व-शाला। घुड़साल। अस्तबल।

हय-शिर—पुं० [सं० हय-शिरस्] १. एक प्राचीन ऋषि। २. एक प्रकार का दिव्यास्त्र।

वि० जिसका सिर घोड़े के सिर की तरह का हो।

हय-शीर्ष—पुं० [सं० ष० स०] विष्णु का हयग्रीव रूप।

हयांग—पुं० [सं०] धनु-राशि।

हया—स्त्री० [अ०] वह प्राकृतिक मनोवृत्ति जो मनुष्य को नैतिक तथा सामाजिक दृष्टि से कोई अनुचित या निंदनीय काम करने से रोकती और उसके मन में संकोच उत्पन्न करती है। स्वाभाविक शील के कारण उत्पन्न होनेवाली लज्जा या शर्म।

विशेष—शर्म और हया में यह अंतर है कि शर्म तो आपराधिक या नैतिक दृष्टि से भी होती है और स्वाभाविक रूप से मनोगत या मानसिक भी होती है। हम यह तो कहते हैं कि तुम्हें झूठ बोलते हुए शर्म नहीं आती, परंतु ऐसे प्रसंगों में 'शर्म' की जगह 'हया' का प्रयोग नहीं कर सकते। हाँ, हम यह अवश्य कहते हैं कि हयादार आदमी कभी झूठ नहीं बोलता। ऐसे प्रसंगों में 'हयादार' की जगह 'शर्मदार' का प्रयोग नहीं होता। हया मनुष्य की स्वाभाविक लज्जाशीलता है और उसकी गणना मनुष्य के स्वाभाविक गुणों में होती है।

हयात—स्त्री०[अ०] जिंदगी। जीवन।

पद—**हीन हयात**=जीवन भर के लिए। **हीन हयात में**= जीते जी।

हयादार—वि०[अ० हया+फा० दार] वह जिसे हया हो। लज्जाशील।

हयादारी—स्त्री०[अ० हया+फा० दारी] हयादार होने की अवस्था, गुण या भाव। लज्जाशीलता।

हयाध्यक्ष—पुं०[सं० ष० त०] घुड़साल का प्रधान अधिकारी और घोड़ों का निरीक्षक।

हयानन—पुं०[सं० ब० स०] हयग्रीव।

हयानना—स्त्री०[सं०] एक योगिनी।

हयायुर्वेद—पुं०[सं०] घोड़ों की चिकित्सा का शास्त्र। शालिहोत्र।

हयालय—पुं० [सं० ष० त०] अश्वशाला। अस्तबल। घुड़साल।

हयाशन—पुं०[सं०] एक प्रकार का धूप। सरलीक का पौधा।

हयी—पुं० [सं० हयिन्] घुड़सवार।

स्त्री० सं० हय का स्त्री०। घोड़ी।

हर—वि०[सं० √हृ (हरण करना)+अच्] एक विशेषण जो यौ० शब्दों के अंत में प्रत्यय के रूप में लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—१. हरण करने अर्थात् छीनने या लूटनेवाला। जैसे—धनहर, मनोहर। २. दूर करने या हटानेवाला। जैसे—पापहर, रोगहर। ३. नाश या वध करनेवाला। जैसे—असुरहर। ४. लेजानेवाला या वहन करनेवाला। जैसे—संदेशहर।

पुं० १. महादेव। शिव। २. अग्नि। आगि। ३. माली नामक राक्षस का पुत्र जो विभीषण का मंत्री था। ४. गणित में, वह संख्या जिससे किसी संख्या को भाग देते हैं। भाजक। (डिवाइज़र) ५. छप्पय नामक छंद के दसवें भेद का नाम। ६. टगण के पहले भेद का नाम। ७. गधा।

प्रत्य०[सं० गृह से वि०] एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लगकर घर, स्थान आदि का अर्थ देता है। जैसे—खँडहर, मैहर, पीहर आदि।

†पुं० [सं० गृह] १. घर। मकान। २. निवास। उदा०—ढोला ढीली हर किया, मू क्या मनह बिसारि।—ढोलामारू।

†वि० जो जल्दी ही किसी क्रिया की समाप्ति तक पहुँचने को हो। आसन्न। (पूरब) यौ० के अन्त में। जैसे—गिरहर मकान=ऐसा मकान जो जल्दी ही गिर पड़ने को हो।

†वि० [सं० घर] धारण करनेवाला। जैसे—जलहर=जलधर।

†पुं०=हल (खेत जोतने का)। जैसे—हरवाहा।

†पुं०=[सं० स्मर, प्रा० भर] उत्कट आकांक्षा। प्रबल इच्छा।

वि० [फा०] प्रत्येक। एक-एक। जैसे—(क) हर आदमी को एक-एक घड़ी मिली। (ख) हर बार यही जवाव मिला।

पद—**हर एक**=एक एक, प्रत्येक **हर कोई**=प्रत्येक व्यक्ति। **हर दम**=हर समय। प्रतिक्षण। **हर रोज**=प्रतिदिन। **हर हमेशा**=नित्य। सदा।

पुं०[जरमन] अँगरेजी ('मिस्टर' शब्द का जरमन पर्याय। महाशय। जैसे—हर स्ट्रेस्मैन।

हरएँ*—अव्य०[हिं० हरूवा] १. धीरे-धीरे। मंद गति से। २. बिना विशेष बल-प्रयोग किए।

हरक—वि०[सं०] १. हरण करनेवाला। २. ले जानेवाला या पहुँचानेवाला।

पुं० १. चोर। ठग। ३. गणित में भाजक। ४. अपने प्रलयंकर रूप में शिव का एक नाम।

हरकत—स्त्री० [अ०] [बहु० हरकात] १. हिलना-डोलना। गति। चाल। २. वह स्पंदन या कंपन जो क्रियाशीलता तथा सजीवता का सूचक हो। जैसे—अभी नब्ज में हरकत है। ३. अनुचित चेष्टा या व्यवहार। जैसे—अब कभी ऐसी हरकत मत करना।

हरकना†—अ० [?] किसी वस्तु की प्राप्ति की इच्छा करना या उसके लिए आतुर होना। उदा०—जनि बहु हरकहु जनि बहु झनकहु, जनि मन करहु उदास ए।—ग्राम-गीत।

†स०=हटकना। उदा०—उन हरकी हंसि के इतै, इन सौंपी मुसकाय।—बिहारी।

हरकारा—पुं०[फा०] १. चिट्ठी-पत्री या संदेशा ले जानेवाला कर्मचारी। २. आज-कल, वह व्यक्ति जो गाँवों आदि में डाक की चिट्ठियाँ, पार्सल आदि एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाता है। (डाकिए से भिन्न)

हरकेस—पुं० [सं० हरिकेश] एक प्रकार का अगहनी धान।

हरख*—पुं०=हर्ष।

हरखना*—अ० [हिं० हरख+ना (प्रत्य०)] हर्षित होना। प्रसन्न होना।

हरखाना*—स०[हिं० हरखाना] प्रसन्न करना। खुश करना। आनंदित करना।

अ०=हरखना। उदा०—तुरत उठे लछिमन हरखाई।—तुलसी।

हरगिज—अव्य०[फा० हरगिज़] किसी दशा में। कदापि। कभी। (केवल नहिक भाव में और 'न' या 'नहीं' के साथ') जैसे—यह बात हरगिज नहीं हो सकती।

हर-गिरि—पुं०[सं० ष० त०] कैलास पर्वत।

हरि-गिला†—पुं० दे० 'लमटेंक' (पक्षी)।

हर-गोरी-रस—पुं०=रससिंदूर। (वैद्यक)

हर-चंद—अव्य० [फा०] १. कितनी ही तरह से। अनेक प्रकार से। २. बहुत बार। ३. अगरचे। यद्यपि।

हरज†—पुं०=हर्ज।

हरजा—पुं०[फा० हर+जा (जगह)] संगतराशों की वह टाँकी जिससे वे सतह को हर जगह बराबर करते हैं। चौरसी।

†पुं० १. =हर्ज। २.=हरजाना।

हर-जाई—पुं० [फा०] १. हर जगह घूमनेवाला व्यक्ति। २. किसी स्त्री की दृष्टि से उसका वह प्रेमी जो अन्य स्त्रियों से संबंध स्थापित किये हो। ३. व्यभिचारी पुरुष।

स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री।

हर-जाना—पुं० [फा० हर्जानः] वह धन जो किसी को उसकी क्षतिपूर्ति करने के उद्देश्य से दिया जाता हो।

हर-जेवड़ी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी झाड़ी, जिसकी जड़ और पत्तियों का व्यवहार ओषधि के रूप में होता है।

हर-जोता—पुं०[हिं० हल+जोतना] १. वह जो हल जोतने का काम करता हो। २. उजड्ड और गँवार। ३. मुंडा नामक पक्षी।

हरट्ट*—वि०[सं० हृष्ट] हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा। मजबूत।

हरठिया†—पुं० [हिं० रहँट] रहँट के बैल हाँकनेवाला।

हरड़ा†—पुं०=हड़ (हर्रे)।

हरण—पुं०[सं० √हृ (हरण करना)+ल्युट्—अन] १. किसी की वस्तु उसकी इच्छा के विरुद्ध बलपूर्वक ले लेना। छीनना या लूटना। २. किसी को उसकी वस्तु से अनुचित रूप से रहित या वंचित करना। ३. रुपया वसूल करने या और कोई अर्थ सिद्ध करने के लिए किसी व्यक्ति को बलपूर्वक कहीं उठा ले जाना और छिपाकर रखना। (किडनेपिंग) ४. दूर करना। हटाना। जैसे—संकट-हरण। ५. नाश या नष्ट करना। ६. गणित में, किसी संख्या का भाग करना। ७. विवाह के

समय कन्या को दिया जानेवाला दहेज। ८. यज्ञोपवीत के समय बालक को दी जानेवाली भिक्षा।

हरणि—स्त्री०[सं०] मृत्यु। मौत।

हरणीय—वि० [सं० √हृ (हरण करना)+अनीयर] जो हरण किया जा सके या किया जाने को हो।

हरता†—वि०=हर्ता (हरण करनेवाला)।

हरता-धरता—वि० [सं० हर्ता+धर्ता (वैदिक)] १. रक्षा और नाश दोनों करनेवाला। २. जिसे सब कुछ करने का पूरा अधिकार प्राप्त हो। कर्ता-धर्ता।

हरतार†—स्त्री० =हरताल।

हरताल—स्त्री०[सं० हरिताल] पीले रंग का एक प्रसिद्ध चमकीला खनिज पदार्थ जो दवा, रँगाई आदि के काम आता है।

मुहा०—(किसी चीज या बात पर) हरताल लगाना= पूरी तरह से रद्द या व्यर्थ कर देना। जैसे—तुमने मेरे सारे किये-धरे पर हरताल लगा दी।

विशेष—मध्ययुग में प्रतिलिपि, लेखा आदि का जो लिखित अंश मिटाना होता था, उस पर गीली हरताल लगा देते थे, जिससे वह अंश बिलकुल मिट जाता था। उसी से यह मुहा० बना है।

†स्त्री० दे० 'हड़ताली।

हरताली—वि० [हिं० हरताल] हरताल के रंग का।

पुं० उक्त प्रकार का गन्धकी या पीला रंग।

हरतेजस्—पुं० [सं०] पारा। पारद।

हरद*—स्त्री०=हल्दी।

हरदा—पुं०[हिं० हरदी] कीटाणुओं का वह समूह जो पीली या गेरू के रंग की बुकनी के रूप में फसल की पत्तियों पर लगकर उन्हें हानि पहुँचाता है। गेरुई।

हरदिया†—वि०[पुं० हिं० हरदी] हल्दी के रंग का। पीला।

पुं०१. उक्त प्रकार का रंग। उक्त रंग का घोड़ा।

हरदिया देव—पुं० दे० 'हरदौल'।

हरदी†—स्त्री०=हल्दी।

हरदू—पुं०[देश०] एक प्रकार का बड़ा पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत और पीले रंग की होती है। इस लकड़ी से बंदूक के कुंदे, कंघियाँ और नावें बनती हैं।

हरदौल—पुं० [सं० हरदत्त] ओरछा के राजा जुझार सिंह (सन् १६२६–३५ ई०) के छोटे भाई जो बहुत सत्यशील और मातृभक्त थे। इन्हें 'हर-दिया देव' भी कहते हैं।

हरद्वान—पुं० [?] [वि० हरद्वानी] एक प्राचीन स्थान, जहाँ की तलवार प्रसिद्ध थी।

हरद्वानी—वि०[हिं० हरद्वान] हरद्वान में होने या बननेवाला।

स्त्री० हरद्वान में बननेवाली एक तरह की तलवार।

हरद्वार†—पुं०=हरिद्वार।

हरना—स० [सं० हरण]१. किसी की वस्तु उसकी इच्छा के विरुद्ध और बलपूर्वक ले लेना। छीन या लूट लेना। हरण करना। २. दूर करना या हटाना। जैसे—किसी का दुःख हरना। ३. न रहने देना। नष्ट करना। जैसे—किसी के प्राण हरना। ४. ले जाना। वहन करना। ५. हठात् ले लेना। अपने वश में कर लेना। जैसे—किसी का मन हरना= किसी को अपने ऊपर मोहित करना।

वि०[स्त्री० हरनी] हरने या हरण करनेवाला। जैसे—कष्ट-हरनी (भवानी)।

†पुं०=हिरना।

†स०=हारना।

हरनाकस*—पुं०=हिरण्यकशिपु।

हरनाच्छ*—पुं०=हिरण्याक्ष।

हरनी—स्त्री०[हिं० हड़] कपड़ों में हड़ का रंग देने की क्रिया।

स्त्री० 'हरन' या 'हिरन' की मादा।

हरनौटा—पुं०[हिं० हरिन+औटा (प्रत्य०)] हिरन का बच्चा। छोटा हिरन।

हर-परेवरी—स्त्री० [हिं० हर (हल)+पड़ना] किसानों की औरतों का एक टोटका जो वे पानी न बरसने पर करती हैं।

हरपा—पुं०[देश०] सुनारों का तराजू रखने का डिब्बा।

हर-पुजी—स्त्री०[हिं० हर=हल+पूजा] कार्तिक में हल का पूजन जो किसान करते हैं। कार्तिक में किसानों के द्वारा होनेवाली हल की पूजा।

हर-प्रिय—पुं०[सं०] करवीर। कनेर।

हरफ—पुं०[अ० हरफ़] अक्षर। वर्ण।

मुहा०—(किसी पर) हरफ आना=ऐसी स्थिति होना जिसमें किसी पर कोई कलंक या दोष लग सके या उसकी हेठी हो सके। जैसे—किसी की इज्जत पर हरफ आना। हरफ उठाना= अक्षर पहचानकर पढ़ लेना। जैसे—अब तो बच्चा हरफ उठा लेता है। हरफ बनाना=(क) सुन्दर अक्षर लिखना। (ख) अक्षर लिखने का अभ्यास करना। (ग) लिखे हुए अक्षर को बदलकर उसके स्थान पर कोई और अक्षर रखना या लगाना।

हरफ-गीर—वि०[फा० हरफ़गीर] [भाव० हरफगीरी] १. किसी लेख के अक्षर के गुण-दोष दिखाने या बतानेवाला। २. बहुत बारीकी से दोष देखने या पकड़नेवाला। ३. बाल की खाल निकालनेवाला।

हरफा—पुं० [देश०] लट्ठों आदि से घेरकर बनाया हुआ भूसा रखने के लिए स्थान।

हरफ-रेउरी†—स्त्री०=हरफा-रेवड़ी।

हरफा-रेवड़ी—स्त्री० [हरफा ?+हिं० रेवड़ी] १. कमरख की जाति का एक प्रकार का वृक्ष। २. उक्त वृक्ष के छोटे खट-मीठे सफ़ेद फल जो देखने में रेवड़ी के आकार के होते हैं।

हर-बर†—स्त्री०=हड़बड़ी।

हरबराना†—अ०, स०=हड़बड़ाना।

हर-बल—पुं०=हरावल।

हरबा—पुं० [अ० हर्बः] १. अस्त्र। हथियार। २. पुरुष की लिंगेंद्रिय। (बाजारू)

हर-बीज—पुं० [सं० ष० त०] पारा। पारद।

हर-बोंग—वि० [हिं० हर, हल+बोंग=लठ] अक्खड़, उजड्ड और गँवार।

पुं० १. उत्पात। उपद्रव। २. कोलाहल। हो-हल्ला। ३. बहुत बड़ी अव्यवस्था या गड़बड़ी।

क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

हर-बोला—पुं०[सं० हर=महादेव+हिं० बोलना] मध्ययुग के हिंदू योद्धा या सैनिक की संज्ञा। उदा०—बुंदेले हरबोलों के मुंह से हमने सुनी कहानी थी।—सुभद्राकुमारी।

विशेष—मराठा युग के सैनिक 'हर हर महादेव' नाद करते हुए शत्रुओं पर आक्रमण करते थे। इसलिए वे लोग 'हरबोला' कहलाते थे।

हर-भूली—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का धतूरा जिसके बीज दवा के काम आते हैं।

हरम—पुं० [सं० हर्म्य से अ० ?] १. राज-प्रासाद या महल का वह हिस्सा जिसमें रानियाँ रहती हैं। जनानखाना। २. जनानखाने में रहनेवाली स्त्रियाँ।

स्त्री० १. स्त्री। पत्नी। २. रखेली। ३. दासी।

हरम-जदगी—स्त्री०[फा० हरामजादः] हरामजादा की तरह की शरारत। बदमाशी।

हर-मल—पुं०[देश०]१. डेढ़-दो हाथ ऊँची एक प्रकार की झाड़ी जिसकी पत्तियाँ ओषधि के रूप में काम आती हैं। इसके बीजों से एक प्रकार का लाल रंग भी निकलता है। २. उक्त के बीजों से निकला हुआ लाल रंग।

हरम-सरा—स्त्री०[अ०] अन्तःपुर। जनान-खाना।

हरयाल†—स्त्री०=हरियाली।

†वि० =हरा-भरा।

हरवल—पुं० [हिं० हर=हल+औल (प्रत्य०)] वह रुपया जो हलवाहों को बिना ब्याज के पेशगी या उधार दिया जाता है।

†पुं०=हरावल।

हरवली—स्त्री०[तु० हरावल] सेना की अध्यक्षता। फौज की अफसरी।

हर-वल्लभ—पुं०[सं०] संगीत में ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

हरवा—वि०=हरुआ (हलका)।

†पुं०=हार (गले में पहनने का)।

हरवाना—स०[हिं० हारना] ऐसा कार्य करना जिससे कोई हार जाय।

†अ०, स०=हड़बड़ाना।

हरवाल—पुं०[देश०] एक प्रकार की घास। सुरारी।

हरवाह†—पुं०=हलवाहा।

हरवाहन—पुं०[सं० ष० त०] शिव के वाहन अर्थात् नन्दी।

हरवाहा†—पुं०=हलवाहा।

हरवाही—स्त्री०[हिं० हरवाह=ई (प्रत्य०)] हलवाहे का काम या मजदूरी।

हर-शंकरी—स्त्री०[सं० हरशंकर] पीपल और पाकड़ के एक साथ लगे हुए पेड़ जो हिन्दुओं में पवित्र माने जाते हैं।

हर-शेखर—स्त्री० [सं० हरशेखर+अच्—टाप्] गंगा (जो शिव के सिर पर रहती हैं)।

हरष†—पुं०=हर्ष।

हरषना*—अ०[हिं० हरष, हर्ष+ना (प्रत्य०)] १. हर्षित होना। प्रसन्न होना। २. पुलकित या प्रफुल्लित होना।

हरषाना*—स०[सं० हर्ष] हर्षित करना। प्रसन्न करना।

†अ०=हरषना।

हरषित†—वि० हर्षित।

हरसना†—अ०, स०=हरषना।

हरसा†—पुं०=हरीष।

हरसाना†—अ०, स०=हरषाना।

हर-सिंगार—पुं०[सं० हार+सिंगार]१. मँझोले कद का एक प्रकार का पेड़। यह शरद ऋतु में फूलता है। २. उक्त वृक्ष के छोटे फूल जो बहुत सुगंधित होते हैं।

हर-सौधा†—पुं०[हिं०हरिस] कोल्हू का वह पाटा जिस पर बैठकर बैल हाँके जाते हैं।

हरहट†—वि० [हिं० हटकना] नटखट।

हरहठ†—वि० [सं० हृष्ट] १. हट्टा-कट्टा। २. प्रबल और उद्दंड या दुष्ट।

हरहराना—अ०[अनु०] 'हरहर' की आवाज होना।

स० 'हरहर' शब्द उत्पन्न करना।

हरहा—पुं०[देश०] भेड़िया। वृक।

†वि०=हरहट।

हरहाया—वि० [हिं० हरहा] [स्त्री० हरहाई] (पशु) जो चारों ओर उपद्रव और फसल आदि की हानि करता-फिरता हो। हरहट। जैसे—हरहाया साँड़, हरहाई भैंस।

हर-हार—पुं० [सं० ष० त०] १. शिव का हार। सर्प। साँप। २. शेषनाग।

हर-हारा—पुं०[स्त्री० हरहारी] दे० 'होलिहार'।

हर-होरवा†—पुं०[देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

हरांस†—पुं० [अ० हर=गरम होना+सं० अंश] मंद ज्वर। हरारत।

हरा—वि०[सं० हरित] [स्त्री० हरी] १. जो ताजी उगी हुई घास या वृक्ष में लगी हुई पत्तियों के रंग का हो। हरित। सब्ज। जैसे—हरा कपड़ा, हरा कागज। २. (स्थान) जिसमें उक्त प्रकार और रंग की पत्तियाँ आदि दूर तक फैली हुई हों। हरियाली से भरा हुआ। (ग्रीन) जैसे—हरा खेत, हरा मैदान।

मुहा०—हरी-हरी सूझना=निराशा, विपत्ति आदि के समीप होने पर भी उसका कोई ज्ञान न होना। संकट आदि की कल्पना या ज्ञान न होने के कारण निश्चिन्त और प्रसन्न रहना। जैसे—यहाँ जान आफत में पड़ी है और तुम्हें हरी-हरी सूझ रही है। **हरे में आँखें फूलना या होना**=दे० ऊपर 'हरी-हरी सूझना'।

३. (दाना, पत्ता या फल) जो अभी मुरझाया या सूखा न हो, और फलतः कठोर न हुआ हो।

पद—हरा-भरा। (देखें)

४. (घाव) जो अभी भरा और सूखा न हो। ५. (मनुष्य अथवा उसका मन) जिसकी थकावट या शिथिलता मिट गई हो और जो फिर से प्रफुल्लित या प्रसन्न हो गया हो। जैसे—(क) अच्छी, ठंढी और साफ हवा लगने से आदमी हरा हो जाता है। (ख) गरमी में शरबत पीने से मन हरा हो जाता है।

पुं० १. ताजी घास या पत्ती का सा रंग। सब्ज रंग। २. उक्त प्रकार के रंग का घोड़ा।

स्त्री०[हर का स्त्री ०] पार्वती।

पुं० [हिं० हार] गले में पहनने का हार। उदा०—अपने कर मोतिन गुह्यो, भयो हरा हर हार।—विहारी।

†वि० [सं० हर, हिं० हारना] १. रहित या शून्य। २. जिसका कुछ हरण हो गया हो, अर्थात् चला गया या निकल चुका हो। जैसे—सत-हरा=जो सत्य से रहित हो चुका हो या सत्य छोड़ चुका हो।

वि०[सं० हर (प्रत्य०)] एक विशेषण जो कुछ संख्या-वाचक शब्दों के अंत में लगकर उनके उतनी बार होने का भाव प्रकट करता है। जैसे—दोहरा, तेहरा, चौहरा आदि।

हराई—स्त्री० [हिं० हल] खेत में हल जोतने की क्रिया या भाव। (गिनती के विचार से) जैसे—दोहराई खेत जोतना।

स्त्री०[हिं० हारना] हारने की क्रिया, दशा या भाव। हार।

हराठा†—वि० [सं० हृष्ट] [स्त्री० हराठी] हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा और मजबूत। (पूरब)

हरानत—पुं०[सं०] रावण का एक नाम।

हराना—स०[हिं० हारना का स०] १. प्रतियोगिता, युद्ध आदि में प्रतिद्वंद्वी या शत्रु को पछाड़ना या परास्त करना। २. दौड़ा-दौड़ाकर शिथिल और पस्त करना। (पूरब)

संयो० क्रि०—डालना।

हरापन—पुं०[हिं० हरा+पन(प्रत्य०)]हरे होने की दशा, गुण या भाव। हरितता। सब्जी।

हरा-भरा—वि०[हिं०] [स्त्री० हरी-भरी] १. जो हरे पेड़-पौधों और घास आदि से भरा हो। २. सब प्रकार से प्रफुल्लित, सम्पन्न और सुखी। जैसे—तेरी गोद हरी-भरी रहे।

हराम—वि०[अ०]१. जो इस्लाम धर्म-शास्त्र में वर्जित या त्याज्य हो। निषिद्ध। 'हलाल' का विपर्याय। ३. बुरा। दूषित। ३. बहुत ही अप्रिय और कटु।

मुहा०—(कोई बात) हराम करना=कोई कार्य परम कष्टदायक और फलतः असंभव कर देना। जैसे—तुमने हमारा खाना-पीना हराम कर दिया है।

पुं०१. अधर्म। पाप। जैसे—चोरी करना या झूठ बोलना हराम है। २. धर्मशास्त्र द्वारा निषिद्ध की हुई चीज या बात।

पद—हराम का=(क) जो बेईमानी से प्राप्त हो। (ख) मुफ्त का। जैसे—हराम का खाना और मसजिद में सोना।

३. स्त्री और पुरुष का अनुचित संबंध। व्यभिचार। जैसे—हराम-जादा। हराम का लड़का।

पद—हराम का पेट=व्यभिचार के कारण रहनेवाला गर्भ।

४. सूअर, जिसका मांस मुसलमानों के लिए निषिद्ध और वर्जित है।

हराम-कार—पुं०[अ०+फा०] १. निषिद्ध कर्म करनेवाला। २. व्यभिचारी।

हराम-कारी—स्त्री०[अ० +फा०] १. निषिद्ध कर्म। पाप। २. व्यभिचार।

हराम-खोर—पुं० [अ० हराम+फा० खोर] [भाव० हरामखोरी] १. हराम की कमाई खानेवाला। २. बिना पूरा परिश्रम किये या प्रतिफल दिये मुफ्त का माल खानेवाला। मुफ्तखोर।

हराम-खोरी—स्त्री० [अ० हराम+फा० खोरी]हराम-खोर होने की दशा या भाव।

हराम-जादा—पुं० [अ० हराम+फा० जादाः] [स्त्री० हरामजादी] १. व्यभिचार से उत्पन्न पुरुष। दोगला। २. बहुत बड़ा दुष्ट या पाजी।

हरामी—वि० [अ० हराम] १. हराम का। हराम संबंधी। जैसे—हरामी कमाई। २. हराम या व्यभिचार से उत्पन्न। दोगला। वर्ण-संकर। ३. बहुत बड़ा दुष्ट, नीच और पाजी।

पद—हरामी का पिल्ला=(क) दोगला। वर्ण-संकर। (ख) बहुत बड़ा दुष्ट या पाजी।

हरारत—स्त्री० [अ०] १. गर्मी। ताप। २. मन्द या हलका ज्वर। थोड़ा बुखार। जैसे—आज हमें कुछ हरारत मालूम होती है।

हरावर—पुं० १.=हरावल। २.=हड़ावर।

हरावल—पुं० [तु०] १. सेना का अगला भाग। २. सिपाहियों का वह दल, जो फौज में सब से आगे रहता है। ३. मध्य-युग में ठगों या डाकुओं का सरदार, जो आगे चलता था।

हरास—पुं० [फा० हिरास] १. भय। डर। २. आशंका। खटका। ३. दुःख। विषाद। ४. ना-उम्मेदी। निराशा।

†पुं० दे० 'हराँस'।

†पुं०=ह्रास।

हराहा†—वि० [हिं० हरहट] (पशु) जो प्रायः सींग से आक्रमण करता हो। मरकहा।

हराहर†—वि०=हलाहल।

†स्त्री० [हिं० हारना] क्लान्ति। थकावट।

पुं०=हलाहल।

हरि—वि० [सं० √हृ (हरण करना)+इन्] १. पीला। २. बादामी या भूरा। ३. हरा।

पुं० १. ईश्वर। भगवान्। २. विष्णु। ३. इन्द्र। ४. सूर्य। ५. चन्द्रमा। ६. किरण। ७. शेर। सिंह। ८. सिंह राशि। ९. अग्नि। आग। १०. वायु। हवा। ११. श्रीकृष्ण। १२. रामचन्द्र। १३. शिव। १४. शुक्र ग्रह। १५. यम। १६. पुराणानुसार एक वर्ष या भू-भाग। १७. एक प्राचीन पर्वत। १८. अठारह वर्णों का एक प्रकार का छंद या वृत्त। १९. बौद्धों के अनुसार एक बहुत बड़ी संख्या। २०. हंस। २१. मोर। २२. तोता। २३. साँप। २४. मेंक। २५. गीदड़।

अव्य० [हिं० हरुए] धीरे। आहिस्ते। उदा०—सूखा हिया हार या भारी। हरि-हरि प्रान तजहिं सब नारी।—जायसी।

हरिअर†—वि० दे० 'हरा' (रंग)। उदा०—यह तन हरिअर खेत, तरुनी हरनी चर गई।

मुहा०—हरिअर सूझना*=दे० 'हरा' के अन्तर्गत 'हरी-हरी सूझना'।

†पुं० हरा रंग।

हरिअराना†—अ०=हरिआना (हरा होना)।

स० हरा करना।

हरिअरी†—स्त्री० [हिं० हरिअर+ई (प्रत्य०)] =हरियाली।

हरिआना†—अ० [हिं० हरिअर] १. हरा होना। सब्ज होना। २. हरे फूल-पत्तों की तरह ताजा होना। ३. ताजगी तथा प्रसन्नता से भर उठना।

†स० हरा करना।

पुं०=हरियाना।

हरिआली—स्त्री० [सं० हरित+आलि]=हरियाली।

हरिक—पुं० [सं०] १. लाल या भूरे रंग का घोड़ा। २. चोर। जुआरी।

हरि-कथा—स्त्री० [सं० ष० त०] ईश्वर या उसके अवतारों के गुण, यश, आदि का वर्णन या चर्चा। उदा०—हरि, अनन्त हरि-कथा अनन्ता।—तुलसी।

हरि-कर्म—पुं० [सं० मध्य० स०] यज्ञ।

हरिकारा†—पुं०=हरकारा।

हरि-कीर्तन—पुं० [सं० ष० त०] भगवान् या उनके अवतारों की स्तुति का गान। भगवान् का भजन।

हरि-केलीय—पुं० [सं० हरिकेलि+छ—ईय] बंग देश का एक नाम।

हरि-केश—वि० [सं० ब० स०] भूरे बालोंवाला।

पुं० शिव।

हरि-कांता—स्त्री० [सं० ब० स०] एक प्रकार की लता।

हरि-क्षेत्र—पुं० [सं०] पटना के पास का एक तीर्थ। हरिहरक्षेत्र।

हरि-गंध—पुं० [सं० ब० स०] पीले चन्दन का पेड़ और लकड़ी।

हरि-गीता—स्त्री०=हरि-गीतिका (छन्द)।

हरि-गीतिका—स्त्री० [सं०] पिंगल में एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में २८ मात्राएँ होती हैं, अंत में एक लघु और एक गुरु होता है और १६ मात्राओं पर यति होती है। इसकी पाँचवीं, उन्नीसवीं और छब्बीसवीं मात्राएँ लघु होनी चाहिएँ।

हरिचंद†—पुं०=हरिश्चन्द्र।

हरि-चन्दन—पुं० [सं० ष० त०] १. एक प्रकार का बढ़िया चन्दन। पीले चन्दन का पेड़ और लकड़ी।

पुं० १. स्वर्ग-स्थित पाँच प्रकार के पेड़ों में से एक। २. कमल का पराग। ३. केसर। ४. चन्द्रमा की चाँदनी।

हरि-चर्म—पुं० [सं० ष० त०] व्याघ्र चर्म। बाघंबर।

हरि-चाप—पुं० [सं० ष० त०] इंद्र-धनुष।

हरिजन—पुं० [सं० ष० त०] १. भगवान् का बंदा। २. वह जिसे ईश्वरीय कृपा से भगवद्-भक्ति सुलभ हुई हो। भगवान् का भक्त। उदा०—इन मुसलमान हरि-जनन पर कोटिन्ह हिंदुन वारिए।—भारतेन्दु। ३. आज कल पद-दलित तथा अस्पृश्य हिंदू जातियों की सामूहिक संज्ञा।

हरिजाई†—पुं०=हरजाई।

हरिण—पुं० [सं० √हृ (हरण करना)+इनन्] [स्त्री० हरिणी] १. मृग। हिरन। २. हंस। ३. सूर्य। ४. विष्णु। ५. शिव। ६. पुराणानुसार एक लोक।

वि० हरा (रंग)।

हरिणक—पुं० [सं०] हिरन का बच्चा या छोटा हिरन।

हरिण-कलंक—पुं० [सं० ब० स०] चन्द्रमा।

हरिण-लता—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का समवृत्त जिसके विषम चरणों में तीन सगण, एक लघु और एक गुरु होता है तथा सम में एक नगण, दो भगण और एक रगण होता है।

हरिण-लक्षण, हरिण-लांछन—पुं० [सं०] चन्द्रमा।

हरिण-हृदय—वि० [सं० ब० स०] जिसका हृदय हिरन के जैसा हो अर्थात् भीरु।

हरिणांक—पुं० [सं० ब० स०] चन्द्रमा।

हरिणाक्ष—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० हरिणाक्षी] जिसकी आँखें हिरन की आँखों के समान सुन्दर हों।

हरिणाश्व—पुं० [सं०] वायु। ।

हरिणी—स्त्री० [सं० हरिण-ङीष्] १. मादा हिरन। हिरन की मादा। २. पीली चमेली। ३. मजीठ। ४. काम-शास्त्र में लिखित चार प्रकार की नायिकाओं में से एक। वि० दे० 'चित्रिणी'।

हरिणेश—पुं० [सं० ष० त०] सिंह। शेर।

हरित—वि० [सं० √हृ+इति] १. भूरे या बादामी रंग का। कपिश। २. हरे रंग का। हरा।

पुं० १. सिंह। शेर। २. सूर्य। ३. सूर्य के रथ का घोड़ा। ४. मरकत नामक रत्न। पन्ना। ५. विषाद। ६. एक प्रकार का तृण। ७. हल्दी।

हरित—वि० [सं० हृ+इतच्] १. भूरे या बादामी रंग का। २. हरा। ३. पीला। ४. ताजा। जैसे—हरित गोमय (गोबर)।

पुं० १. बारहवें मन्वन्तर का एक देवगण। २. शेर। सिंह। ३. फौज। सेना। ४. हरियाली।

हरितक—पुं० [सं०] १. शाक। साग। २. हरी घास।

हरित-कपिश—वि० [सं० ब० स०] पीलापन या हरापन लिए भूरा। लोहे के रंग का।

हरितकी—स्त्री० दे० 'हरीतकी'।

हरित-मणि—पुं० [सं० मध्य० स०] मरकत। पन्ना।

हरिता—स्त्री० [सं० हरि+तल्—टाप्] १. हरि या विष्णु का भाव। विष्णुपन। २. हल्दी। ३. नीली दूब। ४. भूरी गौ। ५. हरा अंगूर। ६. संगीत में एक प्रकार की स्वर-भक्ति।

हरिताभ—वि० [सं० ब० स०] जिसमें हरी आभा हो। हरी आभा से युक्त।

हरिताल—पुं० [सं० ब० स०] १. ऐसा कबूतर, जिसका रंग कुछ-कुछ पीलापन या हरापन लिए हो। २. हरताल नाम की उपधातु।

हरितालक—पुं० [सं०] १. हरिताल (कबूतर)। २. अभिनेता-अभिनेत्रियों की सजावट।

हरितालिका—स्त्री० [सं० ब० स०—कण् इत्व—टाप्] भादों के शुक्ल पक्ष की तृतीया जो स्त्रियों के लिए व्रत का दिन है। तीज।

हरिताली—स्त्री० [सं०] १. आकाश में मेघ आदि की पतली धज्जी या रेखा। २. वायु। हवा। ३. तलवार का धारवाला अंश या भाग। ४. मालकंगनी। ५. हरतालिका तीज।

हरिताश्म(न्)—पुं० [सं० मध्य० स०] १. मरकत मणि। पन्ना। २. तूतिया।

हरिताश्व—वि० [सं० ब० स०] जिसके घोड़े का रंग पीला या हरा हो।

पुं० सूर्य।

हरि-तुरंग—पुं० [सं०] इन्द्र।

हरितोपल—पुं० [सं० मध्य० स०] मरकत। पन्ना।

हरि-दर्भ—पुं० [सं० ब० स०] १. सूर्य। २. सब्जा घोड़ा।

हरिदश्व—पुं० [सं० ब० स०] १. सूर्य। २. आक या मदार का पेड़।

हरि-दास—पुं० [सं० ष० त०] १. विष्णु का भक्त या सेवक। २. दक्षिण

भारत में वह कीर्तनकार, जो भजन आदि गाकर लोगों को धार्मिक और पौराणिक कथाएँ सुनाता हो।

हरि-दिन, हरि-दिवस—पुं० [सं०] विष्णु का दिन, अर्थात् किसी पखवारे की एकादशी।

हरि-दिशा—स्त्री० [सं० ष० त०] पूर्व दिशा जिसमें इन्द्र का निवास माना जाता है।

हरि-देव—पुं० [सं० ब० स०] १. विष्णु। २. श्रवण नक्षत्र।

हरिद्र—पुं० [सं०] पीला चन्दन।

हरिद्रक—पुं० [सं०] पीला चन्दन।

हरिद्रा—स्त्री० [सं०] १. हल्दी। २. जंगल। वन। ३. कल्याण। मंगल। ४. सीसा नामक धातु। ५. एक प्राचीन नदी।

हरिद्रा-गणपति—पुं० [सं० मध्य० स०] गणपति या गणेश जी की एक मूर्ति जिस पर मंत्र पढ़कर हलदी चढ़ाई जाती है।

हरिद्रा-द्वय—पुं० [सं० ष० त०] हलदी और दारुहलदी।

हरिद्रा-प्रमेह—पुं० [सं० मध्य० स०] प्रमेह का एक भेद जिसमें हलदी के समान पीला पेशाब होता है और जलन होती है।

हरिद्रा-मेह—पुं० = हरिद्रा-प्रमेह।

हरिद्रा-राग—वि० [सं० उपमि० स०] १. हल्दी के रंग का। २. फलतः जिस पर पक्का रंग न चढ़ा हो। ३. जिस पर प्रेम का रंग पूरा-पूरा न चढ़ा हो।

पुं० पूर्व राग का एक भेद, जिसमें प्रेम हल्दी के रंग की तरह कच्चा होता है।

हरि-द्वार—पुं० [सं० ष० त०] १. हरि का द्वार। विष्णु-लोक का द्वार। २. पश्चिमी उत्तरप्रदेश में गंगा-तट पर स्थित एक प्रसिद्ध तीर्थ, जिसके संबंध में प्रसिद्ध है कि उसके सेवन से विष्णु-लोक का द्वार खुल जाता है।

हरि-धनुष—पुं० [सं० ष० त०] इन्द्र-धनुष।

हरि-धाम—पुं० [सं० ष० त०] विष्णु-लोक। वैकुण्ठ।

हरिन—पुं० [सं० हरिण] [स्त्री० हरनी, हरिनी] कुछ कालापन लिए पीले रंग का एक प्रसिद्ध सींगवाला चौपाया जो चौकड़ियाँ भरता हुआ बहुत तेज दौड़ता है और जिसके छोटे-बड़े अनेक भेद और उपभेद हैं। मृग। हिरन।

मुहा०—हरिन हो जाना=हरिन की तरह तेज भागते हुए जल्दी से गायब हो जाना। (ख) चट-पट दूर हो जाना। जैसे—नशा हरिन हो जाना।

स्त्री० [हिं० हरा ?] पीलापन लिए हरे रंग की एक भारी गैस या वाष्प जिसमें कुछ उग्र और अप्रिय गंध भी होती है। (क्लोरिन)

हरि-नक्षत्र—पुं० [सं० ष० त०] श्रवण नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता देवता विष्णु हैं।

हरि-नख—पुं० [सं० ष० त०] १. सिंह या बाघ का नाखून। २. उक्त का बनाया हुआ जंत्र या तावीज, जो गले में पहनते हैं। बघ-नहाँ।

हरि-नग*—पुं० [सं०] सर्प की मणि।

हरिन-हर्रा—पुं० [देश०] सुहाग नाम का वृक्ष जिसके बीजों से जलाने का तेल निकलता है।

हरिनाकुस†—पुं०=हिरण्यकशिपु।

हरिनाक्ष†—पुं० = हिरण्याक्ष।

हरि-नाथ—पुं० [सं० ष० त०] (बंदरों में श्रेष्ठ) हनुमान्।

हरि-नाम—पुं० [सं० ष० त०] ईश्वर का नाम।

हरि-नारायणी—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

हरिनी—स्त्री० [हिं० हरिन] १. मादा हिरन। स्त्री जाति का मृग। २. जूही का फूल। ३. बाज पक्षी की मादा।

हरिन्मणि—पुं० [सं०] मरकतमणि। पन्ना।

हरि-पद—पुं० [सं० ष० त०] १. विष्णु-लोक। वैकुण्ठ। २. एक प्रकार का अर्धसम मात्रिक छन्द जिसके पहले और तीसरे चरणों में १६-१६ तथा दूसरे और चौथे चरणों में ११-११ मात्राएँ होती हैं।

हरिपुर—पुं० [सं० ष० त०] विष्णु-लोक। वैकुण्ठ।

हरि-पैड़ी—स्त्री० [हिं० हरि+पैड़ी=सीढ़ी] हरिद्वार तीर्थ में गंगा का एक विशेष घाट जहाँ के स्नान का बहुत माहात्म्य है।

हरि-प्रस्थ—पुं० [सं०] इन्द्र-प्रस्थ।

हरि-प्रिय—पुं० [सं० ष० त०] १. कदंब। २. गुलदुपहरिया। ३. शंख। ४. सन्नाट। बकतर। ५. पागल। विक्षिप्त। ६. मूर्ख व्यक्ति। ७. संगीत में कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

हरि-प्रिया—स्त्री० [सं० ष० त०] १. विष्णु की प्रिया अर्थात् लक्ष्मी। २. तुलसी। ३. पृथ्वी। ४. मधु। शहद। ५. मद्य। शराब। ६. द्वादशी तिथि। ७. लाल चन्दन। ८. मात्रिक सम दण्डक (छन्द) का एक प्रकार या भेद जिसके प्रत्येक चरण में १२-१२-१२ और १० के विराम से कुल ४६ मात्राएँ होती हैं।

हरि-प्रीता—स्त्री० [सं०] ज्योतिष में एक शुभ मुहूर्त। अभिजित्।

हरि-बीज—पुं० [सं० ष० त० अच् वा] हरताल।

हरि-बोधिनी—स्त्री० [सं० हरि√बुध् (ज्ञान करना)+णिच्–णिनि-ङीप्] कार्त्तिक शुक्ल एकादशी। देवोत्थान एकादशी।

हरि-भक्त—पुं० [सं० ष० त०] [भाव० हरिभक्ति] विष्णु या भगवान् का प्रभक्त। ईश्वर का प्रेमी।

हरि-भक्ति—स्त्री० [सं० ष० त०] विष्णु या ईश्वर की भक्ति। ईश्वर-प्रेम।

हरि-भुज्—पुं० [सं० हरि√भुज्+क्विप्] साँप। सर्प।

हरि-मंथ—पुं० [सं० ब० स०] १. अग्नि-मंथ या गनियारी का वृक्ष। २. मटर। ३. चना। ४. एक प्राचीन जनपद।

हरिमा(मन्)—स्त्री० [सं०] १. पीलापन। २. हरापन।

हरि-मेध—पुं० [सं०] १. अश्व-मेध यज्ञ। २. विष्णु।

हरिय—पुं० [सं०] पिंगल वर्ण का घोड़ा।

हरियर†—पुं०=हरीरा।

वि० हरा।

हरियराना—अ०=हरिआना (हरा होना)।

हरियल†—वि०=हरिअर (हरा)।

†पुं०=हारिल (पक्षी)।

हरिया†—पुं० [हिं० हर (हल)] हल जोतनेवाला। हलवाहा।

हरियाई†*—स्त्री०=हरियाली।

हरिया थोथा—पुं० [हिं० हरा+थोथा] नीला थोथा। तूतिया।

हरि-यान—पु० [सं० ष० त०] (विष्णु के वाहन) गरुड़।

हरियाना*—अ० [हिं० हरिअर] १. पेड़-पौधों का हरा होना।

२. प्रफुल्लित या प्रसन्न होना। उदा०—मख राखन को रंग पाइ नरपति हरि आने।—रत्ना०।

स० १. हरा-भरा करना। २. प्रसन्न करना।

पुं० दे० 'बाँगड़' (प्रदेश) जहाँ की गौएँ और भैंसें प्रसिद्ध हैं।

हरियानी—वि० [हिं० हरियाना प्रदेश] 'हरियाना' अर्थात् बाँगड़ प्रदेश का। बाँगड़ू।

स्त्री०=बाँगड़ (बोली)।

हरियारी†—स्त्री०=हरियाली।

हरियाला—वि० [हिं० हरा] हरे रंग का। हरा।

हरियाली—स्त्री० [हिं० हरियाला] १. हरे-भरे पेड़-पौधों का विस्तृत फैलाव या समूह। २. उक्त के सुखद प्रभाव के आधार पर आनन्द और प्रसन्नता। उदा०—भोला सुहाग इठलाता हो, ऐसी हो जिसमें हरियाली।—कोई कवि।

मुहा०—हरियाली सूझना=कठिन अवसर में भी उमंग, प्रसन्नता या दूर की असंभव बातें सूझना। हरी-हरी सूझना।

३. चौपायों को खिलाया जानेवाला हरा चारा। ४. दूब।

हरियाली-तीज—स्त्री० [हिं० हरियाली+तीज] भादौ सुदी तीज। हरतालिका तीज।

हरियावं—पुं० [देश०] मध्य युग में फसल की एक प्रकार की बँटाई जिसमें ९ भाग असामी और ७ भाग जमींदार लेता था।

हरिला—पुं०=हारिल (पक्षी)।

हरि-लीला—स्त्री० [सं० ष० त०] १. ईश्वरीय लीला। २. एक प्रकार का समवृत्त वर्णिक छन्द, जिसके प्रत्येक चरण में तगण, मगण, दो जगण और गुरु लघु वर्ण होते हैं। इसके अंतिम लघु को गुरु करने पर वसन्ततिलका छन्द बन जाता है।

हरि-लोक—पुं० [सं० ष० त०] विष्णु-लोक। बैकुण्ठ।

हरिलोचन—पुं० [सं० ब० स०] १. केकड़ा। २. उल्लू।

हरि-वंश—पुं० [सं० ष० त०] १. कृष्ण का कुल। २. हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध धार्मिक ग्रन्थ जो महाभारत का परिशिष्ट और एक उप-पुराण माना जाता है; और जिसमें श्रीकृष्ण तथा उनके कुल के यादवों का वर्णन है।

हरि-वर—पुं० [सं०] १. ईश्वर का भक्त। हरि-भक्त। २. कोयल।

हरि-वर्ष—पुं० [सं०] पुराणानुसार जम्बू द्वीप के नौ खण्डों में से एक।

हरि-वल्लभा—स्त्री० [सं० ष० त०] १. लक्ष्मी। २. तुलसी। ३. अधिक मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

हरि-वास—पुं० [सं० ब० स०] अश्वत्थ या पीपल जिसमें विष्णु का निवास माना गया है।

हरि-वासर—पुं० [सं० ष० त०] विष्णु का दिन अर्थात् एकादशी।

हरि-वाहन—पुं० [सं० ष० त०] १. विष्णु का वाहन अर्थात् गरुड़। २. सूर्य। ३. इन्द्र।

हरि-शंकर—पुं० [सं० द्व० स०] विष्णु और शिव का युग्म।

हरि-शयनी—स्त्री० [सं० ब० स०] आषाढ़ शुक्ल एकादशी। कहते हैं की इस दिन विष्णु सो जाते हैं और चार महीने बाद देवोत्थान एकादशी को जागते हैं।

हरिशर—पुं० [सं०] शिव। महादेव।

हरिश्चंद्र—वि० [सं०] सोने की सी चमकवाला। स्वर्णाभ। (वैदिक)

पुं० सूर्य-वंश के एक प्रसिद्ध राजा, जो बहुत बड़े दानी और सत्य-निष्ठ थे। ये त्रिशंकु के पुत्र थे; और इन्हें अपनी सत्य-निष्ठा के लिए बहुत अधिक कष्ट सहने पड़े थे।

हरिष—पुं० [सं०] हर्ष।

हरिषेण—पुं० [सं०] १. विष्णु-पुराण के अनुसार दसवें मनु के पुत्रों में से एक। २. जैन पुराणों के अनुसार भारत के दस चक्रवर्तियों में से एक।

हरिस—स्त्री० [सं० हलीषा] १. हल का वह लम्बा लट्ठा, जिसके एक सिरे पर फालवाली लकड़ी और दूसरे सिरे पर जूआ अटका रहता है। २. हलके हरिस की तरह का टुकड़ा जो बैल-गाड़ी में भी होता है।

हरि-सिंगार—पुं०=हरसिंगार (पेड़ और फूल)।

हरि-सुत—पुं० [सं० ष० त०] १. श्रीकृष्ण के पुत्र, प्रद्युम्न। २. अर्जुन जो इन्द्र के अंश से उत्पन्न माने गये हैं।

हरि-हंस—पुं० [सं०] प्रातःकालीन सूर्य। बाल-सूर्य। उदा०—हरि हंस सावक ससि हर हीर।—प्रिथीराज।

हरिहर-क्षेत्र—पुं० [सं० मध्य० स०] पटने के पास का एक तीर्थ स्थान जहाँ कार्तिकी पूर्णिमा को गंगा-स्नान और भारत का एक बहुत बड़ा मेला होता है। यहाँ हाथी, घोड़े आदि जानवर बिकने के लिए आते हैं। कहते हैं कि गज और ग्राहवाली पौराणिक घटना यहीं हुई थी।

हरि-हरित—पुं० [सं०] बीर-बहूटी। इन्द्र-वधू।

हरिहाया—वि० [स्त्री० हरिहाई]=हरहाया।

हरि—स्त्री० [सं०] १. कश्यप की क्रोधवशा नाम की पत्नी के गर्भ से उत्पन्न दस कन्याओं में से एक, जिससे सिंह, बन्दरों आदि की उत्पत्ति मानी गई है। २. चौदह वर्णों का एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में जगण, रगण, जगण, रगण और अंत में लघु गुरु होते हैं।

स्त्री० [हिं० हर=हल] मध्ययुग में वह परिपाटी जिसके अनुसार असामी या खेतिहर अपना हल और बैल ले जाकर जमींदार के खेत जोतते हैं।

स्त्री० सं० 'हर' का हिं० स्त्री०। उदा०—हरी थी वह हर की। (केसर की पहेली)

†पुं०=हरि।

वि०=हिं० 'हरा' का स्त्री०।

हरी-कसीस—स्त्री०=हीरा-कसीस।

हरी-केन—पुं० [अं० ह्यरिकेन] एक प्रकार की लालटेन जिसकी बत्ती में हवा का झोंका नहीं लगता।

हरी खाद—स्त्री० [हिं०] खेती के काम के लिए नील, मूँग, सन आदि के कुछ विशिष्ट पौधे जो थोड़े बड़े होने पर हल जोत कर खेत की मिट्टी में खाद के रूप में मिला दिये जाते हैं। (ग्रीन मैन्योर)

हरी-चाह—स्त्री० [हिं० हरी+चाह] एक प्रकार की घास, जिसकी जड़ में नींबू की सी सुगंध होती है। गंध-तृण।

हरी-चुग—वि० [हिं० हरी (हरियाली)+चुगना] वह जो केवल अच्छे समय में साथ दे। सम्पन्न अवस्था में साथ देनेवाला। फलतः स्वार्थी।

हरीत†—पुं०=हारीत।

हरीतकी—स्त्री० [सं० हरि√ई (गमनादि)+क्त—कन्ङीष्] हड़। हर्रें।

हरीतिमा—स्त्री० [सं०] १. हरापन। २. हरियाली।

हरीफ़—पुं० [अ० हरीफ़] १. दुश्मन। शत्रु। २. प्रतिद्वंद्वी।

हरी-बुलबुल—स्त्री०=हरेवा. (पक्षी)।

हरीरा—पुं० [अ० हरीरः] दूध को औटाकर तथा उसमें कुछ विशिष्ट मसाले और मेवे डालकर बनाया जानेवाला वह पेय, जो मुख्य रूप से प्रसूता स्त्रियों को पिलाया जाता है।

वि० उक्त पेय के रंग का अर्थात् हरा।

वि० [हिं० हरा] प्रसन्न।

हरीरी—वि० [हिं० हरीरा] हरीरे के रंग का। जैसे—दरवाजों पर हरीरी परदे लगे थे।

†पुं० १. हरीरा (पेय पदार्थ)। २. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। (मध्य युग)

हरील†—पुं०=हारिल।

हरीश—पुं० [सं० ष० त०] १. बन्दरों के राजा। २. हनुमान्। ३. सुग्रीव।

हरीस—वि० [अ०] हिर्स अर्थात् लालच करनेवाला। लालची। लोभी।

†पुं०=हरिस।

हरुअ, हरुआ†—वि० [सं० लघुक, पा० लहुअ, विपर्यय 'हलुअ'] [स्त्री० हरुई] जो भारी न हो। हलका।

हरुआई†*—स्त्री० [हिं० हरुआ+ई (प्रत्य०)] १. 'हरुआ' अर्थात् हलके होने की अवस्था, गुण या भाव। हलकापन। २. तेजी। फुरती।

हरुआना†—अ० [हिं० हरुआ+ना (प्रत्य०)] १. हलका होना। २. जल्दी या तेजी से आना।

†स० हलका करना।

हरुए†—अव्य० [हिं० हरुआ] १. धीरे-धीरे। आहिस्ता से। २. इतने धीरे से कि आहट या शब्द न होने पाए अथवा कोई दूसरा न सुन पाए। उदा०—हरुए कहु मो मन बसत सदा बिहारीलाल।—बिहारी।

हरुवा†—वि०=हरुआ।

हरू†—वि०=हरुआ (हलका)।

हरूफ़—पुं० [अ० हर्फ़ का बहु०] अक्षर। वर्ण। हरफ।

हरे—पुं० [सं०] 'हरि' शब्द का संबोधन रूप।

अव्य० [हिं० हरुआ] १. धीरे से। २. विना कोई उग्रता या तीव्रता दिखलाये। कोमलतापूर्वक और सहज में।

वि० १. धीमा। मंद। २. कोमल। मृदु। ३. हलका।

हरेऊ †—पुं०=हरेव। (देश०) उदा०—खुरासान औ चला हरेऊ।—जायसी।

हरेक—वि० [हिं० हर+एक] प्रत्येक। हर एक। (अशुद्ध रूप)

हरेणु—पुं० [सं०] १. मटर। २. हद बाँधने के लिए बनाई जानेवाली बाढ़।

हरेना†—पुं० [हिं० हरा] वह विशेष प्रकार का चारा, जो ब्यानेवाली गाय को दिया जाता है।

हरेरा†—वि० [स्त्री० हरेरी] =हरा।

पुं०=हरीरा।

हरेरी†—स्त्री०=हरिअरी (हरियाली)।

हरेव—पुं० [अ० हिरात] १. मंगोलों का देश। २. उक्त देश में बसनेवाले लोग, अर्थात् मंगोल।

हरेवा—पुं० [हिं० हरा] मधुर स्वर में बोलनेवाली बुलबुल के आकार-प्रकार की हरे रंग की चिड़िया। हरी बुलबुल।

हरैं†—अव्य०=हरे।

हरैना—पुं० [हिं० हर (हल)+ऐना (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० हरैनी] १. वह टेढ़ी गावदुम लकड़ी जो हल के लट्ठे (हरिस) के एक छोर पर आड़े बल में लगी रहती है और जिसमें लोहे का फार ठोंका रहता है। २. बैलगाड़ी में सामने की ओर निकली हुई लकड़ी।

हरैनी†—स्त्री०=हरैना।

हरैया†—वि० [हिं० हरना] १. हरण करने अर्थात् हरनेवाला। २. दूर करने या मिटानेवाला।

हरोल, हरौल†—पुं०=हरावल।

हर्ज—पुं० [अ०] १. काम में होनेवाली ऐसी बाधा या रुकावट, जिसमें कुछ हानि भी होती हो।

पद—हर्ज-गर्ज=अड़चन। बाधा।

२. हानि। नुकसान। जैसे—हमारे दो घंटे हरज हुए हैं।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

हर्तव्य—वि० [सं०] जो हरण किया जा सके या किया जाने को हो।

हर्ता(तृ)—वि० [सं०] [स्त्री० हर्त्री] १. हरण करनेवाला। २. दूर या नष्ट करने वाला।

हर्तार—वि० [सं०] हरण करनेवाला। हर्ता।

हर्द†—स्त्री०=हलदी।

हर्दी†—स्त्री०=हलदी।

हर्फ़—पुं०=हरफ।

हर्बा—पुं०=हरबा (हथियार)।

हर्म्य—पुं० [सं० √हृ+यत्-मुट् च] १. राज-भवन। महल। २. बहुत बड़ा मकान। हवेली। ३. नरक।

हर्म्य-पृष्ठ—पुं० [सं० ष० त०] मकान की पाटन या छत।

हर्य-कुल—वि० [सं०] सूर्यवंश में उत्पन्न।

हर्यक्ष—वि० [सं० ब० स०] भूरी आँखोंवाला।

पुं० १. सिंह। शेर। २. सिंह राशि। ३. शिव। ४. कुबेर। ५. बंदर। ६. एक प्रकार का रोगकारक ग्रह।

हर्यश्व—पुं० [सं० ष० त० ब० स० वा] १. इन्द्र का भूरे रंग का घोड़ा। २. इन्द्र। ३. शिव।

हर्र—स्त्री०=हर्रें (हरीतकी)।

हर्रा—पुं० [सं० हरीतकी] बड़ी जाति की हड़, जिसका उपयोग त्रिफला में होता है और जो रँगाई के काम में भी आती है।

†पुं० [?] गन्दगी। मैला।

†पुं०=हर्रें।

हर्रें—स्त्री० [सं० हरीतकी] १. एक बड़ा पेड़, जिसके पत्ते महुए के पत्तों की तरह चौड़े होते हैं और जिसका फल त्रिफला में का एक है। २. उक्त फल के आकार के चाँदी, सोने आदि के बनाये हुए वे टुकड़े या इसी प्रकार के और नगीने या रत्न जो मालाओं या हारों के बीच-बीच में शोभा के लिए पिरोये जाते हैं। जैसे—मोतियों की माला में सोने (या पन्ने) की हर्रें पिरोई थीं। ३. एक प्रकार का गहना, जो हड़ के आकार का होता है और नाक में पहना जाता है। लटकन।

हरैंया—स्त्री० [हिं० हरें] १. हाथ में पहनने का एक गहना, जिसमें हरें के-से सोने या चाँदी के दाने पाट में गुथे रहते हैं। २. माला या कंठे के दोनों छोरों पर का चिपटा दाना जिसके आगे सुराही होती है।

†वि० [हिं० हरण] हरण करनेवाला।

हर्ष—पुं० सं०√हृष् (खुश होना) +अच्] [वि० हर्षित] १. प्रसन्नता या भय के कारण रोएँ खड़े होना। रोमांच। २. साहित्य में संयोग-शृंगार के अंतर्गत एक संचारी भाव जिसमें प्रसन्नता के कारण रोएँ खड़े हो जाते हैं या चेहरे पर कुछ पसीना आता है। ३. प्रसन्नता। आनंद। खुशी।

हर्षक—वि० [सं० √हृष् (खुश होना)+णिच्-ण्वुल्-अक्] हर्ष उत्पन्न करनेवाला।

हर्षकर—वि० [सं०] आनंद देनेवाला। हर्षकारक।

हर्ष-कीलक—पुं० [सं०] कामशास्त्र में एक प्रकार का आसन या रति-बंध।

हर्षण—पुं० [सं०√हृष् (खुश होना)+णिच्-ल्यु-अन] १. हर्ष या भय से रोंगटों का खड़ा होना। जैसे—लोम-हर्षण। २. प्रफुल्ल या प्रसन्न होना। ३. कामदेव के ५ बाणों में से एक। ४. आँख का एक रोग। ५. एक प्रकार का श्राद्ध। ६. फलित ज्योतिष में एक प्रकार का योग। ७. शस्त्रों का एक प्रकार का प्रहार या वार। ८. काम के वेग से पुरुष की इन्द्रिय में होनेवाला तनाव।

हर्षणीय—वि०[सं०] जिसमें हर्ष होता हो।

हर्ष-धारिका—स्त्री० [सं०] संगीत में चौदह प्रकार के मुख्य तालों में से एक प्रकार का ताल।

हर्षना—अ० [सं० हर्षण] हर्षित या प्रसन्न होना। खुश होना।

हर्षमाण—वि० [सं०√हृष्+शानच्+मुक्] हर्षयुक्त। प्रसन्न।

हर्ष-वर्द्धन—पुं० [सं०] विक्रमी ७ वीं शती का उत्तरी भारत का एक क्षत्रिय-सम्राट् जो बौद्ध था।

हर्षाना—अ० [सं० हर्ष+हिं० आना (प्रत्य०)] हर्ष से युक्त या आनंदित होना। प्रसन्न होना।

स० हर्ष से युक्त या आनंदित करना।

हर्षाश्रु—पुं० [सं० मध्य० स० ष० त० वा] आनंद से निकले हुए आँसू। आनंद के आँसू।

हर्षित—भू० कृ० [सं० हर्ष+इतच्] १. जिसे हर्ष हुआ हो। प्रसन्न किया हुआ। २. जिसे रोमांच हुआ हो।

पुं० हर्ष। प्रसन्नता।

हर्षी(र्षिन्)—वि० [सं०] १. प्रसन्न करनेवाला। २. प्रसन्न।

हर्षुक—वि० [सं०] प्रसन्न करनेवाला।

हर्षुल—वि० [सं०√हृष्+उलच्] १. हर्ष से भरा हुआ। २. अपनी प्रवृत्ति या स्वभाव से जो प्रसन्न रहता हो।

पुं० १. स्त्री का नायक या प्रियतम। २. मृग। हिरन। ३. गौतम बुद्ध का एक नाम।

हर्षुला—स्त्री० [सं० हर्षुल–टाप्] ऐसी कन्या, जिसकी ठोढ़ी पर बाल हों।

विशेष—ऐसी कन्या धर्मशास्त्र के अनुसार विवाह के अयोग्य मानी जाती है।

हर्षोत्फुल्ल—वि० [सं० तृ० त०] खुशी से फूला हुआ।

हर्षोन्माद—पुं० [सं० हर्ष+उन्माद] वह स्थिति जिसमें मनुष्य बहुत अधिक आनंद या हर्ष के कारण सुध-बुध भूलकर पागलों का-सा आचरण करने लगता है। (एक्सटेसी)

हर्सा†—पुं० = हरिस (हल का लट्ठा)।

हल—वि० [सं०] (अक्षर या वर्ण) जिसके अन्त में 'अ' स्वर का उच्चारण न होता हो। जैसे—दैवात् में का 'त्' हल् है।

पुं० टेढ़ी रेखा के रूप में वह चिह्न (्) जो व्यंजनों के नीचे लगाया जाता है, जिससे उन के अन्त में स्थित 'अ' का उच्चारण न हो।

हलंत—वि० [सं० ब० स०] (शब्द) जिसका अंतिम अक्षर या वर्ण हल् हो। जैसे—'पश्चात्' शब्द हलंत है।

हल—पुं० [सं०√हल् (खेत जोतना)+क घञर्थे करणे] १. खेत जोतने का एक प्रसिद्ध यंत्र, जो पहले लकड़ी का ही बनता था; पर अब लोहे का भी बनने लगा है।

क्रि० प्र०—चलाना।—जोतना।

मुहा०—हल जोतना=खेत में हल चलाना।

२. सामुद्रिक के अनुसार पैर में होनेवाली एक रेखा, जो उक्त यंत्र के आकार की होती है। ३. जमीन नापने का पुरानी चाल का लट्ठा। ४. प्राचीन काल का एक प्रकार का व्यक्ति। ५. एक प्राचीन देश जो उत्तर भारत में था।

पुं० [अं०] १. हिसाब लगाना। गणित करना। २. वह पूरा विवरण जो गणित के प्रश्न के उत्तर के रूप में तैयार किया जाता है। ३. किसी कठिन विषय या समस्या का निराकरण या मीमांसा। (सोल्यूशन)

हल-कंप†—पुं०=हड़-कंप।

हलक—पुं० [अ० हल्क] गले की नली। कंठ।

मुहा०—हलक के नीचे उतरना=(क) मुँह में डाली हुई चीज़ का पेट में ले जानेवाले स्रोत में जाना। पेट में जाना। (ख) मन में बैठना। २. कोई उपदेश या सीख का मन पर असर होना।

हलकई†—स्त्री० [हिं० हलका+ई (प्रत्य०)] १. हलकापन। २. ओछापन। तुच्छता। ३. अप्रतिष्ठा। हेठी।

हलक-कुंद—पुं० [सं०] हल की वह लकड़ी, जो लट्ठे की छोर पर आड़े बल में जड़ी रहती है और जिसमें फाल ठोका रहता है। हरैना।

हलक-तालू—पुं० [हिं०] संगीत में ऐसी तान या स्वर, जो हलक और तालू से निकलता हो। (जबड़े से नहीं)। उदा०—गले में कोकिला-गायन के हड्डी ही नहीं, गोया, हजारों में कहीं ये हल्क ये तालू निकलते हैं। —जान साहब।

विशेष—संगीत में हलक-तालू का गाना श्रेष्ठ समझा जाता है और इसके विपरीत जबड़े का निकृष्ट।

हलकना—अ० [सं० हल्लन अथवा अनु० हल-हल] १. किसी पात्र आदि में तरल पदार्थ का इस प्रकार हिलना कि उससे शब्द उत्पन्न हो। जैसे—पेट के पानी का हलकना। उदा०—सखि बात सुनो इक मोहन की निकसै मटकी सिर लै हलकै।—केशव। २. तरंगित होना। लहराना।

हलका—वि० [सं० लघुक, प्रा० लहुक वर्ण विपर्यय से पुं० हिं० 'हलुक'] [स्त्री० हलकी] १. जो तौल में अपेक्षाकृत अधिक भारी न हो। कम भारवाला। 'भारी' का विपर्यय। जैसे—यह पत्थर हलका है तुम उठा सकते हो। २. आनुपातिक दृष्टि से कुछ कम या थोड़ा।

३. जो अपने मान, मूल्य, वेग, शक्ति आदि के मानक या साधारण स्थिति से कुछ कम या घट कर हो। जैसे—हलका दर्द, हलका बुखार, हलका रंग, हलकी सरदी। ४. जिसमें उग्रता, तीव्रता आदि साधारण से कुछ कम या घटकर हो। जैसे—हलकी चोट, हलका वार। ५. (व्यक्ति) जिसके स्वभाव में गम्भीरता, सौजन्य आदि अपेक्षाकृत कम हों। ओछा। तुच्छ। ६. (कथन या बात) जिसमें गुरुत्व या शालीनता अपेक्षया कम हो। जैसे—हलकी बात। ७. (काम) जिसमें अधिक परिश्रम न करना पड़ता हो। सहज। सुगम। ८. किसी प्रकार के भार आदि से मुक्त या रहित। जैसे—लड़की का ब्याह करके वह भी हलके हो गया। ९. जिसके कारण भार कम पड़ता हो। जैसे—हलका भोजन। १०. (खेत या जमीन) जो कम उपजाऊ हो। जैसे—यह खेत तुम्हारे खेत से कुछ हलका है। ११. कम। थोड़ा। जैसे—हलके दाम का कपड़ा। १२. (प्रकृति या शरीर) जिसमें प्रफुल्लता हो। जैसे—नहाने से तबीयत हलकी हो जाती है। १३. किसी की तुलना में कम अच्छा। घटिया। जैसे—हलका माल। १४. जिसका विशेष गौरव, प्रतिष्ठा या मान न हो। जैसे—देखो, हमारी बात हलकी न पड़ने पाए।

पद—हलका सोना=हलका सुनहरी रंग। (रँगरेज) हलकी बात=ओछी, तुच्छ या बुरी बात।

मुहा०—हलका करना=(क) अपमानित करना। (ख) तुच्छ ठहराना। जैसे—तुमने दस आदमियों के बीच में हलका किया। (मन) हलका-भारी होना=(क) उकताना। ऊबना। (ख) मन में किसी प्रकार की चंचलता या विकार का अनुभव करना। (ग) लोगों की दृष्टि में कुछ तुच्छ ठहरना। हलके-हलके=धीरे धीरे। मंद गति से।

वि०[हिं० हड़क या हड़कना]पागल (कुत्ते, गीदड़ आदि के लिए प्रयुक्त)। जैसे—हलका कुत्ता।

पुं०[हल-हल से अनु०] पानी की तरंग। लहर।

पुं०[अ० हल्क़ः]१. किसी चीज के चारों ओर का घेरा। मंडल। २. गोलाकार रेखा। वृत्त। ३. वृत्त की परिधि। ४. किसी प्रकार का सीमित क्षेत्र। ५. शासनिक आदि कार्यों के लिए निर्धारित किया हुआ कोई विशिष्ट क्षेत्र या भू-खंड। जैसे—पुलिस के सिपाही रात को अपने-अपने हलके में गश्त लगाते हैं। ६. गोल घेरा बनाकर रहनेवाले पशुओं का झुण्ड। जैसे—मुगल बादशाहों के साथ हाथियों के हलके चलते थे। ७. पशुओं के गले में पहनाया जानेवाला पट्टा। ८. लोहे का वह गोलाकार बंद, जो पहियों पर जड़ा रहता है। हाल।

हलकाई†—स्त्री०[हिं० हलका+ई (प्रत्य०)]=हलकापन।

हलकान†—वि०=हलाकान।

हलकाना†—अ० [हिं० हलका +ना (प्रत्य०)] हलका होना। बोझ कम होना।

स० हलका करना।

†अ०[हिं० हड़क] (कुत्ते, गीदड़ आदि का) पागल होना। स० पागल करना या बनाना।

स०[हिं० हलकना] १. किसी वस्तु में भरे हुए पानी को हिलाना या हिलाकर बुलबुलाना। २. तरंग या लहर उत्पन्न करना।

†स० हिल जाना।

हलकानी†—स्त्री०=हलाकानी।

हलकापन—पुं०[हिं० हलका+पन (प्रत्य०)]१. हलके होने की अवस्था, गुण या भाव। २. ओछापन। तुच्छता।

हलका पानी—पुं० [हिं०] ऐसा पानी जिसमें खनिज पदार्थ बहुत थोड़े हों। नरम पानी।

हलकारना†—स०[अ० हल+हिं० करना] १. हल करके बहुत ही महीन चूर्ण के रूप में लाना। जैसे—सोना हलकारना। (चित्रकला) २. तितर-बितर करना। छितराना।

हलकारा†—पुं०=हरकारा।

हलकारी—स्त्री० [हिं० हड़+कारी] १. कपड़ा रंगने के लिए पहले उसमें फिटकरी, हड़ या तेजाब आदि का पुट देना जिसमें रंग पक्का हो।

स्त्री०[हिं० हलदी] कपड़ों की वह छपाई जो हलदी के रंग के योग से होती है। (छीपी)

हलकारी-सोना—पुं० [हिं० हलकारना+सोना] चित्र-कला में सोने के वरकों का वह चूर्ण, जो चित्रों पर लगाने के लिए तैयार किया जाता था।

हलकोरा†—पुं० [अनु० हल-हल] हिलोरा। तरंग। लहर।

हल-गोलक—पुं०[सं०] एक प्रकार का कीड़ा।

हल-ग्राही (हिन्)—वि० [सं० हल√ ग्रह् (पकड़ना)+णिच्+णिनि] हल पकड़नेवाला। हल की मूठ पकड़कर खेत जोतनेवाला।

पुं० किसान। खेतिहर।

हल-चल—स्त्री०[हिं० हलना-चलना]१. वह अवस्था या स्थिति जिसमें किसी स्थान पर लोगों का चलना-फिरना अर्थात् आना-जाना या घूमना-फिरना लगा रहता हो। २. किसी स्थान पर लोगों के आने-जाने या काम करने के कारण होनेवाली चहल-पहल तथा शोर-गुल।

मुहा०—हल-चल मचना=(क) शोर मचना। (ख) उपद्रव होना। (ग) आतंक, भय आदि के कारण भगदड़ मचना।

हल-जीवी (विन्)—वि०[सं० हल√ जीव् (जीना)+णिच्—णिनि] हल चलाकर अर्थात् खेती करके निर्वाह करनेवाला। किसान।

हल-जुता—पुं०[हिं० हल+जोतना]१. साधारण किसान। २. गँवार।

हलड़ा†—पुं०=हलरा (लहर)।

हल-दंड—पुं०[सं० ष० त०] हल का लम्बा लट्ठा। हरिस।

हलद†—स्त्री०=हलदी।

हलद-हाथ—स्त्री० [हिं० हलदी+हाथ] विवाह के तीन या पाँच दिन पहले वर और कन्या के शरीर में हलदी (और तेल) लगाने की रस्म। हलदी चढ़ाना।

हलदिया—पुं०[हिं० हलदी]१. एक प्रकार का विष। २. कमल नामक रोग। काँवला।

हलदी—स्त्री०[सं० हरिद्रा] एक प्रसिद्ध पौधे की जड़, जो कड़ी गाँठ के रूप में होती और मसाले तथा रँगाई के काम आती है।

मुहा०—हलदी उठना, चढ़ना या लगाना=विवाह से पहले दूल्हे और दुल्हन के शरीर में हलदी और तेल लगाना। **हलदी लगना**=विवाह होना। **हलदी लगा के बैठना**=(क) घमंड में फूले रहना। अपने को बहुत लगाना। (ख) कोई काम-धन्धा न करते हुए चुपचाप बैठे रहना।

कहा०—हलदी लगे न फिटकिरी=बिना कुछ खर्च या परिश्रम किये हुए। मुफ्त में।

हलदू—पुं०[हिं० हलद (हलदी)] एक प्रकार का बहुत बड़ा और ऊँचा पेड़ जिसकी लकड़ी खेती और सजावट के सामान, कंघियाँ, बन्दूकों के कुंदे आदि बनाने के काम आती है।

हल-धर—वि०[सं० ष० त०] हल धारण करनेवाला।
पुं० बलराम का एक नाम।

हल-पत—पुं०[हिं० हल+पट्ट, पाटा] हल की आड़ी लगी हुई लकड़ी, जो बीच में चौड़ी होती है। परिहत।

हल-पाणि—पुं०[सं० ब० स०] बलराम (जो हाथ में हल लिये रहते थे)।

हलफ—पुं०[अ० हल्फ़] वह स्थिति जिसमें कोई बात ईश्वर को साक्षी रखकर बिलकुल सत्यतापूर्वक कही जाती है। शपथ। सौगन्ध।
मुहा०—हलफ उठाना या लेना=किसी बात की सत्यता का उल्लेख करते हुए ईश्वर को साक्षी रखकर कहना।

हलफन—अव्य०[अ० हल्फ़न] हलफ लेकर। शपथपूर्वक।

हलफ-नामा—पुं०[अ०+फा०]=शपथ-पत्र। (एफ़िडेविट्)

हलफल†—स्त्री०=हल-चल।

हलफा—पुं० [अनु० हल-हल] १. हिलोर। लहर। तरंग। २. दमे के रोग में श्वास का वेग से चलना।
क्रि० प्र०—आना।—उठना।—मारना।

हलफी—वि०[अ० हल्फ़ी] हलफ लेकर कहा या दिया हुआ (बयान)।

हलब—पुं०[देश०] [वि० हलब्बी] फारस के पास का एक देश, जहाँ का शीशा प्रसिद्ध था।

हल-बल†—स्त्री० १.=हलचल। २.=हड़बड़ी।

हलबलाना†—अ०[अनु०][भाव० हलबलाहट] भय या शीघ्रता आदि के कारण घबराना।
स० किसी को घबराने में प्रवृत्त करना।

हलबलाहट—स्त्री० [अनु०] हलबलाने की क्रिया या भाव। घबराहट।

हलबली†—स्त्री०=हड़बड़ी। (लखनऊ) उदा०—जो काम है निगोड़ा, तेरा सो हलबली का।—इन्शा।

हलबी—स्त्री०=हलब्बी।

हलब्बी—वि०[हलब देश०] १. हलब देश का (बढ़िया शीशा)। २. बहुत बड़ा, भारी और मोटा। जैसे—हलब्बी शहतीर।

हल-भल†—स्त्री० १.=हल-चल। २.=हड़बड़ी।

हल-भली†—स्त्री० १.=हड़बड़ी। २.=खलबली। ३.=हल-चल।

हल-भूति—पुं०[सं०] शंकराचार्य का एक नाम।

हल-भृत्—पुं०[सं० हल√भृ (भरण-पोषण करना)] बलराम।

हल-मरिया—स्त्री०[पुर्त० आलमारी] जहाज के नीचे का खाना। (लश०)

हलमिल-लैला—पुं० [सिंहली] एक प्रकार का बड़ा पेड़, जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है और खेती के सामान आदि बनाने के काम आती है।

हल-मुख—पुं०[सं० ष० त०] हल का फाल।

हल-मुखी(खिन्)—पुं०[सं०] एक प्रकार का वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, नगण और सगण आते हैं।

हल-यंत्र—पुं० [सं० मध्य० स०] जमीन जोतने का वह बड़ा हल, जो इंजन की सहायता से चलता है और जिससे बहुत अधिक भूमि बहुत जल्दी जोती जाती है। (ट्रैक्टर)

हलरा—पुं०[हिं० लहर] पानी में उठनेवाली लहर। हिलोर।
क्रि० प्र०—आना।—उठना।

हलराना—स० [हिं० हिलोरा] १. (बच्चों को) हाथ पर लेकर इधर-उधर हिलाना-डुलाना। प्यार से हाथ पर झुलाना। २. दे० 'लहराना'।
†अ०=लहराना।

हलवत—स्त्री०[हिं० हल+औत (प्रत्य०)] नये वर्ष में पहले-पहल खेत में हल ले जाने की रीति या कृत्य। हरौती।

हलवा—पुं०=हलुआ।

हलवाइन—स्त्री०[हिं० हलवाई] हलवाई की अथवा हलवाई जाति की स्त्री।

हलवाई—पुं०[अ० हलवा+ई (प्रत्य०)] [स्त्री० हलवाइन] १. अनेक प्रकार की मिठाइयाँ बनाने और बेचनेवाला दूकानदार। २. हिन्दुओं में एक जाति, जो मुख्यतः उक्त काम करती हो।

हलवाई-खाना—पुं०[हिं० हलवाई+फा० खाना=घर या स्थान] वह स्थान जहाँ हलवाई बैठकर मिठाई, नमकीन, पूरी आदि बनाते हैं।

हलवान—पुं०[अ०] १. भेड़, बकरी आदि का वह छोटा बच्चा, जो अभी दूध पर ही पल रहा हो और सानी, घास आदि न खाता हो। २. उक्त का मांस जो खाने में बहुत मुलायम होता है।

हलवाह—पुं०[सं०] वह जो दूसरे के यहाँ हल जोतने का काम करता हो। हलवाहा।

हलवाहा†—पुं०=हलवाह।

हल-हला—स्त्री० [अनु०] आनंद-सूचक ध्वनि। किलकार।

हल-हलाना†—स० [हिं० हलना या अनु० हल-हल] १. ऐसा पात्र हिलाना जिसमें पानी भरा हो। २. जोर से या झटका देकर हिलाना। झकझोरना। ३. कँपाना।
†अ० काँपना। थरथराना।

हला—स्त्री० [सं०] १. सखी। २. पृथ्वी। ३. जल। ४. मदिरा।

हलाक़—वि०[अ०] १. ध्वस्त या नष्ट किया हुआ। २. वध किया हुआ। हत।

हलाक़त—स्त्री०[अ०] १. हलाक करने की क्रिया या भाव। २. ध्वंस। विनाश। ३. वध। हत्या। ४. मृत्यु। मौत।

हलाकान—वि० [अ० हलाक या हलाकत] [भाव० हलाकानी] जो दौड़-धूप या परिश्रम करता-करता बहुत ही तंग या परेशान हो गया हो।

हलाकानी—स्त्री०[हिं० हलाकान] हलाकान होने की अवस्था या भाव। परेशानी।

हलाकी—वि०[अ० हलक+हिं० ई (प्रत्य०)] हलाक करनेवाला।

हलाकू—वि०[अ० हलाक+ऊ (प्रत्य०)] हलाक करनेवाला।
पुं० एक तुर्क सरदार जो चंगेजखाँ का पोता था और उसी के समान क्रूर तथा हत्यारा था।

हलाचली†—स्त्री०=हल-चल।

हलाना†—स०=हिलाना।

हलाभ—पुं०[सं० ब० स०] वह घोड़ा जिसकी पीठ पर काले या गहरे रंग के रोएँ बराबर कुछ दूर तक चले गए हों।

हला-भला—पुं० [हिं० भला+हला (अनु०)] १. निबटारा। निर्णय। २. परिणाम। फल।

हलाभियोग—पुं०[सं०] हरीती।

हलायुध—पुं०[सं० ब० स०] बलराम।

हलाल—वि० [अ०] जो शरअ या इस्लामी धर्म-शास्त्र के अनुसार अथवा उसके द्वारा अनुमोदित हो। 'हराम' का विपर्यय।

पद—हलाल का=धर्म की दृष्टि से उचित और विहित। **हलाल की कमाई**=वह धन जो कठोर परिश्रम से तथा उचित साधनों से कमाया गया हो।

मुहा०—(किसी जीव को) हलाल करना=मुसलमानी शरअ के अनुसार कलमा पढ़ते हुए किसी धारदार अस्त्र से धीरे-धीरे गला रेतकर हत्या करना। जैसे—मुर्गी या बकरा हलाल करना। **(काम चीज या बात)** हलाल करना=कोई काम ईमानदारी और परिश्रम से पूरा करके उचित रूप से प्रतिफल देना। जैसे—मालिक का पैसा हलाल करके खाना चाहिए।

पुं०१. ऐसा पशु जिसका मांस खाने की मुसलमानी धर्म-पुस्तक में आज्ञा हो। वह जानवर जिसके खाने का निषेध न हो। २. ऐसा पशु जो मुसलमानी धर्म के अनुसार और कलमा पढ़कर धारदार शस्त्र से मारा गया हो।

मुहा०—(पशु को) हलाल करना=पशु का मांस खाने के लिए उसे मुसलमानी शरअ के अनुसार गला रेतकर उसके प्राण लेना। जबह करना। (व्यक्ति को) हलाल करना=बहुत ही बुरी तरहसेअत्याचार और अन्याय-पूर्वक अत्यन्त कष्ट पहुँचाना, अथवा उससे धन आदि ऐंठना।

हलालखोर—वि०[अ० हलाल+फा० खोर] [भाव० हलालखोरी, स्त्री० हलालखोरिन] जो उचित साधनों से तथा कठोर परिश्रम द्वारा धन कमाता हो। धर्म द्वारा अनुमोदित काम करके जीविका चलानेवाला।

पुं० मेहतर।

हलालखोरी—स्त्री० [अ० हलाल+फा० खोर] हलालखोर का काम, पद या भाव।

†स्त्री० 'हलालखोर' का स्त्री० रूप।

हलाहल—पुं०[स० हल-आ√हल्+अच्] १. वह प्रचण्ड विष, जो समुद्र-मंथन के समय निकला था। २. उग्र विष। भारी जहर। ३. एक प्रकार का जहरीला पौधा, जिसके संबंध में यह प्रसिद्ध है कि उसकी गन्ध से ही प्राणी मर जाते हैं।

†वि० पूरा-पूरा। भर-पूर। उदा०—ता दिशि काल हलाहल होय।—घाघ।

हलिक्षण—पुं०[सं० ब० स०] एक प्रकार का सिंह।

हलि-प्रिया—स्त्री०[सं० ष० त०] १. मद्य। शराब। मदिरा। २. ताड़ी।

हली(लिन्)—पुं०[सं० हल+इनि] १. किसान। खेतिहर। २. बलराम का एक नाम।

वि० हल जोतनेवाला।

हलीम—पुं०[सं०] केतकी।

पुं०[देश०] मटर के डंठल, जो बँबई की ओर काटकर जानवरों को खिलाये जाते हैं।

वि० [अ०] [भाव० हलीमी] शान्त और सहनशील।

पुं० मुसलमानों में एक प्रकार का व्यंजन जो मुहर्रम में बनता है।

हलीमक—पुं०[सं०] एक प्रकार का पाण्डु रोग।

हलीमी—स्त्री०[अ०] हलीम अर्थात् शान्त, सहनशील और सुशील होने की अवस्था, गुण या भाव।

हलीसा—पुं० [सं० हलीषा] चप्पू।

हलुआ—पुं०[अ० हल्वः] १. आटे, बेसन, मैदे, सूजी, दाल, गाजर आदि को घी में भूनकर और उसमें चीनी, खोआ आदि मिलाकर तैयार किया जानेवाला एक प्रसिद्ध व्यंजन।

मुहा०—(किसी का) हलुआ निकालना=मारते-मारते बे-दम कर देना। **अपने हलुए माँड़े से काम रखना**=केवल स्वार्थ-साधन का ध्यान रखना। जैसे—तुम्हें तो अपने हलुए माँड़े से काम है, किसी का चाहे कुछ हो।

२. उक्त प्रकार के व्यंजन की तरह की कोई गाढ़ी और मुलायम चीज। जैसे—गवैये रात को सोने के समय गले पर पान का हलुआ बाँधते हैं।

हलुआई†—पुं० [स्त्री० हलुआइन]=हलवाई।

हलुका†—वि०=हलका।

हलुकाई†—स्त्री०=हलकाई (हलकापन)।

हलुवा†—पुं०=हलुआ।

हलुवाई†—पुं०=हलवाई।

हलूक—स्त्री०[अ० हलूक] १. उतना पदार्थ जितना एक बार वमन में मुँह से निकले। कै। वमन।

हलूफा—पुं०[अ० हलूफ़ः] वे मिठाइयाँ, पकवान आदि, जो कुछ जातियों में विवाह से दो-एक दिन पहले कन्या-पक्षवालों के यहाँ से वर पक्षवालों के यहाँ भेजी जाती हैं।

हलोर†—स्त्री०=हिलोर (लहर)।

हलोरवा†—स० दे० 'हिलोरवा'।

हलोहल†—स्त्री०=हल-चल। (राज०)

हल्क—पुं०[अ० हल्क़]=हलक।

हल्की—वि०, पुं०=हलका।

हल्द†—स्त्री०=हलदी।

हल्द-हाथ—स्त्री०=हलद-हाथ।

हल्दी—स्त्री०=हलदी।

हल्य—वि०[सं० हल+यत्] १. हल-सम्बन्धी। हलका। २. (खेत) जो हल से जोता जा सके। ३. भद्दा। कुरूप। ४. फैलाने या विस्तृत करने योग्य। उदा०—जिनकी कीर्ति सकल दिशि हल्या।—निराला।

पुं०१. जोता हुआ या जोतने योग्य खेत। २. कुरूपता। भद्दापन।

हल्लक—पुं० [सं०] लाल कमल।

हल्लन—पुं०[सं०] १. करवट बदलना। २. हिलना-डोलना।

हल्ला—पुं० [अनु०] १. एक या बहुत से लोगों का जोर-जोर से चिल्लाना और बोलना। कोलाहल। शोर। जैसे—तुम तो बहुत हल्ला मचाते हो।

पद—हल्ला-गुल्ला=शोर-गुल।

क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

२. लड़ाई के समय की ललकार। हाँक। ३. विरोधियों का शत्रुओं पर अचानक वेगपूर्वक किया जानेवाला आक्रमण। धावा। हमला।

क्रि० प्र०—बोलना।

हल्लित्र—वि०[सं० हल्ल् (विकास करना)+ष्ट्रन] जोर से हिलानेवाला।

पुं० वह उपकरण या यंत्र, जिसमें कई चीजें एक में मिलाने के लिए रखकर खूब जोर से हिलाई जाती हैं।

हल्लीश—पुं०[सं०]१. नाट्य शास्त्र में अठारह उपरूपकों में से एक प्रकार का नृत्य तथा संगीत-प्रधान उपरूपक, जो एक ही अंक का होता है, जिसमें पात्र रूप में बातें करनेवाला एक पुरुष और-आठ दस स्त्रियाँ होती हैं। २. उक्त के अनुकरण पर होनेवाला एक प्रकार का नृत्य, जिसमें एक पुरुष और कई स्त्रियाँ घेरा बाँधकर नाचती हैं।

हल्लीशक—पुं०[सं०] घेरा या वृत्त बनाकर नाचना।

हव—पुं० [सं० हु (देना लेना) +अच्] १. आहुति। बलि। २. अग्नि। आग। ३. आज्ञा। आदेश। ४. चुनौती।

हवन—पुं०[सं०√हु(देव निमित्त देना)+ल्युट्—अन]१. धार्मिक पद्धति में, देवताओं को प्रसन्न करने के लिए अग्नि में घी, जौ आदि की आहुति देने की क्रिया । होम। २. अग्नि। आग। ३. अग्नि-कुण्ड। ४. अहुति देने का यज्ञ-पात्र। स्रुवा।

हवन-कुंड—पुं०[सं०ष०त०] वह कुंड जिसमें हवन के समय आहुति डाली जाती है।

हवनी—स्त्री०[सं०]१. होम कुंड। २. स्रुवा।

हवनीय—वि०[सं० √हु (देना)+अनीयर् कर्मणि] वह (पदार्थ) जिसे आहुति के रूप में अग्नि में डालना हो।

पुं० घी, जौ आदि पदार्थ जो हवन के लिए आवश्यक हैं।

हवन्नक—वि० [अ० हवन्नकः=एक परम मूर्ख अरब का नाम] बहुत बड़ा उजड्ड। गँवार और मूर्ख।

हवलदार—पुं०[अ० हवालः+फा० दार= रहनेवाला]१. मुसलिम शासनकाल में वह सैनिक अधिकारी, जो राजकर की ठीक-ठीक वसूली और फसल की निगरानी के लिए नियुक्त होता था। २. आज-कल पुलिस या सेना का जमादार जिसके अधीन कुछ सिपाही रहते हैं।

हवस—स्त्री०[अ०] वह इच्छा जिसकी संतुष्टि बराबर अथवा बार-बार की जाती हो, पर फिर भी जो और अधिक संतुष्टि के लिए उत्कट रूप धारण किये रहती हो।

क्रि० प्र०—पूरी करना।

मुहा०—**हवस पकाना**= व्यर्थ कामना करना। मन-मोदक खाना।

हवा—स्त्री०[अ०]१. प्रायः सर्वत्र चलता-रहनेवाला वह तत्त्व जो सारी पृथ्वी में व्याप्त है और जिसमें प्राणी साँस लेते हैं। हवा।

पद—**हवा-पानी**। (देखें)

मुहा०—**हवा उड़ना**=लोक में कोई अफवाह या खबर फैलना। **हवा करना**=पंखे आदि से हवा चलाना। **(कोई चीज) हवा करना**=गायब करना। उड़ा लेना। **हवा के घोड़े पर सवार होना**= (क) बहुत जल्दी में होना। (ख) किसी प्रकार के नशे या गहरी उमंग में होना। **हवा के रुख जाना**=जिस ओर हवा बहती हो, उसी ओर जाना। **हवा खाना**= (क) शुद्ध वायु का सेवन करना। (ख) विकल या वंचित होना। **(कहीं की) हवा खाना**=कहीं जाकर रहना। जैसे—जेल की हवा खाना। **हवा गिरना**=तेज चलती हुई हवा का धीमा या मंद होना। **(किसी काम या बात को) हवा देना**= प्रचार में प्रोत्साहन देना। बढ़ाना। जैसे—परदे की प्रथा ने वेश्यावृत्ति को हवा दी। **हवा पलटना**=कोई नई स्थिति उत्पन्न होना। हालत बदल जाना। **हवा पीकर या फाँककर रहना**=बिना भोजन किये समय बिताना। (व्यंग्य) **हवा फिरना**=दे० ऊपर 'हवा पलटना'। **(किसी को) हवा बताना**=किसी का उद्देश्य बिना सिद्ध किये उसे यों ही चलता करना। टालना जैसे—वह सब को यों ही हवा बताता है। **हवा बदलना**=दे० ऊपर 'हवा पलटना'। **(कहीं की) हवा बिगड़ना**=(क) वातावरण आदि में रोगों के कीटाणु फैलना। (ख) सारी परिस्थिति या वातावरण खराब होना। **(कहीं की या किसी की) हवा लगना**=किसी प्रकार का बुरा परिणाम या अवांछित प्रभाव होना। **हवा से बातें करना**=(क) बहुत तेज दौड़ना या चलना। (ख) आप ही आप या यों ही व्यर्थ की बातें बकते रहना। **हवा से लड़ना**= बिना किसी कारण या बात के लड़ाई-झगड़े करना। **हवा हो जाना**=(क) भाग जाना। (ख) बहुत तेजी से चलने लगना। (ग) गायब या गुम हो जाना।

२. गिनती के विचार से पालतू कबूतरों को हवा अर्थात् आकाश में उड़ाने की क्रिया। उदा०—वे सबेरे कबूतरों को खोलकर दाना देते और तब एक-दो हवा उड़ाते थे।—मिर्जा रुसवा। ३. भूत, प्रेत आदि जिनकी स्थिति हवा के रूप में मानी जाती है। ४. कीर्ति। यश। ५. महत्त्व या खरे व्यवहार का विश्वास। साख।

मुहा०—**हवा बाँधना**= (क) कीर्ति या यश फैलना। (ख) बाजार में साख होना। **हवा बिगड़ना**=पहले की सी मर्यादा या धाक न रह जाना।

वि० (रंगों के संबंध में) साधारण से कम गहरा। हलका। जैसे—हवा गुलाबी=हलका गुलाबी।

स्त्री०[अनु०]१. इच्छा। कामना। २. इन्द्रियों अथवा शरीर के सुख-भोग की कामना। जैसे—हवा-परस्त=इन्द्रिय-लोलुप।

हवाई—वि० [अ० हवा+ई (हिं० प्रत्य०)]१. हवा या वायु से संबंध रखनेवाला। २. हवा में उड़ने, चलने, रहने या होनेवाला। वायव। (एरिअल) जैसे—हवाई जहाज, हवाई हमला। ३. (बात) जिसका कोई वास्तविक आधार न हो। बिलकुल काल्पनिक और निर्मूल। जैसे—हवाई खबर, हवाई गप।

स्त्री०१. एक प्रकार की आतिशबाजी, जो छूटने पर ऊपर कुछ दूर तक हवा में जाती और तब बुझ जाती है।

मुहा०—**(चेहरे या मुंह पर) हवाइयाँ उड़ना**=निराशा, भय आदि के कारण चेहरे का रंग फीका पड़ना। **हवाई गुम होना**=आश्चर्य, भय आदि के कारण बुद्धि का कुछ भी काम न करना।

२. तोप। उदा०—प्रेम पलीता सुरति हवाई, गोला गिआनु चलाइआ। —कबीर। ३. हलकी छाया या प्रभाव। ४. हलकी रंगत। आभा।

स्त्री० पिस्ते, बादाम आदि मेवों के कतरे हुए छोटे छोटे टुकड़े, जो मिठाइयों आदि के ऊपर उनकी शोभा और स्वाद बढ़ाने के लिए छिड़के जाते हैं।

हवाई-अड्डा—पुं०[हिं०]हवाई जहाजों के उतरने, रुकने या प्रस्थान करने का स्थान। (एरोड्रोम)

हवाई-किला—पुं०[हिं०+अ०]१. मन में बाँधा जानेवाला ऐसा बहुत बड़ा मंसूबा या की जानेवाली अभिलाषा जो जल्दी पूरी न हो सके। २. युद्ध में काम आनेवाला एक प्रकार का बहुत बड़ा हवाई जहाज। (एअर-फ़ोर्टरेस)

हवाई-केंद्र—पुं०[हिं०+सं०]वह स्थान जहाँ से सैनिक हवाई जहाज उड़ाकर दूसरी जगह जाते और फिर लौटकर वहीं आ ठहरते हों। (एयर बेस)

हवाई-जहाज—पुं० हवा में उड़नेवाली सवारी। वायुयान। (एरोप्लेन)

हवाई-छतरी—स्त्री० दे० 'परिछत्र'। (पैराशूट)

हवाई-डाक—स्त्री० [हिं०+अं०] वह डाक या चिट्ठियाँ आदि, जो हवाई जहाज के द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजी जाती हों। (एयर मेल)

हवाई-दीदा—वि० [हिं० हवाई+फा० दीदः] जो लज्जा छोड़कर सबसे आँखें लड़ाता फिरे। उदा०—लड़की खुद ही हवाई दीदा थी, निकल गई किसी के साथ।—शौकत थानवी।

हवाई-पट्टी—स्त्री० [हिं०] दे० 'अवतरण पथ'।

हवाई-महल—पुं० दे० 'हवाई किला'।

हवा-कश—पुं० [अ०+फा०] १. कमरों की दीवारों में वह ऊपरवाला झरोखा, जिसमें से गंदी हवा बाहर निकलती और साफ हवा अंदर आती है। रोशनदान। २. पंखे की तरह का, उक्त काम करनेवाला एक प्रकार का उपकरण। (वेन्टिलेटर)

हवा-गीर—पुं० [फा०] आतशबाजी के बान बनानेवाला कारीगर।

हवाई-चक्की—स्त्री० [हिं० हवा+चक्की] आटा पीसने, खेतों में पानी उलीचने आदि की वह चक्की या कल जो हवा के जोर से चलती हो।

हवादार—वि० [अ०+फा०] [भाव० हवादारी] (कमरा, मकान या स्थान) जहाँ खूब या ताजी हवा बराबर चलती रहती हो।

पुं० वह हल्का तख्त, जिस पर बैठाकर बादशाह को महल या किले के भीतर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते थे।

हवादारी—स्त्री० [फा०] १. ऐसी अवस्था या व्यवस्था जिससे कमरे, कोठरी आदि में ताजी हवा ठीक तरह से आती रहे और गंदी हवा बाहर निकलती रहे। व्यजन-संचालन। (वेंटिलेशन) २. शुभ-चिंतन। खैरख्वाही।

हवान—पुं० [?] जहाज पर रखकर चलाई जानेवाली तोप। कोठी तोप।

हवाना—पुं० [हवाना द्वीप] हवाना नामक द्वीप का तम्बाकू, जो बहुत अच्छा समझा जाता है।

हवा-परस्त—वि० [अ०+फा०] [भाव० हवा-परस्ती] केवल इन्द्रियों का सुख-भोग चाहनेवाला। इन्द्रिय-लोलुप।

हवा-पानी—पुं० [अ०+हिं०] १. किसी स्थान की वायु, जल आदि वे प्राकृतिक बातें, जिनका प्राणियों, वनस्पतियों आदि के जीवन, स्वास्थ्य विकास आदि पर प्रभाव पड़ता है। जलवायु। २. विशेषतः किसी प्रदेश की सामान्य वातावरणिक स्थिति। (क्लाइमेट)

हवा-बाज—पुं० [अ०+फा०] [भाव० हवाबाजी] १. हवाई जहाज। २. हवाई जहाज चलानेवाला।

हवा-महल—पुं० [अ०] महलों आदि में वह सबसे ऊँचा कमरा या मकान जिसमें चारों ओर से हवा खूब आती हो। बहार-बुर्ज।

हवामान†—पुं० दे० 'ताप-मान'।

हवाल—पुं० [अ० अहवाल] १. अवस्था। दशा। २. विशेषतः बुरी अवस्था। दुर्दशा। उदा०—जो नर बकरी खात हैं, तिनका कौन हवाल।—कबीर। ३. समाचार। हाल।

हवालदार†—पुं० = हवलदार।

हवाला—पुं० [अ० हवालः] १. किसी बात की पुष्टि के लिए किसी के वचन या किसी घटना का किया जानेवाला उल्लेख या संकेत। प्रमाण का उल्लेख। (रेफ़रेंस) २. किसी की कही या लिखी हुई बात का वह अंश, जो उक्त प्रकार से कहीं कहा या लिखा गया हो। उद्धरण। (साइटेशन) ३. उदाहरण। दृष्टान्त।

क्रि० प्र०—देना।

३. किसी को कोई चीज देख-रेख, रक्षा आदि के विचार से सौंपने की क्रिया या भाव। सुपुर्दगी।

मुहा०—(किसी के) हवाले करना=किसी को दे देना। सौंपना। **(किसी के) हवाले पड़ना**=विवशता की दशा में किसी के अधिकार या अधीनता में जाना, रहना या होना।

हवालात—स्त्री० [अ०] १. पहरे के अन्दर रखे जाने की क्रिया या भाव। २. जेल, थाने आदि की वह कोठरी, जिसमें अभियुक्त निर्णय या विचार होने तक बन्द रखे जाते हैं।

क्रि० प्र०—में देना।—में रखना।

हवालाती—वि० [अ० हवालात] जो हवालात में रखा गया हो।

हवाली—स्त्री० [अ०] आस-पास के स्थान।

पद—हवाली-मवाली=किसी के आस-पास या संग-साथ रहनेवाले ऐरे-गैरे लोग।

हवास—पुं० [अ०] १. शरीर की ज्ञानेन्द्रियाँ। २. इन्द्रियों के द्वारा होनेवाला ज्ञान या संवेदन। ३. चेतना। ज्ञान। होश।

पद—होश-हवास।

मुहा०—हवाश गुम होना=बुद्धि या होश ठिकाने न रहना।

हवि—पुं० [सं० हविस्] १. हवन की वस्तु या सामग्री। वे चीजें, जिनकी हवन में आहुति दी जाती है। २. आहुति। ३. बलि।

हवित्री—स्त्री० [सं० √हु (देना)+ष्ट्रन्—ङीप्] हवन-कुण्ड।

हविर्धानी—स्त्री० [सं०] कामधेनु।

हविर्भुज—पुं० [सं०] अग्नि।

हविष्पात्र—पुं० [सं० ष० त०] हवि रखने का बरतन।

हविष्मती—स्त्री० [सं० हविष्+मतुप्—ङीप्] कामधेनु।

हविष्मान्—वि० [सं० हविष्मत्] [स्त्री० हविष्मती] हवन करनेवाला।

पुं० १. पितरों का एक गण या वर्ग। २. छठे मन्वतन्र के सप्तर्षियों में से एक। ३. अंगिरा के एक पुत्र।

हविष्य—वि० [सं० हविष्+यत्] १. (पदार्थ) जिसकी हवन में आहुति दी जा सकती हो या दी जाने को हो। २. (देवता) जिसके उद्देश्य से आहुति दी जाने को हो।

पुं० १. हवि। २. हविष्पात्र।

हविष्यान्न—पुं० [सं० कर्म० स०] वह विहित सात्विक अन्न या आहार, जो यज्ञ के दिनों में किया जाता है। जैसे—जौ, तिल, मूँग, चावल इत्यादि।

हविस†—स्त्री०=हवस।

†पुं०=हविष्य।

हवीन—पुं० [?] परेते की तरह का वह यंत्र जिसमें लंगर डालने के समय जहाज की रस्सियाँ बाँधी या लपेटी जाती हैं।

हवेली—स्त्री० [अ०] १. राजाओं, रईसों के वर्ग के रहने का ऊँचा, पक्का और बड़ा मकान। २. जोरू। पत्नी। (पूरब) ३. काठियावाड़, गुजरात आदि में वल्लभ संप्रदाय के मन्दिरों की संज्ञा। ४. उक्त मन्दिरों

में होनेवाला वह कीर्तन, जिसमें शास्त्री शैली के राग और रागिनियाँ गाई जाती हैं।

हव्य—वि०[सं० √ हु (देना)+यत्] जो हवि के रूप में अग्नि में डाला जाने को हो या डाला जा सकता हो।

पुं० हवन की सामग्री।

हव्यभुज्—पुं०[सं०] अग्नि।

हव्य-योनि—पुं०[सं० ब० स०] देवता।

हव्य-वाह—पुं०[सं० हव्य√ वह् (ढोना)+घञ्]१. अग्नि। २. पीपल।

हव्याद—वि०[सं० हव्य√ अद्(खाना)+अच्] हव्य खानेवाला।

पुं० अग्नि।

हव्याशन—पुं०[सं० ब० स०] अग्नि।

हशमत—स्त्री०[अ० हश्मत]१. गौरव। बड़ाई। २. ऐश्वर्य। वैभव।

हशर—पुं०=हश्र।

हश्र—पुं०[अ०]१. उठना। २. ईसाइयों, मुसलमानों आदि के मत से सृष्टि का वह अंतिम दिन, जब सभी मृत व्यक्ति कब्रों से निकलकर ईश्वर के सामने उपस्थित होंगे और वहाँ उनके जीवन-काल के कर्मों का विचार तथा निर्णय होगा। ३. अंत। नतीजा। परिणाम। ४. रोना-पीटना। विलाप। ५. बहुत जोरों का शोर या हो-हल्ला।

हसंती—स्त्री०[सं० हसंतिका]१. अँगीठी। २. एक प्रकार की मल्लिका। ३. शाकिनी। ४. एक प्राचीन नदी।

हसत* —पुं०=हस्त (हाथ)।

पुं०=हस्ति (हाथी)।

हसती*—पुं०= हस्ति (हाथी)।

†स्त्री०=हस्ती (अस्तित्व)।

हसद—पुं०[अ०] ईर्ष्या। डाह।

हसन—पुं० [सं०]१. हंसने की क्रिया या भाव। हास। २. ठट्ठा। परिहास। मज़ाक। ३. कार्तिकेय का एक अनुचर।

पुं०[अ०] अली के दो बेटों में से एक, जो मजीद के साथ लड़ाई में मारा गया था और जिसका शोक शीया मुसलमान मुहर्रम में मनाते हैं। (इसके भाई का नाम हुसैन था।)

हसनीय—वि०[सं० √हस् (हँसना)+अनीयर्]=हास्यास्पद।

हसनैन—पुं०[अ०] हसन और हुसैन नामक दोनों भाई, जो अली के पुत्र थे। उदा०—जहँ हसनैन बतूल-सनेहा, तहाँ समाइ न दूसरि देहा। —नूर मोहम्मद।

हसब—अव्य० [अ० हस्ब] अनुसार। मुताबिक। जैसे—हसब हैसियत=अपनी हैसियत के अनुसार।

हसम—पुं० [अ० हश्म] १. धन-सम्पत्ति। वैभव। उदा०—हसम हयगाय देस अति पति सायर मज्जाद।—चंदबरदाई। २. ठाट-बाट। ३. शोभा।

हसर—पुं० [अं० हुजर] रिसाले के सवारों के तीन भेदों में से एक जिनके अस्त्र तथा घोड़े भी हलके होते हैं और वर्दियाँ चटकीले रंगों की होती हैं। अन्य दो भेद लैंसर और ड्रैगून कहलाते हैं।

हसरत—स्त्री० [अ०] १. कामना। वासना। २. खेद। दुःख। ३. पश्चात्ताप।

हसावर—पुं० [हिं० हंस] खाकी रंग की एक प्रकार की बड़ी चिड़िया जिसकी गरदन हाथ भर लम्बी और चोंच केले के फल के समान होती है।

हसिका—स्त्री० [सं०] १. हँसने की क्रिया या भाव। हँसी। २. उपहास। ठट्ठा।

हसित—भू० कृ० [सं०] १. जो हँसा हो या हँस रहा हो। २. जिस पर हँसा गया हो। ३. जिस पर लोग हँसते हों।

पुं० १. हँसी। हास। २. कामदेव के धनुष का नाम।

हसीन—वि० [अ०] सुन्दर। खूबसूरत। (व्यक्ति)

हसील†—वि०=असील (सीधा)।

हस्त—पुं० [सं०√हस् (हास करना)+तन् नेट्] १. हाथ। २. हाथी का सूंड़। ३. हाथ की लिखावट। ४. छन्द का कोई चरण या पद। ५. एक हाथ अर्थात् २४ अंगुल की एक पुरानी नाप। ६. एक नक्षत्र, जिसमें पाँच तारे होते हैं और जिसका आकार हाथ का सा माना गया है। ७. नृत्य, संगीत आदि में हाथ हिलाकर भाव बताने की क्रिया। ८. गुच्छा या झब्बा। जैसे—केश-हस्त।

वि० हाथों के द्वारा किया हुआ या किया जानेवाला। (मैनुअल) यौगिक शब्दों में पूर्व-पद के रूप में। जैसे—हस्तकला, हस्तकौशल आदि।

† पुं०=हस्ति (हाथी)।

हस्तक—पुं० [सं०] १. हाथ। २. नृत्य में, भाव बताने के लिए बनाई जानेवाली हाथ की मुद्रा। ३. संगीत में, हाथ से किया जानेवाला ताल। ४. कर-ताल। ५. हाथ से बजाई जानेवाली ताली। करतल-ध्वनि।

हस्तकार्य—पुं० [सं० ष० त०] हाथ से किया जानेवाला कारीगरी का काम। दस्तकारी।

हस्त-कोहली—स्त्री० [सं०] वर और कन्या की कलाई में मंगलसूत्र बाँधने की क्रिया या रीति।

हस्त-कौशल—पुं० [सं० ष० त०] हाथ से किये जानेवाले कामों से सम्बन्ध रखनेवाला कौशल, दक्षता या सफाई।

हस्त-क्रिया—स्त्री० [सं० ष० त०] १. हाथ का काम। दस्तकारी। २. दे० 'हस्त-मैथुन'।

हस्तक्षेप—पुं० [सं० ष० त०] १. हाथ फेंकना। २. किसी दूसरे के काम में अनावश्यक रूप से तथा बिना अधिकार दखल देना। ३. किसी चलते या होते हुए काम में कुछ फेर-बदल करने के लिए हाथ डालना या फेर-बदल करने के लिए उसके कर्ताओं से कुछ कहना। (इन्टरफ़िअरेंस)

हस्तगत—भू० कृ० [सं० ष० त०] हाथ में आया हुआ। मिला हुआ। प्राप्त।

हस्तग्रह—पुं० [सं० हस्त√ग्रह् (पकड़ना)+अच्, ष० त०] १. हाथ पकड़ना। २. पाणि-ग्रहण। विवाह।

हस्त-चापल्य—पुं० [सं० ष० त०] हाथ की चालाकी, फुरती या सफाई।

हस्ततल—पुं० [सं० ष० त०] हथेली।

हस्त-त्राण—पुं० [सं० ष० त०] हाथों का रक्षक। दस्ताना।

हस्त-दोष—पुं० [सं० ष० त०] कोई चीज तौलने, नापने आदि के समय की जानेवाली वह चालाकी जो स्वार्थवश की जाती है। देने के समय कम और लेने के समय अधिक तौलना या नापना।

हस्त-धारण—पुं० [सं०] १. सहारा देने के लिए किसी का हाथ पकड़ना। २. पाणि-ग्रहण। विवाह। ३. किसी का वार हाथ पर रोकना।

हस्त-पुस्तिका—स्त्री० [सं०] छोटे आकार की कोई ऐसी पुस्तक, जिसमें किसी विषय की सभी मुख्य बातें संक्षेप में लिखी हों। (हैन्डबुक, मैनुअल)

हस्त-पृष्ठ—पुं० [सं० ष० त०] हथेली का पिछला या उलटा भाग।

हस्त-प्रचार—पुं० [सं० ष० त०] अभिनय या नृत्य के समय की जानेवाली हाथों की चेष्टाएँ।

हस्तबिंब—पुं० [सं०] शरीर में सुगंधित द्रव्यों का लेपन करना।

हस्त-मणि—पुं० [सं० ष० त०] कलाई पर पहनने का रत्न।

हस्त-मैथुन—पुं० [सं० मध्य० स०] वीर्य-पात करने के लिए हाथ से इन्द्रिय को बार-बार जोर से सहलाना। हस्त-क्रिया।

हस्त-रेखा—स्त्री० [सं० ष० त०] हथेली में बनी हुई लकीरों में से हर-एक। **विशेष**—सामुद्रिक में इनके आधार पर शुभाशुभ फलों का विचार किया जाता है।

हस्त-लाघव—पुं० [सं० ष० त०] १. हाथ से काम करने का उत्कृष्ट कौशल। २. हाथ की चालाकी, फुरती या सफाई।

हस्त-लिखित—भू० कृ० [सं० तृ० त०] (लेख या पांडुलिपि) जो हाथ से लिखी गई हो।

हस्त-लिपि—स्त्री० [सं० ष० त०] किसी के हाथ की लिखावट या लिपि। (हैन्डराइटिंग)

हस्त-लेख—पुं० [सं० ष० त०] किसी के हाथ का लिखा हुआ लेख या ग्रन्थ। (मैनस्क्रिप्ट)

हस्त-वातरक्त—पुं० [सं०] एक प्रकार का रोग जिसमें हथेलियों में छोटी-छोटी फुंसियाँ निकलती हैं और धीरे-धीरे सारे शरीर में फैल जाती हैं।

हस्तवान् (वत्)—वि० [सं० हस्त+मतुप्] जो हाथ से काम करने में कुशल हो।

हस्त-वारण—पुं० [सं० तृ० त०] हाथ से वार या आघात रोकना।

हस्त-शिल्प—पुं० [सं० ष० त०] मुख्यतः हाथों से प्रस्तुत किया जानेवाला शिल्प। दस्तकारी। (हैंड-क्राफ़्ट)

हस्त-श्रम—पुं० [सं० ष० त०] हाथों (अर्थात् शरीर) से किया जानेवाला परिश्रम। (मैनुअल लेबर)

हस्त-सूत्र—पुं० [सं० ष० त०] मंगल-सूत्र। (दे०)

हस्तांक—पुं० [सं० हस्त+अंक] १. किसी के हाथ के लिखे हुए अक्षर या लिखावट। (हैंडराइटिंग) २. दे० 'हस्ताक्षर'।

हस्तांकन—पुं० [सं० ष० त०] [भू० कृ० हस्तांकित] हाथ से अंकन करने, लिखने आदि की क्रिया।

हस्तांक-पत्र—पुं० [सं० हस्त-अंक ब० स०, पत्र कर्म० स०] वह पत्र जिसके आधार पर बिना कुछ रेहन रखे और हाथ-उधार कुछ रकम कर्ज ली जाती है और जिसमें सूद सहित वह कर्ज चुकाने की प्रतिज्ञा लिखी रहती है। (प्रोनोट, हैन्ड-नोट)

हस्तांकित—भू० कृ० [सं० तृ० त०] हाथ से अंकित किया या लिखा हुआ।

हस्तांजलि—स्त्री० [सं० ष० त०] दोनों हाथों को जोड़कर दोने के समान बनाई जानेवाली अंजलि।

हस्तांतर—पुं० [सं०] दूसरा हाथ।

हस्तांतरक—पुं० [सं०] वह जो कोई सम्पत्ति या संबंध के अधिकार आदि दूसरे को देता हो। हस्तांतरण करनेवाला। अंतरिक। (ट्रांसफ़रर)

हस्तांतरण—पुं० [सं०] [भू० कृ० हस्तांतरित] (सम्पत्ति, स्वत्व आदि का) एक के हाथ से दूसरे के हाथ में जाना या दिया जाना। अंतरण। (ट्रांसफ़रेन्स)

हस्तांतरणीय—वि० [सं० हस्तांतरण+छ-ईय] जिसका हस्तांतरण हो सकता हो। संक्राम्य। (ट्रांसफ़रेबुल)

हस्तांतरित—भू० कृ० [सं० हस्तांतर+इतच्] (सम्पत्ति या अधिकार) जो एक के हाथ से दूसरे के हाथ में गया हो। जिसका हस्तांतरण हुआ हो। (ट्रांसफ़र्ड)

हस्तांतरिती—पुं० [सं० हस्तांतरित] वह जिसे किसी सम्पत्ति का अधिकार दिया या सौंपा गया हो। अंतरिती। (ट्रांसफ़री)

हस्ता—स्त्री० [सं० हस्त-टाप्] हस्त-नक्षत्र।

हस्ताक्षर—पुं० [सं० ष० त०] १. हाथ से बनाये हुए अक्षर। २. किसी व्यक्ति द्वारा लिखा जानेवाला अपना नाम जो इस बात का सूचक होता है कि ऊपर लिखी हुई बातें मैंने लिखी हैं और उनका उत्तरदायित्व मुझ पर है। (सिग्नेचर)

हस्ताक्षरक—पुं० [सं०] वह जो लेख आदि पर हस्ताक्षर करे। दस्तखत करनेवाला। (सिगनेटरी)

हस्ताक्षरित—भू० कृ० [सं० हस्ताक्षर+इतच्] जिस पर किसी के हस्ताक्षर हुए हों। दस्तखत किया हुआ।

हस्ताग्र—पुं० [सं० ष० त०] १. हाथ का अगला भाग। २. उँगलियों के पोर।

हस्तादान—पुं० [सं० तृ० त०] हाथ से ग्रहण करना या लेना।

हस्ताभरण—पुं० [सं० ष० त०] १. हाथ में पहनने का गहना। २. एक प्रकार का साँप।

हस्तामलक—पुं० [सं० मध्य० स०] १. हाथ में लिया हुआ आँवला, जो बिलकुल स्पष्ट दिखलाई देता हो। २. ऐसी वस्तु या विषय जिसका अंग-प्रत्यंग हाथ में लिए हुए आँवले के समान अच्छी तरह दिखाई दे और समझ में आ गया हो। वह चीज या बात जिसका हर पहलू उसी तरह साफ-साफ जाहिर हो गया हो जिस तरह हथेली पर रखे हुए आँवले का होता है।

हस्ता-हस्ति—स्त्री० [सं०] हाथों से होनेवाली खींच-तान। हाथा-पाई।

हस्ति—पुं०=हस्ती (हाथी)।

हस्तिकंद—पुं० [सं० मध्य० स०] एक पौधा जिसका कंद खाया जाता है। हाथीकंद।

हस्तिक—पुं० [सं० हस्ति+कन्] हाथियों का समूह।

हस्ति-करंज—पुं० [सं० उपमि० स०] बड़ी जाति का करंज या कंजा।

हस्ति-कर्ण—पुं० [सं० ब० स] १. अंडी का पेड़। रेंड। २. टेसू। पलास। ३. कच्चू। बंडा। ४. एक गण देवता। ५. शिव का एक गण।

हस्ति-कर्णिका—स्त्री० [सं०] हठयोग में एक प्रकार का आसन।

हस्तिका—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का प्राचीन बाजा जिसमें बजाने के लिए तार लगे रहते थे।

हस्ति-जिह्वा—स्त्री० [सं०] दाहिनी आँख की एक नस।

हस्ति-दंत—पुं० [सं० ष० त०] १. हाथी-दाँत। २. खूँटी। ३. मूली।

हस्ति-दंती—पुं० [सं०] मूली।

हस्ति-नख—पुं० [सं० ष० त०] १. हाथी के नाखून। २. वह बुर्ज या टीला जो गढ़ की दीवार के पास उन स्थानों पर बना होता है जहाँ चढ़ाव होता है।

हस्तिनपुर—पुं० [सं०]=हस्तिनापुर।

हस्तिनापुर—पुं० [सं० तृ० त० अलुक् स०] आधुनिक दिल्ली के उत्तर-पूर्व का एक प्रसिद्ध प्राचीन नगर जहाँ महाभारत के संबंध की अनेक घटनाएँ हुई थीं।

हस्ति-नासा—स्त्री० [सं० ष० त०] हाथी का सूँड़।

हस्तिनी—स्त्री० [सं० हस्तिन्-ङीप्] १. मादा हाथी। हथिनी। २. काम-शास्त्र और साहित्य के अनुसार चार प्रकार की स्त्रियों में ऐसी स्त्री जिसका शरीर बहुत अधिक मोटा हो, जो बहुत अधिक खाती हो और जिसमें काम-वासना बहुत प्रबल हो। ऐसी स्त्री बहुत निकृष्ट और अदम्य मानी गई है।

हस्ति-पिप्पली—स्त्री० [सं० मध्य० स०] गज-पिप्पली।

हस्ति-प्रमेह—पुं० [सं०] प्रमेह का एक भेद जिसमें मूत्र के साथ हाथी के मद-जैसा पदार्थ रुक-रुककर निकलता है।

हस्ति-मकर—पुं० [सं०] गवप नामक जल-जंतु। (ड्यूगांग)

हस्ति-मल्ल—पुं० [सं० सप्त० स०] १. ऐरावत। २. गणेश। ३. उड़ती हुई धूल। ४. पीला।

हस्ति-मुख—पुं० [सं० ब० स०] गणेश।

हस्ति-मेह—पुं० [सं०]=हस्ति-प्रमेह।

हस्ति-व्यूह—पुं० [सं० मध्य० स०] प्राचीन भारत, में सेना के हाथियों का वह व्यूह जिसमें आक्रमण करनेवाले हाथी उरस्य में, तेज दौड़नेवाले (अपवाह्य) मध्य में, और व्याल (मतवाले) पक्ष में होते थे। (कौ०)

हस्ति-श्यामक—पुं० [सं०] १. काला सावाँ। २. बाजरा।

हस्ती (तिन्)—पुं० [सं०] [स्त्री० हस्तिनी] १. हाथी। २. अजमोदा।

हस्ती—स्त्री० [सं० अस्ति से फा०] १. वर्तमान होने की अवस्था। अस्तित्व। २. किसी व्यक्ति का अस्तित्व या व्यक्तित्व। जैसे—मेरे सामने उसकी हस्ती ही क्या है।

हस्ते—अव्य० [सं०] किसी के हाथ से। मारफ़त। द्वारा। जैसे—यह माल तो तुम्हारे हस्ते ही वहाँ गया था। (महाजनी बोल-चाल)

हस्त्य—वि० [सं० हस्त+यत्] १. हाथ-संबंधी। हाथ का। २. हस्त नक्षत्र-संबंधी।

पुं० हाथ में पहनने का दस्ताना।

हस्त्यध्यक्ष—पुं० [सं० स० त०] हाथियों का प्रधान अधिकारी और निरीक्षक।

हस्त्याजीव—पुं० [सं० हस्ति-आ√जीव् (जीना) णिच्-अच्] १. हाथियों का व्यवसायी। २. पीलवान। महावत।

हस्त्यायुवद—पुं० [सं० मध्य० स०] आयुर्वेद या चिकित्सा-शास्त्र का वह अंग जिसमें हाथियों के रोगों और उन्हें दूर करने के उपायों का विवेचन है।

हस्त्यालुक—पुं० [सं०] हाथी-कंद।

हस्ब—अव्य० [अ०] किसी के अनुकूल या अनुसार। मुताबिक। जैसे—हस्ब कानून=कानून के अनुसार। हस्ब मामूल=साधारणतः जैसा होता आया हो, वैसा।

हहर—स्त्री० [हिं० हहरना] १. हहरने की अवस्था, क्रिया या भाव। कँपकँपी। २. डर। भय।

हहरना—अ० [अनु०] १. काँपना। थरथरना। २. डर या भय से काँपना। थर्राना। ३. चकित या दंग हो जाना। ४. ईर्ष्या से क्षुब्ध होना।

संयो० क्रि०—उठना।—जाना।—पड़ना।

हहराना—स० [हिं० हहरना का स०] किसी को हहराने में प्रवृत्त करना।

†अ=हहरना (काँपना)।

हहल—पुं०=हलाहल (विष)।

† स्त्री०=हहर।

हहलना†—अ०=हहरना।

हहलाना—स०, अ०=हहराना।

हहा—स्त्री० [अनु०] जोर से हँसने का शब्द। ठहाका।

स्त्री० [हिं० हाय-हाय] १. गिड़गिड़कार दीनता प्रकट करने की क्रिया या भाव।

मुहा०—हहा खाना=हाय-हाय करते हुए गिड़गिड़ाना।

२. हाहाकार।

हहु*—अ० [हिं० 'हो' (होना क्रिया से) का अवधी रूप] हो।

हाँ—अव्य० [सं०] एक अव्यय जिसका प्रयोग नीचे लिखे अर्थों में होता है। १. कोई प्रश्न होने पर उसके उत्तर में सहमति सूचित करने के लिए। जैसे—हाँ जा सकते हो। २. कोई विचार, प्रस्ताव आदि प्रस्तावित या प्रस्तुत होने पर उसका समर्थन करने के लिए। जैसे—हाँ जरूर चलना चाहिए।

मुहा०—(किसी की) हाँ में हाँ मिलाना=बिना सोचे-विचारे किसी की बात का समर्थन करना।

३. कुछ बतलाये या पुकारे जाने पर उत्तर के रूप में तत्परता सूचित करने के लिए। जैसे—(क) हाँ, तो फिर क्या हुआ? (ख) हाँ, पिता जी। ४. किसी उल्लिखित नकारात्मक कथन के बाद कोई और रियायत देने के प्रसंग में। जैसे—मैं उसके घर नहीं जाऊँगा, हाँ यदि वह आया तो उससे मिल अवश्य लूँगा।

हाँक—स्त्री० [सं० हुंकार] १. किसी को पुकारने या बुलाने के लिए अथवा कोई बात सूचित करने के लिए जोर से कहा जानेवाला शब्द। पुकार।

मुहा०—हाँक देना या हाँक लगाना=जोर से पुकारना या सबको सुनाने के लिए कोई बात कहना। **डाँक-पुकार कर कहना**=खुले आम, डंके की चोट या सब को सुनाकर कहना।

२. किसी को डाँटने-डपटने, बढ़ावा देने या ललकारने आदि के लिए जोर से कहा जानेवाला शब्द। ३. सहायता प्राप्त करने के लिए मचाई जानेवाली पुकार। दुहाई।

हाँकना—स० [हिं० हाँक+ना (प्रत्य०)] १. जोर से चिल्लाकर बुलाना। हाँक देना या हाँक लगाना। २. लड़ाई के समय हुंकार करते हुए शत्रु

को ललकारना। ३. खुले अथवा गाड़ी आदि में जुते हुए जानवरों को आगे बढ़ाने के लिए मुँह से कुछ कहते हुए चाबुक लगाना या ऐसी ही और कोई क्रिया करना। जैसे—घोड़ा या बैल हाँकना। ४. कोई ऐसी सवारी चलाना जिसमें कोई पशु जुता हो। जैसे—एक्का, ताँगा या बैल-गाड़ी हाँकना ५. उक्ति या कथन संबंधी कुछ शब्दों के संबंध में, बहुत बढ़-बढ़ कर या लंबी-चौड़ी बातें करना। जैसे—गप हाँकना, झूठी-सच्ची बातें हाँकना, शेखी हाँकना। ६. पंखे के संबंध में, झलना। हिलाना। जैसे—पंखा हाँकना। ७. मक्खियों आदि के संबंध में, किसी वस्तु या स्थान पर बैठने से रोकने के लिए किसी चीज से हवा करना या कोई चीज हिलाना। जैसे—मिठाई के थाल पर बैठनेवाली मक्खियाँ हाँकना।

हाँका—पुं० [हिं० हाँकना] जंगली जानवरों का शिकार करने के लिए उन्हें हाँक कर ऐसी जगह ले जाना, जहाँ सहज में उनका शिकार हो सके। हँकुआ।

पुं० [हिं० हाँक] १. पुकार। टेर। २. ललकार। ३. गरज। ४. 'हँकवा'।

हाँ-कारी—पुं० [हिं०] किसी के पक्ष या समर्थन में 'हाँ' कहनेवाले लोग या सदस्य।

स्त्री० किसी प्रस्ताव के पक्ष के समर्थन में 'हाँ' कहने की क्रिया या भाव।

हाँगर†—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बड़ी मछली।(शार्क)

हाँगा—पुं० [सं० अंग] १. शरीर का बल। बूता। ताकत। २. साहस। हिम्मत। ३. बलपूर्वक किया जानेवाला अनुचित काम। अत्याचार। जबरदस्ती।

†वि० [?] दुबला-पतला और कमजोर।

हाँगी—स्त्री० [हिं० हाँ] हामी। स्वीकृति।

मुहा०—**हाँगी भरना**=हामी भरना।

†स्त्री०=आँगी (चलनी)।

हाँडना—अ०[सं० हिंडन] १. पैदल चलना। २. इधर-उधर घूमना-फिरना। ३. पीछे हटना। भागना।

वि०[स्त्री० हाँडनी] व्यर्थ इधर-उधर घूमता फिरता रहनेवाला। जैसे—हाँड़नी नारि।

†स०=हँडवना।

हाँडी—स्त्री०[सं० हंडिका] १. देगची के आकार का मिट्टी का वह छोटा गोलाकार बरतन, जिसमें खाने-पीने की चीजें उबाली या पकाई जाती हैं। हंडी। हँड़िया।

पद—**काठ की हाँड़ी**=ऐसा छल जो एक बार तो उद्देश्य सिद्ध कर दे, पर हर बार सिद्ध न कर सके। **बावली हाँड़ी**=ऐसी हाँड़ी जिसमें कई तरह की दालें, तरकारियाँ और इस तरह की दूसरी कई चीजें पकने के लिए एक साथ डाल दी गई हों।

मुहा०—**हाँड़ी उबलना**= ओछे व्यक्ति का बहुत अभिमान करना या इतराना। **हाँड़ी चढ़ाना**=भोजन बनाने के लिए आग या चूल्हे पर हाँड़ी रखना। **हाँड़ी पकना**=(क) हाँड़ी में पकाई जानेवाली चीज का पकना। २. किसी बात के संबंध में गुप्त रूप से परामर्श होना। जैसे—कल उन यारों में खूब हाँड़ी पक रही थी।

मुहा०—**(किसी के नाम पर) हाँड़ी फोड़ना**=(क) किसी के चले जाने पर प्रसन्न होना। (ख) किसी बिगड़े हुए काम का दोष किसी के मत्थे मढ़ना। किसी को दोषी ठहराना।

३. उक्त आकार का शीशे का वह पात्र, जो सजावट के लिए कमरे में टाँगा जाता है और जिसमें मोमबत्ती जलाई जाती है।

हाँतना—स० [सं० हात] १. अलग या जुदा करना। २. दूर या परे करना।

†स०=हतना (वध करना)।

हाँता*—वि० [सं० हात=छोड़ा हुआ] [स्त्री० हाँती] अलग किया या छोड़ा हुआ। त्यक्त।

हाँते†—अव्य०[हिं० हाँता] पृथक्। अलग। उदा०—वीर रस मदमाते रन तें न होत हाँते।—सेनापति।

हाँपना†—अ०=हाँफना।

हाँफना—अ०[देश०] थकावट, भय आदि के कारण फेफड़ों का जल्दी-जल्दी और लंबे-लंबे साँस लेने लगना।

हाँफा—पुं०[हिं० हाँफना] १. हाँफने का रोग। २. हाँफने के समय श्वास के जल्दी-जल्दी और जोर-जोर से चलते रहने का क्रम।

क्रि० प्र०—छूटना।—लगना।

हाँफी—स्त्री०[हिं० हाँफना]=हाँफा।

हाँबोरी—स्त्री०[सं०] एक प्रकार की रागिनी।

हाँमेला—पुं०[देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

हाँवँ†—वि० [सं० हीन?] रहित। विहीन। (लखनऊ) उदा०—इस पर भी लय से हाँवँ रही।—मिर्जा रुसवा।

हाँस†—स्त्री०=हाँसी (हँसी)।

हांस—वि०[सं०] हंस सम्बन्धी। हंस का।

हाँसना†—अ०=हँसना।

हाँसल†—पुं०=हाँसुल।

हाँसबर†—वि०=हँसीला।

हाँसिल—स्त्री० [अं० हाजर] १. रस्सा लपेटने की गड़ारी। २ जहाज या नाव के लंगर में बाँधा जानेवाला रस्सा।

†वि०=हासिल।

हाँसी†—स्त्री०=हँसी। जैसे—रोग का घर खाँसी, लड़ाई का घर हाँसी। (कहा०)

हाँसु†—स्त्री० १.=हँसी। २. हँसली।

हाँसुल—पुं०[?] ऐसा घोड़ा जिसका सारा शरीर मेंहदी के रंग का और पैर कुछ काले हों।

हाँ-हाँ—अव्य० [हिं० अहाँ=नहीं] निषेध या वारण करने का शब्द। जैसे—हाँ-हाँ! यह क्या कर रहे हो?

अव्य० सहमति या स्वीकृति का शब्द।

हा—अव्य० [सं० √हा+का] १. दुःख, भय, शोक आदि का सूचक शब्द।

मुहा०—**हा हा खाना**= बहुत ही दीनतापूर्वक और गिड़गिड़ाकर रक्षा, सहायता आदि की प्रार्थना करना।

२. आश्चर्य या प्रसन्नता का सूचक शब्द। ३. हनन करनेवाला। मार डालनेवाला। यौ० के अन्त में। जैसे—वृत्तहा।

अव्य०, स्त्री०=हाय।

*अ०[स्त्री० ही] 'होना' क्रिया का भूतकालिक रूप। था। उदा०—तोसों कबहुँ भई ही भेंटा।—तुलसी।

हाइ†—अव्य० =हाय।

हाइफन—पुं० [अं० हाइफ़न] पदों के योग का सूचक चिह्न (-) जो यौगिक शब्दों के बीच में लगाया जाता है। जैसे—दिल-दिमाग, धरती-आसमान।

हाई—स्त्री० [सं० घात?] १. दशा। हालत। जैसे—अपनी हाई और परछाई। २. ढंग। तरह। तरीका। ३. घात करने की चाल या तरकीब। उदा०—वातनि सुहृद, करम कपटी के, चले चोर की हाई।—सूर।

†स्त्री०=हाही।

हाई-कोर्ट—पुं० [अं०] उच्च न्यायालय।

हाउ†—अव्य०=हाँ। उदा०—हाउ हाउ वह स्वर्ण-पुरुष।—पन्त।

हाउस—पुं० [अं०] १. घर। मकान। २. दे० 'सदन'।

हाऊ†—पुं० दे० 'हौआ'।

हाकर—पुं० [अं०] फेरी करके छोटी-मोटी वस्तुएँ बेचनेवाला व्यक्ति। फेरीदार।

हाकलि—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का मात्रिक समछन्द, जिसके प्रत्येक चरण में १४ मात्राएँ होती हैं। इसके पहले और दूसरे चरणों में ११ तथा तीसरे और चौथे चरणों में १० अक्षर होते हैं।

हाकलिका—स्त्री० [सं०]=हाकलि (छन्द)।

हाकिनी—स्त्री० [सं०] डाकिनी की तरह की एक प्रचंड देवी।

हाकिम—पुं० [अ०] १. हुकूमत करनेवाला व्यक्ति। शासक। २. प्रधान या बड़ा अधिकारी।

हाकिमाना—वि० [अ० हाकिम+फा० आनः] हाकिमों के ढंग, तरह या प्रकार का।

हाकिमी—स्त्री० [अ० हाकिम+ई (प्रत्य०)] १. हाकिम होने की अवस्था या भाव। २. हाकिम का पद।

हाकी—पुं० [अं०] १. गेंद खेलने की एक प्रकार की छड़ी, जिसका अगला सिरा कुछ मुड़ा हुआ होता है। २. उक्त छड़ियों तथा गेंद से खेला जानेवाला खेल।

हाजत—स्त्री० [अ०] १. ऐसी अपेक्षा या आवश्यकता, जिसकी, पूर्ति यथासाध्य शीघ्र की जाने को हो। जैसे—पाखाने या पेशाब की हाजत। २. वह स्थान जहाँ हिरासत में लिया हुआ आदमी बंद रखा जाता है। (कस्टडी)

क्रि० प्र०—में देना।—में रखना।

हाजती—वि० [हिं० हाजत] १. जिसे किसी चीज की हाजत या आवश्यकता हो। २. लाक्षणिक रूप में, दरिद्र और दीन-हीन। ३. (व्यक्ति) जो हाजत या हवालात में रखा गया हो। हवालाती।

स्त्री० वह पात्र जो रोगियों के बिस्तर के पास मल-मूत्र का त्याग या विसर्जन करने के लिए रखा रहता है।

हाजमा—पुं० [अ० हाज़िमः] १. पाचन-क्रिया। २. पाचन-शक्ति।

हाजरी†—स्त्री०=हाजिरी।

हाजिक़—वि० [अ० हाज़िक़] किसी विषय का बहुत बड़ा ज्ञाता या पंडित।

हाजिर—वि० [अ० हाज़िर] १. उपस्थित। मौजूद। २. प्रस्तुत।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

हाजिर-जवाब—वि० [अ० हाज़िर-जवाब] [भाव० हाजिर-जवाबी] प्रश्न या बात का उत्तर विशेषतः यथोचित उत्तर तुरंत देनेवाला। उत्तर देने में निपुण।

हाजिर-जवाबी—स्त्री० [अ०] हाजिर-जवाब होने की अवस्था, गुण या भाव।

हाजिर-बाश—वि० [अ०+फा०] [भाव० हाजिर-बाशी] सदा अथवा प्रायः हाजिर अर्थात् सेवा में उपस्थित रहनेवाला।

हाजिर-बाशी—स्त्री० [अ०+फा०] १. सदा किसी की सेवा में उपस्थित या हाजिर रहने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. उक्त स्थिति में रहकर की जानेवाली खुशामद और छोटी-मोटी सेवाएँ।

हाजिराई—वि०, पुं०=हाजिराती।

हाजिरात—स्त्री० [अ०] [वि० हाजिराती] एक प्रकार का प्रयोग जिसमें आराधना करके अथवा मनोबल से किसी पर मृत व्यक्तियों की आत्माएँ बुलाई जाती हैं और उससे अनेक प्रकार के प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किये जाते हैं।

हाजिराती—वि० [अ० हाजिरात] हाजिरात-संबंधी। हाजिरात का। पुं० वह जो हाजिरात करता हो।

हाजिरी—स्त्री० [अ० हाज़िरी] १. हाजिर रहने या होने की अवस्था या भाव। २. बड़ों के सामने उपस्थित रहना या होना।

क्रि० प्र०—देना।—बजाना।

३. नौकरों की अपने कार्य, पद या समय पर होनेवाली उपस्थिति।

क्रि० प्र०—देना।—लिखना।—लिखाना।—लेना।

४. अँगरेजों आदि का सवेरे का जल-पान।

हाजिरी-बही—स्त्री० दे० 'उपस्थिति पंजी' (अटेंडेंस रजिस्टर)

हाजी—पुं०[अ०] वह मुसलमान जो (क) हज की यात्रा करने जा रहा हो, या (ख) हज की यात्रा कर आया हो।

हाट—स्त्री०[सं० हट्ट] १. प्राचीन काल में वह बाजार, जो कुछ नियत या विशिष्ट स्थानों, विशिष्ट अवसरों पर या विशिष्ट दिनों में लगता था। २. परवर्ती काल में स्थायी रूप से बना और बसा हुआ बाजार।

पद—हाट-बाट।

मुहा०—हाट करना= बाजार जाकर चीजें या सामान खरीदना। **(किसी चीज का) हाट चढ़ना**= बिकने के लिए बाजार में आना या पहुँचना।

३. दुकान।

हाटक—पुं० [सं० √हट्+ण्वुल्—अक] १. भाड़ा। किराया। जैसे—नौका-हाटक। २. सोना। स्वर्ण। ३. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश।

हाटक-पुर—पुं० [सं० मध्य० स०] लंका जो लोक-प्रवाद के अनुसार सोने की बनी हुई थी।

हाटक-लोचन—[पुं० सं० ब० स०] हिरण्याक्ष।

हाटकी—स्त्री०[सं०] अधोलोक या पाताल की एक नदी।

हाटकीय—वि० [सं० हाटक+ईय] १. स्वर्ण-संबंधी। सोने का। २. सोने का बना हुआ।

हाटकेश—पुं०[सं० ष० त०] शिव की एक मूर्ति जिसका प्रधान मन्दिर दक्षिण भारत में गोदावरी के तट पर है।

हाड़—पुं० [सं० हड्ड] १. शरीर में की अस्थि। हड्डी। २. कुल या वंश की परम्परा के विचार से मनुष्य का गौरव या महत्त्व। कुलीनता की मर्यादा।

†पुं० [सं० आषाढ़] [वि० हाड़ी] आषाढ़ मास। असाढ़।

हाड़ना†—स०[सं० हरण] कोई चीज तौलने से पहले यह देखना कि तराजू के दोनों पलड़े बराबर हैं या नहीं और यदि न हों, तो उन्हें बराबर करना। धड़ा करना।

†अ० =हाड़ना।

हाड़ा—पुं०[?] क्षत्रियों की एक शाखा।

†पुं०=हड्डा (बर्रे)।

पुं०=कौआ।

हाड़ी—वि०[हिं० हाड़=आषाढ़] आषाढ़ मास संबंधी। असाढ़ी।

पुं० एक प्रकार का पहाड़ी राग।

पुं०[?] १. एक प्राचीन अन्त्यज जाति जो पहले बौद्ध थी, पर पीछे नाथमार्गी हो गई थी। २. एक प्रकार का बगला।

†स्त्री०[हिं० हाँड़ी?] धान कूटने की ओखली। ऊखल।

हात—वि०[सं० √ हा (त्याग देना)+क्त] छोड़ा हुआ। त्यागा हुआ।

†पुं० =हाथ।

हातव्य—वि० [सं० √हा (छोड़ना)+तव्य] छोड़े जाने के योग्य। त्याज्य।

हाता—वि०[सं० हंता] मारनेवाला। वध करनेवाला।

†वि०[सं० हात] [स्त्री० हाती] नष्ट या बरबाद किया हुआ।

†पुं० १.=अहाता। २.=हाथा।

हातिम—पुं०[अ०] १. निपुण। चतुर। उस्ताद। २. प्राचीन काल का एक प्रसिद्ध अरब सरदार जो बहुत बड़ा दानी और परोपकारी था।

मुहा०—**हातिम की कब्र पर लात मारना**=बहुत अधिक परोपकार करना। (व्यंग्य)

३. बहुत बड़ा दानी और परोपकारी व्यक्ति।

हातु—पुं०[सं०] १. मृत्यु। मौत। २. सड़क।

हाथ—पुं०[सं० हस्त, प्रा० हत्थ] १. मनुष्य के शरीर में कंधे से उँगलियों तक का वह अंग, जिससे अधिकतर काम किये जाते हैं और चीजें खाई, पकड़ी या ली-दी जाती हैं। कर। हस्त।

विशेष—(क) वानर जाति के प्राणियों में उनके अगले दोनों पैर और पक्षियों में उनके दोनों पैर ही मनुष्य के हाथों का बहुत कुछ काम देते हैं। (ख) मनुष्यों के संबंध में यह अंग उनकी क्रियाशीलता या कर्मठता, अधिकार या वश, उदारता, कृपणता, चतुरता, दक्षता आदि का भी सूचक होता है। आज-कल अँगरेजी के अनुकरण पर यह शब्द काम करनेवाले व्यक्तियों का भी वाचक हो गया है।

पद—**हाथ का चक्का**= जो ठीक तरह से या दक्षतापूर्वक काम न कर सकता हो। **हाथ का झूठा**= चोर, धोखेबाज या बेईमान। **हाथ का दिया**= जो दान के रूप में या परोपकार के लिए दिया गया हो। **हाथ का सच्चा**=(क) जो लेन-देन आदि में किसी प्रकार का छल या बेईमानी न करता हो। (ख) जिसका आघात, युक्ति या वार ठीक और पूरा काम करता हो। **हाथ या हाथ-पैर की मैल**= बहुत ही तुच्छ पदार्थ या वस्तु। जैसे—रुपया-पैसा तो उनके लिए हाथ-पैर की मैल है। **हाथ से**=द्वारा। मारफत। जैसे—उसी के हाथ से तो किताबें भी भेजी थीं। **हाथों-हाथ** से। **हाथों हाथ**=(क) एक के हाथों से दूसरे के हाथों में होते हुए। जैसे—बात की बात में सारा सामान हाथों-हाथ उठकर दूसरे मकान में चला गया। (ख) तत्काल। तुरन्त। जैसे—यहाँ तो माल आते ही हाथों-हाथ बिक जाता है। **रँगे हाथ (या हाथों)**=कोई अपराध करते समय उसके प्रमाण के साथ। जैसे—खूनी (या चोर) रँगे हाथों पकड़ा गया। **लगे हाथ (या हाथों)**=(क) जिस समय कोई काम हो रहा हो, उसी समय और उसके साथ ही साथ। जैसे—जब आप संशोधन कर ही रहे हैं, तब लगे हाथ इस कविता का भी संशोधन कर दीजिए। (ख) साथ ही साथ। उदा०—पनघट पे जो अपनी कभी असवारी गई है। तो वाँ भी लगे हाथ यही ख्वारी गई है।—नजीर।

मुहा०—**(कोई चीज) हाथ आना**=प्राप्त होना। मिलना। उदा०—जलाकर हिज्र ने मारा, कजा के हाथ क्या आया?—कोई शायर। **हाथ उठाकर कोसना**=ईश्वर से यह प्रार्थना करते हुए कोसना कि हमारा शाप पूरा हो। **(किसी को) हाथ उठाकर देना**=अपनी इच्छा, उदारता या प्रसन्नता से किसी को कुछ देना। जैसे—हमें तो तुम जो कुछ हाथ उठाकर दे दोगे, वही हम खुशी से ले लेंगे। **(किसी काम या बात से) हाथ उठाना**=अलग या दूर होना। बाज आना। उदा०—हम हाथ उठा बैठे दुआओं के असर से।—कोई शायर। **(किसी को) हाथ उठाना**=अभिवादन, नमस्ते या सलाम करना। जैसे—वे जिधर जाते थे, उधर सब लोग हाथ उठाते थे। **(किसी पर) हाथ उठाना**=किसी को मारना, पीटना या किसी प्रकार का आघात करना। **हाथ ऊँचा होना**=दान, व्यय आदि के लिए मन में सदा उदारता का भाव रखना। **किसी के आगे) हाथ जोड़ना**= दे० नीचे 'हाथ पसारना या फैलाना'। **हाथ कटना या कट जाना**= (क) प्रतिज्ञा, लेख्य आदि से इस प्रकार बद्ध हो जाना कि उसके विपरीत कुछ किया न जा सके। (ख) साधन, सहायक आदि से रहित हो जाना। जैसे—भाई के मरने से उनके हाथ कट गये। **हाथ के नीचे या हाथ-तले आना**=अधिकार या वश में आना। चंगुल में फँसना। जैसे—जब वह तुम्हारे हाथ के नीचे आ ही गया, तब कहाँ जा सकता है! **हाथ खाली जाना**=प्रहार या वार का ठीक लक्ष्य पर न बैठना। **हाथ खाली होना**=(क) व्यय करने के लिए कुछ भी पास न होना। (ख) करने के लिए कोई काम हाथ में न होना। **(किसी काम या बात से) हाथ खींचना**= कोई काम करते करते सहसा उससे अलग या दूर होना, अथवा उसमें त्रुटि या शिथिलता करने लगना। **हाथ खुजलाना**=(क) किसी को मारने को जी करना। (ख) आर्थिक प्राप्ति या लाभ का योग या लक्षण दिखाई देना। **हाथ खुलना**= किसी में मारने-पीटने की प्रवृत्ति का आरंभ होना। जैसे—इसी तरह अगर उसका हाथ खुल गया, तो वह तुम्हें रोज मारने लगेगा। **हाथ खुला होना**=दान, व्यय आदि के संबंध में उदार प्रवृत्ति होना। जैसे—उनका हाथ खुला था, इसलिए थोड़े ही दिनों में सारी पूँजी खत्म हो गई। **हाथ गरम होना**=किसी प्रकार की आर्थिक प्राप्ति या लाभ होना। **हाथ चलना**=(क) किसी काम में हाथ का हिलना-डोलना। (ख) मारने

के लिए हाथ उठना। (ग) व्यय आदि के लिए उचित या यथेष्ट आय अथवा प्राप्ति होना। **(किसी के) हाथ चूमना**=किसी की कला, निपुणता आदि पर मुग्ध होकर उसके हाथों का भरपूर आदर या सम्मान करना। जैसे—इस चित्र को देखकर जी चाहता है कि चित्रकार के हाथ चूम लूं। **हाथ छूटना**= किसी को मारने के लिए हाथ उठना। **(किसी पर) हाथ छोड़ना**= मारना-पीटना। प्रहार करना। **(किसी काम में) हाथ जमना, बैठना, मँजना या सधना**=कोई काम करने का ठीक और पूरा अभ्यास होना। **(किसी को) हाथ जोड़ना**=(क) अभिवादन, नमस्कार या प्रणाम करना। (ख) किसी प्रकार का अनुग्रह या कृपा प्राप्त करने के लिए अनुनय-विनय करना। **(दूर से) हाथ जोड़ना**= बिलकुल अलग या दूर रहना। किसी प्रकार का संपर्क या संबंध न रखना। **हाथ झाड़कर खड़े हो जाना**= खाली हाथ दिखा देना। कह देना कि मेरे पास कुछ नहीं है या मुझसे कुछ नहीं हो सकता। जैसे—तुम्हारा क्या, तुम तो हाथ झाड़कर खड़े हो जाओगे सारा खर्च हमारे सिर पड़ेगा। **(किसी काम में) हाथ झाड़ना**= खूब चालाकी, फुरती या सफाई दिखाना। अच्छी तरह हाथ चलाना। जैसे—लड़ाई में योद्धाओं ने तलवारों के खूब हाथ झाड़े। **हाथ झुलाते या हिलाते आना**=कुछ भी करके या लेकर न लौटना। खाली हाथ आना। **(किसी काम में) हाथ डालना**= (क) किसी काम में योग देना, सम्मिलित होना या उसका सम्पादन आरंभ करना। (ख) दखल देना। हस्तक्षेप करना। **(किसी पर) हाथ डालना**= (क) किसी को मारना-पीटना। (ख) किसी से छेड़-छाड़ करना। जैसे—मेले में उसने किसी स्त्री पर हाथ डाला था, इसलिए लोगों ने उसे खूब मारा। **हाथ तंग होना**=हाथ में व्यय के लिए यथेष्ट धन न होना। **हाथ दबना**=(क) पास में यथेष्ट धन न होना। (ख) असमंजस या कठिनता में पड़ना। जैसे—अभी तो इस मुकदमे के कारण हमारा हाथ दबा है। **हाथ दबाकर खर्च करना** जहाँ तक हो सके, कम खर्च करना। **(किसी काम में) हाथ दिखाना**= हाथ का कौशल या निपुणता दिखाना। **(किसी चिकित्सक को) हाथ दिखाना**= रोग का निदान कराने के लिए चिकित्सक से नाड़ी की परीक्षा कराना। **(किसी ज्योतिषी को) हाथ दिखाना**=भविष्य या भाग्य का हाल जानने के लिए हथेली की रेखाओं आदि की परीक्षा कराना। **(किसी को) हाथ देना**= (क) सहारा देना। सहायक होना। (ख) इशारा या संकेत करना। (ग) दे० 'हाथ मिलाना'। **(किसी का) हाथ धरना**= दे० नीचे 'हाथ पकड़ना'। **(किसी चीज से) हाथ धोना**= (क) गँवा या खो देना। (ख) प्राप्ति की आशा छोड़ देना। **हाथ धोकर पीछे पड़ना**=पूरी तरह से प्रयत्न में लग जाना। **हाथ न रखने देना**=(क) बातों में जरा भी न आना। जैसे—उसे कैसे राजी करें, वह हाथ तो रखने ही नहीं देता। (ख) कुछ भी दवाव या नियन्त्रण सहन न करना। जैसे—यह घोड़ा इतना तेज है कि हाथ नहीं रखने देता। **(किसी स्त्री का हाथ) न होना**=मासिक धर्म या रजस्वला होने के कारण घर-गृहस्थी के काम करने के योग्य न होना। जैसे—आज बहू का हाथ नहीं था, इसलिए माता जी को रसोई बनानी पड़ी। **(किसी का) हाथ पकड़ना**= (क) किसी को कोई काम करने से रोकना। (ख) किसी के सहायक बनकर उसे अपने आश्रय या शरण में लेना। (ग) पाणि-ग्रहण या विवाह करके पत्नी बनाना। **(किसी के) हाथ पड़ना या हाथ में पड़ना**=किसी के अधिकार या वश में होना। किसी के पल्ले पड़ना। उदा०—छाड़हु पाखंड मानहु बात नाहिं तो परिहौ जम के हाथ।—कबीर। **हाथ पर नाग खेलाना**=बहुत जोखिम का और विकट काम करना। **हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना**= खाली बैठे रहना। कुछ न करना। **(किसी के) हाथ पर हाथ मारना**= प्रतिज्ञा, वचन आदि का पालन करने की दृढ़ता या निश्चय सूचित करने के लिए किसी की हथेली पर अपनी हथेली जोर से पटकना या मारना। **(कुछ) हाथ पल्ले न पड़ना**=(क) कुछ भी प्राप्ति न होना। (ख) कोई लाभदायक परिणाम या फल न मिलना। **(किसी के आगे) हाथ पसारना या फैलाना**=कुछ पाने या माँगने के लिए हाथ आगे करना। **हाथ पसारे**=खाली हाथ। बिना कुछ लिए। उदा०—मुट्ठी बाँधे आया है, हाथ पसारे जायगा। (कहा०) **(लड़की के) हाथ पीले करना**=लड़की का किसी के साथ विवाह कर देना।

विशेष—हिंदुओं में यह प्रथा है कि विवाह से एक दो दिन पहले वर और वधू के हाथों और पैरों पर हल्दी और तेल लगा देते हैं। इसी से उक्त मुहा० बना है।

मुहा०—**हाथ-पैर चलाना, मारना या हिलाना**=(क) जीविका-निर्वाह के लिए कोई काम-धंधा करना। (ख) किसी उद्देश्य या कार्य की सिद्धि के लिए प्रयत्न करना। **(किसी के आगे) हाथ-पैर जोड़ना**= बहुत दीनतापूर्वक अनुनय-विनय करना। **हाथ-पैर निकालना**=(क) मोटा-ताजा होना। (ख) नियंत्रण, मर्यादा आदि का उल्लंघन करते हुए नये और मनमाने ढंग से आचरण करने लगना। **हाथ-पैर पटकना या मारना**= बहुत-कुछ परिश्रम या प्रयत्न करना। **हाथ-पैर फूल जाना**=घबराहट, भय आदि के कारण इतना विचलित होना कि कुछ करते-धरते न बने। **हाथ-पैर हारना**= (क) प्रयत्न करते-करते विफल होने पर साहस या हिम्मत छोड़ बैठना। (ख) वृद्धावस्था के कारण बहुत शिथिल हो जाना। **(किसी के) हाथ बिकना**= (क) पूरी तरह से किसी का अनुयायी दास या भक्त होना। उदा०—मीराँ गिरिधर हाथ बिकानी, लोग कहे बिगरी।—मीराँ। (ख) पूरी तरह से किसी के अधीन या वशवर्ती होना। उदा० —अजहूँ माया हाथ बिकानो।—सूर। **(किसी चीज पर) हाथ फेरना मारना या साफ करना**= चालाकी से या चुपके से कोई चीज कहीं से उड़ा या हथिया लेना। जैसे—किसी के माल पर हाथ फेरना। **(किसी व्यक्ति पर) हाथ फेरना**= स्नेहपूर्वक किसी का शरीर सहलाना। **(किसी के काम में) हाथ बँटाना**= किसी के काम में सम्मिलित होना। योग देना। **(किसी के आगे) हाथ बाँधे खड़े रहना**=हाथ जोड़कर सदा सेवा में उपस्थित रहना। **(किसी के) हाथ बिकना**=किसी का परम अनुयायी, आज्ञाकारी और दास होना। उदा०—मैं निरगुनिया गुन नहिं जानी, एक धनी के हाथ बिकानी।—मीराँ। **हाथ मरोड़ना**=हाथ मलना। पछताना। उदा०—अब पछताव दरब जस जोरी। करहु स्वर्ग पर हाथ मरोरी।—जायसी। **हाथ मलना**= (क) दोनों हथेलियाँ एक दूसरी से मिलाकर उन्हें आपस में मलना या रगड़ना जो किसी बात के लिए दुःखी होने या पछताने का सूचक है। (ख) पछताना।

(किसी से) हाथ मिलाना=(क) किसी से भेंट होने पर उसकी हथेली अपने हाथ में लेकर प्रसन्नता और सद्‌भाव प्रकट करना। (ख) लेन-देन आदि का अथवा और किसी प्रकार का संपर्क या संबंध स्थापित रखना। **हाथ मीड़ना***=दे० ऊपर 'हाथ मलना'। उदा०—मीड़त हाथ, सीस धुनि ठोरत, रुदन करत नृप पारथ।—सूर। **हाथ में करना**=अपने अधिकार या वश में करना। **(किसी के) हाथ में किसी का हाथ देना**=किसी के साथ किसी का विवाह कर देना। **हाथ में रँगना**=अनुचित रूप से धन प्राप्त करना। **(किसी पर) हाथ रखना**=ऐसी बात करना, जिससे कोई दोषी या उत्तरदायी बनाया जा सके या कुछ दबाया जा सके। जैसे—आज तुमने भी उस पर अच्छा हाथ रखा, जिससे वह चुप हो गया। **(किसी के मुँह पर) हाथ रखना**=किसी को बोलने से रोकना। **(किसी के) सिर पर हाथ रखना**= (क) किसी को अपने आश्रय या संरक्षण में लेना। जैसे—अब आप ही इस अनाथ के सिर पर हाथ रखें। (ख) किसी की कसम खाने के लिए उसका सिर छूना। **हाथ रोपना**=दे० ऊपर 'हाथ पसारना'। **(किसी काम में) हाथ लगना**=कार्य आरंभ होना। जैसे—पुस्तक की छपाई में हाथ लग गया है। **(किसी काम में किसी का) हाथ लगना**=किसी प्रकार का संपर्क या संबंध स्थापित होना। जैसे—जिस काम में तुम्हारा हाथ लगेगा, वह कभी पूरा न होगा। **(किसी चीज में) हाथ लगना**=किसी चीज का उपयोग या व्यय आरम्भ होना। जैसे—जब मिठाई में तुम्हारा हाथ लगा है, तब वह काहे को दूसरों के लिए बचेगी। **(कुछ) हाथ लगना**=(क) किसी प्रकार की प्राप्ति होना। गणित में जोड़ लगाते समय वह संख्या नई गिनती में आना, जो अंत की संख्या लिख लेने पर बाकी रहती है। जैसे—१२ के दो रखे, हाथ लगा १। **(एक चीज) हाथ लगना** = प्राप्त होना। मिलना। **हाथ लगाना**= (क) स्पर्श करना। छूना। (ख) कार्य आरंभ करना। **हाथ साधना**=(क) हाथ से किये जानेवाले काम का अभ्यास करना। (ख) कोई विकट काम करने से पहले यह देखने के लिए उसका आरंभ या परीक्षण करना कि यह काम हमसे पूरा हो सकेगा या नहीं। **(किसी चीज पर या किसी पर) हाथ साफ करना**=अच्छी तरह अंत या नाश करना। किसी काम के योग्य न रहने देना या बिलकुल न रहने देना। **हाथों के तोते उड़ जाना**=अचानक कोई बहुत बड़ा, अनिष्ट या दुर्घटना होने पर भौचक्का या स्तब्ध हो जाना। **(किसी को) हाथों में रखना**= बहुत ही आदर या प्रेमपूर्वक अपने पास या साथ रखना। **(किसी को) हाथों हाथ लेना**=बहुत आदर और सम्मानपूर्वक आवभगत या स्वागत-सत्कार करना। २. लम्बाई की एक नाप जो मनुष्य की कोहनी से लेकर पंजे के छोर तक मानी जाती है। चौबीस अंगुल का मान। (क्यूबिट) जैसे—दस हाथ की धोती। बीस हाथ लंबा बाँस।

मुहा०—**हाथ भर का कलेजा होना**=(क) बहुत अधिक साहसी होना। (ख) बहुत अधिक प्रसन्नता होना। **हाथों कलेजा उछलना**=(क) कलेजे में बहुत धड़कन होना। (ख) बहुत अधिक प्रसन्नता होना। ३. किसी कार्य के संचालन में होनेवाला किसी का अंश या प्रेरणा। जैसे—इस मुकदमे में उनका भी कुछ हाथ है। ४. हाथ से किया जानेवाला कोई काम या उसे करने का कोई खास ढंग। जैसे—तलवार का हाथ, लिखावट का हाथ। ५. हाथ से खेले जानेवाले खेलों में हर खिलाड़ी के खेलने की बारी। दाँव। जैसे—तुम तो अपना हाथ चल चुके, अब हमारा हाथ है।

क्रि० प्र०—चलना।

मुहा०—**हाथ मारना**= दाँव या बाजी जीतना।

६. आदि से अन्त तक कोई ऐसा पूरा खेल जो एक बार में हाथ से खेला जाता हो। जैसे—आओ, हमसे भी दो हाथ खेल लो। ७. किसी कार्यालय के कार्यकर्ता। जैसे—आज-कल हमारे यहाँ चार हाथ कम हो गये हैं। ८. औजार या हथियार का दस्ता। मुठिया। हत्था।

हाथ-कंडा†—पुं०=हथकंडा।

हाथ-करघा—पुं०[हिं०]कपड़ा बुनने का कर्घा जो हाथ से चलाया जाता है, बिजली या इंजन से नहीं। (हैंडलूम)

हाथ-धुलाई—स्त्री०[हिं०] वह मजदूरी, जो चमारों आदि को मरे हुए पालतू पशुओं को फेंकने के बदले में दी जाती है।

हाथ-फूल†—पुं०=हथफूल।

हाथ-बाँह—स्त्री० [हिं० हाथ+बाँह] बाँह नामक कसरत करने का एक प्रकार।

हाथल†—पुं० [हिं० हाथ] हाथ का पंजा। उदा०—हाथल बल निरभै हियौ, सरभर न को समत्थ।—बाँकीदास।

हाथा—पुं०[हिं० हाथ]१. दो-तीन हाथ लंबा लकड़ी का एक औजार जिस से सिंचाई करते समय खेत में आया हुआ पानी उलीच कर चारों ओर पहुँचाते हैं। २. तलवार आदि का वार करने का एक ढंग या प्रकार। ३. तलवार का वार। ४. मंगल अवसरों पर हलदी आदि से दीवारों पर लगाई जानेवाली पंजे की छाप। ५. दे० 'हत्था'।

हाथा-छाँटी†—स्त्री० [हिं० हाथ+छाँटना] १. चालाकी। धूर्तता। चालबाजी। २. चालाकी या बेईमानी से कोई चीज उड़ाने या लेने की क्रिया।

हाथा-जड़ी—स्त्री०=हत्थाजड़ी।

हाथा-जोड़ी†—स्त्री०=हत्थाजोड़ी

हाथा-पाई†—स्त्री०=हाथा-बाँही।

हाथा-बाँही—स्त्री०[हिं० हाथ+बाँह] वह लड़ाई जिसमें एक दूसरे के हाँथ को पकड़कर खींचते और ढकेलते हैं।

हाथा-हाथी†—अव्य०[हिं० हाथ+हाथ] हाथों-हाथ। तुरंत।

हाथी—पुं०[सं० हस्तिन] [स्त्री० हथिनी]१. एक बहुत बड़ा प्रसिद्ध स्तनपायी चौपाया, जो अपने स्थूल और विशाल आकार तथा सूँड़ के कारण सब जानवरों से विलक्षण होता है। गज।

पद—**हाथी का खाया कैथ**=ऐसा पदार्थ जो ऊपर से देखने में बिलकुल ठीक और सार-युक्त जान पड़े पर जिसके अन्दर का सार या तत्त्व निकल गया हो। (कहते हैं कि हाथी पूरा कैथ बिना चबाये निगल जाता है और तब वह ठीक उसी रूप में उसकी गुदा से निकलता है; पर उस समय उसके अन्दर से गूदे की जगह लीद भरी रहती है। **हाथी की डहर या राह**=आकाश-गंगा जिसके संबंध में लोक में यह प्रसिद्ध है कि इन्द्र के हाथी इसी रास्ते से आते-जाते हैं। **सफेद हाथी**=दे० स्वतन्त्र शब्द। मुहा०—**हाथी के साथ गन्ने खाना**=किसी काम या बात में ऐसे आदमी की बराबरी करने का प्रयत्न करना जिसकी बराबरी की ही न जा सकती हो। **हाथी पर चढ़ना**= बहुत अधिक प्रतिष्ठित, सम्पन्न या सम्मानित

होना। **हाथी बांधना**= ऐसा काम करना या ऐसी चीज अपने पास रखना, जिसमें प्रायः व्यर्थ का और बहुत अधिक खर्च होता हो। २. शतरंज का एक मोहरा जिसे किश्ती या फील कहते हैं।

स्त्री०[हिं० हाथ] हाथ से दिया जानेवाला सहारा। उदा०—रीझि हँसि हाथी हमैं सब कोउ देत, कहा रीझि हँसि हाथी एक तुमहि पै देत हौ।—भूषण ।

हाथी-कान—पुं०[हिं०] एक प्रकार का बड़ा सेम या चिपटी फली, जिसकी तरकारी बनती है।

हाथी-खाना—पुं० [हिं० हाथी+फा० खानः] वह स्थान जहाँ हाथी रखे जाते हैं। फील-खाना।

हाथी-चक—पुं०[हिं० हाथी+सं०चक्र] एक प्रकार का पौधा, जो औष के काम आता है।

हाथी-चिक्कार—पुं०[हिं० हाथी+सं० चीत्कार] एक प्रकार का बड़ा भाला, जिससे युद्ध क्षेत्र में हाथी पर वार किया जाता था।

हाथी-दाँत—पुं० [हिं० हाथी+दाँत] नर हाथी के मुँह के दोनों छोरों पर डेढ़ हाथ निकले हुए सफेद दाँत जो केवल दिखावटी होते हैं, पर जिनसे अनेक प्रकार की सुन्दर, बहु-मूल्य चीजें बनती हैं।

हाथी-नाल†—स्त्री०=हथनाल।

हाथी-पांव—पुं० [हिं० हाथी+पाँव] १. एक प्रकार का बढ़िया सफेद कत्था। २. फील या श्लीपद नामक रोग।

हाथी-पीच—पुं०[हिं० हाथी+पीच] एक प्रकार का हाथी-चक (पौधा) जो औषध के काम आता है।

हाथी-बच—स्त्री०[हिं० हाथी+बच] एक पौधा जिसके पत्तों की तरकारी बनाई जाती है।

हाथीवान—पुं०[हिं० हाथी+वान (प्रत्य०)] वह जो हाथी चलाता हो। फीलवान। महावत।

हाथी-सूँड़—पुं०[हिं०] एक प्रकार का पौधा, जिसमें लंबी-लंबी पत्तियों के रूप में हलके उन्नाबी रंग के फूल लगते हैं।

हादसा—पुं०[अ० हादिसः] बुरी घटना। दुर्घटना।

हादी—पुं०[अ०]१. हिदायत करने अर्थात् उपदेश देनेवाला। २. मार्ग-दर्शक ।

हान*—स्त्री०=हानि ।

हानि—स्त्री० [सं० √हा (त्यागना)+क्त-इनि]१. परित्याग करना। छोड़ना। २. पूरी तरह से नष्ट हो जाना। न रह जाना। जैसे—तिथि-हानि, प्राण-हानि। ३. ऐसी स्थिति जिसमें कोई विशेष अपकार, घाटा, त्रुटि या कोई बुरी बात हुई हो। अनिष्ट या अपकार। क्षति। नुकसान। 'लाभ' का विपर्याय। (लॉस)। जैसे—धन, मान या स्वास्थ्य की हानि।

क्रि० प्र०—उठाना।—पहुँचाना।

हानिकर—वि०[सं० हानि√ कृ (करना)+अच्] हानि करनेवाला। नुकसान पहुँचानेवाला।

हानि-कारक—वि०=हानिकर।

हानिकारी†—वि०=हानिकर।

हानि-मूल्य—पुं० दे० 'क्षति-मूल्य'।

हानीय—वि०[सं०] हातव्य। त्याज्य।

हानु—पुं०[सं०] दाँत।

हाफिज—वि०[अ० हाफ़िज] हिफाजत अर्थात् रक्षा करनेवाला। रक्षक। जैसे—तुम्हारा खुदा हाफिज है।

पुं० मुसलमानों में वह धर्मशील व्यक्ति, जिसे सारा कुरान कंठस्थ हो।

हाफिजा—पुं० [अ० हाफ़िज़ः] स्मरण-शक्ति। धारणा-शक्ति।

हाबिस—पूं०[देश०] जहाज का लंगर उखाड़ने या खींचने की क्रिया।

हाबुस—पुं०[सं० हविष्य] एक प्रकार का नमकीन व्यंजन जो गेहूँ और जौ की कच्ची और कोमल बालें आग पर भूनकर बनाया जाता है।

हाबूड़ा—पुं०[देश०]१. लूटमार, चोरी आदि करनेवाली एक अर्धसभ्य और अशिक्षित जाति। २. उक्त जाति का कोई व्यक्ति।

हाबूड़ी—स्त्री०[हिं० हाबूड़ा] १. हाबूड़ा जाति की स्त्री। २. हाबूड़ा जाति की बोली।

हाम—वि०[?] किसी में पूरी तरह से लगा या समाया हुआ। लीन। विलुप्त। उदा०—मीराँ ना प्रभु गिरधर नागर, चरन कमल चित हाम रे।—मीराँ।

†पुं०[?]१. साहस। हिम्मत। २. प्रसन्नता।

हामिद—वि०[अ०] हम्द अर्थात् प्रशंसा करनेवाला। प्रशंसक।

हामिल—पुं० [अ०]= हम्माल (भारवाहक)।

हामिला—वि०[अ० हामिलः] गर्भवती।

हामी—स्त्री०[हिं० हाँ] हाँ करने या कहने की क्रिया या भाव। स्वीकृति।

मुहा०—**हामी भरना**= किसी के अनुरोध की रक्षा या प्रार्थना की स्वीकृति के रूप में 'हाँ' कहना।

वि०[अ०]१. हिमायत करनेवाला। २. मददगार। सहायक।

हाय—अव्य०[सं० हा] घोर मानसिक या शारीरिक कष्ट होने पर अथवा उसका भय उत्पन्न होने पर मुँह से निकलनेवाला व्यथा-सूचक अव्यय।

मुहा०—**(किसी की) हाय पड़ना**=पीड़ित व्यक्ति का शाप लगना। मुझे लगता है कि उसकी हाय मुझ पर पड़ी है। **हाय मारना**= पीड़ित करनेवाले को क्रोध में कोप-भरे शब्द कहना।

हायन—पुं०[सं० √हा (त्यागना)+ल्यु—अन] १. गुजरना। बीतना। २. छोड़ना। परित्याग। ३. वर्ष। साल।

हायनक—पुं०[सं०] लाल रंग का एक प्रकार का मोटा चावल।

हायल*—वि० [सं० हाय=छोड़ा हुआ] घायल। उदा०—किय हायल चित चाप लगि बजि पायल तय पाय।—बिहारी।

वि०[अ०] १. आड़ करनेवाला। २. बाधा देने या रोकनेवाला।

हाय-हाय—अव्य० [अनु०] कष्ट, पीड़ा, शोक आदि का सूचक शब्द। स्त्री० १. वह स्थिति जिसमें बाजार में वस्तुएँ न उपलब्ध होने के कारण जन-साधारण में पुकार मची हो। २. किसी दुर्लभ या दुष्प्राप्य चीज को प्राप्त करने के लिए होनेवाली तीव्र इच्छा।

हार—पुं० [सं०√हृ(हरण करना)+अण्—घञ् वा] १. हरण करने अर्थात् जबरदस्ती छीन ले जाने की क्रिया या भाव। जैसे—**गो-हार**= गौएँ छीन ले जाना। २. अपराध आदि के दंड स्वरूप राज्य के द्वारा होनेवाला संपत्ति का हरण। जब्ती। ३. किसी प्रकार कोई चीज ले जाने या ले लेने की क्रिया या भाव। ४. युद्ध। लड़ाई। ५. वियोग, विरह आदि। ६. गणित में वह संख्या जिससे भाग देते हैं। भाजक

(डिवाइज़र) ७. शरीर के वीर्य का क्षय या नाश। ८. पिंगल या छन्द-शास्त्र में गुरुमात्रा की संज्ञा।

वि॰ १. ले जाने या वहन करनेवाला। २. नष्ट करनेवाला। नाशक। ३. मन हरनेवाला। मनोहर।

पुं॰[फा॰] फूलों, मोतियों आदि की माला।

स्त्री॰[सं॰ हरिः] १. खेल, प्रतियोगिता, युद्ध आदि में प्रतिद्वंद्वी से पराजित या परास्त होने की अवस्था या भाव। हारने की क्रिया, दशा या भाव। पराजय। 'जीत' का विपर्याय।

मुहा॰—**हार खाना**= पराजित या परास्त होना। हारना। **हार देना**= पराजित या परास्त करना। हराना।

२. वह शारीरिक स्थिति, जिसमें मनुष्य काम करते-करते इतना शिथिल हो जाता है कि और आगे काम करने की शक्ति या साहस नहीं रह जाता। थकावट।

पुं॰[देश॰] १. वन। जंगल। २. नाव में बाहर की ओर के तख्ते।

पुं॰[हिं॰ हल] १. खेत। २. चरागाह।

†पुं॰=हाल (दशा)।

†प्रत्य॰[स्त्री॰ हारी] दे॰ हारा ('वाला' का बोधक प्रत्यय)। जैसे—करनहार=करनेवाला, मरनहार=मरणोन्मुख।

हारक—वि॰ [सं॰ हर √कृ (हरण करना)+ण्वुल्—अक] १. हरण करनेवाला। २. बलपूर्वक छीननेवाला। ३. कष्ट आदि दूर करने या हटानेवाला। ४. जानेवाला। ५. मनोहर। सुन्दर। ६. चुरानेवाला धूर्त चालाक।

पुं॰ १. गले में पहनने का एक हार। २. गणित में भाजक अंक या संख्या।

हार-गुटिका—स्त्री॰[सं॰ ष॰ त॰] हार की गुरिया। माला के दाने।

हार-जीत—स्त्री॰[हिं॰] १. हारने और जीतने की क्रिया या स्थिति। २. हानि और लाभ।

हारद*—पुं॰[सं॰ हृदय] हृदय की बात।

वि॰=हार्दिक।

हारना—अ॰[हिं॰ हार] १. युद्ध, खेल, प्रतिद्वंद्विता आदि में प्रतिपक्षी के सामने विफल या पराजित होना। 'जीत' का विपर्याय। जैसे—मुकदमे या लड़ाई में हारना। २. प्रयत्न में विफल होना।

मुहा॰—**हारकर**=कोई उपाय या मार्ग न रह जाने की दशा में। असमर्थ या विवश होकर। जैसे—जब और कुछ न हो सका तो हारकर फिर मेरे पास आये। **हारे दरजे**=लाचार या विवश होने की दशा में। हारकर।

३. प्रयत्न या परिश्रम करते-करते इतना थक जाना कि कुछ करने की शक्ति न रह जाय। बहुत ही शिथिल हो जाना। उदा॰—धीरे चल हम हारी हे रघुवर।—ग्रामगीत।

संयो॰ क्रि॰—जाना।

पद—**हारे-गाढ़े**=ऐसी स्थिति में जब कि मनुष्य बहुत ही विवश या शिथिल हो गया हो अथवा भारी विपत्ति या संकट में पड़ा हो। जैसे—हारे-गाढे पड़ोसी ही तो काम आते हैं।'

मुहा॰—**हारे पड़ना***=(क) थककर गिरना। उदा॰—हारे परिहैं सखे राखु धन कहे हमारे।—दीनदयाल गिरि। (ख) लाचार होकर। उदा॰—हारि परे अब पूरा दीजै।—कबीर।

स॰ १. प्रतियोगिता, युद्ध, खेल आदि में सफल न होने के कारण हाथ से उसे या उससे संबंध रखनेवाली चीज जाने देना। जैसे—लड़ाई धन या बाजी हारना। २. गँवाना। खोना। उदा॰—नैकु वियोग मीन नहि मानत, प्रेम-काज क्यु हार्‌यो।—सूर। ३. न रख सकने या निर्वाह न कर सकने के कारण छोड़ देना। जैसे—हिम्मत हारना। ४. किसी को कुछ इस प्रकार देना कि उसे लौटा न सके या उससे पीछे न हट सके। जैसे—वचन हारना।

हार-फलक—पुं॰[सं॰] पाँच लड़ियों का हार।

हार-बंध—पुं॰[सं॰ मध्य॰ स॰] एक प्रकार का चित्र-काव्य जिसमें किसी पद्य के अक्षर हार के आकार में रखे जाते हैं।

हारमोनियम—पुं॰[अं॰] संदूक के आकार का एक प्रसिद्ध पाश्चात्य बाजा जिसके परदों से उँगलियों से दबाने पर स्वर निकलते हैं।

हार-यष्टि—स्त्री॰[सं॰ ष॰ त॰] हार या माला की लड़ी।

हारल†—पुं॰=हारिल (पक्षी)।

हार-सिंगार—पुं॰=हर-सिंगार (परजाता)।

हार-हूण—पुं॰ [सं॰] १. एक प्राचीन देश। २. उक्त देश का निवासी।

हारा—वि॰[सं॰] १. (व्यक्ति) जिसका कुछ हरण कर लिया गया हो। २. जो अपना कुछ या सब खो या गँवा चुका हो। (यौ॰ के अंत में) जैसे—सर्वहारा आदि।

प्रत्य॰[?] [स्त्री॰ हारी] एक प्रत्यय जो क्रियार्थक संज्ञाओं में लगकर 'वाला' का अर्थ देता है। जैंगे—करनहारा, चलावनहारा।

हारावलि (ली)—स्त्री॰[सं॰ उपमि॰ स॰] मोतियों की लड़ी।

हारि—पुं॰ [सं॰ √हृ (हरण करना)+णिच्] १. हार। पराभव। पराजय। २. यात्रियों या पथिकों का दल। कारवाँ।

†पुं॰=हार।

†वि॰=हारक।

हारिक—पुं॰[सं॰] एक प्राचीन जनपद।

हारिका—स्त्री॰ [सं॰] एक प्रकार का छन्द या वृत्त।

हारिज—वि॰ [अं॰] १. हरज अर्थात् हानि करनेवाला। २. बाधक।

हारिण—वि॰[सं॰ हरिण+अण्] हरिण-संबंधी। हिरन का।

पुं॰ हिरन का मांस।

हारिणाश्वा—स्त्री॰ [सं॰] संगीत में मूर्च्छना जिसका स्वर-ग्राम इस प्रकार है—ग, म, प, ध, नि, स, रे। स, रे, ग, म, प, ध, नि, स, रे, ग, म, प।

हारित—भू॰ कृ॰[सं॰ √हृ (हरण करना)+णिच्—क्त हार+इतच् वा] १. हरण किया हुआ। छीना या लूटा हुआ। २. रहित। वंचित। या हीन या किया हुआ। ३. खोया या गँवाया हुआ। ४. जो परास्त हो चुका हो। पराजित। ५. लाया हुआ। ६. मुग्ध या मोहित किया हुआ।

पुं॰ तोता नामक पक्षी।

हारितक—पुं॰ [सं॰] हरी तरकारी, शाक।

हारिद्र—वि॰ [सं॰ हरिद्रा+अण्] १. हलदी से रँगा हुआ। २. हलदी के रंग का। पीला।

पुं॰ १. एक प्रकार का विष जिसका पौधा हलदी के समान होता है और जो हलदी के खेतों में ही उगता है। इसकी गाँठ बहुत जहरीली होती

है। २. एक प्रकार का प्रमेह जिसमें हलदी के रंग का पीला पेशाब आता है।

हारिल—पुं०[सं० हारीत] झुंड में रहनेवाली एक चिड़िया जो प्रायः अपने चंगुल में तिनका या छोटी पतली लकड़ी लिए रहती है। हरियल। उदा०—मृगमद छाँड़ि न जात, गही ज्यौं हारिल लकरी।—भगवत रसिक।

पद—हारिल की लकड़ी=ऐसा आधार या आश्रय जो जल्दी या किसी प्रकार छोड़ा न जा सके। उदा०—हमारे हरि हारिल की लकरी।—सूर।

विशेष—इसकी यह विशेषता है कि यदि घायल होकर किसी वृक्ष की शाखा में लटक जाय, तो मरने पर भी इसके पंजों से वह शाखा नहीं छूटती इसी आधार पर यह पद बना है।

*वि०[हिं० हारना]१. हारा हुआ। २. थका हुआ।

हारी(रिन्)—वि०[सं०√हृ (हरण करना)+णिनि] [स्त्री० हारिणी]१. हरण करनेवाला। हारक। यौ० के अन्त में। जैसे—कष्टहारी। २. पहुँचाने या ले जानेवाला। वाहक। ३. चुराने या लूटनेवाला। ४. दूर करने या हटानेवाला। ५. ध्वस्त या नष्ट करनेवाला। ५. उगाहने या वसूल करनेवाला। ७. जीतनेवाला। विजेता। ८. मन हरनेवाला। सुन्दर।

वि० [फा० हार] हार या माला पहननेवाला।

पुं० एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण और दो गुरु होते हैं।

प्रत्य० हार का स्त्री० रूप।

स्त्री०[हिं० हारना]१. हारने की क्रिया या भाव। पराजय। हार। उदा०—हारी जानि पीर हरि मेरी।—सूर।

क्रि० प्र०—मानना।

२. थकावट। शिथिलता। उदा०—मोहि मग चलत न होइहि हारी।—तुलसी।

†पुं०[हिं० हर=हल] हल जोतनेवाला। हलवाहा। उदा०—अहिर दरदिया बाम्हन हारी।—घाघ।

हारीत—पुं०[सं० √हृ (हरण करना) णिच्—ईतच वा]१. चोर। डाकू या लुटेरा। २. उक्त प्रकार के लोगों का काम या पेशा। ३. कबूतर।

हारुक—पुं० [सं० √हृ (हरण करना)+उकञ्]१. हरण करनेवाला। छीननेवाला। २. ले जानेवाला।

हारू—पुं०[अ०]१. उद्दण्ड और नटखट घोड़ा। २. दूत। ३. हरकारा। ४. नेता। सरदार।

हारौल†—पुं०=हरावल (सेना का अगला भाग)।

हार्द—पुं०[सं० हृदय+अण्, हृदादेशः] १.हृदय के अन्दर की बात। जैसे—शरत्-साहित्य का हार्द समझने में इस आलोचना से बहुत सहायता मिलेगी। २. अनुराग। प्रेम। स्नेह।

वि०=हार्दिक।

हार्दिक—वि०[सं० हृदय+ठञ्—हृदादेशः] हृदय में रहने या होनेवाला। हृदय का। 'मौखिक' का विपर्याय। जैसे—हार्दिक सहानुभूति, हार्दिक स्नेह।

हार्दिक्य—पुं०[सं० हार्दिक+ष्यञ्] मित्र-भाव। मित्रता। सुहृद्-भाव।

हार्दी(दिन्)—वि०[सं०] १. स्नेह-युक्त। २. सहृदय। ३. परम-प्रिय।

हार्य—वि०[सं० √हृ (हरण करना)+ण्यत्]१. जो हरण किये जाने के योग्य हो, अथवा हरण किया जाने को हो। २. जो इधर-उधर हटाया जा सके। ३. (नाटक या रूपक) जिसका अभिनय हो सके या होने को हो। ४. (संख्या) जिसका भाग होने को हो। भाज्य।

हाल—पुं०[सं०]१. खेत जोतने का हल। २. बलराम का एक नाम। ३. एक प्रकार का पक्षी।

पुं०[अ०]१. वह समय जो अभी चल या बीत रहा हो। वर्तमान काल।

पद—हाल का=(क) थोड़े ही दिन पहले का। (ख) ताजा या नया। जैसे—किसी पत्रिका का हाल का अंक। हाल में=वर्तमान समय से कुछ ही दिन पहले। कुछ ही दिन पूर्व। जैसे—उनके घर हाल में ही लड़का हुआ है।

२. वर्तमान से कुछ ही पहले का समय। जैसे—(क) यह तो हाल की बात है। (ख) हाल में वे दिल्ली गये थे। ३. अवस्था। दशा। हालत। जैसे—आज-कल उनका बुरा हाल है।

मुहा०—हाल-बेहाल होना=बहुत ही बुरी दशा या स्थिति में होना।

४. ऐसी दशा या स्थिति जिसमें ठीक तरह से काम चल सकता हो। उदा०—साबित है जो दगला तो नहीं है मोजो में कुछ हाल।—सौदा।

५. बहुत ही बुरी और शोचनीय दशा। बहुत खराब हालत।

मुहा०—(किसी का) हाल करना=बहुत ही बुरी दशा को पहुँचाना। गत बनाना। हाल पतला होना=अवस्था बहुत ही दयनीय होना।

६. अवस्था या दशा का वर्णन या विवरण। वृत्तांत। समाचार। जैसे—उनका भी कुछ हाल मिला? ७. ब्योरा। विवरण।

मुहा०—(किसी से) हाल माँगना*=अधिकारपूर्वक यह पूछना कि यह बात क्यों या कैसे हुई। कैफियत तलब करना। उदा०—एक कोठु पंच सिकदारा पंचै माँगहि हाला।—कबीर।

८. ईश्वर की चर्चा या चिंतन के समय भक्ति के आवेश के कारण होनेवाली तन्मयता, आत्मविस्मृति या विभोरता। (मुसल०) उदा०—खेलत-खेलत हाल करि, जो कुछ होहि सुहोई।—कबीर।

मुहा०—हाल आना=आवेश, उद्वेग आदि के कारण अपने आप को भूल जाना। आत्म-विस्मृत या उन्मत्त होना। उदा०—एक दम से देख उसको होली को हाल आया।—नजीर।

अव्य० वर्तमान काल में। इस समय। उदा०—स्वर्ग यदि न भी मिलेगा हाल।—मैथिलीशरण।

स्त्री०[अ० हालः मंडल]१. काठ के पहिये पर चारों ओर चढ़ाया जानेवाला लोहे का घेरा या गोलाकार बंद। २. कोई गोल चक्र या मंडल।

स्त्री०[हिं० हालना]१. हिलने की क्रिया या भाव। कंप। २. हिलने के कारण लगनेवाला झटका। जैसे—रेल के सफर में उतनी हाल नहीं लगती।

क्रि० प्र०—लगना।

पुं०[अं० हॉल] बहुत बड़ा या खूब लंबा-चौड़ा कमरा। जैसे—टाउन हॉल।

हालक—पुं०[सं०] पीलापन लिए भूरे रंग का घोड़ा।

हाल-गोला†—पुं०=गेंद (खेलने का)।

हाल-डाल—स्त्री० [हिं० हालना+डोलना] १. हिलने-डोलने की क्रिया या भाव। गति। २. हल-चल। ३. कंप।

†पुं० [अं० होलडाल] बिस्तरबंद।

हालत—स्त्री० [अ०] १. अवस्था। दशा। २. परिस्थिति। जैसे—आज-कल बाजार की हालत नाजुक है।

हालना—अ० [सं० हल्लान] १. हिलना-डोलना। २. काँपना। ३. झूलना।

हालरा—पुं० [हिं० हालना] १. बच्चों को हाथ में लेकर हिलाने की क्रिया। २. झटका। झोंका। ३. लहर। हिलोर।

हालहल, हालहाल—पुं०=हलाहल।

हाल-हली—स्त्री० [सं०] मदिरा। शराब।

हाल-हवाल—पुं० [अ० हाल+अहवाल] १. किसी विशिष्ट प्रकार की अवस्था या दशा। २. उक्त प्रकार की दशा का वर्णन या वृत्तान्त।

हाल-हूल—स्त्री० [हिं० हल्ला] १. हल्ला-गुल्ला। कोलाहल। २. हल-चल।

हालाँकि—अव्य० [फा०] १. यद्यपि। २. अगरचे।

हाला—स्त्री० [सं०] मद्य। शराब।

पुं० [अ० हाल] १. गोल घेरा। मंडल। २. चारों ओर पड़नेवाला गड्ढा। उदा०—रोय-रोय नैनन में हाले परै जाले परै. . .।—कविन्द।

†पुं० [हिं० हल] १. मध्य युग में वह कर जो जोतने के हलों पर लगता था। २. जमीन की मालगुजारी। लगान। (पूरब)

हालात—पुं० बहु० [फा० हाल का बहुवचन रूप] १. स्थितियाँ। २. परिस्थितियाँ।

हालाहल—पुं० [सं०] १. हलाहल नामक प्रचण्ड विष। २. एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ बहुत जहरीली होती है। ३. एक प्रकार की बहुत जहरीली छिपकली।

हालाहली—स्त्री० [सं०] मदिरा।

स्त्री० [हिं० हाली=जल्दी] १. जल्दी मचाने की क्रिया या भाव। २. जल्दी।

अव्य० शीघ्रतापूर्वक। जल्दी-जल्दी।

हालिनी—स्त्री० [सं०] एक प्रकार की छिपकली।

हालिम—पुं० [देश०] एक प्रकार का पौधा जिसके बीज औषध के काम आते हैं। चन्द्रसुर। चन्सुर।

हाली†—अव्य० [हिं० हिलना] जल्दी। शीघ्र।

†पुं० [हिं० हल] हल जोतनेवाला।

हालूक—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की तिब्बती भेड़, जिसका ऊन बहुत अच्छा होता है।

हालों†—पुं०=हालिम (पौधा)।

हाव—पुं० [सं० √ह्वे+घञ् भावे √ हु+करणे वा] १. पास बुलाने की क्रिया या भाव। पुकार। बुलाहट। २. साहित्य के शृंगारिक क्षेत्र में नायिका की वे आकर्षक तथा मोहक क्रियाएँ और मुद्राएँ, जो वे स्वाभाविक रूप से संयोग के समय नायक के सामने करती है।

विशेष—साहित्यकारों ने इनकी गणना नायिकाओं के अंगज और स्वभावज अलंकारों में की है; और इसके लीला, विलास, विच्छित्ति, विभ्रम, किलकिंचित, मोहायित, कुट्टमित आदि अनेक प्रकार या भेद बतलाये गये हैं।

पद—हाव-भाव।

हावक—वि० [सं० √हु (देना)+ण्वुल्—अक] हवन या यज्ञ करनेवाला।

हावका—पुं० [हिं० हाव=मुँहबाने का शब्द] १. किसी का उत्कर्ष देखकर या अपनी किसी भारी क्षति का स्मरण करके लिया जानेवाला ठंढा साँस। दीर्घ निश्वास। गहरी या ठंढी साँस।

क्रि० प्र०—भरना।—लेना।

२. किसी बात की प्रबल इच्छा या कामना।

हावनीय—वि० [सं० हवन+छण्—ईय] (पदार्थ) जो हवन के लिए उपयुक्त या योग्य हो।

हाव-भाव—पुं० [सं०] वे आकर्षक और कोमल चेष्टाएँ, जो स्त्रियाँ प्रायः पुरुषों को अनुरक्त तथा मुग्ध करने के लिए करती हैं।

क्रि० प्र०—दिखाना।

हावर—पुं० [देश०] एक प्रकार का छोटा पेड़ जिसकी लकड़ी मजबूत होती और खेती के सामान बनाने के काम में आती है।

हावला-बावला—वि० [हिं० बावला] [स्त्री० हावली-बावली] जो बहुत कुछ बावलों या पागलों का-सा आचरण करता हो।

हाव-हाव†—स्त्री०=हाय-हाय।

हावी—वि० [अ०] १. कुशल। दक्ष। प्रवीण। २. जो अपने गुण, बल, विशेषता आदि के कारण दूसरे को दबा ले या पराभूत कर दे।

वि० [सं०]=हावक (हवन करनेवाला)।

हाशिया—पुं० [अ० हाशियः] १. किसी फैली हुई वस्तु का किनारा। कोर। बारी। जैसे—किताब का हाशिया। कपड़े का हाशिया। (बार्डर) २. कपड़ों में टाँकी जानेवाली गोट या मगजी।

क्रि० प्र०—चढ़ाना।—लगाना।

३. दस्तावेज या लेख्य का वह पार्श्व जो आवश्यकतानुसार कुछ विशिष्ट बातें बढ़ाने या लिखने के लिए खाली रखा जाता है। जैसे—टीका-टिप्पणी लिखने, गवाहों के हस्ताक्षर आदि के लिए हाशिया छोड़ना।

पद—हाशिये का गवाह=वह गवाह या साक्षी जिसने किसी दस्तावेज के किनारे पर हस्ताक्षर किये हों।

मुहा०—(किसी बात पर) हाशिया चढ़ाना=टीका-टिप्पणी, व्याख्या आदि के रूप में कोई व्यंग्यपूर्ण बातें कहना।

हास—पुं० [सं० √ हस् (हँसना)+घञ् भावे] १. हँसने की क्रिया या भाव। हँसी।

विशेष—साहित्य में यह हास्य रस का स्थायी भाव माना गया है, और कहा गया है कि किसी के आकार-प्रकार, रूप-रंग, बोल-चाल, आदि में कोई विलक्षण विकार दिखाई देने पर मनुष्य के चेहरे का जो प्रसन्नता-सूचक विकास होता है वह हास कहलाता है।

२. साहित्य में केवल कौतुक के लिए कही जानेवाली वह बात या बनाया जानेवाला वह रूप या वेश जो आह्लाद या प्रसन्नता का सूचक और उत्पादक होता है। यह सात्विक भावों के अन्तर्गत है। ३. दिल्लगी। परिहास। मजाक। ४. दे० 'उपहास'।

हासक—पुं० [सं० √हस्+(हँसना)+णिच्—ण्वुल्—अक] हँसानेवाला।

हासकर—वि० [सं० हास√कृ (करना)+अच्, ष० त०] हँसानेवाला।

हासन—पुं॰[सं॰] हंसाना।

वि॰ हँसानेवाला।

हासना†—अ॰१. दे॰ 'हंसना'। २. दे॰ 'हींसना'।

हासनिक—पुं॰[सं॰] विनोद या क्रीड़ा आदि में साथ रहनेवाला व्यक्ति। आमोद-प्रमोद का साथी।

हास-लीला—स्त्रीं॰[सं॰ मध्य॰ स॰] हंसी-ठट्ठा। मजाक।

हासवती—स्त्री॰[सं॰] बौद्ध तांत्रिकों की एक देवी।

हास-शील—वि॰[सं॰] ब॰ स॰] हँसानेवाला। हँसोड़। विनोदी।

हासा (सस्)—पुं॰[सं॰ √हस् (हँसना)+णिच्—असुन्] चन्द्रमा।

हासास्पद—पुं॰[सं॰]=हास्यास्पद।

हासिका—स्त्री॰[सं॰√हस् (हँसना) भावे॰ ण्वुल्—अक इत्व—टाप्] १. हास। हंसी। २. मजाक। ठट्ठा।

हासिद—वि॰[अ॰] हसद अर्थात् डाह करनेवाला। ईर्ष्यालु।

हासिल—वि॰[अ॰] पाया या मिला हुआ। प्राप्त। लब्ध।

पुं॰१. जोड़ में किसी संख्या का वह अंश जो अंतिम अंग के नीचे लिखे जानेपर बच रहे। २. गणित की क्रिया का फल। ३. पैदावार। उपज। ४. लाभ। नफा। ५. जमीन का लगान। ६. वह धन जो किसी से अधिकारपूर्वक लिया जाता हो। जैसे—खिराज, चौथ आदि। उदा॰—ठौर ठौर हासिल उगाहत है साल को।—भूषण।

हासी (हासिन्)—वि॰[सं॰ हास+इनि][स्त्री॰ हासिनी] १. हँसनेवाला। जैसे—चारु-हासी। २. श्वेत। सफेद।

हास्तिक—वि॰[सं॰हस्ति+वुण्—अक] हाथी संबंधी। हाथी का।

पुं॰१. हाथी का सवार। २. महावत। २. हाथियों का झुण्ड या पुल।

हास्तिदंत—वि॰[सं॰]१. हाथी-दाँत संबंधी। २. हाथी-दाँत का बना हुआ।

हास्य—वि॰ [सं॰√हस्+ण्यत्]१. हास संबंधी। हास की। २. (काम या बात) जिससे लोग प्रसन्न होकर हंस पड़ें। जिसमें लोगों को हँसाने की योग्यता या शक्ति हो। ३. जिस पर लोग व्यंग्यपूर्वक हँसते हों। जिसकी हँसी उड़ाई जाती हो या उड़ाई जाय। उपहास के योग्य।

पुं॰ १. हँसने की क्रिया या भाव। हँसी। २. साहित्य में, नौ स्थायी भावों या रसों में से एक जो श्रृंगार रस से उत्पन्न और शुभ वर्ण का माना गया है तथा जिसके देवता 'प्रमथ' अर्थात् शिव के गण कहे गये हैं। **विशेष**—इसका स्थायी भाव हास कहा गया है, और आचार-व्यवहार तथा वेश-भूषा की अयुक्तता, असंगति, भद्दापन, विकृति, धृष्टता, चपलता, प्रलाप, व्यंग्य आदि इसके विभाग माने गये हैं। आलस्य, अपहित्थ, तंद्रा, निद्रा, असूया आदि इसके व्यभिचारी भाव कहे गये हैं। यह श्रृंगार, वीर और अद्भुत् रसों का पोषक माना गया है। ३. दिल्लगी। ठट्ठा। मजाक। ४. उपेक्षा और निन्दा से युक्त हँसी। उपहास।

हास्यकर—वि॰[सं॰ ष॰ त॰]१. हँसानेवाला। २. जिसे देख या सुनकर हँसी आती हो। हास्यास्पद।

हास्यास्पद—वि॰[सं॰ ब॰ स॰]१. (ऐसा बेढंगा, फूहड़ या भद्दा), जिसे देखकर लोग उपेक्षा या व्यंग्यपूर्वक हंसते हों। उपहास का पात्र।

हास्योत्पादक—वि॰[सं॰ ष॰ त॰] जिससे लोगों को हंसी आये। उपहास के योग्य।

हा हंत—अव्य॰[सं॰] मृत्यु या मृत्यु-तुल्य कष्ट उपस्थित होने का सूचक अव्यय।

हाहल*—पुं॰=हलाहल* (विष)।

हा-हा—पुं॰ [अनु॰]१. जोर से हँसने का शब्द।

२. बहुत गिड़गिड़ाकर अनुनय-विनय करने का शब्द। उदा॰—हाहा करि हारि रहे, मोहन पायँ परे जिन्ह लातनि मारे।—केशव।

मुहा॰—**हा-हा खाना**=बहुत गिड़गिड़ाकर विनती करना। अत्यन्त दीनता और नम्रता से दया की भीख माँगना।

पुं॰ एक गन्धर्व का नाम।

हाहाकार—पुं॰[सं॰ हाहा√कृ (करना)+अण्] भय के कारण बहुत आदमियों के मुँह से निकला हुआ 'हाहा' शब्द। घबराहट की चिल्लाहट। भय, दुःख या पीड़ा सूचित करनेवाली जन-समूह की पुकार। कुहराम।

क्रि॰ प्र॰—पड़ना।—मचना।—होना।

हाहा-ठीठी—स्त्री॰[अनु॰ हाहा+हिं॰ ठट्ठा] हँसी-ठट्ठा। विनोद-क्रीड़ा। जैसे—तुम्हरा सारा दिन हाहा-ठीठी में बीतता है।

हाहाहूत*—पुं॰[अनु॰]=हाहाकार।

हाहा-हूहू—पुं॰[अनु॰]=हाहा-ठीठी।

हाही—स्त्री॰[हिं॰हाय] कोई चीज और अधिक मात्रा में प्राप्त करते चलते रहने की ऐसी उत्कट इच्छा या लोभ जो दूसरों को अनुचित तथा बेहूदा लगता हो। जैसे—तुम्हें तो खाने की हाही पड़ी रहती है।

क्रि॰ प्र॰—पड़ना।—मचना।

हा-हू*—पुं॰ [अनु॰] १. हल्ला-गुल्ला। कोलाहल। २. धूम-धड़क्का।

हाहूत—पुं॰[अ॰]कुछ मुसलमान साधकों के अनुसार ऊपर की नौ पुरियों या लोकों में से पाँचवीं पुरी या लोक।

हाहू-बेर—पुं॰[देश॰ हाहू+हिं॰ बेर] जंगली बेर। झड़बेरी।

हिं—विभ॰ हिन्दी की हि विभक्ति का बहु॰ रूप। जैसे—तिनहिं, उन्हें।

हिंकरना—अ॰[अनु॰ हिनहिन] घोड़ों का हिनहिनाना। हींसना।

हिंकार—पुं॰[सं॰]१. गौ के रँभाने का शब्द। २. चीते, शेर आदि की गरज या दहाड़। ३. व्याघ्र। बाघ। ४. सामगान का एक अंग जिसमें उद्गाता गीत के बीच-बीच में 'हिं' का उच्चारण करता है।

हिंक्रिया—स्त्री॰[सं॰]=हिंकार।

हिंग—पुं॰[सं॰ हिंगु] एक प्राचीन देश।

†स्त्री॰=हींग।

हिंगनबेर—पुं॰[हिं॰ हिंगोरट+बेर] इँगुदी वृक्ष। गोंदी।

हिंगलाज—स्त्री॰[सं॰ हिंगुलाजा] देवी की एक मूर्ति जिनका मुख्य मंदिर सिन्ध और बलोचिस्तान के बीच की पहाड़ियों में है। यहाँ अँधेरी गुफा में ज्योति के उसी प्रकार दर्शन होते हैं, जिस प्रकार काँगड़े के ज्वालामुखी नामक स्थान में होते हैं।

हिंगली†—स्त्री॰[देश॰] एक प्रकार का तम्बाकू।

हिंगाष्टक चूर्ण—पुं॰=हिंग्वाष्टक चूर्ण।

हिंगु—पुं॰[सं॰ हिम√गम् (जाना आदि)+डु] हींग।

हिंगुक—पुं॰[सं॰] वह पेड़ जिससे हींग निकलती है।

हिंगुपत्र—पुं०[सं० व० स०] इंगुदी। हिंगोट।

हिंगुल—पुं०[सं० हिंग√ला (लेना)+क]१. ईंगुर। सिंगरफ। २. एक प्राचीन नदी।

हिंगुला—स्त्री०[सं०] एक प्रदेश जो सिंध और बलूचिस्तान के बीच में है, जहाँ हिंगुलाजा या हिंगलाज देवी का मन्दिर है।

हिंगुलाजा—स्त्री०[सं०] दुर्गा देवी का एक रूप। वि० दे० 'हिंगलाज'।

हिंगोट—पुं०[सं० हिंगुपत्र, प्रा० हिंगुवत्त] मँझोले आकार का एक झाड़दार कँटीला जंगली पेड़ जिसकी इधर-उधर सीधी निकली हुई टहनियाँ गोल और छोटी होती हैं। इंगुदी।

हिंग्वाष्टक चूर्ण—पुं०[सं० हिंगु+अष्टक] वैद्यक में एक प्रसिद्ध पाचक चूर्ण जो हींग में सात चीजें मिलाने से बनता है।

हिंच—पुं०[अ० हिंच] झटका। आघात। चोट। (लश्करी)

हिंचना†—अ०[?] पीछे की ओर हटना। खिचना।

हिंछना†—अ०[सं० इच्छण] इच्छा करना। चाहना।

हिंछा—स्त्री०=इच्छा।

हिंडक—वि० [सं० हिंड्+ण्वुल्—अक—कै+क व] १. घूमता फिरता रहनेवाला। २. भ्रमणशील। घुमक्कड़।

हिंडन—पुं०[सं० √हिंड्((घूमना)+ल्युट्—अन] घूमना या चलना-फिरना

हिंडिक—पुं०[सं०] फलित ज्योतिष का आचार्य।

हिंडी—स्त्री०[सं०] दुर्गा का एक नाम।

हिंडी-बदाम—पुं० [देश० हिंड+फा० बादाम] अंडमन टापू में होनेवाला एक प्रकार का बड़ा पेड़ जिसमें एक प्रकार का गोंद निकलता है और जिसके बीजों में बहुत तेल होता है।

हिंडीर—पुं० [सं०√हिंड्+ईरन्]१. एक प्रकार की समुद्री मछली की हड्डी जो 'समुद्र फेन' के नाम से प्रसिद्ध है। २. नर या पुरुष जाति का प्राणी। ३. अनार।

हिंडुक—पुं०[सं०] शिव का एक नाम।

हिंडोरना†—पुं०=हिंडोला

अ०=डोलना।

हिंडोरा—पुं०[स्त्री० अल्पा० हिंडोरी] हिंडोला।

हिंडोल—पुं०[सं०हिन्दोल]१. हिंडोला। २. संगीत में एक प्रकार का राग।

विशेष—कहते हैं कि जब यह राग अपने शुद्ध रूप में गाया जाता है, तब हिंडोला अपने आप चलने लगता है।

हिंडोलना—पुं०[हिं० हिंडोल+ना (प्रत्य०)] छोटा हिंडोला।

हिंडोला—पुं०[सं० हिन्दोल] [स्त्री० अल्पा० हिंडोली]१. एक विशेष प्रकार का चक्राकार झूला जिसमें बैठने के लिए आसनों के चार विभाग होते हैं और जो ऊपर-नीचे चक्कर काटता हुआ घूमता है। २. बच्चों को झुलाने का पालना जो आगे-पीछे चलता है। ३. छत, पेड़ आदि में रस्सों से लटकाया हुआ झूला।

हिंडोली—स्त्री० [सं०] एक रागिनी जो हनुमत के मत से हिंडोल राग की प्रिया है।

हिंताल—पुं०[सं०]१. खजूर की जाति का एक प्रकार का छोटा पेड़ जो देखने में बहुत सुन्दर होता है। २. उक्त वृक्ष का फल।

हिंद—पुं०[फा०] हिंदोस्तान। भारतवर्ष।

हिंदवाना†—पुं० [फा० हिंद+वान] तरबूज़।

हिंदवी—स्त्री०[फा०]१. हिंद या हिंदोस्तान की भाषा। आधुनिक हिंदी भाषा का पुराना नाम।

हिंदी—वि०[सं० सिन्धु से फा० हिन्द] हिंद या हिंदोस्तान का। भारतीय।

पुं० हिंद का निवासी। भारतवासी।

स्त्री० १. हिंद या हिन्दोस्तान की भाषा। २. आज-कल मुख्य रूप से, सारे उत्तर और मध्य भारत की एक प्रधान भाषा जो संस्कृत की प्रत्यक्ष उत्तराधिकारिणी होने के कारण मुख्य रूप से प्रायः सारे भारत की राष्ट्र-भाषा रही है, और स्वतन्त्र भारत की राज-भाषा मानी गई है, तथा जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।

विशेष—इसका प्रचार उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश और राजस्थान में व्यापक रूप से है एवं इनके आस-पास के अनेक प्रदेशों में भी यह बहुत कुछ बोली और समझी जाती है। अवधी, बघेली, बिहारी, बुंदेलखंडी, ब्रजी आदि अनेक बोलियाँ इसी के अन्तर्गत मानी जाती हैं, और मैथिली, राजस्थानी आदि भी इसी की शाखाएँ कही जाती हैं। प्रायः १३वीं या १४वीं शती से इस भाषा का आरम्भ माना गया है, और इसका प्राचीन साहित्य बहुत अधिक है। अब भी भारत की आधुनिक भाषाओं में इसका भंडार बहुत बड़ा है और दिन पर दिन इसका प्रचार-व्यवहार, बढ़ता जाता है।

मुहा०—हिंदी की चिंदी निकालना=(क) बहुत सूक्ष्म पर व्यर्थ के या तुच्छ दोष निकालना। (ख) कुतर्क करना।

हिंदीरेवंद—पुं०[फा०] एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ औषध के काम में आती है और चीनी रेवंद या रेवंद चीनी भी कहलाती है।

हिंदुई†—स्त्री०=हिंदवी (भाषा)।

हिंदुत्व—पुं०[सं०]१. हिन्दू होने की अवस्था, गुण धर्म या भाव। २. हिन्दुओं का आचार-विचार और व्यवहार।

हिंदुस्तान—पुं०[फा० हिंदोस्तान]१. हम लोगों के रहने का यह भारत देश। भारत-वर्ष। भारत। २. हमारे इस देश का उत्तरीय और मध्य भाग जो दिल्ली से लेकर पटना तक और दक्षिण में नर्मदा के किनारे तक माना जाता है। यही खास हिंदोस्तान कहा जाता है।

हिंदुस्तानी—वि०[फा०] हिन्दुस्तान का। हिंदुस्तान संबंधी। भारतीय।

पुं० हिन्दुस्तान का निवासी। भारतवासी। भारतीय।

स्त्री०१. हिंदोस्तान की भाषा। २. उत्तरी भारत के मध्य भाग की बोल-चाल या लोक-व्यवहार की (पर साहित्यिक से भिन्न) वह हिंदी जिसमें न तो अरबी के शब्द अधिक हों और न संस्कृत के।

हिंदुस्तानी-संगीत—पुं०[हिं०+सं०] उस पद्धति या शैली का संगीत जो उत्तर भारत में प्रचलित है। (कर्नाटकी संगीत से भिन्न)

हिंदुस्थान†—पुं०=हिंदुस्तान।

हिंदू—पुं०[फा० सं० सिंधु से] भारतवर्ष में बसनेवाली आर्यजाति के वंशज जो भारत में पल्लवित आर्य धर्म, संस्कार और समाज-व्यवस्था को मानते चले आ रहे हैं। भारतीय आर्य-धर्म का अनुयायी।

हिंदूकुश—पुं०[फा०] एक पर्वत श्रेणी जो अफगानिस्तान के उत्तर में है और हिमालय से मिली हुई है।

हिंदूपन—पुं०[फा० हिंदू+पन (प्रत्य०)] हिंदू होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। हिंदुत्व।

हिंदोरना—स०[सं० हिंदोल+ना (हिं० प्रत्य०)] तरल पदार्थ में हाथ या कोई चीज डालकर इधर-उधर घुमाना। घँघोलना।

हिंदोल—पुं०=हिंडोल।

हिंदोलक—पुं०[सं०] छोटा हिंडोल। पालना।

हिंदोस्तान†—पुं०=हिंदुस्तान।

हिंदोस्तानी†—वि०, पुं०, स्त्री०=हिंदुस्तानी।

हिंयाँ†—अव्य०=यहाँ।

हिंव, हिंवार†—पुं०=हिम (बरफ)।

क्रि० प्र०—पड़ना।

हिंस†—स्त्री०=हींस।

हिंसक—वि० [सं०हिंस+ण्वुल्–अक]१. हिंसा करनेवाला। हत्यारा। घातक। २. दूसरों को कष्ट पहुँचानेवाला या पीड़ित करनेवाला। ३. ईर्ष्या-द्वेष करनेवाला। ४. (पशु) जो दूसरे जीवों या पशुओं की हत्या करता हो। जैसे—शेर, चीते, भालू आदि हिंसक होते हैं।

पुं० १. शत्रु। २. उच्चाटन, मारण आदि प्रयोग करनेवाला तांत्रिक ब्राह्मण।

हिंसन—पुं०[सं० √हिंस् (मारना)+ल्युट्—अन][वि० हिंसनीय, हिंस्य, भू० कृ० हिंसित]१. जीवों का वध करना। जान से मार डालना। २. जीव या प्राणी को कष्ट देना। ३. पीड़ित करना। ४. किसी का कोई अनिष्ट या हानि करना। ४. किसी से ईर्ष्या या द्वेष करना।

हिंसना†—अ०=हींसना।

हिंसनीय—वि० [सं०√हिंस् (मारना)+अनीयर्]१. हिंसा करने योग्य। २. जिसकी हिंसा की जा सके या की जाने को हो।

हिंसा—स्त्री०[सं० √हिंस् (मारना)+अ—टाप्]१. जीव की हत्या करना या उसे किसी प्रकार का कष्ट पहुँचाना जो प्रायः सभी धर्मों में पाप माना गया है। २. किसी को किसी प्रकार की हानि पहुँचाना। अनिष्ट अथवा अपकार करना।

हिंसा-कर्म—पुं०[सं० ष० त०] १. वध करने या पीड़ा पहुँचाने का कर्म। मारने या सताने का काम। २. उच्चाटन, मारण आदि ऐसे तांत्रिक प्रयोग जिनसे दूसरों का अनिष्ट होता हो।

हिंसात्मक—वि०[सं० ब० स०] जिसमें हिंसा हो। हिंसा से युक्त। जैसे—हिंसात्मक मनोवृत्ति।

हिंसारु—पुं० [सं०] १. हिंस्र पशु। खूँखार जानवर। २. बाघ या शेर।

हिंसालु—वि०[सं० हिंसा+आलुच्]१. हिंसा करनेवाला। मारने या सतानेवाला। हिंसक। २. जिसकी प्रवृत्ति निरन्तर हिंसा करते रहने की हो।

हिंसित—भू० कृ० [सं० हिंसा+इतच्]१. जिसकी हिंसा की गई हो। मारा हुआ। २. जिसे क्षति पहुँचाई गई हो।

पुं० क्षति। हानि।

हिंसतव्य—वि०[सं०√हिंस् (हिंसा करना)+तव्य] जिसकी हिंसा की जा सकती हो।

हिंस्य—वि०[सं०]=हिंसनीय।

हिंस्र—वि०[सं० √हिंस्+रक्] हिंसा करनेवाला। हिंसक। जैसे—हिंस्र पशु।

हिंस्रक—पुं०[सं०] हिंस्र पशु। खूँखार जानवर।

हिंस्रिका—स्त्री०[सं०] दुश्मनों या डाकुओं की नाव।

हि—वि०[सं० हि] एक पुरानी विभक्ति जिसका प्रयोग पहले तो सब कारकों में होता था, पर पीछे कर्म और संप्रदान में ही ('को' के अर्थ में) रह गया। जैसे—रामहि प्रेम समेत लखि।

†अव्य०=ही।

हिअ*—पुं० [सं० हृदय] १. हृदय। २. छाती।

हिआ—पुं०[सं० हृदय, प्रा० हिअ] १. हृदय। २. छाती।

हिआउ†—पुं०=हियाव (साहस)।

हिआव†—पुं०=हियाव।

हिकड़ा—पुं० [फा० से:=तीन+कोड़ी] तीन कोड़ी कपड़ों का समूह।

हिकमत—स्त्री० [अ०] १. तत्त्व-ज्ञान। २. कोई काम कौशलपूर्वक करने की युक्ति। अच्छी और बढ़िया तरकीब। ३. कार्य सिद्ध करने का उपाय या युक्ति। तदबीर।

क्रि० प्र०—निकालना।—लगाना।

४. हकीम का काम या पेशा। ५. यूनानी चिकित्सा-प्रणाली।

हिकमती—वि०[अ० हिकमत+हिं० ई (प्रत्य०)]१. कार्य-साधन की युक्ति निकालनेवाला। कार्य-पटु। २. चालाक। होशियार।

हिकलाना†—अ०=हकलाना।

हिकायत—स्त्री०[अ०] कथा। कहानी।

हिकारत—स्त्री०=हकारत (घृणा)।

हिक्कल—पुं०[?] बौद्ध संन्यासियों या भिक्षुकों का दण्ड।

हिक्का—स्त्री०[सं०]१. हिचकी। २. बहुत अधिक रोने के कारण बँधने वाली हिचकी। ३. एक प्रकार का रोग, जिसमें लगातार बहुत हिचकियाँ आती हैं।

हिक्किका—स्त्री०[सं०] हिक्का। हिचकी।

हिक्की—पुं०[सं० हिक्किन्] वह जिसे हिक्का का रोग हो। हिचकी का रोगी।

हिचक—स्त्री० [हिं० हिचकना]१. हिचकने की क्रिया या भाव। २. कुछ करने या करने के समय मन में होनेवाला आगा-पीछा या रुकावट।

हिचकी—स्त्री०[सं० हिक्का या हिचहिच से अनु०]१. खाँसी, छींक, डकार आदि की तरह का एक शारीरिक व्यापार जिसमें साँस लेने के समय क्षण भर के लिए फेफड़े का मुँह सिकुड़कर बन्द हो जाता है और पेट की वायु कुछ रुकती और हलका शब्द करती हुई बाहर निकलती है। २. उक्त के फल-स्वरूप झटके से होनेवाला तीव्र शब्द जो कंठ से निकलता है। ३. एक प्रकार का रोग जिसमें बार बार उक्त प्रकार की क्रिया तथा शब्द होता है।

क्रि० प्र०—आना।

हिचकोला—पुं०=हचकोला।

हिचर-मिचर—स्त्री०[हिं० हिचक] वह स्थिति जिसमें कोई काम करने या कुछ कहने में हिचक प्रकट होती हो।

हिजड़ा—पुं०[?] ऐसा व्यक्ति जिसमें शारीरिक दृष्टि से स्त्री और पुरुष दोनों के कुछ-कुछ चिह्न तथा लक्षण जन्मजात और प्राकृतिक रूप से हों। ऐसा व्यक्ति न पूर्णतः पुरुष ही होता है और न स्त्री ही।

(यूनक)

हिजरत—स्त्री०[अ] १. संकट के समय अपनी जन्म-भूमि छोड़कर कहीं दूसरी जगह चले जाना। देश-त्याग। २. मुहम्मद साहब के जीवन की वह घटना जिसमें वे अपनी जन्म-भूमि मक्का का परित्याग करके मदीने चले गये थे। हिजरी सन् का आरम्भ उसी समय से चला है। दे० 'हिजरी'।

हिजरा†—पुं०=हिजड़ा।

हिजरी—पुं०[अ०] प्रसिद्ध मुसलमानी सन् या संवत् जिसका आरम्भ मुहम्मद साहब की हिजरत के दिन (१५ जुलाई सन् ६२२ ई०) हुआ था। विशेष—यह विशुद्ध चांद्र सन् या संवत् है और सौर वर्ष से प्रायः १०-११ दिन छोटा होता है। इसका प्रचलन मुहम्मद साहब के बाद खलीफा उमर ने किया था। इनके महीनों के नाम ये हैं—मुहर्रम, सफर, रबी-उल्-अव्वल, रबी-उस्सानी, जमादि-उल्-अव्वल, जमादि-उल्-आखिर, रजब, शअबान, रमजान, शव्वाल, जिलकअद और जिलहिज्ज।

हिजलाना†—अ०=खिजलाना।

हिजली-बादाम—पुं०[हिजली+हिं० बादाम] काटू नामक वृक्ष के फल जो प्रायः बादाम के समान होते हैं और जिनसे एक प्रकार का तेल निकलता है। यह भून कर खाया भी जाता है और इसका मुरब्बा भी बनता है।

हिजाजह—पुं०[अ० हिजाज] १. पश्चिमी अरब का वह क्षेत्र या प्रदेश जिसमें मक्का, मदीना आदि नगर हैं, और जो अब सऊदी-अरब के अन्तर्गत है। २. फारसी संगीत में, एक प्रकार का मुकाम या राग। ३. उर्दू-फारसी में एक प्रकार का छन्द जिसमें प्रायः रुबाइयाँ लिखी जाती हैं।

हिजाब—पुं०[अ०] १. आड़। ओट। परदा। २. लज्जा। शरम।

हिज्ज—स्त्री० [हिं० जिच्च या अनु०] वह स्थिति जिसमें कोई क्रिया, प्रयत्न, वाद-विवाद आदि करते-करते जी बहुत खिजला गया हो और आगे बढ़ने का कोई रास्ता न दिखाई देता हो।

†पुं० १.=हिजड़ा। २.=हिज्जल।

हिज्जल—पुं०[सं०] एक प्रकार का पेड़।

हिज्जे—पुं०[अ० हिज्जा] १. वे वर्ण या अक्षर जिनसे कोई शब्द बना हो। वर्तनी। २. किसी शब्द के वर्णों का किया जानेवाला अलग-अलग और क्रमिक उच्चारण।

मुहा०—(किसी बात के) हिज्जे करना=व्यर्थ का तर्क-वितर्क करना।

हिज्र—पुं०[अ०] जुदाई। वियोग। विछोह।

हिटकना†—स०=हटकना।

हिडंब—पुं०[?] [स्त्री० हिडंबी] भैंसा।

हिडिंब—पुं०[सं०] एक प्रसिद्ध राक्षस जो भीम के हाथ से मारा गया था।

हिडिंबा—स्त्री० [सं०] हिडिंब राक्षस की बहन, जिससे भीम ने विवाह किया था। घटोत्कच इसी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

हिडोर†—पुं०=हिंडोला।

हित—पुं० [सं०√धा (धारण-पोषण करना)+क्त—धा-हि] १. कल्याण। मंगल। २. भलाई। उपकार। ३. लाभ। फायदा। ४. शुभ-कामना से युक्त अनुराग या प्रेम। ५. विविध क्षेत्रों में किसी वस्तु या विषय के साथ होनेवाला किसी व्यक्ति का वह संबंध जिसके अनुसार उस विषय या वस्तु के कारण भविष्य में होनेवाली हानि या लाभ से उस व्यक्ति की भी हानि या लाभ होता या हो सकता हो। (इन्टरेस्ट) ६. स्नेह। मुहब्बत। ७. वह जो किसी की भलाई चाहता या करता हो। हितैषी। उदा०—पाँच पति हित हारि बैठे, रावरै हित मौरै।—सूर। ८. संबंधी। रिश्तेदार। उदा०—रही फेरि मुँह हेरि इत, हित समुहै चित नारि—बिहारी। ९. नाता। रिश्ता।

वि० १. उपकारी। लाभदायक। २. अनुकूल। मुआफिक। ३. शुभ-चिन्तक।

अव्य० १. (किसी की भलाई या प्रसन्नता के) विचार से। उदा०—जौ अनाथ हित हम पर नेहू।—तुलसी। २. निमित्त। लिए। वास्ते। उदा०—हरि हित हरहु चाप गरुआई।—तुलसी।

हितक—पुं०[सं० हित+क] जानवर का बच्चा।

हितकर—वि०[सं० हित√कृ (करना)+अच्—ष० त०] १. (व्यक्ति) जो दूसरों का हित करता हो। २. (बात या चीज) जिससे हित होता हो। लाभदायक। ३. शरीर को नीरोग तथा स्वस्थ रखनेवाला।

हितकर्ता (र्तृ)—वि०[सं० ष० त०] भलाई करनेवाला।

हित-काम—पुं०[सं० ष० त०] भलाई की कामना या इच्छा। खैरख्वाही।

वि० हित की कामना करनेवाला। हितेच्छु।

हितकारक—वि०[सं०]=हितकर।

हितकारी (रिन्)—वि० [सं०] [स्त्री० हितकारिणी]=हितकर।

हित-चिंतक—वि० [सं० ष० त०] भलाई चाहनेवाला। खैरखाह।

हित-चिंतन—पुं० [सं० ष० त०] किसी की भलाई का चिंतन अर्थात् कामना या इच्छा। उपकार की इच्छा। खैरख्वाही।

हितता*—स्त्री०[सं० हित+ता] भलाई। उपकार।

हित-प्रिय—पुं०[सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

हित-भाषिणी—स्त्री०[सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

हित-वचन—पुं०[सं० चतु० त०] कही हुई कोई ऐसी बात, जिससे किसी का हित होता है। भलाई के विचार से कही हुई बात।

हितवना†—अ०=हिताना।

हितवाद—पुं०[सं० हित√वद् (कहना)+घञ्] किसी के हित के विचार से कही हुई बात। हित-वचन।

हितवादी (दिन्)—वि०[सं०] [स्त्री० हितवादिनी] हित की बात कहनेवाला। भली सलाह देनेवाला।

हितवार†—पुं०[सं० हित] प्रेम। स्नेह।

हित-हरिवंश—पुं० [सं०] राधावल्लभी सम्प्रदाय के संस्थापक एक प्रसिद्ध महात्मा जो ब्रज-भाषा के सुकवि भी थे। (सं० १५५९-१६०९)

हिताई—स्त्री० [सं० हित+आई (हिं० प्रत्य०)] १. नाता। रिश्ता। संबंध। २. नातेदार या रिश्तेदार का घर और परिवार। (पूरब)

हिताकांक्षी (क्षिन्)—वि० [सं० हित-आ√कांक्ष (चाहना)+णिनि] हित की आकांक्षा करने या भलाई चाहनेवाला।

हिताधिकारी—पुं०[सं० हित+अधिकारी] वह जिसे किसी बात या व्यवस्था से कोई आर्थिक लाभ हो रहा हो या भविष्य में होने को हो। (बेनिफीशिअरी)

हिताना*—अ० [सं० हित+हिं० आना (प्रत्य०)] १. अनुकूल। लाभदायक या हितकर होना। २. अनुराग या प्रेम के भाव से युक्त होना। ३. अच्छा और प्रिय लगना।

हितार्थी (र्थिन)—वि०[सं० हितार्थ+इनि] हित की कामना रखनेवाला। हितेच्छु।

हितावह—वि०[सं०] जिससे भलाई हो। हितकारी।

हिताहित—पुं०[सं० द्व० स०] हित और अहित। भलाई-बुराई। उपकार-अपकार। जैसे—जिसे अपने हिताहित का विचार न हो, वह भी कोई आदमी है।

हिती—वि०[सं० हित+ई (हिं० प्रत्य०)]१. भलाई चाहनेवाला। खैरखाह।
पुं० दोस्त। मित्र।

हितु†—पुं०१.=हित। २.=हितू।

हितू—पुं०[सं० हित]१. भलाई करने और चाहनेवाला। हितैषी। खैरखाह। २. निकट का संबंधी। नजदीकी रिश्तेदार। ३. सुहृद। स्नेही।

हितेच्छा—स्त्री०[सं० ष० त०] भलाई की इच्छा या चाह। खैरखाही। उपकार का ध्यान।

हितेच्छु—वि०[सं० ष० त०] हित या भला चाहनेवाला। कल्याण मनानेवाला। खैरखाह।

हितैषणा—स्त्री०[सं० हित+एशण] किसी के हित या मंगल की कामना। शुभ-कामना। खैरख्वाही।

हितैषिता—स्त्री०[सं०] हितैषी होने की अवस्था, गुण या भाव।

हितैषी—वि०[सं० हितैषिन्] [स्त्री० हितैषिणी] भला चाहनेवाला। खैरखाह। कल्याण मनानेवाला।
पुं० दोस्त। मित्र।

हितोक्ति—स्त्री० [सं० चतु० त०] किसी के हित या भलाई के विचार से कही हुई बात।

हितोपदेश—पुं०[सं० चतु० त०]१. किसी का हित या उपकार करने के उद्देश्य से दिया जानेवाला उपदेश। अच्छी नसीहत। २. विष्णु शर्मा रचित संस्कृत का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ जिसमें व्यवहार-नीति की बहुत-सी अच्छी-अच्छी बातें कहानियों के रूप में कही गई हैं।

हितौना†—अ०=हिताना।

हित्ती—पुं० पश्चिमी एशिया की एक प्राचीन जाति, जिसने ई० पू० १५००० के लगभग वहाँ एक साम्राज्य स्थापित किया था। (हिहाइट)

हिदायत—स्त्री० [अ०] १. पथ-प्रदर्शन। रास्ता दिखाना। २. आधिकारिक रूप से यह कहना कि अमुक कार्य इस रूप में होना चाहिए, अथवा अमुक प्रकार की बात नहीं होनी चाहिए। अनुदेश। (इंस्ट्रक्शन)
क्रि० प्र०—करना।—देना।—होना।

हिनक—स्त्री० [हिं० हिनकना] हिनकने की क्रिया या भाव। हिनहिनाहट।

हिनकना—अ० [अनु०] घोड़े का हिनहिनाना। हींसना।

हिनकाना—स० [हिं० हिनकना का स०] घोड़े को हिनकने में प्रवृत्त करना।

हिनती†—स्त्री० [सं० हीनता] हीनता। तुच्छता।

हिनवाना—पुं०=हिंदवाना (तरबूज)।

हिनहिनाना—अ० [अनु० हिन-हिन] [भाव० हिनहिनाहट] घोड़े का हिन-हिन शब्द करना। हींसना।

हिनहिनाहट—स्त्री० [हिं० हिनहिनाना] हिनहिनाने की क्रिया, भाव या शब्द।

हिना—स्त्री० [अ०] मेंहदी का झाड़ और पत्तियाँ।

हिनाई—वि० [अ०] हिना अर्थात् मेंहदी की पिसी हुई पत्तियों के रंग का।
पुं० उक्त प्रकार का रंग।

हिफाजत—स्त्री० [अ० हिफ़ाज़त] रक्षा या उसके विचार से की जानेवाली देख-भाल।

हिफाजती—वि० [अ० हिफ़ाज़ती] जो हिफाजत के लिए अथवा हिफाजत के रूप में हो। जैसे—हिफाज़ती कार्रवाई।

हिब्बा—पुं० [अ० हब्ब] १. अन्न आदि का कण। दाना। २. किसी चीज का बहुत ही छोटा अंश या खंड। ३. दो जौ अथवा किसी-किसी के मत से एक रत्ती की तौल।
पुं० [अ० हिब्बः] किसी को कोई चीज सदा के लिए दे देना। दान। बख्शिश।

हिब्बानामा—पुं० [अ० हिब्बः+फा० नामा] दान-पत्र।

हिमंचल†—पुं० =हिमाचल।

हिमंत†—पुं० =हेमंत।

हिम—पुं०[सं०√हि+मक्] १. आकाश या बादलों में रहनेवाले जलीय अंश का वह ठोस रूप, जो सरदी से जमने के कारण होता है। तुषार। पाला। २. बहुत कड़ी सरदी। जाड़ा। पाला। ३. जाड़े की ऋतु। शीतकाल। ४. पुराणानुसार पृथ्वी का एक विशिष्ट भू-खंड या वर्ष। ५. ऐसी दवा जो रात भर ठंढे पानी में भिगोकर सवेरे मलकर छान ली जाय। ठंढा क्वाथ या काढ़ा। ६. चन्द्रमा। ७. चन्दन। ८. कपूर। ९. मोती। १०. रोंआ। ११. ताजा मक्खन १२. कमल।
वि० ठंढा। शीतल।

हिम-उपल—पुं० [सं० मध्य० स०] आकाश से गिरनेवाले बरफ के टुकड़े। ओला। पत्थर।

हिम-ऋतु—स्त्री० [सं० मध्य० स०] जाड़े का मौसम। हेमंत-ऋतु।

हिम-कण—पुं० [सं० ष० त०] बर्फ या पाले के छोटे-छोटे टुकड़े।

हिम-कर—पुं० [सं० ब० स०] १. चन्द्रमा। २. कपूर।
वि० ठंढा या शीतल करनेवाला।

हिम-किरण—पुं० [सं० ब० स०] चन्द्रमा।

हिम-खंड—पुं० [सं० ष० त०] १. हिमालय। २. दे० 'हिमानी'।

हिम-गह्वर—पुं० [सं० ष० त०] बरफीले पहाड़ों में वह गहरा गोलाकार गड्ढा, जो हिमानी के प्रवाह के कारण पत्थरों के छीजने और बह जाने से बनता है।

हिमगु—पुं० [सं०] चन्द्रमा।

हिम-गृह—पुं० [सं० ष० त०] १. बरफ का घर। बरफ पर बनाया हुआ घर। ३. बहुत ही ठंढा कमरा। सर्द खाना।

हिमज—वि० [सं० हिम√जन् (उत्पन्न होना)] १. हिम या बरफ से होनेवाला। २. हिमालय में होनेवाला।

हिमजा—स्त्री० [सं० हिमज—टाप्] १. पार्वती। २. खिरनी का पेड़। ३. यवनाल से निकली हुई चीनी।

हिम-झंझावात—पुं० [सं०] ऐसा तूफान जिसके साथ ओले भी गिरते हों। बर्फीला तूफान। (ब्लिजर्ड, स्नो-स्टार्म)

हिम-तैल—पुं० [सं०] कपूर के योग से बनाया हुआ तेल।

हिम-दंश—पुं० दे० 'तुषार-दंश'।

हिम-दीधित—पुं० [सं० ब० स०] चन्द्रमा ।

हिम-धाव—पुं० [सं०] दे० 'हिमानी' ।

हिम-पात—पुं० [सं० ष० त०] पाला पड़ना। वर्फ गिरना ।

हिम-पुरुष—पुं०=हिम-मानव ।

हिम-प्रस्थ—पुं० [सं० ब० स०] हिमालय पहाड़।

हिमप्लवा—स्त्री० दे० 'हिम-शैल' ।

हिम-बालुका—स्त्री० [सं० ष० त०] कपूर ।

हिम-भानु—पुं० [सं० ब० स०] चन्द्रमा ।

हिम मयूख—पुं० [सं० ब० स०] चन्द्रमा।

हिम-मानव—पुं० [सं०] एक प्रकार का अज्ञात और रहस्यमय भीषण और विकराल जंतु, जिसके अस्तित्व की कल्पना हिमालय की कुछ बरफीली चोटियों पर दिखाई देनेवाले बड़े-बड़े तथा विलक्षण पद-चिह्नों के आधार पर की गई है। येती। (स्नोमैन)

हिम-रश्मि—पुं० [सं० ब० स०] चन्द्रमा।

हिम-रुचि—पुं० [सं० ब० स०] चन्द्रमा।

हिमरेखा—स्त्री० [सं०] पहाड़ों की ऊँचाई की वह सीमा, जिसके ऊपरी भाग पर सदा बरफ जमा रहता है। (स्नो-लाइन)

हिमर्तु—स्त्री० [सं० मध्य० स०] हेमंत ऋतु। जाड़े का मौसम ।

हिमवत्—[सं०] पुं०=हिमवान् ।

हिमवत्-खंड—पुं० [सं०] स्कंदपुराण के अनुसार एक खंड या भू-भाग ।

हिमवान्—वि० [सं० हिमवत्] [स्त्री० हिमवती] बर्फवाला। जिसमें बर्फ या पाला हो।

पुं० १. हिमालय। २. कैलास पर्वत। ३. चन्द्रमा ।

हिम-विवर—पुं० [सं०] दे० 'हिम-गह्वर' ।

हिम-शर्करा—स्त्री० [सं० मध्य० स० उपमि० स० व०] एक प्रकार की चीनी जो यवनाल से बनाई जाती है।

हिम-शैल—पुं० [सं० मध्य० स०] १. हिमालय । २. बरफ की वे चट्टानें, जो उत्तरी ध्रुव की हिमानी से अलग होकर समुद्र में पहाड़ों की तरह तैरती हुई दिखाई देती हैं । (आइसबर्ग)

हिम-शैलजा—स्त्री० [सं० हिमशैल√जन् (पैदा होना)+ड] पार्वती ।

हिम-सुत—पुं० [सं० ष० त०] चन्द्रमा ।

हिमांक—पुं० [सं० ब० स०] कपूर।

हिमांगी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी ।

हिमांत—पुं० [सं० ष० त०] जाड़े के मौसम की समाप्ति। हेमंत ऋतु का अन्त ।

हिमांशु—पुं० [सं० ब० स०] १. चन्द्रमा । २. कपूर ।

हिमा—स्त्री० [सं०] १. हेमंत ऋतु। २. दुर्गा। ३. छोटी इलायची। ४. नागरमोथा।

हिमाकत—स्त्री० [अ०] अहमक होने की अवस्था या भाव। बेवकूफी। मूर्खता ।

हिमाचल—पुं० [सं० मध्य० स०] हिमालय पहाड़।

हिमाच्छन्न—भू० कृ० [सं० तृ० त०] बरफ से ढका हुआ।

हिमाच्छादित—भू० कृ० [सं०] हिमाच्छन्न।

हिमाद्रि—पुं० [सं० मध्य० स०] हिमालय पहाड़।

हिमानिल—पुं० [सं० मध्य० स०] बहुत ठंढी और बर्फीली हवा ।

हिमानी—स्त्री० [सं० हिम-ङीप् आनुक्] १. बरफ का ढेर। हिम-राशि। २. बरफ की वह बहुत बड़ी राशि, जो पर्वतों पर से फिसलती हुई नीचे गिरती है। (एवलांच)

हिमाब्ज—पुं० [सं०] नील कमल ।

हिमाभ—वि० [सं० ब० स०] १. हिम की आभा से युक्त। २. जो देखने में बरफ की तरह हो।

हिमामदस्ता—पुं० [फा० हावनदस्तः] खरल और बट्टा : हावनदस्ता।

हिमायत—स्त्री० [अ०] [कर्ता० हिमयती] किसी व्यक्ति के किसी आपित्तजनक अथवा विवादास्पद कार्य या बात का दृढ़तापूर्वक किया जानेवाला ऐसा पोषण और समर्थन, जिसमें पक्षपात की भी कुछ झलक हो। तरफदारी। पक्षपात।

हिमायती—वि० [फा०] १. हिमायत के रूप में होनेवाला। प्रेरणा-जनक तथा पक्षपातपूर्ण। २. किसी व्यक्ति अथवा उसके कार्यों की हिमायत करनेवाला । पक्षपाती।

हिमाराति—पुं० [सं०] १. अग्नि। आग। २. सूर्य । ३. आक। मदार। ४. चित्रक या चीता नामक वृक्ष।

हिमाल†—पुं०=हिमालय ।

हिमालय—पुं० [सं० ष० त०] १. भारतवर्ष की उत्तरी सीमा पर पूर्व से पश्चिम तक फैला हुआ एक बहुत बड़ा और ऊँचा पहाड़, जो संसार के सब पर्वतों से बड़ा और ऊँचा है। इसकी सबसे ऊँची चोटी, सागरमाथा या एवरेस्ट २९००२ फुट ऊँची है। उत्तर भारत की बड़ी नदियाँ इसी पर्वत-राज से निकली हैं। २. सफेद खैर का पेड़।

हिमाह्व—पुं० [सं०] १. जंबू द्वीप का एक वर्ष या खंड। २. कपूर।

हिमि*—पुं०=हिम ।

हिमिका—स्त्री० [सं०] पाला । तुषार ।

हिमित—भू० कृ० [सं०] १. जो बरफ के रूप में आया या उसमें परिणत हो गया हो। २. बरफ से ढका हुआ ।

हिमियानी—स्त्री० [फा०] एक प्रकार की पतली, लंबी थैली जो रुपए आदि भरकर कमर में बाँधी जाती है। टाँची। बसनी।

हिमी—वि० [सं० हिम+हिं० ई (प्रत्य०)] १. हिम संबंधी। २. हिम या ओलों से युक्त। (फ्रॉस्टी) जैसे—हिमी वर्षा ।

हिमी वर्षा—स्त्री० [सं० हिम+वर्षा] ऐसी वर्षा जिसमें पानी के साथ-साथ हिम या ओले भी बरसें । (स्लीट)

हिमेश—पुं० [सं० ष० त०] हिमालय।

हिमोपल—पुं० [सं० हिम+उपल] जाड़े में वर्षा के साथ गिरनेवाला ओला या पत्थर ।

हिम्मत—स्त्री० [अ०] १. भयरहित होकर कोई जोखिम का काम करने का सामर्थ्य । साहस। २. उक्त सामर्थ्य की द्योतक मानसिक दृढ़-धारणा।

क्रि० प्र०—करना।—पड़ना।—होना।

मुहा०—हिम्मत हारना=साहस छोड़ना । उत्साह से रहित होना ।

हिम्मती—वि० [अ० हिम्मत+हिं० ई (प्रत्य०)] १. हिम्मतवाला। साहसी। २. पराक्रमी । बहादुर ।

हिम्य—वि० [सं०] १. हिम या बर्फ से ढका हुआ। २. बहुत अधिक ठंढा।

हिय—पुं० [सं० हृदय, प्रा० हिअ] १. हृदय। मन। २. साहस। हिम्मत।

मुहा०—हिय हारना=साहस छोड़ देना। हिम्मत हारना।

हियरा—पुं० [हिं० हिय+रा (प्रत्य०)] १. हृदय। मन। ३. छाती। वक्षःस्थल।

हियाँ—अव्य०=यहाँ।

हिया—पुं० [सं० हृदय, प्रा० हिअ] १. हृदय। मन।

पद—**हिये का अन्धा**=जिसे कुछ भी ज्ञान या समझ न हो। परम मूर्ख।

मुहा०—**हिया फटना**=कलेजा फटना। अत्यन्त शोक या दुःख होना। **हिया भर आना**=करुणा, दुःख आदि से हृदय द्रवित या आकुल होना। **हिया भर लेना**=बहुत अधिक दुःखी होकर गहरा साँस लेना। **हिये का फूटना**=ज्ञान या बुद्धि न रहना। अज्ञान रहना।

२. वक्षःस्थल। छाती।

मुहा०—**हिये से लगाना**=आलिंगन करना। गले लगाना।

हियाव—पुं० [हिं० हिय+आव (प्रत्य०)] कोई विशेष प्रकार का जोखिम का काम करने की वह साहसपूर्ण तथा निःसंकोच की वृत्ति, जो उस तरह का काम पहले एक या अनेक बार कर चुकने से उत्पन्न होती है।

मुहा०—**हियाव खुलना**=निःसंकोच तथा साहसपूर्वक कोई काम करने की समर्थता से युक्त होना। जैसे—उस लड़के का, बड़ों को खरी-खोटी सुनाने का हियाव खुल गया है।

हिरकना—अ० [सं० हिरुक्=समीप] १. परचने के कारण धीरे-धीरे पास आने लगना। परचना। हिलगना। २. बहुत पास आना। सटना।

संयो० क्रि०—जाना।

हिरकाना†—स० [हिं० हिरकना का स०] १. परचाना। हिलगाना। २. बहुत पास लाना। सटाना।

हिरगना †—अ०=हिरकना (हिलगना)। उदा०—जहाँ सो नागिनी हिरणँ कहिअ सो अंग।—जायसी।

हिरगाना †—स०=हिरकाना (हिलगाना)। उदा०—मकु हिरगाइ लेइ हम बासा।—जायसी।

हिरगुनी—स्त्री० [हिं० हीर+गुन=सूत] एक प्रकार की बढ़िया कपास जो सिंध में होती है।

हिरण—पुं० [सं०√हृ (हरण करना)+ल्युट्—अन] १. सोना। स्वर्ण। २. वीर्य। ३. कौड़ी। ४. हिरन।

हिरण्मय—वि० [सं० हिरण्य+मयट्] [स्त्री० हिरण्मयी] १. सोने का बना हुआ। २. सुनहला।

पुं० १. हिरण्यगर्भ। ब्रह्मा। २. जंबू द्वीप के नौ खंडों या वर्षों में से एक, जो श्वेत और शृंगवान् पर्वतों के बीच में स्थित कहा गया है।

हिरण्य—पुं० [सं० हिरण+यत्] १. सृष्टि का नित्य तत्त्व। २. हिरण्यमय नामक भू-खंड या वर्ष। ३. सोना। स्वर्ण। ४. ज्ञान। ५. ज्योति। तेज। ६. अमृत। ७. पुरुष का वीर्य। शुक्र। ८. धतूरा। कौड़ी।

हिरण्य-कशिपु—वि० [सं० ब०स०] सोने के तकिये या गद्दीवाला।

पुं० एक प्रसिद्ध विष्णु-विरोधी दैत्य राजा जो प्रह्लाद के पिता थे।

हिरण्य-कश्यप—पुं०=हिरण्यकशिपु।

हिरण्य-कामधेनु—स्त्री० [सं० मध्य० स०] दान देने के लिए बनाई हुई सोने की कामधेनु गाय। (इसका दान १६ महादानों में है)

हिरण्यकार—पुं० [सं० हिरण्य√कृ (करना)+अण्] स्वर्णकार। सुनार।

हिरण्य-केश—पुं० [सं० ब० स०] विष्णु का एक नाम।

हिरण्य-गर्भ—पुं० [सं० ब० स०] १. वह ज्योतिर्मय अंड, जिससे ब्रह्मा और सारी सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। २. ब्रह्मा। ३. विष्णु। ४. सूक्ष्म-शरीर से युक्त। आत्मा।

हिरण्यनाभ—पुं० [सं० ब० स०] १. विष्णु। २. मेनाक पर्वत। ३. भारतीय वास्तु-शास्त्र के अनुसार ऐसा भवन जिसमें पश्चिम, उत्तर और पूर्व की ओर तीन बड़ी-बड़ी शाखाएँ निकली हों।

हिरण्यपुर—पुं० [सं०] असुरों का एक नगर जो समुद्र के पार वायु-मंडल में स्थित कहा गया है। (हरिवंश)

हिरण्य-पुष्पी—स्त्री० [सं० ब० स०] एक प्रकार का पौधा।

हिरण्य-बाहु—पुं० [ब० स०] १. शिव का एक नाम। २. शोण या सोन नद का एक नाम।

हिरण्यरेता (तस्)—पुं० [सं० ब० स०] १. अग्नि। आग। २. सूर्य। ३. बारह आदित्यों में से एक। ४. शिव। ५. चित्रक या चीता नामक वृक्ष।

हिरण्यरोमा (मन्)—पुं० [सं० ब० स०] १. लोकपाल जो मरीचि के पुत्र हैं। २. भीष्मक का एक नाम

हिरण्यव—पुं० [सं०] १. किसी देवता या मंदिर पर चढ़ा हुआ धन। देवस्व। देवोत्तर संपत्ति। २. सोने का गहना।

हिरण्यवस्त्र—पुं० [सं० मध्य० स०] वैदिक काल का सुनहले तारों का बना एक प्रकार का कपड़ा।

हिरण्यवान्—वि० [सं० हिरण्यवत्] [स्त्री० हिरण्यवती] सोनेवाला। जिसमें या जिसके पास सोना हो।

पुं० अग्नि। आग।

हिरण्यवाह—पुं० [सं० हिरण्य√वह् (ढोना)+णिच्] १. शिव। २. सोन नामक नद।

हिरण्यबिंदु—पुं० [सं० ब० स०] १. अग्नि। आग। २. एक प्राचीन पर्वत। ३. एक प्राचीन तीर्थ।

हिरण्यवीर्य—पुं० [सं० ब० स०] १. अग्नि। आग। २. सूर्य।

हिरण्य-सर (स्)—पुं० [सं० हिरण्यसरस्] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ।

हिरण्याक्ष—पुं० [सं० ब० स० षच्] एक प्रसिद्ध दैत्य जो हिरण्य-कशिपु का भाई था। विष्णु ने बाराह अवतार धारण कर इसे मारा था।

हिरण्याश्व—पुं० [सं० मध्य० स०] दान देने के लिए बनाई हुई घोड़े की सोने की मूर्ति। इसका दान १६ महादानों में है।

हिरदय† —पुं०=हृदय।

हिरदा† —पु०=हृदय।

हिरदावल—पुं० [सं० हृदावर्त्त] घोड़ों की छाती की भौंरी जो बहुत अशुभ मानी जाती है।

हिरन—पुं० [सं० हरिण] [स्त्री० हिरनी] हरिन नामक सींगवाला चौपाया। मृग।

विशेष—सं० हरिण से व्युत्पन्न होने के कारण इस शब्द का वाचक रूप 'हरिन' ही होना चाहिए ; परन्तु उर्दूवालों के प्रभाव से 'हिरन' रूप ही विशेष प्रचलित हो गया है।

मुहा०—हिरन हो जाना=बहुत तेजी से भागकर गायब हो जाना।

हिरन-खुरी—स्त्री० [हिं० हिरन+खुर] एक प्रकार की बरसाती लता जिसके पत्ते हिरन के खुर से मिलते-जुलते होते हैं।

हिरन-मूसा—पुं० [हिं०] चूहे की जाति का एक जन्तु जिसकी पिछली टाँगें बहुत लंबी और अगली टाँगें बहुत छोटी होती हैं। यह छलाँगें भरता हुआ बहुत तेज दौड़ता है।

हिरनी†—अ० [सं० हरण] छीना या दूर किया जाना। हरण होना। उदा०—कोटिक पाप पुंन बहु हिरई।—कबीर।

†स०=हेरना।

†पुं०=हिरन (पशु)।

हिरनाकुस†—पुं०=हिरण्यकशिपु।

हिरनौटा—पुं० [सं० हरिणपोतु या हिं० हिरन+औटा (प्रत्य०)] हिरन का बच्चा। मृग-शावक।

हिरफत—स्त्री० [अ० हिरफ़त] १. व्यवसाय। पेशा। २. हाथ की कारीगरी। दस्तकारी। ३. कौशलपूर्वक कार्य-संपन्न करने का गुण। हुनर। ४. चालाकी। धूर्तता।

हिरफतबाज—वि० [अ० हिरफ़त+फा० बाज़] [भाव० हिरफतबाजी] चालबाज। धूर्त।

हिरमजी—स्त्री० [अ० हिरमज़ी] लाल रंग की एक प्रकार की मिट्टी जिससे कपड़े, दीवारें आदि रँगते हैं। हिरौंजी।

वि० उक्त प्रकार के रंग का।

हिरमिजी†—स्त्री०=हिरमजी।

हिरवा†—पुं०=हीरा।

हिरवा-चाय—स्त्री० [हिं० हीरा+चाय] एक प्रकार की सुगंधित घास जिसकी जड़ से नींबू की-सी सुगंध निकलती है और जिससे सुगंधित तेल बनता है।

हिरस†—स्त्री०=हिर्स।

हिरा—स्त्री० [सं०] रक्तवाहिनी नाड़ी या शिरा।

हिरात—पुं० [?] अफगानिस्तान की सीमा के पास का एक प्रदेश।

हिराती—वि० [हिरात प्रदेश] हिरात नामक स्थान का।

पुं० उक्त देश का घोड़ा जिसके संबंध में कहा जाता है कि यह गरमी में भी नहीं थकता।

हिराना†—अ० [हिं० हिलाना=प्रवेश करना] खेतों में भेड़, बकरी, गाय आदि चौपाये रखना जिसमें उनकी लेंड़ी या गोबर से खेत में खाद हो जाय।

अ०, स०=हेराना।

हिरावल†—पुं०=हरावल।

हिरास—स्त्री० [फा०] १. भय। त्रास। २. खेद। दुःख। ३. निराशा। ना-उम्मेदी।

वि० १. खिन्न। दुःखी २. निराश या हताश।

हिरासत—स्त्री० [अ०] [वि० हिरासती] किसी को इस प्रकार अपने बन्धन या देख-रेख में रखना कि वह भागकर कहीं जाने न पाये। जैसे—पुलिस ने अभियुक्तों को हिरासत में ले लिया। अभिरक्षा। परिरक्षा। (कस्टडी) २. वह स्थान जहाँ उक्त प्रकार के लोग बंद कर के रखे जाते हैं। (लाक-अप)

क्रि० प्र०—में करना।—में लेना।

हिरासती—वि० [अ० हिरासत] १. हिरासत-संबंधी। हिरासत का। जैसे—हिरासती कोठरी। (व्यक्ति) जो हिरासत में रखा गया या लिया गया हो।

हिरासाँ—वि० [फा०] १. निराश। ना-उम्मेद। २. जो साहस छोड़ या हिम्मत हार चुका हो। पस्त। ३. उदासीन या खिन्न।

हिरिस—पुं० [देश०] एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसकी छाल भूरे रंग की होती है। यह फागुन और चैत्र में फलता है। इसके फलों का स्वाद खट-मीठा होता है।

†स्त्री०=हिर्स।

हिरौंजी—वि०, स्त्री०=हिरमजी।

हिरौल†—पुं०=हरावल।

हिर्फत—स्त्री०=हिरफत।

हिर्स—स्त्री० [अ०] १. ऐसी तृष्णा या लोभ जो सहसा मिट न सके और जिसकी तृप्ति की आकांक्षा बनी रहे। निम्न कोटि का लालच या वासना।

क्रि० प्र०—मिटना।—मिटाना।

मुहा०—हिर्स छूटना=मन में लालच होना। तृष्णा होना।

२. किसी की देखा-देखी होनेवाली कुछ काम करने की इच्छा या प्रवृत्ति। स्पर्द्धा। रीस।

पद—हिर्सा-हिर्सी।

हिर्सा हिर्सी—अव्य० [अ० हिर्स] दूसरों को करते देखकर उनसे होड़ करने के लिए।

हिर्सी—वि० [अ०] बहुत अधिक हिर्स या लालच करनेवाला। लालची।

पद—हिर्सी टट्टू=दूसरों की देखा-देखी लोभ या हिर्स करनेवाला व्यक्ति।

हिर्सौंहा—वि० [अ० हिर्स+हिं० औंहा (प्रत्य०)] जिसे बहुत अधिक हिर्स हो। लालची। लोभी।

हिलंदा—वि० [देश०] [स्त्री० हिलंदी] मोटा-ताजा। हट्टा-कट्टा।

हिलकना†—अ० [अनु० या सं० हिक्का] १. हिचकियाँ लेना। २. सिसकना। उदा०—देखकर चुप-चाप हिलक उठी।—वृन्दावन लाल वर्मा। ३. सिकुड़ना।

†अ०=हिलगना।

हिलकी†—स्त्री० [अनु० या सं० हिक्का] १. हिचकी। २. सिसकी।

हिलकोर†—स्त्री०=हिलकोरा (हिलोर)।

हिलकोरना—स० [हिं० हिलकोरना] १. हिलकोरे या लहरें उत्पन्न करना। २. ताल, नदी आदि के शांत जल को क्षुब्ध करना।

हिलकोरा—पुं० [सं० हिल्लोल] हिलोर। लहर। तरंग।

क्रि० प्र०—उठना।

मुहा०—हिलकोरे लेना=तरंगित होना। लहराना।

हिलग†—स्त्री०=हिलगत।

हिलगत—स्त्री० [हिं० हिलगना] १. हिलगने की अवस्था, क्रिया या

भाव। २. लगाव । सम्बन्ध। ३. प्रेम। स्नेह। ४. हेल-मेल । ५. आदत। टेव। बान।

क्रि० प्र०—डालना।—पड़ना।

हिलगन*—स्त्री०=हिलगत। उदा०—हिलगन कठिन है या मन की।—कुंभनदास।

हिलगना—अ० [सं० अधिलग्न, प्रा० अहिलग्न] १. किसी वस्तु के साथ लगकर अटकना, ठहरना या रुकना। २. उलझना। फँसना। ३. प्रायः पास आते रहने के कारण हिलना-मिलना। परचना। जैसे—बच्चे का नये नौकर के साथ हिलगना। ४. बहुत पास या समीप आना। सटना।

हिलगाना—स० [हिं० हिलगना का स०] हिलगने में प्रवृत्त करना। ऐसा करना जिससे कुछ या कोई हिलगे।

हिलना—अ० [सं० हल्लन] १. अपने स्थान से कुछ इधर या उधर होना। कुछ या सूक्ष्म गति में आना। चलायमान होना। जैसे—हवा से पेड़ की पत्तियाँ हिलना।

मुहा०—हिलना-डोलना=(क) थोड़ा इधर-उधर होना। (ख) घूमना-फिरना। (ग) किसी काम के लिए उठना या आगे बढ़ना। (घ) काम-धंधा, उद्योग या परिश्रम करना।

२. कंपित होना। काँपना। ३. लहराना। ४. झूमना। ५. जमा या दृढ़ न रहना। ढीला होना। ६. (पानी में) पैठना। धँसना। ७. (मन का) चंचल होना। डिगना। ८. किसी चीज का खिसकना या सरकना।

अ० [हिं० हिलगना] हेल-मेल में आना। परचना। हिलगना। जैसे—यह लड़का हमसे बहुत हिल गया है।

पद—हिलना-मिलना=(क) मेल-जोल या घनिष्ठ संबंध स्थापित करना। (ख) एक चीज का दूसरी चीज में पूरी तरह से मिल जाना। **हिल-मिलकर**=(क) मेल-जोल के साथ। एक होकर। (ख) इकट्ठे या सम्मिलित होकर। **हिला-मिला** या **हिला-जुला**=मेल-जोल में आया हुआ। परचा हुआ। परिचित और अनुरक्त। जैसे—यह बच्चा तुमसे खूब हिला-जुला है।

हिलमोचिका, हिलमोची—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का साग।

हिलसा—स्त्री० [सं० इल्लिश] एक प्रकार की मछली जो चिपटी और बहुत काँटेदार होती है।

हिलाना—स० [हिं० हिलना का स०] १. किसी को हिलने में प्रवृत्त करना। ऐसा कार्य करना जिससे कुछ या कोई हिले। २. किसी को उसके स्थान से ऊपर-नीचे या इधर-उधर करना। खिसकाना या हटाना। ३. कंपित करना। कँपाना। ४. प्रविष्ट करना या कराना।

संयो० क्रि०—डालना।—देना।

स०=हिलाना। जैसे—बच्चे को प्यार करके अपने साथ हिलाना।

हिलाल—पुं० [अ०] १. शुक्ल पक्ष के आरम्भ का चन्द्रमा जो प्रायः धनुषाकार होता है। २. बँधी हुई पगड़ी की वह उठी हुई ऐंठन जो सामने माथे के ऊपर पड़ती है।

हिलुड़ना†—अ० [हिं० हिलोर] (जल का) लहरों से युक्त होना।

†अ०=हिलना।

हिलोर—स्त्री० [सं० हिल्लोल] तरंग। लहर।

क्रि० प्र०—आना।—उठना।

हिलोरना—स० [हिं० हिलोर+ना (प्रत्य०)] १. पानी को इस प्रकार हिलाना कि उसमें तरंगें उठें। २. किसी तरल पदार्थ को मथने की-सी क्रिया करना। ३. इधर-उधर हिलाते रहना। लहराना। ४. बिखरी हुई चीजें जल्दी-जल्दी समेटना। ५. चारों ओर से खूब तेजी से इकट्ठा करना। जैसे—आज-कल वह खूब रुपये हिलोर रहे हैं।

हिलोरा—पुं० [हिं० हिलोर] बड़ी तथा ऊँची लहर।

हिलोल—पुं०—हिल्लोल।

हिल्ल—पुं० [अ०] १. सहनशीलता। २. सुशीलता।

हिल्ला—पुं० [?] कीचड़।

†पुं०=हीला (मिस)।

हिल्लोल—पुं० [सं०] १. हिलोरा। तरंग। लहर। २. आनन्द या प्रसन्नता की तरंग। मौज। ३. काम-शास्त्र में एक प्रकार का आसन या रति-बन्ध। ४. हिंडोल राग।

हिल्लोलन—पुं० [सं०] [भू० कृ० हिल्लोलित] १. तरंग या तरंगें उठना। लहराना। २. काँपना। ३. झूलना। ४. हिलना।

हिल्सा—स्त्री०=हिलसा (मछली)।

हिवँ—पुं० [सं० हिम] १. बर्फ। २. पाला।

हिवंचल—पुं० [सं० हिम] हिम। पाला। बरफ।

†पुं०=हिमाचल (हिमालय)।

हिव†—अव्य० १.=अब। २.=अभी। (राज०)

हिवड़ा†—पुं०=हिय। हृदय। (राज०) उदा०—चोट लगी निज नाम हरीरी, म्हाँरे हिवड़े खटकी।—मीराँ।

हिवाँर—पुं० [सं० हिम+आलि] १. बरफ। पाला। तुषार।

वि० हिम की तरह का। बहुत ठंढा।

हिस—पुं० [अ०] १. अनुभव। ज्ञान। २. चेतना। संज्ञा।

पद—**बेहिस व हरकत**=निश्चेष्ट और निःसंज्ञ। बेहोश और सुन्न।

हिसका—पुं० [सं० ईर्ष्या, हिं० हींस] १. ईर्ष्या। डाह। २. प्रतिस्पर्धा। होड़।

पद—हिसका-हिसकी=चढ़ा-ऊपरी। होड़।

हिसाब—पुं० [अ०] [वि० हिसाबी] १. वह कला या विद्या, जिसके द्वारा संख्याएँ गिनी, घटाई और जोड़ी जाती हैं अथवा उनका गुणा या भाग किया जाता है। गणित। (एरिथमेटिक) २. उक्त विद्या के अनुसार मान, मूल्य, आदि गिन, जोड़ या समझकर उनका ब्योरा या लेखा तैयार करने का काम। (कल्कुलेशन)

क्रि० प्र०—करना।—जोड़ना।—निकालना।—लगाना।

४. आय-व्यय, लेन-देन आदि का लिखा जानेवाला ब्योरा या विवरण। लेखा। (एकाउन्ट)

पद—कच्चा हिसाब=ऐसा हिसाब जिसमें या तो ब्योरे की बातें पूरी तरह से न भरी गई हों अथवा जिसमें के लेन-देन का विवरण अंतिम और निश्चित रूप से लिखा जाने को हो। **चलता हिसाब**=ऐसा हिसाब जिसमें लेन-देन का क्रम अभी चल रहा हो और जिसका खाता अभी बन्द न हुआ हो। **पक्का हिसाब**=आय-व्यय, लेन-देन आदि की सब मदों का ठीक और पूरा लिखा हुआ हिसाब। **बे-हिसाब**=(क) जिसका लेखा या विवरण ठीक तरह से न रखा गया हो। (ख) इतना अधिक कि

सहज में उसका हिसाब लगाया न जा सकता हो। (ग) साधारण नियम, परिपाटी, प्रथा आदि के विरुद्ध। मोटा हिसाब=अनुमान, कल्पना आदि के आधार पर स्थूल रूप से प्रस्तुत किया हुआ ऐसा हिसाब जिसमें आगे चलकर कमी-बेशी की जा सकती हो।

मुहा०—(किसी का) हिसाब करना=यह स्थिर करना कि कितना पावना या लेना है और कितना देना। हिसाब चलना=(क) लेन-देन का क्रम चलता रहना। (ख) लेन-देन का लेखा चलता रहना। हिसाब चुकता, बराबर या बेबाक करना=किसी का जो कुछ बाकी निकलता हो, वह उसे दे देना। हिसाब चुकाना=हिसाब चुकता करना। हिसाब जाँचना=यह देखना कि आय-व्यय की जो मदें लिखी गई हैं, वे सब ठीक हैं या नहीं। हिसाब जोड़ना=अलग-अलग लिखी हुई रकमों का जोड़ लगाना। योग करना। (किसी को) हिसाब देना या समझाना=आय-व्यय का जमा खर्च आदि का ठीक और पूरा विवरण बतलाना। हिसाब बंद करना=लेन-देन आदि का व्यवहार समाप्त करना। हिसाब बैठाना या लगाना=आय-व्यय आदि का ठीक और पूरा जोड़ प्रस्तुत करना। हिसाब में लगाना=अपने पिछले पावने या लेन-देन के खाते में सम्मिलित करना। जैसे—उन्होंने ये दोनों रकमें हिसाब में लगा ली हैं। हिसाब रखना=(क) आमदनी-खर्च आदि का ब्योरा लिखना। (ख) किसी से ली और उसे दी हुई चीजों या रकमों का ब्योरा लिखते चलना। (किसी से) हिसाब लेना या समझना=यह जानना और समझना कि आय-व्यय कितना हुआ है; और जो हुआ है, वह ठीक है या नहीं। ४. गणित से संबंध रखनेवाला वह प्रश्न जो विद्यार्थियों की योग्यता की परीक्षा के लिए उनके सामने रखा जाता है। जैसे—आठ में से मेरे पाँच हिसाब ठीक निकले और तीन गलत हुए।

क्रि० प्र०—करना।—निकालना।—लगाना।

५. किसी वस्तु के मान, मूल्य, संख्या आदि का निश्चित अनुपात या दर। भाव। जैसे—यह चावल तुमने किस हिसाब से खरीदा है। ६. किसी की दृष्टि में होनेवाला महत्त्व, मान, मूल्य आदि का विचार। जैसे—(क) हमारे हिसाब से तो वह कुछ भी नहीं है, तुम्हारे हिसाब से भले ही बहुत बड़ा पण्डित हुआ करे। (ख) हमारे हिसाब से जैसे तुम, वैसे वह। ७. किसी प्रकार का निश्चित नियम, परिपाटी या व्यवस्था। जैसे—तुम्हारे आने-जाने का कोई ठीक हिसाब ही समझ में नहीं आता। ८. किसी के आचार-व्यवहार आदि का क्रम या ढंग; अथवा उसके फलस्वरूप होनेवाली अवस्था या दशा। जैसे—उनका जो हिसाब पहले था, वही अब भी है। ९. ऐसी स्थिति जिसमें भले-बुरे, हानि-लाभ आदि का ठीक तरह से ध्यान रखा जाता है। जैसे—वह बहुत हिसाब से रहता है; और थोड़ी आमदनी होने पर भी इतनी बड़ी गृहस्थी चलाये चलता है। १० पारस्परिक व्यवहार, साहचर्य आदि में होनेवाली अनुकूलता या समानता।

मुहा०—(किसी से) हिसाब बैठाना=प्रकृति, व्यवहार आदि की ऐसी अनुकूलता जिसमें संग, साथ या साहचर्य बना रहे। जैसे—उससे तुम्हारा हिसाब नहीं बैठता, इसी लिए प्रायः खटपट होती रहती है।

११. किसी कार्य की सिद्धि के लिए निकाला जानेवाला ढंग या युक्ति।

मुहा०—हिसाब बैठाना=ऐसा उपाय या युक्ति करना, जिससे कार्य सिद्ध हो जाय। जैसे—तुम मुँह ताकते रह गये और उसने अपनी नौकरी का हिसाब बैठा ही लिया।

हिसाब-किताब—पुं० [अ०] १. आय-व्यय आदि का (विशेषतः लिखा हुआ) ब्योरा या लेखा। २. उक्त से संबंध रखनेवाली पंजियाँ और बहियाँ। ३. व्यापारिक लेन-देन का व्यवहार। ४. ढंग। तरह। प्रकार। जैसे—उनका हिसाब-किताब हमारी समझ में ही नहीं आता।

हिसाब-चोर—पुं० [अ० हिसाब+हिं० चोर] वह जो व्यवहार या लेखे में कुछ गड़बड़ी करता या लोगों की रकमें दबा लेता हो।

हिसाब-बही—स्त्री० [अ० हिसाब+हिं० बही] वह पंजी या बही, जिसमें आय-व्यय या लेन-देन आदि का ब्योरा लिखा जाता हो।

हिसाबिया—पुं० [हिं० हिसाब] १. हिसाब या गणित का अच्छा ज्ञाता। २. वह जो हर काम या बात में सब बातों का खूब आगा-पीछा सोचने का अभ्यस्त हो। जैसे—जो बहुत बड़ा हिसाबिया हो, उसकी बात-चीत में पार पाना कठिन है।

पुं०=हिसाबी।

हिसाबी—वि० [अ०] १. हिसाब-सम्बन्धी। २. हिसाब से, फलतः समझ-बूझकर काम करनेवाला। ३. चतुर। चालाक।

हिसार—पुं० [फा०] १. अहाता। घेरा। २. किले आदि की चहार-दीवारी या परकोटा।

मुहा०—हिसार बाँधना=चारों ओर सैनिक आदि खड़े करके घेरा डालना।

३. फारसी संगीत की २४ शोभाओं या अलंकारों में से एक।

हिसालू—पुं० [हिं० आलूका अनु०] एक प्रकार का छोटा पौधा या बेल जिसके लाल गूदेदार और रसीले फल खाये जाते हैं। (स्ट्राबेरी)

हिसिषा†—स्त्री० [सं० ईर्ष्या] १. तुल्यता। समानता। २. किसी की बराबरी करने की भावना। प्रतियोषिता। होड़।

हिस्टीरिया—पुं० [अं०] एक प्रकार का स्नायविक रोग, जो प्रायः स्त्रियों को अधिक होता है और जिसमें रोगी बहुत अधिक उत्तेजित होकर प्रायः बे-होश-सा हो जाता है।

हिस्सा—पुं० [अ० हिस्सः] १. उन अवयवों में से हर एक, जिनके योग से कोई चीज बनी हो। जैसे—(क) पानी का एक हिस्सा आक्सीजन है और दो हिस्से हाइड्रोजन। (ख) खून भी हमारे शरीर का एक हिस्सा है। २. किसी वस्तु के विभक्त किये हुए अलग-अलग समझे या माने जानेवाले अथवा कुल से कुछ घटकर या कम होनेवाले अंगों में से हर एक। जैसे—(क) एक सेब के चार हिस्से करना। (ख) इस योजना के भी तीन हिस्से हैं। (ग) मकान के आगे और पीछेवाले हिस्से बाद में बनेंगे। ३. बँटवारे, विभाजन आदि में जो कुछ किसी एक व्यक्ति या पक्ष को प्राप्त हुआ या होता हो। जैसे—(क) पिता की विशाल संपत्ति में से उसके हिस्से में दो मकान और एक दुकान ही आई है। (ख) उसका हिस्सा उसके भाई मार ले गये हैं। ४. वह धन जो किसी साझे की वस्तु या व्यवसाय में कोई एक या हर एक साझेदार लगाये हुए हों। पत्ती। जैसे—इस कारोबार में उनका पाँच आने का हिस्सा है। ५. साझेदार को अपने हिस्से के अनुसार मिलनेवाला लाभ का आनुपातिक अंश। ६. वह गुण या बात जिसमें

विशेष रूप से कोई उत्कृष्ट या प्रवीण हो। जैसे—गद्य में चोज लाना बाबू बालमुकुंद गुप्त के ही हिस्से था। ७. किसी चीज के साथ मिला हुआ उसका कोई अंग या अवयव। जैसे—छाती के बाएँ हिस्से में जिगर या हृदय होता है।

हिस्सा-रसद—अव्य० [अ०+फा०] किसी चीज के विभाग या हिस्से होने पर आनुपातिक रूप से। हर पानेवाले के हिस्से के मुताबिक। हर हिस्सेदार के अंश के अनुसार। जैसे—यह सारी जायदाद सभी उत्तराधिकारियों में हिस्से-रसद बाँटी जायगी।

हिस्सेदार—पुं० [अ० हिस्सः+फा० दार (प्रत्य०)] [भाव० हिस्सेदारी] १. वह जिसका किसी संपत्ति या व्यवसाय में हिस्सा हो। अंशधारी। (शेयर होल्डर) जैसे—(क) इस मकान के चारों भाई बराबर के हिस्सेदार हैं। (ख) इस संस्थान में मैं ४ आने का हिस्सेदार हूँ। २. किसी कार्य, सेवा आदि में योगदान करनेवालों में से हर एक। जैसे—चोरी की योजना बनाने में वे सभी हिस्सेदार रहे हैं।

हिस्सेदारी—स्त्री० [अ० हिस्सः+फा० दारी] हिस्सेदार होने की अवस्था, अधिकार या भाव।

हिहिनाना—अ० [अनु० हिं हिं] घोड़ों का हिनहिनाना। हींसना।

हीं—अ० ब्रज-भाषा और अवधी 'ही' (थी) का बहु०। उदा०—जिनको नित नीके निहारत हीं . . .।—घनानन्द।

हींग—स्त्री० [सं० हिंगु] एक प्रकार का छोटा पौधा जो अफगानिस्तान और फारस में आप से आप और बहुत होता है। २. उक्त पौधे का निर्यास जो जमकर गोंद के समान हो जाता है तथा जो औषध और मसाले के रूप में व्यवहृत होता है। (एसेफेटाइडा)

हींगड़ा†—पुं० [हिं० हींग+ड़ा (प्रत्य०)] एक प्रकार की घटिया हींग।

हींगना†—अ०=हींसना।

हींगलू—पुं० [सं० हिंगुल] ईंगुर। (राज०) उदा०—ग्रिह ग्रिह पति भींति सुगारि हींगलू।—प्रिथीराज।

हींचना†—स०=खींचना।

हींछ†—स्त्री०=इच्छा।

हींछना†—स० [सं० इच्छा] इच्छा करना। चाहना।

हींछा†—स्त्री०=इच्छा।

हींजड़ा†—पुं०=हिजड़ा।

हींठी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की जोंक।

हींडना†—अ० [हिं० हंड़ना] चलना-फिरना। घूमना। उदा०—सोवन कबिरन हींडिया सुन्न समाधि लगाय।—कबीर।

स० [?] तलाश करना। खोजना। ढूँढ़ना।

हींडल†—पुं० [सं० हिंदोल] झूला। हिंडोल। उदा०—भवि मैं हींदी हीडलै मणिधर।—प्रिथीराज।

हींस†—स्त्री० [अनु०] १. घोड़ों के हींसने या हिनहिनाने की क्रिया या भाव। २. हींसने या हिनहिनाने का शब्द। हिनहिनाहट।

हींसना—अ० [हिं० हींस+ना] १. घोड़े का हिनहिनाना। २. गधे का रेंकना।

हींसा†—पुं०=हिस्सा।

†स्त्री०=हिंसा।

हीं हीं—स्त्री० [अनु०] तुच्छता-पूर्वक हंसने का शब्द।

ही—अव्य० [सं० हि (निश्चयार्थक)] एक अव्यय जिसका प्रयोग नीचे लिखे अर्थों में होता है। (क) केवल जोर देने के लिए। जैसे—अब तुम ही बतलाओ कि क्या किया जाय। (ख) केवल मात्रा आदि की तरह अल्पता या परिमिति सूचित करने के लिए। जैसे—वहाँ दो ही तो आदमी थे। (ग) किसी प्रकार की दृढ़ता या निश्चय सूचित करने के लिए। जैसे—(क) वह काम तो होकर ही रहेगा। (ख) मैंने यही बात कही थी। (ग) अवज्ञा, उपेक्षा, हीनता आदि सूचित करने के लिए। जैसे—अब वह आकर ही क्या करेगा। (घ) बहुत कुछ समान। प्रायः। लगभग। जैसे—वह शोभा के विचार से श्री की बहन ही थी।

विशेष—कुछ सर्वनामों तथा अव्ययों के साथ यह संयुक्त भी हो जाता है। इसी=इस+ही; उसी=उस+ही, यहीं=यहाँ+ही, कहीं=कहाँ+ही, वहीं=वहाँ+ही।

†अव्य० १. ब्रजभाषा में 'था' वाचक 'हो' का स्त्री०। उदा०—मुनि नारी पाषान ही।—रहीम। २. अवधी में 'था' वाचक 'हो' का स्त्री०।

पुं०=हिय (हृदय)। जैसे—ही-तल=हृदय-तल।

हीअ—पुं०=हिय (हृदय)।

हीक—स्त्री० [सं० हिक्का] १. हिचकी। २. किसी प्रकार की अप्रिय, सड़ी हुई तथा तीव्र गन्ध। जैसे—(क) हुक्के के पानी की हीक। (ख) इस तरकारी में से कुछ हीक आ रही है। (ग) हाजमा खराब होने पर ही पेट में से हीक उठती है।

क्रि० प्र०—आना।

हीचना†—अ० [अनु०]=हिचकना।

हीछना†—स०=हींछना (चाहना)।

हीछा†—स्त्री०=इच्छा।

हीज†—वि० [हिं० हिजड़ा] १. आलसी। २. सुस्त।

हीजड़ा†—पुं०=हिजड़ा।

हीठना—अ० [सं० अधिष्ठा, प्रा० अहिट्ठा] १. पास जाना। समीप। जाना। २. कहीं जाना या पहुँचना। ३. घुसना। पैठना। जैसे—उसे अपने यहाँ हीठने न देना।

हीड़—स्त्री० [?] एक प्रकार का प्रबन्ध काव्य जो बुन्देल-खंड, मालवे, राजस्थान आदि में गूजर लोग दिवाली के समय गाते हैं।

हीजना†—अ०=हींडना (घूमना-फिरना)।

ही-तल—पुं० [सं० हृदय+तल] १. हृदय का तल। २. हृदय। उदा०—तव मधुर मूर्ति अतीत कै करत हीतल सीत।—प्रसाद।

हीन—वि० [सं०√हा (छोड़ना)+क्त त=न-ईत्व] [स्त्री० हीना, भाव० हीनता] १. छोड़ा या त्यागा हुआ। त्यक्त। २. किसी की तुलना में बहुत ही खराब, घटकर या बुरा। जैसे—हीन दशा। ३. जिसका कुछ भी महत्व या मूल्य न हो। तुच्छ और नगण्य। ४. समस्त पदों के अंत में किसी गुण, तत्त्व, वस्तु आदि से रहित। खाली। जैसे—जन-हीन, धन-हीन, बल-हीन। ५ औरों या बहुतों की अपेक्षा घटकर। निम्न कोटि का। जैसे—उसने भी मुझे हीन समझा और मुझे क्रोध-पूर्वक देखने लगा। (इन्फ़ीरियर) ६. किसी की तुलना में कम, थोड़ा या हलका।

पुं० धर्म-शास्त्र में ऐसा साथी जो प्रामाणिक या विश्वसनीय न हो।

पुं० [अ०] काल। समय।

यौ०—हीन-हयात। (देखें)

हीनक—वि० [सं०] किसी चीज या बात से वंचित या रहित।

हीनक मनोग्रंथि—स्त्री० [सं०] मन में होनेवाली यह धारणा या भावना कि हम किसी दूसरे से या औरों से छोटे या हीन हैं। (इन्फ़ीरियॉरिटी कॉम्प्लेक्स)

हीन-कर्मा—वि० [सं० ब० स०] १. यज्ञादि विधेय कर्म से रहित। जैसे—हीनकर्मा ब्राह्मण। २. अनुचित या बुरे कर्म करनेवाला।

हीन-कुल—वि० [सं०] ब० स०] बुरे या नीच कुल का।

हीन-क्रम—पुं० [सं०] साहित्य में, एक प्रकार का दोष जो वहाँ माना जाता है, जहाँ जिस क्रम से गुण गिनाये गये हों, उसी क्रम से गुणी न गिनाये गये हों।

हीन-ग्रंथि—स्त्री० [सं० हीन+ग्रंथि] दे० 'हीनक मनोग्रंथि'।

हीन-चरित—वि० [सं० ब० स०] जिसका आचरण बुरा हो। दुराचारी।

हीनच्छिद्रिक—पुं० [सं०] वह संघ या श्रेणी जो कुल, मान-मर्यादा, शक्ति आदि में बहुत घटकर हो। (कौ०)

हीनता—स्त्री० [सं० हीन+तल्-टाप्] १. हीन होने की अवस्था या भाव। २. वह आचरण, कार्य या बात जो किसी के हीन होने की सूचक हो। ३. न होने की अवस्था या भाव। अभाव। ४. ओछापन। तुच्छता।

हीनत्व—पुं० [सं०]=हीनता।

हीन-पक्ष—पुं० [सं० मध्य० स०] न्याय में ऐसा पक्ष जो प्रमाणित या सिद्ध न हो सकता हो।

हीन-बल—वि० [सं० ब० स०] =बलहीन (कमजोर)।

हीन-बुद्धि—वि० [सं० ब० स०] १. खराब या दुष्ट बुद्धि वाला। दुर्बुद्धि। २. बुद्धि से रहति। मूर्ख।

हीन-भावना—स्त्री०=हीनक मनोग्रंथि।

हीन-यान—पुं० [सं०] बौद्ध धर्म की एक प्रसिद्ध प्रारम्भिक शाखा या संप्रदाय, जिसमें त्याग, वैराग्य आदि के द्वारा निर्वाण प्राप्त करने के लिए साधना की जाती थी।

विशेष—परवर्त्ती शाखाओं ने केवल तिरस्कार के भाव से उक्त शाखा का यह नाम रखा था। इसका विकास बरमा, श्याम आदि देशों में हुआ था।

हीन-यानी—वि० [सं० हीन-यान] हीन-यान संबंधी। हीन-यान का। पुं० हीन-यान का अनुयायी।

हीन-योग—वि० [सं० ब० स०] जो योग-साधना से च्युत या भ्रष्ट हो चुका हो।

पुं० वैद्यक में वह अवस्था, जिसमें कोई ओषधि या वस्तु अपनी उचित मात्रा से कम मिलाई गई हो।

हीन-योनि—वि० [सं० ब० स०] १. कुलटा या चरित्र-भ्रष्ट स्त्री से उत्पन्न। २. जिसकी उत्पत्ति छोटे या नीच कुल में हुई हो।

हीन-रस—पुं० [सं०] साहित्य में एक प्रकार का दोष, जो किसी रस का वर्णन करते समय उस रस के विरुद्ध प्रसंग लाने से होता है।

हीन-वर्ण—पुं० [सं० ब० स०] नीच जाति या वर्ण। शूद्र वर्ण।

वि० निम्न जाति या वर्ण का।

हीन-वाद—पुं० [सं०] १. व्यर्थ का तर्क। फजूल की बहस। २. झूठी गवाही।

हीन-वादी—वि० [सं० हीनवादिन्] [स्त्री० हीन-वादिनी] १. व्यर्थ का तर्क करनेवाला। २. झूठी गवाही देने या झूठा मुकदमा चलानेवाला। ३. परस्पर-विरोधी बातें कहनेवाला।

हीन-वीर्य—वि० [सं० ब० स०] १. बल या शक्ति से रहित। बिलकुल कमजोर। २. नपुंसक।

हीन-हयात—पुं० [अ०] १. वह समय जिसमें कोई जीता रहा हो। जीवन-क़ाल। जैसे—उन्होंने हीन-हयात में ही सारी जायदाद का बँटवारा कर दिया था।

अव्य० जब तक जीवन रहे तब तक। जैसे—हीन-हयात मुआफी।

हीनांग—वि० [सं० ब० स०] १. अंग या अंगों से रहित। नष्ट या नष्टप्राय अंगवाला। २. अधूरा।

हीना-पटीन—पुं० [सं०] ऐसा जुरमाना जिसके साथ हरजाना भी देना पड़े।

हीनार्थ—वि० [सं०] १. जिसका कार्य सिद्ध न हुआ हो। निष्फल। २. जिसे कोई लाभ न हुआ हो। ३. जिसका कोई अर्थ न हो, अथवा अनुचित या बुरा अर्थ हो।

हीनित—भू० कृ० [सं०] किसी चीज या बात से रहित या वंचित किया हुआ।

हीनोपमा—स्त्री० [सं०] साहित्य में उपमा का एक प्रकार, जिसमें बड़े उपमेय के लिए छोटा उपमान लिया जाय। बड़े की छोटे से दी जानेवाली उपमा।

हीय†—पुं०=हिय।

हीयमान—वि० [सं०] परिमाण, सीमा आदि के विचार से जो बराबर घटता या कम होता जा रहा हो। (डिक्रीज़िंग)

हीयरा†—पुं०=हियरा (हृदय)।

हीया†—पुं०=हिय (हृदय)।

हीर—पुं० [सं० √हृ+क] १. हीरा नामक रत्न। २. शिव का एक नाम। ३. सिंह। ४. सर्प। साँप। ५. विद्युत्। बिजली। ६. मोतियों की माला। ७. छप्पय के ६२ वें भेद का नाम। ८. एक प्रकार का वर्णिक समवृत्त छन्द, जिसके प्रत्येक चरण में भगण, सगण, नगण, जगण, नगण और रगण होते हैं। ९. एक प्रकार का मात्रिक समवृत्त छन्द, जिसके प्रत्येक चरण में ६, ६ और ११ के विराम से २३ मात्राएँ होती हैं। कुछ लोग इसे हीरक और हीरा भी कहते हैं।

पुं० [हिं० हीरा] १. किसी वस्तु के अन्दर का मूल-तत्त्व या सार-भाग। गूदा या सत। सार। जैसे—गेहूँ का हीर, सौंफ का हीर। २. इमारती लकड़ी के अन्दर का सार-भाग जो छाल के नीचे होता है। जैसे—इस लकड़ी का हीर लाल होता है। ३. शरीर के अन्दर का धातु या वीर्य नामक रस। जैसे—अब उनके शरीर में हीर तो रह ही नहीं गया है। ४. ताकत। बल। शक्ति।

पुं० [देश०] एक प्रकार की लता जिसकी टहनियों और पत्तियों पर भूरे रंग के रोएँ होते हैं। इसकी जड़ और पत्तियों का व्यवहार ओषधि के

रूप में होता है। इसके पके फलों के रस से बैंगनी रंग की स्याही बनती है, जो बहुत टिकाऊ होती है।

हीरक—पुं०[सं०]१. हीरा नामक रत्न। २. हीर नामक मात्रिक सम-वृत्त छन्द।

हीरक-जयंती—स्त्री० [सं०] किसी व्यक्ति, संस्था, महत्त्वपूर्ण कार्य आदि की वह जयंती जो उसके जन्म या आरंभ होने के ६० वें वर्ष होती है। (डायमण्ड जुबिली)

हीरा—पुं० [सं० हीरक] १. एक रत्न या बहुमूल्य पत्थर, जो अपनी कठोरता या चमक के लिए प्रसिद्ध है। वज्रमणि।

विशेष—वैज्ञानिक दृष्टि से यह विशुद्ध कार्बन है जो रवे के रूप में जमा हुआ होता है।

मुहा०—**हीरा खाना या हीरे की कनी चाटना**=हीरे का चूर खाना जो प्रायः मृत्यु का कारण होता है।

२. लाक्षणिक रूप में बहुत ही अच्छा आदमी। नर-रत्न। जैसे—वह तो हीरा था। ३. अपने वर्ग की सबसे अच्छी चीज। सर्वोत्तम वस्तु। ४. साधुओं की परिभाषा में रुद्राक्ष या इसी प्रकार का और कोई अकेला मनका जो प्रायः साधु लोग गले में पहनते हैं। ५. एक प्रकार का दुंबा। भेड़ा।

हीराकसीस—पुं० [हिं० हीर+सं० कसीस] लोहे का वह विकार जो गंधक के कारण रासायनिक योग से होता है।

हीरा-दोषी—पुं०[हिं० हीरा+दोषी] विजयसाल का गोंद जो दवा के काम में आता है।

हीरा-नखी—पुं० [हिं० हीरा+नख] एक प्रकार का बढ़िया अगहनी धान जिसका चावल बहुत महीन और सफेद होता है।

हीरा-मन—पुं०[हिं० हीरा+मणि] एक प्रकार का कल्पित तोता जिसका रंग सोने का सा माना जाता है।

हील†—पुं० [देश०]१. पनाले आदि का गंदा कीचड़। गलीज। २. कीचड़ ३. एक प्रकार का सदाबहार पेड़, जिसके तने से गोंद निकलता है। अरदल। गोरक।

हीलना†—अ०=हिलना।

हीला—पुं० [अ० हीलः]१. छल। धोखा। २. ऐसा कारण या हेतु जो कुछ छिपा या दबा रहकर किसी प्रकार का परिणाम या फल दिखाता हो। निमित्त। वसीला। व्याज। जैसे—चलो इसी हीले से बेचारे को कुछ दिनों के लिए नौकरी तो मिल गई।

मुहा०—**हीला निकालना**=उपाय, ढंग या रास्ता निकालना।

३. किसी काम या बात के संबंध में ऐसा बहाना जिसका नाम-मात्र के थोड़ा-बहुत वास्तविक आधार या कारण भी हो।

विशेष—'बहाना' से इसमें यह अंतर है कि यह उतना कलुषित या निंदनीय नहीं होता, जितना 'बहाना' होता है।

क्रि० प्र०—ढूँढ़ना।—निकालना।—बनाना।

पद—हीला-हवाला।

४. दे० 'बहाना' और 'मिस'।

†पुं०=हिल्ला (कीचड़)।

हीला-हवाला—पुं०[अ० हीलः+हवालः] टाल-मटोल या बहानेबाजी की बातें।

हीला-हवाली—स्त्री०=हीला-हवाला।

हीलो-हल—पुं० [सं० हिल्लोल] हल्ला। शोर। (राज०) उदा०—हेंका कह हेंका हीलो-हल।—प्रिथीराज।

हीस—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की कँटीली लता, जो गरमी में फूलती और बरसात में फलती है। इसकी पत्तियाँ और टहनियाँ हाथी बहुत चाव से खाते हैं।

हीसका†—स्त्री०[?]ईर्ष्या।

हीसना—स०[सं० ह्रस=घटना] कम करना। घटाना।

अ० कम होना। घटना।

†पुं०=हींसना (हिनहिनाना)।

हीसा*—स्त्री० दे० 'हीसका'।

†पुं०=हिस्सा।

ही-ही—स्त्री०[अनु०] अशिष्टता या असभ्यतापूर्वक ही-ही शब्द करके हँसने की क्रिया। तुच्छतापूर्वक हँसना।

हुँ—अव्य०[अनु०] एक सकारात्मक शब्द जो किसी बात को सुननेवाला यह सूचित करने के लिए बोलता है कि हम सुन रहे हैं। हाँ।

हुँकना†—अ०=हुंकारना।

हुँकरना†—अ०=हुंकारना।

हुंकार—पुं० [सं० कृ√कृ (करना)+घञ्] १. जोर से डाँटने-डपटने का शब्द। २. लड़ने-भिड़ने के लिए ललकारने का शब्द। ३. किसी प्रकार का उग्र और जोर का शब्द। ४. चिल्लाहट। चीत्कार।

हुंकारना—अ०[सं० हुंकार+ना (प्रत्य०)] १. डाँटने-डपटने के लिए जोर का शब्द करना। २. लड़ने-भिड़ने के लिए ललकारना। ३. जोर से चिल्लाना।

हुँकारी—स्त्री०[हुँहुँ+करना]१. किसी की बात सुनते समय अपनी सचेतता या अवधान सूचित करने के लिए 'हुँ' करने की क्रिया। २. स्वीकृति-सूचक शब्द। हामी।

क्रि० प्र०—भरना।

†स्त्री०=विकारी (धन का मान सूचित करनेवाला चिह्न)।

हुंकृत—पुं० [सं० हुं√कृ+क्त] १. हुंकार। २. सुअर की गुर्राहट। ३. बादल की गरज। ४. गौ के रँभाने का शब्द। ५. मंत्र।

हुंकृति—स्त्री०=हुंकार।

हुंड—पुं०[सं०]१. भारत की एक प्राचीन बर्बर जाति। २. बाघ। व्याघ्र। ३. सूअर। ४. मेढ़ा। ५. राक्षस। ६. अनाज की बाल।

वि० जड़ बुद्धिवाला। मूढ़।

हुंडन—पुं०[सं०]१. अंग का सुन्न या स्तब्ध हो जाना। २. शिव का एक गण।

हुंडा—पुं०[सं०] आग के दहकने का शब्द।

पुं०[हिं० हुंडी]वह रुपया जो कुछ जातियों में वर-पक्ष से कन्या के पिता को ब्याह के लिए दिया जाता है।

हुंडा-भाड़ा—पुं० [हिं० हुंडी+भाड़ा] महाजनी बोलचाल में महसूल, भाड़ा आदि सब कुछ देकर कहीं पर माल पहुँचाने का निश्चयात्मक भार। (आज-कल के अँगरेजी एफ० ओ० आर० की तरह का पुराना भारतीय पद)।

हुंडार—पुं०[सं० हुंड=मेढ़ा अरि=शत्रु] भेड़िया।

हुंडावन—स्त्री०[हिं० हुंडी] १. वह रकम, जो हुंडी लिखने के समय दस्तूरी के रूप में काटी जाती है। २. हुंडी लिखने की दर।

हुंडिका—स्त्री०[सं०] १. प्राचीन भारत में सेना के निर्वाह के लिए दिया जानेवाला आदेशपत्र। २. दे० 'हुंडी'।

हुंडियावा†—स्त्री०=हुंडावन।

हुंडी—स्त्री०[देश०] १. भारतीय महाजनी क्षेत्र में वह पत्र, जो कोई महाजन किसी से कुछ ऋण लेने के समय उसके प्रमाणस्वरूप ऋण देनेवाले को लिखकर देता था और जिस पर यह लिखा होता है कि यह धन इतने दिनों में ब्याज समेत चुका दिया ज़ायगा। पुराने ढंग का एक प्रकार का हैंडनोट।

मुहा०—**हुंडी करना**=किसी के नाम हुँडी लिखना। **हुंडी पटना**=हुंडी के प्राप्य धन का चुकता होना। **हुंडी सकारना**=यह मान लेना कि हम इस हुंडी के रुपए चुका देंगे।

२. रुपए उधार लेने की एक रीति जिसमें लेनेवाले को कुछ निश्चित समय के अंदर ब्याज समेत कुछ किश्तों में सारा ऋण चुका देना पड़ता है। ३. अपना प्राप्य धन या उसका कोई अंश पाने के लिए किसी के नाम लिखा हुआ वह पत्र जिस पर यह लिखा होता है कि इतने रुपए अमुक व्यक्ति, महाजन या बैंक को दे दिये जायँ। (ड्राफ़्ट, बिल या बिल आफ़ एक्सचेंज)

पद—**दर्शनी हुंडी**। (देखें)

हुंडी-बही—स्त्री०[हिं० हुंडी+बही] वह किताब या बही, जिसमें सब तरह की हुंडियों की नकल रहती है।

हुंडी-बेंत—पुं० [देश० हुंडी+हिं० बेंत] एक प्रकार का बेंत। मयूरी बेंत।

हुंत—प्रत्य० [प्रा० विभक्ति 'हिंतो'] १. पुरानी हिंदी में पंचमी और तृतीया की विभक्ति। से। उदा०—तब हुँत तुम बिनु रहै न जीऊ।—जायसी।

अव्य० १. निमित्त। लिए। वास्ते। २. जरिये से। द्वारा।

हुंते†—अव्य० [प्रा० हिंतो] १. से। द्वारा। २. ओर से। तरफ से।

हुंबा—पुं०[देश०] समुद्र की चढ़ती हुई लहर। ज्वार।

हुंभा—स्त्री० [सं०] गाय के रँभाने का शब्द।

हु†—अ० [वैदिक सं० ऊप=और, आगे; प्रा० उपु, हिं० ऊ] अतिरेक सूचक शब्द। भी। जैसे—रामहु=राम भी। हमहु=हम भी।

हुअ*—पुं०[सं० हुत] अग्नि। आग। उदा०—हुअ दूव जरत धरत पग धरनी।—तुलसी।

हुआँ—पुं०[अनु०] गीदड़ों के बोलने का शब्द।

अव्य०=वहाँ।

हुआ—भू० कृ० हिं० 'होना' क्रिया का भूत कृदन्त रूप। जैसे—खेल खतम हुआ।

हुआना—अ० [अनु० हुआँ] गीदड़ का 'हुआँ हुआँ' करना।

हुक—पुं०[अं०] अंकुश के आकार की बड़ी कील जो चीजें फँसाने और लटकाने के लिए दीवार आदि में गाड़ी जाती है।

†स्त्री०[हिं० हूक] कमर, पीठ आदि में अचानक किसी नस के झटका खाने से उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का दर्द।

क्रि० प्र०—पड़ना।

हुकना†—अ० [देश०] १. भूल जाना। विस्मृत होना। २. वार या निशाने का चूकना।

पुं० सोहन चिड़िया नामक पक्षी।

हुकारना—अ०=हुँकारना।

हुकर-पुकर—स्त्री०[अनु०] १. कलेजे की धड़कन। २. अधीरता के कारण मन में होनेवाली बेचैनी या विकलता।

हुकारना†—अ०=हुँकारना।

हुकुम†—पुं०=हुक्म।

हुकुर-हुकुर—स्त्री० [अनु०] दुर्बलता, रोग आदि में होनेवाला श्वास का मन्द और शिथिल स्पन्दन।

हुकूमत—स्त्री० [अ०] १. वह अवस्था जिसमें किसी पर कोई हुक्म चलाया जाता हो। जैसे—सारे घर पर उन्हीं की हुकूमत है।

मुहा०—**हुकूमत चलाना**=दूसरों को आधिकारिक रूप से आज्ञा देना। जैसे—बैठे-बैठे हुकूमत चलाने से कुछ न होगा, उठकर कुछ काम करो। **हुकूमत जताना**=प्रभुत्व प्रदर्शित करना। रोब दिखाना।

२. राजकीय व्यवस्था या शासन।

हुक्का—पुं०[अ०] तम्बाकू का धूआँ खींचने या पीने के लिए बना हुआ एक विशेष प्रकार का उपकरण या यंत्र, जिसमें दो नालियाँ होती हैं। एक पानी भरे पेंदे से ऊपर की ओर खड़ी की जाती है जिस पर चिलम रहती है, और दूसरी पार्श्व में जिसके सिरे पर मुँह लगाकर धूआँ खींचते हैं। इसके गड़गड़ा, फरसी आदि कई प्रकार या भेद होते हैं।

पद—**हुक्का-पानी**।

क्रि० प्र०—गुड़गुड़ाना।—पिलाना।—पीना।

मुहा०—**हुक्का ताजा करना**=हुक्के का पानी बदलना। **हुक्का भरना**=चिलम पर आग, तम्बाकू वगैरह रखकर हुक्का पीने के लिए तैयार करना।

२. दिग्दर्शक यंत्र। कंपास। (लश०)

हुक्का-पानी—पुं०[अ०+हिं०] हिन्दुओं का अपनी जाति या बिरादरी के लोगों के साथ एक दूसरे के हाथ से हुक्का लेकर तम्बाकू पीने और पानी पीने का व्यवहार।

मुहा०—**(किसी का) हुक्का-पानी बंद करना**=किसी को जाति या बिरादरी से अलग करना। पारस्परिक, सामाजिक व्यवहार छोड़ना या बन्द करना।

हुक्काम—पुं०[अ० 'हाकिम' का बहु०] हाकिम लोग। अधिकारी वर्ग। बड़े अफसर।

हुक्कू—पुं०[देश०] एक प्रकार का बन्दर।

हुक्म—पुं०[अ०] १. आधिकारिक रूप से दिया जानेवाला ऐसा आदेश जिसका पालन औरों के लिए अनिवार्य या आवश्यक हो। आज्ञा।

क्रि० प्र०—करना।—देना।—मानना।—लेना।

पद—**जो हुक्म**=आपकी जैसी आज्ञा है, वैसा ही होगा।

मुहा०—**हुक्म उठाना***=(क) आज्ञा पालन करना। (ख) आज्ञानुसार सब तरह की सेवाएँ करना। **हुक्म चलाना**=(क) आज्ञा देना। (ख) अपना बड़प्पन दिखाते हुए दूसरों को काम करने के लिए कहना। जैसे—बैठे-बैठे हुक्म चलाते हो, आप जाकर क्यों नहीं उठा लाते। **हुक्म बजाना या बजा लाना**=आज्ञा का पालन करना।

२. अधिकार, प्रभुत्व आदि की वह स्थिति जिसमें कोई औरों को हुक्म

देता रहता है। जैसे—आप का हुक्म बना रहे। (आशीर्वाद और शुभ कामना)

मुहा०—(किसी के) हुक्म में होना=अधिकार या वश में होना। अधीन होना। जैसे—मैं तो बराबर हुक्म में हाजिर रहता हूँ।

३. आधिकारिक रूप से बनाये हुए नियम। विधि-विधान। जैसे—इस विषय में आज ही एक नया सरकारी हुक्म निकला है। ४. ताश के पत्तों का एक रंग जिसमें काले रंग का पान बना रहता है।

हुक्म अदूली—स्त्री० [अ०] बड़ों की आज्ञा का पालन न करना, जिसकी गिनती अशिष्टता और उद्दंडता में होती है।

हुक्म-चोल—स्त्री०[?] खजूर का गोंद।

हुक्मनामा—पुं०[अ०+फा०] १. वह कागज जिस पर कोई हुक्म लिखा गया हो। २. विशेषतः राजकीय आज्ञा-पत्र। शाही हुकुमनामा।

हुक्म-बरदार—वि०[अ०+फा०] [भाव० हुक्म-बरदारी] आज्ञा के अनुसार चलनेवाला। सेवक। अधीन।

हुक्म-बरदारी—स्त्री०[अ०+फा०]१. आज्ञा-पालन। २. बड़ों की सेवा।

हुक्मी—वि०[अ० हुक्म]१. दूसरे के हुक्म अर्थात् आज्ञा के अनुसार काम करनेवाला। जैसे—मैं तो हुक्मी बंदा हूँ, मेरा क्या कसूर? २. निश्चित रूप से अपना गुण, प्रभाव या फल दिखानेवाला। जैसे—हुक्मी दवा; हुक्मी निशाना। ३. जो अवश्य किया जाय या होने को हो। जरूरी।

हुक्की—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की सुन्दर लता या बेल जिसके फूल ललाई लिए सफ़ेद और सुगंधित होते हैं।

†स्त्री०=हिचकी।

हुँचना†—अ०[?] चारों ओर से दबाव पड़ने पर निरुत्तर या विवश होना। उदा०—हुँच जाने पर भी डंडा खेले जाता था, हालाँकि शास्त्र के अनुसार गया की बारी आनी चाहिए थी।—प्रेमचन्द।

हुजर—पुं०[अं० होज़ार] एक प्रकार के पाश्चात्य घुड़सवार सैनिक जिनके हथियार हलके और वरदियाँ चमकीली होती हैं। उदा०—हुजर सवारों की कई दिशाओं से आक्रमण करने की योजना थी।—वृंदावनलाल वर्मा।

हुजरा—पुं० [अ० हुजरः] कोठरी विशेषतः वह कोठरी, जिसमें बैठकर ईश्वर का ध्यान किया जाता हो। (मुसलमान)

हुजूम—पुं०[अ०] बहुत से लोगों का जमावड़ा। भीड़-भाड़।

हुजूर—पुं०[अ० हुज़ूर]१. किसी बड़े की समक्षता, समीपता या सान्निध्य।

पद—हुज़ूर में=किसी बड़े आदमी के समक्ष या सामने। के आगे। जैसे—वह सब बादशाह के हुज़ूर में लाये गये।

२. बादशाह या बहुत बड़े हाकिम का दरबार।

पद—हुज़ूर महाल=मुसलमानी शासन में वह क्षेत्र, जिसमें शासन की जमींदारी होती थी।

३. बहुत बड़े लोगों को सम्बोधित करने का आदर-सूचक शब्द।

अव्य० (किसी बड़े के) हुज़ूर में। बड़े के सामने। समक्ष। उदा०—निर्मल कीन्हीं आत्मा, नावैं सदा हज़ूरि।—कबीर।

हुज़ूरी—स्त्री० [अ० हुज़ूर+हिं० +ई (प्रत्य०)] किसी बहुत बड़े व्यक्ति का सान्निध्य या सामीप्य।

पुं० किसी बड़े आदमी के सान्निध्य में रहनेवाला। हुज़ूर में रहनेवाला। बड़े आदमियों का दरबारी या पार्श्ववर्ती।

पुं०१. किसी बादशाह या राजा के पास सदा रहनेवाला सेवक। २. दरबारी। मुसाहब

वि० हुजूर-संबंधी। हुजूर का।

हुज्जत—स्त्री० [अ०] [कर्ता हुज्जती] १. दो व्यक्तियों या पक्षों में होनेवाला व्यर्थ का तर्क-वितर्क और कहा-सुनी। २. किसी साधारण-सी बात को भी न सँभालते हुए उसके संबंध में किये जानेवाले व्यर्थ के प्रश्न तथा उठाई जानेवाली आपत्तियाँ। ३. जबानी होनेवाला झगड़ा। कहासुनी। तकरार।

हुज्जती—वि० [अ० हुज्जत] १. हुज्जतें करने की प्रवृत्ति या स्वभाव वाला। २. झगड़ालू।

हुड़—पुं० [सं०]१. मेढ़ा। २ एक प्रकार का इत्र या सुगंधित द्रव्य।

हुड़कना—अ०[अनु०] [भाव० हुड़क, हुड़कन]१. प्रिय के वियोग के कारण (विशेषतः छोटे बच्चे का) बहुत दुःखी होना और रोना। २. भयभीत और चिंतित होना। ३. तरसना।

हुड़का—पुं० [हिं० हुड़कना] १. हुड़कने की अवस्था या भाव। २. किसी के वियोग में होनेवाली उग्र मानसिक शिथिलता तथा बेचैनी जिससे व्यक्ति, विशेषतः बालक खोया-खोया-सा, पागलों-सा या बीमार रहने लगता है।

क्रि० प्र०—पड़ना।—लगना।

हुड़काना—स०[हिं० हुड़क+आना (प्रत्य०)]१. किसी को हुड़कने में प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना, जिससे कोई हुड़के। २. बहुत अधिक भयभीत और दुःखी करना। ललचाते हुए तरसाना।

हुड़दंग—स्त्री०[अनु] [कर्ता हुड़दंग] ऐसी उछल-कूद और उपद्रव जिसमें अशिष्टतापूर्वक खूब हो-हल्ला या शोर-गुल होता हो।

क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

हुड़दंगा—वि० [हिं० हुड़दंग] [स्त्री० हुड़दंगी] हुड़दंग मचानेवाला।

पुं०=हुड़दंग।

हुड़दंगी—स्त्री०=हुड़दंग।

हुड़क—पुं०[सं० हुडुक्क]१. एक प्रकार का बहुत छोटा ढोल, जिसे प्रायः कहार धोबी आदि बजाते हैं। २. दे० 'हुड़क्क'।

हुड़क्क—पुं० [सं० √हुड+उक्क]१. एक प्रकार का बहुत छोटा ढोल। २. मतवाला आदमी। ३. वह डंडा जिसके सिरे पर लोहा जड़ा हो। लोहबन्द। ४. किवाड़ों में लगाने का अरगला। ५. दात्यूह पक्षी।

हुत—भू० कृ०[सं०√हु (देना)+क्त]१. आहुति के रूप में दिया हुआ। जिसकी हवन में आहुति दी गई हो। २. जिसका पूर्ण रूप से उत्सर्जन या समर्पण हुआ हो।

पुं०१. हवन की वस्तु। २. शिव का एक नाम।

†अ० पुरानी हिन्दी में 'होना' क्रिया का भूतकालिक रूप। उदा०—हुत पहिले औ सब है सोई।—जायसी।

अव्य०[प्रा० हिंतो] द्वारा। से। (अवधी)

हुतका—पुं० [?]१. घूँसा। मुक्का। २. जोर का धक्का। (पूरब)

हुतना†—अ० [सं० हुत] आहुति के रूप में आग में पड़ना। हुत होना।

स०=हुनना।

हुतभक्ष—पुं०[सं० हुत√भक्ष् (खाना)+अच्] आहुति का भक्षण करनेवाला। अग्नि। आग।

हुतभुक्, हुतभुज्—पुं० [सं०]१. अग्नि। आग। २. चित्रक या चीता नामक वृक्ष।

हुत-वह—पुं०[सं०हुत√वह् (ढोना)+अच्] अग्नि। आग।

हुत-शेष—पुं० [सं० तृ० त०] हवन करने से बची हुई सामग्री।

हुता†—अ०[हिं० हुत] [स्त्री० हुती] 'था' का अवधी और बुन्देलखडी रूप।

हुताग्नि—पुं०[सं० ष० स०]१. वह जिसने हवन किया हो। २. अग्नि-होत्री। २. हवन-कुंड की अग्नि।

हुतात्मा—पुं०[सं० हुतात्मन्] जिसने अपनी आत्मा या अपने आप को किसी काम में लगाकर पूरी तरह से समाप्त कर दिया हो।

हुताश—पुं०[सं० हुत√अश् (खाना)+अच्] १. अग्नि। २. तीन प्रकार की अग्नियों के आधार पर तीन का वाचक पद। ३. चित्रक या चीता नामक वृक्ष।

हुताशन—पुं०[सं० ब० स०] [वि० हौताशन] अग्नि। आग।

हुति—अव्य० [प्रा० हिंतो]१. पुरानी हिन्दी में अपादान और करण कारक का चिह्न। से। द्वारा। २. ओर से। तरफ से।

हुतो*—अ० [प्रा० हुंतो] [स्त्री० हुती] ब्रज भाषा में 'होना' क्रिया का भूतकालिक रूप। था।

हुथका†—पुं०=हुतका।

हुदकना—अ० [?]१. उमंग में आकर आगे बढ़ना। २. दे० 'फुदकना'।

हुदकाना†—स० [देश०] उत्तेजित करना। उसकाना।

हुदक्का†—पुं० [हिं० हुदकना] हुदकने की क्रिया या भाव।
†पुं०=धक्का।

हुदना†—अ० [सं० हुंडन] १. स्तब्ध होना। २. ठहरना। रुकना।

हुदहुद—पुं०[फा०] एक प्रकार का सुन्दर पक्षी जिसका सारा शरीर चमकीले और भड़कीले परों से ढका रहता है और जिसके सिर पर ताज की तरह लंबी चोटी होती है। मुसलमान इसे 'शाहसुलेमान' भी कहते हैं। यह प्रायः दूब की जड़ें खोदता रहता है, इसलिए 'दूबिया' भी कहलाता है।

हुदहुदी—स्त्री०[अनु०] भय। डर।

हुदारना—स०[देश०] बंधे हुए रस्से पर कोई चीज फैलाना या लटकाना।

हुद्दा—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की मछली।
†पुं०=ओहदा (पद)।

हुन—पुं०[सं० हूण, हूद=सोने का एक पुराना सिक्का] १. मोहर। अशरफी। स्वर्ण-मुद्रा। २. सोना। स्वर्ण।
मुहा०—(कहीं) हुन बरसना=बहुत अधिक आय होना।
अव्य०=अब। (पश्चिम)

हुनक†—सर्व०=उनका। (मैथिली) उदा०—हमर अभाग, हुनक कोन दोस।—विद्यापति।

हुनना—स०[सं० हु, हुन्+हिं०ना(प्रत्य०)] १. जलाने के लिए कोई चीज आग में छोड़ना या डालना। २. आहुति देना।
†स०=हनना (मार डालना)।
†स०=धुनना।

हुनर—पुं०[फा०]१. कला। कारीगरी। २. कोई काम करने का कौशल-पूर्ण गुण। ३. चतुराई। चालाकी। (क्व०)

हुनरमंद—वि०[फा०] जो किसी हुनर या कला का जानकार हो। कला-कुशल। निपुण।

हुनरमंदी—स्त्री० [फा०] हुनरमंद होने की अवस्था, क्रिया या भाव। कला-कुशलता। निपुणता।

हुनरा—पुं०[फा० हुनर] वह बंदर या भालू जो नाचना और खेल दिखाना सीख गया हो। (कलंदर)
वि० जिसके हाथ में हुनर हो। कलाकार।

हुनिया—स्त्री०[देश०] भेड़ों की एक जाति जिसका ऊन अच्छा होता है।
पुं० उक्त भेड़ों से प्राप्त होनेवाला ऊन।

हुन्न†—पुं०=हुन।

हुब, हुब्ब—पुं०[अ०]१. अनुराग। प्रेम। २. भक्ति और श्रद्धा। ३. उत्साह। उमंग।

हुबाब—पुं०=हबाब (बुलबुल)।

हुमकना—अ० [अनु० हुँ (प्रयत्न का सूचक शब्द)]१. उछलना। कूदना। उदा०—हुमकि लात कूबर पर मारी।—तुलसी। २. पैरों से ठेलना या ढकेलना। ३. शरीर का सारा जोर लगाते हुए दबाना। ४. दे० 'हुमकना'। ५. दे० 'हुमचना'।

हुमगना†—अ०=हुमकना।

हुमसना—अ०[सं० उल्लास ?] १. आनन्द या उमंग में आना। उल्लसित होना। २. (मन में भाव या विचार) उत्पन्न होना।

हुमसानना, हुमसाना—स०[हिं० हुमसना का स०] १. उल्लास या प्रसन्नता से युक्त करना। २. उत्तेजित करना। उकसाना।

हुमा—स्त्री०[फा०] एक प्रकार का कल्पित पक्षी, जिसके संबंध में कहा जाता है कि केवल हड्डी ही खाता है और जिसके ऊपर उसकी छाया पड़ जाय, वह बादशाह हो जाता है।

हुमाई—वि०[फा०]१. हुमा संबंधी। २. जिस पर हुमा की छाया पड़ी हो; फलतः भाग्यशाली।

हुमेल—स्त्री०[सं० हमायल]१. धातु के गोल टुकड़ों या सिक्कों की माला जो गले में पहनी जाती है। २. घोड़ों आदि के गले में पहनाया जाने-वाला उक्त आकार-प्रकार का एक गहना।

हुम्मा—पुं०[हिं० उमंग] लहरों का उठना।

हुर—पुं०[देश०] सिंध में रहनेवाले एक प्रकार के अर्ध-सभ्य मुसलमान।

हुरक*—पुं०[अ० हूर=परी] [स्त्री० हुरकिनी] हूरों की तरह का अर्थात् परम सुन्दर पुरुष।
†स्त्री० १=हुड़क। २.=हुड़क्क।

हुरदंग†—स्त्री०=हुड़दंग।

हुरदंगा†—वि०, पुं०=हुड़दंगा।

हुरमत—स्त्री०[अ०] आबरू। इज्जत। मान।

हुरहुर†—पुं०=हुलहुल (पौधा)।

हुरहुरिया—स्त्री० [सं० हुलहुली] एक प्रकार की चिड़िया।

हुरिजक—पुं०[सं०] १. पुराणानुसार निषाद और कबरी स्त्री से उत्पन्न एक संकर जाति। २. उक्त जाति का व्यक्ति।

हुरिआ†—पुं० [हिं० हूरनी ?] लात से किया जानेवाला प्रहार। उदा०—पगा बिनु हुरिआ मारता।—कबीर।

हुरिहार†—पुं०=होलिहार।

हुरुक—पुं०=हुड़क (बाजा)।

हुरुमयी—स्त्री०[सं०] प्राचीन भारत में एक प्रकार का नृत्य।

हुर्र—वि०[अनु०] जो देखते-देखते अदृश्य या लुप्त हो गया हो। जैसे—भीड़ का हुर्र हो जाना।

†पुं०=हुर।

हुर्रा—पुं०[अं०] एक प्रकार की हर्ष-ध्वनि।

हुर्रे—पुं०=हुर्रा।

हुल—पुं०[सं०] एक प्रकार की दो-धारी बड़ी छुरी।

†पुं०=फुल्ल (फूल)।

हुलकना—अ० [फा० हलक] कै करना। वमन करना।

हुलकी—स्त्री० [हिं० हुलकना] १. कै। वमन। उलटी। २. विशूचिका या हैजा नामक रोग।

हुलना—अ० [हिं० हूलना] हूला जाना।

†स०=हूलना।

हुलसना—अ० [सं० उल्लास, हिं० हुलास+ना (प्रत्य०)] १. बहुत अधिक प्रसन्न होना। २. उत्पन्न होकर बढ़ना। उभरना। उमड़ना।

हुलसाना—स०[हिं० हुलसना का स०] उल्लसित करना। हर्ष की उमंग उत्पन्न करना।

†अ०=हुलसना।

हुलसावन—वि०[हिं० हुलसाना] हुलसाने का प्रयत्न करनेवाला।

हुलसी—स्त्री०[हिं० हुलसना] १. हुलास। उल्लास। आनन्द। २. प्रसिद्ध पद "गोद लिए हुलसी फिरै, तुलसी सो सुत होय।" के आधार पर कुछ लोगों के मत से गोस्वामी तुलसीदास की माता का नाम।

हुलहुल—पुं०[?] एक प्रकार का छोटा बरसाती पौधा, जिसे अर्क-पुष्पिका या सूरजवर्त भी कहते हैं।

हुलहुला—पुं०[देश०] १. विलक्षण बात। अद्‌भुत बात। २. उत्पात। उपद्रव। ३. झूठे अभियोग का आरोप। ४. उत्साह। उमंग।

हुलहुली—स्त्री०[सं०] बहुत अधिक प्रसन्न होने की दशा में अथवा आनंद के अवसरों पर स्त्रियों के मुंह से निकलनेवाला एक प्रकार का अस्फुट शब्द।

हुला—पुं०[हिं० हूलना] लाठी का अगला तथा नुकीला छोर या नोक।

हुलाना†—स० [हिं० हूलना] १. किसी को कुछ हूलने में प्रवृत्त करना। २. दे० 'हूलना'।

हुलाल—स्त्री० [हिं० हुलसना] तरंग। लहर।

हुलास—पुं० [सं० उल्लास] १. आनन्द की उमंग। उल्लास। हर्ष की प्रेरणा। २. उत्साह। उमंग।

†स्त्री०=सुंघनी।

हुलासदानी—स्त्री०[हिं० हुलास+दान] हुलास या सुंघनी रखने की डिबिया। सुंघनीदानी।

हुलासी—वि०[हिं० हुलास] १. सदा प्रसन्न रहनेवाला। आनन्दी। २. उत्साही।

हुलिंग—पुं०[सं०] मध्यदेश के अन्तर्गत एक प्राचीन प्रदेश।

हुलिया—पुं०[अ० हुलियः] १. चेहरे की गठन और बनावट। मुख की आकृति और रूप-रंग।

मुहा०—**हुलिया तंग होना**=बहुत ही परेशान और हैरान होना। कष्ट, चिंता आदि के कारण बहुत विकल होना।

२. किसी मनुष्य के रूप, रंग आदि का वह विवरण जो उसकी पहचान के लिए किसी को बतलाया जाता है।

मुहा०—**हुलिया लिखाना**=किसी भागे हुए या लापता आदमी का पता लगाने के लिए उसकी शकल, सूरत आदि का विवरण सरकारी अधिकारियों के पास लिखाना।

हुलूक—पुं०[देश०] एक प्रकार का बन्दर।

हुलैया—स्त्री०[हिं० हूलना] डूबने के पहले नाव के डगमगाने की अवस्था या क्रिया। (मल्लाह)

क्रि० प्र०—खाना।—लेना।

हुल्ल—पुं०[सं०] एक प्रकार का नृत्य।

हुल्लड़—पुं०[अनु० या सं० हुलहुल] १. शोरगुल। हल्ला। कोलाहल। २. उत्साह। उपद्रव। २. दंगा। फसाद।

क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

हुल्लास—पुं०[सं० उल्लास] चौपाई और त्रिभंगी के मेल से बना हुआ एक प्रकार का छंद।

हुश्—अव्य०[अनु०] एक निषेधवाचक शब्द जो उपेक्षा, तुच्छता आदि का भी सूचक है। अनुचित बात मुंह से निकालने पर रोकने का शब्द। जैसे—हुश्! यह क्या बकते हो।

हुश्कारना—स०[हुश से अनु०] हुश-हुश शब्द करके कुत्ते को किसी की ओर काटने आदि के लिए उत्तेजित करना।

हुसियार*—वि०=होशियार।

हुसैन—पुं०[अ०] १. मुहम्मद साहब के दामाद अली के बेटे जो करबला के मैदान में मारे गये थे। शीया मुसलमान इन्हीं के शोक में मुहर्रम मनाते हैं। २. चाँदी के दो छल्ले जो मुसलमान स्त्रियाँ मुहर्रम के दिनों में हुसैन की स्मृति में बच्चों के गले में रक्षा के विचार से पहनाती हैं।

हुसैन-बंद—पुं०[अ०+फा०] हाथ में पहनने का एक जनाना गहना। (मुसल०)

हुसैनी—पुं०[अ० हुसैन] १. फारसी संगीत के बारह मुकामों में से एक। २. एक प्रकार का अंगूर।

स्त्री० कर्नाटकी संगीत पद्धति की एक रागिनी।

हुसैनी कान्हड़ा—पुं० [अ० हुसैनी+हिं० कान्हड़ा] संगीत में कान्हड़ा राग का एक प्रकार या भेद।

हुस्न—पुं० [अ०] १. (स्त्रियों के संबंध में) शरीर विशेषतः मुख का उत्कृष्ट सौन्दर्य। २. कोई उत्कर्ष-सूचक गुण या बात। ३. सुन्दरता बढ़ानेवाली कोई विशिष्ट बात। जैसे—हुस्न-काफिया।

हुस्नदान—पुं० [अ० हुस्न+हिं० दान] पानदान। खासदान। (स्त्रियाँ)

हुस्नपरस्त—वि० [अ०+फा०] [भाव० हुस्नपरस्ती] स्त्री-सौन्दर्य के उपासक। स्त्री की सुन्दरता से प्रेम करनेवाला।

हुस्नपरस्ती—स्त्री० [अ०+फा०] हुस्नपरस्त होने की अवस्था, गुण या भाव। सौन्दर्य की उपासना।

हुस्न-महफ़िल—पुं०[अ० हुस्ने-महफ़िल] एक प्रकार का हुक्का।

हुस्न-हिना—पुं० [अ० हुस्ने-हिना] एक प्रकार का पौधा और उसके सुन्दर फूल जो रात को बढ़िया सुगन्ध देते हैं। रात की रानी।

हुस्यार†—वि०=होशियार।

हुस्यारी—स्त्री०=होशियारी।

हुहब—पुं० [सं०] एक नरक का नाम।

हुहाना—अ०[हू हू से अनु०] हू हू शब्द होना।
स० हू हू शब्द करना।

हुहुआना†—अ० [अनु०] आवेश में आकर हू हू शब्द करना।

हूँ—अव्य०[अनु०] १. किसी प्रश्न के उत्तर में स्वीकृति का सूचक शब्द। २. अनुमोदन, समर्थन या स्वीकृति का सूचक शब्द। ३. कोई बात सुनते समय अपनी सचेतता या सावधानता सूचित करने का शब्द। ४. किसी कारण न बोल सकने की दशा में निषेध या वारण का सूचक शब्द।
अ० वर्तमानकालिक क्रिया 'है' का उत्तम पुरुष एक वचन रूप। जैसे—मैं हूँ।
†अव्य० १. राजस्थानी बोली में कहीं 'में' और कहीं 'से' के स्थान पर विभक्ति के रूप में प्रयुक्त होनेवाला शब्द। उदा०—'घणा हाथ हूँ घड़े घणा।—प्रिथीराज। २. दे० 'हू'।
‡वि०=हौं (मैं)। उदा०—हूँ तेरो पथ निहारूँ स्वामी।—कबीर।

हूँकना—अ०[अनु०]१. गाय का बछड़े के वियोग में या और कोई दुःख सूचित करने के लिए धीरे-धीरे बोलना। हुड़कना। २. सिसक-सिसककर रोना। ३. दे० 'हुंकारना'।

हूँकार†—पुं०=हुंकार।

हूँठ—वि० [सं० अर्धचतुर्थ, प्रा० अद्धुट्ठ (सं० 'अध्युष्ठ' कल्पित जान पड़ता है] साढ़े तीन गुना।

हुँठा—पुं० [हिं० हूँठ] साढ़े तीन का पहाड़ा। अहूँठा।

हूँड़†—स्त्री० [?] रमैनी (कृषकों की पारस्परिक सहायता की प्रथा)।

हूँत—अव्य०[प्रा० हिंतो] से।

हूँती†—अव्य०[प्रा० हिंतो]राजस्थानी भाषा में हूँत की तरह 'से' विभक्ति के स्थान पर प्रयुक्त होनेवाला शब्द।

हूँस—स्त्री०[हिं० हूँसना]१. हूँसने की क्रिया या भाव। जैसे—हूँस से रीस भली।—कहा०। २. किसी को बराबर हूँसते रहने के कारण उस पर पड़नेवाला कुप्रभाव या दुष्परिणाम। जैसे—मेरे बच्चे को तेरी हूँस लगी है। (स्त्रियाँ)
क्रि० प्र०—पड़ना।—लगना।
३. ईर्ष्या, द्वेष आदि के कारण मन में होनेवाली कुढ़न या जलन।

हूँसना—स० [अनु०] [भाव० हूँस]१. रह रहकर कुढ़ते और चिढ़ते हुए किसी को बुरा-भला कहना। उदा०—कैसी गधी हो, बच्चों का खाना हो हूँसती। रातिब तो तीन टट्टू का जाती हो थूर आप।—जान साहब। २. ईर्ष्या, द्वेष आदि के कारण बिगड़ते और डाँट सुनाते रहना। कोसना, काटना।

हूँ-हाँ—स्त्री०[अनु०]कोई बात सुनने पर 'हूँ', 'हाँ' या उसी तरह का कोई और कहा जानेवाला शब्द। जैसे—वह मेरी सब बातें चुपचाप सुन गया, पर बीच में कहीं हूँ-हाँ नहीं की।

हू†—अव्य० [वैदिक सं० उप=आगे और, प्रा० उव, हिं० ऊ] पुरानी हिन्दी में अतिरेक-बोधक शब्द। भी। जैसे—तुमहू, वाहू, हमहू आदि।
पुं०[अनु०]१. गीदड़ के बोलने का शब्द। २. हवा के जोर से चलने पर होनेवाला हू-हू शब्द।
पद—हू का आलम=बिलकुल सुन-सान जगह में वह स्थिति जब हवा जोरों से हू हू करती हुई चल रही हो। भयावने सन्नाटे की स्थिति।

हूक—स्त्री०[सं० हिक्का] कलेजे, छाती, पसली आदि में अचानक बहुत जोर से उठनेवाली पीड़ा या शूल।
क्रि० प्र०—उठना।—मारना।
२. कसक। दर्द। पीड़ा। ३. घोर मानसिक कष्ट। ४. आशंका।

हूकना—अ०[हिं० हूक+ना (प्रत्य०)]१. हूक की पीड़ा या शूल उठना। २. कोई बहुत कष्ट या उग्र बात या स्मृति मन में कसकना या सालना। रह-रहकर पीड़ित करना। ३. अचानक होनेवाले कष्ट या पीड़ा से चौंक पड़ना।

हूखनि†—स्त्री०=हूक। उदा०—ऊख मयूख मयूखनि हूखनि लाग अहूख लखै सुर रूखे।—देव।

हूठना†—अ०[सं० हूड्=चलना] १. हटना। टलना। २. किसी की ओर पीठ करना। ३. घूमना। मुड़ना।

हूठा—पुं०[हिं० अँगूठा]१. किसी को चाही हुई वस्तु न देकर उसे चिढ़ाने के लिए अँगूठा दिखाने की अशिष्ट मुद्रा। ठेंगा। २. स्त्री की दोनों हाथों की मुट्ठियाँ बाँधकर तथा कमर पर रखते हुए मटक कर चलने की क्रिया या भाव। उदा०—हुठ्यौ दै इठलाइ दृग, करै गँवारि सुवार।—बिहारी।

हूड़—वि० [हूण (जाति)] १. उजड्ड। गँवार। २. अनाड़ी। मूर्ख। ३. जिद्दी। हठी।

हूड़ा—पुं०[देश०] दक्षिणी भारत में होनेवाला एक प्रकार का बाँस।

हूण—पुं०[?] एक प्राचीन असभ्य और क्रूर मंगोल जाति, जो पहले चीन की पूरबी सीमा पर लूट-मार किया करती थी, पर ई० चौथी, पाँचवीं सदियों से अत्यन्त प्रबल होकर एशिया, युरोप के सभ्य देशों पर आक्रमण करती हुई बहुत दूर तक फैल गई थी। पर जान पड़ता है कि बाद में यह अन्य असभ्य जातियों में मिलकर समाप्त हो गई थी। २. बहुत बड़ा उजड्ड और क्रूर व्यक्ति।

हूणा*—अ०=होना। उदा०—हूण देइ हरि के चरन निवासा।—कबीर।

हूदना—स०[?] बार बार ठोकर या आघात लगाकर तोड़ना-फोड़ना। (बुंदेल०) उदा०—उठते सींगों से घने घने को हूदें।—मैथिली शरण।

हूदा —वि० [फा० हूदः] ठीक। दुरुस्त।
पद—बेहूदा।
†पुं०=बेहूदा।

हूनना—स०[सं० हवन] १. आग में डालना। २. आग पर रखकर भूनना। ३. विपत्ति में फँसाना।

हूनिया—स्त्री० [हूण (देश०)] एक प्रकार की तिब्बती भेड़।

हूब—स्त्री०=हुब्ब।

हू-बहू—वि०[अ०]१. पहले या मूलतः जैसा रहा हो ठीक वैसा ही। २. किसी के बिलकुल अनुरूप या समान।

हूय—पुं० [सं०] आवाहन करना। बुलाना। जैसे—देव-हूय, पितृ-हूय।

हूर—स्त्री० [अ०] मुसलमानों के बहिश्त अर्थात् स्वर्ग की अप्सरा।
†पुं०=हूर (जाति)।

हूरना—स०[हिं० हूलना]१. जोर से घुसाना या धँसाना। हूलना। २. जोर से धक्का देना। ढकेलना।

स०[हिं० हूरा] मुक्कों से मारना।

स० [?] बहुत अधिक भोजन करना।

हूर-हूण—पुं० [सं०] हूणों की एक शाखा जिसने युरोप में जाकर हलचल मचाई थी। श्वेत-हूण।

हूरा—पुं० [अनु०] घूँसा। मुक्का।

पुं०=हूला।

हूरा-हूरी—स्त्री० [सं०] एक त्योहार या उत्सव, जो दिवाली के तीसरे दिन होता है।

स्त्री०[हिं० हूरना] १. आपस में एक दूसरे को ढकेलते हुए मारना-पीटना। २. उक्त प्रकार की लड़ाई करने के लिए तत्परता दिखाना।

हूल—स्त्री०[सं० शूल] १ हूलने अर्थात् नुकीली चीज जोर से गड़ाने, धँसाने या भोंकने की क्रिया या भाव। २. लासा लगाकर चिड़िया फँसाने का बाँस या लग्घी। ३. शूल। हूक।

स्त्री०[सं० हुल-हुल] १. कोलाहल। हल्ला। धूम। उदा०—परी हूल, जोगिन गढ़ छेंका।—जायसी। २. हर्ष-ध्वनि। ३. ललकार। ४. आनन्द। खुशी। प्रसन्नता।

हूलना—स०[हिं० हूल+ना (प्रत्य०)]१. लाठी, भाले, तलवार आदि का सिरा किसी चीज में धँसाना। २. हूल या तीव्र वेदना उत्पन्न करना।

हूल-फूल—स्त्री० [हिं० हूल+अनु०] आनन्द। प्रसन्नता।

हूला—पुं०[हिं० हूलना] शस्त्र आदि हूलने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—देना।

हूश—वि०[हिं० हूड़] अशिष्ट और असभ्य। उजड्ड।

हूसड़ा—वि०=हूश।

हूह—स्त्री०[अनु०] हुंकार।

मुहा०—**हूह देना**=जोर से हू-हू शब्द करना। हुँकारना।

हू-हू—पुं०[अनु०] अग्नि के जलने का शब्द। जैसे—आग हू-हू करके जल रही थी।

हृच्छूल—पुं०[सं० हृत्—हृदय+शूल] छाती के नीचेवाले भाग में होनेवाली एक प्रकार की बहुत ही भीषण और विकट पीड़ा, जिससे रोगी का दम घुटने लगता है। (एनजिना पैक्टोरिस)

हृत—भू० कृ०[सं० √हृ (हरण करना)+क्त]१. जिसे ले गये हों। पहुँचाया हुआ। २. जो हरण किया गया हो। छीना हुआ। ३. चुराया या जबरदस्ती लिया हुआ। ३. समस्त पदों के आरम्भ में, रहित या वंचित किया हुआ। जैसे—(क) हृतबंधु=जिसके भाई-बंधु छिन गये हों। (ख) हृत-मानस=बेसुध या बेहोश।

हृति—स्त्री०[सं०√हृ (हरण करना)+क्तिन्]१. हरण करने की क्रिया या भाव। हरण। २. लूट। ३. नाश।

हृत्कंप—पुं०[सं० ष० त०]१. हृदय का काँपना। हृदय में होनेवाला कंपन। २. एक रोग जिसमें हृदय कुछ समय तक या बार बार धड़कता रहता है। धड़कन। (पैल्पिटेशन आफ़ हार्ट) ३. आशंका, भय आदि के कारण दहलना।

हृत्तंत्री—स्त्री०[सं० मध्य० स०] हृदय रूपी तंत्री या वीणा।

हृत्पिंड—पुं०[सं० ष० त०] हृदय का कोश या थैली। कलेजा।

हृत्पुरुष—पुं०=चैत्यपुरुष। (देखें)

हृद्—पुं०[सं०] हृदय। दिल।

हृदयंगम—वि० [सं० हृदय√गम् (प्राप्त होना)+खच्-मुम्]१. हृदय या मन में अच्छी तरह आया और बैठा हुआ। २. अच्छी तरह समझ में आया और बैठा हुआ।

हृदय—पुं०[सं० √हृ (हरण करना)+कयन्–दुक् च]१. प्राणियों के शरीर में छाती के अंदर बाईं ओर का वह मांस-कोश जिसके स्पन्दन के फलस्वरूप सारे शरीर की नाड़ियों में रक्त-संचार होता रहता है। कलेजा। दिल।

विशेष—मुहा० के लिए दे० 'कलेजा' और 'दिल' के मुहा०।

२. इसी के पास छाती के मध्यभाग में माना जानेवाला वह अंग जिसमें, प्रेम, हर्ष, शोक, करुणा, क्रोध आदि मनोविकार उत्पन्न होते और रहते हैं। (हार्ट, उक्त दोनों अर्थों के लिए) जैसे—यदि तुम में हृदय होता, तो तुम कभी ऐसे निष्ठुर न होते।

पद—**हृदय की गाँठ**=मन में बैठा हुआ दुर्भाव या वैर।

मुहा०—**हृदय उमड़ना**=करुणा, प्रेम आदि के कारण मन द्रवित और विकल होना। **हृदय भर आना**= हृदय उमड़ना। **हृदय विदीर्ण होना**= करुणा, शोक आदि के कारण मन में बहुत अधिक कष्ट या पीड़ा होना।

३. अंतःकरण। विवेक। जैसे—(क) हमारा हृदय तो यही कहता है कि उसने ऐसी क्रूरता कभी न की होगी। (ख) तुम्हीं अपने हृदय से पूछो कि ऐसा होना चाहिए या नहीं। ४. वक्षःस्थल। छाती।

मुहा०—**(किसी को) हृदय से लगाना**=(क) आलिंगन करना। गले लगाना। (ख) आत्मीय और प्रिय बनाना। जैसे—मालवीय जी तो बराबर यह कहते थे कि अंत्यजों को हृदय से लगाओ।

५. परम प्रिय व्यक्ति। प्राणाधार। ६. किसी वस्तु का सार भाग। ७. बहुत ही गुप्त या गूढ़ बात। रहस्य। ८. किसी काम या बात का मूल कारण या स्रोत।

हृदय-ग्रह—पुं० [सं० हृदय√ग्रह् (पकड़ना)+अच्—ष० त०] कलेजे में होनेवाली शूल या ऐंठन।

हृदय-ग्राही (हिन्)—वि० [सं० हृदय √ग्रह् (पकड़ना)+णिच्—णिनि] १. हृदय को ग्रहण करने अर्थात् पकड़ने वाला। दिल को खींचनेवाला। २. अभीष्ट और सुन्दर। ३. रुचिकर।

हृदय-निकेत—पुं०[सं० ब० स०] मनसिज। कामदेव।

हृदय-प्रमाथी (थिन्)—वि० [सं०] [स्त्री० हृदय-प्रमाथिनी]१. मन को क्षुब्ध या चंचल करनेवाला। २. मन को मोहित करनेवाला।

हृदय-वल्लभ—पुं० [सं० ष० त०] [स्त्री० हृदय-वल्लभा] परम प्रिय व्यक्ति। प्रियतम।

हृदयवान् (वत्)—वि०[सं० हृदय+मतुप्] [स्त्री० हृदयवती]१. दिल-वाला। सहृदय। २. भावुक। रसिक।

हृदय-विदारक—वि०[सं० ष० त०]१. हृदय को विदीर्ण करनेवाला। जिससे दिल फटने लगे। २. अत्यन्त शोक पैदा करनेवाला। ३. मन में परम करुणा या दया उत्पन्न करनेवाला।

हृदयवेधी (धिन्)—वि० [सं० हृदय√विध् (वेधन करना)+णिनि] [स्त्री० हृदयवेधिनी]१. हृदय को वेधनेवाला। दिल को घायल करने

वाला। जैसे—हृदयवेधी कटाक्ष। २. मन को वहुत व्यथित करनेवाला। ३. मन को वहुत अप्रिय या बुरा लगनेवाला।

हृदय-संघट्ट—पुं०[सं० ष० त०] हृदयातिपात। (हार्ट फ़ेल्योर)

हृदय-स्पर्शी (र्शिन्)—वि० [सं० हृदय√स्पर्श (छूना) +णिच्=णिनि] [स्त्री० हृदयस्पर्शिणी] १. हृदय को स्पर्श करनेवाला। दिल को छूनेवाला। २. दिल पर असर करनेवाला। ३. मन में दया उत्पन्न करके उसे द्रवित करनेवाला।

हृदयहारी (रिन्)—वि० [सं० हृदय√हृ+णिनि] [स्त्री० हृदय-हारिणी] मन मोहनेवाला या लुभानेवाला। मनोहर।

हृदयातिपात—पुं० [सं० हृदय+अतिपात] एक रोग जिसमें हृदय की गति सहसा बन्द हो जाने से प्राणी की मृत्यु हो जाती है। (हार्ट-फ़ेल्योर)

हृदयामय—पुं० [सं०]=हृद्रोग।

हृदयालु—वि० [सं० ष० त० हृदय+आलुच] १. सहृदय। भावुक। २. सुशील।

हृदयावरण—पुं० [सं०हृदय+आवरण, ष० त०] शरीर के अन्दर की वह झिल्ली जो हृदय को चारों ओर से घेरे रहती है। (पेरीकार्डियम)

हृदयावसाद—पुं० [सं० हृदय+अवसाद] चिकित्सा के क्षेत्र में, प्रायः मृत्यु से पहले होनेवाली वह स्थिति जिसमें मनुष्य की सारी शक्तियाँ क्षीण हो जाती हैं और वह अचेत तथा निश्चेष्ट हो जाता है। (कोलैप्स)

हृदयिक, हृदयी (यिन्)—वि०[सं० हृदय+ठन्—इक] १. हृदय-संबंधी। २. दिलवाला। ३. साहसी। ४. सहृदय।

हृदयेश—पुं०[सं० ष० त०] [स्त्री० हृदयेशा] हृदयेश्वर (प्रियतम)।

हृदयेश्वर—पुं०[सं०ष०त०] [स्त्री०हृदयेश्वरी] १. प्रेमपात्र। प्रियतम। २. स्त्री के लिए उसका पति।

हृदयोन्मादिनी—स्त्री० [सं० हृदय-उत्√मद् (नशा करना)+णिनि-ङीप्] कुछ लोगों के मत से संगीत में एक श्रुति।

हृदयोन्मादी—वि० [सं० हृदयोन्मादिन्] [स्त्री० हृदयोन्मादिनी] १. हृदय को उन्मत्त या पागल करनेवाला। २. मन को पूर्ण तरह से मोहित करनेवाला।

हृद्गत—वि० [सं० सप्त० त०] १. हृदय में होनेवाला। हृदय का। आंतरिक। जैसे—हृद्गत भाव। २. मन में जमा या बैठा हुआ। ३. प्यारा। प्रिय।

हृद्य—वि०[सं० हृद्+यत्] १. हृदय संबंधी। हृदय का। २. हृदय में रहने या होनेवाला। हार्दिक। ३. हृदय को अच्छा या भला लगनेवाला। मनोहर या सुन्दर। ४. स्वादिष्ट।

पुं० १. प्राचीन भारत में वे मंत्र, जो दूसरों के हृदय पर अधिकार करने अथवा दूसरों को अपने वश में करने के लिए जपे या पढ़े जाते थे। २. महुए की शराब। ३. दही। ४. सफेद जीरा। ५. कपित्थ। कैथ।

हृद्यगंध—पुं०[सं० ब० स०] १. बेल का पेड़ या फल। २. सोंचर नमक।

हृद्यांशु—पुं०[सं० ब० स०] चंद्रमा।

हृद्या—स्त्री० [सं० हृद्य-टाप्] १. वृद्धि नाम की जड़ी। २. बकरी।

हृद्रोग—पुं०[सं० ष० त०] १. हृदय में होनेवाला कोई रोग। (हार्ट डिसीज़) २. कुंभ राशि।

हृल्लास—पुं०[सं० ब० स०] बार-बार कै या वमन करने को जी चाहना। मितली। मिचली। नॉज़िया।

हृषि—स्त्री०[सं०] १. हर्ष। आनन्द। २. आभा। चमक।

हृषित—भू० कृ० [सं०√हृष् (खुश होना)+क्त] १. जिसे हर्ष हुआ हो। हर्षित। २. रोमांचित। ३. चकित। ४. शस्त्रास्त्र से सज्जित। ५. हताश।

हृषीक—पुं०[सं० √हृष् +ईकक्] इंद्रिय।

हृषीकेश—पुं०[सं० ष० त०] १. विष्णु जो इद्रियों के स्वामी कहे जाते हैं। २. श्रीकृष्ण का एक नाम। ३. पूस का महीना। पौष मास।

हृषु—वि० [सं० √हृष्+उ] १. हर्षित होनेवाला। प्रसन्न। २. झूठ बोलनेवाला। झूठा।

पुं० १. अग्नि। आग। २. सूर्य। ३. चन्द्रमा।

हृष्ट—वि० [सं० हृष् (खुश होना)+क्त वा इट्] १. हर्षित। प्रसन्न। २. उठा या खड़ा हुआ (शरीर का रोआँ) ३. जो कठोर या कड़ा हो गया हो।

हृष्ट-पुष्ट—वि०[सं०] जो मोटा-ताजा और फलतः प्रसन्न तथा सुखी हो।

हृष्टयोनि—पुं०[सं० ब० स०] एक प्रकार का नपुंसक।

हृष्टि—स्त्री०[सं० √हृष् (खुश होना)+क्तिन्] १. हर्ष। प्रसन्नता। २. गर्व से इतराना या फूलना।

हृष्यका—स्त्री०[सं०] संगीत में, एक मूर्च्छना जिसका स्वर-ग्राम इस प्रकार है—प ध नि स रे ग म। धनि सरे गम पध नि सरे गम।

हेंगा†—पुं० [सं० अभ्यंग=पोतना] जोते हुए खेत की मिट्टी बराबर करने का पाटा।

क्रि० प्र०—चलाना।

हेंगाई†—स्त्री०[हि० हेंगा] खेत में हेंगा चलाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

हेंगाना†—स [हि० हेंगा] खेत में हेंगा चलाना।

हेंगुरी†—स्त्री०=उँगली। उदा०—हेंगुरी एक खेल दुई गोटा।—जायसी।

हेंवं†—पुं०=हिम।

हें हें—पुं०[अनु०] १. तुच्छतापूर्वक धीरे-से हँसने की क्रिया या शब्द। २. दीनतापूर्वक या गिड़गिड़ाकर कही जानेवाली बात।

हे—अव्य० [सं०] संबोधन सूचक अव्यय। जैसे—हे राम।

†अ० ब्रज भाषा के 'हो' (था) का बहु० रूप। थे। उदा०—मानी हार विमुख दुरजोधन जाके जोधा हे सौ भाई।—सूर।

हेउसी—स्त्री०[देश०] देशावरी रूई।

हेक—वि० [हि० एक] १. एक। उदा०—हय न लागो हेक, पारस राणे प्रताप-सी।—दुरसाजी। २. एक-दो। बहुत थोड़े। कुछ।

हेकड़—वि० [हि० हिया+कड़ा] १. मोटा-ताजा। हट्टा-कट्टा। २. उग्र और प्रचंड। ३. अक्खड़ और उद्दंड। ४. तौल से पूरा। (बाजारू)

हेकड़ा—पुं० [हि० हेकड़] समूह गान में वह व्यक्ति जो किसी बोल या स्वर को बहुत अधिक लंबा खींचता हो।

हेकड़ी—स्त्री०[हि० हेकड़] १. हेकड़ होने की अवस्था, गुण या भाव। २. अक्खड़पन मिली हुई उद्दंडता। ३. बल-प्रयोग। जबरदस्ती।

हेकलो†—वि०=अकेला। (राज) उदा०—लाखा बाता हेकलो चूड़ौ मो न लजाय।—कवि राजा सूर्यमल।

हेका†—अव्य० [सं० एक] एक ओर। (राज०) उदा०—हेका कह हेका हीलो हल।—प्रिथीराज।

हेक्का—स्त्री०[सं० हिक्का+पृषो०] हिक्का। हिचकी।

हेच—वि० [सं० हेय से फा०?] १. जिसका कुछ भी महत्त्व न हो। तुच्छ। २. निःसार।

हेजम†—पुं० [अ० हज्जाम] १. नाई। हज्जाम। २. दूत जिसका काम पहले हज्जाम लोग ही करते थे।

हेठ—वि० [सं० अधस्थः प्रा० अहट्ठ] १. नीचा। जो नीच हो। २. किसी की तुलना में घटकर या हीन।

क्रि० वि० नीचे की ओर। नीचे।

पुं०[सं०] १. बाधा। विघ्न। २. नुकसान। हानि। ३. आघात। चोट।

हेठा—वि०[हिं० हेठ] १. जो नीचे हो। नीचा। २. किसी की तुलना में तुच्छ या हेय। ३. तुच्छ।

हेठापन—पुं०[हिं० हेठा+पन (प्रत्य०)] 'हेठा' होने की अवस्था, गुण या भाव। तुच्छता। नीचता।

हेठी—स्त्री०[हिं० हेठा] १. प्रतिष्ठा में होनेवाली कमी। मान-हानि। २. अपमान। बेइज्जती। ३. जहाज में पाल का पाया। (लश०)

हेड—पुं०[सं०√हेड् (अनादर करना)+अच्] उपेक्षा या अपमान करना।

वि०[अं०] प्रधान। मुख्य। जैसे—हेड आफिस, हेडमास्टर।

हेड़ा—पुं० [देश०] मांस। गोश्त।

हेडिंग—स्त्री०[अं०]=शीर्षक।

हेडि—स्त्री०=हेड़ी। (राज०)

हेडी(ड़ी)—स्त्री० [हिं० लेहँड़ी] १. बिक्री के लिए बाजार में लाये जानेवाले पशुओं का दल। २. झुंड।

†पुं० शिकारी।

हेत†—अव्य० [सं० हेतु] १. लिये। वास्ते। २. चक्कर या फेर में। सबय दिन गये विषय के हेत।—सूर।

†पुं०=हेतु।

हेति—स्त्री०[सं० √हन् (मारना)+क्तिन् करणे] १. वज्र। २. अस्त्र। ३. भाला। ४. घाव। चोट। ५. सूर्य की किरण। ६. आग की लपट। लौ। ७. धनुष की टंकार। ८. औजार। ९. अंकुर।

पुं० १. पुराणानुसार वह प्रथम राक्षस राजा जो मधुमास या चैत्र में सूर्य के रथ पर रहता है। यह प्रहेति का भाई और विद्युत्केश का पिता कहा गया है। (वैदिक)

†पुं० [हिं० हितू] रिश्तेदार। संबंधी। उदा०—मदन के हेति डोर ज्ञानहू के कन रेति...।—सेनापति।

हेतु—पुं० [सं०√हि+तुन्] १. वह भूली बात जिसे ध्यान में रखकर अथवा जिसके उद्देश्य या विचार से कोई काम किया गया हो या कोई बात कही गई हो। अभिप्राय। उद्देश्य। (मोटिव) जैसे—वहाँ जाने में मेरा एक विशेष हेतु था। २. कारण। वजह। सबब।

विशेष—यद्यपि हेतु का एक अर्थ कारण भी होता है। फिर भी कारण और हेतु में तात्विक दृष्टि से बहुत अंतर है। कारण मुख्यतः वह क्रिया, घटना या व्यापार है जिसका कोई परिणाम या फल प्रस्तुत होता है। जैसे—चूल्हे में चिनगारी रह जाना ही घर में आग लगने का कारण था। परन्तु हेतु वस्तुतः वह इच्छा, उद्देश्य या मनोगत भाव है जो कोई काम करने के लिए प्रवृत्त करता अथवा उसका प्रेरक होता है, और जिसके फलस्वरूप कोई कार्य या व्यापार होता है। जैसे—उसकी हर बात में कुछ-न-कुछ हेतु होता है।

३. न्याय-शास्त्र में वह तर्क या युक्ति जिसका कोई निष्कर्ष निकलता हो या जो कोई बात प्रमाणित या सिद्ध करने के लिए उपस्थित की गई हो। साधक। जैसे—जो हेतु अभी आपने उपस्थित किया है, वह आपकी इन बातों से सिद्ध नहीं होता। ४. किसी प्रकार का साधारण तर्क या दलील। ५. साहित्य में, एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें या तो (क) कारण के होते ही कार्य के भी हो जाने का उल्लेख होता है। (जैसे—उन्हें देखते ही मेरे मन में श्रद्धा उत्पन्न हुई थी।) अथवा (ख) कारण का ही कार्य रूप में उल्लेख होता है। (जैसे—आपकी कृपा ही मेरा कल्याण है।)

†पुं०[सं० हित] प्रेम। स्नेह। उदा०—देखि भरत पर हेतु।—तुलसी।

हेतुकी—स्त्री०[सं० हेतु से] वह शास्त्र जिसमें रोगों के निदान या पहचान का विवेचन होता है। निदान-शास्त्र। (इटियालाजी)

हेतुता—स्त्री०[सं० हेतु+तल्—टाप्] हेतु की अवस्था, गुण या भाव।

हेतुत्व—पुं०[सं०]=हेतुता।

हेतु-भेद—पुं०[सं०] ज्योतिष में ग्रह-युद्ध का एक भेद। (बृहत्संहिता)

हेतुमान् (मत्)—वि० [सं० हेतु+मतुप्] [स्त्री० हेतुमती] जिसका कुछ हेतु हो। हेतु-मूलक।

पुं० हेतु के फल-स्वरूप होनेवाला कार्य।

हेतु-वचन—पुं०[सं० मध्य० स०] किसी बात के कारण के संबंध में होनेवाली बहस या विवाद।

हेतुवाद—पुं० [सं० हेतु√वद् (कहना)+घञ्] १. सब बातों का हेतु ढूँढ़ना या सबके विषय में तर्क करना। २. नास्तिकता-पूर्ण कुतर्क। ३. व्यर्थ की कहा-सुनी या वाद-विवाद। ४. दे० 'तर्क-शास्त्र'।

हेतुवादी—वि०[सं० हेतुवादिन्] [स्त्री० हेतुवादिनी] १. तार्किक। दलील करनेवाला। २. नास्तिक।

हेतु विज्ञान—पुं०[सं०] हेतुकी।

हेतुविद्या—स्त्री०[सं० ष० त०] तर्क शास्त्र।

हेतु-शास्त्र—पुं०[सं० ष० त०] १. वह ग्रन्थ या शास्त्र जिसमें स्मृतियों आदि का खंडन या विरोध हो। २. तर्कशास्त्र।

हेतु-हेतुमद्भाव—पुं०[सं०] १. कार्य और कारण का भाव। २. कारण और कार्य का संबंध।

हेतु हेतुमद्भूतकाल—पुं०[सं०] व्याकरण में, क्रिया के भूतकाल का वह भेद या रूप जिसमें ऐसी दो बातों का न होना सूचित होता है जिसमें दूसरी पहली पर निर्भर रहती है। जैसे—यदि तुम मुझसे माँगते तो मैं अवश्य देता।

हेतुत्प्रेक्षा—स्त्री० [सं० ब० स०] साहित्य में, उत्प्रेक्षा अलंकार का एक भेद जिसमें अहेतु को हेतु अथवा अकारण को कारण मानकर किसी प्रकार की उत्प्रेक्षा की जाती है। यथा—मोर-मुकुट की चन्द्रकनि, यो राजत नँद नन्द। मनु ससि-सेखर की अकस, किअ सेखर सत-चन्द।—बिहारी।

हेत्वापह्नुति—स्त्री० [स०] साहित्य में, अपह्नुति अलंकार का एक भेद जिसमें उपमेय का सकारण निषेध करते हुए उपमान की स्थापना की जाती है। यथा—सिवसरजा के कर लसे सोन होय किरवान।—भुजभुजगेस भुजंगिनी, भखति पौन औ पान।—भूषण।

हेत्वाभास—पुं० [सं० हेतु-आ√भास् (प्रकाशित होना)+अच्—घञ् वा] तर्कशास्त्र में, वह अवस्था जिसमें वास्तविक हेतु का अभाव होने पर या किसी अवास्तविक असद् हेतु के वर्तमान रहने पर भी वास्तविक हेतु का आभास मिलता या अस्तित्व दिखाई देता है ; और उसके फल-स्वरूप भ्रम होता या हो सकता है। (फ़ैलेसी)

विशेष—भारतीय नैयायिकों ने इसके ये पाँच भेद कहे हैं—स-व्यभिचार, विरुद्ध, प्रकरणसम, साध्य-सम और कालातीत।

हेमंत—पुं०[सं० हि+झ-अन्त-मुट्च] छः ऋतुओं में से पाँचवी ऋतु, जिसमें अगहन और पूस के महीने पड़ते हैं। जाड़े का मौसम। शीत-काल।

हेमंती—स्त्री०[सं०] जाड़े का मौसम। हेमंत ऋतु।

हेम—पुं०[सं० हि+मन्]१. हिम। पाला। २. सोना। स्वर्ण। ३. कपित्थ। कैथ। ४. नागकेसर। ५. एक माशे की तौल। ६. बादामी रंग का घोड़ा। ७. गौतम बुद्ध का एक नाम।

हेम-कंदल—पुं०[सं० हेमकन्द√ ला (लेना)] मूँगा।

हेमक—पुं०[सं०] १. सोने का टुकड़ा। २. एक प्राचीन वन।

हेम-कल्याण—पुं०[सं०] संगीत में, कल्याण राग का एक प्रकार या भेद।

हेम-कांति—स्त्री०[सं० ब० स०]१. बन-हलदी। २. आँबा हलदी।

हेम-कूट—पुं०[सं० ब० स०] पुराणों के अनुसार एक पर्वत जिसकी चोटी सोने की मानी गई है। यह हिमालय के उत्तर और मेरु के दक्षिण में किंपुरुषवर्ष तथा भारतवर्ष के बीच में माना गया है।

हेम-केश—पुं०[सं० ब० स०] शिवजी का एक नाम।

हेम-गर्भ—पुं० [सं० ब० स०] उत्तर दिशा का एक पर्वत। (वाल्मीकि)

हेमगिरि—पुं०[सं० मध्य० स०] सुमेरु पर्वत (जो सोने का कहा गया है)।

हेमघन—पुं०[सं०] सीसा नामक धातु।

हेमज—वि०[सं० हेम√जन् (उत्पन्न होना)+ड] हेम से उत्पन्न।

पुं० राँगा।

हेमतरु—पुं०[सं०] धतूरा।

हेमतार—पुं० [सं० हेम√तृ (उत्कृष्ट करना)+णिच्—अण्] नीला थोथा। तूतिया।

हेम-ताल—पुं०[सं०] उत्तराखंड का एक पहाड़ी प्रदेश।

हेम-तुला—स्त्री०[सं०] वह तुला-दान जिसमें किसी के भार के बराबर सोना तौलकर दान किया जाता है।

हेम-पर्वत—पुं०[सं० मध्य० स०]१. सुमेरु पर्वत। २. दान के लिए बनाया जानेवाला सोने का पहाड़।

हेम-पुष्प—पुं०[सं० ब० स०] १. चंपा। २. अशोक वृक्ष। ३. नागकेसर। ५. अमलताश।

हेम-पुष्पिका—स्त्री०[सं०]१. सोनजुही। २. गुड़हर।

हेम-पुष्पी—स्त्री० [सं० हेमपुष्प—ङीप्] १. मजीठ। २. मूसली-कंद। ३. कंटकारी।

हेम-फला—स्त्री० [सं० ब० स०] एक प्रकार का केला।

हेम-माला—स्त्री० [सं० ब० स०] यम की पत्नी।

हेम-माली—पुं०[सं० हेममालिन्]१. सूर्य। २. खर नामक राक्षस का पिता।

हेम-मुद्रा—स्त्री० [सं० ष० त०] सोने का सिक्का। अशरफी। मोहर।

हेम-यूथिका—स्त्री०[सं० उपमि० स०] सोनजुही।

हेम-रागिनी—स्त्री० [सं० हेमराग+इनि—ङीप्] हलदी।

हेमरेणु—पुं० [सं०] त्रसरेणु।

हेमलंब, हेमलंबक—पुं० [सं०] वृहस्पति के साठ संवत्सरों में से ३१वाँ संवत्सर।

हेमल—पुं० [सं० हेम√ला (लेना)+क]१. सोनार। २. कसौटी। ३. गिरगिट। ४. छिपकली।

हेमवती—स्त्री०[सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

हेम-सागर—पुं० [सं०] १. एक प्रकार का पौधा, जिसे 'जख्महयात' भी कहते है। २. एक प्रकार का बढ़िया आम जो बंगाल में होता है।

हेमसार—पुं० [सं० हेम√ सृ (निर्मल करना)+णिच्—अण्] नीला थोथा। तूतिया।

हेम-सुता—स्त्री०[सं०] पार्वती। दुर्गा।

हेमांग—पुं० [सं० ब० स०]१. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. गरुड़। ४. सिंह। ५. चंपा।

हेमांगद—पुं०[सं० ष० त०]१. सोने का बिजायठ। २. वसुदेव का एक पुत्र।

हेमा—स्त्री०[सं०]१. सुन्दरी स्त्री। २. पृथ्वी। ३. माधवी लता।

हेमाचल—पुं०[सं० मध्य० स०] सुमेरु पर्वत।

हेमाद्रि—पुं०[सं० मध्य० स०] सुमेरु पर्वत।

हेमाल—पुं०[सं०] एक राग जो दीपक का पुत्र कहा जाता है।

†वि०[सं० हिम] बरफ की तरह ठंढा। शीतल।

†पुं०=हिमालय।

हेम्न—पुं०[सं०] मंगल-ग्रह।

हेम्ना—स्त्री०[सं०] संगीत में संकीर्ण राग का एक भेद।

हेम्य—वि०[सं० हेम+यत]१. सोने का। २. सुनहला।

हेय—वि० [सं० √हा (छोड़ना)+यत्]१. घृणित तथा तुच्छ। २. फलतः छोड़ने या त्यागने योग्य। ३. गमन करने या जानेवाला।

हेरंब—पुं० [सं० हे√रम्ब्+अच्, अलुक्] १. गणेश। २. बुद्ध का एक नाम। ३. धीरोद्धत नायक। ४. भैंसा।

हेरंबक—पुं०[सं०] एक प्राचीन जाति।

हेर—पुं० [सं०] १. किरीट। २. हलदी। ३. आसुरी माया।

†स्त्री० [हिं० हेरना] १. हेरने की क्रिया या भाव। २. खोज। तलाश। ३. प्रेमपूर्ण चितवन या दृष्टि। उदा०—हरी हरिहारी हारि है हे रे री हेरी।—सेनापति।

†पुं०=अहेर (शिकार)।

हेरक—पुं०[सं०] शिव के एक गण का नाम।

†वि०[हिं० हेरना] हेरने या ढूँढ़नेवाला।

हेरनहार—वि० [हिं० हेरना] हेरनेवाला।

हेरना†*—स० [हिं० अहेर] १. तलाश करना। ढूँढ़ना। खोजना। २. ढूँढ़ने के लिए इधर-उधर देखना। ३. ताकना। देखना। ४. जाँचना। परखना।

हेरना-फेरना—स० [हिं० हेरना+फेरना]१. इधर-उधर करना। हेर-फेर करना। २. अदला-बदली करना। बदलना। विनिमय करना।

मुहा०—हेर-फेर कर=(क) घूम फिरकर। (ख) घुमाव-फिराव की बातें करके।

हेर-फेर—पुं०[हिं० हेरना+फेरना]१. घुमाव। चक्कर। २. चक्कर में डालनेवाली या घुमाव-फिराव की और पेचीली बात। ३. चाल-बाजी। दाँव-पेंच। ४. अदला-बदली। विनिमय। ५. अन्तर। फरक। ६. किसी चीज के कुछ अंश हटा बढ़ाकर इधर उधर करना या निकाल देना और उनके स्थान की पूर्ति नये अंशों से करना। रद्दोबदल। (आल्ट्रेशन)

हेरवा†—पुं० [हिं० हेरना] १. तलाश। ढूंढ़। खोज। २. किसी के चले जाने पर उसे खोजने और उसके न मिलने पर बच्चों को होनेवाला दुःख या पड़नेवाला वियोगजन्य कुप्रभाव।

क्रि० प्र०—पड़ना।

हेरवाना†—स० [हिं० हेराना] खोना। गँवाना।

संयो० क्रि०—डालना।—देना।

स०[हिं० हेरना का प्रे०] तलाश करवाना। ढुंढवाना।

हेराना†—अ०[सं० हरण]१. किसी चीज का खो जाना। गुम होना। २. किसी वस्तु का तिरोहित या पहुँच के बाहर होना। उदा०—नयनन नींद हेरानी।—युगलप्रिया। ३. किसी चीज या बात का अभाव या तिरोभाव होना, न रह जाना। उदा०—(क) गुन न हेरानो, गुन-गाहक हेरानो है। (ख) ऊधो को सब ज्ञान हेरायो।—सूर। ३. ऐसी अवस्था में रहना या होना कि ढूँढ़ने पर भी जल्दी पता न चले। ४. आत्म-विस्मृत होना। अपनी सुध-बुध भूलना। उदा०—नित नई नई रुचि वन हेरत हेराइ री।—केशव।

संयो० क्रि०—जाना।

†स०[हिं० हेरना का प्रे०] तलाश कराना। ढुंढवाना।

स० खो या गंवा देना। गुम कर देना।

हेरा-फेरी—स्त्री०[हिं० हेरना+फेरना] इधर का उधर या उधर का इधर होने की अवस्था या भाव। हेर-फेर।

मुहा०—**हेरा-फेरी करना**=(क) इधर से उधर आते-जाते रहना। (ख) चीजें इधर से उठाकर उधर और उधर से उठाकर इधर रखना। (ग) अदल-बदल करना।

हेरिक—पुं०[सं० √हि+इक—रुट् च] गुप्तचर। भेदिया।

हेरियाना—पुं०[देश०] जहाज के अगले पाल्हों की रस्सियाँ तानकर बाँधना। हेरिया मारना। (लश०)

हेरी†—स्त्री०[हिं० हेरना] बुलाने के लिए दी जानेवाली आवाज। पुकार।

मुहा०—**हेरी देना**=पुकारना। उदा०—कोउ हेरी देत, परस्पर स्याम सिखावत।—सूर।

हेरुक—पुं० [सं०√हि+उक:रुट् च] १. गणेश का एक नाम। २. महाशिव का एक नाम। ३. एक बोधिसत्व।

हेल—स्त्री० [हिं० हेलना] हेलने की क्रिया या भाव।

पु०[हिं० हिलना=परचना]. किसी से हिल-मिल जाने की क्रिया या भाव।

पद—हेल-मेल।

पुं०[हिं० हील]१. कीचड़। २. गोबर आदि का ढेर। ३. ढेर। राशि।

पुं०[सं० हेलन]१. अवज्ञा। उपेक्षा। २. घृणा। नफरत।

हेलन—पुं० [सं०√हिल् (अनादर करना)+ल्युट्—अन] [वि० हेलनीय, भू० कृ० हेलित] १. तुच्छ समझकर तिरस्कार करना। २. क्रीड़ा या मनोविनोद करना। खेलवाड़। ३. अपराध। कसूर।

हेलना—अ० [सं० हेलन]१. क्रीड़ा करना। केलि करना। २. विनोद या हँसी-ठट्ठा करना। ३. खेलवाड़ की तरह तुच्छ या हेय समझना। ४. तुच्छ समझते हुए अवज्ञा या तिरस्कार करना। ५. ध्यान न देना। उपेक्षा करना। ६. प्रवेश करना। पैठना। जैसे—घर या पानी में हेलना। ७. तैरना।

हेलनीय—वि० [सं० √हिल् (अपमान करना)+अनीयर्] उपेक्षा या तिरस्कार के योग्य। उपेक्ष्य।

हेल-मेल—पुं०[हिं० हिलना-मिलना]१. हिलने-मिलने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. वह अवस्था जिसमें लोग औरों के साथ अच्छी तरह हिल-मिल जाते और परस्पर घनिष्ठ आत्मीय संबंध स्थापित करते हैं। ३. आपस में उक्त प्रकार का होनेवाला घनिष्ठ संबंध। परिचय बढ़ जाने पर होनेवाला संग-साथ।

हेलया—अव्य० [सं०]१. क्रीड़ा या खेलवाड़ के रूप में। २. बहुत ही सहज में।

हेला—स्त्री०[सं०√हिल् (अनादर करना)+अ-ड =ल]१. किसी को तुच्छ समझने पर उसके प्रति होनेवाली अवज्ञा या तिरस्कार का भाव। २. ध्यान न देना। उपेक्षा। ३. क्रीड़ा। खेलवाड़। ४. शृंगारिक प्रसंगों में होनेवाली प्रेमपूर्ण क्रीड़ा। केलि। ५. साहित्य में मूलतः नायिका की वे सभी क्रियाएँ जो उसकी शृंगारिक भावनाएँ प्रकट करती हैं। यथा—छिन छिन बान बनायौ करै। वार-वारकर उरजन धरै। अति सिंगार मगन मन रहे। ताको कवि हेला छवि कहे।—नन्ददास।

विशेष—परवर्त्ती काल के साहित्यकारों ने इसकी गणना एक विशिष्ट 'हाव' के रूप में की है।

६. परवर्ती साहित्य में, संयोग शृंगार के अन्तर्गत एक विशिष्ट हाव जिसमें नायिका आँखें या भौंहें नचाकर मिलने की अभिलाषा कुछ धृष्टतापूर्वक और अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट करती है।

†अव्य०[सं० हेलया] खेलवाड़ के रूप में। बहुत सहज में। उदा०—जेहि वारीस बँधाये हेला।—तुलसी।

पुं०[हिं० हल्ला]१. पुकार। हाँक। २. धावा। चढ़ाई।

पुं०[हिं० रेलना] धक्का। रेला।

पुं० [हिं० हेल=खेप]१. उतना बोझ जितना एक बार टोकरे में रखकर नाव, गाड़ी आदि में ले जा सकें। खेप। पारी। बारी। हल्ला। जैसे—इस हेले में यह काम पूरा हो जायगा।

पुं० [हिं० हेल=मल] [स्त्री० हेलिन] भंगी, मेहतर आदि की तरह की एक जाति जिसका काम मल आदि उठाकर फेंकना है।

हेलान—पुं० [देश०] डाँड़े को नाव पर रखना। (लश०)

हेलाल—पुं०=हिलाल (बालचन्द्र)

हेलिकाप्टर—पुं०[अं०] एक प्रकार का बहुत छोटा हवाई जहाज।

हेलित—भू० कृ०[सं० हेला+इतच्] जिसका हेलन (अवज्ञा या तिरस्कार) हुआ हो।

हेलिन—स्त्री०[हिं० हेला] हेला जाति की स्त्री। मेहतरानी। गलीज उठानेवाली।

हेली*—अव्य० [हिं० हे(संबोधन)+सं० अली] हे सखी। उदा०—हेली म्हाँसू हरि बिनि रह्यो न जाय।—मीराँ।

†स्त्री० सखी। सहेली।

वि० [हिं० हेल=निकट संबंध] जिससे हेल-मेल हो।

पद—हेली-मेली। (देखें)

हेली-मेली—वि० [हिं० हेल-मेल] जिससे हेल-मेल अर्थात् आपसदारी का संबंध और संग-साथ हो।

हेलुआ†—पुं० [हिं० हेलना=पैठना] पानी में खेला जानेवाला एक प्रकार का खेल। (ब्रज)

†पुं०=हलुआ।

हेलुवा†—पुं०=हेलुआ।

†पुं०=हलुआ।

हेवंत*—पुं०=हेमंत।

हेवर†—पुं०=हैवर।

हेवाँय†—पुं० [सं० हिमालि] पाला। हिम। बर्फ।

हेष—पुं० [सं०] घोड़े की हिनहिनाहट।

हेषी (षिन्)—पुं० [सं० √हिष् +णिनि] घोड़ा।

हेस्त-नेस्त—पुं० [फा० हस्त=होना+नेस्त= न होना, मि० सं० अस्ति+नास्ति] वह स्थिति जिसमें दुविधा या संशय दूर करने के लिए यह निश्चय होता है कि अमुक काम सचमुच हो जायगा या बिलकुल नहीं हो सकेगा।

हैं—अ० हिन्दी की 'होना' क्रिया के वर्तमान-कालिक कृदन्त 'है' का विकारी बहु० रूप।

अव्य० [अनु०] एक अव्यय जो आश्चर्य, असम्मति आदि का सूचक है। जैसे—हैं! यह क्या हुआ।

प्रत्य० ब्रजभाषा में 'गा' भविष्यत् कालिक प्रत्यय का बहु०। जैसे—जैहैं, देहैं आदि।

हैंगुल—वि० [सं०] हिंगुल-संबंधी। ईंगुर का।

हैंडबिल—पुं० [अं०]=परचा।

हैंडबैग—पुं० [अं०] चमड़े आदि का एक छोटा बक्स या लंबोतरा थैला, जो छोटी-मोटी चीजें रखने के लिए हाथ में लटकाया जाता है।

हैंडिल—पुं० [अं०] उपकरण, औजार या ऐसी ही और कोई चीज पकड़ने का दस्ता। मुठिया। हत्था।

हैंस—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का छोटा पौधा, जिसकी जड़ जहरीले फोड़ों को जलाने के लिए घिसकर लगाई जाती है। उदा०—गहन गंभीर हैंस मकोई।—नूर मोहम्मद।

है—अ० [हिं० होना] हिन्दी की 'होना' क्रिया का वर्तमान कालिक एक वचन रूप। जैसे—वह जाता है।

हैउत†—पुं०=हेमंत (ऋतु)। उदा०—हैउत हैउत ही दिन माँझ समौ करि राख्यौ वसंत-वसंती।—देव।

हैकड़†—वि०=हेकड़।

हैकड़ी†—स्त्री०=हेकड़ी।

हैकल—स्त्री० [सं० हय+गल] १. चौकोर या पान के से दानों की गले में पहनने की एक प्रकार की माला। हुमेल। २. उक्त प्रकार की वह बड़ी माला, जो घोड़ों के गले में पहनाई जाती है।

हैजम—स्त्री० [देश०] १. सेना की पंक्ति। २. तलवार। (डिं०)

हैजा—पुं० [अ० हैज़ः] दस्त और कै की सांघातिक बीमारी, जो संक्रामक रूप में फैलती है। विसूचिका। (कालरा)

हैट—पुं० [अं०] पाश्चात्य देशों की वह छज्जेदार बड़ी टोपी, जिससे धूप का बचाव होता है। टोप।

हैटा—पुं० [देश०] एक प्रकार का अंगूर।

हैतुक—वि० [सं० हेतु+ठण्—इक] १. जिसका कोई हेतु हो। जो किसी उद्देश्य से किया जाय। २. किसी पर अवलंबित या आश्रित।

पुं० १. तर्कशास्त्र का पंडित। तार्किक। २. वह जो व्यर्थ के तर्क करता हो। कुतर्की। ३. नास्तिक। ४. मीमांसा-दर्शन का अनुयायी या समर्थक।

हैदर—पुं० [अ०] शेर।

हैन—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास। तकड़ी।

हैफ—अव्य० [अ० हैफ़] खेद या शोक, सूचक शब्द। अफसोस। हाय।

हैबत—स्त्री० [अ०] १. भय। त्रास। दहशत। २. आतंक।

हैबतनाक—वि० [अ०] भयानक। डरावना।

हैबर*—पुं० [सं० हयवर] अच्छा घोड़ा।

हैमंत, हैमंतिक—वि० [सं०] १. हेमन्त से संबंध रखनेवाला। २. हेमंत ऋतु में उत्पन्न होनेवाला।

पुं० हेमंत।

हैम—वि० [सं० हिम+अण्] [स्त्री० हैमी] १. हेम अर्थात् स्वर्ण से संबंध रखनेवाला। २. सोने का बना हुआ। ३. सोने के से रंग का। सुनहला।

पुं० १. शिव का एक नाम। २. चिरायता।

वि० [सं० हिम] १. हिम-संबंधी। हिम का। २. हेमंत ऋतु से संबंध रखने या उसमें होनेवाला। ३. बरफ में होनेवाला।

पुं० १. ओला। पाला। २. ओस।

हैमन—वि० [सं० हेमन्त+अण्—नलोप] १. जाड़े का। शीतकालीन। २. जाड़े के लिए उपयुक्त।

पुं० १. हेमंत ऋतु। २. शालि-धान्य।

हैमवत—वि० [सं० हिमवत्+अण्] [स्त्री० हैमवती] १. हिमालय का। हिमालय-संबंधी। २. हिमालय पर रहने या होनेवाला।

पुं० १. हिमालय का निवासी। २. एक प्राचीन धार्मिक संप्रदाय। ३. पुराणानुसार एक भू-खंड या वर्ष का नाम। ४. एक प्रकार का विष। ५. मोती।

हैमवतिक—वि० [सं० हिमवत+ठक्—इक] हिमालय पर्वत पर निवास करनेवाला।

हैमवती—स्त्री० [सं०] १. उमा। पार्वती। २. गंगा। ३. हरीतकी। हड़। ४. अलसी। तीसी। ५. रेणुका नामक गंध-द्रव्य।

हैमवरी—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

हैमा—स्त्री० [सं० हेम+अण्—टाप्] १. सोनजुही। २. पीली चमेली।

हैमी—स्त्री० [सं० हैम-ङीप्] १. केतकी। २. सोनजुही।

वि०=हैमा।

हैयंगवीन—पुं० [सं०] एक दिन पहले के दूध के मक्खन से बनाया हुआ घी। ताजे मक्खन का घी।

हैया†—पुं०=हौआ।

हैरंब†—वि॰ [सं॰] हैरम्ब या गणेश संबंधी।

पुं॰ हेरंब अर्थात् गणेश का उपासक या भक्त। गाणपत्य।

हैरण्य—वि॰[सं॰ हिरण+अण्]१. हिरण्य-संबंधी। २. सोने का बना हुआ। ३. सोना उत्पन्न करनेवाला।

हैरण्यक—पुं॰[सं॰] स्वर्णकार। सुनार।

हैरण्यगर्भ—वि॰[सं॰] हिरण्यगर्भ-संबंधी।

हैरण्यवत—पुं॰[सं॰] जैन पुराणों के अनुसार जम्बू द्वीप के छठे खंड का नाम।

हैरण्यिक—पुं॰[सं॰ हिरण्य+ठक्—इक] स्वर्णकार। सुनार।

हैरत—स्त्री॰ [अ॰] १. आश्चर्य। अचरज। तअज्जुब। २. फारसी संगीत में एक मुकाम या राग।

हैरान—वि॰[अ॰] [भाव॰ हैरानी]१. आश्चर्य, चमत्कार, अप्रत्याशित व्यवहार आदि से चकित तथा स्तब्ध। २. बहुत देर तक दौड़ने-धूपने, खोजने-ढूंढ़ने आदि के कारण जो दुःखी तथा व्यग्र हो रहा हो। जैसे—उस दिन तुम्हारा घर खोजते खोजते हम हैरान हो गये।

हैरानी—स्त्री॰[अ॰]१. हैरान होने की अवस्था या भाव। २. विस्मय। ३. परेशानी।

हैरिक—पुं॰[सं॰] १. चोर। २. गुप्तचर।

हैवर†—पुं॰ [सं॰ हयवर] अच्छा घोड़ा।

हैवान—पुं॰ [अ॰] [भाव॰ हैवानियत] १. पशु। जानवर। इंसान का विपर्याय। २. बहुत ही उजड्ड या गँवार आदमी।

हैवानात—पुं॰ [अ॰] 'हैवान' का बहुवचन।

हैवानियत—स्त्री॰ [अ॰] १. हैवान या पशु होने की अवस्था या भाव। पशुत्व। २. पशुओं का सा और विवेकहीन या क्रूर आचरण। 'इन्सानियत' या 'मनुष्यत्व' का विपर्याय।

हैवानी—वि॰[अ॰ हैवान] १. हैवान अर्थात् पशु-संबंधी। २. पशुओं का सा।

हैस-बैस—स्त्री॰[अ॰] १. लड़ाई-झगड़ा। २. हो-हल्ला। ३. व्यर्थ का तर्क-वितर्क या वाद-विवाद।

हैसियत—स्त्री॰ [अ॰] १. रंग-ढंग। तौर-तरीका। २. शक्ति या सामर्थ्य सूचक योग्यता। ३. आर्थिक, सामाजिक आदि दृष्टियों से किसी की योग्यता-सूचक स्थिति। जैसे—थोड़े ही दिनों में उसने अपनी अच्छी हैसियत बना ली है। ४. मालियत या मूल्य के विचार से सारी धन-संपत्ति। जैसे—उसने थोड़े ही दिनों में लाखों रुपयों की हैसियत बरबाद कर दी। ५. सामाजिक मान-मर्यादा। इज्जत। प्रतिष्ठा। जैसे—बड़ों से बातें करते समय तुम्हें अपनी हैसियत का भी ध्यान रखना चाहिए।

हैहय—पुं॰ [सं॰ हैहय+अण्] एक क्षत्रिय वंश जो यदु से उत्पन्न कहा गया है। पुराणानुसार इन्होंने शकों के साथ-साथ भारत के अनेक देश जीते थे। प्राचीन काल में इस वंश का सबसे प्रसिद्ध राजा कार्तवीर्य सहस्रार्जुन था, जिसे परशुराम ने मारा था।

हैहयराज—पुं॰[सं॰] हैहयवंशी कार्तवीर्य सहस्रार्जुन।

हैहयाधिराज—पुं॰ [सं॰] हैहयराज।

है है—अव्य॰[हाहा]१. शोक या दुःख-सूचक शब्द। हाय। अफसोस। हाहंत। २. परम आश्चर्य का सूचक शब्द। (स्त्रियाँ) जैसे—है है! यह क्या हो गया।

हों—अ॰ [हिं॰ होना] हिन्दी की सत्तार्थक क्रिया 'होना' का संभाव्य काल के 'हो' का बहुवचन रूप। जैसे—शायद वे वहाँ से चले गये हों।

होंकरना—अ॰ [अनु॰] १. हो-हो शब्द करना। २. जोर से और कटुतापूर्वक बोलना। ३. हुँकारना।

होंठ—पुं॰ [सं॰ ओष्ठ, पु॰ हिं॰ ओठ] प्राणियों के मुख-विवर के आगे के उभरे हुए दोनों किनारे जो ऊपर-नीचे होते हैं; और जिनसे दाँत ढके रहते हैं। ओष्ठ। रदच्छद।

मुहा॰—**होंठ काटना**= दे॰ नीचे 'होंठ चबाना'। **होंठ चबाना**=दाँतों से बार-बार होंठ दबाना जो तीव्र क्रोध का सूचक है। **होंठ चाटना**=बहुत स्वादिष्ट वस्तु खाकर अतृप्ति प्रकट करना। जैसे—हलुआ ऐसा बना था कि लोग होंठ चाटते रह गये। **होंठ चिपकना**=मीठी वस्तु का नाम सुनकर मुख की उक्त प्रकार की स्थिति से लालच के लक्षण प्रकट होना। **(किसी के) होंठ चूसना**= होंठों का चुम्बन करते हुए उनका रस लेना। अधर पान करना। **होंठ हिलाना**=**धीरे** से कुछ बोलना। जैसे—सब बातें हो गईं, पर उसने होंठ तक न हिलाये।

होंठल—वि॰[हिं॰ होंठ+ल (प्रत्य॰)] बड़े और मोटे होंठोंवाला।

होंठी—स्त्री॰[हिं॰ होंठ]१. ऊँचा उठा हुआ किनारा। अवंठ। बादवारी। २. किसी चीज का छोटा टुकड़ा।

हो—अ॰[हिं॰ होना]१. सत्तार्थक क्रिया 'होना' के अन्य पुरुष संभाव्य काल तथा मध्यम पुरुष बहुवचन के वर्तमान काल का रूप। जैसे—शायद वह हो।

†अ॰ ब्रज भाषा में वर्तमान कालिक क्रिया 'है' का सामान्य भूत रूप। था।

पुं॰[अनु॰] किसी को जोर से पुकारते समय संबोधन-सूचक शब्द। जैसे—क्या हो पाण्डेय जी।

होई—स्त्री॰ दे॰ 'अहोई' (पूजन)

होगला—पुं॰[देश॰] एक प्रकार का नरसल या नरकट।

होजन—पुं॰[?] एक प्रकार का हाशिया या किनारा जो कपड़ों में बनाया जाता है।

होटल—पुं॰[अं॰ होटल]आधुनिक ढंग का वह विश्राम-स्थान, जहाँ लोग मूल्य देकर कुछ खाते-पीते या किराया देकर कुछ समय के लिए ठहरते हों।

होड़—स्त्री॰[सं॰ हार=लड़ाई, विवाद]१. शर्त। बाजी।

क्रि॰ प्र॰—बदना।—लगाना।

२. चढ़ा-ऊपरी। प्रतिस्पर्धा। ३. किसी के बराबर होने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न। उदा॰—बदी विदाई में भी अच्छी होड़।—निराला। ३. जिद। हठ।

पुं॰ [सं॰] नाव। नौका।

होड़ना†—अ॰[हिं॰ होड़] किसी से होड़ लगाना। प्रतियोगिता या स्पर्धा करना। उदा॰—निंदकु सो जो निंदा होरै (होड़ै)।—कबीर।

होड़ा—पुं॰ [सं॰] १. चोर। २. लुटेरा। ३. डाकू।

होड़-बादी—स्त्री॰ [हिं॰ होड़+बदना] =होड़ा-होड़ी।

होड़-होड़ी—स्त्री॰ [हिं॰ होड़] १. एक दूसरे से आगे बढ़ जाने का प्रयत्न। प्रतिस्पर्धा। २. बाजी। शर्त।

होत—स्त्री॰ [हिं॰ होना या सं॰ भूति] १. होने की अवस्था, गुण या

भाव। अस्तित्व। २. पास में धन होने की दशा। संपन्नता। उदा०—होत का बाप अनहोत की माँ। ३. समाई। सामर्थ्य।

होतब—पुं०[सं० भवितव्य] वह बात जो दैव की ओर से अवश्यंभावी हो। भावी। होनहार।

होतव्य†—पुं०=होतब।

होतव्यता—स्त्री०[सं० भवितव्यता] अवश्य और अनिवार्य रूप से होनेवाली बात। होनहार। भवितव्यता।

होता—पुं०[सं० होतृ][स्त्री० होत्री] [वि० हौतृक]१. यज्ञ में आहुति देनेवाला। ऋत्विज। २. यज्ञ करानेवाला पुरोहित। ३. अग्नि। ४. शिव।

होता-सोता—वि० [हिं० होना+सोना (अनु०)] निकट का सम्बन्धी। जैसे—अपने होते-सोतों की ऐसी बातें अच्छी नहीं लगतीं।

होतृक—पुं०[सं०] दे० 'होत्रक'।

होते-सोते—अव्य [हिं० होता-सोता] किसी के वर्तमान रहते हुए। जैसे—हमारे होते-सोते तुम्हें कौन कुछ कह सकता है।

होत्र—पुं० [सं०√हु (देना।-लेना)+ष्ट्रन्] १. हवि। २. होम। ३. हवन की सामग्री।

होत्रक—पुं०[सं०] होता का सहायक।

होत्री—स्त्री० [सं०] १. यज्ञ में यजमान के रूप में शिव की मूर्ति। २. शिव की आठ मूर्तियों में से एक।

पुं०=होता।

होत्रीय—वि० [सं० होत्र-होतृ वा+छ—ईय] होता से संबंध रखनेवाला।

पुं०१. होता। २. हवन अथवा यज्ञ करने का मंडल या स्थान।

होनहार—वि०[हिं० होना+हारा (प्रत्य०)]१. (घटना या बात) जो अवश्य होने को हो। होनी। भावी। २. (व्यक्ति विशेषतः बालक) आगे चलकर जिसके सुयोग्य होने की आशा हो या संभावना हो। अच्छे लक्षणोंवाला। उदीयमान। (प्रॉमिसिंग)

पुं० वह बात, जो दैवी या प्राकृत रूप से अवश्य होने को हो। अवश्यंभावी घटना या बात। भवितव्यता। होनी। जैसे—होनहार हिरदै बसै, बिसर जाय सब सुद्ध। (कहा०)

होना—अ०[सं० भवन, प्रा० होन] १. एक बहुत प्रचलित और प्रसिद्ध क्रिया जो प्रयोग और व्यवहार की दृष्टि से 'करना' क्रिया के अकर्मक रूप का काम देती है। यद्यपि व्युत्पत्तिक दृष्टि से इसका संबंध सं० भवन (बनना) से है, फिर भी साधारण क्रिया के रूप में यह अस्तित्व, उपस्थिति, विद्यमानता, सत्ता आदि के अनेक प्रकार के भावों से युक्त हो गई है, और प्रायः नीचे लिखे अर्थों में प्रयुक्त होती है। २. किसी प्रकार के अथवा किसी रूप में अस्तित्व में आना। किसी प्रकार अथवा किसी रूप में बनकर प्रकाश में या सामने आना। जैसे—(क) वृक्षों में फल होना। (ख) दिन के बाद रात (या रात के बाद दिन) होना। ३. किसी क्रिया या व्यापार का पूर्णतया समाप्ति पर आना या पहुँचना। जैसे—(क) लड़के का जनेऊ (या विवाह) होना। (ख) पुस्तक का छपकर प्रकाशित होना। (ग) विरोधी दलों में मेल (या समझौता) होना।

पद—हो चुका=(क) नहीं हो सकता। कभी न होगा। जैसे—तुमसे तो यह काम हो चुका। (ख) अन्त या परिणाम अभीष्ट या शुभ नहीं होगा। (नैराश्य-सूचक) जैसे—यदि ऐसे ही शिक्षक यहाँ आते रहे, तो फिर पढ़ाई हो चुकी। **तो क्या हुआ**=कुछ आपत्ति, चिन्ता, दोष या हर्ज की बात नहीं है, अतः इसका ध्यान या विचार छोड़ दो। जैसे—यदि वह रूठकर चला ही गया है, तो क्या हुआ (अथवा क्या हो गया)।

मुहा०—(किसी काम या बात का)होकर रहना=अवश्य और निश्चित रूप से पूरा या सम्पन्न होना। किसी तरह न चलना या न रुकना। जैसे—तुम लाख चिल्लाया करो, पर हमारा काम तो होकर रहेगा। **(किसी व्यक्ति का) हो चुकना**=देहावसान या मृत्यु हो जाना। मर जाना। जैसे—लड़के के घर पहुँचने से पहले ही वे हो चुके थे। **होना जाना या होना-होवाना**=जो कुछ होने को हो या हो सकता हो। जैसे—(क) इस तरह की बातों से कुछ भी होना जाना नहीं है। (ख) जो कुछ होना-होवाना हो, वह आज ही हो जाय।

३. किया हुआ कार्य या घटना का क्रियात्मक अथवा वास्तविक रूप में सामने आना। जैसे—(क) पराधीन देश का स्वतन्त्र होना। (ख) आपस में मारपीट या लड़ाई-झगड़ा होना।

पद—हो न हो=बहुत कुछ सम्भावना इसी बात की जान पड़ती है। जैसे—हो न हो, यह चोरी उसी नये नौकर ने कराई है।

४. किसी क्रिया या व्यापार का उचित, नियमित या नियत क्रम अथवा रूप में चलना। जारी रहना। जैसे—(क) गाना होता है। (ख) पढ़ाई होती थी। (ग) पानी बरसता है। (घ) हवा चलती है। ५. उपस्थित, वर्तमान या विद्यमान रहना। जैसे—(क) आज-कल वे यहीं हैं। (ख) मेरे पास ऐसी कई पुस्तकें हैं। (ग) हमारे लिए उनका होना और न होना दोनों बराबर हैं। (घ) मैं ही हूँ जो बराबर तुम्हारी रक्षा कर रहा हूँ।

मुहा०—(किसी के) होते-सोते=उपस्थित, वर्तमान या विद्यमान रहने पर। जैसे—तुम्हारे होते-सोते कौन मेरी तरफ आँख उठाकर देख सकता है।

६. उत्पत्ति, जन्म, रचना, सृष्टि आदि के फलस्वरूप दिखाई देना या सामने आना। जैसे—(क) घर में बच्चों का जन्म होना। (ख) फसल पककर (या रसोई बनकर) तैयार होना। (ग) किसी को बुखार (लकवा या हैजा) होना। ७. पहली या पुरानी अवस्था, रूप आदि से बदलकर नई अवस्था, रूप आदि में आना। जैसे—(क) यह लड़का तो अब जवान हो चला है। (ख) उनके सिर के बाल सफेद हो रहे हैं। (ग) चार दिन की बीमारी में तुम क्या से क्या हो गये। ८. किसी क्रिया, बात या वस्तु से कोई परिणाम या फल निकालना। किसी प्रकार की कार्य-सिद्धि दिखाई देना। जैसे—(क) इस उपचार (या औषध) से रोगी को लाभ हो रहा है। (ख) सौ रुपयों से तो यहाँ कुछ भी न होगा। ९. किसी निश्चित और विशिष्ट अवस्था, दशा या स्थिति में आना या पहुँचना। जैसे—(क) विद्यार्थी का पढ़कर पण्डित होना। (ख) स्त्री का गर्भवती (या रजस्वला) होना। (ग) हिन्दू का ईसाई या मुसलमान होना।

मुहा०—(किसी का कुछ) हो बैठना=वास्तविक गुण, योग्यता आदि के अभाव में भी किसी विशष्टि पद या स्थिति में पहुँचना अथवा यह प्रकट करना कि हम कुछ बन गये हैं। (हिन्दी के बन-बैठना, मुहावरे की तरह प्रयुक्त) जैसे—(क) आज-कल तो वह ज्योतिषी या वैद्य

हो बैठा है। (ख) हम तो सब कुछ दे-दिलाकर कंगाल हो बैठे हैं। **(किसी स्त्री का) हो बैठना**=मासिक धर्म से अथवा रजस्वला होना। १०. अवधि, समय आदि का गुजरना या बीतना। जैसे—(क) उसे यहाँ आये अभी दो ही दिन हुए हैं। (ख) उनका देहावसान हुए महीनों हो गये। ११. किसी विशिष्ट कारणवश कहीं जाना अथवा जाकर कुछ समय तक वर्तमान रहना। कहीं जाना और वहाँ कुछ ठहरना या रुकना। जैसे—(क) जब कलकत्ते जाते हो, तब जगन्नाथजी भी होते आना। (ख) वे भले ही पंजाबी हों, पर अब तो वे काशी के हो गये हैं।

मुहा०—(किसी के यहाँ) होते हुए आना (या जाना)=आने या जाने के समय बीच में किसी से मिलते हुए। जैसे—जब चौक जाते हो, तब शर्मा जी के यहाँ से होते या होते हुए आना (या जाना)। **(किसी जगह) से होते हुए**=जाने या आने के समय बीच में कोई स्थान पार करते हुए। जैसे—हम कलकत्ते गये तो थे पटने होते हुए, पर लौटे गया होते हुए। **(किसी जगह के या कहीं के) हो रहना**= कहीं जाने पर अकारण, अनावश्यक रूप से या आवश्यकता से अधिक समय तक ठहरे या रुके रहना। जैसे—यह नौकर जहाँ जाता है, वहीं का हो रहता है। १२. रिश्ते या संबंध के विचार से किसी के साथ संबद्ध रहना। जैसे—रिश्ते में वे हमारे भाई होते हैं।

१३. किसी रूप में किसी का आत्मीय या निकट संबंधी, बनना या रहना। जैसे—जो तुम्हारा हो उससे सहायता माँगो।

पद—होता-सोता=जिसके साथ आत्मीयता का सम्पर्क या निकट का संबंध हो। जैसे—यह सब रोना-धोना जाकर अपने होतों-सोतों को सुनाओ। **(वह) कौन होता है**=(उसका) प्रस्तुत विषय से क्या संबंध है! (उसे) इस बीच में बोलने या हस्तक्षेप करने का क्या अधिकार है! जैसे—वह हमारे घरेलू मामले में बोलनेवाला कौन होता है। (प्रथम पुरुष में इसी का रूप होता है— मैं कौन होता हूँ।)

१४. किसी के साथ आत्मीयता या घनिष्ठता का संबंध स्थापित करके उसके अधीन या वशवर्ती बनना। उदा०—तुम हमारे हो न हो, पर हम तुम्हारे हो चुके।—कोई शायर।

मुहा०—(किसी के) हो जाना या हो रहना=किसी के अधीन या वशवर्ती बन जाना। उदा०—अपना किसी को कर लो, या हो रहो किसी के।—कोई शायर।

१५. किसी प्रकार की अनिष्टकारक, अप्रिय, अवांछनीय और असाधारण घटना, बात या स्थिति का प्रकट या प्रत्यक्ष रूप में सामने आना। उदा०—दिले नादाँ तुझे हुआ क्या है? तेरे इस दर्द की दवा क्या है? —गालिब।

मुहा०—(किसी को कुछ) हो जाना=(क) किसी प्रकार की अनिष्ट-सूचक दशा या स्थिति दिखाई पड़ना। जैसे—(क) जान पड़ता है कि इसे कुछ हो गया है। (ख) न जाने आज-कल तुम्हें क्या हो गया है कि तुम सीधी तरह से बात ही नहीं करते।

विशेष—(क) इस क्रिया के अलग-अलग कालों के हुआ, था, है, हो, होना, होता आदि अनेक विकारी रूप होते हैं, जिनमें लिंग, और वचन के अनुसार कुछ और विकार भी होते हैं। (ख) जब इस क्रिया का कोई रूप अकेला आता है और साधारण क्रिया के रूप में प्रयुक्त होता है, तब वह अपना स्वतंत्र अर्थ रखता है; पर जब इसके दो रूप साथ-साथ आते हैं, तब दूसरा रूप सहकारी क्रिया का काम देता है। (ग) इस क्रिया के था, है, होगा सरीखे कुछ रूपों के संबंध में अनेक वैयाकरणों का मत है कि इनका प्रयोग केवल काल-सूचित करने के लिए होता है। परन्तु वस्तुत: ये रूप उसी दशा में काल-सूचक होते हैं, जब इनका प्रयोग सहकारी क्रिया के रूप में अर्थात् किसी दूसरी क्रिया के साथ होता है। जैसे—वह खाता था; मैं बैठा हूँ—सरीखे प्रयोगों में था और हूँ केवल काल-सूचक हैं। शेष अवस्थाओं में ऊपर बताये हुए अर्थों में से इसका कोई न कोई अर्थ होता ही है। (ग) कुछ अवस्थाओं में यह क्रिया वाक्यों में उद्देश्य और विधेय में संबंध स्थापित करने के लिए केवल कड़ी के रूप में भी प्रयुक्त होती है। जैसे—पुस्तक सुन्दर है। पृथ्वी गोल है। फल मीठा था। आदि। (घ) कुछ अवस्थाओं में इसका प्रयोग 'बनना' की तरह या इस के पर्याय के रूप में भी होता है। जैसे—रसोई बनना और रसोई होना। पर कुछ अवस्थाओं में ऐसा नहीं भी होता है। जैसे—दीवार (या मकान) बनना की जगह दीवार (या मकाऩ) होना नहीं कहा जाता।

होनिहार† —पुं०=होनहार।

होनी—स्त्री० [हिं० होना] १. होने की क्रिया या भाव। जैसे—मुझसे गलती होनी ही थी। २ उत्पत्ति। जन्म। पैदाइश। ३. ऐसी घटना या बात, जिसका घटित होना अनिवार्य, अवश्यंभावी या निश्चित हो। भवितव्यता। जैसे—जो होनी है, वह होकर ही रहेगी। ४. होनहार।

होबार—पुं० [देश०] सोहन चिड़िया का एक भेद। तिल्लर।

†पुं० [?] घोड़ा। (डिं०)

होम—पुं० [सं०√हु (देना-लेना)+मन्] अग्नि में घृत, जौ आदि डालने का धार्मिक कृत्य। हवन।

मुहा०—(कोई चीज) होम करना=(किसी चीज का) इस प्रकार उपयोग या व्यवहार करना कि कुछ भी बाकी न रह जाय। **जी-जान होम करना**=सारी शक्ति लगा देना।

होमक—पुं० [सं०] वह जो होम या हवन करता हो। होता।

होम-काष्ठी—स्त्री० [सं०] यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित करने की फुँकनी। सामिधेनी।

होम-कुंड—पुं० [सं० ष० त०] वह गड्ढा या धातु का बना हुआ गहरा पात्र, जिसमें होम के लिए आग जलाई जाती है।

होमना—स० [सं० होम+हिं० ना (प्रत्य०)] १. देवता के उद्देश्य से अग्नि में कोई चीज डालना। हवन करना। २. पूर्ण रूप से उत्सर्ग या परित्याग करना। बिलकुल छोड़ देना। उदा०—होमति सुख करि कामना, तुमहिं मिलन की लाल।—बिहारी। ३. पूरी तरह से नष्ट या बरबाद करना।

संयो० क्रि०—देना।

होम-धेनु—स्त्री० [सं० चतु० त०] वह गौ जिसका दूध होम-संबंधी कार्यों के लिए दुहा जाता हो।

होमाग्नि—स्त्री० [सं० ष० त०] होम करने के लिए जलाई हुई अग्नि।

होमार्जुनी—स्त्री० [सं०]=होम-धेनु।

होमि—पुं० [सं०] १. अग्नि। आग। २. घृत। घी। ३. जल। पानी।

होमियोपैथ—पुं० [अं०] [भाव० होमियोपैथी] होमियोपैथी नामक चिकित्सा-पद्धति से चिकित्सा करनेवाला व्यक्ति।

होमियोपैथिक—वि० [अं०] १. होमियोपैथी से संवद्ध। २. होमियोपैथ से संवद्ध।

होमियोपैथी—स्त्री० [अं०] रोगों की चिकित्सा की एक पाश्चात्य प्रणाली जो इस सिद्धान्त पर आश्रित है कि जिन औषधों के प्रयोग से किसी स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में किसी विशिष्ट रोग के लक्षणों का आविर्भाव होता है, उन्हीं औषधों की बहुत सूक्ष्म मात्रा से वे रोग दूर भी होते हैं। (एलोपैथी से भिन्न और उसके विपरीत)

होमीय—वि० [सं०] होम-संबंधी। होम का। जैसे—होमीय द्रव्य।

होम्य—वि० [सं० होम+यत्] १ होम-संबंधी। होम का। २. जो होम किया, अर्थात् हवन की अग्नि में डाला जाने को हो।

पुं० घृत। घी।

होर—वि० [अनु०] रुका या ठहरा हुआ।

†स्त्री०=होड़।

होरना†—स०=हेरना (ढूँढ़ना)।

अ० दे० 'होड़ना'।

होरना—पुं० [देश०] साँवक नामक घास, जो पशुओं के चारे के काम आती है।

होरसा—पुं० [सं० घर्ष=घिसना] पत्थर की वह गोल छोटी चौकी, जिस पर चंदन आदि घिसते या रोटी बेलते हैं। चौका।

होरहा—पुं० [सं० होलक] १. चने का छोटा पौधा जो प्रायः जड़ से उखाड़ कर बाजारों में बेचा जाता है और ज़िसमें से चने के ताजे और हरे दाने निकलते हैं। होरा (होला)।

पद—होरहे का दाना=हरा और ताजा चना।

२. चने का ताजा दाना। ३. चने का ताजा और भुना हुआ दाना।

होरा—स्त्री० [सं० यूनानी भाषा से गृहीत] १. एक अहोरात्र का चौबीसवाँ भाग। घंटा। २. किसी राशि या लग्न का आधा अंश। ३. जन्म-कुंडली। ४. जन्म-कुंडली के अनुसार फलाफल-निर्णय की विद्या। जातक-ग्रन्थ।

†पुं०=होला।

†पुं०=होरहा।

होरिल—पुं० [देश०] नवजात बालक। नया पैदा लड़का। उदा०—बाँए कर होरिल को सीस राखि दाहिनें सों गहे कुच प्यारी पय-पान करावति है।—सेनापति।

होरिहार†—पुं०=होलिहार।

होरी†—स्त्री० [?] एक प्रकार की बड़ी नाव, जो जहाजों पर का माल लादने और उतारने के काम में आती है।

स्त्री० [हिं० होली] १. संगीत में, धमार की तरह का एक प्रकार का गीत जो अनेक राग-रागिनियों में गाया जाता है। इसमें अधिकतर श्रीकृष्ण और गोपियों के होली खेलने का वर्णन होता है। २. दे० 'होली'।

होल—पुं० [देश०] पश्चिमी एशिया से आया हुआ एक प्रकार का पौधा जो घोड़ों और चौपायों के चारे के लिए लगाया जाता है।

होलक—पुं० [सं०] आग में भुनी हुई चने, मटर आदि की हरी फलियाँ। होरा। होरहा।

होलकर—पुं० [होल नामक गाँव से] [स्त्री० होलकरी] १. होल गाँव का निवासी। २. मध्ययुगीन भारत में इंदौर नामक देशी राज्य के राजाओं की उपाधि।

होलड़—पुं० [देश०] १. नया उत्पन्न बच्चा। होरिल। २. बच्चे के जन्म के समय गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत।

होला—स्त्री० [सं०] होली का त्योहार।

पुं० सिक्खों की होली, जो होलिका-दाह के दूसरे दिन होती है।

पुं० [सं० होलक] १. आग में भूनी हुई चने, मटर आदि की फलियाँ। २. उक्त भूनी हुई फलियों में से निकाले हुए दाने।

†पुं०=होरहा।

होलाक—पुं० [सं०] आग की गरमी पहुँचाकर पसीना लाने की एक क्रिया। एक प्रकार की स्वेदन-विधि। (आयुर्वेद)

होलाष्टक—पुं० [सं० ष० त०] फाल्गुन शुक्ल अष्टमी से पूर्णिमा तक के ८ दिन, जिनमें यात्रा तथा दूसरे शुभ कार्य प्रायः नहीं किये जाते।

होलिका—स्त्री० [सं०] १. एक प्रसिद्ध राक्षसी। २. होली का त्योहार। ३. होली में जलाई जानेवाली लकड़ियों आदि का ढेर। दे० 'होली'।

होलिकाष्टक—पुं०=होलाष्टक।

होलिहार—पुं० [हिं० होली] १. वह जो घूम-घूम कर धूम-धाम से होली खेलता फिरता हो। २. चारों ओर से मन-माने ढंग से उपद्रव मचानेवाला।

होली—स्त्री० [सं० होलिका] १. हिंदुओं का एक प्रसिद्ध त्योहार, जो फाल्गुन की पूर्णिमा को होता है और जिसमें चौराहों आदि पर आग जलाते, एक दूसरे पर रंग-अबीर डालते और परस्पर हास-परिहास करते हैं।

पद—होली का भड़ुआ=वह बे-ढंगा और भद्दा पुतला, जो होली के दिनों में हास-परिहास के लिए कहीं खड़ा किया जाता अथवा जुलूसों के साथ निकाला जाता है।

मुहा०—होली खेलना=आपस में एक-दूसरे पर अबीर, रंग डालना और हास-परिहास करके होली का त्योहार मनाना।

२. लकड़ियों आदि का वह ढेर, जो उक्त दिन प्रायः रात को एक निश्चित समय पर जलाया जाता है। ३. एक विशेष प्रकार का गीत, जो माघ-फागुन में अनेक धुनों और राग-रागनियों में गाया जाता है। ४. प्रायः अनावश्यक रूप से अथवा व्यर्थ के कामों में बिना सोचे-समझे किया जानेवाला व्यय। जैसे—बात की बात में हजार रुपयों की होली हो गई। ५. किसी उत्सव या समारोह के समय आनंद मनाने के लिए खुली जगह में और सब लोगों के सामने जलाई जानेवाली आग। ६. अनिष्टकारक या त्याज्य वस्तुओं का अंतिम रूप से विनाश करने के लिए सार्वजनिक रूप से उनकी राशियों में जलाई जानेवाली आग। (बानफ़ायर) जैसे—विलायती कपड़ों की होली।

क्रि० प्र०—जलना।

स्त्री० [देश०] एक प्रकार का कँटीला झाड़ या पौधा।

होलू—पुं० [हिं० होला] भुने या उबाले हुए चने। (खोमचेवालों की बोली)

होल्डर—पुं० [अं०] वह चीज जिसका उपयोग किसी दूसरी चीज को पकड़े रहने के लिए होता है। जैसे—कलम का होल्डर, जिसमें निब लगाई जाती है। बिजली के लट्टू का होल्डर, जिसमें बिजली का लट्टू लगाया जाता है।

होल्डाल—पुं० [अं० होल्ड-आल] यात्रा के समय काम आनेवाला एक प्रकार का बहुत लंबा थैला, जिसमें बिस्तर के साथ पहनने के कपड़े आदि भी रख लिए जाते हैं और जो लपेटकर गट्ठर या बंडल के रूप में कर लिया जाता है। बिस्तर-बंद।

होश—पुं० [फा०] १. बुद्धिमत्ता। समझदारी। २. ज्ञान या बोध की वृत्ति जो चेतनता, बुद्धिमत्ता, स्मृति आदि की परिचायक या सूचक है। चेतना। संज्ञा।

पद—होश की दवा करो=अपनी बुद्धि ठिकाने लाओ। अच्छी तरह समझ-बूझकर काम करो। **होश-हवास**=व्यक्ति या शरीर की ऐसी चेतनावस्था, जिसमें यह सब काम ठीक तरह से कर सकता और सब बातें सोच-समझ सकता है।

मुहा०—होश उड़ जाना=अचानक कोई भीषण, विकट या विलक्षण स्थिति उत्पन्न होने पर कुछ समय के लिए किंकर्तव्य-विमूढ़ हो जाना या सुध-बुध गँवा बैठना। **होश करना**=ऐसी स्थिति में आना कि चेतना और बुद्धि ठीक तरह से काम करने लगे। **होश ठिकाने होना**=(क) चित्त स्वस्थ होना। चित्त की अधीरता या व्याकुलता मिटना। (ख) भ्रांति या मोह दूर होने के फल-स्वरूप बुद्धि ठीक होना। (ग) दंड, फल आदि भोगने पर अभिमान या घमंड दूर होना। **होश दंग होना**=दे० ऊपर 'होश उड़ जाना'। **होश पकड़ना**=(क) दे० ऊपर 'होश करना'। (ख) दे० नीचे 'होश सँभालना'। **होश में आना**=अज्ञान, बे-सुध या संज्ञा-शून्य हो जाने के उपरांत फिर से चैतन्य होना। बेहोशी दूर होने पर सुध में आना। **होश सँभालना**=बाल्यावस्था समाप्त होने पर ऐसी अवस्था में आना कि धीरे-धीरे सब बातें समझ में आने लगें। वयस्कता का आरंभ होना। ३. याद। स्मृति।

मुहा०—होश दिलाना =याद या स्मरण कराना।

होशमंद—वि० [फा०] [भाव० होशमंदी] जिसे होश अर्थात् अच्छी समझ हो। समझदार। होशियार।

होशियार—वि० [अ० होशयार] १. जिसके होश-हवास ठीक हों। २. सावधान। ३. चतुर। चालाक। ४. कुशल। दक्ष। ५. वयस्क। जैसे—अब तो उनका लड़का भी होशियार हो चला है।

विशेष—चालाक और होशियार में मौलिक अंतर यह है कि 'चालाक' व्यक्ति तो प्रायः कपट, छल अथवा कौशल पूर्ण युक्ति से भी काम लेता है। पर 'होशियार' में केवल बुद्धिमत्ता और सब प्रकार की सचेतता का भाव ही प्रधान है, कौशल आदि का नहीं।

होशियारी—स्त्री० [फा०] १. होशियार होने की अवस्था गुण या भाव। कौशल। दक्षता। २. चतुराई। चालाकी। ३. सावधानता।

होस†—पुं० १. =होश। २.=हौस।

होस्टल—पुं० [देश०] एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक जगण और एक गुरु होता है। सुधि।

होहा—पुं० [अं०]=छात्रावास।

हौं†—सर्व० [सं० अहम्] ब्रजभाषा का उत्तम पुरुष एक वचन सर्वनाम। मैं।

†अ० हिं० 'होना' क्रिया के वर्तमान-कालिक उत्तम पुरुष एक वचन 'हूँ' का स्थानिक रूप।

हौंकना— अ० [हिं० हुंकार] १. गरजना। हुंकार करना। २. हाँफना।

†स०=धौंकना।

हौंस—स्त्री० [अ० हविस] कामना। लालसा। उदा०—रात दिवस हौंस रहति, मान न बिनु ठहराय।—बिहारी।

हौ—अ० [हिं० होना] १. हिन्दी की 'होना' क्रिया का मध्यम पुरुष एक वचन, वर्तमान कालिक रूप। हो। २. 'होना' क्रिया का भूतकालिक रूप। था।

†अव्य०=हाँ। (स्वीकृति सूचक)

† अ०=है। (पूरब)

हौआ—स्त्री० [अ० हौवा] पैगम्बरी मतों के अनुसार सब से पहली स्त्री जो पृथ्वी पर आदम के साथ उत्पन्न हुई थी और जो मनुष्य-जाति की आदि माता मानी जाती है। (ईव)

†पुं० [हौ हौ से अनु०] एक प्रकार का कल्पित और भीषण या विकराल जन्तु या प्राणी, जिसके नाम का उपयोग किसी को बहुत अधिक भयभीत करने के लिए किया जाता है। (बॉगी)

हौका—पुं० [हिं० हाय]=हाय।

हौज—पुं० [अ० हौज़] १. पानी जमा रहने का चहबच्चा। कुंड। २. मिट्टी आदि का बना हुआ नाँद नामक अर्ध-गोलाकार बड़ा पात्र।

हौजा—पुं० [फा० हौज़] हाथी का हौदा।

हौताशन—वि० [सं०] अग्नि-संबंधी। हुताशन संबंधी। अग्नि का।

हौताशनि—पुं० [सं०] १. स्कंद। २. नील नामक बंदर।

हौतृक—वि० [सं०] होता से संबद्ध।

पुं० होता का कार्य या पद।

हौत्र—पुं० [सं०] =होता।

हौत्रिक—वि० [सं० होतृ+ठक्-इक] होता के कार्य से संबंध रखनेवाला।

हौद—पुं०=हौज।

हौदा—पुं० [फा० हौजः] हाथी की पीठ पर रखकर कसा जानेवाला आसन जिसके चारों ओर रोक रहती है, और पीठ टिकाने के लिए गद्दी रहती है।

क्रि० प्र०—कसना।

पुं० [हिं० हौद] [स्त्री० अल्पा० हौदी] मिट्टी आदि का नाँद के आकार का गोलाकार बड़ा पात्र। हौज।

हौमीय—वि० [सं०]=होमीय।

हौर—पुं० [अ० हौल] १. डर। भय। २. डरावनी चीज या बात। भयानक वस्तु। उदा०—सुत के भएँ बधाई पाई, लोगनि देखत हौर।—सूर।

हौरा†—पुं० [अनु० हाव, हाव] शोर-गुल। हल्ला। कोलाहल।

क्रि० प्र०—करना।—मचना।—मचाना।—होना।

हौरे—अव्य०=हौले।

हौल—पुं०[अ०] डर। भय।

क्रि० प्र०—बैठना।—समाना।

हौल-जौल—स्त्री०[अ० हौल+जौल अनु०] १. जल्दी। शीघ्रता। २. हड़बड़ी।

हौलदार†—पुं०=हवलदार।

हौलदिल—पुं० [फा०] [वि० हौलदिला] १. दिल में बैठा हुआ भय। २. उक्त भय के उग्र होने पर दिल में होनेवाली घबराहट। ३. दिल की धड़कन। हृदय-कंप। ४. दिल घबराने का रोग।

हौल-दिला—वि० [फा० हौलदिल] [स्त्री० हौल-दिली] ऐसे दुर्बल हृदयवाला जिसके मन में जल्दी भय समा जाता हो। जो जल्दी डरकर घबरा जाता हो।

हौल-दिली—स्त्री० [फा०] यशब नामक पत्थर का वह चिपटा छोटा टुकड़ा, जो प्रायः डोरे में पिरोकर गले में पहना जाता है। कहते हैं कि इससे कलेजे की धड़कन आदि रोग दूर होते हैं।

हौलनाक—वि०[अ०+फा०] दिल में भय बैठानेवाला। अत्यन्त भयानक।

हौला-जौली—स्त्री०=हौल-जौल।

हौली—स्त्री०[सं० हाला=मद्य] १. वह स्थान, जहाँ मद्य उतरता और बिकता है। आबकारी। २. वह दूकान, जहाँ देशी शराब बिकती हो और लोग बैठकर पीते हों।

हौलू†—वि० [हिं० हौल]=हौल-दिला।

हौले—अव्य० [हिं० हरुआ] १. धीरे। आहिस्ता। २. मंद गति से। जैसे—हौले-हौले चलना।

पद—हौले हौले=धीरे-धीरे। आहिस्ते से।

हौवा—स्त्री०, पुं०=हौआ।

हौस—स्त्री०[अ० हवस] १. मन में बैठी हुई किसी बात की गहरी चाह या प्रबल लालसा, जिसकी पूर्ति की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा की जाती हो। २. मन की उमंग या तरंग। ३. किसी काम, चीज या बात के प्रति होनेवाला उत्साह। हौसला।

क्रि० प्र०—निकालना।—पूरी करना।—मिटाना।

हौसला—पुं०[अ० हौसलः] १. पक्षियों के पेट का वह ऊपरी भाग, जिसमें खाये हुए दाने आदि एकत्र होते हैं। पोटा। २. उक्त के आधार पर, मनुष्य का ऐसा साहस या हिम्मत, जिसके फलस्वरूप वह किसी प्रकार की प्रसन्नता या संतोष प्राप्त करना चाहता है। जैसे—उसने बड़े हौसले से अपने बेटे का ब्याह किया है।

मुहा०—(मन का) हौसला निकालना=जिस काम या बात के लिए मन में बहुत उमंग या चाह हो, उसे पूरी कर लेना। **हौसला पस्त होना**=प्रयत्न करके विफल होने पर मन का उत्साह नष्ट हो जाना।

३. साहस। हिम्मत। जैसे—वह बहुत हौसलेवाला आदमी है।

मुहा०—(किसी का) हौसला बढ़ाना=उत्तेजित और प्रोत्साहित करना। जैसे—तुम्हीं ने तो उसका हौसला बढ़ाकर उसे इस रोजगार में लगाया था।

हौसलामंद—वि०[फा०] १. लालसा। रखनेवाला। साहसी। २. उदार।

ह्याँ—अव्य०=यहाँ।

ह्याउ—पुं०=हियाव।

ह्यो—पुं०='हिया' (हृदय)।

अ०=था। (ब्रज)

ह्रद—पुं०[सं० √ह्रद+अच् नि०] १. बड़ा तालाब। झील। २. जलाशय। सरोवर। ३. ध्वनि। नाद। ४. किरण। ५. मेढ़ा नामक पशु।

ह्रदिनी—स्त्री० [सं० ह्रद+इनि—ङीप्] नदी।

ह्रसित—भू० कृ०[सं०] जिसका ह्रास हुआ हो या किया गया हो।

ह्रसिमा (मन्)—स्त्री०[सं०] ह्रस्वता

ह्रस्व—वि० [सं०√ह्रस्+वन] [भाव० ह्रस्वता] १.छोटे आकार-प्रकार का। जो दीर्घ न हो। २. (स्वर) जो खींचकर न बोला जाता हो। (शार्ट)

पुं० व्याकरण में, स्वरों के दो भेदों में से एक, जिसमें ध्वनि को अधिक खींचकर नहीं बोला जाता। 'दीर्घ' से भिन्न। (अ, इ, उ और ऋ स्वर ह्रस्व हैं)।

ह्रस्वक—वि०[सं०] बहुत छोटा।

ह्रस्वजात रोग—पुं० [सं०] एक प्रकार का रोग जिसमें दिन के समय वस्तुएँ बहुत छोटी दिखाई पड़ती हैं।

ह्रस्वता—स्त्री० [सं०] ह्रस्व+तल्—टाप्] ह्रस्व होने की अवस्था, गुण या भाव।

ह्रस्व-प्रवासी—पुं०[सं० ह्रस्व-प्र√वस्(वसना)+णिनि] थोड़े समय के लिए कहीं बाहर या विदेश गया हुआ व्यक्ति। वह जो कुछ ही काल के लिए परदेश गया हो। (कौ०)

ह्रस्वांग—वि० [सं० ब० स०] १. छोटे अंगोंवाला। २. ठिगना। नाटा। ३. बौना। वामन।

पुं० जीवक नामक पौधा।

ह्रस्वाग्नि—पुं० [सं० पंच० त०] आक का पौधा। मदार। अर्क।

ह्राद—पुं०[सं० √ह्राद् (शब्द करना)+घञ्] १. ध्वनि। शब्द। आवाज। २. बादल की गरज। ३. हिरण्यकशिपु का एक पुत्र।

ह्रादिनी—स्त्री०[सं० ह्राद+णिनि—ङीप्] १. नदी। २. एक प्राचीन नदी। ३. बिजली। विद्युत्।

ह्रादी—वि० [सं० ह्रादिन्] [स्त्री० ह्रादिनी] १. शब्द करनेवाला। २. गरजनेवाला।

ह्रास—पुं०[सं० √ह्रास् (कम होना)+घञ्] १. बल, शक्ति, स्मृति आदि का घटना, क्षीण होना या न रह जाना। (डिक्लाइन) जैसे—(क) चेतना या स्मृति का ह्रास होना। (ख) मुगल-शासन का ह्रास होना। २. कमी। घटती। (डिक्रीमेन्ट) ३. किसी प्रकार घिसने, छीजने, नष्ट होने या व्यर्थ जाने की क्रिया या भाव। ४. आवाज। ध्वनि।

ह्रासक—वि०[सं०] ह्रास या कमी करनेवाला।

ह्रासन—पुं० [सं०] ह्रास अर्थात् कमी करना। घटाना।

ह्रासनीय—वि०[सं०√ह्रास् (कम होना)+अनीयर] जिसका ह्रास हो सकता या किया जाने को हो।

ह्री—स्त्री०[सं० ह्री+क्विप्] १. लज्जा। व्रीडा। शर्म। हया। २. दक्ष की एक कन्या जो धर्म को ब्याही थी। ३. जैनों की एक देवी।

ह्रीका—स्त्री०[सं०√ह्री+कक्] लज्जाशीलता। हया।

ह्रीण—वि०[सं०] १. लज्जा से युक्त। जैसे—ह्रीणमुख। ३. लज्जित। शरमिन्दा।

ह्रीत—भू० कृ०[सं०] [भाव० ह्रीति] १. लजाया हुआ। २. लाज से भरा हुआ।

ह्रीति—स्त्री० [सं० ह्री+क्तिन्] १. लजाये या लाज से भरे हुए होने की अवस्था या भाव। २. लज्जा। लाज।

ह्रीमान्—वि०[सं० ह्रीमत्] [स्त्री० ह्रीमती] लज्जाशील। हयादार। शर्मदार।

पुं० एक विश्वेदेवा।

ह्री-मूढ़—वि०[सं० तृ० त०] जो बहुत लज्जित होने के कारण कुछ भी कर या कह न सकता हो। जो लज्जा के कारण मूढ़ हो गया हो।

ह्रीवेर—पुं०[सं० ब० स०] सुगंधवाला।

ह्रेषा—स्त्री०[सं०] (घोड़े की) हिनहिनाहट।

ह्रेषी (षिन्)—वि०[सं०] हिनहिनानेवाला।

ह्लाद—पुं० [सं०]=आह्लाद (प्रसन्नता)। उदा०—बस रहा पृथ्वी पर स्वर्गिक स्पर्श ह्लाद सा।—पन्त।

ह्लादक—वि०[सं०] प्रसन्न करनेवाला। आह्लादक।

ह्लादन—पुं०[सं०] [वि० ह्लादनीय भू० कृ० ह्लादित] आनंदित या प्रसन्न करना। खुश करना।

ह्लादिनी—स्त्री०[सं० √ह्लाद+णिनि—ङीप्] १. बिजली। वज्र। २. एक देवी या शक्ति का नाम। ३. ह्लादिनी नदी का दूसरा नाम। वि०[सं०] 'ह्लादी' का स्त्री०। उदा०—शशि असि की प्रेयसी स्मृति, जगी हृदयह्लादिनी।—पन्त।

ह्लादी (दिन्)—वि०[सं०] [स्त्री० ह्लादिनी] १. प्रसन्न करने, रहने या होनेवाला। २. शब्द करनेवाला।

ह्वाँ†—अव्य०=वहाँ।

ह्वान—पुं०[सं०]=आह्वान।

ह्विस्की—स्त्री० [अं० ह्विस्की (शराब)] एक प्रकार की प्रसिद्ध विलायती शराब।

ह्वेल—स्त्री०[अं०] एक प्रकार का प्रसिद्ध स्तनपायी जन्तु जो बहुत बड़े आकार का होता है और जिसकी अनेक जातियाँ या भेद होते हैं।

——०——

परिशिष्ट (क)

छूटे हुए शब्द और अर्थ

अ

अँकना†—अ०[हिं० आँकना का अ०] १. आँका जाना। कूता जाना। २. अंकित या चिह्नित किया जाना। अंकित होना।

अंकास्य—पुं०[सं०] नाटक में अर्थोपक्षेपक का एक भेद जिसमें किसी अंक की समाप्ति पर उसी अंक के पात्रों द्वारा किसी छूटी हुई बात की सूचना दी जाती है। कुछ विद्वानों ने इसे अंकावतार के ही अंतर्गत माना है।

अंकुश-कृमि—पुं०[सं०] मनुष्य की आँतों से उत्पन्न होनेवाले एक प्रकार के कीड़े जिनके मुँह के पास अंकुश या कँटिया की तरह का एक अवयव होता है। ये मनुष्य का रक्त चूसते और कई प्रकार के रोग उत्पन्न करते हैं। (हुक-वर्म)

अंगुली छाप—स्त्री०=उँगली छाप।

अंगुश्त—स्त्री०[सं० अंगुष्ठ से फा०] हाथ की उँगली।

अँजू†—पुं०[सं० अश्रु] आँसू।

अंडाणु—पुं०[सं०] स्त्री के गर्भाशय का वह अणु जो पुरुष के शुक्राणु से मिलकर स्त्रियों के गर्भ-धारण का कारण होता है।

अंतःकालीन—वि० [सं० अंतःकाल, मध्य० स०+ख-ईन] दो काल-विभागों या समयों के बीच में पड़नेवाले काल या समय से संबंध रखने या उसमें होनेवाला । (प्रॉविजनल)

अंतःप्रज्ञा—स्त्री०[सं०] प्राणियों के अंतःकरण में रहनेवाली वह शक्ति जिसके द्वारा उन्हें किसी विषय में बिना कुछ सोचे-विचारे अपने-आप और तत्काल ज्ञान हो जाता है। (इन्टच्यूशन)

अंतःसत्ता—स्त्री०[सं०] शरीर के अन्दर की वह सत्ता, जिसमें आंतर प्राण, आंतर मन और आंतर शरीर के साथ चैत्य पुरुष विद्यमान रहता है। (इनर-बीइंग)

अंतःस्राव—पुं०[सं०] १. आधुनिक आयु-विज्ञान में, शरीर के कुछ अंगों की विशिष्ट ग्रंथियों में से कई प्रकार के रासायनिक तरल पदार्थ या रस निकलने की क्रिया जिससे दूसरे अंगों के पोषण तथा अनेक प्रकार की शारीरिक प्रक्रियाओं में सहायता मिलती है। २. उक्त प्रकार से निकलनेवाला द्रव या रस। (हॉर्मोन)

अंतरण—पुं० [सं०] [भू० कृ० अंतरित] १. अंतर दिखाने या रखने के लिए पदार्थों के बीच में कुछ जगह छोड़ना। (स्पेसिंग)

अंतरणुक—वि०[सं० कर्म० स०] (तत्त्व) जो दो या अधिक पदार्थों के अणुओं में समान रूप से पाया जाता हो। (इन्टर-मोलक्यूलर)

अंतरपणन—पुं०[सं०] आधुनिक वाणिज्य क्षेत्र में, विदेशी विनिमय से सम्बद्ध वस्तुएँ और लेन-देन के कागज-पत्र, हुँडियाँ आदि सस्ते बाजार में खरीदने और तेजी वाले बाजारों में बेचने की क्रिया या भाव। (आर्बिट्रेज)

अंतरा—पुं०

विशेषशास्त्रीय दृष्टि से यह गति के चार अंगों या अंशों में दूसरा अंग या अंश माना जाता है। इसके स्वर मध्य और तार सप्तकों के होते हैं। शेष तीन अंग या अंश स्थायी, संचारी और आभोग कहलाते हैं।

अंतरात्मा (त्मन्)—स्त्री० १. वह दिव्य सत्ता जो जीव-मात्र के शरीर के अन्दर उसके हृदय-केन्द्र में बीज रूप में वर्त्तमान रहती है। जीवात्मा। (सोल)

अंतराबंध—पुं०[सं०] कई प्रकार के मानसिक रोगों का एक वर्ग जिसमें रोगी या तो आस-पास की परिस्थितियों से उदासीन हो जाता है, या उसके विचार भ्रमात्मक हो जाते हैं, या वह निश्चेष्ट और मूढ़ हो जाता है, या उग्र तथा प्रचंड रूप से असाधारण आचरण करने लगता है। (स्किजोफ़ीनिया)

अंतरावर्त्त—पुं०[सं० अंतर+आवर्त्त] किसी पर-राष्ट्र का वह भू-खंड जो किसी कथित या विशिष्ट देश के भीतरी भाग में पड़ता हो और प्रायः चारों ओर उसकी सीमाओं से घिरा हो। 'बहिरावर्त्त' का विपर्याय। (एन्क्लेव) जैसे—भारत की पूर्वी सीमा पर पूर्वी पाकिस्तान के बहुत से अंतरावर्त हैं।

अंतरादेश—पुं०[सं०]=अंतरावर्त।

अंतरिक्ष—पुं० १. पृथ्वी अथवा अन्य ग्रहों को आवृत्त करनेवाले वातावरण के उपरांत और आगे का सारा अनंत विस्तार। आकाश से और आगे और ऊपर का वह सारा विस्तार जो समस्त-ब्रह्मांड में फैला है। (स्पेस)

अंतरिक्ष-किरण—स्त्री० [सं०]=ब्रह्मांड-किरण।

अंतरिक्ष-यान—पुं०[सं०] एक प्रकार का आधुनिक यान जो पृथ्वी के वातावरण से बाहर निकलकर सैकड़ों मील की उँचाई पर अंतरिक्ष अथवा ऊपरी आकाश में भ्रमण करता है और जिसमें कुछ यात्री तथा अनेक प्रकार के यंत्र भी रहते हैं। (कॉस्मोनॉट, स्पेसशिप)

अंतर्ग्रही—वि०[सं०] आकाशस्थ ग्रहों आदि के पारस्परिक दूरी, योजना आदि से संबंध रखनेवाला। ग्रहों आदि को पारस्परिक संबंध के विचार से होनेवाला । (इंटर-स्टेलर) जैसे—अंतर्ग्रही अवकाश; अंतर्ग्रही उड़ान या यात्रा।

स्त्री०=अंतर्गृही।

अंतर्जातीय—वि० [सं० कर्म० स०+छ–ईय] दो या अधिक जातियों से पारस्परिक संबंध रखनेवाला अथवा उनमें होने या पाया जानेवाला। (इन्टर-कास्ट) जैसे—अंतर्जातीय विवाह।

अंतर्दर्शन—पुं० [सं०] १. अंदर की ओर देखना। २. दार्शनिक क्षेत्र में, अपनी आंतरिक या मानसिक प्रक्रियाओं और स्थितियों के सुधार के लिएं उनका चिंतन, मनन और विवेचन करना। आत्म-निरीक्षण। (इन्ट्रॉस्पेक्शन)

अंतर्दृष्टि—स्त्री० २. ऐसी दृष्टि या समझ जिसमें किसी चीज या बात का भीतरी तत्त्व या रहस्य जाना जाय। (इनसाइट)

अंतर्धातुक—वि० [सं० ब० स० कप्] (तत्त्व) जो दो या अधिक धातुओं में समान रूप से पाया जाता हो। (इन्टर-मेटैलिक)

अंतर्ध्वंस—पुं० [सं०] जान-बूझकर और बुरे उद्देश्य से कोई चलता हुआ काम या बनी हुई चीज नष्ट करना या बिगाड़ना। तोड़-फोड़। (सैबोटेज) जैसे—कुछ विद्रोहियों ने गुप्त रूप से अस्त्र-शस्त्र बनाने के कारखानों में अंतर्ध्वंस आरम्भ कर दिया था।

अंतर्प्रांतीय—वि० [सं० कर्म० स० छ-ईय] किसी देश या राज्य के दो या अधिक प्रांतों के पारस्परिक व्यवहार से सम्बन्ध रखने या उनमें होनेवाला। (इन्टर-प्राविन्शल)

अंतर्भावना—स्त्री० २. मनोविज्ञान में चित्त की वह प्रवृत्ति, जिससे कोई चीज देखने या कोई बात सुनने पर उसकी गति, गुण, विस्तार में मनुष्य 'स्व' को लीन कर देता और तब उनका अनुभव या ज्ञान प्राप्त करता है। (इन्फ़ीलिंग)

अंतर्मार्ग—पुं० [सं०] संगीत में, वह मधुर विचित्रता और सौंदर्य, जो किसी गीत के बीच-बीच में विभिन्न स्वरों के पारस्परिक संयोग के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। बोल-चाल में इसी को 'बोल बनाना' कहते हैं।

अंतर्राष्ट्रवाद—पुं० [सं०] वह वाद या सिद्धांत, जिसके अनुसार यह माना जाता है कि सब देशों या राष्ट्रों को समानता के आधार पर और बिना अपने हितों का त्याग किये परस्पर मित्रतापूर्वक रहना और व्यवहार तथा सहयोग करना चाहिए। (इन्टरनेशनलिज़्म)

अंतर्राष्ट्रीय—वि० [सं० अंतर्राष्ट्र मध्य० स०+छ-ईय] १. अपने राष्ट्र की भीतरी बातों से संबंध रखनेवाला। २. अपने राष्ट्र में होनेवाला। ३. आज-कल मुख्य रूप से, दो या अधिक राष्ट्रों के पारस्परिक व्यवहार से संबंध रखने या उनमें होनेवाला। सार्वराष्ट्रीय। (इन्टरनेशनल)

अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय—पुं० [सं०] संयुक्त राष्ट्र-संघ द्वारा स्थापित एक सर्वोच्च न्यायालय जिसमें सदस्य राष्ट्रों के आपसी झगड़ों का विचार या निर्णय होता है। इसकी स्थापना सन् १९४६ में हेग नगर में हुई थी।

अंतर्राष्ट्रीय विधि—स्त्री० [सं०] ऐसी विधि या कानून, जिसमें वे नियम रहते हैं जिनका पालन करना सभी राष्ट्रों के लिए आवश्यक होता है। (इन्टरनेशनल लॉ)

अंतर्वर्ग—पुं० [सं०]=उपगण।

अंतर्वलन—पुं० [सं०] किसी चीज का चक्राकार घूमते हुए अन्दर की ओर मुड़ना। (इन्वोल्यूशन)

अंतर्हित—भू० कृ० २. किसी के अंदर छिपा या दबा हुआ। निगूढ़। निहित। (लेटेन्ट)

अंतश्चेतना—स्त्री० [सं०] अंतःकरण के भीतरी भाग में रहनेवाली चेतना जो हमें सद् और असद् का ज्ञान कराती है। विवेक। (इनर-कान्शेन्स)

अंतस्थ चेतना—स्त्री० [सं०] अंतस्थ सत्ता में रहनेवाली चेतना। (अरविंद-दर्शन के अनुसार इस चेतना की जाग्रति या प्राप्ति होने पर विश्व-शक्तियों की सभी अदृश्य क्रियाएँ और गतियाँ जानी जा सकती हैं।)

अंतस्थ राज्य—पुं० [सं०] दो बड़े राज्यों के बीच में या उनकी सीमाओं पर स्थित होनेवाला वह छोटा राज्य, जो उन दोनों राज्यों में संघर्ष के अवसर न आने देता हो। (बफर स्टेट)

अंतस्थ सत्ता—स्त्री० [सं०] मनुष्य की स्थूल सत्ता के पीछे विद्यमान रहनेवाली वह सूक्ष्म सत्ता जो ऊपर की ओर उच्चतर अतिचेतन स्तरों की ओर भी और नीचे अवचेतन स्तरों की ओर भी खुली रहती है और जिसमें एक बृहत्तर मन और प्राण तथा स्वच्छ सूक्ष्म शरीर रहता है। (सब्लिमिनल बीइंग)

अंतस्था—स्त्री० [सं०]=मज्जका।

अंतिम—वि० ३. (निश्चय या विचार) जो पूरी तरह से किया जा चुका हो और जिसमें सहसा कोई परिवर्तन या फेर-बदल न हो सकता हो। (फ़ाइनल)

अंत्य लेख—पुं०[सं०]=उपसंहार।

अंत्याधार—पुं० [सं०] १. अंतिम छोर या सिरे पर रहनेवाला वह आधार जिस पर कोई भारी चीज टिकी रहती हो। २. आधुनिक वास्तु-रचना में, मेहराबों आदि के नीचे के वे खंभे या स्थूल संरचनाएँ जो छतों, पुलों आदि का सारा भार सँभाले रहती हैं। (एबटमेन्ट)

अंध-विश्वास—पुं० किसी अज्ञात, कल्पित या रहस्यपूर्ण बात या विषय के संबंध में अथवा किसी मत या सिद्धांत के प्रति होनेवाला ऐसा दृढ़ विश्वास, जो किसी प्रकार का तर्क-वितर्क मानने या सुनने न दे। बिना सोचे-समझे किया जानेवाला पक्का विश्वास। (सुपर्स्टिशन) जैसे—(क) प्रेत या देवी-देवताओं पर अथवा पौराणिक कथाओं या परंपरागत रीति-रवाजों पर होनेवाला अंध-विश्वास। (ख) किसी के आदेश, कथन या मत पर होनेवाला अंध-विश्वास।

विशेष—इसका मूल मानव जाति की उस आरंभिक अवस्था से माना जाता है, जिसमें वास्तविक ज्ञान का बहुत-कुछ अभाव न था; और लोग भयवश अदृश्य शक्तियों पर ही विश्वास रखते थे।

अंधी घाटी—स्त्री० [हिं०] भूगोल में, ऐसी घाटी जहाँ पहुँचकर किसी नदी का जल जमीन के अन्दर समाने लगता है; और पृथ्वी तल पर उसके प्रवाह का अन्त हो जाता है। (ब्लाइंड वैली)

अंब्रपाली—स्त्री० [सं० आम्रपाली] वैशाली की एक प्रसिद्ध लिच्छवि वेश्या, जो गौतम बुद्ध के उपदेश से उनकी शिष्या बन गई थी।

अंबिया—पुं० [सं० नबी का बहु०] नबी लोग या ईश्वर के दूत, जिन्हें वह समय-समय पर इस संसार में लोकोपकार के लिए भेजता रहता है।

अंश-विभूति—स्त्री० [सं०] अरविंद दर्शन के अनुसार ईश्वरीय चेतना और शक्ति का वह अंश जो किसी विशिष्ट कार्य के लिए इस लोक में प्रक्षिप्त होता है और वह कार्य पूरा करके फिर अपने मूल में जा मिलता है।

विशेष—कहा जाता है कि इस लोक में आने पर भी वह अपने मूल

से संबद्ध रहती और आवश्यकता होने पर अवतरित हो सकती या यहाँ आ सकती है। (एमैनेशन)

अंश-शोधन—पुं० [सं०] [भू० कृ० अंश-शोधित] किसी वस्तु के अंशों का विभाजन करके उनके मान अंकित या स्थिर करना। अंशन। (कैलेब्रेशन)

अंशांश—पुं० [सं०] अंशों के रूप में मान सूचित करनेवाले यंत्रों में अंशसूचक अंक। (डिग्री)

अकल-खुरी—स्त्री० [हिं० अकलखुरा] अकल-खुरे होने की अवस्था या भाव। परम स्वार्थपरता। उदा०—डर यही है कि मेरे पीछे यह निगोड़ी अकल-खुरी न रहे।—इन्शा।

अकलुष इस्पात—पुं० [सं०+हिं०] एक प्रकार का साफ किया हुआ इस्पात, जो कुछ और धातुओं के मिश्रण से ऐसा हो जाता है कि वातावरण के प्रभाव से दागी नहीं होने पाता और जंग या मोरचे से बचा रहता है। (स्टेनलेस स्टील)

अकल्यता—स्त्री० [सं०] १. बेचैनी। २. अस्वस्थता। बीमारी।

अकाथ—वि० [सं० अकार्यार्थ] जिसका कोई शुभ परिणाम या फल न हो।। अकारथ। निरर्थक। व्यर्थ। उदा०—हरि इच्छा सबते प्रबल, विक्रम सकल अकाथ।—भिखारीदास। (ख) करम, धरम, तीरथ बिना राधन सकल अकाथ।—सूर।

क्रि० वि० बिना किसी अर्थ के। व्यर्थ।

†वि०=अकथ्य।

अकादमिक—वि० [अं० एकैडेमिक] १. किसी विषय के शास्त्रीय अध्ययन, विवेचन आदि से संबंध रखनेवाला। २. अपने उक्त प्रकार के स्वरूप के कारण जो केवल तर्क, विवेचन आदि के क्षेत्र का ही रह गया हो, व्यवहार के क्षेत्र में न आ सकता हो। (एकैडेमिक)

अकाल-प्रसूत—वि० [सं०] १. जो अकाल-प्रसव के फलस्वरूप उत्पन्न हुआ हो। २. जो अपने उचित या नियत समय से पहले ही उत्पन्न या प्रकट हुआ हो।

अकृत—वि० ३. जो किये जा चुकने पर भी न किये के समान कर दिया गया हो। (नल्)

अकृतीकरण—पुं० [सं०] १. जो काम किया जा चुका हो उसे ऐसा रूप देना कि वह न किये हुए के समान हो जाय। २. दे० 'निर्विधायन'।

अकोला—पुं० [देश०] एक प्रकार का मझोला पेड़, जिसके पत्ते प्रति वर्ष शिशिर ऋतु में झड़ जाते हैं।

†पुं०=अंकोला।

अक्काद—पुं० [सामी] ईरान का एक प्राचीन नगर और उसके आस-पास का प्रदेश जो दजला और फरात नदियों के बीच में था। बेबिलोनिया के प्राचीन नगर इसी प्रदेश में थे। ईसा से ढाई-तीन हजार वर्ष पहले यहाँ के राजाओं ने बहुत बड़ा साम्राज्य स्थापित किया था।

अक्रमातिशयोक्ति—स्त्री० साहित्य में, अतिशयोक्ति अलंकार का एक प्रकार जिसमें कारण और कार्य के एक साथ ही घटित होने का उल्लेख होता है। यथा—दोऊ बातें छुटीं गजराज की बराबर ही, पाँव ग्राह मुख तें प्रथा निज मुख तें।—मतिराम। (कुछ आचार्यों ने इसे कारणातिशयोक्ति का ही एक प्रकार माना है।)

अक्रियावाद—पुं० बौद्ध-काल का एक दार्शनिक मतवाद जिसमें यह माना जाता था कि न तो कोई कर्म या क्रिया है और न कोई प्रयत्न। इसलिए मनुष्य के कार्यों का कोई अच्छा या बुरा फल नहीं होता। जैन और बौद्ध दार्शनिकों ने इस मतवाद का खंडन किया था।

अक्षय वट—पुं० १. पुराणानुसार वह वट वृक्ष जो प्रलयवाली बाढ़ के बाद भी बचा रहता है; और जिसके एक एक पत्ते पर ईश्वर छोटे से बालक के रूप में बैठकर सृष्टि का उलट-फेर देखते-रहते हैं।

अक्षर-धाम (न्)—पुं० १. शुद्धाद्वैत मत के अनुसार पूर्ण पुरुषोत्तम का धाम या निवास-स्थान। गो-लोक। २. ब्रह्म-लोक।

अक्षि-साक्षी—पुं० [सं०]=दर्शन-साक्षी।

अख्तर—पुं० [सं० नक्षत्र से फा०] आकाश का नक्षत्र या तारा। सितारा।

अगूढ़-व्यंग्य—पुं० [सं०] गुणीभूत व्यंग्य का एक भेद, जिसमें व्यंग्यार्थ बहुत ही स्पष्ट तथा वाच्यार्थ के बहुत कुछ समान होता है और सरलता से समझ में आ जाता है। (साहित्य)

अगूढ़-व्यंग्या लक्षणा—स्त्री० [सं०] ऐसी लक्षणा, जो अगूढ़ व्यंग्य (देखें) से युक्त हो। (साहित्य)

अगोचरी—स्त्री० [सं०] हठयोग में, साधना की एक मुद्रा, जिसका स्थान कान में माना गया है, और जिसमें बाह्य शब्दों का सुनना बंद करके मन को उन्मनी की ओर प्रवृत्त करने का अभ्यास किया जाता है।

अग्नि—स्त्री० १. पंच-तत्त्वों में से तेज नामक तत्त्व का वह गोचर या दृश्य रूप, जो सब चीजों को जलाता और ताप तथा प्रकाश उत्पन्न करता है। आग। (फायर)

विशेष—(क) संसार के अनेक धर्मों में और विशेषतः वैदिक धर्म में इसे देवता और उपास्य माना गया है। यूनान और रोम में इसकी पूजा राष्ट्र की देवी के रूप में होती थी। (ख) कर्मकांड में गार्ह-पत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, सम्याग्नि, आवसथ और औपसनाग्नि छः प्रकार की अग्नियाँ मानी गई हैं।

२. शरीर का वह ताप, जिससे शरीर के अंदर पाचन आदि क्रियाएँ होती हैं। जठराग्नि। वैद्यक में इनके तीन भेद हैं—भौम, दिव्य और जठर। ३. कोई ऐसा ताप, जो सब प्रकार के मलों या विकारों का नाश करके तेज, निर्मलता, प्रकाश आदि का आविर्भाव करता हो। ४. पूर्व और दक्षिण के बीच का दिशा या कोना। ५. कृत्तिका नक्षत्र। ६. क्षत्रियों का एक प्रसिद्ध वंश या कुल। ७. रहस्य संप्रदाय में, (क) ज्ञान-प्राप्ति की प्रबल इच्छा या उसके लिए होनेवाली आकुलता। (ख) काम, क्रोध आदि मनोविकार। (ग) सुषुम्ना नाड़ी। ८. वह बड़ा ऊसर या मैदान, जिसमें कहीं नाम को भी छाया या हरियाली न हो, और इसी लिए जो बहुत तपता हो। प्राचीन भारत में स्थान नामों के अंत में प्रयुक्त। जैसे—कांडाग्नि, त्रिभुजाग्नि आदि। ९. चित्रक या चीता नामक वृक्ष। १०. मिलावाँ। ११. नींबू। १२. सोना। स्वर्ण।

अग्नि-परीक्षा—स्त्री० ३. बहुत ही कठिन और ऐसी विकट परिस्थिति जिसमें योग्यता, शक्ति आदि की उत्कट परीक्षा होती हो और जिससे पार पाना बहुत ही कष्ट-साध्य हो। दिव्य-परीक्षा। (आर्डिएल)

अग्नि-रक्षक रेखा—स्त्री० [सं०] जंगलों में घास-पात और पेड़-पौधे

काटकर और कुछ दूर तक की जमीन साफ करके बनाई जानेवाली वह रेखा, जो जंगलों में लगी हुई आग दूर तक फैलने से रोकने के लिए जगह-जगह पर बनाई जाती है। अग्नि-रेखा। (फ़ायर-लाइन)

अग्नि रेखा—स्त्री० [सं०] १. अग्नि-रक्षक रेखा। २. अग्नि-वर्षक रेखा।

अग्नि वर्षक रेखा—स्त्री० [सं०] युद्ध, शिकार आदि में योद्धाओं, शिकारियों आदि की वह सबसे आगेवाली पंक्ति, जहाँ से शत्रुओं, चीतों, शेरों आदि पर गोलियाँ चलाई जाती हैं। (फ़ायर-लाइन)।

अग्नि-शामक—वि० [सं०] अग्नि का शमन करनेवाला। आग ठंढी करने या बुझानेवाला।

पुं० एक प्रकार का छोटा दस्ती उपकरण, जिससे किसी जगह लगी हुई आग बुझाने के लिए उस पर कुछ विशिष्ट रासायनिक पदार्थ छिड़कते हैं। (फ़ायर एक्सटिंग्विशर)

अग्निष्टोम—पुं० पाँच दिनों में होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ, जिसका प्रतिपादन अश्वमेध और राजसूय यज्ञ करनेवालों के लिए आवश्यक होता है।

अग्न्याशय—पुं० शरीर के अन्दर उदर में आमाशय के नीचे की एक बड़ी ग्रंथि, जिससे निकलनेवाले रस से खाई हुई चीजें पककर पचती हैं। पेट में रहनेवाली जठराग्नि का मूल स्थान। पक्वाशय। (पैन्क्रियास)

अग्र-घर्षक—वि० [सं०] अग्र-घर्षण करनेवाला। (ऐग्रेसर)

अग्र-घर्षण—पुं० [सं०] [भू० कृ० अग्र-घर्षित] स्वयं आगे बढ़कर किसी पर कोई आक्रमण करना। झगड़ा या बैर-विरोध खड़ा करनेवाला काम करना। (ऐग्रेसन)

अग्र-घर्षिता—स्त्री०=अग्र-घर्षण।

अग्रता—स्त्री० [सं०] १. सबसे आगे अर्थात् पहले रखे जाने या होने की अवस्था या भाव। २. वह आधिकारिक स्थिति जिसमें बड़प्पन, महत्त्व आदि के विचार से किसी वस्तु या व्यक्ति को औरों से पहले बैठाया, रखा या लगाया जाता है। (प्रेसीडेन्स) ३. दे० 'प्राथमिकता'।

अग्र-शाखा—स्त्री० [सं०] हाथ (या पैर) की उँगली।

अघोरपंथ—पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध तांत्रिक शैव सम्प्रदाय जो मन में सम-बुद्धि उत्पन्न करके भेद-भाव दूर करने के लिए मद्य-मांस के सिवा महामांस तक का भी उपभोग करता है। इसे 'अवधूत' और 'सरभंग' भी कहते हैं।

अघ्राणता—स्त्री० [सं०] १. घ्राण-शक्ति का अभाव। २. गंधनाश नामक रोग। (एसोम्निया)

अचका†—पुं० [हिं० औचक] एक प्रकार की अनमेल कविता। ढकोसला।

अचिति—स्त्री० [सं०] अचित या अचेतन होने की अवस्था या भाव। 'चिति' का विपर्याय। (अन्कान्शस्नेस्)

अचैतिकी—स्त्री० [सं० अचेत से] वह आधुनिक विज्ञान जिसमें औषधों के द्वारा शरीर के अंगों को अचेत या सुन्न करने के उपायों या सिद्धांतों का विवेचन होता है। (एनिस्थिसियोलॉजी)

अच्छल—वि० [सं०] सुन्दर। सुहावना।

अजपा जाप—पुं० [हिं०] मंत्र जपने का वह प्रकार जिसमें मन ही मन जप किया जाता है, मुँह से नाम का उच्चारण नहीं किया जाता, और न माला फेरी जाती है।

अज्ञात-चेतन—पुं० [सं०] आधुनिक मानव शास्त्र या मनोविज्ञान में मानस का वह अंश या भाग, जिसका हमें कोई ज्ञान नहीं होता। अचेतन। (अन्कान्शस)

अज्ञात-नामिक पत्र—पुं० [सं०] डाक-विभाग में, ऐसा पत्र जो ठीक या पूरा नाम, पता आदि न लिखा होने के कारण अपने उद्दिष्ट स्थान पर न पहुँच सका हो। (डेड् लेटर)

अज्ञात-वास—पुं०

विशेष—इस प्रकार का वास अपनी इच्छा से भी किया जाता है; और प्राचीन काल में अपराधियों आदि को दंड-स्वरूप भी इसके लिए विवश किया जाता था। महाभारत में पांडवों का अज्ञातवास प्रसिद्ध है।

अज्ञेयवाद—पुं० पाश्चात्य दर्शन में, यह सिद्धांत कि आत्मा, परमात्मा आदि परम तत्त्व अज्ञेय हैं और उनका ठीक-ठीक ज्ञान न तो अभी तक किसी को प्राप्त हो सका है और न आगे हो सकेगा। (ऐग्नास्टिसिज़्म)

विशेष—इसकी मुख्य मान्यता यह है कि किसी विषय का इंद्रियों के द्वारा हमें जो ज्ञान होता है, वह अधूरा ही होता है और उस विषय का मूल या वास्तविक तत्त्व अज्ञेय या अनजाना ही रहता है।

अटकाव—पुं० [हिं० अटकना] १. अटकने या अटकाने की क्रिया या भाव। २. अड़चन। बाधा। विघ्न। ३. कोई ऐसा काम या बात जिसके कारण कुछ करने में अटकना या रुकना पड़े। रुकावट। रोक। जैसे—घर में किसी को चेचक या माता निकलने पर कई तरह के अटकाव करने पड़ते हैं; अर्थात् कई तरह के कामों से बचना पड़ता है।

अट-कौशल—स्त्री० [सं० अष्ट-कौशल] गुप्त परामर्श।

अटा†—पुं० [?] जंगलों में झाड़ियों आदि से घेर कर बनाया हुआ वह सुरक्षित स्थान, जिसमें शिकारी लोग छिपकर बैठते और जहाँ से हिंसक जन्तुओं का शिकार करते हैं। (पूरब)

अठवारों—अव्य० [हिं० अठवारा] कई अठवारों या सप्ताहों तक। पुं० कई अठवारे। कई सप्ताह। जैसे—उन्होंने जरा-से काम में अठवारों लगा दिये।

अणु—पुं० १. किसी द्रव्य का वह सबसे छोटा टुकड़ा, जो स्वतंत्र अवस्था में भी रह सकता हो और जिसमें उसके मूल द्रव्य के सभी गुण वर्तमान हों। (मोलिक्यूल)

विशेष—ऐसे प्रत्येक अणु में साधारणतः दो या अधिक परमाणु होते हैं। आज-कल इसका प्रयोग परमाणु के स्थान पर होने लगा है; क्योंकि पहले परमाणु ही द्रव्य का सबसे छोटा टुकड़ा माना जाता था। दे० 'परमाणु'।

अणु-जीव—पुं० [सं०] अणुओं के समान वे बहुत ही छोटे-छोटे जीव जो प्राणियों में भी और वनस्पतियों में भी रोग, विकार आदि उत्पन्न करते हैं। [माइक्रोब]

अणु-बम—पुं० दे० 'परमाणु-बम'।

अणु-वीक्षण विज्ञान—पुं० [सं०] वह विज्ञान, जिसमें अणु-वीक्षण यंत्र के द्वारा अनुसंधान करने की प्रक्रियाओं तथा सिद्धांतों का विवेचन होता है। (माइक्रोस्कोपी)

अणु-व्रत—पुं० जैन धर्म में ये पाँच छोटे व्रत, जिनका विधान श्रावकों और साधारण गृहस्थों के लिए है—अहिंसा, सत्य, अस्त्येय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। योग-शास्त्र में इन्हीं को यम कहा गया है।

अताई—वि० [अ० अता=प्रदान] १. जो अपनी ईश्वरदत्त प्रतिभा के बल पर ही बिना किसी शिक्षक की सहायता से कोई काम सीख ले। २. साधारण बोल-चाल में जिसने बिना किसी शिक्षक से शिक्षा पाये यों ही देख-सुनकर किसी विद्या या विषय का थोड़ा-बहुत ज्ञान प्राप्त कर लिया हो। (उपेक्षा-सूचक) ३. जो बहुत जल्दी कोई काम सीख लेता हो।

अतिक्रमण—पुं० २. अपने सुख-सुभीते के विचार से अपनी अधिकृत सीमा से निकलकर इस प्रकार आगे बढ़ना या दूसरे की सीमा में जाना कि दूसरों के सुख-सुभीते में बाधा हो। (ट्रान्सग्रेशन)

अतिचार—पुं० २. किसी के क्षेत्र या निवास-स्थान में उसकी इच्छा के विरुद्ध किया जानेवाला अनधिकार-प्रवेश। (ट्रेसपास)

अतिचेतन—पुं० [सं०] १. आधुनिक मनोविज्ञान में, वह स्थिति जिसमें स्नायविक संस्थान के अत्यधिक उत्तेजित होने के कारण चेतना-शक्ति असाधारण रूप में तीव्र हो जाती है। ऐसा प्रायः ज्वर अथवा स्नायविक रोगों में होता है। २. दे० 'ऊर्ध्वचेतन'।

अति-मानस—पुं० [सं०] [वि० अति-मानसिक] मन से परे की और बहुत ऊँची वह अनंत चेतना, जो अज्ञान से पूर्णतः मुक्त, परम सत्यमयी होती है और जो अरविंद-दर्शन में सच्चिदानंद के एक यंत्र के रूप में काम करनेवाली मानी गई है। (सुपर-माइन्ड)

विशेष—अरविंद-दर्शन के अनुसार इसी अति-मानस सत्ता का लोक, महःलोक या महर्लोक कहलाता है।

अति-मानसिक पुरुष—पु०=अति-मानव।

अतिमूर्च्छा—स्त्री० [सं०] विकट आघात या रोग के कारण उत्पन्न होनेवाली वह मूर्च्छा, जो प्रायः अधिक समय तक निरंतर बनी रहती है और अंत में घातक सिद्ध हो सकती है। संन्यास। (कोमा)

अति-यथार्थवाद—पुं० [सं०] कला और साहित्य के क्षेत्र में एक आधुनिक पाश्चात्य मत या सिद्धांत जिसमें सर्व-मान्य भौतिक तथा मानवी सिद्धांतों की उपेक्षा करके अवचेतन या उपचेतन की प्रवृत्तियों के सहारे कोरे काल्पनिक तथा स्वप्निक क्षेत्रों की बातों को सब-कुछ मानकर उन्हीं के आधार पर जीवन की विकृत दशाओं का अंकन या चित्रण किया जाता है। (सर-रियलिज़्म)

अति-यथार्थवादी—वि० [सं०] अति-यथार्थवादी संबंधी। अति-यथार्थवाद का।

पुं० वह जो अति-यथार्थवाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो।

अति-राष्ट्रीयता—स्त्री० [सं०] [वि० अति-राष्ट्रीय] कुछ व्यक्तियों में होनेवाली राष्ट्रीयता की वह उग्र और घमंडभरी भावना, जिसके परिणामस्वरूप वे तर्क, विवेक आदि छोड़कर हरदम लड़ने-भिड़ने के लिए तैयार रहते हैं। (शाविनिज़्म)

अति-राष्ट्रीयतावाद—पुं० [सं०] राजनीतिक क्षेत्र में, यह मत या सिद्धांत कि अपना राष्ट्र ही सब-कुछ है, और इसके सामने किसी राष्ट्र या व्यक्ति का कुछ भी महत्त्व नहीं है। इसमें धर्म, नीति, न्याय आदि के लिए कोई स्थान नहीं होता, और न औचित्य-अनौचित्य, कर्त्तव्याकर्त्तव्य का ही कोई ध्यान रखा जाता है। (अल्ट्रा नेशनलिज्म, शाविनिज्म)

अति-राष्ट्रीयतावादी—वि० [सं०] अति-राष्ट्रीयतावाद संबंधी। अति-राष्ट्रीयता वाद का।

पुं० वह जो अति-राष्ट्रीयतावाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो। (अल्ट्रा नेशनलिस्ट, शाविनिस्ट)

अति-वृद्धि—स्त्री० [सं०] रोग, विकार आदि के कारण शरीर के किसी अंग का असाधारण रूप से और नियत या स्वाभाविक मान से अधिक बड़ा हो जाना।

अतिशयोक्ति—स्त्री०—

विशेष—इसके ये आठ भेद कहे गये हैं—रूपकातिशयोक्ति, भेदकातिशयोक्ति, संबंधातिशयोक्ति, असंबंधातिशयोक्ति, चपला या चपलातिशयोक्ति, अत्यंतातिशयोक्ति और सापह्नवातिशयोक्ति।

अतिसर्पण—पुं० ३. अपने अधिकार, कार्य-क्षेत्र अथवा भोग्य सीमा पार करके ऐसी जगह पहुँचना जहाँ जाना, पहुँचना या रहना अनुचित, अवैध या मर्यादा-विरुद्ध हो। (एनक्रोचमेन्ट)

अति-सूक्ष्मदर्शी—पुं० [सं०] एक प्रकार का सूक्ष्म-दर्शी उपकरण या यंत्र जिससे अणु के समान छोटे-छोटे कण भी बहुत बड़े आकार के दिखाई देते हैं। (अल्ट्रामाइक्रोस्कोप)

अति-स्वन—वि० [सं०] जिसकी गति शब्द की गति (प्रति सेकेन्ड १०८७ फुट या प्रति घंटे ७३८ मील) से अधिक तीव्र हो। (सुपर-सोनिक) जैसे—अब भारत में अति-स्वन विमान (हवाई जहाज) बनाने की भी व्यवस्था हो रही है।

अतींद्रिय-ज्ञान—पुं० [सं०] शारीरिक इंद्रियों की सहायता के लिए बिना केवल आध्यात्मिक या मानसिक बल से दूसरे के मन की बातें या विचार जानने की क्रिया या विद्या। दूर-बोध। पारेंद्रिय-ज्ञान। (टेलिपैथी)

अतींद्रिय-ज्ञानी—पुं० [सं०] ऐसा व्यक्ति, जिसमें अतींद्रिय ज्ञान प्राप्त करने का गुण या शक्ति हो। (टेलिपैथिस्ट)

अतींद्रिय-दर्शन—पुं०[सं०] अतींद्रिय दृष्टि के द्वारा बहुत दूर की या बिलकुल छिपी हुई चीजें देखने की क्रिया या भाव। (क्लेयरवाएन्स)

अतींद्रिय-दर्शी—पुं० [सं०] वह जिसमें अतींद्रिय-दर्शन की शक्ति हो। (क्लेयरवॉएन्ट)

अतींद्रिय-दृष्टि—स्त्री० [सं०] कुछ विशिष्ट लोगों में होनेवाली वह दृष्टि या शक्ति, जिसके द्वारा वे बहुत दूर की और बिलकुल छिपी या दबी हुई चीजें या बातें देख लेते हैं। (क्लेयरवाएन्स)

विशेष—'अतींद्रिय दृष्टि' और 'दिव्य-दृष्टि' का अंतर जानने के लिए देखें 'दिव्य-दृष्टि' का विशेष।

अतींद्रिय श्रवण—पुं० [सं०] कुछ लोगों में होनेवाली वह श्रवण-शक्ति जिसके द्वारा वे बहुत अधिक दूर की ऐसी बातें सुन लेते हैं, जो साधारण लोगों को किसी तरह सुनाई नहीं पड़ती। (क्लेयर-आडिएन्स)

अत्यंतातिशयोक्ति—स्त्री० साहित्य में, अतिशयोक्ति अलंकार का एक प्रकार जिसमें कारण या हेतु से पहले ही कार्य के पूरे होने का उल्लेख होता है। यथा—**जात भयो पहले तन लाय, धो पीछे मिलाय भयो मन**

भावते।—भिखारीदास। (कुछ आचार्यों ने इसे कारणातिशयोक्ति के अंतर्गत ही माना है।)

अत्युक्ति—स्त्री० ३. साहित्य के अतिशयोक्ति की तरह का एक अर्थालंकार, जिसमें किसी की उदारता, यश, योग्यता, शक्ति आदि उचित से बहुत अधिक और बढ़ा-चढ़ा करकिया हुआ वर्णन होता है। जैसे—हे राजन्, आपके दान से याचक कल्पतरु हो गये हैं। उदा०—भूषण भार सँभारिहै, क्यों यह तन सुकुमार। सूधे पाय न परत धर शोभा ही के भार।—बिहारी।

अत्रि—पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध वैदिक और मंत्र-द्रष्टा, जिसकी गिनती दस प्रजापतियों और सप्तर्षियों में होती है। २. सप्तर्षि-मंडल का एक तारा। ३. रामायण काल के एक ऋषि, जो अपनी पत्नी अनसूया के साथ चित्रकूट के दक्षिण में रहते थे।

अथर्बन—पुं० १. ऐसा व्यक्ति जो चित्त-वृत्तियों का निरोध करके समाधि लगाता हो। २. एक वैदिक मुनि, जो ब्रह्मा के पुत्र, वैदिक आर्यों के पूर्व-पुरुष और अग्नि के उत्पादक कहे गये हैं। ३. यज्ञ करानेवाला व्यक्ति। ऋत्विज्।

अथर्व वेद—पुं० [सं०] हिंदुओं के चारों वेदों में से अंतिम या चौथा वेद जिसमें मोहन, उच्चाटन, मारण, जादू-टोने, झाड़-फूंक, ज्योतिष, रोग-निदान आदि के संबंध की बहुत-सी बातें हैं। कुछ लोग आयुर्वेद को इसी का उपवेद मानते हैं।

अदल-बदल—पुं० २. दो चीजों, व्यक्तियों आदि में आपस में होनेवाला स्थान आदि का परिवर्तन। पहले का दूसरे के स्थान पर और दूसरे का पहले के स्थान पर आना, जाना या होना। व्यतिहार। (इन्टरचेन्ज) ३. दे० 'अदला-बदली'।

अदह—पुं० कुछ विशिष्ट प्रकार के ऐसे खनिज द्रव्यों का वर्ग, जिनमें चमकीले सफेद रेशे होते हैं। इन पर आग और विद्युत् का प्रभाव नहीं होता है। इसी लिए इन रेशों के जो कपड़े बनते हैं, वे आग में जल नहीं सकते। (एस्बेस्टस)

अदिति—स्त्री० २. बंधन-हीनता। स्वतंत्रता। ३. ऋग्वेद में, एक मातृ-देवी, जो इन्द्र और आदित्यों को उनकी शक्ति प्रदान करनेवाली मानी गई है। ४. पुराणानुसार दक्ष-प्रजापति की एक कन्या, जो कश्यप को ब्याही थी और जिससे सूर्य आदि ३३ देवता उत्पन्न हुए थे। ५. माता। माँ। ६. पृथ्वी। ७. प्रकृति। ८. वाणी। ९. गाय। गौ। १०. पुनर्वसु नक्षत्र। ११. गरीबी। निर्धनता।

अदृष्ट—पुं० १. न्याय-दर्शन के अनुसार पूर्व जन्म में कर्मों के ऐसे फल, जिनका मूल दिखाई नहीं देता, पर जो मनुष्य को सुख-दुःख देते हैं।

विशेष—अग्नि, जल आदि के कारण होनेवाले दैवी प्रकोपों की गणना भी अदृष्ट में होती है।

२. तकदीर। प्रारब्ध। भाग्य।

अदृष्ट जघना—वि० स्त्री० [सं०] (स्त्री) जो इतनी अधिक लज्जाशील या संकोची हो कि जल्दी अपनी जाँघ भी न देखती हो।

अद्यतन—वि० १. आज के दिन का। आज से संबंध रखनेवाला। २. आज-कल की उपयोगिता, जानकारी प्रचलन, रुचि आदि के विचार से जो ठीक या पूरा हो। दिनाप्त (अप-टू-डेट)

अद्वैतवाद—पुं० २. पाश्चात्य दर्शन में, यह सिद्धान्त कि सारी सृष्टि एक ही मूल-तत्त्व से उत्पन्न हुई है। (ऐब्सोल्यूटिज़्म)

अधःशैल—पुं० [सं०] भू-शास्त्र में, पहाड़ों के नीचे की वे चट्टानें, जो भू-गर्भ के अन्दर रहती हैं। (बैथोलिथ)

अधस्तल—पुं० [सं० ष० त०] १. किसी चीज के सबसे नीचेवाला तल या तह जिसके आधार पर ऊपरवाले तलों का निरूपण या वर्गीकरण होता है। २. भूगोल में, नदी के नीचे का वह तल, जिसकी मिट्टी काटकर वह बहा नहीं पाती, और इसी लिए जिसकी गहराई और बढ़ नहीं सकती। (बेस-लेवल) ३. जमीन के नीचे बनाया हुआ कमरा या घर। तहखाना।

अधारना†—स० [सं० आधार] किसी को अपना आधार या आश्रय-स्थल बनाना या मानना। उदा०—नानक दुखिया सब संसार। सोई सुखिया जिन राम अधार।—गुरु नानक।

अधिक—पुं० साहित्य में अतिशयोक्ति के वर्ग का एक अलंकार जिसमें आधार अथवा आधेय के छोटे होने पर भी इसके अपेक्षया बहुत बड़े होने का उल्लेख किया जाता है। (एक्सीडिंग)

अधिक पद—पुं० [सं०] साहित्य में, एक प्रकार का वाक्य-दोष, जो उस समय माना जाता है, जब किसी वाक्य में अनावश्यक रूप से किसी पद या शब्द का प्रयोग किया जाता है।

अधिकार—पुं० २. किसी वस्तु या विषय पर होनेवाला किसी प्रकार का स्वत्व। इख्तियार। (राइट)

अधिकार-लेख—पुं० [सं०]=एकस्व-पत्र।

अधिकारिता—स्त्री० १. अधिकारी होने की अवस्था, गुण या भाव। २. किसी व्यक्ति की वह स्थिति, जिसमें कोई काम करने के संबंध में उसका अधिकारी होना विधिक दृष्टि से सर्व-मान्य हो। (लोकस स्टैंडी)

अधिकारी तंत्र—पुं० [सं०]=नौकरशाही।

अधिगम—पुं० ३. किसी काम, बात या स्थान में होनेवाली पहुँच। गति। (ऐक्सेस)

अधिदान—पुं० [सं०] राज्य या शासन की ओर से उद्योग-धंधों की अभिवृद्धि के लिए उनके कर्ताओं या संचालकों को दी जानेवाली आर्थिक सहायता। (बाउन्टी)

अधिनायकवादी—वि० [सं०] अधिनायक-वाद संबंधी। अधिनायकवाद का।

पुं० वह जो अधिनायक-वाद का अनुयायी, पोषक अथवा समर्थक हो।

अधिनियम—पुं० २. वह महत्त्वपूर्ण नियमावली, जो किसी विधान के अधीन बनी हो और सबके पालन के लिए विधान-सभा से स्वीकृत हो चुकी हो। कानून। (ऐक्ट) ३. दे० 'विधान'।

अधिनियमिति—स्त्री० [सं०]=अधिनियमन।

अधिन्यस्त—भू० कृ० [सं०] (धन या पदार्थ) जो अधिन्यास के रूप में किसी को दिया या सौंपा गया हो। (एसाइन्ड)

अधिन्यास—पुं० [सं०] १. किसी विशिष्ट उद्देश्य से कुछ नियत या निश्चित करना। २. उपहार, दान आदि के रूप में कोई चीज किसी को देते हुए सौंपना। (एसाइनमेंन्ट)

अधिन्यासक—पुं० [सं०] वह जो अधिन्यास के रूप में कोई चीज किसी को देता या सौंपता हो। (एसाइनर)

अधिन्यासी—पुं० [सं० अधिन्यासिन्] वह जिसे अधिन्यास के रूप में कोई चीज मिली या सौंपी गई हो। (एसाइनी)

अधि-भाषण—पुं० [सं०] न्यायालय में अधिवक्ता या किसी विधिज्ञ द्वारा दिया जानेवाला भाषण या वक्तव्य। (ऐड्रेस आफ़ ऐड्वोकेट)

अधि-प्रभार—पुं० [सं०]=अधिभार।

अधिमत—पुं० २. किसी विवादास्पद विषय के संबंध में पंच या मध्यस्थ का निर्णायिक मत। (वर्डिक्ट)

अधिमूल्य—पुं० कंपनियों में ऋणपत्रों, हिस्सों आदि का अंकित अथवा नियत मूल्य से बढ़ा हुआ वह अतिरिक्त मूल्य, जो कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में दिया या लिया जाता है। बढ़ौती। (प्रीमियम)

अधिराज—पुं० १. प्राचीन भारत में, ऐसा राजा जो किसी सम्राट् के अधीन होता था। २. आज-कल, किसी अधिराज्य का ऐसा स्वामी जिसे सब प्रकार के अधिकार और सत्ताएँ प्राप्त हों। बादशाह। सम्राट्। (सॉवरेन)

अधिरोध—पुं० [सं०] ऐसी आज्ञा या उसके अनुसार होनेवाली रुकावट, जिससे कोई माल कहीं भेजा या कहीं से लाया न जा सके। घाट-बंदी। (एम्बार्गो)

अधिवक्ता (वक्तृ)—पुं० आधुनिक विधिक क्षेत्र में, वह प्रशिक्षित व्यक्ति (वकील से भिन्न और उससे उच्च वर्ग का) जिसे उच्च न्यायालय तक में किसी व्यक्ति की ओर से उसके पक्ष के प्रतिपादन तथा समर्थन का अधिकार प्राप्त होता है। (ऐडवोकेट)

अधिवासी—वि० ३. आज-कल, विधिक क्षेत्र में, ऐसा किसान जो जमींदारी प्रथा टूटने के उपरान्त कोई खेत जोतने-बोने का अधिकारी बन गया हो। (उत्तर प्रदेश)

अधिवृक्क—पुं० [सं०] स्तनपायी जंतुओं के शरीर में वृक्क या गुरदे के ऊपरी भाग में होनेवाली दो ग्रंथियाँ. जिनसे एक प्रकार का स्राव होता है। (ऐड्रिनल)

अधिशासक—वि० [सं०] [स्त्री० अधिशासिका] अधिशासन करनेवाला। अधिकारपूर्वक वश में रखनेवाला।

पुं० वह जो अधिशासन करता हो। अधिशासन-कारी। (गवर्नर)

अधिशासन—पुं० [सं० अधि+शासन] [भू० कृ० अधिशासित, वि० अधिशासक, अधिशासी] कार्य, व्यक्ति, संस्था, स्थान आदि को इस प्रकार नियंत्रण या वश में रखना कि किसी प्रकार मर्यादा का उल्लंघन न होने पाए। (रेजिमेन्टेशन)

अधिशासनिक—वि० [सं०] १. अधिशासन संबंधी। अधिशासन का। २. अधिशासन के रूप में होनेवाला। (गवर्निंग)

अधिशासी—वि० [सं० अधिशासिन्] अधिशासन करनेवाला। (गवर्निंग) जैसे—अधिशासी परिषद्।

अधिशेष—वि० [सं०] (धन या पदार्थ) जो उपयोग या व्यवहार के उपरान्त बच रहे। काम में आने के बाद भी बाकी बचा हुआ। (सर्प्लस)

पुं० मूल्य, मान आदि के विचार से जितना आवश्यक हो या साधारणतः जितना होना चाहिए, उसकी तुलना से होनेवाली अधिकता। बचती। (सर्प्लस)

अधि-सूचित—भू० कृ० [सं०] (बात या विषय) जिसके संबंध में अधिसूचना दी गई हो। (नोटिफ़ाइड) जैसे—अधिसूचित क्षेत्र।

अध्यक्ष—पुं० ३. जन-तांत्रिक राज्यों में लोक-सभा का प्रधान और सभापति। (स्पीकर)

अध्यांतरण—पुं० [सं०] मनन या विचार के क्षेत्र में वह प्रवृत्ति, जिससे किसी सीमित या स्थूल वस्तु के बाह्य रूप के आधार पर उसमें निहित असीम और सूक्ष्म रूप के ज्ञान का परिचय प्राप्त किया जाता है। (इन्टर्नलाइज़ेशन)। जैसे—फूल को देखकर उसकी पवित्रता, सरसता और सौंदर्य की ओर ; चित्र को देखकर उसके माधुर्य, शांति आदि की ओर, या काव्य पढ़कर उसके ओज, प्रसाद आदि गुणों की ओर ध्यान जाना अथवा उनका चिंतन करना।

अध्यात्मवाद—पुं० दर्शन-शास्त्र का वह आरंभिक रूप, जिसके अनुसार यह माना जाता है कि यह संसार ऐसी दैवी शक्तियों से व्युत्पन्न है, जो हमारा अनिष्ट भी कर सकती हैं और हित भी। आत्मा इसी विश्वात्मा का एक अंश है और शरीर न रहने पर वह दिव्य-लोक में चली जाती है और मनुष्य को परलोक का ध्यान रखते हुए आत्मिक उन्नति करनी चाहिए।

अध्यात्मवादी—वि० [सं० अध्यात्मवादिन्] अध्यात्मवाद-संबंधी। अध्यात्मवाद का।

पुं० वह जो अध्यात्म-वाद का अनयायी या समर्थक हो।

अध्यायी—पुं० १. जो किसी विषय का गंभीर और गूढ़ अध्ययन करने में लगा रहता हो। (स्टडेन्ट) जैसे—वे आजीवन इतिहास के अध्यायी रहे। २. साधारण विद्यार्थी। जैसे—सहाध्यायी।

अध्वर्यु—पुं० १. वह जो यज्ञ करता हो। २. वैदिक कर्म-कांड में, यज्ञ के चार ऋत्विज्ञों में से पहला ऋत्विज जो यजुर्वेद के मंत्रों का उच्चारण करता हुआ शेष ऋत्विजों से यज्ञ की समस्त विधियों का संपादन कराता था।

अध्वा—पुं० [सं०] १. तांत्रिक मत में, यह जगत् या सृष्टि। २. मार्ग या रास्ता।

अनंग—वि० २. साहित्य में, जो किसी प्रस्तुत विषय का अंग न हो और इसी लिए जिसका कोई विशेष महत्त्व न हो।

अनंग-वर्णन—पुं० [सं०] साहित्य में एक प्रकार का रस-दोष, जो उस समय माना जाता है, जब अनंग, अबात्, अमुख्य और ऐसे विषय का अधिक वर्णन करने से होता है जो रस का उपकारक या साधक न हो।

अनंगावह—वि० [सं०] मन में काम-वासना उत्पन्न करनेवाला।

अन-उपजाऊ—वि० [हिं०] (भूमि) जो उपजाऊ अर्थात् उर्वर न हो। अनुर्वर।

अनग्रदंत—वि० [सं०] जिसके आगे के दाँत न हों।

पुं० कुछ ऐसे स्तनपायी जंतुओं का वर्ग जिनके दाँत बिलकुल होते ही नहीं, या केवल चौभड़ होते हैं और आगे के दाँत नहीं होते। (ईडेन्टेट) जैसे—चींटीखोर, बन-रोहू आदि।

अनन्यपूर्व—वि० [सं०] [स्त्री० अनन्यपूर्वा] जिसका अभी तक किसी से विवाह न हुआ हो। अविवाहित। कुमार। कुँआरा।

अनन्यपूर्वा—स्त्री० २.कृष्ण-भक्त संप्रदायों में वह कुमारी, जो कृष्ण को अपने पति के रूप में प्राप्त करने की साधना करती है और आजीवन विवाह नहीं करती। 'अन्य-पूर्वा' से भिन्न।

अनन्वय—पुं० २. साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार, जिसमें एक ही वस्तु का उपमान के रूप में भी और उपमेय के रूप में भी वर्णन होता है। अर्थात् यह बतलाया जाता है कि उपमेय अपने से भिन्न किसी और उपमान के साथ उपमित नहीं हो सका। यथा—आज गरीब-नवाज मही पर तो सो तुही सिवराज बिराजै।—भूषण।

अनपैठ—वि० [हिं० अन+पैठना] (स्थान) जहाँ जल्दी प्रवेश न हो सकता हो या बहुत कठिनता से हो सकता हो।

अनभौ*—पुं० [सं० अनुभव] १. अनुभव। २. रहस्य संप्रदाय में किसी काम या बात का वह ज्ञान, जो उसका साक्षात् प्रयोग या व्यवहार करने पर प्राप्त होता है। वि० दे० 'अनभो'।

अनमेल—स्त्री० ऐसी उक्ति या कविता, जिसमें बिलकुल बेमेल, निरर्थक या असंभव बातें हों। ढकोसला। जैसे—भैंसिया चढ़ी बेर पै लपलप गूलर खाय।

अनलहक—अव्य० [अ०] एक प्रसिद्ध अरबी पद, जिसका अर्थ है—मैं ही ब्रह्म हूँ। सं० 'अहं ब्रह्मास्मि' का अरबी रूप।

विशेष—इस पद का प्रचार ईरान के प्रसिद्ध सूफी महात्मा मंसूर ने ई० नवीं-दसवीं शती में किया था। पर यह कथन इस्लाम की मान्यताओं के विरुद्ध था, इसी लिए मंसूर को सूली दी गई थी।

अनशन—पुं० ३. आजकल आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में, तब तक अन्न न ग्रहण करने की प्रतिज्ञा करना जब तक कोई अभीष्ट उद्देश्य सिद्ध न हो जाय अथवा किसी प्रकार की माँग पूरी न हो जाय। (हंगर-स्ट्राइक)

विशेष—अनशन और उपवास का अंतर जानने के लिए देखें उपवास का विशेष।

अनाक्रम्य—वि० [सं०] जिस पर आक्रमण न हो सकता हो। 'आक्रम्य' का विपर्याय।

अनाक्रम्यता—स्त्री० [सं०] अनाक्रम्य होने की अवस्था या भाव। 'आक्रम्यता' का विपर्याय।

अनागारिक—वि० [सं० अन्+आगारिक] जिसके रहने का कोई घर-बार न हो।

पुं० वह जो घर-बार छोड़कर त्यागी, संन्यासी या साधु हो गया हो।

अनात्मवाद—पुं० १. यह मत या सिद्धांत कि आत्मा वास्तव में कुछ है ही नहीं। २. बौद्ध दर्शन का यह सिद्धांत कि आत्मा न तो शाश्वतवाद द्वारा प्रतिपादित रूप में है और न उच्छेदवाद में प्रतिपादित मत के अनुसार उसका सर्वथा अभाव ही है। वह वस्तुतः इन दोनों के मध्य की ऐसी स्थिति है, जिसका निरूपण नहीं हो सकता।

अनात्मवादी—वि० [सं०] अनात्मवाद संबंधी। अनात्मवाद का।

पुं० वह जो अनात्मवाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो।

अनाम-पत्र—पुं० [सं०]=अज्ञात-नामिक पत्र।

अनार्तव—पुं० [सं०] वह शारीरिक स्थिति जिसमें किसी रोग या विकार के कारण स्त्रियों का रजस्राव बंद हो जाता है।

अनावर्त्तन—पुं० ३. किसी काम या बात का एक बार होकर ही रह जाना; फिर न होना। 'आवर्त्तन' का विपर्याय। (नॉन-रेकरेन्स)

अनावर्त्ती—वि०=अनावर्त्तक।

अनावृतन—पुं० [सं०]=अनावृतीकरण।

अनावृतीकरण—पुं० [सं०] १. अनावृत या नंगा करना। ऊपर का आवरण उतारना या हटाना। २. जल-प्रवाह, वर्षा, वायु, सूर्य-ताप आदि का भूमि के ऊपरी भाग की मिट्टी आदि उड़ा या बहाकर दूर हटाते जाना, जिससे नीचे का चट्टानी या पथरीला अंश ऊपर निकल आता है। (डेन्यूडेशन)

अनाहत—पुं० १. अव्यक्त परम तत्त्व का सूचक वह शब्द-ब्रह्म, जो व्यापक नाद के रूप में सारे ब्रह्मांड में व्याप्त है; और जिसकी ध्वनि परम मधुर संगीत की-सी मानी गई है।

विशेष—पाश्चात्य देशों के पुराने दार्शनिक भी इसके अस्तित्व में विश्वास करते थे।

२. वह शब्द जो दोनों कानों को हाथों के अँगूठे से बंद करने पर सुनाई पड़ता है; और जो उक्त विश्वव्यापी नाद का सूक्ष्म अंश माना जाता है। हठ-योग में, शरीर के अंदर हृदय के पास माना जानेवाला एक चक्र जो आकार में कमल के समान और अनेक रंगों के दलोंवाला माना गया है। इसके देवता रुद्र कहे गये हैं। (हार्ट प्लक्सस)

विशेष—कहते हैं कि उक्त प्रकार का शब्द इसी चक्र से उत्पन्न होता है।

अनाहत-नाद—पुं० १. नाद के दो भेदों में से एक। ऐसा नाद या शब्द जो प्रकृति के सभी पदार्थों में नैसर्गिक रूप से निहित और व्याप्त रहता है। जैसे—कानों के छेदों को उँगलियों से बंद करने पर अंदर से होनेवाला सायँ-सायँ शब्द। दूसरा भेद आहत-नाद कहलाता है। २. हठयोग आदि में अंतःकरण में होनेवाला एक विशिष्ट प्रकार का नाद या शब्द, जो योगियों और साधकों को ध्यानस्थ होने पर सुनाई पड़ता है। कहते हैं कि इससे सुनते रहने पर चित्त अंत में नाद-रूपी ब्रह्म में लीन हो जाता है।

अनिबद्ध—वि० [सं०] १. जो बँधा या बाँधा हुआ न हो। २. (संगीत का वह अंग या रूप) जो ताल-बद्ध न हो, अर्थात् जिसके साथ तबला, पखावज आदि बाजे न बजते हों,। 'निबद्ध' का विपर्याय। जैसे—आलाप।

अनिभृत—वि० [सं०] [स्त्री० अनिभृता] १. चंचल। चपल। २. प्रकट। स्पष्ट। ३. संकोच-रहित। ४. जिसमें किसी तरह का दुराव अथवा लुकाव-छिपाव न हो।

अनीश्वरवाद—पुं० [सं०] १. यह दार्शनिक मत या सिद्धांत कि वास्तव में ईश्वर और देवी-देवताओं आदि का कोई अस्तित्व नहीं है। २. विस्तृत अर्थ में वे सभी मत या सिद्धांत जो ईश्वरवादी धर्मों के विरोधी हैं। सभी प्रकार के प्रत्यक्ष वादों, भौतिकवादों, संदेह वादों आदि का समष्टिक रूप। (ऐग्नास्टिसिज्म)

अनीश्वरवादी—वि० [सं०] अनीश्वरवाद संबंधी। अनीश्वरवाद का।

पुं० वह जो अनीश्वरवाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो।

अनुकूल—पुं० साहित्य में, हेतु अलंकार की तरह का एक अर्थालंकार जिसमें किसी प्रतिकूल बात से अनुकूल कार्य होने का उल्लेख होता है। जैसे—हे सुन्दरी! यदि तुम नायक से रुष्ट हो तो उसके मुख पर नखों से क्षत करके उसका केश अपने भुज-पाश में बाँध लो।

अनुकूलन—पुं० ३. दूसरे की कोई बात लेकर उसे अपने अनुकूल बनाकर ग्रहण करना। (एडाप्टेशन)

अनुक्रमणी—स्त्री० [सं०] १. अनुक्रमणिका। २. तालिका। सूची। ३. किसी वेद से संबद्ध वह सूची, जिसमें उसके प्रत्येक मंत्र के ऋषि, देवता, छंद आदि का उल्लेख होता है।

अनुक्रमवाद—पुं० [सं०]=क्रमिकतावाद।

अनुक्रिया—स्त्री० [सं०] २. एक ओर से दिखाई पड़नेवाली किसी क्रिया, भावना, वृत्ति या व्यवहार के फलस्वरूप दूसरी ओर से होनेवाली कोई क्रिया, भावना, वृत्ति या व्यवहार। (रेस्पान्स)

अनुचितार्थ—पुं० [सं०] साहित्यिक रचना का एक प्रकार का दोष जो वहाँ माना जाता है, जहाँ कोई पद या शब्द अनुचित अर्थ का बोध कराता हो। जैसे—रे पिय-हठ क्यों सठ करै, वाही पै किन जात। में प्रिय के साथ 'सठ' (शठ) का प्रयोग अनुचित अर्थ का बोधक है।

अनुच्छेद—पुं० ३. नियमावली, विधान आदि की कोई स्वतंत्र धारा या पद। अधि-पद। (आर्टिकल)

अनुज्ञप्ति—स्त्री० किसी व्यक्ति को कोई काम करने के लिए दिया जानेवाला अधिकार या उसका सूचक पत्र। (लाइसेन्स)

अनुज्ञप्तिधारी—पुं० [सं०] वह जिसे कोई काम करने के लिए अनुज्ञा प्राप्त हो। (लाइसेन्सी, लाइसेन्स-होल्डर)

अनुज्ञा-अधिकारी—पुं० [सं०] वह अधिकारी, जो लोगों को किसी काम के लिए अनुज्ञा (लाइसेन्स) देता हो। (लाइसेन्सिंग आफ़िसर)

अनुज्ञा-पत्र—पुं० वह पत्र जिस पर किसी प्रकार की अनुज्ञा लिखी हो और जिसके अनुसार किसी को कोई विशिष्ट कार्य करने का अधिकार प्राप्त हो। (लाइसेन्स)

अनुनासिकता—स्त्री० [सं०] अनुनासिक होने की अवस्था, परिणाम या भाव। (नैसलाइज़ेशन)

अनुनेतव्य—वि० [सं०] [स्त्री० अनुनेतव्या] जिससे अनुनय-विनय करना आवश्यक या उचित हो।

अनुपजाऊ—वि० [हिं०]=अन-उपजाऊ।

अनुपात—पुं० [सं०] १. एक के बाद दूसरे का आना, गिरना, पड़ना या होना। २. दो या अधिक मानों या संख्याओं में रहनेवाला वह निश्चित या स्थिर पारस्परिक संबंध, जो इस विचार से निरूपित होता है कि एक का दूसरे से कितनी बार गुणा या भाग हो सकता है। (रेशियो) ३. किसी वस्तु के विभिन्न अंगों में होनेवाला वह पारस्परिक संबंध जो उस वस्तु में संगति या सामंजस्य स्थापित करता है। (प्रोपोर्शन) वि० दे० 'समानुपात'।

अनुपिटक—पुं० [सं०] बौद्धों के वे धार्मिक ग्रंथ, जो तीनों पिटकों के बाद पाली भाषा में लिखे गये थे।

अनुपूरक—वि० [सं०] १. बाद में किसी के साथ मिलकर उसे पूरा करनेवाला। २. विशेष रूप से किसी पूर्ण वस्तु की उपादेयता, सार्थकता आदि बढ़ाने के लिए स्वतंत्र इकाई के रूप में जोड़ा या लगाया जानेवाला। 'संपूरक' से भिन्न। (सप्लिमेन्टरी)

अनुभाग—पुं० [सं०] [वि० अनुभागीय] किसी काम या चीज के भाग या हिस्से का कोई छोटा भाग, उप-विभाग या टुकड़ा। (सेक्शन)

अनुभागीय—वि० [सं०] किसी अनुभाग से संबंध रखने या उसमें होनेवाला। (सेक्शनल)

अनुमत—अव्य० [?] पूर्व काल में (पहले से)।

अनुमावाद—पुं० [सं०] दे० 'अनुमितिवाद'।

अनुमित—वि० ३. तर्क-संगत निष्कर्ष के रूप में निकाला हुआ। (इन्फ़र्ड)

अनुमिति अद्भुत—पुं० [सं०] साहित्य में, अद्भुत रस का वह प्रकार या भेद, जिसमें अनुमान के आधार पर ही कोई चीज या बात देखकर परम आश्चर्य या विस्मय होता है। यथा—चित अलिकत भरमत रहत, कहाँ नहीं है बास। विकसित कुसुमन मैं अहै, काको सरस विकास।—हरिऔध।

अनुमितिवाद—पुं० [सं०] साहित्य में, कुछ आचार्यों का यह मत या सिद्धांत कि विभावों, अनुभावों, संचारियों आदि के कारण अभिनेताओं या नटों में वास्तविक कृष्ण, राम आदि की जो प्रतीति होती है, वह अनुमान या अनुमिति के आधार पर ही होती है। अनुमानवाद।

अनुमितिवादी—वि० [सं०] अनुमितिवाद-संबंधी। अनुमिति-वाद का। पुं० वह जो अनुमितिवाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो।

अनुमोदक—वि० [सं०] अनुमोदन करनेवाला।

अनुयोग—पुं० ३. नम्रतापूर्वक कुछ आग्रह करते हुए किसी से कोई काम करने के लिए कहना। (सोलिसिटेशन) ४. ईश्वर, देवता आदि का मनोयोगपूर्वक किया जानेवाला ध्यान। ५. जैन आगमों की टीका या व्याख्या।

अनुरक्षण—पुं० [सं०] [भू० कृ० अनुरक्षित] वह देख-भाल या व्यवस्था जो किसी चीज को ठीक दशा में और काम के योग्य बनाये रखने के लिए मरम्मत आदि के रूप में की जाती है। (मेन्टेनेन्स) जैसे—किसी इमारत, नहर या रेल की लाइन का अनुरक्षण।

अनुराधक—वि० [सं०] अनुराधन करनेवाला।

अनुरेख—पुं० [सं०] अनुरेखन की क्रिया के द्वारा प्रस्तुत की हुई प्रति। (ट्रेसिंग)

अनुर्वरता—स्त्री० [सं०] १. अनुर्वर होने की अवस्था, गुण या भाव। 'उर्वरता' का विपर्याय। २. वह स्थिति जिसमें पुरुष अथवा स्त्री में संतान उत्पन्न करने की शक्ति नहीं होती अथवा नहीं रह जाती।

अनुर्वरीकरण—पुं० [सं०] [भू० कृ० अनुर्वरीकृत] १. अनुर्वर करने की क्रिया या भाव। २. कोई ऐसी यांत्रिक या रासायनिक प्रक्रिया, जिसके द्वारा प्राणियों, वनस्पतियों आदि को प्रजनन की शक्ति से रहित या हीन किया जाता है। (स्टरिलाइज़ेशन)

अनुलोम—वि० [सं०] १. जो अपने ठीक और नियत या बँधे हुए क्रम से चलता या होता है। जैसे—अनुलोम विवाह, अनुलोम स्वर-साधन। २. जिसमें किसी प्रकार का उलटापन या विपरीतता न हो। ठीक और सीधा। (पॉज़िटिव) ३. अनुकूल। मुताबिक।

अनुविधेय—वि० [सं०] [स्त्री० अनुविधेया] किसी की आज्ञा या इच्छा के अनुसार आचरण करनेवाला।

अनुशास्ति—स्त्री० [सं०] १. किसी को शासन या नियंत्रण में रखने के लिए की जानेवाली कार्रवाई। २. आज-कल, किसी देश या राष्ट्र के प्रति कई देशों या राष्ट्रों का मिलकर कोई ऐसी कार्रवाई करना, जिसके

फलस्वरूप वह राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय नियमों का उल्लंघन करना छोड़ दे, या ठीक तरह से उन नियमों का पालन करने के लिए विवश हो। (सैन्कशन)

विशेष—साधारणतः किसी देश के कोई अनुचित काम करने पर अन्य देश या राष्ट्र मिलकर जो यह निश्चय करते हैं कि उस प्रदेश को ऋण देना अथवा उसके साथ व्यापार करना बन्द कर दिया जाय, उसी को राजनीतिक क्षेत्र में अनुशास्ति कहते हैं।

अनुसंधाता—वि० [सं० अनुसंधातृ] अनुसंधान करनेवाला। अनुसंधायक।

अनुसमुद्री—वि० [सं०] समुद्र में होने या उससे संबंध रखनेवाला। समुद्री। (मेरिटाइम)

अनुहरण—पुं० १. किसी का अनुहार या नकल करना। अनुकरण। २. वह स्थिति जिसमें कुछ जीव या वनस्पतियों या वस्तुओं का अनुकरण करके अपना रूप-रंग भी उन्हीं परिस्थितियों के अनुरूप बना लेती हैं। (मिमिक्री) जैसे—तितलियाँ अनुहरण की क्रिया से ही अपना रूप-रंग फूल-पत्तियों का सा बना लेती हैं। ३. समता। बराबरी।

अनृत-शंस—वि० [सं०] झूठी प्रशंसा करनेवाला। खुशामदी।

अनैकांतिक—वि० [सं०] १. जो ऐकांतिक न हो। २. जिसका मन किसी एक बात पर स्थिर न हो। अस्थिर-चित्त।

अन्न-प्राण—पुं० [सं०] अन्नमय अर्थात् जड़ तत्त्वों से बने हुए भाग में अवस्थित रहनेवाला प्राण-तत्त्व। (फ़िजिकल वाइटल)

अन्नमय—वि० [सं०] जड़ तत्त्व का या जड़ से बना हुआ। भौतिक। (मेटिरियल)

अन्नमय पुरुष—पुं० [सं०] वह चेतनमय सत्ता, जो हमारे शरीर मात्र में रहती है। (मेटिरियल बीइंग)

अन्नमय सत्ता—स्त्री० [सं०] जीवों या पदार्थों का वह अंश, जो जड़ तत्त्वों से बना हुआ हो; अर्थात् शरीर।

अन्यथा—वि० १. उद्दिष्ट, कथित या प्रस्तुत से भिन्न अथवा विपरीत। जैसे—मैंने जो कुछ कहा है, उससे अन्यथा नहीं होगा। २. सत्य या वास्तविक से विपरीत। मिथ्या। झूठ।

अन्यपूर्वा—स्त्री० कृष्ण-भक्त संप्रदायों में, ऐसी विवाहिता स्त्री, जो अपने लौकिक पति को छोड़कर श्रीकृष्ण को अपने प्रेमी तथा पति के रूप में ग्रहण करने की लालसा रखती है। 'अनन्यपूर्वा' से भिन्न।

अन्योन्य संदर्भ—पुं० [सं०] प्रत्यभिदेश।

अन्वारूढ़—वि० [सं० अनु+आरूढ] पीछे की ओर बैठा, बैठाया या लगाया हुआ।

अपकर्ष—पुं० ५. साहित्य में रचना का वह दोष, जिसके कारण उसका अर्थ या आशय समझने में कठिनता होती और देर लगती है।

अपकर्षण—पुं० ४. डरा-धमकाकर या बल-प्रयोग करके किसी से कुछ प्राप्त करना। ऐंठना। (एक्सटॉर्शन)

अपकृति—स्त्री० ३. विधिक क्षेत्र में, कुछ विशिष्ट प्रकार का ऐसा अपकार या क्षति, जिसकी पूर्ति न्यायालय से कराई जा सकती हो। (टॉर्ट)

अपग्रास—पुं० [सं०] चंद्र अथवा सूर्य ग्रहण से कुछ पहले की वह अवस्था जिसमें अंधकार का कुछ-कुछ आरंभ होने लगता है। छाया।

अपचयन—पुं० [सं०] [भू० कृ० अपचयित]=अपचय।

अपत*—वि० ३. अधम। नीच। उदा०—पावन किये रावन रिपु तुलसिहु से अपत।—तुलसी।

अपतह—वि० [हिं० अ+पति] जो अपनी पति अर्थात् मान-मर्यादा खो चुका हो। उदा०—हम अपतह अपनी पति खोई।—कबीर।

अपद्रव्यीकरण—पुं० [सं०] अपमिश्रण।

अपनत्व—पुं० [हिं० अपना] अपनापन। आत्मीयता। (असिद्ध रूप)

अपना—सर्व० (ग) (सामाजिक दृष्टि से) जिसके साथ बहुत अधिक आत्मीयता या घनिष्ठता का व्यवहार या संबंध हो। जैसे—जो हमारे समय पर काम आये, वही हमारे लिए अपना है। उदा०—सोई अपनो आपनो, रहै निरन्तर साथ। नैन सहाई पलक ज्यों, देह सहाई हाथ।

अपयान—पुं० [सं०] १. व्यर्थ इधर-उधर घूमना। २. कहीं से टल या हट जाना। ३. अपनी प्रतिज्ञा, स्थान आदि से पीछे हटना या विरत होना। ४. सेना का अपने स्थान पर न ठहर सकने के कारण पीछे हटना। (रिट्रीट)

अपर-निषेचन—पुं० [सं०] [भू० कृ० अपर-निषेचित] भिन्न-भिन्न पौधों या फूलों के पराग और पुं-केसर के योग से नये प्रकार के पौधे या फूल उत्पन्न करने की क्रिया या विद्या। (क्रॉस फ़र्टिलाइज़ेशन)

अपरांग—पुं० [सं०] १. अपर या दूसरा अंग। २. दे० 'अपरांग व्यंग्य'।

अपरांग व्यंग्य—पुं० [सं०] गुणीभूत व्यंग्य का एक प्रकार या भेद। ऐसा व्यंगार्थ जो दूसरे व्यंगार्थ का अंग हो जाने या उसकी पुष्टि करने के कारण अप्रधान या गौण हो गया हो।

अपरिणत—वि० ३. जो ठीक तरह बढ़ न सकने के कारण उचित रूप में न आया हो। जैसे—अपरिणत प्रसव।

अपरिवृत्ति—स्त्री० [सं०] साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार, जो परिवृत्ति या विनिमय नामक अलंकार के बिलकुल विपरीत होता है; और जिसमें इस बात का कथन होता है कि दाता ने दिया तो बहुत कुछ, पर उसके बदले में उसे मिलता कुछ भी नहीं है। यथा—तुम कौन धों पाटी पढ़े हौ लला, मन लेते पै देत छटाँक नहीं।

अपवर्जन—पुं० ३. कोई काम करते समय किसी विशेष कारण से कोई बात छोड़ देना या अलग कर देना (एक्सक्ल्यूज़न)

अपवहन—पुं० १. किसी चलने या बहने वाली चीज का अपना उचित या नियत मार्ग छोड़कर इधर-उधर होना। (ड्रिफ़्ट)

अपवारित—वि० २. छिपाया या ढका हुआ।

पुं० नाट्य-शास्त्र में, नियत-श्राव्य के दो भेदों में से एक। रंग-मंच पर किसी पात्र का दूसरी ओर मुँह करके किसी दूसरे पात्र के मन की गुप्त बात इस प्रकार कहना कि मानों वह दूसरा पात्र सुन ही न रहा है।

अपवाह—पुं० २. नदी की जाली। स्रवण-क्षेत्र। (कैचमेन्ट)

अपवाह-क्षेत्र—पुं० [सं०]=स्रवण-क्षेत्र (नदी की जाली)।

अपवीर्य—वि० [सं०] (वीर्य-रहित)

पुं० नपुंसक। हिजड़ा।

अपसामान्य—वि० [सं०] जो सामान्य न हो, बल्कि उससे कुछ आगे-पीछे या इधर-उधर घटा-बढ़ा हो। (सब-नार्मल)

अपहरण—पुं० २. विधिक क्षेत्र में, किसी व्यक्ति, विशेषतः स्त्री को संभोग के उद्देश्य से उठा या भगा ले जाना। अपनयन। (ऐब्डक्शन)

अपहर्ता(र्तृ)—वि० ४. बच्चे, स्त्री आदि को भगा ले जानेवाला। अपनेता। (एब्डक्टर)

अपहसित—पुं० साहित्य में, हास्य का वह प्रकार या भेद, जिसमें कोई आदमी बिना कोई विशेष बात हुए असमय पर ही हँस पड़ता है और उसका सिर तथा कन्धे भोंडेपन से हिलने लगते हैं।

अपाकरण—पुं० ४. किसी व्यापारिक संस्था का पावना वसूल करके और देना चुका कर उसका कारबार बन्द करने की क्रिया या भाव। परिसमापन। (लिक्विडेशन ऑफ़ कम्पनी)

अपुंस—वि० [सं०]=नपुंसक।

अपुष्टार्थ—पुं० [सं०] साहित्य में, एक प्रकार का अर्थ-दोष, जो वहाँ माना जाता है, जहाँ (क) उक्ति या कथन से मुख्य अर्थ अच्छी तरह प्रकट या सिद्ध न होता हो; अथवा (ख) जहाँ अर्थ का बोध कराने के लिए प्रौढ़ उक्ति से काम न लिया गया हो।

अपेक्षित—वि० २. (धन) जो किसी से पावना हो। प्राप्य। (ड्यू)

अप्रत्यक्ष—वि० २. (काम या व्यवहार) जो नियमित या सीधे उपाय अथवा मार्ग से नहीं, बल्कि किसी और ही उपाय या मार्ग से किया जाय, अथवा किसी और के द्वारा कराया जाय। (इन्डाइरेक्ट)

अप्रत्यक्ष-निर्वाचन—पुं० दे० 'परोक्ष-निर्वाचन'।

अफ्रेशिया—पुं० [हिं० अफ्रीका+एशिया] अफ्रीका और एशिया दोनों महाद्वीपों का संयुक्त नाम। (एफ्रो-एशिया)

अफ्रेशियाई—वि० [हिं० अफ्रेशिया] अफ्रेशिया संबंधी। अफ्रेशिया का। (एफ्रो-एशियन)

पुं० अफ्रीका और एशिया में रहनेवाले लोग। (एफ्रो-एशियन्स)

अब—अव्य० ६. कुछ अवसरों पर केवल जोर देने के लिए, पर या परन्तु की तरह। जैसे—असल बात तो यही है, अब अपनी-अपनी राय अलग हो सकती है।

अबाध-व्यापार—पुं० आधुनिक राजनीति में, दूसरे देशों के साथ होनेवाला ऐसा व्यापार, जिसमें आयात और निर्यात पर राज्य की ओर से कोई विशेष बाधा या बंधन न हो। (फ़्री ट्रेड)

अबाध-समुद्र—पुं० [सं०]=महा-समुद्र।

अभंग श्लेष—पुं० [सं०] साहित्य में, श्लेष अलंकार का वह प्रकार या भेद जिसमें किसी पूरे श्लिष्ट शब्द के ही दो अर्थ हों; इस शब्द के अंगों या अक्षरों का विच्छेद न करना पड़ता हो।

अभावक—पुं० लिखने में यह चिह्न, जो किसी बात के अंतर्गत यह सूचित करने के लिए लगाया जाता है कि यहाँ अमुक पद या शब्द छपने या लिखने से छूट गया है। यह इस प्रकार लिखा जाता है— (∧)।

अभिकलन—पुं० दे० 'संगणन'।

अभिकल्प—पुं० १. किसी उद्देश्य या ध्येय की सिद्धि के लिए पहले से सोच-समझकर की जानेवाली वह कल्पना, जिसके द्वारा उससे संबंध रखनेवाली सब क्रियाओं या बातों को क्रम-बद्ध और व्यवस्थित रूप दिया जाता है। बनत। भाँत। (डिज़ाइन) जैसे—कोई भवन बनाने के लिए पहले उसका अभिकल्प प्रस्तुत किया जाता है। २. अलंकरण, मनोरंजन, शोभा आदि के विचार से किया जानेवाला किसी प्रकार का रेखांकन। (डिज़ाइन) जैसे—इस चित्र (या साड़ी) में बेल-बूटों का नया अभिकल्प दिखाई देता है।

अभिकल्पक—वि० [सं०] अभिकल्प करनेवाला। (डिज़ाइनर)

अभिकल्पन—पुं० [सं०] [भू० कृ० अभिकल्पित] अभिकल्प करने की क्रिया या भाव।

अभिकल्पना—स्त्री० [सं०] १.=अभिकल्प। २.=अभिकल्पन।

अभिक्रांत—भू० कृ० [सं०] जो अपने स्थान से हटा या अलग कर दिया गया हो। विस्थापित। (डिस्प्लेस्ड)

अभिक्रियक—वि० [सं०] अभिक्रिया करनेवाला।

पुं० भौतिक शास्त्र में, एक प्रकार का यंत्र, जिसके द्वारा पारमाण्विक शक्ति उत्पन्न करने के उपरान्त किसी अधिष्ठान में नियंत्रित और सुरक्षित रूप में रखी जाती है। (रिऐक्टर)

अभिक्रिया—स्त्री० [सं०] [वि० अभिक्रियक] रसायन-शास्त्र में, पदार्थों में होनेवाला रासायनिक परिवर्तन या विकार। (रिऐक्शन)

अभिक्षेप(ण)—पुं० [सं०] [भू० कृ० अभिक्षिप्त] १. दूर फेंकना। २. किसी चीज के अगले भाग से प्रहार करना। जैसे—कोड़े से अभिक्षेप करना। ३. अपमानित या तिरस्कृत करना।

अभिगणन—पुं० [सं०] गणना का वह गंभीर और जटिल प्रकार या रूप जिसमें साधारण गणना के सिवा अनुभवों, घटनाओं, नियत सिद्धांतों आदि का भी उपयोग किया जाता है। संगणन। (कम्प्यूटेशन) जैसे—फलित ज्योतिष में आँधियों, भू-कंपों आदि की भविष्यद्-वाणियाँ अभिगणन के आधार पर होती हैं।

अभिग्रहण—पुं० २. आज-कल विधिक क्षेत्र में, राज्य या शासन का अधिकारिक रूप से, परंतु उचित मूल्य चुकाकर किसी की जमीन या मकान सार्वजनिक कार्य के लिए स्वयं प्राप्त करना, अथवा किसी संस्था को दिलवाना। (ऐक्विज़ीशन)

अभिजात वर्ग—पुं० [सं०] सामन्तशाही में समाज के ऐसे उच्चतम लोगों का वर्ग, जिनमें जमींदार, नवाब, महाजन और रईस लोग होते हैं। (एरिस्टोक्रेसी)

अभित्याग—पुं० २. उत्तरदायित्व, कर्तव्य-पालन आदि से बचने के लिए अपना कार्य, पद या स्थान छोड़ कर भाग या हट जाना। (डिज़र्शन)

अभिधर्म—पुं० ३. परवर्ती बौद्ध धर्म में धम्मपद, सुत्त-निपात आदि कुछ ऐसे छोटे ग्रंथों का वर्ग, जिनमें गौतम बुद्ध के उपदेशों के सिवा धर्म-संबंधी कुछ अतिरिक्त बातें भी सारहीन थीं।

अभिनवीकरण—पुं० दे० 'नवीकरण'।

अभिनिषिद्ध—भू० कृ० [सं०] जिसका अभिनिषेध किया गया हो या हुआ हो।

अभिनिषेध—पुं० [सं०] [भू० कृ० अभिनिषिद्ध] १. अच्छी या पूरी तरह से किया हुआ निषेध। २. आज-कल, आपत्तिजनक या दूषित प्रकाशनों आदि का प्रचार रोकने के लिए राज्य या शासन की ओर से निषेधात्मक आज्ञा या व्यवस्था। बाधन। (प्रास्क्रिप्शन)

अभिप्रेरक—वि० [सं०] अभिप्रेरण करनेवाला।

पुं० विधिक क्षेत्र में, वह व्यक्ति जो किसी प्रकार का अपराध करने के लिए अभिप्रेरित या प्रोत्साहित करता हो।

अभिप्रेरण—पुं० [सं०] [भू० कृ० अभिप्रेरित] १. कोई कार्य करने के

लिए उत्पन्न होनेवाली या किसी को दी जानेवाली प्रेरणा। वह तत्त्व जो कोई काम करने के लिए प्रेरित करता है। (मोटिवेशन) २. विधिक क्षेत्र में, किसी को कोई अपराध करने के लिए की जानेवाली प्रेरणा या दिया जानेवाला प्रोत्साहन ।

अभिमत व्यक्ति—पुं० [सं०]=ग्राह्य व्यक्ति।

अभियंता—पुं० [सं०] वह जो अभियांत्रिकी अर्थात् यंत्र-शास्त्र का अच्छा ज्ञाता और प्रशिक्षित हो। (इंजीनियर)

अभियांत्रिक—वि० [सं०] अभियांत्रिकी अर्थात् यंत्र-शास्त्र से संबंध रखनेवाला। (इंजिनियरिंग) जैसे—अभियांत्रिक विभाग।

पुं० वह जो अभियांत्रिकी विद्या का ज्ञाता हो। (इंजिनियर)

अभियांत्रिकी—स्त्री० [सं०] वह कला या विज्ञान, जिसमें अनेक प्रकार के यंत्र आदि बनाने और चलाने तथा अनेक प्रकार की सूचनाएँ प्रस्तुत करने का विवेचन होता है। (इंजीनियरिंग)

विशेष—इसकी बहुत-सी शाखाएँ हैं। जैसे—वास्तु-निर्माण, यंत्र-निर्माण, सिंचाई, नदी-नियंत्रण, धात्त्विक संरचना आदि।

अभियाचना—स्त्री० ३. आधिकारिक रूप से किसी से कुछ करने या देने के लिए कहना। माँग। (डिमैन्ड)

अभियोग-पत्र—पुं० २. वह पत्र, जिसमें किसी बड़े अधिकारी, न्यायालय आदि की ओर से किसी को यह सूचित किया जाता है कि तुम पर अमुक-अमुक अभियोग लगाये जाते हैं; अतः तुम इनके संबंध में अपनी सफाई दो। फर्दजुर्म। (चार्ज-शीट)

अभिलेखागार—पुं०[सं०] वह भवन जिसमें किसी राज्य की प्रशासकीय और सार्वजनिक बातों से संबंध रखनेवाले अभिलेख, प्रलेख आदि सुरक्षित रखे जाते हैं। (आर्काइव्स)

अभिवृत्ति—स्त्री०[सं०] १. कुछ करने-धरने, सोचने-समझने आदि का वह विशिष्ट ढंग, जिससे मनुष्य की प्रवृत्ति, मत, विचार आदि का पता चलता है। रवैया। रुख। जैसे—आजकल मेरे प्रति उनकी अभिवृत्ति कुछ बदली हुई है। २. वह मानसिक स्थिति, जिसके आधार पर कोई व्यक्ति, घटनाओं, वस्तुओं आदि का मूल्यांकन करता है। (ऐटिट्यूड, उक्त दोनों अर्थों के लिए)

अभिव्यंजनावाद—पुं०[सं०] कला और साहित्य में, पाश्चात्यों से गृहीत यह मत या सिद्धांत कि कलाकार या साहित्यकार किसी बाह्य वस्तु का नहीं, बल्कि अपने आंतरिक मनोभाव ही अभिव्यक्त करता है, अर्थात् वह यथार्थ का प्रतिनिधित्व, अंकन या चित्रण नहीं करता; बल्कि उसके संबंध में अपनी भावनाओं या विचारों का ही अंकन या चित्रण करता है। (एक्स्प्रेसनिज्म)

विशेष—इस वाद के अनुयायियों का यह मत है कि कलाकार या साहित्यकार का काम यथार्थ का अंकन या चित्रण करना नहीं है, बल्कि यथार्थ को देखने पर उसके मन में जो भाव या विचार उत्पन्न होते हैं, उन्हीं का अभिव्यंजन उसका कर्तव्य होता है।

अभिव्यंजनवादी—वि०[सं०] अभिव्यंजनावाद-संबंधी। अभिव्यंजनावाद का।

पुं० वह जो अभिव्यंजनावाद का सिद्धान्त मानता हो या उसका अनुयायी हो।

अभिव्यक्ति—स्त्री० ३. कला और साहित्य में, किसी विशिष्ट परिस्थिति में मन में उत्पन्न होनेवाला भाव या विचार किसी कृति में इस प्रकार व्यक्त या स्पष्ट करना कि वह लोगों की दृष्टि में सहज में प्रत्यक्ष हो सके अथवा सजीव-सा जान पड़े। (एक्सप्रेशन)

अभिशस्त—वि० १. जिसे अभिशाप मिला हो। २. जिसकी निंदा या बदनामी हुई हो। ३. जिसकी हत्या या हिंसा हुई हो। ४. जिस पर विपत्ति पड़ी हो। ५. विधिक दृष्टि से जिस पर अपराध सिद्ध या प्रमाणित हुआ हो। अभिशंसित। (कन्विक्टेड)

अभिशस्ति—स्त्री० ६. विधिक दृष्टि से किसी अभियोग या अपराध की पुष्टि होना। ७. न्यायालय द्वारा उक्त प्रकार से अपराध की घोषणा करने की क्रिया या भाव। अभिशंसा। (कन्विक्शन)

अभिश्लेषण—पुं०[सं०] [भू० कृ० अभिश्लेषित] १. दो चीजों का आपस में मिलाकर एक करना। मिश्रण। २. दे० 'संश्लेषण'।

अभिसार—पुं० ३. साहित्य में, नायिका का नायक से मिलने के लिए जाना अथवा उसे अपने पास बुलवाना।

अभिसूचक—वि०[सं०] अभिसूचना देने या करनेवाला।

पुं० १. कोई ऐसा चिह्न या लक्षण जो किसी घटना, क्रिया, स्थिति आदि का सूचक हो। २. किसी प्रकार की चीजों, नामों, बातों आदि का क्रमबद्ध लेखा या विवरण। अनुक्रमणिका। (इन्डेक्स)

अभिस्थगन—पुं०[सं०]=आस्थगन।

अभिहस्तांतरक—वि०[सं०] अभिहस्तांतरण करनेवाला। सन्नयनकार। (कन्वेन्सर)

अभिहस्तांतरण—पुं०[सं०] [भू० कृ० अभिहस्तांतरित] संपत्ति, विशेषतः अचल संपत्ति का लेख्य आदि के द्वारा एक के हाथ से दूसरे के हाथ में जाना या दिया जाना। सन्नयन। (कन्वेएन्स)

अभीक्षक—वि०[सं०] १. अच्छी तरह देखनेवाला। २. किसी काम, चीज या बात को ध्यानपूर्वक देखते रहनेवाला। देखरेख या निगरानी करनेवाला। अवधाता। (केयर-टेकर)

अभीक्षक सरकार—स्त्री० अवधात्री सरकार।

अभीक्षण—पुं०[सं०] [भू० कृ० अभीक्षित] १. अच्छी तरह देखना-भालना। २. इस बात की देख-रेख करते रहना कि कोई अनुचित या हानिकारक घटना या बात न होने पाये।

अभेद रूपक—पुं०[सं०] साहित्य में, रूपक अलंकार के दो मुख्य भेदों में से एक, जिसमें उपमान का ज्यों का त्यों और बिना कुछ घटाये-बढ़ाये उपमेय में आरोप किया जाता है।

अभेदवाद—पुं० [सं०] यह दार्शनिक मत या सिद्धांत कि जीवात्मा और परमात्मा में कोई भेद नहीं है।

अभ्यर्थक—वि०[सं०] अभ्यर्थना करनेवाला।

पुं० आज-कल कार्यालयों, संस्थाओं आदि में वह अधिकारी, जिसके जिम्मे आनेवाले लोगों को आदर-पूर्वक बैठाकर उनका कार्य समझना, उन्हें उपयुक्त कर्मचारियों के पास या नियत विभागों में भेजना तथा दूसरी आवश्यक बातें बतलाना होता है। (रिसेप्शनिस्ट)

अभ्याप्ति—स्त्री०[सं०]=अवाप्ति।

अभ्यारोपण—पुं० [सं० अभि+आरोपण] [भू० कृ० अभ्यारोपित] न्यायालय में साक्षी के आधार पर जूरी का अभियुक्त से यह कहना कि तुम अमुक अपराध के अपराधी हो। (इन्डिक्टमेन्ट)

अमरांगना—स्त्री० [सं० अमर+अंगना] अमर अर्थात् देवता की पत्नी। देवांगना। देवी।

अमला—पुं० २. कार्यालय में किसी बड़े अधिकारी के साथ काम करनेवाले लोगों का समूह। (स्टाफ़)

अमानस—वि०[सं०] मानस से रहित या हीन।

अमानसता—स्त्री० [सं०] वह स्थिति जिसमें मनुष्य की स्मरण-शक्ति आघात, रोग, वृद्धावस्था आदि के कारण बिलकुल नष्ट हो जाती है। बुद्धि-दौर्बल्य। (एमेन्शिया)

अमान्य—वि० ३. जो ठीक, नियमित या विहित न होने के कारण माना न जा सकता हो। (इनवैलिड)

अमिताभ—पुं० ३. महायानी बौद्धों के अनुसार वर्तमान जगत् के अधीश्वर तथा संरक्षक बुद्ध का नाम।

अमृत पुत्र—पुं०[सं०] १. देवता का पुत्र या संतान। २. दैवी गुणों से सम्पन्न ऐसा पराक्रमी और वीर महापुरुष जिसने देवत्व प्राप्त करने के लिए इस लोक में जन्म लिया हो और जिसकी कीर्ति या यश कभी क्षीण न हो। जैसे—महाकवि निराला अमृत पुत्र थे।

अमृतवर्षिणी—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

अमैथुनी सृष्टि—स्त्री०[सं०] पौराणिक क्षेत्र में, ऐसी सृष्टि जो स्त्री और पुरुष के लैंगिक संबंध से नहीं; बल्कि किसी अप्राकृतिक रूप से हुई हो। जैसे—घड़े से अगस्त्य मुनि की अथवा वैवस्वत मनु की छींक से इक्ष्वाकु की उत्पत्ति।

अम्ल-शूल—पुं०[सं०] एक प्रकार का रोग जिसमें पित्त की अम्लता के कारण भोजन के उपरांत कलेजे के आस-पास जलन सी मालूम देती है। उत्श्लेष। (हार्ट-बर्न)

अमोली†—वि०=अमूल्य। उदा०—हरिहर नाम अपार अमोली।—गुरु नानक।

अयत्नज—वि०[सं०] बिना किसी प्रकार के यत्न अर्थात् प्रयत्न या प्रयास के होनेवाला।

अयत्नज अलंकार—पुं०[सं०] नाट्य-शास्त्र में, तीन प्रकार के सात्त्विक अलंकारों में से एक, जिसके अंतर्गत नायिकाओं की शोभा, कांति, दीप्ति, माधुर्य, प्रगल्भता, औदार्य और धैर्य ये सात ऐसी बातें आती हैं, जो उनमें बिना किसी यत्न किये प्राकृतिक रूप से रहती हैं।

अयन-वृत्त—पुं० ३. पृथ्वी के वे क्षेत्र या प्रदेश, जो कर्क-रेखा और मकर-रेखा के बीच में पड़ते हैं और जिनमें गरमी अपेक्षया अधिक पड़ती है। (ट्रापिक्स)

अयस्क—पुं० १. कोई ऐसा खनिज पदार्थ, जिसमें से कोई धातु या कुछ धातुएँ निकाली जा सकती हों। (ओर)

अरज—पुं०[?] संगीत में भैरव ठाठ का एक राग।

अरणि—स्त्री०[सं०] माता। माँ। यौ० के अन्त में, जैसे—गुहारणि=गुह की माता; विश्वारणि=विश्व की माता।

अरध-उरध—पुं०[सं० अधः+उर्ध्वः] रहस्य संप्रदायों तथा हठयोग की साधना में (क) अरध अर्थात् शरीर के मेरु-दंड के नीचेवाले भाग में स्थित मूलाधार और (ख) उरध अर्थात् उसके ऊपरी भाग का सहस्रार चक्र। इन दोनों का अंतर समाप्त करके मूलाधार में स्थित कुंडलिनी को सहस्रार में पहुँचाकर स्थित करना ही योग-साधना का चरम उद्देश्य कहा गया है। उदा०—अरध-उरध बिचै धरी उठाई। मधि सुन्न मैं बैठा जाई। —गोरखनाथ।

अरविंद—पुं० ४. सवैया छंद का एक भेद, जिसके प्रत्येक चरण में आठ सगण और अंत में लघु होता है। इसमें १२ वर्णों पर यति होती है।

अरविंद दर्शन—पुं०[सं०] श्री अरविंद घोष के दार्शनिक विचारों और सिद्धांतों का समुदाय।

विशेष—यह दर्शन श्री अरविंद की साधना-जन्य आध्यात्मिक अनुभूतियों पर आश्रित है। इसमें जगत् और ब्रह्म दोनों को सत्य माना गया है; और यह प्रतिपादित किया गया है कि जगत् और मनुष्य का निरंतर विकास होता रहता है; और इसमें अवरोहण-आरोहण अथवा निवर्तन-विवर्तन का चक्र सदा चलता रहता है। इसमें जड़ और चेतन दोनों को सत्य माना गया है; और यह निरुपित किया गया है कि मनुष्य आध्यात्मिक उन्नति करता हुआ स्वयं तो देवत्व प्राप्त कर ही सकता है, स्वयं देवत्व को भी इस पृथ्वी पर अवतरित कर सकता है। इसके लिए आवश्यकता है साधना के द्वारा केवल उपयुक्त भूमि तैयार करने की। उनका योग व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं, बल्कि सारी मानव जाति के उद्धार के लिए है।

अरुण—पुं० २. सूर्योदय और सूर्यास्त के समय आकाश में दिखाई देनेवाली लाली। ३. प्रातःकाल का सूर्य। बाल-सूर्य।

अर्चना-गीत—पुं०[सं०] दे० 'स्तुति-गीत'।

अर्थवाद—पुं० २. प्रशंसा, स्तुति आदि के रूप में कही जानेवाली ऐसी बातें, जो अपना कोई उद्देश्य सिद्ध करने के लिए कही या की जायँ। चापलूसी की बातें।

अर्थापत्ति—पुं० ३. साहित्य में एक प्रकार का अलंकार, जिसमें कोई बात कहने पर उसके एक पद में कहा हुआ तथ्य उसके दूसरे पदों के संबंध में आप से आप सिद्ध या स्पष्ट हो जाता है। जैसे—यदि कहा जाय कि सारा मकान जल गया हो, तो इसमें आप से आप यह भी सिद्ध हो जायगा की सब चीजें भी जल गईं। उदा०—उसके आशय की थाह मिलेगी किसको। जलकर जननी भी जान न पाई जिसको।—मैथिलीशरण।

अर्थार्थी-भक्ति—स्त्री०[सं०] वह गौणी भक्ति (देखें) जो धन, पुत्र आदि की प्राप्ति या वृद्धि के विचार से की जाती हो।

अर्थोपक्षेपक—वि० [सं०] अर्थ का उपक्षेपण करने अर्थात् सूचना देनेवाला। पुं० भारतीय नाट्य-शास्त्र में वह तत्त्व, जो ऐसी सूक्ष्म बातों की सूचना देता है, जो रसहीन होने के कारण रंगमंच पर प्रत्यक्ष अभिनय के योग्य नहीं मानी जातीं। इसके ये पाँच प्रकार या भेद हैं—निष्क्रमक, चूलिका, अंकास्थ, अंकावतार और प्रवेशक।

अर्धचेतन—वि०, पुं०=अवचेतन।

अर्ध-साप्ताहिक—वि०[सं०] हर तीन दिन के बाद अर्थात् सप्ताह में दो बार होनेवाला। (बाइ-वीकली)

अर्ह—वि० ४. जिसने अनुभव, प्रशिक्षण आदि के द्वारा किसी विशिष्ट कार्य के लिए आवश्यक या उपयुक्त योग्यता प्राप्त कर ली हो। परिगुणी। योग्य। (क्वालिफ़ाइड)

अर्हत—वि० [सं० √अर्ह्+शतृ] १. सर्वज्ञ। २. राग-द्वेषादि से रहित। ३. पूज्य और मान्य।

अर्हता—स्त्री०[सं०] १. अर्ह होने की अवस्था, गुण या भाव। २. आज-

कल कोई काम कर सकने की ऐसी क्षमता, जो विशिष्ट रूप से उस कार्य के अनुभव, प्रशिक्षण आदि के द्वारा अर्जित की गई हो। परिगुण। योग्यता, (क्वालिफ़िकेशन)

अलंकरण—पुं० ४. कोई ऐसी क्रिया या वस्तु, जिससे किसी दूसरे कार्य या वस्तु का सौन्दर्य बढ़ता हो। [एम्बेलिश्मेन्ट]

अलकसाना†—अ०[हिं० अलकस=आलस्य] अलकस या आलस्य करना। कोई काम करने में आलस्य दिखाना।

अलकासी†—स्त्री०=आलकस (आलस्य)।

अलक्षेंद्र—पुं०[सं०] युनान के सुप्रसिद्ध विजयी वीर एलैग्ज़ेन्डर (सिकन्दर) के नाम का वह रूप जो भारतीय संस्कृत साहित्य में मिलता है।

अलग-धलग—वि०[हिं० अलग+अनु० धलग] एक दम से या बिलकुल अलग। जैसे—वह बहुत दिनों से इसी तरह सबसे अलग-धलग रहती है।

अलहदी†—पुं०[हिं० अहदी] वह जो अपने आलस्य या सुस्ती के कारण किसी काम के योग्य न रह गया हो।

अलूचा—पुं०=आलूचा।

अल्प-तंत्र—पुं० १. ऐसी शासन-प्रणाली, जिसमें सारी राज-सत्ता थोड़े-से या इने-गिने लोगों के हाथ में हो। २. ऐसा देश, जिसमें उक्त प्रकार की शासन-प्रणाली हो। (ओलीगार्की)

अवगलित—पुं० साहित्य में, रूपक (नाटक) की एक प्रकार की प्रस्तावना जिसके ये दो भेद कहे गये हैं—(क) जहाँ एक क्रिया से किसी एक कार्य के साथ-साथ दूसरा कार्य भी सिद्ध हो जाय। जैसे—वन-विहार की इच्छा करनेवाली सीता को वन में छोड़ देने पर उसकी इच्छापूर्ति के साथ-साथ राम के द्वारा उसका परित्याग भी हो जाता हो। (ख) जिसमें एक कार्य करने की दशा में कोई दूसरा ही कार्य सिद्ध हो जाता है। जैसे—दही बेचने के लिए निकलनेवाली ग्वालिन को श्रीकृष्ण के दर्शन।

अवगाढ़—वि० ३. डूबा हुआ। ४. भरा हुआ।

अवचेतन—वि० [सं०] १. जो चेतना के ऊपरी तल में नहीं, बल्कि उसके गहरे और भीतरी तल से संबंध रखता हो। (सब्कॉन्शस) २. जो साधारणतः चेतना में न होने पर भी थोड़े प्रयास से उसकी गहराई में से निकलकर चेतना के ऊपरी तल पर आ सकता या लाया जा सकता हो। (मानसिक क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं के संबंध में प्रयुक्त) ३. अचेत, बे-होश।

पुं० आधुनिक मनोविज्ञान में, मानस का वह अंश या पक्ष, जो चेतन से कुछ नीचे रहता है और जिसमें दबी हुई कल्पनाएँ, भावनाएँ आदि धूमिल रूप में रहती और थोड़ा प्रयास करने पर चेतन अंश में आती या आ सकती हैं। (सबकान्शस) विशेष दे० 'मानस'।

अवटुका—स्त्री० [सं०] गले के अन्दर की स्वर-नली। (लैरिंक्स)

अवटु-ग्रंथि—स्त्री० [सं०]=गल-ग्रंथि।

अवतारी(रिन्)—वि० ४. जो अवतारों का कारण रूप हो। अवतार करानेवाली। उदा०—अवतारी सब अवतारन को महतारी महतारी।

अवदान—पुं० २. किसी के बहुत बड़े और महत्त्वपूर्ण कार्यों का वर्णन। ३. किसी का गौरवपूर्ण चरित्र या जीवनी। ४. ऐसी लोक-कथा या लोक-प्रवाद, जो किसी महत्त्वपूर्ण घटना, व्यक्ति, स्थान आदि के आधार पर बहुत दिनों से प्रचलित हो और जिसमें वास्तविक बातों के सिवा कुछ आकर्षक तथा मनोरंजक बातें भी बाद में सम्मिलित हो गई हों। (लिजेन्ड) जैसे—राजा भरथरी (या विक्रमादित्य) का अवदान।

अवधारण—पुं० १. कोई काम या बात देखकर उसके संबंध में कोई मत या विचार मन में धारण करना। (कन्सेप्शन)

अवधूतिका—स्त्री० [सं०] बौद्ध हठ-योग में ललना (इडा) और रसना (पिंगला) के बीच की एक नाड़ी, जो साधना को सहज या सुगम करने में सहायक होती है।

अवधूपन—पुं० [सं०] [भू० कृ० अवधूपित] धूप आदि सुगंधित द्रव्य जलाकर उसके धूएँ से किसी वस्तु को सुगंधित करने की क्रिया या भाव।

अवपात—पुं० २. किसी तल या स्तर का कुछ नीचे की ओर झुकना, दबना या धँसना। (डिप्रेशन)

अवपीड़न—पुं० [सं०] [भू० कृ० अवपीड़ित] किसी को इस उद्देश्य से कष्ट देना या पीड़ित करना कि वह कोई कार्य करने या दबने के लिए विवश हो। जोर-जबरदस्ती। बल-प्रयोग। (कोएर्शन)

अवप्रेरण—पुं० [सं०] [भू० कृ० अवप्रेरित] किसी को किसी अनुचित, आपराधिक या विधि-विरुद्ध काम करने की प्रेरणा करना अथवा सहायता देना। बुरे काम के लिए उकसाना या मदद देना। (एबेटमेन्ट)

अवभेद—पुं० [सं०] किसी चीज के रूप आदि का विकृत होना।

अवरंग†—पुं०=औरंग।

अवरि†—स्त्री०=अवली। जैसे—मेघावरि (मेघों की अवली), वाणावरि (वाणों की अवली)।

अवरोह-पात—पुं०[सं०] ज्योतिष में वह विंदु या स्थान, जहाँ किसी ग्रह या नक्षत्र की कक्षा नीचे उतरते समय क्रान्ति-वृत्त को काटती है। (डिसेन्डिंग नोट) विशेष दे० 'पात'।

अवशंसा—स्त्री०]सं०] किसी खराबी या दोष के संबंध में यह कहना कि इसके लिए अमुक व्यक्ति उत्तरदायी है। किसी को दोषी ठहराना या बतलाना। अवक्षेप। दोषारोप। (ब्लेम)

अवसाद—पुं० ७. आज-कल, वैज्ञानिक क्षेत्र में, किसी तरल मिश्रण का वह गाढ़ा अंश, जो उसके तल में या नीचे बैठ गया हो। कल्क। तलछट। (सेडिमेन्ट)

अवसादी(दिन्)—वि० ४. जो अवसाद या तलछट के रूप में नीचे गया हो। (सेडिमेन्टरी)

अवस्फीति—स्त्री० [सं०] मुद्रा-शास्त्र में वह स्थिति, जब बाजार में मुद्राओं का प्रचलन कम रहता है और जिसके फलस्वरूप चीजों का दाम बढ़ने नहीं पाता। 'स्फीति' का विपर्याय। (डिफ़्लेशन)

अवहट्ट—पुं० [सं० अपभ्रष्ट] एक प्रकार की प्राचीन भाषा, जिसे कुछ लोग अपभ्रंश का ही एक रूप तथा कुछ लोग आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओं का पूर्व रूप मानते हैं। संभवतः विद्यापति के समय में यह साहित्यिक भाषा के रूप में प्रचलित थी।

अवहसित—पुं० [सं०] हास्य या हँसी का वह प्रकार या भेद, जो असमय पर और प्रायः व्यर्थ होता है तथा जिसमें बरबस दूसरों को हँसाने के लिए हँसनेवाला सिर और कंधे कुछ हिलाने लगता है।

अवहार—पुं० [सं० अव√हृ (हरण)+ण] १. किसी की धन-संपत्ति छीन लेना या जब्त कर लेना। २. वह जो उक्त प्रकार से धन-संपत्ति ले-लेता हो। ३. जल-हस्ती। ४. आह्वान। निमंत्रण। ५. किसी

प्रकार के काम का बंद होना या रुकना। ६. किसी कारण से कुछ समय के लिए युद्ध, वैर-विरोध या पारस्परिक संघर्ष स्थगित करना। (ट्रूस) ७. दे० 'विराम-संधि'।

अवाप्त—वि० २. (भवन या स्थान) जो उचित प्रतिमूल्य देकर सार्वजनिक उपयोग के लिए प्राप्त किया गया हो।

अवाप्ति—स्त्री० २. सार्वजनिक उपयोग के उद्देश्य से राज्य या शासन का किसी की भूमि या सम्पत्ति उचित प्रतिमूल्य देकर ले लेना। अभिग्रहण। अभ्याप्ति। (एक्विजीशन)

अव्यलीक—वि० [सं० अ+व्यलीक] १. जो व्यलीक अर्थात् अनुचित, दूषित या बुरा न हो। बिलकुल अच्छा और ठीक। २. जो कपट, छल, दोषादि से पूर्णतः रहित हो। शुद्ध और साफ। ३. जिसमें नाम को भी झूठ या मिथ्यात्व न हो। पूर्णतः सत्य। बिलकुल सच। ४. निरपराध। बेकसूर। ५. कष्ट, चिंता, दुःख आदि से बिलकुल रहित।

पुं० वह जो सदा सत्य बोलता हो। परम सत्यवादी।

अशक्त—वि० २. जो रोग, शारीरिक विकार आदि के कारण कोई काम-धन्धा करने के योग्य न रह गया हो। (इनवैलिड)

अश्म-खनि—स्त्री० [सं०] पहाड़ का वह अंश, जिसमें से इमारती कामों के लिए पत्थर खोदकर निकाले जाते हैं। खदान। (क्वैरी)

अश्रु-गैस—स्त्री० रासायनिक क्रिया से तैयार की जानेवाली एक गैस, जिससे आँखों में जलन उत्पन्न होती है तथा अत्यधिक आँसू निकलने लगते हैं। (टियर-गैस)

अश्रु-ग्रंथि—स्त्री० शरीर के अन्दर माथे के पास की वे ग्रंथियाँ, जो अश्रु या आँसू उत्पन्न करती हैं। (लैक्रिमल ग्लैन्ड)

अश्व-धावन—पुं० [सं०] घुड़दौड़ का खेल या प्रतियोगिता।

अष्टग्रही—स्त्री० [सं० अष्ट+ग्रह+हिं० ई (प्रत्यय)] ज्यौतिष में एक प्रकार का योग, जो किसी राशि में आठ ग्रहों के एक साथ आ जाने पर होता है; और फलित ज्योतिष के अनुसार जिसका फल बहुत ही अशुभ-कारक होता है।

अष्ट-बाहु—वि० [सं०] आठ बाहों वाला।

पुं० एक प्रकार की भीषण समुद्री मछली, जिसके शरीर के चारों ओर बाहों की तरह आठ लंबे, लंबे अंग निकले हुए होते हैं। (आक्टोपस)

अष्ट-मूर्ति—पुं० ३. शिव जिनकी आठ मूर्तियाँ मानी गई हैं—शिव, भैरव, श्रीकंठ, सदाशिव, ईश्वर, रुद्र, विष्णु और ब्रह्मा।

अष्ट-याम—पुं० [सं०] वह कविता, जिसमें देवी-देवता, नायक-नायिका अथवा किसी अन्य व्यक्ति के संबंध में यह वर्णित होता है कि वह प्रति दिन आठों पहरों में से क्रमात् क्या-क्या किया करता है। जैसे—कृष्ण या राम का अष्ट-याम।

अष्ट-सखा—पुं० [सं०] १. पुष्टि मार्ग में, श्रीकृष्ण और उनके बाल्य तथा कैशोर के ये सात मित्र या सखा जो वय, शील आदि में बहुत कुछ उन्हीं के समान थे—ताके, अर्जुन, ऋषभ, तुकल, श्रीयामा, विशाल और भोज।

अष्टाध्यायी—पुं० [सं०] पाणिनी-कृत व्याकरण का एक प्रसिद्ध और प्रामाणिक ग्रंथ, जिसकी गिनती ६ वेदांगों में होती है। (रचना काल—ई० पू० चौथी शताब्दी)

असज्ज—वि० [सं०] १. जो सज्ज या सजाया हुआ न हो। २. जिसने कोई अपराध न किया हो। निरपराध।

असम—वि० ३. अनुपम। बेजोड़।

असमर्थ—वि० २. जो रोग, शारीरिक विकार आदि के कारण काम-धन्धा करने के योग्य न रह गया हो। (इन वैलिड)

असार—पुं० ४. खनिज पदार्थों, विशेषतः धातुओं में से निकाले हुए वे अनुपयोगी अंश या तत्त्व, जिनका व्यापारिक दृष्टि से कोई मूल्य नहीं होता। (गैंग)

असिकाय—पुं० [सं०] किलनी नाम का कीड़ा।

असि-क्रीड़ा—स्त्री० [सं०] तलवार चलाने या तलवार से लड़ने का अभ्यास।

असुंदर व्यंग्य—पुं० [सं०] गुणीभूत व्यंग्य का एक प्रकार या भेद जिसमें वाच्यार्थ की तुलना में व्यंग्यार्थ घटकर और चमत्कार-रहित होता है। यथा—उस सरसी-सी आभरण-रहित सित वसना। सिहरे प्रभु माँ को देख हुई जड़ रसना।—मैथिलीशरण।। यहाँ कौशल्या के 'आभरण-रहित' और 'सित वसना' के व्यंग्यार्थ की तुलना में राम के सिहरने और उनकी रसना के जड़ होने के वाच्यार्थ में अधिक चमत्कार है।

असुरी—वि०=आसुरी।

स्त्री०=असूरी।

असूझा†—वि० पुं०=असूझ।

असूया—स्त्री० २. मन की वह स्थिति, जिसमें दूसरों के पास कोई ऐसी अच्छी चीज देखकर जलन होती है, जो स्वयं हमें प्राप्त न हो। (एन्वी)

असूरी—स्त्री० [सामी असूर] प्राचीन असूर जाति की भाषा, जो सामी परिवार की भाषाओं की एक शाखा है।

अस्तित्ववाद—पुं० [सं०] पाश्चात्य-दर्शन की एक आधुनिक शाखा, जिसका उपयोग साहित्यिक चिंतन पद्धति में भी होने लगा है। इसमें प्रस्तुत और यथार्थ अस्तित्व का ही सबसे अधिक महत्त्व माना जाता है और आस्तिकता, तर्क, परम्परा आदि को व्यर्थ समझकर मानव-जीवन को भी निरर्थक माना जाता है, और कहा जाता है कि मनुष्य को संसार में दर्शक के रूप में ही रहना चाहिए। (एग्जिस्टेन्शिएलिज़्म)

अस्तित्ववादी—वि० [सं०] अस्तित्ववाद संबंधी। अस्तित्ववाद का।

पुं० वह जो अस्तित्ववाद का अनुयायी या समर्थक हो।

अस्थाई—स्त्री० दे० 'आस्थाई'।

*वि० १. =स्थायी। २.=अस्थायी।

अस्थायी†—स्त्री० दे० 'आस्थाई'।

अस्थि-दौर्बल्य—पुं० [सं०] एक प्रकार का रोग, जो मुख्यतः बालकों को यथेष्ट पौष्टिक भोजन, सूर्य का प्रकाश आदि न मिलने के कारण होता और जिसमें शरीर की हड्डियाँ मुलायम होकर झुकने और मुड़ने लगती हैं। (रिकेट्स)

अस्पताल—पुं० २. वह स्थान, जहाँ शरीर के किसी विशिष्ट अंग के रोगों की चिकित्सा होती हो। जैसे—आँखों या दाँतों का अस्पताल।

अस्पताल गाड़ी—स्त्री० [हिं०] वह गाड़ी जिसमें घायल, रोगी आदि उठाकर अस्पताल पहुँचाये जाते हैं। (एम्बुलेन्स)

अस्फुट व्यंग्य—पुं० [सं०] साहित्य में, गुणीभूत व्यंग्य का एक प्रकार या भेद, जिसमें व्यंग्य इतना अधिक अस्फुट या अस्पष्ट रहता है कि अच्छे सहृदय भी उसे सहज में नहीं समझ सकते। यथा—अनदेखे चहैं,

देखे बिछुरन मीत। देखें बिनु, देखहुं पै, तुम सौ सुख नहीं मीत।

अस्वीकार्य व्यक्ति—पुं०[सं०]=अग्राह्य व्यक्ति।

अहंकार—पुं०३. वज्रयानी साधना में वह स्थिति, जब साधक अपने आप को देवता या देवतुल्य समझने लगता है।

अहंता—स्त्री० १. वह स्थिति, जिसमें अहंभाव की अनुभूति होती है।

अहंपद—पुं० २. दे० 'सोहं'।

अहंवाद—पुं०३. आधुनिक पाश्चात्य दर्शन का एक मत या सिद्धांत, जिसमें यह माना जाता है कि ज्ञाता को अपनी अनुभूतियों तथा इच्छाओं के सिवा और किसी बात का ज्ञान नहीं होता; इसलिए अपनी संज्ञा के सिवा और कुछ भी वास्तविक नहीं। (सालिप्सिज्म)

अहंस्पति—पुं०[सं०] क्षयमास का दूसरा नाम।

अहदी—वि०१. जिसने किसी बात का अहद अर्थात् प्रतिज्ञा कर रखी हो। २. जो अपने प्रण या प्रतिज्ञा के फलस्वरूप निरंतर किसी एक ही काम में तल्लीन होकर समय बिताता हो। उदा०—बाबा मैं तो राम नाम को अहदी।—कबीर।

अहरमन—पुं०[पार० अह्रिमन] पारसी धर्म में, ईश्वर का प्रतिद्वंद्वी वह राक्षस या शैतान, जो विषय-वासनाओं का प्रतीक और संसार का विनाशक माना जाता है।

अहाता—पुं० ३. कोई विशिष्ट प्रदेश या भू-खंड। जैसे—बंगाल या बिहार का अहाता। ४. सीमा। हद। जैसे—यहाँ तक हमारा अहाता है।

अहान—पुं०२. अपनी सहायता के लिए की जानेवाली पुकार। ३. ख्याति। प्रसिद्धि। शोर। उदा०—भइ अहान सिगरी दुनिआई।—जायसी।

अहोर—पुं०२. एक प्रकार का मात्रिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में ११ मात्राएँ होती हैं। इसके अन्त में जगण रहना आवश्यक है। यथा—सुरभित मंद बयार साथे सुमन स-डार।

अहेरी—पुं०२. रहस्य संप्रदाय में वह साधक जो विषयासक्त मन, रूपी मृग का गुरु के वचन रूपी बाण से आखेट करता है। इस मृग का मांस 'ज्ञान' कहा गया है, जिसे खाने (प्राप्त करने) की बहुत महिमा है।

अहोम—पुं०[?] असम प्रदेश में रहनेवाली एक प्राचीन जाति, जो चीनियों के ताई परिवार की एक शाखा मानी जाती है। इनके वंशज अभी तक यहाँ वर्तमान हैं।

आ

आंग्ल—वि०[अं० ऐंग्लो] अं० ऐंग्लो को दिया हुआ भारतीय या संस्कृत रूप। अँगरेजों से संबंध रखनेवाला। अँगरेजों का। जैसे—आंग्ल साहित्य।

आंचलिकता—स्त्री०[सं०] आंचलिक होने की अवस्था या भाव।

आंतर चक्र—पुं०[सं०] किसी क्षेत्र, वर्ग या संस्था में अन्दर बहुत कुछ गुप्त रहकर काम करनेवाले लोगों का ऐसा दल, जो जनसाधारण या बाहर के लोगों से बिल्कुल भिन्न हो। (इनर सर्किल)

आंतर सत्ता—स्त्री०[सं०]=अंतःसत्ता। (दे०)

आंतरायिक—वि०[सं०] जो थोड़े थोड़े अंतर पर अर्थात् ठहर-ठहर कर या रुक-रुककर होता हो। (इन्टरमिटेन्ट) जैसे—आंतरायिक ज्वर=अंतरिया बुखार।

आंतरायिक ज्वर—पुं०=विसर्गीज्वर।

आंतरिक मूल्य—पुं०[सं०] किसी वस्तु का वह मूल्य, जो केवल उसके उपादान या तत्त्व के विचार से निश्चित होता है और जो उसके प्रत्यक्ष मूल्य से बहुत भिन्न होता है। (इन्ट्रिन्जिक वैल्यू) जैसे—आज-कल बाजार में चलनेवाले धातु के रुपए का प्रत्यक्ष मूल्य तो १०० नये पैसे है; पर उसका आंतरिक मूल्य १० या १५ नये पैसों से अधिक नहीं है।

आंत्र—पुं०[सं०] आंत्रिक ज्वर। मिआदी बुखार।

आइस-क्रीम—पुं०[अं०] दूध, फलों के टुकड़ों या रसों के योग से आधुनिक यंत्रों की सहायता से बनाई हुई एक प्रकार की कुलफी।

आई—प्रत्य०[देश०] एक प्रत्यय जो क्रियाओं, विशेषणों आदि में उनके भाववाचक रूप बनाने में लगता है। जैसे—चढ़ाई, लड़ाई, चिकनाई, मिठाई आदि।

विशेष—कुछ अवस्थाओं में यह पूर्वी हिन्दी की संज्ञाओं के अंत में लगता है। जैसे—लड़काई।

आकर्णक—पुं०[सं०] एक प्रकार का छोटा उपकरण, जिसकी सहायता से बिजली के तार, रेडियो आदि से आये हुए समाचार सुनाई पड़ते हैं। (हेडफ़ोन)

विशेष—यह प्रायः लोहे की अर्धचन्द्राकार पट्टी के रूप में होता है, जिनके दोनों सिरों पर वे उपकरण लगे रहते हैं, जिनसे आवाज सुनाई पड़ती है। यह सिर के ऊपर से पहन लिया जाता है। हवाई जहाजों आदि के चालक इसी के द्वारा अपने केन्द्रों से आए हुए समाचार और सूचनाएँ सुनते हैं।

आकांक्षा—स्त्री०[सं०] [वि० आकांक्षिक, भू० कृ० आकांक्षित, कर्ता आकांक्षी] १. किसी प्रकार के अभाव के कारण मन में उत्पन्न होनेवाली इच्छा या चाह। २. व्याकरण और साहित्य में, वह स्थिति जिसमें किसी पद या वाक्य के अधूरेपन के कारण पाठक या श्रोता के मन में उसका पूरा आशय जानने की उत्सुकता होती है।

विशेष—न्यायशास्त्र में यह वाक्यार्थ ज्ञान के चार प्रकार के हेतुओं में से एक है।

३. किसी चीज या बात की होनेवाली अपेक्षा। ४. जैनों में एक प्रकार का अतिचार, जो उस दशा में माना जाता है, जब दूसरों की विभूति देखकर उसे पाने की इच्छा होती है। ५. अनुसंधान। खोज।

आकार-विज्ञान—पुं० दे० 'आकारिकी'।

आकारिकी—स्त्री० दे० 'आकृति-विज्ञान'।

आकाश—वि० जिसमें कुछ भी न हो। बिलकुल खाली। जैसे—आकाश-रोमंथन=मुँह में कुछ भी न होने पर भी गौ-भैंस आदि का योंही जुगाली करते या मुँह चलाते रहना।

आकाश-वाणी—स्त्री० ४. भारत सरकार द्वारा संचालित वह विभाग और व्यवस्था, जिसके द्वारा उक्त प्रकार से समाचार आदि प्रसारित किये जाते हैं। (आल इंडिया रेडियो) जैसे—आकाशवाणी दिल्ली, आकाशवाणी पटना आदि।

आकृति-विज्ञान—पुं० आधुनिक जीव-विज्ञान की वह शाखा, जिसमें इस बात का अध्ययन और विवेचन होता है कि जीव-जन्तु और वनस्पतियाँ किन अवस्थाओं में कैसी आकृति या रूप धारण करती हैं, या उनकी बनावट किन आधारों पर होती है। (मॉरफ़ोलाजी)

आक्रम्य—वि०[सं०] जिस पर आक्रमण हो सकता हो, या होने को हो।

आक्रम्यता—स्त्री०[सं०]१. आक्रम्य होने की अवस्था या भाव। २. वह स्थिति, जिसमें शरीर आदि पर रोगों आदि का आक्रमण हो सकता हो। (ससेप्टिबिलिटी)

आक्षेपक—पुं० [सं०] एक प्रकार का वात-रोग जिसमें शरीर के हाथ, पैर आदि अंग रह-रहकर ऐंठते और काँपते हैं। ऐंठन। (कन्वल्शन)

आख्यानक नृत्य—पुं० [सं०] ऐसा नृत्य, जिसके साथ किसी आख्यान से संबद्ध पद भी गाये जाते हों। (बैलेड डान्स)

आख्यान-पुरुष—पुं०[सं०]=कथा-पुरुष ।

आख्यानिक—वि०[सं०]१. आख्यान-संबंधी। आख्यान का। २. जो आख्यान के रूप में हो। ३. जिसका उल्लेख आख्यानों अथवा अनुश्रुतियों में आया हो। अनुश्रुत। (लीजेन्डरी)

आख्यापक—पुं०३. वह जो किसी प्रकार का आख्यापन या एलान करता हो। (एनाउन्सर)

आख्यायिका—स्त्री० ३. संस्कृत साहित्य में गद्यकाव्य के दो भेदों में से वह भेद, जिसकी कथावस्तु लोगों को ज्ञात हो या सत्य हो। (दूसरा भेद कथा कहलाता है।)

आगणन—पुं० [सं०] किसी काम या बात के महत्त्व, व्यय, स्वरूप आदि के संबंध में पहले से किया जानेवाला अनुमान। कूत। प्राक्कलन।

आगम—पुं०३. किसी काम, चीज या बात में बाहर से किसी नये और प्रभावशाली तत्व का आकर क्रियात्मक रूप में सम्मिलित या स्थापित होना। (इन्डक्शन) जैसे—शब्दों में होनेवाला नये अर्थों का आगम। १६. मिलन। समागम। १७. स्त्रीप्रसंग। संभोग।

आगा—मुहा०—**(किसी का) आगा काटना**=किसी चलते हुए व्यक्ति के सामने आकार उसका रास्ता रोकना। उदा०—इतने में भिखारिन ने आकर उसका रास्ता काटा।—उग्र।

आगारिक—वि०[सं०] जो अपने रहने के लिए घर बनाता या घरे में रहता हो।

पुं० गृहस्थ। घर-बारी।

आग्रहण—पुं० २. अधिकारिक या विधिक रूप से प्राप्य धन या वस्तु कहीं से प्राप्त करना या लेना। (ड्राइंग)

आचार-शास्त्र—पुं० वह शास्त्र, जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि मनुष्य को सांसारिक व्यवहारों में अपने आचार-विचार किस प्रकार नैतिक दृष्टि से श्रेष्ठ रखने चाहिए। (एथिक्स)

विशेष—यह हमारे यहाँ के नीति-शास्त्र का एक अंग-मात्र है।

आचार-संहिता—स्त्री० [सं०] ऐसे नियमों का संग्रह, जो किसी विशिष्ट वर्ग के आचरण और व्यवहार के संबंध में नियत या निश्चित किये गये हों। (कोड ऑफ कन्डक्ट) जैसे—राजकर्मचारियों या समाचार-पत्रों की आचार-संहिता।

आजीविक—पुं०[सं०] एक श्रमण सम्प्रदाय, जो वैदिक धर्म के सिवा बुद्ध और महावीर का भी प्रबल विरोधी था।

आतंक—पुं०५. किसी विकट या चिंताजनक घटना के कारण लोगों को होनेवाला वह भय, जिसके फलस्वरूप लोग अपनी रक्षा के उपाय सोचने लगते हैं। सनसनी। (पैनिक)

आतति—स्त्री०[सं०] खिचने या खींचने के कारण पड़नेवाला तनाव। तान। (टेन्सन)

आतप—पुं०२. सूर्य का ताप। सूर्य की गरमी। (इन्सोलेशन)

आतानक—वि०[सं०] खींच या तानकर फैलाने या आगे बढ़ानेवाला। (टेन्सर) जैसे—पैरों या हाथों की आतानक पेशियाँ।

आत्म-चिंतन—पुं० [सं०] आत्मा के संबंध में चिंतन या विचार करना। २. दे० 'अंतदर्शन'।

आत्म-चेतना—स्त्री० दर्शन और मनोविज्ञान में वह स्थिति, जिसमें यह ज्ञान होता है कि हमारा स्वतन्त्र अस्तित्व है, हम कुछ कर रहे हैं, अथवा हमें अनेक प्रकार की अनुभूतियाँ होती हैं। (सेल्फ़-कान्शसनेस)

आत्म-निरीक्षण—पुं०=अंतर्दर्शन ।

आत्म-निर्भर—वि०[सं०] [भाव० आत्म-निर्भरता]१. जो सब बातों में अपने आप पर ही निर्भर हो, किसी दूसरे का आश्रित न हो। २. दे० 'आत्म-पूर्ण'।

आत्म-निर्भरता—स्त्री०[सं०]१. आत्म-निर्भर होने की अवस्था, गुण या भाव। २. राजनीतिक क्षेत्र में वह स्थिति, जिसमें कोई, देश, राज्य या संस्था सब कामों या बातों में अपने आप पर निर्भर हो, दूसरों पर आश्रित न हो। आत्म-पूर्णता। (आटार्की)

आत्म-निष्ठ—वि०[सं०]१. अपने आप में निष्ठा या विश्वास रखनेवाला। २. अध्यात्म या दर्शन में, जो कर्त्ता या विचारक के आत्म (चेतना या मन) में ही उत्पन्न हुआ हो अथवा स्वयं उसी से संबंध रखता हो। 'वस्तु निष्ठ' का विपर्याय। ३. कला और साहित्य में, (अभिव्यंजना या कृति) जो किसी के आत्म (चेतना या मन) में ही उद्भूत हो और उसकी अनुभूतियों तथा विचारों पर ही आश्रित रहकर उन्हें प्रदर्शित करे, बाह्य पदार्थों आदि पर आश्रित न हो। 'वस्तु-निष्ठ' का विपर्याय। (सब्जेक्टिव, अन्तिम दोनों अर्थों के लिए)

आत्म-पीड़न—पुं०१. अपने आपको पीड़ित करने या कष्ट देन की क्रिया या भाव।

आत्म-पूर्ण—वि०[सं०]१. जो अपने आप में स्वयं हर तरह से पूर्ण हो; अर्थात् जिसे अपने अस्तित्व, निर्वाह आदि के लिए बाहरी तत्त्वों, साधनों आदि की अपेक्षा या आवश्यकता न रहती हो। २. (देश, या राज्य) जो अपनी आवश्यकता की प्रायः सभी चीजें स्वयं उत्पन्न करता हो और दूसरे देशों या राज्यों पर आश्रित न रहता हो। आत्म-निर्भर। (आटार्किक, आटार्किकल)

आत्म-पूर्णता—स्त्री०[सं०] १. किसी वस्तु की वह स्थिति, जिसमें वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के सभी साधन अपने अंतर्गत रखती और बाहरी तत्त्वों या साधनों से निरपेक्ष रहती है। २. आधुनिक अर्थशास्त्र में, किसी देश या राज्य की वह स्थिति, जिसमें वह अपनी आवश्यकता की सभी वस्तुएँ स्वयं उत्पन्न करता है और दूसरे देशों या राज्यों से चीजें मँगाने से बचा रहता है। आत्म-निर्भरता। (आटार्की)

आत्म-भर्त्सन—पुं०[सं०] कोई अनुचित या निंदनीय काम कर बैठने पर आप ही अपनी भर्त्सना करना। स्वयं अपने आप को बुरा-भला कहना।

आत्म-रति—स्त्री०३. यौन-विज्ञान में, एक प्रकार की यौन-विकृति (देखें) जिसमें अपनी काम-वासना की तृप्ति के लिए पुरुष अपना वीर्य स्खलित कर लेता है या स्त्री अपना रज स्खलित कर लेती है।

आत्मसंकोच—पुं०[सं०] [वि० आत्म-संकोची] मन की वह स्थिति, जिसमें मनुष्य औरों के सामने अपने महत्त्व आदि के विचार से कुछ संकुचित होता, और खुलकर कोई काम नहीं कर सकता या कोई बात नहीं कह सकता। (सेल्फ़कान्शसनेस)

आत्म-सिद्धि—स्त्री०१. वह स्थिति, जिसमें मनुष्य अपनी आत्मा का ठीक स्वरूप जान लेता और इसकी असीम शक्तियों से परिचित होकर परमात्मा के साथ एकात्म्य स्थापित कर लेता है। (सेल्फ-रियलाइज़ेशन)

आत्म-स्थापन—पुं०[सं०] अपने अधिकार, विचार, सत्ता आदि का दृढ़तापूर्वक किया जानेवाला प्रस्थापन। यह कहना कि हम या हमारे विचार भी महत्त्वपूर्ण हैं, और हमें या हमारे विचारों को भी उचित मान्यता मिलनी चाहिए। (सेल्फ़-एसर्शन)

आत्म-स्वीकृति—स्त्री०[सं०] विधिक क्षेत्र में, अपने किसी अपराध, दोष या भूल के संबंध में यह मान लेना कि हाँ, हमने ऐसा किया है। (कन्फ़ेशन)

आत्मीकरण—पुं०[सं०] [भू० कृ० आत्मीकृत] एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ को अपने साथ मिलाकर इस प्रकार एक कर लेना कि उस दूसरे पदार्थ का अस्तित्व ही न रह जाय। स्वांगीकरण। (एसिमिलेशन) जैसे—हमारा शरीर खाद्य पदार्थों का आत्मीकरण कर लेता है।

आत्यंतिक प्रलय—पुं०[सं०] मन की वह स्थिति, जिसमें परम तथा पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति होने पर वह चित् या ब्रह्म में पूर्ण रूप से लीन हो जाता है। (वेदान्त)

आदत—स्त्री०[अ०] १. प्रवृत्ति, रुचि आदि की विलक्षणता के कारण उत्पन्न होनेवाली वह स्थिति, जो बार-बार कोई काम करते रहने पर अथवा किसी बात के अभ्यस्त होने पर प्रकृति या स्वभाव का अंग बन जाती है। अभ्यास। टेव। बान। (हैबिट) २. प्रकृति। स्वभाव। (नेचर)

आदरार्थक—वि०[सं०] (शब्द) जिसका प्रयोग विशेष रूप से किसी के आदर के विचार से किया जाय। जैसे—'तुम' साधारण सर्वनाम है; और 'आप' आदरार्थक।

आदायक—वि०[सं०]१. ग्रहण करने या लेनेवाला। ग्राही। २. पाने या प्राप्त करनेवाला। प्रापक।

पुं० विधिक क्षेत्र में, किसी विवादग्रस्त या दिवालिये आदि की सम्पत्ति का वह व्यवस्थापक, जो न्यायालय के द्वारा नियुक्त किया गया हो। प्रापक। (रिसीवर)

आदि-ग्रंथ—पुं०[सं०] सिक्खों का प्रसिद्ध धर्मग्रन्थ, जो लोक में 'गुरु ग्रंथ साहब' के नाम से प्रसिद्ध है और जिसका संकलन गुरु अर्जुनदेव ने सन् १६०४ में कराया था।

आदितः—अव्य०[सं०] बिलकुल आदि या आरंभ से। आरंभतः। (ऐब इनिशिओ)

आदि-पंचम—पुं०[सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

आदेशिका—स्त्री०[सं०] न्यायालय का वह आज्ञापत्र, जिसमें किसी व्यक्ति को न्यायालय में उपस्थित होने अथवा कोई चीज उपस्थित करने का आदेश होता है। (प्रोसेस)

आदेशिकी—पुं०[सं०] वाणिज्य क्षेत्र में वह, जिसके नाम कोई हुंडी लिखी जाय या चेक काटा जाय। (ड्राई)

आधर्षण—पुं० मध्ययुगीन अंगरेजी विधिक क्षेत्र में, किसी अपराधी को प्राणदंड मिलने पर राज्य के द्वारा होनेवाली उसकी संपत्ति की जब्ती।

आधर्षित—वि०(व्यक्ति या संपत्ति) जिसका आधर्षण हुआ हो।

आधान—पुं०२. आजकल वैज्ञानिक क्षेत्रों में कोई तरल पदार्थ शरीर की किसी नस के अंदर पहुँचाने की क्रिया या भाव। (ट्रन्सफ़्यूज़न) जैसे—शरीर में किया जानेवाला नमकीन पानी या रक्त का आधान।

आधार—पुं०२. वह मूल तत्त्व, तथ्य या वस्तु, जिसके ऊपर किसी प्रकार की रचना प्रस्तुत या विकसित होती हो। जमीन। (ग्राउन्ड)

आधार-पत्र—पुं०[सं०] वह पत्र, जिस पर किसी प्रकार के क्रय-विक्रय, देने-पावने आदि का ठीक हिसाब या भेजे जानेवाले माल का पूरा विवरण लिखा रहता है। (वाउचर)

आधार-शैल—पुं०[सं०] आधुनिक भू-विज्ञान में पृथ्वीतल के नीचे की वे आग्नेय चट्टानें, जिनके ऊपर बाद में तहें या परतें जमती और बनती चली गई थीं और जिनके नीचे तहों या परतों का कोई चिह्न नहीं मिलता। (बेड-रॉक)

आधुनिकीकरण—पुं०[सं०] किसी परंपरागत या पुरानी कार्य-प्रणाली, व्यवस्था, संघटन आदि को आधुनिक अर्थात् नये ढंग का बनाने की क्रिया या भाव। (माडर्नाइजेशन)

आनंद-योगी—पुं०[सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

आनंद-वाद—पुं०[सं०] [वि० आनंदवादी] आध्यात्मिक क्षेत्र का यह मत या सिद्धान्त कि मनुष्य की आत्मा स्वभावतः आनन्द या ब्रह्मानन्द में पूर्ण है, अतः मनुष्य को आत्मरूप में लीन रहकर सदा आनन्दमय रहना चाहिए।

आनंदवादी—वि०[सं०] आनंदवाद संबंधी। आनन्दवाद का।

पुं० वह जो आनन्दवाद का अनुयायी या समर्थक हो।

आन—स्त्री०५. किसी की मर्यादा या महत्त्व के प्रति मन में होनेवाली आदरपूर्ण भावना या पूज्य बुद्धि। उदा०—ठंड़ियाँ निकली हैं, बच्चे को पड़ा फिरता है। कुछ किसी बात की भी आन है गोइयाँ तुमको।—जानसाहब।

मुहा०—(किसी की) आन मानना=(क) किसी की मर्यादा, महत्त्व आदि का उचित आदर करना और ध्यान रखना। जैसे—भले घर की स्त्रियाँ बड़े-बूढ़ों की आन मानती हैं। (ख) किसी का प्रभुत्व या बड़प्पन मानकर उसके सामने झुकना या दबना। उदा०—देखकर कुरती गले में सब्जधानी आपकी। धान के भी खेत ने अब आन मानी आपकी।—नजीर।

६. अपनी मर्यादा, सुरक्षा आदि के विचार से किया जानेवाला कोई ऐसा निश्चय, जिसके फलस्वरूप किसी काम या बात का निषेध या वर्जन होता हो। जैसे—(क) तुम्हें तो हमारे यहाँ आने की आन है। (ख) उनके घर में हरी चूड़ियों की आन है। (स्त्रियाँ) ७. अपनी मर्यादा आदि की रक्षा के विचार से किया जानेवाला ऐसा दृढ़ निश्चय या संकल्प, जो जिद या हठ के रूप में परिणत हो गया हो। जैसे—न जाने उसे क्या आन पड़ गई है कि वह किसी तरह मनाये नहीं मानता।

क्रि० प्र०—पड़ना।

८. अपनी मर्यादा, महत्त्व आदि की उत्कट भावना के कारण उत्पन्न

होनेवाला मिथ्या अभिमान। अकड़। ऐंठ। जैसे—तुम तो बात बात में अपनी आन ही दिखाते रहते हो।

आनी-बानी—वि० [हिं० आन+बान] आनबानवाला।
स्त्री० पाजीपन। शरारत।

आनुवंशिक विज्ञान—पुं०[सं०] आधुनिक जीव-विज्ञान की वह शाखा, जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि जीवों और वनस्पतियों में आनुवंशिकता किस प्रकार चलती है और उसमें समय-समय पर किन परिस्थितियों में किस प्रकार के विभेद उत्पन्न होते हैं। (.जेनेटिक्स)

आनुवंशिकी—स्त्री० दे० 'आनुवंशिक विज्ञान'।

आन्वीक्षिकी—स्त्री० १. सृष्टि के तत्त्व का विचार करनेवाला शास्त्र।

आपात—पुं० ५. आज-कल राजनीतिक क्षेत्र में, अचानक उत्पन्न होनेवाली कोई ऐसी विशिष्ट स्थिति, जिसके फलस्वरूप देश की शान्तिरक्षा या सुरक्षा में बाधा पड़ने की संभावना हो। हंगामा। (एमर्जेन्सी, अंतिम दोनों अर्थों के लिए)

आपेक्ष—पुं०[सं०]=उपेक्षा।

आपेक्षिकता—स्त्री०[सं०] आपेक्षिक होने की अवस्था, गुण या भाव। (रिलेटिविटी)

आपेक्षिकतावाद—पुं०[सं०] [वि० आपेक्षिकतावादी] आधुनिक भौतिकी का यह नया मत या वाद कि गति और त्वरण दोनों परस्पर निरपेक्ष नहीं हैं, बल्कि एक दूसरे के आपेक्षिक हैं। (रिलेटिविटी थियोरी)

आप्त—पुं० १. ऐसा व्यक्ति, जिसने दर्शन और धर्म की सब बातें अच्छी तरह जान ली हों और जो जीव मात्र पर दया करता तथा सदा सच बोलता है। ५. आज-कल विधिक क्षेत्र में वह व्यक्ति, जो दो प्रतिस्पर्धी या विरोधी दलों के झगड़े या विवादास्पद विषय का अन्तिम निर्णय करने के लिए चुनकर नियुक्त किया गया हो। (अम्पायर)

आप्त प्रमाण—पुं०[सं०] ऐसा प्रमाण, जो आप्त पुरुष के उपदेश या कथन पर आश्रित हो; और इसलिए जिसकी सत्यता में किसी प्रकार का संदेह न किया जा सकता हो। जैसे—वेदों के मंत्र आप्त प्रमाण हैं।

आप्रवास—पुं०[सं०]=आप्रवासन।

आप्रवासन—पुं०[सं०] [भू० कृ० आप्रवासित] अपना देश या मूल निवास-स्थान छोड़कर प्रायः स्थायी रूप से बसने के लिए किसी दूसरे देश में जाकर बसना या रहना। (इमिग्रेशन)

आबंध—पुं० ४. कोई बात निश्चित या पक्की करना। ठहराव। परियुक्ति। (एन्गेजमेन्ट)

आबादकार—पुं० ऐसे लोग, जो किसी कम आबादीवाले देश में जाकर खेती-बारी, व्यापार आदि करने के उद्देश्य से बस गये हों, और उसकी आबादी, संपन्नता आदि बढ़ाने में सहायक हुए हों। (सेटलर्स)

आभिचारिक—वि० २. अभिचार के रूप में होनेवाला।
पुं० १. वह जो उक्त प्रकार से अभिचार करता हो।

आभुक्ति—स्त्री० १. किसी चीज का फल भोगने की क्रिया या भाव। २. किसी की जमीन पर या मकान में किराया, भाड़ा आदि देकर उसमें रहने और उसका सुख भोगने की क्रिया या भाव। आभोग। (टेनेमेन्ट)

आभोग—पुं० ३. विधिक क्षेत्र में, किसी की जमीन पर या मकान में किराया आदि देकर रहने और उसका सुख भोगने की क्रिया या भाव। आभुक्ति। (टेनेमेन्ट) ४. शास्त्रीय संगीत में गीत के चार अंगों में से चौथा अंग या अंश, जो होता तो बहुत कुछ अंतरे की तरह ही है; परन्तु जिसमें गायक ऊँचे से ऊँचे स्वरों तक अर्थात् तार-सप्तक के पंचम स्वर तक जा सकता है।

विशेष—शास्त्रीय दृष्टि से गीत के आरंभिक तीन अंग या अंश, स्थायी, अंतरा और संचारी कहलाते हैं।

आभोगी—स्त्री० संगीत में काफी ठाठ की एक रागिनी।

आम चुनाव—पुं०[अ०+हिं०]=साधारण निर्वाचन।

आमाशय शोथ—पुं०[सं०] एक प्रकार का रोग, जिसमें आमाशय की भीतरी झिल्ली सूजने के कारण पेट में पीड़ा होती है, और रोगी को कै तथा दस्त होने लगते हैं। (गैस्ट्राइटिस)

आमास—पुं०[फा०] शोथ। सूजन।

आमुख—पुं० ३. नियमावली, विधि-विधान आदि के आरंभ का वह अंश, जिसमें उसके उद्देश्यों, प्रयोजनों आदि का उल्लेख होता है। (प्रिएम्बुल) ४. नाटक या रूपक का 'प्रस्तावना' नामक अंश। ५. पुस्तक की प्रस्तावना।

आयतन—पुं० ५. आकाश का उतना अंश, जितना कोई काया घेरती है। (वॉल्यूम) ६. आध्यात्मिक क्षेत्र में वे अंग, या तत्त्व जिनमें तृष्णाओं का निवास या मूल माना गया है। जैसे—आँख, जीभ, नाक, शरीर की त्वचा और मन जिनसे रूप, रस, गंध आदि के सुख की कामना होती है।

आय-व्यय परीक्षक—पुं० दे० 'लेखा-परीक्षक'।

आयुध—पुं० १. युद्ध-क्षेत्र में काम आनेवाले अस्त्र या हथियार। (आर्म्स)

आयुर्विज्ञान—पुं० [सं०] विज्ञान की वह शाखा, जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि शरीर किस प्रकार निरोग किया जाता है और उसके रोग आदि किस प्रकार दूर किये जाते हैं। चिकित्सा-शास्त्र। आयुर्वेद इसी की भारतीय शाखा है।

आयोजना—स्त्री०[सं०] कोई काम आरंभ करने से पहले उसके सभी अंगों और उपांगों पर अच्छी तरह विचार करके बनाई जानेवाली योजना। (प्लान)

आरंभ—पुं० ४. नाट्य-शास्त्र में रूपक की पाँच अवस्थाओं में पहली अवस्था, जिससे यह सूचित होता है कि नायक या नायिका कौन सा उद्दिष्ट फल प्राप्त करने के लिए उत्सुक हैं। इसी से नाटक के लक्ष्य, साध्य और फल का पहले से पता मिल जाता है।

आरंभतः—अव्य० २. बिलकुल नये सिरे से। आदितः। (ऐबइनिशिओ)

आर—प्रत्य०[सं० कार] एक प्रत्यय जो कुछ संज्ञाओं के अंत में लगकर उनके कर्ता का सूचक होता है। जैसे—लोहार, सुनार आदि।

आरति†—स्त्री० [सं० आर्ति] १. आर्त्त होने की अवस्था या भाव। २. आर्त्त अर्थात् परम दुःखी और निस्सहाय होने की अवस्था में परित्राण या रक्षा के लिए की जानेवाली पुकार। आर्त्तनाद। उदा०—राम मिलन के काज सखी मोरे आरति उर में जागी री।—मीराँ।
†स्त्री०=आरती।

आरेख—पुं०[सं०] १. प्रायः चित्र के रूप में होनेवाला कोई ऐसा अंकन, जो परिकलनाओं, विचारों, स्थितियों आदि का परिचायक हो। (डायग्राम) २. दे० 'रेखा-चित्र'।

आरेखन—पुं० [सं०] [भ० कृ० आरेखित] आरेख प्रस्तुत करने की क्रिया या भाव।

आरोग्य-आश्रम—पुं० 'आरोग्य-निवास'।

आरोग्य-निवास—पुं०[सं०] ऐसा स्थान, जो साधारणतः स्वास्थ्य-रक्षा के लिए विशेष उपयुक्त हो, और इसी लिए लोग जहाँ स्वास्थ्य-सुधार के उद्देश्य से जाकर कुछ समय तक रहते हों। (सैनिटोरियम)

विशेष—ऐसे स्थान प्रायः जंगलों में, पहाड़ों पर, समुद्र के किनारे या ऐसे स्थानों में होते हैं, जहाँ का जलवायु प्राकृतिक रूप से स्वच्छ और स्वास्थ्यवर्द्धक होता है।

आरोह-पात—पुं०[सं०] ज्योतिष में वह विन्दु या स्थान, जहाँ किसी ग्रह या नक्षत्र की कक्षा ऊपर चढ़ते समय क्रांति-वृत्त को काटती है। (एसेन्डिंग नोड) विशेष दे० 'पात'।

आर्जुनायन—पुं०[सं०]१. प्राचीन भारत में, समुद्रगुप्त के समय का एक गणतंत्र राज्य जो आधुनिक अलवर, भरतपुर और मथुरा के आसपास था। २. उक्त राज्य का नागरिक या निवासी।

आर्त्तव—पुं० १. वह स्थिति जिसमें युवती और प्रौढ़ा स्त्रियों की जननेंद्रिय से प्रति चौथे सप्ताह तीन से चार दिनों तक रजस्राव होता है। मासिक धर्म। रजोधर्म। (मेनस्ट्रूएशन)

आर्थिक भू-विज्ञान—पुं०[सं०] भूगोल की वह शाखा, जिसमें धन-संपत्ति के उत्पादन, वितरण, विनिमय और उपभोग संबंधी तथ्यों का अध्ययन तथा विवेचन होता है। (एकोनामिक जियोग्रोफ़ी)

आर्थिक भौमिकी—स्त्री०[सं०] आधुनिक भौमिकी की वह शाखा, जिसमें पृथ्वी से उत्पन्न होनेवाली धातुओं, पत्थरों, तेलों, खनिज पदार्थों आदि का विवेचन होता है।

आर्द्रता-मापी—वि० [सं०] आर्द्रता का मान नापने या स्थिर करनेवाला। पुं० एक प्रकार का यंत्र जिसमें पदार्थों या वातावरण की आर्द्रता या नमी का परिमाण जाना जाता है। (हाइग्रोमीटर)

आर्द्रता-विज्ञान—पुं०[सं०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा, जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि वातावरण की आर्द्रता किस प्रकार घटती बढ़ती है और परिस्थितियों पर इसका क्या परिणाम या प्रभाव होता है। (हाइग्रालाजी)

आलकसी†—वि०=आलसी।

आलवार—पुं० [त० अध्यात्म सागर में अवगाहन करनेवाला] दक्षिण भारत के तमिल क्षेत्र में रहनेवाली एक प्राचीन वैष्णव जाति, जिसमें अनेक भक्त कवि हो गये हैं। इनका समय ई० ५ वीं शती से ९ वीं शती तक माना गया है।

आली-काली—स्त्री०[?] हठ योग में, ललना या इड़ा नाड़ी और रसना या पिंगला नाड़ी के दूसरे नाम।

आलेख—पुं० ४. आलेखन की क्रिया से अथवा रेखाओं आदि के द्वारा अंकित किया हुआ चित्र या रूप। (ड्राइंग)

आलेखन—पुं० २. किसी प्रकार की आवृत्ति बनाने के लिए रूप-सूचक रेखाएँ अंकित करना। चित्र बनाना। (ड्राइंग)

आवंतिकी—स्त्री०[सं०]=आवंती।

आवंती—स्त्री०[सं०] नाट्य-शास्त्र में, वह प्रवृत्ति जो भृगु-कच्छ, मालव, विदिशा, सिन्धु, सौराष्ट्र आदि देशों की वेश-भूषा, आचार-व्यवहार, बोलचाल आदि के तत्त्वों से युक्त हो।

आवक—वि०[हिं० आवना=आना] १. जो कहीं बाहर से अन्दर की ओर आ रहा हो। बाहर से आनेवाला। जैसे—आवक डाक। उक्त प्रकार से आनेवाली चीज से संबंध रखनेवाला। (इन्वर्ड) जैसे—आवक भाड़ा।

स्त्री० बाहर या दूसरे स्थानों से चीजें या माल आने की अवस्था या भाव। आयात। (पश्चिम) जैसे—इस साल मंडी में गेहूँ की आवक कुछ कम है।

आवक्ष—वि०[सं०] जो वक्ष अर्थात् छाती तक हो। जैसे—आ-वक्ष चित्र।

क्रि० वि० वक्ष अर्थात् छाती तक।

पुं० ऐसा चित्र या मूर्ति, जिसमें सिर और छाती अर्थात् धड़ ही दिखलाया गया हो; नीचे के अंग न दिखाये गये हों। (बस्ट)

आवर्त्त—पुं० ६. मनुष्यों की कोई घनी आबादी या बस्ती। ७. ऐसा क्षेत्र या देश, जिसमें दूर-दूर तक बहुत-सी छोटी-बड़ी आबादियाँ या बस्तियाँ हों। जैसे—आर्यावर्त्त, ब्रह्मावर्त्त आदि। ८. मनुष्यों की कोई छोटी-मोटी आबादी या बस्ती। जैसे—अंतरावर्त्त, वहिरावर्त्त आदि।

आवर्त्तन—पुं० ६. किसी काम या बात का कुछ समय के वाद फिर उसी क्रम, प्रकार या रूप से घटित होना। (रेफरेन्स)

आवर्धन—पुं० २. किसी छोटी या सूक्ष्म वस्तु के प्रतिबिम्ब आदि कुछ विशिष्ट क्रियाओं से वहुत वढ़ाना। (मैग्निफ़िकेशन)

आवास—पुं० १. किसी स्थान पर प्रायः स्थायी रूप से रहने की अवस्था या भाव। २ रिहाइश। २. वह स्थान, जहाँ कोई नियमित या स्थायी रूप से बराबर रहता हो। रिहाइश (रेज़ीडेन्स)

आवासिक—वि०[सं० आवास+ठक+इक] १. आवास-संबंधी। आवास का। २. किसी के आवास के रूप में अथवा अवास के लिए बना हो। रिहाइशी। (रेसिडेन्शल)

आवासी—पुं० [सं० आवासिन्] [स्त्री० आवासिनी] वह जो किसी स्थान को अपना आवास बनाकर वहाँ रहता हो। (रेसिडेन्ट)

आवासीय—वि०[सं०]१. आवासिक। २. (स्थान) जो आवास के योग्य हो।

आवृत्ति—स्त्री० १. कोई काम या बात बार-बार होना। दोहराया, तेहराया जाना। (रिपीटीशन) ३. यह मत या सिद्धांत कि संसार के सभी काम और बातें चक्र की तरह चलती रहती हैं और उनकी मुख्य घटनाओं की रह-रह कर आवृत्ति होती रहती है।

आव्रजक—पुं०[सं०] वह जो कहीं से चलकर और विशेषतः पैदल चलकर कहीं ठहरने, बसने या रहने के लिए आया हो।

आव्रजन—पुं०[सं०]१. चलना-फिरना या घूमना। २. एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान पर जाना या पहुँचना।

आशंसा—स्त्री० ४. किसी के उत्कर्ष, मंगल आदि के लिए प्रकट की जानेवाली आशीर्वादात्मक कामना। (ब्लेसिंग)

आशनाई—स्त्री०[फा०]१. आशना होने की अवस्था या भाव। २. जान-पहचान। परिचय। ३. दोस्ती। मित्रता। ४. पर-पुरुष और पर-स्त्री में होनेवाला अनुचित और अवैध लैंगिक संबंध।

आशय—पुं० २. किसी प्रकार का पात्र।

आशु-लिपि—स्त्री०[सं०] किसी लिपि के अक्षरों के छोटे और संक्षिप्त संकेत या चिह्न बनाकर तैयार की हुई वह लेख-प्रणाली, जिससे कथन या भाषण बहुत जल्दी लिखे जाते हैं। (शार्ट-हैन्ड)

आशु-लिपिक—पुं० [सं०] वह जो आशु-लिपि की प्रणाली से भाषण आदि लिखता है। (स्टेनोग्राफर)

अशु-लेखन—पुं० [सं०]=आशु-लिपिक।

आश्रित राज्य—पुं० [सं०] आधुनिक राजनीति में ऐसा राज्य, जो स्वतंत्र न हो और जहाँ स्वायत्त-शासन-व्यवस्था के स्थान पर किसी दूरस्थ राज्य का नियंत्रण हो। (डिपेन्डेंसी)

आश्वलायन—पुं० [सं०] ऋग्वेद की २१ शाखाओं में से एक। इस शाखा के अनुसार न तो अब ऋक-संहिता ही मिलती है और न ब्राह्मण ही, परन्तु ये तीनों कल्प-सूत्र अवश्य मिलते हैं—गृह्य-सूत्र, धर्म-सूत्र और श्रौत-सूत्र।

आष्टांगिक मार्ग—पुं० [सं०] बौद्ध धर्म में तृष्णाओं या वासनाओं का नाश करनेवाली ये आठ बातें—अच्छी दृष्टि, अच्छा संकल्प, अच्छे वचन, अच्छे कर्म, अच्छी जीविका, अच्छा व्यायाम, अच्छी स्मृति और अच्छी समाधि।

आस—स्त्री० [सं० आश्रय] किसी काम या बात में किसी को मिलनेवाला थोड़ा या हलका सहारा। जैसे—कुछ आस मिले, तो हम भी सीढ़ियाँ चढ़ जायँ।

मुहा०—आस मिलना=संगीत में, किसी के गाने के समय बीच में किसी दूसरे का भी कुछ गा या बजा देना, जिससे गानेवाले को कुछ सहारा मिले। जैसे—खाली ठेका भी देते चलो तो कुछ आस मिले।

आसज्जा—स्त्री० [सं०] १. सजकर या ठीक स्थिति में आकर कुछ करने के लिए उद्यत या तत्पर होना। तैयारी। २. आधुनिक मनोविज्ञान में, किसी व्यक्ति की वे मानसिक और शारीरिक स्थितियाँ जिनके आधार पर यह स्थिर किया जाता है कि वह अमुक कार्य के लिए उपयुक्त या प्रस्तुत है। तैयारी। (रेडिनेस)

आसन-कोपी—वि० [सं० आसन-कोपिन्] (व्यक्ति) जो एक ही आसन अथवा मुद्रा में अर्थात् शांत भाव से किसी जगह अधिक समय तक न बैठ सकता हो ; फलतः बहुत ही चंचल या चिलबिल्ला।

आसुत—भू० कृ० [सं०] जो असवन की क्रिया से प्रस्तुत किया गया हो। आसव के रूप में तैयार किया हुआ। चुआया हुआ। (डिस्टिल्ड) जैसे—आसुत जल, आसुत मद्य।

आस्ताँ—पुं० [सं० आस्थान से फा०] रहने का स्थान। निवास-स्थान।

आस्तित्विक—वि० [सं०] अस्तित्व से संबंध रखनेवाला। अस्तित्व का।

आस्थगित—भू० कृ० [सं०] (विषय) जो किसी विशेष कारणवश या कोई शर्त पूरी होने तक के लिए रोक रखा गया हो। (डेफर्ड)

आस्थाई—स्त्री० [सं० स्थायी] खयाल, ठुमरी आदि गीतों का पहला चरण, जो प्रत्येक चरण या पद के बाद दोहराकर गाया जाता है।

आहत—वि० ३. जिसका अंत हो चुका हो। समाप्त। ४. (प्राचीन मुद्रा या सिक्का) जिस पर ठप्पे से कोई चिह्न अंकित हो, उसे चलानेवाले का नाम या समय अंकित न हो। (पंच-मार्क्ड)

आहत नाद—पुं० [सं०] नाद के दो भेदों में से एक। ऐसा नाद, जो किसी प्रकार के आघात से उत्पन्न होता है। जैसे—घंटे, घड़ियाल आदि अथवा बाजों से उत्पन्न होनेवाला नाद। नाद का दूसरा भेद अनाहत नाद कहलाता है।

आहरण—पुं० २. बलपूर्वक कहीं से कुछ निकालना या किसी से कुछ लेना। (एग्जैक्शन)

आहार-तंत्र—पुं० [सं०]=पाचक-तंत्र।

आहार नाल—पुं० [सं०] पाचन-कल।

आहुत—भू० कृ० [सं०] १. जिसे आहुति दी गई हो। जो तृप्त किया गया हो। जैसे—सोमाहुत।

इ

इंजील—स्त्री०[अं० इवेन्जेलियन] १. इसाइयों के धर्म-ग्रंथ बाइबिल का एक विशिष्ट अंश, जिसमें इस सु-समाचार का उल्लेख है कि ईसा-मसीह ईश्वर की ओर से लोक-कल्याण के लिए आये थे। ईसाइयों का धर्म-ग्रंथ। बाइबिल।

इंदिरा—स्त्री० ४. एक प्रकार का वर्णिक समवृत्त छन्द, जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण, दो रगण, एक लघु और एक गुरु होता है।

इंदु-गीर्वाणी—स्त्री०[सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

इंदु-धवली—स्त्री०[सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

इंदु-भोगी—पुं०[सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

इंदु-शीतल—पुं०[सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

इंद्रियवाद—पुं०[सं०] [स्त्री० इंद्रियवादी] यह मत या सिद्धांत कि इंद्रियों के सुख-भोग को ही प्रधान मानना चाहिए, और इंद्रियों का सुख भोगते रहना चाहिए। (हेडेनिज़्म)

इक-तरफा—वि० १. दे० 'एक-तरफा'। २. दे० 'एकपक्षीय'।

इकबालमंद—वि०[अ०+फा०] [भाव० इकबालमंदी] (व्यक्ति) जो यथेष्ट प्रभावशाली और सम्पन्न हो।

इकबाली—वि०[अ०] १. इकबाल या स्वीकृत करनेवाला। २. जिसका यथेष्ट प्रताप, वैभव आदि हो।

इकबाली गवाह—पुं० [अ०+फा०] वह अपराधी जिसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया हो और जो अपने साथी अपराधियों के विरुद्ध गवाही दे। भेद-साक्षी। (एप्रूवर)

इच्छापत्र—पुं० वह पत्र या लेख, जिसमें कोई व्यक्ति यह लिखता है कि मेरी मृत्यु के उपरान्त मेरी सम्पत्ति का विभाजन और व्यवस्था अमुक प्रकार से हो। वसीयतनामा। (विल)

इजारेदार—पुं० [फा० इजारादार] [भाव० इजारेदारी] वह जिसने किसी काम या बात का इजारा या एकाधिकार ले रखा हो।

इजारेदारी—स्त्री० १. इजारेदार होने की अवस्था या भाव। २. इजारेदार की प्राप्त होनेवाला अधिकार। एकाधिकार। (मोनोपोली)

इटली—स्त्री०[?] दक्षिण यूरोप का एक प्रसिद्ध और बड़ा प्रायद्वीप।

इडली—स्त्री०[?] अच्छे चावलों को पीस कर बनाया जानेवाला एक प्रकार का दक्षिण भारतीय पकवान।

इतालवी—वि० पुं० स्त्री०=इटालियन।

इतालिया—पुं०=इटली (प्रायद्वीप)।

इब्रानी—पुं०, स्त्री०, वि०=इबरानी।

इमामबाड़ा—पुं० [अ०+हिं०] मुसलमानों में वह धर्म-मंदिर, जो विशेष

रूप से हजरत अली और उनके पुत्रों की स्मृति में बनाया गया हो।

विशेष—मुहर्रम में इमामबाड़ों में शीया मुसलमानों की शोक-सूचक मजलिसें तथा अन्य अवसरों पर अनेक प्रकार के धार्मिक कृत्य होते हैं।

इरण—पुं० २. ऊसर या बंजर भूमि।

इलाकाई—वि०[हिं० इलाका+ई(प्रत्य०)] १. इलाके से संबंध रखने या उसके अंतर्गत होनेवाला। २. दे० 'क्षेत्रिक'।

इलाजपट्टी—स्त्री० [हिं०] १. मरहम-पट्टी। २. किसी को दंड देने के लिए अच्छी तरह मारना-पीटना। (व्यंग्य) उदा०—मालूम पड़ता है कि उसकी इलाज-पट्टी करानी जरूरी है।—उग्र।

इल्मे-मजलिस—पुं०[अ०+फा०] शिष्ट तथा सभ्य समाज में उठने-बैठने, बोलने-चालने आदि का ज्ञान या विद्या।

इष्टि—स्त्री० ५. यज्ञ, विशेषतः अग्निहोत्र, दर्शपूर्ण माय, चातुर्मास्य, पशुयज्ञ और सोम-यज्ञ। बाद में इनमें पाक-यज्ञ, हविर्यज्ञ आदि भी सम्मिलित हो गये थे।

इसराईल—पुं० [यहू०] दक्षिण-पश्चिम एशिया का आधुनिक स्वतंत्र यहूदी राज्य, जो सन् १९४८ में स्थापित हुआ था।

इस्पंजी—वि०[हिं० ईस्पंज] जो इस्पंज की तरह छिद्रमय हो और जिसमें तरल पदार्थ सोखने की शक्ति हो। (स्पांजी)

ई

ई०—हिं० ईसवी सन् का संक्षिप्त रूप।

ई० पू०—हिन्दी ईसा पूर्व (सन्) का संक्षिप्त रूप।

ईश-गिरी—पुं० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

ईश-गोड़—पुं०[सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

ईश-मनोहरी—स्त्री०[सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

ईशावास्य—पुं० [सं०] एक उपनिषद्, जो शुक्ल यजुर्वेद की मंत्र-संहिता का ४० वाँ अध्याय है और सब उपनिषदों में पहला माना जाता है।

ईस्टर—पुं०[सं०] यहूदियों, रोमनों, ईसाइयों का एक प्रसिद्ध त्योहार जो प्रायः अप्रैल में पड़ता है।

उ

उँगली छाप—स्त्री०[हिं०] किसी व्यक्ति विशेषतः अपराधी आदि की पहचान के लिए ली जानेवाली उँगली के अगले भाग की छाप। अंगुली-प्रतिमुद्रा। अंगुली छाप। (फ़िंगरप्रिन्ट)

उकताहट—स्त्री०[हिं० उकताना] उकताने की क्रिया, गुण, धर्म या भाव।

उगाई—स्त्री० [हिं० उगना] उगने की क्रिया, भाव या स्थिति।

स्त्री०[हि० उगाना] १. उगाने की क्रिया, भाव या स्थिति। २. उगाने का पारिश्रमिक या मजदूरी।

उग्र राष्ट्रवाद—पुं० दे० 'अति-राष्ट्रीयतावाद'।

उग्रवाद—पुं०[सं०]=अतिवाद।

उग्रवादी—पुं०[सं०]=अतिवादी

उच्चक मनोग्रंथि—स्त्री०[सं०] मन में रहनेवाली यह धारणा या भावना कि हम किसी दूसरे से अथवा औरों से ऊँचे या बड़े हैं। 'हीनक भावना' का विपर्याय। (सुपीरियोरिटी कम्प्लेक्स)

उच्चतम न्यायालय—पुं०[सं०] दे० 'सर्वोच्च न्यायालय'।

उच्च-भाषक—पुं०[सं०] एक प्रकार का आधुनिक यंत्र, जो बड़े चोंगे के रूप में होता है; और जिसके छोटे गोल मुँह पर कही जानेवाली बात जोर की और अधिक दूर तक सुनाई पड़ती है। (लाउड स्पीकर)

उच्चमान—पुं० [सं०] १. किसी काम या बात का वह सबसे ऊँचा और बड़ा मान, जो पहले के उस प्रकार के सभी मानों के आगे बढ़ा हुआ हो; और जिसका सार्वजनिक रूप से अभिलेख हुआ हो और जो विशेष प्रशंसनीय और महत्त्वपूर्ण माना जाता हो। जैसे—(क) तैराकी या दौड़ में स्थापित किया हुआ उच्चमान। (ख) हवाई जहाज में बहुत अधिक उँचाई तक उड़कर स्थापित किया हुआ उच्चमान। २. गरमी, सरदी, तीव्रता, मूल्य आदि की ऐसी अधिकता या वृद्धि, जो अपने वर्ग में सबसे आगे बढ़ी या ऊपर हुई हो। जैसे—(क) चाँदी या सोने के मूल्य का उच्चमान। (ख) वर्षा या हिमपात का उच्चमान। (रिकार्ड)

उच्चांक—पुं० [सं० उच्च+अंक] १. किसी काम या बात का उच्च मान सूचित करनेवाला अंक। २. दे० 'उच्चमान'।

उच्चायुक्त—पुं०[सं० उच्च+आयुक्त] राजदूत की तरह के एक प्रकार के राजकीय अधिकारी, जो एक राज्य के प्रतिनिधि के रूप में किसी दूसरे राज्य में नियुक्त होकर रहता है। (हाई कमिश्नर)

उच्चालक—पुं०[सं०] १. दूर करने या हटाने वाला। ३. ऊपर उठाने या ले जानेवाला।

पुं० एक प्रकार का आधुनिक यंत्र, जो भारी सामान अथवा बहुत से आदमियों को नीचे से उठाकर ऊपर या ऊँची जगहों पर पहुँचाता है। (एलिवेटर) जैसे—जहाज पर माल चढ़ाने का उच्चालक।

उच्चालन—पुं०[सं०] ऊपर की ओर उठाना, चढ़ाना या ले जाना। (एलिवेशन)

उच्चालित्र—पुं० [सं०]=उच्चालक (यंत्र)।

उच्चित्र—पुं० चित्र-कला में, आवश्यकतानुसार दिखाई जानेवाली ऊँचाई और निचाई। तलोन्नत। निम्नोन्नत। (रिलीफ)

उजलना—अ० [हिं० उजालना का अ०] १. उजला या चमकीला होना। जैसे—बरतन उजलना। २. दीप्त या प्रज्वलित होना। जैसे—दीया उजलना।

स० उजालना।

उठक-बैठक—स्त्री०[हिं० उठना+बैठना] १. बार-बार उठने और बैठने की क्रिया या भाव। २. बैठक या बैठकी नाम की कसरत।

उठाना—स० १०. किसी चीज का कोई तरल पदार्थ सोखकर अपने अन्दर करना। जैसे—मुलायम आटा बहुत पानी उठाता है।

उठाव—पुं० [हिं० उठना] १. उठने की अवस्था, क्रिया या भाव। उठान। २. शरीर के किसी अंग में होनेवाला कोई ऐसा विकार, जो फोड़े, सूजन आदि का रूप धारण कर सकता हो। जैसे—इस उँगली में कोई उठाव उठ रहा है।

क्रि० प्र०—उठना।

उठावन—पुं० [हिं० उठाना, पु० हिं० उठावना] १. उठाने की क्रिया या भाव। २. कोई ऐसा कार्य, जो किसी को आगे बढ़ाने या ऊपर उठाने में प्रवृत्त करता या सहायक होता है। (लिफ़्ट) जैसे—किसी को अधिकारी की कृपा से नौकरी में उठावन मिलना। ३. बिजली की

सहायता से चलनेवाला उत्थापक नामक यंत्र, जिससे लोग ऊँचे भवनों में नीचे-ऊपर आते-जाते हैं। ४. दे० 'उठावना'।

उड़न-तश्तरी—स्त्री० [हिं० उड़ना+तश्तरी] बहुत बड़ी तश्तरी के आकार का एक प्रकार का ज्योतिर्मय उपकरण या पदार्थ, जो कभी कभी आकाश में उड़ता हुआ दिखाई देता है। उड़न-थाल। (फ़्लाइंग डिश, फ़्लाइंग सासर)

विशेष—इधर इस प्रकार के पदार्थ आकाश में उड़ते हुए देखकर इनके संबंध में लोग तरह-तरह की कल्पनाएँ करने लगते थे। पर अब वैज्ञानिकों का कहना है कि ये हमारे सौर जगत् के किसी दूसरे ग्रह से हमारी पृथ्वी का हाल जानने और हम लोगों से संपर्क स्थापित करने के लिए आते हैं। फिर भी अभी तक इनकी अधिकतर बातें अज्ञात और रहस्यमय ही हैं।

उड़न-दस्ता—पुं० [हिं० उड़ना+फा० दस्तः]=उड़ाका दल।

उड़ाका दल—पुं० [हिं०+सं०] पुलिस, सेना, आदि की वह छोटी टुकड़ी या दल, जो कोई विशेष आवश्यकता पड़ने या दुर्घटना होने पर सूचना पाते ही तुरंत वहाँ जा पहुँचता और व्यवस्था, सहायता आदि का काम करता हो। उड़न-दस्ता। (फ़्लाइंग स्क्वाड)

उत्कीर्णन—पुं० [सं०] पत्थर, लकड़ी, हाथी-दाँत आदि का तल छील और गढ़कर उनमें आकृतियाँ, बेल-बूटे, मूर्तियाँ आदि बनाने की कला। (कार्विंग)

उत्केंद्र—पुं० २. दे० 'कंप-केंद्र'।

उत्केंद्रक—वि० [सं०] जो अपने केंद्र से कुछ इधर-उधर हटा हुआ हो। (एक्सेन्ट्रिक)

उत्क्रमण—पुं० २. कोई क्रम उलटने की क्रिया या भाव। (रिवर्शन)

उत्क्रमणीय—वि० [सं०] जिसका उत्क्रमण हो सके, किया जा सके या किया जाने को हो।

उत्क्रांत—वि० ३. उलटा। विपरीत।

उत्क्रांति—स्त्री० ३. विपरीतता।

उत्खनन—पुं० २. आज-कल मुख्य रूप से जमीन खोदने की वह क्रिया, जो गहराई में दबे हुए प्राचीन अवशेषों का पता लगाने के लिए की जाती है। खोदाई। (एक्सकैवेशन)

उत्तर-जीवन—पुं० [सं०] साधारणतः अपने वर्ग के औरों का अंत या मृत्यु हो जाने पर भी बना, बचा या जीवित रहना। परिजीवन। (सर्वाइवल)

उत्तर-जीवित—भू० कृ० [सं०] जिसने उत्तर-जीवन प्राप्त किया हो। परिजीवी। (सर्वाइवर)

उत्तरजीवी (विन्)—पुं० [सं०] वह जिसने उत्तर-जीवन का भोग किया हो। साधारण वय से अधिक समय तक जीता रहनेवाला प्राणी। परिजीवी। (सर्वाइवर)

उत्तरी सागर—पुं० [सं०] एटलांटिक महासागर का वह अंश, जो ग्रेटब्रिटेन के उत्तर तथा नारवे के पश्चिम में है।

उत्थापक—पुं० बिजली की सहायता से चलनेवाला एक प्रकार का यंत्र, जिसकी सहायता से लोग बहुत ऊँची-ऊँची इमारतों या भवनों पर (बिना सीढ़ियाँ चढ़े-उतरे) ऊपर-नीचे आते-जाते हैं। उठावन। (लिफ़्ट)

उत्पल—पुं० ३. कश्मीर का एक राजकुल जो ई० ९वीं और १०वीं शताब्दियों में वहाँ राज्य करता था।

उत्पाद्य—पुं० इतिवृत्त के विचार से रूपक की कथा-वस्तु के तीन भेदों में से एक। ऐसी कथा-वस्तु, जो कर्ण की कल्पना से उत्पन्न या प्रस्तुत हुई हो।

विशेष—शेष दो भेद प्रख्यात और मिश्र कहलाते हैं।

उत्प्लव—पुं० [सं०] १. तरल पदार्थ के तल पर ठोस या भारी पदार्थ के उतराने या तैरने की क्रिया या भाव। २. प्लाव नामक उपकरण, जो पानी पर तैरता रहता है। दे० 'प्लाव'।

उत्संग—पुं० ६. प्राचीन भारत में वह कर, जो राजा के यहाँ पुत्र उत्पन्न होने पर प्रजा से लिया जाता था।

उदयन—पुं० [सं०] वत्स देश का एक प्रसिद्ध चन्द्रवंशी राजा, जो सहस्रानीक का पुत्र था और जिसकी राजधानी कौशाम्बी थी।

उदरपाद—वि० [सं०] जिसके पैर पेट के अन्दर रहते हों।

पुं० घोंघे, शंख आदि के वर्ग के वे जन्तु, जिनके चलने के अंग उनके खोल के अन्दर रहते हैं, और आवश्यकतानुसार बाहर निकाले जा सकते हैं। (गैस्ट्रोपौड)

उदर्या—स्त्री० [सं०] उदरावरण।

उदात्तीकरण—पुं० [सं०] उदात्त करने अर्थात् बहुत ऊँचा उठाने की क्रिया या भाव।

उद्गाता—पुं० १. वह जो खूब जोर से गाता हो।

उद्ग्रहण—पुं० २. राज्य या शासन का आधिकारिक रूप से आदाय, कर, शुल्क नियत करके वसूल करना। (लेवी)

उद्देश्य—पुं० ४. कथात्मक साहित्य के छः तत्त्वों में अन्तिम तत्त्व जिसमें लेखक जीवन के संबंध में अपना दृष्टिकोण या जीवन-दर्शन उपस्थित या स्पष्ट करता है।

उद्धार—पुं० २. किसी को दासता, बंधन, हीनावस्था आदि से मुक्त करके ऐसी स्थिति में लाना कि वह स्वतंत्रतापूर्वक अपनी उन्नति या विकास कर सके। (इमैन्सिपेशन) जैसे—परदे की प्रथा से स्त्रियों का उद्धार।

उद्यम—पुं० २. किसी ऐसे नये काम में प्रवृत्त होना, जिसके लिए अपेक्षया अधिक बल, योग्यता, साहस आदि की आवश्यकता हो। ३. उक्त के फलस्वरूप होनेवाला कोई कार्य या व्यापार। (एन्टरप्राइज, उक्त दोनों अर्थों के लिए)

उद्यान-विज्ञान—पुं० [सं०] वह विज्ञान, जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि पेड़-पौधे आदि किस प्रकार लगाये, बढ़ाये और सुरक्षित रखे जाते हैं। फल, फूल, साग-सब्जी आदि उत्पन्न करने की कला इसी के अन्तर्गत है। (हार्टिकल्चर)

उधरना—अ० २. मुक्ति या मोक्ष प्राप्त करना। उदा०—जाके नाम अजामिल उधर्‌यो, गनिका हू गति पाई।—गुरु नानक।

उधार-बाढ़ी—स्त्री० [हिं० उधार+बढ़ना] उधर लिया हुआ ऐसा ऋण, जिसका सूद बराबर बढ़ता रहता है।

क्रि० प्र०—देना।—माँगना।

उधारा—वि०=उधार।

उन्नायन—पुं० [सं०] उन्नयन करने अर्थात् ऊपर उठाने की क्रिया या भाव।

उन्मोचन—पुं० ३. अपराध या दोष न सिद्ध होने पर अभियुक्त को छोड़ देना। (डिस्चार्ज)

उपकरण—पुं० ४. कोई ऐसा छोटा यंत्र, जिसमें बहुत से छोटे-छोटे कल-पुरजे हों। (एपरेटस)

उपकला—स्त्री० [सं०] शरीर-शास्त्र में, एक प्रकार की बहुत चिकनी और महीन झिल्ली, जो शरीर के सभी भीतरी अंगों को ऊपर से लपेटे रहती है। (एपिथीलियम)

उप-कुलपति—पुं० [सं०] किसी विद्यालय का वह प्रधान अधिकारी, जो कुलपति के अधीन रहकर उसके काम करता हो। (वाईस-चांसलर)

उप-क्षार—पुं० [सं०] जीव-जंतुओं, वनस्पतियों आदि में से निकाला हुआ ऐसा पदार्थ, जिसमें क्षारीय तत्त्व यथेष्ट मात्रा में होता है। (एल्कलॉएड)

विशेष—कुनैन, कोकेन, अफीम आदि इसी वर्ग के पदार्थ हैं।

उप-क्षेपक—वि० [सं०] उपक्षेप करनेवाला।

पुं० दे० 'अर्थपिक्षेपक'।

उप-क्षेपण—पुं० [सं०] १. गिराना या फेंकना। २. अभियोग या दोष लगाना। ३. कहीं से लाकर सामने रखना। ४. सूचित करना।

उप-गण—पुं० [सं०] किसी गण, वर्ग या श्रेणी के अन्दर होनेवाला छोटा गण, वर्ग या श्रेणी। (सब-आर्डर)

उपचर्या—स्त्री० रोगियों की सेवा-सुश्रूषा का काम। (नर्सिंग)

उपचारिका—स्त्री० [सं०] रोगियों का उपचार या सेवा-सुश्रूषा करनेवाली स्त्री। (नर्स)

उपज—स्त्री० १. उपजने की क्रिया या भाव। २. सामूहिक रूप से वे सब चीजें, जो खेतों आदि में फसल उत्पन्न करने पर प्राप्त हों। जैसे—गेहूँ या चावल की उपज। ३. यंत्रों आदि से बनाकर तैयार की हुई चीजें।

उपजात—पुं० वह पदार्थ, जो कोई दूसरा पदार्थ बनाने के समय बीच में प्रसंग या संयोगवश निकल आता या बन जाता हो। उपसर्ग। (बाइ-प्रडक्ट)

उपजाति छंद—पुं० [सं०] छंद-शास्त्र में ऐसा छंद, जो भिन्न प्रकार के योगों से बना हो। जैसे—(क) इन्द्र-वज्रा और उपेन्द्र-वज्रा; (ख) इन्द्रवंशा और वंशस्थ अथवा (ग) तोटक और मनोरमा के योग से बने हुए उपजाति छन्द कहलाते हैं।

उपदान—पुं० २. वह धन जो राज्य या शासन की ओर से किसी ऐसे देश या राज्य को सहायता रूप में दिया जाता है, जो किसी दूसरे देश या राज्य से लड़ रहा हो। ३. वह धन जो राज्य या शासन की ओर से किसी ऐसे व्यापार या शिल्प को प्रोत्साहित करने के लिए सहायता रूप में दिया जाता है, जो देश कि आर्थिक उन्नति या विकास के लिए उपयोगी समझा जाता हो। (सबसिडी)

उपदेश-कथा—स्त्री० [सं०] कथा का वह प्रकार या रूप, जिसमें पशु-पक्षियों, वृक्षों आदि को पात्र बनाकर उनके आचरणों, व्यवहारों आदि को उपदेशात्मक कथा का रूप दिया जाता है। (फ़ेबुल) जैसे—पंचतंत्र, हितोपदेश आदि।

उपदेश-वाद—पुं० [सं०] साहित्यिक क्षेत्र में यह मत या सिद्धांत कि जो कुछ लिखा जाय, वह लोगों को नैतिक उपदेश देने के उद्देश्य से लिखा जाय। (डाइकेस्टिसीज़्म)

उपनयन—पुं० [सं०] जनेऊ या यज्ञोपवीत पहनाने का आधुनिक संस्कार।

उपनागर-अपभ्रंश—स्त्री० [सं०] मध्य युग में, अपभ्रंश भाषा का वह रूप, जो प्राकृत और आभीरी के योग से उद्भूत हुआ था और जो गुजरात तथा पूर्वी सिन्ध में प्रचलित था।

उप-पंजीयक—पुं० [सं०] वह अधिकारी, जो पंजीयक के सहायक रूप में उसके अधीन रहकर काम करता है। (सब-रजिस्ट्रार)

उपपत्ति—स्त्री० ५. किसी बात या विषय के संबंध में ऐसा निरूपित और प्रचलित मत, जो प्रायः ठीक माना जाता हो। सिद्धांत। (थिअरी)

उपरूपक—पुं० नाटक शास्त्र में, ऐसा रूपक, जिसमें गीतों और नृत्यों की प्रधानता हो।

उपरोपण—पुं० [सं०] [भू० कृ० उपरोपित] वनस्पति-विज्ञान में, किसी पौधे या वृक्ष की टहनी दूसरे पौधे या वृक्ष की डाल या तनों पर इस उद्देश्य से लगाना कि वह टहनी भी दूसरे पौधे या वृक्ष का अंश बनकर बढ़ने और फलने-फूलने लगे। कलम लगाना। (ग्रैफ़्टिंग)

उप-विभाग—पुं० २. दे० 'अनुभाग'।

उपशमन—पुं० २. किसी काम या बात में होनेवाली कमी। घटाव। (एबेटमेन्ट)

उप-शिक्षक—पुं० ऐसा शिक्षक, जो विद्यालय में पढ़नेवाले विद्यार्थी को उसके अतिरिक्त समय में पढ़ाई में सहायता देने के लिए शिक्षा देता हो। (ट्यूटर)

उप-शिक्षण—पुं० [सं०] ऐसा शिक्षण, जो किसी विद्यालय में पढ़नेवाले विद्यार्थी को उसके अतिरिक्त समय में उसकी पढ़ाई पक्की करने के लिए दिया जाता हो। (ट्यूशन)

उपशुल्क—पुं० [सं०] कोई ऐसा छोटा कर या शुल्क, जो किसी छोटे परिमित क्षेत्र में ही लगता हो। (रेट) जैसे—नगरों में लगनेवाले अलग अलग प्रकार के उप-शुल्क।

उपसंधि—स्त्री० [सं०] १. नाट्य-शास्त्र में, संधियों का एक छोटा या हल्का रूप, जिसके २१ प्रकार या भेद कहे गये हैं। २. आधुनिक राजनीति में, परस्पर युद्ध करनेवाले राष्ट्रों के सैनिक अधिकारियों का युद्ध स्थगित करने अथवा इसी प्रकार की दूसरी बातों के संबंध में होनेवाला समझौता, जिसका पालन सभी पक्षों के लिए आवश्यक होता है। अभिसमय। (कन्वेन्शन)

उपसाधक—वि० [सं०] (चीज या बात) जो किसी काम में गौण रूप से सहायक हो। (एक्सेसरी)

उपसाधन—पुं० [सं०] कोई ऐसा तत्त्व, जो किसी काम या बात की सिद्धि में गौण रूप से सहायक हो। (एक्सेसरी)

उपस्कर—पुं० ५. वे सब साधन या सामान, जिनकी आवश्यकता या उपयोग ठीक तरह से कोई काम पूरा करने में होता हो। साज-सामान। (इक्विपमेन्ट)

उपस्तंभ—पुं० [सं०] पत्थर, लकड़ी आदि का वह ऊँचा या लंबा

आधार, जिस पर और चीजें जमा या टिकाकर रखी जाती हैं। धानी। (स्टैन्ड) जैसे—घड़ौंची, दीयट आदि।

उपहत—वि० ३. जिसका गुँण या शक्ति नष्ट अथवा विकृत कर दी गई हो।

उपहास काव्य—पुं० [सं०] हास्य-रस का कोई ऐसा काव्य, जिसमें किसी प्रथा, वस्तु, व्यक्ति, स्थिति आदि का निंदनीय रूप सामने रखकर उसकी हँसी उड़ाई गई हो।

उपहास-चित्र—पुं० [सं०] वह अंकन या चित्र, जिसमें किसी घटना, वस्तु या व्यक्ति का रूप केवल हँसी उड़ाने के लिए विकृत करके दिखाया गया हो।

उपाधि—स्त्री० ४. बोल-चाल में, झगड़े-बखेड़े की कोई ऐसी बात, जो किसी काम में बाधक हो। ५. कपट। छल।

उपाध्याय—पुं० १. वह व्यक्ति, जिसके पास लोग किसी विषय का अध्ययन करने के लिए जाते हों।

उपापचयन—पुं० [सं०]=चयापचयन।

उपाय-कौशल—पुं० [सं०] एक प्रकार की बौद्ध पारमिता, जिसके द्वारा बौद्ध-भिक्षु घूम-घूम कर लोगों को महात्मा बुद्ध के उपदेश सुनाते और महायान धर्म के सिद्धांत का प्रचार करते थे।

उपार्थक—पुं० [सं०] उपार्थन अर्थात् अनुयाचन या मतार्थन करनेवाला।

उपार्थन—पुं० [सं०] १. दे० 'अनुयाचन'। २. दे० 'मतार्थन'।

उपार्थना—स्त्री० [सं०]=उपार्थन।

उपालंभ काव्य—पुं० [सं०] साहित्य में, कोई ऐसा काव्य, जिसमें प्रिय के वियोग-काल में उत्कट प्रेम के आवेश में परम आत्मीयतापूर्वक ऐसे मनोभाव प्रकट किये जाते हैं। ऐसे काव्य प्रेमी और प्रेमिका को भी संबोधित करके लिखे जाते हैं और इष्टदेव को संबोधित करके भी। जैसे—भ्रमर-गीत।

उपास्थि—स्त्री० [सं० उप+अस्थि] प्राणियों के शरीर में होनेवाले दृढ़ लचीले ऊतक, जो मिलकर प्रायः हड्डी के समान हो जाते हैं। कुरकुरी। (कार्टिलेज)

उपोत्पाद—पुं० [सं०]=उपजात (पदार्थ)।

उभयचर—पुं० मछलियों और सरीसृपों के बीच के रीढ़दार जंतुओं का एक वर्ग, जिसके जीव जल में भी रह सकते हैं और स्थल में भी। (ऐम्फीबिया) जैसे—कछुआ, मेढक आदि।

उभयलिंगी—वि० [सं०] जिसमें स्त्री और पुरुष दोनों लिंग हों। पुं० १. मनुष्यों में ऐसा व्यक्ति, जिसमें पुरुष और स्त्री दोनों के चिह्न या लिंग वर्तमान हों। २. ऐसे जीव या वनस्पतियाँ, जिनमें स्त्री और पुरुष दोनों के प्रजनन के अंग समान रूप से रहते हों। (हर्माफ़्रोडाइट) जैसे—केंचुआ, काई आदि।

उभय-वेदांत—पुं० [सं०]=विशिष्टाद्वैत

उमाभरण—पुं० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

उमीलना†—सं० [सं० उन्मीलन] १. खोलना। २. प्रकाशमान करना। ३. उल्लसित या प्रसन्न करना। (राज०)

अ० १. खुलना। २. प्रकाशमान होना। चमकना। ३. उल्लसित या प्रसन्न होना, (राज०)

उरःशूल—पुं० [सं०] एक प्रकार का रोग, जिसमें उर या हृदय के ऊपरी भाग में रह-रह कर तीव्र पीड़ा होती है। (इनजाइना पेक्टोरिस)

उरग—पुं० [सं०] ऐसे पृष्ठवंशी जन्तुओं का एक वर्ग, जो पेट के बल रेंगते हुए चलते हैं। जैसे—कछुआ, घड़ियाल, छिपकली, साँप आदि।

उराव†—पुं० [हिं० उर=हृदय] १. मन की उमंग या भाव। २. साहस। हिम्मत।

पुं०, स्त्री०=उराँव (आति और भाषा)।

उरुवेला—स्त्री० [पा०] प्राचीन पाली साहित्य में, फलगू नदी का वह रेतीला तट, जो गया और बुद्ध गया के बीच में पड़ता है।

उर्दू—स्त्री० १. बादशाही छावनी।

उर्मिला—स्त्री० [सं०] राजा सीरध्वज जनक की कन्या और सीता की छोटी बहन जो लक्ष्मण को ब्याही थी।

उलझट्टा†—पुं०=उलझन।

उलझन—स्त्री० ३. ऐसी स्थिति जिसमें किसी विषय से संबंध रखनेवाली कई कठिन, चिंतनीय और पेचीदी बातें एक साथ आ उपस्थित हों। (काम्प्लीकेशन)

उलटा कूआँ—पुं० [हिं०] मध्ययुगीन हठयोगियों की परिभाषा में, ब्रह्म-रंध्र, जिसका मुँह ऊपर की ओर माना जाता है और जिसमें अमृत-तत्त्व के भंडार की कल्पना की गई है।

उल्लेख—पुं० २. लेख, आदि के रूप में होनेवाली चर्चा या जिक्र। वर्णन। (मेन्शन)

उशना (नस्)—पुं० अर्थ-शास्त्र और राजनीति के आचार्य एक प्राचीन वैदिक ऋषि।

उष्णांक—पुं० [सं०]=उष्मांक।

उष्मा—स्त्री० २. वैज्ञानिक क्षेत्र में, गरमी या ताप, जिसके फलस्वरूप जीव-जन्तुओं और वनस्पतियों में जीवन का संचार होता है। (हीट)

उष्मा-रोधक—वि० [सं०] उष्मा अर्थात् गरमी या ताप रोकनेवाला। पुं० आधुनिक विज्ञान में, कोई ऐसा उपकरण या रचना, जो दो चीजों के बीच में इसलिए लगाई जाती है कि एक ओर का ताप, विद्युत् या शब्द दूसरी ओर न जा सके। (इन्स्यूलेटर)

उष्मिक—वि० [सं०] उष्मा-संबंधी। उष्मा का।

ऊँचाई—स्त्री० २. विशिष्ट रूप से किसी नियत तल या स्तर से ऊँचे होने की अवस्था या भाव। (आल्टिच्यूड) जैसे—(क) किसी पर्वत या स्थान की समुद्र तल से ऊँचाई। (ख) किसी ग्रह या नक्षत्र की पृथ्वी-तल से ऊँचाई।

ऊँट-पथ—पुं० [हिं०+सं०] मरुभूमि में और पहाड़ियों पर ऊँटों के काफिले के चलने के लिए बना हुआ मार्ग। (कैमेल ट्रैक)

ऊतक-विज्ञान—पुं० [सं०] आधुनिक जीव-विज्ञान की वह शाखा, जिसमें शरीर की रचना करनेवाले ऊतकों का अध्ययन होता है। (हिस्टोलॉजी)

ऊनता—स्त्री० २. विशेषतः ऐसा अभाव या कमी, जिसके बिना सहसा काम न चल सकता हो। (वान्ट)

ऊर्णाजिन—पुं० [सं०] कुछ विशिष्ट प्रकार के जंतुओं के ऐसे चमड़े, जिनके ऊपर चमकीले, मुलायम और लंबे रोएँ होते हैं। (फ़र)

विशेष—ऐसे चमड़े बहुत मूल्यवान होते हैं और प्रायः बड़े आदमियों के कोट, कुरतियाँ आदि बनाने के काम आते हैं।

ऊर्ध्व चेतन—पुं० [सं०] १. दार्शनिक क्षेत्र में, योगियों आदि को प्राप्त होनेवाली वह उच्च कोटि की चेतना, जिससे उन्हें बैठे-बैठे भूत, भविष्य और वर्तमान की सब बातों का अपने-आप ज्ञान होता रहता है। २. दे० 'अति-चेतन'।

उष्मक—वि० [सं०] ऊष्मा उत्पन्न करनेवाला।

पुं०=तापक (यंत्र)।

उष्मांक—पुं० [सं० ऊष्म+अंक] १. आधुनिक विज्ञान में, तापमान नापने की बहुत छोटी इकाई। २. उक्त के आधार पर खाद्य पदार्थों के द्वारा शरीर में ऊर्जा उत्पन्न करनेवाली शक्ति नापने की इकाई। (कैलरी)

ऋ

ऋचा—स्त्री० १. प्रशंसा। स्तुति। २. अर्चन। पूजा। ३. ऋग्वेद के वे मंत्र, जिसमें अग्नि, इन्द्र, वरुण, विष्णु आदि देवताओं की स्तुति है।

ऋणक—पुं० [सं० ऋण से] लिखाई, छापे आदि में एक प्रकार के चिह्न, जो दो राशियों या संख्याओं के बीच में रहकर यह सूचित करता है कि पहलेवाली राशि या संख्या में से बादवाली राशि या संख्या घटाई जानी चाहिए। वह इस प्रकार लिखा जाता है—(√)।

ऋण-पत्र—पुं० १. वह पत्र, जो ऋण लेने के समय महाजन को ऋण के प्रमाण-स्वरूप लिखकर दिया जाता है और जिस पर लिखा रहता है कि यह ऋण अमुक समय पर ब्याज सहित चुका दिया जायगा। (बांड)

ऋणात्मक—वि० [सं०] १. ऋण संबंधी। ऋण का। २. जो ऋण के रूप में हो। ३. जिसमें किसी प्रकार का अभाव हो। नहिक। (नेगेटिव)

ऋतु-काल—पुं० २. पशु-पक्षियों में वह विशिष्ट ऋतु या समय, जब वे जोड़ा खाते हैं। (मेटिंग सीजन)

ऋषभ-प्रिय—पुं० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

ऋषभ-वाहिनी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

ऋषभांगी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

ए

एक—वि० ४. अनिश्चित या निश्चित संख्यावाचक शब्दों के अन्त में लगने पर, प्रायः। लगभग। जैसे—कुछ एक, दस एक आदि।

एक-दलवाद—पुं० [सं०] राजनीति में, यह मत या सिद्धांत कि राज्य का सारा अधिकार और शासन किसी एक परम प्रधान राजनीतिक दल या वर्ग के हाथ में रहना चाहिए ; और बाकी सब दल या वर्ग अवैध घोषित हो जाने जाहिए। (टोटलिटेरिएनिज़्म)

विशेष—यह वाद वास्तव में जन-तंत्र, लोक-तंत्र, राज-तंत्र आदि तथा जनता की समानता की भावना के बिलकुल विपरीत और विरोधी है।

एक नटनाटक—पुं० [सं०] ऐसा नाटक या रूपक, जिसमें एक ही नट या पात्र रहता और सारी कथा-वस्तु का स्वागत भाषण के रूप में अभिनय करता है। जैसे—संस्कृत के भाण नामक नाटक अथवा सेठ गोविन्ददास कृत "चतुष्पथ", "शाप" और "वर" नामक नाटक।

एक-पक्षीय—वि० २. कई पक्षों में से किसी एक पक्ष से रहने या उसकी ओर से होनेवाला। (यूनिलेटरेल)

एक-परा—पुं० [फा० यक+हिं० पर+आ (प्रत्य०)] एक प्रकार का कबूतर जिसका सारा शरीर सफेद होता है, केवल डैनों पर दो-एक काली चित्तियाँ होती हैं।

एक पात्रीय नाटक—पुं०=एक नट नाटक।

एकम—स्त्री० [हिं० एक] चांद्र मास के हर पक्ष की पहली तिथि। प्रतिपदा।

एक-रंग—वि० ३. (व्यक्ति) जो अन्दर और बाहर सदा एक-सा रहता हो ; फलतः निष्कपट और शुद्ध हृदय का।

एकल—वि० ४. जो किसी एक ही पर आश्रित हो अथवा बिना किसी की सहायता के स्वयं सब कुछ करता हो। (सोल) जैसे—एकल निगम।

एकल निगम—पुं० [सं० कर्म० स०] ऐसा निगम, जो एक ही व्यक्ति पर आश्रित हो, और जो बिना किसी की सहायता के स्वयं या अपने आप सब कार्य करता हो। (सोल कार्पोरेशन) जैसे—राजा एकल निगम होता है।

एक-सूत्रता—स्त्री० [सं०] १. एक-सूत्र होने की अवस्था या भाव। २. चीज़ों या बातों में रहनेवाला समन्वय। ताल-मेल। (को-आर्डिनेशन)

एकांगी—वि० ४. एक ही पत्नी (या पति) के साथ निष्ठापूर्वक जीवन बितानेवाला (या वाली)। ५. एक ही के आसरे या भरोसे में रहनेवाला। एक-निष्ठ।

एकांतिक—पुं० [सं०] वैष्णव सम्प्रदाय का एक पुराना नाम। (शुद्ध रूप ऐकांतिक)।

एकाचार—पुं० [सं०] १. सदा एक ही प्रकार का अथवा एक-रस बना रहनेवाला आचार। २. एक ही पुरुष (या स्त्री) के साथ रहकर संयमपूर्वक जीवन बिताने की अवस्था या क्रिया या भाव।

एकाचारी—वि० [सं०] [स्त्री० एकाचारिणी] १. सदा एक ही प्रकार का आचार रखनेवाला। २. सदा एक ही के साथ रहकर निर्वाह करने या जीवन बितानेवाला।

एकात्मक—वि० [सं०] १. एक के रूप में होने या एक से संबंध रखनेवाला। २. किसी एक ही इकाई से संबंध रखनेवाला। मात्रिक। (युनिटरी)

एकात्मक राष्ट्र—पुं० [सं०] वह राष्ट्र, जिसके सब प्रदेश या राज्य एक ही केन्द्र से शासित होते हैं। एक ही शासन के अधीन होनेवाला राष्ट्र। (युनिटरी स्टेट)

एकायन—पुं० ३. चौक्षक नामक भागवत सम्प्रदाय का अनुयायी।

एकार्थ—पुं० साहित्य में वाक्य का कथित-पद (देखें) नामक दोष।

एकालाप—पुं०.[सं० एक+आलाप] १. किसी व्यवित का लगातार बहुत देर तक आप ही बोलते रहना और दूसरों को बोलने का अवसर न देना। २. ऐसी कविता या कहानी, जिसमें कोई पात्र या व्यक्ति आप ही सब बातें लगातार कहता चलता हो और जिसमें किसी प्रकार

का कथोपकथन न हो। ३. अभिनय या नाटक में की आत्मोक्ति या स्वगत-कथन। (मोनोलॉग)

एकीकरण—पुं० कला पक्ष में भिन्न-भिन्न तत्त्वों को मिलाकर इस प्रकार एक स्थान पर एकत्र करना कि उनके योग से सारी कृति एक-रूप और अच्छी तरह गढ़ी हुई जान पड़े।

एकीय—वि० [सं०]=एकात्मक।

एकैकी—अव्य० [सं०] एकमात्र। केवल एक। एक ही।

एक्स-रे—स्त्री० [अं०] बहुत ही छोटी तरंगोंवाली एक प्रकार की विद्युत्-किरण, जिसमें चमक नहीं होती।

विशेष—ये किरणें अपारदर्शी और ठोस पदार्थों के अन्दर भी पहुँच जाती हैं। इसीलिए इसकी सहायता से पदार्थों, शरीरों, आदि के भीतरी अंश देखे जा सकते और उनके चित्र लिये जा सकते हैं।

एक्स-रे चित्रण—पुं०=रेडियो-चित्रण।

एटम—पुं० [अं०]=परमाणु।

एटम-बम—पुं०=परमाणु बम।

एटमी—वि०=पारमाणविक।

ए० डी० कांग—पुं० [अं० एड डी कैंप] किसी बहुत बड़े राजकीय या सैनिक अधिकारी का निजी संरक्षक या सचिव।

एतो†—वि० [स्त्री० एती]=इतना।

एनामेल—पुं० [अं० एनामल] एक प्रकार का चमकीला पारदर्शी पदार्थ, जो गलाकर धातुओं आदि पर उनमें चमक लाने के लिए चढ़ाया जाता है।

एलकोहल—पुं० [सं०] तीक्ष्ण गंधवाला एक विशिष्ट प्रकार का तरल पदार्थ, जो ज्वलनशील और वर्णहीन होता है और खुला रहने पर हवा में मिलकर उड़ जाता है। इसका प्रयोग कुछ अवस्थाओं में ईंधन की तरह और प्रायः औषधों और मद्यों में मिलाने के लिए तथा उद्योग-धंधों में होता है।

ऐंग्लो-इंडियन—पुं० [अं०] उन अंगरेजों के वंशज, जो भारत में बस गये थे अथवा जिन्होंने भारतीय स्त्रियों को पत्नी के रूप में ग्रहण कर लिया था।

ऐंठन—स्त्री० ४. आक्षेपक नामक रोग।

ऐकक—वि० [सं०]=एकात्मक।

ऐकांतिक—पुं० वैष्णव धर्म का एक पुराना नाम।

ऐतिहासिकता—स्त्री० [सं०] ऐतिहासिक होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव।

ऐतिहासिकतावाद—पुं० [सं०] यह मत या सिद्धांत कि दर्शन, धर्म, संस्कृति, साहित्य आदि की सभी बातों का विवेचन उनकी ऐतिहासिकता के आधार पर ही होना चाहिए।

ऐहिक राज्य—पुं० [सं०] दे० 'धर्म निरपेक्ष राज्य'।

ओज—पुं० [सं०] १. तेज। २. प्रताप। ३. चमक। दीप्ति। ४. उजाला। प्रकाश।

ओड़िया—वि०, स्त्री०, पुं०=उड़िया।

ओड़ल†—पुं०=अड़हुल।

ओपरा—वि० [सं० अपर] [स्त्री० ओपरी] १. (व्यक्ति) जो आत्मीय न हो। पराया। २. जिसमें आत्मीयता या वास्तविकता न हो। (पश्चिम) जैसे—उसने ओपरे दिल से सहानुभूति प्रकट की है।

ओलगना†—स० [सं० अव-लगन] सेवा करना। (राज०)

औ

औत्सुक्य—पुं० २. साहित्य में, तैंतीस संचारी भावों में से एक, जो उस समय माना जाता है, जब इष्ट की प्राप्ति या प्रिय के मिलन के लिए मन उत्सुक होता है। ठंढे साँस लेना, मुँह लटकाकर कुछ सोचना और लेटने पर सोने की इच्छा होना इसके लक्षण कहे गये हैं।

औद्भिदकी—स्त्री० [सं० उद्भिद से] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा, जिसमें उद्भिदों या वनस्पतियों के आकार-प्रकार, जीवन, वृद्धि आदि से संबंध रखनेवाली बातों का विवेचन होता है। वनस्पति-विज्ञान। (बोटैनी)

औपरिष्ट—वि० [सं०] ऊपर का। ऊपरी।

औपरिष्टक—पुं० [सं०] काम-शास्त्र में मैथुन का एक प्रकार का आसन या रतिबंध।

औपयौगिक—वि० २. उपयोग के क्षेत्र या रूप में होनेवाला।

औपायनिक—पुं० प्राचीन भारत में वह भेंट, जो लोगों को राजा के दर्शन के समय अनिवार्य रूप से देनी पड़ती थी।

औरसी—स्त्री० १. पुत्री। बेटी।

औषध-विज्ञान—पुं० [सं०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा, जिसमें औषधियों के गुणों, प्रभावों, व्यवहारों आदि के सिवा इस बात का भी विवेचन होता है कि वे किस प्रकार तैयार की जाती हैं। (फ़ार्माकॉलोजी)

औषध-शास्त्र—पुं० [सं०] आधुनिक चिकित्सा-शास्त्र की वह शाखा, जिसमें प्रत्येक ओषधि के गुण, उपयोग, मात्रा आदि का विचार होता है। (मेटीरिया मेडिका)

कंक्रीट—पुं०=कंकरीट।

कंटियल†—वि०=कँटीला।

कंडम—वि० [अं० कन्डेम्ड] बिलकुल निकम्मा, रद्दी या व्यर्थ का। जैसे—तुम तो बाजार से कंडम माल उठा लाते हो।

कंडिका—स्त्री० ३. किसी साहित्यिक ग्रंथ, रचना, लेख आदि का स्वतंत्र पद। अनुच्छेद। (पैराग्राफ)

कंदर्प पुष्प—पुं० [सं०] ऐसा फूल, जिसमें काम-रति रूपी बल देने की क्षमता हो।

कंदिल—वि० [सं० कन्द से] जो आकार-प्रकार, रूप-रंग आदि में वानस्पतिक कन्द के समान हो। कन्द की तरह का। (ट्यूबरस)

कंप—पुं० ४. किसी चीज का काँपना, थर्राना या रह-रहकर हिलना। जैसे—हृद्-कंप।

कंप-केंद्र—पुं० [सं०] भू-गर्भ में भू-कंप के केन्द्र के ठीक ऊपरवाला पृथ्वी-तल, जिसके चारों ओर भू-कंप के धक्के लगते हैं। अधिकेन्द्र। उत्केन्द्र। (एपिसेन्टर)

कंबुज—पुं० [सं०] कंबोज।

कँवल सोरा—पुं०=रसन-सोरा (मछली)।

कँहरऊ†—पुं० [हिं० कहार] वे गीत, जो कहार लोग दुलहिन की पालकी ले जाने के समय गाया करते हैं।

कच्चा-पानी—पुं० [हिं०] ऐसा पानी, जो औटाया या पकाया न गया हो।

कच्चा लोहा—पुं० [हिं०] बिना साफ किया हुआ वह लोहा, जो पहले-पहल भट्ठी से गलाने पर तैयार होता है। ढलवाँ लोहा। (पिग-आयरन)

कजरा—पुं० १. काजल। २. बालक का जन्म होने पर छठी के दिन गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत, जिसमें प्रसवा को नजर लगने से बचाने के लिए उसकी ननद के द्वारा अथवा नवजात शिशु को नजर लगने से बचाने के लिए उसकी बूआ के द्वारा काजल लगाने का उल्लेख होता है। ३. काले रंग की आँखोंवाला बैल।

कटाव—स्त्री० ३. जलाशय के तटका वह थोड़ा सा भाग, जो पानी के तोड़ से कट गया हो और जिसके अन्दर कुछ दूर तक पानी चला गया हो। (इन्लेट)

कटुआँ—वि० [हिं० काटना] जो काटकर बनाया गया हो।

कटौती—स्त्री० २. किसी काम या बात में किसी रूप में की जानेवाली या होनेवाली कमी। घटाव। (एबेटमेन्ट)

कठ—वि० ६. काठ की तरह जड़ या निर्बुद्धि। जैसे—कठ-मुल्ला।

कड़वड़ा—वि० १. (व्यक्ति) जिसके कुछ बाल सफेद हो गये हों और कुछ काले रह गये हों।

कड़ाह परशाद—पुं० [हिं० कड़ाह+सं० प्रसाद] वह हलुआ, जो सिक्खों में गुरु ग्रन्थ साहब को चढ़ाकर लोगों में प्रसाद के रूप में बाँटा जाता है।

कणिका—स्त्री० [सं०] १. किसी चीज का बहुत ही छोटा कण। कनी। २. शरीर-शास्त्र में, रक्त में तैरनेवाले एक विशेष प्रकार के बहुत छोटे कण, जो लाल और सफेद दो रंगों के होते हैं और जिनके कुछ विशिष्ट कार्य होते हैं। (कार्पसल)

कथकाली—पुं० [सं० कथक=कथावाचक?] दक्षिण भारत, विशेषत: केरल का एक प्रकार का प्रसिद्ध अभिनयात्मक नृत्य, जिसके साथ संगीत भी सम्मिलित रहता है।

कथनी—स्त्री० ३. भारतीय सन्त समाज में ऐसी कोरी मौखिक बातें, जो महात्मा लोग दूसरों को उपदेश देने के समय तो कह जाते हों, पर स्वयं जिनका आचरण या पालन न करते हों। 'करनी' से भिन्न और उसके विपरीत।

कथा—स्त्री० ३. संस्कृत साहित्य में, गद्य काव्य के दो भेदों में से एक, जिसकी कथा-वस्तु अंशतः सत्य होने पर भी अधिकतर काल्पनिक हो।

कथा-काली—पुं० दे० 'कथकाली' (नृत्य)।

कथा-काव्य—पुं० [सं०] ऐसा काव्य, जो किसी लोक प्रचलित कथा या कहानी के आधार पर बना हो। (ऐसे काव्यों में प्राय: श्रृंगार रस की प्रधानता होती है।)

कथा-पुरुष—पुं० [सं०] ऐसा महापुरुष, जिसके चरित्र आदि की बहुत सी बातें आख्यानों या कथाओं के रूप में लोक में प्रचलित हो गई हों। आख्यान पुरुष। (लीजेन्डरी पर्सन) जैसे—महात्मा गाँधी भारत में कथा-पुरुष बन गये हैं।

कथा-सार—पुं० [सं०] किसी कथा, कथानक अथवा वर्णित विषय का वह संक्षिप्त रूप, जिसमें उसकी सभी मुख्य-मुख्य बातें आ गई हों। (सिनॉप्सिस)

कथा-सूत्र—पुं० [सं०] कथा, कहानी आदि की विषय-वस्तु। (थीम) विशेष दे० 'विषय-वस्तु'।

कथित पद—पुं० [सं०] साहित्य में एक प्रकार का शब्द-दोष, जो उस समय माना जाता है, जब एक ही अर्थ सूचित करनेवाले अनेक शब्दों का एक साथ अनावश्यक रूप से प्रयोग किया जाता है। एकार्थ-दोष।

कदाशय—वि० [सं०] जिसका आशय (उद्देश्य या विचार) दूषित या बुरा हो।

पुं० वह स्थिति, जिसमें कोई व्यक्ति किसी बुरे आशय या उद्देश्य से कोई काम करता हो। 'सदाशय' का विपर्याय। (मेलाफ़ाइडीज़)

कदाशयता—स्त्री० [सं०] १. कदाशय होने की अवस्था, गुण या भाव। २. विधिक क्षेत्र में,वह स्थिति जिसमें मनुष्य बुरी नीयत या बेईमानी से अथवा मन में कोई बुरा आशय या उद्देश्य रखकर कोई काम करता है। 'सदाशयता' का विपर्याय। (मेला-फ़ाइडीज़)

कदाशयी—वि० [सं०] १. कदाशय संबंधी। २. (व्यक्ति) जिसके मन में कोई कद् या बुरा आशय हो। ३. (काम या बात) जो किसी बुरे आशय या उद्देश्य से किया गया हो। "सदाशयी" का विपर्याय। (मेला-फाइडी)

कनक-गिरि—पुं० २. संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

कनक भवानी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

कनक-भूषावली—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

कनक-वसंत—पुं० [सं०] संगीत में, कर्णाटकी पद्धति का एक नया राग।

कनकांबरी—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

कन-सुरा—वि० [हिं० काना+सुर=स्वर] [स्त्री० कन-सुरी] १. जिसका स्वर बहुत ही कर्ण-कटु हो। जैसे—वह बहुत कन-सुरी थी। २. जिनमें से कर्ण-कटु स्वर निकलता हो। जैसे—कन-सुरा गला, कन-सुरी सारंगी।

कनिष्क—पुं० [सं०] कुशाण वंश का एक बहुत बड़ा सम्राट्, जो बहुत बड़ा विजयी वीर होने के सिवा कला, धर्म और साहित्य का बहुत बड़ा पोषक भी माना जाता है। इसके शिला-लेख पेशावर से बंगाल तक पाये गये हैं। इसका समय ईसा के लगभग या उसके कुछ ही बाद कहा जाता है।

कन्यका—स्त्री० १. कुमारी कन्या। २. प्राचीन आचार्यों के ग्रन्थों में, अनूढ़ा नायिका का एक पर्याय। (दे० 'अनूढ़ा')

कन्या—स्त्री० वैष्णव संप्रदाय में वे कुमारी गोपियाँ, जो श्रीकृष्ण को ही अपना पति मानकर उनके साथ विहार करती थीं।

कपड़-कीड़ा—पुं० [हिं० कपड़ा+कीड़ा] एक प्रकार का छोटा कीड़ा, जो ऊनी, रेशमी आदि कपड़ों में उत्पन्न होकर उन्हीं में अंडे देता और रहता है, और कपड़ों को काट या छेदकर अथवा और कई तरह से खराब कर देता है। (क्लोद्स मॉथ)

कपास—स्त्री० ३. सन्त साहित्य में, मन की एक संज्ञा जिसे धुनना आवश्यक कहा गया है।

कपोतक—पुं० [सं०] १. छोटा कबूतर। २. फाख्ता नामक पक्षी, जो कपोत वर्ग का ही माना गया है। ३. नृत्य में, एक प्रकार की मुद्रा, जिसमें दोनों हाथ सटाकर छाती पर रखे जाते हैं।

कपोत-पाली—स्त्री० [सं०] प्राचीन भारत का कैवाल नामक अलंकार या गहना।

कबीरा—पुं० [संत कबीर के नाम पर] लोक में प्रचलित एक प्रकार के निर्गुणी गीत, जो वस्तुतः संत कबीरदास के रचे हुए न होने पर भी उनके मत या विचारों की छाया से युक्त होते हैं और जिनमें गीतकार के नाम की जगह 'कबीर' या 'कबीरा' शब्द लगा रहता है।

कबुलवाना—सं० ३. अपराध या दोष स्वीकृत करना।

कबुली†—स्त्री० [हिं० कबूलना] कोई बात कबूल करने की क्रिया या भाव। यह मान लेना कि ऐसा ही हुआ है, अथवा ऐसा ही किया जायगा। उदा०—कुबरी करि कबुली कैकेयी। कपट छुरी उर पाहन देई।—तुलसी।

क्रि० प्र०—करना।—कराना।

कबूलना—स० [फा० कबूल+हिं ना (प्रत्य०)] २. यह मान लेना कि हमने अमुक अपराध या दोष किया है। ३. किसी के आग्रह या प्रार्थना के संबंध में दृढ़ता या निश्चय-पूर्वक यह कहना कि हम उसे मान लेंगे।

कबूली—स्त्री० [अ० कबूल, हिं० कबूलना] कबूल करने अर्थात् मानने की क्रिया या भाव। स्वीकृति। (उदा० दे० 'कबुली' के अन्तर्गत)

क्रि० प्र०—करना।—कराना।

कमजात—वि० [फा० कमज़ात] बहुत ही निकृष्ट या हीन जाति का।

कमल—पुं० १७. एक प्रकार का सम-वृत्त वर्णिक छन्द, जिसके प्रत्येक चरण में तीन सगण, एक नगण और एक गुरु वर्ण होता है। यथा—तरु चन्दन उज्ज्वलता तन धरे।—केशव।

कमल नारायणी—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

कमल रंजनी—स्त्री० [सं०] संगीत में बिलावल ठाठ की एक रागिनी।

कमलाभरण—पुं० [सं०] संगीत में, कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

कमला-मनोहरी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

कमलिनी—स्त्री० ३. बौद्ध हठ-योग में, अवधूतिका का एक नाम।

कमान—स्त्री० [फा०] ९. बसीत नाम का जहाजी यंत्र। दे० 'बसीत'।

स्त्री० [अं० कमांड] ४. वह प्रधान अधिकारी या निकाय, जिसकी आज्ञा या शासन में बहुत, से कार्य और लोग रहते हों। जैसे—कांग्रेस हाई-कमान।

कमारी†—स्त्री० [हिं० कमेरा का स्त्री०] घर के छोटे-मोटे काम करनेवाली दासी। मजदूरनी।

कयवाली—स्त्री०=कैवाल (गहना)।

करखा—पुं० ५. दे० 'कड़खा'।

करनी—स्त्री० ६. भारतीय संत समाज में ऐसी अच्छी बातों का किया जानेवाला आचरण या व्यवहार, जो दूसरों को उपदेश के रूप में कही या बतलाई जाती हों।

करपात्री—पुं० [सं० करपात्रिन्] वह जो खाने के समय हाथ में ही रोटी, दाल, तरकारी आदि लेकर खाता हो। भोजन के लिए पात्रों का उपयोग न करता हो। (साधु-महात्माओं की त्याग-वृत्ति का सूचक पद)।

करभ—पुं० संत साहित्य में, मन की वाचक संज्ञा।

कर-भोग—पुं० [सं०] सरकारी मालगुजारी या लगान वसूल करके अनुचित रूप से खा जाना या हजम कर जाना।

करवट काशी—पुं०=काशी करवट।

करी—स्त्री० [?] चौपाई या चौपैया छन्द का एक नाम।

†स्त्री० १.=कली। उदा०—कँवल करी तू परमिनि मैं निसि भएहु बिहान।—जायसी। २.=कड़ी।

करुण विप्रलंभ—पुं० [सं०] साहित्य में, विप्रलंभ श्रृंगार का वह भेद, जिसमें प्रेमी या प्रेमिका की मृत्यु के उपरांत भी उसके प्रति दुःखपूर्ण प्रेम-भाव बना रहता है; पर साथ ही मन में यह आशा भी बनी रहती है कि इसी जन्म में और इसी शरीर से फिर उससे भेंट होगी।

करुणाकरी—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

करेंच†—स्त्री०=कौंछ (केवाँच)।

कर्कट—पुं० ३. एक प्रसिद्ध घातक और भीषण रोग, जिसमें शरीर के किसी अंग के ऊतकों की कोशिकाएँ विषाक्त होकर उसी प्रकार चारों ओर फैलने लगती हैं, जिस प्रकार उक्त जन्तु के पैर होते हैं। अब तक यह प्रायः असाध्य ही माना जाता था, पर अब इसके कई नये उपचार निकले हैं, जो अनेक अवसरों पर फलप्रद भी होते हैं। (कैन्सर)

कर्ण-पटह—पुं० [सं०] कान के अन्दर की चमड़े की वह झिल्ली, जिस पर वायु का आघात होने से शब्द सुनाई पड़ते हैं। (इयर-ड्रम)

कर्णी-रथ—पुं० [सं०] प्राचीन भारत में, स्त्रियों के बैठने का वह छोटा सा रथ, जिसे आदमी खींचकर ले चलते थे।

कर्णोत्पल—पुं० [सं०] कान में पहनने का करनफूल नामका गहना।

कर्तागिरी—स्त्री० [सं०+फा०] घर-गृहस्थी के कर्ता अर्थात् हर तरह से मालिक होने और सब काम-काज चलाने की अवस्था या भाव।

कर्दन—पुं० [सं०] वायु के प्रकोप से पेट में होनेवाली गड़गड़ाहट।

कर्मण्यक—वि० [सं०] (तत्त्व या पदार्थ) जो किसी दूसरे तत्त्व, पदार्थ आदि को कर्मण्य बनाता अर्थात् किसी कार्य में प्रवृत्त करता हो। (ऐक्टिवेटर)

कर्म-वाद—पुं० ३. भारतीय दर्शन का यह मत-वाद कि मनुष्य को उसके किये हुए कर्मों के अनुसार ही अच्छे और बुरे फल भोगने पड़ते हैं।

कर्मांत—पुं० ४. जीविका निर्वाह के लिए किया जानेवाला काम या धन्धा।

कल-कंठी—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

कल-वसंत—पुं० [सं०] संगीत में कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

कल-विंकक—पुं० [सं०] बहुत ही मधुर स्वर में गानेवाला एक प्रसिद्ध ईरानी पक्षी, जो बुलबुल हजार दास्ताँ (देखें) के नाम से प्रसिद्ध है।

कलाभरणी—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

कला-मुंडी†—स्त्री०=कलाबाजी।

कलाली—स्त्री० [हिं० कलाल] १. कलाल का काम या पेशा। २ कलाल जाति की स्त्री।

पुं० १. कलाल। कलवार। २. रहस्य संप्रदाय और संत साहित्य

में—(क) आत्मा। (ख) परमात्मा जो प्रेम रूपी मद्य पिलाकर भक्तों को सुखी करता है। (सूफियों तथा फारसी साहित्य के 'साकी' के स्थान पर प्रयुक्त)

कलावती—स्त्री० ४. संगीत में, खम्माच ठाठ की एक रागिनी।

कलावाद—पुं० [सं०] आधुनिक कला और साहित्य के क्षेत्र में यह मत या सिद्धांत कि किसी प्रकार की रचना करते समय मुख्य ध्यान उसके कला-पक्ष पर ही रहना चाहिए। उपयोगितावाद से भिन्न।

कलावादी—वि० [सं०] कलावाद-संबंधी। कलावाद का।

पुं० कलावाद का अनुयायी या समर्थक।

कला-विषय—पुं० [सं०] अध्ययन और अनुशीलन का वह अंश या क्षेत्र, जो मनुष्य को अपने जीवन-निर्वाह तथा उच्च कोटि का ज्ञान प्राप्त करने के योग्य तथा समर्थ बनाता है। (आर्ट्स)

कला-स्वरूपी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

कलिल—पुं० ३. आज-कल रसायन-शास्त्र में ऐसे विशिष्ट पदार्थों में पाये जानेवाले कण, जो पानी में पूरी तरह घुल जाते हैं। (कोल्लायड)

कल्क—पुं० १२. किसी प्रकार के घोल की तल-छट। अवसाद। (ऐडिमेन्ट)

कल्प-कथा—स्त्री० [सं०] ऐसी कथा या कहानी, जिसकी घटनाएँ, पात्र आदि वास्तविक नहीं, बल्कि केवल कल्पित हों। (फिक्शन)

कल्प-ग्रंथ—पुं० [सं०] वैदिक काल के वे ग्रंथ, जिनमें यज्ञों से संबंध रखनेवाले कर्म-कांड का विवेचन होता था।

कल्पितार्थ—पुं०=परिकल्पना। (हाइपोथेसिस)

कल्ब—पुं० ५. सूफी साहित्य में, अंतःकरण का वह अंग या वृत्ति, जिसकी सहायता से मनुष्य की बौद्धिक क्रियाएँ होती हैं। (रूह या आत्मा से भिन्न)

कल्याण केसरी—पुं० [सं०] संगीत में, कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

कल्याण-वसंत—पुं० [सं०] संगीत में, कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

कल्लोल—पुं० संगीत में, कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

कवक—पुं० ४. एक प्रकार के बहुत छोटे कीटाणु, जिनकी गिनती पहले वनस्पतियों में होती थी ; पर जो जड़ों, तनों पत्तियों आदि से रहित होने के कारण जीव-वर्ग में गिने जाने लगे हैं। इनके उपनिवेश प्रायः वनस्पतियों पर ही होते हैं। फसलों पर लगनेवाले कँडुआ, रतुआ आदि रोग और ऊली या भुकड़ी इसी वर्ग में आती है। (फंगस)

कवच कोठरी—स्त्री० [सं०+हिं०] आधुनिक युद्ध-सज्जा में कंकड सीमेन्ट आदि के योग से बनी हुई वह पक्की और बहुत मजबूत तल-चौकी या दमदमा, जिस पर तोप के गोले और बमों आदि का भी सहज में कोई प्रभाव नहीं पड़ता। (पिल-बॉक्स)

विशेष—इस प्रकार की कोठरियाँ प्रायः सीमा पर थोड़ी-थोड़ी दूर पर बनाई जाती हैं, जिनके झरोखों में से आक्रमणकारी शत्रु के सैनिकों पर बन्दूकों, मशीनगनों आदि से गोलियाँ चलाई जाती हैं। इनका अधिकांश पृथ्वी तल से नीचे होता है केवल झरोखों वाला थोड़ा सा अंश पृथ्वी तल से कुछ ऊपर रहता है।

कविधरा—वि० [सं०] जिसने कवियों को धारण किया हो ; अर्थात् जिसमें बहुत-से कवि रहे या हुए हों। उदा०—उस कविधरा भू-भाग में अनेक सरस कवि हुए।—विश्वनाथप्रसाद मिश्र।

कव्वाल—पुं०=कौआल।

कव्वाली—स्त्री०=कौआली।

कशेरुक—पुं० २. रीढ़वाले प्राणियों की पीठ पर की वे लंबी हड्डियाँ जो रीढ़ के दोनों ओर निकली रहती हैं।

कशेरुक-दंडी—पुं० [सं०] आधुनिक जीव-विज्ञान में ऐसे प्राणियों का वर्ग, जिनकी पीठ में रीढ़ की हड्डी होती है। (वर्टिब्रेट) जैसे—चौपाये, मछलियाँ, मनुष्य।

विशेष—ऐसे जीवों में खोपड़ी और मस्तिष्क होता है ; और इनके रक्त में लाल रंग के कण होते हैं।

कशेरुकी—पुं०=कशेरुक-दंडी।

कष्ट-कल्पना—स्त्री० २. भारतीय साहित्य में, एक प्रकार का रस-दोष जो वहाँ माना जाता है, जहाँ सहज में यह पता ही न चलता हो कि इसमें अनुभाव क्या है और विभाव क्या है।

कष्टत्व—पुं० [सं०] साहित्य में, कष्टार्थ नामक दोष।

कष्टार्थ—पुं० ३. साहित्य में, उक्ति का वह दोष, जिनके कारण शब्दों में स्थित अर्थ, जल्दी प्रकट या स्पष्ट नहीं होने पाता। ऐसा अर्थ जिसे जानने या समझने में विशेष कष्ट या परिश्रम करना पड़ता है। कष्टत्व।

कसू—सर्व०=किसी।

कहरऊ—पुं० दे० 'कँहरऊ'।

कहा—क्रि० वि०=क्या। उदा०—मों को कहा ढूँढ़े बंदे मैं तेरे पास रे।—कबीर।

कहानीकार—पुं० [हिं०+सं०] वह जो प्रायः कहानियाँ रचता या लिखता हो। कहानी-लेखक।

कहीं—अव्य० ६. किसी तरह। किसी प्रकार। उदा०—छूट जाएँ गम के हाथों से जो निकले दम कहीं।—कोई शायर।

कांकायन—पुं० [सं०] कंक गोत्र या कंक जाति का व्यक्ति।

कांचन-संधि—स्त्री० [सं०] दे० 'संगत-संधि'।

काँच-मल—पुं० [हिं० काँच+सं० मल] जरायुज जीवों के प्रसव के उपरांत निकलनेवाले मांस-खंड। खेड़ी। (स्लैग)

कांडाग्नि—पुं० [सं०] कच्छ-भुज प्रदेश के उत्तर-पूर्व वाले रन का पुराना नाम। (आज-कल का 'काँडला' नामक स्थान)

कांत-सार—पुं० [सं०]=कांति-सार (लोहा)।

कांति-चक्र—पुं० [सं०]=परिमंडल। (देखें)

कांति-सार—पुं० [सं० कांत-सार] एक प्रकार का साफ किया हुआ ढलवाँ लोहा, जिसकी कड़ाहियाँ आदि बनती हैं।

कांस्य—पुं० २. मद्य पीने का प्याला। चषक।

काकतीय—पुं० [सं०] दक्षिण भारत का एक प्राचीन राजवंश। (ई० बारहवीं-तेरहवीं शती)

काकोच्छ्वास—पुं० [सं०] कष्ट, पीड़ा आदि के कारण उखड़ा या टूटा हुआ साँस।

काक्वाक्षिप्त—पुं० [सं० काकु+आक्षिप्त] साहित्य में, गुणीभूत व्यंग्य का एक प्रकार या भेद, जिसमें काकु अथवा कंठ-ध्वनि के द्वारा व्यंग्यार्थ आक्षिप्त होता अर्थात् खींचकर लाया जाता है। यथा—सुनु दसमुख खद्योत प्रकाशा। कबहुँ कि नलिनी करई बिकासा।—तुलसी। इसमें काकु से तो यही अर्थ निकलता है कि खद्योत के प्रकाश

में नलिनी विकसित नहीं होती ; परन्तु इसमें का काक्वाक्षिप्त व्यंग्य यह सूचित करता है कि सीता नलिनी है और वह राम रूपी सूर्य की ओर देखने पर ही विकसित होती है।

काग—पुं० ३. रहस्य संप्रदायों और सन्त समाज में अज्ञान के अन्धकार में पड़ा हुआ चित्त या मन। उदा०—कागिलगर फाँदिया, बटेरै काज जीता ।—कबीर।

काचू कटिया—पुं० [पं० काचू+चाकू=हिं० काटना] मध्य युग में, पंजाबी, व्यक्तियों या विरक्तों का एक संप्रदाय ।

विशेष—इस संप्रदाय के त्यागी किसी के शिष्य नहीं होते थे, बल्कि चाकू से अपनी चुटिया आप ही काट कर मानों अपनेआप को ही अपना गुरु बना लेते थे।(कहा जाता है कि ये लोग प्रायः आपस में भी लड़ते-भिड़ते रहते थे और मद्य, मांस आदि का भी सेवन करते थे।

काजला—पुं०=कजरा (गीत)।

काठक—पुं० [सं०] १. कठ-मुनि की प्रवर्तित शाखा। २. उक्त शाखा का अनुयायी व्यक्ति ।

कातंत्रिक—पुं० [सं०] वह जो कातंत्र व्याकरण का बहुत बड़ा पंडित हो।

कातिल—वि० ५. बहुत अधिक चालाक, गहरा या भरपूर वार करने या हाथ मारनेवाला है। जैसे—कातिल रोजगारी।

कादिरी—पुं० [फा०] एक सूफी सम्प्रदाय जिसके प्रवर्त्तक अब्दुल कादिर अलजीलानी (जन्म सन् १०७८ ई०) थे।

कानटेन—वि० [हिं० काना=एक आँखवाला] एकाक्ष। काना। (उपेक्षा और परिहास)

काना†—पुं० ऐब। खराबी। दोष। उदा०—सूरदास की एक आँख है ताहू में कुछ कानो।—सूर।

कापालिक—पुं० ४. शैव सम्प्रदाय की पाशुपत शाखा के अनुयायी एक प्रकार के विरक्त साधु। ५. उक्त के अनुकरण पर बौद्ध तांत्रिकों और हठ-योग में ऐसा साधक,जिसने डोबी की साधना पूरी कर ली हो।

काबूली—पुं० [फा० काबू] बहुत बड़ा दुष्ट और धूर्त व्यक्ति।

कामकार—पुं०[सं०] प्राणियों की प्रबल कामवासना की सूचक शारीरिक क्रिया या चेष्टा।

काम-चलाऊ—वि० ३. (उपाय या व्यवस्था) जो अस्थायी रूप से या कुछ समय के लिए काम चलाने के लिए उपयोगी सिद्ध हो सके और फलतः पूर्णरूप से उपयोगी या सुदृढ़ न हो। (मेकशिफ्ट) जैसे—झगड़ा निपटाने का मार्ग तो निकाल लिया गया, पर वह कामचलाऊ ही था।

काम-पिशाच—पुं० [सं०] बहुत बड़ा कामुक।

काम-रूपा—स्त्री० [सं०] पुष्टि-मार्गीय वैष्णवों में भक्ति का वह प्रकार जिसमें एक-मात्र कृष्ण के प्रति आसक्ति रहती और उन्हीं की प्राप्ति की कामना होती है। गोपियों की कृष्ण के प्रति भक्ति इसी वर्ग में आती है।

काम-लिंग—पुं० [सं०] वे चिह्न या लक्षण, जिनसे पता चलता है कि मनुष्य कामुक है या उसमें इस समय काम-वासना प्रबल हो रही है।

कामाक्षा—स्त्री० [सं०] १. कामरूप की वह पहाड़ी, जिस पर कामाक्षी देवी का मंदिर है। २. दे० 'कामाक्षी'।

कामित—पुं० [सं०] संभोग की मनोवृत्ति। काम-वासना।

काय-चिकित्सक—पुं० [सं०] वह जो भैषज-शास्त्र का अच्छा ज्ञाता हो और काय-चिकित्सा करता हो। (फ़िज़ीशियन)

काय-बंधन—पुं० [सं०] ऐसा कपड़ा, जो शरीर में बाँध या लपेटकर पहना जाता हो। जैसे—धोती, पटका, साफा आदि।

कायस्थ—पुं० ५. प्राचीन भारत में, किसी कार्यालय या विभाग के लिपिकों आदि का प्रधान अधिकारी।

काया-पलट—पुं० ३. योग-शास्त्र की एक क्रिया जिसमें प्राणायाम आदि के द्वारा शरीर का काया-कल्प किया जाता है।

कायिकी—स्त्री० [सं० कायिक से] आधुनिक जीव-विज्ञान की वह शाखा, जिसमें इस बात का अध्ययन और विवेचन होता है कि जीवधारियों की काया या शरीर के किन-किन अंगों में कैसी-कैसी आंतरिक क्रियाएँ होती हैं और उनके क्या-क्या परिणाम होते हैं। (फ़ीजियोलॉजी)

कारणातिशयोक्ति—स्त्री० [सं०] साहित्य में, अतिशयोक्ति अलंकार का एक प्रकार या भेद, जिसमें कारण या हेतु का अतिशयोक्तिपूर्ण उल्लेख होता है। कुछ आचार्य अक्रमातिशयोक्ति और अत्यंतातिशयोक्ति को भी इसी के अंतर्गत मानते हैं।

कारवाँ-सराय—स्त्री० [फा० कारवाँ+तातारी सरा] मध्य युग में, अफ्रीकी और एशियाई देशों में बड़े और विस्तृत आँगनवाले वे भवन, जिनमें यात्रा के समय कारवाँ अर्थात् यात्रियों और व्यापारियों के दल ठहरा करते थे।

कार्बन—पुं० [सं०] १. रसायन-शास्त्र में एक प्रसिद्ध अधातवीय तत्त्व, जो भौतिक सृष्टि के मूल-तत्त्वों में से एक है। यह स्वतंत्र रूप में भी मिलता है और मिश्र रूप में भी। कोयले और हीरे में यह स्वतंत्र रूप में होता है, पर खड़िया, संगमर्मर आदि में मिश्र रूप में पाया जाता है। २. एक तरह का महीन कागज जिस पर स्याही लगी होती है तथा जो प्रतिलिपि तैयार करने के काम में आता है।

कार्यक—पुं० [सं०] वह जो दीवानी मुकदमा लड़ता हो। वादी और प्रतिवादी दोनों।

कार्य-काल—पुं० [सं०] वह नियत काल, जिसमें कोई अधिकारी या प्रतिनिधि अपने पद पर रहकर कार्य करता हो। (टर्म)

कार्य-वाहक—वि० [सं०] १. कार्य का भार वहन करने या काम चलानेवाला। २. (अधिकारी) जो किसी स्थायी अधिकारी की अनुपस्थिति में उसके पद पर रह कर उसके सब काम चलाता हो। (ऐक्टिंग)

कार्यांग—पुं० दे० 'कार्य-पालिका'।

कार्यान्वय—पुं० [सं०]=कार्यन्विति।

कार्यान्विति—स्त्री० [सं०] १. कार्यान्वित होने की अवस्था, गुण या भाव। २. कर्तव्य, निश्चय, प्रतिज्ञा, वचन आदि का कार्य रूप में किया जानेवाला पालन। अभिपूर्ति। (इम्प्लिमेन्टेशन)

काल-गंडिका—स्त्री०[सं०] कश्मीर की एक प्राचीन नदी। (राज० त०)

काल-क्रम-विज्ञान—पुं० [सं०] वह विज्ञान या विद्या, जिसके द्वारा ऐतिहासिक घटनाओं आदि का किसी विशिष्ट सन् तथा संवत् के आधार पर काल-क्रम निश्चित किया जाता है। (क्रोनोलॉजी)

काल-भोजन—पुं० [सं०] ठीक और नियत या विहित समय पर किया जानेवाला भोजन।

काल-मापी—वि० [सं०] काल का माप करने या समय की नाप बतलानेवाला।

पुं० एक प्रकार की बहुत बढ़िया घड़ी जो बिलकुल ठीक समय बतलाती है, और जिसके द्वारा सभी स्थानों पर स्थानीय समय, देशांतर आदि कुछ और बातें भी जानी जाती है। (क्रोनोमीटर)

काल-लिख—पुं० [सं०] एक प्रकार का यंत्र, जिसकी सहायता से वहुत थोड़े-थोड़े अन्तर पर घटित होनेवाली घटनाओं का अंतर एक मानचित्र पर अंकित होता चलता है। (क्रोनोग्राफ)

काला धन—पुं० दे० 'दूषित धन'।

काला बाजार—पुं० [हिं०]=चोर बाजार।

काला सोना—पुं० [हिं०] पत्थर के कोयले का वाचक पद, जो उसके वहुमुखी उपयोगिताओं का सूचक है। (ब्लैक गोल्ड)

कालिदास—पुं० [सं०] संस्कृत के एक सुप्रसिद्ध और मूर्धन्य कवि, जो प्रकृति के वर्णन के सिवा उपमाएँ देने में भी बेजोड़ थे। इनके काल और देश का अभी तक ऐतिहासिक दृष्टि से प्रामाणिक निर्णय नहीं हुआ है। पर ये उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के राज-कवि माने जाते हैं और कश्मीर तथा मध्यप्रदेश से विशिष्ट रूप से संवद्ध जान पड़ते हैं।

काली बेगम—स्त्री० [हिं०] १. अफीम। (परिहास और व्यंग्य) २. ताश का एक प्रकार का खेल।

काली मिट्टी—स्त्री० २. खेतों की काले या गहरे भूरे रंग की भुरभुरी और महीन मिट्टी, जो विशेष उपजाऊ होती है। ऐसी मिट्टी विशेषतः यूरोप और अमेरिका के कुछ भागों में अधिकता से होती है। (ब्लैक अर्थ)

कालोचित—वि० [सं०]=समयोचित।

कालोचितता—स्त्री० [सं०]=समयोचितता।

काव्य-पाक—पुं० [सं०] साहित्य में सुकवि की रचना का वह परिपाक या परिपक्व रूप, जो विशेष अध्ययन और अभ्यास से प्राप्त होता है।

काव्य-पुरुष—पुं० [सं०] १. कवि की वह अद्भुत और अलौकिक कल्पना, जो उसके काव्य में आत्मा या पुरुष के रूप में रहती है।

काव्य-हरण—पुं० [सं०] साहित्य में, किसी कवि का प्रयुक्त विशिष्ट पद,शब्द आदि ज्यों के त्यों लेकर अपनी कविता में रख लेना, जो एक प्रकार की साहित्यिक चोरी है।

काव्य-हेतु—पुं० [सं०] साहित्य में, ऐसी बातें या साधन, जिनसे मनुष्य में काव्य-रचना की योग्यता या शक्ति उत्पन्न होती है। यथा—प्रतिमा, व्युत्पत्ति या बहुज्ञता, अभ्यास, समाधि या मन की एकाग्रता आदि।

काशिकेय—वि० [सं०] काशी संबंधी। काशी का।

पुं० काशी का निवासी।

काष्ठ-कलह—पुं० [सं०] प्राचीन भारत में, सैनिकों की वह नकली लड़ाई, जो काठ के बने हुए हथियारों से केवल अभ्यास के लिए होती थी।

किंगरिहा†—पुं० [हिं० किंगरी+हा (प्रत्य०)] ऐसा भिक्षुक जो किंगरी बजाकर भीख माँगता फिरता हो।

किण्वन—पुं० [सं०] खमीर उठाने के उद्देश्य से किसी चीज को सड़ाने की क्रिया। (फ़र्मेन्टेशन)

किनरी†—स्त्री० १.=किन्नरी। २.=किंगरी (बाजा)।

५. आर्थिक विषयों में सावधानतापूर्वक की जानेवाली ऐसी व्यवस्था, जिसमें व्यर्थ का नाश या व्यय न होने पावे और ठीक या पूरा लाभ होता हो।

किनाराकश—वि० [फा०] [भाव० किनाराकशी] किसी काम या बात से अपना संबंध तोड़कर किनारे अर्थात् अलग या दूर हो जानेवाला।

किनाराकशी—स्त्री० [फा०] किनाराकश होने की अवस्था, गुण या भाव।

किलो—पुं० [अं०] १.=किलोग्राम। २.=किलोमीटर।

किलोग्राम—पुं० [अं०] दाशमिक प्रणाली की एक तौल, जो १००० ग्राम के बराबर होती है और जो अब भारत में भी प्रचलित हो गई है।

कीट-सारी—वि० [सं० कीट-सारिन्] [स्त्री० कीट-सारिणी] (औषध या द्रव्य) जिसके प्रयोग से कीड़े दूर भागते हों। (इन्सेक्ट रिपेलेन्ट)

कीर्त्तिमान—पुं० [सं०] असाधारण अध्यवसाय, परिश्रम या प्रयास से किया हुआ कोई ऐसा बड़ा या श्रेष्ठ कार्य, जो किसी बहुत ऊँचे मान या माप तक पहुँचा हो और इसीलिए जो सार्वजनिक रूप से अभिलिखित हुआ हो और कर्त्ता के लिए विशेष रूप से कीर्त्ति या यश देनेवाला माना जाता हो। (रेकॉर्ड) जैसे—मई, १९६५ में भारतीय पर्वतारोही दल ने एवरेस्ट पर्वत पर चढ़ाई का नया कीर्त्तिमान स्थापित किया था।

कीर्त्तिस्व—पुं० [सं०] किसी व्यवसायिक संस्था के सुनाम और सुयश का वह लाभ, जो उसके उत्तराधिकारी को प्राप्त होता है। (गुडविल)

कुंतल-मौलि—पुं० [सं०] सिर के बालों का जूड़ा

कुँवार-छल—पुं० [सं० कुमार=कुँवारा या कुँवारी+छल (प्रत्य०)] कुमारी या बालिका की वह स्थिति, जिसमें उसका कौमार्य भंग न हुआ हो। अक्षत-योनि होने की स्थिति।

मुहा०—**(कुँवारी या बालिका का) कुँवार छल उतारना**=अक्षत-योनि या कुमारी के साथ पहले-पहल संभोग या समागम करना। कुमारी का कौमार्य भंग करना।

कुत्तरा†—पुं० [स्त्री० कुत्तरी]=कुत्ता। उदा०—जो घन बरसें उत्तरा। भात न छूटै कुत्तरा। (कहा०)

कुफेर—पुं० [सं० कु+हिं० फेर] १. अशुभ या हानिकारक अवसर या स्थिति। २. बुरी दशा या बुरे दिन। 'सुफेर' का विपर्याय।

कुमेरु ज्योति—स्त्री० [सं०] कुमेरु अर्थत् दक्षिणी ध्रुव के आस-पास के क्षेत्रों में कभी-कभी रात के समय दिखाई पड़नेवाली एक विशेष प्रकार की ज्योति या विद्युत् का प्रकाश। 'सुमेरु-ज्योति' का विपर्याय। (ऑरोरा ऑस्ट्रेलिस)

कुवृद्ध—वि० [सं०] [स्त्री० कुवृद्धा] जो बिना कुछ किये-धरे और व्यर्थ ही बुड्ढा हो गया हो।

कुशल-मंगल—पुं० [सं०]=कुशल-क्षेम।'

कुसूल—पुं० अनाज रखने का कोठला।

पुं०=कुशूल।

कूट-चित्र—पुं० [सं०] १. आज-कल आधुनिक चित्र-कला में ऐसा चित्र, जिसमें ऊपर से तो एक ही घटना या पदार्थ दिखाई देता हो, पर सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर उसमें कुछ और घटनाएँ या पदार्थ भी दिखाई देते हों। जैसे—चित्र में साधारणतः एक वृक्ष और उसकी शाखाएँ ही दिखाई देती हों; परन्तु उन शाखाओं का अंकन ऐसे कौशल से हुआ हो कि कहीं उसमें आदमी, बिल्ली, भालू या शेर की आकृति भी बनी हो। २. दे० 'श्लेष-चित्र'।

कृतित्व—पुं० [सं०] किसी कृति अथवा रचना का गुण, धर्म या भाव।

कृते—अव्य० [सं०] की ओर से। के लिए। के वास्ते। (फ़ॉर)

विशेष—इसका प्रयोग पत्रों आदि के अंत में किसी की ओर से किये जानेवाले हस्ताक्षर के पहले होता है। जैसे—रामनाम शर्मा, कृते प्रधान संपादक। अर्थात् प्रधान संपादक के प्रतिनिधि रूप में हस्ताक्षर।

कृष्ण सागर—पुं० [सं०] दक्षिण यूरोप का एक समुद्र, जो सोवियत रूस, एशिया माइनर और बालकन प्रायद्वीप से घिरा हुआ है। (ब्लैक सी)

केंद्रक—पुं० [सं०] कोई ऐसा तत्त्व या पदार्थ, जो केंद्र बनकर चारों ओर अपने अंगों का विकास करता अथवा अपने कार्य-क्षेत्र आदि का विस्तार करता है। नाभिक। (न्युक्लिअस)

केकय-अपभ्रंश—स्त्री० [सं०] केकय अर्थात् पश्चिमी कश्मीर और पश्चिमी पंजाब में ई० छठी से दसवीं शताब्दियों तक प्रचलित अपभ्रंश भाषा का वह रूप, जिससे आधुनिक पश्चिमी पंजाबी का विकास हुआ है। इस अपभ्रंश का साहित्य मध्ययुग में नष्ट हो जाने के कारण अब अप्राप्य है।

केवड़ा-जल—पुं० [हिं०+सं०] केवड़े के फूलों का भभके से उतारा हुआ सुगंधित अर्क।

केवल-ज्ञान—पुं० [सं०] परब्रह्म या परमात्मा के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान, जो बहुत बड़े-बड़े महात्माओं, योगियों आदि को ही होता है।

केवाल—पुं० [सं०] एक प्रकार का अलंकार या गहना। कपोतपाली।

केश-बल्य—पुं० [सं०] ऐसी चीजें या दवाएँ, जो सिर के बालों को झड़ने से रोकतीं या उनकी जड़ मजबूत करती हैं। (हेयर टॉनिक)

केश-संभारण—पुं० [सं०] स्त्रियों में, सिर के बालों को सुंदर रूप से घुमा-फिराकर उनके गुच्छ या लटें बनाने अथवा जूड़ा आदि बाँधने की कला या क्रिया। (हेयर-ड्रेसिंग)

कैफियत—स्त्री० ३. किसी कथन या बात के स्पष्टीकरण के लिए कही जानेवाली कोई दूसरी छोटी बात। (रिमार्क)

कैरणिक—वि० [सं०] किरणों से संबंध रखनेवाला। किरणों का।

कैरणिकी—वि० दे० 'विकिरण-विज्ञान'।

कैशोरक—पुं० [सं०] नवयौवन। नई जवानी।

कैसो—अव्य० [हिं० कैसा का स्त्री०] क्या। जैसे—राम राम अब मैं कैसी करूँ अर्थात् क्या करूँ। (ब्रज०)

कोमल—स्त्री० [?] चोरी करने के लिए दीवार में किया जानेवाला छेद। सेंध। उदा०—इस साए में कोमल हुई कल रात को इन्शा।—इन्शा।

कोकैंया†—पुं० दे० 'महलाव' (पक्षी)।

कोटा गंबल—पुं० दे० 'रगन' (वृक्ष)।

कोठे-वाली—स्त्री० [हिं० कोठा+वाली (प्रत्य०)] रंडी या वेश्या जो प्रायः कोठे पर रहती या बैठती है।

कोण-शिला—स्त्री० [सं०] १. मकान आदि बनाने के समय नींव का वह पत्थर, जो भारतीय आर्यों में अग्नि-कोण में तथा अन्यान्य जातियों और देशों में ऐसे ही किसी दूसरे विशिष्ट कोण में रखा जाता है। (कार्नर स्टोन) २. आधार-शिला। नींव का पत्थर।

कोणिक दिशा—स्त्री० [सं०] दो दिशाओं के बीच की दिशा। कोण।

कोथ—पुं० ३. एक प्रकार का घातक रोग जिसमें घाव लगने या रक्त का प्रवाह रुकने के कारण शरीर का कोई अंग गलने या सड़ने लगता है। (गैंग्रीन)

कोशिका—स्त्री० ३. बहुत ही सूक्ष्म कणों या छोटे-छोटे कोषों के रूप में वह मूल तत्त्व, जिसमें जीव-जंतुओं के शरीर और खनिज पदार्थ आदि बने होते हैं। ४. वह आधान या पात्र, जिसमें बिजली उत्पन्न करनेवाले रासायनिक तत्त्व भरे रहते हैं। ५. छोटी और अँधेरी कोठरी। काल कोठरी। (सेल, अन्तिम तीनों अर्थों में) जैसे—कारागार में विकट अपराधियों को रखने की कोशिका।

कोषाणु—पुं० [सं०] दे० 'कोशिका' ३।

कौंध प्रकाश—पुं० [हिं०+सं०] ऐसा तीव्र या प्रबल प्रकाश, जो आँखों में चकाचौंध उत्पन्न करता हो। (फ़्लैशलाइट)

कौआ परी—स्त्री० [सं०] ऐसी काली-कलूटी युवती जो प्रायः चटक-मटक से रहती है, बहुत बनाव-सिंगार करके अपने आपको रूपवती समझती है। (बाजारू)

क्रमिकता—स्त्री० [सं०] क्रमिक होने की अवस्था, गुण या भाव।

क्रमिकतावाद—पुं० [सं०] यह सार्वजनिक मत या सिद्धांत कि सभी चीजों और बातों का इस प्रकार क्रमिक रूप से और धीरे-धीरे विकास होता है कि साधारणतः ऊपर से देखने पर इस विकास या वृद्धि का सहसा पता नहीं चलने पाता। अनुक्रमवाद। (ग्रैजुएलिज्म)

क्रमित—भू० कृ० [सं०] १. जो क्रम में रखा या लगाया गया हो। क्रम से युक्त किया हुआ। २. जिसके साथ उतार-चढ़ाव आदि का क्रम निरूपित हो। (ग्रैजुएटेड) जैसे—वेतन का क्रमित मान।

क्रिया-कलाप—पुं० ३. किसी कार्य या व्यवहार से संबंध रखनेवाली सभी विशिष्ट क्रियाएँ। प्रविधि। (टेक्नीक)

क्रिया-विज्ञान—पुं० [सं०] आधुनिक जीव-विज्ञान की वह शाखा, जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि जीवों के अंग और इन्द्रियाँ किस प्रकार अपनी क्रियाएँ या व्यापार करती हैं। (फीज़ियोलोजी)

क्रिया-विधेय—पुं० [सं०] व्याकरण में, वह विधेय जो कर्ता से निर्दिष्ट होनेवाली क्रिया की स्थिति बतलाता है।

क्रीम—पुं० [अं०] १. दूध के ऊपर जमा होनेवाली मलाई। २. दूध और मलाई के योग से बनाये जानेवाले कई प्रकार के खाद्य और पेय पदार्थ। जैसे—बरफ का क्रीम, फलों का क्रीम। ३. अंग-राग के रूप में काम आनेवाला कोई ऐसा पदार्थ जो देखने में मलाई की तरह का हो; या जिसमें मलाई की तरह की कोई चीज जमीन के रूप में काम में लाई गई हो।

क्वाँरी†—स्त्री० [सं० कुमारी] १. ऐसी कन्या या स्त्री, जिसका अभी तक विवाह न हुआ हो। २. रहस्य संप्रदाय और संतों की परिभाषा

में माया, जो सबको अपने रूप-जाल में फँसाकर अपनी ओर अनुरक्त करती है।

क्षति-मूल्य—पुं० [सं०] वह धन जो किसी की कोई क्षति या हानि होने पर उसके बदले में उसे दिया जाय। प्रति-कर। क्षति-पूर्ति। हरजाना। (डैमेज़ेस)

क्षारता—स्त्री० [सं०] क्षार अथवा क्षारीय की अवस्था, गुण या भाव। क्षारीयता। खारापन। (ऐल्कॅलिनिटी)

क्षीणेंद्रिय—वि० [सं०] जिसने विषय-भोग में अपनी सारी पुंसत्व-शक्ति गवां दी हो।

क्षुद्रांत्र—पुं० २. पेड़ के अन्दर की आँतों का वह ऊपरी भाग जो नीचे-वाले भाग की अपेक्षा छोटा और पतला होता है। (स्मॉल इन्टेस्टाइन)

क्षुधा-अभाव—पुं० [सं०]=क्षुधा-नाश।

क्षेत्रक—पुं० [सं०] किसी बड़े क्षेत्र या भू-खंड का वह छोटा टुकड़ा जो किसी विशिष्ट प्रशासनिक अथवा व्यवस्थात्मक कार्य के लिए अलग किया गया हो। (सेक्टर)

क्षेत्र-संन्यास—पुं० [सं०] एक प्रकार का संन्यास, जिसमें किसी बहुत ही परिमित क्षेत्र में रह कर यह निश्चय कर दिया जाता है कि हम इस क्षेत्र के बाहर नहीं जायँगे।

क्षेत्राधिकार—पुं० [सं० क्षेत्र+अधिकार] विधिक दृष्टि से किसी अधिकारी को अपने कार्य-क्षेत्र में प्राप्त होनेवाला वह विशिष्ट अधिकार जिसके अनुसार वह सब कार्य करता या कर सकता है। (जुरिडिक्शन)

क्षेत्रिक—वि० [सं० क्षेत्र+इक] १. किसी विशिष्ट क्षेत्र अर्थात् भू-भाग से संबंध रखने या उसके अंतर्गत होनेवाला। (टेरिटोरियल) २. दे० 'क्षेत्रिय'।

क्षेत्रीय—वि०=क्षेत्रिय।

क्षेत्रीय समुद्र—पुं० [सं०]=प्रादेशिक समुद्र।

क्षेप्यास्त्र—पुं० [सं० क्षेप्य+अस्त्र] कोई ऐसा अस्त्र, जो दूर से फेंककर चलाया अथवा किसी प्रकार का वेग उत्पन्न करके दूर तक पहुँचाया जाता हो। (मिस्सिल) जैसे—कमान का तीर, तोप का गोला, बन्दूक की गोली।

क्षैतिज—वि० [सं०] १. क्षितिज-संबंधी। क्षितिज का। २. ऐसा सपाट या समतल, जिसके दोनों सिरे सीधे दोनों ओर के क्षितिजों तक गये हों। (होराइजॅन्टल)

खंडनात्मक—वि० [सं०] (कथन या बात) जिसमें किसी तथ्य आदि का खंडन किया गया हो अथवा जो किसी प्रकार के खंडन से युक्त हो। खंडनक। (कन्ट्राडिक्टरी)

खंडाकार—पुं० [सं० खंड+अकार]=लुप्ताकार।

खंडिया—पुं० [हिं० खंडी=राजकर+इया (प्रत्य०)] मध्ययुग में वह छोटा राजा, जो किसी बड़े राजा या सम्राट् को खंडी अर्थात् राज-कर दिया करता था।

खंगरुत—पुं० [सं०] पक्षियों का सबेरे और संध्या के समय का कलरव।

खगोल-विद्या—स्त्री० [सं०]=खगोल-विज्ञान।

खटोली—स्त्री० [हिं० खटोला] १. छोटे बच्चों के लिए छोटी खाट। २. डोली नाम की सवारी, जिसे कहार ढोते हैं। (बिहार)

खत्ता—पुं० ४. एक ही तरह की बहुत-सी चीजों का ढेर। कंज। (डम्प)

खपरा†—पुं० [सं० खर्पर] चाँदी, सोना आदि गलाने की घरिया। खर्पर। (क्यूपल)

खपरिया—पुं० [सं० खर्पर] सोना, चाँदी आदि गलाने की घरिया। दे० 'खर्पर'।

खबरदार—पुं० [फा०] राजाओं, नवाबों आदि के दरबारों में वह नौकर जिसका काम आनेवाले लोगों के संबंध में पहले से आकर सूचना देना होता था। जैसे—इतने में खबरदार ने आकर खबर दी कि बड़े नवाब साहब आ रहे हैं।

खरीदी†—स्त्री०=खरीद। जैसे—फसल के दिनों में होनेवाली गेहूँ या जौ की खरीदी।

खरोंच—स्त्री० ३. किसी बड़ी चीज की रगड़ से शरीर में होनेवाला क्षत। (एबेरेजन)

खर्रा—वि० [हिं० खरखर] [स्त्री० खर्री] (खाट) जिस पर बिछौना न बिछा हो और इसीलिए जिसकी बुनावट बदन में गड़ती हो।

खवास—पुं० ४. किसी वस्तु में होनेवाला कोई विशेष गुण। खासियत। उदा०—अक्सीर का खवास है, उनके बिछौने में।—कोई शायर।

खाई—स्त्री० ३. पृथ्वी तल में वह कृत्रिम या प्राकृतिक गड्ढा, जो कुछ दूर तक चला गया हो और जिसमें से होकर नदी, वर्षा आदि का जल बहता हो।

खामना—स० ३. पत्र आदि कहीं भेजने के लिए लिफाफे में रखकर उसका मुँह बन्द करना।

खारापन—पुं० [हिं०] खारे होने की अवस्था, गुण या भाव। (ऐल्कानिनिटी)

खिलंडरा†—वि० [हिं० खेल] [स्त्री० खिलंडरी] खेल या खिलवाड़ की तरह का। जैसे—उसने पीछे से आकर खिलंडरे ढंग से उसकी आँखें बन्द कर लीं।

खिलौना—पुं० ४. पुत्र के जन्म के समय गाये जानेवाले उन गीतों की संज्ञा जिनमें शिशु के रोदन, माता-पिता और परिवार के अन्य लोगों के आनन्द-मंगल और इस आनन्दमंगल के उपलक्ष्य में किये जानेवाले कार्यों का वर्णन होता है। 'सोहर' से भिन्न। †५. सोहर।

खुदा का नूर—पुं० [हिं०] मुसलमानों में दाढ़ी के लिए आदर और सम्मान का सूचक पद। उदा०—और तो मैं क्या कहूँ, बन आये हो लंगूर से। दाढ़ी मुँड़वा लो, मैं बाज आई खुदा के नूर से।—जान साहब।

खुला—वि० ९. (काम) जो सबके सामने और जान-बूझकर प्रकट रूप से किया गया हो और जिसे छिपाने का कोई प्रयत्न न किया गया हो। खुले आम किया हुआ। प्रकट। (ओवर्ट)

खुला समुद्र—पुं० [सं०]=महा समुद्र।

खुश-दामन—स्त्री० [फा०] पति या पत्नी की माता अर्थात् सास का वाचक आदरसूचक पद। (मुसल०)

खून-खच्चर—पुं०=खून-खराबी।

खेरची†—स्त्री० [?] रेजगी (या रेजगारी=छोटे सिक्के)।

खेरीज†—स्त्री० [?] रेजगी (या रेजगारी=छोटे सिक्के)।

खेरू†—पुं०=सूथन (वृक्ष)।

खेलना--स० ५. कोई ऐसा आचरण करना जिसमें कौशल, धूर्तता, फुरती, साहस आदि की आवश्यकता हो। जैसे--किसी के साथ चालाकी खेलना।

खोई--स्त्री०[हिं० खोना] १. खोने अर्थात् गँवाने की क्रिया या भाव। २. रोजगार, सट्टे आदि में होनेवाली आर्थिक हानि। घाटा। 'कमाई' का विपर्याय। जैसे--रोजगार में खोई-कमाई लगी रहती है।

खोजवती--स्त्री०[हिं०]=विचयन प्रकाश।

गंड-पार्श्व--पुं०[सं०] कनपटी।

गंदी बस्ती--स्त्री० [हिं०] मजदूरों या गरीबों की गंदी बस्तियाँ। मलिनावास। (स्लम)

गंध शलाका--स्त्री०[सं०] आज-कल एक प्रकार की प्रसाधन-सामग्री जो सुगंधित शलाका के रूप में होती है। (कोलन स्टिक)

गंधसार तेल--पुं०[सं०+हिं०]=गंध-तैल।

गंधोदक--पुं०[सं०] रासायनिक क्रिया से बनाया हुआ एक प्रकार का सुगंधित तरल पदार्थ, जिसका व्यवहार सिर के बाल और शरीर की त्वचा सुगंधित करने के लिए होता है। (टॉयलेट वाटर)

गज़ेटियर--पुं०[अं०] प्रायः राज्य द्वारा आधिकारिक रूप से प्रकाशित होनेवाला एक प्रकार का ग्रंथ, जो बहुत से भागों में होता है और जिसमें कस्बों, नगरों आदि के ऐतिहासिक भौगोलिक, और सामाजिक विवरण होते हैं।

गड्डो†--स्त्री०[?] गरदन पकड़ कर किसी को कहीं से धक्का देते हुए निकालने की क्रिया। गरदनियाँ।

क्रि० प्र०—देना।--मिलना।

गण-तांत्रिक--वि०[सं०]=गण-तंत्री।

गणनाकार--वि०[सं०] गणना करनेवाला।

पुं० १.=गणक। २.=परिगणक।

गणिका-दारिका--स्त्री०[सं०] वह लड़की, जिसे गणिका अपने पास रखकर नाच-गाना सिखाती हो और जिसके बड़े होने पर वेश्या-वृत्ति कराती हो। नौची।

गणित--भू० कृ० १. जिसकी गणना हुई हो। गिना हुआ। २. गणना के द्वारा निश्चित या स्थिर किया हुआ। जैसे—गणित ज्योतिष।

गणित ज्योतिष--पुं०[सं०] ज्योतिष का वह अंग या शाखा (फलित ज्योतिष से भिन्न) जिसमें आकाशस्थ ग्रहों, नक्षत्रों आदि की गति-विधि की गणना और विवेचना होती है। खगोल-विज्ञान। (ऐस्ट्रोलॉजी)

गणित्र--वि०, पुं०[सं०]=गणक।

पुं०=परिकलक।

गत-यौवन--वि० [सं०] [स्त्री० गत-यौवना] जिसका यौवन-काल बीत चुका हो। अधेड़।

गतानुगतिकता--स्त्री०[सं०] गतानुगतिक होने की अवस्था या भाव।

गतावधि--वि०[सं० गत+अवधि] १. जिसके महत्त्वपूर्ण दिन बीत चुके हों। २. जो पुराना पड़ने के कारण इतना निरर्थक और महत्त्वहीन हो चुका हो कि प्रस्तुत काल में उसका कोई उपयोग न हो सकता हो। यात-याम। 'अद्यतन' का विपर्याय। दिनातीत। (आउट आफ़ डेट)

गति--स्त्री० ऐसी स्थिति, जिसमें किसी प्रकार का उतार-चढ़ाव या कमी-बेशी होती रहे। जैसे--मरण-गति। (डेथ रेट)

गद्य-गीति--स्त्री० दे० 'गद्य-काव्य'।

गन्नई--वि०[हिं० गन्ना] गन्ने के रंग का। हलका नीलापन लिए हुए हरा।

पुं० उक्त प्रकार का रंग।

गल-ग्रंथि--स्त्री० [सं०] शरीर के अन्दर श्वास-नली और स्वर-यंत्र के पास की कुछ विशिष्ट ग्रंथियाँ या उनका समूह। अवटु-ग्रंथि। (थाइराएड ग्लैण्ड)

गलचौर†--स्त्री०[हिं० गाल+चौर (प्रत्य०)] मनबहलाव के लिए की जानेवाली बातचीत।

गलन-रोध--पुं०[सं०] ताप आदि का प्रभाव पड़ने पर भी चीजों को गलने से रोकने की क्रिया, गुण, भाव या शक्ति।

गलनरोधी—वि०[सं०] जो ताप का प्रभाव पड़ने पर भी चीजों को गलने से रोकता हो। तापावरोधक।

गलित-यौवना—वि० स्त्री० २. (युवती) जिसका यौवन समय से पहले ही ढल या समाप्त हो चुका हो।

गहना-पत्तर†--पुं०[हिं०] शरीर पर पहने जानेवाले अनेक प्रकार के गहने। जैसे—सभी स्त्रियाँ गहने-पत्तर से सजी हुई थीं।

गहना-पाती—पुं० दे० 'गहना-पत्तर'।

गह्वर--पुं० १०. पृथ्वी-तल में पाया जानेवाला कोई ऐसा गहरा गड्ढा, जो प्राकृतिक कारणों से बना हो।

गांधीवादी—वि०[हिं०] गांधी-वाद संबंधी।

पुं० वह जो गांधीवाद का अनुयायी हो।

गाँव-गिराँव—पुं०[हिं० गाँव+सं० ग्राम] १. गाँव-देहात। २. गाँव या देहात में होनेवाली संपत्ति।

गाँव-देहात--पुं० [हिं०+फा०] छोटे या बड़े गाँवों का वर्ग या समूह।

गायन--स्त्री०[हिं० गाना] रईसों, राजाओं आदि के महलों में आनेवाली स्त्री।

गायब-गुल्ला—वि०[अ० गायब+गुल्ला (अनु०)] १. (पदार्थ) जो चुरा-छिपाकर या धोखा देकर गायब किया या हटाया-बढ़ाया गया हो। २. धन जो बुरी तरह से और व्यर्थ नष्ट किया गया हो।

गारंटी—स्त्री०[अं० गैरेन्टी]=प्रत्याभूति।

गार्भिकी—स्त्री०[सं० गर्भ से] स्त्री के गर्भवती होने की अवस्था या भाव। गर्भावस्था। (प्रेग्नैन्सी)

गिदौड़ा—पुं०[फा० कंद+हिं० बड़ा] [स्त्री० अल्पा० गिदौड़ी] बड़ी और मोटी रोटी के आकार की वह मिठाई, जो खाली चीनी गलाकर बनाई जाती और मांगलिक अवसरों पर बंधु-बांधवों में बाँटी जाती है।

गिदौरा†—पुं०=गिदौड़ा।

गिराँव†--पुं०[सं० ग्राम] गाँव। जैसे—गाँव-गिराँव।

गिराऊ--वि०[हिं० गिरना+आऊ (प्रत्य०)] १. गिरनेवाला। २. जो टूटा-फूटा या पुराना होने के कारण जल्दी गिर जाने को हो।

गिरावँ—पुं० [सं० ग्राम] कोई छोटा-मोटा गाँव। जैसे—गाँव-गिरावँ से लोग आते रहते हैं।

गिरि-पाद—पुं०[सं०] पहाड़ के नीचे का मैदानी भाग।

गिरि-मंदिर—पुं० दे० 'दरी-मंदिर'।

गिरि-संकट—पुं०[सं०] दो पहाड़ों के बीच का तंग या सँकरा रास्ता। दर्रा। (प्रास)

गिलास-पट्टी—स्त्री०[?+हिं० पट्टी] लोहे की एक प्रकार की कुछ मोटी और कम चौड़ी पट्टी, जो इमारत के काम में आती है।

गीगला—पुं०[?] [स्त्री० गीगली] छोटा बच्चा। (राज०) वि० दुबला-पतला और कमजोर।

गीत-कथा—स्त्री०[सं०] वह कथा या कहानी, जो गीतों के रूप में हो और प्रायः लोक-गीत के रूप में गाई जाती हो।

गीति-नृत्य—पुं० [सं०] ऐसा नृत्य जिसमें नाचनेवाले नाच के साथ-साथ कुछ गाते भी हों। जैसे—गुजरात का गरबा या पंजाब का भाँगड़ा नृत्य।

गुंडागर्दी—स्त्री० [हिं०+फा०] गुंडों की-सी गाली-गलौज या लड़ाई-झगड़ा। २. गुंडापन। गुंडई।

गुणक—पुं० ३. लिखाई, छापे आदि में एक प्रकार का चिह्न, जो दो राशियों या संख्याओं के बीच में रहकर यह सूचित करता है कि पहलेवाली राशि या संख्या को बाद वाली राशि या संख्या से गुणा करना चाहिए। यह इस प्रकार लिखा जाता है— × ।

गुणन-खंड—पुं०[सं०] गणित में ऐसी राशि या राशियाँ, जिनसे किसी बड़ी राशि को भाग देने पर शेष कुछ न बचे। अपवर्त्तक। (फैक्टर)

गुणवाची—वि०[सं०] (भाव या शब्द) जो किसी मूर्त पदार्थ के गुण, विशेषता आदि का वाचक या बोधक हो। (ऐब्सट्रैक्ट) जैसे—सौन्दर्य गुणवाची तत्त्व है।

गुण-वृक्षक—पुं०[सं०] जहाज या बड़ी नाव का मस्तूल, जिसमें गून की रस्सी बाँधकर खींचते हुए आगे से चलते हैं।

गुणावतार—पुं०[सं०] वह अवतार, जिसमें ब्रह्म-पुरुष प्रकृति के गुणों को अपना आधार या श्री-विग्रह बनाकर आविर्भूत होता है। इसी आधार पर ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों गुणावतार कहलाते हैं, क्योंकि ये प्रकृति के एक-एक गुण के श्री-विग्रह हैं।

गुद्दी†—स्त्री० २. मुँह के अन्दर गले का वह निचला भाग, जिससे जबान का भीतरी सिरा सटा रहता है। जैसे—बहुत बढ़-बढ़ कर बातें करोगे तो गुद्दी में से जबान खींच लूँगा।

गुनाना—सं०[हिं० गुनना का स०] किसी को गुणों से युक्त करना। जैसे—लड़के को पढ़ाना-गुनाना।

गुप्त-गल—वि०[सं०] (व्यक्ति) जो कुछ खा या पचा तो जाय, पर दूसरों पर जल्दी प्रकट न होने दे।

गुप्त-चर्या—स्त्री०[सं०] गुप्तचरों का काम। गुप्त रूप से विदेशियों, विपक्षियों आदि की क्रिया-प्रक्रियाओं का पता लगाने का काम। (एस्पायनेज)

गुप्तरोमश—पुं० [सं०] ऐसा पुरुष, जिसके दाढ़ी-मूँछ के बाल न हों या अपेक्षया बहुत कम हों। मुकुन्दा।

गुफा-मंदिर—पुं० दे० 'दरी-मंदिर'।

गुरु ग्रंथ साहब—पुं०[हिं०] गुरु नानक के पद्यात्मक उपदेशों और वचनों का संग्रह, जिसे सिक्ख लोग अपना धर्म-ग्रंथ मानते हैं। इसे 'आदि-ग्रंथ' भी कहते हैं।

गुरु-जल—पुं० [सं०] एक प्रकार का रासायनिक तरल पदार्थ, जिसका उपयोग परमाणुओं का विस्फोट करने में होता है। भारी पानी। (हैवी वाटर)

गुरु-मंडल—पुं०[सं०] भू-गर्भ शास्त्र में पृथ्वी के तीन मुख्य पटलों में बीच का पटल, जो अनेक प्रकार की धातु-मिश्रित चटानों का बना हुआ बहुत गरम और ठोस है और जिसके ऊपरी पटल पर मनुष्य बसते और वनस्पतियाँ उगती हैं। (बैरिस्फ़ियर)

गुलमटा†—पुं०[स्त्री० गुलमटी] हिन्दी गुलाम शब्द का उपेक्षात्मक और तुच्छतासूचक रूप।

गुह्य-साधना—स्त्री०[सं०] ऐसी तांत्रिक साधना, जिसे गुप्त रूप से या सबसे छिपाकर करना आवश्यक तथा विहित हो और जिसके प्रकट होने पर साधना नष्ट हो जाती हो। (ऐसी साधना हिन्दुओं के सिवा जैनों और बौद्धों में भी प्रचलित थी।)

गूढ़-भाव—वि०[सं०] [स्त्री० गूढ़-भावा] अपने मन का भाव छिपाकर रखनेवाला।

गृहिणी—स्त्री० ३. बौद्ध तांत्रिकों में, महामुद्रा (नैरात्मा प्रज्ञा) जिसके संबंध में कहा गया है कि इसे गृहिणी अर्थात् पत्नी के रूप में ग्रहण करना चाहिए।

गृहोपवन—पुं०[सं०] घर के अन्दर या आस-पास लगा हुआ बगीचा।

गेय नाटक—पुं०[सं०]=सांगीत। (आपेरा)

गैतल—पुं०=गायताल।

गैसीय—वि०[अं० गैस से] १. गैस संबंधी। गैस का। २. जिसमें गैस हो। गैस से युक्त। (गैसिअस)

गोट—स्त्री० २. ढोल, तबले आदि पर मढ़े हुए चमड़े के चारों ओर मढ़ा हुआ गोलाकार दूसरा चमड़ा जो प्रायः दो-तीन अंगुल चौड़ा होता है और जो देखने में कपड़े पर लगी हुई गोट के समान जान पड़ता है।

गोटियाचाली—स्त्री०[हिं० गोटियाचाल] गोटियाचाल चलने की क्रिया या भाव।

गोदी—स्त्री० २. बंदरगाहों में वह घेरा हुआ स्थान, जहाँ यात्रा के मध्य में जहाज कुछ समय के लिए ठहर या रुककर रसद-पानी लेते और यंत्रों आदि की छोटी-मोटी मरम्मत करते हैं।

गोपानसी—स्त्री०[सं०] खिड़की का ऊपरी भाग या सिरा।

गोरिल्ला—पुं० २. आधुनिक युद्ध में, ऐसी अनियमित सैनिक टुकड़ी का सदस्य, जिसका काम लुक-छिप कर शत्रु को रसद पहुँचानेवाले दस्तों पर छापा मारकर उन्हें लूटना-मारना होता है। छापामार।

गोला-बारूद—पुं०[हिं०] बंदूकों से चलाई जानेवाली गोलियाँ, तोपों से चलाये जानेवाले गोले और उन्हें चलाने के लिए काम आनेवाली बारूद आदि सामग्री। (एम्युनिशन)

गोष्ठी-कक्ष—पुं०[सं०] आज-कल विधान-सभाओं आदि में वह कक्ष या कमरा, जिसमें सदस्य लोग अवकाश के समय बैठकर आपस में बात-चीत करते हैं। उपांतिका। (लॉबी)

गो-स्तन—पुं०[सं०] १. गौ का थन। २. लकड़ी का वह छोटा टुकड़ा, जो ऊपर से थोड़ा नीचे गिरकर अन्दर से दरवाजा बन्द कर लेता है। बिलैया।

गौण चांद्रमास—पुं०[सं०] चांद्रमास के दो भेदों में से एक, जो चांद्रमास की कृष्ण प्रतिपदा से आरंभ होकर पूर्णिमा को समाप्त होता है। इसी

को 'पूर्णिमांत मास' भी कहते हैं। (दूसरा भेद 'मुख्य चांद्रमास' या 'अमांत' कहलाता है।

गौणी भक्ति––स्त्री०[सं०] देवपूजन, नाम-कीर्तन, भजन आदि के रूप में की जानेवाली भक्ति, जो परा भक्ति की पहली सीढ़ी होने के कारण गौण या कम महत्त्व की कही गई है।

गौणी लक्षणा––स्त्री०[सं०] साहित्य में सारोपा तथा साध्यवसाना लक्षणाओं का एक प्रकार या भेद, जो उस दशा में माना जाता है, जब दो विभिन्न प्रकार के पदार्थों में बहुत अधिक सादृश्य होने पर उनका अन्तर स्पष्ट नहीं होने पाता।

गौरव-गीति––स्त्री०=प्रशस्ति गीति।

ग्रंथि––स्त्री० मनोग्रंथि का वह संक्षिप्त रूप, जो उसे यौ० पदों के अन्त में लगने पर प्राप्त होता है। (कॉम्प्लेक्स) जैसे––दलित-ग्रंथि।

ग्रंथी––पुं०[सं० ग्रंथ+हिं० ई (प्रत्य०)] सिक्ख गुरुद्वारों में वह संत, जो ग्रंथ साहब का पाठ लोगों को सुनाता है और पौरोहित्य करता है।

ग्रह-पार––पुं०[सं०] आकाशस्थ ग्रहों, नक्षत्रों आदि की नियमित और नियत ग्रंथि।

ग्राम––पुं०[अं०] दशमिक प्रणाली में तौल की एक आधारिक इकाई जो $\frac{१}{२८}$ आउन्स के बराबर होती है।

ग्राम्य-राग––पुं०[सं०] संगीत में, रागों का देशी नामक प्रकार या भेद। (दे० 'देशी' के अन्तर्गत)

ग्राम्यवाद––पुं०[सं०] [वि० कर्ता ग्राम्यवादी] आधुनिक साम्यवाद का यह मतवाद कि गाँवों में खेती-बारी के योग्य जितनी भूमि हो, वह सभी खेतिहरों में बराबर-बराबर बँटी हुई होनी चाहिए। (अग्रेरियनिज्म)

ग्लिसरीन––पुं०[अं०] एक प्रकार का गाढ़ा मोटा तरल पदार्थ, जो कुछ पशुओं की चरबी या तेल से बनाया जाता है।

घट वादक––पुं०[सं०] वह जो घटवाद्य बजाता हो।

घटवाद्य––पुं०[सं०] वह घड़ा, जो उलटकर जमीन पर रखा और तबले की तरह बजाया जाता है।

घटाव––पुं० ५. घटाकर कम करने की क्रिया या भाव। अवकरण। (रिडक्शन)

घन––वि० २. (कलन या गणित) लंबाई, चौड़ाई और मोटाई, तीनों के गुणन-फल का सूचक। (क्यूब)

घन-वाद––पुं०[सं०] चित्र-कला की एक आधुनिक शैली, जिसमें भंग रेखाओं के स्थानों पर कोणिक रेखाओं का उपयोग करके आकृतियों को बहुत घन का रूप दिया जाता है। (क्यूबिज्म)

घनवादी––वि०[सं०] घनवाद संबंधी। घनवाद का। ३. घनवाद का अनुयायी या समर्थक।

घनालक––वि०[सं० घन+अलक] [स्त्री० घनालिका] घने बालोंवाला।

घर-घुस्सू––पुं०=घर-घुसना।

घरैत––पुं०[हिं० घर+ऐत (प्रत्य०)] [स्त्री० घरैतिन] [भाव० घरैती] १. वह जो किसी ऐसे घर का मालिक हो, जिसमें किरायेदार भी रहते हों। हिं० 'भड़ैत' का विपर्याय। २. वह जो किसी घर या परिवार में सबसे बड़ा और उसका मालिक हो। गृह-स्वामी। ३. पत्नी की दृष्टि से उसके पति का वाचक या संबोधक शब्द।

घरैती†––स्त्री०[हिं० घरैत+ई (प्रत्य०)] घरैत होने की अवस्था, धर्म या भाव।

†पुं०=घरैत।

घाटी––पुं० [हिं० घाट] महाराष्ट्र में ऐसा व्यक्ति, जो पूर्वी समुद्र-तट अर्थात् मद्रास की ओर का रहनेवाला हो।

घात––पुं० ५. वह स्थान या स्थिति जिसमें कोई व्यक्ति, किसी पर शारीरिक आघात या प्रहार करने के लिए छिपकर और ताक लगाये बैठा रहता है। (ऐम्बुश)

घिनियाना†––अ० [हिं० घिन=घृणा] घृणा करना।

घुड़च––स्त्री०[हिं० घोड़ी] वीणा, सितार आदि की तूंबी पर रखा जानेवाला हड्डी, हाथी दाँत आदि का वह पहला टुकड़ा, जिस पर बैठा कर उसके तार ऊपर से नीचे तक बाँधे जाते हैं।

घुस-पैठिया––पुं० [हिं० घुसपैठ+इया (प्रत्य०)] वह जो उत्पात, उपद्रव आदि के उद्देश्य से किसी दूसरे के क्षेत्र में लुक-छिपकर या बलपूर्वक प्रवेश करता हो। (इन्ट्रूडर)

घुस-पैठी––पुं०=घुसपैठिया।

घोड़ा-चढ़ी––स्त्री०[हिं० घोड़ा+चढ़ना] घोड़े पर चढ़कर देहातों में घूम-फिरकर नाचने-गाने का पेशा करनेवाली निम्न कोटि की वेश्या। ('डेरेदार' से भिन्न)

चंचलातिशयोक्ति––स्त्री०[सं०] साहित्य में, अतिशयोक्ति अलंकार का एक प्रकार या भेद, जिसमें कारण के उल्लेख मात्र से कार्य का ज्ञान होता है। इसी लिए इसकी गणना कारणातिशयोक्ति के अंतर्गत होती है।

चंटई––स्त्री० [हिं० चंट+ई० (प्रत्य०)] बहुत अधिक चालाकी या धूर्तता। चंटपन।

चंटपन––पुं०=चंटई।

चंडाग्नि––स्त्री०[सं०] वज्रयानी बौद्ध तांत्रिकों के अनुसार शरीर के अंदर की एक विशिष्ट अग्नि, जिसे प्रज्वलित करने पर सब प्रकार के क्लेश और वासनाएँ जलकर भस्म हो जाती हैं।

विशेष––कहा गया है कि पवन-निरोध (साँस रोकने) के उपरान्त नौ इन्द्रिय-द्वारों को बंद करके जब दसवाँ द्वार (ब्रह्म-रन्ध्र या वैरोचन द्वार) खुला रखा जाता है, तब यह अग्नि प्रज्वलित होती है।

चंडालिका––स्त्री० ४. सोलह वर्ष की कुमारी युवती।

चंदायनी––स्त्री०[हिं० चंदा=व्यक्ति वाचक संज्ञा] उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ आदि में प्रचलित एक प्रकार की गीत-कथा।

चंद्र-शिला––स्त्री०[सं०] भारतीय स्थापत्य में पत्थर का वह अर्धचंद्राकार टुकड़ा, जो प्रायः सीढ़ियों में नीचे की ओर शोभा के लिए लगाया जाता था और जिस पर कमल आदि की आकृतियाँ उत्कीर्ण होती थीं। (मून-स्टोन)

चंद्र-सखी––स्त्री०[सं०] १. भक्ति की कृष्णाश्रयी शाखा की एक लोक-गायिका जिसके गीत मालवे, राजस्थान और ब्रज में बहुत प्रचलित हैं। २. उक्त गायिका के बनाये हुए अथवा उनके अनुकरण पर बने हुए एक प्रकार के लोक-गीत।

चंपी––स्त्री० [हिं० चाँपना] १. किसी के थके हुए अंग को विश्राम देने के लिए उसे बार-बार हाथों से दबाना। जैसे––किसी के सिर में चंपी करना।

चंपीवाला—पुं० [हिं०] वह जो दूसरों के सिर में तेल लगाने और शरीर के अंगों में चंपी करने का पेशा करता हो।

चकमा—पुं० २. सनसनी फैलानेवाला कोई ऐसा कार्य, जो किसी दुष्ट उद्देश्य से लोगों का ध्यान किसी अवास्तविक या झूठी बात की ओर आकृष्ट किया जाय। (स्टन्ट)

चक्रवातीय वर्षा—स्त्री० [सं०] चक्रवातों के साथ होनेवाली वर्षा, जो प्रायः धीमी होती है, घनघोर झड़ी के रूप में नहीं होती। इसमें पानी की बौछार भी चक्कर-सा काटती रहती है। (साइक्लोनिक रेन)

चक्र-साधना—स्त्री०[सं०] वाममार्गियों की वह सामूहिक उपासना या पूजा, जिसमें स्त्रियाँ और पुरुष मिलकर मद्य, मांस आदि का सेवन करते हुए अनेक प्रकार के तांत्रिक अनुष्ठान और प्रयोग करते हैं।

चक्षु-विज्ञान—पुं०[सं०] दे० 'नेत्र-विज्ञान'।

चखा—वि० [हिं० चख-चख] [स्त्री० चखी] व्यर्थ की बकवाद करनेवाला और तुच्छ या हीन। (उपेक्षा-सूचक) चल चखी, दूर हो, परे भी हट।—इन्शा।

चघड़पन—पुं०[हिं० चघड़+पन (प्रत्य०)] चालाकी। धूर्तता।

चघड़ाई†—स्त्री०=चघड़पन।

चद्दर—स्त्री०[हिं० चौ=चार+दर] वह घोड़ागाड़ी, जिसमें चार-चार घोड़ों की चार कतारें जुती रहती थीं। उदा०—इस छकड़ी के सिवा चद्दर नाम की एक गाड़ी में चार-चार घोड़ों की चार कतारों में सोलह घोड़े जोते जाते थे।—सेठ गोविन्ददास।

चपती—स्त्री० २. लकड़ी की वह पट्टी, जो प्रायः शरीर की कोई हड्डी टूटने पर उसके ऊपर इसलिए बाँधी जाती है कि अंग एक ही अवस्था में रहे, इधर-उधर हिलने न पाये। (स्प्लिन्ट)

चपलातिशयोक्ति—स्त्री०=चंचलातिशयोक्ति।

चमार-सियार—पुं०[हिं०] बहुत ही छोटी और अस्पृश्य मानी जानेवाली जातियों के लोग।

चयापचयन—पुं०[सं०] विपचन।

चरई—वि० विचरण करने अर्थात् चलने या घूमने-फिरनेवाला।

चरक—पुं० ८. प्राचीन भारत में वे विद्वान्, जो घूम-घूमकर सब जगह ज्ञान और विद्या का अध्ययन तथा प्रचार करते थे।

चरकट—पुं०[हिं० चारा+काटना] १. वह जो चौपायों के लिए जंगल से चारा काट कर लाता हो। २. बहुत ही निकृष्ट कोटि का आदमी।

चरखा—पुं० १४. सन्त साहित्य में, मनुष्य का यह शरीर। उदा०—जौ चरखा जरि जाय, बढ़ै या न मरै।—कबीर।

चरण—पुं० २०. निर्माण, परिवर्तन, विराम आदि की क्रियाओं का कोई ऐसा विशिष्ट अंग या अंश, जो किसी निश्चित समय के अन्दर पूरा होता हो अथवा जिसमें किसी कार्य-विभाग की समाप्ति होती हो। (स्टेज) जैसे—इस्पात के इस कारखाने का दूसरा चरण अब समाप्ति पर आ चला है।

चरमावस्था—स्त्री०[सं० चरम+अवस्था] १. घटनाओं, विचारों आदि के क्रम या शृंखला में सब के अंत की या सबसे आगे बढ़ी हुई अवस्था, जिसके उपरान्त पतन या ह्रास का आरम्भ होता है। (क्लाइमैक्स)

चरित-काव्य—पुं०[सं०] तात्त्विक दृष्टि से प्रबंध-काव्य का एक प्रकार या रूप, जिसमें कथा-काव्य और इतिवृत्त की भी अनेक बातें होती और जिसमें मुख्य रूप से किसी महापुरुष या वीर पुरुष का चरित्र वर्णित होता है। जैसे—दशकुमार-चरित, बुद्ध-चरित, हर्ष-चरित आदि।

चर्य्या-पद—पुं०[सं०] वे पद या गीत, जो बौद्ध तांत्रिक लोग चर्या के समय गाते थे।

चल—वि० ५. जो एक ही स्थान पर या एक ही स्थिति में स्थिर न रहता हो, बल्कि प्रायः इधर-उधर हटता-बढ़ता रहता हो। (फ्लोटिंग) जैसे—चल-द्वीप। ५. जो एक स्थान पर ठहरा न रहता हो, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर सभी जगह आ-जा सकता हो। (फ्लाइंग) जैसे—सैनिकों का चल-दस्ता। ७. (धन) जो स्थायी रूप से किसी काम में न लगा हो, बल्कि कभी एक और कभी दूसरे काम में लगता रहता हो। (फ्लोटिंग) जैसे—चल-पूँजी।

चल-द्वीप—पुं०[सं०] कुछ विशिष्ट जलाशयों में होनेवाले वे छोटे भू-भाग, जो पानी पर तैरते हैं। (फ्लोटिंग आइलैंड)

चल-यंत्र—पुं०[सं०] गाड़ी आदि पर रखा हुआ ऐसा यंत्र, जो आवश्यकतानुसार एक स्थान से दूसरे स्थान पर आ-जा सकता हो। (मोबाइल-प्लान्ट)

चलवासी—पुं० [सं०] खानाबदोश। यायावर। (नोमैड)

चलाक्ष—वि०[सं०] [स्त्री० चलाक्षी] चंचल नेत्रोंवाला।

चलावा—पुं० ४. चलाने की क्रिया, ढंग या भाव।

चलिष्णु—वि०[सं०] [भाव० चलिष्णुता] जो चलता अर्थात् अपने स्थान से आगे-पीछे या इधर-उधर हटता-बढ़ता हो। (मोबाइल)

चहका†—पुं०[हिं० चहकना] १. चहकने की क्रिया या भाव। २. पूर्वी उत्तर प्रदेश में होली के अवसर पर गाया जानेवाला एक प्रकार का लोक-गीत।

†पुं०=चहला (कीचड़)।

चांडाली—स्त्री० ४. बौद्ध तंत्र-शास्त्र में सुषुम्ना नाड़ी का एक नाम।

चांद्र—वि० २. जो गणना में चंद्रमा के उदय और अस्त के आधार पर होता हो। (ल्यूनर) जैसे—चांद्र मास, चांद्र-वर्ष। ३. दे० 'सौमिक'।

चांद्र सावन मास—पुं० दे० 'सावन मास' के अंतर्गत।

चाँपा कल—स्त्री० [हिं० चाँपना=दबाना+कल] कोई ऐसी कल या यंत्र, जिसे चलाने के लिए ऐसा मुट्ठा लगा हो, जो हाथ से बार-बार दबाना पड़ता हो। जैसे—कुएँ या जमीन से पानी निकालने की चाँपा-कल।

चाक्रिक—वि० ४. जो चक्र या चक्कर के रूप में चलता हो। चक्कर लगानेवाला। (सर्क्यूलेटरी) जैसे—शरीर में रुधिर प्रवाह का चाक्रिक रूप।

चामुंडी—स्त्री०[सं०] संगीत में, कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

चाय—स्त्री० ४. कुछ विशिष्ट पदार्थों का एक प्रकार से तैयार किया हुआ पेय। जैसे—अदरक की चाय, तुलसी की चाय।

चाय-बगान—पुं०[हिं० चाय+फा० बाग] वह क्षेत्र जहाँ चाय की खेती होती है, और चाय की पत्तियाँ सुखाकर तैयार की जाती हैं।

चार सौ बीस—पुं० [हिं०] १. किसी प्रकार का स्वार्थ सिद्ध करने के लिए चालाकी या धूर्तता से भरा हुआ कोई ऐसा काम करना, जिससे किसी की कोई आर्थिक हानि हो अथवा उसे मानसिक या शारीरिक कष्ट पहुँचे अथवा उसके मान-सम्मान में किसी प्रकार ह्रास हो। २. उक्त

प्रकार की चालाकी या धूर्तता करके अपना स्वार्थ सिद्ध करनेवाला व्यक्ति।

विशेष—भारतीय दंड विधान की ४२० वीं धारा के अनुसार उक्त प्रकार के काम करना दंडनीय अपराध माना गया है; और उसी के आधार पर इधर कुछ दिनों से उक्त पद ऊपर लिखे अर्थों में प्रयुक्त होने लगा है।

चारिणी—वि०[हिं० चारण] १. चारण संबंधी। चारण का। २. चारणों का सा। जैसे—कविता पढ़ने का चारिणी ढंग।

चारुक—वि०[सं०] [स्त्री० चारुका] मनोहर। सुन्दर।

चारु-लीला—स्त्री०[सं०] स्त्रियों के सुन्दर नखरे या हाव-भाव।

चार्ट—पुं०[सं०] किसी बात या विषय के संबंध में कुछ विशिष्ट सूचना या जानकारी करानेवाला ऐसा नक्शा, जिसमें मुख्य मुख्य ज्ञातव्य बातों का क्रमिक उल्लेख या प्रदर्शन हो। जैसे—जहाजियों का चार्ट जिसमें समुद्र की गहराई, बीच में पड़नेवाली चट्टानें, आस-पास के मार्गों और स्थानों का पता चलता है।

चार्वाक—वि०[सं० चारु-वाक्] जो अपना मत या विषय लोगों के सामने प्रभावशाली ढंग से उपस्थित करने में कुशल हो।

चालकता—स्त्री०[सं०] १. चालक होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। २. दे० 'संवाहकता'।

चालन—पुं० ४. कौशलपूर्वक ऐसी क्रिया करना, जिससे कोई कार्य ठीक तरह से सम्पन्न या सिद्ध हो। (मैनिपुलेशन) जैसे—किसी यंत्र का चालन।

चालमोगरा—पुं०[हिं० चावल? +मोगरा] १. एक प्रकार का वृक्ष, जिसमें बड़े बेर की तरह के फल होते हैं। २. उक्त वृक्ष के फल जिनका तेल कुष्ठ, वात रोग आदि में बहुत उपकारी माना जाता है।

चिट-फुट—वि०=चुट-फुट।

चिकित्सा-विज्ञान—पुं० [सं०] विज्ञान की वह शाखा जिसमें रोगों को दूर करने के उपायों, तत्त्वों, सिद्धान्तों आदि का निरूपण होता है। आयुर्विज्ञान। (मेडिकल साएन्स)

चिकित्सा-शास्त्र—पुं० [सं०]=चिकित्सा, विज्ञान।

चिकित्सीय—वि० [सं०] १. चिकित्सा संबंधी। चिकित्सा का। २. चिकित्सा के रूप में होने अथवा चिकित्साशास्त्र से संबंध रखनेवाला। (मेडिकल)

चित्त-ज्ञान—पुं० [सं०] दूसरे के मन की बात ताड़, भाँप या समझ लेना।

चित्त-वृत्ति—स्त्री० २. चित्त की वह स्थिति, जो उसे किसी ओर प्रवृत्त करती हो। मन का झुकाव। (डिस्पोज़ीशन)

चित्तेश्वर—पुं०[सं०] कामदेव।

चित्र-लिपि—स्त्री० २. किसी उपन्यास या नाटक की कथा-वस्तु अथवा कहानी का वह रूप जो चल-चित्र के रूप में दिखाने के लिए प्रस्तुत किया जाता है। (स्क्रीन-प्ले)

चित्राक्षर—पुं०[सं०] वर्णमाला के अक्षरों या वर्णों से भिन्न ऐसे विशिष्ट चिह्न या संकेत जो कोई भाव या विचार करने के लिए स्थिर किये जाते हैं। (आइडियोग्राम) जैसे—जोड़ का सूचक चिह्न+, गुणा का सूचक चिह्न×, समानता का सूचक चिह्न=।

चित्राधार—पुं०[सं०] मोटे तथा सादे कागज़ों की वह पुस्तिका जिसमें लोग फोटो-चित्र टाँककर सुरक्षित रखते हैं। (एलबम)

चित्रावली—स्त्री०[सं०] १. चित्रों की पंक्ति। २. एक ही क्रम या शृंखला के अनेक चित्रों का वर्ग या समूह। ३. दे० 'चित्राधार'।

चित्रित—वि० ६. जिस पर कोई चित्र या आकृति अंकित हो या बनी हो। (फ़िगर्ड)

चित्रीकरण—पुं० ४. किसी कहानी आदि को चित्रों का रूप देना। ५. किसी कहानी का फ़िल्मी चित्र बनाना। ६. दे० 'चित्रण'।

चिर-भोग—पुं०[सं०] १. उचित या नियत समय के उपरान्त भी किसी वस्तु या विषय का भोग करते चलना। २. बहुत दिनों तक किसी सम्पत्ति का इस रूप में भोग करना कि उस पर एक प्रकार का अधिकार या स्वत्व हो जाय। (प्रेस्क्रिप्शन)

चिरोड़ी—स्त्री०[?] खड़िया की तरह का एक प्रकार का खनिज पदार्थ। (जिप्शम)

चींटी-खोर—पुं०[हिं०+फा०] एक प्रकार का जंतु, जिसका मुँह बहुत छोटा और पतला होता है और जो प्रायः चीटियाँ या च्यूँटियाँ खाकर ही निर्वाह करता है। (ऐंट-ईटर)

चीड़—पुं० ३. एक प्रसिद्ध बड़ा पेड़, जिसकी चिकनी और नरम लकड़ी इमारत, सन्दूक आदि बनाने के काम आती है। इस लकड़ी में तेल का अंश अधिक होता है, जो निकाला जाता और तारपीन के तेल के नाम से बिकता है। गंधफिरोजा इसी पेड़ का नाम है। इसका प्रयोग औषध, गंधद्रव्य आदि के रूप में होता है।

चीर-घर—पुं०[हिं० चीरना+घर] अस्पतालों आदि का वह स्थान, जहाँ दुर्घटनाओं आदि से अथवा संदिग्ध अवस्था में मरे हुए लोगों की लाशें चीरकर उनकी मृत्यु के वास्तविक कारण का पता लगाया जाता है।

चुभन—स्त्री० ३. मन में चुभने या खटकनेवाली बात के कारण होनेवाला मानसिक कष्ट, कसक।

चूआँ†—पुं०[हिं० कूआँ का अनु०] १. पहाड़ी सोतों आदि के उद्गम के पास का वह गहरा गड्ढा, जिसमें पानी जमकर किसी ओर बढ़ता है। २. नदियों आदि के रेतीले तट पर खोदा हुआ वह गड्ढा, जिसमें नीचे का पानी आकर भर जाता है।

चूना-पत्थर | पुं०[हिं०] वह विशिष्ट प्रकार का पत्थर, जिसमें चूने का अंश बहुत अधिक होता है और जिसे भट्ठी में फूँकने पर चूना तैयार होता है। (लाइम-स्टोन)

चेर-पुत्र—पुं०[सं०] [स्त्री० चेर-पुत्री] दास की संतान।

चैकित्सिक—वि०[सं०] चिकित्सा-संबंधी। चिकित्सा का। (मेडिकल)

चैतन्य—पुं० ८. ज्वालामुखी पर्वतों में कभी कभी होनेवाला उद्गार।

चैत्य पुरुष—पुं०[सं०] अरविंद-दर्शन में, हृदय में स्थित वह दिव्य पुरुष जो अक्षय भगवत का अंश है और जो प्रत्येक जन्म धारण करने पर बढ़ता, बदलता और विकसित होता रहता है। यही प्रत्येक व्यक्ति का सच्चा स्वरूप और अंतरात्मा का वैयक्तिक रूप है। हृत्पुरुष। (साइकिक बीइंग)

चैत्य-सत्ता—स्त्री० १. क्रमिक विकास के द्वारा निर्मित होनेवाला चैत्य पुरुष का वैयक्तिक स्वरूप। चैत्य पुरुष। (दे०)

चैत्यीकरण--पुं०[सं०] अरविंद दर्शन में वह क्रिया, जिससे चैत्य पुरुष के प्रभाव से मनुष्य का मन, प्राण और शरीर चैत्यमय हो जाता है। (साइकिसाइज़ेशन)

चोरकचहरी—स्त्री०[हिं०] नवाबी शासन में वह विभाग, जो गुप्त रूप से चोरों, बदमाशों आदि के दुष्कर्मों का पता लगाता था। खुफिया जाँच का विभाग।

चौकीमार—पुं०[हिं०] वह जो चौकीमारी करता हो। सरकार की चोरी से वर्जित माल बेचनेवाला व्यापारी। (स्मगलर)

चौकीमारी—स्त्री०[हिं०] चोरी, तट-कर आदि की चौकियों की निगाह बचाकर और चोरी से बाहरी माल देश में लाकर बेचने की क्रिया। तस्कर-व्यापार। तस्करी। (स्मगलिंग)

चौक्ष—पुं०[सं०] एक प्राचीन भागवत संप्रदाय, जिसके अनुयायी एकायन कहलाते और छूआछूत का बहुत विचार करते थे।

चौक्षोपचार—पुं० [सं०] छूआछूत का ढोंग।

चौखलिया—पुं०[सं०] स्वामी नारायण संप्रदाय के अनुयायी, जो प्रायः गुजरात में पाये जाते और छूआछूत का बहुत विचार रखते हैं।

चौधराहट—स्त्री० [हिं० चौधरी+आहट (प्रत्य०)] १. चौधरी होने की अवस्था या भाव। २. चौधरी का काम या पद।

चौदहवीं—स्त्री० [हिं० चौदहवाँ] शुक्लपक्ष की पूर्णिमा तिथि। पूरनमासी।

पद—**चौदहवीं का चांद**=(क) पूर्णिमा का चन्द्रमा। पूर्ण चन्द्र। (ख) बहुत ही सुन्दर व्यक्ति।

विशेष—मुसलमानों में महीने का आरम्भ शुक्ल पक्ष द्वितीया से माना गया है,इसी लिए उनकी पूर्णिमा चौदहवीं तारीख को पड़ती है। इसी आधार पर उक्त पद बना है।

चौ-धारा--वि०[हिं० चार+सं० धारा] चार धारों वाला।

मुहा०—**चौ-धारा बहाना**=बहुत अधिक रोना।

चौपड़—स्त्री० ४. एक प्रकार का राजस्थानी लोक-गीत जो स्त्रियाँ प्रायः झूला झूलते समय गाती हैं।

चौरंगा--वि० २. जिसके चारों ओर मुख (द्वार या रास्ते) हों। उदा०—सो किमि-जान्यो जाय,राह चौरंगी सोहै।--सुधाकर द्विवेदी।

चौरंगी—स्त्री०[हिं० चौरंगा] चौमुहानी। चौराहा।

च्युत-संस्कार—वि०[सं०] [भाव० च्युत-संस्कारता] १. जो संस्कार से च्युत होने अथवा संस्कार के अभाव के कारण त्याज्य या दूषित माना जाता हो। २. (साहित्यिक रचना) जो व्याकरण संबंधी दोषों से युक्त हो।

छँटाई--स्त्री० ३. पेड़-पौधों की फालतू या बढ़ी हुई डालों को काट-छाँट कर अलग करने की क्रिया या भाव। (प्रूनिंग)

छंदतः—क्रि० वि०[सं०] १. छल कपट से। २. स्वच्छन्दता से।

छंदकर—वि०[सं०] [स्त्री० छंदकरी] आज्ञाकारी।

छकड़ी—स्त्री० ३. वह गाड़ी, जिसमें छः घोड़े जुते हों। उदा०—राष्ट्रपति की सवारी अब भी छकड़ी पर ही निकलती है।--सेठ गोविन्ददास। स्त्री०[हिं० छः+कौड़ी] १. एक प्रकार का चौसर का खेल, जो छः कौड़ियों से खेला जाता है। २. एक प्रकार का जूआ जो छः कौड़ियों से खेला जाता है।

छक्का—पुं० ६. गेंद बल्ले के खेल में वह स्थिति, जब बल्ले से मारा हुआ गेंद बिना जमीन को छूए हुए, खेल के मैदान की सीमा पार कर जाता है और जिसके फलस्वरूप बल्ला लगानेवाले खेलाड़ी की छः दौड़ें मानी जाती हैं।

क्रि० प्र०--मारना।—लगना।--लगाना।

छड़ा-छाँड़--वि०[हिं० छड़ा+छँडना=छोड़ना] १. जो सबको छोड़कर बिलकुल अकेला हो गया हो। २. जिसके साथ कोई न हो। अकेला ३. जिसकी स्त्री, बच्चे, आदि न हों।

छतरी सैनिक--पुं० [हिं० छतरी+सं० सैनिक] आधुनिक युद्ध में वे सैनिक जो वायुयानों से छतरी के सहारे शत्रु देशों में युद्ध करने के लिए उतारे जाते हैं। (पैराट्रपर)

छत्तीस--वि० २. जो औरों की तुलना में अच्छा या बढ़कर हो। (बाजारू) जैसे—यह माल उससे छत्तीस पड़ता है।

छद्मावरण--पुं०[सं० छद्म+आवरण] १. वास्तविक बात का रूप छिपाने के लिए ऊपर से कोई ऐसा रूप देना जिससे देखनेवाले धोखे में पड़ जायँ। २. युद्ध-क्षेत्र में, अपनी तोपों, मोरचों आदि को शत्रु की दृष्टि से बचाने के लिए वृक्षों की डालियों, पत्तियों आदि से ढकना। (कैमोफ्लेज़)

छनाव—पु०[हिं० छनना या छानना] छनने या छानने की क्रिया या भाव।

छल्लक--स्त्री०[हिं० छतल्ला] गणित में, योग-सूचक चिह्न जो इस प्रकार लिखा जाता है-- +। (लखनऊ)

छल्ला--पुं० ५. किसी कोमल और लचीले पदार्थ का बना हुआ एक प्रकार का आधुनिक गोल और छोटा उपकरण, जो स्त्रियों के गर्भाशय के मुख पर इसलिए बैठा दिया जाता है कि गर्भाधान की क्रिया न होने पावे। (लूप)

विशेष--गर्भधारण की कामना होने पर यह निकालकर अलग भी किया जा सकता है।

छाँवर†--पुं० [?] मछलियों के बच्चों का समूह। झोल।

छापामार—पुं० [हिं०] सैनिकों की वह टुकड़ी या दल, जो शत्रुओं पर छापा मारने अर्थात् अचानक आक्रमण करने की कला में प्रवीण हो, और इसी काम पर नियुक्त हो। (गोरिल्ला)

छापामार लड़ाई—स्त्री०[हिं०] वह लड़ाई, जो छापामार सैनिकों की सहायता से लड़ी जाती है। (गैरिल्ला वारफ़ेयर)

छाया-चित्र--पुं० ३. किसी वस्तु या व्यक्ति की वह आकृति, जो किसी प्रकाशमान तल पर उसकी छाया पड़ने पर चित्र के रूप में बनती है। (शैडो-ग्राफ़)

छाया-पुरुष--पुं० २. किसी व्यक्ति या शरीर की ऐसी आकृति,जो केवल कल्पना या भ्रमवश आँखों के सामने उपस्थित होती हो; परन्तु जिसकी कोई वास्तविक सत्ता या स्थिति न हो। (फ़ैन्टम)

छिद्र-द्वार—पुं०[सं०] चोर दरवाजा।

छिद्रल—वि०[सं०] १. जिसमें छेद हो। छेद या छेदों से युक्त। २. (शरीर या वानस्पतिक तल) जिसमें ऐसे बहुत-से छोटे-छोटे छेद हों, जिनके द्वारा तरल पदार्थ अंदर जा और बाहर निकल सकते हों। (पोरस)

छिद्रलता—स्त्री०[सं०] छिद्रल होने की अवस्था, गुण या भाव। (पोरोसिटी)

छिपा रुस्तम—पुं०[हिं०+फा०] वह जो वास्तव में किसी काम या बात में बहुत बढ़ा-चढ़ा हो, पर साधारणतः लोग जिसकी वास्तविक स्थिति से परिचित न हों।

छिपाव—पुं० २. किसी से कोई काम, चीज़ या बात छिपाने की क्रिया। जैसे—दुराव-छिपाव की बातें मुझसे न किया करो।

छींटाकशी—स्त्री० दे० 'आवाजाकशी'।

छुटापा†—पुं० [हिं० छोटा+आपा (प्रत्य०)] १. छोटे होने की अवस्था या भाव। छुटपन। २. बाल्यावस्था। लड़कपन। ('बुढ़ापा' के अनुकरण पर) उदा०—भाड़ में जाय यह छुटापा।—अजीमबेग ज़गताई।

छूना—स० ७. किसी के साथ कोई ऐसा काम, बात या व्यवहार करना जिससे उसको कुछ कष्ट हो। उदा०—छुआ है कुछ न छेड़ा है, किसी ने अब तलक उनको।—इन्शा।

छड़े-छाँड़—क्रि० वि० [हिं० छड़ा-छाँड़] बिना किसी को साथ लिये। अकेले।

जंगल का कानून—पद। ऐसी राजनीतिक या सामाजिक स्थिति, जिसमें लोग न्याय-अन्याय आदि का ध्यान छोड़कर जंगली पशुओं की तरह आचरण और व्यवहार करते हों और केवल अपने बल के भरोसे ही स्वार्थ सिद्ध करते हों। (लॉ ऑफ़ जंगल)

जंगल में मंगल—पद सूने स्थान में होनेवाला मंगल।

जंघाकर—पुं०[सं०] वह दूत जो संदेश देकर दौड़ाया जाता था। धावन। हरकारा।

जंजीरा—पुं० ३. भारतीय बही-खाते में जोड़ लगाने की एक रीति, जिसमें रुपए, आने, पैसे आदि सब एक साथ जोड़ दिये जाते हैं।

जंती—पुं०[सं० यंत्र] वह जो यंत्रों से युक्त हो अर्थात् शरीर। उदा०—जस जंती महि जीउ समाना।—कबीर।

जंत्री—पुं० २. समय को निश्चित भागों में बाँटने की क्रिया।

जकड़—स्त्री० ३. ऐसी गाँठ या पेच, जिससे दो या कई चीजें एक दूसरी से जकड़ जायँ।

क्रि० प्र०—लगाना।

जखीरेदार—पुं०[अ०+फा०] [भाव० जखीरेदारी] १. वह जिसके पास कोई जखीरा हो। जखीरे का मालिक। २. वह जो सस्ते दामों में चीजें खरीदकर महँगे भाव पर बेचने के लिए उनका जखीरा या राशि अपने पास एकत्र करके रखता हो। जमाखोर। (होर्डर)

जगतानुबोध—पुं०[सं०] संतों या सिद्धों की परिभाषा में, संसार के वास्तविक स्वरूप का ऐसा बोध, जिससे मन की भ्रान्ति नष्ट हो जाती है।

जच्चा—पुं० [अ० जच्चः] मुसलमानों में, सोहर की तरह के वे गीत, जो पुत्र जन्म के समय गाये जाते हैं। (लोक में इसके १०-१२ प्रकार या भेद मिलते हैं।)

जटामासी†—स्त्री०[हिं० जटना=ठगकर रुपए ले लेना] किसी को ठगकर या धोखा देकर उससे कुछ धन वसूल करने की क्रिया या भाव। (दलाल और दूकानदार)

जटाशंकर—पुं०[सं०] शिव। महादेव।

जटा-शंकरी—स्त्री०[सं०] शंकर की जटा में रहनेवाली गंगा।

जड़-मति—पुं०[सं०] ऐसा व्यक्ति जिसे प्रायः कुछ भी बुद्धि न हो, या बहुत ही थोड़ी और छोटे बच्चों की सी बुद्धि हो। (ईडियट)

जड़-वाद—पुं० २. आज-कल अधिक प्रचलित अर्थ में, यह सिद्धांत कि धन-संपत्ति के भोग में ही मनुष्य को आनन्द या सुख मिलता है, आत्म-चिंतन आदि व्यर्थ की बातें हैं। भौतिकवाद। (मेटीरिअलिज़्म) ३. आज-कल कला और साहित्य के क्षेत्र में, यह मत या सिद्धान्त कि सब काम जन-साधारण का ध्यान रखकर और उन्हीं का महत्त्व स्थापित करने के उद्देश्य से होने चाहिए।

जड़वादी—पुं० वह जो जड़वाद का अनुयायी या समर्थक हो। (मैटिरिअलिस्ट)

जन-कवि—पुं० [सं०] ऐसा कवि या कवि-समुदाय, जिसकी कविता का विषय मुख्य रूप में जनता के व्यापक जीवन से संबद्ध रहता हो। (ऐसी कविता की विषय-वस्तु व्यक्ति-निष्ठ भावनाएँ नहीं होती, और उसके कवि की दृष्टि अन्तर्मुखी नहीं होती, प्रत्युत बाह्यमुखी होती है।)

जन-गीत—पुं०[सं०]=लोक-गीत

जनता-जनार्दन—पुं०[सं०] देश की सारी जनता, जो ईश्वर का रूप मानी जाती है।

जननिक—वि०[सं०] जनन अर्थात् संतान के प्रसव से संबंध रखनेवाला। (जेनेटिव)

जननी मक्खी—स्त्री०=रानी मक्खी।

जन-मत—पुं०[सं०] दे० 'लोक-मत'।

जन-मत संग्रह—पुं०[सं०] आधुनिक राजनीति में किसी विशिष्ट प्रदेश या स्थान के वयस्क निवासियों का वह मत, जो किसी प्रकार की संधि या सार्वराष्ट्रीय संस्था के निर्णय के अनुसार यह जानने के लिए लिया जाता है कि वे लोग किस अथवा किसके राज्य या शासन में रहना चाहते हैं। (प्लेबिसाइट)

जन-वध—पुं०[सं०]=जन-संहार।

जनवादी—वि०[सं०] जनवाद-संबंधी।

पुं० वह जो जनवाद के सिद्धांत मानता हो। जनवाद का अनुयायी।

जन-विद्या—स्त्री० [सं०] विज्ञान की वह शाखा, जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि जनन, मरण, विवाह आदि की संख्याओं का किसी देश की आबादी पर कितना और कैसा प्रभाव पड़ता है। जनांकिकी। (डेमोग्राफी)

जन-संहार—पुं०[सं०] किसी जाति या वर्ग को समाप्त करने के उद्देश्य से उसके व्यक्तियों की व्यवस्थित और संघटित रूप से की जानेवाली हत्या। (जेनोसाइड)

जनांकिकी—स्त्री०[सं०]=जन-विद्या।

जना†—पुं० [सं० जन=व्यक्ति] [स्त्री० जनी] मनुष्य। व्यक्ति। जैसे—चार जने, दस जनियाँ।

जनी—स्त्री० [सं० जनी से फा० जन] नव विवाहिता स्त्री। वधू। २. औरत। स्त्री। ३. जोरू। पत्नी।

जनेच्छा—स्त्री० [सं० जन+इच्छा] जनता अर्थात् लोक या समाज की इच्छा।

जन्मपूर्व—वि०[सं०]=प्राग्प्रसव। (दे०)

जब्त—वि० ३. (लेख या साहित्य) जो दूषित या हानिकारक समझा जाने के कारण राज्य के द्वारा अपने अधिकार में कर लिया गया हो। राज्यसात्। (कॉन्फ़िस्केटेड)

जब्ती—स्त्री० २. राज्य के द्वारा संपत्ति, साहित्य आदि के जब्त किये जाने की क्रिया या भाव। राज्यसात्करण। (कॉन्फिस्केशन)

जम-जम—अव्य० [सं० जन्म, पु० हिं० जमना=जन्म लेना] बहुत प्रसन्नता-पूर्वक सदा ऐसा होता रहे। (स्त्रियों की शुभाशंसा) उदा०—जम जम वह आँखें, उसकी जो बरछी सी तेज हैं। दुश्मन के दिल में चुभती उसी की अति रहे।—इन्शा।

जम-जम—पुं० [अ० ज़म-ज़म] मक्के का एक प्रसिद्ध कूआँ, जिसका पानी मुसलमानों में बहुत पवित्र और मांगलिक समझा जाता है।

जम-जमा—पुं०[?] सितार में एक के बाद दूसरा स्वर बहुत जल्दी और तेजी से बजाने की क्रिया जो आलंकारिक मानी जाती है।

जमूरा†—पुं० [फा० जंबूर या जंबूरक] १. एक प्रकार की छोटी तोप। २. तोप लादने की गाड़ी। ३. लोहारों आदि का एक प्रकार का औजार, जो सँड़सी की तरह होता है। ४. नटों, बाजीगरों आदि के साथ रहनेवाला वह छोटा लड़का, जो अनेक प्रकार के करतब और खेल दिखलाता है और बड़े-बड़े खेलों में उनके सहायक के रूप में काम करता है।

जमाखोर—पुं०[अ०+फा०] वह जो सस्ते दामों में चीजें खरीदकर अपने गोदाम में भर रखता हो और बाद में बहुत महँगे भाव पर बेचता हो। जखीरेदार। (होर्डर)

ज़माखोरी—स्त्री०[अ०+फा०] जमाखोर होने की प्रवृत्ति या स्थिति। जखीरेदारी। (होर्डिंग)

जमीन—स्त्री० ८. ऐसा आरंभिक तत्त्व, जिसके आधार पर आगे कोई और काम होता है। मूल आधार। (ग्राउन्ड)

जय-काव्य—पुं०[सं०] महाभारत नामक प्रसिद्ध ग्रंथ का पहला और पुराना नाम।

जल-कुंड—पुं० [सं०] १. पानी का छोटा तालाब। २. भूगोल में, नदी के किनारे का वह गड्ढा, जिसमें नदी के सूख जाने पर भी पानी भरा रहता है। (वाटरपूल)

जल-ग्रह क्षेत्र—पुं०[सं०] नदियों के उद्गम के आसपास का वह सारा क्षेत्र, जहाँ की वर्षा का जल इकट्ठा होकर नालों आदि के द्वारा नदियों में जाकर मिलता और उसका विस्तार बढ़ाकर उनमें बाढ़ आदि लाता है। जाली। स्रवण-क्षेत्र। (कैचमेन्ट एरिया)

जल-बिजली—स्त्री०=पन-बिजली।

जल-भीति—स्त्री०[सं०] जल से होनेवाला वह भय जो पागल कुत्तों आदि के काटने के फलस्वरूप उत्पन्न होता है। (हाइड्रोफ़ोबिया)

जल-लेखी—स्त्री०[सं०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा जिसमें नदियों, नहरों, समुद्रों आदि की गहराई और विस्तार का विशेषतः इस दृष्टि से अध्ययन किया जाता है कि व्यापारिक कार्यों में उनका कितना और कैसा उपयोग हो सकता है। (हाइड्रोग्राफ़ी)

जलवायु-विज्ञान—पुं०[सं०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि वायु-मंडल में होनेवाले परिवर्तनों का प्राणियों, वनस्पतियों आदि पर क्या और कैसा प्रभाव पड़ता है। (क्ल्याइमेटोलॉजी)

जल-विज्ञान—पुं०[सं०] वह विज्ञान जिसमें विशेषतः भूतल के नीचे के जल के गुणों, नियमों, प्रवाहों, विभाजनों आदि का विचार होता है। नैरिकेय। (हाइड्रोलॉजी)

जल-विद्या—स्त्री०[सं०]=जल-विज्ञान।

जल-विद्युत्—स्त्री०[सं०]=पन-बिजली।

जल-सह—वि०[सं०] (पदार्थ) जिस पर पानी का कोई प्रभाव न हो, जो पानी में न भीग सकता हो अथवा जिसके तल के अन्दर पानी न पहुँच सकता हो। (वाटर-प्रूफ़)

विशेष—प्रायः कपड़ों आदि पर मोम, रबर आदि की तह जमाकर उन्हें जल-सह बनाया जाता है।

जल-सेतु—पुं०[सं०] बहुत दूर से पानी या और कोई तरल पदार्थ लाने के लिए बनाया हुआ वह बड़ा और लंबा तल, जिसके नीचे जगह-जगह सहारे के लिए छोटे-छोटे खंभे या पाये बनाये जाते हैं। सुरंगी। सेतु-वाही। (ऐक्विडक्ट)

जल-स्थल चर—पुं०[सं०]=उभय-चर।

जल-स्थलीय—वि०[सं०]=उभय-चर।

जलागार—पुं०[सं० जल+आगार] वह स्थान जहाँ आवश्यक कार्यों के लिए यथेष्ट जल इकट्ठा करके या भरकर रखा जाता है। (वाटर-रिज़र्वायर)

जलावतरण—पुं०[सं० जल+अवतरण] १. जल में उतरने की क्रिया या भाव। २. जहाजों, नावों, आदि का बनकर तैयार होने पर अथवा मरम्मत के बाद स्थल से हटाकर जल में उतारा या लाया जाना। (लॉन्चिग)

जलूसा†—पुं०[फा० जुलूस] १. किसी प्रकार के आधिक्य, वैभव, सम्पन्नता आदि का प्रदर्शन। २. उक्त का प्रदर्शित होनेवाला रूप।

जलोढ़—वि०[सं०] जो नदियों आदि के प्रवाह के साथ बहकर आई हुई मिट्टी के योग से बना हो। पुलिनमय। (एल्यूवियल) जैसे—जलोढ़ क्षेत्र।

जलोढ़क—पुं०[सं०] वह क्षेत्र जो नदियों आदि के बहाव के साथ आई हुई मिट्टी, रेत आदि के योग से बना हो।

जलोत्सव—पुं०[सं० जल+उत्सव] जलाशयों में होनेवाला ऐसा उत्सव जिसमें तैराकी, नावों की दौड़ आदि क्रीड़ाएँ होती हैं। (रिगेटा)

जहाजरान—पुं०[फा०] वह जो नदियों, समुद्रों आदि में नावें या जहाज चलाने की कला या विद्या जानता हो या चलाता हो, नौचालक। (नेवीगेटर)

जहाजरानी—स्त्री०[फा०] नदियों, समुद्रों आदि में नावें या जहाज चलाने की कला या विद्या। नौचालन। (नेवीगेशन)

जांतविकी—स्त्री०[सं० जांतव से]=प्राणि-विज्ञान।

जाति-नाश—पुं०[सं०]=जाति-वध।

जाति-वध—पुं०[सं०] किसी देश में बसनेवाली जाति का अंत या नाश करने के लिए उसके बहुत से लोगों का एक साथ ही होनेवाला वध या हत्या। (जेनोसाइड)

जाया-जीवी—पुं०[सं०] वह जो अपनी पत्नी से व्यभिचार कराता और उसकी आय से अपनी जीविका चलाता हो।

जावक—वि०[हिं० जाना] १. बाहर या दूसरे स्थानों की ओर जाने-वाला। जैसे—जावक डाक। २. उक्त प्रकार की चीजों से संबंध रखने-वाला। 'आवक' का विपर्याय। (आउटवर्ड) जैसे—जावक भाड़ा।

स्त्री० १. दूसरे देशों या स्थानों को भेजा जानेवाला माल। निर्यात। (एक्सपोर्ट) जैसे—अब तो यहाँ से चने की भी जावक होने लगी है। (पश्चिम) 'आवक' का विपर्याय। २. वह पंजी या रजिस्टर जिसमें भेजी जानेवाली चिट्ठियों और चीजों का ब्योरा लिखा जाता है। (डिस्पैच रजिस्टर)

जिच—वि० जिसके पास किसी के तर्क का उत्तर न रह गया हो। निरुत्तर। जैसे—मेरी बात सुनकर वे जिच हो गये।

जित्ता—वि०[स्त्री० जित्ती]=जितना।

जीप—स्त्री०[अं०] चार पहियोंवाली एक प्रकार की छोटी मोटरगाड़ी, जो ऊबड़-खाबड़ जमीन में भी अच्छी तरह चलती है। (इसका प्रचलन पहले-पहल अमेरिका ने दूसरे महायुद्ध के युद्धक्षेत्रों में किया था।)

जीव-द्रव्य—पुं०[सं०]=जीव-धातु।

जीवन-संगी—वि०[सं०] [स्त्री० जीवन-संगिनी] जो जीवन में बराबर साथ रहता हो।

पुं० स्त्री का पति।

जीवन-साथी—पुं०[सं०]=जीवन-संगी।

जीव-भौतिकी—स्त्री०[सं०] भौतिकी या भौतिक विज्ञान की वह शाखा जो मुख्यतः जीव-जन्तुओं और पेड़-पौधों के विवेचन से संबद्ध है। (बायोफ़िजिक्स)

जीव-मंडल—पुं०[सं०] वैज्ञानिक क्षेत्रों में, जल, स्थल, और आकाश का उतना अंश जिसमें कीड़े-मकोड़े, जीव-जंतु, वनस्पतियाँ आदि रहती तथा होती हैं। (बायोस्फ़ीयर)

जीव-रसायन—पुं०[सं०] रसायन-शास्त्र की वह शाखा, जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि जीव-जंतुओं और पेड़-पौधों के अंदर किस प्रकार की रासायनिक प्रक्रियाएँ होती हैं और उन प्रक्रियाओं का उनके जीवन-क्रम पर क्या प्रभाव पड़ता है। (बायोकेमिस्ट्री)

जुग-बंदी—स्त्री०=जुगलबंदी।

जुगलबंदी—स्त्री०[हिं० जुगल+फा० बदी] संगीत में एक ही वर्ग के दो बाजों का साथ-साथ बजाया जाना। जैसे—तबले और पखावज की जुगलबंदी, बाँसुरी या सरोज अथवा सारंगी की जुगलबंदी। (ड्यूएट)

जुगोना†—स० [हिं० जुगत] बचा और सँभाल कर रखना। जैसे—उसने कुछ रुपए अपने पास जुगो रखे थे।

जूतम-जाता—पुं०=जूतम-जुत्ता।

जूतम-जुत्ता—पुं०[हिं० जूता] आपस में जूतों से होनेवाली मारपीट।

जूरी—स्त्री०[हिं० जुरना] १. घास, पत्तों आदि का एक बँधा हुआ छोटा पूला। जुही। जैसे—तमाकू की जूरी। २. सूरन आदि पौधों के नये कल्ले, जो बँधे हुए निकलते हैं। ३. एक प्रकार का पकवान, जो कई प्रकार के पत्तों को बेसन में लपेटकर घी या तेल में पकाया हुआ होता है। पतौड़ा। (पूरब) ४. काठियावाड़, गुजरात आदि की दलदल में होनेवाला एक पौधा, जिसमें से क्षार निकाला जाता है।

पुं०[अं० ज्यूरी]=ज्यूरी।

जेट—पुं०[अं०] एक प्रकार का हवाई जहाज, जो धूआँ और हवा बहुत तेजी से पीछे की ओर फेंकता हुआ और उसी के बल से आगे बढ़ता हुआ चलता है।

जेतो†—वि०[स्त्री० जेती]=जितना।

जैजात†—स्त्री०=जायदाद (संपत्ति)।

जैव विष—पुं०[सं०] अनेक प्रकार के कीटाणुओं के कारण उत्पन्न होनेवाला वह विष, जिससे शरीर में अनेक प्रकार के रोग होते हैं। (टॉक्सिन)

जोर-जबरदस्ती—स्त्री०=बल-प्रयोग।

जौनपुरी—वि०[जौनपुर, उत्तर प्रदेश का एक नगर] जौनपुर नगर संबंधी। जौनपुर का। जैसे—जौनपुरी खरबूजा।

ज्ञपन—पुं०[सं०][भू० कृ० ज्ञापित, ज्ञप्त] जानने की क्रिया या भाव।

ज्ञप्त—भू० कृ०[सं०]=ज्ञपित।

ज्ञापन-पत्र—पुं०[सं०] १. किसी संस्था आदि के मुख्य-मुख्य नियमों आदि की पुस्तिका। २. वह पत्र या पुस्तिका, जिसमें किसी विषय की मुख्य बातें लोगों को जतलाने के उद्देश्य से लिखी गई हों। ३. वह पत्र या लेख, जो किसी विषय को स्पष्ट करने के लिए स्मारक के रूप में लिखा गया हो। जैसे—किसी सभा, मंडली आदि के उद्देश्यों और व्यवस्था से संबंध रखनेवाला पत्र या पुस्तिका। (मेमोरैण्डम)

ज्यूरी—पुं०[अं०] १. विधिक क्षेत्र में, जन-साधारण में से चुने हुए वे लोग, जो कुछ विशिष्ट फौजदारी अभियोगों में न्यायाधीश के साथ बैठकर गवाहियाँ आदि सुनते और न्यायालय को अभियुक्त के दोषी अथवा निर्दोष होने के संबंध में अपना मत देते हैं। २. वे चुने हुए विशेषज्ञ लोग, जो खेलों आदि में हार-जीत का निर्णय करते और विजयी के लिए पुरस्कार आदि का निर्णय करते हैं।

ज्वालामुख—पुं०[सं०] ज्वालामुखी पर्वत के शिखर पर का गड्ढा, जिसके पेंदेवाले विवर में से ज्वाला और गले हुए पत्थर निकलकर ऊपर उठते हैं। (क्रेटर)

ज्वालामुख झील—स्त्री० [सं० ज्वालामुख+झील] किसी मृत या चिर-शांत ज्वालामुखी पर्वत के ऊपरी भाग या मुख में बना हुआ वह जलाशय, जो वर्षा आदि का जल इकट्ठा होने से बनता है। (क्रेटर लेक)

ज्वालामुखी—वि०[सं० ज्वालामुखिन्] १. जिसके मुख में ज्वाला हो। २. जिसके मुख से ज्वाला निकलती हो। जैसे—ज्वालामुखी पर्वत।

झँझोड़ी—स्त्री०[हिं० झँझोड़ना] झँझोड़ने की क्रिया या भाव। जैसे—मैंने उन्हें खूब झँझोड़ियाँ दीं, अर्थात् खूब झँझोड़ा।

क्रि० प्र०—देना।

झटकई†—पुं०[हिं० झटका] वह जो झटके की रीति से पशुओं का वध करके उनका मांस बेचता या खाता हो।

झड़प—स्त्री० ३. परस्पर विरोधी सैनिकों की टुकड़ियों में अकस्मात सामना होने पर कुछ समय तक चलनेवाली छोटी-मोटी लड़ाई। (स्कर्मिश)

झड़ूस—पुं०[हिं० झाड़]१. जिस पर झाड़ू की मार पड़ती हो, या पड़ी हो २. बहुत ही घृणित और निकृष्ट। उदा०—आग लगे उस मुख झड़ूस की सूरत को।—शौकत थानवी।

झलकी—स्त्री० ३. किसी बड़ी घटना के संबंध की विशेष महत्त्वपूर्ण या मुख्य बात या दृश्य का विवरण। (हाईलाइट) जैसे—कांग्रेस अथवा संसद के अधिवेशन की झलकियाँ।

झाँकी—स्त्री० ७. किसी बड़े कार्य या घटना का वह छोटा अनुकरणात्मक दृश्य, जो उसका वास्तविक रूप दिखलाने के लिए आकर्षक और सुन्दर

रूप में प्रस्तुत किया गया हो ; और जो देखने में प्रायः अचल या स्थिर जान पड़ता हो। (हेलो)

झाड़ी-वन—पुं०[हिं०+सं०] भूमध्य सागर के आस-पास के प्रदेशों में पाया जानेवाला छोटी-छोटी वनस्पतियों या झाड़ियों का घना समूह। (चैपरेल)

झुग्गा—पुं०[?] [स्त्री० अल्पा० झुग्गी] १. झोपड़ा। २. दे० 'झब्बा'

झुनझुना—पुं० २. जन्मोत्सव के समय गाये जानेवाले वे गीत, जिनमें संबंधियों के द्वारा शिशु के हाथ में झुनझुना देकर उसे खिलाने का उल्लेख होता है।

झूंगा†—पुं०=रूँगा (घाल या घलुआ)।

झूलना पुल†—पुं०=झूला पुल।

झूला पुल—पुं० [हिं० झूला+फा० पुल] जंगली या पहाड़ी नदियाँ और नाले पार करने के लिए, उनके दोनों किनारों पर ऊँचे खंभों, चटानों या पेड़ों की डालों पर रस्से बाँध कर बनाया जानेवाला वह पुल, जिसका बीचवाला भाग अधर में लटकता और इधर-उधर झूलता रहता है।

झेरन†—स्त्री०[देश०] झोबरा नाम की घास।

टंकी जहाज—पुं० [हिं० टंकी+फा० जहाज] एक प्रकार का बड़ा समुद्री जहाज, जिसमें पेट्रोल, मिट्टी का तेल आदि ढोने के लिए बहुत सी बड़ी-बड़ी टंकियाँ बनी होती हैं । (टकर)

टकराव—पुं०[हिं० टकराना]१. टकराने की क्रिया, भाव या स्थिति। २. टक्कर।

टपका—पुं० ५. कुछ बँधी हुई और विशिष्ट प्रकार की प्रक्रियाओं से भोले-भाले लोगों को मूर्ख बनाकर उन्हें ठगने की कला या विद्या। ६. दे० 'टपक'।

टपके बाज—पुं०[हिं० टपका+फा० बाज] [भाव० टपकेबाजी] वह ठग या धूर्त जो भोलेभाले आदमियों को चकमा देकर उनसे धन वसूल करके गायब हो जाता हो। (चीट)

टपकेबाजी—स्त्री०[हिं०टपका+फा० बाजी] टपकेबाज का काम या पेशा। (चीटिंग)

टप्पैत—वि०[हिं०टप्पा+ऐत (प्रत्य०)] टप्पा गाने में कुशल और प्रवीण, जैसे—टप्पैत गला, टप्पैत गवैया।

टाइपकारी—स्त्री० [अं०+हिं०] टाइप मशीन के द्वारा छापने की कला, क्रिया या भाव। (टाइप-राइटिंग)

टाइप मशीन—पुं० [अं०] आज-कल छापे की एक प्रकार की छोटी कल, जिसमें अलग-अलग पत्तियों पर अक्षर खुदे होते हैं ;और उन पत्तियों को जोर से दबाने पर वे अक्षर ऊपर लगे हुए कागज पर छपते चलते हैं। इससे प्रायः चिट्ठियाँ, छोटे लेख आदि छापे जाते हैं। (टाइप राइटर)

टिंडी—स्त्री० ३. हाथ में, कंधे से नीचे और कोहनी से ऊपर का भाग। मुश्क। जैसे—उनकी टिंडिया कसी हुई थीं ; अर्थात् मुश्क बँधी हुई थी।

टिप्पणी—स्त्री० ६. किसी घटना, बात या व्यक्ति के संबंध में बहुत ही संक्षेप में प्रकट किया जानेवाला मत या विचार। उप-कथन। (रिमार्क)

टिल्ली†—स्त्री०[अनु०] खोपड़ी या चाँद पर लगाई जानेवाली हलकी चपत। (लखनऊ)

टीकाकार—पुं०[हिं० टीका= रोग निवारक रस+ सं० कार] आज-कल वह कर्मचारी जो चेचक, हैजे आदि महामारियों की रोक-थाम करने के लिए लोगों को टीके लगाता हो। (वैक्सिनेटर)

टुकड़ा—पुं० ५. गाने-बजाने में कुछ विशिष्ट प्रकार के बोलों का वह समूह, जो बीच-बीच में अलंकरण के लिए जोड़ा या लगाया जाता है।

टुकड़ी—स्त्री० ६. सिपाहियों, सैनिकों आदि का छोटा दल या वर्ग, जो व्यवस्थित रूप से कोई कार्य करने के लिए नियुक्त किया गया हो। दस्ता। (कॉलम)

टूटदार—वि०[हिं० टूटना+फा० प्रत्य० दार] कोई ऐसी कड़ी और बड़ी चीज) जिसकी रचना ऐसी युक्ति से हुई हो कि बीच में कहीं से या कई स्थानों पर टूट या मुड़कर छोटे टुकड़ों के रूप में आ सके और फलतः अपेक्षया कम स्थान घेरे। टूटवाँ। (फोल्डिंग) जैसे—टूटदार कुर्सी। खिड़की या दरवाजे का टूटदार पल्ला; टूटदार मेज आदि।

टूटवाँ†—वि०=टूटदार। (दे०)

टोका-टाकी—स्त्री०[हिं० टोकना+अनु०] किसी के कोई काम करते रहने की दशा में उसे बीच में टोकने या टोकते रहने की क्रिया या भाव। (इन्टरप्शन)

टोकाटोकी†—स्त्री०=टोका-टाकी।

टोहक—वि०[हिं० टोह+क (प्रत्य०)] टोह अर्थात् थाह लेने या पता लगानेवाला।

टौटेक†—वि०[देश०] जो सभी दृष्टि से अच्छी और ठीक दशा में हो। (बाजारू) जैसे—टौटेक मकान।

ठंढा गोदाम—पुं०[हिं०]=शीतल भंडार।

ठगहारा†—पुं०[स्त्री० ठगहारी]=ठग।

ठमका—वि०[हिं० ठमकना] [स्त्री० ठमकी] कम ऊँचाईवाला। नाटा। उदा०—उसकी देह दोहरी और कद ठमका था।—अमृतलाल नागर।

ठुस—वि०[हिं० ठुसकी] बहुत ही घटिया, निकम्मा या हलके दरजे का।

डलाव—पुं०[हिं० डालना] वह स्थान जहाँ कूड़ा-करकट डाला अर्थात् फेंका जाता है। कूड़ाखाना। घूरा।

डहरा†—पुं०[?] लोहे का वह तसला, जिससे मल्लाह नाव के अंदर आया हुआ पानी बाहर फेंकते हैं।

डाक पाल—पुं० [हिं० डाक+सं० पाल] डाक-खाने का वह प्रधान अधिकारी जो वहाँ के सब कामों की देखरेख करता है। (पोस्ट मास्टर)

डिंडित्व—पुं०[सं०] गुंडापन।

डिंडी—पुं०[सं०डिंडिन्] गुंडा और बदमाश।

डिंभ—पुं० ३. कीड़े-मकोड़ों का वह आरंभिक रूप, जो उन्हें अंडे से निकलने पर प्राप्त होता है और जिसमें कुछ दिनों तक रहने के उपरान्त उनके पंख, पैर आदि विकसित होते हैं। (लार्वा)

डिंडिया—स्त्री०[?] कौड़ी। (मुहा०)

डेढ़-खुमा—वि०[हिं० डेढ़+फा० खुम] जिसमें एक अंग पूरा सीधा हो और दूसरा आधा टेढ़ा। जैसे—डेढ़-खुमा हुक्का।

डेरेदार—स्त्री० [हिं० डेरा+फा० दार (प्रत्य०)] वह वेश्या, जो किसी नगर में डेरा या मकान लेकर स्थायी रूप से रहती और नाचने-गाने का पेशा करती हो। ('घोड़चढ़ी' से भिन्न)

डेल्टा—पुं०[अं०] नदी के मुहाने पर का वह स्थान, जहाँ नदी के साथ

बहकर आई हुई मिट्टी और रेत के कारण छोटे-छोटे तिकोने भू-खंड बन जाते हैं।

डोभ†—पुं० [हिं० डुबाना] कपड़ों आदि की सिलाई में पड़नेवाला टाँका।

डोभरी—स्त्री० [देश०] वनस्पतियों आदि का अंकुर।
†पुं०=डोभ (सिलाई का टाँका)।

डोरीला—वि० [हिं० डोरा] [स्त्री० डोरीली] (नेत्र) जिसमें डोरे पड़े हों। डोरेदार (आँख)। उदा०—बड़ी-बड़ी डोरीली करुण आँखें।—उग्र।

ढलवाँ लोहा—पुं० दे० 'कच्चा लोहा'।

ढिक्कू†—पुं० [?] भारतीय आदिवासियों की दृष्टि में वे भारतीय जो उनकी तरह आदिवासी नहीं होते।

ढीली†—स्त्री० [हिं० ढीला] आधुनिक दिल्ली का पुराना नाम। (राज०)

ढुलमुल-यकीन—वि० [हिं०+अ०] भाव० ढुलमुल-यकीनी] जो बिना सोचे-समझे सहज में दूसरों की बातों पर विश्वास करके प्रायः अपनी धारणाएँ बदलता रहता हो।

ढोरचोर—पुं० दे० 'गोरू-चोर'।

त

तंत्रिका—स्त्री० ३. प्राणियों के सारे शरीर में जाल के रूप में फैली हुई बहुत ही सूक्ष्म नसों में से प्रत्येक नस। (नर्स)

तंत्रिका-तंत्र—पुं० [सं०] शरीर के अंदर की समस्त तंत्रिकाओंऔ र उनकी कोशिकाओं तथा तंतुओं का सारा समूह, जिससे उनमें चेतना या ज्ञान के अतिरिक्त सब प्रकार की अनुभूतियाँ, क्रियाएँ तथा शारीरिक व्यवहार या व्यापार होते हैं। (नर्वस सिस्टम)

तंद्रा—स्त्री० ३. किसी जीव या तत्त्व की वह स्थिति, जिसमें उसकी सब क्रिआएँ और चेष्टाएँ कुछ समय तक बिलकुल बंद या स्थगित रहती हैं। प्रसुप्ति। (डॉमैंन्सी)

तकनीक—पुं० [अं० टेकनीक] वे सब विशिष्ट क्रियाएँ, जो कोई कार्य करने अथवा कोई वस्तु प्रस्तुत करने में की जाती हैं। प्रविधि। (टेकनीक)

तकनीकी—वि० [अं० टेकनीक] तकनीक के रूप में होने या उससे संबंध रखने वाला। प्राविधिक। (टेकनिकल)

तट-कर—पुं० [सं०] वह कर जो किसी राज्य की ओर से देश के आयात और निर्यात पर समुद्री बंदरगाहों आदि पर लिया जाता है। (ड्यूटी)

तट-बंध—पुं० [सं०] किसी नदी के किनारे कुछ दूर बनाया जानेवाला वह बाँध, जो बाढ़ से उस किनारे के खेतों, बस्तियों आदि की रक्षा करता हो। (एम्बैंकमेन्ट)

तट-रक्षक—पुं० [सं०] उन कर्मचारियों का दल, जो सरकार की ओर से समुद्र-तट पर अवैध आयात रोकने, संकट में पड़े हुए जहाजों की सहायता करने आदि के लिए नियत रहता है। (कोस्ट गार्ड)

तड़ित-संवाहक—पुं० [सं०] दे० 'वज्र-धारक'।

तत्काल-गणक—पुं० [सं०]=सुलभ-गणक।

तत्त्व-मीमांसा—स्त्री० [सं०] दर्शन-शास्त्र की वह शाखा, जिसमें परम तत्त्व अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति, वास्तविकता और सत्ता के स्वरूप का विवेचन होता है। (मेटाफ़ीजिक्स)

तथाकथन—पुं० [सं०] किसी प्रसंग में दूसरे की कही हुई बात ज्यों की त्यों उद्धृत करना या कह सुनाना। (रिप्रोडक्शन)

तथ्य-वाद पद—पुं० [सं०] ऐसा वाद-पद या विचारणीय विषय, जिसका संबंध तथ्यों अर्थात् वास्तविक घटनाओं से हो। विधि वाद पद से भिन्न। (इशू ऑफ़ फ़ैक्ट)

तदात्विक—वि० [सं०] बीता हुआ। गत। 'आवतिक' का विपर्याय।

तदात्म—वि० [सं०] [भाव० तादात्म्य] जो आकार, रूप आदि में किसी के ठीक अनुरूप या समान हो।

तद्रूपता—स्त्री० २. आकार, रूप आदि में किसी के ठीक समान होने की अवस्था, गुण या भाव। तादात्म्य। (आइडेन्टिटी)

तनहारा—पुं० [हिं० तानी+हारा (प्रत्य०)] जुलाहों में वह कारीगर जो बुने जानेवाले कपड़ों के लिए तानी तैयार करता है।

तनाव—पुं० ३. तनने या ताने जाने के फलस्वरूप पड़नेवाला खिंचाव। (टेन्शन)

तनावर—वि० [फा०] बड़े डील-डौल वाला। जैसे—तनावर जवान, तनावर पेड़।

तनु-कीर्ति—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

तन्मयता—स्त्री० २. वह मानसिक स्थिति, जो किसी विषय पर बिलकुल एकाग्र भाव से अधिक समय तक चिंतन करते रहने से प्राप्त होती है और जिसमें उसकी अंतश्चेतना तो बनी रहती है; परन्तु बाह्य जगत् की सुध-बुध प्रायः नहीं रह जाती। किसी विषय में होनेवाली मन की परम एकाग्रता या लीनता। (ट्रान्स) जैसे—जब वे ईश्वर के चिंतन या भजन में पूर्ण रूप से लीन हो जाते थे, तब उनकी तन्मयता बहुत ही दर्शनीय और प्रभावोत्पादक होती थी।

तफ्तीश—स्त्री० [अ०]=तफतीश। जाँच-पड़ताल।

तबला-तरंग—पुं० [हिं०+सं०] ऐसे सात तबले (डुग्गियाँ या बाएँ नहीं) जो अलग-अलग स्वरों में मिलाए हुए होते हैं और जिन पर बारी-बारी से आघात करके संगीतात्मक स्वर निकाले जाते हैं।

तमावरण—पुं० [सं० तम+आवरण] १. वह स्थिति, जिसमें शत्रुओं के आक्रमण, विशेषतः हवाई आक्रमण से रक्षित रहने के लिए रोशनी या तो बुझा दी जाती है, या चारों ओर से इस प्रकार ढक ली जाती है कि उसका प्रकाश बाहर न फैलने पाये। २. लाक्षणिक रूप में, वह स्थिति जिसमें कोई घटना या बात जानबूझकर इसलिए छिपाई जाती है कि वह चारों ओर फैलने न पाये। (ब्लैक-आउट)

तरही—वि० [अ०] उर्दू कविता में, तरह (पूर्ति के लिए स्थिर किया हुआ पद) से संबंध रखनेवाला। जैसे—तरही मुशायरा=ऐसा मुशायरा, जिसमें पहले से स्थिर की हुई तरह पर गजलें पढ़ी जाती हों।

तरीकात—स्त्री० [अ०] इस्लाम धर्म में, विशेषतःसूफी सम्प्रदाय में, परमात्मा तक पहुँचने और धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए चार स्थितियों में से दूसरी स्थिति, जिसमें साधक के लिए किसी को अपना गुरु या पीर बनाना पड़ता है।

विशेष—तीन स्थितियाँ शरीअत, मारफत और हकीकत कहलाती हैं।

तरौंदा—पुं० [हिं० तरना+औदा (प्रत्य०)] विभिन्न आकार-प्रकार वाले वे पीपे, जो बाँधकर इसलिए समुद्र तल पर तैराये जाते हैं कि आने-जाने वाले जहाजों को मार्ग के संकटों और सुविधाओं की सूचना मिलती रहे। (ब्वॉय)

तर्कनावाद—पुं० [सं०] आज-कल यह मत या सिद्धान्त कि धार्मिक आदि

विषयों में वही बातें मानी जानी चाहिए, जो बुद्धि और युक्ति की दृष्टि से ठीक सिद्ध हों। (रैशनलिज्म)

तर्कनावादी—वि०[सं०] तर्कनावाद-संबंधी। तर्कनावाद का।
पुं० वह जो तर्कनावाद का अनुयायी या पोषक हो। (रैशनलिस्ट)

तर्कबुद्धिवाद—पुं०[सं०]=तर्कनावाद।

तल-घर—पुं०[सं० तल+हिं० घर]१. जमीन के नीचे बनाया हुआ कोई कमरा या घर। तहखाना। २. समुद्री जहाजों में नीचे की ओर बना हुआ वह कमरा, जिसमें इंजन चलाने के लिए कोयला भरा रहता है। (बंकर)

तल-घात—पुं०[सं०] करतलों के आघात से ध्वनि उत्पन्न करना। ताली बजाना।

तल-चौकी—स्त्री० [सं०+हिं०] युद्धक्षेत्र में, जमीन के अन्दर की वह गहरी और बड़ी खाई, जिसमें सैनिक लोग कई-कई सप्ताह तक प्रायः स्थायी रूप से रहते हैं। दमदमा। (बंकर)

तल-टीप—स्त्री०[सं०+हिं०] लेखों आदि के नीचे लगाई जानेवाली पाद-टिप्पणी। (फ़ुटनोट)

तलेंडू†—वि०[हिं०तले=नीचे](बच्चा) जो किसी बच्चे के तले अर्थात् ठीक बाद में जन्मा हो। उदा०—मुआ दरबान का लड़का, तलेंडू मझले भाई था।—इन्शा।

तलोच्छेदन—पुं० [सं० तल+उच्छेदन] [भू० कृ० तलोच्छेदित] किसी काम, चीज या बात के आधार या मूल पर ऐसा आघात या प्रहार करना, जिससे वह नष्ट-भ्रष्ट या निरर्थक हो सकता हो। (अंडर-माइनिंग)

तसदीक—स्त्री० ५. विधिक क्षेत्र में, शपथपूर्वक या हस्ताक्षर करके यह प्रमाणित करना कि अमुक कथन या लेख ठीक और सत्य है। (एटेस्टेशन)

तस्कर—वि०[सं०] जो राजकीय नियमों का उल्लंघन करके चोरी से या छिपाकर किया जाता हो। जैसे—सोने का तस्कर व्यापार। २. (माल या सामान) जिसका आयात या निर्यात राज्य द्वारा वर्जित होने पर भी चुरा-छिपाकर लाया या ले जाया जानेवाला।

तस्कर व्यापार—पुं० [सं०] सरकार की चोरी से किया जानेवाला ऐसी चीजों का व्यापार, जिन्हें देश में बाहर से लाना निषिद्ध या वर्जित हो अथवा देश के एक भाग से दूसरे भाग में लाने-ले जाने आदि की मनाही हो। चौकीमारी। (स्मगलिंग)

तस्कर व्यापारी—पुं०[सं०] वह जो तस्कर-व्यापार करता हो। चौकी-मार। (स्मगलर)

तस्करी—स्त्री०[सं० तस्कर=हिं० ई (प्रत्य०)]१. चोर का काम। चोरी। २. आज-कल राज्य द्वारा निषिद्ध या वर्जित चीजें बाहर से लाकर देश में बेचने की क्रिया या भाव। चौकीमारी। (स्मगलिंग)

तहतक†—स्त्री०=तहतुक।

तहतुक—स्त्री० [अनु०] आपस में होनेवाली साधारण कहा-सुनी या जबानी झगड़ा। तूतू-मैं मैं।

तहमद†—स्त्री०=तहमत।

तांत्रिक मत—पुं० [सं०] कोई ऐसा मत, जिसमें तंत्र-शास्त्र या तांत्रिक सिद्धांतों को ही लौकिक तथा पारलौकिक उद्देश्यों की प्राप्ति और सिद्धि का मूल साधन माना गया हो। दे० 'तंत्र'।

विशेष—इस मत का प्रारंभ ई० ६०० के लगभग भारत में आरंभ हुआ था और कुछ ही शताब्दियों में बौद्ध धर्म के द्वारा चीन, तिब्बत, बरमा, आदि दूर-दूर के देशों में भी इसका बहुत कुछ प्रचार हो गया था। इसके अंतर्गत अनेक प्रकार के मत-मतांतर तथा शाखा-प्रशाखाएँ भी विकसित हुई थीं। फिर भी इन सब में मुख्य एकता यही थी कि तांत्रिक साधना मात्र को प्रधानता प्राप्त थी। इसमें बीज मंत्रों के जप, भूत-प्रेत आदि की साधना तथा हठयोग की अनेक क्रियाएँ भी सम्मिलित हो गई थीं। पर अब धीरे-धीरे इसका प्रचार कम होता जा रहा है।

तांत्विक—वि०=तांतव।

ताका—पुं० [अ० ताकः] कपड़े का वह थान, जो दफ्ती पर दोनों ओर घुमाकर लपेटा हुआ हो। जैसे—मखमल का ताका, साटन का ताका।

विशेष—थान बनाने का यह प्रकार नंबरी तहवाले थान से अलग प्रकार का होता है।

ताड़—स्त्री०[हिं० ताड़ना] ताड़ने (अर्थात् दूर से देखकर जानने या भाँपने) की क्रिया या भाव। उदा०—हम से क्या उड़ सके कोई प्यारी। लाख ताड़ों में अपनी ताड़ है एक।—इन्शा।

तात्कालिक—वि० ३. (काम) जिसे तत्काल या तुरंत पूरा करना आवश्यक हो। तुरंती। सद्यस्क। (अर्जेन्ट)

तादात्म्य—पुं०२. आकार, गुण, रूप आदि में किसी के ठीक अनुरूप या समान होने की अवस्था, गुण या भाव। तद्रूपता। (आइडेन्टिटी)

तान पलटा—पुं० [हिं०]संगीत में वह स्थिति, जिसमें बड़ी या लंबी तानें भी होती हैं, और कुछ विशिष्ट प्रकार से तानों के ऊँचे स्वरों से पलटकर नीचे स्वरों पर भी आते हैं।

क्रि० प्र०—लेना।

तानिका-शोथ—पुं०[सं०]=मन्यास्तंभ।

ताप बिजली—स्त्री०[सं० ताप+हिं०बिजली] वह बिजली, जो आज-कल अल्प मात्रा में रासायनिक पदार्थों के योग से बैटरियों के द्वारा और प्रचुर मात्रा में बड़े-बड़े इंजनों में कोयला आदि जलाकर तैयार की जाती है। 'जल बिजली' या 'पन बिजली' से भिन्न। (थर्मल इलेक्ट्रिसिटी)

ताप-विद्युत्—स्त्री० [सं०]=ताप बिजली।

ताप-सह—वि०[सं०] (पदार्थ) जिसमें बहुत अधिक ताप सहने की असाधारण क्षमता हो। (हीट-प्रूफ़)

तापावरोधक—पुं०२. ताप का प्रभाव पड़ने पर भी चीजों को गलने से रोकनेवाला। गलन-रोधी। (रिफ़ैक्टरी)

तापीय—वि० २. ताप के द्वारा उत्पन्न होनेवाला। (थर्मल)

ताम्रशिर—पुं०[सं०] एक प्राचीन भारतीय जाति, जो किसी समय आधुनिक उत्तर प्रदेश और बिहार के क्षेत्रों में बसती और प्रायः ताँबे के अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग करती थी। (संभवतः असुर, नाग और निषाद इसी की शाखाओं के रूप में थे।)

तारकाभ—पुं०[सं०]=क्षुद्र-ग्रह।

तार्किकीकरण—पुं०[सं०] आधुनिक मनोविज्ञान में, अपनी च्युतियों, त्रुटियों, दोषों आदि को उचित और तर्कसंगत सिद्ध करने के लिए झूठ-मूठ व्यर्थ के और कारण ढूँढ़ते फिरना और उनके आधार पर अपने

आपको निर्दोष सिद्ध करना। व्यर्थ के तर्कों और हेतुओं के आधार पर अपना दोष छिपाना। जैसे—नाचना न आने पर यह कहना कि यहाँ कि जमीन ही ऊँची-नीची या ऊबड़-खाबड़ है।

तालबद्ध—वि०[सं०] (संगीत का वह अंग या रूप) जो ताल के नियमों से बँधा हुआ हो; और इसी लिए जिसके साथ तबला, मृदंग आदि बाजे बजते हों।

ताल-मेल—पुं०४. कामों, बातों आदि में होनेवाली एक-सूत्रता या सामंजस्य। समन्वय। (कोआर्डिनेशन)

तास-घड़ियाल—पुं० [अ० तास=थाल+हिं० घड़ियाल] मध्ययुग में, एक प्रकार का समय सूचक-यंत्र, जिसमें समयों पर घड़ियाल या घंटा भी बजता था।

विशेष—कहते हैं कि इसका आविष्कार सुलतान फिरोजशाह ने थट्टा के युद्ध के बाद (सन् १३६२–१३६३ ई०) इसलिए किया था कि बादलों या रात के समय भी नमाज पढ़नेवालों को इस घड़ियाल या घंटे का शब्द सुनकर यह पता चल जाय कि नमाज पढ़ने का समय हो गया है। जायसी ने इसी को राज-घड़ियाल (देखें) कहा है।

तित्ता†—वि०[स्त्री० तित्ती]=उतना।

†वि०[स्त्री० तित्ती]=तीता (तिक्त)।

तिमाही—वि०[हिं० तीन+फा० माह=मास] हर तीसरे महीने होनेवाला। त्रैमासिक। (क्वार्टर्ली)

पुं० किसी वर्ष के तीन महीनों का समूह। वर्ष का चौथाई भाग। (क्वार्टर)।

तिमिर-चित्र—पुं० दे० 'छाया-चित्र'।

तिहाजू—पुं०[हिं० दूहाजू का अनु०] वह पुरुष, जिसकी दो विवाहिता स्त्रियाँ मर चुकी हों और जो फिर तीसरी बार विवाह कर रहा हो अथवा जिसने तीसरा विवाह किया हो।

तीया†—पुं० [हिं० तीन] १. मुसलमानों में किसी की मृत्यु के बाद आनेवाला तीसरा दिन। तीजा। २. ताश में तिड़ी नाम का पत्ता, जिस पर तीन बूटियाँ होती हैं। ३. ढोल, तबले आदि बजाने में किसी बोल की तीन बार होनेवाली वह आवृत्ति, जिसकी समाप्ति सम पर होती है। तिहैया।

तुंगता—स्त्री०[सं०] १. तुंग होने की अवस्था, गुण या भाव। २. आज-कल मुख्य रूप से पृथ्वी-तल अथवा समुद्र-तल से सीधे ऊपर की ओर होनेवाली ऊँचाई। (ऐल्टीच्यूड) जैसे—वह स्थान ४००० फुट की तुंगता पर स्थित है।

तुंगता-मापी—पुं०[सं० तुंगतामापिन्] एक प्रकार का यंत्र, जिससे पर्वतों अथवा उड़ते हुए वायुयानों पर चढ़े हुए लोग यह पता लगाते हैं कि हम इस समय पृथ्वी-तल से कितनी ऊँचाई पर हैं। (ऐल्टीमीटर)

तुरंती—वि० [हिं० तुरंत] (आज्ञा या कार्य) जिसका पालन या संपादन तुरंत अथवा तत्काल किया जाना आवश्यक हो। सद्यस्क। (अर्जेन्ट)

तुलन-पत्र—पुं०[सं०] व्यापारिक, सार्वजनिक संस्थाओं आदि के आय-व्यय का वह लेखा, जिसमें किसी निश्चित समय के अंत तक का यह विवरण रहता है कि किन-किन मदों में कितनी आय और कितना व्यय हुआ; तथा अन्त में देने या पावने के खाते में कितना धन शेष है। (बैलेन्स शीट)

तुल्यांक—पुं०[सं० तुल्य+अंक] दो या अधिक वस्तुओं की मात्रा, मान आदि के परस्पर समान होने की अवस्था, गुण या भाव। (इक्विवेलेन्ट)

तुषार-दंश—पुं०[सं०] बहुत अधिक सरदी पड़ने पर और शरीर पर तुषार के कण लगने के कारण शरीर के किसी अंग में होनेवाला क्षत या सूजन। हिम-दंश। (फ्रॉस्ट-बाइट)

तूतमलंगा—पुं०[?]१. एक प्रकार की वनस्पति। २. उक्त वनस्पति के बीज जो औषध के काम आते हैं।

तूफान—पुं०४. आज-कल वैज्ञानिक क्षेत्र में वह वायु, जो ६५ से ७५ मील प्रति घंटे की तेजी से चलती हो। (स्टॉर्म)

तेल-कूप—पुं०[हिं० तेल+सं० कूप] जमीन के अन्दर खुदा हुआ वह बहुत गहरा और बड़ा गड्ढा, जिसमें पेट्रोल, मिट्टी का तेल आदि खनिज, तेल निकलते हैं। तैल-कूप। (ऑयल वेल)

तेल-पोत—पुं०[हिं० तेल+सं० पोत]=टंकी जहाज।

तैल-कूप—पुं०[सं०]=तेल-कूप।

तोड़-फोड़—स्त्री० कोई ऐसा काम करना, जिससे उत्पादन, प्रबंध, शासन आदि में बहुत गड़बड़ी या बाधा हो। अंतर्ध्वंस। (सैबोटेज)

तोप-गाड़ी—स्त्री०[हिं०] वह गाड़ी, जिस पर तोप रखकर युद्ध-क्षेत्र में एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते हैं। अराबा। (गन कैरेज)

तोप-वाहिनी—स्त्री०=तोप-गाड़ी।

तोलवाँ—वि०[हिं० तोल या तौल] जो इतना उपयुक्त और ठीक हो कि मानों तोल (या नाप) कर बनाया गया हो। जैसे—सभी लड़कियाँ तोलवाँ जोड़े पहने थीं। (लखनऊ)

त्रिभाजन—पुं०[सं०] [भू० कृ० त्रिभाजित] तीन खंडों या भागों में बाँटना। तीन टुकड़े करना।

त्रिविम—वि०[सं० त्रि+विमा] तीन विमाओंवाला। जिसमें तीन विमाएँ हों। (थ्री डाइमेन्शनल)

त्वचार्त्ति—स्त्री० [सं०] छूतवाले रोगों के संक्रमण के कारण शरीर की त्वचा में होनेवाली जलन या प्रदाह।

त्वरित—भू० कृ०[सं०] जिसकी चाल तेज की गई हो। (एक्सेलरेटेड)

क्रि० वि० जल्दी या तेजी से। शीघ्रतापूर्वक।

थाला—पुं०३. वह सारा क्षेत्र, जिसमें किसी नदी और उसकी शाखाओं के जल से सिंचाई होती हो। द्रोणी। (बेसिन)

दंतकारी—स्त्री०[सं० दंतकार+ई (प्रत्य०)] दंतकार का काम, पद या भाव। दांतकी। (डेन्टिस्ट्री)

दक्षतारोध—पुं०[सं०] (सरकारी या गैर सरकारी) नौकरी में वेतन वृद्धि के मार्ग में आनेवाली वह बाधा, जो आवश्यक योग्यता या निपुणता के अभाव से उत्पन्न होती है। (एफ़िशिएन्सी बार)

दड़ा†—पुं०[?] छोटे नगरों में होनेवाली वह सट्टेबाजी, जो बड़े नगरों के सट्टेबाजों के अनुकरण और उन्हीं के बाजार भाव के अनुसार होती है।

दद्दा†—पुं०=दादा (बड़ा भाई)। (बुंदेल०)

दफ्तरशाही—स्त्री०[फा०]=नौकरशाही।

दमदमा—पुं० ३. युद्ध-क्षेत्र में सैनिक रक्षा के लिए जमीन के नीचे खोदी हुई गहरी और लंबी खाई, जिसमें सैनिक कई-कई सप्ताह तक स्थायी रूप से रहते हैं और जिसे आज-कल तल-चौकी कहते हैं। (बंकर)

दर—स्त्री० [हिं०]३. वह नियत मात्रा, या मान जो किसी काम या बात

के अनुपात के विचार से निश्चित किया जाता हो। (रेट) जैसे—भत्ते या वेतन की दर योग्यता के अनुसार निश्चित होती है।

दरजाबंदी—स्त्री॰ [फा॰] आदमियों, चीज़ों आदि को अलग-अलग दर्जों में बाँटने की क्रिया या भाव। अनुपातन। श्रेणीकरण। (ग्रेडिंग)

दरजे—अव्य॰[फा॰ दर्जः] अवस्था या दशा में। उदा॰—एक दरजे मर्द को घर में बुला ले, पर ऐसी औरतों को न बुलावे।—मिरजा रुसवा। (उमरावजान अदा में)

पद—हारे दरजे=लाचारी की हालत में। विवशता की दशा में। जैसे—हारे दरजे मुझे ही वहाँ जाना पड़ा।

रद्र नारायण—पुं॰ [सं॰] दरिद्रों का वर्ग या समूह, जो पहले बहुत ही तुच्छ और हेय समझा जाता था ; परन्तु अब जो सब प्रकार के आदर और सम्मान का पात्र माना जाने लगा है।

दरी-मंदिर—पुं॰[सं॰] वह मंदिर या भवन, जो किसी पर्वत की दरी या गुफा में खोदकर या चट्टान काटकर बनाया गया हो। जैसे—अजन्ता दरी-मंदिर।

दर्शक—पुं॰ २. वह जो किसी दर्शनीय अथवा महत्त्वपूर्ण संस्था, स्थान आदि को ध्यानपूर्वक देखने अथवा उसका परिचय प्राप्त करने के लिए आता हो। (विज़िटर) जैसे—(क) भारतमाता का मंदिर देखने के लिए आनेवाले दर्शक। (ख) कश्मीर देखने के लिए आनेवाले दर्शक। (ग) अजन्ता की गुफाएँ देखने के लिए आनेवाले दर्शक।

दरेती†—स्त्री॰[हिं॰ दरना=दलना] छोटी चक्की।

दर्शक-कक्ष—पुं॰[सं॰] किसी बड़े भवन का वह कक्ष या कमरा, जिसमें बैठकर लोग भाषण, संगीत आदि सुनते अथवा खेल-तमाशे आदि देखते हैं। आस्थानी। (आडिटोरियम)

दर्शक-पंजी—स्त्री॰[सं॰]=दर्शक-पुस्तिका।

दर्शक-पुस्तिका—स्त्री॰ [सं॰] वह पंजी या पुस्तिका, जिसमें किसी बड़ी संस्था में आनेवाले प्रतिष्ठित और सम्मानित लोग, उस संस्था के संबंध में अपने विचार लिखकर हस्ताक्षर करते हैं। आगंतुक पंजी। दर्शक-पंजी। (विजिटर्स बुक)

दर्शन-साक्षी—पुं॰[सं॰] ऐसा गवाह,जो स्वयं देखी हुई घटना की बातें बतलाता हो। अनुभावी। (आइ-विटनेस)

दर्शपति—पुं॰ [सं॰] किसी बड़ी संस्था का वह सर्वप्रधान और सम्मानित अधिकारी, जिसे बीच-बीच आकर उस संस्था का निरीक्षण करने का अधिकार होता है और जो प्रायः उसका सर्वप्रधान संरक्षक भी माना जाता है। (विज़िटर) जैसे—भारतीय विश्वविद्यालयों के दर्शपति साधारणतः यहाँ के राष्ट्रपति ही हुआ करते हैं।

दर्शाधिकारी—पुं॰ [सं॰ दर्श+अधिकारी] वह अधिकारी, जिसे विधिक दृष्टि से किसी संस्था का निरीक्षण करते रहने का अधिकार प्राप्त होता है और जो उसकी त्रुटियाँ आदि दूर करने के सुझाव देता रहता है। (विज़िटर) जैसे—कारागार या जेलखाने का दर्शाधिकारी।

दलनियाँ†—स्त्री॰[हिं॰ दालान] छोटा और पतला दालान।

दलित वर्ग—पुं॰ २. भारतीय हिन्दू समाज में कुछ ऐसी जातियाँ, जो छोटी और हीन समझी जाती हैं। (डिप्रेस्ड क्लासेज़) जैसे—चमार, धोबी आदि।

दलितोद्धार—पुं॰[सं॰ दलित+उद्धार] दलित अर्थात् समाज की दबी या पिछड़ी हुई जातियों और लोगों को आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से ऊपर उठाने की क्रिया या भाव।

दशमेश—पुं॰[सं॰ दशम+ईश] फलित ज्योतिष में, जन्म-कुंडली के दसवें घर का स्वामी ग्रह। २. सिक्खों के दसवें गुरु श्री गोविंदसिंह की संज्ञा।

दस नंबरी—वि॰[हिं॰ दस+अ॰ नंबर] ऐसा प्रसिद्ध और बहुत बड़ा बदमाश,जो कई भीषण अपराधों में दंड पा चुका हो और जो बिना पुलिस को सूचित किये हुए अपना गाँव छोड़कर और कहीं न जा सकता हो।

विशेष—पुलिस के अभिलेखों में एक पंजी या रजिस्टर होता है, जो दसवें नंबर का रजिस्टर कहलाता है और जिसमें हल्के के ऐसे लोगों की नामावली रहती है। इसी आधार पर यह पद बना है।

दस्ता—पुं॰१२. किसी बेड़े की वह छोटी टुकड़ी, जिसमें कई जहाज साथ मिलकर कोई काम करने के लिए नियुक्त किये जाते हैं। (स्क्वैड्रन) जैसे—समुद्री जहाजों का दस्ता, हवाई जहाज़ों का दस्ता आदि।

दस्तावेज—स्त्री॰२. कोई ऐसी लिखी हुई चीज या कागज-पत्र,जो प्रामाणिक माना जाता अथवा प्रमाण के रूप में उपस्थित किया जा सकता हो। प्रलेख। (डॉक्यूमेन्ट)

दस्तावेजी—वि॰२. जो दस्तावेज के रूप में अर्थात् लिखा हुआ और फलतः प्रामाणिक हो। लिखित लेख्य। (डॉक्यूमेन्टरी)

दहन—पुं॰ रासायनिक क्षेत्र में, किसी ऐसे पदार्थ का धीरे-धीरे जलना जो तत्काल सहज में और स्वभावतः आग पकड़ सकता हो। (कम्बस्चन)

दांडिक—वि॰ २. (क्रिया) जो दंड के रूप में हो। दंडात्मक। (प्यूनिटिव)

दांडिक पुलिस—स्त्री॰[सं॰+अं॰] पुलिस के सिपाहियों के वे दस्ते जो किसी ऐसे स्थान पर रखे जाते हैं, जहाँ शांति-भंग का कोई विशेष उपद्रव होता है, और जिसका व्यय उस स्थान के निवासियों से दंड-स्वरूप लिया जाता है। ताजीरी पुलिस। (प्यूनिटिव पुलिस)

दांतिकी—स्त्री॰[सं॰ दंत से] दाँतों के रोगों की चिकित्सा करने और उन्हें निकालने, नये नकली दाँत लगाने आदि के प्रकारों और सिद्धांतों का विवेचन होता है। (डेन्टिस्ट्री)

दागीना†—पुं॰[?] गहना। (गुजरात-महाराष्ट्र)

दाहक रजत—पुं॰[सं॰]=क्षारक रजत।

दिक्-सूचक—वि॰ [सं॰] दिशा या दिशाएँ सूचित करनेवाला।
पुं॰ दिग्दर्शक यंत्र। कुतुब-नुमा। (कंपास)

दिल-चाक—वि॰[फा॰] बहुत ही खुले दिल का और परम उदार। उदा॰—ऐसा दिल-चाक आदमी न मैंने रईसों में देखा, न शाहजादों में।—मिरजा रुसवा (उमरावजान अदा में)

दिवालिया—वि॰ २. (व्यक्ति) जिसके संबंध में न्यायालय ने यह निश्चय कर दिया हो कि यह अपना ऋण चुकाने में अक्षम या असमर्थ है। (बैंकरप्ट)

दिव्य-परीक्षा—स्त्री॰[सं॰] १. प्राचीन भारत में, होनेवाली एक प्रकार की शारीरिक विकट परीक्षा, जिसके द्वारा यह पता लगाया जाता था कि अभियुक्त वास्तव में अपराधी है या निर्दोष।

विशेष—स्मृतियों के अनुसार इसके नीचे लिखे नौ प्रकार होते थे—वट, अग्नि, उदक, विष, कोष, तंदुल, तप्त-मापक, फूल और धर्मज। भिन्न

भिन्न प्रकार के अपराधों, अपराधियों, ऋतुओं और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र आदि वर्णों के विचार से कुछ विशिष्ट प्रकार की परीक्षाओं के लिए अलग-अलग विधान और निषेध भी स्थिर थे।

२. कोई ऐसी बहुत ही कठोर या विकट परिस्थिति, जिससे पार पाने के लिए किसी को अपनी यथेष्ट योग्यता, शक्ति, सहनशीलता आदि का परिचय देना पड़ता हो। अग्नि-परीक्षा। (आर्डिएल)

दिशा—स्त्री० ६. वह विंदु, जिसकी ओर कोई गतिमान वस्तु या व्यक्ति बढ़ता हो। (डाइरेक्शन)

दिशा-विंदु—पुं० [सं०] दे० 'दिग्विंदु'।

दीपक-पद—पुं० [सं०] साहित्यिक रचना में ऐसा पद, जिसका प्रयोग देहली दीपक न्याय से आगे और पीछे दोनों ओर होता है। जैसे—'हम न तुम' में का 'न' 'हम' के लिए भी और 'तुम' के लिए भी प्रयुक्त होने के कारण दीपक पद है।

दीपकुसस्थल†—पुं०=कुशदीप।

दीप-घर—पुं० [हिं०]=प्रकाश-स्तम्भ।

दीबा—पुं० [फा०] एक प्रकार का बढ़िया महीन कपड़ा।

दीवानी—वि० ३. संपत्ति आदि के मुकदमे से संबंध रखनेवाला। (सिविल) जैसे—दीवानी मुकदमा।

दीवानी विधि—स्त्री०=अर्थ-विधि।

दुंबाला—पुं० [फा० दुंबालः] १. किसी ओर निकली हुई लंबी नोक। २. दे० 'दुंबाल'।

दुंबालादार—वि० [हिं०+फा०] नुकीला। उदा०—एक तो जालिम तेरी ये आँखें उस पर कयामत सुरमा और वह भी दुंबालादार।—शौकत थानवी।

दुखतर—स्त्री० [सं० दुहितृ से फा०] पुत्री। बेटी।

दुगाना—पुं० [हिं० दु=दो+हिं० गाना] १. एक तरह का गीत, जिसके एक चरण में एक व्यक्ति कुछ प्रश्न करता और दूसरे चरण में दूसरा व्यक्ति उसका उत्तर देता है। २. ऐसा संगीत; जो दो व्यक्तियों के कंठस्वर से अथवा दो बाजों के सम्मिलित स्वरों से युक्त हो। जुगलबंदी।

दुछत्ती—स्त्री० [हिं० दो+छत] मकान के दूसरे खंड या मंजिल के ऊपर की छत।

दुम्मट—स्त्री० [हिं० दो+मट=मिट्टी] ऐसी जमीन, जिसमें साधारण मटमैले रंग की मिट्टी के सिवा हलके पीले रंग की मिट्टी और कुछ बालू भी मिली होती है। (लोम)

विशेष—ऐसी मिट्टी भुरभुरी होने के कारण पानी अधिक सोखती और अधिक समय तक नम रहती है। इसी लिए खेतीबारी के कामों के लिए अच्छी समझी जाती है।

दुर्विनियोग—पुं० [सं०] १. अनुचित रूप या बुरे उद्देश्य से किया जानेवाला विनियोग। २. किसी के रखे हुए धन में से अपने स्वार्थ के लिए अथवा अनुचित रूप से किया जानेवाला उपयोग। अपयोजन। खयानत। (मिस एप्रोप्रिएशन)

दुष्कृति—स्त्री० २. विधिक क्षेत्र में दूसरों को हानि पहुँचानेवाला कोई ऐसा काम, जिसकी प्रतिपूर्ति न्यायालय के द्वारा कराई जा सकती हो। (टार्ट)

दुहाज—पुं० [हिं० दो+विवाह] दूसरी बार होनेवाला विवाह।

दूध-पिलाई—स्त्री० ५. वह छोटी बोतल या शीशी, जिसके मुँह पर रबर की ढेंपनी लगी रहती है और जिससे छोटे बच्चों को दूध पिलाया जाता है। (फीडिंग बाटल)

दूधिया—वि० ६. (पेड़ या पौधा) जिसके डंठल, तने, पत्ते आदि तोड़ने पर अन्दर से दूध की तरह गाढ़ा सफेद तरल पदार्थ निकलता हो। आक्षीरी। (लैक्टिफ़ेरस)

दूर-कंप—पुं० [सं०] किसी जगह भू-कंप आने के फलस्वरूप उसकी विपरीत दिशा में बहुत दूर तक होनेवाला पृथ्वी का कंप। (टेलिसीज़्म)

दूर-मार—वि० [हिं०] (अस्त्र) जिसकी मार बहुत दूर तक पहुँचती हो। जैसे—दूरमार तोप।

दूर-संचार—पुं० [सं०] ऐसी व्यवस्था, जिसके द्वारा बहुत दूर के लोगों से किसी रूप में बात-चीत हो सके, या ऐसा ही और कोई संबंध स्थापित किया जा सके। (टेलिकम्यूनिकेशन)

दूरान्वयी—वि० [सं०] (संबंध) जो पास का नहीं, बल्कि कुछ या बहुत दूर का हो।

दूरान्वित—भू० कृ० [सं०] जो दूरान्वय वाले तत्त्व से युक्त किया गया हो अथवा हुआ हो।

दूलभ†—वि०=दुर्लभ।

दूषित धन—पुं० [सं०] घूसखोरी, चोरबाजारी आदि अनैतिक या दूषित उपायों से प्राप्त किया हुआ ऐसा धन, जो अधिकारियों की नजर से बचाकर जमा किया गया हो और जिसका आगे चलकर इसी प्रकार के अनैतिक या दूषित कामों के लिए उपयोग होता या हो सकता हो। (ब्लैक मनी) जैसे—आज-कल अफसरों, ठेकेदारों, व्यापारियों आदि के पास बहुत सा दूषित धन जमा हो गया है।

दृढ़ोक्ति—स्त्री० [सं० दृढ़+उक्ति] दृढ़तापूर्वक अर्थात् प्रमाण का निश्चय रखते हुए कही जानेवाली बात। (एसर्शन)

दृष्टांत-कथा—स्त्री० [सं०] कथा का वह प्रकार या भेद, जिसमें आचार, धर्म, नीति आदि से संबंध रखनेवाले सिद्धांतों का प्रतिपादन करने के लिए कुछ विशिष्ट मानव-पात्रों की योजना की जाती है। (पैरेबुल) जैसे—बौद्धों की जातक कथाएँ।

देय—वि० ३. (धन) जो न्याय, विधि या व्यवहार की दृष्टि से किसी को चुकाया या दिया जाने को हो। (ड्यू)

पुं० वह धन जो न्याय, विधि या व्यवहार की दृष्टि से किसी को चुकाया या दिया जाने को हो। (ड्यूज)

देव-कथा—स्त्री० [सं०]=पुराण-कथा।

देवड़ा†—पुं० [सं० देव] भूत-प्रेत झाड़ने और मंत्र-तंत्र करनेवाला ओझा। (पूरब)

देवार*—पुं०=देवारा (नदी का रेतीला किनारा)।

†स्त्री०=दीवार (भीत)।

देवारा†—पुं० [?] नदी का वह रेतीला किनारा, जो बहुत दूर तक फैला हो। (पूरब) जैसे—गंगा, राप्ती या सरयू का देवारा।

देशीकरण—पुं० [सं० देशीयकरण] आधुनिक राजनीति में वह अवस्था, जिसमें कोई राष्ट्र किसी विजातीय या विदेशी व्यक्ति को अपने यहाँ पूर्ण नागरिक अधिकार देकर उसे अपना अंग या सदस्य बनाता हो। (नेचुरलाइज़ेशन)

देशीय—वि० [सं० देश+छ—ईय] १. किसी देश से संबंध रखनेवाला। देशी। २. किसी देश के भीतरी भाग में होनेवाला।

देशीयकरण—पुं० [सं०]=देशीकरण। (दे०)

देह-स्वभाव—दे० 'शील' १. का विशेष।

देहातीयत—स्त्री० [हिं० देहात] देहातीपन। जैसे—इस नाम या पहनावे में कुछ देहातीयत है।

दो दाम पट—पुं० [हिं० दो+दाम=धन+पटना=चुकता होना] महाजनी लेन-देन आदि में वह प्रथा, जिसके अनुसार किसी उधार की हुई रकम का सूद बहुत बढ़ जाने पर मूल धन का दूना देकर ऋण चुकता किया जाता है।

दो-दिली—स्त्री० [हिं० दो+दिल] गर्भवती स्त्री, जिसके उदर में एक दूसरा दिल (अर्थात् जीव) भी होता है।

दो-रसी मिट्टी—स्त्री० [हिं०] दुम्मट जमीन की मिट्टी जो, कुछ तो पीली और कुछ मटमैली होती है और जिसमें बालू का भी कुछ अंश मिला रहता है। (लोम)

दोषारोप—पुं० [सं० दोष+आरोप] १. किसी त्रुटि, दोष या भूल के संबंध में किसी व्यक्ति पर किया जानेवाला आरोप। ऐसा कथन कि अमुक खराबी या दोष के लिए अमुक व्यक्ति उत्तरदायी है। अवक्षेप। अवशंसा। (ब्लेम) २. दे० 'दोषारोपण'।

दो-सखुना—पुं० [फा० दो+सखुन] एक प्रकार की पहेली, जिसमें दो प्रश्नों का ऐसा एक ही उत्तर होता है, जिससे सब प्रश्नों का समाधान हो जाता है। इसे दो-सगुना भी कहते हैं। जैसे—(क) घोड़ा क्यों अड़ा? पान क्यों सड़ा? उत्तर—फेरा न था। (ख) बड़ा क्यों न लाया? जूता क्यों न पहना? उत्तर—तला न था। (ग) मुसाफिर प्यासा क्यों? घोड़ा उदासा क्यों? उत्तर—लोटा न था।

दौड़ाक—पुं० [हिं० दौड़ना+आक (प्रत्य०)] प्रतियोगिता आदि में दौड़ लगानेवाला। धावक। (रनर)

द्रव-इंजीनियरी—स्त्री० [सं० द्रव+हिं० इंजिनियरी] भौतिक विज्ञान की वह शाखा, जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि जल तथा अन्य द्रव पदार्थों के गुणों, शक्तियों आदि का इंजिनियरी के काम में कितना और किस प्रकार का उपयोग होता या हो सकता है (हाईड्रॉलिक्स)

द्रव-चालित—वि० [सं०] (इंजन या यंत्र) जो जल या और किसी द्रव पदार्थ के प्रवाह के वेग से चलता हो। तोयाक्तिक। (हाईड्रॉलिक)

द्रव्यमान—पुं० [सं०] किसी काम में होनेवाली द्रव्य की मात्रा। (मास)

द्रष्टांक—पुं० [सं०] दे० 'वीसा'।

द्राभा—स्त्री० [सं०] ऐसी स्थिति, जिसमें दो भिन्न-भिन्न तत्त्वों का मेल या संयोग होता है। संगम। जैसे—दिव्य और पार्थिव की मिलन-छाया।

द्वितंत्री—वि० [सं०] जिसमें दो प्रकार के तंत्र हों। दो प्रकार के तंत्रों से युक्त।

स्त्री० दे० 'द्वैध-शासन'।

द्विनेत्री—स्त्री० [सं०] युद्ध-क्षेत्र में काम आनेवाली ऐसी दूरबीन, जिसमें दोनों आँखों के लिए दो ताल होते हैं और जिससे दूर की चीजें पास दिखाई देती हैं। (बाइनाक्यूलर)

द्वि-भाजन—पुं० [सं०] [भू० कृ० द्विभाजित] किसी चीज को बीच में से काट कर या और किसी प्रकार से अलग करके दो भागों में विभक्त करने की क्रिया या भाव। (बाइसेक्शन)

द्विलिंगी—वि०, पुं० [सं०]=उभयलिंगी।

द्विविम—वि० [सं० द्वि+विमा] जिसकी दो विमाएँ हों। दो विमाओंवाला। (टु-डाइमेन्शनल)

द्वि-सदनी—वि० [सं० द्वि+सदन] (प्रजातंत्री शासन-व्यवस्था) जिसमें दो सदन होते हैं। (बाइकेमरल)

द्वैध-शासन—पुं० [सं०] वह शासन-प्रणाली, जिसमें कुछ विभाग सरकार के हाथ में और कुछ प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथ में हों। द्वितंत्री। (डायार्की)

धनुस्तंभ—पुं०=धनुष-टंकार (रोग)।

धपियाना†—स०=धपाना।

धरती पुत्र—पुं० [हिं०+सं०] वह यशस्वी और वीर पुरुष, जिसने अपनी मातृभूमि की गौरव-वृद्धि, रक्षा आदि के लिए त्यागपूर्वक बड़े-बड़े काम किये हों।

धर्म-गाथा—स्त्री० [सं०] ऐसी पौराणिक कथाएँ, जिनमें देवी-देवताओं, असुरों आदि के अद्भुत या विलक्षण कार्यों का वर्णन होता है और जिन पर किसी विशिष्ट धर्मावलंबी की पूरी या बहुत-कुछ आस्था होती है। पुराण-कथा। (मिथ)

धर्म-तंत्री—वि० [सं० धर्म-तंत्रिन्] १. धर्म-तंत्र संबंधी। धर्म-तंत्र का। २. धर्म-तंत्र के अंतर्गत या अधीन रहने या होनेवाला। मजहबी। (थिओक्रेटिक)

धर्मतंत्री राज्य—पुं० [सं०] ऐसा राज्य, जो किसी विशिष्ट धर्म या मजहब के सिद्धान्तों पर ही मुख्य रूप से शासित हो और जिसमें ऐहिक या लौकिक बातों का ध्यान और स्थान उपेक्षया गौण रहता हो। मजहबी राज्य। 'धर्म-निरपेक्ष राज्य' से भिन्न। (थिओक्रेटिक स्टेट) जैसे—मुख्यतः इस्लामी सिद्धांतों पर संघटित और स्थापित होने के कारण इसराईल और पाकिस्तान धर्म-तंत्री राज्य हैं।

धर्मदाय—पुं०=धर्मस्व।

धर्म-निरपेक्षता—स्त्री० [सं०] धर्म-निरपेक्ष होने की अवस्था, गुण या भाव। (सेक्युलरिज्म)

धर्म-निरपेक्ष राज्य—पुं० [सं०] आधुनिक राजनीति में ऐसा राज्य, जिसमें केवल लौकिक या सांसारिक दृष्टि से ही प्रशासन के सब कार्य होते हों और जिसमें सब लोगों को अपने धार्मिक आचार-व्यवहार संपन्न करने की पूरी स्वतंत्रता प्राप्त हो। (सेक्यूलर स्टेट)

धर्म-संप्रदाय—पुं० [सं०] उड़ीसा, छोटा नागपुर और बंगाल में प्रचलित एक धार्मिक संप्रदाय, जिसमें 'धर्म' नामक देवता की पूजा होती है।

धर्मस्व—पुं० २. ऐसी धनराशि या संपत्ति, जो इस दृष्टि से सुरक्षित रखने के लिए दान की गई हो कि उससे होनेवाली आय से धर्म, परोपकार या लोक-सेवा का कोई काम बराबर चलता रहे। (एन्डाउमेन्ट)

धर्मासनिक—पुं० [सं०]=धर्माध्यक्ष।

धातुक—पुं० [सं० धातु+क (प्रत्य०)] खनिज पदार्थों के प्राकृतिक

या मूल रूप, जिसमें कई तरह की चीजें छिपी रहती हैं और जिसे गला तथा शोधकर कोई विशिष्ट धातु निकाली जाती है। (ओर)

धातु-पिंड—पुं० [सं०] किसी साफ की हुई धातु का वह चौकोर या लंबोतरा खंड या पिंड, जिसे काट या गला कर तरह-तरह की चीजें बनाई जाती हैं। सिल। (इन्गॉट) जैसे—चाँदी या सोने का धातुपिंड।

धातु-श्राध्नी—स्त्री० [सं०] धातुओं की खड़खड़ाहट की तरह की बोलने-चालने की शैली।

धानी—स्त्री० ८. वह आधार जिस पर कोई चीज खड़ी करके या टिकाकर रखी जाय। उपस्तंभ। (स्टैन्ड)

धामी संप्रदाय—पुं० [सं० धाम=ब्रह्म-लोक+संप्रदाय] संत प्राणनाथ का चलाया हुआ एक प्रसिद्ध धार्मिक सम्प्रदाय, जिसमें ब्रह्म के प्रति प्रेम की प्रधानता मानी जाती है; और इसी लिए किसी धर्म या संप्रदाय से द्वेष या भेद-भाव नहीं रखा जाता।

धारावेग मापी—पुं० [सं०]=बहावमापी।

धार्या—स्त्री० [सं०] सिपाहियों आदि की वरदी।

धिग्वादी—वि० [सं०] [स्त्री० धिग्वादिनी] धिक्कारनेवाला।

धुंध—पुं० ५. ऐसा घना कोहरा, जिसमें प्रायः दिन के समय भी कुछ दूर की चीजें न दिखाई देती हों।

धुनैनी—स्त्री० [हिं०] धुनियाँ जाति की स्त्री।

धुरपदिया—पुं० [सं० ध्रुपद] वह जो ध्रुपद गाने में प्रवीण हो।

धोखा—पुं० विधिक क्षेत्र में, जानबूझ कर की जानेवाली ऐसी चालाकी या धूर्ततापूर्ण क्रिया, जो दूसरों का धन, सम्पत्ति आदि अनुचित रूप से हस्तगत करने के लिए की जाय। उपधा। फरेब। (फ़्रॉड)

धौरित—पुं० [सं०] घोड़ों आदि की दुलकी चाल।

धौलिया†—स्त्री० [सं० धवलिका] माल ढोने की एक प्रकार की बहुत बड़ी नाव, जिस पर ५-६ सौ मन तक माल लाद सकता था।

ध्रुव-घड़ी—स्त्री० [सं०+हिं०] दिशाओं का ज्ञान करानेवाला एक छोटा यंत्र। कुतुबनुमा। दिग्दर्शक यंत्र। (कंपास)

ध्रुवत्व—पुं० [सं०] ध्रुवता।

ध्वजारोहण—पुं० [सं० ध्वज+आरोहण] कुछ विशिष्ट अवसरों पर होनेवाला वह कृत्य या समारोह, जिसमें झंडे की पहले से झुकाई हुई पताका फिर से खींचकर ध्वजदंड के ऊपर पहुँचाई और फहराई जाती है। (फ़्लैग-होएस्टिंग)

ध्वनि-वर्धक—वि० [सं०] ध्वनि को बढ़ाकर उच्च या तीव्र करनेवाला।

पुं० एक प्रकार का यंत्र जिसकी सहायता से साधारण या सूक्ष्म ध्वनियाँ या शब्द भी अधिक जोर के या तीव्र होकर सुनाई पड़ते हैं। (माइक, माइक्रोफ़ोन)

ध्वनि-संकर—पुं० [सं०] साहित्य में वह स्थिति, जब किसी उक्ति में दो ध्वनियाँ एक साथ ही मिली हुई आती हैं।

ध्वानिक—वि० [सं०] ध्वनि या आवाज से संबंध रखनेवाला। (एकॉस्टिक)

ध्वानिकी—स्त्री० [सं० ध्वानिक से] वह शास्त्र, जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि ध्वनि या आवाज किस प्रकार निकलती, फैलती और गूँजती है। (एकॉस्टिक्स)

नकदी पुर्जा—पुं० [हिं०] वह पुरजा जो विक्रेता क्रेता को कुछ खरीद करने पर देता है। (कैश-मेमो)

नकशाबंद—पुं० [अ०+फा०] [भाव० नकशाबंदी] जुलाहों में वह कारीगर, जो गलीचों, साड़ियों आदि की तैयारी से पहले उनमें बनाये जानेवाले बेल-बूटों आदि के नकशे या नमूने बनाता है।

नक-सुरा—वि० [हिं० नाक+सुर=स्वर] [स्त्री० नक-सुरी] (स्वर) जिसके साथ अनुस्वार की भी कुछ छाया हो। जैसे—उसकी आवाज थोड़ी नकसुरी थी। २. (व्यक्ति) जिसके स्वर में अनुस्वार की भी कुछ छाया रहती हो। जैसे—नक-सुरा गवैया।

नकारवादी—वि० [सं०] १. नकारवाद संबंधी। नकारवाद का। २. जो नकारवाद के सिद्धांतों का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो।

नकारी—वि० [हिं० नकार] नकार या नहीं का सूचक। नकारात्मक। नहिक।

स्त्री० १. नकारने अर्थात् नहीं करने की क्रिया या भाव। २. अस्वीकृति। नामंजूरी।

नक्राश्रु—पुं० [सं० नक्र+अश्रु] दे० 'मगरमच्छ' के अन्तर्गत "मगर मच्छ के आँसू"।

नक्शबंदी—पुं० [फा०] भारत में प्रचलित एक प्रकार का सूफी संप्रदाय।

नख-पद—पुं० [सं०] नाखूनों की खरोंच।

नखर—पुं० पशु-पक्षियों आदि की ऐसी उँगलियों का समूह, जिनमें नाखून भी निकले हों। पंजा। (क्लॉ)

नगर-निकाला—पुं० [हिं०] वह दंड जो किसी को नगर से बाहर निकालने के रूप में दिया जाता है।

नगर-पाली†—स्त्री०=नगर-पालिका।

नटवरी—वि० [हिं० नटवर] नटवर संबंधी। नटवर का। जैसे—नटवरी नृत्य।

नतोन्नत—पुं० दे० 'उच्चित्र'।

नथिया-बंद—वि० स्त्री० [हिं०] वेश्या की वह नोची या लड़की, जिसका अभी तक किसी पुरुष से संबंध न हुआ हो।

नदीदा—वि० [हिं० न+फा० दीदः=आँख] [स्त्री० नदीदी] ऐसा निर्लज्ज लालची, जिसके संबंध में ऐसा जान पड़ता हो, कि इसने कभी कोई अच्छी चीज देखी ही न हो।

नदी-पात्र—पुं० [सं०] वह समस्त भूमि-क्षेत्र, जिस पर से होकर नदियाँ बहती हैं। नदी के नीचे का तल। (बेसिन)

नदीष्ण—वि० [सं०] [भाव० नदीष्णता] १. जो नदी में नहा रहा हो, या पड़ा हो। २. जिसे नदी के बहाव, रुख और विकट स्थानों आदि का अच्छा ज्ञान हो। ३. अनुभवी और बुद्धिमान। होशियार। जैसे—इस विकट कार्य में आप भी बहुत ही नदीष्ण हैं।

नदीष्णता—स्त्री० [सं०] नदीष्ण होने की अवस्था, गुण या भाव।

नमस्य—पुं० [सं०] १. व्यक्ति की वह स्थिति, जिसमें लोग उसे आदरपूर्वक नमस्कार करते हों। २. बड़प्पन। महत्त्व।

नमस्वी—पुं० [सं० नमस्विन्] वह जो आदरणीय अथवा पूज्य व्यक्तियों को नमस्कार करता हो।

वि० नमस्कार करनेवाला।

नयाचार—पुं० [सं० नय+आचार] १. नीतिपूर्ण आचरण और व्यवहार। २. आधुनिक राजनीति में, राज्यों के सर्व-प्रधान अधिकारियों अथवा राज्य-मंत्रियों में पारस्परिक होनेवाला औपचारिक तथा सौजन्यपूर्ण आचरण और व्यवहार। (प्रोटोकोल)

नर-भक्षिता—स्त्री० [सं०] मनुष्यों की कुछ जंगली जातियों में प्रचलित वह प्रथा, जिसके अनुसार वे मनुष्यों की हत्या करके उनका मांस खाते हैं। (कैनिबुलिज्म)

नर-भक्षी—पुं० २. ऐसा असभ्य और जंगली व्यक्ति, जो मनुष्यों को मारकर उसका मांस खाता हो। (कैनिबुल)

नरम पानी—पुं० [हिं०] (क) ऐसा पानी जिसके बहाव में अधिक वेग न हो। (ख) ऐसा पानी, जिसमें खनिज तत्व अपेक्षया कम हों।

नर-संहार—पुं० [सं०]=जन-संहार।

नव-जागरण—पुं० [सं०] पाश्चात्य ऐतिहासिक परंपरा में, युरोप के मध्य युग और आधुनिक युग के बीचवाले संक्रमण काल की वह स्थिति, जिसमें बहुत दिनों की सामाजिक दुर्गति के बाद नये-नये अन्वेषणों, आविष्कारों आदि का आरंभ हुआ था और दर्शन, धर्म, विज्ञान, संस्कृति आदि का नये सिरे से पुनरुद्धार या संस्कार होने लगा था। (रिनेजाँ)

नवागंतुक—पुं० [सं० नव+आगंतुक] वह जो कहीं से अभी हाल में आया हो। अजनबी और नया आया हुआ आदमी।

नवीकरण—पुं० [सं० अभिनव से] किसी पुरानी वस्तु को कुछ विशिष्ट उपकरणों, क्रियाओं आदि के द्वारा फिर से नया रूप देने की क्रिया या भाव। (रिनोवेशन)

नाँघन†—स्त्री०=लाँघन।

नाँदा—पुं० [हिं० नाँद] १. मिट्टी की बड़ी नाँद। २. नाँद के आकार के मिट्टी, लकड़ी आदि के वे पात्र, जिनमें बाग-बगीचों की शोभा के लिए पेड़-पौधे लगाये जाते हैं।

नाग-यज्ञ—पुं० [सं०] जनमेजय का वह प्रसिद्ध यज्ञ, जो उन्होंने नागों का नाश करने के लिए किया था।

नागर-युद्ध—पुं० [सं०]=गृह-युद्ध।

नाग-सामंत—पुं० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

नागाभरणी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

नाटेरक—पुं० [सं०] नटी का पुत्र या संतान।

नाटो†—स्त्री० [हिं० नाटा का स्त्री० नाटी?] युवती और दुश्चरित्रा स्त्री।
पुं० दे० 'नैटो' (संघटन)।

नादपेटी—स्त्री० [सं० नाद+हिं० पेटी] ग्रामोफोन आदि बाजों में डिबिया के आकार का वह छोटा अंग या पुरजा, जिसके द्वारा रेकार्डों में आवाज भरी जाती और रेकार्डों में भरी हुई आवाज फिर से बाहर निकल कर सुनाई पड़ती है। (साउन्ड-बॉक्स)

नाद-स्वर—पुं० [सं०] नफीरी की तरह का एक बाजा, जिसका अधिकतर प्रचलन दक्षिण भारत में है।

नाफदानी—स्त्री० [फा०] स्त्री का गर्भाशय।

नाबर—वि० [सं० निर्बल] कमजोर। निर्बल। जैसे—हम क्या रुपया खरचने में किसी से नाबर हैं।

नाभिक—वि० [सं०] नाभि-संबंधी। नाभि का।
पुं० केन्द्रक।

नाम-रूपवाद—पुं० [सं०] दार्शनिक क्षेत्र में, यह मत या सिद्धांत कि इस जगत् में नाम और रूपवाली जितनी सत्ताएँ हैं, वे सब कोरी काल्पनिक हैं, और उनकी कोई वास्तविक सत्ता नहीं है। (नॉमिनेलिज्म)
विशेष—यह हमारे यहाँ के आभासवाद (देखें) का एक प्रकार का भेद ही है।

नामिक विधेय—पुं० [सं०] व्याकरण में वह विधेय, जो कर्ता की क्रिया या व्यापार, गुण, लक्षण आदि का निर्देश करता है।

नामिका—स्त्री० [सं०] ऐसे चुने हुए या विशिष्ट लोगों के नामों की सूची, जिनमें से किसी विषय के विचार या विवेचन के लिए कुछ लोग छाँटकर अलग किये जाने को हों। (पैनेल)

नारेबाजी—स्त्री० [हिं० नारा+फा० बाजी] केवल प्रचार के उद्देश्य से खूब चिल्ला-चिल्लाकर या बार-बार नारे लगाते रहने की क्रिया या भाव।

ना-शुकरा—वि० [हिं० ना+फा० शुक्र=धन्यवाद] [स्त्री० ना-शुकरी] जो कृतज्ञता प्रकट करना न जानता हो।

ना-शुकरी—स्त्री० [हिं० ना-शुकरा] ना-शुकरा होने की अवस्था या भाव। कृतघ्नता।

नासदानी—स्त्री०=नासदान।

निःस्वामिक—वि० [सं०] (वस्तु) जिसका कोई स्वामी या मालिक न हो। २. भू-खंड जिस पर किसी का आधिपत्य या शासन न हो।

निकास पंखा—पुं० [हिं०] वह पंखा जो कमरों की गरम और श्वास से दूषित वायु बाहर निकालने के लिए दीवारों के ऊपरी भाग में झरोखों आदि में लगाया जाता है। रेचक पंखा। (एग्ज़्हॉस्ट फ़ैन)

निगूढ़—वि० ३. किसी के अन्दर छिपा या दबा हुआ।

निजी—वि० ४. जिसका व्यक्तिविशेष से ही संबंध हो, सब लोगों से न हो। 'सार्वजनिक' से भिन्न। खासगी। व्यक्तिगत। (प्राइवेट)

निजी सचिव—पुं० [हिं०+सं०] किसी बड़े अधिकारी का निजी मंत्री। (प्राइवेट सेक्रेटरी)

नित्य-चर्या—स्त्री० [सं०] नित्य या प्रतिदिन और नियमित रूप से किया जानेवाला काम। नैत्यक। (रुटीन)

नित्य-प्रिया—स्त्री० [सं०] वैष्णव भक्तों के अनुसार वे गोपियाँ, जो सदा वृन्दाबन में रहकर श्रीकृष्ण के साथ नृत्य-लीला करती हैं। कहा जाता है कि बहुत लंबी साधना के उपरांत जीवों को यह रूप प्राप्त होता है।

निदर्शक—पुं० वह व्यक्ति जो विज्ञान, रेखागणित आदि में उदाहरण, प्रयोग आदि के द्वारा विद्यार्थियों को यह समझाता हो कि कैसे कोई चीज काम करती या उपयोग में आती है। (डिमॉन्स्ट्रेटर)

निदान-शाला—स्त्री० [सं०]=निदान-गृह।

निदानिका—स्त्री० [सं०]=निदान-गृह।

निदेशन—पुं० [सं०] निदेश करने या देने की क्रिया या भाव। (डाइरेक्शन)

निदेशालय—पुं० २. वह केन्द्रीय कार्यालय, जहाँ से अधीनस्थ कार्य-

कर्ताओं को उनके कामों के संबंध में आवश्यक निदेश भेजे जाते हैं। ३. किसी संस्था के निदेश का वर्ग या समूह। (डाइरेक्टोरेट)

निधान—पुं० ७. किसी काम या रोजगार में रुपए लगाना। निवेश। (इन्वेस्टमेन्ट)

निपटान—स्त्री० [हिं० निपटना या निपटाना] १. निपटने की क्रिया या भाव। २. हाथ में आये हुए काम को निपटाने या पूरा करने की क्रिया या भाव। ३. अनावश्यक या अनुपयोगी वस्तुओं को या तो वेचकर या और किसी प्रकार अलग या दूर करने की क्रिया या भाव। (डिस्पोज़ल)

निबोरी—स्त्री० [सं० नूपुर] एक प्रकार का गहना। उदा०—छरा निबोरी दिखि भई बौरी, जगत ठगौरी जनु इक ठौरी।

निमित्तिक छुट्टी—स्त्री० [हिं०]=आकस्मिक छुट्टी।

निमोया†—वि० [हिं० नि+मुअना=मरना] [स्त्री० निमोई] जिसे मौत भी न आती हो। (स्त्रियों की गाली) उदा०—फिर निमोई औरतों पर जो न हो, थोड़ा है जुल्म।—जान साहब।

नियतन—पुं० [सं०] १. नियत करने की क्रिया या भाव। २. कोई चीज हिस्से के मुताबिक सब लोगों को नियत मात्रा में बाँटने की क्रिया या भाव। (एलॉटमेन्ट)

नियम-निष्ठ—वि० [सं०] [भाव० नियमनिष्ठता] नियमों, परिपाटियों, रूढ़ियों आदि का पालन करनेवाला।

नियम-निष्ठता—स्त्री० [सं०] ऊपरी या बाहरी दिखावट के लिए नियमों, परिपाटियों, रूढ़ियों आदि का पालन करने की अवस्था, क्रिया, गुण या भाव।

नियामक—पुं० २. कोई ऐसा तत्त्व, पदार्थ या व्यक्ति, जो औरों को ठीक तरह से काम करने में प्रवृत्त करता और उनकी गति-विधि का नियंत्रण करता हो। ३. किसी यंत्र का वह अंग या पुरजा, जो यंत्र की गति-विधि आदि का नियंत्रण करता और उसे ठीक तरह से चलाता हो। (रेग्यूलेटर)

निरंकुश शासक—पुं० [सं०] वह शासक, जो बिना किसी का परामर्श लिये अपनी इच्छा और मनमाने ढंग से शासन करता हो। (ऐबसोल्यूट मॉनर्क)

निरंग रूपक—पुं० [सं०] साहित्य में रूपक अलंकार का एक भेद, जिसमें केवल अंगी का आरोप होता है, उसके अंगों का आरोप या उल्लेख नहीं होता। जैसे—मुख कमल है। यहाँ केवल मुख पर कमल का आरोप है ; मुख के अवयवों पर कमल के अवयवों का आरोप नहीं है।

निरंतरता—स्त्री० [सं०] किसी काम या बात के निरंतर अर्थात् लगातार होते रहने की अवस्था, गुण या भाव । सातत्य। (कांटिन्यूइटी)

निरपेक्षता-वाद—पुं० [सं०] वह दार्शनिक मत या सिद्धांत, जिसमें किसी निरपेक्ष सत्ता को सारी सृष्टि का कारण माना गया हो। (ऐब्सोल्यूटिज़्म)

निरसन—पुं० [सं०] विधायिका सभा की वह प्रक्रिया, जो किसी बने हुए विधान को रद या समाप्त करने के लिए होती है। कानून या विधान रद करना। (रिपील)

निरापद—वि० ४. जो किसी आपदा या संकट से पूर्ण रूप से सुरक्षित हो। (इम्यून)

निरापदता—स्त्री० [सं०] १. निरापद होने की अवस्था, गुण या भाव। २. वह स्थिति जिसमें मनुष्य किसी विशिष्ट प्रकार की आपदा या संकट से पूरी तरह बचा हुआ या सुरक्षित रहता है। (इम्यूनिटी)

निरूढ़—वि० ४. जो किसी के अन्दर प्राकृतिक और स्थायी रूप से वर्तमान रहता हो। (इन्हेरेन्ट)

निर्जीवीकरण—पुं० [सं०] किसी सजीव को निर्जीव करने की क्रिया, प्रणाली या भाव।

निर्दलीय—वि० [सं०] जो किसी दल या पक्ष में न हो।

निर्देशी—पुं० [सं० निर्देशित] वह जो कोई विवादास्पद विषय उत्पन्न होने पर यह बतलाता हो कि सिद्धांततः ऐसा होना चाहिए। अभिदेशिकी। (रेफरी)

निर्बंधन—पुं० किसी प्रकार का निर्बंध या रोक लगाने की क्रिया या भाव। पाबदी। (रेस्ट्रिक्शन)

निर्मलीकरण—पुं० [सं०] निर्मल करने अर्थात् दोष, विकार आदि दूर करके किसी चीज को साफ करने की क्रिया या भाव। (क्लैरिफ़िकेशन) जैसे—कूएँ या नदी के जल का निर्मलीकरण।

निर्मेय—वि० [सं०] जिसका निर्माण किया जाने को हो अथवा होने को हो।

पुं० तर्कशास्त्र में, वह बात या विषय, जिसे विचारपूर्वक ठीक सिद्ध करने की आवश्यकता हो, अथवा जो ठीक सिद्ध किया जाने को हो। (प्रॉब्लेम)

निर्वनीकरण—पुं० [सं०] जमीन साफ करने के लिए जंगल या वन साफ करने की क्रिया या भाव। बनकटाई। (डिफ़ोरेस्टेशन)

निर्वहण—पुं० ३. आज्ञा, कर्तव्य आदि का निर्वाह या पालन। (डिस्चार्ज)

निर्वाहिका—स्त्री० [सं०] उतना पारिश्रमिक या वेतन, जितने से कार्यकर्त्ता और उसके परिवार का निर्वाह या भरण-पोषण हो सके। निर्वाह-वृत्ति। (लीविंग वेज)

निलंबन—पुं० १. अस्थायी रूप से किसी को कोई काम करने से रोकना। २. कोई काम या बात अंतिम निर्णय के लिए कुछ समय तक रोक रखने या स्थगित करने की क्रिया या भाव। ३. किसी कर्मचारी या कार्यकर्ता के किसी अपराध, त्रुटि या दोष की सूचना मिलने पर उसकी ठीक जाँच या निर्णय होने तक उसे उसके पद से अस्थायी रूप से हटाये जाने की क्रिया या भाव। मुअत्तली। (सस्पेन्शन)

निलंबित—भू० कृ० [सं०] (कार्य या व्यक्ति) जिसका निलंबन हुआ हो। जो अंतिम निर्णय की प्रतीक्षा में टाला, रोका या हटाया गया हो। मुअत्तल। (सस्पेन्डेड)

निलहारा—पुं० [हिं० नील (रंग)+हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० निलहारिन, निलहारी] वह जो शरीर के अंगों में नील के योग से गोदना गोदने का व्यवसाय करता हो। गोदनहारा।

निलाई—स्त्री०=निराई। (पश्चिम)

निविदा—स्त्री० [सं० निवेद] वह पत्र जिसमें किसी प्रस्ताविक कार्य के संबंध में यह लिखा रहता है कि हम इतने पारिश्रमिक पर अमुक

रूप में यह काम पूरा कर देंगे ; और जो उपयुक्त अधिकारियों के सामने स्वीकृति के लिए रखा जाता है। (टेन्डर)

विशेष—प्रायः अधिकारियों को जब कोई काम कराना होता है, या किसी आवश्यकता की पूर्ति करानी होती है, तब वे सार्वजनिक संबंध में ठीकेदारों से अपने दर की निविदाएँ माँगते हैं ; और तब उनकी शर्तों, स्थितियों आदि पर विचार करके किसी ठीकेदार को उसकी निविदा के आधार पर वह काम सौंपते हैं।

निवृत्ति—स्त्री० ८. किसी विशिष्ट उद्देश्य या विचार से किसी काम या बात से अलग रहना या बचना। उपरति। (ऐब्स्टिनेन्स)

निवृत्तिका—स्त्री०=निवृत्ति-वेतन।

निवृत्ति-वेतन—पुं० [सं०] वेतन का वह प्रकार, जो किसी कर्मचारी को बहुत दिनों तक काम करते रहने पर उसकी वृद्धावस्था में काम के लिए अक्षम हो जाने पर अथवा उसकी किसी विशिष्ट योग्यता, सेवा आदि के विचार से भरण-पोषण के लिए वृत्ति के रूप मिलता है। (पेन्शन)

निवेश—पुं० ५. व्यापार आदि में धन या पूँजी लगाने की क्रिया या भाव। (इन्वेस्टमेन्ट)

निश्चयी—वि० [सं०] १. जिसका कोई निश्चित मान या स्थिर स्वरूप हो। २. सकारात्मक। (पॉज़िटिव) ३. जिसे किसी बात या विषय में पूरा निश्चय हो चुका हो। (कॉन्फ़िडेन्ट)

निश्चेत—वि० [सं०] जिसकी चेतना शक्ति नष्ट हो गई हो। निश्चेतन।

निश्चेतक—वि० [सं०] (ओषधि या पदार्थ) जो शरीर या उसके किसी अंग को कुछ समय के लिए निश्चेत या सुन्न कर देता हो। चेतना या संवेदन से रहित करनेवाला। संवेदनहारी।

पुं० उक्त प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करनेवाली कोई दवा। (एनिस्थेटिक)

निश्चेतन—पुं० २. वह स्थिति, जिसमें किसी रोग या निश्चेतक ओषधि के प्रयोग के कारण शरीर या उसका कोई अंग बिलकुल सुन्न हो जाता है ; और उसमें ताप, पीड़ा आदि का अनुभव करने की शक्ति नष्ट हो जाती है। (एनेस्थीसिया) ३. बेहोश होने की क्रिया या भाव।

निश्चेतनीकरण—पुं० [सं०] १. निश्चेत करने की क्रिया या भाव। २. चिकित्सा-शास्त्र में, चीर-फाड़ आदि से पहले शरीर का कोई अंग औषधों के प्रयोग से निश्चेतन या सुन्न करना। (एनेस्थिसिस)

निश्चेष्टता—स्त्री० [सं०] १. निश्चेष्ट होने की अवस्था या भाव। २. वह अवस्था, जिसमें मनुष्य का सारा शरीर सुन्न या स्तब्ध हो जाता है। (इनर्शिया)

निषिद्ध—भू० कृ० [सं०] (पदार्थ) जिसके आयात-निर्यात, क्रय-विक्रय आदि का राज्य की ओर से निषेध हो। (कॉन्ट्राबैंड)

निषेध—पुं० ६. अधिरोध। घाट-बंदी। (एम्बार्गो)

निषेधवाद—पुं० [सं०] [वि० निषेधवादी] आधुनिक पाश्चात्य क्षेत्रों में, निराश भाव में यह मानना कि यह संसार और मनुष्य का जीवन सब निरर्थक है, आदर्शों का कोई मूल्य या महत्त्व नहीं है और सभी सांसारिक बातें तुच्छ और निस्सार हैं और अन्त में छिन्न-भिन्न होती रहती हैं। (नेगेटिविज़्म)

निषेधाज्ञा—स्त्री० [सं० निषेध+आज्ञा] वह आज्ञा, जो न्यायालय कोई होता हुआ काम रोकने के लिए देता है। व्यादेश। (इन्जंकशन)

निष्कर्ष—पुं० विधिक क्षेत्र में, किसी अभियोग या वाद की पूरी सुनवाई हो चुकने पर न्यायाधीश अथवा न्यायालय द्वारा निकाला हुआ परिणाम। (फ़ाइन्डिंग)

निष्क्रमण—पुं० २. किसी देन या आवर्त्तक भार से मुक्त होने के लिए एक ही बार में कुछ धन एक साथ देकर उससे छुटकारा पाना। (रिडेम्पशन)

निष्क्रांत—पुं० वह जो किसी विपत्ति या संकट से त्रस्त होकर अपना देश या निवास-स्थान छोड़कर दूसरी जगह चला गया हो, या जा रहा हो। निष्क्रमिती। (इवैकुई)

निष्क्रिय-विरोध—पुं० [सं०]=निष्क्रिय प्रतिरोध। सत्याग्रह।

निष्पत्ति—स्त्री० अध्यवसाय अथवा शिक्षा आदि के द्वारा प्राप्त की हुई योग्यता या विशेषता। (एटेनमेन्ट) जैसे—शैक्षणिक योग्यता।

निष्यंदन—पुं० [सं०] [भू० कृ० निष्यंदित] १. तरल पदार्थ का चू या रिस कर बाहर निकलना। क्षरण। २. किसी तरल पदार्थ को इस प्रकार एक पात्र में से दूसरे पात्र में पहुँचाना या ले जाना कि उसमें की मैल पहलेवाले पात्र में ही रह जाय। छानना। (फ़िल्ट्रेशन)

निस्तारण—पुं० आज-कल विशेष रूप से समुद्र में डूबे हुए जहाजों, जलते हुए मकानों आदि में से धन-संपत्ति बचाकर बाहर निकालने की क्रिया या भाव। (सैल्वेज)

निहित स्वार्थ—पुं० [सं०]=अधिष्ठित स्वार्थ।

नीति-दर्शन—पुं० [सं०]=नीति-शास्त्र।

नीति-विज्ञान—पुं० [सं०]=नीति-शास्त्र।

नीर-क्रिया—स्त्री० [सं०] नल के द्वारा एक स्थान से जल, तेल आदि द्रव पदार्थ पहुँचाने की क्रिया या भाव। नीरण। (पाइपिंग)

नील-मुद्र—पुं० [सं०] १. इमारतों आदि के बनावट से संबंध रखनेवाला वह खाका या रेखाकृति, जो छाया-चित्रण की प्रक्रिया से नीले कपड़े या कागज पर उतारी जाती है। २. किसी महत्त्वपूर्ण घटना के संबंध का वह विवरण, जो राज्य या शासन की ओर से प्रकाशित किया जाता है। (ब्लूप्रिन्ट)

नील-मुद्रण—पुं० [सं०]=नीलिका-मुद्रण।

नुक्केदार—वि० [हिं० नुक्का+फा० दार (प्रत्य०)] १. नोकदार। नुकीला। २. जिसका अगला भाग कुछ दूर तक निकला या बढ़ा हुआ हो। जैसे—नुक्केदार टोपी, नुक्केदार दाढ़ी।

नेटो—पुं०=नैटो।

नेति—स्त्री० न रहने या न होने की अवस्था या भाव। नकारात्मकता। (नेगेशन)

नेत्र-विज्ञान—पुं० [सं०] चिकित्सा-शास्त्र की वह शाखा, जिसमें आँखों की बनावट, उनके अंगों की क्रिया-प्रणाली और रोगों का विवेचन होता है। (आफ्थाल्मोलाजी)

नेम—पुं० ३. नित्य और नियमित रूप से प्रतिदिन किया जानेवाला काम। नित्य-चर्चा। नैत्यक। (रुटीन)

नैटो—पुं० [अं० नॉर्थ एटलांटिक ट्रीटी आर्गनाइजेशन के आरम्भिक अक्षरों का सम्मिलित रूप] अमेरिका और इंगलैण्ड द्वारा स्थापित

एक संघटन, जिसमें उत्तरी ऐटलांटिक की रक्षा के उद्देश्य से और भी कई राष्ट्र सम्मिलित हैं।

नैन-मटक्का—पुं० [हिं० नैन+मटकाना] आँखे नचाने या मटकाने की क्रिया या भाव।

नैन-मुतना—वि० [हिं० नैन=आँख+मूतना] [स्त्री० नैन+मुतनी] जिसकी आँखों से बहुत जल्दी आँसू निकल पड़ते हों। जल्दी रो पड़नेवाला। (परिहास और व्यंग्य) उदा०—नैन-मुतनी इस कदर बन जाइए क्या फ़ायदा।—इन्शा।

नैमित्तिक—वि० ४. जो किसी विशेष (उद्देश्य या कार्य) के लिए किया, दिया या रखा गया हो। (कैजुअल) जैसे—नैमित्तिक कर्मचारी, नैमित्तिक छुट्टी आदि।

नोका—पुं०=नोक।

नोखा†—वि० [हिं०] [स्त्री० नोखी]=अनोखा।

नौं आबादी—स्त्री० [फा०] १. ऐसी आवादी या वस्ती, जो अभी हाल में वसी हो। नई बस्ती। २. उपनिवेश। (कॉलोनी)

नौचालन—पुं० [सं०] नदियों, समुद्रों आदि में नाव या जहाज चलाने की क्रिया, भाव या विद्या। जहाजरानी। (नेविगेशन)

नौजित—वि० [सं०] १. समुद्री डाके में लूटा हुआ। २. युद्धकाल में शत्रु के समुद्री जहाजों से छीना या लूटा हुआ।

नौजित न्यायालय—पुं० [सं०] वह न्यायालय, जो इस बात का विचार करता है कि युद्ध-काल में समुद्री जहाजों पर रोका हुआ माल विधिक दृष्टि से जब्त किया जा सकता है या नहीं। (प्राइज कोर्ट)

नौजित-माल—पुं० [सं० नौ-जित+फा० माल] १. समुद्री जहाजों पर डाका डालकर लूटा हुआ माल। २. आधुनिक राजनीति में वह माल, जो शत्रु-देश के जहाजों को रोककर बलपूर्वक उतरवा लिया गया हो अथवा अपने अधिकार में ले लिया गया हो। (प्राइज)

न्याय-तंत्र—पुं० [सं०] वह समस्त राजकीय व्यवस्था, जिसके अन्तर्गत न्यायालयों के द्वारा न्याय के सब काम होते हैं। (जुडिशिअरी)

न्याय-दर्शन—पुं० [सं०] भारतीय आर्यों के छः दर्शनों में से एक, जिसमें किसी तथ्य या बात का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के लिए तार्किक दृष्टि से उसके विवेचन के नियम और सिद्धांत निरूपित हैं। इसके कर्ता कणाद या गौतम ऋषि हैं।

न्याय-पालिका—स्त्री० [सं०] १. =न्याय-तंत्र। २. =न्यायांग।

न्याय-पीठ—पुं० [सं०] १. न्यायालय के न्याय-कर्ता या न्यायाधीश के बैठने का स्थान। न्यायासन। २. लाक्षणिक रूप में, स्वयं न्यायकर्ता अथवा न्यायकर्ताओं का वर्ग या समूह। (बेंच)

न्यायवादी—वि० [सं० न्यायवादिन्] [स्त्री० न्यायवादिनी] सदा न्याय-संगत और सच बात कहनेवाला।

पुं० विधिक क्षेत्र में, जिसे किसी की ओर से मामले-मुकदमे लड़ने या उनकी पैरवी करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त हो।

विशेष—यह पद मुख्तार और वकील के पदों से भिन्न और बहुत उच्च है।

न्याय-शास्त्री—पुं० [सं० न्यायशास्त्रिन्] १. न्याय-दर्शन का ज्ञाता या पंडित। नैयायिक। २. दे० 'विधि-शास्त्री'।

न्यायांग—पुं० [सं० न्याय+अंग] शासन या सरकार का वह अंग या पक्ष, जो न्यायालयों में न्यायाधीशों के द्वारा न्याय-संबंधी सब काम करता-कराता है। न्याय-तंत्र। न्याय-पालिका। (जुडिशियरी)

न्यायाधीन—वि० [सं० न्याय+अधीन] (मुकदमा या विवाद) जो अभी विचार के लिए किसी न्यायालय में उपस्थित हुआ हो, लेकिन जिसका अभी निर्णय न हुआ हो। (सब जुडिस)

न्यायिक—वि० [सं० न्याय से] १. न्याय संबंधी। न्याय का। २. न्यायालयों अथवा न्यायाधीशों से संबंध रखने या उनके द्वारा होनेवाला। (जुडिशियल)

न्यास-धारी—पुं० [सं०] वह जिसे किसी प्रकार के न्यास की व्यवस्था का अधिकार दिया गया या उत्तरदायी बनाया गया हो। न्यासी। (ट्रस्टी)

न्यून रूपक—पुं० [सं०] साहित्य में रूपक अलंकार का एक भेद, जिसमें उपमान का आरोप करते समय उपमेय को इससे न्यून अर्थात् घटकर या हीन बतलाया जाता है। यथा—विप्रनि के मन्दिरन तजि, करत ताप सब ठौर। भाव सिंह भूपाल की तेज तरनि यह और।—मतिराम।

पड़ती—स्त्री० २. कोई ऐसी खाली पड़ी हुई जमीन, जो कभी जोती-बोई तो न गई हो, फिर भी प्रयत्नपूर्वक खेतीबारी के योग्य बनाई जा सकती हो। (फ़ैलो)

पतौड़ा†—पुं० [हिं० पत्ता+बड़ा (पकवान)] कुछ विशिष्ट प्रकार के पत्तों को बेसन में लपेटकर बनाया हुआ पकौड़ा या बड़ा। जूरी। (पश्चिम)

पत्र-मंजूषा—स्त्री० [सं०]=पत्र-पेटी।

पत्थर-तोड़—वि० [हिं० पत्थर+तोड़ना] १. (काम) जो उतना ही कठिन और परिश्रम-साध्य हो जितना पत्थर तोड़ना होता है। २. (आचरण या कथन) जो उतना ही कठोर और विकट परिणाम उत्पन्न करनेवाला हो जितना पत्थर का प्रहार होता है। जैसे—पत्थर-तोड़ जवाब।

पुं० वह व्यक्ति जो पत्थरों को तोड़कर उनके छोटे-छोटे टुकड़े बनाने का काम करता हो।

पद-ग्राही—वि० [सं० पद-ग्राहिन्] जो किसी का पद ग्रहण करे और इस प्रकार उसे अपने पद से कुछ समय के लिए हटने का अवसर दे। भार-ग्राही। (रिलीविंग) जैसे—पदग्राही अधिकारी।

पद-नामित—भू० कृ० [सं०] जिसकी नियुक्ति किसी पद पर हो चुकी हो; परन्तु जिसने अभी तक उस पद का भार न सँभाला हो। (डेज़िग्नेटेड) जैसे—पदनामित प्रधान मंत्री।

पद-संज्ञा—स्त्री० [सं०]=पद-नाम।

पद्धति—स्त्री० ४. कोई वैज्ञानिक कार्य करने का वह विशिष्ट ढंग या प्रकार, जिसके कुछ निश्चित नियम आदि हों; और जिसके फलस्वरूप उसकी गिनती एक स्वतंत्र इकाई के रूप में होती हो। (सिस्टम) जैसे—चिकित्सा की आयुर्वेदिक पद्धति या यूनानी पद्धति।

परजीभ—स्त्री० [सं० प्रतिजिह्वा] जीभ के नीचे का भाग। उदा०—जीभ जाय परजीभ न जावे। (कहा०)

परती—वि० [हिं० परत] १. परत या तह से संबंध रखनेवाला। २. जो परतों या तहों के रूप में हो। जैसे—परती लकड़ी। (दे०)

परती लकड़ी—स्त्री॰ [हिं॰] कुछ विशिष्ट यांत्रिक प्रक्रियाओं से इमारती लकड़ियों की बनी हुई पतली चादर, जो वस्तुतः जमाई हुई परतों के रूप में होती है, और अलमारियों, खिड़कियों, दरवाजों आदि में लकड़ी के तख्तों की जगह लगाई जाती है। (प्लाइ उड, प्लाउ वुड)

पर-हत्या—वि॰ [हिं॰ पर=पराया+हाथ] [स्त्री॰ पर-हत्थी] (काम) जो स्वयं अपने हाथों से न किया जाय, बल्कि किसी दूसरे के द्वारा कराया जाता हो। जैसे—पर-हत्था रोजगार, पर-हत्थी खेती आदि।

परहितवाद—पुं॰ [सं॰]=परार्थवाद।

परिक्रमण—पुं॰ [सं॰] किसी चीज का किसी दूसरी चीज के चारों ओर घूमना। (रिवोल्यूशन)

परिक्रय—पुं॰ ७. बंधन में पड़े हुए व्यक्ति को कुछ धन देकर उसके बदले उसे छुड़ाने की क्रिया। ८. उक्त काम के लिए दिया जानेवाला धन। निष्कृति धन। (रैन्सम)

परिचयी—वि॰ [सं॰ परिचय से] परिचय कराने या देनेवाला। परिचायक। जैसे—पुराने परिचयी ग्रंथों में सन्-संवतों का प्रायः अभाव है।

परिपाक—पुं॰ ५. विकृति-विज्ञान में, वह क्रिया या प्रक्रम, जो शरीर में किसी रोग के कीटाणु पहुँचने, उस रोग के परिपक्व होने और बाह्य लक्षण या स्वरूप प्रगट होने तक होती है। (इनक्यूवेशन)

परिपुष्टि—स्त्री॰ २. किसी के कथन या बात की दूसरे व्यक्ति या साधन के द्वारा पुष्टि या समर्थन। (कोरोबोरेशन)

परिभोग—पुं॰ ३. आज-कल विधिक क्षेत्र में किसी जमीन पर मकान में रहनेवाले व्यक्ति को आस-पास की जमीन से प्राप्त होनेवाला ऐसा सुभीता, जिससे उसे किसी तरह का आराम या सुख मिलता हो। सुख-भोग। (ईज़मेन्ट)

परिरक्षक—वि॰ [सं॰] १. अच्छी तरह से या सब प्रकार से रक्षा करनेवाला। २. (उपाय या क्रिया) जिसकी सहायता से कोई वस्तु इस प्रकार बचा और सँभालकर रखी जा सके कि वह बहुत दिनों तक काम में आ सके। (प्रिजर्वेटिव)

परिरक्षण—पुं॰ [सं॰] [भू॰ कृ॰ परिरक्षित] १. अच्छी तरह और सब प्रकार से बचाकर रखने की क्रिया या भाव। २. किसी विशिष्ट उपाय या क्रिया से किसी वस्तु को ऐसा रूप देना कि वह अधिक दिनों तक काम में आने के योग्य रह सके अथवा बचाकर रखी जा सके। (प्रिजर्वेशन)

परिरक्षा—पुं॰ [सं॰] १. =परिरक्षण। २. =अभिरक्षा (हिरासत)।

क्रि॰ प्र॰—में देना।—में रखना।—में लेना।

परिवर्तक—वि॰ ५. एक रूप से दूसरे रूप में परिवर्तन करनेवाला। (ट्रान्सफ़ॉर्मर)

परिवीक्षण—पुं॰ ३. व्यक्ति को किसी काम या पद पर स्थायी रूप से नियुक्त करने से पहले कुछ समय तक इससे वह काम करवाकर देखना कि उसमें यथेष्ट योग्यता या सामर्थ्य है या नहीं। (प्रोबेशन)

परिवीक्षा—स्त्री॰ [सं॰]=परिवीक्षण।

परिशून्य—वि॰ २. जिसका प्रभाव, शक्ति आदि नहीं के बराबर कर दी गई हो। प्रभावहीन। (वॉयड)

परिसंपत्ति—स्त्री॰ [सं॰]=परिसंपद।

परिसंवाद—पुं॰ २. किसी संघटित गोष्ठी या सभा-समिति में होनेवाली ऐसी बात-चीत, जिसमें किसी विशिष्ट विषय का विचार या विवेचन होता है। (सिम्पोज़ियम)

परिसीमा—स्त्री॰ ३. ज्यामिति में, किसी क्षेत्र या तल के चारों ओर से घेरनेवाली बाहरी रेखा अथवा ऐसी रेखा की लंबाई या विस्तार। (पेरिमीटर)

परेषक—वि॰ [सं॰] भेजनेवाला। प्रेषक।

पुं॰ वह जो किसी तक पहुँचने के लिए कोई माल भेजता हो। (कन्साइनर)

परेषण—पुं॰ [सं॰] [भू॰ कृ॰ परेषित] १. भेजने की क्रिया या भाव। प्रेषण। २. कहीं या किसी को पहुँचाने के लिए माल भेजने की क्रिया या भाव। ३. उक्त प्रकार से भेजी हुई चीज या माल। (कन्साइनमेन्ट)

पर्यायवाचक—वि॰ ३. शब्द जिसका अर्थ किसी दूसरे शब्द के अर्थ के समान ही हो। समानार्थक। (सिनोनिमस)

पर्वतारोहण—पुं॰ [सं॰ पर्वत+आरोहण] १. पहाड़ पर चढ़ना। २. आज-कल मुख्य रूप से बहुत ऊँचे और प्रायः बरफीले पहाड़ों पर चढ़ने की क्रिया, जिसके लिए बहुत कुछ कौशल और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। (माउन्टेनियरिंग)

पर्वतारोही—वि॰ [सं॰ पर्वत+आरोही] [स्त्री॰ पर्वतारोहिणी] पहाड़ पर चढ़नेवाला।

पुं॰ आज-कल ऐसा व्यवित, जो ऊँचे और बरफीले पहाड़ों पर चढ़ने की कला में प्रवीण हो। (माउन्टेनियर)

पलायन—पुं॰ ३. किसी प्रकार के दंड-भोग आदि से बचने के लिए भाग कर कहीं दूर चले जाना। अपसरण। (ऐबस्कान्डिन्ग)

पशुचोर—पुं॰ दे॰ 'गोरू-चोर'।

पहेला†—पुं॰ [हिं॰ पहेली] बड़ी और विकट पहेली। उदा॰—भानमती का थैला तुम हो यार पहेला।—बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'।

पाचक-तंत्र—पुं॰ [सं॰] शरीर के अन्दर के वे सब अंग और यंत्र, जो भोजन पचाते हैं। आहार-तंत्र। (एलिमेन्टरी सिस्टम)

पाचन-तंत्र—पुं॰ [सं॰]=पाचक-तंत्र।

पाचन-नाल—स्त्री॰ [सं॰] गले के अंदर की वह नली, जिससे होकर आहार या भोजन पेट तक पहुँचता है। (एलिमेन्टरी केनाल)

पारंपरिक—वि॰ [सं॰] जो परंपरा से चला आ रहा हो। परंपरागत। (ट्रैडीशनल)

पारेंद्रिय-ज्ञान—पुं॰ [सं॰]=अतींद्रिय-ज्ञान। (टेलिपैथी)

पारेषण—पुं॰ [सं॰] १. कोई चीज कहीं भेजने की क्रिया या भाव। २. विद्युत्-यंत्रों के द्वारा समाचार आदि कहीं भेजने की क्रिया या भाव। (ट्रान्समीशन)

पिछैता†—वि॰ [हिं॰ पीछा+ऐता (प्रत्य॰)] [स्त्री॰ पिछैती] पीछे से अर्थात् बाद में आने, रहने या होनेवाला। 'अगैता' का विपर्याय। जैसे—पिछैती फसल।

पीत-ज्वर—पुं॰ [सं॰] एक प्रकार का ज्वर, जिसमें रोगी को कामला या पीलिया नामक रोग हो जाता है और कै आने लगती है। यह कुछ

विशिष्ट प्रकार के मच्छड़ों के द्वारा शरीर में विषाणु प्रविष्ट होने पर उत्पन्न होता है। पीला बुखार । (यलो फीवर)

पीयूषिका—स्त्री० [सं०]=पीयूष-ग्रंथि।

पीला बुखार=पुं०=पीत ज्वर।

पुनर्विचार—पुं० [सं०] १. किसी काम या बात के संबंध में एक बार विचार हो जाने पर उसे ठीक करने या सुधारने के लिए फिर से होनेवाला विचार। २. विधिक क्षेत्र में, न्यायालय द्वारा किये हुए विचार या निर्णय पर कुछ विशिष्ट अवस्थाओं में फिर से किया जानेवाला विचार। नजरसानी। (रिविज़न)

पुराख्यान—पुं० [सं०]=पुराण-कथा।

पुराण-कथा—स्त्री० [सं०] १. किसी धर्म सम्प्रदाय के पुराणों आदि में वर्णित देवी-देवताओं आदि की ऐसी अद्‌भुत और अलौकिक कथाएँ, जिन पर उस धर्म या संप्रदाय के अनुयायियों की आस्था, विश्वास या श्रद्धा हो। (मिथ) २. सभी धर्मों या संप्रदायों से संबंध रखनेवाली उक्त प्रकार की कथाओं का विज्ञान, शास्त्र या समूह। कथा-शास्त्र। (माइथोलॉजी)

पुरालेखविद्—पुं० [सं०] वह जो पुरालेख आदि पढ़कर उनके अर्थ लगाने में निपुण हो। पुरालेखों का ज्ञाता। (एपिग्राफ़िस्ट)

पुलिया—स्त्री० [हिं० पुल का स्त्री० अल्पा०] वह छोटा पुल जो रेल की पटरियाँ बिछाने या सड़कें बनाने के समय बीच में पड़नेवाले छोटे नालों पर बाँधा जाता है। (काल्वर्ट)

पुष्टिकरण—पुं० [सं०] किसी की कही हुई बात या किये हुए काम की मान्यता या स्वीकृति करते हुए उसकी पुष्टि करने की क्रिया या भाव। संपुष्टि। (कन्फ़र्मेशन)

पूंजी-पदार्थ—पुं० [हिं०+सं०] ऐसे पदार्थ जिनका उपयोग तरह-तरह की चीजें या माल तैयार करने में होता है। (कैपिटल गुड्स) जैसे—(क) कपड़े बनाने के लिए ऊन, कपास, रेशम आदि। (ख) तरह-तरह की चीजें बननेवाले कारखानों में कलें या यंत्र।

पूछताछ घर—पुं० [हिं०] किसी कार्यालय या विभाग का वह विशिष्ट स्थान जहाँ उस कार्यालय या विभाग से संबंध रखनेवाली बातें पूछकर जानी जाती हैं। (एन्क्वायरी ऑफ़िस)

पूति-दूषित—वि० [सं०] (शरीर का अंग) जो पूति से युक्त होने के कारण विषाक्त हो गया हो और सड़ने लगा हो। (सेप्टिक)

पूर्व-क्रय—पुं० [सं०]=हक-शफा।

पूर्वता—स्त्री० [सं०] १. 'पूर्व' का गुण या भाव। २. आगे या पहले होने की अवस्था, गुण या भाव। अग्रता। (प्रैसिडेन्स)

पूर्व-धारण—पुं० [सं०] तर्क आदि की सिद्धि के लिए पहले से कोई बात कल्पित कर लेना या मान लेना। अभ्युपगम। (एजम्प्शन)

पूर्वलेख—पुं० २. अनुबंध, संधि, समझौते आदि का वह मूल मसौदा, जिसकी पुष्टि आगे चलकर संबद्ध दलों या पक्षों की ओर से होने को हो। (प्रोटोकोल)

पूर्वायोजन—पुं० [सं० पूर्व+आयोजन] १. कोई बड़ा कार्य आरंभ करने से पहले उसके लिए किया जानेवाला आयोजन, तैयारी या व्यवस्था। २. कोई बड़ा काम आरंभ करने से पहले उसके संबंध में बनाई जानेवाली योजना। (प्लान)

पृष्ठाधार—पुं०=पृष्ठ-भूमि।

पेशगी—स्त्री०=पेशगी।

पैमान—पुं० [फा०] किसी से की जानेवाली प्रतिज्ञा। किसी को दिया जानेवाला वचन।

पोर्टमेंटो—पुं० [अं०] १. पाश्चात्य ढंग का एक प्रकार का थैला, जिसमें आवश्यक कागज-पत्र आदि रखे जाते हैं। २. दे० 'सूटकेस'।

पोषक—वि० १. खिलाने-पिलानेवाला। २. भरण-पोषण करनेवाला। (फ़ीडर)

पोष-शाला—स्त्री० [सं०]=संवर्धन-शाला।

पौद-घर—पुं० [हिं०] वह स्थान जहाँ वृक्षों के छोटे-छोटे पौधे इसलिए लगाये जाते हैं कि (क) उनकी उन्नति, विकास और संवर्धन के लिए प्रयोग किये जा सकें अथवा (ख) वे तैयार करके ग्राहकों के हाथ बेचे जा सकें। जखीरा। (नर्सरी)

पौधा-घर—पुं० दे० 'पौद-घर'।

पौर-कर—पुं० [सं०] वह कर जो किसी पुर अर्थात् नगर या नगरपालिका में लगता हो। (रेट) जैसे—मकानों पर पानी आदि का लगनेवाला कर।

पौराणिक—वि० २. किसी धर्म या संप्रदाय के पुराणों में आई हुई अद्‌भुत और अलौकिक कथाओं से संबंध रखनेवाला। (माइथॉलाजिकल)

प्रकंद—पुं० [सं०] कुछ विशिष्ट प्रकार के ऐसे कंद जो प्रायः पृथ्वी के नीचे होते हैं और जिनकी जड़ें नीचे की ओर और पत्तियाँ ऊपर की ओर होती हैं। (राइज़ोम)

प्रकल्पन—पुं० [सं०] [भू० कृ० प्रकल्पित] १. किसी भावी घटना या बात के संबंध में कल्पना करने की क्रिया या भाव। २. दे० 'प्रकल्पना'।

प्रकल्पना—स्त्री० ५. गणित में, कोई विशिष्ट मान या राशि निकालने से पहले उसके लिए कोई निश्चित मान या राशि या चिह्न अवधारित करना। (प्रीज़म्प्शन)

प्रकाश-गृह—पुं० [सं०]=प्रकाश-स्तंभ।

प्रकाशिकी—स्त्री० [सं० प्रकाश से] भौतिक विज्ञान का वह अंग या शाखा, जिसमें इस बात का विचार होता है कि प्रकाश में क्या-क्या गुण या तत्त्व होते हैं और दृष्टि या नेत्रों को देखने में उससे किस प्रकार की और किस रूप में सहायता मिलती है। (ऑप्टिक्स)

प्रक्षेप-पथ—पुं० [सं०] दे० 'प्रक्षेप-वक्र'।

प्रक्षेप-वक्र—पुं० [सं०] ज्यामिति में वह वक्र रेखा, जो एक ही कोण वाले कई बिंदुओं पर से होती हुई आगे बढ़ती है। २. उक्त रेखा का मार्ग। (ट्रैजेक्टरी)

प्रचालक—वि० [सं०] प्रचालन करने या चलानेवाला।

पुं० वह जो किसी यंत्र आदि का प्रचालन करता हो। यंत्र से काम लेने के लिए इसे चलानेवाले कारीगर। (ऑपरेटर)

प्रतिक्षेप—पुं० [सं० प्रति√क्षिप् (प्रेरित करना)+घञ्] १. आघात या प्रहार करना। चोट पहुँचाना, २. गृहीत, मान्य या स्वीकृत न करना। अग्राह्य, अमान्य या अस्वीकृत करना। ३. वेगपूर्वक पीछे की ओर मुड़ना, लौटना या हटना। जैसे—खटका हटने पर कमानी का पीछे की ओर होनेवाला प्रतिक्षेप। ४. आगे की ओर किये जाने-

वाले आघात की प्रतिक्रिया के फल के रूप में पीछे की ओर लगनेवाला आघात या झटका। जैसे—बन्दूक या राइफल छोड़ने पर शिकारी के शरीर पर होनेवाला प्रतिक्षेप।

प्रतिनिधि-मंडल—पुं० [सं०] कुछ विशिष्ट लोगों का वह दल या मंडल जिसे कहीं जाकर प्रतिनिधित्व करने का अधिकार प्राप्त हुआ हो। (डेलिगेशन)

प्रतिपत्र—पुं० [सं०] वह पत्र या लेख, जिसके द्वारा किसी सभा, समिति आदि का एक सदस्य अपनी ओर से मतदान करने का अधिकार किसी दूसरे सदस्य को प्रदान करता है। (प्रॉक्सी)

प्रतिपाल्य—पुं० आज-कल कोई ऐसा अल्पवयस्क या शारीरिक दृष्टि से असमर्थ व्यक्ति, जो किसी दूसरे के यहाँ रहकर प्रतिपालित होता है। (वार्ड) जैसे—आज-कल भी उनके यहाँ दो अनाथ बालक (अथवा विधवाएँ) प्रतिपाल्य हैं।

प्रतिफल—पुं० आज-कल विधिक क्षेत्र में वह धन, जो आपस में होनेवाले करार के अनुसार कोई कार्य या सेवा करने के बदले में पारिश्रमिक, शुल्क आदि के रूप में दिया या लिया जाता है। (कान्सिडरेशन) जैसे—जिस समय पुस्तक का अनुवाद कराना निश्चित हुआ था, उस समय उसके प्रतिफल की कोई चर्चा नहीं हुई थी।

प्रतिबंधित—भू० कृ० [सं०] जिसके संबंध में कोई प्रतिबंध या शर्त लगी हो। पणित। (कन्डिशन्ड)

प्रतिवर्तन—पुं० ५. किसी कार्य या निश्चय को इस प्रकार बदलना कि उसका रूप बिलकुल उलटा हो जाय। (रिवर्सन)

प्रति-समाघात—पुं० [सं०] एक स्थान पर होनेवाले समाघात (आघात या प्रहार) के परिणाम अथवा फल के रूप में किसी दूसरे और दूरस्थ स्थान पर लगनेवाला झटका या उत्पन्न होनेवाला संक्षोभ। (रिपर्कशन)

प्रति-साम्य—पुं०=सम-मिति।

प्रत्यक्षतः—क्रि० वि० [सं०] १. प्रत्यक्ष रूप से। २. ऊपर से या पहले-पहल देखने पर। प्रथम दृष्ट्या। (प्राइमा फ़ेसी)

प्रत्यावर्तन—पुं० २. किसी तल या पदार्थ पर पड़नेवाले ताप, प्रकाश, शब्द आदि का उलटकर किसी ओर मुड़ना। ३. उक्त प्रकार से लौटकर पड़ने या आनेवाला ताप, प्रकाश या शब्द। (रिफ़्लेक्शन) जैसे—किरण या तरंग का प्रत्यावर्तन।

प्रत्याशा—स्त्री० ४. किसी काम या बात की संभावना के लिए मन में होनेवाली आशा। आशंसा। (एक्सपेक्टेशन)

प्रथम दृष्ट्या—क्रि० वि० [सं०] पहले पहल अथवा ऊपर से देखने पर। प्रत्यक्षतः। (प्राइमा फ़ेसी)

प्रदाहक—वि० [सं०] १. प्रदाह करनेवाला। २. सेन्द्रिय ऊतकों को जलाने या नष्ट करनेवाला। क्षारक। दाहक। (कॉस्टिक)

प्रभार—पुं० [सं०] किसी व्यक्ति पर रखा जानेवाला कोई ऐसा कार्य-भार, जिसके लिए वह उत्तरदायी ठहरता हो। (चार्ज)

प्रभिन्न—वि० [सं०] [भाव० प्रभिन्नता] जो अपनी किसी प्रकार की विशिष्टता के कारण अपने वर्ग के औरों से अलग या भिन्न माना और समझा जाता हो। (डिस्टिंक्ट)

प्रभिन्नता—स्त्री० [सं०] प्रभिन्न होने की अवस्था, गुण या भाव। (डिस्टिंकशन)

प्रभेद—पुं० ३. वह स्थिति, जिसमें कोई वस्तु या व्यक्ति अपने किसी विशेष गुण या तत्त्व के कारण औरों से अलग या भिन्न माना जाता हो। ४. उक्त प्रकार की स्थिति में रहने के कारण प्राप्त होनेवाला गौरव, प्रमुखता या सम्मान। (डिस्टिंक्शन) उक्त दोनों अर्थों में।

प्रभेदी (दिन्)—वि० [सं०] (गुण या तत्त्व) जिसके कारण कोई औरों से प्रभिन्न या प्रभेद-युक्त माना जाता हो। (डिस्टिंक्टिव)

प्रयासी—वि० [सं० प्रयासिन्] प्रयास अर्थात् कोशिश करनेवाला।

प्रशासकीय—वि० [सं०] १. प्रशासन-संबंधी। २. प्रशासक का। २. दे० 'प्रशासनिक'।

प्रशिक्षणार्थी—पुं० [सं० प्रशिक्षणार्थिन्] [स्त्री० प्रशिक्षणार्थिनी] वह जो किसी कला या विद्या का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा हो। (ट्रेनी)

प्रशिक्षार्थी—पुं० [सं०]=प्रशिक्षणार्थी।

प्रसंगवाद—पुं० [सं०] यह सिद्धांत कि ईश्वरीय विधान के अनुसार मन और शरीर दोनों सभी प्रसंगों में एक दूसरे पर प्रतिक्रियात्मक रूप में कार्य करते हैं। (ओकेज़नलिज़्म)

प्रसारण-गृह—पुं० [सं०] वह भवन या स्थान, जहाँ से रेडियो द्वारा वार्ताएँ, संगीत, सूचनाएँ आदि प्रसारित की जाती हैं। (ब्रॉडकास्टिंग स्टेशन)

प्रसुप्त—भू० कृ० २. (पदार्थ का गुण, प्रभाव या बल) जो अन्दर वर्तमान होने पर भी कुछ कारणों से अभी दबा हुआ हो और सक्रिय न हो। (डॉर्मेन्ट)

प्रसुप्ति—स्त्री० २. किसी जीव या तत्त्व की वह स्थिति, जिसमें उसकी सब क्रियाएँ और चेष्टाएँ कुछ समय तक बिलकुल बंद या स्थगित रहती हैं। तंद्रा। (डॉर्मेन्सी)

प्रसूति-विद्या—स्त्री० [सं०]=धात्री विद्या।

प्रस्राव—पुं० २. किसी वस्तु के अन्दर से कोई तरल पदार्थ निकलकर बाहर की ओर बहना। ३. घाव, फोड़े, आदि में से मवाद या कोई दूषित तरल अंश बहना या रस कर बाहर निकलना। ४. उक्त प्रकार से बाहर निकलनेवाला तरल अंश या मवाद। (डिस्चार्ज)

प्रहार—पुं० २. कोई ऐसा आक्रामक कार्य, जो जान-बूझकर किसी को हानि पहुँचाने अथवा कोई दूषित परिणाम उत्पन्न करने के लिए किया गया हो। (एसॉल्ट)

प्राक्कल्पना—स्त्री० [सं०] पहले से की जानेवाली कोई ऐसी कल्पना, जो किसी भावी या संभावित स्थिति के संबंध में निरूपित की गई हो और जिसके आधार पर आगे के लिए कोई तर्क, निर्णय या विचार किया जाता हो। तर्क, विचार आरंभ करने के लिए किसी ऐसी बात या मत की कल्पना कर लेना, जिसके घटित होने की कोई संभावना हो सकती हो। (हाइपोथेसिस) जैसे—मान लीजिए कि इस जंगल में आग लग जाय, तो फिर जलाने की लकड़ी कहाँ से आयेगी। इसमें "मान लीजिए कि इस जंगल में आग लग जाय" प्राक्कल्पना है।

प्राक्कल्पित—भू० कृ० [सं०] (धारणा, निर्णय या विचार) जो किसी भावी घटना या बात के संबंध में यह मान या सोचकर स्थिर किया गया हो कि यदि ऐसा हुआ, तो। पहले से यह सोचकर कल्पित किया हुआ कि यदि ऐसा हुआ तो। (हाइपॉथेटिकल)

प्रागप्रसव—वि० [सं०] किसी के संबंध के विचार से उसके प्रसव अर्थात्

जन्म से पहले होनेवाला। जन्म-पूर्व। (ऐन्टि-नेटेल) जैसे—हिंदुओं में बालकों के कुछ प्राग्प्रसव संस्कार भी होते हैं। जैसे—गर्भाधान, पुंसवन आदि।

प्राप्य—पुं० किसी की ओर बाकी निकलनेवाला वह धन, जो विधिक दृष्टि से प्राप्त होने को हो अथवा प्राप्त किया जा सकता हो। किसी के यहाँ बाकी पड़ी हुई रकम। (ड्यूज़)

प्रायोजना—स्त्री० [सं० प्र+आयोजना] किसी बड़ी बहुमुखी या या विस्तृत योजना का कोई ऐसा मुख्य अंश या कार्य, जिसे आरंभ करने के लिए विशेष अध्यवसाय और प्रयत्न की आवश्यकता होती हो। (प्रोजेक्ट)

प्रेरक हेतु—पुं० [सं०] वह उद्देश्य या हेतु, जिससे प्रेरित होकर कोई काम किया जाता है। प्रयोजन। (मोटिव)

प्रेषक—वि० २. किसी के नाम कोई पारसल आदि भेजनेवाला। परेषक। (कन्साइनर)

प्रेषिती—पुं० [सं०] वह व्यक्ति, जिसके नाम रेल-पार्सल अथवा उसकी बिल्टी भेजी जाय। (कन्साइनी)

फफूँद—स्त्री० [हिं०]=फफूँदी।

फरेब—पुं० २. कपट और छल से युक्त ऐसा आचरण या व्यवहार जो दूसरों की धन-संपत्ति आदि अनुचित रूप से प्राप्त करने के लिए किया जाय। धोखा। (फ्रॉड)

फर्द-जुर्म—स्त्री० [फा० फ़र्दे-जुर्म] वह पत्र, जिसमें किसी के किये हुए अपराधों या किसी पर लगाये हुए अभियोगों की तालिका रहती है। आरोप-पत्र। अभियोग-पत्र। कलंदरा। (चार्ज-शीट)

फर्द-सजा—स्त्री० [फा० फ़र्दे-सजा] वह पत्र, जिस पर किसी को मिले हुए दंडों या सजाओं की तालिका रहती है।

फालटू†—पुं० [देश०] उत्तरी भारत के पहाड़ी प्रदेशों में बोझ ढोनेवाला मजदूर।

फुल-माल—स्त्री० [हिं० फूल+माला] फूलों की माला। पुष्प-माल।

फुल-हार—पुं० [हिं० फूल+हार=माला] फूलों का हार। फूलों की माला।

†पुं०=फुल-हारा।

बख्तर—पुं० [सं० वक्त्र (एक प्रकार का पहनावा) से फा० बकतर] मध्य युग में, युद्ध के समय पहना जानेवाला एक प्रकार का अँगरखा जिसमें आगे और पीछे दो-दो तवे लगे रहते थे। कवच। चार-आईना। सन्नाह। (आर्मर)

बख्तरपोश—पुं० [फा० बकतर पोश] ऐसा योद्धा, जो बख्तर पहनकर युद्ध करता था।

बख्तरबंद—वि० [फा० बकतरबंद] (गाड़ी या ऐसी ही और कोई चीज) जिस पर रक्षा के लिए बख्तर की तरह लोहे की मोटी-मोटी चादरें या तवे जड़े हों। कवचित। (आर्मर्ड)

बख्तरबंद गाड़ी—स्त्री० [फा० बकतरबंद+हिं० गाड़ी] युद्ध में सैनिकों के काम आनेवाली ऐसी गाड़ी, जिस पर गोले-गोलियों आदि की मार से रक्षित रहने के लिए लोहे की मोटी-मोटी चादरें जड़ी रहती हैं; और जिन पर प्रायः छोटी या हल्की तोपें या मशीनगनें भी रहती हैं। कवचित गाड़ी। (आर्मर्ड कार)

बक्तर—पुं०=बकतर।

बचाव—पुं० ३. अपने आपको आक्रमण, कष्ट, संकट आदि से बचाने के लिए किया जानेवाला उपाय या प्रयत्न। प्रतिरक्षा। (डिफेन्स)

बच्चा-घर—पुं० [हिं०]=शिशु-शाला। (नर्सरी)

बछ-पाड़ा—पुं० [हिं० बछड़ा+पाड़ा] गाय और भैंसे के संयोग से उत्पन्न बछड़ा।

बजरी—स्त्री० चट्टानों, पहाड़ों आदि से झड़कर निकलनेवाली बहुत ही छोटी-छोटी कंकड़ियाँ, जिनमें प्रायः कुछ मिट्टी या रेत भी मिली होती है। (ग्रैवेल)

बढ़ौती—स्त्री० [हिं० बढ़ना+औती (प्रत्य०)] १. बढ़ने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. कंपनियों के ऋण-पत्रों हिस्सों आदि का अंकित अथवा नियत मूल्य से बढ़ा हुआ वह अतिरिक्त मूल्य, जो कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में दिया या लिया जाता है। अधिमूल्य। बढ़ोत्तरी। (प्रिमियम)

बद-सलूका—वि० [फा० बद+अ० सलूक] दूसरों के साथ अशिष्ट या बुरा व्यवहार करनेवाला।

बनकटाई—स्त्री० [हिं० बन+काटना] किसी स्थान पर के जंगल या वन इसलिए काटना कि वह साफ होकर खेती-बारी या बस्ती के लिए उपयुक्त हो जाय। निर्वनीकरण। (डिफॉरेस्टेशन)

बप्पा-बैर—पुं० [हिं० बाप+बैर=शत्रुता] १. आपस में होनेवाला ऐसा बैर या शत्रुता, जो बाप-दादा के समय से चली आ रही हो। २. लाक्षणिक रूप में प्रबल शत्रुता।

बम्हनई†—स्त्री० [हिं० बाम्हन=ब्राह्मण] १. ब्राह्मण होने की अवस्था, गुण या भाव। ब्राह्मणत्व। २. यजमानों आदि से पुजाने की ब्राह्मणों की वृत्ति।

बम्हनौटी†—स्त्री० [हिं० बाम्हन=ब्राह्मण] गाँव का वह अंश या विभाग, जिसमें अधिकतर ब्राह्मण रहते हैं।

बलुआ कागज—पुं० दे० 'रेगमाल'।

बल्लिका—स्त्री० [बलिया शहर के नाम पर मल्लिका का अनु०] कुछ लोगों के अनुसार बलिया और उसके आस-पास की बोली, जो भोजपुरी की एक शाखा है।

बहिरावर्त—पुं० [सं० बहिर्+आवर्त्त] किसी कथित या विशिष्ट राष्ट्र का वह भू-खंड, जो किसी पराये राष्ट्र के भीतरी भाग में पड़ता हो और प्रायः चारों ओर से घिरा हुआ हो। 'अंतरावर्त' का विपर्याय। (एक्सक्लेव) जैसे—पूर्वी पाकिस्तान में भारत के बहुत-से बहिरावर्त हैं।

बहुक निगम—पुं० [सं०]=समष्टि निगम।

बहु-भाषक—वि० [सं०] बहुत अधिक बोलनेवाला।

बहु-भाषज्ञ—पुं० [सं०] वह जो बहुत-सी भाषाएँ जानता हो। अनेक भाषाओं का ज्ञाता या पंडित।

बहु-भाषी—वि० बहुत अथवा अनेक भाषाओं से संबंध रखनेवाला। जैसे—बहुभाषी सामयिक पत्र।

बाँझ—वि० [सं० वंध्या] १. (मादा जंतु या स्त्री) जो किसी शारीरिक विकार के कारण संतान प्रसव करने में पूर्णतः असमर्थ हो। २. जो किसी प्रकार का उत्पादन या फल की सृष्टि न कर सकता या न

कर सका हो। उदा०—दिन की घड़ियाँ रह गई, हाय बाँझ की बाँझ।—बालकृष्ण शर्मा नवीन। ३. संतों की परिभाषा में अज्ञान या ज्ञानहीन (व्यक्ति)।

बाधा—स्त्री० किसी काम या बात के बीच में पड़नेवाली कोई ऐसी रुकावट, जिससे वह काम या बात कुछ समय के लिए रुकती या स्थगित होती हो। (इन्टरप्शन)

बावरिया—पुं० [?] जिप्सी जाति के लोगों की भारतीय शाखा, जिसके कुछ लोग अपराधशील होते और कुछ जगह-जगह घूम कर कैंची, चाकू आदि कई तरह की चीजें बेचते फिरते हैं।

बीमा-किस्त—स्त्री० [फा० बीमा+अ० किस्त] कुछ नियत अवधियों पर किस्त या खंडिका के रूप में वह धन, जो बीमा करानेवाले को अपने जीवन या सम्पत्ति के बीमे के बदले चुकानी या देनी पड़ती है। (प्रिमियम)

बुझाव—पुं० [हिं० बुझाना] बुझाने की क्रिया, ढंग या भाव।

बुझावा—पुं० [हिं० बुझाना=ठंडा या शीतल करना] औद्योगिक क्षेत्र में वह क्रिया, जिसमें किसी गरम या पिघली हुई धातु को किसी रासायनिक घोल में इसलिए डालते हैं कि धातु में कोई नया गुण या विशेषता उत्पन्न हो। (एटेम्परमेन्ट)
क्रि० प्र०—देना।

बुद्धि-दुर्बलता—स्त्री० [सं०]=बुद्धि-दौर्बल्य।

बुद्धि-दौर्बल्य—पुं० २. दे० 'अमानसता'।

बुलक्कड़†—पुं० [हिं० बोलना] वह जो बहुत अधिक बोलता या बातें करता हो। बहुत बड़ा वाचाल।

बेड़ा—पुं० ३. आज-कल लड़ाई में काम आनेवाले बहुत-से ऐसे समुद्री अथवा हवाई जहाजों का समूह, जो किसी एक प्रधान अधिकारी की अधीनता में किसी विशिष्ट क्षेत्र या भू-भाग में काम करता हो। (फ़्लीट)

भगत†—स्त्री० [हिं० भगल?] दूसरों को छलने या ठगने अथवा धोखे में रखकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने की क्रिया या भाव।

भगलबाज—पुं० [हिं०+फा०] [भाव० भगलबाजी] वह जो भगल के द्वारा अर्थात् झूठे आर्थिक प्रलोभन में फँसाकर लोगों से धन-दौलत ठगता हो। भगलिया। (स्विडलर)

भगलबाजी—स्त्री० [हिं०+फा०] भगलबाज होने की अवस्था, गुण या भाव। (स्विंडलिंग)

भगीरथ-प्रयत्न—पुं० [सं०] बहुत कुछ वैसा ही प्रबल और विकट प्रयत्न, जैसा राजा भगीरथ को स्वर्ग से इस पृथ्वी पर गंगा को लाने के लिए करना पड़ा था।

भग्नाश—वि० [सं० भग्न+आशा] जिसकी आशा टूट चुकी हो। हताश।

भठमास†—पुं०=भटवाँस।

भड़ैती—स्त्री० [हिं० भड़ैत] भड़ैत होने की अवस्था या भाव।
†पुं० [स्त्री० भड़ैतिन]=भड़ैत।

भद्राक्ष—पुं० [सं०] रुद्राक्ष की तरह का एक वृक्ष, जिसके फल के बीज देखने में बहुत कुछ रुद्राक्ष की तरह होते हैं। परन्तु धार्मिक दृष्टि से इन बीजों का महात्म्य रुद्राक्ष की अपेक्षा कम माना जाता है।

भस्मी—स्त्री० [सं० भस्म+हिं० ई (प्रत्य०)] १. हिंदुओं में मृतक के दाहकर्म के उपरान्त चिता जल चुकने के बाद बची हुई राख और हड्डियाँ, जो प्रायः तीसरे दिन एकत्र करके रखी जाती और बाद में किसी पवित्र जलाशय या नदी में प्रवाहित की जाती है। चिता का भस्मावशेष। फूल। २. अग्निहोत्र की राख, जो धार्मिक दृष्टि से पवित्र मानकर तिलक रूप में मस्तक पर तथा शरीर के और अंगों पर लगाई जाती है।

भारग्राही—वि० [सं० भारग्राहिन्] जो किसी अधिकारी के कहीं चले जाने पर और अस्थायी रूप से उसके कार्य का भार ग्रहण करता और चलाता हो।

भारी-भड़कम—वि०=भारी-भरकम।

भारी-भरकम—वि० [हिं० भारी+अनु० भरकम] १. बहुत अधिक भारी। जैसे—भारी-भरकम शरीर। २. बहुत अधिक बड़ा और विस्तृत। जैसे—भारी-भरकम योजना। ३. भव्य और विशाल। जैसे—भारी-भरकम मकान।

भाषण—पुं० ५. दूसरों को कोई गंभीर या दुरूह विषय अच्छी तरह समझाने या सिखाने के लिए उसके संबंध में कही जानेवाली विवेचनात्मक और विस्तृत बातें। (लेक्चर) जैसे—विश्वविद्यालय की कक्षा में होनेवाला प्राध्यापक का भाषण। (ख) भक्तों की मंडली या श्रोताओं के सामने होनेवाला धर्माचार्य का भाषण। ५. वक्तृता। व्याख्यान।

भाषांतरण—पुं० [सं०] [भू० कृ० भाषांतरित] एक भाषा में लिखे हुए लेख आदि का दूसरी भाषा में अनुवाद करने की क्रिया या भाव। अनूदन। (ट्रान्सलेशन)

भाषा-तत्त्व—पुं० अनुशीलन की वह शाखा (भाषा-विज्ञान से भिन्न) जिसमें किसी विशिष्ट भाषा की प्रकृति, विकास, व्याकरण, कलात्मक सौंदर्य, स्वरूप आदि का अध्ययन, मनन, विश्लेषण आदि किया जाता है। भाषिकी। (लिंग्विस्टिक्स)

भाषा-तत्त्वज्ञ—पुं० [सं०] वह जिसने किसी विशिष्ट भाषा का भाषा-तत्त्व की दृष्टि से अध्ययन, अनुशीलन और मनन किया हो। 'भाषा-विज्ञानी' से भिन्न। भाषिकी-वेत्ता। (लिंग्विस्ट)

भाषा-विज्ञानी—वि० [सं०] भाषा-विज्ञान संबंधी। भाषा-विज्ञान का। पुं० वह जो भाषा-विज्ञान का अच्छा ज्ञाता या पंडित हो। 'भाषा-तत्त्वज्ञ' से भिन्न। (फ़ाइलोलोजिस्ट)

भाषिकी—स्त्री० [सं० भाषिक से]=भाषा-तत्त्व। (दे०)

भाषिकी-वेत्ता—पुं०=भाषा-तत्त्वज्ञ। (दे०)

भू-मंडल—पुं० २. सारी पृथ्वी का गोलाकार पिंड। (ग्लोब)

भू-मितिक—वि० दे० 'भौमितिक'।

भौमितिक—वि० [सं०] भू-मिति संबंधी। भू-मिति का।

मंदा—पुं० बाजार में वह स्थिति, जब किसी चीज के ग्राहक बहुत कम होते हैं या दाम कुछ गिरने लगता है। मंदी। उदा०—मुकुति आदि मंदे में मेली।—सूर।

मक्खी—स्त्री० ३. एक विशेष प्रकार का बहुत छोटा पेंच, जो बन्दूक की नाल के अगले सिरे पर कसा जाता है और जिसकी सहायता से निशाने की ठीक सीध देखी जाती है। (फ़ोरसाईट)

मखनियाँ दही—पुं० [हिं०] ऐसे दूध का जमाया हुआ दही, जिसमें से मक्खन पहले ही मथकर निकाल लिया गया हो। 'सजाव दही' से भिन्न।

मखनिया दूध—पुं० [हिं०] ऐसा दूध जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो।

मछवाहा†—पुं०=मछुआ।

मछुवा†—पुं०=मछुआ।

मछेरा†—पुं०=मछुआ।

मजहबी राज्य—पुं० [अ+सं०]=धर्मतंत्री राज्य।

मत—पुं० किसी विषय में विचारपूर्वक निरूपित या स्थिर किया हुआ ऐसा सिद्धांत, जिसे साधारणतः सब लोग ठीक मानते हों। उपपत्ति। वाद। (थिअरी)

मत-गणक—पुं० [सं०] वह जो सभा, संस्थाओं आदि में सदस्यों के मत-पत्रों की गणना करके उनका परिणाम अधिकारियों को बतलाता हो। (टेलर)

मत-गणन—पुं० [सं०] लोक-तंत्री व्यवस्था में किसी विषय में लोगों के दिये हुए मतों या मत-पत्रों की आधिकारिक रूप से गणन करने की क्रिया। अधिकारियों, मत-दाताओं आदि को बतलाने के लिए प्राप्त मतों की गिनती करना।

मताग्रह—पुं० [सं० मत+आग्रह] अपने मत अर्थात् विचार, सिद्धांत आदि के संबंध में होनेवाला अतिरिक्त आग्रह या हठ। (डॉग्मेटिज़्म)

मतार्थक—पुं० [सं० मत+अर्थक] वह जो मतदाताओं से यह कहता-फिरता हो कि आप निर्वाचन के समय अमुक व्यक्ति के पक्ष में अपना मत दें। (कैन्वॉसर)

मध्यवर्ती राज्य—पुं० [सं०]=अंतस्थ राज्य।

मनमाना—वि० ३. (बात या विचार) जो किसी तर्क या सिद्धांत पर आश्रित न हो, बल्कि केवल अपनी प्रवृत्ति या रुचि के अनुसार और बिना उपयुक्तता का ध्यान रखे व्यक्त या स्थिर किया गया हो। (आर्बिट्रेरी) ४. जिससे या जिसे मन मानता हो अर्थात् अच्छा, अनुकूल या उपयुक्त समझता हो। मनोनुकूल। जैसे—अब तो तुम्हें मनमाने मित्र मिल गये न। ५. जिसे मन हर तरह से ठीक मानता हो, फिर चाहे वह अच्छा हो या बुरा। फलतः जो उच्छृंखल और स्वच्छन्द वृत्ति के अनुरूप हो। जैसे—मनमाना आचरण, मन-मानी कार्रवाई। ६. जो मन को पूरी तरह सन्तुष्ट और सुखी करता हो। जैसे—मनमाना सुख।

मनस्तत्त्व—पुं० [सं०] मन का वह अंश, तत्त्व या शक्ति, जो बिलकुल नैसर्गिक रूप से काम करती है और जिसके विषय में भौतिक या वैज्ञानिक दृष्टि से कुछ भी जाना नहीं जा सकता। (साइकिक एलिमेन्ट)

मद्देनजर—अव्यय० [फा०] निर्णय, विचार आदि के समय दृष्टि के सामने रखकर। ध्यान में रखते हुए। जैसे—आपको इस झगड़े का फैसला हमारी सब बातों को मद्देनजर रखकर करना चाहिए।

क्रि० प्र०—रखना।

मनिआर्डर—पुं० [अं०] दे० 'धनादेश'।

ममानी†—स्त्री० [हिं० मामा+आनी (प्रत्य०)] मामा की पत्नी, मामी। (मुसल०)

मरणोत्तरक—वि० [सं० मरण+उत्तर+क (प्रत्य०)] किसी के संबंध के विचार से उसकी मृत्यु के उपरान्त होनेवाला। (पोस्थमस, पोस्चमस) जैसे—(क) मरणोत्तरक उपाधि=किसी की मृत्यु के उपरान्त उसे दी जानेवाली उपाधि। (ख) मरणोत्तरक संतान=किसी की मृत्यु के उपरान्त जन्म लेनेवाली उसकी सन्तान।

महनाथम†—पुं०=महना-मत्थन।

महासांघिक—पुं० [सं०] गौतम बुद्ध के वे अनुयायी, जो बौद्ध धर्म में अनेक प्रकार के सुधार करके उसे अधिक उदार तथा व्यापक रूप देने के पक्षपाती थे। आगे चलकर यही लोग महायान संप्रदाय के प्रवर्तक हुए और महायानी कहलाए।

माध्यम—पुं० ५. रसायन-शास्त्र में, वह निस्कीटित पोषक द्रव्य, जिसमें पालन-पोषण, संवर्धन आदि के लिए जीवाणु या विषाणु रखे जाते हैं। ६. प्रेतात्म विद्या में, जिसके संबंध में यह माना जाता है कि आवाहन करने पर प्रेतात्माएँ उस शरीर में आती हैं और उसी के द्वारा प्रश्नों के उत्तर अथवा अपने सन्देश देती हैं। (मीडियम)

मानकीकरण—पुं० २. किसी वस्तु के उत्पादन, निर्माण या रचना के संबंध में उनका ऐसा रूप स्थिर करना कि उनके खरेपन, शुद्धता, श्रेष्ठता आदि के संबंध में किसी प्रकार का सन्देह करने का अवकाश न रह जाय। (स्टैन्डर्डाइज़ेशन) जैसे—औषधों या वस्त्रों का मानकीकरण।

मानव-कल्प—पुं० [सं०] वानर जाति के कुछ ऐसे प्राणियों की संज्ञा, जो मानसिक और शारीरिक दृष्टि से अपेक्षया अधिक उन्नत और विकसित होते हैं। (ऐंथोपॉएड) जैसे—ओरंग-ऊटंग, गिबन, गोरिल्ला, सिम्पैन्जी आदि।

मानविकी—स्त्री० [सं० मानव से] १. समस्त संसार में बसी हुई सारी मानव जाति। २. मनुष्यों में रहनेवाले सभी आवश्यक और शुभ गुणों का समाहार या सामूहिक रूप। ३. वे सब शास्त्र, जिनमें मानव जाति के श्रेष्ठ विचारों का विवेचन या निग्रह होता है; जैसे—इतिहास, कला, दर्शन, साहित्य आदि। (ह्यूमैनिटी)

मान्यता—स्त्री० वह स्थिति, जिसमें कोई बात अपने तर्क, बुद्धि, विश्वास, श्रद्धा आदि के आधार पर मान ली जाती है। (एजम्प्शन)

मापड़ा†—पुं० [?] किसी व्यक्ति के लिए तुच्छता सूचित करते हुए उसकी हँसी उड़ाने का शब्द। (बाजारू)

मापड़ी—स्त्री० [?] नवयुवती और सुन्दरी स्त्री।

मापनी—स्त्री० २. गज आदि की तरह का कोई ऐसा उपकरण जिससे चीजों की लंबाई, चौड़ाई आदि नापी जाती हो। (स्केल)

मालगुंजी—स्त्री० [सं०] संगीत में एक प्रकार की रागिनी।

मालमता—पुं० २. किसी व्यक्ति की वह सारी सम्पत्ति, जिसे सहज में बेचकर दाम खड़े किये जा सकते हों अथवा जिसे द्रव्य या धन के रूप में परिवर्त्तित किया जा सकता हो। परिसंपद। (एसेट्स)

मालियाना—वि० [फा० मालियानः] माल अर्थात् धन-संपत्ति से संबंध रखनेवाला। आर्थिक। माली। जैसे—किसी सवाल का मालियाना पहलू।

†पुं०=मालगुजारी (जमीन की)

मालीखौलिया—पुं०=मालीखूलिया।

माहपारा—पुं० [फा० माहपारः] इतना अधिक सुन्दर कि देखने में चाँद के टुकड़े के समान जान पड़ता हो।

मिजाज—पुं० मनुष्य के मन की वह सामान्य और स्वाभाविक स्थिति जो उसकी क्रियाओं, प्रवृत्तियों, रुचियों आदि की निर्णायक भी होती है और सूचक भी। (डिस्पोज़ीशन) जैसे—उसका मिजाज शुरू से ही चिड़चिड़ा (या सख्त) है।

मिथ्याचारी—पुं० [सं० मिथ्याचारिन्] [स्त्री० मिथ्याचारिणी] वह जो प्रायः अथवा स्वाभाविक रूप से मिथ्याचार करता हो। ढोंगी। (हिपोक्रैट)

मिलावटी—वि० [हिं० मिलावट+ई (प्रत्य०)] (पदार्थ) जिसमें कोई घटिया या रद्दी चीज मिलाई गई हो। अपमिश्रित। (एडल्टेरेटेड) जैसे—मिलावटी घी, मिलावटी चाँदी।

मिली भगत—स्त्री० [हिं० मिलना+भगल (छल-कपट) ?] ऐसी स्थिति, जिसमें दो या कई दल या व्यक्ति मिलकर आपस में किसी प्रकार की गुप्त अभिषंधि या षड्यंत्र रचते हों और दूसरों को अपने जाल में फँसाकर स्वार्थ सिद्ध करते हों। (कोल्यूज़न) जैसे—जान पड़ता है कि भारत की कुछ भूमि हड़पने के लिए यह चीन और पाकिस्तान की मिली भगत है।

विशेष—'मिली भगत' और 'साट-गाँठ' का अन्तर जानने के लिए देखें 'साट-गाँठ' का विशेष।

मुद्रालेख—पुं० [सं०] मुद्रा अर्थात् सिक्के पर अंकित वह लेख या किसी प्रकार का चिह्न जिससे उसके चलानेवाले का नाम, देश और समय सूचित होता है। सिक्के पर का लेख। (लीजेन्ड)

मुद्रीकरण—पुं० [सं०] [भू० कृ० मुद्रीकृत] १. मुद्रा या सिक्के बनाने की क्रिया या भाव। २. किसी वस्तु को ऐसा रूप देना कि वह विधिक दृष्टि से मुद्रा या सिक्के की तरह प्रचलित हो सके। (मनीटाइजेशन) जैसे—कागज के नोटों का मुद्रीकरण।

मुफलिस—वि० ऐसा व्यक्ति, जिसके पास कुछ भी धन-संपत्ति न हो। परम धनहीन। अकिंचन। (पॉपर)

मुर्की—स्त्री० गाने-बजाने में तीन स्वर एक साथ और बहुत जल्दी या तेजी से कोमलता या सुन्दरता-पूर्वक निकालने की क्रिया, जो अलंकारिक मानी जाती है।

मुलाकाती—पुं० वह जो किसी से मुलाकात या भेंट करने के लिए आता हो या आया हो, मिलने के लिए आनेवाला व्यक्ति। (विज़िटर)

मूल्य-ह्रास—पुं० [सं०] चीजों के घिसने-पिसने या बाजार में भाव गिरने आदि के कारण किसी वस्तु के मूल्य में होनेवाली कमी। अर्घ-पतन। (डेप्रिसिएशन)

मृद्भांड—पुं० १. मिट्टी का बर्तन। २. दे० 'मृण्पात्र'।

मौंजवान् (वत्)—वि० [सं० मौंज+मतुप्, म=व, तुम दीर्घ न लोप] मुंजवान नामक पर्वत में होने या उससे संबंध रखनेवाला।

मौंजी—पुं० [सं० मौंजिन] वह जो मूंज की मेखला पहने हो। वि० मौंजीय।

मौंजीय—वि० (सं० मुंजा+छ, छ=ईय] १. मूँज संबंधी। २. मूँज का बना हुआ।

मौकुलि—पुं०[सं० मुकुल+इम्] कौआ।

मौच—पुं०[सं०√मुच् (छोड़ना)+अण्] केला (फल)।

मौद्गलि—पुं०[सं० मुद्गल+इम्] कौआ।

मौनता—स्त्री०[सं० मौन+तल-टाप्] मौन होने या रहने की अवस्था या भाव। चुप होना। चुप्पी। मौन।

मौष्ठिक—पुं०[सं० मुष्ठि+ठक, ठ=इक] चोरी।

मौसम-विज्ञान—पुं०[अ०+सं०] वह विद्या या विज्ञान जो वातावरण संबंधी विक्षोभों आदि की विवेचना करके मौसम संबंधी बातें पहले से बतलाता है। (मिटिअरोलॉजी)

म्लेच्छ-मुख—पुं०[सं०] ताँबा।

यंत्र-पुत्रिका—स्त्री०[सं०] एक तरह की कठपुतली, जो यंत्रों से चलाई जाती है।

यंत्र-सज्ज—वि०[सं०] १. यंत्रों से युक्त। २. अस्त्र-शस्त्रों से युक्त (सेना)।

यंत्रांश—पुं०[सं० ब० स०] संगीत में एक प्रकार का राग जो हनुमत के मत से हिंडोल राग का पुत्र है।

यंत्रिकी—स्त्री०[सं०] छोटी साली।

यक्षता—स्त्री०[सं० यक्ष+तल्] यक्ष होने की अवस्था, धर्म या भाव। यक्षपन।

यक्षत्व—पुं०[सं० यक्ष+त्व]=यक्षता।

यक्षप—पुं०[सं० उप० स०]=यक्ष-पति।

यक्ष-रस—पुं०[सं० ष० त० स०] एक प्रकार का मादक द्रव।

यक्षांगी—स्त्री०[सं० ब० स०] एक प्राचीन नदी।

यक्षामलक—पुं०[सं० ष० त० स०] पिंड-खजूर।

यक्ष्मि—वि०[सं०] १. यक्ष्मा संबंधी। २. जिसमें यक्ष्मा के कीटाणु हों। ३. यक्ष्मा की ओर प्रवृत्त।

यजुश्श्रुति—पुं०[सं० ष० त० स०] यजुर्वेद।

युजुष्पात्र—पुं०[सं० ष० त० स०] एक प्रकार का यज्ञ-पात्र।

यजूवर—पुं०[सं० ष० त० स०] ब्राह्मण।

यमजात—पुं०=यमज।

यम-प्रस्थ—पुं०[सं० ष० त० स०] एक प्राचीन नगर जो कुरुक्षेत्र के दक्षिण में था।

यमया—स्त्री०[सं० यम+√या+क, टाप्] ज्योतिष के अनुसार एक प्रकार का नक्षत्र-योग।

यम-सूर्य—पुं०[सं० द्वंद्व० स०] दो कमरोंवाला ऐसा घर, जिसका एक कमरा उत्तर को और दूसरा कमरा पश्चिम को खुलता है।

यम-स्तोम—पुं० [सं० द्वन्द्व स०+अच्] एक दिन में होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

यमातिशत्र—पुं० [सं० ष० त० स०] ४९ दिनों में होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

यमादित्य—पुं०[सं० यम+आदित्य, कर्म० स०] सूर्य का एक रूप।

यवमत्यक—पुं०[सं० यव+त्वा (आदान)+क, यवत्व+क] एक पक्षी (सुश्रुत)

यव-शाक—पुं०[सं० ष० त० स०] एक प्रकार का साग।

यव-सुरा—स्त्री०[सं० ष० त० स०] यव-मद्य। (दे०)

यवान—वि०[सं० यु+मानच्] वेगवान्। तेज। क्षिप्र।

यवानिका—स्त्री०[सं० यव+ङीप्+आनुक] अजवायन।

यवाम्ल—पुं०[सं० ष० त० स०] जौ के माँड की काँजी।

यवाश—पुं०[सं० उप० स०] एक प्रकार का कीड़ा, जो जौ की फसल को हानि पहुँचाता है।

यविरा—स्त्री०[सं० यव से] यव अर्थात् जौ का बना हुआ शीतल, हल्का मादक पेय। (बियर)

यवोद्भव—पुं०[सं० ब० स०] जवाखार।

यव्यावती—स्त्री० [सं०√यु+यत्+टाप्=यव्या+मतुप्+ङीप] १. वैदिक युग की एक नदी। २. उक्त नदी के तट पर का एक प्राचीन नगर।

याग-संतान—पुं०[सं० ष० त० स०] इन्द्र के पुत्र जयंत का एक नाम।

याज्—वि०[सं०√यज्+णिच्] यज्ञ करनेवाला। याचक।
पुं० १. अनाज। अन्न। २. एक प्राचीन ऋषि।
†पुं० यज्ञ।

याजुषी-अनुष्टुप—पुं० [सं० याजुष+ङीप्, याजुषी-अनुष्टुप, व्यस्तपद] एक वैदिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते है।

याजुषी-उष्णिक—पुं० [सं० व्यस्तपद] एक वैदिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में सात-सात वर्ण होते हैं।

याजुषी गायत्री—स्त्री० [सं० व्यस्तपद] एक वैदिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में ६ वर्ण होते हैं।

याजुषी जगती—स्त्री०[सं० व्यस्तपद] एक वैदिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में बारह वर्ण होते हैं।

याजुषी त्रिष्टुप—पुं०[सं० व्यस्तपद] एक वैदिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में नौ वर्ण होते हैं।

याजुषी बृहती—स्त्री० [सं० व्यस्तपद] एक वैदिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में नौ वर्ण होते हैं।

याज्ञतूर—पुं०[सं० यज्ञतूर+अण्] एक प्रकार का साम।

यादु—पुं०[सं०√या+उ+टुक] १. जल। पानी। २. तरल पदार्थ।

याद्व—वि०[सं०] यदु संबंधी। यदु का।
पुं० यदुवंशी।

याप्ता—स्त्री०[सं०√या+णिच्+क=याप्त+टाप्] जटा।

यामक—पुं०[सं० यम्+ण्वुल] पुनर्वसु (नक्षत्र)।

यामकिनी—स्त्री० [सं० यामक+णिनी+ङीप्] १. कुल-वधू। कुल-स्त्री। २. लड़के की पत्नी। पुत्र-वधू। ३. बहन। भगिनी।

यामीर—पुं०[सं० याम+ईत्व] चन्द्रमा।

यार्कायन—पुं०[सं० यर्क+फक्] यर्क ऋषि के गोत्र में उत्पन्न पुरुष या अपत्य।

याविक—पुं०[सं० यव+ठक] मक्का। जुआर।

याशु—पुं०[सं०] १. आलिंगन। परिरंभण। २. मैथुन। संभोग।

युगल-बंदी—स्त्री० [सं०+फा०] ऐसा गाना, जो दो आदमी मिलकर गाते हों। २. ऐसा वाद्य संगीत जिसमें दो अलग-अलग प्रकार के बाजे साथ मिलकर बजाये जाते हों। जुगल-बंदी। (ड्यूएट) जैसे—बाँसुरी और शहनाई की युगल-बंदी।

युज्य—वि० [सं०√युज् (योग)+यत्] १. मिला हुआ। संयुक्त। २. जो मिलाया जा सके या मिलाया जाने को हो। ३. उपयुक्त।
पुं० १. मिलान। संयोग। २. संबंधावस्था। नातेदारी। ३. स्वजन। बंधु। ४. एक प्रकार का साम।

युधिक—वि०[सं०√युध्+ठक्] युद्ध करनेवाला।

युनेस्को—पुं०[अं० यूनाइटेड नेशन्स एजुकेशनल साइंटिफिक ऐंड कल्चरल आरगनाइज़ेशन के आरंभिक अक्षरों का समूह] संयुक्त राष्ट्र संघ की शाखा के रूप में एक संस्था, जो सारे संसार में शिक्षा, विज्ञान और सांस्कृतिक विषयों का प्रचार और समन्वय करने के उद्देश्य से बनी है।

योग-निद्रालु—पुं०[सं० योग-निद्रा+आलुच] विष्णु जो प्रलय के समय योगनिद्रा लेते हैं।

योगापत्ति—स्त्री०[सं०] प्रथा, रीति-नीति आदि के कारण होनेवाला संस्कार।

योगिका—स्त्री०[सं०] छपाई, लिखाई आदि में एक प्रकार का चिह्न जो यौगिक पदों या शब्दों में एक दूसरे से उनका पार्थक्य दिखाने के लिए बीच में लगाया जाता है; और जिसका रूप होता है '–' संयोजन-चिह्न। (हाइफ़ेन)

यौध—पुं०[सं० योध+अण्] योद्धा। सिपाही।

रंग-भेद—पुं० [सं०] आधुनिक राजनीति में, जिसमें मनुष्य के शरीर के काले, गोरे, पीले, आदि वर्णों के भेद के कारण उन्हें छोटा-बड़ा माना जाता है, और अपने वर्ण के सिवा दूसरे वर्ण के लोगों के साथ समानता का व्यवहार नहीं किया जाता। (कलर बार)

रंग-मध्य—पुं० [सं० ष०त० स०] रंगमंच। रंग-स्थली।

रक्त-आमातिसार—पुं० [सं० ष० त० स०] एक प्रकार का आतिसार रोग जिसमें लहू के दस्त आते हैं।

रक्त-केशी (शिन्)—वि०[सं० रक्त-केश+इनि] जिसके बाल लाल रंग के हों।

रक्त-पदी—स्त्री० [सं० ब० स०] लज्जावंती पौधा।

रक्त-वह—वि०[सं०](नस) जिसमें से होकर शरीर का रक्त बहता है।

रक्ताधिमंथ—पुं० [सं० मध्य० स०] एकप्रकार का अधिमंथ रोग, जो रक्त के विकार के कारण होता है।

रक्ताभिष्यंद—पुं०[सं० रक्त-अभिष्यंद, कर्म० स०] आँखों के लाल होने यथा उनमें से लाल पानी टपकने का एक रोग।

रक्तिम—वि० [सं०] [भाव० रक्तिमा] रक्त के रंग की सी आभा-वाला।

रक्षोपाय—पुं०[सं० रक्षा+उपाय] पहले से किया जानेवाला ऐसा उपाय या व्यवस्था, जिससे आगे चलकर किसी प्रकार के संकट या हानि से बचाव या सुरक्षा हो सकती हो। रक्षा-कवच। (सेफ़-गार्ड)

रजोविरति—स्त्री०[सं०] रजो-निवृत्ति।(दे०)

रट्टू—वि०[हिं० रटना] १. बहुत अधिक या लगातार रहनेवाला। २. (बालक या विद्यार्थी) जो अपना पाठ रट तो लेता हो; पर उसे पूरी तरह से हृदयंगम न करता हो।

रत-जाली—स्त्री० [सं०] कुटनी।

रतिक—वि०[सं०] रति-संबंधी। रति का।
पुं० संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

रति-नाग—पुं० [सं० ष०त० स०] सोलह प्रकार के रति-बंधों में से एक। (काम-शास्त्र)

रद्द-बदल—पुं०[फा० रद्दोबदल] पहले की कुछ चीजों या बातों को रद्द या निरर्थक करके उनके स्थान पर नई चीजें या बातें रखना। २. आमूल अथवा आंशिक परिवर्त्तन। हेर-फेर। (ऑल्टरेशन)

रद्दोबदल—पुं०[फा०]=रद्द-बदल।

रन—पुं०[सं० इरण=रेगिस्तान] १. मरुभूमि। रेगिस्तान। २. भारत के पश्चिमी प्रदेश कच्छ का वह रेगिस्तानी इलाका, जो समुद्र-तल से कुछ नीचा पड़ता है और वर्षा-ऋतु में समुद्री ज्वार के जल से भर जाता है।

रवि-रत्नक—पुं०[सं० रविरत्न+कन्] माणिक्य। मानिक।

रवैया—पुं० ४. किसी कार्य के प्रति होनेवाला दृष्टिकोण या मनोवृत्ति। अभिवृत्ति। रुख। (ऐटिच्यूड)

रस-नायक—पुं०[ष० त०] १. शिव। २. पारा।

रसायक—पुं०[सं० ब० स०] एक प्रकार की घास।

रसाली (लिन्)—पुं०[सं० रसाल+इनि] १. गन्ना। २. चना। ३. एक प्रकार का कर्नाटकी राग।

रहरूढ़-भाव—पुं०[सं० ष० त०] १. संसार के झगड़ों को छोड़कर एकांत स्थान में निवास करना। २. वह जो उक्त प्रकार से संसार छोड़कर विरक्त हो गया हो।

रहाइशी†—वि०=रिहाइशी।

राकेट—पुं० [अं० रॉकेट] १. बान नाम की आतिशबाजी। २. उक्त के अनुकरण पर बना हुआ एक प्रकार का आधुनिक यंत्र, जिसके एक सिरे पर भभकनेवाले पदार्थ भरे रहते हैं, जो जलनेपर उस यंत्र को आकाश में बहुत ऊपर उड़ा ले जाते हैं।

विशेष—कुछ राकेट तो आकाश में पहुँचकर संकेतात्मक प्रकाश करते हैं, कुछ घातक अस्त्रों का काम करते है; और कुछ का उपयोग अनेक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधानों के लिए होता है।

राजकीय—वि० २. राजा या महाराजा से संबंध रखनेवाला। राजशाही। (रॉयल)

राज-क्षमा—स्त्री० [सं०] ऐसे राजनीतिक अपराधियों को राज्य की ओर से मिलनेवाली सार्विक क्षमा, जिन्होंने राज्य के विरुद्ध कोई अनुचित कार्य या अपराध किया हो। (ऐमनेस्टी)

राजत्व—पुं० २. किसी देश या राज्य में एकमात्र राजा का ही होनेवाला अनियंत्रित शासन। राजशाही। स्स्ही। (किंगशिप)

राजदूर्वा—स्त्री०[सं० ष० त०] मोटे कांडों वाली एक प्रकार की दूब।

राज-धर्तूरक—पुं०[सं० राज-धर्तूर, ष० त०+कन्] एक प्रकार का धतूरा, जिसके फूल कई आवरण के होते हैं। कनक-धतूरा।

राज-नील—पुं०[सं० ष० त०] मरकत मणि। पन्ना।

राज-पटोल—पुं०[सं० मध्य स०] एक प्रकार का परवल।

राज-पट्टिका—स्त्री०[सं० ष० त०] चकोर। चातक।

राजपर्णी—स्त्री० [सं० ष० त०] प्रसारिणी लता।

राज-भद्रक—पुं०[सं० ष० त०] १. पारहद का पेड़। परिभद्रक। २. नीम। ३. कुड़ा नामक वनस्पति। ४. कुंदरू। ५. सफेद मदार।

राजशाही—वि०[हिं० राजा+फा० शाह] राजाओं या महाराजाओं से संबंध रखनेवाला। राजकीय। (रायल) २. राजाओं-महाराओं आदि की तरह का। राजसी। जैसे—राज-शाही ठाट-बाट।

स्त्री० वह स्थिति, जिसमें किसी देश पर राजा का अनियंत्रित शासन होता है। राजत्व। शाही। (किंगशिप) जैसे—कश्मीर में उन्हें राजशाही का अंत करने के प्रयत्न में बार-बार जेल जाना पड़ा।

राजस्थानी—वि०[हिं० राजस्थान] राजस्थान संबंधी। राजस्थान का। जैसे—राजस्थानी लोकगीत।

पुं० राजस्थान का निवासी।

स्त्री० राजस्थान की बोली या भाषा।

राजिक—पुं०[सं०]=वनपाल।

राज्य-धर—पुं०[सं० राज्य√धृ (धारण)+अच्] राज्य का पालन। शासन।

राज्य-मंडल—पुं०[सं०] आधुनिक राजनीतिक में दो या अधिक देशों या राज्यों के योग से बना हुआ वह मंडल या संस्था, जिसे किसी विशिष्ट उद्देश्य से स्थायी रूप प्राप्त हुआ हो। परिसंघ। (कनफ़ेडरेशन)

राज्य-स्थायी (यिन)—पुं० [सं० राज्य√स्था (गति-निवृत्ति)+णिनि] राजा। शासक।

राज्यसात्—वि०[सं०] जिसे राज्य या शासन ने किसी विशेष कारणवश पूरी तरह से अपने अधिकार या कब्जे में कर लिया हो। जब्त किया हुआ। (कान्फ़िस्केटेड) जैसे—राज्यसात् संपत्ति, राज्यसात् साहित्य।

राज्यसात्करण—पुं०[सं०] १. दंड के रूप में सरकार द्वारा किसी के धन या संपत्ति का छीन लिया जाना। उस पर कब्जा कर लेना। २. राज्य का किसी दूषित और हानिकारक लेख, सामयिक पत्र, साहित्य आदि का प्रचलन या प्रचार रोकने के लिए उसकी सब प्रतियाँ अपने अधिकार में कर लेना। जब्ती। (कान्फ़िस्केशन)

रामधुन—स्त्री०[सं० राम+हिं० धुन (ध्वनि)] राम-राम, सीताराम, रघुपति राघव राजाराम आदि राम-संबंधी भजनों का कीर्तन।

रामा-प्रिय—पुं०[सं० ष० त०] दारचीनी।

राम्या—स्त्री०[सं०√रम् (क्रीड़ा)+ण्यत्+टाप] रात्रि। रात।

राशनिंग—स्त्री०[अं०] अनुभाजन।

राष्ट्रपति शासन—पुं०[सं०] वह शासन प्रणाली, जिसमें प्रधान अर्थात् राज्य का अध्यक्ष राज्य का मुख्य तथा सर्वोपरि होता है। मंत्रि-मंडलीय शासन-प्रणाली से भिन्न। (प्रेज़िडेंशियल गवर्नमेन्ट)

राष्ट्रिक—पुं० ३. आज-कल वैधानिक दृष्टि से वह व्यक्ति, जो या तो जन्म से या देशीकरण की विधि के अनुसार किसी राष्ट्र का अधिकार-प्राप्त अंग या सदस्य हो। (नेशनल)

राष्ट्रिकता—स्त्री०[सं०] १. राष्ट्रिक होने की अवस्था, गुण या भाव। २. आज-कल मुख्य रूप से वह स्थिति, जिसमें कोई व्यक्ति वैधानिक दृष्टि से किसी राष्ट्र का राष्ट्रिक (अंग और सदस्य) होता है। (नैशनेलिटी)

राष्ट्रिका—स्त्री [सं० राष्ट्र+ङीष्+क+टाप्] कंटकारी। भटकटैया।

राह-चबैनी—स्त्री०[फा० राह+हिं० चबैना] हिन्दुओं में दान की एक प्रथा, जिसमें ३६० लड्डू कुछ भुने हुए चने और थोड़ी दक्षिणा इस उद्देश्य से ब्राह्मणों को बाँटी जाती है कि दाता को मरने के उपरान्त परलोक की यात्रा में साल भर तक बराबर खाने को मिलता रहे।

राहित्य—पुं० [सं०] रहित होने की अवस्था, गुण या भाव। रहितत्व।

राहुच्छन्न—पुं०[सं० ष० त०] अदरक। आदी।

रिंखण—पुं० [सं०√रिंख् (गति)+ल्यूट्] १. फिसलना। लड़खड़ाना। २. विचलित होना। डिगना।

रिआयत--स्त्री०५. किसी के कष्ट, संकट आदि का ध्यान रखते हुए उसे दी जानेवाली कोई ऐसी सहायता या सुभीता, जिससे उसके कष्ट में कुछ कमी हो। ६. किसी प्रकार के उपचार, औषध आदि से पीड़ा, रोग आदि में होनेवाली कमी या न्यूनता। (रिलीफ़, उक्त दोनों अर्थों में) जैसे--इस दवा से वुखार तो उतरेगा ही खाँसी में भी कुछ रिआयत होगी।

रिक्ति--स्त्री०[सं०] १. रिक्त होने की अवस्था, गुण या भाव। २. दे० 'रिक्तिका'।

रिक्तिका--स्त्री०[सं०] किसी वात या वस्तु में कोई ऐसा अवकाश या छिद्र, जिसमें से कोई चीज वाहर निकल सकती हो। ऐसा छिद्र या मार्ग, जिससे वाहर निकल सकने का अवसर मिल सकता हो। (लेकुना) जैसे--इस विधान में कई रिक्तिकाएँ हैं, जिससे इसका उद्देश्य पूरी तरह से सिद्ध नहीं हो सकता।

रिधम--पुं०[सं०√राध् (संसिद्धि)+अमच् (वा) इत्व] वसंत ऋतु।

रिपुवाह--वि०[सं० रिपु+√वह् (प्रवाह)+घञ्] पाप या पातक का नाश करनेवाला।

रिषीक--पुं० [सं०√रिष् (हिंसा)+ईकन्] १. शिव। २. तलवार।

रिहाइश--स्त्री० ३. किसी स्थान पर रहने की क्रिया या भाव। आवास। (रेज़िडेन्स)

रिहाइशी--वि०[फ़ा०] (भवन या स्थान) जिसमें कोई रिहाइश या आवास करता हो। आवासीय। (रेज़िडेन्शल)

रीज्या--स्त्री०[सं०√रिज् (गर्जन)-स्यत्+टाप्] १. घृणा। नफरत। २. निंदा। ३. भर्त्सना।

रीढ़क--पुं०[सं० रीढ़+कन्] रीढ़।

रीति-चंद्रिक--पुं०[सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

रुख--पुं० किसी काम या वात के संबंध में मनुष्य का वह मनोगत भाव जो उसे कुछ करने या न करने के लिए प्रवृत्त करता है। अभिवृत्ति। रवैया। (एटिच्यूड)

रूँधना†--स०=रौंदना। उदा०--माटी कहे कौंहार सों तू का रूँधै मोंहि। एक दिन ऐसा आयगा मैं रूँधूंगी तोहि।--कबीर।

रूढ़--वि० जो लोक में किसी रुढ़ि के अनुसार परंपरा से चला आया हो, या प्रचलित हो। (कन्वेन्शनल)

रूढ़िवाद--पुं०[सं०] यह मत या सिद्धांत कि हमें रूढ़ियों अर्थात् परंपरा से चली आई प्रथाओं, रीतियों, व्यवहारों आदि का ही पालन करना चाहिए; उनका परित्याग नहीं करना चाहिए। (कन्वेन्शनलिज़्म)

रूढ़िवादी--वि०[सं०] रुढ़िवाद-संबंधी। रूढ़िवाद का।

पुं० वह जो रूढ़िवाद का अनुयायी या समर्थक हो। (कन्वेन्शनलिस्ट)

रूपांतरण--पुं० २. विधिक क्षेत्र में, एक प्रकार के दंड को बदलकर उसके स्थान पर दूसरे प्रकार का अथवा दूसरा ऐसा दंड देना, जो अपेक्षया कम कठोर हो। (कम्यूटेशन) जैसे--फाँसी की सजा रद्द करके उसकी जगह आजीवन कारावास की सजा देना।

रेगमाल--पुं०[फ़ा०] एक प्रकार का कागज, जिस पर वालू और कुरंड पत्थर का चूरा चिपकाया जाता है; और जिससे लकड़ी की चीजें रगड़कर चिकनी और साफ की जाती हैं। वलुआ कागज। (एमरी-पेपर)

रेचक-पंखा--पुं०[सं०+हिं०]=निकास-पंखा।

रेडार--पुं०[अं०] दे० 'तेजोन्वेष'।

रेडिआई--वि०[अं० रेडियो+हिं० आई (प्रत्य०)] १. रेडियो संवंधी। रेडियो का। जैसे--रेडिआई कवि सम्मेलन। २. रेडियो के द्वारा प्रस्तुत किया जानेवाला। जैसे--प्रसाद की कहानी का रेडिआई रूपांतर।

रैन-बसेरा--पुं०[हिं० रैन=रात+वसेरा] १. वह स्थान जहाँ रहकर सुख से रात विताई जाती हो। २. आजकल वड़े नगरों में वह स्थान, जहाँ ऐसे गरीव कुछ किराया देकर अथवा यों ही रात विताते हैं, जिनका कोई घरवार नहीं होता।

रैली--स्त्री० [अं०] वहुत से ऐसे लोगों का जमावड़ा, जो किसी विशिष्ट उद्देश्य की सिद्धि के लिए किसी विशिष्ट स्थान पर हो। जैसे--वाल-चरों की रैली; राष्ट्रीय स्वयंसेवक दल की रैली; श्रमिक दल की रैली आदि।

रोग-विज्ञान--पुं०[सं०]=विकृति-विज्ञान।

रोजही†--स्त्री०[फ़ा० रोज+हिं० ही (प्रत्य०)] १. काम करने की वह प्रथा, जिसमें पारिश्रमिक या वेतन प्रति दिन के हिसाव से मिलता है। २. उक्त प्रकार से मिलनेवाला पारिश्रमिक या वेतन।

क्रि० प्र०--कमाना।

३, रुपए उधार देने और लेने की एक प्रथा, जिसमें सूद प्रतिदिन के हिसाव से जोड़ा और लिया या दिया जाता है।

मुहा०--**रोजही चलाना**=उक्त ढंग से लोगों के रुपए उधार देने का व्यवसाय करना। **रोजही लेना**=उक्त ढंग से किसी से ऋण लेना।

रोधाधिकार--पुं० [सं० रोध+अधिकार]=निषेधाधिकार।

रोना--वि० ३. जो देखने में रोता हुआ सा जान पड़े। जैसे--रोनी सूरत। ४. वहुत ही उदास और तेजहीन। प्रभा, शोभा आदि से बिलकुल रहित।

रोमांतिका--स्त्री० [सं०] खसरा या मसूरिका नाम का रोग। (मीजिल्स)

रोष--पुं० ३. किसी प्रकार का अपमान या हानि होने पर मन में उत्पन्न होनेवाली अप्रसन्नता या नाराजगी। अमर्ष। (रिजेन्टमेन्ट)

लंकाई--वि० [हिं० लंका+ई (प्रत्य०)] १. लंका संवंधी। लंका का। २. लंका में रहने या होनेवाला।

पुं० लंका देश का निवासी।

स्त्री० लंका देश की भाषा।

लंकेश्वरी--स्त्री० [सं०] १. लंका की रानी। २. रावण की पत्नी मन्दोदरी। ३. संगीत में, एक प्रकार की रागिनी।

लक्वा--पुं० २. अंगवात नामक रोग, जिसमें शरीर का कोई अंग या पार्श्व वहुत-कुछ निर्जीव या संज्ञा-शून्य हो जाता है। पक्षाघात। (पैरालिसिस)

लखनवी--वि० [लखनऊ, उत्तर प्रदेश का नगर] १. लखनऊ संवंधी। लखनऊ का। लखनौआ। २. लखनऊ में रहने या होनेवाला। जैसे--मीर लखनवी। (उर्दू)

लखनौआ† --वि० उभ० [लखनऊ, उत्तर प्रदेश का नगर] १. लखनऊ संवंधी। लखनऊ का। जैसे--लखनौआ खरवूजा, लखनौआ टोपी। २. लखनऊ में रहने या होनेवाला।

लघुकरण—पुं० २. किसी कड़ी या बड़ी सजा को हलकी या छोटी सजा का रूप देना। (कम्यूटेशन, उक्त दोनों अर्थों के लिए)

लजाम—स्त्री० [फा०]=लगाम।

लटकन—पुं० २. कोई ऐसी छोटी गोलाकार या लंबोतरी चीज, जो किसी बड़ी चीज के नीचे शोभा, सुन्दरता आदि बढ़ाने के लिए लटकती हुई लगाई जाती है। (पेन्डैन्ट) जैसे—मोतियों की माला या हीरे के हार का लटकन।

लड़ाव—पुं० [हिं० लड़ना+आव (प्रत्य०)] एक दूसरे से लड़ने की क्रिया या भाव। २. टक्कर खाना। टकराना। जैसे—समुद्र की लहरें लड़ाव पर थीं।—उग्र।

लतिहाव†—पुं० [हिं० लात+हाव (प्रत्य०)] खच्चरों, घोड़ों आदि का आपस में एक दूसरे पर अपनी पिछली टाँगों से प्रहार करना। जैसे—तबेले में होनेवाला लतिहाव।

लपाड़िया†—वि० [हिं० लप-लप से अनु०] १. झूठा। मिथ्यावादी। २. बहुत बढ़-बढ़ कर बोलनेवाला। डींग हाँकनेवाला। लबार।

लपोटा†—पुं०=लप्पड़ (थप्पड़)।

लबरा—वि० २. बहुत बढ़-बढ़कर बोलनेवाला। डींग हाँकनेवाला।

लबाड़—वि० ३. बहुत बढ़-बढ़ कर बोलनेवाला। डींग हाँकनेवाला।

लब्धिका—स्त्री० [सं० लब्धि से] कोई ऐसी समता या विशेषता, जो विशेष परिश्रम या प्रयत्नपूर्वक अर्जित या प्राप्त की गई हो। उपलब्धि। (एटेनमेन्ट)

ललारी†—पुं० [हिं० नील या लाल ?] वह जो कपड़े रँगने का व्यवसाय करता हो। रँगरेज। (पश्चिम)

ललित—वि० ६. जो इतना सुकुमार और सुन्दर हो कि सहज में लोगों को मुग्ध कर सके। (फाइन) जैसे—ललित कला।

ललित पंचम—पुं० [सं०] संगीत में एक प्रकार का राग।

ललिता गौरी—स्त्री० [सं०] संगीत में, एक प्रकार की रागिनी।

लसीका—स्त्री० ३. शरीर में कुछ विकृत अवस्थाओं में उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का वर्णहीन तरल पदार्थ, जो ऊतकों में से निकलता और रक्त में जा मिलता हो। (लिम्फ)

लहरा—पुं० ३. सब कामों की ओर से निश्चिंत होकर पूर्ण मनोयोग से सुख-भोग की ओर प्रवृत्त होना या उसका आनन्द लेना। जैसे—बरसात में वह कई-कई दिन बगीचे में रहकर लहरा लेते हैं। ४. कोई ऐसी क्रिया या बात, जिसके फलस्वरूप लोगों में किसी प्रकार का ईर्ष्या-द्वेष, लड़ाई-झगड़ा, प्रतिस्पर्धा आदि उत्पन्न हो। जैसे—तुम्हें भी लहरा लगाना खूब आता है।

क्रि० प्र०—लगाना।

लहराव—पुं० [हिं० लहराना] लहरने की अवस्था; क्रिया या भाव।

लापड़†—पुं० [हिं० पापड़ का अनु०] कई तरह की दालों को पीसकर बनाया हुआ पापड़। (राज०)

लाभांश—पुं० २. उद्योग-धंधे, व्यापार आदि में यथेष्ट लाभ होने पर उसका वह अंश जो हिस्सेदारों के सिवा कर्मचारियों आदि को भी प्रसन्न तथा संतुष्ट रखने के लिए उनके वेतन आदि के अतिरिक्त दिया जाता है। (बोनस)

लार-गद्दी—स्त्री० [हिं०] छोटे बच्चों का एक प्रकार का पहनावा जो उनके गले में और छाती पर इसलिए पहनाया जाता है कि उनके मुँह से गिरनेवाली लार से उनके बदन पर के अच्छे कपड़े खराब न हों। (बिब)

लाल-ताला—पुं० [हिं०] राज्य द्वारा रक्षित वनों की सड़कों के मुहाने पर बने हुए फाटकों पर बंद किया जानेवाला वह ताला, जो शिकारियों आदि को दूर या बाहर रखने के लिए लगाया जाता है और जिसे पार करके जंगलों में जाना अपराध माना जाता है। (रेड लॉक)

लाश-घर—पुं० दे० 'मुरदा-घर'।

लिटर—पुं० [अं०] दशमिक प्रणाली में, आधानों, पात्रों आदि की धारिता निश्चित करने का एक आधारिक मान, जो ६१.०२५ घन इंचों के बराबर होता है।

विशेष—इसका उपयोग प्रायः तरल पदार्थ नापने के लिए होता है। अब भारत में भी इसका प्रचलन हो गया है।

लिप्यंतर—पुं० [सं० लिपि+अंतर] किसी भाषा के लेख या विचार का वह रूप, जो उसकी मूल लिपि में प्रस्तुत किया गया हो; परन्तु मूल की भाषा ज्यों की त्यों रहने दी गई हो। (ट्रैन्स्लिटरेशन)

लिप्यंतरण—पुं० [सं० लिपि+अंतरण] किसी भाषा में लिखे हुए लेख या विचार ज्यों के त्यों उसी भाषा में, परन्तु दूसरी लिपि में लिखने की क्रिया या भाव। (ट्रैन्स्लिटरेशन)

लिफाफिया—पुं० वह जो केवल दूसरों को दिखाने के लिए ऊपरी तड़क-भड़क या बनावटी दिखावट रखता हो।

लिफाफेबाज—पुं० [भाव० लिफाफेबाजी]=लिफाफिया।

लुगदी—स्त्री० [देश०] १. गीली पीसी हुई चीज की छोटी गोली। जैसे—भाँग की लुगदी। २. आजकल कुछ विशिष्ट प्रकार की घासों, टहनियों, पत्तियों, बाँसों आदि से तैयार किया हुआ वह गूदा, जिससे कागज बनाया जाता है। (पेपर पल्प)

लुप्ति—स्त्री० [सं०] १. लुप्त अर्थात् गायब या गुम होने की अवस्था या भाव। २. किसी काम या बात के बीच में भूल से कोई अंश छूट या रह जाने की अवस्था या भाव। चूक। (ओमीशन)

लैटिन—वि० [अं०] १. प्राचीन रोम और इटली से संबंध रखनेवाला या उससे उद्भूत। २. उक्त की प्राचीन भाषा, संस्कृति और सभ्यता से संबंध रखनेवाला या उससे प्रस्तुत।

लैटिन अमेरिका—पुं० [सं०] पश्चिमी गोलार्द्ध में अमेरिका के संयुक्त राज्यों, कनाडा तथा ब्रिटेन के उपनिवेशों को छोड़कर बाकी वे सभी देश, जिनमें पुर्तगाली, फ्रांसीसी और स्पेनी भाषाएँ बोली जाती हैं।

लोकतंत्र—पुं० १. लोक अर्थात् सारे जन-समाज का तंत्र या शासन। २. आधुनिक राजनीति में ऐसी शासन-प्रणाली, जिसमें सभी वयस्क पुरुषों और स्त्रियों को यह अधिकार प्राप्त होता है कि शासन-कार्य के लिए वे अपने प्रतिनिधि चुनें।

विशेष—इस शासन-प्रणाली के मुख्य लक्षण या विशेषताएँ ये हैं—(क) इसमें बहुमत का निर्णय ही सब लोगों को मानना पड़ता है। (ख) इसमें अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा का भी ध्यान रखा जाता है। (ग) इसमें साधारणतः सब लोगों को समान रूप से नागरिक अधिकार प्राप्त होते हैं; अपनी इच्छा और विश्वास के अनुसार धर्मा-

चरण की स्वतंत्रता होती है और बिना किसी बाधा के अपने विचार प्रकट कर सकते और संघटन बना सकते हैं ; और (घ) लोक-तंत्री शासन-प्रणाली में सर्व-प्रधान अधिकारी या शासक निर्वाचित भी हो सकता है; और उसका पद वंशानुक्रमिक भी हो सकता है। 'गणतंत्र' से इसमें यही मुख्य अंतर है।

३. ऐसा देश या राज्य, जिसमें उक्त प्रकार की शासन-प्रणाली प्रचलित हो। ४. संस्थाओं, समाजों आदि की वह स्थिति, जिसमें सब सदस्यों को समान अधिकार प्राप्त होते हैं और सब समस्याओं का निराकरण बहुमत के अनुसार होता है। (डेमो-क्रेसी, उक्त सभी अर्थों में)

लोकशाही--स्त्री० [सं० लोक+फा० शाही]=लोक-तंत्र।

लोक-संहार--पुं० [सं०] किसी जाति या वर्ग के सब अथवा बहुत से लोगों का एक साथ किया जानेवाला वध या संहार। सर्व-संहार। (प्रोग्राम)

लोक-समाज--पुं० [सं०] किसी देश, नगर, भू-भाग आदि में रहनेवाले उन सभी लोगों का समाज जो एक ही तंत्र से शासित होते हैं और जिनके स्वार्थ या हित प्रायः एक से होते हैं। (कम्युनिटी)

लोक-साहित्य--पुं० [सं०] लोक अर्थात् जन-साधारण में पढ़ा जानेवाला साहित्य, विशेषतः ऐसा साहित्य जो विशुद्ध विद्वत्तापूर्ण तथा शास्त्रीय साहित्य से भिन्न हो। (फ़ोक लिटरेचर)

विशेष--साधारणतः अशिक्षितों, असभ्यों और आदिम जातियों आदि में प्रचलित साहित्य तो इसके अंतर्गत आता ही है, इसके अतिरिक्त सभ्य समाज में प्रचलित ऐसे परंपरागत साहित्य का इसमें अंतर्भाव होता है, जो लोक में मौखिक रूप से प्रचलित हो अथवा जिसके कर्ता, रचयिता आदि अज्ञात हों।

लोपन--पुं० ४. आज-कल किसी मुद्रित या लिखित प्रति में से उसका कोई अंश काटकर निकाल देना। (डिलीशन)

लोह-आवरण--पुं० दे० 'लौह-आवरण'।

लौंद का साल--पुं० दे० 'अधिवर्ष'।

लौकिक राज्य--पुं० [सं०] दे० 'धर्म निरपेक्ष राज्य'।

लौ--स्त्री० [?] किसी काम, चीज या बात की ओर लगनेवाला ऐसा पक्का और पूरा ध्यान, जो सहसा कभी छूटता या टूटता न हो। मन की लगन।

मुहा०--लौ लगाना=एकाग्रचित्त होकर किसी काम, चीज या बात की ओर पूरा-पूरा ध्यान लगाना।

लौह-आवरण--पुं० [सं०] १. एक पद, जो आरंभ में सोवियत रूस की उस अवस्था के लिए प्रयुक्त होता था, जिसके अनुसार वे अपनी भीतरी आर्थिक, राजनीतिक आदि बातें अन्य देशों से पूरी तरह छिपाकर रखते थे और सहसा शेष जगत् पर प्रकट नहीं होने देते थे। २. उक्त प्रकार की कोई ऐसी व्यवस्था, जो किसी बड़ी बात को व्यापक रूप से छिपाये रखने के लिए की जाती हो। (आयरन कर्टेन)

वंदी प्रत्यक्षीकरण--पुं० [सं०] विविध क्षेत्रों में, एक विशिष्ट प्रकार की व्यवस्था, जिसके अनुसार राज्य द्वारा वंदी किया हुआ कोई व्यक्ति न्यायालय से यह प्रार्थना कर सकता है कि मुझे न्यायालय में बुलाकर इस बात का निर्णय किया जाय कि राज्य द्वारा वंदी किया जाना नियमित या विधि-विहित है या नहीं। (हैबिअस कॉर्पस)

वक्तृता--स्त्री० ३. संस्था, सभा, समाज आदि में किसी उपस्थित या प्रासंगिक विषय पर धारा-प्रवाह रूप में किसी के द्वारा प्रस्तुत किये जानेवाले विवेचनात्मक और विस्तृत विचार। व्याख्यान। (स्पीच) जैसे--सभाओं में राजनीतिक या सामाजिक नेताओं की होनेवाली वक्तृता।

वचनबद्धता--स्त्री० [सं०] वचनबद्ध होने की अवस्था, क्रिया या भाव। (कमिटमेन्ट)

वटु--पुं० ३. भारतीय आर्यों में ऐसा बालक, जिसका अभी तक यज्ञोपवीत या व्रतबंध न हुआ हो।

वर्णन--पुं० बातचीत के समय प्रसंगवश किसी काम, चीज या बात की होनेवाली चर्चा। उल्लेख। (मेन्शन)

वशंवद--वि० ३. कहने के अनुसार काम करनेवाला।

वसंतिका--स्त्री० [सं०] संगीत में एक प्रकार की रागिनी।

वसापायस--पुं० [सं०] अम्लाशय और पित्त विकार से बननेवाला सफेद रंग का वह पदार्थ, जो शरीर में से मूत्र के साथ निकलता है। (काइल)

वस्तु-विनिमय--पुं० [सं०] १. किसी से एक चीज लेकर उसके बदले में उसे दूसरी चीज देना। चीजों की अदला-बदली। २. व्यापार में वह स्थिति जिसमें किसी से कोई चीज लेने पर उसका मूल्य धन के रूप में नहीं चुकाया जाता ; बल्कि उतने ही मूल्य की कोई और चीज उसे दी जाती है। अदला-बदली। (बार्टर)

वहा-मापी--पुं० [सं० वहा-मापिन्] वह यंत्र, जिससे पानी या किसी तरल पदार्थ के बहाव की गति, मात्रा, वेग आदि मापते हैं। धारावेग-मापी। (करेन्टमीटर)

वहिष्कर्ण--पुं० [सं०] १. प्राणियों के कानों का बाहर की ओर निकला हुआ अंश या भाग। २. किसी चीज का कोई ऐसा अंग या भाग, जो कानों की तरह बाहर निकला हो। (आरिकल)

वाँस†--पुं० [सं० पाश] किसी प्रकार का पाश, फंदा या बंधन। यौगिक के अन्त में ; जैसे--चिलवाँस, ढेलवाँस आदि।

वाक्पीठ--पुं० [सं०] किसी ऐसे जन-समूह का मंच, जिस पर बैठकर लोग लोकोपयोगी अथवा सामयिक विषयों पर विचार-विमर्श करते हैं। (फ़ोरम)

वाग्विश्वास--पुं० [सं० वाक्+विश्वास] १. सैनिक क्षेत्र में, युद्ध के वन्दियों के द्वारा दिये हुए इस विशिष्ट वचन पर किया जानेवाला विश्वास कि यदि कैद से छोड़ दिये जाएँगे, तो अपने बन्दी करनेवालों के आदेश का पालन करेंगे, अथवा भविष्य में युद्ध में सम्मिलित न होंगे। साधारणतः इस प्रकार का विश्वास दिलाने पर वे कैद से छोड़ दिये जाते हैं। २. विधिक क्षेत्र में, कैदियों के दिये हुए इस वचन पर किया जानेवाला विश्वास कि यदि वे अस्थायी रूप से कुछ समय के लिए छोड़ दिए जाएँगे, तो फिर लौटकर जेल में आ जाएँगे ; अथवा यदि स्थायी रूप से छोड़ दियें जाएँगे तो भविष्य में कोई अपराध न करेंगे। ३. वह अवस्था जिसमें कैदी लोग उक्त प्रकार का वचन देने पर कैद से अस्थायी अथवा स्थायी रूप से छोड़ दिये जाते हैं। (पैरोल; उक्त सभी अर्थों में)

वातापि--पुं० [सं०] एक राक्षस, जो आतापि का भाई था और जो अगस्त्य मुनि द्वारा मारा गया था।

वाद-कारण—पुं० [सं०]=वाद-मूल।

वाद-विवाद—पुं० ३. केवल औपचारिक रूप से होनेवाली उक्त प्रकार की ऐसी बातचीत, जिसमें पारस्परिक मतों या विचारों का खंडन-मंडन होता है। (डिबेट)

वायु-दाब-मापक—पुं० [हिं०] वह यंत्र जिससे किसी स्थान या वातावरण के घटने या बढ़नेवाले ताप-क्रम का पता चलता है। (बैरोमीटर)

विंदुक—पुं० २. आजकल पिचकारी की तरह का शीशे का एक छोटा उपकरण. जिसमें भरा हुआ तरल पदार्थ एक-एक बूंद करके गिराया या टपकाया जाता है। (ड्रॉपर)

विकर्षण—पुं० [सं०] १. दूसरी ओर या विपरीत दिशा में होनेवाला खिचाव। 'आकर्षण' का विपर्याय। २. आगे बढ़ाई या फेंकी हुई चीज को फिर खींच कर अपनी ओर लाना। वापस बुलाना। लौटाना। ३. न रहने देना। नष्ट करना। ४. कामदेव के पाँच वाणों में से एक। ५. किसी को बलपूर्वक पीछे की ओर ढकेलना या हटाना। जैसे—आक्रमण करनेवाले शत्रु का विकर्षण। ६. अपने अनुकूल न समझकर या अरुचिकर होने पर अलग या दूर करना अथवा हटाना। ७. किसी प्रकार के गुण, प्रवृत्ति आदि का उत्कट विरोध होने के कारण एक तत्त्व या पदार्थ का दूसरे तत्त्व या पदार्थ को दूर हटाना। (रिपल्शन, अन्तिम तीनों, अर्थों में)

विकिरण—पुं० ताप-प्रकाश की किरणों के फल-स्वरूप होनेवाली दूर-व्यापी प्रक्रिया। (रेडियो)

विकिरणशीलता—स्त्री० [सं०] आधुनिक विज्ञान की वह स्थिति जिसमें अणुबमों आदि के विस्फोट के कारण विषाक्त किरणें निकलकर चारों ओर फैलती और वातावरण दूषित करके जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों आदि को बहुत हानि पहुँचाती हैं। (रैडियो-ऐक्टिविटी)

विकृति-विज्ञानी—पुं० [सं०] वह जो विकृति-विज्ञान का अच्छा ज्ञाता हो। (पैथोलॉजिस्ट)

विक्रय-लेख्य—पुं० [सं०]=विक्रय-पत्र।

विखंडन—पुं० [सं०] [वि० विखंडनीय, भू० कृ० विखंडित] १. किसी चीज के छोटे-छोटे टुकड़े करना। २. किसी चीज को तोड़-फोड़ कर उसके खंड या टुकड़े करना। ३. विज्ञान में, ऐसी क्रिया करना, जिससे किसी अणु के परमाणु अलग-अलग हो जायँ। (स्प्लिटिंग)

विचारण—स्त्री० ४. विधिक क्षेत्र में वह अवस्था, जिसमें न्यायालय के द्वारा इस बात का विचार किया जाता है कि अभियुक्त किसी अभियोग का वस्तुतः दोषी है या नहीं। (ट्राएल)

विचार-धारा—स्त्री० २. व्यक्तियों अथवा उनके दलों, वर्गों आदि की वह विशिष्ट विचार-प्रणाली और उसके आधार पर स्थिर किये हुए सिद्धान्त, जिनका उपयोग आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में अनुकरणीय और पालनीय आदर्शों के रूप में होता है। (आइडिओलॉजी)

विचाराधिकार—पुं० [सं० विचार+अधिकार] १. किसी बात या विषय पर कुछ सोच-विचार करने का ऐसा अधिकार, जो उसके लिए आवश्यक योग्यता रखने से प्राप्त होता हैं। २. आज-कल विधिक क्षेत्र में, अधिकारी या न्यायालय का वह अधिकार, जिससे उसे किसी अपराध या दोष की ओर ध्यान देकर उसका प्रतिकार करने की क्षमता प्राप्त होती है। (कॉग्निजैन्स)

विच्छेदन—पुं० २. चिकित्सा-शास्त्र में, शरीर के किसी दूषित, पीड़ित या विषाक्त अंग को शल्यक्रिया के द्वारा काटकर अलग करने की क्रिया या भाव। अंगच्छेदन। (ऐम्पूटेशन)

विजय—स्त्री० शत्रु को युद्ध-क्षेत्र में हराकर उसके देश अथवा किसी प्रदेश पर अधिकार प्राप्त करने की क्रिया या भाव। जीत। (कॉनक्वेस्ट)

विजयोपहार—पुं० [सं० विजय+उपहार] १. वह उपहार, जो किसी को विजय प्राप्त करने पर भेंट के रूप में मिलता है। २. ढाल, कवच आदि के रूप में वह विजय-चिह्न, जो खिलाड़ियों आदि को कोई प्रतियोगिता जीतने पर मिलता है। ३. किसी प्रकार के शत्रु को जीतने पर प्राप्त की हुई कोई ऐसी चीज, जो उस विजय का स्मरण कराती हो। जय-चिह्न। (ट्रॉफ़ी) जैसे—घड़ियाल, चीते, भालू, शेर आदि को मारकर उनकी उतारी हुई खाल।

विद्युत्-दाब—स्त्री० [सं०+हिं०] विद्युत् की गति या धारा का वह मान, जो उसकी दाब के आधार पर आँका या नापा जाता है। (वोल्टेज)

विधि—स्त्री० १. कोई काम करने या चीज बनाने का नियत और निश्चित ढंग या प्रकार। प्रक्रिया। (प्रोसेस) २. व्याकरण में वाक्य की वह स्थिति जिसमें उसकी क्रिया किसी प्रकार के अनुरोध, आज्ञा, आदेश, उपदेश आदि की सूचक हो। (इम्परेटिव मूड) जैसे—(क) सदा गुरुजनों की आज्ञा पालन करो। (ख) अब आप भी अपने विचार प्रकट करें।

विधिवेत्ता—पुं० [सं०] वह जो विधि-शास्त्र, अर्थात् कानून का बहुत अच्छा ज्ञाता हो, अथवा जिसने तत्संबंधी विषयों पर अच्छे ग्रंथ लेख आदि लिखे हों। (ज्यूरिस्ट)

विधि-शास्त्र—पुं० [सं०] १. वह शास्त्र जिसमें किसी विशिष्ट विषय के नियमों, विधियों, सिद्धान्तों आदि का निरूपण और विवेचन होता है। जैसे—अन्तर्राष्ट्रीय विधिशास्त्र, चिकित्सीय विधि-शास्त्र आदि। २. मुख्य रूप से वह शास्त्र जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि कानून या विधि-विधान किन नियमों के आधार पर बनाये जाने चाहिए और विवादों आदि का निर्णय या न्याय किन सिद्धान्तों के अनुसार होना चाहिए। न्याय-शास्त्र। (जुरिस्प्रूडेन्स)

विधि-शास्त्री—पुं० [सं० विधिशास्त्रिन्] वह जो किसी विधि-शास्त्र का अच्छा ज्ञाता या पंडित हो। (जुरिस्प्रुडेन्ट)

विनय—पुं० किसी को नियंत्रण या शासन में रखने के लिए कही जानेवाली ऐसी बात, जिसके साथ अवज्ञा के लिए दंड का भी भय दिखाया गया या विधान किया गया हो। (स्मृति)

स्त्री० नम्रतापूर्वक की जानेवाली प्रार्थना या विनती।

विनियमन—पुं० [सं०] [भू० कृ० विनियमित] १. विनियम बनाने की क्रिया या भाव। २. ऐसी व्यवस्था करना, जिससे कोई काम या बात ठीक ढंग से और नियमित रूप में होती चले। (रेगुलेशन)

विपत्र समाहर्त्ता—पुं०=प्राप्यक समाहर्ता।

विमुद्रीकरण—पुं० [सं०] [भू० कृ० विमुद्रीकृत] जिस चीज या मुद्रा या सिक्के के रूप में प्रचलन हो उसके संबंध में ऐसी विधिक क्रिया करना कि उसका वह मुद्रा या सिक्केवाला महत्त्व, मूल्य या रूप नष्ट

हो जाय और उसका प्रचलन बन्द हो जाय। 'मुद्रीकरण' का विपर्याय। (डिमनीटाइजेशन) जैसे—(क) पहले इस देश में हजार रुपए वाले नोट भी चलते थे। पर बाद में सरकार ने उनका विमुद्रीकरण कर दिया। (ख) लोगों के पास काला या दूषित धन निकलवाने के उद्देश्य से अब कुछ लोग यह भी कहने लगे हैं कि सौ रुपयोंवाले नोटों का विमुद्रीकरण कर दिया जाय।

विलोप—पुं० किसी वस्तु का इस प्रकार नष्ट या समाप्त हो जाना कि उसका कोई अंश या चिह्न न रह जाय। अस्तित्व का पूरी तरह मिट जाना। लोप। (एक्सटिंकशन)

विवरणिका—स्त्री० १. किसी नये कार्य, व्यापार, संस्था आदि से संबंध रखनेवाली मुख्य-मुख्य बातें बतलानेवाला विवरण-पत्र। २. किसी शैक्षणिक संस्था के संबंध का वह विवरण-पत्र, जिसमें उसके नियमों, पाठ्य-क्रमों आदि से संबंध रखनेवाली सभी मुख्य बातों का उल्लेख हो। (प्रॉस्पेक्टस)

विषाद—पुं० ६. एक प्रकार का मानसिक रोग जिसमें रोगी बहुत ही उदास, दुखी और विरक्त होकर प्रायः चुपचाप सिर झुकाये बैठा रहता है। मालीखौलिया। (मेलान्कोलिया)

विस्फोटन—पुं० २. भभकनेवाले पदार्थों में इस प्रकार आग लगाना कि उसके फलस्वरूप कोई चीज टूट-फूट कर छिन्न-भिन्न या नष्ट-भ्रष्ट हो जाय अथवा उसके टुकड़े-टुकड़े होकर हवा में उड़ या छितरा जाय। (ब्लैस्टिंग)

विह्वल—वि० ३. दया, प्रेम, सहानुभूति आदि के आवेश में होने के कारण जो अपना आप भूलकर मग्न और विभोर हो रहा हो। जैसे—प्रेम-विह्वल।

वीथी—स्त्री० ७. बड़े मकानों आदि में दर्शकों के बैठने के लिए बना हुआ ऊँचा और सीढ़ीनुमा स्थान। दीर्घा। (गैलरी)

वृत्तिका—वि० [सं०] जो किसी जीव या प्राणी की वृत्ति या मूल स्वभाव से उद्भूत या संबद्ध हो। मन में सहज भाव से और आपसे आप उत्पन्न या उद्भूत होनेवाला। सहज। साहजिक। (इन्स्टिक्टिव)

पुं० मनुष्य में उन सभी कार्यों और वृत्तियों का सामूहिक रूप जिसके आधार पर वह अपने जीवन में उन्नति या प्रगति करता है और जिसका उसके भविष्य पर प्रभाव पड़ता है। जीवक। (केरियर)

वैखरी—स्त्री० ४. वाणी का वह रूप जो वर्णमाला, अक्षरों या वर्णों से निरूपित होता है और जो बोलचाल के शब्दों के रूप में सामने आता है।

व्याख्यान—पुं० ४. संस्था, सभा, समाज आदि में किसी उपस्थित या प्रासंगिक विषय पर धारा-प्रवाह रूप में किसी के द्वारा प्रस्तुत किये जानेवाले विवेचनात्मक और विस्तृत विचार। भाषण। वक्तृता। (स्पीच) जैसे—आज-कल राजनीतिक समस्याओं पर प्रायः सभी जगह नित्य कुछ न कुछ व्याख्यान होते रहते हैं।

व्यापार-चक्र—पुं० [सं०] वह सारी अवधि या समय, जिसमें व्यापार संबंधी तेजी-मंदी आदि की तरह की कुछ विशिष्ट घटनाओं की रह रहकर आवृत्ति होती रहती है। (ट्रेड-साइकिल)

व्यापार-छाप—स्त्री० [सं०+हिं०] व्यापारियों आदि का परिचायक वह चिह्न या निशान, जो उनकी वस्तुओं आदि पर अंकित हो। मार्का। (ट्रेडमार्क)

व्युत्पत्ति-विज्ञान—पुं० [सं०] वह विज्ञान या शास्त्र, जिसमें शब्दों के मूल उद्गम या व्युत्पत्ति का विचार और विवेचन होता है। (एटिमोलोजी)

शब्दार्थ-विज्ञान—पुं० [सं०] वह विज्ञान या शास्त्र, जिसमें शब्दों के सूक्ष्म अर्थों का विवेचन हो।

शरीर-गठन—स्त्री० [सं०+हिं०] शरीर की बनावट या संरचना जिसके अन्तर्गत आकार, रूप आदि बातें आती हैं और जिससे उसके बल या शक्ति का पता चलता है। अंग-लेट। (फ़िज़ीक)

शर्त—स्त्री० ४. कोई काम या बात पूरी करने से पहले उसके संबंध में बतलाया जानेवाला कोई अनिवार्य, अपेक्षित या आवश्यक तत्त्व। (कन्डिशन) जैसे—मैं तो वहाँ चलने के लिए तैयार हूँ; पर शर्त यह है कि आप भी मेरे साथ रहें।

शलाका मुद्रा—स्त्री० २. परवर्ती काल में, उक्त प्रकार की वे मुद्राएँ जिन पर किसी व्यापारिक श्रेणी (संघ या संस्था) की सूचक छाप अंकित होती थी। आहत-मुद्रा। (पंचमार्क्ड क्वॉएन)

शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व—पुं० [सं०] आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में यह नया मत या सिद्धांत कि सब देशों या राष्ट्रों को आपस में शांतिपूर्वक रहकर अपना-अपना अस्तित्व बनाये रहना चाहिए और आपस के विवाद शांतिपूर्वक बातचीत करके ही निपटाने चाहिए। युद्ध के द्वारा नहीं। (पीसफुल कोएग्जिस्टेन्स)

शांति-सेना—स्त्री० [सं०] आधुनिक राजनीति में तटस्थ देशों की वह सेना, जो दो या अधिक शत्रु-देशों का युद्ध रोकने अथवा गृह-युद्ध विद्रोह आदि रोकने के लिए नियुक्त की जाती है। (पीस फोर्स)

शाठ्य—पुं० [सं०] शठ होने की अवस्था, गुण या भाव। शठता।

शाठ्य-ग्रंथि—स्त्री० [सं०] शठता अर्थात् बहुत बड़ी दुष्टता करने के उद्देश्य से कुछ लोगों का आपस में मिलकर कोई गुट या दल बनाना। साट-गाँठ। (कोल्यूज़न)

शास-पत्र—पुं० [सं०] वह अधिकार-पत्र जो राजा या सरकार से किसी विशेष प्रकार के अधिकार के संबंध में किसी व्यक्ति या संस्था को दिया गया हो। (चार्टर)

शास-पत्रित—भू० कृ० [सं०] (व्यक्ति या संस्था) जिसे किसी काम के लिए शास-पत्र मिला हो। (चार्टर्ड) जैसे—शास-पत्रित लेखपाल।

शास-पत्रित लेखपाल—पुं० [सं०] वह लेखापाल जिसे आय-व्यय आदि की जाँच करने के संबंध में शास-पत्र मिला हो। (चार्टर्ड एकाउन्टैन्ट)

शास्त्री—स्त्री० [सं० शास्त्र+ई (प्रत्य०)] देवनागरी लिपि। हिन्दी भाषा। (पश्चिम)

शाहखरच—पुं०=शाहखर्च।

शाहखरची—स्त्री०=शाहखर्ची।

शिशु-शाला—स्त्री० [सं०] १. वह स्थान जहाँ शिशु अर्थात् छोटे-छोटे बच्चे पालन-पोषण आदि के लिए रखे जाते हैं। २. आज-कल बड़े-बड़े कारखानों में वह स्थान, जहाँ काम करनेवाली स्त्रियाँ अपने छोटे बच्चों को सुरक्षित रूप से रहने के लिए छोड़ देती हैं और वहाँ उन बच्चों की सब प्रकार से देखभाल होती है। बच्चा-घर। (नर्सरी)

शीत-निद्रा—स्त्री० [सं०] कुछ जीव-जंतुओं की वह शीतकालीन निद्रा, निसमें वे चुपचाप बिना कुछ खाये-पीये गुफाओं आदि में अथवा जमीन के नीचे दबे पड़े रहते हैं। परिशयन। (हाइबर्नेशन)

शील-भंग—पुं० [सं०] किसी सच्चरित्रा कुमारी अथवा विवाहिता स्त्री के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध संभोग करके उसे चरित्र-भ्रष्ट और कलंकित करना।

शून्यवाद—पुं० २. यह पाश्चात्य दार्शनिक मत या सिद्धांत कि ज्ञान और सत्य का कोई मूल और वास्तविक आधार नहीं है। ३. यह मत या सिद्धांत कि बहुत दिनों से जो धार्मिक प्रथाएँ और नैतिक विश्वास आदि चले आ रहे हैं। वे व्यर्थ हैं और उनका अनुसरण और पालन नहीं होना चाहिए। (निहिलिज़्म)

शृंगक—पुं० [सं०] चिकित्सा-क्षेत्र में, एक प्रकार की छोटी पिचकारी जिसकी सहायता से शरीर के अन्दर दवा पहुँचाई जाती है। (सीरिंज)

शैल-संस्तर—पुं० [सं०]=आधार-शैल।

शोध—पुं० ६. खोज। गवेषणा (रिसर्च)

श्मशान—पुं० ४. आज-कल एक प्रकार की बड़ी भट्ठी, जिसमें प्रायः बिजली की सहायता से शव जलाये जाते हैं। (क्रेमेटोरियम)

श्रमिक—पुं० [सं०] वह जो केवल शारीरिक परिश्रम के काम करके अपनी जीविका चलाता हो। श्रमकर। मजदूर। (लेबरर)

श्रव्यकला—स्त्री० [सं०] कला के मुख्य दो वर्गों में से एक, जिसमें कविता-पाठ, संगीत आदि का अंतर्भाव होता है। दूसरा वर्ग 'प्रेक्ष्य कला' कहलाता है।

श्रुति-व्यवस्था—स्त्री० [सं०] बड़े-बड़े कमरों आदि की रचना में वह व्यवस्था, जिसमें आवाज सब जगह साफ सुनाई दे और गूँजने न पावे। (एकाउस्टिक्स)

संकेंद्रण शिविर—पुं० [सं०] १. वह स्थान, जहाँ चारों ओर भेजने के लिए सेनाएँ एकत्र की जाती हैं। २. युद्ध-काल में वह स्थान जहाँ विदेशियों, शत्रुओं आदि के सन्दिग्ध व्यक्ति एकत्र करके पहरे में रखे जाते हैं। ३. वह स्थान, जहाँ अपने देश के ऐसे विरोधी दलों के लिए लोग पहरे में रखे जाते हैं, जिनसे किसी प्रकार के अनिष्ट की आशंका होती है। वंदी शिविर। (कन्सेन्ट्रेशन कैंप)

संकेतक—वि० [सं०] संकेत करनेवाला।

पुं० १. कोई ऐसी चीज या बात, जिसका उपयोग किसी प्रकार का मार्ग-दर्शन या और कोई संकेत करने के लिए होता है। २. वह विशिष्ट प्रकार का संकेत, जो आकाश में उड़नेवाले जहाजों को उनके निदेशन, मार्ग-दर्शन आदि के लिए रेडियो के द्वारा किया जाता है। (बेकन)

संकेत-लिपि—स्त्री० [सं०] आज-कल राजनीतिक क्षेत्र में, एक प्रकार की गुह्य लेखे-प्रणाली, जिसमें साधारण पदों, वाक्यों और शब्दों के लिए कुछ सांकेतिक शब्द नियत होते हैं और जिनका आशय वही लोग समझ सकते हैं, जिनके पास उनकी कुंजी हो। गूढ़-संहिता लिखने की लिपि। (साइफ़र कोड)

संगमन—पुं० २. राजनीतिक, व्यापारिक, आदि संस्थाओं के प्रतिनिधियों सदस्यों आदि की ऐसी सभा या सम्मेलन, जो महत्त्वपूर्ण विषयों के संबंध में कोई अधिसमय, प्रथा या रूढ़ि निश्चित करने के लिए होता हो। (कन्वेन्शन)

संभरक—वि० [सं०] संभरण करनेवाला।

पुं० कोई ऐसी चीज या साधन जो आगे चलकर किसी बड़ी व्यवस्था या आवश्यकता की पूर्ति करती हो। (फ़ीडर) जैसे—(क) संभरक नहर=वह बड़ी नहर जो छोटी-छोटी नहरों में पानी पहुँचाती हो। (ख) संभरक रेल=छोटी शाखा के रूप में चलनेवाली वह रेलगाड़ी जो आगे चलकर किसी बड़े रेलमार्ग पर चलनेवाली रेलगाड़ियों तक यात्रियों को पहुँचाती हो।

संयुग्मन—पुं० [सं०]=युग्मन।

संयोजन-चिह्न—पुं० [सं०]=योगिका। (हाईफेन)

संलग्नक—पुं० [सं०] वह पत्र या लेख, जो किसी पत्र के साथ संलग्न करके भेजा जाय। सह-पत्र। (एन्क्लोजर)

संवर्धक-शाला—स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ छोटे-छोटे जीव-जन्तुओं आदि का ठीक तरह से पालन-पोषण करके उनके वर्ग की उन्नति तथा वृद्धि की जाती है। पोष-शाला। (नर्सरी) जैसे—मछलियों की संवर्धन-शाला ; रेशम के कीड़ों की संवर्धन-शाला आदि।

संविध—स्त्री० [सं०] [वि० सांविधिक] १. ऐसी विधि अर्थात् परिपाटी या रीति, जो लोक में प्रामाणिक मानी जाती है। २. आधुनिक राजनीति में, वह विधान जो विधायिका सभा में स्वीकृत हो चुका हो और जिसके प्रचलन में कोई अड़चन न रह गई हो। (स्टैट्यूट)

संविधि-ग्रंथ—पुं० [सं०] आधुनिक राजनीति में वह ग्रंथ या पुस्तिका, जिसमें राज्य द्वारा स्वीकृति विधान या कानून औपचारिक रूप से लिखकर रखे जाते हैं। संविधि-पुस्तक। (स्टैट्यूट बुक)

संविधि-पुस्तक—स्त्री० [सं०]=संविधि-ग्रंथ।

सकत†—स्त्री० [सं० शक्ति] शक्ति।

सखरच†—वि० [फा० शाहखर्च] [भाव० सखरची] बहुत उदारता पूर्वक या जी खोलकर खरच करनेवाला। उदा०—बनियाँ का सखरच ठकुरा क हीन। वैद क पूत व्याधि नहिं चीन्ह।—घाघ।

सजाव दही—पुं० [हिं० सजाना+दही] शुद्ध दूध को उबालकर जमाया हुआ दही। 'मखनियाँ दही' से भिन्न।

सपरेटा†—पुं० [अं० सेपरेटेड मिल्क]=मखनिया दूध। ऐसा दूध जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो। मखनिया दूध।

सबै†—वि०=सभी। उदा०—सबै दिन जात न एक समान।

समग्र युद्ध—पुं० [सं०] ऐसा विकट और व्यापक युद्ध जो सैनिक क्षेत्रों तक ही परिमित न हो, बल्कि जिसमें शत्रु के नागरिक और सामाजिक क्षेत्रों पर भी प्रहार करके उनका विनाश किया जाता हो। (टोटल वार)

समय-सूचक—वि० [सं०] [भाव० समय-सूचकता] १. जो समय सूचित करता हो। समय का ज्ञान करानेवाला। २. (व्यक्ति) जो समय की आवश्यकता देखते हुए उसके अनुरूप कोई ठीक काम करता हो।

समर्थांग—वि० [सं०] समर्थ अंगों वाला। हट्टा-कट्टा। (एबल-बॉडीड)

समुद्र-विज्ञान—पुं० [सं०] भूगोल की वह शाखा, जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि समुद्र में कहाँ कितनी अधिक या कम गहराई होती है ; कहाँ कैसी लहरें उठती हैं ; और कहाँ कैसे खनिज पदार्थ, जीव-जंतु, वनस्पतियाँ आदि होती हैं। (ओसेनोग्राफ़ी)

सरघी†—स्त्री०=सहरी। (पश्चिम)

सह-पत्र—पुं० [सं०] वह पत्र या लेख, जो किसी पत्र के साथ नत्थी करके कहीं भेजा जाय। संलग्नक। (एन्क्लोज़र)

साँचा—वि० [स्त्री० साँची]=सच्चा। उदा०—शुभ नाम प्रभू का साँचा। तन हाड़ चाम का ढाँचा।—भजन।

सांविधिक—वि० [सं० संविधि से] १. संविधि संबंधी। संविधि का। २. नियम या निश्चय, जिसे संविधि अर्थात् स्वीकृत विधान का रूप प्राप्त हो चुका हो। ३. (कार्य या क्रिया) जो संविधि के अनुसार अथवा संविधि के रूप में प्रचलित और व्यवहृत हो। (स्टैट्यूअरी) जैसे—संविधिक रूप से होनेवाली राशन, व्यवस्था।

सांसर्गिक—वि० [सं०]=संसर्गज।

साट-गाँठ†—स्त्री०=साठ-गाँठ।

सादरा—पुं० [फा० शाह+दर+आमद=महाराज का आगमन] शास्त्रीय संगीत में, धमार और ध्रुपद के वर्ग का एक प्रकार का गायन जिसके गीत अनेक राग-रागिनियों में बँधे होते हैं।

विशेष—कहते हैं कि दरबार में नवाब, बादशाह, राजा-महाराजा आदि जब आकर बैठते थे, तब उनके सामने पहले इसी प्रकार का गायन होता था। इसी लिए पहले इसे 'शाह दरामद' कहते थे, जिसका परवर्ती रूप सादरा है।

सामंतशाही—स्त्री० [सं०+फा०] वह स्थिति जिसमें किसी देश में सामंतों का राज्य या शासन होता है। सामंती। (फ्यूडलिज्म)

साम्राजियत—स्त्री० [हिं० साम्राज्य+फा० इयत (प्रत्य०)] साम्राज्यवाद।

साहित्यिकी—स्त्री० [सं० साहित्य से] साहित्यिक कृतियों या रचनाओं की आलोचनात्मक चर्चा। साहित्यिक बातों और विषयों का विवेचन।

सिएटो—पुं० [अं० के साउथ-ईस्ट एशियन ट्रीटी आर्गेनिजेशन के आरंभिक अक्षरों का समूह] आज-कल दक्षिण-पूर्वी एशिया के कुछ राज्यों और कुछ पाश्चात्य राज्यों की वह संस्था, जिसका उद्देश्य संसार के उक्त क्षेत्र में कम्यूनिज्म का प्रसार रोकना है।

सिजल—वि० [?] जो देखने में बहुत ही उपयुक्त, सुन्दर और सुडौल हो। जैसे—सिजल आदमी, सिजल पहनावा।

सिजिल†—वि०=सिजल।

सींक-सलाई—वि० [हिं०] बहुत अधिक दुबला-पतला। क्षीणकाय।

सुखभोग—पुं० आज-कल विधिक क्षेत्र में, किसी स्थान में रहनेवाले व्यक्ति का वह अधिकार, जिसमें उसे किसी आस-पास की जमीन या मकान से अपने परंपरागत सुभीते के आधार पर सुख भोगने के रूप में प्राप्त होता है। परिभोग। (ईजमेन्ट) जैसे—यदि हमारे मकान में बहुत दिनों से किसी बाहरी ओर खिड़की चली आ रही हो, तो हमें आधिकारिक रूप में प्रकाश और वायु का सुख-भोग प्राप्त होता है। और इसी लिए कोई नया मकान बनानेवाला हमारी दीवार के सटाकर कोई ऐसी दीवार खड़ी नहीं कर सकता, जिससे हमारे उक्त सुख-भोग में बाधा होती हो।

सुखौआ—वि० [हिं० सूखा+औआ (प्रत्य०)] जो बहुत अधिक सूख गया हो। जैसे—सुखौआ आम, सुखौआ गाजर।

सुखौता†—वि० [स्त्री० सुखौती]=सुखौआ।

सुत्त†—पुं०=सूत्र। (बौद्ध)

सुना-सुनाया—वि० [हिं० सुनना] [स्त्री० सुनी-सुनायी] कथन या वृत्तान्त जो केवल दूसरों के मुँह से सुना गया हो और जिसकी प्रामाणिकता, सत्यता आदि का कोई निश्चय न हो। जैसे—यों ही सुनी-सुनायी बातों पर उसे दौड़ना ठीक नहीं है।

सुल्ह-सफाई—स्त्री० [अ०+फा०] ऐसी स्थिति, जिसमें परस्पर विरोधी दलों या पक्षों में मेल-जौल हो जाय और किसी प्रकार का मनोमालिन्य न रह जाय।

सूफियाना—वि० [अ० सूफ़ी से] १. सूफी संप्रदाय से संबंध रखनेवाला। २. सूफियों की तरह का। ३. जो देखने में बिलकुल सादा होने पर भी बिलकुल सुन्दरता से युक्त हो।

जैसे—सूफियाना पहनावा।

विशेष—साधारणतः सूफियों की सभी चीजें और बातें, बिलकुल सादी होने पर भी भली और सुन्दर जान पड़ती हैं। इसी आधार पर यह शब्द उक्त अर्थ में प्रचलित हुआ है।

सेंटो—पुं० [अं० के सेन्ट्रल ट्रीटी आर्गेनिजेशन के आरंभिक अक्षरों का समूह] आधुनिक राजनीति में, यूरोप तथा एशिया के कुछ देशों का एक संगठन, जिसका उद्देश्य पारस्परिक सहयोगपूर्वक कम्यूनिज्म का प्रसार रोकना है।

सेतु-वाही—पुं० [सं० सेतुवाहिन्]=जल-सेतु।

सैर-बीन—स्त्री० [फा०] दूरबीन की तरह का एक छोटा उपकरण जो किसी खाने या छोटे सन्दूक के मुँह पर लगा रहता है और जिसके द्वारा अन्दर रखे हुए दृश्यों, पदार्थों आदि के छोटे चित्र परिवर्द्धित रूप या बड़े आकार में दिखाई पड़ते हैं। (पीप-शो)

स्त्री-केसर—पुं० [सं०]=गर्भ-केसर।

स्थायी—पुं० [सं०] साधारण गीतों में उसका पहला चरण या पंक्ति जिसका गायन आगे चलकर दूसरे चरणों या पंक्तियों के बाद बार-बार होता है। लोक-व्यवहार में इसे टेक भी कहते हैं।

विशेष—शास्त्रीय संगीत में गीत का पहला अंश स्थायी कहलाता है, जो मंद्र और मध्य सप्तकों तक ही सीमित रहता है। इसका कोई अंश तार सप्तक में नहीं जाता।

स्थैतिकी—स्त्री०=स्थिति-गणित।

स्वजीवी—पुं० [सं० स्वजीविन्] प्राणी-विज्ञान में, वनस्पतियों आदि के दो वर्गों में से एक, जो जल आदि से स्वयं अपना आहार प्राप्त करके अपने बल पर और स्वतंत्र रूप से जीवित रहते और बढ़ते हैं। 'परजीवी' का विपर्याय।

स्वपीड़न—पुं० [सं०]=आत्म-पीड़न।

स्वभावी—वि० [सं०]=स्वभाववाला। (प्रायः यौगिक के अंत में) जैसे—शीत-स्वभावी।

स्वर-नली—स्त्री० [सं०] गले के अन्दर की वह नली जिसकी सहायता से स्वरों अर्थात् शब्दों का उच्चारण होता है। अवटुका। (लैरिंक्स)

स्वीकार्य व्यक्ति—पुं० [सं०]=ग्राह्य व्यक्ति।

हवाई पट्टी—स्त्री० [हिं०] हवाई जहाज के अड्डों पर पक्की लंबी सड़क, जिस पर से चलकर हवाई जहाज उड़ते हैं और उतरकर चलते हुए ठहरते हैं। (एयर स्ट्रिप)

परिशिष्ट ख

अँग्रेजी-हिन्दी शब्दावली

Abacus—गिनतारा।
Abandoned—परित्यक्त।
Abandoning—अपसर्जन, परित्यजन, परित्याग।
Abatement—१. अपचय, छूट। २. उपशमन। ३. कटौती।
Abbreviation—संक्षिप्त आलेख, संक्षिप्तक।
Abcess—फोड़ा।
Abdication—अधिकार-त्याग।
Abdomen—उदर।
Abducted—अपनीत, अपहृत।
Abduction—अपनयन, अपहरण, भगाना।
Abductor—अपनेता, अपहर्त्ता, अपहारक।
Aberration—अपरेण, विपथन।
Abetment—अवप्रेरण।
Abettor—दुरुत्साहक।
Abeyance—प्रसुप्तावस्था।
Abidance—पालन।
Abiding—अनुसारी।
Ability—१. क्षमता, २. योग्यता।
Abinitio—आदितः, आरंभतः।
Ablative case—अपादान कारक।
Able—योग्य।
Abnormal—अपसामान्य, अप्रसम।
Abnormally—अप्रसमतः।
Abode—आवास, वासस्थान।
Abolished—उन्मूलित।
Abolition—उन्मूलन।
Abrasion—खरोंच।
Abscond—प्रपलायन, फरार होना, भाग जाना।
Absconder—प्रपलायक, फरार, भगोड़ा।
Absconding—प्रलायन।
Absence—अनुपस्थिति।
Absent—अनुपस्थित।
Absolute—१. अबाध। २. असीम। ३. परम।
Absolute monarch—निरंकुश शासक।
Absolute monarchy—निरंकुश शासन।
Absolute order—परम आज्ञा।
Absolute power—परम सत्ता।
Absolutism—१. अद्वैतवाद। २. निरपेक्षवाद।
Absorption—अवशोषण, प्रचूषण, शोषण।
Abstinence—उपरति, निवृत्ति।
Abstract—वि० १. अमूर्त्त। २. गुणवाची। सं० १. तत्त्व। २. सत्त, सत्त्व, सार। ३. सारांश। ४. सार-सूची। ५. समस्तिका।
Abutment—अंत्याधार।
Abuttal—चतुःसीमा।
Abuttals—अनुसीमा।
Academic—१. अकादमिक। २. शैक्षणिक, शैक्षिक। ३. शास्त्रीय, सारस्वत।
Academy—अकादमी।
Accelerated—त्वरित।
Acceleration—त्वरण।
Accent—स्वर-पात, स्वराघात।
Acceptance—१. प्रतिग्रहण। २. सकार। ३. स्वीकृति।
Accepted—१. प्रतिगृहीत, २. स्वीकृत।
Access—अधिगम।
Accessory—वि० उपसाधक।
पुं० उपसाधन।
Accessory after the fact—अनुषंगी।
Accessory before the fact—पुरःसंगी।
Accident—दुर्घटना।
Accidental—१. आनुषंगिक। २. आकस्मिक।
Accidentalism—आकस्मिकतावाद।
Accomplice—सह-अपराधी।
Accomplished—निष्ण, निष्णात।
Accordance—अनुसारता।
Accordingly—अनुसारतः।
Account—१. खाता। २. लेखा। हिसाब।
Accountant—लेखाकार, लेखापाल।
Accountant General—महालेखापाल।
Account book—लेखा-बही।
Accounting—१. लेखा-कर्म। २. लेखा-शास्त्र।
Accrual—प्रोद्भवन।
Accrued—प्रोद्भूत।
Accumulated—पुंजित, संचित।
Accumulation—संचय, संचयन।
Accuracy—परिशुद्धि।
Accurate—परिशुद्ध।
Accusable—अभियोज्य।
Accusation—अभियोग, अभियोजन।
Accused—अभियुक्त, मुलजिम।
Acid—अम्ल, तेजाब।
Acidic—अम्लीय।
Acidification—अम्लीकरण।
Acidimetry—अम्लमिति।
Acidity—१. अम्लता। २. अम्ल-पित्त।
Acoustic—ध्वनिक।
Acoustics—१. ध्वनिकी। २. श्रुति-व्यवस्था।
Acquisition—अभिग्रहण, अभ्याप्ति, अवाप्ति।
Act— अधिनियम।
Acting—वि० १. कारक। २. कार्यवाहक।
पुं० अभिनय।
Action—क्रिया, व्यापार।
Activation—कर्मण्यन।
Active—सक्रिय।
Active voice—कर्त्तरि प्रयोग, कर्तृ-वाच्य।
Activity—सक्रियता।
Actor—अभिनेता।
Actress—अभिनेत्री।
Acute angle—न्यून कोण।
Adaptation—अनुकूलन।
Additional—अतिरिक्त।
Address—१. पता, बाह्यनाम। २. अभिभाषण। ३. अभिनंदन-पत्र।
Addressee—बाह्यनामिक।
Address of Advocate—अधिभाषण।
Ad hoc committee—तदर्थ समिति।
Adjacent angle —आसन्न कोण।
Adjective—विशेषण।
Adjourned—स्थगित।
Adjournment—स्थगन।
Adjournment motion—स्थगन प्रस्ताव।
Adjudication—१. अधिनिर्णय, न्यायिक निर्णय। २. अधिनिर्णयन।
Adjusted— समंज्जित।
Adjustment—समंजन।
Administration—प्रशासन
Administrative—प्रशासनिक, प्रशासकीय।
Administrator—प्रशासक।
Administrator General—महाप्रशासक।
Admiral—नौसेनाध्यक्ष।
Admiralty—नवाधिकरण।
Admirer—प्रशंसक।
Admission—प्रवेश।
Adolescent—किशोर।
Adopted—अभिगृहीत।
Adopted son—दत्तक।

Adoption—दत्तक-ग्रहण।
Adrenal—अधिवृक्क।
Adulterated—अपमिश्रित, मिलावटी।
Adulteration—अपमिश्रण, घालमेल, मिलावट।
Adultery—जार-कर्म, जिना, व्यभिचार।
Ad valorem—यथा-मूल्य।
Advance—अगाऊ, अग्रिम, पेशगी।
Advent—आगमन।
Adverse—प्रतिकूल।
Advice—१. परामर्श, मंत्रणा, सलाह। २. संज्ञापन। ३. सूचना।
Adviser—मंत्रणाकार।
Advisory Council—मंत्रणा-परिषद्।
Advocate—अधिवक्ता।
Advocate General—महाधिवक्ता।
Aerial—वि० वायव, हवाई। सं० वायवीय।
Aerodrome—हवाई अड्डा।
Aerology—वायु-मंडल-विज्ञान।
Aeronautics—वैमानिकी।
Aeroplane—हवाई जहाज।
Aestheticism—सौंदर्यवाद।
Aesthetics—सौंदर्य-शास्त्र।
Affectation—बनावट।
Affection—अनुरक्ति, अनुराग।
Affectionate gift—प्रसाद-दान।
Affidavit—शपथ-पत्र, हलफनामा।
Affiliation—संबंधीकरण।
Affirmation—अभिवचन, प्रतिज्ञान, प्रतिज्ञापन।
Affirmative—सकारात्मक, स्वीकारात्मक।
Afforestation—वन-रोपण।
Affricate—स्पर्श-संघर्षी।
Aforesaid—उक्त, उपर्युक्त।
Afro-Asia—अफ्रेशिया।
Afro-Asian—अफ्रेशियाई।
After-effect—पश्च-प्रभाव।
Age—१. अवस्था, वय। २. आयु, उमर।
Agency—अभिकरण, साधन।
Agenda—कार्य-सूची, कार्यावली।
Agent—अभिकर्ता।
Aggravation—अतिरेक।
Aggregate—संकलित।
Aggregate Corporation—समष्टि निकाय, समष्टि निगम।
Aggression—१. अग्रधर्षण। २. प्रथमाक्रमण।
Aggressor—१. अग्रधर्षक।
Agitation—आंदोलन।
Aglutination—संश्लेषण।
Agnosticism—१. अज्ञेयवाद। २. अनीश्वरवाद।
Agrarianism—ग्राम्यवाद।

Agreed—अनुबद्ध।
Agreement—१. अनुबंध। २. अनुबंध-पत्र, इकरारनामा। ३. रजामंदी, सहमति।
Agricultural year—कृषि-वर्ष।
Aid de camp— ० डी० कांग।
Air base—हवाई अड्डा, हवाई केंद्र।
Air bath—वायु-स्नान।
Air-conditioned—वातानुकूलित।
Air-conditioning—वातानुकूलन।
Air fortress—हवाई किला।
Air hostess—स्वागतिका।
Air Mail—हवाई डाक।
Air Navigation—विमानन।
Air port—विमान-पत्तन, हवाई अड्डा।
Air route—वायु-मार्ग।
Air stream—अवतरण-पथ, हवाई पट्टी।
Albino—सूरज-मुखी।
Album—चित्राधार।
Alcohol—सुरासार।
Alcoholism—पानात्यय, मदात्यय।
Alert—चौकन्ना।
Algebra—बीजगणित।
Alimentary canal—आहार-नाल, पाचन-नाल।
Alimentary system—आहार-तंत्र, पाचक-तंत्र, पचन-संस्थान।
Alive—जीवित
Alkali—क्षार, खार।
Alkalimetry—क्षार-मिति।
Alkaline—क्षारीय।
Alkalinity—क्षारता, क्षारीयता, खारापन।
Alkaloid—उपक्षार, क्षारोद।
Allegation—१. अभिकथन, कथन। २. आरोप।
Alleged—अभिकथित, कथित।
Allegiance—१. अनुषक्ति। २. निष्ठा।
Allegory—प्रतीक-कथा, साध्यवसान रूपक।
Alliance—मैत्री, संश्रय।
Allied—संश्रित, समवर्गी।
Alligator—मगर
All India Radio—आकाश-वाणी।
Alliteration—अनुप्रास।
Allocation—विनिधान।
Alloted—नियत प्रदिष्ट।
Allotment—नियतन, प्रदेशन।
Allotrope—अपर-रूप।
Allotropy—अपर-रूपता।
Allowance—अभिदेय, भत्ता।
Alloy—मिश्रधातु।
All-party—सर्व-दलीय।
All-rounder—सर्वतोमुखी।
Alluvial—जलोढ़, पुलिनमय।
Alluvial land— कछार।
Alphabet—अक्षर।

Alphabetical order—अक्षर-क्रम।
Alteration—रद्द-बदल, रद्दोबदल, हेर-फेर।
Alternative—अनुकल्प, विकल्प।
Altimeter— तुंगतामापी।
Altitude—१. उन्नतांश। २. ऊँचाई, तुंगता।
Altruism—परहितवाद, परार्थवाद।
Alum—फिटकिरी।
Amalgamation—एकीकरण।
Ambition—उच्चाकांक्षा।
Ambitious—उच्चाकांक्षी।
Ambulance car—अस्पताल गाड़ी, परिचार गाड़ी।
Ambush—घात।
Amendment—संशोधन।
Amenerrhoea—रुद्धार्तव।
Amenity—सुख-सुविधा।
Amentia— अमानसता, बालिश्य, बुद्धि-दौर्बल्य।
Ammonia—१. तिक्ताक्ति। २. नौसादर।
Ammunition—१. आयुधीय, युद्धोपकरण। २. गोला-बारूद।
Amnesty—सर्व-क्षमा।
Amount—१. धन-राशि। २. धनांक।
Amphibia—उभयचर, जल-स्थल-चर।
Amphibian—उभय-चर, जल-स्थलीय।
Amputation—अंगच्छेदन, विच्छेदन।
Amusement—आमोद।
Anachronism—काल-दोष।
Anaemia—रक्त-क्षीणता।
Anaesthesia—निश्चेतन, संवेदन-हरण।
Anaesthesiology—अचैतिकी।
Anaesthesis—अचेतनीकरण, निश्चेतनीकरण।
Anaesthetic—निश्चेतनक, संवेदनहारी।
Analogous—अनुधर्मक, अनुधर्मी।
Analogy—अतिदेश।
Analysis—विश्लेषण।
Analytical—विश्लेषणात्मक, वैश्लेषिक।
Anarchism—अराजकतावाद।
Anarchist—वि० अराजक। पुं० अराजकतावादी।
Anarchy—अराजकता।
Anatomy—शरीर-शास्त्र, शरीर-विज्ञान।
Ancient—प्राचीन।
Anger—क्रोध।
Angina pectoris—हृच्छूल।
Anglo-Indian—अधगोरा।
Angular—कोणिक।
Anhydrous—अजल।
Animal husbandry—पशु-पालन।
Announcement—अभिज्ञापन, आख्यापन, ऐलान।
Announcer—अभिज्ञापक, आख्यापक।

Annual—वि० वार्षिक।
सं० वार्षिकी।
Annuity—वार्षिकी।
Anode—धनाग्र।
Anomalistic year— परिवर्ष।
Anorexia—क्षुधा-अभाव, क्षुधा-नाश।
Anosmia—अघ्राणता, गंध-नाश।
Ant-eater—चींटी-खोर।
Antenatal—जन्म-पूर्व, प्राग्प्रसव।
Anthology—चयनिका।
Anthropo-geography—मानव-भूगोल।
Anthropoid—मानव-कल्प।
Anthropological—मानव-शास्त्रीय।
Anthropologist—मानव-शास्त्री।
Anthropology—मानव-शास्त्र।
Anticipated—प्रत्याशित।
Anticipation—प्रत्याशा।
Anti-climax—१.प्रतिकाष्ठा। २.पतत्प्रकर्ष। (अलंकार)
Anti-diluvial—पूर्व-प्लावनिक।
Antidote—वि० प्रतिकारक, मारक, विषहन। सं० उतार।
Antimony—अंजन, सुरमा।
Antiquarian—पुराविद्।
Antique—पुराकालीन।
Antiquities—पुरावशेष।
Antiquity—पुराणता।
Anti-septic—प्रतिपौतिक।
Antomology—कीट-विज्ञान।
Aorta—महाधमनी।
Apartheid—पृथग्वासन।
Apathy—अरति, उदासीनता।
Ape—वानर।
Aphelion—रवि-उच्च।
Aphrasia—वाग्रोध, वाग्लोप।
Apogee—१. भूम्यूच्च। २. पराकाष्ठा।
Apparatus—उपकरण, यंत्र, साधित्र।
Apparently—प्रतीयमानतः।
Appeal—पुनर्वाद।
Appeasement—१. अपतुष्टि, अभिराधन। २. तुष्टीकरण।
Appellant—पुनर्वादी।
Appellate—पौनर्वादिक।
Appellate order—पौनर्वादिक आज्ञा।
Appended—संलग्न।
Appendix—परिशिष्ट।
Applicable—प्रयोज्य।
Application—१. अर्जी, आवेदनपत्र, प्रार्थनापत्र। २. अनुप्रयोग, अनुप्रयोजन।
Applied—१. अनुप्रयुक्त। २. प्रायौगिक।
Applied arts—व्यावहारिक-कला।
Applied sciences—व्यावहारिक-विज्ञान।
Appointment—नियुक्ति।
Apportionment—अंशापन।
Apprehension—आशंका।
Appropriation—विनियोग, विनियोजन।
Approval—अनुमोदन।
Approver—इकबाली गवाह, भेद-साक्षी।
Aqueduct—जलसेतु, सुरंगिका, सेतु-वाही।
Arbitrage—अंतरपणन।
Arbitrary—मनमाना।
Arbitrator—पंच।
Arborial—वृक्षवासी।
Arboriculture—१. त -रोपण। २. वानस्पत्य।
Arch—तोरण, मेहराब।
Archaeologist—पुरातत्त्वज्ञ, पुरावि ।
Archaeology—पुरातत्व।
Archaeozoic era—आदि-कल्प।
Archipelago—द्वीप-पुंज।
Architecture—वास्तु-कला।
Archives—अभिलेखागार, लेखागार।
Area—क्षेत्र-फल।
Argument—तर्क।
Aristocracy—१. अभिजात-तंत्र, कुलतंत्र, कुलीन-तंत्र। २. अभिजात वर्ग।
Aristotle—अरस्तू।
Arithmetic—अंकगणित, पाटी - गणित, हिसाब।
Armament—हथियारबंदी।
Armaments—युद्धोपकरण।
Armed—आयुध, हथियारबंद।
Armed neutrality—सशस्त्र तटस्थता।
Armistice—अवहार, विराम-संधि।
Armour—कवच, चार-आईना। बख्तर। सन्नाह।
Armoured—कवचित, बख्तरबंद।
Armoured car—कवचित यान, बख्तरबंद गाड़ी।
Arms—आयुध।
Arms Act—आयुध-विधान।
Army—१. फौज, सेना। २. स्थल-सेना।
Arrest—गिरफ्तारी।
Art—कला।
Artery—धमनी।
Art gallery—कला-शाला।
Arthritis—संधि-शोथ।
Article—१. अनुच्छेद, अभिपद। २. धारा। ३. प्रवस्तु।
Articulation—उच्चारण।
Artist—कलाकार।
Artistic—कलात्मक।
Arts—कला-विषय।
Art-therapy—कला-चिकित्सा।
Asafoetida—हींग।
Asbestos—अदह।
Ascending—आरोही।
Ascending node—आरोह-पात।
Ascent—आरोह
A-septic—अपौतिक।
Asphalt—अश्मज़।
Asphyxia—श्वासावरोध।
Aspirant—अभिलाषी, आकांक्षी।
Aspiration—अभीप्सा।
Assault—प्रहार, वार।
Assembly House—सभा-गृह।
Assent——अनुमति।
Assertion—१. दृढ़ोक्ति। २. स्वाग्रह।
Assessee—निर्धारिती।
Assessment—निर्धारण।
Assessor—पंच।
Asset—परिसंपद्, मालमता।
Assigned—अधिन्यस्त, अभ्यर्पित।
Assignee—अधिन्यासी, अभ्यर्पिती।
Assignment—अधिन्यास, अभ्यर्पण।
Assignor—अधिन्यासक, अभ्यर्पक।
Assimilation—आत्मीकरण, स्वांगीकरण।
Association—१. समुदाय। २. सहचार, साहचर्य।
Assumption—१. अभ्युपगम, पूर्वधारण। २. मान्यता।
Assurance—आश्वासन।
Asterism—तारा-पुंज।
Asteroid—क्षु -ग्रह, तारकाभ।
Asthma—दमा, श्वास (रोग)।
Astrology—फलित ज्योतिष।
Astrometry—खगोलमिति।
Astronomy—१. खगोल-विज्ञान, खगोल-विद्या। २. गणित ज्योतिष।
Asylum—आश्रम।
Atlantic—अतलांतक।
Atlas—मानचित्रावली।
At least—अंततः।
Atmospheric pressure—वायु-भार।
Atoll—प्रवाली।
Atom—परमाणु।
Atom bomb—परमाणु बम।
Atomic—पारमाणविक।
Atomic test—परमाणु-परीक्षण।
Atomism—परमाणुवाद।
Atomist—परमाणुवादी।
Atomistics—परमाण्विकी।
Attached—१. अनुलग्न, आसंजित, संलग्न। २. आसक्त।
Attachment—१. आसक्ति। २. कुरकी। ३. संयोजन।
Attack—आक्रमण, हमला।
Attainment—१. उपलब्धि, लब्धिका। २.निष्पत्ति, सिद्धि।

Attemperment—बुझावा।
Attendance officer—उपस्थिति अधिकारी।
Attendance register—उपस्थिति पंजी, हाजिरी बही।
Attestation—१. तसदीक, प्रमाणीकरण। २. साक्ष्यंकन।
Attested—साक्ष्यंकित।
Attitude—अभिवृत्ति, रवैया, रुख।
Attorney—न्यायवादी।
Attorney General—महान्यायवादी।
Attraction—आकर्षण।
Attractive—आकर्षक।
Auction—नीलाम, प्रतिक्रोश।
Audibility—श्रव्यता।
Auditing—लेखा-परीक्षण।
Auditor—अंकेक्षक, लेखा-परीक्षक।
Auditorium—आस्थानी, दर्शक-कक्ष।
Auditory—श्रोत्र-ग्राह्य।
Augment—आगम।
Augmentation—आवर्धन, संवर्धन।
Auricle—१. अलिंद (हृदय का)। २. वहिष्कर्ण।
Aurora Australis—कुमेरु-ज्योति।
Aurora Borealis—मेरु-ज्योति,सुमेरु-ज्योति।
Autarchic, Autarchical—आत्मनिर्भर, आत्म-पूर्ण।
Autarchy—आत्म-निर्भरता, आत्म-पूर्णता।
Authorised—अधिकृत, प्राधिकृत।
Authoritarianism—सत्तावाद।
Authoritative—१.आधिकारिक, २.प्रामाणिका ३. साधिकार।
Authoritatively—साधिकार।
Authority—१. अधिकारी। २. प्राधिकारी। ३. प्राधिकार। ४. अधिकरण्य। ५. आधिकारिकी।
Authority letter—अधिकार-पत्र।
Authorization—प्राधिकरण।
Autobiography—आत्म-कथा,आत्मचरित।
Autograph—स्वाक्षर।
Automatic—स्वचल, स्वचालित।
Automaton—स्वचल।
Autonomous—स्वायत्त, स्वायत्त-शासी।
Autonomy—स्वायत्तता, स्वायत्त-शासन।
Available—प्राप्य।
Avalanche—हिमानी।
Average—औसत, माध्य।
Aviation—विमान-चालन।
Award—पंचाट, परिनिर्णय।
Awkward—भद्दा।
Axe—कुल्हाड़ा।
Axial—अक्षीय।
Axiom—स्वयं-तथ्य, स्वयं-सिद्ध।
Axiomatic—स्वयं-सिद्ध।
Axis—अक्ष, कीली, धुरा, धुरी।
Axle—अक्ष।
Ayes—हाँकारी।
Azimuth—दिगंश।
Azurian—चंवई।

B

Baboon—श्व-वानर।
Baby—शिशु।
Babylove—बाबिल।
Back—पश्च।
Backache—पृष्ठ-शूल।
Backbiting—पैशुन्य।
Backbone—मेरु-दंड।
Background—१. पूर्वपीठिका, पृष्ठभूमि, पृष्ठिका, भूमिका। २. परभाग, पृष्ठाधार। (चित्रकला)
Backing—पृष्ठाधान।
Bacteria—जीवाणु, रोगाणु।
Bad conductor—कुचालक।
Bad land—बंजरभूमि।
Bail—जमानत, प्रतिभूति।
Bailable—प्रतिभाव्य।
Balance—तराजू, तुला, समतुलन।
Balanced—संतुलित।
Balance of payment—भुगतान-तुला।
Balance sheet—आय-व्यय फलक, चिटठा, तल-पट, तुला-पत्र, पक्का-चिट्ठा।
Balancing—संतुलन, सम-तोलन।
Baldness—गंज (सिर का रोग)।
Ballad—गाथा।
Ballad dance—आख्यानक नृत्य।
Ballot—१. गूढ़-पत्र, मत-पत्र, शलाका। २. चिट्ठी।
Ballot box—मतदान पेटिका।
Ballot paper—मत-पत्र, शलाका-पत्र।
Bankrupt—दिवालिया।
Banqueting hall—आहार-मंडप।
Bar—बाध।
Barb—क्षुर।
Barber's saloon—क्षौर-मंदिर।
Bargain—सौदा।
Bargaining—१.सौदाकारी। २.सौदेबाजी।
Barometer—१.वायु-दाब मापक। २. वायु-भार मापक।
Barred—बाधित।
Barred by limitation—अवधि बाधित, तमादी।
Barrier—पारिघ।
Barter—अदला-बदली, वस्तु-विनिमय।
Barysphere—गुरु-मंडल।
Base—१. आधार। २. मूलांश। ३.अड्डा। (जहाजों आदि का)
Base level—अधस्तल।
Basic—आधारिक।
Basic language—आधारिक भाषा।
Basin—थाला, द्रोणी, नदी-तल, नदी-पात्र।
Bat—बल्ला।
Bath—१. स्नान। २. स्वेद (यौ० के अन्त में)।
Bathing suit—स्नान-वस्त्र।
Batholith—अधःशैल।
Bay—उपसागर, खाड़ी।
Beach—पुलिन।
Beacon १. प्रकाश-स्तंभ। २. संकेतक।
Beak—चंचु, चोंच।
Bean—फली।
Beat—स्पंदन।
Beauty—सौंदर्य।
Bed—१. क्यारी। २. बिछौना, बिस्तर। ३. पलंग, शय्या। ४. तल (नदी का)। ५ संस्तर।
Bed rock—आधार-शैल, शैल-संस्तर।
Bed sore—शय्या-व्रण।
Beginning—आरंभ।
Being—सत्ता।
Belief— विश्वास।
Belligerent—परियुद्धक, युद्धकारी।
Bell metal—घंट-धातु।
Belt—पेटी।
Bench—१. न्याय-पीठ। २. पीठ।
Bend— वलनी।
Beneficiary—हिताधिकारी।
Benefit—लाभ।
Bent bar coin—शलाका मुद्रा।
Bequest—उत्तरदान।
Beri beri—वातव, लासक।
Beryl—लहसुनियाँ, वैदूर्य।
Bibliography—संदर्भिका।
Bicameral—द्विसदनात्मक, द्वि-सदनी।
Biennial—द्विवार्षिक।
Bigamy—द्वि-विवाह।
Bigot—कट्टर।
Bilateral—द्वि-पक्षी।
Bile—१. पित्त। २. लार-गद्दी।
Biliary—पैत्तिक।
Bilious—पित्त-रंजक, पित्तारुण।
Bill—१. प्राप्यक, विपत्र। २. विधेयक। २. हुंडी। ४. प्रायद्वीप-खंड।
Bill collector—प्राप्यक समाहर्ता, विपत्र समाहर्ता।
Billiard—अंटा।
Bill of exchange—हुंडी।
Bill of lading—वहन-पत्र।
Bill of rights—अधिकार-पत्र।
Bi-metallic—द्विधातविक।

Bi-metallism—द्विधातु-वाद।
Binocular—द्विनेत्री, दूरबीन।
Binomial—द्विपद।
Bio-chemistry—जीव-रसायन।
Biology—जीव-विज्ञान, प्राणि-विज्ञान।
Bio-physics—जीव-भौतिकी।
Bio-sphere—जीव-मंडल, प्राणी-मंडल।
Birth certificate—जन्म-प्रमाणक।
Birthday—जन्म-दिन।
Birth rate—जनन-गति।
Birth register—जन्म-पंजी।
Bi-section—द्वि-भाजन।
Bison—अरना भैंसा
Bite—काटना।
Bi-weekly—अर्ध-साप्ताहिक।
Black—काला, कृष्ण।
Black earth—काली मिट्टी।
Black gold—काला सोना (पत्थर का कोयला)।
Black-hole—काल-कोठरी।
Black list—काली सूची, वर्ज्य सूची।
Black mail—भयादोहन।
Black market—काला बाजार, चोर बाजार।
Black money—काला धन, दूषित धन।
Black-out—१. चिराग-गुल। २. तमावरण।
Black Sea—कृष्णसागर।
Black water fever—काल-मेह।
Blame—१. अवक्षेप, अवशंसा। २. दोषारोपण।
Blank verse—अतुकांत (काव्य या छंद), अनुप्रासहीन (काव्य या छंद), मुक्त छंद।
Blast furnace—धमन-भट्टी।
Blasting—१. अभिधमन। २. विस्फोटन।
Bleaching—प्रक्षालन।
Blessing—१. आशंसा, आशीर्वाद। २. स्वस्त्ययन।
Blind valley—अंधी घाटी।
Blinking—मुलमुलाना।
Blister—फफोला।
Blizzard—बर्फानी तूफान, हिम-झंझावात।
Blockade—१. घेराबंदी, नाकेबंदी, रोध। २. संरोध।
Blood bank—रक्तदान बैंक।
Blood pressure—रक्त-चाप।
Blood sugar—रक्त-शर्करा।
Blood vessel—शिरा।
Blotting paper—सोख्ता, स्याही-चूस, स्याही-सोख।
Blow-hole—वायु-छिद्र।
Blue—नीला।
Blue print—नील-मुद्र।
Blue printing—नीलिका मुद्रण।
Bluff—धौंस।
Boar—जंगली सूअर।
Boat bridge—नाव का पुल।
Bodice—अंगिया, चोली।
Bodily—कायिक।
Body—१. काया, शरीर। २. निकाय, संस्था।
Body-guard—अंग रक्षक, शिरोरक्षी।
Bogy—हौआ।
Boiling point—क्वथनांक।
Bolt—सिटकिनी।
Bombast—शब्दाडंबर।
Bomber—बम-वर्षक।
Bombing—बम-बारी।
Bona fide—वि० १. सदाशय, सदाशयी। २. सद्भावी। सं० सदाशयता।
Bona vacatia—अस्वामिकता, स्वामीहीनत्व।
Bond—१. ऋण-पत्र। २. बंध-पत्र। ३. मुचलका।
Bond of surety—प्रतिभू-पत्र।
Bone oil—अस्थि-तैल।
Bonfire—होली।
Bonus—लाभांश।
Book-post—पुस्त-डाक।
Border—१. किनारा। २. हासिया। ३. उपांत। ४. सीमा।
Bore—परिबेध।
Boring—परिवेधन।
Borrower—उद्धारणिक।
Boss—अधिपुरुष, मालिक।
Botany—औद्भिदकी, वनस्पति शास्त्र।
Boundary—१. चतु:सीमा, चौहद्दी। २. सीमा। ३. पर्यंत।
Boxing—मुक्केबाजी।
Boycott—बहिष्कार।
Boy scout—बाल-चर।
Bracket—कोष्ठक।
Brag—डींग।
Brain—मस्तिष्क।
Branch—शाखा।
Brass—पीतल।
Bravado—डींग।
Breach—भंग।
Breach of law—विधि-भंग।
Breach of peace—शांति-भंग।
Breach of trust—न्यास-भंग।
Breath—श्वास, सांस।
Breeding—प्रजनन।
Brevity—लाघव।
Bribe—उत्कोच, घूस, रिश्वत।
Bridge—पुल, सेतु।
Brief—संक्षिप्त।
Bright red—सूहा (रंग)।
Brilliantine—शुभ्रक।
Brimstone—गंधकाश्म।
Broadcasting—प्रसारण।
Broadcasting station—आकाशवाणी, प्रसारण-गृह।
Bronze—काँसा।
Bronze age—कांस्य-युग।
Budget—आय-व्ययक।
Buffer state—अंतस्थ राज्य, मध्यवर्ती राज्य।
Bulb—गाँठ।
Bunker—तल-घर, तल-चौकी, दमदमा।
Buoy—गैंदा, प्लाव।
Burden—भार।
Bureaucracy—१. अधिकारी-तंत्र, दफ्तरशाही। २. नौकर-शाही।
Burner—१. कल्ला। २. ज्वालक।
Burning point—ज्वलनांक।
Burnisher—ओपनी, घोटा।
Bust—आवक्ष।
Butter—मक्खन।
Butyrometer—स्नेहमापक।
Bye-election—उप-निर्वाचन।
Bye-law—उपविधि।
Bye-product—उपजात, उपसर्ग, उपोत्पाद।
By law—विधित:।
By virtue of office—पदेन।

C

Cabbage—करमकल्ला।
Cabinet council—मंत्रि-परिषद्।
Cable—समुद्री तार।
Cadema—शोफ।
Cadmium—अरगजी।
Cairn—तुमुली।
Calamity—आपात, विनिपात।
Calculation—परिकलन, हिसाब।
Calculator—गणक, गणित्र, परिकलक।
Calendar—काल-दर्श, दिन-पत्र
Calendar month—पंचांग मास।
Calendar year—पंचांग वर्ष।
Calibration—अंशन, अंश-शोधन।
Caliph—खलीफा।
Calomel—रस-कपूर।
Calorie—उष्मांक।
Calx—भस्मक।
Camel track—ऊँट-पथ।
Camouflage—छद्मावरण, छलावरण।
Camphor— कपूर।
Canal—कुल्या, नहर।
Cancellation—निरसन।
Cancellation of common factor—अपवर्तन।

Cancelled—निरस्त।
Cancer—१. कर्क राशि, सरतान। २. कर्कट रोग, कर्कटार्बुद, सरतान।
Candidate—अभ्यर्थी, उम्मेदवार, प्रत्याशी।
Cane-sugar—इक्षु-शर्करा।
Cannibal—नर-भक्षी।
Cannibalism—नर-भक्षिता।
Cannon—तोप।
Cannon fodder—तोप का ईंधन या चारा।
Canon—अधि-मत।
Cantonment—छावनी।
Canvasser—१. अनुयाचक, उपार्थक। २. मतार्थक।
Canvassing—१. अनुयाचन, उपार्थन, मतार्थन।
Capacity—१. क्षमता, सामर्थ्य। २. धारिता, समाई।
Cape—अंतरीप।
Capillary—वि० कौशिक। सं० केशिका।
Capital—पूँजी।
Capital goods—पँजी-पदार्थ।
Capitalism—पूँजीवाद।
Capitalist—१. पूँजीदार, पूँजीपति। २. पूँजीवादी।
Capital punishment—प्राण-दंड, मृत्यु-दंड।
Capsule—पुटी, संपुट, संपुटिका।
Carat—करात।
Carbon—अंगारक, कार्बन।
Carbon paper—कार्बन।
Cardinal number—गण-संख्या।
Cardinal points—दिग्‌विंदु, दिशा-बिन्दु।
Care—अवधान।
Career—आचरित, जीवक, वृत्तिक।
Caretaker—अभीक्षक, अवधाता।
Caretaker Government—अभीक्षक सरकार, अवधात्री सरकार।
Cargo —पोत-भार।
Cargo-ship—पोत-भारक।
Caricature—१. विकृतिकरण। २. उपहास चित्र।
Carmine—वि० किरमिजी, गुलाली। सं० कियाह, किरमिज, कृमिराग।
Carpel—गर्भ-केसर, स्त्री-केसर।
Carrier—संवाहक।
Cartilage—उपास्थि, कुरकुरी।
Cartoon—व्यंग्य-चित्र।
Cartridge—कारतूस।
Carving—उत्कीर्णन।
Cascade—प्रपाती।
Case—१. अवस्था, दशा। २. स्थिति। ३. खाना, घर। ४. कारक (व्याकरण)। ५. प्रघटन।
Cash balance—रोकड़-बाकी।
Cashed—भुक्त।
Cashier—खजानची, रोकड़िया।
Cash memo—नकदी पुर्जा, रोक-टीप।
Casting vote—निर्णायक मत।
Casual—नैमित्तिक।
Casual leave—आकस्मिक छुट्टी।
Casualty—१. आकस्मिकी। २. समापत्ति।
Catalogue—सूची-पत्र।
Catalysis—उत्प्रेरणा।
Cataract—मोतियाबिंद।
Catarrh—नजला, प्रतिश्याय, प्रसेक, श्लेष्म।
Catchment area—जलग्रह क्षेत्र, जाली, बहेत।
Catechism—प्रश्नोत्तरी।
Catechu—कत्था।
Categorical—निरुपाधि।
Cattle—गोरू।
Cattle-lifter—गोरू-चोर, ढोर-चोर, पशु-चोर।
Cattle pound—पशु-निरोधिका।
Caucasus—काफ।
Causality—कारणिकता।
Cause—कारण।
Cause of action—१. कार्य-हेतु। २. वाद-मूल, वाद-हेतु।
Caustic—क्षारक, दाहक, प्रदाहक।
Caustic silver—क्षारक-रजत, दाहक-रजत।
Caveman—गुहा-मानव।
Cavity—विवर।
Ceasefire—युद्ध-विराम, युद्ध-स्थगन।
Ceded—सत्तांतरित।
Cell—१. कोषाणु, कोशिका (शारीरिक)। २. कोशिका (बिजली की)। ३. कोशिका (वास्तु की)।
Cenozoic era—नव-कल्प।
Censure motion—निंदा-प्रस्ताव।
Census—१. गणना। २. जन-गणना, मर्दुमसुमारी।
Centenary—शतवार्षिकी।
Central—केंद्रीय।
Central Government—केंदीय-शासन, केंद्रीय-सरकार।
Centralisation—केंद्रीकरण।
Centralised—केंद्रित।
Centre—केंद्र।
Centre of gravity—गुरुत्व-केंद्र।
Centric—केंद्रिक।
Centrifugal—अपकेंद्री, केंद्रापसारी।
Centripetal—केंद्राभिमुखी।
Century—शताब्दी, शती।
Cerebral—प्रमास्तिष्क।
Certainty—निश्चय।
Certificate—प्रमाणक, प्रमाण-पत्र।
Certification—प्रमाणन।
Certifier—प्रमाण-कर्ता।
Cerulean—विष्णु-कांति।
Cess—अबवाब, उपकर।
Cession—सत्तांतरण।
Chain—१. शृंखला। २. पर्वतमाला।
Chair—१. कुरसी। २. पीठ।
Chalk—खड़िया, दूधिया।
Chamber of Princes—नरेंद्र-मंडल।
Chancellor—कुलपति।
Change—परिवर्तन।
Channel—१. प्रणाली। २. [illegible]ार।
Chaparral—झाड़ी-वन।
Chapter—अध्याय, प्रकरण।
Character book—आचरण-पंजी।
Characteristic—लाक्षणिक।
Characteristics—अनुभाव।
Charcoal—काठ-कोयला।
Charge—१. अधिरोप, आरोप, दोषारोपण। २. अवधान। ३. कार्य-भार। ४. प्रभार, भार। ५. पद-भार।
Chargeable—परिव्ययनीय।
Charge certificate—भार-प्रमाणक।
Charge-holder—भार-धारक।
Charge sheet—अभियोग-पत्र, आरोप-पत्र, कलंदरा, फर्दजुर्म।
Charitable—धर्मार्थ, पुण्यार्थ।
Charitable endowment—धर्मस्व-निधि, पुण्यार्थ-निधि।
Charter—शास-पत्र।
Chartered—शास-पत्रित।
Chartered accountant—अधिकृत लेखा-पाल, शासपत्रित-लेखापाल।
Chasm—गह्वर।
Chauvinism—अति-राष्ट्रीयता, अति-राष्ट्रीयतावाद।
Chauvinist—अति-राष्ट्रीयतावादी।
Cheap—सस्ता।
Cheat—टपकेबाज।
Cheating—१. वंचना। २. टपकेबाजी।
Chemical—रस-द्रव्य।
Chemistry—रसायन-शास्त्र।
Chief Minister—मुख्यमंत्री।
Child Welfare Centre—शिशु-कल्याण केंद्र।
Chin—ठोढ़ी।
Chlorine—हरिन।
Cholera—हैजा।
Chord—चाप-कर्ण।
Chorus—वृंद-संगीत, समेत-गान, सह-गान।

Chronicle—इति-वृत्त।
Chronograph—काल-लेख।
Chronology—काल-क्रम।
Chronometer—१. काल-मापी। २. देशांतर-सूचक यंत्र।
Chyle—वसापायस।
Cilia—रोमिका।
Cinema—चल-चित्र, चित्र-पट।
Cipher—१. गूढ़-लेख, संकेताक्षर। २. विंदु, शून्य।
Cipher code—१. गूढ़-संहिता।२. संकेत-लिपि।
Cipher procedure—बीजांक-प्रक्रिया।
Circle—१. मंडल। २. वृत्त।
Circle inspector—परिधिक निरीक्षक।
Circuit—परिपथ।
Circular—वि० गोल।
सं० गस्ती चिट्ठी, परिपत्र।
Circulatory—चाक्रिक।
Circulatory system—रक्त-वह तंत्र।
Circumcision—१. खतना। २. मुसलमानी, सुन्नत।
Circumference—परिधि।
Circumscribed—परिगत।
Circumstances—परिस्थिति।
Circumstantial—परिस्थितिगत।
Citation—१. आकारक, उपस्थितिपत्र। २. उद्धरण।
Citizen—नागरिक।
Citizenship—नागरता, नागरिकता।
City Corporation—महापालिका।
City planning—नगर-सन्निवेश।
Civet cat—मुश्क-बिलाव।
Civics—नागरिक शास्त्र।
Civil—१. अर्थ, दीवानी। २. नागर। ३. सभ्य।
Civil case—अर्थ-व्यवहार,दीवानी मुकदमा।
Civil court—अर्थ-न्यायालय, दीवानी अदालत।
Civil disobedience—सविनय अवज्ञा।
Civility—नागरता।
Civilization—सभ्यता।
Civil law—अर्थ-विधि, दीवानी विधि।
Civil marriage—लौकिक विवाह।
Civil procedure—अर्थ-प्रक्रिया।
Civil process—अर्थ-प्रसर।
Civil remedy—अर्थोपचार।
Civil right—नागर अधिकार।
Civil suicide—संन्यास।
Civil war—गृह-युद्ध।
Claim—१. अध्यर्थन। २. दावा।
Clair-audience—अतींद्रिय-श्रवण, परोक्ष-श्रवण।
Clair-voyance—अतींद्रिय-दर्शन। २. अतींद्रिय-दृष्टि।
Clair-voyant—अतींद्रिय-दर्शी।
Clarification—निर्मलीकरण। २ स्पष्टीकरण।
Class—१. कक्षा। २. श्रेणी।
Class-fellow—सहपाठी, सहाध्यायी।
Classification—वर्गीकरण।
Classified—वर्गित, वर्गीकृत।
Class struggle—वर्ग-संघर्ष।
Claw—नखर, पंजा।
Clay—चिकनी मिट्टी, मटियार।
Cleavage—फटन।
Cleaver—स्वच्छक।
Clerk—लिपिक।
Climate—जल-वायु, हवापानी।
Climatology—जल-वायु-विज्ञान।
Climax—१. चरस, चरमावस्था। २. सारांश।
Clinic—निदान-गृह, निदान-शाला, निदानिका।
Clinical—नैदानिक।
Clog—अर्गल।
Closure—संवरण।
Clot—स्कंद।
Cloth—कपड़ा।
Clothes moth—कपड़-कीड़ा।
Cloud—मेघ।
Cloud burst—मेघस्फोट।
Cloudy—१. मेघ-श्याम (वर्ण)। २. मेघाच्छन्न।
Clove—लौंगिया।
Clue—सूत्र।
Clumsy—भोंदा।
Coalition Government—संयुक्त सरकार।
Coaltar—अलकतरा।
Coast-guard—तट-रक्षक।
Cobalt—सविता (तृ)।
Cobra—नाग।
Cocktail-party—पात्र-गोष्ठी।
Cod—स्नेहमीन।
Code—१. संहिता। २. विधायन-संहिता। ३. संकेतकी।
Code of conduct—आचार-संहिता।
Codification—संहिताकरण।
Codified—संहित।
Coercion—१. अवपीड़न। २. बलप्रयोग।
Co-existence—१. सह-अस्तित्व। २. सह-जीवन (वनस्पति विज्ञान)।
Coffee—कहवा।
Coffee-house—कहवाखाना।
Cognizable—अवेक्षणीय, प्रज्ञेय।
Cognizance—१. प्रज्ञान। २. विचाराधिकार।
Cognizant—प्रज्ञाता।
Cohesion— संसक्ति।
Coin—मुद्रा, सिक्का।
Coitus—मैथुन, संभोग।
Cold—जुकाम, प्रतिश्याय, सरदी।
Cold front—शीताग्र।
Cold storage—ठंडा गोदाम, शीतल भंडार, शीतागार, सर्द-खाना।
Cold war—ठंढा युद्ध, शीत युद्ध।
Cold wave—शीत तरंग।
Colic pain—शूल।
Collaboration—सहयोग।
Collapse—१. पात। २. हृदयावसाद।
Collation—१. परितुलन। २. मिलान, समाकलन।
Colleague—सहकर्मी (र्मिन्)।
Collection—१.अनुप्रापण, वसूली, समाहरण। २. सग्रहण। ३. संग्रह।
Collective—१. सामूहिक। २. समुच्चयार्थक। (व्याकरण)
Collectivism—समष्टिवाद।
Collector—समाहर्त्ता।
College—महाविद्यालय।
Colloid—कलिल।
Collusion—१. साठ-गाँठ। २. मिली-भगत।
Cologne-stick—गंध-श्लाका।
Colonial—औपनिवेशिक।
Colony—उपनिवेश, नौअबादी।
Colour bar—रंग-भेद।
Colour blind—वर्णान्ध।
Colour blindness—वर्णान्धता।
Column—१. स्तंभ (सामयिक पत्रों का)। २. टुकड़ी, दस्ता। (सैनिक)
Columnist—स्तंभ-लेखक।
Coma—अतिमूर्च्छा, संन्यास (रोग)।
Combination—१. संयोग, संयोजन। २. समुच्चय।
Combustible— दहन-शील, दह्य।
Combustion—दहन।
Comet—केतु, धूम-केतु, पुच्छल तारा।
Comma—अल्प-विराम।
Command—आदेश, समादेश।
Commander—समादेशक।
Commemoration volume—स्मारक-ग्रंथ।
Commencement—आरंभ।
Commendable—संस्ताव्य।
Commendation—संस्तवन।
Commentary—टीका, वृत्ति।
Commentator—टीकाकार, वृत्तिकार।
Commerce—वाणिज्य।
Commission—आयोग।

Commisionary—प्रमंडल।
Commitment—१. वचन-बद्धता। २. सपुर्दगी।
Committed—सपुर्द।
Commixture—संकर (अलंकार)।
Commode—गमला, शौचासनी
Commodity—पण्य-वस्तु।
Common—१. साधारण। २. सर्व-सामान्य। ३. सार्व-जनिक। ४. सर्व-साधारण।
Common factor—समापवर्तक।
Common law—सामान्य विधि।
Common sense—सामान्य बुद्धि।
Commonwealth—राष्ट्र-मंडल।
Communal—सांप्रदायिक।
Communalism—सांप्रदायिकता।
Communication—१. संगमन। २. संचार। ३. यातायात।
Communique—विज्ञप्ति।
Communism—साम्यवाद।
Community—लोक समाज।
Commutation—१. परिवर्त्तन। २. रूपान्तरण (दंड का)। ३. लघुकरण। ४. परिणाम (अलंकार)।
Company—समवाय।
Comparison—तुलना, मिलान।
Compass—कुतुबनुमा, दिग्दर्शक यंत्र, दिग्सूचक यंत्र, ध्रुव-घड़ी।
Compassion—करुणा।
Compatibility—संगति।
Compendium—सार-संग्रह।
Compensation—प्रतिकर, प्रतिमूल्य, मुआवजा।
Competency—सक्षमता।
Competent—सक्षम।
Competition—प्रतियोगिता।
Compilation—संकलन।
Complaint—परिवाद, फरियाद, शिकायत।
Complainant—अभियोगी।
Complement—संपूरक।
Complementary—पूरक, संपूरक।
Complex—ग्रंथि, मनोग्रंथि।
Complication—उलझन।
Compost—वानस्पतिक खाद।
Compound—समस्त।
Compounder—संमिश्रक।
Compounding—सम्मिश्रण।
Compound interest—चक्र-वृद्धि, शिखा-वृद्धि, सूद-दर-सूद।
Compound sentence—संयुक्त वाक्य।
Comprehensive— व्यापक।
Compression—संपीड़न।
Compromise—समझौता।
Computation—अभिगणन, संगणन।
Concave— अवतल, नतोदर।
Concealment—अपह्नुति (अलंकार)।
Concentration—संकेंद्रण।
Concentration camp—बंदी शिविर, संकेंद्रण शिविर।
Conception—१. अवधारणा। २. संकल्पन। ३. गर्भ-धारण।
Conceptualism—१. प्रत्ययवाद। २. प्रमावाद।
Concession—रिआअत।
Conciliation—संराधन।
Conciliation officer—संराधक अधिकारी।
Concise—मिताक्षर, संक्षिप्त।
Conclusion—निष्कर्ष, परिणाम।
Concomittant—सहवर्ती।
Concrete—१. ठोस। २. मूर्त।
Concubine—रखनी, रखेली, रखैल।
Concurrent—१. संवर्ती। २. समवर्ती।
Condition—१. अवस्था। २. प्रतिबंध, शर्त।
Conditioned—पणित, प्रतिबंधित।
Conditioning—संवलन।
Condolence—संवेदना।
Condominium—१. द्वैराज्य। २. सहराज्य।
Conduct—१. आचरण। २. व्यापार।
Conduction—संवाहन।
Conductivity—संवाहकता।
Cone—१. कोण। २. शंकु।
Confederation—परिसंघ, राज्य-मंडल।
Conference—सम्मेलन।
Confession—१. अपराध-स्वीकरण। २. आत्म-स्वीकृति, स्वीकरण। ३. स्वीकारोक्ति।
Confident—निश्चयी।
Confidential—१. गोपनीय। २ प्रत्ययिक, विश्वस्त।
Confirmation—१. अभिपोषण, दृढ़ायन, पुष्टीकरण। २. संपुष्टि। ३. स्थायीकरण।
Confiscated—जबत, राज्यसात्।
Confiscation—जबती, राज्यसात्करण।
Conflagration—अग्नि-कांड, अवदाह।
Conflict— १. विरोध। २. संघर्ष।
Congenital—सहजात।
Congratulation— बधाई।
Conics—शंकु-गणित।
Conjectural—अटकलपच्चू।
Conjoint Consonant—संयुक्ताक्षर।
Conjugation—युग्मन, संयुग्मन, संयोजन।
Conjunction—युति, योग, संयुति।
Conjunction of stars—योग।
Connected description—सहोक्ति।
Connecting—संवर्धक
Connection—संबंध।
Connective—योगी।
Conquest—जीत, विजय।
Conscience—अंतःकरण, विवेक।
Conscription—अनिवार्य भर्ती।
Consecutive—क्रमागत, क्रमिक।
Consent—सम्मति, सहमति।
Consequence— परिणाम, फल।
Consequent—१. अनुवर्ती। २. परिणामी।
Considerate—सतर्क।
Consideration—१. विचार। २. प्रतिफल।
Consigned—परेषित, प्रेषित।
Consignee—प्रेषिती।
Consigner—परेषक, प्रेषक।
Consignment—परेषण।
Consistancy—संगति।
Consolidated—संहृत।
Consolidation—संहृति।
Consolidation of holdings— चकबंदी।
Consonant— वि० सन्नादी। पुं० व्यंजन।
Conspiracy— अभिसंधि, षडयंत्र।
Constable—सिपाही (पुलिस का)।
Constabulary—रक्षी दल।
Constant—१. अविरत, निरंतर, लगातार। २. स्थिर।
Constipation— कोष्ठबद्धता, कब्जीयत।
Constipative—कोष्ठबद्धक।
Constituency—निर्वाचन-क्षेत्र।
Constituent Assembly—संविधान परिषद।
Constitution—संविधान।
Constitutional— संविधानिक, संविधानी, संवैधानीय।
Constitutionalism—संविधानवाद।
Constitutionalist—संविधानवादी।
Constitutional monarchy—संवैधानिक राजतंत्र।
Constraint—अभिभव, निरोध।
Consumer—उपभोक्ता।
Consumption—उपभोग।
Contact— संसर्ग।
Contagious—संक्रामक, सांसर्गिक।
Contemplation—मनन।
Contemporary—समकालीन, समसामयिक।
Contents— अंतर्वस्तु।
Context—१. प्रसंग। २. संदर्भ।
Contiguity— संसक्ति।
Contiguous—संसक्त।
Continent—महादेश।
Continued—क्रमागत।
Continuity—निरंतरता, सातत्य।
Contortion—व्यावरण।
Contour—परिरेखा।
Contraband—निषिद्ध, वर्जित, विनिषिद्ध।
Contraband trade—विनिषिद्ध व्यापार।

Contract— ठीका, संविदा।
Contract deed—ठीका-पत्र, संविदापत्र।
Contraction—आकुंचन।
Contractor—ठीकेदार।
Contradiction—खंडन, प्रतिवाद।
Contradictory—खंडनक, खंडनात्मक।
Contribution—अंश-दान।
Contributor—अंश-दाता।
Contributory— अंश-दानिक।
Control—नियंत्रण।
Controversion—विवादास्पद।
Convener—संयोजक।
Convention— १. अभि-समय। २. उपसंधि। ३. रूढ़ि। ४. संगमन।
Conventional—१. अभि-सामयिक।२.रूढ़।
Convergence—अभिसरण।
Converging—अभिसारी।
Converse—प्रतिलोम।
Conversely—विलोमतः।
Conversion—मत-परिवर्त्तन।
Convex— उत्तल, उन्नतोदर।
Conveyance—१. अभि-हस्तांतरण, संनयन। २. प्रवहण, वाहन, सवारी।
Conveyancer—अभि-हस्तांतरक, संनयनकार।
Conveyancing—१. संनयन-लेखन।२. संनयन-विद्या।
Convicted—अभिशंसित, अभिशस्त।
Conviction—अभिशंसा, अभिशस्ति।
Convocation—समावर्तन।
Convocation Address—दीक्षांत भाषण।
Convulsion—आक्षेपक, ऐंठन।
Cooling—शीतन।
Co-operation—सहकार, सहकारिता, सहयोग।
Co-operative society—सहकार-समिति।
Co-opted—प्रगृहीत, सहयोजित।
Co-option—प्रग्रहण, सहयोजन।
Co-ordination— एक-सूत्रता, तालमेल, समन्वय।
Co-partner—सहभागी।
Copy— प्रतिलिपि।
Copyist—प्रतिलिपिक।
Copyright—प्रतिक-स्वत्व।
Coral—मूंगा, मूंगी।
Coral island—प्रवाल-द्वीप।
Cord—सूत्र।
Co-relation— अनुबंध।
Cork—काग।
Corner-stone — १. कोण-शिला। २. आधार-शिला, नींव का पत्थर।
Cornice—कगनी, छजली।
Corollary—उपप्रमेय।
Corona— कांति-चक्र, परि-मंडल।
Coronation—राज्याभिषेक।
Corporated—निगमित।
Corporation— १. निगम, श्रेणी। २. महानगर-पालिका, महापालिका।
Corporation aggregate—समष्टि-निकाय।
Corporation sole— एकल निगम।
Corpuscle— कणिका।
Corrected— शोधित।
Correction— शोधन, संशोधन।
Corrective—संशोधक।
Correspondence—चिट्ठी-पत्री।
Correspondent—संवाद-दाता।
Corridor—गलियारा।
Corroboration—परिपुष्टि।
Corrosion—संक्षारण।
Corrosive—संक्षारक।
Corrupt—प्रदुष्ट, भ्रष्ट।
Corruption—प्रदोष, भ्रष्टाचार।
Corundum—कुरुविंद।
Co-sharer—सहांशी।
Cosmetics—अंगराग, शृंगार-सामग्री।
Cosmic—विश्वक, ब्रह्मांडीय।
Cosmic rays—अंतरिक्ष किरण, ब्रह्मांड किरण।
Cosmism—विश्ववाद।
Cosmography—सर्ग-लेख।
Cosmology—सृष्टि-विज्ञान।
Cosmonaut—अंतरिक्ष-यान।
Cosmopolitan—सार्वभौम, सार्वभौमिक।
Cost—परिव्यय, लागत।
Cost of management—प्रबंध-व्यय।
Cost of suit—वाद-व्यय।
Costs—अर्थ-दंड, हरजाना।
Cottage industry—कुटी उद्योग।
Cough—खाँसी।
Council—परिषद।
Councillor—पारिषद।
Counsel General—महावाणिज्य दूत।
Counteraction—प्रतिकरण, प्रतिकार।
Counteractive—प्रतिकारिक।
Counter-attack—प्रत्याक्रमण।
Counter-balance—प्रति-तुलन।
Counter-charge—प्रत्यारोप।
Counter-exception—प्रतिपसव।
Counterfeit—कूट, प्रतिरूप।
Counterfeiter—प्रतिरूपक।
Counterfoil—प्रति-पर्ण।
Counter-revolution—प्रति-क्रांति।
Counterseal—प्रतिमुद्रांकन।
Countersigned—प्रतिहस्ताक्षरित।
Countersigning—प्रतिहस्ताक्षरण।
Counting—गणन, गिनना।
Coupling—युग्मन।
Coupon—पणिका।
Courage—साहस।
Course—१. क्रमक। २. पाठ्य-क्रम।
Court—अदालत, कचहरी, न्यायालय।
Court fee—अधिकरण-शुल्क, न्याय-शुल्क।
Court Inspector—व्यवहार-निरीक्षक।
Court Martial—सैनिक न्यायालय।
Court Officer—आधिकरणिक।
Court of records—अभिलेख-अधिकरण।
Court of wards—प्रतिपालक अधिकरण।
Covenant—प्रसंविदा।
Cover—आवरण-पृष्ठ।
Crab—केंकड़ा।
Crane—उत्तोलक, उत्तोलक यंत्र।
Crater—ज्वाला-मुख।
Crater lake—ज्वाला-मुख झील।
Cream—मुलतानी।
Creation—सृष्टि।
Credential—प्रत्ययवादी।
Credentials—प्रत्यय-पत्र।
Credit—वि० धन।
सं० १. ऋण। २. साख।
Credit sale—उधार विक्रय।
Credit side—ऋण-पक्ष, धन-पक्ष।
Creeping—विसर्पी।
Crematorium—१. दाह-गृह। २. श्मशान।
Cricket—गेंद-बल्ला।
Criminal—१. अपराधशील। २आपराधिक।
Criminal Procedure—आपराधिक प्रक्रिया।
Criminology—अपराध विज्ञान।
Crimson—वि० किरमिजी, सताखुई।
पुं० किरमिज।
Criterion—कसौटी।
Crocodile*—घड़ियाल।
Crocodile tears—मकराश्रु*, मगरमच्छ के आँसू।
Croon—मिस्की।
Crop—फसल।
Cross-breeding—अन्योन्य प्रजनन, संकरण।
Cross-examination—प्रति-परीक्षण।
Cross-fertilization—अपर-निषेचन।
Cross-reference—अन्योन्य संदर्भ, प्रत्याभिदेश।
Crossword—वर्ग-पहेली।
Crude—अन-गढ़।
Crystal— १. क़लम, केलास, रवा। २. बिल्लौर, स्फटिक।

---

*Crocodile वास्तव में घड़ियाल है। परन्तु घड़ियाल और मगर का ठीक अन्तर न समझने के कारण Crocodile tears के लिए भूल से 'मकराश्रु' शब्द बना लिया गया है।

Crystallization—कैलसन, मणिभीकरण।
Cube—घन।
Cube measure—घन-मान।
Cube root—घन-मूल।
Cubism—घन-वाद।
Culpable—अपराधिक।
Cult---पंथ।
Cultivated—कृष्ट, कृषित।
Cultivation—१. कृषि-कर्म। २. संवर्धन।
Culturable land--खेती-भूमि।
Cultural—सांस्कृतिक।
Culture—१ संवर्धन,। २. संस्कार। ३. संस्कृति।
Culvert—पुलिया।
Cumulated—संयुत, समुच्चित।
Cumulation—संयुति, समुच्चय।
Cuneiform—कीलाक्षर।
Cupel—खपरा, खपरिया, खर्पर।
Curable—चिकित्स्य।
Curator—संग्रहालयाध्यक्ष।
Curiosity—कुतूहल।
Curious—कुतूहली।
Currency—चल-मुद्रा, चलार्थ, मुद्रा।
Current—१ चलित, प्रचलित। २. सांप्रतिक। सं० धारा, प्रवाह, वहा।
Current account—चलता खाता।
Currentmeter—धारा-वेगमापी, वहामापक, वहामापी।
Curriculum—पाठ्य-चर्या।
Curtain—परदा।
Curve—१ वक्र-रेखा। २. मो ।
Custodian—अभिरक्षक।
Custody— १. अभिरक्षा, परिरक्षा। २ हिरासत, हाजत।
Customary— आचारिक।
Cut—कटौती।
Cut motion—कटौती का प्रस्ताव।
Cycle—चक्र।
Cyclic—चक्रीय।
Cyclic order—चक्र-क्रम।
Cyclone—चक्रवात, बवंडर।
Cyclonic rain—चक्रवातीय वर्षा।
Cyclostyle—चक्र-लेखित्र।

D

Daily—दैनिक।
Dairy—दुग्ध-शाला।
Dam—बाँध, रोध।
Damages—क्षति-मूल्य।
Dark age—अंधकार युग।
Date—तारीख, तिथि, दिनांक।
Dated—तिथित।
Day-dream—दिवा-स्वप्न।
Dead letter—अज्ञात-नामिक-पत्र, अनाम-पत्र।
Dead-lock—गति-रोध, जिच।
Deal—अर्थ-बंध।
Dean of faculty—संकायाध्यक्ष।
Dearness allowance—मँहगाई।
Death-bed—मृत्यु-शय्या।
Death duty—मृत्यु-कर।
Death rate—मृत्यु-दर, मरणगति।
Death roll—मृत्यु-संख्या।
Debatable—विवाद्य, संभाष्य।
Debate—वाद-विवाद, संभाषा।
Debenture—ऋण-प ।
Debit—विकलन।
Debris—मलवा।
Debt—ऋण।
Decade—दशक।
Decantation— नियारना।
Decease—प्रमीति।
Deceased—प्रमीत।
Decentralization—विकेंद्रीकरण।
Deception—कपट, छल।
Decimalization—दशमलवकरण।
Decimal system—दशमिक प्रणाली।
Decision—१. निर्णय। २. विनिश्चय।
Decisive—निर्णयात्मक।
Declaration—घोषणा, प्रख्यापन।
Declension—रूप-साधन।
Decline—ह्रास।
Decoction—काढ़ा, क्वाथ, जोशाँदा।
Decomposition—सड़न।
Decontrol—विनियंत्रण।
Decoration—अलंकरण, सजाना, सजाव।
Decorative art—सज्जा-कला।
Decreasing—ह्रीयमान।
Decree—आज्ञप्ति।
Decrement—ह्रास।
Dedication—समर्पण।
Deduction—१. अभ्युपगम। २. निगमन।
Deed—दस्तावेज, विलेख।
Deed of gift—दान-पत्र।
Deem—समझना।
Deep carmine—अलतई।
De facto—वस्तुतः।
Defalcation—खयानत।
Defamation—मानहानि।
Defect—१. त्रुटि। २. दोष।
Defence—१. प्रतिरक्षा, बचाव। २. सफाई।
Defence witness—सफाई का गवाह।
Deferment—आस्थगन।
Deferred—आस्थगित।
Deficit—१. अववर्त्त, कमी। २. घटती, घटी, घाटा।
Defined—परिभाषित।
Definite—निश्चित।
Definition—परिभाषा।
Deflation—अवस्फीति, विस्फीति।
Deforestation—निर्वनीकरण, वन-कटाई।
Defraction—व्याभंग।
Defraying—अदायगी।
Degenerated—अपजात।
Degeneration—आपजात्य।
Degradation—कोटिच्युति।
Degraded—कोटिच्युत।
Degree—१ अंश। २. अशांश। ३. कला।
Dehydrated—निर्जलित।
Dehydration—निर्जलीकरण, विजलीकरण।
Deism—प्रकृति-देव-वाद।
De jure—विधितः।
Delegation—प्रतिनिधि-मंडल।
Deletion—लोपन, विलोपन।
Deliberation—विमर्श।
Delimitation—परिसीमन।
Delineation—रेखाचित्र।
Delinquency—अपचार।
Deliquent—प्रस्वेद।
Deliquescence—प्रस्वेदन।
Delirium—प्रलाप।
Delivery—१. दाति, संप्रदान। २. प्रसव।
Deluge—प्रलय।
De lux edition—राज-संस्करण।
Demand—१. अभियाचना। २. माँग।
Demarcated—सीमांकित।
Demarcation—सीमांकन।
Dementia—बुद्धि-भ्रंश, मनो-भ्रंश।
Demilitarisation—असैन्यीकरण, विसैन्यीकरण।
Democracy—लोक-तंत्र।
Democratic—लोक-तांत्रिक।
Demography—जन-विद्या, जनांकिकी।
Demonology—पैशाचिकी।
Demonstration—१. उपपादन। २ निदर्शन। ३. प्रदर्शन।
Demonstrative—प्रदर्शक, प्रदर्शनात्मक, प्रादर्शनिक।
Demonstrator—१. उपपादक। २. निदर्शक। ३. प्रदर्शक।
Demulcent—शामक।
Demmrage—विलंब-शुल्क।
Denatured—अपहृत।
Dengue—दंडक-ज्वर।
Dentist—दंत-कार।
Dentistry—दंत-कारी, दांतिकी।
Denudation—अनावृतीकरण।
Department—विभाग।
Departmental—विभागीय।

Departure—प्रस्थान।
Dependancy—आश्रित-राज्य।
Depilatory—विलोमक।
Deportation—विपत्तन।
Deposit—निक्षेप।
Deposited—अभिन्यस्त, निक्षिप्त।
Depreciation—अर्घ-पतन, मूल्य-ह्लास।
Depreciation fund—मूल्य-ह्लास-निधि।
Depressed—दलित, पद-दलित।
Depressed classes—दलित-वर्ग।
Depression—१. अवनमन, अवपात। २. प्रावसादन।
Deprived—वंचित।
Deputation—१. प्रतिनिधान। २. शिष्ट-मंडल।
Deputed—प्रतिनियुक्त।
Deputy Commissioner—उपायुक्त।
Derangement—क्रम-भंग।
Derivation—निरुक्ति, व्युत्पत्ति।
Derivative—व्युत्पत्तिक।
Derogation—१. अपकर्ष। २. अप्रतिष्ठा।
Descendant—वंशज।
Descending—अवरोही।
Descending node—अवरोहपात केतु।
Descent—उद्भव।
Description—वर्णन।
Desert—मरु-स्थल।
Deserted—परित्यक्त।
Deserter—अपसरक।
Desertion—१. अभित्याग। २. अपसरण।
Design—अभिकल्प, तरह, परिरूप, बनत, भाँत।
Designated—पदनामित।
Designation—अभिधान, पदनाम, पद-संज्ञा।
Designer—१. अभिकल्पक। परिरूपक। २. रूपांकक।
Designing— अभिकल्पन, रूपांकन।
Despatch book—प्रेषण-पुस्तक।
Despatch register—जावक।
Despondency—विमाद।
Despot—निरंकुश।
Destiny—नियति।
Destroyer—वि० विनाशी।
पुं० विध्वंसक (जहाज)।
Desulphurization—विगंधकीकरण।
Detached—अनासक्त।
Detachment—अनासक्ति।
Detention—निरोध।
Detenu—नजर-बंद।
Determination—अवधारण, निश्चय।
Determinism—नियति-वाद।
Determinist—नियतिवादी।
Detonation—प्रस्फोटन।
Detonator—प्रस्फोटक।
Detritus—मलबा, विखंड राशि।
Devaluation—अवमूल्यन।
Development—१. अभिवर्धन, अभिवृद्धि। २. विकास।
Deviation—विचलन।
Devotion—भक्ति।
Dew—ओस।
Dew-point—ओसांक।
Diabetes—मधु-मेह।
Diacritical mark—विशेषक-चिह्न।
Diagnosis—निदान, रोग-निदान।
Diagonal—वि० विकर्ण।
सं० विकर्ण।
Diagonally—विकर्णतः।
Diagram—आरेख, रेखा-चित्र।
Dialect—उपभाषा, बोली, विभाषा।
Diamond Jubilee—हीरक जयंती।
Diaphoretic—प्रस्वेदक, स्वेदक।
Diarchy—१. द्वितंत्र, द्वैध-शासन। २. द्वि-दलशासन प्रणाली।
Diarrhoea—अतिसार।
Diary—दैनिकी।
Dice—पासा।
Dictator—अधिनायक, तानाशाह।
Didacticism—उपदेश-वाद।
Diet—भोजन।
Dieted—भोजन-ग्राही।
Dietetics—आहार-विज्ञान।
Difference—अंतर।
Different—भिन्न।
Difficult—कठिन।
Difficulty—कठिनाई।
Digression—१. उत्क्रम। २. विषयांतर।
Dilemma—धर्म-संकट।
Dilution—तनूकरण।
Dimension—१. आयाम। २. परिमाप। ३. विमा।
Dimensional—विमीय।
Diminutive—१. अल्पक। २. तुच्छार्थक।
Diphtheria—रोहिणी।
Diploma—पदवी-पत्र।
Diplomacy—कूट-नीति।
Direct—प्रत्यक्ष।
Direction— १. अभिदिशा, दिशा। २. निदेश, निदेशन।
Directive—निदेश, निदेशन।
Director—निदेशक।
Directorate—निदेशालय।
Direct speech—स्पष्ट-कथन।
Direct tax—प्रत्यक्ष-कर।
Disaffection—अपरक्ति, अपराग।
Disarmament—निरस्त्रीकरण।
Disc—१. चकती। २. तवा। ३. बिम्ब, मंडलक।
Discharge—१. अवरोपण। २. उन्मोचन, उन्मुक्ति। ३. निर्वहण, पालन। ४. प्रस्राव।
Disciple—शिष्य।
Disciplinary—अनुशासनिक।
Discipline—अनुशासन, विनय।
Discovery—आविष्कार।
Discretion—संविवेक, स्वविवेक।
Discretionary—विवेकाधीन।
Discrimination—भेद-भाव, विभेद।
Discussion—वाद-विवाद।
Disease—रोग, व्याधि।
Disgrace—अपमान।
Disguise—वेश।
Dishonesty—अनार्जव, वेईमानी।
Dishonouring—अनादरण।
Disinfectant—संक्रमण-नाशक।
Disintegration—विघटन।
Dismissal—पद-च्युति, बरखास्तगी।
Dismissed—१. खारिज। २. पदच्युत।
Disobedience—अवज्ञा, आज्ञा-भंग।
Disparity—असमानता।
Displaced—अभिक्रांत, उद्वासित, विस्थापित।
Displacement—अभिक्रांति, उद्वासन, विस्थापन।
Disposal—१. निपटान निस्तारण। २. निसर्ग। ३. समापन।
Disposition—१. मिजाज, स्वभाव। २. चित्त-वृत्ति, प्रवृत्ति। ३. शील। ४. व्यवस्था।
Dispute—विवाद।
Disputed—विवादित।
Disregard—१. अवमान। २. अवहेलन।
Dissatisfaction—असंतोष।
Dissection—व्यवच्छेद।
Dissent—विमत, विसम्मति।
Dissertation—१. मत-बंध। २. शोध-बंध, शोध-निबंध।
Dissimilar—विसदृश।
Dissimilation—विषमीकरण।
Dissolved—विघटित।
Distillation—आसवन।
Distilled—आसुत।
Distiller—आसवक।
Distillery—आसवनी।
Distinct—प्रभिन्न, भिन्न।
Distinction—१. प्रभिन्नता। २. प्रभेद।
Distinctive—प्रभेदी।
Distribution of labour—श्रम-विभाजन।
Distributor—वितरक।
Distributory—वितरक-नदी।
Ditch—खाई।

Diver—गोताखोर।
Divergence—अपसरण, अपसृति।
Dividend—लाभांश।
Division—१. भाग। २. विभाग। ३. प्रखंड। ४. भाजक, हार। ५. वाहिनी (सेना की)।
Divisor—भाजक।
Divorce—तलाक, विवाह-विच्छेद।
Dock—गोदी।
Doctrine—मत, सिद्धांत।
Doctrine of Universals—विश्वक सिद्धांत।
Document—दस्तावेज, प्रलेख, लेख्य।
Documentary—१. लिखित। २. लेख्य। ३. दस्तावेजी।
Documentary film—वृत्त-चित्र।
Documentation—प्रलेख-पोषण।
Dogma—अततिम।
Dogmatic—मताग्रही।
Dogmatism—१. आदेशवाद। २. मताग्रह।
Dome—गुंबद।
Domestic science—गार्हस्थ विज्ञान।
Domicile—अधिवास।
Domiciled—अधिवासी।
Dominion—अधिकार-क्षेत्र।
Donation—दान, दत्त।
Doomsday—कयामत।
Dormancy—तंद्रा, प्रसुप्ति।
Dormant—अनुद्भूत, प्रसुप्त, सुप्त।
Dose—ऊँघ।
Dosing—ऊँघना।
Double member constituency—द्वि-सदस्य निर्वाचन क्षेत्र।
Draft—१. खाका। २. प्रारूप, प्रालेख, मसौदा। ३. धनादेश। ४. हुंडी। ५. पांडु-लेख।
Drafting—पांडु-लेखन।
Draftsman—पांडु-लेखक, नकशा-नवीस, मान-चित्रक।
Drama—नाटक।
Dramatic—नाटकीय।
Drawal—सकारी।
Drawee—आदेशिती।
Drawer—आग्राहक, आगृहीत।
Drawing—१. आलेख, आलेखन, लेखन। २. लेख्य। ३. रेखा-चित्र, नकशा। ४. आग्रहण।
Dread—त्रास, विभीषिका।
Dream—स्वप्न।
Dreamer—स्वप्नदर्शी।
Dress—परिच्छद, पोशाक।
Dressing—१. प्रतिसारण। २. प्रसाधन।
Dressing room—१. प्रतिसारण-शाला। २. वस्त्रागार।
Drift—१. अपवहन, अपवाह। २. बहाव।
Drink—१. पेय। २. पानीय।
Drizzle—झीसी, फुहार।
Drop—बूँद, बिंदु।
Dropper—बिंदुक।
Dropping—अवपातन।
Drought—सूखा।
Drug—ओषधि।
Dry—सूखा।
Dry dressing—निर्जल प्रतिसारण।
Dry farming—निर्जल खेती, सूखी खेती।
Dry fruit—वान।
Dry washing—सूखी धुलाई, निर्जल धुलाई।
Dualism—द्वैतवाद।
Dualist—द्वैतवादी
Ductile—तन्य, प्रत्यस्थ।
Ductility—तन्यता, प्रत्यस्थता।
Due—१ अपेक्षित। २. देय। ३. प्राप्य ४. दातव्य।
Dues—१. देय। २. प्राप्य।
Duet—जुगलबंदी, युगल-गान, दुगाना।
Dugong—गवय, हस्ति-मकर।
Dump—खत्ता, गंज।
Dumping—१. गंजाई। २. पाटना,पटाई।
Duplicate—द्वितीयक।
Duration—भोग-काल।
Dust din—कूड़ा-कोठ।
Dusting—धूलन।
Dust-well—धूल-कूप।
Dutiable—शुल्कार्ह।
Duty—१. कर्तव्य। २. तट-कर, सीमा-शुल्क।
Dynamic—गतिक।
Dynamics—गति-विज्ञान।
Dysentry—पेचिश, प्रवाहिका।
Dysmenonrhoea—कष्टार्तव।

E

Eager—उत्सुका
Eagerness—उत्सुकता
Eal—सर्प-मीन।
Ear-drum—कर्ण-पटह, कर्ण-मृदंग।
Earned—अर्जित।
Earthquake—भूकंप।
Easement—परिभोग, सुखभोग।
Easy chair—आराम-कुर्सी, सुखासन।
Ebony—आबनूस।
Eccentric—वि० उत्केन्द्र, उत्केन्द्रक, विमध्य। सं० १. उत्केन्द्र। २. सनकी।
Eccentricity—१. उत्केन्द्रता, विमध्यता। २. सनक।
Echo—अनुनाद, गूँज, प्रतिध्वनि।
Echo word—प्रतिध्वनिक शब्द।
Eclipse—उपराग, ग्रहण।
Eclipse (lunar)—चन्द्र-ग्रहण।
Eclipse (partial)—खंड-ग्रहण।
Eclipse (solar)—सूर्य-ग्रहण।
Ecliptic—क्रांतिवृत्त, रविमार्ग।
Ecology—परिस्थिति-विज्ञान।
Economic—आर्थिक।
Economic Geography—आर्थिक भू-विज्ञान।
Economics—अर्थ-शास्त्र।
Economist—अर्थ-शास्त्री।
Economy—किफायत।
Ecstasy—१. अत्यानंद। २. हर्षोन्माद। ३. हाल (धार्मिक तन्मयता)।
Eczema—पामा।
Edentate—अनग्रदंत।
Edible—खाद्य।
Editing—संपादन।
Edition—आवृत्ति, संस्करण।
Editor—संपादक।
Education—शिक्षा।
Educational—शैक्षणिक, शैक्षिक।
Educationist—शैक्षिक।
Effect—प्रभाव।
Effective—प्राभाविक।
Efficiency—दक्षता निपुणता, प्रगुण।
Efficiency bar—कौशल-बाध, दक्षता-रोध।
Effort—प्रयत्न।
Ego—अहं।
Egoism—१. अस्मिता। २. अहंकार।
Egotism—अहंकार, अहंमन्यता।
Eight-wheeler—अठ-पहिया।
Elastic—प्रायस्थ।
Elasticity—प्रायस्थता।
Elder—वृद्ध।
Elderman—नगर-वृद्ध।
Elected—निर्वाचित।
Election—निर्वाचन।
Election petition—चुनाव-याचिका।
Electoral College—निर्वाचक-मंडल।
Electorate—निर्वाचक।
Electricity—बिजली।
Electrolysis—विद्युत्-विश्लेषण।
Electrometer—विद्युत् मापक।
Electroscope—विद्युद्दर्शी।
Element— तत्त्व।
Elementary—आरंभिक।
Elevation—१. उत्थान, उठान, उत्सेध। २. उन्नयन। ३. उच्चता, उत्सेध। ४. उच्चालन।
Elevator—उच्चालक।
Eligible—पात्र।
Elocution—वक्तृत्व-कला।

Elongation—दीर्घीकरण।
Elucidation—स्पष्टीकरण।
Emanation—अंश-विभूति।
Emancipation—१. उद्धार। २. मुक्ति।
Embankment—तट-बंध, पुश्ता, बाँध।
Embargo—१. प्रतिरोध, घाट-बंदी। २. निषेध, रोक।
Embellishment—अलंकरण, परिष्करण।
Embezzlement—अपहार, गबन।
Embryo—भ्रूण।
Embryology—भ्रूण-विज्ञान, भ्रौणिकी।
Emergency—१. आपात। २. हंगामा।
Emergent—१. आपातिक, आपाती। २. हंगामी।
Emery paper—बलुआ कागज, रेगमाल।
Emission—उत्सर्जन।
Emphasis—बलाघात।
Empirical—आनुभविक।
Empiricism—प्रत्यक्षवाद।
Employed—अधियुक्त।
Employee—अधियुक्ती।
Employer—अधियोक्ता, नियोक्ता।
Employment—अधियुक्ति, अधियोजन।
Employment bureau—अधियोजनालय।
Employment exchange—नियोजनालय।
Emulation—स्पर्धा।
Emulsification—पायसीकरण।
Emulsion—पायस।
Enactment—अधिनियमन, विधायन।
En bloc—समूहतः।
Encirclement—घेरा-बंदी।
Enclave—अंतरावर्त।
Enclosed—१. परिवेष्ठित, संवेष्ठित, समवृत। २. अनुलग्न।
Enclosure—१. घेरा। २. समावरण। ३. अनुलग्नक, संलग्नक, सह-पत्र।
Encounter—मुठ-भेड़।
Encroachment—अतिक्रमण, अतिसर्पण।
Encumbered—भारित।
Encumbrance—भार।
Encyclopaedia—विश्व-कोश।
End—अंत।
Endemic—स्थान-पदिक।
Endiometer—वायु-मापी।
Endiometry—वायु-मिति।
Endogamy—सवर्ण-विवाह।
Endogen—अंतर्जात।
Endomosis—रसापकर्षण।
Endorsed—पृष्ठांकित।
Endorsement—पृष्ठांकन।
Endowment—१. धर्मस्व। २. स्थायी-निधि।
Enema—अनुवास, वस्तिकर्म।
Energy—ऊर्जा।
Engagement—१. आबंध, वचन-बंध। २. नियुक्ति। ३. परियुक्ति।
Engima pectoris—उर-शूल।
Engine—इंजन।
Engineer—अभियंता, अभियांत्रिक।
Engineering—वि० अभियांत्रिक। सं० अभियंत्रण, अभियांत्रिकी, यंत्रशास्त्र।
Engrave—उकेरना।
Engraving—उकेरी।
Enlarged—परिवर्धित।
Enlargement—परिवर्धन।
Enquiry—परिप्रश्न, पूछ-ताछ।
Enquiry office—पूछ-ताछ घर।
Enrolment—नाम-निवेश।
Ensign—पोत-ध्वज।
Ensuant—अनुभाव।
Entente—समहित।
Entered—अनुविष्ट, निविष्ट।
Enterprise—१. उद्यम। २. साहस।
Enterpriser—१. उद्यमी। २. साहसी।
Enterprising—आरंभी।
Entertainment—आमोद-प्रमोद, मनोरंजन।
Entertainment tax—मनोरंजन-कर।
Entitled—अधिकारी।
Entry—१. अनुवेश, इंदराज, निविष्ट, प्रविष्टि, लेखी। २. प्रवेश।
Enumeration—परिगणन।
Enumerator—परिगणक, गणनाकार।
Envy—असूया।
Epicentre—अधिकेन्द्र, उत्केन्द्र, कंप-केंद्र।
Epidemic—मरक, मरी, महामारी।
Epidemicology—मरक-विज्ञान, महामारी-विज्ञान।
Epigraph—पुरालेख।
Epigraphist—पुरालेखविद्।
Epigraphy—पुरालेख-शास्त्र।
Epilepsy— अपस्मार, मिरगी।
Epitaph—समाधि-लेख।
Epitheleum—उप-कला।
Epoch—अनुयुग।
Equal—सम, समान।
Equality—समता।
Equation—समीकरण।
Equator—निरस,भूमध्य-रेखा ,विषुवत् रेखा।
Equilateral—सम-भुज।
Equilibrium—साम्यावस्था।
Equipment—उपस्कर, साज-समान, प्रसाधन, सज्जा।
Equipped—सज्जित।
Equitable—साम्यामूलक, साम्यिका।
Equivalent—वि० एकार्थक, समानार्थक। सं० तुल्यांक।
Era—कल्प।
Erosion—कटाव।
Errata—शुद्धि-पत्र।
Error—भूल।
Errors and omissions—भूल-चूक।
Erruption—स्फोट।
Escheat—वि० राजग, राजगामी। स० नजूल, प्रत्यापत्ति।
Esoteric—१. गुह्य। २. दीक्षणीय।
Espionage—गुप्त-चर्या।
Essay—निबंध।
Essence—सार।
Essential oil—गंध-तैल, गंधसार तेल।
Established—सिद्ध।
Establishment—१. संस्थापन, स्थापन, स्थापना। २. अधिष्ठान।
Estate—भूमि।
Estate duty—भू-शुल्क।
Estimate—१. अनुमान। २. तखमीना। ३. प्राक्कलन।
Estimated—अनुमित।
Estimation—१. आकलन, आगणन, प्राक्कलन। २. कूत। ३. मूल्यांकन।
Estuary—सागर-संगम।
Etcetera—आदि, इत्यादि, वगैरह।
Eternal—शाश्वत।
Ether—आकाश।
Ethics—१. आचार-शास्त्र। २. नीति-शास्त्र।
Etiology—निदान-शास्त्र,हेतु-विज्ञान, हेतुकी।
Etymology—१. निरुक्त, निरुक्ति। २. व्युत्पत्ति। ३. व्युत्पत्ति-विज्ञान।
Eucalyptus—गंध-सफेदा।
Eunuch—हिंजड़ा।
Evacuee—निष्क्रमिती, निष्क्रांत।
Eve—हौआ।
Even—सम।
Evening party—सांध्य-गोष्ठी।
Eviction—अधिनिष्कासन।
Evidence—१. गवाही, साक्षी। २. प्रमाण।
Evolution—विकास, विवर्त्तन।
Exaction—आहरण।
Exaggerated—अतिरंजित।
Exaggeration—१. अतिरंजन। २. अतिशयोक्ति, अत्युक्ति।
Examination—परीक्षा।
Examined—परीक्षित।
Examinee—परीक्षार्थी।
Examiner—परीक्षक।
Examining—१. परीक्षण। २. समीक्षा।
Example—उदाहरण।
Excavation—उत्खनन, खोदाई।
Exceeding—अधिक, समधिक।
Except—अतिरिक्त, सिवा।
Exception—अपवाद।

Exceptional—अपवादिक।
Excess—अतिरिक्त।
Excessive—अतिशय, अत्यधिक।
Excess profit—अतिरिक्त-लाभ।
Exchange—१. मिलाप-केंद्र। २. विनिमय।
Excise duty—आबकारी शुल्क, उत्पादन शुल्क।
Excited—उत्तेजित।
Excitement—उत्तेजना।
Exclave—बहिरावर्त।
Exclusion—अपवर्जन।
Exclusive—एकांतिक, ऐकांतिक।
Ex-convict—पूर्वापराधी।
Excursion—परिमार्गन, सैर।
Executed—निष्पन्न।
Execution—१. इजरा। २. निष्पत्ति, निष्पादन।
Executive—कार्य-पालिका।
Executor—निर्वाहक, निष्पादक।
Exemption—विमुक्ति।
Exercise—१.कसरत, व्यायाम। २. अभ्यास।
Exertion—आयास।
Exhaust——निकास।
Exhaust fan—निकास पंखा, रेचक पंखा।
Exhibition—नुमाइश, प्रदर्शिनी।
Existence—१. अस्तित्व। २. भाव।
Existentialism—अस्तित्ववाद।
Ex-officio—पदेन।
Exogamy—असवर्ण-विवाह।
Expansionism—विस्तारवाद।
Expectation—आशंसा, प्रत्याशा।
Expediency—कालोचितता, समयोचितता।
Expedient—कालोचित, समयोचित।
Expedition—अभियान।
Expelled—अपसृत।
Experience—अनुभव, तजरुबा।
Experiment—प्रयोग।
Experimental—प्रायोगिक।
Experimentalism—प्रयोगवाद।
Experimental science—प्रायोगिक विज्ञान।
Expert—प्रवीण।
Expiration—समाप्ति।
Expiry—समाप्ति।
Explanation— १. व्याख्या। २. स्पष्टीकरण।
Exploitation—शोषण।
Exploiter—शोषक।
Exploration—अन्वेषण, गवेषण, समन्वेषण।
Explosive—विस्फोटक।
Export—निर्यात, जावक।
Export duty—निर्यात शुल्क।
Exporter—निर्यातक।
Express—आशुग।
Expressed—अभिव्यंजित, अभिव्यक्त।
Expression—अभिव्यंजन, अभिव्यक्ति।
Expressionism—अभिव्यंजनवाद।
Expressive—अभिव्यंजक।
Express letter—आशुग-पत्र।
Extension—अतिदेश, विस्तरण, विस्तार।
Extensive—विस्तृत।
Extent—आयति, प्रसार, विस्तार।
Extermination—उन्मूलन।
External trade—बहिर्वाणिज्य।
Extinction—१. निर्वापण। २. विलोप। ३. समाप्ति।
Extortion—अपकर्षण।
Extra—अतिरिक्त।
Extradition—प्रत्यर्पण।
Extraordinary—असाधारण।
Extreme—बाह्यपद।
Extremism—अतिवाद, उग्रवाद, परम-पंथ।
Extremist—अतिवादी, उग्रवादी, परम-पंथी।
Eye-ball—अक्षि-गोलक।
Eye-witness—अक्षि-साक्षी, अनुभावी, दर्शन-साक्षी।

F

Fable—१. आख्यान, कथा। २. उपदेश-कथा।
Facsimile—अनुलिपि, प्रतिकृति, प्रतिमुद्रण।
Factor—१. कारक, घटक। २. तत्त्व। ३. अपवर्तक, गुणन-खंड। (गणित)
Factory—उद्योगालय, कारखाना।
Faculty—१. मनीषा। २. संकल्प। ३. संकाय।
Fallacy—हेत्वाभास।
Fallow—पड़ती (जमीन)।
Family—१. कुल। २. परिवार।
Family planning—कुटुम्ब-नियोजन, परिवार-नियोजन।
Farewell—विदाई।
Far-fetched—क्लिष्ट-कल्पित।
Farm—फारम।
Fashion—भूषाचार।
Fast—उपवास।
Fat—वसा।
Fatal—घातक, सांघातिक।
Fatherland—पितृ-देश।
Fatty—वसीय।
Fault—दोष।
Favour—अनुग्रह।
Feature programme—रूपक कार्य-क्रम।
Federal—संघीय।
Federal Court—संघ-न्यायालय।
Federation—संघ।
Feeder— वि० पोषक। सं० संभरक।
Feeding bottle—दूध-पिलाई।
Felon—आततायी।
Feminine—स्त्रीलिंग।
Fermentation—किण्वन, संधान।
Fern—पर्णांग।
Ferrous—लोहस।
Ferry toll—घट्ट-कर।
Fertile—उपजाऊ, उर्वर।
Fertilizer—उर्वरक।
Festival—त्योहार।
Feudal—सामंतिक, सामंती।
Feudalism—१. सामंतवाद। २. सामंतशाही, सामंती।
Feudal system—१. सामंत-तंत्र। २. सामंत-प्रणाली। ३. सामंत-प्रथा।
Fibre—तंतु, रेशा।
Fiction—१. कल्प-कथा। २. उपन्यास।
Fifth column—पंचमांग।
Fifth columnist—पंचमांगी।
Figurative—आलंकारिक।
Figure—१. अंक। २. आकृति।
Figured—उच्चित्र, चित्रित।
Figure of speech—अलंकार।
Filament—तंतु।
File—१. नत्थी, संचिका। २. पत्रजात, मिसिल। ३. रेती।
Filed—१. दाखिल। २. नस्तित।
Fill-in-blanks—पद-पूरण।
Filmed—चल-चित्रित।
Filming—चल-चित्रण।
Filtration—छानना, निस्यंदन।
Final—अंतिम।
Finance—वित्त।
Finance bill—वित्त-विधेयक।
Finance Minister—अर्थ-मंत्री, वित्त-मंत्री।
Finances—वित्त-साधन।
Financial—वित्तीय।
Financial year—वित्त-वर्ष, वित्तीय वर्ष।
Finding—निष्कर्ष।
Fine—सं० अर्थ-दंड, जुरमाना। वि० १. ललित। २. सूक्ष्म।
Fine arts—ललित कला।
Finger-print—अंगुली छाप, उँगली छाप।
Fire—अग्नि, आग।
Fire-arms—आग्नेय अस्त्र। आग्नेयास्त्र।
Fire-brigade—दम-कल।
Fire-extinguisher—अग्नि-शामक।
Fire-line—अग्निरक्षक रेखा, अग्नि रेखा।
Fire-proof—अग्नि-सह।
Fire-red—आतिशी।
Fire-wood—ईंधन।
Fire-works—आतिशबाजी।

Firing line—अग्नि-वर्षक रेखा।
Firm—कोठी।
Firmament—महाव्योम।
First aid—प्रथमोपचार, प्राथमिक, उपचार।
Firstly—प्रथमतः।
First person— उत्तम पु ष।
Fish scale—सेहरा।
Fistula—भगंदर।
Fit—उपयुक्त।
Fixed price—स्थिर-मूल्य।
Flag—झंडा।
Flag day—झंडा दिवस।
Flag-hoisting—१. ध्वजारोपण। २. ध्वजारोहण।
Flag pole—ध्वज-दंड।
Flag-ship—ध्वज-पोत।
Flash light—कौंधप्रकाश।
Flavour—रस।
Fleet—बेड़ा।
Fleshy—मांसल।
Flexible—आनम्य।
Flint—चकमक।
Floating—चल।
Floating island—चल-द्वीप।
Flower—फूल।
Flower-leaf—फूल-पत्ती।
Fluctuation—उतार-चढ़ाव।
Flying—चल।
Flying dish—उड़न-तश्तरी, उड़न-थाल।
Flying fortress—उड़न-किला।
Flying saucer—उड़न-तश्तरी, उड़नथाल।
Flying squad—उड़न-दस्ता, उड़ाका दल।
Foetus—भ्रूण।
Fog—धुंध।
Foil—पर्ण।
Folding—१. टूटदार, टूटवाँ। २. वलनिक।
Folk dance—लोक-नृत्य।
Folk literature—लोक-साहित्य।
Folk lore—लोक-वार्ता।
Folk song—लोक-गीत।
Follower—अनुयायी।
Fomentation—सेंक, सेंकाई।
Foodgrains—खाद्यान्न।
Food-pipe—भोजन-नालिका।
Food-rationing—खाद्य अनुभाजन।
Foot-note—तल-टीप, पाद-टिप्पणी।
Foot-rule—फुटा।
Footwear—पादुका।
For—कृते (हस्ताक्षर के पहले)।
Forbidding—निषेध।
Force—१. बल। २. शक्ति।
Forceps—१. चिमटी। २. संदेश।
Fore-arm—पूर्व-बाहु।
Forecast—पूर्वानुमान।
Forefathers— पूर्व पुरुष।
Foreign Minister—पर-राष्ट्र मंत्री।
Foreign policy—परराष्ट्र नीति।
Foresight—१. पूर्व-दृष्टि। २. मक्खी (बन्दूक की)।
Forest culture—वन-संस्कृति।
Forest ranger—राजिक, वनपाल।
Forethought—पूर्व-विचार।
Forgery—जाल, जालसाजी।
Form—१. रूप, शकल। २. आकार-पत्र, प्रपत्र।
Formal—औपचारिक, रीतिक।
Formalism—१. नियम-निष्ठता। २. रीतिवाद।
Formality—औपचारिकता।
Formally—उपचारात्।
Formal talk—वार्ता।
Formation—बनावट।
Formula—सूत्र।
Fort—किला, गढ़, दुर्ग।
For the time being—समय विशेष पर।
Fortnight—पक्ष।
Fortnightly—पाक्षिक।
Forum—वाक्पीठ।
Forwarding—अग्रसारण।
Fossil—जीवाश्म।
Foundation stone—आधार-शिला, नींव का पत्थर।
Fraction—१. अंश। २. भिन्न। (गणित)
Fractionation—अंशन।
Fracture—अस्थि-भंग, कांड-भंग, विभंग।
Franchise—मताधिकार।
Fraud—१. उपधा, धोखा, फरेब। २. धोखेबाजी।
Fraudulent—औपधिक, कपटपूर्ण।
Free—स्वतंत्र।
Freedom—स्वतंत्रता।
Free trade—अबाध व्यापार, मुक्त व्यापार।
Fresco—भित्ति-चित्र।
Friction—घर्षण।
Frigid Zone—शीत-कटि-बंध।
Front elevation—पुरोदर्शन।
Frontier—सीमा।
Frost—तुषार, पाला।
Frost-bite—तुषार-दंश।
Frosty—हिमी।
Fruit-sugar—फल-शर्करा।
Frustrum—छिन्नक।
Fuel—ईंधन।
Fuller's earth—सज्जी।
Full marks—पूर्णांक।
Full stop—पूर्ण-विराम।
Fumigation—धूम्रकरण।
Function—१. कृत्य। २. समारोह।
Functionary—कृत्यवाह।
Fund—निधि।
Fundamental—मूलभूत, मौलिक।
Funding—निचयन।
Fungative—छत्रकाय मान।
Fungus—कवक, खुमी, छत्रक, फफूंद, फफूँदी।
Funnel—१. कीप। २. चिमनी।
Fur—उर्णाजिन।
Furniture—उपस्कर, उपस्कार, परिष्कार, साज।
Further—अपर।
Fused—समेकित।
Fusible—समेकनीय।
Fusion— १. समेकन। २. सायुज्य।

G

Gain—१. प्राप्ति। २. लाभ।
Galaxy—आकाश-गंगा, छाया-पथ, मंदाकिनी।
Gale—वात्या।
Gall bladder—पित्ताशय।
Gallery—चूलदान, दीर्घा, वीथी।
Galvanisation—यशदीकरण।
Game—सावज।
Gangrene—कोथ।
Gangue—असार।
Garden house—उद्यान-गृह।
Garden party—उद्यान-गोष्ठी।
Gaseous—गैसीय
Gaso-meter—गैस-मापी।
Gastritis—आमाशय-शोथ।
Gastropod—उदर-पाद।
Gazette—राज-पत्र।
Gazetted—राज-पत्रित।
Gazetteer—भौगोलिकी।
Geneology—वंशावली।
General—१. आम, सार्विक। २. सामान्य।
General election—आम-चुनाव, साधारण-निर्वाचन।
Generalisation—साधारणीकरण।
Generality—१. सामान्यता। २. व्याप्ति।
General secretary—प्रधान मंत्री।
Generation—पीढ़ी, पुश्त।
Genetic—जननिक।
Genetics—आनुवंशिक विज्ञान, आनुवंशिकी।
Genius—प्रतिभा।
Genocide—१. जन-वध, जन-संहार। २. जाति-नाश, जाति-वध।
Genuine—अकूट, असली।
Genus—जाति।
Geographical—भौगोलिक।

Geography—भूगोल।
Geology—भू-विज्ञान, भौतिकी।
Geometry—ज्यामिति।
Geophysics—भू-भौतिकी।
Germ—कीटाणु।
Germination—अंकुरण।
Gesture—इंगित, मुद्रा।
Geurilla—छापामार।
Geurilla warfare—छापामार लड़ाई।
Gift—१. उपहार, भेंट। २. दान।
Gift-deed—दान-पत्र।
Gift-edged—स्वर्णाभ।
Glacier—हिमनदी, हिमानी।
Gladness—आह्लाद।
Glance—झाँकी।
Glass—काँच, शीशा।
Global—१. गोलकीय। २. भू-मंडलीय।
Globe—१. गोलक। २. भू-मंडल।
Gloom—विषाद।
Glorification—प्रशस्ति।
Glossary—शब्दार्थी।
Glucose—द्राक्ष-शर्करा।
Glycerine—ग्लिसरिन।
Goal—इष्ट।
Goal keeper—गोली।
Goiter—गल-गंड, घेघा।
Gold—सोना, स्वर्ण।
Golden—सुनहला।
Golden Jubilee—स्वर्ण-जयंती।
Golden yellow—सोना-जरद।
Gold standard—स्वर्ण-मानक।
Gonorrhoea—सूजाक।
Good conductor—सुचालक।
Good-will—कीर्तिस्व।
Gorilla—गोरिल्ला (जंतु)।
Governance—अभिशासन, शासन।
Governing—अधिशासनिक, अधिशासी।
Governing Body—१. प्रबंध परिषद्,। २. शासन-निकाय, शासी निकाय।
Government—शासन, सरकार।
Governor—१. शासक। २. राज्यपाल।
Governor General—महाराज्य-पाल।
Gradation—अनुपातन, श्रेणीकरण।
Grade—कोटि, श्रेणी।
Graded—कोटि-बद्ध, श्रेणीकृत।
Grade examination—कोटि-परीक्षा।
Grading—अनुपातन, दरजाबंदी, श्रेणीकरण।
Gradual—क्रमिक।
Gradualism—अनुक्रम-वाद, क्रमिकतावाद।
Gradually—क्रमतः, क्रमशः।
Graduate—स्नातक।
Graduated—१. अंशांकित। २. क्रमित।
Graduation—अंशांकन।

Grafting—उप-रोपण।
Grain—अनाज, अन्न, गल्ला।
Granary—अन्नशाला।
Grant—अनुदान।
Graph—१. खाका, बिंदु-रेख। २. लेखा-चित्र।
Gratification—अनुतोष, अनुतोषण, परितोष।
Gratuity—आनुतोषिक।
Gravel—बजरी।
Gravimeter—भार-मापी।
Gravitation—गुरुत्वाकर्षण।
Gravity—गुरुत्व, मध्याकर्षण।
Gray—धूसर।
Greatest—१. अधिकतम। २. महत्तम।
Great power—महा-शक्ति।
Great war—महायुद्ध।
Greed—लोभ।
Greedy—लोभी।
Green—हरा।
Green manure—हरी खाद।
Green pigeon—हारिल।
Grenade—हथ-गोला।
Grid—जालक।
Grief—दुःख।
Groating—पिलाई।
Gross—स्थूल।
Gross assets—कच्ची निकासी।
Ground—१. जमीन, भूमि। २. आधार-भूमि। ३. आधार।
Growing crop—बढ़ती फसल।
Guarantee—प्रतिश्रुति, प्रत्याभूति।
Guardian—अभिभावक, संरक्षक।
Guerilla—छापामार।
Guerilla warfare—छापामार लड़ाई।
Guess—अटकल, अनुमान।
Guessed—अनुमित।
Guest—अतिथि, मेहमान।
Guest house—अतिथि-शाला।
Guild—श्रेणी। (व्यापारियों की)
Guilt—दोष।
Guinea worm—नहरुआ।
Gulf—आखात, खाड़ी।
Gun carriage—अराबा, तोपगाड़ी।
Gutter press—पनालिया-पत्र।
Gutturopalatal—कंठ्य-तालव्य।
Gynaecology—स्त्रैणकी।
Gynarchy—स्त्री-राज्य।
Gypsum—चिरोड़ी, सफेद सुरमा।
Gyration—विघूर्णन।
Gyrostat—घूर्णिका।

H

Habeas corpus—बंदी प्रत्यक्षीकरण।

Habit—आदत, स्वभाव।
Haemocology—रुधिर-विज्ञान।
Hair dressing—केश-संभारण।
Hair-dye—केश-कल्प।
Hair-style—केश-विन्यास।
Hair tonic—केश-वल्य
Half—अर्ध।
Half pant—अर्धोरुक।
Half-yearly—छमाही, षाण्मासिक।
Hallucination—मति-भ्रम, विभ्रम।
Halo—परिवेश, प्रभा-मंडल, भा-मंडल।
Hammer—१. हथौड़ा, हथौड़ी। २. घोड़ा (बन्दूक का)।
Hand-bill—परचा।
Hand bomb—हथ-गोला।
Hand book—हस्त-पुस्तिका।
Handicraft—हस्त-शिल्प।
Handle—हत्था।
Handloom—करघा, हथकरघा।
Handnote—हस्तांक-पत्र।
Handwriting—लिखावट, हस्तलिपि, हस्तांक।
Haphazard—अललटप्पू।
Happiness—आनन्द।
Harbour—पोताश्रय।
Harmony—ताल-मेल, संगति, सामंजस्य।
Harvest—फसल।
Head—१. शीर्ष। २. सिर।
Heading—शीर्षक।
Head-lamp—अग्र-दीप।
Head master—प्रधानाध्यापक।
Head of cattle—रास।
Head office—प्रधान कार्यालय, मुख्यालय।
Head quarter—मुख्यालय।
Health—स्वास्थ्य।
Health certificate—आरोग्य-प्रमाणक।
Healthy—स्वस्थ।
Hearing—सुनवाई।
Hearsay—श्रुतानुश्रुत।
Heart—कलेजा, हृदय।
Heartburn—अम्ल-शूल, उत्क्लेश।
Heart disease—हृद्रोग।
Heart failure—हृदय-संघट्ट, हृदयातिपात।
Heart plexus—अनाहत-चक्र।
Heat—उष्मा, ताप।
Heater—ऊष्मक, तापक।
Heat-proof—ताप-सह।
Heat treatment—तापोपचार।
Heat-wave—ताप-तरंग।
Heaven—स्वर्ग।
Heavy water—गुरु जल, भारी पानी।
Hebrew—इबरानी।
Hectic fever—प्रलेपक।

Hedonism—इंद्रियवाद।
Height—ऊँचाई।
Heir—उत्तराधिकारी, दायाधिकारी।
Heliograph—सूर्य-चित्रक।
Heliographic—सूर्य-चित्रीय ।
Helminthology—कृमि-विज्ञान ।
Helpless—असहाय।
Hemiplegia—अर्धांग, पक्षाघात।
Hemisphere—गोलार्द्ध।
Hence—अतः।
Herald—१. अग्रदूत। २. वैजयंतिक।
Hereby—एतद्वारा ।
Hereditary—आनुवंशिक, पुरुषानुक्रमिक, वंशानुक्रमिक।
Heredity—आनुवंशिकता।
Hermaphrodite—उभय-लिंगी, द्वि-लिंगी।
Hero-worship—वीर-पूजा।
Herpetology—सरीसृप-विज्ञान ।
Herring—बहुला।
Hesitation—असमंजस।
Heterogeneous—विजातीय, विषमांग।
Hettite—हित्ती।
Hexagon—षट्भुज।
Hexagonal—षट्-कोण।
Hibernation—परिशयन, परिनिद्रा।
Hiccup—हिचकी।
Hidden—प्रच्छन्न।
Hierarchy—पुरोहित-तंत्र।
High blood pressure—उच्च रक्त-चाप।
High Commissioner—उच्चायुक्त।
High Court—उच्च न्यायालय।
Highlight—झलकी।
High seas—अबाध समुद्र, खुला समुद्र, महा-समुद्र।
High vacuum—अतिनिर्वात।
Hindrance— अड़चन।
Histology—ऊतक-विज्ञान, औतिकी।
Historical—ऐतिहासिक।
History—इतिहास।
History-sheet—इति-वृत्तक।
History-sheeter—इति-वृत्ती।
Hoarder—जखीरेदार, जमाखोर।
Hoarding—१. गाड़ना। २. जखीरेदारी। ३. अपसंचय, जमाखोरी ।
Hobby—शगल।
Hogdeer—पाड़ा।
Holdall—बिस्तर-बंद।
Home—१. गृह, घर। २. स्वराष्ट्र।
Homeguard—गृह-रक्षक।
Home Minister—गृह-मंत्री। स्वराष्ट्र-मंत्री।
Home Ministry—गृह-मंत्रालय।
Home Secretary—गृह-सचिव।
Homesick—गृहासक्त।
Homicide—नर-हत्या, हत्या।
Homogeneous—१. समांग। २. सहजातिक।
Homologous—सजात।
Homonym—सम-ध्वनिक।
Homonymous—सम-ध्वनिक
Honest—ईमानदार, ऋजु।
Honesty—ईमानदारी, ऋजुता।
Honeymoon—मधु-चंद्र।
Honorarium—मानदेय।
Honorary—अवैतनिक।
Honourable— माननीय।
Honouring (of a draft)—सकारना।
Hook-worm—अंकुश-कृमि।
Hope—आशा।
Horizon—क्षितिज।
Horizontal—१. अनुप्रस्थ, आड़ा। २. क्षैतिज, सपाट।
Hormone—अंतःस्राव।
Horoscope—१. जन्म-कुंडली। २ जन्म-पत्री।
Horse power—अश्व-शक्ति ।
Horticulture—उद्यान-कर्म, उद्यान-विज्ञान।
Host—आतिथेय, स्वागतक।
Hostage—ओल।
Hostel—छात्रावास।
Hostile—प्रतिपक्षी।
House—१. घर, मकान। २. सदन।
House-boat—शिकारा।
House of Commons—लोक-सभा।
House of Lords—सामंत-सभा।
House of Peoples—लोक-सभा।
Howler—बहक।
Human—मानवीय।
Humanism—मानवतावाद।
Humanitarian—मानवतावादी।
Humanities—मानव-शास्त्र, मानविकी।
Humanization—मानवीकरण।
Hunger-strike—अनशन।
Hurdle—थोड़ी।
Hurricane—प्रभंजन।
Husk—१. भूसा। २. तूसी, भूसी।
Hydraulic—उदिक, तोयालिक, द्रव-चालित।
Hydraulics—द्रव-इंजीनियरी।
Hydrocele—अंड-वृद्धि।
Hydro-electricity—पन-बिजली।
Hydrogen—उदजन।
Hydrography—जल-लेखी।
Hydrology— जल-विज्ञान, नैरिकेय।
Hydrolysis—जल-विश्लेषण।
Hydrometer—जल-मापक।
Hydroplane—जल-वायुयान।
Hydrophobia—जल-भीति, जल-संत्रास, जलांतंक.
Hygiene—स्वास्थ्य-विज्ञान
Hygrology—अद्रिता-विज्ञान
Hygrometer—आर्द्रता-मापी
Hyphen—योगिका, संयोजन चिह्न
Hyperbole—अतिशयोक्ति। (अलंकार)
Hypnotism—संमोहन।
Hypnotist—संमोहक।
Hypochondria—पित्तोन्माद।
Hypocrisy—पाखंड।
Hypogastric plexus—स्वाधिष्ठान (चक्र)।
Hypothecated—भाराक्रांत।
Hypothecation—भाराक्रांति।
Hypothesis—१. परिकल्पना, प्राक्कल्पना। २. प्रमेय।
Hypothetical—परिकल्पित, प्राक्कल्पित, सोपाधिक।
Hysteria—अपतंत्रक, वातोन्माद।

I

Iceberg—हिम-शैल।
Idea—प्रत्यय, विचार।
Ideal—आदर्श।
Idealisation—आदर्शीकरण।
Idealism—१. आदर्शवाद। २. प्रत्ययवाद।
Idealist—आदर्शवादी।
Identification—अभिज्ञान, पहचान, शिनाख्त।
Identity—१. अभिज्ञान, पहचान, शिनाख्त, २. तद्रूपरता, तादात्म्य। ३. एकात्मता।
Ideogram—चित्राक्षर।
Ideography—भावांकन, भावलिपि।
Ideology—विचार-धारा, वैचारिकी।
Idiot—जड़-मति।
Ignatius beam—पपीतिया।
Igneous—अग्निज।
Ignominy—अपयश।
Ignoring—अवगणन।
Ill-advised—कुमंत्रित।
Illegal—अविधिक, अवैध।
Illegal practice—अवैधाचरण।
Illimitable—असीम्य।
Illusion—१. अध्यास, धोखा, भ्रम। २. माया।
Illustration—निदर्शन।
Imaginable—कल्पनीय।
Imagery—प्रतिमावली, मूर्तविधान।
Imaginary—कल्पित, काल्पनिक।
Imagination—कल्पना।
Imitation—१. अनुकरण। २. अनुकृति।
Imitator—अनुकारक।
Immature—अपक्व।
Immeasurable—अमापनीय।

Immersion—निमज्जन।
Immigration—आप्रवास, आप्रवासन।
Immoderate—अमर्याद।
Immodest—अविनीत।
Immodesty—अविनय।
Immorality—अनाचार, अनैतिकता।
Immovable—अचल, स्थावर।
Immovable property—अचल संपत्ति।
Immune—निरापद।
Immunity—१. अभिमुक्ति, उन्मुक्ति। २. निरापदता।
Impact—संघात।
Impeachment—महाभियोग।
Imperative—आज्ञार्थक।
Imperative mood—विधि। (व्याकरण)
Imperceptible—अगोचर।
Imperfect—अधूरा, अपूर्ण।
Imperialism—साम्राज्यवाद।
Imperialist—साम्राज्यवादी।
Imperishable—अविनश्वर।
Impersonal—अव्यक्तिक।
Impersonal case—भावे प्रयोग।
Implement—उपकरण।
Implementation—अभिपूर्ति, कार्यान्विति।
Implication—विपक्षा।
Import—आयात, आवक।
Importance—महत्त्व।
Import duty—आयात-शुल्क।
Imported—आयात।
Imprisoned—कारारुद्ध।
Imprisonment—कारावास, कैद, सजा।
Improbable—असंभाव्य।
Impulse—आवेग।
Inadvertance—असावधानता।
Incest—अगम्यागम्य।
In-charge—१. अवधायक। २. कार्यभारी।
Incidence—१. आपतन। २. घटना। ३. अनुषंग, संयोग।
Incidental—आनुषंगिक।
In-circle—अंतर्वृत्त।
Incited—उत्तेजित।
Incitement—उत्तेजना।
Inclination—१. झुकाव, नति। २. प्रवृत्ति।
Included—अंतर्गत।
Inclusion—अंतर्भाव।
Incombustible—अदह्य।
Income—आय।
Income-tax—आय-कर।
Incomparable—१. अतुल्य। २. अनुपम, बेजोड़।
Incomplete—अधूरा, अपूर्ण।
Incomprehensible—अबोध्य।
Inconceivable—अचिंत्य, अभावनीय।
Incongruity—विषम (अलंकार)
Inconsistency—असंगति।
Incorporated—निगमित।
Incorporation—निगमीकरण।
Increment—वृद्धि।
Incubation—परिपाक।
Incurable—अचिकित्स्य, असाध्य।
Incurred—उपगत।
Indebtedness—ऋणग्रस्तता।
Independence—स्वाधीनता।
Index—वि० अभिसूचक। सं० १. अनुक्रमणिका। २. विषयानुक्रमणिका।
Index number—सूचकांक।
Indianisation—भारतीयकरण।
Indictment—अभ्यारोपण।
Indifferent—उदासीन।
Indigestion—अपच।
Indigo—नील।
Indirect—१. अप्रत्यक्ष। २. परोक्ष।
Indirect description—अप्रस्तुत प्रशंसा।
Indirect election—अप्रत्यक्ष निर्वाचन, परोक्ष निर्वाचन।
Indirect tax—अप्रत्यक्ष कर, परोक्ष कर।
Indistinct—अस्पष्ट।
Individual—व्यक्तिक।
Individualism—व्यक्तिवाद।
Individualist—व्यक्तिवादी।
Individuality—व्यक्तिकता।
Indology—भारत-विद्या।
Induction—१. अनुगम। २. आगम। ३. प्रेरणा।
Industrial—औद्योगिक।
Industrialisation—उद्योगीकरण।
Industrialist—उद्योग-पति।
Industry—उद्योग-धंधा।
Inequality—असमता।
Inertia—निश्चेष्टता।
Inevitable—१. अनिवार्य। २. अवश्यंभावी।
Inexpedient—अनुपयुक्त।
Inexplicable—अव्याख्येय।
Infamy—अपकीर्ति।
Infant—शिशु।
Infections—औपसर्गिक, छुतहा, संसर्गज।
Inference—१. अनुमान, अनुमिति। २. अध्याहरण, अध्याहार।
Inferior—१. अधोवर्ती। २. अवर। ३. घटिया। ४. हीन।
Inferiority complex—हीनक मनोग्रंथि।
Inferior servant—अवर-सेवक।
Inferior service—अवर-सेवा।
Inferred—१. अनुमित। २. अध्याहृत।
Infinite—अनंत।
Infinity—अनंतता, अनंती।
Infirmary—रुग्णालय।
Infix—मध्य प्रत्यय।
Inflammation—शोथ, सूजन।
Inflated—स्फीत।
Inflation—१. स्फीतता, स्फीति। २. मुद्रा-स्फीति।
Influence—प्रभाव।
Influx—अंतरागम।
In force—१. प्रचलित। २. बलवत्।
Informal—१. अनौपचारिक। २. अरीतिक।
Information—सूचना।
Information bureau—सूचनालय।
Information Officer—सूचना अधिकारी।
Infrangible—अभंगुर।
Infringement—व्याघात
Ingot—धातु-खंड, सिल।
Inherent—अंतर्निष्ठ, निगूढ़।
Inheritance—उत्तराधिकार।
Inheritor—उत्तराधिकारी।
Initial—वि० आदिक। सं० आद्याक्षर।
Initialled—आद्याक्षरित।
Initiative—पहल।
Injection—सूई।
Injunction—निषेधाज्ञा, व्यादेश, समादेश।
Injury—आघात।
Ink—स्याही।
Inland—अंतर्देशीय।
Inlet—प्रवेशिका।
Inner being—अंतः-सत्ता।
Inner circle—आंतर-चक्र।
Inner conscience—अंतश्चेतना।
Inner feeling—अंतर्भावना।
Innings—पाली।
Innumerable—असंख्येय।
Inoperative—अप्रवर्ती।
Inordinate—अमित।
Inorganic—अजैव।
In part—अंशतः।
Inscribed circle—अंतर्वृत्त।
Inscription—लेख।
Insect repellant—कीट-सारी।
Insectivorous—कीट-भोजी।
Insemination—संसेचन।
Inseparable—अच्छिन्न।
Inserted—सन्निविष्ट।
Insight—अंतर्दृष्टि।
Insolation—आतप, सूर्य-ताप।
Insolvent—दिवालिया।
Insomnia—अनिद्रा, उन्निद्रा (रोग)।
Inspection—निरीक्षण।
Inspector—निरीक्षक।

Inspiration—प्रेरणा।
Instalment—क़िस्त, खंडनी, खंडिका।
Installation—प्रस्थापन, संस्थापन।
Instance—दृष्टांत।
Instinct—सहज-बुद्धि।
Instinctive—वृत्तिक, सहज, साहजिक।
Institute—१. ज्ञानालय। २. पीठ। ३. संस्था, संस्थान।
Instruction—१. अनुदेश, हिदायत। २. अनुदेशन।
Instructor—अनुदेशक।
Instrument—१. औजार। २. करण। ३. साधन।
Instrumental case—करण कारक। (व्याक०)
Instrumental music—वाद्य-संगीत।
Insulator—उष्मारोधक।
Insulin—मधु-सूदनी।
Insult—अपमान।
Insurance—बीमा।
Intellect—१. प्रज्ञा, बुद्धि, समझ। २. विचार-शक्ति।
Intellectual—बौद्धिक।
Intellectualism—प्रज्ञावाद, बुद्धिवाद।
Intellectualist—बुद्धिवादी।
Intend—मंतव्य।
Intended—अभिप्रेत।
Intense—अतिशय, अत्यंत, उत्कट, तीव्र।
Intensity—तीव्रता।
Intent—अभिप्राय।
Intention—१. आशय। २. नीयत।
Inter-caste—अंतर्जातीय।
Intercepted—अंतरावरोधित।
Interception—अंतरावरोधन।
Interchange—अदल-बदल, व्यतिहार।
Interest—१. अभिरुचि, दिलचस्पी, रस। २. स्वार्थ, हित। ३. व्याज, सूद।
Interference—हस्तक्षेप।
Interim—अंतरिम।
Interim order—अंतरिम आदेश।
Interleaved—अंतर्पत्रित।
Interleaving—अंतर्पत्रण।
Intermediary—मध्यवर्ती।
Intermediary profit—अंतर्पतित आय।
Intermediate—अंतर्वर्ती।
Inter-metallic—अंतर्धातुक।
Intermittent—आंतरायिक।
Intermittent fever—आंतरिक ज्वर, विरामी ज्वर, विसर्गी ज्वर।
Inter-molecular—अंतरणुक।
Internal—१. अंतस्थ, आंतरिक। २. देशिक।
Internalisation—अध्यांतरण।
Internal trade—अंतर्वाणिज्य।
International—अंतर्राष्ट्रीय, सार्वराष्ट्रीय।
Internationalism—अंतर्राष्ट्रवाद।
International law—अंतर्राष्ट्रीय विधि।
Internment—अंतरायण, नजरबंदी।
Interpolation—अंतर्वेशन।
Interpretation—अर्थापन, निर्वचन, विवृत्ति।
Interprovincial—अंतर्प्रान्तीय।
Interruption—१. टोकाटाकी। २. बाधा।
Inter-stellar—अंतर्ग्रही।
Interval—मध्यांतर।
Intestine—अंत्र, आँत।
Intimacy—आत्मीयता।
Intimate—आत्मिक, आत्मीय।
Intransitive verb—अकर्मक क्रिया।
Intrinsic—आंतर।
Intrinsic value—आंतरिक मूल्य।
Introduction—प्रस्तावना।
Introspection—अंतर्दर्शन।
Intruder—घुसपैठिया।
Intrusion—घुसपैठ।
Intuition—अंतर्ज्ञान। अंतःप्रज्ञा।
Invalid—१. अमान्य। २. अशक्त। ३. असमर्थ।
Invalid deed—दुर्लेख्य।
Invented—उपज्ञात।
Invention—आविष्कार, ईजाद, उपज्ञा।
Inventor—आदिष्कर्ता, आविष्कारक, उपज्ञाता।
Inversion—उत्क्रमण।
Inverted—अपवृत्त।
Investigation—१. अनुसंधान। २. जाँच, तफ्तीश।
Investiture—मानाभिषेक।
Investment—निधान, निवेश, लग्गत।
Invigilator—अभिजागर।
Invisible—अदृश्य।
Invoice—बीजक।
Involution—१. अंतर्वलन। २. निवर्तन।
Involved—अंतर्ग्रस्त।
Inward—आवक।
Iron—लोहा।
Iron age—लौह-युग।
Iron curtain—लोह-आवरण, लोह-जाल, लौह-आवरण।
Irony—व्यंग्य।
Irregular—अनियमित।
Irresponsible—अनुत्तरदायी।
Irrigation—आबपाशी, सिचाई।
Ism—वाद।
Isolation—आतपन।
Issue—१. निर्गम। २. वाद-पद।
Issue capital—निर्गमित पूँजी।
Issue of fact—तथ्य वाद-पद।
Issue of law—विधि वाद-पद।
Issue price—निर्गम-मूल्य।
Ivory—हाथी दाँत।

J

Jacket—गीदड़।
Jack fruit—कटहल।
Jade—संगयशब।
Jail—कारा, कारागार, कैदखाना।
Jailor—कारागारिक, कारापाल।
Jaundice—कमल, कामला, पीलिया।
Jealousy—ईर्ष्या, मात्सर्य।
Jelly—अवलेह।
Jerk—झटका।
Jet black—कोयली (रंग)।
Joint—संधि।
Joint account—संयुक्त-खाता।
Journal—वृत्त-पत्र।
Journalism—पत्रकारिता।
Journalist—पत्रकार।
Jubilee—जयंती।
Judgement creditor—वाद-ऋणी।
Judicial—न्यायिक।
Judicial Authority—न्यायिक अधिकारी।
Judiciary—न्याय-तंत्र, न्यायपालिका, न्यायांग।
Juice—रस।
Junction—संगम।
Junior—कनिष्ठ।
Jupiter—वृहस्पति।
Jurisdiction—१. अधि-क्षेत्र, अधिकार क्षेत्र। २. क्षेत्राधिकार।
Jurisprudence—न्याय-शास्त्र, विधि-शास्त्र।
Jurist—विधि-वेत्ता, न्यायशास्त्री।
Jury—१. अधिनिर्णायक, जूरी, ज्यूरी, न्याय-सभ्य। २. पंच।
Just—न्याय-संगत।
Justice—न्याय-मूर्ति।
Juvenile—अल्पवयस्क, किशोर।
Juvevile literature—बाल-साहित्य।

K

Keel—नौतल।
Key—कुंजी।
Kick—ठोकर, पदाघात।
Kidnapping—हरण।
Kidney—गुरदा, वृक्क।
Kind—प्रकार।
Kindness—कृपा।
Kindred—सगोत्र।
Kingfisher—किरकिरा, किलकिला। (पक्षी)
Kingship—राजत्व, राजशाही, शाही।

King's yellow—अंमलतासी।
Kinsman—सगोत्र।
Kinship—सगोत्रता।

L

Label—अंकितक, नाम-पत्र।
Laboratory—प्रयोगशाला।
Labour—श्रम।
Labour bureau—श्रम-कार्यालय।
Labour dispute—श्रम-विवाद।
Labourer—कमकर, श्रमिक।
Labour room—प्रसूति भवन, सौरी।
Labour union—श्रम-संघ।
Labour welfare—श्रमिक कल्याण-कार्य।
Labyrinth—भूल-भुलैया।
Laconic—अल्पाक्षरिक।
Lacrimal gland—अश्रु-ग्रंथि।
Lactiferous—आक्षीरी, दूधिया।
Lactometer—दुग्ध-मापक।
Lacuna—रिक्ति, रिक्तिका।
Lake-dwelling—जल-निवास।
Lamina—फार।
Lampoon—अवगति।
Land—१. जमीन, भूमि। २. स्थल।
Landing ground—अवतरण भूमि।
Land revenue—भू-आगम, मालगुजारी, राजस्व।
Landscape—भू-दृश्य।
Land-slip—भू-स्खलन।
Land-survey—भू-परिमाप।
Land-tenure—भू-धृति।
Lane—गली।
Lapis lazuli—वैदूर्य मणि।
Lapsed—लीन।
Larva—डिंभ।
Larynx—स्वर-नली।
Lassitude—अवसाद, शिथिलता।
Lasso—फाँसा।
Last—अंतिम।
Lastly—अंततः।
Late—स्वर्गीय।
Late fee—विलंब-शुल्क।
Latent—१. अंतर्हित। २. निगूढ़।
Later—१. अंततर। २. परवर्ती।
Latest—अंततम।
Latitude—अक्षांश।
Latteral—पार्श्विक।
Laughter—अट्टहास, ठहाका।
Launching—जलावतरण।
Lavatory—शौचालय।
Lavender—चमेलिया (रंग)।
Law—विधान, विधि।
Lawfully—विधितः।
Law-maker—विधि-कर्ता।
Lawn—दूर्वा-क्षेत्र, प्रस्तार।
Law of contract—संविदा प्रविधि।
Law of jungle—जंगल का कानून।
Lawyer—विधिज्ञ।
Lay out—अभिन्यास।
Lead—सीसा।
Leader—१. अग्र-लेख। २. नेता।
Leader of the House—सदन-नेता।
Leading article—अग्र-लेख।
Leaf—पर्ण।
League of Nations—राष्ट्र-संघ।
Leap year—अधिवर्ष, लौंद का साल।
Lease—पट्टा।
Lease-deed—पट्ट-लेख्य।
Lease holder—पट्टाधारी।
Leave account—अवकाश-लेखा।
Lecture—भाषण।
Ledger—खाता, खाता-बही, प्रपंजी।
Legacy—रिक्थ।
Legal—विधिक।
Legal proceeding—विधिक-व्यवहार।
Legal representative—विधिक प्रतिनिधि।
Legation—दूतावास।
Legend—१. अनुश्रुति। २. आख्यान, अवदान। ३. मुद्रा-लेख।
Legendary—१. अनुश्रुत। २. आख्यानिक, ऐतिह्य।
Legendary person—आख्यान-पुरुष। कथा-पुरुष।
Legislative Assembly—विधान-सभा।
Legislative Council—विधान-परिषद।
Legislator—विधायक।
Legislature—विधान-मंडल, विधानांग।
Leguminous—फलीदार।
Lens—१. तेजो-जल (आँख का)। २. ताल (शीशे का)।
Leprosy—कुष्ठ, कोढ़।
Lesson—पाठ।
Letter—१. अक्षर। २. चिट्ठी, पत्र।
Letter book—पत्र-पंजी।
Letter-box—पत्र-पेटी।
Letter of request—निवेदन-पत्र।
Letter-pad—पत्राली।
Letters patent—अधिकार-लेख, एकस्व-पत्र।
Leucoderma—श्वेत-कुष्ठ।
Leucorrhoea—प्रदर, श्वेत-प्रदर।
Level—१. तल, सतह। २. स्तर।
Levelling—चौरसाई, समतलन।
Levy—उगाही, उद्ग्रहण।
Lixicographer—कोशकार।
Lexicography—कोश-रचना।
Lexicology—कोश-कला।
Lexicon—निघंटु, पुरा-कोश।
Liability—दायित्व, देन, वार्यत्व।
Liaison officer—संपर्क अधिकारी।
Libel—अपमान लेख।
Liberal—उदार।
Liberalism—उदारतावाद।
Liberty—स्वतंत्रता।
Liberty of thought—विचार-स्वातंत्र्य।
Librarian—पुस्तकालयाध्यक्ष, पुस्त-पाल।
Licence—१. अनुज्ञप्ति, अनुज्ञा। २. अनुज्ञा-पत्र।
Licencee—अनुज्ञप्ति-धारी।
Licence-holder—अनुज्ञप्ति-धारी।
Licencing officer—अनुज्ञा-अधिकारी।
Life—जीवन।
Life-boat—जीवन-नौका।
Life-certificate—जीवन-प्रमाणक।
Life-companion—जीवन-संगी।
Life-history—जीवन-वृत्त।
Life insurance—जीवन-बीमा।
Lift—१. उठावन। २. उत्थापक (यंत्र)।
Ligament—स्नायु।
Light—प्रकाश।
Lighthouse—कंडीलिया, दीप-घर, प्रकाश-स्तंभ।
Light maroon—उन्नावी।
Lightning—बिजली।
Lightning arrestor—तड़ित-रक्षक, बिजली-बचाव।
Lightning protector—बिजली-बचाव।
Light year—प्रकाश-वर्ष।
Like—सदृश।
Limestone—चूना-पत्थर।
Limit—सीमा।
Limited—परिमित, परिसीमित, सीमित।
Limitless—असीम।
Line-drawing—स्याह-कलम।
Linguist—भाषा-तत्त्वज्ञ, भाषिकी-वेत्ता।
Linguistics—भाषा-तत्त्व, भाषिकी।
Lintel—सोहावटी।
Liquidation—अपाकरण, परिसमापन।
Liquidator—अपाकर्ता, परिसमापक।
List—सूची।
Literacy—साक्षरता।
Literate—साक्षर।
Literature—साहित्य।
Lithograph—प्रस्तर-मुद्रण, शिला-मुद्रण।
Liver—यकृत।
Live-stock—पशु-धन।
Living wage—निर्वाह-भृति, निर्वाहिका।
Lizard—सरट।
Load—भार।

Loam—१. दुम्मट, दोमट (जमीन)। २. दो-रसी मिट्टी।
Lobby—उपांतिका, गोष्ठी-कक्ष, प्रकोष्ठ।
Local—स्थानीय।
Local authority—स्थानिक अधिकारी।
Local board—स्थानिक परिषद।
Localization—स्थानीकरण।
Localized—स्थानीकृत।
Local self-government—स्थानिक स्वायत्त शासन।
Local tax—स्थानिक कर।
Lock-jaw—हनुस्तंभ।
Lock-out—तालाबंदी।
Lock-up—हिरासत।
Locomotive—चलित्र।
Locus standi—अधिकारिता।
Log—अभिलेख।
Logic—तर्क-शास्त्र।
Logical—तर्क-संगत।
Logistics—सैन्य-तंत्र।
Longing—उत्कंठा।
Longitude—देशांतर।
Loop—छल्ला।
Loop-device—छल्ला-विधि।
Loss—१. घाटा। २. हानि।
Lot—भाग्य-पत्रक।
Lottery—भाग्यदा, लाटरी।
Loudspeaker—उच्च-भाषक।
Louse—जूँ।
Lower—अधस्तन।
Lubricant—स्नेहक।
Lubricating—स्निग्ध।
Lubrication—स्नेहन।
Lucrative—प्रलाभी।
Luminosity—जगमगाहट, दीप्ति।
Luminous—दीप्त।
Lunar—सौमिक।
Lunar month—चांद्र-मास।
Lunar-year—चांद्र-वर्ष।
Lung—फेफड़ा।
Luxury—विलास।
Lymph—लसीका, लासक।
Lyric—प्रगीत।

M

Mace—१. गदा। २. जावित्री।
Macedonia—मकदूनिया।
Machine—कल, पेंच, यंत्र।
Magna Carta—महाधिकार-पत्र।
Magnate—चुंबक।
Magnification—अधिरूपण, आवर्धन।
Magnifier—आवर्धक।
Maintenance—१. अनुरक्षण। २. पालन, पोषण, भरण-पोषण।
Maintenance allowance—पोषण-वृत्ति।
Majority—१. अधिकांश। २. बहुमत।
Make-shift—काम-चलाऊ।
Malafide—कदाशयी।
Malafides—कदाशय, कदाशयता।
Malaria—जूड़ी, फसली बुखार, विषम ज्वर।
Malnutrition—कु-पोषण।
Malt—यव।
Maltose—यव-शर्करा।
Management—प्रबंध, व्यवस्था।
Management charges—प्रबंध-परिव्यय।
Management committee—प्रबंध-समिति।
Manager—प्रबंधक, व्यवस्थापक।
Managing agent—प्रबंध अभिकर्ता।
Managing director—प्रबंध-संचालक।
Managing editor—प्रबंध-संपादक।
Mandate—प्रादेश।
Mandatory—प्रादेशात्मक।
Manganese—मंगल, मैंगनीज।
Manifestation—अभिव्यक्ति।
Manifesto—लोक-घोषणा।
Manipulation—चालन।
Manner—प्रकार।
Manual—वि० हस्त (यौ० के आरंभ में) सं० १. नियमावली। २. गुटका, हस्त-पुस्तिका।
Manual labour—हस्त-श्रम।
Manure—खाद।
Manuscript—पांडु-लिपि, हस्त-लेख।
Map—मानचित्र।
Mapping—मान-चित्रण।
Marching song—प्रयाण-गीत।
Margin—उपांत।
Marginal—१. उपांत, उपांतिक। २. न्यूनाधिक।
Marginal heading—पार्श्व-शीर्षक।
Marginal note—पार्श्व-टिप्पणी।
Margin witness—उपांत-साक्षी।
Marital—वैवाहिक।
Maritime—अनुसमुद्री, समुद्री।
Marketing—विपणन।
Marrow—सार।
Mars—मंगल-ग्रह।
Marsh—दलदल।
Marsupium—शिशु-धानी।
Martial—सैनिक।
Masculine—पुंलिंग।
Masochism—आत्म-पीड़न।
Mass—वि० बहु-मात्र। सं० १. द्रव्यमान। २. संहति।
Massacre—कटा, सार्विक वध।
Mass production—बहुमात्र-उत्पादन।
Master—अधिपति।
Mastic—मस्तगी।
Material—वि० १. अन्नमय। २. भौतिक। सं० १. उपकरण, उपादान। २. द्रव्य, पदार्थ।
Material being—अन्नमय-पुरुष।
Materialism—जड़-वाद, भौतिकवाद।
Materialist—जड़-वादी।
Materia Medica—औषध-शास्त्र।
Maternity—मातृत्व।
Maternity leave—प्रसवावकाश।
Maternity ward—सूतिकागार।
Mating season—ऋतु-काल।
Mathematics—गणित।
Matriarchal—मातृक।
Matriarchy—मातृ-तंत्र।
Matricide—मातृ-हत्या।
Matron—मातृका, मेट्रन।
Matter—१. महाभूत। २. द्रव्य, पदार्थ। ३. विषय। ४. विषय-वस्तु।
Mature—परिपक्व।
May Day—मई दिवस।
Mayor—नगर-प्रमुख।
Meadow—चारागाह।
Mean—मध्यमान।
Meander—वि० विसर्पी। सं० १. विसर्पण। २. गो-मूत्रिका।
Meaning—अर्थ।
Means—साधन।
Means of communication—संचार-साधन।
Measles—खसरा, मसूरिका, रोमांतिका।
Measurement—नाप, मापनी।
Mechanic—वि० यांत्रिक। सं० यंत्रकार।
Mechanical—यांत्रिक।
Mechanics—यांत्रिकी।
Mechanism—यंत्रकारी।
Medal—पदक।
Median—माध्यिक।
Mediation—मध्यस्थता।
Mediator—मध्यस्थ।
Medical—चिकित्सीय, चैकित्सिक।
Medical certificate—चिकित्सक प्रमाणक।
Medical leave—चिकित्सावकाश, रुग्नावकाश।
Medical science—आयुर्विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, चिकित्सा शास्त्र।
Medicine—औषध, दवा।
Medieval—मध्ययुगीन।
Medium—माध्यम।
Medulla—मज्जका।
Melancholia—मालीखोलिया, विषाद

(रोग)।
Melting-point—द्रवणांक।
Member—सदस्य, सभासद।
Membership—मेंबरी, सदस्यता।
Membrane—कल।
Memo—पत्रक।
Memorandom—१. ज्ञापन-पत्र। २. परिचय-पत्र।
Memorial—स्मारक।
Memory—१. स्मृति। २. स्मरण-शक्ति।
Meningitis—गरदन-तोड़ बुखार, तानिका शोथ, मन्यास्तंभ।
Menopause—रजोनिवृत्ति।
Menses—मासिक धर्म, रजोधर्म।
Menstruation—आर्तव, रजोधर्म।
Mental deficiency—मनोदौर्बल्य।
Mental hospital—मानसिक चिकित्सालय।
Mentality—मानसता, मनोवृत्ति।
Mental science—मानस-विज्ञान।
Mental weakness—मनोदौर्बल्य।
Mention—उल्लेख, वर्णन।
Mentioned—उल्लिखित।
Merchandise—पण्य-वस्तु।
Mercantile—आपणिक, वाणिज्य।
Mercantile mark—वाणिज्य चिह्न।
Mercantilism—वाणिज्यवाद।
Mercenery—भृत-भोगी।
Mercuric—पारदिक।
Mercury—१. पारद, पारा। २. बुध (ग्रह)।
Mercy—दया।
Merge—विलयत।
Merging—विलन।
Meridian—१. याम्योत्तर रेखा। २. याम्योत्तरवृत्त।
Merits—गुण-दोष।
Mermaid—जलपरी।
Meriment—प्रमोद।
Mesmerism—मूर्च्छन।
Mesopotamia—इराक।
Mesozoic era—मध्यजीव कल्प।
Message—संदेश।
Metabolims—उपापचयन, चयापचयन।
Metallic age—धातु-युग।
Metallurgy—धातु-विज्ञान।
Metaphysics—तत्त्व-मीमांसा।
Meteor—उल्का।
Meteorite—उल्काश्म।
Meteorlogy—मौसम-विज्ञान।
Meter—मापक।
Methylated—उपहत।
Metre—छंद।
Metrical—छंदोबद्ध।
Mica—अबरक।
Microbe—अणु-जीव।
Microphone—ध्वनि-क्षेपक-यंत्र, ध्वनि-वर्धक।
Microscope—सूक्ष्मदर्शी, सूक्ष्मवीक्षक।
Microscopy—अणुवीक्षण-विज्ञान।
Micro-wave—अणु-तरंग।
Middle Ages—मध्य-युग।
Middle class—मध्यमवर्ग।
Middle-East—मध्य-पूर्व।
Middleman—बिचौती, मध्यस्थ।
Midwife—दाई, धात्री, प्रसाविका।
Midwifery—कुमार-भृत्या, धात्री-विद्या, प्रसूति-विद्या।
Migration—प्रवसन, प्रव्रजन।
Milestone—मील-पत्थर।
Militarisation—अस्त्रीकरण, सैन्यीकरण।
Militarism—१. सामरिकता, सैनिकता। २. सामरिकवाद, सैन्यवाद।
Militarist—सैन्यवादी।
Military—सैनिक।
Military kttache—सैनिक सहकारी।
Milk-sugar—दुग्धशर्करा।
Milky—दूधिया।
Milky-way—आकाश-गंगा।
Millenium—सहस्त्राब्दि।
Mimicry—अनुहरण।
Mind—मानस।
Minded—मनस्क।
Mine—खान, सुरंग।
Mine-layer—सुरंग-प्रसार।
Mineral—खनिज।
Mineralogy—खनिज-विज्ञान।
Mine-sweeper—सुरंग-बुहार।
Minimum—अल्पक, अल्पतम।
Minister—मंत्री।
Ministerial—सचिव।
Ministry—१. मंत्रि-मंडल। २. मंत्रालय। सचिवाधिकार।
Minor—अवयस्क, नाबालिग।
Minority—अल्पांश।
Mint—१. टकसाल। २. पुदीना।
Minute—कला।
Minute book—कला-पंजी।
Miraculous—चमत्कारिक।
Mirage—मरीचिका, मृग-मरीचिका।
Misappropriation—अपयोजन, दुर्विनियोग।
Miscarriage—१. अपवहन। २. गर्भस्राव।
Miscarried—अपवाहित।
Miscarry—अपवहन।
Miscellaneous—प्रकीर्ण, फुटकर, विविध।
Missile—क्षिपणी, क्षेप्यास्त्र।
Mist—कोहरा।
Mistake—१. अशुद्धि। २. भूल।
Misunderstanding—गलत-फहमा, विभ्रम।
Mixture—मिश्रण।
Mobile—चलिष्णु।
Mobile plant—चल-यंत्र।
Mobilization—लामबंदी, संसज्जन।
Model— १. प्रतिमान। २. साँचा।
Moderate—संयत।
Moderate breeze—समीर।
Moderation—संयम।
Modern—अर्वाचीन, आधुनिक।
Modernisation—आधुनिकीकरण।
Modesty—१. विनय। २. शील।
Modification—अनुशोधन।
Modules—मापांक।
Molasses—राब।
Molecular—आणविक।
Molecule—अणु।
Molestation—छेड़छाड़।
Momentum—परिवल, संवेद।
Monarchy—राजतंत्र।
Money—द्रव्य, धन, मुद्रा।
Money-bill—अर्थ-विधेयक।
Money order—धनादेश।
Monism—अद्वैतवाद।
Monogamy—एक-विवाह।
Monologue—१. आत्मोक्ति, स्वगतकथन। २. एकालाप।
Monoplegia—एकांग-घात।
Monopoly—एकाधिकार, इजारेदारी।
Monotheism—एकेश्वरवाद।
Monotonous—एक-सुरा।
Monotony—एक-सुरापन।
Monsoon—पावस।
Monument—कीर्ति-स्तंभ
Mood—मनोदशा।
Moon-stone—चंद्र-शिला।
Morality—सदाचार।
Mordant—रंग-स्थापक।
Moritorium—ऋण-स्थगन।
Morning star—अरुंधती।
Morphene—संबंध-तत्व।
Morphology—१. आकारिकी, आकृति-विज्ञान, २. रूप-विधान। (भाषा विज्ञान)
Mortal—अनित्य।
Mortgage—बंधक, रेहन।
Mortgage with possession—भोग-बंधक।
Mortgagor—बंधक-कर्त्ता।
Mortuary—मुरदा-घर, लाश घर।
Mother tincture—मूलार्क।
Motif—अभिप्राय।
Motion—१. गति। २. प्रस्ताव।

Motion of no-confidence—अविश्वास-प्रस्ताव।
Motivation—अभिप्रेरण।
Motive—हेतुप्रयोजन, प्रेरक-हेतु।
Mould—साँचा।
Mountaineer—पर्वतवासी, पर्वतारोही।
Mountaineering—पर्वतारोहण।
Mourning—शोक।
Mouse deer—मूसा-हिरन।
Mouthpiece—मुखांग।
Mouthwash—मुख-धावक।
Movable property—चल-संपत्ति।
Movie—चल-चित्र।
Multiple—१. अपवर्त्य, गुणित। २. गुणज, बहुगुण। ३. बहुलित।
Multiplication—गुणन, गुणा।
Multiplication table—पहाड़ा।
Multiplier—गुणक।
Multi-purpose—बहु-हेतुक।
Mumps—कन-पेड़ा।
Municipal fund—नगर-निधि।
Municipality—नगर-पालिका।
Munsif—विचारक।
Muscle—पेशी।
Museum—अजायब-घर, संग्रहालय।
Mushroom—खुमी।
Musician—गवैया, गायक।
Musk—कस्तूरी।
Musk deer—कस्तूरी-मृग।
Mutation—नाम-चढ़ाई, नामांतरण।
Mutiny—गदर।
Mutual—पारस्परिक।
Myrtle—मेंहदिया, मेंहदी।
Mysticism—रहस्यवाद।
Myth—देव-कथा, धर्म-गाथा, पुराण-कथा।
Mythological—पौराणिक।
Mythology—देवकथा-शास्त्र, पुराण-विद्या।

N

Nadar—अधःस्वस्तिक।
Nail—काँटा।
Nasalisation—अनुनासिकता।
Nation—राष्ट्र।
National—वि० राष्ट्रीय।
पुं० राष्ट्रिक।
Nationalism—१. राष्ट्रीयता। २. राष्ट्रवाद।
Nationality—राष्ट्रिकता।
Natural—१. नैसर्गिक, प्रकृत, प्राकृतिक। २. स्वाभाविक।
Natural history—प्रकृति-विज्ञान।
Naturalisation—देशीकरण, देशीयकरण।
Naturalism—१. नैसर्गिकी। २. प्रकृतिवाद।
Naturalist—१. प्रकृतिवादी। २. प्रकृतिवेत्ता।
Natural science—प्रकृति-विज्ञान।
Nature—१. निसर्ग, प्रकृति। २. आदत, स्वभाव।
Nature cure—प्राकृतिक-चिकित्सा।
Naturopathy—प्राकृतिक-चिकित्सा।
Nausea—हृल्लास।
Nautical science—नौ-विज्ञान।
Naval—समुद्रिय।
Naval service—नौ-सेवा।
Navigable—नाव्य, नौतरणीय। (जल-मार्ग)
Navigation—जहाजरानी, नौचालन।
Navigator—जहाजरान।
Navy—जल-सेना, नौ-सेना।
Nebula—नीहारिका।
Necessity—आवश्यकता, जरूरत।
Nectar—अमृत।
Needle-work—सूईकारी।
Negation—नकारात्मकता, निषेध, नेति।
Negative—१. अभावात्मक। २. ऋणात्मक। ३. नत्वर्थक। ४. नहिक।
Negativism—निषेधवाद।
Nepthritis—वृक्क-शोथ।
Neptune—वरुण।
Nerve—तंत्रिका, संवेदन-सूत्र, स्नायु।
Nervous—स्नायविक।
Nervous system—तंत्रिका-तंत्र।
Nett assets—पक्की निकास।
Neutral—तटस्थ।
Neutrality—तटस्थता।
Never-ending—अनंत।
New-fashioned—अभिनव।
News—खबर, समाचार।
Newspaper—अखबार, समाचार-पत्र।
Nib—डंक।
Nihilism—नाशवाद, शून्यवाद।
Node—१. पात। २. पर्ण-ग्रंथि।
Nomad—खानाबदोश, चलवासी, यायावर।
No Man's Land—स्वामीहीन-भूमि।
Nomenclature—नाम-कोश।
Nominal—अभिहित, नामिक।
Nominalism—नाम-रूपवाद।
Nominated—नामांकित।
Nomination—नामांकन।
Nomination paper—नामांकन-पत्र।
Nominative case—कर्ता कारक।
Nominee—नामांकित।
Non-agricultural—अकृषिक।
Non-bailable—अप्रतिभाव्य।
Non-cognizable—अनवेक्षणीय।
Non-cognizance—अनवेक्षा।
Non-conductor—अचालक।
Non-co-operation—असहयोग।
Non-descript—अज्ञात-कुल।
Non-dieted—अभोजन-ग्राही।
Non-ferrous—अलौहिक।
Non-matter—अपदार्थ।
Non-metal—अधातु।
Non-metallic—अधात्विक।
Non-occupancy tenant—गैर-दखलिकार।
Non-recarrence—अनावर्तन।
Non-recurring—अनावर्तक।
Non-resident—अनवासिक।
Non-sale—अविक्रय।
Non-vegetarian—आमिषभोजी।
Norm—प्रसमता, प्रसामान्यता।
Normal—१. प्रसम, प्रसामान्य, सामान्य। २. प्रकृत, सहज।
Normality—प्रसमता।
Normally—सामान्यतः।
Normative science—आदर्श-विज्ञान।
North pole—उत्तरी ध्रुव, सुमे ।
Notation—१. अंकनी। २. स्वर-लिपि।
Note—१. टीप। २. पत्रक।
Note of Interrogation—प्रश्न-चिह्न।
Notice—सूचना, सूचना-पत्र।
Notification—अधिसूचन, अधिसूचना।
Notified—१. अधिसूचित। २. विज्ञापित।
Notified area—विज्ञापित क्षेत्र।
Noun—संज्ञा (व्याकरण)।
Novel—उपन्यास।
Novelist—उपन्यासकार।
Nucleus—वि० नाभिक।
सं० केंद्रक, नाभि।
Nudism—नग्नवाद।
Nudist—नग्नवादी।
Nuisance—१. कंटक। २. लोक-कंटक।
Null—अकृत।
Nullification—१. अकृतीकरण। २. निर्विधायन, व्यर्थन।
Nullified—निर्विधायित।
Number—१. अंक। २. संख्या। ३. वचन। (व्या०)
Numbering—संख्यांकन।
Numberless—असंख्य।
Numeral—संख्यांक।
Nurse—उपचारिका, दाई, धात्री।
Nursery—१. जखीरा, नौरंगा, पौद घर। २. बच्चा-घर, शिशुशाला। ३. पोषशाला, संवर्धन-शाला।
Nursing—१. उपचर्या। २. परिचार।
Nutrition—पोषाहार।

O

Oasis—मरु-द्वीप।
Oath—शपथ।
Object—१. उद्देश्य। २. पदार्थ।
Objection—आपत्ति।
Objective—वि० १. वस्तु-निष्ठ। २. कर्म-प्रधान।
सं० कर्म।
Objective case—कर्म-कारक।
Obligation—१. आभार। २. दायित्व।
Obliged—अनुगृहीत।
Obliging—अनुग्राहक।
Obliteration—अभिलोपन।
Obloquy—अपवाद।
Obscene—अश्लील।
Observance—प्रेक्षण।
Observation—प्रेक्षण।
Observer—प्रेक्षक।
Obstacle—बाधा।
Obstetrics—प्रासविक-विज्ञान, प्रसूति-विज्ञान।
Obstetrical—प्रासविक।
Obtuse angle—अधि-कोण।
Obverse—साधा।
Occasional—अवसरिक।
Occasionalism—प्रसंगवाद।
Occlusion—अविधारण, संरोध।
Occupancy right—भोगाधिकार।
Occupancy tenant—दखिलकार।
Occupant—काबिज।
Oceanography—समुद्र-विज्ञान।
Octagon—अष्ट-भुज।
Octahedra—अष्ट-फलक।
Octahedral—अष्ट-फलक।
Octave—सप्तक।
Octavo—अठपेजी।
Octopus—अष्ट-बाहु, अष्टपाद।
Octroi—चुंगी।
Odd—वियुग्म।
Ode—संबोधन-गीति।
Odour—गंध।
Offence—अपराध।
Offender—अपराधी, मुजरिम।
Offer—प्रस्ताव।
Offeree—प्रस्तावितो।
Offering—अर्पण।
Office—कार्यालय, दफ्तर।
Officer—अधिकारी।
Officer-in-charge—भारवाही अधिकारी।
Official—अधिकारिक।
Official residence—पदावास।
Officiating—निर्वाहणिक, स्थानापन्न।
Off-print—अधिमुद्रण।
Oil colour—तैल-रंग।
Oil painting—तैल-चित्र।
Oil well—तेल-कूप, तैल-कूप।
Oily—स्निग्ध।
Oligarchy—अल्पतंत्र।
Omission—१. अकरण, अनाचरण। २. चूक, लुप्ति।
Omnipotent—सर्वशक्तिमान।
One-act-play—एकांकी। (नाटक)
Opacity—अपारदर्शिता।
Opaque—अपारदर्शी।
Opening balance—आद्य-शेष।
Opera—गीति-रूपक, संगीतिका, सांगीत।
Operation—१. व्यापार। २. शल्योपचार।
Operator—संचालक।
Ophicephalus—सर्प-शीर्ष।
Ophthalmology—चक्षु-विज्ञान, नेत्र-विज्ञान, नैत्रिकी।
Opinion—अभिमत, राय, सम्मति।
Opium—अफीम।
Opportunism—अवसरवाद।
Opportunist—समानुवर्ती।
Opposite—नहिक।
Opposition—विरोध।
Opposition bench—विरोध-पीठ।
Optics—प्रकाशिकी।
Optimist—आशावादी।
Option—विकल्प।
Optional—वैकल्पिक।
Oration—वक्तृता, वाग्मिता।
Orator—वक्ता, वाग्मी।
Orbicular—मंडलाकार।
Orchestra—वाद्य-वृन्द।
Ordeal—अग्नि-परीक्षा, दिव्य-परीक्षा।
Order—१. आज्ञा। २. क्रम। ३. गण, श्रेणी।
Order form—माँग-पत्र।
Order-sheet—आज्ञा-फलक।
Ordinal—क्रम-सूचक।
Ordinance—अध्यादेश।
Ordinary—साधारण।
Ordinate—कोटि, भुजमान।
Ore—धातुक।
Organ—मुख-पत्र।
Organic—सेंद्रिय।
Organisation—संघटन।
Orientalism—प्राच्य-विद्या।
Orientalist—प्राच्य-विद्या वेत्ता, प्राच्य-वेत्ता।
Oriental sore—प्राच्य-व्रण।
Orignial—मौलिक।
Originality—मौलिकता।
Ornament—अलंकार, आभूषण, गहना।
Ornamental—अलंकारिक।
Ornithology—पक्षी-विज्ञान।
Orphanage—अनाथालय।
Orthodox—परंपरानिष्ठ, सनातन।
Orthography—शिक्षा।
Osmosis—रसाकर्षण, परिसरण।
Ostentation—आडंबर।
Other—भिन्न।
Otherwise—अन्यथा।
Outdoor—बहिर्द्वारी।
Outerfile—विसर्पी।
Outfall—निकास, निष्काष।
Outfitter—वेशकार।
Outgrown—अधिवृद्ध।
Outgrowth—अधिवृद्धि।
Outline—१. खाका, रूप-रेखा। २. बहिर्रेखा।
Out of date—अनद्यतन, गतावधि, दिनातीत, यात-याम।
Outskirt—बाह्यांचल।
Outward—जावक।
Oval—अंडाकार।
Ovary—अंडाशय।
Over-cooling—अतिशीतन।
Over-draft—अधि-विकर्ष।
Over hauling—पुनःकल्पन।
Over-hitting—अतिसंधान।
Overlapping—वि० परस्पर-व्यापी।
सं० अविच्छादन।
Over-population—अति-प्रजन।
Over-production—अति-उत्पादन।
Over-ruling—व्यवस्था।
Overseer—अधिकर्मी।
Oversight—दृष्टि-दोष।
Overt—खुला, प्रकट।
Overtone—अधि-स्वर।
Ovule—बीजांड।
Owner—स्वामी।
Ownership—स्वामित्व, स्वाम्य।
Owner's risk—जोखिम धनीसिर।
Oxygen—प्राण-वायु।

P

Pacific Ocean—प्रशांत महासागर।
Pacifism—शांतिवाद।
Pacifist—शांतिवादी।
Packer—संवेष्टक।
Packing—संवेष्टन।
Pad—कवालिका, गद्दी।
Pagoda tree—ुल-चीन।
Paid—१. दत्त। २. भृत। वैतनिक।
Pain—पीड़ा।

Painted scroll—आख्यान-पट।
Painter—रंग-चित्रक, रंग-साज।
Painting—१. चित्रण, चित्रांकन। २. चित्र, तस्वीर। ३. रंग-चित्र। ४. रंग-चित्रण।
Palaeontology—जीवाश्म-विज्ञान, पुरा-जैविकी।
Palaeozoic era—पुरा-काल।
Palate—तालू।
Palmate—पंजक।
Palpitation of heart—हृत्कंप।
Pancreas—अग्नाशय।
Pandemic—विश्वपदिक।
Panel—नामिका, चयनक।
Pangolin—बन-रोहू।
Panic—आतंक, भीषिका, सनसनी।
Pantheism—सर्वात्मवाद, सर्वेश्वरवाद।
Pantheist—सर्वात्मवादी, सर्वेश्वरवादी।
Pantheon—देव-गण।
Paper—१. कागज, पत्र। २. अभिपत्र।
Paper currency—धन-पत्र। नोट।
Paper-cutter—पत्र-कर्तक।
Paper-money—पत्रक-धन।
Paper-pulp—लुगदी।
Papers—पत्र-जात।
Paper-weight—दाब।
Parable—दृष्टांत-कथा।
Parachute—अवतरण-छत्र, छतरी, हवाई छतरी।
Paragraph—अनुच्छेद, कंडिका।
Paralapsis—आक्षेप-अलंकार।
Parallel Government—समकक्ष सरकार।
Paralysis—अग-घात, पक्षाघात, लकवा।
Paramount—सर्वोपरि।
Paramount power—सर्वोपरि सत्ता।
Paranomatic—श्लेष (अलंकार)।
Paraplegia—अराग-घात।
Para-psychology—परा-मनोविज्ञान।
Parasite—परजीवी, पराश्रयी, परोपजीवी।
Paratrooper—छतरी सैनिक।
Parasol—आतपत्र।
Parcel post—पोट-डाक।
Parliament—संसद।
Parliamentarian—संसदी।
Parliamentary—सांसद।
Parliamentary Secretary—सदन-सचिव. सांसद सचिव।
Parole—वाग्विश्वास।
Part—१. अंश। २. भाग। ३. भूमिका।
Partial—आंशिक।
Partial eclipse—खंड-ग्रहण।
Particle—कण।
Partly—अंशतः।
Partridge—तीतर।
Partnership—भागिता, हिस्सेदारी।
Party— दल।
Pass—१. पारक, पार-पत्र। २. गिरि-संकट, दर्रा।
Passed—पारित।
Passing—१. पारण। २. संक्रमण।
Passive resistance—निष्क्रिय प्रतिरोध, निष्क्रिय-विरोध, सत्याग्रह।
Passive voice—कर्म-वाच्य।
Passport—पारपत्र, राहदारी का परवाना।
Pastoral song—ग्वाल-गीत।
Pasture—पशुचर।
Pasture land—गोचर, गोचर-भूमि।
Patent—एकस्व।
Pathologist—निदानज्ञ, विकृति-विज्ञानी, विकृति-वेत्ता।
Pathology—रोग-विज्ञान, विकृति-विज्ञान, वैकारिकी।
Patriarchal—पैतृव्य।
Patrol—गश्त।
Patron—संरक्षक।
Pattern—प्रतिमान।
Pauper—अकिंचन, मुफलिश।
Pavilion—मंडप, प्रशाखिया।
Pay—वेतन।
Paying—दायक।
Pay order—देयादेश, धनादेश।
Pea—मटर।
Peace—शांति।
Peace force—शांति सेना।
Peaceful co-existence—शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व।
Peace treaty—शांति-संधि।
Pearl—१. मुक्ता, मोती। २. खसखसी, मोतिया (रंग)।
Pebble—स्फटिक।
Peculiar allegation—विशेषोक्ति।
Pedagogy—शिक्षण-विज्ञान।
Pedestal—पादपीठ, मंची।
Pediatrics—कौमार-भृत्य, शैशविकी।
Peep-show—सैर-बीन।
Petiole—पर्ण-वृन्त, वृन्त।
Pelvis—पेड़ू, श्रोणी।
Penal code—दंड-संहिता।
Penalogy—दंड-विज्ञान, दंड-शास्त्र।
Penalty—दंड, शास्ति।
Pendant—१. जुगनू। २. लटकन।
Pending—लंबित।
Pen friend—पत्र-मित्र।
Peninsula—प्रायद्वीप।
Pension—निवृत्ति-वेतन, पेन्शन।
Pentagon—पंच-भुज।
Penumbra—उपच्छाया।
Peon-book—पत्रवाह-पंजी।
Percent—प्रतिशत।
Percentage—प्रतिशतक।
Perception—अवबोधन, प्रत्यक्ष-ज्ञान।
Percussion—समाघात।
Perennial—परिवार्षिक, वर्षानुवर्षी, सदा-बहार।
Perfection—पूर्णता।
Performance—पालन।
Perfumery—गंधकारिता।
Pericardium—हृदयावरण।
Pericarp—फलावरण।
Perihelion—रवि-नीच।
Peimeter—परिमाप, परिसीमा।
Period—कालावधि।
Periodic—कालिक।
Periodical—वि० कालिक।
सं० सामयिक पत्र।
Period of service—सेवा-काल।
Peripheri—परिरेखा।
Peritoreum—उदरावरण, उदर्या।
Permanent—स्थायी।
Permanent Advance—अप्रतिदेय।
Permeable—प्रविश्य, भेद्य।
Permission—अनुज्ञा, अनुमति।
Permissive—अनुज्ञापक।
Permitted—अनुज्ञप्त।
Permutation—प्रस्तार।
Perpendicular—लंब।
Perpetual—सतत।
Perpetuity—सातत्य।
Perseverance—अध्यवसाय।
Persona grata—अभिमत व्यक्ति, ग्राह्य व्यक्ति, स्वीकार्य व्यक्ति।
Personal—निजी, वैयक्तिक।
Personal assistant—निजी सहायक।
Personal bond—वैयक्तिक बंध।
Personality—व्यक्तित्व।
Personal law—वैयक्तिक विधि।
Persona non grata—अग्राह्य व्यक्ति, अस्वीकार्य व्यक्ति।
Perspective—परिदृष्टि, परिप्रेक्ष्य, संदर्श।
Pervasive—व्याप्ति।
Pessimism—निराशावाद।
Pessimist—निराशावादी।
Petition—याचिका।
Petition of objection—आपत्ति-पत्र।
Petroleum—भू-तैल।
Phallicism—लिंग-पूजा।
Phallicist—लिंग-पूजक।
Phantom—छाया पुरुष, मनोलीला।
Pharaoh—फ़रऊ।
Pharmacology—औषध-विज्ञान।

Pharmacopia—भेषज-संग्रह, मान्य-औषध-कोश।
Pharmacy—भैषजिकी।
Phenomenal world—दृश्य-जगत्।
Philologist—भाषा-विज्ञानी।
Philology—भाषा-विज्ञान।
Philosophical system—तत्त्ववाद।
Phobia—भीति।
Phoenix—अमर-पक्षी।
Phonetic—ध्वनिक।
Phonetics—ध्वनि-विज्ञान।
Photo—छाया-चित्र।
Photo-chemistry—प्रकाश-रसायन।
Photography—आलोक चित्रण, छाया-चित्रण।
Photo-synthesis—प्रकाश-संश्लेषण।
Phraseology—पदावली।
Physical—भौतिक।
Physical geography—भौतिक भूगोल।
Physical vital—अन्न-प्राण। (अरविंद-दर्शन)
Physician—काय-चिकित्सक।
Physics—भौतिक-विज्ञान।
Physiology—कायिकी, क्रिया-विज्ञान, दैहिकी।
Physio-theraphy—भौतिक-चिकित्सा।
Physique—अंगलेट, शरीर-गठन।
Picketing—धरना।
Picnic—गोठ।
Pictography—चित्र-लिपि।
Picture gallery—चित्र-शाला।
Pier—पोत-घाट।
Pigeon—कबूतर।
Pig iron—१. कच्चा लोहा। २. ढलवाँ लोहा।
Pigment—वर्णक।
Piles—अर्श, बवासीर।
Pill-box—कवच कोठरी।
Pilot—वैमानिकी।
Piloting—निर्याण।
Pin—आलपीन, कंटिका।
Pine-apple—अनन्नास।
Pioneer—पुरोगामी।
Piping—नीर-क्रिया, नीरण।
Pirate—जल-दस्यु, समुद्री डाकू।
Pisciculture—मत्स्य-पालन।
Pistel—गर्भ-केसर, स्त्री-केसर।
Pitch—१. काकु (अलंकार)। २. तार (स्वर)।
Pith—गूदा।
Pithy—अर्थ-गर्भित।
Pituitary gland—पीयूष ग्रंथि, पीयूषिका।
Pity—अनुकंपा।
Pivot—चूल।
Place—जगह, स्थान।

Place of occurrence—घटना-स्थल।
Plagiarism—१. भाव-हरण। २. साहित्यिक चोरी।
Plagiarist—१. भावहारी। २. साहित्यिक चोर।
Plagiary—साहित्यिक चोरी।
Plaint—अर्जीदावा।
Plan—आयोजना, पूर्वायोजन, योजना।
Planet—ग्रह।
Planning—योजना।
Planning Commission—योजना आयोग।
Plaster of Paris—गच।
Plastic—सुघट्य, सुनम्य।
Plasticity—सुघट्यता।
Plateau—पठार।
Platform—अलिंद, चबूतरा।
Play—क्रीड़ा, खेल।
Play-back—पार्श्व-संगीत।
Play-ground—क्रीड़ा-स्थल।
Pleader—अभिवक्ता।
Pleading—अभिवचन।
Plebiscite—जनमत-संग्रह।
Pledge—रेहन।
Pledged—प्रतिभूत।
Pleurisy—उरोग्रह।
Plexus—चक्र।
Pliable—आनम्य।
Plinth—कुरसी।
Plot—१. कथा-वस्तु, संविधानक। २. कुचक्र, षड्यंत्र। ३. भू-खंड।
Plotosus—कंटकार।
Plum—आलूचा।
Plumate—शंकुर, साहुल।
Pluralism—बहुक-वाद, बहुल-वाद।
Pleutocray—धनिक-तंत्र।
Plywood—परती-लकड़ी।
P. M.—अपराह्न
Pod—फली।
Poem—काव्य।
Poet—कवि।
Poetry—कविता।
Pogrom—लोक-संहार, सर्व-संहार।
Point—१. विंदु। २. सूत्र।
Point of order—नियमापत्ति।
Poison—विष।
Poisonous—जहरीला, विषाक्त।
Polar—ध्रुवीय।
Polar axis—ध्रुवाक्ष।
Polarity—ध्रुवता, ध्रुवत्व।
Polarization—ध्रुवण।
Polarizer—ध्रुवीयक।
Pole—मेरु।
Police action—आरक्षिक कार्य।

Police force—आरक्षिक दल।
Policy—नीति।
Politics—राजनीति।
Pollen—पराग।
Pollination—परागण।
Polling booth—मतदान-कोष्ठ।
Polling station—मतदान-केन्द्र।
Polyandry—बहुपतित्व।
Polygamy—बहु-विवाह।
Polygyny—बहूपतित्व।
Polytheism—बहुदेव-वाद।
Pomp—आटोप, तड़क-भड़क।
Popular—लोक-प्रिय, सर्व-प्रिय।
Popular Government—लोक-शासन।
Popularity—लोकप्रियता, सर्व-प्रियता।
Porosity—छिद्रलता।
Porous—छिद्रल।
Portfolio—संविभाग।
Portion—भाग।
Pose—ठवन।
Position—१. स्थिति। २. बाना। ३. ठिकाना। (सैनिक)
Positive—वि० १. अनुलोम। २. गरम। ४. निश्चयात्मक। ४. विध्यात्मक। ५. सकारात्मक। ६. सहिक।
सं० धनाणु।
Positiveness—सहिकता।
Positivity—सहिकता।
Possession—१. अधिकार। २. आधिपत्य, कब्जा। ३. भुक्ति, भोग।
Possibility—संभावना।
Possible—संभव।
Post—१. पद, ओहदा। २. चौकी। ३. डाक। ४. स्थान।
Posted—नियत।
Poster—प्रज्ञापक।
Post graduate—स्नातकोत्तर।
Postgram—तार-पत्र।
Posthumous—मरणोत्तरक।
Posting—स्थापन।
Postmaster—डाकपाल।
Postmaster General—महाडाक-पाल।
Post-mortem—शव-परीक्षा।
Post office—डाकखाना, डाकघर।
Postscript—पश्चलेख
Postscriptum—पुनश्च।
Posture—ठवन-मुद्रा।
Potency—प्रभविष्णुता।
Potsherd—ठीकरा।
Pottery—१. कुम्हारी। २. मृण्पात्र, मृद्भांड।
Powder—१. चूर्ण। २. मुख-चूर्ण।
Power—१. अधिकार। २. क्षमता। ३. घात (गणित)। ४. बल, शक्ति। ५. सत्ता।

Power politics—बल-नीति।
Pox—चेचक, बड़ी माता।
Practical—क्रियात्मक।
Practice—अभ्यास।
Praise—प्रशंसा।
Preamble—आमुख।
Precaution—पूर्व-साचित्य।
Precautionary—वारणिक।
Precautionary measure—पूर्वोपाय।
Precedence—अग्रता, पूर्वता।
Precedent—पूर्विका।
Precipitated—अवक्षिप्त।
Precipitation—अवक्षेपण।
Precise—अवितथ।
Precognition—पूर्व-दर्शन।
Preconscience—पूर्व-चेतन।
Predecessor—पूर्वाधिकारी।
Prediction—भविष्यद्वाणी।
Pre-emption—पूर्व-क्रय, हक-शफा।
Pre-existence—प्राग्भाव।
Preface—भूमिका।
Preferable—अधिमान्य, वरीय।
Preference—अधिमान, वरीयता।
Preferential—अधिमानिक।
Preferred—अधिमानित।
Pregnancy—गर्भिकी।
Pregnant—गर्भवती, गर्भिणी।
Pre-historic—प्रागैतिहासिक।
Prejudice—पूर्वग्रह।
Prejudiced—पूर्वग्रस्त।
Pre-knowledge—पूर्व-ज्ञान।
Premium—१. अधिमूल्य, बढ़ोतरी, बढ़ौती। २. बीमा किस्त।
Prepaid—पुरुदत्त।
Preparation—उपक्रम, तैयारी।
Prepayment—पुर-दान। प्रति[illegible]।
Prerogative—परमाधिकार।
Prescribed—१. नियत। २. प्रदिष्ट।
Prescriber—प्रदिष्टा।
Prescription—१. प्रदेशन। २. चिर-भोग। ३. नुस्खा।
Presence chamber—श्रीमंडप।
Present—१. प्रस्तुत। २. वर्तमान।
Preservation—परिरक्षण।
Preservation of fruits—फल-परिरक्षण।
Preservative—परिरक्षक।
Preserved—परिरक्षित।
President—१. अध्यक्ष। २. राष्ट्रपति। ३. सभापति।
Presidential Government—प्राधानिक शासन।
Presiding—अध्यासीन, पीठासीन।
Presiding officer—१. अधिपति, अधिष्ठता। २. पीठासीन अधिकारी।
Press—१. छापाखाना। २. पत्र, समाचार-पत्र।
Pressure gauge—दाब-मापक।
Presumption—१. प्रकल्पना। २. अवलेव। ३. अर्थापत्ति अलंकार।
Presumptuous–१. अवक्षिप्त। २. अवलेपक।
Presumptuousness—अवलिप्ति।
Previous instruction—पूर्वादेश।
Pride—अभिमान, घमंड।
Priest—पुरोहित।
Priesthood—पौरोहित्व।
Prima facie—ऊपर से देखने पर, प्रत्यक्षतः, प्रथम दृष्ट्या।
Primary—प्राथमिक।
Primary education—प्राथमिक शिक्षा।
Prime Minister—प्रधान मंत्री।
Primitive—आदिम।
Primitive race—आदिम जाति।
Principal—आचार्य, प्रधानाचार्य।
Principle—सिद्धांत।
Printing press—छापाखाना, मुद्रणालय।
Priority—प्रथमता, प्राथमिकता।
Prison—कारागार, कैदखाना, बंदी-गृह।
Prisoner—कैदी, बंदी।
Prisoner of war—युद्ध-बंदी।
Private—खासगी; वैयक्तिक।
Private Secretary—निजी सचिव।
Privilege—प्राधिकार, विशेषाधिकार।
Privy pot—शौचनी।
Prize—१. इनाम, पारितोषिक, पुरस्कार। २. नौ-जित माल।
Prize Court—नौ-जित न्यायालय।
Probation—परिवीक्षण, परिवीक्षा।
Problem—१. समस्या। २. निर्मेय। (तर्क-शास्त्र)
Procedure—प्रक्रिया।
Proceeding—प्रक्रिया।
Proceedings—कार्य-विवरण।
Proceeds—अर्थागम।
Process—१. प्रक्रम। २. प्रक्रिया, विधि। ३. आदेशिका।
Process fee—प्रसर-शुल्क।
Process server—प्रसर-पात्र।
Proclamation—१. उद्घोषणा, घोषणा। २. घोषणा-पत्र।
Procuress—कुटनी।
Produced—प्रस्तुत।
Product—गुणन-फल।
Production—१. उत्पादन। २. उपज।
Productivity—उपजाऊपन।
Profession—पेशा।
Profession tax—वृत्ति-कर।
Professor—प्राध्यापक।
Profile—एक-चश्म, पार्श्वगत।
Profit—१. लाभ। २. लभ्यांश।
Profitable—लाभदायक, स्वार्थिक।
Profit and loss—लाभालाभ।
Profiteer—मुनाफाखोर।
Profiteering—मुनाफाखोरी।
Programme—कार्य-क्रम।
Progress—१. उन्नति। २. प्रगति।
Progression—१. पुरोगति। २. श्रेढ़ी।
Progressive—१. पुरोगामी। २. प्रगतिशील। ३. श्रेढ़िक।
Prohibitory—प्रतिषेधक।
Project—प्रयोजना।
Projected—प्रक्षिप्त।
Projection—प्रक्षेपण।
Projector—प्रक्षेपक।
Proletariat—सर्वहारा।
Promise—प्रतिश्रुति।
Promising—उदीयमान, होनहार।
Promoted—उन्नीत।
Promotion—१. उन्नयन। २. पदोन्नति।
Promulgated—प्रचारित।
Promulgation—प्रख्यापन।
Pronote—हस्तांक-पत्र।
Pronoun—सर्वनाम।
Pronunciation—उच्चारण।
Proof—१. उपपत्ति। २. प्रमाण, सबूत। ३. शोध्य-पत्र।
वि० कवच, सह (यौ० के अन्त में)।
Propaganda—अधिप्रचार।
Propagandist—अधिप्रचारक।
Proper—उपयुक्त।
Property—१. गुण, गुण-धर्म, धर्म। २. जायदाद, संपत्ति।
Property mark—स्वामित्व-चिह्न।
Property tax—संपत्ति-कर।
Prophet—पैगंबर।
Proportion—अनुपात, समानुपात।
Proportional—आनुपातिक।
Proportionate—समानुपातिक।
Proposal—प्रस्ताव।
Proposition—प्रतिज्ञा।
Proprietor—स्वामी।
Prorogation—सत्रावसान।
Proscribed diet—प्रतिभोजन।
Proscription—१. बाधन। २. अभिनिषेध।
Prose—गद्य।
Prosody—पिंगल।
Prospectus—विवरण-पत्र, विवरणिका।
Prostate gland—अष्ठीला ग्रंथि।
Prostitution—वेश्यावृत्ति।
Protection—संरक्षण।

Protection duty—संरक्षण-शुल्क।
Protectionism—संरक्षण-वाद।
Protective—शरण्य।
Protectorate—रक्षित राज्य, संरक्षित राज्य।
Protein—प्रोटीन।
Protest—प्रत्याख्यान।
Prothesis—पूर्वागम।
Protocol—१. नयाचार। २. पूर्व-लेख, संलेख।
Protoplasm—जीव-द्रव्य, जीव-धातु।
Protraction—अविलंबन।
Protractor—चाँदा।
Proved—प्रमाणित, सिद्ध।
Proverb—कहावत।
Provided—उपबंधित।
Providence—पूर्व-विवेचन।
Province—प्रदेश, प्रांत, क्षेत्र।
Provincialism—प्रांतीयता, प्रादेशिकता।
Provident fund—निर्वाह-निधि, भविष्य-निधि, संभरण निधि।
Provision—१. उपबंध, शर्त। २. व्यवस्था।
Provisional—अंतःकालीन, अंतर्कालीन।
Proviso— उपबंध, प्रतिबंध।
Provocation—उत्तेजना।
Provocative—उत्तेजक, भड़काऊ।
Proxy—प्रति-पत्र।
Pruning—छँटाई।
Psychic—प्रेतात्म-विद्या।
Psychic being—चैत्य पुरुष।
Psychic element—मनस्तत्व।
Psychicization—चैत्यीकरण।
Psychics—आत्मिकी।
Psycho-analysis—मनोविश्लेषण।
Psychological—मनोवैज्ञानिक।
Psychologist—मनोवैज्ञानिक।
Psychology—मनोविज्ञान।
Public—वि॰ सार्वजनिक।
सं॰ जनता, सर्वसाधारण।
Publication—प्रकाशन।
Public career—लोक-वाहक।
Public health—लोक-स्वास्थ्य।
Public life—लोक-जीवन।
Public office—लोक-पद।
Public opinion—लोक-मत।
Public peace—लोक-शांति।
Public place—महाभूमि।
Public servant—लोक-सेवक।
Public service—लोक-सेवा।
Public Service Commission—लोक-सेवा आयोग।
Public spirit—लोक-भावना।
Public Utility Service—लोकोपयोगी सेवा।
Public works—लोक-वास्तु।
Pulley—गड़ारी।
Pulp—१. गूदा। २. लुगदी।
Pulsation—स्पंदन।
Pulse—१. नाड़ी। २. स्पंद।
Pump—दमकल।
Pun—श्लेष।
Punch marked—आहत (मु ा)।
Punch marked coin—आहत मुद्रा, शलाका मु ा।
Punctual—समयनिष्ठ।
Punctuality—समयनिष्ठता।
Punctuation—विराम-चिह्न।
Punishment—दंड।
Punitive—ताजीरी, दांडिक।
Punitive force—ताजीरी पुलिस, दांडिक पुलिस।
Purchases journal—क्रय-पंजी।
Purchases ledger—क्रय-प्रपंजी।
Purging—सारण।
Purification—पूतीकरण।
Purple— बैंगनी
Purpose—अभिप्राय।
Putrefaction—पूयन।
Pyrrhoea—परिदर, पूय-दंत।
Pyrite—माक्षिक।
Pyrometer—उत्तापमापी।

Q

Quadrant—पाद।
Quail—बटेर।
Quake—कंप।
Qualification—अर्हता, परिगुण। योग्यता।
Qualified—अर्ह, परिगुणी, योग्य।
Quality—गुण।
Quandary—उभय-संकट, धर्म-संकट।
Quantity—परिमाण।
Quantum—प्रमात्रा।
Quarantine—१. संग-रोध, संस ोध। २. निरोध।
Quarry—१. उत्खनन। २. अश्मखनि, खदान।
Quarter—तिमाही, त्रिमास।
Quarterly—तिमाही, त्रैमासिक।
Quarto—चौपेजी।
Que—पंक्ति।
Q. E. F.—इतिकृत।
Queen bee—जननी मखी, रानी मखी।
Query—१. अनुयोग, पूछताछ। २ शंका।
Question—१. प्रश्न। २. सवाल। ३. शंका।
Questionable—शंकनीय।
Questionaire—प्रश्नावली।
Questioner—प्राश्निक।
Quibbling—वाक्-छल।
Quorum—गण-पूर्त्ति।
Quota—नियतांश, यथांश।
Quotation—अवतरण, उद्धरण।

R

Racial discrimination—वर्ण-भेद।
Racialism—जातिवाद।
Rack—टाँड।
Radar—तेजोन्वेष।
Radiant of meteors—उल्का-पंथ।
Radiation—विकिरण।
Radiator—विकिरक।
Radicalism—अतिवाद।
Radio-active—तेजस्क्रिय।
Radio-activity—तेजस्क्रियता, विकिरण-शीलता।
Radiograph—रेडियो-चित्रण।
Radiography—एक्स-रे चित्रण, रेडियो चित्रण।
Radiology—विकिरण-विज्ञान।
Radio-meter—विकिरण-मापी।
Radio-therapy—रेडियो-चिकित्सा।
Radius—त्रिज्या।
Raillery—फबती।
Rainbow—इन्द्र-धनुष।
Rain gauge—वर्षा-मापक।
Rally—१. चक्र। २. समवेतन।
Ramp—ढलान, ढाल, रपटा।
Range—१. परास, भार। २. शृंखला (पर्वत आदि का)।
Rank—पदवी।
Ransom—निष्कृति-धन, परिक्रय।
Rape—जिना-बिल-जब्र, बलात्कार।
Rare—१. क्वचित्। २. दुर्लभ।
Rate—१. दर, भाव। २. पौर-कर। ३. उप-शुल्क।
Rate-circular—रवौती।
Ratification—१. अनुसमर्थन, अभिपोषण। २. सत्यांकन।
Ratified—१. अनुसमर्थित, अभिपुष्ट। २. सत्यांकित।
Ratio—अनुपात।
Ration—१. अनुभक्तक। २. रसद।
Rationalism—तर्कनावाद, बुद्धिवाद।
Rationalist—तर्कनावादी।
Rationed—अनुभक्त।
Rationing—अनुभाजन।
Raw material—कच्चा माल।
Reaction—१. अभिक्रिया। २. प्रतिक्रिया।
Reactionism—प्रतिक्रियावाद।
Reactor—१. अभिक्रियक। २. प्रतिक्रियक।
Readiness—१. आसज्जा। २. तैयारी।

Reading—१. अध्ययन। २. पढ़त, पाठ, वाचन।
Reading room—वाचनालय।
Re-agent—प्रतिकर्मक।
Real—वास्तविक।
Realism—यथार्थवाद।
Reality—यथार्थता, वास्तविकता।
Re-armament—पुनरस्त्रीकरण।
Reason—युक्ति।
Recall—प्रत्याह्वान।
Receipt—प्राप्तिका, रसीद।
Receiver—१. आदाता, आदायक, प्रापक, ३. ग्राहक-यंत्र। ३. प्रतिग्राहक।
Receptacle—१. आशय। २. धानी, पात्र।
Reception—१. प्राप्ति। २. स्वागत।
Reception committee—स्वागत-समिति।
Receptionist— अभ्यर्थक, स्वागतक।
Reciprocal—अन्योन्य।
Reciprocity—अन्योन्यता।
Recital—उद्धरणी।
Recitation—१. पठन, पाठ। २. काव्य-पाठ। ३. प्रपठन।
Reckoning—संगणन।
Recognised—मान्य, मान्यताप्राप्त, स्वीकृत।
Recognition—मान्यता।
Recoil—प्रतिक्षेप।
Recollection—१. अनुस्मरण, स्मृति।
Recommendation—अनुशंसा। संस्तुति, सिफारिश।
Recommended—अनुशंसित।
Reconstruction—पुनर्निर्माण।
Record—१. अभिलेख। २. ध्वन्यालेख। ३. उच्चमान। ४. उच्चांक।
Recording—१. अभिलेखन। २. ध्वन्यालेखन।
Recording machine—अभिलेखन यंत्र।
Record-keeper—अभिलेखपाल।
Record room—अभिलेखालय।
Recovery—प्रतिप्राप्ति।
Rectangle—आयत।
Rectangular—आयताकार।
Rectification—१. ऋजुकरण। २. परिशोधन।
Rector—अधिशिक्षक।
Rectum—मलाशय।
Recurrence—आवर्तन।
Recurring—आवर्तक।
Redeemed—निष्क्रीत।
Redemption—१. निष्क्रय। २. निष्क्रयण।
Red-handed—कर्म-गृहीत, रँगे हाथ, रँगे हाथों।
Red heat—रक्त ताप।
Red-hot—रक्त तप्त।
Re-distribution—पुनर्विभाजन।
Red lock—लाल ताला।
Red Sea—लोहित-सागर।
Red-tape—लाल-फीता।
Reduction—१. अवकरण, कमी, घटाव। २. कटौती।
Re-embursement—प्रतिपूर्त्ति।
Re-enacted—पुनर्निहित।
Re-enactment—पुनर्विधायन।
Re-examination—पुनर्परीक्षण।
Referee—अभिदेशिकी, निर्देशी।
Reference—१. निर्देश, निर्देशन। २. संदर्भ, हवाला।
Reference book—निर्देश-ग्रंथ।
Reference books—संदर्भ-साहित्य।
Referendum—जन-निर्देश।
Refinement—परिष्कृति।
Refinery—१. परिष्करण-शाला, परिष्करणी। २. परिष्कार।
Reflection—परावर्तन, प्रत्यावर्तन।
Reflector—प्रकाश-परावर्तक।
Reformatory—वि० सुधारक। पुं० सुधारालय।
Reformer—सुधारक।
Refractoriness—गलन-रोध, तापावरोध।
Refractory—गलनरोधी, तापावरोधक।
Refrigeration—प्रशीतन।
Refrigerator—प्रशीतक।
Refugee—शरणार्थी।
Refund—प्रतिनिचयन।
Refutation—खंडन।
Regatta—जलोत्सव।
Regent—राजप।
Regimentation—अधिशासन।
Register—पंजिका, पंजी।
Registered—निबद्ध।
Registrar—पंजीयक।
Registration—पंजीयन।
Regression—१. प्रत्यागमन। २. प्रतिपायन।
Regret—खेद।
Regular—नियमित।
Regulating—नियमन।
Regulation—१. नियमन, विनियमन। २. विनियम।
Regulator—नियामक।
Rehabilitation—पुनर्वास।
Rehearsal—१. पूर्वाभ्यास। २. पूर्वाभिनय।
Rejected—अस्वीकृत।
Rejection—अस्वीकरण।
Rejoinder—प्रत्युत्तर।
Relapse—पुनरावर्तन।
Relapsing fever—पुनरावर्ती ज्वर।
Relative—अनुपाती, सापेक्ष, सापेक्षिक।
Relative order—क्रम।
Relativity—आपेक्षिकता, सापेक्षता।
Relativity theory—आपेक्षिकतावाद।
Relay—पुनर्सारण।
Relayed—पुनर्सारित।
Relay race—चौकी दौड़।
Relevancy—संगति।
Relevant—प्रासंगिक, संगत।
Relic—स्मृति-शेष।
Relief—उच्चित्र, निम्नोन्नत।
Relieved—पद-न्यस्त।
Relieving—पद-ग्राही, भारग्राही।
Religious—१. धार्मिक। २. धर्मपरायण।
Religiousness—धर्मपरायणता।
Remark—१. उपकथन, टिप्पणी। २. कैफियत।
Remedial—प्रतिविधिक।
Remedy—प्रतिविधि।
Reminder—अनुस्मारक, स्मरण-पत्र।
Reminiscence—संस्मरण।
Remission—१. अवसर्ग। २. छूट।
Remuneration—पारिश्रमिक।
Renaissance—नव-जागरण, पुनरुत्थान, पुनर्जागरण।
Renewal—नवीनीकरण।
Renovation—नवीकरण, पुनरुद्धार।
Rent—किराया।
Rent officer—भाटक अधिकारी।
Repairs—मरम्मत।
Repayment—परिशोध।
Repeal—निरसन।
Repercussion—प्रति-समाघात।
Repetition—आवृत्ति, पुनरावृत्ति, पुनरुक्ति।
Replacement—पुनर्स्थापन।
Report—१. प्रतिवेदन। २. विवरण-पत्र। सूचना।
Reported—प्रतिवेदित।
Reporter—१. प्रतिवेदी। २. संवाददाता।
Representation—प्रतिनिधित्व।
Representative—प्रतिनिधि।
Representative Government—प्रतिनिधि शासन।
Reprint—पुनर्मुद्रण।
Reprisal—प्रतिपीड़न, प्रतिशोध, प्रत्याघात।
Reproduction—१. तथाकथन। २. प्रजनन। ३. पुनर्जीवन।
Republic—गण-तंत्र, गण-राज्य।
Republican—गण-तंत्री।
Repudiation—अनंगीकरण।
Repugnancy—विरोध।
Repulsed—प्रतिक्षिप्त।

Repulsion—विकर्षण।
Request—प्रार्थना।
Requirement—अपेक्षा।
Requisition—अधियाचन।
Rescinding—निरसन।
Research—खोज, गवेषणा, शोध।
Resentment—अमर्ष, रोष।
Reservation—प्रारक्षण।
Reserved—प्रारक्षित।
Residence—आवास, रिहाइश।
Residency—पदावास।
Resident—वासामात्य।
Residential—आवासिक, आवसीय, रिहाइशी।
Resignation—त्याग-पत्र।
Resolution—१. निश्चय। २. मंतव्य। ३. संकल्प।
Resonance—अनुनाद।
Resources—संबल, साधन।
Response—अनुक्रिया।
Responsible—उत्तरदायी।
Rest—विश्राम।
Restaurant—भोजनालय।
Restoration—पुनरुद्धार।
Restricted—निर्बद्ध।
Restriction—१. आसेध। २. पाबंदी, प्रतिबंध, रोक।
Result—परिणाम।
Resultant—फलिक।
Resumption—१. पुनरारंभ। २. पुनर्ग्रहण।
Retail—खुदरा, परचून।
Retired—अवकाश-प्राप्त।
Retirement—१. अवकाश-ग्रहण। २. निवृत्ति ३. विश्रांति।
Retreat—अपयान, अपावर्तन।
Retrenchment—छँटनी।
Retrocognition—पश्च-दर्शन।
Retrogression—पश्चगमन।
Retrogressive—पश्चगामी।
Retrospected—सिंहावलोकित।
Retrospection—अनुदर्शन, पश्च-दर्शन, सिंहावलोकन।
Retrospective—१. पश्चदर्शित, सिंहावलोकित। २. पूर्व-व्यापित।
Return—१. वापसी। २. प्रतिलाभ। ३. प्रत्याय। ४. लेखा, विवरणी।
Returning officer—निर्वाचन अधिकारी।
Return ticket—वापसी टिकट।
Revenge—प्रतिशोध, बदला।
Reversion—१. उत्क्रमण, प्रतिवर्त्तन। २. विपर्यय।
Review—१. पुनरीक्षण, पुनर्विलोकन। २. प्रत्यालोचन, समालोचना, समीक्षा।
Revised—पुनरीक्षित।
Revision—१. पुनरवलोकन, पुनरीक्षण। २. पुनर्विचार, नजरसानी।
Revival—पुनरुज्जीवन।
Revived—पुनरुज्जीवित।
Revocation—प्रतिसंहरण।
Revolution—१. परिक्रमण। २. क्रांति।
Rhetoric—वक्तृत्व-शास्त्र।
Rheumatism—गठिया।
Rhinoceros—गैंडा।
Rhizome—कंद, प्रकंद।
Rhombus—सम-चतुर्भुज।
Rhythm—लय।
Rhythmical—लयक।
Rickets—अस्थिदौर्बल्य (रोग)।
Riddle—पहेली।
Right—१. अधिकार। २. स्वत्व।
Right of easement—सुखाधिकार।
Right of passage—मार्गाधिकार।
Right wing—दक्षिण-मार्ग।
Rigorous imprisonment—कड़ी सजा, सपरिश्रम-कारावास।
Rise—उदय।
Risk—जोखिम।
Risk owner's—धनी सिर।
Ritual right—संस्कार।
Rival—प्रतिस्पर्धी।
Rivalry—प्रतिस्पर्धा।
Roasting—भूनना।
Robe—महावस्त्र।
Robot—यंत्र-मानव।
Rod—दंड।
Role—चीरक।
Roll—खर्रा।
Roller—बेलन।
Rope-way—रज्जु-मार्ग।
Rose—गुलाब।
Rosy—गुलाबी।
Rotation—घूर्णन, परिभ्रमण।
Rough—स्थूल।
Round—चक्र।
Roundworm—केंचुआ।
Routine—नित्यचर्या, नेम, नैत्यक।
Royal—राजकीय, राजशाही।
Royalty—स्वत्व-शुल्क।
Rule—नियम।
Rule of three—त्रैराशिक।
Ruling—व्यवस्था।
Runner—१. दौड़ाक। २. धावक।
Rural uplift—ग्राम-सुधार।

S

Sabotage—अंतर्ध्वंस, तोड़-फोड़, ध्वंसन।
Saccharimeter—शर्करामापी।
Saccharose—इक्षु-शर्करा।
Sacrament—संस्कृति।
Safeguard—रक्षाकवच, रक्षोपाय।
Safety—क्षेम।
Saffron—केसर
Sagittarius—धनु (राशि)।
Sale-deed—बैनामा, विक्रय-पत्र।
Sales journal—विक्रय-पंजी।
Sales tax—बिक्री-कर, विक्रय-कर।
Salivary gland—लाला-ग्रंथि।
Salmon—वि० गेरुआ। सं० मृदुपक्षा (मछली)।
Salvage—१. निस्तार, निस्तारण। २. भ्रंशोद्धार।
Salvation army—मुक्ति-सेना।
Sample—बानगी।
Sanction—१. मंजूरी, स्वीकृति। २. अनुशासन, अनुशास्ति।
Sanctioned—स्वीकृत।
Sanctuary—शरण-क्षेत्र, शरण-स्थान।
Sandfly—मरु-मक्षिका।
Sanitation—१. शुचिता, स्वच्छता। २. स्वास्थ्य-रक्षा।
Sanitorium—आरोग्य-आश्रम, स्वास्थ्य-निवास।
Sap—रस।
Sappers and miners—सफरमैना।
Sapphire—नीलम, नील-मणि।
Sapwood—रस-दारु।
Sarcasm—कटाक्ष।
Satellite—उपग्रह।
Satire—व्यंग्य-गीति।
Satisfaction—मनस्तोष।
Saving—बचत।
Scale—१. काँटा। २. परिमाण, मापनी। ३. शल्क।
Scale leaf—पाताली पत्ती।
Scalene—विषम-बाहु, विषम-भुज।
Scandal—बदनामी।
Scattering—प्रकीर्णन।
Scene—दृश्य।
Scenery—दृश्य।
Scepticism—संशयवाद।
Schedule—परिगणित।
Scheme—परियोजना, योजना।
Schizophrenia—अंतराबंध।
Scholar—कृत-विद्य।
Scholarship—छात्र-वृत्ति।
School—१. शाखा। २. संप्रदाय। ३. विद्यालय।
Sciatica—गृध्रसी।
Science—१. विज्ञान। २. शास्त्र।

Scolding—आक्रोश।
Scorched earth—सर्व-क्षार।
Scorpio—वृश्चिक (राशि)।
Scout—चर।
Screen play—चित्र-लिपि।
Screw—पेच।
Scriptures—आगम।
Scrofula—कंठ-माला।
Scroll—खर्रा, चीरक, वर्ति-लेख।
Scrutiny—संपरीक्षण, संवीक्षा।
Scurrility—अपभाषण।
Scurvy—प्रशीताद।
Sea-green—समुद्र-लहरी।
Seal—मुद्रा, मोहर।
Seal of office—पद-मुद्रा।
Seance—आत्मायन।
Sea-quake—समुद्र-कंप।
Search-light—अन्वेषक-प्रकाश, विचयन-प्रकाश, खोजबत्ती।
Seasoning—सीझना (लकड़ी)।
Sea voyage—समुद्र-यात्रा।
Secant—छेदिका।
Secondarily—परतः।
Secondary—परवर्ती (वनस्पति विज्ञान)।
Secondary education—माध्यमिक शिक्षा।
Seconding—अनुमोदन, समर्थन।
Second person—मध्यम पुरुष।
Secret—रहस्य।
Secretariat—सचिवालय।
Secretary—सचिव।
Secretion—१. निःसारण। २. स्राव।
Section—१. अनुभाग, प्रभाग। २. दफा, धारा।
Sectional—अनुभागीय।
Sector—१. क्षेत्रक। २. वृत्तखंड। (ज्यामिति)
Secular—१. ऐहिक, धर्म-निरपेक्षता। २. लौकिक।
Secularism—धर्म-निरपेक्ष।
Secular state—ऐहिक राज्य, धर्म-निरपेक्ष राज्य, लौकिक राज्य।
Security—१. सुरक्षा। २. प्रतिभूति, मुचलका।
Security Council—सुरक्षा-परिषद।
Sedative—शामक।
Sediment—अवसाद, कल्क, तलछट।
Sedimentary—अवसादी।
Sedition—राजद्रोह।
Seismic—भकंपीय।
Seismograph—भकंप-लेखी।
Seismology—भकंप-विज्ञान।
Seismometer—भूकंप-मापी।

Select Committee—प्रवर-समिति।
Self—आत्म।
Self-acquired—स्व-अर्जित। स्वार्जित।
Self-assertion—आत्म-स्थापन।
Self-confidence—आत्म-विश्वास।
Self-consciousness—१. आत्म-चेतना। २. आत्म-संकोच।
Self-contained—आत्म-भरित।
Self-defence—स्व-रक्षा।
Self-determination—आत्म-निर्णय।
Self-government—स्व-शासन।
Self-loading—स्वयं-भर।
Self-praise—आत्म-श्लाघा।
Self-realization—आत्म-सिद्धि।
Self-respect—आत्म-गौरव, स्वाभिमान।
Self-starter—स्वचालक।
Semanteme—अर्थ-तत्त्व।
Semantic change—अर्थ-विकार।
Semantics—अर्थ-विधान।
Semblance—सारूप, सारूप्य।
Semi—अर्ध।
Semi-circle—अर्ध-वृत्त।
Seminar—विचार-गोष्ठी।
Semination—गर्भ-स्थापन।
Sender—प्रेषक।
Senility—सठिआव।
Senior—प्रवर।
Sensation—सनसनी।
Sense—१. भाव। २. संज्ञा।
Sense of humour—विनोद-वृत्ति।
Sense organ—ज्ञानेन्द्रिय।
Sensibility—संवेद्यता।
Sensory—सांवेदिक।
Sensualism—इंद्रियार्थवाद।
Sentence—वाक्य।
Sentiment—१. मनोभाव। २. रस।
Septic—वि० पूतिदूषित, पौतिक। सं० पूति।
Septic tank—पूति-कुंड, संडास-टंकी।
Sequnce—अनुक्रम।
Serial number—क्रम-संख्या।
Series—१. क्रमक। २. श्रृंखला। ३. श्रेणी।
Serpentine—सर्पिल।
Serum—सौम्य।
Servant—१. नौकर। २. सेवक।
Service—१. अनुपालन। २. नौकरी। ३. सेवा।
Service book—सेवा-पंजी।
Session—१. अधिवेशन। २. सत्र।
Session Court—सत्र-न्यायालय।
Session Judge—दौरा-जज।
Set—कुलक।
Set aside—अन्यथा करना।

Set square—कोनिया।
Settlers—आबादकार।
Sex—लिंग।
Sexology—यौनिकी।
Sexual—यौन, लैंगिक।
Sexuality—यौनता, लिंगित्व।
Sexy—योनिक।
Shade—१. छाया। २. आभा। ३. झाँप।
Shading—छायाकरण।
Shadowgraph—छाया-चित्र।
Shaft—कूपक।
Shaker—हल्लित्र।
Shape—आकृति।
Share—अंश, हिस्सा।
Share-holder—अंश-धारी, हिस्सेदार।
Sharer—सह-भागी।
Shark—सोर, हाँगर।
Shavings—छीलन।
Sheet—फलक।
Shell—खोल।
Shelter—१. आश्रय। २. शरणगृह।
Sheriff—सुमान्य।
Shield—ढाल, सिपर।
Shift—पाली।
Shirt—कमीज।
Shock—संक्षोभ।
Shorthand—१. आशुलिपि। २. संक्षिप्त-लिपि।
Short-lived—१. अल्प-जीवी, अल्पायु। २. अल्पकालिक।
Show-down—बल-परीक्षा।
Shrinkage—आकुंचन।
Shrub—क्षुप।
Sib—सहोदर।
Side—भुजा।
Sidereal year—नाक्षत्र-वर्ष।
Siege—घेराबंदी, नाकेबंदी, रोध।
Sighting—लक्ष्य-साधन।
Signatory—हस्ताक्षरक।
Signature—हस्ताक्षर।
Sign-board—नाम-पट्ट।
Signed—स्वाक्षरित।
Silencer—निःशब्दक।
Silent—अनुच्चरित।
Silk cotton—सेमल।
Silver Jubilee—रजत जयंती।
Silver screen—रजत-पट।
Silver standard—रजत-मानक।
Similar—सदृश, समान।
Similarity—सादृश्य।
Simple—सादा।
Simple imprisonment—सादी सजा।
Simplification—सरलीकरण।

Simultaneous—१. युगपत्, समकालीन। २. समकालिक।
Sinew—कंडरा।
Singular—वि० अनूठा।
सं० एकवचन (व्याकरण)।
Sinus—नाड़ी व्रण, नासूर।
Sit-down strike—बैठकी हड़ताल, बैठ-हड़ताल।
Site—स्थल।
Site plan—स्थलालेख्य।
Sitting—बैठक।
Size—आकार।
Sketching—आकार-रेखन।
Skilful—कुशल।
Skilled—कुशल।
Skin—चमड़ा।
Skirmish—झड़प
Skull—कपाल, खोपड़ी।
Sky—आकाश।
Sky-blue—आसमानी।
Sky-scraper—अभ्रंकश, गगनचुंबी।
Slag—१. काँच, मल, खेड़ी। २. धातु-मल। ३. कचरा।
Slaughter house—वधालय।
Sleeper—शयनिका।
Sleeping movement—निद्रा-गति।
Sleet—हिमी-वर्षा।
Slight—अवधीरण।
Slip—चूक, भूल।
Slogan—घोष, नारा।
Sloth—शाखालंबी, सुस्तपाँव।
Slow fever—मंद-ज्वर।
Slum—गंदी बस्ती, मलित्रवास।
Small intestine—क्षुद्रांत्र।
Smoke-blue—अब्बासी (रंग)।
Smoke-screen—धूम-पट।
Smuggler—चौकीमार, तस्कर-व्यापारी।
Smuggling—चौकीमारी, तस्करी, तस्कर-व्यापार।
Snipe—चाहा (पक्षी)।
Snow-bite—तुषार-दंश, हिम-दंश।
Snow-line—तुषार-रेखा, हिम-रेखा।
Snowman—हिम-मानव।
Snow-storm—बर्फानी, तूफान, हिम-झंझावात।
Soap stone—गोरा पत्थर।
So-called—तथाकथित, तथोक्त।
Socialism—समाजवाद।
Socialist—समाजवादी।
Socialization—समाजीकरण।
Social reform—समाज-सुधार।
Social reformer— समाज-सुधारक।
Society—संस्था।
Sociology—समाज-शास्त्र।
Socrates—सुकरात।
Soft—कोमल।
Soft currency—सुलभ-मुद्रा। तत्काल-गणक।
Solace—तोष।
Solar—सौर।
Solar eclipse—सूर्य-ग्रहण।
Solar system—सौर-जगत, सौर मंडल।
Solar year—सौर वर्ष।
Soldering—१. झलाई। २. टँकाई।
Sole—एकल।
Sole Corporation—एकल निगम।
Solicitation—अनुयोग।
Soliloquy—स्वगत-कथन।
Solipcism—अहंवाद।
Solitary cell—काल-कोठरी।
Solstice—अयन।
Soluble—विलेय।
Solution—१. घोल, मिश्रण। २. हल (समस्या का)।
Sonority—स्वरता।
Sonorous—स्वरित।
Sore throat—गल-शोथ।
Sorrow—दुःख।
S. O. S.—संकट-संकेत।
Soul—अंतरात्मा, आत्मा।
Sound—वि० स्वस्थ।
सं० १. ध्वनि, शब्द। २. स्वर।
Sound box—नाद-पेटी।
Source—स्रोत।
South Pole—कुमेरु, दक्षिणी ध्रुव।
Souvenir—स्मारिका।
Sovereign—वि० प्रभु-सत्ताक।
सं० अधिराज।
Sovereign state—प्रभु-राज्य।
Sovereignty—१. प्रभु-सत्ता। २. अधिराज।
Soya-bean—भटतास, भटवाँस।
Space—१. अंतरिक्ष। २. अवकाश।
Space-ship—अंतरिक्ष-यान, व्योम-यान।
Spacing—अंतरण, अंतरालन।
Spark—स्फुलिंग।
Spasm—ऐंठन।
Speaker—१. अध्यक्ष। २. प्रमुख। ३. वक्ता।
Specialization—विशिष्टीकरण।
Special number—विशेषांक।
Spectrum—वर्ण-क्रम।
Speculation—फाटका, सट्टा।
Speculator—सट्टेबाज।
Speech—वक्तृता, व्याख्यान।
Speech of brevity—समासोक्ति।
Spelling—अक्षरी, वर्तनी।
Spermatozoan—शुक्राणु।
Sphere of influence—प्रभाव-क्षेत्र।
Spherical—१. गोल, गोलाकार। २. सर्व-वर्त्तुल।
Spicing—छौंकना, बघारना।
Spike—शूली।
Spinal—सौषुम्न।
Spinal cord—मेरु-रज्जु।
Spine—पृष्ट-वंश।
Spinning—कताई, कातना।
Spiral—पेचक।
Spirit—१. अंतरात्मा। २. प्रेतात्मा। ३. सुरा। ४. सुरासव।
Spiritual—१. आध्यात्मिक। २. प्रेतात्मक
Spiritualism—१. आध्यात्मिकी। २. प्रेतात्मवाद।
Spiritualist—प्रेतात्मवादिक।
Spiritualistic—अध्यात्मवादिक।
Spite—विद्वेष।
Spiteful—विद्वेषी।
Spleen—तिल्ली, प्लीहा।
Splint—चपती, खपची।
Split personality—खंडित व्यक्तित्व।
Splitting—विखंडन, विभेदन।
Spokesman—प्रवक्ता।
Sporigy—इस्पंजी।
Sporadic—छुट-पुट।
Spring—कमानी।
Sprue—संग्रहणी।
Squad, Squadron—दस्ता।
Stabilization—स्थिरीकरण।
Stable—वि० स्थिर। सं० अस्तबल।
Staff—१. अमला। २. ध्वजदंड।
Stage—१. अवस्था, अवस्थान। २. चरण। ३. मंच। ४. रंग-मंच।
Stainless steel—अकलुष इस्पात।
Stamen—पराग-केसर, पुंकेसर।
Stamp paper—पक्का कागज।
Stand—उप-स्तंभ, घाती।
Standard—मानक।
Standardization—मानकीकरण।
Standardized—मानकित।
Standard time—मानक, समय।
Standing committee—स्थायी समिति।
Standing crop—खड़ी फसल।
Starch—१. मंड। २. श्वेत-सार।
Star-dust—तारिका-धूलि।
Star-fish—समुद्र-तारा।
Starvation—भुखमरी।
State—१. दशा। २. राज्य।
State Funds—राज्य-निधि।
Statement—१. अभ्युक्ति, कथन। २. बयान, वक्तव्य। ३. विवरण।

Statesmen—राज-मर्मज्ञ।
State socialism—राजकीय समाजवाद।
Static—स्थितिशील।
Station—अवस्थान।
Stationary—स्थिर।
Stationery—लेखन-सामग्री।
Statics—स्थिति-गणित, स्थैतिकी।
Statistics—१. अंक-शास्त्र। २. सांख्यिकी।
Status—स्थिति।
Status quo—यथा-पूर्व स्थिति।
Statute—संविधि।
Stayed—स्थगित।
Steam—भाप।
Steamer—अग्नि-बोट, धूआँ-कश।
Steel—इस्पात।
Stem—स्कंध।
Stenographer—आशुलिपिक, आशुलेखक।
Step—कदम।
Step-motherly—वैमत्रिय।
Sterile—वंध्य।
Sterilization—१. अनुर्वरीकरण। २. निष्कीटन। ३. विसंक्रमण।
Sterilized—निष्कीटित।
Sterilizer—निष्कीटक।
Sterling balance—पाउंड-पावना।
Stilt—बैसाखी (लकड़ी का उपकरण)।
Stipula—अनुपत्र।
Stitchcraft—सूईकारी।
Stock—भंडार, भांडार, स्कंध।
Stock-book—भांडार पंजी, स्कंध-पंजी।
Stockist—भांडार-पाल।
Stock-keeper—स्कंध-पाल।
Stomach—आमाशय।
Stone—१. पत्थर, प्रस्तर। २. अष्ठि (फलों की गुठली)। ३. अश्मरी, पथरी (रोग)।
Stool examination—मल-परीक्षा।
Storey—खंड।
Storm—तूफान।
Story—कहानी।
Straight forwardness—अर्जव।
Stranger—अजनबी, अनजान।
Strangury—मूत्र कृच्छ (रोग)।
Strata—स्तर।
Strategic area—कूट-क्षेत्र।
Strategic point—कूट-स्थल।
Stratification—स्तरण।
Strawberry—हिसालू।
Strength—शक्ति।
Strike—हड़ताल।
Striker—आघातक (तोप, बन्दूक आदि का)।
Striving—उद्यम।
Strong gale—चंडवात, प्रावल झंझा।
Structure—संरचना।
Struggle—संघर्ष।
Struggle for existence—जीवन-संघर्ष।
Student—१. विद्यार्थी। २. अध्यायी।
Study—१. अध्ययन। २. अनुशीलन।
Study leave—अध्ययनावकाश।
Study room—पाठागार।
Stunt—चकमा।
Stupour—जड़िमा।
Style—सज।
Stylish—सजीला।
Sub—अधः।
Sub-clause—उप-खंड।
Sub-conscious—अज्ञात चेतन, अवचेतन।
Sub-family—उप-कुल।
Subject—१. प्रजा। २. विषय।
Subject committee—विषय-निर्धारिणी-समिति।
Subjective—आत्मनिष्ट।
Sub-judice—न्यायाधीन, विचाराधीन।
Subjugation—अधीनीकरण।
Sublimerial being—अंतस्थ सत्ता।
Sub-marine—गोताखोर, पनडुब्बी।
Sub-normal—अनुप्रसम।
Sub-normally—अनुप्रसमतः।
Sub-order—उप-गण।
Sub-ordinate—अवरस्थ, अधीनस्थ, मातहत।
Sub-ordinate Court—अधीनस्थ न्यायालय।
Sub-ordinate officer—अधीनस्थ अधिकारी।
Sub-registrar—उप-पंजीयक।
Subrogation—संकर्षण।
Sub-rule—उप-नियम।
Sub-Scription—चंदा।
Sub-section—उप-धारा।
Subsequent—परवर्त्ती।
Subsidy—उपदान।
Sub-soil—अधोभूमि।
Substance—भाव।
Substitute—प्रतिस्थापति।
Substitution—प्रतिस्थापन।
Subsumption—उपनय।
Subtle—सूक्ष्म।
Suburle—उप-नगर, परि-नगर।
Suburban—परिनागर।
Succession certificate—उत्तराधिकार प्रमाणक।
Successively—१. अनुपूर्वतः। २. क्रमतः।
Successor—उत्तराधिकारी।
Sufficient—पर्याप्त।
Suffix—पर-प्रत्यय।
Suffocation—घुटन।
Suggestion—सुझाव।
Suicide—आत्म-हत्या।
Suit—दावा, वाद।
Sum—धन-राशि।
Summary—वि० सरसरी। सं० १. सारांश। २. सारांशक।
Summary proceeding—सरसरी प्रक्रिया।
Summary trial—सरसरी व्यवहार दर्शन।
Summer vocation—ग्रीष्मावकाश।
Summit conference—शिखर सम्मेलन।
Summon—आह्वान।
Summons—आकारक, समन।
Sun bath—आतप-स्नान।
Superannuation—अतिहायन।
Superintendence—अधीक्षण।
Superintendent—अधीक्षक।
Superior—प्रवर, वरिष्ठ।
Superiority Complex—उच्चक मनोग्रंथि।
Superman—अतिमानव।
Super-mind—अतिमानस।
Supernatural—आधिदैविक।
Supernumerary—अधिसंख्य।
Superposition—अध्यारोप।
Superseded—अधिक्रांत।
Supersession—अधिक्रमण, अधिक्रांति।
Supersonic—अति-स्वन।
Superstition—अंधविश्वास।
Super tax—अधि-कर।
Supervising—पर्यवेक्षक।
Supervisor—पर्यवेक्षक।
Supplanting—अभिरोपण।
Supplement—१. अतिरिक्त-पत्र, क्रोड-पत्र, परिशिष्ट। २. अनुपूरक, पूरक।
Supplementary—अनुपूरक, पूरक।
Supplementation—अनुपूरण।
Supplied—समायुक्त।
Supplier—समायोजक।
Supply—१. आपूर्ति। २. पूर्त्ति। ३. संभरण।
Supposition—कल्पना।
Supreme—सर्वोच्च।
Supreme Court—सर्वोच्च न्यायालय।
Surcharge—अधिप्रभार, अधिभार।
Surfacing—पृष्ठकरण।
Surgical—शल्यक।
Surgical operator—शल्योपचारी।
Surgeon—शल्यकार।
Surgery—१. शल्यकारी, शल्यक्रिया। २. शल्यशास्त्र।
Surmise—अवकल्पना।
Surplus—वि० अतिरिक्त। सं० अधिशेष, बढ़ती।
Surplus budget—उद्वर्त्त।
Surprise—आश्चर्य, ताज्जुब।

श्री

Surrealism—अति-यथार्थवाद।
Surrender—आत्म-समर्पण, समर्पण।
Surrender Value—समर्पण-मूल्य।
Survey—१. पैमाइश, भूमापन, भूमिति। २. पर्यवलोकन, सर्वेक्षण।
Surveyor—सर्वेक्षक।
Survival—अतिजीवन, उत्तर-जीवन, उत्तर-जीविता, परि-जीवन।
Survivor—अतिजीवी, परिजीवी, उत्तर जीवी।
Susceptibility—आक्रम्यता।
Suspected—संदिग्ध।
Suspended—निलंबित, मुअत्तल।
Suspense—१. अनुलंब। २. असमंजस।
Suspense account—१. उचंत, उचिंत। २. उचंत खाता, उचिंत खाता।
Suspension—निलंबन, मुअत्तली।
Suspicion—संदेह।
Swindler—भगलबाज, भगलिया।
Swindling—भगल, भगलबाजी।
Switch—खटका। बटन।
Symbiosis—सह-जीवन।
Symbal—प्रतिक।
Symbolism—प्रतीकवाद।
Symmetrical—सम-मित, सम्मित।
Symmetry—प्रतिसाम्य, सममिति।
Sympathetic fever—आगंतुक ज्वर।
Sympathy—संवेदना, सहानुभूति, हमदर्दी।
Symposium—परिचर्चा, परि-संवाद।
Synchronisation—समकालन, समक्रमण।
Synchroniser—सम-क्रामक।
Synchronous—सम-क्रमिक।
Syndicate—अभिषद्।
Synod—धर्म-सभा।
Synonym—पर्यार्यवाची, समानार्थक।
Synonymist—पर्यायज्ञ।
Synonymous—पर्यायवाचक, समानार्थक।
Synonyms—१. पर्यार्थ, सभानार्थ। २. पर्याय।
Synonymy—पर्यायकी।
Synopsis—कथा-सार।
Synthesis—संश्लेषण।
Synthetic—श्लिष्ट, संश्लिष्ट।
Syphillis—आतशक, उपदंश, गरमी (रोग)।
Syringe—१. पिचकारी। २. शृंगक, सूई।
System—१. पद्धति, प्रणाली। २. तंत्र, संहति-तंत्र।

T

Table—१. मेज। २. सारणी।
Tablean—झाँकी।
Table-Land—अधित्यका, प्रस्थ।
Taboo—वर्जन, वर्जना।
Tabulation—सारणीकरण, सारणीयन।
Tabulatof—१. सारणिक। २. सारणी-यंत्र। ३. सारणीकार।
Tactile—स्पर्श-ग्राह्य।
Tadpole—छुछ मछली।
Talk—वार्ता।
Talkie—बोल-पट।
Tangent—स्पर्श-रेखा।
Tangible—मूर्त।
Tanker—टंकी जहाज, तेल पोत।
Tanning—अ० सीझना (चमड़े का)। स० सीझाना (चमड़ा)।
Tap—टोंटी।
Tape—फीता।
Taproot—मूसला।
Tarpanlin—तिरपाल।
Tartan gold—अनारी (रंग)।
Taste—स्वाद।
Tax—कर।
Taxicology—विष-विज्ञान।
Taxidermist—चर्म प्रसाधक। (परि०)
Tear gas—अश्रु-गैस।
Technical—१. पारिभाषिक (शब्द)। २. तकनीकी, प्राविधिक, रचना-तंत्री।
Technicality—प्राविधिकता।
Technician—प्रविधिज्ञ।
Technical term—परिभाषा, पारिभाषिक शब्द।
Technique—क्रिया-कलाप, तकनीक प्रविधि, रचना-तंत्र।
Telecommunication—दूर-संचार।
Telegram—तार, दूर-लेख।
Telegraph—दूर-लेखक।
Telegraphic—दूर-लेखी।
Telegraphically—दूर-लेखतः।
Telegraphic money order—दूर-लेखी धनादेश।
Telegraphist—दूर-लेखक।
Telemeter—दूर-मापक।
Telepathist—अतींद्रिय ज्ञानी।
Telepathy—अतींद्रिय ज्ञान, पारेंद्रिय ज्ञान।
Telephone—दूर-भाषक।
Telephonic—दूर-भाषिक।
Telephotograph—दूर-चित्रण।
Telephotography—दूर-चित्रण।
Teleprint—दूर-मुद्र।
Teleprinter—दूर-मुद्रक।
Teleprinting—दूर-मुद्रण।
Telescope—दूर-दर्शक, दूर-वीक्षक।
Teleseism—दूर-कंप।
Television—दूर-दर्श।
Teller—मत-गणक।
Telling—मत-गणन।
Temperate zone—समशीतोष्ण कटिबंध।
Temperature—तापमान।
Tempest—अतिवात।
Temporary—१. अल्पकालिक। २. अस्थायी।
Temptation—प्रलोभ, प्रलोभन।
Tenacious—अभिसक्त।
Tenacity—अभिसक्ति।
Tenant—असामी, काश्तकार।
Tendency—प्रवृत्ति।
Tender—निविदा।
Tendon—कंडरा।
Tenement—आभुक्ति, आभोग।
Tense—आतानिक।
Tenser—आतानक।
Tension—आतति, तनाव।
Tenure—१. पदावधि। ३. स्थायित्व।
Tenure holder—खातेदार।
Term—अवधि। २. कार्य-काल। ३. शर्त्त।
Terminal—१. आंतिक, आवसानिक। २. आवधिक।
Terminal tax—आवसानिक-कर, सीमा-कर।
Termination—१. अवसान। २. परिसमापन। ३. पर-प्रत्यय (व्याकरण)।
Terminology—पारिभाषिकी, शब्दावली।
Terminus—अवसानक।
Terrace gun—बुर्ज-तोप।
Terrace-like—सम-समुन्नत, सीढ़ीनु
Terracota—मृण्मूर्ति।
Terrestrial—स्थलज।
Territorial—१. क्षेत्रिक। २. प्रादेशिक।
Territorial Army—प्रादेशिक सेना।
Territorial waters—क्षेत्रीय समुद्र, जल-प्रांगण, प्रादेशिक समुद्र।
Territory—भू-भाग, राज्य-क्षेत्र।
Terror—आतंक।
Terrorism—आतंकवाद।
Terrorist—आतंकवादी।
Terse—परिसंहत।
Testing—परीक्षण।
Test piece—परीक्षण शलाका।
Test tube—परीक्षण नलिका।
Tetanus—धनुर्वात, धनुष-टंकार, धनुस्तंभ।
Tetra hedron—चतुष्फलक।
Tetraoden—मनुष्य शीर्ष।
Text—पाठ, मूल-पाठ।
Text book—पाठ्य-पुस्तक।
Textual criticism—पाठालोचन।
Texture—पोत।
Theism—१. आस्तिकता। २. ईश्वरवाद।
Theist—ईश्वरवादी।
Theme—१. कथा-सूत्र। २. विषय। ३. विषय-वस्तु।
Theocracy—धर्म-तंत्र।
Theocratic—धर्म-तंत्री, मजहबी।

Theocratic State—धर्म-तंत्री राज्य, मजहबी राज्य।
Theomania—धर्मोन्माद।
Theorem—प्रमेय।
Theory—१. उपपत्ति, सिद्धांत। २. मत, वाद।
Theory of evolution—विकास-वाद।
Therapy—चिकित्सा।
Thermal—तापीय।
Thermal electricity—ताप-बिजली।
Thermograph—ताप-लेखी।
Thermometer—तापमापक-यंत्र।
Thermos—पलघ।
Thesis—प्रबंध।
Third person—अन्य-पुरुष। (व्या०)
Thorn—काँटा।
Thorny—कंटकाकीर्ण, कँटीला।
Thread—सूत, सूत्र।
Threadworm—सूत्र-कृमि।
Threat—धमकी।
Three dimensional—त्रिविध।
Thrombosis—शिरावरोध।
Thumb impression—अँगूठे का निशान, अँगूठे की छाप।
Thyroid—अवटुका।
Thyroid gland—अवटुका ग्रंथि, अवटु ग्रंथि, गल ग्रंथि।
Tick—किलनी।
Tidal waters—वेला-जल।
Tide—भाटा।
Tie and dye—बाँधनू।
Timber—इमारती लकड़ी।
Time—काल।
Time-barred—कालातीत।
Time bomb—समय-बम।
Time signal—समय-संकेत।
Time-table—समय-सारिणी।
Tinge—आभा।
Tissue—ऊतक।
Title—१. आगम। २. उपाधि, पदवी।
Title of honour—मानोपाधि।
Title page—मुख पृष्ठ।
Titration—अनुमापन।
Toilet—अभ्यंजन, प्रसावन।
Toilet water—गंधोदक।
Token—संकेत।
Toll tax—पथ-कर, मार्ग-कर।
Tonnage—नौप्रभार।
Tonsil—गलांकुर, तुंडिका।
Tonsillitis—तुंडिका शोथ।
Tool—औजार।
Torid zone—उष्ण-कटिबन्ध।
Tort—दुष्कृति।
Toss—निक्षेप-निर्णय।
Total—जोड़, योग।
Total eclipse—ख-ग्रास (ग्रहण)।
Totalitarianism—एक दल-वाद।
Total war—समग्र युद्ध।
Totally—सर्वज्ञः।
Touch—स्पर्श।
Touchstone—कसौटी।
Tour—परिक्रम।
Toxic—विषाक्त, वैषिक।
Toxin—जैव-विष।
Town area—पत्तन-क्षेत्र।
Trachea—श्वास-नली।
Tracing—अनुरेख, अनुरेखन।
Tract—भूखण्ड।
Tractor—कृषि-यन्त्र, हल-यन्त्र।
Trade—व्यापार।
Trade balance—व्यापार-तुला।
Trade cycle—व्यापार-चक्र।
Trade mark—मार्का, व्यापार छाप।
Trades tax—व्यापार कर।
Trade union— व्यवसाय संघ।
Tradition—परम्परा।
Traditional—परम्परागत, पारस्परिक।
Traditionalism—परम्परावाद।
Tragacanth—कतीरा (ोंद)।
Trained—प्रशिक्षित।
Trainee—प्रशिक्षणार्थी, प्रशिक्षार्थी।
Training—प्रशिक्षण।
Training college—प्रशिक्षण महाविद्यालय।
Training school—प्रशिक्षण विद्यालय।
Trajectory—१. प्रक्षेप-पत्र। २. प्रक्षेप-चक्र। ३. प्रासायन।
Trance—१. तन्मयता। २. समाधि।
Tranquillity—प्रशान्ति।
Transaction—पणाया, परायावर्त्त।
Transcription—प्रतिलेखन।
Transfer—बदली।
Transferable—हस्तान्तरणीय।
Transferee—१. अन्तरिती (तिन्)। २. हस्तांतरिती, हस्तान्तरी।
Transference—१. अन्तरण। २. स्थानान्तरण। ३. हस्तान्तरण।
Transferor—१. अन्तरितक। २. हस्तान्तरक, हस्तांतर-कर्त्ता।
Transferred—१ स्थानान्तरित। २. हस्तान्तरित।
Transformation—रूपान्तरण।
Transformer—सं० परिणामित्र। वि० परिवर्त्तक।
Transfusion—आभाव।
Transgression—अतिक्रमण।
Transit—पार-गमन, पार-वहन।
Transit pass—निकासी-पत्र।
Translation—१. अनूदन, भाषान्तरण। २. अनुवाद, उल्था, तरजुमा, भाषान्तर।
Translator—अनुवादक, भाषान्तरकार।
Transliteration—१. लिप्यन्तरण। २. लिप्यन्तर।
Transmigration—पुनर्जन्म।
Transmission—पारेषण, सम्प्रेषण।
Transmitter—पारेषक, संप्रेषक।
Transparent—पारदर्शक।
Transport—परिवहन।
Transposition—क्रम-परिवर्तन, विपर्यय।
Transverse—अनुप्रस्थ, आड़ा।
Travelling—सचल।
Travelling allowance—यत्रा-भत्ता।
Treasure—कोष, खजाना।
Treasurer—कोषाध्यक्ष, खजानची।
Treasury—१. खजाना। २. राजकोष।
Treatment—१. उपचार। २. चिकित्सा।
Treaty—१. सन्धि, सुलह। २. सन्धि-पत्र, सुलहनामा।
Trench—खाई।
Trespass—अतिचार।
Trial—परिदर्शन, विचार, विचारण।
Tribunal—अधिकरण, न्यायाधिकरण।
Tributary—सहायक नदी।
Trick—१. चाल, २. चालबाज़ी।
Triennal—त्रैवार्षिक।
Trigger—लिबलिबी।
Triplate—त्रयी।
Trisection—सम-त्रिभाजन।
Trolly—ठेला।
Trophy—जय-चिह्न, विजयोपहार।
Tropic—कटिबन्ध।
Tropical year—सायन वर्ष, सावन वर्ष।
Tropics—अयन-वृत्त।
Truce—अवहार।
True—सत्य।
Trump—तुरुप (खेल)।
Trump card—विजयास्त्र।
Trust—न्यास, प्रन्यास।
Trustee—न्यासधारी, न्यासी।
Tuberous—कन्दिल।
Tube well—नल-कूप।
Tuition—उपशिक्षण।
Tumour—अर्बुद।
Tunnel—बोगदा, सुरंग।
Turning point—आवर्त-बिन्दु।
Turpentine—तारपीन।
Tutor—उपशिक्षक।
Twilight—१. अरुणाभा, झुटपुटा। २. सन्ध्यालोक, सान्ध्य-प्रकाश।
Twist—ऐंठन।
Two dimensional—द्विविम।

Type—१. प्रकार। २. मुद्र। ३. प्रितरूप, प्ररूप।
Type metal—मुद्र-धातु।
Type writer—मुद्र-लेख।
Type writing—टंकण, टाइपकारी, मुद्रलेखन।
Typhoid—आंत्रिक ज्वर, मिआदी बुखार।
Typhus—तंद्रिक ज्वर।
Typical—१. ठेठ। २. प्ररूपी, प्रारूपिक।
Typist—टंकक, मुद्रलेखक।
Tyranny—अत्याचार, जुल्म।
Tyrant—अत्याचारी।

U

Ultimately—अंततोगत्वा।
Ultra microscope—अतिसूक्ष्मदर्शी।
Ultra nationalism—अति राष्ट्रीयतावाद।
Ultra nationalist—अति-राष्ट्रीयतावादी।
Umbra—प्रच्छाया।
Umpine—१. अंककार, आप्त। २. पंच।
Unable—असमर्थ।
Unacquainted—अनभिज्ञ।
Unalterable—अविवर्त्य।
Unanimity—सर्व-सम्मति।
Unarmed—निरस्त्र।
Unavoidable—अनिवार्य।
Uncalled for—अनाहूत।
Uncastrated—आँड़ू।
Uncertainty—अनिश्चय।
Uncommon—असाधारण।
Unconscious—अचेत, बेहोश।
Unconsciousness—अचेतना, बेहोशी।
Unconstitutional—अवैधानिक।
Uncontrolled—अनियंत्रित।
Uncultivated—अकृषित।
Uncurrant—अप्रचलित।
Under—अधस्थ।
Under-current—अंतर्धारा।
Underground—पाताली, भूमिगत।
Underline—अधोरेखा।
Underlining—अधोरेखन।
Undermining—तलोच्छेदन।
Understood—अध्याहृत।
Undesirable—अवांछनीय।
Undone—अकृत।
Undue—अनुचित।
Unearned—अनर्जित।
Uneducated—अशिक्षित।
Unemployed—अनधियुक्त, बेकार।
Unemployment—अनियुक्ति, बेकारी।
Unending—अनंत।
Unfortunate—अभागा।
Uni-axial—एकाक्ष।
Unicameral—एकसदनी।
Unification—एकीकरण।
Uniform—वि० एक समान। सं० परिच्छद, वरदी, वर्दी।
Unilateral—एक-पक्षीय।
Unique—अद्वितीय।
Unisexual—एकलिंगी।
Unit—१. अदद। २. इकाई। ३. मानक-इकाई।
Unitary—एकात्मक, मात्रिक।
Unitary state—एकात्मक राज्य।
United Nations—संयुक्त-राष्ट्र-संघ।
Unity—१. एकता, एका। २. अन्विति। (नाटक की)
Universal—१. विश्वक। २. सर्वव्यापी, सार्विक। ३. सार्वत्रिक, सार्वदेशिक।
Universalism—सर्वार्थवाद।
University—विश्वविद्यालय।
Unknowable—अज्ञेय।
Unknown—अज्ञात।
Unlimited—१. अपरिमित। २. असीम।
Unnatural—अनैसर्गिक, अप्रकृत, अप्राकृतिक।
Unobserved—अलक्षित।
Unpaid—१. अदत्त। २. अभृतक।
Unparliamentary—असांसद्।
Unquestionable—अशंकनीय।
Unsaleable—अविक्रेय।
Unscientific—अवैज्ञानिक।
Unseated—अनासीन।
Unseen—अनदेखा।
Unsexual—अलैंगिक।
Unstability—अस्थिरता।
Unstable—अस्थायी।
Unsymmetrical—अ-सम्मित।
Unthinkable—अविचार्य।
Untimely—असामयिक।
Untouchability—अस्पृश्यता।
Untouchable—अछूत, अस्पृश्य।
Untrained—अप्रशिक्षित।
Unusual—अप्रायिक।
Unveiled—अनावृत।
Unveiling—अनावरण।
Unvoluntary—अनैच्छिक।
Upper class—उच्च वर्ग।
Uprising—उपप्लव, विद्रोह, विप्लव।
Uptodate—अद्यतन, दिनाप्त।
Uranus—उरण।
Ureltira—मूत्र-मार्ग।
Urge—पुलक।
Urgent—तात्कालिक, तुरंती, सद्यस्क।
Urinasy bludder—मूत्राशय, वस्ति।
Urine examination—मूत्र-परीक्षा।
Ursa Major—सप्तर्षि।
Urti caria—जुड़-पित्ती, शीतपित्त।
Usage—१. उपचार। २. प्रचलन, प्रथा। ३. प्रयोग।
Use—१. उपयोग। २. प्रयोग।
Usual—१. चलित। २. प्रायिक। ३. साधारण।
Uterus—गर्भाशय।
Utilitarian—उपयोगितावादी।
Utilitarianism—उपयोगितावाद।
Utility—उपयोगिता।
Utterance—उक्ति।
Uvula—अलि-जिह्वा।
Uvular—अलि-जिह्वीय।

V

Vacancy—रिक्तता।
Vacation—अधिग्राम, छुट्टी।
Vaccination—टीका।
Vaccinator—टीकाकार।
Vacuum—वि० निर्वात। सं० विशून्य।
Valid deed—संलेख।
Valuation—मूल्यन, मूल्यांकन।
Valve—कपाट।
Vaporization—वास्पन।
Vapour—भाप, वास्प।
Vapour bath—१. उष्मा स्वेद। २. वाष्प-स्नान।
Variable—चल (गणित)।
Vascular—वाहिनीय।
Vegetarian—निरामिष-भोजी, शाकाहारी।
Venereology—मैथुनिकी।
Venom—गरल।
Ventilater—वातायनी, हवाकश।
Ventilation—व्यंजन-संचालन, हवादारी।
Ventral—अक्षीय।
Ventricle—निलय।
Verbal noun—क्रियार्थक संज्ञा।
Verdict—अधिमत।
Verification—सत्यापन।
Verified—सत्यापित।
Vermition—सं०, ईंगुर, सिंदूर। वि० सिंदूरी (रंग)।
Verse—पद्य।
Vertebrate—कशेरुक-दंडी, कशेरुकी।
Vertex—शीर्ष।
Vertical—उदग्र, ऊर्ध्व। खड़ा।
Vertical angle—शीर्ष-कोण।
Vessel—वाहिका, वाहिनी।
Vested—अधिष्ठित।
Vested interest—अधिष्ठित स्वार्थ।
Vesting—अधिष्ठान।
Veterinary—पशु-चिकित्सा।

Veterinary surgeon—पशु-चिकित्सक।
Veto—न्षिेधाधिकार, प्रतिषेधाधिकार, रोध अधिकार।
Via media—मध्यम मार्ग।
Vice-chairman—उपाध्यक्ष।
Vice-chanceller—उप-कुलपति।
Vice-President—उप-सभापति।
Vice Versa—प्रतिक्रमात।
View—दृश्य।
Viewpoint—दृष्टिकोण।
Vigilance—१. चौकसी, संतर्कता। २. निगरानी।
Vigilant—चौकस, जागरूक, सतर्क।
Vigour—ओज।
Virgin—अक्षत-योनि, कुमारी।
Virgo—कन्या (राशि)।
Venris—विषाणु।
Visa—अनुवेश-पत्र, अनुवेशिका, वीजा।
Visibility—दृश्यता।
Visitor—१. मुलाकाती। २. दर्शक। ३. दर्शपति। ४. दर्शाधिकारी (परि०)
Visitor's book—आगंतुक पंजी, दर्शक पंजी, दर्शक पुस्तिका। (परि०)।
Visual—दृश्य।
Vitamin—विटामिन।
Vitriol—कासीस।
Vituperation—गाली-गलौज।
Viva voce—मौखिक परीक्षा।
Vocabulary—शब्दावली।
Vocal cord—स्वर-सूत्र।
Vocation—व्यवसाय।
Void—परिशून्य।
Volatile—वाष्यशील।
Volt—ऊर्ज।
Voltage—ऊर्जमान, विद्युत दाव।
Volume—१. आयतन। २. खंड (ग्रंथ का)।
Volumetric—आयतनीय।
Volumetry—आयतन मिती।
Vuluntarily—स्वेच्छया।
Voluntary—स्वैच्छिक।
Volunteer—स्वयंसेवक।
Vote—मत।
Voting—मतदान।
Voting paper—मत-पत्र।
Voucher—आधार-पत्र।
Vowel—स्वर।
Vulva—भग।

W

Waiting room—प्रतीक्षालय।
Walkout—१. अपक्रमण। २. सदन-त्याग।
Walnut—अखरोट।
Want—ऊनता।
Wanton—स्वच्छन्न।
Ward—१. प्रतिपालय। २. संरक्षित।
Wardboy—किंकर।
Warden—संरक्षक।
Warning—चेतावनी।
War of Independence—स्वातंत्र्य युद्ध।
War of nerves—आतंक युद्ध।
Warrant—अधिपत्र।
Warrior—योद्धा।
Warship—युद्ध-पोत।
Wasp—गंधालिका, बर्रे, भिड़।
Wasting disease—क्षीणक रोग।
Water chestnut—सिंघाड़ा।
Water colour—जल-रंग।
Waterfall—जल-प्रपात। प्रपात, दरी।
Water gas—जल-वाष्प।
Water-glass—जल-काँच।
Water mark—जल-चिह्न।
Water pipe—कल।
Water pool—जलकुंड। (परि०)।
Waterproof—जल-सह।
Water-rate—१. आबियाना, जल-कर। २. जल-शुल्क।
Water reservoir--जलागार।
Water spout—जल-स्तंभ।
Water tap—कल।
Water tight—जल-रुद्ध।
Water ways—जल-मार्ग।
Wealth tax—विभव कर।
Weapon—शस्त्र।
Weaver—जुलाहा, बुनकर।
Week-end—सप्ताहांत।
Weekly—साप्ताहिक, हफ्तेवार।
Weight—१. तौल। २. भार।
Welding—संधान।
Welfare—१. कुशल-क्षेम, कुशल-मंगल। २. कल्याण।
Westernization—पाश्चात्यीकरण।
Wet-droppery—मग्नाशुक।
Wheel—चक्र, पहिया।
Whet stone—१. कुरंड, कुंड। २. सान। ३. सिल्ली।
Whip—सचेतक।
Whisper—कानाफूसी, फुसफुस।
White elephant—सफेद-हाथी।
White paper—श्वेत-पत्र।
Whole—समस्त।
Whole sale—थोक।
Whooping cough—कु-कास, कुकुरखाँसी, ठाँसी।
Wild Buffalo—अंसा (भैंसा)।
Will—इच्छा-पत्र, रिक्थ-पत्र, वसीयतनामा।
Wind—पवन।
Wind furnace—पवन-भट्टी।
Winding up—समापन।
Windmill—पवन-चक्की।
Wind storm—आँधी।
Wine—१. आसव। २. मदिरा, शराब।
Wire—तार।
Wire guage—तार-जाली।
Wireless—तारहीन।
Wish—कामना।
Wit—चोज, सुभाषित।
Withdrawal—परावर्तन।
Witness—गवाह, साक्षी।
Wonderful—अद्भुत।
Wooden—काष्ठीय।
Word—शब्द।
Word-meaning—पदार्थ, शब्दार्थ।
Working committee—कार्य-समिति।
Working day—कार्य-दिवस।
Workshop—कर्म-शाला।
Worry—चिंता।
Worth—अर्घ।
Writ—आदेश-लेख, परमादेश, प्रादेश, समादेश।
Writing off—अपलेखन।
Writ of mandamus—परमादेश, समादेश-याचिका।
Writ of prohibition—प्रतिषेध-लेख।
Writ petition—समादेश-याचिका।

Y

Year book—अब्द-कोष, वर्ष-पुस्तिका, वर्ष-बोध।
Yearly—वार्षिक, सालाना।
Yellow fever—पीत ज्वर, पीला बुखार।
Yoke—पीतक।
Younger—कनिष्ठ।

Z

Zodiac—ख-स्वास्तिक, शिरोबिंदु।
Zenith—शशि-चक्र।
Zone—१. क्षेत्र। २. मंडल।
Zoo—चिड़िया-घर।
Zoologist—प्राणी-विज्ञ।
Zoology—प्राणी-विज्ञान।

विश्ववि
2.2

STOCK VERIFY
2020
G... Library

COMPILED

पुस्तकालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार।